।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक 157

राजस्थानी–हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश

द्वितीय-खण्ड
['प' से 'ह']

सम्पादक
पद्मश्री सीताराम लालस

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1987

प्रथमावृत्ति 1000] [मूल्य रु० 145.00

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक

डा० पद्मधर पाठक

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रंथांक 157

राजस्थानी–हिन्दी संक्षिप्त शब्दकोश

द्वितीय-खण्ड

['प' से 'ह']

सम्पादक

पद्मश्री सीताराम लालस

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1987

प्रथमावृत्ति 1000]

नम्र सूचन

इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें. जिससे अन्य वाचकगण इसका उपयोग कर सकें.

[मूल्य रू० 145 00

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित
सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

ग्रन्थ सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक

ग्रंथांक 157

प्रकाशक
राजस्थान राज्य संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

मुद्रक
श्री पुखराज जांगिड, पंकज प्रिण्टर्स, जोधपुर

विक्रमाब्द 2044] [शकाब्द 1909

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दो शब्द

कोश का द्वितीय खण्ड जिज्ञासु विद्यार्थियों के सम्मुख रखते हुए हमें हर्ष मिश्रित अवसाद का अनुभव हो रहा है। कोशकार के जीवन-काल में ही यह खण्ड भी प्रकाश में आ जाता तो हम इसे भी उनके हाथों में सौंप कर अपेक्षाकृत अधिक परितोष का अनुभव करते।

उनकी स्वर्गस्थ आत्मा को प्रतिष्ठान की विनम्र श्रद्धाञ्जलि।

निदेशक
पद्मधर पाठक

भाद्रपद पूर्णिमा; वि. सं. २०४४

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संकेत-चिह्न

संकेत	पूर्ण
पु०	संज्ञा पुंलिंग
स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
वि०	विशेषण
क्रि०	क्रिया
यौ०	यौगिक
अव्य०	अव्यय
क्रि-वि०	क्रिया विशेषण
सं०	संस्कृत
अ०	अरबी
फा०	फ़ारसी
देश०	देशज शब्दावली
(=)	देखो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–प–

प–देवनागरी वर्णमाला का इक्कीसवां वर्ण ।

पंइताळीस–देखो 'पैंतालीस' ।

पंक–पु० [सं०] १ पाप । २ कीचड़ । ३ कलंक, दोष । ४ दलदल । ५ मलहम । —**जनम, जात**–पु० कमल । —**प्रभा, प्यहा, प्रमा**–स्त्री० एक नरक । –**रुट, रुह, रूह**–पु० कमल ।

पंककीर–पु० [सं०] टिटहरी नामक पक्षी ।

पंकज–पु० [सं०] १ कमल । २ फूल । ३ सारस पक्षी । –वि० कीचड़ में उत्पन्न होनेवाला । –**आसन**–पु० ब्रह्मा । —**ग्रह**–पु० बरगद । —**बंधु**–पु० सूर्य, रवि । —**राग**–पु० पद्म राग मणि । —**हत, हती, हत्थ, हत्थी**–पु० सूर्य, रवि ।

पंकजणी, पंकजिणी–देखो 'पंकजिनी' ।

पंकजित–पु० [सं०] गरुड़ का एक पुत्र ।

पंकजिनी–स्त्री० [सं०] कमल की लता ।

पंकज्ज–देखो 'पंकज' ।

पंकण (णि, णी)–स्त्री० १ प्रत्यञ्चा २ देखो 'पंखणी' ।

पंकत (ति, ती)–देखो 'पंक्ति' ।

पंकति-दूहो–पु० दोहा छन्द का एक भेद ।

पंकदिग्धांग–पु० स्कन्द का एक अनुचर ।

पंकधूम–पु० एक नरक विशेष ।

पंकय–देखो 'पंकज' ।

पंकाउळी–देखो 'पंकावळी' ।

पंकाभा–स्त्री० एक नरक विशेष ।

पंकावळि (ळी)–स्त्री० एक छन्द विशेष

पंकि–देखो 'पंक्ति' ।

पंकेरुह–देखो 'पंकरुह' ।

पंखखण–१ देखो 'पंख' । २ देखो 'पक्षी' । ३ देखो 'पंखी' ।

पंक्ति–स्त्री० [सं०] १ कतार २ रेखा । ३ वर्तमान पीढ़ी । ४ श्रेणी । ५ मनुष्यों की कतार । ६ पृथ्वी । ७ कीर्ति, यश । ८ एक ही जाति के मनुष्यों का समूह । ९ पांच की संख्या । १० दश की संख्या । ११ एक वर्ण वृत्त विशेष । —**टाळ**–वि० पंक्ति या जाति से बहिष्कृत । —**बद्ध**–वि० कतार में जड़ा या बंधा हुआ, श्रेणीबद्ध ।

पंक्ति-पावन–पु० यज्ञ में बुलाकर दान देने लायक ब्राह्मण ।

पंख, पंखड, पंखड़ी (डी) पंखड़ो, (डो)–पु० [सं० पक्ष] १ पक्षी आदि का पर । २ पुष्प-दल । ३ धूलि । ४ मांसाहारी पक्षी । ५ राजा की सवारी का हाथी । ६ अश्व, घोड़ा । ७ धारा प्रवाह । ८ देखो 'पक्षी' । ९ देखो 'पंखारो' ।

पंखण (णि, णी)–स्त्री० [सं० पक्षिणी] १ मादा पक्षी । २ मादा गिद्ध । ३ चील । ४ वर्तमान व आने वाले दिन के बीच की रात । ५ अप्सरा । ६ राठौड़ों की कुल देवी । —**आळो, याळो, वाळो**–पु० पक्षी ।

पंखराउ, (राऊ, राज, राय, राव)–देखो 'पक्षीराज'

पंखराळ–वि० १ बड़े-बड़े परों वाला । २ देखो 'पखराळ' ।

पंखवा–स्त्री० पंखे की हवा ।

पंखवो–देखो 'पंखारो' ।

पंखांण–देखो 'पामांण' ।

पंखांराउ, (राऊ, राज, राव)–देखो 'पक्षीराज' ।

पंखाकुळी, पखाबरदार–पु० पंखा से हवा करने वाला अनुचर ।

पंखाबरदारी–स्त्री० पंखे से हवा करने का कार्य ।

पंखायण–देखो 'पंखणी' ।

पंखार, पंखारो–पु० तीर की पूंछ ।

पखाळ, (ळी)–वि० [सं० पक्षालु] १ पंख या परों वाला, परदार । २ पक्षवाला, पक्षधर । –पु० १ पक्षी । २ मांसाहारी पक्षी । ३ पक्षीराज गरुड़ । ४ गिद्ध । ५ सर्प, नाग । ६ घोड़ा, अश्व । ७ तीर, शर । ८ एक डिंगल गीत विशेष ।

पंखावरदार–देखो 'पंखाबरदार' ।

पंखावरदारी–देखो 'पखाबरदारी' ।

पखासाळ–स्त्री० १ वह कक्ष जहां पंखा लगा हो । २ मकान का हवादार कक्ष ।

पंखि–१ –देखो 'पक्षी' । २ देखो 'पंख' । ३ देखो 'पंखी' ।

पंखिओ–१ देखो 'पक्षी' । २ देखो 'पंखियो' । ३ देखो 'पक्ष' ।

पंखिण, (णि, णी)–देखो 'पंखणी' ।

पंखियो–पु० १ छोटी पसली वाला बैल । २ देखो 'पक्षी' । ३ देखो 'पंखी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पखो–पु० [सं० पक्षी] १ पक्षीराज गरुड़। २ पक्षी। ३ बाण, शर। ४ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र। ५ रहट का एक भाग। ६ पुष्प दल। ७ मांसाहारी पक्षी। ८ मक्खी, मक्षिका। ९ बन्दूक के मुह पर बनी नोक। १० देखो 'पंख'।

पखोयो–१ देखो 'पंखियो'। २ देखो 'पक्षी'।

पखोड़, पखोड़ो–१ देखो 'पंखो'। २ देखो 'पक्षी'।

पखोणी (णी)–१ देखो 'पखणी'। २ देखो 'पक्षी'।

पखोपत (पति, पतो, पत्त, पत्ति, पत्तो)–देखो 'पक्षीपत'।

पखोयो–१ देखो 'पक्षी'। २ देखो 'पंखियो'।

पखोराव–देखो 'पक्षीराज'।

पखोस–पु० [सं० पक्षी-ईश] १ गरुड। २ देखो 'पक्षी'।

पखुड़ी–देखो 'पंख'।

पखेरयो, पखेरू, पखेरूयो, (वी)–पु० पक्षी।

पखेसर–वि० [सं० पक्ष-ईश्वर] पखधारी, पखवाला। –पु० १ पक्षीराज गरुड़। २ जटायु। ३ पक्षी।

पखोसो–देखो 'पखारी'।

पखो–पु० १ हवा करने या गर्मी में हवा खाने का उपकरण। २ स्त्रियों की ओढ़नी के किनारे लगी तार गोटे की झलरी। ३ देखो 'पंख'।

पग–पु० [सं० उपांग] १ ढोलक के आकार का एक वाद्य। २ देखो 'पंगु'। ३ देखो 'पंक'।

पगत, पगति (ती)–देखो 'पंक्ति'। —टाळ=पंक्तिटाळ'।

पगनाथ–पु० राजा जयचन्द की एक उपाधि।

पगरण–पु० [सं० उपांगधरण] १ वस्त्र। २ पहनने के वस्त्र।

पगराज, पगराव–पु० [सं० पंगुराज] राजा जयचन्द।

पगळ, पगळियो, पगळो–देखो 'पगुळ'।

पगळी–देखो 'पगुळी'।

पगी–स्त्री० [सं० पग्वी] कीर्ति, यश। –वि० अपग, लगड़ा।

पगु–वि० [सं०] (स्त्री० पगवी, पगी) पांवो से लाचार, अपग, लगड़ा। –पु० १ शनिश्चर। २ सूर्य के सारथी का एक नाम। —ग्रह–पु० मकर राशि। मकर।

पगुगति–पु० एक छन्द विशेष।

पगुरण, पगुरिण, पगुरिणी–देखो 'पंगरण'।

पगुळ–पु० [सं० पगुल:] १ श्वेत घोड़ा। २ देखो 'पंगु'। ३ देखो 'पागळ'।

पगुळी–देखो 'पंगी'।

पगुळो, पगू–देखो पंगु।

पगो–वि० (स्त्री० पगी) पतला, दुबला।

पंघरणो (वो)–देखो 'पागरणो' (वो)।

पच–पु० [सं०] १ग्राम पंचायत का सदस्य, जनप्रतिनिधि। २विवाद के निर्णय हेतु नियुक्त व्यक्ति या व्यक्ति समूह। ३ पांच का अंक। –वि० १ चार व एक। २ पांच के स्थान वाला। ३ हर बात में टांग अड़ाने वाला, पंचायती करने वाला। —अंग–वि० पांच अंगों वाला, पंचांग। –पु० कछुआ। पांच अंग। —आचार–पु० आचार के पांच अंग (जैन)। —इंद्री–स्त्री० पंचेन्द्रिय।

पचइवाद्य–देखो 'पंचवाद्य'।

पचक–पु० [सं०] १ पांच नक्षत्रों का समूह। २ फलित ज्योतिष में नक्षत्रों का एक समय विशेष। ३ शकुन शास्त्र। ४ पांच का समूह।

पंचकन्या–स्त्री० [सं०] सदा कुमारी मानी गई पांच पौराणिक स्त्रियां-अहल्या, कुंती, द्रौपदी, तारा व मंदोदरी।

पंचकपाळ–पु० [सं० पंचकपाल] एक प्रकार का पुराडोश।

पंचकमाळा–स्त्री० एक वर्णिक वृत्त विशेष।

पंचकरम–पु०[सं०पंचकर्म] १ पांच प्रकार के कर्म (वैशेषिक)। २ चिकित्सा की पांच क्रियाएँ।

पंचकळा–स्त्री० [सं० पंचकला] पांच शस्त्रों का समूह।

पंचकल्प–पु० [सं०] एक सूत्र का नाम। (जैन)

पंचकल्याण–पु० [सं०] एक प्रकार का अश्व।

पंचकवळ–पु० [सं० पंचकवल] कुत्ते आदि के लिये निकाले जाने वाले पांच ग्रास।

पंचकविधि–स्त्री० [सं०] पंचक में मरने वाले के लिये किया जाने वाला एक संस्कार विशेष।

पंचकसाय–पु० [सं० पंचकषाय] पांच वृक्षों का कषाय।

पंचकाम–पु० [सं०] पांच प्रकार के कामदेव।

पंचकारण–पु० [सं०] किसी कार्य की उत्पत्ति के माने गये पांच कारण। (जैन)

पंचकिसांण (किसियाण, कियाण)–देखो 'पंचकल्याण'।

पंचकेस–स्त्री० [सं० पंच केश] यज्ञोपवीत संस्कार में बटुक के शिर में रखी जाने वाली पांच शिखायें।

पंचकेसी–स्त्री० १ शरीर के सभी अंगों पर रखे जाने वाले बाल। २ इस प्रकार से रखे गये बालों वाला व्यक्ति।

पंचकोण–पु० [सं०] कुण्डली में पांचवां व नौवां स्थान।

पंचकोल–पु० [सं०] पांचक व रुचिकर पांच वस्तुएँ।

पंचकोस–पु० [सं० पंचकोश] १ शरीरस्थ पांच कोश। २ पांच कोश के क्षेत्र में बसी काशी।

पंचकोसी–स्त्री० [सं० पंचकोशी] १ काशी का एक नाम। २ काशी की परिक्रमा। ३ प्रयाग की परिक्रमा।

पंचक्रम–देखो 'पंचकरम'।

पंचकृत्य, पंचकित्य–पु० [सं० पंचकृत्य] ईश्वर के पांच कर्म।

पंचक्लेस–पु० [सं०पंचक्लेश] राग-द्वेषादि पांच प्रकार के क्लेश।

पंचक्षारगण–पु० [सं०] लवणादि पांच प्रकार के क्षार।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचगंगा–स्त्री० [सं०] गंगा, यमुनादि पांच नदियों का समूह, पंचनद ।

पंचगण–स्त्री० [सं०] १ पांच औषधियों का समूह । २ पंचों का समूह ।

पंचगव्य–पु० [सं०] दूध, दही, घी, गोमल और गोमूत्र, गाय के पांच पदार्थ । **–घृत, घ्रित**–पु० उक्त पदार्थों से बनी औषधि विशेष ।

पंचगीत–पु० [सं०] भागवत के दशवें स्कन्ध के पांच मुख्य प्रकरण ।

पंचगुप्त–पु० [सं०] कछुवा ।

पंचगौड़–पु० [सं०] विंध्याचल के उत्तर में निवास करने वाले, ब्राह्मणों के पांच वर्ग ।

पंचग्गळउ–वि० [सं० पंच+अग्रिलकम्] जिसके पांच अग्र हों ।

पंचग्रह–पु० [सं०] मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि, इन पांचों ग्रहों का समूह ।

पंचघटी–पु० [सं० पंचघटिका] पांच घटी रात्री व्यतीत होने का समय ।

पंचचक्कर(चक्र)–पु०[सं०पंचचक्र] परिस्थिति संबंधी पांच चक्र ।

पंचचामर–पु० [सं० पंचचामर] एक वर्णवृत्त विशेष ।

पंचचूड़–पु० [सं०] पांच शिखा वाला व्यक्ति ।

पंचचूड़ा–स्त्री० [सं०] एक अप्सरा ।

पंचजन–पु० [सं०] १ पांच व्यक्तियों का समूह । २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद । ३ पुरुष । ४ शरीर संबंधी पांच प्राण । ५ एक प्रजापति का नाम ।

पंचजन्य–पु० [सं० पांचजन्य] 'पंचजन' असुर की हड्डी का बना श्रीकृष्ण का शंख ।

पंचडोळियो–पु० पांच लोक देवता संबंधी गीत ।

पंचतंत्रो–स्त्री० [सं०] पांच तार की वीणा ।

पंचतत, पंचतत्व–पु० [सं० पंचतत्त्व] १ पृथ्वी, जल, वायु आदि पांच प्राकृतिक तत्त्व । २ वाम मार्ग के अनुसार मद्य, मांस मत्स्य, मुद्रा और मैथुन । ३ तन्त्रानुसार गुरु तत्त्व, मंत्र तत्त्व, मनस्तत्त्व, देवतत्त्व और ध्यानतत्त्व ।

पंचतन्मात्र–पु० [सं०] इन्द्रियों से ग्रहण किए जाने वाले पांच विषय यथा शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गंध ।

पंचतपो–पु० [सं० पंचतपस्] पंचाग्नि तापने वाला तपस्वी ।

पंचतर (तरु)–पु० [सं० पंचतरु] पांच देव वृक्ष ।

पंचतत्र–देखो 'पंचत्व' ।

पंचताळ–स्त्री० [सं० पंचताल] अष्टताल का एक भेद

पंचताळीस–देखो 'पैंताळीस' ।

पंचतिक्त–पु० [सं०] पांच औषधियों का समूह

पंचतिथ (तिथि)–स्त्री० [सं० पंचतिथि] कार्तिक व वैशाख के शुक्ल पक्ष की पांच पुण्य तिथियां ।

पंचतीरथ–पु० [सं० पंचतीर्थ] विश्रांति, शौकर, नैमिष, प्रयाग और पुष्कर तीर्थ ।

पंचतीरथी–स्त्री० १ एक प्रकार की असद् भूत स्थापना (जैन) । २ देखो 'पंचतीरथ' ।

पंचतृण–पु० [सं० पंचतृण] कुश, कांस, शर, दर्भ और ईख के तृणों का समूह ।

पंचत्व–पु० [सं०] १ पांच का भाव । २ अवसान, मृत्यु । ३ मोक्ष ।

पंचदसी–स्त्री० [सं० पंचदशी] १ पूर्णिमा । २ अमावस्या ।

पंचदेव–पु० [सं०] आदित्य, वरुण, विष्णु, गणेश और देवी ।

पंचदेवद्रुक्ष (द्रुख, द्रिक्ष, द्रिख)–पु० [सं० पंचदेववृक्ष] मंदार, पारिजात, संतान, कल्प व हरिचंदन वृक्ष ।

पंचद्रविड़–पु० [सं०] दक्षिण वासी ब्राह्मणों के पांच वर्ग ।

पंचधारतपनश्री–स्त्री० लपसी नामक एक खाद्य पदार्थ ।

पंचन–पु० कमल ।

पंचनद–देखो 'पंचनद' ।

पंजनख–पु० पांच-पांच नाखूनों वाला प्राणी ।

पंचनद (नदी, नदो)–पु० [सं०] १ रावी, सतलुज, व्यास, चिनाव और झेलम नदियों का समूह । २ उक्त नदियों वाला प्रदेश । ३ इन नदियों का संगम स्थल ।

पंचनाथ–पु० [सं०] बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ ।

पंचनामो–पु० [सं० पंचनाम्तः] पंचों के निर्णय का पत्र ।

पंचनिंब–पु० [सं०] नीम वृक्ष के पांच अंग ।

पंचपंचाळ–पु० पांचाली (द्रौपदी) के पांच पुत्र ।

पंचपक्षी–पु० [सं०] एक प्रकार का शकुन शास्त्र ।

पंचपगो–पु० [सं० पंचपदी] एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।

पंचपणो–पु० [सं० पंच-त्व] १ पंच का कार्य । २ पंच का पद । ३ वाद-विवाद ।

पंचपद–देखो 'नवकार' ।

पंचपरमेस्ठि–देखो 'नवकार' ।

पंचपातर, पंचपात्र–पु० [सं० पंचपात्र] १ पूजन संबंधी पात्र । २ पांच धातु का बना पात्र ।

पंचपिता–पु० [सं० पंचपितृ] पांच प्रकार के पिता ।

पंचपित्त–पु० [सं०] वराह, छाग, महिष, मत्स्य और मयूर का पित्त ।

पंचपीर–पु० पांच लोक देवता यथा-पाबू, हड़बू, रामदेव, मांगलियामेहा व गोगादेव ।

पंचपुसप (पुसब, पुस्प)–पु० [सं० पंचपुष्प] चंपा, आम, शमी, कमल और कनेर के पुष्प ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचबळा–स्त्री० पांच औषधियों का समूह ।

पंचबलि–स्त्री० [सं०] पांच प्रकार का पुण्य ।

पंचबाण–पु० १ कामदेव के पांच बाण । २ कामदेव के पांच पुष्प-अरविंद, अशोक, आम, नवमल्लिका, नीलोत्पल । ३ कामदेव ।

पंचभद्र–पु० [सं०] १ एक प्रकार का घोड़ा । २ घोड़ों की एक जाति । ३ पंचकल्याण घोड़ा । ४ एक प्रकार का औषधि समूह ।

पंचभरतारी–स्त्री० [सं० पंचभर्तृका] द्रौपदी ।

पंच-भीख (भीखण, भीखम)–देखो 'भीखमपंचक' ।

पंचभूत–पु० [सं०] पांच भौतिक तत्त्व ।

पंचभूतक (भूतिक, भौतिक)–वि० [सं० पंचभौतिक] पांच भौतिक तत्त्वों से बना । –पु० शरीर ।

पंचमंडळी–स्त्री० पंचायत, पंच-समूह ।

पंचम (उ)–पु० [सं०] १ संगीत में सप्तक का पांचवां स्वर । २ एक राग विशेष । –वि० पांचवां ।

पंचमकार–स्त्री० [सं०] मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन । (वाम मार्ग)

पंचमगति–स्त्री० [सं०] मोक्ष ।

पंचमगुण–पु० [सं०] मोक्ष ।

पंचमराग–देखो 'पंचम' ।

पंचमहायज्ञ–पु० [सं०] पितृ तर्पण, हवनादि गृहस्थ के पांच कर्म विशेष ।

पंचमहापातक–पु० [सं०] ब्रह्म हत्या आदि पांच प्रकार के महान् पाप कर्म ।

पंचमहाव्याधि–स्त्री० [सं०] यक्ष्मा, कुष्ठ आदि पांच भयंकर रोग ।

पंचमहाव्रत–पु० [सं०] योग शास्त्रानुसार पांच प्रकार के आचरण ।

पंचमहाशब्द (सब्द)–पु० [सं० पंचमहाशब्द] १ पांच प्रकार के वाद्यों का समूह । २ इन वाद्यों से उत्पन्न ध्वनि ।

पंचमाथ–पु० [सं० पंच-मस्तक] शिव, महादेव ।

पंचमी–स्त्री० [सं०] १ चंद्र मास के प्रत्येक पक्ष की पांचवीं तिथि । २ मुक्ति, मोक्ष । ३ द्रौपदी । ४ अपादान कारक । ५ शर्त्तादि से निवृत्ति की क्रिया । –वि० चार के बाद वाली, पांचवीं ।

पंचमुख–पु० [सं०] १ सिंह । २ नृसिंहावतार । ३ शिव, महादेव । ४ ब्रह्मा । ५ हनुमान का एक रूप ।

पंचमुखी–वि० [सं०] पांच मुखों वाला । –पु० एक अशुभ रंग का घोड़ा विशेष ।

पंचमुदरा–देखो 'पंचमुद्रा' ।

पंचमुद्र–पु० [सं०] शिव, महादेव ।

पंचमुद्रा–स्त्री० [सं०] १ पूजन विधि में पांच प्रकार की मुद्राएँ । २ हठ योग की पांच मुद्राएँ ।

पंचमूळ–पु० [सं० पंचमूल] पांच प्रकार की जड़ीय औषधियां ।

पंचमूळी–स्त्री० [सं० पंचमूली] स्वल्प पंचमूल ।

पंचमेर, (मेरु) –पु० [सं० पंचमेरु] पांच प्रसिद्ध पर्वत ।

पंचमेळ, (मेळो)–वि० [सं० पंचमिलन्] पांच वस्तुओं का मिश्रण ।

पंचमेवो–पु० बादाम, पिश्ता आदि पांच मेवे ।

पंचमेस–पु० [सं० पंचमेश] जन्म कुण्डली में पांचवें घर का स्वामी ।

पंचमो–देखो 'पंचम' ।

पंचरंग–वि० [सं०] पांच रंगों का, पचरंगा ।

पंचरतन, (रत्न)–पु० [सं० पंचरत्न] १ पांच प्रकार के रत्न । २ एक स्तोत्र का नाम । ३ पांच धार्मिक ग्रंथ विशेष ।

पंचराइओ–पु० एक वस्त्र विशेष ।

पंचरात्र–पु० [सं०] १ पांच दिनों में पूर्ण होने वाला यज्ञ । २ पांच रातों का समूह ।

पंचराशिक– पु० [सं० पंचराशिक] गणित की एक विधि ।

पंचरूप, (रूपी)–पु० [सं०] सुमेरु पर्वत ।

पंचळ–वि० पांचाल या पंजाब देश का । –पु० द्रुपद राजा का पुत्र धृष्टद्युम्न ।

पंचलक्षण–पु० [सं०] पुराण के पांच लक्षण या चिह्न ।

पंचलड़ो–वि० [सं० पंच-लटिक] १ पांच लड़ों का, पंचलड़ा । २ पांच तह का । ३ पांच गुना । –पु० गले का एक हार विशेष ।

पंचलोह (लोह)–पु० [सं०] १ सोना, चांदी आदि पांच धातुएँ । २ पांच प्रकार के लोह ।

पंचवटी, पंचवट्टी–स्त्री० [सं० पंचवटी] दण्डकारण्य का एक स्थान ।

पंचवदन–पु० [सं०] १ शिव । २ ब्रह्मा । ३ एक मात्रिक छन्द विशेष ।

पंचवय–पु० [सं० पंचव्रत] पांच महाव्रत । (जैन)

पंचवरग–पु० [सं० पंच-वर्ग] पांच वस्तुओं का समूह ।

पंचवरण, पंचवरन–पु० [सं०पंचवर्ण] १ प्रणव के पांच वर्ण । २ वस्त्र विशेष । ३ पचरंगा घोड़ा । –वि० पांच रंग का ।

पंचवांणी–स्त्री० [सं० पञ्च-वाणी] कबीर, दादू, हरिदास, रामदास और दयालदास की वाणियां ।

पंचवाद्य–पु० [सं०] तंत्र, आनद्ध, सुशिर, घन और वीरों का गर्जन ।

पंचवीस–देखो 'पचीस' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचवीं–देखो 'पंचम'।

पंचसंधि–स्त्री० [सं०] १ संधि के पांच भेद। २ पांच की संख्या।

पंचसद (सद्द)–देखो 'पंचसब्द'।

पंचसदी–पु० [सं० पंच+फा० सदी] १ पांच सौ ऊंटों का स्वामी। २ पांच सौ की संख्या।

पंचसबद (सबदउ, सबद्द, सब्द)–पु० [सं० पंच शब्द] १ पांच प्रकार के वाद्य। २ पांच प्रकार की ध्वनियां। ३ पांच वाद्यों की ध्वनि।

पंचसमंदीय–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

पंचसर–पु० [सं० पंचशर] १ कामदेव। २ काम के पांच बाण। —धारी–पु० कामदेव।

पंचसाख–पु० [सं० पंचशाख] हाथ, कर।

पंचसिख–पु० [सं० पंचशिख] सिंह।

पंचसिद्धौसधि–स्त्री० [सं० पंचसिद्धौषधि] पांच प्रकार की औषधियों का योग।

पंचसूना–स्त्री० [सं० पञ्चसूनः] गृहस्थी के पांच दैनिक कर्म। (जैन)

पंचसो–पु० [सं० पंच–शत्] देशी कपड़े की बुनाई का एक औजार। –वि० पांच सौ।

पंचस्नेह–पु० [सं०] पांच प्रकार के स्निग्ध पदार्थ।

पंचस्वेद–पु० पांच प्रकार के स्वेद।

पंचहजारी (हज्जारी)–पु० [फा०] १ पांच हजार की सेना का नायक। २ मुगल साम्राज्य में सामंतों की एक उपाधि।

पंचहम–देखो 'पंचम'।

पंचहुतासण–पु० [सं० पंचहुताशन] तपस्या की पांच अग्नियां।

पंचाइण–देखो 'पंचानन'।

पंचांग–पु० [सं०] १ पांच अंग। २ पांच अंग वाला पदार्थ। ३ वार, तिथि, नक्षत्र आदि का विवरण-पत्रक (ज्योतिष) ४ पुरश्चरण में किये जाने वाले पांच कर्म। ५ तांत्रिक उपासना के पांच अंग। ६ सहाय, साधन, उपाय, देशकाल भेद और विपद प्रतिकार। ७ वृक्ष के पांच अंग। ८ कच्छप। ९ देखो 'पंचकल्याण'।

पंचांगनि, पंचांगनी, पंचांगि–देखो 'पंचाग्नि'।

पंचांण–देखो 'पंचानन'।

पंचांसु, पंचांसू, पंचांसू–देखो 'पचांसू'।

पंचांसुमी (सी), पंचांसमी (सी)–देखो 'पचांसवी'।

पंचांयण, पंचाइण–देखो 'पंचानन'।

पंचाग्निनि–देखो 'पंचाग्नि'।

पंचाइन, पंचाईण, पंचाईन–१ देखो 'पंचानन'। २ देखो 'पंचजन्य'।

पंचाक्षर, पंचाक्षरी–पु० [सं० पंच + अक्षर] पांच अक्षरों का मंत्र। –वि० १ पांच अक्षरों वाला। २ पांच अक्षर के मंत्र का जाप करने वाला।

पंचागनि, पंचागनी, पंचाग्नि–स्त्री० [सं० पंचाग्नि] १ तपस्वी के चार ओर जलाई जाने वाली धूणियों की अग्नि व पांचवीं सूर्य की अग्नि। २ अधिक उष्ण मानी जाने वाली पांच औषधियां। ३ पांच की संख्या*। –वि० पंचाग्नि तापने वाला।

पंचाचार–देखो 'पंचआचार'।

पंचाणण (णु)–देखो 'पंचानन'।

पंचातप–पु० [सं० पंच-आतप] ग्रीष्म ऋतु में चारों ओर अग्नि जला कर किया जाने वाला तप।

पंचात्मा–पु० [सं०] पंच प्राण।

पंचाद–स्त्री० पश्चिम व वायव्य के मध्य की दिशा।

पंचादी–वि० उक्त दिशा संबंधी।

पंचादी–पु० एक मात्रिक छन्द विशेष।

पंचानन–वि० [सं०] १ पांच मुख वाला, पंचमुखी। २ वीर, बहादुर। –पु० १ शिव, महादेव। २ शेर। ३ सिंह राशि। ४ स्वर साधन की एक विधि।

पंचाननी–स्त्री० [सं०] पार्वती, दुर्गा।

पंचामरा–स्त्री० [सं०] दूर्वा, विजया, बिल्वपत्र, निर्गुंडी और काली तुलसी का समूह।

पंचामृत, पंचाम्रित–पु० [सं० पंचामृत] दूध, दही, शक्कर, घृत व मधु के मिश्रण से बना नैवेद्य।

पंचाम्ल–पु० [सं०] पांच खट्टे पदार्थ।

पंचायण (णो)–देखो 'पंचानन'।

पंचायत, पंचायतड़ो (डो)–स्त्री० १ गांव या बस्ती का प्रशासन देखने वाली संस्था, मंडली। २ विवाद के समाधान हेतु मनोनीत व्यक्तियों का समूह। ३ पंचों की सभा। ४ किसी विषय पर व्यर्थ का वाद-विवाद।

पंचायतन–पु० [सं०] देव प्रतिमाओं का समूह।

पंचायती–वि० १ पंचायत संबंधी। २ देखो 'पंचायत'।

पंचायन–१ देखो 'पांचजन्य'। २ देखो 'पंचानन'।

पंचाळ–पु० [सं० पंचाल] १ हिमालय व चम्बल के बीच बसा एक प्राचीन प्रदेश। २ गुजरात - काठियावाड़ का प्राचीन नाम, सौराष्ट्र देश।

पंचाळि, पंचाळी–वि० [सं०पांचाली] पंचाल का, पंचाल संबंधी। –स्त्री० १ चारणों की एक देवी। २ देखो 'पांचाली'।

पंचावन, पंचावनद्द, पंचावनि–देखो 'पचपन'।

पंचवनी–देखो 'पचपनी'।

पंचास–देखो 'पचास'।

पंचासम–देखो 'पचासमी'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचासर–पु० पार्श्वनाथ का एक नाम ।

पंचास–देखो 'पिचियासी' ।

पंचाहर–देखो 'पंजाहर' ।

पंचीकरण–वि० [सं०] वेदान्त में पंच भूतों का विभाग विशेष ।

पंचीकृत–वि० [सं० पंचीकृत] जिसका पंचीकरण हुआ हो ।

पंचीकनी–पु० [सं० पंचीकरण] मनुष्य ।

पंचुत्तर–पु० [सं०] पंच अनुत्तर ।

पंचेंदि, पंचेंदी, पंचेंद्री, पंचेंदी, पंचेंद्री–स्त्री० [सं० पंचेंद्रिय] १ आंख, नाक, कान, जिह्वा व त्वचा ये पांच इन्द्रियां । २ उक्त इन्द्रियों वाला प्राणी ।

पंचेसु–पु० [सं० पंचेषु] १ कामदेव । २ काम के पांच बाण ।

पंचेरी, (री)–देखो 'पंसेरी' ।

पंचोतरी–देखो 'पिचंतरी' ।

पंचोळ–पु० पंचायत ।

पंचोळी–पु० (स्त्री० पंचोळण) कायस्थ जाति व इस जाति का व्यक्ति ।

पच्चाण–देखो 'पंचानन' ।

पच्चाणुं, पच्चांणु–देखो 'पचांणु' ।

पंच्यासी, पंच्यासीइ–देखो 'पिचियासी' ।

पंछि–देखो 'पक्षी' ।

पंछियो–पु० १ छोटी धोती । २ देखो 'पक्षी'

पंछी, पंछीड़ो, पंछीसो–देखो 'पक्षी' ।

पंछोलो–पु० स्वर्णकारों का एक औजार ।

पंज–देखो 'पंजो'

पंजणो–वि० मिटाने व नाश करने वाला ।

पंजणो (णो)–क्रि० मिटाना, नष्ट करना, ध्वंस करना ।

पंजरई–१ देखो 'पंजर' । २ देखो 'पींजरो' ।

पंजर (रि, रो)–पु० [सं०पंजर] १ शरीर, देह । २ प्राणियों के शरीर का कठोर भाग, हड्डियां । ३ कंकाल, ठट्ठर । ४ आला । ५ देखो 'पींजरो' । –वि० रक्षक । —विसन, विसनु='विसनुपंजर' ।

पंजहजारी–देखो 'पंचहजारी' ।

पंजातोड़-बैठक–पु० कुश्ती का एक दाव, पेच ।

पंजाब–पु०भारत का उत्तरी प्रांत विशेष ।

पंजाबळ–पु० कहारों की एक बोली या संकेत ।

पंजाबी–वि०[फा०] पंजाब का, पंजाब संबंधी । –पु० पंजाब का निवासी । –स्त्री० पंजाब की भाषा ।

पंजार–देखो 'पंजोळ' ।

पंजारी–देखो 'पंजोरी' ।

पंजाळी–स्त्री० चड़स खींचने वाले बैलों के गर्दन में फंसाया जाने वाला जूआ ।

पंजाळो–वि० पंजेवाला ।

पंजावो–पु० १ प्रथम गर्भवती गाय के पांचवें मास के थन का उभार । २ देखो 'पचावो' ।

पंजाहर–स्त्री० सेना, फौज ।

पंजियो–देखो 'पंजो' ।

पंजी–देखो 'पांची' ।

पंजीरी, पंजेरी–स्त्री० [सं० पंच-जीरा] घनिये के आटे में शक्कर आदि मिला कर बनाया जाने वाला एक नैवेद्य विशेष ।

पंजोळ–पु० खेत में सूखने के लिये खड़े किये गये पांच-पांच पूलों के समूह ।

पंजो–पु० [फा० पंजा] १ पांच का समूह । २ हाथ या पांव की पांचों अंगुलियें । ३ शरीर का अंगुलियों वाला भाग । ४ हाथ का निशान, चिह्न । ५ बादशाह की हस्तमुद्रा । ६ शेर, बिल्ली आदि प्राणियों के पांवों का अग्र भाग । ७ जूते का अग्र भाग । ८ पांच बूंटी वाला ताश का पत्ता । ९ पांच का अंक । १० जूए का एक दाव । ११ पीठ खुजलाने का उपकरण विशेष ।

पंड–पु० [सं० पिण्ड, पण्ड] १ आकाश, नभ । २ पवन । ३ अर्जुन । ४ हिजड़ा, नपुंसक । ५ देखो 'पांडु' ।

पंडग–नं० [सं० पंडक] नपुंसक, हिजड़ा ।

पंडत–देखो 'पंडित' । (स्त्री० पंडतणी, पंडताणी)

पंडर, पंडरवेस, पंडरावेस, पंडरु (रू)–पु०[सं०पाण्डु] १ यवन, मुसलमान । २ बादशाह । [सं० पिण्ड] ३ पानी का बुदबुदा । ४ देखो 'पांडुर' । ५ देखो 'पिंडरु' (रू) ।

पंडव, पंडवडो–देखो 'पांडव' ।

पंडवतिलक–देखो 'पांडवतिलक' ।

पंडवनामी–देखो 'पांडवनामी' ।

पंडवप्रिया–स्त्री० [सं० पाण्डव-प्रिया] द्रौपदी ।

पंडवमध्य–पु० [सं० पाण्डव-मध्य] अर्जुन ।

पंडवेस–पु० [सं० पाण्डवेश] १ राजा पाण्डु । २ युधिष्ठिर । ३ पाण्डव ।[सं० पाण्डु] ४ मुसलमान, यवन । ५ बादशाह । ६ ललाई युक्त पीला रंग । ७ श्वेत रंग । ८ श्वेत हाथी ।

पंडवो–१ देखो 'पांडव' । २ देखो 'पांडु' ।

पंडसुत–पु० [सं० पांडु-सुत] १ राजा पाण्डु के पुत्र, पाण्डव । २ अर्जुन ।

पंडां–देखो 'पिंडां' ।

पंडा–स्त्री० [सं०] १ बुद्धि । २ विद्या । ३ समझदारी । ४ विज्ञान ।

पंडाळ–पु० बड़ा मण्डप ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंडित–पु० [सं०] (स्त्री० पंडितानी) १ शास्त्रों का ज्ञाता। विद्वान, ज्ञानी। २ विशेषज्ञ। ३ ब्राह्मण। –वि० १ बुद्धिमान, चतुर। २ निपुण, दक्ष।

पंडितानी–स्त्री० १ पंडित की स्त्री। २ ब्राह्मणी। ३ विदुषी।

पंडिताह (ई)–स्त्री० विद्वत्ता, पाण्डित्य।

पंडिताउ (ऊ)–वि० पांडित्य के अनुरूप।

पंडिति–देखो 'पंडित'।

पंडिपाद–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

पंडिय–देखो 'पंडित'।

पंडिवेस–देखो 'पंडवेस'।

पंडी–स्त्री० [सं० पण्डा] पंडे की स्त्री।

पंडीर–पु० महादेव, शिव।

पंडोस पंडोसीक–देखो 'पाँडोस'।

पंडु–१ देखो 'पांडु'। २ देखो 'पांडव'। ३ देखो 'पांडुर'।

पंडुक–पु० [सं० पाण्डु] (स्त्री० पंडुकी) कबूतर जाति का एक पक्षी।

पंडुकुमरी–स्त्री० द्रौपदी।

पंडुर–देखो 'पांडुर'।

पंडुरी–स्त्री० [सं० पण्डुकी] फाख्ता पक्षी।

पंडू–१ देखो 'पांडु'। २ देखो 'पांडव'।

पंडूर–वि० [सं० पाण्डुर] १ उज्ज्वल, निर्मल। २ देखो 'पांडुर'। ३ देखो 'पंडुर'।

पंडोखली–स्त्री० गाठ बाँधने का वस्त्र।

पंडो–पु० [सं० पण्डावित्] १ मंदिर का पुजारी। २ तीर्थ गुरु।

पंत–वि० [सं० प्रान्त] १ तुच्छ। २ देखो 'पंक्ति'। ३ देखो 'पाँति'।

पंतर, पंतरण–देखो 'पांतरण'।

पंतरणी (बी)–देखो 'पांतरणी' (बी)।

पंतरोह–स्त्री० [सं० पंक्ति-रुह] धूलि, रज।

पंतावख–पु० स्वर्ग, देवलोक।

पंति पंती–१ देखो 'पंक्ति'। २ देखो 'पाँति'।

पंथ–पु० [सं० पथ] १ रास्ता, मार्ग। २ सम्प्रदाय, धर्म मार्ग, मत। ३ आचार, पद्धति, व्यवहार, क्रम। ४ एक तांत्रिक मत, वाम-मार्ग।

पंथक–वि० [सं० पथ-क] राह में उत्पन्न। पु० चोर।

पंथक-पथक–स्त्री० १ शत्रु, दुश्मन। २ लुटेरा।

पंथग–पु० [सं० पथग] अनुयायी, शिष्य।

पंथड़ो–देखो 'पथ'।

पंथवारियो–पु० १ 'पंथवारी' पर स्थापित कलश। २ तीर्थ यात्रियों की याद में खेतों, जौ आदि बोये जाने का स्थान।

पंथवारी–स्त्री० तीर्थ यात्रियों की याद में बोये जाने वाले खेत, जौ आदि।

पंथाण–देखो 'पंथ'।

पंथाई–वि० १ वाम मार्ग को मानने वाला, वाममार्गी। २ पथ का, पथ संबंधी।

पंथाळरो–पु० घोड़ा।

पंथिक–देखो 'पंथी'।

पंथिड़ो, पंथियो–देखो 'पंथी'।

पंथी, पंथीक, पंथीड़ो, पंथीडो–पु० [सं० पांथिक] १ राही, यात्री। बटोही। २ किसी पथ या सम्प्रदाय का अनुयायी। ३ वाम मार्गी। ४ पथ प्रदर्शक।

पंथीय पंथीयो–देखो 'पथी'।

पंदरमो, पंदरवे–देखो 'पनरमो'।

पंदरह पंदरै, पंद्रह, पंनर–देखो 'पनरै'।

पंनरपि–अव्य० [सं० पुनरपि] फिर, पुनः।

पंनग–देखो 'पन्नग'।

पंनड़ो, पंनडी (डो)–१ देखो 'पनड़ी'। २ देखो 'पांन'।

पंपा–स्त्री० [सं०] १ दक्षिण भारत की एक नदी। २ इस नदी के पास बसा एक नगर। ३ दण्डकारण्य की एक झील या सरोवर।

पंपागर (गिर, गिरि)–पु० [सं० पंपागिरि] उक्त नदी के पास का ऋष्यमूक पर्वत।

पंपाळ (ळो)–पु० १ झूठ, असत्य। २ ढोंग, आडंबर, पाखंड। ३ झंझट, झमेला। ४ व्यर्थ का प्रलाप। ५ दुनियादारी का प्रपंच। –वि० मिथ्या, झूठा।

पंपोटो–पु० पानी आदि का बुलबुला।

पंपोळणो (बो)–क्रि० [सं० पम्पस्] धीरे-धीरे हाथ फेरना, सहलाना।

पंपोळाणो (बो), पंपोळावणो (बो)–क्रि० धीरे-धीरे हाथ फिराना, सहलवाना।

पंमार–देखो 'परमार'।

पंयाळ–देखो 'पंताळ'।

पंव–वि० पाव।

पंवर, पंवरी–देखो 'पामड़ी'।

पंवार–देखो 'परमार'।

पंसणी–वि० [सं० पांसुल] (स्त्री० पांसुली) दुष्ट, नीच।

पंसारी–पु० [सं० पण्यशाली] (स्त्री० पंसारण) किराणा व जड़ी, बूटी आदि का व्यापारी।

पंसीउकत–स्त्री० पैशाची भाषा।

पंसुळी–देखो 'पांसळी'।

पंसेरो–स्त्री० १ पाच सेर का तौल, बाट। २ पाच सेर पदार्थ की मात्रा

पंसेरी–वि० १ एक। २ देखो 'पसेरी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प–पु० [सं०] १ रवि, सूर्य। २ पवन। ३ वृक्ष। ४ गुरु। ५ राजा। ६ सिंह। ७ कामदेव। ८ पीना क्रिया। ९ पत्ता, पत्र। १० अण्डा। ११ शासक। १२ रक्षक।

पइंठणी (बो)–देखो 'पैठणी' (बो)।

पइंडउ, पइंडो–देखो 'पैंडो'।

पइंतीस, पइंत्रीस–देखो 'पैंतीस'।

पइंसठ, (ठि, ठी)–देखो 'पैंसठ'।

पइ–अव्य० [सं० प्रति] १ वश में, अधिकार या कब्जे में। २ पास में, निकट। –क्रि०वि० अपेक्षा में, बनिस्पत से। –पु० [सं० पद] पैर, चरण।

पइड़ो–देखो 'पेड़ो'।

पइट्ठणी (बो), पइठणी (बो)–देखो 'पैठणी' (बो)।

पइठांणी–वि० पइठाण देश का, पइठाण देश संबंधी। –पु० पइठाण देश का वस्त्र।

पइठांणो–पु० पइठाण देश का घोड़ा।

पइदिणि–क्रि० वि० [सं० प्रतिदिन] प्रतिदिन, रोजाना।

पइन्ना–पु० [सं० प्रकीर्ण] प्रकीर्ण, स्फुट संग्रह।

पइमाल–देखो 'पैमाल'।

पइयो–१ देखो 'पेड़ो'। २ देखो 'पईसो'। ३ देखो 'पथिक'।

पइर–पु० [सं० प्रकार] १ तरह, भांति, प्रकार। २ देखो 'पैर'।

पइरवो–देखो 'पैरवो'।

पइरोज, पइरोजउ, पइरोजो–देखो 'फिरोजो'।

पइलइ–देखो 'पैलें'।

पइलई, पइलो–देखो 'पैलो'।

पइसड़ो–देखो 'पईसो'।

पइसणी (बो)–देखो 'पैसणी' (बो)।

पईसागर–देखो 'पयसागर'।

पइसारउ, पइसारो–देखो 'पयसागर'।

पइसो–देखो 'पईसो'।

पइहरणी, (बो)–देखो 'पैरणी' (बो)

पइहिसो–देखो 'पैंसो'।

पई–१ देखो 'पथिक'। २ देखो 'पैड़ो'

पईखणी, (बो)–देखो 'पेखणी' (बो)।

पईडउ–१ देखो 'पैड़ो'। २ देखो 'पैंड़ो'।

पईयो–१ देखो 'पईसो'। २ देखो 'पैंड़ो'।

पईसड़ो, पईसो–पु० [सं० पस्य-अंश या पणांश] १ तांबे या धातु का सिक्का जो पहले रुपये का चौसठवां भाग था और अब सौ वां भाग है। २ पाव छटांक का एक तौल। ३ उक्त तौल का बाट, जो भोहर के आकार का होता था। ४ धन, दौलत, द्रव्य। ५ ऋण, कर्ज।

पउंजणी–देखो 'पूंजणी'।

पउंतार–देखो 'पूंतार'।

पउ–पु० [सं० वपु] शरीर, देह।

पउढ़णी, (बो)–देखो 'पौढ़णी' (बो)।

पउढ़ाणी (बो) देखो 'पौढ़ाणी (बो)।

पउढ़िम–देखो 'पौढ़म'।

पउतार–देखो 'पूंतार'।

पउतीय, पउतीयो–१ देखो 'पोतियो'। २ देखो 'पोत'।

पउधारणी, (बो)–देखो 'पधारणी' (बो)।

पउम–देखो 'पदम'।

पउमा–देखो 'पदमावती'।

पउर–देखो 'प्रचुर'।

पउरिस, पउरिस्सि–देखो 'पौरस'।

पउल, पउलि (ली)–देखो 'पौल'।

पउहुतणी, (बो)–देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पऊर–१ देखो 'प्रचुर'। २ देखो 'प्रहर'।

पएस–देखो 'प्रदेस'।

पएसी–देखो 'प्रदेसी'।

पओहर–देखो 'पयोधर'।

पकड़–स्त्री० [सं० प्रकृष्ट] १ पकड़ने की क्रिया या भाव। ग्रहण। २ पकड़ने का ढंग। ३ अशुद्धि या दोष ढूंढ़ने की क्षमता। ४ ग्राह्य शक्ति। ५ चिपकने की शक्ति। ६ संगीत में एक प्रकार का स्वर समूह। ७ समझने की शक्ति, बुद्धि। ८ वस्तु को पकड़ने का औजार, उपकरण। ९ वश, काबू।

पकड़णी (बो)–क्रि० [सं० प्रकृष्ट] १ हाथों में कोई वस्तु लेना, हाथों से पकड़ना। २ छूना, हाथ लगाना। ३ थामना। ४ अशुद्धि, त्रुटि, दोष आदि निकालना। ५ अनुचित कार्य करने वाले को देख लेना, चोरी पकड़ना। ६ काबू में करना, नियंत्रण में करना, दबोचना। ७ गिरफ्तार करना, बंधन में डालना। ८ रोक-टोक करना। ९ आगे जाने वाले तक पहुंचना। १० साथ कर लेना। ११ कोई कार्य करना, कार्य प्रारंभ करना। १२ अपने स्वभाव के अनुरूप करना। १३ ग्रसना, घेरना। १४ आक्रांत करना, प्रभाव में रखना। १५ संपर्क बनाये रखना। १६ धारण करना, रखना। १७ जिम्मेदारी लेना, संभालना।

पकड़ाणी (बो), पकड़ावणी (बो)–क्रि० १ हाथ में कोई वस्तु देना, पकड़ाना। २ छुआना। हाथ लगवाना। ३ थमवाना। ४ अशुद्धि, दोष, त्रुटि आदि निकलवाना। ५ अनुचित कार्य करते हुए को दिखाना। चोरी पकड़ाना। ६ काबू में करवाना, नियंत्रण में कराना। दबोचवाना। ७ गिरफ्तार कराना, बंधन में डलवाना। ८ रोक-टोक कराना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ आगे जाने वाले तक पहुँचवाना। १० साथ कराना। ११ कोई कार्य या धंधा प्रारम्भ कराना। १२ स्वभाव के अनुरूप कराना। १३ ग्रसाना, घेराना। १४ आक्रांत कराना, प्रभाव में रखाना। १५ संपर्क कराना। १६ धारण कराना, रखाना। १७ जिम्मेदारी देना, संभलाना।

पकणी (बो)–क्रि० [सं० पचष्] १ कार्य सिद्ध होना। २ मामला तय होना, सौदा पटना। ३ चौसर की गोटी का चक्कर पूरा होना। ४ उपार्जन होना। ५ देखो 'पाकणी' (बो)।

पकरणी–स्त्री० [सं०] एक वृक्ष विशेष।

पकल्ल–पु० [सं० पक्षलः] घोड़ा।

पकवांन (नु, न)–पु० [सं० पक्वान्न] घी, तेल आदि में पका खाद्य पदार्थ, पौष्टिक भोजन।

पकवाशय–पु० [सं० पक्वाशय] उदरस्थ भोजन पचाने वाला अवयव।

पकाई–स्त्री० [सं० पक्व] १ पकने या पकाने की क्रिया या भाव। २ पकाने की मजदूरी। ३ दृढ़ता, पक्काई। ४ कठोरता, ठोसपना। ५ निपुणता, चतुराई। ६ सतर्कता, सावधानी।

पकाणी (बो)–क्रि० [सं० पचष्] १ कार्य सिद्ध कराना। २ मामला तय कराना, सौदा पटाना। ३ चौसर की गोटी का चक्कर पूरा कराना। ४ उपार्जन कराना। ५ अनाज, फलादि को परिपक्वावस्था प्राप्त कराना। ६ खाना आदि पकाना, सिझाना। ७ कच्चापन दूर करना। ८ घाव आदि पकने की दशा में लाना।

पकार–पु० [सं०] 'प' अक्षर, वर्ण।

पकाव–पु० [सं० पक्व] १ पकने की अवस्था या भाव। २ मवाद, पीप।

पकावणी (बो)–देखो 'पकाणी' (बो)।

पकोड़ी, पकोड़ो–पु० बेसन या दाल का बड़ा, वटक।

पक्की–१ देखो 'पक्की'। २ देखो 'पाकी'। (स्त्री० पकी)

पक्कबर–देखो 'पैगंबर'।

पक्कड़णी (बो)–देखो 'पकड़णी' (बो)।

पक्कण–पु० [सं०] १ एक अनार्य देश का नाम। २ बर्बर या चाण्डाल का झोंपड़ा। ३ अनार्य देशवासी।

पक्की–वि० [सं० पक्व] (स्त्री० पक्की) १ जो कच्चा न हो, पका हुआ, परिपक्व। २ पूर्ण, सम्पूर्ण, अभाव रहित। ३ सन्देह रहित, अटूट, प्रगाढ़। ४ प्रशिक्षित, अभ्यस्त, कार्य सिद्धि लायक। ५ प्रौढ़, परिपुष्ट। ६ आंच, गर्मी आदि से पककर दृढ़, मजबूत। ७ दक्ष, प्रवीण, कुशल। ८ अकाट्य, अखण्ड, प्रमाणित। ९ प्रामाणिक मान का, टकसाली। १० पत्थर, ईंट, चूने का बना (भवन)। ११ उबाला हुआ, औटाया हुआ। १२ शुद्ध, विशुद्ध, असली। १३ अटल, अडिग। १४ घी, तेल आदि में सिका या तला हुआ। १५ प्रमाणित, सनद। १६ स्थिर, दृढ़, टिकाऊ। १७ देखो 'पाकी'। —**पईसो**–पु० तांबे का एक प्राचीन तौल जो पांच छटांक का होता था।

पक्ख–देखो 'पक्ष'।

पक्खर–देखो 'पाखर'।

पक्खरणी (बो)–देखो 'पाखरणी' (बो)।

पक्खराळ (ळी)–१ देखो 'पखराळ'। २ देखो 'पाखर'।

पक्खरिय–देखो 'पाखर'।

पक्खरेत, पक्खरेंत–देखो 'पखरैत'।

पक्खाउज (ज्ज)–देखो 'पखावज'।

पक्खि, पक्खी–स्त्री० १ मृतक के पीछे नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराने की प्रथा। (कायस्थ) २ देखो 'पक्षी'। ३ देखो 'पखी'। ४ देखो 'पख'।

पक्खिणी–पु० [सं० पक्षिक] पक्षी, पंछेरू।

पक्खे (क्खें)–देखो 'पखें'।

पक्वान, पक्वानु, पक्वान्न–देखो 'पकवांन'।

पक्ष–पु० [सं०] १ दायां, बायां भाग, बगल, पार्श्व। ओर, तरफ। २ हाथी, घोड़े आदि का वाम भाग, दक्षिणी पार्श्व। ३ किसी विषय का कोई अंग, प्रसंग, प्रकरण। ४ किसी विषय की धारणा, मत, सम्मति। ५ चन्द्रमास की पन्द्रह दिवसीय कोई अवधि। ६ किसी व्यक्ति या विषय के समर्थन की क्षमता या मात्रा, समर्थकों का दल। ७ वंश, कुल। ८ हित या फायदे की बात। ९ संबंध, लगाव। १० वह वस्तु जिसमें साध्य की स्थिति संदिग्ध हो। ११ सेना, दल, फौज। १२ सहायक, सखा, साथी। १३ साथियों की टोली। मण्डली। १४ समान विचारधारा या विभिन्न विचार धाराओं वाला वर्ग। १५ आर्थिक स्थिति। १६ पक्षी का पर, पंख, डैना। १७ बाण की पूंछ। १८ शरीर का दायां, बायां कोई भाग। १९ मदद, सहायता, समर्थन। २० पक्षी। २१ परिस्थिति, हालत अवस्था। २२ घोड़ा, अश्व। २३ राजा की सवारी का हाथी। २४ दीवार। २५ मकान, घर। २६ विरोध, प्रत्युत्तर। २७ धारणा। २८ पड़ोस। २९ कोष्ठक। ३० दो की संख्या।

पक्षता–स्त्री० [सं०] तरफदारी, पक्षपात।

पक्षधर–पु० [सं०] १ चन्द्रमा। २ पक्षपाती। ३ पक्षी। –वि० किसी पक्ष में रहने वाला।

पक्षपात–पु० [सं०] १ अनुचित विरोध या समर्थन। २ अन्याय।

पक्षपाती–वि० [सं०] पक्षपात करने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पक्षवरद्विनी–स्त्री० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय पर्यन्त रहने वाली द्वादशी ।

पक्षाघात–पु० [सं० पक्षाघात] शरीर का भाग बेकार कर देने वाला वात रोग ।

पक्षितीरथ–पु० [सं० पक्षितीर्थ] दक्षिण भारत की एक नदी ।

पक्षियो–पु० [सं० पक्षी] पक्षी, पंछेरू ।

पक्षिराज–पु० [सं०] १ गरुड़ । २ जटायु ।

पक्षी–वि० [सं० पक्षिन्] १ पंखो वाला, परों वाला । २ पक्षों वाला । ३ पक्ष सम्पन्न । –पु० १ पंखों वाला प्राणी, पंछी, चिड़ियादि । २ मध्य ह्रस्व को मात्रा का नाम । **–राज**–पु० गरुड़, जटायु ।

पक्ष–देखो 'पक्ष' ।

पक्षअंधियार–देखो 'अंधारोपख' ।

पक्षइ, पक्षई–१ देखो 'पखं' । २ देखो 'पक्ष' ।

पक्षउ–१ देखो 'पक्ष' । २ देखो 'पखं' ।

पक्षक्रस्न–देखो 'क्रसणपख' ।

पक्षघात–देखो 'पक्षाघात' ।

पक्षणपती–पु० [सं० पक्षिपति] गरुड़ ।

पक्षणी–स्त्री० [सं० पक्षिणी] १ रात्रि, निशा । २ मादा पक्षी ।

पक्षतरणि–पु० [सं० पक्ष तरणि] शुक्ल पक्ष ।

पक्षतूट–पु० [सं० पक्ष-त्रुटि] काव्य संबधी एक दोष ।

पक्षपाड़ो–पु० [सं० पक्षपत्] हीरे का एक दोष ।

पक्षपात–देखो 'पक्षपात' ।

पक्षर–देखो 'पाखर' ।

पक्षरणी (बी)– देखो 'पाखरणी' (बी) ।

पक्षराल-देखो 'पाखर' ।

पक्षराणी (बी)–क्रि० हाथी व घोड़े को झूल या कवच धारण कराना ।

पक्षराळ–पु० १ पाखर से सज्जित घोड़ा या हाथी । २ घोड़ा । ३ देखो 'पाखर' ।

पक्षराळी–वि० [सं०प्रखर] (स्त्री०पखराळी) १ पाखर संबंधी । २ पाखर युक्त । ३ देखो 'पखराळ' ।

पक्षराव–देखो 'पक्षिराज' ।

पक्षरावणी (बी)–देखो 'पखराणी' (बी) ।

पक्षरेत, पक्षरेत–वि० [सं०प्रखरेतस्] कवचधारी –पु० १ योद्धा, वीर । २ घोड़ा ।

पक्षवाड़ो, पक्षवारो–पु० [सं० पक्ष-पाटक] १ चन्द्र मास का कोई पक्ष । २ पन्द्रह दिन का समय ।

पक्षवासउ–पु० [सं० पक्ष-वास] एक पक्ष को अवधि ।

पक्षाल–देखो 'पासाण' । **—भेद** = 'पासाणभेद' ।

पक्षाणी–देखो 'पासाणी' ।

पखा–क्रि०वि० [स०पक्ष] १ ओर, तरफ । २ देखो 'पखावज' ।

पखाउज–देखो 'पखावज' । **—कार**='पखावजकार' ।

पखाउजि (जी)–देखो 'पखावजी' ।

पखाघात–देखो 'पक्षाघात' ।

पखाचळ–वि० [सं० पक्ष + अचल] पक्ष को दृढ़ करने वाला ।

पखापखि, पखापखी–देखो 'पक्षपात' ।

पखापत–वि० पक्ष करने या लेने वाला, पक्षपाती ।

पखारणी (बी)–देखो 'पखाळणी' (बी) ।

पखाळ–पु० [सं० प्रक्षालनम्] १ स्नान, मज्जन । २ विरेचन, जुलाब ।

पखाल–स्त्री० ऊंट या भैंसे पर लाद कर, पानी ढोने की चमड़े की बड़ी मश्क, थैली ।

पखाळणी (बी)–क्रि० [सं० प्रक्षालनम्] १ धोना । २ धोकर साफ करना । ३ स्नान करना ।

पखाळव–स्त्री० विचार-विमर्श ।

पखालियो, पखाळी–पु० १ 'पखाल' से पानी ढोने वाला भिश्ती । २ पखाल' ढोने वाला पशु ।

पखावज–पु० [सं० पक्ष + वाद्य] मृदंग से कुछ छोटा एक वाद्य ।

पखावजो–पु० [स० पक्षवाद्य] पखावज बजाने वाला ।

पखि, पखी–वि० १ हितैषी, शुभेच्छु । २ समर्थक, पक्ष करने वाला । ३ सहायक मददगार । ४ रक्षक, रक्षा करने वाला । ५ पक्षपात करने वाला । –पु० १ मित्र, दोस्त । २ बगल पार्श्व । ३ बढ़ई का एक औजार । ४ देखो 'पक्ष' । –क्रि०वि० ओर, तरफ ।

पखीहं, पखीह (ई)–देखो 'पखं' ।

पखीणी–वि० [सं० पक्षिन्] (स्त्री० पखीणी) पक्ष का, पक्ष संबधी ।

पखू–देखो 'पखी' ।

पखे, पखें पखै–क्रि०वि० [सं० पक्ष, पक्षास्मिन्] १ ओर, तरफ । २ सिवा, अतिरिक्त । बनिस्पत, अपेक्षा । ३ बिना, अभाव में ।

पखंत–वि० पक्ष वाला ।

पखंपार–वि० असीम, अपार ।

पखोळणी (बी)–देखो 'पखाळणी' (बी) ।

पखो, पखय–देखो 'पक्ष' ।

पग–पु० [सं० पदक] १ प्राणियों के शरीर का प्रमुख अंग जिनसे चलने-फिरने की क्रिया होती है । २ उक्त अंग का चिह्न जो चलने फिरने से बनता है । ३ पद । ४ किसी वस्तु या उपकरण का पाया । ५ कदम ।

पगड़–१ देखो 'पग' । २ देखो 'पाग' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पगड़ी–१ देखो 'पाग'। २ देखो 'पेडी'।

पगड़ो–पु० [सं० प्रगे] १ उषाकाल, सवेरा। २ चौसर के खेल में गोटियां रखने की क्रिया। ३ देखो 'पागड़ो'। ४ देखो 'पग'।

पगचंपणो, पगचंपी, पगचांपणो–स्त्री० १ हाथों से पांवों को धीरे-धीरे दबाने की क्रिया। २ सेवा शुश्रूषा। ३ खुशामद।

पगछटो–वि० (स्त्री० पगछटी) चुस्त, फुर्तीला।

पगडंडी, पगडांडी–स्त्री० [सं० पदक + दण्ड] जंगल या मैदान में बना पतला व लम्बा रास्ता।

पगणो (बो)–क्रि० १ अनुरक्त होना, आसक्त होना। २ लीन होना।

पगत–क्रि०वि० नित्य।

पगतरी–स्त्री० [स० पाद - तल] जूती।

पगतळ, पगतळी, पगतळो–पु० [सं० पाद + तल] पांव का तलुवा, पादतल।

पगतियो, पगत्यो–देखो 'पगथियो'।

पगथळो–देखो 'पगतळी'।

पगथिओ, पगथियो–पु०[सं०पदक+स्था] जीने की सीढ़ी, पेड़ी।

पगदासो–स्त्री० जूती।

पगधोई–स्त्री० १ शादी के अवसर पर वर के पिता के पांव धोने की एक प्रथा। २ मेवाड़ की एक नदी।

पगपड़ण, पगपडण–पु० [सं० पदक + पतनम्] वधू द्वारा बड़ी बूढ़ियों के चरण स्पर्श की प्रथा या क्रिया।

पगपखोटण–पु० [सं० पाद-प्रक्षोटनम्] १ पांव दबाने की क्रिया या भाव। २ पांव दबाने वाला।

पगपान–पु० [सं० पदक-पत्रम्] स्त्रियों के पैरों का आभूषण विशेष।

पगपांवड़ो (डो)–पु० १ किसी का स्वागत करने के लिये रास्ते में बिछाया जाने वाला वस्त्र। २ पायंदाज।

पगपाखर–पु० [सं० पदक-प्रखर] जूती।

पगपावटी–स्त्री० पैरों के बल पर चलाया जाने वाला रहट।

पगफूटणो–स्त्री० पांवों का एक रोग।

पगमंड, पगमंडण, पगमंडणा–पु० [सं० पदक-मंडनम्] १ अतिथि के स्वागतार्थ बिछाया जाने वाला वस्त्र, पायंदाज। २ उक्त वस्त्र पर पांव रखते हुए चलने की क्रिया। ३ उक्त प्रकार से चलने से बनने वाला पदचिह्न।

पगरखी, पगरखो–देखो 'पगरखी'।

पगरखी–स्त्री० [सं० पद-रक्षिका] पांव की जूती।

पगरखो–पु० जूते बनाने वालों से लिया जाने वाला कर या टेक्स।

पगलड़ी–देखो 'पग'।

पगलियो–देखो 'पगल्यो'। २ देखो 'पग'।

पगलू–१ पदचिह्न। २ देखो 'पग'।

पगलो–पु० १ खड़ाऊ, पादुका। २ देखो 'पग'। ३ देखो 'पागल'

पगल्भ–देखो 'प्रगल्भ'।

पगल्यो–पु० १ किसी देवता या पीर के, सोने, चांदी या पत्थर आदि पर खुदे पद चिह्न। २ देखो 'पग'।

पगल्ल, पगल्लो–१ देखो 'पागल'। २ देखो 'पग'।

पगवंदस, पगवंदन–पु० [सं० पदवंदनम्] चरण स्पर्श करने की क्रिया।

पगवट, पगवटु–पु० [सं० पद-वाटः] १ कदम रखने की क्रिया। २ पैदल चलने की क्रिया।

पगवाव, पगवावड़ी–स्त्री [सं० पदक–वापिका] पेढ़ियों वाली वापिका।

पगवाहो–वि० [सं० पदक–वह] पांव पैदल।

पगविण–पु० [सं० पद विहीन] सूर्य, रवि।

पगसुख–पु० [सं० पद सुख] जूती, उपानह।

पगह–देखो 'परगै'।

पगां–क्रि० वि० १ लिए, वास्ते। २ सामने, चौड़े में, प्रकट में।

पगांणो, पगांतियो, पगांतो, पगांत्यो, पगांथियो, पगांथो, पगांध्यो–पु० [सं० पद–स्था] १ चारपाई का, पावों की तरफ रहने वाला भाग। २ सोते समय पैरों की तरफ वाला स्थान।

पगांम–देखो 'पैगांम'।

पगा–देखो 'पगां'।

पगाई–स्त्री० [सं० प्रकृति] प्रकृति। (जैन)

पगाणो (बो)–क्रि० अनुरक्त करना, लीन करना।

पगार (रि)–पु० [सं० प्रकार] १ परकोटा, शहरपनाह। २ मार्ग, रास्ता। ३ पराक्रम, शौर्य, बाहुबल। ४ छिछले पानी वाला जलाशय। ५ गढ़, किला। ६ रक्षा, पनाह। ७ वेतन। –वि० रक्षा करने वाला, रक्षक।

पगावणो (बो)–देखो पगाणो (बो)।

पगास–देखो 'प्रकास'।

पगि–देखो 'पग'।

पगी–स्त्री० रहट में लगने वाली लकड़ी विशेष।

पगे–देखो 'पगां'।

पगेसो–वि० १ पांवों से चलने योग्य। २ पैदल चलने वाला। ३ पदयात्री।

पगोड़ी पगोठो–देखो 'पगथियो'।

पगोडो–पु० स्वर्णकारों का एक उपकरण।

पगोतियो, पगोत्यो, पगोथियो, पगोथ्यो–देखो 'पगथियो'।

पगो–पु० १ रहट के स्तंभ के नीचे रहने वाला पत्थर। २ देखो 'पागो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पग्ग–देखो 'पग'।

पग्गार–देखो 'पगार'।

पग्घड़, पग्घड़–१ देखो 'पाग'। २ देखो 'पग'।

पग्घड़ी–देखो 'पाग'।

पड़–स्त्री० [सं० पट] १ कपड़े पर चित्रित, किसी लोकनायक का जीवन चरित्र। २ देखो 'परड़'।

पड़काळ, पड़काळी–पु० १ घायलों को उठाने की डोली। २ जीना, सीढ़ी।

पड़कोट, पड़कोटी–पु० [सं० परिकोट] परकोटा, शहर पनाह।

पड़की–क्रि०वि० [सं० पतू] पट्ट की ध्वनि करते हुए।

पड़क्खणी (बी), पड़खणी (बी)–देखो 'पडखणी' (बी)।

पड़खाऊ–वि० १ न कमाने वाला, कमा खाने में असमर्थ। २ निठल्ला।

पड़गन–पु० [स० प्रतिग्रहण] वचन बद्धता।

पड़गनी–पु० [फा० परगनः] १ प्रान्त, जिला। २ तहसील।

पड़गाहणी (बी)–क्रि० [सं० प्रतिग्रहण] १ कैद करना। २ देखो 'पडगाहणी' (बी)।

पड़चंदी–देखो 'पडचदी'।

पड़चिधी–देखो 'पड़ची'।

पड़चूंण, पड़चूंन, पड़चूण, पड़चून–स्त्री० [सं० प्रचूर्ण] किराणा की परचूनी दुकान या व्यवसाय।

पड़ची–१ देखो 'पड़छी'। २ देखो 'परची'।

पड़च्छ–देखो 'पड़छ'।

पड़च्छी–देखो 'पुड़छी'।

पड़छदी–देखो 'पड़चदी'।

पड़छ–स्त्री० १ ऊंट की एक चाल। २ घोड़े की एक चाल। ३ चौपाये का कदम। ४ देखो 'पुड़छी'।

पड़छणी (बी)–देखो 'परछणी' (बी)।

पड़छाय, पड़छाय–स्त्री० [सं० प्रतिछाय] छाया। प्रतिछाया। परछाई।

पड़छी–स्त्री० १ घोड़े या ऊंट के चारजामे लगने में वाला एक उपकरण। २ देखो 'पुड़छी'। ३ झोली।

पड़छी–पु० १ लोहे का छोटा कड़ाहा। २ देखो 'परची'।

पड़जान–स्त्री० १ गांव या नगर के बाहर, कन्या पक्ष की ओर से की जाने वाली बरात की अगवानी। २ सीमान्त पूजन।

पड़जानियो–पु० उक्त प्रकार से अगवानी करने वाला व्यक्ति।

पड़णी (बी)–क्रि० [सं० पतनम्] १ ऊंचे स्थान से नीचे धरातल पर गिरना, पतन होना। २ किसी वस्तु को किसी पात्र में डाला जाना, रखा जाना। ३ वृष्टि के रूप में गिरना। ४ उड़कर गिरना, फैलना, छितराना। ५ चोट या आघात होना। ६ प्रविष्ट होना समाहित होना। ७ मिलना, मिश्रण होना। ८ दशा या स्थिति में परिवर्तन होना। ९ बनना। १० बीच में आना, हस्तक्षेप करना, दखल देना। ११ झपट कर आना, किसी पर टूटना, धावा बोलना। १२ स्वतः उत्पन्न होना। १३ होना, बनना। १४ विशेष परिस्थिति आना। १५ टिकना, पड़ाव डालना। १६ सोना, लेटना, विश्राम करना। १७ घायल होकर गिरना वीरगति पाना। १८ मरना। १९ संयोग बनना। २० लगन लगना, चिन्ता होना। २१ उतरना, उतर कर अलग होना। २२ बंधन में डाला जाना। २३ उपार्जन होना, लाभ होना। २४ सस्ती या महंगी आना। २५ मिलना, प्राप्त होना। २६ उखड़ना, ढहना।

पड़त–स्त्री० [सं० पतू] १ उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिये खाली छोड़ी हुई भूमि। २ किसी वस्तु की बिक्री दर, लागत। ३ दर, शरह। [सं० प्रति] ४ पुस्तक की प्रति, प्रतिलिपि।

पड़तमाळ (माळी)–देखो 'प्रतिमाळ'।

पड़त-रा-खासड़ा–पु० जागीरदारों द्वारा किसानों से लिया जाने वाला कर विशेष।

पड़तळ–वि० निर्धन, कंगाल, असमर्थ। –पु० १ सामान सामग्री २ चारजामे के उपकरणों का समूह। ३ चारजामे के नीचे का वस्त्र। ४ कृषि संबंधी उपकरण। ५ देखो 'पड़त'।

पड़तळी–पु० [सं०परि-तन] १ तलवार का पट्टा। २ चपरास।

पड़ताळ–स्त्री० [स० प्रति-भालनम्] १ देखभाल, जांच, निगरानी। २ खोज, तलाश। ३ ध्वनि, आवाज। ४ बौछार। ५ प्रहार, चोट। ६ छानबीन।

पड़ताळणी (बी)–क्रि० [स० प्रताडनम्] १ जोश पूर्वक आगे बढ़ाना, झोंकना। २ ध्वंस करना, नष्ट करना। ३ पीटना, मारना। ४ पराजित करना, हराना। ५ भगाना, तेजी से चलाना। ६ खोजना, तलाश करना। ७ छान-बीन करना, जांच करना।

पड़तो–देखो 'पड़त'।

पड़द–स्त्री० [सं० पर्दः] खजूर।

पड़दड़ी, पड़दड़ो–पु० १ तलवार की म्यान या कोश। २ तलवार का पट्टा।

पड़दनी–स्त्री० कूए पर काम आने वाला चमड़े का एक उपकरण विशेष।

पड़दळी, पड़दळो–देखो 'पड़दड़ी'।

पड़दांनी–स्त्री० रहट पर रखने की एक प्रस्तर शिला।

पड़दाहत–देखो 'पड़दायत'।

पड़दादो–पु० [सं०प्रपितामह] (स्त्री०पड़दादी) पिता का दादा।

पड़दापोस–देखो 'परदापोस'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पड़दापोस–देखो 'परदापोस'।

पड़दाबेगण–स्त्री० [फा०पर्दः बेगम] राजप्रासादों की सशस्त्र स्त्री पहरेदार।

पड़दायत पड़दायतन–स्त्री० १ पर्दा रखने वाली स्त्री, परदे में रहने वाली स्त्री। २ राजा या सामतों की उपपत्नी रखैल। ३ पर्दा रखने की प्रथा।

पड़दार–पु० [फा० पर्दः दार] १ बादशाहों की जनानी ड्योढ़ी पर पहरे का कार्य करने वाली एक मुसलमान जाति। २ इस जाति का व्यक्ति। ३ दरबान, द्वारपाल।

पड़दारू–पु० [फा० पर्दाज] चित्र की महीन रेखाएँ।

पड़दाबेगण–देखो 'पड़दाबेगण'।

पड़दी–स्त्री० [फा० पर्दी] १ किसी मकान, कक्ष या कोष्ठक के विभाग करने के लिये बीच में बनाई जाने वाली पतली दीवार या खड़ी लकड़ी। पार्टीशन। ताटी। [सं० परिधानी] २ वर-वधूके बीच में लगाने का अन्तरपट। ३ एक प्रकार का बटुवा।

पड़दो (दौ)–पु० [फा० पर्दः] १ आड़ या ओट के लिये टांगा जाने वाला वस्त्र। २ चिक, टाट। ३ ढकने या छुपाने का वस्त्र। ४ घूंघट पर्दा। ५ किसी बात आदि को छुपाने की क्रिया। ६ व्यवधान, ओट, छिपाव। ७ अन्तःपुर, जनानखाना। ८ बच्चे को पालने में झुलाने का वस्त्र। ९ तह, परत। १० पतली दीवार, ताटी।

पड़धान–देखो 'प्रधान'।

पड़धानगी–देखो 'प्रधानगी'।

पड़नांनो–पु० (स्त्री० पड़नांनी) माता का दादा।

पड़नाळ–देखो 'परनाल'।

पड़पड़ाणो (बो)–क्रि० १ पड़पड़ शब्द करना। २ बकना बड़बड़ाना। ३ पपड़ी जमना।

पड़पड़ाट, पड़पड़ाहट–पु० १ पड़पड़ाने की क्रिया या शब्द। २ बड़बड़ाहट, बकवाद।

पड़पण–पु० [सं०परिपणम्] १ मूल पूंजी। २ धन, दौलत,द्रव्य। ३ शक्ति, सामर्थ्य। ४ सहायता, मदद। ५ कूंए के उपकरण विशेष।

पड़पणो (बो)–क्रि० १ पार पाना, जीतना। २ वश चलना। ३ साथ निभाना, निर्वाह करना। ४ काम चलाना। ५ मुकाबला करना।

पड़पोतरो, पड़पोतो, पड़पोत्र, पड़पोत्रो–देखो 'प्रपौत्र'।

पड़प्पण–देखो 'पड़पन'।

पड़फणो (बो)–क्रि० वरण करना, वरना।

पड़मद–पु० प्रातः काल, सवेरा।

पड़यज–पु० १ सहानुभूति, हमदर्दी। २ प्रतिउपकार। –क्रि०वि० प्रति दिन, रोजाना।

पड़वा–स्त्री० [स० प्रति पदा] चन्द्र मास के प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि।

पड़वाचा, पड़वाचो–पु० [सं० प्रति–वचन] उत्तर, जवाब।

पड़वो–पु० [सं० प्रतिपस्त्य] १ कच्ची छाजन का बना कक्ष। २ रंग महल। ३ देखो 'पड़ह'।

पड़सद, पड़सह, पड़साव–पु० [सं० प्रति–शब्द] १ प्रति ध्वनि। २ घोर शब्द, जोर की ध्वनि।

पड़साळ (साळा)–स्त्री० [सं० प्रति–शाला] मकान का एक कक्ष।

पड़सूचो (सूवो, सूधो)–देखो 'पड़ूदी'।

पड़हड़–देखो 'पटह'।

पड़हार–देखो 'प्रतिहार'।

पड़ह, पड़हो–पु० [सं० पटह] १ सार्वजनिक घोषणा, डुंडी। २ देखो 'पटह'।

पड़ाउ, पड़ाऊ–पु० [सं० पतित] पराजित सेना का रणक्षेत्र में छोड़ा हुआ सामान। –वि० पड़ा हुआ।

पड़णो, (बो)–क्रि० १ गिरवाना, पटकवाना। २ छिनवाना, झपटवाना। ३ बनवाना। ४ पात्र आदि में डलवाना। ५ उखड़वाना। ६ चोट कराना, पिटवाना। ७ मिलवाना, मिश्रण कराना। ८ मरवाना। ९ उपार्जन कराना।

पड़ापड़, पड़ापड़ी–स्त्री० [सं०पत्] १ पट-पट की लगातार होने वाली ध्वनि। २ लगातार होने वाले आघात। ३ पटाखे आदि की ध्वनि।

पड़ाळ, पड़ाळा–स्त्री० [सं०पत्] टीबों के मध्य की भूमि।

पड़ाव–पु० [सं० प्रत्यावास] १ यात्रा के बीच का अस्थाई विश्राम, ठहराव। २ उक्त प्रकार का विश्राम लेने का स्थल। ३ यात्रियों के ठहरने का स्थान।

पड़ावणो (बो)–देखो 'पड़ाणो' (बो)।

पड़िआगळ, पड़िआळग–देखो 'पड़ियालग'।

पड़िकम्मण, पड़िकमण,(णो)–देखो 'पडिकमण'।

पड़िमा–देखो 'प्रतिमा'।

पड़ियागळ–देखो 'पडियालग'।

पड़ियार–देखो 'प्रतिहार'।

पड़िवत्ति–स्त्री० [सं० प्रतिपत्तिः] १ प्राप्ति, उपलब्धि। २ ज्ञान।

पड़िवा–देखो 'पड़वा'।

पड़िहाणो (बो)–क्रि० व्याकुल होना, घबराना, परेशान होना।

पड़िहार–देखो 'प्रतिहार'।

पड़ूत्तर (त्तर)–पु० [सं० प्रत्युत्तर] उत्तर, प्रत्युत्तर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पड़ूदी–स्त्री० मेदे व घी-शक्कर से बना एक पौष्टिक पदार्थ ।

पड़ेच, पड़ेंच–स्त्री० कनात, पर्दा ।

पड़ेत–देखो 'पड़त' ।

पड़ोज–देखो 'पडोज' ।

पड़ोटियौ–देखो 'परड़' ।

पड़ोदी, पड़ोद्यो–देखो 'पड़ूदी' ।

पड़ोस–देखो 'पाड़ोस' ।

पड़ोसी–देखो 'पाड़ोसी' ।

पच–पु० [सं० पच्] १ पाचन क्रिया । २ देखो 'पथ्य' ।

पचक–देखो 'पंचक' ।

पचकणी (बौ)–देखो 'पिचकणी' (बौ) ।

पचकल्याण–देखो 'पंचकल्याण' ।

पचकाणी (बौ)–देखो 'पिचकाणी' (बौ) ।

पचकूटो–पु० [सं० पञ्च-कुट्टनम्] केर, कुंभट, सांगरी, अमचूर गुड़ आदि की मिश्रित सब्जी ।

पचक्खणी (बौ), पचखणी (बौ)–क्रि० [सं० प्रत्याख्यानम्] छोड़ना, त्यागना ।

पचखाण–पु० [सं० प्रत्याख्यान] १ त्याग, परहेज । २ दुष्कर्मों के परित्याग का व्रत ।

पचखाणी (बौ), पचखावणी (बौ)–क्रि० [सं० प्रत्याख्यानम्] छुड़ाना, परित्याग कराना ।

पचग्रह–देखो 'पंचग्रह' ।

पचड़ो–क्रि० [सं०पचनम्] झंझट, बखेड़ा, प्रपंच, पेचोदा कार्य ।

पचणो (बौ)–क्रि० [सं० पचनम्] १ खाया हुआ पदार्थ पचना, हजम होना । २ पाई हुई वस्तु या धन अपने पास ही रह जाना, वापस लौटाना न पड़ना । ३ एक पदार्थ में दूसरा पदार्थ लीन होना । ४ अवैध रूप से धन कमाना । ५ पकना । ६ सामर्थ्य से बाहर कार्य करने का प्रयास करना ।

पचधारी, पचधारो–पु० १ दूध व मावे के योग से बना हलवा विशेष । २ एक प्रकार की मिठाई ।

पचपच–पु० १ कीचड़ । २ पच-पच शब्द करने की क्रिया । ३ पीप आदि भर जाने की अवस्था । ४ अधिक तरावट होने की अवस्था ।

पचपचो–वि० (स्त्री० पचपची) १ घृत आदि से तर व्यंजन । २ गीला या कुछ पानीदार ।

पचपन–वि० [सं० पञ्च-पञ्चाश] पचास व पांच । –पु० पचास व पांच की संख्या, ५५ ।

पचपनमो (वौ)–वि० [सं० पंचपंचाशत्] १ पचपन के स्थान वाला, पचपनवां । २ चौपन के बाद वाला ।

पचपनो–पु० [सं० पंचपंचाशत्] पचपन की संख्या का वर्ण ।

पचपीर–पु० १ लोकदेवता । २ देखो 'पंचपीर' ।

पचमणियो–पु० कंठ का एक आभूषण (मेवात) ।

पचरंग–पु० [सं०] १ पांच रंगों का समूह । २ पांच रंगों की सामग्री । ३ देखो 'पचरंगो' ।

पचरंगो–वि० [सं० पंचरंग] (स्त्री० पचरंगी) पांच रंगों का, पचरंगा ।

पचराई–स्त्री० [सं० पंच-राजी] काचर, ग्वारफली, टिंडो तुरई व बैंगन के मिश्रण का शाक ।

पचलड़ी पचसड़ो–स्त्री० [सं० पंच-लटिका] पांच लड़ियों का हार, माला ।

पचवणो (बौ)–देखो 'पचणो' (बौ) ।

पचवीस–देखो 'पचीस' ।

पचहत्तर–देखो 'पिचंतर' ।

पचांणु, पचांणू–वि० [सं० पंचनवति] नब्बे व पांच, पांच कम सौ । –पु० नब्बे व पांच की संख्या, ९५ ।

पचांणू'क–वि० पचानवे के लगभग ।

पचांणूमौ (वौ)–वि० जिसका स्थान चौरानू के बाद हो, पचानवां । –पु० पचाणू का वर्ष ।

पचाणो (बौ)–क्रि० [सं० पचष्] १ हजम करना, पचाना २ ली हुई वस्तु या धन को लेकर न लौटाना, दबाकर रख लेना । ३ सहन करना, बर्दाश्त करना । ४ एक पदार्थ को दूसरे में लीन करना, मिलाना । ५ पकाना । ६ थकाना, हैरान करना । ७ क्षमता से बाहर का कार्य कराना ।

पचारणो (बौ)–देखो 'पछाड़णो' (बौ) ।

पचावणो (बौ)–देखो 'पचाणो' (बौ) ।

पचावन–देखो 'पचपन' ।

पचावनो–देखो 'पचपनो' ।

पचावो–पु० बाजरी या ज्वार आदि के पुंघालों का, तरतीब वार जमा हुआ लंबा व चौड़ा ढेर ।

पचास–वि० चालीस और दश, सौ का आधा ।
–पु० पचास की संख्या, ५० ।

पचासमो (वौ)–वि० [सं० पंचासमः] पचास के स्थान वाला ।

पचासे'क–वि० [सं० पंचशत्] पचास के लगभग ।

पचासो–पु० १ पचास का वर्ष । २ देखो 'पचावो' ।

पचीयत–पु० पश्चाताप

पचोर–पु० 'सुरणाई' वाद्य के मुंह पर लगा नारियल की खोपड़ी का गोल खंड ।

पचीस–वि० [सं० पंचविंशति] पांच और बीस, चौबीस व एक । –पु० पचीस की संख्या, २५ ।

पचीसमो (वौ)–वि० पचीस के स्थान वाला, पचीसवां ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पचीसिका, पचीसी–स्त्री० [सं० पच विंशति] १ पचीस वस्तुओं का समूह। २ पचीस छन्दों का काव्य संग्रह। ३ मनुष्य जीवन के प्रारंभ के पचीस वर्ष।

पचीसे'क–वि० [सं० पंच विंशति] पचीस के लगभग।

पचीसो–पु० [सं० पंचविंशत्] पचीस का वर्ष।

पचेटो, पचोटो–पु० पांच गोली का एक खेल विशेष।

पचोतर, पचोतरसो–वि० [सं० पञ्चोतर] एक सौ व पांच। –पु० उक्त संख्या का अंक, १०५।

पच्चंग–पु० [सं० प्रत्यङ्ग] प्रत्यंग (जैन)।

पच्चखांण (खांणो)–देखो 'पचखांण'।

पच्चर–देखो 'फाचर'।

पच्चहिआंण–देखो 'पहिचांण,'।

पच्ची, पच्चीकारी–स्त्री० [सं० पचिता] १ जड़ाई या जमाई का कार्य। २ किसी धातु के पात्र आदि पर दूसरी धातु की चित्रकारी आदि।

पच्चीस–देखो 'पचीस'।

पच्चीसो–देखो 'पचीसी'।

पच्छ–१ देखो 'पक्ष'। २ देखो 'पछै'।

पच्छम–देखो 'पच्छिम'।

पच्छमी–वि० १ पश्चिम का, पश्चिम संबंधी। २ देखो 'पच्छिम'।

पच्छवांण–देखो 'पछेवांण'।

पच्छिम–पु० [सं० पश्चिम] १ पूर्व के सामने की दिशा। २ पृथ्वी के पश्चिमी भाग में बसे देश। —**घाट**–पु० बंबई के पश्चिम की ओर की पर्वतमाला।

पच्छिमि–वि० [सं० पश्चिमी] पश्चिम का, पश्चिम संबंधी।

पच्छी–देखो 'पक्षी'।

पच्छेवांणु–वि० [सं० पश्चात्–त्वन्] पीछे का, बाद का, पीछे वाला।

पच्छोकड़ो, पच्छोकडउ, पच्छोकडो–देखो 'पछोकड़ो'।

पच्यासियो–देखो 'पिचियासियो'।

पच्यासी–देखो 'पिचियासी'।

पछंटणो (बो)–देखो 'पछटणो' (बो)।

पछ–पु० [सं० पथ्य] १ व्रत, संकल्प, प्रण। २ त्याग। ३ देखो 'पथ्य'। ४ देखो 'पछै'।

पछइ–देखो पछै'।

पछट–स्त्री० १ तलवार, खड्ग। २ प्रहार, चोट। ३ पछाड़।

पछटणो (बो)–क्रि० १ तेज हांकना, तेज चलाना। २ पछाड़ना; जोर से पटकना। ३ प्रहार करना, मारना।

पछटो, पछट्ट, पछट्ठ–देखो 'पछट'।

पछट्टणो (बो), पछठणो (बो)–क्रि० १ भेजना, प्रेरित करना। २ देखो 'पछटणो' (बो)।

पछतावो–देखो 'पछतावो'।

पछतावणो (बो)–क्रि० [सं० पश्चाताप] १ पश्चाताप करना, अफसोस करना, खेद प्रगट करना। २ रंज करना।

पछताप, पछतापो, पछताव–देखो 'पछतावो'।

पछतावणो (बो)–देखो 'पछताणो' (बो)।

पछतावो–पु० [सं० पश्चाताप] किसी बात पर रंज, खेद या मनस्ताप करने की क्रिया या भाव, पश्चाताप।

पछम–देखो 'पच्छिम'। —**घाट**= पच्छिम-घाट'।

पछमांण–वि० १ पश्चिम का, पश्चिम संबंधी। २ देखो 'पच्छिम'।

पछलारो–वि० १ आखिर का, आखिरी। २ देखो 'पाछलो'।

पछलो–देखो 'पाछलो'। (स्त्री० पछली)

पछवांण–१ देखो 'पछमांण'। २ देखो 'पच्छिम'।

पछवा–देखो 'पिछवा'।

पछवाई–स्त्री० [सं० पश्चात] १ सेना का पिछला भाग। २ इस भाग से युद्ध करने की क्रिया। ३ पिछला भाग। ४ पीछे का कार्य। ५ पश्चिम की ओर की वायु, हवा।

पछवाड़ो–पु० [सं० पश्चात्+वाटः] पीछे का भाग। पीछे का प्रदेश।

पछवाह–देखो 'पछवाई'।

पछांणणो, (बो)–देखो 'पहचांणणो' (बो)।

पछाड़–स्त्री० [सं० पश्चात्-प्रहार] १ उठा कर पटकने की क्रिया या भाव। २ सहसा गिर पड़ने की क्रिया या भाव। ३ मूछित होकर गिरने की क्रिया या भाव।

पछाड़णो, (बो)–क्रि० [सं० पश्चात् प्रहार] १ वध करना, मारना, हनन करना। २ घात करना, वार करना। ३ पराजित करना, हराना। ४ मारना, पीटना। ५ जमीन या शिला पर जोर से पटकना, मारना, आछंटना। ६ कुश्ती में गिराना, पटकना। ७ गिराना, पटकना। ८ मात देना।

पछाड़ी–स्त्री० [सं० पश्चात] १ पीछे का हिस्सा या पृष्ठ भाग। २ घोड़े के पिछले पांव बांधने की रस्सी। ३ पंक्ति का सबसे अंतिम व्यक्ति। ४ बन्दूक छोड़ते समय लगने वाला कुंदे का झटका। ५ देखो 'पछाड़'। –क्रि० वि० पीछे, पीछे की ओर।

पछाड़ीवाव–स्त्री० बन्दूक छोड़ते समय लगने वाला कुन्दे का झटका

पछाड़णो (बो)–देखो 'पछाड़णो (बो)।

पछाताप, पछातापो–देखो 'पछतावो'।

पछि–क्रि० वि० पश्चात, बाद में, पीछे।

पछिमी–१ देखो 'पच्छिम'। २ देखो 'पच्छिमी'।

पछिलउ, पछिलो–देखो 'पाछलो'। (स्त्री० पछिली)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पछिवांण–देखो 'पछेवांण'।

पछीत–देखो 'पछीत'।

पछी–क्रि० वि० [सं० पश्चात्] १ बाद में, पश्चात्, तदनन्तर, पीछे। २ देखो 'पक्षी'।

पछीत, पछीतरा–स्त्री० मकान के कक्ष में, दीवार के सहारे ऊंची लगाई जाने वाली पत्थर की पट्टी, टांड।

पछें, पछे–देखो 'पछै'।

पछेड़लु (लू), पछेड़ल्लु (ल्लू)–वि० (स्त्री० पछेड़ली) १ बाद का, पश्चात का। २ पीछे का।

पछेड़ी–देखो 'पछेवड़ी'।

पछेली–स्त्री० १ स्त्रियों के हाथ का एक आभूषण विशेष। २ विधवा स्त्री के हाथ का आभूषण (मेवात)।

पछेवड़ी–स्त्री० [सं० प्रच्छदः] १ मोटे सूती कपड़े की चादर, चद्दर। २ मोटे कपड़े का थान। ३ पगड़ी पर बांधने का वस्त्र विशेष। ४ सिरोपाव में पगड़ी के साथ दिया जाने वाला वस्त्र। ५ स्त्री संघ द्वारा पूज्य पाट पर आसीन करते समय ओढ़ाया जाने वाला श्वेत वस्त्र (जैन)। ६ देखो 'पछेवड़ी'।

पछेवड़ुं, पछेवड़ू, पछेवड़ूं, पछेवड़ौ, पछेवड़ौ–पु० [सं० प्रच्छदः + पटः] १ प्रायः सफेद रंग का, ओढ़ने का वस्त्र। २ सफेद चादर। चद्दर।

पछेवांण, पछेवांणि–क्रि०वि० पीछे की ओर।

पछैं, पछै–क्रि०वि० [सं० पश्चात्] १ बाद में, तदुपरांत, तदनन्तर, पीछे। २ फिर। ३ अन्त में।

पछोकड़ौ, पछोकड्ड, पछोकडौ–पु० [सं० पश्चादोक] पीछे का स्थान, पीठ का स्थान।

पछोड़ी (डी)–देखो 'पछेवड़ी'।

पछोपौं, पछोपौ–देखो 'पाछोपौ'।

पजणौ (णी)–क्रि० [सं० प्रजुडनम्] १ बंधन में आना, पकड़ में आना। २ उलझन में आना, परेशानी में पड़ना। ३ घुसना, प्रविष्ट होना। ४ घुसकर फंस जाना, अटक जाना, अड़ जाना। ५ ठसाया जाना। ६ जड़ा जाना। ७ पीटा जाना, मारा जाना। ८ काबू में आना, वश में आना। ९ ठीक-ठीक समाहित होना। १० टक्कर लेना, टकराना, भिड़ना। ११ सम्पर्क करना, संबंध स्थापित करना।

पजांमौ–देखो 'पाजांमौ'।

पजाऔ–देखो 'पजावौ'।

पजाणौ (णी)-क्रि० [सं० प्रजोडनम्] १ बंधन में डालना, पकड़ में लाना। २ उलझन में डालना, परेशानी में पटकना। ३ घुसाना, प्रविष्ट करना। ४ घुसा कर फंसाना। अटकाना, अड़ाना। ५ ठसाना, ठूंसना। ६ जड़ना। ७ पीटना, मारना। ८ काबू में करना, वश में करना। ९ ठीक-ठीक समाहित करना। १० टक्कर लिराना, भिड़वाना। ११ सम्पर्क कराना। १२ संबंध स्थापित कराना।

पजाव–देखो 'पजावौ'।

पजावगर–पु० [फा०] मिट्टी की ईंटें बनाने वाला व्यक्ति।

पजावणौ (वौ)–देखो 'पजाणौ' (वौ)।

पजावौ–पु० [फा० पजावः] मिट्टी की ईंटें या खड्डी का, घास-फूस या कंडों में पकाने के लिये, जमाया हुआ ढेर।

पजूंण, पजूण, पजूसण–देखो 'परघूसण'।

पजोणौ (णी), पजोवणौ (वी)–क्रि० प्राप्त करना।

पज्ज–पु० [सं० पद्य] मार्ग, रास्ता।

पज्जण–पु० [सं० पर्जन्य] १ वर्षा का बादल (जैन)। २ इन्द्र।

पज्जत, पज्जत्त–वि० [सं० पर्याप्त] १ परिपूर्ण मात्रा में, पूर्ण। २ सम्पूर्ण। ३ समर्थ, शक्तिशाली। ४ यथेष्ट (जैन)।

पज्जत्ता–स्त्री० [सं० पर्याप्त] सम्पूर्णता, पूर्णता।

पज्जत्ति–स्त्री० [सं० पर्याप्ति] १ पुद्गलों को ग्रहण करने की शक्ति। २ शक्ति, सामर्थ्य।

पज्जव–पु० [सं० पर्यव] १ परिच्छेद, निर्णय (जैन)। २ विशेषता (जैन)। ३ द्रव्य और गुण का रूपान्तर (जैन) ४ पर्याय।

पज्जूसण, पज्जोसवण, पज्जोसवणा–देखो 'परघूसण'।

पज्झटिका–स्त्री० [सं० पद्धटिका] एक प्रकार का मात्रिक छन्द।

पटंगय–स्त्री० एक राग विशेष।

पटंतर–पु० [सं०] १ गूढ़ विषय, गोप्य बात, रहस्य की बात। २ भेदोपभेद। ३ पार्थक्य, पृथकत्व, अलगाव। ४ सादृश्य कथन। उपम। ५ समानता, सादृश्य। ६ परिवर्तन।

पटंतरह (रौ)–स्त्री० १ पाट बैठते समय ओढ़ाई जाने वाली चादर। २ आचार्य के पाट या गादी पर बैठाया जाने वाला दूसरा व्यक्ति।

पटंबर–पु० [सं०] १ कौशेय, रेशमी वस्त्र। २ वस्त्र, कपड़ा। ३ कपटता, धूर्तता। ४ गुप्त भेद। ५ गोप्य विषय।

पटंबरि, पटंबरी–वि० १ कपट करने वाला, धूर्त। २ देखो 'पटंबर'।

पटंबरौ–देखो 'पटंबर'।

पट–पु० [सं०] १ वस्त्र, कपड़ा। २ महीन वस्त्र। ३ कपाट, किवाड़। ४ पर्दा। ५ पालकी के दरवाजे का कपाट। ६ चित्रांकित करने का पत्र या गत्ता। ७ जगन्नाथ, बद्रीनाथ आदि का चित्र। ८ नदी तट, किनारा। ९ शकट या गाड़ी पर लगाने का छप्पर। १० छत, छाजन। ११ कुश्ती का एक पेच। १२ किसी वस्तु के गिरने से उत्पन्न 'पट' ध्वनि। १३ नाश, ध्वंस। –क्रि०वि० १ शीघ्र, तुरंत, झट। २ देखो 'पट्ट'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पटउटि, पटउटी–देखो 'पटकुटी'।

पटउलउ, पटउलडी (डी), पटउली, पटउलीय, पटउली–देखो 'पटकूल'।

पटओ–देखो 'पटवो'।

पटक–स्त्री० [सं० पत्] १ पराजय, हार। २ पछाड़, पटकी।

पटकणी (नी)–क्रि० [सं०पत्] १ किसी वस्तु को ऊपर से नीचे डालना, पटकना। २ अधिक व्यय या दान करना। ३ पहनाना, धारण कराना। ४ फेंकना, उछालना, गिराना। ५ व्याप्त करना, फैलाना। ६ करना, बनाना, सौंपना। ७ पछाड़ना, गिराना। ८ निकालना, छोड़ना। ९ खड़े हुए, रखे हुए या जमाये हुए पदार्थ को जमीन पर गिराना, फैलाना, डालना। १० गिरा देना, खो देना। ११ बलात् कहीं रख देना।

पटकाणी (वी)–क्रि० १ ऊपर से नीचे डलवाना, पटकाना। २ अधिक व्यय या दान कराना। ३ धारण करवाना। ४ फेंकाना, उछलवाना। ५ व्याप्त कराना, फैलवाना, ६ करवाना, बनवाना, सौंपवाना। ७ पछाड़ दिराना। गिरवाना। ८ निकलवाना, छोड़ाना। ९ खड़े या जमाये हुए को जमीन पर गिरवाना, फैलवाना, डलवाना। १० गिरवा देना, गुम करा देना। ११ बलात् कहीं रखवा देना।

पटकाय–पु० [सं० पटकारः] १ कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा, ततुकाय। २ चित्रकार।

पटकावणी (वी)–देखो 'पटकाणी' (वी)।

पटकी–स्त्री० [सं० पत्] १ वज्रापात, बिजली, विद्युत। २ वज्र, इन्द्र का अस्त्र। ३ भयंकर आफत। ४ कुश्ती का एक दाव।

पटकुटी–स्त्री० छोटा तंबू, खेमा, छोलदारी।

पटकूल–पु० [सं० पट्ट-दुकूल] १ वस्त्र, कपड़ा। २ रेशमी वस्त्र, कपड़ा। ३ दुपट्टा।

पटक्कणी (वी)–देखो 'पटकणी' (वी)।

पटड़ियो–१ देखो 'पाटी'। २ देखो 'पट्टी'। ३ देखो 'पटियो'।

पटड़ी–१ देखो 'पट्टी'। २ देखो 'पाटी'।

पटड़ो–१ देखो 'पट्टो'। २ देखो 'पाटो'।

पटचर–पु० [सं० पटच्चर] चोर।

पटचार–पु० [सं० पटचार] वस्त्र, कपड़ा।

पटझर–देखो 'पटाझर'।

पटण–देखो 'पट्टण'।

पटणी–स्त्री० एक बहुमूल्य वस्त्र विशेष।

पटतीप–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

पटणो–पु० [सं० पट्टन] पाटलीपुत्र।

पटणो (वो)–क्रि० [सं० पत्] १ वसूल होना, प्राप्त होना। २ मन मिलना, संबंधों का निर्वाह होना। ३ सौदा तय होना, समझौता होना। ४ गड्ढा या कूप आदि का पट जाना, बुर जाना, भर जाना। ५ छा जाना, फैल जाना, भर जाना, बिछ जाना। ६ धंसना, प्रविष्ट होना, घुसना। ७ अर्जित होना।

पटतर–देखो 'पटतर'।

पटताळ–पु० [सं० पट्टताल] मृदंग की एक ताल।

पटधारी–वि० [सं०] वस्त्र धारी।

पटन–देखो 'पट्टण'।

पटपड़ो–पु० १ मस्तक, शिर। २ 'चूनगरों' का एक उपकरण।

पटपाटु–पु० एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र।

पटपोरी–पु० सूंघनी या तंबाकू की डिब्बी को खोलने से पूर्व अंगुली से झाड़ने की क्रिया या भाव।

पटमंजरी–स्त्री० [सं०] सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी।

पटमंडप–पु० [सं०] तंबू, खेमा।

पटरंगणा (ना)–पु० विवाहोपरान्त वर-वधू से खेलाया जाने वाला एक खेल।

पटरांणी, पटरागणि (णी, नी)–देखो 'पट्टराणी'।

पटरी–१ देखो 'पट्टी'। २ देखो 'पाटी'।

पटळ, पटल–पु० [सं० पटलम्] १ मकान की छत, छाजन, छप्पर। २ पर्दा, आवरण। ३ आड़। ४ ढेर, अंबार। ५ समूह, झुण्ड। ६ आंख का मोतियाबिंद रोग। ७ देखो 'पिटल'।

पटलि, पटली–स्त्री० १ धोती या साड़ी के पल्लु की छोटी-छोटी तहें जो नाभि के नीचे खोंसी जाती हैं। २ इसी तरह ओढ़नी के पल्लु की तहें। ३ मोटाई, मोटापन। ४ देखो 'पटी'।

पटवाद्य–पु० [सं०] झांझ से मिलता-जुलता एक वाद्य।

पटवार, पटवारगिरी–स्त्री० [सं० पट्ट-कार] पटवारी का कार्य, पद या पारिश्रमिक।

पटवारी–पु० [सं० पट्ट-कार] राजस्व विभाग का एक कर्मचारी जो कृषि भूमि के लगान वसूली आदि का कार्य करता है।

पटवो–पु० (स्त्री० पटवी) हार आदि गूंथने का कार्य करने वाला व्यक्ति।

पटसन–पु० एक पौधा जिसके रेसों से टाट सूतली आदि बनते हैं।

पटसाळ–स्त्री० [सं० पृष्ठ-शाला] मकान के पृष्ठ भाग में बनी शाला, कक्ष।

पटह–पु० [सं० पटहः] १ दुन्दुभी, नगाड़ा। २ बड़ा ढोल। ३ प्रथम गुरु ढगण का एक भेद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पटहत्थ (हथ, हस्ती)–पु० [सं० पट्ट-हस्ती] १ राजा की सवारी का मुख्य हाथी। २ हाथी, गज। ३ खड्गधारी योद्धा।

पटहोड, पटहोडउ, पटहोडी–पु० घोड़ा, अश्व।

पटांतर, पटांतरु–अव्य० [सं० प्रत्यन्तर] प्रत्यन्तर।

पटांशुक–पु० [सं० पटांशुक] एक प्रकार का वस्त्र या पहनावा।

पटाइत–देखो 'पटायत'।

पटाई–स्त्री० [सं०] १ पटाने की क्रिया या भाव। २ वसूली प्राप्ति। ३ पाटने की क्रिया। ४ पाटने का पारिश्रमिक।

पटाक–अव्य० १ शीघ्र, तुरन्त। २ 'पट' की ध्वनि करता हुआ।

पटाकी, पटाखी–पु० १ आतिशबाजी, बारूद की गोली। २ फट-फट आवाज करने वाला।

पटाभर–पु० [सं० पट्ट-भर] १ मस्त हाथी। २ हाथी गज। ३ सिंह, शेर।

पटाणी (बी)–क्रि० १ वसूली करना, प्राप्त करना। २ अपने कार्य के लिए किसी को राजी करना, अपने पक्ष में करना। ३ परस्पर समानता कराना। ४ तै कराना, सौदा कराना। ५ कूप, गड्ढे आदि की पटवाना, बराबर कराना, भरवा देना। ६ आच्छादित कराना। ७ ध्वस्त या नष्ट कराना। ८ घुसाना, प्रविष्ट कराना।

पटाधर–वि० [सं० पट्ट-धारी] वह जिसके पास पट्टा हो। पु० १ जागीरदार। २ सामन्त। ३ हाथी। ४ सिंह।

पटापांन–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

पटाबधाई–देखो 'पाटाबंधाई'।

पटाबाज–देखो 'पटैबाज'।

पटायत–पु० १ जागीरदार, सामन्त। २ पट्टे का अधिकारी।

पटाळ–वि० १ पट्टेदार बालों की गर्दन वाला। २ पट्टे खेलने वाला। –पु० १ लंबे बालों वाला व्यक्ति। २ हाथी। ३ शेर, सिंह। ४ ऊंट। ५ जागीरदार, सामंत।

पटालय–पु० [सं० पटः आलय] खेमा, तम्बू।

पटाळी–देखो 'पटाळ'।

पटावणी (बी)–देखो 'पटाणी' (बी)।

पटावळी–देखो 'पट्टावळी'।

पटासी–स्त्री० लकड़ी छीलने का औजार।

पटियार–स्त्री० १ विवाह योग्य कन्या को पाट पर (बाने) बैठाने की प्रथा। २ देखो 'पठियार'। ३ देखो 'पटियारी'।

पटियारी–स्त्री० बकरी के बालों का दरीनुमा बना मोटा वस्त्र।

पटियो–पु० [सं० पट्टः] १ स्त्रियों का एक कंठाभरण। २ बकरी के बालों से बनी मोटी दरी। ३ देखो 'पट्टो'। ४ देखो 'पटी'।

पटी–स्त्री० [सं० पट्टी] १ सड़क के दोनों ओर पैदल चलने का पक्का मार्ग, फुटपाथ। २ रेल मार्ग। ३ क्यारों के पास बना पतला मार्ग। ४ काष्ठ की पतली तख्ती। ५ देखो 'पट्टी'।

पटोड़णी (बी)–क्रि० फट-फट मारना।

पटीदारी–देखो 'पट्टीदारी'।

पटु–वि० [सं०] १ चतुर, निपुण, दक्ष। २ चालाक, धूर्त, मक्कार। ३ स्वस्थ, निरोग। ४ तीक्ष्ण, तेज। ५ चरपरा, तीता। ६ कुशाग्र बुद्धि। –पु० ओढ़ने का ऊनी वस्त्र।

पटुआ–देखो 'पटवो'।

पटुड़ी–देखो 'पटु'।

पटुता–स्त्री० [सं०] १ चतुराई, निपुणता, दक्षता। २ चालाकी, धूर्तता, मक्कारी। ३ स्वस्थता, निरोगता। ४ तीक्ष्णता। ५ चरपराहट। ६ कुशाग्रता।

पटुलडी–देखो 'पटकूळ'।

पटुलडो–देखो 'पटुलो'।

पटुली–देखो 'पटोली'।

पटुलो–१ देखो 'पटोलो'। २ देखो 'पटु'।

पटुवो–देखो 'पटवो'।

पटूड, पटूडी–देखो 'पटु'।

पटेत–देखो 'पटैत'।

पटेपड़ी–देखो 'पाटेपड़ी'।

पटेबाज–देखो 'पटैबाज'।

पटेल–१ देखो 'पिटल'। २ देखो 'पटैल'।

पटेली–स्त्री० श्वेत व काली लकीरों वाली बकरी।

पटैत, पटैतिय–पु० १ सिंह। २ सिंहों की एक जाति। ३ योद्धा, वीर। ४ पटैबाज।

पटैबाज–वि० १ पट्टा खेलने वाला, पट्टे से लड़ने वाला। २ धूर्त, चालाक। ३ व्यभिचारी।

पटैल–वि० १ शिर या गर्दन पर बालों वाला। २ पट्टाबाज। –पु० १ लम्बे बालों वाला व्यक्ति। २ सिंह की एक जाति या इस जाति का सिंह। ३ शिर पर बालों वाला भयंकर सर्प। ४ सिंह, शेर। ५ ऊंट। ६ हाथी। ७ वीर, योद्धा। ८ पट्टा अधिकारी। ९ जागीरदार, सामंत। १० स्वामी, मालिक। ११ देखो 'पिटल'।

पठोधर, पठोधरु–देखो 'पाटोधर'।

पटोळ, पटोलडी–पु० [सं० पटोलः] १ परवल की लता व उसका फल। २ कड़वी तोरई। ३ देखो 'पटोळी'। ४ देखो 'पटोली'।

पटोलि, पटोली–स्त्री० साड़ी।

पटोळी (लो)–पु० १ वस्त्र, कपड़ा। २ लहंगा। ३ रेशमी वस्त्र। ४ गेहूं या बाजरी के आटे का बना एक पेय पदार्थ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पटो–पु० [सं० पट्टः] १ राजा या शासक द्वारा प्रदत्त भूमि संबंधी अधिकार पत्र, पट्टा। २ किसी सामन्त को किसी जागीर के संबंध में दिया गया अधिकार-पत्र। ३ जागीर। ४ स्त्रियों का एक आभूषण विशेष। ५ घोड़े के मस्तक का आभूषण। ६ चपड़ास। ७ चपड़ास टांगने की चमड़े की पट्टी। ८ कमरबंद, पट्टा। ९ पुरुषों के शिर के लम्बे बाल। १० शेर, ऊंट, हाथी के गर्दन के बाल। ११ ऊंट, हाथी आदि का मद। १२ एक प्रकार की छोटी तलवार। १३ शस्त्र विद्या संबंधी खेल। १४ कसीदे की जूती पर लगने वाला रेशमी वस्त्र। १५ देखो 'पाटी'।

पट्टंतर–देखो 'पटंतर'।

पट्ट–पु० [सं०] १ लिखने की तख्ती, सलेट। २ किसी वस्तु का चौरस या चपटा तल-भाग। ३ रेशम। ४ महीन वस्त्र। ५ मुकुट। ६ राज सिंहासन, तख्त। ७ धड़ का कवच। ८ ढाल। ९ घाव पर बांधने की पट्टी। १० चौरस व चपटा भूमि तल। ११ देखो 'पट'। १२ देखो 'पाट'। १३ देखो 'पाटी'।

पट्टकूळ–देखो 'पट्टदुकूळ'।

पट्टझर–देखो 'पटाझर'।

पट्टडी–१ देखो 'पट्टी'। २ देखो 'पाटी'।

पट्टण, पट्टन–पु० [सं० पट्टन] नगर, कस्बा।

पट्टदुकूळ–पु० [सं० पट्टदुकूल] १ रेशम का वस्त्र। २ वस्त्र, कपड़ा। ३ पटकूल।

पट्टप–देखो 'पाटप'।

पट्टकुमार–पु० [सं०] ज्येष्ठ कुमार, युवराज।

पट्टरांणी–स्त्री० [सं० पट्ट-राज्ञी] राजा की प्रधान रानी।

पट्टसिखर–पु० [सं० पट्ट-शिखर] शिर का एक आभूषण विशेष।

पट्टहरी, पट्टहीर–पु० एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

पट्टाझर–देखो 'पटाझर'।

पट्टावींटी, पट्टावींटी–स्त्री० [सं० पट्ट-आवेष्टनम्] पाणिग्रहण से पूर्व वर की ओर से वधू को पहनाई जाने वाली चांदी की मुद्रिका।

पट्टायत–देखो 'पटायत'।

पट्टावळि, पट्टावळी–स्त्री० [सं० पट्ट-आवली] पाट परम्परा, गुरु परम्परा। (जैन)

पट्टिस–पु० [सं० पट्टिश] एक प्रकार का भाला।

पट्टी–स्त्री० [सं०] १ घोड़े की तेज चाल। २ तेज दौड़। ३ घोड़े का तंग। ४ लम्बा व पतला पत्थर जो मकान की छाजन में रखा जाता है। ५ वस्त्र का पतला लंबा खण्ड। ६ सूती या ऊनी वस्त्र की धज्जी। ७ कोई भू-भाग या प्रदेश। ८ मूर्तियों का संचा। ९ देखो 'पटी'। १० देखो 'पाटी'।

पट्टैत–देखो 'पटैत'।

पट्टैवार–वि० जागीरदार, सामंत, भूमि का मालिक।

पट्टोळी–देखो 'पटोळी'।

पट्ठी–पु० [सं० पट्ट] १ भूमि या मकान का अधिकार पत्र। पट्टा। २ मशीन का पट्टा, मोटा फीता। ३ कमरबंद। ४ वर या वधू के ललाट पर लगाई जाने वाली चमकी। ५ राजा द्वारा दिया जाने वाला भूमि के स्वामित्व का अधिकार पत्र। (प्राचीन)

पट्ठांण–देखो 'पठांण'।

पट्ठी–वि० [सं० पुष्ठ] (स्त्री० पटठी) १ नवयुवक, तरुण। २ पुष्ठ शरीर वाला। ३ कुश्तीबाज। –पु० १ कुश्ती का खिलाड़ी, नया पहलवान। २ मांस पेशियों को परस्पर बांधने वाला तंतु। ३ कमर और जांघ के जोड़ का स्थान।

पठंग (गो)–पु० [सं० पृष्ठ-अंग] सहारा, मदद।

पठ–पु० [सं० पठ्] १ पढ़ना क्रिया या भाव। २ देखो 'पाट'।

पठड़ी–देखो 'पाठ'।

पठणो (बो)–क्रि० भेजना।

पठन–पु० [सं० पठ्] १ पढ़ने की क्रिया। २ बहत्तर कलाओं में से एक।

पठमंजरी–स्त्री० एक रागिनी विशेष।

पठसाळ–देखो 'पठाळ'।

पठांण–पु० [फा० पुख्तोना] (स्त्री० पठांणी) अफगानिस्तान व पाकिस्तान की सीमा पर बसने वाली एक मुसलमान जाति व इस जाति व्यक्ति।

पठांणी–वि० [फा० पुख्तोना] पठान का, पठान संबंधी। –स्त्री० पठान जाति की स्त्री।

पठांणीलोध (लोध)–पु० [सं० पट्टिकालोध्र] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल आदि औषधि में काम आते हैं।

पठाणी (बो)–क्रि० [सं० प्रस्थान] भेजना, रवाना करना, विदा करना।

पठार–पु० [सं० पृष्ठ + धार] ऊंची व पहाड़ी समतल भूमि।

पठाळ–स्त्री० [सं० पृष्ठशाला] बरामदा।

पठावड़ी–स्त्री० [सं० पट्ट-अवली] पेट पर सफेद दाग वाली बकरी।

पठावणो (बो)–देखो 'पठाणो' (बो)।

पठिक–देखो 'पाठक'।

पठित–वि० [सं०] १ पढ़ा हुआ। २ शिक्षित।

पठो–देखो 'पट्ठो'। (स्त्री० पठ्ठी)

पडंग–पु० [सं० पतंग] १ पक्षी, चिड़िया। २ पतंगा, जीव। ३ टिड्डी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडखणी (बी)–क्रि० [सं० प्रतीक्षा] प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना।

पडगन–देखो 'पड़गन'।

पडगौरव–स्त्री० विवाहोपरान्त वधु पक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोज। (श्रीमाली)

पडघारव–स्त्री० ध्वनि, आवाज।

पडचंदो–पु० [सं० प्रति-चंद] प्रतिबिंब।

पडच–देखो 'पड़च'।

पडणी (बी)–१ देखो 'पड़णी' (बी)। २ देखो 'पढ़णी' (बी)।

पडयागळ, पडयाळ (स)–देखो 'पडियालग'।

पडरेट–पु० भैंस का बच्चा।

पडळी (सी)–पु० [सं० पटल] १ गणेश पूजन की सामग्री। २ इस सामग्री के साथ वर पक्ष की ओर से लाया जाने वाला सामान।

पडवज–पु० सहानुभूति, हमदर्दी।

पडवडणी (बी)–क्रि० [सं० प्रतिपधध्वम्] १ आशंका करना। २ डरना। ३ समझना। ४ बोध होना।

पडसूदो, पडसूधी–देखो 'पड़ूदी'।

पडह, पडहउ–देखो 'पटह'।

पडाउ (ऊ)–देखो 'पड़ाऊ'।

पडाग–स्त्री० पताका।

पडायो–पु० घास-फूस का बना छोटा-मकान।

पडाळ–स्त्री० घोरे के नीचे की भूमि।

पडाव–पु० [देश०] १ गर्व, घमण्ड। २ अहसान। ३ देखो 'पड़ाव'।

पडि–पु० [सं० प्रति] युद्ध।

पडियागळ, पडियालग–देखो 'पडियालग'।

पडिआर–देखो 'प्रतिहार'।

पडिकमइ, पडिक्कमण, पडिकमणउ, पडिकमणा, पडिक्कमणु, पडिक्कमणो, पडिक्कमणा, पडिक्कमणो–पु० [सं० प्रतिक्रमण, प्रतिकर्मण] १ अशुभ योग में गये पुरुष का शुभ योगों में आने की क्रिया (जैन)। २ प्रतिकार, बदला। ३ जवाबी कार्य या कर्म। ४ अंग कर्म।

पडिगरिउ–वि० [सं० प्रतिजागृत] सचेत, सावधान।

पडिगाहण–वि० नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला।

पडिपुन्न–वि० [सं० प्रतिपन्न] पूर्ण, पूरा।

पडिबिंब–देखो 'प्रतिबिंब'।

पडिबोध (बोह)–देखो 'प्रतिबोध'।

पडिबोहणी (बी)–देखो 'प्रतिबोधणी' (बी)।

पडिमा–देखो 'प्रतिमा'।

पडिमाधारी–वि० प्रतिमाधारी।

पडियाळ, पडियाळग, पडियालग, पडियालगि–स्त्री० १ तलवार। २ कटारी।

पडिस–देखो 'पिटल'।

पडिलेहण, पडिलेहणा, पडिलेहा, पडिलेही, पडिलेहू या–स्त्री० [सं० प्रतिलेखन] दैनिक उपयोग के पात्र, वस्त्र आदि का पूर्वावलोकन।

पडिवज्जणी, (बी)–क्रि० [सं० प्रतिपद्यते] स्वीकार करना।

पडिवडु–वि० [सं० प्रतिपद] स्पष्ट, उचित।

पडिहाइणी, (बी)–क्रि० [सं० प्रति भाति] १ भयभीत होना, डरना। २ दिखाई देना। ३ प्रकट होना। ४ तैयार या कटिबद्ध होना।

पडिहार, पडिहाक, पडिहारी–देखो 'प्रतिहार'।

पडीवा–देखो 'पड़वा'।

पडु–पु० खलिहान में अनाज के ढेर में खड़ा किया जाने वाला लकड़ी का लट्ठा।

पडुतर (त्तर)–पु० [सं० प्रत्युत्तर] उत्तर, जवाब, उत्तर का उत्तर।

पडूंचउ–पु० [सं० प्रतिभाव्यम्] प्रति भाव्य।

पडूछणी (बी)–क्रि० [सं० प्रतिपृच्छति] गुरु से पूछ कर कार्य करना।

पडूवी, (धी)–देखो 'पड़ूदी'।

पडूर, पडूरि–पु० [सं० प्रचुर] अधिक, बहुत।

पडेरी–पु० डेरा, खेमा, शिविर।

पडोज–पु० सहानुभूति, हमदर्दी, शिष्टाचार।

पडोटियो–पु० छोटा चितकबरा सर्प।

पडोसी, पडोसु– देखो 'पाड़ोसी'।

पढ़ी–देखो 'पाढ़ी'।

पढ़णी–स्त्री० [सं० पठ्] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २ पढ़ने का ढंग। ३ छंद पाठ या छंद पाठ की ध्वनि।

पढ़णी (बी)–क्रि० [सं० पठनं] १ लिखावट को देख कर समझना, पढ़ना। २ लिखावट के अनुसार बोलना, उच्चारण करना। ३ उच्चारण करना, मंत्रोच्चार करना। ४ पढ़ाई करना, अध्ययन करना, शिक्षा ग्रहण करना। ५ रटना, रटाई करना। ६ सीखना। ७ काव्य पाठ करना।

पढ़म–देखो 'प्रथम'।

पढ़ाई–स्त्री० [सं० पठनम्] १ विद्याध्ययन, अध्ययन। २ पढ़ने की क्रिया या भाव। ३ पढ़ाई के लिये व्यय किया जाने वाला धन। ४ शैली। ५ पढ़ाने का पारिश्रमिक।

पढ़ाणी, (बी), पढ़ावणी (बी)–क्रि० १ लिखावट को दिखाकर समझाना, पढ़ाना। २ लिखे अनुसार बोलाना, उच्चारण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना । ३ उच्चारण कराना, मंत्रोच्चार कराना । ४ पढ़ाई कराना, अध्ययन कराना, शिक्षा देना । ५ रटाना, रटाई कराना । ६ सीखाना ।

पढ़िआक–देखो 'प्रतिहार' ।

पढ़िबं–वि० [सं० पठितव्यम्] १ पढ़ने योग्य । २ पढ़ाने योग्य ।

पढ़ू–वि० [सं० प्रति-भू:] १ जमानत देने वाला, जामनी । २ निष्कलंक, निष्पाप बेदाग । ३ वीर, बहादुर ।

पढोकड़ी–वि० १ पढ़ने वाला, अध्येता । २ अधिक पढ़ने वाला । ३ विद्वान ।

पणंग, पणंगियो, पणंगो–पु० [सं० पानाङ्ग] १ पानी, जल । २ मेघ की बूंद ।

पणंच–देखो 'पणच' ।

पण–पु० [सं०प्रतिज्ञा, प्रण] १ दृढ़ निश्चय, संकल्प,, प्रतिज्ञा । प्रण । २ व्रत । [सं० पर्वन्] ३ आय के चार भागों में से एक । [सं० पानीयम्] ४ पानी, जल । –क्रि०वि० [सं०पुन:] १ भी । २ परन्तु । ३ तो भी । ४ फिर, फिर भी । –वि० [सं० पंच] पंच, पांच ।

पणइंद्रिय–देखो 'पंचेंद्रिह' ।

पणछी–पु० छाछ से बना पेय पदार्थ ।

पणग (गो)–स्त्री० १ वर्षा की बंद । २ देखो 'पणंग' । ३ देखो 'पाणगो' ।

पणघट–पु० [सं० पानीय-घट्ट] १ जलाशय का किनारा जहां से पीने का पानी भरा जाता है । २ घाट । ३ पानी लाने वाली स्त्रियों का समूह । ४ इस घाट पर जाने का रास्ता ।

पणच, पणछ–स्त्री० [सं० प्रतंचिका, प्रा० पडंचा] धनुष की डोरी, प्रत्यंचा ।

पणछल्ल–वि० प्रतिज्ञा का पालन करने वाला ।

पणणी (बी)–क्रि० [सं० प्रणमति] १ प्रणाम करना, नमन करना । २ देखो 'पुणणी' (बी) ।

पणधर (धारी)–वि० [सं० प्रतिज्ञा-धारी] प्रतिज्ञा करने वाला, प्रणधारी ।

पणनडी–पु० पोखर, पानी का गड्डा ।

पणपणी (बी)–देखो 'पनपणी' (बी) ।

पणपाणी (बी), पणपाथणी (बी)–देखो 'पनपाणी' (बी) ।

पणफर–पु० [सं०] कुण्डली में लग्न से दूसरा, पांचवां, आठवां और ग्यारहवां घर ।

पणबंद (बंध)–वि० [सं०प्रतिज्ञा-बन्ध] प्रणवीर, प्रतिज्ञावान ।

पणमंड–वि० [सं० प्रतिज्ञा-मण्डनम्] प्रणवीर, प्रणधारी ।

पणमणी (बी)–क्रि० [सं० प्रणाम्] प्रणाम करना । नमस्कार करना ।

पणयालीस–देखो 'पैंतालीस' ।

पणवंत–वि० [सं० प्रतिज्ञा - वान] प्रणधारी ।

पणव–पु० [सं० पणव] १ छोटा नगाड़ा । २ छोटा ढोल ।

पणस–पु० [सं० पनस] १ कटहल । २ राम की सेना का एक बन्दर ।

पणसणु–वि० नष्ट करने वाला ।

पणसणी (बी)–क्रि० [सं० प्रनाश] १ नष्ट करना । २ नष्ट होना ।

पणहा–पु० [सं० उपानह] जूती (मेवात) ।

पणहार (हारण, हारी)–वि० [सं० प्रतिज्ञा-हारी] १ प्रतिज्ञा हारने वाला, प्रणहारी । २ देखो 'पणिहार' ।

पणि–देखो 'पण' ।

पणियार, पणियारी, पणिहार, पणिहारण, पणिहारी–स्त्री० [सं० पानीयहारी] १ जलाशय से पानी लाने वाली स्त्री । २ वर्षा के समय बहते पानी में उठने वाले बुद-बुदे । ३ हल में लगने का एक उपकरण (मेवात) । ४ हल का एक अन्य उपकरण । ५ एक लोग गीत । ६ सारंगी का मुख्य छेद (शेखावटी) । ७ गधा या गधी । (ऊमर कोट)

पणी–देखो 'पण' ।

पणीहारी–देखो 'पणिहारी' ।

पणू, पणो–पु० [देश०] १ खरबूजा, पपीता, आम आदि की गिरी के शक्कर मिले टुकड़े । २ देखो 'पण' ।

पण्यांगना–स्त्री० [सं०] वेश्या, गणिका ।

पतंग–पु० [सं०] १ सूर्य, सूरज । २ दीपक, ज्योति । ३ चिनगारी । ४ खून । ५ लाल रंग । ६ हल्का रंग । ७ मच्छर आदि उड़ने वाले जीव । ८ पक्षी । ९ टिड्डी । १० कनकौआ, गुड्डी । ११ शरीर, अंग । १२ एक झाड़ी विशेष । १३ एक प्रकार का वृक्ष । १४ डिंगल का एक छन्द ।

पतंगज–पु०[सं०]१ सूर्य पुत्र यम । २ कर्ण । ३ अश्विनी कुमार । ४ पसीना ।

पतंगजा–स्त्री० सूर्य पुत्री यमुना ।

पतंगबाज–पु० पतंग या गुड्डी उड़ाने का शौकीन, निपुण, दक्ष ।

पतंगबाजी–स्त्री० पतंग उड़ाने की क्रिया, होड़, प्रतिस्पर्धा ।

पतंगसुत–देखो 'पतंगज' ।

पतंगिया, पतंगी–पु० १ पर दार कीट । २ टिड्डी ।

पतग्या–देखो 'प्रतिग्या' ।

पतंजलि–पु० [सं० पतंजलि] १ योग शास्त्र के रचनाकार एक ऋषि । २ पाणिनीय सूत्रों पर महाभाष्य लिखने वाले एक मुनि ।

पत–स्त्री० १ मर्यादा, प्रतिज्ञा, गौरव । २ इज्जत, प्रतिष्ठा । ३ गुड़ की चासनी । ४ विश्वास, भरोसा । ५ साख, पैठ । ६ देखो 'पति' । ७ देखो 'पत्री' । ८ देखो 'पत्र' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पतउड–पु० [सं० उडुपति] चन्द्रमा, शशि ।

पतओखद–पु० [सं० औषधि-पति] चन्द्रमा, सोम ।

पतकिरण–पु० [सं० किरणपति] सूर्य, रवि ।

पतग–देखो 'पतंग' ।

पतगर–पु० विश्वास, भरोसा ।

पतगरणो (बो)–क्रि० १ विश्वास करना, भरोसा करना । २ स्वीकार करना, मानना ।

पतगरौ–देखो 'पतगर' ।

पतग्वाळ–पु० [सं० ग्वालपति] श्रीकृष्ण ।

पतड़ी–स्त्री० [सं० पत्रम्] १ धातु के पत्र खण्डों पर बनी किसी इष्ट की मूर्ति । २ दांत कुरेदने की चांदी की पत्ती । (मेवात)

पतड़ी– पु० [सं० पत्रम्] १ तिथिपत्र, पंचांग । २ कुंभट की फली ।

पतचोस–पु० शेष नाग ।

पतजादव–पु० [सं० यादव पति] श्रीकृष्ण ।

पतझड़–स्त्री० [सं० पत्र-क्षरणम्] षट् ऋतुओं में से एक, शिशिर ऋतु ।

पतणी–देखो 'पत्नी' ।

पतत–देखो 'पतित' ।

पतत्रि, पतत्री–पु० [सं०] पक्षी, चिड़िया । —**अरण**–पु० जटायु ।

पतधीर–वि० विश्वासी, भरोसेमंद ।

पतन–पु० [सं०] १ अवनति, गिरावट । २ पड़ना क्रिया । ३ अधोगति । ४ ह्रास । ५ उत्थान का विपर्याय । ६ मृत्यु, नाश । ७ देखो 'पट्टण' ।

पतनाळ (ळो)–देखो 'परनाळ' ।

पतनी, पतन्नी–स्त्री० [सं० पत्नी] १ स्त्री, नारी, औरत । २ देखो 'पत्नी' । —**अरत, अत, अरत, अत**='पत्नीव्रत' ।

पतन्नी–देखो 'पतरणी' ।

पतप्पा–देखो 'प्रतिग्या' ।

पतपछी–पु० [सं० पक्षीपति] १ गरुड़ । २ देखो 'प्रतिपक्षी' ।

पतप्रीत–पु० [सं० पति-प्रीति] १ सेवक, अनुचर । २ पतिव्रता, पतिप्रिया ।

पतप्रेम–पु० [सं०पति-प्रेमा] १ सती, साध्वी । २ सेवक ।

पतब्रत–देखो 'पतिव्रत' ।

पतमंदोवरी–स्त्री० [सं० मंदोदरीपति] रावण ।

पतर–१ देखो 'पात्र' । २ देखो 'पत्र' ।

पतरणी (बो)–देखो 'पथरणी' (वो) ।

पतराखण–वि० प्रतिष्ठा रखने वाला । –पु० ईश्वर ।

पतरी–१ देखो 'पथरी' । २ देखो 'पत्र' ३ देखो 'पतड़ी' ।

पतरूह, पतरोह–स्त्री० [सं० पृथ्वी-रूह] रज, धूल ।

पतळ–देखो 'पातळ' ।

पतलज–स्त्री० व्यभिचारिणी, कुल्टा स्त्री ।

पतळियो–पु० [सं० पत्रल] १ सोने, चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का औजार । २ देखो 'पतळो' । (स्त्री०पतळी)

पतलून–पु० १ पजामा । २ पैंट ।

पतळोड़ी–देखो 'पतळो' । (स्त्री० पतळोड़ी)

पतळो–वि० [सं० पत्रल] (स्त्री० पतळी) १ तरल, द्रवमान । २ अशक्त, कमजोर । ३ जिसकी मोटाई व स्थूलता कम हो । ४ कृशकाय, दुबला । ५ बारीक, महीन, झीना । ६ संकरा, पतला, कम चौड़ा । ७ सूक्ष्म ।

पतवरत–देखो 'पतिव्रत' ।

पतवरता–देखो 'पतिव्रता' ।

पतवसांन–पु० [सं० प्रत्यवसान] भोजन ।

पतवांणणो (बो)–क्रि० [सं० प्रत्यवायनम्] १ जांच करना, परीक्षा करना । २ काम में लेकर देखना । ३ व्यवहार करके देखना ।

पतवार–स्त्री० [सं० पत्रबाल] नाव की बल्ली, कर्ण ।

पतवासत–पु० [सं० वास्तोष्पति] इन्द्र ।

पतव्रत–देखो 'पतिव्रत' ।

पतव्रता–देखो 'पतिव्रता' ।

पतसंगम–वि० [सं०] शीतल ।*

पतसा–देखो 'बादसाह' ।

पतसार–पु० [सं० सार-पत] पहाड़ ।

पतसाळ–स्त्री० [सं० पितृ-शाला] १ पैतृक भवन । २ पीहर, मायका ।

पतसाह–देखो 'बादसाह' ।

पतसाहण–वि० १ बादशाह का, बादशाही । २ देखो 'बादसाह' ।

पतसाही–देखो 'बादसाही' ।

पतस्वाहा–पु० [सं० स्वाहापति] अग्नि ।

पतहीण, पतहीणी–वि० १ अविश्वसनीय, जो भरोसेमंद न हो । २ पतिहीना, विधवा । ३ मानहीन । ४ साख हीना ।

पतांणणो (बो)–क्रि० [सं० प्रत्ययाय:] जांच करना ।

पता–देखो 'पिता' ।

पताक–देखो 'पताका' ।

पताकणी (नी)–स्त्री० [सं० पताकिनी] १ फौज, सेना, दल । २ एक देवी ।

पताका–स्त्री० [सं०] १ झण्डा, ध्वजा, पताका । २ घोड़े के चारजामे का एक भाग । ३ पिंगल के नौ प्रत्ययों में से आठवां । —**दंड**–पु० ध्वज फहराने की लकड़ी, दण्ड । ध्वज ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पताकामीन–पु० [सं० मीन-पताका] कामदेव, मदन।

पताकिनी–देखो 'पताकनी'।

पताकी–वि० [सं० पताकिन्] पताकाधारी। –पु० १ रथ। २ फलितज्योतिष में एक चक्र विशेष।

पताख, पताखा–देखो 'पताका'।

पतामह–देखो 'पितामह'।

पताळ, पताळि, पताळी–देखो 'पाताळ'। —**खंड**='पाताळ खंड'। –**गारुड़ी**='पाताळगारुड़ी'। –**जंत्र**='पाताळजंत्र'। —**वंती**='पाताळदंती'।

पताळियो–वि० [सं० पाताल] १ पाताल का, पाताल संबंधी। २ पाताल तक गया हुआ। –पु० १ अत्यन्त गहरा एवं अथाह कूआ। २ नीचे की ओर झुके हुए सींगों वाला जानवर। ३ देखो 'पाताळ'।

पतास, पतासड़ी, पतासियो–देखो 'पतासो'।

पतासि, पतासी–स्त्री० १ लकड़ी का दस्ता लगा लोहे का बड़ा प्याला जो चम्मच की तरह होता है। २ छोटी व छिछली कड़ाही। ३ बढ़ई का एक औजार, 'रुखाणी'। ४ एक प्रकार की आतिशबाजी।

पतासो–पु० [सं० वातास] १ शक्कर की नरम चासनी को टपका कर बनाई एक मिठाई, बतासा। २ पानी का बुदबुदा। ३ जलजीरे का पानी भरकर खाने का, मेदे का बना गोला।

पतिंग–देखो 'पतंग'।

पति–पु० [सं०] १ किसी स्त्री का खाविंद, भर्ता। २ स्वामी, प्रभु, मालिक। ३ ईश्वर। ४ शिव। ५ अध्यक्ष। ६ शासक। ७ अधिष्ठाता। ८ मर्यादा, इज्जत, प्रतिष्ठा। ९ विश्वास, प्रतीति। १० जड़। ११ गमन, गति। १२ देखो 'पत'। —**घातण, घातणि, घातणी, घातिणी**–स्त्री० पति की हत्यारी स्त्री। स्त्री की हथेली पर होने वाली एक रेखा। वैधव्य के लक्षणों वाली स्त्री। —**धरम, धरस, धत**–पु० पति के प्रति स्त्री का कर्त्तव्य, स्त्री का धर्म। —**धरता, धता**='पतिव्रता'।

पतिआणो (बो)–क्रि० [सं० प्रत्ययितम्] १ विश्वास करना, भरोसा करना। २ सच मानना। ३ निश्चय करना। ४ संतुष्ट होना।

पतिआरो–पु० [सं० प्रत्ययित] भरोसा, विश्वास।

पतिउत्तर–पु० [सं० उत्तर-पति] कुबेर।

पतिजळ–पु० [सं० जलपति] समुद्र, सागर।

पतित–वि० [सं०] (स्त्री० पतिता) १ गिरा हुआ, पड़ा हुआ, टपका हुआ। २ जिसका पतन हो गया हो, अधःपात हुआ। ३ धर्म व जाति से च्युत। ४ महापापी, पातकी। ५ हारा हुआ, पराजित। ६ अधीन, अन्तर्गत। ७ स्थापित।

पतितउधारण–पु० [सं० पतित-उद्धारण] ईश्वर, जो अधर्मों का उद्धार करे।

पतिमराळ–पु० [सं० मराल-पति] ब्रह्मा।

पतियत–पु० स्वामित्व, पतित्व। विवाह।

पतिया–स्त्री० [सं० पत्र] पत्री, चिट्ठी।

पतियाणो (बो)–देखो 'पतिआणो' (बो)।

पतियारो–'पतिआरो'।

पतियाबणो (बो)–देखो 'पतिआणो' (बो)।

पतिलोक–पु० [सं०] पतिव्रता स्त्री को मिलने वाला स्वर्गलोक।

पतिव्रत–पु० [सं०] १ स्त्री का अपने पति के प्रति कर्त्तव्य धर्म। २ स्त्री का शीलव्रत।

पतिव्रता–स्त्री० [सं०] उक्त धर्म व व्रत को धारण करने वाली स्त्री, सती स्त्री।

पतिसाह, पतिस्या–देखो 'बादसाह'।

पतिसाही–देखो 'बादसाही'।

पतिहथणापुर–पु० [सं० हस्तिनापुर-पति] युधिष्ठिर।

पती–१ देखो 'पति' २ देखो 'पत्र'।

पतीअपार–वि० [सं० अपार-पति] जिसके अनेक पति हों। –स्त्री० १ पृथ्वी। २ वेश्या। ३ लक्ष्मी।

पतीग्रह–पु० [सं० ग्रहपति] सूर्य।

पतीज–पु० विश्वास।

पतीजणो (बो)–क्रि० [सं० प्रत्ययित्] विश्वस्त होना, आश्वस्त होना, संतुष्ट होना।

पतीत–देखो 'पतित'।

पतीनागराइ–पु० [सं० पति नागराज] शेषनाग।

पतीनि–देखो 'पत्नी'।

पतीयासो–स्त्री० सरोवर।

पतीराखण–देखो 'पतराखण'।

पतीवरत, पतीव्रत–देखो 'पतिव्रत'।

पतीवरता, पतीव्रता–देखो 'पतिव्रता'।

पतीवसंत–पु० [सं० वसंत-पति] १ वृक्ष। २ कामदेव।

पतीहतणापुर–देखो 'पतिहथणापुर'।

पतेरि–स्त्री० [सं० पितृव्य] चचेरी, बहन।

पतोड़, पतोळ–देखो 'पितोड़'।

पतोलड़ी, पतोली–देखो 'पातली'।

पतो–पु० [सं० प्रत्यय] १ निश्चित स्थान। २ कोई स्थान विशेष। ३ निश्चित स्थान बताने वाली बात। ४ डाक का पता, ठिकाना। ५ ठौर-ठिकाना, अता-पता। ६ जानकारी, सूचना। ७ खोज, अनुसंधान। ८ टोह, सुराग, चिह्न। ९ ताश का पत्ता। १० देखो 'पत्र'। ११ देखो 'पत्ती'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पत्त–१ देखो 'पत्र'। २ देखो 'पिता'। ३ देखो 'पति'। ४ देखो 'पात्र'।

पत्तन–१ देखो 'पतन'। २ देखो 'पट्टण'।

पत्तपुष्प–देखो 'पत्रपुष्प'।

पत्तर–पु० [सं० पात्र] १ संन्यासियों का भिक्षा-पात्र। खप्पर। २ किसी धातु की चद्दर। ३ देखो 'पत्र'। ४ देखो 'पात्र'।

पत्तल–देखो 'पातळ'।

पत्ति, पत्ती–स्त्री० [सं० पत्र] १ पेड़, पौधों की छोटी पत्तियां। २ पत्ते का खण्ड। ३ धातु का छोटा व पतला खण्ड, पाती। ४ ठोढ़ी, डाढ़ी बनाने का उपकरण (ब्लेड)।

पत्तीजणी, (बी)–देखो 'पतीजणी' (बी)।

पत्तीसुरळिया–पु० स्त्रियों के कर्णाभूषण।

पत्तेणम–देखो 'पत्र'।

पत्तौ–पु० [सं० पत्रक] १ स्त्री के कान का आभूषण। २ देखो 'पतौ'। ३ देखो 'पोतौ'।

पत्थ–१ देखो 'पारथ'। २ देखो 'पंथ'। ३ देखो 'पथ्य'। ४ देखो 'पथ'।

पत्थर–पु० [सं० प्रस्तरः] पहाड़ का खण्ड, पाषाण। चट्टान।

पत्थरकळा–स्त्री० [सं० प्रस्तरकला] एक प्रकार की बन्दूक।

पत्थरचटो–स्त्री० [सं० प्रस्तरः-चष्ट] एक प्रकार की औषधि।

पत्थरचटो–वि० [सं० प्रस्तर-चष्ट] कंजूस, सूम। –पु० १ एक प्रकार का सर्प। २ एक प्रकार की घास।

पत्थरफोड़, पत्थरफोड़ो–वि० [सं० प्रस्तर-स्फोटनम्] पत्थर तोड़ने का कार्य करने वाला, संगतरास। –पु० १ पत्थर फोड़ने का उपकरण। २ एक पक्षी विशेष।

पत्थरबाज–पु० पत्थर फेंकने वाला।

पत्थरबाजी–स्त्री० पत्थर फेंकने की क्रिया।

पत्थ्या–स्त्री० [सं० पथ्या] १ गली, वीथी। २ मार्ग रास्ता।

पत्नी–स्त्री० [सं०] किसी पुरुष की विवाहिता स्त्री, भार्या, अर्धांगिनी। —**दास**–पु० पत्नी का गुलाम। —**प्रिय**–पु० पत्नी का प्रिय पुरुष। जो पत्नी को अधिक प्यार करे। —**व्रत** = 'पत्नीव्रत'। —**भक्त**–वि० पत्नी की अधिक सेवा करने वाला। —**व्रत**–वि० केवल अपनी ही पत्नी से प्रेम व भोग करने के संकल्प वाला।

पत्यारो–देखो 'पतियारो'।

पत्र–पु० [सं०] १ चिट्ठी-खत, सन्देश पत्र। २ लिखा हुआ कागज, दस्तावेज। ३ पन्ना, पृष्ठ, पेज। ४ वृक्ष आदि का पत्ता। ५ पक्षी का पर। ६ तीर की पूंछ। ७ चिड़िया, पक्षी। ८ पुष्प-दल, पंखुड़ी। ९ किसी धातु का पत्तर। १० तलवार आदि की धार। ११ रथ, घोड़ा आदि सवारी। १२ प्रथम लघु ढगण के भेद का नाम। १३ देखो 'पात्र'। १४ समाचार -पत्र।

पत्रका–देखो 'पत्रिका'।

पत्रकार–पु० [सं०] किसी समाचार पत्र का सम्पादक या संवाद-दाता।

पत्रच्छेद–स्त्री० [सं०] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

पत्रज–पु० [सं०] तेजपात।

पत्रदूत, पत्रपुगायण–पु० [सं० पत्रदूत] १ पत्रवाहक। २ डाकिया, चिट्ठी रसा।

पत्रपुष्प–पु० [सं० पत्र - पुष्प] मामूली भेंट। भेंट की साधारण सामग्री।

पत्रबाह–देखो 'पत्रवाहक'।

पत्रभंग–पु० [सं०] शृंगारार्थ माथे व गाल पर की जाने वाली चित्रकारी।

पत्ररथ–पु० पक्षी।

पत्रवाह, पत्रवाहक–पु० [सं०] पत्रवाहक, पत्र लेजाने वाला, डाकिया।

पत्रांतूळ, पत्रांतूल–पु० [सं० पत्र - तुल्य] नाश, समाप्ति।

पत्राकार–वि० [सं०] १ पत्ते के आकार का। २ पत्र के रूप में।

पत्राळ–पु० [सं० पत्र + आलुच] १ पक्षी, पंखेरू। २ घने पत्तों वाला वृक्ष या पौधा।

पत्रावळो–स्त्री० [सं० पत्रावली] १ पत्र नत्थी करने की किताब, फाइल। २ पत्रों की पंक्ति। ३ एक प्रकार का हार।

पत्रिका–स्त्री० [सं०] १ छोटा खत, चिट्ठी। २ जन्म पत्रिका। ३ लग्न पत्रिका। ४ कोई सामयिक समाचार पत्र या साहित्यिक पत्र। ५ निमन्त्रण - पत्र।

पत्रियाणी–देखो 'पत्र'।

पत्री–स्त्री० [सं० पत्रिन्] १ वृक्ष। २ पक्षी। ३ तीर, बाण। ४ यमराज। ५ कमल। ६ चिट्ठी, खत। ७ जन्म पत्रिका। ८ ताड़। ९ पर्वत, पहाड़। १० रथ। –वि० पत्तों वाला। —**राज**–पु० गरुड़।

पत्रीस–पुं० [सं० पत्रीश] १ कल्प वृक्ष, कल्पतरु। २ गरुड़।

पत्रेसुर–देखो 'पित्रेस्वर'।

पत्रौ–देखो 'पतड़ो'।

पथ–पु० [सं०] १ मार्ग, रास्ता। २ देखो 'पंथ'। ३ जल पानी। ४ देखो 'पथ्य'। ५ देखो 'पारथ'।

पथक–पु० [सं०] १ रास्ता जानने वाला। २ रास्ता बतलाने वाला। ३ देखो 'पथिक'।

पथचारी–पु० [सं० पथचारिन्] राहगीर, पथिक।

पथछाया–पु० आकाश, आसमान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पथदरसक-वि० [सं० पथदर्शक] रास्ता दिखाने वाला।

पथर-देखो 'पत्थर'। -कला='पत्थरकला'।

पथरणउ, पथरणी-पु० [सं० प्रस्तरणम्] १ गद्दा, बासिया। २ बिछाने का वस्त्र

पथरणी (बी)-देखो 'पाथरणी' (बी)।

पथराणी (बी), पथरावणी (बी)-क्रि० [सं० प्रस्तरणम्] १ बिछवाना, फैलवाना। २ छितरवाना, बिखरवाना।

पथरी-स्त्री० [सं० प्रस्तर] १ मूत्राशय में जमने वाला पत्थर खण्ड, एक रोग। २ पक्षियों का पवनाशय। ३ पत्थर की प्याली या कुंडी। ४ चकमक का पत्थर। ५ शान, सिल्ली।

पथरीलो-वि० पत्थरों से युक्त, पत्थरों से भरा, जहां पर पत्थर बिखरे हों।

पथरोटी, पथरोटी-पु० पत्थर का पात्र, कुंडा।

पथारी-स्त्री० [सं० प्रस्तरणम्] १ बिस्तर, बिछौना। २ झड़ बेरी के कांटों का बड़ा गुच्छा।

पथि-देखो १ 'पथ'। २ देखो 'पथ'।

पथिक-पु० [सं०] १ राहगीर, यात्री। २ रास्ता बताने वाला।

पथिचक्र-पु० [सं०] यात्रा का योग जानने का चक्र। (ज्योतिष)

पथी-१ देखो 'पथ'। २ देखो 'पथिक'।

पथ्य-१ देखो 'पथ'। २ देखो 'पथ'। ३ देखो 'पथ्य'।

पथ्थर-देखो 'पत्थर'।

पथ्य-पु० [सं०] १ शीघ्र पचने वाला भोजन, आहार। २ पेट व स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाने वाला पदार्थ। ३ हर्र का वृक्ष। ४ हित, मंगल। वि०-१ गुणकारी, लाभप्रद। २ योग्य, उपयुक्त।

पथ्या-स्त्री० [सं०] हरीतकी, हर्र।

पद-पु० [सं०] १ पैर, चरण, पग। २ योग्यता के अनुसार नियत स्थान। दर्जा। ३ भक्ति संबधी कविता, भजन। ४ छन्द या श्लोकादि का चतुर्थांश। ५ नौकरी में किसी वेतन विशेष का स्थान। ओहदा ६ व्यवसाय, कार्य। ७ निश्चित अर्थवाला वाक्यांश। ८ उपाधि, पदवी। ९ पैर का चिह्न या निशान। १० मोक्ष, निर्वाण। ११ दान में देने की वस्तु। १२ महिमा, मर्यादा। १३ खोज, पता। १४ आवास स्थान, घर। १५ प्रकाश की किरण। १६ देखो 'पद्य'। -वि० कोमल, मुलायम।

पदआस्रय-पु० [सं० पदआश्रय] घर, गृह।

पदक-पु० [सं०] तुकमा, मैडल, बिल्ला।

पदकड़ी-स्त्री० एक आभूषण।

पदक-नगना-पु० हीरा।

पदकणी (बी)-देखो 'फुदकणी' (बी)।

पदकुळक, पदकूळक-देखो 'पादाकुळक'।

पदग, पदग्ग-पु० [सं० पदग, पदाग्र] १ पैदल चलने वाला प्यादा। २ पैर का अगला भाग। ३ देखो 'पदक'।

पदचर-वि० [सं०] १ पैरों से चलने वाला। २ पैदल चलने वाला, प्यादा।

पदचांपड़ी-स्त्री० पगचम्पी।

पदचार, पदचारी-पु० [सं० पदचारिन्] १ पैदल चलने वाला व्यक्ति या प्राणी। २ देखो 'पदचर'।

पदचिह्न-पु० [सं०] १ चलते समय बनने वाले पैरों के निशान। २ किसी देव या सिद्ध-पुरुष के, पत्थर आदि पर बने पैरों के निशान।

पदठवणउ, पदठवणी-पु० [सं० पद-स्थापनम्] पांवड़ा।

पदतळ-पु० [सं० पद-तल] पैर का तल, तलुवा।

पदत्याग-पु०[सं०] किसी ओहदे, उपाधि या स्थान का परित्याग।

पदत्रिभंग-पु० [सं० पद त्रिभंगी] श्रीकृष्ण।

पदद्रव-पु० [सं०] भागना क्रिया, पलायन।

पदपल्लव, पदपल्लव-पु० [सं० पदपल्लव] पैर की अंगुली।

पदपीठ-स्त्री० [सं०] जूती।

पदबंध-पु० [सं०] १ वह गद्य जिसमें अनुप्रासों और समासों की अधिकता हो। २ पद्यबंध

पदवी-देखो 'पदवी'।

पदम-पु० [सं० पद्म] (स्त्री० पदमण, पदमणी) १ कमल। २ विष्णु का एक आयुध। ३ पैर में रेखाओं से बना कमल। ४ नव निधियों में से एक। ५ गले में पहनने का एक प्रकार का गहना। ६ हाथी के मस्तक पर बनाये जाने वाले चिह्न। ७ पदम वृक्ष, पदमाख। ८ सर्प के सिर पर बना चिह्न। ९ बिल्ली के पंजे पर बना चिह्न। १० एक ही कुर्सी पर बना आठ हाथ चौड़ा घर। ११ एक प्रकार का नाग। १२ गणित में सोलहवें स्थान का संख्या। १३ शरीरस्थ एक कमल विशेष। १४ सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक। १५ बलदेव। १६ पुराणानुसार एक नरक का नाम। १७ जम्बू द्वीप के दक्षिण-पश्चिम का एक देश। १८ भारत का नौवां चक्रवर्ती (जैन)। १९ एक पुराण। २० जैनों के एक तीर्थंकर। २१ एक वर्ण वृत्त। २२ घोड़े के कंधे व बगल की भौंरी। २३ आभूषणों पर खोद कर बनाया गया चिह्न विशेष। २४ वार व नक्षत्रों का एक योग। २५ हाथी, गज। —धर-पु० ईश्वर, विष्णु। —नाग-पु० नागों की एक जाति। —नाभ-पु०ईश्वर, विष्णु, श्रीकृष्ण। ब्रह्मा। एक तीर्थंकर। -बंध-पु० सूर्य, भानु। -भू='पद्मभू'—शिला-स्त्री० रहट वाले पत्थर को दबा कर रखने वाली शिला। —हल, हस्त-पु० सूर्य, भानु।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पदमअंजणी (नी)–पु० एक प्रकार का घोड़ा।
पदमजुण (जोणी)–देखो 'पद्मजूण'।
पदमणं, पदमणि, पदमणी–स्त्री० [सं० पद्मिनी] १ सर्वश्रेष्ठ जाति की स्त्री। २ छोटा कमल, कमलिनी। ३ कमल युक्त जलाशय। ४ हथिनी। ५ सुन्दर स्त्री। ६ कुमुदनी। ७ चित्तौड़ की एक प्रसिद्ध रानी। —**पति, पती**–पु० सूर्य, भानु। चन्द्रमा।
पदमणी–वि० (स्त्री० पदमणी) चतुर, बुद्धिमान। अच्छा श्रेष्ठ।
पदमराग–पु० [सं० पद्मराग] एक रत्न विशेष। —**पटळ**–पु० एक प्रकार का वस्त्र। —**मणि, मिण, मिणि**–स्त्री० लाल मणि।
पदमा–स्त्री० [सं० पद्मा] १ लक्ष्मी। २ नव निधियों में से एक। ३ रुक्मिणी। —**एकादसी**='पद्माएकादसी'।
पदमाक–देखो 'पदमाक्ष'।
पदमाकर–देखो 'पद्माकर'।
पदमाक्ष, पदमाख–पु० [सं० पद्माक्ष] १ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक। २ पद्मकाष्ठ नामक एक वृक्ष। ३ कमल के बीज, कमल गट्टा। ४ विष्णु। ५ सूर्य।
पदमापित (पिता)–पु० [सं० पद्मापिता] १ समुद्र। २ भीष्मक।
पदमालय–देखो 'पद्मालय'।
पदमालया–देखो 'पद्मालया'।
पदमालया पिता, (पिता)–देखो 'पद्मापित'।
पदमावती–देखो 'पद्मावती'।
पदमासण–देखो 'पद्मासण'।
पदमिण, पदमिणि, पदमिणी, पदमिनि, पदमी–देखो 'पदमणी'।
पदमूळ–पु० [सं० पदमूल] पैर का तलुवा।
पदम्म–देखो 'पदम'।
पदम्मिणी–देखो 'पदमणी'।
पदम्मी–पु० [सं० पद्मिन्] (स्त्री० पदम्मण, पदम्मणी) हाथी।
पदर–पु० ड्योढ़ीदार के बैठने का स्थान।
पदराणी (णो), पदरावणी (णो)–देखो 'पधराणी' (णो)।
पदरी–देखो 'पद्धरी'।
पदवन–देखो 'पदमणी'।
पदवी–स्त्री० [सं०] १ मार्ग, रास्ता। २ पद, उपाधि।
पदांसुक–पु० [सं० पदांशुक] वस्त्र विशेष।
पदाक्रांती, पदाघात–पु० [सं० पदक्रान्त,पदाघात] पदाघात ठोकर।
पदाणी (णो)–देखो 'पिदाणी' (णो)।
पदात(ति,ती)–पु० [सं० पदातः] १ पैदल, प्यादा। २ डगण के चतुर्थ भेद का नाम।
पदाधिकारी–पु० [सं०] किसी पद का धारक, पद पर आसीन व्यक्ति, ओहदेदार।
पदानुग–पु० [सं०] अनुसरण करने वाला, अनुयायी।
पदायत–देखो 'पदात'।
पदारणी(णो)–देखो 'पधारणी' (णो)।
पदारथ–पु० [सं० पदार्थ] १ अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चार साधन। २ कोई चीज, वस्तु। —**वाद**–पु० भौतिक पदार्थों की सत्ता को मानने का सिद्धांत। –**वादी**–वि० उक्त सिद्धान्त को मानने वाला। –**विग्यान**–पु० भौतिक विज्ञान शास्त्र। –**विद्या**–वि० पदार्थों का ज्ञान कराने वाली विद्या।
पदारपण–पु० [सं० पदार्पण] आना क्रिया, पांव रखना क्रिया।
पदारी–पु० [सं० पदधारणम्] किसी के शरीर में किसी देवता की अनुभूति।
पदावळी–स्त्री० [सं० पदावली] पदों की शृंखला, पद्यों का संग्रह।
पदु–देखो 'पद'।
पदोड़(ड़ी)–स्त्री० एक प्रकार की बकरी। –वि०(स्त्री० पदोड़ी) अधिक पादने वाला।
पदोदक–पु० [सं०] चरणामृत।
पद्मनाभ–देखो 'पदमनाभ'।
पद्धति,(ती)–स्त्री० [सं०] १ कार्य करने की रीति, प्रणाली। २ परम्परा, रिवाज। ३ मार्ग, रास्ता।
पद्धर, पद्धरय–१ देखो 'पाधरो'। २ देखो 'पाधर'। –**पति, पती** = 'पाधरपतसा'।
पद्धरि, (री)–पु० १ सोलह मात्रा व अंत जगण वाला एक छन्द विशेष। २ देखो 'पाधरी'।
पद्धरी–देखो 'पाधरी'।
पद्मक्षेत्र–पु० [सं०] उड़ीसा का एक तीर्थ।
पद्मज–पु० [सं०] ब्रह्मा।
पद्मजुण, (जोण,जोणी,जोनी)–पु० [सं० पद्मयोनि] १ ब्रह्मा। २ बुद्ध का एक नाम।
पद्मणी–देखो 'पदमणी'।
पद्मनाभ(भि)–देखो 'पदमनाभ'।
पद्मनिधि–स्त्री० [सं०] नव निधियों में से एक।
पद्मनी–देखो 'पदमणी'।
पद्मप्रभ (प्रभु)–पु०[सं०] वर्तमान काल के छठे तीर्थंकर (जैन)।
पद्मबंध–पु० [सं०] एक प्रकार का चित्रकाव्य।
पद्ममास–पु० [सं०] १ विष्णु। २ शिव।
पद्ममू–पु० [सं०] ब्रह्मा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पद्ममुद्रा–स्त्री० [सं०] दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाई जाने वाली एक मुद्रा।

पद्मराग–देखो 'पदमराग'।

पद्मरेखा–स्त्री० [सं०] सौभाग्य सूचक हस्तरेखा।

पद्मलांछणा (ना)–स्त्री० [सं०पद्मलाञ्छना] १ सरस्वती का एक नाम। २ तारा का एक नाम। ३ लक्ष्मी।

पद्मलेश्या–स्त्री० [सं० पद्मलेश्या] जैन मतानुसार एक लेश्या।

पद्महथ, (हस्त)–देखो 'पदमहत'।

पद्मा–देखो 'पदमा'।

पद्माएकादसी–स्त्री० भाद्रपद शुक्ला एकादशी।

पद्माकर–पु० [सं०] १ तालाब, सरोवर। २ कमलयुक्त तालाब।

पद्मालय–पु० [स०] १ समुद्र। २ सरोवर। ३ ब्रह्मा।

पद्मालया–स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ रुक्मिणी। ३ लौंग।

पद्मावती–स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी। २ पद्मिनी जाति की स्त्री। ३ चित्तौड़ की प्रसिद्ध रानी। ४ एक अप्सरा (पौराणिक)। ५ उज्जयिनी का प्राचीन नाम। ६ बत्तीस मात्राओं का एक छन्द विशेष।

पद्मावळि (ळी)–पु० [सं० पद्मावली] एक वस्त्र विशेष।

पद्मासण (न)–पु० [सं० पद्मासन] १ योग के चौरासी आसनों में से एक। २ संभोग का एक आसन।

पद्मिनी पद्मीनी–देखो 'पदमणी'।

पद्मोत्तर–पु० [सं०] एक प्रकार का वस्त्र।

पद्य–वि० [सं०] १ जिसमें कविता के पद या चरण हों, जो छन्दोबद्ध हो। २ चरण संबंधी। ३ पद चिह्नों से चिह्नित। ४ शब्द संबंधी। ५ अंतिम। –पु० पिंगल के अनुसार चार चरणों वाला एक छन्द।

पधड़ी–देखो 'पढ़री'।

पधर–देखो 'पाधरी'।

पधराणी, (णो)–क्रि० [सं प्र-धारणम्] १ आदर पूर्वक लाना, लेजाना। २ ससम्मान बुलाना। ३ स्थापित करना, प्रतिष्ठित करना। ४ देव मूर्ति की स्थापना करना। ५ हड़प लेना, छीन लेना। ६ डाल देना, फेंक देना। ७ तिरोहित करना। ८ धारण करना, पहनना, पहनाना। ९ भेंट करना। १० खाना, हजम करना। ११ लाना। १२ बैठाना, विराजमान कराना। १३ प्रवेश कराना। १४ लेना। १५ ले जाना। १६ भेज देना। १७ प्रकट या जाहिर करना।

पधरावणी–स्त्री० किसी महन्त को घर बुलाकर दी जाने वाली भेंट।

पधरावणो (वो)–देखो 'पधराणो' (वो)।

पधरी–देखो 'पढ़री'।

पधारणो (वो)–क्रि० [सं० पद् धारणम्] १ आना, पहुँचना। २ जाना, चला जाना। ३ ससम्मान आना-जाना।

पधोरणो (वो)–देखो 'पाधोरणो' (वो)।

पध्धर–देखो 'पाधरी'।

पध्धारणो (वो)–देखो 'पधारणो' (वो)।

पनंग–देखो 'पन्नग'।

पनंगणी–स्त्री० १ नाग कन्या। २ नागिन।

पनंगपति, (पती)–देखो 'पन्नगपति'।

पनंगपाळ–पु० [सं० पन्नग-पाल] चन्दन।

पनंगलोक–देखो 'पन्नगलोक'।

पनंगसंघार, पनंगसिंघार–पु० [सं० पन्नग-संहार] मोर, मयूर।

पनंगाण–देखो 'पन्नग'।

पनंगाराय–पु० [सं० पन्नगराज] शेषनाग।

पनंगासन–देखो 'पन्नगासन'।

पनंगेस–पु० [सं० पन्नग-ईश] शेषनाग।

पनग्ग–देखो 'पन्नग'।

पन–१ देखो 'पुण्य'। २ देखो 'प्रण'। ३ देखो 'पांन'। ४ देखो 'पांनो'।

पनग–देखो 'पन्नग'। **—पति, पती** = 'पन्नगपति'। **—लोक** 'पन्नगलोक'।

पनगहार–पु० [सं० पन्नग–हार] शिव, महादेव।

पनगांण–देखो 'पन्नग'।

पनगारि–देखो 'पन्नगारि'।

पनगासन–पु० [सं०पन्नग–आसन] १ गरुड़। २ विष्णु।

पनग्ग–देखो 'पन्नग'।

पनग्गी–देखो 'पन्नग'।

पनघट–देखो 'पणघट'।

पनड़ियो–पु० खूबकला नामक घास।

पनड़ी–स्त्री० (ब. व.) [सं० पत्रम्] १ आभूषणों में लटकते हुए छोटे-छोटे पत्तेनुमा भाग। २ पेड़ या पौधों के सूखे पत्तों का समूह। ३ किसी पौधे की सुगंधित पत्ती। ४ चने के पौधे के पत्तों का ढेर। ५ देखो 'पांनड़ी'। ६ देखो 'पांन'।

पनडुब्बी–स्त्री० १ एक जल पक्षी विशेष। २ पानी के अन्दर चलने वाली नाव।

पनपणो (वो)–क्रि० १ किसी पेड़ या पौधे का उगकर बढ़ते जाना। २ पानी मिलने से हरा होना। ३ स्वस्थ व तंदुरुस्त होना। ४ आर्थिक दृष्टि से संभलना। ५ वैभव युक्त होना। ६ बढ़ना, वृद्धि होना। ७ प्राप्त होना, मिलना।

पनपाणो, (वो)–क्रि० १ किसी पेड़ या पौधे को पानी देकर बढ़ाना। २ स्वस्थ या तंदुरुस्त करना। ३ आर्थिक स्थिति मजबूत करना। ४ बढ़ाना वृद्धि करना। ५ प्राप्त कराना, मिलाना।

पनर, पनरह–देखो 'पनरह'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पनरम, पनरमंइ, पनरमंउ पनरमओ–वि० [सं० पंचदश:] पन्द्रहवां ।

पनरवाड़ियो–पु० १ किसी नक्षत्र पर सूर्य का पन्द्रह दिन तक रहने का क्रम । २ किसी नक्षत्र का पन्द्रह दिन तक प्रभावी रहने का क्रम ।

पनरह–वि० [सं० पंचदश] दश और पांच, पन्द्रह । –पु० पन्द्रह की संख्या व उसका अंक, १५ ।

पनरहवींविद्या–स्त्री० छल-प्रपंच वाली एक विद्या ।

पनराड़ी–स्त्री० पन्द्रह दिन का समय, पखवाड़ा ।

पनरे (रें)–देखो 'पनरह' ।

पनरैंक–वि० पन्द्रह के लगभग ।

पनरोतड़ो, पनरौ–पु० पन्द्रह का वर्ष ।

पनवा–स्त्री० आभूषणों के बीच लगी पाननुमा चौकी ।

पनवाड़ि (ड़ी)–स्त्री० [सं० पर्णवाटिका] १ नागरवेल का खेत । २ पान का व्यापारी । ३ पान लगाकर देने वाला अनुचर । ४ अच्छे पानों वाला प्रदेश ।

पनस–पु० [सं०] कटहल का वृक्ष व उसका फल ।

पनसारी–देखो 'पंसारी' ।

पनसूरो–पु० [सं० पत्र - चूरणम्] ज्वार, बाजरी आदि के पत्तों का चूरा ।

पनहि (ही)–स्त्री० [सं० उपानह] जूती ।

पनहूरो–देखो 'पनसूरो' ।

पनांग–देखो 'पिनाक' ।

पना–देखो 'पनाह' ।

पनाक–देखो 'पिनाक' ।

पनाकी– देखो 'पिनाकी' ।

पनाग–पु० [सं० पन्नग:] १ हाथी, गज । २ देखो 'पन्नग' ३ देखो 'पिनाक' ।

पनामाक–पु० १ पति । २ प्रेमी, नायक । ३ रसिक । ४ एक लोक गीत ।

पनाळ–देखो 'परनाळ' ।

पनाह–स्त्री० [फा०] १ रक्षा, सुरक्षा । २ शरण, आश्रय । ३ शरणस्थल । ४ सुरक्षा पाने का स्थान । ५ शहर के चारों ओर बनी मोटी व ऊंची दीवार ।

पनिया–देखो 'पनही' ।

पनी–स्त्री० [सं० पर्ण] १ ऐरे की सिट्टी या बाली जो औषधि में काम आती है । २ देखो 'पन्नी' ।

पनीडो–देखो 'परींडो' ।

पनीर–पु० [फा०] १ फटे दूध का जमा हुआ दही, छेना । २ पानी निचोड़ा हुआ दही ।

पनीहारी–देखो 'पणिहारी' ।

पनुंती–देखो 'पनोती' ।

पनूं–देखो 'पनौ' ।

पनूंतो–वि० [सं० पूत] पवित्र, श्रेष्ठ ।

पनूरो–देखो 'पनसूरो' ।

पनोति, पनोती–स्त्री० [सं० प्रशप्ति] १ शनि ग्रह की शुभाशुभ फलप्रद स्थिति । महाकल्याणी । २ कुग्रहों का योग, दुर्दशाकाल ।

पनोतो–देखो 'पनूंतो' ।

पनौ–पु० [सं०] १ हरे रंग का एक रत्न विशेष । २ चौड़ाई, अरज । –वि० १ सुकोमल, सुकुमार । २ देखो 'पनांमारू' । ३ देखो 'पांनो' ।

पन्नग–देखो 'पन्नग' ।

पन्न–१ देखो 'पांन' । २ देखो 'पवन' ।

पन्नग–पु० [सं०] (स्त्री० पन्नगी) १ सर्प, नाग । २ शेषनाग ।

पन्नगकेसर–स्त्री० नाग केसर ।

पन्नगपति, (पती)–पु० [सं०] १ शेष नाग । २ नाग लोक का राजा ।

पन्नगपीवण–देखो 'पैणो' ।

पन्नगलोक (लोकि)–पु० [सं०] नागलोक, पाताल ।

पन्नगारि–पु० [सं०] गरुड़ ।

पन्नत्ता–पु० [सं० प्रज्ञप्ति:] १ विज्ञप्ति, घोषणा । २ सूचना । ३ शिक्षा । ४ प्रण, शर्त ।

पन्नवणा–स्त्री० [सं० प्रज्ञापना] एक सूत्र विशेष (जैन) ।

पन्नामंवर, पन्नामाक–देखो 'पनामारू' ।

पन्नी–स्त्री० [सं० पर्ण] १ किसी धातु का कागजनुमा पत्तर, पत्र । २ छोटे पत्तों का ढेर ।

पन्नीगर, पन्नीसाज–पु० [सं० पर्णीकर] धातु की पन्नी बनाने वाला ।

पन्नीसाजि–स्त्री० पन्नी बनाने का व्यवसाय या कार्य ।

पन्नौ–पु० १ कागज, पत्र । २ एक रत्न विशेष । ३ अरज.चौडाई ।

पन्हा–देखो 'पनाह' ।

पपइयो, पपईयो–पु० [सं० पपीहा] १ चातक पक्षी । २ एक लोक गीत ।

पपड़ी–स्त्री० [सं० पर्पटी] १ किसी सतह या वस्तु पर जमने वाली परत । २ पापड़नुमा कोई पदार्थ, चीप्स ।

पपधनवा–देखो 'पुरुषधन्वा' ।

पपय्यो–देखो 'पपइयो' ।

पपिळका–देखो 'पिपिलिका' ।

पपिळी–देखो 'पिपीळी' ।

पपिहियो, पपिहो–देखो 'पपइयो' ।

पपी–पु० [सं०] १ सूर्य, रवि । २ चन्द्रमा, सोम ।

पपीतो–पु० [मला० पपाया] ऐरंड जाति का एक वृक्ष व उसका फल ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पपीयरी, पपीयौ–देखो 'पपइयौ' ।
पपील–१ देखो 'पिपील' । २ देखो 'पिपिळिकामारग' ।
पपीलिका–देखो 'पिपिळका' ।
पपीहरी, पपीहो, पपैइयौ, पपैया, पपैयो–देखो 'पपइयौ' ।
पपोळणौ (बौ)–देखो 'पंपोळणौ' (बौ) ।
पप्पड़–देखो 'पापड़' ।
पप्पड़ी–देखो 'पपड़ी' ।
पप्पड़ौ–१ देखो 'पापड़' । २ देखो 'पापड़ौ' ।
पबंध–देखो 'प्रबंध' ।
पब–१ देखो 'परबत' । २ देखो 'परब' ।
पबळ–देखो 'प्रबळ' ।
पबांणौ–वि० पर्वतीय, पर्वत संबंधी ।
पबासाई, पबासाही–स्त्री० एक प्रकार की तलवार ।
पबि–देखो 'पवि' ।
पबे, पबै–देखो 'परबत' ।
पबैग्रस्त–पु० [सं० अस्ताचल-पर्वत] अस्ताचल पर्वत ।
पबैड़ौ–पु० हाथ में रखने का डंडा ।
पबैराट–देखो 'परबतराज' ।
पब्ब, पब्बय–देखो 'परबत' ।
पब्बाया–देखो 'परबत' ।
पब्बासाही–देखो 'पबासाई' ।
पब्बै–देखो 'परबत' ।
पब्बैगिर–पु० पर्वत ।
पब्बैराज, पब्बैराट–देखो 'परबतराज' ।
पभंकर–देखो 'प्रभाकर' ।
पभणौ (बौ)–क्रि० [सं० प्रभण] कहना, बोलना ।
पभा–देखो 'प्रभा' ।
पभावइ–देखो 'प्रभावती' ।
पभारा–स्त्री० [सं० प्राग्भार] शरीर की आठवीं अवस्था, जरा अवस्था । (जैन)
पभूय–देखो 'प्रभूत' ।
पभंग, पभंगय, पभंगर, पभंगह, पभंगाण–पु० [सं० प्रवंग] घोड़ा, अश्व ।
पभंगाळौ–पु० [सं० प्रवंग] घोड़ों का समूह ।
पभंगेस–पु० [सं० प्रवंग-ईश] श्रेष्ठ घोड़ा ।
पभंग, पभग–देखो 'पयंग' ।
पभत–देखो 'प्रभत' ।
पभाड़ियौ, पभाड़ियौ–देखो 'पदांड' ।
पभाणौ (बौ)–देखो 'पोमाणौ' (बौ) ।
पभाय–देखो 'प्रभाव' ।
भार–१ देखो 'परभार' । २ देखो 'पंवार' ।
पभावणौ, (बौ)–देखो 'पोमाणौ' (बौ) ।
पमुंह, पमुह–पु० [सं० प्रतिमुख] १ उल्टा, विरुद्ध । २ देखो 'प्रमुख' ।
पमुंकणौ, (बौ)–देखो 'मूकणौ' (बौ) ।
पमोडी–स्त्री० [सं० पद्मकर्कटी] पद्मकर्कटी ।
पमोद–देखो 'प्रमोद'
पम्ह–देखो 'पद्म' ।
पम्हा–देखो 'पद्मा' ।
पयंग–१ देखो 'पतंग' । २ देखो 'पतंग' ।
पयंड, पयंडौ–पु० [सं० प्रचण्ड] १ प्रखर, तेज, तीव्र । २ जबरदस्त, जोरदार ।
पयंव–पु० [सं० पय-इन्द्र] तालाब, सरोवर, समुद्र ।
पयंपणौ (बौ)–क्रि० [सं० प्रजल्पनम्] कहना, कथना ।
पय–पु० [सं०] १ दूध । २ पानी । ३ वीर्य । ४ भोजन । ५ बल, शक्ति । ६ तेज, कांति । [सं०पद] ७ चरण, पंक्ति । ८ पैर ।
पयग–पु० [सं० पयोग] वरुण ।
पयगुण–स्त्री० शरीर, देह ।
पयचार–स्त्री० [सं० पदचार] १ पाद रक्षिका, जूती । २ देखो 'पदचार' ।
पयठणौ (बौ), पयठुणौ (बौ)–देखो 'पैठणौ' (बौ) ।
पयड, पयडउ, पयडिउ, पयडु–पु० [सं० प्रकट] १ प्रकट । २ प्रसिद्ध, विख्यात ।
पयडिय, पयडी–स्त्री० [सं० प्रकृति] प्रकृति । —बंध= 'प्रकृतिबंध' ।
पयतळि–देखो 'पदतळ' ।
पयद–देखो 'पयोद' ।
पयदात–पु० [सं० पदाति] पैदल, प्यादा ।
पयध–देखो 'पयोधि' ।
पयधर–देखो 'पयोधर' ।
पधधि–देखो 'पयोधि' ।
पयनध, पयनिध, पयनिधि–देखो 'पयोनिधि' ।
पयनिरत–स्त्री० [सं० पयोनृत्यं] मछली ।
पयन्ना–पु० [सं० प्रकर्ण] प्रकर्ण ।
पयप–पु० [सं०] वरुण ।
पयपांन–पु० [सं० पयपान] दुग्ध या जलपान ।
पयमाल–वि०[फा०पायमाल, पामाल] रौंदा हुआ, अति दुःखी ।
पयलु–वि० [सं० पराचीन] पराचीन ।
पयसणौ (बौ)–देखो 'पैसणौ' (बौ) ।
पयसागर–पु० [सं०] १ समुद्र, सागर । २ जलाशय, तालाब । ३ बर्तन या पात्र विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पयसीर, पयसीरा–स्त्री० [सं० पय] नदी ।

पयस्वनी–स्त्री० [सं० पयस्विनी] पानी वाली नदी ।

पयहर–देखो 'पयोधर' ।

पयहारी–पु० [सं० पय-आहारी] केवल दूध पर निर्वाह करने वाला ।

पयांण, पयांणउ, पयांणी–देखो 'प्रयाण' ।

पयाद, पयादो–पु० [सं० पदाति] (स्त्री० पयादी) पैदल प्यादा ।

पयार–पु० [सं० प्रकार] १ प्रकार । २ देखो 'पाताळ' ।

पयाळ–देखो 'पाताळ' । —**सींगी**='पाताळसींगी' ।

पयालि-१ देखो 'पाताळ' । २ देखो 'प्याली' ।

पयालु, पयाली-देखो 'प्यालो' ।

पयावच्च-पु० [सं० प्रजापति] ब्रह्मा ।

पयावाळो-वि० धनवान, पैसे वाला ।

पयासि-देखो 'प्रतापी' ।

पयासणु-देखो 'प्रकासन' ।

पयासणी (बी)–देखो 'प्रकासणी' (बी) ।

पयूख-देखो 'पीयूख' ।

पयं-देखो 'पय' ।

पयोद-पु० [सं०] बादल ।

पयोधर-देखो 'पयोधर' ।

पयोधु-देखो 'पयोद' ।

पयोध्न-देखो 'पयोधि' ।

पयोधर-पु० [सं०] १ समुद्र । २ तालाब । ३ बादल । ४ स्तन, कुच । ५ गाय का अयन । ६ सूर्य । ७ गुरु-लघु की चार मात्रा का समूह । ८.४८ मात्रा का एक छन्द विशेष । ९ छप्पय छंद का एक भेद विशेष ।

पयोधार, पयोधि-पु० [सं० पयोधर] १ सागर । २ जलाशय ।

पयोनिध, पयोनिधि, पयोनिधी-पु० [सं० पयोनिधि] समुद्र ।

पयोमुख, पयोमुच-पु० [सं०] बादल, मेघ ।

पयोवह-पु० [सं०] बादल, मेघ ।

पयोव्रत-पु० [सं०] एक व्रत विशेष ।

पयोष्णी-स्त्री० [सं० पयोष्णी] नदी ।

पयोहर-देखो 'पयोधर' ।

पयो-पु० पैसा, धन, द्रव्य ।

परं-अव्य० किन्तु, लेकिन ।

परंग, परंगि-पु० [सं० परंग] दूसरे का शरीर या अंग ।

परंच-अव्य० [सं०] १ और भी । २ तो भी । ३ परन्तु ।

परंजण (न)-देखो 'परजन्य' ।

परंतप–वि०[सं०] १ वैरियों को दुःख देने वाला । २ जितेन्द्रिय । –पु० [सं०] चिन्तामणि ।

परंतु–अव्य० [सं०] १ पर । २ तो भी । ३ किन्तु । ४ लेकिन ।

परंद, परंदो–पु० [फा० परिन्दः] चिड़िया, पक्षी ।

परंध्री–देखो 'पुरंधि' ।

परंपर–पु० [सं०] १ अविच्छिन्न क्रम, सिलसिला । २ पुत्र, पौत्र आदि ।

परंपरा–स्त्री० [सं०] अनुक्रम, सिलसिला । रीति

पर–वि० [सं०] १ अन्य, दूसरा, पराया । २ आगे का, पूर्व का । ३ दूसरे का, पराए का । ४ बाद का । ५ चोर । –पु० [सं०] १ शत्रु, वैरी । २ पंख, पक्ष । –स्त्री० [सं०] ३ प्रीति, प्रेम । ४ प्रतिज्ञा, प्रण । ५ मर्यादा, परम्परा । ६ इतिहास । इतिवृत्त । –अव्य० १ परन्तु, लेकिन । २ ऊपर, सीमा से परे । ३ देखो 'प्र' ।

परइ–देखो 'परं' ।

परइधत–पु० [सं० परैधित] दास, भृत्य ।

परउपकार–देखो 'परोपकार' ।

परउपकारी, परउपगारी–देखो 'परोपकारी' ।

परकट–देखो 'प्रकट' ।

परकज–देखो 'परकज्ज' ।

परकजू–वि० परोपकारी ।

परकज्ज–पु० [सं० पर-कार्य] दूसरे का कार्य, पराया कार्य ।

परकत, परकत्ति–देखो 'प्रकृति' ।

परकमण, परकमणा, परकमा, परकम्मा–देखो 'परिक्रमा' ।

परकर–पु० [सं० परैश्वर्य] वैभव ।

परकरती–देखो 'प्रकृति' ।

परकरमण, परकारमण–पु० [सं० पर-कार्मण] अनुचर, नौकर ।

परकांड–देखो 'प्रकांड' ।

परकार, परकाळ–पु० [फा० परकार] १ वृत्त बनाने का उपकरण । २ देखो 'प्रकार' ।

परकास–पु० [सं० प्रकाश] १ हंस । २ देखो 'प्रकास' ।

परकासक–देखो 'प्रकासक' ।

परकासण–देखो 'प्रकासण' ।

परकासणी (बी)–देखो 'प्रकासणी' (बी) ।

परकासमांन, परकासवांन–देखो 'प्रकासवांन' ।

परकिरिया–देखो 'प्रक्रिया' ।

परकीय–वि० [सं०] दूसरे का पराया ।

परकीया–स्त्री० [सं०] १ पर पुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री । २ एक प्रकार की नायिका । ३ गाथा छन्द का एक भेद ।

परकीरण–देखो 'प्रकीरण' ।

परकोट, परकोटो–पु० [सं० पर-कोटः] १ शहर पनाह । २ चाहर दिवारी, शाहता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परकोप–देखो 'प्रकोप'।
परक्खणो (बो)–देखो 'परखणो' (बो)।
परकृत, परकृति, परकस, परकसी–स्त्री० [सं० परकृति] १ दूसरे का किया कार्य। २ दूसरों की रचना। ३ देखो 'प्रकृति'।
परक्रम, परक्रमा–देखो 'परिक्रमा'।
परखंड–पु० [सं०] विदेश, परदेश।
परख–देखो 'परीक्षा'।
परखणो (बो)–क्रि० [सं० परीक्षणम्] १ गुण, दोष, स्वभाव आदि की जांच करना। २ परीक्षा करना। ३ मान, महत्व आदि की जानकारी करना। ४ जानना, पहिचानना। ५ कसौटी पर रख कर देखना।
परखत्र–वि० [सं० पर-क्षत्रम्] क्षत्रियत्व, वीरता, बहादुरी।
परखद, परखदा–देखो 'परिसद'।
परखर–१ देखो 'प्रखर'। २ देखो 'परकर'।
परखा–देखो 'परीक्षा'।
परखाई–स्त्री० [सं० परीक्षा] १ परखने की क्रिया या भाव। २ परखने की मजदूरी।
परखाणो (बो), परखावणो (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु के गुण दोषों की जांच कराना। २ मान, परिमाण आदि ज्ञात कराना। ३ परीक्षा कराना, जांच कराना। ४ किसी प्राणी के स्वभाव व चरित्र की जानकारी कराना। ५ पहचान कराना। ६ परिचय कराना। ७ कसौटी पर कसवाना।
परखो–स्त्री० [सं० परीक्षणम्] बंद बोरे में से कुछ अनाज आदि निकाल कर देखने का लोहे का उपकरण। 'बंबी'।
परख्य–देखो 'परीक्षा'।
परग–पु० पैर, चरण।
परगड–देखो 'प्रकट'।
परगजु–देखो 'परकजु'।
परगट–देखो 'प्रकट'।
परगटणो (बो)–देखो 'प्रकटणो' (बो)।
परगटाणो (बो), परगटावणो (बो)–देखो 'प्रकटाणो' (बो)।
परगट्ट–देखो 'प्रकट'।
परगडणो (बो)–देखो 'प्रकटणो' (बो)।
परगडो–वि० [सं० प्रकट] प्रकट।
परगणो–देखो 'परगनो'।
परगत–पु० [सं० परित्यक्त] १ परित्याग। २ देखो 'प्रकृति'।
परगती–१ देखो 'प्रकृति'। २ देखो 'प्रगति'।
परगनो–पु० [फा० परगनः] एक ही प्रशासन के अधीन कुछ गांवों का समूह। क्षेत्र विशेष।
परगरणो (बो)–क्रि० [सं० परिगलनम्] घुल जाना।
परगळ–वि० [सं० पुष्कल] (स्त्री० परगळी) प्रचुर, अधिक, पूर्ण, पूरा।
परगळांण, परगळाई–स्त्री० [सं० पुष्कल] १ बाहुल्यता, आधिक्य। २ विस्तार, फैलाव।
परगळो–देखो 'परगळ'।
परगस–पु० पुष्प विशेष।
परगहं–देखो 'परिग्रह'।
परगाढ़–देखो 'प्रगाढ़'।
परगाळ–देखो 'प्रगाळ'।
परगाळियो–देखो 'प्रगाळियो'।
परगासक–देखो 'प्रकासक'।
परगासणो (बो)–देखो 'प्रकासणो' (बो)
परगाह, परगं, परगाह–देखो 'परिग्रह'।
परग्या–देखो 'प्रग्या'।
परग्याचक्षू–देखो 'प्रग्याचक्षु'।
परग्रह–देखो 'परिग्रह'।
परघट–देखो 'प्रकट'।
परघरळ, परघळ–देखो 'परगळ'।
परघळणो (बो)–देखो 'पिघळणो' (बो)।
परघळांण, परघळाई–देखो 'परगळांण'।
परघळो–देखो 'परगळ'।
परघु, परघू, परघे, परघं–देखो 'परिग्रह'।
परघृत–पु० [सं० परघृत] मक्खन, नवनीत।
परड़, परड़ोटियो–स्त्री० एक जाति विशेष का सर्प।
परड़ो–देखो 'प्रलय'।
परचंड–देखो 'प्रचंड'।
परचइ–१ देखो 'परचो'। २ देखो 'परिचय'।
परचक्कपल्ल–वि० शत्रु दल को रोकने वाला वीर।
परचणो (बो)–क्रि० [सं० प्रच्छ] १ कहना। २ स्वीकार करना, मानना। ३ समझना।
परचलण–देखो 'प्रचलन'।
परचाकरणो (बो)–देखो 'परचाणो' (बो)।
परचाणो (बो)–क्रि० १ कहलाना। २ स्वीकार कराना। ३ परिचित कराना।
परचाधारो–पु० १ सिद्ध पुरुष, महात्मा। २ चमत्कार पूर्ण काम करने वाला पुरुष।
परचार–देखो 'प्रचार'।
परचारणो (बो)–देखो 'प्रचारणो (बो)।
परचारत–देखो 'प्रचारित'।
परचावणो (बो)–देखो 'परचाणो' (बो)।
परचासुध–वि० सतर्क, होशियार। सिद्ध।
परची–स्त्री० [सं० परिचय] १ किसी महात्मा के जीवन चरित्र संबंधी ग्रंथ। २ कागज की पर्ची (स्लिप)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परचूण (ण)–वि० फुटकर, जो थोक न हो । –पु० फुटकर किराणे का सामान ।

परचूनी–वि० १ फुटकर व्यापार संबंधी । २ फुटकर किराणा संबंधी ।

परचूरणि–देखो 'पड़चूण' ।

परचूरता–देखो 'प्रचुरता' ।

परचेतस–पु० [सं०] वरुण ।

परचै–देखो 'परिचय' ।

परचो–पु० [सं० परिचय, फा० परचः] १ चमत्कार । २ परिचय, पहचान । ३ शक्ति, बल । ४ पत्र, चिट्ठी । ५ परिणाम, फल । ६ प्रश्न, सवाल । ७ परीक्षा का प्रश्न-पत्र । ८ देखो 'पड़छो' ।

परचोवणो (बो)–क्रि० [सं०क्वचित] उपदेश देना, समझाना ।

परछणो (बो)–क्रि० [सं० प्रोक्षणम्] १ पकड़ना । २ स्त्रियों द्वारा तोरण पर आये दूल्हे का स्वागत करना ।

परछन–स्त्री० [सं० परि+अर्चन] तोरण पर आये दूल्हे का स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला स्वागत ।

परछणजार–पु० [सं० परक्षयज्वाल] सुदर्शन चक्र ।

परछाई, परछाईं–स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १ छाया अक्स । २ प्रतिबिंब, परछाई ।

परछाणो (बो), परछावणो (बो)–क्रि० १ पकड़ाना । २ तोरण पर दूल्हे का स्वागत कराना ।

परछेद–देखो 'परिच्छेद' ।

परजक–देखो 'पर्यंक' ।

परजंग–देखो 'प्रजंघ' ।

परजंत–देखो 'पर्यंत' ।

परज–स्त्री० [सं० पराजिका] १ एक रागिनी विशेष । २ देखो 'प्रज' । ३ देखो 'प्रजा' ।

परजघण–पु० सूअर ।

परजन, परजन्य–पु० [सं० पर्जन्य] १ मेघ, बादल । २ वर्षा । ३ इन्द्र । ४ देखो 'परिजन' ।

परजळणो (बो),–देखो 'प्रजळणो' (बो) ।

परजळाणो (बो)–देखो 'प्रजळाणो' (बो) ।

परजा–देखो 'प्रजा' ।

परजाऊ–देखो 'परिजाऊ' ।

परजागर–देखो 'प्रजागर' ।

परजात–पु० [सं०] १ नौकर, चाकर, सेवक । २ कोकिल कोयल । –वि० १ दूसरे से उत्पन्न । २ पराश्रित । ३ दूसरी जात का ।

परजापत (पति, पती)–पु० १ इन्द्र । २ देखो 'प्रजापति' ।

परजापाळ–देखो 'प्रजापाळ' ।

परजायोक्ति–पु० [सं० पर्यायोक्ति] एक प्रकार का अर्थालंकार ।

परजाळ–पु० [सं० प्रज्वलनम्] आग की लपट, जलन ।

परजाळणो (बो)–देखो 'प्रजाळणो' (बो) ।

परजाव–पु० अवसर, मौका ।

परजिण, परजिन–१ देखो 'परजन्य' । २ देखो 'परिजन' ।

परजूड़ी–स्त्री० जूए का निम्न भाग, प्रासंग ।

परट्ट, परट्ठ–देखो 'परठ' ।

परट्ठणो, (बो)–देखो 'परठणो' (बो) ।

परट्ठाणो (बो), परट्ठावणो (बो)–देखो 'परठाणो' (बो) ।

परठ–स्त्री० [सं० परस्थापन्] १ समाचार, सूचना । २ सूची, लिस्ट । ३ चौकसाई, दक्षता । ४ निरख, भाव, रेट । ५ आकाश, आसमान । ६ ब्रह्मा ।

परठण–क्रि० [सं० पर-स्थापनम्] १ स्थिति । २ व्यवस्था । ३ प्रस्थान ।

परठणो (बो)–क्रि० [सं० प्रतिष्ठापितं] १ चिह्न बनाना, निशान बनाना । २ पहनना, धारण करना । ३ भेजना, पठाना । ४ प्रस्थान, करना । ५ पूजा करना, पूजना । ६ स्थापित करना, सजाना । ७ देखना । ८ प्रहार करना । ९ रखना । १० चलना । ११ बन्दूक से निशाना लगाना । १२ रचाना, बनाना । १३ देना । १४ देव मन्दिर की स्थापना करना, प्रतिष्ठा करना ।

परठता–स्त्री० [सं० प्रतिष्ठापनम्] जैन साधुओं के लघु शंका करने का पात्र विशेष ।

परठाणो (बो), परठावणो (बो)–क्रि० १ चिह्न बनवाना, निशान बनवाना । २ पहनाना, धारण कराना । ३ भिजवाना, पठवाना । ४ प्रस्थान कराना । ५ पूजा कराना, पुजवाना । ६ बंधवाना, सजवाना । ७ दिखाना । ८ प्रहार कराना । ९ रखवाना । १० चलवाना । ११ बन्दूक से निशाना लगवाना । १२ रचना कराना, बनवाना । १३ दिलाना । १४ देव मन्दिर की स्थापना कराना, प्रतिष्ठा कराना ।

परठि–स्त्री० [सं० पृथ्वी] १ पृथ्वी, भूमि । –पु० २ समुद्र ।

परठौ–पु० [सं० प्र-स्था] सजावट ।

परड, परडोटियौ–देखो 'परड़' ।

परण–पु० [सं० पर्ण, परिणय] १ पत्र । २ पलास । ३ विवाह ।

परणकुटी–स्त्री० [सं०पर्ण-कुटी] घास-फूस की कुटिया, झौंपड़ी ।

परणण–पु० [सं० परिणय] विवाह ।

परणणो (बो)–क्रि० [सं० परिणयनम्] विवाह करना, विवाहित होना ।

परणसाळा–स्त्री० [सं० पर्णशाला] झौंपड़ी, कुटिया ।

परणाणो (बो)–क्रि० [सं० परिणयनम्] विवाह कराना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परणाम–१ देखो 'प्रणाम'। २ देखो 'परिणाम'।
परणाळ–देखो 'परनाळ'।
परणावणी (बी)–देखो 'परणावणी' (बी)।
परणाह–वि० [सं० परिणाह] दीर्घ, बड़ा।
परणि, परणी–स्त्री० [सं० परिणीता] १ विवाहिता स्त्री। २ परची, स्लिप।
परणेत–वि० [सं० परणीत] विवाहित।
परणेता–स्त्री० [सं० परिणीता] विवाहिता स्त्री।
परणेसू–वि० १ विवाह संबंधी। २ देखो 'परणेत'।
परणो–पु० [सं० परिणयनम्] विवाह।
परण्योड़ो, परण्यो–वि० विवाहित। –पु० पति।
परतंग्या–देखो 'प्रतिग्या'।
परतंचा–देखो 'प्रत्यंचा'।
परतंत, परतंत्र–वि० [सं० परतंत्र] १ अधीन, वशीभूत। २ दूसरे के सहारे रहने वाला, पराधीन। ३ देखो 'परमतत्त्व'।
परत–पु० १ सामना, मुकाबला। २ प्रण, प्रतिज्ञा। ३ प्रकृति, स्वभाव। ४ तह। ५ स्तर। ६ पुट। ७ पपड़ी। ८ पर्दा, आवरण। ९ किसी पत्र की प्रतिलिपि। –सर्व० आपस, परस्पर। –क्रि० वि० १ हरगिज, कदापि, कभी भी। २ प्रत्यक्ष। ३ देखो 'पड़त'।
परतक–देखो 'प्रत्यक्ष'।
परतकाळी–स्त्री० एक प्रकार की शराब।
परतकूळता–देखो 'प्रतिकूळता'।
परतक्ख, परतक्खि, परतक्ष, परतक्ष, परतक्षि, (खी, ख्य)–देखो 'प्रत्यक्ष'।
परतग्या–देखो 'प्रतिग्या'।
परतणो (बो)–क्रि० परिवर्तित होना।
परतमा–देखो 'प्रतिमा'।
परतमाळ, परतमाळा, परतमाळी–१ देखो 'प्रतिमा'। २ देखो 'प्रतिमाळ'।
परतळ–देखो 'पड़तळ'।
परतळी–पु० १ पुतला। २ चद्दर, चादर। ३ देखो 'पड़तळी'।
परताप–पु० १ किनारा, तट। २ देखो 'प्रताप'।
परतापी, परतापीक–देखो 'प्रतापी'।
परताळ–देखो 'पड़ताळ'।
परताळणो (बो)–देखो 'पड़ताळणो' (बो)।
परतिग्या–देखो 'प्रतिग्या'।
परति–देखो 'प्रति'।
परतिकूळ–देखो 'प्रतिकूळ'।
परतिख–देखो 'प्रत्यक्ष'।
परतिनिधि–देखो 'प्रतिनिधि'।
परतीत, परतीति, (ती)–१ देखो 'प्रतीत'। २ देखो 'प्रतीति'।
परतेक–देखो 'प्रत्येक'।
परतै–क्रि० वि० द्वारा, मार्फत, से।
परतो–देखो 'परचो'।
परत्त–देखो 'परत'।
परत्तख–देखो 'प्रत्यक्ष'।
परत्थी–देखो 'परस्त्री'।
परत्यक्ष–देखो 'प्रत्यक्ष'।
परत्र–अव्य० [सं०] परलोक में, अगले जन्म में।
परत्री–स्त्री० [सं० पर+स्त्री] पराई स्त्री।
परथ–वि० [सं० परार्थ] पराधीन, परतंत्र।
परथट्टपल्ल–वि० शत्रु दल को रोकने वाला वीर।
परथम–देखो 'प्रथम'।
परथी–देखो 'प्रथवी'।—**धर**='प्रथवीधर'। —**नाथ**='प्रथवीनाथ'।
परवकण, परवकणा, परवक्खण, परवक्षण, परवक्षणा, परवक्षण, परवखणा–देखो 'प्रदक्षिणा'।
परवर–देखो 'प्रवर'।
परवरप–पु० [सं० परवर्ष] पक्षी।
परवरसक–पु० १ गढ़, किला। २ देखो 'प्रवरसक'।
परवळि (लि)–पु० [सं० पर दल] शत्रुसेना।
परवांन–१ देखो 'प्रवांन'। २ देखो 'प्रधांन'।
परवानगी–देखो 'प्रधांनगी'।
परवाखत–पु० [अ० परवाख्त] संरक्षण, देखभाल।
परवाज–पु० सजावट, सज्जा।
परवादार–वि०[फा० पर्दादार]पर्दा रखने वाला, वाली। –स्त्री० पर्दा रखने वाली स्त्री।
परवादारी–स्त्री० [फा० पर्दादारी] पर्दा रखने की क्रिया या प्रथा।
परवावो–देखो 'पड़दादो'। (स्त्री० पड़दादी)
परवायत–देखो 'पड़दायत'।
परवक्षिण, परवक्षिणा, परविक्खणा–देखो 'प्रदक्षिणा'।
परवीपत, परवीप्त–देखो 'प्रदीप्त'।
परवुज–देखो 'परवाज'।
परवे, परवेस, परवेसड़ो (डो)–पु० [सं० परदेश] १ अन्य देश, पराया देश। २ प्रदेश।
परवेसि, परवेसी, परवेसीड़ो–वि० [सं०परदेशी] (स्त्री० परदेसण (णी) अन्य देश का, विदेशी। –पु० १ अन्य देश का निवासी। २ अन्य देश का पदार्थ।
परवेह–देखो 'परदेस'।
परदोस–देखो 'प्रदोस'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परडी–देखो 'पड़की'।
परधान–१ देखो 'प्रधान'। २ देखो 'परिधान'।
परधानगी–देखो 'प्रधानगी'।
परधाम–पु० [सं० परधाम] परलोक।
परनाळ–पु० [सं० प्रणाल] छत का पानी नीचे बहाने का नाला।
परनाळका–देखो 'प्रणाळका'।
परनाळणो (बो)–क्रि० [सं० प्रणालनम्] चीरना, फाड़ना।
परनाळी (ळी)–१ देखो 'परनाळ'। २ देखो 'प्रणाली'।
परन्योड़ो–देखो 'परण्योड़ो'।
परपंच–देखो 'प्रपंच'।
परपंची–देखो 'प्रपंची'।
परपक्व–देखो 'परिपक्व'।
परपचक–वि० [सं० प्रपाचक] पचाने वाला, पाचक।
परपट, परपटी–वि० [सं० पर्पट] पपड़ी जमा हुआ, सूखा। –स्त्री० १ पपड़ी, तह। २ पापड़। ३ वैद्यक में एक प्रकार का रस।
परपत्रावली–स्त्री० [सं०] खजूर।
परपराट–स्त्री० परपराहट।
परपरिवाद–पु०[सं०] १ अपवाद, परिवाद। २ पराये दोष देखने की क्रिया या भाव। (जैन)
परपात–पु० [सं० परिपात] १ डाकू, लुटेरा। २ देखो 'प्रताप'।
परपिंड, परपिंडो–पु० [सं० परपिण्ड] चाकर, दास।
परपुरुस–पु० [सं० परपुरुष] पति के अलावा कोई पुरुष, अन्य पुरुष जो परिवार का न हो।
परपुस्ट–स्त्री० [सं० परपुष्ट] कोयल।
परपूठ–क्रि०वि० [सं० परपृष्ठ] पीठ पीछे, अनुपस्थिति में।
परपूरण–देखो 'परिपूरण'।
परपैठ–स्त्री० पहली व दूसरी बार लिखी हुण्डी के खो जाने पर तीसरी बार लिखी हुण्डी।
परपोतरो, परपोतो, परपोत्र, परपोत्रो–देखो 'प्रपोत्र'। (स्त्री० परपोतरी, परपोती, परपोत्री)
परप्पण–देखो 'पड़पणा'।
परप्रिया–स्त्री० [सं०] १ वेश्या, गणिका। २ कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी।
परफुल्लंत–देखो 'प्रफुल्लित'।
परबंध–पु० [सं० पदबंध] नृत्य की एक गति।
परब–देखो 'परव'।
परबत–देखो 'परवत'।
परबतजा–देखो 'परवतजा'।
परबतमाळ(माळा)–देखो 'परवत-माळा'।
परबतमेर–देखो 'मेरुपरवत'।
परबत्त–देखो 'परवत'।
परबयं–पु० [सं० पर्वयश] सुदर्शन चक्र।
परबळ–देखो 'प्रबळ'।
परबस–वि० [सं० परवश] १ पराधीन, जो स्वतंत्र न हो, दूसरों का वशवर्ती। २ पराश्रित। ३ विवश, मजबूर।
परबसता, परबसताई–स्त्री० पराधीनता, विवशता।
परबात–देखो 'प्रभात'।
परबारो–वि० [सं० पर-द्वार] (स्त्री० परबारी) १ जो किसी के मार्फत न हो, सीधा, प्रत्यक्ष। २ स्वतः, स्वयं ही। ३ बिना, रहित। –क्रि०वि० १ परोक्ष में, पीठ में। २ बीच वालों को छोड़ते हुए। ३ बिना रुके।
परबाळ–पु० १ आंख में चुभने वाला, पलक का बाल। २ देखो 'प्रवाल'।
परबीण, परबीन–देखो 'प्रवीण'।
परबेस–देखो 'प्रवेस'।
परबोद, परबोध–पु० [सं० प्रबोध] १ एक छन्द विशेष। २ देखो 'प्रबोध'।
परबोधक–देखो 'प्रबोधक'।
परबोधणी (नी)–देखो 'प्रबोधनी'।
परबोधणो (बो)–देखो 'प्रबोधणो' (बो)।
परब्ब–देखो 'परव'।
परब्बत, परब्बं–देखो 'परवत'।
परब्रहम, परब्रह्म, परब्रह्म–पु० [सं० परब्रह्मन्] १ परमात्मा ईश्वर। २ शिव।
परभव, परभवि–पु० [सं० परभव] १ दूसरा लोक। २ दूसरा जन्म। ३ देखो 'परिभव'।
परभवणो (बो)–क्रि० तिरस्कृत होना, अनादृत होना।
परभवहु–पु० [सं० परिभवः] अनादर, तिरस्कार। परिभव।
परभा–देखो 'प्रभा'।
परभाकर–देखो 'प्रभाकर'।
परभात, परभातड़ी, परभातड़ो, परभाती–१ देखो 'प्रभात'। २ देखो 'प्रभाती'।
परभातीतारो–देखो 'प्रभातियो-तारो'।
परभारो–देखो 'परबारो'।
परभाव–देखो 'प्रभाव'। —साळी='प्रभावसाळी'।
परभास–पु० [सं० प्रभासः] सूर्य, रवि। —खेत्र='प्रभासखेत्र'।
परभु, परभू देखो 'प्रभु'।
परभेद–देखो 'प्रभेद'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परछत, परछित–पु० [सं० परभृतः] १ शिव, महादेव। २ चाकर, सेवक। ३ कोयल। ४ स्वामिकार्तिकेय।

परम–वि० [सं०] १ अंतिम। २ अति दूरवर्ती। ३ अत्यन्त, बहुत। ४ मुख्य, प्रधान। ५ सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ। ६ आरम्भिक। ७ अत्यंत, बहुत। ८ महान्, बड़ा। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ कामदेव। –अव्य० परसों।

परमकोस–पु० [सं० परम-कोष] कपट।

परमगत, परमगति–पु० [सं० परमगति] मोक्ष, मुक्ति।

परमगुर, परमगुरु (रू)–पु० [सं० परमगुरु] १ ईश्वर। २ शिव। ३ श्रीकृष्ण। ४ चंद्र, चांद।

परमचित–पु० [सं० पराचित] चाकर, सेवक। –स्त्री० संगीत की एक ताल।

परमत–देखो 'प्रमत्त'।

परमतत (तत्व)–पु० [सं० परमतत्त्व] १ विश्व के विकास का मूल तत्त्व। २ ब्रह्म, ईश्वर।

परमत्थ, परमथ–देखो 'प्रमथ'। —**नाथ** = 'प्रमथनाथ'।

परमद–पु० [सं०] शराब से होने वाला एक रोग विशेष।

परमधाम–पु० [सं० परमधाम] वैकुण्ठ, स्वर्ग।

परमनंद, परमनंदन–पु० [सं०] गणेश, गजानन।

परमपद–पु० [सं०] १ मुक्ति, मोक्ष। २ ईश्वर।

परमपिता–पु० [सं०] परमेश्वर, ईश्वर।

परमपुर–पु० [सं०] १ विष्णुलोक। २ वैकुण्ठ, स्वर्ग। ३ कैलाश, शिवधाम।

परमपुरायण–पु० [सं० परम-परायण] ईश्वर।

परमपुरुस–पु० [सं० परम पुरुष] ईश्वर, विष्णु।

परमप्रिय–पु० [सं०] १ दो ह्रस्व मात्राओं का नाम। २ अत्यन्त प्रिय प्राणी। ३ पति।

परमफल–पु० [सं०] मोक्ष, मुक्ति।

परमब्रह्म–पु० [सं०] ईश्वर।

परमब्रह्मचारिणी––स्त्री० [सं०] दुर्गा।

परमर–वि० श्रेष्ठ, उत्तम।

परमळ, परमळि–पु० १ मक्का के भुने हुए दाने। २ देखो 'परिमळ'।

परमसुख–पु० [सं०] अत्यानन्द।

परमहंस–वि० [सं०] सीधा, सरल, भोला-भाला। –पु० १ परमात्मा, ईश्वर। २ ज्ञान मार्ग में अग्रणी, संन्यासी। ३ संन्यासियों की चार श्रेणियों में से श्रेष्ठ श्रेणी। ४ उक्त श्रेणी का संन्यासी।

परमांण–१ देखो 'प्रमांण'। २ देखो 'परमांणु'।

परमांणिक–देखो 'प्रमांणिक'।

परमांणु, (णौ)–पु० [सं० परमाणु] १ अत्यन्त सूक्ष्म कण। २ किसी पदार्थ का अत्यन्त छोटा अंश जिसका खण्ड न हो सके। —**वाद**–पु० सृष्टि संबंधी एक सिद्धान्त। —**वादी**–पु० उक्त सिद्धान्त को मानने वाला।

परमा–देखो 'प्रमा'।

परमाहस्ट–पु० [सं० परमेष्ठिन्] ब्रह्मा।

परमाणंद, परमाणंदौ–देखो 'परमानंद'।

परमातम, परमातमा, परमातम, परमात्मा–पु० [सं० परमात्मा] १ ईश्वर, परमेश्वर। २ परब्रह्म।

परमाद–देखो 'प्रमाद'।

परमादी–देखो 'प्रमादी'।

परमादौ–देखो 'प्रमाद'।

परमाद्वैत–पु० [सं०] १ जीव और ब्रह्म में अभेद करने वाला वेदान्त का सिद्धान्त। २ परब्रह्म, परमात्मा।

परमाधम्मिअ, परमाधांमी–पु० [सं०परम धार्मिक] नरकवासियों को दण्डित करने वाला देव।

परमानंद, परमानंदौ–पु० [सं० परमानंद] १ आनन्द स्वरूप ब्रह्म, परमात्मा। २ ब्रह्म के अनुभव का सुख, ब्रह्मानन्द। ३ अत्यधिक सुख।

परमापति–पु० [सं० परम-पति] ईश्वर।

परमायत–वि० १ सब से दीर्घ। २ सब काल में स्थित।

परमार–पु० [सं० प्रामार] एक राजपूत वंश।

परमारत, परमारथ–पु० [सं०परमार्थ] १ परोपकार। २ उत्कृष्ट पदार्थ। ३ मोक्ष। ४ परमसुख। ५ वास्तविक सत्ता।

परमारथता–स्त्री० [सं० परमार्थता] १ सत्य भाव, यथार्थ। २ परोपकारिता।

परमारथी–वि० [सं० परमार्थी] १ परोपकारी। २ मोक्ष चाहने वाला।

परमाहमी, परमाहम्मिअ–वि० [सं० परम-अधर्मी] १ परम अधर्मी, महानीच। २ देखो 'परमाधांमी'।

परमिट्ठओ–देखो 'परमेस्ठी'।

परमिति–स्त्री० [सं०] १ सीमा। २ मर्यादा। ३ परिमिति। ४ नाप, परिमाण।

परमिस्टं–पु० [सं० परमेष्ट] ब्रह्मा।

परमुख–वि०[सं०] १ प्रतिकूल या विरुद्ध आचरण करने वाला। २ विमुख, उल्टे मुंह। –स्त्री० १ राजस्थानी साहित्य की एक विधा। २ देखो 'प्रमुख'।

परमे–देखो 'परमै'।

परमेठि–देखो 'परमेस्टी'।

परमेस (श)–पु० [सं० परमेश] १ परमेश्वर। २ परब्रह्म।

परमेसटी–देखो 'परमेस्ठी'।

परमेसर–देखो 'परमेस्वर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परमेसरी–देखो 'परमेस्वरी'।
परमेसर, परमेसुर–देखो 'परमेस्वर'।
परमेस्ट–देखो 'परमेस्ठ'।
परमेस्टि, परमेस्टी–देखो 'परमेस्ठी'।
परमेस्ठ–पु० [सं० परमेष्ठ] ब्रह्मा, प्रजापति।
परमेस्ठि, परमेस्ठिनी–स्त्री० [सं० परमेष्ठिनी] १ देवी। २ श्री।
परमेस्ठी–पु० [सं० परमेष्ठिन्] १ ब्रह्मा, चतुरानन। २ अग्नि आदि देवता। ३ तत्त्व, भूत। ४ एक यज्ञ विशेष। ५ शालिग्राम की एक मूर्ति। ६ ब्रह्म का रूप, विराट पुरुष। ७ अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि।
परमेस्वर–पु० [सं० परमेश्वर] १ ईश्वर, ब्रह्म। २ विष्णु। ३ शिव।
परमेस्वरी–स्त्री० [सं० परमेश्वरी] देवी, दुर्गा।
परमेह–देखो 'प्रमेह'।
परमै–अव्य० परसों।
परमोच्छव, परमोछव, परमोतसव–पु० [सं० परस-उत्सव] १ बड़ा उत्सव, महान् उत्सव। २ हंसी, खुशी व आनन्द का अवसर।
परमोध–१ देखो 'प्रबोध'। २ देखो 'प्रमोद'।
परम्म–देखो 'परम'।
परम्मळ–देखो 'परिमळ'।
परम्मुख–देखो 'परमुख'।
परम्य–देखो 'परम'।
परयंक–पु० [सं० पर्यंक] पलंग, शय्या।
परयंत–अव्य० [सं० पर्यंत] तक, लों, निश्चित सीमा तक
परयटन–पु० [सं० पर्यटन] भ्रमण, देशाटन।
परयाग–देखो 'प्रयाग'।
परयागत–देखो 'प्रियागत'।
परयाप्त–वि० [सं० पर्याप्त] यथेष्ट, यथोचित, पूरा, जितना आवश्यक हो।
परयुक्षण–पु० [सं० पर्युक्षणम्] पूजन से पूर्व मंत्रोच्चार से पवित्र करने की क्रिया।
परयुक्षणी–स्त्री० [सं० पर्युक्षणी] शुद्धिकरण के लिये पानी लेकर छिड़कने का पात्र।
परयुसण, परयुसण–पु० [सं० पर्युषणम्] १ पूजन, अर्चन, सेवा। २ जैनियों का एक पर्व विशेष। ३ वर्षाकाल में साधुओं का एक ही स्थान पर विश्राम।
परराउ–वि० पराया, दूसरे का।
परलंब–देखो 'प्रलंब'।
परलंबो, परलंभो–देखो 'प्रलंब'।
परल–स्त्री० १ झूठ। २ असत्य बात, गप्प।
परलउ–देखो 'प्रलय'।
परलकौ–देखो 'पलकौ'।
परलय–देखो 'प्रलय'। —करण='प्रलयकरण'।
परलाई–स्त्री० उछल कूद।
परलै–देखो 'प्रलय'। —करण='प्रलयकरण'।
परसै–क्रि०वि० [सं० पर-लै] उस ओर, दूसरी ओर, उधर। –वि० उधर के, उस ओर के।
परलैदिन–देखो 'पैलैदिन'।
परलोक–पु० [सं०] १ वैकुण्ठ। २ दूसरा लोक। ३ यमलोक।
परलौ–देखो 'प्रलय'।
परलौ–वि० [सं०पर-रा+लौ] (स्त्री०परली) १ उस ओर का, दूसरी ओर का। २ सामने की ओर भगा हुआ। ३ ध्यान देने वाला। ४ उत्तर काल भव। ५ दूसरा।
परव–पु० [सं०पर्वन्] १ ग्रंथि, जोड़, गांठ। २ अंश, भाग, टुकड़ा, विभाग। ३ ग्रंथ का भाग। ४ निर्दिष्टकाल, अवधि। ५ पूर्णिमा, अमावस्या और संक्रांति। ६ देव पूजन या व्रत उपवास की तिथि विशेष। ७ उत्सव, पुण्यकाल। ८ अवसर, मौका। ९ त्यौहार। १० यज्ञादिक उत्सव। ११ चन्द्र या सूर्य ग्रहण। [सं० प्रपा] १२ पौसाला, प्याऊ। १३ कूप, कुण्ड। १४ समय। –कार–पु० लोभ वश पर्व दिनों का धर्मानुष्ठान अन्य दिन को कराने वाला ब्राह्मण। —काळ–पु० पर्व का समय, पुण्य काल। चतुर्दशी, अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या और संक्रान्ति। चन्द्रमा के क्षय का समय। —गांमी–स्त्री० पर्व के दिन स्त्री प्रसंग करने वाला।
परवज–पु० [सं० पर्वज] तने में गांठ वाला वृक्ष।
परवरणी–स्त्री० [सं० पर्वणी] पूर्णिमा, पूनम।
परवत–पु० [सं० पर्वत] १ पहाड़, पर्वत। २ पहाड़ की तरह ही ऊंचा ढेर। ३ दशनामी संन्यासियों की एक शाखा। ४ वृक्ष, पेड़। ५ महाभारत के अनुसार एक गंधर्व का नाम। ६ एक प्रकार की मछली।
परवतअरि–देखो 'परवतारि'।
परवतजा–स्त्री०[सं० पर्वतजा] १ पार्वती, गिरिजा। २ नदी।
परवतनंदणी (नी)–स्त्री० [सं० पर्वतनन्दिनी] १ पार्वती, गिरिजा। २ गौरी।
परवतमाळ, परवतमाळा–स्त्री० [सं० पर्वतमाळा] १ पर्वत श्रेणी। २ हिमालय पर्वत।
परवतमेर–पु० मेरु पर्वत।
परवतराज–पु० [सं० पर्वतराज] १ हिमालय पर्वत। २ कोई बड़ा पर्वत। ३ सुमेरू, पर्वत।
परवतसुत–पु० [सं० पर्वतसुत] लोहा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परवतारि–पु० [सं० पर्वतारि] इन्द्र ।

परवतासण(न)–पु० [सं० पर्वतासन] एक प्रकार का योगासन ।

परवतास्त्र–पु० [सं० पर्वतास्त्र] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र ।

परवतिया–वि० १ पर्वत संबंधी, पर्वत का । २ पर्वतों में रहने वाला । ३ पर्वतों में उत्पन्न होने वाला । –स्त्री० एक प्रकार की बकरी ।

परवतेस, परवतेसर–पु० [सं० पर्वतेश] १ हिमालय पर्वत । २ सुमेरु पर्वत । ३ कोई बड़ा पर्वत ।

परवन–स्त्री० मेवाड़ की एक नदी ।

परवर–वि० [फा०] परिपालक, पोषण करने वाला । –स्त्री० १ चूल्हे की बेवणी । २ देखो 'प्रवर' । ३ देखो 'परवळ' ।

परवरणो (बो)–क्रि० [सं० प्रवर्तनम्] १ घूमना-फिरना । २ व्याप्त होना । ३ प्रसिद्धि प्राप्त करना । ४ प्रस्थान करना, गमन करना ।

परवरती–वि० [सं० प्रवर्ती] १ भूले भटकों को राह पर लाने वाला । २ बाद का, बाद में होने वाला ।

परवरदिगार, परवरदीगार–पु० [फा०] १ ईश्वर । २ पालन कर्ता, पालक ।

परवरा–वि० पर्व का, पर्व संबंधी ।

परवरिस, परवरिसी–स्त्री० [फा० परवरिश] पालन-पोषण ।

परवळ–स्त्री० १ एक प्रकार की लता विशेष । २ उक्त लता का फल । ३ नागरबेल का फल । ४ चिचड़ा का फल ।

परवलांण–स्त्री० घोड़े के पैर बाधने की रस्सी ।

परवस–वि० [सं० परवश] १ पराधीन, परतंत्र । २ पराश्रित ३ विवश, मजबूर ।

परवसता–स्त्री० [सं० परवशता] १ पराधीनता, परतंत्रता । २ दूसरों पर निर्भरता । ३ विवशता ।

परवसि–देखो 'परवस' ।

परवस्तो–स्त्री० परवरिश, पालन-पोषण ।

परवस्स–देखो 'परवस' ।

परवांण–१ देखो 'प्रमांण' । २ देखो 'परिमांण' ।

परवांणि, परवांणी–वि० [सं० प्रमाणिक] १ शास्त्र सिद्ध । २ मान्यता प्राप्त, माननीय । ३ प्रमाण में देखने लायक । ४ प्रमाणसिद्ध ।

परवांणे (णै)–क्रि० वि० [सं० प्रमाण] अनुसार, मुताबिक, अनुरूप ।

परवांणो, परवांन–पु० [फा० परवाना] १ आज्ञा पत्र । २ माप, नाप । ३ देखो 'प्रमाण' ।

परवांनो–पु० [फा० परवान] १ पतंगा । २ देखो 'परवांणो' ।

परवा–स्त्री० [फा०] १ चिन्ता, फिकर । २ व्यग्रता, व्याकुलता । ३ भय, डर । ४ ध्यान, खयाल । ५ तवज्जा । ६ देखो 'पड़वा' । ७ देखो 'परवाई' ।

परवाह, परवाई–स्त्री० [सं० पूर्व-वायु] वर्षाकालीन पूर्व दिशा की वायु ।

परवाड़मल (मल्ल)–देखो 'प्रवाड़मल्ल' ।

परवाड़ो–देखो 'प्रवाड़ो' ।

परवाद–पु० [सं० प्रवाद] १ छल, कपट । २ देखो 'प्रवाद' ।

परवायो–देखो 'परवाह' ।

परवार–देखो 'परिवार' ।

परवारणो, (बो)–क्रि० [सं० परवारणम्] १ मस्त होना, लीन होना, तल्लीन होना । २ तृप्त होना, अघाना । ३ तैयार होना, सन्नद्ध होना । ४ दुरावस्था को प्राप्त होना, खराब दशा में आना । ५ नष्ट होना, बरबाद होना । ६ नीति पथ से भ्रष्ट होना, बदचलन होना । ७ बरबाद कर देना । ८ बिगड़ना ।

परवारो–१ देखो 'परिवार' । २ देखो 'परवारो' ।

परवाळ–देखो 'प्रवाळ' ।

परवाळि, परवाळी–पु० १ प्रवाल के रंग से मिलते-जुलते रंग का वस्त्र । २ देखो 'प्रवाळ' ।

परवाह–१ देखो 'प्रवाह' । २ देखो 'परवा' ।

परवाहणो, (बो)–देखो 'प्रवाहणो' (बो) ।

परवाहपय–पु० [सं० प्रवाह-पय] नदी ।

परवाही–वि० १ परवाह करने वाला । २ खुशामदी, चापलूस । ३ देखो 'परवाई' । ४ देखो 'प्रवाही' ।

परवीण–देखो 'प्रवीण' ।

परवीणता–देखो 'प्रवीणता' ।

परवीन–देखो 'प्रवीण' ।

परवेस–१ देखो 'परवेस' । २ देखो 'प्रवेस' ।

परव्रढ–पु० राजा, नृप ।

परव्रहम–देखो 'परब्रह्म' ।

परसंख्या–देखो 'परिसंख्या' ।

परसग (घ)–देखो 'प्रसंग' ।

परसंगी (घी)–देखो 'प्रसंगी' ।

परसतोख–पु० [सं०] परसंतोष चोर ।

परसंसणो, (बो)–देखो 'प्रसंसणो' (बो) ।

परसंसा–देखो 'प्रसंसा' ।

परस–पु० १ दो लघु गण के तीसरे भेद का नाम । २ देखो 'स्परस' । ३ देखो 'परसरांम' । ४ देखो 'पारस' ।

परसण–१ देखो 'प्रसन्न' । २ देखो 'प्रस्न' ।

परसणो (बो)–क्रि० [सं० स्पर्शनम्] १ देव दर्शनार्थ जाना । २ तीर्थ यात्रा पर जाना । ३ स्पर्श करना, छूना । ४ देखो 'पुरसणो' (बो) ।

परसत, परसद, परसदा–देखो 'परिसद' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परसन, परसन्न–१ देखो 'प्रसन्न'। २ देखो 'प्रश्न'।

परसपर–देखो 'परस्पर'।

परसरग–पु० [सं० परसर्ग] भाषा विज्ञान में कुछ संज्ञा विभक्तियां।

परसवरण–पु० [सं० परसवर्ण] पर या उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण।

परसाणो (बो)–क्रि० [सं० स्पर्शनम्] १ स्पर्श कराना, छुआना। २ तीर्थ यात्रा कराना। ३ देव दर्शन कराना। ४ देखो पुरसाणो' (बो)।

परसाद–१ देखो 'प्रसाद'। २ देखो 'प्रासाद'।

परसार–देखो 'प्रसार'।

परसारणो (बो)–देखो 'प्रसारणो' (बो)।

परसावणो (बो)–१ देखो 'प्रसारणो' (बो)। २ देखो 'परसाणो' (बो)।

परसिध, परसिद्ध, परसिध–देखो 'प्रसिद्ध'।

परसिधता, परसिद्धता, परसिधता–देखो 'प्रसिद्धता'।

परसिधि (धी)–देखो 'प्रसिद्धि'।

परसीजणो (बो)–क्रि० [सं०प्रस्वेदनम्] १ पसीना होना, पसीने से तर होना। २ देखो 'पसीजणो' (बो)।

परसीणो–देखो 'पसीनो'।

परसोतस–पु० [सं० परशु-रा० तस=हाथ] १ गजानन, गणेश। २ परशुराम।

परसोधर–देखो 'परसुधर'।

परसीपाण–पु० [सं० परशु-पाणि] १ गजानन, गणेश। २ परशुराम।

परसु–पु० [सं० परशु] कुल्हाड़ीनुमा एक शस्त्र, फरसा। —धर, धरण–पु० परशुराम। गजानन, गणेश। परशुधारी सिपाही। फरसा रखने वाला।

परसुरांम–पु० [सं० परशुराम] जमदग्निनन्दन परशुराम।

परसुवन–पु० [सं० परशुवन] एक नरक का नाम।

परसुं–क्रि० [वि० सं० परश्वः] गत दिन से पहले, आगामी दिन के बाद। –पु० गत दिन से पहले व आगामी दिन के बाद का दिन।

परसूत–देखो 'प्रसूत'।

परसून–देखो 'प्रसून'।

परसेद, परसेदो–देखो 'प्रस्वेद'।

परस्पर–क्रि० वि० [सं०] आपस में, एक दूसरे के साथ।

परस्सणो (बो)–देखो 'परसणो' (बो)।

परस्सो–१ देखो 'फरसो'। २ देखो 'परसुरांम'।

परहंस–स्त्री० १ पराजय, हार। २ देखो 'परमहंस'।

परहुत–अव्य० [सं० परतस्] १ दूसरे से। २ शत्रु से। ३ आगे, परे, पीछे, ऊपर। ४ दूर, अलग। ५ अन्यथा, नहीं तो। ६ भिन्न प्रकार से। ७ बाद को, और आगे। [सं० प्राक्] ८ पहले। ९ आरंभ में, हाल ही में। १० पूर्व में। ११ पूर्व दिशा में। १२ सामने। १३ जहां तक हो वहां तक।

परहरणो, (बो)–क्रि० [सं० परिहरणम्] १ छोड़ना, त्यागना। २ आगे बढ़ना, आगे चलना। ३ भाग जाना। ४ नष्ट करना, मिटाना, हटाना। ५ छीनना, झपटना। ६ मुक्त होना, छूटना।

परहा–वि० [सं० परस्मिन्] १ दूर, पृथक, अलग। २ नष्ट, बर्बाद।

परही–क्रि० वि० [सं० परस्मिन] परे, दूर, अतिदूर

परहुणी–स्त्री० १ लगन, चाह। २ उत्साह।

परहेज– पु० [फा०] १ कुपथ्य का त्याग। २ संयम, पथ्य। ३ बुरी बातों से बचाव। —गार–वि० पथ्य रखने वाला, संयमी। बुरी बातों से दूर रहने वाला। —गारी– स्त्री० परहेज रखने की क्रिया या भाव।

परहेरो–क्रि० वि० पृथक, अलग, दूर।

परहो–देखो 'परो'।

परां–क्रि० वि० १ ऊपर। २ पूर्व, पहले। ३ उस ओर। ४ देखो 'परसू'।

परांखणो (बो)–देखो 'प्रांखणो' (बो)।

परांण–१ देखो 'प्रयांण'। २ देखो 'प्रांण'। ३ देखो 'पुरांण'।

परांणउ–वि० [सं० प्राण] बलवान, शक्तिशाली।

परांणि, परांणी–स्त्री० [सं० प्रेरणिका] १ बैलों को हांकने की लकड़ी। २ देखो 'प्रांणी'। –क्रि० वि० [सं० प्राण] बलात्, बलपूर्वक।

परांत–स्त्री० फसल की पंक्तिबद्ध कटाई या गुड़ाई करने का क्रम।

पराँथठो–पु० [सं० प्रोत्या] घी या तेल में तल कर सेकी हुई रोटी।

परा–अव्य० [सं०] एक अव्यय शब्द जो दूर, पीछे, एक तरफ, ओर आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है। –स्त्री० १ चार प्रकार की वाणियों में से एक। २ ब्रह्म विद्या। ३ एक प्रकार का साम-गान। ४ गंगा नदी का एक नाम।

पराई–देखो परायी'।

पराए–क्रि० वि० दूर पृथक, अतिदूर।

पराका–स्त्री० [सं०] ध्वजा, पताका।

पराकास्टा, पराकास्ठा, पराकोटी–स्त्री० [सं० पराकाष्ठा] १ चरम सीमा, हद। २ ब्रह्मा की आधी आयु।

पराकृत–देखो 'प्राकृत'।

पराकृति, पराकृती–देखो 'प्राकृतिक'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पराक्रम (म्म)–पु० [सं०] १ बल, शक्ति। २ साहस, हिम्मत। उद्योग, पुरुषार्थ। —**वत**–वि० वीर, बहादुर, साहसी, शक्तिशाली, पुरुषार्थी।

पराक्रमी–वि० [सं०] १ बलवान, शक्तिशाली। २ साहसी। ३ पुरुषार्थी।

पराखाड–पु० [सं० परासाड] इन्द्र।

पराग–पु० [सं०] १ पुष्प रज। २ धूल, रज। ३ चन्दन। ४ कीर्ति, ख्याति।

परागकेसर–पु० [सं०] फूलों के बीच के तंतु।

परागवड़–देखो 'प्रयागवड़'।

पराघड–क्रि० वि० [सं० पराग्रक] दूर।

पराचत–देखो 'प्राछत'।

पराचित, पराचिति–पु० [सं० पर-प्राचित] १ नौकर, भृत्य। २ देखो 'प्राछत'।

पराचीन–देखो 'प्राचीन'।

पराचीपति–देखो 'प्राचीपति'।

पराछत, पराछित, पराछीत–देखो 'प्राछत'।

पराज–स्त्री० तलवार का एक भाग।

पराजय–स्त्री० [सं०] हार, शिकस्त, असफलता।

पराजित–वि० [सं०] हारा हुआ, परास्त।

पराजै–देखो 'पराजय'।

पराणी (बी)–क्रि० [सं० प्रावृष] गाय, भैंस आदि के स्तनों में दूध उतरना।

परात–स्त्री० [सं० पात्र] आटा गूंदने की बड़ी थाली। –वि० [फा० परास्त] हारा हुआ, पराजित।

परातणी (बी)–क्रि० हारना, पराजित होना।

परातिपरि, परात्पर–वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट। –पु० १ परमात्मा। २ विष्णु।

पराथ–देखो 'पारथ'।

परावत–पु० [सं०] फारस का घोड़ा विशेष।

पराधीन–वि० [सं०] १ दूसरों का वशवर्ती। २ परवश, परतंत्र।

पराधीनता–स्त्री० [सं०] १ परवशता, परतंत्रता। २ दूसरों की अधीनता।

परापत–देखो 'प्राप्त'।

परापति, परापती–देखो 'प्राप्ति'।

परापर, परापरी–पु० [सं०] १ एक फल विशेष, फालस। २ देखो 'परंपरा'।

पराभव–स्त्री० [सं०] १ ध्वंस, नाश, संहार। २ पराजय, हार। ३ अवनति। ४ तिरस्कार, अपमान। ५ वियोग।

पराभवणो (बो)–क्रि० पराजित होना, तिरस्कृत होना।

पराभूत–वि० [सं०] १ ध्वस्त, नष्ट। २ पराजित, परास्त। ३ अवनत। ४ तिरस्कृत, अपमानित।

पराभरस–पु० [सं० परामर्श] १ सलाह, राय। २ विवेचन, विचार।

पराभुख–पु० [सं० पराङ्-मुख] कवि निबद्ध पात्र प्रौढ़ोक्ति। –वि० विरुद्ध, विमुख।

परायड–देखो 'परायो'

परायचित–देखो 'प्राछत'।

परायण–वि० [सं०] १ निरत, लीन, प्रवृत्त। तत्पर। २ निष्ठ। ३ देखो 'पारायण'।

परायो–वि० (स्त्री० पराई) १ अन्य, दूसरा। २ जो घर का, परिवार का न हो।

परारंभ–देखो 'प्रारंभ'।

परार–अव्य० [सं० परारि] गत वर्ष से पूर्व। –पु० गत वर्ष से पूर्व का वर्ष।

परारथ–पु० [सं० परार्थ] परोपकार, दूसरों का उपकार।

पराळ–पु० [सं० पलाल:] १ चावलों की भूसी। २ घास का छोटा पुलिंदा। ३ भूसा, घास। ४ जंजाल, प्रपंच।

पराळी–वि० प्रचंड, तेज।

पराळु, पराळू–स्त्री० [सं० पल्लवित] १ बोवाई के बाद, वर्षा होने से पहले उगजाने वाली खरीफ। २ देखो 'पराळ'।

परावणी (बी) देखो 'पराणी' (बी)।

परावत–देखो 'पारावत'।

परावध, परावधी–स्त्री० [सं० परावधि] १ सीमा, छोर, हद। २ अंतिम सीमा। ३ चरमोत्कर्ष।

परावह–पु० [सं०] वायु के सात भेदों में से एक।

परासकंद, परासकंदी, परासकंधी–वि० [सं० परास्कंदित] चोर, तस्कर।

परासर–पु० [सं० पराशर] १ वेदव्यास के पिता एक ऋषि। २ आयुर्वेदाचार्य एक ऋषि। ३ वशिष्ठ एवं शक्ति के पुत्र एक गोत्रकार ऋषि। ४ एक प्रसिद्ध स्मृतिकार ऋषि। ५ पाराशर संहिता के रचयिता एक ज्योतिषाचार्य। ६ एक एक अष्टापद जानवर। ७ हिंसक वन्य पशु।

परासु–वि० [सं०] प्राणहीन, मृत।

परास्त–वि० पराजित, हारा हुआ।

परास्रय–पु० [सं० पराश्रय] दूसरों का आश्रय, पराधीनता।

परि–देखो 'परि'।

परिडो–देखो 'परींडो'।

परिंदो–पु० [फा० परिन्द] पक्षी।

परि–उप० किसी शब्द के आगे लगकर अर्थ वृद्धि करने वाला एक उपसर्ग। –क्रि० वि० १ ऊपर, पर। २ ज्यों, मानो, जैसे। ३ परन्तु, किन्तु। ४ कर। –वि० १ समान। २ देखो 'परी'। ३ देखो 'परी'। –स्त्री० १ प्रकार, तरह रीति। २ देखो 'पग'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिग्रच, परि ग्रचि, परिग्रछ–स्त्री० पर्दा ।

परिग्रांण–१ देखो 'परियाण' । २ देखो 'प्रयाण' ।

परिग्रात्मा–देखो 'परमात्मा' ।

परिकर–पु० [सं०] १ परिवार, कुटुम्ब । २ लवाजमा । ३ दल, समूह, सेना । ४ अनुचर, सेवक । ५ वैभव । ६ कमर बंद, पटुका । ७ पर्यंक, पलंग । ८ फैसला, निर्णय । ९ एक अर्थालंकार ।

परिकराकुर–पु० [सं०] एक प्रकार का अर्थालंकार ।

परिकास–देखो 'प्रकास' ।

परिक्कम–देखो 'पराक्रम' ।

परिक्कमी–पु० [सं० परिक्रमः] १ भ्रमण । २ फेरी । ३ चारों ओर घूमना क्रिया । ४ क्रम, सिलसिला । ५ एक के पीछे एक दूसरे का गमन । –वि० टहलनेवाला ।

परिक्खणी (बी)–देखो 'परखणी' (बी) ।

परिक्खिय–देखो 'परीक्षित' ।

परिक्खिवि–देखो 'परिसव' ।

परिक्कमणा, परिक्कमा, परिक्कम्मा–स्त्री० [सं० परिक्रमा] १ किसी देव मूर्ति, देवालय आदि के चारों ओर घूमने की क्रिया । २ किसी तीर्थ या क्षेत्र विशेष के चारों ओर की फेरी ।

परिक्षा, परिख–देखो 'परीक्षा' ।

परिक्खणी–वि० परीक्षा या जांच करने वाला ।

परिखणी (बी)–देखो 'परखणी' (बी) ।

परिखा, परिख्या–स्त्री० १ किसी शहर की पनाह के बाहर बनी मोटी खाई । २ देखो 'परीक्षा' । –वि० असीम, अपार ।

परिख्यण–वि० [सं० परीक्षणम्] परीक्षा करने वाला ।

परिख्यात–देखो 'प्रख्यात' ।

परिगणन, परिगणना–स्त्री० [सं०] ठीक प्रकार से की गई गणना, गिनती ।

परिगणित–वि० [सं०] १ ठीक से गिना हुआ । २ कथित ।

परिगत–वि० [सं०] १ बीता हुआ, गत । २ विस्मृत । ३ मरा हुआ । ४ घेरा हुआ, वेष्टित । ५ समझा हुआ, ज्ञात । ६ ढका हुआ, आच्छादित । ७ पाया हुआ, प्राप्त ।

परिगर–पु० १ मूर्ति के आस-पास का कोतरणी (नक्काशी) का परिवेश । २ देखो 'परिकर' ।

परिगरि–देखो 'परिकर' ।

परिगह, परिगहि–देखो 'परिग्रह' ।

परिगूढ–वि० [सं०] अतिगूढ़, रहस्यमय ।

परिग्गह–देखो 'परिग्रह' ।

परिग्यांण, परिग्यान–पु० [सं० परिज्ञान] किसी विषय का पूर्ण व सम्यक ज्ञान ।

परिग्रह, परिग्रहो–पु० [सं० परिग्रह] १ वस्तु या धन का संग्रह । २ परिजन, परिवार । ३ चाकर, सेवक । ४ स्वीकृति । ५ दान । ६ पकड़ । ७ प्राप्ति, उपलब्धि । ८ धन, दौलत । ९ सेना, फौज । १० अन्तःपुर, रनवास । ११ सूर्य या चन्द्र ग्रहण । १२ कलंक, दोष, पाप । १३ घिराव । १४ पकड़ । १५ पहुनाई । १६ शपथ । १७ अनुग्रह । १८ पूर्णता । १९ विष्णु का एक नामान्तरण । २० जड़, मूल ।

परिघ, परिघन–पु० [सं० परिघः] १ एक आयुध विशेष । २ ज्योतिष के २७ योगों में से १९ वां ।

परिघरउ–देखो 'परिग्रह' ।

परिघल–देखो 'परगळ' ।

परिघात–पु० [सं०] १ वध, हत्या । २ हनन । ३ डंडा, लुहांगी । ४ छुटकारा ।

परिघोस–पु० [सं० परिघोष] १ मेघ की गर्जना । २ कोई घोषणा । ३ अनुचित कथन । ४ शोर, हल्ला ।

परिघ्घन–देखो 'परिघ' ।

परिचउ, परिचय–पु० [सं० परिचय] १ जान-पहचान । २ जानकारी, ज्ञान । ३ प्रमाण । ४ अनुभव ।

परिचत–वि० [सं० परित्यक्त] परित्यक्त ।

परिचर–पु० [सं०] १ नौकर, चाकर, सेवक । २ अनुयायी । ३ चौकीदार ।

परिचायक–वि० [सं०] परिचय कराने वाला, परिचय देने वाला, द्योतक ।

परिचार–पु० [सं०] १ सेवा, टहल । २ देखो 'प्रचार' ।

परिचारक, परिचारिक–पु० [सं०] सेवक, अनुचर, दास, अनुयायी ।

परिचारी–पु० [सं० परिचारिन्] सेवक, अनुचर ।

परिचालक–वि० [सं०] १ चलाने वाला । चलने की प्रेरणा देने वाला । २ कार्य चलाने वाला । ३ गाड़ी का चालक, (ड्राईवर) ।

परिचावणी (बी)–क्रि० फुसलाना, ललचाना ।

परिचित–वि० [सं०] जाना-पहचाना, जिसका परिचय प्राप्त हो ।

परिची–देखो 'परची' ।

परिच्छेव–पु० ग्रंथ या पुस्तक का अध्याय, प्रकरण । विभाग ।

परिच्छेय–वि० १ गिनने, नापने या तोलने योग्य । २ बांटने या विभक्त करने योग्य ।

परिछंदौ–पु० परिवार ।

परिछन–देखो 'परछन' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिछेव–देखो 'परिच्छेद' ।

परिजंक–देखो 'परयंक' ।

परिजन–पु० [सं०] १ परिवार, कुटुम्ब । २ परिवार के सदस्य । ३ अनुचर, अनुयायी । ४ आश्रित जन । ५ देखो 'परजन' ।

परिजनता–स्त्री० [सं०] परिजन होने की अवस्था या भाव ।

परिजळणी (बो)–देखो 'प्रजळणी' (बो) ।

परिजात–वि० वीर रस पूर्ण कविता ।

परिजात–वि० [सं०] १ उत्पन्न, जन्मा हुआ । २ देखो 'पारिजात' ।

परिजाळणी (बो)–देखो 'प्रजाळणी' (बो) ।

परिणणी (बो)–क्रि० विवाह करना, शादी करना ।

परिणत–वि० [सं०] बदला हुआ, रूपान्तरित, स्थानान्तरित ।

परिणति–स्त्री० [सं०] १ अवनति । २ रूपान्तरण । ३ परिवर्तन । ४ पूर्णता । ५ परिणाम । ६ अन्त । ७ अवसान, मृत्यु । ८ पकावट । ९ नमन, झुकाव । –पु० १० तिरछी चोट करने वाला हाथी ।

परिणय, परिणयण (न)–पु० [सं० परिणयः] १ विवाह, शादी । २ लग्न ।

परिणाणी (बो)–देखो 'परणाणी' (बो) ।

परिणामदस्सी–वि० [सं० परिणामदर्शिन्] दूरदर्शी, सूक्ष्मदर्शी ।

परिणिति–स्त्री० १ प्रवृत्ति । २ देखो 'परिणति' ।

परित्ताण–देखो 'परित्राण, ।

परिताप परितापन–पु० [सं० परितापः] पश्चाताप, संताप, कष्ट ।

परितापी–वि० १ पश्चाताप करने वाला, दुःखी । २ दुःख दायी ।

परितुस्ट–वि० [सं० परितुष्ट] संतुष्ट, प्रसन्न ।

परितुस्टि–स्त्री० [सं० परितुष्टि] संतोष, प्रसन्नता ।

परितोख–देखो 'परितोस' ।

परितोम–पु० खोल, गिलाफ ।

परितोस–पु० [सं० परितोष] संतोष, प्रसन्नता ।

परितोसक–पु० [सं० परितोषक] संतुष्ट करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

परितोसी–वि० [सं० परितोषिन्] संतोषी, सब्रवाला ।

परित्त–वि० चारों ओर ।

परित्यज्य–वि० [सं०] त्यागने योग्य, छोड़ने योग्य ।

परित्यागी–पु० [सं०] छोड़ने का भाव, त्याग ।

परित्यागी–वि० [सं०] छोड़ने वाला, त्यागी ।

परित्रप्त–वि० [सं० परितृप्त] अघाया हुआ, संतुष्ट ।

परित्राज–पु० [सं० परित्राणम्] रक्षा, बचाव ।

परिदक्खिण, परिदक्खिणा, परिदखणा, परिदखिणा–देखो 'प्रदक्षिणा' ।

परिदरसण (न)–पु० [सं० परिदर्शन] अवलोकन, ध्यानपूर्वक देखना क्रिया ।

परिदळ–पु० शत्रु, शत्रु दल ।

परिध–पु० [सं० परिधि] १ गढ़, किला । २ देखो 'परिधि' ।

परिधन, परिधान–पु० [सं० परिधान] पहनने का वस्त्र, पोशाक ।

परिधि–स्त्री० [सं०] १ किसी वृत्त की सीमा, गोलाई, घेरा । २ आहता, घेरा । ३ दीवार । ४ सूर्यमण्डल का घेरा । ५ प्रकाश का घेरा । ६ किसी ग्रह की कक्षा ।

परिनाळ–देखो 'परनाळ' ।

परिनिस्ठा–पु० [सं० परिनिष्ठा] १ चरम सीमा, पराकाष्ठा । २ पूर्णज्ञान या परिचय । ३ पूर्णता ।

परिन्यास–पु० [सं०] किसी काव्य का वह स्थल जहां कोई विशेष अर्थ पूरा हो ।

परिपक्व–वि० [सं०] १ पूर्ण पका हुआ । २ पूर्ण विकसित । ३ निपुण ।

परिपण–पु० [सं०] मूल धन, पूंजी ।

परिपाक– पु० [सं०] १ पकने या पचने का भाव । २ पूर्णता । ३ निपुणता । ४ पाचन शक्ति । ५ पकना क्रिया । ६ फल, परिणाम । ७ चालाकी ।

परिपाटि, परिपाटी–स्त्री० [सं०] १ प्रणाली, शैली । २ परंपरा, रीति । ३ प्रचलन ।

परिपाळग–पु० [सं० परिपालक] पालन करने वाला, पालन कर्त्ता ।

परिपाळणी (बो)–क्रि० [सं० परिपालम्] पालन-पोषण करना, रक्षा करना ।

परिपीड़ण–पु० [सं० परिपीडनम्] दुःख, पीड़ा, कष्ट ।

परिपुसट, परिपुस्ट–वि० [सं० परिपुष्ट] भली भांति पोषित, पूर्ण हृष्ट-पुष्ट, मोटा ताजा ।

परिपूजण–पु० [सं० परिपूजनम्] विधिवत पूजा व उपासना की क्रिया ।

परिपूजणी (बो)–क्रि० [सं० परिपूजनम्] परिपूर्ण करना, सन्तुष्ट करना ।

परिपूर, परिपूरण–वि० [सं० परिपूर्ण] १ सम्पूर्ण, पूरा । २ पूर्ण भरा हुआ । ३ लबालब । ४ संतुष्ट, तृप्त ।

परिपोटक, परिपोटिक–पु० [सं० परिपाटक] कान का एक रोग विशेष ।

परिप्रोछक–वि० [सं० परिपृच्छक] जिज्ञासा करने वाला । जिज्ञासु ।

परिबंधन–पु० [सं] बंधन, कठोर बंधन ।

परिबह–पु० [सं० परिबर्ह] १ राजा के हाथी या घोड़े की झूल । २ राजा के छत्र, चंवर आदि ।

परिबार–देखो 'परिवार' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिबह्म–देखो 'परब्रह्म' ।

परिभव, परिभवण, परिभाव–पु० [सं० परिभावन] १ पराजय, हार । २ तिरस्कार, अपमान । अनादर ।

परिभासा–स्त्री० [सं० परिभाषा] १ किसी विषय या सिद्धान्त का परिचयात्मक वाक्य, अर्थ कथन । २ स्पष्ट कथन । ३ किसी ग्रंथ, शास्त्र आदि की विशिष्ट संज्ञा ।

परिभ्रत–देखो 'परभ्रत' ।

परिभ्रमण–पु० [सं०] १ घुमाव, चक्कर, फेरी । २ यात्रा, पर्यटन । ३ पद यात्रा ।

परिमंडल–पु० [सं०परिमंडलम्] १ फेरा, चक्कर । २ वृत्त, घेरा ।

परिमल–स्त्री० [सं० परिमल] सुगंध, सुवास ।

परिमाण–पु० [सं० परिमाण] नाप, तौल ।

परिमित–वि० [सं०] सीमित, नपा तुला ।

परिम्मल–देखो 'परिमल' ।

परियंक, परियंका–पु० [सं० पर्यंक] पलंग, शय्या ।

परिवट्ट–पु० [सं० परिवर्त] परिवर्तन दोष (जैन)

परियण–पु० [सं० प्रणय] १ प्रेम । २ देखो 'परिजन' ।

परियणो (बो)–क्रि० [सं० परित्यागम्] छोड़ना, परित्याग करना ।

परियं–पु० [सं० परिजन] पूर्वज ।

परियांण–पु० १ वंश, कुटुम्ब । २ पंथधारी । ३ कीर्ति, यश । ४ पर्यटन, भ्रमण । ५ सूर्योदय के समय पुकारी जाने वाली पूर्व व आग्नेय के बीच की दिशा । ६ देखो 'प्रयांण' ।

परिया–क्रि० वि० १ उस तरफ, उस ओर । २ दूर, अलग । ३ परे । ४ देखो 'प्रजा' ।

परियागत–देखो 'प्रियगत' ।

परियाणो (बो)–क्रि० जाना, गमन करना ।

परियावट–वि० पूर्वकृत ।

परियावळी–स्त्री० [सं० पूर्वज-अवली] वंशावली । वंश-वृक्ष ।

परियास–पु० [सं० प्रकाश] १ प्रकाश । २ देखो 'प्रयास' ।

परिरंभ–पु० [सं०] १ आलिंगन । २ गले मिलन ।

परिरोध–पु० [सं०] अवरोध, रुकावट ।

परिलंघन–पु० [सं०] लांघना क्रिया, कूद-फांद ।

परिलाप–पु० [सं० प्रलाप] आक्रंद, प्रलाप ।

परिलुप्त–वि० १ नष्ट । २ क्षतिग्रस्त ।

परिलेख–पु० [सं० परिलेखः] ढांचा, खाका ।

परिलोप–पु० [सं० परिलोप] विलोप, नाश ।

परिवउ–स्त्री० [सं० प्रतिपदा] प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि ।

परिवत्सर–पु० [सं०] पंचवर्षीय युग का दूसरा वर्ष ।

परिवरणो (बो)–क्रि० १ आना, आगमन होना । २ आवेष्टित होना, घिर जाना । ३ देखो 'परवरणो' (बो) ।

परिवरत–पु० [सं० परिवर्त] १ घुमाव, चक्कर, फेरा, फिराव । २ विनिमय, अदल-बदल । ३ किसी काल या युग का अंत । ४ प्रलय, नाश । ५ परिवर्तन । ५ मृत्यु के पुत्र दुस्सह के पुत्रों में से एक ।

परिवरतक–वि० [सं० परिवर्तक] १ उलट-पुलट करने वाला, परिवर्तन करने वाला । २ घूमने वाला, फिरने वाला । ३ युग का अंत करने वाला । ४ प्रलय करने वाला ।

परिवरतन–पु० [सं० परिवर्तन] १ अदल-बदल, हेर-फेर । २ उलट-पुलट । ३ आवर्तन, चक्कर । ४ शृंगार का एक आसन । ५ युग का अन्त, काल का अंत ।

परिवह–पु० [सं०] १ सात प्रकार के पवनों में से एक । २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

परिवांण–देखो 'प्रमांण' ।

परिवड़ि, परिवाड़ी–देखो 'परिपाटी' ।

परिवाद–पु० [सं०] १ दोष-कथन । २ निंदा । ३ तार वाद्य बजाने का छल्ला ।

परिवादक–पु० [सं०] निंदा करने वाला व्यक्ति । निंदक ।

परिवादणी–स्त्री० [सं० परिवादिनी] सात तारों वाली वीणा ।

परिवादी–वि० [सं०] अपवादी, निंदक । विरोधी ।

परिवापण–स्त्री० [सं० परिवापन] हजामत ।

परिवार, परिवारि, परिवारी, परिवारो–पु० [सं० परिवारः] १ कुटुम्ब, घर के लोग । २ एक ही पिता या दादा की संतान । ३ वंश । ४ तलवार की म्यान, कोष । ५ अनुचर वर्ग । ६ आश्रित जन ।

परिवारणो (बो)–पु० [सं० परिवारणम्] चारों ओर से आवेष्टित होना, घेरा जाना ।

परिवाह–पु० [सं०] १ पानी बहने की नाली, मोरी । २ कुण्ड व जलाशयों में सीमा से अधिक पानी भरने पर निकास की नाली, रास्ता, ओटा ।

परिवेख–देखो 'परिवेस' ।

परिवेदन–पु० [सं०] पूरा ज्ञान, सम्यक ज्ञान ।

परिवेस–पु० [सं०परिवेश] १ घेरा, वृत्त, परिधि । २ प्रकाश का वृत्त ।

परिवेसण–पु० [सं० परिवेषण] परसना, परोसना ।

परिवेस्टन–पु० [सं० परिवेष्टन] १ दायरा, घेरा । २ वेष्टन क्रिया ।

परिव्रज्या–स्त्री० [सं०] १ भिक्षुक की तरह भ्रमण । २ परिभ्रमण । ३ तपस्या ।

परिव्राज, परिव्राजक–पु० [सं०] (स्त्री० परिव्राजिका) १ सदा भ्रमण करने वाला संन्यासी । २ यती, परमहंस । ३ तपस्वी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिसंख्या–पु० [सं० १ गणना, गिनती। २ एक अर्थालंकार विशेष।

परिसद, परिसदा–पु० [सं० परिषद्] १ सभा, समिति। २ सदस्य, मण्डली।

परिसन–पु०[सं०]१ सामीप्य, पास। पड़ोस। २ सीमा, किनारा। ३ परिधि। ४ चौड़ाई, अरज। ५ मृत्यु। ६ नियम, आज्ञा। ७ आहता।

परिसरण–क्रि० [सं० स्पर्शनम्] छूना, स्पर्श करना।

परिसह, परिसहा, परिसा–पु० [सं० परिषह] संयम च्युत साधु द्वारा किये जाने वाले २२ प्रायश्चित।

परिसिद्ध–देखो 'प्रसिद्ध'।

परिसिष्ट–वि० [सं० परिशिष्ट] छूटा हुआ, अवशिष्ट। –पु० १ किसी विषय, ग्रंथ या रचना का छूटा हुआ भाग जो अतिरिक्त अध्याय के रूप में अंत में जोड़ा जाता है। २ किसी विषय से संबंधित अतिरिक्त विवरण।

परिसीलन–पु० [सं० परिशीलन] मनन पूर्वक अध्ययन।

परिसोधन–पु० [सं० परिशोधन] १ किसी पदार्थ को शुद्ध करने की क्रिया। २ सफाई, स्वच्छता। ३ चुकारा, निपटारा।

परिसौ–देखो 'परिसह'।

परिस्तान–पु० [फा०] १ परियों का लोक, देश। २ सुन्दर स्त्रियों वाला क्षेत्र।

परिस्कृत–वि० [सं० परिष्कृत] शुद्ध व विकसित किया हुआ।

परिस्रम–पु० [सं० परिश्रम] श्र , मेहनत, उद्यम।

परिस्रमी–वि० [सं० परिश्रमिन्] उद्यमी, मेहनती।

परिस्राव–पु० [सं०] एक रोग। विशेष

परिहंस–देखो 'परहंस'।

परिहंसणो (बो)–क्रि० हंसना, परिहास करना।

परिहण–देखो 'पहरण'।

परिहरणी, (बो)–देखो 'परहरणो' (बो)।

परिहां–देखो 'परियां'।

परिहांण–देखो 'पहरण'।

परिहार–पु०१त्यागना, छोड़ना क्रिया, त्याग। २ देखो 'प्रतिहार'।

परिहास–पु० [सं०] हंसी, दिल्लगी, मजाक।

परींडो–पु० घर का वह स्थान जहां पीने के पानी के पात्र रहते हैं।

परी–स्त्री० [फा०] १ अप्सरा। २ कंधों पर परों वाली कल्पित सुन्दर स्त्रियां। ३ एक पुष्प। ४ एक प्रकार का बाण। –पु० शत्रु, विरोधी।

परीयां–देखो 'परियां'।

परीकर–देखो 'परिकर'।

परीक्षणो (बो)–देखो 'परखणो' (बो)।

परीक्षक–पु० [सं०] (स्त्री० परीक्षिका) १ परीक्षा करने वाला, जांच करने वाला। २ उत्तर पुस्तिका की जांच करने वाला।

परीक्षत–देखो 'परीक्षित'।

परीक्षा–स्त्री० [सं०] १ गुण-दोष व योग्यता की जांच। २ पढ़ाई का इम्तिहान।

परीक्षित–वि० [सं०] जांचा हुआ, जांच किया हुआ। –पु० अर्जुन का पौत्र व अभिमन्यु का पुत्र, एक राजा।

परीख–स्त्री० १ इच्छा। २ देखो 'परीक्षा'।

परीक्षण–देखो 'परीक्षण'।

परीक्षणो (बो)–देखो 'परखणो' (बो)।

परीखत–देखो 'परीक्षित'।

परीख्या–देखो 'परीक्षा'।

परीघणो–पु० रहट में लगने वाला लकड़ी का एक लट्ठा।

परीछणो (बो)–देखो 'परखणो' (बो)।

परीछाणो (बो), परीछावणी(बो)–देखो 'परखाणो' (बो)।

परीणत–देखो 'परिणति'।

परीत–देखो 'प्रीति'।

परीतो–पु० रहट का एक उपकरण।

परीभव–देखो 'पराभव'।

परीरम्भ–देखो 'परिरम्भ'।

परीमप्प–पु० आकाश, आसमान।

परीमोड–पु० एक प्रकार का व्यंजन।

परीयच्चय–पु० आंचल।

परीयछ, परीयछि–स्त्री० १ पर्दा। २ दरी, जाजम। ३ बिछायत।

परीयणि–देखो 'परिजन'

परीवाडीदोस–पु० भोजन की पंक्ति को छोड़कर भोजन करने पर लगने वाला दोष। (जैन)

परीवारू–देखो 'परिवार'।

परीसउ–देखो 'परिसह'।

परीसणो (बो)–क्रि० परोसना।

परीसदा–देखो 'परिसद'।

परीसह, परीसा–देखो 'परिसह'।

परीसौ–देखो 'परिसह'।

पलतसार–पु० एक पौराणिक राजा।

पलस–वि० [सं०परुष] १ कठोर, कड़ा, ठोस, सख्त। २ कर्कश। ३ अप्रिय, बुरा। –पु० बाण, तीर।

पलसणो (बो)–क्रि० १ क्रोध करना (जैन)। २ देखो 'पुरसणो' (बो)।

पलसारो–देखो 'पुरसगारो'।

पक्साणो (बो)–देखो 'पुरसाणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पल्लसावणो (बो)–देखो 'पुरसाणो' (बो)।

पल्लो–पु० आमंत्रित व्यक्ति के न आ सकने की दशा में उसके घर भेजा जाने वाला भोजन का थाल।

परेंडो–देखो 'परींडो'।

परे–अव्य० १ भांति, तरह। २ दूर। ३ देखो 'परै'।

परेख–स्त्री० १ कील, मेख। २ देखो 'परीक्षा'।

परेखणो (बो)–देखो 'परखणो' (बो)।

परेग–स्त्री० कील।

परेच–देखो 'परीयच्छ'।

परेज–देखो 'परहेज'।

परेत–देखो 'प्रेत'।

परेतपत (पति, पती)–देखो 'प्रेतपति'।

परेम–स्त्री० [सं० परिमल] १ सुगन्ध, सुवास। २ देखो 'प्रेम'।

परेमी–देखो 'प्रेमी'।

परेरउ–वि० १ पराया, दूसरे का, अन्य का। २ देखो 'परै'।

परेरणा–देखो 'प्रेरणा'।

परेलो–पु० ताण्डव नृत्य का प्रथम भेद।

परेवो–१ देखो 'पारेवो'। २ देखो 'परसेवो'।

परेस–देखो 'प्रेस'।

परेसांन–वि० [फा० परेशान] व्यग्र, उद्विग्न, व्याकुल, हैरान।

परेसांनी–स्त्री० [फा० परेशानी] उद्विग्नता, व्याकुलता, बेचैनी।

परै, परै–पु० १ प्रकार, तरह, भांति। २ सामने वाला दूसरा पार्श्व। –क्रि०वि० १ अलग, दूर। २ उस ओर, उधर। ३ ऊपर, पर।

परैज–देखो 'परहेज'।

परैरो–वि० (स्त्री० परैरी) दूर, अति दूर।

परैलु–वि० (स्त्री० परैली) परली तरफ का, दूसरी ओर का।

परैसूं–अव्य० [सं० परस्तात्] उस ओर से, दूसरी ओर से।

परोंणी–देखो 'परांणी'।

परोंस–स्त्री० फसल की कटाई का क्रम।

परोक्ष–पु० [सं०] १ अनुपस्थिति। २ अभाव। ३ छिपाव।

परोजन–देखो 'प्रयोजन'।

परोजो–देखो 'फिरोजो'।

परोटणो (बो)–क्रि० १ उपभोग करना, इस्तेमाल करना। २ निभाना, निर्वाह करना। ३ सम्हलाना। ४ सुधारना। ५ देखभाल करना, हिफाजत करना।

परोत्तर–देखो 'प्रत्युत्तर'।

परोपंखो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

परोपकार–पु० [सं०] दूसरों की भलाई का कार्य।

परोपकारक–वि० [सं०] दूसरों की भलाई करने वाला।

परोसणो (बो)–देखो 'पुरसणो' (बो)।

परोहन–पु० [सं० प्ररोहण] १ नाव, नौका। २ वह वस्तु जिस पर सवार हो कर यात्रा की जाय। सवारी

परो–पु० (स्त्री० परि) १ निश्चय एवं पूर्णता बोधक शब्द जो सदैव क्रिया से संबंधित रहता है। २ मृत व्यक्ति जो देव योनि में मान कर पूजा जाता है। ३ पितर। –अव्य० दूर अलग, परै।

पर्याय–पु० [सं० पर्याय] १ समानार्थक शब्द। २ द्रव्य और गुणों में रहने वाली अवस्था।

पर्यूसण (न)–देखो 'परयूसण'।

पलंक–देखो 'पलंग'।

पलंकसा–स्त्री० [सं० पलंकषा] १ लाख, लाक्षा। २ गूगल। ३ गोखरू।

पलंग–पु० [सं० पल्यंक] १ चारपाई, खाट। २ शय्या, सेज। ३ प्लव, गति। ४ एक प्रकार का घोड़ा। **–तोड़**–वि० निठल्ला, निकम्मा। –स्त्री० एक औषधि विशेष। **–पोस**–पु० चारपाई पर बिछाने की चादर।

पलंगि–देखो 'पलंग'।

पलंडु–देखो 'पलांडु'।

पलंब–१ देखो 'प्लवंग'। २ देखो 'प्रलंब'।

पलंबंग–देखो 'प्लवंग'।

पळ, पल–पु० [सं० पल] १ मांस। २ समय का एक बहुत छोटा विभाग। क्षण। ३ आंख की पलक।

पलक–स्त्री० [सं०] १ आंख के ऊपर का अवयव जो गिरता उठता रहता है। २ पल क्षण।

पळकणो (बो)–क्रि० चमकना, टिमटिमाना।

पळकाणो (बो)–क्रि० चमकाना।

पलकारणो (बो)–क्रि० टपकाना, गिराना।

पळकावणो (बो)–देखो 'पळकाणो' (बो)।

पळको–पु० चमक।

पलक्क–देखो 'पलक'।

पलखद्वीप–पु० [सं० प्लक्षद्वीप] पृथ्वी के सात बड़े खण्डों में से एक।

पळगांण–पु० पक्षी।

पलड़ो–पु० १ तराजू का पल्ला, तुलापाट। २ झूले का मंच।

पळचर, पळचार, पळचारी, पळचारो, पळच्चर–पु० [सं०पलचर] १ मांसाहारी प्राणी। २ रक्त प्रिय एक देवता।

पलट–स्त्री० १ अधोवस्त्र का झोला। २ अंडी।

पलटण–स्त्री० १ पैदल सेना का एक विभाग, सेना की टुकड़ी। २ दल, समूह, झुण्ड।

पलटणो (बो)–क्रि० [सं० प्रलोठन] १ किसी स्थिति का बदलना, विपरीत दशा होना। २ कह कर इन्कार कर देना, मुकरना। ३ अधिकार से हटना, छूट जाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ विरुद्ध होना, विमुख होना। ५ उलटना, औंधा होना। ६ लौटना, वापिस होना। ७ अवस्था या दशा बदलना। ८ स्वभाव बदलना, मनोदशा बदलना। ९ मूल वस्तु के स्थान पर दूसरी आना। १० उलटना, बदलना। ११ आगे पीछे या ऊपर-नीचे करना। १२ लौटाना, मोड़ना। १३ घुमाना, मोड़ना। १४ रूप परिवर्तन करना। १५ स्थान परिवर्तन करना।

पलटाणी (बो)–क्रि० १ किसी स्थिति को बदल देना, विपरीत दशा करना। २ मुकरा देना, इन्कार करा देना। ३ अधिकार से हटा देना, छुड़वा देना। ४ विरुद्ध व विमुख करना। ५ उलटा देना, औंधा करना। ६ लौटाना, वापिस करना। ७ अवस्था या दशा बदलना। ८ स्वभाव बदलाना, मनोदशा बदलाना। ९ मूल वस्तु के स्थान पर दूसरी लाना। १० उलटाना, बदलाना। ११ आगे पीछे या ऊपर नीचे कराना। १२ लौटवाना, मुड़वाना। १३ घुमवाना, मुड़वाना। १४ रूप परिवर्तन कराना। १५ स्थान परिवर्तन कराना।

पलटाव–पु० परिवर्तन।

पलटावणी (बो)–देखो 'पलटाणी' (बो)।

पलटी–स्त्री० [सं० प्रलोठनम्] स्थानान्तरण, बदली।

पलटो–पु० [सं० प्रलोठन] १ परिवर्तन। २ चक्कर, घुमाव। ३ प्रतिशोध, बदला। ४ लोहे का बड़ा खुरचा, खुरपा। ५ रसोई का बर्तन विशेष (मेवात)।

पलट्टण–देखो 'पलटण'।

पलणी–देखो 'पालणी'।

पळणो (बो)–क्रि० [सं० पालनम्] १ परवरिश पाना, पोषित होना। २ आश्रय पाना, पनाह पाना। ३ निभाया जाना, निभना। ४ देखो 'पलणो' (बो)।

पलणो (बो)–क्रि० [सं० पलायनम्, पल्] १ भागना, भाग जाना। २ भड़ना, डट जाना। ३ रोका जाना रुकना। ४ मिटना। ५ प्रभाव मानना। ६ समायोजित होना, सधना। ७ देखो 'पळणो' (बो)।

पलथी–देखो 'पालथी'।

पळपळाट–पु० [सं० पल्लवम्] १ चमचमाहट। २ नटखटपन, चंचलता। ३ दुष्टता, नीचता।

पळपळाणो (बो), पळपळावणो (बो)–क्रि० १ चमकना। चमचमाना। २ आभा युक्त होना। ३ चंचलता करना। ४ उद्दण्डता करना। ५ दुष्टता करना, नीचता करना।

पलबंग–देखो 'प्लवंग'।

पळभक्षी, पळभक्ष–वि० मांसाहारी।

पलव–वि० [सं० पलवम्] १ चंचल, नटखट। २ देखो 'पल्लव'।

पलवकर–पु० [सं० पल्लवकर] हाथ की अंगुली।

पलवक्ष–पु० [सं०] सिंह।

पलवग–देखो 'प्लवंग'।

पलवट–स्त्री० कमर, कटि।

पलवसु–पु० [सं० पल्लवसू] नाखून।

पलथाड़ो–पु० पीछे का भाग, पृष्ठ भाग।

पळसेटो–क्रि०वि० तेजी से, वेगपूर्वक।

पळहारी–वि० मांसाहारी।

पला–स्त्री० वाद्यों के बोलों का मिलान, क्रम।

पळांचर–देखो 'पळचर'।

पलांडु–पु० [सं०] प्याज।

पलांण–पु० [सं० पल्ययनम्] १ ऊंट का चारजामा, ऊंट की जीन। २ मिट्टी की दीवार पर की जाने वाली घास-फूस की छाजन।

पलांणणो (बो)–क्रि० [सं० पल्ययनम्] ऊंट पर चारजामा कसना, जीन लगाना, सवार होना।

पलांणियो–पु० १ ऊंट को हल से जोड़ने का एक उपकरण। २ देखो 'पलांण'।

पलांणी–देखो 'पलांण'।

पला–स्त्री० [सं० पल्लव] १ मृतक के पीछे रुदन के साथ गाया जाने वाला विरह गीत। [सं० पलायन] २ पलायन, प्रस्थान।

पलाऊ–वि० १ रोकने वाला, रोकने योग्य। २ मना करने वाला, नियंत्रित करने वाला।

पळाक, पळाको–पु० चमक, प्रकाश।

पळाटो–पु० चक्कर, फेरा।

पलाणो (बो)–क्रि० [सं० पलायनम्] १ रुकवाना, रोकाना। २ मना करवाना, नियंत्रित कराना। ३ परस्पर समायोजित कराना। ४ भागना, दौड़ना पलायन करना।

पलाथी–देखो 'पालथी'।

पलाद–पु० [सं०] मांस भक्षी प्राणी, राक्षस।

पलादार–देखो 'पल्लेदार'।

पळापळ–पु० तेज प्रकाश, चमचमाहट।

पलायणो, (बो)–क्रि० [सं० पलायनम्] १ भागना, भाग जाना। २ प्रस्थान कर जाना।

पलायन–पु० [सं०] भागना क्रिया, प्रस्थान।

पलायमान–वि० भागता हुआ, प्रस्थान को तैयार।

पळायो–पु० कृषि कार्य के (लाह) भोजन में सम्मिलित होने वाला व्यक्ति।

पलाल, पलालि–पु० [सं०] १ घास, भूसा। २ घास का ढेर। ३ मांस का ढेर।

पळावण–पु० गाय, भैंस को दुहते समय पहले स्तन धोने का पानी।

पलावित–देखो 'प्लावित'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पळास–पु० [सं० पलाश] १ राक्षस, दुष्ट। २ एक वृक्ष विशेष। ३ एक ओजार।

पळासण–वि० [सं० पलम्-अशन्] मांस भक्षी।

पळासपापड़ी–देखो 'पलास पापड़ी'।

पळासपापड़ी–पु० पलास की फली जो औषध में काम आती है।

पळासि–वि० [सं० पलाशिन्] मांसाहारी।

पळासियो–१ देखो 'पळास'। २ देखो 'पळायो'।

पळिंग–देखो 'पलंग'।

पलित–वि० [सं०] १ वृद्ध, बूढ़ा। २ पका हुआ (बाल)। –पु० १ पका बाल। २ वैद्यक के अनुसार एक रोग।

पळियो–देखो 'पळी'।

पलियो–पु० १ पायंदाज की जगह रखा टाट का टुकड़ा। २ कोई वस्त्र का टुकड़ा। ३ देखो 'पल्लो'।

पलींडो–देखो 'परींडो'।

पळी, पली–स्त्री० १ विशेष खाद्य पदार्थ बनाने का उपकरण। [सं० पलित] २ सफेद बाल। [सं० पल्लिः, पल्ली] ३ मकान, झोंपड़ी। ४ छोटा ग्राम।

पळीचणो–देखो 'परीचणो'।

पलीत–वि० [सं० प्रेत, फा० पलीद] १ कायर, डरपोक। २ मूर्ख, मूढ़। ३ आलसी, निकम्मा। ४ मैला, गन्दा, अपवित्र। –पु० १ नाश, विनाश, ध्वंस। २ असुर। ३ प्रेत, भूत।

पलीती, पलीतो–पु० [फा० फतीत] १ कोई तांत्रिक यंत्र। २ बन्दूक आदि छोड़ने की चिनगारी। ३ पनसाखे पर रख कर जलाई जाने वाली कपड़े की बत्ती।

पलीयो, पलीधो–पु० मट्ठे के साथ बनाया जाने वाला मांस का सालन।

पळूंड–पु० एक कृषि उपकरण विशेष।

पलूटा–स्त्री० गायन का अलंकार विशेष।

पले'क–वि० एक क्षण के लगभग।

पलेट–स्त्री० १ तश्तरी। २ पट्टी।

पळेटणो, (बो)–क्रि० लपेटना, आवेष्टित करना।

पळेटाणो (बो), पळेटावणो (बो)–क्रि० लिपटवाना, आवेष्टित कराना।

पळेटो–पु० १ आवेष्टन, घेरा। २ विवाह में, भांवरी या यज्ञ की परिक्रमा।

पळेथन, पलेथन–देखो 'पळोथन'।

पलेव, पलेवड़ो–देखो 'पलेवो'।

पलेवणउ–पु० [सं० प्रदीपनम्] आग लगाने की क्रिया।

पलेवो, पलेह–पु० [सं० अवलेह] १ पतला खाद्य पदार्थ। २ पहिये की धुरी में स्निग्ध वस्तु के साथ लगाया जाने वाला सन या कपड़ा।

पलेहण–पु० [सं० प्रलेखन] वस्त्रादि संभालने की क्रिया (जैन)।

पलोटण–पु० १ वैभव। २ लोट-पोट। ३ देखो 'पलोथन'।

पलोटणो (बो)–क्रि० [सं० प्रलोठनम्] लोट-पोट होना।

पलोणो (बो)–क्रि० [सं० प्रलोपनम्] देखना, निरीक्षण करना।

पलोतण, पलोथण–पु० [सं० प्रलेपनम्] १ रोटी बेलते समय गीले आटे पर लगाया जाने वाला सूखा आटा। २ अतिरिक्त व्यय।

पळो–पु० द्रव पदार्थ लेने का, खड़ा हत्था लगा, कटोरीनुमा, उपकरण।

पलो–पु० [सं० पल्ल] १ कपड़े का छोर, पल्ला। २ साड़ी या ओढ़नी का छोर विशेष। ३ दूरी, फासला। ४ किवाड़ का पट। ५ तराजू का पलड़ा। ६ चार मन का एक तौल।

पल्थो–वि० १ उस ओर का। २ देखो 'पालथी'।

पल्यंक, पल्यंकि, पल्यंकु, पल्यंग, पल्यंग–स्त्री० [सं० पल्यंक] बढ़िया व उत्तम श्रेणी की खाट, चारपाई, सेज, शय्या।

पल्या, पल्यु–पु० [सं० पलित] सफेद बाल।

पल्योपम–पु० [सं०] काल का एक माप, एक विभाग जो कूप की उपमा से गिना जाता है।

पल्लंक–देखो 'पल्यंक'।

पल्ल–देखो 'पल'।

पल्लड़ो–पु० १ झूले का मंच। २ देखो 'पलड़ो'।

पल्लचर–देखो 'पळचर'।

पल्लण–वि० मिटाने वाला, दूर करने वाला।

पल्लणो (बो)–देखो 'पलणो' (बो)।

पल्लर–देखो 'पालर'।

पल्लव–पु० [सं०] १ कोमल पत्ता, कोंपल। २ दक्षिण का एक राजवंश।

पल्लवणो (बो)–क्रि० वृक्षों व पौधों के नये पत्ते आना, पल्लवित होना।

पल्लवि–देखो 'पल्लव'।

पल्लवित–वि० [सं०] पत्तों से युक्त, फला-फूला। हरा-भरा।

पल्लांण–देखो 'पलांण'।

पल्लांणणो (बो)–देखो 'पलांणणो' (बो)।

पल्लाटो–देखो 'पळळाटो'।

पल्ली–स्त्री० छोटा वस्त्र, झोला।

पल्लू–पु० १ आंचल या वस्त्र का छोर। २ चौड़ा पट्टा, गोट।

पल्लेदार–पु० १ अनाज ढोने वाला मजदूर। २ एक बन्दूक विशेष।

पल्लोस–पु० प्रवाह, झोंका।

पल्लो–पु० १ वस्त्र का छोर। २ आंचल। ३ देखो 'पैलो'।

पल्हण–पु० स्नान, मज्जन।

पल्हव–देखो 'पल्लव'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पल्हवणी (बी)–देखो 'पल्लवणी' (बी)।
पल्हवित–देखो 'पल्लवित'।
पल्हांण–देखो 'पलांण'।
पल्हांणणी (बी)–देखो 'पलांणणी' (बी)।
पवंग, पवंगम–१ देखो 'प्लवंगम'। २ देखो 'पमंग'।
पवंण–देखो 'पवन'।
पव–देखो 'परवत'।
पवगंज–देखो 'पमंग'।
पवज–देखो 'पवन'।
पवत्रिय–देखो 'पवित्री'।
पवत्री–देखो 'पवित्री'।

पवन–पु० [सं०] १ वायु, हवा। २ वायु का अधिष्ठाता देवता। ३ प्राण वायु। ४ सर्प, सांप। ५ श्रीविष्णु। ६ प्रथम लघु ठगण के भेद का नाम। ७ कुछ विशिष्ट जातियों के वर्ग का नाम। ८ उच्चास की संख्या०। –वि० चंचल०। **–कुमार**–पु० हनुमान, भीम। **–चकी, चक्की**–स्त्री० हवा से चलने वाली चक्की।—**चक्र**–पु० चक्रवात। —**ज, जात**–पु० हनुमान, भीम। —**तनय**–पु० हनुमान, भीम। —**दाग, दाह**–पु० मृतक के शव को किसी ऊंचे व खुले स्थान पर रख देना। —**दिस्ण**–पु० आकाश, आसमान। —**नंद, नंदन**–पु० भीम, हनुमान। —**पंथ, पथ, पध**–पु० आकाश, आसमान। —**पुत्र, पूत**–पु० हनुमान, भीम। —**मग**–पु० आकाश, आसमान। —**बांण**–पु० तेज हवा चला देने वाला अस्त्र। —**वेग**–पु० हवा का वेग। घोड़ा। –वि० हवा की तरह वेगवान। —**सख, सखा**–पु० अग्नि, आग। —**सुत**–पु० हनुमान, भीम।

पवनघणईहा–स्त्री० [सं० पवन-घन-ईहा] अग्नि, आग।
पवनबध–पु० पवन को बांध देने वाला सिद्ध या मंत्र।
पवनांण–१ देखो 'पावन'। २ देखो 'पवन'।
पवनासण (न)–पु० [सं० पवन-अशनम्] १ हवा पीकर जीने वाला प्राणी। २ सर्प, सांप। [सं० पवन-आशन] ३ योग के चौरासी आसनों में से एक।
पवनासणी (नी)–पु० [सं० पवनाशिन्] १ सर्प, सांप। २ पवन आसन लगाने वाला योगी।
पवनिणी, पवनी, पवन्न, पवन्नि–देखो 'पवन'।
पवमांण, पवमांन–पु० [सं० पवमानः] हवा, वायु।
पवर, पवरु–देखो 'प्रवर'।
'प'वरग–पु० [सं०] नागरी लिपि के 'प' से 'म' तक का वर्ण समूह।
पवसाक, पवसाज–देखो 'पोसाक'।
पवांड़, पवाड़उ, पवाड़ो–पु० १ चकवड़, चक्रमर्द, एक औषधि। २ देखो 'प्रवाड़ो'।
पवाचणी (बी)–क्रि० पढ़ना, वाचना।
पवाडो–देखो 'प्रवाडो'।
पवारसाही–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
पवाल (उ)–देखो 'प्रवाळ'।
पवासणी (बी)–क्रि० [सं० प्रकाशनम्] १ चमकना, प्रकाशित होना। २ तुष्टमान होना।
पवासी–पु० [सं० प्रभास] प्रकाश, चमक।
पवि–पु० [सं०] १ वज्र। २ मार्ग, रास्ता।
पविगि–देखो 'पमग'।
पवित, पवितर–देखो 'पवित्र'।
पवितरी–देखो 'पवित्री'।
पवितरी–देखो 'पवित्री'।
पवित्त, पवित्तर, पवित्ति, पवित्र–वि० [सं० पवित्र] १ शुद्ध, पाप रहित। २ निर्मल, स्वच्छ, साफ। ३ यज्ञादि द्वारा शुद्ध। –पु० १ यज्ञ में घी छिड़कने का कुश। २ तांबा।
पवित्रता–पु० [सं०] शुद्धता, पावनता निर्मलता।
पवित्रा–स्त्री० [सं०] १ तुलसी। २ श्रावण शुक्ला एकादशी।
पवित्रिय, पवित्री–स्त्री० १ कुश की अंगुठी। २ संन्यासियों की माला के मध्य का मणिया। ३ तांबा और चांदी के मिश्रण से बनी मुद्रिका।
पवित्री–पु० [सं० पवित्र] १ मेड़तिया राठौड़ों की पगड़ी पर बांधने की चारभुजा के नाम की पट्टी। २ रेशम के गुच्छे का बना मांगलिक हार।
पविधर–पु० [सं०] इन्द्र।
पविन–देखो 'पावन'।
पविपांणी–पु० [सं०] इन्द्र।
पवी–देखो 'पवि'।
पवीतरी–१ देखो 'पवित्र'। २ देखो 'पवित्री'।
पर्व–देखो 'परवत'।
पवोड़ी–स्त्री० कमल के बीज।
पव्वय, पव्वं–देखो 'परवत'।
पसंगी–देखो 'पासंग'।
पसंति–देखो 'पस्यंती'।
पसंद–वि० [फा०] १ जो अच्छा लगे, रुचिकर, इच्छित। २ देखो 'प्रसन्न'।
पसंनि–पु० दर्शन।
पसंसा–देखो 'प्रसंसा'।
पस–स्त्री० १ अवधि, समय। २ मौहलत, छूट। ३ प्रवेश। ४ देखो 'पुसी'। ५ देखो 'अंजली'। –अव्य० [फा०] अतः, इस कारण, इसलिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पसकण–वि० कायर, डरपोक।
पसकी–पु० कायरपन, भीरुता।
पसगत–देखो 'पसुगत'।
पसज–देखो 'पिसण'।
पसणी (बो)–देखो 'फंसणी' (बो)।
पसतो–पु० [फा० पश्तो] १ साढ़े तीन मात्रा का एक ताल। २ अफगानिस्तान की भाषा।
पसत्थ, पसथ–देखो 'प्रसस्त'।
पसथराग–पु० [सं० प्रशस्त-राग] दान-पुण्य, गुरु भक्ति आदि के प्रति अनुराग। (जैन)
पसन्न–१ देखो 'प्रसन्न'। २ देखो 'प्रस्न'।
पसम–पु० [फा० पश्म] १ रोम, बाल, रोमावली। २ मुलायम व उत्तम श्रेणी की ऊन। ३ गुप्तांगों के बाल।
पसमीन, पसमीर, पसम्म–पु० [फा० पशमीना] मुलायम ऊन का बना वस्त्र।
पसर–पु० [सं० प्रसर] १ आक्रमण, हमला। २ विस्तार, फैलाव। ३ पिचकारी।
पसरकंटाळी–स्त्री० [सं० प्रसर-कंटाली] कंटीले पत्तों वाला एक पौधा विशेष।
पसरणो (बो)–क्रि० [सं० प्रसरणम्] १ फैलना, विस्तृत होना, छितरना, पसरना। २ पैर फैलाकर सोना। ३ अधिक फैलाव करना। ४ आगे बढ़ना।
पसराणो (बो), पसरावणो (बो)–क्रि० १ फैलाना, विस्तृत करना, छितराना, पसराना। २ पैर फैलाकर सुलाना। ३ अधिक फैलाव कराना। ४ आगे बढ़ाना।
पसळी–देखो 'पासळी'।
पसवांन–पु० [सं० प्सानम्] भोजन। खाद्य।
पसवाड़–देखो 'पसवाड़ो'।
पसवाड़ै–क्रि० वि० [सं० पार्श्व-पाटक] १ पार्श्व में, बगल में, निकट। २ ओर, तरफ।
पसवाड़ो–पु० [सं० पार्श्वः] पार्श्व, बगल, करवट।
पसवाज–पु० नृत्य के समय पहनने का, वेश्याओं का घाघरा।
पसाइत, पसाइती–देखो 'पसायती'।
पसाइतो–देखो 'पसायतो'।
पसाउ, पसाउलो–१ देखो 'प्रसाद'। २ देखो 'पसाव'।
पसाणो, (बो)–क्रि० [सं० प्रसावण] १ भात या चावल का मांड निकालना। २ किसी पदार्थ का जलांश निकालना।
पसायत, पसायतो–पु० १ सेवा या नौकरी के बदले दी जाने वाली भूमि या जागीर। २ उक्त प्रकार की भूमि को भोगने वाला व्यक्ति।
पसायतबाब–पु० उक्त प्रकार की भूमि के स्वामी से लिया जाने वाला कर।
पसायती–पु० 'पसायत' की भूमि या जागीर पाने वाला व्यक्ति।
पसार–देखो 'प्रसार'।
पसारटो–पु० पंसारी का कार्य।
पसारणो (बो)–क्रि० [सं० प्रसारणम्] फैलाना, पसारना, विस्तृत करना, छितराना।
पसारो–देखो 'पंसारी'।
पसाव–पु० [सं० प्रसाद] १ भेंट, पुरस्कार। २ कपड़ा, वस्त्र। [सं० प्रस्राव] ३ चावल की मांड। ४ किसी पदार्थ से निकाला गया जलांश। ५ पसीना, स्वेद। ६ देखो 'प्रसाद'।
पसावण–पु० [सं० प्रस्रावण] मांड, पीच, पानी।
पसावणो, (बो)–देखो 'पसाणो' (बो)।
पसीजणो (बो)–क्रि० [सं० प्र-स्विद] १ पिघलना, द्रवित होना। २ दयामय होना। ३ अच्छी तरह पक कर फूल जाना। ४ नम होना। ५ पसीना-पसीना होना।
पसीनो–पु० [सं० प्रस्वेद] अधिक गर्मी या श्रम के कारण शरीर के रोम कूपों से निकलने वाला पानी, पसीना, स्वेद।
पसु–पु० [सं० पशु] चौपाया जानवर। —काळ–पु० सर्प, सांप। —गति–पु० पशुओं के समान गति, पशु योनि। —घात–स्त्री० पशु बलि। —चा–स्त्री० पशु के समान क्रिया। पशुत्व। —धरम–पु० पशुओं के समान आचरण। —नाथ, पति, पती–पु० शिव। सिंह। —भाव–पु० पशुपन, पशुत्व। —राज–पु० सिंह, शेर। —लक्षण, लखण–पु० पशुओं के गुण। ७२ कलाओं में से एक।
पसुपतास्त्र–पु० [सं० पशुपतास्त्र] शिव का त्रिशूल।
पसुवो, पसू–देखो 'पसु'।
पसे–पु० दर्शन।
पसेउ, पसेव, पसेवो–देखो 'पसीनो'।
पसै–स्त्री० हाथों से अंजलि बनाने की मुद्रा।
पसोपेस–पु० [फा० पसोपेश] असमंजस, दुविधा, धर्म संकट।
पस्चाताप–देखो 'पछतावो'।
पस्चिम–पु० [सं० पश्चिम] पूर्व के सामने की दिशा, सूर्यास्त वाली दिशा। —अचळ= 'अस्ताचल'। —सागर–पु० आयर लेण्ड व अमेरिका के बीच का समुद्र।
पस्त–वि० [फा०] पराजित, दबा हुआ, निराश, हताश। —हिम्मत–वि० साहस रहित, कायर।
पस्तां–देखो 'पिस्ता'।
पस्ताणो (बो)–देखो 'पछताणो' (बो)।
पस्ताव–१ देखो 'पछतावो'। २ देखो 'प्रस्ताव'।
पस्तावणो, (बो)–देखो 'पछताणो' (बो)।
पस्तावो–देखो 'पछतावो'।
पस्तो–देखो 'पसतो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पस्म–स्त्री० [फा० पश्म] बढ़िया व मुलायम ऊन।

पस्यंती–स्त्री० [सं० पश्यंती] मूलाधार से उठ कर हृदय में जाने की ध्वनि, नाद।

पस्सरणी (बो)–देखो 'पसरणी' (बो)।

पह–पु० [सं० पथ] १ रास्ता, मार्ग। [सं० प्रभु] २ स्वामी, प्रभु। ३ राजा, नृप। ४ योद्धा, वीर। [सं० पद] ५ प्रातः, उषा काल। ६ प्रतिष्ठा, मर्यादा। ७ पुण्य काल, सुअवसर। ८ पृथ्वी, भूमि। –वि० [सं० प्रथम] १ पहला, प्रथम। २ दाता।

पहड़णी (बो)क्रि० [सं० पृथु=प्रक्षेपे] १ अपने स्थान से हटना। २ डिगना, विचलित होना। ३ फिसलना। ४ अधीर होना, घबराना। ५ धोखा देना।

पहचाण–स्त्री० १ जान-पहचान, परिचय। २ गुण-दोष देखने की शक्ति।

पहचांणणी (बो)–क्रि० १ परिचय करना, जान लेना। २ गुण दोष या असली-नकली की जानकारी कर लेना। ३ ठीक से समझ लेना।

पहचि, पहची–देखो 'पहुंच'।

पहट–स्त्री० १ पराजय, हार। २ टक्कर, चोट, आघात। ३ विनाश, बरबादी।

पहटणी (बो)–क्रि० १ हराना, पराजित करना। २ नाश करना, बरबाद करना। ३ टक्कर मारना, चोट लगाना।

पहट्ट–देखो 'पहट'।

पहट्टणी (बो)–देखो 'पहटणी' (बो)।

पहतणी (बो)–देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पहनणी (बो)–देखो 'पहरणी' (बो)।

पहनाइ, पहनाई–स्त्री० पहनने की क्रिया या भाव, पहनाने का ढंग।

पहनाणी (बो)–देखो 'पहराणी' (बो)

पहनाच–पु० [सं० प्रभु-नाथ] ईश्वर।

पहनाव–देखो 'पहनावो'।

पहनावणी (बो)–देखो 'पहराणी' (बो)।

पहनावो–पु० पहनने का वस्त्र, पोशाक।

पहनी–स्त्री० [सं० उपानह] जूती, पगरक्षिका।

पहनौ–देखो 'पनौ'।

पहप–देखो 'पुस्प'।

पहपवेण–स्त्री० [सं० पुष्पवेणि] फूलों की चोटी, वेणी।

पहपणी (बो)–क्रि० [सं० पुष्प्] प्रफुल्लित होना, फलना, पुष्पित, पल्लवित होना

पहम, पहमी–देखो 'पृथवी'।

पहर–देखो 'प्रहर'।

पहरण, पहरणि (णी)–पु० [सं० प्रहरणम्] १ पहनने के उपकरण। २ अस्त्र-शस्त्र। [सं० परिधान] ३ पहनने के वस्त्र, परिधान।

पहरणी (बो)–क्रि० [सं० परिधान] पहनना, धारण करना।

पहरतणी (बो)–क्रि० [सं०प्रहरणम्] नष्ट करना, नाश करना।

पहरवो–देखो प्रहरी'।

पहरांमणी, पहरांवणी–देखो 'पहरावणी'।

पहरांमणी (बो)–देखो 'पहराणी' (बो)।

पहराइत, पहराउत–देखो 'पौ'रायत'।

पहराणी (बो)–क्रि० पहनाना, धारण कराना।

पहरायत–देखो 'पौ'रायत'।

पहराव–देखो 'पहनावो'।

पहरावणी–स्त्री० [सं० परिधापनी] १ विवाह कर, विदाई के समय कन्या के पिता की ओर से दिये जाने वाले वस्त्रादि। २ वृद्ध मृतक के पीछे उसकी संतान को उसके ससुराल पक्ष द्वारा दी जाने वाली वस्त्रादि की भेंट।

पहरावणी (बो)–देखो 'पहराणी' (बो)।

पहरिणी (बो)–देखो 'पहरणी' (बो)।

पहरी, पहरु, (रू)–देखो 'प्रहरी'।

पहरी–पु० [सं० प्रहरदान] १ चौकीदारी, चौकसी। २ निगरानी, रखवाली। ३ रक्षक, सुरक्षा कर्मचारी। ४ चौकीदारी आदि के लिये क्रमशः नियुक्ति। ५ उक्त प्रकार से पारी निकालने वाला व्यक्ति। ६ हिरासत, हवालात।

पहल–पु० [सं० प्रथम] १ शुरूआत, प्रारंभ। २ अगवानी। ३ शत्रु, दुश्मन। ४ धुनी हुई रूई की मोटी तह। ५ देखो 'पहलू'।

पहलकै–देखो 'पैलकै'।

पहलव–स्त्री०[सं० पह्लव] एक प्राचीन वंश।

पहलवां, पहलवांन–पु० [फा० पहलवान] मल्ल, कुश्ती बाज।

पहलवांनी–स्त्री० [फा० पहलवानी] कुश्ती, मल्ल युद्ध।

पहलवी–स्त्री० [फा०] ईरान की एक भाषा।

पहलां–देखो 'पै'लां'।

पहळाज, पहळाव–देखो 'प्रहळाद'।

पहली–१ देखो पै' ली'। २ देखो 'पहली'।

पहलोभव–वि० पहले जन्मा हुआ, ज्येष्ठ।

पहलू–पु० [फा०] १ बगल, पार्श्व, करवट। २ पड़ोस, आस-पास का क्षेत्र, स्थान। ३ सेना का दायां या बायां भाग। ४ विषय का कोई पक्ष, भाग।

पहले–देखो 'पै'लै'।

पहलोत–स्त्री० १ प्रथम पत्नी। २ देखो 'पैलियांण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहळो–वि० (स्त्री० पहळी) चौड़ा, विस्तृत ।

पहल्ल–देखो 'पहल' ।

पहल्लो–देखो 'पैं'लो' ।

पहल्लो–देखो 'पैं'लो' ।

पहव–पु० [सं० प्रभु] १ राजा, नृप । २ स्वामी, प्रभु । ३ योद्धा, वीर । –वि० प्रथम ।

पहवि, पहवी–देखो 'प्रथवी' ।

पहसांच–पु० [सं० प्रहसांच] चन्द्रमा ।

पहाण (णी)–देखो 'प्रधान' ।

पहा–स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण ।

पहाड़–पु० [सं० पाषाण] १ पर्वत, गिरि । २ बड़ा टीबा, ढेर । ३ बहुत बड़ा पत्थर । ४ भारी व असाध्य कार्य ।

पहाड़वी–स्त्री० दक्षिण से उत्तर की ओर बहने वाली हवा, वायु ।

पहाड़ा–पु० प्रत्येक अंक का १ से १० तक के गुणनफल से बनने वाला क्रम ।

पहाड़ी, पहाडी–वि० [सं० पाषाणी] १ पहाड़ का, पहाड़ संबंधी । २ पहाड़ पर होने वाला । –स्त्री० १ पहाड़ी प्रदेश का निवासी । २ इस प्रदेश की भाषा । ३ छोटा पहाड़ ।

पहार–१ देखो 'प्रहार' । २ देखो 'पहाड़' ।

पहारणी (णी)–देखो 'प्रहारणी' (णी) ।

पहास–देखो 'प्रभास' ।

पहासणी (णी)–देखो 'प्रभासणी' (णी) ।

पहि, पहिय–अव्य० १ किन्तु, लेकिन । २ देखो 'प्रथवी' । ३ देखो 'पथिक' ।

पहिड़ो–देखो 'पैं'ड़ो' ।

पहिचाण–देखो 'पहचांण' ।

पहिचाणणी (णी)–देखो 'पहचांणणी' (णी) ।

पहिचांणो–देखो 'पहचांण' ।

पहिटणी (णी)–क्रि० १ पलटना, बदलना । २ देखो 'पैंटणी' (णी) ।

पहिठांणो–पु० एक विशेष जाति का घोड़ा ।

पहिड़णी (णी)–देखो 'पहड़णी' (णी) ।

पहिनणी (णी)–देखो 'पहरणी' (णी) ।

पहिनाणी (णी), पहिनावणी (णी)–देखो 'पहराणी' (णी) ।

पहिनावो–देखो 'पहनावो' ।

पहिय, पहियड़–देखो 'पथक' ।

पहियो–देखो 'पैं'ड़ो' ।

पहिरण (णी)–देखो 'पहरण' ।

पहिरणी (णी)–देखो 'पहरणी' (णी) ।

पहिरामनी, पहिरावनी–देखो 'पहरावणी' ।

पहिराड़णी (णी), पहिराणी (णी)–देखो 'पहराणी' (णी) ।

पहिरायत पहिरायति, पहिरायती–देखो 'पौ'रायत' ।

पहिरावणी–देखो 'पहरावणी' ।

पहिरावणी (णी)–देखो 'पहराणी' (णी) ।

पहिरी–देखो 'प्रहरी' ।

पहिलड़, पहिलउ–देखो 'पैं'लो' ।

पहिलकउ, पहिलको, पहिलड़ो–वि० (स्त्री० पहिलकी) पहले का, पूर्व का ।

पहिळाद (वि, वी, वो)–देखो 'प्रहळाद' ।

पहिली–देखो 'पैं'ली' ।

पहिलु, पहिलु, पहिलू–देखो 'पैं'लो' ।

पहिलूंणि, पहिलूंणी–वि० १ प्रथम पहला । २ देखो 'पैंलियांण'

पहिलूंणो–देखो 'पैं'लूणो' ।

पहिलें–देखो 'पैं'ली' ।

पहिलो–देखो 'पैं'लो' ।

पहिल्ली–१ देखो 'पैं'ली' । २ देखो 'पहेली' ।

पही–१ देखो 'पथिक' । २ देखो 'प्रथवी' । ३ देखो 'पैं'ड़ो' ।

पहुंच, पहुंचण–स्त्री० [सं० प्रभूत] १ गन्तव्य स्थान तक जाने, लेजाने, लेजाकर रखने की क्रिया या भाव । २ ठिकाने या यथा स्थान हो जाने की क्रिया या भाव । ३ यथा स्थान होने, जाने आदि की सूचना । ४ क्षमता, सामर्थ्य ।

पहुंचणो (णी)–क्रि० [सं० प्रभूत] १ किसी गन्तव्य स्थान तक जाना । २ मंजिल तय कर लेना । ३ एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाना । ४ यथा-स्थान होना । ५ भेजी हुई वस्तु का मिलना । ६ फैलते हुए जाना । ७ निश्चित स्थान तक बढ़ना, प्रगति करना । ८ पैठना, बैठना, व्याप्त, होना । ९ ज्ञान या अनुभव प्राप्त करना । १० सक्षम व समर्थ होना । ११ शत्रु आदि से मुकाबला कर लेना । १२ होना, मिलना ।

पहुंचवांन–वि० १ सक्षम, समर्थ । २ पुरुषार्थी ।

पहुंचाड़णो (णी), पहुंचाणी (णी), पहुंचावणो (णी)–क्रि० १ किसी गन्तव्य स्थान तक ले जाना । २ मंजिल तय कराना । ३ एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना । ४ यथा स्थान करना । ५ भेजी हुई वस्तु को निश्चित स्थान या व्यक्ति को देना । ६ फैलाते हुए ले जाना । ७ निश्चित स्थिति तक बढ़ाना, प्रगति कराना । ८ पैठाना, बैठाना व्याप्त कराना । ९ ज्ञान या अनुभव प्राप्त कराना । १० सक्षम व समर्थ करना । ११ शत्रु आदि से मुकाबला कराना । १२ कराना, मिलाना ।

पहुंचि, पहुंचो–देखो 'पहुंच' ।

पहुंचो–देखो 'पुणचो' ।

पहुंत–देखो 'पहुंच' ।

पहुंतणो (णी)–देखो 'पहुंचणो' (णी) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पहु–पु० [सं० प्रभु] १ ईश्वर, परमात्मा। २ स्वामी, प्रभु। ३ राजा, नृप। –क्रि०वि०प्रत्यक्ष, सामने।

पहुआवर–पु० एक प्रकार का व्यंजन विशेष।

पहुचणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पहुचाड़णो (बो), पहुचाणो (बो), पहुचावणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पहुटणो(बो)–देखो 'पहटणो' (बो)।

पहुत (स)–देखो 'पहुंच'।

पहुतणो (बो), पहुतबो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पहुपंजलि, पहुपांजलि–देखो 'पुस्पांजळी'।

पहुप–देखो 'पुस्प'।

पहुमि, पहुमी–देखो 'प्रथवी'।

पहूर–देखो 'प्रहर'।

पहवो–देखो 'प्रथवी'। —**नाह**= 'प्रथवीनाथ'।

पहूंत–देखो 'पहुंच'।

पहूंतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पहू–देखो 'पहु'।

पहूत–देखो 'पहुंच'।

पहेली–स्त्री० [सं०प्रहेलिका] १ व्यंग, वक्रोक्ति या गुढ़ार्थक वाक्य या शब्द। प्रहेली। २ परोक्ष अर्थ बोधक वाक्य।

पहैत–वि० सहित, संयुक्त।

पहैलो–१ देखो 'पहेलो'। २ देखो 'पैलो'।

पहोंच–देखो 'पहुंच'।

पहोंचणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पहोंचाणो (बो), पहोंचावणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पहोंत–देखो 'पहुंच'।

पहोच–देखो 'पहुंच'।

पहोचणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पहोप–देखो 'पुस्प'।

पहोपकछो–पु० [सं० पुष्पकच्छ] एक प्रकार का अशुभ रंग का घोड़ा।

पहोमि (मी)–देखो 'प्रथवी'।

पहोर–देखो 'प्रहर'।

पहोरो–देखो 'पहरो'।

पहोवर–देखो 'पयोधर'।

पहोवी–देखो 'प्रथवी'।

पहोत–देखो 'पहुंच'।

पहोतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पहोर–देखो 'प्रहर'।

पह्लवो–देखो 'पहलवी'।

पां–क्रि०वि० १ पास में, निकट। २ देखो 'पांसु'। ३ देखो 'पद'। ४ देखो 'पांम'।

पांउडो, पांउडो–देखो 'पांवडो'।

पांउणो–१ देखो 'पांमणो'। २ देखो 'पांवणो'।

पांक–१ देखो 'पूंख'। २ देखो 'पंक'।

पांकणो (बो)–क्रि० १ छोड़ना, त्यागना। २ 'प्रांखणो'(बो)।

पांख, पांखड़ली, पांखड़ी, पांखड़ो–स्त्री० [सं० पक्ष] १ पक्षी का पर, पंख। २ कुक्षि, कूख। ३ शाखा। ४ पुष्पदल। ५ देखो 'पूंख'।

पांखण–देखो 'पंखण'।

पांखणी–देखो 'पंखणी'।

पांखरणो (बो)–देखो 'प्रांखणो' (बो)।

पांखलियो–देखो 'पांखळो'।

पांखळो–पु० १ बैलगाड़ी के थाटे पर लगाया जाने वाला कटहरा। २ उक्त कटहरा में आने लायक सामान की मात्रा।

पांखियो–देखो 'पक्षी'।

पांखी–देखो 'पांख'।

पांखोजणो (बो)–क्रि० चींटियों, पक्षियों आदि के पंख आना।

पांखुड़ो, पांखूड़ी–देखो 'पांख'।

पांगरण–देखो 'पंगरण'।

पांगरणो (बो)–क्रि० [सं० उपाङ्ग धरणम्] १ अंकुरित होना, पनपना। २ हृष्टपुष्ट व मोटा-ताजा होना। ३ विहार करना।

पांगळ–पु०[सं० पांगुल्य] १ ऊंट। २ युवा ऊंट। ३ देखो 'पंगु'।

पांगळणो (बो)–देखो 'पांगरणो' (बो)।

पांगळियो–१ देखो 'पांगळ'। २ देखो 'पंगु'।

पांगो–देखो 'पंगो'।

पांगुरण–देखो 'पंगरण'।

पांगुरणो (बो), पांगूरणो (बो)–देखो 'पांगरणो' (बो)।

पांगो–पु० १ पतला, पानी जैसा द्रव पदार्थ। २ देखो 'पंगु'।

पांघरणो (बो)–देखो 'पांगरणो' (बो)।

पांच–वि० [सं० पंच] चार व एक, पांच। –पु० १ पांच की संख्या व अंक, ५। २ देखो 'पंच'। —**अंग** = 'पंचांग'।

पांचअव्रत–पु० [सं० पंच-अव्रत] हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह-अव्रत। (जैन)

पांचको–पु० [सं० पंच] प्रसव के पांचवें दिन किया जाने वाला संस्कार।

पांचड़ो, पांचडो–पु० १ लम्बा कदम, छलांग। २ देखो 'पांच'।

पांचजन, पांचजन्य–पु० [सं० पांचजन्य] श्रीकृष्ण का शंख।

पांचणा पु० (ब०व०) बलि किये बकरे के चारों पांव व शिर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पांचणो (बो)–देखो 'पहुंचणो'(बो) ।

पांचनखो–पु० [सं० पंचनख] एक प्रकार का अशुभ घोड़ा ।

पांचपदो–पु० [सं० पंच-पद] बागड़ क्षेत्र में जोगियों के एक समूह वादन का नाम ।

पांचबांण–देखो 'पंचबांण' ।

पांचभूतिक–देखो 'पंचभूतक' ।

पांचम–१ देखो 'पंचमी' । २ देखो 'पंचम' ।

पांचमउ–देखो 'पंचम' ।

पांचमहाव्रत–देखो 'पंचमहाव्रत' ।

पांचमि (मी)–१ देखो 'पंचम' । २ देखो 'पांचमी' ।

पांचमुख–देखो 'पंचमुख' ।

पांचमो–देखो 'पंचम' (स्त्री० पंचमी) ।

पांचयग्य–पु० [सं० पंचयज्ञ] श्रीकृष्ण के शंख का नाम ।

पांचरूप–देखो 'पंचरूप' ।

पांचलड़ो–देखो 'पंचलड़ी' ।

पांचलड़ो–वि० १ पांचों तत्त्वों वाला, पांचों तत्त्वों से युक्त । २ देखो 'पंचलड़ो' ।

पांचसी–स्त्री० १ मूर्ति । २ देखो 'पंचाली' ।

पांचसोड़–पु० पुरोहित ब्राह्मणों का एक भेद ।

पांचवी–स्त्री० १ नैऋत्य कोण से चलने वाली अकाल सूचक हवा । २ देखो 'पंचमी' ।

पांचवों–देखो 'पंचम' ।

पांचसई–देखो 'पांचसौ' ।

पांचसदी–देखो 'पंचसदी' ।

पांचहजारी–देखो 'पंचहजारी' ।

पांचाणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो) ।

पांचाधर–पु० सेना के पांच दल ।

पांचाव्रत–देखो 'पंचाव्रत' ।

पांचायण–देखो 'पंचायण' ।

पांचाळ–देखो 'पंचाळ' ।

पांचाळी–स्त्री० [सं० पांचाली] १ द्रौपदी का एक नाम । २ साहित्य में एक प्रकार की रीति । ३ इन्द्रजाल के छः भेदों में से एक ।

पांचि–देखो 'पांच' ।

पांचिंद्रिय–देखो 'पंचेंद्रिय' ।

पांचिम–देखो 'पंचमी' ।

पांची–स्त्री० ताश में पांच बूंटी वाला पत्ता ।

पांचुं, पांचूं–वि० [सं० पंच] १ समस्त पांचों । २ देखो 'पांच' । ३ देखो 'पंचमी' ।

पांचूंप्रगट–पु० [सं० पंचप्रकट] कछुआ, कमठ ।

पांचूंसाख–देखो 'पंचसाख' ।

पांचें–देखो 'पंचमी' ।

पांचेंक–वि० [सं० पंच-एक] पांच के लगभग ।

पांचौ–पु० [सं० पंच] १ पांच की संख्या का अंक । २ पांच का वर्ष ।

पांजर, पांजरउ, पांजरड़उ–पु० १ चड़स में लगने वाले लकड़ी के गुटके । २ देखो 'पंजर' ।

पांजरी–पु० [सं० पंजर] १ नाव का एक भाग या हिस्सा । २ देखो 'पंजर' ।

पांजा–पु० [सं० पंच] पांच तंतुओं से बना धागा ।

पांड–स्त्री० १ छाब । २ देखो 'पांडु' । ३ देखो 'पिंड' । ४ देखो 'पांडुर' । ५ देखो 'पांडव' ।

पांडर, पांडरउ, पांडरो–वि० [सं० पाण्डुर] १ स्वच्छ, निर्मल । २ देखो 'पांडुर' ।

पांडव–पु० [सं०] १ राजा पांडु के पुत्र । २ पांच इन्द्रियां । ३ घोड़े का सईस । ४ यवन, मुसलमान । —**तिलक**–पु० युधिष्ठिर । —**नगर**–पु० दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ । —**नामी**–वि० पांचों पाण्डवों में से किसी नाम का ।

पांडिति–देखो 'पंडित' ।

पांडियो–देखो 'पंडो' ।

पांडोउ–पु० [सं० पाण्डु] एक देश का नाम ।

पांडीस–स्त्री० तलवार ।

पांडु–पु० [सं०] १ एक रोग विशेष । २ सफेद रंग । ३ कुछ लालो लिये पीला रंग । ४ कुरुवंश का एक राजा पांडु । ५ देखो 'पांडव' ।

पांडुता–स्त्री० [सं०] सफेदी, रक्ताल्पता ।

पांडुनाग–पु० [सं० पाण्डुनाग] १ सफेद हाथी । २ सफेद, सांप ।

पांडुपुत्र, पांडुपूत–पु० [सं०] राजा पांडु के पुत्र, पांडव ।

पांडुर–वि० [सं०] १ पीला, पीत । २ श्वेत, सफेद । —पु० १ पीलिया नामक रोग । २ रक्ताल्पता का एक रोग ।

पांडुरी–स्त्री० पारस पीपल नामक वृक्ष ।

पांडुरो–देखो 'पांडुर' ।

पांडुलिपि–स्त्री० [सं०] १ प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ । २ किसी लेख आदि का लिखित प्रारूप, मसविदा ।

पांडू–देखो 'पांडु' ।

पांडूप–पु० एक वस्त्र विशेष ।

पांडूर, पांडूरो–देखो 'पांडुर' ।

पांडे–देखो 'पांडधो' ।

पांडेरी-ओवरी–स्त्री० मेवाड़ के महाराणा का एक विभाग ।

पांडोसवी–पु० खड्गधारी योद्धा ।

पांडधो–पु० [सं० पण्डा] १ विद्वान, पण्डित । २ तीर्थ गुरु । ३ शिक्षक । ४ रसोइया ।

पांण–पु० [सं० प्राण, प्रण, पानीय, उपानह, पानम्] १ शक्ति,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बल, सामर्थ्य । २ जीव, प्राण । ३ पानी, जल । ४ प्रभाव, प्रताप । ५ प्रण । ६ करवट, बगल । ७ जूती । ८ कारण; हेतु । ९ मर्यादा, प्रतिष्ठा । १० शस्त्रादि की धार । ११ चमक । १२ कपड़े में लगाई जाने वाली मांड । १३ खड़ी पाई । १४ तुष्टि, संतुष्टि । १५ मान । १६ सिंचाई । –क्रि०वि० [सं० प्राण] १ ही । २ तुरन्त, शीघ्र । ३ देखो 'पांणि' ।

पांणकीर, पांणकोरो–पु०बिना धोया, कलप या मांड वाला वस्त्र ।

पांणगो, पांणग्ग–पु० [सं० पानः] १ गांव में पीने के पानी का कूआ । २ शराब आदि की गोष्ठी ।

पांणग्रहण–देखो 'पांणिग्रहण' ।

पांणत–स्त्री० [सं० पानीयकृत्य] १ फसल की सिंचाई करना, क्यारियां पाना । २ उक्त कार्य की मजदूरी ।

पांणतियो, पांणती–पु० सिंचाई करने वाला, क्यारियां पाने वाला व्यक्ति ।

पांणब–देखो 'पांणी' ।

पांणधर–वि० [सं० प्राणधारिन्] १ शक्तिशाली, बलवान । २ प्राणवान, जीवधारी ।

पांणप–देखो 'पांणिप' ।

पांणपखो–पु० धोया पत्थर ।

पांणपुन्न–पु० [सं० पानी पुण्य] पानी पिलाने का पुण्य ।

पांणही–देखो 'पनही' ।

पांणि–पु० [सं० पाणि] १ कर, हाथ । २ देखो 'पांण' । ३ देखो 'पांणी' ।

पांणिगो–देखो 'पांणगो' ।

पांणिग्रहण–पु० [सं० पाणि ग्रहण] विवाह, शादी । वर द्वारा कन्या का हाथ थाम कर ग्रहण करने की क्रिया ।

पांणिनि, पांणिन, पांणिनि–पु० [सं० पाणिनि] संस्कृत-व्याकरण के प्रख्यात विद्वान् ।

पांणिनीय–वि० [सं० पाणिनीय] पाणिनि का बनाया हुआ ।

पांणिप–पु० १ शक्ति, बल, सामर्थ्य । २ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान । ३ कांति, आभा ।

पांणिपीड़ण–पु० पाणिग्रहण ।

पांणो–पु०[सं० पानीय]१ जल, पानी । २ शक्ति, बल, सामर्थ्य । ३ चमक, कांति । ४ तेज, ओज । ५ वीर्य । ६ आंसू । ७ इज्जत, प्रतिष्ठा । ८ स्वाभिमान । ९ देखो 'पांणि' । १० किसी पदार्थ का द्रवीय भाग ।

पांणीग्रहण–देखो 'पांणिग्रहण' ।

पांणीड़ी–देखो 'पांणी' ।

पांणीजरो, पांणीझरो–पु० एक प्रकार का आंत्रिक ज्वर ।

पांणीजीवो–पु० [सं० पानीयजीव] १ कछुवा, कच्छप । २ जल के जीव ।

पांणीपंथ–देखो 'पांणीपत' ।

पांणीपंथी–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।

पांणीपत, पांणीपथ–पु०[सं० पानीपत] दिल्ली के आस-पास का एक प्राचीन प्रदेश जहां पर इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुए थे ।

पांणीलंघणो–पु० मृतक के परिवार वालों को अन्न-जल ग्रहण कराने की प्रथा ।

पांणीवाड़ो–पु० दाह संस्कार के बाद स्नानादि कर अंजलि देने की क्रिया ।

पांणीहड, पांणीहल–पु० मुक्ता, मोती ।

पांणीहारी–देखो 'पणिहार' ।

पांणूं–पु० १ एक प्रकार का छंद । २ देखो 'पांणी' ।

पांणेची (छी)–वि० १ पानी की, पानी संबंधी । २ पूर्वजों की पुश्तैनी । –स्त्री० पानी के पात्र रखने की जगह, परींडा ।

पांणेचीधरा–स्त्री० पूर्वजों की भूमि ।

पांणें–वि० शक्तिशाली, समर्थ । –क्रि० वि० लिए, वास्ते, निमित्त । देखो 'पांण' ।

पांणो–१ देखो 'पणो' । २ देखो 'पांण' ।

पांत–१ देखो 'पंक्ति' । २ देखो 'पांती' ।

पांतर, पांतरण–स्त्री० १ विस्मरण, भूल । २ त्याग । ३ पागलपन ।

पांतरणो(बो)–क्रि० १ छोड़ना,त्यागना । २ भूलना,विस्मृत होना । ३ बुद्धिहीन होना, पागल-पन करना । ४ धोखा खाना ।

पांतरो–देखो 'पांतर' ।

पांति–१ देखो 'पांती' । २ देखो 'पंक्ति' ।

पांतिग–देखो 'पातक' ।

पांतियो–पु० [सं० पंक्ति] भोजन के लिये पंक्ति बद्ध बैठाने के लिये बिछाने का लंबा वस्त्र ।

पांती–स्त्री० [सं० पंक्ति] १ हिस्सा, भाग । २ देखो 'पंक्ति' । —**दार**–पु० हिस्सेदार, भागीदार । —**वार**–वि० हिस्से के अनुसार ।

पांतोटी, पांतो, पांत्यो–देखो 'पांतियो' ।

पांयणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो) ।

पांन–पु० [सं० पर्णम्]१ पत्ता, पत्र । २ कत्था, चूना व सुपारी के साथ खाने का नागर बेल का पत्ता, ताम्बूल । ३ इसी पान के आकार का कोई आभूषण या उपकरण । ४ तमाखू । [सं० पा] ५ पीना क्रिया । खान-पान । [सं० पानः] ६ नगाड़ा । ७ सर्प, सांप । ८ ताश का लाल रंग, पान का पत्ता । ९ स्त्रियों के कान का आभूषण । १० फौलाद की बनी पत्ती ।

पांनक–स्त्री० [सं० पानकम्] पेय पदार्थ ।

पांनकराड़–पु० शराब का व्यापारी, कलाल ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पानड़ली–देखो 'पान'।

पानड़ी–स्त्री० [सं० पर्णम्] १ चंदा उगाहने की सूची, याद दाश्त। २ रहट में खट-खट करने वाला उपकरण। ३ मूंग, मोठ आदि के सूखे पत्ते। ४ देखो 'पनड़ी'।

पानड़ो–१ देखो 'पान'। २ देखो 'पानी'।

पानचराई–स्त्री० मवेशी चराने का एक टैक्स, कर।

पानदान–पु० ताम्बूल रखने की डिबिया, पात्र।

पानदार–पु० सर्प का चित्र खुदा, अर्धमण्डलाकार पत्थर।

पानपखीण–पु० चन्द्रमा।

पानबीड़ो–पु० ताम्बूल की गिलौरी।

पानस–स्त्री० तिलहन की सूखी पत्तियां।

पानसी–स्त्री० १ चने के पौधे की कच्ची पत्तियां। २ मोठ, मूंग आदि के पौधों की सूखी पत्तियों का ढेर। ३ देखो 'पनड़ी'।

पानह, पानही–देखो 'पनही'।

पानि–देखो 'पाणि'।

पानिप–पु० [सं० पानः] १ नगाड़ा, ढोल। २ शराब पीने वाला व्यक्ति। ३ देखो 'पाणिय'। ४ देखो 'पाणिप'।

पानो–देखो 'पाणी'।

पानीपथ–देखो 'पाणीपथ'।

पानूस–देखो 'फानूस'।

पानोळी–स्त्री० नए पौधे पर आने वाली पत्तियां, नवीन पत्ते।

पानो, पान्हो–पु० [सं० पान] १ नगाड़ा। २ हिस्सा व अधिकार। ३ सम्पर्क, व्यवहार। [सं० पर्ण] ४ कागज, पत्र। ५ पृष्ठ, पेज। ६ वंश। ७ पत्ता। [फा० पहन] ८ माता के स्तनों में आने वाला दूध। ९ जमीन का भाग, हिस्सा। १० लंबे कागज की तरह का खेत। ११ अस्त्र आदि की धार। १२ देखो 'पान'।

पापण, पापणि–स्त्री० पलक।

पामड़ी, पामरी–स्त्री० [सं० पक्ष्माटिका] १ एक प्रकार का दुशाला, ओढ़ने का वस्त्र। २ दुल्हिन को विवाह-मण्डप में ओढ़ाने का वस्त्र।

पाम–स्त्री० [सं० पामन्] १ रक्त विकार से होने वाला एक चर्म रोग। खुजली। २ रोग, बीमारी। ३ व्यर्थ की बला।

पामड़ी–देखो 'पांभड़ी'।

पामड़ो–देखो 'पांवड़ो'।

पामणचार, पामणाचार–पु० खातिरदारी, आवभगत।

पामणो–पु० [सं० प्राघुणक] १ मेहमान, अतिथि। २ जमाता, जमाई।

पामली (ली)–देखो 'पाणी' (ली)।

पामर–वि० [सं० पामर] १ नीच कुल या वंश का। २ पापी, नीच। ३ मूर्ख, निर्बुद्धि।

पामरजोग–पु० [सं० पामरयोग] १ बाजीगर आदि के चमत्कारिक खेल। २ निकृष्ट मानी जाने वाली यौगिक क्रियायें।

पामरी–देखो 'पांभड़ी'।

पामल, पामलियो–१ देखो 'पांमर'। २ देखो 'पांयलो'।

पाम्हणो–देखो 'पांमणो'।

पाय–१ देखो 'पद', 'पांव'। २ देखो 'पाम'।

पायल, पायलियो, पायलो–वि० (स्त्री० पायली) पामारोग से ग्रसित।

पाव–पु० १ पैर, चरण। २ देखो 'पद'। ३ देखो 'पाम'।

पावड़ो–(डो) पु० [सं० पदक] १ कदम, डग, पैंड। २ पायंदाज, पग-पांवड़ा।

पावणो–देखो 'पांमणो'। (स्त्री० पावणी)

पावर–देखो 'पांमर'।

पावळ, पावळियो, पावळो–१ देखो 'पांयलो'। २ देखो 'पद'। (स्त्री० पावळी)

पास–स्त्री० [सं० पांसु] १ रज, धूलि। २ देखो 'फांस'।

पासर–पु० १ डांस, गोमक्खी। २ देखो 'पांसुल'।

पासळि, पासळी–देखो 'पासळी'।

पासु–१ देखो 'पांस'। २ देखो 'पांसली'।

पासुघुर–पु० घोड़ों के पैरों का एक रोग।

पासुभंग–पु० [सं० पशुंका-भंज्] छोटी पसली का ऊंट।

पासुल–वि० [सं० पांशुल] १ पापी, दुष्ट। २ गंदला किया हुआ, मलिन। ३ भ्रष्ट, पतित।

पासुळी–स्त्री० [सं० पांशुला] १ रजस्वला। २ छिनाल औरत। ३ देखो 'पासळी'।

पासू–देखो 'पांस'।

पासो–देखो 'पासी'।

पाह–स्त्री० १ महीनतम रज या धूलि। २ देखो 'पांस'।

पाहणो–देखो 'पांमणो'।

पाहि, पाही–क्रि०वि० पास, निकट।

पाहुणो–देखो 'पांमणो'।

पा'–देखो 'पास'।

पा–वि० पीने वाला। –पु० १ पान। २ पक्षी। ३ अमृत। –स्त्री० ४ शिवा। ५ रज, धूलि।

पाय–देखो 'पद'।

पायणी (णी)–देखो 'पाणी' (णी)।

पायडिओ–देखो 'पायडीउ'।

पायराधिय, पायाराधिय–पु० ओट से मारने वाला भील, शिकारी।

पाइ–देखो 'पद'।

पाइक (क्क)–देखो 'पायक'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाइगह–देखो 'पायगा'।
पाइणि–देखो 'पोयणी'।
पाइवळ–देखो 'पाईदळ'।
पाइस–देखो 'पायल'।
पाइली–देखो 'पायली'।

पाई–स्त्री० १ पैसे का तिहाई भाग एक प्राचीन सिक्का। २ छोटी खड़ी रेखा। ३ इकाई का चतुर्थांश। ४ झड़बेरी के सूखे कांटों का बड़ा गुच्छा।

पाईक (कु)–देखो 'पायक'।
पाईगह–देखो 'पायगा'।

पाईता–पु० एक वर्णिक छन्द विशेष।
पाईवळ–पु० [स० पदाति] पैदल सिपाही।
पाउंडो–देखो 'पांवडो'।
पाउं, पाउ–१ देखो 'पद'। २ देखो 'पाऊ'।
पाउरवोस–पु० [सं० प्रकाश-दोष] दीपक, मणि आदि के प्रकाश से लगने वाला दोष। (जैन)
पाउधारी–देखो 'पधारो'।
पाउस–देखो 'पाटल'।
पाउस–देखो 'पावस'।

पाऊ–पु० १ ऊपर से मुड़ा हुआ लोहे का मोटा कीला। २ देखो 'पद'।

पाए–देखो 'पद'।
पाएल–१ देखो 'पैंदल'। २ देखो 'पायल'।

पाओल्यां–स्त्री० [सं० पाद-अवलि] चमड़े की कसों में गुंथी घुंघरुओं की दो पट्टियां।

पाक–वि० [फा०] १ पवित्र, शुद्ध, निर्मल। २ पाप रहित, निर्दोष। [सं० पाकः] ३ पकाया हुआ। ४ पकने योग्य। ५ अनुकूल पड़ने वाला। –पु० १ पकने की क्रिया या भाव। २ पका हुआ अन्न, भोजन, मिठाई। ३ मिठाई, मिष्ठान्न। ४ मिश्री, चीनी या शहद के योग से बना पौष्टिक खाद्य पदार्थ। ५ पचने की क्रिया। ६ घाव पकने की अवस्था। ७ बालों की सफेदी, पकाव। ८ लकड़ी के मध्य का परिपक्व भाग। ९ एक दैत्य विशेष। १० बालक, बच्चा। ११ कर्मविपाक। १२ पाकिस्तान।

पाकड़–पु० [सं० पर्कटी] प्लक्ष नामक वृक्ष विशेष।
पाकड़णो (बो)–देखो 'पकड़णो' (बो)।
पाकठ–वि० १ पका हुआ। २ अनुभवी।

पाकणो (बो)–क्रि० [सं० पचष्] १ अनाज, फल आदि परिपक्व होना, पकना। २ आंच या गर्मी पाकर पकाव लेना। ३ घाव भरना, घाव में पीप पड़ना। ४ देखो 'पकणो' (बो)।

पाकती–क्रि०वि० १ निकट, समीप, पास में। २ पार्श्व में, बगल में।
पाकथांन–पु० [सं० पाकस्थान] १ पाकशाला, रसोईघर। २ पवित्र स्थान। ३ पाकिस्तान।
पाकरिपु–पु० [सं०] इन्द्र।
पाकसाळा–स्त्री० [सं० पाकशाला] रसोईघर। रसौड़ा।
पाकसासण, पाकसासन–पु० [सं० पाक शासन] इन्द्र।
पाकसिया–स्त्री० रामावत साधुओं की एक शाखा।
पाकारि–पु० [सं०] इन्द्र।
पाकिस्तान–पु० भारत के पश्चिम में स्थित एक मुस्लिम देश।

पाकेट, पाकेटू–पु० ऊंट।
पाकोड़ो–वि० (स्त्री० पाकोड़ी) पका हुआ, परिपक्व।
पाको–वि० [सं० पक्व] (स्त्री० पाकी) १ पका हुआ। २ वृद्ध। ३ चतुर, निपुण। ४ देखो 'पक्को'।

पाक्षिक–वि० [सं०] १ पक्ष या पखवाड़े से संबंधित। २ तरफदार, मददगार। ३ अच्छे वंश का। ४ पन्द्रह-पन्द्रह दिन में प्रकाशित होने वाला या बनने वाला।

पाखंड–पु० [सं० पाखण्ड] १ वेद विरुद्ध आचरण। २ ढोंग, स्वांग, आडंबर। ३ षट् दर्शनों में से एक अथवा प्रत्येक। ४ शरारत, नीचता। ५ कपट, धोखा। ६ ९६ की संख्या※।

पाखंडी–वि० [सं० पाषण्डिन्] १ वेद विरुद्ध आचरण करने वाला। २ षट्दर्शनी। ३ ढोंगी कपटी,। ४ धोखेबाज, धूर्त, नीच। ५ शरारती।
पाख–क्रि०वि० १ ओर, तरफ। २ देखो 'पक्ष'। ३ देखो 'पाखर'।
पाखइ–देखो 'पखै'।

पाखड़ी–स्त्री० १ आंख की पलक। २ देखो 'पांख'।

पाखड़ो–पु० १ ऊंट के चारजामे के बाजू की लकड़ी। २ ऊंट या भैंस का अगला पांव बांधने का बंधन।
पाखति, पाखती–देखो 'पाकती'।

पाखर–वि० [सं० प्रखर] तीक्ष्ण, तेज। –पु० [सं० प्रखर] १ युद्ध के समय हाथी या घोड़े पर डाली जाने वाली झूल, कवच। २ कोहरा, धुंध। ३ कवच।

पाखरड़ू, पाखरड़ो–देखो 'पाखर'।
पाखरणो (बो)–क्रि०वि० [सं० प्रखर] १ कवच, शस्त्रादि से सज्जित होना। २ घोड़े आदि पर जीन या पाखर कसना।
पाखरयंत, पाखरयत–वि० [सं० प्रखरयत्] कवच, झूल, जीन शस्त्रादि से सज्जित।
पाखरांण–देखो 'पाखर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाखरी–१ देखो 'पाखर'। २ देखो 'पाखळी'।

पाखरेत–देखो 'पखरेत'।

पाखळणो (बो)–क्रि० ऊंट या घोड़े के पैर बांधना।

पाखळि, पाखळिय–देखो 'पाखळी'।

पाखळियो–देखो 'पांखळी'।

पाखळी, पाखळीय–पु० मोट खाली करने के स्थान पर लगाया जाने वाला पत्थर। –क्रि०वि० पास, समीप। चारों ओर, चारों तरफ।

पाखळो–देखो 'पांखळी'।

पाखाण–देखो 'पासांण'। —**बद्ध**='पासांणबद्ध'। —**भेद**= 'पासांणभेद'।

पाखांणी–देखो 'पासांणी'।

पाखांणो–देखो 'पाखांनो'।

पाखान–देखो 'पासांण'।

पाखानो–पु० [फा० पायखाना] १ शौचालय, टट्टी। २ मल, विष्ठा।

पाखाळणो (बो)–देखो 'पखाळणो' (बो)।

पाखि, पाखी–क्रि० वि० पास, निकट, समीप। –स्त्री० १ कूए की सिंचाई में एक ही नाली से भरी जाने वाली क्यारियां। –पु० २ घोड़ा, अश्व। ३ देखो 'पक्षी'। ४ देखो 'पखैं'।

पाखे, पाखेड़ि पाखें–१ देखो 'पाकती'। २ देखो 'पखैं'। ३ देखो 'पाख'।

पाखो–पु० [सं० यक्ष] १ दूधारू पशु के स्तन-मण्डल का आधा भाग। २ देखो 'पक्ष'। ३ देखो 'पखैं'।

पाग, पागड़–स्त्री० [सं० पदक] १ सिर पर बांधने की पगड़ी। २ देखो 'पग'। ३ देखो 'पाक'। ४ देखो 'पागड़ो'।

पागड़ाछाक–स्त्री० प्रस्थान के समय मेहमानों से की जाने वाली शराब की मनुहार।

पागड़ापछाड़–स्त्री० घोड़े के पेट पर होने वाली एक भंवरी।

पागड़ी–देखो 'पाग'।

पागड़ून–पु० १ घोड़े के चारजामे में लगा पायदान का बंधन। २ देखो 'पागड़ो'।

पागड़ो–पु० १ घोड़े के चारजामे में लगा पायदान, रकाब। २ पुरुषों के पैर का आभूषण विशेष। ३ देखो 'पाग'।

पागणो (बो)–क्रि० [सं० पाकः] १ किसी खाद्य पदार्थ को गुड़ या शक्कर की चासनी में डुबाना। २ डूबना, तन्मय होना, मग्न होना।

पागतो, पागते–देखो 'पाकती'।

पागल–वि० [सं०] (स्त्री० पागलड़ी) १ जिसका दिमाग ठीक न हो, बावला, सनकी। २ नासमझ, मूर्ख। ३ क्रोध आदि की भावना में उन्मत्त।—**खानो**–पु० पागलों को रखने का स्थान, पागलों का चिकित्सालय।

पागलियो–१ देखो 'पग'। २ देखो 'पागो'। ३ देखो 'पागल'।

पागार (रो)–पु० [सं० प्राकार] परकोटा, चारदीवारी।

पागि–देखो १ 'पग'। २ देखो 'पागो'।

पागी, पागोड़ी–पु० [सं० पदक] १ पद चिह्नों से चोर आदि का पता बताने वाला, खोजी। विशेषज्ञ। २ मार्ग दर्शक, प्रेरक। ३ जानकार, विज्ञ।

पागीपो–पु० [सं० पदक] १ चोरों आदि के पद चिह्न पहचानने का कार्य। २ इस कार्य का पारिश्रमिक।

पागोड़ियो, पागोड़ो, पगोटियो–देखो 'पावड़ियो'।

पगोटी–स्त्री० [सं० पदक] बैठक, पालथी।

पागोटो, पागोड़ियो, पागोड़ो, पागोलियो, पागोतीयो, पागोत्यो, पागोथियो, पागोथ्यो–देखो 'पगथियो'।

पागो–पु० [सं० पाद] पलंग, खाट, कुर्सी आदि का पाया।

पाघ–देखो 'पाग'।

पाघड़–१ देखो 'पाग'। २ देखो 'पागड़ो'।

पाघड़ो–देखो 'पाग'।

पाघड़ो–देखो 'पागड़ो'।

पाघणी–देखो 'पाग'।

पाघोड़ी, पाघोटो–देखो 'पावड़ियो'।

पाड़–पु० १ एक प्रकार का वाद्य। २ अहसान।

पा' ड़–देखो 'पहाड़'।

पाड़णो (बो)–क्रि० [सं० पातनम्] १ पराजित करना, हराना। २ प्रविष्ट करना। ३ दखल देना, हस्तक्षेप करना। ४ दुःख या विपत्ति पड़ना। ५ वीरगति पाना। ६ मारना, संहार करना। ७ त्वचा उतारना। ८ गिराना, पटकना। ९ एक वस्तु को दूसरी पर फैलाना। १० छोड़ा या डाला जाना। ११ स्थिति बदलना। १२ प्राप्त करना, हथियाना। १३ उखाड़ना। १४ लूटना।

पाड़वलो–देखो 'पड़दलो'।

पाड़ो–देखो 'पाडो'।

पाड़ें–अव्य० १ निकट, पास। २ ओर, तरफ।

पाड़ोस–पु० [सं० प्रतिवेश] १ आस-पास का निवास स्थान। २ सीमावर्ती देश या क्षेत्र।

पाड़ोसण–स्त्री० [सं० प्रतिवेशिन्] अगल-बगल वाले मकान में रहने वाली स्त्री।

पाड़ोसी–पु० [सं० प्रतिवेशिन्] (स्त्री० पाड़ोसण) आस-पास के मकानों के निवासी।

पाड़ो–पु० [सं० पट्टन] मुहल्ला।

पाच–स्त्री० मणि।

पाचक–वि० [सं०] शीघ्र पचने या पचाने वाला। पचने में हल्का। —पु०– १ रसोईया, बावर्ची। २ पांच प्रकार के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पित्तों में से एक। ३ उक्त पित्त में रहने वाली अग्नि। ४ पाचन शक्ति बढ़ाने वाली औषधि।

पाचड़ियो–पु० हल के पीछे लगने वाली लकड़ी।

पाचणो–देखो 'पाछणो'।

पाचणो (बो)–क्रि० [सं० पचष्] १ पकाना। २ हजम होना पचना।

पाचन–पु० [सं०] १ खाया हुआ पदार्थ पेट में हजम होने की क्रिया। २ उदरस्थ अग्नि जिससे पाचन क्रिया होती है। ३ पाचन शक्ति बढ़ाने वाली औषधि। ४ आग, अग्नि। ५ पकाने की क्रिया। ६ प्रायश्चित। —वि० १ पचाने या पकाने वाला। हजम करने वाला। —**शक्ति, सगति, सगती**–स्त्री० भोजन पचाने वाली अग्नि। हजम करने की क्षमता।

पाचनी–स्त्री० [सं०] हरड़े, हरीतकी।

पाचर, पाचरो–पु० बैलगाड़ी के पहिये की 'पूठियों' के सिरों में फंसाई जाने वाली लकड़ी।

पाचळणो–वि० पीछे का। क्रि०वि०– पीछे से।

पाचो–स्त्री० १ एक प्रकार की लता, हरित पत्रिका। २ देखो 'पुणाछी'।

पाचू–पु० ऊंट के किसी अंग में होने वाली ग्रंथि।

पाछ–स्त्री० कमी, कसर, बाकी।

पाछइ–क्रि०वि० पीछे, बाद में।

पाछउ–देखो 'पाछो'। (स्त्री० पाछी)

पाछटणो (बो)–क्रि० १ वार करना, चलाना। २ फोड़ना तोड़ना। ३ देखो 'पछटणो' (बो)।

पाछणो–पु० १ उतरा। २ द्वन्द्व युद्ध के समय पैर के अंगूठे में बांधने का छोटा छुरा।

पाछत, पाछतरी–पु० [सं० पश्चात्] मौसम के अंत में बोई जाने वाली फसल। —वि० विलंब से बोया हुआ।

पाछपीछि (छी)–क्रि०वि० [सं० पश्चात्] पीछे, बाद में।

पाछमनो–वि० [सं० पश्चात्-मन] १ आगे बढ़ने में उदासीन। २ विलंब से कार्य करने वाला। ३ निरुत्साहित, धीमी गति वाला।

पाछल–स्त्री० [सं० पश्चात्] १ पीठ, पृष्ठ। २ देखो 'पाछलो'।

पाछलो–वि० [सं० पश्चात] (स्त्री० पाछली) १ पूर्व का, पहले का। २ पीछे का, बाद वाला। ३ पृष्ठ भाग वाला।

पाछिम–देखो 'पच्छिम'।

पाछिमड, पाछिलो–देखो 'पाछलो' (स्त्री० पाछली)।

पाछु–वि० पीछे का, पश्चात का।

पाछेपो–देखो 'पाछोपो'।

पाछै–देखो 'पछै'।

पाछोपो–वि० [सं० पश्चात्] १ पीछे का, बाद का। २ पीठ पीछे का।

पाछोर–स्त्री० [सं० पश्चात्] तालाब या पोखर के आस-पास की पिछली भूमि।

पाछो–वि० (स्त्री० पाछी) वापस, पीछे।

पाज–स्त्री० [सं० पाजस्य] १ प्रण। २ पुल, सेतु। ३ तट, कूल, किनारा। ४ तालाब की पाज। ५ सीमा, हद। ६ प्रतिष्ठा, गौरव, मान। ७ पंक्ति, कतार। ८ पट्ठा, घाट।

पाजड़ो–देखो 'पाज'।

पाजणक्षीर–पु० एक प्रकार का कंद विशेष।

पाजणी–देखो 'पैंजणी'।

पाजामो–पु० [फा० पाजामा] दोनों पांवों में फिरो कर कमर में बांधने का अधोवस्त्र।

पाजा–देखो 'पाज'।

पाजि, पाजी–वि० [फा० पा] १ दुष्ट, नीच। २ लुच्चा, बदमाश।

पाजेब–देखो 'पायजेब'।

पाजळणो (बो)–देखो 'प्रजळणो' (बो)।

पाझो–देखो 'प्राझो'।

पाटंबर–देखो 'पटंबर'।

पाट–पु० [सं० पट्ट] १ रेशम का वस्त्र। २ रेशमी डोरा। ३ वस्त्र। ४ सिंहासन, राजगद्दी। ५ पीढ़ा, बाजोट, चौकी। ६ तख्ता। ७ राजा, सम्राट। ८ पीसने की चक्की का कोई पाट। ९ कोल्हू में लगने वाला एक तख्ता विशेष। १० कपड़े का थान। ११ मकान की चुनाई आदि में काम आने वाला मोटा, चौड़ा व लम्बा पत्थर। १२ छत में लगाए जाने वाले लकड़ी के मोटे पाटिये। शहतीर। १३ रबी की फसल की भूमि विशेष। १४ भूमि की तह, परत। १५ भूमि, जमीन। १६ नदी की चौड़ाई। १७ लकड़ी की मोटी व बड़ी पट्टी। १८ पत्थर की बड़ी पट्टी। १९ स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष। २० कोमल "। २१ देखो 'पट'। २२ देखो 'पट्ट'।

पाटऊधोर–देखो 'पाटोधर'।

पाटक–वि० [सं० पटु] १ चतुर, बुद्धिमान, योग्य। २ दक्ष, निपुण, प्रवीण। ३ धूर्त, चालाक। [सं० पाटकः] ४ विभाजन करने वाला। –पु० १ नदी तट। २ एक बाजा विशेष। ३ ग्राम का अर्द्ध भाग। ४ बालिश्त, बिता।

पाटड़ागोह–स्त्री० एक प्रकार की भूरे रंग की गोह।

पाटड़ी–१ देखो 'पाटी'। २ देखो 'पटी'। ३ देखो 'पट्टी'। ४ देखो 'पाटी'।

पाटड़ो–पु० [सं० पट्टः] हेगा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाटण–पु० [सं० पत्तन] १ गुजरात का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर। २ पाटने की क्रिया या भाव। ३ नगर, शहर।

पाटणमुखी–पु० काजल, कज्जल।

पाटणी–पु० १ वस्त्र विशेष। २ देखो 'पट्टण'।

पाटणो (णी)–क्रि० [सं० पाटनम्] १ किसी चीज की रेल-पेल कर देना। २ गड्ढे को बराबर कर देना, दूर देना, समतल कर देना। ३ छत या छाजन बनाना। ४ खलल भर देना, अवकाश न रहने देना। रिक्तता न रहने देना।

पाटधंभ–पु० [सं० पट्ट-स्तम्भ] १ राज सिंहासन का रक्षक। २ राजा। ३ सामन्त, सरदार।

पाटधान–पु० [सं० पट्ट-स्थान] १ किसी राज्य की राजधानी। २ धर्म या सम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र।

पाटनगर–पु० [सं० पट्ट नगर] प्रमुख स्थान, राज्य स्थान।

पाटप–वि० [सं० पट्टप] १ प्रधान, मुख्य। २ शिरोमणि।

पाटपत (पति, पती)–पु० [सं० पट्टपति] १ राजा, नृप। २ युवराज, उत्तराधिकारी।

पाटरक्षक–पु० [सं० पाट रक्षक] १ राजा, नृप। २ राजगद्दी की रक्षा करने वाला।

पाटरायंभ–देखो 'पाटधंभ'।

पाटरियंभ–पु० [सं० पट्ट] युद्धस्थल, रणक्षेत्र।

पाटल, पाटल–पु० [सं० पाटलः] १ एक वृक्ष विशेष। २ एक देश। ३ पाडर वृक्ष या इस वृक्ष का फूल। ४ एक प्रकार का चावल।

पाटला, पाटलावती–स्त्री० [सं० पाटलावटी] देवी, दुर्गा।

पाटली–पु० मगध (बिहार प्रदेश) की राजधानी।

पाटली–पु० १ स्त्रियों के हाथ का कंगन। २ बैलगाड़ी के पहिये का एक भाग। ३ चरखे का एक भाग। ४ देखो 'पाटल'।

पाटव–पु० [सं०] १ स्वास्थ्य, आरोग्यता। २ स्फूर्ति, कुशलता। ३ देखो 'पाटवी'।

पाटवी–वि० १ उत्तराधिकारी। २ गद्दी का संभावित अधिकारी। ३ रेशमी वस्त्र, कौशेय।

पाटवीराग–स्त्री० वीर राग, सिंधुराग।

पाटहाथी–देखो 'पटहस्ती'।

पाटाबंध, पाटाबांधण–वि० [सं० पट्ट-बंधनम्] १ घावों की मरहम पट्टी करने वाला, जरीह। २ जिसने युद्ध स्थल में कइयों को घायल किया हो। ३ जिसके कई घाव लगे हों व पाटे बंधे हों।

पाटाबंधाई–स्त्री० [सं० पट्ट-बंधनम्] १ घावों पर मरहम्म पट्टी करने का कार्य। २ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।

पाटि–१ देखो 'पाट'। २ देखो 'पाटी'। ३ देखो 'पाटी'।

पाटिसधान, पाटिस्थान–पु० [सं० पट्ट-स्थान] १ प्रमुख स्थान। २ सिंहासन। ३ राजधानी।

पाटी–स्त्री० [सं० पट्टः, पाटीः] १ परिपाटी, रीति। २ गुणादि का क्रम। गणना क्रम। ३ पाठ, सबक। ४ बच्चों के पढ़ने लिखने की स्लेट या तख्ती। ५ चारपाई की लम्बाई की ओर की पट्टी। ६ विवाह के समय पढ़ा जाने वाला वेद मंत्र। ७ कान का निचला भाग। ८ जुताई किये खेत को समतल करने का उपकरण। ९ घाव पर बांधने की पट्टी। १० किसी कपड़े की कोर अथवा किनारी। ११ मांग, बालों की पट्टी। १२ मवेशी चराने व घास के लिये छोड़ा हुआ भू-भाग। १३ देखो 'पट्ट'। १४ देखो 'पट्टी'। १५ देखो 'पाट'।

पाटीपोतो–पु० [सं० पट्टः-पोत] स्लेट साफ करने का छोटा कपड़ा।

पाटीहोड़ी–देखो 'पटहोड़ी'।

पाटु–पु० [सं० पट्ट] १ वस्त्र विशेष। [सं० पाद] २ लात।

पाटुघासी–स्त्री० [सं० पाद-घातुच] पाद प्रहारिणी, पैर की चोट।

पाटेपड़ी–स्त्री० एक पक्षी विशेष।

पाटैदार–पु० [सं० पट्ट+फा. दार] पट्टी बांधने वाला।

पाटोती–पु० भोजन की थाली रखने की छोटी चौकी।

पाटोधर–वि० [सं० पट्ट-धारिन्] १ श्रेष्ट, उत्तम। २ वस्त्र-धारी। ४ वीर, बहादुर। –पु० १ राजा, नृप। २ युवराज, उत्तराधिकारी।

पाटो–पु० [सं० पट्ट] १ मरहम, पट्टी। २ काष्ठ का बना कोई तख्ता। ३ देखो 'पाट'। ४ देखो 'पाटी'।

पाटोधरण–देखो 'पाटोधर'।

पाठ–पु० [सं०] १ पढ़ने की क्रिया, पढ़ाई। २ धार्मिक पुस्तक का नियमित पठन। ३ पढ़ने का विषय। ४ प्रतिदिन पढ़ने का विषय। ५ पुस्तक का अंश, परिच्छेद, अध्याय। ६ किसी वाक्य या पंक्ति में शब्दों का अन्तर, पाठान्तर। ७ फालसा। ८ जवान बकरी जो गर्भवती न हुई हो। ९ देखो 'पाठी'। १० देखो 'पाट'।

पाठक–पु० [सं०] १ पढ़ाने वाला, अध्यापक। २ नित्य पाठ करने वाला, पढ़ने वाला। ३ धर्मोपदेशक। ४ ब्राह्मणों का भेद। ५ विद्यार्थी। ६ कथावाचक। ७ दीक्षा गुरु।

पाठकी–देखो 'पाठ'।

पाठड़ी–पु० सूअर का जवान बच्चा।

पाठदोस–पु० [सं० पाठ दोष] १ किसी ग्रंथ में लिखावट या छपाई की अशुद्धि। २ वर्जित रीति से पढ़ने की क्रिया।

पाठन–पु० [सं०] पढ़ाना क्रिया, अध्यापन।

पाठप्रणाली–स्त्री० [सं०] पढ़ने-पढ़ाने की रीति या ढंग।

पाठभेद–पु० [सं०] किसी ग्रंथ की प्रतिलिपियों में कहीं-कहीं होने वाला शब्दों या वाक्यों का अन्तर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाठड–देखो 'पाठा'।
पाठवणो (बो)–देखो 'पठाणो' (बो)।
पाठसाळा–स्त्री० [सं० पाठ-शाला] विद्यालय, स्कूल।
पाठांण, पाठांन–देखो 'पठाण'।
पाठांतर–देखो 'पाठभेद'।
पाठा–स्त्री० [सं०] एक लता विशेष।
पाठाफेर–पु० किसी कवि या लेखक की रचना में किया जाने वाला आंशिक परिवर्तन।
पाठिक–देखो 'पाठक'।
पाठी–वि० पाठ करने वाला, पढ़ने वाला। –स्त्री० जवान एवं हृष्ट-पुष्ट स्त्री।
पाठीक–देखो 'पाठक'।
पाठीन–स्त्री०[सं०] १ एक प्रकार की मछली। २ देखो 'पाठी'।
पाठेड़ी–स्त्री० जवान बकरी।
पाठेपड़ी–देखो 'पाटेपड़ी'।
पाठो–पु० [सं० पुष्ट] (स्त्री० पाठी) १ हृष्ट-पुष्ट या मोटा-ताजा व्यक्ति। २ ऊंट के चारजामे में लगने वाला डंडा। ३ एक प्रकार का हिरण। ४ लिखने का बड़ा कागज। ५ जांघ पर गांठ होने का एक रोग। ६ जवान हाथी।
पा'ड, पाड–१ देखो 'पटह'। २ देखो 'पट्ट'। ३ देखो पा'ड'। ४ देखो 'पहाड़'।
पाडकी–देखो 'पाडी'।
पाडगत, पाडगती–पु० १ राजस्थानी में 'सुपंख' गीत जिसमें नृत्य के बोल आते हैं। २ एक गीत या छन्द विशेष।
पाडड़ी–देखो 'पाडी'।
पाडण–स्त्री० एक प्रकार की मछली।
पाडणी (बो)–देखो 'पाड़णो' (बो)।
पाडर–देखो 'पाटल'।
पाडल–स्त्री० १ एक रंग विशेष की गाय। २ पीले रंग की हिरणी। ३ एक प्रकार का पीपल, पारस पीपल। ४ देखो 'पाटल'।
पाडलिया–देखो 'पाटलीपुत्र'।
पाडसूत्र–पु० [सं० पट्ट-सूत्र] रेशमी धागों का कार्य करने वाली जाति।
पाडाखुरो–पु० भैंसे के समान क्षुरों वाला सूअर।
पाडाजीभी–स्त्री० भैंसे की जिह्वा के आकार की कटार।
पाडियो–देखो 'पाडो'।
पाडिहार, पाडिहारु, पाडिहारू–देखो 'प्रतिहार'।
पाडी–स्त्री० भैंस की छोटी बछिया।
पाडुइ, पाडुआ–वि०[सं० पातुक] हल्का, खराब, अशुभ। (जैन)
पाडू–स्त्री० लूट।
पाडूई, पाडूउ–देखो 'पाडुइ'।
पाडोस–देखो 'पाड़ोस,।
पाडोसी–देखो 'पाड़ोसी'।
पाडो–पु० [सं० पटह] १ भैंसा, महिष। २ घोषणा, ढिंढोरा। ३ आक वृक्ष का फल। ४ देखो 'पाड़ो'।
पाढ़–पु० १ वंश, कुल। २ देखो 'पाठ'।
पाढ़गत, पाढ़गति–देखो 'पाडगत'।
पाढ़ि–१ देखो 'पाट'। २ देखो 'पाढ़'।
पाढ़ीक–देखो 'पाठक'।
पाढ़ो–पु० १ योग संस्कार। २ देखो 'पाट'। ३ देखो 'पाढ़'।
पाणो (बो)–क्रि०[स० प्रापण, प्रा.] १ पान कराना, पिलाना। २ प्राप्त करना, पाना, उपलब्ध करना। ३ भोगना, अनुभव करना। ४ भोजन करना, खाना। ५ समझना। ६ देखना, साक्षात्कार करना। ७ किसी के बराबर पहुंचना। ८ समर्थ होना। ९ धूम्रपान करना। १० मिलना प्राप्त होना।
पातंग–देखो 'पतंग'।
पातंजळ, पातंजळि–देखो 'पतंजलि'।
पात–पु० [सं० पात्रम्] १ कवि। २ याचक। ३ हल की 'चऊ'। ४ प्रहार, चोट। ५ आभूषणों आदि पर चढ़ाने की सोने आदि की पतली पत्ती। ६ स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष। ७ पत्ता, पल्लव। ८ पाई की बुनावट में बान की लड़ियों का समूह। ९ पतन, गिरावट। १० गुड़ की हल्की चासनी। ११ देखो 'पत'।
पातक (कु)–पु०[सं०]१ कुकर्म, पाप, अघ। २ गुनाह, दोष।
पातकि, पातकी–वि० [सं० पातकिन्] १ पापी, कुकर्मी, अधर्मी। २ गुनाहगार।
पातग–देखो 'पातक'।
पातड़ी–स्त्री० १ ऊंट की नाक पर चोट से होने वाली ग्रंथि। २ देखो 'पतड़ी'। ३ देखो 'पातड़ो'। ४ देखो 'पात'। ५ देखो 'पातो'।
पातड़ो–पु० १ रूंझ का वृक्ष व फल। २ बबूल वृक्ष की फली।
पातन–पु० [सं०] पारे के आठ संस्कारों में से पांचवां।
पातर–स्त्री० [सं० पात्र] १ हिन्दू वेश्याओं की एक जाति। २ देखो 'पातळ'। ३ देखो 'पात्र'। ४ देखो 'पातरो'।
पातरउ–देखो 'पातरो'।
पातरवाड़ो–पु० [सं० पात्र-पाटक] वेश्याओं का मुहल्ला।
पातरु–१ देखो 'पातरो'। २ देखो 'पातर'।
पातरो–पु० [सं० पात्र] १ साधु, विशेष कर जैन साधु का काष्ठ-पात्र। २ देखो 'पात्र'। ३ देखो 'पातड़ो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पातळ–स्त्री०[सं० पत्र] १ पत्तल, पनवारा। २ एक व्यक्ति के एक समय की भोजन सामग्री। ३ देखो 'पतळी'।

पातळड़ी–देखो 'पातळी'।

पातळचट्टू, पातळचट्टी–वि० (स्त्री० पातळचट्टी) १ स्वार्थी, धोखे बाज। २ खुशामद खोर, चापलूस। ३ खाने के लिये मरने वाला।

पातळपेटी–वि० [सं० पत्राल–पेट] पतले पेट वाली, कृशोदरा।

पातळियो–देखो 'पतळी'।

पातळी–वि० [सं० पत्राल] पतली, कृशांगी, सुन्दरी।

पातस्यो–स्त्री० मटकी, घघरी।

पातळो–वि० [सं० पत्राल] (स्त्री० पातळी) १ कम उपजाऊ। २ देखो 'पतळो'। ३ देखो 'पाटलो'।

पातसा(ह)–देखो 'बादसाह'।

पातसाई–देखो 'बादसाही'।

पातस्याई, पातस्याही–देखो 'बादसाही'।

पाताळ–पु० [सं० पाताल] १ पृथ्वी के नीचे का लोक। २ अत्यधिक गहरा कूआ या खड्डा। ३ मात्रिक छन्दों की मात्राओं को जानने का चक्र विशेष। —खंड–पु० पाताल लोक। —गरुडो, गरुड, गरुडी–स्त्री० एक प्रकार की लता। जल जमनी। —जंत्र–पु० कड़ी औषधियां पिघलाने का यंत्र विशेष। —तुंबी–स्त्री० हाथी जिसके दांत नीचे झुके हुए हो। —पति, पती–पु० शेषनाग। —सींगो–पु० मवेशी, जिसके सींग नीचे की ओर झुके हों। —सिद्धि–स्त्री० बहत्तर कलाओं में से एक।

पाताळियो–१ देखो 'पताळियो'। २ देखो 'पाताळ'।

पाति–देखो 'पाती'।

पातिक (ग, गि)–देखो 'पातक'।

पातिव्रत–देखो 'पतिव्रत'।

पातिसा, पातिसाह–देखो 'बादसाह'।

पातिसाही–देखो 'बादसाही'।

पातिस्या, पातीस्या–देखो 'बादसाह'।

पातिस्याही–देखो 'बादसाही'।

पाती–स्त्री० [सं० पत्री] १ तलवार। २ स्वर्णकारों का औजार विशेष। ३ लोहे आदि की पत्ती। ४ पत्र, चिट्ठी। खत।

पातुर, पातुर–देखो 'पातर'।

पातो–पु० [सं० पात्र] १ मिट्टी का बना बड़ा पात्र। २ स्त्रियों के कंठ का एक आभूषण।

पात्र–पु० [सं०] १ बर्तन, भाजन। २ किसी नाटक, कहानी आदि के अभिनेता। ३ किसी पद या हक का अधिकारी व्यक्ति। ४ देखो 'पत्र'। ५ देखो 'पातर'। ६ देखो 'पात'।

पात्रता–स्त्री० [सं०] १ पात्र होने की अवस्था या भाव। २ योग्यता, भाजनता। ३ अभिनेता होने की स्थिति।

पात्रो–१ देखो 'पातरो'। २ देखो 'पात्र'।

पाथ–पु० [सं० पाथ] १ जल, पानी। २ देखो 'पत्थर'। ३ देखो 'पंथ'। ४ देखो 'पारथ'। ५ देखो 'पथ'। —नाथ–पु० समुद्र, सागर। —निधि–पु० समुद्र।

पाथर–१ देखो 'पत्थर'। २ देखो 'पथ'।

पाथरणि, पाथरणी–देखो 'पथरणो'।

पाथरणो (बो)–क्रि० [सं० प्रस्तरणम्] १ फैलाना, बिछाना। २ धराशायी करना, मारना।

पाथराणो (बो)–देखो 'पथराणो' (बो)।

पाथराधरणो (बो)–देखो 'पथराणो (बो)'।

पाथरी–१ देखो 'पाथरो'। २ देखो 'पथारी'।

पाथरो–पु० [सं० प्रस्तरणम्] खेत में अनाज के कटे पौधों का ढेर।

पाथारी–स्त्री० [सं० प्रस्तरणम्] १ गोष्ठी। २ घास की गंजी या ढेरी।

पाथियो–पु० [सं० पथिक] राहगीर।

पाथिव–देखो 'पार्थिव'।

पाधू–१ देखो 'पात'। २ देखो 'पाथ'। ३ देखो 'पथक'।

पाथेय–पु० [सं०] यात्रा के समय साथ रखने की भोजन सामग्री।

पाथोज–पु० [सं०] कमल।

पाथोद–पु० [सं०] १ मेघ, बादल। २ समुद्र।

पाथोधर–पु० [सं०] बादल, मेघ।

पाथोधि, पाथोनिधि, पाथोनिधी–पु० [सं०] समुद्र, सागर।

पाथोरुह–पु० [सं०] कमल।

पाद–पु० [सं० पर्दः, पादः] १ अपान वायु। २ पैर, चरण।

पादक–पु० [सं०] आभूषण विशेष। –वि० पादने वाला अपान वायु निकालने वाला।

पादचारी–देखो पदचारी'।

पादटीका–स्त्री० [सं०] किसी ग्रंथ के पृष्ठ के नीचे दी गई टिप्पणी, फुटनोट।

पादण–स्त्री० [सं० पर्दनः] १ अपानवायु निकलने की क्रिया या ढंग। २ अपान वायु के रोग वाली स्त्री।

पादणो–वि० [सं० पर्दनम्] (स्त्री० पादणी) जिसके अपान वायु अधिक निकलती हो।

पादणो (बो)–क्रि० [सं० पर्द] अपानवायु निकालना, निकलना।

पादत्र, पादत्राण–पु० [सं०] १ जूता, जूती। २ खड़ाऊ।

पादस्खलन–स्त्री० [सं०] पैरों के तलवों में होने वाली जलन।

पादप–पु० [सं०] वृक्ष, पेड़।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावपोस–पु० जूता, पगरखी।
पावर–देखो 'पाधर'।
पावरी–पु० १ ईसाई धर्म का पुरोहित। २ देखो 'पाधरी'।
पावरी–देखो पाधरी'। (स्त्री० पादरी)
पावर्चदन–पु० [सं०] पैर पकड़ कर प्रणाम करने की क्रिया।
पादवेस्टक–पु० [सं० पादवेष्टक] पैर में धारण करने का आभूषण विशेष।
पादशृंखलिका–स्त्री० [सं० पाद शृंखलिका] पैरों का आभूषण विशेष।
पादशाखा–स्त्री० [सं० पादशाखा] पांव की अंगुली।
पादसाह–देखो 'बादसाह'।
पादहर्ष–पु० [सं० पाद हर्ष] एक रोग विशेष।
पादहिता–स्त्री० [सं०] जूती, उपानह्।
पादाकुलक–देखो 'पादाकुलक'।
पादाभरण–पु० [सं०] नूपुर।
पादाकांति–वि० [सं०] पैरों से कुचला हुआ, पददलित।
पादाकुलक, पादाकुलति, पादाकूलक–पु० [सं०] एक मात्रिक छंद विशेष।
पादारबंद, पादारब्यंद–पु० [सं० पादारविन्द] चरण कमल।
पादुका–स्त्री० [सं०] १ खड़ाऊ। २ जूती। ३ देखो 'पगलिया'।
पादोदक–देखो 'पदोदक'।
पादोदर–पु० [सं०] सर्प, सांप।
पाधोरणी (बी)–देखो 'पाधोरणी' (बी)।
पाबी–पु० १ काला नमक, संचल लवण। २ देखो 'पादणी'।
पाम्रि–देखो 'पाधरी'।
पाधड़ी–देखो 'पद्धरी'।
पाधर–वि० १ पालतू। २ अनुकूल। –पु० १ समतल भूमि, खुला मैदान। २ तलवार। ३ सीध, लंबाई। ४ देखो 'पाधरी'।
पाधरणी (बी)–देखो 'पाधोरणी' (बी)।
पाधरयतसा–स्त्री० १ तलवार का स्वामी, योद्धा। २ खुले मैदान में लड़ने वाला वीर।
पाधरसली–वि० १ प्रासादगुण युक्त। २ सरल स्वभाव का।
पाधरी–वि० १ सीधी, बिना मोड़ की, लंबी। २ सहज, सरल। ३ देखो 'पद्धरी'।
पाधरो–वि० (स्त्री० पाधरी) १ बिना मोड़ या घुमाव का, सीधा। २ सरल, सहज। ३ जिसमें ऐंठन न हो। ४ जिसमें अड़ने या दुराग्रह की प्रवृत्ति न हो। ५ जो कपटी न हो, अकुटिल। ६ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल। ७ जो कठिन न हो, आसान। ८ शांत, गंभीर। ९ शिष्ट, सुशील। १० सुबोध, सुगम्य। ११ देखो 'पाधर'।
पाधोर–वि० १ लक्ष्य पर सीधा निशाना लगाने वाला। २ देखो 'पाधर'।
पाधोरणी (बी)–क्रि० [सं० उपाधोरणम्] १ दंड देकर सीधा करना। २ युवा बैल को हल गाड़ी आदि के लिये अभ्यस्त करना।
पाधोरी–वि० (स्त्री० पाधोरणी) १ दण्ड देकर सुधारने वाला। २ युवा बैल को कृषि कार्य के लिये अभ्यस्त करने वाला। ३ अचूक निशाने बाज।
पाधी–पु० [सं० उपाध्याय] पंडित, ब्राह्मण।
पाप–पु० [सं०] १ कुकर्म, दुष्कर्म, बुरा कार्य, निंदित कर्म। २ धर्म व समाज की दृष्टि से वर्जित कर्म। ३ दुर्भाग्य। ४ वध, हत्या। ५ हीन या बुरी भावना। ६ अहित, अनिष्ट, बुराई। ७ प्रपंच, झंझट, बुराई। ८ अपराध। ९ दुःखद वर्णन*। १० अटल*। ११ तप्त वर्णन*। १२ कृष्ण वर्णन*।
पापइयो–देखो 'पपइयो'।
पापकरस–पु० [सं०] शिकार, आखेट।
पापकरम–पु० [सं० पापकर्म] बुरे व अनुचित कार्य। दुष्कर्म।
पापकरमी–वि० [सं० पाप+कर्मिन्] पापी, दुराचारी, कुकर्मी
पापक्षय, पापक्षै–पु० [सं० पापक्षय] १ पापों के क्षय होने की क्रिया या अवस्था। २ पापों से मुक्ति देने वाला स्थान, तीर्थ।
पापगण–पु० [सं०] ठगण का आठवां भेद।
पापग्रह–पु० [सं०] १ कृष्ण पक्ष की दशमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक का चन्द्रमा। २ फलित ज्योतिष के सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु ग्रह।
पापड़–पु० [सं० पर्पट] १ मूंग आदि के आटे में क्षार मिला कर, अत्यन्त पतला, रोटीनुमा बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ। २ एक वृक्ष विशेष। –वि० १ बारीक, पतला। २ सूखा, शुष्क।
पापड़ी–स्त्री० [सं० पर्पटी] १ बबूल की फली। २ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। ३ एक प्रकार का वृक्ष विशेष। ४ देखो 'पपड़ी'।
पापड़ी-खार–पु० [सं० पर्पट क्षार] केले के पेड़ का क्षार, क्षार विशेष।
पापड़ी–पु० १ स्कंध के पीछे की हड्डी। २ देखो 'पापड़'।
पापड़ी-काथो–पु० [सं० पर्पट-क्वाथ] एक प्रकार का कत्था।
पापचंद्रमा–पु० [सं०] विशाखा के अंतिम चरण से ज्येष्ठा के अंतिम चरण तक का चन्द्रमा।
पापचर, पापचारी–वि० [सं०] पापी, पापाचारी।
पापजूण–स्त्री० [सं०पापयोनि] पशु आदि की निकृष्ट योनि।
पापण, पापणी–वि० [सं० पापिनी] पाप कर्म करने वाली, हत्यारी, पापिनी।
पापत्रयताप–पु० [सं०] १ कायिक, वाचिक व मानसिक तीन प्रकार के पाप। २ आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक ताप।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पापदरसी–वि० [सं० पापदर्शिन्] १ बुरी नियत या दृष्टि वाला। २ पाप को न जानने वाला।

पापदृस्टी–स्त्री० [सं० पापदृष्टि] कुदृष्टि, बुरी नियत।

पापनक्षत्र–पु० [सं०] भरणी, कृतिका, विशाखा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्र।

पापनांमी–वि० [सं० पापनामन्] पापी, दुष्ट।

पापनासणी–स्त्री० [सं० पापनाशिनी] पापों को नष्ट करने वाली, तुलसी।

पापनासन–पु० [सं० पापनाशन] १ पापों का विनाश करने वाला विष्णु, परमात्मा। २ शिव। ३ पाप का क्षय करने वाला कर्म, प्रायश्चित।

पापफळ–पु० [सं० पापफल] जिस कार्य से पापों की उत्पत्ति हो। पाप कर्म।

पापमति–वि० [सं०] बुरे कामों की प्रवृत्ति वाला। दुर्बुद्धि।

पापमय–वि० [सं०] पापों से युक्त।

पापमोचण (न)–१ देखो 'पापमोचणी'। २ देखो 'पापनासन'।

पापमोचणी(नी)–स्त्री०[सं०] १ चैत्र कृष्णा एकादशी। २ गंगा।

पापरोग–पु० [सं०] पाप या निंदनीय कामों से होने वाला रोग।

पापरोगी–वि० [सं०] उक्त प्रकार के रोगों से ग्रसित।

पापळ–वि० अशक्त, कमजोर।

पापलोक–पु० [सं०] नरक लोक।

पापसमणी–वि० [सं० पाप शमनी] पापनाशक, तुलसी।

पापस्थांन–पु० [सं० पापस्थान] जन्म कुण्डली में ३, ८, १२वां स्थान।

पापहर, पापहारी–वि० [सं० पापहारिन] पापनाशक, पापों को मिटाने वाला। –स्त्री० १ एक नदी का नाम। २ गंगा।

पापांकुसा–स्त्री० [सं० पापांकुशा] आश्विन शुक्ला एकादशी।

पापा–पु० १ बच्चों द्वारा पिता का एक सम्बोधन। २ बिसप व यूनानी पादरियों की उपाधि विशेष। ३ पुराणानुसार एक तीर्थ।

पापाख्या–स्त्री० [सं०] बुध ग्रह की हस्त, अनुराधा या ज्येष्ठा नक्षत्र में रहते समय की गति।

पापाचार–पु० [सं०] १ दुराचार, कुकर्म। २ अन्याय, अत्याचार।

पापाचारी–वि० [सं०] पापकरने वाला, दुराचारी।

पापात्मा–वि० [सं०] जिसकी भावना गंदी हो, पाप करने वाला।

पापि–देखो १ 'पापी'। २ देखो 'पाप'।

पापिणी–देखो 'पापणी'।

पापियउ, पापियो–१ देखो 'पापी'। २ देखो 'पपईयो'।

पापिस्ट–वि० [सं० पापीष्ट] पापियों में अग्रणी। महापातकी।

पापी, पापीयो–वि० [सं० पापिन्](स्त्री०पापण,पापणी)१ निंदनीय व हेयकर्म करने वाला। २ हत्यारा, वधिक। ३ कुकर्मी, दुष्कर्मी। ४ क्रूर, निर्दयी। ५ अन्यायी, अत्याचारी। ६ दुष्ट, दुःखदायी। ७ उत्पीड़क। ८ गुनाहगार अपराधी।

पापु–१ देखो 'पाप'। २ देखो 'पापा'।

पापेड़ो–पु० पाप कर्म, कुकर्म।

पापोस–पु० [फा० पा-पोश] जूता, उपानह्।

पापौ–देखो 'पाप'।

पाबंद–वि० [फा०] १ बंधा हुआ, बद्ध, कैद। २ नियम, प्रतिज्ञा आदि का पालनहार। ३ कर्त्तव्य के प्रति सावधान। ४ अपने कार्य या ड्यूटी पर मुस्तैदी से लगा हुआ। ५ रोका हुआ। –पु० घोड़े की पिछाड़ी।

पाबंदी–स्त्री० [फा०] १ पाबंद होने की अवस्था या भाव बद्धता। २ नियम, प्रतिज्ञा आदि की अनुपालना। ३ कर्त्तव्य के प्रति सावधानी। ४ बाध्यता, लाचारी। ५ रोक, मनाही।

पाबागढ़–पु० चौहानों का एक छोटा सा राज्य।

पाबासर–पु० [सं० पर्वतसर] पर्वत के मध्य की झील या तालाब।

पाबासरी, पाबाहरी–वि० [सं० पर्वतसर] पर्वतीय बड़ी झील या जलाशय। –पु० हंस, मराल।

पाबू, पाबूराठौड़–पु० एक इतिहास प्रसिद्ध, दृढ़ प्रतिज्ञ राठौड़ वीर।

पाबै–देखो 'परवत'।

पायंदाज–पु० [फा०]पैर पोंछने का उपकरण, पांवड़ा।

पायंदारी–स्त्री० एक समय का राशन।

पाय–देखो 'पद'।

पायक–पु०[सं० पादाति] (स्त्री० पायका) १ सेवक, नौकर परिचायक। २ पैदल सिपाही, प्यादा। ३ दूत, सन्देशवाहक। ४ योद्धा, वीर।

पायका–स्त्री० [सं० पादातिका] दासी, सेविका, परिचारिका।

पायकी–१ देखो 'पातकी'। २ देखो 'पायका'।

पायकी, पायक्क–देखो 'पायक'।

पायगा, पायगाह–पु० [फा० पाएगाह] अश्वशाला, घुड़शाला।

पायड़–पु० बैलगाड़ी के पहिये का मुख्य भाग।

पायजो–पु० पहने हुए अधोवस्त्र का बनाया हुआ झोला।

पायच्छित, पायछत, पायछित–देखो 'प्राछत'।

पायजांमो–देखो 'पजांमो'।

पायजादो–वि० प्राप्त करने वाला।

पायजेब–स्त्री० [फा०] स्त्रियों के पैरों का आभूषण, नूपुर।

पायडीउ–वि० [सं० प्रकटित] प्रकट।

पायत–पु० एक प्रकार का छन्द विशेष।

पायताबो–पु० [फा०] पैर का मौजा, जुर्राब।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पायदळ-पु०[सं० पाद दल] पैदल सेना, प्यादा।

पायदार-वि० [फा०] १ टिकाऊ, दृढ़, मजबूत। २ निश्चित, स्थिर। ३ प्रामाणिक।

पायनामी, पायनामो-वि० पैरों में सिर झुकाने वाला, नमने वाला, नम्र। -पु० [सं० पद-नाम] अधिकार।

पायपोस-देखो 'पादपोस'।

पायपोसबरदार-पु० जूता उठा कर चलने वाला व्यक्ति।

पायरख-स्त्री० परीक्षा, आंच।

पायरखू-पु० परीक्षण कसौटी। -वि० परीक्षक, परीक्षा करने वाला।

पायल-स्त्री० १ स्त्रियों के पैरों का आभूषण विशेष। २ मकान पर पट्टियां चढ़ाने के लिये बनाया गया ढालु रास्ता। ३ देखो 'पायदळ'।

पायलड़ी-१ देखो 'पायल'। २ देखो 'पायली'।

पायली, पायलो-पु० १ अनाज नापने का पात्र विशेष। २ एक तौल विशेष। ३ अफीम का छबड़ा।

पायस-१ देखो 'पायल'। २ देखो 'पायदळ'।

पायस-पु० [सं०] १ दूध, क्षीर। २ देखो 'पाइस'।

पायांण-देखो 'प्रयांण'।

पायाकुळक-देखो 'पादाकुळक'।

पायारोपणी-स्त्री० मंदिर, मकान आदि की नींव लगाने की क्रिया।

पायारो-देखो 'पगार'।

पायाळ (ळि)-देखो 'पाताळ'।

पायाळमुख-पु० [सं० पाताल मुख] वृक्ष, पेड़।

पायुभेद-पु० [सं०] चन्द्र ग्रहण के मोक्ष की एक विधि।

पायू-पु० [सं० पायु] मल द्वार, गुदा।

पायो-पु० [सं० पाद] १ बन्दूक का घोड़ा, खटका। २ एक बार में सेका व तला जाने वाला भोजन का अंश। ३ नक्षत्र का चतुर्थांश समय। ४ खंभा, स्तंभ। ५ पैर, पाया। ६ पैर की एक बीमारी। ७ पद, ओहदा। ८ वश, अधिकार। ९ देखो 'पागो'। १० देखो 'पद'।

पारंग, पारंगत-वि० [सं० पारंगत] १ किसी विषय का पण्डित, विशेषज्ञ, विज्ञ। २ निपुण, दक्ष। ३ पार गया हुआ।

पारंद-पु० १ बाण, तीर। २ देखो 'पारींद्र'।

पारंपर-पु० पार, आरपार।

पारंभ-देखो 'प्रारंभ'।

पारंभसुर (सुध, सुध)-वि० [सं० पारंभसुर] १ महान् कार्य करने वाला। २ यश का कार्य करने वाला। ३ प्रारंभ किये कार्य को पूरा करने वाला।

पार-वि० [सं० पारय्] १ दूसरा, पराया, अन्य। २ आगे या सामने वाला। ३ दूसरे तट तक गया हुआ। -क्रि०वि० १ दूसरे तट या किनारे, उस ओर। २ दूसरी ओर। -पु० १ जलाशय आदि का दूसरा किनारा, अपर तट। २ आगे की सीमा। ३ छोर, अंत हद। ४ दोनों ओर के तट। ५ शत्रु, दुश्मन। ६ चोर। ७ किसी वस्तु का अधिक से अधिक परिमाण।

पार-अपार-पु० ईश्वर, परमात्मा।

पारउ-देखो 'पारो'।

पारक-वि० [सं०] (स्त्री० पारकी) १ पार करने वाला। २ बचाने वाला। ३ मुक्त करने वाला। ४ उद्धार करने वाला। ५ पराया, अन्य। ६ विरोधी। -पु० [अं० पार्क] १ बाग, बगीचा, उपवन। २ देखो 'पारकर'। ३ देखो 'परीक्षा'।

पारकर-पु० १ एक प्रान्त विशेष। २ इस प्रान्त का घोड़ा।

पारकियो-देखो 'पारको'।

पारको-वि० [सं० पारकीय] (स्त्री० पारकी) १ पराया, दूसरों का। २ शत्रु का।

पारखड़ी-देखो 'परीक्षा'।

पारख-१ देखो 'परख'। २ देखो 'परीक्षा'।

पारखणो (णी)-देखो 'परखणो' (णी)।

पारखत, पारखद-देखो 'पारसद'।

पारखा-देखो 'परीक्षा'।

पारखि, पारखी, पारखु, पारखू पारखो-१ देखो 'परीक्षक'। २ देखो 'परीक्षा'।

पारग-वि० [सं०] पार जाने वाला।

पारगत-देखो 'पारंगत'।

पारगामी-वि० [सं० पारगामिन्] पार जाने वाला, पार उतरने वाला।

पारचो-पु० [सं० पारज्] १ स्वर्ण, सोना। [फा० पार्चः] २ कपड़ा वस्त्र। ३ कपड़े का टुकड़ा।

पारजात, पारजातक, पारजाति (ती)-देखो 'पारिजात'।

पारजीत-वि० [सं०] १ पार जाने वाला। २ मुक्त, स्वतंत्र।

पारणउ-देखो 'पारणो'।

पारणी-देखो 'परणी'।

पारणो-पु० [सं० पारणम्] १ किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जाने वाला पहला भोजन और तत्संबंधी, कृत्य। २ तृप्त करने की क्रिया या भाव। ३ समाप्ति। ४ किसी पुराणादि धर्म ग्रंथ का नियमित रूप से नित्य पाठ।

पारत-देखो 'पारद'।

पारत्थ-देखो 'पारथ'।

पारथणी (णो)-देखो 'प्रारथणी' (णो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारथ–पु० [सं० पार्थ] १ पृथा के पुत्र, पाण्डव। २ अर्जुन का एक नामान्तर। ३ अर्जुन नामक वृक्ष। ४ पृथ्वी पति, राजा। –वि० १ श्वेत, सफेद*। २ श्याम-काला*।

पारथनी (नी)–देखो 'प्रारथनी' (नी)।

पारथव–देखो 'पार्थिव'।

पारथि–१ देखो 'पारथ'। २ देखो 'पारथी'। ३ देखो 'प्रारथी'।

पारथिव–वि० [सं० पार्थिव] १ पृथ्वी संबंधी, पृथ्वी का। २ मिट्टी का बना। ३ पंचभौतिक। –पु० १ राजा, नृप। २ बादशाह, सम्राट। ३ तगर वृक्ष। ४ मंगल ग्रह। ५ मिट्टी का बर्तन। ६ पृथ्वी का प्राणी। —लिंग–पु० मिट्टी का शिव लिंग।

पारथी–वि० १ प्रार्थना, निवेदन, विनती। २ पार्थिव शिव लिंग की उपासना, अर्चना। ३ कवि। ४ योद्धा, वीर। ५ देखो 'प्रारथी'।

पारथ्य, पारथ्वी–१ देखो 'पारथ'। २ देखो 'पारथी'।

पारद–वि० १ परे, सीमा से परे। २ मुक्ति दाता। –पु० [सं०] १ पारा नामक धातु। २ पारस में रहने वाली एक जाति। ३ श्वेत, सफेद*।

पारदरसक–वि० [सं० पारदर्शक] १ जिसके आर-पार दिखाई देता हो। २ जिसके अन्दर की वस्तु दिखती हो। ३ प्रकाश जिसके आर-पार जाता हो।

पारदरसी–वि० [सं० पारदर्शिन्] १ उस पार तक देखने वाला। २ चतुर, बुद्धिमान। ३ दूरदर्शी।

पारध–पु० १ खुला मैदान। २ देखो 'पारधी'।

पारधि, पारधी, पारधियो, पारध्यो–पु० [सं० पार्षद्धि] १ बहेलिया, शिकारी। २ भील। ३ आड़ लेकर वार करने वाला। ४ शिकार, आखेट।

पारधिबसण–पु० [सं० पार्षद्धिव्यसन] शिकार का व्यसन।

पारपंथक–पु० [सं० पार पथिक] डाकू, चोर।

पारपर्ज–वि० असंख्य, अपार, असीम।

पारपलव–देखो 'पारिपलव'।

पारबत, पारबतां, पारबती, पारबत्तो, पारब्बती–देखो 'पारवती'। —नाथ='पारवतीनाथ'। —पति='पारवतीपति'।

पारब्रह्म–देखो 'परब्रह्म'।

पारमारथिक–वि० [सं० पारमार्थिक] १ परमार्थ संबंधी। २ जिससे मनुष्य को पारलौकिक सुख हो। ३ सदा अपरिवर्तित रहने वाला। ४ वास्तविक।

पारलौकिक–वि० [सं०] स्वर्ग या परलोक संबंधी।

पारवण–पु० [सं० पार्वण] किसी पर्व में किया जाने वाला श्राद्ध।

पारवतां, पारवती, पारवत्तो–स्त्री० [सं० पार्वती] १ हिमालय की पुत्री व शिव की पत्नी। २ आदि शक्ति, दुर्गा। ३ द्रौपदी। ४ पहाड़ी नदी। ५ ग्वालिन। ६ सुवर्ण-युक्त मृत्तिका। —नाथ, पति, पती–पु० शिव, महादेव।

पारवारयै–वि० पार होने वाला, पार जाने वाला

पारवाळ–पु० [सं० प्रहारिवाल] आंख की पलक के भीतर होने वाले बाल, एक रोग।

पारवहंम, पारवह्म–देखो 'परब्रह्म'।

पारस–वि० चंगा, स्वस्थ, निरोग। –पु० [सं० स्पर्श] १ लोहे को स्वर्ण बनाने वाला कल्पित पत्थर। [सं० पारस्क] २ अफगानिस्तान के पास का एक देश। [सं० पार्श्व] ३ पास का भाग, बगल, करवट। ४ देखो 'परसुराम'। ५ देखो 'पारसनाथ'।

पारसद–पु० [सं० पार्षद] १ किसी परिषद् का सदस्य, पंच। २ गण, दूत। ३ सेवक, परिचायक, नौकर। ४ साथी, सहायक। ५ विख्यात पुरुष।

पारसदेव–देखो 'पारसनाथ'।

पारसनाथ–पु० [सं० पार्श्वनाथ] जैनियों के तेईसवें तीर्थंकर।

पारसपीपळ, पारसपीपळी–पु० [सं० पारीश पिप्पल] पीपल जाति का एक वृक्ष विशेष।

पारसद–देखो 'पारसव'।

पारसल–स्त्री० [अं० पार्सल] डाक, रेल आदि के द्वारा भेजने का किसी वस्तु का पुलिंदा, गठरी। गांठ।

पारसव–पु० [सं० पारशव] १ लोहा। २ वर्णसंकर संतान। [सं० पार्श्व] ३ करवट, बगल। ४ पड़ोस, सामीप्य। –क्रि० वि० १ निकट, पास, बगल में, पड़ोस में। –वि० २ हरामी, दोगला।

पारसी–स्त्री० १ सांकेतिक भाषा या बोली। २ संकेत, इशारा। ३ देखो 'फारसी'।

पारसी अजमोद, (अजमो)–पु० खुरासानी अजवायन।

पारसीयो–पु० मिट्टी या पत्थर का बना पात्र।

पाराजातपत–पु० [सं० प्रजात-पति] इन्द्र।

पारातीरत, पारातीरथ–पु० [सं० परातीर्थ] वेश्या या पर स्त्री गमन, व्यभिचार।

पारार्थ–पु० १ योद्धा, वीर। २ देखो 'परथ'। ३ देखो 'प्रारथना'।

पारार्थनी (नी)–देखो 'प्रारथनी' (नी)।

पाराध, पाराधी–देखो 'पारधी'।

पारायण–पु० [सं०] १ किसी निश्चित अवधि में किसी ग्रंथ का पाठ। २ अनुष्ठान। ३ किसी अनुष्ठान की समाप्ति। ४ बार-बार पढ़ने की क्रिया।

पारायणी–स्त्री० १ चिंतन-मनन के साथ समाप्ति की क्रिया या भाव। २ सरस्वती। ३ पार पाने वाली, पार जाने वाली।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारावत-पु० १ कबूतर। २ लाल या रक्त वर्णीय।
पारावार-वि० [सं०] पारंगत, पूर्ण। -पु० १ समुद्र, सागर २ सीमा, हद।
पारासर पारासुर, पारास्वर-पु० [सं० पाराशर] १ पराशर ऋषि के पुत्र। २ वेदव्यास का नामान्तर। ३ ब्राह्मणों की एक जाति। ४ देखो 'पराशर'।
पारि-१ देखो 'पार'। २ देखो 'पारी'।
पारिक-१ देखो 'परीक्षक'। २ देखो 'परीक्षा'।
पारिक्षा,पारिखू, पारिखी-१ देखो 'परीक्षा'। २ देखो 'परीक्षक'।
पारिखा-देखो 'परीक्षा'।
पारिजात, पारिजातक, पारिजाती-पु० [सं० पारिजातः] १ इन्द्र के नन्दन वन का एक देव वृक्ष। २ इस वृक्ष का फूल। ३ हर सिंगार नामक वृक्ष का नामान्तर। ४ पारियात्र नामक एक सूर्यवंशी राजा। ५ फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभयोग।
पारितोषिक-पु० [सं० पारितोषिक] पुरस्कार, इनाम।
पारिध-देखो 'पारधी'।
पारिप्लव-वि० [सं० पारिप्लव] चंचल।
पारियात्र-पु० [सं० पारियात्र] विंध्य के अन्तर्वर्ती सप्त कुल पर्वतों में से एक।
पारिभाषिक-वि० [सं० पारिभाषिक] जिसे परिभाषा द्वारा स्पष्ट किया जावे।
पारिषी-पु० हल में लगने का लकड़ी का एक उपकरण
पारिसी-देखो 'पारेवी'।
पारिस-देखो 'पारस'।
पारिसपीपळ-देखो 'पारसपीपळ'।
पारीण-पु० [सं०] १ सिंह, शेर। २ अग्रगण्य।
पारी-स्त्री० १ घी आदि रखने का मिट्टी का पात्र। २ व्यंजन विशेष। ३ किसी काम का अवसर, क्रम, नम्बर, बारी।
पारीक-पु० [सं० प्रति] ब्राह्मणों की एक शाखा।
पारीख-१ देखो 'परीक्षा'। २ देखो 'पारीक'।
पारीखी-देखो 'परीक्षक'।
पारु, पारू-वि० [सं० पारम] पार करने वाला।
पारूठी-देखो 'अपूठी'।
पारेवी-पु० रहट पर बनी कूंडी जिसमें पानी गिरता है।
पारेवड-पु० १ वस्त्र विशेष। २ देखो 'पारेवी'।
पारेवड़ी-देखो 'पारेवी'।
पारेवड़ी-देखो 'पारेवी'।
पारेवर-देखो 'पारेवो'।
पारेवी-स्त्री० [सं० पारावती] कबूतरी, कपोती।
पारेवो-पु० [सं० पारावत] (स्त्री० पारेवी) १ कपोत, कबूतर। २ डूंगरपुर में निकलने वाला संगमूसा पत्थर।
पारेसी-देखो पारेवी'।
पारोकिया-वि० १ दूर की। २ देखो 'परकिया'।
पारोटियो, पारोटो-पु० मिट्टी का छोटा पात्र।
पारोठो-देखो 'उपरोठी'।
पारो-पु० [सं० पारद] १ एक प्रसिद्ध द्रवीय धातु। २ घी रखने का मोटा पात्र। ३ देखो 'पर'।
पालंखी, पालखी-स्त्री० [सं० पालिः] १ पानी की रोक। २ बांध। [सं० पालः] ३ हर्र, हरड़। ४ देखो 'पायल'।
पाल-स्त्री० १ पालन पोषण २ बांध या तालाब के चारों ओर बना मिट्टी का गोलकार बांध।
पाल-पु० [सं० पट] १ छोटा तम्बू, सामियाना। २ बिछाने का टाट आदि वस्त्र। ३ नाव के मस्तूल पर बांधा जाने वाला कपड़ा। ४ रोक, अवरोध, मनाही। [सं० पल्लि] ५ भीलों की बाहुल्यता वाला गांव। ६ फल पकाने का घास फूस बिछा स्थान। ७ देखो 'जाल'।
पालक-देखो 'पाळो'।
पालक, पालख-वि० [सं० पालक] १ रक्षक, रक्षा करने वाला। २ पालन-पोषण करने वाला। ३ एक प्रकार का पत्ती वाला शाक। ४ एक देव विमान।
पालकी (की)-स्त्री० [सं० पल्यंक] डोली। कहार द्वारा उठाने की सवारी। —खांनी-पु० डोलियां रखने का घर। —नशीन-पु० डोली में बैठकर चलने वाला।—सिरोपाव-पु० जोधपुर दरबार द्वारा दिया जाने वाला एक पुरस्कार।
पालखी (खी)-पु० एक प्रकार का पत्तीदार शाक।
पालख-पु० [सं० पालक] १ बादल, मेघ। २ देखो 'पालक'।
पालगर-पु० [सं० पाल-कर] पालनहार, रक्षक।
पालड़ी-स्त्री० गोष्ठी।
पालड़ी-देखो 'पलड़ो'।
पालड-पु० परिवर्तन, बदलाव।
पालटणी (णी)-देखो 'पलटणी' (णी)।
पालठी-देखो 'पालखी'।
पालण, पालन-पु० [सं० पालनम्] १ रक्षा, बचाव। २ पोषण, परवरिश। ३ पथ्य। ४ रोक, मनाही।
पालनड़ो, पालनियो, पालनो-पु० [सं० पल्यंक] १ छोटे बच्चों को सुलाने का झूला। २ झूलने वाला पलंग, झूला। ३ व्रत के उपरांत किया जाने वाला भोजन।
पालणो (णो)-क्रि० [सं० पालनम्] १ परण-पोषण करना, परवरिश करना। २ रक्षा करना। ३ निभाना, निर्वाह करना।
पालणो (णो)-क्रि० [सं० पालनम्] १ दूर करना, हटाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ रोकना, मना करना। ३ मिटाना, नष्ट करना। ४ भगाना।

पालतू–वि० [सं० पालनम्] १ पाला हुआ, पोसा हुआ। २ पालन-पोषण के लिए रखा हुआ।

पालथी–स्त्री० [सं० पर्य्यस्त] पद्मासन, कमलासन, बैठक।

पालम–स्त्री० भकुन चिड़ी।

पालमहि–पु० [सं० महिपाल] १ बादल, घन। २ राजा, नृप।

पालर, पालरियो–पु० वर्षा का पानी, नदी, नहर या सरोवर का पानी।

पालवणी–स्त्री० एक गीत या छंद विशेष।

पालवणो (वो)–देखो 'पल्लवणो' (वो)।

पालवी–पु० [सं० पल्लि:] १ भीलों का मुखिया। २ भील।

पालसेट–देखो 'पलसेटी'।

पालसो–देखो 'फालसो'।

पालागर–पु० [सं० प्रालेय-गिरि] हिमगिरि, हिमालय।

पालापाली, पालापूली–स्त्री० वर्जन क्रिया, मनाही, रोकथाम।

पालिगी–देखो 'पलंग'।

पालि–स्त्री० [सं० पालि] १ पंक्ति, कतार। २ पांव-पैदल, प्यादा। ३ देखो 'पाळी'। ४ देखो 'पाळ'।

पालिका, पालिका–वि० [सं० पालिका] १ पालन करने वाली। २ रक्षा करने वाली। –स्त्री० किसी कार्य या व्यवस्था विशेष के लिये गठित समिति, परिषद्।

पालिस–स्त्री० [अं० पोलिश] १ किसी पात्र या वस्तु विशेष की सुन्दरता के लिए लगाया जाने वाला रोगन, मसाला। २ चमक, आभा। ३ निकल।

पालिसरो–पु० बढ़ई का एक औजार विशेष।

पालसी–स्त्री० [अं०] १ कार्य प्रणाली। २ व्यवहार। ३ नीति।

पाळी–स्त्री० [सं० पालि] १ कान का अग्र भाग। २ रेत की छोटी कतार। ३ पांव पैदल, प्यादा। ४ देखो 'पाळ'। ५ देखो 'पारी'।

पाली–स्त्री० १ एक प्राचीन भारतीय भाषा। २ कोना।

पालीघात–वि० [सं० पदाति] पैदल, प्यादा।

पालू–वि० [सं० पालक] १ पालने वाला, पालक। २ पालतू, पाला हुआ। ३ देखो 'पाळो'।

पाळे, पाळें–पु० भैंस आदि मादा पशु का ऋतुमति होना।

पाळोकड, पाळोकडी–देखो 'पालतू'।

पालोठी–देखो 'पालथी'।

पाळो–वि० [सं० पाल-आलुच्] (स्त्री० पाळी) पैदल, प्यादा। –पु० [सं० प्रालेय] १ बर्फ, हिम। २ वृद्ध या रोगी को मल-मूत्र कराने का बालीनुमा पात्र विशेष। ३ खेल के मैदान में प्रत्येक पक्ष की सीमा। ४ खेल की पारी (गेम)। ५ निर्जन स्थान, शून्य स्थल। ६ रेगिस्तान। ७ देखो 'पारो'।

पालो–पु० [सं० पल्लवम्] झड़बेरी के सूखे पत्तों का ढेर।

पालडो–पु० बैलगाड़ी के पहिये का एक भाग।

पालहवणो (वो)–देखो 'पल्लवणो' (वो)।

पावंडो–देखो 'पांवडो'।

पाव–पु० [सं० पाद] १ चौथा भाग, चतुर्थांश। २ सेर का चौथाई भाग, एक तौल। ३ नाथ सम्प्रदाय के सिद्धों की एक उपाधि विशेष। ४ पैर, चरण। ५ देखो 'पाव'।

पावक, पावकी, पावकक(ग)–पु० [सं० पावक] १ अग्नि, आग। २ एक प्रकार का बाण, तीर। ३ सूर्य। ४ अग्नि का अधिष्ठाता देव। ५ तेज, ताप। ६ लाल रंग। ७ तीन की संख्या। —कुंड–पु० अग्नि जलाने का कुण्ड। त्रिकोण०। —मणि–स्त्री० सूर्यकान्त मणि।

पावड़ियो–पु० १ सीढ़ी। २ देखो 'पावड़ी'।

पावड़ी–स्त्री० [सं० पादुका] १ खड़ाऊ, पादुका। २ जुलाहे का एक उपकरण। ३ फासला, दूरी। ४ देखो 'पावड़ियो'। ५ देखो 'फावड़ो'।

पावड़ो–१ देखो 'पहाड़ो'। २ देखो 'फावड़ो'।

पावजळांधी–पु० [सं० जालंधरपाद] जलंधर नाथ।

पावटो–पु० १ पांवों से चलाने का छोटा रहट। २ जलाशय का घाट। ३ देखो 'पावड़ो'।

पावठी–देखो 'पावड़ी'।

पावण–वि० पिलाने वाला। –स्त्री० १ पिलाने की क्रिया या ढंग। २ देखो 'पावन'।

पावणी–स्त्री० १ पिलाने की क्रिया। २ पिलाने वाली। ३ मेहमान स्त्री,

पावणो–वि० पिलाने वाला। –पु० १ मेहमान। २ जंवाई।

पावणो (वो)–देखो 'पाणो' (वो)।

पावन–वि० [सं०] (स्त्री० पावनी) १ पवित्र, शुद्ध। २ पाप मिटाने वाला, पवित्र करने वाला। ३ अवगुण व दोष रहित। –पु० १ एक छन्द विशेष। २ परमेश्वर, ईश्वर। ३ पीतर। ४ रुद्राक्ष। ५ चंदन। ६ सिद्ध पुरुष। ७ विष्णु। ८ अपने पति के बजाय अपने राजा के लिये सुहागिन बनी रहने वाली दासियां। —पुरुख, पुरुखि–पु० श्रीविष्णु। श्रीकृष्ण।

पावनता–स्त्री० [सं०] पावन होने की अवस्था या भाव, पवित्रता, शुद्धता।

पावन्न–देखो 'पावन'।

पावपंथ–पु० [सं० पाद+पंथ] नाथ पंथ, नाथ सम्प्रदाय।

पावपंथी–वि० उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

पावपोस–देखो 'पादपोस'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावरी–स्त्री० [सं० प्रावरी] १ चमड़े, ऊन या सूत की बनी छोटी थैली। २ देखो 'पावरी'।

पावरोर–पु० [सं० पापरौरव] भयंकर पाप।

पावरी–पु० [सं० प्रावर] १ घोड़े की जीन पर लटकाने का थैला। २ घोड़े को दाना खिलाने का थैला।

पावला–देखो 'पाओला'।

पावाल–स्त्री० सीढ़ी, जीना।

पावली–स्त्री० १ रुपये का चतुर्थांश एक सिक्का। २ देखो 'पायली'।

पावली–पु० १ पैर, चरण। २ देखो 'पावली'।

पावस–स्त्री [सं० प्रावृष] १ वर्षा ऋतु। २ वर्षा, बारिस। ३ मेघ बादल। ४ गाय-भैंस के स्तनों में दूध उतरने की अवस्था।

पावसणी (वी)–क्रि० [सं० प्रावृषम्] १ गाय-भैंस आदि के स्तनों में दूध उतरना। २ द्रवित होना।

पावसाणी (वी) क्रि० १ गाय-भैंस आदि के स्तनों में दूध उतरने जैसी क्रियाएँ करना। २ द्रवित करना।

पावसि–देखो 'पावस'।

पावहिणी–न० १ हिजड़ा, नपुंसक। २ देखो 'पपहणी'।

पावही–स्त्री० एक देवी का नाम।

पावासर, पावाहर–देखो 'पाडासर'।

पाविवड़–पु० [सं० प्रयागवट] प्रयाग का बोधिवृक्ष।

पावेक–वि० पाव सेर के लगभग।

पावो–पु० १ बड़े टीन या बड़ी बोतल का चतुर्थांश। २ बौना, ठिगना।

पासंग, पासंगो–पु० [फा०] १ तराजू के संतुलन में होने वाला अन्तर, 'काण'। २ उक्त अन्तर को ठीक करने के लिये रखा जाने वाला भार। ३ सहारा, मदद।

पास, पासइ–वि० [अं०] १ पार, तय। २ उत्तीर्ण, सफल। ३ पारित, स्वीकृत।–पु०[सं० पार्श्व] १ सामिप्य, निकटता, नजदीकी। २ पड़ोस। –[सं० पाश] ३ पाश, फंदा। ४ बंधन। ५ अधिकार, कब्जा। ६ समूह, झुण्ड। ७ वरुण। ८ कहीं जाने का पार-पत्र। ९ देखो 'पारसनाथ'। –क्रि०वि० [सं०पार्श्वकम्] १ बगल में, निकट में। २ अन्दर। ३ पड़ोस में, पास में। ४ अधिकार में, कब्जे में।

पासकरेखी–स्त्री० पासा फेंक कर गणना करने की ज्योतिष की एक प्रक्रिया।

पासड़ी–देखो 'पास'।

पासणिहंद, पासणिह–पु० पार्श्वनाथ। (जैन)

पासणी–स्त्री० [सं० प्राशन] बच्चे को प्रथम बार अन्न चटाने की क्रिया।

पासणी–देखो 'पाहुणी'।

पासणी (वी)–क्रि० [सं० पाश] पानी निकालने के लिए कुए में मोट आदि डालना।

पासत्थउ–वि० चरित्र पालन में शिथिल, ढीला। अशुद्ध। (जैन)

पासत्थपमत्तदोस–पु० आचार भ्रष्ट साधु से आहार लेने का दोष। (जैन)

पासनाह–देखो 'पारसनाथ'।

पासपासळी–पु० पतली पसली का घोड़ा।

पासबान–देखो 'पासवान'।

पासभूत–पु० [सं० पास भूत] वरुण।

पासरण–पु० [सं० प्रसरण] १ फैलाव। २ धावा। –वि० धावा करने वाला।

पासरणी (वी)–देखो 'पसरणी' (वी)।

पासरी–पु० [सं० उपाश्रय] जैन यतियों का स्थान।

पासळी–स्त्री० [सं० पशुंका] मनुष्य, बन्दर आदि के सीने तथा पशुओं के पेट पर रहने वाला गोलाकार हड्डी समूह।

पासवनी–देखो 'पासवान'।

पासवय–पु० लघु शंका, मूत्र। (जैन)

पासवान–स्त्री० [सं० पार्श्व] १ उप पत्नी, रखैल। २ सेवक, मर्जीवान। ३ अंग रक्षक।

पासवानियो–स्त्री० रखैल का पुत्र।

पासवाड़ी–देखो 'पसवाड़ी'।

पासहर–पु० [सं० पासीधर] फांसी का फंदा रखने वाला।

पासहुवान–देखो 'पासवान'।

पासाण–पु० [सं० पाषाण] पत्थर। प्रस्तर।

पासाणकरम–पु० [सं० पाषाणकर्म] ७२ कलाओं में से एक।

पासाणबद्ध–पु० [सं० पाषाणबद्ध] चारों ओर पत्थरों से बंधा सरोवर।

पासाणभेद–पु० सुन्दर पत्तियों वाला पौधा विशेष

पासाणी–वि० [सं० पाषाण] पत्थर का, पत्थर संबंधी।

पासाकेवळी–देखो 'पासकरेखी'।

पासाड़ी–देखो 'पसवाड़ी'।

पासाद–देखो 'प्रासाद'।

पासावळि, पासावळी–क्रि०वि० [सं० पार्श्व-अवलि] पास, निकट।

पासासार–पु० [सं० पाशक] चौसर नामक खेल।

पासि–क्रि०वि० १ पास में, नजदीक में। २ देखो 'पारसनाथ'। ३ देखो 'पास'। ४ देखो 'फांसी'।

पासोंधो–देखो 'पाचछियो'।

पासी–पु० [सं० पार्श्व] १ ओर, तरफ। २ देखो 'फांसी'। ३ देखो 'पास'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पासीगर–पु० [सं० पाश-कर] जाल रचाने वाला, फांसी गूंथने वाला। जालसाज।

पासीजळ–पु० [सं० पाशी-जल] जल का देवता, वरुण।

पासु, पासू–१ फांसी का जाल। २ देखो 'पास'। ३ देखो 'पासो'।

पासेवांण–देखो 'पासवांन'।

पासेस–देखो 'पारसनाथ'।

पासेही–देखो 'पास'।

पासै–क्रि०वि० [सं० पार्श्व] १ दूर, अलग। २ पास में।

पासो–पु० [सं० प्राशक] १ चौसर खेलने के गुटके जिन पर अंक लिखे होते हैं। [सं० पार्श्व] २ बगल, करवट। ३ कान का आभूषण विशेष। ४ देखो 'पास'। ५ देखो 'पारसनाथ'।

पास्वौ–पु० [सं० पार्श्व] एक प्रकार का तकिया।

पाहं–देखो 'पास'।

पाहइ–देखो 'पखै'।

पाहड–देखो 'पहाड़'।

पाहण, पाहन–देखो 'पासांण'।

पाहति–देखो 'पखै'।

पाहरी, पाहरु, पाहरू–देखो 'प्रहरी'।

पाहांण–देखो 'पासांण'

पाहाणो–देखो 'पागो'।

पाहाड़–देखो 'पहाड़'।

पाहाड़ी, पाहार–पु० १ पत्थरों का ढेर। २ पहाड़ी प्रदेश। ३ देखो 'पहाड़'। ४ देखो 'प्रहार'।

पाहारणी–देखो 'प्रहारणी'।

पाहारणी (वी)–देखो 'प्रहारणी' (वी)।

पाहि–१ देखो 'पास'। २ देखो 'पखै'।

पाहि, पाहिइ–अव्य० १ सुरक्षा की मांग सूचक आवाज। २ देखो 'पद'।

पाहुंन–देखो 'पांमणो'।

पाहुड़ी–देखो 'पावड़ियो'।

पाहुण, पाहुणउ, पाहुणो–देखो 'पांमणो'।

पाहुर, पाहुरी–देखो 'पावरी'।

पाहेसे-पाहेसे–अव्य० भैंस को पानी पिलाते समय मुंह से बोला जाने वाला शब्द।

पाहै–१ देखो 'पास'। २ देखो 'पखै'।

पाहोड़ा–वि० पास का, निकट का।

पाहोरी–देखो 'पावरी'।

पाहोरी–देखो 'पावरी'।

पिक–स्त्री० [सं० पिनेक] मस्ती, उन्माद।

पिंग–वि० [सं०] १ लाल-पीला मिला हुआ भूरा। २ कतिपय पीत।

पिंगति–देखो 'पंक्ति'।

पिंगळ–वि० [सं० पिङ्गल] १ पीला, पीत। २ भूरापन लिये पीला, सुंघनी के रंग का। ३ भूरापन लिये लाल। —पु० [सं०] १ सूर्य रवि। २ शनि। ३ मेघ, बादल। ४ छन्द शास्त्र के निर्माता एक मुनि। ५ छन्द शास्त्र। ६ वृज भाषा। ७ पीतल। ८ एक नाग का नाम। ९ एक प्रकार का फनदार सर्प। १० भैरव का पुत्र एक राग। ११ बन्दर, कपि। १२ नेवला, नकुल। १३ उलूक पक्षी, उल्लू। १४ हरताल। १५ कुबेर की नवनिधियों में से एक।

पिंगळा–स्त्री० [सं० पिंगला] १ शरीरस्थ तीन प्रधान नाड़ियों में से एक (योग)। २ लक्ष्मी का एक नाम। ३ दक्षिणी दिग्गज की स्त्री। ४ राजा भर्तृहरि की रानी का नाम। ५ एक भगवद् भक्त वेश्या का नाम। ६ एक प्रकार की चिड़िया। ७ गोरोचन।

पिंगा–स्त्री० [सं०] १ रक्त वाहिनी एक नाड़ी। २ हल्दी। ३ केसर। ४ हरताल। ५ चण्डिका देवी।

पिंगी–स्त्री० [देशज] स्त्रियों के द्वारा खेत में कास करते समय बच्चों के पैर में बांधने की रस्सी।

पिंगो–पु० १ वर्षा के उपरान्त नदी के किनारे पर आजाने वाली मिट्टी। २ देखो 'पींगो'।

पिछाटणो (वो)–क्रि० पछाड़ना, पटकना।

पिंजड़ो–देखो 'पींजरो'।

पिंजण (न)–देखो 'पींजण'।

पिंजर–देखो 'पंजर'।

पिंजरो–१ देखो 'पींजरो'। २ देखो 'पंजर'।

पिंजस–पु० [फा० फिनस] १ पलंग, ढोलिया। २ डोली की तरह बंद एक सवारी विशेष।

पिंजारण–स्त्री० पिंजारा जाति की स्त्री।

पिंजारा–स्त्री० रूई धुनने का कार्य करने वाली जाति।

पिंजारो–पु० [सं० पिञ्जनम्] (स्त्री० पिंजारण, पिंजारी) पिंजारा जाति का व्यक्ति, धुनका।

पिंजूस, पिंजूसन–पु० [सं० पिंजूष] १ श्रवणेन्द्रिय, कान। २ कान का मेल, ठेठी।

पिंड–पु० [सं० पिण्डम्] १ गोलाकार कोई वस्तु, गोला। २ कोई द्रव्य खण्ड, ठोस टुकड़ा। ३ ढेर, राशि। ४ तीर्थों में अस्थि विसर्जन के समय बनाया जाने वाला आटे का गोला। ५ पितृ तर्पण के समय पके चावलों का बनाया जाने वाला गोला। ६ रण क्षेत्र में घायल वीर द्वारा पितृ तर्पण के लिये बनाया जाने वाला खून-मिट्टी का गोला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७ शरीर, देह। ८ शक्ति, बल। ९ भोजन, आहार। १० देखो 'पांडव'।

पिंडखजूर, पिंडखिजूर–पु० [सं० पिण्ड खर्ज्जूरम्] १ खजूर वृक्ष के मीठे फल, गोला छुहारा। २ खजूर वृक्ष।

पिंडज–पु० [सं०] १ गर्भ में सर्वांग पूर्ण होकर जन्मने वाला प्राणी। २ पुत्र।

पिंडत–देखो 'पंडित'।

पिंडदान–पु० [सं० पिंडदान] १ मृतक के पीछे किये जाने वाले पुण्य-दान, तर्पण आदि के संस्कार। २ श्राद्ध पक्ष में किया जाने वाला पितृ तर्पण। ३ रण भूमि में घायल वीर द्वारा बनाये जाने वाले रक्त व मिट्टी के पिण्ड।

पिंडप–पु० १ शक्ति, बल। २ देखो 'पिंड'।

पिंडपुष्प–पु० [सं० पिण्डपुष्पम्] १ अनार, दाड़िम। २ अशोक वृक्ष। ३ गुलाब वृक्ष।

पिंडबड़ी–देखो 'पिंडवड़ी'।

पिंडबली–वि० शक्ति शाली, बलवान।

पिंडर–देखो 'पांडुर'।

पिंडरु–पु० [सं० पिण्ड] किसी के जन्म से घर में होने वाला अशौच।

पिंडवड़िया–पु० 'पिंडवड़ी' के अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति।

पिंडवड़ी–स्त्री० कृषि कार्य में परस्पर एक दूसरे के यहां कार्य कराने की रीति।

पिंडवाय–स्त्री० भिक्षार्थ भ्रमण (जैन)।

पिंडवो–१ देखो 'पिंड'। २ देखो 'पांडव'।

पिंडा–पु० [सं० पिण्ड] श्रीमान, आप।

पिंडाकार–वि० गोलाकार, वृत्ताकार।

पिंडाण–देखो 'पिंड'।

पिंडार–पु० [सं०] १ ग्वाला, गोप। २ देखो 'पिंडारी'।

पिंडारक–स्त्री० [सं०] १ एक पवित्र नदी का नाम। २ गुजरात स्थित एक प्राचीन तीर्थ। ३ एक नाग का नाम।

पिंडारा–स्त्री० [सं० पिंडार] दक्षिण की एक जाति।

पिंडारिया–देखो 'पिंडारी'।

पिंडारी–स्त्री० 'पिंडारा' जाति की स्त्री।

पिंडारी–पु० (स्त्री० पिंडारण, पिंडारिन) १ 'पिंडारा' जाति का व्यक्ति। २ उपलों को व्यवस्थित जमाकर रखा हुआ ढेर।

पिंडाल, पिंडालु, पिंडालू–पु० १ एक प्रकार का कन्द। २ अरबी।

पिंडि–१ देखो 'पिंड'। २ देखो 'पिंडी'।

पिंडी–स्त्री० [सं० पिण्ड] १ पोटली, गठरी। २ रस्सी या डोरे की गट्ठी, गोला। ३ सारंगी बजाने के गज का एक स्थान या भाग। ४ देखो 'पींडी'।

पिंडुपिंड–पु० [सं० पिंड] १ कामदेव। २ आप, यंस्व।

पिंडोळी–स्त्री० १ एक लता विशेष। २ किसी पदार्थ के लम्बे लड्डू। ३ पैर की पिंडली। ४ देखो 'पिंडी'। ५ देखो 'पिंड'।

पिंडो–देखो 'पिंड'।

पिंग–देखो 'पण'।

पिंदी–देखो 'पींदी'।

पिंधन–पु० [सं० पिधान] १ वस्त्र, कपड़ा, परिधान। २ आवरण, ढक्कन।

पिंयाळ–देखो 'पाताळ'।

पि–स्त्री० [सं०] १ विषय। २ योनि, भग। ३ भीष्म। ४ पवित्र। ५ शिखा। ६ स्वर्ग।

पिअ, पिअउ–देखो 'प्रिय'।

पिअणी (बो)–देखो 'पीणी' (बो)।

पिअहर–देखो 'पी'र'।

पिआई–स्त्री० [सं० पा] १ कूए से पानी निकाल कर पिलाने की क्रिया। २ इस कार्य का पारिश्रमिक। ३ पानी पिलाने वाले का पारिश्रमिक। ४ देखो 'पिसाई'।

पिआर–१ देखो 'प्यार'। २ देखो 'पाताल'।

पिआरी–देखो 'प्यारी'।

पिआरो–देखो 'प्यारी'। (स्त्री० पिआरी)

पिआली–देखो 'प्याली'।

पिआस–देखो 'प्यास'।

पिआसी–देखो 'प्यासी'। (स्त्री० पिआसी)

पिउ–देखो 'प्रिय'।

पिउड़ी–देखो 'प्रिय'।

पिउहर–देखो 'पी'र'।

पिऊ–देखो 'प्रिय'।

पिकंबर–देखो 'पैगंबर'।

पिक, पिकी–स्त्री० [सं०] १ कोयल। २ काला, श्याम*। —कंठी–वि० मधुर स्वर वाली। —बैनी, बैनी, बैनी–वि० मृदु भाषी, मीठे स्वर वाली। —वलभ, वल्लभ–पु० आम का वृक्ष।

पिक्खणी (बो)–देखो 'पेखणी' (बो)।

पिक्खणय–पु० [सं० प्रेक्षणम्] दृश्य।

पिगळणी (बो)–देखो 'पिघळणी' (बो)।

पिगळाणी (बो)–देखो 'पिघळाणी' (बो)।

पिगाळणी (बो)–देखो 'पिघाळणी' (बो)।

पिघळणी (बो)–क्रि० [सं० प्र+गलनम्] १ किसी ठोस वस्तु का गर्मी पाकर नरम होना, द्रव के रूप में होना। २ द्रवीभूत होना, पसीजना। ३ विचलित होना, फिसलना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिघळाणो (बो), पिघळावणो (बो)–क्रि० १ किसी ठोस वस्तु को गर्मी द्वारा नरम कराना, द्रव रूप कराना। २ द्रवी भूत कराना, पसीजाना। ३ विचलित कराना, फिसलाना।

पिघाळणो (बो)–क्रि० [सं० प्रगलनम्] १ किसी ठोस वस्तु को गर्मी द्वारा नरम करना, द्रव रूप करना। २ द्रवीभूत करना, पसीजाना। ३ विचलित करना, फिसलाना।

पिड़–पु० १ युद्ध, संग्राम। २ जोर से अपान वायु निकलने का शब्द।

पिड़गनू, पिड़गनो–देखो 'परगनो'।

पिड़गी–स्त्री० [सं० पिटक] १ ध्वनि, आवाज। २ पानी आदि के पात्र के नीचे लगी गोल गिरी जिससे पात्र ठीक से रखा जा सके।

पिड़जांन–देखो 'पड़जांन'।

पिड़वा–देखो 'पड़वा'।

पिड़ि–पु० [सं० पिंड] १ वृक्ष का तना। २ देखो 'पिड़'।

पिडड–पु० [सं०] उदर, पेट।

पिचंतर–वि० [सं०पञ्च सप्तति] सत्तर और पांच। –पु० सत्तर व पांच की संख्या, ७५।

पिचंतरमो (बो)–वि० चौहत्तर के बाद वाला, पिचहत्तर के स्थान वाला।

पिचंतरे'क–वि० पिचहत्तर के लगभग।

पिचंतरी–पु० पिचहत्तर का वर्ष।

पिचक–देखो 'पंचक'।

पिचकणो (बो)–क्रि० [सं०पिच्च] फूली हुई वस्तु का दबना।

पिचकाणो (बो)–क्रि० किसी फूली हुई वस्तु को दबा देना, उभार न रहने देना।

पिचकार, पिचकारका, पिचकारी–स्त्री०[सं०पिच्चकार] १ तरल पदार्थ को भरकर जोर से फेंकने का नलीदार यंत्र, उपकरण। २ इस उपकरण द्वारा फेंकी जाने वाली द्रव पदार्थ की धारा। ३ इसी प्रकार किसी पदार्थ की निकलने वाली धारा।

पिचकावणो (बो)–देखो 'पिचकाणो' (बो)।

पिचकिच–पु० खजूर।

पिचड़णो (बो)–क्रि० १ दब कर पिचक जाना। २ देखो 'पिछड़णो' (बो)।

पिचपिचाणो (बो)–क्रि० [सं० पिच्च] १ घाव में पीप भरना व गीला पड़ना। २ अधिक नरम या तर होने से पच-पच करना। ३ रसना, झरना।

पिचपिचाहट–स्त्री० आर्द्र, नमी या भराव के कारण होने वाली पच-पच।

पिचपिचो–वि० १ अधिक गीला। २ अधिक नरम। ३ अधिक तर। ४ देखो 'चिपचिपो'। ५ देखो 'पचपचो'।

पिचरंग, पिचरंगो–१ देखो 'पचरंग'। २ देखो 'पचरंगो'।

पिचरकी, पिचरको–देखो 'पिचकारी'।

पिचांणणो (बो)–देखो 'पचांणणो' (बो)।

पिचांणवो–देखो 'पचांणवो'।

पिचास–देखो 'पिसाच'।

पिचियासियो–पु० ८५ का वर्ष।

पिचियासी–वि० अस्सी व पांच, पिच्यासी। –पु० अस्सी व पांच की संख्या, ८५।

पिचियो–पु० १ छोटा बच्चा। २ फोड़ा, फुंसी।

पिचुळ–पु० झाऊ का पेड़।

पिचू–पु० १ कैर का वृक्ष। २ कैर का फल। ३ नीम का वृक्ष।

पिचोतर–देखो 'पिचंतर'।

पिचोतरी–स्त्री० सौ के ऊपर पांच, एक सौ पांच।

पिचोवड़ी–देखो 'पछेवड़ी'।

पिच्चक–देखो 'पंचक'।

पिच्छ–पु० [सं०] १ पंख, पर। २ मयूर का पंख। ३ बाण की पूंछ। ४ चोटी, कलगी। ५ पूंछ।

पिच्छम–देखो 'पच्छिम'।

पिच्छु–स्त्री० ह्रस्व इकार की मात्रा।

पिच्यांणमं, पिच्यांणु (णू)–देखो 'पचांणू'।

पिच्यासी–देखो 'पिचियासी'।

पिछ–देखो 'पीछू'।

पिछक–पु० [सं० पिच्छक] तमाल-पत्र।

पिछड़णो (बो)–क्रि० [सं० पश्चात्कृत] १ पीछे रह जाना। २ विकास या प्रगति न करना। ३ बलपूर्वक दबाने से टूट-फूट जाना। ४ दबने से रस निकलना।

पिछताओ–देखो 'पछतावो'।

पिछताणो (बो)–देखो 'पछताणो' (बो)।

पिछताप, पिछतापो, पिछताव–देखो 'पछतावो'।

पिछतावणो (बो)–देखो 'पछताणो' (बो)।

पिछतावो–देखो 'पछतावो'।

पिछम–देखो 'पच्छिम'।

पिछमांण, पिछमांणो–देखो 'पछमांण'।

पिछमाव–क्रि० वि० १ पश्चिम में, पश्चिम की ओर। २ देखो 'पश्चिम'।

पिछमियो–देखो 'पच्छिमी'।

पिछलगी–स्त्री० अनुकरण, अनुसरण, देखा-देखी, नकल। –वि० पीछे-पीछे रहने वाली।

पिछलगू, पिछलगों, पिछलगू–पु०(स्त्री० पिछलगी) १ अनुयायी, अनुगामी। २ शिष्य। ३ सेवक, नौकर। –वि० १ पीछे-पीछे रहने वाला, चापलूस। २ अनुसरण करने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिछलो–देखो 'पाछालो'। (स्त्री० पिछली)
पिछवा–स्त्री० [सं० पश्चिम-वायु] पश्चिम की वायु।
पिछवाड़ो–पु० १ पीछे का भाग। २ मकान का पिछला हिस्सा।
पिछवो–पु० [सं० पृष्ठ] हाथी का एक आभूषण विशेष।
पिछांण–देखो 'पैंचांण'।
पिछांणणो (बो)–देखो 'पैंचांणणो' (बो)।
पिछांणी, पिछाणु–देखो 'पैंचांण'।
पिछाड़ी–देखो 'पछाड़ी'।
पिछाड़ीवड़ी–देखो 'पछोकड़ो'।
पिछी–स्त्री० ह्रस्व इकार की मात्रा।
पिछुं–पु० [सं० पुच्छ] १ पूंछ। २ देखो 'पिच्छ'।
पिछेवड़ो–देखो 'पछेवड़ो'।
पिछोकड़, पिछोकड़ो, पिछोकड़ड, पिछोकड़ो–देखो 'पछोकड़ो'।
पिछोड़ी–देखो 'पछेवड़ी'।
पिछोड़ो, पिछोवड़ो–देखो 'पछेवड़ो'।
पिछोहा–पु० सांसियों में, पुत्र जन्मोत्सव के छठे दिन का भोज।
पिजूसण–१ देखो 'पिजूसण'। २ देखो 'परयूसण'।
पिटट–स्त्री० पिटाई, मारपीट।
पिटणो (बो)–क्रि० [स० पीडनम्] १ पीटा जाना, पिटाई होना, मार खाना। २ हारना, किश्त खाना। ३ प्रतियोगिता में हारना। ४ खेल में गोटी का मारा जाना। ५ अधिक काम में आने पर घिस जाना, पुराना पड़ जाना।
पिटपिट–स्त्री० [अनु०] हल्की सी ध्वनि विशेष।
पिटपिटाणो (बो)–क्रि० १ पिट-पिट ध्वनि करना। २ विवश रहना, मजबूर रहना। ३ कसमसाना, मन मसोस कर रह जाना।
पिटपिटी–स्त्री० चने के पौधे पर लगने वाले पोपले जिनमें दाना पड़ता है।
पिटल–पु० १ एक काश्तकार कौम या जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।
पिटांट–वि० दुबला-पतला, कृशकाय।
पिटाई–स्त्री० [सं० पीडनम्] १ पीटने की क्रिया या भाव। २ पीटने की मजदूरी। ३ किसी पर पड़ने वाली मार।
पिटाट–पु० सिर, मस्तक।
पिटाणो (बो)–क्रि० १ पिटवाना, पिटाई कराना, मार पटकवाना। २ प्रतियोगिता में हरवाना। ३ किश्त खिलवाना। ४ खेल में गोटियां मरवाना।
पिटापिट–पु० १ ध्वनि, आवाज। २ पिटाई।
पिटारो–स्त्री० टोकरी, डलिया।
पिटारो–पु० [सं० पिटकः] बड़ा टोकरा।
पिटावणो (बो)–देखो 'पिटाणो' (बो)।
पिट्ठ, पिट्ठो–देखो 'पीठ'।
पिट्ठ–वि० १ दोस्त, मित्र। २ सहायक, मददगार। ३ पीछे चलने वाला, अनुगामी।
पिठणो (बो)–क्रि० पैठना, प्रवेश करना।
पिठवण–स्त्री० [सं० पृष्ठपर्णी] ओषधि में काम आने वाली एक लता।
पिठांण–देखो 'पीठांण'।
पिडित–वि० [सं० पीड़ित] दुःखी, आतुर।
पिडीयार, पिढ़ीयार–देखो 'प्रतिहार'।
पिण–१ देखो 'पण'। २ देखो 'प्रण'।
पिणघट–देखो 'पणघट'।
पिणच–स्त्री० १ बुना हुआ कपड़ा फैलाने का लकड़ियों का ढांचा विशेष। २ देखो 'पुणाच'। ३ देखो 'पणाच'।
पिणचोजणी–पु० १ ऊंट के पिछले पैरों में होने वाला एक रोग। २ इस रोग से पीडित ऊंट।
पिणचोजणो (बो), पिणछोजणो (बो)–क्रि० रोग विशेष से ऊंट के पिछले पैरों में सूजन आना।
पिणयार, पिणहार, पिणहारो–देखो 'पणियार'।
पिणि–क्रि०वि० परन्तु, किन्तु।
पितबर–देखो 'पीतांबर'।
पित–१ देखो 'पिता'। २ देखो 'पित्त'।
पितकाळी, पितगाळी–स्त्री० [सं० पित्तकारी] लाल मिर्च।
पितपति–देखो 'पितरपति'।
पितरपापड़ो–देखो 'पित्तपापड़ो'।
पितमनमथ–पु० [सं० मन्मथ-पिता] मन।
पितर, पितरियो–पु० [सं० पितृ-पितरः] (स्त्री० पितरांणी) १ परलोकवासी पूर्वज। २ प्रेतत्व से मुक्त मृत व्यक्ति। ३ सब जीवों के आदि पुरुष एक देव विशेष। ४ किसी परिवार का मृत सदस्य जो देव योनि में होकर किसी अन्य सदस्य के जरिये अपना परिचय कराता हो। (रूढ़ि)। —पति–पु० धर्मराज, यमराज।
पितरेसुर, पितरेस्वर–देखो 'पित्रेश्वर'।
पितळकण–देखो 'पितळण'।
पितळकणो (बो)–देखो 'पितळणो' (बो)।
पितळण–स्त्री० १ फिसलन। २ फिसलने लायक चिकनाई। ३ चिकनाई वाला स्थान।
पितळणो (बो)–क्रि० १ फिसलना, रपटना। २ पीतल के बर्तन आदि में कोई तरल पदार्थ कसैला होना।
पितळाणो (बो), पितळावणो (बो)–क्रि० १ फिसलाना, रपटाना। २ कसैला करना।
पितवड–देखो 'पित्तोड़'।
पितसरो–पु० [सं० पिता-श्वसुर] श्वसुर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिता–पु० [सं० पितृ] जन्म दाता, जनक, बाप।

पितामह–पु० [सं०] १ पिता का पिता दादा। २ भीष्म। ३ शिव। ४ ब्रह्मा। ५ चौसठ भैरवों में से एक।

पितामिरच, पितामिरचि, पितामिरची–पु० कमल।

पितुंडियो, पितुंडो–पु० मोठ पर बंध पत्थर के नीचे लगाने का चमड़ा।

पितु–देखो 'पिता'।

पितुडियो, पितुंडो–देखो 'पितुंडियो'।

पितोड, पितौड–देखो 'पित्तोड़'।

पित्त–पु० [सं०] १ शरीरस्थ तीन तत्त्वों में से एक (वात, पित्त, कफ) २ उक्त तत्त्व का गुण-दोष। ३ देखो 'पिता'। —**कर**–वि० पित्त की वृद्धि करने वाला। —**कारक**–वि० पित्त उत्पन्न करने वाला। —**कास**–पु० पित्त विकृति से होने वाला रोग, खांसी। —**ज्वर, ज्वर**–पु० पित्त प्रकोप से होने वाला ज्वर, बुखार। —**दाह**='पित्तज्वर'। —**प्रकृति**–पु० पित्त की प्रधानता वाला शरीर। —**प्रकोप**–पु० पित्त की विकृति व उग्रता। —**व्याधि**–स्त्री० पित्त विकृति का रोग। —**शूल**–पु० पित्त विकृति से होने वाला दर्द, शूल। —**स्थान**–पु० पित्ताशय। —**हर**–पु० पित्त पर नियंत्रण करने वाली औषधि। खसखश, उशीर।

पित्तातिसार–पु० [सं०] पित्त प्रकोप से होने वाला अतिसार।

पित्तारि–वि० [सं०] पित्त का नाश करने वाला। –पु०– १ पित्त का शत्रु। २ पित्त पापड़ा। ३ पीला चंदन।

पित्तासय–पु० [सं० पित्ताशय] पित्त रहने का स्थान।

पित्ती–स्त्री० पित्त प्रकोप से होने वाली रक्त विकृति, एक रोग।

पित्तोड–पु० [सं० पात्रलोट:] बेसन से बनने वाला एक नमकीन खाद्य पदार्थ।

पित्तोदर–पु० [सं०] पित्त विकृति से होने वाला, पेट फूलने का रोग।

पित्तोन्माद–पु० [सं०] पित्ताशय की खराबी से होने वाला उन्माद रोग।

पित्र–पु० [सं० पित्र्य] १ बड़ा भाई। २ देखो 'पित्री'।

—**अमावस**= 'पित्रीअमावस'। —**करम**= 'पित्रीकरम'। —**किरिया**= 'पित्रीक्रिया'। —**कुळ**= 'पित्रीकुळ'। —**क्रिया**= 'पित्रीक्रिया'। —**गीता**='पित्रीगीता'। —**ग्रह**= 'पित्रीग्रह'। —**तरपण**= 'पित्रीतरपण'। —**भक्ति, भगति**= 'पित्री भक्ति'। —**लोक**='पित्रीलोक'।

पित्र पूरवी, (पूरवी)–पु० [सं० पित्र्यः पूर्वी] बड़ा भाई।

पित्राई–पु० [सं० पित्र्य] पिता के चाचा का बेटा। –वि० पिता संबंधी, पिता का वंशज।

पित्री–पु० [सं० पितृ] १ पिता। २ किसी के मृत-पूर्वज। ३ प्रेतत्व से मुक्त हुआ मृत व्यक्ति। ४ समस्त जीवों के आदि पूर्वज एक देव। ५ देखो 'पितर'। —**अमावस**–स्त्री० श्राद्ध पक्ष की अमावस्या तिथि। —**करम**–पु० पितरों के लिये किया जाने वाला श्राद्ध, तर्पण आदि। —**कल्प**–पु० श्राद्धादि कर्म, कल्प। —**कानन**–पु० श्मशान भूमि, मरघट। —**कारज**–पु० श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म। —**किरिया**–'पित्रीक्रिया'। —**कुळ**–पु० पिता या पितामह का समस्त परिवार। —**कृत्य, क्रिया**–स्त्री० श्राद्धादि के कर्म। —**गीता**–स्त्री० वराह पुराण का एक अंश जिसमें पितरों का माहात्म्य कहा गया है। —**ग्रह**–पु० पिता का घर। स्त्री का मायका नेहर। स्कन्द आदि बाल ग्रहों में से एक। —**घर**='पित्रीग्रह' —**घात**–पु० पिता का वध, हत्या। —**घातक, घाती घातीक**–वि० पिता का हत्यारा। —**जग, जज्ञ**–पु० पितृ तर्पण। —**तरपण**–पु० पितरों को दी जाने वाली जलांजलि। गया तीर्थ पर किया जाने वाला पितृ श्राद्ध। —**तिथ, तिथि**–स्त्री० अमावस्या। —**तीरथ**–पु० गया तीर्थ। मत्स्यपुराण में वर्णित प्रयाग, वाराणसी आदि २२२ तीर्थ। अंगूठे व तर्जनी के मध्य का स्थान। —**दान**–पु० पिता या पूर्वजों की सम्पत्ति। श्राद्ध संबंधी दान। —**दिन**–पु० अमावस्या। —**देव**–पु० पितरों का अधिष्ठाता देव। —**देवत**–पु० पितरों के निमित्त किया जाने वाला कर्म। पितरों का अधिष्ठाता देव। पित्रीदेव। —**नाथ**–पु० यमराज। अर्यमा नामक पितर। —**पक्ष, पख**–पु० श्राद्ध पक्ष। आश्विन मास का कृष्ण पक्ष। पितृ कुल। —**पती**–पु० यमराज। —**पथ**–पु० पितृ लोक। पितर होने की अवस्था या स्थिति। –**पिता**–पु० पितामह, दादा। —**प्रसू**–स्त्री० पिता की माता, दादी। संध्या, सायंकाल। —**प्रिय**–स्त्री० भंगरा। भृंगराज। अगस्त का वृक्ष। —**भक्त, भगत**–पु० माता-पिता की सेवा करने वाला पुत्र। —**भक्ति, भगति**–स्त्री० माता-पिता की सेवा। माता-पिता के प्रति श्रद्धा व भक्ति। —**भोजन**–पु० पितरों के निमित्त किया जाने वाला भोजन, उरद। —**मंदिर**–पु० पिता का घर। श्मशान भूमि। —**मेध**–पु० एक प्रकार का अंत्येष्टि कर्म। पितृ यज्ञ। —**मेळो**='पितरांमेळो'। —**राज**–पु० यमराज। —**रिण**–पु० पिता का ऋण। —**लोक**–पु० पितरों के निवास का लोक। —**वंस**–पु० पिता का कुल। –**वन, वसतो, वास**–पु० श्मशान। मरघट। —**स्थान**–पु० पिता का पद। पितरों का स्थान।

पित्रीकुल्या–पु० [सं० पितृकुल्या] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पित्रीगण–पु० [सं० पितृगण] १ पितर। २ मरीचि आदि ऋषियों के पुत्र।

पित्रीगाथा–स्त्री० [सं० पितृगाथा] पितरों द्वारा पढ़ा जाने वाला श्लोक विशेष।

पित्रीजाण–पु० [सं० पितृयान] मरणोपरान्त जीव को परलोक ले जाने का मार्ग।

पित्रीरिस्ट–पु० [सं० पितृरिष्ट] जन्म संबंधी एक कुयोग।

पित्रीरूप–पु० [सं० पितृरूप] शिव।

पित्रीवनेचर–पु० [सं० पितृ-वन-चर] १ शिव, महादेव। २ भूत-प्रेत। ३ श्मशानवासी।

पित्रीवदन–पु० [सं० पितृ-वदन] कुश।

पित्रीव्रत–पु० [सं० पितृ-व्रत] पितृकर्म।

पित्रीसू–स्त्री० [सं० पितृसू] १ पिता की माता, दादी। २ संध्याकाल।

पित्रीहंता–वि० [सं० पितृ-हंता] पिता का हत्यारा, पिता-घाती।

पित्रेस–पु० [सं० पितृ-ईश] यमराज।

पित्रेसुर, पित्रेस्वर–पु० [सं० पितर-ईश्वर] १ यमराज। २ परलोकवासी पूर्वज। ३ देवयोनि। ४ देखो 'पितर'।

पिथ–देखो 'प्रथु'।

पिथराव–पु० [सं० पृथु-राज] राजा पृथु।

पिथो, पिथी–देखो 'प्रथ्वी'।

पिदड़को–पु० १ कचूमर। २ नाराजगी। ३ फटकार।

पिदणो (णी)–क्रि० १ खेल में किसी पक्ष या खिलाड़ी की पिटाई होना। २ अधिक चक्कर खाना, भाग-दौड़ करना। ३ बार-बार इधर-उधर घूमना। ४ परेशान होना, कष्ट उठाना।

पिदर–पु० [सं० पितृ] पिता।

पिदाई–स्त्री० १ खेल में खिलाड़ी की सजा के रूप में होने वाली भाग-दौड़। २ किसी कार्य के लिये बार-बार चक्कर लगाने की क्रिया। ३ परेशानी, कष्ट। ४ भाग-दौड़।

पिदाणो (णी), पिदावणो (णी)–क्रि० १ खेल में किसी खिलाड़ी को अधिक दौड़ाना, पिदाई कराना। २ बार-बार चक्कर कटवाना, भाग-दौड़ कराना। ३ बार-बार इधर-उधर घुमाना। ४ परेशान करना, तंग करना।

पिदियो–पु० एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

पिद्दी–स्त्री० एक प्रकार की छोटी चिड़िया। –वि० तुच्छ, नगण्य।

पिद्दो–पु० तुच्छ जीव।

पिधणो (णी)–क्रि० [सं० परिधारणम्] १ आच्छादित होना, ढका जाना। २ देखो 'पिदणो' (णी)।

पिधान–पु० [सं० पिधानम्] १ तलवार का कोष, म्यान। २ आवरण, ढक्कन।

पिधाणो (णी), पिधावणो (णी)–क्रि० १ आच्छादित करना, ढकना। २ देखो 'पिदाणो' (णी)।

पिद्ध–देखो 'पीन्हो'।

पिन–स्त्री० [अं०] १ कागजों में लगाने की छोटी व बारीक कील। २ वस्त्रों में लगाने का तार का छोटा उपकरण। ३ स्त्रियों के बालों में लगाने की पिन।

पिनक–स्त्री० १ अफीम का हल्का नशा। २ तन्द्रा, नींद।

पिनकणो (णी)–क्रि० १ अफीम के नशे में झूमना। २ नींद का झोंका खाना।

पिनकी–वि० १ अफीमची। २ तंद्रित।

पिनस–१ देखो 'पीनस'। २ देखो 'पिजस'।

पिनसन–देखो 'पेनसन'।

पिनाक–पु० [सं०] १ शिवजी का धनुष। २ धनुष। ३ धनुषाकार एक वीणा विशेष। —**धारि, पाणी**–पु० शिव, महादेव।

पिनाकी, पिनाकेस, पिनाकी–पु० [सं० पिनाकिन्] शिव, महादेव।

पिनायक, पिनायग–देखो 'पिनाक'।

पिनारा–देखो 'पिजारा'।

पिनारो–देखो 'पिजारो'।

पिनिद्ध–वि० [सं० पिनद्ध] पहना हुआ, धारण किया हुआ।

पिनाक–देखो 'पिनाक'।

पिपरमिट, पिपरमेंट–पु० [अं० पेपरमिंट] १ पुदीने की जाति का एक पौधा। २ इस पौधे का अर्क। ३ इस अर्क के योग से बनी शक्कर की गोली।

पिपलोओ–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

पिपास, पिपासा–स्त्री० [सं० पिपासा] प्यास, तृष्णा। उत्कण्ठा।

पिपासित, पिपासो, पिपासु–वि० [सं०] १ तृषित, प्यासा। २ उत्कण्ठित। ३ पीने का इच्छुक।

पिपीतकी–स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला द्वादसी।

पिपोल, पिपीलक, पिपीलिक–पु० [सं० पिपीलः] १ चींटा। २ एक प्रकार का सुवर्ण।

पिपोलिका, पिपीली–स्त्री० चींटी।

पिपो–देखो 'पीपो'।

पिप्पळ–देखो 'पीपळ'।

पिप्पळा–स्त्री० [सं० पिप्पला] एक प्राचीन नदी।

पिप्पलि, पिप्पली–स्त्री० [सं०] पीपल नामक लता या उसका फल। —**मूळ**–पु० पीपल नामक लता की जड़।

पिमूकणो (णी)–देखो 'मूकणो' (णी)।

पिम्म, पिम्मु–देखो 'प्रेम'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पियंकर–वि० [सं० प्रियकर] हितैषी। (जैन)
पिय–पु० [सं० प्रिय] १ चातक पक्षी की आवाज। २ देखो 'प्रिय'। ३ देखो 'पिता'। ४ देखो 'प्रिया'।
पियड़उ–देखो 'प्रिय'।
पियर–१ देखो 'पितर'। २ देखो 'पी'र'।
पियरोला–स्त्री० मधुर बोली वाली एक पीली चिड़िया।
पियहर–पु० [सं० पितृगृह] पीहर।
पियांण, पियांणउ, पियांणौ–देखो 'प्रयाण'।
पियांनौ–पु० एक प्रकार का स्वर वाद्य।
पिया–१ देखो 'प्रिय'। २ देखो 'प्रिया'।
पियाक–पु० [सं० पा] पीने वाला, अधिक पीने वाला।
पियाड़–पु० सिंचाई किया हुआ खेत।
पियाबास–पु० कटसरैया, कुरबक।
पियामहि–देखो 'पितामह'।
पियार–१ देखो 'प्यार'। २ देखो 'पंयाळ'।
पियारी–देखो 'प्यारी'। (स्त्री० पयारी)
पियाळ–पु० [सं० पियाल] १ एक छोटा वृक्ष विशेष। २ देखो 'पाताळ'।
पियासौ–देखो 'प्यालौ'।
पियास–देखो 'प्यास'।
पियासाळ–पु० [सं० प्रियसालक] बेहड़े की जाति का एक वृक्ष विशेष।
पियासौ–देखो 'प्यासौ'।
पियूख, पियूस–देखो 'पीयूख'।
पियौ–पु० [सं० पा] पशुओं को पानी पिलाये जाने का दिन।
पिरकरमा–देखो 'परिक्रमा'।
पिरजा–देखो 'प्रजा'। —पत, पति, पती = 'प्रजापति'।
पिरणणी (बी)–देखो 'परणणी' (बी)।
पिरतक, पिरतक्ख, पिरतख–देखो 'प्रत्यक्ष'।
पिरथमी–देखो 'प्रथवी'। —तळ = 'प्रथवीतळ' —नाथ= 'प्रथवीनाथ'।
पिरथवी, पिरथि, पिरथो–देखो 'प्रथवी'। —धर = 'प्रथवीधर'। —नाथ = 'प्रथवीनाथ'। —पाळ = 'प्रथवीपाळ'। —पोख = 'प्रथवीपोख'। —राज = 'प्रथवीराज'।
पिरथु–देखो 'प्रथु'।
पिरभु, पिरभू–देखो 'प्रभु'।
पिरवा, पिरवाई–देखो 'परवाई'।
पिरवार–देखो 'परवार'।
पिरसू–देखो 'परसू'।
पिरांणी–१ देखो 'परांणी'। २ देखो 'प्रांणी'।
पिरांणी–देखो 'प्रांण'।
पिराग–१ देखो 'प्रयाग'। २ देखो 'पराग'। —वड़ = 'प्रयागवड़'।
पिराचित, पिराछत, पिराछित, पिरास्चित–देखो 'प्रायछत'।
पिरि–देखो 'परि'।
पिरिआं, पिरियां–१ देखो 'परसू'। २ देखो 'प्रियां'।
पिरियोजन–देखो 'प्रयोजन'।
पिरीत–देखो 'प्रीत'।
पिरू, पिरू–देखो 'परसू'।
पिरोजन–देखो 'प्रयोजन'।
पिरोजी–देखो 'फिरोजी'।
पिरोली (बी), पिरोवणी (बी)–देखो 'पोणी' (बी)।
पिरोहित–देखो 'पुरोहित'।
पिलंग–पु० १ शिकारी कुत्ता। २ देखो 'पलंघ'।
पिलंड–पु० १ शेषनाग। २ सर्प, सांप।
पिलणौ (बी)–क्रि० १ भग जाना। २ दूर होना, मिटना। ३ द्रवित होना, पिघलना। ४ तिल, सरसों आदि पेरा जाना। ५ किसी कार्य में जोर-शोर से लग जाना। ६ अत्यधिक मार-पीट करना।
पिलपिल–स्त्री० अधिक नरम होने की अवस्था, पिलपिलाहट।
पिलपिलणौ (बौ)–क्रि० १ नरम व पिलपिला होना। २ सड़ना। ३ फलादि का अत्यधिक पकना।
पिलपिलाणौ (बौ)–क्रि० १ नरम करना, गीला करना, पिलपिला करना। २ सड़ाना। ३ अधिक पकाना।
पिलपिलाट, पिलपिलाहट–स्त्री० नरमी, गीलापन, पोपलापन।
पिलपिलो–वि० (स्त्री० पिलापिली) १ अत्यधिक नरम, पोपला। २ जिसमें अधिक रस हो। ३ अत्यधिक पका हुआ। ४ सड़ा हुआ।
पिलवांण–देखो 'पीलवांण'।
पिलां–स्त्री० एक चिड़िया जिसका मांस खाया जाता है।
पिलांण–देखो 'पलांण'।
पिलांणणौ (बौ)–देखो 'पलांणणौ' (बौ)।
पिलांणियौ–देखो 'पलांण'।
पिळाअक्षतेस–देखो 'पीळाअक्षत'।
पिलाणौ (बौ)–देखो 'पाणौ' (बौ)।
पिलिया–स्त्री० पकी हुई ककड़ी।
पिलुपरणी–स्त्री० [सं० पिलुपर्णी] मूर्वा लता व फली।
पिलूंदी–स्त्री० एक लता विशेष।
पिल्ल–देखो 'पल'।
पिल्लणौ (बौ)–देखो 'पिलणौ' (बौ)।
पिल्हणौ (बौ)–क्रि० १ स्पर्श करना, छूना। २ चूमना। ३ देखो 'पिलणौ' (बौ)।
पिल्लौ–पु० [तामिल० पिल्ला] कुत्ते का बच्चा, छोटा कुत्ता।
पिव–देखो 'प्रिय'।
पिवासा–देखो 'पिपासा'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिवणो (बो)–देखो 'पीणो' (बो)।

पिसकस–पु० १ एक विशेष प्रकार का धनुष। २ धनुष।

पिसण–वि० [सं० पिशुन] १ नीच, दुष्ट। २ पापी। ३ चुगलखोर, निंदक। ४ छली, कपटी, धूर्त। –पु० शत्रु, दुश्मन। —खोर–वि० शत्रुओं का नाश करने वाला।

पिसण-पलग–पु० [सं० पिशुन-पन्नग] मयूर, मोर।

पिसणाक–देखो 'पिसण'।

पिसणो (बो)–क्रि० १ पीसा जाना, महीन आटे की तरह किया जाना। २ कुचला जाना, दबना। ३ नरम व रसदार पदार्थ का दबकर फूटजाना। ४ चूर्ण हो जाना, टूट कर बिखरना। ५ थकना, शिथिल होना। ६ शोषण किया जाना। ७ अधिक दबाव या खिचाव से वस्त्रादि का फटजाना। ८ देखो 'फिसणो' (बो)।

पिसताणो (बो), पिसतावणो (बो)–देखो 'पछताणो' (बो)।

पिसतावो–देखो 'पछतावो'।

पिसतोल–देखो 'पिस्तोल'।

पिसतो–देखो 'पिस्तो'।

पिसन (ब्र)–देखो 'पिसण'।

पिसर–पु० [फा०] पुत्र, लड़का, बेटा।

पिसळणो (बो)–क्रि० १ किसी नरम वस्तु को हाथ से मसलना, रगड़ना। २ देखो 'फिसळणो' (बो)।

पिसाई–स्त्री० [सं० पेषणम्] १ पीसने की क्रिया या भाव। २ दानेदार वस्तु को आटे के रूप में करने की क्रिया। ३ पीसने का व्यवसाय। ४ पीसने का किराया। पारिश्रमिक। ५ अत्यधिक शारीरिक श्रम। ६ ताश के खेल में पत्ते बांटने का कार्य।

पिसाच, पिसाचक–पु० [सं० पिशाच] (स्त्री० पिसाचण, पिसाचणी) १ भूत या प्रेतों की तरह की एक योनि। २ इस योनि का जीव। ३ बीभत्स या जघन्य कार्य करने वाला व्यक्ति। ४ भारत के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित एक प्राचीन प्रदेश। ५ इस प्रदेश का निवासी। –वि० मांसाहारी, मांस भक्षी। —धन–वि० पिशाचों का नाश करने वाला। पिशाच बाधा मिटाने वाला। –स्त्री० पीली सरसों।

पिसाचको–पु० [सं० पिशाचकिन्] कुबेर।

पिसाचचरजा–स्त्री० [सं० पिशाचचर्या] पिसाचों की तरह मरघट का परिभ्रमण।

पिसाचद्रु–पु० [सं० पिशाचद्रु] सिहोर का वृक्ष।

पिसाचपत, पिसाचपति–पु० [सं० पिशाचपति] शिव, महादेव।

पिसाचबाधा–स्त्री० [सं० पिशाचबाधा] १ पिशाचों का उत्पात। २ पिशाचों के उत्पात से होने वाला कष्ट।

पिसाचभाखा, पिसाचभासा–स्त्री० [सं० पिशाच भाषा] एक प्राचीन भाषा, पैशाची भाषा।

पिसाचमोचन–पु० [सं० पिशाचमोचन] १ पिशाच योनि से मुक्ति दिलाने वाला काशी का एक तालाब। २ देखो 'पिसाचघन'।

पिसाचर–देखो 'पिसाच'।

पिसाचविवाह–पु० विवाह की एक अधम रीति।

पिसाचांगजन–पु० वरुणदेव।

पिसाचा–पु० [सं० पिशाचिन्] १ कुबेर। –स्त्री० [सं० पिशस्य] २ एक देव जाति।

पिसाची–स्त्री० [सं० पिशाची] १ पिशाच स्त्री। २ पिशाचों की भाषा। ३ जटामासी।

पिसाणो (बो)–क्रि० १ अनाज आदि का आटा बनवाना, पिसवाना। २ महीन चूर्ण बनवाना, आटे की तरह कराना। ३ चटनी की तरह कराना। ४ कठोर श्रम कराना। ५ व्यर्थ में नुकसान पहुंचवाना। ६ मरवाना, संहार कराना। ७ शोषण कराना।

पिसाविय–देखो 'फिसादी'।

पिसारण, पिसारी–स्त्री० [सं० पेषणम्] पिसाई का कार्य करने वाली स्त्री।

पिसावणो (बो)–देखो 'पिसाणो' (बो)।

पिसित–पु० [सं० पिशितस्] १ मांस, गोश्त। २ मांस का टुकड़ा, बोटी।

पिसु–देखो 'पंसु'।

पिसुण, पिसुन–देखो 'पिसण'।

पिस्ट–वि० [सं० पिष्ट] पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ। –पु० १ उबटन। २ आटा। ३ चूर्ण।

पिस्टपेसन–पु० [सं० पिष्ट पेषणम्] १ पिसी हुई वस्तु को पुनः पिसाई। २ कही हुई बात का पुनर्कथन। ३ व्यर्थ का कार्य।

पिस्टि, पिस्टी–स्त्री० [सं० पिष्टि] १ पीसी हुई वस्तु। २ पीठी।

पिस्ती–देखो 'पित्ती'।

पिस्तो–पु० [सं० पिस्त] १ एक प्रकार का सूखा मेवा। २ कलेजे का एक भाग।

पिस्सू–पु० [फा० पश्शः] १ मच्छर। २ मच्छर जैसा एक अन्य कीड़ा।

पिह–पु० [सं० प्रभु] पति। स्वामी।

पिहर–देखो 'पी'र'।

पिहरण–देखो 'पहरण'।

पिहलउ–वि० [सं० पृथुल] १ चौड़ा, विस्तृत। २ देखो 'प्रथम'।

पिहलाद–देखो 'प्रहळाद'।

पिहाई–१ देखो 'पिसाई'। २ देखो 'पिथाई'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिहित, पिहिय–वि० [सं० पिहित] १ छुपा हुआ, गुप्त । २ ढका हुआ ।

पिहिरण–देखो 'पहरण' ।

पिहिलू–वि० प्रथम ।

पिहुपलणो (बो)–देखो 'पेखणो' (बो) ।

पिहुलउ, पिहुलो–देखो 'पिहलउ' ।

पीं–स्त्री० अव्यक्त ध्वनि या शब्द ।

पींग–देखो 'पिंग' ।

पींगो–पु० [सं० प्लवंग] बच्चों का झूला, पालना । –वि० अति तरल ।

पींडणो (बो)–देखो 'पीड़णो' (बो) ।

पींचणो (बो)–क्रि० [सं० पिच्च] १ दबाना, कसकर पकड़ना । २ सिकुड़ना या तनाव खाना । ३ कुचलना, रौंदना ।

पींचो–पु० एक प्रकार की चिड़िया, गुल-दुम ।

पींछ–पु० [सं० पिच्छम्] १ मयूर की पूंछ, पर । २ मोर की पूंछ का चंदोवा । ३ डैना । ४ किलंगी ।

पींछरो–पु० [सं० पिच्छम्] गेहूं, ज्वार आदि की कच्ची बाल ।

पींजण–स्त्री० [सं० पिंजनम्] रूई धुनने की धुनकी, पिंजन ।

पींजणी–स्त्री० १ बैलगाड़ी के पहिए के आगे का धनुषाकार लकड़ी का उपकरण जिस पर होकर धुरा निकला रहता है । २ पैर में धारण करने का आभूषण । ३ देखो 'पींजण' ।

पींजणो (बो)–क्रि० [सं० पिंजि] १ धुनकी से रूई धुनना । २ पीटना, मारना ।

पींजर–देखो 'पंजर' ।

पींजरणो (बो)–क्रि० [सं० पिंजि] १ संहार करना, मारना । २ ध्वंस करना, नष्ट करना । ३ आच्छादित करना, ढकना । ४ देखो 'पींजणो' (बो) ।

पींजरस्यो–देखो 'पींजरो' ।

पींजरापिरोळ, पींजरापोळ–स्त्री० [सं० पञ्जर-प्रतोली] १ किसी संस्था द्वारा चलाई जाने वाली गौशाला । २ फसल की हानि पहुंचाने वाले पशुओं की कैद, कांझी हाउस ।

पींजरो–पु० [सं० पञ्जरकम्] चारों ओर जाली लगा कोई सन्दूक या कक्ष ।

पींजस–देखो 'पिंजस' ।

पींजारा–देखो 'पिंजारा' ।

पींजारी–देखो 'पिंजारी' ।

पींजू–पु० करील का पका फल, ढालू ।

पींड–१ देखो 'पिंड' । २ देखो 'पींडो' । ३ देखो 'पींडी' ।

पींडकी–देखो 'पींडी' ।

पींडळी–देखो 'पींडी' ।

पींडवा–स्त्री० हल पर वजन रख कर की जाने वाली जुताई ।

पींडाढाळ–पु० ऊंट ।

पींडार–पु० [सं० पिण्डार] १ गडरिया । २ ग्वाला । ३ देखो 'पिंडारो' ।

पींडारउ–पु० [सं० पिंडहर] गायों का झुण्ड, गायों का समूह ।

पींडाळू–देखो 'पिंडाळू' ।

पींडी–स्त्री० [सं० पिण्ड] १ शिवलिंग । २ शिव की प्रतिमा । ३ आटे आदि का छोटा व लंबूतरा पिंड । ४ पैर का, घुटने के नीचे का भाग । ५ रस्सी आदि समेट कर बनाया गया लंबा गोला । ६ मोट के मुंह पर लगाया जाने वाला लकड़ी का चौखटा । ७ देखो 'पींडो' ।

पींडो–पु० [सं० पिण्ड] १ पशुओं के पिछले पैरों का मांसल भाग । २ हल पर रखा जाने वाला वजन । ३ पिण्ड या गोला, लोथा । ४ रस्सी का गोला । ५ जल-पात्रों का समूह, पीने के पानी के पात्र रखने का स्थान ।

पींणच–देखो 'पुंणच' ।

पींदो–पु० [सं० पिण्ड] १ तल, नीचे की सतह, पैंदा । २ अंतिम स्थिति ।

पींधो–पु० चिथड़ा ।

पींप–देखो 'पीप' ।

पींपटो–देखो 'पींपी' ।

पींपळ पींपळियो–देखो 'पीपळ' ।

पींपलो–देखो 'पीपळी' ।

पींपळो–पु० भाले या तलवार की नोक ।

पींपा–स्त्री० खींप की फली ।

पींपाड़ी, पींपी–स्त्री० १ फूंक कर बजाने का बच्चों का खिलौना । २ सीटी, विसल ।

पींपो–पु० लोहे का टीन । बड़ा या चौकोर डिब्बा ।

पी–पु० [सं०] १ स्वर्ण, सोना । २ लोहा । ३ पीड़ा कष्ट । ४ हल्दी । ५ चींटी । ६ पोना क्रिया । ७ देखो 'प्रिय' । ८ देखो 'पिआई' ।

पीअणजहर–पु० शिव, महादेव ।

पीअणो (बो)–देखो 'पीणो' (बो) ।

पीअळ (च)–देखो 'पीयळ' ।

पीआंण, पीआंणो–देखो 'प्रयाण' ।

पीआई–१ देखो 'पिआई' । २ देखो 'पिसाई' ।

पीआरडी (डी)–वि० [सं० पराक] १ पराई, दूसरे की । २ देखो 'प्रिया' ।

पीआरडो–वि०(स्त्री० पीआरडी)पराया, दूसरे का ।

पीउ, पीई–देखो 'प्रीति' ।

पीउ, पीऊ, पीऊडइ–१ देखो 'पिय' । २ देखो 'प्रिय' ।

पीऊस–देखो 'पीयूख' ।

पीक–पु० [सं० पिच्च] १ थूक, ष्ठीवन । २ पान का थूक । –स्त्री० ३ चाह, इच्छा । ४ आवश्यकता, जरूरत ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ आशय मतलब । —धांन, दांनी–पु० थूकने का पात्र ।

पोगळणी, पोघळणी (बो)–देखो 'पिघळणी' (बो) ।

पीड–देखो 'पीड़ा' ।

पीडक–वि० [सं० पीडक] १ कष्ट देने वाला, पीड़ा पहुंचाने वाला । २ अत्याचारी, आततायी । ३ ग्रहण करने वाला पकड़ने वाला । ४ दबाने वाला ।

पीड़न, पीड़णी–स्त्री० [सं० पीडन] १ कोई मानसिक या शारीरिक कष्ट । २ दर्द, पीड़ा । ३ आक्रमण द्वारा किसी देश को बर्बाद करने का कार्य । ४ कष्ट, संकट । ५ सूर्य या चंद्र का ग्रहण । ६ उच्छेद, नाश । ७ स्वरों के उच्चारण का एक दोष ।

पीड़णी (बो)–क्रि० [सं० पीड़नम्] १ पीड़ा देना, कष्ट देना । २ दर्द करना । ३ तंग या परेशान करना, दुःख देना ।

पीड़त–देखो 'पीड़ित' ।

पीड़न–देखो 'पीड़ण' ।

पीड़ा–स्त्री० [सं० पीडा] १ रोग, बिमारी, व्याधि । २ यातना, कष्ट दुःख । ३ वेदना, व्यथा, दर्द । ४ शारीरिक पीड़ा । ५ अव्यवस्था के कारण होने वाली असुविधा । ६ चंद्र या सूर्य ग्रहण । ७ नाश, उच्छेद । ८ हल्दी । —कर–वि० कष्टप्रद, हानिकारक । —घर–पु० दुःखदाई स्थान, वस्तु या कार्य । –वि० जिसके रोग या दुःख अधिक रहता हो । —स्थान–पु० जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का स्थान ।

पीड़ावणी (बो)–क्रि० [सं० पीडनम्] १ पीड़ामय होना, कष्ट युक्त होना । २ प्रसव पीड़ा होना ।

पीड़िका–स्त्री० [सं० पीडिका] फुंसी, फोड़ा ।

पीड़ित–वि० [सं० पीडित] १ पीड़ा या व्यथा से ग्रस्त । २ आधि-व्याधि से दुःखी । ३ अत्याचार या जुल्म का शिकार, आक्रान्त । ४ दुःखी, परेशान । ५ शृंगार का एक आसन ।

पीच–पु० १ समूह, भीड़ । २ जलाशय के किनारे पानी पीने वाले पशुओं की भीड़ । ३ कूए से पीने का पानी निकालने का कार्य या श्रम । ४ इस कार्य का पारिश्रमिक । ५ ऐसे पानी के उपयोग के बदले दिया जाने वाला कर ।

पीचको–पु० [सं० पा] सार्वजनिक कूआ ।

पीचू–पु० करील का पका फल, ढालू ।

पीचो–देखो 'पींचो' ।

पीछ–पु० १ पर्दा । २ पूंछ । ३ पीछे । ४ देखो 'पीच' । ५ देखो 'पींछ' ।

पीछम–देखो 'पच्छिम' ।

पीछे, पीछें–क्रि०वि० [सं० पश्चात्] १ विरुद्ध या विपरीत दिशा में । २ आगे, सामने । ३ पृष्ठ भाग में । ४ आगे वाले स्थान से पहले, पूर्व में । ५ चलने वाले के पृष्ठ भाग में । ६ तदनन्तर, बाद में, पश्चात् । ७ अनुपस्थिति में । ८ अंत में, आखिर में । ९ लिये, वास्ते, निमित्त । १० मरणोपरान्त, बाद में ।

पीछोड़ू–देखो 'पछेवड़ी' ।

पीछोड़ी–देखो 'पछेवड़ी' ।

पीछौ–पु० [सं० पश्चात्] १ जाने या भागने वाले के पीछे-पीछे जाने की क्रिया या भाव । २ पृष्ठ भाग । ३ पिछवाड़ा ।

पीजणबाब–स्त्री० प्रजा से लेने का एक प्राचीन कर ।

पीजणी–देखो 'पींजणी' ।

पीजवणी (बो)–देखो 'पींजरणी' (बो) ।

पीजहलउ, पीजहलू–पु० [सं० पेय फलम्] पेय फल ।

पीट–स्त्री० [सं० पीड] प्रहार, चोट, मार ।

पीटणी (बो)–क्रि० [सं० पीडनम्] १ मारना, चोट लगाना । २ पिटाई करना । ३ प्रहार करना, आघात करना । ४ सोना, चांदी आदि धातु की पिटाई करना । ५ बजाना । ६ किसी तरह उपार्जन करना । ७ खेल में गोटी को मारना । ८ प्रतियोगिता में हराना ।

पीटोकड़, पीटोकड़ी–वि० [सं० पीड] (स्त्री० पीटोकड़ी) १ निर्लज्ज, ढीट, दुष्ट । २ मार खाने का आदी ।

पीठ–स्त्री० [सं० पृष्ठम्] १ छाती व पेट के पीछे का भाग, पृष्ठ भाग । २ वस्त्रादि का पिछला हिस्सा । ३ कुर्सी, सिंहासन आदि में पीठ टिकाने का स्थान । ४ मकान आदि का पिछवाड़ा । ५ दुकान पर ग्राहकों की भीड़ । ६ जलाशय पर पानी पीने वाले पशुओं की भीड़ । [सं० पीठः] ७ मूर्ति का आधार स्थान । वेदी । ८ आसन, कुशासन । ९ बैठने की चौकी, पीढ़ा । १० बैठने का ढंग, मुद्रा, आसन । ११ राज सिंहासन । १२ किसी धर्म या शिक्षा का केन्द्र । १३ वह स्थान जहां सती के शरीर का अंग विष्णु के चक्र से कटकर गिरा हो । १४ कपड़े की बुनावट की मोटाई, दृढ़ता ।

पीठक–स्त्री० [सं०] चौकी । पीढ़ा ।

पीठगरभ–पु०[सं० पीठगर्भ] मूर्ति को जमाने का गड्ढा, वेदी ।

पीठड़ली–देखो 'पीठी' ।

पीठड़ी–स्त्री० [सं० पिष्टि] आंख की एक दवा विशेष ।

पीठनायका–स्त्री० [सं०] १४ वर्ष की कन्या जो दुर्गोत्सव में दुर्गा की प्रतिनिधि मानी जाती है ।

पीठभू–पु० [सं०] चहार दिवारी के आस-पास का भू-भाग ।

पीठमरद (क)–पु० [सं० पीठ-मर्द] १ नायक के चार सखाओं में से एक । २ कुपित नायिका को प्रसन्न करने वाला नायक । ३ वेश्या को नृत्य सिखाने वाला उस्ताद नृत्य शिक्षक ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीठलो–पु० बेसन की, हलवे की तरह बनी सब्जी ।

पीठवनी-स्त्री० [स० पृष्टि पर्णी] १ एक प्रकार का क्षुप । २ एक प्रकार का वृक्ष ।

पीठांण, पीठांणि (णी)–पु० युद्ध, लड़ाई ।

पीठाड़ी–स्त्री० एक प्रकार का गोलाकार पौधा ।

पीठि, पीठी–क्रि०वि० [सं० पृष्ठ] १ पीछे । २ देखो 'पीठ' ।

पीठिका–स्त्री० [सं०] १ मूर्ति या खंभे का आधार । २ पुस्तक के विशिष्ट भागों में से कोई एक ।

पीठी–स्त्री० [सं० पिष्टि] १ शरीर की त्वचा को कोमल व सुन्दर बनाने का उबटन विशेष । २ विवाह के समय ऐसा उबटन करने की रीति । ३ पीठी कराते समय गाया जाने वाला लोक गीत ।

पीढ़, पीढ़लो–पु० [सं० पीठम्] आसन, पीढ़ा ।

पीढ़ियो–पु० [सं० पीठम्] बैलगाड़ी के धाटे के नीचे लगाया जाने वाला काष्ठ खण्ड विशेष ।

पीढ़ी–स्त्री० [सं० पीठिका] १ मूंज या सूत की बनी चौकी, आसन, पीढ़ा । २ वंश क्रम । ३ वंश क्रम में प्रत्येक क्रम की संतान । ४ किसी देश, समाज या परिवार में किसी निश्चित आयु या अवधि में रहने वाले प्राणियों का समूह । ५ किसी विषय या क्षेत्र विशेष से संबंधित परम्परागत अवस्था । —**नांमो**–पु० वंश वृक्ष, वंशावली ।

पीढ़ो–पु० [सं० पीठक] बैठने की चौकी, आसन ।

पीण–देखो 'पीन' ।

पीणोहारी–देखो 'पणिहारी' ।

पीणुक–वि० [सं० पा] उपभोग करने योग्य ।

पीणो–पु० [सं० पानम्] १ पीना क्रिया या भाव । २ देखो 'पेणो' ।

पीणो (बो)–क्रि० [सं० पानम्] १ पानी या किसी तरल पदार्थ का पान करना, पीना । २ किसी अप्रिय बात को चुपचाप सह जाना । ३ इसी तरह किसी उग्र मनोविकार को दबा लेना । ४ धूम्रपान करना, नशा करना । ५ शोषण करना, सोखना । ६ पेड़-पौधों, वनस्पतियों आदि का सीचित होना । ७ आत्मसात करना । ८ सर्प विशेष द्वारा अपने श्वास से मनुष्य को प्राण वायु खींच लेना ।

पीतांबर–देखो 'पीतांबर' ।

पीत–वि० [सं०] १ पिया हुआ, पान किया हुआ । २ भीगा हुआ तर । ३ पीला, पीले रंग का । ४ भूरा । –पु० १ पीला रंग । २ भूरा रंग । ३ हरताल । ४ देखो 'प्रीत' । —**चंदण, चंदन**–पु० पीला चंदन, हरिचंदन ।

पीतअंजणी–पु० पीले चकत्तों वाला घोड़ा ।

पीतकुस्मांड–पु० [सं० पीत-कुष्माण्डु] पीला कुष्माण्डु ।

पीतड़लो, पीतड़ो–देखो 'प्रीत' ।

पीतता–स्त्री० पीला पन, पीली झांई ।

पीतधातु–स्त्री० [स०] गोपी चंदन ।

पीतन, पीतनक–पु० [स० पीतनम्] १ केशर । २ हरताल । ३ वट वृक्ष ।

पीतनायक–पु० [सं० प्रीत-नायक] आभूषण विशेष ।

पीतपट–पु० [सं०] पीला वस्त्र, पीतांबर ।

पीतप (मो)–देखो 'प्रीतम' ।

पीतरग–पु० [सं०] १ सोना, स्वर्ण । २ अनार । ३ पीला रंग ।

पीतरगत–वि० [सं० पीत रक्तम्] १ नारंगी रंग का । २ पीत वर्णी । –स्त्री० १ केशर । २ पुखराज ।

पीतरयाई–पु० [सं० पितृव्य] पितृव्य, चाचा ।

पीतळ–पु० [सं० पित्तलम्] तांबे और जस्ते के योग से बना एक मिश्र धातु ।

पीतळियो–वि० १ पीतल का बना, पीतल संबंधी । २ पीतल के पात्र में रहने से हुआ विकृत, कसेला । –पु० पीतल का तसला । कलसा ।

पीतळीजणो (बो)–क्रि० [सं० पित्तलम्] पीतल के बर्तन में रहने से विकृत होना, कसेला होना ।

पीतलोह–पु० [सं०] पीतल ।

पीतवसु–पु० एक देश का नाम ।

पीतवांन–पु० हाथी की दोनों आंखों के बीच का स्थान ।

पीतवास–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु का एक नामान्तर ।

पीतविंदु–पु० [सं०] विष्णु के चरण चिह्नों में से एक ।

पीतस–स्त्री० सासु । काकी सासु ।

पीतसरो–पु० चचिया ससुर ।

पीतांबर–पु० [सं०] १ पीला वस्त्र । २ पूजा-पाठ के समय पहनने का वस्त्र विशेष, कौशेय । ३ पीला वस्त्र पहनने वाला व्यक्ति । ४ विष्णु । ५ श्रीकृष्ण ।

पीता–स्त्री० [सं०] हल्दी ।

पीति, पीती–पु० [स० पीती] १ घोड़ा । २ देखो 'पित्ती' ।

पीतु–पु० [सं० पितुः] १ सूर्य । २ अग्नि । ३ हाथियों के झुण्ड का सरदार, यूथपति ।

पीतो–पु० [सं० पित्त] १ यकृत के पीछे नीचे की ओर रहने वाला पित्त का थैला, पित्ताशय । २ बल, सामर्थ्य ।

पीत्रांत्रो–वि० [सं० पितृ] १ पिता के वंश से संबंधित । २ पिता का, पिता संबंधी । –स्त्री० चाची, काकी ।

पीत्रीयउ, पीत्रीयु–पु० [सं० पितृव्य] १ चाचा, काका । २ कुटुम्ब का कोई वृद्ध पुरुष ।

पीथ–पु० [सं० पीथः] १ सूर्य । २ अग्नि । ३ जल । ४ क्षय ।

पीथि (थी)–पु० [सं० पीथिः] घोड़ा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीव, पीवु, पीवी, पीषु, पीधौ–देखो 'पीन्हौ'।

पीन–वि० [सं०] १ मोटा, स्थूल, मांसल। २ भरा पूरा, सम्पन्न। ३ पुष्ट। ४ देखो 'पीन्हौ'। –पु० बड़े-बड़े वक्षस्थल, कुच।

पीनण–देखो 'पींजण'।

पीनणी–देखो 'पींजणी'।

पीनणी (बी)–देखो 'पींजणी' (बी)।

पीनस–पु० [सं०] १ सर्दी, जुखाम। २ नाक का एक रोग। ३ देखो 'पिंजस'।

पीनसी–वि० पीनस रोग से पीड़ित।

पीनारा–देखो 'पिंजारा'।

पीनारी–देखो 'पिंजारी'।

पीनोड़ो, पीन्ह, पीन्होड़ो, पीन्हो–वि० [सं० पीत] पान किया हुआ, पिया हुआ।

पीप–पु० [सं० पूय] फोड़ा, फुंसी, घाव आदि में भरने वाला मवाद।

पीपड़ी–१ देखो 'पीपी'। २ देखो 'पीप'।

पीपड़ी–पु० १ चारों ओर से उठे हुए किनारों का लोहे का एक पतरा। २ देखो 'पीपौ'।

पीपर–पु० [सं० पिप्पली] १ एक प्रकार की लता। २ उक्त लता की कली जो औषध में काम आती है। ३ देखो 'पीपळ'।

पीपरामूळ–देखो 'पिप्पळीमूळ'।

पीपळ–पु० [सं० पिप्पल] १ बरगद जाति का एक पवित्र वृक्ष। २ देखो 'पीपर'।

पीपळपत्तो, पीपलपत्ती, पीपळपांन–पु० [सं० पिप्पलपत्र] १ पीपल वृक्ष का पत्ता, पान। २ स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष। ३ पीपल के पत्तों के आकार की बनी आभूषणों की झल्लरी।

पीपळपांनकटार–स्त्री० पीपल के पत्ते के आकार की बनी कटार।

पीपळामूळ–देखो 'पिप्पळीमूळ'।

पीपळि–१ देखो 'पीपर'। २ देखो 'पीपळी'।

पीपलिगच्छि–पु० जैन साधुओं का दल या समूह विशेष।

पीपळियो–वि० पीपल के वृक्ष का या पीपल संबंधी। –पु० १ पीपल का फल। २ देखो 'पीपळ'।

पीपळी–स्त्री० [सं० पिप्पल] १ पीपल की जाति का एक वृक्ष विशेष। २ बहन जो धर्म की प्रतीक हो। ३ एक राजस्थानी लोक गीत।

पीपळो–पु० तलवार का चन्द्राकार भाग।

पीपावंसी–पु० १ पीपा नामक भक्त के वंशज। २ दर्जियों की एक शाखा।

पीपी–स्त्री० [सं० पिप्पल] १ पीपल का फल। २ फूंक कर बजाने का बच्चों का खिलौना। ३ छोटा टीन।

पीपूड़ी, पीपूड़ीपरड़–स्त्री० एक छोटा सर्प विशेष जो उछल कर काटता है।

पीपौ–पु० १ लोहे की पतली चादर का बना तेल आदि डालने का चौकोर पात्र। २ कूए से पानी निकालने की डोली विशेष। ३ गागरोण का खींची राजा।

पीब–देखो 'पीप'।

पीय–१ देखो 'प्रिय'। २ देखो 'पिता'।

पीयण–वि० पीने वाला। –स्त्री० १ पीने की क्रिया या भाव। २ देखो 'पैंणो'।

पीयणजहर–देखो 'पीअणजहर'।

पीयणी–देखो 'पैंणी'।

पीयमधु–पु० [सं० प्रियमधु] श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम।

पीयर–देखो 'पी'र'।

पीयल–स्त्री० [सं० पा] १ सिंचाई की कृषि भूमि। २ उक्त भूमि में सिंचाई से होने वाली फसल। ३ पीले रंग की चिड़िया। ४ शराब की गोष्ठी। ५ कान का आभूषण विशेष।

पीयळी, पीयलो–देखो 'पीळी'।

पीयांण, पीयांणउ, पीयांणी–देखो 'प्रयांण'।

पीया–१ देखो 'प्रिय'। २ देखो 'प्रिया'।

पीयाई–१ देखो 'पिसाई'। २ देखो 'पिआई'।

पीयामह–पु० [सं० पितामह] १ पितामह। २ देखो 'पियमधु'।

पीयार–१ देखो 'पाताल'। २ देखो 'प्यार'।

पीयारउ, पीयारड़ो–वि० १ पराया, दूसरे का। २ देखो 'प्यारो'।

पीयारी–देखो 'प्यारी'।

पीयारो–देखो 'प्यारो'। (स्त्री० पीयारी)

पीयाल–१ देखो 'पाताळ'। २ देखो 'प्याली'।

पीयाली–देखो 'प्याली'।

पीयालो–देखो 'प्यालो'।

पीयूख, पीयूस–पु० [सं० पीयूष] १ अमृत, सुधा। २ दूध। –वि० मधुर।

पीयोड़ो–वि० [सं० पीत:] (स्त्री० पीयोड़ी) पिया हुआ।

पीयो–देखो १ 'प्रिय'। २ देखो 'पियो'।

पी'र–पु० [सं० पितृ-गृह] स्त्री या लड़की का मायका। पिता का घर। पीहर।

पीर–वि० [फा०] १ महात्मा, सिद्ध। २ बड़ा, पूज्य। ३ बूढ़ा। ४ चालाक, धूर्त। –पु० १ धर्म गुरु, उपदेशक। २ सिद्ध पुरुष। ३ मुसलमानों का पैगंबर। ४ सोमवार। ५ पीड़ा, दर्द।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—अजोणी, अजोनी—पु० शिव, महादेव। —जादो—पु० धर्म गुरु का पुत्र। —जुगादी—पु० महादेव, शिव।

पीरांण, पीरांणी—वि० १ पीरों का, पीरों संबंधी। २ देखो 'प्रांण'।

पीराई—स्त्री० १ पीर होने की अवस्था या भाव। पीरत्व। २ पीरों का चमत्कार। ३ पीरों के गीत गाने वाली मुसलमान जाति।

पी'रियो—वि० स्त्री के पीहर का, मायके का, पीहर संबंधी। —पु० १ स्त्री के मायके का व्यक्ति। २ मायके के परिवार का सदस्य। ३ देखो 'पी'र'।

पीरी—स्त्री० १ पीर होने का भाव, पीरत्व। २ वृद्धावस्था। ३ शिष्य बनाने का कार्य।

पीरीयजि—देखो 'परीक्षित'।

पीड, पीड़—स्त्री० [सं० पीड़ा] दर्द, पीड़ा, पीर।

पीरोजियो, पीरोजी—देखो 'फीरोजी'।

पीरोजो—देखो 'फीरोजी'।

पीरोत—देखो 'पुरोहित'।

पी'रो—देखो 'पी'र'।

पील—वि० १ रक्षक, सहायक। २ देखो 'पीयल'।

पीलखांनो—पु० हाथियों के बांधने का स्थान, हस्तीशाला।

पीलखोस (चोस, जोत)—देखो 'पीलसोत'।

पीळणो, पीळबो—क्रि० पीला पड़ना, पीतवर्ण होना। पीला करना।

पीलणो (बो)—क्रि० १ कोल्हू आदि में डाल कर रस निकालना। २ अधिक दबाव देकर सत्व निकाल देना। ३ मारना, संहार करना। ४ ध्वस्त करना, नष्ट करना। ५ तंग करना परेशान करना। ६ अत्यधिक परिश्रम कराना। ७ काम में लगाये रखना।

पीलतो—देखो 'पीली'।

पीलपांव—पु० श्लीपद नामक एक रोग।

पीलपायो—पु० [फा० पील-पाय] १ चारपाई के पायों के नीचे लगाया जाने वाला सहारा, आधार। २ किले की दीवार के नीचे बनी मोटी दीवार।

पीलपाळ, पीलबांन—देखो 'पीलवांन'।

पीलरियो, पीलरो—वि० (स्त्री० पीलरी) १ रक्ताल्पता के रोग से पीड़ित। २ पीले रंग का, पीत।

पीलवण, पीलवणी—स्त्री० वृक्षों पर चढ़ी रहने वाली एक मोटी लता विशेष।

पीलवांण, पीलवांन—पु० [सं० पीलुवान] १ महावत, हाथीवान। २ देखो 'पीलवण'।

पीलवांनी—स्त्री० १ महावत का कार्य। २ महावत का पद। ३ महावत का वेतन। ४ देखो 'पीलवण'।

पीळसोज, पीळसोत—स्त्री० [फा० फतीलसोज] १ पीतल आदि धातु की बनी खड़ी दीवट, जिसमें कई बत्तियां एक साथ जलाई जाती हैं। २ साधारण चिराग दान।

पीळाअक्षत, पीळाआखती, पीळाआखा, पीळाचावळ—पु० [सं० पीत+अक्षत] हल्दी या केसर से रंगे चावल जो मांगलिक अवसरों पर इष्ट मित्रों को निमंत्रण के रूप में दिये जाते हैं।

पीळाडो—वि० पापी, दुष्ट।

पीलाणो (बो), पीलावणो (बो)—क्रि० १ कोल्हू आदि में डाल कर पेराना, रस निकलवाना। २ मरवाना, संहार कराना। ३ परेशान करना, अत्यधिक परिश्रम कराना।

पीलिया—देखो 'पीलू'।

पीळियो—वि० पीत वर्ण का, पीले रंग का। —पु० १ रक्त दोष का एक रोग। २ पीला बैल।

पीळी—वि० पीत वर्ण की, पीली, पीत। —स्त्री० पीले रंग की गाय, पीली घोड़ी, पीली मिट्टी।

पीळीकणेर—स्त्री० पीले फूलों वाली कणेर।

पीळीचमेली—स्त्री० पीले फूलों वाली चमेली जाति की एक लता।

पीळीजूही—स्त्री० पीले फूलों वाली जूही, सोन जूही।

पीळीमाटी—स्त्री० पीले रंग की चिकनी मिट्टी।

पीलु, पीलू—पु० [सं० पीलुः] १ हाथी, गज। २ तीर, बाण। ३ मरुदेशीय एक वृक्ष विशेष। ४ इस वृक्ष के फल। ५ एक राग विशेष। ६ ताड़ वृक्ष।

पीलूवडो—पु० [सं० पीलु] वृक्ष विशेष।

पीलोत—देखो 'पीलसोज'।

पीळो—वि० [सं० पीत] (स्त्री० पीळी) १ केसर या हल्दी जैसे रंग का पीत, पीला, जर्द। २ पीत वर्ण। ३ कांतिहीन, निस्तेज। ४ शर्मिंदा, भयातुर। —पु० १ स्त्रियों की पीली ओढ़नी। २ एक मांगलिक लोक गीत। ३ पीला रंग। ४ पीले रंग का बैल। ५ रंग विशेष का घोड़ा।

पीळोपो, पीळोबाचळ—पु० उषा काल, सवेरा, तड़का।

पीव—पु० [सं० प्रिय] १ चातक, पपीहा। २ पति। ३ प्रिय।

पीवड़ी—१ देखो 'पीव'। २ देखो 'पी'र'।

पीवण, पीवणउ, पीवणो—वि० १ पीने वाला। २ देखो 'पैणो'।

पीवणी (बो)—देखो 'पीणी' (बी)।

पीवर—पु० [सं०] १ बड़ा, स्थूल, मोटा। २ देखो 'पी'र'।

पीवरियो—देखो 'पी'र'।

पीवल—१ देखो 'पीयल'। २ देखो 'प्रिय'।

पीसणू, पीसणू, पीसणो—पु० [सं० पेषण] १ पीसने की क्रिया या भाव। २ पीसने की वस्तु। ३ पिसाई करने का उपकरण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ पिसाई का व्यवसाय। ५ पिसाई के लिये रखा हुआ अनाज।

पीसणो (बो)–क्रि० [सं० पेषणं] १ महीन चूर्ण या आटे के रूप में करना। २ अनाज का आटा बनाना। ३ चटनी के रूप में बांटना। ४ अधिक श्रम कराना। ५ शोषण कराना। ६ ताश के खेल में पत्ते बांटने का कार्य करना।

पीसाई–स्त्री० १ पीसने का कार्य। २ पीसने का पारिश्रमिक। ३ ताश के पत्ते बांटने का कार्य।

पीसाणो (बो), पीसावणो (बो)–क्रि० १ महीन चूर्ण या आटे के रूप में कराना। २ अनाज का आटा बनवाना। ३ चटनी के रूप में बटवाना। ४ अधिक श्रम करना। ५ शोषण कराना। ६ ताश के पत्ते बंटवाना।

पीसू–देखो 'पिसू'।

पीसो–देखो 'पईसो'।

पीसोधरो–पु० [सं० पिश-धारिन्] राक्षस, असुर।

पीसौर–पु० पेशावर।

पीह, पीहर, पीहरड़ी, पीहरि, पीहरी–देखो 'पी'र'।

पीहरियो–१ देखो 'पी'रियो'। २ देखो 'पी'र'।

पीहू–स्त्री० पपीहे की बोली।

पुंछ, पुंछो–पु० [सं० पुच्छ] १ तीर की पूंछ। २ देखो 'पूंछ'।

पुंग–देखो 'पूग'।

पुंगरण–देखो 'पंगरण'।

पुंगळ–देखो 'पूंगळ'।

पुंगव–वि० [सं०] कुशल, श्रेष्ठ।

पुंगी–देखो 'पूंगी'।

पुंगीफळ–देखो 'पूंगीफळ'।

पुंचाळो–देखो 'पूंचाळो'। (स्त्री० पूंचाळी)

पुंचिका–देखो 'पुणची'।

पुंची–देखो 'पुणची'।

पुंचीयो–१ देखो 'पुणचो'। २ देखो 'पुणची'।

पुंछ–देखो 'पूंछ'।

पुंछाळ, पुंछाळो–वि० [सं० पुच्छ+आलुच] १ पूंछ वाला। २ पिछलग्गू। –पु० घोड़ा, अश्व।

पुंज–पु० [सं० पृथो] १ समूह, ढेर, राशि। २ गुच्छा।

पुंजी–देखो 'पूंजी'।

पुंठ–देखो 'पूठ'।

पुंड–पु० [सं० पुण्ड्र] १ केसर, चंदन आदि का तिलक, टीका। २ सफेद कमल।

पुंडग–पु० बूंद।

पुंडर–१ देखो 'पुंड्र'। २ देखो 'पांडुर'।

पुंडरिकणी–पु० १ श्वेत कमलिनी। २ एक नगर का नाम।

पुंडरी–वि० [सं० पाण्डरीक] श्वेत, सफेद।

पुंडरीक–पु० [सं०] १ श्वेत, कमल। २ रघुवंश का एक राजा। ३ यवन, मुसलमान। ४ बादशाह। ५ जैनियों के एक गणधर। ६ सिंह। ७ श्वेत वर्ण। ८ श्वेत हाथी। ९ श्वेत सर्प। १० एक बाज पक्षी विशेष। ११ एक नाग का नाम। १२ क्रौंच द्वीप का एक पर्वत। १३ आकाश। १४ तिलक। १५ हाथी का ज्वर। १६ अग्निकोण के दिग्गज का नाम। १७ श्वेत कुष्ट।

पुंडरीकस, पुंडरीकाक्ष, पुंडरीकाख, पुंडरीकास–पु० [सं० पुंडरीकाक्ष] कमल नयन, श्रीकृष्ण, ईश्वर, विष्णु।

पुंडरीकासण–पु० [सं० पुंडरीकासन] ब्रह्मा।

पुंड्र–वि० [सं०] श्वेत, सफेद। –पु० १ एक देश का नाम। २ एक वृक्ष का नाम। ३ बलि के पुत्र का नाम। ४ केसर या चंदन का तिलक, टीका। ५ कमल। ६ श्वेत कमल।

पुंण–देखो 'पूंण'।

पुंणच, पुंणछ–पु० हल और हरीसा के जोड़ पर मजबूती के लिये लगा डंडा।

पुंतार–पु० हाथी का शिक्षक।

पुंनाग–पु० [सं० पन्नग] १ सर्प, सांप। [सं० पुन्नाग] २ श्वेत, हाथी। ३ श्वेत कमल। ४ नाग केसर।

पुंन्नु–देखो 'पूनम'।

पुंलिंग–देखो 'पुल्लिंग'।

पुंस–पु० [सं० पुंस्] पुरुष, नर।

पुंसचळी–स्त्री० [सं० पुंश्चली] १ कुलटा या व्यभिचारिणी स्त्री। २ वेश्या, गणिका।

पुंसत्व–वि० [सं० पुंसत्व] १ पुरुषार्थ बल। २ सत्य।

पुंसरस–पु० [सं०] दूध।

पुंसळी–देखो 'पुंसचळी'।

पुंसवन–पु० [सं०] गर्भाधान के तीसरे मास में किया जाने वाला एक संस्कार।

पुंहंच–देखो 'पहुंच'।

पुंहचणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पुंहचो–देखो 'पुणचो'।

पुंहत–देखो 'पहुंच'।

पुंहतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पुंहरी–देखो 'पांमरी'।

पुआळ–देखो 'पूळो'।

पुओहर–देखो 'पयोधर'।

पुओ–पु० [सं० पूप] मीठा बड़ा, गुलगुला, पूवा।

पुकरमूळ–देखो 'पुस्करमूळ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुकार–स्त्री० [सं० प्रकुश] १ किसी प्रकार की मदद आदि के लिये लगाई जाने वाली लम्बी आवाज। २ किसी को बुलाने के लिये की जाने वाली आवाज। ३ फरियाद। ऊंची आवाज में की जाने वाली मांग। ४ राजा, बादशाह या शासक के सामने अपने कष्ट संबंधी कही जाने वाली बात। ५ दुःख में ईश्वर को याद करने की क्रिया।

पुकारणो (बो)–क्रि० [सं० प्रकुश] १ रक्षा या बचाव के लिये चिल्लाना, पुकारना। २ किसी को बुलाने के लिये जोर से आवाज देना। ३ जोर से बोलकर सुनाना। ४ फरियाद करना, शिकायत करना। अपने कष्ट की बात कहना। ५ नाम जपना, रट लगाना।

पुकारू–वि० पुकार करने वाला, फरियादी।

पुक्कर–देखो 'पुस्कर'।

पुक्कल–पु० एक सूर्य वंशी राजा का नाम।

पुक्खर–वि० [सं० प्रखर] १ तीक्ष्ण, धारदार पैना। २ देखो 'पुस्कर'।

पुक्खरवरत–देखो 'पुस्करवरत'।

पुक्ख–पु० [सं०] १ पुस्य नामक राजा जो हिरण्यनाभ का पुत्र था। २ देखो 'पुस्य'।

पुक्ख–देखो 'पुस्य'।

पुक्खणो (बो)–क्रि० [सं० पुष्प] १ पुष्पों की माला बनाना। २ देखो 'पोखणो' (बो)।

पुक्खत–देखो 'पुख्त'।

पुक्खताई–स्त्री० १ गंभीरता, गांभीर्य। २ वृद्धावस्था। ३ मजबूती दृढ़ता।

पुक्खतापण, पुक्खतापणो, पुक्खतापो–पु० १ गंभीरता। २ वृद्धावस्था। ३ दृढ़ता मजबूती। ४ स्थिरता।

पुक्खमास–देखो 'पुस्यमास'।

पुक्खर–देखो 'पुस्कर'।

पुक्खरांण–पु० [सं० पक्षिराज] गरुड़।

पुक्खराज–पु० [सं० पुष्पराग] पीले रंग का एक बहुमूल्य रत्न।

पुक्खराजो–वि० 'पुखराज' का बना।

पुक्खलावती–स्त्री० [सं० पुष्कलावती] पुष्कलावती नामक नगरी।

पुक्खसनांन–देखो 'पुस्यस्नांन'।

पुक्खा–पु० [सं० पूषन] सूर्य।

पुक्खि–देखो 'पुस्पनक्षत्र'।

पुक्खीख, पुक्खेक–पु० कामदेव।

पुक्ख, पुक्खा, पुक्खो–वि० [फा० पुख्तः] १ वृद्ध, बुजुर्ग, बूढ़ा। २ पक्का, दृढ़, मजबूत। ३ पूर्ण, पूरा।

पुक्खारक–देखो 'पुस्यारक'।

पुगड़ो–देखो 'पगड़ो'।

पुगताई–देखो 'पुखताई'।

पुगतापण–देखो 'पुखतापण'।

पुगतो–देखो 'पुखतो'।

पुगाणी (बो)–देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पुगावण–स्त्री० १ पहुंचाने की क्रिया। २ पहुंचाने वाला।

पुगावणी (बो)–देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पुगळ, पुगस–१ देखो 'पुदगळ'। २ देखो 'पूंगळ'।

पुड़–पु० [स० पुट] १ तह, परत। २ नगाड़े या ढोल पर मढ़ा जाने वाला चमड़ा।

पुड़ऊंध–पु० [सं० पुटऊर्ध्व] उथल-पुथल। अव्यवस्था।

पुड़च्छी, पुड़छी–स्त्री० १ घोड़े की पीठ में 'मुद्दा' और 'पुट्ठे' के मध्य का भाग। २ देखो 'पड़छी'।

पुड़तकाळ–देखो 'पुरतगाळ'।

पुड़वड़ी–स्त्री० [स० पुट-द्रढ़ी] कटारी की म्यान।

पुड़पुड़ी–स्त्री० [सं० पुट्] गुदगुदी।

पुड़ि–१ देखो 'पुड़'। २ देखो 'पुड़ी'।

पुड़िको–देखो 'पुड़ो'।

पुड़ियाळ–देखो 'पुड़'।

पुड़ियो–पु० १ चक्की का पाट। २ देखो 'पुड़ो'। ३ देखो 'पुड़ी'।

पुड़ी–स्त्री० [सं० पुटिका] १ चक्की से पीसा हुआ आटा गिरने का गोलाकार स्थान। घेरा। २ पराठा। ३ तली हुई पूरी। ४ कागज में कोई वस्तु रख कर बांधा गया संपुट। ५ देखो 'पुड़'।

पुड़ो–पु० १ बड़ा सम्पुट, बण्डल, पुड़ीका। २ चूतड़।

पुचकार–स्त्री० १ ओठों से की जाने वाली प्यार भरी ध्वनि। चुमकार। २ ओठों से चूमने से उत्पन्न ध्वनि।

पुचकारणो (बो)–क्रि० १ स्नेह या प्यार करना, प्यार से धैर्य बंधाना। २ ओठों से स्नेह भरी ध्वनि करना। चुमकारना। ३ प्यार से शरीर पर हाथ फेरना। ४ रोते हुए को सांत्वना देना।

पुचकारो–देखो 'पुचकार'।

पुच्छ, पुच्छी–देखो 'पूंछ'।

पुच्छणो (बो)–देखो 'पूछणो' (बो)।

पुजनीक–देखो 'पूजनीक'।

पुजा–देखो 'पूजा'।

पुजाई–स्त्री० १ पूजने की क्रिया भाव, पूजा, सेवा। २ पूजा के बदले मिलने वाला पारिश्रमिक या भेंट।

पुजाणो (बो)–क्रि० १ देव पूजन कराना, पूजा का कार्य कर वाना। २ अपनी पूजा या प्रतिष्ठा कराना। ३ पुजवाना, महत्व बढ़वाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुजापो–पु० १ देव पूजन की सामग्री। २ चढ़ावा, नैवेद्य।

पुजारी, पुजारो–पु० [सं० पूज] (स्त्री० पुजारण, पुजारिण) १ देव मंदिर की पूजा करने वाला। २ पूजा आदि का कार्य करने वाला।

पुजावणी (बो)– देखो 'पुजाणी' (बो)।

पुज्ज–१ देखो 'पूज'। २ देखो 'पूज्य'।

पुट–पु० [सं०] १ तह, परत, पल्ला। २ गिलाफ, खोल। ३ आच्छादन। ४ दोने या कटोरेनुमा पदार्थ। ५ दोना, कटोरा, ऐसा ही कोई पात्र। ६ औषध पकाने का बंद बर्तन। ७ ऐसे बर्तन में औषध बनाने की क्रिया या विधि। ८ किसी औषधि या किसी पदार्थ में किसी अन्य औषधि या वस्तु का दिया जाने वाला संपुट, योग। ९ इसी तरह किसी एक रंग में अन्य रंग का योग देकर रंगने की क्रिया। १० ढक्कन। ११ नगर, शहर। १२ पृष्ठ भाग। –वि० उल्टा, औंधा।

पुटपड़ी–पु० १ गास। २ देखो 'पापड़ी'।

पुटपाक–पु० [सं०] पत्तों के दोने में रख कर औषध बनाने का कार्य या ढंग।

पुटभेद, पुटभेदन (न)–पु० [सं० पुट भेदनम्] १ नगर, शहर। २ एक वाद्य विशेष।

पुटाळ, पुटाळी–पु० [सं० पुट-आलुच] तलवार की मूठ का मध्य भाग।

पुटिया–पु० एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

पुट्टळी–देखो 'पोट'।

पुट्ठआहिओ, पुट्ठिआहिओ, पुट्ठाहिओ–देखो 'पोटियो'।

पुट्ठी–पु० [सं० पृष्ठ] १ पृष्ठ के नीचे नितंबों वाला भाग। २ चौपायों के पिछले पैरों के ऊपर का भाग। ३ किसी पुस्तक का गत्ता, आवरण।

पुठाणो (बो)–क्रि० बैल गाड़ी के चक्के में 'पूठिया' लगवाना।

पुढ़णो (बो)–देखो 'पोढ़णी' (बो)।

पुढ़गर–पु० [सं० पुथकर] विलाप, रुदन।

पुढ़वी–देखो 'प्रथवी'।

पुण–१ देखो 'पुन'। २ देखो 'पुण्य'। ३ देखो 'पुरण'।

पुणग–स्त्री० जल कण, बूंद। वि० अणुमात्र, किंचित।

पुणच–१ देखो 'पुणची'। २ देखो 'पणच'।

पुणचिओ–देखो 'पुणची'।

पुणची–स्त्री० [सं० प्रकोष्ठ] स्त्रियों की कलई पर धारण करने का आभूषण।

पुणछो–पु० [सं० प्रकोष्ठ] १ कलाई, हाथ का पहुंचा २ कलाई का आभूषण।

पुणछ–पु० १ पशु का पृष्ठ भाग, चूतड़। २ देखो 'पणच'।

पुणणो (बो)–क्रि० [सं०पणनम्] १ बोलना, कहना। २ बनाना रचना, कथना।

पुणिव–देखो 'फणीद'।

पुणि–१ देखो 'पुण्य'। २ देखो 'पुन'।

पुणियो–१ देखो 'पुरणियो'। २ देखो 'पुरण'।

पुण्ण पुण्ण–देखो 'पुण्य'।

पुण्णट्ठा–पु० [सं० पुण्य-नष्ट] मृत्यु भोज का भोजन लेने से होने वाला दोष (जैन)।

पुण्णमासि, पुण्णमासी–देखो 'पूरणमासी'।

पुण्णिम–देखो 'पूरणिमा'।

पुण्य (न्यु)–वि० [सं०] १ पवित्र, शुद्ध। २ मांगलिक, शुभ। ३ उत्तम फलदायी। ४ उत्सवसंबंधी। ५ नेक, ईमानदार, धार्मिक। ६ मनोहर, सुन्दर। ७ कोमल*। ८ आनन्ददायी। –पु० १ शुभ परिणाम व फल वाला कार्य। २ शुभ कर्मों का संचय। ३ शुभ कर्मों का बंध। ४ विशुद्धता, पवित्रता। ५ परोपकार। ६ दान, धर्म। ७ धार्मिक कर्म।

पुण्यक–पु० [सं०] १ पुण्य दायक व्रत, अनुष्ठान। २ पुत्र के कल्याण हेतु माता द्वारा किया जाने वाला व्रत। ३ विष्णु।

पुण्यकरता–पु० [सं० पुण्य कर्तृ] पुण्य कर्म करने का समय।

पुण्यकरम–पु० [सं० पुण्य कर्मन्] पुण्यदायी कार्य।

पुण्यकाळ–पु० [सं० पुण्यकाल] दान-पुण्य करने का समय।

पुण्यक्षेत्र (खेत)–पु० [सं० पुण्य क्षेत्र] वह स्थान जहां पुण्य प्राप्त होता है, तीर्थ।

पुण्यजन–पु० [सं] १ राक्षस, असुर। २ यक्ष।

पुण्यजनेस्वर–पु० [सं० पुण्यजनेश्वर] कुबेर।

पुण्यजोग–देखो 'पुण्ययोग'।

पुण्यतिथ, पुण्यतिथि–स्त्री० [सं० पुण्यतिथि] १ शुभ कार्य का उपयुक्त दिन। २ शुभ मूहूर्त वाला दिन। ३ पर्व दिवस।

पुण्यपुरुस–पु० [सं० पुण्य पुरुष] धर्मात्मा व्यक्ति।

पुण्यभूमि–पु० [सं०] १ भारतवर्ष, आर्यावर्त। २ वह स्थान या प्रदेश जहां धर्मात्मा जन्म लेते हैं या निवास करते हैं।

पुण्ययोग–पु० शुभ योग।

पुण्यवंत (वान)–वि० [सं० पुण्यवत्] (स्त्री० पुण्यवंती) शुभ कार्य करने वाला, धर्मात्मा, दानी।

पुण्यस्थान–पु० [सं० पुण्यस्थान] १ तीर्थ स्थान। २ पुण्य भूमि। ३ जन्म कुण्डली में लग्न से नौवां स्थान।

पुण्याई–स्त्री० पुण्य का प्रभाव। पुण्य का फल।

पुण्यात्मा, पुण्यात्मा–वि० [सं० पुण्यात्मन्] धर्मात्मा व पुण्यवान।

पुण्यारथ–वि० [सं० पुण्यार्थ] १ पुण्य-प्राप्ति के लिये किया जाने वाला। २ दान या परोपकार में लगाया हुआ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–पु० १ परोपकार या दान में लगाया हुआ धन। २ परोपकार की भावना।

पुण्योदय–पु० [सं०] शुभ कर्मों के फल स्वरूप होने वाला भाग्योदय।

पुत–पु० १ एक नरक विशेष। २ नितम्ब, चूतड़। ३ देखो 'पुत्र'।

पुतना–देखो 'पूतना'।

पुतर–देखो 'पुत्र'।

पुतळी–देखो 'पूतळी'।

पुतळी–देखो 'पूतळी'।

पुतार–देखो 'पूंतार'।

पुतारणी (बी)–देखो 'पूंतारणी' (बी)।

पुती, पुतीय–स्त्री० पुत्री। —**दान**–पु० कन्यादान।

पुतो, पुत्त, पुत्तर, पुत्तु–देखो 'पुत्र'।

पुत्तलविधान–पु० [सं०] अस्थियों के अभाव में कृत्रिम पुतला बना कर किया जाने वाला कर्म, विधान, संस्कार।

पुत्ति–१ देखो 'पूरति'। २ देखो 'पुत्री'।

पुत्तिका–स्त्री० [सं०] १ तितली। २ मधु मक्षिका। ३ दीमक।

पुत्तु, पुत्तो, पुत्र–पु० [सं० पुत्र] (स्त्री० पुत्ती, पुत्री) १ लड़का, बेटा, वत्स, आत्मज। २ बालक।

पुत्रदाएकादसी–स्त्री० [सं० पुत्रदा एकादशी] श्रावण के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

पुत्रवंती (वती)–स्त्री० [सं० पुत्रवती] वह स्त्री जिसके पुत्र हो।

पुत्रि, पुत्रिका, पुत्री–स्त्री० [सं० पुत्री] १ बेटी, वत्सा, आत्मजा। २ कन्या, लड़की।

पुत्रु–देखो 'पुत्र'।

पुत्रेस्टि–पु० [सं० पुत्रेष्टि] पुत्र प्राप्ति हेतु किया जाने वाला यज्ञ।

पुत्रोछव, पुत्रोत्सव–पु० [सं० पुत्रोत्सव] पुत्र जन्म का उत्सव।

पुत्रौ–देखो 'पुत्र'।

पुद्गळ, पुद्गल, पुद्गळ–पु० [सं० पुद्गल] १ शरीर, तन। २ रूप रंग और स्पर्श गुण वाला एक मूर्त पदार्थ। ३ पूर्ण गलन धर्म वाला द्रव्य। ४ परमाणु।

पुन–अव्य० [सं० पुनः] १ पुनः दुबारा। २ नए सिरे से, फिर से। ३ अनन्तर, पीछे। ४ देखो 'पुण्य'।

पुनजनेसर–देखो 'पुण्यजनेसर'।

पुनजोग–देखो 'पुण्ययोग'।

पुनमां, पुनमी, पुनम्म–देखो 'पूरणिमा'।

पुनरजन्म, पुनरजीवण (न)–पु० [सं० पुनर्जन्म] १ मरणोपरान्त किसी जीवात्मा का दुबारा होने वाला जन्म। २ हृदय गति रुक कर दुबारा चल जाने की अवस्था। ३ भयंकर रोग या दुर्घटना से बच जाने की अवस्था।

पुनरनवा–स्त्री० [सं० पुनर्नवा] वर्षा ऋतु में होने वाली एक वनस्पति –वि० वि० देखो 'साटी'।

पुनरपि–अव्य० [सं० पुनर-अपि] दुबारा, पुनः फिर से।

पुनरभव–पु० [सं० पुनर्भव] १ नाखून। २ दूसरा जन्म।

पुनरवसु, पुनरवसू–पु० [सं० पुनर्वसु] सत्ताईस नक्षत्रों में से एक।

पुनरविवाह–पु० [सं० पुनर्विवाह] दुबारा विवाह, दूसरी शादी।

पुनरावत–वि० [सं० पुनरावृत्त] दोहराया हुआ। फिरसे घुमाया हुआ।

पुनरासो–पु० [सं० पुण्यराशि] १ पुण्य का समूह। २ पुण्य कर्मों का संचय।

पुनरुक्ति–पु० [सं०] कही हुई बात को दोहराना, पुनरावृत्ति।

पुनवंती–देखो 'पुण्यवती'।

पुनवती–स्त्री० [सं० पूर्णवती] १ ध्वजा। २ देखो 'पुण्यवंती'।

पुनाजोग–देखो 'पुण्ययोग'।

पुनावत–पु० राठौड़ वंश की उपशाखा एवं इस शाखा का व्यक्ति।

पुनि–पु० [सं० पुनः] १ दूध। २ देखो 'पुन'।

पुनितोया–स्त्री० [सं० पुण्यतोया] गंगा।

पुनिम–देखो 'पूरणिमा'।

पुनियर–देखो 'पुण्य'।

पुनियाई–देखो 'पुण्याई'।

पुनीत–वि० [सं० पुण्यमय] (स्त्री० पुनीता) १ जो पवित्र एवं शुद्ध हो। २ उत्तम, श्रेष्ठ। –पु० १ सूर्य, भानु। २ युधिष्ठिर। ३ धर्म, पुण्य।

पुनुं, पुनु, पुन्न–१ देखो 'पुण्य'। २ देखो 'पूरण'।

पुन्नवसु–देखो 'पुनरवसु'।

पुन्नाक–पु० [सं०] १ सुलताना चम्पा नामक वृक्ष। २ देखो 'पिनाक'।

पुन्नि–१ देखो 'पुण्य'। २ देखो 'पुन'।

पुन्य–देखो 'पुण्य'। —**वंत**='पुण्यवंत'। —**वांन**='पुण्यवंत'।

पुन्याई–देखो 'पुण्याई'।

पुन्यात्मा–देखो 'पुण्यात्मा'।

पुन्यारथ–देखो 'पुण्यारथ'।

पुन्यु, पुन्यू–१ देखो 'पूनम'। २ देखो 'पुण्य'।

पुन्योदय–देखो 'पुण्योदय'।

पुप्फ–देखो 'पुस्प'।

पुप्फकरंड–देखो 'पुस्पकरंडक'।

पुप्फचूलिका, पुप्फचूलिया–पु० [सं० पुष्पचूलिका] प्रश्न व्याकरण सूत्र का एक उपांग। (जैन)

पुप्फदंत–देखो 'पुस्पदंत'।

पुप्फमई–देखो 'पुस्पमई'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुप्फि, पुफ–देखो 'पुप्प'।

पुफचूलीका, पुफचूलीया–देखो 'पुप्फचूलिया'।

पुब्भ–१ देखो 'परवत'। २ देखो 'पूरव'।

पुमांन–पु० [सं० पुमान्] मनुष्य, पुरुष।

पुमाड़ो–देखो 'प्रदाड़ो'।

पुमाणो, (बो) पुमावणो (बो)–देखो 'पोमाणो' (बो)।

पुय–पु० [सं०] १ वरुण। २ जीवात्मा।

पुरद, पुरंदर–पु० [सं० पुरंदर] १ इन्द्र। २ शिव, महादेव। ३ विष्णु। ४ ज्येष्ठा नक्षत्र। ५ नगर। ६ अग्नि। ७ चोर।

पुरंदरा–स्त्री० गंगा।

पुरक–देखो 'पुरंदर'।

पुरंधि, पुरंधी–स्त्री० [सं०] १ सुहागिन व बाल-बच्चों वाली स्त्री। २ स्त्री, नारी।

पुर–पु० [सं०] १ नगर, शहर। २ घर, निवास। ३ देह, शरीर। ४ लोक, भुवन। ५ नक्षत्र-पुंज।

पुर'–देखो 'पुरस'।

पुर-अमर–पु० [सं० अमर-पुर] स्वर्ग।

पुरइव–पु० [सं० इन्द्रपुर] स्वर्ग।

पुरक्ख–देखो 'पुरुस'।

पुरक्खपुराण–देखो 'पुरांणपुरुस'।

पुरख, पुरखड़ो–देखो 'पुरुस'।

पुरखपुराण–देखो 'पुरांण पुरुस'।

पुरखातण, पुरखातन–देखो 'पुरुसातन'।

पुरखाधम–पु० [सं० पुरुष-धर्म] कुबेर।

पुरखारत, पुरखारथ–देखो 'पुरुसारथ'।

पुरखि–देखो 'पुरुस'।

पुरखेस–पु० [सं० पुरुष-ईश] राजा, नृप।

पुरखोतम–देखो 'पुरुसोत्तम'।

पुरखो–पु० [सं० पुरुष] १ पूर्वज। २ वृद्ध पुरुष, बुजुर्ग।

पुरख्ख–देखो 'पुरुस'।

पुरज–देखो 'पुरजो'।

पुरजण (न)–पु० [सं० पुरजन] १ नगर के लोग, नगरवासी, पुरवासी। २ गेहूं की फसल के साथ होने वाला एक पौधा।

पुरजित–पु० [सं० पुरजित्] १ शिव, महादेव। २ जाम्बुवती एवं श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

पुरजियो–देखो 'पुरजो'।

पुरजो–पु० [फा० पुर्जः] १ टुकड़ा, खण्ड। २ कागज का टुकड़ा, चिट, पर्ची। ३ छोटा खत, चिट्ठी। ४ किसी यंत्र का कोई भाग, उपकरण।

पुरट–पु० [सं०] सुवर्ण, सोना।

पुरण–पु० [सं० पुरन्ति] १ घोड़ा। अश्व। २ वाहन, सवारी। २ देखो 'पूरण'।

पुरणवासी–देखो 'पूरणमासी'।

पुरणाई–स्त्री० [सं० पूर्ण] मांगलिक अवसरों पर गोबर आदि से आंगन लेपने की क्रिया।

पुरणाहुति, पुरणाहुती–देखो 'पूरणाहुती'।

पुरणिम–देखो 'पूरणिमा'।

पुरणियो–पु० १ गधा। २ देखो 'पूरण'।

पुरतकाळ, पुरतगाळ–पु० १ योरुप के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक छोटा देश। २ इस देश की बनी तलवार।

पुरतगाळी–वि० 'पुरतगाल' का, पुरतगाल संबंधी। –पु० १ पुरतगाल की भाषा। २ पुरतगाल का निवासी।

पुरतोरण–पु० [सं०] नगर का मुख्य द्वार।

पुरतो–अव्य० [सं० पुरतस्] १ आगे, सामने, सम्मुख। २ पूर्व, पहले। ३ पीछे से।

पुरत्रांण–पु० [सं० पुरत्राण] परकोटा, शहरपनाह।

पुरदड़ी–देखो 'पड़दळी'।

पुरद्वार–पु० नगर का मुख्य द्वार।

पुरधर–पु० [सं०] नगर, शहर।

पुरनबिरम–देखो 'पूरणब्रह्म'।

पुरनारी–स्त्री० [सं०] वेश्या, रण्डी।

पुरपाळ–पु० [सं० पुर-पालक] १ नगर रक्षक। २ नगर का प्रमुख अधिकारी। ३ कोतवाल। ४ आत्मा, जीव।

पुरब–देखो 'पूरव'।

पुरबळो–देखो 'पूरबळो'। (स्त्री० पूरबळी)

पुरबी–देखो 'पूरबी'।

पुरबीकम– पु० [सं० विक्रमपुर] बीकानेर नगर।

पुरराउ–पु० [सं० पुरराज] नगर पति।

पुरलिंग–देखो 'पुल्लिंग'।

पुरवणी (बो)–देखो 'पूरणी' (बो)।

पुरवाई–देखो 'पुरवाई'।

पुरवासी–पु० [सं०] नगर का निवासी।

पुरविसन, पुरविस्न–पु० [सं० विष्णु-पुर] वैकुण्ठ।

पुरस–पु० [सं० पुरुष] १ ऐड़ी से चोटी तक की लम्बाई का नाप। २ दोनों हाथों को समानान्तर फैलाने पर एक हाथ की मध्यमा से दूसरी मध्यमा तक का फैलाव, माप। ३ देखो 'पुरुस'।

पुरसकारी, पुरसगारी–स्त्री० [सं० परिवेषकार] १ भोजन परोसने वाली स्त्री। २ भोजन परोसने की क्रिया। ३ भोजन परोसने की कला। ४ परोसी जाने वाली भोजन सामग्री।

पुरसकारो, पुरसगारो–पु० [सं० परिवेषकार] (स्त्री० पुरसगारी) भोजन परोसने वाला व्यक्ति।

पुरसड़ो–१ देखो 'पुरस'। २ देखो 'पुरुस'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरसणी (बो)–क्रि० [सं० परवेषणम्] भोजन परोसना ।
पुरसपत–देखो 'सप्तपुरी' ।
पुरसपुराण–देखो 'पुरांणपुरुस' ।
पुरसली–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया, काबर ।
पुरसाकार–पु० [सं० पुरुषाकार] लिंग, शिश्न ।
पुरसाणी (बो)–क्रि० भोजन परोसवाना ।
पुरसातण, पुरसातन–पु० [सं० पुरुष-तन] बल, पराक्रम ।
पुरसाद–देखो 'प्रसाद' ।
पुरसारथ–देखो 'पुरुसारथ' ।
पुरसारी–देखो 'पुरसगारी' ।
पुरसारी–देखो 'पुरसगारी' ।
पुरसि–१ देखो 'पुरस' । २ देखो 'पुरुस' ।
पुरसोतम, पुरसोत्तम–देखो 'पुरुसोत्तम' ।
पुरस्कार–पु० [सं०] पारितोषिक, इनाम ।
पुरस्कृत–वि० [सं० पुरस्कृत] जिसे पुरस्कार दिया गया हो, इनाम प्राप्त ।
पुरहथण–पु० हस्तिनापुर ।
पुरहूत (ति,ती)–देखो 'पुरुहूत' ।
पुरहूत-जय–पु० [सं० पुरुहूतजय] वज्र ।
पुरहूत–पु० [सं०] शिव, महादेव ।
पुरांइंद–देखो 'इंद्रपुरी' ।
पुरांण–वि० [सं० पुराण] १ प्राचीन, पुरातन । २ आदि का, मूल । ३ पुराना, काम में लिया हुआ । –पु० १ हिन्दुओं के धर्म एवं संस्कृति संबंधी १८ ग्रंथ । २ इतिवृत्त, इतिहास । ३ कोई प्राचीन घटना, आख्यान । –स्त्री० ४ एक नदी का नाम । ५ पुरुष की बहत्तर कलाओं में से एक । ६ अठारह की संख्या* ।
पुरांण–पु० [सं० पुराण] ब्रह्मा, विधि ।
पुरांणपुरख, (पुरस,पुरखस,पुरख,पुरुस)–पु० [सं० पुराण-पुरुष] १ ईश्वर, ब्रह्म । २ श्रीकृष्ण ।
पुरांणिक–देखो 'पुरांणीक' ।
पुरांणी–१ देखो 'पुरांणी' । २ देखो 'परांणी' ।
पुरांणीक–वि० [सं० पौराणिक] १ पुराण संबंधी, पुराण का । २ पुराणों का जानकार ।
पुरांणी–वि० [सं० पुराण] (स्त्री० पुरांणी) १ जो नया न हो, पुराना, प्राचीन । २ पूर्व काल में बना या रचा हुआ । ३ जीर्ण-शीर्ण या कमजोर हालत का । ४ प्राचीन, पुरातन । ५ परिपक्व । ६ अनुभवी, ज्ञाता । ७ पूर्ण रूप से अभ्यस्त । ८ वरिष्ठ । ९ किसी निश्चित अवधि से सुरक्षित किया हुआ ।
पुरा–अव्य० [सं०] १ पूर्व काल में, पुराने समय से । २ शीघ्र, तुरंत । ३ अब तक । –वि० प्राचीन, पुराना ।
पुराचीन–देखो 'प्राचीन' ।
पुराणी (बो)–क्रि० १ भरवाना, भर्ती करवाना । २ पूर्ति कराना, पूरा कहाना । ३ सजवाना, सजावट कराना ।
पुरातत्व–पु० [सं०] प्राचीन काल संबंधी विद्या ।
पुरातन, पुरातम–वि० [सं०] १ प्राचीन, पुराना । २ बूढ़ा । ३ आदिकाल का । ४ जीर्ण-शीर्ण, घिसा हुआ । –पु० १ विष्णु का नामान्तर । विष्णु । २ सनातन या आदि पुरुष ।
पुरातळ–पु० [सं० पुरातल] तलातल ।
पुरायण–देखो 'पारायण' ।
पुरारि–पु० [सं०] शिव ।
पुरारब्ध–देखो 'प्रारब्ध' ।
पुरारब्धी–देखो 'प्रारब्धी' ।
पुरावली (बो)–देखो 'पुराणी' (बो) ।
पुरिंद, पुरिंदर, पुरिंद्र–देखो 'पुरंदर' ।
पुरिंद्री–देखो 'पुरंध्री' ।
पुरिख, पुरिखि–१ देखो 'पुरीख' । २ देखो 'पुरुस' ।
पुरिखिपुरांण–देखो 'पुरांण पुरुस' ।
पुरिखोतम–देखो 'पुरुसोतम' ।
पुरिखौ–देखो 'पुरखौ' ।
पुरिमड्ढ–पु० प्रथम दो प्रहर तक भोजन त्यागने की क्रिया ।
पुरिस–देखो 'पुरस' ।
पुरिसोतम, पुरिसोत्तम–देखो 'पुरुषोत्तम' ।
पुरिसौ–देखो 'पोरसौ'
पुरींद्री–देखो 'पुरंध्री' ।
पुरी–स्त्री० [सं०] १ नगर, शहर । २ छोटी नगरी । ३ जगन्नाथ पुरी । ४ दशनामी संन्यासियों की एक शाखा । ५ इस शाखा का संन्यासी । । ६ चन्द्रमा । ७ देखो 'पुड़ी' ।
पुरीख, पुरीस–पु० [सं० पुरीष] १ मल, विष्टा । २ देखो 'पुरुस' ।
पुरु–पु० [सं०] १ ययाति के पुत्र एक प्राचीन राजा । २ सिकन्दर से लड़ने वाला पंजाब का राजा । ३ शरीर, देह । ४ देवलोक, अमरपुर, स्वर्ग । ५ पुष्पराग । ६ देखो 'पुर' ।
पुरुकुसीमांन–पु० [सं० पुरुकुत्स] एक सूर्यवंशी राजा ।
पुरुक्ख–देखो 'पुरुस' ।
पुरुख, पुरुखड़ौ–देखो 'पुरुस' ।
पुरुखपुरांण–देखो 'पुरांणपुरुख' ।
पुरुखातम, पुरुखात्रम–देखो 'पुरुसातन' ।
पुरुखारथ–देखो 'पुरुसारथ' ।
पुरुखि–देखो 'पुरुस' ।
पुरुखौ–देखो 'पुरखौ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरंजित–पु० [सं०] १ कुंतिभोज का पुत्र व अर्जुन का मामा। २ निमिवंशीय एक राजा। ३ विष्णु।

पुरणो (णो)–क्रि० पूर्ण करना, पूरा करना।

पुरस पुरसड़ो–पु० [सं० पुरुष] १ मानव जाति का नर प्राणी, आदमी, पुरुष। मनुष्य। २ प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी अकर्ता और असंगचेतन तत्त्व, विश्वात्मा। ३ मानव शरीर या आत्मा। ४ किसी स्त्री का पति। ५ जीव, आत्मा। ६ परमात्मा। ७ सूर्य। ८ शिव। ९ किसी पीढ़ी या पुश्त का प्रतिनिधि। १० अधिकारी, कार्यकर्ता। ११ वक्ता की दृष्टि से किया जाने वाला सर्वनाम का त्रिभाजन। १२ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। १३ गुमाश्ता नौकर। १४ आंख की पुतली। —**ग्रह**–पु० रवि, मंगल, गुरु। —**नक्षत्र**–पु० अश्विनी, मघा, मूल, रेवती, पुष्य, श्रवण, हस्त और शतभिषा नक्षत्र। —**मेध**–पु० मनुष्य की बलि वाला यज्ञ। —**राशि**–स्त्री० मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुंभ। —**वार**–पु० रवि, मंगल और गुरुवार।

पुरसातन–पु० [सं० पुरुष-तन] शक्ति, बल, सामर्थ्य।

पुरसारथ–पु० [सं० पुरुषार्थ] १ पुरुष की शक्ति, सामर्थ्य। २ कार्य करने का उत्साह। ३ पुरुष के उद्योग का विषय। ४ परिश्रम, उद्यम।

पुरसारथो–वि० [सं० पुरुषार्थी] १ परिश्रम एवं मेहनत करने वाला। २ उत्साही।

पुरसु–देखो 'पुरुस'।

पुरसोतम, पुरसोत्तम–पु० [सं० पुरुषोत्तम] १ पुरुषों में उत्तम, श्रेष्ठ पुरुष। २ ईश्वर। ३ श्रीरामचन्द्र। ४ श्रीकृष्ण। ५ जगन्नाथ पुरी का मंदिर। ६ जगन्नाथ की मूर्ति(उड़ीसा) —**क्षेत्र**–पु० जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)। —**मास**–पु० अधिकमास, मलमास।

पुरहूत–पु० [सं०] इन्द्र।

पुरसणो (णो)–देखो 'पुरसणो' (णो)।

पुरेंद्री–देखो 'पुरंध्री'।

पुरे–देखो 'प्रहर'।

पुरोगत–वि० [सं०] १ जो सामने हो, सम्मुख। २ पुराना, प्राचीन। ३ गत, विगत। ४ देखो 'पुरोगति'।

पुरोगति–वि० [सं०] अग्रगामी। –स्त्री० १ आगे-आगे चलने की क्रिया या भाव। २ पुरोगत होने की अवस्था –पु० ३ स्वान, कुत्ता।

पुरोचन–पु० [सं०] लाक्षागृह में पांडवों को जलाने के लिये नियुक्त दुर्योधन का म्लेच्छ मंत्री।

पुरोडा, पुरोडास–पु० [सं० पुरोडाश] १ कपाल में पकाई हुई आटे की टिकिया। २ इस टिकिया की यज्ञ में आहुति देने की क्रिया। ३ उक्त आहुति देते समय पढ़ा जाने वाला मंत्र। ४ सोमरस।

पुरोहिअ, पुरोहित, पुरोहितु–पु० [सं० पुरोहित] (स्त्री० पुरोहितण, पुरोहिताणी) १ यज्ञ, अनुष्ठान संस्कार आदि कराने वाला ब्राह्मण। २ प्रधान याज्ञिक कर्म कराने वाला ब्राह्मण। ३ ब्राह्मणों का एक वर्ग। ४ सामंत या राजा का कुलगुरु। ५ राज गुरु।

पुरोहिताई–स्त्री० १ यज्ञ आदि कराने का कार्य। २ राज गुरु का पद। ३ उक्त पद का वेतन।

पुरो–देखो 'पुर'।

पुलंदर, पुलंदो, पुलंद–देखो 'पुरंदर'।

पुळ, पुल–स्त्री० [फा० पुल] नदी, जलाशय आदि के आर-पार जाने का, पानी के ऊपर बना रास्ता, सेतु। २ देखो 'पळ'।

पुळक, पुलक–पु० [सं० पुलकन्] १ प्रेम, भय, हर्ष के कारण शरीर में होने वाला रोमांच, कम्पन। २ कोई कार्य करने की इच्छा, कामना। ३ हर्ष, प्रसन्नता। ४ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, रत्न। ५ हाथी का रातिब। ६ हरताल।

पुळकणो (णो)–क्रि० १ रोमांचित होना, कम्पायमान होना। २ इच्छा या कामना होना। ३ हर्षित या प्रसन्न होना।

पुळकाणो (णो), पुळकावणो (णो)–क्रि० १ रोमांचित करना, कम्पायमान करना। २ इच्छा या कामना जागृत करना। ३ हर्षित या प्रसन्न करना।

पुळकि–देखो 'पुळक'।

पुलकित–वि०[सं०]१ रोमांचित, कम्पित। २ गद्गद्। ३ हर्षित, प्रसन्न।

पुलग–पु० [सं० प्लवंग] घोड़ा।

पुळच(छ)–देखो 'पोळछ'।

पुळण(न)–देखो 'पुलिन'।

पुळणो(णो)–क्रि० [सं० पलायनम्] १ कूच करना, प्रस्थान करना। २ चलना, गमन करना। ३ गतिमान होना। ४ बहना। ५ दौड़ना, भागना। ६ युद्ध से भागना। ७ नष्ट होना, मिट जाना। ८ खिसकना। ९ व्यतीत होना, गुजरना।

पुळपुळ–स्त्री० १ उद्दण्डता, शैतानी। २ चंचलता। ३ गुदगुदी, मचमची। ४ हल्की खुजलाहट।

पुळपुळणो (णो)–क्रि० १ उद्दण्डता या शैतानी करना। २ चंचलता करना। ३ गुदगुदी होना, मचमचाना। ४ हल्की खुजलाहट होना।

पुळपुळा'ट–देखो 'पुळपुळाहट'।

पुळपुळाणो(णो)–क्रि० १ कोई खाद्य पदार्थ मुंह में रख कर उसका स्वाद लेना, रस-चूसना। २ ऊपर हाथ फेरना, सहलाना। ३ देखो 'पुळपुळणो' (णो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुळपुळाहट–देखो 'पुळपुळ'।

पुळपुळो–वि० (स्त्री० पुळपुळी) १ उद्दण्ड, शैतान। २ चंचल, नटखट। ३ दुष्ट, उत्पाती। ४ गुदगुदा, नरम, मुलायम। ५ फुर्तीला, ताकीदवाला।

पुलमजा–देखो 'पुलोमजा'। —**पति**–'पुलोमजापति'।

पुलवती–वि० सौभाग्यवती, सुशील।

पुळसत, पुळसुत, पुलस्त्य–पु० [सं० पुलस्ति, पुलस्त्य] सप्त ऋषियों में से एक ऋषि।

पुलाक–पु० [सं०] १ धान की भूसी। २ दुष्ट रस वाला द्रव्य। ३ एक प्रकार का कदन्न, अंकरा। ४ चावल की मांड, पीच। ५ भात। ६ पुलाव। ७ पुलाकलब्धि वाला साधु (जैन)।

पुलाकलब्धि–स्त्री० [सं०] देवता के समान समृद्धि वाला मुनि।

पुळाणो(बो), पुलाणो(बो)–क्रि० [सं० पलायनम्] १ कूच करना, प्रस्थान करना। २ चलाना, गमन कराना। ३ गतिमान करना। ४ बहाना। ५ दौड़ाना, भगाना। ६ युद्ध से भगाना। ७ नष्ट करना, मिटाना। ८ खिसकाना। ९ व्यतीत करना, गुजारना।

पुलाव, पुलाव–पु० [फा०] १ मांस के साथ पकाये गये चावल। मांसोदन। २ नमकादि मसाले डालकर पकाया हुवा चावल।

पुलावणो(बो)–देखो 'पुलाणो' (बो)।

पुळिंद(न्द्र)–पु० [सं० पुलिंदक] १ भारत में बसने वाली एक प्राचीन असभ्य जाति। २ इस जाति का व्यक्ति। ३ इस जाति के निवास वाला प्रदेश। ४ देखो 'पुरंदर'।

पुलिंदर–देखो 'पुरंदर'।

पुलिंदा–स्त्री० तापी की सहायक एक नदी।

पुलिंदो–पु० कागज आदि की छोटी गठरी, गट्ठर, बंडल।

पुळिण, पुलिण–देखो 'पुलिन'।

पुलित–पु० [सं० प्लुतिः] १ स्वर का एक भेद, जो तीन मात्रा का होता है। २ घोड़े की एक चाल विशेष। ३ सरपट चाल। ४ छलांग, फलांग।

पुलिन–पु० [सं०] १ नदी का रेतीला तट। २ नदी का तट।

पुलियार–वि० [सं० पलायनकार] भागने वाला।

पुलिस–पु० [अं०] १ राज्य की आन्तरिक सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने वाला एक विभाग। २ उक्त विभाग के सुरक्षात्मक कार्य करने वाले कर्मचारियों का दल। ३ इस दल का व्यक्ति।

पुळी–स्त्री० छोटे बछड़े के सींगों का आवरण। २ काले व भूरे रंग की एक चिड़िया विशेष।

पुळीण, पुलीन–देखो 'पुलिन'।

पुलोम–पु०[सं०] १ 'शची' का पिता एक दैत्य। २ एक राक्षस का नाम।

पुलोमजा–स्त्री० [सं०] इन्द्राणी, शची।—**पति**–पु० इन्द्र।

पुलोमा–स्त्री० [सं०] महर्षि भृगु की पत्नी का नाम।

पुळो–पु० [सं० प्लुत] १ घोड़े की एक चाल विशेष। २ देखो 'पूळो'।

पुल्यंदर–देखो 'पुरंदर'।

पुल्लिंग–पु० [सं०] १ पुरुष चिह्न वाला प्राणी। २ पुरुष वाची नाम, शब्द या सम्बोधन। ३ स्त्री लिंग का विपर्याय।

पुल्ली–पु० घोड़े के सुम के ऊपर का भाग।

पुव–देखो 'पूरव'।

पुवन–देखो 'पवन'।

पुवभव–देखो 'पूरव भव'।

पुवांड–देखो 'पमाड'।

पुव्वंग–देखो 'पूरवांग'।

पुवाड़ो–देखो 'प्रवाड़ो'।

पुव्वंग–देखो 'पूरवांग'।

पुव्व–देखो 'पूरव'।

पुव्वभव, पुव्वहव–देखो 'पूरवभव'।

पुव्वांग–देखो 'पूरवांग'।

पुस–१ देखो 'पुस्य'। २ देखो 'पुस्प'।

पुसकर–देखो 'पुस्कर'।

पुसकर-चूड़–पु० [सं० पुष्कर चूड़] एक दिग्गज का नाम।

पुसकरणा–स्त्री० एक ब्राह्मण वर्ग विशेष।

पुसकरणी–स्त्री० [सं० पुष्करिणी] १ हस्तिनी। २ देखो 'पुसकरणी' (स्त्री०)

पुसकरणी–पु० (स्त्री० पुसकरणी) पुष्करणा जाति का ब्राह्मण।

पुसकरनाभ–देखो 'पुस्करनाभ'।

पुसकरपांन–पु० [सं० पुष्कर-पर्ण] यज्ञ-वेदी बनाने के काम आने वाली ईंट।

पुसकरमुख–पु० [सं० पुष्कर मुख]हाथी की सूंड का विवर।

पुसकरमूळ–देखो 'पुस्करमूळ'।

पुसकराक्ष, पुसकराख–वि० [सं० पुष्करराक्ष] कमलनयन। –पु० विष्णु।

पुसकरावती–स्त्री० [सं० पुष्करावती] एक प्राचीन नदी।

पुसकळ–देखो 'पुस्कळ'।

पुसकळक–पु० [सं० पुष्कलक] कस्तूरी मृग।

पुसकळावती–स्त्री० [सं० पुष्कलावती] गांधार देश की प्राचीन राजधानी।

पुसट–देखो 'पुस्ट'।

पुसटता–देखो 'पुस्टता'।

पुसटाई–देखो 'पुस्टाई'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुसटी–देखो 'पुस्टी'।

पुसटीमत (मारग)–देखो 'पुस्टीमारग'।

पुसतक–देखो 'पुस्तक'।

पुसप–देखो 'पुस्प'।

पुसपकरंड–पु० [सं० पुष्पकरंडक] १ फूल रखने की डलिया। २ उज्जयिनी के शिवोद्यान का नाम।

पुसपकाळ–पु० [सं० पुष्पकाल] वसंत ऋतु।

पुसपकीट–पु० [सं० पुष्पकीट] भ्रमर, भौंरा।

पुसपकेतु–पु० [सं० पुष्पकेतु] कामदेव।

पुसपगंध–पु० [सं० पुष्पगंध] १ भौंरा, भ्रमर। २ जूही।

पुसपधनाव–देखो 'पुस्पधन्वा'

पुसपधनु–देखो 'पुस्पधनु'।

पुसपनक्षत–देखो 'पुस्पनक्षत्र'।

पुसपपुर–देखो 'पुस्पपुर'।

पुसपबांण–देखो 'पुस्पबाण'।

पुसपमाळ, पुसपमाळा–देखो 'पुस्पमाळा'।

पुसपरस–पु० [सं० पुष्परस] १ पुष्प पराग, मकरंद। २ शहद। ३ भौंरा।

पुसपवाटिका–देखो 'पुस्पवाटिका'।

पुसपवस्टी–स्त्री० [सं० पुष्पवृष्टि] फूलों की वर्षा, कहीं पर फूल बरसाने का कार्य।

पुसपसर–पु० [सं० पुष्पसर] कामदेव।

पुसबन–देखो 'पुस्प'।

पुसरी–पु० रक्त, खून।

पुसळाई–स्त्री० द्वार पर लगी लकड़ी की चौखट।

पुसळी–देखो 'पुसी'।

पुसाणी (बो)–देखो 'पोसाणी'(बो)।

पुसी–स्त्री० [सं०प्रसर] १ दोने की तरह बनाई गई हथेली की मुद्रा। २ उक्त मुद्रा में आने लायक वस्तु।

पुस्कर–पु० [सं० पुष्कर] १ जल, पानी। २ कमल। ३ नील कमल। ४ तालाब, सरोवर। ५ आकाश, अंतरिक्ष। ६ तलवार की धार। ७ तलवार। ८ तलवार की म्यान। ९ तीर, बाण। १० हाथी की जिह्वा का अग्रभाग। ११ हाथी की सूंड का अग्र भाग। १२ युद्ध, लड़ाई। १३ सर्प विशेष। १४ विष्णु का एक नाम। १५ शिव। १६ सूर्य, भानु। १७ भग्नपाद नक्षत्र का एक अशुभ योग। १८ ढोल की चाम, चर्म। १९ ढोलक का मुख। २० अनावृष्टि सूचक बादल। २१ ब्रह्माण्ड के सात विशाल भागों में से एक। २२ अजमेर के पास का एक तीर्थ। २३ पीले और बादामी रंग का मृग विशेष। –वि० कोमल ※। —नाभ–पु० विष्णु।

पुस्करमूळ–पु० एक प्रकार की वनस्पती जिसकी जड़ औषध में काम आती है।

पुस्करावरत–पु० [सं० पुष्करावर्तक] मेघों का एक विशेष अधिपति।

पुस्करी–पु० [सं० पुष्करिन्] हाथी, गज।

पुस्कळ–वि० [सं० पुष्कल] १ विपुल, पर्याप्त। २ अत्यधिक, बहुत।

पुस्ट–वि० [सं० पुष्ट] १ पोषित, पाला हुआ। २ हृष्ट–पुष्ट, मोटा–ताजा। ३ सम्पन्न, पूर्ण सम्पन्न। ४ बल वर्द्धक, पौष्टिक। ५ पूर्ण, पूरा। ६ पक्का।

पुस्टता, पुस्टाई–स्त्री० पुष्ट होने की अवस्था या भाव।

पुस्टि–स्त्री० [सं० पुष्टि] १ पोषण। २ बलिष्ठता। ३ मोटाई, मुटापा। ४ वृद्धि, पूर्णता। ५ समर्थन, पक्कापन। ६ निश्चय। ७ सोलह मात्राओं में से एक। —कर–वि० बलवर्द्धक, पौष्टिक। पुष्ट करने वाला।
—करण–वि० बल वर्द्धक।

पुस्टिमत, पुस्टिमारग–पु० [सं० पुष्टिमत, मार्ग] वल्लभाचार्य के मतानुसार वैष्णव भक्ति मार्ग।

पुस्तंग–पु० [फा० पुश्त–सं० अंग] १ घोड़े के पिछले पैरों का ऊपरी भाग। २ घोड़े के पिछले पैरों में होने वाला एक रोग। ३ घोड़े की पीठ के नीचे रहने वाला पट्टा।

पुस्त–स्त्री० [फा० पुश्त] १ पृष्ठ भाग, पृष्ठ, पीछा। २ किसी प्राणी की पीठ। ३ वंशक्रम या आयुक्रम से होने वाली पीढ़ी, पीढ़ी क्रम से होनेवाला प्राणी समूह। ४ लेपन, प्लास्टर। ५ मिट्टी खोदने का कार्य। ६ पुस्तक। ७ हाथ की लिखी पुस्तक। ८ देखो 'पुस्ती'।

पुस्तक–स्त्री० [सं०] १ कोई ग्रंथ, किताब। २ कागजों की बंधी हुई जिल्द। ३ घोड़े की दुलत्ती, पिछले पैरों का आघात। —प्रकास–पु० पुस्तकों का संग्रहालय, पुस्तकालय।
—साळ–स्त्री० पुस्तकालय।

पुस्तकाकार–वि० [सं०] पुस्तक के आकार में, पुस्तक के रूप में।

पुस्तकालय–पु० [स०] पुस्तकों का संग्रहालय। लाईब्रेरी।

पुस्तखार–पु० [फा० पुश्तखार] पशुओं की पीठ खुजलाने का लोहे का उपकरण।

पुस्तग– १ देखो 'पुस्तंग'। २ देखो 'पुस्तक'।

पुस्तनांमो–पु० [फा० पुश्त–सं० नाम्न] वंशावली, वंशक्रम।

पुस्तबंध, पुस्तबंध–स्त्री० [फा० पुश्त–सं०बंध] पुश्ते की बंधाई, पुश्ता उठाने की क्रिया।

पुस्ती–स्त्री० [फा०] १ जलाघात आदि से दीवार या बांध की सुरक्षा हेतु मिट्टी आदि का दिया जाने वाला सहारा। २ पालण–पोषण। ३ सहायता–मदद। ४ मजबूती, दृढ़ता।

पुस्तैन–स्त्री० वंशक्रम, वंशपरंपरा, पीढ़ी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तैनी–वि० [फा०] १ वंशपरम्परा का। २ बाप दादों से चला आ रहा। ३ पूर्वजों का बनाया हुआ। ४ भावी पीढ़ी तक चलने वाला।

पुस्तौ–पु० पुस्तक की जिल्द पर लगने वाला चमड़ा या कपड़ा।

पुस्प–पु० [सं० पुष्प] १ लताओं, पेड़-पौधों, वनस्पतियों पर लगने वाले फूल, कुसुम। २ ऋतुमति स्त्री का रज। ३ आंख का फूला नामक रोग। ४ पुखराज। ५ कुबेर का पुष्पक विमान ६ घोड़े के शरीर पर होने वाली चित्ती। ७ वीरता। ८ सुशीलता। ९ विकास, प्रफुल्लन। १० देखो 'पुस्य'। —**चाप**–पु०कामदेव।–**धनु,धन्वा, ध्वज, पति**–पु० कामदेव —**मइ,मय**–वि० पुष्पों से युक्त। —**माळ, माळा**–स्त्री० फूलों का हार।—**मास**–पु०चैत्रमास।—**रथ**–पु०एक प्रकार का रथ। —**वाटिका**–स्त्री० फुलवारी। —**सजा, सज्जा**–स्त्री०फूल बिछाकर तैयार की शय्या। —**सरासण(न)**–पु० कामदेव।

पुस्पक–पु० [सं० पुष्पक] कुबेर का विमान।

पुस्पदंत (दंती)–पु० [स० पुष्पदंत] १ वायु कोण का दिग्गज। २ शिव का एक अनुचर। ३ नगर का एक द्वार विशेष।

पुस्पपुर–पु० [सं० पुष्प-पुर] पाटली पुत्र का एक नाम।

पुस्पांजळि, पुस्पांजळी–स्त्री० [सं० पुष्पांजलि] १ देवता या महापुरुषों को अर्पित की जाने वाली फूलों से भरी अंजलि।

पुस्पा–स्त्री० [सं० पुष्पा] चम्पानगरी।

पुस्पाकर–पु० [सं० पुष्पाकर] वसंतऋतु।

पुस्पावळि (ळी)–स्त्री०[सं० पुष्पावली]पुष्प, पुष्पों की कतार।

पुस्पिका–स्त्री० [सं० पुष्पिका] १ किसी ग्रंथ या ग्रंथ के अध्याय के अंत में लिखा समाप्ति सूचक वाक्य, इति वाक्य। २ दांतों का मेल। ३ लिंग का मेल।

पुस्य–पु० [सं० पुष्य] १ पौष मास। २ सत्ताईश नक्षत्रों में से एक। ३ कलियुग।

पुस्यनक्षत्र–पु० [सं० पुष्यनक्षत्र] एक नक्षत्र विशेष।

पुस्यमास–पु० [सं० पुष्यमास] विक्रम संवत का दशवां मास।

पुस्यसनांन (स्नान)–पु० [सं० पुष्यस्नान] पूसमास का चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में आने पर किया जाने वाला तीर्थ स्नान।

पुस्यारक–पु० [सं० पुष्यार्क] १ रविवासरीय पुष्य नक्षत्र। २ कर्क की संक्रांति में सूर्य का पुष्य नक्षत्र में होने का एक योग।

पुह–१ देखो 'पुस्प'। २ देखो 'प्रथवी'।

पुहकर–१ देखो 'पुस्कर'। २ देखो 'पुस्पकर'।

पुहकरनाभ–देखो 'पुस्करनाभ'।

पुहकरमूळ–देखो 'पुस्करमूळ'।

पुहगाळ–पु० [सं० पुष्यकाल] प्रातः काल, सवेरा।

पुहचतु (तौ)–वि० बलवान, शक्तिशाली।

पुहण–देखो 'पुरण'।

पुहतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पुहप–देखो 'पुस्प'।

पुहपति–पु० [सं० पुष्पपति] १ कामदेव। २ पृथ्वीपति।

पुहपमाळ (माळा)–देखो 'पुस्पमाळ'।

पुहपवती–स्त्री० [सं० पुष्पवती] १ फूलों वाली, फूलों से युक्त। २ रजस्वला स्त्री।

पुहपांजळी–देखो 'पुस्पांजळी'।

पुहपाई, पुहपावती–स्त्री० [सं० पुष्पावती] पुष्पावती नगरी।

पुहम, पुहमि, पुहमी–देखो 'प्रथवी'।

पुहर, पुहरि, पुहरी–देखो 'प्रहर'।

पुहरी–देखो 'पहरी'।

पुहव–१ देखो 'पुस्य'। २ देखो 'पुस्प'।

पुहवि, पुहवी–देखो 'प्रथवी'। —**पति; पत्ति**='प्रथवीपति'।

पुहवीतळ (ळि)–पु० [सं० पृथ्वीतल] पृथ्वीतल।

पुहवीस–देखो 'प्रथवीस'।

पुहुंच–स्त्री० पहुंचने की क्रिया या शक्ति।

पुहुंचणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पुहुंचाड़णो (बो), पुहुंचाणो (बो), पुहुंचावणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पुहुंतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पुहुच–देखो 'पहुंच'।

पुहुण–देखो 'पुरण'।

पुहुंतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पुहुप–१ देखो 'पुस्प'। २ देखो 'पुस्य'। —**माळ, माळा**= 'पुस्पमाळ'।

पुहुरायत–देखो 'पौरायत'।

पुहुवि, पुहोवी–देखो 'प्रथवी'। —**धणी**='प्रथवीधणी'।

पूं–स्त्री० ध्वनि विशेष।

पूंक, पूंकड़ो–देखो 'पूंख'।

पूंकणो (बो)–देखो 'प्रांखणो' (बो)।

पूंख–पु० [सं० प्रंख] १ बाजरी, ज्वार आदि के कच्चे दानों की बाल जिसे सेक कर खाया जाता है। २ मक्का का भुट्टा। ३ खेत को मेढ़।

पूंखणो (बो)–देखो 'प्रांखणो' (बो)।

पूंखियो–पु० १ एक घास विशेष। २ देखो 'पूंख'।

पूंग–देखो 'पूग'।

पूंगड़ो–पु०(स्त्री० पूंगड़ी)१ बड़े घर की संतान। २ शाहजादा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूंगरण–देखो 'पंगरण'।

पूंगळ–पु० बीकानेर राज्यान्तर्गत एक भू-भाग।

पूंगी–स्त्री० १ संपेरे का फूंक वाद्य। २ सुपारी।

पूंगीफळ–पु० [सं० पूगफल] सुपारी।

पूंगीयर–पु० संपेरा, गारुड़ी।

पूंचणा–देखो 'पांचणा'।

पूंचाळ, पूंचाळो–वि० समर्थ, शक्तिशाली।

पूंचियो–देखो 'पुणचो'।

पूंछी–पु० १ चोरी का माल लाने वाला, तस्कर। २ इस कार्य का पारिश्रमिक। ३ बैलगाड़ी के धाटे के नीचे लगने वाला डंडा विशेष। ४ बैलगाड़ी के पिछले भाग में लगाया जाने वाला लकड़ी का कटहरा। ५ देखो 'पुणची'।

पूंची–देखो 'पुणची'।

पूंछ, पूंछड़–स्त्री० [सं० पृच्छ] १ पक्षियों या जानवरों आदि की दुम। लांगूल। २ किसी वस्तु के पीछे का लंबा भाग।

पूंछड़तंग–पु० ऊंट के चारजामे या बैल की झूल का, पूंछ के नीचे रहने वाला भाग।

पूंछड़ी, पूंछड़ी–देखो 'पूंछ'।

पूंछडोलो–पु० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

पूंछणो (बो)–क्रि० [सं० प्रोच्छन] हाथ या वस्त्रादि से कुछ पोंछना, साफ करना।

पूंछपांछ, पूंछापांछो–वि० शेष बचा हुआ, अवशिष्ट। –पु० पोंछने की क्रिया या भाव।

पूंछबुवार–पु०पूंछ का जमीन पर घसीटते हुए चलने वाला बैल।

पूंछरेस–वि० पूंछ वाला।

पूंछलतारो–पु० भाप या कुहरे की पूंछ वाला एक तारा विशेष।

पूंछवाळ–पु० पूंछ के नीचले भाग के बाल।

पूंछाळ–वि० बड़ी पूंछ वाला।

पूंछियो–देखो 'पूंची'।

पूंछी–स्त्री० [सं० पुच्छ] चौपायों पर लिया जाने वाला कर विशेष।

पूंछेटणो (बो)–क्रि० बैलों के पूंछ मरोड़ना।

पूंज–पु० १ बाजरी के सिट्टों का ढेर। २ घास का ऊंचा व सीधा गंज। ३ देखो 'पूंज'। ४ देखो 'पूंजवाळ'।

पूंजड़ी–देखो 'पूंजी'।

पूंजण–पु० [सं० परिमार्जनम्] सफाई करने का उपकरण।

पूंजणी–स्त्री० [सं० परिमार्जिका] जैन साधुओं का जमीन आदि बुहारने का चंवर, उपकरण, ओघा

पूंजणो (बो)–क्रि० १ किसी उपकरण से खुजली मिटाना, खुजलाना। २ पूंजणी द्वारा सफाई करना।

पूंजळी–देखो 'पूंज'।

पूंजवाळ–पु० १ मूंज या डाभ का एक बार में, रस्सी बुनने में जोड़ा जाने वाला भाग। २ रस्सी या पलंग बुनते समय बिखरने वाला मूंज का फूस।

पूंजी–स्त्री० [सं० पुञ्ज] १ जोड़ा या जमा किया हुआ धन। २ व्यापार में लगा या ऋण पर दिया हुआ मूल धन। ३ आय वाली पूंजी या संपत्ति। ४ किसी विषय की योग्यता, धन। —**वार**–पु० अधिक धन या सम्पत्ति वाला व्यक्ति। —**वारी**–स्त्री० धनवान होने की अवस्था। —**पति**–वि० धनवान। —**वाद**–पु० पूंजी या पूंजीपतियों के वर्चस्व वाली आर्थिक नीति। सिद्धान्त। —**वादी**–स्त्री० उक्त नीति या सिद्धान्त को मानने वाला।

पूंठ–देखो 'पीठ'।

पूंठगठरी–पु० पीठ पर गठरी लादे घूम-घूम कर सौदा बेचने वाला सौदागर।

पूंठि–क्रि०वि० पीछे, पूठ पीछे।

पूंठियो, पूंठीड़ो–पु० वस्त्र विशेष, अंगा, अंगरखा।

पूंण–वि० [सं० पाद-ऊन] १ तीन चौथाई, पौन, एक में पाव कम। २ देखो 'पूरण'।

पूंणियो–१ देखो 'पुरणियो'। २ देखो 'पुरण'। ३ देखो 'पूंण'।

पूंतरी–पु० छिलका, छाल।

पूंतार–पु० महावत।

पूंतारणो (बो)–क्रि० [सं० पूताऽन्तरणम्] प्रोत्साहित करना। जोश दिलाना।

पूंद–पु० नितम्ब, चूतड़।

पूंदियो–पु० चरस चलाते समय लाव पर रख कर बैठने का चमड़ा।

पूंदो–वि० कायर, डरपोक।

पूंन–१ देखो 'पवन'। २ देखो 'पूंद'।

पूंमड़ो–देखो पूंगड़ो'।

पू–वि० पूर्ण। –पु०१ नभ, आकाश। २ पूर्व, प्राची। ३ नगर। ४ शरीर, वपु। –स्त्री० ५ गंगा।

पूओहर–देखो 'पयोधर'।

पूख–१ देखो 'पुस्य'। २ देखो 'पूंख'।

पूखण–वि० [सं० पूषणम्] १ पालन-पोषण करने वाला। २ देखो 'पूमण'।

पूग–पु० [सं०] १ सुपारी का पेड़। २ सुपारी। ३ झुण्ड; समूह। ४ देखो 'पहुंच'।

पूगणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पूगफळ–देखो 'पूंगीफळ'।

पूगरण–देखो 'पगरण'।

पूगळ–१ देखो 'पुद्गळ'। २ देखो 'पूंगळ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूगळगढ़, पूगळि–देखो 'पूंगळ'।

पूगाणो (बो), पूगावणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पूचाळो–देखो 'पूंचाळो'।

पूछ–स्त्री० १ पूछने की क्रिया या भाव। २ चाह, जरूरत। ३ आदर, इज्जत। ४ लोकप्रियता।

पूछणो (बो)–क्रि० [स० पृच्छ] पूछना, प्रश्न करना।

पूछगाछ–देखो 'पूछताछ'।

पूछड़ो–देखो 'पूंछ'।

पूछणो (बो)–क्रि० [सं० पृच्छ] १ आदर करना, सम्मान करना। २ टोकना, रोक-टोक करना। ३ हाल-चाल जानना कुसल पूछना। ४ ध्यान देना, महत्व देना। ५ किसी बात की जानकारी हेतु बात करना। ६ प्रश्न करना। ७ जांच करना, पूछताछ करना। ८ सलाह, मशविरा लेना।

पूछताछ, पूछताज, पूछपाछ–स्त्री० १ पूछने की क्रिया या भाव। २ चाह, आवश्यकता।

पूछाड़णो (बो), पूछाणो (बो)–क्रि० १ आदर करवाना, सम्मान कराना। २ रोक-टोक कराना। ३ हाल-चाल ज्ञात कराना, कुसल पुछवाना। ४ ध्यान दिलाना, महत्व दिराना। ५ किसी बात की जानकारी कराना। ६ प्रश्न कराना। ७ जांच कराना, पूछताछ कराना। ८ सलाह मशविरा कराना।

पूछातांछी, पूछापाछी–देखो 'पूछताछ'।

पूछावणो (बो)–देखो 'पूछाणो' (बो)।

पूछी–देखो 'पूंछी'।

पूज–पु० [सं० पूज्य] १ देवता, देव। २ पहुँच, निर्वाह। ३ देखो 'पूजा'।

पूजक, पूजग–पु० [सं० पूजक] पूजा करने वाला।

पूजजी–देखो 'पूज्यजी'।

पूजणो, (बो)–क्रि० [सं० पूजन] १ देवी-देवताओं की आराधना करना, पूजा-अर्चना करना। २ समता करना, तुलना करना मुकाबला करना। ३ आदर करना, सत्कार करना। ४ तारीफ करना, वाह-वाह करना। ५ पूर्ण करना। ६ देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पूजदेव–पु० [सं० पूज्यदेव] इष्टदेव।

पूजन–पु० [सं०] पूजा, अर्चना, वन्दना।

पूजनीक, पूजनीय–वि० [सं० पूजनीय] पूजा करने योग्य, वन्दनीय।

पूजसी–१ देखो 'पूंजळी'। २ देखो 'पूंज'।

पूजवण–देखो 'पूजवांण'।

पूजवणो(बो)–१ देखो 'पहुंचणो'(बो)। २ देखो 'पूजणो'(बो)।

पूजवांण–स्त्री० [सं० पूजः प्रण] १ शक्ति बल। २ वैभव। ३ पहुँच। –वि० समक्ष।

पूजा–स्त्री० [सं०] १ किसी देवी-देवता या इष्ट की प्रतिमा पर केसर, चंदन, फल-फूल नैवेद्य आदि चढ़ा कर किया जाने वाला पूजन, अर्चना, वंदना। २ पिटाई (व्यंग)।

पूजाणो (बो)–क्रि० १ किसी की बराबरी कराना समता कराना। २ पूजा, अर्चना, वंदना कराना। ३ आदर, सत्कार कराना। ४ बड़ाई कराना; प्रतिष्ठा कराना। ५ पूर्ण कराना। ६ इच्छा पूरी कराना। ७ देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पूजापती, पूजापाती–स्त्री० १ देव-पूजन में रखे जाने वाले पदार्थ। २ देखो 'पूजा'।

पूजापो–पु० पूजा की सामग्री।

पूजारी, पूजारु, पूजाक, पूजारो–देखो 'पुजारी'।

पूजावणो (बो)–देखो 'पूजाणो' (बो)।

पूजित–वि० पूजा हुआ, आराधित, सम्मानित।

पूज्यजी–पु० १ साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका इन चतुर्विध श्रीसंघ के अधिष्ठाता (जैन)। २ कोई पूज्य पुरुष।

पूटी–देखो 'पूठी'।

पूठ–पु० [सं० पृष्ठ] १ सहायता, मदद। २ शरण। ३ देखो 'पीठ'।

पूठइ (ई)–क्रि०वि० [सं० पृष्ठ] पीछे, अनुपस्थिति में।

पूड़ियो–पु० [सं० पृष्ठवाह] १ फेरी लगाकर सौदा बेचने वाला व्यापारी। २ देखो 'पूठाड़ो'।

पूठड़ो–देखो 'पूठाड़ो'।

पूठणो (बो)–क्रि० १ गाड़ी, शकट आदि के चक्के में पूठी लगाना। २ कूए या जलाशय के अन्दर पत्थरों से बंधाई करना।

पूठरो–वि० [सं० पृष्ठ] (स्त्री० पूठरी) १ पीठ का, पीछे का। २ देखो 'फूठरो'।

पूठलो–देखो 'पीठ'।

पूठलो–वि० [सं० पृष्ठ] (स्त्री० पूठली) पीछे का, पीछे वाला।

पूठवाड़ो–क्रि०वि० १ पीछे की ओर, पीछे। २ देखो 'पूठाड़ो'।

पूठवाल–पु० पहरेदार, चौकीदार (मेवात)।

पूठाड़ो–पु० फेरी लगा कर सौदा बेचने का थैला, बुगचा।

पूठाणो (बो), पूठावणो (बो)–देखो 'पुठाणो' (बो)।

पूठि–१ देखो 'पूठ'। २ देखो 'पीठ'। ३ देखो 'पूठी'।

पूठियो–पु० पहनने का वस्त्र विशेष, अंगरखा।

पूठिलो–देखो 'पूठलो' (स्त्री० पूठली)।

पूठी–स्त्री० १ बैलगाड़ी के चक्के पर लगने वाली अर्द्ध चंद्राकार मोटी व चपटी लकड़ी। २ कूए या जलाशय की दीवार में लगाने का अर्द्ध चंद्राकार पत्थर। ३ वधू के प्रथम गृह प्रवेश के समय द्वार पर पढ़ा जाने वाला मंत्र। (ब्राह्मण)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–क्रि०वि० १ वापस, पीछो । २ देखो 'पूठ' । —बंध–वि० पूठी लगा कर बांधा हुआ । पूठी युक्त ।

पूठीसंवारक–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

पूठ–देखो 'पीठ' ।

पूठो–क्रि०वि० [सं० पृष्ठ] १ पीछे की ओर, वापस । २ लौटकर । ३ पुनः, दुबारा । –पु० १ बैल आदि पशुओं के पिछले पैरों का ऊपरी हिस्सा । २ किसी पुस्तक आदि का गत्ता, आवरण । ३ देखो 'पीठ' ।

पूढणो (बो)–देखो 'पौढ़णो' (बो) ।

पूढ़ो–स्त्री० [सं० प्रौढ़ा] वृद्ध स्त्री, बुढ़िया ।

पूण–वि० १ एक में पाव कम, तीन चौथाई, पौन । २ देखो 'पूरण' । ३ देखो 'पून' । ४ देखो 'पवन' । —जात= 'पवन' (३) ।

पूणणो (बो)–क्रि० [सं० पादोनन] १ नष्ट करना, खराब करना । २ कम मूल्य में बेचना । [सं० पूर्णयति] ३ पूरा करना, पूर्ण करना ।

पूणाणो (बो), पूणावणो (बो)–क्रि० १ नष्ट कराना, खराब कराना । २ कम मूल्य में बिकवाना । ३ पूरा कराना, पूर्ण कराना ।

पूणियो–वि० तीन चौथाई के नाप वाला, तीन चौथाई मात्रा वाला । –पु० १ एक छन्द विशेष । २ देखो 'पूंण' । ३ देखो 'पुरणियो' । ४ देखो 'पूरण' ।

पूणी–स्त्री० [सं० पुणित] चरखा कातने की घुनी हुई रूई की बत्ती ।

पूणो–पु० १ पौन का पहाड़ा । २ देखो 'पूण' । ३ देखो 'पणो' ।

पूत–वि० [सं०] १ पवित्र, शुद्ध । २ देखो 'पुत्र' ।

पूतआतमा–देखो 'पूतातमा' ।

पूतड़लो, पूतड़ो–देखो 'पुत्र' ।

पूतना–स्त्री० [सं०] १ स्तन पान द्वारा कृष्ण को मारने के लिये नियुक्त कंस की एक अनुचरी । २ हर्र, हरीतकी ।

पूतनारि, पूतनासूदन–पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।

पूतनाहड़–स्त्री० [सं० पूतना-हरीतकी] छोटी हरड़ ।

पूतरो–देखो 'पुत्र' ।

पूतळ–पु० [सं० पुत्रकः] वर्ण संकर या जारज संतान ।

पूतळविधि–देखो 'पुत्तळविधान' ।

पूतळी–स्त्री० [सं० पुत्रकः] १ लकड़ी, पत्थर, धातु आदि की कोई प्रतिमा, आकृति । २ मृतक के प्रतीक रूप में बनी घास-फूस आदि की आकृति । ३ कपड़ा बुनने की कल । ४ आंख का काला भाग । ५ घोड़े की टाप का सेंढ़कनुमा निकला हुआ मांसल भाग ।

पूतळो–पु० [सं० पुत्रकः] १ मिट्टी या धातु आदि की पुरुषाकार मूर्ति । २ मृतक के प्रतीक रूप में बनी घास-फूस आदि की आकृति ।

पूतातमा–वि० [सं० पूतात्मा] पवित्र या शुद्ध हृदयवाला । –पु० पक्षीराज गरुड़ ।

पूतारणी (बो)–देखो 'पूंतारणी' (बो) ।

पूती–देखो 'पुत्री' ।

पूत्त, पूत्तु, पूत्तू, पूत्रो–देखो 'पुत्र' ।

पून–१ देखो 'पवन' । २ देखो 'पूंद' । ३ देखो 'पुण्य' । ४ देखो 'पूनम' ।

पूनजनेसर (सुर, स्वर)–देखो 'पुण्यजनेस्वर' ।

पूनम, पूनमी–स्त्री० [सं० पूर्णिमा] प्रत्येक मास की अंतिम तिथि, पूर्णिमा । —पत–पु० चन्द्रमा, शशि ।

पूनागिर–पु० मारवाड़ का एक पर्वत विशेष ।

पूनिम, पूनिमी, पूनू, पूनौ–देखो 'पूनम' ।

पून्य–देखो 'पुण्य' ।

पून्यम, पून्यू–देखो 'पूनम' ।

पूपी–स्त्री० [सं० पूपिका] १ पूरी, पूड़ी, रोटी । २ छोटा मालपूवा ।

पूफ–देखो 'पुस्य' ।

पूमाणो (बो), पूमावणो (बो)–देखो 'पोमाणो' (बो) ।

पूर–वि० १ पूरा, पूर्ण । २ सहित युक्त । ३ क्षत-विक्षत । –पु० १ घाव का भराव । २ फटा कपड़ा, चिथड़ा । ३ समूह, ढेर । ४ बहुतायत, भरमार । ५ जल की धारा । ६ जल की बाढ़ । ७ नदी की बाढ़ । ८ प्रपात, प्रवाह । ९ देखो 'पूरक' । १० देखो 'पूरण' । ११ देखो 'पूरी' ।

पूरउ–देखो 'पूरो' ।

पूरक–वि० [सं०] १ पूर्ति करने वाला, पूरा करने वाला । २ संतुष्ट करने वाला । –पु० [सं०] १ प्राणायाम की एक विधि । २ मृतक के पीछे दश दिन तक दिया जाने वाला पिण्ड दान । ३ गुणक अंक ।

पूरण–वि० [सं० पूर्ण] १ जिसमें कोई कमी न हो, पूर्ण । २ पूरा किया हुआ, परिपूर्ण, पूर्ण । ३ पर्याप्त, भरपूर । ४ समस्त, समूचा, कुल । ५ निपटाया हुआ, समाप्त सम्पन्न । ६ बीता हुआ, विगत । ७ संतुष्ट, तृप्त । ८ दृढ़, बलिष्ठ । ९ स्वार्थी । १० अखण्ड । –पु० [सं० पूरण] १ पूर्ति, पूर्णता । २ समाप्ति । ३ रिक्त स्थान की पूर्ति । ४ पूर्ण ब्रह्म, परमात्मा । ५ आकाश, आसमान । ६ मृतक के दशवें दिन का पिण्ड दान । ७ रोटी या पूड़ी विशेष । ८ वृष्टि, वर्षा । ९ अंक का गुणन । —चंद, चंद्र–पु० पूर्णिमा का पूरा चन्द्रमा । —पाद्मासन –पु० एक योगासन विशेष । —पुरख, पुरस–पु० ईश्वर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परमात्मा। —**प्रतिज्ञ**–वि० दृढ़ प्रतिज्ञ। —**ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म**–पु० ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म।

पूरणता–स्त्री० १ पूर्ण होने की अवस्था। २ अभाव या त्रुटि न होने की दशा।

पूरणमासी–स्त्री० [सं० पूर्णमासी] प्रत्येक मास की अंतिम तिथि।

पूरणविराम–पु० [सं० पूर्ण विराम] १ वाक्य के अंत में लगने वाला खड़ी पाई का चिह्न, बिन्दु। २ पूर्णतया ठहरने की अवस्था या भाव।

पूरणा–स्त्री० [सं० पूर्णा] प्रत्येक मास की पंचमी, दशमी, अमावस्या एवं पूर्णिमा तिथि।

पूरणाघात–पु० [सं० पूर्णाघात] ताल में अनाघात की एक मात्रा के बाद आने वाला स्थान।

पूरणानंद–पु० [सं० पूर्णानन्द] १ परमानन्द, परमेश्वर। २ सम्पूर्ण आनन्द।

पूरणावतार–पु० [सं० पूर्णावतार] ब्रह्म का अपनी सम्पूर्ण कलाओं सहित अवतार।

पूरणाहुति, पूरणाहुती–स्त्री० [सं० पूर्ण-आहुति] १ यज्ञ की समाप्ति पर दी जाने वाली अंतिम आहुति। २ किसी कार्य का अंतिम भाग। ३ अंतिम कृत्य।

पूरणिमा–स्त्री० [सं० पूर्णिमा] प्रत्येक मास की अंतिम तिथि।

पूरणी–स्त्री० १ एक दीवार से सटा कर उठाई गई दूसरी दीवार या पर्दा। २ कार्य पूर्णता।

पूर्णेंदु–पु० [सं० पूर्णेन्दु] पूर्णिमा का चन्द्रमा।

पूरणोपमा–पु० [सं० पूर्णोपमा] एक प्रकार का अर्थालंकार।

परणौ (बौ)–क्रि० [सं० पूरणम्] १ पूर्ति करना, भर्ती करना। २ रिक्त स्थान को भरना। ३ तृप्त या संतुष्ट करना। ४ पूरा करना, पूर्ण करना। ५ आवश्यकता की पूर्ति करना। ६ गुजर चलना, पूरा पड़ना। ७ मांगलिक अवसरों पर आंगन में चित्रकारी करना। ८ वाद्य बजाना। ९ व्यतीत होना, समाप्त होना। १० भर जाना, पूर्ण हो जाना।

पूरत, पूरति–स्त्री० [सं० पूर्ति] १ पूर्णता, पूरापन। २ घाटा या कमी बराबर करने की क्रिया। ३ समाप्ति। ४ अनुपालना। ५ तृप्ति।

पूरन–देखो 'पूरण'। —**मासी**='पूरणमासी'।

पूरपटो–क्रि०वि० पूरे वेग से, तेजी से।

पूरब–देखो 'पूरब'।

पूरबज–देखो 'पूरबज'।

पूरबजनम–देखो 'पूरबजन्म'।

पूरबदेव–देखो 'पूरबदेव'।

पूरबपत (पति, पती)–देखो 'पूरबपति'।

पूरबमीमांसा–देखो 'पूरबमीमांसा'।

पूरबळ–पु० १ 'पूर्वजन्म, पहिला जन्म। २ पूर्वकाल, पहला समय, प्राचीन काल। ३ पूर्ण शक्ति।

पूरबलौ–देखो 'पूरबलौ'। (स्त्री० पूरबली)

पूरबानक्षत्र–१ देखो 'पूरबाफालगुणी'। २ देखो 'पूरबासाढ़ा'। ३ देखो 'पूरबा भाद्रपदा'।

पूरबासाडा (साढ़ा)–देखो 'पूरबासाढ़ा'।

पूरबिया–वि० पूर्व का, पूर्व संबंधी। –पु० १ पूर्व प्रदेश का राजपूत या व्यक्ति। २ चौहानों की एक शाखा। ३ नाइयों की एक शाखा।

पूरबियौ–पु० १ पूर्व प्रदेश का निवासी। २ उत्तर प्रदेश का निवासी। ३ पूरबिया शाखा का चौहान या नाई।

पूरब्ब–देखो 'पूरब'।

पूरब–क्रि० वि० [सं० पूर्व] १ पहले, प्रथम। २ आगे। ३ निश्चित अवधि से पहले। –स्त्री० १ सूर्योदय की दिशा। २ किसी स्थान से पूर्व में बसा प्रदेश। ३ दीर्घकालीन एक अवधि या समय। –वि० १ पहले का, आगे का। २ प्राचीन, पुरातन। ३ अगला, पूर्व वाला। ५ पहले कथित। —**करम**–पु० पूर्व जन्म के कार्य। रोगोत्पति से पहले के कार्य। —**ग्यांन**–पु० पूर्व जन्म का ज्ञान। —**ज**–पु० बड़ा भाई। पूर्व पुरुष, बड़ेरे, पुरखे। —**जन्म**–पु० वर्तमान जन्म से पहले का जन्म। —**जन्मा**–पु०-बड़ा भाई। जो पहले जन्मा हो। —**देव**–पु० नर और नारायण। असुर, राक्षस। —**धर, धारी**–पु० पूर्व पक्ष को धारण करने वाला। —**पक्ष, पख**–पु० चन्द्र मास का कृष्ण पक्ष। शास्त्र विषयक कोई प्रश्न या शंका। वादी या दावेदार की बात, पक्ष, वाद। —**पक्षी**–वि० पूर्व पक्ष उपस्थित करने वाला। वादी। —**पति**–पु० पूर्व दिशा का अधिपति। इन्द्र। —**भव**–पु० पूर्व जन्म, पहला जन्म। —**रूप**–पु० प्रारंभिक रूप, आकार। एक अर्थालंकार। –**वाद**–पु० न्यायालय में प्रस्तुत किया जाने वाला अभियोग, वाद। —**वादी**–पु० अभियोग प्रस्तुत करने वाला। —**वृत्त**–पु०-इतिहास, इतिवृत्त।

पूरबगंगा–स्त्री० [सं० पूर्व गंगा] नर्बदा नदी।

पूरबरण–वि० (स्त्री० पूरबरणी) पूर्ण करने वाला।

पूरबरणौ (बौ)–क्रि० [सं० पोषणम्] १ पालना-पोषना। २ सधना, साध्य होना, सज आना। २ निर्वहित होना। पोसाना। ३ देखो 'पूरणौ' (बौ)।

पूरबतरकासन–पु० [सं० पूर्वतर्कासन] योग के चौरासी आसनों में से एक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूरवदिगवदन–पु० [सं० पूर्वदिग्वदनम्] मेष, सिंह, और धनु राशियां।

पूरवदिगीस–पु० [सं० पूर्वदिगीश] १ इन्द्र। २ मेष, सिंह और धनु ये तीन राशियां।

पूरवदिस्ट–पु० [सं० पूर्वदिष्ट] पूर्व कर्मों से भोगे-जाने वाले सुख-दुःख।

पूरवफाल्गुनी–देखो 'पूरवाफालगुनी'।

पूरवभाद्रपद–देखो 'पूरवा भाद्रपद'।

पूरवमीमांसा–पु० [सं० पूर्वमीमांसा] जैमिनी ऋषि द्वारा रचित कर्मकाण्ड संबंधी शास्त्र।

पूरवराग–पु० [सं० पुर्व राग] संयोग से पूर्व नायक-नायिका का प्रेम संबन्ध।

पूरवली–वि० (स्त्री० पूरवली) १ पहले का पूर्व का। २ पूर्व जन्म का।

पूरवांग–पु० [सं० पूर्वाङ्ग] १ पूर्व भाग। २ अगला भाग। ३ चौरासी लाख वर्ष का समय (जैन)।

पूरवाखाड़ा–देखो 'पूरवासाढ़ा'।

पूरवाचळ–पु० [सं० पूर्वाचल] उदयगिरि पर्वत।

पूरवाचारिज–पु० [सं० पूर्वाचार्य] पूर्व पीढ़ी के आचार्य।

पूरवानुराग–देखो 'पूरवराग'।

पूरवापर–अव्य० [सं० पूर्वापर] आगे-पीछे।

पूरवाफाल्गुणी–स्त्री० [सं० पूर्वाफाल्गुनी] सत्ताईस नक्षत्रों से ग्यारहवां, दो तारों वाला नक्षत्र।

पूरवाभाद्र, पूरवाभाद्रपद, पूरवाभाद्रपदा–पु० [सं० पूर्वाभाद्रपदा] २७ नक्षत्रों में २५ वां नक्षत्र।

पूरवार्द्ध (द्ध)–पु० [सं० पूर्वार्द्ध] १ किसी कार्य, विषय या ग्रंथ का पूर्व या प्रारंभ का आधा भाग। २ शरीर का पहला अर्ध भाग।

पूरवासाढ़ा–स्त्री० [सं० पूर्वाषाढ़ा] २७ नक्षत्रों में २० वां नक्षत्र।

पूरविलह–वि० [सं० पूर्विल] पूर्व का, पिछला।

पूरवी–वि० [सं० पूर्वीय] १ पूर्व का, पहले का। २ पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा संबंधी। –स्त्री० १ एक बोली। २ एक रागिनी। ३ बिहार प्रान्त में गाया जाने वाला एक दादरा।

पूरवीघाट–पु० [सं० पूर्वी-घट्ट] दक्षिण-भारत में पूर्वी समुद्र के साथ-साथ बालासोर से कन्याकुमारी तक की पर्वत शृंखला।

पूरसस–वि० पूर्ण।

पूरहूत–देखो 'पुरुहूत'।

पूराणी (बी)–क्रि० १ कमी पूर्ति कराना, पूरा-बराबर कराना। २ खाली स्थान को भराना। ३ तृप्त या संतुष्ट कराना। ४ पूर्ण कराना। ५ मनोरथ सफल कराना, इच्छा पूर्ति कराना। ६ मांगलिक अवसरों पर आंगन में चित्रकारी कराना। ७ बजवाना। ८ व्यतीत या समाप्त कराना। ९ भरवाना, पूर्ति करवाना।

पूरातन–देखो 'पुरातन'।

पूरावास–पु० स्त्री के गर्भ की पूर्णावधि।

पूरावणी (बी)–देखो 'पूराणी' (बी)।

पूरित–वि० [सं०] १ परिपूर्ण, पूर्ण भरा हुआ। २ तृप्त, संतुष्ट।

पूरिय–पु० [सं० पुरिका] १ नगर, कस्बा। २ देखो 'पुरी'।

पूरी–देखो 'पूरी'। (स्त्री०)

पूरु–पु० [सं०] १ वैराज मनु के एक पुत्र। २ मनुष्य।

पूरुख–देखो 'पुरुस'।

पूरंपाठं–क्रि०वि० परिपक्वावस्था में।

पूरो–वि० [सं० पूर्ण] (स्त्री० पूरी) १ जिसमें रिक्तता या अवकाश न हो। २ जिसमें कमी या कोई कसर न हो। ३ यथेष्ट, पर्याप्त। ४ समग्र, समूचा, कुल। ५ जो अपूर्ण या अधूरा न हो। ६ निश्चित या निर्धारित अवधि पर्यन्त रहने वाला। ७ आद्योपान्त, सर्वांगीण। ८ पूर्णता को प्राप्त किया हुआ। ९ दृढ़, पक्का, अटल। १० संतोषजनक, तुष्टिप्रद। ११ संतुष्ट, तृप्त। १२ बलिष्ठ, समर्थ।

पूळी, पूळी–पु० [सं० पूलक] घास के तृण या पौधों का छोटा गट्ठर, पूवाल।

पूवौ–देखो 'पुथौ'।

पूस–पु० [सं० पौष] विक्रमी संवत का दशवां मास।

पूसण–पु० [सं० पूषण] १ सूर्य। २ बारह आदित्यों में से एक। ३ पालन-पोषण करने वाला।

पूसणा–स्त्री० [सं० पूषणा] स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।

पूसदंतहर–पु० [सं० पूसदंतहर] शिव का अनुचर, वीरभद्र।

पूसली–देखो 'पुसी'।

पूसा–स्त्री० [सं० पूषा] १ दाहिने कान की एक नाड़ी का नाम। २ देखो 'पूसण'।

पूहड़णी (बी)–देखो 'पहड़णी' (बी)।

पूहण–देखो 'पूरण'।

पूहतणी (बी)–देखो 'पहुंचणी' (बी)।

पूहप–देखो 'पुस्प'।

पूहमीपोख–देखो 'प्रथवीपोख'।

पूहर–देखो 'प्रहर'।

पैंजार–देखो 'पैंजार'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पेड–१ देखो 'पैंड'। २ देखो 'पैंडौ'। ३ देखो 'पिंड'।

पेंडौ–१ देखो 'पैंडौ'। २ देखो 'परींडौ'।

पेंदी–देखो 'पींदौ'।

पेंवड–पु० एक घास विशेष।

पे–स्त्री० १ पीने की क्रिया। २ पेटी। ३ भोग। ४ पक्ष। ५ अंडा। ६ पानी, जल।

पेई–स्त्री० [सं० पेटिका] छोटी सन्दूक, पेटी।

पेकंबर–देखो 'पैगंबर'।

पेकार–पु० गाने का व्यवसायी।

पेखणी (बी)–देखो 'पेखणौ' (बौ)।

पेखक–देखो 'प्रेक्षक'।

पेखणी–देखो 'पेसणी'।

पेखणौ (बौ), पेखहणौ (बौ)–क्रि० [सं० प्रेक्षण] १ देखना, अवलोकन करना। २ गौर करना, ध्यान देना।

पेखाणौ (बौ), पेखावणौ (बौ)–क्रि० १ दिखाना, अवलोकन कराना। २ गौर कराना, ध्यान दिलाना।

पेगंबर–देखो 'पैगंबर'।

पेड़–पु० [सं० पिण्ड] वृक्ष, दरख्त।

पेड़काळौ–स्त्री० [सं० पट्टिकालय] सीढ़ियों की पंक्ति। जीना।

पेड़ी–स्त्री० १ पेड़ का तना। २ तीर्थ का घाट। ३ घाट पर बनी सीढ़ियां। ४ देखो 'पेडी'। ५ देखो 'पैड़ी'।

पेड़ौ–देखो 'पैंडौ'।

पेच–पु० [फा०] १ छल, कपट, धोखा। २ षड्यंत्र, दाव। ३ चतुराई, बुद्धिमानी। ४ उलझन, बखेड़ा, झंझट। ५ धूर्तता, चालाकी। ६ पगड़ी, साफे आदि का बंध, लपेट, फेरा। ७ लकड़ी या यंत्रादि में कसने का धारीदार कीला। ८ यंत्र चलाने या बंद करने का उपकरण। ९ युक्ति, तरकीब। १० पतंग लड़ाने का खेल, पतंगबाजी। ११ कुश्ती का दाव। १२ जोड़-तोड़, मरम्मत। १३ घुमाव, फिराव, चक्कर। १४ सिर का आभूषण विशेष। १५ व्यसन, आदत।

पेचक–स्त्री० [सं०] १ पूंछ का मूल। २ हाथी की पूंछ की जड़। ३ सेज, शय्या। ४ बादल। ५ जूं, चीलहर।

पेचकी–देखो 'पीचकी'।

पेचकस–पु० १ धारीदार कील को कसने का उपकरण। २ एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

पेचदार–वि० [फा०] जिसमें पेच हो, पेचवाला, ऐंठन वाला।

पेचबाज–पु० १ दावपेच, तरकीब, उपाय। २ चालाकी, धूर्तता।

पेचपट्टी–स्त्री० एक प्रकार का औजार या उपकरण।

पेचलंगूरोय–स्त्री० घोड़े की एक चाल विशेष।

पेचांळौ–पु० घुंघराले बालों वाला व्यक्ति।

पेचिस–स्त्री० १ अतिसार रोग। पेट की खराबी जिसमें बार-बार दस्त होती है। २ पेट के अन्दर की मरोड़, ऐंठन।

पेची–वि० १ चालाक या धूर्त। २ देखो 'पेछी'। –स्त्री० १ बर की लाल पगड़ी पर लपेटने का वस्त्र (बांमी)। २ पगड़ी बांधने का एक ढंग।

पेचीदा–वि० [फा०] १ पेचदार। २ उलझन भरा, झंझटों वाला। ३ गूढ़, रहस्यमय।

पेचूंटी–स्त्री० मनुष्य की नाभि के नीचे चलने वाली नस। धरण।

पेचू–देखो 'पेछू'।

पेचौ–पु० किनारी पर तार-गोटा लगी पगड़ी विशेष।

पेछी, पेछू–वि० व्यसनी, दुर्व्यसनी।

पेज–पु० [सं० पेय] १ पीने की वस्तु, द्रव पदार्थ। २ प्रतिष्ठा, इज्जत। ३ लाज, शर्म। ४ शील। ५ प्रतिज्ञा। ६ शर्त। ७ पृष्ठ, पन्ना।

पेजकी–देखो 'पीचकी'।

पेट, पेटड़सौ, पेटल–पु० १ प्राणियों के शरीर का मध्य भाग, उदर। २ शरीर में अन्न पचाने वाला संस्थान, अवयव। आमाशय। ३ परिवार, औलाद, संतान। ४ वंश, कुल। ५ बन्दूक या तोप में गोला भरने का स्थान। ६ किसी वस्तु के मध्य का पोपला भाग। ७ स्त्री का गर्भ। ८ मन अन्तः करण। —**घियाळी**–स्त्री० उदर पूर्णार्थ की जाने की मजदूरी। छोटी चोरी। —**घियाळियौ**–पु० उक्त कार्य करने वाला। —**पसार**–स्त्री० पेट तक ऊंची भूमि।

पेटारथी–वि० पेट भरना ही सब कुछ समझने वाला। पेटू।

पेटाळजौ, पेटाळिजौ–पु० १ पक्षियों का उदरस्थान। २ शिकारी पशुओं का पेट।

पेटि–१ देखो 'पेट'। २ देखो 'पेटी'।

पेटियौ–पु० १ एक समय के भोजन का आटा-दाल आदि सामान। २ बन्दूक या तोप में एक बार खर्च का बारूद। ३ भोजन, खाना।

पेटी, पेटीय–स्त्री० [सं० पेटिका] १ संदूकची, छोटी संदूक। २ कमर, कटि। ३ कमर बंद। ४ नाई के औजार रखने की किसबत। ५ पेट का कवच। ६ मशीन पर कते सूत का गट्ठर।

पेटू–वि० १ मोटे पेट वाला। २ अधिक खाने वाला।

पेटै–क्रि०वि० १ बदले में, एवज में। २ लिए, निमित्त।

पेटौ–पु० १ किसी पदार्थ का मध्य भाग। २ पशुओं की आंतें। ३ वृक्ष का तना। ४ बही के पृष्ठ का मध्य भाग, बही का एक भाग। ५ जुलाहे की ढरकी के मध्य का रिक्त स्थान। ६ तलवार के मध्य का चौड़ा भाग। ७ कपड़े की बुनावट

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में दाना का भाग। ८ उड़ती हुई पतंग की डोर में पड़ने वाली झोल। ९ देखो 'पेट'।

पेठावड़ी–स्त्री० सफेद कुम्हड़े को मसालों के साथ पीस कर बनाई गई बड़ी।

पेठौ–पु० १ एक प्रकार का फल, कुम्हड़ा। २ शक्कर से पागी हुई मावे की मिठाई विशेष।

पेडाइत–देखो 'पैंडायत'।

पेडी–स्त्री० १ द्वार की चौखट के नीचे की लकड़ी। २ दुकान या मकान (किराये के) के हस्तान्तरण में पहले वाले किरायेदार को दी जाने वाली धन राशि।

पेडू–पु० १ नाभि व मूत्रेन्द्रिय के बीच का स्थान, उपस्थ। २ गर्भाशय। ३ स्त्री की कामेच्छा।

पेढ़–देखो 'पेड़'।

पेढ़ी–देखो 'पेढी'।

पेतालौ–देखो 'पैंताळौ'।

पेथड़बाई–स्त्री० चारण वंशोत्पन्न एक देवी विशेष।

पेथल–देखो 'पंदल'।

पेदौ–देखो 'पेट'।

पेनसन–स्त्री० [अं०] सेवा निवृत्त कर्मचारी को मिलने वाला मासिक वेतन, उपादान।

पेनसनर, पेनसनियौ–पु० सेवा निवृत्त कर्मचारी।

पेनाकी–देखो 'पिनाकी'।

पेम–देखो 'प्रेम'।

पेमचीबोर–पु० कलम द्वारा मीठा किया बड़ा बेर।

पेमचौ–देखो 'पोमचौ'।

पेमजीबोर–देखो 'पेमचीबोर'।

पेमरी–पु० एक देव वृक्ष।

पेमरस–देखो 'प्रेमरस'।

पेमल–वि० प्रेम करने वाला, प्रेमी। मोह ममता वाला। –स्त्री० मीरां बाई का बचपन का नाम।

पेमली, पेमलीबोर–देखो 'पेमचीबोर'।

पेमांनौ–पु० [फा० पैमान] १ संदेश। २ देखो 'पैमांनौ'।

पेमौ–देखो 'प्रेम'।

पेय–वि० [सं०] पीने योग्य, द्रवीय गुण वाला। –पु० १ पीने की वस्तु। २ जल-पानी। ३ दूध। ४ शर्बत। ५ देखो 'प्रिय'। ६ देखो 'पिता'।

पेयामहि–देखो 'पितामह'।

पेयी–देखो 'पेटी'।

पेरण–देखो 'पैरण'।

पेरणौ (बौ)–क्रि० १ गन्ने को कोल्हू में डाल कर रस निकालना। २ देखो 'प्रेरणौ' (बौ)।

पेरवौ, पेरवौ–पु० [सं० पर्व] १ अंगुलियों के संधिस्थान, जोड़। २ इन जोड़ों के बीच का भाग। ३ अंगुली या अंगूठे के ऊपर का भाग।

पेरी–स्त्री० [सं० पर्व] गन्ना, बाजरी, ज्वार आदि के पौधे या बांस के बीच-बीच में आये जोड़। विभाग।

पेरोजौ–देखो 'फीरोजौ'।

पेरयाळ, पेरयाळौ–वि० (स्त्री० पेर्याळी) दूसरी ओर का, दूर का।

पेल–पु० पेलने का भाव, धक्का, ढकेल।

पेलणौ (बौ)–क्रि० [सं० पीड़नम्, पेलनम्] १ धक्का लगाना, ठेलना, धकाना, ढकेलना। २ हराना, पराजित करना। ३ पीछे हटाना। ४ जाना। भेजना। ५ नष्ट करना मिटाना। ६ पठाना, रवाना करना। ७ झोंकना, डालना। ८ चलाना। ९ दौड़ाना। १० चालू करना।

पेलव–वि० [सं०] १ दुर्बल, कृश, कमजोर। २ सुकुमार, कोमल। ३ सूक्ष्म, छोटा। ४ पतला, महीन, बारीक।

पेलवांन–देखो 'पहलवांन'।

पेलवांनी–देखो 'पहलवांनी'।

पेलाडि–स्त्री० पीड़ा, दर्द, कष्ट वेदना।

पेलावेलि–क्रि०वि० [सं० प्रेरा, प्रेरि] बार-बार, पुनः-पुनः निरंतर।

पेस–क्रि०वि० [फा० पेश] १ प्रस्तुत, उपस्थित। २ सामने, सम्मुख। –वि० १ पूर्ण, पूरा। २ हाजिर, मौजूद। –पु० १ स्वामी, मालिक। २ दण्ड, कर, लाग। ३ वरण। ४ भेंट, नजर।

पेसकबज (कबज्ज, कबज)–पु० [फा० पेशकब्ज] कटार विशेष।

पेसकस (कसि, कसी)–स्त्री० [फा० पेशकश] १ भेंट, नजर, उपहार। २ प्रस्ताव। ३ निवेदन, अर्ज। ४ मुगलकाल में हुक्मनामे के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

पेसकार–पु० [फा० पेशकार] १ पत्र व्यवहार आदि कार्यालयीय कार्य करने वाला कर्मचारी, लेखक, लिपिक। २ छोटा मजदूर।

पेसकारी–स्त्री० [फा० पेशकारी] 'पेशकार' का कार्य, पद या वेतन।

पेसखांनउ, पेसखांनौ, पेसखेमौ–पु० [फा० पेशखेमा] १ अगले पड़ाव पर अग्रिम लगाया जाने वाला खेमा। २ अग्रिम भेजा जाने वाला सेना का सामान।

पेसगार–देखो 'पेसकार'।

पेसगारी–देखो 'पेसकारी'।

पेसगी–स्त्री० [फा० पेशगी] किसी कार्य के लिये अग्रिम दिया जाने वाला धन। –वि० अग्रिम तौर पर किया जाने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पेसणी–स्त्री० [सं० पेषणी] चक्की। पिसाई करने का यंत्र।

पेसणो (बो)–क्रि० १ उभरी हुई या फूली हुई वस्तु पर जोर देकर पिचका देना। २ दबा कर चूरा कर देना, चूर्ण कर देना। ३ देखो 'फेसणो' (बो)।

पेसतर–क्रि०वि० [फा० पेश्तर] पूर्व में, पहले।

पेसता–देखो 'पस्तो'।

पेसताख–स्त्री० [सं० पेशताक] इमारत के आगे निकली एक प्रकार की मेहराब।

पेसबंद (बंदी, बध)–पु० [फा० पेशबंद, बंदी] १ घोड़े की गर्दन से बांधा जाने वाला चारजामे का भाग। २ पूर्व में सोची हुई युक्ति, तरकीब। ३ षड्यंत्र, छल।

पेसबाब–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

पेसराज–पु० पत्थर ढोने वाला मजदूर।

पेसरंग–पु० एक रंग विशेष का घोड़ा।

पेसळ, पेसल–वि० [सं० पेशल] १ सुन्दर, मनोहर। २ प्रवीण, कुशल।

पेसवा–पु० [फा० पेशवा] १ नेता, अगुवा। २ महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधानमंत्री की उपाधि।

पेसवाई–स्त्री० [फा० पेशवाई] १ अगवानी, स्वागत। २ पेशवा का कार्य।

पेसवाज–स्त्री० [फा० पिशवाज] वेश्याओं का एक लहंगा विशेष।

पेसांणी, पेसांनी–स्त्री० [फा० पेशानी] १ ललाट, भाल। २ भाग्य, प्रारब्ध। ३ किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग

पेसाब–पु० [फा० पेशाब] १ मूत्र, मूत। २ निकृष्ट वे हेय वस्तु। —**खांनो**–पु० मूत्रालय।

पेसार–देखो 'पैसार'।

पेसारियो–पु० चोरी के लिये सेंध में घुसने से पूर्व कपड़ा बांध कर डाली जाने वाली लकड़ी।

पेसावर–पु० [फा० पेशावर] १ व्यवसायी, पेशा करने वाला। २ पाकिस्तान का एक नगर। –स्त्री० [फा० पेशःवर] ३ व्यभिचार से धन कमाने वाली स्त्री।

पेसावरी–वि० १ व्यवसायी, पेशेवर। २ पेसावर नगर का।

पेसिकस–देखो 'पेसकस'।

पेसिका–पु० [सं० पेशिका] अण्डा।

पेसी–स्त्री० [फा० पेशी] १ मुकद्दमे की सुनवाई। २ सामने प्रस्तुत होने की क्रिया या भाव। ३ शरीरस्थ मांस की गुल्थी, गांठ।

पेसोर–देखो 'पेसावर'।

पेसो–पु० [फा० पेश] १ जीविकोपार्जन का उद्योग, व्यवसाय। २ वेश्यावृत्ति।

पेस्तर–क्रि० वि० [फा० पेश्वर] पहले, पूर्व।

पेहगार–देखो 'पेसकार'।

पेहगारी–देखो 'पेसकारी'।

पेहटा (ठा) मोड–पु० फावड़ा (मेवात)।

पेहळाद–देखो 'प्रहलाद'।

पेहली–१ देखो 'पैंली'। २ देखो 'पहली'।

पेहवो–वि० व्यर्थ।

पें–देखो 'पैं'।

पेंक–देखो 'पैंक'।

पेंकड़ी–देखो 'पैंखड़ी'।

पेंखड़णो, (बो)–क्रि० ऊंट या भैंस के अगले पैर में लोहे का कड़ा डाल कर बांधना।

पेंखड़ो–पु०ऊंट या भैंस के अगले पैर बांधने का लोहे का उपकरण।

पेंगळ–देखो 'पिंगळ'।

पेंड़णो, (बो)–देखो 'पहड़णो' (बो)।

पेंजणो, (बो)–स्त्री० [सं० पद+झन] स्त्रियों के पैरों का आभूषण। नूपुर।

पेंड–पु० [सं० पद दण्ड] १ कदम, डग। २ देखो 'पैं डो'।

पेंडाक–वि० डग भरने वाला, चलने वाला।

पेंडायत–पु० बटमार।

पेंडू–देखो 'पैंड'।

पेंडो–पु० १ मार्ग, रास्ता। पथ। २ यात्रा, विशेष कर पैदल यात्रा। ३ प्रथा, परंपरा, प्रणाली। ४ पद-यात्रा। ५ देखो 'परींडो'।

पेंणो–पु० [सं० पा, पवन] १ सोते हुए मनुष्य की छाती पर बैठकर श्वास पीकर प्राण लेने वाला विषैला सर्प विशेष। २ कपटी व्यक्ति।

पेंतरो–पु० [सं० पदांतर] १ कुश्ती बाजी। २ चालाकी की बात।

पेंताबो–देखो 'पैंताळो'।

पेंताळवो–देखो 'पैंताळीसो'।

पेंताळीस–वि० [सं० पंचचत्वारिंशत्] चालीस और पांच। –पु० चालीस और पांच की संख्या व अंक, ४५।

पेंताळीसमो (मी)–वि० पैंतालीस के स्थान वाला।

पेंताळीसे'क–वि० पैंतालीस के लगभग।

पेंताळीसो–पु० ४५ का वर्ष।

पेंताळो–पु० [सं० पाद-तल] १ जूती के अन्दर लगने वाला चमड़े आदि का अतिरिक्त तलवा। २ देखो 'पैंताळीसो'।

पेंतीस–वि० [सं० पंचत्रिंशत्] तीस और पांच। –पु० तीस और पांच की संख्या व अंक, ३५।

पेंतीसमो (मी)–वि० पैंतीस के स्थान वाला।

पेंतीसो–पु० १ पैंतीस का वर्ष। २ तीन हजार पांच सौ की संख्या, ३५००।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पैंतो–पु० भेद, रहस्य ।
पैंत्रीसो–देखो 'पैंतीसो' ।
पैंनाग–देखो 'पैनाग' ।
पैंसट–देखो 'पैंसठ' ।
पैंसटो–देखो 'पैंसठो' ।
पैंसठ–वि० [सं० पञ्चषष्ठि] साठ और पांच । –पु० साठ और पांच की संख्या व उसका अंक, ६५ ।
पैंसठमो (वीं)–वि० पैंसठ के स्थान वाला ।
पैंसठेंक–वि० पैंसठ के लगभग ।
पैंसठो–पु० ६५ का वर्ष ।
पै–वि० [सं० प्रभा] १ सुन्दर, मनोहर । २ चमकदार, आकर्षक । [सं० पद] ३ पैदल, प्यादा । –पु० [सं० पद] १ चरण, पैर । २ पद, ओहदा । ३ सगा, संबंधी । ४ पैसा, टका । ५ श्रद्धा । [सं० पयस] ६ दूध । ७ जल, पानी । [सं० पयज] ८ कमल, नीरज । –क्रि०वि० १ ऊपर, पर । २ में । ३ पास, निकट । ४ किन्तु, लेकिन । ५ अनन्तर, पीछे ।
पैकंबर–देखो 'पैगंबर' ।
पैक–वि० [फा० पैक] चतुर, होशियार, कुशल, प्रवीण ।
पैकनभाव–पु० हाथी की एक बीमारी ।
पैकळो–पु० १ बड़ी जूं । २ देखो पैंखड़ो ।
पैकांम–पु० [फा० पैकान] तीर की नोक ।
पैकार–स्त्री० [फा०] १ लड़ाई, युद्ध । [फा० पायकार] २ फुटकर सौदा बेचने वाला व्यापारी । ३ देखो 'पेसकार' ।
पैकेट–पु० [अं०] छोटा गट्ठर, पुलिंदा ।
पैगंबर–पु० [फा०] ईश्वर का संदेश वाहक, धर्म प्रवर्तक ।
पैगंबरी–पु० [फा०] १ पैगंबर होने की अवस्था या भाव । २ पैगंबर का पद ।
पैगांम–पु० संदेश, सूचना, खबर ।
पैड़काळो–पु० जीना, सीढ़ी ।
पैड़णो (वो)–देखो 'पहड़णो' (वो) ।
पैड़ी–स्त्री० १ जीना, सीढ़ी । २ सिंचाई के लिये जलाशय से पानी लाकर डाले जाने का स्थान, पौदर । ३ डिंगल का निसाणी छंद विशेष । ४ देखो 'पैंड' ।
पै'ड़ो–पु० [सं० परिधि] १ पहिया, चक्का, चक्र । २ जाटों का बड़ा मृत्यु भोज । ३ खोए की एक मिठाई विशेष । ४ मकान पर पट्टियां चढ़ाने के लिए बनाया गया रास्ता । ५ देखो 'पेड़ो' ।
पै'चांण–स्त्री० [सं० प्रत्याभिज्ञान] १ परिचय, पहचान । २ जानकारी ।
पै'चांणणो (वो)–देखो 'पहचांणणो' (वो) ।
पैज–स्त्री० [सं० प्रतिज्ञा] १ प्रण, प्रतिज्ञा । २ प्रतिस्पर्धा । प्रतिद्वंद्विता । ३ मर्यादा, सीमा । –बंध–वि० प्रतिज्ञा वीर, दृढ़प्रतिज्ञ । मर्यादा रखने वाला । प्रतिस्पर्द्धा करने वाला ।
पैजार–पु० [फा०] जूता, उपानह ।
पैटावणो (वो)–क्रि० [सं० प्रविष्ठयु] नये बैलों को कृषि कार्य के लिये अभ्यस्त करना, प्रशिक्षण देना ।
पैठ–स्त्री० [सं० प्रविष्ठ] १ प्रवेश, गति, पहुंच । २ मूल हुण्डी के खोजाने पर उसके स्थान पर लिखी जाने वाली हुण्डी । ३ भरोसा, विश्वास । ४ साख, प्रतिष्ठा, इज्जत । ५ चरित्र । ६ कार्य कुशलता, दक्षता । ७ जानकारी, ज्ञान ।
पैठणो (वो)–क्रि० [सं० प्रविष्ठम्] १ प्रविष्ठ होना, घुसना । २ गहरा जाना, उतरना ।
पैठवान, पैठवांनियो–पु० १ विश्वसनीय व्यक्ति । २ रेल की लाइन बदलने वाला कर्मचारी ।
पैठाणो (वो)–क्रि० १ प्रविष्ठ कराना, घुसाना । २ गहरा भेजना, उतारना ।
पैठार–पु० १ प्रवेश, पैंठ । २ प्रवेश द्वार, दरवाजा ।
पैठावणो (वो)–देखो 'पैठाणो' (वो) ।
पैठि–देखो 'पैठ' ।
पैंड–स्त्री० १ कूए के पास बना ढालु रास्ता जिस पर बैल चलते हैं । २ देखो 'पैंडी' ।
पैंडी–पु० १ 'गाहटा' या रहट में भीतर की ओर चलने वाला बैल । २ देखो 'पैंड़ी' ।
पैणगो–देखो 'पांणगो' ।
पैणी–देखो 'पै'णी' ।
पैत्रक, पैत्रिक–वि० [सं० पैतृक] पूर्वजों का, पूर्वजों से चला आ रहा, पुश्तैनी ।
पैदल–वि० [सं० पाद तल] १ पैरों से चलने वाला, प्यादा । २ बिना सवारी का । –क्रि०वि० पैरों से, पांव-पांव । –पु० १ पांवों से चलने की क्रिया या भाव । २ पैदल सिपाई । ३ शतरंज की एक गोटी, प्यादी ।
पैदा–वि० [सं०] १ उत्पन्न, प्रसूत, जन्मा हुआ । २ अर्जित कमाया हुआ । ३ प्रकट, उपस्थित ।
पैदाइस, पैदायस–स्त्री० [फा० पैदाइश] १ उत्पत्ति, जन्म । २ प्राप्ति । ३ आय, आमदनी । ४ उत्पादन । ५ निर्माण । ६ सृजन, रचना ।
पैदावार, पैदावारी–स्त्री० [फा० पैदावार] १ फसल, उपज । २ आमदनी, आय ।
पैदास–देखो 'पैदाइस' ।
पैनाक–१ देखो 'पिनाक' । २ देखो 'पैनाग' ।
पैनाग, पैनायक–पु० [सं० पन्नग] १ सर्प, सांप । २ हाथी, गज । ३ देखो 'पिनाक' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पैनो–वि० [सं० पैण] १ तेज धार वाला, तीक्ष्ण। २ देखो 'पनो'।

पैबंद–देखो 'पैवंद'।

पैबंदी–देखो 'पैवंदी'।

पैबदू–देखो 'पैवंद'।

पैमांनो–पु० [फा० पैमाना] १ माप दण्ड, नाप। २ नापने का उपकरण।

पैमाइस, पैमायस–स्त्री० [फा० पैमाइश] भूमि नापने की क्रिया, माप।

पैमाल–वि० [फा० पा-माल] १ रौंदा हुआ पदाक्रान्त। २ तबाह, नष्ट, दुर्दशाग्रस्त। ३ नष्ट-भ्रष्ट। ४ निरर्थक व्यर्थ। बेकार।

पैमाली–स्त्री० १ दुर्गति। २ बरबादी

पैमास–देखो 'पैमाइस'।

पैर–पु० [सं० पददण्ड] १ चरण, पांव। २ धूलि पर पड़ा पद चिह्न। ३ वैभव, ऐश्वर्य। ४ रक्त प्रदर। ५ प्रहर। ६ वक्त, जमाना। ७ खलिहान। ८ समय या युग का कोई विभाग। ९ बड़े कार्य का कोई भाग। **–गाडी**–स्त्री० पैरों से चलाने की छोटी गाड़ी।

पैरण–पु० [सं० परिधान] खत्री-वैश्यों की स्त्रियों का एक अधोवस्त्र विशेष।

पैंरणो (बो)–क्रि० १ स्वीकार करना, अपने ऊपर लेना। २ तैरना। ३ देखो 'पहरणो' (बो)।

पैरवाई–देखो 'पैरवी'।

पैरवास, पैरवेस–पु० [सं० परिवेश] पोशाक, वेशभूषा, पहनावा।

पैरवी–स्त्री० [फा०] १ अनुगमन, अनुसरण। २ पक्ष का मण्डन, न्यायालय में किसी पक्ष का प्रस्तुतीकरण। ३ आज्ञा पालन। ४ कार्यवाही। ५ कोशिश, प्रयास, प्रयत्न। **—कार**–वि० पैरवी करने वाला।

पैंरामणी (बी)–देखो 'पहरावणी'।

पैराक–वि० [सं० प्लावक] तैरने वाला, तैराक।

पैराकर–वि० पार करने वाला।

पैराकी–वि० १ प्रवीण, चतुर। २ देखो 'पैराक'।

पैराणो (बो)–क्रि० १ स्वीकार कराना। २ तैराना, तैरने के लिये प्रेरित करना। ३ देखो 'पहराणो' (बो)।

पैरावण–स्त्री० [सं० परिधानम्] १ पहनाने की क्रिया या भाव। २ पहनाने के वस्त्रादि। ३ गिरासी जाति में विवाह की एक रीति विशेष।

पैंरावणि–देखो 'पहरावणी'।

पैंरावणो(बो)–१देखो 'पहराणो'(बो)। २ देखो'पैंराणो'(बो)।

पैरोकार–देखो 'पैरवीकार'।

पैल–पु० १ मंद गति से चलने वाला बैल। २ आलसी, सुस्त शिथिल। ३ प्राथमिकता, विशेषता। ४ प्रथमावसर।

पैंल–देखो 'पहल'।

पैंलके–अव्य० १ पहले, पूर्व में। २ पूर्व या गत वर्ष में।

पैंलड़ो–देखो 'पैंलो'।

पैलणो (बो)–देखो 'पेलणो' (बो)।

पैंलपांत, पैंलपोत, पैंलपौत–अव्य० सर्वप्रथम, सबसे पहले।

पैलांतर–वि० पूर्व जन्म का।

पैंला–अव्य० १ आदि से, शुरू में, सर्वप्रथम। २ आगे, पूर्व। ३ विगत काल में, पूर्व में। ४ देखो 'पैंली'।

पैंळाद–देखो 'प्रहळाद'।

पैलियांण, पैलियांत–वि० १ प्रथम, पहली। २ पहली बार होने वाला। –स्त्री० प्रथम प्रसव करने वाली मादा पशु।

पैंलो, पैली–क्रि०वि० १ प्रथम, पहले। २ उस ओर, दूसरी ओर। –वि० १ प्रथम, पहली। २ उस ओर की, दूसरी ओर की। ३ देखो 'पैंलो'। ४ देखो 'पैंला'।

पैलीघर–स्त्री० दूसरा किनारा, दूसरा तट।

पैलीयांत–देखो 'पैलियांण'।

पैलूंण, पैलूंणी–देखो 'पैलियांण'।

पैंलें, पैलें–क्रि०वि० १ उस ओर। २ प्रथम, पहले।

पैलेदिन–क्रि० वि० वर्तमान दिन से तीन दिन पहले या बाद।

पैंलेपार–क्रि०वि० उस पार, दूसरे किनारे।

पैंलोड़ो–देखो 'पैंलो'। (स्त्री० पैंलोड़ी)

पैलोट, पैलोटणी, पैलोठणी–देखो 'पैलियांण'।

पैंलो, पैलौ–वि० (स्त्री० पैंली, पैली) १ प्रथम, पहला, प्रथम बार हुआ। २ किसी वर्गीकृत वस्तु के प्रारंभिक अंश से संबंधित। ३ प्रतियोगिता में सर्वप्रथम घोषित। ४ वर्तमान काल से पूर्व का। ५ दूसरा, अन्य। ६ शत्रु। ७ आगे आने वाला, भावी। **—जनम**–पु० पूर्व जन्म। अगला जन्म। **—भव**–पु० पूर्व जन्म।

पैवंद–पु० [फा० पैबंद] १ किसी वस्त्र के बड़े छेद पर सीने का वस्त्र-खण्ड। २ जोड़।

पैवंदी–वि० [फा० पैबंदी] १ जिसमें पैबंद लगा हो। २ पैबंद लगा कर तैयार किया। ३ वर्ण संकर।

पैस–स्त्री० १ गति, पहुँच, प्रवेश। २ देखो 'पेस'।

पैसण–स्त्री० [सं० प्रविष्ट] पहुंच, प्रवेश।

पैसणो (बो)–क्रि० [सं० प्रविश] प्रवेश करना, घुसना।

पैसर–देखो 'पैसार'।

पैसवाई–देखो 'पेसवाई'।

पैसाच, पैसाची–वि० [सं० पैशाची] पिशाच संबंधी, पिशाची। –स्त्री० [सं० पैशाची] एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पैसाड़णो (बो), पैसाणो (बो)–क्रि० प्रविष्ट कराना, घुसाना।

पैसार–पु० [सं० प्रवेशनम्] १ प्रवेश, पैठ। २ डेरा। ३ प्रवेश द्वार। ४ आयात।

पैसारो–पु० [सं० प्रवेशम्] १ पुष्करणा ब्राह्मणों की एक वैवाहिक रीति या रश्म। २ इस अवसर पर गाया जाने वाला गीत। ३ विवाहोपरान्त दूल्हे-दुल्हन के गृह-प्रवेश की रश्म विशेष। ४ देखो 'पैसार'।

पैसावणो (बो)–देखो 'पैसाणो' (बो)।

पैहरण–देखो 'पहरण'।

पैहरणी (बो)–देखो 'पैंरणी' (बो)।

पैहराणी (बो)–देखो 'पैंराणी' (बो)।

पैहरावणी–देखो 'पहरावणी'।

पैहरी–देखो 'पैड़ी'।

पैहस–देखो 'पहल'।

पैहसड़ी–देखो 'पैंली'।

पैहसां, पैहसा–देखो 'पैंला'।

पैहळाद–देखो 'प्रहलाद'।

पैहसी–देखो 'पैंली'।

पैहसो–देखो 'पैंलो'। (स्त्री० पैहली)

पोंच–१ देखो 'पहुंच'। २ देखो 'पौंच'।

पोंचणो (बो), पोंतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पोंहच–१ देखो 'पहुंच'। २ देखो 'पौंच'।

पोंहचणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पोंहचाणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पोंहतणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पो–पु०१ पिण्ड। २ सुत, पुत्र। ३ वध। ४ प्रभु। ५ देखो 'पौ'।

पो'–स्त्री० १ पृथ्वी। २ चौपड़ नामक खेल में एक दांव। ३ देखो 'पौ'।

पोअ–देखो 'पोत'।

पोअणो (बो)–देखो 'पोवणो' (बो)।

पोआणो (बो)–देखो 'पोवाणो' (बो)।

पोइण–देखो 'पोयण'।

पोइणि, पोइणी–देखो 'पोयणी'।

पोइस–अव्य० [फा० पोश] हटो, बचो आदि सांकेतिक ध्वनियां।

पोईण–देखो 'पोयण'।

पो'कर–१ देखो 'पुस्कर'। २ देखो 'पोखर'।

पोकरणा–देखो 'पुस्करणा'।

पोकरणी–देखो 'पुस्करणी'। (स्त्री० पोकरणी)

पोकरमूळ–देखो 'पुस्करमूळ'।

पोकरी–देखो 'पुस्करी'।

पोकारणो (बो)–देखो 'पुकारणो' (बो)।

पोकार–वि० १ पुकारने वाला। २ देखो 'पुकार'।

पोक्कारणो (बो)–देखो 'पुकारणो' (बो)।

पोख–पु० [सं० पोषण] १ शरण, आश्रय, सहारा। २ देखो 'पोसण'। ३ देखो 'पौक'।

पोखण–देखो 'पोसण'।

पोखणी–वि० [सं० पोषण] (स्त्री० पोखणी) १ पालन पोषण करने वाला। पोषक। २ संरक्षक। –पु० श्रीमाली ब्राह्मणों की एक वैवाहिक रश्म।

पोखणो (बो)–१ देखो 'पोसणो' (बो)। २ 'प्रांखणो' (बो)।

पोखता–स्त्री० [सं० पोषित्] मनोवांछित सुख देने वाली एक अप्सरा विशेष।

पोखर, पोखरो–पु० [सं० पुष्कर] १ छोटा तालाब, जलाशय। २ बरसाती पानी का गड्ढा। ३ देखो 'पुस्कर'।

पोखाळो–पु० १ नाश विनाश, खराबी, बरबादी। २ तत्त्व हीन व निरर्थक वस्तु।

पोगड–देखो 'पोगंड'।

पोगर–स्त्री० [सं० पुष्करी] हाथी की सूंड।

पोगसापुद्गळ–पु० आत्मा से लगकर अलग हुए पुद्गल। (जैन)

पोगेती–स्त्री० [सं० पर्य्यस्त] स्वस्तिकासन, पालथी।

पोग्गळ, पोग्गल–देखो 'पुद्गल'।

पोग्गळी, पोग्गली–वि० पुद्गल वाला।

पोड़–देखो 'पौड़'।

पोड़कणो (बो)–क्रि० बदलना, फिसलना।

पोड़ि–देखो 'पौड़'।

पोच–वि० [फा० पूच] १ नीच, दुष्ट। २ पोचा, ओछा, तुच्छ। –पु० १ कुमार्ग, कुसंग। २ कायरता, कमजोरी। ३ देखो 'पोचो'।

पो'च–देखो 'पहुंच'।

पो'चणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पो'चाणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पो'चापो–पु० १ अप्रतिष्ठा, अपकीर्ति। २ ओछापन, हल्कापन। ३ अपमान, अनादर। ४ कायरता।

पोचावणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

पोचो–वि० [फा० पूच] (स्त्री० पोची) १ घृणित, निकृष्ट, हेय। २ तुच्छ। ३ कमजोर, अशक्त, क्षीण। ४ शूद्र। ५ अनुसूचित वर्ग का।

पोछड़ी–स्त्री० [सं० पश्च] १ प्रौढ़ावस्था की अंतिम संतान। २ उक्त संतान वाली स्त्री।

पोछड़ीयो–पु० पानी निकालने के रस्से से जोड़ा जाने वाला छोटा रस्सा।

पो'छणो (बो)–देखो 'पहुंचणो' (बो)।

पो'छाणो (बो)–देखो 'पहुंचाणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोछोड़ी–पु० मकान का पृष्ठ भाग।

पोट–स्त्री० [सं०] १ ढेर, समूह। २ पकने की स्थिति। ३ पीठ पर माल लदे गधे, बैल आदि का समूह। ४ गठरी, बुगचा। ५ बिजली, वज्र। ६ सर्प के मुंह में होने वाली विष की थैली।

पोटलियो–पु० १ कंधे पर सामान लाद कर फेरी लगाने वाला व्यापारी। २ बकरी के बालों की बनी छोटी दरी। ३ देखो 'पोट'।

पोटली–स्त्री० १ छोटी गठरी। २ देखो 'पोट'।

पोटळी–पु० १ कोड़ा, चाबुक। २ देखो 'पोट'। ३ देखो 'पोटळियो'।

पोटाणो (बो), **पोटावणो (बो)**–क्रि० बहकाना, फुसलाना।

पोटि–देखो 'पोट'।

पोटियो–पु० [सं० पृष्टिवाहिकः] १ घास का छोटा ढेर। २ पीठ पर बोझा लादने के काम वाला बैल।

पोटी–स्त्री० १ पक्षियों की पेट की थैली जिसमें चुगा-पानी रहता है। २ ऊंट के पैर में होने वाली ग्रंथि।

पोटीजणो (बो)–क्रि० १ बहकाया जाना, फुसलाया जाना। २ पटाया जाना।

पोटो–पु० १ गोबर, गोमय। २ अनाज के पौधों की बालें निकलने से पूर्व की अवस्था। ३ देखो 'पोटी'।

पोट्टसजिण–पु० एक जैन तीर्थंकर।

पोठ–देखो 'पोट'।

पोठियो–देखो 'पोटियो'।

पोठो–१ देखो 'पोटियो'। २ देखो 'पोट'। ३ देखो 'पोटियो'।

पोठीयो–देखो 'पोटियो'।

पोठो–देखो 'पोटो'।

पोड़ी–देखो 'पौड़ी'।

पोढ़उं–देखो 'प्रौढ़'।

पोढ़णो–वि० (स्त्री० पोढ़णी) शयन करने वाला।

पोढ़णो (बो)–देखो 'पौढ़णो' (बो)।

पोढ़ाणो (बो)–देखो 'पौढ़ाणो' (बो)।

पोढ़िम, पोढ़िमपणउ–देखो 'पौढ़म'।

पोढ़ी–देखो 'पौढ़ी'।

पोढ़ोनाथ–पु० रामदेव तुंवर नामक सिद्ध का एक नामान्तर।

पोढ़ोनेर–देखो 'पौढ़ी'।

पोंणो (बो)–देखो 'पोवणो' (बो)।

पोत–पु० [सं०] १ जहाज, नाव। २ पशु, पक्षी आदि का बच्चा। ३ अधोवस्त्र, धोती। ४ बालक। ५ भेद, रहस्य। ६ वह गर्भस्थ पिण्ड जिस पर झिल्ली न चढ़ी हो। ७ ढांचा, बनावट, रचना। ८ आभा, कांति। ९ बरछी। १० वस्त्र, रेशमी वस्त्र। ११ वस्त्र की बुनावट। १२ वस्त्र की मोटाई। १३ दश वर्ष का हाथी। १४ वृक्ष का अंकुआ। १५ वह स्थल जहां घर हो। [सं० प्रोत] १६ स्त्री के कंठाभरण में पिरोये जाने वाले छोटे मोती। १७ माला। १८ गले में पहनने का काला डोरा, पवित्रा।

पोतइ–देखो 'पोतै'।

पोतक–पु० [सं०] १ नाव, नौका। २ जानवर का बच्चा। ३ छोटा वृक्ष। ४ वह भूखण्ड, जिस पर मकान बना हो।

पोतड़ियो–देखो 'पोतड़ो'।

पोतड़ो–पु० १ बच्चों के अधो भाग में बांधने का वस्त्र खण्ड, चिथड़ा। २ देखो 'पोतो'।

पोतणो–पु० वह कपड़ा जिसमें कोई चीज पोती जावे। –वि० पुताई करने वाला।

पोतणो (बो)–क्रि० [सं० प्लुत] १ पुताई करना। पोतना। २ लेपन करना, लीपना। ३ चुपड़ना।

पोतदार–पु०[फा०] १ कोषाध्यक्ष, खजांची। २ बड़ा अफीमची।

पोतरउ–देखो 'पोतो'।

पोतरो–देखो 'पोतो'।

पोतवाळ, पोतवाल, पोतवाळियो–पु० अण्डकोश।

पोता–देखो 'पोतै'।

पोताई–स्त्री० १ पौत्र के वंशज। २ देखो 'पुताई'।

पोताचेलो–पु० चेले का चेला, प्रशिष्य।

पोताबार–देखो 'पोतदार'।

पोतार–देखो 'पुंतार'।

पोतारणो (बो)–देखो 'पूंतारणो' (बो)।

पोतारो–पु० १ पुताई करने का ढंग, पुताई का कार्य। २ पुताई का उपकरण।

पोताळ, पोताळियो–देखो 'पोतवाळ'।

पोति–१ देखो 'पोत'। २ देखो 'पोती'। ३ देखो 'पोते'।

पोतियो–पु० साफा। पगड़ी।

पोतो–स्त्री० [सं० पौत्री] पुत्र की पुत्री, पौत्री।

पोते, पोतै–सर्व० स्वयं, खुद। –क्रि०वि० १ हिसाब में, खाते में। २ पास में, कब्जे में। ३ जमा बंदी में।

पोतैबार–देखो 'पोतदार'।

पोतो–पु० [सं० पौत्र] १ पुत्र का पुत्र, पौत्र। २ अफीम का बहुआ।

पोत्यो–देखो 'पोतियो'।

पोत्राण–देखो 'पौत्राण'।

पोत्रो–देखो 'पोतो'।

पोथकी–स्त्री० नेत्र की पलक का एक रोग।

पोथड़, पोथड़की, पोथड़ो–देखो 'पोथो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोथी, पोथो–स्त्री० [सं० पुस्तिका] १ पुस्तक, किताब, ग्रंथ। २ किसी ग्रंथ का कोई भाग, जिल्द। —**खानो**–पु० पुस्तकालय।

पोद–स्त्री० १ कुछ विशेष प्रकार के पौधों का नया कल्ला जिसे एक स्थान से उखाड़ कर अन्यत्र खोंसा व उगाया जाता है। २ उक्त प्रकार के पौधों का समूह। ३ इन पौधों को रोपने की क्रिया।

पोदीनो–पु० [फा० पोदीन] पत्तीदार छोटा पौधा जिसकी पत्तियां साग-सब्जी व औषधि में काम आती हैं।

पोदो (धो)–पु० १ वृक्ष का कल्ला, पौधा। २ छोटे पौधों वाली वनस्पती।

पोध–देखो 'पोद'।

पोन–देखो 'पवन'।

पोनखोनो–पु० आभूषणों पर खुदाई करने का औजार विशेष।

पोन्य–देखो 'पुण्य'।

पोपट–पु० १ योनि भग। २ तोता, शुक।

पोपळ, पोपस–वि० १ खोखला, पोला, पोपला। २ कमजोर अशक्त। ३ सारहीन, तत्त्व रहित।

पोपलीन–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

पोपलो–वि० (स्त्री० पोपली) १ अत्यन्त पिलपिला। २ पिचा हुआ, पिचका हुआ। ३ बिना दांत का। ४ खोखला, थोथा। ५ स्थूलकाय, थलथला।

पोपां, पोपांबाई–वि० मूर्खा, मूर्ख। –स्त्री० एक अयोग्य व मूर्खा रानी जो जालौर की शासक थी।

पो'बारा–पु० चौपड़ का एक दाव।

पोमचियो, पोमचो–पु० १ एक विशेष प्रकार का दुपट्टा। २ स्त्रियों के ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष।

पोमणो (णो), नोमाणो (णो), पोमावणो (णो)–क्रि० [सं०पहुपमानम्] १ आत्मश्लाघा या खुद की प्रशंसा करना। २ मन ही मन खुश होना, मोद भरना, इतराना। ३ गर्व करना।

पोमावती–स्त्री० १ एक मात्रिक छंद विशेष। २ एक प्राचीन नगर।

पोमो–स्त्री० १ मल द्वार, गुदा। २ योनि, भग। ३ देखो 'पृथवी'।

पो'मूळ–देखो 'पुस्करमूळ'।

पोयण–पु० [सं० पद्म] १ कमल। २ टगण के सातवें भेद का नाम। —**नाभ**–पु० ब्रह्मा। विष्णु।

पोयणि, पोयणी–स्त्री० [सं० पद्मिनी] कमलिनी। –**नाळ**–स्त्री० कमल की नाल।

पोयणो (णो)–देखो 'पोवणो' (णो)।

पोर, पो'र–१ देखो 'पो'र'। २ देखो 'प्रहर'। ३ देखो 'पेरवो'।

पोरख–देखो 'पोरस'।

पोरचो–पु० पत्थर की वह कुण्डी जिसमें रहट की माल से पानी गिरता है।

पोरवाळ–पु० जैन मतावलंबी एक जाति।

पोरस–देखो 'पोरस'।

पोरसि, पोरसी–स्त्री० [सं० पौरुषी] १ एक प्रहर तक धर्म ध्यान करने की क्रिया। (जैन) २ देखो 'पोरस'।

पोरसो–देखो 'पोरसो'।

पोरस्त–देखो 'पोरस'।

पो'रायत–देखो 'पो'रायत'।

पोरियो–पु० उदर-भरण का साधन, छोटी मजदूरी।

पोरिस–देखो 'पोरस'।

पोरिसो–देखो 'पोरसो'।

पोरी–स्त्री० १ मूल द्वार, गुदा। २ योनि।

पोरियाड, पोरियाड–देखो 'पोरवाळ'।

पो'रो–देखो 'पहरो'।

पोळ–स्त्री० १ साढ़े पांच गज का जमीन का एक माप विशेष। २ देखो 'पौळ'।

पोल–स्त्री० १ आसमान, आकाश। २. खाली जगह, खोखलापन। ३ शून्य स्थान, रिक्तता। ४ अव्यवस्था। ५ अनुशासन का अभाव। ६ देखो 'पौल'।

पोलक–पु० हाथी को नियंत्रित करने हेतु बांस पर बांध कर जलाया जाने वाला पयाल।

पोलरवाळो–पु० एक प्रकार का सिंचाई का कुआ।

पोळच, पोळछ–स्त्री० १ कृषि भूमि की उर्वरावस्था विशेष। २ इस अवस्था वाला खेत।

पोलड़ी–स्त्री० १ अंगूठी के मध्य का उभरा हुआ भाग। २ देखो 'पोल'। ३ देखो 'पोलरी'।

पोलरो–स्त्री० १ सिलाई करते समय दर्जियों द्वारा अंगुली में पहनने का छल्ला। २ स्त्रियों के पैरों का आभूषण विशेष।

पोल-रो-खत–पु० कर्जे की लिखावट का पत्र।

पोलसेटो–स्त्री० आसानी से दुही जाने वाली भवेशी।

पोलाद–देखो 'फोलाद'।

पोळि–१ देखो 'पोळी'। २ देखो 'पौळ'। —**पात**='पौळपात'।

पोळियो–देखो 'पौळियो'।

पोळियति–स्त्री० [सं० प्रतोली-वृत्ति] मुख्य द्वार पर नियुक्ति के संबध में मिलने वाला वेतन।

पोळी–पु० रोटी के ऊपर की पतली परत। २ दूध पर आने वाली पतली मलाई। ३ देखो 'पौळी'।

पोलो–वि० (स्त्री० पोली) खोखला, खाली। –पु० १ लकड़ी आदि पर लगाने का धातु का छल्ला, खोल। २ पैर का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आभूषण विशेष। ३ गोबर, गोमय। ४ घोड़ों पर बैठ कर खेला जाने वाला एक खेल।

पोवट, पोवटो, पोवठ, पोवठो–पु० [सं० पौष-प्रावृट] पौष मास की वर्षा।

पोवण (णि, णी, णू, णो)–स्त्री० १ रोटी बनाने की क्रिया। २ माला पिरोने का कार्य। ३ उक्त कार्य करने वाला।

पोवणी (बो)–क्रि० १ रोटी बनाना, रोटी बेलना। २ माला पिरोना, बनाना। ३ सुई आदि में डोरा डालना।

पोवा–देखो 'प्याऊ'।

पोवाणी (बो)–क्रि० १ रोटी आदि बनवाना, बेलवाना। २ माला पिरोवाना, बनवाना। ३ सुई में धागा डलवाना।

पोस–पु० [फा० पोश] १ मेज आदि पर बिछाने का वस्त्र। [सं० पोषणम्] २ पालन-पोषण। ३ सुरक्षा, संरक्षण। ४ कवचधारी योद्धा। ५ कृपा, दया। ६ देखो 'पूस'। ७ देखो 'पौरस'।

पोसउ–देखो 'पोसघ'।

पोसक–वि०[सं० पोषक] १ पालने वाला, पालक। २ सहायक। ३ बढ़ाने वाला, वर्द्धक।

पोसण–पु० [सं० पोषण] १ पालन। २ वर्द्धन, बढ़ोतरी।

पोसणी (बो)–क्रि० [सं० पोषणं] पालना, रक्षा करना।

पोसत–देखो 'पोस्त'।

पोसता–देखो 'पोखता'।

पोसती–देखो 'पोस्ती'।

पोसध–देखो 'पौसध'।

पोसप्प–देखो 'पुस्प'।

पोसवा–स्त्री० पंवार वंश की एक शाखा।

पोसवाळ–देखो 'पोसाळ'।

पोसह, पोसहउ–देखो 'पोसध'।

पोसाक, पोसाख–स्त्री० [फा० पोशाक] पहनने के वस्त्र, वस्त्रों का जोड़ा। पहनावा।

पोसाणी (बो)–क्रि० १ पूरा पड़ना, निर्वाह होना, गुजर होना। २ हानि न होना, देन-लेन में ठीक पड़ना। ३ पालन कराना, रक्षा कराना।

पोसारी–देखो 'पौसध'।

पोसाळ–स्त्री० [सं० पाठशाला] छोटा विद्यालय, चटसाल। महाजनी विद्यालय।

पोसाळियो–पु० उक्त प्रकार के विद्यालय का अध्यापक व छात्र।

पोसावणी (बो)–देखो 'पोसाणी' (बो)।

पोसीदगी–स्त्री० [फा० पोशीदगी] छिपाव, दुराव।

पोसीदा–क्रि०वि० छिपे तौर पर, गुप्त रूप से।

पोसीदो–वि० (स्त्री० पोसीदी) छुपा हुआ, गुप्त।

पोसो–१ देखो 'पौसध'। २ देखो 'पूस'।

पोस्त, पोस्ता–पु० [फा० पोस्त] अफीम का पौधा व डोडा।

पोस्ती–पु० [फा०] १ डोडा पीने वाला अफीमची। २ आलसी आदमी।

पोस्तीन–पु० [फा०] १ गरम और मुलायम रोएँ वाला समूर हिरण आदि। २ खाल का बना कोट विशेष।

पोह–१ देखो 'पह'। २ देखो 'पूस'।

पोहकर–देखो 'पुस्कर'। —नाभ='पुस्करनाभ'।

पोहकरमूळ–देखो 'पुस्करमूळ'।

पोहकरी–देखो 'पुस्करी'।

पोहच–देखो 'पहुंच'।

पोहचणी (बो)–देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पोहचाणी (बो), पोहचावणी (बो)–देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पोहढ़णी (बो)–देखो 'पोढ़णी' (बो)।

पोहतणी (बो)–क्रि० १ पूर्ण होना, पूरा होना। २ देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पोहप–१ देखो 'पुस्पक'। २ देखो 'पुस्प'।

पोहपमाळ, पोहपमाळा–देखो 'पुस्पमाळा'।

पोहपविमाण–देखो 'पुस्पकविमाण'।

पोहम, पोहमी–देखो 'प्रथवी'।

पोहमीईस–पु० [सं० पृथ्वीश] राजा, नृप।

पोहर–देखो 'प्रहर'।

पोहराइत, पोहराइत–देखो 'पो'रायत'।

पोहरू–१ देखो 'पौ'रायत'। २ देखो 'पहरी'।

पोहरे'क–देखो 'पौरे'क'।

पोहरी–१ देखो 'पहरी'। २ देखो 'प्रहर'।

पोहल–पु० गुरु नानक की वाणी सुनाने के बाद पिलाया जाने वाला शर्बत।

पोहव–१ देखो 'पह'। २ देखो 'प्रथवी'।

पोहवी–देखो 'प्रथवी'।

पोही–स्त्री० पौष मास की पूर्णिमा।

पोहोकर–देखो 'पुस्कर'। —नभ,नाभ='पुस्करनाभ'।

पोहोचाणी (बो)–देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पोहोत–देखो 'पहुंच'।

पोहोतणी (बो)–देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पोहोप–देखो 'पुस्प'।

पोहोपकछ-मधुवैत्य–पु० एक प्रकार का अश्व विशेष।

पोहोमी–देखो 'प्रथवी'।

पोहोर–देखो 'प्रहर'।

पोहोसी–वि० (स्त्री० पोहोली) चौड़ा, विस्तृत।

पोहोव–१ देखो 'पह'। २ देखो 'पौ'।

पोहोसी–देखो 'पौसध'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोही–देखो 'पौ'।

पोहोर–देखो 'प्रहर'।

पौंच–देखो 'पौंच'।

पौंचाल, पौंचाळी-देखो 'पौंचाळी' (स्त्री पौंचाली)

पौंची–स्त्री० हाथी को नियंत्रण में करने का काष्ठ का उपकरण विशेष।

पौंय–देखो 'पहुंच'।

पौंयणी (बो)–१ देखो 'पौंथणी' (बो)। २ देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पौंहचणी (बो)–देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पौंहचि–देखो 'पौंच'।

पौंहची–देखो 'पूंची'।

पौ'–स्त्री० [सं० प्रपा] १ राहगीरों, यात्रियों आदि को जल पिलाने का स्थान, प्याऊ। २ प्रातःकाल। ३ चौपड़ का एक दाव। ४ देखो 'परौ'।

पौइणी–देखो 'पोयणी'।

पौक–पु० पशुओं के बैठने का खुला स्थान।

पौ'कर–देखो 'पुस्कर'।

पौकार–देखो 'पुकार'।

पौगंड–पु० [सं० पौगंडम्] पांच से सोलह वर्ष तक की अवस्था।

पौड़–पु० घोड़े का सुम।

पौड़ी–स्त्री० घोड़े या ऊंट के अगले पैरों में बांधने का बंधन विशेष।

पौंच–स्त्री० [सं० प्रभूत] १ पहुंचने की क्रिया या भाव। २ यथा-स्थान पहुँचने की सूचना। ३ जाने या पहुंचने की सीमा। ४ क्षमता, बल, सामर्थ्य। ५ ज्ञान, अनुभव, सूझ-बूझ। ६ ज्ञान की सीमा। ७ काम करने की योग्यता। ८ देखो 'पूंची'।

पौंचणी (बो)–देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पौंचवांन–वि० १ सिद्धि प्राप्त, सिद्ध। २ शक्तिशाली, समर्थ, क्षमतावान। ३ पहुंचने वाला।

पौंचाणी (बो)–देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पौंचारो–पु० १ पानी आदि में भिगोकर आंगन आदि पोंछने का वस्त्र। २ उक्त वस्त्र से पोछने का कार्य। ३ उक्त कार्य की मजदूरी। ४ तोप या बंदूक की नाल को ठंडी करने का वस्त्र।

पौंचाळ, पौंचाळी–वि० १ पहुंच वाला, शक्तिशाली, समर्थ। २ सिद्ध, सिद्धि वाला।

पौंचावणी (बो)–देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पौछ–देखो 'पौंच'। —**वांन**=='पौंचवांन'।

पौछाड़णी (बो), पौछाणी (बो), पौछावणी (बो)–देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पौढ़णी (बो)–क्रि० [सं० प्रलोठनम्] १ सोना, सोजाना। २ आराम करने के लिये लेटना, विश्राम करना। ३ धराशायी होना। ४ घोड़े या घोड़ी का भूमि पर बैठना।

पौढ़म–पु० [सं० प्रौढ] १ शौर्य, पराक्रम, बहादुरी। २ प्रौढ़ता, प्रौढ़त्व। ३ देखो 'पौढ़िम'।

पौढ़ाऊ वि० शयन करने वाला।

पौढ़ाड़णी (बो), पौढ़ाणी (बो)–क्रि० १ सुलाना, सोने के लिये प्रेरित करना। २ लेटाना, आराम कराना। ३ धराशायी करना। ४ घोड़े या घोड़ी को भूमि पर बैठाना, गिराना।

पौढ़ापो–पु० [सं० प्रौढ़त्व] १ प्रौढ़ावस्था। २ वृद्धावस्था, वृद्धत्व। ३ देखो 'पौढ़म'।

पौढ़ी–स्त्री० १ मारवाड़ के पोकरण नगर का पुराना नाम। २ सोने की क्रिया या भाव।

पौढ़ीनणी–वि० [सं० प्रौढ़] प्रौढ़त्व वाला, प्रौढ़।

पौढ़ी–वि० [सं० प्रौढ़] (स्त्री० पौढ़ी) १ प्रौढ़। २ अनुभवी, बुद्धिमान। ३ विकसित, परिपक्व। ४ निपुण, चतुर।

पौतणी(बो)–१देखो 'पोतणी'(बो)। २ देखो 'पहुंचणी'(बो)।

पौताणी (बो), पौतावणी (बो)–१ देखो 'पोताणी' (बो)। २ देखो 'पहुंचाणी' (बो)।

पौतारणी (बो)–देखो 'पूंतारणी' (बो)।

पौत्र–देखो 'पोतो'।

पौत्राण–पु० १ दौहित्र की संतान, दौहित्र का वंश। २ पौत्र व उसका वंश।

पौथणी (बो)–क्रि० [सं० प्रस्थानम्] १ प्रस्थान करना। २ प्रयाण करना। ३ देखो 'पहुंचणी' (बो)।

पौथाळी-वि० हृष्ट-पुष्ट।

पौद, पौध, पौधो–देखो 'पोदो'।

पौन–देखो 'पवन'।

पौ'र– १ देखो 'पौर'। २ देखो 'प्रहर'।

पौर–अव्य० [सं० परुत] गत वर्ष में, पिछले वर्ष में। —पु०— गत वर्ष, पिछला वर्ष।

पौरख–देखो 'पौरस'।

पौरव–वि० [सं०] १ पुरु का, पुरु संबंधी। २ पुरु से आया हुआ। –पु० १ पुरु के वंशज। २ उत्तर भारत का एक प्रान्त। ३ उक्त प्रान्त का अधिशासी।

पौरवी–स्त्री० [सं०] १ संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। २ युधिष्ठिर की धर्मपत्नी का नाम। ३ वसुदेव की एक पत्नी का नाम।

पौरस–वि० [सं० पौरुषेय] मनुष्य का, मनुष्य संबंधी। –पु० [सं० पौरुषम्] १ मानवी कर्म, मनुष्य का कार्य। २ वीरता बहादुरी, शौर्य। ३ शक्ति, बल। ४ जोश, उत्साह।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ अहंकार, अभिमान । ६ उद्योग, परिश्रम । —वांन–वि० शक्तिशाली, बलवान ।

पौरसी–वि० १ पुरुषार्थी, समर्थ । २ शक्तिशाली, बलवान । ३ देखो 'पोरसो' ।

पौरसो–पु० [सं० पुरुष] पुतला ।

पौरांण–वि० [सं० पौराणिक] १ पुराण संबंधी, पुराण का । २ प्राचीन, पुराना । ३ देखो 'पुरांण' ।

पौरांणिक–वि० [सं० पौराणिक] १ पुराण पाठी । २ पुराण संबंधी । ३ पुराण वेत्ता । ४ पूर्व कालीन ।

पौराणौ (बौ)–क्रि० प्रतीक्षा करना ।

पौ'रायत, पौ'रायतो–पु० चौकीदार, पहरेदार, सुरक्षा कर्मचारी ।

पौरावणौ (बौ)–देखो 'पौराणौ' (बौ) ।

पौरिस–देखो 'पौरस' ।

पौरी–पु० १ मूलद्वार, गुदा । २ देखो 'पौळ' ।

पौरुख–देखो 'पौरस' ।

पौ'रेक, पौ'रेक–वि० एक प्रहर के लग-भग ।

पौ'रो–देखो 'पहरो' ।

पौळ–स्त्री० [सं० प्रतोली] १ बड़ा दरवाजा । २ तोरण द्वार । ३ राज भवन की ड्योढ़ी । ४ बन्दूक की नाल पर लगने वाला उपकरण विशेष । ५ सारंगी के ऊपर का एक भाग ।

पौल–देखो 'पोल' ।

पौळपात, पौळपात्र–पु० [सं० प्रतोली-पात्र] १ मुख्य द्वार या पौल पर नियुक्त कर्मचारी । २ द्वाररक्षक । ३ युद्ध के समय मुख्य द्वार खोल कर सर्वप्रथम युद्ध करने वाला चारण वीर, योद्धा ।

पौळबारहठ– देखो 'पौळपात' ।

पौळस्त, पौळस्ति, पौलस्त, पौलस्त्य–पु० [सं० पौलस्त्यः] १ पुलस्त्य का वंशज । २ कुबेर । ३ रावण ।

पौलस्त्यी–स्त्री० [सं०] रावण की बहन, शूर्पनखा ।

पौळहत्थो–पु० [सं० प्रतोली-हस्त] १ बड़ा भोज जिसमें सबके लिये खाने की छूट होती है । २ सती होने वाली स्त्री के हाथ का नगर के मुख्य द्वार पर बना चिह्न ।

पौळाणौ (बौ)–क्रि० प्रारंभ करना, शुरू करना ।

पौलाद–देखो 'फौलाद' ।

पौळावणौ (बौ)–देखो 'पौळाणौ' (बौ) ।

पौळि–देखो 'पोळ' ।

पौळिड़ो, पौळियो–पु० द्वारपाल, ड्योढ़ीदार ।

पौलिस–पु० १ चमक, निकल, कलई । २ चिकनाई, कलई आदि करने का रोगन या पदार्थ ।

पौळी–देखो 'पौळ' ।

पौळीड़ो–देखो 'पौळियो' ।

पौलोमी–स्त्री० [सं०] १ इन्द्राणी । २ भृगु ऋषि की पत्नी ।

पौल्यो–देखो 'पौळियो' ।

पौस–देखो 'पोस' ।

पौसध–पु० [सं०] धर्म वृद्धि के लिये किया जाने वाला व्रत ।

पौसधसाला (ळी)–स्त्री० [सं० पौषधशाला] उक्त व्रत करने का स्थान ।

पौसाक (ख)–देखो 'पोसाक' ।

पौसाळ–देखो 'पोसाळ' ।

पौसावणौ (बौ)–देखो 'पोसाणौ' (बौ) ।

पौस्टिक–वि० [सं० पौष्टिक] बल, वीर्य वर्द्धक, पौष्टिक ।

पौह–१ देखो 'पह' । २ देखो 'पूस' ।

पौहकर, पौहकरण–देखो 'पुस्कर' । —मूळ='पुस्करमूळ' ।

पौहचणौ (बौ)–देखो 'पहुंचणौ' (बौ) ।

पौहचाणौ (बौ)–देखो 'पहुंचाणौ' (बौ) ।

पौहचाळ–देखो 'पौचाळौ' ।

पौहचावणौ (बौ)–देखो 'पहुंचाणौ' (बौ) ।

पौहतणौ (बौ)–१ देखो पहुंचणौ'(बौ) । २ देखो 'पौथणौ'(बौ)

पौहताणौ (बौ), पौहतावणौ (बौ)–देखो 'पहुंचाणौ' (बौ) ।

पौहप–देखो 'पुस्प' । —धनु = 'पुस्पधनु' ।

पौहमि, पौहमी–देखो 'प्रथवी' ।

पौहमीवंदण–पु० [सं० पृथवी-वंदन] बांस ।

पौहर–पु० [सं० प्रहर] १ जल, पानी । २ समय । ३ प्रहर ।

पौहरायत (ती)–देखो 'पौ'रायत' ।

पौहरेकरण–पु० [सं० कर्ण-प्रहर] प्रातःकाल, राजा कर्ण का वक्त ।

पौहरो–देखो 'पहरो' ।

पौहव–देखो 'पह' ।

पौहुमी–देखो 'प्रथवी' ।

पौहो–देखो 'पह' ।

प्यंड–देखो 'पिंड' ।

प्यलोणौ (बौ)–क्रि० समेटना ।

प्याज–पु० [फा० प्याज] भारत में सर्वत्र पाया जाने वाला एक कंद जो सब्जी आदि में काम आता है ।

प्याड–पु० एक प्रकार का कण्ठाभरण ।

प्याद, प्यादल, प्यादो–देखो 'पैदल' ।

प्यारंभ–देखो 'प्रारंभ' ।

प्यार–पु० [सं० प्रीति] १ प्रेम, स्नेह । २ ममता, वात्सल्य । ३ स्त्री-पुरुष का प्रेम संबंध । ४ प्रेम-परक क्रियायें, चुम्बन आदि । ५ किसी को अत्यधिक चाहने या आसक्त होने की अवस्था या भाव ।

प्यारी–वि० अच्छी लगने वाली, प्रिय । –स्त्री० १ प्रिया, प्रेमिका । २ पत्नी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्यारो–वि० [सं० प्रिय] अत्यधिक अच्छा लगने वाला, मन भाने वाला। प्रिय, प्यारा।–पु० १ प्रिय प्राणी, प्रेमी। २ पति।

प्यालो, प्यालो–पु० [फा० पियाल] १ मिट्टी या किसी धातु की कटोरी विशेष। २ तोप या बन्दूक का कान।

प्यावड़ो–स्त्री० शरीर पर रंगने की पीली मिट्टी।

प्यास (सा)–स्त्री० [सं० पिपासा] १ जल पीने की इच्छा, तृषा। २ भोग की प्रबल इच्छा। ३ तृष्णा। ४ द्रव पदार्थ पीने की इच्छा।

प्यासो–वि० [सं० पिपासु] (स्त्री० प्यासी) १ जल पीने का इच्छुक, तृषित, पिपासु, प्यासा। २ भोग की प्रबल इच्छा वाला। ३ किसी प्रकार की तीव्र इच्छा या कामना वाला।

प्यूतारणो (बो)–देखो 'पूंतारणो' (बो)।

प्रइज–देखो 'प्रजा'।

प्रईक (ख)–पु० [सं० प्रेष्य] नौकर, चाकर।

प्रउढ़–देखो 'प्रौढ़'।

प्रउढ़ा, प्रऊढ़ा–देखो 'प्रौढ़ा'।

प्रकप–पु० [सं०] कंपन, थर्राहट, कंपकंपी।

प्रकंपण–पु० [सं० प्रकंपन] १ वायु, हवा। २ थरथराहट।

प्रकंपमान–वि० कांपने वाला, थर्राने वाला।

प्रकंवण–देखो 'प्रकंपण'।

प्रक–पु० [सं० प्र-क] मयूर, मोर।

प्रकट–वि० [सं०] १ जो खुला हो, प्रकाशित, बेपर्दा, गुप्त न हो। २ प्रत्यक्ष, सामने, स्पष्ट। ३ प्रसिद्ध, मशहूर। ४ दातार। ५ बहुचचित। ६ जो रहस्यमय न हो। ७ उत्पन्न। ८ दिखने योग्य।–अव्य० १ साफ तौर से। २ प्रत्यक्ष।

प्रकटणो (बो)–क्रि० [सं० प्रकटनम्] १ प्रकट होना, जाहिर होना। २ प्रकाशित होना, चौड़े होना। ३ जानकारी में आना, सामने आना। ४ उदित होना।

प्रकटसरीर–पु० [सं० प्रकटः] प्रकट शरीर।

प्रकटाणो (बो), प्रकटावणो (बो)–क्रि० १ जाहिर करना, प्रकट करना। २ प्रकाशित करना, चौड़े करना। ३ जानकारी में लाना, सामने लाना। ४ पैदा करना। ५ भेद खुलवाना।

प्रकत, प्रकति, प्रकत्त, प्रकत्ति, प्रकत्ती–देखो 'प्रकृति'।

प्रकपन–देखो 'प्रकंपण'।

प्रकर–पु० [सं० प्रकरः] १ समूह, ढेर। २ भीड़। ३ संग्रह। ४ सहायता।

प्रकरण–पु० [सं०] १ प्रसंग, विषय। २ किसी पुस्तक या ग्रंथ का अध्याय। ३ आरंभिक विषय। ४ वक्तव्य। ५ किसी विषय की व्याख्या। ६ चर्चा का विषय।

प्रकरस, प्रकरसक–पु० [सं० प्रकर्ष] १ उत्कर्ष। २ आधिक्य, अधिकता। ३ उत्तमता। ४ प्रसिद्धि। ५ दीर्घता, लम्बाई। ६ बल, ताकत।

प्रकवाहण (न)–पु०[सं० प्रकवाहन] स्वामिकार्त्तिकेय, षडानन।

प्रकांड–वि० [सं०] १ बहुत बड़ा, विशाल। २ महान्, उत्तम, श्रेष्ठ। ३ विस्तृत, चौड़ा। ४ अत्यधिक।

प्रकांम–स्त्री० [सं० प्राकाम्य] अष्ट सिद्धियों में से एक।

प्रकार–पु० [सं० प्रकारः] १ ढंग, तौर, तरीका। २ रीति, प्रणाली। ३ तरह, भांति। ४ जाति, किश्म। ५ भेद। ६ देखो 'प्राकार'।

प्रकारो–देखो 'प्रकार'।

प्रकास, प्रकासो–पु० [सं० प्रकारः] १ प्रताप, प्रभाव, असर। २ देखो 'प्रकार'।

प्रकास–पु० [सं० प्रकाश] १ अंधकार की विपरीत अवस्था, रोशनी चांदनी। उजाला। २ अंधेरे का नाश करने वाला तत्त्व या शक्ति। ३ ज्योतिर्मान पदार्थों की तरंग शक्ति। ४ सूर्य, चांद, दीपक आदि की ज्योति जिसकी सहायता से दृश्यमान वस्तुओं को देखा जा सके। ५ आंखों की देखने की शक्ति। ६ ज्ञान। ७ ख्याति प्रसिद्धि। ८ स्थिति अवस्था। ९ सूर्य का आतप, धूप। १० चमक, कांति। ११ सूर्य, भानु। १२ तेज, दीप्ति, औज। १३ आकाश। १४ घोड़े की पीठ की चमक। १५ खुला मैदान। १६ किसी ग्रंथ या पुस्तक का अध्याय।

प्रकासक–पु० [सं० प्रकाशक] १ किसी पुस्तक, पत्र-पत्रिका आदि का प्रकाशन करने वाला व्यक्ति, व्यापारी या संस्था। २ सूर्य। ३ विख्यात या प्रसिद्धकर्त्ता।–वि० १ प्रकाश में लाने वाला, चौड़े में लाने वाला। २ प्रकाशित करने वाला। ३ व्यक्त करने वाला, व्याख्या करने वाला। ४ प्रसिद्ध या विख्यात करने वाला। ५ प्रगट करने वाला, दिखाने व बताने वाला। ६ चलाने वाला, प्रचलित करने वाला। ७ चमकीला, उज्ज्वल।

प्रकासण (न)–पु० [सं० प्रकाशन] १ प्रकाशित करने का कार्य। २ मुद्रित कर उपलब्ध कराने का कार्य। ३ मुद्रित की जाने वाली पुस्तक आदि। ४ विष्णु का एक नामान्तर। ५ सूर्य। ६ वर्णन, व्याख्या।–वि० प्रकट व प्रसिद्ध करने वाला।

प्रकासणो (बो)–क्रि० [सं० प्रकाशनम्] १ दिखाना, दर्शन कराना। बताना। २ कहना, कथना। ३ वर्णन करना, बखान करना। ४ प्रगट व जाहिर करना। ५ चलाना, प्रचलित करना। ६ छपवा कर प्रकाशित करना। ७ चौड़े में लाना, सामने लाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकासत–देखो 'प्रकासित'।

प्रकासतभूप–पु० [सं० प्रकाश-भूप] सूर्य, भानु।

प्रकासदांन–पु० मकान या किसी कक्ष का रोशनदान, वातायत।

प्रकासन–देखो 'प्रकासण'।

प्रकासमांन, प्रकासवांन–वि० [सं० प्रकाशमान] चमकने वाला, चमकीला। उदयीमान।

प्रकासित–वि० [सं० प्रकाशित] १ जिससे प्रकाश निकल रहा हो, चमकता हुआ, रोशन। २ जिसका प्रकाशन हो रहा हो, हो गया हो, प्रगट, प्रकाशित। ३ प्रगट, सामने, चौड़े में आया हुआ। ४ दृश्यमान। ५ प्रत्यक्ष।

प्रकासी–वि० [सं० प्रकाशिन्] १ चमकता हुआ। चमकीला, प्रकाशमान। २ साफ, उज्ज्वल। ३ प्रकाश करने वाला।

प्रकीरण–पु० [सं० प्रकीर्ण] १ फुटकर कविताओं का संग्रह। २ किसी पुस्तक का अध्याय। ३ विभिन्न वस्तुओं का संग्रह।

प्रकीरणक–पु० [सं० प्रकीर्णक] १ ग्रंथ का अध्याय, प्रकरण। २ चंवर। ३ घोड़ा। –वि० १ फुटकर। २ बिखरा हुआ।

प्रकीरतन–पु० [सं० प्रकीर्तनम्] १ घोषणा। २ ऊंची आवाज में कीर्तन।

प्रकुपित–वि० [सं०] क्रुद्ध, कुपित रूप में, उग्र।

प्रकुस्मांडी–स्त्री० [सं० प्रकुष्माण्डी] दुर्गा।

प्रकोप–पु० [सं०] १ अधिक क्रोध। २ प्रबल व उग्र प्रभाव। ३ रोग का अधिक विस्तार, व्यापकता। ४ शरीरस्थ वात, पित्त, कफ आदि में से किसी की विकृति। ५ क्षोभ, दुःख। ६ किसी की नाराजगी के कारण होने वाला प्रभाव।

प्रकोस्ठ–पु० [सं० प्रकोष्ठ] १ कोहनी के नीचे का भाग। २ चारों ओर इमारत से घिरा खुला आंगन। ३ बाहरी बैठक का कमरा, कक्ष। ४ कोई विभाग या कक्ष, कोष्ठक।

प्रकास–देखो 'प्रकास'।

प्रकासणी (बी)–देखो 'प्रकासणी' (बी)।

प्रकत–वि० [सं० प्रकृत] १ असली, यथार्थ। २ स्वाभाविक। ३ देखो 'प्रकृति'।

प्रकति, प्रकती (त्ति, त्ती)–स्त्री० [सं० प्रकृति] १ वह अनादि शक्ति जो समस्त विश्व के सृजन, विनाश आदि समस्त क्रियाओं का उद्गम स्रोत है। २ प्राणी या वस्तु का जन्मजात गुण, स्वभाव, प्रवृत्ति। ३ वह स्थान जहां वनस्पतियां, पशु, पक्षी आदि अपने मूल रूप में दिखाई देते हों। ४ मनुष्य का जन्मजात गुण जिससे वह शुभाशुभ आचरण करता हो। ५ आवास, निर्वाह की वह व्यवस्था जिसके अन्तर्गत मनुष्य मूलभूत पदार्थों का मौलिक स्थिति में उपभोग करता है। ६ आबोहवा, वातावरण, जलवायु। ७ वैद्यक के अनुसार शरीर रचना व प्रवृत्ति के सात विभाग। ८ व्याकरण में वह मूल धातु रूप जिसके उपसर्ग एवं प्रत्यय लगने से अनेक रूप बनते हैं। ९ भारत की प्राचीन राजनीति में राजा, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, बल, प्रजा एवं शिल्पी इन नौ तत्त्वों का समूह। १० दार्शनिक क्षेत्र में पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार इन आठों का समूह। ११ आकाश, वायु, पृथ्वी, जल व तेज पांच तत्त्व व इनके प्रत्येक के पांच-पांच तत्त्व। १२ आकृति। १३ प्रजा। १४ संतान। १५ स्त्री, नारी। १६ माता। १७ योनि, लिंग। १८ स्वभाव, तासीर। १९ नमूना, आदर्श। २०.२५ की संख्या※। २१.८ की संख्या※।

प्रकम–पु०[सं०]१ आरंभ, शुरूआत। २ ढंग, तौर। ३ कार्यवाही, पद्धति। ४ पैर, कदम। —**भंग**–पु० एक साहित्यिक दोष।

प्रकस्ट–वि० [सं० प्रकृष्ट] १ उत्कृष्टतर, श्रेष्ठ। २ प्रधान, मुख्य।

प्रकस्टता–स्त्री० उत्तमता, श्रेष्ठता।

प्रकति–देखो 'प्रकृति'।

प्रक्रिया–स्त्री० [सं०] १ ढंग, तौर, तरीका। २ परम्परा, प्रणाली। ३ विधि, रीति। ४ ग्रंथ का अध्याय, परिच्छेद। ५ अधिकार, हक। ६ व्याकरण में वाक्य रचना की विधि।

प्रक्षिप्त–वि० [सं०] १ बाद में जोड़ा या ऊपर से मिलाया हुआ। २ घुसेड़ा या डाला हुआ। ३ आगे की ओर बढ़ा या निकला हुआ। ४ फेंका हुआ।

प्रक्षेप–पु० [सं०] १ मिलावट, जोड़। २ घुसाव, प्रवेश। ३ बढ़ाव। ४ फैलाव, छितराव। ५ बिखराव। ६ छोटा बक्सा, भण्डारिया।

प्रखंड–देखो 'परखंड'।

प्रखत–पु० [सं० पृषतः] १ चित्तीदार हिरण। २ हिरण। ३ मोर, मयूर। ४ मोती। ५ धन, द्रव्य।

प्रखतक–पु० [सं० पृषत्क] तीर, बाण।

प्रखतवाह–पु० [सं० पृषत्वाह] स्वामिकार्त्तिकेय।

प्रखर–वि० [सं०] १ तीव्र, तेज, तीक्ष्ण। २ बड़ा। ३ अत्यन्त उष्ण।

प्रखालित, प्रखोलित–वि० [सं० प्रक्षालित] १ धोया हुआ। २ स्पष्ट, साफ। ३ छिड़का हुआ। ४ पवित्र किया हुआ।

प्रख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।

प्रख्याति–स्त्री० [सं०] १ कीर्ति, सुयश। २ प्रसिद्धि।

प्रगट–पु० [सं० प्रकट] १ एक छन्द विशेष। २ देखो 'प्रकट'।

प्रगटणी (बी)–देखो 'प्रकटणी' (बी)।

प्रगटदसा–स्त्री० [सं० प्रकट+दशा] १ प्रकाश, रोशनी, ज्योति। २ दीपक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रगटाणी (बो), प्रगटावणी (बो)–देखो 'प्रकटाणी' (बो)।
प्रगट्ट–देखो 'प्रकट'।
प्रगट्टणी (बो)–देखो 'प्रकटणी' (बो)।
प्रगड–पु० [सं० प्रगाढ़] गरुड़।
प्रगडउ–देखो 'पगड़ो'।
प्रगति (ति, ती)–स्त्री० [सं० प्रगति] १ उन्नति, तरक्की, विकास, बढ़ाव। २ देखो 'प्रकृति'।
प्रगळ–देखो 'परगळ'।
प्रगळणी (बो)–देखो 'पिघळणी' (बो)।
प्रगळभ–देखो 'प्रगल्भ'।
प्रगळांण–देखो 'परगळांण'।
प्रगल्भ–वि० [सं०] १ निर्भय, निडर। २ साहसी, उत्साही हिम्मती। ३ वीर, बहादुर। ४ प्रत्युत्पन्न मति, हाजिर जवाब। ५ बुद्धिमान, निपुण, चतुर। ६ अभिमानी, गर्विला।
प्रगल्भता–स्त्री० [सं०] १ निर्भयता, निडरता। २ साहस उत्साह। ३ वीरता, बहादुरी। ४ बुद्धिमानी, चतुराई निपुणता। ५ ढीटता, दुष्टता।
प्रगाढ़–वि० [सं०] १ दृढ़, मजबूत। २ अत्यधिक, बहुत। ३ गहरा, गहन। ४ शक्तिशाली, समर्थ। ५ वीर, बहादुर।
प्रगाळ–पु० [सं० प्रगे-काल] प्रातःकाल, सवेरा। –अव्य० सवेरे।
प्रगाळियो–वि० प्रातः काल का, उषाकाल संबंधी। –पु० प्रातः कालीन तारा।
प्रगास–देखो 'प्रकास'।
प्रगासणी (बो)–देखो 'प्रकासणी' (बो)।
प्रगिना–देखो 'प्रग्या'।
प्रगड्डणी (बो)–देखो 'प्रकटणी' (बो)।
प्रग्घळ, प्रग्घळी–देखो 'परगळ'।
प्रग्य–वि० [सं० प्रज्ञ] १ बुद्धिमान, चतुर। २ प्रतिभावान। ३ विद्वान, पंडित। —**चक्षु, चख**–पु० ज्ञान के नेत्र। नेत्र हीन, अंधा। मन। धृतराष्ट्र का नामान्तर।
ग्रह–पु० [सं०] १ सूर्य या चंद्र ग्रहण का आरंभ। २ लगाम बलगा। ३ रोक थाम। ४ बंधन, कैद। ५ बंदी, कैदी।
प्रघट–देखो 'प्रकट'।
प्रघटणी (बो)–देखो 'प्रकटणी' (बो)।
प्रघट्ट–देखो 'प्रकट'।
प्रघट्टणी (बो)–देखो 'प्रकटणी' (बो)।
प्रघण, प्रघळ– १ देखो 'परगळ'। २ देखो 'प्रघळी'।
प्रघळी–वि० [सं० पुष्कल] (स्त्री० प्रघळी) १ महान्, जबरदस्त। २ देखो 'परगळ'।
प्रघस–पु० [सं०] १ राक्षस। २ भुक्कड़पन, पेटूपन। ३ अग्निदीपना।
प्रघात–पु० [सं०] १ युद्ध, लड़ाई। २ वध, हत्या।
प्रघेळ–देखो 'परगळ'।
प्रचंड–वि० [सं०] १ अत्यन्त तेज तीव्र, उग्र। २ तेज, तीक्ष्ण। ३ मजबूत, दृढ़। ४ बलवान शक्तिशाली। ५ साहसी, वीर। ६ महान्, बड़ा। ७ अधिक, अत्यधिक। ८ भयंकर, भयावह। ९ महाकाय, बड़ा। १० कठिन, कठोर। ११ प्रतापी। १२ दुःसाध्य, कठिन। १३ गुस्सैल, क्रोधी।
प्रचंडक–देखो 'प्रचंड'।
प्रचंडता–स्त्री० उग्रता, भयानकता, महानता।
प्रचंडा–स्त्री० [सं०] दुर्गा, रणचण्डी।
प्रचंडी–देखो 'प्रचंड'।
प्रचक्र–पु० [सं०] शत्रु दल, शत्रु सेना।
प्रचर–पु० [सं०] मार्ग, रास्ता।
प्रचलण (न)–पु० [सं०] १ परंपरा, प्रथा। २ रीति, रिवाज, नियम, सिद्धान्त। ३ किसी नियम या रीति का व्यवहार चालू रहना। ४ चलन, प्रचार, फैशन। ५ अनुकरण से चलने वाले कार्य। रूढ़ि
प्रचलित–वि० [सं०] १ जिसका चलन, प्रचलन हो। २ अधिक व्यवहार में आने वाला। ३ जो चलन में आ गया हो। ४ प्रचारित।
प्रचार–पु० [सं०] १ किसी बात या वस्तु को अधिक लोगों की जानकारी में लाने की क्रिया, विज्ञापन। २ प्रचलन। ३ रिवाज, चलन। ४ परंपरा, रस्म। ५ मार्ग। ६ चाल-चलन, आचरण।
प्रचारक–वि० [सं०] प्रचार, विज्ञापन करने वाला।
प्रचारणी (बो)–क्रि० [सं० प्रचारणम्] १ प्रचार करना, विज्ञापन करना। २ फैलाना। ३ अधिक लोगों की जानकारी में लाना। ४ कहना, कथना। ५ प्रचलन में लाना। चलाना। ६ भेजना।
प्रचारित–वि० [सं०] जिसका प्रचार कर दिया गया हो, विज्ञापित। प्रचलित, जारी। फैलाया हुआ।
प्रचुर–वि० [सं०] १ बहुत, अधिक। २ विपुल, पर्याप्त। ३ बड़ा, दीर्घ, विस्तृत।
प्रचुरता–स्त्री० [सं०] १ बहुतायत, अधिकता। २ विपुलता। ३ दीर्घता, विस्तार।
प्रचेता–पु० [सं० प्रचेतस्] १ वरुण। २ एक ऋषि का नाम। ३ बारहवां प्रजापति।
प्रचेलक–पु० [सं०] अश्व, घोड़ा।
प्रचोळ–वि० अत्यधिक लाल, रक्तवर्ण का।
प्रच्चो–देखो 'परचो'।
प्रच्छक–वि० [सं०] प्रश्नकर्ता, पूछने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रच्छन्न–वि० [सं०] छुपा हुआ, गुप्त।

प्रच्छा–स्त्री० [सं० प्रच्छ] प्रश्न, इच्छा।

प्रच्छादन–पु० [सं० प्रच्छादनम्] १ ढकना, छिपाना। २ कपड़ों के ऊपर धारण करने का वस्त्र।

प्रछन, प्रछन्न–देखो 'प्रच्छन्न'।

प्रजक–देखो 'परयंक'।

प्रजघ–पु० [सं०] रावण की सेना का एक योद्धा।

प्रजत–देखो 'परयंत'।

प्रज–पु० १ पति, स्वामी। २ संतान, औलाद। ३ देखो 'प्रजा'।

प्रजपाळ–पु० [सं० प्रजापालक] राजा, नृप।

प्रजपाळण–पु० प्रजा पालन, प्रजा की रक्षा।

प्रजरणी (बो)–देखो 'प्रजळणी' (बो)।

प्रजळणी (बो)–क्रि० [सं० प्रज्वलनम्] १ जलना, भस्म होना। २ कोप करना, क्रुद्ध होना। ३ फोड़े में जलन होना।

प्रजळत–स्त्री० [सं० प्रज्वलनः] १ अग्नि, आग। २ देखो 'प्रज्वलित'।

प्रजळप, प्रजल्प, प्रजल्पन–पु० [सं०] गप्प-शप्प, वार्तालाप। बकवाद। प्रलाप।

प्रजा–स्त्री० [सं०] १ संतान, औलाद। २ किसी राजा, शासक या राज्य के अधीन बसने वाला मानव-समाज। जनता। ---**नाथ, प, पत, पति, पती**–पु० राजा, बादशाह। शासक।

प्रजागर–पु० [सं०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। ३ अभिभावक, संरक्षक।

प्रजानाथ–पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ मनु। ३ दक्ष प्रजापति। ४ राजा। ५ बादशाह।

प्रजाप, प्रजापत, प्रजापति, प्रजापती–पु० [सं० प्रजापति] १ सृष्टि उत्पन्न करने वाला, मूल पुरुष। २ ब्रह्मा, विरंची। ३ ब्रह्मा के दश पुत्र। ४ कश्यप। ५ मनु। ६ सूर्य, भानु। ७ विश्वकर्मा। ८ पिता, जनक। ९ राजा, नृप। १० कुम्भकार, कुम्हार। ११ सात संवत्सरों में से पांचवां। १२ वार-नक्षत्र संबंधी बनने वाला एक योग विशेष।

प्रजापाळ, प्रजापाळगर–पु० [सं० प्रजापाल] राजा, नृप।

प्रजाळणी (बो)–क्रि० [सं० प्रज्वलनम्] १ जलाना, भस्म करना। २ क्रुद्ध करना, कुपित करना।

प्रजु, प्रजुण, प्रजुन्न–वि० [सं० प्रज्वलनम्] १ प्रज्वलित, सुलगा हुआ। २ देखो 'प्रद्युम्न'।

प्रजेस–पु० [सं० प्रजेश] प्रजापति, राजा।

प्रजोग–देखो 'प्रयोग'।

प्रजोध–वि० [सं०] योद्धा, वीर।

प्रज्ज–देखो 'प्रजा'।

प्रज्जळणी (बो)–देखो 'प्रजळणी' (बो)।

प्रज्जुन–देखो 'प्रद्युम्न'।

प्रज्झटिका–स्त्री० [सं० पद्धटिका] एक छंद विशेष।

प्रज्वळणी (बो)–देखो 'प्रजळणी' (बो)।

प्रज्वलित–वि० [सं०] १ जो जल रहा हो, सुलगा हुआ, धधकता हुआ। २ चमकीला। ३ क्रुद्ध।

प्रज्वाळणी (बो)–क्रि [सं० प्रज्वालनम्] जलाना।

प्रज्वाळ–स्त्री० [सं० प्रज्वाला] आग की लपट, ज्वाला।

प्रडीन–पु० [सं०] उड़ान, उड़ना क्रिया या भाव।

प्रणछ–देखो 'पणच'।

प्रणत–वि० [सं०] १ बहुत झुका हुआ। २ विनीत, नम्र। ३ दीन। ४ प्रणाम करता हुआ। ५ चतुर, निपुण। –पु० नमस्कार।

प्रणतारत–वि० [सं०] शरणागत, दुःखिया।

प्रणति, प्रणती–स्त्री० [सं० प्रणति] नम्रता, सुशीलता, दीनता।

प्रणपति–स्त्री० [सं० प्रणिपातः] नमस्कार, प्रणाम।

प्रणमंग, प्रणम–देखो 'प्रणांम'।

प्रणमणी (बो), प्रणम्मणी (बो)–क्रि० [सं० प्रणाम्] १ पैरों में झुक कर प्रणाम करना, नमस्कार करना। २ विनय करना।

प्रणय–पु० [सं०] १ प्रेम, प्रीति, आसक्ति, स्नेह। २ मैत्री, दोस्ती। ३ मेल-जोल। ४ विश्वास, भरोसा। ५ विवाह, पाणिग्रहण। [सं० प्रणयी] ६ पति, भर्तार।

प्रणव–पु० [सं०] १ ओंकार मंत्र। २ त्रिदेव। ३ परमेश्वर।

प्रणवणी (बो)–देखो 'प्रणमणी' (बो)।

प्रणांम–पु० [सं० प्रणाम] नमस्कार, अभिवादन, नमन।

प्रणा–स्त्री० [सं० प्रणी-भावे विवप्] गली।

प्रणाळ, प्रणाळका–पु० १ बड़ा जल मार्ग, नहर, बंबा। २ पानी के निकास की नाली। ३ कमल की नाल। ४ देखो 'परनाळ'।

प्रणाळी–स्त्री० [सं० प्रणाली] कार्य करने की विधि, रीति, ढंग। परंपरा, रूढ़ि।

प्रणिधान–पु० [सं० प्रणिधानं] १ प्रयोग, व्यवहार, उपभोग। २ विशेष प्रयत्न। ३ समाधि।

प्रणिपात–पु० [सं०] नमस्कार, प्रणाम।

प्रणीत–पु० [सं०] १ मंत्रों द्वारा संस्कारित यज्ञाग्नि। २ यज्ञ के लिये, मंत्रोच्चार सहित, कूए से निकाला हुआ जल। ३ ऐसा जल रखने का पात्र। –वि० [सं० प्रणीत] १ उपस्थित, प्रस्तुत तैयार। २ लाया हुआ। ३ भेंट किया हुआ। ४ निर्मित, रचित।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रणेता–वि० [सं० प्रणेतृ] निर्माता, रचयिता।

प्रतग्या–देखो 'प्रतिग्या'।

प्रतचा, प्रतज्या–देखो 'प्रत्यंचा'।

प्रत–स्त्री० १ प्रतिज्ञा, प्रण। २ देखो 'प्रति'।

प्रतउत्तर–देखो 'प्रत्युत्तर'।

प्रतक–देखो 'प्रत्यक्ष'

प्रतकूळ–देखो 'प्रतिकूळ'।

प्रतक्क (क्ख, क्ष, ख, क्ख) प्रतक्षि (क्षी)–देखो 'प्रत्यक्ष'। —**वादी** = 'प्रत्यक्षवादी'।

प्रतग्गिया, प्रतग्या–देखो 'प्रतिग्या'। —**पत्र** = 'प्रतिग्या-पत्र'।

प्रतच्छ–देखो 'प्रत्यक्ष'।

प्रतत्थ–पु० [सं० प्रतथ्य] शास्त्र।

प्रतिदंद (दुंद)–देखो 'प्रतिद्वंद'।

प्रतदंदी (दुंदी)–देखो 'प्रतिद्वंदी'।

प्रतना, प्रतनी–स्त्री० [सं० पृतना] १ सेना, फौज। २ सेना का एक संगठन विशेष। ३ युद्ध, लड़ाई।

प्रतन्या–देखो 'प्रतिग्या'।

प्रतपक्षी, प्रतपखी–देखो 'प्रतिपक्षी'।

प्रतपण–पु० [सं० प्रतपनम्] १ तप, तेज। २ प्रताप, प्रभाव। ३ शौर्य।

प्रतपणो (बो)–क्रि० १ प्रताप फैलना, यश फैलना। २ शौर्य बढ़ना। ३ तपना, तेजोमय होना। ४ ऐश्वर्यवान होना, सुख भोगना।

प्रतपायण–वि० [सं० प्रतिपायन] दातार, दानी, उदार।

प्रतपाळ–देखो 'प्रतिपाळ'।

प्रतपाळक, प्रतपाळग–देखो 'प्रतिपाळक'।

प्रतपाळण–देखो 'प्रतिपाळण'।

प्रतपाळणो (बो)–देखो 'प्रतिपाळणो' (बो)।

प्रतपाळी–देखो 'प्रतिपाळ'।

प्रतप्पणो (बो)–देखो 'प्रतपणो' (बो)।

प्रतबंब–देखो 'प्रतिबिंब'।

प्रतबंध–देखो 'प्रतिबंध'।

प्रतबिंब–देखो 'प्रतिबिंब'।

प्रतबिंबो–पु० [सं० प्रतिबिंब] दर्पण, शीशा।

प्रतभा–देखो 'प्रतिभा'।

प्रतमक–पु० [सं०] एक प्रकार का दमा रोग।

प्रतमा–देखो 'प्रतिमा'।

प्रतमाळ, प्रतमाळा, प्रतमाळी–देखो 'प्रतिमाळी'।

प्रतयोगता–देखो 'प्रतियोगिता'।

प्रतर–पु० [सं०] पार उतरने या जाने की क्रिया या भाव।

प्रतरतप–पु० [सं०] एक प्रकार का उपवास (जैन)।

प्रतरोधक–देखो 'प्रतिरोधक'।

प्रतळ–पु० [सं० प्रतल] १ पाताल के सातवें भाग का नाम। २ हाथ की हथेली।

प्रतवाय–पु० [सं० प्रत्यवाय] १ शास्त्रोक्त कर्त्तव्य एवं नित्य कर्म न करने पर लगने वाला दोष। २ शास्त्र विरुद्ध मार्ग। ३ शास्त्र विरुद्ध आचरण। ४ न्यूनता, ह्रास।

प्रतवास्त–पु० [सं० वास्तोष्पति] इंद्र।

प्रतव्योम–पु० एक सूर्यवंशी राजा।

प्रतसटा, प्रतसठा–देखो 'प्रतिस्ठा'।

प्रतहार–देखो 'प्रतिहार'।

प्रताकणी–देखो 'पताकणी'।

प्रताप–पु० [सं०] १ ऐसा ताप जिसमें तीव्र तेज हो, आभा, चमक, कांति। २ उष्णता, गर्मी, ताप। ३ पराक्रम, शौर्य। ४ साहस। ५ ऐश्वर्य, वैभव। ६ प्रभाव, रौब। ७ पुण्य प्रभाव। ८ गौरव, यश। ९ ख्याति। १० बल, शक्ति। ११ यश, कीर्ति। १२ प्रकाश, रोशनी। १३ कारण। १४ प्रतिभा। —**वळो, वळी**–वि० शूरवीर, यशस्वी, प्रतिभाशाली। भाग्यशाली। —**वान**–वि० विक्रमी, प्रतापी। महिमावान।

प्रतापी, प्रतापीक–वि० [सं० प्रतापी] १ प्रभावशाली, गौरवशाली। २ शक्तिशाली। ३ ऐश्वर्यशाली। ४ यशस्वी।

प्रतायिता–पु० [सं० प्र + तायृ] पिता

प्रति–देखो 'प्रति'।

प्रतिचा–देखो 'प्रत्यंचा'।

प्रति–अव्य० [सं०] १ एक उपसर्ग, हर। २ उल्टा, विपरीत, विरोध में। ३ समान, सदृश। ४ बदले। ५ स्पष्ट, सामने। ६ प्रत्यक्ष। ७ फल स्वरूप। ८ भली प्रकार से। ९ हरेक, एक-एक। १० तुलना में, मुकाबले। ११ ओर, तरफ। –स्त्री० १ किसी ग्रंथ की जिल्द, किताब, कृति। २ नकल, प्रतिलिपि। —**कार**–पु० बदला, प्रतिशोध, वैर। चिकित्सा, इलाज। निराकरण। पुरस्कार। —**कूळ**–वि० विपरीत, उल्टा, विरुद्ध, जो अनुकूल या माफिक न हो। —**कूळता**–स्त्री० उल्टापन, विरोध। अनुकूल न होने की अवस्था या गुण। —**घात**–पु० सामना, मुकाबला। चोट के बदले चोट। रुकावट, बाधा। —**घातक, घाती**–वि० सामना करने वाला, चोट के बदले चोट करने वाला। रुकावट या बाधा डालने वाला। शत्रु, दुश्मन। —**पक्ख, पक्ष, पख**–वि० विरोधी पक्ष, सामने वाला पक्ष। शत्रु सेना। —**पक्षी, पखी**–वि० विरोधी, मुकाबले में आने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—फल–पु० किसी कार्य का परिणाम। किसी कार्य से प्राप्त होने वाला फल। एक क्रिया के बदले की जाने वाली क्रिया। प्रतिशोध। —बंब, बिंब–पु० प्रतिछाया, छाया। परछाई। चमक, झलक।

प्रतिअवसान–पु० भोजन।

प्रतिक्रम–पु० [सं०] १ प्रदक्षिणा, परिक्रमा। २ विपरीत क्रम।

प्रतिक्रमण (णा)–पु० [सं०] शुभ योग के लिये की जाने वाली साधना।

प्रतिक्रिया–स्त्री० [सं०] १ एक क्रिया के परिणाम स्वरूप होने वाली दूसरी क्रिया। २ किसी कार्य या घटना के पक्ष-विपक्ष में कही जाने वाली बातें। टीका-टिप्पणी। ३ विपरीत क्रिया। ४ एक अवस्था के अंत से दूसरी विपरीत अवस्था का आविर्भाव। ५ रक्षण, रक्षा। ६ सहायता। ७ बदला, प्रतिकार। ८ विरोध, मुकाबला। —वाद–पु० परम्परागत सिद्धांतों का विरोध करने वाला मत। —वादी–स्त्री० उक्त मत को मानने वाला।

प्रतिज्ञा–स्त्री० [सं० प्रतिज्ञा] १ कुछ करने या न करने का दृढ़ निश्चय, संकल्प। प्रण। २ शपथ, सौगंध। ३ वादा, वचन। ४ बयान, घोषणा। ५ न्याय के पांच अवयवों में से एक। —पत्र–पु० उक्त प्रकार के निश्चय का लिखित पत्र, दस्तावेज।

प्रतिग्रह (ग्रहण)–पु० [सं०] १ स्वीकृति, ग्रहण। २ विधि पूर्वक दिये दान को ग्रहण करने की क्रिया। ३ पकड़, अधिकार। ४ पाणिग्रहण, विवाह। ५ रुकावट, बाधा।

प्रतिछांह (छाया)–स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १ परछाई, प्रतिबिंब। २ आकृति, शक्ल।

प्रतिताळ–पु० [सं० प्रतिताल] कांलार, समराव्य, वैकुंठ और वांछित नामक चार तालों का समूह।

प्रतितूनी–स्त्री० चौरासी प्रकार के वात रोगों में से एक।

प्रतिद्वंद, प्रतिद्वंद्व, प्रतिद्वंद्व–पु० [सं० प्रतिद्वन्द्व] झगड़ा, मुकाबला, दो समान शक्तियों का परस्पर मुकाबला। प्रतिस्पर्धा।

प्रतिद्वंदी, प्रतिद्वंद्वी, प्रतिद्वंद्वी–वि० [सं० प्रतिद्वन्द्वी] आमने-सामने या मुकाबले में आने वाला, विरोधी। प्रतिस्पर्धी।

प्रतिध्वन, प्रतिध्वनि–स्त्री० [सं० प्रतिध्वनि] १ किसी शब्द, आवाज या ध्वनि के टकराव से पुनः होने वाली आवाज। गूंज। २ छाया, झलक।

प्रतिनायक–पु० [सं०] किसी नाटक में मुख्य पात्र का विरोधी पात्र।

प्रतिनिध, प्रतिनिधि, प्रतिनिधी–पु० [सं० प्रतिनिधि] १ मूर्ति, प्रतिमा। २ प्रतिक्रिया में होने वाली किसी पदार्थ के समानता की कल्पना। ३ स्थानापन्न। ४ शासन एवं राष्ट्र का पक्ष रखने वाला व्यक्ति। ५ किसी संस्था या संघ का सदस्य। ६ संसद या विधान सभा के लिए चयनित व्यक्ति।

प्रतिपति–पु० [सं० पितपति] यमराज।

प्रतिपतिकरम–पु० [सं० पितपतिकर्म] श्राद्धादि में सबसे अंत में किया जाने वाला कर्म।

प्रतिपद, प्रतिपदा–स्त्री० [सं० प्रतिपदा, प्रतिपद] १ किसी मास के पक्ष की प्रथम तिथि। २ द्वार, दरवाजा।

प्रतिपादक–वि० [सं०] १ विषय की व्याख्या करने वाला, २ सविवरण सामने रखने वाला। ३ साबित करने वाला, प्रतिपन्न करने वाला।

प्रतिपादन–पु० [सं०] १ व्याख्या, निष्पादन। २ किसी पक्ष की स्थापना। ३ आरंभ। ४ अभ्यास। ५ प्रस्तुतीकरण।

प्रतिपाप–पु० [सं०] पापी के साथ किया जाने वाला कठोर व पापमय व्यवहार।

प्रतिपायण–पु० [सं० प्रतिपादन] दान।

प्रतिपाल प्रतिपाल–स्त्री० [सं० प्रतिपालन] १ रक्षा, रक्षण, संरक्षण। २ देख-रेख, निगरानी। ३ पालन-पोषण। ४ सहायता, मदद। ५ बचाव। –वि० १ रक्षा करने वाला रक्षक। २ सहायता करने वाला सहायक।

प्रतिपालक, प्रतिपाळग–वि० [सं० प्रतिपालक] १ रक्षक, रक्षा करने वाला। २ सहायक, मददगार। ३ प्रतिज्ञा पालन करने वाला। ४ बचाने वाला। ५ पोषक।

प्रतिपालण–पु० [सं० प्रतिपालन] रक्षा, सहायता, पोषण आदि करने की क्रिया।

प्रतिपाळणो (बो)–क्रि० [सं० प्रतिपालनम्] १ पालन-पोषण करना। २ रक्षा, करना। ३ प्रतिज्ञा पालन करना, निभाना।

प्रतिपाळो–देखो 'प्रतिपाळ'।

प्रतिबंध–पु० [सं०] १ सौगंध, शपथ। २ विघ्न, बाधा, अवरोध। ३ किसी क्रिया या क्रिया-व्यापार को रोकने के लिये की गई व्यवस्था। ४ नियंत्रण। ५ बन्धन।

प्रतिबंधक–वि० [सं०] १ प्रतिबन्ध लगाने वाला। २ रोकने या अटकाने वाला। ३ मुकाबला या सामना करने वाला। ४ बांधने वाला। –पु० १ अंकुर। २ शाखा।

प्रतिबंधा–स्त्री० दुर्गा, देवी।

प्रतिबूधणो (बो)–क्रि० [सं० प्रतिबोधनम्] १ प्रतिबोधित होना, आत्मज्ञानी होना। २ देखो 'प्रतिबोधणो' (बो)।

प्रतिबोध–पु० [सं०] १ ज्ञान। २ शिक्षण, शिक्षा। ३ जागरण ४ युक्ति, तर्क।

प्रतिबोधण–पु० [सं० प्रतिबोधनम्] १ शिक्षा, ज्ञान, उपदेश आदि देने की क्रिया। २ जागृत करने की क्रिया। ३ उपदेश, चेतावनी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिबोधणी (णी)–क्रि० [सं० प्रतिबोधनम्] १ शिक्षा, ज्ञान आदि देना, उपदेश देना। २ जागृत करना, जगाना। ३ सचेत करना। ४ आत्मज्ञान कराना।

प्रतिभट–पु० [सं०] बराबरी या मुकाबले का योद्धा। –वि० मुकाबला करने वाला।

प्रतिभा–स्त्री० [सं०] १ असाधारण मानसिक शक्ति, असाधारण बुद्धिबल। २ प्रभावित या आकर्षित करने की असाधारण शक्ति। ३ साहस, वीरता। ४ चमक, उज्ज्वलता। ५ प्रकाश, रोशनी। ६ प्रतिबिंब। ७ ढीटता। ८ अक्खड़पन। —वान–वि० जिसमें प्रतिभा हो, विशेष शक्ति वाला। —संपन्न, शाली–वि० प्रतिभावान।

प्रतिभू–पु० [सं०] जमानत देने वाला, जामनी।

प्रतिमल (मल्ल)–पु० [सं० प्रतिमल्ल] १ मुकाबला। २ मुकाबला करने वाला।

प्रतिमान–पु० [सं० प्रतिमान] १ हाथी के ललाट के नीचे या दोनों दांतों के बीच का भाग। २ मूर्ति, प्रतिमा। ३ सादृश। ४ दृष्टान्त, उदाहरण, आदर्श। ५ मान, तौल। ६ प्रतिबिंब। ७ मानदण्ड।

प्रतिमा–स्त्री० [सं०] १ धातु या पत्थर आदि की बनी कोई मूर्ति। २ शकल, आकृति। ३ चित्र। ४ किसी देवता की मूर्ति। ५ हाथी के दांतों पर लगाने का छल्ला। ६ हाथी के शिर का एक भाग। ७ साहित्य में एक अलंकार।

प्रतिमाळ (माळा, माळी)–स्त्री० १ कटार। २ चौसठ कलाओं में से एक।

प्रतियोगता, प्रतियोगियता–स्त्री०[सं०] १ मुकाबला, प्रतिस्पर्धा। २ तुलना। ३ शत्रुता, दुश्मनी। ४ खण्डन।

प्रतिराह–स्त्री० [सं०] वही मार्ग।

प्रतिरोध–पु० [सं०] १ विरोध, अवरोध, रुकावट। २ रोक, मनाही। ३ घेरा। ४ छिपाव, दुराव। ५ चोरी, डकैती। ६ भर्त्सना।

प्रतिरोधक–पु० [सं०] १ वैरी, शत्रु। २ चोर। ३ प्रतिरोध करने वाला।

प्रतिरोधन–पु० [सं०] १ प्रतिरोध की दशा, अवस्था। २ चोर, डाकू।

प्रतिलाभणी (णी)–पु० दानादि का प्रतिफल मिलना, प्राप्त होना।

प्रतिलिपि, प्रतिलिपी–स्त्री० [सं० प्रतिलिपि] मूल पत्र या दस्तावेज की नकल, कोपी।

प्रतिवचन–पु० [सं०] उत्तर, जवाब।

प्रतिवस्तु–स्त्री० [सं०] अन्य वस्तु के सदृश वस्तु।

प्रतिवस्तूपमा–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का उपमा अलंकार विशेष।

प्रतिवाद–पु० [सं०] १ किसी बात का विरोध, खण्डन। २ उत्तर-प्रत्युत्तर। ३ विवाद, बहस।

प्रतिवादी–वि० [सं०] प्रतिवाद, विरोध या बहस करने वाला, विरोधी।

प्रतिवास–स्त्री० [सं०] १ सुगंध, महक। २ प्रतिवेश, पड़ोस। ३ पास में निवास।

प्रतिबिंब–देखो 'प्रतिबिंब'।

प्रतिसत–अव्य० प्रति एक सौ पर।

प्रतिसीरा–स्त्री० [सं०] परदा, कनात, चिक।

प्रतिस्टा (ष्ठा)–स्त्री० [सं० प्रतिष्ठा] १ स्थापना, स्थापित करने की क्रिया। २ मान, मर्यादा, इज्जत। ३ आदर, सत्कार, सम्मान। ४ यश कीर्ति, ख्याति। ५ पृथ्वी। ६ आधार, ठहराव। ७ शांति, विश्राम। ८ स्थिरता, स्थाइत्व। ९ चार वर्ण का एक वृत्त विशेष।

प्रतिस्ठापण (न)–पु० [सं० प्रतिस्थापन] किसी प्रतिमा की विधिवत स्थापना।

प्रतिस्ठावांन–वि० इज्जत-प्रतिष्ठा वाला।

प्रतिस्ठित–वि० [सं० प्रतिष्ठित] १ स्थापित किया हुआ। २ सम्मानित, इज्जतदार, गौरवशाली। ३ पूर्ण किया हुआ। ४ प्रभावशाली।

प्रतिस्थापण–पु० [सं० प्रतिस्थापन] १ मूल वस्तु के स्थान पर स्थानापन्न वस्तु रखने की क्रिया। २ स्थापित करने की क्रिया। ३ स्थापना।

प्रतिस्परद्धा, प्रतिस्परधा–स्त्री० [सं० प्रतिस्पर्द्धा] १ आगे बढ़ने की होड़, मुकाबला, प्रतियोगिता। २ मुकाबला।

प्रतिस्रुत–स्त्री० [सं० प्रतिश्रुत] वादा, प्रतिज्ञा।

प्रतिहत–वि० [सं०] १ हटाया हुआ। २ भगाया हुआ। ३ रुका हुआ, अवरुद्ध।

प्रतिहार–पु० [सं०] १ द्वारपाल, दरबान। २ छड़ीदार, चोबदार। ३ पहरेदार। ४ राजकुल रक्षक एक कर्मचारी विशेष। ५ उक्त कर्मचारी वर्ग से उत्पन्न एक राजवंश।

प्रतीक–वि० [सं०] १ प्रतिकूल, विरुद्ध। २ उल्टा, विलोम। ३ स्थानापन्न। –पु० १ स्थानापन्न वस्तु। २ सबूत। ३ नमूना। ४ प्रतिमा, मूर्ति। ५ आकृति। ६ मुख, मुंह। ७ किसी गद्य-पद्य का आद्यन्त।

प्रतीकार–देखो 'प्रतिकार'।

प्रतीकास–पु० [सं० प्रतीकाश्व] सूर्यवंशी राजा भानु का पुत्र।

प्रतीक्षा–स्त्री० [सं०] १ इंतजार। २ प्रत्याशा, अपेक्षा। ३ खयाल, विचार। ४ आसरा।

प्रतीचि, प्रतीची–स्त्री० [सं० प्रतीची] पश्चिम दिशा।

प्रतीचीप–पु० वरुण।

प्रतीठ–देखो 'प्रतिष्ठा'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतीठिउ–देखो 'प्रतिस्थित'।

प्रतीत–वि० [सं०] १ गया गुजरा, बीता हुआ, व्यतीत। २ विश्वास किया हुआ, विश्वस्त। ३ सिद्ध, साबित। ४ भली प्रकार ज्ञात, प्रसिद्ध। ५ देखो 'प्रतीति'।

प्रतीतणो (णो)–क्रि० [सं० प्रतीतिः] १ व्यतीत होना, गुजरना। २ विश्वास करना।

प्रतीति–स्त्री० [सं०] १ विश्वास, भरोसा। २ अनुभव, जानकारी। ज्ञान। ३ कीर्ति, ख्याति। ४ हर्ष, आनन्द।

प्रतीप–वि० [सं०] १ प्रतिकूल, विरुद्ध, उल्टा। २ हटी, दुराग्रही। ३ बाधक, विघ्नरूप। ४ शत्रु। ५ अप्रिय। –पु० १ एक अर्थालंकार विशेष। २ राजा शान्तनु के पिता का नाम।

प्रतीर–पु० [सं०] किनारा, तट।

प्रतीग्रता–देखो 'प्रतिग्रता'।

प्रतीहार–देखो 'प्रतिहार'।

प्रतुद–पु० [सं०] पक्षी।

प्रते–देखो 'प्रति'।

प्रतेस्ट, प्रतेस्ठ–देखो 'प्रतिस्ठा'।

प्रतं–देखो 'प्रति'।

प्रतोखणो (बो)–क्रि० [सं० प्रतोषणम्] संतुष्ट करना।

प्रतोद–पु० [सं०] १ बैलों को हांकने का डंडा। २ चाबुक।

प्रतोळका, प्रतोळिका–स्त्री० [सं० प्रतोलिका] गली।

प्रतोळी–स्त्री० [सं० प्रतोली] १ किसी नगर का मुख्य मार्ग। २ नगर के मध्य का चौड़ा मार्ग। ३ गली। ४ मुख्य द्वार, बड़ा दरवाजा। ५ नगर प्राचीर का द्वार। ६ दुर्ग का मुख्य द्वार। ७ वह दुर्ग जिसका द्वार नगर की ओर हो। —द्वार–पु० मुख्य दरवाजा।

प्रत्तेस्ट, प्रत्तेस्ठ–देखो 'प्रतिस्ठा'।

प्रत्थ–देखो 'प्रथु'।

प्रत्थमिय–देखो 'प्रथवी'।

प्रत्थळ–देखो 'प्रथुळ'।

प्रत्थीव–देखो 'प्रथ्वीप'।

प्रत्यंचा–स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी।

प्रत्यंत–पु० [सं०]यवन, म्लेच्छ। —देस–पु० म्लेच्छों का देश। –धरा–पु० म्लेच्छ देश। —राज–पु० यवन राजा।

प्रत्यक्ष–वि० [सं०] १ जो दिखाई दे रहा हो। २ जो वर्तमान हो, उपस्थित, मौजूद। ३ जो इन्द्रियों से गोचर हो। ४ जो सबूत के तौर पर प्रस्तुत हो। ५ जो घुमाव-फिराव से रहित हो, सीधा, सहज। ६ स्पष्ट, साफ, साक्षात्। ७ समीप, पास। ८ शरीर संबंधी। –पु० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। —वादी–पु० प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानने वाला व्यक्ति।

प्रत्यग्या–देखो 'प्रतिग्या'।

प्रत्यनीक–पु० [सं०] एक अर्थालंकार विशेष।

प्रत्यय–पु० [सं०] १ मूल शब्द के अन्त में जुड़कर संयुक्ताक्षर बनाने वाला शब्द। २ पिंगल का एक अंग।

प्रत्याख्यान–पु० [सं०] खंडन।

प्रत्यागम–पु० [सं०] १ पुनर्जन्म। २ पुनरागमन, वापसी।

प्रत्याहार–पु० [सं०] योग के आठ अंगों में से एक।

प्रत्युक्ति–स्त्री० [सं०] जवाब, उत्तर।

प्रत्युत्तर–पु० [सं०] उत्तर पर उत्तर, विवाद। —कळा–स्त्री० बहत्तर कलाओं में से एक।

प्रत्यूह–पु० [सं०] १ रोक, अटकाव। २ विघ्न, बाधा।

प्रत्येक–वि० [सं०] १ बहुतों में से एक, हरेक। २ सब, समस्त। ३ एक बार में एक। ४ अलग-अलग, एकाकी।

प्रथ–देखो 'प्रथु'।

प्रथक–अव्य० [सं०पृथक्] १ अलग, जुदा। २ भिन्न। ३ एकाकी। अकेला।

प्रथम–वि० [सं०] १ पहला, प्रारंभ का। २ सर्वश्रेष्ठ, उत्तम। ३ प्रतियोगिता या परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त। –क्रि०वि० पहले, प्रारंभ में। –पु० पिता।

प्रथमज–वि० [सं०] पहले पहल जन्मने वाला। –पु० बड़ा भाई, अग्रज।

प्रथमता–स्त्री० प्रथम होने की अवस्था या भाव। प्राथमिकता।

प्रथमपुरुस–पु०[सं० प्रथम-पुरुष] १ पहला व्यक्ति। २ व्याकरण मे उत्तम पुरुष। ३ सस्कृत व्याकरण में अन्य पुरुष।

प्रथमाण–देखो 'प्रथवी'।

प्रथमा–स्त्री० [सं०] १ व्याकरण में कर्त्ता-कारक। २ एक प्रकार की शराब।

प्रथमाव, प्रथमादा, प्रथमी–देखो 'प्रथवी'। –तळ='प्रथवीतळ'। —पोख = 'प्रथवीपोख'।

प्रथमेण–१ देखो 'प्रथवी'। २ देखो 'प्रथम'।

प्रथम्म–देखो 'प्रथम'।

प्रथम्मी–देखो 'प्रथवी'।

प्रथरोमा–देखो 'प्रथुरोमा'।

प्रथळ–देखो 'प्रथुळ'।

प्रथवी–स्त्री० [सं० पृथ्वी] १ धरती, धरा, भूमि। २ राज्य, राज्य का क्षेत्र। —तळ–पु० पाताल। —धणी–पु० राजा, नृप। शेषनाग। –धर–पु० राजा। शेषनाग। पर्वत। —नाथ–पु० राजा। शेषनाग। —पत, पति–पु० राजा। यमराज। शेषनाग। —पाळ–पु० राजा। इन्द्र, मेघ। —पोख–पु० इन्द्र। —राज–पु० राजा।

प्रथवीस–पु० [सं० पृथिवीश] १ राजा, नृप। २ इन्द्र।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथा–स्त्री० [सं०] १ परम्परा, परिपाटी, रूढ़ि। २ रीति, ढंग, प्रणाली, विधि। ३ रस्म, रिवाज। [सं० पृथा] ४ पाण्डवों की माता कुंती।

प्रथित–वि० [सं०] प्रसिद्ध, विख्यात।

प्रथिमि, प्रथिमी–१ देखो 'प्रथवी'। २ देखो 'प्रथम'।

प्रथिवी–देखो 'प्रथवी'। —**धर**='प्रथवीधर'। —**नाथ**='प्रथवीनाथ'। —**पति, पती**='प्रथवीपति'। —**पाळ**='प्रथवीपाळ'।

प्रथी–देखो 'प्रथ्वी'। —**छात**='प्रथवीछात'। —**नाथ**='प्रथवीनाथ'। —**पत, पति, पती** = 'प्रथ्वीपति'। —**पाळ** = 'प्रथ्वीपाल'।

प्रथीप–देखो 'प्रथ्वीप'।

प्रथीपुरदर–देखो 'प्रथ्वीपुरंदर'।

प्रथीस–देखो प्रथ्वीस'।

प्रथु–वि० [सं० पृथु] १ चौड़ा, विस्तृत। २ बड़ा, महान्। ३ दीर्घ, लंबा। ४ विपुल, पर्याप्त, अधिक। ५ असंख्य, अगणित। –पु० १ सूर्य वंशी एक राजा। २ राजा वेणु के पुत्र का नाम। ३ अग्नि, आग। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ अफीम।

प्रथुक–पु० [सं०पृथुक] (स्त्री० प्रथुका) १ बालक, बच्चा, शिशु। २ चिड़वा। ३ हिंगुपत्री।

प्रथुरोसा–स्त्री० [सं० पृथुरोमा] मछली।

प्रथुळ–वि० [सं० पृथुल] १ अधिक, व्यापक। २ अधिक लम्बा, दीर्घ, विस्तृत। ३ विस्तीर्ण। ४ बहुत, अधिक। ५ ढेर, राशि, समूह।

प्रथू–देखो 'प्रथु'।

प्रथूळ–देखो 'प्रथुळ'।

प्रथ्वी–स्त्री० [सं० पृथ्वी] १ सौर मण्डल का ग्रह जिस पर मानव सृष्टि चल रही है। २ पृथ्वी तत्त्व, भूमि, धरती। ३ मृत्युलोक, इहलोक। संसार। ४ धरातल, जमीन। ५ सत्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त। ६ एक की संख्या। —**काय**–पु० मिट्टी, हींगुल, हरताल, पत्थर, हीरा आदि तत्त्व। —**चक्र**–पु० भू-मंडल। —**छात**–पु० राजा, नृप। —**तळ**–पु० भूमि की ऊपरी सतह, धरातल। संसार, विश्व। पाताल। —**धर**–पु० राजा, नृप। शेषनाग। पहाड़। —**नाथ**–पु० राजा, नृप। —**पत, पति, पती**–पु० राजा, नृप। यमराज। —**पाळ**–पु० राजा। इन्द्र। मेघ। —**पुत्र**–पु० मंगल। वृक्ष। —**पोस**–पु० राजा। इन्द्र। —**राज**–पु० राजा। इन्द्र।

प्रथ्वीप–पु० [सं० पृथ्वीप] राजा।

प्रथ्वीपुरदर–पु० [सं० पृथ्वीपुरंदर] राजा, नृप।

प्रथ्वीस–पु० [सं० पृथ्वीश] १ राजा, नृप। २ इन्द्र।

प्रद–वि० [सं०] देने वाला, दाता।

प्रदकण (णा) प्रदक्खण (णा), प्रदक्षण (णा), प्रदक्षिण (णा) प्रदखण (णा)–स्त्री० [सं० प्रदक्षिणा] परिक्रमा, चारों ओर फिर कर लगाया जाने वाला चक्र।

प्रदच्छ–वि० [सं० प्रदक्ष] १ चतुर, दक्ष। २ प्रदक्षिणा।

प्रदच्छण (णा), प्रदछिछण (णा), प्रदछण (णा), प्रदछिण (णा)–देखो 'प्रदक्षिणा'।

प्रदत, प्रदत्त–वि० [सं० प्रदत्त] जो दिया जा चुका है, दिया हुआ।

प्रदमन–देखो 'प्रद्युम्न'।

प्रदर–पु० [सं०] १ तीर बाण। २ दरार, तड़कण। ३ स्त्रियों के गर्भाशय संबंधी एक रोग।

प्रदरसक–वि० [सं० प्रदर्शक] १ दिखानेवाला। २ विज्ञापन करने वाला। ३ प्रेरणा देने वाला।

प्रदरसण (न)–पु० [सं० प्रदर्शन] १ दिखावा, विज्ञापन। २ दिखलाने का कार्य। ३ शिक्षा, उपदेश, व्याख्या। ४ सूरत, शक्ल। ५ चितवन।

प्रदरसणी, प्रदरसनी–स्त्री० [सं० प्रदर्शनी] नुमाइश। वस्तुओं का दिखावा।

प्रदान–पु० [सं० प्रदानम्] १ देना क्रिया। २ दान। ३ भेंट चढ़ावा।

प्रदाक, प्रदाकु–पु० [सं० पृदाकु] १ सर्प, सांप। २ बिच्छु।

प्रदायक–वि० [सं०] देनेवाला।

प्रदाव–पु० [सं०] अग्नि, आग।

प्रदाह–स्त्री० [सं०] शरीर में ज्वर आदि से होने वाली जलन।

प्रदिक्षण, प्रदिक्षणा–देखो 'प्रदक्षिणा'।

प्रदिखण (णा)–देखो 'प्रदक्षिणा'।

प्रदिमन–देखो 'प्रद्युम्न'।

प्रदिसा–स्त्री० [सं० प्रदिशा] दो मुख्य दिशाओं के बीच की दिशा, कोण।

प्रदीप–पु० [सं०] १ दीपक, चिराग। २ प्रकाश, ज्योति। ३ किरण, रश्मि।

प्रदीपक–वि० [सं०] १ प्रकाश या रोशनी करने वाला। प्रदीप्त करने वाला, प्रकाशक। २ एक प्रकार का भयंकर विष।

प्रदीपण (न)–पु० [सं० प्रदीपनं] १ प्रकाश या रोशनी करने का कार्य। २ एक प्रकार का खनिज विष। –वि० १ प्रकाश करने वाला। २ उत्तेजक।

प्रदीप्त–वि० [सं०] १ प्रज्वलित। २ प्रकाशित, रोशन। ३ जगमगाता हुआ, प्रकाशमान।

प्रदुमन, प्रदूमन–देखो 'प्रद्युम्न'।

प्रदेस–पु० [सं० प्रदेश] १ किसी राष्ट्र या देश का कोई भाग, प्रांत, इलाका। २ कोई बड़ा भू-भाग। ३ कोई राज्य।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ स्थान, जगह। ५ सघीय राज्य की कोई इकाई। ६ तर्जनी की नोक से अंगुठे की नोक तक की लंबाई। ७ अंग, अवयव। —बंध–पु० जीव के साथ न्यूनाधिक परमाणु वाले कर्म स्कन्धों का संबंध।

प्रदेसी–वि० [सं० प्रदेशी] प्रदेश का, प्रदेश संबंधी।

प्रदोख–देखो 'प्रदोस'।

प्रदोमन–पु० [सं० प्रद्युम्न] १ सूर्य, रवि। २ देखो 'प्रद्युम्न'।

प्रदोस–पु० [सं० प्रदोष] १ सायंकाल, शाम। २ मास के प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को किया जाने वाला व्रत। ३ सायकाल का अंधेरा। ४ एक दोष विशेष।

प्रद्युमन, प्रद्युम्न–पु० [सं० प्रद्युम्न] १ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २ कामदेव, मदन। ३ मनु के पुत्र का एक नाम।

प्रद्योत–पु० [सं] १ किरण, रश्मि। २ दीप्ति, आभा, चमक। ३ ज्योति।

प्रद्योतन–पु० [सं०] १ सूर्य, भानु। २ चमक, प्रकाश। ३ दहकन।

प्रद्रव, प्रद्राव–पु० [सं०] १ पलायन, प्रयाण। रवानगी। २ गति, चाल।

प्रधन–पु० [सं०] १ युद्ध। २ युद्ध में लूटा हुआ माल। ३ नाश, विनाश। ४ नमस्कार।

प्रधान–वि० [सं० प्रधान] १ मुख्य, खास। २ प्रसिद्ध, ख्याति प्राप्त। ३ उत्तम, श्रेष्ठ। ४ मुख्यतया प्रचलित। –पु० १ मुख्य व आवश्यक पदार्थ। २ संसार का उपादान कारण। ३ परब्रह्म, ईश्वर। ४ शिव। ५ सरदार, दरबारी। ६ सचिव, मंत्री, अमात्य। ७ सेनापति। ८ सामंत कालीन एक पद। ९ सरपंच के ऊपर का एक पद।

प्रधानगी–स्त्री० १ प्रधान का पद व कार्य। २ [illegible]ता।

प्रधानता–स्त्री० १ प्रधान होने की अवस्था या भाव। २ प्राथमिकता।

प्रधारक–पु० [सं० पृदाकु] १ बाण, तीर। २ सर्प, सांप।

प्रधाव–पु० आक्रमण, हमला।

प्रधुन–देखो 'प्रधन'।

प्रध्वंस–पु० [सं०] १ पूर्ण विनाश। २ संहार। ३ नितान्त अभाव।

प्रध्वंसक, प्रध्वंसी–वि० [सं०] विनाश व ध्वंस करने वाला।

प्रनाळ–देखो 'परनाळ'।

प्रनाळका–देखो 'प्रणाळका'।

प्रनाळी–देखो 'प्रणाली'।

प्रपंच–पु० [सं०] १ संसार, दुनिया। २ उद्योग परिश्रम। ३ सांसारिक, झंझट। ४ प्रपंच, बखेड़ा। ५ तजबीज उपाय। ६ षड्यंत्र, जाल। ७ विस्तार, फैलाव। ८ कपट, छल। ९ वागविस्तार, वचनचातुर्य। १० रचना, लीला। ११ ठगी। १२ लड़ाई, झगड़ा। १३ प्रदर्शन, विकास। १४ अति विस्तार। १५ बहुलता, अनेकत्व। १६ भ्रम, धोखा। १७ दृश्य जगत। १८ उलझन।

प्रपंचक, प्रपंची–वि० [सं०] १ प्रपंच करने वाला। २ छली, कपटी।

प्रपत–देखो 'प्राप्त'।

प्रपथ, प्रपथ्या–स्त्री० [सं० प्रपथ्या] हरीतकी, हर्रे।

प्रपा–स्त्री० [सं०] १ पीने के पानी का स्थान, प्याऊ। २ कूप, कुण्ड। ३ जलकुण्ड। ४ जल पिलाने का कार्य।

प्रपात–पु० [सं०] १ पतन, गिरावट। २ पहाड़ या ऊंचाई से गिरने वाला झरना। ३ जल प्रताप। ४ झड़ना, गिरना।

प्रपितामह–पु० [सं०] (स्त्री० प्रपितामही) पिता का दादा।

प्रपीडण, प्रपीडन–पु० [सं० प्रपीडनम्] १ बहुत अधिक सताना, कष्ट देना। २ बहुत दबाकर रस निकालना।

प्रपुन्नाट, प्रपुन्नाड–पु० [सं० प्रपुन्नाट] एक प्रकार का क्षुप, चक्रमर्द, चकवड़।

प्रपोटो–पु० पानी का बुदबुदा।

प्रपोतरो, प्रपोती, प्रपौत्र, प्रपौत्री–पु० [सं० प्रपौत्र] (स्त्री० प्रपोतरी, प्रपोती, प्रपौत्री) पुत्र का पौत्र, पौत्र का पुत्र।

प्रफुल–देखो 'प्रफुल्ल'।

प्रफुलणो (बो)–देखो 'प्रफुल्लणो' (बो)।

प्रफुलित–देखो 'प्रफुल्लित'।

प्रफुल्ल–वि०[सं०]१ पूर्ण खिला हुआ, फूला हुआ। २ आनन्दित। ३ मुस्कराता हुआ।

प्रफुल्लणो (बो)–क्रि० १ फलना, फूलना। २ फूल आदि का खिलना। ३ आनन्दित होना। हर्षित होना। ४ मुस्कराना।

प्रफुल्लता–स्त्री०१ फूल आदि के खिलने की अवस्था। २ आनन्द, हर्ष। ३ स्वस्थता।

प्रफुल्लित, प्रफूलत–वि० [सं० प्रफुल्लित] १ पूर्ण खिला हुआ, फूला हुआ। २ लहलहाता हुआ, हरा-भरा। ३ आनन्दित, हर्षित। ४ मुस्कराता हुआ।

प्रबंद्ध, प्रबंध, प्रबधो–पु० [सं० प्रबंध] १ साहित्य में श्रव्य काव्य का एक भेद विशेष। २ पद्यबंध रचना, काव्य। ३ काव्य का एक भेद। ४ विभिन्न कथानकों का संकलित ग्रंथ। ५ ऐसा निबंध या लेख जिसका सिलसिला या क्रम जारी रहे। ६ अध्याय, सर्ग। ७ सजावट। ८ प्रण, प्रतिज्ञा। ९ व्यवस्था, इंतजाम। १० योजना।

प्रब–देखो 'परब'।

प्रबय–वि० [सं० प्र-वय] वृद्ध, वयोवृद्ध। बूढ़ा।

प्रबळ–वि० [सं० प्रबल] १ ताकतवर, शक्तिशाली। २ खतरनाक, विनाशकारी। ३ प्रचंड, भयंकर। ४ अद्भुत, विचित्र।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ विपुल, अधिक । ६ अत्यन्त मजबूत, सुदृढ़ । ७ उग्र प्रचंड ।

प्रबहण–देखो 'प्रवहण' ।

प्रबाळ (ल)–पु० [सं० प्रवाल] मूंगा नामक नगीना ।

प्रबाळी–वि० १ प्रवाल का, प्रवाल संबंधी । २ प्रवाल के रंग का । ३ लाल । ४ देखो 'प्रबाळ' ।

प्रबीण–देखो 'प्रवीण' ।

प्रबोत–देखो 'पवित्र' ।

प्रबोर–देखो 'प्रवीर' ।

प्रबुद्ध–वि० [सं०] १ बुद्धिमान, विद्वान् । २ जानकार, विज्ञ । ३ जागृत, जगा हुआ । ४ पूर्ण खिला हुआ, विकसित ।

प्रबोध–पु० [सं०] १ किसी विषय या बात का पूर्ण ज्ञान । २ यथार्थ ज्ञान । ३ बुद्धि, प्रज्ञा । ४ जागृतावस्था, अनिद्रा । ५ सतर्कता, सावधानी । ६ सत्यासत्य का ज्ञान । ७ धैर्य, सांत्वना, आश्वासन ।

प्रबोधक–वि० [सं०] १ यथार्थ ज्ञान कराने वाला, बताने वाला । २ ज्ञान या बुद्धि देने वाला । ३ समझाने-बुझाने वाला । ४ सचेत करने वाला, चेताने वाला । ५ धीरज बंधाने वाला । ६ सांत्वना देने वाला ।

प्रबोधणो (बो)–क्रि० [सं० प्रबोधनम्] १ जागृत करना, जगाना २ सचेत करना । ३ उपदेश देना । ४ यथार्थ ज्ञान देना । ५ शिक्षा देना ।

प्रबोधनी–स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला एकादशी ।

प्रब्ब–देखो 'परब' ।

प्रब्बत–देखो 'परबत' ।—**माळा**='परबतमाळा' ।

प्रभ, प्रभु प्रब्भू–देखो 'प्रभु' ।

प्रब्रत्ति–देखो 'प्रवृत्ति' ।

प्रभंज प्रभंजण, प्रभंजन–पु० [सं० प्रभञ्जन] पवन, हवा ।

प्रभ–१ देखो 'प्रभा' । २ देखो 'प्रभु' ।

प्रभणो (बो)–क्रि० [सं० प्र + भण्] १ कहना, कथना । २ वर्णन करना, बखान करना । ३ रटना, जपना । ४ उच्चारण करना बोलना ।

प्रभत, प्रभता, प्रभति, प्रभती, प्रभत्त, प्रभत्ता, प्रभत्ती–देखो 'प्रभुता' ।

प्रभव–पु० [सं०] १ उद्गम स्थल, निकास, उत्पत्ति स्थान । २ जन्म, उत्पत्ति । ३ शक्ति, बल, पराक्रम । ४ विष्णु का एक नामान्तर ।

प्रभवस्यांमळ–पु० [सं० श्यामल-प्रभ] श्रीकृष्ण ।

प्रभा–स्त्री० [सं०] १ चमक-दमक, जगमगाहट । २ कांति, दीप्ति, आभा । ३ ज्योति, प्रकाश, रोशनी । ४ किरण, रश्मि । ५ शोभा । ६ सूर्य की छाया । ७ दुर्गा का एक नामान्तर । ८ कुबेर की नगरी का नाम । ९ एक अप्सरा का नाम । १० कीर्ति, सुयश । ११ लक्ष्मी । १२ आभूषण । —**कर**–पु० सूर्य । चांद, चन्द्रमा । समुद्र, सागर । शिव । —**पत, पति**–पु० सूर्य, भानु ।

प्रभात, प्रभाति–पु० [सं०] १ प्रातःकाल, सवेरा । २ रोशनी का प्रारंभ । —**फेरी**–स्त्री० ईश्वर नाम की रट लगाते हुए प्रातःकालीन नगर-भ्रमण ।

प्रभातियो–वि० १ प्रभात संबंधी, प्रभात का । २ प्रभात के समय उदय होने वाला । —**तारो**–पु० प्रातःकाल उदय होने वाला तारा । वह नक्षत्र (ग्रह) जो सूर्य की संक्रान्ति की राशि में हो अथवा उसकी पूर्व राशि में हो ।

प्रभाती–स्त्री० [सं०] १ प्रत्यूष और प्रभास वसुओं की माता । २ प्रातःकाल (ब्राह्म मुहूर्त) में गाया जाने वाला राग विशेष । ३ उक्त राग में गाया जाने वाला पद, भजन । ४ देखो 'प्रभात' ।

प्रभावक–स्त्री० [सं० वक्र-प्रभा] तलवार ।

प्रभाव–पु० [सं०] १ अच्छा या बुरा असर । २ परिणाम, फल । ३ कारण । ४ बल, शक्ति । ५ चरित्र बल या सत्य बल के कारण पड़ने वाला रौब । ६ डर, भय । ७ अन्तःकरण को किसी ओर प्रवृत्त करने का गुण । ८ ज्योतिष में ग्रह या ग्रहों की विशिष्ट स्थिति या विकार । —**शाळी**–वि० जिसका प्रभाव या रौब पड़ता हो । प्रतिष्ठित ।

प्रभावती–स्त्री० [सं०] १ एक राग विशेष । २ सूर्य की पत्नी का नाम । ३ एक वर्ण वृत्त, रुचिरा छन्द ।

प्रभावित–वि० [सं०] १ जिस पर प्रभाव पड़ा हो, जो किसी के प्रभाव में आ गया हो । २ लागू, मान्य ।

प्रभास–वि० [सं०] १ चमकदार, प्रभापूर्ण चमकीला । २ आभा या कांति युक्त । –पु० १ ज्योति, प्रकाश, चमक । २ आठ वसुओं में से एक । ३ सौंदर्य । ४ काठियावाड़ का एक प्रसिद्ध तीर्थ । —**क्षेत्र**–पु० उक्त तीर्थ वाला क्षेत्र ।

प्रभासणो (बो)–क्रि० [सं० प्रभासनम्] १ चमकना, प्रकाशित होना । २ दिखाई पड़ना । ३ आभा व कांतिमय होना ।

प्रभित–देखो 'प्रभूत' ।

प्रभित, प्रभिति–देखो 'प्रभूत' ।

प्रभिन्न–पु० [सं०] मस्त हाथी । उन्मत्त हाथी ।

प्रभु–वि० [सं०] १ शक्तिशाली, बलवान् । २ योग्य । ३ अधिकार प्राप्त । ४ बराबरी का । –पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ श्रीकृष्ण । ३ शिव, महादेव । ४ स्वामी मालिक । ५ इष्टदेव । ६ राजा । ७ सर्वोच्च अधिकारी । ८ श्याम रंग । ९ सूर्य । १० इन्द्र ।

प्रभुता, प्रभुताई, प्रभुति–स्त्री० [सं० प्रभुत्व] १ प्रभु होने की दशा । २ प्रभुत्व, प्रभाव । ३ महानता, बड़प्पन ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ ऐश्वर्य, वैभव। ५ हुकूमत, शासन। ६ शक्ति, बल। सामर्थ्य। ७ यश, कीर्ति।

प्रभू–देखो 'प्रभु'।

प्रभूत–वि० [सं०] १ निकला हुआ, उत्पन्न। २ बहुत, विपुल।

प्रभेद–पु० [स०] १ हाथी की कनपटियों से चूने वाला मद। २ भेद, भिन्नता।

प्रभ्भु–देखो 'प्रभु'।

प्रभ्रंस–पु० [स० प्रभ्रंश] पतन, गिरना।

प्रभ्रत, प्रभ्रति, प्रभ्रती, प्रभ्रत्ती प्रभ्रित्ति–अव्य० [सं० प्रभृति] इत्यादि।

प्रभ्रष्ट–वि० [सं० प्रभ्रष्ट] नीचे गिरा हुआ, पतित।

प्रम–देखो 'परम'। –गुर, गुरु='परमगुरु'।

प्रमजोत–स्त्री० [सं० परम ज्योति] परम ज्योति।

प्रमत–वि० [सं०] १ विचारा हुआ, मनन किया हुआ। २ देखो 'प्रमत्त'।

प्रमत्त–वि० [सं०] १ मद मस्त, नशे में चूर। २ उन्मत्त, पागल। ३ असावधान, लापरवाह। ४ अधिकार आदि के गर्व से युक्त।

प्रमथ–पु० [सं० प्रमथनम्] १ मंथन। २ पीड़ा, कष्ट, त्रास। ३ हत्या, वध। [सं० प्रमथः] ४ शिव के गण। ५ घोड़ा। —नाथ–पु० शिव, महादेव। —पत, पति–पु० शिव, महादेव।

प्रमथाधिप, प्रमथाध्यप–पु० [सं० प्रमथाधिप] शिव, महादेव।

प्रमथालय–पु० [सं०] १ शिव के गणों का निवास स्थान। २ श्मशान भूमि। ३ कष्ट या यंत्रणादायक स्थान।

प्रमदति–देखो 'प्रमुदित'।

प्रमदरस–पु० [सं० प्रमद-रस] आनंद।

प्रमदा–स्त्री० [सं०] १ धर्म पत्नी, भार्या। २ युवती, सुन्दरी। ३ स्त्री, रमणी। ४ रात्रि, निशा।

प्रमदावन–पु० [सं०] अन्तःपुर के समीप का बगीचा।

प्रमपुर–देखो 'परमपुर'।

प्रममंडप–पु० [सं० परममंडप] देवालय, देवमंदिर।

प्रमरथ–देखो 'परमारथ'।

प्रमरदन–पु० [सं० प्रमर्दनम्] १ अच्छी तरह से मर्दन। २ कुचलने या नष्ट करने की क्रिया।

प्रमळ–देखो 'परिमळ'।

प्रमहंस–देखो 'परमहंस'

प्रमाण (ण)–वि० [सं० प्रमाणम्] १ जो सबके लिये मान्य हो। २ मुताबिक, अनुसार। ३ समान, तुल्य, अनुरूप, बराबर, सदृश। ४ अटल, दृढ़। ५ कामयाब, कृत कार्य, सफल, सार्थक। ६ निर्धारित, निश्चित, सही। ७ सत्य। ८ सबूत के रूप में मान्य। –पु० १ सबूत के तौर पर कही हुई बात या वस्तु। २ गवाही, साक्षी। ३ सत्यता, सच्चाई। ४ प्रतीति, यकीन, दृढ़ विश्वास। ५ सब के लिये मान्य उचित बात। ६ माप व तौल का मान। ७ लम्बाई-चौड़ाई, विस्तार, आकार, आयतन। ८ आधार भूत वस्तु। ९ तरह, भांति, प्रकार। १० तर्क या विवाद की पुष्टि में कही गई बात। ११ धर्म शास्त्र, आगम। १२ तालाब। १३ साहित्य में एक अलंकार विशेष। १४ बनावट। १५ लक्षण, नियम। १६ आधार, बूता, जोर। १७ अपना व दूसरों का निश्चय करने वाला सच्चा ज्ञान। १८ न्याय शास्त्र के चार प्रमाण। १९ यथार्थ ज्ञान, शुद्ध बुद्धि। २० मात्रा। २१ युक्ति। २२ सीमा।

प्रमाणणी (णी)–क्रि० [सं० प्रमाणम्] १ मानना, मान्य होना। २ सिद्ध करना, पुष्ट करना।

प्रमाण-पत्र–पु० [सं० प्रमाण-पत्र] १ परीक्षा, प्रशिक्षण आदि का उपाधि पत्र। २ सबूत के लिए मान्य लिखित-पत्र।

प्रमाणि–देखो 'प्रमाण'।

प्रमाणिक–वि० [सं० प्रमाणिक] १ प्रमाण के रूप में मान्य। २ शास्त्रज्ञ। ३ मान्य। ४ ठीक, सही। ५ शास्त्र-सिद्ध। ६ साक्ष्यों द्वारा सिद्ध।

प्रमाणिका–स्त्री० [सं० प्रमाणिका] एक छन्द विशेष।

प्रमाणी–१ देखो 'प्रमाण'। २ देखो 'प्रमाणिका'।

प्रमाणु, प्रमाणु (नु)–१ देखो 'प्रमाण'। २ देखो 'परमाणु'।

प्रमा–स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी, रमा। २ रुक्मिणी का एक नाम। ३ यथार्थ ज्ञान, शुद्ध बोध। ४ यथा आवश्यक अनुभव।

प्रमातम–देखो 'परमात्मा'।

प्रमाद–पु० [सं०] १ मादक पदार्थों के सेवन से होने वाला नशा। २ मस्ती। ३ मानव मस्तिष्क की मदान्ध अवस्था। ४ ऐसी अवस्था में की जाने वाली भूल। अनुचित कार्य। ५ लापरवाही, बेपरवाही। ६ उन्माद, पागलपन। ७ अन्तः करण की दुर्बलता। ८ बेहोशी, मूर्छा। ९ आलस्य। १० भूल, गलती गफलत। ११ बेहोशी, मूर्च्छा। १२ योग शास्त्र के अनुसार नौ प्रकार के अंतरायाम।

प्रमादी–वि० [सं० प्रमादिन्] (स्त्री० प्रमादिणी) १ प्रमाद करने वाला। २ पागल। ३ उन्मत्त, मस्त। ४ लापरवाह, असावधान।

प्रमार–देखो 'परमार'।

प्रमीस–पु० [सं० परम-ईश] १ परमात्मा, ईश्वर। २ विष्णु।

प्रमुकणी (णी), प्रमुक्कणी (णी)–देखो 'मूकणी' (णी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रमुख–वि० [सं०] १ सबसे अग्र या पहले होने वाला। २ मुख्य, प्रधान। ३ सर्वश्रेष्ठ, उत्तम। ४ सर्वोच्च पद पर होने वाला। ५ जो दूसरों के प्रतिमुख होकर खड़ा हो। –पु० १ राज्य का प्रधान। २ प्रधान शासक। ३ विधान सभा या संसद का अध्यक्ष। –अव्य० १ आदि, प्रभृति। २ आगे सामने। २ वगैरह।

प्रमुखता–स्त्री० [सं०] १ प्रमुख होने की अवस्था या भाव। २ प्राथमिकता। ३ विशेषता।

प्रमुद–पु० [सं०] १ आनन्द, हर्ष। २ देखो 'प्रमुदित'।

प्रमुदित–वि० [सं०] १ आह्लादित, हर्षित, खुश। २ सुखी।

प्रमूकणी (बी)–देखो 'मूकणी' (बी)।

प्रमेय–वि० [सं०] १ जिसका अवधारण हो सके, जो समझ में आ सके। २ जो प्रमाण का विषय हो। ३ जो प्रमाणों से सिद्ध हो सके। –पु० १ प्रमाणों से जाना हुआ विषय। २ सूत्र।

प्रमेस, प्रमेसर, प्रमेसुर, प्रमेस्वर–देखो 'परमेस्वर'।

प्रमेह–पु० [सं०] धातु संबंधी एक रोग विशेष।

प्रमोद–पु० [सं०] हर्ष, खुशी, मोद, विनोद।

प्रमोदक–वि० [सं०] हर्ष-प्रद, आनन्द-दायक। –पु० एक प्रकार का जड़हन।

प्रमोदन–पु० [स०] विष्णु का एक नामान्तर।

प्रमोदा–स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

प्रमोहन–पु० [सं०] सम्मोहन क्रिया।

प्रम्म–देखो 'परम'।

प्रम्मदा–देखो 'प्रमदा'।

प्रम्मळ, प्रम्मल–वि० [सं० परिमल] १ सुन्दर। २ देखो 'परिमल'।

प्रयत्न–पु० [सं०] १ किसी काम के लिये की जाने वाली मानसिक व शारीरिक चेष्टायें। २ प्रयास, उद्योग। ३ श्रम, परिश्रम। ४ क्रियाशीलता, सक्रियता। ५ वर्ण के उच्चारण की क्रिया। ६ न्याय शास्त्र के अनुसार जीव या प्राणी के छः गुणों में से एक जो उसकी सक्रिय चेष्टा का सूचक हो।

प्रयसा–स्त्री० [सं०] रावण की अनुचरी एक राक्षसी।

प्रयाण–पु० [सं० प्रयाणम्] १ यात्रा का प्रस्थान, कूच, रवानगी। २ यात्रा, सफर। ३ अभियान, चढ़ाई। ४ मर कर किसी अन्य लोक में गमन। ५ कार्य का अनुष्ठान या आरंभ। ६ आक्रमण हमला। ७ उन्नति, विकास, बढ़ोतरी। ८ मृत्यु, महायात्रा। ९ घोड़े या पशु की पीठ। —काल–पु० प्रस्थान का समय, यात्रा का प्रारंभ। मृत्युकाल।

प्रयाग–पु० [सं०] १ गंगा-यमुना के संगम स्थल पर बना एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान। २ वह स्थान जहां अधिक यज्ञ होते हों। ३ प्रथम गुरु की चार मात्रा का नाम। ४ यज्ञ। ५ घोड़ा। ६ इन्द्र।

प्रयागराज–पु० [सं०] 'प्रयाग' तीर्थ।

प्रयागराजेस्वर–पु० [सं०] प्रयाग वट के पास स्थित शिवालय।

प्रयागवड–पु० [सं० प्रयाग-वट] प्रयाग का प्रसिद्ध वट वृक्ष।

प्रयागिनी–पु० [सं० प्राज्ञ] पंडित।

प्रयास–पु० [सं०] १ किसी कठिन कार्य के लिये किया जाने वाला उद्योग, श्रम, कोशिश, प्रयत्न। २ मेहनत या श्रम से निर्मित वस्तु, श्रम साध्य कार्य।

प्रयुंजणी (बी)–क्रि० प्ररूपित करना।

प्रयुक्त–वि० [सं०] १ कार्य या व्यवहार में लिया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ। २ संलग्न। ३ नियुक्त, नामजद किया हुआ। ४ प्रेरित, उकसाया हुआ।

प्रयुत–वि० [सं०] दश लाख। –पु० दश लाख की संख्या।

प्रयोग–पु० [सं०] १ किसी कार्य में लगना क्रिया। २ अभ्यास प्रयास। ३ इस्तेमाल, काम में लेना क्रिया। उपभोग। ४ वैज्ञानिक अनुसंधान के पश्चात् नवीन आविष्कार का परीक्षण। ५ इस परीक्षण से सिद्ध वस्तु को समझाने की क्रिया। ६ औचित्य जानने की क्रिया। ७ राजनीति में साम-दाम आदि का अवलंबन। ८ उचित रूप से कार्य करने की विधि या ढंग। ९ तांत्रिक उपचार। १० व्याकरण में क्रिया पद का नाम। ११ अभिनय, नाटक। १२ औषध योजना, उपचार। १३ उपकरण, औजार। १४ कार्य का अनुष्ठान, प्रारंभ। १५ तरकीब, युक्ति, उपाय। १६ परिणाम प्रतिफल। १७ घोड़ा। १८ प्रथा। —शाला–स्त्री० वैज्ञानिक परीक्षण सिद्ध करने का विभाग।

प्रयोगी–वि० [सं० प्रयोगिन्] १ व्यवहार में लेने योग्य। २ प्रयोग करने वाला, प्रेरक।

प्रयोजक–वि० [सं०] १ प्रयोग या अनुष्ठान कर्त्ता। २ काम में लगाने वाला, प्रेरक।

प्रयोजन–पु० [सं०] १ मतलब, आशय, अभिप्राय। २ उद्देश्य लक्ष्य।

प्ररय–पु० [सं० प्र-रय] वेग, गति।

प्ररहा–पु० [सं० प्रहार] युद्ध, लड़ाई, आघात।

प्ररूढ–वि० [सं०] १ आगे या ऊपर उठा हुआ। २ उगा हुआ।

प्ररूप–पु० [सं०] १ आदर्श वस्तु, व्यक्ति या प्राणी। २ व्याख्या।

प्ररूपक–पु० [सं०] व्याख्याकार। प्रतिपादक। समझाने वाला।

प्ररूपणा–स्त्री० [सं०] कथन, वक्तव्य। प्रतिपादन।

प्ररूपणी (बी)–क्रि० [सं० प्ररूपणम्] १ कथना। २ प्रतिपादन, व्याख्या करना। ३ समझाना। ४ स्थापित करना, स्थापना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्ररोप–पु० [सं०] तीर, बाण।

प्ररोह–पु० [सं०] अंकुर।

प्ररोहणो (बो)–क्रि० [सं० प्ररोहणम्] १ उदय होना, उठना। २ अंकुरित होना, उगना।

प्रलंद–देखो 'पुरंदर'।

प्रळंब, प्रलंब–वि० [सं० प्रलंब] १ नीचे की ओर लटकता हुआ लंबा। २ बड़ा लम्बा। ३ सुस्त। ४ दीर्घ सूत्री। –पु० १ बलराम द्वारा मारा गया एक दैत्य। २ लटकाव, झुलाव। ३ शाखा, डाली। ४ कण्ठहार। ५ फूल माला। ६ स्त्री के कुच। ७ जस्ता, सीसा।

प्रलंबन–पु० [सं० प्रलंबनम्] सहारा, अवलंबन।

प्रलंबी–पु० [सं० प्लवंग] १ बन्दर, मर्कट। २ देखो 'प्रलंब'।

प्रलंभन–पु० [सं० प्रलंभ] छल, कपट, धोखा।

प्रळ–देखो 'पळ'।

प्रळइ, प्रळउ, प्रलइ, प्रलउ–देखो 'प्रळय'।

प्रलपन–पु०[सं०प्रलपनम्] १ वार्तालाप, बातचीत। २ संभाषण। ३ गप्प-शप्प। ४ प्रलाप, बकवाद।

प्रळयकर–वि०[सं०प्रलय-कर]प्रलय मचाने वाला, विनाशकारी।

प्रळय–पु० [सं० प्रलय] १ न रहने की स्थिति व अवस्था, लय, विलीन। २ पृथ्वी व दृश्य जगत का जल में विलीनीकरण। कल्पांत में संसार का नाश। ३ कोई बड़ा विनाश होना। ४ भयंकर प्राकृतिक प्रकोप के कारण जन धन की भारी क्षति। ५ संहार, विनाश, ध्वंस। ६ साहित्य में एक सात्विक अनुभाव। ७ मूर्च्छा, बेहोशी। ८ मृत्यु, मौत। —कार–पु० नाश, विनाश, ध्वंस, संहार।—काळ–पु० संसार के नाश का समय, कल्पांत। विनाश की घड़ी। —काळी–वि० विनाशकारी। —झाळ–पु० प्रलयकाल की ज्वाला अग्नि। विनाशकारी अग्नि।

प्रळयांतक–पु० [सं०] चौसठ भैरवों में से एक।

प्रळयानळ–पु० [सं० प्रलय अनिल] प्रलयकाल की वायु।

प्रळाद–देखो 'प्रहलाद'।

प्रलाप–पु० [सं० प्रलाप] १ वार्तालाप, संवाद। २ व्यर्थ की बकवाद। ३ विलाप, रुदन।

प्रलापक–वि० [सं० प्रलापक] प्रलाप करने वाला। विलाप करने वाला। –पु० एक प्रकार का सन्निपात रोग।

प्रलेप–पु० [सं० प्रलेपः] १ लेपन, उबटन। २ मरहम।

प्रळे–देखो 'प्रळय'। —कार='प्रळयकार'। —झळ='प्रळयझळ'।

प्रळेदातार–पु० [सं० प्रलयदातार] महादानी, बड़ा दान करने वाला।

प्रळेमेघ–पु० [सं० प्रलयमेघ] प्रलय के समय भयंकर वर्षा करने वाले मेघ।

प्रलोक–देखो 'परलोक'।

प्रळोणो (बो)–क्रि० [सं० प्रलोठनम्] १ लौटना-पौटना। २ धारण करना।

प्रलोप–पु० [सं०] लोप।

प्रलोभ–पु० [सं०] अत्यन्त लोभ, अधिक लालच।

प्रलोभक–वि० [सं०] अधिक लालच देने या करने वाला।

प्रलोभन–वि०[सं०] १ लोभ, लालच। २ लालसा, तीव्र इच्छा। ३ आकर्षण।

प्रळोभी–वि० [सं० प्रलोभिन्] १ लोभी, लालची, लालायित रहने वाला। २ आकर्षित होने वाला।

प्रळो–देखो 'प्रळय'।

प्रल्लय–देखो 'प्रळय'।

प्रल्लाद, प्रल्हाद–देखो 'प्रहलाद'।

प्रवंग–पु० [सं०] घोड़ा, अश्व।

प्रवंचक–वि० [सं०] ठग, धोखेबाज, चोर, धूर्त।

प्रवंचना–स्त्री० [सं०] ठगी, धोखा, चोरी, धूर्तता।

प्रव–देखो 'परव'।

प्रवचन–पु० [सं०] १ किसी विषय को समझाने के लिए दिया जाने वाला वक्तव्य। २ व्याख्यात्मक भाषण। ३ धार्मिक विषयों का उपदेश।

प्रवत–पु० पानी, जल।

प्रवदारण–देखो 'प्रविदारण'।

प्रवयण–पु०[सं०]१ बैल हांकने का डंडा, प्रेरणिका। २ चाबुक। ३ अंकुश।

प्रवर–वि० [सं०] १ महिमान्वित। महिमा वाला। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ मुख्य, प्रधान। ४ आयु में सबसे बड़ा। ५ वरिष्ठ। –पु० १ गोत्र प्रवर्तक ऋषि। २ पूर्व, पुरुष। ३ संतति, वंशज, संतान। ४ वंश, कुल। ५ अग्नि संस्कार का मंत्र विशेष।

प्रवरत–पु० [सं० प्रवर्त] कार्यारंभ, प्रारंभ।

प्रवरतक–वि० [सं० प्रवर्तक] १ किसी कार्य या बात को शुरू करने वाला। २ किसी कार्य की प्रेरणा देने वाला। ३ किसी मत को चलाने वाला। ४ किसी सिद्धान्त को प्रचलित करने वाला। ५ कार्य का संचालक। ६ उत्साह देने वाला। ७ गति देने वाला। ८ नया आविष्कार करने वाला।

प्रवरतणी (बी)–क्रि० [सं० प्रवर्तनम्] १ फैलना, प्रवृत्त होना। २ लेन-देन में आना, व्यवहार में आना। चलन में आना।

प्रवरताणो (बो)–क्रि० [सं० प्रवर्तनम्] १ फैलाना, प्रवर्तन कराना। २ व्यवहार में लाना, चलाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रवह–पु० [सं०] १ धारा। २ पवन, हवा। ३ सात प्रकार के पवनों में से एक।

प्रवहण–पु० [सं० प्रवहणम्] १ पर्दादार गाड़ी, पालकी या डोली। २ जहाज, नौका, पोत।

प्रवाण–देखो 'प्रमाण'।

प्रवाणी–देखो 'परवाणी'।

प्रवाड़–देखो 'प्रवाड़ो'।

प्रवाड़मल्ल (मल्ल)–पु० योद्धा, वीर।

प्रवाड़ि–स्त्री० प्रदक्षिणा, परिक्रमा।

प्रवाड़ो, प्रवाड–पु० [सं० प्रवाद] १ युद्ध, लड़ाई, संग्राम। २ वीरतापूर्ण कार्य, बहादुरी का काम। ३ शौर्य, पराक्रम। ४ कीर्ति, यश वर्धक कार्य। ५ कीर्ति, यश। ६ विजय, जीत। ७ दैविक, चमत्कारिक कार्य।

प्रवाद–पु० [सं० प्रवादः] १ वार्तालाप, संवाद। २ बातचीत। ३ अफवाह, जनश्रुति। ४ वर्णन। ५ शब्दोच्चारण। ६ निन्दा।

प्रवाळ–देखो 'प्रवाळ'।

प्रवाळक–वि० [सं०] १ लाल, रक्ताभ। २ प्रवाल के रंग का।

प्रवाळड़ो, प्रवाळियो–देखो 'प्रवाळ'।

प्रवाळी–पु० [सं० प्रवालम्] १ नवीन पत्ते, कोंपल, किसलय। २ देखो 'प्रवाळी'।

प्रवास–पु० [सं०] १ परदेश या विदेश में निवास, परदेश-वास। २ देश निर्वासन।

प्रवासी–पु० [सं० प्रवासिन्] १ यात्री, पथिक, बटोही। २ परदेश में बसने वाला।

प्रवाह–पु० [सं०] १ पूर्ण वेग से बहने वाली बड़ी जल धारा। २ जल का बहाव। ३ जल या किसी द्रव पदार्थ के बहाव की तेज गति। ४ नदी। ५ सोता। ६ गति, गमन, चाल। ७ किसी कार्य आदि का निरन्तर चलने वाला क्रम। ८ स्नान। ९ दान।

प्रवाहणो (वो)–क्रि० [सं० प्रवाहनम्] १ जल धारा में बहाना। २ रुके हुए को गति देना।

प्रवाहिका–स्त्री० [सं०] पेट का एक रोग विशेष।

प्रवाही–वि० [सं० प्रवाहिन्] जो प्रवाह में बह रहा हो। जिसमें प्रवाह हो।

प्रवित (ति, त्त, त्ती)–देखो 'पवित्र'।

प्रविदारण–पु० [सं० प्रविदारणम्] युद्ध, लड़ाई।

प्रविसणो (वो)–क्रि० [सं० प्रविश] प्रवेश करना, घुसना।

प्रविस्ट (स्ठ)–पु० [सं० प्रविष्ट] प्रवेश, दाखला। –वि० १ प्रवेश किया हुआ, घुसा हुआ। २ अन्दर गया हुआ। ३ संलग्न। ४ समाहित।

प्रवीण–वि० [सं०] १ किसी कार्य में दक्ष, निपुण। २ चतुर, बुद्धिमान। ३ गाने-बजाने का कलाकार। ४ कार्य का अच्छा जानकार। –पु० १ पंडित। २ कवि। ३ वीणावादक।

प्रवीणता–स्त्री० निपुणता, चतुराई, दक्षता। बुद्धिमानी।

प्रवीत–देखो 'पवित्र'।

प्रवीन–देखो 'प्रवीण'।

प्रवीर–पु० [सं० प्रवीरः] वीर पुरुष, बहादुर व्यक्ति, योद्धा।

प्रवेस–पु० [सं० प्रवेश] १ किसी के अन्दर जाने की क्रिया या भाव। घुसना क्रिया। २ अन्तर्निवेस। ३ समावेश। ४ गति, रसाई, जानकारी। ५ दूसरे के काय में दखल। ६ किसी कार्य में संलग्नता। ७ रंगमंच पर पात्र की उपस्थिति। ८ द्वार। ९ सूर्य का किसी राशि में संक्रमण। —द्वार–पु० प्रवेश करने का रास्ता, द्वार।

प्रवेसक–वि० [सं० प्रवेशक] १ प्रवेश करने या घुसने वाला। २ प्रवेश कराने या घुसाने वाला।

प्रव्रज्या–स्त्री० [सं०] गृहस्थाश्रम छोड़कर संन्यास लेना।

प्रवृत्त–वि० [सं० प्रवृत्त] १ कहीं लगा हुआ, झुका या मुड़ा हुआ। २ किसी में संलग्न।

प्रवृत्ति–स्त्री० [सं० प्रवृत्ति] १ मन की वृत्ति। मनोदशा। २ वृत्ति का किसी ओर झुकाव, लगाव। ३ प्रवाह, बहाव। ४ झुकाव। ५ उन्नति, बढ़ती। ६ उत्पत्ति। उद्गम। ७ उदय, प्राकट्य। ८ आरंभ। ९ लगन, रुझान। १० चालचलन, आचरण। ११ काम धंधा। १२ भाव, अर्थ। १३ सांसारिक विषयों में अनुरक्ति। १४ वृत्तान्त, हाल। १५ प्रारब्ध, भाग्य। १६ बोध। १७ हाथी का मद। १८ जीवनयापन का ढंग। १९ यज्ञ, पूजादि धार्मिक कार्य।

प्रवृद्ध–वि० [सं० प्रवृद्ध] १ पूर्ण बूढ़ा, वृद्ध। २ वृद्धि युक्त। ३ फैला हुआ, विस्तृत। ४ अहंकारी, अभिमानी। –पु० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

प्रसंग(घ)–पु० [सं० प्रसङ्ग] १ अनुराग, आसक्ति। २ संसर्ग, संपर्क। ३ संबंध, रिश्ता। ४ मेल-मुलाकात। ५ अनुचित संबंध, लगाव। ६ वार्त्ता, विषय। ७ विवादग्रस्त व चर्चा का विषय। ८ संभोग, मैथुन। ९ मौका, अवसर। १० प्रकरण। ११ हेतु, कारण।

प्रसंगी (घी)–वि० [सं० प्रसंगिन्] १ जिसका प्रसंग चल रहा हो। २ प्रसंग युक्त। ३ सम्बन्धी, रिश्तेदार। ४ अनुरक्त, आसक्त। ५ संभोग करने वाला।

प्रसंध–पु० शरीर की रचना. शरीर का गठन।

प्रसंसक–वि० [सं० प्रशंसक] तारीफ या प्रशंसा करने वाला, प्रशंसक।

प्रसंसणो (वो)–क्रि० [सं० प्रशंसनम्] तारीफ या प्रशंसा करना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसंसा–स्त्री० [सं० प्रशंसा] १ अच्छे कार्य या गुणों की बड़ाई, तारीफ, श्लाघा। २ यश, कीर्ति। ३ स्तुति।

प्रसण–१ देखो 'प्रसन्न'। २ देखो 'प्रस्न'। ३ देखो 'पिसण'।

प्रसणांण, प्रसणायण–देखो 'पिसण'।

प्रसणी–स्त्री० [सं० पृश्निः] श्रीकृष्ण की माता देवकी का एक नामान्तर। २ देखो 'प्रस्नि'।

प्रसणीगब्भ–देखो 'प्रस्निगर्भ'।

प्रसत–वि० प्रकट, प्रत्यक्ष, जाहिर। –पु० [सं० पृषत्] १ जल या किसी द्रव पदार्थ की बूंद। कतरा। २ दाग, धब्बा। ३ चित्तीदार हिरण।

प्रसतर–देखो 'प्रस्तर'।

प्रसतानो–देखो 'प्रस्थानो'।

प्रसतार–देखो 'प्रस्तार'।

प्रसताव–देखो 'प्रस्ताव'।

प्रसथांण–देखो 'प्रस्थान'।

प्रसद (घ)–स्त्री० [सं० पृषत्] १ नदी। २ देखो 'प्रसिद्ध'। ३ देखो 'प्रसिद्धि'।

प्रसन–१ देखो 'प्रसन्न'। २ देखो 'प्रस्न'। ३ देखो 'पसंद'।

प्रसनता–देखो 'प्रसन्नता'।

प्रसना–स्त्री० [सं० प्रसन्ना] मदिरा, शराब।

प्रसनाइ (ई)–देखो 'प्रसन्नता'।

प्रसनोतर, प्रसनोसर–देखो 'प्रस्नोत्तर'।

प्रसन्न–वि० [सं०] १ खुश, हर्षित, आनन्दित। २ संतुष्ट। ३ पवित्र, शुद्ध। ४ निर्मल, स्वच्छ। ५ चमकीला। ६ साफ, स्पष्ट। ७ सत्य, सही। ८ शुभ। ९ कृपालु। १० बोधगम्य। —**मुख**–वि० जिसका चेहरा खुशी से खिला रहता हो। हंसमुख।

प्रसन्नता–स्त्री० [सं०] १ खुशी, हर्ष, आनन्द। २ संतुष्टि। ३ निर्मलता। ४ कृपा, अनुग्रह।

प्रसन्नांध–पु० [सं०] घोड़ों का एक रोग।

प्रसन्नियगब्भ–देखो 'प्रस्निगर्भ'।

प्रसन्नी–वि० प्रसन्न होने वाली, खुश रहने वाली। –स्त्री० [सं० पृश्निः] श्रीकृष्ण की माता का एक नाम।

प्रसपन्ना–देखो 'पुस्पधन्वा'।

प्रसभ–पु० [सं० प्रसभम्] १ हठ, दुराग्रह। २ छल, कपट।

प्रसम–पु० [सं० प्रशम] १ शांति। २ शमन, उपशम।

प्रसमन–पु० [सं० प्रशमन] शांति, शमन।

प्रसर–अव्य० [सं० प्रसर] १ शीघ्र, जल्दी। २ निरंतर, लगातार। –पु० १ वेग, गति, तेजी। २ निरंतर चाल। ३ अभिवृद्धि, विकास, प्रगति। ४ विस्तार, फैलाव। ५ वात, पित्त आदि दोषों का संचार, घटाव-बढ़ाव। ६ व्याप्ति। ७ राशि, समूह। ८ प्रधानता।

प्रसरणी (वी)–देखो 'पसरणी' (वी)।

प्रसव–पु० [सं०] १ प्रजनन क्रिया। २ उत्पत्ति, जन्म। ३ बच्चा। ४ पुष्प, फूल।

प्रसवणी (वी)–क्रि० [सं० प्रसवनम्] १ बच्चा उत्पन्न करना, जनना, जन्म देना। २ उत्पन्न करना, पैदा करना।

प्रसस्त–वि० [सं० प्रशस्त] १ प्रशंसनीय। २ प्रशंसित। ३ सर्वोत्तम, श्रेष्ठ। ४ कृत-कृत्य। ५ स्पष्ट, साफ। ६ विस्तृत, चौड़ा।

प्रसस्ति–स्त्री० [सं० प्रशस्ति] १ प्रशंसा, बड़ाई। २ यश, कीर्ति। ३ कीर्ति के रूप में लिखित पत्र, कविता या गीत। ४ कीर्तिगान, विरुदावली।

प्रसांण–देखो 'पिसण'।

प्रसांत–वि० [सं० प्रशान्त] १ चंचलता रहित, स्थिर, शांत। २ शांत व निश्चल वृत्ति वाला। ३ वशीभूत, दमनित। –पु० एशिया व अमेरिका के बीच का एक महासागर।

प्रसांति–स्त्री० [सं० प्रशांति] शांति, स्थिरता।

प्रसाख, प्रसाखा–स्त्री० [सं० प्रशाखा] किसी बड़ी शाखा की शाखा, उपशाखा।

प्रसाच–देखो 'पिसाच'।

प्रसाद–पु० [सं०] १ देव प्रतिमा के आगे चढ़ाया जाने वाला मीठा पदार्थ आदि, नैवेद्य। २ नैवेद्य स्वरूप या साधुओं, भक्तों के भोजनार्थ बनाया हुआ खाद्य पदार्थ। ३ देवता या गुरु के अनुग्रह से प्राप्त वस्तु। ४ उपकार, भलाई। ५ अनुग्रह, कृपा। ६ वरदान। ७ कारण। ८ भोजन। ९ काव्य का सुबोधगम्य होने का गुण। १० एक मात्रिक छन्द विशेष। ११ देखो 'प्रासाद'।

प्रसादक–वि० [सं०] १ अनुग्रह करने वाला। २ आनन्द बढ़ाने व प्रसन्न करने वाला।

प्रसादी–स्त्री० १ नैवेद्य। २ प्रसाद के रूप में प्राप्त वस्तु। ३ नैवेद्य के रूप में बांटा जाने वाला पदार्थ। ४ तीर्थ यात्रा से लौटकर किया जाने वाला बड़ा भोज।

प्रसाधन–पु० [सं० प्रसाधनम्] १ सजावट का सामान। २ सजावट। ३ शृंगार। ४ शृंगार की सामग्री। ५ कंघी। ६ वेश।

प्रसार–पु० [सं०] फैलाव, विस्तार।

प्रसारणी (वी)–क्रि० १ स्पर्श कराना, छुआना। २ देखो 'पसारणी' (वी)।

प्रसिटि, प्रसिटी–पु० [सं० श्रेष्ठ] पति।

प्रसिद्ध–वि० [सं०] १ विख्यात, मशहूर। २ जिसकी ख्याति हो। ३ जिसे ज्यादा लोग जानते हों। ४ देखो 'प्रसिद्धि'।

प्रसिद्धता–स्त्री० [सं०] १ ख्याति, प्रसिद्धि। २ प्रभावपूर्ण होने की अवस्था। ३ यश, कीर्ति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसिद्धि–स्त्री० [सं०] १ प्रसिद्ध होने की अवस्था, ख्याति। २ यश, कीर्ति। ३ सजावट, शृंगार। ४ सफलता।

प्रसिध–१ देखो 'प्रसिद्ध'। २ देखो 'प्रसिद्धि'।

प्रसिधि प्रसिधी–देखो 'प्रसिद्धि'।

प्रसुन–देखो 'प्रसून'।

प्रसू–स्त्री० [सं०] माता, जननी।

प्रसूत–वि० [सं०] १ उत्पन्न, पैदा, जनित। २ संजात। –पु० १ संतान, औलाद। २ देखो 'प्रसूति'। ३ देखो 'प्रसूता'।

प्रसूता–स्त्री० [सं०] जच्चा स्त्री।

प्रसूति–स्त्री० [सं०प्रसूतिः] १ प्रसव, जनना क्रिया। २ उद्भव। ३ संतान। ४ उत्पत्ति, पैदावार। ५ माता, जननी।

प्रसूतिका–स्त्री० [सं०] जच्चा।

प्रसून–पु० [सं०] १ पुष्प, फूल। २ कमल। ३ कली। ४ फल।

प्रसेणिय, प्रसेणी–स्त्री० घोड़ी।

प्रसेव–देखो 'प्रस्वेद'।

प्रसेनजीत–पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा।

प्रसेव–देखो 'प्रस्वेद'।

प्रस्कन्न–पु० [सं०] घोड़ों का एक रोग।

प्रस्ट–देखो 'प्रिस्ट'।

प्रस्टवस–स्त्री० [सं० पृष्टवंश] रीढ़ की हड्डी।

प्रस्टा–वि० [सं० पृष्टा] प्रश्न पूछने वाला।

प्रस्टि–पु० [सं० प्रष्टि] तीन घोड़ों के रथ का एक घोड़ा।

प्रस्ठ–देखो 'प्रिस्ठ'।

प्रस्ठोदय–पु० [सं० पृष्ठोदय] पीठ की ओर उदय होने वाली छः राशियां।

प्रस्तर–पु० [सं०] १ पत्थर, चट्टान। २ चौरस जगह, मैदान। ३ सेज, शय्या। ४ फूल-पत्तों की सेज। ५ रत्न। ६ देखो 'प्रस्तार'।

प्रस्तांनो–देखो 'प्रस्थानो'।

प्रस्ताऊ–देखो 'प्रस्तावू'।

प्रस्तार–पु० [सं०] १ प्रस्ताव, फैलाव। २ चौरस जमीन, मैदान। ३ पिंगल के नव प्रत्ययों में से प्रथम।

प्रस्ताव–पु० [सं०] १ अवसर, मौका। २ समय। ३ विचारार्थ कही जाने वाली बात। ४ चर्चा, जिक्र, वर्णन। ५ प्रकरण, अध्याय। ६ भूमिका, उपक्रम। ७ आरंभ, शुरूआत। ८ सलाह, मशविरा। ९ विषय, प्रसंग। १० अभिनय से पूर्व का प्रसंग। परिचय।

प्रस्तावक–वि० [सं०] १ प्रस्ताव करने वाला। २ प्रस्ताव करने योग्य।

प्रस्तावना–स्त्री० [सं०] किसी विषय या पुस्तक का प्रारंभिक वक्तव्य, भूमिका।

प्रस्तावि–देखो 'प्रस्ताव'।

प्रस्ताविक–वि० [सं०] प्रस्ताव संबंधी, प्रस्ताव का। –पु० १ काव्य का एक भेद। फुटकर काव्य। २ पूर्वापर संबंध रहित वार्तालाप।

प्रस्तावित–वि० [सं०] जिसका प्रस्ताव किया गया हो, जो प्रस्ताव के लिये रखा गया हो।

प्रस्तावू–वि० १ प्रस्ताव के तौर पर कहा हुआ। २ प्रस्ताव के ढंग का। ३ प्रस्ताविक।

प्रस्तावो–देखो 'प्रस्ताव'।

प्रस्तुत–वि० [सं०] १ तैयार, मौजूद, उपस्थित, वर्तमान। २ जो समीप या सामने हो। ३ आरंभ किया हुआ। ४ पूर्ण। ५ वर्णित। –पु० प्रस्तुत विषय।

प्रस्तुतांकुर, प्रस्तुतालंकार–पु० [सं०] एक अर्थालंकार।

प्रस्थांन–पु० [सं० प्रस्थानम्] १ कूच। २ गमन, यात्रारंभ, रवानगी। ३ सेना का कूच, प्रयाण। ४ चढ़ाई। ५ जाना क्रिया।

प्रस्थांनो–पु० [सं० प्रस्थानं] १ यात्रा में साथ ले जाने का सामान। २ किसी मुहूर्त को साधने के लिये उक्त सामान को यात्रा से पूर्व कहीं पर रखने की क्रिया।

प्रस्थापन–पु० [सं०] १ रवानगी, विदाई। २ स्थापना, सिद्ध करना, स्थापित करना।

प्रस्थाव–देखो 'प्रस्ताव'।

प्रस्न–पु० [सं० प्रश्न] १ वह वाक्य या शब्द जो कुछ जानने के लिये किसी को कहा गया हो, सवाल। २ वह सवाल जिसका जवाब अभीष्ट हो। ३ उत्तर पाने के लिये कही गई बात। ४ परीक्षा में पूछने की बातें। ५ समस्या। ७ न्यायालय में होने वाले विचारणीय विषय।

प्रस्नि–स्त्री० [सं० पृश्नि] श्रीकृष्ण की माता देवकी का एक नाम। —**गरभ**–पु० श्रीकृष्ण। —**भद्र**–पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।

प्रस्नोतर, प्रस्नोत्तर–पु० [सं० प्रश्नोत्तर] सवाल-जवाब का सिलसिला।

प्रस्नोतरी, प्रस्नोत्तरी–स्त्री० १ प्रश्न और उत्तर की सूची या पुस्तिका। २ प्रश्न व उत्तर दोनों होने वाली वस्तु।

प्रस्रवणी (नी)–स्त्री० [सं० प्रस्रंसनी] निरन्तर पानी बहते रहने वाली योनि (वैद्यक)।

प्रस्रगद्वार–पु० [सं० प्रस्रगद्वार] सूर्य।

प्रस्राव–पु० [सं० प्रस्राव] १ झरना। २ पेशाब, मूत्र।

प्रस्वास–पु० [सं० प्रश्वासः] १ नथने से बाहर आई हुई श्वास। २ नथने से सांस निकलने की क्रिया।

प्रस्वेद–पु० [सं०] पसीना।

प्रस्सरणी (वी)–देखो 'पसरणी' (वी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रह–पु० [सं० प्रभा] १ सूर्योदय का प्रकाश। २ देखो 'पह'। ३ देखो 'प्रहर'।

प्रहगळ–देखो 'प्रगाळ'।

प्रहगाळियो–देखो प्रगाळियो'।

प्रहत–वि० [सं०] (स्त्री० प्रहतणे) १ मारा हुआ, प्रताड़ित। २ घायल किया हुआ।

प्रहर–पु० [सं०] १ दिन-रात का आठवां भाग। २ समय का मान विशेष। ३ समय।

प्रहरण–पु० [सं० प्रहरणम्] १ अस्त्र-शस्त्र। २ आयुध, हथियार। ३ आक्रमण, हमला। ४ प्रहार, चोट। ५ युद्ध।

प्रहरी–पु० [सं०] १ पहरा देने वाला, पहरेदार, चौकीदार। २ घंटा बजाने वाला।

प्रहळाद–पु० [सं० प्रह्लाद] १ हिरण्यकश्यप के पुत्र भक्तराज प्रह्लाद। २ अत्यन्त हर्ष एवं आनन्द।

प्रहळादपुर–पु० [सं० प्रहलाद पुर] विष्णु।

प्रहसत, प्रहस्त–पु० [सं० प्रहस्त] रावण का एक अमात्य व सेना पति।

प्रहा–पु० धनुष।

प्रहार–पु० [सं०] आघात, चोट। वार।

प्रहारक–वि० [सं०] चोट व आघात करने वाला।

प्रहारण–पु० [सं०] प्रहार व चोट करने की क्रिया।

प्रहारणी–वि० १ प्रहार करने वाला। २ मारने वाला।

प्रहारणो (बो)–क्रि० १ प्रहार करना, मारना। २ चोट या आघात करना।

प्रहारि, प्रहारी–वि० [सं० प्रहारिन्] १ प्रहार, चोट या वार करने वाला। २ मारने वाला। ३ देखो 'प्रहार'।

प्रहास–पु० [सं०] १ अट्टहास। २ प्रहसन, हंसी, मखौल। ३ शिव। ४ स्वामिकार्त्तिकेय का एक अनुचर। ५ तलवार। ६ एक मात्रिक छन्द विशेष।

प्रहुंची–देखो 'पुणची'।

प्रहुस–देखो 'प्रहरस'।

प्रहेति–पु० [सं०] एक राक्षस।

प्रह्लाद–देखो 'प्रहळाद'।

प्रांखणो (बो)–क्रि० [सं० पोषणम्] तोरण द्वार या गृह द्वार पर दूल्हे या दुल्हिन का स्त्रियों द्वारा स्वागत व अगवानी करना।

प्रांगण–पु० [सं० प्रांगणम्] मकान के बीच या सामने की खुली जमीन, आंगन।

प्रांचणा–देखो 'पांचणा'।

प्रांचाळी–देखो 'पांचाळी'।

प्रांची–देखो 'पुणची'।

प्रांचो–देखो 'पुणचो'।

प्रांछ–देखो परांत'।

प्रांण–पु० [सं० प्राण:] १ श्वास, प्रश्वास, सांस। २ हृदयस्थ प्राण वायु। ३ जीवन शक्ति। ४ शरीरस्थ पंच प्राण वायु। ५ बल, शक्ति, पौरुष। ६ जीव, आत्मा। ७ पवन, वायु। ८ प्राण के समान प्रिय वस्तु या कोई जीव। ९ मित्र। १० प्रेमी माशूक। ११ पाचन शक्ति। १२ ब्रह्मा। १३ विष्णु। १४ ब्रह्म, परमेश्वर। १५ इन्द्रिय। १६ समय का एक मान विशेष। १७ गंध रस, बोल। १८ प्रयाण। १९ प्रतिभा। २० महत्वाकांक्षा। —**अधार, आधार**='प्राणाधार'। —**इस्ट**–पु० दोस्त, मित्र। पति। —**कस्ट**–पु० मृत्यु के समय प्राणों को होनें वाला कष्ट। —**गुर**–पु० बड़ा बलवान। —**घात**–पु० वध, हत्या। आत्मघात। —**घातक, घाती**–वि० वधिक, हत्यारा, प्राण लेने वाला। आत्महत्या करने वाला। —**चंड**–वि० वीर बहादुर। —**जिहांन**–पु० वायु, पवन। —**त्याग**–पु० मृत्यु। अवसान। —**दंड**–पु० मृत्युदण्ड। —**दांन**–पु० प्राणों की रक्षा। प्राणों का बलिदान। युद्ध। मारने या वध करने लायक प्राणी को दिया जाने वाला क्षमादान। —**दाता**–वि० मरणासन्न को जिंदा करने वाला। —**धन**–वि० प्राणों के समान प्रिय। पति। —**धार**–वि० प्राणधारी, जीवित। —**धारण**–पु० शिव। प्राण रक्षा का भाव। —**धारी**–पु० जीव, प्राणी। —**नाथ**–पु० पति, स्वामी। प्राणों का स्वामी।—**नास**–पु० अवसान, मृत्यु। —**नासक**–वि० मारने वाला, हत्यारा। —**पत, पति, पती**–पु० स्वामी, मालिक। पति खाविंद। —**प्यारो, प्रिय, वल्लभ**–वि० अत्यन्त प्रिय, परमप्रिय। परमप्रिय व्यक्ति। पति। —**वांन**–वि० जिसमें प्राण हो। —**वायु**–स्त्री० प्राण। जीव। श्वास, सांस। आक्सीजन।—**संकट**–पु० बड़ी भारी विपत्ति। प्राणों के जाने लायक स्थिति। —**हर**–वि० प्राणों का हरण करने वाला। प्राणघातक। यम। —**हरण**–पु० प्राण लेने की क्रिया या भाव। यमराज। —**हरणी**–स्त्री० प्राण लेने वाली। प्राणों को खतरे में डालने वाली। मृत्यु, मौत।

प्रांणदा–स्त्री० [सं०] हरीतकी, हर्रे।

प्रांणनाम–पु० [सं० प्राणनाम] हंस।

प्रांणपूर–वि० पूर्ण शक्तिशाली।

प्रांणप्रतिस्टा, प्रांणप्रतिस्ठा–स्त्री० [सं० प्राण-प्रतिष्ठा] १ प्राण धारण कराना। २ देवमूर्ति की विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार द्वारा की जाने वाली स्थापना।

प्रांणप्रद–वि० [सं० प्राणप्रद] १ प्राणदाता। २ स्वास्थ्य-वर्द्धक।

प्रांणबस्टीक–पु० [सं० वृष्टिक-प्राण] मयूर, मोर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रांणमयकोस–पु० [सं० प्राणमयकोश] पांच कर्मेन्द्रिय और पांच प्राणों के समूह का नाम।

प्रांणयात्रा–स्त्री० [सं० प्राणयात्रा] १ श्वास-प्रश्वास के आने-जाने की क्रिया। २ प्राणी के जीवित रहने की चेष्टायें। ३ आजीविका।

प्रांणयोनि–पु० [सं० प्राणयोनि] १ परमेश्वर। २ वायु, हवा।

प्रांणसंतोख–पु० [सं० प्राणसंतोष] हर्रे, हरीतकी।

प्रांणसंदेह–पु० प्राण रहने का सन्देह।

प्रांणसरीर–पु० [सं० प्राणशरीर] १ वह सूक्ष्म शरीर जो मनोमय, विज्ञान और क्रिया का कारण माना गया है। २ ईश्वर, परमेश्वर।

प्रांणांत–पु० [सं० प्राणांत] अवसान, मृत्यु।

प्रांणांतक–वि० १ प्राणों का अन्त करने वाला। २ हत्यारा, वधिक। ३ मौत के जैसा कष्ट देने वाला।

प्रांणाघात–पु० [सं० प्राणाघात] वध, हत्या।

प्रांणातिपात–पु० जीव हिंसा, हत्या।

प्रांणात्मा–स्त्री० [सं०] प्राणात्मा, जीवात्मा।

प्रांणाधार–वि० [सं० प्राणाधार] जिस पर प्राण आधारित हों, जिसके बिना प्राण न रहे। –पु० १ प्रेम पात्र। २ स्त्री का पति।

प्रांणायाम–पु० [सं० प्राणायाम] श्वास को नियंत्रित करने की यौगिक क्रिया विशेष।

प्रांणायामी–वि० १ प्राणायाम संबंधी। २ प्राणायाम करने वाला।

प्रांणासण (न)–पु० [सं० प्राणासन] १ योग के चौरासी आसनों में से एक। २ तांत्रिक साधना में एक प्रकार का आसन विशेष।

प्रांणाहुति–स्त्री० [सं० प्राणाहुति] पांच ग्रासों के रूप में पांच प्राणों को दी जाने वाली आहुति।

प्रांणि–१ देखो 'प्रांणी'। २ देखो 'प्रांण'। —**मंडळ**='प्राणी-मंडळ'।

प्रांणिय, प्रांणियड–१ देखो 'प्रांणी'। २ देखो 'प्रांण'।

प्रांणियौ, प्रांणी, प्रांणीढ़ौ–वि० [सं० प्राणिन्] पांचों प्राणों को धारण करने वाला, प्राणवान, जिसमें प्राण हों। जीव धारी। –पु० १ जल-थल व नभ में विचरण करने वाले विभिन्न योनियों के जीव। २ मनुष्य, व्यक्ति। ३ प्रत्येक परिवार के सदस्य। ४ पति-पत्नी। —**मंडळ**–पु० जीव, जन्तु व वनस्पतियों वाला जल-थल व आकाश का भाग।

प्रांणेय–पु० [सं० प्रणयी] पति।

प्रांणेस–पु० [सं० प्राणेश] १ प्राणों का स्वामी। २ पति, खाविंद।

प्रांणेसर (सुर, स्वर)–पु० [सं० प्राणेश्वर] १ प्राणों का स्वामी, मालिक। २ परमप्रिय व्यक्ति। ३ पति।

प्रांत–पु० [सं० प्रांत] १ किसी देश या राष्ट्र का कोई भाग, क्षेत्र। २ संघीय शासन की कोई इकाई। ३ राज्य। ४ सीमा, हद। ५ किनारा, छोर। ६ किसी के निवास स्थान के आस-पास का क्षेत्र।

प्रांन–देखो 'प्रांण'।

प्रांनी–देखो 'प्रांणी'।

प्रांमणड़ी, प्रांमणी–देखो 'पांमणी'।

प्रांमणौ (बौ)–देखो 'पाणौ' (बौ)।

प्रांमती–वि० प्राप्त करने वाला।

प्रांसु–वि० [सं० प्रांशु] ऊंचा, लंबा, बड़ा। –पु० लंबे डील-डौल का आदमी।

प्रांहणौ, प्रांहुणौ–देखो 'पांमणौ'।

प्राकम–देखो 'पराक्रम'।

प्राकमी–१ देखो 'पराक्रमी'। २ देखो 'पराक्रम'।

प्राकांम, प्राकांमिया–स्त्री० [सं० प्राकाम्य] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।

प्राकार–पु०[सं०] १ चाहर दीवारी, आहते की दीवार। २ गढ़, किला। ४ देखो 'प्रकार'।

प्राकिरत–देखो 'प्राकृत'।

प्राकथन–पु० [सं०] १ पहले कही हुई बात, पूर्व कथन। २ प्रस्तावना, भूमिका।

प्राकृत–वि० [सं० प्राकृत] १ प्रकृति का, प्रकृति संबंधी। २ असली, स्वाभाविक। ३ प्रकृतिजन्य। ४ स्वतःनिर्मित। ५ मामूली, साधारण। ६ अशिक्षित, अनपढ़। ७ तुच्छ, क्षुद्र, नीच। ८ प्रान्तीय। ९ पूर्वकालिक। १० आदि। –स्त्री० १ बोलचाल की भाषा जो स्वतः स्फुटित होती है। २ एक प्राचीन भाषा। ३ किसी प्रांत या स्थान विशेष की बोली, लोकभाषा। अपभ्रंश रूपों से बनी भाषा। ४ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। —**प्रळय**–पु० प्रकृति का ब्रह्म में लीन होने की अवस्था। —**बंध**–पु० जन साधारण की बोली में रचित काव्य।

प्राकृतिक–वि० [सं० प्राकृतिक] १ प्रकृति संबंधी, प्रकृति का। २ प्रकृति से उत्पन्न, प्रकृतिजन्य। ३ वास्तविक, स्वाभाविक। ४ साधारण मामूली।

प्राक्रम–देखो 'पराक्रम'।

प्राक्रमी–देखो 'पराक्रमी'।

प्राक्रमीस–वि० [सं० पराक्रमीश] महान् पराक्रमी, साहसी, वीर श्रेष्ठ।

प्राग–१ देखो 'प्रयाग'। २ देखो 'पराग'।

प्रागना–देखो 'प्रग्या'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रागभाव–पु० [सं०] १ वैशेषिक-शास्त्र के अनुसार पांच प्रकार के अभावों में से पहला। २ वह पदार्थ जिसका आदि न हो अन्त न हो। अनादि। सांत पदार्थ।

प्रागवड़–देखो 'प्रयागवड़'।

प्रागज्योतिस–पु० [सं० प्राग्ज्योतिष] आसाम प्रदेशान्तर्गत काम रूप देश का प्राचीन नाम। —**पुर**–पु० इस देश की राजधानी का नगर।

प्रागै–अव्य० प्रातः, सवेरे।

प्राग्य, प्राग्यन–स्त्री० [सं० प्राज्ञ] १ बुद्धिमान, चतुर। २ पंडित, विद्वान। ३ मूर्ख, अज्ञानी। ४ कवि। ५ देखो 'प्रग्या'।

प्राघळो–वि० [सं० पुष्कल] १ उदार चित्त। २ देखो 'परगळ'।

प्राघुणक–पु० [सं०] मेहमान, अतिथि।

प्राछत–देखो 'प्राछत'।

प्राचाळो–देखो 'पोचाळो'।

प्राचि–देखो 'प्राची'।

प्राचिति–देखो 'प्राछत'।

प्राचिनबिरह–पु० [सं० प्राचीनबर्हिस्] इंद्र।

प्राची–स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा।

प्राचीन–वि० [सं०] १ पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा संबंधी। २ पूर्व की ओर मुड़ा हुआ। ३ अगला, पूर्व कथित। ४ पुरातन, पुराना। ५ ऐतिहासिक। —**बर्ह, बरह बरही, बर्ह**='प्राचिन बिरह'।

प्राचीनता–स्त्री० [सं०] पुरानापन, पुरातनता।

प्राचीनावीत–पु० [सं०] यज्ञोपवीत धारण करने का एक ढंग। रीति।

प्राचीनवीती–वि० उक्त रीति से यज्ञोपवीत धारण करने वाला।

प्राचीप–पु० [सं०] इन्द्र।

प्राचीपति–पु० [सं०] इन्द्र।

प्राचीर–पु० [सं०] किसी नगर के बाहर बनी चाहर दीवारी, शहर पनाह।

प्राच्य–वि० [सं०] १ पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा संबंधी। २ प्राचीन, पुराना।

प्राछत प्राछस, प्राछित–पु० [सं० प्रायश्चित] १ कलंक, धब्बा, दाग। २ पाप, दोष। ३ कुकर्म या भूल सुधार के लिये किया जाने वाला पश्चाताप, पछतावा। ४ पापों से छुटकारा पाने के लिये किया जाने वाला प्रायश्चित।

प्राजळ–पु० [सं० प्रजल] जल, पानी।

प्राजळणो (बो)–देखो 'प्रजळणो' (बो)।

प्राजापत्य–वि० [सं०] प्रजापति संबंधी। –पु० १ यज्ञ विशेष। २ उत्पादक शक्ति। ३ आठ प्रकार के विवाहों में से चौथा विवाह।

प्राजाळ–वि० [सं० प्रज्वलनम्] जलाने वाला।

प्राजो–पु० [सं० पराजय] (स्त्री० प्राजी) १ हार, पराजय। २ देखो 'प्राभो'।

प्राभो–वि० [सं० प्राज्ञ] (स्त्री० प्राभी) १ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष। २ प्रसिद्ध, विख्यात। ३ महान्। ४ बहुत, अपार। ५ शक्तिशाली, समर्थ। ६ वीर, बहादुर। ७ वयोवृद्ध, पूज्य। ८ अटल, दृढ़।

प्रात–अव्य० [सं० प्रातर्] सवेरे, तड़के, भोर। —**करम**–पु० नित्य कर्म। —**काळ**–पु० उषाकाल, सवेरा। —**नाथ**–पु० सूर्य, भानु। —**संध्या**–स्त्री० प्रातः कालीन संध्या, पूजा, पाठ।

प्रादुरभाव–पु० [सं० प्रादुर्भाव] १ उदय, उत्पत्ति २ आविष्कार। ३ प्रकटीकरण। ४ अवतार।

प्रादेस–देखो 'प्रदेस'।

प्राधान–वि० [सं० प्राधानिक] १ प्रधान संबंधी। २ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट।

प्रापक–पु० [सं०] हवा, पवन। –वि० प्राप्त करने वाला। प्राप्त करने योग्य।

प्रापणो (बो)–क्रि० [सं० प्र + आप्] १ प्राप्त करना। २ मिलना।

प्रापत–१ देखो 'प्राप्त'। २ देखो 'प्राप्ति'।

प्रापतरूप–पु० [सं० प्राप्तरूप] १ पंडित, विद्वान। २ कवि।

प्रापति, प्रापती–देखो 'प्राप्ति'।

प्रापतीक–वि० १ प्राप्त करने वाला। प्राप्त करने योग्य। २ देखो 'प्राप्ति'।

प्राप्त–वि० [सं०] १ पाया हुआ, लब्ध, मिला हुआ। २ जीता हुआ, लिया हुआ। ३ जो प्राप्य हो, मिलने योग्य। ४ सहा हुआ। ५ आया हुआ। ६ पूर्ण किया हुआ। ७ उपयुक्त, ठीक।

प्राप्ति–स्त्री० [सं०] १ उपलब्धि, प्रापण, मिलना क्रिया। २ पहुँच। ३ आगमन। ४ अर्थागम, अर्जन। ५ हिस्सा, अंश। ६ प्रारब्ध, भाग्य। ७ अष्ट सिद्धियों में से एक। ८ आय, आमदनी। ९ अनुमान; कल्पना। १० उदय। ११ सुखागम।

प्रायचित, प्रायस्चित–देखो 'प्राछत'।

प्रारंभ–पु० [सं०] १ काम का श्रीगणेश, आरंभ, शुरूआत। २ किसी कार्य या विषय का आरंभिक अंश। ३ उपद्रव, युद्ध। ४ बड़ा कार्य। ५ वैभव। ६ जलसा। ७ तैयारी।

प्रारंभणो (बो)–क्रि० [सं० प्रारंभणम्] प्रारंभ करना, शुरू करना। चलाना।

प्रारंभिक–वि० [सं०] १ प्रारंभ का शुरूआत का। २ प्रारंभ के लिये कहा या लिखा हुआ। ३ आदि। ४ प्राथमिक। ५ प्रस्तावना के रूप में।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रारथण (णा)–स्त्री० [सं० प्रार्थन] १ प्रार्थना, विनय । २ याचना । ३ इच्छा ।

प्रारथणो (णी)–क्रि० [सं० प्रार्थनम्] १ याचना करना । २ प्रार्थना करना । विनय करना ।

प्रारथना–स्त्री० [सं० प्रार्थना] १ प्रार्थना, विनय, अर्जी । २ याचना । ३ इच्छा । —**पत्र**–पु० लिखित प्रार्थना करने का कागज, अर्जी । आवेदन-पत्र ।

प्रारथनासण (न)–पु० एक योगासन विशेष ।

प्रारथी–वि० [सं० प्रार्थी] १ प्रार्थना करने वाला, आवेदक । २ याचक । ३ विनीत ।

प्रारब्ध–पु० [सं०] १ पूर्व जन्म या पूर्व काल के शुभ-शुभ कर्म । २ उक्त कर्मों का फल । ३ भाग्य ।

प्रारब्धी–वि० [सं०] १ प्रारब्ध या पूर्व कर्म भोगने वाला । २ भाग्यशाली ।

प्रालब्ध–देखो 'प्रारब्ध' ।

प्रालेय–पु० [सं० प्रालेयम्] बर्फ, हिम ।

प्राळी–देखो 'पाळी' ।

प्रावरण–पु० [सं०] आच्छादन, आवरण, ढक्कन ।

प्रावृट–पु० [सं० प्रावृट] १ वर्षा । २ वर्षा ऋतु ।

प्राघृति–स्त्री० [सं० प्रावृति] हाथी का मद ।

प्रासंग–पु० [स०] १ जूए का निम्न भाग । २ पशु के कंधे पर रहने वाला जूए का भाग ।

प्रास–पु० [स०] १ एक प्रकार का भाला विशेष । २ देखो 'पास' ।

प्रासणो (णी)–क्रि० [सं० प्राशनम्] भोजन करना, कुछ खाना ।

प्रासन्न–देखो 'प्रसन्न' ।

प्रासरणो–पु० [सं० प्रसरणम्] १ आगे बढ़ने की क्रिया । २ प्रयाण ।

प्रासाद (दु)–पु० [सं०] १ विशाल या बड़ा भवन । २ राज भवन, महल । ३ देवमंदिर, देवालय । ४ महल, अट्टालिका । ५ देखो 'प्रसाद' ।

प्राशी–पु० [सं० पाशिन्] वरुण ।

प्रासुक–वि० चेतना शक्ति हीन (जैन) ।

प्राहइ–अव्य० [सं० प्रायः] लगभग, बहुत करके, बहुधा, अक्सर । प्रायः ।

प्राहणी–देखो 'पांमणी' ।

प्राहार–देखो 'प्रहार' ।

प्राहि, प्राहिई–देखो 'प्राहइ' ।

प्राहुण–देखो 'पांमणो' ।

प्राहुणउ, प्राहुणी–देखो 'पांमणो' ।

प्रिअमधु–देखो 'प्रियमधु' ।

प्रिउ–देखो 'प्रिय' ।

प्रिथ्वी–देखो 'प्रथ्वी' ।

प्रिथ्वु, प्रिथ्यू, प्रिथ–देखो 'प्रथु' ।

प्रिथम–देखो 'प्रथम' ।

प्रिथमी, प्रिथवी–देखो 'प्रथ्वी' । —**तळ**='प्रथ्वीतळ' —**पाळ**='प्रथ्वीपाळ' ।

प्रिथवीस–देखो 'प्रथवीस' ।

प्रिथविय, प्रिथव्वीय–देखो 'प्रथवी' ।

प्रिधा–देखो 'प्रथा' ।

प्रिधि–देखो 'प्रथ्वी' ।

प्रिधिमि, प्रिधिमी–देखो 'प्रथ्वी' ।

प्रिथी–देखो 'प्रथ्वी' । —**नाथ**='प्रथ्वीनाथ' ।

प्रिथीप–देखो 'प्रथ्वीप' ।

प्रिथीपति–देखो 'प्रथ्वीपति' ।

प्रिधु–देखो 'प्रथु' ।

प्रिधुक–देखो 'प्रथुक' ।

प्रिधुळ–देखो 'प्रथुळ' ।

प्रियगु (गू)–पु० [सं०] वृक्ष विशेष व उसके फल (गूंदी) ।

प्रियंवदु–वि० [सं० प्रियंवद] मृदुभाषी । मीठा बोलने वाला ।

प्रिय–वि० [सं०] (स्त्री० प्रिया) १ प्यारा, वल्लभ । २ सुन्दर, मनोहर । ३ हर्षप्रद, आनन्ददायक । –पु० १ पति, खाविंद । २ प्रेमी । ३ स्वामी, मालिक । ४ दामाद, जमाता । ५ जाति विशेष का हिरण । ६ आनन्द हर्ष । ७ दो लघु मात्रा का नाम । —**काम**–वि० हितैषी, शुभेच्छु । —**गण**–पु० प्रिय लगने वाले सदस्य । दो लघु की मात्रा का नाम । —**पात्र**–वि० प्रेम या प्यार करने योग्य । प्रेम पात्र ।

प्रियतम–वि० [सं०] (स्त्री० प्रियतमा) सर्वाधिक प्रिय, सबसे अधिक प्यारा । –पु० १ पति, भर्ता । २ आशिक, प्रेमी । ३ स्वामी, मालिक । ४ ईश्वर । ५ मित्र, दोस्त, सखा ।

प्रियदाहि–स्त्री० प्रियदाह ।

प्रियव्रत–पु० [सं० प्रियव्रत] १ स्वायंभुव मनु के पुत्रों में से एक । २ एक राजा ।

प्रियभद्र–पु० [सं०] श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम ।

प्रियभासण–पु० [सं० प्रियभाषण] मधुर संभाषण, मीठे बोल ।

प्रियभासी–वि० [सं० प्रियभाषी] मधुर भाषी, मधुर भाषा बोलने वाला ।

प्रियमधु–पु० [सं०] बलराम का एक नामान्तर ।

प्रियमरु–पु० [सं० प्रियमरुस्थल] मरुस्थल का प्रेमी, ऊंट ।

प्रियमेळउ–पु० [सं० प्रियमिलाप] प्रिय का मिलाप, मिलन ।

प्रियवलका–स्त्री० [सं० प्रियवल्लिका] रामवेलि ।

प्रियवादनी–वि० मधुर भाषिनी । –स्त्री० मालती ।

प्रियवादी–वि० [सं० प्रियवादिन्] मधुर भाषी ।

प्रियवादिका–स्त्री० एक बाजा विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रियसंदेस–पु० [सं० प्रियसंदेश] शुभ संदेश, खुश खबरी।

प्रिया–स्त्री० [सं०] १ प्रेयसी, नायिका। २ स्त्री, पत्नी। ३ माया। ४ छोटी इलायची। ५ खबर। ६ दो रगण का एक वर्ण वृत्त। ७ चमेली। —**अधर**–वि० मधुर। –पु० प्रियतमा के ओठ।

प्रियाग–देखो 'प्रयाग'। —**बड़**, **वड़**='प्रयागवड़'।

प्रियागत–वि० [सं० प्रजागत] वंश परंपरागत।

प्रियात्मा–स्त्री० [सं०] प्रिया, भार्या।

प्रियाळ–देखो 'पियाळ'।

प्रियास–देखो 'प्रयास'।

प्रियुंज्या–वि० [सं० प्रयोजित] प्रयोजित।

प्रियु–१ देखो 'प्रिय'। २ देखो 'प्रिया'।

प्रियुड़उ–देखो 'प्रिय'।

प्रियोग–देखो 'प्रयोग'।

प्रियोजन–देखो 'प्रयोजन'।

प्रिव–देखो 'प्रिय'।

प्रिवित–देखो 'पवित्र'।

प्रिसटपरणी–स्त्री० [सं० पृष्टिपर्णी] एक प्रकार की लता।

प्रिसण, प्रिसणांण–देखो 'पिसण'।

प्रिसिधि–देखो 'प्रसिद्धि'।

प्रिस्ट, प्रिस्ठ–वि० [सं० पृष्ट] पूछा हुआ, जो पूछा गया हो। –पु० [सं० पृष्ठ] १ पत्र, कागज, पन्ना। २ लिखे या छपे कागज का एक भाग। ३ पीठ।

प्री, प्रीउ–देखो 'प्रिय'।

प्रीउड़ी, प्रीउडो, प्रीऊ, प्रीऊड़ी, प्रीऊडो–देखो 'प्रिय'।

प्रीछ्यल–देखो 'परीक्षित'।

प्रीछणी (बो)–क्रि० [सं० परि+ईक्षणम्, पृच्छ] १ समझना। २ प्रतीति करना, विश्वास करना। ३ पूछना। ४ देखो 'परखणी' (बो)।

प्रीछ्यल–देखो 'परीक्षत'।

प्रीत, प्रीतड़ली, प्रीतड़ी–देखो 'प्रीति'।

प्रीतधारी–वि० [सं०] प्रीति करने वाला।

प्रीतम, प्रीतमी–देखो 'प्रियतम'।

प्रीति, प्रीती, प्रीतो–स्त्री० [सं० प्रति] १ प्रेम, स्नेह, प्यार, ममता। २ स्त्री-पुरुष की परस्पर आसक्ति इश्क, मुहब्बत। ३ अनुराग। ४ आनन्द, हर्ष। ५ इष्ट या अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति का सुख। संतुष्टि। ६ मैत्री, दोस्ती। ७ कामदेव की स्त्री रति की सौत का नाम। ८ फलित ज्योतिष के २७ योगों में से चौथा योग। —**भोज**–पु० इष्ट-मित्रों व सगे-संबंधियों को दिया जाने वाला भोज।

प्रीथी–देखो 'प्रथ्वी'।

प्रीवुम, प्रीवुम–पु० [सं० प्रियद्रुम] वानर, कपि।

प्रीमि–१ देखो 'प्रेम'। २ देखो 'प्रेमी'।

प्रीय–देखो 'प्रिय'। —**मधु, मधू**='प्रियमधु'।

प्रीया–देखो 'प्रिया'।

प्रीयारी–देखो 'प्यारी'।

प्रीयु, प्रीयुड़ी, प्रीव–देखो 'प्रिय'।

प्रीसणी (बो)–क्रि० [सं० परिविश्] परोसना, भोजन कराना।

प्रूंचाळी, प्रूचाळी–देखो 'पौचाळी'।

प्रूढ़–देखो 'प्रौढ़'।

प्रेक्षक–वि० [सं०] १ दर्शक। २ जांच व परीक्षा करने वाला।

प्रेख–स्त्री० [सं० प्रेक्षा] आज्ञा।

प्रेत–पु० [सं०] (स्त्री० प्रेतण, प्रेतणी) १ मरा हुआ मनुष्य। २ मनुष्य के मरने के बाद प्राप्त होने वाली भूतादि की अधो योनि। ३ अधोयोनि में प्राप्त कल्पित शरीर। ४ एक कल्पित देव योनि जिसका शरीर विकराल माना जाता है। ५ प्रेत, भूत। –वि० मृत, मरा हुआ। महा कृपण, कंजूस। —**अधिपति**–पु० शिव। यमराज। —**अन्न**–पु० पितरों को अर्पित अन्न। —**अस्थि**–स्त्री० मुर्दे की हड्डियां। —**ईस, ईसर, ईस्वर**–पु० शिव। यमराज। —**करम, कर्म**–पु० मृतक के पीछे किये जाने वाले संस्कार। —**ग्रह**–पु० श्मशान भूमि। कब्रिस्तान। —**चारो**–पु० शिव। –**तरपण**–पु० मृतक के पीछे किये जाने वाले कर्म। —**दाह**–पु० दाह संस्कार। —**देह**–पु० मरने के दिन से सपिंडी तक मृतक को मिलने वाला कल्पित शरीर। —**नदी**–स्त्री० वैतरणी नदी। —**नाथ, नाह**–पु० शिव। यम। —**पक्ष, पख**–पु० श्राद्ध पक्ष। —**पत, पति, पती**–पु० यमराज। शिव। —**पिंड**–पु० मृतक के पीछे किया जाने वाला पिंडदान। —**पुर**–पु० यमपुरी। श्मशान भूमि। —**भाव**–पु० मृत्यु, मौत। —**भूम, भूमि, भोम**–स्त्री० श्मशान भूमि। मरघट। —**मेध**–पु० मृतक कर्म विशेष। —**राज**–पु० यमराज। —**लोक**–पु० यमलोक। —**वन**–पु० श्मशान भूमि। —**सरीर**–पु० मृतक को प्राप्त होने वाला कल्पित अधोयोनि का शरीर। —**स्राद्ध**–पु० मृतक के पीछे एक साल में किये जाने वाले सोलह श्राद्ध।

प्रेतम–देखो 'प्रियतम'।

प्रेताधिप–पु० [सं०] यमराज।

प्रेतासिनी–स्त्री० [सं०] मृतकों को खाने वाली देवी।

प्रेम–पु० [सं०] १ स्नेह, प्रीति, ममत्व। २ किसी जीव या वस्तु के प्रति हार्दिक लगाव। ३ स्त्री-पुरुष की परस्पर आसक्ति, इश्क, मुहब्बत। ४ अनुकंपा। ५ हर्ष, प्रसन्नता। ६ एक मात्रिक छन्द विशेष। ७ आमोद-प्रमोद। –वि० कोमल, मुलायम *। —**करता**–वि० प्रेमी, आशिक। —**गरविता**–स्त्री० मान करने वाली एक नायिका विशेष। —**जळ**–पु०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रेमाश्रु। —**पात्र**–वि० जिससे प्रेम किया जाय। प्रेम करने योग्य। —**पाश**–स्त्री० प्रेम का बंधन। —**भक्ति**–स्त्री० प्रेम व्यापार में की जाने वाली भक्ति। ईश्वर को प्रेमी के रूप में देखना। —**रस**–पु० प्रेम का आनन्द। —**वारि, वारी**='प्रेमजळ'।

प्रेमदा–देखो 'प्रमदा'।

प्रेमनांनाणो–पु० माता का ननिहाल।

प्रेमनांनो–पु० माता का नाना।

प्रेमलेसा, प्रेमलेस्या–स्त्री० [सं० प्रेमलेश्या] मनुष्य की दया, निस्वार्थ एवं विवेकमय वृत्ति।

प्रेमातुर–वि० [सं०] प्रेम में विह्वल, आतुर, प्रेमी से मिलने को व्याकुल।

प्रेमालाप–पु० १ प्रेम की बातें। २ प्यार की बातें।

प्रेमास्रु–पु० [सं० प्रेमाश्रु] अधिक प्रेम या प्रिय के मिलने पर आने वाले हर्ष के आंसू।

प्रेमास्वारथ–स्त्री० [सं० स्वार्थ-प्रेमा] वेश्या, गणिका।

प्रेमी–वि० [सं० प्रेमिन्] १ प्रेम करने वाला, अनुरागी। २ आशिक। –पु० दोस्त, मित्र।

प्रेमो–देखो 'प्रेम'।

प्रेयसी–स्त्री० [सं०] १ प्रिय स्त्री, प्रेमिका, प्रिया। २ स्त्री, भार्या। ३ हरीतकी, हर्रे।

प्रेरक, प्रेरक्क–वि० [सं० प्रेरक] १ प्रेरणा देने वाला, संस्कार जगाने वाला। २ प्रेरणा का आधार। ३ मार्ग दर्शन या उपदेश करने वाला। ४ उत्साहित करने वाला।

प्रेरणा–स्त्री० [सं०] १ किसी कार्य में लगाने या प्रवृत्त करने की क्रिया। २ अच्छे कार्य के प्रति जागृत की जाने वाली भावना। ३ किसी कार्य के लिये मन में सहसा होने वाला विचार। ४ दबाव। ५ उत्साह, उत्तेजना। ६ भावना, प्रवृत्ति।

प्रेरणार्थकक्रिया–स्त्री० [सं० प्रेरणार्थक क्रिया] व्याकरण में क्रिया का एक रूप।

प्रेरणिका–स्त्री० १ बैलों को हांकने की लकड़ी। २ प्रेरित करने वाली।

प्रेरणो (बो)–क्रि० [सं० प्रेरणम्] १ प्रेरित करना। २ भेजना। ३ चलाना। ४ फेंकना। ५ ढकेलना, गति देना। ६ उत्साहित करना।

प्रेरित, प्रेरियोड़ो–वि० [सं० प्रेरित] १ प्रेरित किया हुआ। २ भेजा हुआ। ३ चलाया हुआ। ४ फेंका हुआ। ५ ढकेला हुआ, गतिमान किया हुआ। ६ उत्साहित किया हुआ।

प्रेषक–वि० [सं० प्रेषक] १ भेजने वाला। २ प्रस्तुत करने वाला।

प्रेषित–वि० [सं० प्रेषित] १ भेजा हुआ। २ प्रस्तुत किया हुआ।

प्रेहसी–देखो 'प्रेयसी'।

प्रेहा–स्त्री० [सं० प्र + इहा] इच्छा, आकांक्षा।

प्रैंतीस–देखो 'पैंतीस'।

प्रैत–देखो 'प्रेत'। —**करम**='प्रेतकरम'।

प्रैळाद–देखो 'प्रहळाद'।

प्रोंच–देखो 'पुराचो'।

प्रोंचो–देखो 'पुराचो'।

प्रोढ़–देखो 'प्रौढ़'।

प्रोढ़ा–देखो 'प्रौढ़ा'।

प्रोढ़ो–देखो 'प्रौढ़'।

प्रो'णो (बो)–देखो 'पोणो' (बो)।

प्रोत–देखो 'पोत'।

प्रोत्साहन–पु० [सं०] १ जोश बंधाने व उत्साहित करने की क्रिया। २ हिम्मत, साहस।

प्रोथ–पु० [सं० प्रोथम्] १ घोड़े या सूअर का नथूना। २ नितंब, चूतड़। ३ कटि प्रदेश।

प्रोथी–पु० [सं० प्रोथिन्] घोड़ा, अश्व।

प्रोयणो (बो)–देखो 'पोणो' (बो)।

प्रोयत–देखो 'पुरोहित'।

प्रोळ, प्रोळि–देखो 'पोळ'। —**पात, पत्र**='पोळपात'। —**बारह, बारहठ**='पोळबारहठ'।

प्रोळियो–देखो 'पोळियो'।

प्रोळी–देखो 'पोळ'।

प्रोवणो (बो)–देखो 'पोणो' (बो)।

प्रोसितपतिका–स्त्री० [सं० प्रोषित पतिका] पति की वियोगिनी नायिका।

प्रोह–पु० [सं०] १ हाथी का पैर। २ देखो 'पो'।

प्रोहत, प्रोहित, प्रोहित–देखो 'पुरोहित'।

प्रौंचाळ–देखो 'पौंचाळो'।

प्रौंचाळो–देखो 'पौंचाळो'।

प्रौ–देखो 'परो'।

प्रौचाळो–देखो 'पौंचाळो'।

प्रौढ़–वि० [सं०] (स्त्री० प्रौढ़ा) १ जो वृद्धावस्था के पूर्व की अवस्था में हो। परिपक्वावस्था वाला। २ परिपक्व व विकसित। पूर्ण बढ़ा हुआ। ३ बलवान, शक्तिशाली। ४ दृढ़, पक्का, मजबूत। ५ चतुर, चालाक।

प्रौढ़ता–स्त्री० [सं०] प्रौढ़ होने की अवस्था या भाव। प्रौढ़त्व। परिपक्वावस्था।

प्रौढ़ा–स्त्री० १ 'प्रौढ़' स्त्री, परिपक्वावस्था वाली स्त्री। २ काम कला में दक्ष स्त्री, नायिका (साहित्य)। ३ भगण के अधिक प्रयोग वाली गाथा (छन्द)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—अधीरा–स्त्री० एक प्रकार की नायिका । —धीरा–स्त्री०एक नायिका विशेष । —धीराधीरा–स्त्री० एक नायिका विशेष ।

प्रौढ़ौ–देखो 'प्रौढ़' ।

प्रौढ़ौक्ति–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का शब्दालंकार ।

प्रोळ, प्रोळि–देखो 'पोळ' ।

प्रोळियो, प्रौलियो–देखो 'पोळियो' ।

प्रौस्ठपदी–स्त्री० [सं० प्रौष्ठ पदी] भादव मास की पूर्णिमा ।

प्लक्ष–पु० [सं०] १ सप्त महाद्वीपों में से एक । (पुराण) २ एक प्राचीन तीर्थ ।

प्लवंग–पु० [सं०] १ बन्दर, कपि । २ अश्व, घोड़ा । ३ हिरण मृग ।

प्लवंगम्–पु० [सं०] १ एक छन्द विशेष । २ वानर । ३ मेंढ़क ।

प्लवंगेस–पु० [सं० प्लवंग+ईश] हनुमान ।

प्लव–पु० [सं०] चाण्डाल ।

प्लवग–देखो 'प्लवंग' ।

प्लावत–वि० [सं०] भरा हुआ ।

प्लीहा–स्त्री० [सं०] तिल्ली नामक रोग ।

प्लुत–पु० [सं०] १ घोड़े की एक चाल । २ व्याकरण में स्वर का एक भेद । ३ तीन मात्राओं की ताल ।

--फ--

फ-देव नागरी वर्णमाला का २२ वां व्यंजन, 'प' वर्ग का दूसरा वर्ण ।

फंक–देखो 'फांक' ।

फंकणौ (बौ)–देखो 'फाकणौ' (बौ) ।

फंकौ–स्त्री० १ मोठ, मूंग, ग्वार आदि का महीनतम चूर्ण । २ देखो 'फाकी' ।

फंग–पु० एक प्रकार का पौधा ।

फंगड़ियो–पु० रहट में, बैल हांकने के लिये बैठने का स्थान ।

फंट–पु० [सं० फांट] १ विरोध । २ पृथकता ।

फंटणौ (बौ)–क्रि० १ विरुद्ध होना । २ पृथक होना, अलग होना । ३ साथ छोड़ देना ।

फंटाई–स्त्री० १ अलग होने की क्रिया या भाव, छंटनी, पृथकता । २ बढ़ई एक औजार ।

फंटाणौ (बौ), फंटावणौ (बौ)–क्रि० १ पृथक कराना, अलग कराना । २ विभक्त कराना । ३ विरुद्ध कराना । ४ साथ छुड़वाना । ५ विपरीत पक्ष में करना ।

फंड-पु० १ ढोंग, आडंबर । २ कार्य विशेष के लिये निर्मित कोष ।

फंद–देखो 'फंदौ' ।

फंदणौ (बौ)–क्रि० १ बंधन में पड़ना । २ आफत में पड़ना । ३ उलझन में फंसना । ४ धोखे में आना । ५ कोई वस्तु किसी में धंस कर अटक जाना । ६ कार्य में बलात् अटक जाना । ७ फंसना, धंसना ।

फंदाणौ (बौ), फंदावणौ (बौ)–क्रि० १ बंधन में डालना । २ आफत में डालना । ३ उलझन में फंसाना । ४ धोखे में लेना । ५ कोई वस्तु किसी में डाल कर अटकाना । ६ कार्य में उलझाना । ७ फंसाना, धंसाना ।

फंदौ–पु० [देश०] १ बंधन । २ आफत, विपत्ति । ३ जाल, फंदा, धोखा । ४ उलझन, प्रपंच । ५ दुःख, कष्ट । ६ झगड़ा, टंटा । ७ उपद्रव, उत्पात । ८ स्त्री-पुरुष का नाजायज प्रेम संबंध । ९ रस्सी में गांठ लगा कर बनाया जाने वाला गोल घेरा । १० फांसी का फंदा ।

फंफणौ (बौ)–क्रि० प्रयत्न करना, परिश्रम करना ।

फंफाणौ (बौ), फंफावणौ (बौ)–क्रि० प्रयत्न कराना, परिश्रम कराना ।

फंफेड़णौ (बौ)–क्रि० १ तीर मारना, तीर घुसाना । २ किसी प्राणी या वस्तु को पकड़ कर जोर से हिलाना, झकझोरना ।

फंवार–स्त्री० [अ० फव्वार] १ बारीक बूंदों वाली हल्की वर्षा । २ फंवारे की जल धारा ।

फंवारौ–पु० [अ० फव्वार] १ बारीक धाराओं में पानी फेंकने का यंत्र विशेष । २ बरसात की हल्की बौछार । ३ महीन बूंदों की झड़ी ।

फंसणौ (बौ)–क्रि० [सं० पाशनं] १ बंधन में पड़ना, बंधन के वशीभूत होना । २ आजाद या मुक्त न रहना । ३ उलझन या परेशानी में पड़ना । ४ सांसरिक प्रपंचों में उलझ जाना । ५ किसी कार्य में अधिक व्यस्त होना, आसानी से न छूट

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकना। ६ किसी धोखे, जाल या षड़यंत्र में पड़ जाना, छलना में पड़ना। ७ वशीभूत या अधीन होना। ८ तीक्ष्ण वस्तु का किसी अन्य वस्तु में घुस जाना। ९ कोई वस्तु किसी अन्य वस्तु में घुस कर अटक जाना। १० पर स्त्री प्रसंग में पड़ जाना। ११ पाश या फंदे में फंस जाना। १२ पशु-पक्षियों का शिकारी के जाल में पड़ जाना। १६ तांत्रिक या किसी चमत्कारिक प्रभाव में आना।

फंसाणी (बो), फसावणी (बो)–क्रि० १ बंधन में पटकना, बंधन के वशीभूत करना। २ आजाद या मुक्त न रहने देना। ३ उलझन या परेशानी में डालना। ४ सांसारिक प्रपंचों में उलझाना। ५ किसी कार्य में अत्यधिक उलझा देना। ६ धोखे या षड़यंत्र में उलझाना। ७ वशीभूत या अधीन करना। ८ तीक्ष्ण वस्तु को किसी अन्य वस्तु में घुसा देना। ९ कोई वस्तु किसी अन्य वस्तु में घुसा कर अटका देना। १० पर स्त्री प्रसंग में पटकना। ११ पशु-पक्षियों को शिकारी के जाल में फंसाना। १२ पाश या फंदे में डाल देना। १३ तांत्रिक या किसी चमत्कारिक प्रभाव में लेना।

फ–पु० १ पाप। २ झाग, फेन। ३ पुण्य। ४ माघ महिना। ५ ध्वनि। ६ आंधी, अधड़, तूफान। ७ वर्षा। ८ भय। ९ रक्षा। १० निष्ठा। ११ बुद्धि। १२ वाणी। १३ प्रसन्नता।

फई, फईड़ी–पु० हाथ या जूते का आघात व इस आघात की ध्वनि।

फउज–देखो 'फौज'।

फउरणी (बो)–देखो 'फेरणी' (बो)।

फक–वि० [सं० स्फटिक] १ श्वेत, शुभ्र। २ स्वच्छ, साफ। –स्त्री० [अ० फक] १ भय, लज्जा, आश्चर्य आदि के कारण चेहरे पर होने वाले उदासी के चिह्न। २ ध्वनि विशेष। ३ इन्जन की ध्वनि। –अव्य० अवाक्, हतप्रभ।

फकत–अव्य० १ केवल, सिर्फ, मात्र। २ इति।

फकर–वि० [अ० फक्र] १ दीन, दरिद्र। २ निर्लोभी, संतोषी, मस्त। ३ अभिमानी, घमंडी। ४ देखो फिकर'। ५ वैरागी। –पु० १ साधु, फकीर। २ दरिद्रता।

फकारी–पु० सर्प, सांप।

फकीर–वि० [अ०] (स्त्री० फकीरणी) १ निर्धन, कंगाल। २ भिक्षुक, भिखारी। ३ संसार त्यागी, विरक्त। –पु० १ मुसलमान साधु। २ एक मुसलमान जाति। ३ साधु।

फकीरी–स्त्री० [अ०] १ निर्धनता, कंगाली। २ भिखारीपन। ३ विरक्ति, वैराग्य। ४ संन्यास। ५ साधुत्व।

फक्क–देखो 'फक'।

फक्कड़, फक्कर, फक्खड़, फक्खर–देखो 'फकर'।

फगडंड–पु० [सं० पाखण्ड] ढोंग, पाखण्ड।

फगडंडी–वि० [सं० पाखण्डी] ढोंगी, पाखण्डी।

फगडो–पु० [सं० पाखण्ड] १ ढोंग, पाखण्ड। २ टंटा, झगड़ा।

फगत–देखो 'फकत'।

फगफगणी (बो)–क्रि० १ खिलना, फलना, प्रफुल्लित होना। २ सर्वांगीण विकसित होना।

फगवा, फगुवा–पु० [सं० फाल्गुन] १ होलिकोत्सव का दिन, होली। २ होली के आमोद-प्रमोद, खेल। ३ उक्त अवसर पर दिया जाने वाला उपहार, भेंट।

फग–देखो 'फाग'।

फगुण–देखो 'फागण'।

फड़–पु० १ समूह, ढेर। २ बैलगाड़ी की छत का एक भाग। ३ बैल की मूत्रेन्द्रिय। –स्त्री० ४ चीरी हुई लकड़ी। ५ ध्वनि विशेष। ६ लम्बा पत्र।

फड़क–देखो 'फड़की'।

फड़कड़, फड़कड–पु० १ घोड़े की तेज चाल। २ इस चाल से उत्पन्न ध्वनि।

फड़कण–स्त्री० १ फड़कने की क्रिया या भाव। २ दिल की धड़कन।

फड़कणी (बो)–क्रि० [सं० स्फुरणम्] १ दिल का सामान्य से अधिक धड़कना। २ किसी अंग में स्फुरण होना, अंग फड़कना। ३ हवा से कागज आदि का उड़ना। ४ उड़ने की ध्वनि होना।

फड़काणी (बो), फड़कावणी (बो)–क्रि० १ हिलाना, डुलाना। २ हवा में उड़ाना, फहराना। ३ पक्षियों द्वारा अपने पर तथा पशुओं द्वारा अपने कानों को हिलाकर आवाज करना।

फड़की–पु० १ कपाट का एक भाग, पल्ला। २ एक पल्ले का कपाट, पाटिया। ३ किसानों से लेने का एक कर विशेष। ४ कुम्हार, सुधार आदि को खलिहान से दिया जाने वाला अनाज। ५ पतंग। ६ कंचुकी के पार्श्व भाग में रहने वाला वस्त्र। ७ सहसा बढ़ी हुई दिल की धड़कन। ८ देखो 'फड़कण'।

फड़फकणी (बो)–देखो 'फड़कणी' (बो)।

फड़ड़, फड़ड़ाट, फड़ड़ाटी, फड़ड़ाहट (टी)–स्त्री० १ वस्त्र फटने से उत्पन्न ध्वनि। २ उड़ते समय पक्षियों के पंखों से उत्पन्न ध्वनि। ३ अपान वायु की ध्वनि। ४ पशुओं के नाक से कभी-कभी होने वाली ध्वनि। ५ कोई ध्वनि विशेष।

फड़द–स्त्री० [फा० फर्द] १ सूची, तालिका। २ निमंत्रण का सूची पत्र। ३ आय-व्यय का पत्र। ४ रजाई के ऊपर का खोल, खोल का एक भाग। ५ ग्रामीण स्त्रियों के घाघरे का वस्त्र विशेष।

फड़दी–१ देखो 'फरद'। २ देखो 'फड़द'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फड़फड़–पु० ध्वनि विशेष ।

फड़फड़णो (बो)–क्रि० १ आतुर, व्यग्र, बेचैन होना । २ घबराना । ३ ध्वनि होना । ४ उद्वेलित होना । ५ पक्षियों के पर व पशुओं कानों से झटका लगने पर ध्वनि होना ।

फड़फड़ाणो (बो), फड़फड़ावणो (बो)–क्रि० १ पक्षियों द्वारा पर व पशुओं द्वारा कानों को जोर से हिलाना । २ आतुर या व्यग्र करना । ३ उद्वेलित करना । ४ ध्वनि करना ।

फड़फड़ी–स्त्री० १ झुंझलाहट । २ हिम्मत, साहस, जोश । ३ उद्वेलन । ४ जोर से झटका देने की क्रिया, फटकार ।

फड़मस–पु० फोग नामक झाड़ी का फूल ।

फड़वड़ा–स्त्री० घोड़े की तेज चाल व इससे उत्पन्न ध्वनि ।

फड़वड़ाणो (बो)–क्रि० १ घोड़े को तेज दौड़ाना । २ देखो 'फड़फड़ाणो' (बो) ।

फड़हड़–देखो 'फड़हड़ाट' ।

फड़हड़णो (बो)–क्रि० १ पशुओं की तेज चाल से नाक से आवाज होना । २ देखो 'फड़फड़णो' (बो) ।

फड़ाफड़–देखो 'फटाफट' ।

फड़ियो–पु० अनाज का फुटकर व्यापारी ।

फड़ी–स्त्री० १ लगातार मारने की ध्वनि । २ ऊंट के पैर के नीचे का भाग । ३ ऊंट के पैर का प्रहार । ४ उक्त प्रहार की ध्वनि ।

फड़ूस–पु० 'भुरट' घास के दाने ।

फड़ो–पु० ऊंट के चारों पैरों से कूदने की क्रिया ।

फचर, फचराक, फच्चर–देखो 'फाचर' ।

फजर, फजराट–स्त्री० [अ० फज्र] १ प्रातःकाल, सवेरा । २ सवेरे की नमाज ।

फजल–स्त्री० [अ० फज्ल] १ खैरियत, शांति, सुख-चैन २ कृपा, दया । –पु० ३ बुजुर्ग ।

फजीत, फजीतवाड़ो, फजीतो, फजीतो–देखो 'फजीहत' ।

फजीलत, फसीलस–पु० [अ० फजीलत] १ श्रेष्ठता, उत्तमता । २ इज्जत, प्रतिष्ठा ।

फजीहत, फजीहती–स्त्री० [अ०] १ दुर्गति, दुर्दशा । २ बदनामी ।

फजुली–देखो 'फजूल' ।

फजूल–वि० [अ० फुजूल] १ जिसकी जरूरत, आवश्यकता न हो, व्यर्थ, निरर्थक । २ जो आवश्यकता से अधिक हो, अतिरिक्त । ३ निकम्मा । ४ बेमतलब का । —**खरच**–पु० अपव्यय । —**खरची**–वि० अपव्ययी । –स्त्री० अपव्यय की दशा, अवस्था ।

फजूली–देखो 'फजूल' ।

फज्जर–देखो 'फजर' ।

फट–स्त्री० [सं०] १ एक तांत्रिक मंत्र । २ वायु या गैस भरी वस्तु फूटने की आवाज । –वि० सफेद, स्वच्छ । –क्रि०वि० १ तुरंत, शीघ्र, झट-पट । २ देखो 'फिट' ।

फटक–देखो 'स्फटिक' ।

फटकड़ी–देखो 'फिटकड़ी' ।

फटकड़ो–पु० [देश०] वस्त्र विशेष ।

फटकण–स्त्री० १ सूप से अनाज साफ करने पर निकला कचरा । २ फटकने की क्रिया या भाव ।

फटकणो (बो)–क्रि० १ फट-फट शब्द करना । २ अस्त्र-शस्त्र आदि चलाना, फेंकना । ३ पटकना, गिराना । ४ रुई को धुनकी पर धुनना । ५ लाचारी में हाथ पांव पटकना, फटकना । ६ किसी को बुरा-भला कहना । ७ सूप में लेकर अनाज साफ करना । ८ कपड़े को झटका लगाना । ९ आना, हाजर होना ।

फटकमण, फटकमणी, फटकमिणी–देखो 'स्फटिकमणि' ।

फटकाणो (बो)–क्रि० १ फट-फट शब्द करना । २ अस्त्र-शस्त्र आदि चलवाना, फेंकाना । ३ पटकाना, गिरवाना । ४ रुई को धुनकी से धुनवाना । ५ सूप से अनाज आदि साफ कराना । ६ वस्त्र के झटका लगवा कर साफ कराना । ७ बुरा-भला कहाना, फटकार लगवाना ।

फटकामिण–देखो 'स्फटिकमणि' ।

फटकार–पु० [सं० फट्+कार:] १.४९ क्षेत्रपालों में से एक । २ प्रताड़ना, डांट, झिड़की, बुरा-भला कहना, भर्त्सना । धमकी । ३ मार्मिक आघात । ४ शाप, बद्दुआ । ५ प्रहार, आघात । ६ कोप दृष्टि । ७ प्रभाव, असर । ८ पक्षियों के परों की फड़फड़ाहट । ९ झटका, धक्का ।

फटकारणो (बो)–क्रि० १ शाप देना, बद्दुआ देना । २ आघात, प्रहार या चोट करना । ३ झाड़ना, झटकना । ४ पटकना, पछाड़ना । ५ उपार्जन करना, कमाना । ६ डांट-डपट करना, धमकाना । ७ सीख या शिक्षा देना । ८ झटका देना । ९ झटका देकर दूर फेंक देना । १० रोष प्रकट करना । ११ झटके के साथ तेजी से जाना ।

फटकारियो–पु० एक ही नाली से सींचित होने वाले क्यारों में से अंतिम क्यारा ।

फटकारे–क्रि० वि० शीघ्रता से, त्वरित गति से । तुरंत ।

फटकारो–पु० १ झटका । २ झौंका, झपट्टा । ३ शाप, बद्दुआ । ४ धिक्कार, लानत । ५ फटकार, धमकी । ६ झड़ी । ७ आघात, टक्कर, प्रहार । ८ फट-फट ध्वनि । ९ फड़फड़ाहट । १० शीघ्रता, सत्वरता । ११ झाड़ पौंछ करने की क्रिया । सफाई ।

फटकावणो (बो)–देखो 'फटकाणो' (बो) ।

फटकिमणी–देखो 'स्फटिकमणि' ।

फटको–पु० १ झटका । २ फट-फट ध्वनि । ३ साफ-सफाई करने की क्रिया ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फटणो (बो)–१ देखो 'फाटणो' (बो) । २ देखो 'फंटणो' (बो) ।

फटफट–देखो 'फटाफट' ।

फटफटाणो (बो)–क्रि० १ फड़फड़ाना । २ पक्षियों का परों के और पशुओं का कानों को झटका देना । ३ फट-फट ध्वनि करना ।

फटफटियो–वि० व्यर्थ बकने वाला । –पु० मोटर साईकिल ।

फटा–पु० [सं० स्फटा] सांप का फन ।

फटाक–क्रि०वि० शीघ्र, तुरंत ।

फटाको–देखो पटाको' ।

फटाफट–क्रि० वि० १ शीघ्र, तुरंत । २ निरंतर, लगातार । –स्त्री० ध्वनि विशेष ।

फटि–देखो 'फिट' ।

फटिक–देखो 'स्फटिक' ।

फटिकमणि–देखो 'स्फटिकमणि' ।

फटित–देखो 'स्फटित' ।

फटोड़, फटोड़ो–पु० १ हवा या गैस भरी वस्तु के फूटने की आवाज । २ थप्पड़, चांटा । ३ चांटे की ध्वनि । ४ चोट, आघात की ध्वनि । ५ वस्तु के गिरने की ध्वनि ।

फट्टणो (बो)–१ देखो 'फाटणो' (बो) । २ देखो 'फंटणो' (बो) ।

फड–देखो 'फड़' ।

फडड, फडडाट–देखो 'फड़ड़ाट' ।

फडद–१ देखो 'फड़द' । २ देखो 'फरहद' ।

फडफड–देखो 'फड़फड़' ।

फडहट–देखो 'फड़हड़ाट' ।

फडहटीया–स्त्री० एक व्यावसायिक जाति ।

फडहडणो (बो)–१ देखो 'फड़हड़णो' (बो) । २ देखो 'फड़फड़णो' (बो) ।

फडहडा–देखो 'फड़हड़ाट' ।

फडियाळ–देखो 'पडियाळग' ।

फडियो, फडीयो–देखो 'फड़ियो' ।

फणंग–पु० [सं० फणिन्+अंग] शेषनाग ।

फण–पु० [सं० फण] सांप का मुख, ठोडी, फन । **—कर**–पु० सांप । **—मंडप**–पु० फन का फैलाव, या विस्तार ।

फणकार, फणकारो–स्त्री० १ बैल या घोड़े को चलाते समय अभीष्ट दिशा में मोड़ने के लिये रास या लगाम का दिया जाने वाला झटका । २ सांप की फुफकार । ३ पशुओं के सांस लेने की क्रिया । ४ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।

फणकारणो (बो)–क्रि० १ बैलों की रास या घोड़े की लगाम का झटका देना । २ फुफकारना । ३ पशुओं द्वारा श्वास लेना ।

फणगट–देखो 'फरगट' ।

फणगटो–देखो 'फागोटो' ।

फणगर–स्त्री० १ पर, पंख । [सं० फणिधर] २ सांप, नाग ।

फणगरो–स्त्री० शाक विशेष ।

फणगो–पु० पतंगा ।

फणधर–वि० [सं० फणधारिन्] फनवाला, फनधारी । –पु० १ सांप । २ शेषनाग ।

फणपंति, फणपंती–स्त्री० [सं० फण-पंक्ति] फनों की पंक्ति ।

फणपत (पति, पति पती, पत्त, पत्ति, पत्ती)–पु० [सं०फण-पति] १ सर्प, सांप । २ देखो 'फणिपति' ।

फणफण–स्त्री० १ तीर, पत्थर आदि तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि । २ उद्दण्डता, बदमाशी । ३ तुनतुनाहट ।

फणमंडप–पु० [सं० फण–मण्डप] सर्प का फैला हुआ फन ।

फणमाळ–स्त्री० [सं० फण माल] शेषनाग ।

फणस–स्त्री० [सं० पनस] कटहल का वृक्ष और उसका फल ।

फण्सहस्स–देखो 'सहसफण' । –धार='सहसफणधार' ।

फणाकार–पु० [सं० फण-आकार] १ सर्प का फन । २ सर्प, सांप, शेषनाग ।

फणाधर–देखो 'फणधर' ।

फणाळी, फणाळो–वि० फनधारी । –पु० १ शेषनाग । २ सर्प, सांप ।

फणिंद–देखो 'फणींद' ।

फणि–पु० १ गणों के प्रथम भेद गुरु का नाम । २ देखो 'फणी' ।

फणिजकुमारी–स्त्री० [सं० फणिजकुमारिका] नाग कन्या ।

फणिपति–पु० [सं० फणिन्-पतिः] १ शेषनाग, नागराज । २ वासुकिनाग ।

फणियास–पु० शृंगार में एक आसन का नाम ।

फणिफेन–पु० [सं० फणिन्-फेनः] अफीम ।

फणिराज–पु० [सं० फणिन्–राज] १ शेषनाग । २ वासुकिनाग ।

फणींद, फणींव–पु० [सं० फणींद्र] १ शेषनाग । २ नागराज वासुकि । ३ सर्प । ४ एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

फणी–पु० [सं० फणिन्] १ सांप, सर्प । २ शेषनाग । ३ एक प्रकार का बिना पत्तों का भू-फोड़ । ४ टगण के पांचवें भेद का नाम ।

फणीधर–देखो 'फणधर'

फणीस–पु० [सं० फणीश] १ शेषनाग । २ सर्प, सांप ।

फणेजा–सर्व० आपका, अपना ।

फणो–देखो 'फुणो' ।

फत–देखो 'फतह'

फतन–देखो 'फितन' ।

फतवा–पु० [अ० फतवः] मुसलमान धर्माचार्य द्वारा किसी विवाद का लिखित निर्णय ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फतवी–देखो 'फतूही'।

फतह–स्त्री० [अ०] १ विजय। २ सफलता, कामयाबी। –**चांद**–पु० पगड़ी पर धारण करने का आभूषण।

फतहपेच–पु० [अ० फतह-रा०पेच] १ पगड़ी बांधने का एक ढंग। २ पगड़ी पर धारण करने का आभूषण विशेष। ३ स्त्रियों के शिर गूंथने का एक ढंग। ४ स्त्रियों के शिर का एक आभूषण विशेष।

फतूर–पु० [अ० फुतूर] १ उपद्रव, खुरापात। २ ढोंग, आडंबर पाखंड। ३ विघ्न, बाधा। ४ हानि, नुकसान।

फतूरिया–वि० १ 'फतूर' करने वाला। २ उपद्रवी, उद्दण्ड। ३ ढोंगी, पाखंडी। ४ विघ्नकारक, बाधक।

फतूह–पु० [अ० फुतूह] १ समूह, ढेर। २ विजय, जीत। ३ सफलता।

फतूहा–स्त्री० ध्वजा, झंडा, पताका।

फतूही–स्त्री० [अ० फुतूही] १ बिना आस्तीन का एक छोटा कमीज। २ सदरी, जाकेट। ३ युद्ध में लूटकर लाया माल।

फते, फतेह, फतै–देखो 'फतह'।—**चांद**='फतहचांद'।

फतैपेच–देखो 'फतहपेच'।

फदकण–पु० १ चारों ओर आहाते से घिरे खेत के प्रवेश द्वार पर खड्डा खोद कर, उस पर रखा जाने वाला लंबा सीधा पत्थर या लकड़ा। २ देखो 'फुदकण'।

फदकणी, (बी)–देखो 'फुदकणी' (बी)।

फदकूड़ी–पु० (स्त्री० फदकूड़ी) १ उछल-कूद करने वाला। २ उछलने वाला। ३ बिना मतलब की भाग-दौड़ करने वाला।

फदके (कै)–क्रि० वि० शीघ्रता से, जल्दी।

फदकी, फदड़कउ, फदड़की–पु० [देश०] १ कूद-कूद कर चलने वाला कीड़ा। २ फुदकने वाला जीव। ३ फटे हुए दूध का लच्छा। ४ रुई कातने में बीच-बीच में रहने वाला गुच्छा, फूमदा। ५ आकाश में छितराये खाली-बादल। ६ देखो 'फरड़की'।

फदफद–स्त्री० १ खिचड़ी आदि से, पकते समय उत्पन्न ध्वनि २ देखो 'फदाफद'।

फदफदाटी–पु०[देश०]१ उछल कूद। २ जोश, आवेश। ३ फुदकने की क्रिया या भाव।

फदाकी–देखो 'फदाक'।

फदाफद–क्रि० वि० फुदकते हुए, उछलते हुए, छलांगें मारते हुए।

फदाळ–पु०[देश०] 'फदाळी' लोगों द्वारा बजाने का एक बाजा।

फदाळी–स्त्री० सुन्नी मुसलमानों के अन्तर्गत एक जाति।

फदियो– पु० [अ० फदिय:] १ मध्यकाल में प्रचलित एक छोटा सिक्का। २ मांगलिक अवसरों पर कुम्हार, बढ़ई आदि को दिया जाने वाला पुरस्कार। ३ बच्चे के अंगप्रत्यंग पर लगाने का काजल का टीका। ४ स्त्रियों व कन्याओं द्वारा हथेली पर बनाई जाने वाली मेंहदी की टिकिया। ५ अपराधी को कैद से छुड़ाने के बदले दिया जाने वाला धन। ६ एक प्रकार का अर्थ दण्ड।

फन–पु० [अ०] १ गुण, खूबी। २ विद्या। ३ कला, दस्तकारी। ४ देखो 'फण'।

फनधर–देखो 'फणधर'।

फनपति–देखो 'फणपति'।

फनफनाट–पु० १ शरारत, उद्दण्डता। २ क्रोध में बड़बड़ाट। ३ फन फटकारने की क्रिया।

फनमाळ–देखो 'फणमाळ'।

फनाळी–देखो 'फणाळी'।

फनी–देखो 'फणी'।

फफरी–स्त्री० [देश०] धमकी, घुड़की। डांट, फटकार। –वि० १ नमकीन। २ चिकनी चुपड़ी।

फफवा, फफवो–पु० एक प्रकार का विषैला जीव।

फफूंदी–स्त्री० [देश०] १ स्त्रियों की साड़ी आदि में लगाने की गांठ विशेष। २ बरसात के दिनों में किसी वस्तु पर जमने वाला रुई की तह जैसा पदार्थ। ३ एक पतंगा विशेष। ४ मुकड़ी।

फफोळी–पु० [सं० प्रस्फोट] जलने या रक्त विकार से त्वचा पर बतासे की तरह होने वाला फोड़ा।

फब, फबण–वि० [सं० प्रभवन] १ सुन्दरता, छवि। शोभा। २ अच्छा लगने की अवस्था।

फबणी (बी)–देखो 'फाबणी' (बी)।

फबती–वि० उपयुक्त, प्रसंगानुसार। –स्त्री० १ उपयुक्त बात। २ व्यंग, चुटकी।

फबीलो–वि० [सं० प्रभा+रा० ईलो] (स्त्री० फबीली) सुन्दर, छैला, रसिक, शौकीन।

फबो–देखो 'फुंबो'।

फब्बणी (बी)–देखो 'फाबणी' (बी)।

फभड़ी, फमड़ी–देखो 'पांमड़ी'।

फरंग–१ देखो 'फिरंग'। २ देखो 'फिरंगी'।

फरंगट–देखो 'फरगट'।

फरंगाण, फरंगी–देखो 'फिरंगी'।

फर–स्त्री० [सं० फलम्] १ पीठ। २ पर्वत की तलहटी। ३ जलाशय की पाज का नीचला भाग। ४ पशुओं के अगले पैरों के संधिस्थल के पास का भाग। [सं० फलकं, फलम्] ५ ढाल। ६ बाण की नोक। ७ ढलवां भू-भाग, ढलाव। ८ झूठी प्रशंसा। ९ चिड़िया आदि के उड़ने से उत्पन्न ध्वनि। १० देखो 'फळ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फरक–पु० [अ०फर्क] १ अन्तर। २ दूरी, फासला। ३ पार्थक्य, पृथकता, अलगाव। ४ भेद, भिन्नता। ५ भेद-भाव, परायापन, दुराव। ६ विभिन्नता, विशेषता। ७ कमी, न्यूनता। ८ हेर-फेर, परिवर्तन। ९ असर, प्रभाव। १० हिसाब-किताब का अन्तर। ११ एक संख्या से दूसरी संख्या घटाने से निकलने वाला शेष। १२ दो वस्तुओं की विषमता। १३ सुधार। १४ उन्नति या अवनति की दशा। १५ ध्वज, झंडा।

फरकणी (बो)–देखो 'फड़कणी' (बो)।

फरकाणी (बो)–देखो 'फड़काणी' (बो)।

फरकावणी (बो)–देखो 'फड़काणी' (बो)।

फरकी–देखो 'फिरकी'।

फरकीवाड़ी, फरकेड़ी–पु० [देश०] १ भूमि आदि का हल्का सूखापन। २ कई दिन की वर्षा के बाद निकलने वाली धूप।

फरकी–वि० [देश०] १ हल्का नमकीन, चटपटा, चरपरा। २ हल्का-फुल्का। ३ कम गीला। ५ स्वच्छ, निर्मल। –पु० नमकीन खाद्य पदार्थ।

फरक्कणी (बो)–देखो 'फड़कणी' (बो)।

फरगट, फरगटी, फरगट्ट–पु०[देश०]१ तिरछी चितवन, नजारा। २ घोड़े की चाल विशेष। ३ एक प्रकार का लोक नृत्य। ४ तमक। ५ चक्कर, घुमाव, वृत्त।

फरड़–देखो 'फड़ड़'।

फरड़कणी (बो)–क्रि० १ घोड़े, गधे आदि के नाक से तेज श्वास लेने से ध्वनि होना। २ क्रोध में अनुपयुक्त बातें कहना। ३ अपान वायु की ध्वनि होना।

फरड़की, फरड़ाट, फरड़ाटी–पु० १ क्रोध में कही हुई बात, दो टूक बात। २ घोड़े, गधे आदि के नाक की तेज आवाज। ३ देखो 'फड़ड़'

फरड़ाहक, फरड़ाहट–देखो 'फड़ड़'

फरड़ी–स्त्री० [देश०] बालों या सिट्टों सहित काटे हुए बाजरी के पौधे।

फरड़ी–पु० [देश०] १ ऊंट का पदाघात। २ डंठल।

फरजंद–पु०[फ़ा० फ़र्ज़न्द] १ पुत्र, लड़का, बेटा। २ संतान।

फरज–पु० [फ़ा० फर्ज] १ कर्त्तव्य, धर्म। २ कर्म, अनिवार्य कर्म। ३ मुसलमानों के अनिवार्य धार्मिक कार्य। ४ ऋणभार। ५ काल्पनिक व अनुमानित बात। ६ एहसान। [अ० फ़र्द] हुक्मनामा, आदेश।

फरजन, फरजन्न, फरजिब–१ देखो 'फरजंद'। २ देखो 'फरज'।

फरजि, फरजी–वि० [फा० फर्जी] १ जो असली या मूल न हो, नकली। २ झूठा, असत्य, जाली। ३ कल्पित। ४ नाम मात्र का, सत्ताहीन। –पु० शतरंज का एक मोहरा।

फरण–स्त्री० [देश०] १ घूमने या चक्कर काटने की क्रिया या भाव। २ ध्वनि विशेष। ३ स्फुरण।

फरणफट–क्रि०वि० शीघ्रता से, तेजी से, त्वरा से।

फरणाट (फरणाटो)–स्त्री० १ शीघ्रता, तेजी, तेज गति। २ ध्वनि विशेष। ३ फनफनाहट।

फरणाहट–क्रि०वि० शीघ्रता से, तेजी से।

फरणी (बो)–देखो 'फिरणी' (बो)।

फरती–स्त्री० १ वेश्या, रण्डी। २ व्यभिचारिणी स्त्री।

फरद, फरदी–देखो 'फड़द'।

फरफर–स्त्री० [अनु०] १ वस्त्रादि के हवा में उड़ने की क्रिया। २ इस प्रकार उड़ने से उत्पन्न ध्वनि। ३ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

फरफराणी (बो)–क्रि० १ वस्त्रादि को हवा में उड़ाना, ध्वज का लहराना। २ किसी खाद्य पदार्थ को हल्की आंच पर सेंकना।

फरफरियो, फरफरो–वि० (स्त्री० फरफरी) १ मामूली सूखा, फरफरा। २ हल्का नमकीन व चटपटा। ३ हल्का-फुल्का। ४ पतला, क्षीण। ५ बनावटी, काल्पनिक। ६ सुडौल।

फरमाण, फरमान–पु० [फा० फर्मान] १ राज्याज्ञा, शासन का हुक्म। २ आदेश, आज्ञा-पत्र। ३ विनती, अर्ज।

फरमांबरदार, फरमांवरदार, फरमांवरदारु–वि० [फा० फर्मांबरदार] आदेश या हुक्म मानने वाला।

फरमाइस, फरमाईस–स्त्री० [फा० फर्माइश] १ आज्ञा आदेश। २ इच्छा, मांग।

फरमाणी (बो)–क्रि० [फा० फर्मान्] १ कहना। २ आज्ञा देना आदेश करना। ३ इच्छा बनाना। ४ मांग करना। ५ विनती, अरज करना। ६ कुछ करना।

फरमाबरदार–देखो 'फरमांबरदार'

फरमावणी (बो)–देखो 'फरमाणी' (बो)।

फरमास–देखो 'फरमाइस'।

फरयाद–देखो 'फरियाद'।

फरयादी–देखो 'फरियादी'।

फरर–स्त्री० १ ध्वजा, पताका आदि हवा में उड़ने की क्रिया। २ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि। ३ देखो 'फररी'।

फररणी (बो)–देखो 'फरहरणी' (बो)।

फरराट (टी)–स्त्री० फर-फर या सर-सर की ध्वनि। तीव्र गति का भाव।

फररी–स्त्री० [देश०]१ छोटी पताका, झण्डी। २ भाले पर लगी झण्डी। ३ देखो 'परसु'।

फररी–पु० १ संकेत, इशारा। २ देखो 'फररी'।

फरळणी (बो)–देखो 'फुरळणी' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फरबट–पु० १ चालाक, चतुर, चलता-पुर्जा। २ वर्तमान युग में, अपना कार्य साधन में चतुर।

फरमाण–देखो 'फरमाण'।

फरवास–पु० एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

फरवो–वि० (स्त्री० फरवी) तेज चलने वाला ऊंट, बैल या घोड़ा।

फरस–पु० [सं० स्पर्श] १ छूना क्रिया, स्पर्श। [अं० फर्श] २ पत्थर की चौकोर शिला। ३ गृह का आंगन। ४ आंगन में बिछाने की बड़ी दरी। ५ देखो 'परसु'। ६ देखो 'परसुरांम'।

फरसण–देखो 'स्परसण'।

फरसणा–स्त्री० [सं० स्पर्शनम्] १ पालन, आचरण व क्रियान्वयन। २ ग्राहय पदार्थ के रूप, रंग, गंध आदि में परिवर्तन।

फरसणी (बो)–देखो 'परसणी' (बो)।

फरसती–देखो 'फरिस्तो'।

फरसधर (धरण)–देखो 'परसुधर'।

फरसपासाण–पु० [सं० स्पर्श-पाषाण] पारस पत्थर।

फरसबंध–पु० पक्के आंगन वाला ऊंचा स्थान।

फरसरांम–देखो 'परसुरांम'।

फरसाधर(धरण), फरसाधर(धरण)–देखो 'परसुधर'।

फरसि–१देखो 'परसु'। २ देखो 'परसुरांम'। ३ देखो 'फरसी'

फरसिरांम–देखो 'परसुरांम'।

फरसी–स्त्री० [सं० परशु] १ कृषि कार्य में काम आने वाला, परसु के आकार का, एक उपकरण। २ देखो 'परसु'।

फरसीचुग्गो–पु०[सं० परशु-चुंगा] एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

फरसीजामदग्ण–पु० परशुराम का एक नामान्तर।

फरसीधर (धरण, धारण)–देखो 'परसुधर'।

फरसीसाह–पु० परशुराम का नामान्तर।

फरसूधर–देखो 'परसुधर'।

फरसो–१देखो 'परसु'। २ देखो 'परसुरांम'।

फरस्स–१देखो 'परसु'। २ देखो 'परसुरांम'। ३ देखो 'फरस'

फरस्सी–देखो' फरसी'।

फरस्सो– १ देखो 'परसु'। २ देखो 'परसुरांम'।

फरहड़णो (बो)–क्रि० [देश०] 'फड़हड़' की ध्वनि करना।

फरहद–पु० परिभद्र वृक्ष का नाम।

फरहर–देखो 'फहर'।

फरहरणो (बो)–क्रि० १ वस्त्र, पताका आदि हवा से उड़ना। २ ध्वजारोहण होना। ३ पवन चलना। ४ छलांग लगाना, कूदना। ५ हवा में तैरना।

फरहरावणो (बो), फरहरावणो (बो)–क्रि०१ वस्त्र, पताका आदि हवा में उड़ाना। २ ध्वजारोहण करना। ३ पवन चलाना। ४ छलांग लगवाना, कूदाना। ५ हवा में तैराना।

फरहरो–वि० (स्त्री० फरहरी) १ सुडौल, सुगठित, सुन्दर। २ सुबुक, छरहरा।

फरहास-देखो 'फरवास'।

फरहो–देखो 'फरहरो'।

फरांस–१ देखो 'फरवास'। २ देखो 'फांस'।

फरा–स्त्री० गुफा, कन्दरा।

फराक–स्त्री० लड़कियों के पहनने का वस्त्र, गगरी। फाक।

फराकत–देखो 'फरागत'।

फराकी, फराखो–स्त्री० [फा०फराखी] १ विशालता, विस्तृतता। २ छलांग।

फरागत–स्त्री [अ०] १ मल त्याग आदि नित्य क्रियाओं से निवृत्ति। २ किसी कार्य की पूर्णता, निवृत्ति। ३ मुक्ति, छुटकारा।

फराड़ो–पु० १ अधिक वर्षा के बाद वातावरण में कुछ सूखापन होने की दशा। २ एक वर्षा से दूसरी वर्षा के बीच का समय।

फरागो (बो)–देखो 'फिरागो' (बो)।

फरामोस–वि० [फा० फरामोश] १ भूला हुआ, विस्मृत। २ भ्रमित।

फरार–वि० [फा०] १ गायब, लुप्त। २ अपराध के बाद भागा हुआ।

फरारी–स्त्री० १ भागने, गायब या लुप्त होने की क्रिया। २ देखो 'फरार'।

फराळ–पु० फलाहार, शाकाहार।

फरास–पु० [अ० फर्राश] १ तम्बू, शामियाना, दरियां आदि सामान। २ शामियाना आदि लगाकर व्यवस्था करने वाला कर्मचारी। २ देखो 'फरवास'। —खानो–पु० तम्बू, शामियाना आदि सामान रखने का स्थान। इस सामान की देख रेख करने वाला विभाग। इस विभाग का कार्य।

फरासत–स्त्री० [अ० फिरासत] १ बुद्धि की तीव्रता, बुद्धिमता, अक्लमंदी।

फरासीपखो–पु० हवा करने का काष्ठ का एक पंखा।

फरि–१ देखो 'फररी'। २ देखो 'फरसी' ३ देखो 'परसु'।

फरियाद–स्त्री० [फा० फर्याद] १ दुःखी या त्रस्त व्यक्ति द्वारा रक्षार्थ की जाने वाली पुकार, अन्याय के विरुद्ध उठाई जाने वाली आवाज। २ विनती, अर्जी। ३ अन्यायकर्त्ता की, राजा या प्रशासन के पास की जाने वाली शिकायत।

फरियादी, फरियादू–वि० [फा० फर्यादी] १ फरियाद संबंधी। २ फरियादनुमा। ३ फरियाद करने वाला। ४ आवेदक।

फरिस्तो–पु०[फा० फिरिश्तः] १ ईश्वर का दूत। २ देवदूत। ३ विष्णु का पार्षद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फरो–१ देखो 'फरसी'। २ देखो 'फररी'। ३ देखो 'परसु'।

फरोक–पु०[अ०] १ वादी या प्रतिवादी। २ झगड़ने वाला कोई पक्ष।

फरीकैन–पु०[अ०] झगड़ने वाले दोनों या सभी पक्ष।

फरीद–वि० [अ०] अनुपम, अनोखा, अद्वितीय।

फरसरांम–देखो 'परसुरांम'।

फरूकड़ो–पु० १ इशारा, संकेत। २ फड़कन।

फरूकणो (बो)–क्रि० १ उपस्थित होना, हाजिर होना। २ आना दिखाई पड़ना। ३ देखभाल करने के लिये आना। ४ देखो 'फड़कणो' (बो)।

फरूकाणो (बो), फरूकावणो (बो)–क्रि० १ उपस्थित करना, लाना, लेकर आना। २ देखो 'फड़काणो' (बो)।

फरूकणो (बो)–देखो 'फरूकणो' (बो)।

फरेब–पु० [फा०] १ छल, कपट। २ चालाकी, धूर्तता।

फरेबी–वि० [फा०] कपटी, धूर्त।

फरेस्तो, फरेस्तो, फरैस्तो–देखो 'फरिस्तो'।

फरोई–देखो 'फरोही'।

फरोकड़ो–देखो 'फिरोकड़ो'।

फरोकत, फरोख, फरोखत–स्त्री० [फा० फरोख्त] बेचने की क्रिया, विक्रय।

फरोदस्त, फरोदस्तो–पु० [फा०] १ एक वस्त्र विशेष। २ एक प्रकार का संकर राग। ३ चौदह मात्राओं की एक ताल।

फरोळ–पु० उत्पात, उपद्रव।

फरोळणो (बो)–देखो 'फुरळणो' (बो)।

फरोही–स्त्री० पशुपालकों से लिया जाने वाला एक कर विशेष।

फरो–पु० १ नगर या ग्राम के बाहर की बस्ती। २ पर्वत की तलहटी।

फळंग–देखो 'फलांग'।

फळंगणो (बो)–देखो 'फलांगणो' (बो)।

फळ–पु० [सं० फलम्] १ वृक्ष, पौधों व लताओं के फूल के बाद लगने वाला तत्त्व, बीज, बीज का कोष। फल। २ परिणाम, नतीजा। ३ शुभाशुभ कर्मों का भुगतान। ४ शुभ कर्मों के चार परिणाम-अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष। ५ लाभ, प्राप्ति। ६ कर्मों का प्रतिकार, बदला। ७ न्याय शास्त्र के अनुसार वह अर्थ जो प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न होता है। ८ गणित की क्रिया का परिणाम। ९ फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रह, नक्षत्र की स्थिति से होने वाला सुख या दुःख। १० गुण प्रभाव। ११ प्रयोजन। १२ भाले या छुरी आदि का पैना या नुकीला भाग। १३ गौरी पूजन के लिये स्त्रियों द्वारा आटे की बनाई जानेवाली सुपारी। १४ जायफल। १५ नारियल। १६ ढाल। १७ हल की फाल। १८ चार की संख्या ※।

फळक, फळकी–पु० [सं०] १ ढाल। २ शस्त्र की धार। [अ०] ३ आकाश, आसमान। ४ देखो 'फुलकी'।

फळकू–स्त्री० १ बालू रेत। २ देखो 'फलकी'।

फळकेसर–पु० [सं० फल केशर] नारियल का वृक्ष।

फळकोस–पु० [सं० फलं+कोष] १ पुरुषेन्द्रिय। २ अंडकोश।

फळकी–पु० १ फफोला। २ देखो 'फुलकी'।

फळगट, फळगटो–स्त्री० [सं० फल+घट्ट] ग्वार, मोठ आदि की फलियों का भूसा।

फळगर–देखो 'फूलपगर'।

फळगु–देखो 'फल्गु'।

फळग्राही–पु० [सं० फलग्राहिन्] १ वृक्ष। २ फल को ग्रहण करने वाला।

फळचर–पु० [सं० फलचर] वानर, बन्दर।

फळढोकळी–स्त्री० गणगौर पूजन के लिये बनाये गये आटे के बेरनुमा दाने व वथु वे के पत्ते की पिंडियां।

फळणो (बो)–क्रि० [सं० फलम्] १ वृक्ष, पौधों व लताओं का फलों से युक्त होना, फलना। २ पुष्पित, पल्लवित व फलित होना। ३ गृहस्थ का संतान आदि से युक्त होना। ४ स्त्री का प्रसव करना। ५ किसी बात, कार्य या प्रयास का शुभाशुभ परिणाम निकलना। ६ विस्तार होना, वृद्धि होना। ७ एक संख्या का दूसरी संख्या में गुणा होना।

फळतरीढाळ–स्त्री० एक प्रकार की ढाल।

फळद–वि० [सं० फलद] फलदायक।

फळदान–पु० [सं० फलदान] १ फलों का दान। २ सगाई पर वर को वधू-पक्ष की ओर से श्रीफल देने की प्रथा।

फळदाइक, फळदाइक–देखो 'फळदायक'।

फळदात–पु० [सं० फल दातृ] फल देने वाला।

फळदायक, फळदायन–वि० [सं०] फल देने वाला, शुभ, लाभप्रद।

फळदार–वि० [सं० फलं+फा० दार] जिसके फल हों, फलों वाला।

फळद्रु–पु० [सं० फलद] वृक्ष।

फळपित, फळपिता–पु० [सं० फल पितृ] पुष्प, फूल।

फळपुहप, फळपुहाप, फळपुहुप–पु० [सं० फल+पुष्पम्] वह वृक्ष जिसके फल-पुष्प दोनों लगते हों।

फळप्रद–वि० [सं० फलप्रद] फल देने वाला, लाभदायक।

फळभूम (भूमि, भोम)–स्त्री० [सं० फल-भूमि] कर्म फल भोगने का स्थान। पृथ्वी, स्वर्ग, नरक।

फळराज–वि० पु० [सं० फलं+राजन्] फलों में श्रेष्ठ। –पु० १ तरबूज। २ खरबूजा। ३ आम।

फळसंसकार, फळसंस्कार–पु० [सं० फल – संस्कार] आकाश में किसी ग्रह के केन्द्र का समीकरण या मंद-फल निरूपण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फळसाउगाड़, फळसाउघाड़–पु० अपने समूचे गांव व निकटवर्ती गावों के लोगों को दिया जाने वाला भोज ।

फळसौ–पु० १ भवन, गवाड़ी, ग्राम या नगर का मुख्य द्वार । २ खेत, बाड़ी आदि के आहते के द्वार पर लगा का कांटों का फाटक ।

फळस्थापन–पु० [सं० फलस्थापन] सीमन्तोन्नय–संस्कार, फलीकरण ।

फळहकार–पु० [सं० फलकं–कारः] १ मुद्गर ढाल आदि बनाने वाला व्यक्ति । २ फलों को तैयार कर रखने व पेश करने वाला व्यक्ति ।

फळहळि (ळी)–स्त्री० [सं०फुल्ल पौलिका, प्र० फुल्ल प्रोलिया] पीसी हुई दाल में फल मिला कर घी में सेक कर बनाई हुई रोटी, फुल्लौरो ।

फळहिकार–देखो 'फलहकार' ।

फळहुलि–देखो 'फळहली' ।

फसां–वि० [अ०] अमुक । कल्पित ।

फलांग–स्त्री० [देश०] १ छलांग, कुदान, कूद कर जाना क्रिया । २ देखो 'फरलांग' ।

फलांगणो (बो)–क्रि० १ छलांग लगाना, कूदना, लांघना । २ बीच की सीढ़ी को छोड़कर आगे बढ़ जाना ।

फलांणसिंह–देखो 'फलांणी' ।

फलांणियो, फसांणो–वि० (स्त्री० फलांणी) अमुक, कल्पित । –पु० अज्ञात व्यक्ति या वस्तु जिसके बारे में बात कही जा रही हो ।

फळाणो (बो)–क्रि० [सं०फलम्] दो संख्याओं का परस्पर गुणन करके फल निकालना, हिसाब लगाना ।

फळादेस–पु० [सं० फलादेश] ग्रहों के प्रभाव बताने वाली बातें ।

फळाध्यक्ष–पु० सब प्रकार के फल देने वाला, ईश्वर ।

फळापेक्षा–स्त्री० [सं० फलं-अपेक्षा] फल प्राप्ति की अपेक्षा, कामना, इच्छा, संभावना ।

फळाफळ–पु०शुभाशुभ फल ।

फळायफळाय–स्त्री० बच्चे के रोने की ध्वनि ।

फळारथी–वि० [सं० फलार्थिन्] फल पाने का इच्छुक ।

फलालेन (लैन)–स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र ।

फळावट–स्त्री० गुणा करने की क्रिया, गुणा करने का परिणाम ।

फळावणो (बो)–देखो 'फळाणो' (बो) ।

फळासव–पु० [सं०] फलों का आसव, पौष्टिक औषधि ।

फळाहार–पु० [सं०] १ केवल फलों का ही आहार । २ व्रत, उपवास के दिन खाने की वस्तु ।

फळाहारी–वि० [सं०] १ केवल फल ही खाने वाला । २ फलाहार संबंधी ।

फळिकार–देखो 'फळहकार' ।

फळित–वि० [सं० फलित्] फला हुआ ।

फळितज्योतिस–पु० ज्योतिष शास्त्र का एक विभाग ।

फळियळ–वि० फलयुक्त, फलों वाला । फल सहित ।

फळी–वि० [सं० फलित्] १ फलों से युक्त, फलों वाला । २ फल लगनेवाला । –पु० १ फलों वाला वृक्ष, पेड़ । २ वृक्ष, पौधे या लता पर लगने वाला लम्बा संपुट जिसमें बीज होते हैं । फली । ३ ओढ़ने के वस्त्र के छोर पर ऐंठन दिये हुए डोरे, तन्तु । ४ शाखा, वंश ।

फळीजणो (बो)–क्रि० [सं० फलम्] १ बकरी या मादा ऊंट का गर्भवती होना । २. फलयुक्त होना ।

फळीभूत–वि० [सं० फलीभूत] सफल ।

फळोस–पु० १ मोठ, मूंग आदि की फलियों का भूसा । २ भुरट नामक घास के बीज । ३ देखो 'फळी' ।

फळूंसी–स्त्री० मोठ, मूंग आदि फलियों का छिलका ।

फळू–देखो 'फळी' ।

फलूरियो–वि० [देश०] व्यर्थ का प्रलाप करने वाला ।

फलोड़ो–पु० जलने से होने वाला फफोला ।

फळोदय–पु०[सं० फलोदय] १ फलित ज्योतिष में ग्रह-नक्षत्रों के योग से शुभाशुभ फल प्राप्ति का समय । २ स्वर्ग । ३ फल का प्रत्यक्षीकरण ।

फळौ–देखो 'फळसौ' ।

फल्गु–वि०[सं०] १ निरर्थक, बेकार, व्यर्थ । २ निस्सार । ३ क्षुद्र । ४ साधारण । ५ वसंत ऋतु ।

फल्गुन–पु० [सं०] १ इन्द्र का नाम । २ देखो 'फागण' ।

फल्गुनी–देखो 'फाल्गुणी' ।

फवज, फवज्ज–देखो 'फौज' ।

फवारो–देखो 'फंवारो' ।

फवो–देखो 'फुंबो' ।

फव्वज–देखो 'फौज' ।

फसणो (बो)–देखो 'फंसणो' (बो) ।

फसत, फसद–देखो 'फस्त' ।

फसल–स्त्री० [अ० फस्ल] १ ऋतु, मौसम । २ काल, समय । ३ निर्धारित ऋतु में पक कर तैयार होने वाली अनाज आदि की पैदावार । ४ कृषि उपज ।

फसळणो (बो)–देखो 'फिसळणो' (बो) ।

फसळी–वि० [अ० फस्ली] १ फसल का, फसल संबंधी । २ ऋतु विशेष में होने वाला । **—बुखार**–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला विषम ज्वर ।

फसाणो (बो)–देखो 'फंसाणो' (बो) ।

फसाद–देखो 'फिसाद' ।

फसादी–देखो 'फिसादी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फसावणो (बो)–देखो 'फंसाणो' (बो)।

फस्त, फस्द–स्त्री० [अ० फस्द] नस को छेद कर दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

फहम–स्त्री० [अ० फहम] १ ज्ञान, समझ। २ बुद्धि, अक्ल। ३ ध्यान, खयाल।

फहर–स्त्री० [देश०] फहरने की अवस्था, क्रिया या भाव।

फहरणो (बो)–देखो 'फरहरणो' (बो)।

फहराणो (बो), फहरावणो (बो)–देखो 'फरहराणो' (बो)।

फहरिस्त–देखो 'फैरिस्त'।

फांक, फांकड़, फांकड़ी–स्त्री० [सं० फलकं] १ ककड़ी आदि फलों का अर्धचन्द्राकार काटा हुआ खण्ड। २ नारंगी के छिलके के नीचे जुड़े रहने वाले अर्ध चन्द्राकार विभाग। ३ खरबूजे पर बनी लंबी रेखाएँ। ४ रेखा, लाइन।

फांकणो (बो)–क्रि० १ झूठ बोलना, मिथ्या भाषण करना। २ देखो 'फाकणो' (बो)।

फांको–१ देखो 'फांक'। २ देखो 'फाकी'।

फांगि–स्त्री० [देश०] व्यंजन विशेष।

फांट–स्त्री० [देश०] १ कई भागों में बांटने, विभाजन करने की क्रिया। २ पृथक या अलग करने की क्रिया। ३ बांटा या अलग किया हुआ भाग, अंश। ४ युवा बकरी जो गर्भवती न हो। ५ औषधियों के महीन चूर्ण को उबाल कर तैयार किया हुआ रस, पेय पदार्थ। ६ गठरी। ७ वह स्थान जहां मुख्य रास्ते से अन्य दिशा में कोई रास्ता मुड़ता हो।

फांटणो (बो)–क्रि० [देश०] १ बांटना, हिस्से करना, विभाग करना। २ अलग करना, पृथक करना। ३ औषधियों के चूर्ण से रस बनाना। ४ विरुद्ध या विपरीत करना।

फांटियो–पु० [देश०] रेखा खींचने या बनाने का एक प्राचीन उपकरण।

फांटी–पु० [देश०] १ भूत, प्रेत आदि से प्रभावित होने की अवस्था या भाव। २ भिन्नता, भेद। ३ विरोध, शत्रुता। ४ कचरा, भूसा। ५ पृथकता, अलगाव। ६ शाखा। ७ मुख्य रास्ते के बीच से अन्य दिशा में जाने वाला रास्ता। ८ वह स्थान जहाँ से दो रास्ते अलग-अलग होते हैं।

फांडर–स्त्री० १ बंध्या गाय या मादा ऊंट। २ केवल एक ही बार प्रसव करने वाली गाय।

फांडो–पु० [देश०] १ बड़ा छेद या सूराख। २ चोरी के निमित्त दीवार में बनाई गई सेंध। ३ हाथी की पीठ पर 'तौहरू' कसने की क्रिया या कसावट।

फाणस–पु० [सं० पनस] कटहल।

फांद–स्त्री० [देश०] १ बड़ा पेट, तोंद। २ छलांग, फलांग,

फांदणो (बो)–क्रि० १ उछलना, कूदना, लांघना। २ बंधन में डालना, जाल में फंसाना। ३ नर पशु का मादा पशु से संभोग करना।

फांदळ, फांदाळ, फांदाळी–वि० (स्त्री० फांदळी, फांदाळी) बड़े पेट या तोंद वाला।

फांदो–पु० १ कोल्हू का मुख्य फंदा, बंधन। २ देखो 'फंदो'।

फांनूस–पु० [फा० फानूस] १ एक प्रकार बड़ा दीपक, कंडील, ज्योति विशेष। २ छत में लटकाने का शीशे का गुलदस्ता जिसमें मोमबत्तियां जलाई जाती हैं।

फांफ–स्त्री० [देश०] १ छोटे पक्षियों का शिकार करने का डंडा। २ प्रयत्न, कोशिश। ३ ठण्डी व तीक्ष्ण वायु।

फांबड़ी–देखो 'पांमड़ी'।

फांस, फांसड़ी–स्त्री० [सं० पाश] १ पशु पक्षियों को फंसाने की रस्सी, फंदा। २ जाल, बंधन। ३ सूखी लकड़ी या बांस का बारीक तंतु जो कांटे की तरह चमड़ी में घुस जाता है। ४ देखो 'फांसी'।

फांसणो (बो)–क्रि० [सं० पाशन्] १ पशु या पक्षी को फंदे या जाल में फंसाना। २ फंसाना, उलझाना। ३ धोखे या जाल में लेना, फंसाना। ४ फुसला कर अपने वश में करना।

फांसियो–वि० फांसने वाला, बांधने वाला, बंधन में डालने वाला।

फांसी–स्त्री० [सं० पाश, प्रा०फासी] १ फसाने का फंदा, पाश। २ बंधन। ३ रस्सी का गोल फंदा जिसे अपराधी के गले में डालकर खींचकर प्राण दण्ड दिया जाता था। ४ एक प्रकार का प्राण दंड।

फा–पु० १ विष। २ तीर्थ। ३ बैठक, गुदा।

फाउ, फाऊ–वि० [देश०] मुफ्त। –स्त्री० पोरवाल जाति की एक वैवाहिक प्रथा।

फाकउ–देखो 'फाकी'।

फाकड़ी–देखो 'फांक'।

फाकणो (बो)–क्रि० [देश०] १ औषधि, चूर्ण, नमकीन आदि की थोड़ी मात्रा हाथ में लेकर मुंह में डालना। २ फक्की लगाना।

फाकता–देखो 'फाखता'।

फाकर–स्त्री० एक मांसाहारी जानवर।

फाका–पु० [अ० फाका:] १ व्रत, उपवास। २ लंघन। ३ अन्न या रोटी का अभाव। ४ अत्यन्त गरीबी अवस्था। —कस–वि० निर्धन, कंगाल। भूखा। व्रतधारी। —कसी–स्त्री० निर्धनता, कंगाली। अन्नाभाव की दशा। भूखा रहने की अवस्था।

फाकी–स्त्री० [फा०] १ चूर्ण या औषधि आदि की एक बार फाकने लायक मात्रा। २ इस मात्रा को फाकने की क्रिया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या भाव। ३ फल आदि की फांक। ४ सिखावट, सीख, बुद्धि भ्रमित करने वाली बात।

फाकी–पु० [देश०] १ टिड्डी के बच्चों का दल। २ देखो 'फाकी'।

फाखता–स्त्री० [फा० फाख्तः] पंडुकी नामक पक्षी।

फाग–पु० [सं० फाल्गुन] १ होली के अवसर पर खेलने का रंग आदि का खेल। २ इस अवसर या फाल्गुन में गाये जाने वाले लोक गीत। ३ फाल्गुन मास के उत्सव। ४ फाल्गुन मास में की जाने वाली शृंगारिक क्रियाएँ। ५ ओढ़नी का रंग विशेष।

फागण–पु० [सं० फाल्गुन] १ माघ मास के बाद वाला मास जिसमें होली के उत्सव चलते हैं। २ होली के गीत।

फागणियो–वि० [सं० फाल्गुन] फाल्गुन संबंधी, फाल्गुन का।
–स्त्री० स्त्रियों की ओढ़नी का एक रंग विशेष।

फागणी–देखो 'फाल्गुनी'।

फागण्यो–देखो 'फागणियो'।

फागुण–देखो 'फागण'।

फागुणियासूंग–पु० रबी की फसल के साथ होने वाले मूंग।

फागुणियो, फागुण्यो–देखो 'फागणियो'।

फागोटो–पु० फागुण का एक शृंगारिक संभाषण।

फाड़–देखो 'फाड'।

फाड़कती, फाड़खती, फाड़गतो–देखो 'फारगती'।

फाड़णो (बो)–क्रि० [सं० स्फाटनम्] १ शस्त्र, छुरी, चाकू आदि से विदीर्ण करना, चीरना। २ वस्त्र, कागज आदि को खींचकर या झटका देकर खण्डित करना, टुकड़े करना। ३ चीर-फाड़ करना, शल्य क्रिया करना। ४ किसी समूह या दल के बीच से दो भाग कर देना, बीच में से चीरते हुए पार निकल जाना। बीच में रास्ता बना देना। ५ तालाब, नदी, जलाशय को तैरकर पार करना। ६ लम्बी वस्तु के दो लम्बे विभाग करना। ७ आपस में विरोध डालना, भेद-भाव कर देना। ८ संपुट की तरह बंद वस्तु को खुला कर देना। ९ खोलना, खुली स्थिति में करना। १० अच्छे भावों के स्थान पर क्रूर या विरोधी भाव पैदा करना। ११ दूध आदि पदार्थ में अम्ल या विपरीत गुण की वस्तु का योग देकर विकृत करना, रासायनिक परिवर्तन करना। १२ मकान में सेंध लगाना। १३ दरार या विवर करना।

फाड़ो–पु० [देश०] १ खेत में दो सीताओं के बीच रहने वाली जमीन। २ किसी पदार्थ का तोड़ा या चीरा हुआ भाग। ३ खण्डित अंश। ४ भाग, हिस्सा। ५ देखो 'फाडो'।

फाचर, फाचरियो, फाचरो–पु० [देश०] १ पत्थर या लकड़ी का पतला तीक्ष्ण खण्ड, चीप। २ देखो 'पाचरो'।

फाचैं–क्रि० वि० [सं० पश्चात्] बाद में, पीछे, पश्चात्।

फाट–पु० [देश०] १ फटने की क्रिया या भाव। २ फटाव, चिराव, चीरा, दरार। ३ खण्ड, टुकड़ा।

फाटक–स्त्री० [सं० कपाट] १ बड़े भवन, आहते, कारखाने आदि का बड़ा मुख्य द्वार। २ मुख्य द्वार का कपाट। ३ दरवाजे या रास्ते में, कुत्तों आदि को रोक के लिये लगाया जाने वाला छोटा कपाट, जाली। ४ फसल को नुकसान पहुंचाने वाले मवेशियों को बंद कर रखने का स्थान।

फाटकी–स्त्री० [देश०] १ लकड़ी या लोहे आदि की पट्टी। २ देखो 'फाटक'।

फाटको–पु० [देश०] १ व्यापारिक सट्टा, जूआ। २ इस सट्टे में धन लगाने की क्रिया। ३ हानि-लाभ की अनिश्चितता वाला कार्य। ४ शस्त्र प्रहार। ५ चेजारे के बैठने का पाटिया।

फाटणो (बो)–क्रि० [सं० स्फाटनम्] १ किसी वस्तु का विदीर्ण होना, चिरना। २ वस्त्रादि साबुत न रहना, टुकड़े या बीच में छेद होना या फट जाना। ३ किसी द्रव पदार्थ में विकृति आना। ४ दरार पड़ना, तरेर आना, चिर जाना। ५ अपने पक्ष से अलग या विरुद्ध होना। ६ आंख या मुंह का खुलना, चौड़ा होना। ७ त्वचा में दरार पड़ना। ८ तितर-बितर होना। ९ मर्यादा का उल्लंघन करना। सीमा छोड़ना। १० बादल आदि मिट कर मौसम साफ होना।

फाटोड़ी–वि० (स्त्री० फाटोड़ी) फटा हुआ, फटी हालत में।

फाटो, फाट्योड़ो–वि० (स्त्री० फाटी) १ फटा हुआ, विदीर्ण। २ अश्लील, अशिष्ट।

फाड–स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का वस्त्र। २ किसी वस्तु के लंबे दो खण्डों में से एक। ३ काष्ठ या फल का लंबा खंड। फांक।

फाडणउ–वि० १ फटने वाला। २ पृथक होने वाला।

फाडणो (बो)–देखो 'फाड़णो' (बो)।

फाडसींगो, फाडासींगो–पु० [देश०] (स्त्री० फाडसींगी, फाडासींगी) लंबे व फैले हुए सींगों वाला पशु।

फाडासुपारी–स्त्री० छालिया (पान की सुपारी) का अर्धभाग।

फाडी–स्त्री० १ लकड़ी की चीप। २ देखो 'फाड'। ३ देखो 'फाडो'। (स्त्री०)

फाडो–पु० [देश०] (स्त्री० फाडी) १ लंबे और फैले हुए सींगों वाला पशु। २ असामान्य ढंग से लंबे कदम रखने वाला व्यक्ति। ३ पशु का फैला हुआ लंबा सींग। ४ काष्ठ का चीरा हुआ लंबा खण्ड। ५ छालिया का अर्धगोलाकार अंश। —वि०– अधिक फैला हुआ।

फातड़ो–पु० [देश०] हिजड़ों के साथ रहने व लाग वसूल करने वाला व्यक्ति।

फातमा–स्त्री० [अ० फातिम] मुहम्मद साहब की कन्या।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फातळो–वि० [देश०] (स्त्री० फातळी) १ कायर, डरपोक । २ देखो 'फातड़ो' ।

फातिया, फातिहा–स्त्री० [अ० फातिह] १ प्रार्थना, विनती । २ वंदना । ३ मृतक के नाम पर दिया जाने वाला चढ़ावा ।

फाथोजणो (जो)–क्रि० १ अर्थ-संकट से घबराना । २ भ्रम में पड़ जाना ।

फाथो–वि० [देश०] (स्त्री० फाथी) १ शीघ्रता करने वाला, उतावला । २ भूखा हुआ, भ्रमित ।

फाफड़ो, फाकरो–पु० [देश०] १ गेहूं की पतली रोटी । २ सूखी रोटी ।

फाफानवफड़ंद–देखो 'फोफानंदफड़ंद' ।

फाबणो (जो)–क्रि० [सं० प्रभवनम्] १ उपयुक्त स्थान पर शोभित होना, जचना । २ सुन्दर लगना । ३ उपयुक्त व अवसर अनुकूल लगना । ४ अपनी स्थिति के अनुकूल ठीक होना ।

फाबो–पु० १ पैर का पंजा । २ कोल्हू की लाट के शीर्ष में लगने का डंडा ।

फाय–स्त्री० [देश०] १ अत्यन्त लोभ, लालच । २ हाय तोबा । ३ आतुरता ।

फायदेबंद (मंद)–वि० [अ० फाइद:+फा०मंद] १ लाभदायक लाभप्रद । २ हितकर । ३ स्वास्थ्यवर्द्धक ।

फायदो–पु० [अ० फायद:] १ लाभ । २ हित, भलाई । ३ प्राप्ति आर्थिक लाभ । ४ सुधार । ५ बचत । ६ निष्कर्ष, नतीजा । ७ प्रतिशोधात्मक गुण ।

फायोफीटो–वि० [देश०] (स्त्री० फाइफीटी) हक्का-बक्का भौचक्का ।

फार–वि० [सं० स्फार] बहुत, अधिक । –स्त्री०– [सं० स्फारम्] आधिक्य, अधिकता, विपुलता ।

फारक–वि० १ हल्का-फुल्का । २ सहज, सरल । ३ जो अधिक भार-बोझ वाला न हो । ४ जिसकी चाल बोझिल न हो । ५ स्फूर्तिवाला, फुर्तिला । ६ हल्का, घटिया । —पु० [सं० स्फारकम्] १ शत्रु, दुश्मन । २ योद्धा, वीर । ३ शस्त्रधारी पैदल सिपाही । ४ बच्चों का एक खेल विशेष । ५ देखो 'फारिग' ।

फारकती–देखो 'फारखती' ।

फारकी–स्त्री० [देश०] हाथी की पीठ पर रखी जाने वाली अम्बारी विशेष ।

फारक्क–१ देखो 'फारक' । २ देखो 'फारकी' ।

फारखती, फारगती–स्त्री० [अ० फारिग+फा०खती] १ कर्ज उधार लेन-देन आदि का निपटारा, अदायगी । २ उक्त प्रकार के लेन-देन के निपटारे पर की जाने वाली रसीद । ३ छुटकारा, मुक्ति । ४ पूर्व लेन-देन के चुकता होने की लिखावट व लेख-पत्र ।

फारग–१ देखो 'फारक' । २ देखो 'फारिग' ।

फारस–वि० [सं० पारस्य] फारस देश संबंधी, फारस देश का । —पु० १ ईरान देश का पुराना नाम । २ इस देश का निवासी । ३ देखो 'फारसी' ।

फारसी–पु० [फा०] १ फारस देश का निवासी । –स्त्री० २ फारस की भाषा व लिपि । —पोस–वि० फारसी जानने वाला ।

फारिग–वि० [अ०] १ निवृत्त । २ छुटकारा पाया हुआ, मुक्त । २ पूर्ण, समाप्त । ३ मस्त, बेफिक्र ।

फारीज–पु० दण्ड स्वरूप लिया जाने का अतिरिक्त कर ।

फाळ–स्त्री० [सं० प्लव] १ छलांग, कुदान, फलांग । २ हल का नुकीला भाग । ३ हल की फाल को गरम कर अपराधी को सजा देने की एक प्राचीन क्रिया । [अ० फाल] ४ पासा फेंक कर रमल में शुभाशुभ बताने की क्रिया ।

फाल–पु० [सं० फलं, फाल:] १ मूंग, मोठ आदि की फलित होने की अवस्था । २ वस्त्र खण्ड । ३ सूती कपड़ा । ४ शस्त्र का पैना भाग ।

फालक–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

फाळका–स्त्री० [सं० प्लव] छलांग, कुदान ।

फाळको, फालको–पु० [देश०] १ आग में तेज गरम की हुई लोह की छड़ । २ अंगारा । ३ देखो 'फालो' ।

फालगुण–१ देखो 'फाल्गुन' । २ देखो 'फागण' ।

फालगुणी–देखो 'फाल्गुनी' ।

फालडी–स्त्री० १ एक प्रकार का आभूषण । २ देखो 'फाल' ।

फालणो (जो)–क्रि० [सं० फलम्] फल युक्त होना ।

फालतू–वि० [देश०] १ व्यर्थ, निरर्थक । २ अनुपयोगी । ३ जो आवश्यकता से अधिक हो, अतिरिक्त । ४ बेकार, निकम्मा ।

फालर, फालरियो, फालरो–पु० [देश०] १ बकरा । २ देखो 'फालो' ।

फाळसो, फालसो–पु० [अ० फालसा] १ एक प्रकार का वृक्ष । २ इस वृक्ष का फल ।

फालि–स्त्री० [देश०] फांक ।

फालिज–पु० [अ० फालिज] एक प्रसिद्ध वात रोग जिससे शरीर का दायां या बायां भाग निष्क्रिय हो जाता है । पक्षाघात ।

फाळियो–देखो 'फाळ' ।

फालो–पु० १ वस्त्र का टुकड़ा । २ साड़ी । ३ पहेली (मेवात) ।

फालीय–पु० एक प्रकार का आभूषण ।

फालो–पु० [देश०] जलने या चोट आदि से शरीर पर होने वाला फफोला ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फाल्गुन–स्त्री० [सं०] १ अर्जुन का एक नाम । २ अर्जुन वृक्ष । ३ फागण मास ।

फाल्गुनी–पु० [सं०] १ फाल्गुन मास की पूर्णिमा । २ पूर्वा व उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र । ३ देखो 'फाल्गुन' ।

फावड़ियो, फावड़ी, फावड़ो–पु० [देश०] मिट्टी आदि खोदने का लोहे की चद्दर का बना उपकरण विशेष ।

फावणो (बो)–क्रि० [देश०] १ फंसाना । २ अड़ाना, अटकाना । ३ सफल होना । ४ देखो 'फाबणो' (बो) ।

फास–देखो १ 'फांसी' । २ देखो 'फांस' । ३ देखो 'स्परस' ।

फासलो–पु० [अ० फासिल] दूरी, अन्तर ।

फासीगर–देखो 'पासोगर' ।

फासुअ, फासू, फासूय–वि० [सं० प्रासुक] १ साधु के ग्रहण करने योग्य । २ दोष रहित, निर्दोष । ३ व्यर्थ, फिजूल ।

फिगरणो (बो)–क्रि० [देश०] १ लाड में इतराना । २ फूलना, घमंड करना । ३ क्रोध करना, बिफरना । ४ झुंझलाना ।

फिट–पु० एक वृक्ष विशेष ।

फिफर, फिफरड़–देखो 'फैंफड़ो' ।

फिकन–वि० दुष्ट, नीच, पतित, हीन ।

फिकर–पु० [अ० फिक्र] १ चिंता, सोच । २ किसी कार्य के प्रति लगन, जागरुकता ।

फिड़–पु० [देश०] समूह, ढेर ।

फिड़कलो–स्त्री० [देश०] १ छोटा पतंगा । २ देखो 'फिरको' ।

फिड़कलो–पु० [देश०] १ बड़ा पतंगा । २ वर्षा ऋतु में होने वाला पतंगा ।

फिड़कियो–पु० [देश०] १ 'झाल' के पीछे बांधने की रस्सी । २ देखो 'फिड़को' ।

फिड़को–पु० [देश०] (स्त्री० फिड़की) १ छोटी टिड्डी या टिड्डी का बच्चा । २ पतंगा । ३ सनक ।

फिथळणो (बो)–क्रि० [देश०] १ चलचित्त होना, विचलित होना । २ घृणा करना । ३ कायर होना । ४ इन्कार होना ५ बात से मुकरना ।

फिजूल–वि० [अ०] १ व्यर्थ, निरर्थक, बेकार । २ निकम्मा, निठल्ला । ३ सारहीन, तथ्यहीन । —**खरच**–पु० अनावश्यक व्यय । —**खरची**–स्त्री० अनावश्यक व्यय की क्रिया या आदत ।

फिट–अव्य० [देश०] तिरस्कार सूचक ध्वनि, धिक् । -वि० [अं०] १ उपयुक्त सही, ठीक, मुनासिब । २ ठीक नियोजित या स्थापित । ३ नाप में ठीक ।

फिटक–स्त्री० [देश०] १ चाल, जाल, धोखा । २ कब्जा, वश, काबू । ३ जालसाजी की नीति । ४ स्वार्थ वश किसी की चाल में फंसने की क्रिया । ५ प्रभाव । ६ लज्जा । ७ देखो 'स्फटिक' ।

फिटकड़ी–स्त्री० [सं० स्फटिका] श्वेत एवं चमकीला एक खनिज पदार्थ ।

फिटकड़ो–पु० [देश०] सिर में तालु के ऊपर का स्थान ।

फिटकरयणमणि–स्त्री० स्फटिक रत्न मणि ।

फिटकरी–देखो 'फिटकड़ी' ।

फिटकार–देखो 'फटकार' ।

फिटकारणो (बो)–देखो 'फटकारणो' (बो) ।

फिटकारियो–वि० [देश०] शापित, अभिशप्त ।

फिटकारी–देखो 'फटकारी' ।

फिटकी–स्त्री० बददुआ, शाप ।

फिटळो–देखो 'फिटोळ' । (स्त्री० फिटळी)

फिटिअ–पु० [सं० स्फटी=फणो] १ सर्प, नाग । २ खटमल ।

फिटोफिट–वि० [अं० फिट] नाप में सही ।

फिटोळ–वि० [देश०] १ अवारा । २ बिगड़ैल । ३ बदचलन । ४ अविश्वनीय ।

फिटो–पु० [देश०] त्यागना, छोड़ना, क्रिया । परित्याग । –वि० (स्त्री० फिटी) १ खुला, ढीला, स्वतन्त्र । २ किसी कार्य में संलग्न । ३ उपेक्षित, नगण्य । ४ लज्जित, शर्मिन्दा ५ अपमानित ।

फितन–पु० [अ० फित्न:] १ एक प्रकार का पुष्प विशेष । २ इस पुष्प का रज, पुष्पसार ।

फितूर–देखो 'फतूर' ।

फितूराळो, फितूरो–वि० १ उपद्रवी, झगड़ालू । २ खुरापात करने वाला, खुरापाती । ३ धूर्त, कपटी, पाखण्डी, ढोंगी । ४ विघ्नकारक, बाधक । ५ हानिकारक ।

फिदकड़ो, फिदड़की, फिदड़को–देखो 'फदड़को' ।

फिदवी–वि० [अ० फिद्वी] १ आज्ञाकारी । २ स्वामिभक्त, विश्वसनीय । ३ सेवक, दास ।

फिदा–वि० [अ०] १ आसक्त, मोहित । २ वशीभूत । ३ न्यौछावर । वारि ।

फिफरड़–देखो 'फैंफड़ो' ।

फिफ्फर, फिफ्फरक–देखो 'फैंफड़ो' ।

फियो–पु० [सं० प्लीहा] पाचन संस्थान का एक अवयव । तिल्ली ।

फिरंग–पु० [अ० फ्रांक] १ पश्चिम यूरोप का एक देश । २ इस देश का निवासी । ३ अंग्रेज । ४ आतशक रोग गर्मी । ५ एक प्रकार का फूल । ६ शराब संग्रह करने का एक पात्र । ७ देखो 'फिरंगी' ।

फिरंगण–स्त्री० अंग्रेज स्त्री, गौरी स्त्री ।

फिरंगथांन–पु० अंग्रेजों का देश ।

फिरंगवाय–पु० १ एक रोग विशेष, आतशक रोग । २ घोड़े की इन्द्रियों का एक रोग ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिरंगाण–देखो 'फिरंगी'।

फिरंगी–वि० १ फिरंग देश का, फिरंग देश संबंधी। २ फिरंग रोग से पीड़ित। –पु० १ युरोप देश का निवासी, अंग्रेज। २ फिरंग देश की बनी तलवार। ३ ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष।

फिरंड–वि० [देश०] विरोधी, विपक्षी।

फिर–अव्य० [देश०] १ बाद में, अनन्तर, पीछे। २ अतिरिक्त, अलावा। ३ पुनः, और, दुबारा। ४ उपरान्त, बावजूद।

फिरकी–स्त्री० [देश०] बच्चों का खिलौना, चकरी।

फिरकी–पु० [अ० फिर्क] १. जाति, वर्ग। २ पंथ, सम्प्रदाय।

फिरड–स्त्री० [देश०] टिड्डी की आरम्भिक अवस्था।

फिरड़ी–स्त्री० [देश०] १ बन्ध्या ऊंटनी, बांझ सांड। २ देखो 'फरड़ी'।

फिरण–स्त्री० फिरने की क्रिया। –वि० फिरने वाला।

फिरणवार–वि० फिरने वाला, घुमक्कड़।

फिरणी–स्त्री० १ घूमने-फिरने की क्रिया या भाव। २ फिरने का ढंग। ३ प्रदक्षिणा, परिक्रमा। ४ परिक्रमा का मार्ग। ५ ऊंट, घोड़े आदि की चाल। ६ भ्रमण परिभ्रमण। ७ चकरी, फिरकी। ८ देखो 'फुरणी'।

फिरणो (बो)–क्रि० [सं० स्फिर] १ इधर-उधर चलना, टहलना घूमना। २ प्रातःकालीन भ्रमण करना, घूमना। ३ वृत्ताकार घूमना। गोल चक्कर लगाना। ४ दिशा परिवर्तन करना, मुड़ना, घूमना। ५ किसी स्थान पर बार-बार जाना। चक्कर लगाना। ६ किसी के चारों ओर व्याप्त होना, वृत्त बना लेना, आवेष्टित होना। ७ कार्य सिद्धि के लिये जगह जगह जाना। ८ युद्ध से भागना, पीठ दिखाना, हारना। ९ लौटना, लौट जाना। १० वादे से फिर जाना, मुकरना। ११ किसी वस्तु का वापस होना, लौटाया जाना। १२ ग्रहों के अनुसार दिनमान बदलना, शुभाशुभ योग आना। १३ रोग में सुधार होना, स्वास्थ्य सुधरना। १४ देशाटन करना। १५ व्यर्थ फिरना, भटकना। १६ परिभ्रमण करना परिक्रमा करना, प्रदक्षिणा करना। १७ छानबीन करना, खोज करना। १८ फैलना, व्याप्त होना। १९ बाधा स्वरूप सामने आना। २० खिलाफ या विरुद्ध होना। २१ चारों ओर प्रचारित होना। २२ ऐंठना। २३ शौचादि। के लिये बाहर जाना। २४ किसी धुरी या अक्ष पर चक्कर लगाना। २५ दौड़ना, सचेत होना।

फिरत–स्त्री० १ घोड़े, ऊंट आदि को ठीक चलने के लिये शिक्षित करने की क्रिया। २ शिक्षित ऊंट या घोड़े की चाल।

फिरबाज–देखो 'फेरबाज'।

फिरसत–देखो 'फैरिस्त'।

फिरसती–देखो 'फरिस्ती'।

फिरसांगणी–स्त्री० एक वृक्ष विशेष।

फिरास–देखो 'फरास'।

फिराऊ–वि० १ विरोधी, विपक्षी। २ वापस लौटाया जाने वाला।

फिराक–वि० १ तेज गति से चलने वाला। २ इधर-उधर फिरने वाला। ३ व्यर्थ फिरने का आदी। ४ अच्छी चाल वाला (ऊंट या घोड़ा) –स्त्री० १ घोड़े या ऊंट की अच्छी चाल। २ टोह, खोज। ३ ताक। ४ चिंता, फिक्र। ५ उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा। ६ देखो 'फराक'।

फिरागट–पु० १ लघु शंका (मेवात)। २ देखो 'फरागत'।

फिराणी (बो)–क्रि० [सं० स्फिर] १ इधर-उधर चलाना, टहलाना, घुमाना। २ प्रातः कालीन भ्रमण कराना, घुमाना। ३ वृत्ताकार घुमाना, गोल चक्कर लगवाना। ४ दिशा परिवर्तन कराना, मुड़ाना, घुमाना। ५ किसी स्थान पर बार-बार भेजना। चक्कर लगवाना। ६ चारों ओर व्याप्त कराना, आवेष्टित कराना। वृत्त बनवाना। ७ कार्य सिद्धि के लिये जगह-जगह भेजना। ८ युद्ध से भगाना, हराना। ९ लौटाना, वापस कराना। १० वादे से फिराना, मुकराना। ११ किसी वस्तु को वापस कराना। १२ देशाटन कराना। १३ व्यर्थ फिराना, भटकाना। १४ परिभ्रमण कराना, परिक्रमा कराना। १५ छानबीन कराना, खोज कराना। १६ फैलाना व्याप्त कराना। १७ बाधा रूप में सामने लाना। १८ खिलाफ या विरुद्ध कराना। १९ चारों ओर प्रचारित कराना। २० ऐंठाना। २१ शौचादि के लिये बाहर भेजना। २२ किसी धुरी या अक्ष पर चक्कर लगवाना। २३ दौड़ाना सचेत कराना।

फिराब–देखो 'फरियाद'।

फिराब–पु० १ चाल, गति। २ चलने की गति, क्रिया या ढंग। ३ किसी के चारों ओर खींची रेखा, घेरा, वृत्त, परिधि।

फिरावणी (बो)–देखो 'फिराणी' (बो)।

फिरास–देखो 'फरवास'।

फिरासत–स्त्री० [अ० फिरासत] १ दक्षता, प्रवीणता। २ किसी बात को शीघ्र समझने की क्रिया।

फिरिब, फिरियाब–देखो 'फरियाद'।

फिरीयादी–देखो 'फरियादी'।

फिरिस्ती–देखो 'फरिस्ती'।

फिरी–देखो 'फिर'।

फिरियादी–देखो 'फरियादी'।

फिरोकड़ी–वि० (स्त्री० फिरोकड़ी) १ अधिक घूमने-फिरने वाला, भ्रमणशील। २ घूमने-फिरने का शौकीन। ३ व्यर्थ भटकने वाला। ४ गतिशील।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फिरोज, फिरोजियो, फिरोजी, फिरोजो–पु० [फा० फिरोज] १ नीले रंग का एक नग या पत्थर। २ इस नग से मिलता जुलता एक रंग। ३ 'फिरोजशाह' द्वारा चलाया गया सिक्का।

फिरोळणो (बो)–देखो 'फुरळणो' (बो)।

फिरोळी–स्त्री० उलट-पुलट करने की क्रिया या भाव, उलट पुलट।

फिलवांण–देखो 'फीलवांन'।

फिळसो–देखो 'फळसो'।

फिलहाल–क्रि०वि० [अ०] १ अभी-अभी तो, इस समय। २ अस्थाई तौर पर।

फिळाउगाड, फिळाउघाड–देखो 'फलसाउघाड़'।

फिळियो, फिळी–देखो 'फळसो'।

फिस–अव्य० १ असफलता या अव्यवस्था सूचक ध्वनि। २ धिक्।

फिसकणो (बो)–क्रि० १ धोखा खाना। २ बदलना, मुकरना। ३ कायर या कमजोर पड़ना।

फिसड्डी–वि० [देश०] १ हर काम में पीछे रहने वाला, सुस्त, आलसी। २ कमजोर, निर्बल। ३ अकर्मण्य, निकम्मा।

फिसणो (बो)–क्रि० [देश०] १ हड्डी का संधि स्थान छोड़ना। २ द्रवित होना। ३ जीर्ण वस्त्र का घिस कर फट जाना। ४ रसदार फल का दब कर फूट जाना। ५ बदलना, मुकरना। ६ देखो 'पिसणो' (बो)।

फिसळ, फिसळण–स्त्री० [सं० प्रसरणम्] १ फिसलने की क्रिया या भाव, रपटन। २ चिकनाई जहां पर कोई वस्तु ठहर न सके। ३ दृढ़ता या ठहराव की कमी।

फिसलणो (बो)–क्रि० १ चिकनाई के कारण कोई चीज रपट जाना, खिसक जाना। २ कीचड़ आदि पर अचानक पैर पड़ जाने पर गिर पड़ना। ३ चिकने पत्थर या अन्य धातु से बने स्थान पर चढ़ कर धीरे-धीरे नीचे खिसकने, रपटने की क्रिया करना। ४ प्रवृत्त होना, लालायित होना। ५ वचन से बदलना, मुकरना। ६ दृढ़ न रहना। ७ पथ-भ्रष्ट होना। ८ देखो 'फिसणो' (बो)।

फिसाद–पु० [अ० फसाद] १ लड़ाई, झगड़ा। २ टंटा, कलह। ३ उपद्रव, बलवा, विद्रोह। ४ बिगाड़, खराबी।

फिसादिक, फिसादिय, फिसादी–वि० [अ० फसादी] १ लड़ाई झगड़ा करने वाला, झगड़ालू। २ उपद्रवी, उत्पाती। ३ दंगा करने वाला, बलवा मचाने वाला। ४ विद्रोही। ५ बिगाड़ या बरबादी करने वाला। ६ देखो 'फिसाद'।

फिहो–देखो 'फियो'।

फींकर–देखो 'फीकर'।

फींच–पु० [सं० स्फिच] मनुष्यों व पशुओं के नितम्बों के नीचे का भाग।

फींचणो (बो)–देखो 'फीचणो' (बो)।

फींचियो–पु० [देश०] दौड़ते हुए को पटकने के लिये पीछे से पैरों में अड़ाई जाने वाली टांग।

फींडो–वि० [देश०] (स्त्री० फींडी) १ चपटा। २ चपटी नाक वाला।

फीण–देखो 'फैण'।

फीणाबाटियो–देखो 'फीणाबाटी'।

फींवी–स्त्री० [देश०] छोटा टुकड़ा, विभक्त भाग।

फींफरो–देखो 'फेंफड़ो'।

फी–स्त्री० १ तिरस्कार सूचक शब्द। २ अव्यवस्था के प्रति कहने का शब्द। ३ देवता। ४ वायु। ५ हाथी। [फा०] ६ नुक्स, दोष, कमी। ७ कसर, न्यूनता। —अव्य० [अ०] प्रति, हर।

फीक–स्त्री० १ विशेष दशा में होने वाला मुख का फीकापन। २ यथेष्ट मात्रा में मीठा या नमक न होने की स्थिति।

फीकर–पु० [देश०] बकरे के पीठ के ऊपर का मांस पिंड।

फीकरियो–वि० [देश०] नीरस, रूखा, फीका।

फीकास–पु० फीकापन।

फीको–वि० [देश०] (स्त्री० फीकी) १ स्वाद रहित, स्वाद हीन। २ कम शक्कर, गुड़ या नमक वाला। ३ उदास, खिन्न। ४ अपमानित, लज्जित। ५ निष्प्रभ, निस्तेज। ६ हल्का, धीमा, मलिन। ७ रूखा। ८ तुच्छ, हीन। ९ प्रभाव हीन। १० नीरस, शुष्क। ११ आनन्द, उत्साह, उमंग रहित, जहां रागरंग की कमी हो। १२ सारहीन, निस्सार। १३ अलोना। १४ ओजहीन। १५ तुच्छ, हल्का। १६ अभीष्ट परिणाम रहित। १७ अप्रिय, अरुचिकर। १८ न्यून। १९ निष्फल। २० नगण्य।

फीच–देखो 'फींच'।

फीचणो (बो)–क्रि० लत्ती लगाना, टांग अड़ाना।

फीट–अव्य० १ फोकट, मुफ्त। २ तुरन्त। –पु०– १ फीकापन। २ देखो 'फिट'। ३ देखो 'फिटो'। ४ देखो 'फुट'।

फीटणो (बो)–क्रि० [देश०] नाश होना, नष्ट होना।

फीटोकड़, फीटोकड़ो, फीटो–वि० [देश०] (स्त्री० फीटी, फिटोकड़ी) १ बेशर्म, निर्लज्ज। २ ढीट, दुष्ट। ३ झूठा। ४ अश्लील। ५ लज्जित, शर्मिन्दा। ६ अपमानित।

फीण–देखो 'फैण'।

फीणनांखतो–पु० ऊंट।

फीणनाग–पु० [सं० फेण-नाग] अफीम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फीणाबाटी, फीणारोटी–स्त्री० घी का संपुट देकर दुबारा बेली हुई अधिक परतों वाली रोटी विशेष ।

फीणी–स्त्री० [सं० फेनिका] १ स्त्रियों के नाक का छोटा आभूषण, कांटा । २. मैदे के तंतु का गोल गुच्छा बना कर तैयार की जाने वाली मिठाई विशेष ।

फीणो–पु० [देश०] रहट में लगने वाला लकड़ी का गुटका विशेष ।

फीत–स्त्री० [फा०] १ सेना या पुलिस कर्मियों को तरक्की पर दिया जाने वाला चिह्न । २ देखो 'फीतो' ।

फीतड–वि० [सं० स्फीत] समर्थ, शक्तिशाली ।

फीतो–पु० [पुर्त० फीता] १ सूत आदि की पतली लम्बी पट्टी । २ लंबाई नापने का फीता, टेप । ३ चौड़ी पट्टी का गोटा । ४ कपड़े की लम्बी पट्टी ।

फीदो–वि० [देश०] खोखला ।

फीनसताई–स्त्री० तारीफ, प्रशंसा ।

फीफर, फीफरड, फीफरड, फीफरियू, फीफरो–देखो 'फैंफड़ी' ।

फीयो–देखो 'फियो' ।

फीरोजी, फीरोजो–देखो 'फिरोजो' ।

फील–पु० [फा०] १ हाथी, गज । २ एक प्रकार का बाण । **—खानो**–पु० हस्तिशाला । **—चराई, चरावणी**–स्त्री० हाथी को चराने का कर ।

फीलवांन–पु० [फा०] महावत, हाथीवान ।

फीळाउघाड, फीळाउघाड–देखो 'फलसाउघाड' ।

फीहो–देखो 'फियो' ।

फुंआरो–देखो 'फंवारो' ।

फुंकणो (बो)–देखो 'फूंकणो' (बो) ।

फुंकाणो (बो)–क्रि० १ मुंह से फूंक निकलवाना । २ फूंकने की क्रिया कराना । ३ मंत्रादि पढ़कर झाड़ फूंक कराना, तांत्रिक उपचार कराना । ४ जलवाना, भस्म कराना । ५ दाह संस्कार कराना । ६ नष्ट कराना, नाश कराना । ७ किसी धातु की रासायनिक क्रिया से भस्म बनवाना । ८ सताने के लिये प्रेरित करना । ९ फूंक वाद्य बजवाना ।

फुंकार–देखो 'फूंकार' ।

फुंकावणो (बो)–देखो 'फुंकाणो' (बो) ।

फुंणाळ–देखो 'फणाळी' ।

फुंणो–देखो 'फुणो' ।

फुंतरको–देखो 'फूंतरो' ।

फुंद–देखो 'फौंद' ।

फुंदळ,फुंदल,फुंदाळ,फुंदाल,फुंदाळो,फुंदालो–देखो 'फौंदाळी' ।

फुंदी–देखो 'फूंदी' ।

फुंदी–देखो 'फूंदी' ।

फुंफकार, फुंफकारो–देखो 'फूंकार' ।

फुंफाड़ो–देखो फूफड़ो' ।

फुंबी–स्त्री० [सं० पृथ्वी] १ वर्षा ऋतु में होने वाला एक भू-फोड़ । २ देखो 'फूंभी' ।

फुंबो–पु० [देश०] रुई का लच्छा या वस्त्र खण्ड ।

फुंवार– १ देखो 'फंवार' । २ देखो 'फंवारो' ।

फुंवारो–देखो 'फंवारो' ।

फुसहलि–स्त्री० एक वनस्पति विशेष ।

फुंसी–स्त्री० [सं० पनसिका] छोटा फोड़ा, फुंसी ।

फुंहार–देखो' फंवार' ।

फुंहारो–देखो 'फंवारो' ।

फु–पु० १ कार्त्तिक मास । २ कृतज्ञता । ३ गुण । ४ विलम्ब ।

फुआरो–देखो 'फवारो' ।

फुकनीबाज–वि० बकवास करनेवाला, व्यर्थ बकने वाला ।

फुकार– १ देखो 'फुकार' । २ देखो 'फूंकार' ।

फुगतरो–पु० [देश०] १ छिलका । २ छिलके का टुकड़ा । ३ चमड़ा ।

फुडकली–देखो 'फिरकी' ।

फुटकर–वि० १ अलग, पृथक । २ भिन्न प्रकार का, कई मेल का । ३ जो थोक में न हो, परचून । ४ छोटी–छोटी इकाइयों वाला ।

फुटबाल–स्त्री० [अं०] पैरों से खेलने वाली बड़ी गेंद ।

फुटरो–देखो 'फूटरो' ।

फुट्टणो (बो)–देखो 'फूटणो' (बो) ।

फुड, फुडवि, फुडियो, फुडो–वि० [सं० स्फुट] १ प्रगट, साफ, स्पष्ट । २ हृष्ट-पुष्ट । ३ एकाक्षी, काना । –पु० १ यवन । २ उपस्थ ।

फुणद, फुणंद–देखो 'फणींद' ।

फुण–पु० १ पवन । २ देखो 'फण' । ३ देखो 'फुणो' ।

फुणकली, फुणकलो–पु० छोटा फोड़ा, फुंसी ।

फुणकार, फुणकारो–१ देखो 'फणकार' । २ देखो 'फणकारो' । ३ देखो 'फूंकार' ।

फुणगळ–देखो 'फुणकली' ।

फुणडसण–पु० [सं० फण-दंश] सर्प, सांप ।

फुणद–देखो 'फणींद' ।

फुणधर–देखो 'फणधर' ।

फुणसी–स्त्री० मादा सर्प, सर्पिणी, नागिन ।

फुणसहस–देखो 'सहसफुण' ।

फुणसी–देखो 'फुंसी' ।

फुणांपति, फुणापति–१ देखो 'फणपति' । २ देखो 'फणिपति' ।

फुणांफेर–पु० [सं० फण+रा० फेर] शेषनाग ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फुणाकार–देखो 'फणाकार'।
फुणाट–देखो 'फण'।
फुणाफेर–देखो 'फुणाफेर'।
फुणाळ–देखो 'फणाळी'।
फुणावरण–वि० [सं०फण+रा० वरण] फनधारी। –पु० १ सर्प। २ शेषनाग।
फुणिंद–देखो 'फणींद'।
फुणी–देखो 'फणी'।
फुणीसीस–पु० शेषनाग।
फुणो–पु० [सं० फणः] पैर की अंगुलियों के नीचे का भाग।
फुतरकी–देखो 'फूंतरी'।
फुत्कार–देखो 'फूत्कार'।
फुदकडी–स्त्री० एक विशिष्ट जाति की चिड़िया।
फुदकण–वि० [देश०] कूद-फांद करने वाला, फुदकने वाला। –स्त्री० १ फुदकना क्रिया। २ बरसाती कीड़ा, पतंगा। ३ देखो 'फदकण'।
फुदकणी (बी)–क्रि० १ उछल-कूद करना, कूदना, फुदकना। २ फुदकते हुए उड़ना। ३ हर्ष में उछलना-कूदना।
फुदकी–स्त्री० फुदकने की क्रिया, छलांग।
फुदगळ–देखो 'पुदगळ'।
फुदी–देखो 'फूंदी'।
फुनिग, फुनिग–पु० [सं० पन्नग] १ सर्प, सांप। २ शरीर, देह। ३ परमाणु। ४ आत्मा।
फुप्फुस–पु० [सं०] फेंफड़ा।
फुफकार–देखो 'फूंकार'।
फुफकारणी (बी)–देखो 'फूंकारणी' (बी)।
फुफकारी–देखो 'फूंकार'।
फुर–स्त्री० १ पक्षियों के उड़ते समय परों की ध्वनि। २ उड़ने की क्रिया। ३ फड़कने की क्रिया या भाव। –वि० अस्थिर।
फुरकण–पु० [देश०] १ सफेद आंखों वाला बैल जिसकी आंखों पर भंवरी हो। २ फड़कण।
फुरकणी (बी)–क्रि० [सं० प्रस्पंदनम्, स्फुरणम्] १ अंग-प्रत्यंग में स्पंदन होना, फड़कना। २ फुर करके उड़ना। ३ हवा का बहना, हवा चलना। ४ देखो 'फड़कणी' (बी)। ५ देखो 'फरूकणी' (बी)।
फुरकान–पु० [अ० फुरकानि] मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ।
फुरकाणी (बी)–१ देखो 'फड़काणी' (बी)। २ देखो 'फरूकाणी' (बी)।
फुरकारी–पु० इशारा, संकेत। विश्राम, विश्रांति।
फुरकावणी (बी)–१ देखो 'फड़काणी' (बी)। २ देखो 'फरूकाणी' (बी)।
फुरक्कणी (बी)–१ देखो 'फरकणी' (बी)। २ देखो 'फड़कणी' (बी)। ३ देखो 'फरूकणी' (बी)।
फुरण–देखो 'फुरणी'।
फुरणा–स्त्री० [सं०स्फुरणम्] १ इच्छा। २ अनुभूति। ३ कंपन, फड़कन, धड़कन। ४ मनमें सहसा उठने वाला विचार।
फुरणि, फुरणी, फुरणू, फुरणी–पु० १ स्फूर्ति, तेजी। २ तेजी से मुड़ने या घूमने की क्रिया। ३ नाक का छिद्र, नाशापुट; नथूना।
फुरणी (बी)–१ देखो 'फड़कणी' (बी)। २ देखो 'फिरणी' (बी)।
फुरत, फुरती–स्त्री० [सं० स्फूर्ति] १ शीघ्रता, जल्दी। २ चंचलता स्फूर्ति।
फुरतीलो–वि० (स्त्री० फुरतीली) १ चंचल, फूतिला। २ तेजी से कार्य करने वाला। ३ तेज गति या चाल वाला।
फुरना–देखो 'फुरणा'।
फुरफुरणी (बी)–क्रि० १ किसी अंग में हल्की स्पंदन होना, धीरे-धीरे फड़कना। २ फुरफुर करके उड़ना।
फुरफुराहट–स्त्री० १ अंग-प्रत्यंग में होने वाला स्पंदन, फड़कन। २ पवन की सरसराहट, हवा से उत्पन्न ध्वनि। ३ पक्षियों की फडफड़ाहट।
फुरमाण, फुरमाणि, फुरमाणी, फुरमान–देखो 'फरमांण'।
फुरमाणी (बी)–देखो 'फरमाणी' (बी)।
फुरमायस–देखो 'फरमाइस'।
फुरमावणी (बी)–देखो 'फरमाणी' (बी)।
फुरमास–स्त्री० १ एक प्रकार का लगान। २ देखो 'फरमाइस'।
फुरम्माण–देखो 'फरमांण'।
फुरळणी (बी)–क्रि० [देश०] १ इधर-उधर करना, अस्त-व्यस्त करना। २ बिखेरना, छितराना, तितर-बितर करना। ३ वस्तु के ढेर को उथल-पुथल या ऊपर-नीचे करना। स्थिति में परिवर्तन करना। ४ चीरना-फाड़ना। ५ कोई चीज ढूंढने के लिये अन्य चीजें इधर-उधर करना।
फुरसत–स्त्री० [अ० फुर्सत] १ अवसर, मौका। २ समय, अवकाश। ३ व्यस्तता से छुटकारा। काम से छुट्टी। ४ निवृत्ति। ५ कोई भी काम न होने की अवस्था।
फुरसरांम, फुरसरांमि–देखो 'परसुरांम'।
फुरोळणी (बी)–देखो 'फुरळणी' (बी)।
फुल–स्त्री० अग्नि। –वि० [अं०] १ पूर्ण, पूरा। २ तीव्र, तेज। ३ शक्ति भर। ४ देखो 'फूल'।
फुलक–पु० १ कोयला। २ देखो 'फुलकी'।
फुलकी–पु० [सं० फुल्लक] १ गेहूं की रोटी, चपाती। २ हल्की पतली रोटी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फुलगार–पु० [सं० फुल्स-कार] १ शाक, रायते आदि में दी जाने वाली छौंक, घुंगार, बघार। २ उक्त छौंक की सुगन्ध।

फुलगारणो (बो)–क्रि० शाक, रायते आदि में छौंक लगाना, घुंगार देना।

फुलड़ी–स्त्री० १ गाड़ी, दरवाजे आदि पर कीलों से जड़ा जाने वाला धातु का फूल, तारों की तरह बने धातु के उपकरण। २ देखो 'फूलड़ी'। ३ देखो 'फूली'।

फुलड़ो–देखो 'फूल'।

फुलछड़ी, फुलझड़ी–देखो 'फूलझड़ी'।

फुलण–देखो 'फूलण'।

फुलणो (बो)–देखो 'फूलणो' (बो)।

फुलपगर–देखो 'फूलपगर'।

फुलमद–देखो 'फूलमद'।

फुलमाळ–देखो 'फूलमाळ'।

फुलरड़ी, फुलरी–देखो 'फूलरी'।

फुलवांद–देखो 'फुलवाद'।

फुलवाई, फुलवाड़ी–स्त्री० [सं० फुल्ल-वाटिका] पुष्प वाटिका उद्यान। छोटा बगीचा।

फुलवाद, फुलवादि, फुलवाडो–स्त्री० [सं० फुल्लवाटिका] १ फूलों वाला पौधा। २ फूलों वाले पौधों का समूह। ३ पुष्प फूल।

फुलवारी–पु० १ एक रंग विशेष का घोड़ा। २ देखो 'फुलवाड़ी'।

फुलाणो (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु में वायु भर कर मोटा करना, फुलाना। २ पेट बढ़ाना। ३ पुलकित या आनन्दित करना। ४ गर्व, अभिमान या मान करना। ५ मान करके चेहरे की विशेष आकृति बनाना। ६ फूलों से युक्त करना।

फुलाद–देखो 'फुलवाद'।

फुलाळो–देखो 'फूलाळो'।

फुलावणो (बो)–देखो 'फुलाणो' (बो)।

फुलिंग–पु० [सं० स्फुलिंग] अग्निकण।

फुली–१ देखो 'फूली'। २ देखो 'फूल'।

फुलेल–पु० [सं० फुल्ल-तैल] फूलों की महक वाला तेल।

फुलेली–स्त्री० उक्त तेल रखने का काच का बर्तन।

फुलोत्तर–देखो 'फूलअंत'।

फुल्ल–वि० [सं० फुल्ल] १ फूला हुआ, विकसित। २ देखो 'फूल'।

फुल्ली–१ देखो 'फूल'। २ देखो फूलड़ी'। ३ देखो फूली'। ४ देखो फूलरी।

फुल्लो–देखो 'फूलो'।

फुवारो देखो 'फवारो'।

फुस, फुसकी–स्त्री० [सं० स्पृशः] १ बहुत धीमी व अस्पष्ट ध्वनि २ धीरे-धीरे निकलने वाली अपान वायु। ३ स्पर्श। ४ देखो फिस'।

फुसफुसाणो (बो)–क्रि० धीरे-धीरे अस्पष्ट ध्वनि करना, फुसफुसाहट करना।

फुसलाणो(बो), फुसलावणो(बो)–क्रि० १ चिकनी-चुपड़ी व मीठी-मीठी बातें करके किसी को भुलावे में लेना, अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये राजी करना। २ बहकाना।

फुहड़, फुहड, फुहड़ी–देखो 'फूड़'।

फुहली–देखो 'फूहली'।

फुहार–देखो 'फंवार'।

फुहारो–देखो 'फंवारो'।

फुहो–स्त्री० रात्रि में बोलने वाला एक मांसाहारी जंगली छोटा जानवर।

फूं–स्त्री० १ मुंह से, जोर से निकलने वाली हवा। श्वास। २ इस श्वास की ध्वनि। ३ सर्प के फुफकारने की ध्वनि।

फूंक–स्त्री० १ मुंह से विशेष प्रकार से निकाली जाने वाली वायु। मुंह की हवा, श्वास। २ मंत्रोच्चार के साथ छोड़ी जाने वाली श्वास।

फूंकण–वि० फूंक मारने वाला –पु० जहरीली फूंक मारने वाला जीव।

फूंकणी–स्त्री० १ आग सुलगाने के लिये फूंक मारने की नलिका। २ भाथी।

फूंकणो–पु० रबर का खिलौना, गुब्बारा।

फूंकणो (बो)–क्रि० १ मुंह से फूंक मारना। २ मंत्र पढ़कर फूंक लगाना। ३ मुंह से बाजा बजाना। ४ जलाना, भस्म करना ५ नष्ट या बरबाद करना। ६ किसी धातु की रासायनिक विधि से भस्म बनाना। ७ सताना, कष्ट देना। ८ अनावश्यक खर्चा करना।

फूंकरड़–देखो 'फूंकार'।

फूंकाणो (बो)–देखो 'फुंकाणो' (बो)।

फूंकार–स्त्री० [सं० फूत्कार] १ सर्प आदि प्राणियों द्वारा मुंह से जोर से श्वास छोड़ने की क्रिया, फुफकार। २ इस प्रकार श्वास निकालने से उत्पन्न ध्वनि। ३ श्वास। ४ विश्राम।

फूंकारणो (बो)–क्रि० १ सर्प आदि प्राणियों का मुंह से जोर से श्वास छोड़ना, फुफकारना। २ फुफकार की ध्वनि होना। ३ जोर की श्वास लेना।

फूंकारो–देखो 'फूंकार'।

फूंकावणो (बो)–देखो 'फुंकाणो' (बो)।

फूंको–१ देखो 'फूंक'। २ देखो 'फूंकणो'।

फूंगारी–स्त्री० एक प्रकार का मूं-फोड़।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फूंणी–देखो 'फुणी'।
फूंतकार–देखो 'फूतकार'।
फूंतरी–पु० [देश०] छिलका।
फूंतारियो–पु० उदयपुर राज्य का प्राचीन सिक्का।
फूंद–देखो 'फूंदो'।
फूंदाळ–देखो 'फूंदाळो'।
फूंदाळो–वि० (स्त्री०फूंदाळी) जिसमें फूंदे लगे हों। फूंदोंवाला
फूंदी–स्त्री० [देश०] १ तितली। २ एक लोक नृत्य विशेष। ३ इस नृत्य के साथ गाया जाने वाला लोक गीत। ४ देखो 'फूंदो'।
फूंदो–पु० [देश०] १ रंग-बिरंगे धागे, सूत या रुई का छोटा गुच्छा। २ एक प्रकार की राखी।
फूंदाळो–वि० फूंदों वाली, फूंदों से युक्त। —डोरो–स्त्री० एक लोक गीत विशेष।
फूंफां–स्त्री० १ जोर से श्वास लेने की क्रिया व ध्वनि। २ व्याकुलता से किया जाने वाला कार्य।
फूंफांड़ियो–वि० १ फूं-फूं करने वाला, फुफकारने वाला। २ जल्दबाज। ३ देखो 'फूंफाड़ो'।
फूंफाड़ियो, फूंफाड़्यो–वि० 'फूंफाड़ा' करने वाला फूं-पां करने वाला।
फूंफाड़ो–पु० १ सर्प आदि की फुफकार फूंकार। २ तेज श्वास से नाक से उत्पन्न ध्वनि। ३ क्रोधावस्था में ली जाने वाली तेज श्वास।
फूंफी–स्त्री० [सं० पुष्पी] पिता की बहिन, बूआ।
फूंफो–पु० [सं० पुष्पा] (स्त्री० फूंफी) बूआ का पति, पिता का बहनोई।
फूंबडो–पु० [देश०] रुई या सूत आदि का छोटा गुच्छा।
फूंबी–देखो 'फुंबी'।
फूंबो–देखो 'फुंबो'।
फूंमड़ो–देखो 'पूंगड़ो'।
फूंमी–स्त्री० [सं० पुष्पुम्भी] १ बाजरी की बालों आदि पर जमने वाली रुई की तरह की परत। २ देखो 'फुंबी'। ३ देखो 'फूंदी'।
फूंमो–देखो 'फुंबो'।
फूंमदो–देखो 'फूंबदो'।
फूंमो–१ देखो फूंमी'। २ देखो 'फुंबी'।
फूंस–पु० पौष मास।
फूंहारो–देखो 'फंवारो'।
फूंहो–देखो फुही'।
फू–पु० १ फूंक। २ ऋण। ३ भू, भूमि। ४ शरण। ५ वचन। ६ घास। ७ तिनका, तृण। ८ कूड़ा-करकट, फूस-कचरा। ९ कुश।
फूकणूं–पु० १ फेफड़ा। २ देखो 'फूंकणो'।
फूकी–देखो १ 'फूंक'। २ देखो 'फूंकणी'। ३ देखो 'फाकी'।
फूड़–वि० १ किसी कार्य में जो चतुर या प्रवीण न हो, अदक्ष। २ अभद्र, भद्दा, बेशऊर। ३ मैला-कुचैला। ४ चाल-चलन का बेढंगा।
फूड़ियो–पु० श्वान। —पु० कुत्ते या बिल्ली का विष्ठा, मल।
फूट–स्त्री० [सं० स्फुट] १ फूटने की क्रिया या भाव। २ पृथक होने का भाव, पृथकता। ३ किसी परिवार, समाज या संगठन के सदस्यों में परस्पर प्रेम, मेल या मतैक्य का अभाव। ४ वैमनस्य, विरोध। ५ संगठन की कमी। ६ पौधे की अंकुरित होने की अवस्था। ७ बाजरी के पौधे की पेरी में से निकलने वाले अंकुर।
फूटण, फूटणो–स्त्री० [सं० स्फूटनम्] १ फूटने की क्रिया या भाव। २ फूट कर अलग हुआ अंश। ३ शरीर के संधि स्थलों में होने वाली पीड़ा।
फूटणो (बो)–क्रि० [सं० स्फूटनम्] १ बर्तन आदि का टूटना, बर्तनों में छेद होना। २ टूट-फूट होना। ३ किसी वस्तु के टुकड़े होना। खण्डित होना। ४ ढोल आदि बाद्यों का चमड़ा फट जाना। दरार पड़ना। ५ जलाशय की पाज या बांध आदि की दीवार में दरार पड़ना। छेद होना। ६ संगठन या परिवार में मतभेद या विरोध पैदा होना। ७ मर्यादा का उल्लंघन होना। सीमा छोड़ देना। ८ संगठन से पृथक होकर भेद दे देना। ९ शरीर के अंग में घाव होना, रक्त बहना, शिर फटना। १० आर-पार होना, बेध कर निकल जाना। ११ फोड़े, फुंसी आदि का फटना। १२ गैस, हवा या द्रव पदार्थ भरी वस्तु का सहसा फट जाना। १३ किसी महत्वपूर्ण या गुप्त बात का प्रसारित होना। १४ किसी बात की तीव्र प्रतिक्रिया होना। १५ अवरोध हटने से अबाध गति से आवागमन खुलना। १६ विस्फोट होना। १७ स्रोत के रूप में निकलना। १८ प्रस्फुटित या अंकुरित होना। १९ पृथक, अलग या विभक्त होना। २० शरीर के संधि स्थलों में दर्द होना। २१ गुप्त बात या रहस्य का उद्घाटन होना, बात खुलना। २२ कहीं से चुपके से खिसकना। जाना। २३ तरल पदार्थ का रिसना।
फूटर–वि० [देश०] १ निर्मल, स्वच्छ। २ देखो 'फूटरो'।
फूटरमल–पु० पति, खाविंद। —वि– सुन्दर, मनोहर।
फूटरियो, फूटरो–वि० [देश०] (स्त्री०फूटरी) १ सुन्दर, मनोहर। २ गुणवान। ३ साफ-सफाई वाला। सुव्यवस्थित।
फूटोड़ी, फूटो–वि० [सं० स्फुट] (स्त्री० फूटी,फूटोड़ी) १ फूटा हुआ। २ छिद्रित। ३ टूटा-फूटा, भग्न, खण्डित। ४ दरार युक्त। ५ क्षत-विक्षत। ६ हतभाग्य। ७ पृथक व अलग।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फूठरौ–देखो 'फूटरौ'।

फूडीयौ–पु० १ वृक्ष विशेष। २ देखो 'फूड़ियौ'।

फूणौ–पु० १ एक प्रकार का शाक विशेष। २ देखो 'फुणौ'।

फूतकार–स्त्री० १ लोमड़ी, गीदड़, वानर आदि जानवरों के मुंह की फें-फें ध्वनि। २ देखो 'फूंकार'।

फूतकारणौ (बौ)–क्रि० १ लोमड़ी, गीदड़ आदि का फें-फें बोलना। २ देखो 'फूंकारणौ' (बौ)।

फूतकारी, फूत्कार, फूत्रकार–देखो 'फूतकार'।

फूदडौ–देखो 'पूगड़ौ'।

फूदडी–स्त्री० पंखुरी।

फूदडौ–देखो 'पूंगड़ौ'।

फूधेडौ (ढ़ो)–स्त्री० १ शाक या वनस्पती विशेष। २ वृक्ष विशेष।

फूनौ–स्त्री० १ तितली। २ बच्चों की लिंगेन्द्रिय।

फूफस–स्त्री० पति या पत्नी की बूआ। बूआ सास।

फूफसरौ–पु० पति या पत्नी का फूंफा।

फूफाड़ौ–देखो 'फूंफाड़ौ'।

फूफी–देखो 'फूंफी'।

फूफूकार–स्त्री० ध्वनि या शब्द विशेष।

फूफौ–देखो 'फूंफौ' (स्त्री० फूफी)।

फूबडौ–देखो 'पूंगड़ौ'।

फूमदौ, फूमदौ–देखो 'फूंबदौ'।

फूरकणी–स्त्री० हल्का सा दर्द, चरमराहट।

फूरकणौ (बौ)–देखो 'फुरकणौ' (बौ)।

फूल–वि० [सं० फुल्ल] १ तुलनात्मक दृष्टि से हल्का, फारिक। २ खुश। ३ नाजुक कोमल। —पु० १ पेड़, पौधों व वनस्पतियों के लगने वाला पुष्प, कुसुम। २ फूल के आकार का आभूषण। ३ फूल जैसी चित्रकारी। ४ भट्टी से प्रथम बार निकला हुआ हल्के नशे का शराब। ५ हल्का नशा। ६ बलि पशु का रक्त। ७ मृतक की अस्थियां। [सं० स्फुलिंग] ८ अग्निकण, चिनगारी। ९ आतिशबाजी की चिनगारी। १० दो वस्तुओं के संघर्षण से निकलने वाली चिनगारी। ११ चिराग-बत्ती पर पड़े हुए गोल दाने। १२ चिराग का वह भाग जिसमें बत्ती रहती है। १३ पशुओं की स्थूलान्त्र। १४ तलवार। १५ पितरों या देवताओं के नाम पर बने, गले में पहनने के आभूषण। १६ हड्डी। १७ गर्भाशय। १८ शरीर पर पड़ने वाला कुष्ट रोग का धब्बा। १९ चेचक के व्रण, दाने। २० स्त्रियों के मासिक धर्म का रज। २१ तांबे व रांगे का एक मिश्र धातु। २२ मथानी के आगे का फूल जैसा भाग। २३ कागज की फून पत्ती। २४ धातु के बने फूल या तारे। २५ तलवार की मूठ का एक भाग। २६ पानी का बुलबुला। —**अरडूसौ**–पु० एक पौधा विशेष। अडूसा। —**आंत**–स्त्री० पशुओं की स्थूलांत्र जिसमें मल रहता है। —**कारी**–स्त्री० फूलों जैसी चित्रकारी। —**गोभी**–स्त्री० गोभी का फूल। —**झड़ी**–स्त्री० पुष्प वर्षा। —**दांन**–पु० फूल सजाने का काच, मिट्टी या धातु निर्मित पात्र, देवताओं के समक्ष फूल रखने का पात्र। —**माळ, माळा, माला**–स्त्री० फूलों का हार। हड्डियों की माला। एक जाति विशेष का घोड़ा। —**माळी**–पु० फूलों का बगीचा लगाने व फूल बेचने वाला माली, बागवान। —**रज**–पु० पुष्प पराग। —**हटौ**–स्त्री० फूलों की दुकान। फूलमण्डी। बाजार।

फूलगार–पु० १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष। २ देखो 'फुलगार'।

फूलगूधर–पु० शीश पर गूंथा जाने वाला एक रजत का आभूषण विशेष।

फूलडौ–स्त्री० १ बिवाई। २ देखो 'फूल'। ३ देखो 'फूलौ'।

फूलडौ–देखो 'फूल'।

फूलझड़ी–स्त्री० १ एक प्रकार की आतिशबाजी। २ मस्त हाथी को वश में करने का आतिशबाजी का एक उपकरण। ३ झगड़ा या विवाद वाली बात। ४ पुष्प वर्षा, झड़ी। ५ फूलों की कतार।

फूलझूमकौ–पु० १ स्त्रियों का आभूषण विशेष। २ फूलों का गुच्छा।

फूलडोल, फूलडौल–पु० १ चैत्र शुक्ला एकादशी को मनाया जाने वाला एक उत्सव। २ होली के अगले दिन 'खेड़ापा' ग्राम में लगने वाला रामस्नेहियों का एक मेला।

फूलण–स्त्री० १ वर्षा ऋतु में प्रायः खाद्य पदार्थों पर जमने वाली सफेद फफूंदी। २ शरीर पर पसीने से जमने वाली सफेद धारियां, धब्बे। ३ पिंगल प्रकाश के अनुसार एक छन्द। ४ फूलने की क्रिया या गुण।

फूलणौ (बौ)–क्रि० १ फूलों से युक्त होना। २ प्रफुल्लित होना, खिलना, विकसित होना। ३ खुश होना आनन्दित होना। ४ सम्पन्न होना। ५ हवा, गैस या पानी आदि भरने से गेंद या गुब्बारे की तरह उभरना, मोटा होना, फूलना। ६ सूजन या वर्म आना। ७ स्थूल काय होना, मोटियाना। ८ गर्व करना, अभिमान करना। ९ सूर्यास्त के उपरांत रक्तिम आभा का छाना। १० उभार होना। ११ शीलन से लकड़ी आदि का बढ़ना।

फूलता–पु० एक शस्त्र विशेष।

फूलद–पु० [सं० फूल+द] वृक्ष, पेड़।

फूलधार, फूलधारा, फूलधरा–पु० [सं० फुल्लधार] १ तलवार। २ तलवार की धार। ३ देवता के लिये बलि पशु के रक्त की धारा। २ फूल जाति की शराब की धारा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फूलनसो–पु० १ हलका नशा । २ फूल नामक शराब का नशा ।
फूलपगर–पु० १ प्रकार का वस्त्र । २ पुष्प समूह ।
फूलप्रियंगु–पु० एक औषधि विशेष ।
फूलफगर–देखो 'फूलपगर' ।
फूलबाई–स्त्री० मेहा की पुत्री व करणीदेवी की बहिन ।
फूलबाज–पु० नट जाति की एक शाखा ।
फूलमखांगा (ना)–पु० सफेद ताल मखाना ।
फूलमती–स्त्री० शीतला रोग की अधिष्ठात्री एक देवी ।
फूलमहल–पु० [फा०] १ राजा महाराजाओं का एक महल । जिसमें चित्रकारी की होती । २ भोग विलास का महल, रंग महल ।
फूलरी–स्त्री० १ सफेद रंग की या सफेद कानों वाली बकरी । २ देखो 'फूलड़ी' ।
फूलवाड़ी–देखो 'फुलवाड़ी' ।
फूलहत्थ, फूलहथ–स्त्री० तलवार ।
फूलहरो–पु० शुभ रंग का घोड़ा ।
फूलहाथ–देखो 'फूलहत्थ' ।
फूसां–देखो 'फूलबाई' ।
फूलांमाळ (माळा)–१ देखो 'फूलमाळ' । २ देखो 'फूलमाळा' ।
फूलांरीधारी–वि० १ अमीर, भाग्यशाली । २ कोमल, नाजुक । —पु० १ फूल की गठरी । २ ढेर, समूह ।
फूलांसेज–स्त्री० पुष्प शय्या ।
फूसाणो (बो)–देखो 'फुलाणो' (बो) ।
फूलाद–देखो 'फुलवाद' ।
फूलाळ, फूलाळो–वि० (स्त्री० फूलाळी) फूलोंवाला, फूलों से आच्छादित ।
फूलावणो (बो)–देखो 'फुलाणो' (बो) ।
फूलि–१ देखो 'फूल' । २ देखो 'फूली' ।
फूलियो– १ देखो 'फूलो' । २ देखो 'फूल' ।
फूली–स्त्री० १ आक या मदार के फूल का मध्य भाग । २ आंख की पुतली पर होने वाला सफेद दाग । ३ सिर का एक आभूषण । ४ भुनी हुई ज्वार, मक्का, चावल, खीरा, लावा । ५ एक प्रकार का शाक । ६ देखो 'फूल' । ७ देखो 'फूहली' ।
फूलेरो–पु० [सं० पुष्पमु-वेला] विवाहित कन्या के प्रथम रजो दर्शन की शुद्धि पर उसकी माता द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव ।
फूलेल–देखो फुलेल' ।
फूलो–पु० १ आंख की पुतली पर पड़ने वाला सफेद दाग । २ खोला, लावा । ३ देखो 'फूल' । ४ फिटकरी, गोंद आदि को आंच पर भुनने से फूला हुआ दाना ।
फूस–पु० १ सूखा तिनका, तृण । २ कचरा, कूड़ा करकट ।
फूसगज–पु० पौष की पूर्णिमा के दिन घास-फूस का बनाया जाने वाला हाथी ।
फूह–देखो 'फूस' ।
फूहड़ (ड), **फूहड़ि**–देखो 'फूड' ।
फूहलि, फूहली–स्त्री० बहन की राखी प्राप्त होने पर भाई द्वारा बहन को भेजी जाने वाली पोशाक ।
फूहारी–देखो फंवारी' ।
फूहो–देखो 'फूंबो' ।
फें–देखो 'फैं' ।
फेंक–देखो 'फैंक' ।
फेंकणो (बो)–देखो 'फैंकणो' (बो) ।
फेंकल–देखो 'फेकल' ।
फेंकाणो (बो), फेंकावणो (बो)–देखो 'फैंकाणो' (बो) ।
फेंगळ–पु० फेन, झाग ।
फेंट–स्त्री० १ मल्ल युद्ध का एक दाव । २ कटि प्रदेश, कमर का घेरा । ३ देखो 'फांट' । ४ देखो 'फैंटो' । ५ देखो 'फेंटो' ।
फेंटणो (बो)–क्रि० १ लपेटना, बांधना । २ देखो 'फांटणो' (बो) ।
फेंटो–पु० १ कमर पर लपेटकर बांधने के वस्त्र का छोर । २ देखो 'फैंटो' ।
फेंफड़ो–देखो फैंफड़ो' ।
फे–पु० १ भ्रमण । २ रट, जाप ।
फेकरी–स्त्री० स्यालिनी ।
फेकळ–पु० कच्चा पीलू ।
फेकारी–स्त्री० १ एक वृक्ष विशेष । २ देखो 'फेकरी' ।
फेज–देखो 'फैज' ।
फेट–स्त्री० १ टक्कर, धक्का, आघात । २ झपट, चपेट । ३ चोट । ४ दृष्टि-पथ में होने की दशा या भाव । ५ किसी आसुरी माया या प्रेत बाधा का प्रभाव । ६ अन्तराय, विघ्न । ७ नाश, ध्वंस ।
फेटणो (बो)–क्रि० १ टक्कर, धक्का, झटका लगना । २ दृष्टि गोचर होना । ३ किसी आसुरी माया के प्रभाव में आना । ४ साक्षात्कार होना ।
फेटियो–पु० १ घाघरे के नीचे पहनने का लंबा वस्त्र । २ विधवा स्त्रियों का, एक रंग विशेष का अधोवस्त्र । ३ कमर पर लपेटने का वस्त्र ।
फेटो–पु० १ किसी स्थान विशेष पर आने-जाने का अभ्यास या अवसर । २ भेंट, मिलाप, साक्षात्कार । ३ अधिक घूमने फिरने की क्रिया अवस्था या भाव । ४ दूरी का चक्कर, घुमाव । ५ देखो 'फैंटो' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फेंड़णी (बो)–क्रि० [सं० स्फेटयति] १ विनाश करना। २ दूर हटाना। ३ परित्याग करना। छोड़ना। ४ जानना। ५ तोड़ना। ६ उद्घाटन करना।

फेण–पु० १ श्वेत, सफेद०। २ देखो 'फेण'।

फेणी– देखो 'फीणी'।

फेतकार, फेत्कार–पु० १ लोमड़ी के आकार का एक मांसाहारी जानवर। २ स्यालिनी। ३ स्यालिनो की बोली। ४ लोमड़ी। ५ देखो 'फूतकार'।

फेदड़–स्त्री० १ दूध आदि पदार्थों में अम्ल के योग से पड़ने वाले फिदड़के। विकृतावस्था। २ आकाश में छितराये बादलों के खण्ड।

फेन, फेनक–देखो 'फेण'।

फेनी–देखो 'फीणी'।

फेफड़ी–स्त्री० १ ओठों पर जमने वाली पपड़ी। २ कोई पपड़ी।

फेफड़ी, फेफर–देखो 'फेंफड़ी'।

फेफरी–स्त्री० १ फेफड़ा। २ देखो 'फेफड़ी'।

फेफरी–देखो 'फेंफड़ी'।

फे'म–देखो 'फहम'।

फेरंड–पु० [सं०] १ शृगाल, गीदड़, सियार। २ लोमड़ी।

फेर–पु० १ फिरने की क्रिया या भाव। २ आने-जाने का चक्कर। ३ घुमाव, मोड़। ४ परिवर्तन का सिलसिला-क्रम। ५ अन्तर, फर्क, भिन्नता। ६ भाग्य या परिस्थितियों का चक्कर या प्रभाव। ७ दुविधा, उलझन, झंझट। ८ प्रपंच, बखेड़ा, जंजाल। ९ परिवर्तन, उलट-फेर, अदला-बदली। १० संशय, भ्रम, संदेह, गलत फहमी। ११ धोखा, प्रवंचना, चालबाजी। १२ दैवी या आसुरी माया का प्रभाव। १३ हानि, नुकसान, घाटा। १४ फासला, दूरी। १५ विस्तार, फैलाव। १६ ऊंट या घोड़े को चाल सिखाने का ढंग। १७ किसानों से लिया जाने वाला एक कर। १८ ऊंट या घोड़े की चाल। १९ झुकाव। २० चक्कर लगाने का क्रम। [सं० फेरः] २१ शृगाल, गीदड़। –वि० अन्य, दूसरा, अतिरिक्त। –क्रि० वि० १ पुनः दुबारा २ वापस। ३ और, फिर। ४ तदन्तर, उपरांत, बाद में। ५ इस पर भी। ६ लेकिन, परन्तु।

फेरड–देखो 'फेरंड'।

फेरणी (बो)–क्रि० [सं० प्रेरणम्] १ ऊंट, घोड़े आदि को चाल सिखाना, प्रशिक्षित करना। २ शस्त्रों को हाथ में लेकर घुमाना। ३ शस्त्र चलाने का अभ्यास करना। ४ भेंट स्वरूप दी वस्तु या कोई दी गई वस्तु को वापस करना, स्वीकार न करना। ५ किसी स्थान पर बार-बार आने-जाने के लिये मजबूर करना। ६ दूल्हा-दुल्हिन की भांवरी पड़ना। फेरे खाना। ७ किसी वस्तु को किसी अक्ष पर या धुरी पर घुमाना। चारों ओर घुमाना। ८ एक दिशा से दूसरी दिशा में मोड़ना,घुमाना। ९ परास्त करना, खदेड़ना। १० किसी के इर्द-गिर्द चक्कर लगवाना। ११ कार्य सिद्धि या सम्पर्क के लिये बार-बार भेजना। १२ सहलाना। १३ किसी पर तेल, रोगन आदि का लेपन करना, लगाना। १४ प्रदर्शनार्थ घुमाना। १५ वितरित करना, देने के लिये आगे करना। १६ परिवर्तन करना, बदलना। १७ पड़ी चीज को उथल-पुथल करना। १८ पार्श्व बदलना। १९ दिशा परिवर्तन करना। २० अंग-प्रत्यंग पर धीरे-धीरे हाथ फेरना। २१ वचन बदलना। २२ कायरता दिखाना। २३ पढ़े हुए को दोहराना। २४ मुंह को सामने न रखना।

फेरफार–पु० [देश०] १ धूर्तता, चालाकी, छल, कपट। २ घुमाव, फिराव, चक्कर। ३ बहुत बड़ा परिवर्तन, उलट फेर। ४ रद्दोबदल, परिवर्तन। ५ लेन-देन या व्यवहार चलते रहने की क्रिया। ६ फरक, अन्तर। ७ निश्चय। ८ परिवर्तन की क्रिया। ९ आवागमन।

फेरबाज–देखो 'फेरवाज'।

फेरव–पु० [सं० फेरवः] (स्त्री० फेरवी) १ सियार, शृगाल, गीदड़। २ कपटी, चालाक प्राणी। ३ हिंसक जानवर। ४ राक्षस।

फेरवणी (बो)–देखो 'फेरणी' (बो)।

फेरवाज–स्त्री० लहंगे के अन्दर नीचे लगने वाली पट्टी या झल्लरी।

फेराणी (बो)–क्रि० १ ऊंट, घोड़े आदि को चाल सिखवाना, प्रशिक्षित कराना। २ शस्त्रों को हाथ से घुमवाना। ३ शस्त्र चलाने का अभ्यास कराना। ४ भेंट स्वरूप आई हुई वस्तु को वापस कराना। ५ कहीं पर बार-बार आने-जाने के लिये विवश कराना। ६ दूल्हे-दुल्हिन को भांवरी दिलाना। फेरे खिलाना। ७ किसी वस्तु को किसी अक्ष या धुरी पर घुमवाना, चक्कर दिराना, फिराना। ८ एक दिशा से दूसरी ओर मुड़वाना, घुमवाना। ९ परास्त कराना। १० किसी के आस-पास चक्कर लगवाना। ११ कार्य सिद्धि या सम्पर्क के लिये बार-बार भिजवाना। १२ सहलवाना। १३ किसी पर तेल, रोगन आदि का लेपन कराना। १४ प्रदर्शनार्थ घुमवाना। १५ वितरित कराना। देने के लिये आगे करवाना। १६ परिवर्तन कराना, बदलवाना। १७ पड़ी वस्तु को उथल-पुथल कराना। १८ पार्श्व बदलाना। १९ दिशा परिवर्तन कराना। २० अंग-प्रत्यंग पर धीरे-धीरे हाथ फिरवाना। २१ वचन या वादे से बदलवाना। २२ कायरता दिखवाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२३ पढ़े हुए को दुहरवाना । २४ मुंह को सामने न रखवाना । २५ देखो 'फिराणी' (बो) ।

फेरादी–देखो 'फरियादी' ।

फेराफेरी–देखो 'फेरफार' ।

फेराबाज–देखो 'फेरबाज' ।

फेरावणी (बो)–देखो 'फेराणी' (बो) ।

फेरासारी–देखो 'फेरफार' ।

फेरि–१ देखो 'फेर' । २ देखो 'फेरी' ।

फेरिय–पु० धतूरा ।

फेरिस्त–देखो 'फैरिस्त' ।

फेरी–स्त्री० [देश०] १ परिक्रमा, प्रदक्षिणा । २ भिक्षाटन के लिये फिरने की क्रिया । ३ सूर्योदय से पूर्व हरिकीर्तन करते हुए नगर भ्रमण । ४ सौदा बेचने के लिये गांव-गांव, गली गली फिरने की क्रिया । ५ चक्कर, फेर । —वाळी–वि० उक्त प्रकार से फेरी देने वाला ।

फेरूं, फेरू–क्रि०वि० फिर, पुनः, दुबारा, और । –वि० १ फिराने वाला, घुमाने वाला । २ पशुओं को चाल सिखाने वाला ।

फेरो–पु० १ चक्कर । २ घुमाव, फिराव । ३ बार-बार घूमना क्रिया । ४ विवाह के समय होने वाली भांवरी, फेरा । अग्नि परिक्रमा । ५ किसी के चारों ओर फिरने की क्रिया । ६ कहीं पर बार-बार जाना क्रिया । ७ जन्म-मरण, आवागमन । ८ फरक, अन्तर । ९ बार, दफा । १० समय । ११ शौच निवृत्ति क्रिया ।

फेसणो (बो)–क्रि० [सं० पिष्ट] १ रगड़ के साथ महीन पीसना, महीन चूर्ण बना देना । २ तोड़ना, फोड़ना । ३ पेसना ।

फेसाणो (बो), फेसावणो (बो)–क्रि० १ रगड़ के साथ महीन पिसवाना, महीन चूर्ण बनवाना । २ तोड़ाना, फोड़ाना । ३ पेसाना ।

फेहरिस्त–देखो 'फैरिस्त' ।

फैं–वि० १ उन्मत्त, मस्त । २ तेज वायु की ध्वनि ।

फैंक–स्त्री० १ फेंकना क्रिया या भाव । २ फेंकने की क्षमता । ३ असत्य या अतिरंजित बात । ४ सारहीन बात ।

फैंकणो (बो)–क्रि० [सं० प्रक्षेपणम्] १ हाथ या किसी उपकरण की सहायता से कोई वस्तु दूर तक समानान्तर या ऊपर उछाल देना, फेंक देना, चला देना । २ कोई वस्तु झटके के साथ इधर-उधर रखना, हटाना । ३ इधर-उधर डाल देना, कहीं रख देना । ४ लापरवाही से कोई वस्तु कहीं डाल देना । ५ वार या आघात की दृष्टि से कोई वस्तु चलाना, फेंकना, उछालना । ६ त्याज्य वस्तुओं को बाहर डाल देना । ७ दृष्टि चलाना, नजर फेंकना । ८ अपव्यय करना । ९ जूए का पाशा चलाना । १० हाथ-पांव पटकना । ११ उठा कर पटक देना । १२ उछाल देना । १३ सहसा कोई भावना छोड़ देना ।

फैंटो–पु० १ सिर पर बांधने का साफा । पगड़ी । २ बैलों के शृंगार निमित्त सींगों पर बांधी जाने वाली रंगीन रस्सी ।

फैंण–पु० [सं० फेण] किसी तरल पदार्थ पर आने वाले झाग । बुदबुदे ।

फैंतकार, फैंतकारी, फैंत्कार–१ देखो 'फेतकार' । २ देखो 'फूतकार' ।

फैंफड़ो–पु० [सं० फुप्फुस] प्राणियों की छाती के नीचे होने वाला धोंकनी जैसा अवयव, जिससे श्वास क्रिया होती है ।

फैं–पु० १ साख । २ लाल । ३ फूल । ४ वसंत ऋतु ।

फैंकरणो (बो)–क्रि० १ करुणा करके रोना, करुण क्रन्दन करना । २ इतराना ।

फैंज–पु० [अ०] १ फायदा लाभ । २ परोपकार, हित । ३ दानशीलता । ४ यश, कीर्ति ।

फैंटो–१ देखो 'फैंटो' । २ देखो 'फेंट' । ३ देखो 'फेटो' ।

फैंण–देखो 'फैंण' ।

फैंतकार, फैंत्कार–१ देखो 'फेतकार' । २ देखो 'फूत्कार' ।

फैंन–वि० पाखण्डी, ढोंगी । –पु० १ विद्युत चलित पंखा । २ देखो 'फैंण' ।

फैंफड़ो–देखो 'फैंफड़ो' ।

फैंम–देखो 'फहम' ।

फैंमदार–वि० [फा० फहम-दार] बुद्धिमान, चतुर ।

फैंयाज–वि० [अ०] उदार, दातार ।

फैंरिस्त–स्त्री० [अ० फैहरिस्त] १ सूची-पत्र । २ बीजक । ३ सूची ।

फैंरु (रू)–देखो 'फेरू' ।

फैंल–पु० [अ० फैंल] १ उत्पात, उपद्रव, बदमाशी । २ ढोंग पाखंड । ३ अव्यवस्था, गड़बड़ी । ४ असाधारण व्यवहार, चाल चलन । ५ अनावश्यक क्रियाएँ । ६ हल्का नशा । ७ बच्चों, स्त्रियों का दुराग्रह, हठ । ८ फैलने की क्रिया या दशा । —वि० [अ०] असफल, अनुत्तीर्ण ।

फैलणो (बो)–क्रि० [सं० प्रसरणम्] १ विस्तृत होना, लंबाई चौड़ाई के हिसाब से विस्तार पाना । २ स्थूल या मोटा होना । ३ आवृत्त होना, छा जाना । ४ पनपना, पसरना । ५ बिखरना, छितरा जाना । ६ संख्या में वृद्धि होना । ७ आकार-प्रकार के अनुसार अभिवृद्धि होना । ८ प्रचलित होना । ९ प्रसिद्ध होना । १० प्रसारित होना । ११ प्रकाशित होना । १२ व्यापक होना । १३ कार्य क्षेत्र की सीमा बढ़ना । १४ प्रकट होना । १५ स्फीति होना । १६ विज्ञापित होना, जानकारी में आना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फैलाणो (बो), फैलावणो (बो)–क्रि० १ विस्तृत करना। बनाना। २ स्थूल या मोटा करना। ३ आवृत्त करना, छा देना। ४ पनपाना, पसराना। ५ बिखराना, छितराना। ६ संख्या में वृद्धि करना। ७ आकार-प्रकार में अभिवृद्धि करना। ८ प्रचलित करना। ९ प्रसिद्ध करना। १० प्रसारित करना। ११ प्रकाशित करना। १२ व्यापक करना। १३ कार्य क्षेत्र बढ़ाना, सीमा बढ़ाना। १४ प्रकट करना। १५ स्फीति करना। १६ विज्ञापित करना, जानकारी में लाना।

फैलाव–पु० १ विस्तार, बढ़ाव। २ प्रचार। ३ लम्बाई-चौड़ाई। ४ फैलने की क्षमता।

फैली–वि० १ उत्पाती, उपद्रवी। २ ढोंगी, पाखंडी। ३ दुराग्रही, हठी।

फैसन–स्त्री० [अं० फैशन] १ शृंगार, आकर्षक वेश-भूषा २ प्रथा, प्रचलन। ३ रीति, ढंग, चाल।

फैसलो–पु० [अ० फैसल] १ निर्णय, निपटारा। २ अभियोग या झगड़े के प्रति न्यायालय द्वारा दी गई व्यवस्था।

फैसवो–पु० एक प्रकार का पतंग।

फो–पु० १ फल। २ वैधृत। ३ काल। ४ बंध्या। ५ श्याम।

फोओ–देखो 'फुंबो'।

फोई–देखो 'फुही'।

फोक–वि० १ व्यर्थ, फिजूल। २ खोखला।

फोकट–देखो 'फोगट'।

फोग, फोगड़, फोगडो–पु० मरुस्थल में होने वाली एक झाड़ी। २ ऊंट, बकरी आदि की चोरी।

फोगट–वि० मुफ्त, बिना पैसे। २ निः शुल्क। ३ व्यर्थ, निरर्थक।

फोगणो (बो), फोगरणो (बो)–क्रि० १ फूलना, प्रफुल्लित होना। २ फफोले पड़ना।

फोगराणो (बो), फोगरावणो (बो)–क्रि० १ फुलाना, प्रफुल्लित करना। २ फफोले पटकना।

फोगल, फोगलियो, फोगलो–पु० १ 'फोग' नामक पौधे की मंजर २ देखो 'फोग'।

फोगसींगियो–वि० वह घोड़ा जिसके पिछले पैर के संधिस्थल पर भंवरी हो।

फोगाणो (बो)–देखो 'फोगराणो' (बो)।

फोगियो–देखो 'फोग'।

फोड़ड़–देखो 'फोड़ो'।

फोड़णो (बो)–क्रि० [सं० स्फोटनम्] १ आघात, चोट, दबाव या पटक कर कोई वस्तु तोड़ना, खण्डित करना। २ किसी पात्र या वस्तु में छेद या दरार कर देना। ३ आनद्ध वाद्य को विदीर्ण करना। ४ बांध, सीमा, अवरोध आदि तोड़ना, हटाना। ५ किसी दल या संगठन के सदस्यों को तोड़ना, अपनी ओर मिलाना। ६ प्रलोभन देकर भेद लेना, गुप्त बात जानना। ७ विरोध डालना। ८ पृथक या अलग करना। ९ मस्तक में चोट से घाव करना। १० घाव में छेद करना। ११ स्त्री के साथ संभोग या मैथुन करना। १२ मर्यादा छोड़ना। १३ रहस्योद्घाटन करना, बात खोलना। १४ बात का विज्ञापन या प्रसारण करना। १५ विध्वंस, नाश या तहस-नहस करना। १६ बंब या आतिशबाजी में विस्फोट करना। १७ आवरण या तल में छेद करना।

फोड़ाणो (बो), फोड़ावणो (बो)–क्रि० १ आघात, चोट, दबाव या पटका कर किसी वस्तु को तुड़वाना। खण्डित कराना। २ किसी पात्र या वस्तु में छेद कराना, दरार कराना। ३ आनद्ध वाद्य को विदीर्ण कराना। ४ बांध, सीमा, अवरोध आदि तुड़वाना, हटवाना। ५ किसी दल या संगठन के सदस्यों को अपनी ओर मिलवाना। ६ प्रलोभन देकर भेद लिवाना, गुप्त बात कहलाना। ७ विरोध डलवाना। ८ पृथक या अलग करवाना। ९ मस्तक में चोट लगवाकर घाव कराना। १० घाव में छेद कराना। ११ स्त्री के साथ संभोग कराना, मैथुन कराना। १२ मर्यादा छुड़वाना। १३ रहस्योद्घाटन कराना। १४ बात का विज्ञापन कराना, प्रसारण कराना। १५ विध्वंस या नाश कराना। १६ बंब या आतिशबाजी में विस्फोट कराना। १७ आवरण या तल में छेद कराना।

फोड़ो–पु० [सं० स्फोटक] १ शरीर में होने वाला, घाव, फुंसी, फोड़ा। २ कष्ट, संकट।

फोज–देखो 'फौज'। **—आभरण**='फौजआभरण'। **–गाहण**='फौजगाहण'। **—बंधी**='फौजबंधी'। **—मुसाहब**='फौज मुसाहब'।

फोट, फोटकार–स्त्री० १ फटकार, प्रताड़ना। २ धिक्कार, तिरस्कार। ३ वस्तु के टूटने- फूटने की ध्वनि।

फोड़ड–देखो 'फोड़ो'।

फोड़णो (बो)–देखो 'फोड़णो' (बो)।

फोत–देखो 'फौत'।

फोतकार–देखो 'फूतकार'।

फोता–पु० [फा० फोता] अंडकोश।

फोवो–पु० एक पक्षी विशेष।

फोफळ, फोफल–पु० १ नारियल का वृक्ष। २ नारियल। ३ देखो 'फौफळ'। ४ देखो 'फोफळियो'।

फोफळणी–स्त्री० एक वृक्ष विशेष।

फोफळिया–पु० एक व्यावसायिक जाति।

फोफळियो, फोफलियो, फोफळीयो, फोफलीयो–पु० १ 'तिसंडो' के सूखे टुकड़े। २ फफोला। ३ विस्फोट। ४ बढ़ई का एक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपकरण। ५ टोपीदार एक लंबी कील। ३ फोफलिया जाति का व्यक्ति।

फोफानंदफड़ंद–पु० बाहयाडंबर दिखाने या लम्बी-लम्बी डींगें हांकने वाला व्यक्ति।

फोयो–देखो 'फुंबो'।

फोर–पु० परिवर्तन।

फोरणा–देखो 'फुरणा'।

फोरणी–स्त्री० कपड़े की बुनाई में काम आने वाला एक डंडा।

फोरणी (बो)–१ देखो 'फेरणी' (बो)। २ देखो 'फोड़णी' (बो)।

फोरी–देखो 'फौरी'।

फोलावीतोड़ी–देखो 'फौलादीतोड़ी'।

फोली–पु० चने का फल।

फोहारी–देखो 'फंवारी'।

फोहो–देखो 'फुंबो'।

फौणस–देखो 'फांनूस'।

फौंद–पु० तोंद, बड़ा पेट।

फौंदाळ, फौंदाळी–वि० तोंदल, पेटू।

फौ–पु० १ शेषनाग। २ द्रोण। ३ स्वर्ण। ४ गंगा। ५ सात की संख्या।

फौआरी–देखो 'फंवारी'।

फौड़णी (बो)–देखो 'फोड़णी' (बो)।

फौड़ाणी (बो)–देखो 'फोड़णी' (बो)।

फौज–स्त्री० [अ०] १ सेना। सैन्य दल। २ जत्था, समूह झुण्ड। —**आभरण**–पु० मंत्री। शस्त्र। —**गाहण**–पु० योद्धा, वीर। —**बंधी**–स्त्री० सेना की तैयारी, सेना की व्यूह रचना। —**मुसाधब, मुसाहब, मुसाहिब**–पु० फौज बक्सी। सेनापति।

फौजखरच–पु० सेना को रखने के लिए प्रजा से लिया जाने वाला कर।

फौजथंब (थंभ)–पु० किसी सेना का प्रमुख योद्धा।

फौजदार–पु० [अ०] १ सेनापति। २ फौज के आगे चलने वाला छड़ीदार। ३ सैन्य संगठन, विन्यास या व्यूह करने वाला। ४ फौजदारी मामलों पर निर्णय देने वाला। ५ हस्ती शाला का अध्यक्ष। ६ महावत। ७ पुलिस, सिपाही। ८ नगर रक्षक, अधीक्षक।

फौजदारी–स्त्री० [अ०] १ फौजदार का कार्य या पद। २ लड़ाई, झगड़ा, मारपीट। ३ मार-पीट संबंधी मुकद्दमा। ४ ऐसे मुकद्दमे सुनने वाला न्यायालय। ५ जोर-जबरदस्ती।

फौजदेसरी–स्त्री० एक सरकारी लगान विशेष।

फौजपति, फौजपती–पु० सेनापति।

फौजबक्सी–पु० [अ०] सेना के कामों की देख-रेख करने वाला सामंत।

फौजबळ–पु० [अ०] १ सैन्य शक्ति। २ सामन्तों से लिया जाने वाला कर। ३ पराजित राजा या सरदार से फौज के खर्च संबंधी लिया जाने वाला धन। ४ राज्य की सीमा पर स्थित गांवों की रक्षा के लिए नियुक्त सेना के लिए गांवों से लिया जाने वाला कर।

फौजबाब–पु० [अ०] एक प्रकार का कर।

फौजबीडार–पु० १ लाल बाल व सफेद टीकों वाला घोड़ा। २ योद्धा।

फौजांग्रेसर–वि० फौज में आगे, अग्रगण्य रहने वाला।

फौजी–पु० [अ०] १ सैनिक, फौज का सिपाही। २ फौज का सदस्य। –वि० फौज का, फौज संबंधी।

फौत–स्त्री० मृत्यु, मौत।

फौतकार–देखो 'फूतकार'।

फौपली–पु० १ सूखा गोबर, ऊपला। २ देखो 'फौफली'।

फौफळ, फौफल, फौफली–वि० १ खोखला। २ वायु से फूला हुआ, वात युक्त। –स्त्री० सुपारी।

फौरणी (बो)–१ देखो 'फेरणी' (बो)। २ देखो 'फोड़णी' (बो)।

फौरन–क्रि०वि० [अ०] शीघ्र, तुरंत।

फौरी–वि० (स्त्री० फौरी) १ अशुभ। २ कमजोर, दुर्बल। ३ हल्का। ४ निम्न श्रेणी का। ५ नीच। ६ हल्के चरित्र वाला।

फौलाद–पु० [अ०] अच्छा लोहा, इस्पात।

फौलादी–वि० [अ०] १ फौलाद का बना। २ फौलाद संबंधी। ३ दृढ़, मजबूत, क, ठोर।

फौव्वारी, फौहार, फौहारी–देखो 'फंवारी'।

फौहो–देखो 'फुंही'।

फौहो–देखो 'फुंबो'।

फ्यावड़ी, फ्यावरी–स्त्री० एक प्रकार का जंगली जानवर।

फ्रांगणी–स्त्री० एक प्रकार का छोटा पौधा।

फ्रोहारी–देखो 'फंवारी'।

फ्लवंगम–देखो 'प्लवंगम'।

फ्लवग–देखो 'प्लवंग'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--ब--

ब–देवनागरी वर्णमाला का तेईसवां व्यंजन तथा 'प' वर्ग का तीसरा वर्ण ।

बइंयासियो–देखो 'बंयासियो' ।

बइंयासी–देखो 'बंयासी' ।

बइंयासी'क–देखो 'बंयासी'क' ।

बंक, बंकउ, बंकड़, बंकड़ी–स्त्री० [सं० वक्र] १ एक प्रकार की तलवार विशेष । २ देखो 'बांक' । ३ देखो 'बांकी' । ४ देखो 'वक्र' ।

बंकट–वि० [सं० वक्र] २ उल्टा, विरुद्ध । २ निष्ठुर, बेरहम । ३ भयावह, विकट । ४ वीर, बहादुर । –पु० हनुमान, बजरंग ।

बंकनाळ, बंकनालि, बंकनाळी–स्त्री० [सं वक्र-नलिका] १ स्वर्णकारों की छोटी नलिका जो आगे से मुड़ी हुई होती है । २ सुषुम्ना नाड़ी । —वि० वि० देखो 'सुसुम्ना' ।

बंकबत्ती–स्त्री० [सं० वक्र-वर्तिका] टोपी के ऊपर लगी चोटी, किलंगी ।

बंकरो–पु० [सं० वक्र-हरि] हनुमान, महावीर ।

बंकाई–स्त्री० [सं० वक्र] १ टेढ़ापन, बांकापन, तिरछापन । २ बांकुरापन, विशेषता ।

बंकार (क)–देखो 'बांकी' ।

बंकि–१ देखो 'बंक' । २ देखो 'बांकी' । ३ देखो 'बांकी' ।

बंकियो–पु० १ स्त्रियों के बाहु का एक आभूषण विशेष । २ देखो 'बांकियो' । ३ देखो 'बांकी' ।

बंकी–देखो 'बंक, बांकी, बांकी' ।

बंकुर–देखो 'बांकी' ।

बंकुरता–देखो 'बंकाई' ।

बंकी–देखो 'बांकी' ।

बंग–पु० १ एक देश का नाम । २ बंगाल का नाम । ३ यवन, मुसलमान । ४ रहस्य, भेद । ५ एक वाद्य विशेष । ६ पहाड़ की घाटी, दर्रा । ७ देखो 'बंग' ।

बंगड़–पु० १ हाथी के दांत के ऊपर लगने वाला धातु का छल्ला, बंद । २ धातु का छल्ला । ३ इसी तरह लोहे या पीतल के बने छोटे-बड़े छल्ले जो यथा अवसर काम आते हैं । ४ देखो 'बांगड़ी' ।

बंगड़ी–स्त्री० १ एक प्रकार का आभूषण । २ एक प्रकार का खिलौना । ३ नैचे के मध्य का उभरा हुआ भाग । ४ देखो 'बंगड़' । ५ चूड़ी पर लगने का बंद ।

बंगड़ीदार–पु० १ वह चूड़ी जिस पर सोने या चांदी के पत्तर का बन्द लगा हो । २ कंगूरे वाला अर्द्ध मण्डलाकार पत्थर ।

बंगळ–देखो 'बंगाळ' ।

बंगळा, बंगला–स्त्री० बंगाल की भाषा ।

बंगळियो–देखो 'बंगळी' ।

बंगळी, बंगसी–पु० घोड़ा, अश्व ।

बंगळो–पु० १ चारों ओर से खुला व चाहर दिवारी से घिरा एक मंजिला मकान । २ मकान के ऊपर बना छोटा हवादार कमरा । ३ घास-फूस या खपरैल का छोटा मकान । ४ जागीरदारों की मर्दानी बैठक का कमरा । ५ छोटा मंदिर ।

बंगस, बंगसी, बंगस्स–पु० [फा० बंगिश] १ एक पठान जाति व इस जाति का व्यक्ति । २ यवन, मुसलमान ।

बंगा–पु० १ हाथ का आभूषण विशेष । २ देखो 'बंगाळ' ।

बंगार–देखो 'बघार' ।

बंगारणो (बो)–देखो 'बघारणो (बो)' ।

बंगारा–वि० [देश०] १ बंगाल देश का । २ बंगाल से संबंधित ।

बंगारी–स्त्री० [सं० वंग-अरि] हरताल ।

बंगाळ–पु० [सं० वंग] १ भारत का एक प्रान्त । २ बादशाह । ३ मुसलमान, यवन । ४ असुर, राक्षस । ५ बंगाल प्रदेश का घोड़ा । ६ वाम पक्ष की सेना । ७ एक रागिनी विशेष । –वि० बड़ा, महान् ।

बंगाळिका–स्त्री० मेघ राग की स्त्री एक रागिनी ।

बंगाळिय, बंगाळी–वि० बंगाल का, बंगाल संबंधी । –पु० १ बंगाल देश का निवासी । २ यवन, मुसलमान । ३ महादेव, शिव । –स्त्री० ४ बंगाल की भाषा । ५ एक रागिनी विशेष ।

बंगाळी–देखी 'बंगाळ' ।

बंगू–पु० १ एक प्रकार की मछली । २ एक प्रकार का खिलौना । ३ देखो 'बरघू' ।

बंगेस्वरी–स्त्री० १ बंग देश की देवी । २ एक रागिनी । ३ देखो 'बागीस्वरी' ।

बंधोटी–वि० बाँधने वाली ।

बंचक–देखो 'बंचक' ।

बंचकता–देखो 'बंचकता' ।

बंचणा–देखो 'बंचना' ।

बंचणी (बो)–देखो 'बंचणी' (बो) ।

बंचत–१ देखो 'वांछित' । २ देखो 'बंचित' ।

बंचाणी (बो)–देखो 'बचाणी' (बो) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंचित–देखो 'वंचित'।

बंछक–१ देखो 'वंछक'। २ देखो 'वंचक'।

बंछणी (बी)–देखो 'वंछणी' (बी)।

बंछाणी (बी)–देखो 'वंछाणी' (बी)।

बछासुर–देखो 'वत्सासुर'।

बंछित–देखो 'वांछित'।

बछचा–देखो 'वांछा'।

बंजड़, बंजर–वि० [सं० बंध्या] जहां उपज या पैदावार न होती हो, ऊसर। —भूमि—स्त्री० ऊसर भूमि। बिना उपज वाली कृषि भूमि।

बंजवाड़–पु० नुकसान, हानि।

बंजारा–देखो 'बिणजारा'।

बंजारी–देखो 'बिणजारी'।

बंझ, बंझ्या–देखो 'बंध्या'।

बंट–देखो 'वंट'।

बंटक–पु० किसी उपकरण का दस्ता, बेंट।

बंटणी–(बी)–क्रि० [सं० वट्] १ विभाजित होना, अलग-अलग हिस्सों में होना। २ वितरित होना, बांटा जाना। दिया जाना। ३ पीसा जाना, बंटाई होना।

बंटवाई–देखो 'बंटाई'।

बंटवाड़, बंटवाड़ी, बंटवारी–पु० [सं. वंट+पाटक] १ बांटने, विभाजित करने आदि का कार्य, विभाजन, बंटवारा। २ विभाजित भाग या हिस्सा।

बंटाइयत–देखो 'बंटायत'।

बंटाई–स्त्री० १ बांटने का कार्य वंटवारा, विभाजन। २ वितरण। ३ पीसने का कार्य, पिसाई। ४ इस कार्य का पारिश्रमिक।

बंटाणी (बी)–क्रि० १ विभाजित कराना, अलग-अलग हिस्सों में कराना। २ वितरित कराना, बंटवाना। ३ पिसवाना।

बंटायत–पु० हिस्सेदार, भागीदार, साझेदार।

बंटारी–वि० १ विभाजन या बंटवारा करने वाला। २ हिस्से बनाने वाला। ३ वितरण कराने वाला। ४ पीसने वाला।

बंटावणी (बी)–देखो 'बंटाणी' (बी)।

बंटी–स्त्री० हिरन आदि पशुओं को फंसाने का जाल या फंदा।

बंटो–पु० १ बच्चों के खेलने की काच की गोली। २ देखो 'बांटो'

बंड–वि० १ चंचल, उद्दण्ड, बदमाश। २ देखो 'वांडो'। ३ देखो 'बांडो'। ४ देखो 'बंडी'।

बंडळी–स्त्री० व्यक्तियों का समूह, दल, मण्डली।

बंडियो–देखो 'बंडो'।

बंडी–स्त्री० १ आचार आदि रखने का, चीनी-मिट्टी का पात्र विशेष। २ देखो 'बंडी'।

बंडी–पु० १ बिना बांहों का बनियान या कमीज। २ देखो 'वंडी, बांडी, वांडी'।

बणकड–पु० एक वृक्ष विशेष।

बतळ–देखो 'बंतळ'।

बत्रीस–देखो 'बत्तीस'।

बंद–वि० [फा०] १ रुका हुआ, अवरुद्ध। २ प्रतिबंधित। ३ जो चारों ओर या किसी भी ओर से खुला न हो। ४ जिसके मुंह पर डाट या ढक्कन लगा हो। ५ जिसका कोई मुंह न हो। ६ जिसका द्वार जड़ा हुआ हो। ७ जिसका कार्य, गति या उद्योग चालू न हो। ८ जो गतिमान न हो, रुका हुआ। स्थिर। ९ जिसका प्रचलन रुक गया हो, जो चलन में न हो। १० जो मुक्त या आजाद न हो। ११ बन्धन में पड़ा हुआ। –पु० १ बांधना क्रिया या भाव बंधन। २ रंगाई के समय कपड़े को स्थान-स्थान से बांधने की क्रिया। ३ पगड़ी बांधने का एक ढंग। ४ चुनाई की मजबूती के लिये दीवार के बीच-बीच में लगाई जाने वाली पट्टियां। ५ स्त्रियों के हाथ का आभूषण विशेष। ७ विबंध आनाह, कब्ज। ७ देखो 'बंध'।

बंधक–वि० १ बंधन युक्त। २ देखो 'बंधक'।

बंदगी–स्त्री० [फा०] १ ईश्वर वंदना, ईश्वर भक्ति। २ सेवा-शुश्रूषा, टहल। ३ अभिवादन, सलाम।

बंदगोभी–स्त्री० पत्ता गोभी, करमकल्ला, एक शाक।

बंदड़ी–१ देखो 'बांदी'। २ देखो 'बनी'।

बंदण–१ देखो 'वंदन'। २ देखो 'बंधन'।

बंदणा–देखो 'वंदना'।

बंदणियो–वि० १ वंदना या आराधना करने वाला। २ बंधन में आने वाला। ३ देखो 'बंधन'। ४ देखो 'बंधणी'।

बंदणी–१ देखो 'बंधणी'। २ देखो 'बंधन'।

बंदणी (बी)–१ देखो 'वंदणी' (बी)। २ देखो 'बंधणी' (बी)।

बंदन–१ देखो 'बंधन'। २ देखो 'वंदन'।

बंदनमाळ–देखो 'बांदरमाळ'।

बंदना–देखो 'वंदना'।

बंदर–पु० १ बन्दूक चलाने का खटका। २ देखो 'बंदरगाह'। ३ देखो 'वांनर'।

बंदरगाह–पु० [फा०] समुद्र के किनारे जहाजों के ठहरने का स्थान।

बंदरमाळ, बंदरवाळ, बंदरवाळि, बंदराळ–देखो 'बांदरमाळ'।

बंदरियो–पु० १ बढ़ई की कबानी का एक भाग। २ देखो 'बंदर'। ३ देखो 'वांनर'।

बंदळी–स्त्री० [सं० विदु:] स्त्रियों का एक आभूषण।

बंदव–देखो 'बंधु'।

बंदवांमी–देखो 'वांमीबंद'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंदवीर–वि० जिसकी वंदना की जाय, वंदनीय ।

बंदवो–देखो 'बंधु' ।

बंदसाळ–स्त्री० [सं० बंध-शाला] बंदीगृह, जेल ।

बंदांण–देखो 'बंधाण' ।

बंदांणी–देखो 'बंधाणी' ।

बंदाणो(णी)–१ देखो 'बंधाणो' (णी) । २ देखो 'बंधाणो' (णी) ।

बंदारक–देखो 'बंदारक' ।

बंदारा–स्त्री० रंगाई का कार्य करने वाली एक जाति ।

बंदारो–पु० उक्त जाति का रंगरेज ।

बंदावणो(णी)–१देखो 'बंधाणो' (णी) । २ देखो 'बंदाणो' (णी) ।

बंदि–देखो 'बंदी' ।

बंदिअण, बंदिआंण–देखो 'बंदीजण' ।

बंदिखांनो–देखो 'बंदीखानो' ।

बंदिजण, बंदियण, बंदियांण–देखो 'बंदीजण' ।

बंदिण, बंदिन–पु० [सं० वंदिन्] १ बन्दीजन, भाट । २ कैदी । ३ देखो 'वंदन' ।

बंदिस–स्त्री० [फा० बंदिश] १ बांधने की क्रिया या भाव । २ बधन रुकावट ।

बंदी–पु० [सं० वंदिन्] १ बंदीजन, भाट । २ कैदी । ३ नियमित चलने वाला कार्य । ४ देखो 'बांदी' ।

बंदीअण, बंदीआंण–देखो 'बंदीजण' ।

बंदीखांनो–पु० [फा० बंदीखांन] कैदखाना, बंदीगृह ।

बंदीगी–देखो 'बंदगी' ।

बंदीघर–पु० [फा० बंदी+सं० गृह] कैद खाना, कारावास ।

बंदीजण, बंदीजन, बंदीयण–पु० [सं०वन्दिन्+जन] १ विरुदावली पढ़ने वाला भाट । २ याचक ।

बंदीवांन–पु० [सं० बंदी+वत्] १ कैदी । २ याचक । ३ भाट बंदीजन ।

बंदुकची–देखो 'बंदूकची' ।

बंदुबस्त–देखो 'बंदोबस्त' ।

बंदूक, बंदूकड़ी–स्त्री० [अ०] नलीदार अस्त्र (यंत्र) जिसमें गोली और बारूद भर कर छोड़ा जाता है ।

बंदूकची–पु० [अ० बंदूक+तु०ची] १ बंदूक चलाने वाला व्यक्ति, योद्धा । २ बंदूक की सफाई करने वाला व्यक्ति । ३ बंदूक बनाने वाला लोहार ।

बंदूकिया–स्त्री० बंदूक बनाने का व्यवसाय करने वाली जाति ।

बंदूकियो–पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।

बंदूख–देखो 'बंदूक' ।

बंदेज–देखो 'बंधेज' ।

बंधोकड़ी, बंधोखड़ी, बंधोगड़ी–स्त्री० १ बंधन । २ रुकावट । ३ अटकाव । ४ नियंत्रण, कैद ।

बंदोबस्त–पु० [फा०] १ इंतजाम, प्रबंध, व्यवस्था । २ कृषि भूमि की नपाई का कार्य । ३ कृषि भूमि पर कर निर्धारित करने वाला विभाग ।

बंदोर–पु० कैदी ।

बंदोरो–देखो 'बंदोळो' ।

बंदोळो–स्त्री० [स० वंदवल्ली] विवाह के पहले दिन की संध्या को होने वाला उत्सव या कार्यक्रम विशेष ।

बांदोळी–पु० विवाह के पूर्व वाले दिनों में इष्ट-मित्र या सगे संबंधियों द्वारा दूल्हे या दुल्हिन को दिया जाने वाला भोज ।

बंबीपस्त–देखो 'बंदोबस्त' ।

बंबी–पु० [फा० बंद] (स्त्री० बंदी) १ सेवक, दास । २ नौकर, अनुचर । ३ भक्त । ४ कृपा पात्र । ५ स्वयं के लिए एक सम्बोधन, एक शब्द । ६ देखो 'बांध' ।

बंद्दी–देखो 'बंदो' ।

बंद्दबाळय–देखो 'बांदरमाळ' ।

बंध–पु० [सं० बंधः] १ बांधने की क्रिया, भाव या ढंग । २ बंधन । ३ डोरी, रस्सी, जंजीर । ४ फीता, कस्सा, डोरा । ५ गांठ, ग्रंथि । ६ कैद । ७ लगाव, फंसाव । ८ संबंध, मेल । ९ आड, रोक, रक्षा, सहारा । १० मर्यादा, सीमा । ११ तट, किनारा । १२ चौखट । १३ लकड़ी आदि के सिरे पर मजबूती के लिये लगाया जाने वाला धातु का गोल छल्ला । १४ युद्ध के नियम, कलाएँ १५ शरीर । १६ शरीर का गठन । १७ लगान, कर, टेक्स । १८ जाल । १९ संकट । २० संग्राम । २१ अस्त्र-शस्त्र । २२ जोड़, जुड़ाई । २३ बनावट, रचना । २४ प्रबन्ध काव्य रचना । २५ काव्य-छंद का एक भेद । २६ चित्र काव्य में छंद रचना । २७ मैथुन संबंधी एक आसन । २८ योग साधना की कोई मुद्रा । २९ साहित्य में निबंध आदि की रचना । ३० किसी जलाशय का बांध । ३१ परिमाण या महत्ता सूचक एक प्रत्यय शब्द । ३२ मलबंधी, कब्जियत । ३३ परिणाम, हल, नतीजा । ३४ परिस्थिति अवस्था । ३५ जिसके द्वारा कर्म और आत्मा क्षीर-नीर की तरह एक हो । ३६ सम्प्रदाय सूचक शब्द । ३७ बहत्तर कलाओं में से एक । ३८ देखो 'बधु' । ३९ देखो 'बद' । ४० देखो 'बांध' ।

बंधक–वि० [सं०] १ बांधने वाला । २ पकड़ने वाला । ३ तोड़ने, भंग करने वाला । —पु० १ कैद । २ कैदी । ३ रेहन रखी जाने वाली वस्तु । ४ घरोहर । ५ पट्टी । ६ बांध ।

बंधकि, बंधकी–स्त्री० [सं०] १ बदचलन या व्यभिचारिणी स्त्री । २ वेश्या, रंडी । ३ देखो 'बंधक' ।

बांधकुस्ट–पु० कब्जियत, कोष्ठ बद्धता ।

बंधण–पु० १ खड्ग, तलवार । २ देखो 'बंधन' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंधणियो–१ देखो 'बंधणी' । २ देखो 'बंधन' ।

बंधणी–स्त्री० १ शरीर के संधिस्थलों को जोड़ने वाली नाड़ी । २ रस्सी, डोरी ।

बंधणो–पु० [सं० बधन] १ रस्सा । २ देखो 'बंधन' ।

बंधणो (बो)–क्रि० [सं० बंधनम्] १ बंधन में आना, बंधना । २ डोरी आदि के बंधन में आना,फंदे में आना । ३ अटकना, प्रतिबंधित होना । ४ प्रतिज्ञाबद्ध होना, वचनबद्ध होना । ५ फंसना, उलझना । ६ स्वाद-वशीभूत होना । रसलोलुप होना । ७ आसक्त, मुग्ध या मोहित होना । ८ क्रम निर्धारित होना । ९ नियमित होना । १० पालन या प्रचलन के लिये नियत या निर्धारित होना । ११ सैन्य विन्यास होना, युद्ध के लिये सजना । १२ काव्य रचना होना । १३ सिर पर साफा आदि बांधा जाना । १४ रंगाई के समय वस्त्र को विशेष ढंग से बांधा जाना । १५ स्थिर होना । १६ स्थापित होना । १७ जुड़ना, संलग्न होना । १८ कूए आदि की बंधाई होना । १९ तालाब, खेत आदि के चारों ओर दीवार किया जाना । २० मैल या स्निग्धता के कारण परस्पर चिपकना, ग्रंथि बनना । २१ उत्तरदायित्व में फंसना । २२ स्थाई संबंध होना । २३ देखो 'वंदणो' (बो) । २४ देखो 'बांधणो' (बो) ।

बंधन–पु० [सं० बंधनम्] १ बांधना क्रिया या भाव । २ बांधने का उपकरण । ३ रस्सा, रस्सी, डोरी । ४ वस्त्रों की रंगाई के समय विशेष रूप से बांधने का ढंग । ५ फंसा रखने वाली वस्तु । ६ शरीर का गठन । ७ प्रतिबंध, रुकावट । ८ हथकड़ी या बेड़ी । ९ जेल, कैदखाना । १० बांध कर रखने का स्थान । ११ मानसिक रूप से बंधे रहने की अवस्था, भाव ।

बंधर–देखो 'बंधुर' ।

बंधव–देखो 'बंधु' ।

बंधवणी (बो)–१ देखो 'बंधणी' (बो) । २ देखो 'बांधणी' (बो) ।

बंधवो–देखो 'बंधु' ।

बंधाण–पु० [सं० बंधनम्] १ किसी कार्य के चलने की रीति, नियम, परिपाटी । २ परंपरा अनुसार लेने-देने वाला धन, वस्तु । ३ सृष्टि का नियम । ४ नियम । ५ कैद । ६ वचनबद्धता । ७ रुकावट, बाधा । ८ व्यसन । ९ संगीत में ताल का सम । १० देखो 'बंधन' । ११ देखो 'बंध' ।

बंधाणी–वि० १ किसी बंधन में आया हुआ, वशीभूत । २ व्यसनी, आदी । ३ विवश, लाचार । ४ कुछ क्रियाएँ नियमित रूप से करने वाला ।

बंधान–देखो 'बंधाण' ।

बंधाड़णो (बो), बंधाणो (बो)–क्रि० १ बंधवाना, बंधन में लिराना, बंधन युक्त कराना । २ रस्सी आदि के बंधन में डलवाना, फंदे में डलाना । ३ ग्रंथि या सम्पुट रूप में कराना, गांठ बनवाना । ४ गट्ठर बनवाना । ५ प्रतिबंध में कराना, अटकवाना । ६ प्रतिज्ञा या वचनबद्ध कराना । ७ फंसवाना, उलझवाना । ८. स्वाद या रस लोलुप कराना, वशीभूत कराना । ९ आसक्त या मुग्ध कराना । १० क्रम या नियम निर्धारित कराना । ११ नियमित कराना । १२ प्रचलन या पालन के लिये निर्धारित कराना । १३ सैन्य विन्यास कराना, सजवाना, गठित कराना । १४ काव्य रचना करवाना । १५ धारण करवाना, शिर पर बंधवाना । १६ रंगाई के लिये वस्त्र को विशेष ढंग से बंधवाना । १७ स्थित कराना, स्थापित या स्थिर कराना । १८ जुड़वाना, संलग्न कराना । १९ कूए आदि की बंधाई कराना । २० बांध या दीवार बनवाना । २१ देखो 'वंदाणो' (बो) ।

बंधारणो, (बो)–देखो 'वधारणो' (बो) ।

बंधारा–देखो 'बंदारा' ।

बंधारो–देखो 'बंदारो' ।

बंधालग–पु० [देश०] एक प्रकार का कीमती वस्त्र विशेष ।

बंधावणो (बो)–देखो 'बंधाणो' (बो) ।

बंधित–वि० [सं०] १ बंधा हुआ । २ प्रतिबंधित । ३ नियमित । ४ कैद में पड़ा हुआ । ५ बंध्या, बांझ ।

बंधिनो–स्त्री० एक प्रकार की विद्या विशेष ।

बंधियो–देखो 'बंध' ।

बंधी–देखो 'बंदी' ।

बंधीखानो–देखो 'बंदीखानो' ।

बंधु–वि० [सं०] सहायक । –पु० १ पारिवारिक जन । २ भाई । ३ नाते-रिश्तेदार । ४ दोस्त, मित्र । ५. 'बधु-जीवक' नामक वृक्ष ।

बंधुता–स्त्री० १ भाई चारा, भ्रातृत्व, बंधुत्व । २ दोस्ती, मित्रता ।

बंधुर–वि० [सं०] १ सुन्दर, मनोहर । २ तरंगित, लहराता हुआ । ३ टेढ़ा-मेढ़ा ।

बंधू–देखो 'बंधु' ।

बंधूक–पु० [सं०] दोपरिया नामक वृक्ष ।

बंधूजगत–पु० [सं. जगत्-बंधु] १ ईश्वर । २ सूर्य ।

बंधेज–पु० १ नियम में बंधा चलने वाला कार्य-क्रम । २. नियमित रूप से दिया जाने वाला द्रव्य या पदार्थ । ३ व्यवस्था, प्रबंध । ४ किसी वस्तु को रोकने या बांधने का ढंग । ५ वीर्य स्तंभन की युक्ति । ६ काव्य-प्रबन्ध । ७ व्यूह रचना । ८ रंगाई से पूर्व वस्त्र को बांधने का ढंग विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ इस प्रकार से बांध कर रंगा हुआ वस्त्र । १० देखो 'बंधण' । ११ देखो 'बंद' ।

बंधोकड़ी, बंधोखड़ी, बंधोगड़ी–देखो 'बदोकड़ी' ।

बंधी–१ देखो 'बंधु' । २ देखो 'बंध' । ३ देखो 'बांध' ।

बंध्य–वि० [सं०] १ बांधने व कैद करने योग्य । २ बंध्या ।

बंध्या–वि० [सं०] जिसके संतान न होती हो, बांझ । –स्त्री० बांझ स्त्री या मादा पशु ।

बंनी–१ देखो 'बनी' । २ देखो 'बन' ।

बंनोळी–देखो 'बंदोळी' ।

बंनोळौ–देखो 'बंदोळौ' ।

बंब–वि० [सं० बिंब] रक्ताभ, लाल । –पु० १ सूर्य, रवि । २ प्रतिबिंब, चमक । ३ खून । ४ रणनाद । ५ आवाज, ध्वनि । ६ ढोल । ७ नगाड़ा । ८ दुंदुभि । [अं०] ९ बारूद का गोला । [अनु०] १० शिव भक्तों का एक उच्चारण 'बं-बं महादेव' । ११ देखो 'बिंब' । १२ देखो 'बंबळी' ।

बंबक–पु० १ रक्त, खून । २ नगाड़ा ।

बंबराळ–वि० १ क्रोध पूर्ण, क्रुद्ध । २ विकराल, भयंकर, जबरदस्त । ३ जोश पूर्ण । ४ लाल ।

बंबळ–वि० लाल ।

बंबळी–स्त्री० १ युद्ध में बजने वाला एक बाजा । २ देखो 'बांवळी' ।

बंबहर–पु० १ सूर्य, भानु । २ महादेव ।

बंबाड़–पु० [सं० बंभाष्] १ चिल्लाहट, पुकार । २ जोरदार ध्वनि । ३ जोश पूर्ण आवाज । ४ रंभाने की क्रिया या भाव । ५ देखो 'बोबाड़' ।

बंबाड़णौ (बौ)–क्रि० [सं० बम्भाषणम्] १ जोश पूर्ण आवाज करना । २ रंभाना । ३ चिल्लाना, जोर से पुकारना । ४ रुदन करना, रोना ।

बंबार–वि० गहरा, बड़ा । –पु० १ शस्त्र का घाव या छेद । २ बड़ा घाव । ३ देखो 'बंबाड़' ।

बंबारौ–पु० १ उदर, पेट । २ बड़ा खड्डा । ३ देखो 'बंबार' ।

बंबाळ–वि० (स्त्री० बंबाळी) १ प्रचंड, भयंकर । २ तेज, तीव्र । ३ जबरदस्त, महान् । ४ लाल, रक्ताभ । ५ भयावह, भयप्रद । ६ लंबपथ, तर । ७ तेजस्वी । –पु० १ सिंह । २ सूर्य । ३ नगाड़ा । ४ सांसारिक प्रपंच, झमेला । ५ ढोंग, पाखण्ड । ६ उत्तरदायित्व, बीझा । ७ झुण्ड, समूह । ८ ऊंटों की एक जाति व इस जाति का ऊंट । ९ समुद्र । १० गुच्छा । ११ देखो 'बंब' ।

बंबाळ–देखो 'बंबाळ' ।

बंबाळियौ, बंबाळौ–वि० १ प्रपंची, झमेले में पड़ा हुआ । २ देखो 'बंबाळ' ।

बंबि, बंबी–पु० [सं० विवर] १ नगाड़ा । २ सर्प । ३ सर्प का बिल, विवर । ४ बंद बोरी से सामान निकाल कर देखने का उपकरण, परखी ।

बंबीयळ, बंबोळ–देखो 'बंबी' ।

बंबूल–देखो 'बांवळ' ।

बंबूळी–देखो 'बांवळी' ।

बंबौ–पु० १ पानी का बड़ा नाला । २ गंदे पानी का नाला ३ स्रोत ।

बंभंड– देखो 'ब्रह्मांड' ।

बंभ–१ देखो 'ब्रह्मा' । २ देखो 'ब्राह्मण' । ३ देखो 'ब्रह्म' । ४ देखो 'बंब' ।

बंभणवाड़–पु० [सं० ब्राह्मण-पाटक] एक देश का नाम ।

बंभदेव–देखो 'ब्रह्मदेव' ।

बंभर–पु० [सं० विवर] १ बड़ी गुफा । कंदरा । २ बड़ा छेद । ३ देखो 'बंबार' ।

बंभलोक, बंभलोग–देखो 'ब्रह्मलोक' ।

बंभहत्या–देखो 'ब्रह्महत्या' ।

बंभांण–१ देखो 'ब्रह्मा' । २ देखो 'ब्रह्मांड' । ३ देखो 'ब्राह्मण' ।

बंभार–देखो 'बंबार' ।

बंभि, बंभी–१ देखो 'ब्राह्मण' । २ देखो 'भांबी' । ३ देखो बंबी' ।

बंभेसर–पु० [सं० ब्रह्म-ईश्वर] १ ब्रह्मा । २ महादेव । ३ ब्राह्मणों का स्वामी ।

बंभांण–१ देखो 'ब्रह्मांड' । २ देखो 'ब्रह्मा' । ३ देखो 'ब्राह्मण' ।

बंया–देखो 'बांह' ।

बयाळी, बयाळीस–वि० [सं० द्विचत्वारिंशत्] चालीस व दो, बयालीं । –पु० चालीस व दो का अंक व संख्या, ४२ ।

बयाळीसमौ (वौं)–वि० बयालीस के स्थान वाला, इकतालीस के बाद वाला ।

बयाळीसौ, बयाळौ, बयासौ–पु० बयालीस की संख्या का वर्ष ।

बयासियौ–पु० बयासी की संख्या का वर्ष ।

बयासी–वि० [सं० द्वयशीति] अस्सी व दो, बयासी । –पु० अस्सी व दो की संख्या, ८२ ।

बयासी'क–वि० बयासी के लगभग ।

बयासीमौ (वौं)–वि० बयासी के स्थान वाला, इक्यासी के बाद वाला ।

बरड़ूकणौ (बौ) देखो 'बड़कणौ' (बौ) ।

बवळौ–देखो 'बांवळ' ।

बस–१ देखो 'बंस' । २ देखो 'बंसी' । ३ देखो 'बांस' । —छेतर='बंसछेतर' ।

बसक–देखो 'बंसक' ।

बसज–देखो 'बंसज' ।

बसबक्ष–देखो 'बंसबक्ष' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंसभाई–देखो 'वंसभाई'।

बंसरी, बंसळी–१ देखो 'बंसी'। २ देखो 'बांसरी'। ३ देखो 'वंसी'।

बंससोचन–देखो 'वंसलोचन'।

बंसा–१ देखो 'वंसा'। २ देखो 'बांस'।

बंसाबळियो, बंसाबळीयो, बंसावळियो–देखो 'वंसावळियो'।

बंसावळी–१ देखो 'वंसावळी'। २ देखो 'बासावळी'।

बंसी–स्त्री० १ मछली पकड़ने का कांटा। २ देखो 'वंसी'। ३ देखो 'बांसरी'। —**धर, धरण**='वंसीधर'।

बंसीधर–देखो 'वंसधर'।

बंहाळ, बहाळो–देखो 'बांहाळो'।

ब–पु० [स०] १ बोल। २ नीम का फल। ३ ववकरण। ४ कलस। ५ प्लुत स्वर। ६ संग्राम। ७ प्रवेश। ८ बुनावट ९ बुवाई। १० वरुण। ११ योनि। १२ समुद्र। १३ जल। १४ गमन। १५ तंतुसंतान। १६ सूचना। –वि० चमकयुक्त।

बग्रि, बग्रो–१ देखो 'बोर'। २ देखो 'बैर'।

बग्रसिणी (बी)–देखो 'बंसणी' (बी)।

बइन, बइनड़, बइनड़ी, बइनड, बइनडी–देखो 'बहन'।

बइकार–पु० १ बाजा बजाने वाला व्यक्ति। २ देखो 'बेकार'।

बइट्ठक–देखो 'बैठक'।

बइट्ठणी (बी)–देखो 'बैठणी' (बी)।

बइट्ठाणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बी)।

बइठक–देखो 'बैठक'।

बइठण, बइठणी–पु० बैठने का ढंग, बैठने का आसन।

बइठणी (बी)–देखो 'बैठणी' (बी)।

बइठाणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बी)।

बइठ्ठणी (बी)–देखो 'बैठणी' (बी)।

बइठ्ठाणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बी)।

बइतालीस, बइतालीस–देखो 'बयालीस'।

बइयर, बइयरि बइयरी–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'वैर'। ३ देखो 'वैरी'। ४ देखो 'बोर'।

बइयो–पु० [सं० वयनम्] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

बइर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'बैर'। ३ देखो 'बोर'।

बइरण, बइरणी–१ देखो 'वैरण'। २ देखो 'वैर'।

बइरी–१ देखो 'वैरी'। २ देखो 'वैर'। ३ देखो 'बोर'।

बइल, बइल्ल–देखो 'बैल'।

बइस–देखो 'वैस्य'।

बइसक–देखो 'वैसक'।

बइसणी–देखो 'वैसणी'।

बइसणी (बी)–देखो 'बैसणी' (बी)।

बइसाणी (बी)–देखो 'बैसाणी' (बी)।

बइसारणी (बी)–१ देखो 'बैसाणी' (बी)। २ देखो 'विसारणी' (बी)।

बइसावणी (बी)–देखो 'बैसाणी' (बी)।

बइहन–देखो 'बहन'।

बई–स्त्री० १ चड़स खींचने के जूए के ऊपर-नीचे लगने वाली लकड़ी। २ देखो 'बही'।

बईग्रर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'बोर'। ३ देखो 'वैर'।

बईग्रारि, बईग्रारी–१देखो 'बैर'। २ देखो 'वैरी'। ३ देखो 'वैर'।

बईकुंठ–देखो 'वैकुंठ'।

बईठणी (बी)–देखो 'बैठणी' (बी)।

बईठाणी (बी), बईठावणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बी)।

बईमांन–देखो 'बेईमांन'।

बईमांनी–देखो 'बेईमांनी'।

बईयर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'वैर'। ३ देखो 'बोर'।

बईयरि (री)–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'वैरी'। ३ देखो 'बोर'।

बईयासी–देखो 'बयासी'।

बईयो–देखो 'बइयो'।

बईर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'वैर' ३ देखो 'बोर'।

बईरण, बईरणी–१ देखो 'वैरण'। २ देखो 'बैर'।

बईरी–१ देखो 'बैरी'। २ देखो 'वैर'।

बईस–देखो 'वैस्य'।

बउ–देखो 'बहु'। —**खोवड़ी**='बहुखीचड़ी'। —**बंदोळी**='बहुबंदोळी'।

बउर–देखो 'बोर'।

बउरात–देखो 'बहुरात'।

बउरि, बउरी–देखो 'बोर'।

बउलाणी (बी), बउलावणी (बी)–१ देखो 'बोलाणी' (बी)। २ देखो 'बुलाणी' (बी)।

बउलोच–देखो 'बलोच'।

बऊ, बऊड़ी–देखो 'बहू'।

बऊजी–देखो 'बहूजी'।

बग्रोत्तर–वि० [सं० द्विसप्तति] सत्तर और दो, बहत्तर। –पु० सत्तर व दो की संख्या, ७२।

बग्रोत्तरमो (वी)–वि० बहत्तर के स्थान वाला, इकत्तर के बाद वाला।

बग्रोत्तरी–पु० बहत्तर का वर्ष।

बक–वि० [सं० बकः] (स्त्री० बकी) १ बगुले के समान श्वेत। २ बक ध्यानी, ढोंगी, पाखण्डी। –पु० १ जल जन्तुओं का शिकार करने वाला एक श्वेत व बड़ा पक्षी। २ पुष्प। ३ अगस्त्य नामक वृक्ष व उसका फूल। ४ कुबेर। ५ भीम द्वारा वधित एक असुर। ६ कंस का अनुचर एक राक्षस। ७ देखो 'बाकी'। ८ देखो 'बख'।

बकमक–पु० बकवाद, प्रलाप। व्यर्थ का विवाद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बकट-देखो 'विकट' ।

बकणी-स्त्री० बकने की क्रिया या भाव ।

बकणो (बो)-क्रि० [सं० वच्] १ कहना, बोलना । २ उपदेश देना । ३ अधिक बोलना, व्यर्थ बकना । ४ हल्ला करना, चिल्लाना । ५ अचेतन अवस्था में बड़बड़ाना । ६ प्रलाप करना, बड़बड़ाना । ७ विलाप करना, रुदन करना ।

बकत-१ देखो 'बखत' । २ देखो 'वक्त' ।

बकतर-देखो 'बखतर' ।

बकता-देखो 'वक्ता' ।

बकतावर-देखो 'बखतावर' ।

बकत्तर-देखो 'बखतर' ।

बकत्तावर-देखो 'बखतावर' ।

बकत्र-देखो 'वक्त्र' ।

बकध्यान-पु० [सं० बक-ध्यान] बगुले की तरह का दिखावटी ध्यान, ढोंग, पाखण्ड ।

बकध्यानी-वि०[सं०]१ ढोंगी, पाखण्डी । २ छली, कपटी, धूर्त ।

बकपंचक-स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ला ग्यारस से पूर्णमासी तक की तिथियां ।

बकबक-देखो 'बकझक' ।

बकबकणो (बो)-देखो 'बकणो' बो) ।

बकबाद-देखो 'बकवाद' ।

बकमारण-पु० [सं०] १ बकासुर को मारने वाले, श्रीकृष्ण । २ भीम ।

बकमौन-देखो 'बकध्यान' ।

बकमौनी-देखो 'बकध्यानी' ।

बकयंवलि-स्त्री० एक वृक्ष विशेष ।

बकयली-स्त्री० एक वृक्ष विशेष ।

बकर-पु० [अ०] १ गाय । २ देखो 'बकरी' ।

बकरकसाई-वि० [अ० बकर-कस्साब] गौ वधिक, गौ हिंसक ।

बकरड़ी-देखो 'बकरी' ।

बकरणो (बो)-क्रि० १ अपनी गलती या भूल कबूल करना, मानना । २ गुप्त बात कहना, भेद प्रकट करना । ३ मुश्किल से सत्य बोलना । ४ बोलना, चिल्लाना ।

बकराईद-पु० [अ०] एक मुस्लिम त्यौहार ।

बकराड़ियो-पु० बकरी या भेड़ के बच्चों को रखने का स्थान ।

बकराणो (बो)-क्रि० १ गलती मंजूर करवाना, भूल कबूलवाना । २ गुप्त बात या भेद प्रकट कराना । ३ सत्य बुलवाना । ४ बुलवाना, चिल्लाटी कराना ।

बकरावाब-पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।

बकराळ, बकराळी-देखो 'विकराळ' ।

बकरिपु-पु० [सं०] १ बकासुर का शत्रु, भीम । २ श्रीकृष्ण ।

बकरियो-पु० बकरी का बच्चा । छोटा बकरा ।

बकरी-स्त्री० दो थन वाला दूधारू, छोटा चौपाया मादा पशु ।

बकरीव-देखो 'बकराईद' ।

बकरो-पु० [सं० बर्कर] (स्त्री० बकरी) लम्बे बालों व दो सींगों वाला चौपाया छोटा जानवर । बकरा ।

बकवती-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी ।

बकवाद-स्त्री० [सं० वच्+वाद] १ व्यर्थ बोलने या बकने की क्रिया या भाव । २ सारहीन बात, प्रलाप । ३ व्यर्थ का वाद-विवाद । ४ विवाद, हुज्जत । ५ शेखी, डींग । ६ झगड़ा, तकरार ।

बकवादी-वि० १ व्यर्थ बोलने वाला, बकने वाला । २ प्रलापी । ३ विवादी । ४ शेखी मारने वाला, डींग हांकने वाला ।

बकवास-देखो 'बकवाद' ।

बकवृती, बकवृत्ती-वि० [सं० बकवृत्ति] १ बुगले के समान अपने शिकार की ताक में शांत बैठने वाला । २ मौका पाकर घात करने वाला । ३ ढोंगी, पाखण्डी, छलिया । -पु० उक्त प्रकार के चरित्र वाला व्यक्ति ।

बकस-१ देखो 'बक्स' । २ देखो 'वक्ष' ।

बकसणो (बो)-क्रि० [फा० बख्श] १ क्षमा करना, माफ करना । २ इनायत करना, पुरस्कार देना । ३ दया पूर्वक छोड़ देना, मुक्त करना । ४ देना, वितरण करना ।

बकसाणो (बो), बकसावणो (बो)-क्रि० १ क्षमा कराना, माफ कराना । २ इनायत कराना, पुरस्कार दिलाना । ३ दया पूर्वक छुड़ा देना, मुक्त कराना । ४ वितरण कराना ।

बकसी-पु० [फा० बख्शी] शाही सेना का प्रमुख अधिकारी जो सेना के कार्यों के प्रति उत्तरदायी रहता था और सैनिक गति-विधियों में बादशाह को परामर्श देता था ।

बकसीजागीर-पु० १ जागीर की व्यवस्था या प्रबन्ध का महकमा । २ इस विभाग का अधिकारी ।

बकसीफौज-पु० १ सेना की व्यवस्था व प्रबंध वाला महकमा । २ इस विभाग का अधिकारी ।

बकसीस-स्त्री० [फा० बख्शिश] १ दान । २ इनाम, पुरस्कार, इनायत । ३ देने की क्रिया । ४ प्रस्तुत करने की क्रिया ।

बकांण, बकांणि, बकाणी-पु० १ एक प्राचीन देश । २ देखो 'बकायन' । ३ देखो 'बखांण' ।

बकांनी-स्त्री० १ दाढ़ी के बालों को ठीक जमाये रखने के लिये बांधी जाने वाली कपड़े की एक पट्टी । २ ऐसी पट्टी बांधने की क्रिया ।

बकाइन-देखो 'बकायन' ।

बकाई-स्त्री० हकला कर बोलने की क्रिया, हकलाहट ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बकाणी (बौ)–क्रि० १ कहलाना, बोलाना। २ हल्ला कराना चिल्लाने के लिये प्रेरित करना। ३ प्रलाप कराना, बकवाद कराना, बकझक कराना।

बकायण–देखो 'बकायन'।

बकायन–पु० नीम की जाति का एक वृक्ष, महानिम्ब।

बकाया–वि० [अ० बकाय:] बचा हुआ, अवशिष्ट, शेष। –पु० १ बाकी निकलने वाला धन, ऋण। २ चुकाने लायक धन राशि। ३ बचत। ४ कार्य का शेष रहा अंश।

बकार–पु० [सं०] १ 'प' वर्ग का तृतीय वर्ण 'ब'। २ देखो 'बाकार'। ३ देखो 'बकारि'।

बकारणी (बौ)–देखो 'बाकारणी' (बौ)।

बकारि–पु० [सं० बक-अरि] १ श्रीकृष्ण। २ भीम।

बकाल–देखो 'बक्काल'।

बकासुर–पु० [सं०] १ भीम द्वारा मारा गया एक दैत्य। २ श्री कृष्ण द्वारा वधित एक असुर।

बकियौ–देखो 'बखियौ'।

बकी, बकु–वि० बकने वाला, बकवादी। –स्त्री० [सं०] १ बका सुर की बहन पूतना। २ देखो 'बक'।

बकुची–देखो 'बुगची'।

बकुल–पु० [सं०] १ मौलसिरी का वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल या फूल।

बकुसी–देखो 'बक'।

बकेल–वि० १ अधिक बोलने वाला बकने वाला। २ देखो 'बघेल'।

बकेसर–पु० १ भूत, प्रेत। २ देखो 'बकासुर'।

बकैल–१ देखो 'बकेल'। २ देखो 'बघेल'।

बकोट–पु० [सं०] १ बगुला। २ सारस। ३ काग।

बकोर–पु० १ पक्षियों का कलरव। २ बतखों की ध्वनि। ३ बकवाद, प्रलाप। ४ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला

बकौ–देखो 'बाकी'।

बकौरी–वि० बकवादी, प्रलापी। वाचाल, बातूनी।

बक्कणी (बौ)–देखो 'बकणी' (बौ)।

बक्कतर–देखो 'बखतर'।

बक्कर–१ देखो 'बकर'। २ देखो 'बकरी'।

बक्करियौ–देखो 'बकरियौ'।

बक्करी–देखो 'बकरी'।

बक्कस–१ देखो 'बकल'। २ देखो 'बल्कल'।

बक्काल–पु० [अ०] किराणा का परचूनिया दुकानदार। –वि० १ बेवकूफ, मूर्ख। २ डरपोक।

बक्की–देखो 'बकी'।

बक्की–देखो 'बाकी'।

बक्ख, बक्खळ–१ देखो 'बख'। २ देखो 'वक्ष'।

बक्खांण, बक्खांणु–देखो 'बखांण'।

बक्क–देखो 'वक्र'। —तुंड='वक्रतुंड'।

बक्कोदर–देखो 'वृकोदर'।

बक्खी–देखो 'बकसी'।

बक्खीजागीर–देखो 'बकसीजागीर'।

बक्खीफौज–देखो 'बकसीफौज'।

बक्खोज–देखो 'वक्षोज'।

बक्स–पु० [अं०] १ पेटी, सन्दूक। २ देखो 'वक्ष'।

बक्सणी (बौ)–देखो 'बकसणी' (बौ)।

बक्साणी (बौ)–देखो 'बकसाणी' (बौ)।

बक्सी–देखो 'बकसी'।

बक्सीस–देखो 'बकसीस'।

बख–पु० [सं० पक्ष] १ दाव-पेच। २ युक्ति, उपाय। ३ कुश्ती का दाव। ४ वश, काबू। ५ अवसर, मौका। ६ अभ्यास। ७ रोमावली। ८ देखो 'विस'।

बखड़ो–स्त्री० [सं० वक्षटि] १ व्यर्थ की उठा-पटक, हाथा-पाई। २ व्यर्थ की मेहनत। ३ वश, काबू। ४ पकड़, शिकंजा। ५ देखो 'बख'।

बखणी–क्रि०वि० १ अधिकार या कब्जे में, वश में। २ पकड़ में।

बखत–पु० [फा० बख्त] १ भाग, किस्मत, सौभाग्य। २ देखो 'वक्त'।

बखतधर, बखतधारी–वि० सौभाग्यशाली, भाग्यवान।

बखतबळ, बखतबळी–पु० [फा० बख्तवरी] प्रबल भाग्य। खुश नशीबी। –वि० सौभाग्यशाली, भाग्यवान। –क्रि०वि० यथासमय।

बखतबांगरी–वि० हतभाग्य, भाग्यहीन।

बखतर–पु० [फा० बख्तर] कवच, सनाह। —खांनौ–पु० कवच आदि रखने का स्थान। —पोस–वि० कवचधारी।

बखतरियौ, बखतरी–पु० १ कवच धारी योद्धा या व्यक्ति। २ अंगरखा। ३ देखो 'बखतर'।

बखतवंत, बखतवडाळ–वि० [फा० बख्त+सं०वंत] सौभाग्य शाली, भाग्यवान। —वि० सम्पन्न, धनाढ्य। भाग्य शाली, खुशहाल।

बखतबिलंद–वि० [फा० बख्तेबलंद] जिसके भाग्य का सितारा चमक रहा हो। –पु० अच्छा भाग्य, सौभाग्य।

बखतावर–वि० [फा० बख्त + सं० वंत] भाग्यशाली, सौभाग्यशाली।

बखतावरी–स्त्री० [फा०बख्तावरी] १ खुश किस्मती, सौभाग्य। २ धनाढ्यता, सम्पन्नता।

बखति, बखती–देखो 'बखत'।

बखतैत–वि० अपने समय का वीर, प्रभावशाली, भाग्यशाली।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बखघर–देखो 'विसघर' ।
बखधारी–देखो 'विसधारी' ।
बखम–देखो 'विसम' ।
बखसणो (बो)–देखो 'बकसणो' (बो) ।
बखसाणो (बो), बखसावणो (बो)–देखो 'बकसाणो' (बो) ।
बखसी–देखो 'बकसी' ।
बखसीस–देखो 'बकसीस' ।
बखांण–पु० [सं० व्याख्यान] १ व्याख्यान, भाषण । २ उपदेश, धर्मोपदेश । ३ व्याख्या । ४ वर्णन । ५ कीर्ति । ६ स्तुति, प्रार्थना । ७ प्रशंसा ।
बखांणण–पु० [सं० व्याख्यानम्] १ बखान करने की क्रिया या भाव । २ बखान करने का ढंग ।
बखांणणो (बो)–क्रि० [सं० व्याख्यानम्] १ व्याख्यान देना, भाषण देना । २ उपदेश करना, उपदेश देना । ३ व्याख्या करना । ४ वर्णन करना । ५ यश या कीर्तिगान करना । ६ स्तुति या प्रार्थना करना । ७ प्रशंसा करना, तारीफ करना ।
बखाकखंड–वि० वाग्जाल या ठाट-बाट वाला ।
बखारी–देखो 'भखारी' ।
बखाळ–देखो 'पखाळ' ।
बखाळियो–वि० बक-बक करने वाला ।
बखियो–पु० [फा० बखिय:] १ एक प्रकार की महीन व मजबूत सिलाई । २ रस्सियों के जोड़ का मजबूत बंध ।
बखील–वि० [अ०] कृपण, कंजूस ।
बखूबी–अव्य० [फा० बखूबी] १ भली भांति, अच्छी तरह से । २ पूर्ण रूप से, पूरी तरह से ।
बखेड़ियो, बखेड़ी–वि० १ उपद्रवी, उत्पाती । २ विवाद करने वाला झगड़ालू ।
बखेड़ो–पु० १ अस्त-व्यस्त पड़ा सामान, बिखेरा । २ झंझट, झगड़ा, तकरार । ३ आडंबर । ४ व्यर्थ का विस्तार । ५ भारी आयोजन । ६ सांसारिक प्रपंच । ७ विवाद, झगड़ा ।
बखेरणो (बो)–देखो 'बिखेरणो' (बो) ।
बखेड़ी–देखो 'बखेड़ी' ।
बखोरो–देखो 'बकोरो' ।
बखो–देखो 'विखो' ।
बख्त–१ देखो 'बखत' । २ देखो 'वक्त' ।
बख्तर–देखो 'बखतर' ।
बख्सणो (बो)–देखो 'बकसणो' (बो) ।
बख्साणो (बो)–देखो 'बकसाणो' (बो) ।
बख्सिस, बख्सीस–देखो 'बकसीस' ।
बग–पु० [सं० पटक] १ डग, कदम । २ देखो 'बाग' । ३ देखो 'बक' । ४ देखो 'बुग' । ५ देखो 'बगर' ।
बगअाती–पु० अशुभ रंग का एक घोड़ा ।
बगग–स्त्री० ध्वनि विशेष ।
बगड़–पु० १ मकान के सामने या अन्दर पड़ा खुला मैदान । २ लम्बा-चौड़ा व खुला मैदान । ३ सहन, चौक, आंगन । ४ मार्ग, रास्ता ।
बगड़णो (बो)–देखो 'बिगड़णो' (बो) ।
बगड़ाणो (बो), बगड़ावणो (बो)–क्रि० दौडाना, भगाना ।
बगड़ावत–देखो 'बगड़ावत' ।
बगट्ट–वि० [सं० विकट] जबरदस्त, जोरदार ।
बगणो (बो)–१ देखो 'बजणो' (बो) । २ देखो 'बाजणो' (बो) ।
बगत–१ देखो 'बखत' । २ देखो 'वक्त' ।
बगतर–देखो 'बखतर' । —**खानो**–='बखतरखानो' । —**पोस**='बखतरपोस' । —**बाज**='बखतरबाज' ।
बगतरियो, बगतरी–पु० १ अंगरखा, अंगरखी । २ देखो 'बखतरियो' । ३ देखो बखतर' ।
बगतावर–देखो 'बखतावर' ।
बगतावरी–देखो 'बखतावरी ।
बगती–देखो 'बुगती' ।
बगत्तर–देखो 'बखतर' । —**पोस**='बखतरपोस' ।
बगथरी–स्त्री० १ एक प्रकार की वनस्पति । २ देखो 'बखतरी' । ३ देखो 'बगती' ।
बगदाद–पु० [फा०] इराक देश की राजधानी का नगर ।
बगदादी–वि० [फा०] बगदाद का, बगदाद संबंधी । बगदाद का निवासी । –पु० मुसलमान ।
बगदो–पु० १ कूड़ा, कचरा । २ घास-फूस । ३ किसी वस्तु का सारहीन भाग ।
बगनी–स्त्री० १ मुसलमानों का एक टोंटीदार लोटा । २ देखो 'बगनी' (स्त्री०) ।
बगनी–वि० [देश०] (स्त्री० बगनी) १ अस्थिर चित्त, मति भ्रम । २ आश्चर्य चकित, विस्मित । ३ हतप्रभ, हैरान ।
बगर–पु० [देश०] १ फलांकुर । २ देखो 'बगड़' । ३ देखो 'बगैर' ।
बगरड़ो–पु० [देश०] एक लोक गीत विशेष ।
बगरू–पु० [देश०] कानों के पास घुंघराले बालों वाला ऊंट ।
बगरो–पु० एक पौधा विशेष ।
बगळ–स्त्री० १ बड़े-बड़े कौर लेकर जोर-जोर से खाने की क्रिया । २ वायु ।
बगल, बगलउ–स्त्री० [फा०] १ मनुष्य के शरीर का हाथ के नीचे का भाग । कांख । २ छातों के दोनों किनारों का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाग, पार्श्व । ३ ऊंट के अगले पैरों के संधिस्थलों वाला भाग । ४ कांख में होने वाले बाल । ५ पहनने के वस्त्र का कांख के पास रहने वाला भाग । ६ निकट का स्थान । ७ पड़ोस । —क्रि०वि० १ ओर तरफ । २ समीप, पास । निकट । ३ देखो 'बक' ।

बगलगिरी–देखो 'बगलगीरी' ।

बगलगीर–वि० [फा०] बगल में रहने वाला । —स्त्री० गले मिलने या लिपटने की क्रिया या भाव ।

बगलगीरी–स्त्री० १ बाहों में भरकर मिलने की क्रिया या भाव । अंकमाल । २ मेहमानों के स्वागत में इत्र लगाने की क्रिया ।

बगलड़ी, बगलडी–देखो 'बगल' ।

बगलतकियो–पु० बगल में दबाकर बैठने का तकिया ।

बगलबंदी (बंधी)–स्त्री० शरीर पर धारण करने का एक वस्त्र विशेष ।

बगलाऊ–क्रि०वि० बगल में, पास में, निकट ।

बगलाभक्त (भगत)–देखो 'बुगलाभक्त' ।

बगलाभक्ति (भगती)–देखो 'बुगलाभक्ति' ।

बगलामुखी–स्त्री० १ एक देवी । २ दश महाविद्याओं में से एक ।

बगलायो–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

बगलि–१ देखो 'बगली' । २ देखो 'बगल' ।

बगलियो–पु० [देश०] १ लकड़ी में छेद करने का औजार । २ देखो 'बक' ।

बगली–वि०[फा०]१ बगल का, बगल संबंधी । २ एक ओर का । —स्त्री० १ दर्जियों की सूई-धागा रखने की थैली विशेष । २ कुरते की बगल में लगने वाला कपड़ा । –पु० ३ ऊंटों का एक रोग । ४ इस रोग से पीड़ित ऊंट । ५ मुग्दर चलाने का एक ढंग । ६ चोरी के उद्देश्य से खोदी जाने वाली सेंध । ७ कुश्ती का एक दाव । ८ बुगले की जाति की मादा पक्षी । ९ देखो 'बगल' । १० देखो 'बगलबंधी' ।

बगली-गुप्ती–स्त्री० एक शस्त्र विशेष ।

बगलो–देखो 'बक' । (स्त्री० बगली)

बगस–देखो 'बक्स' ।

बगसण–स्त्री० दान करने की क्रिया, दान । –वि० दाता, दानी, देनेवाला ।

बगसणो (बो)–देखो 'बकसणो' (बो) ।

बगसर–पु० [देश०] यवन, मुसलमान ।

बगसरियो–देखो 'बगसर' ।

बगसाणो (बो), बगसावणो (बो)–देखो 'बकसाणो' (बो) ।

बगसियो–१ देखो 'बक्स' । २ देखो 'बुगचो' ।

बगसिस–देखो 'बकसीस' ।

बगसी–देखो 'बकसी' ।

बगसीस–देखो 'बकसीस' ।

बगसो–देखो 'बक्स' ।

बगहरा–देखो 'बगैरह' ।

बगाई–स्त्री० [देश०] १ जमुहाई, उबासी । २ फेंकना क्रिया ।

बगाणो(बो)–क्रि०१ फेंकना,उछालना । २ देखो'बजाणो' (बो) ।

बगार–१ देखो 'बघार' । २ देखो 'बेगार' । ३ देखो 'बगारो' ।

बगारणो (बो)–देखो 'बघारणो' (बो) ।

बगारो–पु० [सं० भगागार] छिद्र, छेद, सूराख ।

बगावणो (बो)–देखो 'बगाणो' (बो) ।

बगावत–स्त्री० [अ०] १ विद्रोह की भावना, बागी होने का भाव । २ शासन के विरुद्ध खड़े होकर किया जाने वाला विद्रोह । ३ किसी के विरुद्ध षड़यंत्र ।

बगासुर–देखो 'बकासुर' ।

बगितार–पु० पुकार, चिल्लाहट ।

बगीचो, बगीचौ, बगीछो–पु० [फा० बागचः] उपवन, वाटिका, बाग ।

बगोलणो–क्रि० वि० लगभग, करीब ।

बगु–देखो 'बक' ।

बगुळियो, बगुसियो, बगुळो, बगूळियो, बगूळो, बगूलो, बगूल्यो–१ देखो 'बक' । २ देखो 'बघूळो' ।

बगेची, बगेचौ (छौ)–देखो 'बगीचो' ।

बगैर, बगैर–अव्य० १ बिना, बे । २ अलावा, अतिरिक्त । ३ रहित ।

बगैल, बगैल–देखो 'बघेल' ।

बग–पु० १ किसी द्रव पदार्थ का तेज प्रवाह । २ उक्त प्रवाह की ध्वनि । ३ सहसा, जल्दी, शीघ्र । ४ देखो 'बक' । ५ देखो 'बाग' । ६ देखो 'बरग' ।

बगणो (बो)–१ देखो 'बजणो' (बो) । २ देखो 'बाजणो'(बो) ।

बग्गी–देखो 'बग्घी' । —**खानो**= बग्घीखानो' ।

बग्गू–देखो 'बरघू' ।

बग्गो–पु० दो की संख्या का वर्ग ।

बग्घी–स्त्री० चार पहियों वाली घोड़ा-गाड़ी । –**खानो**–पु० उक्त गाड़ी रखने का स्थान ।

बघंबर–देखो 'बाघंबर' ।

बघ–१ देखो 'बरग' । २ देखो 'बाघ' ।

बघबाव–देखो 'बघबाव' ।

बघर–पु० आमोद-प्रमोद ।

बघळावणो (बो)–क्रि० चोरी करना, चोरना ।

बघवाणी–स्त्री० [सं० वाक्वाणी] सरस्वती ।

बघबाय, बघबाव–स्त्री० [सं० व्याघ्रवायु] सिंह के शरीर की गंध ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बघार–पु० [सं० भ्रज्जकार] १ साग-सब्जी के मसाले भुनने की क्रिया। २ मसाले भुनने के लिये घी या तेल गर्म करने की क्रिया। ३ छौंक, छमका। ४ छौंक के लिये घी-तेल आदि में डाला जाने वाला हींग, जीरा आदि पदार्थ।

बघारणो (बो)–क्रि० [सं० भ्रज्जकरणम्] १ छौंक लगाना, छौंकना। २ भुनना, भुनाई करना। ३ सेखी या डींग मारना।

बघी–देखो 'बग्घी'।

बघुर, बघूर, बघूळ, बघूल–१ देखो 'बघूळी'। २ देखो 'बक'।

बघूळियो–१ देखो 'बघूळी'। २ देखो 'बक'।

बघूळी, बघूली–पु० [सं० वर्तुलः, वातूल] १ वातचक्र, हवा का गोल चक्र। २ पवन। ३ नाश, संहार। ४ देखो 'बक'।

बघेरिओ, बघेरियो–देखो 'बघेरो'।

बघेरो–पु० [सं० व्याघ्र] सिंह जाति का हिंसक पशु।

बघेल–वि० १ युवा, जवान। २ देखो 'बाघेल'।

बघेलखंड–देखो 'बाघेलखंड'।

बघेलो, बघेस–१ देखो 'बाघेल'। २ देखो 'बघेल'।

बघो–पु० १ कान के सामने का भाग, कनपटी। २ कांख, बगल।

बघ्घी–पु० १ एक प्रकार का नृत्य। २ देखो 'बग्घी'।

बघ्घू–देखो 'बग्घू'।

बड़ंग–पु० [सं० वड्-अंग] भाला।

बड़ंब–पु० १ लकड़ी के प्रहार से होने वाली ध्वनि। २ लकड़ी टूटने की ध्वनि।

बड़–देखो 'वट'।

बड़कणो (बो)–क्रि० १ फटना, दरार पड़ना, चटकना, तड़कना। २ वजन या दबाव के कारण, गाड़ी, छकड़े आदि से चलते चलते वटवट ध्वनि होना। ३ चलते समय मनुष्य या पशु के पैरों से चट-चट ध्वनि होना।

बड़कबोलो–देखो 'बड़काबोलो'।

बड़काणो (बो)–क्रि० १ फाड़ना, दरार पटकना, तड़काना चटकाना। २ मारना, काटना। ३ वजन या दबाव डाल कर बट-बट की आवाज कराना।

बड़काबोल–पु० कटु शब्द।

बड़काबोलो–वि० (स्त्री० बड़काबोली) १ कटुवादी, कर्कशवचन कहने वाला। २ बकवाद करने वाला।

बड़काबणो (बो)–देखो 'बड़काणो' (बो)।

बड़को–पु० १ क्रोध या आवेश में सहसा बोला जाने वाला शब्द। २ कर्कश ध्वनि या शब्द। ३ लकड़ी आदि के टूटने की ध्वनि। ४ प्रहार की ध्वनि। ५ झिड़की, झटका।

बड़कोलो–पु० बरगद का फल।

बड़बणो (बो)–देखो 'बड़कणो' (बो)।

बड़गड़णो (बो)–क्रि० तेजी से दौड़ना।

बड़गड़ां–क्रि०वि० तेजी से दौड़ते हुए।

बड़गड़ाणो (बो)–क्रि० तेजी से दौड़ाना।

बड़गड़ो–स्त्री० तेज दौड़।

बड़गड़ो–पु० १ तेज दौड़, तेज गति। २ घोड़े की एक चाल विशेष।

बड़ड़–स्त्री० १ लकड़ी के फटने की ध्वनि। २ सख्त वस्तु चबाने की ध्वनि। ३ बोझ से लदी गाड़ी के चलने पर उत्पन्न ध्वनि।

बड़ड़णो (बो)–क्रि० १ बड़बड़ करते हुए फटना। २ बटबट की ध्वनि करना।

बड़णो (बो)–क्रि० १ घुसना, धंसना। २ प्रवेश करना, पैठना।

बड़बखती–देखो 'बडवखती'।

बड़बड़–स्त्री० १ अव्यक्त ध्वनि। २ क्रोध में बड़बड़ाने की क्रिया। ३ बकवाद, प्रलाप। ४ सख्त वस्तु चबाने की ध्वनि।

बड़बड़णो (बो)–क्रि० १ द्रव पदार्थ में गर्मी आदि के कारण बुद-बुदे उठना, विकृत होना। २ घावों से खून बुदबुदाना। ३ किण्वन के कारण पदार्थों में गैस उत्पन्न होना। ४ क्रोध में बड़बड़ाना। ५ मस्ती में गुनगुनाना। ६ प्रलाप या बकवाद करना। ७ विलाप करना।

बड़बड़ाट–स्त्री० १ बड़बड़ाने की क्रिया व ध्वनि। २ क्रोधावेश में मुंह से निकलने वाली अस्पष्ट ध्वनि। ३ व्यर्थ की बकवाद। प्रलाप। ४ तूं-तूं, मैं-मैं।

बड़बड़ाणो (बो)–देखो 'बड़बड़णो' (बो)।

बड़बड़ी–स्त्री० १ जोश, आवेश। २ झुंझलाहट। ३ देखो 'बड़बड़'। ४ देखो बड़ाबड़ी'।

बड़ब्बड़–देखो 'बड़बड़'।

बड़भाग–देखो 'बडभाग'।

बड़भागी–देखो 'बडभागी'।

बड़लो, बड़ल्यो–देखो 'वट'।

बड़वा–स्त्री० [सं० वडवा] १ घोड़ी। २ बही भाटों की एक शाखा। ३ अश्विनी नक्षत्र। ४ सूर्य की स्त्री अश्विनी नामक अप्सरा। ५ दासी, परिचायिका। ६ रंडी, वेश्या। ७ देखो 'बड़वानळ'।

बड़वाअगन, बड़वाग, बड़वागन, बड़वागनी, बड़वागि, बड़वाग्नि,

बड़वानळ–स्त्री० [सं० वडवाग्नि, वडवानल] समुद्र के भीतर की आग, ताप।

बड़वानळ चूरण–पु० [सं० वडवानल-चूर्ण] अजीर्णनाशक एवं क्षुधावर्धक एक चूर्ण।

बड़वानळरस–पु० एक औषधि विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बड़वामुख–पु० [सं० वडवामुख] १ पाताल । २ शिव का मुख । ३ बड़वाग्नि । ४ एक औषधि विशेष ।

बड़वाली–पु० बरगद का वृक्ष ।

बड़वासी–पु० [सं० वटवासी] १ यक्ष, किन्नर । २ पक्षी ।

बड़वासुत–पु० [सं० वडवासुत] अश्विनी कुमार ।

बड़वो–पु० 'बड़वा' शाखा का बही भाट ।

बड़ाकी–पु० १ शस्त्र टकराने की ध्वनि । २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । ३ सख्त वस्तु के टूटने या कटने की ध्वनि । ४ देखो 'बड़की' ।

बड़ाणी (बो) क्रि० १ घुसाना, धसाना । २ प्रवेश कराना, पैठाना ।

बड़ाबड, बड़ाबड़ि बड़ाबड़ी–स्त्री० १ युद्ध । २ शस्त्र प्रहार । ३ शस्त्र प्रहार की ध्वनि । ५ बड़-बड़ ध्वनि । ५ महामारी प्लेग । –अव्य० १ निरन्तर, लगातार । २ देखो 'बड़बड' ।

बड़ारण–देखो 'बडारण' ।

बड़ियो–पु० [सं० भातिक] १ दैनिक मजदूरी पर कार्य करने वाला श्रमिक । २ काम का बदला काम करके चुकाने वाला कृषक । ३ देखो 'बड़ी' ।

बड़ी–स्त्री० [सं० वटिका] १ मूंगेड़ी, मूंग की बड़ी । २ छोटा मांस पिंड, बोटी । [सं०वर्ती] ३ मूंज, डाभ आदि की बनी रस्सी । [सं० वृत्ति] ४ काम का बदला काम से चुकाने की क्रिया । ५ दैनिक मजदूरी । ६ दैनिक श्रम का धन । ७ तुरंत प्रसव वाली गाय या भैंस का गर्म किया हुआ दूध ।

बड़ीड, बड़ीडो–पु० १ प्रहार की ध्वनि । २ देखो 'बटीड़' ।

बड़ूको–देखो 'बड़की' ।

बड़ो–पु० [सं० वटक] (स्त्री०बड़ी) १ बेसन आदि का पकौड़ा । २ गिरासिया जाति में मृतक के पीछे किया जाने वाला भोज । ३ देखो 'बडो' ।

बच–१ देखो 'वच' । २ देखो 'वचन' ।

बचको, बचक–पु० १ पांचों अंगुलियों को फैलाकर उल्टे प्याले जैसी बनाई हुई हाथ की मुद्रा । २ इस मुद्रा में समाने लायक पदार्थ की मात्रा ।

बचणो (बो)–क्रि० [सं०] १ दुःखद स्थिति या विपत्ति से दूर रहना, आफत में नहीं फंसना । २ सुरक्षित रहना, क्षति ग्रस्त न होना । ३ बुरी संगत या दुर्व्यसनों से दूर रहना । ४ कुकर्म मे वंचित रहना । ५ किसी के प्रभाव में न आना, निर्लिप्त रहना ६ आलोचना, प्रशंसा आदि से वंचित रहना । ७ आश्रय पाना । शरण पाना । ८ शेष रहना, अवशिष्ट रहना । ९ नष्ट होने से रह जाना । १० बड़ी दुर्घटना या संभावित मृत्यु की लपेट से दूर रह जाना । ११ झपट में न आना । १२ पढ़ने योग्य होना । १३ बाकी रहना ।

बचत–स्त्री० १ आवश्यक खर्चे के बाद शेष रहने वाला आय का भाग । २ बचे रहने या सुरक्षित रहने की अवस्था या भाव । ३ रक्षा, सुरक्षा । ४ किसी विपत्ति में न फंसने की अवस्था । ५ शेष या अवशिष्ट रहा भाग । ६ मुनाफा, लाभ ।

बचन–१ देखो 'वच' । २ देखो 'वचन' ।

बचनका बचनिका–देखो 'वचनिका' ।

बचनीय–देखो 'वचनीय' ।

बचपण, बचपणो–देखो 'बाळपणो' ।

बचाड़णो (बो), बचाणो (बो)–क्रि० १ दुःखद स्थिति या विपत्ति से दूर रखना । आफत में नही फंसाना । २ सुरक्षित रखना, क्षतिग्रस्त न होने देना । ३ बुरी संगत या दुर्व्यसनों से दूर रखना । ४ कुकर्मों से वंचित रखना । ५ किसी के प्रभाव से मुक्त रखना, निर्लिप्त रखना । ६ आलोचना, प्रशंसा आदि से वंचित रखना । ७ आश्रय देना, शरण देना । ८ शेष रखना, अवशिष्ट रखना । ९ नष्ट न होने देना । १० बड़ी दुर्घटना या मौत से बचाना । ११ झपट में न आने देना । १२ पढ़वाना । १३ खर्च में से बचा कर रखना ।

बचाळै–देखो 'बिचै' ।

बचाय–पु० १ बचाने की क्रिया या भाव । २ सुरक्षा, त्राण, रक्षा । ३ छुटकारा ।

बचावणो (बो)–देखो 'बचाणो' (बो) ।

बचियो, बचीयो, बचो–देखो 'बच्चो' ।

बच्चक–१ देखो 'वच्चक' । २ देखो बचको' ।

बच्चड़ो (डो)–१ देखो 'बच्चो' । २ देखो 'बछड़ो' ।

बच्चणो (बो)–देखो 'बचणो' (बो) ।

बच्चादांनी–स्त्री० [फा० बच्चःदान] गर्भाशय, कोख ।

बच्चो–पु० [फा०] (स्त्री० बच्ची) १ किसी प्राणी का नवजात शिशु । २ बाल्यावस्था वाला प्राणी । ३ अबोध या नाबालिग प्राणी । ४ संतान । –वि० १ नासमझ, नादान । २ अनुभवहीन ।

बच्छ–१ देखो 'वत्स' । २ देखो 'वक्ष' । ३ देखो 'वत्सर' । ४ देखो 'बछड़ो' ।

बच्छड़ो–१ देखो 'वत्स' । २ देखो 'बछड़ो' ।

बच्छर–देखो 'वत्सर' ।

बच्छराज–देखो 'वत्सराज' ।

बच्छळ–देखो 'वत्सळ' ।

बच्छस–देखो 'वक्षस्थळ' ।

बच्छो–देखो 'बच्चो' ।

बछ–१ देखो 'वत्स' । २ देखो 'वक्ष' ।

बछक–देखो 'वत्सक' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बछड़ी–पु० [सं० वत्स] १ गाय का बच्चा, बछड़ा। २ देखो 'वत्स'।

बछदेव–देखो 'वसुदेव'।

बछनाग, बछनाभ–देखो 'वत्सनाभ'।

बछबारस–देखो 'बछवारस'।

बछराज–देखो 'वत्सराज'।

बछरी–१ देखो 'बछड़ी'। २ देखो 'बछेरी'।

बछल–देखो 'वत्सल'।

बछवा–देखो 'वत्स'।

बछाणी (बौ), बछावणी (बौ)–१ देखो 'बचाणी' (बौ)। २ देखो 'बिछाणी' (बौ)।

बछासुर–देखो 'वत्सासुर'।

बछिया–१ देखो 'बच्चो'। २ देखो 'वत्स'।

बछेड़ी–१ देखो 'बछेरी'। २ देखो 'बछड़ी'।

बछेरियो, बछेरो–पु० [सं० वत्स-तर] (स्त्री० बछेरी) घोड़ी का बच्चा, बच्चा-घोड़ा।

बछो–१ देखो 'वत्स'। २ देखो 'बच्चो'।

बजंटी–देखो 'बजरबंटी'।

बजंत्रण–पु० [सं० वाद्य+यंत्र] वाद्ययंत्र, बाजा।

बजंत्री–पु० [सं० वाद्य+यंत्री] १ वाद्य बजाने वाला। २ वाद्य बजाने वाली मंडली। ३ पेशेवर गाने बजाने वालों से लिया जाने वाला कर।

बज–स्त्री० [सं० वाद्यम्] १ नगारा बजाने की ध्वनि। २ वाद्य ध्वनि। [सं० बद्] ३ संयम।

बजड़–देखो 'वज्र'। —**कपाड, किवाड़**='वज्रकपाट'।

बजट–पु० [अं०] १ आय-व्यय का ब्योरा, विवरण। २ आय-व्यय पत्रक। ३ किसी विभाग के लिये खर्च को निर्धारित राशि, मद।

बजणो–देखो 'बाजणो'।

बजणो (बौ)–क्रि० [सं० वाद्यम्] १ घड़ी के अनुसार समय होना, घड़ी से समय लक्षित होना। २ घड़ी की सुई का निश्चित समय पर आना। ३ दौड़ना, भागना। ४ देखो 'बाजणो' (बौ)।

बजन–देखो 'वजन'।

बजरंग, बजरंगबली (बली) बजरंगी–पु० [सं० वज्राङ्ग-बलिन्] महावीर, हनुमान, पवनपुत्र।

बजर–देखो 'वज्र'।

बजरकपाट (किवाड़)–देखो 'वज्रकपाट'।

बजरणी (बौ)–देखो 'वज्जरणी' (बौ)।

बजरतुंड–देखो 'वज्रतुंड'।

बजरदत–देखो 'वज्रदंत'।

बजरबंटी–स्त्री० स्त्रियों का एक प्राभूषण विशेष।

बजरबट (बट्टू.बट्टू)–वि० [सं० वज्र-वृत्ति] १ अत्यधिक दृढ़, मजबूत, ठोस। २ कठोर, सख्त। ३ स्वभाव से कठोर। —पु० [सं० वज्र+वटुक] बारूद का खिलौना विशेष, एक आतिशबाजी।

बजरमणि, बजरमणी–स्त्री० [सं० वज्रमणि] हीरा।

बजराक, बजराग, बजरागि, बजरागी–वि० [सं० वज्र-अंग] १ वज्र के समान मजबूत एवं दृढ़ अंगों वाला। २ शक्ति शाली, बलवान्। ३ दृढ़, अटल। ४ भयंकर, भीषण, प्रचंड। —स्त्री० [सं० वज्र+अग्नि] १ बिजली, विद्युत। २ आफत, विपत्ति।

बजरि–१ देखो 'वज्र'। २ देखो 'बजरी'। ३ देखो 'बाजरी'।

बजरी–स्त्री० १ दानेदार रेत विशेष। २ देखो 'बाजरी'। ३ देखो 'वज्र'।

बजवाई–स्त्री० [सं० वाजनं] १ वाद्य बजाने की क्रिया या भाव। २ वाद्य बजाने की विधि। ३ वाद्य बजाने का पारिश्रमिक।

बजह–देखो 'वजह'।

बजा–वि० [फा०] १ उचित, वाजिब। २ यथावत्, ठीक। ३ दुरुस्त। ४ उचित स्थान वाला।

बजाई–देखो 'बजवाई'।

बजाड़णो (बौ)–देखो 'बजाणो' (बौ)।

बजाज–पु० [अ० बज्जाज] कपड़े का व्यापारी, वस्त्र-व्यवसायी।

बजाजा–पु० [अ० बज्जाजा] कपड़ा-बाजार।

बजाजी–स्त्री० [अ० बज्जाजी] १ वस्त्र-व्यवसाय। २ बजाज की दुकान की सामग्री। ३ देखो 'बजाज'।

बजाणो (बौ)–क्रि० १ नगाड़े, ढोल आदि पर आघात कर ध्वनि करना। २ वाद्य बजाना। ३ करतल ध्वनि करना। ४ दो वस्तुओं को परस्पर टकराकर ध्वनि करना। ५ मुद्रा या पात्र की जांच के लिये उसे बजाना। ६ शस्त्र प्रहार करना। ७ युद्ध करना, लड़ना। रण कौशल दिखाना। ८ वीर गति प्राप्त करना। ९ ख्याति या प्रसिद्धि प्राप्त करना। १० दौड़ाना, भगाना।

बजाय–क्रि०वि० [फा०] १ अपेक्षा में, बदले में, एवज में। २ तुलना में मुकाबले में। ३ स्थानापन्न रूप में।

बजार–देखो 'बाजार'।

बजारण–देखो 'बाजारण'।

बजारी, बजारू–देखो 'बाजारू'।

बजावणी (बौ)–देखो 'बजाणो' (बौ)।

बजीर–देखो 'वजीर'।

बजो–पु० १ कलंक, दोष। २ बदनामी, अपवाद। ३ दोषारोपण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बज्ज–देखो 'वज्र'।

बज्जणो (बो)–१ देखो 'बजणो' (बो)। २ देखो 'बाजणो' (बो)।

बज्जर–देखो 'वज्र'।

बज्जरणो (बो)–देखो 'वज्जरणो' (बो)।

बज्झ–वि० बाह्य, बाहरी।

बज्रंगी–देखो 'बजरंगी'।

बज्र–देखो 'वज्र'। —तुंड= वज्रतुंड'। —धर='वज्रधर'। —नाभ='वज्रनाभ'। —पात='वज्रपात'। —भास='वज्रभास'।

बज्राग–देखो 'बजराक'।

बज्रागमुख–पु० [सं० वज्र-अग्र-मुख] वज्र का अगला भाग, नोक, मुख।

बज्री–देखो 'वज्री'।

बन्नणो (बो)–१ देखो 'बंधणो' (बो)। २ देखो 'बजणो' (बो)। ३ देखो 'बाजणो' (बो)। ४ देखो 'बझणो' (बो)।

बन्नो–देखो 'वजो'।

बट–१ देखो 'वट'। २ देखो 'बाट'।

बटकड़ो–पु० [देश०] १ आंगन में चूना या सीमेंट जमाने का काष्ठ का उपकरण। २ देखो 'बटको'। ३ देखो 'बाटको'।

बटकणो (बो)–क्रि० [सं० वदम्] १ चिल्लाना, चीत्कार करना। २ कड़कना, गरजना। ३ टूटना। ४ दांतों से काटना। ५ गिरना, पड़ना। ६ क्रोधित होना। ७ देखो 'भटकणो' (बो)।

बटकी–देखो 'बाटकी'।

बटको–पु० [सं० वंट] १ वस्त्र-खण्ड, कपड़े का टुकड़ा। २ टुकड़ा, टूक। ३ विभाग, खण्ड। ४ दांतों से काटने की क्रिया या भाव। ५ दांतों से काटने का घाव। चिह्न।

बटकैकणो (बो)–देखो 'बटकणो' (बो)।

बटक्को–देखो 'बटको'।

बटण पु० [अ० बटन] १ पहनने के वस्त्रों में लगने वाली घुंडी। २ किसी यंत्र को चलाने या रोकने का उपकरण। ३ बिजली जलाने-बुझाने का खटका। [सं० वेष्ट] ४ रस्सी आदि में ऐंठन देने की क्रिया। ५ ऐंठन, उमेठन। ६ गले का एक आभूषण विशेष।

बटणियो, बटणो–पु० रस्सी ऐंठने का उपकरण। –वि० बटने वाला, ऐंठने वाला।

बटणो (बो)–क्रि० [सं० वेष्टनम्] १ तंतु या रेशों में ऐंठन देकर डोरा या रस्सी बनाना। २ रोटी पापड़ आदि बेलना। ३ सौदा बिकना, सौदा बिकने से पैसा आना। ४ देखो 'बंटणो' (बो)।

बटत–स्त्री० [सं० वाणिज्यम्] १ विक्रय, बिक्री। २ बिक्री का रुपया या धन। आय।

बटन–देखो 'बटण'।

बटपड़ो, बटपाड़ो, बटपाडो, बटपारो–पु० [सं० वाट-पाटकम्] राहगीरों को लूटने वाला, लुटेरा।

बटबड़–देखो 'बाटबड़'।

बटभरणो–देखो 'बटमरणो'।

बटमार–देखो 'बटपाड़ो'।

बटळणो (बो)–देखो 'विटळणो' (बो)।

बटलाळीयो–पु० लकड़ी में खुदाई करने का उपकरण।

बटली, बटलोई–स्त्री० [सं० वट-लोटिका] दाल, चावल आदि पकाने का पात्र, पतीली।

बटवो–पु० १ एक लोक गीत। २ देखो 'बटुवो'।

बटाइ, बटाई–स्त्री० [सं० वट-वेष्टनम्] १ बटने या ऐंठन देने की क्रिया या भाव। २ रोटी, पापड़ आदि की बेलाई। ३ उक्त कार्य का पारिश्रमिक। ४ इस प्रकार का व्यवसाय। ५ देखो 'बंटाई'।

बटाउ, बटाउड़ी–देखो 'बटाऊ'।

बटाऊ–पु० पथिक, राहगीर, यात्री।

बटाणो (बो)–क्रि० १ रस्सी, डोरा आदि बनवाना, ऐंठन दिखाना। २ रोटी, पापड़ आदि बेलाना। ३ बिक्री कर वाना। आय कराना। ४ उपाय कराना, वश चलवाना। ५ देखो 'बंटाणो' (बो)।

बटापट, बटाबट–पु० १ शीघ्रता से तोड़ने, मारने या काटने की क्रिया या भाव। २ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि। ३ देखो 'फटाफट'।

बटारक–देखो 'बटारक'।

बटारो–पु० (स्त्री० बटारी) १ बटाई का कार्य करने वाला व्यक्ति, श्रमिक। २ बेलने का कार्य करने वाला श्रमिक। ३ देखो 'बंटारो'।

बटाळ–देखो 'बटाळो'।

बटाळणो (बो)–देखो 'बिटाळणो' (बो)।

बटाव–पु० प्रजा से लिया जाने वाला एक कर विशेष।

बटावणो (बो)–१ देखो 'बटाणो' (बो)। २ देखो 'बंटाणो' (बो)।

बटाऊ–देखो 'बटाऊ'।

बटियो–१ देखो 'बाटियो'। २ देखो 'बाटो'।

बटींग–वि० [सं० वटुकः] १ मूर्ख, मूढ़। २ देखो 'बटीड़ो'।

बटी–स्त्री० [सं० वटी] १ अफीम की टिकिया। २ साबुन की टिकिया। ३ इसी तरह की किसी पदार्थ की चौकोर टिकिया। ४ राहगीर, पथिक। ५ देखो 'बटी'।

बटीड़, बटीड़ो–पु० [सं० वात+आहत] १ मस्तिष्क या शरीर के किसी अंग में वात विकार से अचानक उठने वाला दर्द। २ रह-रह कर होने वाला तीव्र दर्द। ३ बिच्छू के काटने का दर्द। ४ प्रहार, चोट। ५ प्रहार की ध्वनि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बटुक–देखो 'बटुक'।

बटुवा–पु० [सं० वट-वेष्टनम्] १ चमड़े, प्लास्टिक आदि का बना, रुपये-पैसे रखने का, ढक्कनदार छोटा थैला। २ देव मूर्ति रखने का थैला।

बटुकणा (बो)–क्रि० [सं० वक्त्र+कट्] दांतों से काट कर खाना।

बटेर–पु० [सं० वर्तिक] तीतर जाति का एक छोटा पक्षी विशेष। —**बाज**–पु० बटेर को पालने व लड़ाने वाला। —**बाजी**–स्त्री० बटेर को पालने व लड़ाने की क्रिया।

बटोड़ी–पु० सूखे उपलों का चुना हुआ ढेर।

बटोती–पु० बंटवारा, हिस्सा।

बटोरणी–पु० [सं० वट्] एक प्रकार का शस्त्र।

बटोरणी (बो)–क्रि० [सं० वट्] १ इकट्ठा करना, संग्रह करना। २ समेटना, एकत्र करना। ३ चुनना, चुगना, बीनना।

बटोही–देखो 'बटाऊ'।

बटौ–देखो 'बट्टौ'।

बट्ट–१ देखो 'वट'। २ देखो 'वाट'। ३ देखो 'बट्टौ'।

बट्टाखातो–पु० १ उधार की रकम जो वसूल होने लायक न हो। २ उक्त रकम का खाता।

बट्टी–देखो 'बटो'।

बट्टौ–पु० [सं० वार्त्त] १ किसी वस्तु के लेन-देन में होने वाली कमी। २ नुक्स वाली वस्तु की कीमत में होने वाली कमी। ३ नोट या मुद्रा के लेन-देन में होने वाली कटौती। ४ सोने चांदी के आभूषणों में मिलाई जाने वाली अन्य धातुओं की खोट। ५ घाटा, नुकसान। ६ घब्बा, कलक, दाग। ७ भाग, हिस्सा। [सं० वटक:] ८ बाजीगर का लड्डू गोला। ९ देखो 'बटेर'।

बठठ–स्त्री० बट-बट ध्वनि।

बठठाठ–स्त्री० ध्वनि विशेष।

बठाणणी (बो)–देखो 'बैठाणी' (बो)।

बठी, बठीनं–देखो 'बठी'।

बठेह, बठं, बठेई–देखो 'बठें'।

बठोठ–पु० १ गर्व, घमंड। २ विशेष, अधिक।

बठोबठ–वि० १ नाप के अनुसार ठीक, बराबर। २ उचित, अनुरूप।

बडंग, बडंगी–देखो 'विडंग'।

बड–१ देखो 'बडो'। २ देखो 'वट'।

बडआक–पु० [देश०] बड़ का फल।

बडइस–देखो 'बडहिल'।

बडउ–१ देखो 'बडो'। २ देखो 'बटुक'।

बडकुमार–पु० [सं० वड्र-कुमार] (स्त्री० बडकुमारी) १ बड़ा लड़का। २ युवराज।

बडकुमारी–स्त्री० [सं० वड्र-कुमारी] १ बड़ी लड़की, युवा लड़की। २ ज्येष्ठ राजकुमारी।

बडको–पु० [सं० वड्रक] पूर्वज, बडेरा। –वि० १ सर्वोत्तम, श्रेष्ठ। २ मुख्य, प्रधान।

बडकोळो–पु० वट का फल।

बडखेत–वि० [सं० वड्र+क्षेत्रम्] श्रेष्ठ भूमि।

बडगूंदी, बडगूंदो–पु० १ गूंदी जाति का वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष का फल।

बडगोतण–वि० १ श्रेष्ठ या उच्च कुल की। २ गर्विली, मानिनी।

बडचीत–देखो 'वडचीत'।

बडणी (बो)–१ देखो 'बड़णी' (बो)। २ देखो 'बड़णी' (बो)। ३ देखो 'बघणी' (बो)।

बडदूमो–पु० [देश०] लम्बी दुम का हाथी।

बडनाळ–देखो 'वडनाळ'।

बडपण, बडप्पण–पु० १ श्रेष्ठ या बड़ा होने की अवस्था या भाव। २ बड़ा कार्य, उच्च भावना या विचार। ३ सज्जनता का कार्य। ४ महत्व, बड़ाई। ५ गौरव।

बडफर–देखो 'वडफर'।

बडबेहड़ो, बडबेहड़ी–पु० [सं० वड्र+द्विघटक] स्त्रियों द्वारा किसी के स्वागतार्थ शिर पर रखे जाने वाले दो घड़े, द्विघटक।

बडबोर, बडबोरड़ी, बडबोरी–स्त्री० [सं० वड्रबदर] १ बेर का अपेक्षा कृत बड़ा फल। २ बड़े बेरों वाला वृक्ष।

बडबोल–पु० [सं० वड्र-वचन] १ महापुरुषों के वचन, बोल, वाणी, उपदेश। २ ऊंची बातें। ३ शेखी, डींग। ४ सार गर्भित बात।

बडबोलो–वि० [सं० वड्र+वच्] (स्त्री० बड़बोली) १ महत्वपूर्ण और सारगर्भित बात कहने वाला। २ वाक्चतुर। ३ बहुत बोलने वाला, प्रलाप करने वाला। ४ शेखी मारने या डींग हांकने वाला। ५ बरगद का फल।

बडभाग–पु० [सं० वड्र-भाग] १ अहोभाग्य, सौभाग्य। २ देखो 'बडभागी'।

बडभागी–वि० [सं० वड्र-भागिन्] (स्त्री० बडभागण) १ सौभाग्य शाली, बड़े भाग्य वाला। २ खुशकिस्मत, सुखी।

बडम–१ देखो 'बडो'। २ देखो 'वडम'। —**बोल**='बडबोल'।

बडमेघा–पु० [सं० वड्र-मेघा] ब्रह्मा।

बडराग–देखो 'बडोराग'।

बडवंस–पु० १ प्रसिद्ध या श्रेष्ठ कुल। २ बड़ा परिवार।

बडवखती–वि० सौभाग्यशाली, भाग्यवान।

बडवाग्गन, बडवाग, बडवाग्नि, बडवानळ–देखो 'बड़वाग्नि'।

बडवार–वि० यशस्वी, कीर्तिवान।

बडवीर–वि० [सं० वड्र-वीर] बहादुर, साहसी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बडबोर–देखो 'बडबोर' ।

बडहंस–पु० एक राग विशेष ।

बडहंससारंग–पु० सम्पूर्ण जाति का एक राग ।

बडहल–देखो 'बडहिल' ।

बडहार–पु० [सं० वड़-आहार] १ विवाह के बाद बरात को दिया जाने वाला विशेष भोज । २ देखो 'बडहर' ।

बडहिल–स्त्री० रथ, गाड़ी आदि की धुरी, कील ।

बडांबडी–स्त्री० देवी, दुर्गा ।

बडाई–स्त्री० १ बड़प्पन की भावना । २ गुणों की श्रेष्ठता, महत्ता । ३ तारीफ, प्रशंसा । ४ यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा । ५ महिमा, प्रभाव । ६ आदर । ७ अभिमान, गर्व । ८ देखो 'बढ़ई' ।

बडाणी (णौ)–१ देखो 'बढ़ाणी' (बौ) । २ देखो 'बधाणी' (बौ) ।

बडातत–पु० [सं० वड़-तत्त्व] महतत्त्व । बुद्धितत्त्व

बडादिन–पु० [सं० वड़-दिन] १ पर्व या त्यौहार का दिन । २.२५ दिसम्बर का दिन ।

बडापण (पणौ)–देखो 'बडप्पण' ।

बडाबोल–देखो 'बडबोल' ।

बडारण–देखो 'बढारण' ।

बडाळ–१ देखो 'बडाळ' । २ देखो 'बडौ' ।

बडाळभुजाळ–वि० १ सर्व-समर्थ, ईश्वर । २ विशाल भुजाओं वाला, आजानुबाहु । ३ समर्थ, सक्षम ।

बडाळी–१ देखो 'बडाळ' । २ देखो 'बडौ' । (स्त्री० बडाळी)

बडिम, बडिमि–देखो 'बडम' ।

बडियौ–पु० वट वृक्ष का फल ।

बडिस–देखो 'बडिस' ।

बडी–स्त्री० [सं० बड़] १ किसी व्यक्ति की दो स्त्रियों में से प्रथम विवाहिता स्त्री, अधबूढ़ा, अधिविन्ना । २ ताई । ३ देखो 'बडौ' (स्त्री०) । **–इलायची**–स्त्री० पूर्ण पकी इलायची । गरम मसाले में डाली जाने वाली डोडा इलायची । इस इलायची का पेड़ । **—जान**–स्त्री० बरातियों को दिया जाने वाला एक भोज विशेष । **–तीज**–स्त्री० भादव के कृष्ण पक्ष की तृतीया । **—बाक**–स्त्री० मुनक्का दाख ।

बडीनीस–स्त्री० दीर्घ शंका निवारण की क्रिया । (जैन)

बडीबलाय–स्त्री० १ महान् उलझन या झंझट वाला कार्य । २ बड़ी विपत्ति । –पु० १ पुण्य जन, पुण्य पुरुष । ४ दानव दैत्य । ५ यक्ष । –वि० १ समर्थ, शक्तिशाली । २ महान् ।

बडीमां, बडीमाता–स्त्री० १ शीतला माता, चेचक । २ मां की जेठानी, ताई ।

बडीराई–स्त्री० १ लाल रंग की सरसों विशेष । २ इस सरसों का पौधा ।

बडीसांकळी–स्त्री० एक व्रत विशेष । (जैन)

बडुयौ–देखो 'बटुक' ।

बडूउ, बडूओ–देखो 'बडौ' ।

बडूकलियौ, बडूकल्यौ–देखो 'भड़भोलौ' ।

बडूजा–देखो 'विडूजा' **—बाह**='विडूजाबाह' ।

बडेर–देखो 'बडेर' ।

बडेरौ–वि० (स्त्री० बडेरी) १ महान्, श्रेष्ठ । २ मुख्य, प्रधान । ३ वृद्ध, दाना । ४ बड़ा, ज्येष्ठ । ५ आयु के हिसाब से या रिश्ते या पद में बड़ा । –पु० १ पितामह, प्रपितामह, पूर्वज । २ परिवार का वृद्ध पुरुष । ३ बड़ा भाई । ४ परिवार का वरिष्ठ सदस्य ।

बडोड़ौ, बडो, बडोड़ो–वि० [सं० वड़] (स्त्री० बडी, बडोड़ी) १ आयु में बड़ा, ज्येष्ठ । २ अग्रज । ३ पूर्वज, पुरखा । ४ पद या रिश्ते में बड़ा । ५ महान्, श्रेष्ठ । ६ उत्तम । ७ समर्थ, प्रबल । ८ जबरदस्त, जोरदार । ९ महत्वपूर्ण । १० सम्मानित । ११ सम्पन्न । १२ विशाल, विस्तृत । १३ दीर्घ, बड़ा । १४ अत्यधिक, बहुत । १५ अद्भुत, अनौखा । १६ बुझा हुआ (दीपक) । १७ खण्डित । –पु० ब्राह्मण ।

बडोराग–पु० वीर रस पूर्ण राग, सिंधु राग ।

बडोबेस–पु० विवाह के समय वधू के लिये बनाई गई विशिष्ट पोशाक ।

बड्डौ–देखो 'बडौ' ।

बढ़–वि० [सं० वर्धित] १ बढ़ा हुआ, उन्नत । २ अधिक, ज्यादा । [सं० वठरः] ३ मूर्ख । ४ देखो 'बाढ़' ।

बढ़ई–पु० [सं० वर्धकि] १ लकड़ी का इमारती सामान आदि बनाने वाली जाति । २ इस जाति का कोई व्यक्ति, सुथार, खाती । ३ लकड़ी का कारीगर ।

बढ़की–देखो 'बडकौ' ।

बढ़चीत–देखो 'बडचीत' ।

बढ़णी (बौ)–क्रि० [सं० वर्धनम्] १ वीर गति प्राप्त होना, शहीद होना । २ समाप्त होना, मिटना । ३ टुकड़े होना, कटना । ४ युद्ध किया जाना । ५ अपने स्थान से कटना । ६ देखो 'बधणौ' (बौ) ।

बढ़वार–वि० [सं० वड़-वार] भाग्यशाली, योग्य । –पु० झड़बेरी का पौधा ।

बढ़हर–देखो 'बडहर' ।

बढ़हार–देखो 'बडहार' ।

बढ़ाणी (बौ)–क्रि० १ मरवाना । २ मिटवाना, समाप्त कराना । ३ कटवाना, टुकड़े करवाना । ४ चिरवाना । ५ युद्ध कराना । ६ देखो 'बधाणी' (बौ) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बढ़ाबढ़ी–स्त्री० [सं० वर्धनम्] १ मर्यादा या सीमा तोड़ने की क्रिया या भाव । २ प्रतिस्पर्धा, होड़ ।

बढ़ार–देखो 'बड़हार' ।

बढ़ारी–वि० काटने या चीरने वाला ।

बढ़ाळी–देखो 'बाढ़ाळी' ।

बढ़ाळो–देखो 'बाढ़ाळो' ।

बढ़ाव–पु० [सं० वर्धनम्] १ बढ़ने की क्रिया या भाव । २ वृद्धि, बढ़ोतरी । ३ विस्तार, फैलाव । ४ विकास, प्रगति । ५ उन्नयन । ६ गति । ७ तीव्रता । ८ कटाव ।

बढ़ावणो (बो)–१देखो 'बढ़ाणो' (बो) । २ देखो 'बधाणो' (बो) ।

बढ़ावो–पु० [सं० वर्धनम्] १ आगे बढ़ने की क्रिया, आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करने की क्रिया । २ प्रोत्साहन । सह ।

बढ़िया–वि० १ रूप-रंग के अनुसार सुन्दर, अच्छा । २ गुण व स्वभाव से उच्च, उत्तम श्रेष्ठ । ३ जाति से उच्च ।

बढ़ोतरी–स्त्री० १ बढ़ने की क्रिया या भाव । २ उत्तरोत्तर होने वाली वृद्धि । ३ उन्नति, तरक्की । ४ व्यापारिक लाभ । ५ वार्षिक वेतन वृद्धि । ६ वंश या संतान वृद्धि । ७ पोषण । ८ कटने की क्रिया । ९ आय या जमा पूंजी की वृद्धि ।

बण–१ देखो 'बन' । २ देखो 'बण' । ३ देखो 'बणी' ।

बणक–देखो 'बणिक' ।

बणकर–देखो 'बुनकर' ।

बणखंड–देखो 'बनखंड' ।

बणचर–देखो 'बनचर' ।

बणज–१ देखो 'बिणज' । २ देखो 'वाणिज्य' ।

बणजणो (बो)–देखो 'बिणजणो' (बो) ।

बणजार–देखो 'बिणजार' ।

बणजारक, बणजारी–देखो 'बिणजारो' ।

बणठण–स्त्री० १ सुसज्जित होने की क्रिया या भाव । २ सुसज्जित होने की सामग्री ।

बणण–स्त्री० ध्वनि विशेष ।

बणणो (बो)–क्रि० [सं० बननम्] १ विभिन्न वस्तुओं, तत्त्वों, संसाधनों से कोई चीज तैयार होना, बनना, अस्तित्व में आना । २ कोई वस्तु उपयोग की स्थिति में आना । ३ नवीन रूप में परिवर्तित होना । ४ किसी पद पर आसीन होना । ५ नियुक्त होना । ६ असलियत छिपाने हेतु कुछ विशेष अभिनय, आचरण या व्यवहार करना । ७ विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए अपनी स्थिति बनाये रखना । ८ मेल-जोल होना, संबंध या सम्पर्क होना, पटना । ९ भाव या संबंध बदलना । १० झगड़े की स्थिति आना, ठनना । ११ किसी विशेष अवस्था या दशा में होना । १२ बेवकूफी या हास्यास्पद अवस्था में होना । १३ ठगी या धोखे में आना, मतिभ्रम होना । १४ सुधरी अवस्था में आना, संतोषजनक अवस्था में आना । १५ अभिनय या भूमिका करना । १६ आविष्कृत होना । १७ कार्य सम्पन्न होना, पूर्ण होना । १८ अवसर मिलना, कार्य साधन का मौका मिलना । १९ लक्ष्य सिद्धि होना । २० वश चलना । २१ संभव होना । २२ स्थिति बिगड़ने से रहना । २३ अप्रत्यासित योग आना । संयोग बनना । २४ कहीं पर कुछ होना । २५ निर्मित या अंकित होना । २६ सजना । २७ होना । २८ ढोंग करना । २९ व्यापारिक लाभ होना । ३० प्राप्ति या वसूली होना । ३१ निर्वाह होना, किसी दशा को चलाते रहना । ३२ व्यवस्था होना । ३३ एकत्र होना, जुड़ना । ३४ नवीन संबंध होना । ३५ देखो 'बुणणो' (बो) ।

बणत–पु० १ मेल-जोल, प्रेम । २ बुनने की क्रिया या भाव । ३ बुनने का ढंग, बुनावट । ४ बनावट ।

बणयाणी–देखो 'वणियाणी' ।

बणराम–देखो 'बळराम' ।

बणराई, बणराइ (ई), बणराज (राव, राय, राव)–देखो 'वनराज' ।

बणसटी–देखो 'बणस्टी' ।

बणाई–१ देखो 'बणत' । २ देखो 'बुणाई' ।

बणाक–वि० [सं० बननम्] १ किसी वस्तु को बनाने वाला, निर्माता । २ निर्माण कार्य में दक्ष । ३ बुनाई करने वाला । –पुं० १ एक पक्षी विशेष । २ देखो 'विनायक' ।

बणाणी (बो)–क्रि० १ विभिन्न वस्तुओं, तत्त्वों, संसाधनों से कोई चीज तैयार करना । बनाना, अस्तित्व में लाना । २ कोई वस्तु उपयोग की दशा में लाना । ३ नवीन रूप में परिवर्तित करना । ४ किसी पद पर आसीन करना । ५ नियुक्त करना । ६ अभिनय या बनावटी आचरण के लिये तैयार करना । ७ अपनी स्थिति को बनाये रखना । ८ मेल-जोल कराना, संबंध या सम्पर्क कराना, पटवाना । ९ भाव या संबंध बदलाना । १० झगड़े की स्थिति लाना, ठनाना । ११ किसी विशेष अवस्था या दशा में करना । १२ बेवकूफ बनाना । १३ ठगना, धोखे में लेना । मति भ्रमित करना । १४ सुधरी या संतोषजनक दशा में लाना । १५ अभिनय या भूमिका कराना । १६ आविष्कार करना । १७ कार्य संपन्न करना, पूर्ण करना । १८ अवसर देना । मौका देना । १९ लक्ष्य सिद्ध कराना । २० वश चलाना । २१ संभव करना । २२ स्थिति को बिगड़ने से बचाना । २३ अप्रत्यासित योग बनाना । २४ कहीं पर कुछ बनाना । २५ निर्मित, चित्रित या अंकित करना । २६ सजाना । २७ करना । २८ ढोंग कराना । २९ व्यापारिक लाभ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना । ३० वसूली करना । ३१ निर्वाह कराना । ३२ व्यवस्था करना । ३३ एकत्र करना, जुड़ाना । ३४ नवीन संबंध करना । ३५ देखो 'बुणाणी' (बौ) ।

बनारस–स्त्री० १एक प्रकार की शक्कर । २ देखो 'बनारस' ।

बनारसी–वि० १ उक्त शक्कर का बना । २ देखो 'बनारसी' ।

बणाव–पु० १ शृंगार, सजावट । २ आभूषण, गहना । ३ शृंगार प्रसाधन । ४ बनावट, रचना । ५ स्वांग । ६ रूप । ७ रचना ।

बणावट–देखो 'बनावट' ।

बणावटी–देखो 'बनावटी' ।

बणावणी (बौ)–देखो 'बणाणी' (बौ) ।

बणास–१ देखो 'बांणास' । २ देखो 'बनास' ।

बणि–१ देखो 'वणी' । २ देखो 'वण' ।

बणिक–देखो 'वणिक' ।

बणिजारा–देखो 'विणजारा' ।

बणिजारियो, बणिजारो–देखो 'विणजारो' ।

बणियाणी–देखो 'वणियाणी' ।

बणियो–देखो 'वणिक' ।

बणी–१ देखो 'वणी' । २ देखो 'बनी' । ३ देखो 'वण' । ४ देखो 'बन' ।

बणेटी–देखो 'बनैटी' ।

बणेसुर–पु० [सं० वन-ईश्वर] १ सिंह, शेर । २ हाथी, गज ।

बणैटी–देखो 'बनैटी' ।

बणोखड़ी–स्त्री० [सं० वाणि-लकुटी] १ कपास का पौधा । २ इस पौधे के डंठल ।

बणोड़ी–पु० १ आंख का एक फोड़ा, रोग विशेष । २ व्यवधान । –क्रि० वि० बीच में ।

बणो–पु० कपास का पौधा ।

बतंगड़–पु० बढ़ा-चढ़ा कर कही हुई बात, बात का बड़ा रूप ।

बत–देखो 'बात' ।

बतक–पु० [सं० बर्तक] १ एक प्रकार का जल पक्षी । २ शराब रखने की सुराई । –वि० लाल* ।

बतकाव–देखो 'बतळाव' ।

बतख–देखो 'बतक' ।

बतगाव–देखो 'बतळाव' ।

बतरी–स्त्री० १ रहट के घेरे में लगने वाली लोहे की एक कील विशेष । २ जूए में लगने वाली एक कील ।

बतळ–देखो 'वंतळ' ।

बतळाणी (बौ), बतलाणी (बौ)–क्रि० [सं० वार्तन] १ सम्बोधन करना । २ पूछना, प्रश्न करना । ३ हाल चाल पूछना । ४ बोलना । ५ किसी से आगे होकर बोलना । ६ विचार-विमर्श या बात-चीत करना । ७ देखो 'बताणी' (बौ) ।

बतळाव, बतळावण, बतलावण–स्त्री० [सं० वार्तन] १ विचार विमर्श करने की क्रिया या भाव । २ बात । ३ बोल-चाल । ४ बात-चीत । ५ होड़, बहस । ६ सम्बोधन । ७ समझौता । ८ दिखलाना या बताना क्रिया ।

बतळावणी (बौ)–१ देखो 'बतळाणी' (बौ) । २ देखो 'बताणी' (बौ) ।

बतसर–देखो 'वत्सर' ।

बताड़णी (बौ), बताणी (बौ)–क्रि० १ जानकारी या सूचना देना । २ परिचय देना, जान-पहचान कराना । ३ वर्णन करना, कथना । ४ मार्ग दर्शन करना । ५ सलाह या सुझाव देना । ६ समझाना । ७ दिखलाना, इंगित करना । ८ शारीरिक चेष्टा या संकेतों से समझाना, दर्शाना । ९ कहना, बोल देना । १० उपभोग कराना, भुगतवाना । ११ सबक सिखाना, मजा चखाना । १२ सतर्क करना, सचेत करना ।

बतार–पु० नदी या सरोवर का घाट ।

बतावणी (बौ)–देखो 'बताणी' (बौ) ।

बतासौ–पु० १ तलवार की मूठ का एक भाग । २ देखो 'पतासौ' ।

बति–१ देखो 'बत्ती' । २ देखो 'बात' ।

बतियां–१ देखो 'बात' । २ देखो 'बत्ती' ।

बती–१ देखो 'बत्ती' । २ देखो 'बत्ती' । ३ देखो 'बात' ।

बतीस–देखो 'बत्तीस' ।

बतीसमौ–देखो 'बत्तीसमौ' ।

बतीसी–देखो 'बत्तीसी' ।

बतूळ, बतूळी–देखो 'बथूळी' ।

बतौर–क्रि०वि [फा०] १ तरह से, रीति से । २ रूप में, किसी दशा में । तौर पर । ३ सदृश, समान ।

बत्त, बत्तड़ी–देखो 'बात' ।

बत्ती–स्त्री० [सं० वर्ति] १ दीपक, चिराग । २ विद्युत से जलने वाला चिराग । बल्ब । ३ चिराग में जलने वाला सूत या रुई । ४ रुई या सूत का मोटा डोरा । ५ मोमबत्ती । ६ अगरबत्ती । ७ छाजन में लगने का घास का पूआल या आक की लकड़ियां । ८ बंदूक, तोप आदि का पलीता । ९ घाव में भरने को रुई या कपड़े की चज्जी ।

बत्तीस–वि० [सं० द्वात्रिंशत] तीस और दो । –पु० तीस व दो की संख्या, ३२ ।

बत्तीसका–देखो 'बत्तीसी' ।

बत्तीसमौ (बौ)–वि० बत्तीस के स्थान वाला, इकत्तीस के बाद वाला ।

बत्तीसियौ–वि० १ बत्तीस दांतों वाला । २ बत्तीस अंग या भागों वाला । ३ बत्तीस लक्षणों वाला, सर्वगुणी । –पु० १ एक पक्षी विशेष । २ देखो 'बत्तीसी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बत्तीसे'क–वि० बत्तीस के लगभग ।

बत्तीसी–स्त्री० १ मनुष्य के मुंह में ऊपर-नीचे स्थित दंत पंक्तियां । २ बत्तीस दांतों का समूह । ३ एक ही प्रकार की बत्तीस वस्तुओं का समूह । ४ बत्तीस छंदों का समूह । ५ विवाह के अवसर पर वर-कन्या के ननिहाल वालों को दिया जाने वाल विशेष निमंत्रण । ६ वैवाहिक निमंत्रण, कुंम-कुंभ पत्रिका ।

बत्तीसो–वि० (स्त्री० बत्तीसी) १ शक्तिशाली, समर्थ । २ चतुर पंडित । ३ विद्वान । –पु० १ नर बलि के लिये निश्चित मनुष्य । २ बत्तीस पदार्थों के मिश्रण से बना अफीम । ३ बत्तीस सुगंधित पदार्थों से बना धूप । ४ बत्तीस पौष्टिक पदार्थों से बना खाद्य पदार्थ । ५ बत्तीस की संख्या वाला वर्ष । ६ एक छन्द विशेष ।

बत्तेरो–वि० १ विशेष अधिक । २ देखो 'बतेरो' ।

बत्थ–देखो 'बाथ' ।

बत्थुविज्जा–स्त्री० वास्तु विद्या ।

बत्रा–वि० बिखरा हुआ ।

बत्रारि–पु० [सं० वृत्र-अरि] इन्द्र ।

बत्रीसलक्षणो–देखो 'बत्तीसलक्षणो' ।

बत्सर–देखो 'वत्सर' ।

बध–देखो 'बाध' ।

बधकड़–पु० १ मल्ल युद्ध । २ देखो 'बाध' ।

बधणो (बो)–क्रि० मिलना, प्राप्त होना ।

बधबो–पु० [सं० वास्तुकम्] १ अधिकतर गेहूं व जौ के खेतों में होने वाला एक पौधा । २ उक्त पौधे का पत्ता ।

बधारणो (बो)–क्रि० १ भिड़ना, युद्ध करना । २ मल्ल युद्ध करना ।

बधुओ, बधुबो–पु० १ एक छंद विशेष । २ देखो 'बधबो' ।

बधूंडणो (बो)–क्रि० १ छानबीन करना, खोज करना । २ ठूंस-ठूंस कर खाना । ३ इकट्ठा करना । ४ कुश्ती लड़ना, धक्का देना । ५ छीनना ।

बधूळ, बधूळियो, बधूळो–पु० [सं० वातुंल] चक्कर खाती हुई तेज चलने वाली हवा । वायु का गुल्म । वातचक्र ।

बधोबध–देखो 'बाधोबाध' ।

बध्य–देखो 'बाध' ।

बद–वि० [फ़ा० बद] १ दुष्ट, नीच, मनहूस । २ उपद्रवी, फिसादी । ३ बुरा, खराब । ४ देखो 'वद' । —**अमल**–वि० दुष्कर्म करने वाला । बुरे कर्म करने वाला । –**अमली**–स्त्री० कुप्रबंध । अव्यवस्था । बुरा शासन । अराजकता । —**इंतजाम, इंतजामी**–स्त्री० अव्यवस्था । अराजकता , —**कार**–वि० दुष्कर्मी, कुकर्मी । दुराचारी । –**कारी**–स्त्री० कुकर्म । दुराचार । व्यभिचार । —**किस्मत**–वि० बुरे भाग्य वाला । अभागा । हतभाग्य । —**किस्मती**–स्त्री० बुरे भाग्य । अभाग्य । —**खोर, खोरो**–वि० दुष्ट, नीच । कमीना । हरामी । —**खवाह**–वि० बुराई चाहने वाला । अहित चिंतक । शत्रु, विपक्षी । –**चलण (न)**–वि० कुमार्ग गामी, वेश्यागामी । दुश्चरित्र । —**चलणी (नी)**–स्त्री० बुरा आचरण । व्यभिचार । वेश्यागमन । —**जबांन**–वि० गंदी भाषा बोलने वाला । गाली देने वाला । कटुभाषी । —**जात**–वि० नीच कुलोत्पन्न । कमीना, नीच, दुष्ट । बदमाश । —**तमीज**–वि० अनुचित आचरण करने वाला । अशिष्ट, असभ्य । नीच, ढीट, धृष्ट । —**तमीजी**–स्त्री० अशिष्टता । धृष्टता, नीचता । —**दिमाग**–वि० तुनक मिजाज, चिड़चिड़ा । अड़ियल । घमण्डी । —**दिमागी**–स्त्री० चिड़चिड़ापन । घमण्ड । अड़ियलपन । —**नसीब**–वि० बुरे भाग्य वाला । अभागा । —**नसीबी**–स्त्री० बुरे भाग्य । अभाग । —**नीत, नीयत**–वि० बुरी नीयत या भावना वाला । बईमान । लोभी, छलिया । दुष्कर्मी । —**नीयती**–स्त्री० बुरी नीयत या भावना ।

बदगांठ–स्त्री० [सं० वर्ष्म-ग्रंथि] एक ग्रंथि रोग विशेष ।

बदणी–१ देखो 'बंधणी' । २ देखो 'बधणी' ।

बदणो (बो)–१ देखो 'बंधणो' (बो) । २ देखो 'बधणो' (बो) ।

बदतर–वि० [फा०] अपेक्षाकृत तुच्छ, हेय, नीच, खराब ।

बदुआ–स्त्री० [फा० बद+अ० दुआ] १ अशुभ कामना, अशुभ चिंतन । २ अभिशाप, दुराशीश, शाप । ३ हाय ।

बदन–पु० [अ०] १ शरीर, देह, तन । २ देखो 'वदन' ।

बदनाम–वि० [फा०] १ कुख्यात । २ अपने आचरण के प्रति अप्रतिष्ठित, बेइज्जत । ३ निन्दित, अपकीर्ति वाला ।

बदनामी–स्त्री० [फा०] १ बदनाम होने की अवस्था या भाव । २ निन्दा, अपकीर्ति । ३ कुख्याति, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती ।

बदनीयत–[सं०] धोखेबाज, कपटी, छल करने वाला ।

बदनो–वि० १ बदन का, बदन संबंधी । २ शरीरधारी, देहधारी । ३ मुंहवाला ।

बदन्न–देखो 'बदन' ।

बदपरहेज–वि० [फा०] कुपथ्य लेने वाला ।

बदपरहेजी– स्त्री० [फा०] १ कुपथ्य का सेवन । २ कुपथ्य ।

बदफैल–वि० [फा०] १ बदमाश, उद्दण्ड । २ दुष्कर्मी ।

बदफैली–स्त्री० [फा०] १ बदमाशी, उद्दण्डता । २ दुष्कर्म । ३ व्यभिचार ।

बदबख्त–वि० [फा०] जिसका वक्त बुरा हो । अभागा ।

बदबख्ती–स्त्री० [फा०] बुरा वक्त । अभाग ।

बदबू, बदबोई, बदबोय(बोह), बदबो–स्त्री० [फा० बदबू] १ बुरी गंध, दुर्गन्ध । २ अपकीर्ति, बुराई । —**दार**–वि०–दुर्गन्ध युक्त ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बदमास–वि० [फा० बदमाश] १ बुरे आचरण या स्वभाव वाला। २ उद्दण्ड, उपद्रवी। ३ नीच, दुष्ट। ४ बदचलन, व्यभिचारी। ५ लुच्चा, बईमान। ६ नटखट।

बदमासी–स्त्री० [फा० बदमाशी] १ बुरा आचरण या स्वभाव। २ उद्दण्डता, उपद्रव। ३ नीचता, दुष्टता। ४ व्यभिचार। ५ लुच्चापन, बईमानी। ६ नटखटपन।

बदमिज़ाज–देखो 'बदमिजाज'।

बदमिजाजी–देखो 'बदमिजाजी'।

बदरंग–वि० [फा०] १ जिसका रंग विकृत या फीका हो गया हो। २ बुरे रंग का। ३ विवर्ण, भिन्न रंग का। ४ खराब, खोटा। ५ अन्य रंग खेलने वाला खिलाड़ी (ताश)।

बदरंगी–स्त्री० [फा०] १ बदरंग होने की अवस्था या भाव। २ रंग का फीकापन या विकृति। ३ खोटापन। ४ अशुभ या बुरा रंग।

बदरकी–स्त्री० बैलगाड़ी में घास आदि भरने के लिये ऊपर लगाई जाने वाली लंबी लकड़ी।

बदरा–पु० [सं० भद्र] १ कल्याण। २ देखो 'बदरा'।

बदराह–वि० [फा०] १ बुरे रास्ते चलने वाला, पथ भ्रष्ट कुमार्गी। २ व्यभिचारी। ३ दुर्व्यसनी। ४ दुष्ट, पाजी। –पु० १ कुमार्ग, कुपंथ। २ व्यभिचार, दुर्व्यसन।

बदरी–स्त्री० [सं०] १ बेर का पेड़। २ हिमालय की एक चोटी का नाम। ३ कई रंगों के चकत्तों वाली गाय। ४ देखो 'बदरीनाथ'।

बदरीकाश्रम, बदरीनाथ, बदरीनारायण, बदरीविशाल–पु० १ हिमालय पर स्थित हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ। २ उक्त तीर्थ में प्रतिस्थापित देवता।

बदरो–पु० चितकबरा, पशु।

बदल–पु० [अ० बदल] १ अदल-बदल, हेर-फेर, परिवर्तन। २ देखो 'बादल'।

बदलणो (बो)–क्रि० १ परिवर्तन होना, हेर-फेर होना। २ एक स्थिति से दूसरी में आना। ३ एक स्थान से दूसरे पर आना। ४ एक के स्थान पर दूसरा आना। ५ पद या नियुक्ति में परिवर्तन होना। ६ मनस्थिति बदलना। ७ पीछे की ओर घूमना, मुड़ना। ८ विरुद्ध होना। ९ वादे या बात से मुकरना, इन्कार करना। १० वेश परिवर्तन करना। ११ एक के स्थान पर दूसरे को लाना। १२ विषयान्तर करना। १३ परिवर्तन करना। १४ परस्पर हस्तान्तरण करना। १५ दिशा परिवर्तन करना।

बदलाणो (बो)–क्रि० १ परिवर्तन कराना, हेर-फेर कराना। २ एक स्थिति से दूसरी में लाना। ३ एक स्थान से दूसरे पर कराना। ४ एक के स्थान पर दूसरे को लिवाना। ५ पद या नियुक्ति में परिवर्तन कराना। ६ मनस्थिति बदलाना। ७ पीछे की ओर घुमवाना, मुड़वाना। ८ विरुद्ध कराना। ९ वादे या बात से मुकराना, इन्कार कराना। १० वेश परिवर्तन कराना। ११ विषयान्तर कराना। १२ परिवर्तन कराना। १३ परस्पर हस्तान्तरण कराना। १४ दिशा बदलाना।

बदळायत–वि० १ जो बदला लेना चाहता हो। २ शत्रु, वैरी। ३ एवज में काम करने वाला, स्थानापन्न।

बदळायणो (बो)–देखो 'बदळाणो' (बो)।

बदळो–स्त्री० १ बदले हुए होने की अवस्था। २ स्थानान्तरण, तबादला। ३ देखो 'बदलै'। ४ देखो 'बादळ'।

बदळे, बदळै–क्रि०वि० १ एवज में। २ अदल-बदल करने पर। ३ स्थानापन्न दशा में। ४ लिये, वास्ते।

बदळो–पु० १ बदलने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु के एवज में ली जाने वाली वस्तु। ३ क्षतिपूर्ति का धन। ४ प्रतिकार, प्रतिक्रिया। ५ प्रति व्यवहार। ६ प्रतिफल, मुगतान। ७ मुआवजा, मुआवजे का धन। ८ प्रतिशोध, वैर। ९ स्थानापन्न, एवज। १० देखो 'बादळ'।

बदवा–देखो 'बद्दुआ'।

बदसलूक–वि० [फा०] १ दुर्व्यवहार करने वाला, बुरा सलूक करने वाला। २ असभ्य, अनाड़ी।

बदसलूकी–स्त्री० १ दुर्व्यवहार, बुरा व्यवहार। २ असभ्यता, अनाड़ीपन।

बदसाह–देखो 'बादसाह'।

बदसूरत–वि० [फा०] जिसका चेहरा सुन्दर न हो, जो रूपवान न हो। कुरूप।

बदस्तूर–क्रि०वि० [फा०] १ परिवर्तन के बिना, यथावत्, यथा पूर्व। ढंगसर। २ कायदेसर, नियमानुसार। ३ परम्परा या रूढ़िगत। ४ निरन्तर।

बदहजमी–स्त्री० [फा०] १ अपच का रोग, अजीर्ण। २ किसी बात को मन में न रख पाने की अवस्था।

बदांम–देखो 'बादांम'।

बदांमण–१ देखो 'बदावण'। २ देखो 'बदावन'।

बदांमणी–देखो 'बधांमणी'।

बदांमणी (बी)–देखो 'बधाणी' (बी)।

बदांमी–देखो 'बादांमी'।

बदाणो (बो)–१ देखो 'बदाणो' (बो)। २ देखो 'बधाणो' (बो)।

बदाबदी–स्त्री० १ वाद-विवाद। २ होड़, प्रतिस्पर्धा। ३ किसी को नीचा दिखाने या रखने की प्रवृत्ति।

बदारणो (बो)–देखो 'बधारणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बदावण–स्त्री० [सं० बद्ध-दामन्] १ खाट के पैंताने की ओर खींच कर लगायी जाने वाली मूंज या सूत की रस्सी। २ देखो 'बदाधन'।

बदावणी–देखो 'बधांमणी'।

बदावणी(बौ)–१ देखो 'बधाणी' (बौ)। २ देखो 'बदाणी'(बौ)।

बदावन–१ देखो 'बदावन'। २ देखो 'बदावण'।

बदावी–देखो 'बधावी'।

बदि, बदी–स्त्री० [फा० बदी] १ बुरी या गंदी बातें। २ निन्दनीय चर्चा। ३ निन्दा, कटवी, आलोचना। ४ बुरा कार्य, कुकर्म। ५ बदनामी। ६ बईमानी। ७ देखो 'बदि'।

बदीत–देखो 'विदित'।

बदीती–वि० १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ कबूल किया हुआ।

बदौलत, बदौलत–क्रि० वि० [फा० बदौलत] १ अनुग्रह या कृपा से। २ प्रयत्न या प्रयास से। ३ अवलंब या सहारे से। ४ कारण, वजह से। ५ द्वारा।

बद्दळ–देखो 'बादळ'।

बद्दळी–१ देखो 'बदळी'। २ देखो 'बादळी'।

बद्दळो–१ देखो 'बदळो'। २ देखो 'बादळ'।

बद्ध–वि० [सं०] १ बंधन में पड़ा हुआ। २ हथकड़ी या बेड़ी में जकड़ा हुआ, कैदी, बंदी। ३ गिरफ्तार किया हुआ। ४ किसी प्रकार के घेरे में पड़ा हुआ। ५ प्रतिबंध लगा हुआ। ६ गतिरोध आया हुआ, अवरुद्ध, रोका हुआ। ७ बनाया हुआ, रचा हुआ। ८ जमा हुआ। ९ जुड़ा हुआ, सटा हुआ, संलग्न। १० सज-धज कर तैयार, पहना हुआ। ११ निर्धारित या निश्चित। १२ फंसा हुआ, उलझा हुआ। १३ सांसारिक प्रपंच में पड़ा हुआ। —कोस्ठ–पु० कब्ज का रोग। कब्ज हो जाने की दशा।

बद्धणी (बौ)–१ देखो 'बधणी' (बौ)। २ देखो 'बंधणी'(बौ)।

बद्धी–स्त्री० १ रंगे हुए चमड़े का पतला फीता, कस्सा। २ गंडा ताबीज।

बद्धाचळ–देखो 'विध्याचळ'।

बद्रीनाथ, बद्रीपति–देखो 'बदरीनाथ'।

बध–देखो 'वध'।

बधक–१ देखो 'बधिक'। २ देखो 'बधक'।

बधकी–वि० १ कीमती। २ बढ़िया, अच्छा। (स्त्री० बधकी)

बधणी–वि० [सं० वर्धनम्] १ बढ़ने योग्य। बढ़ने वाला। २ जोर लगने पर बढ़ जाने वाला। ३ लचीला, लोचदार। ४ देखो 'बंधणी'।

बधणी (बौ)–क्रि० [सं० वर्धनम्] १ आकार-प्रकार या क्षेत्र में वृद्धि होना। २ निश्चित सीमा से बाहर होना। ३ आगे चलना, अग्रसर होना। ४ उन्नत होना, ऊपर उठना। ५ विकसित होना, प्रफुल्लित होना, खिलना। ६ गुण, विद्या, योग्यता में वृद्धि होना। ७ विशेष गुण प्राप्त करना, विशिष्ट होना। ८ परिणाम या नाप तौल में वृद्धि होना। ९ अधिक व्यापक होना। १० प्रबल या तीव्र होना। ११ प्रतियोगिता में आगे होना, अग्रगण्य होना। १२ धन या सम्पत्ति में वृद्धि होना। १३ वस्तुओं की कीमतें बढ़ना। १४ अस्त होना। १५ मारना, संहार करना, वध करना। १६ देखो 'वदणी' (बौ)।

बधतीवेस–स्त्री० युवा अवस्था। जवानी।

बधती–वि० [सं० वर्धनम्] (स्त्री० बधती) १ निश्चित मात्रा से कुछ अधिक। २ अग्रसर। ३ चढ़ता हुआ, उन्नत। ४ विकासशील, विकसित। ५ विशिष्टता प्राप्त, विशेष। ६ उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाला, प्रगतिशील। ७ अस्त होने को उन्मुख। ८ तेजी की ओर उन्मुख।

बधरणी (बौ)–देखो 'बधरणी' (बौ)।

बधराणी (बौ), बधरावणी (बौ)–देखो 'बधराणी' (बौ)।

बधरोम–देखो 'बधरोम'।

बधवा–स्त्री० १ तोप, बंदूक आदि के छूटने का धूंआ। २ आतिशबाजी का धूंआ। ३ देखो 'बिधवा'।

बधहोणी–स्त्री० [सं० बध-भू] १ धरती, भूमि, पृथ्वी। २ कलह करने वाली स्त्री।

बधांमणी–देखो 'बधांमणी'।

बधांमणी (बौ)–देखो 'बधाणी' (बौ)।

बधाई–स्त्री० [सं० वर्धय्] १ मांगलिक या शुभ अवसरों का उत्सव। २ शुभ संवाद, खुशखबरी। ३ शुभ संवाद देने वाले को दिया जाने वाला पुरस्कार। ४ घर में शुभ कार्य या खुशी की घटना होने पर इष्ट मित्रों व संबंधियों में बांटा जाने वाला मांगलिक पदार्थ। ५ आशीर्वचन। ६ मुबारकबाद, शुभकामना। ७ स्वागत। —दार, हार–वि० शुभ संवाद या खुश खबरी देने वाला। मुबारकबाद देने वाला। आशीर्वचन कहने वाला।

बधाउ, बधाऊ, बधाऊ–वि० [सं० वर्धय्] १ शुभ समाचार या बधाई संदेश देने वाला, लाने वाला। २ शुभ कार्य या भावी घटना की सूचना देने वाले लक्षण, चिह्न, प्रतीक। ३ अधिक, विशेष। —पु० १ वर्षा की सूचना देने वाला पतंगा। २ देखो 'बधावी'।

बधाणी–वि० [सं० वर्धन] (स्त्री० बधाणी) वृद्धि करने वाला।

बधाणी (बौ)–क्रि० [सं० वर्धापनम्] १ स्वागत करना, अगवानी करना। २ उत्सव मनाना, खुशी मनाना। ३ सम्मान, आदर या सत्कार करना। ४ आकार-प्रकार, क्षेत्र या मात्रा में वृद्धि करना। ५ निश्चित सीमा से बाहर या आगे करना,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बढ़ाना। ६ आगे चलाना, अग्रसर करना। ७ उन्नत करना ऊपर उठाना। ८ विकसित करना। ९ गुण, विद्या में बढ़ोतरी करना, योग्यता बढ़वाना। १० विशिष्टता प्राप्त कराना। ११ परिमाण, नाप, तौल में वृद्धि करना। १२ अधिक व्यापक करना। १३ प्रबल या तीव्र करना। १४ प्रतियोगिता में आगे रखना। १५ धन-सम्पत्ति बढ़ाना। १६ कीमतें बढ़ाना। १७ दुकानदारी समेटना।

बधापो–पु० [सं० वर्धनम्] १ वृद्धि। २ सन्तानोत्पत्ति, वंश वृद्धि।

बधाबधी–देखो 'बढ़ाबढ़ी'।

बधारणो (बो)–देखो 'वधारणो' (बो)।

बधारो–पु० [सं० वर्धार] १ शासन की अच्छी सेवा के बदले दी जाने वाली अतिरिक्त जागीर (मध्यकाल)। २ तरक्की, बढ़ोतरी। ३ देखो 'विधारो'।

बधाव–पु० [सं० वर्धन] १ बढ़ा हुआ होने की अवस्था या स्थिति, वृद्धि, अधिकता, विशेषता। २ विकास। ३ विस्तार फैलाव। ४ मूल्य वृद्धि।

बधावणो–देखो 'वधामणो'।

बधावणो (बो)–देखो 'बधाणो' (बो)।

बधावो–पु० [सं० वर्धापि] १ स्वागत, अगवानी। २ मंगल गान, लोक गीत। ३ आनन्दोत्सव, उत्सव। ४ खुशी पर बांटा जाने वाला पदार्थ। ५ देखो 'बधाऊ'।

बधिक–देखो 'वधिक'।

बधिर–वि० [सं०] जिसकी श्रवणेन्द्रियां निष्क्रिय हों, बहरा।

बधिरता–स्त्री० बहरापन।

बधिसमर–पु० [सं० समरवधी] योद्धा, शूरवीर।

बधु, बधू–१ देखो 'वधू'। २ देखो 'बाधो'।

बधेपो–देखो 'बधापो'।

बधो–देखो 'बाधो'। (स्त्री० बधी)

बध्धणो (बो)–१देखो 'बंधणो' (बो)। २ देखो 'बधणो' (बो)।

बध्धी–१ देखो 'बद्धी'। २ देखो 'ब्रद्धी'।

बध्धो–देखो 'बाधो' (स्त्री० बध्धी)।

बन–देखो 'वन'।

बनकर–देखो 'वनकर'।

बनखंड–देखो 'वनखंड'।

बनखंडी–देखो 'वनखंडी'।

बनगव (गाय, गाव)–देखो 'वनगव'।

बनड़ी–देखो 'बनी'।

बनड़ो–देखो 'बनो'।

बनचर (चरो, चारी)–देखो 'वनचर'।

बनज–१ देखो 'वनज'। २ देखो 'विणज'। ३ देखो 'वाणिज्य'।

बनजारो–देखो 'बिणजारो'।

बनणियो, बनणो–देखो 'बंधणो'।

बनता–देखो 'वनिता'।

बनतुलसी–देखो 'वनतुलसी'।

बनद–देखो 'वनद'।

बननिधि–देखो 'वननिधि'।

बननेटिय–पु० वैमनस्य, अनबन।

बनपत (पति, पती)–देखो 'वनपति'।

बनपसा–स्त्री० [फा० बनपशा] एक प्रकार की वनस्पति जो औषधि में काम आती है।

बनपाळ, बनपालक–देखो 'वनपाळ'।

बनफळ–देखो 'वनफळ'।

बनबास–देखो 'वनवास'।

बनमय–देखो 'वनमय'।

बनमांनस, (मानुस)–देखो 'वनमांनुस'।

बनमाळ (माळा)–देखो 'बनमाळा'।

बनमाळी, बनमाळी–देखो 'वनमाळी'।

बनर–देखो 'वांनर'।

बनराइ, बनराज (राय, राव)–देखो 'वनराज'।

बनवास, बनवासी–देखो 'वनवास'।

बनसपति, बनसपती–देखो 'वनस्पति'।

बनसी–१ देखो 'वंसी'। २ देखो 'बंसी'।

बनस्पति, बनस्पती–देखो 'वनस्पति'।

बनाम–अव्य० [फा० बनाम] १ किसी के नाम पर या नाम से। २ किसी के प्रति या अपेक्षा में। ३ विरोध में, विरुद्ध। ४ सामने, मुकाबले में।

बनात–पु० १ रंग विशेष का ऊनी या रेशमी उत्तम वस्त्र, चादर। २ रंगीन रस्सी या डोरी। ३ बनात के रंग का वस्त्र।

बनातो–वि० १ बनात का, बनात संबंधी। २ बनात के रंग वाला।

बनाफर–पु० एक क्षत्रिय वंश या इस वंश का व्यक्ति।

बनारणो (बो)–देखो 'वधारणो' (बो)।

बनारस–स्त्री० [सं० वाराणसी] काशी नगरी का एक नाम।

बनारसो–वि० [सं० वाराणसी] उक्त नगरी का, उक्त नगरी संबंधी। –पु० १ बनारस का निवासी। २ बनारस में निर्मित वस्तु।

बनावट–स्त्री० १ किसी वस्तु की रचना, निर्माण विधि, ढांचा, शैली, विधान। २ रूप रेखा, आकार-प्रकार। ३ दिखावा मात्र, सत्यता की नकल। ४ कृत्रिमता। ५ ढोंग, आडंबर।

बनावटी–वि० १ जिसमें वास्तविकता का अभाव हो। २ जिसमें वास्तविता की नकल हो। ३ कृत्रिम, नकली। ४ कल्पित।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बनास–स्त्री० १ अरावली से निकल कर चंबल में गिरने वाली एक नदी। २ देखो 'विनास'।

बनासपति (पति)–स्त्री० १ नाशपति नामक वृक्ष व उसका फल। २ देखो 'वनस्पति'।

बनि–१ देखो 'बनी'। २ देखो 'बनी'। ३ देखो 'बनि'।

बनिता–देखो 'वनिता'।

बनियान–पु० १ कुर्ता। २ गंजी, बंडा।

बनिस्पत, बनिस्बत–क्रि० वि० [फा० बनिस्बत] १ किसी की तुलना में, मुकाबले में। २ अपेक्षा में। ३ तुलनात्मक दृष्टि से।

बनी–स्त्री० १ दुल्हन। २ नववधू। ३ सरपंखा नामक पौधा। ४ देखो 'वनी'।

बनीत–पु० [सं० वैनतेय] गरुड़।

बनू–देखो 'बनो'।

बनेई–देखो 'बहनोई'।

बनै–पु० [सं० द्वि] दोनों, दो।

बनैटी, बनैठी–स्त्री० [सं० वन-यष्टी] पट्टेबाजी में काम आने वाली एक प्रकार की छड़ी।

बनोक–देखो 'वनोक'।

बनोळी–देखो 'बंदोळी'।

बनो–पु० (स्त्री० बनी) १ दूल्हा, वर। २ किसी युवक या कुमार का संबोधन। ३ वर के प्रति गाने का एक लोक गीत। ४ देखो 'बानो'।

बन्न–देखो 'वन'।

बन्नउळी, बन्नउली–देखो 'बंदोळी'।

बन्नर–देखो 'बानर'।

बन्नरमाळ–देखो 'बांदरमाळ'।

बन्नी–वि० [सं० वन्न] १ बनी हुई, निर्मित। २ देखो 'बनी'। ३ देखो 'वनी'। ४ देखो 'वनि'।

बन्नीत–देखो 'बनीत'।

बन्नौ–देखो 'बनो'।

बन्याबांना–स्त्री० गुजराती नटों की एक शाखा।

बन्हि बन्हो–१ देखो 'बनी'। २ देखो 'बनि'। ३ देखो 'वनी'।

बन्हे, बन्है–देखो 'बनै'।

बप–१ देखो 'बपु'। २ देखो 'बाप'।

बपटौ–पु० [सं० द्विपट्ट] १ एक ही हरीसा में जुड़े दो हल। २ दो पाट की कोई वस्तु।

बपत, बपता–देखो 'विपदा'।

बपराणो (बो)–देखो 'वपराणो' (बो)।

बपा–देखो 'बपा'।

बपीहो–देखो 'पपईयो'।

बपु–१ देखो 'वपु'। २ देखो 'बाप'।

बपुख–१ देखो 'वपुस'। २ देखो 'वपु'।

बपूकार–देखो 'बापूकार'।

बपूकारणो (बो)–देखो 'बापूकारणो' (बो)।

बपूकारिईओ, बपूकारियो–देखो 'बापूकारियो'।

बपैयो–देखो 'पपईयो'।

बपोतो, बपौती–देखो 'बापौती'।

बप्प–१ देखो 'वपु'। २ देखो 'बाप'।

बप्पड़ो, बप्पडो–देखो 'बापड़ो'।

बप्पियारो, बप्पीउ, बप्पीहा, बप्पीहो–देखो 'पपईयो'।

बप्पु–१ देखो 'वपु'। २ देखो 'बाप'।

बफातो–वि० [सं० बाष्प] जिसमें भाप निकल रही हो, भाप युक्त।

बफादार–देखो 'वफादार'।

बफादारी–देखो 'वफ़ादारी'।

बफारो–पु० [सं० बाष्प-धारा] १ उबलते पानी में दवा डालने से निकलने वाली भाप। २ उक्त भाप से किया जाने वाला सेंक। ३ तपाने या सेंक करने की क्रिया। ४ आंख पर साधारण चोट लगने पर कपड़ा लगाकर मुंह की भाप से किया जाने वाला सेंक।

बफीजणो (बो)–क्रि० १ भाप से उबलना, सीजना, पकना, गर्मी पाना। २ 'बफारा' से सिकताव किया जाना। ३ उबलना। ४ अत्यधिक गर्मी महसूस करना।

बबकणो (बो), बबबकणो (बो)–देखो 'भभकणो' (बो)।

बबकाणो (बो)–देखो 'भभकाणो' (बो)।

बबबकाणो (बो)–देखो 'भभकाणो' (बो)।

बबर–पु० [अ०] शेरों की एक जाति व इस जाति का शेर। –वि० १ वीर, बहादुर। २ जबरदस्त, भयंकर।

बबरची–देखो 'बावरची'। —**खानो**= 'बावरचीखानो'।

बबरेल, बबरैल–देखो 'बबर'।

बबहियो–देखो 'पपईयो'।

बबाजान–देखो 'बाबाजान'।

बबोईयो–देखो 'पपईयो'।

बबोहो–देखो 'पपईयो'।

बबूळ, बबूळियो, बबूळो–१ देखो 'बांवळ' २ देखो 'बथूळो'।

बबेक–१ देखो 'विवेक'। २ देखो 'विसेस'।

बबैयो–देखो 'पपईयो'।

बब्बर–देखो 'बाबर'।

बब्बीहो–देखो 'पपईयो'।

बब्बुळ, बब्बूळ–१ देखो 'बांवळ'। २ देखो 'बथूळो'।

बब्भीखण, बब्भीसण–देखो 'विभीसण'।

बभकणो (बो)–देखो 'भभकणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बमखाणो (बो), बमखावणो (बो)–देखो 'भभकाणो' (बो)।

बभीख, बभीखण–देखो 'विभीसण'।

बभीत–पु० [सं० विभीत] १ बहेड़ा नामक वृक्ष। २ इस वृक्ष फल जो औषधियों प्रयोग लिया जाता है।

बभीसण–देखो 'विभीसण'।

बभूत, बभूति, बभूती–देखो 'विभूति' —सिद्ध. सिध = 'विभूति सिद्ध'।

बभूळो–देखो 'बधूळो'।

बभ्भीखण, बभ्भीळण, बभ्भीसण–देखो 'विभीसण'।

बभ्रु, बभ्रू–पु० [सं०] १ अग्नि, आग। २ भूरा रंग। ३ भूरे केशों वाला मनुष्य। ४ शिव। ५ विष्णु। ६ न्योला, नेवला, नकुल। ७ एक राजा जो ययाति का पौत्र एवं द्रुह्य का पुत्र था। ८ रोमपाद का पुत्र एक राजा। ९ विश्वामित्र ऋषि के ब्रह्मज्ञानी पुत्रों में से एक। –वि० १ सांवला। २ भूरा। ३ श्वेत। ४ गंजा। —**बाहण, बाहन**–पु० अर्जुन का एक पुत्र।

बम–देखो 'बंब'।

बमणउ, बमणेटो, बमणोटो, बमणो–देखो 'दूणो' (स्त्री०बमणी)।

बमणो (बो)–क्रि० [सं० वमनम्] १ बमन करना, उगलना, कै करना। २ बात प्रगट करना।

बमाण–देखो 'विमाण'।

बमाणियो–पु० अनाज का एक माप, परिमाण विशेष।

बमिलन, बमिलनि, बमीलन बमीलनि–पु० नगाड़ा।

बमुजब, बमुजिब, बमूजब, बमूजिब–क्रि०वि० तदनुसार, मुताबिक।

बमूह–देखो 'विमुह'।

बमेक–देखो 'विवेक'।

बयंड–१ देखो 'वितंड'। २ देखो 'बंडो'।

बय–देखो 'वय'।

बयकुंट, बयकूंट–देखो 'वैकुंठ'।

बयट्ठणो (बो)–देखो 'बैठणो' (बो)।

बयट्ठाणो (बो)–देखो 'बैठाणो' (बो)।

बयठणो (बो)–देखो 'बैठणो' (बो)।

बयठाणो (बो)–देखो 'बैठाणो' (बो)।

बयण, बयन–देखो 'वचन'।

बयर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'वैर'। ३ देखो 'बोर'।

बयळ–पु० [सं० ज्वलन्] १ सूर्य। २ वीर, बलवान पुरुष। ३ तेज, ओज। –स्त्री० ४ आभा, कांति।

बयल, बयल्ल–देखो 'बैल'।

बयस–१ देखो 'बयस'। २ देखो 'वैस्य'।

बयसणो (बो)–देखो 'बैठणो' (बो)।

बयांन–पु० [अ० बयान] १ बातचीत। २ चर्चा, जिक्र। ३ वर्णन उल्लेख। ४ वृत्तान्त, हाल-चाल। ५ सूचना। ६ न्यायालयों में होने वाले, वादी-प्रतिवादी व गवाहों के वक्तव्य।

बयांलिस, बयांळी, बयांळीस–देखो 'बंयाळी'।

बयांळीसो, बयांळो–पु० १ बयालीस का समूह। २ बयालीस का वर्ष।

बयार–स्त्री० [सं० वायुः] पवन, वायु, शीतल व मंद पवन।

बयालिस, बयाळी, बयाळीस, बयालीस–देखो 'बंयाळी'।

बयासी–देखो 'बंयासी'।

बयो, बय्यो–देखो 'बइयो'।

बरंग, बरंगळ–पु० १ टुकड़ा, खंड। २ भाग, अंश। ३ कवच, सनाह। ४ देखो 'बरंग'।

बरंगा–देखो 'बारंगा'।

बरंगी–वि० १ जबरदस्त, जोरदार। २ भयंकर, भयावह। ३ देखो 'बरंगी'।

बरंगोळ–देखो 'बरंग'।

बरगो–पु० १ छत को पाटने की छोटी लकड़ी। २ छत पाटने की पत्थर की छोटी पट्टी। ३ डंडा। ४ देखो 'बरंग'।

बरंडी–देखो 'भिंडी'।

बरंडो–देखो 'बरंडो'।

बर–स्त्री० १ लंबी यात्रा या थकान से शरीर में होने वाली जकड़न। २ करुण क्रन्दन। ३ देखो 'बर'। ४ देखो 'बार'।

बरअंग–देखो 'बरांग'।

बरकंदाज–वि० [फा०] १ शीघ्र उपस्थित होने वाला, फुर्तीला। २ तैयार रहने वाला। –पु० १ तोड़ेदार बन्दूक रखने वाला सिपाही। २ चौकीदार। ३ एक महकमा।

बरक–स्त्री० [अ० बर्क] १ बिजली, विद्युत। २ चिल्लाहट। ३ गर्जना। ४ राड़। ५ मांस। ६ देखो 'बरक'।

बरकणो (बो)–क्रि० १ जोश पूर्ण आवाज करना, दहाड़ना, गर्जना। २ चिल्लाना, चीखना। ३ दुःख या दर्द भरी आवाज करना। ४ देखो 'बड़कणो' (बो)।

बरकत (त्त)–स्त्री० [अ०] १ आवश्यकताओं को पूर्ति आसानी से होते रहने की दशा या अवस्था। २ निर्वाह, गुजारा। ३ बचत। ४ लाभ, फायदा, वृद्धि। ५ क्षमता, गुंजाईश। ६ अनुग्रह, कृपा। ७ प्रारंभ, शुरूआत। ८ एक की संख्या (मंगल भाषित)।

बरकमदाज–देखो 'बरकंदाज'।

बरकर–१ देखो 'बकर'। २ देखो 'बकरो'।

बरकरार–वि० १ जो अपने अस्तित्व में हो, वर्तमान हो। २ कायम, मौजूद। ३ सही सलामत, सुरक्षित। ४ बहाल किया हुआ, पुनर्नियुक्त।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरकला–देखो 'बुरकला'।

बरकस–वि० [सं० वक्रिन्] उल्टा, विपरीत, विरुद्ध।

बरकसी–स्त्री० शत्रुता, वैर।

बरकाणी (बी), बरकावणी (बी)–क्रि० १ जोश पूर्ण आवाज कराना, गर्जाना। २ चीखाना। ३ करुण क्रन्दन कराना। ४ देखो 'बड़काणी' (बी)।

बरकियो–पु० बकरियों का एक चिल्लाने का रोग विशेष।

बरकी–स्त्री० १ रुई या ऊन का बोरा। २ गद्दी।

बरकी–पु० १ बलि पशु का एक ही वार में किया जाने वाला वध। २ दर्द भरी आवाज, चिल्लाहट। ३ देखो 'बड़की'।

बरख–१ देखो 'बरस'। २ देखो 'बरक'।

बरखणी (बी)–देखो 'बरसणी' (बी)।

बरखा–देखो 'बरसा'।

बरखाणी (बी)–देखो 'बरसाणी' (बी)।

बरखास, बरखास्त–वि० [फा० बरखास्त] १ जिसका कार्य बंद हो गया हो। २ विसर्जित। ३ स्थगित। ४ नौकरी या पद से हटाया हुआ, पदच्युत।

बरखास्तगी–स्त्री० [फा०] १ बरखास्त होने की अवस्था या भाव। २ बरखास्त करने की क्रिया। ३ विसर्जन। ४ नौकरी या पद से निष्कासन।

बरखिलाफ–वि० [फा०] १ विरुद्ध, विपरीत। २ भयंकर, विरोधी। ३ प्रतिकूल।

बरखिलाफत–स्त्री० [फा०] १ विरोध, भयंकर विरोध। २ प्रतिकूलता। ३ 'बरखिलाफ' होने की अवस्था या भाव।

बरखयात–देखो 'बरखयात'।

बरग–१ देखो 'बरग'। २ देखो 'बरघू'। ३ देखो 'बरक'।

बरगड़ो–पु० [देश०] १ चीता, तेन्दुआ। २ भेड़िया। ३ घोड़े की एक तेज चाल।

बरगत–देखो 'बरकत'।

बरगद–पु० वट वृक्ष।

बरगळ–पु० १ छिद्र, छेद। २ खण्ड, टुकड़ा। ३ अंश, भाग।

बरगळणी (बी)–देखो 'बरगळणी' (बी)।

बरगळाणी (बी), बरगळावणी (बी)–देखो 'बरगळाणी' (बी)।

बरगिरा–स्त्री० घोड़ों का एक रोग विशेष।

बरगी–पु० [फा०बरगीर] १ अश्वपाल, सईस। २ अश्वारोही, अश्व सैनिक। ३ एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।

बरघूं, बरघू–देखो 'बरघू'।

बरघ–देखो 'बरग'।

बरघड़ो–देखो 'बरगड़ो'।

बरघळ (ल्ळ)–देखो 'बरगळ'।

बरघुवार–वि० 'बरघू' वाद्य बजाने वाला।

बरघू–पु० तुरही से मिलता-जुलता एक वाद्य विशेष। –वि० १ मूर्ख, मूढ़, बेवकूफ। २ देखो 'बगनी'।

बरघोसा–स्त्री० [सं० वरघोषा] मंजू घोषा नामक अप्सरा

बरड़–पु० १ पथरीली भूमि। २ बूंदी क्षेत्र का दक्षिणी प्रदेश। ३ देखो 'बड़ड़'।

बरड़क, बरड़को–पु० १ लकड़ी आदि के टूटने की ध्वनि। २ देखो 'बड़को'।

बरड़ण–स्त्री० दहलीज।

बरड़णी (बी)–क्रि० १ प्रलाप करना, बक-बक करना। बकना। २ चिल्लाना, चीखना। ३ विलाप करना, रोना। ४ क्रोध या दर्द में अस्पष्ट ध्वनि करना। ५ क्रोध करना, क्रुद्ध होना। ६ नींद में बड़बड़ाना। ७ गुर्राना। ८ कठोर वस्तु चबाने से ध्वनि होना। ९ चिरना, फटना। १० आंख का दुखना।

बरड़ाटो–पु० १ प्रलाप, कूक, चिल्लाहट। २ क्रोधपूर्ण आवाज। ३ गुर्राहट। ४ चिरने-फटने से उत्पन्न ध्वनि। ५ जोश, साहस। ६ कठोर वस्तु को चबाने की ध्वनि।

बरड़ाणी (बी)–क्रि० १ प्रलाप करना, कूकना, चिल्लाना। २ विलाप करना, रोना। ३ दर्द में कराहना, तड़फना। ४ क्रोध में बड़बड़ाना। ५ नींद में बड़बड़ाना। ६ गुर्राना। ७ कठोर वस्तु जोर-जोर से चबाना। ८ चीरना, फाड़ना, टुकड़े करना। ९ जोश या आवेश में आना। १० दबाव पड़ने पर बट-बट ध्वनि करना।

बरड़ियो–पु० १ मेघवालों में, दूल्हे के ओढ़ने का एक वस्त्र। २ देखो 'बरड़ो'।

बरड़ी–स्त्री० [देश०] १ पहाड़ी, भाखरी। २ काली व श्वेत चौकियों वाला एक ऊनी वस्त्र विशेष। –वि० कठोर, सख्त।

बरड़ूकणी (बी)–देखो 'बड़कणी' (बी)।

बरड़ूको–देखो 'बड़की'।

बरड़ो–देखो 'बैंड़ो'।

बरधस–देखो 'बरबस'।

बरछि, बरछी, बरछी, बरछी–स्त्री० [सं० वश्च] १ छोटा बरछा या भाला। २ बत्ती।

बरछेत, बरछैत–वि० १ बरछा चलाने में दक्ष व निपुण। २ बरछा चलाने वाला।

बरछो–पु० एक शस्त्र विशेष, भाला।

बरजणी (बी)–क्रि० [सं० वर्जनम्] १ मना करना, निषेध करना। २ रोकना। ३ बात-बात में रोकना, टोकना। ४ समझाना। ५ सामना करना, मुकाबला करना। ६ उपभोग न करना, प्रयोग में न लाना। ७ छोड़ना, त्यागना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरजनीक, बरजनीय–वि० [सं० वर्ज्य] १ जिसका निषेध हो, निषिद्ध। २ रुकवाने, रोकने योग्य। ३ त्यागने योग्य, त्याज्य।

बरजाणो (बो)–क्रि० १ निषेध करवाना, मना करवाना। २ रुकवाना, रोकाना। ३ बात-बात पर निषेध कराना, टोकाना। ४ समझवाना। ५ उपभोग न कराना, प्रयोग में न लाने देना। ६ छुड़वाना, त्याग करवाना।

बरजोड़, बरजोड़ण–पु० १ बंधन। २ ग्रंथि, गांठ। ३ वैवाहिक सूत्र बंधन।

बरजोर–वि० १ प्रबल, तेज, जबरदस्त। २ बलवान, शक्तिशाली। ३ अत्याचारी, दुष्ट। ४ कठिन, भारी।

बरजोरी–स्त्री० १ जोर-जबरदस्ती की कार्यवाही। २ बलात् कराया जाने वाला कार्य। ३ अनुचित काम। ४ छीना झपटी। ५ बल प्रयोग। –क्रि० वि० १ जबरदस्ती से बलात्। २ बल पूर्वक, दबाव से।

बरटी, बरठी–पु० [सं० बरटः] १ एक प्रकार का हल्का धान, अनाज। २ हंस।

बरण–१ देखो 'वरण'। २ देखो 'व्रण'।

बरणण–देखो 'वरणन'।

बरणणो (बो)–देखो 'वरणणो' (बो)।

बरणदूत–देखो 'वरणदूत'।

बरणन–देखो 'वरणन'।

बरणा'ट, बरणाटक–पु० १ तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि। २ प्रहारों की ध्वनि। ३ तीव्र चाल।

बरणी–स्त्री० १ मिट्टी का छोटा पात्र विशेष। २ एक वृक्ष विशेष। ३ देखो 'वरणी'। ४ देखो 'भरणी'।

बरणी–पु० १ श्रीमाली ब्राह्मणों की एक वैवाहिक रस्म। २ देखो 'वरणी'।

बरत–१ देखो 'व्रत'। २ देखो 'व्रत्ति'। ३ देखो 'वरत'।

बरतण–पु० [सं० वर्त] १ बरतने की क्रिया या भाव। २ बर्ताव। ३ देखो 'बरतन'।

बरतणी–स्त्री० [सं० वर्त्तिका] १ लकड़ी को छील कर बनाई एक कलम विशेष। २ चित्रकार की तूलिका, कूंची। ३ वेतन। ४ व्यवहार। ५ किसी शब्द का वर्णानुक्रम।

बरतणी–पु० १ स्लेट पर लिखने की कलम। २ खड़िया लिपि की पटिया पर लिखने की कलम।

बरतणो (बो)–क्रि० [सं० वर्तन] १ बर्ताव करना, व्यवहार करना। २ आचरण या अमल करना। ३ उपयोग या इस्तेमाल करना। ४ साथ-साथ रहना, लेन-देन आदि का व्यवहार करना। ५ करना। ६ रखना। ७ बांटना, वितरण करना। ८ बीतना, व्यतीत होना। ९ अंत होना। १० उपयोग में आना, प्रयोग में लाना। ११ उपस्थित या विद्यमान होना।

बरतन–पु० [सं० वर्तन] १ धातु या मिट्टी आदि का बना कोई पात्र। २ देखो 'बरतण'।

बरताणो (बो)–क्रि० १ बर्ताव करवाना, व्यवहार करवाना। २ आचरण या अमल करवाना। ३ उपयोग कराना, इस्तेमाल कराना। ४ एक दूसरे का साथ कराकर आचरण व्यवहार आदि की जानकारी करवाना। ५ रखवाना। ६ कराना। ७ बंटवाना, वितरण कराना। ८ उपस्थित करना, विद्यमान करना। ९ अंत करना। कराना। १० बंटवाना वितरण कराना।

बरतारि–देखो 'व्रतारि'।

बरताव–पु० [सं० वर्तन] १ बरतने की क्रिया या भाव। २ आचार, व्यवहार, सुलूक।

बरतावणो (बो)–देखो 'बरताणो' (बो)।

बरतियो–देखो 'भरतियो'।

बरती–१ देखो 'व्रती'। २ देखो 'व्रति'।

बरतीक–पु० कन्या पक्ष के लोग (पुष्करणा ब्राह्मण)।

बरतुळ–१ देखो 'वरतुळ'। २ देखो 'बधूळो'।

बरतेसर–देखो 'विरतेसर'।

बरत्रो–पु० [सं० वरत्रा] १ चमड़े का चौड़ा व बड़ा फीता, तस्मा। २ हाथी या घोड़े का जेरबंद। ३ देखो 'बरत'।

बरद–१ देखो 'विरुद'। २ देखो 'वरद'। —पत, पति, पतो= 'विरुदपति'।

बरदांन–देखो 'वरदान'।

बरदाई–देखो 'वरदाई'।

बरदाणो (बो)–देखो 'विरुदाणो' (बो)।

बरदाता–देखो 'वरदाता'।

बरदायक–देखो 'वरदायक'।

बरदायण (णि, णो)–देखो 'वरदायण'।

बरदार–वि० [फा०] १ मानने वाला, पालन करने वाला। २ वहन करने वाला, धारण करने वाला।

बरदारी–स्त्री० [फा०] १ 'बरदार' होने की स्थिति। २ बरदार का कार्य।

बरदावणो (बो)–देखो 'विरुदाणो' (बो)।

बरदास–देखो 'बरदास्त'।

बरदासणो (बो)–क्रि० [फा० बरदाश्त] १ सहन करना, सहना। २ संभालना, संभाल कर रखना। ३ धारण करना, वहन करना।

बरदास्त–स्त्री० [फा० बर्दाश्त] १ सहने की क्रिया या भाव, सहने की क्षमता। २ सहनशीलता, सहन।

बरदेत–देखो 'बरदायक'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरधक, बरधकी–देखो 'वरधक' ।

बरन, बरन्न–देखो 'वरण' ।

बरफ–पु० [फा० बर्फ] १ हिम, हिमखण्ड । तुषार । २ ठण्डक से जमा हुआ पानी । ३ मशीन से जमाया हुआ पानी, दूध या फल का रस । –वि० अत्यधिक ठण्डा । –खानी–पु० बर्फ बनाने या रखने का स्थान ।

बरफाब–देखो 'बरफ' ।

बरफानी वि० [फा० बर्फानी] १ बर्फ का, बर्फ संबंधी । २ बर्फ से युक्त । ३ बरफ से आच्छादित । ४ बर्फ से प्रभावित अत्यधिक ठण्डा ।

बरफिस्तान–पु० [फा०] बर्फ वाला प्रदेश । अत्यधिक ठण्डा स्थान ।

बरफी–पु० [फा० बर्फी] १ खोए में चीनी मिलाकर तैयार की मिठाई, चक्की । २ सद्य, प्रसूता गाय या भैंस के दूध को गरम कर बनाया गया खाद्य पदार्थ । —वि० बरफ से युक्त, ठण्डी ।

बरबंड–देखो 'बलबंड' ।

बरबर–वि० [सं० बर्बर] १ असभ्य, जंगली, अनाड़ी । २ उद्दण्ड क्रूर, हिंसक । ३ मूर्ख, बेवकूफ । ४ घुंघराले बालों वाला । –पु० १ एक प्राचीन मानव जाति । २ इस जाति का मनुष्य । ३ क्रूर व हिंसक व्यक्ति । ४ असभ्य व्यक्ति । ५ घुघराले बाल । ६ देखो 'बड़बड़' । ७ देखो 'बारबार' । ८ देखो 'बराबर' । —काय–पु० बर्बर मानव जाति या इसका व्यक्ति ।

बरबरणी (बी)–देखो 'बड़बड़णी' (बी) ।

बरबरियो–पु० पहाड़ी इलाकों में होने वाला एक वृक्ष विशेष ।

बरबस–अव्य० [सं० बल-वंशम्] १ बल पूर्वक, दबाव डाल कर, जबरदस्ती । २ निरर्थक, व्यर्थ । ३ सहसा, अचानक । ४ आवेश या भावावेग में । –वि० लाचार ।

बरबाड़ी–स्त्री० एक प्रकार का घास ।

बरबाद–वि० [फा०] १ जो ध्वस्त या नष्ट हो गया हो । २ जिसका पतन हो चुका हो । ३ तबाह, चौपट । ४ लुटा हुआ, श्रीहीन । ५ शोचनीय या दयनीय दशा वाला । ६ व्यर्थ में खर्च ।

बरबादी–स्त्री० [फा०] १ बर्बाद होने की अवस्था या भाव । २ विनाश, ध्वंस । ३ तबाही । बर्बादी । ४ व्यर्थ का खर्चा । ५ लूट-पाट ।

बरबीसहथी–पु० बीस हाथों वाली के पति, शिव ।

बरब्बर–१ देखो 'बरबर' । २ देखो 'बड़बड़' । ३ देखो 'बराबर' ।

बरम–१ देखो 'बरम' । २ देखो 'ब्रह्म' ।

बरमंड–देखो 'ब्रह्मांड' ।

बरमा–पु० [सं० ब्रह्म+देश] १ भारत के पूर्व में स्थित एक छोटा देश । २ देखो 'ब्रह्मा' । ३ देखो 'बरमा' ।

बरमानंद–देखो 'ब्रह्मानंद' ।

बरमाळ, बरमाळा–देखो 'बरमाळा' ।

बरमी–वि० बरमा से संबंधित, बरमा का । –पु० बरमा का निवासी ।

बरमो–पु० १ लकड़ी, धातु, दीवार आदि में छेद करने का औजार । २ चकरीदार सियार ।

बरम्म–१ देखो 'बरम' । २ देखो 'ब्रह्म' ।

बरम्मा, बरम्हा–१ देखो 'ब्रह्मा' । २ देखो 'बरमा' ।

बरयांम–देखो 'वरियांम' ।

बरयिता–देखो 'वरयता' ।

बरवचि–देखो 'बरूचि' ।

बरळ–१ देखो 'बराळ' । २ देखो 'बरळ' ।

बरलच्छि, बरलछि–पु० [सं० लक्ष्मी-वर] लक्ष्मीपति, श्रीविष्णु ।

बरळाणो (बो), बरळावणो (बो)–देखो 'बरड़ाणो' (बो) ।

बरवती–देखो 'बरवती' ।

बरवै–पु० १ एक मात्रिक छन्द विशेष । २ एक राग विशेष ।

बरवो–पु० १ मोटा रस्सा । २ सकोरा, करवा, पात्र । ३ एक रागिनी विशेष ।

बरस, बरसड़ो– देखो 'वरस' । —गांठ='बरसगांठ' ।

बरसण–देखो 'वरसण' ।

बरसणी (बी)–देखो 'बरसणी' (बो) ।

बरसव्यावणी–देखो 'वरसव्यावणी' ।

बरसरथ–पु० [देश०] सूर्य, रवि ।

बरसरी–पु० घोड़ों का एक रोग विशेष ।

बरसा–देखो 'वरसा' ।

बरसाऊ–देखो 'वरसाऊ' ।

बरसाणो (बो)–देखो 'वरसाणो' (बो) ।

बरसात–देखो 'वरसात' ।

बरसाती–स्त्री० १ घोड़ों का एक रोग विशेष । २ देखो 'वरसाती' ।

बरसाव, बरसायत–देखो 'वरसात' ।

बरसाळ, बरसाळा, बरसाला, बरसाळी–१ देखो 'बरसाळ' । २ देखो 'बारसाळो' ।

बरसाळू–देखो 'वरसाळू' ।

बरसाळो–देखो 'वरसाळो' ।

बरसावणो (बो)–देखो 'वरसाणो' (बो) ।

बरसी–१ देखो 'वरसी' । २ देखो 'वरसाळी' ।

बरसोंद–देखो 'वरसोद' ।

बरसोंदियो–देखो 'वरसोदियो' ।

बरसोड़ी–वि० [सं० वार्षिक] १ एक वर्ष की आयु की । २ वर्ष में एक बार होने वाली । वार्षिक ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरसोद–देखो 'बरसोद'।
बरसोधण–देखो 'बरसोदण'।
बरसोधियो–देखो 'बरसोदियो'।
बरसोधी–देखो 'बरसोदी'।
बरसोळी, बरसोली–देखो 'बरसोळी'।
बरह–देखो 'बरह'।
बरहक–वि० [फा०] १ न्याय व धर्म के अनुसार उचित, न्यायोचित। २ उचित, वाजिब। ३ हक के अनुसार।
बरहास–देखो 'बरहास'।
बरहि (ही)–स्त्री० [सं० बर्हिस, बर्हिण, वर्ह] १ अग्नि, आग। २ प्रकाश, तेज। ३ मोर, मयूर। ४ मोर की पूंछ। ५ मोर की पूंछ का चंदोवा। ६ पक्षी की पूंछ। ७ पत्ता। —मुख–पु० अग्नि। देवता, सुर।
बरांणू–देखो 'बांणू'।
बरांमण–देखो 'ब्राह्मण'।
बरांमद–वि० [फा०] १ उपलब्ध, प्राप्त। २ प्रगट, सामने मौजूद।
बरांमदो–पु० [फा० बरामदः] १ मकान के आगे बना कक्ष जो ऊपर पटा हुआ तथा आजू-बाजू से खुला होता है। २ दालान।
बराक–देखो 'बराक'।
बराड़–पु० १ गहरा घाव। २ दरार। ३ उष्ण, वाष्प। ४ कराह, आह। ५ मध्य भारत का एक प्रदेश। [फा० बरमार] ६ गांव के हर घर से लिया जाने वाला चंदा। ७ टैक्स, महसूल। ८ पूर्ण करने की क्रिया। ९ ऊपर या सामने लाने की क्रिया। —वि० १ लाने वाला। २ लाया हुआ।
बराड़णी (बी)–देखो 'बरड़ाणी' (बी)।
बराड़ी–वि० १ बराड़ का, बराड़ संबंधी। २ बराड़ से उत्पन्न। —पु० १ बराड़ का निवासी। २ बराड़ की रुई। ३ बराड़ की पीपल। ४ बराड़ की बनी वस्तु।
बराधक, बराधक–वि० [सं० वर्चस्वी] १ वीर, बहादुर। २ जबरदस्त, जोरदार। ३ प्रचंड, तेज। ४ जोश युक्त जोशीला। ५ ओजस्वी, तेजस्वी। ६ भरपूर, पूरा। ७ पूर्ण मस्त।
बराधमुखी–वि० [देश०] १ निःशंक, मस्त। २ खुले मुंह वाला।
बराजणी (बी)–देखो 'विराजणी' (बी)।
बराट–१ देखो 'बैराट'। २ देखो 'विराट'। ३ देखो 'वराट'।
बराटक–देखो 'वराटक'।
बरात–स्त्री० [सं० वर-यात्रा] १ दूल्हे के साथ रहने वाला उसके परिवार व इष्ट-मित्रों का समूह। २ वर पक्ष।
बरातियो, बराती–पु० [सं० वर-यात्री] १ 'बरात' का सदस्य। २ वर पक्ष का व्यक्ति।
बरापुर, बरापूर–वि० १ ओज, कांति या तेज युक्त। तेजस्वी। २ वीर, योद्धा। ३ साहसी, पराक्रमी।
बराबड, बराबर–वि० [फा० बराबर] १ गुण व मात्रा में समान, तुल्य। २ समतल, एकसा। ३ उपयुक्त, वाजिब ठीक, उचित। ४ चुकाया हुआ। ५ पूर्ण किया हुआ, पूरा। ६ समाप्त, नष्ट। —क्रि०वि० १ लगातार, बिना रुके, निरन्तर। २ एक ही पंक्ति में, सीधा। ३ पार्श्व या बगल में, जोड़े-जोड़े, साथ में। ४ समानान्तर दूरी में। ५ हमेशा, प्रतिदिन।
बराबरि–१ देखो 'बराबर'। २ देखो 'बराबरी'।
बराबरियो–वि० १ गुण, आयु, योग्यता, क्षमता आदि में जो समान हो। २ समान रिश्ते वाला। ३ जोड़ का, साथ का।
बराबरी–स्त्री० [फा०] १ बराबर होने की अवस्था या भाव। २ समता, तुल्यता। ३ प्रतियोगिता, स्पर्धा आदि में समानता। ४ मुकाबला, सामना। ५ जोड़। ६ देखा-देखी की जाने वाली क्रिया, नकल, होड़। ७ देखो 'बराबर'।
बराबाट–पु० १ चौपट, नष्ट, नाश। २ तहस-नहस।
बराय–अव्य० [फा०] १ वास्ते, लिये, कृते। २ बतौर, तौर। ३ नाम मात्र के लिये।
बरायतो–वि० [सं० वर्चस्वी] १ प्रभावशाली, ओजस्वी। २ कांतियुक्त, तेजस्वी।
बरार–देखो 'बराड़'।
बरारक–देखो 'बरारक'
बरारी–स्त्री० १ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। २ देखो 'बराड़ी'।
बरारोकोट–वि० [सं० वर्चस्वी-कोट] वीर, बहादुर।
बरारो–वि० [सं० वर्चस्विन्] १ ओज पूर्ण, ओजस्वी। २ जोश पूर्ण, जोशीला। ३ भयंकर, विकराल। ४ जबरदस्त, जोरदार। ५ शूरवीर, पराक्रमी।
बराळ–देखो 'वराळ'।
बरास–पु० [सं० पोतास] १ सुगंधित भीमसेनी कर्पूर। २ देखो 'बरहास'।
बराह–देखो 'वराह'।
बरिखा–देखो 'बरसा'।
बरिट्ठ–देखो 'बरिस्ठ'।
बरिबंड–देखो 'बळबंड'।
बरियो–देखो 'बेळा'।
बरियांनी–पु० [देश०] दही और शक्कर के योग से बना मांस।
बरियांम–देखो 'बरियांस'।
बरिस–देखो 'बरस'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरी–पु० [देश०] १ बाजरी नामक अनाज की फसल में लगने वाला कीड़ा। २ खलिहान में घूमने वाले बैलों में से बाहर की ओर चलने वाला बैल। ३ भेड़िया। ४ एक प्रकार का घास। –वि० [अ०] १ मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद। २ वंचित, बचा हुआ। ३ बंधन या कैद से छोड़ा हुआ। ४ बेकसूर, निर्दोष। ५ देखो 'बरी'। ६ देखो 'बड़ी'।

बरीक–देखो 'बारीक'।

बरीख–देखो 'बीख'।

बरीजणी (बी)–क्रि० लंबी यात्रा या थकान से शरीर अकड़ जाना।

बरीयां–देखो 'बेळा'।

रीयांम–देखो 'बरियांम'।

बरीस–१ देखो 'बरस'। २ देखो 'बरीस'।

बरीसण–देखो 'बरीसणा'।

बरीसणी (बी)–देखो 'बरीसणो' (बी)।

बरु–पु० एक प्रकार की घास।

बरुओ–पु० [देश०] मिट्टी का छोटा जल-पात्र।

बरुण–देखो 'वरुण'। —पुरी='बरुणपुरी'।

बरुणी, बरुणी–स्त्री० १ पलक के किनारे के बाल, बरौनी। २ देखो 'वारुणी'।

बरुय, बरुयो, बरूय–देखो 'बरूय'।

बरूद, बरूध–१ देखो 'बरसोद'। २ देखो 'विरुद्ध'।

बरोटियो–१ देखो 'बारोटियो'। २ देखो 'बरोटी'।

बरोटी–स्त्री० विवाह के बाद वधू के स्वागत में किया जाने वाला भोज।

बरोठियो–१ देखो 'बारोटियो'। २ देखो 'बरोटी'।

बरोठी–देखो 'बरोटी'।

बरोठीयो–१ देखो 'बारोटियो'। २ देखो 'बरोटी'।

बरोध (ध)–१ देखो 'बरसोद'। २ देखो 'विरोध'।

बरोबर–देखो 'बराबर'।

बरोबरी–१ देखो 'बराबरी'। २ देखो 'बराबर'।

बरोळ–देखो 'बरोळ'।

बरोळणी (बी)–देखो 'बिरोळणो' (बी)।

बरोळी–देखो 'बराळ'।

बरी–पु० १ तेज, ओज। २ प्रकाश।

बलंद–स्त्री० १ हाथी के पांव में डाली जाने वाली बेड़ी विशेष। २ देखो 'बुलंद'।

बळ, बल–पु० [सं०बलम्] १ शक्ति, ताकत। २ शौर्य, पराक्रम। ३ सामर्थ्य क्षमता। ४ आवेश, जोश। ५ धैर्य, धीरज। ६ वीर्य। ७ सेना। ८ प्रभाव, रौब। ९ लहरदार। १० आश्रय, सहारा। ११ आभा, कान्ति। १२ तत्त्व, सार। १३ बलराम। १४ नाव, नौका। १५ बैल। १६ इन्द्र द्वारा वधित एक दैत्य। १७ छप्पय छंद का एक भेद। १८ एक पौधा, क्षुप विशेष। –वि० १ सुन्दर। २ देखो 'बळ'। —कर–वि० बल देने या बढ़ाने वाला; पौष्टिक।

बळक, बलक–१ देखो 'बळक'। २ देखो 'बलख'।

बलकल–देखो 'वल्कल'।

बलकार–पु० [देश०] बैल।

बलकी–१ देखो 'बलखी'। २ देखो 'बल्लकी'।

बलक्क–पु० [देश०] १ लचक, मोड़। २ देखो 'बलख'।

बलक्की–देखो 'बलखी'।

बलख–पु० [फा०] १ अफगानिस्तान का एक प्राचीन नगर। २ इस नगर के आस-पास का क्षेत्र। ३ एक द्वीप विशेष। –वि० उज्ज्वल, श्वेत।

बलखी, बलखी–पु० [फा०] १ 'बलख' का निवासी। २ मुसलमानों की एक जाति। ३ बलख देश का घोड़ा।

बलगम–पु० [अ० बल्गम] कफ, श्लेष्मा।

बलज–पु० [सं०] १ नगर द्वार, फाटक। २ खेत। ३ अनाज का ढेर, अनाज। ४ युद्ध, लड़ाई। –वि० जो बल से उत्पन्न हो।

बळट्ठ, बळट्ठी, बळठी–देखो 'बलिस्ठ'।

बळण–स्त्री० [सं० ज्वलन] १ जलने, दहकने की क्रिया या भाव। २ दाह, जलन। ३ अग्नि। ४ ईर्ष्या। ५ घाव या रोग के कारण होने वाली जलन। ६ देखो 'बळण'।

बळणो (बी)–क्रि० [सं० प्रज्वलनम्] १ आग के संयोग से किसी पदार्थ में धुंआ या लौ निकलना, जलना, आग लगना, दहकना, धधकना। २ अग्नि में भस्म हो जाना। ३ अग्नि या अत्यधिक गरम वस्तु से शरीर का कोई अंग झुलसना, जलना। ४ अत्यधिक तपन से वनस्पति का झुलसना, मुरझाना। ५ बुखार से शरीर गरम होना। ६ विरह या दुःख में तड़फना। ७ दीपक या बत्ती लगना, जलना। ८ भौतिक या रासायनिक ताप से वस्तु के गुण समाप्त हो जाना। ९ द्वेष या ईर्ष्या करना। १० क्रोध में घुटना। ११ समाप्त होना, नष्ट होना। १२ देखो 'बळणो' (बी)।

बळत–स्त्री० [सं० ज्वलन] १ जलने की क्रिया या भाव। २ शरीर के किसी अंग में जलने, चोट लगने या घाव आदि से होने वाली दाह। ३ मिर्च आदि की जलन। ४ उदराग्नि। ५ आंतरिक अग्नि, दाह, तप्त। ६ ईर्ष्या, द्वेष मानसिक कष्ट। ७ धूप की गर्मी।

बळतांणक– पु० सेना या फौज का घोड़ा।

बळतोकड़–वि० १ चिड़चिड़े स्वभाव वाला। २ ईर्ष्या या द्वेष करने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बळतो–वि० [सं० ज्वलन] (स्त्री० बळती) जलता हुआ। –पु० १ ग्रीष्मकालीन उष्ण वायु, लू। २ गर्मी, तप्त। ३ देखो 'वळतो'।

बळद–पु० [सं० बलद] गाय का बछड़ा जिसकी नाक में नकेल डाल कर कृषि कार्य के लिये तैयार किया गया हो। –वि० १ व्यर्थ परिश्रम करने वाला, पचने वाला। २ अड़ियल, मूर्ख। ३ पशु स्वभाव वाला।

बळदांन–देखो 'बलिदांन'।

बळदाऊ–देखो 'बळदेव'।

बळदार–पु० १ बैलों को बांधने का सुरक्षित स्थान। २ देखो 'बळदार'।

बळदियो-देखो 'बळद'।

बळदेव, बलदेव–पु० [सं० बलदेव] १ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम। २ पवन, हवा।

बळध, बळधियो–देखो 'बळद'।

बळपूर–वि० [सं० पूर्णबलि] पूर्ण शक्तिशाली।

बळबंड, बलबंड–वि० [सं० बरिबंड] १ महाबली, शक्तिशाली। २ भयंकर, जोरदार। ३ तीक्ष्ण, तेज। ४ प्रभावशाली, प्रतिभाशाली। ५ सुस्थिर, दृढ़।

बळबध, बलबंध, बळबंधण (बंधु, बंधू)–देखो 'बळिबंध'।

बळबळ–देखो 'वळवळ'।

बळबळणो (बो)–क्रि० [सं० प्रज्वलनं] १ धधकना, जलना, प्रज्वलित होना। २ ताप से अत्यधिक गरम होना। ३ धूप आदि से वातावरण में अधिक गर्मी होना।

बळबळतो–वि० [सं० ज्वलित] (स्त्री० बळबळती) १ खूब गरम या तपा हुआ। २ दहकता हुआ, धधकता हुआ। ३ प्रज्वलित।

बळबळो, बलबलो–वि० [सं० वावदूक] १ अच्छा बोलने वाला, वक्ता। २ वाचाल, अधिक बोलने वाला। ३ प्रलापी, बकवादी। –पु० १ बुदबुदा। २ देखो 'भळभळो'।

बळबांध–वि० शक्तिशाली, शूरवीर।

बळबळ, बळबळि–देखो 'वळवळ'।

बळभ–देखो 'वल्लभ'।

बळभज्जन–देखो 'वळभज्जन'।

बळभद्र, बळभद्द, बळभद्द–पु० [सं० बलभद्र] १ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम। २ मजबूत या दृढ़ व्यक्ति। ३ बैल विशेष। ४ भाई। ५ लोध वृक्ष।

बळभि, बळभी–देखो 'वळभि'।

बळभुज–पु० [सं० बलि-भुज] ईश्वर। –वि० योद्धा, वीर।

बळमडळ–पु० [सं० बलिमंडल] पाताल, बलि लोक।

बलम–१ देखो 'बल्लभ'। २ देखो 'वल्लभ'। ३ देखो 'बालम'।

बळमथणी (नी)–स्त्री० एक महाविद्या।

बलमयागत–पु० [सं० वल्लव-आगत] दूध।

बलमी, बलमीक–देखो 'बालमीक'।

बलय–देखो 'वलय'।

बळराम–पु० श्रीकृष्ण के बड़े भाई का नाम।

बळराज, बळराजा (राव)–देखो 'बळिराजा'।

बळरितं–पु० [सं० बल-ऋतम्] इन्द्र।

बळवंड, बळवंडो–देखो 'बळबंड'।

बळवंत (तो, तु, तू, तो)–वि० [सं० बलवत्] १ बलवान, शूरवीर। २ योद्धा, वीर। ३ जबरदस्त, जोरदार। ४ सामर्थ्यवान, सक्षम। ५ सघन, गाढ़ा। ६ अधिक भारी। –पु० १ बलदेव का नामान्तर। २ गरुड़।

बलव–देखो 'बल्लव'।

बळवधण–वि० [सं० बल-वर्धन] १ जिससे बल की वृद्धि होती है। २ पौष्टिक। –पु० भोजन।

बळवनांमी–देखो 'बल्लवनांमी'।

बळवळ–देखो 'वळवळ'।

बळवळणो (बो)–देखो 'बलबळणो' (बो)।

बळवांण, बळवांणो (वांन)–वि० [सं० बल-वत्] १ शक्तिशाली, पराक्रमी। २ मजबूत, दृढ़, पुष्ट।

बलवाई–वि० १ बलवा करने वाला, उपद्रवी। २ विद्रोही, बागी।

बळवारी–स्त्री० एक घास विशेष।

बळवाळो–देखो 'बळवांण'।

बळबीर–पु० [सं० बलवीर] १ विष्णु। २ बलराम। ३ केसर। ४ देखो 'बलवांन'।

बळवंरो–पु० [सं०] इन्द्र।

बलवो–पु० [अ० बल्वा] १ शासन के विरुद्ध विद्रोह, बगावत, क्रांति। २ उपद्रव, हुल्लड़। ३ झगड़ा, संघर्ष।

बळसंघ–पु० [सं०] वीर, बहादुर।

बलसणो (बो)–देखो 'विलसणो' (बो)।

बळसदन–पु० [सं० बलि-सदन] १ बलि राजा का सदन, महल। २ पाताल।

बलसाणो (बो)–देखो 'विलसाणो' (बो)।

बळसाळी, बळसीळ–वि० [सं० बलशालिन्] बलवान्, शक्तिशाली।

बळसूदन–पु० [सं० बलसूदनः] १ इन्द्र। २ विष्णु।

बळहंत–वि० [सं० बलहन्] बल का हनन करने वाला, कमजोरी लाने वाला। –पु० इन्द्र।

बळहट–स्त्री० बलात् किसी को भोजन कराने की क्रिया। बलात् किसी को भोजन कराने का विवाद। —मल, मल्ल= 'बलहटमल'।

बळहारी–देखो 'बळिहारी'।

बळहीण (हीन)–वि० [सं० बलहीन] १ शक्तिहीन, कमजोर। २ दुर्बल, क्षीण। ३ अक्षम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बळां, बळांई–१ देखो 'बळां'। २ देखो 'बला'।

बळांणी, बलांणी–पु० १ राजकीय खर्च पर किसी के यहां रखा जाने वाला हाथी। २ राजकीय खर्च व राजा की इच्छा तक किसी को सवारी के लिये दिया जाने वाला घोड़ा। ३ घोड़ा।

बला–स्त्री० [सं०] १ युद्ध में भूख-प्यास आदि को रोक रखने वाला मंत्र या विद्या। २ औषध में काम आने वाले पौधों का एक वर्ग। [सं०] ३ मनुष्य की तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था। ४ कष्ट, दुःखदायक दशा, विपत्ति, संकट। घोर संकट। ५ घृणित, तुच्छ या हेय वस्तु। ६ भूत-प्रेतों की लीला। ७ अद्भुत या विचित्र वस्तु। ८ रोग, व्याधि। ९ मादक पदार्थ। १० परेशान करने वाला कार्य, वस्तु या प्राणी। –वि० १ जबरदस्त, जोरदार। २ वीर, बहादुर। ३ भयंकर।

बळाइ, बळायो–पु० [देश०] (स्त्री० बळाइण, बळायण) १ धमार। २ कांख में होने वाला फोड़ा।

बलाइ, बलाई–देखो 'बला'।

बलाक–पु० [सं० बलाकः] (स्त्री० बलाका, बलाकी) १ बगला, बक। २ भागवत के अनुसार एक राजा।

बलाका–स्त्री० [सं०] १ मादा बगला, बगली। २ बक पंक्ति। ३ वर्षा ऋतु में एक साथ उड़ने वाले पक्षी। ४ नृत्य में एक गति विशेष।

बळाकारी–वि० १ जबरदस्त, जोरदार। २ प्रचंड, भयंकर।

बळाकी–देखो 'बळाकी'।

बळाक्रम–पु० [सं० बल-आक्रम] शक्ति, सामर्थ्य।

बळाक्रमी–वि० बलवान, शक्तिशाली, समर्थ।

बलाट–पु० [सं० बलाटः] मूंग, हरिया नामक अन्न।

बलाणी (बी)–देखो 'बुलाणी' (बी)।

बलात–क्रि०वि० [सं०] १ बल पूर्वक, जबरदस्ती से। २ हठात् हठ पूर्वक। ३ सहसा, अचानक।

बलात्कार–पु० [सं०] १ बल पूर्वक या जोर जबरदस्ती से किया गया कार्य। २ किसी स्त्री या युवति से बलपूर्वक किया जाने वाला संभोग। ३ ऋणि को पकड़ कर बैठाने की क्रिया।

बळाबंध–देखो 'बळाबंध'।

बळाबळा, बळाबळी–देखो 'बळबळ'।

बलाय–देखो 'बला'।

बलायां–देखो 'बलैया'।

बलाराति–पु० [सं० बल-अराति:] 'बल' दैत्य को मारने वाला इन्द्र।

बलारो–पु० [देश०] बढ़ई का एक औजार।

बलाल–पु० हंस।

बलावणी (बी)–देखो 'बुलाणी' (बी)।

बलावो–देखो 'बुलावो'।

बळाह, बलाह–पु० गर्दन और दुम में पीले बाल वाला घोड़ा।

बळाहक, बळाहकि, बळाहिक–पु० [सं० बलाहकः] १ बादल। २ बुगला, सारस। ३ पहाड़। ४ श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम। ५ प्रलयकालीन सात बादलों में से एक।

बळाही–देखो 'बळाइ'।

बलि, बलि–स्त्री० [सं० बलि] १ बलि पशु या प्राणी। २ बलि पशु का मांस। ३ देवालय या देव मूर्ति के आगे रखा जाने वाला नैवेद्य, चढ़ावा। ४ देव-पूजन की सामग्री। ५ उच्छिष्ट पदार्थ। ६ प्रह्लाद का पौत्र एक प्रसिद्ध दैत्य राजा। ७ भू-स्वामियों द्वारा राजा को दिया जाने वाला उपज का षष्टांश। ८ पांच महायज्ञों में से एक। ९ आठवें मनवन्तर के इन्द्र का नाम। १० बलराम का एक नामान्तर। ११ छोटा भाई, अनुज। १२ शब्द। १३ बैल। १४ बल, शक्ति। १५ चंवर दण्ड, डण्डा। १६ न्यौछावर, बलिहारी। १७ झूठ। –वि० १ बलवान, शक्तिशाली। २ देखो 'बळि'।

बलिउ–वि० [सं० ज्वलित] जला हुआ, दग्ध।

बळिदान–पु० [सं० बलिदान] १ देवी-देवताओं को किसी जीव के प्राणों की भेंट। २ प्राणी वध, उत्सर्ग। ३ किसी अच्छे कार्य के लिये किया जाने वाला प्राण त्याग, उत्सर्ग।

बळिदेव–देखो 'बळदेव'।

बलिनंदन–पु० बाणासुर।

बळिबंध, (बंधण, बंधणि, बंधाणि, बंधि)–पु० [सं० बलिबंधन] १ परमात्मा, ईश्वर, विष्णु। २ वामन अवतार। ३ श्रीकृष्ण। –वि० बलवान, शक्तिशाली।

बळिबळि–क्रि० वि० बार-बार, पुनः पुनः।

बळिभद्र, बलिभद्र, बलिभद्रि, बलिभद्री–देखो 'बळभद्र'।

बळिभुक, बळिभुज–पु० [सं० बलिभुज्] १ कौआ, काक। २ सारस, गैरैया। ३ बगला।

बळिभोग–पु० [सं० बलि-भोग] देवी-देवताओं के भोग का बलि पशु या मनुष्य, नैवेद्य, प्रसाद।

बलिमुक (मुख)–पु० [सं० बलिमुखः] बंदर, बानर।

बळियउ, बलियउ–देखो 'बळी'।

बळियारी–देखो 'बळिहारी'।

बळियो–पु० १ कच्चे मकानों की छत के नीचे लगाया जाने वाला लकड़ी का डंडा। २ स्त्रियों की कलाई का आभूषण विशेष। –वि० १ जला हुआ। २ देखो 'बळियो'।

बळिरांम–देखो 'बळरांम'।

बळिराउ, बळिराज, बळिराजा, बळिराव–पु० [सं० बलि+राज] १ दैत्यराज बलि। बलिराजा। २ कपट, छल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बलिवंत, बलिवंति–देखो 'बलवंत'।
बलिवरद–देखो 'बलीवरद'।
बलिवीर–देखो 'बलवीर'।
बलिवैस्वदेव–पु० [सं० बलिवैश्वदेव] पांच महायज्ञों में से चौथा, भूत यज्ञ।
बलिस्ट, बलिस्ठ–वि० [सं० बलिष्ठ] १ शक्तिशाली, बलवान्। २ दृढ़, मजबूत।
बलिहार, बलिहार–देखो 'बलिहारी'।
बलिहारणौ (बौ)–क्रि० १ बलैया लेना। २ बलिहारी जाना। ३ बलिदान करना।
बलिहारी, बलिहारी, बलिहारी–स्त्री० १ न्यौछावर, उत्सर्ग। २ बलैयां। ३ बलिदान। ४ विशेषता, महत्व। ५ बड़प्पन। ६ धन्यवाद, साधुवाद।
बलींड–पु० [सं० वलीकम्] मकानों की छाजन में लगने का लकड़ा
बली, बली, बलीय–वि० [सं० बलिन्] १ बलवान, ताकतवर, पराक्रमी, वीर। २ जोरदार, जबरदस्त। ३ भयंकर, भयावह। ४ दृढ़, मजबूत। ५ अडिग, अटल। –पु० १ भीम। २ भैंसा। ३ ऊंट। ४ सूअर। –स्त्री० ५ एक प्रकार की चमेली। ६ 'चैंजारे' के काम आने वाली मोटी लकड़ी। ७ देखो 'वली'। ८ देखो 'बली'।
बलीट, बलीठ–देखो 'बलिस्ठ'।
बलीतो–पु० [सं० ज्वलन] १ चूल्हे में जलाने की लकड़ियां, ऊपला आदि। २ खाना पकाने का ईंधन। ३ बेकार व अनुपयोगी वस्तुओं का ढेर। फालतू सामान। ४ जलाने लायक वस्तु।
बलीमुख, बलीमुख–देखो 'बलिमुख'।
बलीराज, बलीराजा, बलीराव–देखो 'बलिराज'।
बलीवरद–पु० [सं० बलीवर्द] १ बैल। २ सांड।
बलीहार, बलीहारी–देखो 'बलिहारी'।
बलु, बलु–१ देखो 'बल'। २ देखो 'बलराम'।
बलूंबणौ (बौ)–देखो 'विलूंबणौ' (बौ)।
बलू–देखो 'बलू'।
बलूखड़ी–देखो 'बणोखड़ी'।
बलूच–देखो 'बलोच'।
बलूब, बलूब–देखो 'बलद'।
बळे, बले–देखो 'बळै'।
बळेटी, बलेठी–देखो 'बलिस्ठ'।
बलेणी–देखो 'बलाणौ'।
बळेबीच–वि० कुटिल*।
बलेरण–देखो 'बलेरण'।
बळै–देखो 'बळै'।
बळैया–स्त्री० १ बला, बलाय, आफत, २ न्यौछावर वारना, उत्सर्ग।
बलोच–पु० [फा०] १ पाकिस्तान के पश्चिम में बसने वाली एक मुसलमान लड़ाकू जाति। २ बलोचिस्तान।
बलोचिस्तांन (स्थांन)–पु० [फा० बलोचिस्तान] पाकिस्तान का एक पश्चिमी प्रदेश।
बलोची–पु० [फा०] (स्त्री० बलोचण, बलोचणी) १ बलोच जाति का व्यक्ति। २ 'बलोचि-स्तान' का निवासी। ३ इस प्रदेश की भाषा। ४ साक आदि वनस्पति। –वि० बलोच का, बलोच संबंधी।
बलोटी–देखो 'बरोटी'।
बळोवळ, बळोवळी, बळोवळ, बळोवळी–देखो 'बळोवळ'।
बळौ–पु० [देश०] १ लगन, धुन। २ जलन, दाह। ३ देखो 'बळौ'
बलोच–देखो 'बलोच'।
बल्कि–अव्य० [फा०] १ इसके विरुद्ध, अन्यथा। २ अपेक्षा में, स्थान पर।
बल्गा–देखो 'बल्गा'।
बल्ली–स्त्री० कूए से पानी निकालने के लिये जुती हुई बैलों की जोड़ी।
बल्लभ–देखो 'वल्लभ'।
बल्लम–पु० १ भाला, बरछा। २ राजा या सामंत के आगे हाथ में लेकर चलने का सुनहरा डंडा, छड़ी। ३ डण्डा, सोंटा। छड़ी। ४ देखो 'वल्लभ'।
बल्लव, बल्लवु–पु० [सं० बल्लवः] १ अज्ञातवास के समय भीम का नाम। २ रसोइया। ३ ग्वाला, अहीर। —**नाजी**–पु० भीम।
बल्लहौ–देखो 'वल्लभ'।
बल्ला–पु० एक प्राचीन राजवंश।
बल्लारी–स्त्री० एक रागिनी विशेष।
बल्लालदेवी–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी।
बल्लि–१ देखो 'बल्ली'। २ देखो 'वल्ली'।
बल्लिताथ–पु० [देश०] १ रोम, लोम। २ केश, बाल।
बल्लिस्ट (स्ठ)–देखो 'बलिस्ठ'।
बल्ली–पु० १ ताम्बूल। २ देखो 'वल्ली'।
बल्य–पु० [सं०] करण का एक नाम। (ज्योतिष)
बल्लौ–देखो 'वल्लभ'।
बवंडर–पु० [सं० वाताडम्बर] १ गोलाकार चलने वाली प्रचण्ड वायु। चक्रवात २ आंधी, तूफान। ३ उपद्रव, हंगामा।
बव–स्त्री० [देश०] १ कर, टैक्स। २ देखो 'बच'। ३ देखो 'दो'।
बवतर, बवत्तर–देखो 'बत्रोत्तर'।
बवार–देखो 'व्यवहार'।
बवारी–१ देखो 'बुहारी'। २ देखो 'व्यवहारी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बवाळ–पु० हंगामा, उपद्रव । झगड़ा ।
बवासिर, बवासीर–पु० [अ० बवासीर] गुदा के अन्दर होने वाला मस्सा, अर्श रोग ।
बवीसमो–देखो 'बाईसमो' ।
बवीतर, बवीत्तर–देखो 'बग्रोत्तर' ।
बसंत–देखो 'वसंत' । —**पंचमी, पांचम, पांचिम, पांचमो**= 'वसतपंचमी' । —**रमणी**='वसंतरमणी' । —**रितु**='वसंत रितु' ।
बसंता–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया ।
बसंतो–देखो 'वसंती' ।
बसंवर–१ देखो 'वैस्वानर' । २ देखो 'विसुंदरी' ।
बसंदरा, बसंधरा–देखो 'वसुंधरा' ।
बस–वि० [फा०] १ केवल, मात्र, सिर्फ । २ समाप्त, पूर्ण । ३ यथेष्ट, पर्याप्त । –स्त्री० १ किसी क्रिया को रोक देने का संकेत । २ सवारियों वाली बड़ी मोटर गाड़ी । ३ देखो 'वस' ।
बसण–स्त्री० [सं० वसनं] १ बसने की क्रिया या भाव । २ निवास, आबास । ३ देखो 'वसन' ।
बसणो–पु० [सं० वसनं] १ बस्ता । २ निवास स्थान, घर । ३ देखो 'वसन' ।
बसणो (बो)–क्रि० [सं० वसनं] १ किसी स्थान विशेष या क्षेत्र विशेष में स्थाई रूप से रहना । निवास करना । २ रहना । ३ आबाद होना, आबादी के रूप में होना । ४ ठहरना, टिकना । ५ स्थित होना । ६ दृढ़ता से जमना, हृदयगत होना ।
बसत, बसतड़ी–१ देखो 'वस्तु' । २ देखो 'बस्ती' ।
बसति, बसती, बसत्ती–१ देखो 'बस्ती' । २ देखो 'वस्ति' ।
बसती–देखो 'बस्ती' ।
बसत्र–देखो 'वस्त्र' ।
बसन (ब)–देखो 'वसन' ।
बसर–स्त्री० [फा०] १ गुजारा । २ जीवन निर्वाह । [अ०] ३ दृष्टि, नजर । ४ आंख, नेत्र ।
बसा–देखो 'वसा' ।
बसाणो (बो)–क्रि० १ किसी स्थान या क्षेत्र विशेष में स्थाई रूप से रखना । बसाना । २ आबाद करना । ३ रखना । ४ ठहराना, टिकाना । ५ दृढ़ता से जमाना । हृदयगत कराना ।
बसाव, बसावट–पु० १ बसने की क्रिया या भाव । २ निवास, आवास । ३ आबाद होने की अवस्था । ४ टिकाव, ठहराव, जमाव । ५ बसने का ढंग ।
बसावणो (बो)–देखो 'बसाणो' (बो) ।
बसास–देखो 'विस्वास'
बसि, बसो–देखो 'वसी' ।
बसीकर–देखो 'वसीकर' ।
बसीकरण–देखो 'वसीकरण' ।
बसीटाळू, बसीटाळो–१ देखो 'विस्टाळू' । २ देखो 'विस्टाळो' ।
बसीठ–१ देखो 'वसीठ' । २ देखो 'वसिस्ट' ।
बसीभूत–देखो 'वसीभूत' ।
बसीयत–देखो 'वसीयत' ।
बसीलो–देखो 'वसीलो' ।
बसीवांन–देखो 'वसीवांन' ।
बसुंधरा–देखो 'वसुंधरा' ।
बसु–देखो 'वसु' ।
बसुंधरम–देखो 'वसुंदरभ' ।
बसुदेव–देखो 'वसुदेव' ।
बसुधा–देखो 'वसुधा' ।
बसुधाधिप–देखो 'वसुधापति' ।
बसुधेस–देखो 'वसुधेस' ।
बसुमति, बसुमती–देखो 'वसुमती' ।
बसू–देखो 'वसु' ।
बसूली–देखो 'वसूली' ।
बसूलो–देखो 'वसूलो' ।
बसेरो–पु० [सं० बसति] १ रात्रि, विश्राम । २ रात्रि-विश्राम लेने का स्थान । ३ निवास स्थान, आवास गृह । ४ शिविर डेरा । ५ पक्षियों का घोंसला ।
बसेलो–देखो 'वसूलो' ।
बसेस–देखो 'विसेस' ।
बसेवांन, बसैवांन–देखो 'वसोवांन' ।
बसोली–देखो 'वसूली' ।
बसोलो–देखो 'वसूलो' ।
बस्क–पु० [सं० वष्क] १ चलना या जाना क्रिया । २ एक प्राचीन देश ।
बस्कय–पु० [सं० वष्कय] एक साल का बछड़ा । —वि० पूर्ण वयस्क ।
बस्कयणी–स्त्री० [सं० वेष्कयणी] १ चिर प्रसूता गाय । २ बछड़ों वाली गाय ।
बस्त–पु० [सं०] १ बकरा । २ देखो 'वस्तु' ।
बस्तर–देखो 'वस्त्र' ।
बस्ति–१ देखो 'बहिस्त' । २ देखो 'बस्ती' । ३ देखो 'वस्ति' ।
बस्तिकरम–देखो 'वस्तिकरम' ।
बस्तिमल–देखो 'वस्तिमल' ।
बस्ती–स्त्री० [सं० वसती] १ वह स्थान जहां लोग स्थाई रूप से निवास करते हों, नगर, कस्बा, गांव । २ मुहल्ला । ३ घर, आवास । ४ शिविर । ५ बसना क्रिया, निवास ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ आबाद होने की अवस्था। ७ समाज, आबादी, जन संख्या, जनपद। ८ रात, रात्रि। ९ ठहराव। १० आधार। ११ परिवार। १२ चहल-पहल। १३ देखो 'वस्ति'। —मल-पु० नगर का योद्धा, पहलवान।

बस्तु-देखो 'वस्तु'।

बस्तो-पु० [फा० बस्तः] १ पुस्तकें कागज आदि बांधने का वस्त्र। २ इस प्रकार बंधी पुस्तकें या कागजों का बंडल। ३ विद्यार्थियों की पाठ्य पुस्तकों का थैला। ४ दुकानदारों के 'बटखरे' रखने की थैली।

बस्त्र-देखो 'वस्त्र'।

बस्सी-देखो 'वसी'।

बहंग-देखो 'विहंग'।

बहचणो (बो)-देखो 'बैचणो' (बो)।

बहतर-देखो 'बत्तर'।

बह-१ देखो 'वह'। २ देखो 'बहुत'।

बहक-स्त्री० १ बहकने की क्रिया या भाव। २ पथ भ्रष्ट या मति भ्रष्ट होने की दशा। ३ पागलपन। ४ प्रलाप, बकवास। —क्रि०वि० किसी के हक में, लिये, वास्ते, प्रति।

बहकणो (बो)-क्रि० १ सही रास्ता छोड़कर गलत रास्ते जाना, भटकना, पथ भ्रष्ट होना। २ गुमराह होना, भ्रमित होना। भुलावे में आना। ३ लक्ष्य चूकना, भूलना। ४ विचार धारा में परिवर्तन होना, विषयान्तर होना। ५ आवेश मद या क्रोध में पागल हो जाना, आपे में न रहना। ६ इस दशा में बड़बड़ाना। ७ आतंकित होना। डरना।

बहकामी-देखो बहुकांमी'।

बहकाणो(बो), बहकावणो (बो)-क्रि० १ पथ भ्रष्ट करना, सही रास्ता छुड़ाना। २ गुमराह करना, भ्रमित करना। ३ लक्ष्य चुकाना, भुलाना। ४ विचारधारा में परिवर्तन कराना, विषयान्तर कराना। ५ आपे में न रहने देना। ६ शान्त करना, बहलाना। ७ आतंकित करना। डराना।

बहड़णो (बो)-क्रि० १ कटना, कटजाना। २ देखो 'बावड़णो' (बो)।

बहड़ाणो (बो), बहड़ावणो (बो)-क्रि० १ कटवाना, कटवाया जाना। २ देखो 'बावड़ाणो' (बो)।

बहचराय-स्त्री० [देश०] चारण कुलोत्पन्न एक देवी विशेष।

बहठणो (बो)-देखो 'बैठणो' (बो)।

बहठाणो (बो)-देखो 'बैठाणो' (बो)।

बहण, बहणो-१. देखो 'बहन'। २ देखो 'वहण'। ३ देखो 'बहणी'।

बहणीई-देखो 'बहनोई'।

बहणो (बो)-देखो 'वहणो' (बो)।

बहत-१ देखो 'बहुत'। २ देखो 'वहत'।

बहतर, बहतरि, बहतरी-देखो 'बत्तर'।

बहतरी-देखो 'बत्तरी'।

बहल-१ देखो 'बहुत'। २ देखो 'वहत'।

बहत्तर, बहत्तरि, बहत्तरी-देखो 'बत्तर'।

बहत्तरी-देखो 'बत्तरी'।

बहधा, बहधो-पु० बढ़-बढ़ कर बातें करने की क्रिया।

बहधो-पु० [सं० विघातः] १ युद्ध, लड़ाई। २ उपद्रव टंटा, फिसाद। ३ विवाद। ४ विघ्न, बाधा, अड़चन। ५ अन्तर, फर्क। ६ सन्देह। ७ हल्ला-गुल्ला, हुल्लड़।

बहधा-देखो 'बहुधा'।

बहन, बहनड़, बहनड़ली, बहनड़ी-स्त्री० [सं भगिनी] १ खुद के माता-पिता की लड़की, कन्या/भगिनी, बहन। २ चाचा, ताऊ, मामा, बूआदि की पुत्री। ३ बहन के रूप में स्वीकृत स्त्री, धर्म बहन।

बहनांमि, बहनामी-देखो 'बहुनांमी'।

बहनि (नी)-१ देखो 'बहन'। २ देखो 'वनि'।

बहनेवी बहनोइ, बहनोवो, बहनोइ-पु० [सं० भगिनी पतिः] बहन का पति।

बहन्न-देखो 'बहन'।

बहबहणो (बो)-क्रि० १ प्रसन्न होना, खुश होना। २ खिल-खिलाना। ३ उमंगित होना। ४ उत्कंठित होना।

बहबिद्ध-देखो 'बहुविधि'।

बहबुवणो-वि० [देश०] (स्त्री० बहबुवणी) १ प्रसन्न, खुश। २ अधीर, उतावला। ३ आतुर।

बहमंड-देखो 'ब्रह्मांड'।

बहम-देखो 'वहम'।

बहमांणो-१ देखो 'बहुमांनी'। २ देखो 'ब्रह्मांणी'।

बहमी-देखो वहमी'।

बहमोलो-देखो 'बहुमोलो'।

बहरंग, बहरंगी (गो)-देखो 'बहुरंगी'।

बहरक, बहरख-स्त्री० माले की नोक में बंधी रहने वाली झंडी।

बहरखणो (बो)-क्रि० १ फहरना। २ चमकना।

बहरखो-पु० १ बाहू का एक गहना विशेष। भुजबन्ध। २ कुहनी पर पहनने का वस्त्र विशेष।

बहरणो-देखो 'बारणो'।

बहरणो (बो)-देखो 'बैरणो' (बो)।

बहराणो (बो)-देखो 'बैराणो' (बो)।

बहरापणो-पु० बहरापन।

बहरार-वि० [सं० वर्द्धन] चीरने वाला।

बहरावणो (बो)-देखो 'बैराणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहरी, बहरू (रू)–वि० [अ० बह्री] समुद्र का, समुद्र सम्बन्धी। –पु० १ एक सामुद्रिक शिकारी पक्षी। २ डायनी, प्रेतनी। ३ देवी। ४ देखो 'बहरी' (स्त्री०)।

बहरूपियो, बहरूपी, बहरूपो–देखो 'बहुरूपियो'।

बहरो–वि० [सं० बधिर] (स्त्री० बहरी) १ जिसकी श्रवणेन्द्रियां नष्ट हो चुकी हों, श्रवणशक्ति समाप्त हो गई हो। २ जो सुनने में असमर्थ हो। ३ कही हुई बात को जो ध्यान से न सुन सकता हो ४ काव्य का एक दोष।

बहळ, बहल–वि० [सं०बहल] १ अत्यधिक, बहुत प्रचुर, विपुल। २ स्थूल, मोटा, बड़ा। ३ मजबूत, दृढ़, सशक्त। ४ गाढ़ा, घना।–पु० १ ऊख विशेष। २ कीचड़, पंक। ३ एक प्रकार की बैल गाड़ी। ४ रथ। ५ देखो 'बळद'।

बहलणो (बो)–क्रि० [फा० ब-हाल] १ दुःखी या परेशान मन को शांति मिलना, तसल्ली होना। २ मनोरंजन होना। ३ परेशान करने वाली बातों से ध्यान बंटना। ४ रोता बच्चा खेलने लग जाना।

बहलवांन–पु० 'बहल' नासक गाड़ी चलाने वाला। गाड़ीवान।

बहलाणो (बो)–क्रि० १ दुःखी या परेशान मन को शांति देना, तसल्ली देना। २ मनोरंजन कराना। ३ दुःखी करने वाली बातों से ध्यान बंटाना। ४ रोते बच्चे को खेलने में लगाना।

बहलायण–स्त्री० [सं० बहुलाऽयन] उत्तर की तेज वायु।

बहलाव–पु० १ बहलाने की क्रिया या भाव। २ मन बहलाव। मनोरंजन। ३ प्रसन्नता। ४ संतोष।

बहलावणो (बो)–देखो 'बहलाणो' (बो)।

बहसिय–पु० एक अनार्य जाति व इस जाति का व्यक्ति।

बहलियो–पु० १ 'बहल' में जोतने का बैल। २ देखो 'बळद'। ३ शिकारी।

बहली–पु० १ एक देश का नाम। २ देखो 'बहल'।

बहलीक–पु० एक देश का नाम।

बहलीम–पु० १ सुन्नी मुसलमानों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। २ नायक जाति के मुसलमानों का एक भेद।

बहलीयो–देखो 'बहलियो'।

बहळो–क्रि० वि० १ शीघ्र, तुरंत। २ वैसा। ३ देखो 'बहल'।

बहवड़–देखो 'बहू'।

बहवणो (बो)–देखो 'बहणो' (बो)।

बहविध–देखो 'बहुविध'।

बहस–स्त्री० [अ०] १ अपने पक्ष की सही सिद्ध करने के लिये कही गई बात, तर्क, वाद-विवाद। २ हुज्जत, व्यर्थ का विवाद। ३ वाग्युद्ध। ४ प्रतिस्पर्धा, होड़। ५ न्यायालयों में होने वाली वकीलों की जिरह। ६ समान, बराबर। ७ समपद। ८ पराक्रम।

बहसणो (बो)–क्रि० १ जोश या आवेश में आना। २ आक्रमण के लिये तेजी से बढ़ना। ३ उत्साहित होना। ४ युद्ध करना, लड़ना। ५ मारना, संहार करना। ६ शोभा देना। ७ प्रसन्न होना, खुश होना। ८ देखो 'बैसणो' (बो)।

बहसांणणो (बो)–देखो 'बैसांणो' (बो)।

बहसांमि, बहसांमी–देखो 'बहुस्वांमी'।

बहसाणो (बो), बहसावणो (बो)–क्रि० १ जोश में लाना, आवेश में लाना। २ युद्धार्थ तेजी से गमन कराना। ३ उत्साह बढ़ाना। ४ युद्ध कराना, लड़ाना। ५ मरवाना, संहार कराना। ६ शोभित करना। ७ प्रसन्न या खुश कराना। ८ देखो 'बैसाणो' (बो)।

बहसिणो (बो)–देखो 'बहसणो' (बो)।

बहस्कार–देखो 'बहिस्कार'।

बहस्कृत–देखो 'बहिस्कृत'।

बहस्वांमि (मी)–देखो बहुस्वांमी'।

बहस्स–देखो 'बहस'।

बहस्सणो (बो)–देखो 'बहसणो' (बो)।

बहांण, बहांणो–१ देखो 'विहांण'। २ देखो 'वाहन'। ३ देखो 'वहांनो'।

बहाड़णो (बो), बहाणो (बो)–देखो 'वहाणो' (बो)।

बहादर–देखो 'बहादुर'।

बहादरि (री)–देखो 'बहादुरी'।

बहादुर–वि० [तु०] १ शक्तिशाली, बलवान। २ शूरवीर, योद्धा, वीर। ३ उत्साही, साहसी।

बहादुरी–स्त्री० [तु०] १ 'बहादुर' होने की अवस्था या भाव। २ साहस का कार्य। ३ वीरता। ४ साहस। ५ बल प्रदर्शन।

बहानो–पु० [फा० बहान] १ किसी कार्य या जिम्मेदारी से बचने के लिये की जाने वाली असत्य बातें, मिस, बहाना। २ निमित्त, कारण।

बहार–स्त्री० [फा०] १ फूलों के खिलने की ऋतु। २ वसंत ऋतु ३ यौवन का विकास, यौवन का रस। ४ विकास। ५ प्रफुल्लता। ६ आनन्द, मौज। ७ रमणीयता, सुहावनापन। ८ एक रागिनी विशेष।

बहारो–वि० [फा०] १ बहार का, बहार संबंधी। २ देखो 'बुहारी'। ३ देखो 'बाहरी'।

बहारू–१ देखो 'बिहारी'। २ देखो 'बहारू'।

बहाल–वि०[अ०] १ कायम, बरकरार। २ पुनर्नियुक्त। ३ अच्छी दशा में, भला, चंगा। ४ उत्साहयुक्त, फुर्तीला, साहसी।

बहाली–स्त्री० [अ०] १ बहाल करने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ पुनर्नियुक्ति। ३ तंदुरुस्ती, स्वस्थता। ४ उत्साह, साहस। ५ झांसा-पट्टी, झूठ।

बहाळी–देखो 'वाळी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहालो–देखो 'वालो' ।

बहाव–पु० [सं० वहनं] १ बहने की क्रिया या भाव । २ पानी आदि के बहने की गति, बहने का रास्ता । ३ जल प्रवाह से उत्पन्न ध्वनि । ४ प्रवाह, धारा, सोता । ५ किसी भावना या विचार धारा का प्रभाव ।

बहावणो, (बो)–देखो 'वहाणो' (बो) ।

बहि–अव्य० [सं०वहिस्] १ द्वार के बाहर । २ अन्दर के सामने ।

बहिकणो (बो)–देखो 'बहकणो' (बो) ।

बहिकाणो (बो), बहिकावणो (बो)–देखो 'बहकाणो' (बो) ।

बहिड़–देखो 'बैंड़' ।

बहिड़ो, बहिडो, बहिडूं–देखो 'बेंड़ो' ।

बहिण, बहिणि, बहिणी–देखो 'बहन' ।

बहित्तरि (री)–देखो 'बग्रोत्तर' ।

बहित्र–देखो 'वहित्र' ।

बहिन, बहिनड़, बहिनड़ी, बहिनडोय, बहिनर, बहिनि, बहिनी–देखो 'बहन' ।

बहिनेवी–देखो 'बहनोई' ।

बहिनो–देखो 'बहानो' ।

बहिफनी–देखो 'वहुफळी' ।

बहिरंग–वि० [सं बाह्य] १ बाहरी, बाहर का, बाह्य । २ जो किसी क्षेत्र या वर्ग से बाहर हो । ३ जो अनावश्यक हो । ४ बाहर की ओर का । –पु० १ बनावट, आकार-प्रकार । २ पूजा आदि औपचारिक कर्म । ३ देखो 'बहुरंगी' ।

बहिर–१ देखो 'वहीर' । २ देखो 'बाहर' ।

बहिरउ–देखो 'बहरो' ।

बहिरखूं, बहिरखो–देखो 'बहरखो' ।

बहिरगत–क्रि० वि० [सं० बहिर्गत] बाहर ।

बहिरणो (बो)–देखो 'बैरणो' (बो) ।

बहिरलापिका–स्त्री० [सं० बहिर्लापिका] काव्य रचना में एक पहेली ।

बहिराणो (बो), बहिरावणो (बो)–देखो 'बैराणो' (बो) ।

बहिरिखो–देखो 'बहरखो' ।

बहिरो–देखो 'बहरो' ।

बहिल–देखो 'बहल' ।

बहिलायत–वि० कृपा पात्र ।

बहिल्ल–देखो 'बहल' ।

बहिस–अव्य० [सं० बहिस्] १ बाहिर की ओर, बाहरी । २ द्वार के बाहर । ३ बाहर की ओर से । ४ देखो 'बहिस' । ५ देखो 'बहिस्त' ।

बहिस्करण–पु० [सं० बहिष्करण] १ बहिष्कार करने की क्रिया या भाव । २ अलगाव, पृथक्करण । ३ शरीर के बाहर की पांच ज्ञानेन्द्रियां व पांच कर्मेन्द्रियां ।

बहिस्कार–पु० [सं० बहिष्कार] १ बाहर निकालने की क्रिया । २ अलग या पृथक करने की क्रिया या भाव । ३ अनादर, बेइज्जती । ४ सम्बन्ध विच्छेद । ५ सामाजिक असहयोग । ६ त्याग । ७ घृणा या असहयोग करने की क्रिया ।

बहिस्कृत–वि० [सं० बहिष्कृत] १ जिसका बहिष्कार किया जाय बहिष्कृत । २ त्यक्त ।

बहिस्त–पु० [फा० बहिस्त] स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

बही–स्त्री० [सं० वद्ध] १ लेन-देन का हिसाब रखने की किताब, पंजिका । २ व्यापार का लेखा-जोखा लिखने की पुस्तक, पंजिका । —खत, खातो='खाताबही' ।

बहीचरा–देखो 'बहचराय' ।

बहीभाट–पु० वंशावली लिखने वाले भाटों की एक शाखा ।

बहीर–देखो 'बहोर' ।

बहुंतर, बहुंतरि, बहुंतरी, बहुंत्तर, बहुंत्तरि, बहुंत्तरो–देखो 'बग्रोत्तर' ।

बहु–१ देखो 'बहुत' । २ देखो 'बहू'

बहुअड़, बहुअर, बहुआण–देखो 'बहू' ।

बहुकामी–वि० [सं० बहु-कामिन्] १ जो अधिक मैथुन करता हो, ऐयाश, कामी । २ स्त्रैण । [सं० बहु-कर्मिन्] ३ जो कार्य में अधिक व्यस्त रहता हो । ४ जिसके पास अधिक कार्य हो । बहुधंधी । ५ ईश्वर ।

बहुखीचड़ी–स्त्री० [सं० वधू-कृसर] नव वधू के स्वागत में किया जाने वाला भोज ।

बहुगुणी, बहुगुणो–वि० [सं० बहु-गुणिन्] १ जिसमें अनेक गुण हो, गुणवान । २ जो कई कामों में उपयोगी हो । –पु० विशेष लक्षणों वाला घोड़ा ।

बहुड़णो (बो)–देखो 'बावड़णो' (बो) ।

बहुड़ाणो (बो), बहुड़ावणो (बो)–देखो 'बावड़ाणो' (बो) ।

बहुड़ि–१ देखो 'बहुरि' । २ देखो 'बहू' ।

बहुचक–पु० [सं०] १ जलेबी व इमरती नामक मिठाई । २ फीणी नामक मिठाई ।

बहुजाण–वि० [सं० बहुज्ञ] १ बहुज्ञानी, पंडित । २ चतुर, बुद्धिमान ।

बहुडाणो (बो), बहुडावणो (बो)–देखो 'बावड़ाणो' (बो) ।

बहुत–वि० [सं० प्रभूत] १ जो गिनती में अधिक हो । अनेक । २ मात्रा या परिमाण में अधिक, अत्यन्त । ३ विपुल, प्रचुर, पर्याप्त । ४ विविध । ५ समूह ।

बहुतर, बहुतरि, बहुतरी–देखो 'बग्रोत्तर' ।

बहुतरो–देखो 'बग्रोतरो' ।

बहुतात, बहुतायत–स्त्री० १ बहुत होने की अवस्था, अनेकता । २ अधिकता, विपुलता, प्रचुरता ।

बहुतेरो–क्रि० वि० बहुत से, बहुत बार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुत–देखो 'बहुत'।

बहुत्तर, बहुत्तरि, बहुत्तरी–देखो 'बहोत्तर'।

बहुत्तरी–देखो 'बहोत्तरी'।

बहुधान्य–पु० [सं०] १ ब्रह्मा के बीस वर्षों में से बारहवां वर्ष।

बहुधा–अव्य० [सं०] १ कई बार, अनेक बार। २ भांति-भांति से, विविध रूपेन। ३ अनेक प्रकार से। ४ कई अवसरों पर। ५ कई स्थानों पर। ६ अधिकतर, प्रायः।

बहुधीत–वि० [सं० बहु-अधीत] बहुज्ञानी, पंडित, विद्वान।

बहुनामिय, बहुनामी–वि० [सं० बहुनामन्] जिसके अनेक नाम हों। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ शिव, महादेव। ३ विष्णु। ४ राम। ५ कृष्ण।

बहुपाव, बहुपाद–पु० [सं० बहुपादः] वट वृक्ष।

बहुप्रज–वि० [सं०] जिसके अनेक संतानें हों। –पु० १ सूअर, वराह। २ मूंज नामक घास।

बहुफळ–पु० [सं० बहुफलः] कदम्ब वृक्ष।

बहुफळी–स्त्री० एक प्रकार की जंगली गाजर।

बहुफूली–पु० अधिक फूलों वाला पौधा विशेष।

बहुबंबोळो–पु० नव वधू के स्वागत में संबंधियों द्वारा दिया जाने वाला भोजन।

बहुबीज–पु० अधिक बीजों वाला फल।

बहुबोलो–देखो 'बहुभासी'।

बहुभक्षी–वि० [सं० बहुभक्षी] जो अधिक खाता हो। –पु० भीम का एक नामान्तर।

बहुभाखी (भासी)–वि० [सं० बहुभाषिन्] १ अधिक बोलने वाला। २ प्रलापी, बकवादी, गप्पी। ३ लम्बे-लम्बे भाषण देने वाला।

बहुमान–पु० १ अधिक मान व आदर। २ बड़ों द्वारा छोटों को प्रदत्त पुरस्कार।

बहुमानी–वि० [सं०] १ जिसका अधिक मान या आदर हो। २ प्रतिष्ठित।

बहुमूत्र–पु० [सं०] १ अधिक पेशाव आने का रोग। २ ऐसे रोग का रोगी।

बहुमूस–देखो 'बहुमूल्य'।

बहुमूळी–स्त्री० [सं० बहु+मुलिन] १ एक जड़ी विशेष। २ अधिक जड़ों वाला पौधा।

बहुमूसी (मूलो, मूल्य, मोलो)–वि० [सं० बहुमूल्य] १ जो मूल्यवान हो, कीमती, अमूल्य। २ अधिक महत्वपूर्ण।

बहुय–देखो 'बहुत'।

बहुरंगी–वि० [सं० बहुरंगिन्] १ जिसके अनेक रंग हों, विविध रंगों वाला। २ विविध विचारों वाला। ३ जिसके कई तरह के शौक हों, मनमौजी, रंगीला।

बहुरखउ–१ देखो 'बहुरखो'। २ देखो 'बाहुरक्षक'।

बहुरात–स्त्री० [सं० वधूरात्रि] नव वधू के आगमन पर प्रथम रात्रि को किया जाने वाला जागरण।

बहुरि–क्रि०वि० [सं०] १ पुनः, फिर, बार-बार। २ अनन्तर उपरान्त, बाद में। ३ पीछे। ४ देखो 'बहू'।

बहुरिणी (णी)–वि० [सं० बहुऋणी] १ जिस पर अधिक कर्ज हो। २ जो एहसानों से दबा हुआ हो।

बहुरी–पु० [सं० वादुकः] १ यज्ञ। २ देखो 'बहुरि'। ३ देखो 'बहू'।

बहुरूप–वि० [सं०] १ जिसके अनेक रूप हों। अनेक रूप बनाने वाला। २ चितकबरा। –पु० १ परमात्मा, विष्णु। २ शिव, महादेव। ३ ब्रह्म। ४ सूर्य। ५ कामदेव। ६ केश। ७ गिरगिट, सरट।

बहुरूपा–स्त्री० [सं०] १ दुर्गा, देवी। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

बहुरूपियो, बहुरूपी–वि० [सं० बहुरूपिन्] १ अनेक रूपों वाला अनेक रूप बनाने वाला। २ नकल करने वाला। —पु० स्वांग बना कर जीविका निर्वाह करने वाला व्यक्ति।

बहुळ, बहुस–वि० [सं० बहुल] (स्त्री० बहुली) १ प्रचुर, अधिक विपुल, पर्याप्त, ज्यादा। २ सघन, गाढ़ा। ३ कसा हुआ। –पु० १ आकाश। २ सफेद मिर्च। ३ कृष्ण पक्ष। ४ शिव। ५ अग्नि।

बहुलता–स्त्री० [सं०] १ 'बहुल' होने की दशा या अवस्था। २ अधिकता, प्रचुरता।

बहुळा, बहुसा–स्त्री० [सं० बहुला] १ गौ, गाय। २ इलायची। ३ नील का पौधा। ४ कृत्तिका नक्षत्र। ५ देखो 'बहुल'। –चौथ–स्त्री० भादव कृष्णा चतुर्थी की तिथि। -बन,वन–पु० वृन्दावन के ८४ वनों में से एक। नील के पौधों वाला जंगल।

बहुलातमज–पु० [सं० बहुला-आत्मज] स्वामि कार्तिकेय।

बहुसी–स्त्री० १ चौसठ योगिनियों में से एक। २ शाक, व्यंजन आदि। ३ देखो 'बहुल'।

बहुळु, बहुलु, बहुळो, बहुलो–देखो 'बोळो'।

बहुवड़–देखो 'बहू'।

बहुवद–देखो 'बहुवादी'।

बहुवाद–पु० [सं०] १ भिन्न-भिन्न मत। २ अध्यात्म व दर्शन सम्बन्धी विभिन्न सिद्धान्त। ३ एक राजनैतिक सिद्धान्त।

बहुवादी–वि०[सं० बहुवादिन्] १ बहुवाद के सिद्धान्त को मानने वाला। २ ऐसा सिद्धान्त बनाने वाला। ३ बहुत बोलने वाला, बकवादी।

बहुवार–अव्य० [सं० बहुवार] १ कई बार, अनेक बार, प्रायः। २ बार-बार। —पु० १ लिसोड़े का पेड़। २ उक्त पेड़ का फल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुवासो–पु० [सं० वधुवास] बहू को ससुराल में मिलने वाला कष्ट, त्रास।

बहुविध, बहुविधि–क्रि०वि० [सं०बहुविध] १ अनेक प्रकार से, रीति या ढंग से। २ अनेक नीतियों से।

बहुवै–पु० [सं० द्वे] १ दोनों। २ देखो 'बहुत'।

बहुव्रीहि–वि० [सं०] बहुत चावलों वाला। –पु० व्याकरण के छः प्रकार के समासों में से एक।

बहुश्रुत, बहुस्रोत–वि० [सं० बहुश्रुत] १ जिसने बहुत कुछ सुना हो। २ अनेक विषयों का जानकर। ३ विद्वान, पंडित। ४ वेदों का ज्ञाता। ५ अधिक सुनने वाला। ६ अतिवृद्ध।

बहुस्वामी–वि० [सं० बहुस्वामिन्]१ बहुतों का स्वामी। २ जिस के अधीन बहुतसी वस्तुएँ हों। –पु० ईश्वर।

बहू–स्त्री० [सं० वधू] १ धर्म–पत्नी, जोरू। ३ स्त्री, औरत, नारी। ३ पुत्र वधू, पतोहू। ४ नव वधू। ५ छोटे सम्बन्धी की स्त्री। ६ धार्मिक बुद्धि, सुबुद्धि। [सं० बहु] ७ समूह —वि० १ दोनों। २ देखो 'बहुत'।

बहूजी,बहूजीराज–पु०१ राजमाता। २ वृद्धा स्त्रियों के लिये एक आदर सूचक संबोधन। ३ नववधू का आदर सूचक संबोधन

बहूतरि, बहूतरी–देखो 'बग्रोतर'।

बहूत्त–देखो 'बहुत'।

बहूदक–पु० [स० बहूउदक] संन्यासियों का एक भेद।

बहूधोत–देखो 'बहुधोत'।

बहूपमा–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्थालंकार।

बहूपांव, बहूपाद–देखो 'बहुपाद'।

बहूय–देखो 'बहुत'।

बहूला (ला)–देखो 'बहुला'।

बहूवड़–देखो 'बहू'।

बहूविध–देखो 'बहुविध'।

बहेड़, बहेड़उ, बहेड़ा, बहेड़ो–देखो 'बे'ड़ो'।

बहेटो–पु० ऊंट।

बहेरखो–देखो 'बहरखो'।

बहेला–देखो 'बाघेला'।

बहेलियो–पु० [सं० वधजीवन्] १ व्याध, शिकारी, बहेलिया। २ कसाई, बूचर। ३ जल्लाद।

बहोड़णो (बो)–क्रि० १ लेना, प्राप्त करना। २ रक्षा करना, बचाना। ३ लौटाना, वापस करना। ४ पीछे फेरना, मोड़ना, घुमाना। ५ विसर्जन करना, समाप्त करना।

बहोड़ाणो (बो), बहोड़ावणो (बो)–क्रि० १ प्राप्त कराना लिवाना, । २ रक्षा करवाना, बचवाना। ३ वापस कराना लौटवाना। ४ पीछे फिरवाना, मुड़वाना, घुमवाना। ५ विसर्जन कराना, समाप्त कराना।

बहोड़ि–देखो 'बहुरि'।

बहोत–देखो 'बहुत'।

बहोतर–देखो 'बग्रोत्तर'।

बहोतरो–देखो 'बग्रोत्तरी'।

बहोनांमी–देखो 'बहुनांमी'।

बहोर, बहोरि (रो)–देखो 'बहुरि'।

बहो–देखो 'बोह'।

बहोड़णो (बो)–देखो 'बहोड़णो' (बो)।

बहोड़ाणो (बो), बहोड़ावणो (बो)–देखो 'बहोड़ाणो' (बो)।

बहोड़ि–देखो 'बहुरि'।

बहोत–देखो 'बहुत'।

बहोत्तर–देखो 'बग्रोत्तर'।

बां–स्त्री० १ गाय के रंभाने की ध्वनि। २ बार, दफा। ३ देखो 'बा'।

बांइ–देखो 'बांयो'।

बांइटो–देखो 'बांइटो'।

बांई–स्त्री० १ दरवाजे के अगल-बगल खड़ा लगाया जाने वाला पत्थर। २ देखो 'बांयो' (स्त्री०)। ३ देखो 'बांई'। ४ देखो 'बांह'।

बांईटो–देखो 'बाइंटो'।

बांक–पु० [सं० वक्र] १ घुमाव, मोड़। २ धनुष। ३ टेढ़ापन; वक्रता। ४ हथियार चलाने की एक विद्या का नाम। ५ वीरता, बहादुरी, पराक्रम। ६ अभिमान,गर्व। ७ ऐंठन, मरोड़। ८ तलवार। ९ तलवार से मिलता-जुलता एक शस्त्र विशेष। १० घिसते समय लोहे को पकड़ने का उपकरण, सिकंजा। ११ रहट में लगने वाली एक लकड़ी विशेष १२ बैलगाड़ी के धाटे के नीचे का मुड़ा हुआ भाग। १३ जल-पात्र विशेष। १४ कमी, कसर। १५ परसु नामक कृषि उपकरण। १६औरतों के वस्त्रों में लगाने का तार गोटे का एक फीता विशेष। १७ व्यंग। –वि० १ टेढ़ा, तिरछा। २ मुड़ा हुआ।

बांकउ–देखो 'बांको'।

बांकड़–१ देखो 'बांको'। २ देखो 'बांक'।

बांकड़मल–वि० १ योद्धा, वीर। २ मल्ल।

बांकड़लो–देखो 'बांकी'।

बांकड़लो–देखो 'बांको'।

बांकड़ी–स्त्री० १ लाठी, लकड़ी। २ धातु के हुक्के में लगने वाला एक उपकरण। ३ देखो 'बांकी'। ४ देखो 'बांकली'।

बांकड़ो–१ देखो 'बांक'। २ देखो 'बांको'।

बांकनळ, बांकनाळ–देखो 'बंकनाळ'।

बांकबसूलो–स्त्री० बढ़ई का एक औजार।

बांकम–स्त्री० १ बहादुरी का कार्य। २ शौर्य, पराक्रम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बांकल–स्त्री० [सं० वक्र] १ तलवार। २ 'माधा' चारण की पुत्री एक देवी।

बांकलमाता–स्त्री० रेबारियों के ढाढ़ियों की एक देवी।

बांकली–स्त्री० [सं० वक्रनलिका] १ रहट की माल से पानी गिरने के स्थान पर बनी कुंडी। २ देखो 'बांकल'।

बांकापण, बांकापणौ–पु० १ बांका होने की अवस्था या भाव। २ टेढ़ापन, बांकापन। ३ तिरछापन। ४ ऐंठन। ५ वीरता, शौर्य। ६ श्लेषात्मक भाषा, व्यंग। ७ बनावट या रचना की सुन्दरता, छवि, आभा।

बांकिम–देखो 'बांकम'।

बांकियौ–पु० १ फूंक कर बजाने का बाजा विशेष, तुरही। २ स्वर्णकारों का एक उपकरण। ३ देखो 'बांक'। ४ देखो 'बांकौ'।

बांकियौबाव–पु० धनुर्वात नामक रोग।

बांकौ–वि० [सं० वक्र] १ ऊबड़-खाबड़, ऊंची-नीची। २ टेढ़ी तिरछी, वक्र। ३ दुर्गम, दुरूह, विकट। ४ देखो 'बांकौ'।

बांकीनाळ–देखो 'बंकनाळ'।

बांकुरौ, बांकौ–वि० [सं० वक्र] (स्त्री० बांकी) १ मुड़ा हुआ, वक्र। २ टेढ़ा,तिरछा। ऐंठनदार। ३ पैना। ४ शूरवीर, पराक्रमी। ५ जबरदस्त। ६ पुरुषार्थी, हिम्मतवान। ७ गर्विला, अभिमानी। ८ निपुण, दक्ष। ९ दृढ़, मजबूत। १० दुर्गम, दुरूह। ११ कठिन। १२ विरुद्ध, उल्टा। १३ कुटिल, क्रूर। १४ विकट, भयावह। १५ छैल-छबीला, शौकीन। १६ छैला। १७ घुंघुराला,छल्लेदार। १८ शोभनीय। १९ दीर्घ। २० विशेष गुणों वाला। –पु० हनुमान।

बांखाण–देखो 'बखाण'।

बांखांणणौ (बौ)–देखो 'बखाणणौ' (बौ)।

बांग–स्त्री० [फा०] १ जोर से पुकारने की क्रिया या भाव। २ आवाज, ध्वनि, स्वर, नाद। ३ मुर्गे की बोली। ४ मस्जिदों में मुल्लाओं द्वारा की जाने वाली अजान। ५ मृत व्यक्तियों के पीछे जोर से रोने की आवाज। ६ जोर से रोना, चिल्लाना, हाय-तोबा करने की क्रिया।

बांगड़–पु० १ करनाल, रोहतक,हरियाणा और हिसार प्रदेश का नाम। २ देखो 'बंगड़'। ३ देखो 'बांगड़'। ४ देखो 'बांगर'। ५ देखो 'बांगड़ौ'।

बांगड़फूली–स्त्री० अधिक फूलों वाली एक वनस्पति।

बांगणौ–पु० भगोना।

बांगणौ (बौ)–क्रि० [फा० बांग] १ अजान देना। २ मुर्गे का बोलना। ३ मृतक के पीछे जोर से रोना। ४ रोना, हाय तोबा मचाना। ५ देखो 'बांगणौ' (बौ)।

बांगर–स्त्री० वर्षा के पानी से ही फसल देने वाली कृषि भूमि।

बांगड़–स्त्री० केवल वर्षा के पानी से ही होने वाली फसल।

बांगळ–पु० एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

बांगळौ (लौ)–देखो 'बांघलौ'।

बांगौ–देखो 'बगनौ'।

बांघळौ (लौ)–वि० [सं० व्याघ्र+रा० लौ] १ योद्धा, वीर। २ क्रुद्ध, क्रोधित। ३ भूखा। ४ जबरदस्त, जोरदार। ५ असावधान। –पु० भूखा व क्रुद्ध शेर।

बांघ–देखो 'बांमच'।

बांचणौ (बौ)–क्रि० [सं०वाचनम्] १ लिखी हुई भाषा या इबारत को पढ़ना, पढ़कर सुनाना। २ पाठ करना। ३ पत्र पढ़ना। ४ कथना, कहना। ५ जान लेना, भांप लेना, समझ लेना। ६ देखो 'बांछणौ' (बौ)।

बांछणौ (बौ)–देखो 'बांछणौ' (बौ)।

बांछा–देखो 'बांछा'।

बांछित–देखो 'बांछित'।

बांजंत्र–देखो 'वाद्ययंत्र'।

बांझ–देखो 'बंध्या'।

बांझकंकाड़ी (कंकोड़ी, कांकड़ी)–पु० [सं० बंध्याककोटकी] वृक्षों पर फैली रहने वाली बिना फलों वाली लता।

बांझड़ियौ–देखो 'बांझड़ौ'।

बांझड़ी–देखो 'बंध्या'।

बांझड़ौ–वि० [सं० वंध्य] (स्त्री० बांझड़ी) १ संतान रहित, संतानहीन। २ स्त्री विहीन, रंडवा, विधुर। ३ बंजर, बेकाम।

बांझणी–देखो 'बंध्या'।

बांझणौ–देखो 'बांझड़ौ'।

बांझपण (पणौ)–पु० १ बांझ होने की दशा, अवस्था। २ ऊसरता।

बांझिणी–देखो 'बंध्या'।

बांझियौ–देखो 'बांझड़ौ'।

बांझी–देखो 'बंध्या'।

बांट–१ देखो 'बंट'। २ देखो 'बांटकौ'।

बांटकियौ, बांटकौ–पु० [सं० वंठर:] कंटीला पौधा या छोटी झाड़ी।

बांटणौ–वि० [सं० वंटक] १ बांटने या विभाजन करने वाला। २ देने वाला, दाता। –पु० सिल-बट्टा।

बांटणौ (बौ)–क्रि० [सं० वंटनम्] १ किसी वस्तु या क्षेत्र को कई भागों में विभक्त करना। बांटना। २ सम्पत्ति आदि के हिस्से कर के भागीदारों को देना। ३ वितरण करना, बांटना। ४ दान देना। ५ पीसना।

बांटीलौ–वि० (स्त्री० बांटीली) १ बांटने या वितरण करने वाला, वितरक। २ गर्विला, अभिमानी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बांटौ–पु० [सं०वट्] १ बांटने की क्रिया या भाव । २ विभाजित अंश या हिस्सा । ३ जागीरदार को दिया जाने वाला उपज का भाग । ४ मवेशियों को खिलाने की खाद्य सामग्री विशेष । ५ खलिहान में रखा कटी फसल का गोलाकार ढेर ।

बांठ–स्त्री० १ बध्या बकरी । २ मादा सूअर । ३ देखो 'बांटकौ' ।

बांठकौ (ठौ)–देखो 'बांटकौ' ।

बांठो–पु० कच्चे मकानों की छाजन में काम आने वाला क्षुप ।

बांडकी–देखो 'बांडी' ।

बांडपांसू, बांडपाहौ–पु० [सं० वंड+पार्श्व] वह बैल जिसके अन्तवाली पसली छोटी हो ।

बांडा–स्त्री० कुम्हारों की एक जाति विशेष ।

बांडाई–स्त्री० १ शरारत, बदमाशी । २ चालाकी, धूर्तता ।

बांडाबीज–स्त्री० अक्षय तृतीया के पूर्व की तिथि ।

बांडियौ–पु० १ एक प्रकार का छोटी बांह का अंगरखा । २ देखो 'बांडो' ।

बांडी–स्त्री० १ सर्प विशेष । २ राजस्थान के दक्षिण एवं पूर्व में बहने वाली दो नदियां । ३ देखो 'बांडो' (स्त्री०) ।

बांडेरू–पु० [देश०] १ 'आई-माता' के भक्त 'सीरवी' । २ देखो 'भांडेरू' ।

बांडो–वि० [सं० वंड] (स्त्री० बांडी) १ कटे हुए पूंछ का । २ उद्दण्ड, बदमाश, उत्पाती । —पु० १ कटी पूंछ का पशु । २ सुन्नी मुसलमान । ३ बांडा जाति का कुम्हार ।

बांढौ–देखो 'बांढौ' ।

बांण–वि० चतुर, दक्ष, निपुण । —पु० [सं० बाण] १ तीर नामक शस्त्र, सायक, शर । २ तीर का अग्र भाग । ३ निशाना, लक्ष्य । ४ बारूद से छोड़ने का उपकरण । ५ गाय का स्तन । ६ स्वर्ग । ७ बल । ८ पुत्र, सुत । ९ चारण । १० बाणभट्ट । ११ बाणासुर । १२ ध्यान, लगन । १३ महादेव । १४ स्वभाव, प्रकृति । १५ मर्यादा, मान । १६ जोर से चिल्लाने की आवाज, रोने की आवाज । १७ अग्नि, आग । १८ आज्ञा । १९ बाण गंगा । २० खाट बुनने की रस्सी, मूंज आदि । २१ ऋतुमति गाय व भैंस । २२ पांच की संख्या । २३ देखो 'बांणी' । २४ देखो 'बांण' ।

बांणक–१ देखो 'बांणक' । २ देखो 'बणिक' ।

बांणगंगा–स्त्री० १ जोधपुर जिले में बिलाड़ा ग्राम के पास बहने वाला एक जल स्रोत । २ हिमालय के सोमेश्वर गिरि से निकलने वाली एक नदी का नाम । ३ धौलपुर, जयपुर व बूंदी प्रदेशों के पास बहने वाली नदियां ।

बांणण, बांणनी–देखो 'बणियांणी' ।

बांणपंजरि–स्त्री० [सं० बाण-पञ्जर] तरकस तूणीर, भाता ।

बांणपति (पत्नी, पत्नो)–पु० [सं० बाण-पति] १ महादेव, शिव । २ धनुर्धर ।

बांणप्रस्थ–देखो 'वानप्रस्थ' ।

बांणभट्ट–पु० [सं०] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि ।

बांणमौ (वौ)–वि० इकरानु के बाद वाला, बानवे के स्थान वाला । –पु० बानवे की संख्या का वर्ष ।

बांणाघ–पु० सूर्य ।

बांणारसि, बांणारसी–१ देखो 'वाराणसी' । २ देखो 'बनारसी' ।

बांणाळ (ळौ)–१ देखो 'बांण' । २ देखो 'बांणावळौ' ।

बांणाव–देखो 'बणाव' ।

बांणावती–स्त्री० [सं० बाणावती] दैत्यराज बाणासुर की पत्नी का नाम ।

बांणावळि, बांणावळी–वि० [सं० बाणावली] जो धनुर्विद्या में प्रवीण या दक्ष हो । कुशल धनुर्धर । –स्त्री० तीरों की कतार या बौछार ।

बांणास–स्त्री० [सं० बाण] १ तलवार, खड्ग । २ धनुष ।

बांणासण, बांणासणौ–पु० [सं० बाणासनं] धनुष, कमान ।

बांणासि–देखो 'बांणास' ।

बांणासुर–पु० [सं० बाण-असुर] राजा बलि का बड़ा पुत्र । सहस्रबाहु ।

बांणि–१ देखो 'बांणी' । २ देखो 'बांण' ।

बांणिक–१ देखो 'बांणक' । २ देखो 'बणिक' ।

बांणियौ–देखो 'बणिक' ।

बांणी–देखो 'बाणी' ।

बांणु, बांणू–वि० [सं० द्विनवतिः] नब्बे और दो । बानवे । –पु० १ नब्बे व दो की संख्या, ९२ । २ देखो 'बांण' ।

बांणूमौ (वौ)–देखो 'बांणवौ' ।

बांणैत, बांणैत–देखो 'बानेत' ।

बांणौ–पु० एक प्रकार की मोटे दाने की रेत ।

बांध–देखो 'बाध' ।

बांद–स्त्री० [सं० बांद] १ दूल्हे-दुल्हिन को, इष्ट-मित्रों संबंधियों द्वारा भेंट किया जाने वाला द्रव्य । २ इष्ट-मित्रों द्वारा दुल्हिन-दूल्हे को दिया जाने वाला भोज । ३ सेवक, दास ।

बांदड़माळ–देखो 'बांदरमाळ' ।

बांदणौ (बौ)–क्रि० [सं० वंदनम्] १ अभिवादन या नमस्कार करना । २ पूजा करना, अर्चना करना । ३ स्वागत करना । ४ देखो 'बांधणौ' (बौ) ।

बांदर–१ देखो 'बांनर' । २ देखो 'बंदर' ।

बांदरमाळ, (माळा, वाळ)–स्त्री० [सं० वंदनी+माला] १ मकानों के द्वार या मण्डप की सजावट में लटकाई

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाने वाली माला । २ स्वागत के समय पहनाई जाने वाली माला ।

बांदरियो, बांदरी–देखो 'बांनर' ।

बांदा, बांदाल–पु० [सं० बांदाल] अन्य वृक्ष की शाखा पर उगने वाली वनस्पति ।

बांदि–१ देखो 'बांदी' । २ देखो 'बंदी' ।

बांदी–स्त्री० १ दासी, सेविका, परिचारिका । २ नौकरानी ।

बांदो–१ देखो 'बंदो' । २ देखो 'बांनो' ।

बांध–पु० [सं० बंध] १ बांधने की क्रिया का भाव । २ नदी या जलाशय का पानी रोकने के लिए बनाई गई मोटी दीवार, पुश्ता, घुस्स । ३ छोटा ढेर ।

बांधण–वि० [सं० बंध] १ बांधने वाला । २ रक्षा करने वाला –पु० १ बांधने की क्रिया या भाव । २ देखो 'बंधन' ।

बांधणी–स्त्री० [सं० बंधन] १ बांधने की क्रिया या ढंग । २ देखो 'बांनणी' ।

बांधणू–पु० [सं० बंधन] १ रंगरेज का कपड़ा विशेष । २ रंगाई से पूर्व वस्त्र को स्थान-स्थान से बांधने का ढंग । ३ वह वस्त्र जिसमें सूत के धागों से बांधकर बुंदकियां लगाई जाती हैं । ४ देखो 'बांधण' ।

बांधणो(बो)[1]–क्रि० [सं० बंधनम्] १ रस्सी या डोरी आदि से आबद्ध करना, बन्धन युक्त करना, बांधना । २ किसी वस्तु पर डोरा आदि कसकर लपेटना । ३ कैद करना, बन्धन में डालना । ४ किसी फंदे में फंसाना । ५ उलझन या झंझट में फंसाना । ६ लटकाना, टेरना, टांकना । ७ अधीन करना, काबू या नियन्त्रण में करना । ८ मुग्ध करना, मोह लेना । ९ अवरुद्ध करना, रोकना । १० गतिहीन करना । ११ आड लगाना, बांध बनाना । १२ कुए आदि की बंधाई करना । १३ निर्माण करना, बनाना । १४ नया राज्य या जागीर स्थापित करना । १५ स्थापित करना, स्थापना । १६ निश्चित या तय करना । १७ नियमित करना । १८ क्रम निश्चित करना । १९ नियम व सिद्धान्तों में मर्यादित करना । २० तंत्र-मन्त्र से वशीभूत करना । २१ शस्त्रादि धारण करना । २२ सैन्य विन्यास करना । २३ कल्पना करना, धारणा बनाना । २४ रखना । २५ रचना के लिए सामग्री एकत्र करना । साधन जुटाना । २६ किसी को किसी के साथ संबद्ध करना, जोडना । २७ लड्डू या पिण्ड के रूप में बनाना । २८ साफा या पगड़ी शिर पर लपेटना । २९ रंगाई के लिए वस्त्र की बंधाई करना । ३० काव्य रचना करना । ३१ पुस्तक की जिल्दबंधी करना ।

बांधव–देखो 'बंधु' ।

बांधवर–स्त्री० एक जड़ी विशेष ।

बांन–१ देखो 'बांण' । २ देखो 'बांनो' । ३ देखो 'बांद' । ४ देखो 'बांन' ।

बांनक–देखो 'बांणक' ।

बांनगी–स्त्री० १ बिक्री योग्य सामान का नमूना । २ आदर्श । ३ रूपरेखा ढांचा ।

बांनणी–स्त्री० जुलाहों का एक उपकरण ।

बांनद्रोही–पु० भैंसा, महिष ।

बांनप्रस्त, बांनप्रस्थ–देखो 'बांनप्रस्थ' ।

बांनर बांनरड़ो–देखो 'बांनर' ।

बांनरधी–पु० [सं० वारिनिधि] समुद्र, सागर ।

बांनात–देखो 'बनात' ।

बांनाधार–वि० कुल-मर्यादा की धारण करने वाला ।

बांनाबंध बांनाबधण–वि० १ गुणधारी । २ सैनिक वेश भूषा धारण करने वाला । –पु० १ सैनिक । २ तीरंदाज । ३ युद्ध में दृढ़ प्रतिज्ञ रहने का चिह्नधारी योद्धा । ४ वीर, बहादुर । ५ पूजनीय ।

बांनी–१ देखो 'बांणी' । २ देखो 'बांनी' ।

बांनेत, बांनैत–पु० १ योद्धा, वीर । २ धनुर्धर । ३ कोई वेश धारण किया हुआ । ४ प्रधान सेनापति । ५ युद्ध से न भागने की प्रतिज्ञा का चिह्न रखने वाला योद्धा ।

बांनेतपण (पणो)–पु० १ बानेत होने की अवस्था या भाव २ वीरता, बहादुरी ।

बांनोळी–देखो 'बंदोळी' ।

बांनोळो–देखो 'बंदोळी' ।

बांनो–पु० [सं० वर्ण] १ वेश-भूषा, पहनावा । २ ध्वज, झण्डा, पताका । ३ दूल्हे या दुल्हिन की वेश-भूषा । ४ विवाह की रस्म प्रारम्भ करने का प्रथम दिन । ५ जाति या वर्ण का अच्छा गुण या स्वभाव । ६ गुण-स्वभाव । ७ चिह्न । ८ मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा, इज्जत । ९ मार्ग-दर्शन । उपदेश, दीक्षा । १० वंश परम्परागत कार्य या आचरण । ११ अवस्था, आयु । १२ स्वभाव । १३ चाल । १४ रीति । १५ तैयारी १६ खातर, तवज्जा । [सं० वयनम्] १७ कपड़े की बुनवाट का वह धागा जो आड़ा डाला जाता है । १८ बुनावट ।

बांफणो, (बो)–देखो 'बाफणो' (बो) ।

बांबड़–१ देखो 'बांबाड़' । २ देखो 'बांबड़ी' ।

बांबड़ी–स्त्री० [सं० बंध्या] बांझ गाय, भैंस या मादा मवेशी ।

बांबळ–वि० लाल ।

बांबराड़, बांबाड़–वि० १ जबरदस्त, जोरदार । २ शूरवीर, बलवान । ३ देखो 'बंबाड़' ।

बांबाड़ी–वि० १ चिल्लाने वाला । २ अनाड़ी । ३ देखो 'बांबड़' ।

बांबाड़ो–पु० जोर का हल्ला, चिल्लाहट ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बांबाळ–देखो 'बंबाळ' ।

बांबि, बांबी–स्त्री० १ एक लता विशेष एवं उसका फूल । २ देखो 'बंबी' ।

बांभ–देखो 'भांव' ।

बांभण, बांभरु बांभांण–१ देखो 'ब्राह्मण' । २ देखो 'भांबो' ।

बांभी, बांभोड़ी–देखो 'भांबो' ।

बांम–देखो 'वांम' ।

बांमण–१ देखो 'ब्राह्मण' । २ देखो 'वांमन' ।

बांमणगिलोतरी–स्त्री० छिपकली जाति का एक जीव विशेष ।

बांमणनेगी–वि० दुःखद ।

बांमणियाबांभी–पु० भांबियों की एक शाखा ।

बांमणियासुनार–पु० स्वर्णकारों की एक शाखा ।

बांमणी–स्त्री० १ घोड़े की ग्रयाल या दुम में होने वाला एक रोग । २ 'मोठ' में लगने वाला कीड़ा विशेष ।

बांमदेव–देखो 'वांमदेव' ।

बांमन–१ देखो 'वांमन' । २ देखो 'ब्राह्मण' ।

बांममग–देखो 'वांममारग' ।

बांममछी–स्त्री० सर्प के ग्राकार की मछली विशेष ।

बांमलो–पु० १ बैलों का एक दोष । २ उक्त दोष वाला बैल । ३ गड्ढा, छिद्र । [सं० वल्मिक] ४ दीमक का बनाया मिट्टी का ढेर । बंबीठा ।

बांमांग–देखो 'वांमांग' ।

बांमा–देखो 'वांमा' ।

बांमी–देखो 'वांमी' । —**बंध, बंध**='वांमीबंध' ।

बांमो–देखो 'वामो' ।

बांय–१ देखो 'बांह' । २ देखो 'बोय' ।

बांयो–वि० [सं०वाम] (स्त्री० बांइ, बांई, बांयी) १ बायीं ग्रोर का, वाम । २ दाहिने से उल्टा, दायें से विपरीत । ३ वाम-भाग में स्थित । ४ वामांगी । –पु० १ वाम-भाग, वामांग । २ बायें हाथ से बजाया जाने वाला तबला ।

बांध–देखो 'बांह' ।

बांवठो–वि० खिचा-खिचासा, टेढ़ा-मेढ़ा ।

बांवळ, बांवल, बांवळियो, बांवळो–पु० [सं० बर्बुर] १ लंबे-लंबे कांटों वाला एक प्रसिद्ध वृक्ष विशेष,बबूल वृक्ष । २ देखो 'बांह' ।

बांवळि, बांवळी–स्त्री० [सं० बर्बुर] बबूल जाति की झाड़ी ।

बांवो–पु० एक देश का नाम ।

बांयो–देखो 'बांयो' ।

बांस, बांसड़ो–पु० [सं० वंश] १ गन्ने के समान गांठदार लंबी लकड़ी जो प्रायः ग्रन्दर से खोखली होती है । २ इस जाति की कोई लकड़ी, लाठी । ३ सवा तीन गज का एक नाप । ४ रीढ़ की हड्डी । ५ लट्ठा, लाठ । ६ नाव खेने की लग्गी । ७ देखो 'वाय' ।

बांसठ–देखो 'बासठ' ।

बांसरो, बांसली–वि० [सं० वंश] १ बांस की, बांस संबंधी । –स्त्री० १ बांस की बनी वस्तु । २ देखो 'वंसी' ।

बांसलो–देखो 'बांसलो' (स्त्री० बांसली) ।

बांसा–१ देखो 'बांसा' । २ देखो 'बांसै' ।

बांसिबा–क्रि०वि० पीछे ।

बांसियो–देखो 'बांसियो' ।

बांसुरो, बांसुली–देखो 'वंसी' ।

बांसे, बांसै–देखो 'बांसै' ।

बांसोकड़–पु० वह नया कपड़ा जो ग्रधिक समय तक पड़ा रह जाने के कारण कमजोर हो गया हो ।

बांसोली–देखो 'वसूली' ।

बांसो–१ देखो 'बांसो' । २ देखो 'बांस' ।

बांह, बांहड़ली, बांहड़ी–स्त्री० [सं० बाहुः] १ मनुष्य के कंधे से कलई के बीच का ग्रवयव, भाग । भुजा, बाहु । २ पहनने का वस्त्र, का भुजा पर रहने वाला भाग । ग्रास्तीन । ३ सहायता, मदद । ४ वचन, वादा, ग्राश्वासन । ५ भुजबल, शक्ति ।

बांहण–देखो 'वाहन' ।

बांहतोड़–पु० [सं० बाहुः+त्रुटित] कुश्ती का एक दाव, पेच ।

बांहधर–वि० १ स्वागत या ग्रगवानी करने वाला । २ विश्वास पात्र । ३ जमानत देने वाला, जमानती ।

बांहनी–देखो 'बहांनो' ।

बांहपसाव, बांहपसाव–पु० १ लंबे हाथ बढ़ाकर परस्पर मिलने की क्रिया या भाव । २ राजा महाराजाग्रों द्वारा दिया जाने वाला सम्मान ।

बांहबर–देखो 'बांहवर' ।

बांहबळ–देखो 'बाहुबळ' ।

बांहबेली–वि० १ सहायक, मददगार । २ रक्षक, संरक्षक ।

बांहबोस–पु० १ वचन, वादा । २ विश्वास, भरोसा ।

बांहमरोड़–पु० कुश्ती का एक पेच ।

बांहळियो–देखो 'बोहळियो' ।

बांहवर–वि० [सं० बाहुःवरः] वीर, पराक्रमी ।

बांहांप्रलंब–देखो 'बाहुप्रलंब' ।

बांहाळो, बांहाळ, बांहाळो–वि० १ वीर, शक्तिशाली, पराक्रमी । २ ग्राजानबाहु ।

बांहि–देखो 'बांह' ।

बाहिण–देखो 'वाहन' ।

बाहोळो–देखो 'वसूलो' ।

बा–पु० १ पिता, बाप । २ वृद्ध पुरुष । ३ वृद्ध पुरुषों का एक संबोधन । ४ बच्चों का एक प्यार भरा संबोधन । ५ माता;

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दादी आदि के प्रति एक संबोधन । ६ बाबू का संक्षिप्त रूप । अव्य० [फा०] १ एक उपसर्ग । २ देखो 'वा' ।

बाअणी–देखो 'बाहणी' ।

बाइ–देखो 'बाई' ।

बाइक–१ देखो 'वाक्य' । २ देखो 'वायक' ।

बाइड़–देखो 'बायड़' ।

बाइर–देखो 'बैर' ।

बाइस–१ देखो 'बाईस' । २ देखो 'वायस' ।

बाइसटोळा–देखो 'बाईसटोळा' ।

बाइसो–देखो 'बाईसो' ।

बाइसो–देखो 'बाईसो' ।

बाईंटो–देखो 'बांडटो' ।

बाई–स्त्री० १ बहिन, भगिनी । २ पुत्री । ३ लड़की, कन्या । ४ माता, जननी । ५ स्त्री, औरत । ६ स्त्री या युवती के लिए प्रेम व ममत्व भरा संबोधन । ७ वेश्या, रंडी । ८ कमजोर या अशक्त पुरुष । ९ देखो 'वाई' ।

बाईजी–स्त्री० १ पिता की बहन, बूआ, फूंफी । २ पति की बहन, ननद । ३ बड़ी बहन ।

बाईजीलाल–स्त्री० राजकुमारी या सामंतों की लड़कियों का संबोधन ।

बाईमंगो–पु० १ औरतों के लक्षण या स्वभाव वाला पुरुष । २ अस्थिर चित्त व्यक्ति । ३ नाजुक मिजाज व्यक्ति ।

बाईबराड़–पु० राजकुमारी के विवाह पर प्रजा से लिया जाने वाला कर ।

बाईमंगो–पु० (स्त्री० बाईमंगी) १ बहन या बेटी के बदले धन लेने वाला व्यक्ति । २ बहन या बेटी का आश्रित रहने वाला व्यक्ति ।

बाईस–वि० [सं० द्वाविंशति] बीस व दो, बाईस । –पु० बीस व दो की संख्या, २२ ।

बाईसटोळा–स्त्री० जैन सम्प्रदाय की एक शाखा ।

बाईसमों (वौ)–वि० जो इक्कीस के बाद आता हो, बाईस के स्थान वाला ।

बाईसो–स्त्री० १ बाईस सूबों से एकत्र की गई शाही सेना । २ बाईस वस्तु या पद्यों का समूह ।

बाईसो–पु० बाईस की संख्या का वर्ष ।

बाउड़णो (वौ)–देखो 'बावड़णो' (वौ) ।

बाउड़ी–देखो 'बावड़ी' ।

बाउड़ो–देखो 'बाहु' ।

बाउची–देखो 'बापची' ।

बाउल–स्त्री० १ सुन्दर, स्त्री । २ पुतली, पंचालिका, गुड़िया । ३ देखो 'बांवल' । ४ देखो 'बावल' । ५ देखो 'वावल' ।

बाउलड़–देखो 'बावळी' ।

बाउलि, बाउली–१ देखो 'बांवळी' । २ देखो 'बावळी' ।

बाउलीउ, बाउलू, बाउळी (वौ)–देखो 'बावळी' ।

बाओतर, बाओत्तर–देखो 'बओत्तर' ।

बाओलियु (यो)–१ देखो 'बांवळ' । २ देखो 'बकुल' ।

बाक–१ देखो 'वाक' । २ देखो 'बाकी' ।

बाकचाल–देखो 'वाचाळ' ।

बाकड़ी–देखो 'बाखड़ी' ।

बाकर, बाकरउ, बाकरड़ो–१ देखो 'बकरी' । २ देखो 'बकर' ।

बाकरियो–१ देखो 'बकरी' । २ देखो 'बकरियो' ।

बाकरू, बाकरी–देखो 'बकरी' ।

बाकळ–१ देखो 'वाकळ' । २ देखो 'बाकळा' ।

बाकळा, बाकळी–पु० [सं वाष्कल] १ उबाला हुआ अनाज । २ देवी-देवताओं को चढ़ाई जाने वाली बलि ।

बाकळांणी–देखो 'बाकवांणी' ।

बाकस–पु० १ रस रहित, शुष्क । २ स्वाद रहित । ३ रस निकला हुआ गन्ना, रसरहित गन्ना ।

बाकसाळी–देखो 'बाकसाळी' ।

बाकार–देखो 'वाकार' ।

बाकारणी (वौ)–देखो 'वाकारणो' (वौ) ।

बाकी–वि० [अ०] १ अवशिष्ट, शेष । २ कमी । ३ अन्य । ४ ऋण के रूप में बकाया । —स्त्री० १ बड़ी संख्या में से छोटी घटाने की क्रिया । २ बड़ी संख्या में छोटी संख्या घटाने पर निकलने वाला परिणाम । ३ बकाया रकम, ऋण । —अव्य० १ लेकिन, मगर, परन्तु । २ अन्यथा ।

बाकुळ, बाकुल, बकुळा (ला, ळो)–देखो 'बाकळा' ।

बाको–पु० [सं० वक्त्र] १ मुख, मुंह । २ खुला हुआ मुंह । ३ चेहरा । ४ थूथन, चोंच ।

बाखड़, बाखड़ी–स्त्री० [सं० बष्कयणी] दूध देना बंद कर देने की अवस्था वाली गाय या भैंस । —जांन–स्त्री० वयस्क दूल्हे की बरात (बिश्नोई) ।

बाखड़ी–पु० 'बाखड़ी' गाय या भैंस का दूध ।

बाखर–पु० १ धन-दौलत, जायदाद । २ कई वस्तुओं का समूह, ढेर । ३ मिश्रित वस्तुओं की मात्रा ।

बाखरी–स्त्री० १छोटा मकान, छोटा आवास । २ देखो 'बाखर' ।

बाखळ–पु० १ गांव के बीच का चौक । २ गांव के बाहर का वह स्थान जहां जंगल में चरने जाने वाले मवेशी एकत्र होते हैं । ३ छत के आगे बना आहाता ।

बाखांण–देखो 'बखांण' ।

बाखांणणो (वौ)–देखो 'बखांणणो' (वौ) ।

बाखांणि–देखो 'बखांण' ।

बाखामोड़–स्त्री० [सं० वक्त्र-जल्पः] १ व्यर्थ का विवाद । वाद विवाद, तर्क । २ बकवाद-प्रलाप । ३ झगड़ा, फिसाद ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाखार, बाखारी–देखो 'मखारी'।

बाखोट, बाखोटियो–पु० [सं० बाह्लपोटलिक] हिरन का बच्चा मृगशावक।

बाखोळी–स्त्री० बीमार या घायलों को उठाने की झोली विशेष।

बागंबर–देखो 'बाघंबर'।

बाग–पु० [फ़ा०] १ बगीचा, उद्यान, उपवन। —स्त्री० [सं० वल्गा] २ घोड़े आदि की लगाम, रास। [सं० वाक्] ३ वाणी, गिरा। ४ सरस्वती। ५ देखो 'बरग'। ६ देखो 'बाघ'।

बागड़–स्त्री० १ बच्चों को डराने के लिये बताया जाने वाला एक काल्पनिक जंतु। २ सारंगी वाद्य का एक उपकरण। ३ वन बिलाव। ४ कायर व्यक्ति। ५ देखो 'बागंड़'। ६ देखो 'बागळ'।

बागड़णी (बी)–देखो 'बागड़णी' (बी)।

बागड़या–स्त्री० ढाढ़ी जाति की एक शाखा।

बागड़ियो–१ देखो 'बागड़ियो'। २ देखो 'बागड़'।

बागड़ी–देखो 'बागड़ी'।

बागड–१ देखो 'बागड़'। २ देखो 'बागड'।

बागडोर–स्त्री० [सं० वल्गा-दोर] १ लगाम, रास। २ बो'री। ३ किसी कार्य का उत्तरदायित्व।

बागणो (बो)–देखो 'बाजणो' (बो)।

बागपकड़ाई–स्त्री० दूल्हे की घोड़ी की लगाम पकड़ने का नेग।

बागर–स्त्री० १ घास या चारे का चुना हुआ गोल ढेर। २ चारा गाह, घास-भण्डार। ३ कड़बी के पुआलों का 'पचासा'। ४ ऊंट की गर्दन के बाल। ५ ऊंट की पूंछ के बाल। ६ जाल, फंदा। ७ बंध्या गाय। ८ नदी किनारे की ऊंची भूमि। ९ ऊंची भूमि। १० देखो 'बागळ'। ११ देखो 'बागड़'।

बागरी–पु० [सं० वागुरिका] १ शिकारी, व्याध। २ देखो 'बागड़ी'।

बागळ–स्त्री० १ उल्लू जाति का एक पक्षी विशेष। २ चमगादड़।

बागळी–स्त्री० १ कंधे पर लटका कर पीठ पर डालने की थैली विशेष। २ रहट की माल में बंधे जल पात्रों के नीचे का हिस्सा।

बागळो (लो)–पु० १ यात्रा में साथ ले जाने का जल-पात्र। २ देखो 'बैक'।

बागवं, बागवांन–पु० [फ़ा० बागवान] १ माली, बागवान। २ बाग-बगीचों में पौधों की देख-भाल करने वाला व्यक्ति, कर्मचारी।

बागवांनो–स्त्री० [फ़ा०] १ बागवान का कार्य। २ बगीचों में पेड़-पौधे लगाना, पानी देने आदि का कार्य।

बागहीण–वि० [सं० वाक्-हीन] १ मूक, गूंगा। [सं० वल्गा-हीन] २ बिना लगाम का, मुक्त।

बागांसपूर–वि० तेजगति वाला, वेगवान। –पु० तीव्र गति वाला ऊंट।

बागाइत, बागात, बागाती, बागायत–पु० [फ़ा० बागाइत] १ बाग, बगीचे, उपवन आदि। २ सार्वजनिक (सरकारी) बगीचों की देख-भाल करने वाला विभाग। ३ बगीचा लगाने की भूमि।

बागी–वि० [फ़ा० बाग] १ बाग, बगीचा संबंधी। [अ०] २ बगावत या विद्रोह करने वाला, विद्रोही। ३ क्रांतिकारी, राजद्रोही। ४ विरोधी, विपक्षी। ५ आज्ञा की अवहेलना करने वाला। —पु० १ लुटेरा। २ सुरणाई वाद्य के झाबे में बंधी रहने वाली रस्सी।

बागुर–देखो 'बागर'।

बागेलो–देखो 'बाघेलो'।

बागेसरी, बागेसुरी, बागेस्वरी–देखो 'बागोस्वरी'।

बागोटियो–देखो 'बाखोट'।

बागोरा–स्त्री० भाट जाति की एक शाखा।

बागोस–पु० पशुओं द्वारा की जाने वाली जुगाली।

बागोसणो (बो)–क्रि० [सं० वोदगलनम्] पशुओं का जुगाली करना।

बागोला–पु० गडरियों द्वारा दिया जाने वाला कर।

बागो–पु० १ प्राचीन समय का एक पहनावा, अंगा। २ दूल्हे, दुल्हिन की पोशाक। ३ पहनावा, पोशाक। ४ बड़ा छेद। ५ मार्ग, रास्ता। ६ चुननदार घेरे वाला पुरुषों का एक पहनावा।

बाघंबर–पु० [सं० व्याघ्रांबर] सिंह चर्म का वस्त्र।

बाघ–पु० [सं० व्याघ्र] (स्त्री० बाघण, बाघणी) १ सिंह, शेर। २ दूहा नामक छन्द विशेष।

बाघड़–१ देखो 'बागड़'। २ देखो 'बागड'।

बाघचरम–पु० [सं० व्याघ्र चर्म] सिंह की चर्म, बाघंबर।

बाघनख–पु० [सं० व्याघ्रनख] १ शेर या चीते का नख जो बच्चों के गले में बांधा जाता है। २ एक प्रसिद्ध गंध द्रव्य। ३ थूहर नामक वृक्ष या पौधा। ४ एक प्रकार का कंद। ५ देखो 'बाघनखो'।

बाघनखो–पु० [सं० व्याघ्रनख] शेर के पंजेनुमा स्टील का एक नुकीला शस्त्र विशेष।

बाघमूरो–पु० केसरीसिंह।

बाघमुखी, बाघमुखो–पु० [सं० व्याघ्रमुखं] सिंह के मुख के समान मुख वाली तोप। –वि० सिंह के मुख वाली/वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाघमूत–पु० [सं० व्याघ्र-मूत्र] १ सिंह का मूत्र । २ नर मूत्र, आदमी का मूत ।

बाघवाहिणी–स्त्री० [सं० व्याघ्र वाहिनी] १ पार्वती । २ देवी, दुर्गा ।

बाघिनीकुच–पु० [सं० व्याघ्री-कुच] १ शेरनी के स्तन । २ नौ की संख्या* ।

बाघेलखंड–पु० मध्य भारत का एक प्राचीन प्रदेश ।

बाघो–देखो 'बागो' ।

बाड़–स्त्री० [सं० वाटम्] १ झड़बेरी के कांटे या कंटीली झाड़ी के सूखे पौधों का बनाया हुआ आहता, आड । २ सीमा, हद । ३ आहाता । ४ ढेर । ५ कतार । ६ गन्ना । ७ गन्ने की फसल या गन्ने का खेत ।

बाड़णो (बो)–क्रि० १ घुसाना, धंसाना । २ प्रवेश करवाना, पैठाना ।

बाड़नळ–देखो 'बड़वानळ' ।

बाड़लियो–१ देखो 'बाड़लो' । २ देखो 'बाड़ो' ।

बाड़लो, बाड़सो–पु० स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष ।

बाड़व, बाड़वो–स्त्री० [सं० वाडवं] १ अग्नि, आग । २ समुद्र की अग्नि, बड़वाग्नि । ३ विद्युत, बिजली । ४ घोड़ियों का समूह । ५ ब्राह्मण ।

बाड़ियो, बाड़ियो–पु० १ फोग पौधे की, फूल आने से पूर्व की दशा । २ शौच जाते समय पानी ले जाने का बर्तन । ३ देखो 'बाड़ो' ।

बाड़ी–स्त्री० [सं० वाटिका] १ उपवन, बगिया, फूलबगिया । २ घर । ३ गांव के समीप का छोटा खेत । ४ साग-सब्जी बोने का छोटा खेत । ५ तंबू के चारों ओर लगने वाली कनात । ६ मिट्टी का टोंटीदार बर्तन । ७ आबदस्त का पानी रखने का बर्तन । –वि० कड़वी । स्वाद में तीक्ष्ण ।

बाड़ू–वि० अड़ियल, उद्दण्ड । –पु० १ एक प्रकार का पत्थर । २ एक प्रकार की कृषि भूमि ।

बाड़ोटियो–देखो 'बाड़ो' ।

बाड़ोतरो–पु० [सं० द्वयुत्तर] १ बारह का वर्ष । २ बारह का पहाड़ा । ३ एक सौ दो की संख्या । ४ एक सौ बारह की संख्या । –वि० बारहवां ।

बाड़ो–वि० (स्त्री० बाड़ी) १ कर्कस, कटु । २ कटुभाषी । ३ कड़वा, खारा, तीक्ष्ण । –पु० [सं० वाट] १ दीवार या कंटीली बाड़ से घिरा क्षेत्र, आहाता । २ रहट के समीप सब्जी आदि लगाने का स्थान । ३ सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर बना रहने वाला वृत्त । ४ घर, भवन ।

बाध–देखो 'बाच' ।

बाधक–वि० १ मुंह से खाने वाला । २ अन्याय से पैसा खाने वाला । ३ देखो 'वाचक' ।

बाधण–देखो 'बाचन' ।

बाधणी (बो)–देखो 'बांचणी' (बो) ।

बाधबंध–देखो 'बाचाबंध' ।

बाधरी–देखो 'बहचराय' ।

बाधा–देखो 'बाचा' । –बंध, बंधी='बाचाबंधी' ।

बाधियो, बाधों, बाध्यो–पु० १ प्यार भरा चुम्बन । २ देखो 'बाचो'

बाछ–१ देखो 'बच्चो' । २ देखो 'वत्स' ।

बाछड़धायो–वि० आर्द्र, नम ।

बाछड़ियो, बाछड़ू, बाछड़ो, बाछड़ू–पु० [सं० वत्स] (स्त्री० बाछड़ी) १ गाय का बछड़ा । २ चमड़े की खोल में भूसा भर कर बनाया हुआ बछड़ा । ३ देखो 'वत्स' ।

बाछळ, बाछल–देखो 'वात्सल्य' ।

बाछियो–देखो 'वत्स' ।

बाछुबाई, बाछूबाई–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

बाछो–देखो 'वत्स' ।

बाजंत्र–देखो 'वाद्ययंत्र' ।

बाजंद बाजंत्र, बाज–पु० [सं० वाजिन्, वाजः] (स्त्री० बाजणी) १ घोड़ा, अश्व । २ तीर में लगने वाला पर । ३ बाजे की ध्वनि । ४ बजाने का ढंग या तरीका । ५ वेग । ६ सितार का पहला तार । ७ बाजा, वाद्य । ८ सूत के तानों के बीच लगाई जाने वाली लकड़ी । ९ वस्त्र । [फा०] १० एक हिंसक पक्षी, शिकरा, बाज, श्येन । ११ कर, महसूल । –वि० १ वंचित, रहित । २ चतुर, निपुण, होशियार । ३ विशिष्ट, कोई-कोई । –क्रि० वि० १ जल्दी, शीघ्र । २ बगैर, बिना । ३ पीछे, उल्टे । –प्रत्य० ४ संज्ञा शब्दों के पीछे लगकर विशेषण बनाने वाला प्रत्यय ।

बाजउठ–देखो 'बाजोठ' ।

बाजण, बाजणी, बाजणी–स्त्री० [सं० वादन] १ बाजने की क्रिया या भाव । २ बजाने का ढंग, तरीका । ३ किसी वाद्य की ध्वनि । ४ ध्वनि युक्त वस्तु, पात्र । –वि० [सं० वाद्य] १ बजने वाली । २ ध्वनि करने वाली । ३ ध्वनिमय ।

बाजणो (बो)–क्रि० [सं० वादनं] १ बाजे का बजना, ध्वनि होना । २ समय सूचक घंटे का बजना । ३ शस्त्र चलना, प्रहार होना । ४ लड़ना, भिड़ना, युद्ध करना । ५ वीर गति प्राप्त होना । ६ प्रसिद्ध, विख्यात होना । ७ ललकारना, पुकारना । ८ कहलाना, पुकारा जाना । ९ गतिमान होना, चलना । १० पहुंचना, उपस्थित होना ।

बाजत्र–देखो 'वाद्ययंत्र' ।

बाजदार–वि० [फा०] १ शाही कर एकत्र करने वाला, बाजगीर । २ बाज रखने वाला । ३ घुड़ सवार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाजबट–देखो 'बजोट'।

बाजर–देखो 'बाजरी'।

बाजराज–पु० [सं० बाजिन्-राजः] घोड़ा, अश्व।

बाजरियोबंट–पु० तलवार की एक प्रकार की पैनी धार।

बाजरियो–पु० १ बाजरी नामक अन्न के साथ पकाया हुआ मांस। २ बाजरी का खीच। ३ करील वृक्ष के छोटे फूल।

बाजरी, बाजरो–स्त्री० १ मरुस्थल में होने वाला प्रसिद्ध अनाज। २ उक्त अनाज का पौधा।

बाजवट–देखो 'बाजोट'।

बाजसाला–स्त्री० अश्व शाला।

बाजांन–पु० [सं० वाद्य] वाद्य ध्वनि।

बाजाज–देखो 'बजाज'।

बाजाब्ता–क्रि० वि० [फा०] १ नियमानुसार, नियम के अनुरूप। २ हिफाजत से।

बाजार–पु० [फा०] १ वह स्थान या क्षेत्र जहां वस्तुओं के क्रय-विक्रय की दुकानें हों। २ वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिये निश्चित स्थान व अवधि के लिये लगने वाली दुकानें।

बाजारी, बाजारू–वि० [फा०] १ बाजार का, बाजार संबंधी। २ बाजार में बैठने वाला। ३ मर्यादाहीन, अशिष्ट। ४ निम्न स्तर का, साधारण। ५ खुले आम व्यभिचार करने वाला। ६ दिखावटी।

बाजिब, बाजिब्र–१ देखो 'वाज'। २ देखो 'बाजिदो'।

बाजिदो–वि० [फा० बाजिद] १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ कुख्यात। ३ बोलने वाला, वक्ता। ४ आवाज करने वाला, ध्वनिमान। ५ खेलने वाला, खिलाड़ी। –पु० लौटन कबूतर।

बाजि–१ देखो 'बाज'। २ देखो 'बाजी'।

बाजित्र–देखो 'वाद्ययंत्र'।

बाजिया–स्त्री० गेहूं की एक जाति।

बाजी–स्त्री० [फा०] १ दो पक्षों में हार-जीत के प्रति होने वाली शर्त। दांव। २ खेल का क्रम। ३ खेल में दांव लगाने का अवसर। ४ खेल। ५ होड़, प्रतिस्पर्धा। ६ वाद-विवाद। ७ मौका, अवसर। ८ विजय, जीत। ९ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। १० ताश का खेल। —पु० ११ वृद्ध पुरुष। १२ पूर्वज, दादा। १३ करदाता। –प्रत्य० १ संज्ञा शब्दों के पीछे लगने वाला शौक या व्यसन सूचक प्रत्यय। २ देखो 'बाज'।

बाजीकर, बाजीकरण–स्त्री० [सं० बाजीकरण] १ एक प्रकार की औषधि विशेष। २ वह प्रक्रिया जिससे पुरुष में घोड़े की शक्ति आ जाती है।

बाजीगर–पु० [फा०] १ कसरत के खेल करने वाला, नट तमाशगीर। २ जादूगर, तांत्रिक। ऐन्द्रजालिक। ३ मदारी। ४ हास्य अभिनेता, कौतुकी। ५ कव्वालों की एक जाति विशेष।

बाजीसा–पु० वृद्ध एवं आदरणीय पुरुष।

बाजु–१ देखो 'बाजू'। २ देखो 'बाजूबंध'।

बाजुबंद, बाजुबंध–देखो 'बाजूबंध'।

बाजुवांणो (णै)–क्रि० वि० पार्श्व में बगले में।

बाजू, बाजूडी–पु० [फा०] १ भुजा, बांह, बाहु। २ पार्श्व, बगल ३ आस-पास, पड़ोस। ४ ओर, तरफ। ५ सेना के एक ओर का भाग। ६ मित्र, सहायक। ७ पक्षी का डैना। ८ देखो 'बाजूबंध'।

बाजूजोसण–पु० हाथ का आभूषण।

बाजूपुरी–पु० १ सिंह की एक जाति विशेष। २ इस जाति का सिंह।

बाजूबंध (बंध, बंधन)–पु० भुजा का आभूषण।

बाजे–वि० [अ० बअज] कई-कई। –सर्व० किसी-किसी। –क्रि०वि० कभी-कभी।

बांजेजमा–पु० प्रजा से लिया जाने वाला सरकारी कर।

बाजोट, बाजोटियो, बाजाटो, बाजोठ, बजोठयो–पु० लकड़ी की चौकी।

बाजो–पु० [सं० वाद्य] १ वाद्य, किसी प्रकार का बाजा। २ फूंक कर बजाने का खिलौना।

बाज्यो–पु० [देश०] लम्बे ओठों का एक ऊंट विशेष।

बाझणो (बो)–क्रि०वि० [सं० बंध्] १ बनना, रचा जाना, गठित होना। २ संगठित या व्यवस्थित होना। ३ सुरक्षित होना। ४ बंधन युक्त होना, बांधा जाना। ५ वृद्धि को प्राप्त होना।

बाट–पु० १ करील वृक्ष के लाल फूल। २ करील वृक्ष की बौर। ३ जाल वृक्ष की बौर। ४ छाछ और जौ के आटे के योग से बना ठंडा पेय पदार्थ। ५ जौ का दलिया, खिचड़ी। ६ गेहूं का दलिया। ७ देखो 'वाट'।

बाटकडी–देखो 'बाटकी'।

बाटकी–स्त्री० कटोरी, प्याली।

बाटकीटाळ–वि० जाति बहिष्कृत।

बाटको–पु० धातु का बड़ा कटोरा, प्याला।

बाटड़, बाटडली, बाटड़ी–देखो 'बाट'।

बाटणो (बो)–क्रि० १ बिक्री की आय करना, बेच कर पैसा लेना। २ देखो 'बांटणो' (बो)।

बाटबड़–स्त्री० तीतर के आकार का एक पक्षी विशेष।

बाटमो–वि० (स्त्री० बाटमी] १ कठोर शब्द कहने वाला, कटु भाषी। २ टेढ़ा, वक्र, विरुद्ध।

बाटलो–पु० १ बोतल। २ देखो 'बाटी' ३ देखो 'बाट'।

बाटा–पु० (व.व.) स्त्रियों के कानों के आभूषण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाटाबरड़ी–पु० अव्यवस्थित कार्य ।

बाटिका–देखो 'वाटिका' ।

बाटियो–पु० [स० वट] १ कई तहों वाली मोटी रोटी । २ बाटी, रोटी । ३ रोटी की तरह पिचका हुआ पदार्थ । ४ देखो 'बाटी' ।

बाटी–स्त्री० [सं० वट,वाटी] १ गोली, पिण्ड । २ अनाज विशेष । ३ चपाती, रोटी । ४ गेहूं के आटे की गेंदनुमा रोटी । ५ देखो 'वाट' ।

बाटीकोळो–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का कद्दू ।

बाटी–पु० [सं० वट] १ गेहूं के आटे का गोल रोटा, वाटी । २ एक प्रकार घास । ३ देखो 'बाट' ।

बाठो–वि० (स्त्री० बाठी) १ धोंधा, उल्टा । २ देखो 'बाटो' ।

बाड–स्त्री० १ ऐंचापण । २ देखो 'बाढ़' । ३ देखो 'बाड़' ।

बाडणी (बो)–देखो 'बाढ़णी' (बो) ।

बाडबेय–देखो 'वाडवेय' ।

बाडब–देखो 'बाड़व' ।

बाडोटेड़ी, बाडोटेरी, बाडोतेड़ी, बाडो–वि० (स्त्री० बाडीटेरी) १ ऐंचाताना, २ आड़ा, तिरछा ।

बाढ़–स्त्री० [सं० वर्द्धन] १ बढ़ने की क्रिया या भाव । २ अधिक वर्षा से होने वाला जल-प्लावन, नदी की बाढ़ । ३ तोप आदि के निरन्तर छूटने की क्रिया । ४ शस्त्र की धार । ५ शस्त्र का टुकड़ा । ६ निरन्तर होने वाला शस्त्र प्रहार । ७ घाव, क्षत । ८ छेद । ९ युद्ध । १० पेचिस रोग से पेट में होने वाली ऐंठन । मरोड़ । ११ व्यापारिक लाभ, वृद्धि । १२ सेवा या नौकरी के बदले मिलने वाली जागीर । १३ विभाग, हिस्सा । १४ देखो 'वादी' । —वि० [सं०वाढ़] १ दृढ़ । २ अत्यधिक, अधिक । ३ उच्च स्वर युक्त ।

बाढ़कढ़–स्त्री० तलवार, खड्ग ।

बाढ़ण–स्त्री० [सं० वध्] १ काटने की क्रिया या भाव । २ मारने, संहार करने या हिंसा करने की क्रिया । ३ कतरण । ४ वृद्धि ।

बाढ़णो–वि० [सं० वध्] १ काटने वाला । २ मारने, संहार करने वाला ।३ वृद्धि करने वाला ।–पु० काटने का उपकरण ।

बाढ़णो (बो)–क्रि० [सं० वध्] १ काटना, काटकर टुकड़े करना । २ मारना, संहार करना । ३ प्रतिशोध लेना, वैर लेना । ४ समाप्त या नष्ट करना । ५ वृद्धि होना, बढ़ना । ६ घाव करना । ७ बांटना, पीसना ।

बाढ़ाक–वि० [सं० वर्धक] १ वीर । २ मारने संहार, करने वाला । ३ काटने, टुकड़े करने वाला । ४ काटने में दक्ष, निपुण ।

बाढ़ाणी (बो)–१ देखो 'बाढ़णो' (बो) । २ देखो 'बढ़ाणी' (बो) ।

बाढ़ाळ–देखो 'बाढ़ाळी' ।

बाढ़ाळी–स्त्री० [सं० बाधु] १ कटारी । २ तलवार, खड्ग ।

बाढ़ाळी–वि० १ वीर, योद्धा । २ काटने वाला । ३ तेज धार वाला, पैनी धार वाला । ४ तलवारधारी ।

बाढ़ी–वि०[सं० वर्धं] कटी हुई । –पु० [सं० वर्धकि] १ बढ़ई, तक्षक । २ देखो 'बादी' ।

बाढ़ेत, बाढ़ेती–पु० १ नौकरी या सेवा के बदले दी जाने वाली भूमि । २ ऐसा भूमि पाने वाला व्यक्ति ।

बाणी (बो)–देखो 'बावणी' (बो) ।

बात, बातड़ली बातड़ी–स्त्री० [सं० वार्त्ता] १ किसी विषय को सूचित करने वाला सार्थक शब्द । वाक्य, वाणी, वचन, बोल, कथन । २ चर्चा, जिक्र, प्रसंग । ३ वार्तालाप, कथोपकथन । ४ विचार–विमर्श । ५ मामला, माजरा, मसला । ६ विषय । ७ समाचार, सूचना, खबर, संदेश ।८ अफवाह, प्रवाद ।९ वृत्तान्त, हाल-चाल । १० गुप्त वार्त्ता, रहस्य, भेद । ११ अभिप्राय, आशय, भाव । १२ संबंध, लगाव । १३ व्यवहार, बर्ताव, सम्पर्क । १४ स्वभाव,प्रकृति, लक्षण, चरित्र, आचरण । १५ विशेषता, खूबी । १६ प्रशंसा, तारीफ, यश, कीर्ति । १७ सामर्थ्य, हस्ती, हैसियत । १८ मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा । १९ वचन, प्रमाण, साख, विश्वास, २० प्रभाव, धाक, रौब । २१ प्रतिज्ञा, प्रण, वादा, कौल । २२ कार्य, कर्म, क्रिया । २३ कोई घटना, संयोग । २४ कारण, हेतु । २५ प्रश्न, सवाल । २६ अभिलाषा, कामना, इच्छा, चाह । २७ मिस, बहाना । २८ विचार । २९ भाव । ३० नसीहत, सीख, शिक्षा । ३१ आदेश, हुक्म । ३२ उक्ति, चमत्कार पूर्ण कथन । ३३ अवस्था, परिस्थिति । ३४ समस्या, उलझन । ३५ विवाद, हुज्जत । ३६ सलाह, सुझाव । ३७ स्पष्टीकरण । ३८ उल्लेख । ३९ व्यवस्था, प्रबंध । ४० अभिलेख । ४१ वस्तु, पदार्थ, चीज । ४२ मूल कारण, बीज । ४३ वस्तु का मूल्य, दाम, कीमत । ४४ उचित, ठीक । ४५ निश्चय । ४६ आवश्यकता, जरूरत । ४७ उपाय, तरकीब, तरीका । ४८ तरह, भांति, प्रकार । ४९ वास्तविकता, सही मतलब, तत्त्व । ५० सामान्य बात । ५१ क्रिया-कलाप । ५२ बहकावा, धोखा, प्रवंचना । ५३ अन्तर कथा । गूढ़ आशय । ५४ चुगली । ५५ इतिवृत्त, इतिहास । ५६ प्रेमाख्यान । ५७ धार्मिक या पौराणिक आख्यान । ५८ कहानी । लघु कथा । ५९ उपन्यास । ६० देखो 'वात' । —कर, कार–वि० बातें करने वाला, वार्ताकार ।

बातचीत–स्त्री० [सं० वार्त्ता+चित] किसी मामले पर की जाने वाली बातें, विचार–विमर्श ।

बातप–देखो वातप'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बातपोस–वि० [सं० वार्त्ता पोषिन्] १ बात कहने में चतुर, दक्ष। २ बातूनी।

बातबतळावण–स्त्री० वार्तालाप, बातचीत, सम्बोधन। बोल-चाल।

बातलड़ी देखो 'बात'।

बातलाणी (बी)–देखो 'बतलाणी' (बी)।

बातळाव–देखो 'बतळाव'।

बातविगत–स्त्री० १ समाचार। २ हाल-चाल। ३ विवरण।

बातायण–देखो 'वातायण'।

बाती–१ देखो 'वत्ती'। २ देखो 'बात'। ३ देखो 'बाती'।

बातूनी–वि० [सं० वार्त्ता-उन्मद] १ बातों का शौकीन, रसिक। २ व्यर्थ बातचीत करने वाला, वाचाल।

बातूल–देखो 'वातुल'।

बात्ती–१ देखो 'बात'। २ देखो 'बात्यो'।

बात्यो–पु० घोड़ी की योनि।

बाथंबाथ–देखो 'बाथोबाथ'।

बाथ, बाथड़, बाथड़ी–स्त्री० [सं० बाहूत्था,बाहूत्थ] १ दोनों हाथों को पूरा फैलाकर बनाया गया वृत्त। २ आलिंगन के समय की बाहुओं की मुद्रा, बाहुपाश, अंक। ३ बाहुपाश में समाने वाला पदार्थ। ४ आलिंगन। ५ भुजा, बांह। ६ युद्ध।

बाथट–देखो 'बाथोट'।

बाथटणो (बो)–देखो 'बाथोटणो' (बो)।

बाथमो–वि० [सं० बाहूत्थः] बाथ में भरने या समाने योग्य।

बाथळकुंडियो (कूंडियो)–पु० एक खेल विशेष।

बाथां, बाथियां–स्त्री० [सं० बाहूत्थ] १ कुश्ती। २ गुत्थमगुत्था। ३ द्वन्द्वयुद्ध। ४ बाहुपाश। ५ मल्ल युद्ध।

बाथूं–देखो 'बाथ'।

बाथेड़ो–पु० १ झगड़ा, हुज्जत। २ किसी प्रकार का श्रम, व्यर्थ श्रम। ३ मगज पच्ची। ४ हाथापाई। ५ उठा-पटक।

बाधै–देखो 'बाथां'।

बाधोड़ो–देखो 'बाथेड़ो'।

बाथोट–पु० [सं० बाहूत्थः] बाहुपाश।

बाथोटणो (बो)–क्रि० [सं० बाहूत्थापन] १ युद्ध करना, लड़ना। २ बाहुपाश में आबद्ध करना, आलिंगन करना। ३ कुश्ती लड़ना।

बाथोबाथ–वि० गुत्थमगुत्था। —पु०– १ द्वन्द्व युद्ध का एक दाव। २ कुश्ती। ३ आलिंगन, आलिंगन की एक क्रिया।

बाध्यां–देखो 'बाथां'।

बाद–वि० [अ० बा'द] १ अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ। २ अतिरिक्त। —क्रि०वि० १ अनन्तर, पीछे, पश्चात्। २ सिवाय, अलावा। —पु०१ घटाने की क्रिया। २ घटाने की मात्रा। ३ तोले हुए पदार्थ में से कुछ छूट की जाने वाली मात्रा। [फा०बाद] ४ पवन, वायु। ५ देखो 'वाद'।

बादकाकुल–पु० ताल का एक भेद।

बादकेसर–पु० एक प्रकार का पशु रोग।

बादगीर–वि० १ झगड़ा करने वाला, झगड़ालु। २ विवाद करने वाला।

बादण–१ देखो 'बादळ'। २ देखो 'वादण'।

बादणी (बी)–१देखो 'वादणी' (बी)। २ देखो 'बांधणी' (बी)।

बा'बर–देखो 'बहादुर'।

बाबर–वि० [सं०] १ बेर का, बेर संबंधी। २ कपास का, कपास संबंधी। ३ स्थूल, मोटा। ४ एकेन्द्रियादि जीव (जैन)। –पु० १ बेर का पेड़ व फल। २ कपास का पौधा, कपास। ३ रुई। ४ कपड़ा। ५ रेशम। ६ पुद्गल के छः भेदों में से एक। ७ देखो 'बादल'।

बादरायण–पु० [सं०] वेदव्यास का एक नाम।

बा'दरी–देखो 'बहादुरी'।

बादरी–स्त्री० [सं० वभ्री] १ चमड़े का तस्मा विशेष। २ देखो 'बादळ'।

बादरी–देखो 'बादळ'।

बादळ–पु० [सं० वारिद] १ मेघ, घन, बादल। २ दूधिया रंग का पत्थर विशेष। —**भरणी, वरणी, वरणी**–वि० जिसका रंग-वर्ण बादल जैसा हो।

बादळमहल (मैं'ल)–पु० राज प्रासाद का सबसे ऊंचा बना कक्ष।

बादळांवाळी–पु० एक बाल रोग विशेष।

बादळाईपारचो–पु० जरीदार वस्त्र विशेष।

बादळि, बादळियो, बादळो–देखो 'बादळ'।

बादळी–पु० १ सोना, चांदी आदि का चमकीला तार, कलाबतू कामदानी तार। २ उक्त तारों का बना वस्त्र। ३ चमकीले तारों का बुरादा। [सं० वारिदः] ४ यात्रा के समय साथ ले जाने का जल-पात्र, केतली। ५ देखो 'बादल'।

बादल्ल–देखो 'बादळ'।

बादसा, बादसाह–पु० [फा० बादशाह] १ बड़े राज्य का शासक सम्राट, राजाओं का राजा। २ निरंकुश एवं स्वतंत्र व्यक्ति। ३ किसी वर्ग या कार्य क्षेत्र का सबसे बड़ा व्यक्ति। ४ उदार एवं श्रेष्ठ पुरुष। ५ शतरंज का सबसे बड़ा मोहरा। ६ ताश का एक बड़ा पत्ता।

बादसाहत–स्त्री० [फा० बादशाहत] १ बादशाह का कार्य शासन, हुकूमत। २ बादशाह का राज्य।

बादसाही–स्त्री० [फा० बादशाही] १ बादशाह का शासन। २ बादशाह होने की अवस्था। —वि० १ बादशाह का बादशाह संबंधी। २ बादशाहों के समान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बादस्या–देखो 'बादसाह'।
बादस्याई–देखो 'बादसाही'।
बादस्याह–देखो 'बादसाह'।
बादस्याही–देखो 'बादसाही'।
बादाम–स्त्री० [फा० बादाम] १ एक प्रसिद्ध सूखा मेवा। २ इस मेवे का वृक्ष।
बादामी–वि० [फा० बादामी] १ बादाम का, बादाम संबंधी। २ बादाम के आकार-प्रकार का। ३ बादाम के रंग का। ४ बादाम के योग से बना। –पु० १ बादाम के रंग का घोड़ा। २ शाही महलों में रहने वाले ख्वाजाओं का एक भेद। ३ जलाशयों के किनारे रहने वाली एक चिड़िया विशेष।
बादाळक–देखो 'बादाळक'।
बादि–देखो 'बादी'।
बादिसाह–देखो 'बादसाह'।
बादिसाही–देखो 'बादसाही'।
बादिस्याह–देखो 'बादसाह'।
बादिस्याही–देखो 'बादसाही'।
बादी–पु० [सं० वादिन्] १ न्यायालय में वादी पेश करने वाला व्यक्ति, दावेदार, मुद्दई। २ भाष्यकार, टीकाकार। ३ शिक्षक। ४ संगीत में किसी राग का मुख्य स्वर। ५ शरीर में होने वाला वात विकार। ६ शरीरस्थ वायु। ७ लुहारों का एक औजार। ८ चमारों के नट, ढेढिया नट। ९ अन्न पर लिया जाने वाला एक प्रकार का ब्याज, ऊप। –अव्य० व्यर्थ में, निरर्थक। फालतू। –वि० [सं० वादिन्] १ बोलने वाला, वक्ता। २ झगड़ा करने वाला, विवादी। ३ हठी, जिद्दी, दुराग्रही। ४ किसी पर अभियोग लगाने वाला। ५ प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी, शत्रु। ६ प्रारम्भ या शुरूआत करने वाला। ७ किसी कार्य में पहल करने वाला। ८ किसी विषय का प्रस्तावक। ९ किसी वाद को मानने वाला। [सं० वात्] १० वायु, संबंधी। ११ शरीर में वायु कारक। १२ वायु ग्रस्त। १३ विद्वान, पंडित। १४ निपुण, दक्ष। १५ बधिया किया हुआ, खस्सी। —कर–वि० शरीर में वायु कारक। –पु० वायुकारक खाद्य।
बादीगर–देखो 'बाजीगर'।
बादीलो–वि० [सं० वाद + घन] (स्त्री० बादीली) १ हठी, जिद्दी। २ स्थूल काय, मोटा। ३ गर्वीला, अभिमानी।
बादुर–स्त्री० चमगादड़।
बादेलो–पु० एक प्रकार का तकिया।
बादोबाद–पु० १ प्रतिस्पर्धा, होड़। २ विवाद, बहस।
बादो–१ देखो 'बाधो'। २ देखो 'वादी'।
बाध–१ देखो 'बाधा'। २ देखो 'वाद'।
बाधक–वि० [सं०] १ रुकावट डालने वाला, विघ्न डालने वाला, रोडा अटकाने वाला। २ दुखदायी, हानिकारक। ३ मिटाने वाला। ४ छेड़-छाड़ करने वाला। ५ स्त्रियों का एक प्रजनन संबंधी रोग।
बाधकता–पु० [सं० बाध] १ बाधक का कर्म, क्रिया। २ देखो 'बाधा'।
बाधणो (बो)–१ देखो 'बधणो' (बो)। २ देखो 'बंधणो' (बो) ३ देखो 'बांधणो' (बो)।
बा'धरो–देखो 'बहादुर'।
बाधली–स्त्री० [सं० वर्धी] मैस के चमड़े की बनी लाव।
बाधा–स्त्री० [सं०] १ रुकावट, अड़चन। २ विघ्न, रोड़ा, व्यवधान। ३ कठिनाई, दिक्कत, मुश्किल। ४ उलझन समस्या। ५ मुकाबला, सामना। ६ प्रतिवाद, एतराज, आपत्ति। ७ अनिष्ट, हानि। ८ भय, डर। ९ कष्ट, पीड़ा। १० अत्याचार। ११ बंधन। १२ सम्पूर्णता १३ अखण्डता। १४ रुकावट डालने वाली वस्तु।
बाधारणो, (बो)–देखो 'बधारणो' (बो)।
बाधारवांन–पु० मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।
बाधावणो (बो)–देखो 'बधावणो' (बो)।
बाधित–वि० [सं०] १ पीड़ित, त्रस्त। २ रोका हुआ, अवरुद्ध। ३ मुकाबला या सामना किया हुआ। ४ खारिज किया हुआ, निरस्त। ५ खण्डन किया हुआ, खण्डित। ६ परिमित, सीमित। ७ रोड़ा डाला हुआ।
बाधिरच–पु० [सं० बाधिर्य] बहरापन।
बाधी–१ देखो 'बद्धो'। २ देखो 'बाधो'।
बाधू–देखो 'बाधो'।
बाधेपो–देखो 'बधापो'।
बाधो–वि० [सं० बद्ध] (स्त्री० बाधि, बाधी) १ सम्पूर्ण, पूर्ण सब। २ वृद्धि, बढ़ोतरी, अधिकाई। ३ अखण्ड। ४ विशेष।
बाध्य–वि० [सं०] १ विवश, मजबूर। २ पीड़ित, त्रस्त। ३ विवश, मजबूर। ४ रोका हुआ, अवरुद्ध।
बाध्यउ–देखो 'बाधो'।
बाप, बापड़–पु० [सं० वप्प] पिता, जनक।
बापड़–देखो 'बापड़ो'।
बापड़उ, बापड़ियो, बापड़ु–१ देखो 'बापड़ो'। २ देखो 'बाप'।
बापड़ेंग, बापड़ेस–वि० १ जबरदस्त, जोरदार। २ महान्, बड़ा।
बापड़ो–वि० (स्त्री० बापड़ी) १ जिसका पालन-पोषण करने वाला न हो, बेचारा, बेसहारा। २ विवेकहीन, अज्ञानी। ३ जिसकी कोई गणना न हो, नगण्य। अकिंचन, तुच्छ। ४ सीधा-साधा भोला-भाला। ५ जबरदस्त, शक्तिशाली।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बलवान। ६ मूर्ख, बेवकूफ। ७ बिना बाप का, बाप से वंचित। ८ देखो 'बाप'।

बापची-स्त्री० [सं० वाकुची] १ एक औषधि विशेष व इसका क्षुप। २ देखो 'बापजी'।

बापजी पु० १ ईश्वर, देवता, सिद्ध पुरुषों आदि के लिये आदर सूचक संबोधन। २ वधू द्वारा श्वसुर के प्रति संबोधन। ३ पिताजी। ४ राजाओं का संबोधन। ५ कुमार, राजकुमार। (मेवाड़)

बापडो-देखो 'बापडौ'।

बापजायो-वि० १ अपने पिता के गुणों एवं नाम को प्रसिद्ध करने वाला। २ अपने पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला।

बापमारो-वि० पिताघाती।

बापरणो (बो)-देखो 'बापरणो' (बो)।

बापि, बापिका-देखो 'बापी'।

बापिअ, बापिय, बापियडो-देखो 'पपईयो'।

बापी-स्त्री० १ पूर्वजों की सम्पत्ति, जायदाद, जमीन। २ पूर्वजों का बना मकान। ३ देखो 'बापी'।

बापीअड्ड, बापीऊड्ड-देखो 'पपईयो'।

बापीपाव-देखो 'पगवाव'।

बापीयड़ो, बापीयडो, बापीहउ-देखो 'पपईयो'।

बापु-१ देखो 'बाप'। २ देखो 'बापू'।

बापुड़ो, बापुरो-१ देखो 'बाप'। २ देखो 'बापू'। ३ देखो 'बापड़ो'।

बापू-पु० [सं० वप्य] १ वृद्ध पुरुषों का संबोधन। २ राजा, महाराजाओं का संबोधन। ३ महात्मा गांधी की उपाधि। ४ देखो 'बाप'।

बापूकार-पु० उत्साहित करने वाली आवाज।

बापूकारणो (बो)-क्रि० उत्साहित करना, जोश दिलाना।

बापूकारियो-वि० उत्साहित करने वाला, जोश दिलाने वाला।

बापूड़ो-१ देखो 'बाप'। २ देखो 'बापू'। ३ देखो 'बापड़ो'।

बापेयो, बापैयो-देखो 'पपईयो'।

बापोती-स्त्री० [सं० बाप + ऊति] १ पैतृक सम्पत्ति। भूमि, जायदाद। २ पूर्वजों का मकान।

बाप्पो-पु० १ चित्तौड़ का महाराणा बप्पा रावल। २ वाह-वाही, धन्य-धन्य। ३ व्यंगार्थ सूचक शब्द विशेष। ४ देखो 'बाप'।

बापौती-देखो 'बापोती'।

बाफ-स्त्री० [सं० बाष्प] १ तरल पदार्थ को गरम करने पर उठने वाली भाप, बाष्प। २ धूंआ, धूम्र। ३ गैस। ४ ज्वर के कारण देह से निकलने वाली गर्मी। ५ क्रोधावस्था में मुंह से निकलने वाली गरम श्वास। ६ ठंड के कारण मुंह से निकलने वाली भाप। ७ मन की घुटन। भावना, इच्छा। ८ एक बहुमूल्य वस्त्र विशेष। ९ भेद, रहस्य।

बाफणो (बो)-क्रि० [सं० बाष्पनम्] १ भाप द्वारा गर्मी पहुँचाना, गरम करना। २ भाप से पकाना। ३ उबालना। ४ बाष्प से किसी अंग का सेक करना।

बाफतो-पु० [फा० बाफ्त:] १ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष। २ एक प्रकार सफेद वस्त्र।

बाब-पु० [अ०] १ प्रजा, रैयत। २ कर्जा, ऋण। ३ कर लगान। ४ मुकद्दमा, मामला। ५ विषय। ६ पुस्तक का कोई अध्याय। ७ तरह, भांति, प्रकार। ८ अभिप्राय, मतलब, आशय। ९ द्वार, दरवाजा। १० संबंध। ११ योग्य। १२ वस्त्र, कपड़ा। १३ वायु।

बाबड़णो (बो)-देखो 'बावड़णो' (बो)।

बाबची, बाबजी-देखो 'बापची'।

बाबत अव्य० [फा०] १ विषय में, संबंध में, बारे में। २ लिये, वास्ते। ३ निमित्त, हेतु। —स्त्री० १ संबंध। २ विषय।

बाबय्यो-देखो 'पपईयो'।

बाबर-पु०[तु०]१एक प्रसिद्ध मुसलमान बादशाह। २ मुसलमान। [सं० बर्बर] ३ नाइयों की एक शाखा। ४ मरहम पट्टी या वैद्य का कार्य करने वाला व्यक्ति। ५ केश, बाल। ६ घुंघराले बाल। ७ फूहड़ स्त्री। ८ मूर्ख व्यक्ति। ९ एक जंगली जाति या कबीला। १० उक्त कबीले का व्यक्ति। ११ हथियारों की खनक। १२ नृत्य का एक भेद विशेष।

बाबरकोट-पु० वीरों के कटे शिरों का ढेर।

बाबरची-देखो 'बावरची'। —**खानो**-'बावरचीखानो'।

बाबरजंट-पु० राक्षक, असुर। -वि० कुरूप, बदसूरत।

बाबरियो-वि० १ जटाधारी। २ देखो 'बावर'।

बाबरी-पु० [तु० बाबर] १ 'बाबर' के वंशज। २ एक मुगल वंश। ३ मुसलमान। [सं० बर्बर] ४ घुंघराले बाल। ५ केशों की जुल्फ, लट। ६ धातु पिंड को काटने या पीटने से निकला पतला हिस्सा।

बाबरेल, बाबरेल-देखो 'बबर'।

बाबरोत-पु० १ एक देश का नाम। २ देखो 'बबर'।

बाबल, बाबलियो-पु० पिता, बाप।

बाबहियउ, बाबहियो-देखो 'पपईयो'।

बाबा-पु० १ बूढ़े व्यक्ति का आदर सूचक संबोधन। २ कोई साधु, फकीर। ३ ताऊ।

बाबाई-वि० १ बाबा का, बाबा संबंधी। २ ताऊ के वंश का।

बाबाजान-पु० [अ०] १ पिता, दादा, नाना। २ सरदार।

बाबिल-पु० [अ०] १ इराक का एक प्राचीन नगर। २ देखो 'बाबल'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाबी-स्त्री० १ हुक्का। २ देखो 'बाबो' (स्त्री०)

बाबीय, बाबीयो, बाबीह, बाबीहउ, बाबीहड़उ, बाबीहीयो, बाबोही देखो 'पपईयो'।

बाबुस-१ देखो 'बाबल'। २ देखो 'बाबिल'।

बाबू, बाबूड़ो-पु० १ सभ्य या सज्जन व्यक्ति। २ बच्चा, शिशु। ३ सरकारी कार्यालय का एक कर्मचारी, लिपिक।

बाबेली-स्त्री० सखी, सहेली।

बाबेहियो, बाबेहीयो, बाबेयी-देखो 'पपईयो'।

बाबोड़णो, (बो)-क्रि० १ पूछना, बतलाना, संबोधित करना। २ बोलाना।

बाबो, बाबोजी, बाबोसा-पु० १ ईश्वर, देवता या पीर के लिये प्रयुक्त संबोधन। २ रामदेव नामक सिद्ध पुरुष। ३ साधु, फ़कीर, संन्यासी। ४ पितामह, दादा। ५ ताऊ। ६ पिता, बाप। ७ वृद्ध पुरुष, बूढ़ा व्यक्ति। ८ मेवाड़ के सामंतों की एक उपाधि। ९ बच्चों को भय दिखाने का एक काल्पनिक जंतु।

बाभी, बाभीजी, बाभीसा-देखो 'भाभी'।

बाभीसा-१ देखो 'बाबोसा'। २ देखो 'भाभीसा'।

बाय-स्त्री० १ तरह, भांति, प्रकार। २ देखो 'वायु'। ३ देखो 'वाय'। ४ देखो 'बाई'।

बायक-देखो 'बायक'।

बायड़-स्त्री० [सं० वाक्कट] १ अभिलाषा, इच्छा, कामना। २ नशे आदि की खुराक लेने की तीव्र इच्छा, उत्कण्ठा। ३ देखो 'बाई'।

बायड़ियो-वि० १ जिसे इच्छा या कामना हो। २ नशे आदि के लिये लालायित हो।

बायड़ी-देखो 'बाई'।

बायणो-क्रि० वि० १ बायीं ओर बायीं। २ विरोध में।

बायनंद-देखो 'वायनंद'।

बायबिड़ंग, बायबिडंग-देखो 'वायबिडंग'।

बायर-१ देखो 'बैर'। २ देखो 'बायड़'।

बा'यर-देखो 'बाहर'।

बायरि, बा'यरि-१ देखो 'बैर'। २ देखो 'बाहरी'।

बायरियो-१ देखो 'बायरो'। २ देखो 'बायड़ियो'।

बायरो, बा'यरो-१ देखो 'बाहरि'। २ देखो 'बैर'।

बायरो-पु० पवन, हवा, वायु।

बा'यरो-वि० (स्त्री० बा'यरी) रहित, विहीन, बिना।

बायल, बायली-१ देखो 'बाई'। २ देखो 'बायल'।

बायस-देखो 'वायस'।

बायसुत-देखो 'वायुसुत'।

बायां, बायांसा-देखो 'मावलियां'।

बाया-१ देखो 'बाई'। २ देखो 'बाचा'।

बायाळ, बायास-१ देखो 'बंयाळीस'। २ देखो 'बाई'।

बायोस-देखो 'बाईस'।

बायु-देखो 'वायु'।

बायुबाह, बायुवाह-देखो 'वायुवाह'।

बायुसखा-देखो 'वायुसखा'।

बायू-देखो 'वायु'। —सखा='वायुसखा'।

बायौ-पु० १ बैल गाड़ी के धोरे का एक भाग। २ देखो 'बाचा'। ३ देखो 'बांयी'।

बारंग, बारंगना, बारंगा-देखो 'वारंगना'।

बारंबार, बारंबारो-अव्य० [सं० वारंवार] १ पुनः-पुनः, बार-बार। २ बहुतबार, अनेक बार, निरंतर।

बार-पु० १ मृतक के पीछे किया जाने वाला रुदन। २ देखो 'वार'। ३ देखो 'द्वार'। ४ देखो 'बाल'। ५ देखो 'बारह'। ६ देखो 'बाहर'।

बा'र-१ देखो 'बाहर'। २ देखो 'बारस'।

बा'रई, बा'रइ-१ देखो 'बारह'। २ देखो 'बाहर'।

बा'रकर-क्रि० वि० १ चारों ओर से, चौतरफ से। २ किसी क्षेत्र के बाहर होकर। ३ बाहर की तरफ से।

बारखड़ी-स्त्री० [सं० द्वादशाक्षरी] वर्णमाला में प्रत्येक व्यंजन में स्वरों के योग से बनने वाले वर्ण समूह।

बारखाळी-वि० (स्त्री० बारखाळी) व्यभिचारी, पथभ्रष्ट।

बारगिरी-देखो 'बारगीर'।

बारगी-पु० [फा०] घोड़ा, अश्व। —अव्य० [सं० वार] दफा; बार।

बारगीर-पु० [फा०] १ अश्वपाल, सईस। २ घुड़ सवार। ३ घोड़ा; अश्व। ४ ऊंट। ५ बैल, वृषभ। —वि० साधारण, मामूली।

बारछुड़ाई (छुड़ाई, छोड़ाई)-स्त्री० विवाह संबंधी एक रश्म विशेष।

बारट-देखो 'बारहठ'।

बारठो-पु० १ किसी चारण को दी जाने वाली पदवी। २ इस पदवी के साथ मिलने वाली जागीर।

बारण-देखो 'वारण'। —पति, पती='वारणपति'।

बारणी-स्त्री० १ मांगणियार (मुसलमान) जाति का एक भेद। २ देखो 'वारुणि'।

बारणू-देखो 'बारणी'।

बारणे, बारणै-क्रि० वि० द्वार के बाहर, सामने, द्वार पर।

बारणौ-पु० [सं० द्वार] दरवाजा। घर-द्वार।

बारणौ (बो)-देखो 'वारणौ' (बो)।

बारता-देखो 'वारता'।

बारतू-वि० [सं० बहिस्] १ बाहर का, बाहरी। २ जो अपने शहर, गांव या प्रदेश का न हो। ३ विदेशी।

बारद-देखो 'बारिद'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बारदांनो–पु०[फा०बारदान:] १ जूट का बना वस्त्र । २ जूट की बोरी या बड़ा थैला । ३ सामान पैक कर भेजने का पात्र या संदूक । ४ सेना की खाद्य सामग्री, रसद, राशन ।

बारद्धक–देखो 'वारद्धक' ।

बारध, बारधि–देखो 'वारिधि' ।

बारनियो–पु० १ घास-फूस का बना कक्ष । छान, छप्पर । २ देखो 'बारणो' ।

बारनिस–देखो 'वारनिस' ।

बारनो–देखो 'बारणो' ।

बा'रपगो–वि० १ व्यभिचारी, लम्पट । २ धूर्त, दुष्ट । ३ अवारा ।

बारबरदार–पु० [फा०] बोझा ढोने वाला मजदूर, कुली ।

बारबार–देखो 'बारंबार' ।

बारबिलासिणी–देखो 'वारविलासिणी' ।

बारम–१ देखो 'बारह' । २ देखो 'बारवों' ।

बारमइ, बारमउ–देखो 'बारवों' ।

बारमबार–देखो 'बारंबार' ।

बारमो–देखो 'बारवों' ।

बारम्म–१ देखो 'बारवों' । २ देखो 'बारह' ।

बारराकाई, बाररोकाई–स्त्री० १ विवाह के समय की एक रश्म । २ इस रश्म में सवासणी को दिया जाने वाला धन ।

बा'रलो–वि० [सं० बाह्य] (स्त्री० बारली) १ बाहर वाला, बाहरी । २ बाहर की ओर बना हुआ या स्थित । ३ अन्य देश का, परदेशी, विदेशी । ४ पराया, अन्य । ५ विरोधी, शत्रु । ६ विलग, अलग ।

बारवट–पु० [सं० बार-पट्ट] १ द्वार का कपाट, किवाड़ । २ द्वार का पर्दा । ३ द्वार पर लगी नाम-पट्टिका ।

बा'रवों–वि० [सं० द्वादश:] (स्त्री० बा'रवीं) १ दस व दो के स्थान वाला, ग्यारह के बाद वाला । २ देखो 'बा'रियो' ।

बा'रवोंसनि–पु० बारहवीं राशि पर प्रभाव बताने वाला शनि ग्रह ।

बारस–स्त्री० [सं० द्वादशी] प्रत्येक मास के प्रत्येक पक्ष की बारहवीं तिथि ।

बारसाळी–स्त्री० [सं० बार-शाला] मकान में मुख्य द्वार पर बना कक्ष ।

बारसि–देखो 'बारस' ।

बारसुंबरी–देखो 'वारसुंदरी' ।

बारसोत–देखो 'बारोत' ।

बारह–वि० [सं० द्वादश] दस व दो, द्वादश । –स्त्री० दस व दो की संख्या, १२ ।

बारहखड़ी–देखो 'बारखड़ी' ।

बारहघण–पु० बारह प्रकार की मेघ माला ।

बारहट–देखो 'पोळपात' ।

बारहटो–देखो 'बारठो' ।

बारहट्ट (ठ)–देखो 'पोळपात' ।

बारहणं–देखो 'बारठो' ।

बारहदरी–देखो 'बारा'दरी' ।

बारहमासियो–पु० [सं० द्वादश-मास] १ बारह महीनों के वर्णन वाला गीत या कविता । २ रेल-मार्ग या सड़क पर वर्ष भर कार्य करने वाला मजदूर । ३ बारह मास गर्भ में रह कर जन्मने वाला बच्चा । ४ सदा एक स्थान पर रहने वाला व्यक्ति । ५ वर्ष भर फलते-फूलते रहने वाला पौधा । —वि० बारह मास का, बारह मास संबंधी, बारह मास होने वाला ।

बारहमासी–वि० [सं० द्वादश-मासिक] १ जो वर्ष भर या सब ऋतुओं में वर्तमान रहे । २ सभी ऋतुओं में फलने-फूलने वाला ।

बारहमासो–वि० [सं० द्वादशमासिक] १ बारह महीनों के वर्णन वाला गीत या काव्य । २ देखो 'बारहमासियो' ।

बारहमो (मौ)–देखो 'बारवों' ।

बारहर–पु० [सं० वारि+धर] समुद्र, सागर ।

बारहवफात–स्त्री० मुसलमानों का एक त्यौहार ।

बारहसिंगो–पु० [सं०-द्वादश-शृंग] वह मृग जिसके सींग की कई शाखाएँ हों, सांभर ।

बारहहजारी–पु० शाहजादों को दिया जाने वाला एक मनसब ।

बारां–१ देखो 'बारह' । २ देखो 'बाहर' ।

बारांगना–देखो 'वारंगना' ।

बारांणू–देखो 'बांणू' ।

बारा–पु० [सं०वार] १ समय, वक्त, काल । २ अवसर, मौका । ३ विलम्ब, देर । ४ विषय, प्रसंग, बाबत । ५ दिन, दिवस ।

बा'रा–१ देखो 'बाहर' । २ देखो 'बारह' । ३ देखो 'बा'यरो' ।

बाराजोरो–देखो 'बरजोरी' ।

बारात–देखो 'बरात' ।

बारा'बड़ी, बारा'दरी, बारा'घड़ी–स्त्री० बारह दरवाजों वाला बड़ा कक्ष ।

बाराबांणी, बाराबांनी–वि० [सं० द्वादश-वर्ण] १ सूर्य के समान चमकने वाला, अत्यन्त प्रकाशवान । २ पूर्ण शुद्ध, खरा । ३ निर्मल, स्वच्छ । ४ उचित वाजिब, ठीक ।

बारा'बाट–वि० [सं० द्वादश-वाट] १ अस्त-व्यस्त, विछिन्न । २ आश्रयहीन, अनाथ । [सं० बहिस्-वाट] ३ नष्ट-भ्रष्ट, बरबाद । ४ राजद्रोही, बागी । —पु० १ व्यर्थ का प्रसार, विस्तार, फैलाव । २ इधर-उधर फैले कई मार्ग । ३ डाकू, लुटेरा । ४ कुमार्गगामी व्यक्ति ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बारासधी–पु० शाही शासन में एक ओहदा।
बाराह–१ देखो 'वराह'। २ देखो 'बारह'।
बाराहो–१ देखो 'बारह'। २ देखो 'बा'रियौ'।
बारि–१ देखो 'वारि'। २ देखो 'बारी'। ३ देखो 'बार'।
बा'रि–देखो 'बाहरी'।
बारिगर–पु० हथियारों पर धार लगाने वाला, सिकलीगर।
बारिगह–पु० [फा० बारगाह] १ राज दरबार, कचहरी। २ तम्बू, खेमा। ३ ड्योढ़ी, राजद्वार।
बारिज–देखो 'वारिज'।
बारिद–देखो 'वारिद'।
बारिधर–देखो 'वारिधर'।
बारिधि–देखो 'वारिधि'।
बारियांम–देखो 'वरियांम'।
बा'रियौ–पु० [सं० द्वादशा] मृतक के बारहवें दिन किये जाने वाले क्रिया कर्म, ब्राह्मण भोजन आदि।
बारियौ–पु० कूए पर मोट खाली करने वाला व्यक्ति।
बारिस–स्त्री० [फा० बारिश] १ वर्षा, वृष्टि, बरसात। २ वर्षा ऋतु। ३ देखो 'बारीस'।
बारी–स्त्री० [सं० वार] १ खिड़की, छोटा दरवाजा। २ वातायन। ३ झरोखा, गवाक्ष। [फा०] ४ किसी कार्य का क्रम तथा क्रमशः आने वाला अवसर। नम्बर। ५ अवसर, मौका ६ किसी कार्य पर क्रमशः की जाने वाली नियुक्ति। ७ समय, वक्त, अवसर। ८ झूंठी पत्तलें उठाने वाला एक वर्ग। ९ देखो 'वारी'। १० देखो 'वार'। ११ देखो 'बेरी'।
बारीक–वि० [फा०] १ अत्यन्त गूढ़, रहस्यमय। २ सूक्ष्म भाव या ज्ञान वाला। ३ सूक्ष्म अणुओं वाला, अत्यन्त महीन पिसा हुआ। ४ जिसका आयतन बहुत कम हो (डोरा आदि) ५ अत्यन्त पतला, झीणा, झीना। (वस्त्रादि) ६ घिस कर जीर्ण-शीर्ण हुवा हुआ। पुराना
बारीकी–स्त्री० [फा०] १ बारीक होने की अवस्था या भाव। २ सूक्ष्मता, गहराई। ३ महीनता, पतला या झीनापन। ४ गूढ़ता। ५ भावों की सूक्ष्मता, निपुणता।
बारीबार–पु० [फा०] १ पत्तल-दोना बनाने वाली जाति विशेष। २ उक्त जाति का व्यक्ति। ३ निश्चित अवधि के लिये तैनात व्यक्ति।
बारीबारी–क्रि० वि० क्रमशः, रह-रह कर, एक के बाद एक।
बारीयांम–देखो 'वरियांम'।
बा'रीयौ–देखो 'बा'रियौ'।
बारीस–१ देखो 'बारिस'। २ देखो 'वारीस'।
बा'र–१ देखो 'बाहरू'। २ देखो 'बाहर'। ३ देखो 'बारू'। ४ देखो 'बार'।
बा'रंती, बा'रंती (यौ)–अव्य० बाहर की ओर।
बारंबार–देखो 'बारंबार'।
बारणी–देखो 'वारुणी'।
बारू–क्रि० वि० [सं० बाह्य] १ बाहर से, बाहर की तरफ से। २ देखो 'बारह'। ३ देखो 'बाहरु'।
बारू–देखो 'बालू'।
बा'रू–१ देखो 'बाहरू'। २ देखो 'बारह'। ३ देखो 'बा'रू'।
बारूणी–देखो 'वारूणी'।
बारूद–पु० [फा०] चूर्ण की तरह महीन एक विस्फोटक पदार्थ, अग्निचूर्ण, शोरा। —खांनौ–पु० उक्त पदार्थ का संग्रह कक्ष।
बा'रे, बा'रै–१ देखो 'बाहर'। २ देखो 'बारह'।
बा'रैक–वि० बारह के लगभग।
बा'रैहजारी–देखो 'बारहहजारी'।
बारोटियौ–पु० [सं० बार. उत्थित] १ राजा या जागीदार के विरुद्ध होकर निकल जाने वाला व्यक्ति, बागी, राजद्रोही। २ लुटेरा, डाकू।
बारोटौ–पु० १ क्रोध, कोप। २ देखो 'बारठौ'। ३ देखो 'बारोटियौ'।
बारोठियौ, बारोठीयौ–देखो 'बारोटियौ'।
बारोठौ–१ देखो 'बारोटौ'। २ देखो 'बारठौ'।
बारोत–पु० [सं० बार-उत्थ] १ द्वार या खिड़की की चौखट। २ चौखट की खड़ी लकड़ी।
बारोतरउ, बारोतरौ–देखो 'बाहोतरौ'।
बारोबार–देखो 'बारबार'।
बारोळ–वि० बदचलन, अवारा।
बारौ–पु० १ बड़ा छेद, सूराख। २ मौकी, नाली। [सं० द्वादश] ३ बारह की संख्या वाला वर्ष। ४ आय का रास्ता, जरिया [सं० बाल] ५ बालक, बच्चा। ६ देखो 'बारह'। ७ देखो 'बार'। ८ देखो 'बारी'।
बारौल–देखो 'बारोळ'।
बाळ, बाल, बालउ, बालउ–वि० [सं० बाल] १ बाल्यावस्था वाला, अवयस्क। २ तुरन्त का जन्मा या उदित। ३ अबोध, नासमझ। –पु० १ बालक, बच्चा। २ लड़का, पुत्र, वत्स। ३ किसी पशु का बच्चा। ४ नासमझ व्यक्ति। ५ बाल्यावस्था। ६ बालकदास नामक एक नाथ। ७ पांच वर्ष का हाथी। ८ किसी पशु की पूंछ। ९ केश, लोम, रोम। १० नारियल। ११ भुट्टा। १२ भुजंग, सर्प। १३ दया। १४ बालि नामक बंदर। १५ देखो 'बाळ'। १६ देखो 'बाला'।
बाळक, बालक–वि० [सं० बालक] (स्त्री० बाळिका, बालिका) १ बाल्यावस्था वाला, अवयस्क। २ बच्चों की तरह का।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ अबोध, नासमझ । ४ अज्ञानी, विवेकहीन । ५ चंचल । ६ असमर्थ । —पु० १ बच्चा, लड़का । २ पुत्र, बेटा, वत्स । ३ किशोर, कुमार । ४ मूर्ख, व्यक्ति । ५ घोड़ा या हाथी की पूंछ ।

बाळकता, बाळकताई, बाळकपण—स्त्री० बाल्यावस्था. बालक होने की अवस्था या भाव ।

बाळकपुर—पु० एक देश का नाम ।

बाळका, बाळकी—स्त्री० [सं० बालिका] बालिका, लड़की, पुत्री

बाळकाळ—देखो 'बाल्यकाळ' ।

बाळकियो—देखो 'बाळक' ।

बाळकी—देखो 'बालका' ।

बाळकूंची—स्त्री० घोड़े के बालों की बनी कूंची, ब्रुश ।

बाळकेळि, बाळकेळी—स्त्री० [सं० बाल-केली] बच्चों का खेल, आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा ।

बाळकी, बाळकी, बाळक्क, बाळक्क—देखो 'बालक' ।

बाळकृष्ण—पु० [सं० बालकृष्ण] बाल्यावस्था वाले कृष्ण ।

बाळक्रीड़ाकरम—पु० [सं० बालक्रीड़ा कर्म] १ बच्चों के खेल आदि क्रियाएं । २ चौसठ कलाओं में से एक ।

बाळखिल्य—पु० [सं०] ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न एक ऋषि समूह ।

बाळग, बाळग—देखो 'बालिंग' ।

बाळगोठियो—पु० बचपन का मित्र, बाल सखा ।

बाळगोपाळ, बाळगोपाल—पु० [सं० बाल-गोपाल] १ बालक बच्चा, शिशु । २ पुत्रादि संतान, परिवार । ३ बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण ।

बाळड—१ देखो 'बाळ' । २ देखो 'बालड़ी' ।

बाळड़ी—देखो 'बाला' ।

बाळडो—पु० १ कैर या जाल वृक्ष की बौर । २ बाजरी आदि के दाने के ऊपर का छिलका तुस, भूषा । ३ देखो 'बाल' ।

बाळचंद्र—पु० [सं० बालचंद्र] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा ।

बाळचंद्रिका—वि० [सं०] १ कुटिल । २ तिरछा । —स्त्री० १ कुटिल कटाक्ष । २ कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी ।

बाळचोटी—स्त्री० १ स्त्रियों के शिर का एक आभूषण विशेष । २ स्त्रियों की वेणी, चोटी ।

बाळछड़—स्त्री० जटामासी ।

बाळछो—पु [सं० बाल-पुच्छ] १ घोड़े की पूंछ के बाल । २ तलवार की धार ।

बाळजति (जती)—वि० [सं० बालयति] १ जो बाल्यकाल से ही संयमशील और जितेंद्रिय हो । बाल संन्यासी २ बाल-वैरागी, सांसारिक प्रपंचों से विरक्त । ३ बाल ब्रह्मचारी । —पु० लक्ष्मण ।

बाळटी—स्त्री० डोली की तरह बना व ऊपर कड़ा लगा एक जल-पात्र विशेष ।

बाळणियो—पु० मुट्ठी भर गेहूं के पौधों का समूह जिसे आग में सेक कर खाया जाता है ।

बाळणो (बो)—क्रि० १ किसी वस्तु को आग में डालना या आग लगाना । जलाना. भस्म करना । २ सुलगाना, प्रज्वलित करना । ३ दीपक आदि को ज्योतिर्मय करना । ४ झुलसा देना । ५ विद्युत आदि के प्रभाव से तार या यंत्र को जला देना, प्रमुख गुणों को समाप्त करना । ६ क्रोधित करना, खिजाना, तंग करना । ७ वियोग से तड़फाना । ८ देखो 'बाळणो' (बो) ।

बाळतंत्र—पु० [सं० बालतंत्र] बच्चों के पालन-पोषण की विधि धात्री-कर्म ।

बाळतोड़—पु० बाल टूटने से होने वाला एक फोड़ा विशेष ।

बाळद—स्त्री० [सं० बलदः] १ देशान्तर में व्यापार के लिये माल ढोने वाले बैलों का समूह । २ बैलगाड़ी, रथ । ३ बैलों पर लदा माल, सामान । ४ बाल-बच्चे, संतान । ५ देखो 'बळद' ।

बाळदियो—पु० १ बैलों पर माल लौकर देशान्तर में व्यापार करने वाला बनजारा । २ कृषक के बैलों को चराने वाला नौकर । ३ कृषि कार्य के लिये रखा हुआ नौकर ।

बाळदी—१ देखो 'बाळदियो' । २ देखो बाळधी' ।

बाळदो—पु० १ बैलों का समूह । २ देखो 'बाळद' । ३ देखो 'बाळदियो' ।

बाळध—देखो 'बाळद' ।

बाळधी—स्त्री० [सं० बालधि] १ पूंछ, दुम । २ देखो 'बाळदो' ।

बालप्पणि—पु० बालकपन ।

बालबंध—देखो 'बालाबंध' ।

बाळबकेल, बाळबघेल—वि० तरुण, युवा ।

बाळबुद्धि—स्त्री० [सं० बालबुद्धि] बालकों के समान बुद्धि. विवेक हीनता, अबोधता । —वि० १ अल्प बुद्धि, अल्पज्ञ । २ मंद-बुद्धि ।

बाळबोध—पु० [सं० बालबोध] बालकों के पढ़ने या समझने लायक पुस्तक या भाषा ।

बाळभोग—पु० [सं० बाल-भोग] १ इष्टदेव या देव मूर्ति के आगे प्रातः काल रखा जाने वाला नैवेद्य । २ नाश्ता, कलेवा ।

बालम—पु० [सं० वल्लभः] १ किसी स्त्री का पति, स्वामी । २ प्रेमी, प्रिय व्यक्ति । ३ जार । ४ गधा । —वि० १ सर्वोपरि प्रधान । २ प्यारा । ३ देखो 'बालमकाकड़ी' ।

बालमकाकड़ी—देखो 'बालम काकड़ी' ।

बालमखीरा—पु० खीरा नामक बड़ा फल ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बालमुकुंद, बालमुकुंद–पु० [सं० बालमुकुंद] १ बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण। २ बालक रूप में ईश्वर। ३ ईश्वर, परमेश्वर।

बालमिक, बाल्मीक–देखो 'वालमिक'।

बालमीयो, बालमो–देखो 'बालम'।

बाल्यति (ती)–देखो 'बाळजति'।

बाळरंड, बाळरांड–देखो 'बाळविधवा'।

बाळलियो–देखो 'बाळलो'।

बाळलीला–स्त्री० बाल सुलभ क्रीड़ा, चेष्टा, खेल।

बाळविधवा–स्त्री० [सं० बालविधवा] विवाह के तुरंत बाद ही विधवा हो जाने वाली लड़की या स्त्री।

बाळविधु–पु०[सं०बालविधु] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा।

बाळविनोद, बालविनोद–पु० [सं० बालविनोद] बच्चों के मनोविनोद के खेल।

बाळविवाह–पु० [सं०बालविवाह] बाल्यावस्था में हो जाने वाली शादी।

बाळवेसी–स्त्री० [सं० बाल-वयस्या:] १ बालिका, बाला। २ बाल सहेली, बाल सखी।

बाळव्यजन–पु० [सं०] केशों का बना चवर।

बाळसंघाती–पु० [सं० बाल-संगिन्] बाल-सखा, बचपन का साथी।

बाळस, बालस–वि० [सं० बालिश] १ मूर्ख। २ नादान। –पु० १ नासमझ व्यक्ति। २ बालक, बच्चा। ३ तकिया, उपधान, सिरहाना।

बाळसखा–पु० [सं०] बचपन का मित्र।

बाळसद–देखो 'बाळसाद'।

बाळससि–पु० [सं० बालशशि] शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा। —वि० कुटिल, तिरछा।

बाळसाद–पु० [सं० बाल-शब्द] १ बच्चे का रुदन। २ तुरंत के जन्मे शिशु का रुदन।

बाळसूरज–पु० [सं० बालसूर्य] प्रातःकालीन उगता हुआ सूर्य।

बाळहट, बाळहठ–पु० [सं० बालहठ:] बच्चे का किसी बात पर होने वाला जिद्, हठ।

बालहो–देखो 'बालो'।

बाळा, बाला–स्त्री० [सं० बाला] १ बारह से सत्रह वर्ष की आयु वाली लड़की, युवती। २ छोटी बालिका। ३ पत्नी, भार्या, अर्धांगिनी। ४ स्त्री, औरत। ५ वेश्या। ६ दश महाविद्याओं में से एक। ७ छोटी इलायची। ८ हल्दी। ९ घृत कुमारी। १० चमेली विशेष। ११ एक आभूषण विशेष। १२ निसाणी छन्द का एक भेद। १३ घोड़ों की एक जाति व इस जाति का घोड़ा। –वि० [फा० बाला] १ ऊपर, ऊंचा। २ सब से अच्छा, श्रेष्ठ। ३ सामने, आगे। ४ अलग, पृथक।

बाळाई–स्त्री० १ पगड़ी का एक बंध। २ मलाई। –वि० ऊपरी बाहरी।

बालाचुंदड़ी (चुंदड़ी, चुनड़ी)–स्त्री० एक प्रकार की चुनड़ी विशेष।

बाळाजळ–स्त्री० [सं० बाला-जल] विद्युत, बिजली।

बालाजी–पु० [सं० वल्लभ] हनुमान, बजरंग।

बालाजोड़ी–स्त्री० एक दूसरे के हाथों के पंजे परस्पर मिलाकर चलने की क्रिया।

बाळानंदी–स्त्री० वैष्णव संप्रदाय की एक शाखा।

बालापण–पु० १ बाल्यावस्था। २ युवापन, जवानी।

बाळापोस–पु० [फा० बालोपोश] १ किसी वस्तु पर ढकने का वस्त्र, आवरण का वस्त्र। २ उत्तरीय।

बालाबंद, बालाबंदी, बालाबंध (बंधी)–स्त्री० पगड़ी पर धारण करने का एक जरीदार वस्त्र।

बाळाबोध, बाळावबोध–पु० [सं० बाल-बोध] १ बच्चों को दिया जाने वाला ज्ञान, बोध। २ किसी काव्य या ग्रंथ की सरल टीका।

बालार–पु० एक प्रान्त का नाम।

बालारण–स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी।

बालि, बालि–पु० [सं० बालि] १ किष्किन्धा का राजा एक वानर। २ देखो 'बाळ'। ३ देखो 'बाला'।

बालिक–१ देखो 'बाळक'। २ देखो 'बालहीक'।

बालिका, बालिका–स्त्री० [सं० बालिका] १ कन्या, लड़की। २ पुत्री, बेटी। ३ देखो 'बाला'।

बालिकुमार–पु० [सं० बालि-कुमार] वानर-राज बालि का पुत्र अंगद।

बालिग–वि० [अ०] वयस्क, दाना। जो अबोध न हो।

बाळियो–१ देखो 'बाळो'। २ देखो 'बा'ळो'।

बालिस्त–पु० [फा० बालिश्त] हाथ के अंगुष्ठ व कनिष्ठा के फैलाव की लम्बाई, इस लंबाई का नाप विशेष।

बाळी–स्त्री० १ नाक या कान का एक आभूषण विशेष। २ देखो 'बाला'।

बाली–स्त्री० १ देखो 'बालि'। २ देखो 'बाला'।

बाळीवेस, बालीवेस–स्त्री० [सं० बाल-वयस] १ छोटी उम्र, बाल्यावस्था, बचपन। २ नव यौवना स्त्री, युवती।

बाळु–१ देखो 'बाळ'। २ देखो 'बाळू'।

बालुकाजत्र (यंत्र)–पु० [सं० बालुकायंत्र] औषधियों को फूंकने का यंत्र।

बाळुड़ो, बालुड़ो–१ देखो 'बाळ'। २ देखो 'बालो'।

बाळूंड़ी–देखो 'बाळोड़ीकोड़ी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाळूंजी, बाळूंडी, बालूंदी–पु० [सं० वल्लभोदय] प्रथम प्रसव के समय पिता के घर से मिलने वाला धन, द्रव्य सामान आदि ।

बाळू–स्त्री० [सं० बालुका] मेदे की तरह बारीक मिट्टी, धूलि रज ।

बाळूड़ी–१ देखो 'बाळ' । २ देखो 'बाळू' ।

बासूड़ी–देखो 'बालौ' ।

बाळूछी–स्त्री० सूअर के बालों की बनी एक प्रकार की कूंची ।

बाळूदानी–स्त्री० बारीक रेत रखने की जालीदार डिबिया ।

बालूयड़उ–देखो 'बाळ' ।

बालूसाही–स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।

बाळेचौ–देखो 'बाळछौ' ।

बालेय–पु० [सं० बालेयः] गधा, खर, रासभ । –वि० १ बलि देने योग्य । २ कोमल, मुलायम । ३ बलि के वंश का ।

बाळेस– देखो 'बाळि' ।

बाळोड़ीकीड़ी–स्त्री० लाल रंग की छोटी चींटी ।

बालोन–पु० [सं० वल्लभः] प्यार ।

बालोवण–स्त्री० १ एक लोक गीत विशेष । २ देखो 'वालौ' ।

बालोजी–देखो 'वालाजी' ।

बाळी, बाळौ–पु० १ कान का आभूषण विशेष । २ देखो 'बाळ' । ३ देखो 'बा'ळौ' ।

बाळौमेळ–पु० [सं० बाल-मेल] बचपन की मित्रता, बाल्यावस्था का संग ।

बाळौसीत–पु० शीतकाल की प्रारम्भिक अवस्था ।

बाल्टी–देखो 'बालटी' ।

बाल्य–वि० [सं०] १ बच्चों संबंधी । २ बचपन जैसी । ३ बालकों जैसा । –पु० १ बचपन, लड़कपन । २ मूर्खता, मूढ़ता । **–काळ**–पु० बचपन, किशोरावस्था से पूर्व की अवस्था ।

बाल्यावस्था–पु० [सं०] बचपन, किशोरावस्था से पूर्व की अवस्था ।

बाल्हम, बाल्हमौ–देखो 'बालम' ।

बाल्हा–१ देखो 'बाला' । २ देखो 'बाल्हा' ।

बाल्हि, बाल्ही–पु० [सं० बाल्हिः] बलख बुखारा नामक देश ।

बाल्हीक–देखो 'बाल्हीक' ।

बाल्हौ–१ देखो 'बालौ' । २ देखो 'बा'ळौ' ।

बाव–पु० १ वादा, कौल, प्रतिज्ञा, वचन । २ देखो 'बाव' । ३ देखो 'बावड़ो' ।

बावईयौ–देखो 'पपईयौ' ।

बायकरण–पु० [सं० वात-करण] १ वायु पैदा करने वाला, वायुकारक पदार्थ । २ वायु फैलाने या फेंकने वाला उपकरण, पंखा ।

बावड़–पु० १ पता, ठिकाना, खोज खबर । २ संकेत, इशारा । ३ अभिलाषा, इच्छा, चाह ।

बावड़णौ (बौ)–क्रि० [सं० व्यावर्तन] १ वापस आना, लौटना । २ मोड़ लेना, घूमना । ३ पुनः प्राप्त होना । ४ पुनः संचरित होना, होश में आना । ५ समाप्त, खत्म या अंत होना । ६ समाचार या खबर मिलना । ७ पता लगना, जानकारी होना । ८ जाना । ९ इच्छा, अभिलाषा या चाह होना । १० विसर्जन होना । ११ भिड़ना, युद्ध होना ।

बावड़ली–देखो 'बावड़ी' ।

बावड़ाणौ (बौ)–क्रि० १ वापस लाना, लौटाना । २ मोड़ना, घुमाना । ३ पुनः प्राप्त करना । ४ पुनः संचार करना, होश में लाना । ५ समाप्त कराना, खत्म कराना, अंत कराना । ६ समाचार, खबर या संकेत कराना । ७ पता लगवाना, मालूम करवाना, जानकारी करवाना । ८ भिजवाना । ८ इच्छा या अभिलाषा कराना । १० विसर्जन कराना । ११ युद्ध कराना, लड़ाना ।

बावड़ी–स्त्री० [सं० वापि] १ चारों तरफ सीढ़ियां व चौड़े मुंह वाला खुला कूआ । वापिका । २ बांसुरी का एक भाग ।

बावण–स्त्री० [सं० वापन] १ बोने की क्रिया, बोवाई । २ बोवाई की विधि या ढंग । ३ उक्त कार्य की मजदूरी । ४ फेंकने की क्रिया या ढंग । ५ देखो 'बावन' ।

बावणि, बावणी–स्त्री० १ रहट के चक्र में लगने वाली एक लकड़ी । २ अनाज बोने की क्रिया । ३ अनाज बोने का समय । ४ बोये जाने वाले अनाज की मात्रा । ५ देखो 'बावनी' ।

बावणी–देखो 'बावनी' ।

बावणौ (बौ)–क्रि० [सं० वापनं] १ भूमि में अनाज की बोवाई करना, बोना । २ अंकुरित करना । [सं० वहनं] ३ प्रहार या चोट करना । ४ चलाना, फिकवाना । ५ आक्रमण करना, हमला करना । ६ व्यवस्थित करना, संवारना । ७ शपथ लेना, अथवा देना । ८ बांधना । ९ ठगना धोखा देना ।

बावत्तर (रि,री)–देखो 'बत्तोत्तर' ।

बावन–वि० [सं० द्विपंचाशत्] पचास व दो । –पु० १ पचास व दो की संख्या, ५२ । २ युद्ध प्रिय बावन भैरव । ३ देखो 'वामन' ।

बावनउचंदण, बावनचंदण, बावनचंदन–देखो 'बावनौचंदण' ।

बावनजीरीबारस–स्त्री० [सं० वामन-द्वादशी] भादवा शुक्ला द्वादशी को होने वाली वामन जयंती ।

बावनजीरीबेळौ–पु० उक्त तिथि को किया जाने वाला व्रत ।

बावनबीर–देखो 'बावनवीर' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बावनमो (वौ)–वि० [सं० द्विपंचाशत्] (स्त्री० बावनमी) बावन के स्थान वाला, इक्कावन से बाद वाला।

बावनवीर (वीरि)–वि० १ पराक्रमी, साहसी, वीर। २ चतुर, चालाक।

बावनहजारी–पु० मुगलकालीन एक मनसब।

बावनिचंदण (चंदण)–देखो 'बावनौचंदण'।

बावनियौ–पु० १ ताश का एक खेल। २ देखो 'वांमन'।

बावनी–वि० [सं० द्विपंचाशत्] बावन का, बावन संबंधी। –स्त्री० १ बावन वस्तुओं या पद्यों का समूह। २ बावन बीघों की जमीन।

बावने'क–वि० बावन के लगभग।

बावनौ–पु० [सं० द्विपंचाशत्] १ बावन की संख्या का वर्ष। २ देखो 'बावनमौ'।

बावनौचंदण (चंदन, चन्नण) बावनौसीखंड–पु० [सं० द्विपंचाशत्+चन्दनम्] १ उत्तम श्रेणी का एक चन्दन विशेष। २ इस चन्दन का वृक्ष या लकड़ी।

बावन्न–१ देखो 'वांमन'। २ देखो 'बावन'।

बावन्नतीरी–स्त्री० एक शस्त्र विशेष।

बावन्नू–देखो 'वांमन'।

बावभक्ख–वि० [सं० वायु+भक्षः] १ वायु का भक्षण करने वाला। २ वायु द्वारा सोखा हुआ। ३ वायु द्वारा दूषित या अशक्त किया हुआ। –पु० १ सर्प। २ वायु का भक्षण।

बावभक्खी–पु० [सं० वायु-भक्षण] १ वायु पीकर रहने वाला साधु, तपस्वी। २ व्यर्थ बकने वाला व्यक्ति। ३ पागल व्यक्ति। –वि० १ वायु भक्षण करने वाला। २ वायु द्वारा दूषित।

बावर–पु० [फा०] १ एक देश का नाम। २ यकीन, विश्वास।

बावरचौ–पु० [फा०] रसोईया, पाक शास्त्री। —खांना–पु० रसोईघर, पाकशाला।

बावरणौ (वौ)–देखो 'वापरणौ' (वौ)।

बावरिया–स्त्री० एक खानाबदोश जंगली जाति।

बावरौ–पु० (स्त्री० बावरण, बावरणी) १ एक अनुसूचित जन जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

बावरौ–देखो 'बावळौ'।

बावळ, बावल–१ देखो 'बावळ'। २ देखो 'बांवळ'। ३ देखो 'बावळौ'

बावळि–१ देखो 'बावळी'। २ देखो 'बांवळी'। ३ देखो 'बावळौ'

बावळियौ, बावळियौ–१ देखो 'बांवल'। २ देखो 'बावळौ'।

बावळौ–वि० [सं० वातुल] (स्त्री० बावळी) १ जिसकी बुद्धि या मस्तिष्क वात विकार के कारण विकृत हो चुका हो। पागल, विक्षिप्त। २ मदोन्मत्त, उन्मत्त, मतवाला। ३ हत प्रभ, भौंचक्का। ४ बेसुध। ५ नासमझ, मूर्ख। ६ अज्ञानी। ७ वायु का, वायु सम्बन्धी।

बावीस–देखो 'बाईस'।

बावीसमौ (वौ)–देखो 'बाईसमौ'।

बावीसी–देखो 'बाईसी'।

बावौ–देखो 'बांवौ'।

बावोत्तर–देखो 'बत्तोत्तर'।

बासंत–देखो 'वासंत'।

बासंव (वौ)–देखो 'बासिंदौ'।

बास–देखो 'वास'।

बासक–१ देखो 'वासक'। २ देखो 'वासुकि'।

बासकसज्जा–देखो 'वासकसज्जा'।

बासग–देखो 'वासुकि'।

बासड़ी, बासड़ौ–देखो 'वास'।

बासटौ–देखो 'बासठौ'।

बासठ, बासठि (ठी)–वि० [सं० द्वाषष्टि] साठ और दो। –पु० साठ और दो की संख्या, ६२।

बासठे'क–वि० बासठ के लगभग।

बासठौ–पु० [सं० द्विषष्टः] बासठ की संख्या का वर्ष।

बासण–पु० १ बर्तन, पात्र। २ साधन, उपकरण।

बासणौ (वौ)–क्रि० [सं० वासनम्] १ बदबू देना, सड़ना, दुर्गन्ध युक्त होना। २ महकना। गंध देना। ३ अपशब्द कहना। ४ बुरे भाव व्यक्त करना। ५ देखो 'बसणौ' (वौ)

बासती–पु० १ लाल रंग का वस्त्र विशेष। २ आग का अंगारा. आग।

बासते (तै)–१ देखो 'वास्ते'। २ देखो 'बासदी'।

बासती (त्तौ,स्यौ)–पु० १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष। २ देखो 'वास्तौ'।

बासवी, बासवे–देखो 'बासदी'।

बासदेव–१ देखो 'बासदे'। २ देखो 'वासुदेव'।

बासना–देखो 'वासना'।

बासप–देखो 'वास्प'।

बासर–देखो 'वासर'। —कर, किरण–'वासरकर'।

बासव–देखो 'वासव'।

बासवी–देखो 'वासवी'।

बासवोदिसा–देखो 'वासविदिसा'।

बाससुमेर, बाससुमेरु–देखो 'वाससुमेर'।

बासांवळी–देखो 'वासावली'।

बा'सा–पु० वृद्ध पुरुष, बृद्ध पुरुष का सम्बोधन।

बासिंद, बासिंदौ–पु० [फा० बाशिद] १ बसने वाला, रहने वाला निवासी। २ प्रसिद्ध, मशहूर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बासी–वि० [सं० बास] १ जो ताजा न हो। २ जो रात का या एक वक्त पहले का बना हो। ३ देखो 'वासी'। ४ जो कुम्हला गया हो। ५ अधिक समय तक पड़े रहने से जो विकृत हो गया हो।

बासीमुंडी–पु० प्रातःकाल जागने पर रहने वाली मुंह की दशा।

बासुकि, बासुकी, बासुग–देखो 'वासुकि'।

बासुर–१ देखो 'वासुरा'। २ देखो 'वासर'।

बासुरी–देखो 'वासर'।

बासू–पु० [सं० वसु] घोड़ा।

बासो–देखो 'वासी'।

बास्सो–१ देखो 'वासदो'। २ देखो 'बासती'।

बास्ते, बास्तें–१ देखो 'वास्ते'। २ देखो 'बासती'।

बास्तो–१ देखो 'बासतो'। २ देखो 'वास्तो'। ३ देखो 'बासती'।

बाह–स्त्री० [सं०] १ भुजा, हाथ। २ भुजबल, शक्ति। –[अ०] ३ मैथुन शक्ति, काम शक्ति। ४ बाजा, वाद्य। ५ देखो 'वाह'। —**आजांन**='आजानबाहु'।

बाहड़णी (बी)–देखो 'बावड़णी' (बी)।

बाहण–देखो 'वाहन'।

बाहणअरी–पु० १ भैंसा, महिष। २ ऊंट।

बाहणमेह–पु० [सं० वाहन-मेघ] इन्द्र।

बाहणी–देखो 'वाहनी'।

बाहणो (बो)–क्रि० [सं० वाहनं] १ प्रवाहित करना, बहाना। २ देखो 'बावणो' (बो)।

बाहदर–देखो 'बहादुर'।

बाहदी–देखो 'बासदी'।

बाहन–देखो 'वाहन'।

बाहनी–देखो 'वाहनी'।

बाहनो–देखो 'बहानो'।

बाहप्रलंब–देखो 'बाहुप्रलंब'।

बाहबाही–देखो 'वाहवाही'।

बाहभाण–पु० [सं० भानुवाहन] १ घोड़ा, अश्व। २ सूर्य का अश्व।

बाहर–वि० [सं० बहिस्] १ भीतर का विपर्याय, अन्दर का उल्टा। २ किसी पात्र, क्षेत्र या सीमा से अलग, दूर, तटस्थ। ३ सीमा से दूर। ४ मर्यादा को छोड़ा हुआ। –अव्य० सिवाय, वगैर, अलग, अलावा, छोड़कर। –स्त्री० १ सहायता, मदद। २ रक्षा, बचाव। ३ अनुधावन, पीछा। ४ पीछा करने की क्रिया। ५ पीछा करने वाला दल या टोली। ६ पीछा करने वाली सेना।

बाहरजामी–पु० [सं० बाह्ययामी] ईश्वर का सगुण रूप, बाहरी रूप।

बाहरली–देखो 'बारली' (स्त्री० बाहरली)।

बाहरवी–देखो 'बाहरू'।

बाहरि (री)–वि० [सं० बाह्य] १ बाहर का, बाह्य। २ अजनबी, अनजान। ३ अलग, भिन्न। ४ पराया, गैर। ५ समाज से बहिष्कृत। ६ पतित। ७ विदेशी। –क्रि० वि० १ बगैर, बिना, रहित। २ देखो 'बाहर'।

बाहरु (रू)–वि० १ रक्षा करने वाला, रक्षक। २ सहायक, मददगार। ३ युद्ध या संटककाल की सूचनार्थ बजने वाला वाद्य। ४ पीछा करने वाला। ५ देखो 'बाहरी'।

बाहरो–देखो 'बायरो' (स्त्री० बाहरी)।

बाहळी–देखो 'वा'ळी'।

बाहली–देखो 'बाली' (स्त्री० बाहली)।

बाहस–पु० [सं० बाहस] अजगर नामक सर्प।

बाहसवा–स्त्री० पार्वती, दुर्गा।

बाहांप्रळंब–देखो 'बाहुप्रलंब'।

बाहांळ (ळी)–देखो 'बांहाळ'।

बाहादर–देखो 'बहादुर'।

बाहादरी–देखो 'बहादुरी'।

बाहार–१ देखो 'बाहर'। २ देखो 'वार'।

बाहारली–देखो 'बारली'। (स्त्री० बाहारली)

बाहाळी–देखो 'वा'ळी'।

बाहिखदोस–पु० भिक्षा संबधी एक दोष। (जैन)

बाहिज्यालोचन–पु० ललाट पर आड़े तिलक वाला घोड़ा विशेष।

बाहित्थदेस–पु० [सं० बाहित्थ-देश] हाथी के कुंभस्थल के नीचे का भाग।

बाहित्र–स्त्री० नाव। जहाज।

बाहिनी–देखो 'वाहनी'।

बाहिर–देखो 'बाहर'।

बाहिरली (ल्यु)–देखो 'बारली' (स्त्री० बाहिरली)।

बाहिरि (री)–१ देखो 'बाहर'। २ देखो 'बाहरी'।

बाहिरो–देखो 'बा'यरो'।

बाही–देखो 'वही'।

बाहीयउ–देखो 'बाह्य'।

बाहु, बाहुअ–पु० [सं० बाहु] १ भुजा, बांह। २ हाथ, कलाई। ३ पशु के अगले पैर के ऊपर का हिस्सा। ४ इक्ष्वाकुवंशीय का एक राजा। ५ पृथुराजा के पुत्र का नाम। ६ इन्द्र सावर्णि मनवन्तर के सप्तऋषियों में से एक। ७ स्वारोचिष मनु का एक पुत्र। ८ बीस विहरमानों में से एक।

बाहुक–पु० [सं०] १ राजा नल का एक नाम। २ नकुल का नामान्तर। ३ कौरव्य कुल का एक नाग। ४ बन्दर। ५ इक्ष्वाकुवंशीय राजा बाहु का नामान्तर। ६ वृष्णिवंशीय एक वीर।

बाहुड़–१ देखो 'बावड़'। २ देखो 'बाहु'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाहुड़णी (बो)–देखो 'बावड़णी' (बो) ।
बाहुड़ि–देखो 'बहुरी' ।
बाहुड़ी–१ देखो 'बहू' । २ देखो 'बाहु' ।
बाहुज–पु० [सं० बाहुजन्य] १ ब्रह्मा के हाथ से उत्पन्न, क्षत्रिय । २ तोता ।
बाहुत्र, बाहुत्राण–पु० [सं० बाहुत्र] बाहु की रक्षा करने वाला कवच ।
बाहुदंड–पु० [सं०] भुजदंड, बाहु, भुजा ।
बाहुदंतक–पु० [सं०] इन्द्र द्वारा रचित स्मृति ।
बाहुदंती–पु० [सं० बाहुदन्तेय] इन्द्र ।
बाहुप्रलंब (म)–वि० [सं०बाहुप्रलंभ] जिसकी भुजाएँ लम्बी हों ।
बाहुबल(ल)–पु० [सं० बाहुबल] पराक्रम, शौर्य, भुजबल ।
बाहुबली (ली)–वि० पराक्रमी, शूरवीर ।
बाहुमूल–पु० [सं० बाहुमूल] कंधे का संधिस्थल ।
बाहुयुद्ध–पु० [सं०] १ मल्ल युद्ध । २ कुश्ती ।
बाहुरक्षक–पु० [सं०] १ अंगरक्षक । २ बाहुरक्षक कवच ।
बाहुल–पु० [सं० बाहुल] १ युद्ध के समय बाहु पर धारण करने का कवच । २ हाथों के दास्ताने । ३ अग्नि । ४ कार्तिक मास ।
बाहुसंगार–पु० [सं बाहुशृंगार] भुजा का आभूषण ।
बाहुसंस्फोट–पु० [सं०] ताल ठोकना क्रिया ।
बाहुसाली–पु० [सं० बाहुशालिन्] १ शिव, महादेव । २ भीम ।
बाहुहजार–पु० सहस्रबाहु ।
बाहूं, बाहू, बाहूड़ी–देखो 'बाहु' ।
बाहूजुद्ध–देखो 'बाहुयुद्ध' ।
बाहूडंड, बाहूदंड–देखो 'बाहुदंड' ।
बाहूसाखा–स्त्री० [सं० बाहु शाखा] अंगुलि ।
बाहेण–देखो 'बाहन' ।
बाहैरी–१ देखो 'बाहर' । २ देखो 'बाहरी' ।
बाह्य–वि० [सं०] १ बाहर का, बाहरी । २ अजनबी, अपरिचित ३ विदेशी । ४ जो अन्दर का न हो । ५ परिवार, वर्ग या संघ से इतर । –पु० राजा की सवारी का हाथी ।
बाह्यांतर–क्रि०वि० [सं०] भीतर-बाहर दोनों ओर ।
बाह्यायाम–पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग ।
बाह्लीक–देखो 'वाह्लीक' ।
बि–देखो 'बी' ।
बिजण, बिजन–१ देखो 'व्यंजन' । २ देखो 'बींजणी' ।
बिजणी–देखो 'बींजणी' ।
बिझ–देखो 'विंध्य' ।
बिट–१ देखो 'बींट' । २ देखो 'विट' ।
बिटणी (बो), बिट्टणी (बो)–देखो 'बींटणी' (बो)
बिंडी–१ देखो 'भिंडी' । २ देखो 'बिंदी' ।
बिणणी (बो)–क्रि० [सं० वृ] १ चुनना, बीनना । २ किसी पदार्थ की छंटनी करना, अलग-अलग करना ।
बिणाई–स्त्री० १ चुनने या बीनने की क्रिया या भाव । छंटनी । २ चुनने या छंटनी करने का पारिश्रमिक । ३ देखो 'बुणाई'
बिंद–१ देखो 'बिंदु' । २ देखो 'बूंद' । ३ देखो 'बिंदी' । ४ देखो 'बिंदक' ।
बिंदक–पु० १ एक राजवंश । २ देखो 'बिंदु' । ३ देखो 'बूंद' ।
बिंदकी–वि० वीर्य से उत्पन्न । –पु० दशनामी गोस्वामियों की किसी स्त्री से उत्पन्न उत्तराधिकारी शिष्य या पुत्र ।
बिंदणी (बो)–१ देखो 'वंदणी (बो) । २ देखो 'विंधणी' (बो)
बिंदली–देखो 'बिंदी' ।
बिंदवी–देखो 'बिंदु' ।
बिंदाळ–पु० देवदाली का वृक्ष ।
बिंदी–स्त्री० [सं० बिंदु] १ स्त्रियों के ललाट पर होने वाला सुहाग बिंदु । २ उक्त प्रकार का आभूषण । ३ ललाट पर लगने वाला गोल तिलक, टीका । ४ देखो 'बिंदु' ।
बिंदु–पु० [सं०] १ किसी तरल पदार्थ की बूंद, कतरा । २ सूक्ष्म परमाणु, छोटा कण । ३ शून्य, सिफर, गोला अंक । ४ वीर्य की बूंद, शुक्र कण । ५ योग में अनाहत नाद के प्रकाश का व्यक्त रूप । ६ ज्योमिती के अनुसार बहुत छोटा चिह्न या वस्तु जिसके विभाग नहीं किया जा सके । ७ शब्द या वर्ण पर लगने वाला अनुस्वार । ८ ललाट पर लगने वाला गोल टीका, तिलक, बिंदी । ९ किसी रंग आदि का लगने वाला छींटा धब्बा । १० किसी क्षेत्र आदि का केन्द्र स्थान, मध्यस्थल । ११ ओस कण । १२ श्रम कण ।
बिंदुसार–पु० [सं०] १ शिशुनाग वंशीय एक राजा । २ एक मौर्य वंशीय राजा ।
बिंद्राबन, बिंद्रावन–देखो 'वृंदावन' ।
बिंध–देखो 'विंध्य' ।
बिंधणी (बो)–क्रि० [सं० वेधनं] १ छेदा जाना, छिद्रित होना । २ शस्त्र या किसी तीक्ष्ण वस्तु से बेधा जाना । ३ उलझना, फंसना । ४ किसी के साथ संलग्न होना । ५ तीखे औजार से खोदा जाना ।
बिंधाणी (बो), बिंधावणी (बो)–क्रि० [सं० वेधनं] १ छेदना, छिद्रित करना । २ शस्त्र या किसी तीक्ष्ण वस्तु से बेधना । ३ उलझाना, फंसाना । ४ किसी के साथ संलग्न करना । ५ तीखे औजार से खोदना ।
बिंध्य–देखो 'विंध्य' ।
बिंध्याचल–देखो 'विंध्याचल' ।
बिंब–पु० [सं० बिम्बम्] १ किसी पारदर्शक पदार्थ से दिखने वाला प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, प्रतिछाया । २ सूर्य । ३ सूर्य या चन्द्रमा का मण्डल । ४ सूर्य या चन्द्रमा का आकार, गोला ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ कोई गोलाकार चिह्न, मण्डल । ६ शीशा, दर्पण । ७ परछाईं, छाया । ८ सूरत, शक्ल । ९ चमक, दमक । १० प्रकाश, रोशनी । ११ शोभा, कांति, आभा । १२ आभास, झलक, झांकी । १३ मूर्ति, प्रतिमा । १४ देवालय । १५ शिखर । १६ एक राजा जो वसुदेव व भद्रा का पुत्र था । १७ कुंदरू । १८ एक छंद विशेष । १९ लक्षणा या व्यंजना शक्ति से निकलने वाला अर्थ । २० देखो 'बंब' ।

बिंबफळ–पु० [सं० बिंबकम्] एक प्रकार का लाल कुंदरू ।

बिंबर–देखो 'बिंबर' ।

बिंबसार, बिंबिसार–पु० १ अजातशत्रु के पिता एक राजा । २ राजा बिन्दुसार का एक नाम ।

बिंबर–देखो 'बिंबर' ।

बिंबळ–१ देखो 'बिल्वल' । २ देखो 'बिंबळ' ।

बिंबरबिंत–पु० संभोग विषयक एक आसन विशेष ।

बिंयाळीस–देखो 'बंयाळीस' ।

बिंयो–पु० १ ऊन का धागा । २ रुई के टुकड़े में रखी जाने वाली अमल की मात्रा । ३ साग-सब्जी

बिंरद–देखो 'बिरुद' ।

बिंहू–देखो 'बेऊं' ।

बि–पु० १ नभ । २ फल । ३ वचन । ४ विष । ५ शशि । –स्त्री० ६ पत्ती । ७ पृथ्वी । ८ देखो 'बी' ।

बिआणी (बी)–देखो 'बोहणी' (बौ) ।

बिआणी–देखो 'बिहांणी' ।

बिआ–देखो 'बी' ।

बिआणी (बी)–१देखो 'ब्याणी' (बौ)। २ देखो 'विवाहणी' (बौ) ।

बिइ–देखो 'बी' ।

बिउ–देखो 'बेऊं' ।

बिउलसिरी–देखो 'बोलसिरी' ।

बिओग–देखो 'वियोग' ।

बिओगी–देखो 'वियोगी' ।

बिओत्तर–देखो 'बओत्तर' ।

बिकड़ियो–पु० [सं० द्विकटह] १ दो कड़ों का पात्र । २ छोटा कटाह, कड़ाई ।

बिकट (ट्ट)–देखो 'विकट' ।

बिकणी (बी)–क्रि० [सं० विक्रय] १ मूल्य या कीमत पर बिकना, बेचा जाना । २ बिक्री होना । ३ दास या गुलाम होना । ४ आत्म-समर्पण करना । ५ स्वीकार करना, मानना । ६ अधिकार में जाना । ७ उचित समझना । ८ गिनना ।

बिकरंद–देखो 'बिकरंद' ।

बिकरतन–पु० [सं० बिकर्तन] सूर्य, मानु ।

बिकरम–१ देखो 'बिक्रमादित्य' । २ देखो 'बिक्रम' ।

बिकराळ–देखो 'बिकराळ' ।

बिकरी, बिकरौ–देखो 'बिक्री' ।

बिकळ–देखो 'बिकळ' । —चित=बिकळचित' ।

बिकसणी (बी)–देखो 'बिकसणी' (बी) ।

बिकसत–देखो 'बिकसित' ।

बिकसाणी (बी), बिकसावणी (बी)–देखो 'बिकसाणी' (बी) ।

बिकसित–देखो 'बिकसित' ।

बिकस्सणी (बी)–देखो 'बिकसणी' (बी) ।

बिकाऊ–पु० [सं० विक्रयं] बिकने योग्य वस्तु, बेचने के लिये निश्चित किया हुआ या रखा हुआ ।

बिकाणी (बी)–क्रि० १ मूल्य या कीमत पर दिलवाना, बिकवाना, बेचाना । २ दुकान आदि पर बिक्री कराना । ३ दास या गुलाम बनवाना । ४ आत्म-समर्पण कराना । ५ स्वीकार कराना, मनवाना । ६ औचित्य समझाना । ७ गिनवाना ।

बिकार–देखो 'विकार' ।

बिकारी–देखो 'बिकारी' ।

बिकावणी (बी)–देखो 'बिकाणी' (बी) ।

बिकासणी (बी)–देखो 'विकासणी' (बी) ।

बिक्क–पु० बीस वर्ष का हाथी ।

बिक्करांळ–देखो 'बिकराळ' ।

बिक्कत–देखो 'बिकत' ।

बिक्कम–देखो 'बिक्रम' ।

बिक्कमांत–देखो 'बिक्रमांत' ।

बिक्कमाजीत, बिक्कमारक–देखो 'बिक्रमारक' ।

बिक्कमी–देखो 'बिक्रमी' ।

बिक्कय–देखो 'बिक्रय' ।

बिक्की–स्त्री० [सं० बिक्रय] १ बेचने का कार्य । २ बेचने से होने वाली आय ।

बिक्केय–१ देखो 'बिक्रय' । २ देखो 'बिक्रेय' ।

बिखंड–देखो 'बिखंड' ।

बिखंडणी (बी)–देखो 'बिखंडणी' (बी) ।

बिखंभ–देखो 'बिखंभ' ।

बिख–देखो 'बिस' ।

बिखम–देखो 'बिखम' ।

बिखमी–देखो 'बिखमी' ।

बिखरणी (बी)–क्रि० [सं० बिकरणम्] १ किसी पदार्थ के कण या रेशे इधर-उधर फैलना, छितरना, पसरना । २ एकत्र या संगठित हुए का अलग-अलग हो जाना । ३ लिखावट या अंकन का मिटना, अलोप होना । ४ अव्यवस्थित होना, अस्त-व्यस्त होना । ५ नष्ट होना, ध्वस्त होना । ६ सोजन, शोथ या वर्म का मिटना । ७ प्रकाशित या विज्ञापित होना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८ ढह जाना, मिटना। ९ विसर्जन होना। १० खुलना, उधड़ना।

बिखराणो (बो), **बिखरावणो (बो)**–क्रि० १ किसी पदार्थ के कण या रेशों को इधर-उधर फैलाना, छितराना, पसराना। २ एकत्र या संगठित हुए को अलग-अलग कराना। ३ लिखावट या अंकन को मिटाना, अलोप कराना। ४ अव्यवस्थित या अस्त-व्यस्त कराना। ५ नष्ट कराना, ध्वस्त कराना। ६ सोजन, शोथ या वर्म मिटाना। ७ प्रकाशित या विज्ञापित कराना। ८ ढहाना, मिटाना। ९ विसर्जन कराना। १० खुलवाना, उघड़वाना।

बिखसूचक–पु० चकोर।

बिखहर–१ देखो 'विसधर'। २ देखो 'विसहर'।

बिखहा–पु० [सं० विष-हन्] गरुड़।

बिखाद–देखो 'विसाद'।

बिखेर–स्त्री० पैसे आदि उछालने की क्रिया, शव पर पैसे उछालने की क्रिया।

बिखेरणो (बो)–क्रि० [सं० विकीर्णक] १ किसी वस्तु के रेशों या कणों को इधर-उधर फैलाना, छितराना, पसराना। २ एकत्र या संगठित का अलग-अलग होना, यत्र-तत्र होना। ३ अव्यवस्थित या अस्त-व्यस्त करना। ४ नष्ट करना, ध्वस्त करना। ५ भंग करना, विसर्जन करना। ६ सोजन, शोथ या वर्म मिटाना। ७ खोलना, उधेड़ना। ८ लिखावट या अंकन मिटाना। ९ प्रकाशन या विज्ञापन करना। १० ढहाना, मिटाना।

बिखेराणो (बो)–देखो 'बिखराणो' (बो)।

बिखै–देखो 'विसय'।

बिखोरणो (बो)–देखो 'बिखेरणो' (बो)।

बिखो–देखो 'विखो'।

बिगड़णो (बो)–क्रि० [सं० विकरण] १ किसी वस्तु का, रूप गुण, स्वभाव की दृष्टि से विकृत होना। २ निर्माण क्रिया में त्रुटि रह जाने से कोई वस्तु ठीक न बनना। ३ खराब दशा या अवस्था में आना, विकृत होना। ४ परस्पर संबंध खराब होना, तनाव होना। ५ आचरण, स्वभाव या प्रकृति में विकार आना। ६ नाराज, क्रुद्ध या गुस्से में होना। ७ कुलीनता मिटना, कुल गौरव नष्ट होना। ८ उद्दण्ड या अनियंत्रित होना। ९ पथ-भ्रष्ट होना, बद चलन होना। १० पतन होना, ह्रास होना। ११ नष्ट होना। १२ प्रतिष्ठा घटना। १३ काव्य संबंधी दोष आना। १४ हानि या नुकसान होना। १५ व्यर्थ खर्च होना। १६ लड़ाई होना। १७ विपरीत होना, विरुद्ध होना।

बिगड़ायल, बिगड़ैल–वि० १ वर्ण संकर। २ पथ-भ्रष्ट। बद चलन। ३ उद्दण्ड, बदमाश। ४ चुगलखोर। ५ क्रुद्ध, बिफरा हुआ।

बिगड़ो–वि० [सं० द्वि-गुणित] (स्त्री० बिगड़ी) १ दुगुना। २ दो। –पु० दो की संख्या।

बिगत–देखो 'विगत'। —**वार**='बिगतवार'

बिगताणो (बो)–देखो 'विगताणो' (बो)।

बिगताळु, बिगताळू देखो 'विगताळू'।

बिगतावणो (बो)–देखो 'विगताणो' (बो)।

बिगन–देखो 'विघ्न'।

बिगनोप–देखो 'विग्यान'।

बिगर, बिगरि–देखो 'बगैर'।

बिगल–देखो 'बिगुल'।

बिगसणो (बो)–देखो 'विकसणो' (बो)।

बिगसाणो (बो), **बिगसावणो (बो)**–देखो 'विकसाणो' (बो)।

बिगाड़–पु० १ बिगड़ने की क्रिया या भाव। २ ऐब, खराबी। ३ वैमनस्य, शत्रुता। ४ बुराई, अपकार, अहित। ५ हानि नुकसान। ६ संहार, नाश। ७ विकृति, विकार।

बिगाड़णो (बो), **बिगारणो (बो)**–क्रि० [सं० विकार] १ किसी वस्तु के रूप गुण आदि विकृत करना। २ निर्माण या बनावट में दोष या ऐब रख देना। ३ दुर्दशा करना, खराबी करना। ४ मन-मुटाव करना, तनाव बढ़ाना। मतभेद बढ़ाना। ५ कुलीनता मिटाना, कुल गौरव नष्ट करना, वर्ण संकर करना। ६ आचरण, प्रकृति या स्वभाव खराब करना। ७ नाराज करना, क्रुद्ध करना। गुस्से में करना। ८ पथ-भ्रष्ट करना, बदचलन करना। ९ सतीत्व या शील नष्ट करना। १० पतन करना, बरबाद करना, ह्रास करना। ११ नष्ट करना। १२ प्रतिष्ठा में हानि पहुंचाना, बेइज्जती करना। १३ काव्य रचना में दोष रखना। १४ हानि करना। १५ व्यर्थ खर्च करना। १६ लड़ाई करना, झगड़ा करना। १७ विपरीत या विरुद्ध करना। १८ व्यवस्था खराब करना। १९ गुमराह करना, कुमार्ग पर डालना। २० दूषित या गंदा करना।

बिगास–देखो 'विकास'।

बिगासणो (बो)–देखो 'विकासणो' (बो)।

बिगुण, बिगुणो–वि० [सं० द्वि-गुणित] दुगुना।

बिगुल–स्त्री० १ एक प्रकार की तुरही। २ उक्त तुरही का शब्द।

बिगूचणो (बो)–क्रि० [सं० विकोचनम्] १ निंदित होना, बदनाम होना। २ दुःखी होना, संतप्त होना।

बिगोई बिगोई–वि० १ चुगलखोर। २ निंदक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिगोवणो (बो)–क्रि० [सं० विकोचनम्] १ निंदा या अपकीर्ति करना। २ दुःखी या संतप्त करना, त्रस्त करना।

बिगोणो (बो), बिगोवणो (बो)–देखो 'बिगोणो' (बो)।

बिगो–पु० ढाई वर्ष का पशु।

बिग्गाहा–स्त्री० आर्या छन्द का एक भेद।

बिग्यान–देखो 'बिग्यान'।

बिग्रह–देखो 'बिग्रह'।

बिघड़ियो–१ देखो 'बेड़ो'। २ देखो 'दुगड़ियो'।

बिघन, बिघ्न–देखो 'बिघ्न'। —**कारी**='बिघ्नकारी' —**हरण (न)**='बिघ्नहरण'।

बिड़–स्त्री० झाड़ी या झुरमुट का भूमि स्पर्शी भाग।

बिड़द, बिड़दड़ी–पु० [सं० वृद्धि] १ विवाह आदि मांगलिक कार्य। २ मांगलिक कार्य के समय बनाया जाने वाला मिष्ठान। ३ इस मिष्ठान का गणेश को चढ़ाया जाने वाला भाग।

बिड़दबड़ी–स्त्री० [सं० वृद्धिवाटिका] विवाह के प्रारंभ में मातृका पूजन के समय बनाई जाने वाली वाटिका, मुंगोड़ी।

बिड़दावणो (बो), बिड़दावणो (बो)–देखो 'बिरुदावणो' (बो)।

बिड़लो–पु० [देश०] १ संबंध या सगाई के लिये आने वाला श्रीफल आदि। २ मिट्टी के पात्र में उगाया जाने वाला पौधा। ३ देखो 'बीड़ो'।

बिड़ाळ–देखो 'बिडाळ'।

बिड़ोतरसो–वि० [सं० द्व्युत्तर-शतम्] एक सौ दो। –पु० एक सौ दो की संख्या, १०२।

बिड़ो–१ देखो 'बिड़'। २ देखो 'बीड़ो'।

बिड़ोला–देखो 'बिडुजा'।

बिच–देखो 'बीच'।

बिचकल–पु० [सं० बिचकिलः] एक प्रकार की मल्लिका या चमेली, मदनक।

बिचक्खण–देखो 'बिचक्षण'।

बिचरणो (बो)–देखो 'बिचरणो' (बो)।

बिचळणो (बो)–देखो 'बिचळणो' (बो)।

बिचळाणो (बो), बिचळावणो (बो)–देखो 'बिचळाणो' (बो)।

बिचलो–वि० (स्त्री० बिचली) १ बीच में रहने वाला, मध्यस्थ। २ मध्यस्था करने वाला। ३ मध्यम श्रेणी का। ४ मध्यम आकार का। –**बासो**–पु० शव यात्रा में मार्ग में ठहरने का स्थान।

बिचा–देखो 'बीच'।

बिचार–देखो 'बिचार'।

बिचारणो (बो)–देखो 'बिचारणो' (बो)।

बिचारमांन (वांन)–देखो 'बिचारवांन'।

बिचारो–देखो 'बेचारो'।

बिचाळ, बिचाळी, बिचाळै–देखो 'बिचै'।

बिचि–१ देखो 'बीच'। २ देखो 'बिचि'।

बिचित्र–देखो 'बिचित्र'।

बिचित्रता–देखो 'बिचित्रता'।

बिचिन–वि० चतुर, होशियार।

बिचियो–देखो 'बच्चो'।

बिचेटियो–वि० १ मध्य का, बीच वाला। २ मंझला।

बिचै–क्रि०वि० १ बीच में या मध्य में। २ तुलना में, मुकाबले में। ३ अन्दर में, भीतर में। ४ दरम्यान।

बिच्छी, बिच्छु, बिच्छू, बिच्छूड़ी, बिच्छूड़ो–पु० [सं० वृश्चिक] १ अति विषैला एक जीव जिसके पूंछ में डंक होता है। २ एक प्रकार की घास। ३ काकतुंडी का पौधा व उसका फल। ४ स्त्रियों के पैरों का एक आभूषण विशेष।

बिछड़णो (बो)–१ देखो 'बिछुड़णो' (बो)। २ देखो 'बिछूटणो' (बो)।

बिछड़ाणो (बो), बिछड़ावणो (बो)–देखो 'बिछुड़ाणो' (बो)।

बिछणो (बो)–क्रि० [सं० विस्तरणम्] १ बिछौने की तरह धरातल या किसी आधार पर फैलना। २ यत्र-तत्र फैलना, बिखरना। ३ युद्ध स्थल में लाशों का पड़ना।

बिछवो–पु० १ महावत के अंगूठे में पहनने का उपकरण। २ देखो 'बिछोह'।

बिछाइत–देखो 'बिछायत'।

बिछाओ–देखो 'बिछोह'।

बिछाणो–पु० [सं० विस्तरण] दरी, गद्दा, चादर आदि साधन, बिस्तर, बिछौना।

बिछाणो (बो)–क्रि० [सं० विस्तरणम्] १ बिस्तर फैलाना, बिछाना। २ यत्र-तत्र बिखेरना, छितराना। ३ युद्ध स्थल में लाशों का ढेर लगा देना।

बिछात, बिछायत–स्त्री० [सं० विस्तर] १ बिछाने का कार्य। २ दरी, गद्दा आदि बिछा कर की गई तैयारी। ३ बिछौना, बिस्तर। ४ विशेष समारोह के लिये की गई तैयारी।

बिछावण, बिछावणो–देखो 'बिछाणो'।

बिछावणो (बो)–देखो 'बिछाणो' (बो)।

बिछियो–पु० [सं० विच्छ] १ स्त्रियों के पैरों का एक आभूषण विशेष। २ देखो 'बच्चो'।

बिछुड़ण–स्त्री० [सं० विच्छेदन] १ बिछुड़ने की क्रिया या भाव। २ वियोग, जुदाई।

बिछुड़णो (बो)–क्रि० [सं० विच्छेदनम्] १ साथ रहने वालों का अलग-अलग होना, पृथक-पृथक होना। २ वियोग या जुदाई होना। ३ भटक जाना, भूल में पड़ना। ४ साथी से अलग रह जाना। साथ छूट जाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिछुड़ाणो (बो), बिछुड़ावणो (बो)–क्रि० [सं० विच्छेदनम्] १ एक साथ रहने वालों को अलग करना, जुदा करना। २ वियोग या जुदाई की स्थिति में रखना या करना। ३ भटका देना, भ्रमित करना। ४ साथी से अलग करना, साथ छुड़ा देना।

बिछुटणो (बो)–१ देखो 'बिछुड़णो' (बो)। २ देखो 'बिछूटणो' (बो)।

बिछुटाणो (बो)–१ देखो 'बिछुड़ाणो' (बो)। २ देखो 'बिछूटाणो' (बो)।

बिछुरणो (बो)–देखो 'बिछुड़णो' (बो)।

बिछूंदरो–स्त्री० विषतुइया, छिपकली।

बिछूटणो (बो)–क्रि० १ कटकर दूर होना। २ मुक्त होना। ३ शेष रहना। ४ समाप्त होना, मिटना। ५ चल पड़ना। ६ अलग या दूर होना। ७ छूट पड़ना, गिरना। ८ देखो 'बिछुड़णो' (बो)।

बिछूटाणो (बो)–क्रि० [सं० विछूटणो] १ काट कर दूर करवाना। २ छुड़वाना, मुक्त करवाना। ३ शेष रखवाना। ४ समाप्त करवाना, मिटवाना। ५ चलवाना। ६ अलग हटवाना, दूर करवाना। ७ छुटवाना, गिरवाना। ८ देखो 'बिछुड़ाणो' (बो)। ९ देखो 'छूटाणो' (बो)।

बिछूटो–वि० (स्त्री० बिछूटी) मुक्त, खुला हुआ, फेंका हुआ।

बिछेद–देखो 'बिच्छेद'।

बिछेवो, बिछैवो–देखो 'बिछोह'।

बिछोड़णो (बो), बिछोड़ाणो (बो), बिछोड़ावणो (बो)–देखो 'बिछुड़ाणो' (बो)।

बिछोय, बिछोवो, बिछोह–देखो 'बिछोह'।

बिछोहणो (बो)–देखो 'बिछोहणो' (बो)।

बिछोहो–देखो 'बिछोह'।

बिज–१ देखो 'बीज'। २ देखो 'बोजळी'।

बिजकणो (बो)–देखो 'भिचकणो' (बो)।

बिजकाणो (बो), बिजकावणो (बो)–देखो 'भिचकाणो' (बो)।

बिजक्क, बिजड़, बिजड़ली–देखो 'बीजळा'।

बिजड़ाहथ (हथी, हथो)–देखो 'बीजळाहथ'।

बिजड़ी, बिजड़ो–देखो 'बोजळा'।

बिजणो–देखो 'बींजणो'।

बिजन–देखो 'विजन'।

बिजय–देखो 'विजय'। —घंट='विजयघंट'। —सार='विजयसार'।

बिजया–देखो 'विजया'। —दसमी—='विजयादसमी'।

बिजळ, बिजळड़ी–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।

बिजळणो (बो)–क्रि० १ चकाचौंध होना, चौंधिया जाना। २ भौंचक्का होना, हक्का-बक्का होना।

बिजळसार–पु० [सं० विद्युत-सार] उत्तम श्रेणी का लोहा विशेष।

बिजळा–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।

बिजळो–देखो 'बीजळी'।

बिजलोटन–स्त्री० एक प्रकार की विलायती बन्दूक।

बिजाई–देखो 'विजाई'।

बिजाणो (बो)–क्रि० बीज बोवाना, बोवाई कराना।

बिजाति–देखो 'विजाति'।

बिजायठ–पु० बांह पर धारण करने का आभूषण विशेष।

बिजावणो (बो)–देखो 'बिजाणो' (बो)।

बिजु–देखो 'बिज्जू'।

बिजुरांणी–स्त्री० [सं० विद्युत-राज्ञी] विद्युत, बिजली।

बिजुळळ, बिजुळळ–देखो 'बीजूझळ'।

बिजेत–देखो 'विजेत'।

बिजै–देखो 'विजय'।

बिजैमंड–देखो 'विजैमंड'।

बिजैसार–देखो 'विजयसार'।

बिजोग–क्रि०वि० १ लिये, निमित्त, हेतु। २ देखो 'वियोग'।

बिजोगिय, बिजोगी–देखो 'वियोगी'।

बिजोरो, बिजोरौ–पु० १ मध्यम आकार का, नींबू की जाति का एक वृक्ष विशेष। २ उक्त वृक्षका फल। ३ मिट्टी का एक पात्र विशेष।

बिज्ज, बिज्जड़–१ देखो 'बीजळी'। २ देखो 'बीजळा'।

बिज्जण–स्त्री० पंखे से हवा करने का कार्य या ढंग।

बिज्जु, बिज्जू–पु० १ एक प्रकार का छोटा जानवर। २ बिल्ली के आकार का एक अन्य जानवर विशेष।

बिज्जड़–देखो 'बोजळा'।

बिझासणियां–स्त्री० कुछ लोक देवियों का समूह।

बिटंब–वि० लम्पट, बदमाश, दुष्ट।

बिटंबण–पु० छल, धोखा, विडंबना।

बिटंबणो (बो)–क्रि० १ घूमना, विचरण करना। २ भ्रमित होना, भटकना।

बिट–१ देखो 'विट'। २ देखो 'वींट'।

बिटकणी–देखो 'वींटणी'।

बिटचार–देखो 'विटचर'।

बिटप–देखो 'विटप'।

बिटळ–देखो 'विटळ'।

बिटळणो (बो)–देखो 'विटळणो' (बो)।

बिटळी–स्त्री० चोटी, शिखर।

बिटळो–देखो 'बिटळ'। (स्त्री० बिटळी)

बिटाणो (बो)–देखो 'बैठाणो' (बो)।

बिटिया–देखो 'बेटी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिट्टी–वि० (स्त्री० बिट्टी) १ दो तह या परत वाला। २ देखो 'बपटी'।

बिट्ठळ–देखो 'विट्ठल'।

बिठणी (बी)–देखो 'बैठणी' (बी)।

बिठाणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बी)।

बिठोरणी (बी)–क्रि० भुजाएँ ठोकना, चुनौती देना।

बिडंब–देखो 'विडंब'।

बिडंबक–देखो 'विडंबक'।

बिडंबण–पु० धोखा, कपट, छल।

बिडंबना–देखो 'विडंबना'।

बिड–१ देखो 'विड'। २ देखो 'विट'।

बिडवाणी (बी), बिडदावणी (बी)–देखो 'बिरुदाणी' (बी)।

बिडरणी (बी)–देखो 'बिडरणी' (बी)।

बिडराणी (बी), बिडरावणी (बी)–देखो 'बिडराणी' (बी)।

बिडरी–देखो 'बिडरी'।

बिडरूप–देखो 'विडरूप'।

बिडरूपी–देखो 'विडरूपी'।

बिडळी–१ देखो 'बीडी'। २ देखो 'बिड़ली'।

बिडली–पु० १ गमला, पौधा। २ देखो 'बीड़ी'।

बिडाणी–देखो 'बिराणी'।

बिडारणी (बी)–देखो 'बिडारणी' (बी)।

बिडाळ–पु० [सं० बिडाल] (स्त्री० बिडाळी) १ बिल्ली। २ वन बिलाव। ३ दोहे का बीसवां भेद। ४ आंख का डेला। ५ आंखों की चिकित्सा विशेष।

बिडूजा, बिडोजा–देखो 'बिड़ूजा'। —वाह='बिड़ूजावाह'।

बिढ़ण–देखो 'बिढ़ण'।

बिढ़णी (बी)–देखो 'बिढ़णी' (बी)।

बिढ़ाळ–देखो 'बेढ़ाळ'।

बिड़ू–पु० बहेड़े का वृक्ष या फल।

बिड़ूणी, बिढ़ोणी–वि० १ युद्ध का, युद्ध संबंधी। २ वीर रस पूर्ण।

बिढ़ो–पु० [सं० बिभितकम्] बहेड़ा नामक वृक्ष या इसका फल।

बिणंगणी–देखो 'बिणगणी'।

बिण–१ देखो 'बिना'। २ देखो 'वण'।

बिणगणी–स्त्री० बैलगाड़ी के अग्रभाग में लटकने वाली लकड़ी।

बिणज–१ देखो 'बिणज'। २ देखो 'वाणिज्य'।

बिणजणी (बी)–देखो 'बिणजणी' (बी)।

बिणजार–पु० १ अच्छी नस्ल का बैल या सांड। २ देखो 'बिणजारो'।

बिणजारा–स्त्री० बैलों पर सामान लाद कर देशांतर में व्यापार करने वाली जाति।

बिणजारो–पु० [सं० वाणिज्यकर] (स्त्री० बणजारण बणजारी) १ उक्त जाति का व्यक्ति। २ सौदागर।

बिणट्ठणी (बी)–क्रि० [सं० विनष्टनम्] १ प्राण निकलना, मरना। २ विनष्ट होना, नष्ट होना।

बिणणी (बी)–देखो 'बिणणी' (बी)।

बिणसणी (बी)–देखो 'बिणसणी' (बी)।

बिणसील–वि० [सं० बिन-शील] दुश्चरित्र। –पु० दुःख।

बिणाव–देखो 'बणाव'।

बिणास–देखो 'बिनास'।

बिणासणी (बी)–देखो 'बिणासणी' (बी)।

बिणियांणी–देखो 'बणियांणी'।

बिणु–देखो 'बिना'।

बिणोकड़ी–देखो 'बिणोकड़ी'।

बितंड–देखो 'वितंड'।

बित–देखो 'वित्त'।

बितथ–देखो 'वितथ'।

बितरण–देखो 'वितरण'।

बितरणी (बी)–देखो 'वितरणी' (बी)।

बितांन–देखो 'वितांन'।

बिताणी (बी), बितावणी (बी)–क्रि० १ समय गुजारना, व्यतीत करना। २ घटित करना। ३ समाप्त या नष्ट करना। ४ बेकार करना।

बितिहोतर (होत्र)–देखो 'वीतिहोत्र'।

बितीत–देखो 'व्यतीत'।

बितीतणी (बी)–क्रि० [सं० व्यतीत] १ समय गुजरना, व्यतीत होना। २ घटित होना। ३ बेकार होना, उपयोगहीन होना। ४ समाप्त होना, नष्ट होना।

बितुंड–देखो 'वितंड'।

बित्त–देखो 'वित्त'।

बित्थरणी (बी)–देखो 'बिस्तरणी' (बी)।

बित्थीरण–देखो 'बिस्तीरण'।

बियरणी (बी)–देखो 'बिस्तरणी' (बी)।

बिया–देखो 'व्यथा'।

बियार–देखो 'बिस्तार'।

बियारणी (बी)–देखो 'बिस्तारणी' (बी)।

बियित–देखो 'व्यथित'।

बियुरणी (बी)–देखो 'बिस्तरणी' (बी)।

बियुंभियो–पु० [सं० द्वि-स्तूप] दो कोहान वाला ऊंट।

बिरमांन–देखो 'विद्यमान'।

बिरंग–देखो 'बदरंग'।

बिरंच–स्त्री० १ तांबे व जस्ते के संयोग से बनी धातु विशेष। २ देखो 'बिदुर'। ३ देखो 'बिदरम'।

बिरवा देखो 'बिधवा'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिदाम–पु० १ सोने-चांदी के आभूषणों पर खुदाई करने का एक औजार । २ जिसका दाम या मूल्य न हो, मूल्य रहित । ३ देखो 'बादाम' ।
बिदामी–देखो 'बादामी' ।
बिदा–देखो 'विदा' ।
बिदाह, बिदाई–देखो 'विदाई' ।
बिदारक–देखो 'विदारक' ।
बिदारणी (बौ)–देखो 'विदारणी' (बौ) ।
बिदारीकंद–देखो 'विदारीकंद' ।
बिदित–देखो 'विदित' ।
बिदिया–देखो 'विद्या' ।
बिदिसा, बिदिसा–देखो 'विदिसा' ।
बिदीरण–देखो 'विदीरण' ।
बिदुळ–स्त्री० एक प्रकार की लचीली लकड़ी ।
बिदूसणी (बौ), बिदूसणी (बौ)–देखो 'विदूसणी' (बौ) ।
बिदेस–देखो 'विदेस' ।
बिदेही–स्त्री० १ राम स्नेही साधुओं की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । २ देखो 'विदेही' ।
बिदोस–पु० [सं० वि-दोष] दोष, अवगुण, बुराई ।
बिद्ध–१ देखो 'विधि' । २ देखो 'विध' । ३ देखो 'बद्ध' ।
बिद्या–देखो 'विद्या' ।
बिद्रमी–देखो 'विद्रुमी' ।
बिद्रावण–पु० १ पलायण, प्रस्थान । २ भाग-दौड़ ।
बिधसणी (बौ)–देखो 'विधूंसणी' (बौ) ।
बिध–१ देखो 'विध' । २ देखो 'विधि' ।
बिधना–देखो 'विधना' ।
बिधवा–देखो 'विधवा' —पण, पणू, पणो='विधवापणी' ।
बिधांण–देखो 'विधांन' ।
बिधाणी (बौ)–देखो 'वदाणी' (बौ) ।
बिधाता–देखो 'विधाता' ।
बिधि–देखो 'विधि' ।
बिधु–देखो 'विधु' ।
बिधुर–देखो 'विधुर' ।
बिधूंसण–देखो 'विधूंसण' ।
बिधूंसणी (बौ)–देखो 'विधूंसणी' (बौ) ।
बिधूसण–देखो 'विधूंसण' ।
बिधूसणी (बौ)–देखो 'विधूंसणी' (बौ) ।
बिधेय–देखो 'विधेय' ।
बिधंस–देखो 'विध्वंस' ।
बिन–देखो 'बिना' ।
बिनउलो–देखो 'बंदोळो' ।
बिनड़णी (बौ)–देखो 'बिनड़णी' (बौ) ।
बिनज–१ देखो 'बिणज' । २ देखो 'वाणिज्य' ।
बिनतासुत–देखो 'विनतासुत' ।
बिनती–देखो 'विनती' ।
बिनवणी (बौ)–देखो 'विनवणी' (बौ) ।
बिनसणी (बौ)–देखो 'विनसणी' (बौ) ।
बिनसाणी (बौ), बिनसावणी (बौ)–देखो 'विनसाणी' (बौ) ।
बिनां–देखो 'बिना' ।
बिनांण–देखो 'विनांण' ।
बिनांणी–देखो 'विनांणी' ।
बिना–अव्य० [सं० विना] १ न होने या रहने की स्थिति । २ रहित, बगैर । ३ अतिरिक्त, सिवाय, छोड़कर ।
बिनादी–वि० आदि रहित, अनादि ।
बिनायक–देखो 'विनायक' ।
बिनास–देखो 'विनास' ।
बिनासणी–देखो 'विनासणी' ।
बिनिंदनीय–वि० १ बुरा । २ निंदा करने योग्य ।
बिनि–देखो 'बिना' ।
बिनीत–देखो 'विनीत' ।
बिने, बिनै–वि० दोनों । –पु० १ दो की संख्या । २ देखो 'बिना' ।
बिनौटा–पु० दूल्हे या दुल्हिन की जूती ।
बिन्नोट–पु० एक प्रकार का शस्त्र ।
बिन्हां, बिन्हें, बिन्है–१ देखो 'बिनै' । २ देखो 'बिना' ।
बिपक्ख, बिपच्छ–देखो 'विपक्ष' ।
बिपच्छी–देखो 'विपक्षी' ।
बिपणक–देखो 'विपणक' ।
बिपणी–देखो 'विपणी' ।
बिपत, बिपता, बिपति, बिपती, बिपत्त, बिपत्ति–देखो 'विपत्ति' ।
बिपद, बिपदा–देखो 'विपदा' ।
बिपर–देखो 'विप्र' ।
बिपरयास–पु० [सं० विपर्यास] अदल-बदल, परिवर्तन ।
बिपरीत–देखो 'विपरीत' ।
बिपुळा–देखो 'विपुळा' ।
बिपुहरीयो–देखो 'दोपारियो' ।
बिप्फरणी (बौ)–देखो 'विफरणी' (बौ) ।
बिप्र–देखो 'विप्र' ।
बिफरणी (बौ)–देखो 'विफरणी' (बौ) ।
बिफळ–देखो 'विफळ' ।
बिबरण–देखो 'विवरण' ।
बिबरो–पु० १ भेद, रहस्य, जानकारी । २ ज्ञान, इल्म ।
बिबस–देखो 'विवस' ।
बिबहार–देखो 'व्यवहार' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिबाह–देखो 'विवाह'।
बिबाहण–देखो 'ब्याण'।
बिबाहणी (बी)–देखो 'विवाहणी' (बी)।
बिबाहिणि (णी)–देखो 'ब्याण'।
बिबाही–१ देखो 'ब्याई'। २ देखो 'विवाई'।
बिबुद्ध–देखो 'विबुध'।
बिबुधालय–देखो 'विबुधालय'।
बिबुधेस–देखो 'विबुधेस'।
बिबेक–देखो 'विवेक'।
बिब्बड़–देखो 'बरबड़ो'।
बिब्बर–देखो 'विवर'।
बिभंजण–देखो 'विभंजण'।
बिभंजणी (बी)–देखो 'विभंजणी' (बी)।
बिभचार–देखो 'व्यभिचार'
बिभळ–देखो 'विभळ'।
बिभव–देखो 'वैभव'।
बिभा–देखो 'विभा'।
बिभाकर–देखो 'विभाकार'।
बिभाग–देखो 'विभाग'।
बिभागी–देखो 'विभागी'।
बिभाड़णी (बी)–देखो 'विभाड़णी' (बी)।
बिभावरी–देखो 'विभावरी'।
बिभावसू–देखो 'विभावसू'।
बिभीखण, बिभीसण–देखो 'विभीसण'।
बिभु, बिभू–देखो 'विभू'।
बिभूत, बिभूति–देखो 'विभूति'
बिभूसा–देखो 'विभूसा'।
बिभेदण–देखो 'विभेदण'।
बिभो–१ देखो 'वैभव'। २ देखो 'भंभो'।
बिभ्भळ–देखो 'विह्वल'।
बिमणउ, बिमणो–देखो 'दूणो'।
बिमन, बिमनो–देखो 'विमन'।
बिमर–वि० १ जबरदस्त। २ देखो 'विवर'।
बिमळ–देखो 'विमळ'।
बिमहो–देखो 'विमुहो'।
बिमाण–देखो 'विमाण'।
बिमाणण–देखो 'विमाणण'।
बिमाणस, बिमान–देखो 'विमाण'।
बिमा, बिमाह–देखो 'विवाह'।
बिमुद्र–देखो 'विमुद्र'।
बिमुहो–देखो 'विमुहो'।
बिमेक–देखो 'विवेक'।
बिमोहणी (बी)–देखो 'विमोहणी' (बी)।
बिम्मर–देखो 'विवर'।
बिय–वि० [सं० द्वि] १ दो। २ युग्म, जोड़ा। ३ दूसरा, द्वितीय। ४ अन्य, दूसरा, और। ५ देखो 'बीज'।
बियत–देखो 'वियत'।
बियांन–पु० १ निर्जन, सूना। २ देखो 'विमांन'।
बियाप–पु० [सं० व्याप्त] १ साधन, सामग्री। २ व्याप्त।
बियापक–देखो 'व्यापक'।
बियापणी (बी)–देखो 'व्यापणी' (बी)।
बियापी–देखो 'व्यापी'।
बियाळको–वि० [सं० भय-आलुच-क] (स्त्री०बियाळकी) १ डरपोक, कायर। भयभीत, डरा हुआ। २ उपद्रवी, दुष्ट। –पु० [सं० व्यालक] दुष्ट हाथी।
बियाव, बियाह–देखो 'विवाह'।
बिये, बियें–सर्व० उस।
बियोग–देखो 'वियोग'।
बियोगी–देखो 'वियोगी'।
बियोबारभो–पु० वर-कन्या संबंधी एक अशुभ-फल (ज्योतिष)।
बियो–देखो 'दूजो'।
बिरंग–देखो 'विरंग'।
बिरंगी–देखो 'विरंगी'।
बिरंच, बिरंचिय, बिरंची–देखो 'विरंची'।—नाथ='विरंचिनाथ'
बिरंज–पु० १ एक प्रकार का मांस। २ देखो 'विणज'।
बिरंडी–देखो 'भिडो'।
बिरंडो–वि० १ दृढ़, अटल, अडिग। २ देखो 'वरंडो'।
बिरकत–देखो 'विरक्त'।
बिरक्ख–देखो 'वृक्ष'।
बिरक्खा–देखो 'वरसा'।
बिरख–देखो 'वृक्ष'।
बिरखा–देखो 'वरसा'। —कर, करण='वरसाकरण' —रत, रितु='वरसारितु'।
बिरगत–देखो 'विरक्त'।
बिरचणी (बी), बिरच्चणी (बी)–देखो 'विरचणी' (बी)।
बिरछ–देखो 'वृक्ष'।
बिरज–देखो 'व्रज'।
बिरजा–देखो 'विरजा'।
बिरजानंद–पु० स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु का नाम।
बिरतंत, बिरतांत–देखो 'वृतांत'।
बिरति, बिरती–देखो 'व्रति'।
बिरतेसर, बिरतेसरी, बिरतेस्वरी–देखो 'विरतेस्वरी'।
बिरती (त्ती)–वि० [सं० वि-रक्त] (स्त्री० बिरत्ती) क्रोध पूर्ण लाल चेहरे वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिरथ–१ देखो 'व्यरथ'। २ देखो 'विरथ'।
बिरथा–देखो 'व्रथा'।
बिरद–देखो 'विरुद'।
बिरदाणी (बी)–देखो 'विरुदाणी' (बी)।
बिरदाधिपति–देखो 'विरुदपति'।
बिरदायक–देखो 'विरुदायक'।
बिरदाळ, बिरदाळी–देखो 'विरुदाळी'।
बिरदि–देखो 'विरुद'।
बिरदेत, बिरदैत–देखो 'विरुदैत'।
बिरह–देखो 'विरुद'।
बिरध–देखो 'वृद्ध'।
बिरधाई, बिरधापण(णो)–देखो 'वृद्धता'।
बिरमचारी–देखो 'ब्रह्मचारी'।
बिरमांड–देखो 'ब्रह्मांड'।
बिरमा–देखो 'ब्रह्मा'।
बिरमा–१ देखो 'बेळा'। २ देखो 'बिरिया'।
बिरळी–देखो 'विरळी'। (स्त्री० विरळी)
बिरवो–पु० [सं० विटपक] १ वृक्ष, पेड़। २ पौधा। ३ चने का पौधा, बूट।
बिरस, बिरसन–पु० जहर, विष।
बिरह–देखो 'विरह'।
बिरहानळ–देखो 'विरहानळ'।
बिरही–देखो 'विरही'।
बिरांणी–देखो 'विरांणी'।
बिरांमण–देखो 'ब्राह्मण'।
बिरांमी–वि० १ अशान्त, व्याकुल। २ देखो 'ब्राह्मी'।
बिराईजणो (बो)–क्रि० दूषित जल पीने से पशु का पेट फूलना।
बिराग–१ देखो 'वैराग्य'। २ देखो 'विराग'।
बिराजणी (बी)–देखो 'विराजणी' (बी)।
बिराट–१ देखो 'वैराट'। २ देखो 'विराठ'।
बिरादर–पु० [सं० भ्रातृक] १ भाई, भ्राता। २ स्वजातीय बंधु। ३ कुटुम्बी।
बिरादरी–स्त्री० [सं० भ्रातृकी] १ जाति। २ वर्ग। ३ ज्याति।
बिराध–देखो 'विराध'।
बिराधधोर–देखो 'विराधिवीर'।
बिराळी–स्त्री० १ जीरे की तरह के दाने वाला एक पदार्थ। २ इस पदार्थ का पौधा। ३ हाथ की अंगुली में होने वाला एक फोड़ा।
रावणी (बी)–देखो 'विरावणी (बी)।
बिरिछ, बिरिछ–देखो 'वृक्ष'।
बिरिद, बिरिदि–देखो 'विरुद'। –पति='विरुदपति'।
बिरिध–देखो 'वृद्ध'।
बिरियां, बिरिया, बिरीया–पु० १ एक प्रकार का पकाया हुआ मांस। २ भीग कर फूले हुए मोठ। ३ देखो 'बेळा'।
बिरुद–१ देखो 'विरुद'। २ देखो 'विरुद्ध'। —पत, पति= 'विरुदपति'।
बिरुदाणी (बी)–देखो 'विरुदाणी' (बी)।
बिरुदाळ (ळी)–देखो 'विरुदाळी'।
बिरुदावळी–देखो 'विरुदावळी'।
बिरुदैत–देखो 'विरुदैत'।
बिरुद्ध, बिरुध–देखो 'विरुद्ध'।
बिरूझणी (बी)–देखो 'विरूझणी' (बी)।
बिरूणी (बी)–वि० जोशपूर्ण, वीररस पूर्ण।
बिरूती, बिरूथ–१ देखो 'वरूथ'। २ देखो 'वरूथी'।
बिरूथण, बिरूथणी, बिरूथनी–देखो 'वरूथणी'।
बिरूथी–देखो 'वरूथी'।
बिरोचन–देखो 'विरोचन'।
बिरोध–देखो 'विरोध'।
बिरोधणी (बी)–देखो 'विरोधणी' (बी)।
बिरोधी–देखो 'विरोधी'।
बिरोबट, बिरोबठ, बिरोबर–देखो 'बराबर'।
बिरोबरी–देखो 'बराबरी'।
बिरोळणी (बी)–देखो 'वरोळणी' (बी)।
बिरोबटी–देखो 'बराबरी'।
बिरोबर–देखो 'बराबर'।
बिरोबरी–देखो 'बराबरी'।
बिरोळणी (बी)–देखो 'विरोळणी' (बी)।
बिलंगणी–स्त्री० छोटी खाट।
बिलंद–१ देखो 'बिलंद'। २ देखो 'बुलंद'।
बिलंब–देखो 'विलंब'।
बिलंबणी (बी)–देखो 'विलंबणी' (बी)।
बिल–पु० [सं०] १ छेद, सूराख। २ भूमि में बना विवर जिसमें सर्प, चूहे आदि रहते हैं। ३ निकास, मुहाना। ४ गड्ढा, गर्त। ५ गुफा, कंदरा। ६ इन्द्र के घोड़े उच्चैश्रवस् का नाम। ७ किसी कानून की पांडुलिपि। ८ विधेयक। ९ किसी वस्तु की कीमत आदि के विवरण वाला पत्र। १० वेतन, चुकारे आदि के विवरण वाला पत्रक।
बिलकुल–वि० [अ०] १ सम्पूर्ण, सब, कुल। २ निरा, नितांत। –क्रि० वि० १ निश्चय ही। २ हर तरह से, सब तरह से सर्वथा। ३ पूर्ण तौर से।
बिलकुळणी (बी)–देखो 'विलकुळणी' (बी)।
बिलखी, बिलखी–देखो 'बिलखी'। (स्त्री० बिलखी, बिलक्खी)।
बिलख, बिलखण–देखो 'बिलख'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिलखणी–देखो 'विलखणी'।

बिलखणी (बी)–देखो 'विलखणी' (बी)।

बिलखाणी (बी)–देखो 'विलखाणी' (बी)।

बिलखी–देखो 'विलखी'। (स्त्री० बिलखी)।

बिलग–देखो 'विलग'।

बिलगणी–देखो 'बिलंगणी'।

बिलगणी (बी)–देखो 'विलगणी' (बी)।

बिलगाणी, (बी)–देखो 'विलगाणी' (बी)।

बिलगणी (बी)–देखो 'विलगणी' (बी)।

बिलच्छण–देखो 'विलक्षण'।

बिलटी–स्त्री० १ रेल पार्सल या ट्रक से सामान भेजते समय प्रेषक को दी जाने वाली रसीद। २ छात्रों को वर्णमाला सिखाने के लिये खींची जाने वाली सीधी रेखा। (प्राचीन) ३ वर्णमाला में स्वर ज्ञान।

बिलपणी (बी)–देखो 'विलपणी' (बी)।

बिलफेल–क्रि०वि० [अ०] अभी, इसी समय, वर्तमान दशा में।

बिलबिल–पु० [सं० विह्वल] १ करुण-क्रन्दन, विलाप। २ विह्वल होने की अवस्था या भाव।

बिलबिलणी (बी)–क्रि० [सं० विह्वलम्] १ करुण क्रन्दन करना विलखना, विलाप करना। २ विह्वल होना। ३ हाहाकार करना, प्रलाप करना। ४ भूख से व्याकुल होना।

बिलबिलाट–पु० विलाप।

बिलबिलाणी (बी)–देखो 'बिलविलणी' (बी)।

बिलम–देखो 'विलंब'।

बिलमणी (बी)–देखो 'विलमणी' (बी)।

बिलमाणी (बी) बिलमावणी (बी)–देखो 'विलमाणी' (बी)।

बिललाणी (बी), बिललावणी (बी)–देखो 'विलबिलणी' (बी)

बिलळी–वि० (स्त्री० बिलळी) १ अश्लील, बेहूदा। २ धर्म या आचरणच्युत, पतित। ३ मूर्ख, नासमझ। ४ सारहीन, निरर्थक, व्यर्थ।

बिलवर–देखो 'बिल्लौर'।

बिलवाल–पु० एक जाति विशेष।

बिलसणी (बी)–देखो 'विलसणी' (बी)।

बिलसाणी (बी)–देखो 'विलसाणी' (बी)।

बिलहेफ–अव्य० [फा०] १ बिना आश्चर्य के। २ बिना अफसोस के

बिलांत–देखो 'बालिस्त'।

बिलाई–स्त्री० १ कूए में गिरी वस्तु को निकालने का, लोहे के कांटों का गुच्छा। २ वन बिलाव। ३ बिल्ली। ४ मृत्यु।

बिलागणी (बी)–देखो 'विलागणी' (बी)।

बिलाड़, बिलाड, बिलाडउ–देखो 'बिडाल'।

बिलाणी (बी)–देखो 'विलाणी' (बी)।

बिलाप–देखो 'विलाप'।

बिलापणी (बी)–देखो 'विलापणी' (बी)।

बिलाय–पु० १ कांख में होने वाला फोड़ा। २ देखो 'बला'।

बिलायत–देखो 'विलायत'।

बिलार–देखो 'बिडाल'।

बिलावल–पु० १ दीपक राग का पुत्र एक राग विशेष। २ संगीत का एक थाट।

बिलास–देखो 'विलास'।

बिलासणी (बी)–देखो 'विलासणी' (बी)।

बिलि–स्त्री० १ दरवाजे के कपाट के अन्दर की चिटकनी। २ देखो 'बिल्ली'।

बिलियौ–पु० हाथी दांत या नारियल की चूड़ी विशेष।

बिलींदी–पु० एक वस्त्र विशेष।

बिलो–देखो 'बिल्ली'।

बिलियां–देखो 'वेळा'।

बिलूंबणी (बी), बिलूंबणी (बी), बिलूंमणी (बी)–देखो 'विलूंबणी' (बी)।

बिलू–पु० [सं० बिल] एक जीव विशेष। –वि० १ मूर्ख। २ दुर्बल।

बिलूधणी (बी)–देखो 'विलूंधणी' (बी)।

बिलेसय, बिलेसरी–पु० [सं० बिलेशय] १ सांप, सर्प। २ चूहा, मूशक। ३ बिल में रहने वाला जीव।

बिलं–१ देखो 'वळं'। २ देखो 'विलय'।

बिलोकणी (बी)–देखो 'विलोकणी' (बी)।

बिलोड़णी (बी)–देखो 'विलोड़णी' (बी)।

बिलोच–१ देखो 'बलोच'। २ देखो 'बलोचिस्तांन'।

बिलोचिस्तांन–देखो 'बलोचिस्तांन'।

बिलोणी (बी)–देखो 'विलोड़णी' (बी)।

बिलोवणी–देखो 'विलोवणी' (बी)।

बिलोवणी (बी)–देखो 'विलोडणी' (बी)।

बिल्लो–देखो 'बिल्ली'।

बिल्लौर–देखो 'बिल्लौर'।

बिल्कुल–देखो 'बिलकुल'।

बिल्लगणी (बी)–देखो 'बिलगणी' (बी)।

बिल्लायत–देखो 'विलायत'।

बिल्ली–स्त्री० [सं० विडाल] १ शेर की जाति का, चूहा भक्षी एक चौपाया जानवर, मार्जार। २ सारंगी की खूंटियों को कसने का उपकरण।

बिल्लोच–१ देखो 'बलोच'। २ देखो 'बिल्लौच'।

बिल्लो–पु० १ धातु का बना तुकमा, टोकन, बैज। २ देखो 'बिल्ली'।

बिल्लौर–पु० [सं० वैडूर्य्य] एक प्रकार का सफेद, पारदर्शक पत्थर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिल्लौरी–वि० १ बिल्लौर का, बिल्लौर संबंधी। २ बिल्लौर पत्थर का बना।
बिवड़ी–देखो 'बेवड़ी'।
बिबराउ, बिबराी–देखो 'दूणी'।
बिबरण–देखो 'विवरण'।
बिबरी–पु० फर्क, अन्तर।
बिबसाय–देखो 'व्यवसाय'।
बिबस्था–देखो 'व्यवस्था'।
बिबहार–देखो 'व्यवहार'।
बिमाण–देखो 'विमाण'।
बिवाई–स्त्री० [सं० विपादिका] १ शीतकाल में हाथ-पांवों की चमड़ी फटने का रोग। २ देखो 'व्याई'।
बिवाद–देखो 'विवाद'।
बिवार–स्त्री० १ दोबार। २ देखो 'व्यवहार'।
बिवाह–देखो 'विवाह'।
बिबुधालय–देखो विबुधालय'।
बिवेक–देखो 'विवेक'।
बिवेकी–देखो 'विवेकी'।
बिवोग–देखो 'वियोग'।
बिसंभर–देखो 'विस्वंभर'।
बिसंन, बिसंन–१ देखो 'विष्णु'। २ देखो 'व्यसन'।
बिस–१ देखो 'विस'। २ देखो 'बिसम'। ३ देखो 'वैस्य'।
बिसइ–देखो 'विसय'।
बिसकंभक–देखो 'विस्कंभ'।
बिसकन्या–देखो 'विसकन्या'।
बिसकांमणी–देखो 'विसकांमणी'।
बिसकूट–देखो 'बिस्कुट'।
बिसखपरो–पु० [सं० विष+खर्पर] १ करीब डेढ़ फुट लंबा एक सरीसृप विषैला जंतु। २ एक जंगली बूटी। ३ पुनर्नवा।
बिसटर–१ देखो 'विस्टर'। २ देखो 'बिस्तर'।
बिसटाळू–देखो 'विसटाळू'।
बिसटाळी–देखो 'विसटाळी'।
बिसटी–देखो 'विस्टी'।
बिसणी (बी)– १ देखो 'बैसणी' (बौ)। २ देखो 'बसणी' (बौ)।
बिसत–पु० [सं० विस्त:] ८० रत्ती के बराबर का एक तौल।
बिसतर–१ देखो 'विस्तर'। २ देखो 'बिस्तरबंध'।
बिसतरणी (बी)–देखो 'विस्तरणी' (बौ)।
बिसतरबंद–देखो 'बिस्तरबंद'।
बिसतार–देखो 'विस्तार'।
बिसतारणी (बी)–देखो 'विस्तारणी' (बौ)।
बिसद–देखो 'विसद'।
बिसदी (दी)–पु० [सं० द्वि+सती] १ मुगलकालीन एक सैनिक पद विशेष। २ एक मनसब।
बिसन–१ देखो 'व्यसन'। २ देखो 'विष्णु'। —पथ='विष्णुपथ'। —पद='विष्णुपद'।
बिसनी–देखो 'व्यसनी'।
बिसनु–देखो 'विष्णु'।
बिसन्न–१ देखो 'विष्णु'। २ देखो 'व्यसन'।
बिसप–पु० [अं०] ईसाइयों का बड़ा पादरी।
बिसप्रसून–देखो 'विसप्रसून'।
बिसफळ–देखो 'विसफळ'।
बिसफोटक–देखो विस्फोटक'।
बिसबास–देखो 'विस्वास'।
बिसमत–देखो 'विसमत'।
बिसमय–देखो 'विस्मय'।
बिसमरण–देखो 'विस्मरण'।
बिसमरणी (बी)–देखो 'विसूमरणी' (बौ)।
बिसमित–१ देखो 'विस्मित'। २ देखो 'बिसमत'।
बिसमै–देखो 'विस्मय'। (स्त्री० बिसमी)।
बिसर–देखो 'विसर'।
बिसरणी (बी)–देखो 'विसरणी' (बौ)।
बिसरांम–देखो 'विस्रांम'।
बिसरांमी–देखो 'विस्रांमी'।
बिसराणी (बी)–देखो 'विसराणी' (बौ)।
बिसराळ–देखो 'विसराळ'।
बिसरावणी (बी)–देखो 'विसरावणी' (बौ)।
बिसरी–वि० [सं० द्विग्] (स्त्री० बिसरी) दूसरा, द्वितीय।
बिसवाबीस–देखो 'बिसवावीस'।
बिसवार–देखो 'वेसवार'।
बिसवास–देखो 'विस्वास'। —घात='विस्वासघात'।
बिसवासी–देखो 'विस्वासी'।
बिसहर–देखो 'बिसधर'।
बिसहरतिय–देखो 'बिसहरंतिय'।
बिसांई–देखो 'बिस्रांति'।
बिसांणणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बौ)।
बिसांणी–देखो 'बिस्रांति'।
बिसांवरी–देखो 'बिसूंदरी'।
बिसांनी–देखो 'बिसांनी'।
बिसाई–देखो 'बिस्रांति'।
बिसाख–१ देखो 'बिसाख'। २ देखो 'बैसाख'।
बिसाखा–देखो 'बिसाखा'।
बिसात–स्त्री० [अ०] १ सामर्थ्य हैसियत; पहुंच। २ साहस, हिम्मत। ३ सतह, स्तर। ४ बिछौना, फर्श। ५ शतरंज

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का तख्ता व चौपड़ का कपड़ा। ६ पूंजी। ७ बिसाती का कार्य। ८ बिसाती का सामान।

बिसाती–पु० [अ०] १ सूई, धागा, चूड़ी आदि का व्यापार। २ ऐसा व्यापार करने वाला।

बिसारणी (बी)–१ देखो 'बिसारणी (बी)'। २ देखो 'बैठाणी (बी)'।

बिसारद–देखो 'बिसारद'।

बिसाळ–देखो 'बिसाळ'।

बिसाळापुरी–देखो 'बिसालापुरी'।

बिसास–देखो 'बिस्वास'।

बिसासणी (बी)–देखो 'बिस्वासणी' (बी)।

बिसाहणी–पु० वैर, शत्रुता।

बिसाहणी (बी)–देखो 'बिसाहणी' (बी)।

बिसिख–देखो 'बिसिख'।

बिसिखा–देखो 'बिसिखा'।

बिसिया–वि० [सं० बिष] १ बिष का, बिष संबंधी। २ देखो 'बिसय'। ३ देखो 'बिस'।

बिसी–देखो 'बीसी'।

बिसुकरमा–देखो 'बिस्वकरमा'।

बिसुद्ध–देखो 'बिसुद्ध'।

बिसुद्धि–देखो 'बिसुद्धि'।

बिसुध–१ देखो 'बेसुध'। २ देखो 'बिसुद्ध'।

बिसुधा–देखो 'बसुधा'।

बिसू–१ देखो 'बिस्व'। २ देखो 'बसु'।

बिसूकणी (बी)–देखो 'बिसूकणी' (बी)।

बिसूरणी–देखो 'बिसूरणी'।

बिसेख–देखो 'बिसेस'।

बिसेखणी (बी)–देखो 'बिसेसणी' (बी)।

बिसेखता–देखो 'बिसेसता'।

बिसेन–पु० १ एक प्राचीन क्षत्रिय वंश। २ इस वंश का व्यक्ति।

बिसेस–देखो 'बिसेस'।

बिसेसता–देखो 'बिसेसता'।

बिसेसर–देखो 'बिस्वेसर'।

बिस्नु–देखो 'बिस्णु'।

बिस्तर–पु० [फा०] १ शय्या, सेज, बिछौना। २ देखो 'बिस्तार' ३ देखो 'बिस्तरबंद'।

बिस्तरणी (बी)–देखो 'बिस्तरणी' (बी)।

बिस्तरबंद–पु० [फा०] यात्रा आदि में बिछाने-ओढ़ने के संसाधन बांध कर ले जाने का बड़ा थैला, बेडिंग, होलडोल।

बिस्तार–देखो 'बिस्तार'।

बिस्तारणी (बी)–देखो 'बिस्तारणी' (बी)

बिस्तुक–देखो 'बिस्णु'।

बिस्मय–देखो 'बिस्मय'।

बिस्मल्ला–देखो 'बिस्मिल्ला'।

बिस्मिल–वि० [अ०] १ कुर्बानी किया हुआ। २ कुर्बान। ३ घायल, जख्मी।

बिस्मिल्ला, बिस्मिल्लाह–अव्य० [अ०] कार्य के प्रारम्भ में लिया जाने वाला ईश्वर का नाम। –पु० १ कार्य का शुभारम्भ। २ हलाल।

बिस्स–देखो 'बिस'।

बिस्व–देखो 'बिस्व'।

बिस्वकसंहर–पु० [सं० बिश्व-संहर] १ यमराज। २ शिव। ३ रुद्र।

बिस्वरेतस–पु० [सं० बिस्वरेतस्] ब्रह्मा, विरंची, चतुरानन।

बिस्वावीस–देखो 'बिसवावीस'।

बिस्वास–देखो 'बिस्वास'। —घात=बिस्वासघात। —पात्र=बिस्वासपात्र।

बिस्वासणी (बी)–देखो 'बिस्वासणी' (बी)।

बिस्वी–देखो 'बिस्वी'।

बिहंग, बिहंगड़ी–पु० १ एक राग विशेष। २ देखो 'बिहंग'।

बिहंगम–१ देखो 'बिहंग'। २ देखो 'बिहंगम'।

बिहंगी–देखो 'बिहंग'।

बिहंड–देखो 'बिहंड'।

बिहडणी (बी)–देखो 'बिहंडणी' (बी)।

बिहसणी (बी)–देखो 'बिहसणी' (बी)।

बिहग–देखो 'बिहग'।

बिहगेस–देखो 'बिहंगेस'।

बिहड़–देखो 'बीहड़'।

बिहड़णी (बी)–क्रि० १ नाश होना, मिटना, समाप्त होना। २ दूर होना, पृथक होना।

बिहचणी (बी)–देखो 'बिचणी' (बी)।

बिहण–देखो 'बिहण'।

बिहणी (बी)–देखो 'बीहणी' (बी)।

बिहत्तरि, बहत्तरि (री)–देखो 'बंभोत्तर'।

बिहद, बिहद्द–देखो 'बेहद'।

बिहन–देखो 'बहन'।

बिहरणी (बी)–१ देखो 'बिरणी' (बी)। २ देखो 'बिहरणी' (बी)।

बिहराणी (बी)–१ देखो 'बिराणी' (बी)। २ देखो 'बिहराणी' (बी)।

बिहरी–क्रि० वि० [सं० द्वि+हरी] १ दुबारा, दूसरी बार। २ दूतरफा दोहरा।

बिहल–देखो 'बिह्वल'।

बिहसणी (बी)–देखो 'बिहसणी' (बी)।

बिहां वि० [सं० द्वि] दोनों। –सर्व०-उन। –क्रि० वि० वहां।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिहांण–देखो 'बिहाण'।

बिहांणा–पु० विवाह के दिनों में प्रातःकाल गाये जाने वाले मांगलिक गीत।

बिहांणी–देखो 'बिसांनी'।

बिहांणो, बिहांन–देखो 'बिहाण'।

बिहांनो–१ देखो 'बिहांणो'। २ देखो 'बिसांनी'।

बिहांमण–देखो 'बिहामणो'। (स्त्री० बिहांमणी)।

बिहांमणो–वि० (स्त्री० बिहांमणी) डर उत्पन्न करने वाला, भयावना।

बिहांमणी (बी)–१ देखो 'बिवाहणी' (बी)। २ देखो 'बीहणी' (बी)।

बिहांमो–देखो 'बिसांति'।

बिहाग, बिहागड़ो–स्त्री० मध्य रात्रि को गाई जाने वाली राग विशेष।

बिहाणी (बी)–१ देखो 'बिवाहणी' (बी)। २ देखो 'बिहाणी' (बी)। ३ देखो 'ब्याणी' (बी)।

बिहार–देखो 'विहार'।

बिहारणी (बी)–१ देखो 'विहारणी' (बी)। २ देखो 'वैराणी' (बी)।

बिहारी–देखो 'विहारी'।

बिहाल–देखो 'बेहाल'।

बिहाल्यो–पु० बिछौना, गद्दा।

बिहावणी (बी)–१ देखो 'बिहाणी' (बी)। २ देखो 'ब्याणी' (बी)। ३ देखो 'बिवाहणी' (बी)।

बिहि–देखो 'विधि'।

बिहीड़–देखो 'बेड़ो'।

बिहित–देखो 'विहित'।

बिहितणी (बी)–देखो 'बीतणी' (बी)

बिहिन–देखो 'बहन'।

बिही–पु० १ एक वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष का फल।

बिहीण (ब)–देखो 'बिहीन'।

बिहीदांणो–पु० बिही के फल का बीज।

बिहुं–देखो 'बेऊ'।

बिहुंअ–देखो 'बिहूणो'।

बिहुंवे (वै)–क्रि० वि० दोनों ओर, दोनों तरफ। –वि० दोनों दो।

बिहु–देखो 'बेऊ'।

बिहुणो–देखो 'बिहूणो'।

बिहूं–देखो 'बेऊ'।

बिहूंणी–देखो 'बिसांनी'।

बिहूंणो, बिहूंव–देखो 'बिहूणो'।

बिहूणी–देखो 'बिसांनी'।

बिहूणो, बिहूव–वि० [सं० विहीन] (स्त्री० बिहूणी) १ बिना, रहित। २ शून्य; सूना।

बिहू–देखो 'बहू'।

बिहूल–देखो 'बिहूल'।

बीं–देखो 'बी'।

बींकणी (बी)–देखो 'बींकणी' (बी)।

बींछियो–पु० १ किसी लकड़ी की पट्टी में लगने वाला एक कीला, पिन। २ हल के पीछे लगने वाला हुक। ३ देखो 'बिछियो'

बींजण–स्त्री० [सं० बीजनं] १ हवा करने की क्रिया या भाव। २ देखो 'बींजणी'। ३ देखो 'व्यंजन'।

बींजणी, बींजणो–पु० [सं० बीजनं] १ हवा करने का उपकरण पंखा। २ बढ़ई का एक औजार विशेष।

बींजणो (बी)–क्रि० [सं० बीजनं] १ पंखे से हवा करना। २ चंवर डुलाना, चंवर से हवा करना।

बींजाणो (बी)–क्रि० १ पंखे से हवा कराना। २ चंवर डुलवाना चंवर से हवा करवाना।

बींझ–देखो 'विंध्य'।

बींझणो (बी)–देखो 'बींजणो' (बी)।

बींझाचळ–देखो 'विंध्याचळ'।

बींझाणो (बी)–देखो 'बींजाणो' (बी)।

बींट–१ देखो 'बींटो'। २ देखो 'बींट'। ३ देखो 'बूंट'।

बींटको–देखो 'बूंट'।

बींटणी–स्त्री० १ स्त्री के स्तन पर बनी घुंडी, नोक। २ बच्चों को दूध आदि पिलाने का रबड़ का उपकरण।

बींटणो (बी)–देखो 'बींटणी' (बी)।

बींटळी–स्त्री० १ अजमेर के पास पर्वत शिखर पर स्थित तारागढ़ का एक नाम। २ देखो 'बींटी'। ३ देखो 'बींटणी'।

बींटी–स्त्री० [सं० वेष्टिता] मुद्रिका, अंगूठी।

बींटो–पु० [सं० वट-वेष्टने] १ बिस्तर आदि को बांधकर रखा गोल गट्ठर बिस्तरबंद। २ घेरा, आवेष्टन।

बींठ–देखो 'बींट'।

बींठो–देखो 'बींठो'।

बींद–पु० [सं० बिन्दः] (स्त्री० बींदणी, बींनणी) १ जिसका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवाह सद्य होने को हो या हुआ हो, दूल्हा। २ पति, खाविंद।

बींवड़ली, बींवड़ी–स्त्री० [सं विद्धपुटी] सौगात, उपहार की छोटी गठरी।

बींवड़ो–पु० १ रहट की माल के लिये बना बबूल की पतली टहनियों का घेरा। २ देखो 'बींद'।

बींवणी–स्त्री० [सं० विन्दी:] १ सद्य विवाहिता युवती, स्त्री। नववधू। २ पुत्र वधू या छोटे भाई आदि की स्त्री। ३ पत्नी भार्या। ४ कुल वधू। ५ बच्चे की लिंगेंद्रिय।

बींवणो–१ देखो 'बींजणो'। २ देखो 'बींदणी'।

बींवणो (बो)–देखो 'बींधणो' (बो)।

बींवपगलिया–पु० [सं० बिंद+पदक] १ दूल्हे की मंद चाल। २ चलने का एक ढंग।

बींवबागो बींवबाघो–पु० दूल्हे की पोशाक।

बींवव–देखो 'बींद'।

बींवी–देखो 'बिंदी'।

बींवोळी–स्त्री० १ दूल्हे-दुल्हिन की पोशाक। २ देखो 'बंदोली'।

बींधणो (बो)–क्रि० [सं० वेधनम्] १ छेदना, छिद्रित करना। २ उलझाना, फंसाना। ३ किसी के साथ संलग्न करना। ४ त्रास देना। ५ शस्त्र से बेध कर घायल करना।

बींधाणो (बो), बींधावणो (बो)–क्रि० १ छेदवाना, छिद्रित कराना। २ उलझवाना, फंसवाना। ३ किसी के साथ संलग्न कराना। ४ त्रास दिलाना। ५ शस्त्र से बेधा कर घायल कराना।

बींन–१ देखो 'बींद'। २ देखो 'वीणा'।

बींनणी–देखो 'बींदणी'।

बींनोळी–१ देखो 'बंदोळी'। २ देखो 'बींदोळी'।

बींनोळी–देखो 'बंदोळी'।

बींमाळी–वि० अतिक्रुद्ध, आग बबूला।

बींभर–देखो 'भींभर'।

बींभरणो (बो)–देखो 'भींभरणो' (बो)।

बींयचियो–पु० बड़े आरे का एक अवयव विशेष।

बी बीअ–पु० [सं० भी] १ डर, भय, आतंक। २ विरह। ३ राजा, नृप। –स्त्री० ४ लता। ५ रात्रि। ६ विनय। ७ खजूर। —सर्व० १ वह। २ उस। —वि० [सं० द्वि] १ दूसरा, द्वितीय। २ दो। –क्रि०वि० ३ ही। ४ देखो 'भी'।

बीक–१ देखो 'विक्रमादित्य'। २ देखो 'बी'।

बीकण–वि० १ भयभीत रहने वाला, डरपोक। २ देखो 'भीखण'

बीकपुर, बीकपुरी (रो)–पु० [सं० विक्रमपुर] १ बीकानेर नगर का एक नामान्तर। २ बीकानेर का निवासी। —वि० बीकानेर का, बीकानेर सम्बन्धी।

बीकम–१ देखो 'विक्रम'। २ देखो 'विक्रमादित्य'।

बीकमपुर (री)–देखो 'विक्रमपुर'।

बीकाण, बीकाणी, बीकानयर, बीकानेर–पु० [सं० विक्रमनगर] उत्तरी राजस्थान का एक नगर।

बीकानेरियो, बीकानेरी–वि० बीकानेर का, बीकानेर संबंधी। —पु० बीकानेर का निवासी।

बीकासो–पु० मेघाच्छादित दिन या वातावरण।

बीको–देखो 'विक्रमादित्य'।

बीख–देखो 'बीख'।

बीखणो (बो), बीखणणो (बो)–१ देखो 'बीखणो (बो)। २ देखो 'बेखणो' (बो)।

बीखरणी (बो)–देखो 'बिखरणी' (बो)।

बीखराणो (बो), बीखरावणी (बो)–देखो 'बिखराणो' (बो)।

बीखेरणो (बो)–देखो 'बिखेरणो' (बो)।

बीगड़णो (बो)–देखो 'बिगड़णो' (बो)।

बीघनहरण–देखो 'विघ्नहरण'।

बीघोडी–स्त्री० कृषि भूमि पर लिया जाने वाला लगान, कर।

बीघो–पु० कृषि भूमि का एक नाप।

बीड़, बीड़ड–देखो 'बीड़ो'।

बीड़णो (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु के दो भागों को जोड़ना, भिड़ाना, सम्पुटावस्था में करना। २ बंद करना। ३ जड़ना, जड़ाई करना।

बीड़मी (बो)–पु० १ ढक्कनदार पात्र, ढक्कन वाला पात्र। २ ऐसा उपकरण जो आवश्यकतानुसार समेटा जा सके। –वि० ढक्कनदार, सम्पुटावस्था वाला।

बीड़ाझीड़ा–पु० १ वन, जंगल। –स्त्री० २ सीमा, सरहद।

बीड़ाणो (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु के दो भागों को जुड़वाना, भिड़वाना, सम्पुटावस्था में करवाना। २ बंद करवाना। ३ जड़ाई करवाना, जड़ाना।

बीड़ादार–वि० पान का बीड़ा देने वाला।

बीड़ो–स्त्री० १ टीमरू के पत्ते में जर्दा डालकर बनाई गई धूम्र दण्डिका। २ देखो 'बीड़ो'।

बीड़ो–पु० १ तलवार की म्यान के मुंह पर बंधी रहने वाली डोरी। २ पड़त में छोड़ा हुआ खेत, कृषि भूमि। ३ घास का सुरक्षित मैदान। ४ गोचर भूमि। ५ जंगल। ६ बंधन। ७ नागरबेल के पान का संपुट, पान की गिलोरी।

बीच–पु० १ मध्य। २ फासला, दूरी, अन्तर। ३ केन्द्र स्थान, मध्यस्थल, केन्द्र बिन्दु। ४ दरम्यान। ५ भेद, अन्तर। ६ द्वेष।

बीचली–स्त्री० विद्युत, बिजली।

बीचवचाव–पु० झगड़े या विवाद में की जाने वाली मध्यस्थता।

बीचलो–देखो 'बिचलो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीचार–देखो 'विचार'।

बीचारणी (बी)–देखो 'विचारणी' (बी)।

बीचाळैं–देखो 'बिचैं'।

बीचि–१ देखो 'बीच'। २ देखो 'विचि'।

बीचूंबीच–देखो 'बीचोबीच'।

बीचैं–देखो 'बिचैं'।

बीचोबीच, बीचीबीच–अव्य० ठीक बीच में, मध्य में। केन्द्र बिंदुपर।

बीच्छु, बीच्छू–पु० १ विशाखा नक्षत्र। २ देखो 'बिच्छू'।

बीछड़णी (बी)–देखो 'बिछुड़णी' (बी)।

बीछण, बीछणी–स्त्री० १ मादा बिच्छू। २ एक प्रकार का वात रोग।

बीछणी(बी)–१ देखो 'बिछुड़णी'(बी)। २ देखो 'बीचणी'(बी) ३ देखो 'बिछणी' (बी)।

बीछयो, बीछियो–१ देखो 'बिछियो'। २ देखो 'बीच्छू'।

बीछो, बीछू–१ देखो 'बिच्छू'। २ देखो 'बीच्छू'।

बीछूड़णी (बी)–देखो 'बिछुड़णी' (बी)।

बीछूटणी (बी)–देखो 'बिछूटणी' (बी)।

बीछोड़णी (बी)–देखो 'बिछोड़णी (बी)।

बीज–पु० [सं०] १ किसी वस्तु, पेड़ पौधे आदि का उत्पत्ति तत्त्व गर्भाण्ड, दाना। २ अंकुर। ३ वीर्य, शुक्र। ४ वंश। ५ बोवाई के लिये सुरक्षित रखा हुआ अन्न। ६ जड़, मूल ७ गिरी, मिगी। ८ उद्गमस्थल। ९ प्रधान या मुख्य कारण। १० सारांश, सार भाग। ११ नाटक की मूल कहानी, कथानक। १२ एक मंत्र विशेष। १३ मंत्र का प्रधान भाग। १४ कारण, हेतु। १५ कोई अव्यक्त वर्ण समुदाय जिसे हर व्यक्ति न समझ सकता हो। १६ किसी देवता को प्रसन्न करने की अव्यक्त ध्वनि या शब्द। १७ एक यज्ञीय देवता विशेष। १८ देखो 'दूज'। १९ देखो 'बीजळी' २० देखो 'बीजळा'।

बीजई, बीजउ–१ देखो 'दूजौ'। २ देखो 'बीज'।

बीजउद्भवन–पु० [सं०] वीर्य।

बीजउरउ–देखो 'बीजोरौ'।

बीजउरौआ–पु० कोई व्यवसाय विशेष।

बीजक–पु० [सं०] १ विक्रेता द्वारा क्रेता को दी जानो वाली बेची हुई वस्तुओं की मूल्य सूची, बिल। २ किसी गढ़े धन के साथ लगी रहने वाली सूची। ३ संत महात्माओं के प्रामाणिक पदों या छन्दों का संग्रह।

बीजगणित–स्त्री० [सं०] गणित का एक भेद।

बीजड़–देखो 'बीजळा'।

बीजड़काच–पु० एक प्रकार का शीशा जिसे फर्श पर लगाने से जल का आभास होता है।

बीजड़सी–१ देखो 'बीजळी'। २ देखो 'बीजळा'।

बीजड़हत,बीजड़हती, बीजड़हतौ, बीजड़हथ, बीजड़हथी,बीजड़हथौ, बीजड़ाहत, बीजड़ाहतो, (हथ,हथौ)–देखो 'बीजळाहथ'।

बीजण–वि० १ बोया जाने योग्य। २ बोया जाने वाला। ३ बोने वाला। —स्त्री० १ बोने की क्रिया या भाव। २ बोने योग्य अन्न। ३ देखो 'बींजणी'।

बीजणी–स्त्री० [सं०] १ बोवाई का बीज रखने की थैली। २ बोवाई करने को बांस की नलिका जो हल के पीछे बंधी रहती है। ३ देखो 'बीजण'।

बीजणी–देखो 'बींजणी'।

बीजणौ (बी)–क्रि० १ किसी अनाज, साग आदि के बीजों की बोवाई करना। २ किसी बात का बीजारोपण करना।

बीजपूर, बीजपूरक–पु० [सं० बीजपुर] १ बीजौरा नींबू। २ चकोतरा।

बीजबंद, बीजबंध–पु० [सं० बीजबंध] खरैंटी या बरियारी के बीज, बला।

बीजमंत्र–पु० [सं०] १ किसी देवता की स्तुति का मूल मंत्र। २ किसी कार्य का मूलतत्त्व, सारांश।

बीजमारग–पु० [सं० बीजमार्ग] वाम मार्ग का एक भेद।

बीजमारगी–वि० [सं० बीजमार्गी] वाममार्गी।

बीजळ, बीजल–स्त्री० १ एक प्रकार का लोहा विशेष। २ सुन्दर स्त्री, सुन्दरी। ३ विद्युत। –वि० [सं० बीजल] १ बीजों वाला, बीजों से युक्त। २ अधिक बीजों वाला। ३ सुन्दर; मनोहर। ४ दूसरा, द्वितीय। ५ देखो 'बीजळा'।

बीजळड़ी–१ देखो 'बीजळी'। २ देखो 'बीजळा'। ३ देखो 'बीजळ'।

बीजळसार–देखो 'बिजळसार'।

बीजळहत्त, बीजळहत्ती, बीजळहत्थ, बीजळहत्थी, बीजळहथ, बीजळहथी (हथौ)–देखो 'बीजळाहत'।

बीजळा–स्त्री० [सं० विद्युत] १ तलवार, खड्ग। २ कटार। ३ देखो 'बीजळी'।

बीजळाहत, बीजळाहती, बीजळाहत्थ, बीजलाहत्थी, बीजळाहथ, बीजळाहत्थी, बीजळाहथौ–वि० १ जिसके हाथ में तलवार हो। २ खड्गधारी या कटारधारी योद्धा।

बीजळि, बीजळी–स्त्री० [सं० विद्युत] १ एक प्रसिद्ध प्राकृतिक शक्ति, विद्युत। २ वैज्ञानिक ढंग से उत्पादित उक्त शक्ति का एक रूप। ३ बरसाती मेघों की परस्पर टक्कर से उत्पन्न अग्नि, तड़ित, चपला। ४ वज्र।

बीजलोही–पु० १ रक्त, बीज। २ दुर्गा द्वारा संहारित एक असुर।

बीजवर–देखो 'दूजवर'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीजवाड़ियो, बीजवाड़ो–पु० कुम्हार, माती आदि को दिया जाने वाला अन्न ।

बीजांण–देखो 'बिजळी' ।

बीजाकारण–पु० [सं० बीजकारण] पिता, जनक ।

बीजाक्षर, बीजाखर–पु० [सं० बीज-अक्षर] किसी बीज मंत्र का पहला अक्षर ।

बीजापुर–पु० भारत का एक नगर ।

बीजापुरी, बीजापुरो–वि० १ बीजापुर का, बीजापुर संबंधी । २ बीजापुर का बना हुआ । –पु० १ बीजापुर का शासक । २ बीजापुर का निवासी ।

बीजाबरणी–स्त्री० व्यापार करने वाली एक जाति विशेष ।

बीजाबोल–पु० [सं० बोल] एक प्रकार का गोंद विशेष ।

बीजियांण–देखो 'दूजियांण' ।

बीजु–वि० १ जो बीज बोने से उगा हो । २ देखो 'दूजो' । ३ देखो 'बिज्जु' ।

बीजुरो– १ देखो 'बीजळी' । २ देखो 'बीजोरी' ।

बीजुरी–देखो 'बीजोरी' ।

बीजुळी–देखो 'बीजळी' ।

बीजूं, बीजू–अव्य० १ और । २ देखो 'दूजो' । ३ देखो 'बीजळी' । ४ देखो 'बिज्जु' ।

बीजूजळ, बीजूजळा, बीजूसळ–स्त्री० [सं० विद्युत्ज्वाला] तलवार, खड्ग ।

बीजूमाळा–देखो 'विद्युत्माळा' ।

बीजंसाही–देखो 'विजयसाही' ।

बीजोड़ो–देखो 'दूजो' ।

बीजोरड़ी–देखो 'बीजोरी' ।

बीजोरी–स्त्री० १ बीजोरा नींबू का वृक्ष व फल । २ एक फल विशेष ।

बीजोरो–पु० [सं० बीजपूरक] १ एक जाति विशेष का नींबू व इसका वृक्ष । २ पूजा या स्वागत के थाल में रखने का जल पात्र ।

बीजोळियो–पु० बोवाई का बीज रखने का छोटा थैला ।

बीजो–देखो 'दूजो' ।

बीझणूं, बीझणो–देखो 'बींजणो' ।

बीझणो (बो)–क्रि० [सं० विभेमि] डरना, भय खाना ।

बीझूसळ–देखो 'बीजूजळ' ।

बीझोड़णो (बो)–देखो 'बीझोड़णो' (बो)

बीट–देखो 'बींट' ।

बीटण–देखो 'बींटण' ।

बीटणी–देखो 'बींटणी' ।

बीटणो (बो)–देखो 'बींटणो' (बो) ।

बीटळी, बीटली–१ देखो 'बींटळी' । २ देखो 'बींटी' ।

बीटाणो (बो)–देखो 'बींटाणो' (बो) ।

बीटी–देखो 'बींटी' ।

बीठळ, बीठुळ–देखो 'विट्ठळ' । —**नाथ**='विट्ठळनाथ' ।

बीठो–वि० (स्त्री० बीठी) १ अश्लील, भद्दा । २ खराब, गन्दा । ३ निकम्मा ।

बीड–देखो 'बीड़ो' ।

बीडउ–देखो 'बीड़ो' ।

बीडळ–स्त्री० बैलगाड़ी की धुरी के आगे लगाई जाने वाली कील ।

बीडो–देखो 'बीड़ो' ।

बीढ़–१ देखो 'भीड़' । २ देखो 'वेढ़' ।

बीढ़ण–देखो 'विढ़ण' ।

बीढ़णो (बो)–देखो 'विढ़णो' (बो) ।

बीण–देखो 'वीणा' ।

बीणणो (बो)–१ देखो 'विणणो' (बो) । २ देखो 'बुणणो' (बो) ।

बीणती–देखो 'विनती' ।

बीणा–देखो 'वीणा' ।

बीणाई–देखो 'बुणाई' ।

बीणी–१ देखो 'वाणी' । २ देखो 'वीणी' ।

बीणी–पु० १ स्त्रियों द्वारा अपने ललाट पर बालों से बनाई जाने वाली चन्द्राकृति, बाल बनाने का एक ढंग । २ देखो 'वीणी' ।

बी'णी (बो)–देखो 'बीहणी' (बो) ।

बीत–१ देखो 'बीत' । २ देखो 'वित्त' ।

बीतणो (बो)–क्रि० [सं० व्यतीतनम्] १ काल चक्र के अनुसार समय का भूत की ओर जाना, गुजरना, व्यतीत होना । २ बात या घटना का समय जाना । ३ घटित होना । ४ अन्त होना, समाप्त होना । ५ बेकार होना, अप्रयोज्य होना, नष्ट होना । ६ उचित या अनुचित व्यवहार होना । ७ उम्र या अवधि का कम होना । ८ हानि-लाभ भुगतना । ९ जीर्ण-शीर्ण होना । १० असर होना, प्रभाव होना । ११ महावत का हाथी पर बैठे-बैठे पांव हिलाना ।

बीतत्यागी–पु० [सं० वित्त-त्यागी] दानवीर, महादानी ।

बीतराग–देखो 'वीतराग' ।

बीतहोत्र, बीतिहोत्र–देखो 'वीतिहोत्र' ।

बीती–देखो 'बीति' ।

बीथरणो (बो)–देखो 'विस्तरणो' (बो) ।

बीथि, बीथी–देखो 'वीथी' ।

बीदग–देखो 'वीदग' ।

बीदड़ली, बीदड़ी–देखो 'बींदड़ी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीदा–देखो 'विदा'।
बीधणी (बी)–देखो 'बींधणी' (बी)।
बीधूंसणी (बी)–देखो 'विधूंसणी' (बी)।
बीन–१ देखो 'वीणा'। २ देखो 'बींद'। ३ देखो 'विनय'।
बीनड़ी, बीनणी–देखो 'बींदणी'।
बीनणी (बी)–क्रि० [सं० विनयनम्] १ विनती या प्रार्थना करना। २ अभिवादन या स्वागत करना।
बीनती–देखो 'विनती'।
बीनळ–स्त्री० [सं० वह्नि] अग्नि, आग।
बीनवणी (बी)–देखो 'विनवणी' (बी)।
बीनांण–देखो 'विनांण'।
बीनी–स्त्री० [फा०] नासिका, नाक।
बीने, बीनै–क्रि०वि० १ उस ओर, उधर। २ उसको, उसे। –वि०–दोनों।
बीनो, बीन्हो–पु० [फा० बीना] १ मुंह, मुख। २ उषाकाल प्रभात। ३ उषाकाल का उजाला। ४ कष्ट, तकलीफ। ५ छान-बीन, तुक्ता चीनी। –वि०जिसे दिखाई देता हो, दृष्टिवाला।
बीफरणी (बी)–देखो 'विफरणी' (बी)।
बीफरेल, बीफरैल–देखो 'विफरेल'।
बीबड़ी–देखो 'बीबी'।
बीबाळ–पु० १ योद्धा, वीर। २ मुसलमान।
बीबाह–देखो 'विवाह'।
बीबी–स्त्री० [फा० बी] १ यवन स्त्री, मुसलमान औरत। २ अच्छे घराने की स्त्री, कुलवधू। ३ पत्नी, भार्या। ४ स्त्री, औरत।
बीबू, बीबो–पु० (स्त्री० बीबी) १ यवन, मुसलमान। २ कार्य का विस्तार, बिखराव, फैलाव।
बीमचार–देखो 'व्यभिचार'।
बीमच्छ, बीमत्स, बीमत्सु–देखो 'विभत्स'।
बीमरणी (बी)–देखो 'विफरणी' (बी)।
बीमळी–देखो 'वीभळी'।
बीमाड़णी (बी)–देखो 'विभाड़णी' (बी)।
बीमीछण–देखो 'विभीसण'।
बीमोग–देखो 'विभोग'।
बीमांण–देखो 'विमांण'।
बीमांणग (गी)–देखो 'विमांणग'।
बीमार–वि० [फा०] रुग्ण, रोगी, रोगग्रस्त।
बीमारदारी–स्त्री० [फा०] रोगी की सेवा शुश्रुषा।
बीमारी–स्त्री० [फा०] १ रोग, व्याधि। २ झंझट, परेशानी।
बीमाह–देखो 'विवाह'।
बीमौ–पु० [फा० बीम] किसी प्राणी के जीवन या किसी वस्तु की भावी क्षति की पूर्ति हेतु की जाने वाली व्यवस्था। बीमा। गारण्टी।
बीय–देखो 'बी'।
बीयड़ोत्तरसौ–देखो 'बिड़ोत्तरसौ'।
बीयाळ, बीयाळकी, बीयाळी–वि० [सं०व्यालु] (स्त्री०बीयाळकी) १ डरने वाला, डरपोक, भयभीत। २ डराने वाला।
बीयास–देखो 'व्यास'।
बीयौ–पु० [सं० द्वि] १ दो की संख्या का अंक। २ दो की संख्या का वर्ष। ३ देखो 'दूजौ'। ४ देखो 'बहयौ'।
बीर–देखो 'वीर'।
बीरख–१ देखो 'वृक्ष'। २ देखो 'वृक्ष'।
बीरखेत–देखो 'वीरखेत'।
बीरखेती–देखो 'वीरखेती'।
बीरगत, बीरगति–देखो 'वीरगति'।
बीरघंट–देखो 'वीरघंट'।
बीरज–देखो 'वीरज'।
बीरत, बीरता, बीरताई, बीरती–देखो 'वीरता'।
बीरपण, बीरपणौ–देखो 'वीरपण, वीरपणौ'।
बीरबर–देखो 'वीरवर'।
बीरबळ–पु० बादशाह-अकबर के दरबार के नौ रत्नों में से एक।
बीरबळी–पु० १ स्वर्ण निर्मित गोल चक्राकार आभूषण विशेष। २ वीरों को चढ़ाई जाने वाली बलि।
बीरभद्र–देखो 'वीरभद्र'।
बीरभाव–देखो 'वीरभाव'।
बीरभोम–देखो 'वीरभूमि'।
बीररस–देखो 'वीररस'।
बीरवर–देखो 'वीरवर'।
बीरहक, बीरहाक–देखो 'वीरहाक'।
बीरांण–देखो 'वीरांण'।
बीरांमी–देखो 'ब्राह्मी'।
बीरा–देखो 'वीरा'।
बीराधबीर, बीराधिबीर–देखो 'वीराधिवीर'।
बीरारस–देखो 'वीररस'।
बीरी–स्त्री० १ सखी, आली। २ वीरबहूटी।
बीरीयां–देखो 'वेळा'।
बीरू–स्त्री० वापंद की पुत्री एक देवी विशेष।
बीरूप–देखो 'विडरूप'।
बीरोचन–देखो 'विरोचन'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीरो–देखो 'बीरौ'।

बील–पु० १ जुगनू, आगिया। २ सर्प, सांप। ३ देखो 'बीलौ'। ४ देखो 'बील'।

बीलपतर (पत्तर, पत्र)–पु० [सं० बिल्व-पत्र] शिवजी को चढ़ाये जाने वाले, बील वृक्ष के पत्ते।

बीलपुरी–देखो 'बीरपुरी'।

बीलफळ–पु० [सं० बिल्व-फलम्] बील वृक्ष का फल।

बीलरीकुंड–स्त्री० एक प्रकार का सरकारी कर।

बीलोणो (बो)–देखो 'बिलोड़णो' (बो)।

बीलोपत्र–देखो 'बीलपत्र'।

बीलौ–पु० [सं० बिल्व] १ बिल्व नामक वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष का फल।

बीस–देखो 'बीस'।

बीसधरपांणी–पु० [सं० विंशति-पाणिधर] रावण।

बीसन–१ देखो 'बिस्णु'। २ देखो 'ब्यसन'।

बीसबसा, बीसबिसवा, बीसबिस्वा–देखो 'बिसवाबीस'।

बीसभुज, बीसभुजा–देखो 'बीसभुज'।

बीसभुजाळ, बीसभुजाळी–देखो 'बीसभुजाळी'।

बीसमणो (बो)–देखो 'बीसमणो' (बो)।

बीसमो–देखो 'बीसवौ'।

बीसरणो (बो)–देखो 'बिसरणो' (बो)।

बीसराणो (बो), बीसरावणो (बो)–देखो 'बिसराणो' (बो)।

बीसळदे–पु० अजमेर का एक चौहान राजा।

बीसवौ–देखो 'बीसवौ'।

बीसहत, बीसहती, बीसहत्य, बीसहत्थी, बीसहथ (थि, थी)–देखो 'बीसहती'।

बीसांबीसं–देखो 'बिसवाबीस'।

बीसारणो (बो)–देखो 'बिसारणो' (बो)।

बीसाबीस–देखो 'बिसवाबीस'।

बीसियो–देखो 'बीछियो'।

बीसी–देखो 'बीसी'।

बीसुबसा–देखो 'बिसवाबीस'।

बीसूती–स्त्री० दो सूत का वस्त्र।—वि० दो सूत वाला, दो सूती।

बीसूनी–देखो 'बिसोनी'।

बी'सेक–देखो 'बीसे'क'।

बीसोतर–देखो 'बीसोत्तर'।

बीसोनी–देखो 'बिसोनी'।

बीसौ–देखो 'बीसौ'।

बीहंडणो (बो)–देखो 'बिहंडणो' (बो)।

बीह–देखो 'बी'।

बीहड़–पु० १ ऊंचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़। २ विकट, दुर्गम। ३ सघन, घना।

बीहेणो (बो)–क्रि० १ डरना, आतंकित होना, भयभीत होना। २ शंका खाना, लिहाज रखना।

बीहसणो (बो)–देखो 'बिहसणो' (बो)।

बीहांण (णू)–देखो 'बिहांण'।

बीहांमणु (णू, णो)–वि० (स्त्री० बीहांमणी) भयानक, डरावना।

बीहाणो (बो), बीहावणो (बो)–क्रि० भयभीत करना, डराना।

बुंगरड–स्त्री० १ तोप के गोले की ध्वनि। २ वर्षा होने की ध्वनि।

बुंगळी–१ देखो 'बंगळी'। २ देखो 'बगळी'।

बुंगलो–पु० मकान की छत पर कोने पर ताजिये की शक्ल का बना गुम्बज।

बुंदो–देखो 'बूंदो'।

बुंदीवार–पु० १ बूंदी वाले लड्डू। २ बूंदी की मिठाई।—वि० छोटी-छोटी बूंदी वाला या बूंदी के छापे वाला।

बुंदेलखंड–पु० उत्तर व मध्य भारत का एक प्रदेश।

बुंदेलखंडी–वि० उक्त प्रदेश का, उक्त प्रदेश संबंधी।—स्त्री० उक्त प्रदेश की बोली।

बुंब–देखो 'बूंब'।

बुआरणो (बो)–देखो 'बुहारणो' (बो)।

बुआरी–देखो 'बुहारी'।

बुई–स्त्री० रुई जैसी मुलायम बाल वाला एक पौधा विशेष।

बुक–१ देखो 'बक'। २ देखो 'बुग'।

बुकचो–देखो 'बुगचो'।

बुकनी–स्त्री० १ किसी वस्तु का महीन पिसा चूर्ण। २ देखो 'बकांनी'।

बुकणो (बो)–देखो 'बूकणो' (बो)।

बुकस–पु० [सं०] १ हरिजन, मेहत्तर, भंगी। २ देखो 'बुगस'।

बुकांन बुकांनिय, बुकांनी–देखो 'बकांनी'।

बुक्क, बुक्को–पु० [सं० बुक्क:] १ वक्षस्थल, छाती। २ देखो 'बूक'। ३ देखो 'बाको'।

बुखार–पु० [अ०] १ ज्वर, ताप। २ व्याधि। ३ वाष्प, भाप। ४ एक द्वीप का नाम।

बुखारी–पु० १ बुखार द्वीप का निवासी। २ मुसलमान। ३ बुखार द्वीप की बोली।

बुग–पु० १ मक्खी के आकार का एक कीड़ा विशेष। २ कुबेर। ३ अगस्त्य का वृक्ष। ४ उक्त वृक्ष का फूल। ५ देखो 'बक'।

बुगची, बुगचो–पु० [सं० वकोच] १ वह गठरी जिसमें वस्त्र या फुटकर सामग्री बांधी जाती है। २ चौकोर वस्त्र के तीन कोणों को परस्पर जोड़ कर बनाया जाने वाला थैला विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुगली–स्त्री० मिट्टी का बना जल-पात्र विशेष। केतली।
बुगवाह–देखो 'बगदाद'।
बुगवादी–देखो 'बगदादी'।
बुगवो–पु० बोझा ढोने वाला ऊंट।
बुगदो–पु० [अ० बुग्द] एक प्रकार का बड़ा छुरा विशेष।
बुगध्यानी–देखो 'बकध्यानी'।
बुगर–पु० १ ऊंटों के लिये प्रसिद्ध एक प्रान्त। २ इस प्रान्त का ऊंट।
बुगल, बुगलांण–देखो 'बक'।
बुगलाभक्त–वि० १ बगले के समान ध्यान लगाकर बैठने वाला, पाखंडी, ढोंगी, बकध्यानी। २ कपटी, धूर्त, धोखेबाज।
बुगलाभक्ति–स्त्री० [सं० बक-भक्ति] १ बगले की तरह ध्यान लगाकर बैठने की क्रिया या भाव। २ ढोंग, पाखंड, आडम्बर। ३ प्रवंचना, कपट, छल।
बुगलाभगत–देखो 'बुगलाभक्त'।
बुगलाभगति (ती)–देखो 'बुगलाभक्ति'।
बुगसिथो–पु० १ रहट की माल का पानी गिरने के स्थान पर बनी पत्थर की कुण्डी। २ देखो 'बक'।
बुगसो–पु० १ एक जाति विशेष का घोड़ा। २ देखो 'बक'।
बुगस–पु० [फा०] १ कौआ। २ एक प्रकार का बड़ा छुरा विशेष। ३ देखो 'बक'।
बुगाळ–पु० घास, कौर।
बुगी–स्त्री० १ गर्दन। २ गर्दन के ऊपर के बाल। ३ ऊंट की कुकुद के ऊपर के बाल।
बुड़को–पु० १ बकरी आदि को खिलाया जाने वाला अन्न। २ पानी में कोई वस्तु डूबने की ध्वनि।
बुड़चणो (बो)–क्रि० वि० १ तोड़ना। २ काटना, कतराना। ३ पशुओं द्वारा खड़ी फसल खाना।
बुड़ब–देखो 'बुरद'।
बुड़बपांचम–स्त्री० वसंत पंचमी।
बुड़बुड़ाक–स्त्री० खरगोश के बैठने का स्थान।
बुड़बुड़ियो, बुड़बुड़ो–पु० [सं० बुद् बुद] १ हवा भर जाने से पानी या किसी तरल पदार्थ में उठने वाला बुदबुदा। बुल्ला। २ मन में होने वाली खुशी की तरंग।
बुड़बूटियो–पु० शरीर से मैल उतारने का छोटा पत्थर।
बुड़ियोतीतर–पु० एक प्रकार का तीतर।
बुचकार–देखो 'पुचकार'।
बुचकारणो (बो)–देखो 'पुचकारणो' (बो)।
बुचकारो, बुचकारो–देखो 'पुचकार'।
बुचो, बुच्चो–देखो 'बूचो'।
बुज–स्त्री० [फा० बुज] १ बकरी, अजा। २ देखो 'बुज्झ'।
बुजणो (बो)–देखो 'बुझणो' (बो)।
बुजदिल–वि० [फा०] डरपोक, कायर, भीरु।
बुजदिली–स्त्री० [फा०] कायरता, भीरुता।
बुजरग–पु० [फा० बुजुर्ग] १ वृद्ध पुरुष। २ पूर्वज, पुरखा। ३ अनुभवी वृद्ध पुरुष।
बुजरगी–स्त्री० [फा० बुजुर्गी] बुजुर्ग होने का भाव, बड़प्पन।
बुजाणो (बो), बुजावणो (बो)–देखो 'बुझावणो' (बो)।
बुजी–देखो 'बुजी'।
बुजुरग–देखो 'बुजरग'।
बुजुरगी–देखो 'बुजरगी'।
बुज्ज–१ देखो 'बुरज'। २ देखो 'बुब'। ३ देखो 'बुज्झ'।
बुज्जो, बुज्झ, बुझ–वि० [फा० बुज] (स्त्री० बुज्जो, बुझी) मूर्ख, नासमझ। —पु० बकरा।
बुझणो (बो)–क्रि० [सं० उज्झति] १ दीपक की ज्योति समाप्त होना। २ जलते हुए पदार्थ से अग्नि समाप्त हो जाना। ३ कांतिहीन व निस्तेज होना। ४ मंद, धीमा या उदास होना। ५ पानी के योग से अग्नि शान्त होना। ६ आवेग शांत होना। ७ भूख-प्यास मिटना, तृप्ति होना। ८ गरम वस्तु को विशेष गुण लेने के लिये किसी तरल पदार्थ में डाल कर ठंडा किया जाना [घूना]। ९ देखो 'बूझणो' (बो)।
बुझदिल–देखो 'बुजदिल'।
बुझदिली–देखो 'बुजदिली'।
बुझाई–स्त्री० बुझाने की क्रिया या भाव।
बुझाकड़, बुझाकड, बुझागड़, बुझागर–वि० [सं०बुद्धि+आकर] चतुर, बुद्धिमान, अनुभव सिद्ध।
बुझाणो (बो), बुझावणो (बो)–क्रि० १ दीपक की ज्योति समाप्त करना। २ जलते पदार्थ की अग्नि समाप्त करना। ३ कांतिहीन व निस्तेज करना। ४ मंद, धीमा या उदास करना। ५ पानी डालकर अग्नि शांत करना। ६ आवेग शांत करना। ७ भूख-प्यास मिटाना, तृप्त करना। ८ गरम वस्तु को विशेष गुण लेने के लिये तरल पदार्थ में डाल कर ठंडा करना। ९ देखो 'बूझाणो' (बो)।
बुझ्झ–१ देखो 'बूझ'। २ देखो 'बुज्झ'।
बुटाबटो–पु० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।
बुट्ठणो (बो)–देखो 'बूठणो' (बो)।
बुड–पु० प्रस्थान, रवानगी, कूच।
बुड़णो (बो)–देखो 'बूडणो' (बो)।
बुड्ढो–देखो 'बूढ़ो'।
बुड्ढण–देखो 'बूढ़ण'।
बुढ़ाई–स्त्री० वृद्धावस्था, वृद्धत्व।
बुढ़ापो–पु० वृद्ध होने की अवस्था, वृद्धावस्था।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुढ़ो–देखो 'बूढ़ो'।
बुढ़ढन–देखो 'बूढ़ण'।
बुणणी (णी)–क्रि० १ सूत या रुई के तारों या रेशों से करघे से वस्त्र बनाना। २ ऊन या रुई के तारों से पहनने के वस्त्र आदि बनाना। ३ खाट की बुनाई करना। ४ डोरों का जाल आदि बनाना।
बुणाई–स्त्री० बुनने का कार्य। बुनने का ढंग। बुनने की मजदूरी
बुणावणी (णी)–क्रि० १ सूत या रुई के तारों या रेशों से करघे द्वारा वस्त्र बनाना। २ ऊन या रुई के तारों से पहनने के वस्त्रादि बनवाना। ३ खाट की बुनाई करवाना। ४ जाल आदि बनवाना।
बुत–पु० [फा०] प्रतिमा, मूर्ति। देव प्रतिमा। —परस्त–वि० मूर्ति पूजक। —परस्ती–स्त्री० मूर्ति पूजा।
बुतशिकन–वि० [फा० बुतशिकन] मूर्ति पूजा का विरोधी।
बुती–१ देखो 'बुत्ती'। २ देखो 'बूती'।
बुत्ते बाज–वि० १ धोखेबाज, झांसाबाज। २ फुसलाने वाला, बहकाने वाला। ३ कपटी, धूर्त।
बुत्ती, बुत्ती–पु० धोखा, चकमा, झांसा।
बुध्य–देखो 'बूथ'।
बुद–१ देखो 'बुद्धि'। २ देखो 'बुद्ध'। ३ देखो 'बुध'।
बुदबुद–स्त्री० [सं० बुद् बुद्] १ पानी या किसी तरल पदार्थ में बुद-बुदे उठने की क्रिया या भाव। २ देखो 'बुदबुदो'।
बुदबुदाकार–पु० [सं० बुदबुद्-आकार] जल, जल ही जल।
बुदबुदी–स्त्री० १ तमन्ना, इच्छा, कामना। २ खबर।
बुदबुदो–पु० [सं० बुद् बुद्] १ पानी या तरल पदार्थ में वायु से उठने वाला बुल्ला, बुलबुदा। २ देखो 'बुदबुड़ियो'।
बुदसागर–देखो 'बुद्धिसागर'।
बुद्ध–पु० [सं०] १ बौद्ध धर्म के प्रवर्तक सिद्धार्थ गौतम। २ बुद्धिमान व्यक्ति। –वि० १ ज्ञानी, पंडित, विद्वान। २ जो जाना हुआ हो, ज्ञेय। ३ देखो 'बुद्धि'।
बुद्धआंबेज–वि० बुद्धिमान, चतुर।
बुद्धवर–देखो 'बुद्धिवर'।
बुद्धवंत–देखो 'बुद्धिवंत'।
बुद्धवर–देखो 'बुद्धिवर'।
बुद्धवांन–देखो 'बुद्धिवंत'।
बुद्धि–स्त्री० [सं०] १ बोध शक्ति, धी, अक्ल, मति। २ समझ, ज्ञान। ३ धारणा, विचार, राय। ४ चेतना। ५ युक्ति, अटकल। ६ चाल, नीति। ७ हाजर-जवाबी। ८ विवेक, धैर्य। ९ विश्वास। १० इरादा, अभिप्राय, आशय। ११ मन, चित्त। १२ वृत्ति। १३ छप्पय छंद का एक भेद। १४ देखो 'बुद्धिगाथा'।
बुद्धिगाथा–स्त्री० गाथा छंद का एक भेद।
बुद्धिचक्षु (क्ष)–पु० [सं० बुद्धिचक्षुस्] १ प्रज्ञा व ज्ञान का नेत्र। २ धृतराष्ट्र।
बुद्धिजीवी–वि० [सं० बुद्धिजीवन्] बुद्धि के द्वारा आजीविका कमाने वाला। बौद्धिक कार्य करने वाला।
बुद्धिबल–पु० [सं०] १ बुद्धि व विवेक पूर्वक बल-प्रयोग की अवस्था। २ बल एवं बुद्धि का सामंजस्य। ३ बुद्धि व ज्ञान का बल।
बुद्धिमंत (मत)–वि० [सं० बुद्धिमत्] १ विद्वान, पंडित, ज्ञानी। २ बुद्धिमान, चतुर, समझदार, विवेकशील। ३ प्रतिभा शाली। ४ चालाक।
बुद्धिमता–स्त्री० [सं०] बुद्धिमानी, समझदारी, अक्लमंदी।
बुद्धिमान–देखो 'बुद्धिमंत'।
बुद्धिमानी–स्त्री० १ समझदारी, अक्लमंदी। २ चतुराई।
बुद्धिवंत, बुद्धिवत–वि० [सं० बुद्धि-वत्] १ जो बुद्धि से भरपूर हो, पंडित, ज्ञानी, विद्वान। २ चतुर, विवेकशील। ३ प्रतिभा या प्रभावशाली। ४ चालाक।
बुद्धिवर, बुद्धिवान–वि० [सं० बुद्धि-वर] १ जिसकी बुद्धि प्रखर और तेज हो, श्रेष्ठ बुद्धि। २ पंडित, ज्ञानी विद्वान। ३ समझदार, चतुर।
बुद्धिसदन–पु० [सं०] बुद्धि का घर, गजानन, गणेश।
बुद्धिसागर–वि० [सं०] १ जो बुद्धि का सागर या भण्डार हो। २ विद्वान, पंडित, ज्ञानी। ३ चतुर बुद्धिमान।
बुद्धिसाळी, बुद्धिसील–वि० [सं० बुद्धिशालिन्, बुद्धिशील] समझदार, अक्लमंद, चतुर।
बुद्धिहटी–स्त्री० एक जाति विशेष।
बुद्धिहीन–वि० [सं०] जिसमें बुद्धि का अभाव हो, मूर्ख, बेवकूफ।
बुद्धी–देखो 'बुद्धि'।
बुद्धीवाळो–देखो 'बुद्धिवान'।
बुध–पु० [सं० बुध] १ सूर्य के समीप रहने वाला सौर-जगत का एक ग्रह। २ नौ ग्रहों में से चौथा ग्रह। ३ प्रत्येक सप्ताह का चौथा दिन। ४ पंडित, ज्ञानी, विद्वान। ५ देवता। ६ चतुर, निपुण। ७ एक ऋषि। ८ वेगवत् राजा का पुत्र एक राजा। ९ एक स्मृतिकार-धर्म शास्त्रज्ञ। १० मगध देश का एक राजा। ११ एक राक्षस। १२ कुत्ता। १३ सुतप देवों में से एक। –वि० १ श्वेत। २ कृष्ण। ३ देखो 'बुद्ध'। ४ देखो 'बुद्धि'।
बुधआंबेज–देखो 'बुद्धआंबेज'।
बुधकरण–वि० बुद्धिमान। पंडित। ज्ञानी।
बुधजांमी–पु० [सं० बुधयामी] बुध का पिता चन्द्रमा।
बुधदा–स्त्री० [सं० बुद्धि-दात्री] सरस्वती, शारदा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुधबळ–देखो 'बुद्धिबळ'।
बुधभायरो–वि० बुद्धिहीन।
बुधवंत (वंतो)–देखो 'बुद्धिवंत'।
बुधवर–देखो 'बुद्धिवर'।
बुधवांण (न)–देखो 'बुद्धिवांन'।
बुधवार–पु० [सं०] प्रत्येक सप्ताह का चौथा दिन।
बुधसदन–देखो 'बुद्धिसदन'।
बुधसागर–देखो 'बुद्धिसागर'।
बुधहा–स्त्री० [सं० बुद्धिहा] शराब, मदिरा।
बुधहीण (हीणो)–देखो 'बुद्धिहीन'।
बुधा–पु० [सं० बुधान] आचार्य, पंडित, ज्ञानी।
बुधाणो (बो)–क्रि० रोना, विलाप करना, रुदन करना।
बुधाष्टमी–स्त्री० [सं० बुध-अष्टमी] बुधवार के दिन आने वाली अष्टमी तिथि।
बुधि–देखो 'बुद्धि'।
बुधिबळ–देखो 'बुद्धिबळ'।
बुधिवंत (वांत)–देखो 'बुद्धिवंत'।
बुधिवांनो–देखो 'बुद्धिमांनी'।
बुधीहीण–देखो 'बुद्धिहीण'।
बुध्ध–१ देखो 'बुद्ध'। २ देखो 'बुध'। ३ देखो 'बुद्धि'।
बुनकर–पु० कपड़ा बुनने वाला कारीगर।
बुनाई–स्त्री० बुनावट, बुनने का कार्य या पारिश्रमिक।
बुनियाद, बुन्याद–स्त्री० [फा० बुन्याद] १ आधार, नींव। २ सामर्थ्य, शक्ति, बल। ३ जड़, मूल। ४ असलियत। ५ अस्तित्व। ६ आरंभ, शुरूआत।
बुनियादी बुन्यादी–वि० [फा० बुन्यादी] १ आधारभूत। २ मूल भूत। ३ असली, सही। ४ प्रारंभिक।
बुबुकणो (बो)–क्रि० [सं० बुक्कनम्] १ दहाड़ मारकर रोना, विलाप करना, कूकना। २ भभकना। ३ उबक कर बाहर आना। ४ चिल्लाना, भौंकना।
बुबुकारो–स्त्री० [सं० बुक्कनम्] १ जोर-जोर से रोने की क्रिया या भाव। २ भभकाहट। ३ भौंकने की आवाज, चिल्लाहट।
बुबुक्षा, बुबुक्षा, बुभुक्षा–स्त्री० [सं० बुभुक्षा] १ खाने की इच्छा, भूख, क्षुधा। २ तीव्र आकांक्षा। चाह। ३ हविस, कामना।
बुभुक्षित, बुभुक्षित–वि० [सं० बुभुक्षित] १ भूख से पीड़ित, भूखा। २ लालायित।
बुरगा–स्त्री० एक प्रकार की सवारी।
बुर–स्त्री० १ महीन कण। २ एक सुगंधित पौधा विशेष।
बुरउ–१ देखो 'बूरी'। २ देखो 'बुरो'। ३ देखो 'बुर'।
बुरकणो (बो)–देखो 'बुरकाणो' (बो)।
बुरकली–पु० गोबर व पीली मिट्टी के मिश्रण से बनी छोटी गोली।
बुरकाणो (बो), बुरकावणो (बो)–क्रि० १ मिट्टी या महीन कणों वाली वस्तु किसी स्थान या पदार्थ पर छिड़कना, छितराना, फैलाना। २ औषधि का बुरादा घाव पर डालना। ३ किसी खाद्य पदार्थ पर शक्कर डालना।
बुरको–पु० [फा० बुर्का] १ पर्दानशीन मुसलमान स्त्रियों का एक पहनावा जिससे शिर से पांव तक शरीर ढका रहता है। २ नकाब।
बुरगटियो, बुरगटो–पु० वस्त्र की चारों ओर से दबा कर ओढ़ लेने की क्रिया।
बुरकणो (बो)–क्रि० ऊपर से तोड़ना, बेरहमी से तोड़ना।
बुरचणो (बो)–देखो 'बुड़चणो' (बो)।
बुरचितो, बुरचींतो–वि० बुरी बातें सोचने वाला, बुरा चाहने वाला।
बुरछ–स्त्री० बरछी।
बुरछाळ–पु० १ बरछी धारण करने वाला। २ वीर, योद्धा। ३ देखो 'बुरछ'।
बुरज–स्त्री० [अ० बुर्ज] १ किले या परकोटे की दीवार में मीनार की तरह बना हुआ कक्ष। २ किले या परकोटे पर तोपें रखने का स्थान। ३ मीनार का ऊपरी भाग, गुम्बद गुम्बज। ४ मण्डप। ५ गुब्बारा। ६ राशि। ७ एक पक्षी विशेष।
बुरजाळ–पु० १ गढ़, कीला। २ जिसमें बुर्जे बनी हों।
बुरजो–पु० [सं० वर्द्धमान] मिट्टी का गुंबजदार ढक्कन।
बुरझ–देखो 'बुरज'।
बुरझी–देखो 'बरछी'।
बुरटो–स्त्री० [देश०] एक लोक गीत विशेष।
बुरड–पु० एक जाति विशेष व इस जाति का व्यक्ति।
बुरडी–स्त्री० [देश०] जिसके कान कटे हों, कान कटी।
बुरणो (बो)–देखो 'बूरणो' (बो)।
बुरद–स्त्री० [फा० बुर्द] १ शतरंज में किसी पक्ष के हार की एक अवस्था। २ बाजी, शर्त। ३ प्रतियोगिता, होड़। ४ रिश्वत की रकम।–वि० १ नष्ट, बर्बाद। २ डूबा हुआ।
बुरबुर–स्त्री० धूल या किसी वस्तु के महीन कण।
बुरबुरखांड–स्त्री० महीन कणों या दानों वाली शक्कर।
बुरळ–पु० वात चक्र।
बुरस–पु० [अं० ब्रूश] १ महीन तार या बालों का बना उपकरण विशेष। २ बालों की कूंची।
बुराई–स्त्री० १ बुरा होने का भाव, बुरापन। २ खराबी। गड़बड़ी। ३ अवगुण, ऐब, दोष। ४ आलोचना, कटवी। ५ अपयश, निंदा। ६ मनोमालिन्य, कलुषता। ७ वैर, शत्रुता। ८ द्वेष, ईर्ष्या। ९ शिकायत १० संबंधों में खराबी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुराणी (बो)–देखो 'बुरावणी' (बो)।

बुरादी–पु० [फा० बुरादह] १ चीराई के समय लकड़ी से निकलने वाला बुरादा। २ साफ करते समय उतरने वाले लकड़ी के छिलके। ३ किसी वस्तु का महीन चूर्ण।

बुरावणी (बो)–क्रि० १ किसी खड्डे आदि में मिट्टी पत्थर आदि डाल कर भरवाना, समतल कराना। २ जमीन में दफन कराना, दफनाना। ३ निन्दा, आलोचना या बुराई करना, कोसना।

बुरियो–पु० महाब्राह्मण।

बुरी–स्त्री० १ निन्दा। २ शिकायत, चुगली। ३ देखो 'बुरी'।

बुरीगार–वि० १ दुष्ट, नीच। २ बुरे कार्य करने वाला। ३ किसी की बुराई या अहित करने वाला।

बुरी–वि० [सं० विरूप] (स्त्री० बुरी) १ अच्छे का विलोम, विपर्याय। २ खराब, निकृष्ट। ३ अनुचित, खराब। ४ सामाजिक, नैतिक व धार्मिक दृष्टि से निकृष्ट, हेय, निंदनीय। ५ अशुभ, अमंगलकारी। ६ अशोभनीय, अनुचित। ७ घृणित, गंदा। ८ असह्य, दुःखदायी। ९ स्वभाव से दुष्ट, नीच। १० हानिकारक। ११ व्यवहार से उग्र। १२ दोष पूर्ण गुणों वाला। १३ अप्रिय, असुहावना। –पु० १ नुकसान, हानि, अनिष्ट। २ देखो 'बूरी'।

बुलंद–वि० [फा० बलंद] १ चमकता हुआ, तेज। २ बहुत ऊंचा। ३ जबरदस्त। ४ प्रतिष्ठित, महान्, उच्च, श्रेष्ठ। ५ बलवान। ६ निःशंक, निडर। ७ प्रबल। ८ लम्बा। ९ भारी, तीव्र। १० प्रसिद्ध। ११ अधिक असरदार।

बुलंदी–स्त्री० [फा० बलन्दी] १ बुलंद होने का भाव। २ ऊंचाई, लम्बाई। ३ शक्ति, बल। ४ श्रेष्ठता, महानता, उच्चता। ५ प्रबलता। ६ भारीपन।

बुलगार–वि० सुन्दर, मनोहर।

बुलडोग–पु० [अं०] १ एक प्रकार का विलायती कुत्ता, वृष कुक्कर। २ वृषमुख।

बुलबुल–स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार की चिड़िया। २ एक प्रकार का वस्त्र। —बाज–वि० बुलबुलें पालने व लड़ाने का शौकीन। –बाजी–स्त्री० उक्त प्रकार का कार्य या शौक।

बुलबुलो–पु० [सं० बुद्बुद्] १ किसी तरल पदार्थ का बुदबुदा, बुल्ला। २ क्षणिक, वस्तु।

बुलवाक–पु० १ बुलाने वाला व्यक्ति। २ संदेश वाहक, हलकारा।

बुलवाणी (बो)–देखो 'बुलाणी' (बो)।

बुलाक–पु० [तु०] १ स्त्रियों के नाक का आभूषण विशेष। नथ। २ उक्त नथ में डालने का लम्बा मोती विशेष। –स्त्री० ३ नाक के बीच की हड्डी।

बुलाकी–पु० [तु० बुलाक] १ घोड़ों की एक जाति। २ उक्त जाति का घोड़ा।

बुलाणी (बो)–क्रि० [सं० वद्] १ किसी को पास आने का कहना, संकेत या इशारा करना। २ बुलावा भेजना, पास आने का कहलाना। ३ पुकारना, आवाज देना। ४ निमन्त्रण देना, आमन्त्रण देना। ५ आह्वान करना। ६ बोलने के लिये प्रेरित करना।

बुलावण–स्त्री० १ बुलाने की क्रिया या भाव। २ पास आने का संकेत। ३ आह्वान।

बुलावणी (बो)–देखो 'बुलाणी' (बो)।

बुलावो–पु० १ बुलाने की क्रिया या भाव। २ आदेश, हुक्म। ३ निमन्त्रण। ४ आवाज, पुकार।

बुलि, बुली–स्त्री० [सं०] १ योनि, भग। २ छोटे बच्चे का शिश्न। ३ गुदा।

बुल्लणी (बो)–देखो 'बोलणी' (बो)।

बुल्लाणी (बो), बुल्लावणी (बो)–१ देखो 'बोलाणी' (बो)। २ देखो 'बुलाणी' (बो)।

बुल्ली–स्त्री० १ आभूषण बनाने का एक औजार। २ देखो 'बुली'

बुल्लो–देखो 'बुलबुलो'।

बुवाणी (बो)–देखो 'वहाणी' (बो)।

बुवारणी (बो)–देखो 'बुहारणी' (बो)।

बुवारी–१ देखो 'बुहारी'। २ देखो 'बहू'।

बुहणी (बो)–देखो 'वहणी' (बो)।

बुहत्तर, बुहत्तरि (री)–देखो 'बत्तोत्तर'।

बुहराड़णी (बो), बुहराणी (बो), बुहरावणी (बो)–क्रि० १ बुहारने का कार्य करवाना। २ झाड़ू लगवाना, सफाई करवाना। ३ कांटे या कचरा साफ करवाना। ४ इकट्ठा करवाना, एकत्र करवाना।

बुहाई–स्त्री० [फा० बू] १ दुर्गंध बदबू। २ गंध, महक।

बुहाणी (बो)–देखो 'वहाणी' (बो)।

बुहानो–देखो 'बहानो'।

बुहार–देखो 'व्यवहार'।

बुहारड़ी–१ देखो 'बुहारी'। २ देखो 'बहू'।

बुहारण–पु० पूंछ पर भौंरी वाला घोड़ा।

बुहारणी (बो)–क्रि० [सं० बहुकरणम्] १ किसी स्थान या मकान में झाड़ू लगाना, सफाई करना। २ रास्ते या स्थान से कांटे या कूड़ा-कचरा हटाना। ३ बिखरे पदार्थ को बटोरना, एकत्र करना। ४ झाड़ना। ५ अवांछित तत्त्वों को हटाना।

बुहारि, बुहारी–स्त्री० [सं० बहुकरी] १ सींकों का बना झाड़ू सोहनी, बढ़नी। २ देखो 'बहू'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बुहारी–पु० १ झाड़ू लगाने की क्रिया। २ झाड़ू। ३ देखो 'पूछ-बुहार'।

बुहि–देखो 'बेऊं'।

बुहुत्तर, बुहुत्तिरि, बुहुत्तिरी–देखो 'बग्रोत्तर'।

बुहुत्तर, बुहुत्तिरि, बुहुत्तिरी–देखो 'बग्रोत्तर'।

बूंग–पु० १ टुकड़ा, खण्ड, अंश। –स्त्री० २ चिनगारी। ३ द्रव पदार्थ को तेज धार, प्रवाह। ४ चिल्लाहट, रुदन। ५ बूंझ।

बूंगरी–देखो 'बुहारी'।

बूंगी–देखो 'बूंझ'।

बूंगो–पु० [देश०] १ बैलगाडी के थाटे का, पीछे मुड़ा हुआ शिरा, नोक। २ दीवार में लगे पत्थर या लकड़ी का बाहर निकला हुआ हिस्सा।

बूंघरी–देखो 'बुहारी'।

बूंघरी–पु० झाड़ू।

बूंझ–स्त्री० १ किसी प्राणी की संज्ञाहीन होने की अवस्था या दशा। २ बेहोशी, मूर्छा, गश।

बूंझियो, बूंझी–पु० १ घास की जड़ों का समूह। २ पौधा, क्षुप। ३ कंटीली झाड़ी। ४ पानी की 'मूंण' पर लगाने का रस्सी का ढक्कन। ५ बोतल के मुंह पर फंसाने का कार्क, गोटी। ६ 'वेह' में रखे जाने वाले कलशों में से सबसे ऊपर का कलश।

बूंट–पु० [सं० विटप] १ वंश, बीज। २ जड़, मूल। ३ अंकुर, कोंपल। ४ फल की लता से जोड़े रखने वाला डंठल। ५ मशीन से बना जूता विशेष। ६ देखो 'बूंटो'।

बूंटको–देखो 'बूंट'।

बूंटाउपाड़–वि० १ वंश को नाश करने वाला। २ पौधे उखाड़ने वाला।

बूंटी–स्त्री० [सं० विटप] १ वनस्पति, पौधा। २ जड़ी, औषधि, ३ औषधि, दवा। ४ भंग, विजिया। ५ कपड़े आदि पर बनी फूल पत्तियां। ६ खेलने के पत्तों [ताश] पर बनी पत्तियां। –वि० [सं० बंड] १ कान कटी हुई। २ विलक्षण, विचित्र।

बूंटो–पु० [सं० विटप] १ पौधा, क्षुप। २ अंकुर, कोंपल। ३ अनाज की कटाई के बाद जमीन में गड़ा रह जाने वाला हिस्सा। ४ वस्त्रादि पर अंकित पौधे का चित्र। –वि० [सं० वंड] (स्त्री० बूंटी) १ कान कटा हुआ, बूंचा। २ विचित्र, अद्भुत।

बूंठ–पु० १ किसी पेड़ या पौधे का फूल, पत्ती व शाखा रहित खड़ा टूंट, डंठल। २ देखो 'बूंटो'।

बूंठो–१ देखो बूंटो'। २ देखो 'बूंठ'।

बूंतणो(बो)–क्रि० [सं०व्यूतीकरणम्] मापना, निर्धारित करना।

बूंद, बूंदड़, बूंदड़ी–स्त्री० [सं० बिन्दु] १ तरल पदार्थ, पानी आदि का छोटा, कण, कतरा, पृषत। २ पानी का छींटा, बरसात की बूंद। ३ अश्रु, आंसू। ४ स्त्री के गर्भाशय में पुरुष के वीर्य का गिरने वाला अंश। ५ देखो बूंदी'।

बूंदळा–पु० (ब.व.) बूंदी के राज्य पर अधिकार करने वाले भील।

बूंदा–पु० कान के आभूषण।

बूंदी–पु० १ चूतड़ पर भंवरी वाला बैल। २ कमर का जोड़। –स्त्री० [सं० बिंदु] ३ मोतियों के दानों जैसी बनने वाली बेसन की मिठाई विशेष। ४ देखो 'बूंद'। ५ देखो 'बुंदी'।

बूंदी–पु० १ बड़ी बूंद। २ अग्नि, आग। ३ जलता हुआ काष्ठ खण्ड। –वि० थोड़ासा, अत्यल्प।

बूंब–पु० [सं० बुंब] १ पुकार, आवाज। २ चिल्लाहट, आहि-आहि। ३ रक्षार्थ की जाने वाली पुकार। ४ चिंघाड़; गर्जन। ५ कोलाहल। ६ जोर का धमाका, आवाज। ७ समर वाद्य, रणभेरी।

बूंबड़ी–स्त्री० १ शाहजादी। २ देखो 'बूंब'।

बूंबरण, बूंबरिण–स्त्री० १ आहि-आहि की पुकार, करुण क्रन्दन। २ जोर की आवाज, चिल्लाहट।

बूंबला–देखो 'बूंमड़ा'।

बूंबाड़ी–देखो 'बूंब'।

बूंबारव–देखो 'बूंबरण'।

बूंबारोळ–देखो 'बूंबरण'।

बूंबी, बूंबीउ–स्त्री० १ आवाज, पुकार। २ झुंझलाहट, घुटन। ३ आवेश, जोश।

बूंबोजणो (बो)–क्रि० १ गुस्से या क्रोध में घुटना, झुंझलाना। २ आवेश या जोश में आना। ३ चिल्लाना। ४ दम घुटना घबराहट होना। ५ गश खाना।

बूंमड़ा–पु० [देश०] अनाज के दानों के ऊपर का छिलका।

बूंल, बूंल्यो–देखो 'बांवळ'।

बू–स्त्री० [फा०] १ गंध, वास, महक। २ बदबू, दुर्गन्ध। ३ आभास, प्रतित। ४ प्रभाव, असर। ५ गर्व, अभिमान। [सं०वधू] ६ बच्चों द्वारा माता के प्रति संबोधन। ७ बूढ़ी औरत के प्रति संबोधन।

बूई–देखो 'बुई'।

बूक, बूकड़, बूकड़ी–स्त्री० [सं० बाहु-वस्त्र] १ हथेली व अंगुलियों को समेट कर पात्रनुसा बनाई गई मुद्रा। २ बाहु। ३ गुरदा। ४ हृदय। ५ नरसिंघा, तुरही। ६ नगारा। ७ तेज, प्रवाह। ८ शस्त्रों की तेज बौछार। ९ देखो 'बूकियो'।

बूकच, बूकचो–देखो 'बुगचो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बूकणा (बौ)–क्रि० १ हथेली में लेकर किसी पदार्थ की फक्की लगाना। २ रुदन करना, चिल्लाना। ३ सिल पर पीसना रगड़ना।

बूकिया, बूकी–पु० १ बाहु, भुजा। २ स्त्रियों के बाहु का वस्त्र। ३ तालाब या बांध के दोनों किनारे। ४ किसी वस्तु की फक्की लगाने की क्रिया। ४ फक्की की मात्रा।

बूग–पु० १ भाले की नोक, अणी। २ देखो 'बक'।

बूड़ण–देखो 'बूढ़ण'।

बूड़णो (बौ)–देखो बूडणो' (बौ)।

बूड़ी–स्त्री० [देश०] भाले, बरछे आदि के निचले सिरे में लगने वाली लोहे की मजबूत छड़।

बूच–स्त्री० कान कटे होने की अवस्था, बूचापन।

बूचकी–स्त्री० १ कटे कान की गाय या बकरी। २ छोटे कानों की बकरी।

बूचड़–पु० [अ० बुचर] १ मांस के लिये पशु वध करने वाला कसाई। २ मांस का व्यवसायी। ३ पशु वध की क्रिया। —खानो–पु० पशु वध करने का स्थान, कसाईखाना। मांस की दुकान।

बूची–वि० (स्त्री० बूची) १ जिसके कान कटे हों, कान कटा। २ छोटे-छोटे कानों वाला।

बूज–१ देखो 'बूझ'। २ देखो 'बूंझ'।

बूजणो (बौ)–देखो 'बूझणो' (बौ)।

बूजर–पु० राजा नल द्वारा विजित एक प्राचीन देश।

बूजली–देखो 'बूझली'।

बूजाणो (बौ), बूजावणो (बौ)–देखो बूझाणो' (बौ)।

बूजी–देखो 'बूंझ'।

बूजी–पु० [देश०] १ खलिहान में चलने वाले बैलों के मुंह पर लपाई जाने वाली जाली। २ गाड़ी आदि पर लाद कर पानी लाने के जल पात्र का ढक्कन। ३ छोटा बच्चा। ४ देखो 'बूंझी'।

बूजी–स्त्री० [देश०] ग्वार की फलियों का साग विशेष।

बूझ–पु० [सं० बुद्धि] १ समझ, बुद्धि, ज्ञान। २ देखो 'बूंझ'। ३ देखो 'पूछ'।

बूझगर–देखो 'बूझागर'।

बूझणो (बौ)–क्रि० [सं० बोधयम्] १ बोध करना, समझना ज्ञान करना। २ गूढ़ विषय या मर्म समझना, रहस्य जानना। ३ अनुभव करना। ४ देखो 'पूछणो' (बौ)। ५ देखो 'बुझणो' (बौ)।

बूझबूझाकड़ बूझबूझागर–वि० [सं० बुद्धि-बुद्ध्याकर] १ बहुगुणी ज्ञानी, गुणज्ञ। २ बहुतसी बातें जानने वाला, बहुश्रुत। ३ मोहल्ले या गांव में सब से अधिक ज्ञानी, अनुभवी। ४ ज्ञानी होने का ढोंग करने वाला, पाखंडी।

बूझली–स्त्री० कान का आभूषण विशेष।

बूझवण–स्त्री० [सं० बोधनम्] १ बोध करने या समझने की क्रिया या भाव। २ पूछने की क्रिया, पूछताछ।

बूझवणो (बौ)–१देखो 'बूझणो' (बौ)। २ देखो पूछणो' (बौ)। ३ देखो 'बुझणो' (बौ)।

बूझाणो (बौ), बूझावणो (बौ)–क्रि० १ बोध कराना, समझाना ज्ञान कराना। २ गूढ़ विषय या मर्म समझाना, रहस्य जनाना। ३ अनुभव कराना। ४ देखो 'पूछाणो' (बौ)। ५ देखो 'बुझाणो' (बौ)।

बूट–स्त्री० १ चारण कुलोत्पन्न एक देवी। —पु० २ एक प्रकार का हिंसक जानवर। ३ देखो 'बूंट'। —वि० जिसके कान न हो, बूचा।

बूटकी–देखो 'बूंटी'।

बूटाड़–पु० हिरण।

बूटी–देखो 'बूंटी'।

बूटी–देखो 'बूंटी'।

बूठ–देखो 'बूंठ'।

बूठणो (बौ)–क्रि० [सं० वृष्टनम्] १ बरसना, वर्षा होना। २ बौछार होना, झड़ी लगना। ३ तुष्टमान होना। ४ प्रवाहित होना।

बूठी–देखो 'बूंठी'।

बूड़–पु० [सं० बुडनम्] १ डूबने की दशा, क्रिया या भाव। २ डुबकी लगाने का ढंग। ३ एक प्राचीन देश। ४ देखो 'बूढ़ी'। ५ देखो 'बूढ़ी'। ६ देखो 'बूढ़ण'।

बूड़ण (णि, णी)–देखो 'बूढ़ण'।

बूड़णो (बौ)–क्रि० [सं० बुड] १ जल में समाना, डूबना। २ गहरे जल में जाना। ३ निमग्न होना, लीन होना, लिप्त होना। ४ किसी विषय या विचार में खो जाना। एकाग्रचित्त होना। ५ नाश होना, मिटना, समाप्त होना। ६ पतन होना, गिरना, ह्रास होना। ७ भयंकर आर्थिक हानि होना।

बूड़परचा, बूड़पिरचा–स्त्री० [सं० वृद्ध-पूर्व-वायु] आग्नेय कोण से बहने वाली हवा।

बूड़ाणो (बौ), बूड़ावणो (बौ)–क्रि० १ जल में डुबाना। २ निमग्न, लीन या लिप्त करना। ३ तन्मयता लाना, एकाग्रता लाना। ४ नष्ट करना, मिटाना, समाप्त करना। ५ गिराना, पतन करना, ह्रास करना। ६ घेरे या प्रभाव में लाना, फंसाना, उलझाना। ७ आर्थिक हानि पहुंचाना।

बूड़ी–देखो 'बूढ़ी'।

बूढ़–स्त्री० १ वृद्धता, वृद्धपना। २ देखो 'बूढ़ी'। ३ देखो 'बूढ़ण'।

बूढ़जाम–पु० [सं० वृद्ध-जनित] वृद्धावस्था की संतान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बूढ़ण (णि, णी)–स्त्री० [सं० वृद्धा] १ वृद्ध स्त्री, वृद्धा बुढ़िया । २ वीर बहूटी नामक कीड़ा ।

बूढ़णो (बो)–क्रि० [सं० वृद्धत्व] वृद्ध होना, बुढ़ापा आना ।

बूढ़ल (लि, ली)–देखो 'बूढ़ण' ।

बूढ़लो–देखो 'बूढ़ो' ।

बूढ़वेम, बूढ़वैम–देखो 'बूढ़जाम' ।

बूढ़ाई, बूढ़ापण (णो)–पु० [सं० वृद्धत्व] १ वृद्ध होने की दशा, अवस्था या भाव । २ वृद्धावस्था का भाव ।

बूढ़ापो–देखो 'बुढ़ापो' ।

बूढ़ि, बूढ़ी–वि० [सं० वृद्धा] वृद्धा अवस्था वाली, वृद्धा ।

बूढ़ेवारे, बूढ़ैवारै–क्रि० वि० [सं० वृद्ध+वेला] वृद्धावस्था में, बुढ़ापे में ।

बूढ़ो–वि० [सं० वृद्ध] (स्त्री० बूढ़ी) १ वृद्धावस्था वाला, वृद्ध, बूढ़ा । २ बुजुर्ग, दाना । ३ वृद्धि को प्राप्त, बड़ा हुआ । ४ बुद्धिमान, चतुर । ५ झर-झर, पुराना, क्षीण । ६ परिपक्व । –पु० १ वृद्धावस्था का प्राणी । २ वृद्ध पुरुष ।

बूढ़ोढैण–पु० [सं० वृद्ध] अति वृद्ध एवं संज्ञा शून्य प्राणी ।

बूणा–स्त्री० भाटों की एक शाखा विशेष ।

बूतणो (बो)–देखो 'बूंतणो' (बो) ।

बूतो–पु० १ योग्यता, अनुभव । २ हौसला, ज्ञान, बोध । ३ औकात, क्षमता । ४ सामर्थ्य, हस्ती । ५ शक्ति, बल, पराक्रम । ६ आयु । ७ शारीरिक क्षमता ।

बूत्कार–स्त्री० [सं० चीत्कार] चिल्लाहट, चीत्कार ।

बूथ–स्त्री० १ मांस का टुकड़ा, बोटी । २ गाढ़े खून की ग्रन्थि । रक्त पिण्ड ।

बूथेळी–देखो 'बथूलो' ।

बून–देखो 'बूंद' ।

बूने, बूनै–क्रि० वि० उस ओर, उधर । –सर्व० उसे, उसको ।

बूब, बूबड़–देखो 'बूंब' ।

बूबड़ी–१ देखो 'बूंबडी' । २ देखो 'बूंब' ।

बूबणो (बो), बूबूणो (बी)–क्रि० जोर से बोलना, चिल्लाना ।

बूम–देखो 'बूंब' ।

बूमनो–पु० फकीर ।

बूर, बूरड़ो–पु० १ प्रहार । २ बौछार । ३ प्रवाह, बहाव । ४ समूह । ५ एक प्रकार की घास । ६ अधिक जड़ों वाला एक सुगंधित घास विशेष । ७ सुहागा । ८ देखो 'बुरो' ।

बूरणो (बो)–क्रि० १ गड्ढा खोद कर गाड़ देना, दफना देना । २ खाई, गड्ढे आदि को पाट देना, समतल कर देना । ३ क्षत-विक्षत कर मिट्टी में मिला देना । ४ सन देना, आच्छादित कर देना । ५ धूल आदि वस्तु के ढेर में दबा देना । ६ अधिक देना, भरना ।

बूराणो (बो), बूरावणो (बो)–देखो 'बुरावणो' (बो) ।

बूरी–स्त्री० १ रंग विशेष की मादा मवेशी । २ एक वनस्पति विशेष ।

बूरो–पु० १ अच्छे किस्म की शक्कर विशेष । २ भूरे रंग की कच्ची चीनी । ३ कोई महीन चूर्ण । ४ देखो 'बुरो' ।

बूसा–स्त्री० चमड़े की रंगाई का कार्य करने वाली एक चमार जाति, रैगर ।

बूसो–स्त्री० हाथ में रखने की लाठी ।

बूहणो (बो)–देखो 'बहणो' (बो) ।

बूहाणो (बो)–देखो 'वहाणो' (बो) ।

बूहारणो (बो)–देखो 'बुहारणो' (बो) ।

बूहारो–देखो 'बुहारी' ।

बें–सर्व० १ उस, वह । २ वे । –स्त्री० भेड़ या बकरी की बोली ।

बेंच–स्त्री० १ लंबी कुर्सीनुमा बैठने का आसन, बैठने का लम्बा तख्ता । २ न्यायाधीश या सांसदों के बैठने का आसन ।

बेंचणो (बो)–देखो 'बांटणो' (बो) ।

बेंचवाड़ो–पु० बंटवारा, विभाजन, वितरण ।

बेंचाणो (बो), बेंचावणो (बो)–देखो 'बंटाणो' (बो) ।

बेंट–पु० [सं० वण्ट] औजार आदि का दस्ता, हत्था ।

बेंडो–देखो 'बेंडो' । (स्त्री० बेंडी)

बेंण–१ देखो 'बेन' । २ देखो 'बहन' । ३ देखो 'वचन' ।

बेंत–स्त्री० [सं० वेतस्] १ ताड़ या खजूर की छड़ी विशेष । २ ताड़ या खजूर की शाखा की लकड़ी की छाल का पतला रेशा (केन) । ३ बालिश्त । [सं० व्यूतिः] ४ सिलाई के वस्त्रों का माप ।

बेंतणो (बो)–क्रि० [सं० व्यूतिः करणम्] सिलाई के वस्त्रों का माप लेना ।

बेंताणो (बो)–क्रि० सिलाई के कपड़ों का माप लिखवाना ।

बेंतालीस–देखो 'बयालीस' ।

बेंतावणो (बो)–देखो 'बेंताणो' (बो) ।

बेंदी–देखो 'बिंदी' ।

बे–वि० [सं० द्वे] १ दो । २ दोनों । –क्रि० वि० [फा०] १ बगैर, बिना । २ अभाव में । ३ उपसर्ग विशेष । –पु० १ कमल । २ क्रम । ३ जग । ४ नीचजन । ५ संसार । ६ साक्षी । ७ देखो 'बे' । —अंत–वि० अनन्त, अन्तहीन —अकल–वि० मूर्ख, बुद्धिहीन । नादान । —अकली–स्त्री० मूर्खता । नादानी । —अदब–वि० धृष्ट, गुस्ताख । बदतमीज । असभ्य । अशिष्ट । —अदबी–स्त्री० अशिष्टता असभ्यता, बदतमीजी, धृष्टता । बलात्कार ।

बेअक्खरी, बेअखरी, बेअखखरी, बेअखयरी–पु० १ सोलह मात्रा का एक छन्द विशेष । २ चौदह वर्ण का एक छन्द विशेष । —छोसर–पु० एक छन्द विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेअरथ (थी)–वि० [सं० वि+अर्थ] १ जिसका कोई अर्थ न हो। २ निरर्थक, व्यर्थ, तथ्यहीन। ३ जिसके दो अर्थ हों।

बेआब–वि० [फा०] १ जो आभाहीन हो कांतिहीन, निस्तेज। २ प्रतिष्ठाहीन। ३ चमकहीन, धुंधला। ४ जिसमें पानी न हो, जलहीन।

बेआबरू–वि० [फा०] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा, रहित। २ बेशर्म।

बेइंदिय, बेइंदी, बेइंद्रिय–वि० [सं० द्वि-इन्द्रिय] दो इन्द्रियों वाला। –पु० मुख व शरीर, दो इन्द्री वाले जीव।

बेइंसाफ–वि० [फा०] अन्यायी।

बेइंसाफी–स्त्री० [फा०] अन्याय, पक्षपात।

बेइ–देखो 'बेई'।

बेइज्जत–वि० [फा०] १ मान, प्रतिष्ठा व इज्जत से रहित। २ निंदित। ३ तिरस्कृत।

बेइज्जती–स्त्री० [फा०] १ मान, प्रतिष्ठा की हानि। २ अपमान, अनादर। ३ तिरस्कार। ४ निंदा।

बेइतबार–पु० [फा०] १ अविश्वास। २ संदेह। ३ बेसबरी।

बेइल्म, बेइल्मी–वि० [फा०] १ जो किसी इल्म या कला का जानकार न हो। २ अनपढ़, अज्ञानी।

बेई–वि० [सं० द्वे] १ दो, दोनों। २ विचारा हुआ। –पु० लकड़ी के दो सींगों वाला एक कृषि उपकरण। –क्रि० वि० लिए, वास्ते, निमित्त, प्रति।

बेईठणी (बी)–देखो 'बैठणी' (बी)।

बेईठाणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बी)।

बेईमान–वि० [फा०] १ जिसका कोई ईमान या धर्म न हो, अधर्मी। २ अविश्वासी, झूठा। ३ प्रतिष्ठा या इज्जत रहित। ४ उद्दण्ड, बदमाश। ५ अत्याचारी, अन्यायी। दुष्ट।

बेईमानी–स्त्री० [फा०] १ ईमान या धर्म का अभाव, अधर्म। २ अविश्वास, झूठ। ३ धोखा, जालसाजी। ४ उद्दण्डता, बदमाशी। ५ अनाचार, अत्याचार, अन्याय।

बेउ–देखो 'बेऊ'।

बेउंडी–देखो 'बेवणी'।

बेउ–देखो 'बेऊ'।

बेउज्र–वि० १ जिसे किसी बात का उज्र या आपत्ति न हो। २ जिसमें आपत्ति करने की गुंजाईश न हो।

बेउसीलो–वि० [फा०] (स्त्री० बेउसीली) आश्रय, सहारा या साधनहीन।

बेऊ, बेऊ–वि० [सं० द्वे] १ दो, दोनों। २ दूसरा, द्वितीय। ३ दो बार औटाया हुआ। —सर्व० उन्हें, उनको।

बेकट, बेकठ–देखो 'विकट'।

बेकदर–वि० [फा०] १ जिसकी कद्र, इज्जत, प्रतिष्ठा, आदर न हो। २ अपमानित, जलील। ३ उपेक्षित। ४ तुच्छ, हेय।

बेकदरी–स्त्री० [फा०] १ बेकदर होने की दशा या भाव। २ अप्रतिष्ठा, अनादर। ३ उपेक्षा। ४ तुच्छता, हेयता।

बेकर, बेकरड़ी बेकरड़ो–पु० [सं० विकीर्ण] १ याचकों की झोली का मिश्रित अनाज। २ दानेदार धूल। ३ खूबकला नामक औषधि।

बेकरार–वि० [फा०] जिसके चित्त में शांति न हो, अशान्त, व्याकुल, बेचैन।

बेकरारी–स्त्री० [फा०] १ बेकरार होने की अवस्था या भाव। २ व्याकुलता, बेचैनी। ३ अशान्ति।

बेकरियो, बेकरू–देखो 'बेकर'।

बेकळ–१ देखो 'विकळ'। २ देखो 'बेकळू'।

बेकळी–पु० १ प्रसव के बाद घोड़ी के होने वाला एक रोग। २ देखो 'व्याकुली'।

बेकळू–स्त्री० [सं० बालुका] १ महीन बालू रेत। २ एक विशेष प्रकार की रेत।

बेकस–वि० [फा०] १ असहाय, निराश्रय। २ दीन, अनाथ, मुहताज। ३ दुःखी, पीड़ित, त्रस्त।

बेकसूर–वि० [फ़ा०] १ जिसका कोई कसूर न हो, निर्दोष, निरपराध। २ सीधा-सादा, भोला-भाला।

बेकाम, बेकाज–वि० [फा० बेकार] १ जिसके पास कोई कार्य न हो, बेकार, निठल्ला, निकम्मा। २ निरर्थक, व्यर्थ, बेकार। [सं० निष्काम] ३ जिसका कोई मतलब या प्रयोजन न हो। ४ कामना या इच्छा रहित।

बेकाबू–वि० [फा०] १ जो काबू में न आसके, वश के बाहर का। २ निरंकुश, उच्छृंखल। ३ उद्विग्न, आपे से बाहर। ४ स्वतन्त्र, आजाद। ५ सीमा से बाहर।

बेकार–वि० [फा०] १ निठल्ला, निकम्मा। २ निरर्थक, व्यर्थ। ३ फालतू, अतिरिक्त। ४ सारहीन, तथ्यहीन। ५ नौकरी या उद्यमहीन।

बेकारी–स्त्री० [फा०] १ निठल्ला या निकम्मापन। २ बेकार होने की दशा। ३ बेरोजगारी।

बेकी–स्त्री० १ दो की संख्या। २ दो वस्तुओं का जोड़ा, युग्म। ३ दो अंगुलियों का संकेत।

बेकीमती–वि० [फा०] अमूल्य, बहुमूल्य, निर्मूल्य।

बेकुंठी–देखो 'बैकुंठ'।

बेकूफ बेकूब–देखो 'बेवकूफ'।

बेकूबी–देखो 'बेवकूफी'।

बेख–पु० [सं० वेष] १ वेश-भूषा, पोशाक। २ स्वरूप, रूप। [सं० वयस] ३ आयु, उम्र, वय। ४ जड़, मूल। ५ समान, तुल्य।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेखटक, बेखटके–क्रि०वि० [फा०] १ बिना किसी आवाज या खटके से। २ बिना किसी रुकावट या व्यवधान के। ३ बिना किसी भय, संकोच के।

बेखबी (बौ)–देखो 'बेखबी' (बौ)।

बेखता–वि० [फा०] १ निरपराध, बेकसूर। निर्दोष। २ अमोघ अचूक।

बेखबर–वि० [फा०] १ जिसकी कोई खबर न हो। २ जिसे होश-हवास या चेतना न हो। ३ असावधान, लापरवाह। ४ अनजान।

बेखबरदारी–स्त्री० [फा०] १ बेखबर होने की दशा या भाव। २ अचेतनता। ३ लापरवाही, असावधानी। ४ अनजानपना।

बेखबरी–पु० १ बेखबर होने की अवस्था या भाव। २ लापरवाही, असावधानी। ३ अज्ञानता। ४ बेहोशी।

बेखरच–वि० [फा०] धनहीन, गरीब।

बेखबेरी–स्त्री० एक देवी का नाम।

बेखातर, बेखातिर–वि० [फा०] १ बेचैन, अशान्त, दुःखी, व्याकुल। २ जिसकी इज्जत, मान, प्रतिष्ठा न हो।

बेखौफ–वि० [फा०] शंका व डर से रहित, निःशंक, निडर।

बेग–पु० [अं०] १ चमड़े, प्लास्टिक आदि का थैला विशेष। [तु०] २ अध्यक्ष, नायक। ३ अमीर, धनवान। ४ मुगल-कालीन एक उपाधि। ५ देखो 'वेग'।

बेगड़–स्त्री० [सं० द्विगढ] १ अच्छी नस्ल की गाय। २ बनजारे के पशुओं का झुण्ड। ३ दो गढ़ या किल्ले। ४ देखो 'बेगड़ो'।

बेगड़ो–पु० १ सीधे व लम्बे सींगों वाला, अच्छी नस्ल का बैल। २ बैल। ३ नर हिरण। ४ दो गढ़ों का अधीशक। –वि० १ जबरदस्त, जोरदार, २ दोगला, वर्णसंकर।

बेगति (ती)–स्त्री० १ दुर्गति, दुरावस्था। २ प्रेत योनि।

बेगम–वि० [फा०] जिसे कोई गम या चिंता न हो। निश्चित। –स्त्री० १ बादशाह या नवाब की स्त्री। २ सभ्रांत परिवार की स्त्री। ३ पत्नी, बीबी। ४ अप्सरा, हूर। ५ रानी के चित्र वाला ताश।

बेगमी–वि० १ बेगम का, बेगम संबंधी। २ उत्तम, बढ़िया। –स्त्री० निश्चितता, बेफ्रिकी।

बेगर–अव्य० बगैर, बिना, रहित। –वि० विरक्त, उदास। –पु० रंगाई का मसाला विशेष।

बेगरज–वि० [फा०] १ जिसे कोई गरज, मतलब या स्वार्थ न हो, निस्वार्थ। २ व्यर्थ, निरर्थक।

बेगरजी–स्त्री० [फा०] १ निस्वार्थ की भावना। २ व्यर्थता।

बेगल–पु० [देश०] भूखा सिंह।

बेगवती–पु० १ एक वर्णवृत्त विशेष। २ देखो 'वेगवंत'।

बेगसर–पु० [सं० वेगसरः] खच्चर, अश्वतर।

बेगानगी–स्त्री० [फा०] १ परायेपन की भावना। २ अपरिचितता।

बेगानो–वि० [फा० बेगानः] (स्त्री० बेगानी) १ पराया, अन्य, गैर। २ अजनबी, अनजाना। ३ अनभिज्ञ, अज्ञानी।

बेगाबल–देखो 'बेगाबल'।

बेगार–स्त्री० १ बिना शुल्क दिये, बलपूर्वक करवाया जाने वाला कार्य। २ निरर्थक श्रम। ३ बे मन से किया गया कार्य। ४ व्यर्थ का झमेला, झंझट, बखेड़ा। ५ बेरोजगारी, बेकारी

बेगारी–वि० [फा०] १ बेगार का कार्य करने वाला। २ बेमन से कार्य करने वाला।

बेगुना, बेगुनाह–वि० [फा०] १ निरपराध, निर्दोष। २ बेदाग, निष्कलंक।

बेगी–देखो 'वेगी'। (स्त्री० बेगी)

बेड़–पु० [देश०] १ कूए का जलस्तर। २ कूए की गहराई। ३ बीहड़वन, जंगल। ४ देखो 'बैड़ो'। ५ देखो 'बैड़'।

बेड़की–स्त्री० [सं० द्विघट] १ मिट्टी का छोटा जल पात्र। २ देखो 'बैंड़'।

बेड़णी–स्त्री० १ बेड़ने की क्रिया या भाव। २ अनाज की बालों की कटाई। ३ शिर काटने की क्रिया। ४ मुण्डन, मुण्डाई।

बेड़णो (बौ)–क्रि० १ अनाज की बालें काटना। तोड़ना। २ काटना। ३ मुण्डन करना।

बेड़बो–देखो 'बेड़ो'।

बेड़ाफोड़–पु० एक भयंकर विषैला सर्प।

बेड़ियो–देखो 'बेड़ो'।

बेड़ी–स्त्री० [सं० वलय] १ कैदी के पांव में डालने का लोहे का छल्ला। २ हाथी आदि पशुओं के पांव में डालने का छल्ला। ३ स्त्रियों के पांव का एक आभूषण विशेष। ४ छोटी नौका, नाव। ५ बंधन। —वाहो–पु० नाविक, मल्लाह।

बेड़ूको, बेड़ूखी–पु० [सं० द्विवृक्षता] १ दो शाखाओं वाला वृक्ष। २ हाथ की अंगुलियों का संधिस्थान।

बेड़ूबो–पु० [सं० विद्धांग] बिगड़ा हुआ, खराब।

बेड़ो–पु० [सं० बेडा] १ बड़े लट्ठों को जोड़ कर बनाया जल पोत। नौका। २ नावों या जलपोतों का समूह। ३ मिट्टी का जल-पात्र। [सं० द्विघटक] ४ पनिहारी के शिर पर रखा जल पात्रों का जोड़ा। ५ एक पर एक रखी वस्तुओं का समूह। ६ पवन, हवा। ७ फौज, सेना। ८ हाथ की अंगुलियों के संधिस्थल। ९ पहाड़ों का संधिस्थल। १० पेड़ की शाखाओं का संधिस्थल [सं० विभितकः]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११ बहेड़े का वृक्ष । १२ इस वृक्ष का फल । १३ देखो 'बैं'ड़ो' ।

बेंड़ो–देखो 'बैं'ड़ो' ।

बेंचणो (बो)–क्रि० [सं० विक्रयणम्] १ मूल्य लेकर कोई वस्तु देना । बेचना । २ बिक्री करना । ३ समर्पित करना । ४ द्रव्य आदि के लोभ में धर्म-ईमान खोना ।

बेंचाण (म)–पु० [सं० विक्रय] १ बेचने की क्रिया या भाव । २ बेची जाने वाली वस्तु ।

बेचाक–वि० [देश०] १ पूर्णतया अस्वस्थ, रुग्ण, बीमार । २ क्षीण, दुर्बल । ३ असावधान, गाफिल । ४ सुस्त, उदास । ५ बेचने का कार्य करने वाला, व्यवसायी ।

बेचाणो (बो)–क्रि० [सं० विक्रयणम्] १ मूल्य के बदले कोई वस्तु दिराना, बिकवाना । २ बिक्री कराना । ३ समर्पित कराना । ४ धन आदि का लोभ देकर धर्म-ईमान गमवाना ।

बेचारो–वि० [फा० बेचारा] (स्त्री० बेचारी) १ जिसके पास कोई साधन या कोई उपाय न हो । २ निस्सहाय, बेसहारा । ३ दुःखी, परेशान । ४ दरिद्र, कंगाल, दीन ।

बेचावणो (बो)–देखो 'बेचाणो' (बो) ।

बेचिराग–वि० [फा०] १ जहां चिराग न जले । २ जहां चिराग का अभाव हो । ३ निस्संतान ।

बेचेत, बेचेतं बेचेते–वि० १ जिसमें चेतना न हो, अचेत बेहोश । २ होश-हवास से रहित, मतिभ्रम । ३ असावधान ।

बेचैन–वि० [फा०] १ जिसे चैन न हो, अशान्त । २ व्याकुल, विकल । ३ दुःखी, संतप्त । ४ उदास, चिन्तित । ५ भयातुर, उद्विग्न । ६ अस्थिरचित्त ।

बेचैनी–स्त्री० [फा०] १ चैन रहित होने की दशा, अशान्ति । २ व्याकुलता, विकलता । ३ शोक, दुःख, उदासी । ४ उद्विग्नता, भय । ५ चित्त की अस्थिरता, घबराहट ।

बेछाड़–देखो 'बेछाड़' ।

बे'ज, बे'जको–पु० [सं० वेध] छिद्र, सूराख, विवर, छेद ।

बेजड़–वि० १ जिसकी कोई जड़ या मूल न हो, निर्मूल । २ बेबुनियाद, निराधार । ३ सारहीन, व्यर्थ । –पु० [सं० द्विजट] १ गेहूं-चने का मिश्रण । २ कई अनाजों का मिश्रण । ३ देखो 'बीजला' ।

बेजड़हथ–देखो 'बीजळाहथ' ।

बेजबान–वि० [फा०] १ जिसके जबान या वाणी न हो, मूक । २ जो बोलना न जानता हो । ३ चुप, शांत, गंभीर । ४ दीन, गरीब, विवश । –पु० अपशब्द, गाली ।

बेजान–वि० [फा०] १ जिसमें जान न हो, निर्जीव । २ अत्यन्त कमज़ोर, क्षीण ।

बेजा–वि० [फा०] १ जो उचित स्थान पर न हो । २ अनुचित, अनुपयुक्त, बुरा । ३ तुच्छ, घटिया, हेय, खराब । ४ असंगत, बेतुका । ५ बेकाबू ।

बेजापता, बेजाप्ता–वि० [फा०] १ जिसका कोई जाब्ता न किया गया हो, असुरक्षित । २ जो कानून या नियम के विरुद्ध हो । ३ अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त ।

बेजारा–स्त्री० [देश०] वस्त्र बुनने का व्यवसाय करने वाली जाति ।

बेजारो–पु० [देश०] उक्त जाति का व्यक्ति ।

बेजु बेजू–देखो 'बिज्जु' ।

बेजोड़–वि० [फा०] १ जिसकी कोई जोड़ न हो, अद्वितीय, अनुपम, अनोखा । २ जिसमें कोई जोड़ न हो, अखण्ड । ३ जिसका कोई साम्य न हो, बेतुका ।

बेजो–पु० १ कपड़ा बुनने का एक यन्त्र । २ कपड़ा बुनने की क्रिया ।

बेज्यास–पु० [फा०] १ विश्वास या तसल्ली का अभाव । २ धैर्य की कमी, अधीरता । ३ निराशा । ४ अविश्राम, अशांति ।

बेझ, बेंझ, बेझको–देखो 'बे'ज' ।

बेझड़–देखो 'बेजड़' ।

बेझो–पु० [सं० वेध] निशाना, लक्ष्य ।

बेट–पु० समुद्र के बीच का टापू, द्वीप ।

बेटउ बेटकियो, बेटड़ो–देखो 'बेटो' ।

बेटड़ो, बेटी–स्त्री० [सं० वत्सा] १ पुत्री, वत्सा, आत्मजा । २ कन्या, लड़की । ३ किसी के प्रति स्नेहयुक्त संबोधन ।

बेटो–पु० [सं० वत्स, बटु] (स्त्री० बेटी) १ पुत्र, सुत, वत्स । २ लड़का, बच्चा । ३ छोटे बच्चों का स्नेह युक्त सम्बोधन ।

बेठ–पु० [देश०] मुफ्त काम कराने की क्रिया, बेगार ।

बेठक–देखो 'बैठक' ।

बेठणो (बो)–देखो 'बैठणो' (बो) ।

बेठाणो (बो)–देखो 'बैठाणो' (बो) ।

बेठिकाणे (णै)–क्रि० वि० [फा०] १ निर्धारित स्थान से अलग । २ अन्यत्र । ३ अनुपयुक्त स्थान पर । ४ गलत पते पर । ५ बेमेल ।

बेठियो–पु० बेगारी ।

बेडलो–देखो 'बेड़ी' ।

बेडाळ–वि० [फा०] १ जिसकी कोई डाल या शाखा न हो । २ अव्यवस्थित । ३ देखो 'बेड़ो' ।

बेडीवाहो–देखो 'बेड़ीवाहो' ।

बेडोळ–वि० १ भद्दा, बेढंगा । २ कुरूप । ३ अस्त-व्यस्त ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेढंग–पु० १ ढंग का अभाव। २ अव्यवस्था। ३ भद्दापन, भोंडापन।

बेढंगापण (णो)–पु० १ बेढंगा होने की अवस्था या भाव। २ अव्यवस्था। ३ भद्दापन, भोंडापन। ४ विचित्रता।

बेढंगी–वि० १ जिसका कोई ढंग न हो, अनुपयुक्त। २ अव्यवस्थित। ३ भद्दा, भोंडा। ४ विचित्र।

बेढ–देखो 'बेढ'।

बेढक, बेढकी–देखो 'बेढक'।

बेढणी (बो)–देखो 'बेढणी' (बो)।

बेढब–वि० १ जिसका कोई ढब या ढंग न हो, बेढंगा। २ अव्यवस्थित। ३ भद्दा, भोंडा।

बेढाळ–वि० १ अस्त-व्यस्त। अव्यस्थित। २ विडरूप, कुरूप, भद्दा।

बेढी–देखो 'बेढ'।

बेढीगार, बेढीगारी–देखो 'बेढीगारी'।

बेढीमण (मणी)–देखो 'बेढीमणी'।

बेण–१ देखो 'वीणा'। २ देखो 'वेणी'। ३ देखो 'वचन'।

बेणका–स्त्री० १ वीणा। २ वेणी।

बेणची–स्त्री० [देश०] चारपायों का एक आसन विशेष, पीढ़ा।

बेणसुत–देखो 'वेनसुत'।

बेणि, बेणी–१ देखो 'वेणी'। २ देखो 'वीणी'।

बेणीडंड, बेणीदंड–देखो 'वेणीदंड'

बेणीफूल–देखो 'वेणीफूल'।

बेणु, बेणु–देखो 'वेणु'।

बेतंड–देखो 'वितुंड'।

बेत–पु० १ मौका, अवसर। २ संतान। ३ वक्त, समय। ४ देखो 'वैत'।

बेतधर–पु० [सं० वेतस्-धर] १ द्वारपाल। २ दण्डी।

बेतरणी–देखो 'वैतरणी'।

बेतरह–क्रि०वि० [फा०] १ बुरी तरह। २ विचित्र ढंग से। ३ साधारणतया। –वि० अत्यधिक, बहुत।

बेतलब, बेतलबी–वि० १ कर मुक्त। २ जांच से मुक्त। —जागीर –स्त्री० करमुक्त जागीर।

बेतस–देखो 'वेतस'।

बेताब–वि० [फा०] १ आतुर, अधीर। व्यग्र। २ प्रबल इच्छा वाला, उत्कण्ठित। ३ आवेश या जोश पूर्ण। ४ रोष पूर्ण, क्रोध युक्त। ५ बेचैन, अशांत। ६ अशक्त। ७ उतावला, त्वरित।

बेताबी–स्त्री० [फा०] १ बेताब होने की दशा या भाव, आतुराई, व्यग्रता। २ उत्कण्ठा। ३ आवेश, जोश। ४ रोष, क्रोध। ५ बेचैनी, अशांति। ६ अशक्तता। ७ त्वरा, उतावली

बेतार–वि० [फा०] बिना तार का। –पु० रेडियो, आकाशवाणी

बेताळ–वि० [फा० बे+सं० ताल] १ जिसमें ताल या सम का अभाव हो या मेल न हो। २ देखो 'वेताळ'। –भट्ट='वेत ळभट्ट'।

बेताळिक–देखो 'वैताळिक'।

बेताळीस बेतालीस–देखो 'बयाळीस'।

बेताव–देखो 'बेताब'।

बेतुकी–वि० [फा०] १ जिसकी कोई तुक या मेल न हो, बेमेल। २ जिसका कोई सामंजस्य न हो। ३ बेढंगा। ४ विषय से हटकर, अप्रासंगिक। ५ असुहावना। ६ अनिष्ट सूचक। ७ विशेषता से हीन।

बेथळियो–वि० १ संपत्तिहीन, निर्धन, गरीब। २ बेहूदा।

बेथाग–देखो 'अथाह'।

बेथी–स्त्री० दूरी, फासला, अन्तर।

बेद–पु० १ भेद, फर्क, अन्तर। २ देखो 'वेद'। ३ देखो 'वैद्य'।

बेदक–१ देखो 'वैदिक'। २ देखो 'वैद्यक'।

बेदखल–वि० [फा०] १ जिस पर किसी का दखल, अधिकार या कब्जा न हो। २ जो हस्तक्षेप से रहित हो।

बेदखली–स्त्री० [फा०] १ बेदखल होने की अवस्था या भाव। २ अधिकार या कब्जे का अभाव। ३ बिना हस्तक्षेप की अवस्था।

बेदगरभ–देखो 'वेदगरभ'।

बेदन (नि, नी)–देखो 'वेदना'।

बेदब–देखो 'बेअदब'।

बेदबी–देखो 'बेअदबी'।

बेदव्यास–देखो 'वेदव्यास'।

बेदम–वि० [फा०] १ जिसमें दम, जीवन शक्ति या प्राण न हो। २ शक्तिहीन, कमजोर दुर्बल। ३ अक्षम।

बेदरद, बेदरदी–वि० [फा० बेदर्द] जिसमें दया, रहम आदि कोमल भावों का अभाव हो, निर्दयी, बेरहम, कठोर, क्रूर।

बेदल–देखो 'बेदिल'।

बेदसणी–स्त्री० [सं० द्विरसना] सर्पिणी।

बेदांणी–देखो 'बैनांणी'।

बेदांणी–वि० [फा० बेदानः] १ जिसमें दाना या बीज न हो। [फा० बेदाना] २ मूर्ख, बेवकूफ। ३ ओछी भावना वाला। –पु० १ विहीदाना नामक फल। २ इस फल के बीज। ३ दारूहल्दी।

बेदांत–देखो 'वेदांत'।

बेदांती–वि० १ जिसके दांत न हो, बिना दांत वाला। २ देखो 'वेदांती'।

बेदाग–वि० [फा०] १ जिस पर दाग या धब्बा न हो, साफ,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वच्छ, निर्मल । २ जिसका चरित्र उज्ज्वल हो, निष्कलंक, शुद्ध, । ३ निरपराध, निर्दोष । निष्पाप । ४ अवगुण रहित बेऐब । ५ अचूक, अमोघ । ६ कोरा, अछूता । –क्रि०वि० बिना क्षति उठाये, बिना मात खाये ।

बेदि–पु० [सं० बेधी] १ धृष्ट या ढीठ हाथी । २ देखो 'बेदी' ।

बेदिल–वि० [फा०] १ जिसका दिल या मन ठीक न हो, उदास, खिन्नचित्त । २ जिसमें उत्साह या साहस की कमी हो । निराश हताश । ३ शोकसंतप्त, दुःखी । –गीर–वि० दुःखी, उदास ।

बेदी–देखो 'वेदी' ।

बेदुरुस्त–वि० [फा०] १ जो दुरुस्त या ठीक न हो । २ अनुचित, गैरवाजिब । ३ असत्य । ४ अस्वस्थ, रुग्ण । ५ भौंदा, भद्दा, बदशक्ल । ६ खण्डित, टूटा हुआ ।

बेदुवाय–स्त्री० [फा० बद्दुआ] अभिशाप, बद्दुआ ।

बेदी–पु० १ झगड़ा, टटा, झंझट । २ हुल्लड़, शोर, कोलाहल । ३ विघ्न, बाधा । अड़चन । ४ आवाज ।

बेदौधर–देखो 'बेदौधर' ।

बेदौधुन–देखो 'बेदौधुन' ।

बेध–पु० [सं० वेध] १ युद्ध, लड़ाई, संग्राम । २ वैर, शत्रुता, वैमनस्य, विरोध, दुश्मनी । ३ द्वेष, ईर्ष्या ।

बेधड़क–देखो 'निधड़क' ।

बेधणी–देखो 'वेधणी' ।

बेधणी (नी)–देखो 'वेधणी' (नी) ।

बेधरम–१ देखो 'विधरम्म' । २ देखो 'अधरम' ।

बेधस–देखो 'वेधस' ।

बेधा–देखो 'वेधा' ।

बेधाधी–देखो 'वेधाधी' ।

बेधीर–देखो 'अधीर' ।

बेधो–देखो 'बेदी' ।

बेन–१ देखो 'बहन' । २ देखो 'वीणा' । ३ देखो 'वेन' ।

बेनड़, बेनड़ी–देखो 'बहन' ।

बेनवा–स्त्री० मुसलमान फकीरों की एक शाखा । –वि० अत्यधिक

बेनसीब–वि० [फा० बे-नसीब] १ हतभाग्य, संदभागी । २ उपलब्धियों से वंचित ।

बेनागा–क्रि०वि० निरन्तर, नियमित, बिना रुके ।

बेनी–देखो 'वेणी' ।

बेनोई–देखो 'बहनोई' ।

बेपटी–देखो 'बपटी' ।

बेपतरी–वि० (स्त्री०बेपतरी) १ जिसकी साख या इज्जत न हो । २ अविश्वसनीय । ३ झूठा, धोखेबाज ।

बेपरद–वि० [फा० बेपर्द] १ जिस पर पर्दा न हो, खुला । २ स्पष्ट, साफ । ३ यथार्थ रूप में । ४ दुराव-छिपाव से रहित । –स्त्री० १ बिना बुर्कावाली औरत । २ पर्दा न करने वाली औरत ।

बेपरदगी–स्त्री० [फा० बेपर्दगी] १ बेपर्दा होने की अवस्था या भाव । २ खुलापन । ३ स्पष्टवादिता ।

बेपरवा, बेपरवाह–वि० [फा० बेपर्वा] १ जिसे कोई परवाह न हो, बेफिक्र, निश्चिंत । २ भय या शंका से रहित, निर्भय, निडर । ३ गैर जिम्मेवार, लापरवाह । ४ बहुत बड़ा, उदार, दानी ।

बेपरवाई, बेपरवाही–स्त्री० [फा०] १ बेपरवाह होने की अवस्था या भाव । २ निश्चितता, बेफिक्री । ३ निशंकता, निस्संकोच । ४ लापरवाही, गैर जिम्मेदारी । ५ निर्भयता । ६ उदारता ।

बेपाक–वि० [फा०] १ जो पाक न हो, अशुद्ध । २ जो स्वच्छ न हो, गंदा ।

बेपार–वि० जिसका पार न हो, अपार । –पु० १ दोपहर, मध्याह्न । २ देखो 'व्यापार' ।

बेपारह–पु० १ दुपहरी का भोजन, मध्याह्न का खाना । २ दो प्रहर । ३ मध्याह्न ।

बेपारही, बेपारियो–पु० १ दुपहरी में किया जाने वाला भोजन आदि कार्य । २ दुपहरी में खिलने वाला पौधा ।

बेपारी–१ देखो 'व्यापारी' । २ देखो 'दोपारी' ।

बेपारो–१ देखो 'व्यापार' । २ देखो 'दोपारी' ।

बेपींदो–वि० १ जिसके पैंदा न हो । २ जिसकी बात का विश्वास न हो । ३ जो अपने वादे का पक्का न हो । ४ झूठा, निराधार । ५ अस्थिर ।

बेपीड़, बेपीर–वि० १ जिसके हृदय में पीड़ा या सहानुभूति न हो । २ निर्दय, बेरहम । ३ जो पर दुःखकातर न हो ।

बेपुड़ि (ड़ी)–वि० १ दो परतों वाली, दोहरी । २ जो दोनों ओर से चले ।

बेपोहर–पु० [सं० द्विप्रहर] दो प्रहर, मध्याह्न ।

बेपोहरो–पु० [सं० द्विप्रहरिकम्] १ मध्याह्न का भोजन । २ मध्याह्न का समय ।

बेफाड–पु० [सं० द्विफलक] १ दो खण्ड, टुकड़े या विभाग । २ दो दल ।

बेफायदा–वि० लाभ रहित, बेकार ।

बेफिकर–देखो 'बेफिक्र' ।

बेफिकरी–देखो 'बेफिक्री' ।

बेफिकरो, बेफिक्र–वि० [फा० बेफिक्र] १ जिसे कोई फिक्र या चिन्ता न हो । निश्चिंत । आश्वस्थ । २ निर्भय, निडर । ३ लापरवाह, बेपरवाह ।

बेफिक्री–स्त्री० [फा०] १ निश्चितता । २ निर्भयता । ३ लापरवाही ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेध–पु० भाग्य, किस्मत, नसीब ।

बेबसी–स्त्री० [सं० विवश] १ विवश होने की अवस्था या भाव । २ लाचारी, मजबूरी । ३ परवशता, पराधीनता ।

बेवांण–पु० [देश०] १ एक जाति विशेष का घोड़ा । २ देखो 'विमान' ।

बेबाहु–वि० [सं० विबाहु] १ बिना भुजाओं का । [सं० द्विबाहु] २ दो भुजाओं वाला । ३ शक्तिशाली पराक्रमी । ४ दोनों भुजाओं से शस्त्र चलाने वाला बिना किसी सहारे के । –स्त्री० [सं० वाहिनी] सेना, फौज ।

बेबुद्धि, बेबुधी–वि० [सं० वि+बुद्धि] मूर्ख, बुद्धिहीन ।

बेबुनियाद–वि० [फा०] १ जिसकी कोई बुनियाद या जड़ न हो, निराधार । २ अप्रामाणिक ।

बेब्याही–वि० १ अविवाहित, कुंवारा । २ दो बार विवाहित ।

बेभव–देखो 'वैभव' ।

बेभाव–क्रि०वि० १ जिसका कोई भाव न हो, जिसका हिसाब या लेखा न हो । २ बिना किसी औचित्य के । —वि० ३ अत्यधिक, बहुत ।

बेम–पु० १ गाय, भैंस आदि के प्रसव की क्रिया । २ संतान, औलाद । ३ पुत्र, लड़का ।

बेमजा–वि० [फा०] १ आनन्द या लुत्फ से रहित । २ नीरस सूखा, रूखा ।

बेमजी–पु० १ गोने के समय कन्या को दिया जाने वाला द्रव्य वस्त्रादि । २ द्विरागमन ।

बेमन–वि० [फा०] १ उदास, खिन्न । २ अशान्त, चिन्तित । ३ दिलचस्पी रहित । –क्रि०वि० बिना मन से बिना दिलचस्पी के ।

बेमाता–देखो 'बेमाता' ।

बेमार–देखो 'बीमार' ।

बेमारी–देखो 'बीमारी' ।

बेमालूम–वि० [फा०] १ जिसका अता-पता, ठिकाना या जानकारी न हो । २ अज्ञात । ३ गुप्त ।

बेमुख–वि० १ बिना मुख का । २ देखो 'विमुख' ।

बेमुनासिब–वि० [फा०] अनुचित ।

बेमुरव्वत–वि० [फा०] १ जिसमें शील, संकोच आदि न हो । २ उज्जड़, अनाड़ी । ३ निष्ठुर, बेरहम ।

बेमुरव्वती–स्त्री० [फा०] १ शील, संकोच का अभाव । २ उज्जड़ता, अनाड़ीपन । ३ निष्ठुरता, बेरहमी ।

बेमुरौवी–वि० [फा०] बिना प्रेम वाला, प्रेम रहित, निर्मोही ।

बेमुरौवती–देखो 'बेमुरव्वती' ।

बेमुहो–वि० [सं० द्वेमुखः] १ दो मुख वाला । २ दो तरह की बात करने वाला । ३ कपटी, धोखेबाज । ४ देखो 'विमुख' ।

बेमौकी, बेमौकी–पु० [फा०] १ कुअवसर, असमय । २ बुरा समय ।

बेमौसम, बेमौसमी, बेमौसिम–क्रि०वि० मौसम के विपरीत असमय में । —वि० बेतुका ।

बेय–वि० [सं०द्वे] १ दो । २ दोनों ।

बेर–१ देखो 'वेला' । २ देखो 'बोर' । ३ देखो 'बैर' । ४ देखो 'वेर' । ५ देखो 'बैर' ।

बेरबखेर–क्रि०वि० [सं० वेला] १ समय-असमय, वक्त-बेवक्त । २ चाहे जिस समय ।

बेरक–पु० [अ०] १ सैनिकों का आवास । २ घुड़शाला । ३ देखो 'बैरक' । ४ देखो 'बेरक' ।

बेरजो–पु० चीड़ या साल वृक्ष का गोंद, गंधा विरोजा ।

बेरटी–१ देखो 'बोर' । २ देखो 'बैर' ।

बेरणो–देखो 'बारणो' ।

बेरणो (बो)–देखो 'बैरणो' (बो) ।

बेरस–वि० १ नीरस, बेमजा, रूखा-सूखा । २ आनन्द या खुशी से रहित । ३ बेस्वाद, स्वाद रहित । ४ नाखुश, नाराज ।

बेरहडी–पु० घोड़ों का एक रोग विशेष ।

बेरहम–वि० [फा०] १ निर्दयी, निष्ठुर, क्रूर । २ आततायी जुल्मी ।

बेरहमी–स्त्री० [फा०] १ निर्दयता, निष्ठुरता, क्रूरता । २ जुल्म, अत्याचार ।

बेराज–वि० [फा०] १ जिसका कोई राज या रहस्य न हो । २ निस्सार, निर्मूल । ३ सुस्त, उदास, नाराज । —पु० विषाद, दुःख, उदासी ।

बेराजी–वि० [फा०] १ अप्रसन्न, नाखुश । २ रुष्ट, क्रुद्ध । ३ रोने वाला, व्याकुल । ४ असंतुष्ट । –पु० रुदन विलाप ।

बेराह–वि० [फा०] १ पथ भ्रष्ट, कुमार्गगामी । २ गुमराह, पथ भ्रमित —पु० १ दो राह । २ गलत रास्ता ।

बेरियां–देखो 'वेळा' ।

बेरी–स्त्री० [सं० बेड़ा] १ छोटे मुंह का कूआ । २ खलिहान में घूमने वाले बैलों में से बाहर वाला बैल । ३ देखो 'बैरी' । ४ देखो 'बेड़ी' । ५ देखो 'बोर' ।

बेरुख–वि० [फा०] १ बेमुरव्वत, स्वार्थी । २ नाराज, क्रुद्ध । ३ विमुख, विरुद्ध । ४ उपेक्षित । ५ दुःशील । ६ जो रुख न मिलाता हो ।

बेरुखी–स्त्री० [फा०] १ बेरुख होने की अवस्था या भाव । २ नाराजगी, क्रोध । ३ विमुखता, विरोध । ४ उपेक्षा । ५ दुःशीलता । ६ रुख न मिलाने की अवस्था ।

बेरूप–वि० [सं० विरूप] कुरूप, बदशक्ल ।

बेरोक–क्रि० वि० [फा०] १ बिना रुकावट या मनाही के । २ निर्विघ्न, बेखटके । ३ निरन्तर, लगातार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेरोजगार–वि० [फा०] १ किसी नौकरी या उद्यम से रहित, बेकार। २ निकम्मा, निठल्ला।

बेरोजगारी–स्त्री० [फा०] १ बेरोजगार होने की अवस्था या भाव। २ बेकारी की समस्या। ३ व्यवसाय या उद्यम का अभाव।

बेरी–पु० [देश०] १ जानकारी, पता, इल्म, मालूम, अनुभव। २ रहस्य, भेद, वस्तुस्थिति का ज्ञान। ३ ज्ञान। ४ चालू विषय की पकड़, समझ। ५ देखो 'बेरा'।

बेरौनक–वि० [फा०] १ कान्ति या आभाहीन। २ शोभा या श्रीहीन। ३ उदास, खामोश। ४ सूना, उजाड़। ५ जहाँ चहल-पहल न हो।

बेरौनकी–स्त्री० [फा०] १ कान्तिहीनता। २ शोभा या श्रीहीन होने की दशा। ३ उदासी, खामोशी। ४ सूनापन, उजड़ापन। ५ चहल-पहल का अभाव।

बेलंद–देखो 'बुलंद'।

बेल, बेल–पु० [सं० बिल्व] १ एक वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष के पत्ते या फल। ३ लता विशेष। ४ लता की चित्रकारी। ५ सीमा निर्धारण वाली रेखा। ६ वंश, कुल, परिवार। ७ सहायता, मदद, रक्षा। ८ क्यारियों की सिंचाई के लिये बनी नाली। ९ सहायक, मददगार। १० नाव खेने का डंडा, बल्ली। ११ हलवा आदि पकाने का लम्बा खुरपा। १२ ऊंट के पेट में होने वाला रोग। १३ घोड़ों का एक रोग। १४ हाथ का आभूषण विशेष। १५ जोड़ा, युग्म। १६ देखो 'बेळ'।

बेलकी–स्त्री० मिट्टी का छोटा-जल-पात्र।

बेलड़–पु० १ लता फल। २ देखो 'बेल'। ३ देखो 'बेलडी'।

बेलड़ो, बेलड़ि, बेलड़ी–वि० [सं० द्वि-लटिका] १ दो लड़ों या लटों वाली। २ देखो 'बेल'।

बेलण, बेलण–क्रि० वि० सहायता के लिये, सहायतार्थ। –स्त्री० १ सहायता, मदद। –पु० २ फावड़ा, कुदाली।

बेलणो, बेलणो–पु० १ ऊंट की नकेल की रस्सी। २ देखो 'बेरजो'।

बेलज, बेलज्ज–स्त्री० मिर्च। –वि० निर्लज्ज, बेशर्म।

बेलण–स्त्री० [सं० वल्लभा, वेल्लनं] १ प्रेयसी, प्रिया, प्यारी। २ सहेली, साथिन। ३ रोटी बेलने का उपकरण। ४ बेलन की तरह काम आने वाला कोई उपकरण। ५ किसी यन्त्र का कोई पुर्जा विशेष। ६ करघे में लगी एक लकड़ी विशेष।

बेलणो (बो)–क्रि० [सं० वेल्लनम्] १ रोटी आदि बेलना, बटना। २ छितराना, फैलाना। ३ अधिक श्रम करना। ४ देखो 'बेलखो (बो)'।

बेलदार–वि० [सं० वेल्लि+फा० दार] १ जिस पर लता या बेल-बूंटे बने हों। २ लताओं से युक्त। –पु० [फा०] (स्त्री० बेलदारी) १ पत्थर तोड़ने या जमीन खोदने का कार्य करने वाली एक जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

बेलबारी–स्त्री० १ फूल-पत्तियों का कसीदा। २ वस्त्रादि में बने लताओं के चित्र। ३ बेलदार की स्त्री।

बेलपत्र, बेलपात–पु० [सं० बिल्वपत्र] बेल वृक्ष के पत्ते जो शिवजी को चढ़ाये जाते हैं।

बेलस–पु० १ लोहे का औजार विशेष। २ सहायता, मदद ३ देखो 'विलास'। ४ देखो 'बेलास'।

बेलसणो (बो)–देखो 'विलसणो' (बो)।

बेळा, बेला–स्त्री० १ ऊंट पर सवारी करने का ढंग विशेष २ देखो 'बेळा'।

बेला–स्त्री० साग के लिये बनाई गई बेसन की गोल टिकिया

बेलाग–वि० १ जिसमें किसी प्रकार का लगाव न हो। २ क मुक्त। ३ तटस्थ, अलग। ४ स्पष्ट, साफ।

बेलाणो–पु० [सं० द्वेलात] दो व्यक्तियों की सवारी वाला ऊंट।

बेळास–पु० १ दो सवारी से युक्त घोड़ा या ऊंट। २ देखो 'विलास'।

बेलि–स्त्री० [प्रा० वइल्ल] १ गाय, गौ। २ देखो 'बेल'। ३ देखो 'बेली'।

बेलियो–पु० १ डिंगल का एक छन्द विशेष। २ देखो बहुलियो ३ देखो 'बैल'।

बेलियोपीपळ–पु० एक जाति विशेष का पीपल।

बेलो, बेलीड़ो–पु० [सं० वल] १ प्रियतम, प्यारा, प्रेमी। २ सखा, मित्र, साथी। ३ सहायक, मददगार। ४ सेवक दास, भृत्य। ५ मनुष्य। व्यक्ति। ६ द्वार के बाहर की ओर लगाया जाने वाला पत्थर। ७ देखो 'बेल'।

बेलोपो–पु० १ बेली होने की अवस्था या भाव। २ मित्रता दोस्ती। ३ सहायता, मदद। ४ सेवा, चाकरी, नौकरी।

बेळू, बेलू बेळूड़ो–१ देखो 'बाळू'। २ देखो 'वेळू'। ४ देखो बगाळू'।

बेसे–स्त्री० मदद, सहायता।

बेळो बेलो–पु० [सं० द्वं] १ एक ही गर्भ से साथ जन्मने वाले शिशुओं का जोड़ा, युग्म। २ कतार, पंक्ति। ३ एक साथ किये जाने वाले दो उपवास। ४ वामन द्वादशी का व्रत। ५ युग्म, जोड़ा, दम्पति। ६ गाय, भैंस के दो स्तन। ७ ऊंट पर सवार दो व्यक्ति।

बेव–देखो 'बे'।

बेवकूफ–वि० [फा०] १ जिसमें बुद्धि का अभाव हो, निर्बुद्धि। २ मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी। ३ नादान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेवकूफी–स्त्री० [फा०] १ बेवकूफ होने की अवस्था या भाव। २ मूढ़ता, अज्ञानता, मूर्खता। ३ नादानी, बचपना।

बेवक्त–क्रि० वि० [फा०] १ कुसमय, असमय। २ अनुपयुक्त अवसर पर।

बेवड़ीचूड़–पु० आभूषणों की खुदाई करने का औजार विशेष।

बेवड़ो–वि० [सं० द्वेवट] (स्त्री० बेवड़ी) १ दो तह, परत या लटों वाला। २ दुगुना, दोहरा। ३ झुका हुआ मुड़ा हुआ। ४ देखो 'बेड़ो'।

बेवस–स्त्री० [सं० वहनं] १ चलने की क्रिया या भाव। २ चलने का ढंग।

बेवणी–स्त्री० [सं० वेपनी] चूल्हे के सामने आहते की तरह बनी छोटी पाली।

बेवणो (बो)–क्रि० [देश०] १ अवलोकन करना, देखना। २ ध्यान करना, सोचना, विचारना। ३ आगा-पीछा सोचना। ४ अनुभव करना, महसूस करना। ५ देखो 'वहणो' (बो)।

बेवतन–वि० [फा०] १ जिसका कोई देश, प्रदेश या वतन न हो। २ घरबार रहित। ३ परदेशी। ४ निर्वासित।

बेवफा–वि० [फा०] १ वफा से रहित, कृतघ्न। २ अविश्वासी, धोखेबाज, दगाबाज। ३ बेमुरव्वत, निर्मोही।

बेवळ–वि० सीधा-सादा, सरल।

बेवळी, बेवली–वि० (स्त्री० बेवळी) दोहरा, द्विगुणा। –पु० दो सींगों का एक कृषि उपकरण।

बेवांण–१ देखो 'विमाण'। २ देखो 'ब्याण'।

बेवा–स्त्री० विधवा स्त्री या युवती।

बेवाई–स्त्री० १ विधवापन, वैधव्य। २ देखो 'बिवाई'। ३ देखो 'ब्याई'।

बेवापण, बेवापणो (न)–पु० विधवा होने की अवस्था, वैधव्य, रंडापा।

बेवि, बेवे–देखो 'बेऊ'।

बेसंग–पु० [सं० द्वे-संघ] दो दल, दो दलों का समूह।

बेसंसा–वि० संशय या संदेह रहित।

बेस–१ देखो 'बेस'। २ देखो 'बयस'।

बेसऊर–वि० [फा० बेशऊर] १ असभ्य, अशिष्ट, गंवार। २ साधारण ज्ञान से रहित, मूर्ख, मूढ़।

बेसऊरी–स्त्री० [फा०] १ बेसऊर होने की अवस्था या भाव। २ असभ्यता, अनाड़ीपन, गंवारूपन। ३ मूर्खता।

बेसक–क्रि०वि० [फा० बेशक] शक या संदेह रहित, निस्संदेह।

बेसकीमत, बेसकीमती–वि० [फा० बेश-कीमती] बहुमूल्य, अधिक मूल्य का।

बेसण–पु० चने का आटा।

बेसणी–वि० चने के आटे का बना।

बेसणी–देखो 'बैसणी'।

बेसणी (बो)–देखो 'बैसणी' (बो)।

बेसबधू–स्त्री० [सं० वेसबधू] नगर वधू, वेश्या, रंडी।

बेसबर–वि० [फा० बे-सब्र] जिसे धैर्य न हो, अधीर, आतुर।

बेसबरी–स्त्री० [फा० बेसब्री] १ अधीरता, आतुराई। २ जल्दबाजी, त्वरा। ३ धैर्य का अभाव।

बेसमझ–वि० [फा०] १ नासमझ, नादान। २ अज्ञानी, मूर्ख। ३ अनुभवहीन।

बेसमझी–स्त्री० [फा०] १ नासमझी, नादानी। २ अज्ञानता, मूर्खता। ३ अनुभवहीनता। ४ धृष्टता। ५ मूर्खता के कार्य।

बेसर–पु० १ नाक का आभूषण विशेष। २ बघेरा। ३ देखो 'वेसर'।

बेसरज–वि० एक प्रकार का हाथी।

बेसरम–वि० [फा० बेशर्म] १ निर्लज्ज, बेशर्म। २ ढीट, धृष्ट।

बेसरमी–स्त्री० [फा० बेशर्मी] १ निर्लज्जता, बेशर्मी। २ ढीटता, धृष्टता।

बेसहूर–देखो 'बेसऊर'।

बेसांणणो (बो)–देखो 'बैसांणणो' (बो)।

बेसांनर–देखो 'वैस्वानर'।

बेसाड़णो(बो), बेसाणो(बो), बेसारणो(बो), बेसाचणो (बो) देखो 'बैसाणो' (बो)।

बेसास–वि० १ श्वास रहित। २ देखो 'विस्वास'।

बेसासघड़–देखो 'विस्वास'।

बेसासचो (बो)–देखो 'विस्वासणो' (बो)।

बेसी–वि० [फा० बेश] अधिक, ज्यादा, अतिरिक्त। –स्त्री० [फा०बेशी] १ अधिक होने की दशा या भाव। २ अधिकता ज्यादती। ३ वृद्धि, बढ़ोतरी। ४ नफा, लाभ।

बेसुध–वि० १ बेहोश, अचेत। २ असावधान, लापरवाह। ३ मूढ़मति, मतिभ्रम।

बेसुधि, बेसुधी–स्त्री० १ सुधी का अभाव। २ बेहोशी, मूर्च्छा, अचेतना। २ घबराहट, बदहवासी। ४ विमूढ़ता। ५ देखो 'बेसुध'।

बेसुमार–वि० [फा०] १ जिसका कोई सुमार या गणना न हो, अगणित, असंख्य। २ अपार, अत्यधिक।

बेसुरत–देखो 'बदसूरत'।

बेसुर, बेसुरो–वि०१ संगीत में जो स्वर के मेल में न हो, जिसकी आवाज वाद्य-ध्वनि से न मिलती हो। २ जिस स्वर या आवाज में मीठास न हो।

बेसूर–देखो 'बेसऊर'।

बेसोठो–पु० आसन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेस्म–देखो 'बेस्म'।

बेस्वाद–वि० [फा० बे+सं०स्वाद] १ स्वाद रहित। २ जिसका स्वाद अच्छा न हो। ३ अप्रिय, अरुचिकर।

बेह–देखो 'बेह'।

बेहक–वि० [फा०] १ जो हक से बाहर का हो, नाजायज। २ जो उचित न हो, अनुचित। ३ जो न्याय संगत न हो। ४ असत्य। ५ अनधिकृत। ६ देखो 'बहक'।

बेहकणी (बो)–देखो 'बहकणी' (बो)।

बेहकाणी(बो), बेहकावणी (बो)–देखो 'बहकाणी' (बो)।

बेहड़–देखो 'बे'ड़ो'।

बेहड़ली–देखो 'बेह'।

बेहड़ू–देखो 'बे'ड़ो'।

बेहड़ो–देखो 'बे'ड़ो'।

बेहटो–पु० ऊंट।

बेहड्ड बेहड्डू–देखो 'बे'ड़ो'।

बेहतर–वि० [फा०] जो तुलना में अच्छा, ठीक, उचित हो। –पु० १ अच्छापन, अच्छाई। २ भलाई।

बेहथ–वि० [सं० द्वि-हस्त] दो हाथों वाला।

बेहद, बेहद्द–वि० [फा०] १ जिसकी कोई सीमा या हद न हो, असीम, अपार। २ अत्यन्त, अत्यधिक। ३ अगणित, असंख्य। ४ मर्यादा से बाहर। ५ अतिशयोक्तिपूर्ण। ६ अलक्ष्य, अभेद्य।

बेहदो–देखो 'बहदो'।

बेहन, बेहनड़ी–देखो 'बहन'।

बेहमाता–देखो 'बेमाता'।

बेहया–वि० [फा०] बेशर्म, निर्लज्ज।

बेहयाई–स्त्री० १ बेशर्मी, निर्लज्जता। २ बेशर्म होने की अवस्था या भाव।

बेहरणो (बो)–देखो 'बैरणो' (बो)।

बेहरी–स्त्री० १ पृथ्वी, धरती, धरा। २ घोड़ा। ३ देखो 'बहरी'।

बेहरो–वि० [सं० द्वि] (स्त्री० बेहरी) १ दूसरी बार, दुबारा। २ दोहरा। —स्त्री० १ फूलों का हार। २ एक प्रकार की घास। ३ देखो 'बे'ड़ो'। ४ देखो 'बहरो'।

बेहल–पु० १ चारण कवि। २ देखो 'बहल'।

बेहलो–पु० (स्त्री० बेहली) ऊंट।

बेहवाल–देखो 'बेहाल'।

बेहसणो (बो)–देखो 'बहसणो' (बो)।

बेहांमी–पु० [सं० विश्राम] आराम, विश्राम।

बेहा–देखो 'विधाता'।

बेहाल–वि० [फा०] १ अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त। २ बिगड़ी दशा या हालत का। ३ संज्ञा शून्य, चेतनाहीन, बेहोश, मूर्च्छित। ४ विकल, व्याकुल, अधीर, दुःखी। ५ दुर्दशाग्रस्त। ६ बेखबर, अनजान। ७ मस्त, मग्न, मोदमय।

बेहाली–स्त्री० १ बेहाल होने की दशा या भाव। २ व्याकुल बेचैन, अधीर होने की दशा। ३ अज्ञानता। ४ शोचनीय अवस्था। ५ मस्ती।

बेहिसाब–वि० [फा०] १ जिसका कोई हिसाब या लेखा न हो। २ असंख्य, अगणित। ३ असीम, अपार।

बेहुं–देखो 'बेऊं'।

बेहुंणी–वि० [सं० बधिर] (स्त्री० बेहुंणी) १ अस्थिर चित्त, विक्षिप्त, बहिरा। २ लापरवाह।

बेहुनर–वि० [फा०] १ किसी हुनर या कला से रहित। २ जिसके पास कोई काम धंधा न हो। ३ निकम्मा, निठल्ला। ४ मूढ़, मूर्ख।

बेहुनरी–स्त्री० १ निठल्लापन, निकम्मापन। २ हुनर या कला का अभाव।

बेहूं, बेहू–देखो 'बेऊं'।

बेहूड़ो–देखो 'बे'ड़ो'।

बेहूदगी–स्त्री० [फा०] १ असभ्यता, अनाड़ीपन। २ अश्लीलता भद्दापन।

बेहूदो–वि० [फा० बेहूद] (स्त्री० बेहूदी) १ असभ्य, अशिष्ट बदतमीज। २ व्यवहार व आचरण की दृष्टि से अनुचित। ३ आवारा, दुश्चरित्र। ४ बेढंगा, बेमेल। ५ व्यर्थ, बेकार। ६ अस्त-व्यस्त, छिन्न-भिन्न, क्षतिग्रस्त, बेहाल।

बेहैफ–वि० [फा०] १ जिसे कोई चिंता या शंका न हो। २ खेद रहित। ३ आश्चर्य रहित। ४ मस्त।

बेहोनी–देखो 'बिसोनी'।

बेहोस–वि० [फा० बेहोश] १ जिसे होश न हो, मूर्च्छित, अचेत। २ असावधान, लापरवाह। ३ आलसी, निश्चेष्ट। ४ उन्मत्त, मस्त।

बेहोसी–स्त्री० [फा० बेहोशी] १ बेहोश होने की दशा या भाव। २ मूर्च्छा, अचेतना, शून्यता। ३ असावधानी, लापरवाही। ४ सुस्ती, आलस्य। ५ उन्मत्तावस्था, मस्ती।

बैं–देखो 'बैं'।

बैंक–पु० [अं०] रुपयों का लेन-देन, ऋण आदि देने वाला कार्यालय, खजाना।

बैंकुंठ, बैंकूंठ–देखो 'वैकुंठ'। –वासी='वैकुंठवासी'।

बैंकति–देखो 'बैंकती'।

बैंगण–पु० [सं०वंगण] एक पौधा विशेष जिसके फलों की सब्जी बनती है।

बैंगणी–वि० उक्त फल के रंग जैसे रंग का।

बैंचणो (बो), बैंछणो (बो)–क्रि० [सं० विभाजन] १ वितरण करना, बांटना। २ विभक्त करना, हिस्से करना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बैजा–पु० घोड़ों का एक रोग ।

बैंड–पु० [अं०] १ मांगलिक एवं विशेष अवसरों पर बजाये जाने वाले वाद्यों का समूह । २ उक्त वाद्यों को बजाने वाला दल । ३ देखो 'बैंडी' ।

बैंडाक–पु० १ घोड़ा, अश्व । २ देखो 'बैंडी' ।

बैंडारास–स्त्री० वीररसपूर्ण एक राग ।

बैंडूर–पु० १ घोड़ा । २ हाथी ।

बैंडी–वि० [सं० वितुण्ड, विदरः] (स्त्री० बैंडी) १ उन्मत्त, मस्त । २ तेजस्वी, बांकुरा, वीर । ३ चतुर, चालाक बुद्धिमान । ४ उद्दण्ड, बदमाश । ५ पागल, बावरा । ६ दुर्गम, दुरूह, कठिन । ७ अनुपयुक्त, खराब । —पु० १ घोड़ा, अश्व । २ औजार का दस्ता, बेंट ।

बैंत–पु० [सं० वह] १ मार्ग, रास्ता, पथ । २ वचन । ३ वीणा ४ बहन ।

बैंत–देखो 'बेंत' ।

बैंतणी (बी)–देखो 'बेंतणी' (बी) ।

बैंताणी(बी)–देखो 'बेंताणी' (बी) ।

बैंताळीस–देखो 'बयाळीस' ।

बैंदी–देखो 'बिंदी' ।

बैंन–पु० १ वचन । २ वीणा । ३ बहन ।

बैंनोई–देखो 'बहनोई' ।

बैंम–देखो 'वहम' ।

बैंसो–पु० शस्त्र या औजार की मूठ, दस्ता, बेंट ।

बं–सर्व० १ वे, उन । २ उस । –पु० १ करण । २ अरुण । ३ बालक । ४ श्रवन । ५ वच । ६ सत । ७ करघे का एक उपकरण । ८ उमर, आयु, वय, अवस्था । ९ देखो 'वैं' । १० देखो 'बे' ।

बंगडी–देखो 'बैंड़ी' ।

बंगखरी, बंगाखरी–देखो 'बेग्रखरी' ।

बंकण–पु० बैलगाड़ी में चारा आदि भर कर बांधने का रस्सा ।

बंकणी (बी)–देखो 'बहकणी' (बी) ।

बंकळ–देखो 'विकळ' ।

बंकाणी(बी), बंकावणी(बी)–देखो 'बहकाणी' (बी) ।

बंकुंठ–देखो 'वैकुंठ' ।

बंकुंठग्रामी–पु० [सं० वैकुण्ठग्रामिन्] विष्णु, ईश्वर ।

बंकुंठाग्रहविमळ–पु० [सं० वैकुण्ठ-गृह-विमल] ईश्वर, विष्णु ।

बंकूंट, बंकूंठ–देखो 'वैकुंठ' ।

बंकूंठी–देखो 'वैकुंठी' ।

बंखरी–देखो 'वैखरी' ।

बंखाणणी (बी)–देखो 'बखाणणी' (बी) ।

बंग–१ देखो 'वेग' । २ देखो 'बेग' ।

बंगी–देखो 'बेगी' ।

बंड, बंड, बंडकी–स्त्री० १ प्रथम बार प्रसूता होने वाली गाय । २ युवा गाय ।

बंडलो–पु० १ ढेर, समूह । २ देखो 'बेडलो' ।

बंड़ाई–स्त्री० १ कड़वाहट, खारापन । २ उत्तेजना, क्रोध, गुस्सा ३ कटुता, अप्रियता । ४ बदमाशी, उद्दण्डता । ५ तनाव ।

बंड़ी–देखो 'बेड़ी' ।

बंडू को (खो)–देखो 'बेडु को' ।

बं'ड़ो बंड़ो–वि० (स्त्री० बं'ड़ी, बंडी) १ कड़वा, क्षारयुक्त । २ अमधुर, अरुचिकर । ३ कटु, कर्कश, । ४ उग्र, क्रोधी, क्रूर । ५ दुर्गम, दुरूह, विकट । ६ कड़ा, कठोर । ७ भयंकर भयानक, भयावह । ८ बदमाश, उद्दण्ड, बुरा । ९ जोशीला, तेजस्वी । १० कड़ा, कठोर । ११ वीर, बहादुर । १२ उन्मत्त । १३ विरोधी, विपक्षी । १४ देखो 'बे'ड़ो' ।

बंचरा, बंचराय–देखो 'बहचराय' ।

बंछाड़–देखो 'बैछाड़' ।

बंचंन–देखो 'बेचैन' ।

बंछरा, बंछराम–देखो 'बहचराम' ।

बंछाड़–वि० १ शैतान, आततायी । २ शक्तिशाली, प्रचण्ड, जबरदस्त । ३ वश में या काबू में न आने वाला, वीर, बहादुर । ४ उद्दण्ड, बदमाश । ५ जिसमें कोई ऐब हो, खोटी आदत वाला । –स्त्री० दूहते समय पांव पछाड़ने वाली गाय ।

बंछाणी (बी)–देखो 'बिछाणी' (बी) ।

बंछोळ–वि० शान्त ।

बंजंती–देखो 'वैजयंती' । —माळ, माळा= वैजंतीमाळा' ।

बंज–पु० [सं० वेध] छेद, सूराख, छिद्र ।

बंजणती, बंजयंती–देखो 'वैजयंती' ।

बंजा–पु० १ घोड़ों का एक रोग विशेष । २ देखो 'बेजा' ।

बंजागर–देखो 'बेजारा' ।

बंटरी–स्त्री० [अ०] १ विद्युत उत्पादक यंत्र । २ टोर्च । ३ तोपखाना ।

बैठक–स्त्री० [सं० वेशन] १ बैठने की क्रिया या ढंग । २ बैठने की जगह, स्थान । ३ आगंतुकों को बैठाने का कक्ष । ४ गांव या मुहल्ले की चौपाल । ५ दरबार में बैठने का प्रतिष्ठित स्थान । ६ रात्रि में मवेशियों के बैठने का स्थान । ७ व्यायाम या कसरत का एक ढंग । ८ करघे में जुलाहे के बैठने का स्थान । ९ बैठने का आसन, पीढ़ा । १० सभा, मिटिंग । ११ बैठने पर जमीन पर टिकने वाला शरीर का भाग । १२ किसी मूर्ति या खंभे की चौकी । १३ गुदा । १४ संगति । सोबत ।

बैठकचूड़ी–स्त्री० १ बड़ी-बड़ी बिंदियों वाली चूड़ी विशेष । २ सादी चूड़ी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बैठकी–वि० बैठकों में प्रायः जाने-आने वाला।

बैठकी–पु० १ बैठने का स्थान। २ बैठने का आसन।

बैठणो (बो)–क्रि० [सं० वेशन] १ मनुष्य द्वारा पांवों को समेटकर या गुदा टिकाकर कहीं पर अवस्थित होना स्थिर होना, आसन जमाना। २ किसी प्राणी का खड़े होने या सोने की बीच की दशा में होना। ३ रेंगने वाले या उड़ने वाले प्राणियों का कहीं पर रुके रहना। ४ कहीं ठीक स्थित होना, सही-सही जमना। ५ आसन या पद ग्रहण करना। ६ किसी कार्य में जमकर संलग्न होना। ७ सवार होना, सवारी करना। ८ प्रवेश होना, घुसना, धंसना। ९ सतह पर जमना। १० चुनाव या प्रतियोगिता में मैदान से हट जाना। ११ सोते हुए का उठना। १२ विद्यमान, मौजूद या वर्तमान होना। १३ समझ में आना। १४ व्यवसाय न चलना। १५ तौल में निश्चित मान ज्ञात होना। १६ समाना, फिट होना। १७ निकम्मा, निठल्ला होना। १८ निरुपाय या निरुत्तर होना। १९ स्थाई रूप से अंकित होना, लगना। २० यथा स्थान आना। २१ आमदनी होना। २२ बकाया रकम वसूल होना। २३ अस्त होना डूबना। २४ पतन होना, ह्रास होना। २५ पिचकना। २६ किसी स्त्री का अन्य पुरुष के घर में रह जाना। २७ अभ्यास में आना। २८ मृतक के संबंधियों को संवेदना देना।

बैठांणणो (बो), बैठाणणो (बो), बैठालणो (बो), बैठावणो (बो)–क्रि० १ बैठने के लिये प्रेरित करना, बैठाना। २ खड़े या सोने के बीच की अवस्था में करना। ३ किसी स्थान पर रोकना रोके रखना। ४ ठीक स्थित करना, जमाना। ५ आसन या पद ग्रहण कराना। ६ किसी कार्य में संलग्न करना, लगाना ७ सवार कराना, सवारी कराना। ८ प्रवेश कराना, घुसाना ९ सतह में जमाना। १० विरक्त करना, मैदान से हटा देना। ११ सोते हुए को उठाना। १२ वर्तमान या उपस्थित रखना। १३ कारोबार डुबा देना। १४ निश्चित तौल निकालना, तोलना। १५ व्यवसाय न चलाना। १६ समझाना, दिमाग में बैठाना। १७ फिट करना। १८ निकम्मा करना। १९ निरुपाय या निरुत्तर करना। २० स्थाई रूप से अंकित करना, दागना। २१ यथा स्थान लाना। २२ आमदनी करना। २३ बकाया रकम वसूल करना। २४ अस्त करना, डुबाना। २५ पतन करना, ह्रास करना। २६ पिचकाना। २७ किसी स्त्री को अन्य पुरुष के घर में रखना। २८ अभ्यास में लाना। २९ मृतक के संबंधियों को संवेदना दिलाना।

बैठोखातो–पु० १ देन-लेन का हिसाब। २ इस हिसाब की बही।

बैठोविवाह, (व्याह)–पु० वर पक्ष व कन्या पक्ष का एक ही स्थान, गांव व नगर में रह कर किया जाने वाला विवाह।

बैडोळ–देखो 'बेडौल'।

बैढ़–देखो 'बेढ़'।

बैढ़ीमण–देखो 'बेढ़ीमण'।

बैढोगारी–देखो 'बेढोगारी'।

बैण–१ देखो 'वचन'। २ देखो 'बहन'।

बैणव–देखो 'वैणव'।

बैणसगाई–देखो 'वयणसगाई'।

बैणी–देखो 'वेणी'।

बैंणो–देखो 'वैंणो'।

बैंणो (बो)–देखो 'वहणो' (बो)।

बैत–१ देखो 'वेंत'। २ देखो 'वेंत'।

बैनड–वि० १ बहता या चलता हुआ। २ बलवान। ३ धनाढ्य, धनी। –स्त्री० कृषि भूमि।

बैतणो (बो)–देखो 'वैंतणो' (बो)।

बैतरणी–देखो 'वैतरणी'।

बैताणो (बो)–देखो 'बेंताणो' (बो)।

बैताळ–देखो 'बेताळ'।

बैताळिक–देखो 'वैताळिक'।

बैद–देखो 'वैद्य'।

बैदई–१ देखो 'वैद्यक'। २ देखो 'वैदेही'।

बैदक, बैदगी–देखो 'वैद्यक'।

बैदिक–१ देखो 'वैदिक'। २ देखो 'वैद्यक'।

बैध–पु० युद्ध, संग्राम।

बैधग्रण–वि० [सं० वैधेय] मूर्ख, मूढ़।

बैधव–देखो 'वैधव्य'।

बैन, बैनड, बैनड़ली बैनडी–१ देखो 'वचन'। २ देखो 'बहन'।

बैनतीय, बैनतेय–देखो 'वैनतेय'।

बैनांणी–पु० [सं० वेध-धानी] १ लोहार। २ बाज पक्षी।

बैनीत–देखो 'बेनीत'।

बैनु–वि० दोनों। –क्रि० वि० उधर, उस ओर।

बैनोई–देखो 'बहनोई'।

बैपाक–देखो 'बेपाक'।

बैपार–देखो 'व्यापार'।

बैपारी–देखो 'व्यापारी'।

बैपैरोराछ–पु० कपड़ा बुनने का औजार विशेष।

बैबरण (न)–वि० [सं० वैवर्ण्य] १ फीके रंग का, मंद रंग का, विवर्ण। २ बदले हुए रंग का।

बैभव–देखो 'वैभव'।

बैंम–देखो 'वहम'।

बैयकी–स्त्री० बेंजा बुनने के लिये बैठने का स्थान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बैयर–१ देखो 'वैर'। २ देखो 'बैर'।
बैयालिस–देखो 'बयाळी'।
बैयो–देखो 'बहयो'।
बैरंग–वि०[फा०बे-रंग] १ रंग हीन, बिना रंग का। २ अन्य रंग का। ३ खाली हाथ। ४ बिना टिकट लगा।
बैरंगी–वि० १ कई रंगों वाली, बहुरंगी। २ बहुरूपिया।
बैर–स्त्री० १ पत्नी, भार्या। २ स्त्री, औरत, नारी। ३ देखो 'वैर'।
बैरक, बैरक्क, बैरख–पु० [फा०] १ ध्वजा। पताका। २ झण्डी। ३ किसी भूमि पर कब्जा करने पर गाड़ा जाने वाला झण्डा। ४ सैनिकों के लिये बने मकान या कक्ष।
बैरड़ी–देखो 'बैर'।
बैरड़ो–पु० एक सर्प विशेष।
बैरण–देखो 'वैर'।
बैरणी–देखो 'बारणो'।
बैरणो (बो)–क्रि० [सं० वर्द्धनं] १ चीरना, फाड़ना। २ जैन साधुओं का भिक्षार्थ जाना। ३ दूल्हे का अपने इष्ट मित्रों व संबंधियों के यहां भोजन करना। ४ काटना, चीरना।
बैरभाव–देखो 'वैरभाव'।
बैरसुध–देखो 'वैरसुध'।
बैरहर–देखो 'वैरहर'।
बैरहरण–देखो 'वैरहरण'।
बैरांगर–देखो 'वैरागर'।
बैरांण (न)–देखो 'वीरान'।
बैराई–स्त्री० १ लड़की आदि की चोराई। २ इस कार्य का पारिश्रमिक। ३ जैन साधुओं को भोजन देने का कार्य। –वि० शत्रु, दुश्मन, बैरी।
बैराग–देखो 'वैराग्य'।
बैरागर–देखो 'वैरागर'।
बैरागी–देखो 'वैरागी'।
बैराग्य–देखो 'वैराग्य'।
बैराड़ो–वि० बैराड़ देश का, बैराड़ देश संबंधी। –पु० बैराड़ देश का घोड़ा।
बैराजमांन–देखो 'विराजमांन'।
बैराट–१ देखो 'वैराट'। २ देखो 'विराट'।
बैराणो (बो)–क्रि० १ चीराना, फड़वाना। २ जैन साधुओं को भिक्षा या भोजन देना। ३ दूल्हे को भोजन कराना।
बैरायत–देखो 'वैरायत'।
बैरी–देखो 'बैरी'।
बैरोड़ी–देखो 'बैरी'।
बैरो–वि० १ विशाल, दीर्घ, प्रचण्ड। २ विविध रूपों वाला।
बैरोचन–१ देखो 'विरोचन'। २ देखो 'वैरोचन'।
बैरी–देखो 'बेरी'।
बैरो–देखो 'बहरो'।
बैल–पु० [सं० बलीवर्द] १ गऊ पुत्र एक प्रसिद्ध चौपाया जो कृषि कार्य में उपयोगी होता है। वृषभ। २ शिव का वाहन नंदी। ३ देखो 'बहल'।
बैलगाड़ी–स्त्री० बैलों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी।
बैलड़ली, बैलड़ी–१ देखो 'बहल'। २ देखो 'बैल'।
बैलण–देखो 'वेलण'।
बैलणो (बो)–क्रि० नींद में सोते समय या सन्नीपात रोग में बड़बड़ाना, प्रलाप करना।
बैलर–पु० १ एक घोड़ा विशेष। २ भाप से चलने वाली मशीनों का एक भाग।
बैलियो–१ देखो 'बहलियो'। २ देखो 'बैल'।
बैली–१ देखो 'वेली'। २ देखो 'बहल'।
बैलून–पु० [अं०] रब्बर का गुब्बारा।
बैलो–देखो 'बेळो'।
बैल्यो–देखो 'बैल'।
बैव–पु० [सं० विवेक] विवेक, ज्ञान, बुद्धि।
बैवणी–देखो 'बेवणी'।
बैवणो (बो)–देखो 'बहणो' (बो)।
बैवळसरी–देखो 'वोलसिरी'।
बैवस–१ देखो 'वैवस्वत'। २ देखो 'विवस'।
बैवाणो (बो)–देखो 'बहाणो' (बो)।
बैसंवर–देखो 'वैस्वानर'।
बैस–पु० १ एक प्राचीन क्षत्रिय राजवंश। २ देखो 'वैस्य'। ३ देखो 'वयस'। ४ देखो 'वेस'। ५ देखो 'बहस'।
बैसक–देखो 'बैठक'।
बैसकी, बैसकै–स्त्री० पशु को, बैठने के बाद, उठने की असमर्थावस्था।
बैसणी–पु० [सं० उपवेशनम्] १ निवास, आवास, रहना। २ आसन, बिछायत। ३ निवास स्थान। ४ राजधानी। ४ राजसिंहासन। ५ जैनियों का एक अनुष्ठान।
बैसणो (बो)–देखो 'बैठणो (बो)।
बैसर–१ देखो 'बेसर'। २ देखो 'वेसर'।
बैसरवण–देखो 'वैस्रवण'।
बैसांणणी (बो)–देखो 'बैठाणो' (बो)।
बैसाख–देखो 'वैसाख'।
बैसाखि, बैसाखी–देखो 'वैसाखो'।
बैसाड़णा (बो)–देखो 'बैठाणो' (बो)।
बैसाणो(बो), बैसारणो(बो)–देखो 'बैठाणो' (बो)
बैसारिण–देखो 'वैसारिण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बैसारू–वि० १ बैठने वाला । २ सवारी करने वाला । ३ बैठने योग्य । ४ यात्री । —गाड़ी–स्त्री० यात्री गाड़ी ।

बैसालणी (बी), बैसावणी (बी)–देखो 'बैठाणी' (बौ) ।

बैसास देखो 'विस्वास' ।

बैसासणी (बी)–देखो 'विस्वासणी' (बौ) ।

बैसिक–देखो 'बैसिक' ।

बैसोत–देखो 'बेसारु' ।

बैस्नव, बैस्नवव–देखो 'वैस्णव' ।

बेंह–देखो बेह' ।

बेंहकाणी (बी), बेंहकावणी (बी)–देखो 'बहकाणी' (बौ) ।

बेंहड़ी–देखो 'बे'ड़ी' ।

बेंहण, बेंहन–देखो 'बहन' ।

बेंहणी (बी)–देखो 'वहणी' (बौ) ।

बेंहनेई, बेंहनोइ, बेंहनोई–देखो 'बहनोई' ।

बेंहर–वि० [सं० बेर] भयानक, विकट ।

बेंहराव–पु० लवाजिमा ।

बेंहरि (री)–स्त्री० रणक्षेत्र में नृत्य करने वाली एक देवी विशेष ।

बेंहल–१ देखो 'बैल' । २ देखो 'बहल' ।

बेंहलियो–देखो 'बहलियो' ।

बेंहिन–देखो 'बहन' ।

बेंहियां–देखो 'बांह' ।

बोंकार–पु० [सं० बुक्+कार] दहाड़ने या गर्जने की ध्वनि ।

बोंगडो–पु० [देश०] रहट का प्रमुख चक्र ।

बोंडियो–१ देखो 'बंडी' । २ देखो 'बांडी' ।

बोंलसरी–देखो 'बोलसरी' ।

बो–पु० १ बकरा । २ दाड़िम । ३ जांबूफल । ४ पांव । ५ श्वास । ६ उश्वास, निश्श्वास । ७ प्राण । ८ रसास्वादन, आनन्द । —सर्व० वह ।

बो'–अव्य० दुःख या शोक सूचक ध्वनि ।

बोअणी (बी)–देखो 'बोवणी' (बौ) ।

बोअर, बोअरि, बोअरी–देखो 'बोर' ।

बोक–वि० मूर्ख, अज्ञानी, अनजान । —पु० [सं० बुक्क:] १ बकरा । २ छेद, सूराख । ३ चांडाल, श्वपच । ४ रोने या चिल्लाने की ध्वनि । ५ किसी पदार्थ का तेजप्रवाह । ६ मूर्खता, अज्ञान । ७ देखो 'बूक' ।

बोकड़ बोकड़ु, बोकड़ी, बोकड़ु, बोकडो–पु० [सं० बुक्क] बकरा ।

बोकणी (बी)–क्रि० [सं० बुक्कनं] १ बकरे का बोलना । २ कूकना, चिल्लाना । ३ रोना । ४ भूंकना ।

बोकरो–देखो बोकड़ो' ।

बोकी–देखो 'बोखी' ।

बोखरो–वि० छोटे कानों वाली । (बकरी)

बोखलो–देखो 'बोखी' ।

बोखार–देखो 'बुखार' ।

बोखियो, बोखो–वि० (स्त्री० बोखी) १ जिसके मुंह में दांत न हो, बिना दांत का, पोपला । २ जिसके मुंह में सामने वाले दांत न हों । —पु० मुंह टूटा हुआ मिट्टी का पात्र ।

बोगणो–पु० १ पक्की चद्दर का बना नाना प्रकार के फूलों का सांचा । २ देखो 'बहुगुणो' ।

बोगमो–पु० घोड़ों का एक रोग ।

बोगी, बोगो–स्त्री० १ आगे-पीछे दोनों ओर मुंह वाला सर्प, राजिल सर्प । २ मिट्टी का एक बड़ा पात्र विशेष । ३ रेल का डिब्बा ।

बोड़णो (बी)–क्रि० [सं० बर्हणम्] १ नष्ट करना, बरबाद करना । डुबाना । २ जलमग्न करना, डुबाना । ३ हराना पराजित कराना । ४ दांतों से काटना । ५ चुटकी काटना । ६ मस्त होना, उन्मत्त होना । ७ पागल या विक्षिप्त हो जाना ।

बोड़ाणी (बी)–क्रि० १ नष्ट कराना, बरबाद कराना, डुबवाना । २ निमग्न करवाना, जलमग्न कराना । ३ पराजित कराना हराना । ४ दांतों मे कटवाना । ५ चुटकी कटाना । ६ मस्त या उन्मत्त कराना । ७ पागल बनवाना, विक्षिप्त बनाना ।

बोडियो–पु० [देश०] रहट की ठल्ली का एक भाग ।

बो'डो–देखो 'बोरडो' ।

बोचड़ो–देखो 'बोछड़ो' ।

बोचणी (बी)–क्रि० १ कतरना, काटकर अलग करना । २ बीताना, गुजारना । ३ कतरना ।

बोछड़ो–वि० [सं० वचर] (स्त्री० बोछड़ी) १ उद्दण्ड, बदमाश । २ चंट, नटखट । ३ चंचल । ४ छेड़-छाड़ करने वाला ।

बोछरड़ाई–स्त्री० [सं० वंचन] १ चंचलता, नटखटपना । २ लड़ाई, झगड़ा । ३ बदनामी उद्दण्डता । ४ छेड़-छाड़ चुहलबाजी ।

बोछरड़ो–देखो 'बोछड़ो' ।

बोछाड़, बोछार–देखो 'बौछाड़' ।

बोज–देखो 'बोझ' ।

बोजनीळी–पु० शुभ रंग का एक घोड़ा विशेष ।

बोजो–१ देखो 'बूंझो' । २ देखो 'बोझो' ।

बोझ–पु० [अ० वज्न] १ वजन या भार । २ भारीपन, गुरुत्व । ३ किसी बड़े कार्य की जिम्मेदारी । ४ मानसिक दबाव चिन्ता । ५ खर्च आदि का भार । ६ किसी कार्य का श्रम या कष्ट । ७ कठिन कार्य । ८ क्षतिपूर्ति का प्रभाव, असर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भार। ९ गधे, घोड़े आदि पर लादा जाने वाला सामान। १० संभाल, रक्षा।

बोझा–देखो 'बोझां'।

बोझियो–१ देखो 'बूंझो'। २ देखो 'बोझी'।

बोझिल, बोझीलो–देखो 'बोझल'।

बोझी बोझो–पु० [अ० वजन] १ पुलिंदा, टोकरा। २ कलंक, दोष। ३ देखो 'बोझ'। ४ देखो 'बूंझो'।

बोझ्यां–क्रि०वि० वजन से, भार से।

बोझ्यो–देखो 'बूंझो'।

बोट–पु० [अं०] १ भाप से चलने वाली छोटी नौका, नाव। [अं० वोट] २ मत समर्थन, सहमति। [देश०] ३ वादा, कौल, वचन,। ४ टुकड़ा, टूक, खण्ड। ५ काचर का टुकड़ा।

बोटकाचरी–स्त्री० सूखे हुए काचर का टुकड़ा।

बोटणो (बो)–क्रि० १ टुकड़े या खण्ड करना। खण्ड-खण्ड करना। २ काटना, तोड़ना। ३ खाना, चबाना।

बोटी–स्त्री० [सं० बंट] १ मांस का टुकड़ा, खण्ड। २ खण्ड, भाग, अंश।

बोटो–पु० मोटे लट्ठे का काटा हुआ छोटा खण्ड।

बोठवणो बो)–देखो 'बोटणो' (बो)।

बोडबिलाव, बोडबिलावर–पु० बिल्ली जाति का एक हिंसक जंगली जानवर।

बोंणो (बो)–देखो 'बोवणो' (बो)।

बोत–पु० १ घोड़ों की एक जाति। २ दश वर्ष की आयु का हाथी। ३ देखो 'बहुत'।

बोतर–देखो 'बग्रोतर'।

बोतरो–देखो 'बग्रोतरो'।

बोतल–स्त्री०[अं०बोटल] १ लंबे व संकरे मुंह की बड़ी शीशी। २ इस शीशी में समाने लायक द्रव पदार्थ की मात्रा। ३ शराब की बोतल।

बोता–पु० १ मुंह पर कपड़ा लपेट रखने वाले साधु, संन्यासियों का वर्ग। २ तीन की संख्या सूचक उच्चारण।

बोताज–पु० अधिक संतान।

बोतो–पु० १ अनाज मापने के पात्र के मुंह पर अनाज भरते समय रखे जाने वाले दोनों हाथ। २ बूढ़ा बैल। ३ किसी वस्तु का परिमाण। ४ नाटे कद का आदमी। ५ ओढ़े हुए वस्त्र की गाढ़ी लपेट, गाती। ६ पल्लू, छोर। –वि० कायर डरपोक, भीरु।

बोथ–पु० किसी माप का अंदाज, अनुमान।

बोथणो (बो)–क्रि० १ बिना तौल या माप किये परिमाण निर्धारित करना। २ तय करना। निश्चित करना।

बोथी–स्त्री० वादा, वचन।

बोथो–देखो 'बोतो'।

बोदड़–देखो 'बोदो'।

बोदरी–स्त्री० चेचक जैसा एक रोग विशेष।

बोदालयो–पु० १ एक तरह का घोड़ा। २ देखो 'बोदो'। ३ देखो 'बोदलो'।

बोदलो–पु० १ एक देश विशेष का ऊंट। २ देखो 'बोदो'।

बोदाकाठी–स्त्री० एक खाद्य सामग्री विशेष।

बोदापण (णो)–पु० [सं० वृद्धापनम्] १ पुरानापन, जीर्णता, वृद्धपना। २ ओछापन, तुच्छापन ३ कमजोरी। ४ मूर्खता।

बोदार–पु० [फा० बूदार] इत्र।

बोदो–वि० [सं० वृद्ध] (स्त्री० बोदी) १ जीर्ण-शीर्ण, पुराना। २ आयु में वृद्ध। ३ अशक्त, कमजोर। ४ डरपोक, भीरु, कायर। ५ ओछा, संकीर्ण, तुच्छ। ६ निर्दयी, कुटिल। ७ निकम्मा, बेकार, नाकाम। ८ बुरा, खराब। ९ मूर्ख। १० भद्दा, हेय। ११ क्षुद्र। १२ वृद्ध, बूढ़ा।

बोध–पु० [सं०] १ रूप, स्वरूप या अस्तित्व आदि का होने वाला भान, अनुभव, अनुभूति। २ ज्ञान, समझ, जानकारी। ३ उपदेश, मार्ग दर्शन। ४ ध्यान। ५ तसल्ली, धीरज, सांत्वना। ६ अर्थ, आशय।

बोधक–वि० [सं०] १ बोध कराने वाला। २ उपदेश या ज्ञान देने वाला। ३ प्रेरक। –पु० १ जासूस, भेदिया। २ शृंगार का एक भाव।

बोधकर–पु० [सं०] १ भाट, बंदीजन। २ देखो 'बोधक'।

बोधगम्य–वि० [सं०] जो समझ में आजाय, बुद्धिगत होने योग्य।

बोधजांण–पु० बुद्धि, ज्ञान, जानकारी।

बोधणो (बो)–क्रि०वि० [सं० बोधनम्] १ रूप, स्वरूप या अस्तित्व की अनुभूति करना, ज्ञान करना। समझना। २ चिंतन करना, याद करना, समझना। ध्यान करना। ३ उपदेश करना, समझाना। ४ शिक्षा या प्रेरणा देना। ५ सूचना, जानकारी देना। ६ तसल्ली देना, धीरज बंधाना। ७ जगाना।

बोधव्रता–पु० [सं० बोधव्रत] १ गणेश। २ बुद्धिमान।

बोधस–देखो 'बोध'।

बोधि–१ देखो 'बोध'। २ देखो 'बुद्ध'।

बोधितरु–देखो 'बोधिवृक्ष'।

बोधिबीज–पु० ज्ञान-तत्त्व।

बोधिलता–स्त्री० ज्ञान-वल्लि।

बोधिलाभ–पु० ज्ञान प्राप्ति।

बोधिवृक्ष–पु० [सं० बोधिवृक्ष] १ वह वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को सिद्धि प्राप्त हुई थी। २ पीपल का वृक्ष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोधीउ–वि० [सं० बोधित] उपदेश दिया हुआ उपदिष्ट ।
बोनोळी–देखो 'बंदोळी' ।
बोपार–देखो 'व्यापार' ।
बोपारी–देखो 'व्यापारी' ।
बोपूसाही–पु० कुचामनी सिक्का ।
बोफाई बोफापण (णो)–स्त्री० नादानी, नासमझी ।
बोफूनी–स्त्री० औषध के काम आने वाली बूंटी विशेष ।
बोफो–वि० (स्त्री० बोफी) नादान, नासमझ, मूर्ख ।
बोबाड़–पु० १ जोर की आवाज, शब्द, चिल्लाहट । २ जोर से रोने की आवाज ।
बोबाड़णो (बो) -क्रि० [देश०] १ जोर-जोर से बोलना, चिल्लाना । २ रोना, कूकना । ३ रुलाना, कूकाना । ४ हाय-त्राय करना ।
बोबाडो–पु० [देश०] १ जोर की आवाज, चिल्लाहट । २ जोर से रोने की आवाज । ३ करुण क्रन्दन, त्राहि-त्राहि । ४ चीख, पुकार ।
बोबाणो (बो)–देखो 'बोबाड़णो' (बो) ।
बोबियो–पु० १ गोखरू व कांटी नामक घास व फल । २ देखो 'बोबो' ।
बोबो–पु० स्तन, थन, चूंची ।
बोभर–स्त्री० [सं० विभावसु:] १ छोटे-छोटे अग्नि कणों का समूह । २ गरम राख । ३ कर्णमूल के पास का हिस्सा ।
बोभरियो–वि० १ 'बोभर' का, 'बोभर' संबंधी । २ 'बोभर' से सिका । ३ देखो 'बोभरो' ।
बोभरो–पु० शिर, मस्तक ।
बोमंगी–वि० [सं० व्योम-अंग] आकाशचारी, आकाशगामी । —पु० [सं० विहंगम] पक्षी, पंछी ।
बोम–देखो 'व्योम' ।
बोमगा–स्त्री० [सं० व्योम-गंगा] १ आकाश गंगा । २ देखो 'बोमंगी' ।
बोमगामी–वि० आकाशचारी ।
बोमचक्की–पु० [सं० व्योम चक्रिन्] सूर्य, भानु ।
बोमतिलक–पु० [सं० व्योम-तिलक] सूर्य, भानु ।
बोय–स्त्री० [फा० बू] १ गंध, सुवास, महक । २ दुर्गंध, बदबू । ३ देखो 'बो' ।
बोयणो (बो)–देखो 'बोवणो' (बो) ।
बोयथ–देखो 'बोहित' ।
बोयनो–देखो 'बहानो' ।
बोयल–देखो 'बायल' ।
बोयो–पु० अंबाड़ी या सन की छाल उतारने के बाद का डंठल ।
बोर–पु० [सं० बदर] १ बेर का पेड़, वृक्ष । २ इस वृक्ष का फल, बेर, बदरी-फल । [सं० वर्तुल] ३ स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष । ४ मांस पिण्ड या खण्ड । ५ घोड़ों का एक रंग विशेष ।
बोरकियो, बोरको, बोरखो–१ देखो 'बहरखो' । २ देखो 'बोर' ।
बोरगत–देखो 'बौरगत' ।
बोरड़ी–देखो 'बोर' ।
बोरटी–देखो 'बोर' ।
बोरणो (बो)–१ देखो 'बुहारणो' (बो) । २ देखो 'बोड़णो' (बो) ।
बोरसो–देखो 'बोर' ।
बोराणो (बो) बोरावणो (बो)–देखो 'बुहराणो' (बो) ।
बोरि–१ देखो 'बोर' । २ देखो 'बोरी' ।
बोरिआवडी–देखो 'बोरीयावडी' ।
बोरियो पु० १ कमीज के लिये बनाया कपड़े का बटन । २ देखो 'बोर' ।
बोरी–स्त्री० १ अनाज आदि भरने का बारदाने का बड़ा थैला । २ इस थैले में समाने लायक सामान या अनाज । ३ देखो 'बोर' ।
बोरीयावडि–पु० एक प्रकार का कीमती वस्त्र विशेष ।
बोरो–पु० ऊट या बकरी के बालों या जूट आदि का बना बहुत बड़ा थैला ।
बो'रो–देखो 'बौ'रो' ।
बोळ–पु० १ रंग में डुबाने का भाव । २ रंग । ३ लाल, रक्ताभ । ४ रंग में तर । ५ बहरापन ।
बोल–पु० [सं० वद्] १ मनुष्य के मुंह से उच्चारित कोई शब्द, वाक्य, वचन । २ ध्वनि, नाद, शब्द । ३ कथन बात । ४ वचन, वादा, कौल । ५ वृत्तान्त, हाल । ६ व्यंग, ताना कटुवचन । ७ कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि । ८ भाषा । ९ वाद्य का स्वर । १० गीत, पद, अंतरा । ११ उपदेश, ज्ञान, सीख । १२ हंसी, मजाक ।
बोलक–पु० जल-भ्रमर, जल-चक्र ।
बोळकी–स्त्री० युवा गाय ।
बोळको–वि० (स्त्री० बोळकी) अधिक बोलने वाला, वाचाल ।
बोलगत–स्त्री० १ बोलने की क्रिया या भाव । २ बोलने का ढंग । ३ वार्ता, बातचीत । ४ वाणी, बोली ।
बोलड़ो–देखो 'बोल' ।
बोलचाल–स्त्री० १ बोलने की क्रिया या भाव । २ बोलने, बात करने का ढंग । ३ किसी विषय पर होने वाला वार्त्तालाप । ४ मेल-जोल, प्रेम संबंध । ५ छेड़-छाड़ । ६ तर्क-वितर्क । ७ झगड़ा, वाग्युद्ध । ८ सामान्य बात, चलती भाषा ।
बोळचोथ–स्त्री० श्रावण शुक्ला चतुर्थी का दिन ।
बोलण–पु० १ मुख, मुंह । २ देखो 'बोलणी' ।
बोलणी स्त्री० १ बोलने की क्रिया या भाव । २ बोलने का ढंग । ३ वाणी । ४ जिह्वा, रसना, गिरा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोलणी–पु० १ दान, पुण्यादि का संकल्प । २ नैवेद्य आदि चढ़ावा । —वि० १ बकने वाला, प्रलापी । २ बोलने वाला । ३ जिसमें आवाज हो । ध्वनिकारक ।

बोळणी (बो)–क्रि० १ डुबाना, सराबोर करना, तर करना । २ रंग में डुबाना । ३ लाल, रक्ताभ करना । ४ डुबाना, जल मग्न करना । ५ देखो 'बोळणी' (बो) ।

बोलणी (बो)–क्रि०[सं०ब्रूयम्]१ मुंह से कुछ शब्द, बोल, वचन वाणी या आवाज निकालना । २ कुछ कहना । ३ संबोधन करना, बुलाना, बात छेड़ना । ४ पूछताछ करना, रोक-टोक करना । ५ पक्ष या विपक्ष में बोलना, कहना । ६ भाव व्यक्त करना, कहना । ७ ध्वनि या आवाज करना, झंकृत होना । ८ परस्पर टक्कर या आघात से ध्वनि होना । ९ चीखना, चिल्लाना । १० कटु शब्द या अपशब्द कहना । ११ जोश पूर्ण बात करना । १२ राय देना, अभिमत देना । १३ गिरने का शब्द होना । १४ उत्तर देना, जवाब देना । १५ झगड़ा या वाग्युद्ध होना । १६ बात करना, चर्चा करना । १७ अपना गुण बताना । १८ प्रतिवाद करना । १९ दान-पुण्य का संकल्प करना । २० देवता का नैवेद्य कहना चढ़ावे की घोषणा करना । २१ आदेश सुनाना । २२ संदेश या सूचना देना । २३ आवाज देना । २४ देखो 'बोळणी' (बो) ।

बोलती–स्त्री० १ वाणी, भाषा, बोलने की शक्ति । २ जिह्वा रसना, जबान ।

बोलतो–पु० १ बोलने का ज्ञान कराने वाला तत्त्व । २ जीवन तत्त्व, प्राण, आत्मा । ३–मनुष्य ।

बोलबंध–पु० वचन, वादा ।

बोलबाला, बोलबालो–पु० १ प्रभाव, धाक, रौब । २ शान शौकत, ठाट-बाट । ३ विशेषता, महत्व । ४ मान, प्रतिष्ठा इज्जत । ५ लोकप्रियता, यश, कीर्ति । ६ विजय, जीत ।

बोलमां, बोलमा– देखो 'बोलवां' ।

बोळरीपाटी–स्त्री० [देश०] पढ़ने व लिपि सुधारने की तख्ती ।

बोळवणी (बो)–देखो 'बोळणी' (बो) ।

बोलवां, बोलवा–स्त्री० किसी देवता के चढ़ावे, पूजा, फेरी आदि की घोषणा ।

बोलसर–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

बोलसरी, बोलसक, बोलसिरी–पु० [सं० बकुलश्री] १ मोलसिरी का वृक्ष, पेड़ । २ उक्त वृक्ष का फल या फूल ।

बोलाई–स्त्री० बोलाने का कार्य ।

बोळाऊ–पु० १ दूत, संदेश वाहक । २ बुलाने वाला ।

बोलाकड़ो–पु० १ वाक्पटु । २ वाचाल, अधिक बोलने वाला ।

बोलाड़णी(बो)–१देखो 'बोलाणी'(बो)।२ देखो 'बुलाणी'(बो) ।

बोलाचाली–देखो 'बोलचाल' ।

बोळाणी(बो)–क्रि०१ सराबोर करवाना, डुबवाना ।२ रंगवाना । ३ डुबा देना, जल मग्न कराना । ४ प्रारंभ या शुरू करवाना । ५ देखो 'बोळाणी' (बो) ।

बोलाणी (बो)–क्रि० १ मुंह से बोलने के लिये प्रेरित करना । वाणी या वचन निकालना । २ शब्दों द्वारा विचार प्रगट कराना, कुछ बुलवाना । ३ बात कराना, बात छेड़ाना । परस्पर बात कराना । ४ रोक-टोक कराना, जांच कराना, पूछताछ कराना । ५ झंकृत कराना, बजवाना । ६ भाव प्रगट कराना । ७ दो वस्तुओं को परस्पर टकरा कर आवाज कराना । ८ ऊपर से गिरा कर धमाका कराना । ९ चीखाना चिल्लाहट कराना । १० कटुशब्द कहाना, अपशब्द कहलाना । ११ जोश पूर्ण शब्द कहलाना । १२ राय दिराना । १३ उत्तर या जवाब दिराना । १४ वाग्युद्ध या झगड़ा कराना । १५ बात या चर्चा कराना । १६ अपने गुण बताना । १७ प्रतिवाद कराना । १८ दान-पुण्य का संकल्प कराना । १९ किसी देवता के चढ़ावे या फेरी की घोषणा कराना । २० आदेश सुनवाना । २१ संदेश या सूचना दिलाना । २२ आवाज दिराना । २३ प्यार कराना । २४ देखो 'बोळाणी' (बो) ।

बोलाळी–पु० १ बोलने की क्रिया या भाव । २ बोलने की ध्वनि । ३ शोर-गुल, कोलाहल ।

बोलावड़ी–स्त्री० सफेद-मुंह व पांवों वाली बकरी ।

बोळावणी–देखो 'बोळावणी' ।

बोळावणी (बो)–देखो 'बोळाणी' (बो) ।

बोलावणी (बो)–१ देखो 'बोलाणी' (बो) २ देखो 'बुलाणी' (बो) ।

बोळावी, बोळावू, बोळावो–देखो 'बोळावो' ।

बोलावो–देखो 'बुलावो' ।

बोलींट, बोलींटियो–पु० दो से ढाई वर्ष की आयु वाला बछड़ा ।

बोळी–स्त्री० १ फाल्गुन पक्ष । २ मूक, गूंगी ।

बोली–स्त्री० १ बोलने की क्रिया या भाव । २ किसी प्राणी के बोलने की आवाज । वचन, बात । ३ किसी देश या प्रदेश के लोगों के बोल-चाल की भाषा । ४ विशिष्ट अभिप्राय से कही जाने वाली बात, वाक्य, शब्द । ५ वादा, वचन । ६ वाणी, जबान, बात करने का ढंग । ७ मयाद, मोहलत छूट । ८ वस्तु आदि की नीलामी पर कीमत की घोषणा । ९ बोल-चाल का स्वर या ध्वनि । १० व्यंग, ताना । ११ हंसी, ठिठोली । —ठोली–स्त्री० हंसी ठट्ठा, मजाक । —दार–पु० नीलामी की घोषणा करने वाला ।

बोळीबेपार (बँपार)–पु० मध्याह्न ।

बोलूड़ी–स्त्री० बोली, आवाज, ध्वनि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोळो–वि० [सं० बधिर] (स्त्री० बोळी) १ जिसकी श्रवणेन्द्रिय बेकार हों, जो सुन नहीं सकता हो, बहरा। २ जो सुनने के लिये तैयार न हो, सुनने में ध्यान न हो। ३ जिसका स्वर या ध्वनि समाप्त हो गया हो। ४ ऊंचा या कम सुनने वाला। –पु० चर्मकार।

बोलो–१ वि० बोलने वाला, वाचाल। २ चुप, शांत, खामोश।

बोळोचोनर बोळोघोन–वि० बिल्कुल बहरा।

बोलो बोलो क्रि०वि० १ शांति से, चुपचाप। २ बिना बोले या कोई खटका या आवाज किये।

बोल्लाह–पु० वह घोड़ा जिसकी अयाल व पूंछ के बाल घने हों।

बोवड–पु० एक पक्षी विशेष।

बोवणी–स्त्री० [सं० वपनी] १ दुकान लगाने या खुलने पर सर्वप्रथम की गई बिक्री या सौदा। २ प्रथम सौदा। ३ सर्व प्रथम की आय। ४ कार्यारंभ, शुरूआत। ५ बोने की क्रिया या भाव।

बोवणो (बो)–क्रि० [सं० वपनम्] १ फसल के लिये बोवाई करना, अनाज आदि खेत या किसी जगह डालना, बोना। २ व्यर्थ गमाना, निरर्थक व्यय करना। बरबाद करना। ३ डुबाना। ४ पतन करना, गिराना। ५ नुकसान या हानि पहुंचाना। ६ दुःखी करना।

बोवाणो (बो), बोवावणो (बो)–क्रि० १ फसल के लिये बोवाई कराना, बोवाना। २ व्यर्थ गमवाना, बरबाद कराना। ३ डुबवाना। ४ पतन कराना, गिरवाना। ५ नुकसान या हानि कराना। ६ दुःखी कराना।

बोसराणो (बो), बोसिराणो (बो)–देखो 'विसराणो' (बो)।

बोसो–पु० चुम्बन।

बोह–स्त्री० [फा० बू] १ सुगंध, महक, सौरभ। २ गंध। ३ दुर्गन्ध। ४ प्रवाह, धारा। ५ बौछार। ६ वृद्धि, बढ़ोतरी। ७ समूह, झुंड। ८ बहुत, अधिक, प्रचुर। ९ प्रहार, चोट। १० कोशल। ११ उत्साह, आनन्द, चाव। १२ संपुट, पुट, लेपन। १३ भाले या बरछी की लंबाई के बराबर का नाप। १४ देखो 'बोध'।

बोहड़–देखो 'बावड़'।

बोहड़णो (बो)–देखो 'बहोड़णो' (बो)।

बोहड़ाणो (बो)–देखो 'बहोड़ाणो' (बो)।

बोहछाड़–देखो 'बौछाड़'।

बोहजूझो, बोहजूझो–वि० अधिक युद्ध करने वाला, युद्धप्रिय।

बोहडडीय–वि० १ जो बहुतों को दण्ड दे चुका हो। २ अधिक दण्ड देने वाला। ३ जिसको अधिक दण्ड मिला हो।

बोहड़णो (बो)–देखो 'बहोड़णो' (बो)।

बोहणो (बो)–देखो 'बोधणो' (बो)।

बोहत–देखो 'बहुत'।

बोहतर–देखो 'बहोत्तर'।

बोहदीप्ती–वि० [सं० बहु-दीप्ति] आभा और कान्ति से भरपूर।

बोहनामी–देखो 'बहुनामी'।

बोहरंगो–देखो 'बहुरंगी'।

बोहरा–पु० १ बनिया। २ एक वर्ग विशेष।

बोहराळ–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

बोहरूपी–स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि। २ लक्ष्मी। ३ देखो 'बहुरूपी'।

बोहरी–देखो 'घो'रो'।

बोहळ–पु० १ तलवार की धार में की जाने वाली स्नान। २ देखो 'बोहळ'।

बोहळणो (बो)–क्रि० १ तलवार की धार में स्नान करना, नहाना। वीर गति प्राप्त होना। २ युद्ध करना। ३ देखो 'बोळणो' (बो)। ४ देखो 'बोळाणो' (बो)।

बोहळाणो (बो)–क्रि० १ तलवार की धारा में स्नान कराना, वीर गति प्राप्त कराना। २ देखो 'बोळाणो' (बो)

बोहलियो १ देखो 'बैल'। २ देखो 'बोहळियो'।

बोहळ–देखो 'बैल'।

बोहळी–देखो 'बोळी'। (स्त्री० बोहळी)

बोहा–देखो 'बहुत'।

बोहि बोहित, बोहिति, बोहित्थ, बोहिय–स्त्री० [सं० बहित्र] नाव, जहाज, बेड़ा।

बोहियस्वामी–पु० [सं० बहित्र-स्वामी] विष्णु का एक नाम।

बोही–देखो 'बोही'।

बोहोत–देखो 'बहुत'।

बोहोनामी–देखो 'बहुनामी'।

बोहोळो, बोहोलो–देखो 'बोळो'।

बोहो देखो 'बहुत'।

बौ–अव्य० अरे रे।

बौ–सर्व० वह, उस। –पु० जुलाहों का एक उपकरण।

बौखो देखो 'बोखो'।

बौड़–पु० तेज अंगारा।

बौछड़ी देखो 'बोछड़ी'।

बौछाड़, बौछार, बौछाळ–स्त्री० [सं० वायुछटा] १ वर्षा, बारिस। २ लगातार गिरने, पड़ने या चलने की क्रिया। ३ वर्षा की झड़ी। ४ तीव्र प्रवाह, प्रपात। ५ निरन्तर चलने वाला सिलसिला, क्रम। ६ व्यंग, ताना, कटाक्ष। वार। ७ तरंग, लहर, वेग।

बौडी–स्त्री० हाथ में रखने का डंडा।

बौत–देखो 'बहुत'।

बौताज, बौतायत–देखो 'बहुतायत'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बोतेरो–देखो 'बहुतेरो'।
बोतो, बोथो–देखो 'बोतो'।
बोद्ध–वि० [सं० बुद्ध+अण] १ बुद्ध का, बुद्ध संबंधी। २ बुद्ध द्वारा प्रचलित। ३ बुद्ध का अनुयायी। –पु० १ गौतम बुद्ध द्वारा प्रचलित एक धर्म। २ इस धर्म के नाम पर चलने वाला एक सम्प्रदाय।
बोम–देखो 'व्योम'।
बोरंगो–देखो 'बहुरंगो'।
बोर–पु० आम की मंजरी।
बोरको, बोरखो–देखो 'बहरखो'।
बोरमत–स्त्री० सूद पर ऋण देने का व्यवसाय।
बोरता–पु० घोड़ों का एक रंग विशेष,
बोराणो (बो), बोरावणो (बो)–क्रि० १ पागल या बावरा होना। २ मस्त होना, उन्मत्त होना। ३ भ्रमित या गुमराह होना। ४ देखो 'बुहराणो' (बो)।
बोरी–देखो 'बोरी'।
बोरूप–देखो 'बहुरूप'।
बोरूपियो–देखो 'बहुरूपियो'।
बो'रो–पु० [सं० व्यवहारिन्] (स्त्री० बो'री) १ सूद पर ऋण देने वाला व्यक्ति, व्यापारी। २ ऋण दाता।
बोळ–देखो 'बोळ'।
बोळचोथ–देखो 'बोळचोथ'।
बोळणो (बो)–१ देखो 'बोळणो' (बो)। २ देखो 'वोळणो' (बो)।
बोळसर, बोलसिरी–देखो 'बोलसिरि'।
बोळाई–स्त्री० १ अधिकता, बाहुल्य। २ विपुलता, प्रचुरता। ३ अनेकता।
बोलाई–स्त्री० १ एक मादा पशु विशेष। २ बोलाने की क्रिया।
बोळाचोथ–देखो 'बोळचोथ'।
बोळाणो (बो)–१ देखो 'वोळाणो' (बो)। २ देखो 'बोळाणो' (बो)।
बोळायत–१ देखो 'बुलावो'। २ देखो 'वोळावो'।
बोळावणो (बो)–१ देखो 'वोळाणो' (बो)। २ देखो 'बोळाणो' (बो)।
बोलावो–देखो 'बुलावो'।
बो'ळो–वि० (स्त्री० बो'ळी) १ अधिक, बहुत, प्रचुर। २ गहरा।
बोवार–देखो 'व्यवहार'।
बोह–१ देखो 'बोह'। २ देखो 'बहुत'।
बोहजांण–देखो 'बहुजांण'।
बोहत–देखो 'बहुत'।
बोहत्तर–देखो 'बम्होत्तर'।
बोहत्तरो–देखो 'बम्होत्तरो'।
बोहनांमो–देखो 'बहुनांमो'।
बोहरो–देखो 'बो'रो'।
बोहळ–पु० १ समूह। २ खलिहान में साफ अनाज का ढेर। ३ बहुतायत।
बोहळियो–पु० १ छोटी उम्र का बैल, युवा बैल। २ देखो 'बैल'।
बोहळो–देखो 'बो'ळो'। (स्त्री० बो'हळी)
बोहित–देखो 'बोहित'।
बोहोडंडीय–देखो 'बोहडंडीय'।
बोहोरो–देखो 'बो'रो'।
ब्यंग–देखो 'व्यंग'।
ब्यंजन–देखो 'व्यंजन'।
ब्यंजना–देखो 'व्यंजना'।
ब्यंदु–देखो 'बिंदु'।
ब्यतीत–देखो 'व्यतीत'।
ब्यथा–देखो 'व्यथा'।
ब्यलागणो (बो)–देखो 'लागणो' (बो)।
ब्यवसाय–देखो 'व्यवसाय'।
ब्यवस्था–देखो 'व्यवस्था',
ब्यवहार–देखो 'व्यवहार'।
ब्यवहारी–देखो 'व्यवहारी'।
ब्यसन–देखो 'व्यसन'।
ब्यसनी–देखो 'व्यसनी'।
ब्यांन–देखो 'व्यान'।
ब्यांनत–पु० शृंगार में एक आसन विशेष।
ब्यांव–देखो 'विवाह'।
ब्याई–देखो 'व्याई'।
ब्याऊ–१ देखो 'बेऊ'। २ देखो 'बिवाई'।
ब्याकरण–देखो 'व्याकरण'।
ब्याकुळ, ब्याकुळी–देखो 'व्याकुळ'।
ब्याख्यांन–पु० [सं० व्याख्यान] भाषण, वक्तृता।
ब्याज–देखो 'व्याज'।
ब्याध–१ देखो 'व्याधि'। २ देखो 'व्याध'।
ब्याधि–देखो 'व्याधि'।
ब्याणो (बो)–क्रि० १ गाय, भैंस आदि मादा पशुओं का बच्चा जनना, प्रसव करना। २ देखो 'विवाहणो' (बो)।
ब्यापक–देखो 'व्यापक'।
ब्यापणो (बो)–देखो 'व्यापणो' (बो)।
ब्यापार–देखो 'व्यापार'।
ब्यायी–देखो 'व्याई'।
ब्याळ, ब्याल–देखो 'व्याळ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्यालिस, ब्यालीस–देखो 'बयालीस'।
ब्याळू–देखो 'ब्यालू'।
ब्याव–देखो 'विवाह'।
ब्यावच–स्त्री० सेवा भक्ति, व्यावृत्ति।
ब्यावण, ब्यावणी–स्त्री० १ मादा पशु की प्रसव क्रिया। २ पशु के प्रसव का ढंग।
ब्यावणूं–वि० गर्भवती, (पशु)।
ब्यावणी (बौ)–१ देखो 'ब्याणी' (बौ)। २ देखो 'विवाहणी' (बौ)।
ब्यास–देखो 'व्यास'। —पूनम='व्यासपूनम'।
ब्याह–देखो 'विवाह'।
ब्याहणी–देखो 'ब्यावणी'।
ब्याहणी (बौ)–देखो 'विवाहणी' (बौ)।
ब्याहता–१ देखो विवाहित'। २ देखो 'विवाहिता'।
ब्याहतो–पु० (स्त्री० ब्याहता) पति।
ब्याही–देखो 'ब्याई'।
ब्यूह–देखो 'व्यूह'।
ब्योंत–देखो 'बेंत'।
ब्योपार–देखो 'व्यापार'।
ब्योपारी–देखो 'व्यापारी'।
ब्योम–देखो 'व्योम'।
ब्योरो–देखो 'ब्योरो'।
ब्योसाय–देखो 'व्यवसाय'।
ब्योहार–देखो 'व्यवहार'।
ब्योपार–देखो 'व्यापार'।
ब्यौपारी–देखो 'व्यापारी'।
ब्यौरो–देखो 'ब्योरो'।
ब्यौहार–देखो 'व्यवहार'।
ब्रंद–देखो 'ब्रंद'।
ब्रंदारक–देखो 'ब्रंदारक'।
ब्रंदावन–देखो 'ब्रंदावन'। –राव='ब्रंदावनराव'।
ब्रंमग्यांन–देखो 'ब्रह्मग्यांन'।
ब्रंमचार, ब्रंहमचार–१ देखो 'ब्रह्मचारी'। २ देखो 'ब्रह्मचर्य'।
ब्रक–देखो 'ब्रक'।
ब्रकोदर–देखो 'ब्रकोदर'।
ब्रक्क–१ देखो 'ब्रक'। २ देखो 'ब्रक्क'।
ब्रख, ब्रक्ष–१ देखो 'ब्रख'। २ देखो 'ब्रक्ष'।
ब्रखब, ब्रखभ–देखो 'ब्रखब'। –धुज='ब्रखबधुज'।
ब्रखा–देखो 'ब्रखा'।
ब्रख्य–देखो 'ब्रक्ष'।
ब्रज–देखो 'ब्रज'। —चंद='ब्रजचंद'। —देव='ब्रजदेव'। —देस= ब्रजदेस'। –नंद='ब्रजनंद'। —नाथ='ब्रजनाथ'। —नायक='ब्रजनायक'। —पत, पति='ब्रजपति'। —बनता, बनिता='ब्रजबनिता'। —बाल='ब्रजबाळा'। —बास='ब्रजवास'। —बासी='ब्रजवासी'। —भूखण= 'ब्रजभूसण'। —मंद='ब्रजमंद'। —राज='ब्रजराज'। —वासी = 'ब्रजवासी'।
ब्रजाक, ब्रजाग, ब्रजागि–देखो 'बजराक'।
ब्रजिन–देखो 'ब्रजिन'।
ब्रज्ज–देखो 'ब्रज'।
ब्रण–१ देखो 'व्रण'। २ देखो 'वरण'। —पद = 'व्रणपद'।
ब्रत–१ देखो 'व्रत'। २ देखो 'व्रतांत'।
ब्रतति–स्त्री० लता, बेल, वल्लरी।
ब्रतांत–देखो 'व्रतांत'।
ब्रताव–देखो 'बरताव'।
ब्रत्त–देखो 'व्रत'।
ब्रत्तांत–देखो 'व्रतांत'।
ब्रप्रारि–देखो 'व्रत्रारि'
ब्रथा–देखो 'व्रथा'।
ब्रद–देखो 'विरुद'।
ब्रदाळ–देखो 'विरुदाळी'।
ब्रदाळी–१ देखो 'विरुदावळी'। २ देखो 'विरुदाळी'।
ब्रवाळी–देखो 'विरुदाळी' (स्त्री० ब्रदाळी)।
ब्रद्ध–देखो 'व्रद्ध'।
ब्रद्धता–देखो 'व्रद्धता'।
ब्रद्धपूनम–स्त्री० वैशाख की पूर्णिमा।
ब्रध–१ देखो 'वध'। २ देखो 'व्रद्ध'।
ब्रधो–देखो 'विधि'।
ब्रन, ब्रन्न–१ देखो 'व्रण'। २ देखो 'वरण'।
ब्रम, ब्रम्म–देखो 'ब्रह्म'। —अाखर='ब्रह्माक्षर'। 'कुंड= 'ब्रह्मकुंड'। –खाड='ब्रह्मखाड'। —ग्यांन='ब्रह्मग्यांन'। —ग्यांनी= ब्रह्मग्यांनी'। –चर्ज=ब्रह्मचर्य'। –चार = 'ब्रह्मचारी'। —जोग='ब्रह्मयोग'। –तारथ = 'ब्रह्मतीरथ'। —दंड='ब्रह्मदंड'। –दवार='ब्रह्मद्वार'। –दांन='ब्रह्मदांन'। —दिन='ब्रह्मदिन'। –दैत्य='ब्रह्मदैत्य'। –दोस= ब्रह्मदोस'। —द्रोही='ब्रह्मद्रोही'। —नाभ='ब्रह्मनाभ'। —निस्ट– 'ब्रह्मनिस्ट'। —पद–'ब्रह्मपद'। —पास='ब्रह्मपास'। –पुतर='ब्रह्मपुत्र'। –पुतरा,पुतरो,पुत्तरी पुत्री= ब्रह्मपुत्री। —पुरांण=देखो 'ब्रह्मपुरांण'। —बळ='ब्रह्मबळ'। —भूत='ब्रह्मभूत'। —भोज='ब्रह्मभोज'। —मूरत= 'ब्रह्ममूरत'। —रंध्र='ब्रह्मरंध्र'। राक्षस, राक्षस= 'ब्रह्मराक्षस'। —रात='ब्रह्मरात'। —रिसी 'ब्रह्मरिसी'। –लोक='ब्रह्मलोक'। —वादिनी='ब्रह्मवादिनी'। –विद्या=

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'ब्रह्मविद्या' ।—वेत्ता, वेत्ता=ब्रह्मवेत्ता' ।—सुता= 'ब्रह्मसुता' ।—हत्या='ब्रह्महत्या' ।

ब्रमाग्य, ब्रम्मग्य—देखो 'ब्रह्मण्य' ।

ब्रम्मा—देखो 'ब्रह्मा' ।

ब्रव—पु० १ दान । २ लगन । ३ ईर्ष्या ।

ब्रवण—देखो 'ब्रवण' ।

ब्रवणी (नी)—देखो 'ब्रवणी' (नी) ।

ब्रस—देखो 'ब्रस' ।

ब्रसभांन—देखो 'ब्रसभान' ।

ब्रसल—देखो 'ब्रसल' ।

ब्रस्सी, ब्रस्ती—देखो 'ब्रस्ती' ।

ब्रह्मचार—देखो 'ब्रह्मचारी' ।

ब्रह—पु० १ इन्द्र । २ देखो 'विरह' । ३ देखो 'ब्रहत' ।

ब्रहत—देखो 'ब्रहत' ।

ब्रहती—स्त्री० [सं० बृहिती] १ हाथी की घिघाड़ । २ एक जड़ी बूटी । ३ देखो 'ब्रहती' ।

ब्रहतीपति—देखो 'ब्रहस्पति' ।

ब्रहद—देखो ब्रहत' ।

ब्रहदभांण (आंन, भांनु)—देखो 'ब्रहदभानु' ।

ब्रहदारण्यक—पु० [सं० बृहदारण्यक] दस मुख्य उपनिषदों में से एक ।

ब्रहद्रथ—पु० [सं० बृहद्रथ] १ इन्द्र । २ मगध का राजा व जरासंध का पिता । ३ सामवेद का एक अंश । ४ यज्ञ पात्र ।

ब्रहन्नट, ब्रहन्नल ब्रहन्नळा, ब्रहन्नड, ब्रहन्नडा, ब्रहन्नळ, ब्रहन्नळा—पु० [सं० बृहन्नट] अज्ञातवास में अर्जुन का एक नाम ।

ब्रहमड—देखो ब्रह्मांड' ।

ब्रहमडी—देखो ब्रह्मांडी' ।

ब्रहम—१ देखो 'ब्रह्म' । २ देखो 'ब्रह्मा' । ३ देखो 'ब्राह्मण' । —गिनांन='ब्रह्मग्यांन' । -गियांन='ब्रह्मग्यांन' ।-चरज='ब्रह्मचरज' ।—धिया='ब्रह्मधिया' ।—पास='ब्रह्मपास' । -पुरी='ब्रह्मपुरी' ।-सुतन='ब्रह्मसुतन' ।-सुता='ब्रह्मसुता' ।

ब्रहमांण—देखो 'ब्रह्मा' ।

ब्रहमांणी—देखो 'ब्रह्मांणी' ।

ब्रहमांन—देखो 'ब्रह्म' ।

ब्रहमा—देखो 'ब्रह्मा' ।

ब्रहम्म—देखो 'ब्रह्म' ।

ब्रहम्मा—देखो 'ब्रह्मा' ।

ब्रहम्मापित्त—पु० [सं० ब्रह्मा-पिता] ब्रह्मा के पिता, विष्णु ।

ब्रहसपति (पती), ब्रहस्पति (ती)—देखो 'ब्रहस्पती' ।

ब्रहस्पतिस्मृति—स्त्री० [सं० बृहस्पति+स्मृति] बृहस्पति द्वारा रचित एक स्मृति ।

ब्रहांमण—देखो 'ब्राह्मण' ।

ब्रहास—देखो 'बरहास' ।

ब्रह्मांड—देखो ब्रह्मांड' ।

ब्रह्मांडी—स्त्री० दुर्गा का एक नाम ।

ब्रह्म—पु० [सं० ब्रह्मन्] १ सत्, चित् आनन्द से युक्त एव सम्पूर्ण जड़-चेतन में व्याप्त एक मात्र सत्ता जो सृष्टि का मूल कारण है और अविनाशी है । २ ईश्वर, परमेश्वर । ३ विष्णु । ४ महादेव । ५ ब्रह्मा । ६ सूर्य । ७ चैतन्य । ८ अन्तरात्मा, जीवात्मा । ९ ओंकार, प्रणव । १० वेद । ११ श्रुति । १२ ब्रह्मविद्या । १३ वेदों का ब्राह्मण भाग । १४ ब्राह्मण । १५ भक्त जन । १६ ब्रह्म विद्या को जानने वाला । १७ सप्त प्रजापतियों का नामान्तर । १८ बृहस्पति का नामान्तर । १९ फलित ज्योतिष में एक शुभ योग । २० छप्पय छंद का एक भेद । २१ आर्या गीति का एक भेद । २२ संगीत में एक ताल । २३ आकाश, आसमान, नभ । २४ एक की संख्या* । —कन्यका, कन्या—स्त्री० सरस्वती । —कपाळ—पु० ललाट के मध्य का भाग । —करम—पु० ब्राह्मण का अनुष्ठेय कर्म, एक यज्ञ विशेष ।—कल्प—पु० एक ब्रह्मा का समय । —कवच—पु० एक मन्त्र विशेष । —कांड—पु० वेद का एक भाग, ज्ञान कांड ।—काष्ठ—पु० शहतूत का वृक्ष ।—कुंड—पु० एक तीर्थ विशेष ।—कूरच—पु० एक व्रत विशेष ।—क्षत्र, क्षत्री—पु० क्षत्रिय एवं ब्राह्मण से उत्पन्न एक जाति । वैश्य जाति । वस्त्र छपाई का कार्य करने वाली एक जाति ।—खाड—पु० अत्यन्त गहरा खड्डा । संसार ।—गति—स्त्री० मुक्ति, मोक्ष । —गांठ = 'ब्रह्मग्रंथि' । —गिनांन='ब्रह्मग्यांन' ।-गिनांनी = 'ब्रह्मग्यांनी' ।-गीळ—पु० ब्रह्माण्ड ।—ग्यांन—पु० ब्रह्म का बोध । अद्वैत सिद्धान्त का बोध । ब्रह्मविद्या । आत्म ज्ञान ।—ग्यांनी—पु० ब्रह्म का बोध रखने वाला । आत्म तत्त्व वेत्ता । अद्वैतवादी । ब्रह्म विद्या को जानने वाला । —ग्रंथि—स्त्री० जनेऊ की प्रमुख गांठ । शरीर की एक ग्रंथि ।—ग्रह—पु० ब्रह्मराक्षस । —घाट—पु० पुष्कर तीर्थ के सरोवर का एक घाट । —घात—पु० ब्राह्मण की हत्या, ब्रह्महत्या ।—घातक—वि० ब्राह्मण का हत्यारा । ब्रह्म हत्या का दोषी ।-घातिणी (नी)—स्त्री० वह रजस्वला स्त्री जिसका दूसरा दिन हो । —वि० ब्राह्मण की हत्यारी ।-घाती = 'ब्रह्मघातक' ।—घोस—पु० वेद पाठ की ध्वनि । वेदाध्ययन । वेदपाठ ।—चक्र—पु० संसार चक्र ।—ज—पु० ब्रह्मा । स्वामिकार्तिकेय ।-जळ—पु० गंगाजल । ताम्रपात्र में रखा जाने वाला जल । छप्पय छंद का एक भेद ।—जार, जारी—पु० ब्राह्मणी के साथ व्यभिचार करने वाला, ब्राह्मणी का उप पति । इन्द्र । —जीवी—वि० भीत कर्म कराकर निर्वाह करने वाला,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेतन भोगी या स्वार्थ सेवी ब्राह्मण । —भूण, जोनी= 'ब्रह्मयोनी' । —जोग='ब्रह्मयोग' । —तत='ब्रह्मतत्व' । —तत्व —पु० ब्रह्म संबंधी सत्यज्ञान । —तीरथ—पु० नर्मदा तट का एक प्राचीन तीर्थ । —तेज—पु० ब्रह्म का तेज, प्रकाश । ब्रह्मचर्य के कारण मुख का ओज, आभा, कांति । ब्राह्मण के मुख का तेज । ब्राह्मण का क्रोध, आवेश । —दंड—पु० ब्राह्मण का शाप । ब्राह्मण या योगी के हाथ का डंडा । ब्राह्मण पर किया जाने वाला दंड । महादेव, शिव । ब्राह्मण की प्रशंसा । —दंडी—स्त्री० ब्राह्मी नामक जड़ी, अजदंती । —दान—पु० विद्या दान । वेद पढ़ाने की क्रिया । —दाता—पु० वेद पढ़ाने वाला आचार्य । —दिन—पु० ब्रह्मा का एक दिन । —देव—पु० ब्रह्मा । ब्राह्मण । —दैत्य—पु० राक्षस वृत्ति वाला ब्राह्मण । —दोस—पु० ब्रह्महत्या व इसका दोष । —दोसी—वि० ब्रह्म हत्या का दोषी । ब्राह्मण का हत्यारा । —द्रोही—वि० ब्राह्मण से वैर रखने वाला । नास्तिक । —द्वार—पु० खोपड़ी के मध्य का रंध्र । ब्रह्मरंध्र । ब्रह्मा का द्वार । —धिया—स्त्री० ब्रह्मा की पुत्री । सरस्वती । —नाम—पु० विष्णु । —निस्ठ—वि० ब्रह्मज्ञान में लीन । ब्रह्मज्ञानी । ब्राह्मणभक्त । —पद—पु० मोक्ष मुक्ति । ब्रह्मत्व । ब्राह्मणत्व । —पास—पु० ब्रह्मा का एक अस्त्र । —पुत्तर, पुत्र—पु० नारद । मरीचि । वसिष्ठ । मनु । सनकादिक । ब्राह्मण का पुत्र । मान सरोवर से निकलने वाला एक नद । एक प्रकार का विषाक्त कंद । —पुत्री—स्त्री० सरस्वती । सरस्वती नदी । वाराही कंद । —पुर—पु० ब्रह्माजी का लोक । हृदय । —पुराण—पु० अठारह पुराणों में से एक । —पुरी—स्त्री० ब्रह्मा की पुरी, वाराणसी । ब्राह्मणों का मोहल्ला । —फास='ब्रह्मपास' । —बल—पु० तपस्या का बल । ब्रह्म की शक्ति । —भट, भट्ट—पु० ब्राह्मणों की एक उपाधि । भाटों की एक शाखा । —भूत—पु० मर कर प्रेत योनि में गया ब्राह्मण । ब्रह्म में लीन । —भोज—पु० ब्राह्मणों का सामूहिक भोजन । —मुहूरत्त, मुहूरत, मूहूरत्त—पु० सूर्योदय से पूर्व का समय । तड़का । प्रातःकाल । —योग—पु० आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि । ब्रह्म के मिलने का योग । १८ मात्राओं की एक ताल । —योनि—वि० ब्रह्म से उत्पन्न । —पु० ब्रह्म का ध्यान । गया जी के पास का एक तीर्थ । सरस्वती । —रंध्र—पु० मानव मस्तिष्क का गुप्त छेद, दशवां द्वार । योग के अनुसार एक कमल । —राकस, राक्षस—पु० शिव का एक गण । मर कर प्रेत योनि को प्राप्त ब्राह्मण । —रात, रात्र, रात्रि—स्त्री० रात के अंतिम चार दण्ड । ब्रह्मा की एक रात । शुकदेव । याज्ञवल्क्य मुनि । —रासि—पु० बृहस्पति से आक्रांत एक श्रवण नामक नक्षत्र । परशुराम का एक नाम । —रिसी—पु० ब्राह्मण जाति का ऋषि । वसिष्ठ आदि मन्त्र द्रष्टा ऋषि । ऋषियों की उपाधि या श्रेणी । —रूप—पु० वर्णिक छन्द विशेष । —रेख, लेख—पु० भाग्य के लेख । प्रारब्ध । सत्य एवं युक्ति संगत लेख । —लोक—पु० ब्रह्मा के निवास स्थान का लोक । मोक्ष । —वध—पु० ब्रह्म हत्या । —वाणी—स्त्री० वेद । —वाक्य—पु० वेद वाक्य । सत्य व अटल शब्द । ब्राह्मण के बोल । —वाट—पु० ब्रह्मचर्य की मर्यादा । ब्राह्मणों की नवाड़ी । —वाद—पु० वेदपाठ । अद्वैतवाद का सिद्धान्त । ब्रह्म मय सृष्टि मानने का दर्शन । —वादिनी—स्त्री० गायत्री । —वादी—पु० ब्रह्मवाद के दर्शन को मानने वाला । अद्वैत वादी । वेदपाठी । वेदान्ती । —विद्या—स्त्री० ब्रह्म के पहचान की विद्या । दुर्गा । —वेत्ता—पु० ब्रह्मज्ञानी । ऋषि । —वैवरत, वैवरत्त—पु० ब्रह्मा का विवर्त जगत । कृष्ण भक्ति संबंधी अष्टादश पुराणों में से एक । श्रीकृष्ण । —सभा—स्त्री० ब्रह्मा की सभा, दरबार । ब्राह्मणों का न्यायालय । —समाज—पु० राजा राममोहनराय द्वारा प्रचलित एक सम्प्रदाय । ब्राह्मणों का समाज । —सर—पु० एक प्राचीन तीर्थ । —सिद्धांत—पु० ज्योतिष की एक सिद्धान्त पद्धति । —सिर—पु० एक अस्त्र विशेष । —सुतन—पु० नारदादि सप्तऋषि गण । महादेव । केतु विशेष । —सुता—स्त्री० सरस्वती । —सू—पु० ब्रह्मा । अनिरुद्ध । कामदेव । विष्णु की एक मूर्ति विशेष । —सूत, सूत्र—पु० जनेऊ यज्ञोपवीत । वेदान्त का एक मुख्य ग्रंथ । —हत्या, हित्या—पु० ब्राह्मण की हत्या । महा पाप । —हृदय—पु० शुद्ध हृदय । प्रथम वर्ग के १६ नक्षत्रों में से एक ।

ब्रह्मकूरच—पु० [सं० ब्रह्मकूर्चम्] रजस्वला के स्पर्श-दोष को मिटाने का व्रत, प्रायश्चित ।

ब्रह्मज्ञ—वि० [सं० ब्रह्मज्ञ] १ वेदांत तत्व को जानने वाला । वेदज्ञ । ज्ञानी । २ जिसे ब्रह्म का बोध हो । ३ विष्णु । ४ कार्तिकेय ।

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज, ब्रह्मचर्य, ब्रह्मचार—पु० [सं० ब्रह्मचर्य] १ मनुष्य जीवन की प्रारंभिक अवस्था जब वह भोगों से दूर रह कर विद्याध्ययन करता है । २ जीवन के चार आश्रमों में से एक । ३ संभोग व मैथुन से बचने का व्रत । ४ योग में एक प्रकार का यम । ५ वीर्य रक्षण की साधना ।

ब्रह्मचारण्य—देखो 'ब्रह्मचारिणी' ।

ब्रह्मचारि—देखो 'ब्रह्मचारी' ।

ब्रह्मचारिणि (णी)—स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मचर्य व्रत पालने वाली स्त्री । २ सती स्त्री । ३ पार्वती । ४ दुर्गा । ५ सरस्वती ।

ब्रह्मचारी—वि० [सं०] १ जो ब्रह्मचर्य आश्रम में हो । २ जो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके सात्विक जीवन व्यतीत करता हो। ३ जिसे ब्रह्म का बोध या ज्ञान हो। ४ जिसने कभी स्त्री प्रसंग न किया हो, जितेन्द्रिय। ५ वेदाध्ययन करने वाला। ६ विद्यार्थी। ७ शिव, महादेव। ८ स्वामि कार्त्तिकेय, स्कन्द।

ब्रह्मणी–१ देखो 'ब्रह्मांणी'। २ देखो 'ब्राह्मणी'।

ब्रह्मतत्व,ब्रह्मत्व–पु० [सं०ब्रह्मत्व] १ शुद्ध ब्रह्म का भाव। २ ब्रह्म मय या ब्रह्म में लीन होने की अवस्था। ३ ब्रह्मा नामक ऋत्विज होने की अवस्था। ४ ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मांड, ब्रह्मांडि–पु० [सं०] १ सृष्टि एवं अन्तरिक्ष में माने गये अनन्त लोकों का समूह। २ अन्तरिक्ष, आकाश। ३ कपाल खोपड़ी। ४ समुद्र। ५ स्वर्ण का एक महादान।

ब्रह्माण–देखो 'ब्रह्म'।

ब्रह्माणी–स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मा की स्त्री। २ सरस्वती, शारदा। ३ ब्रह्म की शक्ति, दुर्गा, पार्वती, देवी। ४ ज्योतिष की एक देवी विशेष। ५ रेणु गंधा नामक द्रव्य, पीतल। ६ उड़ीसा की एक नदी।

ब्रह्मा–पु० [सं०] १ सृष्टि की रचना के लिये बनाया ब्रह्म का एक सगुण रूप। चतुरानन, विधाता। २ यज्ञ का एक ऋत्विज। ३ ८गण के आठवें भेद का नाम।

ब्रह्माक्षर–पु० [सं०] १ ओंकार, प्रणव। २ वर्ण माला का प्रथम अक्षर। ३ प्रारंभिक ज्ञान।

ब्रह्मानंद–पु० [सं०] ब्रह्मज्ञान का आनन्द।

ब्रह्माव–पु० [सं०] आशीर्वाद, आशीष।

ब्रह्मावत–पु० [सं० ब्रह्मापुत्र] नारद मुनि।

ब्रह्मावरत–पु० [सं० ब्रह्मावर्त] सरस्वती एवं दृशद्वति नदियों के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम।

ब्रह्मावरि–पु० एक ब्रह्मास्त्र जो रावण के पास था।

ब्रह्मासन–पु० [सं०] १ ब्रह्म का ध्यान व चिंतन के लिये लगाया जाने वाला आसन। २ तंत्रोक्त देव पूजा का आसन।

ब्रह्मास्त्र–पु० [सं०] १ सभी अस्त्रों में श्रेष्ठ एक अस्त्र। २ ब्रह्मा की शक्ति से परिचालित एक अस्त्र। ३ सन्निपात की एक औषधि।

ब्रह्मिस्ठा–स्त्री० [सं० ब्रह्मिष्ठा] दुर्गा, देवी।

ब्रह्मी–देखो 'ब्राह्मी'।

ब्रांभ–देखो 'ब्रह्म'।

ब्रांभण–देखो 'ब्राह्मण' ---भोजन='ब्राह्मण भोजन'।

ब्रात–देखो 'व्रात'।

ब्राहमण–देखो 'ब्राह्मण'।

ब्राहमी–देखो 'ब्राह्मी'।

ब्राह्मण–पु० [सं०] (स्त्री० ब्राह्मणी) १ पुरुष समाज के चार वर्णों में से प्रथम वर्ण। इस वर्ण का व्यक्ति, द्विज, विप्र। २ यज्ञ कराने वाला। ३ ब्रह्मवादी। ४ वेदों का एक भाग। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ अग्नि।---भोजन–पु०ब्राह्मणों को दिया जाने वाला भोजन।

ब्राह्मणत्व–पु० [सं०]१ ब्राह्मण होने का भाव या दशा। २ ब्राह्मण का धर्म या आचरण। ३ ब्राह्मण के गुण, प्रतिभा।

ब्राह्मणी–स्त्री० [सं०] १ भारंगी का नामान्तर। २ ब्राह्मण स्त्री। ३ गाथा छंद का भेद।

ब्राह्ममुहूरत–देखो 'ब्रह्ममुहूरत'।

ब्राह्मी–स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मकी मूर्ति मति शक्ति। २ शिव की आठ मातृकाओं में से एक। ३ सरस्वती। ४ दुर्गा। ५ वाणी। ६ रोहिणी नक्षत्र। ७ ब्रह्म विवाह से परिणिता स्त्री। ८ ब्रह्म की पत्नी। ९ भारत की एक प्राचीन लिपि। १० एक प्रसिद्ध औषधि। ११ एक नदी का नाम।

बिखा–देखो 'व्रखा'।

बित–देखो 'व्रत्ति'।

बिद, बिदि–देखो 'विरुद'।

बिहनट–देखो 'बहनट'।

बिहसपत–देखो 'बृहस्पति'।

बिह्मा–देखो 'ब्रह्म'।

बीख–देखो 'बीख'।

बीड़, बीड़ा–देखो 'ब्रीड़ा'।

बीवणी (बी)–क्रि० [सं० ब्रूम्] १ कहना। २ बोलना। ३ पुकारना। ४ उत्तर देना।

बूह, बूहार–देखो 'भू'।

बेता–१ देखो 'व्रतासुर'। २ देखो 'व्रत'।

बैंमंड–देखो 'ब्रह्मांड'।

ब्लोच–देखो 'बलोच'।

ब्लोचिस्तान (स्थान)–देखो 'बलोचिस्तान'।

म्हार–१ देखो 'बाहर'। २ देखो 'बहार'।

म्हाल–देखो 'बहाल'।

म्हाळो–१ देखो 'बा'ळो'। २ देखो 'बाळो'।

म्हासो–देखो 'बासो'।

म्हेनड़, म्हेनड–देखो 'बहन'।

म्ही–देखो 'बहुत'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

--भ--

भ–देवनागरी वर्णमाला का चौबीसवां वर्ण ।

भइस–देखो 'भैंस' ।

भइसी–देखो 'भैंसी' ।

भंकारी–स्त्री० [सं० भंकार] १ भुनगा । २ एक प्रकार का छोटा मच्छर ।

भंख–वि० निर्धन, कंगाल ।

भंग–पु० [सं० भङ्ग] १ टूट-भाग, खण्डन । २ दरार । ३ घाव, क्षत । ४ पृथकता, अलहदगी । ५ अंश, हिस्सा । ६ नियम या क्रम में पड़ने वाला अन्तर । ७ किसी कार्य की स्थगित करने की क्रिया । ८ बाधा, विघ्न, रुकावट, गड़बड़ी । ९ प्रतिबंध, मुअत्तली । १० भागने की क्रिया । ११ पराजय । १२ असफलता । १३ नाश, बरबादी । १४ कार्य, व्यवस्था आदि को रुकावट । १५ भगदड़, खलबली । १६ ध्वंस, विनाश । १७ फेर, मोड़ । १८ तह, परत । १९ लहर या सिकुड़न । २० जल-मार्ग, नहर । २१ पथ, रास्ता । २२ छल, धोखा । २३ अदित वात रोग । २४ एक देश का नाम । २५ हानि, क्षति । २६ देखो 'वंग' । –वि० १ टूटा हुआ क्षत-विक्षत । २ बिखरा हुआ । ३ जो गठित न हो । ४ रुका हुआ, बाधित । ५ देखो 'भांग' ।

भंगअहारी–पु० [स०] १ शिव, महादेव । २ भांग का नशा करने वाला व्यक्ति ।

भंगड़–देखो 'भंगेड़ी' ।

भंगण–वि० तोड़-फोड़ करने वाला । –स्त्री० भंगी की स्त्री ।

भंगणो (बो)–क्रि० [सं० भञ्ज्] १ टूटना, खण्डित होना, भग्न होना । २ हारना, परास्त होना । ३ किसी से दबना, दबाव मानना । ४ मिटना, नष्ट होना । ५ देखो 'भागणो' (बो) ।

भंगविहारी–पु० शिव, महादेव ।

भंगराज–पु० [सं० भृंगराज] १ काले रंग की एक चिड़िया विशेष । २ देखो 'भांगरो' ।

भंगरो–देखो 'भांगरो' ।

भंगवट, भंगवट्ट, भंगवाट–देखो 'भगवट' ।

भंगाण–स्त्री० १ भागने की क्रिया या भाव, भागदड़ । २ धाक, भय, रौब ।

भंगार–देखो 'बघार' ।

भंगारणो (बो)–देखो 'बघारणो' (बो) ।

भंगि–स्त्री० [सं०] १ तरीका, ढंग । २ शरीर की कोई भाव सूचक मुद्रा । ३ टूट-फूट । ४ घुमाव, टेढ़ापन । ५ सिकुड़न । ६ फरेब, जाल । ७ विन्यास, विच्छेद । ८ व्यंग्योक्ति । ९ रसिकतापूर्ण उत्तर ।

भंगी, भंगोड़ी–पु० (स्त्री० भंगण) १ एक अस्पृश्य जाति या इस जाति का व्यक्ति, हरिजन । [स० भंग+ङीप] २ रेखा चित्र, रेखाओं की चित्रकारी । [सं० भंगिन्] ३ शिव, महादेव ।

भंगीखाड़ो–पु० १ भंगियों का मोहल्ला । २ गंदा स्थान । ३ गंदगी ।

भंगुर–वि० [सं० भंज्+घुरच्] १ टूट-फूट कर विघटित होने वाला । २ नष्ट होने योग्य । –पु० नदी का मोड़ ।

भंगेड़ी–वि० [सं० भंग] बहुत अधिक भांग पीने वाला, भांग पीने का आदी ।

भंगेड़ो, भंगेरो–देखो 'भंगेड़ी' ।

भंगेळ, भंगेळियो–वि० [सं० भंग+रा.प्र. एलिओ] भागने वाला ।

भंज–स्त्री० १ लंब, दूरी । २ तोड़ना क्रिया, भंजन । ३ पहले बोई फसल खराब होने पर उस पर दुबारा बोई जाने वाली फसल । ४ विघ्न, बाधा, अड़चन । ५ जोड़ का खण्डन ।

भंजक–वि० [सं० भंज्] १ तोड़ने-फोड़ने वाला, भंजन करने वाला । २ विघ्न या बाधा डालने वाला ।

भंजगो–स्त्री० [सं० भंज्] विघ्न, बाधा ।

भंजण–पु० १ तोड़ने या भंग करने की क्रिया । २ ध्वंस, नाश । ३ खण्डन, भंग । ४ सहार । ५ पराजय, हार । –वि० १ मिटाने, नाश करने या ध्वंस करने वाला । २ मारने वाला । ३ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

भंजणो–वि० [सं० भंज] १ मिटाने वाला, नाश करने वाला । २ पराजित करने वाला । ३ सहार करने वाला । ४ तोड़ने वाला, टुकड़े करने वाला । ५ भागने वाला, डरपोक ।

भंजणो (बो)–क्रि० १ मिटना, नाश होना । २ पराजित होना । ३ सहार होना । ४ टूटना । ५ डर कर भागना । ६ जोड़े

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का बिखरना । ७ बड़ी मुद्रा का फुटकर सिक्कों में होना । ८ देखो 'भांजणो' (बो) ।

भंजाड़णो (बो), भंजाणो (बो), भंजावणो (बो)–क्रि० १ मिट वाना, नाश करवाना । २ पराजित कराना । ३ संहार करवाना । ४ तुड़वाना, टुकड़े करवाना । ५ भगवाना । ६ बड़ी मुद्रा को छोटी मुद्रा में बदलवाना । ७ मुड़वाना । ८ तह करवाना । ९ खर्च करवाना । १० नियम से विचलित करवाना, प्रण तुड़वाना ।

भंड–पु० [सं० भण्ड] १ एक देश का नाम । २ देखो 'भांडो' । ३ देखो 'भांड' ।

भंडम–पु० [सं० भाण्डक] १ क्षति, हानि । २ कवच । ३ निन्दा ।

भंडणो (बो)–देखो 'भांडणो' (बो) ।

भंडफोड़–देखो 'भंडाफोड़' ।

भंडवड़ो–पु० भांडने की क्रिया, निंदा, अपकीर्ति ।

भंडाह, भंडाई–देखो 'भांडाई' ।

भंडाणो (बो)–क्रि० १ निंदा कराना, अपकीर्ति कराना । २ बिगाड़ना, खराब करना ।

भंडाफोड़–पु० [सं० भाण्ड-स्फोट] १ रहस्योद्घाटन, गुप्त बात प्रकट होने की अवस्था । २ गुप्त योजना की जानकारी ।

भंडार, भंडारउं, भंडारउ–पु० [सं० भाण्डागारम्] १ खजाना कोष, धनागार । २ भोजन, रसोई । ३ किसी वस्तु का बड़ा संग्रहालय, कोठार । ४ भोजन सामग्री का कोठार । ५ माल गोदाम । ६ देखो 'भंडारो' ।

भंडारणो (बो)–क्रि० [सं० भाण्डारणम्] १ संग्रह करना, संगृहीत कर रखना । २ गर्भ की जरा को भूमिगत करना ।

भंडारियो–पु० [सं० भण्डार] १ छोटा भंडार या कोठार । २ दीवार या किसी उपकरण में भण्डार की तरह बना खाना । ३ औजार रखने की पेटी, संदूक । ४ एक प्रकार का सर्प विशेष । ५ देखो 'भंडार' । ६ देखो 'भंडारी' ।

भंडारी–पु० [सं० भाण्डागारिक] १ भण्डार का प्रभारी या अधिकारी । २ रसोईया । ३ छोटी कोठरी, खजाना । ४ पृथ्वी, धरती ।

भंडारो–पु० [सं० भण्डार] १ साधु सन्यासियों के लिये किया जाने वाला बड़ा भोज । २ किसी बड़े दशनामी साधु की मृत्यु के पीछे किया जाने वाला भोज । ३ देखो 'भंडार' ।

भंडावणो (बो)–देखो 'भंडाणो' (बो) ।

भंडाहर–देखो 'भंडार' ।

भंडीस–वि० विध्वंस या नाश करने वाला ।–पु० दक्ष प्रजापति ।

भंडेल–स्त्री० एक पर एक रखे बर्तनों का ढेर ।

भंडेलो–पु० मुसलमान जाति का भांड ।

भंडोपकरण–पु० [सं० भण्डा-उपकरण] गृहस्थ संबंधी सामान ।

भंडो–देखो 'भांडो' ।

भंणकणो (बो), भंणक्कणो (बो)–देखो 'भणकणो' (बो) ।

भंणणो (बो)–देखो 'भणणो' (बो) ।

भंत भंति, भंतो–१ देखो 'भांत' । २ देखो 'भांति' ।

भंदोळी–देखो 'बंदोळी' ।

भंदोळो–देखो 'बंदोळो' ।

भंधो–देखो 'बांध' ।

भंफोड़–देखो 'भूंफोड़' ।

भंभ–पु० १ धुंआ । २ अधिक बालों का समूह ।

भंभर–वि० [सं० विह्वल] १ घबराया हुआ, व्याकुल । २ भयभीत, भयातुर । ३ द्रवित ।

भंभरभूळो, भंभरभोळो, भंभळभोळो–वि० [सं० विह्वल+भमुल्लक] (स्त्री० भंभरभोळी, भंभळभोळी) बहुत भोला-भाला, सीधा, सरल । मुग्ध ।

भंभा–स्त्री० एक वाद्य विशेष ।

भंभार–वि० १ बहुत बड़ा । २ देखो 'भंबार' ।

भंभारो–पु० १ जैसलमेर का एक क्षेत्र । २ देखो 'भंबार' । ३ देखो 'भंबारो' ।

भंभोर–वि० भयानक, भयावह ।

भंभूळियो–देखो 'बघूळो' ।

भंभूळो–देखो 'बघूळो' ।

भंभेड़ो–स्त्री० एक वृक्ष विशेष ।

भंभेरणो (बो)–क्रि० क्रुद्ध करना, कुपित करना ।

भंभेरी–स्त्री० १ एक देश का नाम । २ देखो 'विभो' ।

भंभो–पु० एक वाद्य विशेष ।

भंभर–१ देखो 'भंवर' । २ देखो 'भ्रमर' ।

भंभरकड़ी–देखो 'भंवरकड़ी' ।

भंभरी–१ देखो 'भ्रमर' । २ देखो 'भंवर' ।

भंभळ–देखो 'भंवळ' ।

भंभाण–देखो 'भयानक' ।

भंभाण–१ देखो 'भंवळ' । २ देखो 'भूंण' ।

भंभणो (बो)–क्रि० [सं० भ्रमणम्] १ घूमना, फिरना । २ चक्कर खाना, भटकना । ३ उड़ना । ४ मुड़ना, वक्राकार होना । ५ भ्रम में पड़ना, भ्रमित होना ।

भंवर–पु० [सं० भ्रमर] (स्त्री० भंवरी) १ नाक का आभूषण विशेष । २ गहरे पानी में पड़ने वाला आवर्त, चक्कर । ३ श्याम रंग । ४ मकान का गंदा पानी जाने के लिये बना गड्ढा । ५ गेहूँ की फसल का एक रोग । ६ चक्राकार बने हुए बाल । ७ घास का गोल ढेर । [सं० भ्रमरः] (स्त्री० भंवरी) ८ वह लड़का जिसका बाप जिन्दा हो । ९ पति, खाविंद । १० श्याम रंग का घोड़ा । –वि० १ काले रंग का, श्याम ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ रसिक, शौकीन, छैल-छबीला। ३ मस्त, उन्मत्त। ४ देखो 'भ्रमर'।

भंवरकड़ी-स्त्री० [सं० भ्रमर-कटक] पशुओं के गले में बांधने की लोहे या पीतल की कड़ी।

भंवरगुंजार-स्त्री० [सं०] १ डिंगल का एक अष्टपदी छंद। २ भौंरे की गुंजन।

भंवरगुफा-स्त्री० [सं० भ्रमर-गुहा] १ अंधेरी कोठरी। २ यौग के अनुसार शरीरस्थ एक चक्र।

भंवरछैल-देखो 'छैलभंवर'।

भंवरजाळ-पु० [सं० भ्रम-जाल] १ सांसारिक प्रपंच, बंधन। २ उलझन, झंझट, बखेड़ा। ३ छल, कपट। ४ अशुभ रंग का घोड़ा विशेष।

भंवरतिलक-पु० शिर का एक आभूषण विशेष।

भंवरभीख-स्त्री० [सं० भ्रमर-भिक्षा] भौंरे के समान घूम-घूम कर मांगी जाने वाली भिक्षा।

भंवराई-स्त्री० शौकीनपना, छैलापन।

भंवरामाटी-स्त्री० [सं० भ्रमर-मृत्तिका] १ अपने अंडों की सुरक्षा हेतु भंवरी द्वारा बनाया मिट्टी का घरौंदा। २ उक्त घरौंदे की मिट्टी।

भंवराळ, भंवराळी-वि० [सं० भ्रमर-आलुच] (स्त्री० भंवराळी) १ गोलाकार या चक्करदार। २ श्याम वर्ण का, काला।

भंवरियो, भंवरियो-पु० १ एक लोक गीत विशेष। २ देखो 'भंवर'।

भंवरी-स्त्री० १ टिटहरी पक्षी, टीटोड़ी। २ देखो 'भंवर'। ३ देखो 'भ्रमर'।

भंवरो-देखो 'भ्रमर'।

भंवळ-स्त्री० [सं० भ्रमः] १ चक्कर, गश। २ गश खाने की क्रिया या भाव।

भंवहारो-१ देखो 'भ्रू'। २ देखो 'भंवारो'।

भंवाणो (णी)-क्रि० १ घुमाना, फिराना। २ चक्कर खिलाना। ३ मोड़ना। ४ ऐंठन देना।

भंवारो-पु० किसी मकान का भूमिगत कक्ष, तलगृह।

भंवावणो (णी)-देखो 'भंवाणो' (णी)।

भंवेराई-देखो 'भंवराई'।

भंस-पु० विध्वंस।

भंसण-देखो 'भसम'।

भंसा-पु० एक प्रकार का चौहटा।

भ-पु० [सं०] १ ऋषि। २ गृह। ३ जल। ४ दीप्ति। ५ नक्षत्र। ६ नभ। ७ भय। ८ पर्वत, पहाड़। ९ सूर्य, भानु। १० भूप, राजा। ११ भ्रमर। १२ राशि। १३ जांघ। १४ सेवा। १५ भार्गव। १६ भ्रम। १७ माया। १८ शुक्रग्रह। १९ शुक्राचार्य। २० मधु मक्खी। २१ सत्ताईस की संख्या। २२ 'भगण' नामक गण का संक्षिप्त रूप।

भइंस, भइंसि-देखो 'भैंस'।

भइंसो-देखो 'भैंसो'।

भइ-१ देखो 'भय'। २ देखो 'भाई'।

भइण भइणि भइणी-देखो 'बहन'।

भइयो-देखो 'भाई'।

भइरव-पु० १ बहुमूल्य रत्न। २ देखो 'भैरव'।

भइरवी-देखो 'भैरवी'।

भइसाइत-पु० [सं० महिष] भैंसा रखने वाला।

भइसि-देखो 'भैंस'।

भई-१ देखो 'भाई'। २ देखो 'भय'।

भईया-स्त्री० १ बाने बजाने वाली एक जाति। २ देखो 'भाई'।

भउंर-देखो 'भंवर'।

भउंरी-स्त्री० १ घोड़े का नथूना। २ देखो 'भंवरी'।

भउंरो-१ देखो 'भंवर'। २ 'भ्रमर'। ३ देखो 'भ्रू'। ४ देखो 'भंवारो'।

भउ-१ देखो 'भय'। २ देखो 'बहू'।

भउजाई-देखो 'भोजाई'।

भउडि-देखो 'भयडि'।

भऊ-देखो 'बहू'।

भक-स्त्री० १ वायु के दबाव से उत्पन्न एक ध्वनि विशेष। २ संकरे मुंह के पात्र से द्रव पदार्थ या धुंआ निकलने की ध्वनि। ३ बकवाद। ४ देखो 'भक्ष'।

भकक्षा-स्त्री० नक्षत्र कक्षा।

भकज-वि० [सं० भक्षक] भक्षण करने वाला।

भकणी (णी)-१ देखो 'भक्षणो' (णी)। २ देखो 'भाखणो' (णी)।

भकत-देखो 'भक्त'। -वछळ='भक्तवत्सळ'।

भकति, भकती-देखो 'भक्ति'। -कर='भक्तिकर'। -सूतर='भक्तिसूत्र'।

भकभकणो (णी), भकभकणो (णी)-क्रि० १ भक-भक की आवाज होना। २ इस आवाज के साथ धुंआ या द्रव पदार्थ निकलना।

भकभूक-पु० महीन चूर्ण। चूरा।

भकभूर-पु० १ नाश। २ ऐसा चूर्ण जिसमें कण भी हों। ३ धूल से लथपथ, धूसरित। मटमैला।

भकभूरो-वि० १ धूल से मिलता-जुलता रंग। २ देखो 'भकभूर'।

भकळ (स)-क्रि० वि० १ बिना रुके, लगातार। २ अनियंत्रित रूप से, अशिष्टता से।

भकाऊ-पु० एक भयानक कल्पित जीव।

भकाणो (णी)-१ देखो 'भखाणो' (णी)। २ देखो 'बहकाणो' (णी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भकार–पु० १ 'भ' अक्षर, वर्ण । २ भगण के लिये प्रयुक्त शब्द ।

भकारणी (बी)–देखो 'वाकारणी' (बी) ।

भकारी–देखो 'भखारी' ।

भकावटी–देखो 'भखावटी' ।

भकुंड–देखो 'भाखुंड' ।

भकूट–पु० [स०] विवाह की गणना में शुभ मानी जाने वाली राशियों का समूह ।

भकूडी–पु० तोप में बत्ती ठूंसने का मोटा गज ।

भक्करणी(बी)–१ देखो 'भक्षणी' (बी) । २ देखो 'भाखणी' (बी) ।

भक्ख–देखो 'भक्ष' ।

भक्खणी(बी)–१ देखो 'भक्षणी' (बी) । २ देखो 'भाखणी' (बी) ।

भक्खर भक्खरप–१ देखो 'भाखर' । २ देखो 'भास्कर' ।

भक्खरी–स्त्री० १ एक प्रकार की रोटी । २ देखो 'भाखर' ।

भक्खी–देखो 'भक्षी' ।

भक्त–वि० [सं०] १ ईश्वर, किसी देवता या महात्मा के प्रति श्रद्धा-भक्ति व आस्था रखने वाला । २ भजन करने वाला । ३ जो किसी के प्रति अत्यन्त श्रद्धालु हो, अनुयायी । ४ पक्षपाती । –पु० १ भोजन । २ उपासना या भक्ति करने वाला मनुष्य । ३ धार्मिक वृत्ति वाला प्राणी । **–तारण-तरण**–वि० भक्तों का उद्धारक । –पु० ईश्वर । गरुड़ । **—दास**–पु० अपने स्वामी से भोजन-कपड़ा पाने वाला भक्त । **–परायण**–पु० ईश्वर । भक्तों का पालक । **–भक्खल, भक्खल**='भक्तवत्सल' । **—राक्षस**–पु० विभीषण । **—वत्सल, वत्सल**–वि० भक्तों पर दया, स्नेह रखने वाला । –पु० ईश्वर ।

भक्ति–स्त्री० [सं०] १ ईश्वर, किसी देवता या महात्मा के प्रति होने वाली अटूट श्रद्धा, आस्था । २ उपासना, भजन, तपस्या । ३ विश्वास, निष्ठा, श्रद्धा । ४ सेवा-शुश्रूषा । ५ अनुराग । ६ आदर-सम्मान । ७ मान प्रदर्शन । ८ पूजा अर्चना । ९ भोजन । १० सजावट । ११ भात । १२ उबाला हुआ भोज्य पदार्थ । १३ भिन्नता, पृथकता । १४ बंटवारा बांट । १५ हिस्सा, अंश, विभाग । १६ साहित्य में ध्वनि विशेष । १७ छन्द शास्त्र में एक वृत्त विशेष । १८ जैन मतानुसार एक वमन । १९ नौ की संख्या० । **–कर, कारक**–वि० जिससे भक्ति उत्पन्न हो । भक्तियोग्य । **–मार्ग**–पु० भक्ति करके मुक्ति या सिद्धि प्राप्त करने की विधि । **–सूतर, सूत्र**–पु० वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र ग्रन्थ ।

भक्ष–पु० [सं०] १ भोजन, आहार । २ भोज्य पदार्थ । –वि० १ आहार करने वाला । २ देखो 'भक्ष्य' ।

भक्षक–वि० [सं०] खाने वाला, आहारी ।

भक्षण–पु० [सं०] १ आहार, भोजन । २ भोजन करने वाला ।

भक्षणी–स्त्री० [सं० भक्षिणी] भक्षण करने वाली ।

भक्षणी (बी)–क्रि० [सं० भक्षण] १ भोजन करना, आहार करना, खाना । २ अशिष्टता से खाना । ३ काटना, दंशना ।

भक्षाणी (बी)–क्रि० [सं० भक्षण] १ भोजन कराना, आहार कराना, खिलाना । २ अशिष्टता से खिलाना । ३ कटाना, दंशाना ।

भक्षि, भक्षी–वि० [सं० भक्षिन्] (स्त्री० भक्षिणी) १ खाने वाला आहार करने वाला । २ पदार्थ या वस्तु विशेष को खाने वाला ।

भक्षु–देखो 'भिक्षु' ।

भक्ष्य–वि० खाने योग्य पदार्थ ।

भखंड–देखो 'भूखंड' ।

भख–पु० [सं० भक्ष्] १ पानी । २ किसी देवता को चढ़ाई जाने वाली बलि । ३ भखना या निगलना क्रिया । ४ बलात् खाने की क्रिया । ५ देखो 'भक्ष' ।

भखग्रास–स्त्री० [सं० आशु+भक्षी] भकड़ी ।

भखण–देखो 'भक्षण' ।

भखणी–देखो 'भक्षणी' ।

भखणी (बी)–क्रि० [सं० भक्षणम्] १ आहार करना, खाना । २ बलात् खाना, निगलना । ३ दंश करना, काटना । ४ देखो 'भाखणी' (बी) ।

भखपनंग–पु० [सं० पन्नग:+भक्षक] १ मयूर, मोर । २ गरुड़ ।

भखभूर–देखो 'भकभूर' ।

भखभूरी–स्त्री० भोजन की चिन्ता ।

भखभूरी–देखो 'भकभूरी' ।

भखमंजार–पु० [सं० मार्जार-भक्ष्य] चूहा, मूषा ।

भखरी–१ देखो 'भाखर' । २ देखो 'भक्खरी' ।

भखाणी(बी)–१ देखो 'भक्षाणी' (बी) । २ देखो 'बहकाणी' (बी) ।

भखार–देखो 'भखारी' ।

भखारणी (बी)–देखो 'वाकारणी' (बी) ।

भखारी, भखारी–स्त्री० [सं० भक्षागार] किसी दीवार में या जीने के नीचे बना कक्ष ।

भखावटी–पु० उषाकाल, ब्राह्ममुहूर्त ।

भखावणी(बी)–१ देखो 'भक्षाणी' (बी) । २ देखो 'बहकाणी' (बी)

भखी–स्त्री० १ एक घास विशेष । २ देखो 'भक्षी' ।

भखुंड, भखूंड–वि० [सं० भू-खंड] धूल से सना, धूसरित ।

भखो–पु० पेट के बाजू का स्थान ।

भख्खणी–देखो 'भक्षणी' ।

भख्खणी (बी)–देखो 'भक्षणी' (बी) ।

भख्खु–देखो 'भक्षी' ।

भगंदर–पु० [सं०] गुदावर्त के पास होने वाला एक रोग ।

भगवंती–देखो 'भगवती' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भग–पु० [सं०] १ बारह आदित्यों में से एक। २ सूर्य। ३ शिव का एक रूप विशेष। ४ एक देवता का नाम। ५ शोभा, कांति। ६ योनि, गुदा। ७ चन्द्रमा। ८ सौभाग्य, समृद्धि ९ गौरव कीर्ति। १० सौन्दर्य। ११ प्रेम। १२ धर्म। १३ उत्तराफाल्गुणी नक्षत्र।

भगड़–स्त्री० १ भगदड़, दौड़-भाग। –पु० २ मकान के आगे या मुहल्ले के बीच पड़ा अनावश्यक खुला स्थान।

भगण–पु० १ छन्द शास्त्र में तीन वर्णों का एक गण विशेष। २ खगोल में ग्रहों का चक्कर।

भगणी (वी)–देखो 'भागणी' (वी)।

भगत–पु० [सं०] (स्त्री० भगतण, भगतणी) १ एक जाति विशेष व इस जाति का व्यक्ति। २ देखो 'भक्त'। ३ देखो 'भक्ति'।

भगतणी (वी)–देखो 'भुगतणी' (वी)।

भगतपरायण–देखो 'भक्तपरायण'।

भगतबच्छळ (बछळ)–देखो 'भक्तवत्सल'।

भगतमाळ–स्त्री० [सं० भक्त-माला] १ भक्तों की शृंखला। २ भक्तों के चरित्र वर्णन की पुस्तक।

भगतराक्षस–देखो 'भक्तराक्षस'।

भगतवच्छळ (वछळ विछळ)–देखो 'भक्तवत्सल'।

भगतांपत (पति)–पु० [सं० भक्त-पति] १ भक्तों का स्वामी। ईश्वर। २ श्रीराम। ३ श्रीविष्णु। ४ श्रीकृष्ण।

भगतांवछल (वछळ)–देखो 'भक्तवत्सल'।

भगताणी (वी)–क्रि० [स० भुज्] १ कहना। २ भोजन कराना खिलाना। ३ उपभोग कराना। ४ देखो 'भुगताणी' (वी)।

भगतावणी(वी)–१देखो 'भगताणी'(वी)।२देखो 'भुगताणी'(वी)।

भगति, भगती–देखो 'भक्ति'। –कर='भक्तिकर'। –सूतर='भक्तिसूत्र'।

भगदड़–स्त्री० एकत्र समाज या समूह की, सहसा यत्र-तत्र भागने की क्रिया, खलबली। दौड़-भाग।

भगदत्त, भगदत्तु–पु० [सं० भगदत्त] कौरव पक्षीय, प्राग्ज्योतिष पुर के राजा का नाम।

भगदसू–पु० [सं० दिवस-भग] सूर्य।

भगनाळ–स्त्री० [सं० भग-नालिका] लंबी-चौड़ी या गहरी नाली।

भगनी–देखो 'भगिनी'।

भगयुग–पु० बृहस्पति के बारह युगों में से अंतिम युग।

भगळ, भगळखांनो, भगळखेल, भगळविद्या–पु० १ आडंबर, ढोंग। २ ऐन्द्रजालिक खेल। ३ अव्यवस्था। ४ फूहड़, असभ्य। ५ छल, कपट, धोखा। ६ एक प्रकार का जल जंतु विशेष।

भगवंत–देखो 'भगवत'।

भगवंती, भगवई–देखो 'भगवती'। –भरता='भगवतीभरता'।

भगवउ–देखो 'भगवो'।

भगवट, भगवट्ट–स्त्री० १ भागने की क्रिया या भाव। २ युद्ध में पीठ दिखाने का भाव। ३ भागने का रास्ता या मार्ग।

भगवत–पु० [सं० भगवत्-मतुप्] १ विष्णु। २ ईश्वर, परमेश्वर। ३ शिव, शंकर। ४ सूर्य। ५ जिन देव। ६ देवता।

भगवतगीता–देखो 'भगवद्गीता'।

भगवति, भगवती, भगवत्ती–स्त्री० [स०] १ देवी, दुर्गा, पार्वती। २ सरस्वती। ३ गंगा। –भरता–पु० शिव, महादेव।

भगवत्पदी–स्त्री० [सं०] गंगा।

भगवद्गीता–स्त्री० [सं०] महाभारत के भीष्म पर्व के अठारहवें अध्याय का एक प्रकरण।

भगवन, भगवन्त–पु० [सं० भगवत्] १ सादर संबोधन। २ देखो 'भगवांन'।

भगवांण, भगवांन, भगवांनडो–वि० [सं० भगवान्] ऐश्वर्ययुक्त। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ शिव, महादेव। ३ विष्णु। ४ जिन। ५ कार्त्तिकेय। ६ सूर्य। ७ कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

भगवाट–देखो 'भगवट'।

भगवो–वि० गेरुए रंग का, भगवा। –पु० गेरुआ रंग। –भेस–पु० संन्यासियों का वेश।

भगव्वान–देखो 'भगवांन'।

भगसास्त्र–पु० [सं० भग-शास्त्र] कामशास्त्र, कोकशास्त्र।

भगांकुर–पु० [सं०] बवासीर नामक रोग।

भगांण–देखो 'भंगाण'।

भगा–क्रि०वि० लिए, वास्ते, निमित्त।

भगाणी (वी)–क्रि० १ दौड़ाना, भगाना। २ दौड़ कर जाने के लिये कहना। ३ उड़ा ले जाना। ४ तेज चलाना। ५ भाग दौड़ कराना।

भगाळ–स्त्री० [सं० भगाल] आदमी की खोपड़ी। मुंड।

भगाळी–पु० [सं० भगालिन्] मुंडमाला धारण करने वाला शिव।

भगावटो–देखो 'भखावटो'।

भगावणी(वी)–१देखो 'भंजाणी' (वी)। २ देखो 'भगाणी' (वी)।

भगिनी–स्त्री० [सं०] बहन।

भगिर, भगिरथ, भगिरथ्थ–देखो 'भगीरथ'

भगी–स्त्री० १ भागने की क्रिया, भगदड़, दौड़-धूप। २ फूट।

भगीरथ–पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा जिसने कठिन तपस्या से गंगा की अवतारणा की थी।

भगुवो–देखो 'भगवो'।

भगू, भगेडो, भगोडो–वि० १ भागने वाला। २ भागा हुआ। ३ डरपोक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भगोळ–देखो 'भूगोळ'।
भगोलो–पु० पीतल आदि का पात्र, भगोना।
भगणो (बो)–देखो 'भागणो' (बो)।
भगदत–देखो 'भगदत्त'।
भगर–पु० १ कहूर। २ मोठ, ग्वार आदि के फूल।
भगवान–देखो 'भगवान'।
भगी–देखो 'भगी'।
भग्गू–देखो 'भगू'।
भग्न–वि० [सं०] १ टूटा हुआ, खण्डित। २ पराजित, हारा हुआ।
भग्नदूत–पु० हारी हुई सेना की टुकड़ी।
भग्नपाद–पु० [सं०] पुनर्वसु, उत्तराषाढा, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, पूर्व भाद्रपद व विशाखा नक्षत्र।
भग्नावसेस–पु० [सं० भग्नावशेष] खण्डहर, टूटा हुआ खण्ड। अवशेष, चिह्न।
भग्गो–देखो 'भगिनो'।
भड–गाण–पु० घोड़ा।
भड–व–१ देखो 'भड़िद'। २ देखो 'भड़'।
भड–पु० १ वट वृक्ष की शाखा। २ देखो 'भट'।
भड़क–स्त्री० १ भड़कने की क्रिया या भाव। २ उत्तेजना, जोश। ३ चमक-दमक। ४ आवाज, ध्वनि। —क्रि०वि० शीघ्र सहसा।
भड़कणो (बो)–क्रि० १ सहसा तेज आवाज के साथ विस्फोट होना, जोर से जलना। २ आवेश या क्रोध में बोलना। ३ बहकावे में आकर क्रुद्ध होना। ४ चमकना। ५ पहले की अपेक्षा तीव्र होना। ६ देखो 'भिड़कणो' (बो)।
भड़काणो (बो), भड़कावणो (बो)–क्रि० १ सहसा विस्फोट करना, जोर से जलाना। प्रज्वलित करना। २ आवेश या जोश में लाना। ३ बहका कर क्रोधित करना। ४ चमकाना। ५ पहले की अपेक्षा तीव्र करना। ६ देखो 'भिड़काणो' (बो)।
भड़किमाड़, भड़किवाड़–पु० [सं० भट+कपाट, वज्र-कपाट] १ योद्धा, वीर। २ रक्षक, पहरेदार। ३ वज्र की तरह मजबूत व दृढ़ कपाट।
भड़कीलो–वि० (स्त्री० भड़कीली) १ चमक-दमक वाला। २ जोश व आवेश में आने वाला। ३ क्रोध करने वाला। ४ चौंकने वाला।
भड़की–पु० १ चमक-दमक, तड़क-भड़क। २ ध्वनि विशेष।
भड़क्क–देखो 'भड़क'।
भड़क्कणो (बो)–१ देखो 'भड़कणो' (बो)। २ देखो 'भिड़कणो' (बो)।
भड़क्काणो (बो)–१ देखो 'भड़काणो' (बो)। २ देखो 'भिड़काणो' (बो)।
भड़क्खणो (बो)–देखो 'भड़कणो' (बो)।
भड़क्खाणो–वि० योद्धाओं का भक्षण करने वाला।
भड़क्खाणो (बो), भड़क्खावणो (बो)–देखो भड़काणो' (बो)।
भड़क्काट–स्त्री० ध्वनि विशेष।
भड़च्छणो (बो)–क्रि० १ दांतों से काटना। २ जल्दी-जल्दी खाना।
भड़ज–पु० १ घोड़ा अश्व। २ योद्धा वीर।
भड़णो (बो)–क्रि० १ घुसना, धंसना, पैठना। प्रविष्ट करना। २ देखो 'भिड़णो' (बो)।
भड़ताळ–स्त्री० १ आग, अग्नि। २ तीव्र गर्मी, उष्णता।
भड़प्पणो (बो), भड़प्पणो (बो)–क्रि० [सं० भृष्ट] भुनना।
भड़पाळक–पु० सेनापति।
भड़भोलियो–देखो 'भड़भोलियो'।
भड़भड़णो (बो)–क्रि० भड़-भड़ की ध्वनि होना, करना।
भड़भड़ाट–स्त्री० भड़-भड़ की ध्वनि।
भड़भड़ाणो (बो)–क्रि० भड़-भड़ की ध्वनि कराना।
भड़भड़ियो–वि० १ भड़-भड़ करने वाला। २ गप्पी, प्रलापी।
भड़भड़ी–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ महामारी, प्लेग। ३ आवेश, जोश।
भड़भूजो–पु० [सं० भ्राष्ट-भर्जनम्] चने आदि का भाड़ चलाने वाला, चना सेकने वाला।
भड़भोलियो, भड़भोलो, भड़भोल्यो–पु० होली के साथ जलाने के लिये बनाई गई गोबर की गोल टिकिया।
भड़यैत–पु० योद्धा, वीर।
भड़वाई–स्त्री० भड़वों का कार्य, वेश्याओं की दलाली।
भड़वाणो (बो)–क्रि० १ घुसवाना, धंसवाना, प्रविष्ट कराना। २ पराजित कर भगाना। ३ देखो 'भिड़वाणो' (बो)।
भड़वापणो–देखो 'भड़वाई'।
भड़वो–पु० [सं०भाटिक] (स्त्री०भड़वी) १ वेश्याओं का दलाल। २ वेश्याओं के साथ साज बजाने वाला।
भड़हक्क–पु० योद्धाओं की आवाज, गर्जना, दहाड़ना।
भड़ाकिमाड़, (किवाड़)–देखो 'भड़किवाड़'।
भड़ाठेक–वि० पूर्ण स्वस्थ।
भड़ावळी, भड़ावड़–वि० योद्धाओं में बलवान, महायोद्धा।
भड़ाक–क्रि० वि० तुरंत, शीघ्र।
भड़ाकी–पु० ध्वनि विशेष।
भड़ाभड़–स्त्री० ध्वनि विशेष।
भड़ाभड़–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ शीघ्रता, तेजी। –क्रि०वि० तुरंत, शीघ्र।
भड़ाभड़ी–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ देखो 'भड़भड़ी'।
भड़ाळ, भड़ाली–देखो 'भट'।
भड़ाव–पु० १ समूह, झुण्ड। २ दल, सार्थ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भड़िद-पु० १ विस्फोट की ध्वनि। २ भारी वस्तु के गिरने या टकराने की ध्वनि।

भड़िक-देखो 'भड़क'।

भड़ियाल-वि० टक्कर लेने वाला।

भड़ींद-देखो 'भड़िद'।

भड़ीड़-स्त्री० १ प्रहार, चोट या टक्कर। २ प्रहार, चोट या टक्कर की आवाज़।

भड़ौती-पु० [सं० भटित्र या भृष्ट] १ सींकों पर भुना हुआ मांस। २ आलु, बैंगन आदि का सालन। ३ दबकर या कुचलकर विकृत हुआ पदार्थ।

भड़ीहार-पु० भटिहार।

भड़ूस-पु० बिना पानी के सफेद बादल।

भड़ेंच-क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत।

भड़ोची-वि० भड़ौंच संबंधी, भड़ौंचका। -पु० भड़ौंच प्रदेश का घोड़ा।

भड़ोलियौ-पु० वट वृक्ष का फल।

भच-पु० १ शिर में होने वाली पीड़ा विशेष। २ झटका, धक्का। ३ झटके की ध्वनि। -क्रि० वि० १ शीघ्र, तुरंत। २ सहसा, एकदम।

भचक-स्त्री० १ भय, आतंक। २ प्रहार से उत्पन्न ध्वनि। ३ टक्कर, भिड़ंत। ४ शिर में दर्द का लगने वाला झटका।

भचकणौ (बौ)-क्रि० १ आश्चर्य में चौंकना, भौंचक्का रहना। २ झटका लगना। ३ प्रहार करना। ४ काटना। ५ देखो 'भिचकणौ' (बौ)।

भचकै-क्रि० वि० १ शीघ्र, तुरंत। २ सहसा, अचानक।

भचको, भचक्क-देखो 'भचक'।

भचक्कणौ (बौ)-देखो 'भचकणौ' (बौ)।

भचक्को-देखो 'भचक'।

भचक्र-पु० [सं०] १ नक्षत्रों का समूह। २ ग्रहों के भ्रमण की कक्षा।

भचड़-स्त्री० १ सहसा उखाड़ने की क्रिया। २ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि। ३ जोर से चबाकर खाने की क्रिया या उससे उत्पन्न ध्वनि। ४ देखो भचीड़'।

भचड़णौ (बौ)-क्रि० १ टक्कर खाना। २ भच-भच ध्वनि होना। ३ बड़े-बड़े ग्रास लेकर जोर-जोर से खाना। ४ खटखटाना।

भचभचाणौ (बौ)-क्रि० १ शीघ्रता करना। २ खड़खड़ाना, खटखटाना।

भचभेड़ी-देखो 'भचीड़ी'।

भचाक-स्त्री० १ प्रहार, चोट। २ प्रहार की ध्वनि। -क्रि०वि० १ 'भच' की ध्वनि के साथ। २ सहसा।

भचामच-स्त्री० १ प्रहार या वस्तुओं के टकराने की ध्वनि। २ शिर दर्द। ३ शीघ्रता।

भचीड़-पु० १ आघात, प्रहार। २ टक्कर। ३ प्रहार या टक्कर से उत्पन्न ध्वनि। ४ कूट-मार। ५ दुःख, कष्ट। ६ हानि, नुकसान। ७ दर्द, चीस। ८ भटकने की क्रिया। ९ कपाट जड़ने की ध्वनि।

भचीड़णौ (बौ)-क्रि० १ बंद द्वार को हिलाना, खटखटाना। २ टक्कर या आघात करना। ३ कूटना, मारना। ४ हानि पहुँचाना।

भचीड़ी-देखो 'भचीड़'।

भचेड़णौ (बौ)-देखो 'भचीड़णौ' (बौ)।

भच्च-देखो 'भच'।

भच्छ-देखो 'भक्ष'।

भच्छणी-देखो 'भक्षणी'।

भच्छणौ (बौ)-देखो 'भक्षणौ' (बौ)।

भच्छनी-देखो 'भक्षणी'।

भजणौ (बौ)-क्रि० [सं० भज्] १ अपने इष्ट या ईश्वर का भजन करना, भक्ति करना। २ स्मरण या ध्यान करना। ३ जपना, जाप करना। ४ ध्यान मग्न होना, अनुरक्त होना। ५ हर समय याद करना। ६ अधिकार या कब्जे में करना। ७ कहलवाना। ८ आश्रित होना। ९ बटवारा करना। १० उपभोग करना। ११ सम्मान करना। १२ सेवा शुश्रूषा करना। १३ पसंद करना, चाहना। १४ स्वीकार करना, अंगीकृत करना। १५ संभोग करना, भोगना। १६ धारण करना, वहन करना। १७ देखो 'भंजणौ' (बौ)। १८ देखो 'भाजणौ' (बौ)।

भजन-पु० [सं०] १ पूजा, उपासना, सेवा। २ भक्ति, कीर्तन, नाम जपन। ३ स्मरण, ध्यान। ४ ईश्वर या किसी देवता के गुणानुवाद का गीत या पद।—आनंद-पु० ईश्वर भक्ति से मिलने वाला सुख।—आनंदी-वि० ईश्वर भक्ति में मस्त रहने वाला। —उपदेसक-वि० भजन के माध्यम से उपदेश करने वाला।

भजनी, भजनीक-वि० भजन करने वाला, भक्ति-पद गाने वाला।

भजनेर-देखो 'भटनेर'।

भजन्न-देखो 'भजन'।

भजाड़णौ (बौ)-१ देखो 'भजाणौ' (बौ)। २ देखो 'भंजाणौ' (बौ)।

भजाणौ (बौ)-क्रि० १ ईश्वर या इष्ट का भजन कराना, भक्ति कराना। २ स्मरण या ध्यान कराना। ३ जाप कराना, जपवाना। ४ ध्यान में मग्न करना, अनुरक्त करना। ५ हर समय याद कराना। ६ अधिकार या कब्जे में कराना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७ कहलवाना। ८ आश्रित करना। ९ बंटवारा कराना। १० उपभोग कराना। ११ सम्मान कराना। १२ सेवा शुश्रूषा कराना। १३ पसंद कराना। १४ स्वीकार या अंगीकृत कराना। १५ संभोग कराना, भोगवाना। १६ धारण कराना। वहन कराना। १७ देखो 'भंजाणो' (बो)। १८ भगाना, दौड़ाना।

भजावणो (बो)–१ देखो 'भजाणो' (बो)। २ देखो 'भजाणो' (बो)।

भज्जणो–देखो 'भजणो'।

भज्जणो (बो)–देखो 'भजणो' (बो)।

भज्जा–स्त्री० भार्या।

भज्ज–वि० [सं० भज्] १ भजने योग्य, सेवा करने योग्य। २ विभक्त करने योग्य।

भट–पु० [सं० भटः] १ योद्धा, वीर। २ सिपाही, सैनिक। ३ पहलवान, मल्ल। ४ नौकर। ५ देखो 'भाट'। ६ देखो 'भट्टी'। ७ देखो 'भट्टी'।

भटक–पु० कोप।

भटकटैया–स्त्री० एक वनस्पति विशेष।

भटकणिया–पु० कुम्भट के बीज।

भटकणो (बो)–क्रि० १ निरुद्देश्य घूमना, इधर-उधर फिरना। २ आवारा फिरना। ३ कार्य सिद्धि के प्रयास में फिरना। ४ विचरण करना। ५ सही दिशा या दृष्टि कोण से अलग जाना। ६ भ्रमित होना। ७ अस्थिर चित्त होना। ८ मर्यादा छोड़ना। ९ भड़कना, प्रज्वलित होना। १० क्रुद्ध होना, कुपित होना। ११ लालायित होना, इच्छुक होना। १२ गमन करना, जाना। १३ वज्रपात होना, बिजली गिरना।

भटकळ–पु० [सं० भट] १ युद्ध, लड़ाई। २ संहार, नाश ध्वंस ३ भीड़।

भटका–स्त्री० १ किसी बात को रह-रह कर होने वाली उत्कण्ठा। २ भटकने की क्रिया या भाव।

भटकाणो (बो), भटकावणो (बो)–क्रि० १ निरुद्देश्य घुमाना, इधर-उधर फिराना। २ आवारा फिराना। ३ कार्य सिद्धि के लिये फिराना। ४ विचरण कराना। ५ गलत दिशा या दृष्टिकोण में ले जाना। ६ भ्रमित करना। ७ अस्थिर चित्त करना। ८ मर्यादा छुड़ाना। ९ भड़काना, प्रज्वलित करना। १० क्रुद्ध या कुपित करना। ११ लालायित या इच्छुक बनाना। १२ गमन कराना, भेजना। १३ वज्रपात करना।

भटकी–स्त्री० भ्रम, अज्ञान।

भटकूड़ो–वि० १ अधिक घूमने वाला, घुमक्कड़। २ आवारा घूमने वाला।

भटकणो (बो)–देखो 'भटकणो' (बो)।

भटतीतर–पु० तीतर जाति का एक पक्षी विशेष।

भटनेर–देखो 'भाडमनेर'।

भटनेरी–पु० भटनेर का निवासी।

भटांण–वि० पूर्ण परिपक्व।

भटाकड़ो, भटाको–पु० पटाखा।

भटाळि, भटाळी–स्त्री० [सं० भट-अवलि] १ वीरों की पंक्ति। २ सुभटों की पंक्ति। ३ सेना।

भटियारो–पु० [सं० भ्राष्टमिन्ध] (स्त्री० भटियारण, भटियारणी, भटियारी) १ भड़भूंजा। २ किसी सराय का कर्मचारी।

भटी–१ देखो 'भट्टी'। २ देखो 'भाटी'।

भट्टारक (रो)–पु० छछूंदर।

भट्ट–स्त्री० १ बहन। २ सखी, सहेली।

भट्टुकड़ो–पु० पटाखा।

भटेस–पु० [सं० भट-ईश] योद्धा, वीर, शूरवीर।

भटो–पु० १ बैंगन नाम शाक। २ देखो 'भट्टो'।

भट्ट–पु० [सं० भट्टः] १ प्रभु, स्वामी। २ ब्राह्मणों की एक उपाधि। ३ एक वर्ण संकर जाति। ४ देखो 'भाट'। ५ देखो 'भट'। ६ देखो 'भट्टी'। ७ देखो 'भट्टी'।

भट्टाउरि–पु० भटनेर-नगर का एक नाम।

भट्टार, भट्टारक–वि० [सं०] (स्त्री० भट्टारिका) मान्य, पूज्य।

भट्टारिका-भवन–पु० [सं०] राजमहिषि का महल।

भट्टी–स्त्री० [सं० भ्राष्ट्र] १ बड़ा चूल्हा। २ भाड़। ३ रसायन या शराब बनाने का चूल्हा। ४ शराब बनाने का स्थान।

भट्टू–पु० १ मानजा। २ देखो 'भट्ट'। ३ देखो 'भट्ट'।

भट्टो–पु० [सं० भ्राष्ट्र] १ चूना पकाने का अग्नि कुण्ड। २ ईंटें पकाने का स्थान।

भट्ठ–१ देखो 'भट्टी'। २ देखो 'भट्ट'। ३ देखो 'भट्टो'।

भट्ठी–देखो 'भट्टी'।

भट्ठी–देखो 'भट्टो'।

भठ–१ देखो 'भट'। २ देखो 'भट्ट'। ३ देखो 'भट्टी'। ४ देखो 'भट्टो'।

भठियारपण (पणो)–पु० [सं० भ्राष्ट्रस्थन] भटियारे का कार्य।

भठियारो–देखो 'भटियारो'। (स्त्री० भठियारी)

भठी–देखो 'भट्टी'।

भठीयारो–देखो 'भटियारो'।

भठ्ठी–देखो 'भट्टी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भडंग–पु० मूर्ख व्यक्ति ।

भडंगी–वि० आडंबर रचने वाला । दिखावा करने वाला ।

भडजर–पु० [सं० भट्-पंजर] योद्धा का अस्थि-पंजर ।

भड–पु० १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष । २ देखो 'भट' ।

भडकणी (बी)–१ देखो 'भिड़कणी' (बी) । २ देखो 'भड़कणी' (बी) ।

भडकाउणी (बी), भड़काणी (बी)–१ देखो 'भड़काणी' (बी) । २ देखो 'भिड़काणी' (बी) ।

भडकिमाड, (किमाड, किमाड)–देखो 'भड़किवाड़' ।

भडग–पु० [सं० भद्रांग] १ शिव, महादेव । २ बलराम ।

भडणी (बी)–क्रि० १ हाथों से जड़ सहित उखेड़ना । २ देखो 'भिड़णी' (बी) ।

भडताळ–देखो 'भिड़ताळ' ।

भडत्थ–देखो 'भड़ौती' ।

भडवाउ, भडवाय–पु० [सं० भटवाद] १ वीरता की ख्याति । २ सामर्थ्य, बल, शक्ति । ३ योद्धापन ।

भडांप–स्त्री० एक प्रकार की बन्दूक ।

भडांवली–स्त्री० १ द्विविधा, सन्देह । २ आतुरता, त्वरा ।

भडाभड–देखो 'भड़ाभड़' ।

भडाल–देखो 'भट' ।

भडोळ–वि० फूहड़, असभ्य ।

भडोळखानो–पु० अव्यवस्था ।

भडुळीपुराण, भडुळीपुराण–पु० 'डंक' ज्योतिषी द्वारा रचित वर्षा-विज्ञान संबंधी पद्यों का संग्रह ।

भणंक–देखो 'भणक' ।

भणकणी (बी)–देखो 'भणकणी' (बी) ।

भणंकार, भणंकी भणंक्क–देखो 'भणक' ।

भणंक्कणी (बी)–देखो 'भणकणी' (बी) ।

भण–पु० ताड़ का वृक्ष ।

भणक–स्त्री० [सं० भण, भणन] १ ध्वनि, आवाज । २ अफवाह, उड़ती खबर । ३ किसी बात का संकेत । ४ हल्की आवाज ।

भणकणी (बी)–क्रि० १ भन-भन शब्द होना । २ भंडराना । ३ आना । ४ जाना । ५ भन-भन शब्द करना । ६ मक्खियों का भिन-भिनाना ।

भणकार, भणकारी, भणकी भणणंक–देखो 'भणक' ।

भणणकणी (बी)–देखो 'भणकणी' (बी) ।

भणण–स्त्री० १ भौंरे आदि की गुनगुनाहट । २ मक्खियों की भिन-भिनाहट । ३ एक ही वृत्त पर जोर से घूमने की क्रिया । ४ इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि ।

भणणणी (बी)– देखो 'भणकणी' (बी) ।

भणणांट, भणणाट (टी)–देखो 'भणण' ।

भणणाणी (बी), भणणावणी (बी)–क्रि० १ भौंरे का गुनगुनाना । २ मक्खियों का भिनभिनाना । ३ चक्र का जोर से फिरना । ४ चक्र फिरने की ध्वनि होना ।

भणणाहट–देखो 'भणण' ।

भणणी (बी)–क्रि० १ पढ़ना, पढ़ाई करना । २ अध्ययन करना मनन करना । ३ पाठ करना, मंत्रोच्चार करना । ४ जपना । ५ रटना । ६ कहना, कथना । ७ बुनाई करना । ८ होना । ९ बनना ।

भणत–स्त्री० १ पढ़ने की क्रिया या भाव । २ बुनने की क्रिया या भाव । ३ बुनाई का ढंग । ४ कृषकों का लोग गीत विशेष ।

भणभणाट, भणभणाहट, भणभणाटो–देखो 'भणण' ।

भणसाल, भणसालह–स्त्री० कोषागार, खजाना ।

भणहण–देखो 'भणण' ।

भणहणणी (बी)–क्रि० १ हवा का चलना । २ देखो 'भणकणी' (बी) ।

भणाड़णी (बी)–देखो 'भणाणी' (बी) ।

भणाणी (बी), भणावणी (बी)–क्रि० १ कहलाना, बुलवाना । २ पढ़ाना, पढ़ाई कराना । ३ अध्ययन कराना, मनन कराना । ४ पाठ कराना, मंत्रोच्चार कराना । ५ जपाना । ६ रटाना । ७ कथाना । ८ बुनाना । ९ बनवाना ।

भणित–स्त्री० कही हुई बात या कथा ।—वि० पढ़ा हुआ, बना हुआ, बुना हुआ ।

भणियण–वि० १ पठित, पढ़ा हुआ । २ विद्वान ।—पु० चारण कवि ।

भणी क्रि०वि० १ कहकर, बोलकर । २ लिए, वास्ते, निमित्त ।

भणेज भणेज–देखो 'भांणेज' ।

भण्यागरी–वि० साथ रहने वाला, सहचर ।

भत–१ देखो 'भांत' । २ देखो 'भात' ।

भतई–१ देखो 'भातवी' । २ देखो 'भात' ।

भतवार, भतवारण, भतवारी–स्त्री० [सं० भक्त-हारिणी] कृषक के लिये खेत में भोजन लेकर जाने वाली स्त्री ।

भतवारी–पु० कृषक के लिये खेत में भोजन ले जाने वाला व्यक्ति ।

भतार, भतारो–देखो 'भरतार' ।

भति–१ देखो 'भांत' । २ देखो 'भती' ।

भतो–स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि । २ देखो 'भांत' ।

भतीज, भतीजो–पु० [सं० भ्रातृज] (स्त्री० भतीजी) बड़े भाई का लड़का । भतीजा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भतूळियो, भतूळो भतूल्यो–देखो 'बधूळो' ।

भत्त–१ देखो 'भांत' । २ देखो 'भक्त' । ३ देखो 'भात' । ४ देखो 'भांति' ।

भत्ति, भत्ती–१ देखो 'भांत' । २ देखो 'भक्ति' । ३ देखो 'भतई' ।

भत्तीजी–देखो 'भतीजो' । (स्त्री० भत्तीजी)

भत्तो–पु० [सं० भक्तम्] वेतन के अलावा विभिन्न रूपों में मिलने वाला द्रव्य, भत्ता, अलाउंस ।

भत्रीज, भत्रीजउ–देखो 'भतीजो' ।

भथरट्ट–स्त्री० एक जाति विशेष ।

भथाइत, भथाइति (ती, तु)भथाउ, भथाउत, भथाउतिहुं–पु० [सं० भस्त्रा+रा.आइति] १ तरकसधारी योद्धा । २ तरकस बनाने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

भथारो–१ देखो 'भाथो' । २ देखो 'भातो' ।

भधूळियो, भधूळो, भधूल्यो–देखो 'बधूळो' ।

भदणो (बो)–१ देखो 'भिदणो' (बो) । २ देखो 'बधणो' (बो) ।

भदर–१ देखो 'भद्दर' । २ देखो 'भद्र' ।

भदरक–पु० [सं० भद्रक] १ सार, तत्त्व । २ मनोहर, सुन्दर । ३ देखो 'भद्र' । –काळी = 'भद्रकाळी' ।–जात,जाति,जाती= 'भद्रजात' ।

भदरा–देखो 'भद्रा' ।

भदाउ, भदाउड़ो, भदाऊ, भदावुड़ो–देखो 'बधाऊ' ।

भदाह–स्त्री० अग्नि ।

भदोराय–स्त्री० आवड़देवो की बहन ।

भद्द–१ देखो 'भादवो' । २ देखो 'भद्र' ।

भद्दता–देखो 'भद्रता' ।

भद्दर–पु० [स० भद्राकरण] १ परिवार के वृद्ध की मृत्यु पर दाढ़ी, मूंछ व शिर के बाल मुंडवाने की क्रिया या भाव । मुण्डन । २ देखो 'भादवो' । —वि० १ मुण्डित । २ देखो 'भद्र' ।

भद्दव–देखो 'भादवो' ।

भद्दा–देखो 'भद्रा' ।

भद्दापण (पणो)–पु० [फा० बद] भद्दा होने की अवस्था या भाव । कुरूपता ।

भद्दो–वि० [फा० बद] (स्त्री० भद्दी) १ कुरूप, बदशक्ल । २ बेढंगा, बेडौल । ३ अशिष्ट, असभ्य, फूहड़ । ४ अप्रिय, कर्कश, अरुचिकर । ५ अश्लील, हेय ।

भद्र, भद्दु–पु० [सं० भद्र] १ सफेद हाथी । २ उत्तर दिशा का दिग्गज । ३ वृषभ, बैल । ४ शिव, महादेव । ५ सफेद रंग । ६ खंजन पक्षी । ७ स्वर साधन की एक विधि । ८ शिव का गण वीरभद्र । ९ जैनियों का एक व्रत । १० जैनियों के तीर्थंकर । ११ मेरु पर्वत । १२ कदम्ब वृक्ष । –वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ । २ कल्याण व मंगलकारी । ३ सभ्य, शिष्ट । ४ सज्जन, साधु । ५ कृपालु, दयालु । ६ भाग्यवान, समृद्ध । ७ शुभ । ८ अनुकूल । ९ सुन्दर, मनोहर । १० प्रशंसनीय । ११ प्रिय । १२ दंभी, पाखंडी । १३ देखो 'भद्दर' । —काळी–स्त्री० दुर्गा की १६ भुजाओं वाली मूर्ति । कात्यायनी । एक स्कन्द मातृका ।–जात, जाति, जाती, जातीउ, जातीनाग–पु० हाथी, गज । सफेद हाथी ।

भद्रक–पु० एक प्रकार का छन्द ।

भद्रक्षेमा–स्त्री० [सं० भद्रक्षेमा] दुर्गा देवी, भगवती ।

भद्रग–देखो 'भडग' ।

भद्रणो (बो)–क्रि० [सं० भद्र] अच्छा करना ।

भद्रतरणी–स्त्री० [सं०] गुलाब का एक फूल विशेष ।

भद्रता–स्त्री० [सं०] १ श्रेष्ठता, उत्तमता । २ अच्छाई । ३ सज्जनता, साधुता । ४ सुन्दरता, मनोहरता ।

भद्रपीठ–स्त्री० [सं०] राजा या देवता के अभिषेक का सिंहासन ।

भद्रबल्लभ–पु० बलराम का एक नाम ।

भद्रबाहुस्वामी–पु० [सं०] यशोभद्र के शिष्य व कल्पसूत्र के रचनाकार ।

भद्रसेन–पु० १ कंस द्वारा वधित देवकी का एक पुत्र । २ कुंती का एक पुत्र ।

भद्रसेध–पु० [सं० भद्र-क्षेम] कुशलता, क्षेम ।

भद्रा–स्त्री० [सं०] १ द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि की संज्ञा । २ दुर्गा, देवी । ३ पृथ्वी, अवनि । ४ गंगा की एक धारा । ५ अर्जुन की स्त्री, सुभद्रा । ६ श्रीकृष्ण की एक पत्नी । ७ कल्याणकारिणी शक्ति । ८ आकाश गंगा । ९ गौ, गाय । १० हल्दी । ११ दूब, दूर्वा । १२ छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक कन्या । १३ गौतम बुद्ध की एक शक्ति । १४ वनस्पति विशेष । १५ ज्योतिष में एक अशुभ योग । १६ आर्या गीत या 'खंधाण' का एक भेद विशेष । १७ फूहड़ स्त्री ।

भद्राकरण–पु० [सं०] मुण्डन क्रिया, हजामत ।

भद्रानंद–पु० संगीत में स्वर साधन की एक प्रणाली ।

भद्रासण–पु० [सं०] १ राजसिंहासन । २ कोई आसन विशेष । ३ कुर्सी ।

भद्रिका–स्त्री० [सं० भद्रा] १ ज्योतिष में योगिनी दशा के अन्तर्गत पांचवीं कक्षा । २ देखो 'भद्रा' ।

भद्रोत्तर–पु० जैनियों का एक व्रत ।

भनक, भनक–देखो 'भणक' ।

भननेटिय–पु० चक्कर ।

भपत–पु० चन्द्रमा, शशि ।

भपोभप–वि० अनुरूप, तुल्य, समान । हूबहू ।

भबकणो (बो)–देखो 'भभकणो' (बो) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भबकाणी (बो), भबकावणी (बो)–देखो 'भभकाणी' (बो) ।
भबकी–देखो भभकी' ।
भबकी–देखो 'भभकी' ।
भबबकणी (बो)–देखो 'भभकणी' (बो) ।
भबबकाणी (बो), भबबकावणी (बो)–देखो 'भभकाणी' (बो) ।
भबन–देखो 'भवन' ।
भबुतासिद्ध भबुतासिध–देखो 'विभूतासिध' ।
भबूत भबूती–देखो 'विभूति' ।
भभभकणी (बो)–देखो 'भभकणी' (बो) ।
भभक–स्त्री० १ गंध, बदबू । २ अग्नि, आग । ३ भड़कन । ४ भड़भड़ाहट । ५ धमौका । ६ सहसा सुलगने की क्रिया या भाव ।
भभकणी (बो)–क्रि० १ रह-रह कर जलना । २ जलते समय भभकना । ३ सहसा प्रज्वलित होना । ४ क्रोध में भड़कना । ५ फफक कर रोना । ६ तेज बदबू आना, दुर्गंध का झोंका आना । ७ सड़ना । ८ बुदबुदाना । ९ द्रव पदार्थ का तेजी से उमग कर आना । १० वाद्यों की ध्वनि होना । ११ उबलना, भाप की आवाज होना । १२ आवेश में आना ।
भभकभक–पु० ध्वनि विशेष ।
भभकाणी (बो)–क्रि० १ रह-रह कर जलाना । २ भभकाना, जलाना । ३ सहसा प्रज्वलित करना । ४ क्रोध में भड़काना । ५ फफक कर रुलाना । ६ सड़ाना । ७ वाद्य ध्वनि करना । ८ उबालना । ९ आवेश में लाना ।
भभकार–स्त्री० १ सड़ांध । २ बुदबुदाहट । ३ भभककर फूटने या बहने की क्रिया या भाव । ४ घोर गर्जना ।—वि० १ गहरा । २ देखो 'भभक' ।
भभकारणी (बो)–क्रि० सिंह आदि का गर्जना, दहाड़ना ।
भभकावणी (बो)–देखो 'भभकाणी' (बो) ।
भभकी–स्त्री० १ झूठी व दिखावटी धमकी । २ गहरी प्यास । ३ जलन, दाह ।
भभको–पु० १ आसवन यंत्र । नलिका यंत्र । २ सहसा चमक कर बुझने वाली अग्नि । ३ क्षणिक प्रकाश । ४ रोष, क्रोध । ५ उत्तेजना, उग्रता, आवेश । ६ चमक-दमक, तड़क-भड़क । ७ दिखावटी प्रभाव ।
भभबकणी (बो)–देखो 'भभकणी' (बो) ।
भभबको–देखो 'भभको' ।
भभरणी (बो)–क्रि० १ घबराना । २ भ्रम में पड़ना, चकराना ।
भभरुक, भभरूक, भभरुस–पु० एक कल्पित प्रेत । —वि० विकराल, प्रचण्ड ।
भभूत–देखो 'विभूति' ।
भभूतासिद्ध (सिध)–देखो 'विभूतासिद्ध' ।
भभूती–देखो 'विभूती' ।
भभीखण, भभीसण–देखो 'विभीसण' ।
भमंग–वि० [सं० भ्रमर-भृंग] काला, कृष्ण ।—पु० १ भौंरा भ्रमर । २ देखो 'भुजंग' ।
भमगर–पु० काला, सर्प, काला नाग ।
भमणी (बो), भमणी (बो)–देखो 'भवणी' (बो) ।
भमण–देखो 'भवन' ।
भमर–पु० १ एक छन्द विशेष । २ देखो 'भंवर' । ३ देखो 'भ्रमर' ।—कड़ी= भवरकली' ।—गुंजार='भंवरगुजार' । —गुफा– भंवरगुफा' । —छल='छलभंवर' । —जाळ= 'भंवरजाळ' ।
भमरड़ी, भमरडउ, भमरडी–देखो 'भंवर' ।
भमणियो–पु० १ चरखे का गोल चक्र । २ देखो 'भूंण' ।
भमरभार–स्त्री० एक प्रकार की भांग ।
भमरभोख–देखो 'भंवरभोख' ।
भमरभोळियो (ळो)–वि० सादा, सीधा, भोला ।
भमरलउ, भमरलु, भमरलो–१ देखो 'भंवर' । २ देखो 'भ्रमर' ।
भमरांण–१ देखो 'भ्रमर' । २ देखो 'भंवर' ।
भमराळी–देखो 'भंवराळी' ।
भमरावळि (ळी)–देखो 'भंवरावळी' ।
भमरी–स्त्री० [सं० भ्रमरी] स्त्री का एक प्रकार का आभूषण ।
भमरी, भमरी–१ देखो 'भ्रमर' । २ देखो 'भंवर' ।
भमळ (लि, ली)–१ देखो 'भ्रमर' । २ देखो 'भवळ' ।
भमहडी, भमहि–स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह ।
भमाड़णी(बो), भमाड़णी(बो), भमाणी (बो) भमावणी (बो)–देखो 'भवाणी' (बो) ।
भमावणकुंजर–पु० [सं० कुंजर-भ्रामक] भीम ।
भमियाळ–वि० जानकार, ज्ञाता ।
भमुह, भमुहिय–देखो 'भ्रू' ।
भम्मणी (बो)–देखो 'भवणी' (बो) ।
भम्मर–देखो 'भंवर' ।
भयंकर–वि० [सं०] १ डरावना, भयावह । २ विकराल, प्रचण्ड । ३ खतरनाक । ४ अत्यधिक, बहुत । ५ जबरदस्त, जोरदार । ६ विशाल ।
भयंकरता–स्त्री० [सं०] १ डरावनापन । २ विकरालता, प्रचण्डता । ३ प्रबलता । ४ अधिकता ।
भयंकरपीठ–पु० [सं० भयंकर+पृष्ठ] हाथी ।
भयंकरी–स्त्री० देवी का एक रूप विशेष ।
भयंकार, भयंकारी–देखो 'भयंकर' ।
भयंग–स्त्री० [सं० भू] १ पृथ्वी, भूमि । २ देखो 'भुजंग' ।
भयंगचर–पु० [सं० भुजंग-चर] १ गरुड़ । २ मोर, मयूर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भयंगर, भयंब–देखो 'भयंकर'।

भय–पु० [सं०] १ डर, खौफ, भीति। २ चिंता, आशंका, अनिष्ट की संभावना। ३ जोखिम। ४ बीमारी, रोग। ५ अधर्म द्वारा उत्पन्न एक राक्षस। ६ द्रोण का एक पुत्र।

भयकर, भयकार–देखो 'भयंकर'।

भयकारमुखी–स्त्री० [सं० भय-मुख] तोप। –वि० डरावने मुख वाली, विकराल मुख वाली।

भयचक–देखो 'भौंचक'।

भयट्ठाण–पु० [सं० भयस्थान] भयप्रद स्थान।

भयडि, भयडिहि–स्त्री० [सं० भ्रकुटि] भौंह।

भयणि (णी)–देखो 'बहन'।

भयव–पु० [सं०] १ सूअर, वराह। २ देखो 'भयदाई'।

भयवाई–वि० [सं०] १ डरावना, भयप्रद। २ डराने-धमकाने वाला।

भयनासण (न)–वि० [सं० भय-नाशिन्] भय, आशंका या कमजोरी मिटाने वाला, भयनाशक। –पु० ईश्वर, परमेश्वर।

भयपद, भयप्रद–वि० भयानक, डरावना, खतरनाक।

भयभंजक, भयभंजण–देखो 'भयनासण'।

भयभीत, भयभूत–वि० [सं० भयभीत] डरा हुआ, सहमा हुआ आशंकित, भ्रमित।

भयमोचण–देखो 'भयनासण'।

भयरव–देखो 'भैरव'।

भयरवी–देखो 'भैरवी'।

भयहर, भयहरण, भयहरता, भयहारी–वि० [सं० भय+हरण] डर और भय का हरण करने वाला।–पु० ईश्वर, परमात्मा।

भयांयक, भयांणंक–देखो 'भयानक'।

भयांण–पु० १ एक जाति विशेष का घोड़ा। २ देखो 'भयानक'।

भयांणउ–पु० १ एक प्रदेश का नाम। २ देखो 'भयानक'।

भयांणक (ख, ग)–देखो 'भयानक'।

भयांणी–देखो 'भयावणी'।

भयांन, भयांनक–वि० [सं० भयानक] १ जिससे भय लगता हो, भयप्रद, डरावना। २ प्रबल, प्रचण्ड। –पु० १ साहित्य में एक रस। २ बाघ। ३ राहु।

भयागर–देखो 'भयंकर'।

भयातिसार–पु० भय के कारण होने वाला अतिसार रोग।

भयातुर–वि० [सं०] भय से व्याकुल।

भयावणी (नी)–वि० डरावना, खौफनाक।

भयावह–वि० [सं०] डरावना, भयानक।

भरंग–वि० अत्यन्त काला, श्याम।

भर–पु० १ उत्तरदायित्व, जिम्मेवारी। २ संग्रह। ३ भराव। ४ रिक्तता का अभाव। ५ भार, बोझ। ६ तोल। ७ पूर्णता, यथेष्टता। ८ एक तोले का तौल। ९ तिल के कटे पौधों की, एक बार में बैलगाड़ी में भरने लायक मात्रा। १० बालू का टीला। –वि० १ कुल, समस्त, सब। २ पूर्ण, चरमोत्थिति में। ३ पोषक।—क्रि०वि० ४ तक पर्यन्त। ५ अवधि या परिमाण पर्यन्त। ६ अच्छी तरह, भली प्रकार से। ७ के, द्वारा, से। ८ देखो 'भेरी'।

भरकुट, भरकूट–देखो 'भ्रकुट'।

भरखमो, भरखणू, भरखिवो, भरखीवो–वि० (स्त्री० भरखमी) सहनशील, सहिष्णु।

भरग, भरगु–देखो 'भृगु'।

भरगुलता–देखो 'भ्रगुलता'।

भरड–स्त्री० ध्वनि विशेष।

भरडकोट–पु० एक प्राचीन दुर्ग।

भरडणो (बो)–क्रि० १ मारना, संहार करना। २ कुचलना; रौंदना। ३ दांतों से चबाना।

भरडा–स्त्री० एक जाति विशेष।

भरडो, भरडउ, भरडु–पु० १ उक्त जाति का व्यक्ति। २ श्वेत व स्याह रंग का घोड़ा।

भरडणो (बो)–देखो 'भरडणो' (बो)।

भरण, भरणको–वि० [सं० भृ] १ भरने वाला, परिपूर्ण करने वाला। २ पालन-पोषण करने वाला।—पु० १ भरने की क्रिया या भाव। २ पालन-पोषण। ३ क्षति पूर्ति। ४ बांस की खपचियों का बना, अनाज नापने का टोकरा। ५ मेघ, बादल। ६ तगारी, पात्र। ७ प्रथम गुरु के गणगण का नाम। ८ देखो 'भरणी'।

भरणनद, भरणनिबांण–पु० बादल।

भरणाटे, भरणाटै–क्रि०वि० वेग से, तेजी से। चक्र की तरह।

भरणाटो–पु० चक्कर।

भरणाणो (बो)–क्रि० १ भ्रमित करना, घुमाना। २ तेज घुमाना।

भरणियो–वि० भरने वाला।

भरणी–स्त्री० [सं०] १ सत्ताईस नक्षत्रों में से एक। २ एक प्रकार का शुभ लग्न। ३ सांप को चीर देने वाला कीड़ा विशेष। ४ काच, चीनी आदि का पात्र विशेष। ५ करघे की डरकी। ६ बुनाई में बाने का सूत।

भरणीजळ–स्त्री० उत्तर और ईशान के मध्य की दिशा।

भरणी–पु० [सं० भरण] १ सेवाओं के बदले दिया जाने वाला द्रव्य या पदार्थ, एवजाना, मुआवजा। २ क्षति पूर्ति। कमी पूर्ति।

भरणो (बो)–क्रि० [सं० भृ] १ अपेक्षित वस्तु से परिपूर्ण होना, रिक्त न रहना। २ रिक्तता की पूर्ति होना, अवकाश न रहना। ३ हृष्ट-पुष्ट होना, पुष्ट होना। ४ रिक्त पद पर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नियुक्ति होना । ५ भावावेश में आना । ६ तृप्ति या अरुचि होना । ७ सवारी, वाहन आदि पर लदान करना । ८ खड्डा, बिवर या दरार का पटना, बंद होना । ९ ओत प्रोत या तर होना, सन जाना । १० उत्साहित होना, आवेश में आना । ११ गर्भवती होना । १२ रिक्तता की पूर्ति करना । १३ रेखा या चित्र में रंग देना । १४ दंड देना, क्षति पूर्ति करना । १५ निर्वाह करना, निभाना । १६ कहना, शिक्षा देना; किसी के विरुद्ध भड़काना । १७ यंत्र संचालन की अपेक्षित क्रिया करना । १८ संग्रह करना । १९ सहमति देना । २० मापना ।

भरत–पु० [सं०] १ राजा दशरथ का एक पुत्र । २ राजा दुष्यन्त का पुत्र । ३ जड़ भरत नामक महायोगी । ४ नाट्य शास्त्र के प्रणेता सुविख्यात एक आचार्य । ५ लवा पक्षी का एक भेद । ६ प्रथम तीर्थंकर ऋषभ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम । ७ तांबा व रांगा मिश्रित एक धातु । ८ गहरी जमीन वाला खेत । ९ देखो 'भरती' । १० देखो 'वरत' । —क्षेत्र–पु० भारतवर्ष । —खंड, खेतर, खेत्र–पु० भारत वर्ष ।

भरतपुरिया–स्त्री० रामावत साधुओं की एक शाखा ।

भरतपुरियोमोटो–पु० १ भरत धातु निर्मित लुटिया, पात्र । २ अनिश्चित विचारों वाला व्यक्ति । (लाक्षणिक)

भरतर, भरतरि–पु० [सं० भर्तृ] १ उज्जैन के प्रसिद्ध राजा जो वैरागी हो गये । –स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि ।

भरतवीणा–स्त्री० एक प्रकार की वीणा ।

भरतार, भरता–पु० [सं० भर्तृ] १ युधिष्ठिर का एक नामान्तर । २ राजा । ३ पति । ४ स्वामी, मालिक । ५ नेता, नायक, प्रधान । ६ समर्थक, रक्षक । ७ ईश्वर ।

भरतार्ज–पु० [सं०] श्रीरामचन्द्र ।

भरताचारज, भरताचारय–पु० [सं० भरत+आचार्य] एक ऋषि का नाम ।

भरतार–पु० [सं० भर्तृ] १ पति । २ मालिक, स्वामी । ३ ईश्वर, मालिक ।

भरतियो–पु० [सं० भृत्य] १ नौकर, सेवक, अनुचर । २ क्षति पूर्ति । ३ भरत धातु का बना पात्र । ४ यति, तांत्रिक ।

भरती–स्त्री० १ रिक्त स्थान को भरने की क्रिया या भाव । २ चित्र आदि में रंग देने की क्रिया या भाव । ३ नियोजन, नियुक्ति । ४ प्रवेश, दाखिला । ५ क्षति पूर्ति । ६ भराव ।

भरतेसर, भरतेसर भरतेस्वर–पु० [सं० भरत-ईश्वर] आदिनाथ के पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत ।

भरथ–देखो 'भरत' ।

भरथरी–देखो 'भरतरी' ।

भरथाज–देखो 'भरताज' ।

भरथार–देखो 'भरतार' ।

भरद्वाज, भरद्वाज–पु० [सं० भरद्वाज] १ अंगिरसवंशीय एक सुविख्यात ऋषि । २ सप्तर्षियों में से एक । ३ भरत पक्षी । ४ पूर्व मन्वंतर के एक ब्रह्मर्षि । ५ एक अग्नि विशेष । ६ एक धर्म शास्त्रकार । ७ एक राजा विशेष । ८ वाल्मीकि ऋषि के शिष्य एक ऋषि ।

भरनी–देखो 'भरणी' ।

भरपाई–स्त्री० १ किसी वस्तु की प्राप्ति या प्राप्ति की सूचना । २ वसूली । ३ वसूली या प्राप्ति के प्रति की जाने वाली रसीद । –क्रि०वि० पूर्ण रूप से, पूरी तरह ।

भरपूर–वि० १ भरा पूरा, परिपूर्ण । २ यथेष्ट, पर्याप्त । ३ आवश्यकता की पूर्ति के लिये खूब । ४ पूर्ण विकास की दशा में । ५ पूरी क्षमता या जोर के साथ ।

भरभंड–वि० धूलि धूसरित ।

भरभार–पु० उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

भरभोलियो–देखो 'भड़भोलियो' ।

भरम–पु० [सं० भ्रम] १ संशय, सन्देह, शंका, अविश्वास । २ भेद, रहस्य । [सं० भर्मन्] ३ मिथ्या ज्ञान । ४ गलत फहमी । ५ झूठी आशा या विश्वास । ६ गुंजाइश । ७ सार तत्त्व । ८ अवतार । ९ वेतन, मजदूरी । १० विश्वास, साख । [सं० भर्मन्] ११ स्वर्ण, सोना ।

भरमकारी–देखो 'भ्रमकारी' ।

भरमजाळ–देखो 'भवरजाळ' ।

भरमण–देखो 'भ्रमण' ।

भरमणा–स्त्री० [सं० भ्रम] १ भ्रम, संदेह । २ विश्वास भरोसा । ३ धोखा । ४ भूल, गलती । ५ मन में होने वाला अनिश्चय ।

भरमणो (बो)–देखो 'भ्रमणो' (बो) ।

भरमाणो (बो)–देखो 'भ्रमाणो' (बो) ।

भरमाभरमी–स्त्री० १ भ्रम के कारण होने वाली स्थिति । २ भुलावा । ३ भरोसा ।

भरमार–स्त्री० [सं०] अधिकता, बाहुल्य, प्रचुरता । पूर्ति ।

भरमावणो (बो)–देखो 'भ्रमाणो' (बो) ।

भरमासतक–पु० सिकलीगर ।

भरम्म–देखो 'भरम' ।

भरराट–पु० ध्वनि विशेष ।

भरराणो (बो), भररावणो (बो)–क्रि० १ भर्र-भर्र की आवाज होना । २ चक्कर आना । ३ उड़ना ।

भरळ–स्त्री० उट-पटांग बकने की क्रिया । –क्रि०वि० १ चमचमाता हुआ । २ एकाएक, अकस्मात । ३ निरन्तर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भरळकणी (बो), भरळक्कणी (बो)–क्रि० १ चमकना, चमचमाना। २ प्रज्वलित होना, सुलगना। ३ कोप करना, क्रोध करना। ४ बकना।

भरळकी–पु० १ झलक, झांकी। २ सहसा कुछ दिख जाने की क्रिया या भाव। ३ चमक-दमक। ४ बिजली की चमक। ५ आग की लपट, ज्वाला।

भरळाट (टी)–पु० १ चमक-दमक। २ आग की लपट ज्वाला। ३ क्रोध, गुस्सा।

भरळाटतन–पु० सूर्य।

भरवाई–स्त्री० [सं० भरण] १ भरवाने का कार्य। पूर्ति का कार्य। २ रिक्तता पूर्ति का कार्य। ३ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।

भरवाड़ (डी)–पु० पशुपालक एक जाति विशेष।

भरवाड़ी–पु० (स्त्री० भरवाड़ी) भरवाड़ जाति का व्यक्ति।

भरवाणी (बो)–देखो 'भराणी' (बो)।

भरसक–क्रि०वि० यथा शक्ति। आवश्यकतानुसार।

भरसूंडी–पु० मुंह, मुख।

भरह–देखो 'भरत'।—खंड = 'भरतखंड'।

भरहपुराण–पु० [सं० भरतपुराण] भरत मुनि का नाट्य शास्त्र।

भरहमंभ–पु० एक वाद्य विशेष।

भरहर–पु० १ भेरी आदि वाद्यों की ध्वनि। २ एक दिशा का नाम।

भरहरउ, भरहरी–देखो 'भररी'।

भरहरबो (बो)–क्रि० भेरी आदि का बजना।

भरहसंगीत–पु० [सं० भरत-संगीत] भरत मुनि द्वारा रचित संगीत।

भरहेर–देखो 'भरहर'।

भरहैरवय–पु० [सं० भरत+ऐरावत] एक क्षेत्र का नाम।

भरात–१ देखो 'भ्रात'। २ देखो 'भराव'।

भरांति–देखो 'भ्रांति'।

भराई–देखो 'भरवाई'।

भराजक–देखो 'भ्राजक'।

भराणी (बो)– क्रि० [सं० भरण] १ पात्र, खड्डा या रिक्त स्थान को परिपूर्ण कराना, भरवाना। २ वसूल कराना, अदायगी कराना। ३ रिक्तता या अवकाश न रखाना। ४ रिक्त पद पर नियुक्ति कराना। ५ पशु या सवारी पर बोझा लद वाना। ६ छेद या दरार बंद करवाना। ७ सजाना, ओत-प्रोत कराना। ८ संग्रह कराना। ९ चित्र में रंग लगवाना। १० निर्वाह कराना। ११ घोड़ी को गर्भवती कराना। १२ कहलवाना। १३ तृप्ति, संतोष या तुष्टि कराना। १४ अशुचि कराना। १५ किसी यंत्र में स्याही आदि भिरवाना। १६ कबूल कराना, सहमति कराना। १७ क्षतिपूर्ति कराना।

भरात (थ)–१ देखो 'भारत'। २ देखो 'बरात'।

भरारियो–पु० गेहूं आदि के भूसे को सुरक्षित रखने के लिये बनाया घास का घेरा, ढेर।

भरारी–देखो 'भररी'।

भराव–पु० [सं० भरण] १ भरने की क्रिया या भाव। २ भुगतान कराना, चुकवाना। ३ भरी जाने वाली वस्तु। ४ रिक्त स्थान की पूर्ति के लिये खींची जाने वाली रेखा। ५ निचली सतह पर स्थित कृषि भूमि। ६ खेत का निचला हिस्सा। ७ फोड़े-फुंसी में पीप भरने की दशा। ८ स्वीकारात्मक शब्द। ९ एकत्र किया मलबा। १० देखो 'भरेत'।

भरावणी (बो)–देखो 'भराणी' (बो)।

भरावा–स्त्री० ठठेरा जाति की एक शाखा।

भरित–वि० भरा हुआ, परिपूर्ण।

भरिया–पु० छोटे बच्चे का मल, विष्टा।

भरियावळि–वि० गर्वपूर्ण।

भरियोगवाड़–पु० १ गायों, मवेशियों से परिपूर्ण होने की अवस्था। २ वैभव सम्पन्न घर।

भरियोडोस–पु० हृष्ट-पुष्ट देह, स्वस्थ शरीर।

भरियोतरियो–वि० १ भरा हुआ परिपूर्ण। २ वैभवपूर्ण, सम्पन्न।

भरियोभरम–पु० विश्वास।

भरी–१ देखो 'भर'। २ देखो 'बरी'।

भरुज–पु० [सं०] गीदड़, लगास।

भरूंट–देखो 'भुरंट'।

भरूंटो–पु० १ भारी गट्ठर। २ देखो 'भुरंट'।

भरूआड़ी–देखो 'भरवाड़'।

भरूवाड़ी–देखो 'भरवाड़ी'।

भरूवड़–देखो 'भरवाड़'।

भरेत–पु० १ वर्षा का पानी एकत्र होने वाली नीची भूमि। २ निचली सतह की कृषि भूमि।

भरेहर–देखो 'भरहर'।

भरै–वि० १ कारगर, सफल। २ माफिक, पक्ष में। ३ उपलब्ध। ४ फायदे में।

भरोटी, भरोटो–वि० १ भारी वजन वाला। २ देखो 'भरूंटो'। ३ देखो 'भुरंट'।

भरोडा–पु० आंख की पुतलियों में होने वाला एक रोग।

भरोती–स्त्री० १ एक प्रकार का कर। २ प्रमाण, सबूत। २ पुष्टि, समर्थन। ४ प्राप्ति-रसीद। ५ देखो 'भारती'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भरोस–देखो 'भरोसो'।

भरोसादार (बंद, बंध)–वि० विश्वास-पात्र। विश्वसनीय।

भरोसो–पु० १ दृढ़ विश्वास। २ विश्वास। ३ आश्रय, सहारा. अवलंब। ४ आशा, उम्मीद।

भळ–१ देखो 'भळावण'। २ देखो 'वळै'। ३ देखो 'वळ'। ४ देखो 'भलो'।

भळ, भळ–वि०१ बहुत अधिक। २ देखो 'भलां'। ३ देखो 'वळै'। ४ देखो 'भलो'। ५ देखो 'भालो'। ६ देखो 'वळ'।

भळइ (ई)–१ देखो 'भलै'। २ देखो 'भळाई'। ३ देखो 'भलाई'। ४ देखो 'भलो'।

भळउ–देखो 'भलो'।

भळक–स्त्री० चमक, कांति।

भळकणो–वि० (स्त्री० भळकणी) चमकदार, कांतियुक्त।

भळकणो (बो)–क्रि०१ चमकना, कांति युक्त होना। २ प्रकाशित होना।

भळकाणो(बो)–क्रि०१ चमकाना, कांति युक्त करना। २ प्रकाशित करना।

भळकार–स्त्री० १ तीर। २ चमक, झलक।

भळकारो–पु० १ चमक, प्रकाश। २ झलक, आभास।—वि० चमकने वाला, चमकयुक्त।

भळकावणो (बो)–देखो 'भळकाणो' (बो)।

भळको–पु०१ चमक,कांति। २ झलक। ३ एक आभूषण विशेष।

भळको–पु० १ तीर, बाण। २ देखो 'भालो'।

भळवकणो (बो),–देखो 'भळकणो' (बो)।

भळवको–देखो 'भालो'।

भळवो (बो)–क्रि०१ उत्तरदायित्व लेना, संभालना। २ स्वीकार कर लेना। ३ देखो 'भिळणो' (बो)।

भळपण (णो)–पु० १ भलाई, अच्छापन। २ यश, कीर्ति।

भळभ–वि० क्रुद्ध, कुपित।

भळभट (ट्ट)–वि० आग बबूला।

भळभळ, भळभळाट–देखो 'भळळ'।

भळभळाणो (बो)–क्रि० चमकना।

भळभळो–वि० स्वाद में कुछ कड़वा। (स्त्री० भळभळी)

भळम–पु० १ अच्छापन, भलाई। २ यश, कीर्ति। ३ सुन्दरता, खूबसूरती।

भळमनसत, भळमनसात, भळमनसाहत, भळमनसाहो, भळमनसो, भळमाणसो–स्त्री० इन्सानियत, सज्जनता, शराफत।

भळम्भळ–स्त्री० चमक।

भळळ, भळळाट, भळळाटो, भळहळ–स्त्री० १ चमक, कांति। २ तेज। ३ प्रकाश।

भळहळणो (बो)–क्रि० १ चमकना, दमकना। २ प्रज्वलित होना।

भळहोडो–देखो 'भलो'।

भळां,भळांई, भळांहो–वि० १ ठीक, उचित, वाजिब। २ अच्छा।—क्रि०वि० १ शौक से, खुशी से, प्रसन्नता से। २ बिना आपत्ति से। ३ चाहे, इच्छा से, स्वेच्छा से।

भळांण, भळांमण, भळांवण, भळांवणो–देखो 'भोळावण'।

भळाई–स्त्री० १ भला होने की अवस्था या भाव। २ अच्छापन। ३ सज्जनता। ४ परोपकार, उपकार। ५ यश, कीर्ति। ६ हित, लाभ।

भळाको–पु० १ चमक-दमक। २ देखो 'वळाको'।

भळाणो (बो)–देखो 'भोळाणो' (बो)।

भळापण (पणो)–पु० १ भला होने की अवस्था या भाव। २ भलाई, सज्जनता।

भळाभळ–पु० जगमगाहट, चमचमाहट।

भळामण–देखो 'भोळावण'।

भळाव, भळावण–देखो 'भोळावण'।

भळावणो (बो)–देखो 'भोळाणो' (बो)।

भळाहळ–देखो 'भळाभळ'।

भळाहो–देखो 'भलाई'।

भळिउ–देखो 'भलो'।

भळियार–पु० बीज बोने का उपकरण।

भळिम, भळिमि (मी)–देखो 'भलम'।

भळीभांत, भळीभांति–क्रि०वि० पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से। उचित ढंग से।

भळु, भळू–देखो 'भलो'।

भळे–देखो 'वळै'।

भळे–अव्य० प्रशंसा सूचक ध्वनि, अच्छा!

भळेई–देखो 'भलांई'।

भळेरउ, भळेरड़ो, भळेरडो, भळेरो–देखो 'भलो'।

भळेवड़ो–पु० बैल के शिर में सींगों में बांधी जाने वाली रस्सी।

भळै–अव्य० १ स्वतः उच्चारित वर्णात्मक शब्द, स्वर। २ देखो 'वळै'।

भळैटिया–पु० (ब.व.) अक्षरों की टेढ़ी-तिरछी रेखाएँ। प्रारंभिक ज्ञान के अक्षर।

भलोड़ो, भलो, भलोस–पु० [सं० भद्र] (स्त्री० भली) १ भलाई, हित। २ मंगल, कल्याण। ३ नफा, लाभ। ४ परोपकार।—वि० १ अच्छा, बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम। २ ठीक, उचित। ३ खूब, अधिक, प्रचुर। ४ श्रेयस्कर, उचित। ५ शोभनीय। ६ रोगरहित, स्वस्थ। ७ सदाचारी, सज्जन। ८ उच्च, महान्। ९ रुचिकर। १० अच्छी बनावट का। ११ कल्याणकारी, मंगलमय। १२ प्रशंसनीय। १३ प्रिय। १४ संतोषजनक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भल्ल–१ देखो 'भलो'। २ देखो 'भालो'।
भल्लअर–देखो 'भल्लयर'।
भल्लक–पु० [सं०] रीछ, भालू।
भल्लकणी (बो)–देखो 'भळकणी' (बो)।
भल्लयर–वि० भला, श्रेष्ठ।
भल्लियो, भल्लो–१ देखो 'भलो'। २ देखो 'भालो'।
भवग–देखो 'भुजंग'।
भवंर–१ देखो 'भंवर'। २ देखो 'भ्रमर'।
भव–पु० [सं०] १ संसार, जगत। २ महादेव, शिव। ३ जन्म। ४ यमराज। ५ स्वर्ग। ६ जीवन। ७ कारण, हेतु। ८ कामदेव। ९ श्रीरामचन्द्र। १० बादल, मेघ। ११ मांस। १२ कल्याण, मंगल। १३ कुशल-क्षेम। १४ सत्ता। १५ अस्तित्व। १६ निकास। १७ स्वास्थ्य। १८ प्राप्ति। १९ श्रेष्ठता। २० ग्यारह की संख्या।–वि० [सं० भवत्] १ होने वाला। २ वर्तमान।–क्रि०वि० ३ हरगिज, कभी भी।
भवक–देखो 'भविक'।
भवकेतु–पु० पूर्व दिशा में कभी-कभी दिखने वाला पुच्छल तारा।
भवकी–पु० १ धड़कन। २ देखो 'भभकी'।
भवड़–देखो 'बहू'।
भवण–१ देखो 'भवळ'। २ देखो 'भवन'। ३ देखो 'भूंण'। ४ देखो 'भ्रमण'।
भवणपति भवणवई, भवणवइदेव–देखो 'भवनपति'।
भवणो (बो)–क्रि० [सं० भू] १ होना। २ देखो 'भंवणो' (बो)।
भवतवता–देखो भवितव्यता'।
भवतव्य–देखो 'भवितव्य'।
भवतव्यता–देखो 'भवितव्यता'।
भवतात–पु० [सं०] सूर्य, आदित्य।
भवतारक, भवतारण, भवतारन–पु०[सं०] १ ईश्वर, परमात्मा। २ श्रीकृष्ण।
भवती–पु० एक प्रकार का जहरीला बाण।
भवधरण–वि० [सं०] संसार को धारण करने वाला।—पु० ईश्वर।
भवनंतर–पु० जन्मान्तर।
भवन–पु० [सं०] १ गृह, मकान। २ महल, प्रासाद। ३ देवालय, मंदिर। ४ संसार, जगत। ५ खंड, टुकड़ा। ६ डेरा, विश्राम। ७ स्थान। ८ अस्तित्व। ९ उत्पत्ति। १० छप्पय छंद का एक भेद। ११ ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। १२ देखो 'भुवन'।—पति, पती–पु० घर का स्वामी, गृह स्वामी। ग्रहों का स्वामी। ईश्वर। जैन देवताओं का वर्ग।
भवनार–स्त्री० [सं० भवनारी] १ पार्वती। २ वेश्या।
भवनेस–पु० [सं० भवन+ईश] गृह स्वामी, भवन का मालिक।
भवपंकी–पु० जन्मरूपी दलदल'।
भवपाळी–स्त्री० [सं० भव-पाली] संसार की पालक भुवनेश्वरी देवी।
भवपिति, भवपिता–पु० [सं० भव-पिता] ब्रह्मा।
भवप्राण–पु० [सं० भवप्राण] पार्वती।
भवबंधन–पु०[सं०] १ सांसारिक कष्ट एवं दुःख। २ जन्म-मरण का चक्र।
भवबुद्ध–वि० [सं०] संसार को जागृत या प्रबुद्ध करने वाला।
भवभंजण (न)–वि० [सं० भव-भंजन] १ ईश्वर, परमात्मा। २ यमराज, काल।
भवभय–पु० [सं०] बार-बार जन्म-मरण का भय।–हरण–पु० ईश्वर, परमात्मा। श्रीकृष्ण।
भवभामिनी–स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ वेश्या।
भवमोचक, भवमोचन–वि० संसार के बंधन छुड़ाने वाला।—पु० ईश्वर, परमात्मा।
भवर, भवरियो–१ देखो 'भंवर'। २ देखो 'भ्रमर'। –गुंजार='भंवरगुंजार'।–जाळ='भंवरजाळ'।–तिलक='भंवरतिलक'।
भवळ–देखो 'भंवळ'।
भवलोस–स्त्री० शिव, महादेव।
भव-वांमा–स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ वेश्या।
भवविलास–पु० [सं०] १ सांसारिक सुख। २ माया जाल।
भवस–पु० १ यवन, मुसलमान। [सं० भविष्यत्] २ भावी, होनहार। ३ देखो 'भविस्य'।
भवसउ–पु० [सं० भव+शतक] सौ जन्म।
भवसागर, भवसायर, भवसिंधु–पु० [सं०] संसार रूपी समुद्र।
भवसि–१ देखो 'भवस'। २ देखो 'भविस्य'।
भवसुत्ता–स्त्री० नदी।
भवस्त, भवस्स–१ देखो 'भविस्य'। २ देखो 'भवस'।
भवांणी–देखो 'भवांनी'।
भवांतर–देखो 'भवनंतर'।
भवांन–सर्व० [सं० भवत्] आप।
भवांनी–स्त्री० [सं० भवानी] १ पार्वती। २ दुर्गा, शक्ति। ३ एक चिड़िया विशेष। ४ उल्लू जाति का एक पक्षी विशेष। ५ एक रागिनी।
भवांनीरथ–पु० [सं०] सिंह।
भवा–स्त्री० पार्वती।
भवाइया–स्त्री० एक जाति विशेष।
भवाड़णी (बो), भवाड़णी (बो), भवाणी (बो)–क्रि० [सं०भव] १ करना। २ शोभायमान करना। ३ देखो'भंवाणी' (बो)। ४ बोवाई कराना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भवापत (पति)–पु० [सं० भवा-पति] शिव ।
भवाब्धि–पु०. [सं०] संसार-सागर, जगत ।
भवाळ–पु० [सं० भूपाल] राजा ।
भवावणी (बी)–देखो 'भवाणी' (बी) ।
भवि–वि० भवजीव, मुक्तिगामी प्राणी । –क्रि०वि० १ पुनः फिर । २ देखो 'भय' । ३ देखो 'भव' । ४ देखो 'भावी' ।
भविक–वि० [सं०] १ संसार का, ससार संबंधी । २ सिद्धि प्राप्त होने के योग्य । ३ मोक्ष पाने योग्य जीव । –जन–पु० सांसारिक प्राणी ।
भवितव्य–वि० [सं०] १ भावी, होने वाला, होनहार । २ अवश्यम्भावी ।
भवितव्यता–स्त्री० [सं०] १ होनी, भावी, होनहार । २ प्रारब्ध, भाग्य, किस्मत ।
भविय–१ देखो 'भव्य' । २ देखो भविक' । —जण, जन= 'भविकजन' ।
भविस्य–पु० [सं० भविष्य] १ आने वाला समय, आगामी काल, क्षण । २ वर्तमान के बाद का समय । –वि० १ आगे होने वाला, आने वाला । २ प्रत्यासन्न, निकट । —वाणी–स्त्री० आगे घटने वाली बात की घोषणा ।
भविस्यत–पु० [सं० भविष्यत्] आगामी समय ।
भविस्स–देखो 'भविस्य' ।
भवी–१ देखो 'भव' । २ देखो 'भावी' । ३ देखो 'भवि' ।
भवीक–१ देखो 'भविक' । २ देखो 'भव्य' ।
भवे, भवें–क्रि० वि० हरगिज, कतई, कभी भी ।
भवेस, भवेस–पु० [सं० भव+ईश] १ संसार का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा । २ शिव, महादेव । ३ देखो 'भवस' ।
भवोदधि–पु० [सं० भव-उदधि] संसार सागर ।
भवोभव–पु० [सं० भव] जन्म-जन्मान्तर ।
भवो–देखो 'भव' ।
भव्य, भव्यक–पु० [सं०] १ कुशल क्षेम । २ शिव, महादेव । ३ देवगणों का समूह विशेष । ४ चाक्षुप् मन्वंतर का एक देव । ५ ध्रुव राजा का एक पुत्र । –वि० १ सुन्दर, मनोहर । २ शुभ, मंगलकारी । ३ योग्य, लायक । ४ भविष्य में होने या आने वाला । ५ मोक्ष योग्य ।
भव्या–स्त्री० [सं०] उमा, पार्वती ।
भव्व–देखो 'भव' ।
भसंधि–स्त्री० [सं० भ+संधि] ज्योतिष में एक नक्षत्र संधि ।
भस–स्त्री० १ किसी पदार्थ की असह्य गंध । २ देखो 'भस्म' ।
भसण, भसणड–देखो 'भुसणी' ।
भसम, भसम्म–देखो 'भस्म' ।
भसमागि–स्त्री० [सं० भस्म-अग्नि] भस्म करने वाली आग, तीव्र ज्वाला ।
भसमासुर–देखो 'भस्मासुर' ।
भसमी–देखो 'भस्म' ।
भसमीय–वि० [सं० भस्म] १ भस्म जैसा, भस्म की तरह । २ भस्म के रंग का । ३ भस्म की तरह महीन ।
भसम्मी–देखो 'भस्म' ।
भसर–पु० भौंरा ।
भसुंड, भसूंड–पु० [सं० भृग्-शुण्ड] हाथी, गज । –वि०राख या धूल से भरा ।
भस्त–देखो 'बहिस्त' ।
भस्म–स्त्री० १ लकड़ी, कंडे आदि के जलने के बाद बची रहने वाली राख । २ चिता की राख । ३ हवन कुण्ड या धूनी की राख । ४ किसी औषधि की राख, भस्मौषधि । –वि० जल कर राख बना । —अंगी–पु० भस्म के रंग का घोड़ा । –वि० जिसके अंग पर भस्म लगी हो । धूलि-धूसरित ।
भस्मक–पु० [सं०] १ एक रोग विशेष । २ भस्मासुर का एक नाम । –वि० भस्म करने वाला ।
भस्मकारी–वि० भस्म करने वाला ।
भस्माकर–देखो 'भस्मासुर' ।
भस्मागनी–स्त्री० शरीरस्थ पंचाग्नियों में से एक ।
भस्मासुर–पु० शिवोपासक एक प्रसिद्ध राक्षस ।
भस्मीभूत–वि० [सं०] जल कर राख हुआ ।
भहंगी–स्त्री० पत्थर ढोने की, लकड़ी की टोकरी । (मेवात)
भहु–देखो 'भू' ।
भहराणी (बी)–देखो 'भरराणी' (बी) ।
भहरी–१ देखो 'भंवारी' । २ देखो 'भारी' ।
भहु–देखो 'बहू' ।
भां–देखो 'भांय' ।
भांकार, भांकारि–स्त्री० १ भेरी नामक वाद्य । २ भेरी नामक वाद्य की ध्वनि ।
भांख–स्त्री० तलहटी ।
भांखड़ी–स्त्री० एक वनस्पति विशेष ।
भांखणी (बी)–क्रि० [सं० भा+अंकन] रोटी पर थोड़ी मात्रा में घी आदि लगाना, चुपड़ना ।
भांखी–पु० घी, तेल आदि का हल्का लेपन, चुपड़न ।
भांग–स्त्री० [सं० भंगा] १ एक प्रसिद्ध मादक वनस्पति । २ इस वनस्पति को घोट कर बनाया गया पेय ।
भांगड़–वि० भंग का नशेबाज, भंगेड़ी ।
भांगड़भुतड़, भांगड़भूतड़–वि० १ भंग में मस्त रहने वाला । २ उन्मत्त, मदमस्त । ३ बेपरवाह ।
भांगड़ली, भांगड़ी–देखो 'भांग' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भांगड़ो–पु० १ एक औषधि विशेष, भांगरा । २ देखो 'भंगेड़ो' ।

भांगण–स्त्री० [सं० भंग] १ तोड़ने, भंग करने की क्रिया या भाव । २ वध, हत्या ।

भांगणो–वि० [सं० भंग्] १ निवारण करने, मिटाने वाला । २ विध्वंसक । संहारक । ३ मारने, पीटने वाला । ४ तोड़-फोड़ करने वाला । ५ खण्डित, भंग करने वाला ।

भांगणो (बो)–क्रि० [सं० भंग्] १ तोड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना, खण्डित करना । २ खर्च करना । ३ भंग करना । ४ मार-पीट करना । ५ निवारण करना, मिटाना । ६ विनाश करना, विध्वंस करना । ७ पराजित करना, हराना । ८ लूटना । ९ मिटाना, नष्ट करना । १० संहार करना, मारना । ११ नियम तोड़ना । १२ व्यय या खर्च करना । १३ प्रकट करना ।

भांगरी–स्त्री० एक प्रकार की घास ।

भांगरो–पु० [सं० भृंगराज] एक प्रकार का क्षुप ।

भांगा–स्त्री० [सं० भंग] बिगाड़, खराबी ।

भांगि, भांगी–देखो 'भांग' ।

भांगेसुर–पु० [सं० भंगा-ईश्वर] १ भंग । २ शिव, महादेव । ३ भगेड़ी ।

भांगेड़ी–देखो 'भगेड़ी' ।

भागो–पु० १ टुकड़ा, खण्ड, अंश । २ विघ्न, बाधा ।

भांज–स्त्री० १ तोड़ने-मरोड़ने की क्रिया या भाव । २ विघ्न, बाधा । ३ पंचायती । ४ विभाजन । ५ टूटन ।

भांजक–वि० [सं० भंग्] भंग करने वाला, तोड़ने वाला –स्त्री० बाधा, विघ्न ।

भांजघड़–स्त्री० [सं० भंग-घट्] १ पशोपेश, संकल्प-विकल्प, अनिश्चितता की दशा । २ विवाद । ३ चिंतन, विचार । ४ तोड़-जोड़ । ५ संकल्प । ६ सलाह ।

भांजणो–देखो 'भांगणो' ।

भांजणो (बो)–देखो 'भांगणो' (बो) ।

भांड–पु० [सं० भंड] १ हास्यास्पद क्रियाएँ करने वाली एक याचक जाति । २ उक्त जाति का व्यक्ति । –वि० मुंह-फट, बेशर्म ।

भांडणो (बो)–क्रि० १ बदनाम करना । २ निंदा करना । ३ प्रताड़ना देना ।

भांडग्री–पु० एक आदमकद पौधा जो औषधि में काम आता है ।

भांडपति–पु० कोषाध्यक्ष ।

भांडाई–स्त्री० १ निंदा करने की क्रिया या भाव । २ भांड द्वारा किया जाने वाला स्वांग रचना का कार्य । ३ निंदा ।

भांडागार, भांडागार–पु० [सं० भंड+आगार] कोष, खजाना ।

भांडागारिक–पु० कोषाध्यक्ष ।

भांडार–देखो 'भंडार' ।

भांडेक–वि० १ किसी कार्य को सुचारु रूप से पूरा करने वाला । २ निंदक । ३ देखो 'भांड' ।

भांडो–पु० [सं० भंड] १ बड़ा पात्र, जल पात्र । २ शरीर ।

भांणग–पु० एक प्रकार का वाद्य ।

भांण–१ देखो 'बांण' । २ देखो 'भांनु' । ३ देखो 'बहन' ।

भांणउगवण, भांणउगांथ–पु० [सं० भानु-उदय] सूर्योदय ।

भांणउगाळी–स्त्री० [सं० भानु-उदयकाल] सूर्योदय का समय ।

भांणकुळ–पु० सूर्यवंश ।

भांणकुळजा–स्त्री० सूर्यवंशजा ।

भांणजड़ो, भांणजो–पु० बहन का पुत्र ।

भांणनंद–पु० [सं० भानु-नंद] १ सूर्यपुत्र दानवीर कर्ण । २ यमराज । ३ राहु । ४ सुग्रीव । ५ शनि ।

भांणनंदा–स्त्री० [सं० भानु+नंदा] सूर्य पुत्री यमुना ।

भांणबंस–पु० सूर्यवंश ।

भांण-भांणकुळ–पु० [सं० भानुकुल-भानु] १ सूर्यवंश के सूर्य श्रीराम । २ ईश्वर ।

भांणरांणी–स्त्री० [सं० भानु+राज्ञी] देवी, दुर्गा ।

भांणव–पु० [सं० भाणव] १ काव्यकार, कवि । २ उत्तम वक्ता ३ चारणों की एक उपाधि ।

भांणसुत (सुतन)–पु० [सं० भानु सुत] यम, शनि, कर्ण, सुग्रीव ।

भांणसुता–स्त्री० [सं० भानुसुता] यमुना ।

भांणू–१ देखो 'भांनु' । २ देखो 'भांणेज' ।

भांणेज (जो)–पु० [सं० भगिनी+ज] (स्त्री० भांणजी, भांणेजी) बहिन का पुत्र । भानजा ।

भांणो–पु० १ खाद्य सामग्री से युक्त भोजन का पात्र । २ भोजन । ३ देखो 'भानु' ।

भांत, भांतड़ली–स्त्री० [सं० भाति] १ प्रकार, किस्म । २ विशेष ढंग या परिरूप । ३ भिन्नता । ४ तुलनात्मक दृष्टि से भेद; अन्तर । ५ देखो 'भांति' ।

भांत भंतीलो–वि० (स्त्री० भांतभंतीली) तरह-तरह का, विभिन्न प्रकार का ।

भांतर–१ देखो 'भांत' । २ देखो 'भांति' ।

भांति–स्त्री० १ प्रकार, तरह, किस्म । २ चाल-ढाल, रंग-ढंग । ३ आचार व्यवहार की मर्यादा । ४ प्रथा, रीति । ५ अनुरूप –क्रि०वि० प्रकार से, तरह से ।

भांन–पु० [सं० भानं] १ प्रकाश, रोशनी । २ ज्ञान, प्रतीति । ३ अनुभव । ४ नाश, ध्वंस । ५ प्राकट्य, प्रकाशन, प्रादुर्भाव ६ देखो 'भानु' ।

भांनणो (बो)–देखो 'भांगणो' (बो) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भानमति (ती)–देखो 'भानुमति'।

भानवी–स्त्री० [सं० भानवी] यमुना नदी।

भानु–पु० [सं० भानु] १ सूर्य, भास्कर। २ विष्णु। ३ किरण। ४ आक, मदार। ५ पन्द्रहवें अर्हित के पिता का नाम। ६ कश्यप का एक पुत्र। ७ श्रीकृष्ण का पुत्र एक महारथी। –स्त्री० ८ दक्ष की कन्या।

भानुकाअमावस–स्त्री० [सं० भानुका अमावस्या] जेष्ठ कृष्ण अमावस्या।

भानुज–पु० [सं० भानुज] यम, शनि, कर्ण, सुग्रीव। –वि० सूर्य से जन्मा।

भानुजा, भानुतनया, भानुतनूजा–स्त्री० यमुना नदी, राधा।

भानुपाक–पु० [सं०] धूप से पकी औषधि।

भानुप्रताप–पु० १ कैकय के राजा सत्यकेतु। २ सूर्य का प्रताप, तेज।

भानुमती–स्त्री० [सं० भानुमती] १ अंगिरस ऋषि की बड़ी पुत्री का नाम। २ सगर राजा की रानी का एक नाम। ३ राजा विक्रमादित्य की रानी। ५ नटों से मिलती-जुलती एक मुसलमान जाति व इस जाति की स्त्री। ६ गंगा।

भानुमांनु, भानुरथ–पु० बृहदश्व के पुत्र का नाम।

भानुवार–पु० [सं० भानुवार] रविवार, इतवार।

भानुसप्तमी–स्त्री० [सं० भानुसप्तमी] १ माघ शुक्ला सप्तमी। २ रविवार को आने वाली सप्तमी।

भानुसुत–पु० [सं० भानुसुत] यम, शनि, राहु, कर्ण, सुग्रीव।

भानू–पु० [सं० भानु] १ अग्नि, आग। २ देखो 'भानु'।

भापटी–स्त्री० बांस की खपची।

भापणी, भापणी–पु० पलक के बाल। पलक।

भापणो (बो)–क्रि० १ स्थिति या बात का अनुमान लगाना। २ ताड़ लेना। ३ परिस्थिति की गंभीरता समझना।

भाब–स्त्री० १ गांव भांभी की पदवी। २ इस पदवी के साथ दिया जाने वाला धन या वस्तु। ३ भांभियों का कार्य।

भाबटी, भाबिड़ी, भाबी–स्त्री० (स्त्री० भावणा, भाबणी) १ चमड़े या जूते की सिलाई का काम करने वाली जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

भाभर–पु० जोश, आवेश।

भाभरभोळव, भाभरभोळवो, भाभरभोळी–देखो 'भंभरभोळो'।

भाभरहूळी–स्त्री० एक प्रकार की सब्जी।

भाभराळो, भाभरो–पु० उन्मत्त, मस्त।

भाभळभळको (भोळो)–वि० सायंकाल का समय।

भाभळी–स्त्री० गर्म राख, कुछ अग्नि कणों वाली राख।

भाभाई–स्त्री० बेगार का कार्य।

भाभी–देखो 'भांबी'।

भाभ–पु० [सं० भाभ] १ बहनोई। बहिन का पति। २ देखो 'भांमिनी'।

भामटी–स्त्री० एक प्रकार सब्जी।

भामण–देखो 'भांमिनी'।

भामणइ, भामणउ, भामणां, भामणा–देखो 'भांमणौ'

भामणि, भामणी, भामणि, भामणी–देखो 'भांमिनी'।

भामणे (णै)–स्त्री० १ न्योछावर, उत्सर्ग। २ बलैया। ३ बलिहारी।

भामनि भामनि भामनी–देखो भांमिनी'।

भामरि–देखो 'भांवरि'।

भामरो–देखो 'भांमर'।

भामा, भामिण भामिणि, भामिणी भामिनी, भामीनी–स्त्री० [सं० भामिनी] १ स्त्री, औरत। २ पत्नी, भार्या। ३ व्यभिचारिणी या कुलटा स्त्री।

भामी–देखो 'भामणौ'।

भाय भायकी (खी)–स्त्री० [सं० भूमि] १ दूरी, फासला। २ भूमि।

भारंड पु० एक पक्षी विशेष।

भाव–क्रि० वि० १ लिए, निमित्त। २ देखो 'भांव'।

भावण–देखो 'भावणा'।

भावणी (बी)–देखो 'भावणी (बी)'।

भावर, भावरि, भावरी–स्त्री० [सं० भ्रमण] १ परिक्रमा, फेरी। २ वर-वधू द्वारा विवाह वेदी के दिये जाने वाले फेरे। ३ जल का चक्कर, जल-भ्रमर।

भावें–देखो 'भावें'।

भाहरो–देखो 'भूहू'।

भा–पु० १ आकाश। २ प्रकाश। ३ मद। ४ उज्ज्वलता। ५ बड़े भाई का संबोधन। –स्त्री० ५ लक्ष्मी, श्री। ६ यश, कीर्ति। ७ रात, रात्रि। ८ चमक, कांति। प्रभा। ९ मर्यादा। १० किरण। ११ शोभा। १२ बिजली। १३ देखो 'वाह'।

भाअलोड़–१ देखो 'भालोड'। २ देखो 'भालो'।

भाइ–स्त्री० [सं० भाष्ट्र] १ भट्टी, भाड़। २ देखो 'भाई'।

भाइगु–देखो 'भाग्य'।

भाइड़ो–देखो 'भाई'।

भाइप, भाइपो–देखो 'भाईपो'।

भाइसाइत–पु० १ एक चौहटे का नाम। २ देखो 'भइसाइत'।

भाई–पु० [सं० भ्रातृ] १ अपनी माता या पिता का अन्य पुत्र, सहोदर, भ्राता। २ चाचा, ताऊ, भूआ, मामा आदि का पुत्र, बंधु। ३ भ्रातृत्व की श्रेणी में आने वाला कोई प्राणी। ४ अपनी जाति या गोत्र का व्यक्ति। ५ मित्र, दोस्त। ६ नागासाही साधुओं की एक शाखा। ७ भ्रातृत्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की भावना से किया जाने वाला एक संबोधन। –क्रि०वि० प्रशंसा सूचक ध्वनि। आश्चर्य या घृणा सूचक शब्द।

भाईड़उ, भाईड़ौ–देखो 'भाई'।

भाईचारो–पु० [सं० भ्रातृ-चार] १ बन्धुत्व की भावना या रिश्ता। २ मित्रता, दोस्ती।

भाईजी–पु० १ पिता, बाप। २ बड़ा भाई।

भाईदूज–स्त्री० [सं० भ्रातृ-द्वितीया] कार्त्तिक शुक्ला द्वितीया तिथि।

भाईपांचम–स्त्री० [सं० भ्रातृ-पंचमी] भाद्रपद शुक्ला पंचमी।

भाईपो–पु० १ भ्रातृत्व-बंधुत्व। २ अपने परिवार या सगोत्रीय व्यक्तियों का समूह। ३ मित्रता-दोस्ती।

भाईबंट (बंटो)–पु० [सं० भ्रातृ-बण्ट] १ पैतृक सम्पत्ति का बंटवारा। २ बंटवारे से मिलने वाला अंश।

भाईबंध (बंध)–पु० १ भ्राता, बंधु, अपने पारिवारिक जन। २ स्व जातीय बंधु।

भाईबीज–स्त्री० भाईदूज।

भाईयप–देखो 'भाईपो'।

भाईसो–देखो 'भायलो'।

भाईबंट (बंटो)–देखो 'भाईबंट'।

भाउ, भाऊ–१ देखो 'भाई'। २ देखो 'भाव'। ३ देखो 'बहूजी'।

भाऊगड़दी, भाऊगरदी–स्त्री० लड़ाई, झगड़ा।

भाएलो–देखो 'भायलो'। (स्त्री० भाएली)

भाक–देखो 'भाख'।

भाकणी (बी)–१ देखो 'भासणी' (बी)। २ देखो 'भाखणी' (बी)।

भाकर (ड़ो, ड़ी), भाकरियो–देखो 'भाखर'।

भाकरखड़–पु० मूंज की तरह की एक घास।

भाकरी–१ देखो 'भाखरी'। २ देखो 'भक्खरी'।

भाकल, भाकलियो, भाकलो–पु० १ ऊंट के बालों का बना एक बिछावन। २ ओढ़ने का ऊनी वस्त्र।

भाकसी–देखो 'भाखसी'।

भाख–पु० १ उषाकाल। २ डिंगल का एक छंद। –स्त्री० [सं० भाष्] ३ सरस्वती। ४ देखो 'भासा'। ५ देखो 'भासण'।

भाखड़ी–स्त्री० १ एक डिंगल गीत विशेष। २ देखो 'भाखर'। ३ देखो 'भासा'।

भाखण–देखो 'भासण'।

भाखणो–पु० [सं० भाष्] बोलना क्रिया। –वि० बोलने वाला।

भाखणो (बो)–क्रि० [सं० भाष्] १ कहना, बोलना। २ उच्चारण करना। ३ वर्णन करना। ४ प्रकट करना, प्रकाशित करना। ५ देखो 'भासणो' (बो)।

भाखर–पु० १ पहाड़, पर्वत। २ पर्वत की तरह गंभीर लगने वाला कार्य।

भाखरकेर–पु० केर की तरह का एक वृक्ष विशेष।

भाखरखड़–देखो 'भाकरखड'।

भाखरगूंदो–स्त्री० एक वृक्ष विशेष।

भाखरांनरेस–पु० सिंह व्याघ्र।

भाखरि–१ देखो 'भाखर'। २ देखो 'भाखरो'। ३ देखो 'भक्खरी'।

भाखरियो–देखो 'भाखर'।

भाखरो–स्त्री० १ छोटी पहाड़ी। २ देखो 'भाखर'। ३ देखो 'भक्खरी'।

भाखभ, भाखसियो, भाखलो–देखो 'भाकलो'।

भाखवणो (बो)–देखो 'भाखणो' (बो)।

भाखसो–स्त्री० १ कैद खाना। २ कारागार की काल कोठरी। ३ कैदियों को रखने का तलगृह।

भाखा–देखो 'भासा'।

भाखाखीणो–वि० आधा भूखा।

भाखारी–देखो 'भक्खारी'।

भाखी–स्त्री० [सं० भाषणम्] वाणी, बोली।

भाख्या–देखो 'भासा'।

भाग–पु० [सं०] १ किसी वस्तु का हिस्सा, अंश। २ खण्ड, टुकड़ा। ३ विभाग, उप खण्ड। ४ गणित की एक प्रक्रिया। ५ देखो 'भाग्य'। ६ देखो 'भाख'।

भागणो–वि० (स्त्री० भागणी) १ भागने वाला, पलायनवादी। २ कायर, डरपोक।

भागणो (बो)–क्रि० १ दौड़ना, भागना। २ युद्ध स्थल से पीठ दिखाकर जाना। ३ काटे आदि का चुभना, धंसना। ४ मिटना, समाप्त होना। ५ तेज चलना। ६ चल-विचल होना। ७ विभक्त होना। ८ व्यतीत होना, बीतना। ९ खण्डित होना, टूटना। १० नष्ट होना, ध्वस्त होना।

भागदौड़–स्त्री० १ प्रयत्न, कोशिश। २ कार्य साधन के लिये इधर-उधर आने-जाने की क्रिया। ३ जल्दबाजी।

भागधांम–पु० ललाट, भाल।

भागधारी–वि० १ हिस्सेदार, भागीदार। २ भाग्यशाली।

भागधेय–पु० [सं० भागधेयः] कर, टेक्स। उत्तराधिकारी।

भागफळ–पु० [सं० भाग-फलम्] १ गणित में 'भाग' की क्रिया से आने वाला परिणाम। २ प्रारब्ध का फल।

भागबळी–देखो 'भाग्यबळो'।

भागभंवरी–स्त्री० घोड़े के ललाट पर होने वाली भंवरी।

भागरा–स्त्री० एक राग विशेष।

भागरोकोट–वि० [सं० भाग्य-कोट] भाग्यशाली।

भागळ, भागळ–वि० १ कायर डरपोक। २ व्रत या संकल्प तोड़ने वाला। –स्त्री० अर्गला, परिघ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भागळखेस–देखो 'भगळखेस'।

भागवंत–वि० [सं० भाग्यवत्] (स्त्री० भागवंती) १ भाग्यवान, भाग्यशाली। २ देखो 'भावबत'।

भागवत–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण की महिमा व भक्तिरस संबंधी ग्रंथ। २ कोई सम्पूर्ण कथा या वृत्तान्त। ३ तेरह की संख्या १३। –वि० विष्णु का, विष्णु संबंधी।

भागवती–स्त्री० [सं०] वैष्णवों की कण्ठी विशेष।

भागवान–वि० [सं० भाग्यवान्] धनवान, भाग्यवान।

भागवानी–स्त्री० [सं० भाग्यवत्+ई] १ सम्पन्नता, अमीरी। २ अमीरों की सी स्थिति, अवस्था या भाव।

भागसाळी–देखो 'भाग्यसाळी'।

भागहीण–देखो 'भाग्यहीण'।

भगाणो–वि० भागने वाला। कायर। डरपोक।

भागाबोड़–देखो 'भागदौड़'।

भागि–१ देखो 'भाग्य'। २ देखो 'भागी'।

भागिसो–वि० भागने वाला। कायर।

भागी–वि० [सं० भागिन्] (स्त्री० भागण, भागणि, भागणी, भागिण, भागिणी) १ भाग्यशाली, खुशकिस्मत। २ हिस्सेदार, भागीदार। ३ अधिकारी, हकदार।

भागीरथ–वि० १ भगीरथ संबंधी, भगीरथ का। २ देखो 'भगीरथ'।

भागीरथी–स्त्री० [सं०] गंगानदी।

भागू–वि० भागने वाला, डरपोक, कायर।

भागोड़ो–वि० १ खुभा या धंसा हुआ। २ टूटा हुआ।

भागोत–देखो 'भागवत'।

भागो–वि० [सं० भग्न] (स्त्री० भागी) १ टूटा हुआ, खण्डित। २ अपूर्ण, अधूरा।

भागौत–देखो 'भागवत'।

भाखिदि, भाखिदि–क्रि० वि० तत्काल।

भाग्य–पु० [सं०] १ प्रारब्ध, किस्मत। २ सौभाग्य। ३ हर्ष। ४ समृद्धि।

भाग्यचक्र–पु० [सं०] भाग्य का फेर, चक्कर। परिस्थितियों का फेर।

भाग्यबळ–पु० [सं०] १ भाग्य, प्रारब्ध, अच्छा भाग्य २ अदृष्ट लाभ।

भाग्यभाव–पु० जन्म कुण्डली में एक स्थान।

भाग्यवांन, भाग्यसाळी–वि० [सं० भाग्यवत्] १ भाग्यवान्, खुश किस्मत। २ समृद्ध, सम्पन्न। ३ अमीर।

भाग्यहीण–वि० अभागा, हतभाग्य।

भाग्यांणी–वि० भाग्यशाली।

भाड़ंगेर–पु० १ भटनेर शहर का नामान्तर। २ हनुमानगढ़ का एक प्राचीन किला। ३ चुरू जिले का एक प्राचीन नगर।

भाड़–पु० [सं० भ्राष्ट्र] १ भड़ भूंजे की भट्टी, बड़ा चूल्हा। २ लाक्षणिक भावों में विनाशकारी कार्य।

भाडागाड़ो–स्त्री० बैलगाड़ी से घास ढोने से बचना चाहे उन किसानों से लिया जाने वाला कर।

भाड़ेती–वि० १ किराया देकर यात्रा करने या रहने वाला। २ किराया लेकर कार्य करने वाला।

भाड़ो–पु० [सं० भाटक] १ किराया। २ श्रम के बदले दिया जाने वाला धन या वस्तु।

भाव–स्त्री० एक प्रकार का प्राचीन कर।

भावक–पु० [सं० भाभा-चक्र] प्रकाश का वृत्त। कांति वृत्त।

भावर, भावरियो, भावरो–पु० १ सूअर का छोटा बच्चा। २ लोहार का ऐरण।

भाछ–देखो 'भाच'।

भाजक–वि० [सं०] विभाग करने वाला, विभाजक। –पु० गणित में-विभाजक संख्या या अंक।

भाजकांस–पु० [सं० भाजक+अंश] भाग लगाने पर शेष रहने वाला अंश (गणित)।

भाजड–स्त्री० भागने की क्रिया।

भाजण–पु० [सं० भाजन] १ बर्तन, पात्र। २ अच्छा-बुरा फल भोक्ता। ३ भागने की क्रिया या भाव। ४ कायर।

भाजणो (बो)–क्रि० १ विभाजन करना। २ हिस्से करना। ३ देखो 'भागणो' (बो)।

भाज-दोड़ो–देखो 'भागदौड़'।

भा' जी–पु० पिता या बड़े भाई का एक संबोधन।

भाजी–स्त्री० १ तरकारी, सब्जी। २ मांस।

भाज्जणो (बो)–देखो 'भागणो' (बो)।

भाज्य–पु० [सं०] गणित की संख्या जिसमें भाग दिया जाय।

भाट–पु० [सं० भट्ट] (स्त्री० भाटणी) १ वंशावली लिखने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति। २ एक अन्य नीच जाति।

भाटक–पु० [सं०] १ किराया, भाड़ा। २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि विशेष।

भाटकणो (बो)–क्रि० अत्यन्त क्रोध करना, क्रुद्ध होना।

भाटकळ–देखो 'भटकळ'।

भाटखळ–पु० भीड़, समूह, जमघट।

भाटभाखा, भाटभाषा–स्त्री० [सं० भट्ट-भाषा] पिंगल भाषा।

भाटभोट–स्त्री० १ बौछार। २ झड़ी। ३ चुगलखोर।

भाटिया–स्त्री० गुजरात की एक क्षत्रिय जाति विशेष।

भाटी–देखो 'भट्टी'।

भाटीयो–पु० जैसलमेर राज्य का नाम।

भाटो–पु० १ पत्थर। २ ज्वार के बाद समुद्र के जल का उतार।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाठमीठ–स्त्री० शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

भाठियो–१ देखो 'भाटो' । २ देखो 'भाटिया' ।

भाठी–देखो 'भट्ठी' ।

भाठीत–पु० यवन, मुसलमान ।

भाठो–देखो 'भाटो' ।

भाड–वि० १ गरीब । बेचारा । २ मूर्ख, नासमझ । –पु० १ स्वर्णकारों का एक औजार विशेष । २ बड़ा मेंढ़क ।

भाडणो (णो)–क्रि० १ छल करना, ठगना । २ देखो 'डाढ़णो' (णो) ।

भाडळीआठम–स्त्री० आषाढ़ कृष्णा अष्टमी ।

भाडळीनम–स्त्री० आषाढ़ शुक्ला नवमी ।

भाडिज, भाडेज–पु० एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।

भाणो–वि० रुचिकर, सुहावना ।

भाणो (णो)–क्रि० [सं० भा] १ रुचिकर, लगना, अच्छा लगना, सुहाना । २ सहन होना । ३ फबना, शोभित होना । ४ चाहना, इच्छा करना । ५ स्वादिष्ट लगना ।

भात–पु० [सं० भक्त] १ पके हुए चावल । २ व्यंजन, भोजन । ३ विवाह के समय दिया जाने वाला बड़ा भोज विशेष । ४ वरवधू के ननिहाल वालों की तरफ से दिये जाने वाले वस्त्राभूषण विशेष । ५ एक लोक गीत विशेष ।

भातड़ियो–पु० १ गांव-गांव फिर कर काम करने वाला स्वर्णकार । २ देखो 'भात' । ३ देखो 'भायो' ।

भातड़ो–पु० १ चमड़े का एक थैला विशेष । २ देखो 'भात' । ३ देखो 'भायो' ।

भातवी–पु० वर या कन्या के ननिहाल वाले लोग ।

भाति, भातो–पु० १ किसान के लिये खेत में खाना लेजाने वाला व्यक्ति । २ देखो 'भातवी' । ३ देखो 'भांति' ।

भातीजो–देखो 'भतीजो' ।

भातो–पु० [सं० भक्त] १ यात्रा या कार्य पर जाते समय साथ लिया जाने वाला खाना । २ खेत में कार्यरत किसान के लिये भेजा जाने वाला खाना । ३ पुट । ४ देखो 'भायो' ।

भात्रीज, भात्रीजो–देखो 'भतीजो' ।

भाथ, भाथड़ो–१ देखो 'भात' । २ देखो 'भायो' । ३ देखो 'भातो' ।

भाथळ–देखो 'भायो' ।

भाथाइत–देखो 'भथाइत' ।

भाथाळ–पु० तरकसधारी योद्धा । बाणावली योद्धा ।

भाथी–स्त्री० [सं० भस्त्रिका] लोहार आदि की धोंकनी ।

भाथो–पु० [सं० भस्त्रा] तरकस, तूणीर ।

भादउ, भादरउ, भादरव–देखो 'भादवो' ।

भादरवी–देखो 'भादवो' ।

भादरवो भादव, भादवड़ो–देखो 'भादवो' ।

भादवो–वि० [सं० भाद्रपदी] भादो मास की ।

भादवो–पु० [सं० भाद्रपद] १ श्रावण के बाद आने वाला महीना । २ बृहस्पति के उस वर्ष का नाम जब वह पूर्व भाद्रपदा या उत्तरा भाद्रपदा में उदय होता है ।

भाडिज–देखो 'भाडेज' ।

भादु, भादुड़ो–देखो 'भादवो' ।

भादुर–१ देखो 'बहादुर' । २ देखो 'भादवो' ।

भादुवो, भादू, भादू, भादूड़ो–देखो 'भादवो' ।

भादेव, भादेव, भादो, भाद्र, भाद्रपद–पु० [सं० भाद्रपद] भादव मास ।

भाद्रपदा–स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र पुंज का नाम ।

भाद्रव, भाद्रवउ, भाद्रवऊ, भाद्रवड, भाद्रवडउ, भाद्रवडो, भाद्रवो, भाद्रव्य–देखो 'भादवो' ।

भाद्रवी–देखो 'भादवी' ।

भाद्रायण–पु० पूर्व देश का एक खण्ड ।

भाप, भाफ–स्त्री० [सं० वाष्प] १ किसी तरल पदार्थ आदि की वाष्प । २ किसी भी तत्त्व की वाष्पीय अवस्था । ३ शीत काल में मुंह से निकलने वाली भाप ।

भाभोसा–देखो 'भाभोसा' ।

भामज–देखो 'भावज' ।

भामर–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला क्षुप विशेष ।

भामरामूत–वि० १ पूर्ण वेग और जोश युक्त । २ अत्यन्त क्रुद्ध एवं जोशीला । ३ लापरवाह । –पु० एक ऐतिहासिक व्यक्ति विशेष ।

भाभा–स्त्री० १ राजा की उप-पत्नी की संतान का वंश । २ बड़ों के लिये एक संबोधन शब्द । ३ माता, जननी ।

भाभी, भाभाजी, भाभोसा–स्त्री० १ बड़े भाई की स्त्री, भोजाई । २ जेठ की स्त्री, जिठानी ।

भाभू–स्त्री० माता के लिए उच्चारण किया जाने वाला शब्द, माता ।

भामो, भामोजी, भामोसा–पु० १ पिता या बड़े भाई का संबोधन । २ राजा की उप-पत्नी का पुत्र ।

भामडळ–पु० [सं०] सूर्य, रवि ।

भाय–स्त्री० १ कृपा, दया । २ पसंद । ३ एहसान । ४ चाह, इच्छा । ५ तरह, भांति, प्रकार । ६ रुचि । –वि० १ मनवांछित, रुचिकर । २ देखो 'भाई' ।

भायकी–स्त्री० हल्की निद्रा, तंद्रा ।

भायण–वि० प्रिय, प्यारा ।

भायजी–देखो 'भाईजी' ।

भायप, भायपो–देखो 'भाईपो' ।

भायस–देखो 'भायेलो' । (स्त्री० भायली)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भायसौ, भायहौ–देखो 'भासियौ' ।
भायूबीज–देखो 'भाईदूज' ।
भाये–देखो 'भार्थै' ।
भायेलो पु० (स्त्री० भायेली) १ मित्र, दोस्त, सखा । २ प्रेमी, आशिक ।
भायौ–पु० १ संतान-पुत्र । २ देखो 'भाई' ।
भायौजी–देखो 'भाईजी' ।
भारग–पु० चन्द्रमा, चांद ।
भारगी–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति ।
भारज–पु० एक पक्षी विशेष ।
भार–पु० [सं०] १ बोझा, वजन । २ तराजू का झुकाव । ३ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी । ४ संभाल, रक्षा । ५ आश्रय, सहारा । ६ समूह, झुण्ड, दल । ७ सेना, फौज । ८ संकट, आपत्ति । ९ कष्ट, तकलीफ । १० भूमि, पृथ्वी । ११ पाप, अत्याचार । १२ गौरव । १३ कठिन, दुष्कर । १४ सामान, सामग्री । १५ दहेज । १६ एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र । १७ वनस्पति के एक वर्ग का नाम । १८ बल, शक्ति । १९ क्रोध, गुस्सा । –अट्ठार, अठार, अठार, अट्ठार, अट्ठार–पु० अष्टादश वनस्पति का नाम । आबू पर्वत ।
भारउतारण–पु० श्रीकृष्ण ।
भारखमी–देखो 'भरखमी' । (स्त्री० भारखमी) ।
भारगव–पु० [सं० भार्गव] १ भृगुकुल में उत्पन्न व्यक्ति । २ च्यवन ऋषि । ३ उशीनस्, शुक्र । ४ जमदग्नि । ५ परशुराम । ६ वाल्मीकि । ७ उत्तर भारत में पाई जाने वाली एक हिन्दू जाति ।
भारगवी–स्त्री० [सं० भार्गवी] १ लक्ष्मी । २ पार्वती । ३ दूब । ४ उड़ीसा की एक नदी ।
भारगवेश्वरि–पु० भांगासुरि राजा का नामान्तर ।
भारज,भारजा,भारज्या–स्त्री० १ फूहड़ स्त्री । २ देखो 'भारया' ।
भारण, भारणि–पु० रहंट पर रखने का बोझा । –वि० घातक । देखो 'भारणी' ।
भारणिणी–पु० 'मोट' के मुंह पर बंधा रहने वाला वजनी पत्थर ।
भारणी–स्त्री० १ पीटने की क्रिया या भाव, मार-पीट । २ सजा-दण्ड ।
भारणौ (बौ)–क्रि० १ अंगारोंवाली राख में दबाना । २ गाड़ना, दफनाना । ३ देखो भरणौ' (बौ) । ४ देखो 'बुहारणौ' (बौ) ।
भारत–पु० [सं०] १ युद्ध संग्राम । २ लंबी गाथा, वृत्तान्त । ३ कसीदादार वस्त्र । ४ बढ़िया वस्त्र । ५ भरत का वंशज । ६ भारत देश । ७ भारतीय । ८ देखो 'महाभारत' ।
भारतमंद–पु० संगीत का एक मुखतास ।
भारतवरस–पु० [सं० भारतवर्ष] भारतदेश, हिन्दुस्तान, हिन्द ।
भारति–देखो 'भारती' ।
भारतियौ–वि० १ बढ़िया वस्त्र विक्रेता । २ विवाह में 'माहेरा' लाने वाला ।
भारती–पु० [सं०] १ सरस्वती, शारदा । २ वाणी । ३ कविता । ४ साहित्य में एक वृत्ति । ५ ब्राह्मी बूटी । ६ एक प्राचीन नदी का नाम । ७ एक प्रकार का पक्षी । ८ दशनामियों की एक शाखा ।
भारतीय–वि० [सं० भारत] भारत संबंधी, भारत का ।
भारत्थ–१ देखो 'भारत' । २ देखो 'महाभारत' ।
भारत्थि–१ देखो 'भारत' । २ देखो 'भारती' ।
भारध–१ देखो 'भारत' । २ देखो 'महाभारत' ।
भारधि, भारथ्थ–१ देखो 'भारत' । २ देखो 'भारती' । ३ देखो 'महाभारत' ।
भारबर–देखो 'भारवरदार' ।
भारवाज, भारद्वाज–पु० [सं० भारद्वाज] १ अंगिरस गोत्र का एक मंत्रकार । २ सप्तऋषियों में से एक । ३ एक श्रौत सूत्रकार । ४ एक ऋषि । ५ एक व्याकरणकार । ६ द्रोणाचार्य । ७ मंगलग्रह । ८ बृहस्पति का एक पुत्र । ९ भरद्वाज कुल में उत्पन्न व्यक्ति । १० एक चिड़िया विशेष ।
भारपलांण, भारपिलाण–पु० बोझा ढोने के ऊंट का चारजामा ।
भारबंध–पु० रहट की माल के शिरे का बंध ।
भारबरदारी–देखो 'भारवरदारी' ।
भारभुज–पु० राजा, नृप ।
भारभोर–देखो 'भार' ।
भारमाली–वि० [सं० भार+मालिन्] भार उठाने वाला ।
भारया (भारथा)–स्त्री० [सं० भार्या] १ पत्नी, अर्धांगिनी । २ कोई स्त्री, महिला ।
भारलदण–वि० बोझा ढोने वाला । –पु० गधा, खर ।
भारलदारी–वि० भार लदने या लादने वाला ।
भारव–स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी ।
भारवरदार–पु० [फा० बारबरदार] भारवाहक ।
भारवरदारी–स्त्री० [फ़ा० बारबरदारी] १ भार वहन की क्रिया । २ भारवहन करने वाली गाड़ी ।
भारवहगात्र–पु० रथ ।
भारवहण–पु० गधा, खर ।
भारवाहक–वि० [सं०] बोझा ढोने या भार वहन करने वाला ।
भारवाहीनांव–स्त्री० माल ढोने वाली नौका, डुंडी ।
भारसह–पु० [सं०] बनिया, वैश्य, व्यापारी । –वि० सहनशील, सहिष्णु ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारहारी-पु० [सं० भारहारिन्] श्रीविष्णु। -वि० १ भार हरने वाला। २ भार उतारने वाला।

भारात भाराय, भाराधि-१ देखो 'भारत'। २ देखो 'महाभारत'।

भारथियो-पु० युद्ध करने वाला योद्धा।

भारिंगी-देखो 'भारंगी'।

भारिजा, भारिज्या-देखो 'भारया'।

भारिष्ठ-देखो 'भारत'।

भारियां-स्त्री० १ समूह। २ देखो 'बोझ्यां'।

भारिया देखो 'भारया'।

भारियो-पु० १ वजन उठाने वाला। २ भार वाहक। ३ देखो 'भारी'।

भारींगण-पु० मोट खींचने की लकड़ियों पर रखने का बोझा।

भारो-स्त्री० [सं० भारं] लकड़ियों या घास का गट्ठर। -वि० १ अधिक भार या वजन वाला, वजनी। २ अत्यन्त, खूब, बहुत ३ भीषण, भयंकर। ४ कठिन, मुश्किल। ५ जोरदार। ६ विशाल, बड़ा। ७ गंभीर, गुरुतर। ८ गरिष्ठ, ठोस। ९ अनिष्ट या हानिकारक। १० विकार युक्त। ११ शक्ति या प्रभाव में अधिक। १२ सशक्त, बलवान। १३ चतुर, महान, बड़ा। १४ विपुल। १५ उत्तम सुन्दर। -क्रि० वि० बतई, बिल्कुल। —पण, पणो-पु० भारयुक्त, बोझयुक्त होने की अवस्था या भाव। —बोल-पु० गर्व युक्त वचन।

भारोकन्यका-स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

भारोखमूं (खमो खम्मो), भारोखूं-देखो 'भरखमो'।

भारोगरो, भारोघरो-पु० बड़ा परिवार।

भारोलगनी-स्त्री० [सं० भारी+लग्न] जिस कन्या का विवाह-लग्न ठीक न बैठे।

भाखंडी, भाखडो-स्त्री० रहट की लाट के पास रखा रहने वाला बोझा।

भारोट (ठ)-पु० छत के पत्थरों के नीचे लगने वाला शहतीर।

भारो-पु० १ घास आदि का गट्ठर। २ देखो 'भारी'।

भाळ (ल)-स्त्री० [सं० भाल] १ ललाट, मस्तक। २ खोज, तलाश। ३ खबर, संदेश। ४ ध्यान, जानकारी। ५ निरीक्षण, जांच। ६ प्रतीक्षा।

भाल-पु० १ एहसान, उपकार। २ देखो 'बहाल'। ३ देखो 'भालू'। ४ देखो 'भालो'।

भाळक, भालक-वि० १ देखभाल करने वाला। २ खोजने वाला। ३ ध्यान या जानकारी रखने वाला। ४ खबर करने वाला। ५ दर्शनीय। ६ जांच करने वाला, निरीक्षक। ७ देखो 'भालू'।

भाळकी-स्त्री० एक वृक्ष विशेष।

भालकी-१ देखो 'भालोड़'। २ देखो 'भाली'।

भालड़ियो-पु० १ तीखे सींगों वाला बैल। २ देखो 'भालो' ३ देखो 'भालोड़'।

भालड़ी-१देखो 'भाली'। २ देखो 'भालोड़'।

भालड़ो-१ देखो 'भालो'। २ देखो 'भालोड़'।

भालचद्र-पु० शिव।

भालणो-वि० देखने वाला। -पु० याद, स्मरण। देखने की इच्छा।

भालणो (णी)-क्रि० १ देखना। २ तलाश करना, खोजना। ३ समझना, जानना। ४ ताकना, झांकना।

भाळदार-वि० (स्त्री० भाळदारण) ध्यान से देखने वाला।

भालनेत्र-पु० शिव। रुद्र।

भालपत(पति,पती)-पु० [सं० भालु-पति] रीछों का स्वामी, जामवंत।

भालम-देखो 'भलम'।

भालमको-पु० कीर्ति का रक्षक।

भाळयळ-देखो 'भाळ'।

भाळवी-वि० तलाश करने, देखने या ढूंढने वाला।

भालांक-पु०[सं०भाल-अंक]१ शिव, महादेव। २ भाग्य के लेख।

भालागिरी-स्त्री० भाला चलाने की विद्या।

भालाबरदार-वि० भाला चलाने वाला।

भालाळ, भालाळो-पु० १ भालाधारी योद्धा। २ पाबू राठौड़ की एक उपाधि।

भालासींगो-पु० तीखे सींगों वाला बैल।

भालाहस्थो-पु० भाला धारी योद्धा।

भाळाहळ-वि० १ पूर्ण, परिपूर्ण। २ देखो 'भळाभळ'।

भालि-देखो 'भालोड़'।

भाळिग्रस्त-देखो 'भाळ'।

भालिम भालिमि-देखो 'भलम'।

भाळियळ, भालियस, भाळियाळ, भालियलि, भाळीभळेय, भाळोयळ-वि० १ देखने वाला, दर्शक। २ देखो 'भाळ'।

भालु, भालुर-देखो 'भालू'।

भालुनाथ-पु० [सं० भाल्लुक-नाथ] रीछों का स्वामी, जामवंत।

भाळू-पु० १ शिकार की खबर देने वाला व्यक्ति। २ देखभाल करने वाला व्यक्ति।

भालु, भालूक-पु० [सं० भाल्लुक] रीछ नामक चौपाया जंगली जानवर।

भालैराव-पु० भाला चलाने में कुशल व्यक्ति।

भालोड़, भालोड़ी, भालोड-पु०१ तीखी नोक वाला लंबा शस्त्र। २ तीर, बाण। ३ देखो 'भाली'।

भाळो-वि० १ देखने वाला, दर्शक। २ खोजने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भालो–पु० [सं० भल्ल] तीखी नोक या नुकीले फल वाला एक लंबा शस्त्र । बरछा, नेजा ।

भाव–पु० [सं०] १ अस्तित्व, सत्ता । २ अवस्था, दशा, हालत । ३ श्रद्धा, भक्ति । ४ विश्वास, दृढ़मत । ५ कल्पना, भावना । ६ मन का विचार, खयाल । ७ स्वभाव प्रकृति । ८ मानसिक स्थिति । ९ चित्त मन । १० पद. ओहदा । ११ आचरण । १२ तरह, प्रकार । १३ प्रेम, अनुराग । १४ हाव-भाव, चेष्टाएँ । १५ सम्मान, इज्जत । १६ चोंचला, नखरा । १७ प्रतीति, आभास । १८ प्रवृत्ति । १९ लक्ष्य, उद्देश्य । २० कार्य, क्रिया । २१ हंगतरीका । २२ आत्मा । २३ जन्म, पैदाइश । २४ योनि, भग । २५ रति क्रिया । २६ प्रभाव प्रकोप । २७ आशय, अर्थ । २८ सारांश । २९ सांख्य के अनुसार छः भावों से युक्त पदार्थ । ३० वैशेषिक के अनुसार छः पदार्थ । ३१ सांख्य के अनुसार बुद्धि तत्त्व का कार्य । ३२ वस्तु का मूल्य, दर । ३३ व्यापारिक वस्तुओं की दर । ३४ साहित्य में मानसिक अवस्थाओं का व्यंजक तत्त्व । ३५ नायका के यौवनावस्था में उद्भूत २८ अलंकारों में से एक । ३६ संगीत में पांचवां अंग । ३७ जन्म कुण्डली में ग्रहों की १२ स्थितियों में से एक । ३८ ज्योतिष में जन्म समय का लग्न । ३९ उद्देश्य, हेतु । ४० कामना, वासना । ४१ कर्मों के उदय, क्षय, क्षयोपशम या उपशम से होने वाले आत्मा के परिणामों के नाम । ४२ वस्तु का गुण या स्वभाव । ४३ किसी देवता का प्रसाद । ४४ विद्वान । ४५ शरीर में किसी देवता की उपस्थिति की दशा । ४६ एक गीत विशेष ।

भावइ, भावइ–देखो 'भावै' ।

भावक–पु० [सं०] १ कुशल, संगल । २ भक्त । ३ किंचित्, थोड़ा । ४ देखो 'भावुक' ।

भावगम्य–वि० [सं०] भावों के द्वारा जाना जा सकने वाला ।

भावड़, भावड़वा–देखो 'भावट' ।

भावज, भावजड़ी, भावज्या–स्त्री० बड़े भाई की स्त्री, भाभी ।

भावट, भावठ (ठि: ठी)–स्त्री० [सं० भावट] १ अभिलाषा, इच्छा । २ भूख । ३ दिल का भाव, भावना । ४ शौक, चाव । ५ कष्ट, दुःख, तकलीफ । ६ धोखा, चालाकी । ७ उपाधि, जंजाल । –वि० मन वांछित, इच्छित ।

भावण–स्त्री० इच्छा, रुचि, चाह । –वि० सुहावना, रुचिकर, मनभावता ।

भावणी–वि० १ सुन्दर, मनोहर । २ रुचिकर, सुहावना । ३ प्रिय ।

भावणो (णौ)–क्रि० १ अच्छा या रुचिकर लगना । २ प्रिय लगना, पसंद आना । ३ सुन्दर लगना । ४ खाया जा सकना । ५ खाने में ठीक लगना ।

भावत–क्रि० वि० अचानक, सहसा ।

भावन–स्त्री० १ एक लोक गीत । २ एक राजस्थानी छन्द । ३ रुचि, पसंद । ४ देखो 'भावना' ।

भावना–स्त्री० [सं०] १ चित्त या मन का एक संस्कार, विचार, खयाल, कल्पना । २ श्रद्धा, भक्ति, प्रेम । ३ इच्छा, कामना । ४ ध्यान, चिंतन । ५ उत्पत्ति, प्रादुर्भाव । ६ औषधि बनाने की एक विधि । ७ शक्ति, बल । ८ स्थान, गुंजाइश ।

भावनामयशरीर–पु० सांख्य के अनुसार मृत्यु से पूर्व मनुष्य द्वारा धारण किया जाने वाला शरीर ।

भावनी–स्त्री० पार्वती ।

भावपरिग्रह–पु० [सं०] मनुष्य की धन संग्रह की अभिलाषा ।

भावप्रधान–वि० भावों की प्रधानता वाला ।

भावभक्त (भक्ति, भगत, भगति, भगती)–स्त्री० [सं० भाव-भक्ति] १ आदर, सत्कार । २ ईश्वर प्रार्थना ।

भावमन–पु० [सं० भाव+मन] पुद्गलों से उत्पन्न ज्ञान ।

भावरो–पु० गेहूँ के साथ होने वाला एक घास ।

भावली–स्त्री० चाही खेती की एक माप ।

भाववाचक, भाववाच्य–स्त्री० व्याकरण में क्रिया या संज्ञा का एक रूप ।

भावविकार–पु० यास्क के अनुसार जीव में होने वाले छः विकार ।

भावव्यंजक–वि० भाव प्रगट करने वाला ।

भावसबलता–पु० एक प्रकार का अलंकार ।

भावहिंसा–स्त्री० हिंसक वृत्ति या भावना ।

भावांतर–पु० विचार परिवर्तन ।

भावाभाव–पु० १ भावों का अभाव । २ उत्पत्ति, लय और नाश ।

भावाभास–पु० एक अलंकार विशेष ।

भावारथ–पु० आशय, तात्पर्य ।

भावारस–पु० तीन लघु मात्रा का नाम ।

भावाश्रित–पु० एक प्रकार का नृत्य । –वि० भावों पर आधारित ।

भावि–देखो 'भावी' ।

भाविक–पु० १ भावी घटना का अनुमान । २ एक अलंकार विशेष । –वि० १ भाव का, भाव संबंधी । २ भावों का ज्ञाता, मर्मज्ञ । ३ असली, वास्तविक । ४ प्राकृतिक, नैसर्गिक । ५ भविष्य में होने वाला ।

भाविजोग, भाविजोगि–देखो 'भावीजोग' ।

भावित–वि० १ विचारा या सोचा हुआ । २ मिलाया हुआ, मिश्रित । ३ शुद्ध किया हुआ । ४ सुवासित । ५ किसी रस की भावना से युक्त ।

भावियो–पु० रसयुक्त, मिला हुआ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भावी–स्त्री० [सं० भाविन्] १ भवितव्यता, होनहार। २ भविष्य। ३ भाग्य, प्रारब्ध। ४ श्रद्धा, भक्ति।

भावीक–वि० [सं० भाविन्] १ भक्ति या श्रद्धा रखने वाला। २ देखो 'भावुक'। ३ देखो 'भाविक'।

भावीजोग–पु० १ भविष्य की घटनाओं का योग। २ देखो 'भावी'।

भावीस–देखो 'भावी'।

भावुक–वि० [सं०] १ भाव, भावना या विचार करने, समझने वाला। २ कोमल हृदय या कोमल भावों वाला। ३ भावनाओं में बहने वाला। ४ अच्छे विचारों वाला। ५ समृद्धि शाली।

भावे, भावै–क्रि०वि० १ भले हो, चाहे। २ अथवा, या। ३ स्वतः, अपने आप। ४ लिये, वास्ते। ५ अचानक, सहसा।

भावोदय–पु० एक प्रकार का अलंकार।

भावौ–देखो 'भाव'।

भासकर–देखो 'भास्कर'।

भास–पु० [सं०] १ प्रकाश, उजाला। २ आभा, प्रभा, दीप्ति। ३ किरण, रश्मि। ४ सूर्य, रवि। ५ गीध। ६ शंकुत पक्षी ७ एक छन्द विशेष। ८ कड़खा छन्द का नामान्तर। ९ पद्य खण्ड। १० देखो 'भासा'। ११ देखो 'भास्य'। १२ पद्य खण्ड के साथ-साथ होने वाला काव्य का भाग।

भासक–वि० [सं० भाषक] १ भाषण करने वाला, प्रवक्ता। २ बोलने वाला।

भासकर–देखो 'भास्कर'।

भासकरण–वि० [सं० भासकर्ण] १ सूर्य, रवि। २ रावण का एक सेना नायक।

भासग्य–वि० [सं० भाषाज्ञ] भाषा जानने वाला।

भासछन्ना–वि० भस्म से आच्छादित।

भासण–पु० [सं० भाषण] १ वार्त्तालाप, बातचीत। २ बोली आवाज। ३ प्रवचन, उपदेश, व्याख्यान। ४ राजनैतिक भाषण।

भासणौ (बौ)–क्रि० [सं० भास्] १ आभास या प्रतीति होना, मालूम पड़ना। २ जानकारी या ज्ञान होना, अनुभव होना। ३ प्रकाशित या प्रगट होना। ४ दिखना। ५ शोभित होना। ६ देखो 'भाखणौ' (बौ)।

भासतीक–पु० सूर्य, रवि।

भासमंत–वि० ज्योतिर्मय, चमकदार।

भासमाण, भासवान–पु० [सं० भास्-मान] १ सूर्य, रवि। २ दृश्यमान।

भासर–वि० [सं० भास्वर] प्रकाशमान, तेजस्वी।

भासांतर–पु० [सं० भाषा-अंतर] अनुवाद, उल्था।

भासांन–पु० रवि, सूर्य।

भासा–स्त्री० [सं० भाषा] १ किसी देश, क्षेत्र या समुदाय की बोली जो व्याकरण व साहित्य की दृष्टि से व्यवस्थित हो। भाषा। २ बोली, वाणी, वचन। ३ हिन्दी भाषा। ४ संगीत में एक ताल। ५ पशु-पक्षियों की बोली। ६ सरस्वती। ७ किसी छंद, पद्य या कविता का गद्य रूप।

—टीका–वि० लिखित। टीका युक्त।

भासासम–पु० एक शब्दालंकार विशेष।

भासासमिति–स्त्री० [सं० भाषा-समिति] जैन धर्म में एक आचार विशेष।

भासिक–वि० दृश्यमान।

भासियौ–पु० १ भैंस या भैंसे का पूरा झगड़ा। २ भाषा बोलने या समझने वाला।

भासी–वि० [सं० भाषिन्] १ बोलने वाला, कहने वाला। २ भाषण देने वाला।

भासुर, भासुरह–वि० [सं० भासुर] चमकीला।

भास्कर–पु० [सं०] १ सूर्य, रवि। २ शिव, महादेव। ३ अग्नि, आग। ४ आक, मदार।

भाह–क्रि० वि० पसंद।

भाहर–देखो 'भरी'।

भाहरी–पु० भारी स्वर, मोटी आवाज।

भाहि–स्त्री० भट्टी।

भाहियौ–देखो 'भासियौ'।

भिंगराज–देखो 'भृंगराज'।

भिंगाणौ (बौ)–देखो 'भिजोणौ' (बौ)।

भिंगी–देखो 'भींगी'।

भिंगोणौ (बौ), भिंगोवणौ (बौ), भिंजोणौ (बौ), भिंजोवणौ (बौ)–देखो 'भिजोणौ' (बौ)।

भिटणौ (बौ)–क्रि० अस्पृश्य वस्तु से स्पर्श होना, छूत होना। लगना।

भिडज–देखो 'भड़ज'।

भिडपाळ, भिडरपाळ, भिडपाळ, भिडिपाळ–देखो 'भिदपाळ'।

भिड्योगवार–पु० भिंडी जैसी चिकनी फली वाला ग्वार।

भिंडी–स्त्री० [सं० भिंड] १ बड़ी फलियों वाला एक पौधा। २ इस पौधे की फली, जिसकी तरकारी बनती है। ३ छोटे सींग वाली गाय। ४ सीधी-साधी गाय। ५ छोटी दीवार। ६ कच्चे मकान के आगे बनी मिट्टी आदि की दीवार।

भितर, भितरि, भितरी–देखो 'भीतर'।

भिदपाळ, भिदिपाळ, भिदीपाळ–पु० [सं० भिदपाल] १ एक प्रकार का शस्त्र। २ एक प्रकार का छोटा डंडा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिभरणी (बी)–देखो 'भींभरणी' (बी)।

भिमळ–१ देखो 'विमळ'। २ देखो 'विह्वल'।

भिसट–देखो 'भ्रष्ट'।

भि–पु० १ तीर, बाण। २ प्रेम। ३ भैरव। ४ सुमेरु पर्वत। –स्त्री० ५ औरत, नारी।

भिउड, भिउंड, भिउडी–देखो 'भ्रकुटी'।

भिको–पु० दुःखमय समय, कष्टप्रद समय (मेवात)।

भिक्खा–देखो 'भिक्षा'।

भिक्खाचरी, भिक्खायरिया–स्त्री० [सं० भिक्षा-चर्या] भिक्षा-वृत्ति, भीख।

भिक्खावरी–वि० [सं० भिक्षाचारी] भिक्षा मांगने वाला भिक्षुक।

भिक्खुधम्म–पु० [भिक्षु-धर्म] जैन साधु का धर्म, यति धर्म।

भिक्खू–देखो 'भिक्षु'।

भिक्षणेस–पु० सिंह, शेर।

भिक्षा–स्त्री० [सं०] १ याचित वस्तु, भीख। २ भिखारी का कार्य। ३ मांगना या याचना की क्रिया। ४ साधुओं द्वारा की जाने वाली खाद्य पदार्थ की याचना।

भिक्षाचर–पु० [सं०] भिखारी, याचक, साधु।

भिक्षाचार–पु० [सं०] भीख लेना क्रिया।

भिक्षाचारी–स्त्री० [सं०] १ शुद्ध आहार लेने की क्रिया। २ भिक्षा के लिये घूमने वाला।

भिक्षाटण(न)–पु० [सं० भिक्षा-अटन] भिक्षार्थ भ्रमण, विचरण।

भिक्षु, भिक्षुक–पु० [सं०] १ भिखारी। २ याचक। ३ रंक, निर्धन। ४ जैन साधु। ५ साधु, फक्कड़।

भिक्षुरूप–पु० शिव, महादेव।

भिखंग, भिखक, भिखग–देखो 'भिक्षुक'।

भिखमंगो पु० भिखारी, निर्धन।

भिखायत पु० १ भिखारी, याचक। २ देखो 'विखायत'।

भिखारी भिखियारी–पु० [सं० भिक्षाचारिन्] (स्त्री० भिखारण) १ भीख मांग कर जीने वाला, गरीब, मंगता। २ याचक। ३ रंक, दरिद्र।

भिख्या–देखो 'भिक्षा'।

भिखयारी देखो 'भिखारी'।

भिखपासी–देखो 'भिखारी'।

भिगोणी(बी), भिगोवणी(बी)–देखो 'भिजोणी' (बी)।

भिगह–पु० [सं० अभिग्रह] धार्मिक नियम। प्रतिज्ञा।

भिड़त देखो 'भिड़ंत'।

भिड़–पु० १बर्र नामक कीड़ा, पतंगा। २ देखो 'भट'। –क्रि०वि० समीप, नजदीक।

भिड़पाल–देखो 'भिड़ियाल'।

भिड़क–स्त्री० १ चौंकने की क्रिया या भाव। २ भड़कना क्रिया। ३ झपका।

भिड़कण भिड़कणी–वि०(स्त्री०भिड़कणी) चौंकने वाला, चमकने वाला। (पशु)

भिड़कणी (बी)–क्रि० १ चौंकना, चमकना। २ चौंक कर या डर कर भाग जाना। ३ देखो 'भड़कणी' (बी)।

भिड़काणी(बी),भिड़कावणी(बी)–क्रि० १ चमकाना, चौंकाना। २ चमकाकर या डरा कर भगाना। ३ बहकाना, भुलावे में रखना। ४ संग छुड़वाना, त्याग करवाना। ५ देखो 'भड़काणी' (बी)।

भिड़काव–पु० चमकने, चौंकाने आदि की क्रिया या भाव।

भिड़ग, भिड़ज, भिड़जाळ, भिड़ज्ज–१ देखो 'भड़ज'। २ देखो भट'।

भिड़णी(बी)–क्रि० १ संलग्न होना, सटना। २ परस्पर जुड़ना। ३ दो वस्तुओं का परस्पर ऐसा लग जाना कि बीच में अवकाश न रहे। ४ छूना, स्पर्श होना, लगना। ५ जोर से टकराना, टक्कर खाना। ६ लड़ना, झगड़ना। ७ कुश्ती या द्वन्द्व युद्ध करना, मल्ल युद्ध करना। ८ गुत्थमगुत्था होना। ९ युद्ध करना। १० सामना होना, मुकाबला होना ११ वाद-विवाद होना, करना। १२ मैथुन या संभोग क्रिया करना।

भिड़त–स्त्री० १ सटाव, जुड़ाव। २ संलग्नता। ३ टक्कर, जोर की टक्कर। ४ युद्ध, झगड़ा। ५ मुकाबला, सामना। ६ विवाद, बहस। ७ कुश्ती, मल्लयुद्ध। ८ मैथुन क्रिया।

भिड़ज्ज पु० एक प्रकार का वस्त्र।

भिड़ाणी (बी)–क्रि० १ संलग्न करना, सटाना। २ परस्पर जुड़ाना। ३ पास-पास ऐसा लगाना कि बीच में अवकाश न रहे। ४ छुआना, स्पर्श कराना, लगाना। ५ जोर से टक्कर कराना। ६ लड़ाना, झगड़ाना। ७ कुश्ती या द्वन्द्व युद्ध कराना। मल्ल युद्ध कराना। ८ गुत्थमगुत्था कराना। ९ युद्ध कराना। १० सामना या मुकाबला कराना। ११ वाद-विवाद कराना। १२ मैथुन कराना।

भिड़ाळ–देखो 'भट'।

भिड़ावणी (बी)–देखो 'भिड़ाणी' (बी)।

भिड़ि–पु० १ युद्ध, लड़ाई। २ देखो 'भट'।

भिड़ियाळ–वि० लड़ने-झगड़ने वाला। टकराने वाला। योद्धा, वीर।

भिचक–स्त्री० १ संकोच, हिचकिचाहट। २ बाधा, विघ्न। व्यवधान।

भिचकणी (बी)–क्रि० १ संकोच करना, हिचकना। २ कतराना ३ भयभीत होना, डरना। ४ चौंकना। ५ किसी कार्य का इरादा छोड़ देना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिच्च–पु० [सं० भृत्य] १ नौकर, भृत्य। २ सेना।

भिच्छ, भिच्छा–देखो 'भिक्षा'।

भिच्छु–१ देखो 'बिच्छु'। २ देखो 'भिक्षुक'।

भिच्छुक–देखो 'भिक्षुक'।

भिछ, भिछा–देखो 'भिक्षा'।

भिजोणो (बो), भिजोवणो (बो)–क्रि० १ पानी या किसी तरल पदार्थ से भिगोना, तर करना। २ पानी या किसी तरल पदार्थ में डाल देना। ३ गीला करना, आर्द्र करना। ४ छींटे लगाना।

भिडंत–देखो 'भिड़ंत'।

भिड–१ देखो 'भड़'। २ देखो 'भट'।

भिडमाल, भिडयाळ–देखो 'भडियाळ'।

भिडज, भिडज्ज–देखो 'भड़ज'।

भिडणो (बो)–देखो 'भिड़णो' (बो)।

भिडत–देखो 'भिड़त'।

भिडियाळ, भिडीयाळ–१ देखो 'भट'। २ देखो 'भिडियाळ'।

भिणकणो (बो)–देखो 'भणकणो' (बो)।

भिणणो (बो)–देखो 'भणणो' (बो)।

भिणभिणाटो, भिणभिणाहट–पु० १ मक्खियों की भिन-भिनाट। २ भ्रमर गुंजार।

भित्त, भित्ति–देखो 'भीत'।

भिदणो (बो)–क्रि० १ भेदा जाना। २ छेदा या फोड़ा जाना। ३ छिद्रित किया जाना। ४ घायल होना। ५ रिसना।

भिदाणो (बो), भिदावणो (बो)–क्रि० १ भेदन कराना। २ छेदन कराना, छिद्रित कराना, फुड़वाना। ३ घायल कराना। ४ रिसवाना।

भिदि–देखो 'भेद'।

भिदियो–वि० छिद्रित, छेदपूर्ण।

भिदुर–पु० [स०] वज्र।

भिन–१ देखो 'भिन्न'। २ देखो 'भणण'।

भिनभिन, भिनभिनाट–स्त्री० मक्खियों के उड़ने व बोलने की ध्वनि।

भिनभिनाणो (बो)–क्रि० मक्खियों का उड़ना व बोलना, किसी स्थान पर भिनभिनाना।

भिन्न–पु० [सं० भिद्] १ किसी वस्तु का खण्ड, टुकड़ा, अंश। २ गणित में किसी संख्या या इकाई का खण्ड या विभाग। ३ नीलम का एक दोष। –वि० १ अलग, अतिरिक्त, जुदा। २ पृथक, दूर। ३ प्रकारान्तर से अन्य। ४ अन्य, दूसरा, अपर। ५ विमक्त। ६ विशिष्ट।

भिन्नता–स्त्री० १ भेद, अन्तर। २ अलगाव, पार्थक्य।

भिन्नर–देखो 'भीमळ'।

भिमरो–पु० १ कपाल खोपड़ी। २ ललाट, भाल। ३ मस्तक।

भिमरणो (बो)–देखो 'भींभरणो' (बो)।

भिमरियां–स्त्री० क्रोधावेश।

भिरंड, भिरड, भिरडी–देखो 'भिराड'।

भिरग, भिरगु–देखो 'भृगु'।

भिरगसुत, भिरगुसुत–देखो 'भृगुसुत'।

भिरड़–पु० ततैया, बर्र जाति का एक बड़ा पतंगा।

भिरड़णो, (बो)–क्रि० १ कुपित या क्रुद्ध होना। २ नाराज, नाखुश होना। ३ मसलना। ४ मारना।

भिरड़ी–पु० एक प्रकार का औजार या उपकरण।

भिराड भिराडी–वि० साहसी, बहादुर।

भिराणो–देखो 'बिरावणो'।

भिलकि–स्त्री० भूमि की दरार।

भिलखी–देखो 'भीलणी'।

भिळणो (बो), भिसणो (बो)–क्रि० १ एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलना, मिश्रण होना। २ किसी पदार्थ में दूसरे का अंश पड़ जाना। ३ सम्मिलित होना, संलग्न होना। ४ गढ़, किले या गांव में शत्रु सेना का घुसकर फैल जाना। ५ फसल कटने के बाद खेत में पशुओं का चर जाना। ६ इसी तरह खड़ी फसल में पशुओं का चर जाना। ७ शस्त्र प्रहार होना। ८ युद्ध होना, लड़ाई होना। ९ किसी पक्ष में मिलना। १० किसी विशेष स्थिति में पड़ना या गिरना। ११ टूटना। १२ होना। १३ पहुंचना। १४ सूक्ष्म जीवों या कीटाणुओं का संक्रमण होना। १५ नष्ट होना। १६ ज्योति में लीन होना।

भिळाणो (बो) भिसाणो (बो)–क्रि० १ एक वस्तु को दूसरी में मिलाना, मिश्रण करना। २ एक वस्तु में दूसरी का अंश पटकना। ३ सम्मिलित करना, संलग्न करना। ४ गढ़ किले या गांव में शत्रु सेना को घुसाना। ५ फसल कटने पर या खड़ी फसल के खेत में पशुओं को चराना। ६ शस्त्र, प्रहार करना। ७ युद्ध या लड़ाई करना। ८ किसी पक्ष में या अपने पक्ष में मिलाना। ९ विशेष परिस्थिति में डालना, पटकना। १० तोड़ना। ११ करना। १२ पहुंचाना। १३ देखो 'भेळणो' (बो)। १४ नष्ट कराना।

भिसाळ–पु० भीलों का समूह।

भिलावो–पु० [सं० भल्लातकः] औषधि में काम आने वाला एक फल व उसका वृक्ष।

भिळावणो (बो)–देखो 'भिळाणो' (बो)।

भिले–देखो 'भले'।

भिल्ल–देखो 'भील'।

भिल्लो–देखो 'बिल्लो'।

भिस–अव्य० [सं० भृशं] अधिकता से, तेजी से, जोरों से।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भिसक भिसज-पु० [सं० भिषज] वैद्य, हकीम, चिकित्सक। डाक्टर।
भिसट-वि० १ नीच, पतित। २ देखो 'भ्रष्ट'।
भिसटो-देखो 'विस्ठो'।
भिसत-देखो 'बहिस्त'।
भिसति, भिसती-१ देखो 'भिस्ती'। २ देखो 'बहिस्त'।
भिसम-देखो 'भीस्म'।
भिस्ट-देखो 'भ्रष्ट'।
भिस्टो-देखो 'विस्ठो'।
भिस्त-देखो 'बहिस्त'।
भिस्तनसीन-पु० [सं० बहिस्त नशीन] देहावसान, मृत्यु।
भिस्ती-स्त्री० १ एक मुसलमान जाति जो मसकों से पानी ढोने का कार्य करती है। २ इस जाति का व्यक्ति। सक्का।
भिहाणी-स्त्री० खेत में बना झोंपड़ी। ढाणी।
भींग-देखो 'भींगी'/ भींगो'।
भींगणो (बो)-देखो 'भीजणो' (बो)।
भींगी-स्त्री० वर्षा ऋतु के उपरांत होने वाला एक कीड़ा।
भींगोणी (बो) भींगोवणी (बो)-देखो 'भिजोणो' (बो)।
भींगो-पु० 'भींगी' के गर्दन पर होने वाला चमकीला ठोस आवरण।
भींच-पु० [सं० अभ्यंच] १ योद्धा, सुभट। २ दबाव, फंसाव।
भींचणो (बो)-क्रि० १ दल पूर्वक दबाना, पकड़ना, संकुचित करना। २ बंद करना, सम्पुट बनाना। ३ हाथ की मुट्ठी बंद करना। ४ आवेश या क्रोध में दांत पीसना। ५ मूर्च्छावस्था में दांत जुड़ जाना। ६ कृपणता या कंजूसी करना।
भींचरड़-वि० १ काटने या मारने वाला। २ देखो 'भींच'।
भींछ-देखो 'भींच'।
भींज-देखो 'भीज'।
भींजणो (बो)-देखो 'भीजणो' (बो)।
भींजिया-स्त्री० छोटे बच्चे का मूत्र।
भींजोणो (बो), भींजोवणो (बो)-देखो 'भिजोणो' (बो)।
भींट-स्त्री० १ छूआछूत का दोष। २ देखो 'भीट'। ३ देखो 'भींटोरो'।
भींटणो (बो)-क्रि० १ अछूत वस्तु से छू जाना, स्पर्श कर जाना। २ पास आना, सम्पर्क में आना। ३ होना।
भींटारो, भींटोरो-पु० झड़ बेरी के सूखे डठलों के छोटे-छोटे ढेरों का समूह, जो एक साथ गाड़ी में भरा जाता हो।
भींडसी-देखो 'भिंडी'।
भींडियो-पु० छोटे सींगों वाला बैल।
भींडी-देखो 'भिंडी'।
भींत-देखो 'भीत'।
भींतड़ी-पु० १ गृह, भवन, मकान। २ देखो 'भीत'।
भींतर (रि)-देखो 'भीतर'।
भींतहर-वि [सं० भीत-हर] १ भय का हरण करने वाला, भयहारी। २ देखो 'भीतिहर'।
भींति-देखो 'भींत'।
भींतियो-पु० १ मिट्टी की दीवारों पर बनी कच्ची झोंपड़ी। २ खपरैल की छाजन के सहारे के लिए दीवार में लगाया जाने वाला काष्ठ का डंडा।
भींनणो (बो)-१देखो 'भीनणो'(बो)। २ देखो'भीजणो'(बो)।
भींभर, भींभरी-पु० १ शिर, मस्तक। २ क्रोध, गुस्सा। ३ भौंगुर।
भींरणो (बो)-क्रि० १ क्रोध करना, गुस्सा करना। २ बिखरना।
भींभळ, भींभल-पु० १ महोत्सव। २ मुग्धा। ३ देखो 'बिभळ'।
भींभराव-पु० भीम का पुत्र।
भींयाड़ो-पु० भैंस का चमड़ा।
भींयो-पु० १ जुलाहे के काम का बांस विशेष। २ देखो 'भीम'।
भींव-देखो 'भीम'।
भींवराज-देखो 'भीमराज'।
भी-अव्य० [सं० अपि] १ निश्चित रूप से, अवश्य, जरूर। २ अपेक्षाकृत, तुलना में। ३ अतिरिक्त, सिवाय। ४ और। ५ फिर, पुनः। ६ तक, पर्यन्त। ७ भर्त्सना सूचक ध्वनि। ८ क्षोभ व आश्चर्य सूचक ध्वनि।
भीक-देखो 'भिक्षा'।
भीकण-देखो 'भिक्षुक'।
भीकम-देखो 'भीस्म'।
भीकमचांदी-स्त्री० पुरुषेन्द्रिय काटने की क्रिया।
भीख-१ देखो 'भिक्षा'। २ देखो 'वीख'।
भीखक भीखग-देखो 'भिक्षुक'।
भीखण-देखो 'भीसण'।
भीखणो (बो)-क्रि० भीख मांगना, याचना करना।
भीखम-१ देखो 'भीस्म'। २ देखो 'भीकम'।
भीखमआठम-स्त्री० [सं० भीष्म-अष्टमी] माघ शुक्ला अष्टमी।
भीखमक-देखो 'भीस्मक'।
भीखमचांदी-देखो 'भीकमचांदी'।
भीखमपचक-पु० [सं० भीष्म-पंचक] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा पर्यन्त की तिथियां।
भीखारी-देखो 'भिखारी'।
भीगणो (बो)-देखो 'भीजणो' (बो)।
भीगोणो (बो), भीगोवणो (बो)-देखो 'भीजोणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भीड़–स्त्री० १ समूह, जमघट। २ आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का समूह। ३ फालतू व्यक्तियों की उपस्थिति। ४ संकट, विपत्ति। ५ सहायता, मदद। ६ बाहुल्य, अधिकता। ७ भिड़ने की क्रिया या भाव। ८ औजार या उपकरण विशेष। ९ बैलगाड़ी के थाटे का एक भाग। १० बैलगाड़ी के तख्ते के बीच का रिक्त स्थान।

भीड़णी–स्त्री० घोड़े का चारजामा कसने की क्रिया या भाव।

भीड़णो (बो), भीड़बो (बो)–क्रि० १ कसकर, पहनना। २ कसना। ३ चिपकाना। ४ कंजूसी करना। ५ बंद करना। ६ बाहु-पाश में लेना, आलिंगन करना। ७ शस्त्र धारण करना, बाँधना। ८ अंगों को परस्पर मिलाना।

भीड़ाणो (बो), भीड़ाबो (बो)–देखो 'भिड़ाणो' (बो)।

भीड़ि, भीड़ी, भीड़ू–पु० १ सहायक, मददगार। २ मित्र, दोस्त। ३ अपनी टोली, दल या संगठन का सदस्य। ४ संगी, साथी। ५ रक्षक। ६ जीवन साथी, पति। –वि० [सं० भीरु] कायर, डरपोक।

भीड़ो–पु० १ बेंगन। २ देखो 'भीड़'।

भीच–देखो 'भींच'।

भीचड़ो–देखो 'भींच'।

भीचणो (बो)–देखो 'भींचणो' (बो)।

भीचरड़–वि० १ विध्वंसक, संहारक। २ देखो 'भींच'।

भीछा–देखो 'भिक्षा'।

भीछ–देखो 'भीच'।

भींज–स्त्री० भीगने की क्रिया या भाव।

भीजण–देखो 'भीनण'।

भीजणो (बो)–क्रि० [सं० अभ्यंज] १ गीला होना, पानी आदि से तर होना। २ आर्द्र होना, नम होना। ३ पानी के छींटे लगना। ४ पानी आदि में डूबे रहने से फूल जाना। ५ दयार्द्र होना, द्रवीभूत होना। ६ किसी रस या भावना से अभिभूत होना। [सं० भिद्य] ७ भेदा जाना, छेदा जाना।

भीजोणो (बो), भीजोवणो (बो)–देखो 'भिजोणो' (बो)।

भींट, भींटकियो, भींटको, भींटड़–पु० १ झड़बेरी के कांटे पौधों का छोटा ढेर। २ केर की छोटी झाड़ी। ३ देखो 'भींट'।

भींटणो (बो)–देखो 'भींटणो' (बो)।

भींटहरो–देखो 'भींटोरो'।

भीठ–पु० १ युद्ध, लड़ाई, संग्राम। २ शस्त्र समूह का प्रहार। ३ भीड़। ४ शस्त्र, प्रहार की ध्वनि। ५ किसी शस्त्र का प्रहार। वार। ६ देखो 'भींट'।

भीठकियो, भीठको–देखो 'भींटकी'।

भीठहरो–देखो 'भींटोरो'।

भीठो–पु० कपटी मित्र।

भीड–देखो 'भीड़'।

भीडणो (बो)–देखो 'भीड़णो' (बो)।

भीडो, भीडू–देखो 'भीड़ो'।

भीत–वि० [सं०] १ डरा हुआ, भयातुर। २ शंकित, व्याकुल। –स्त्री० [सं० भीति] १ भय, डर, आतंक। २ दीवार।

भीतड़ो–देखो 'भींतड़ो'।

भीतर–अव्य० [सं० अभ्यंतर] १ अन्दर, में। २ किसी सीमा या दायरे या कक्ष में। ३ बाहर के विपरीत में। ४ गुप्त रूप से, चुपके से। –पु० १ आन्तरिक कक्ष। २ भीतरी भाग। ३ अन्तःपुर, रनिवास।

भीतरलो–वि० [सं० अभ्यंतर] १ भीतर का, अन्दर का। २ आपस का, पारस्परिक।

भीतरवाड़ियो–पु० (स्त्री० भीतरली) १ राजमहल के अन्दर का नौकर। २ देखो 'भीतरियो'।

भीतरि–१ देखो 'भीतर'। २ देखो 'भीतरी'।

भीतरियो–पु० १ निज मन्दिर का पुजारी। २ अन्दर वाला।

भीतरी–वि० १ अन्दर का, भीतर का। २ गुप्त, गोपनीय। ३ सच्चा। ४ अभिन्न। ५ देखो 'भीतर'।

भीतरोटांग–पु० कुश्ती का एक दांव।

भीति–स्त्री० [सं०] १ भय, डर, आतंक। २ देखो 'भीत'। ३ देखो 'भांति'।

भीतिकर, भीतिकारी–वि० डरावना, भयानक।

भीतिहर–पु० [सं० भिति:+हर] दुर्ग, किला।

भीनड–देखो 'भीनो'।

भीनण–पु० १ छाछ या मट्ठे में भिगोई हुई सूखी रोटियां। २ इसी तरह भिगोया हुआ कोई खाद्य पदार्थ।

भीनणो (बो)–क्रि० १ किसी तत्त्व विशेष या रंग विशेष से युक्त होना, प्रभावित होना। २ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना। ३ अनुरक्त होना। ४ युक्त होना। ५ देखो 'भीजणो' (बो)।

भीनरवाइ–स्त्री० आर्द्र भूमि, गीली या नम जमीन।

भीनरवाड़ो, भीनोटो–पु० नम या आर्द्र भू-भाग।

भीनो–वि० [सं० भीनी] १ अनुरक्त। २ युक्त, सहित। ३ पूर्ण, परिपूर्ण। भरा हुआ। ४ भीगा हुआ, गीला, आर्द्र। ५ मंद, धीमा। ६ मस्त, मतवाला। ७ श्याम रंग का। ८ ओत-प्रोत, सना हुआ।

भीफरणो (बो)–देखो 'बिफरणो' (बो)।

भीमळ–देखो 'बिमळ'।

भीमळणो (बो)–क्रि० १ गर्म होना, उष्ण होना। २ बिल्कुल होना।

भीमू–पु० सिंह, शेर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भीम–पु० [सं०] १ शिव, महादेव। २ विष्णु। ३ कुंती का द्वितीय पुत्र एक पाण्डव। ४ पुरुवंशीय एक राजा। ५ रावण का मित्र एक राक्षस। ६ एक अग्नि विशेष। ७ एकादश रुद्रों में से एक। ८ विदर्भ देश का राजा, दमयंती का पिता। ९ कुंभकरण का एक पुत्र। १० साहित्य में भयानक रस। ११ एक नदी का नाम। –वि० १ बहुत बड़ा, विशाल। २ भीषण, भयानक। ३ अत्यधिक।

भीमएकादसी–स्त्री० [सं०] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २ कार्त्तिक शुक्ला एकादशी। ३ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमक–देखो 'भीमक'।

भीमकुंड–पु० एक तीर्थ विशेष।

भीमकुमार–पु० [सं०] घटोत्कच।

भीमगज–पु० पांडु-पुत्र भीम द्वारा आकाश में फेंके गये हाथी।

भीमवाल, भीमवाथ–पु० रंग विशेष का घोड़ा।

भीमड़ी–देखो 'भीम'।

भीमचंडी–स्त्री० एक देवी का नाम।

भीमजी–पु० एक लोक गीत।

भीमतलाव–पु० बड़ा सरोवर।

भीमता–स्त्री० भयानक होने की अवस्था या भाव।

भीमतिथ, भीमतिथि–स्त्री०[सं०भीमतिथि]१ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २ कार्त्तिक शुक्ला एकादशी। ३ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमथळी–पु० जैसलमेर का एक भू-भाग।

भीमनाद–पु० [सं०] भयकर ध्वनि या शब्द। जोर की आवाज।

भीमफळोदया–स्त्री० [सं०] भयकर फल देने वाली।

भीमबळ–पु०१ एक प्रकार की अग्नि। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भीममुख–पु० एक प्रकार का बाण।

भीमरथ–पु० १ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २ एक नृपति। ३ विकृति राजा का पुत्र। ४ एक अन्य राजा।

भीमरथी–स्त्री०१ एक पौराणिक नदी। २ मानव के ७७ वें वर्ष में आने वाली एक कठिन अवस्था।

भीमसंकरी–स्त्री० दक्षिण की एक बड़ी नदी।

भीमसेण, भीमसेन–पु० भीम।

भीमसेनीकपूर–पु० एक प्रकार का कपूर।

भीमसेनु–देखो 'भीमसेन'।

भीमा–स्त्री० १ दक्षिण की एक नदी। २ देवी, दुर्गा। –वि० भीषण, भयंकर।

भीमाजळ–पु०भीमसिंह नाम वाले के लिए सम्मान सूचक शब्द।

भीमि, भीमी–स्त्री० १ भीम राजा की पुत्री, दमयंती। २ देखो 'भीम'।

भीमू, भीमेण–देखो 'भीम'।

भीमोत–पु० राठौड़ वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

भीमोत्तर–पु० एक लता विशेष। कुम्हड़ा।

भीमोदरी–स्त्री० दुर्गा।

भीय–देखो 'बी'।

भीयड़–१ देखो 'भीड़'। २ देखो 'भीड़ी'।

भीयो–वि० डरा हुआ, भीत।

भीर–देखो 'भीड़'।

भीरव–देखो 'भीड़ी'।

भीरि, भीरी–१ देखो 'भीड़ी'। २ देखो 'भीड़'।

भीरु–वि० [सं० भीरु] कायर, डरपोक। –पु० १ चांदी, रजत २ देखो 'भीड़ी'।

भीरुता–स्त्री० १ कायरता, कमजोरी। २ डर, भय।

भीरू–स्त्री० [सं०] १ स्त्री, औरत। २ देखो 'भीरु'।

भीरूक–पु० [सं०भीरूकन्] १ चांदी। २ वन, जंगल। ३ उल्लू।

भीरो–देखो 'भीड़'।

भील, भीलड़ी–पु० [सं०भिल्ल] (स्त्री०भीलण, भीलणी) १ एक जंगली या पहाड़ी अनुसूचित जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

भीलड़ी, भीलण, भीलणी–स्त्री० १ भील जाति की स्त्री। २ शबरी नामक भील स्त्री जो राम की भक्त थी।

भीळणी (बी)–देखो 'भिळणी' (बी)।

भीलप–पु० १ विलाप। २ कायरता। ३ घबराहट।

भीलभूसण–पु० [सं० भिल्ल भूषण] गुंजा या घुंघची की माला।

भीलवाड़ी–पु० १ भीलों का क्षेत्र या प्रदेश। २ इस प्रदेश की मिट्टी का बना एक प्राचीन सिक्का।

भीळाणी (बी)–देखो 'भिळाणी' (बी)।

भीलामी–देखो 'भिलावी'।

भीळावणी (बी)–देखो 'भिळाणी' (बी)।

भीलावी–देखो 'भिलावी'।

भीलि, भीली–देखो 'भीलणी'।

भीव–देखो 'भीम'।

भीवणी (बी)–देखो 'भीजणी' (बी)।

भीसण–वि० [सं० भीषण] १ भयानक, डरावना। २ विशाल, प्रचण्ड। ३ अत्यधिक खतरनाक। ४ उग्र, दुष्ट। ५ दुष्कर, कठिन। ६ विकट, विपत्तिदायक। ७ बुरा। –पु० १ ब्रह्मा। २ शिव, महादेव। ३ वय नामक असुर का पुत्र। ४ साहित्य में एक रस। ५ एक नृपति विशेष। ६ एक असुर।

भीसणता–स्त्री० [सं० भीषणता] १ भयंकरता, डरावनापन। २ उग्रता, उग्रता। ३ दुष्करता, विकटता।

भीसणी–स्त्री० [सं० भीषणी] सीता की एक सखी।

भीसम–देखो 'भीस्म'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भीसमग्रायी–स्त्री० [सं० भीष्म-ग्रार्या] गंगा, भागीरथी।
भीसुर–वि० दीप्तिमान।
भीस्म–पु० [सं० भीष्म] १ कुरुराज शांतनु व गंगा का पुत्र। २ शिव, महादेव। ३ राक्षस, असुर। ४ साहित्य में एक रस। –वि० भयंकर, डरावना।
भीस्मक–पु० [सं० भीष्मक] विदर्भ देश का भोजवंशीय राजा। –सुता–स्त्री० श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी।
भीस्मपितामह–पु० [सं० भीष्म-पितामह] कौरव-पांडवों के पितामह, भीष्म।
भीस्ममणि–स्त्री० [सं० भीष्ममणि] एक सफेद पत्थर या मणि विशेष।
भीस्मसू–स्त्री० [स० भीष्मसू] गंगा, भागीरथी।
भीस्माष्टमी–स्त्री० [सं० भीष्माष्टमी] माघ शुक्ला अष्टमी जब भीष्म ने देह त्याग किया।
भुं, भुंअ–१ देखो 'भांय'। २ देखो 'भूमि'। ३ देखो 'भ्रू'।
भुंआरी, भुंइंक, भुंइंरी–देखो 'भंवारी'।
भुंइ, भुंइण–१ देखो 'भूमि'। २ देखो 'भांय'। ३ देखो 'भुवन'।
भुंइदाग–पु० १ शव का दफन। २ दाह संस्कार का दिन।
भुंइरी–देखो 'भंवारी'।
भुंई–१ देखो 'भांय'। २ देखो 'भूमि'।
भुंईबांवळी–स्त्री० बबूल जाति का एक वृक्ष।
भुंकार–स्त्री० ध्वनि विशेष।
भुंगर–पु० एक जंतु विशेष।
भुंगरी–पु० रंग विशेष का घोड़ा।
भुंगळ–देखो 'भूंगळ'।
भुंजाइयो–पु० अतिथियों को भोजन कराने वाला।
भुंजाई, भुंजायो–स्त्री० १ भोज विशेष। २ देवता का नैवेद्य ३ भूंजने की क्रिया। ४ रसोई।
भुंजाणो (बो), भुंजावणो (बो)–क्रि० १ तलवाना, भुंजवाना। २ तलना, फाई करना।
भुंडु, भुंडो–देखो 'भूंडो'।
भुंय–१ देखो 'भूमि'। २ देखो 'भांय'।
भुंरट, भुंरटियो–देखो 'भुरट'।
भुंवलि–देखो 'भुवन'।
भुंवाणो (बो)–देखो 'भंवाणो' (बो)।
भुंवाळो–देखो 'भंवळ'।
भुंवारी–१ देखो 'भंवारी'। २ देखो 'भ्रू'।
भुंवास–पु० १ घोड़े के पिछले पैर बांधने का खूंटा। २ देखो 'भूंयास'।
भुंहडिय–देखो 'भ्रू, भ्रकुटि'।
भुंहरी, भुंहारी–१ देखो 'भ्रू'। २ 'भंवारी'।
भु–पु० १ कौआ। २ सर्प। ३ हड्डी। ४ वेसक।
भुअंग–देखो 'भुजंग'।
भुअंगम (मि)–देखो 'भुजंगम'।
भुअ–देखो 'भू'।
भुअण, भुअन–देखो 'भुवन'। –पति='भुवनपति'।
भुअपति, भुअपत्तिअ–देखो 'भूपति'।
भुअबल्ल–पु० [सं० भू-बल] १ राजा, नृप। २ वीर, योद्धा।
भुआ, भुआजी–देखो 'भूआ'।
भुआळ–पु० १ केश, बाल। २ आर्या गीति का एक भेद। ३ देखो 'भूपाळ'।
भुइं, भुइ–१ देखो 'भूमि'। २ देखो 'भांय'।
भुइं आंवळो–पु० [सं० भूम्यामलकः] ठंडे स्थानों में होने वाला एक क्षुप विशेष।
भुइ, भुइण, भुई–१ देखो 'भूमि'। २ देखो 'भांय'।
भुई रींगणी–स्त्री० कंटकारी नामक छोटा क्षुप।
भुई–देखो 'भूमि'।
भुक्ख–देखो 'भूख'।
भुक्खड़, भुक्खो–देखो 'भूखी'।
भुक्त–वि० [सं०] १ खाया हुआ, भक्षित। २ भोगा हुआ। ३ भुगता हुआ, वहन किया हुआ। ४ सजा, दण्ड आदि पाया हुआ। ५ जिसे भुना लिया गया हो। –पु० भोजन।
भुक्तकार–पु० [सं०] रसोईदार, रसोईया।
भुक्तभोग, भुक्तभोगी–वि० [सं०] १ जिसने भोग किया हो। २ जिसका भोग किया गया हो। ३ भुगता हुआ।
भुक्ति–स्त्री० [सं०] १ चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। २ ग्रहों का किसी राशि से गमन। ३ अपने अधिकार के प्रयोग की अवस्था, दखल। ४ आहार, भोजन। ५ भोग। ६ प्रान्त।
भुखड़ी–स्त्री० एक प्रकार की बन्दूक।
भुखमरी–स्त्री० निर्धनता, कंगाली।
भुखमरो–वि० (स्त्री० भुखमरी) १ भूखा, कंगाल, निर्धन, दरिद्र। २ हर समय खाने की नीयत रखने वाला, ओछा। ३ अत्यन्त भूखा, भूख से बेताब।
भुखारी–पु० [फा० बुखारा] तुर्किस्तान का एक नगर।
भुख्याळवो–देखो 'भूखो'। (स्त्री० भुख्याळवी)।
भुगटी–देखो 'भ्रकुटि'।
भुगत–पु० [सं० भक्त] १ भोजन, आहार। २ धन, द्रव्य। ३ भुगतने की क्रिया या भाव।
भुगतणो (बो)–क्रि० [सं० भुक्त] १ उपभोग करना, भोगना। २ वहन करना, सहन करना। ३ भार उठाना, जिम्मेदारी लेना। ४ अनुभव करना, देखना। ५ ऋण, देनादारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदि का निपटना । ६ भुजरना, बीतना । ७ पूरा होना, निपटना । ८ खबर होना, संदेश मिलना । ९ चुकता होना ।

भुगतांण (न)–पु० १ ऋण आदि का चुकारा, निपटारा । २ फैसला, निर्णय । ३ परिशोध । ४ भुगतान योग्य रकम । ५ प्रतिफल । ६ रसीद, पहुँच । ८ भोगना क्रिया ।

भुगतावणो (बो), भुगतावबो (बो)–क्रि० १ उपभोग कराना, भोगाना । २ वहन कराना, सहन कराना । ३ भार उठवाना, जिम्मेदारी देना । ४ अनुभव कराना, दिखाना । ५ ऋण आदि पटवाना । ६ चुकता करना, देना । ७ पूरा करना, निपटाना । ८ खबर कराना । संदेश कराना ।

भुगति–पु० [सं०] १ विषय-भोग, सांसारिक सुख । २ भोजन, आहार । ३ भोज ।

भुगोळ (ल)–देखो 'भूगोळ' ।

भुड़को–देखो 'बुगती' ।

भुड़की–पु० मिट्टी की सुराई, जलपात्र ।

भुड़द–देखो 'बुरद' ।

भुचकणो (बो)–क्रि० १ कम्पायमान होना, कांपना । २ डोलायमान होना, डोलना ।

भुचरको–पु० १ टक्कर, भिड़न्त । २ प्रहार, चोट । ३ चूर्ण, चूरा ।

भुजंग–पु० [सं०] १ सर्प, सांप । २ शेषनाग । ३ पति । ४ उप पति, यार, प्रेमी । ५ स्वामी, मालिक । ६ राजा नृप । ७ कुंडलिनी नामक नागिन का पति । (हठयोग) । ८ राजा का विशेष सेवक (प्राचीन) । ९ सीसा नामक धातु । १० राजा, नृप । ११ पन्द्रहवें विहरमान । —चर–पु० गरुड़ । मोर । —पत, पति–पु० शेषनाग । वासुकि । —पास–स्त्री० नागपाश अस्त्र । —भुज, भोजिन–पु० गरुड़ । मयूर ।

भुजंगप्रयात–पु० [सं०] एक वर्णिक छन्द विशेष ।

भुजंगम–पु० [सं०] सर्प, नाग, शेषनाग । —चर–पु० गरुड़ । मोर ।

भुजंगरसना–स्त्री० दो की संख्या० ।

भुजंगासन–पु० चौरासी आसनों में से एक ।

भुजंगी–पु० १ एक वर्णिक छद विशेष । २ देखो 'भुजंग' ।

भुजंगेंद्र–पु० [सं०] शेषनाग ।

भुजगेस, भुजगेसर–पु० [सं०] १ शेषनाग । २ पातंजलि ऋषि एक नाम । ३ वासुकि ।

भुज–पु० [सं०] १ हाथ । २ मकान के एक ओर की दीवार । ३ हाथी की सूंड । ४ वृक्ष की शाखा या डाली । ५ रेखा गणित की कोई रेखा । ६ रेखा गणित में समकोणों का पूरक कोण । ७ ज्योतिष में तीन राशियों के अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति । ८ दो की संख्या० । ९ चार की संख्या० । १० देखो 'भुजा' ।

भुज अंतर–पु० वक्षस्थल, छाती ।

भुजआजांन–वि० आजानबाहु ।

भुजकंट (ठ)–पु० नाखून ।

भुजक–पु० [स० भुजिष्य] नौकर, अनुचर ।

भुजकांटो–देखो 'भुजकंट' ।

भुजकोटर–स्त्री० [सं०] बाहुमूल के नीचे का खड्डा, कांख ।

भुजग देखो 'भुजंग' । —पति='भुजगपति' ।

भुजगळ–देखो 'भुजळग' ।

भुजगीस, भुजगेस, भुजगेस्वर–देखो 'भुजगेस' ।

भुजइ–पु० वीर, योद्धा ।

भुजठाळक–देखो 'भुजळक' ।

भुजडड–वि० [सं० भुजदण्ड] १ योद्धा, वीर । २ प्रचंड, जोरदार । ३ समर्थ, शक्तिशाली । ४ आभूषण विशेष । ५ देखो 'भुजा' ।

भुजजांण–पु० १ लम्बी भुजाओं वाला वक्षस्थल । २ योद्धा, वीर ।

भुजतळ–पु० भुजाओं का मध्य भाग ।

भुजदंड–देखो 'भुजाडंड' ।

भुजन देखो 'भजन' ।

भुजपरिनाग–पु० [सं०] नवकुली नागों में से एक ।

भुजपाळ–पु० योद्धा, वीर ।

भुजपास–पु० [सं० भुजपाश] भुजाओं का पाश, गलबांही । आलिंगन ।

भुजबंद (धय), भुजबंधण–पु० [सं० भुजबंध] १ भुजा का आभूषण विशेष । २ आलिंगन ।

भुजबळ–पु० [सं० भुजबल] १ शक्ति, बल सामर्थ्य, भुजाओं का बल । २ घोड़े के अगले पैर पर होने वाली भौंरी । ३ मुखिया, प्रधान ।

भुजबळी (लि)–वि० पराक्रमी, बली, वीर ।

भुजबाय–पु० आलिंगन, गलबांही ।

भुजभूसण–पु० [सं० भुज-आभूषण] भुजा का आभूषण विशेष ।

भुजमूळ–पु० [सं०] कांख ।

भुजमोचक–पु० [सं०] सर्प का विष उतारने वाला रत्न ।

भुजयडड–देखो 'भुजदंड' ।

भुजळक भुजळग–स्त्री० तलवार ।

भुजलठी–वि० १ हाथ में लाठी रखने वाला । २ डंडे के बल काम कराने वाला ।

भुजवीसो–पु० बीस भुजा वाला, रावण ।

भुजसंभु–पु० युद्ध का भार उठाने वाला योद्धा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुजसीस–पु० [सं०] कंधा ।
भुजांख, भुजांम–देखो 'भुजा' ।
भुजा–स्त्री० [सं०] १ हाथ, हस्त । २ बाँह, बाहु ।
भुजाआजान–वि० आजानबाहु ।
भुजाई–देखो 'भुंजाई' ।
भुजाकंट–देखो 'भुजकंट' ।
भुजाग–स्त्री० नागिन, सर्पिनी ।
भुजागळ–वि० १ रक्षक, पहरेदार । २ शक्तिशाली, बलवान । ३ बड़ा, विशाल । ४ लम्बी भुजा वाला । –स्त्री० अर्गला, बेंडा ।
भुजाग–देखो 'भुजाग' ।
भुजाट–वि० १ भयंकर' जबरदस्त । २ देखो 'भुजा' ।
भुजाडंड, भुजाडंडि–देखो 'भुजडंड' ।
भुजाडी–पु० १ संहार करने वाला । २ पराक्रमी ।
भुजादंड–देखो 'भुजडंड' ।
भुजापत, भुजापति–पु० [सं० भुजपति] वीर, योद्धा ।
भुजाबळ, भुजाबळि–देखो 'भुजबळ' ।
भुजाबोच–स्त्री० कोहनी ।
भुजायत–स्त्री० लक्ष्मी, रमा ।
भुजाळ–वि० १ लंबी भुजाओं वाला । २ भयंकर, प्रचंड । ३ बहादुर, वीर । ४ समर्थ, शक्तिशाली । ५ देखो 'बुरजाळ' ।
भुजाळि (ळी)–वि० १ समर्थ, शक्तिशाली । २ देखो 'बुरज' ।
भुजाळी–देखो 'भुजाळ' ।
भुजावेद–पु० [सं०] १ गरुड़ । २ विष्णु ।
भुजि–देखो 'भुजा' ।
भुजिया–पु० १ बेसन की बारीक सेंव । २ पकोड़े । ३ भुना हुआ खाद्य पदार्थ ।
भुजीस–पु० नाग, सर्प ।
भुज्ज–१ देखो 'भुज' । २ देखो 'भुजा' ।
भुज्जडंड–देखो 'भुजडंड' ।
भुज्जन–१ देखो 'भोजन' । २ देखो 'भजन' ।
भुज्जाळ–१ देखो 'बुरजाळ' । २ देखो 'भुजाळ' ।
भुटंत–देखो 'भूटांत' ।
भुटकणो (बो), भुटक्कणो (बो)–क्रि० १ भिड़ना, टक्कर खाना । २ युद्ध करना । ३ देखो 'भटकणो' (बो) ।
भुटणो (बो)–क्रि० १ क्रुद्ध होना, क्रोधित होना । २ ईर्ष्या, द्वेष करना ।
भुटाणो (बो), भुटाववणो (बो)–क्रि० १ क्रोध दिराना, गुस्सा दिराना । २ द्वेष कराना ।
भुट्टणो (बो)–देखो 'भुटणो' (बो) ।
भुठार, भुठीर–पु० १ घोड़ों की एक जाति विशेष । २ इस जाति का घोड़ा ।
भुडंड–देखो 'भुजडंड' ।
भुणकमळो–देखो 'भूणकमळो' ।
भुतियो, भुत्तियो–देखो 'भूतियो' ।
भुथांण–देखो 'भाथो' ।
भुधर, भुधरो–देखो 'भूधर' ।
भुनगो–पु० १ छोटा पतंगा, जीव । २ तुच्छ प्राणी या पदार्थ ।
भुनणो(बो)–क्रि० १ आग पर सेकना, भुनना । २ गोलियों से छलनी कर देना । ३ नोट या सिक्का खुला किया जाना ।
भुनाणो (बो), भुनाववणो (बो)–क्रि० १ आग पर सिकवाना । २ गोलियों से छलनी कराना । ३ नोट या सिक्का खुला कराना ।
भुपति–देखो 'भूपति' ।
भुपाळ–देखो 'भूपाळ' ।
भुभारड–पु० शेर, सिंह ।
भुमंड, भुमंडळ–देखो 'भूमंडळ' ।
भुमण–देखो 'भुवन' ।
भुम्मि, भुम्मी–देखो 'भूमि' ।
भुयंग–देखो 'भुजंग' । —धर='भुजंगधर' ।
भुयंगम–देखो 'भुजंगम' ।
भुयंगेस, भुयंगेसर (सुर)–देखो 'भुजंगेसर' ।
भुयंद–पु० [सं० भू+इन्द्र] राजा, नृप ।
भुय–१ देखो 'भूमि' । २ देखो 'भुज' ।
भुयग, भुयग्गि–देखो 'भुजंग' ।
भुयण (णि णी)–देखो 'भुवन' । —पत, पति, पत्ति, पत्ती= 'भुवनपति' ।
भुयदंड–देखो 'भुजडंड' ।
भुरंगो–वि० बुझा हुआ ।
भुरंट, भुरंटियो–देखो 'भुरट' ।
भुरंड–पु० कवच बनाने वाला लुहार ।
भुरकणो (बो)–देखो 'बुरकणो' (बो) ।
भुरकि, भुरकी, भुरक्की–स्त्री० १ महीन चूर्ण । २ वशीकरण मंत्र से मंत्रित भस्म, धूल ।
भुरड़णो (बो)–क्रि० १ महीन चूर्ण करना । २ संहार करना, मारना । ३ ताप से झुलसना ।
भुरज–स्त्री० १ शिखर । २ शिखरदार बादल । ३ देखो 'बुरज' ।
भुरजाळ–पु० १ योद्धा, वीर । २ गढ़पति, राजा । ३ देखो 'बुरजाळ' ।
भुरजाळी–स्त्री० गोल सींग वाली गाय या भैंस ।
भुरजाळी–वि० १ शिखर वाला । २ देखो 'भुरजाळ' ।
भुरजाल–देखो 'बुरजाळ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भुरजी–देखो 'भुरजाळी'।
भुरज–देखो 'बुरज'।
भुरजाळ–१ देखो 'भुरजाळ'। २ देखो 'बुरजाळ'।
भुरट–पु० १ लम्बे तृण व बालों वाला एक घास विशेष। २ उक्त घास का कांटेदार डोडा।
भुरड–पु० ज्वार का भुट्टा।
भुरणाट–देखो 'भणणाट'।
भुरणी (बो)–क्रि० १ कोई वस्तु विकृत होकर धीरे-धीरे नष्ट होना। २ क्षय होना।
भुरभुर–स्त्री० एक प्रकार की घास।
भुरभुरो–वि० (स्त्री० भुरभुरी) कम गीला या कम चिकना। जिसमें घी, तेल की कमी हो, फरका।
भुररी–स्त्री० बाजरी की बालों पर आने वाली फुनगी।
भुरस, भुरसी–१ देखो 'भूरसी'। २ देखो 'बुरज'।
भुरियो–१ देखो 'भूरो'। २ देखो 'बुरो'।
भुसणी (बो)–देखो 'भूलणी' (बो)।
भुळभुळ–स्त्री० धूप में तपी हुई गरम मिट्टी।
भुळसणी (बो)–क्रि० झुलसना, जलना।
भुळसाणी (बो), भुळसावणी (बो)–क्रि० झुलसाना, जलाना।
भुलाड़णी (बो)–देखो 'भुलाणी' (बो)।
भुलाचार–पु० भ्रम, भ्रांति।
भुळाणी (बो), भुलाणी (बो)–१ देखो 'भोळाणी' (बो)। २ देखो 'भुलाणी' (बो)।
भुलाणी (बो)–क्रि० १ कोई बात, प्रसंग या कार्य मस्तिष्क में न रखना, बिसरा देना, विस्मृत कर देना। ध्यान में न रखना। २ यादी में या कण्ठस्थ न रखना। ३ किसी खास बात या विषय से ध्यान बटा देना। ४ चलते कार्य से त्रुटि करा देना। भूल करा देना। ५ भ्रमित करना धोखे में डालना। ६ विश्वास या भुलावे में रखना। ७ अनुरक्त या आशक्त करना, कराना। ८ अभ्यास छुड़ाना।
भुलापो–पु० १ भूलने का भाव, अवस्था। २ विस्मृति। ३ भ्रम, धोखा।
भुळावण (णी)–देखो 'भोळावण'।
भुळावणी (बो)–देखो 'भोळाणी' (बो)।
भुलावणी (बो)–देखो 'भुलाणी' (बो)।
भुलावनो–वि० भुलाने वाला।
भुलावो–पु० १ धोखा, भ्रम। २ विस्मृति। ३ छल, कपट।
भुल्लित–वि० भूला हुआ।
भुवंग–देखो 'भुजंग'।
भुवगम–देखो 'भुजंगम'।
भुव–देखो 'भूमि'।
भुवडंड–देखो 'भुजडंड'।
भुवण, भुवणी–१ देखो 'भुवन'। २ देखो 'भवन'। –पत, पति= 'भुवनपति'।
भुवन–पु० [सं०] १ संसार, जगत। २ पृथ्वी, भूमि। ३ जल, पानी। ४ स्वर्ग। ५ मानव जाति, मनुष्य। ६ प्राणी, जीव। ७ तीन की संख्या*। ८ चौदह की संख्या*। ९ लोक। १० भवन। —क्षौमिनी–स्त्री० महाविद्या। —गुरु–पु० जगद्गुरु। —पत, पति–पु० ईश्वर। इन्द्र। राजा, नृप। सम्राट। समुद्र।
भुवनेस, भुवनेसर–देखो 'भुवनेस्वर'।
भुवनेसरी, भुवनेसी–देखो 'भुवनेस्वरी'।
भुवनेस्वर–पु० [सं० भुवनेश्वर] १ शिव। शिव की एक मूर्ति या रूप। २ ईश्वर, परमात्मा। ३ उड़ीसा का एक तीर्थ स्थान।
भुवनेस्वरी–स्त्री० [सं० भुवनेश्वरी] १ देवी। २ दश महाविद्याओं में से एक।
भुवन्न–देखो 'भुवन'।
भुवपत, (पति, पती, पत्त, पत्ति)–देखो 'भूपति'।
भुवपाळ–देखो 'भूपाळ'।
भुवरलोक–पु० [सं० भुवर्लोक] अंतरिक्ष।
भुवरियो–वि० १ अधिक घुमावदार। २ घुंघराला।
भुवाणी (बो)–देखो 'बोबाणी' (बो)।
भुवाळ–पु० १ बाल, केश। २ देखो 'भूपाळ'।
भुवाळी–देखो 'भवळ'।
भुवि, भुवी–देखो 'भूमि'।
भुस–देखो 'भूसो'।
भुसण–पु० १ कुत्ता, श्वान। २ कुत्ते की बोली।
भुसणो–वि० १ भुसने वाला। २ व्यर्थ बकने वाला।
भुसणी (बो)–क्रि० १ कुत्ते का भौंकना, भुसना। २ व्यर्थ बकना।
भुसाणी (बो), भुसावणी (बो)–क्रि० १ कुत्ते को भौंकाना, भौंकने के लिए प्रेरित करना। २ व्यर्थ बकवाना।
भुसी–देखो 'भूसो'।
भुह, भुहर, भुहार, भुहारव–देखो 'भू'।
भुहि–देखो 'भूमि'।
भूं–पु० १ रुदन की आवाज या ध्वनि। २ देखो 'भू'।
भूंइ–देखो 'भूमि'।
भूंक–स्त्री० गधे के रेंकने की ध्वनि।
भूंकण–पु० १ गधा, खर। २ कुत्ता, श्वान। ३ कुत्ते की बोली।
भूंकणी (बो)–क्रि० १ गधे का रेंकना, बोलना। २ कुत्ते का भौंकना। ३ व्यर्थ बकवास करना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूंखर–वि० अति शीतल ।
भूंगड़ी–पु० सेका हुआ चना ।
भूंगरी–स्त्री० लाल मुंह वाली भेड़ ।
भूंगळ–स्त्री० १ नरसिंघा नामक बाजा । २ बड़े उद्योग, कारखाने या सार्वजनिक स्थान पर स्थित भूं-भूं कर लंबी बोलने वाली सीटी । विसल । ३ देखो 'भूंगळी' ।
भूंगळी–स्त्री० चूल्हे या आग में फूंक लगाने की नलिका ।
भूंगळो–पु० बड़ी नलिका, नल, पाइप ।
भूंगो–पु० १ वर्षा ऋतु में होने वाला उद्भिज पौधा । २ बांस का अंकुर । ३ एक कीड़ा विशेष । ४ पशुओं को चराने का कर विशेष ।
भूंच–स्त्री० १ ऊसर भूमि । २ रेगिस्तान । –वि० अपठित,मूर्ख ।
भूंचक–पु० सूअर का बच्चा ।
भूंचणो (बो)–क्रि० १ उपभोग करना, भोगना । २ मांगना, याचना करना ।
भूंचाळ–देखो 'भूचाळ' ।
भूंछ–वि० १ कटा हुआ । २ भींचा हुआ । ३ देखो 'भूंच' ।
भूंजणो (बो)–क्रि० १घी या तेल में मिर्च मसाले भुनना, पकाना । २ आग पर सेकना, अधिक सेकना । ३ सीधे अंगारों पर पकाना । ४ गर्म हवा से झुलसना । ५ मांस आदि पकाना । ६ बंदूक आदि की गोलियों से छलनी कर देना । ७ सताना दुःख देना ।
भूंजळो–पु० भुना हुआ मांस ।
भूंजाई–देखो 'भुंजाई' ।
भूंड–स्त्री० १ अपकीर्ति, अपयश, बदनामी । २ कलंक । ३ दोष । –पु० (स्त्री० भूंडण) ४ सूअर, बराह ।
भूंडच–स्त्री० १ मादा सूअर । २ कलह प्रिय स्त्री ।
भूंडसूरो–पु० ग्राम्य सूअर ।
भूंडाई, भूंडापणो–स्त्री० १ शिकायत । २ निंदा, अपकीर्ति । ३ दोष, अवगुण । ४ खराबी । ५ कुरूपता । ६ अभद्रता । ७ बुरा होने का भाव, बुरापन ।
भूंडोड़ो–देखो 'भूंडो' । (स्त्री० भूंडोड़ी) ।
भूंडोळ–पु० भूकम्प, भूचाल ।
भूंडो–वि० (स्त्री० भूंडी) १ अनुचित, खराब । २ दुरावस्था या खराब अवस्था वाला, बेकार । ३ अशोभनीय,भद्दा, कुरूप । ४ अनिष्टकर, अशुभ । ५ जिसमें शालीनता व शिष्टता का अभाव हो । ६ वर्जनीय । ७ अलाभकारी, हानिकारक । ८ असह्य, कष्टप्रद । ९ खतरनाक, क्रूर । १० क्रुद्ध, नाराज । ११ अकीर्तिकर, निंदनीय । १२ निम्नस्तरीय । १३ घृणा करने योग्य, घृणित । १४ गंदा, हेय, अस्वच्छ । –पु० १ अपकीर्ति में लिखा काव्य या छन्द । २ अमांगलिक कविता ।
भूंण–पु० [सं० भ्रमण] कूए के ऊपर लगा बड़ा चक्र ।
भूंतकमळो, भूंतमयो–पु० ऊंट ।
भूंथरा–पु० (ब.व.) शिर के अव्यवस्थित बाल ।
भूंभ–स्त्री० मस्ती ।
भूंभाड़ो–पु० १ भूं-भूं कर तेज रुदन । २ तेज आंधी ।
भूं-भूंकार–स्त्री० गधे के रेंकने की ध्वनि ।
भूंय–देखो 'भोंय' ।
भूंयास–पु० [सं० भूंन्यास] १ किसी वस्तु का जमीन में गड़ा छोर । २ जमीन में धंस कर या गड़ कर पड़ी या खड़ी वस्तु । ३ देखो 'भुंवास' ।
भूंरो–१ देखो 'भंवारो' । २ देखो 'भ्रमर' ।
भूंवणो (बो)–देखो 'भंवणो' (बो) ।
भूंवारो–१ देखो 'भंवारो' । २ देखो 'भू' ।
भूंवाळी–देखो 'भंवळ' ।
भूंविवेता–पु० स्वर्ग ।
भूंसणी (बो)–देखो 'भुसणी' (बो) ।
भूंह–देखो 'भ्रू' ।
भूंहर–स्त्री० कुहरा ।
भूंहरियो, भूंहरो–वि० (स्त्री० भूंहरी) १ धूलि से आच्छादित, धूमिल । २ देखो 'भंवारो' ।
भूंहार, भूंहारो–१ देखो 'भ्रू' । २ देखो 'भंवारो' ।
भू–स्त्री० [सं०] १ भूमि, पृथ्वी । २ संसार, जगत । ३ श्री विष्णु । ४ राजा, नृप । ५ भूषण । ६ साधु, महात्मा । ७ पानी, जल । ८ एक की संख्या । ९ देखो 'भ्रू' ।
भूअ–१ देखो 'भू' । २ देखो 'भुज' ।
भूअडंड–देखो 'भुजडंड' ।
भूअण–१ देखो 'भूंण' । २ देखो 'भवन' ।
भूअणतरि–पु० [सं० भवन+अंतर] आकाश, नभ ।
भूअपत (पति, पती, पत्ति, पत्ती)–देखो 'भूपति' ।
भूअबळां–देखो 'भुजबळ' ।
भूआ (बी)–स्त्री० [सं०बुआ] १ पिता की बहन । २ कंगाली ।
भूआड (ऊ)–पु० पृथ्वी काय ।
भूआड़ो–पु० पिता का बहनोई ।
भूइं–देखो 'भूमि' ।
भूकत (च)–पु० राजा, भूपति ।
भूकंप–पु० [सं०] भूमि के अन्दर होने वाला वायु प्रकोप जिससे भूमि में कंपन होती है या जमीन फट जाती है ।
भूक–पु० १ नाश, संहार । २ देखो 'भूख' । ३ देखो 'भूकी' ।
भूकण–१ देखो 'भूंकण' । २ देखो 'भूसण' ।
भूकणो (बो)–देखो 'भूंकणो' (बो) ।
भूकाक–पु० बाज जाति का एक छोटा पक्षी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूकि–देखो 'भूकी'।
भूकियो–देखो 'भूखो'।
भूकी–देखो 'भूकी'।
भूकोड़ो–देखो 'भूखो'।
भूकोहरी–पु० एक छन्द विशेष।
भूकी–पु० १ महीनतम चूर्ण, चूरा। २ सूक्ष्म टुकड़ों का ढेर। ३ नाश, संहार। ४ महीन पिसी हुई बुकनी। ५ देखो 'भूखो'।
भूखंड–पु० १ पृथ्वी का कोई एक भाग। २ नौ की संख्या।
भूखडियो–पु० छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक।
भूख–स्त्री० [सं० बुभुक्षा] १ प्राणियों की रोटी या अपना खाद्य, खाने की इच्छा, आवश्यकता, शरीर की मांग, क्षुधा। २ इसी तरह किसी कार्य विशेष या वस्तु की तीव्र कामना, अभिलाषा। ३ आवश्यकता, जरूरत। ४ अभिलाषा, कामना। ५ कमी, टोटा। ६ दरिद्रता कंगाली। ७ वासना।
भूखण–१ देखो 'भूसण'। २ देखो 'भूकण'।
भूखणो (बो)–देखो 'भूकणो' (बो)।
भूखलमेर–पु० जैसलमेर का एक नाम।
भूखाण–देखो 'भूसण'।
भूखाल–देखो 'भूखो'।
भूखाळुयो, भूखाळुयो, भूखाळू भूखाळो–देखो 'भूखो'
भूखि–देखो भूख'।
भूखियो–देखो 'भूखो'।
भूखो–वि० [सं० बुभुक्षित] (स्त्री० भूखी) १ जिसे भूख लगी हो, भूखा, क्षुधित। २ दीन गरीब। ३ अभिलाषी, इच्छुक। ४ कृपण, कंजूस। ५ विलास के लिये उत्कण्ठित।
भूगणो (बो)–क्रि० १ भग्न होना, खण्डित होना, टूटना। २ दुःखी होना।
भूगरभ–पु० [सं० भू गर्भ] १ भूमि का भीतरी भाग। २ विष्णु। ३ संस्कृत के कवि भवभूति का एक नाम। —शास्त्र, शास्त्र–पु० पृथ्वी तथा पृथ्वी के अन्दर स्थित भौतिक तत्वों का विवेचन।
भूगळ देखो 'भूगळ'।
भूगोळ, भूगोल–पु० [सं०] १ पृथ्वी, धरती। २ पृथ्वी का गोला, बनावट। ३ पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि तत्वों का ज्ञान कराने वाली विद्या या शास्त्र। ४ भू-मण्डल।
भूगोलक–पु० [सं०] भू-मंडल।
भूचकणो (बो)–क्रि० १ डांवाडोल होना, डगमगाना। २ कांपना थर्राना। ३ हिलना, डुलना।
भूचक्र–पु० [सं०] १ पृथ्वी की परिधि। २ विषुवत् रेखा।
भूचर (भूचराद)–पु० [सं०] १ भूमि पर विचरण करने वाला प्राणी। मनुष्य, पशु आदि। २ शिव, महादेव। ३ भूत, पिशाच। ४ एक सिद्धि। ५ देखो 'भाचर'।
भूचरी–स्त्री० [सं०] समाधि ध्यान की एक मुद्रा।
भूचर (रू)–देखो 'भूचर'।
भूचार, भूचारी–देखो 'भूचर'।
भूचाळ–पु० [सं० भूचाल] वायु का तीव्र प्रकोप जिससे पृथ्वी कांपने या डोलने लगती है। भूकंप।
भूछाय–पु० अंधेरा।
भूजणो–पु० १ राग-द्वेष, ईर्ष्या। २ मन-मुटाव।
भूजणो (बो)–क्रि० क्रोध करना, गुस्सा करना।
भूजा–स्त्री० [सं०] १ जानकी, सीता। २ देखो 'भुजा'।
भूजाई–१ देखो 'भुजाई'। २ देखो 'भोजाई'।
भूज्ज–अव्य० पुनः, फिर।
भूटको–पु० बन्दूक की आवाज।
भूडड, भूडडह–देखो 'भूजडड'।
भूडोळ–पु० भूकंपन। भूचाल।
भूडो–पु० बालू रेत का टीला।
भूण–पु० [सं० भ्रूण] १ जल विहार, भ्रमण। २ गर्भस्थ शिशु। ३ देखो 'भूण'।
भूणहत्या–स्त्री० गर्भस्थ शिशु की हत्या, गर्भपात।
भूत–पु० [सं०] १ प्राकृतिक तत्व, (पृथ्वी, जल, आकाश आदि)। द्रव्य। २ जीव, प्राणी। ३ पदार्थ। ४ तत्व। ५ आत्मा। ६ प्रेत, राक्षस। ७ संसार, जगत। ८ भूत बात। ९ बीता हुआ समय, काल। १० पांच की संख्या। ११ बच्चा, पुत्र। १२ शिव। १३ मृत शरीर, शव। १४ वीरभद्र। १५ भृगु ऋषि का पुत्र, एक ऋषि। १६ एक यादव राजा। १७ एक प्राचीन भारतीय मानव जाति। १८ अधोगति को प्राप्त कोई आत्मा। १९ व्याकरण में एक काल। २० कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी। २१ शिव के अनुचर गण। –वि० १ बीता हुआ, गुजरा हुआ। २ घटित, हुवा हुआ। ३ किसी विशिष्ट दशा को प्राप्त। ४ बना हुआ। ५ पुराना, प्राचीन। ६ पहले वाला, विगत, गत। ७ सत्य। ८ ठीक, उचित। —अंतक–पु० यमराज, धर्मराज। —आत्मक–पु० पंच भौतिक शरीर। —आवास–पु० शिव। —कळा–स्त्री० पंच भूतों से उत्पन्न शक्ति। —काळ–पु० गुजरा हुआ समय। —कालिक–वि० भूतकाल संबंधी। —क्रदत–पु० क्रिया का एक रूप। —खानी–पु० गंदा, अव्यवस्थित व अंधेरा केश या स्थान। —गण–पु० शिव के अनुचरों का समूह। —चतुरदसी–पु० कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी। —चारी–पु० शिव। —जज्ञ–पु० एक प्रकार का यज्ञ। भूत-प्रेतों की बलि देकर किया जाने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला यज्ञ। -द्रुंग, द्रोणी-स्त्री० प्रेत योनि, अधोगति। परमेश्वर। —धाम-पु० श्मशान भूमि, मरघट। —नाथ, नायक-पु० शिव। महादेव।— नायिका, नायिका-स्त्री०-दुर्गा, देवी। —पक्ष, पक्ष-पु० कृष्ण पक्ष। —प, पत, पति, पती—पु० शिव। महादेव। परमात्मा। —पाल—पु० विश्वपालक विष्णु। ईश्वर। —पूनम, पूषु-स्त्री० आश्विन की पूर्णिमा। —राज, राट-पु० शिव। महादेव।

भूतक-पु० [सं०] १ सुमेरु पर स्थित २१ लोकों में से एक। २ देखो 'भूत'।

भूतघ्न-पु० [सं०] १ ऊंट। २ भोज-पत्र। ३ लहसुन।

भूतड़िया, भूतड़ी-पु० १ एक रंग विशेष का घोड़ा। २ देखो 'भूत'।

भूतडमन-पु० बहत्तर कलाओं में से एक।

भूतभावन-पु० [सं०] परमात्मा, विष्णु।

भूतभाषा-स्त्री० [सं० भूत भाषा] पैशाचिक भाषा विशेष।

भूतमिडंग-वि० मस्त, उन्मत्त।

भूतम-पु० [सं० भूतभम्] सोना, स्वर्ण।

भूतमात्रा-स्त्री० [सं०] रूप, रस, गंध, शब्द व स्पर्श आदि सूक्ष्म तत्त्व।

भूतल (ळ, ल, ली)-पु० [सं० भूतल] १ पृथ्वी तल, धरातल। २ पाताल। ३ विश्व, दुनिया।

भूतलेस-पु० [सं० भूतल-ईश] शिव, महादेव।

भूतवास-पु० [सं० भूत वासः] १ शिव, महादेव। २ विष्णु। ३ भूतों का निवास, श्मशान।

भूतवाहन-पु० [सं०] १ शिव, महादेव। २ भूतों पर सवारी करने वाला।

भूतविद्या-पु० [सं०] प्रेत बाधा दूर करने की तांत्रिक क्रिया।

भूतहन-देखो 'भूतघ्न'।

भूतांण-१ देखो 'भाथौ'। २ देखो 'भूत'।

भूतापति-देखो 'भूतपति'।

भूतात्मा-पु० [सं०] १ शरीर। २ जीवात्मा। ३ शिव, महादेव। ४ परमेश्वर।

भूताधिपति-पु० [सं० भूत+अधिपति] शिव, महादेव।

भूतापि-पु० परमेश्वर।

भूतायत-पु० शिव, महादेव।

भूतार, भूतारण-पु० [सं०] १ भूमि तारण, ईश्वर। २ भूत, प्रेत। ३ देखो 'भाथौ'।

भूतावळ (ळि, ळी)-पु० [सं० भूत-अवलि] १ भूतों की मंडली। २ भूतों की कथा। ३ कल्पित कथाएँ।

भूतावास-पु० १ संसार, विश्व। २ शरीर, देह। ३ विष्णु। ४ बहेड़ा। ५ श्मशान।

भूति-पु० [सं०] १ शिव। २ विष्णु। ३ पितृगण। ४ बृहस्पति। ५ विश्वामित्र का एक पुत्र। ६ अंगिरस् का एक पुत्र। ७ एक यादव राजा। ८ राजा का एक मंत्री। ९ ऐश्वर्य, वैभव। १० धन, सम्पत्ति। ११ सौभाग्य। १२ जन्म, उत्पत्ति। १३ अस्तित्व। १४ घटित होने की अवस्था या भाव। १५ गौरव, महिमा। १६ वृद्धि। १७ अधिकता। १८ वृद्धि नामक ओषधि। १९ आठ प्रकार की सिद्धियां। २० भूतृण। २१ सत्ता। २२ लक्ष्मी। २३ मुक्ति, मोक्ष। २४ हाथी के मस्तक की चिपकारी। २५ पकाया हुआ मांस। २६ रूसा नामक घास। २७ सरयू।

भूतियौ-पु० आक के फल में होने वाली रूई।

भूती-देखो 'भूति'।

भूतेस, भूतेसर-पु० [सं० भूत-ईश्वर] १ शिव, महादेव। २ परमेश्वर, ब्रह्मा। ३ स्वामिकार्त्तिकेय।

भूतेसरी-स्त्री० [सं० भूतेश्वरी] १ पार्वती। २ दुर्गा, देवी।

भूतेसुरध, भूतेस्वर-पु० [सं० भूतेश्वर] शिव, महादेव।

भूतोन्माद-पु० [सं०] भूत-प्रेतों के प्रभाव से होने वाला रोग, उन्माद।

भूतौ-वि० [सं० भूत] घटित, बना हुआ, हुआ हुआ।

भूथड़, भूथांण, भूथारण-देखो 'भाथौ'।

भदड-देखो 'भुजडंड'।

भूदाग-देखो 'भुंइदाग'।

भूदार, भूदारक-पु० [सं० भूदार] सूअर, शूकर, वराह।

भूदेव, भूदेवत-पु० [सं० भूदेव] १ ब्राह्मण। २ राजा।

भूधर-पु० [सं०] १ पहाड़, पर्वत। २ परमेश्वर, परमात्मा। ३ श्रीविष्णु। ४ श्रीकृष्ण। ५ वराह अवतार। ६ शेषनाग। ७ राजा, नृप। ८ शिव। ९ बैल, वृषभ। १० पारे की औषध बनाने की क्रिया। ११ सात की संख्या। —धणी-पु० विष्णु।

भूधरेस्वर-पु० [सं० भूधर-ईश्वर] १ पर्वतों का राजा, हिमालय। २ शिव। ३ राजा, नृप। ४ इन्द्र। ४ विष्णु।

भूधरौ-देखो 'भूधर'।

भूधाता-पु० [सं० भूधातृ] ब्रह्मा।

भूनणो (णौ)-देखो 'भूंजणौ' (णौ)।

भूनेता-पु० [सं० भूनेतृ] १ राजा, नृप। २ राजकुमार।

भूपण-देखो 'भूषण'।

भूपक-पु० [सं०] राजा, नृप।

भूपत (ति, ती)-पु० [सं० भूपति] १ राजा, नृप। २ मेघ राज का पुत्र एक राग। ३ ईश्वर। ४ शिव, महादेव। ५ इन्द्र। ६ एक सनातन विश्व देव। ७ मय गुरु की चार माता का नाम।

भूषण-पु० [सं०] शेर, सिंह।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूपह–पु० [सं० भूप्रभु] राजा।
भूपांण, भूपाळ, भूपालि–पु० [सं० भूपाल] राजा, नृप।
भूपाळी–स्त्री० [सं० भूपाली] एक रागिनी।
भूपुत्र–पु० [सं०] १ नरकासुर नामक राक्षस। २ मंगल-ग्रह।
भूपुत्री–स्त्री० [सं०] सीता, जानकी।
भूफोड़–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला पौधा विशेष।
भूबळ, भूबळि–पु० [सं० भू+बल] १ वीर, योद्धा। २ राजा, नरेश।
भूभट–पु० [सं०] १ वीर, योद्धा। २ राजा, नृप।
भूभरता–पु० [सं० भू+भर्तृ] राजा, नृप।
भूभळ–स्त्री० गर्म राख या धूल।
भूभळो–वि० (स्त्री० भूभळी) धुंधला, धूलि धूसरित।
भूभारधर–पु० [सं०] शेषनाग।
भूभूघाटि, भूभूयाटि–स्त्री० १ ध्वनि विशेष। २ भृकुटि।
भूमो–वि० भयानक, भयावह।
भूधर–पु० [सं० भूभृत] १ राजा, नृप। २ इन्द्र का हाथी। ३ पहाड़ पर्वत।
भूमड़, भूमडळ–पु० पृथ्वी, धरती।
भूम–पु० १ ज्ञान। २ भूमि। ३ दिशा, जंगल। ४ होश। ५ बुद्धि। ६ चतुराई, दक्षता। ७ मौन। ८ भ्रमण।
भूमणो (णी)–क्रि० भ्रमण करना, घूमना, फिरना।
भूमधा–स्त्री० [सं० भूमध्य] अंधेरा।
भूमबाव–पु० भांभियों से लिया जाने वाला कर।
भूमय–स्त्री० [स० भूमयट्] सूर्य-पत्नी छाया। –वि० मिट्टी का बना।
भूमळ–स्त्री० गर्म राख।
भूमविहार–स्त्री० नदी, सरीता।
भूमा–वि० असीम, अपार अनन्त।
भूमि–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी अवनि। २ जमीन या जमीन का अंश। ३ खाली जगह, पृथ्वी का खाली स्थान। ४ पृथ्वी का तल, सतह। ५ अपने अधिकार का भू-भाग। ६ कृषि भूमि। ७ प्रदेश या प्रान्त। ८ आधार या जड़। ९ जन्म स्थान। १० धन, सम्पत्ति। ११ फासला, दूरी। १२ विस्तृत मैदान। १३ गोचर भूमि। १४ आधार। १५ योग शास्त्र में योगी की अवस्थाएं। —कंत–पु० राजा, नृप। भूस्वामी। —चर–वि० पृथ्वी पर विचरण करने वाला। —ज–पु० सोना। खनिज। मंगल ग्रह। नरकासुर। –वि० पृथ्वी से उत्पन्न। —जा– स्त्री० जानकी, सीता। —जीवी–पु० कृषक। खेतीहर। —धंभ–पु० राजा। स्तंभ। —पाळ–पु० राजा, नृप। —पुत्र='भूमिज'। —पुत्री='भूमिजा'। –सुत='भूमिज'। सुता='भूमिजा'। —सुर–पु०ब्राह्मण।
भूमिका–स्त्री० [सं०] १ किसी पुस्तक के पूर्व या किसी काव्य के पूर्व में संकलित उसी रचना का परिचायक आलेख। २ मुख्य बात के पूर्व कही हुई बात। ३ नाटक के किसी पात्र का अभिनय। ४ चित्त की पांच अवस्थाएँ। ५ नाटक के नट की पोशाक। ६ जमीन, भूमि। ७ शृंगार। ८ मकान की मंजिल। ९ श्मशान भूमि। १० डग, पद।
भूमिगम–पु० ऊंट।
भूमिचंपो–पु० चंपा का एक पौधा विशेष।
भूमियो–देखो 'भोमियो'।
भूमींद्र–पु० [सं०] राजा, नृप।
भूमी–देखो 'भूमि'।
भूमीयाचारो–देखो 'भोमीचारो'।
भूमीरुह–पु० [सं०] वृक्ष, पेड़।
भूमीलेप–पु० [सं०] गोबर।
भूम्मि–देखो 'भूमि'।
भूयंग–देखो 'भुजग'।
भूयंगम (मि)–देखो 'भुजंगम'।
भूय–पु० सिंह, शेर। –वि० [सं० भूयस] बहुत, अधिक। –अव्य० १ फिर, पुनः। २ देखो 'भांय'।
भूयगांम–पु० [सं० भूत+ग्राम] १ भूत, समुदाय। २ शरीर, तन।
भूयचइण–पु० पवन, हवा।
भूयणतरि–क्रि० वि० संसार में।
भूयण–स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि। २ देखो 'भुवन'। ३ देखो 'भवन'।
भूयणपति–देखो 'भुवनपति'।
भूयबळि (ळी)–देखो 'भुजबळ'।
भूयाळ–देखो 'भूपाळ'।
भूर–पु० [सं० भूरि] १ एक प्रकार का चर्म रोग। २ भ्रम, संदेह। ३ देखो 'भूरि'। ४ देखो 'भूरो'।
भूरइ–स्त्री० [स० भूरज] धूलि, धूल।
भूरची, भूरछी–देखो 'भूरसी'।
भूरज–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी की धूल, रज। २ देखो 'बुरज'।
भूरजपत्र–देखो 'भोजपत्र'।
भूरजाळ–देखो 'बुरजाळ'।
भूरटी–देखो 'भूरो'।
भूरवाडो–पु० यवन, मुसलमान।
भूरभूर–देखो 'भुरभुर'।
भूरसी–स्त्री० [सं० भू+श्री] १ यज्ञ, विवाहादि की समाप्ति पर ब्राह्मणों को दी जाने वाली दक्षिणा। २ बड़े कार्य की संलग्नता में होने वाला छोटा कार्य।
भूरह–पु० [सं० भूमि+रुह] वृक्ष, पेड़।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूरि-पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ इन्द्र। ५ उपहार, भेंट। ६ दान। ७ स्वर्ण, सोना। ८ बालु रेत। –वि० बहुत, अधिक, प्रचुर।

भूरिक, भूरिज-स्त्री० [सं०] पृथ्वी, अवनि।

भूरिमायु-पु० गीदड़, सियार।

भूरियो-देखो 'भूरी'।

भूरिश्रव, भूरिश्रवा-पु० [सं० भूरिश्रवस्] १ कुरुवंशीय एक राजा। २ अंगिरस् ऋषि का एक शिष्य। ३ एक यादव राजा। ४ एक पितृगण।

भूरी-स्त्री० भूरे रंग की भैंस। –वि० १ भूरे रंग की, भूरी। २ देखो 'भूरि'।

भूरेस-पु० सिंह, शेर।

भूरो-पु० [सं० वभ्रु] (स्त्री० भूरी) १ मिट्टी जैसा रंग, मटमैला रंग। २ सिंह, शेर। ३ ऊंट। ४ यूरोप का निवासी। ५ एक कबूतर विशेष। ६ महीन चूर्ण। ७ एक विशेष प्रकार का अमल। ८ भूरे रंग का भैंसा। –वि० १ भूरा, मट मैला, मिट्टी जैसे रंग का। २ गौर वर्ण का। ३ वीर, योद्धा। ४ उदार हृदय, दानवीर। ५ यशस्वी। ६ देखो 'भंवारी'।

भूरोबाघ-वि० वीर, योद्धा।

भूल-स्त्री० १ भूलने की क्रिया या भाव। २ अज्ञानता। भ्रम। ३ नासमझी। ४ गलती, चूक। ५ अशुद्धि, त्रुटि। ६ अपराध दोष, कसूर। ७ विस्मरण। ८ पाखण्ड। ९ कमी, अभाव।

भूलणो (बो)-क्रि० १ याद्दी या स्मृति न रहना, विस्मृति होना। २ अनुरक्त या आशक्त होना। ३ इतराना, फूलना। ४ गलती करना, त्रुटि करना। ५ भ्रम में पड़ना, भ्रमित होना। ६ भुलाना, विस्मृत करना। ७ अभ्यास छूटना।

भूलभूलैया-स्त्री० १ भ्रमित करने वाली बात। २ चक्करदार या पेचीदी बात। ३ अधिक कक्षों एवं दरवाजों वाली इमारत जिसके बाहर जाना मुश्किल होता है।

भूलिंग-पु० एक छोटा पक्षी।

भूलीक-पु० [सं०] १ पृथ्वी लोक, संसार, जगत। २ मृत्यु लोक।

भूलोड़ो-वि० (स्त्री० भूलोड़ी) भूला हुआ। भ्रमित।

भूलो-वि० (स्त्री० भूली) १ विस्मृत हुवा हुआ। २ भ्रम में पड़ा हुआ, भ्रमित। ३ अनुरक्त या आशक्त। ४ गलती या त्रुटि किया हुआ। ५ इतरा हुआ, फूला हुआ। –पु० १ विस्मृति। २ भूल।

भूवंग-देखो 'भुजंग'।

भूवंतरी-पु० एक कंद विशेष।

भूवण (णि)-१ देखो 'भुवन'। २ देखो 'भवन'।

भूवर-पु० एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

भूवरियो-वि० १ गोलाकार, गोल आकृति का। २ देखो 'डूबरियो'।

भूवळ-, भूवल-पु० [सं० भू+वलय] भूगोल।

भूवल्लभ-पु० [सं०] राजा, नृप।

भूवा-देखो 'भूआ'।

भूवाजी-स्त्री० १ कंगाली, दरिद्रता। २ देखो 'भूआ'।

भूवारि-स्त्री० हाथी पकड़ कर बांधने का स्थान।

भूवाळ-देखो 'भूपाळ'।

भूविचार-पु० [सं०] सूअर।

भूविद्या-स्त्री० [सं०] भू-विज्ञान।

भूसक-पु० [सं० भूशक] राजा, नृप।

भूसण-पु० [सं० भूषण] १ अलंकार, गहना, भूषण। २ गुण विशेष। ३ शोभा बढ़ाने वाला पदार्थ। ४ साहित्य में अलंकार। ५ एक वनस्पति विशेष। ६ बारह की संख्या। –वि० बारहवां।

भूसणभोजन-पु० स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

भूसणोपमा-स्त्री० [सं० भूषणोपमा] उपमा अलंकार का एक भेद।

भूसरग-पु० सुमेरु पर्वत का एक नाम।

भूसी-स्त्री० १ किसी वस्तु के छिलकों का महीन चूर्ण। २ पत्तियों का महीन चूर्ण। ३ देखो 'भूसो'।

भूसुर-पु० [सं०] ब्राह्मण।

भूसो-पु० १ चारे का महीन चूर्ण। २ चोकर, चापड़।

भूह-देखो 'भू'।

भूहर-स्त्री० आकाश में छाए रजकण, गर्द, अंधड़।

भूहरणो (बो)-स्त्री० आकाश में गर्द छाना, अंधड़ आना।

भूहरो, भूहार, भूहारो-१ देखो 'भू'। २ देखो 'भंवारी'।

भूहि-देखो 'भूमि'।

भेंइसि-देखो 'भैंस'।

भेंच-देखो 'भींच'।

भेंड-देखो 'भेंट'।

भेंटगणेसचौथ-पु० मरहठों द्वारा गणेशचौथ पर किसानों से वसूल किया जाने वाला कर।

भेंटणो (बो)-१ देखो 'भेटणो' (बो)। २ देखो 'भींटणो' (बो)।

भेंटदसरावो-पु० दशहरे के उपलक्ष में मरहठों द्वारा, किसानों से वसूल किया जाने वाला कर।

भेंटहोळी-स्त्री० होली पर्व पर मरहठों द्वारा लगाया गया कर जो किसानों से वसूल किया जाता था।

भेंटो-देखो 'भेटी'।

भेंसाखंधियो-पु० स्वर्णकारों का एक औजार विशेष।

भेंसाद-देखो 'भैंसाद'।

भे-सर्व० [सं० भवन्त] आप।

भेइरवी-देखो 'भैरवी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भेड़–वि० १ भेद जानने वाला। २ देखो 'भेद'।

भेक–पु० [सं०] १ मेंढक। २ देखो 'भेख'।

भेख–पु० [सं० वेश] १ वस्त्रादि का पहनावा, पहनने के वस्त्रों का जोड़ा। वेश-भूषा। २ रूप, रंग, वर्ण। ३ वस्त्रों को पहनने-ओढ़ने का ढंग विशेष। ४ कृत्रिम पहनावा विशेष। ५ साधु संन्यासियों का विशेष पहनावा या रूप विशेष। ६ संन्यास। ७ मत, सम्प्रदाय। ८ देखो 'भेक'।

भेखज–देखो 'भेसज'।

भेखणो (बो)–क्रि० १ संन्यास लेना। २ भेष बदलना।

भेखधारी–पु० किसी विशेष सम्प्रदाय का साधु।

भेग–देखो 'भेख'।

भेड़–स्त्री० [सं० भेड:] १ बकरी जाति का छोटा चौपाया जिसके बालों की ऊन होती है। २ बैल। ३ बड़ा मेंढक। ४ बिना सोचे दूसरों का अनुकरण करने वाला व्यक्ति।

भेड़णो (बो)–क्रि० १ टक्कर लगाना, भिड़ाना। २ धारण करना, कसना। ३ प्रहार करना। ४ भिड़ाना, सटाना। ५ सुसज्जित होना।

भेड़ब–वि० योद्धा, सुभट।

भेड़ाय–पु० भेडिया।

भेड़ियो–पु० जंगली कुत्तों से मिलता-जुलता एक मांसाहारी जानवर।

भेड़ै–क्रि० वि० १ बराबर, समानान्तर। २ समीप, निकट।

भेड़ो–पु० १ नर भेड़। २ देखो 'भैड़ो'।

भेजणो (बो)–क्रि० १ किसी को आज्ञा देकर, कहकर प्रेरित करना, रवाना करना, भेजना। २ किसी को कहीं जाने के लिये कहना। ३ पत्र या कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रेषित करना। ४ संदेश कहलाना। ५ बुलावा देना।

भेजाणो (बो), भेजावणो (बो)–क्रि० १ आज्ञा या प्रेरणा द्वारा कहीं रवाना कराना, भिजवाना। प्रेरित कराना। २ किसी को कहीं जाने के लिये कहलाना। ३ पत्र या वस्तु प्रेषित कराना। ४ संदेश कहलवाना। ५ बुलावा दिलाना।

भेजी–देखो 'भेजो'।

भेजो–पु० १ मस्तिष्क, दिमाग। २ मस्तिष्क या खोपड़ी के अन्दर का गूदा। ३ जानवरों के मस्तिष्क के अन्दर का मांस।

भेट–स्त्री० १ मिलन, मुलाकात, साक्षात्कार। २ उपहार, सौगात, नजराना। ३ दर्शन। ४ देवता आदि को अर्पित की जाने वाली वस्तु। ५ कर, टैक्स।

भेटको–पु० १ टक्कर, भिड़ंत, युद्ध। २ परिचय, जान-पहचान। ३ आलिंगन।

भेटग–स्त्री० मिलना क्रिया, स्पर्श।

भेटणो–पु० १ विनती, प्रार्थना। २ मिलाप। ३ टक्कर, भिड़ंत। ४ देखो 'भेट'।

भेटणो (बो)–क्रि० १ मिलना। २ साक्षात्कार करना, परिचय करना। ३ आलिंगन करना। ४ टकराना, भिड़ंत करना। ५ युद्ध करना, लड़ना। ६ दर्शन करना। ७ तीर्थयात्रा करना। ८ स्पर्श करना, छूना। ९ अछूत से स्पर्श होना। १० संसर्ग करना, सम्पर्क करना। ११ अर्पण करना, चढ़ाना। १२ प्राप्त करना। १३ उदय होना। १४ गले लगाना, वरण करना।

भेटरड़ो–पु० गेहूँ व चने का मिश्रण।

भेटा, भेटि–देखो 'भेट'।

भेटी–स्त्री० १ पशु या मनुष्य का शिर। २ पशु या मनुष्य के शिर से किया जाने वाला प्रहार, आघात। ३ तुकबंदी। ४ टक्कर, भिड़ंत। ५ जुआरी द्वारा दाव पर लगाने का अक्षर। ६ सहारा।

भेटीजणो (बो)–क्रि० स्त्री का रजस्वला होना।

भेटो–देखो 'भेट'।

भेडउ–देखो 'भेट'।

भेडणो (बो)–१ देखो 'भेटणो' (बो)। २ देखो 'भेड़णो' (बो)।

भेडब–पु० वीर, योद्धा।

भेडवणो (बो)–१ देखो 'भिड़ाणो' (बो)। २ देखो 'भेटणो' (बो)।

भेडा–स्त्री० एक प्रकार की बतख।

भेडागारी–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति। शाक विशेष।

भेडि–देखो 'भेट'।

भेडो–पु० भेड़ का मूत्र।

भेणी–पु० पंजाब का एक तीर्थ स्थान।

भेणो (बो)–देखो 'भेयणो' (बो)।

भेडंग, भेडगर, भेडंगी–वि० भेदिया।

भेद–पु० [सं०] १ भेदने, छेदन करने की क्रिया या भाव। वेधन, छेदन। २ दरार, फटाव। ३ गुप्त बात, रहस्य। ४ झगड़ा, वैमनस्य। ५ अलगाव, पक्षपात। ६ अन्तर, फर्क। ७ मर्म, तत्त्व, वस्तु स्थिति। ८ मतान्तर। ९ भिन्नता, विभिन्नता। १० तरह, प्रकार, किस्म। ११ विश्वासघात। १२ द्वैतता, भावात्मक एकता का अभाव। १३ एक प्रकार की नीति, नीति का एक अंग।

भेदक–पु० [सं०] १ भेदने वाला। २ संगीतज्ञ। ३ भेदिया।

भेदकशूळ–पु० [सं० भेदकशूल] एक प्रकार का शस्त्र।

भेदकारी–वि० १ भेदन करने वाला, छेदने वाला। २ भेदिया। –स्त्री० मिलावट।

भेदग, भेदगर–वि० १ भेद जानने वाला। २ भेदने वाला। ३ गुप्तचर, भेदिया।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भेवड़ी–स्त्री० आटे व चावल का बना पतला खाद्य पदार्थ ।

भेवजमा–पु० बलभद्र ।

भेवणो (बो)–क्रि० [सं०भेदनं] १ भेदन करना, छेदना, बींधना । २ विदीर्ण करना । ३ चीर कर पार करना । ४ आर-पार निकलना । ५ व्याकुल होना ।

भेवन–पु० [सं०] भेदना-क्रिया, छेदन, विद्धन । –वि० भेदन करने वाला ।

भेवनकाळंडी–पु० श्रीकृष्ण के भाई बलराम ।

भेवबुद्धि–स्त्री० फूट डालने की क्रिया । अलगाव की भावना ।

भेवभाव–पु० [सं०] १ अलग-अलग भावना से देखने का दृष्टिकोण । २ भिन्न भाव । ३ पक्षपात । ४ पक्षपात पूर्ण नीति । ५ अन्तर, फर्क । ६ मतान्तर । ७ एकता का अभाव । ८ ऊंच-नीच की भावना । ९ अपने पराये का भाव ।

भेवागळ–वि० भेद जानने वाला, रहस्य जानने वाला ।

भेवि–देखो 'भेद' ।

भेविनो–स्त्री० योगियों की शक्ति या सिद्धि ।

भेवियो–पु० गुप्तचर ।

भेवी–वि० [सं० भेदिन्] १ भेदन या छेदन करने वाला । २ रहस्य जानने वाला । ३ गुप्तचर, जासूस ।

भेवीसबद–पु० १ दशरथ । २ अर्जुन । ३ शब्द बेधी बाण चलाने वाला ।

भेद्य–वि० भेदने योग्य, छेदने योग्य ।

भेय–देखो 'भेद' ।

भेयण–देखो 'भेदन, भुवन, भवन' ।

भेयणि, भेयणी–देखो 'भेदिनी' ।

भेयणो (बो)–क्रि० १ गीला करना, भिगोना । २ औषधि बनाना ।

भेयो–वि० भीगा हुआ, गीला ।

भेर–पु० [सं०] १ तरबूज, मतीरा । २ भेरी नामक वाद्य । ३ बड़ा ढोल । ४ बड़ा नगारा ।–अव्य० १ फिर, पुनः । २ और ।

भेरि, भेरी–स्त्री० [सं०] १ युद्ध में प्रयुक्त एक वाद्य विशेष । २ तुरही के आकार का वाद्य । ३ ढोलक । ४ ढोल ।

भेरीपरीक्षा–स्त्री० ७२ कलाओं में से एक ।

भेरूं, भेरू, भेरूजी–देखो 'भैरव' ।

भेरो–देखो 'भेळी' ।

भेळ–पु० १ मिलावट, मिश्रण । २ वर्ण संकरता ।

भेळको–पु० १ मेल-मिलाप । २ प्रेम । ३ सामना, मुलाकात । ४ भिड़ंत, टक्कर । ५ स्पर्श ।

भेळणो (बो)–क्रि० १ मिलाना, मिश्रण करना । २ मिलावट करना । ३ सम्मिलित करना । ४ झोंकना; डालना । ५ गढ़, किला या कोई मोर्चा जीतना । ६ खड़ी फसल के खेत में पशु चराना । ७ नष्ट करना, बर्बाद करना । ८ तोड़ना । ९ अपनी ओर मिलाना, पक्ष में करना । १० पहुंचाना, पहुंचा देना ।

भेळप–पु० १ साथ-साथ रहने का भाव । २ अविभाजन की दशा । ३ प्रेम, अनुराग । ४ मित्रता, दोस्ती । ५ मेल-जोल । ६ एकता, संगठन । ७ साझा, साझेदारी । ८ संयोग । —हार–वि० साझेदार । साथ रहने वाला । मित्र ।

भेळभेळ–क्रि० वि० १ साथ-साथ, लगे हाथ । २ चालू कार्य के साथ । ३ शामिल । ४ संलग्नता में ।

भेळभाड़–पु० १ सम्मिश्रण । मिश्रण । २ मिले हुए कई पदार्थ । ३ साझेदारी । ४ मवेशी चराने लायक फसल कटा हुआ खेत ।

भेळाणो (बो)–क्रि० १ मिश्रण कराना, मिलाना । २ शामिल कराना, संग में कराना । ३ मिलावट कराना । ४ झोंकाना, डलवाना । ५ गढ़, किला या मोर्चा जिता देना । ६ खड़ी फसल के खेत में पशु चरवाना । ७ नष्ट कराना, बर्बाद कराना । ८ तोड़ाना । ९ पक्ष में करना । १० पहुँचवाना ।

भेळाणो–पु० १ शामिल या साथ रहने की अवस्था या भाव । २ मैत्री, दोस्ती । ३ हिस्सेदारी, साझेदारी ।

भेळावणो (बो)–देखो 'भेळाणो' (बो) ।

भेळियो–पु० कई पदार्थों का मिश्रण ।

भेली–स्त्री० १ गुड़ की गोल व बड़ी बट्टी । २ छोटी नाव, डोंगी ।

भेळो, भेलो–वि० (स्त्री० भेळी, भेली) १ एकत्रित, इकट्ठा । २ शामिल, साथ । ३ सम्मिलित । ४ संकुचित । ५ संचित या संग्रहीत । ६ सिमटा हुआ, सिकुड़ा हुआ । ७ मिश्रित । ८ साझेवाला, हिस्सेवाला । ९ व्यवस्थित । –क्रि० वि० साथ-साथ, साझे में, एक साथ ।

भेव–देखो 'भेद' ।

भेवणो (बो)–क्रि० [सं० भेदनम्] १ भिगोना, आर्द्र करना । २ तरबतर करना । ३ चलना । ४ बहना ।

भेवाड़णो(बो), भेवाणो(बो), भेवावणो (बो)–क्रि० १ भिगोना, आर्द्र करना । २ तर करना, गीला करना । ३ चलाना । ४ बहाना ।

भेवो–देखो 'भेद' ।

भेस–देखो 'भेख' ।

भेसज–पु० [सं० भेषजं] १ औषधि, दवा । २ जल । ३ विष्णु । ४ चिकित्सक, वैद्य ।

भेसधारी–वि० किसी विशेष वेशभूषा या सम्प्रदाय विशेष का ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भेसाद–देखो 'भैंसाद'।
भेहरण–पु०[सं० भय हरण] ईश्वर, भगवान। –वि० भय को दूर करने वाला।
भें–स्त्री० भेड़ या गाय आदि की बोली।
भेंचकणी (बो)–देखो 'भेंचकणी' (बो)।
भेंण, भेंणड़, भेंन–देखो 'बहन'।
भेंरु–देखो 'भैरव'।
भेंस, भेंसड़ली, भेंसड़ी–स्त्री० [सं० महिष] १ अधिक दूध देने वाली प्रसिद्ध मादा पशु, महिषी। २ आक का फल। ३ काली व मोटी औरत। (लाक्षणिक)
भेंसपूंछो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।
भेंसागूगल–पु० एक प्रकार का गूगल विशेष।
भेंसाल–पु० विसायती।
भेंसासुर–स्त्री० महिषासुर मर्दनी देवी विशेष।
भेंसापाज–स्त्री० एक देवी विशेष।
भेंसामाता–स्त्री० बड़े दानों वाली शीतला, चेचक।
भेंसालसण–पु० मानव शरीर पर होने वाला एक दाग विशेष।
भेंसासुर–पु० एक राक्षस विशेष।
भेंसी–पु० [सं० महिष] १ मोटे डील डौल का प्रसिद्ध चौपाया जानवर। महिष। २ मदार वृक्ष का फल। ३ मोटा व काला मनुष्य।
भै–पु० [सं०] १ नक्षत्र, तारा। २ देखो 'भैं'। ३ देखो 'भय'।
भेंखज–देखो 'भेसज'।
भेंड़ो–वि० (स्त्री० भेंड़ी) १ भयंकर, डरावना। २ खतरनाक, बुरा।
भेंचक–वि० (स्त्री० भेंचकी) १ भौंचक्का, चकित, विस्मित। २ घबराया हुआ। ३ भयभीत, डरा हुआ। ४ महान्, बड़ा, प्रचण्डकाय। ५ भयंकर, डरावना। –पु० एक भयंकर जल जंतु।
भेंचकणो (बो), भेंचक्कणो (बो)–क्रि० १ भयभीत होना, डरना। २ संभ्रमित होना। ३ भौंचक्का होना, स्तंभित होना। ४ चौंकना। ५ घबराना।
भेंण, भेंणड़ी–देखो 'बहन'।
भेंत–१ देखो 'भीति'। २ देखो 'वैंत'।
भेंन, भेंनड़ी–देखो 'बहन'।
भेंभंग–वि० [सं० भय भंग] १ भयभीत। २ देखो 'भुजंग'।
भेंभीत–वि० १ निडर, निर्भय। २ जबरदस्त, बड़ा। ३ देखो 'भयभीत'।
भेंतकार–पु० हाहाकार।
भें' भी–देखो 'वहमी'।
भेंभो–पु० १ लोकदेवता (मेवात)। २ देखो 'भाई'।
भेंरवांण–देखो 'भैरव'।
भैंरव–पु०[सं०]१ तेल और सिंदूर से पूजे जाने वाले एक देवता विशेष। २ शिव, महादेव। ३ शिव के गण जो उन्हीं के अवतार हैं। ४ साहित्य में भयानक रस। ५ ताल के सात मुख्य भेदों में से एक। ६ संगीत में एक रागका नाम। ७ एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र। –वि० [सं० भैं+रव] १ भीषण शब्द वाला। २ भयंकर, भयानक। ३ घोर विनाशकारी। ४ अति उग्र या तीव।
भैंरवघांप (फ)–स्त्री० हिमालय पर्वत पर केदारनाथ के मंदिर के पीछे की एक कगार जहां से मनोकामना सिद्धि के लिये छलांग लगाई जाती है।
भैंरवमस्तक–पु० संगीत में ताल का एक भेद।
भैंरवा–स्त्री० एक पक्षी विशेष।
भैंरवी–स्त्री०१ तांत्रिक देवी, महाविद्या। २ चामुण्डा, दुर्गा, देवी। ३ 'कोचरी' नामक चिड़िया। ४ पार्वती। ५ संगीत में एक रागिनी। ६ एक प्रकार का उत्तम वस्त्र। —चक्र–पु० तांत्रिक अनुष्ठान का समय चक्र।
भैंरवेस–पु० [सं० भैंरव-ईश] शिव, महादेव।
भैंरवो–देखो 'भैंरव'।
भैंरस–पु० [सं० भय+रस] साहित्य में एक रस।
भैंराहर–पु० ऊंट।
भैंरिपु–पु० [सं० भय रिपु] ईश्वर, परमात्मा।
भैंरू–देखो 'भैरव'।
भैंरूजी–पु० १ भैंरव की मूर्ति। २ एक लोक गीत।
भैं' री–१ देखो 'भंवरी'। २ देखो 'भेळी'।
भैंसी–१ देखो 'बहल'। २ देखो 'भेलो'।
भेंळी–देखो 'भेळी'।
भेंसड़ी–देखो 'भैंसी'।
भेंसी–देखो 'भैंस'।
भेंहरण–पु० [सं० भय-हरण] ईश्वर, परमात्मा।
भों–१ देखो 'भव'। २ देखो 'भय'।
भोंगरी–स्त्री० एक प्रकार घास।
भोंदू–क्रि० १ बेवकूफ, मूर्ख। २ सीधा-सादा, भोला-भाला।
भोंपू–पु० १ तुरही के आकार का एक बाजा विशेष। २ किसी उद्योग आदि में लगी, समय-समय पर लंबी बोलने वाली सीटी। ३ मोटर आदि वाहनों में लगा बाजा, हार्न। ४ इसी तरह बोलने वाला खिलौना।
भोंय–देखो 'भांय'।
भोंह–देखो 'भ्रू'।
भो–अव्य० १ हे, अरे। २ देखो 'भय'। ३ देखो 'भव'।
भोअणनंदन–पु० [सं० भूनंदन] मंगल ग्रह।
भोई–पु० (स्त्री० भोयण) १ कहार जाति व इस जाति का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यक्ति। २ महावत का सहायक। ३ खैरादी। ४ भोजन करने वाला, भोजी। ५ तीर में होने वाला छल्ला।

भोक्ता–वि० [सं० भोक्तृ] १ खाने वाला, भोजन करने वाला। २ भोगने वाला। ३ उपभोग करने वाला। –पु० स्त्री का पति, स्वामी।

भोग–पु० [सं०] १ भोगने की क्रिया या भाव। २ सुख-दुःख की अवस्था। ३ सुख-सुविधा की सामग्री। ४ उपयोग, उपभोग। ५ देवताओं का प्रसाद, नैवेद्य। ६ भोजन, खाना। ७ खाना क्रिया। ८ जमीन-जायदाद पर अधिकार होकर मिलने वाला लाभ। ९ कब्जा, भुक्ति। १० आराम, चैन, ऐश। ११ संभोग, मैथुन। १२ संभोग शक्ति। १३ घर, मकान। १४ निवास स्थान। १५ सुख, आराम। १६ दुःख, कष्ट। १७ पाप, पुण्य का फल। १८ किसी घटना या बात का प्रतिफल। १९ किराया, भाड़ा। २० राज्य कर, लगान। २१ कृषि उपज का हिस्सा, हासिल। २२ ज्योतिष में सूर्य आदि ग्रहों का काल या समय। २३ सांप, सर्प। २४ सांप का फन। २५ आय, आमदनी। २६ बलि। २७ दावत, प्रीतिभोज। २८ लाभ, फायदा। २९ धन संपत्ति। ३० संभोग के बदले देवया को दिया जाने वाला धन। ३१ शरीर, देह। ३२ परिमाण, मान। ३३ प्रारब्ध, भाग्य। ३४ शासन, हुकूमत। ३५ माल गुजारी। ३६ छप्पन की संख्या※।

भोगण–वि० भोगने वाला।

भोगणजमी–पु० राजा, नृप।

भोगणो–वि० (स्त्री० भोगणी) १ उपभोग करने वाला, भोक्ता। २ खाने वाला। ३ उपयोग करने वाला, काम में लाने वाला। ४ संभोग करने वाला। ५ सहन करने वाला, भुगतने वाला।

भोगणो (बो)–क्रि० १ सुख या दुःख की अवस्था में रहना, पाप पुण्य का फल भुगतना। २ स्त्री संभोग करना। ३ उपभोग करना। ४ काम में लाना। ५ भुगतना। सहना। ६ आनन्द या ऐश करना। ७ सद्-उपयोग करना। ८ शासन या राज्य करना।

भोगता–पु० [सं० भोक्ता] १ पति, भरतार। २ उपभोक्ता। ३ जागीरदार।

भोगदेह–पु० मरणोपरांत मिलने वाला सूक्ष्म शरीर।

भोगनो–पु० १ कान के आगे का भाग, कनपटी। २ मस्तिष्क। बुद्धि। ३ शिर, मस्तक। ४ प्रारब्ध, भाग्य।

भोगपत, भोगपति–पु० नगर का शासक, सूबेदार।

भोगपतर, भोगपत्र–पु० [सं० भोग-पत्र] किसी वस्तु के उपभोग के लिये दिया गया अधिकार-पत्र।

भोगपाळ–पु० [सं० भोग-पाल] १ भोग पति। २ सईस।

भोगभाड़ो–पु० [सं० भोग-भाटक] कृषक द्वारा जागीरदार को दिया जाने वाला एक कर।

भोगभूमि–स्त्री० [सं० भोग्य भूमि] १ क्रीड़ा स्थल। २ विलास का स्थान। ३ जैन मतानुसार एक लोक विशेष।

भोगळ, भोगल–स्त्री० [सं० भुजार्गल] अर्गला।

भोगळाऊ, भोगळाबू–वि० [सं० भोग-लाभ] ऋण के बदले रखी हुई भूमि, जायदाद या वस्तु जिसका उपभोग करने पर ऋण का ब्याज नहीं होता।

भोगळावो–पु० [सं० भोग-लाभः] एक प्रकार का ऋण।

भोगलिप्सा–स्त्री० [सं०] संभोग की इच्छा, व्यसन।

भोगळियाळ, भोगळियाळी–स्त्री० कटार।

भोगळो (लो)–स्त्री० १ स्त्रियों के शिर के बोर के पीछे की नलिका। २ देखो 'भूंगळी'।

भोगळो–पु० बैलगाड़ी के चक्के के बीच में लगने वाला लोहे का उपकरण।

भोगवण–पु० भोग करने योग्य वस्तु।

भोगवणो (बो)–देखो 'भोगणो' (बो)।

भोगवती–स्त्री० [सं०] १ गंगा। २ पाताल गंगा। ३ नागिन। ४ नागलोक या नागपुरी। ५ द्वितीया तिथि की रात्रि।

भोगवान–पु० [सं० भोगवत्] १ सांप। २ गाना, गीत।

भोगविलास–पु० [सं०] १ सुख-चैन, आनन्द-मौज, ऐशोआराम। २ संभोग।

भोगसोस–देखो 'भोगीसैल'।

भोगांतराय–पु० सुख व भोगों के बीच पड़ने वाला विघ्न।

भोगाणो (बो), भोगावणो (बो)–क्रि० १ सुख-दुःख की दशा में रखना। पुण्य-पाप का फल भुगताना। २ स्त्री-प्रसंग या संभोग कराना। ३ उपभोग कराना। ४ भुगतवाना। ५ ऐश कराना, मौज कराना। ६ उपयोग कराना।

भोगि, भोगियो–देखो 'भोगी'।

भोगियोभमर, भोगियो भवर–वि० विलासी, विलास प्रिय।

भोगी–पु० १ सर्प, नाग। २ एक छन्द शास्त्रकार। ३ शेषनाग। ४ नृप, राजा। ५ जमींदार। ६ धनी, वैभवशाली। ७ संगीत में एक राग। –वि० १ भोगने वाला, भोक्ता। २ उपभोक्ता। ३ खाने वाला। ४ विषयासक्त, विलासी। ५ ऐश आराम करने वाला। मौजी। ६ मध्याश, रण्डीबाज।

भोगीकुसुम–पु० भ्रमर, भौंरा।

भोगीसैल–पु० [सं० भोगीशैलः] जोधपुर के पास स्थित एक पर्वत श्रेणी।

भोगेसर, भोगेस्वर–पु० एक तीर्थ का नाम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोग्य–वि० [सं०] भोगने लायक।

भोग्यमान–वि० भोगने योग्य।

भोड़, भोड़किर्यो–देखो 'भोंड'।

भोड़णो (बो)–क्रि० नाश करना, मिटाना।

भोज–पु० [सं०] १ धार्मिक या मांगलिक दृष्टि से बनाया गई व्यक्तियों का सामूहिक भोजन, बड़ा भोजन। २ दावत। ३ खाद्य सामग्री। ४ यादव कुल में एक राजवंश। ५ एक लोक समूह। ६ यादव वंशीय एक राजा। ७ महाभोज राजा के वंशजों का उपनाम। ८ एक अन्य राजवंश। ९ कश्यप कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। १० कान्य कुब्ज देश का राजा। ११ मालवे का परमार वंशीय राजा।

भोजक, तोजग–पु० १ सूर्योपासक एक राजा। २ शाकद्विपीय ब्राह्मण। –वि० १ भोजन करने वाला। २ भोग करने वाला।

भोजपत्री–स्त्री० [सं० भूर्जपत्र] १ चिट्ठी, पत्री। २ देखो 'भोजाई'।

भोजण, भोजन–पु० [सं० भोजन] १ क्षुधा शांति के लिये खाई जाने वाली रोटी, खाद्य सामग्री, खाना। २ खाद्य विशेष। ३ खाने की क्रिया या भाव। —**खोनो**–पु० पाकशाला। रसोईघर। —**भट, भट्ट**–वि० अधिक खाने वाला पेटू। —**शाळ, साळ**–स्त्री० पाकशाला।

भोजनालय–पु० १ रसोई घर, पाकशाला। २ मूल्य लेकर भोजन खिलाने की दुकान, गृह। होटल।

भोजनियो, भोजनु–देखो 'भोजन'।

भोजपत्र–पु० [स० भूर्ज-पत्र] १ ऊंचे पर्वतों पर पाया जाने वाला मझोले आकार का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष की छाल।

भोजपरीक्षक–पु० पाकशास्त्री, रसोईया।

भोजपुरियो–वि० १ भोजपुर का, भोजपुर संबंधी। २ भोजपुर का बना। –पु० भोजपुर का निवासी।

भोजपुरी–स्त्री० भोजपुर की भाषा। –वि० भोजपुर का।

भोजरू पु० शर पंखा।

भोजाई–स्त्री० बड़े भाई की पत्नी, भाभी।

भोजी–वि० १ भोजन करने वाला, खाने वाला। २ देखो 'भोजाई'।

भोजोसुधा–पु० [सं० सुधाभोजिन्] इन्द्र।

भोज्य–वि० भोजन करने योग्य।

भोज्यविधि–स्त्री० ६४ कलाओं में से एक।

भोट–पु० १ भूटान देश का एक नाम। २ तीव्र या तेज गरमी, ताप। ३ अग्नि, आग। ४ बौछार, झड़ी।

भोटणो (बो)–क्रि० १ दांतों से तोड़ना, काटना। २ भोजन करना, खाना। ३ प्रहार करना।

भोटो–वि० (स्त्री० भोटी) १ जिसकी धार या नोक तीखी न हो। २ मंद, धीमा। ३ मंदबुद्धि वाला।

भोट्ट, भोठ–देखो 'भोट'।

भोठणो (बो)–देखो भोटणो' (बो)।

भोड, भोडक, भोडको–पु० १ मतीरे या तरबूज का विकृत फल। २ मस्तक, शिर। ३ मुंडा हुआ शिर। ४ देखो 'भोडल'।

भोडळ–पु० १ अभ्रक नामक खनिज धातु। –वि० श्वेत, सफेद।

भोडळो, भोडलो–वि० १ भोला भाला, सीधा-सादा। २ नासमझ, नादान। ३ बुद्धू, मूर्ख।

भोडागार–पु० भंडार।

भोडी–स्त्री० १ छोटा मतीरा, तरबूज। २ देखो 'भोट'।

भोण–१ देखो 'भवन'। २ देखो 'भुवन'।

भोणमती–वि० अस्थिर चित्त, बात बदलने वाला।

भोत–देखो 'बहुत'।

भोतरो–देखो 'बहुतेरी'।

भोबार–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

भोबू–देखो 'भोंदू'।

भोन–देखो 'भवन, भुवन'।

भोपणियो–देखो 'भोपणो'।

भोपणो–देखो 'भोपणो'।

भोपाई–स्त्री० १ भोपा का कार्य। २ सिद्धि, चमत्कार।

भोपाडप, भोपाडफ, भोपाडफर, भोपाडफरी–स्त्री० भोपा का दिखावा, ढोंग, पाखंड, आडंबर।

भोपाळ–देखो 'भूपाळ'।

भोपाळी, भोपाली–स्त्री० संगीत में एक राग।

भोपो–पु० (स्त्री० भोपण, भोपी) १ किसी देवता का भक्त या पुजारी जिसके शरीर में देवता आकर भूत-भविष्य की बात कहता है। २ देवता का पुजारी। ३ भील जाति के व्यक्ति का एक सम्बोधन।

भोबर–देखो 'भोभर'।

भोभरियो, भोभरो–देखो 'भोभरो'।

भोभर, भोभरि–स्त्री० १ गर्म राख, छोटी चिनगारियों वाली राख। २ देखो 'भोभरो'।

भोभरियो, भोभरो–पु० शिर, मस्तक।

भोम–स्त्री० [सं० भोमः, भूमि] १ मंगल ग्रह। २ मंगल वार। ३ भूमि। ४ अधिकृत भूमि। ५ कृषि भूमि। ६ श्मशान भूमि। ७ राज्य। ८ अग्नि, आग। ९ स्थान। १० ज्ञान, बुद्धि। ११ ध्यान, चेतना। १२ परिचय। १३ कार्य क्षमता। १४ राज्य या शासन की सेवा के उपलक्ष में दी गई भूमि।

भोमअंस–पु० [सं० भौमः अंश] रक्तवर्ण का मूंगा या लाल।

भोमका–स्त्री० १ श्मशान भूमि। २ देखो 'भूमिका'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भोमदंती–स्त्री० १ उत्तर दिशा का दिग्पाल । २ सार्वभौम दिग्गज ।

भोमबाब–पु० एक प्रकार का कर, लगान जो भोमियों से लिया जाता था ।

भोमविज्जा–स्त्री० भूकंप से शुभाशुभ फल जानने की विद्या ।

भोमि–देखो 'भूमि' ।

भोमियाचारी–देखो 'भोमीचारी' ।

भोमियाजी–पु० एक प्रकार का लोक देवता ।

भोमियाबंट–पु० पिता की संपत्ति का पुत्रों में बराबर विभाजन ।

भोमियो–वि० १ जानकार, विज्ञ । २ चतुर, दक्ष । ३ मूल निवासी । ४ बाहुबल से अधिकृत भूमि का स्वामी । ५ क्षेत्र विशेष का विशेष जानकर । ६ लुटेरा, डाकू । ७ किसी क्षेत्र या भूमि का सार्वभौम स्वामी । –पु० १ चूहा । २ वह छोटा भू-स्वामी जो पुलिस का कार्य करता था ।

भोमी–देखो 'भूमि' ।

भोमीचार–पु० भूमि का अधिकार ।

भोमीचारी–पु० १ भोमियों की बस्ती । २ 'भोमियों' का अधिकार । ३ लूट-खसोट, डकती । ४ कृषि भूमि का निःशुल्क भोग । ५ जमींदारी विशेष ।

भोमीबळ–पु० जल, पानी ।

भोमीयाचारी–देखो 'भोमीचारी' ।

भोमीयो–देखो 'भोमियो' ।

भोयंकर–देखो 'भयंकर' ।

भोयंग–देखो 'भुजंग' ।

भोयंगमंडळ–पु० [सं० भुजंग-मंडल] नागलोक, पाताल ।

भोय–१ देखो 'भोम' । २ देखो 'भोग' ।

भोयड़लो–पु० एक अछूत जाति का व्यक्ति ।

भोयण, भोयणउ–१ देखो 'भवन, भुवन' । २ देखो 'भोजन' ।

भोर–पु० १ सवेरा, प्रातःकाल । २ धोखा, भ्रम । –वि० चकित, स्तंभित ।

भोरड़–वि० वृद्ध, बूढ़ा ।

भोरणो (बो)–क्रि० १ भ्रम में रखना, भ्रमित करना । २ टुकड़े-टुकड़े करना, महीन चूर्ण बनाना ।

भोरी–स्त्री० चेचक रोग का एक भेद ।

भोरो–पु० १ कण, दाना । २ किसी वस्तु का महीन अंश, टुकड़ा ।

भोळ–१ देखो 'भोळो' । २ देखो 'भौळ' । ३ देखो 'भोळानाथ' ।

भोळ–पु० योनि, भग, स्त्री चिह्न ।

भोळउ–देखो 'भोळो' ।

भोळणो (बो)–क्रि० १ अपने जिम्मे लेना, अपनी देख-रेख में करना । २ भुलावे में रखना । ३ धोखे में रखना । ४ सहलाना, पुचकारना ।

भोळप–स्त्री० १ गलती, भूल । २ भ्रम, धोखा । ३ अविवेक । ४ भुलावा । ५ सीधापन, सादगी । ६ चतुराई, चालाकी का अभाव ।

भोळवणो (बो)–देखो 'भोळणो' (बो) ।

भोळाई–स्त्री० सीधापन, सरलता, भोलापन, नादानी ।

भोळाटो–वि० धोखा खाया हुआ, भ्रम में पड़ा हुआ, भ्रम, चक्कर ।

भोळाणो (बो)–क्रि० १ किसी को जिम्मेदारी या देखरेख में करना, देना । २ संभलाना, सौंपना । ३ कार्य निर्देश करना । ४ भुलाना । ५ धोखे में डालना । ६ हिदायत देना ।

भोळानाथ–पु० शिव, महादेव ।

भोळापण (पणो)–पु० १ नादानी, नासमझी । २ सीधापन, सरलता । ३ अज्ञानता, असावधानी । ४ मूर्खता ।

भोळाबट–स्त्री० जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व ।

भोळावण (णि, णी)–स्त्री० १ कार्य का उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी । २ निगरानी, देख-रेख । ३ संभाल । ४ सावधानी के लिये निर्देश । ५ सिफारिश । ६ शिक्षा, समझ ।

भोळावणो (बो)–देखो 'भोळाणो' (बो) ।

भोळि–पु० [सं० बहुलिट] ऊंट ।

भोळीचक्कवत (वति, वरति)–पु० शिव, महादेव ।

भोळेपण–देखो 'भोळापण' ।

भोळेराव–पु० गुजरात का राजा भोला भीम ।

भोळें–क्रि० वि० भ्रमवश, असावधानी में, नादानी से ।

भोळो–वि० (स्त्री० भोळी) १ स्वभाव से सरल, सीधा-सादा । शरीफ । २ मासूम, नादान । ३ जिसके दिमाग में कोई चालाकी या चतुराई न हो । ४ मूर्ख, बेवकूफ । ५ समझदार; भला । ६ निश्छल । ७ सम्मिलित, साथ । –पु० १ शिव, महादेव । २ अभाव । ३ भ्रम । ४ गर्व, अभिमान ।

भोळोनाथ–पु० शिव, महादेव ।

भोवाळ–देखो 'भपाळ' ।

भोसकियो, भोसचियो–पु० स्त्री की योनि, भग ।

भोसागर–देखो 'भवसागर' ।

भोहणो (बो)–क्रि० भोगना, उपभोग करना ।

भौं–स्त्री० ध्वनि विशेष ।

भौंकणो (बो)–देखो 'भंकणो' (बो) ।

भौंचक, भौचका–वि० हक्का-बक्का, स्तंभित ।

भौंजाई–१ देखो 'भूंजाई' । २ देखो 'भोजाई' ।

भौंडेल–पु० विवाहादि मांगलिक अवसरों पर कुछ उपहार लेने वाली जाति समूह ।

भौंर, भौंरो–देखो 'भ्रमर' ।

भौंरामाखी–स्त्री० बड़ी मक्खी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भौळ, भौळी–देखो 'भंवळ' ।
भौह, भौहारी–१ देखो 'भ्रू' । २ देखो 'भंवारी' ।
भौ–१ देखो 'भव' । २ देखो 'भव' ।
भौंवारी–१ देखो 'भ्रू' । २ देखो 'भंवारी' ।
भौग–देखो 'भोग' ।
भौड़–स्त्री० १ सूर्य की कड़ी धूप या गर्मी । २ तीव्र खुजली का एक रोग ।
भौंटो–वि० (स्त्री० भौंटी) जो पैना या तीक्ष्ण न हो ।
भौड, भौडक–देखो 'भोडक' ।
भौंडिडुम–पु० [सं भय+दुंदुभि] आपातकाल या युद्ध के समय बजाया जाने वाला वाद्य ।
भौण–१ देखो 'भवन' । २ देखो 'भुवन' ।
भौत–देखो 'बहुत' ।
भौतिक–पु० [सं०] १ शिव, महादेव । २ आंख, कान आदि इन्द्रियां । ३ आधि, व्याधि । ४ प्राकृतिक तत्त्व । –वि० १ पार्थिव, पंच भूतों से बना । २ पंच भूतों से संबंधित । ३ शरीर संबंधी । ४ सांसारिक, लौकिक । ५ मूल योनि से संबंधित । ६ प्रकृति संबंधी । —सृष्टि–स्त्री० देव, मनुष्य व तिर्यंक की समष्टि ।
भौदोख–पु० [सं० भयदोष] मनुष्य का कर्म संबंधी दोष (जैन)
भौपति–देखो 'भूपति' ।
भौपाळ–देखो 'भूपाळ' ।
भौम–१ देखो 'भोम' । २ देखो 'भूमि' ।
भौमप्रदोस–पु० [सं० भौम प्रदोष] मंगलवार को पड़ने वाला प्रदोष व्रत ।
भौमवार–पु० [सं०] मंगलवार ।
भौमासुर–पु० नरकासुर नामक राक्षस ।
भौमि, भौमी–स्त्री० १ पृथ्वी की पुत्री, सीता । २ देखो 'भूमि' ।
भौमीचारी, भौमीयाचारी–देखो 'भोमीचारी' ।
भौम्यो–देखो 'भोमियो' ।
भौयग–देखो 'भुजंग' ।
भौयण–१ देखो 'भवन' । २ देखो 'भुवन' ।
भौर–देखो 'भोर' ।
भौरिक–पु० [सं०] १ सोने, जवाहरात के भण्डार का अध्यक्ष । २ अध्यक्ष ।
भौळप–देखो 'भोळप' ।
भौळवणी (वो)–देखो 'भोळणी' (वो) ।
भौळावण–देखो 'भोळावण' ।
भौळावै–देखो 'भोळै'
भौळै–देखो 'भोळै' ।
भौळो–पु० १ भुलावा । २ देखो 'भोळो' ।
भौवाळ–देखो 'भूपाळ' ।
भौसिंध, भौसिंधु–देखो 'भवसिंधु' ।
भौह–देखो 'भ्रू' ।
भौहण–देखो 'भवन' ।
भौहरी, भौहारी–देखो 'भ्रू' ।
भ्याड़–पु० बड़ा मेंढक ।
भ्यारियो–वि० तुच्छ, भौंदू, मूर्ख ।
भ्यास–देखो 'भास' ।
भ्रंग–पु० [सं० भृंग] १ भ्रमर, भंवरा । २ भंवरा जाति का अन्य पतंगा । ३ हाथी, गज । ४ लता, बेल । ५ अभ्रक । ६ दालचीनी । ७ देखो 'भृगु' ।—राज–पु० बड़ा भंवरा । भंगरा नामक औषधि । काले रंग का एक पक्षी विशेष ।
भ्रंगरीट–पु० [सं०] १ शिव का एक द्वारपाल । २ लोहा ।
भ्रंगली–पु० एक वाद्य विशेष ।
भ्रंगार–पु० १ एक पक्षी विशेष । २ राज्याभिषेक के समय काम आने वाला घट, कलस । ३ स्वर्ण, सोना । ४ लौंग ।
भ्रंगारो–पु० झींगुर ।
भ्रंगि–देखो 'भृंगी' ।
भ्रंगिरीट (रीटि)–देखो 'भृंगरीट' ।
भ्रंगी–पु० १ शिव, महादेव । २ शिव का एक गण । ३ भौंरा, भ्रमर । ४ भंवरे जाति का पतंगा । ५ भांग, विजिया ।
भ्रंगीस–पु० [सं० भृंगीश] शिव, महादेव ।
भ्रंता–वि० भ्रांति वाला, संदेही ।
भ्रंति–देखो 'भ्रांति' ।
भ्रंभणो (वो)–देखो 'भंवणो' (वो) ।
भ्रंसणो–वि० नाश करने वाला ।
भ्रंसणो (वो)–क्रि० नाश करना, ध्वंस करना ।
भ्रकट, भ्रकट्ट भ्रकुट भ्रकुटक भ्रकुटि, भ्रकुटी, भ्रकुट्टी–स्त्री० [सं० भ्रकुटिः] १ भौंह, भ्रू । २ ललाट । ३ शिर, मस्तक ।
भ्रकुंड–वि० जिसकी भ्रकुटी चढ़ी हुई हो । –पु० शिर, मस्तक ।
भ्रख–१ देखो 'भक्ष' । २ देखो 'भख' ।
भ्रखण–देखो 'भक्षण' ।
भ्रगनिस–पु० [सं० निशा+भ+रक्ष] चन्द्रमा, शशि ।
भ्रग–देखो 'भृगु' ।
भ्रगट, भ्रगिट–देखो 'भ्रकुटी' ।
भ्रगु–पु० [सं० भृगु] १ एक गोत्रकार मुनि जो ब्रह्मा के पुत्र थे । २ सप्तऋषियों में से एक । ३ परशुराम । ४ जमदग्नि । ५ शुक्राचार्य । ६ शिव, महादेव । ७ श्रीकृष्ण । ८ शुक्रवार । ९ पहाड़ के शिखर की समतल भूमि ।
भ्रगुकच्छ–पु० [सं०] भड़ौंच का प्राचीन नाम ।
भ्रगुट, भ्रगुटि, भ्रगुटी, भ्रगुट्ट, भ्रगुट्टी–देखो 'भ्रकुटी' ।
भ्रगुतुंग–स्त्री० [सं०] हिमालय की एक चोटी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृगुनंद (नंदन, नंदन), भृगुनाथ, भृगुपत (पति पती, रांम)-पु० [सं०] परशुराम ।
भृगुसुता, भृगुसुत-देखो 'भ्रिगुलता' ।
भृगुसुत-पु० १ शुक्राचार्य । २ शुक्र ग्रह ।
भृगू-देखो 'भृगु' ।
भृगूट भृगूटी, भृगूटीय-देखो 'भ्रकुट' ।
भृगेस-पु० [सं० भृगु+ईश] परशुराम ।
भृत-पु०एक देव जाति । -वि० १ भृति, बहुत । २ देखो 'भ्राता' । ३ देखो 'भृत्य' ।
भृतखंड-देखो 'भारतखंड' ।
भृतार-देखो 'भरतार' ।
भृत्य-पु० [सं०] नौकर, चाकर ।
भृद्रजाती-देखो 'भद्रजात' ।
भृद्रजोध-पु० शिव का गण, वीरभद्र ।
भ्रम-पु० [सं०] १ मिथ्या विश्वास । २ धोखा । ३ संदेह अविश्वास, शक । ४ आभास, प्रतीति । ५ भूल, गलती । ६ गड़बड़ी । ७ बेहोशी, मूर्च्छा । ८ एक रोग । ९ पुत्र । १० देखो 'भरम' । ११ देखो 'भ्रमण' ।
भ्रमक-पु० [सं०] डर, भय, आतंक ।
भ्रमकारी-वि० [सं०] १ भ्रम में डालने वाला । २ संदेह, अविश्वास जगाने वाला । ३ आभास वाला । ४ गुंजाईश या सार वाला । ५ भेद या रहस्य वाला ।
भ्रमगांमी-वि०[सं०भ्रमगांमी]१चलचित्त,डावांडोल । २ भ्रमित ।
भ्रमजाळ-पु०संदेह, भ्रम, अविश्वास, धोखे का वातावरण,घेरा ।
भ्रमण-पु० [सं०] १ घूमना क्रिया, विचरण । २ यात्रा, सफर । ३ चक्कर, फेरा । ४ आना-जाना, आवागमन । ५ धोखा, भूल । ६ भ्रम, भ्रांति ।
भ्रमणी-वि० १ भ्रमण करने वाला, फिरने वाला । २ यात्री । ३ चक्कर या फेरी लगाने वाला ।
भ्रमणी (वी)-क्रि० [सं० भ्रमणम्] १ धोखा खाना । २ सफर करना, यात्रा करना । ३ बहकना । ४ चकित होना । ५ देखो 'भंवणी' (वी) ।
भ्रमना-देखो 'भरमना' ।
भ्रममूळक-वि० [सं० भ्रम-मूलक] भ्रम पैदा करने वाला ।
भ्रमर-पु० [सं० भ्रमर] १ काले रंग का पतंगा, भंवरा, भौंरा, चंचरीक । २ श्याम रंग । ३ लहर, तरंग । ४ प्राण, जीव, आत्मा । ५ दोहे का एक भेद । ६ छप्पय छंद का एक भेद । ७ देखो 'भंवर' ।
भ्रमरकेतु-पु० [सं०] एक राक्षस ।
भ्रमरगुंजार-स्त्री० [सं०] १ भ्रमर की भूं-भूं की ध्वनि । २ देखो 'भंवरगुंजार' ।
भ्रमराधप-पु० हाथी ।
भ्रमरावळ, भ्रमरावळी-स्त्री० [सं० भ्रमर+ अवलि] १ भंवरों की कतार, पंक्ति । २ एक मात्रिक छंद विशेष ।
भ्रमरी-स्त्री० १ मिर्गी नामक रोग । २ एक लता, षट पदी ।
भ्रमवाहण-पु० इन्द्र ।
भ्रमाणी (वी), भ्रमावणी (वी)-क्रि० १ धोखा देना । २ बहकाना । ३ घुमाना, फिराना, विचरण कराना । ४ सफर या यात्रा कराना । ५ भ्रम में डालना, चकित करना । ६ देखो 'भवाणी' (वी) ।
भ्रमवाण कुंजर-पु० पांडु पुत्र भीम ।
भ्रमि-स्त्री० १ ध्रुव की पत्नी का नाम । २ देखो 'भ्रमी' ।
भ्रमी-वि० [सं० भ्रमिन्] १ जो भ्रम में पड़ा हो, भ्रमित । २ शकी स्वभाव वाला । ३ चकित, भौंचक्का । -स्त्री० एक प्रकार की बंदूक ।
भ्रमुवल्लभ-पु० [सं० भ्रमुवल्लभ] ऐरावत हाथी ।
भ्रम्भ-देखो 'भ्रम' ।
भ्रम्ह-१ देखो 'भ्रम' । २ देखो 'ब्रह्म' । ३ देखो 'ब्राह्मण' ।
भ्रसंडी-वि० भयंकर, जबरदस्त ।
भ्रसंस-स्त्री० [सं० भृश्] अपकीर्ति, निंदा ।
भ्रसंसनीय-वि० निंदनीय ।
भ्रसुंड, भ्रसुंडी, भ्रसूंड, भ्रसूंडी-पु० १ हाथी का मस्तक । २ हाथी की सूंड ।
भ्रस्ट-वि० [सं० भ्रष्ट] १ पतित, पदच्युत । २ नीच, दुष्ट । ३ खराब, दूषित । ४ चरित्रहीन, बदचलन । ५ नष्ट, बरबाद । ६ भला भटका ।
भ्रस्टा-वि० [सं० भृश्] कुलटा, पुंश्चली ।
भ्रस्टाचार-पु० [सं० भ्रष्टाचार] १ दूषित एवं निंदनीय कर्म । २ दुष्कर्म, कुकर्म । ३ रिश्वत, घूंस ।
भ्रह्म-१ देखो 'ब्रह्म' । २ देखो 'ब्रह्मा' । ३ देखो 'भ्रम' ।
भ्रह्मचार-देखो 'ब्रह्मचरज' ।
भ्रह्मचारी-देखो 'ब्रह्मचारी' ।
भ्रह्माण, भ्रह्मा, भ्रह्मेस-१ देखो 'ब्रह्मा' । २ देखो 'ब्रह्म' ।
भ्रह्मिण-देखो 'ब्राह्मण' ।
भ्रहास-देखो 'बरहास' ।
भ्रहूं-देखो 'भ्रू' ।
भ्रांत-पु० [सं०] १ विरोध, वैमनस्य, शत्रुता । २ घूमना-फिरना भ्रमण । ३ विचार । ४ भ्रांति । -वि० १ भ्रम में पड़ा हुआ भ्रमित । २ संदेह की अवस्था वाला । शकी । ३ भूला हुआ, भटका हुआ । ४ चक्कर खाया हुआ । ५ इधर-उधर घूमा हुआ ।
भ्रांतापह्नुति-पु० [सं० भ्रान्तापह्नुति] एक काव्यालंकार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्रांति, भ्रांती–स्त्री० [सं० भ्रांति] १ भ्रम, धोखा। २ संदेह, शक। ३ भूल-चूक। ४ घबराहट, परेशानी। ५ मोह। ६ प्रमाद। ७ चक्कर, फेरा। ८ एक काव्यालंकार।

भ्रांतिजथा–स्त्री० डिंगल का एक अलंकार।

भ्रामक–वि० [सं० भ्रामक] १ भ्रम, भुलावे या संशय में रखने वाला. भ्रमित करने वाला। २ धोखे में रखने वाला। ३ धूर्त, चालाक। ४ घुमाने वाला।

भ्रामणी (वी)–देखो 'भ्रमणी' (वी)।

भ्रामर, भ्रामरी–पु० १ दोहे का एक भेद। २ गोला, वृत्त। ३ परिक्रमा, भांवरी। ४ घूमर नृत्य। –वि० भ्रमर-संबंधी।

भ्रामी–स्त्री० १ ब्राह्मण की स्त्री, ब्राह्मणी। २ एक प्रकार का गाथा छंद। ३ देखो 'ब्राह्मी'।

भ्राजक–पु० [सं० भ्राजक] त्वचा में स्थित पित्त।

भ्राजणी (वी)–क्रि० शोभित होना।

भ्रात–पु० [सं० भ्रातृ] भाई, सहोदर।

भ्रातबिजेसर–पु० श्रीकृष्ण के भाई, बलराम।

भ्राता–पु० [सं० भ्रातृ] १ भाई, सहोदर। २ सगा, संबंधी।

भ्रातासखी–पु० [सं० लक्ष्मी-भ्राता] चन्द्रमा, शशि।

भ्रातीज, भ्रातीजो, भ्रात्रीज, भ्रात्रीजी–देखो 'भतीजो'। (स्त्री० भ्रातीजी, भ्रात्रीजी)।

भ्रासड–स्त्री० भड़भूंजे की भट्टी।

भ्रिंगी–देखो 'भृंगी'।

भ्रिकुट, भ्रिगुट–देखो 'भ्रकुटि'।

भ्रिगुरिसी–देखो 'भृगु'।

भ्रिगुलता भ्रिगुलात–स्त्री० विष्णु की छाती पर भृगु ऋषि की लात का चिह्न।

भ्रित–स्त्री० १ कोयल। २ देखो 'भृत्य'।

भ्रिहम–१ देखो 'ब्रह्मा'। २ देखो 'ब्रह्म'।

भ्रू.भ्रू–देखो 'भ्रू'।

भ्रूण–देखो 'भ्रूण'।

भ्रूह, भ्रू, भ्रूध, भ्रूमावळ–पु०[सं०] आंख के ऊपर के धनुषाकार बाल, भौंह। भ्रकुटि।

भ्रूज–पु० [सं० भ्रूणः] १ स्त्री का गर्भ। २ गर्भस्थ शिशु। –हत्या–स्त्री० गर्भस्थ शिशु की हत्या। गर्भपात कराना।

भ्रूभंग–पु० [सं०] तिरछी भ्रकुटि, चढ़े हुए तेवर।

भ्रूविक्षेप–पु० टेढ़ी भ्रकुटि की दशा, क्रोधावस्था।

भ्रूह, भ्रोंह, भ्रोंह–देखो 'भ्रू'।

–म–

म–पु०–देवनागरी वर्णमाला के 'प' वर्ग का अंतिम वर्ण।

मं–पु० १ मंगलग्रह। २ दुष्ट। ३ गुड़। ४ मिलन। ५ सुंदर। ६ रूप। ७ मंगलगीत। ८ उत्सव। ९ देखो 'म'।

मइ–१ देखो 'म्हैं'। २ देखो 'में'। ३ देखो 'मय'।

मकड़–१ देखो 'मकड़ी'। २ देखो 'मांकण'।

मकू–पु० [सं० मंक] गति की शीघ्रता, तेजी, वेग।

मकड़ी–देखो 'मकड़ी'।

मंख, मंखू–पु० १ चित्रपट दिखाकर निर्वाह करने वाली भिक्षु जाति। २ देखो 'मख'। ३ देखो 'मकू'।

मंग–पु० [सं० मृग] १ सिंह, वनराज। २ देखो 'मांग'। ३ देखो 'मारग'।

मंगजण–देखो 'मांगण'।

मंगजाई–देखो 'मगजाई'।

मंगण–देखो 'मांगण'।

मंगणि (णी)–देखो 'मंगनी'।

मंगणी (णी)–देखो 'मांगणी' (वी)।

मंगत–१ देखो 'मांगत'। २ देखो 'मंगतो'।

मंगतराय–पु० याचकों का सरदार, याचकों में अग्रणी।

मंगतवाड़, मंगतवेड़–पु० याचकों का दल।

मंगताई–स्त्री० १ मांगने की क्रिया या भाव। २ दीनता व हीनता का भाव। ३ नीचता। ४ भिक्षुक जैसी हरकतें।

मंगतो–पु० (स्त्री० मंगतण, मंगती) भिखारी, याचक।

मंगन–देखो 'मग्न'।

मंगनी–स्त्री० १ मांगने की क्रिया या भाव। २ मांग कर ली जाने वाली वस्तु। ३ लड़के-लड़की का वैवाहिक संबंध, सगाई।

मंगर, मंगरो–१ देखो 'मगर'। २ देखो 'मगरो'।

मंगळ–वि० [सं० मंगल] १ शुभ, सौभाग्यमय। २ समृद्धिवान। ३ लाभप्रद। ४ वीर, बहादुर। ५ बंद। –पु० १ कुशल क्षेम, हित, कल्याण। २ समृद्धि, खुशहाली। ३ हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द। ४ शुभ कार्य। ५ प्रत्येक सप्ताह का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीसरा दिन। ६ सौर जगत का एक ग्रह। ७ विष्णु। ८ समापन्न, समाप्ति। ९ मांगलिक गीत। १० कंठ, ललाट व शिर पर मौरी वाला घोड़ा। ११ लाल रंग या वर्ण। १२ विवाह मण्डप में होने वाली भांवरी। १३ वीर पुरुष, योद्धा। १४ विवाह। १५ एक डिंगल गीत विशेष। १६ डिंगल में छोटे साणोर का एक भेद। १७ एक छंद विशेष। १८ शुभ वस्तु। १९ हल्दी। २० आशीर्वाद। —ग्रह='ग्रहमगल' —करण—वि० कल्याण व हित करने वाला। –पु० गणेश, गजानन। —करणी–वि० कल्याणकारी। –स्त्री० केसर। —कळस–पु० मांगलिक अवसरों पर जल भर कर रखा जाने वाला घड़ा।—कारी, कारी–वि० शुभ। —गान–पु० मांगलिक गीत। —ग्रह–पु० शुभ ग्रह। सौर जगत का एक ग्रह। —घट=मंगळ कळस'। —चंडिका–स्त्री० दुर्गा का एक नाम। —दायक–वि० कल्याणकारी, शुभ। —पाठ–पु० देव तुष्टि के लिये किया जाने वाला स्तुति-पाठ। —पाठक, पाठी–पु० बंदीजन, भाट। स्वस्ति वाचन करने वाला। —रूप–पु० शुभ व आनन्द दायक स्वरूप। ईश्वर। —वेळा–स्त्री० दिन व रात में शुभ माने जाने वाले काल, शुभ समय। —स्नान–पु० शुभ कार्य करने से पूर्व किया जाने वाला स्नान।

मंगळगोरीव्रत-पु० [सं० मंगलगौरीव्रत] श्रावण के कृष्ण पक्ष के प्रथम मंगलवार से चार मंगलवारों तक किया जाने वाला व्रत।

मंगळचार (च्यार)–देखो 'मंगळाचार'।

मंगळछाया–स्त्री० [सं० मंगलछाया:] प्लक्ष-वृक्ष।

मंगळणी (णो)–क्रि० १ होली का जलना। २ अच्छी दशा में पूर्ण होना।

मंगळधवळ (धवळ)–देखो 'धवळ मंगळ'।

मंगळवाद–पु० [सं०] आशीर्वाद, आशीष।

मंगळवार–पु० [सं०] सप्ताह का तीसरा दिन।

मंगळवारी–वि० मंगलवार का, मंगलवार संबंधी, मंगलवार को होने वाला।

मंगळसूत्र–पु० [सं० मंगल सूत्र] १ शुभ अवसर या कार्य के समय हाथ में बांधने का धागा। २ सौभाग्यवती स्त्री के गले का आभूषण या डोरा। ३ गंडा, तावीज।

मंगळा–स्त्री० [सं० मंगला] १ पार्वती, गिरिजा। २ दुर्गा, देवी। ३ पतिव्रता स्त्री। ४ दूर्वा, दूब। ५ तुलसी। ६ हल्दी। ७ ज्वाला। ८ आय। ९ विष्णु, शिव, कृष्ण आदि के मन्दिरों में प्रातः काल अंधेरे-अंधेरे में होने वाली आरती। १० त्रिपुरवध के समय शिव को वर देने वाली देवी। —कार–वि० मंगल करने वाला। —कारी–वि० शुभ।

मंगळाचरण–पु० [सं० मंगल+आचरण] १ किसी कार्य का शुभारंभ। २ किसी कार्य के प्रारंभ में किया जाने वाला स्वस्ति-वाचन। ३ किसी ग्रंथ के प्रारंभ में शुभकामना सूचक लिखा जाने वाला छंद या पद्य।

मंगळाचार, मंगलाचार, मंगळाचारी–पु० [सं० मंगल-आचार] १ आनन्दोत्सव, हर्षोल्लास। २ मांगलिक कृत्य। ३ किसी कार्य के प्रारंभ में स्वस्तिवाचन की क्रिया। ४ मांगलिक गीत।

मंगळाचौथ–स्त्री० [सं० मंगला चतुर्थी] शुक्ल पक्ष में मंगलवार को आने वाली चतुर्थी।

मंगळाणी (णो)–क्रि० १ होली जलाना। २ कपाट दिराना (शुभ)। ३ पूर्ण कराना।

मंगळामुखी–स्त्री० वेश्या, रंडी।

मंगळारंभ–पु० शुभारंभ, श्रीगणेश।

मंगळालय–पु० [सं० मंगल-आलय] ईश्वर, परमेश्वर।

मंगळावणी (णो)–देखो 'मंगळाणी' (णो)।

मंगळाव्रत–पु० [सं० मंगलाव्रत] शिव-पार्वती के निमित्त किया जाने वाला व्रत।

मंगळि–१ देखो 'मंगळा'। २ देखो 'मंगळी'।

मंगळियो, मंगलियो–पु० मृतक के द्वादशे की क्रिया में काम लेने का मिट्टी का पात्र।

मंगळी–वि० मंगल संबंधी, मंगल ग्रह संबंधी। –स्त्री० १ मंगल ग्रह के अशुभ योग वाली जन्म कुण्डली। २ स्वस्ति पाठ। ३ देखो 'मंगळा'।

मंगळीक–पु० १ शुभ पदार्थ। २ गुड़। ३ देखो 'मांगळिक'।

मंगळीकमाळा (माला)–स्त्री० शुभ पदार्थों की श्रेणी, कतार, माला।

मंगळीकाचळ–पु० बालु रेत वाली पोपली मरु भूमि।

मंगल्य–वि० [सं० मंगल्य] १ मंगलकारक, मंगलदायक, शुभ। २ सुन्दर, मनोहर। ३ साधु। ४ पवित्र।–पु० १ राज्याभिषेक के समय तीर्थ स्थलों से लाया गया जल। २ बैल। ३ दही। ४ चन्दन काष्ठ। ५ सिन्दूर। ६ स्वर्ण, सोना। ७ वट वृक्ष। ८ नारियल का वृक्ष व फल।

मंगल्या–स्त्री० [सं० मंगल्या] १ दुर्गा का एक नाम। २ एक प्रकार का अन्न।

मंगवाणी (णो)–देखो 'मंगाणी' (णो)।

मंगसखांनो–पु० बड़े तम्बू में लगने वाला छोटा तंबू।

मंगसर, मंगसिर–देखो 'मिगसर'।

मंगाइणी (णो), मंगाणी (णो), मंगावणी (णो)–क्रि० १ किसी वस्तु को लाने के लिये कहना। २ वस्तु की मांग भेजना,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्डर देना। ३ मांगने का कार्य कराना। ४ वस्तु को लौटाने के लिये कहलाना।

मंगिण–देखो 'मांगण'।

मंगित–देखो 'मंगती'।

मंगेज–पु० गर्व, अभिमान।

मंगेजण (न)–वि० गर्विली, मानिनी।

मंगेड़ी–पु० द्वार, दरवाजा।

मंगेतर–स्त्री० १ विवाह हेतु निश्चित की गई लड़की, सगाई की हुई लड़की। –पु० २ संबंध किया हुआ लड़का।

मंगोळ–पु० १ मध्य ऐशिया (मंगोलिया) व उससे पूर्व में बसने वाली एक जाति। २ इस जाति का व्यक्ति।

मंच, मंचक–पु० [सं०मञ्च] १ किसी सभास्थल का ऊंचा स्थान, चौकी जिस पर बैठ कर प्रवचन, अभिनय आदि किया जाता है। स्टेज। २ खेत की रखवाली या शिकार के लिये बनाया गया मचान। ३ पलंग, खाट। ४ पीठिका।

मंचिका–स्त्री० [सं०] कुर्सी।

मंचोनमंच–पु० मंडप।

मंछावाचा–पु० [सं० मनस्-वाञ्छा] शिव की उपासना के लिये किया जाने वाला व्रत विशेष। –क्रि० वि० मन और वचन से।

मंछर–देखो 'मछर'।

मंछा–देखो 'मंसा'।

मंछी–देखो 'मच्छी'।

मंज–पु० १ रंग। २ देखो 'मंजु'। ३ देखो 'मंजरी'।

मंजण, मंजणि (णी)–पु० [सं० मार्जनम्] १ स्नान। २ दांत साफ करने का चूर्ण या दवा, मंजन। दांतुन। ३ दांतुन करने की क्रिया।

मंजणी (बी)–क्रि० [सं० मार्जन] १ स्वच्छ होना, नहाना। २ मांजा जाना, साफ किया जाना, चमकना, साफ होना। ३ दक्ष होना, प्रवीण होना। ४ अनुभवी होना। ५ देखो 'माजणी' (बी)।

मंजन–देखो 'मंजण'।

मंजर–पु० [सं० मञ्जर] १ मोती। २ मोर पंख की चंद्रिका के महीनतम बाल। –वि० १ सुंदर, मनोहर। २ देखो 'मंजरी'।

मंजरणी (बी)–क्रि० वृक्ष व पौधों पर मंजरी आना, बौर युक्त होना।

मंजरि–देखो 'मंजरी'।

मंजरिनेत्र–पु० एक रंग विशेष का घोड़ा।

मंजरी–स्त्री० [सं० मंजर-ङीप] १ कतिपय पौधों व वृक्षों में फलों से पूर्व आने वाली बौर। २ एक राग विशेष।

मंजरीक–पु० १ मोती। २ तुलसी।

मंजळी–देखो 'मंजुळ'।

मंजवती–पु० एक वर्णिक छंद विशेष।

मंजा–स्त्री० [सं०] १ बकरी। २ मंजरी। ३ लता, बेल।

मंजाणी (बी)–क्रि० १ राख, मिट्टी आदि से साफ कराना। २ स्वच्छ कराना, चमकवाना। ३ स्नान करवाना, नहलवाना।

मंजार–१ देखो 'मारजार'। २ देखो 'मध्य'।

मंजारखळ–पु० [सं० मार्जार+खल] श्वान, कुत्ता।

मंजारड़ी–१ देखो 'मारजार'। २ देखो 'मंजा'।

मंजारछळ–पु० [सं० मार्जार छल] शेर, सिंह।

मंजारी–देखो 'मारजार'।

मंजावट–स्त्री० मज्जन व सफाई की क्रिया।

मंजावणी (बी)–देखो 'मंजाणी' (बी)।

मंजासणी–देखो 'मजासणी'।

मंजिल–स्त्री० [अ०] १ यात्रा के बीच आने वाले ठहराव, विश्राम स्थल। २ गन्तव्य स्थान। ३ क्रमशः तय की जाने वाली यात्रा की दूरी या चढ़ाई। ४ मकान के ऊपर नीचे का खण्ड, माला, मंजीरी। ५ एक दिन की यात्रा। ६ नक्षत्र। ७ चांद का घर। ८ लंबी यात्रा।

मंजीठ–देखो 'मजीठ'।

मंजीठी–देखो 'मजीठो'।

मंजीर–पु० [सं०] १ पैरों में पहनने का आभूषण विशेष, नूपुर, झांझर। २ एक प्रकार का वस्त्र विशेष। ३ वह डंडा या खंभा जिसमें मय-दण्ड बंधा रहता है। ४ प्रथम गुरु के नगण का एक भेद। ५ देखो 'मंजीरा'।

मंजीरा–पु० (ब. व.) [सं० मंजीर] १ कांसी या पीतल के प्यालानुमा युग्म वाद्य जो प्रायः ढोलक के साथ बजाये जाते हैं। २ अठारह वर्ण का एक वर्णिक छंद विशेष।

मंजु–वि० [सं०] सुन्दर, मनोरम।

मंजुकेसी–पु० [सं० मंजुकेशिन्] श्रीकृष्ण।

मंजुघोस–पु० [सं० मंजुघोष] तांत्रिकों का एक देवता।

मंजुघोसा–स्त्री० [सं० मंजुघोषा] १ एक अप्सरा का नाम। २ अप्सरा।

मंजुनासी–स्त्री० [सं० मंजुनाशी] १ दुर्गा का एक नाम। २ इन्द्राणी का एक नाम।

मंजुर–१ देखो 'मंजरी'। २ देखो 'मंजूर'।

मंजुरणी (बी)–देखो 'मंजरणी' (बी)।

मंजुळ–वि० [सं० मंजुल] १ सुन्दर, मनोहर। २ सुरीला।

मंजुसी–पु० [सं० मंजुश्री] १ एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य। २ देखो 'मंजूसी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंजु–१ देखो 'मंजु'। २ देखो 'मंजुस'।

मंजुर–वि० [अ०] स्वीकारा हुआ, माना हुआ। स्वीकृत। जिसकी सहमति हो।

मंजुरी–स्त्री० स्वीकृति, सहमति, मान्यता। इजाजत, अनुमति।

मंजूस, मंजूसी, मंजूसी–पु० [सं० मंजूषा] १ छोटा पिटारा, डिब्बा। २ पक्षियों का पिंजरा। ३ हाथी का हौदा। ४ संदूक. पेटी।

मंजेस–पु० चरखे के नीचे की लंबी लकड़ी, डंडा।

मंजो–देखो 'मांजो'।

मंझ, मंझम–देखो 'मध्य'।

मंझली–वि० [सं० मध्यम] (स्त्री० मंझली) बीचका, मध्यका।

मंझा–स्त्री० [सं० मध्या] १ कमर, कटि। २ मध्या।

मझार, मझारि, मंझार, मंझाळ, मंझि–क्रि० वि० बीच में, मध्य में। घेरे, दायरे या क्षेत्र में। मध्य।

मंझिम–वि० [सं० मध्यम] १ मध्य। २ मध्यम।

मंझियार–वि० १ मध्य का, बीच का, मझला। २ देखो 'मंझार'।

मंठणो (बो)–क्रि० रचना, बनाना, निर्माण कराना। सजन कराना।

मंठाणो (बो), मंठावणो (बो)–क्रि० १ रचवाना, बनवाना, निर्माण कराना। सर्जन कराना। २ देखो 'मठारणो' (बो)।

मंड–पु० [सं०] १ आभूषण, गहना। २ रचना, सृष्टि। ३ ब्रह्माण्ड। ४ शरीर, देह। ५ निर्भरता। ६ आवागमन। ७ देखो 'मंडप'। ८ देखो 'मंडाण'। ९ देखो 'मांडो'। १० देखो 'मांडाणो'। ११ देखो 'मंढ'। १२ देखो 'मुंड'। १३ देखो 'मांड'।

मंडक, मंडको–पु० [सं० मण्डकः] १ मैदे में घी-शक्कर मिला कर बनाई जाने वाली रोटी। २ मोटी रोटी या चपाती।

मंडण (उ)–पु० [सं०मण्डनम्] १ सजावट, शृंगार। २ आभूषण गहना। ३ शोभा। ४ पुष्टि, प्रमाणीकरण।

मंडणकोट, मंडणगढ़–पु० [सं० मंडन-कोट] हाथी, गज।

मंडणछत्र–पु० [सं० मंडन-छत्र] आकाश, नभ।

मंडणो (बो)–क्रि० [सं० मंडनम्] १ होने की स्थिति में आना, होना। २ ठनना, पक्का होना, निश्चित होना। ३ कटिबद्ध तत्पर या उतारू होना। ४ उत्पन्न होना, अंकुरित होना। ५ स्थिर होना, रुपना, जमना, रुकना। ६ अटल, अडिग या दृढ़ होना, डटना। ७ जुड़ना, लगना। ८ आरंभ होना, शुरू होना। ९ स्थापित या कायम होना। १० सार्वजनिक लेन-देन या व्यापार के लिये चालू होना, कार्य करने लगना। ११ उमड़ना, उभरना, मंडराना। १२ चित्रांकित, चित्रित होना। १३ लिखा जाना, दर्ज होना। १४ चलने या कार्य रूप में आने के लिये स्थापित होना। १५ चलना, चल पड़ना, कार्य करने लगना। १६ अंकित होना, चिह्नित होना। १७ बनना, निर्मित होना। १८ संलग्न करना लगाना, खड़ा करना। १९ लेने या झेलने के लिये हाथ या वस्त्र आदि फैलाया जाना। २० तनना। २१ घोड़े, ऊंट आदि पर चारजामा कसा जाना। २२ सर्जन होना, सृष्टि होना। २३ रचा जाना, रचित होना। २४ मनाया जाना। २५ सजना, सज्जित होना। २६ आच्छादित होना, ढका जाना। २७ तैयार, उद्यत या प्रस्तुत होना। २८ छितरना, बिखरना। २९ प्रबन्ध होना, व्यवस्था होना। ३० व्यक्त होना। ३१ संबंध जुड़ना, मेल होना। ३२ संधान होना। ३३ शोभित होना। ३४ आभूषणों में रत्न आदि जड़ा जाना। ३५ ढोल आदि पर चमड़ा चढ़ाया जाना। ३६ आवेष्टित करना। ३७ तश्वीर आदि काच में लगायी जाना। ३८ शृंगार किया जाना। ३९ कुछ करना। ४० देखो 'मांडणो' (बो)।

मंडन–देखो 'मंडण'।

मंडप–पु० [सं०] १ देव मन्दिर, देवालय। २ भवन। ३ वितान चंदोवा। ४ आच्छादित स्थान। ५ छपरा, छप्पर। ६ मंदिर में दर्शक कक्ष। ७ देवालय आदि पर बना गुंबज, अण्डा। ८ देवालय में मूर्ति पर तना चंदोवा। ९ तंबू, शामियाना। १० सामयिक तंबू या मंडप।

मंडपपुर–पु० [सं०] मंडोर का नामान्तर।

मंडपराह, मंडपाळ–पु० [सं० मंडपराज, मंड-पाल] राजा, नृप।

मंडपि–देखो 'मंडप'।

मंडरणो (बो)–क्रि० चारों ओर से घिरना, छा जाना।

मंडराणो (बो)–क्रि० [सं०मंडल] १ मंडलाकार उठ कर छा जाना। २ पक्षियों का किसी घेरे या वृत्त में उड़ना। ३ किसी के आस-पास चक्कर लगाना।

मंडळ–पु० [सं० मंडलम्] १ किसी स्थान या बिन्दु पर चारों ओर बना घेरा, वृत्त। २ सूर्य, चन्द्रमा आदि के चारों ओर का प्रकाश वृत्त। ३ किसी वस्तु का मुख्य गोलाकार भाग। ४ गोलाकार आकृति, रचना या वृत्त। ५ आकाश वृत्त। ६ श्वान, कुत्ता। ७ मित्रों का समाज, वर्ग। लोगों का समाज। ८ किसी विभाग या संस्था के संचालन के लिये बना विभिन्न सदस्यों का समूह, बोर्ड। ९ नक्षत्रों का घेरा। कक्षा। १० ढेर, समूह। ११ दल, समूह. १२ देश। १३ बारह राज्यों का संघ। १४ कोई क्षेत्र या प्रदेश विशेष। १५ गोल चिह्न या दाग। १६ चालीस योजन लंबा व बीस योजन चौड़ा भू-भाग। १७ प्रशासनिक दृष्टि से विभाजित प्रदेश, जिला। १८ गोलाकार विस्तार। १९ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। २० सैन्य संगठन या व्यूह रचना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२१ पांच शामियानों का डेरा। २२ ऋग्वेद का एक खण्ड या भाग। २३ संसार। २४ तीर्थ स्थान। २५ एक जाति विशेष का सर्प। २६ मुड़ी हुई तलवार, खांडा।

मंडलओली–पु० द्वारिका के समीपवर्ती एक क्षेत्र।

मंडलक–देखो 'मंडलीक'।

मंडलकरणिक–पु० राज्य के एक सूबे का अधिकारी।

मंडलाग, मंडलाग्र–स्त्री० [सं० मण्डलाग्र] तलवार।

मंडलाधीस–देखो 'मंडलेस्वर'।

मंडलि–देखो 'मंडली'।

मंडलिक–देखो 'मंडलीक'।

मंडली–स्त्री० [सं० मण्डली] १ मानव दल, मानव समूह। २ गोलाकार वृत्त, वर्तुल। ३ समान विचारों वाले व्यक्तियों का दल, वर्ग। ४ सर्पों का एक वर्ग विशेष। ५ वट वृक्ष। ६ गेहूँ व चने के कटे पौधों का ढेर। ७ नाच-गान व नाटक करने वाले लोगों का समूह।

मंडलीक, मंडलीक–पु० [सं०मांडलिक्] १ प्रदेश, प्रांत या जिले का प्रशासक। २ राजा, नृप। ३ बारह राज्यों का अधिपति।

मंडलेसर, मंडलेस्वर–पु० [सं० मंडल-ईश्वर] १ एक मंडल या प्रदेश का शासक, अधिपति। २ बारह राज्यों का अधिपति। ३ खाखी साधुओं का कोई मठाधीश, महन्त। ४ महादेव, शिव।

मंडव - देखो 'मंडप'।

मंडवी–देखो 'मांडवी'।

मंडवी–पु० १ एक प्रकार का कदन्न। २ देखो 'मंडप'। ३ देखो 'मांडो'।

मंडाण–पु० [सं० मंडनम्] १ मंडित करने की क्रिया या भाव। २ विशेष कार्य की तैयारी। ३ रचना, बनावट। ४ आडंबर। ५ सजावट, सजधज। ६ तैयारी हलचल, चहल-पहल। ७ निशान, चिह्न। ८ लक्षण, आसार। ९ भूमिका।

मंडाई–स्त्री०१ मंडने की क्रिया या भाव। २ मंडने का व्यवसाय। ३ इस कार्य का पारिश्रमिक। ४ लिखने का कार्य। ५ लिखने का ढंग।

मंडाड़णो (बो), मंडाणो (बो), मंडावणो (बो)–क्रि० १ होने की स्थिति में लाना। २ ठनवाना, पक्का करवाना, निश्चित करवाना। ३ कटिबद्ध, तत्पर या उद्यत होने के लिये प्रेरित करना। ४ स्थिर कराना, रुपवाना, जमवाना। ५ अटल, अडिग या दृढ़ करने के लिये प्रेरित करना। ६ जुड़वाना, लगवाना। ७ स्थापित करवाना, कायम करवाना। ८ आरंभ या शुरू करवाना। ९ कार्य या व्यापार के लिये खुलवाना, लगवाना, चालू करवाना। १० चित्रित या चित्रांकित कराना। ११ लिखवाना, दर्ज कराना। १२ अंकित करवाना चित्रित करवाना। १३ निर्माण कराना, बनवाना। १४ चलाने के लिये स्थापित कराना, रखवाना। १५ सहारे लगवाना, खड़ा कराना, स्थिर कराना। १६ हाथ या दामन फैलवाना। पसराना। १७ तनवाना। १८ घोड़े या ऊंट पर चारजामा कसवाना। १९ सृजन करवाना। २० रचवाना, रचना कराना। २१ मनवाना। २२ सुसज्जित करवाना, सजवाना। २३ आच्छादित करवाना, ढकवाना। २४ तैयार या प्रस्तुत कराना। २५ छितरवाना, बिखरवाना २६ प्रबंध या व्यवस्था कराना। २७ व्यक्त करवाना। २८ संबंध जुड़वाना, मेल कराना। २९ संधान करवाना। ३० आभूषणों में रत्नादि जड़वाना। ३१ ढोल आदि पर चमड़ा लगवाना। ३२ तश्वीर आदि को शीशे या चौखट में बिठवाना, फिट कराना। ३३ आवेष्टित कराना, मंडित कराना। ३४ शृंगार कराना,सजवाना। ३५ कुछ करवाना।

मंडावी–देखो 'मांडवी'।

मंडित–वि० [सं०] १ शोभित, विभूषित, सजाया हुआ। २ छाया हुआ, आच्छादित। ३ जड़ित, जड़ा हुआ।

मंडी–स्त्री० १ दशनामी साधुओं के रहने का स्थान, मठ। २ किसी वस्तु विशेष या वस्तुओं का व्यापारिक केन्द्र।

मंडुक, मण्डूक–पु० [सं० मंडुक] (स्त्री० मंडुकी) १ चार पैरों वाला छोटा जलचर प्राणी, मेंढ़क, दादुर। २ एक ऋषि विशेष। ३ दोहे छंद का एक भेद। ४ रुद्रताल के बारह भेदों में से एक। ५ एक प्रकार का वाद्य। ६ एक प्रकार का नृत्य। ७ घोड़ों की एक जाति विशेष।

मंडूकपरणी–स्त्री० [सं० मंडूकपर्णी] १ ब्राह्मी बूंटी। २ मजिष्टा, मंजीठ।

मंडूकासण (न)–पु० [सं० मण्डूकासन] योग के चौरासी आसनों में से एक।

मंडूकी–स्त्री० [सं०] १ मादा मेंढ़क, मेंढ़की। २ स्वेच्छाचारिणी छिनाल स्त्री।

मंडूर–स्त्री० [सं०] लोहे के जंग से बनी भस्म, औषधि।

मंडेरी–स्त्री० [सं० मंडप] १ विशाल भवनों के तोरण द्वार पर बना बड़ा छज्जा। २ भवन के ऊपर,चारों ओर बनी छोटी दीवार।

मंडेलो–पु० बड़े-छोटे के क्रम से एक दूसरे पर रखे बर्तनों का ढेर

मंडोर, मंडोउर, मंडोवर–पु० [सं० मंडपपुर] जोधपुर या मारवाड़ की प्राचीन राजधानी।

मंडोवरी–पु० १ मंडोर का निवासी। २ मंडोर के शासक राठौड़ों की एक उपाधि।–वि० मंडोर का, मंडोर संबंधी।

मंढ–पु० [सं० मंडप] १ दशनामी साधुओं का मठ। २ चौकी या चबूतरे पर बना छोटा देव मंदिर। ३ देवी का मंदिर।

मंढणो (बो)–देखो 'मंडणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंढाणी (बो), मंढावणी (बो)–देखो 'मंडाणी' (बो) ।
मंढी–देखो 'मंडी' ।
मंणणी (बो)–देखो 'मुंणणी' (बो) ।
मंत, मंतर–देखो 'मंत्र' । —कार='मंत्रकार' ।
मंतरणा–देखो 'मंत्रणा' ।
मंतरणी (बो)–क्रि० [सं मंत्रणम्] १ मंत्र द्वारा संस्कृत करना, पवित्र करना । २ जादू-टोना करना । ३ मंत्रों से वश में करना । ४ सीखा, पढ़ा कर वश में करना । ५ झाड़-फूंक करना । ६ फुसलाना, भुलावे में डालना । ७ झूठी प्रशंसा या तारीफ करना ।
मंतराई–स्त्री० [सं० मंत्रता] १ अभिमंत्रित करने का कार्य । २ झाड़-फूंक करने का कार्य । ३ जादू टोना करने का कार्य । ४ देखो 'मिताई' ।
मंतरोळियो–पु० बनावटी मित्र, साधारण मित्र ।
मंतव्य–पु० [सं०] मन का विचार, मन का लक्ष्य, उद्देश्य ।
मंतु–पु० अपराध, गुनाह ।
मंत्र–पु० १ देवाभिसाधन, गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिसके द्वारा देवस्तुति तथा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो, वेद वाक्य । २ ऐसा वेद वाक्य जिससे सिद्धि प्राप्त की जा सकती हो । ३ सिद्धिदायक मंत्रों के समूह वाला वेदों का भाग । ४ साधना के लिये जपा जाने वाला शब्द । ५ ज्ञान प्राप्ति, लक्ष्य सिद्धि या मोक्ष प्राप्ति के लिये गुरु द्वारा दी गई विद्या, शिक्षा । ६ गोपनीय व रहस्य की बात । ७ चौसठ कलाओं में से एक । ८ विचार, उद्देश्य । ९ जादू टोना । १० तांत्रिक विद्या । ११ देखो 'मंत्री' । —कार–पु० मंत्र द्रष्टा ऋषि । —कुसल–पु० परामर्श देने में कुशल —कृत–पु० वेद रचयिता । वेद पाठी । परामर्श दाता । दूत । मंत्रों से निर्मित ।
मंत्रज्ञ–पु० [सं० मंत्रज्ञ] १ मंत्री । २ पंडित, ब्राह्मण । ३ मंत्रों का ज्ञाता । ४ गुप्तचर । ५ वेदज्ञ ।
मंत्रजळ–पु० [सं० मंत्रजल] अभिमंत्रित जल ।
मंत्रजांण–पु० [सं० मंत्रज्ञ] दूत ।
मंत्रणा–स्त्री० [सं०] परामर्श, सलाह ।
मंत्रणी–वि० १ जादू-टोना करने वाली । २ मंत्राणी ।
मंत्रणो–पु० [सं० मंत्रण] परामर्श, सलाह, मंत्रणा ।
मंत्रणो (बो)–देखो 'मंतरणी' (बो) ।
मंत्र-तंत्र–पु० [सं०] १ जादू टोना का कार्य । २ तांत्रिक साधना का मंत्र ।
मंत्रदेव, मंत्रदेवता–पु० [सं०] मंत्र से आह्वान किया गया देवता ।
मंत्रपाळ (ल)–पु० [सं०मंत्रपाल] मंत्रणा देने वाला, सलाहकार मंत्री ।
मंत्रपूत–वि० १ मंत्रों द्वारा पवित्र किया हुआ । २ अभिमंत्रित । –पु० गरुड़ ।
मंत्रबीज–पु० [सं०] मंत्र का मुख्य अक्षर । मूल मंत्र ।
मंत्रमुग्ध–वि० [सं०] १ मंत्र द्वारा वशीभूत । २ मुग्ध, मोहित ।
मंत्रमूरत, मंत्रमूरति–पु० [सं० मंत्रमूर्ति] शिव, महादेव ।
मंत्रमूळ–पु० [सं० मंत्रमूल] इन्द्रजाल, जादू ।
मंत्रयोग–पु० [सं०] १ मंत्र का प्रयोग । २ मंत्र पढ़ने का कार्य । ३ इन्द्रजाल, जादू ।
मंत्रवाद–पु० [सं०] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।
मंत्रवादी–वि० [सं० मंत्रवादिन्] मंत्र उच्चारण करने वाला, मंत्रज्ञ ।
मंत्रविद्या–स्त्री० मंत्रों की साधना, विद्या । मंत्र शास्त्र ।
मंत्रवी–देखो 'मंत्री' ।
मंत्रसंसकार, मंत्रसंस्कार–पु० [सं० मंत्र संस्कार] १ मंत्रोच्चार से किया जाने वाला संस्कार । २ मंत्रग्रहण से पूर्व किया जाने वाला संस्कार । ३ विवाह ।
मंत्रसंहिता–स्त्री० [सं०] वेदों का एक भाग ।
मंत्रसाधक–पु० [सं०] मंत्रों की साधना करने वाला व्यक्ति । साधक, तांत्रिक ।
मंत्रसाधन–पु० [सं०] किसी मंत्र की साधना ।
मंत्रसिद्ध, मंत्रसिध–वि० [सं० मंत्रसिद्ध] १ मंत्रों द्वारा सिद्ध किया गया । २ मंत्रों से सिद्ध करने वाला ।
मंत्रसिद्धि, मंत्रसिधि–स्त्री० [सं० मंत्रसिद्धि] मंत्रों की साधना से प्राप्त सिद्धि ।
मंत्र-संसकार–देखो 'मंत्र संस्कार' ।
मंत्राई–१ देखो 'मतराई' । २ देखो 'मंत्राई' ।
मंत्रि–देखो 'मंत्री' ।
मंत्रित–वि० [सं०] मंत्रों द्वारा सुसंस्कृत, अभिमंत्रित ।
मंत्री–पु० [सं० मंत्रिन्] १ परामर्श या मंत्रणा देने वाला; सलाहकार । २ राजा का मुख्य सलाहकार, मंत्री, अमात्य, प्रधान । ३ संसदीय प्रणाली से गठित मंत्री मण्डल का कोई सदस्य । ४ किसी संस्था का सचिव, संस्था का प्रमुख कार्य कर्ता । ५ शतरंज का एक मोहरा, गोटी ।
मंत्रीपरार्थ–पु० [सं० पार्थ-मंत्री] श्रीकृष्ण ।
मंत्रीसर, मंत्रीसरि, मंत्रीस्वर, मंत्रेस्वर–पु० राज्य या देश के मंत्रियों का प्रधान । प्रधान मंत्री ।
मंत्रोळियो–१ देखो 'मित्र' । २ देखो 'मंतरोळियो' ।
मंथ–पु० [सं०] १ मंथन, विलोड़न । २ रगड़, मर्दन । ३ मथ-दण्ड, मथानी । ४ एक प्रकार का मृग । ५ एक प्रकार का शर्बत । ६ बाल रोगों का एक ज्वर । ७ देखो 'महंत' ।
मंथगिरि, मंथगिरि–पु० मंदराचल पर्वत ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंथज–पु० [सं०] मक्खन, नवनीत ।
मथण–देखो 'मंथन' ।
मथणी (णी)–देखो 'मथणी' (णी) ।
मंथन–पु० [सं०] १ मथने की क्रिया या भाव, विलोड़न । २ मथ दण्ड, रई । ३ देखो 'मथन' ।
मंथरा–क्रि० वि० [सं० मंथर] धीरे से, मंद गति से । धीमे ।
मंथरा–स्त्री० [सं०] १ कैकई की प्रमुख दासी, कूबड़ी । २ देखो 'मथुरा' ।
मंथाण–वि० १ मंथन संबंधी । २ देखो 'मथांणो' । ३ देखो 'मथणी' । ४ देखो 'मथण' । ५ देखो 'मथांण' ।
मंथांणी–स्त्री० १ दो तगण का एक छंद विशेष । २ देखो 'मथांणी' ।
मंद–वि० [सं०] १ मूर्ख, मूढ़ । २ कृपण, कंजूस । ३ तनिक, थोड़ा । ४ कांतिहीन, फीका, निष्प्रभ । ५ कमजोर, क्षीण ६ हल्का, धीमा । ७ खल, दुष्ट । ८ कम वेग वाला, मंथर, धीमा । ९ प्रभावहीन । १० सुस्त, आलसी । ११ उदासीन । १२ कोमल । १३ दोष युक्त । १४ अभागा । १५ जिसमें तेजी, तीव्रता का अभाव हो । –पु० १ घोड़ी की गर्दन का एक रोग । २ एक प्रकार का हाथी । ३ यमराज, यम । ४ शनिश्चर । ५ देखो 'मद' । ६ देखो 'मंदी' ।
मंदक–वि० [सं०] १ मूर्ख, मूढ़ । २ देखो 'मंदी' ।
मंदकोरा–स्त्री० घोड़ों की एक जाति विशेष ।
मंदग–वि० [सं०] धीमी गति या चाल वाला । –पु० शाकद्वीप के ब्राह्मणों के चार वर्णों में से एक ।
मंदगति–स्त्री० [सं०] १ धीमी चाल, गति । २ ग्रहों की एक अवस्था ।
मंदजुर, मंदज्वर–पु० [सं० मंदज्वर] निरन्तर बना रहने वाला हल्का ज्वर ।
मंदता–स्त्री० धीमापन, हल्कापन ।
मंदफळ–पु० [सं० मंदफल] ग्रहों की गति का एक भेद ।
मंदभाग, मंदभागी–वि० [सं० मंद भाग्य] (स्त्री० मंदभागण) १ अभागा, दुर्भाग्यशाली । २ गरीब, निर्धन, दरिद्र ।
मंदमति, मंदमती–वि० मूढ़, मूर्ख, छोटी बुद्धि वाला, जिसकी बुद्धि प्रखर न हो ।
मंदर–पु० [सं०] १ मंदराचल पर्वत । २ इन्द्र । ३ वरुण । ४ स्वर्ग । ५ कुश द्वीप पर्वत का एक तीर्थ । ६ देखो 'मंदिर' । ७ देखो 'मंदरा' । ८ देखो 'मंदार' ।
मंदरगर (गिर, गिरि, गिरी)–पु० [सं० मंदरगिरि] मंदराचल पर्वत ।
मंदरा–स्त्री० एक छंद विशेष ।
मंदराचळ–पु० [सं० मंदराचल] एक पर्वत जो समुद्र मंथन में काम आया ।
मंदरियो–देखो 'मंदिर' ।
मंदरी–वि० [सं० मंद] (स्त्री० मंदरी) धीमा, हल्का ।
मंदळ–देखो 'मादळ' ।
मंदवाड़, मंदवाड़ि, (ड़ी)–देखो 'मांदगी' ।
मंदहास–पु० [सं०] धीमी हंसी, मुस्कान ।
मंदा–स्त्री० १ एक संक्रान्ति विशेष । २ गंगा ।
मंदाग्राखर–पु० [सं० मंद+अक्षर] मंदभाग्य, हतभाग्य, अभाग्य ।
मंदाइण–देखो 'मंदाकिनी' ।
मंदाक–वि० [सं० मंद] तुच्छ, तनिक ।
मंदाकण, मंदाकणी (नी), मंदाकिण, मंदाकिणी (नी)–स्त्री० १ स्वर्ग में बहने वाली गंगा की धारा । २ गंगा का नामान्तर । ३ आकाश गंगा । ४ चित्रकूट के पास बहने वाली एक नदी । ५ सात प्रकार की संक्रान्तियों में एक । ६ एक वर्णिक छंद विशेष । ७ कुबेर की माता का नाम ।
मंदाक्रांता स्त्री० [सं०] सत्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त विशेष ।
मंदागनी–देखो 'मंदाग्नि' ।
मंदागिणी–देखो 'मंदाकिनी' ।
मंदागिर–देखो 'मंदरगिर' ।
मंदाग्नि–स्त्री० पाचन शक्ति मंद होने का रोग विशेष ।
मंदायण, मंदायणि (णी, नी)–देखो 'मंदाकिनी' ।
मंदार, मंदारक–पु० [सं०] १ इन्द्र के नन्दन-वन के पांच वृक्षों में से एक । २ आक मदार । ३ धतूरा । ४ मंदराचल पर्वत ५ हिरण्य कशिपु का ज्येष्ठ पुत्र, एक असुर । ६ धौम्य ऋषि का पुत्र । ७ डिंगल का एक छंद ।
मंदाशय–पु० [सं० मंदाशय] अनुचित अर्थ का भाव ।
मंदिर मंदिरछद, मंदिरि–पु० १ देवालय, देव प्रासाद । २ भवन, मकान । ३ राजमहल । ४ वह स्थान जहाँ पवित्र भावनाओं की गंगा बहती हो । [सं० मद] ५ वरुण ।
मंदी–स्त्री० १ मंद होने की दशा, अवस्था या भाव, मन्दता । २ पदार्थों के बाजार भाव कम होने की अवस्था । सस्तीवाड़ा ३ व्यापार की धीमी दशा । ४ तेजी, तीव्रता का अभाव । ५ उदासी । ६ धीमापन । ७ घुंघलापन ।
मंदील–स्त्री० [अ०] जरदोजी का वस्त्र विशेष ।
मंदीधाड़, मंदीवाड़ी–१ देखो 'मंदी' । २ देखो 'मांदगी' ।
मंदुर–स्त्री० [सं० मदुरा] अश्वशाला, घुड़साला ।
मंदोच्च–पु० [सं० मंद+उच्च] ग्रहों की एक प्रकार की गति ।
मंदोदर–वि० [सं०] १ छोटे व पतले पेट वाला । २ मंदाग्नि के रोग वाला । –पु० १ मय दानव का नामान्तर । २ देखो 'मंदोदरी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंदोदरि, मदोदरी, मंदोवर (री)–स्त्री० [सं० मंदोदरी] रावण की प्रमुख रानी।

मंदी–वि० [सं० मंद] (स्त्री० मंदी) १ सुस्त, शिथिल, आलसी। २ मंद गति से कार्य करने वाला। ३ रहित, हीन। ४ अस्वस्थ, रुग्ण। ५ कम कीमत पर, सस्ता। ६ देखो 'मंद'।

मंद्र–पु० १ हाथियों की एक जाति विशेष। २ देखो 'मंदर'।

मंद्राचळ–देखो 'मंदराचळ'।

मंधरी–देखो 'मंदरी'।

मंन–देखो 'मन'।

मंनव–देखो 'मानव'।

मंमद–देखो मैमद,।

ममांणी–स्त्री० एक प्रकार की खान जहां पर संगमरमर जैसा पत्थर निकलता है।

मंयगळ (ल)–देखो 'मदकळ'।

मंयली–देखो 'मांयली'।

मंवर–देखो 'मौर'।

मंस–देखो 'मांस'।

मसचर मसचार–देखो 'मांसाचर'।

मसब–देखो 'मनसब' —दार='मनसबदार'।

मसा–स्त्री० [स० मनस्, मंशा] १ इच्छा, कामना, लालसा। २ मर्जी, स्वेच्छा। ३ आशय, इरादा। ४ संकल्प। ५ मनोरथ। ६ मन, चित्त। ७ बुद्धि।

मंसहार, मंसाहार (हारी)–देखो 'मांसाहार, मांसाहारी'।

मंसुख, मंसूख–वि० [अ० मंसूख] रद्द, खारिज।

मसूखा– स्त्री० [अ०] रद्द करने की क्रिया।

मंसूबो, मंसोबो–पु० [अ० मंसूब] १ विचार, इरादा। २ संकल्प। ३ अभिलाषा, मनोरथ। ४ योजना। ५ कल्पना, भावना।

मह–देखो 'मांय'।

मंहगो–देखो 'मूंगो'।

मंहदड़ली, मंहदी–देखो 'मैंदी'।

मंहमाइ (ई)–देखो 'महामाया'।

मंहस–देखो 'महल'।

मंहि, मंही– १ देखो 'मांय'। २ देखो 'मही'।

म–पु० [सं०] १ समय, काल। २ विष, जहर। ३ विष्णु। ४ ब्रह्मा। ५ चन्द्रमा। ६ यम। ७ शिव। ८ श्रीराम। ९ हाथी, गज। १० मस्तक। ११ शरीर। १२ युद्ध। १३ समूह। १४ 'म' गण। १५ मध्यम स्वर। १६ जल। १७ सुख, कुशलता। –सर्व० [सं० अहं] १ उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप, मैं। २ षष्ठी व प्रथमा के अतिरिक्त विभक्तियों में लगने वाला 'मैं' का रूप। –अव्य० नहीं, मत, मा।

मइं–सर्व० १ मैं। २ मुझ। ३ मेरा। ४ देखो 'मई'।

मइगळ–देखो 'मदकळ'।

मइंद–देखो 'मयंद'।

मइ–१ देखो 'मइं'। २ देखो 'मय'। ३ देखो 'महीव'।

मइगळ–देखो 'मदकळ'।

मइण–देखो 'मदन'।

मइत–पु० [सं० मृतक] शव।

मइथळो–देखो 'मैथिळी'।

मइवो–देखो 'मैदो'।

मइमंत, मइमत–देखो 'मैमंत'।

मइयळ–देखो 'महीतळ'।

मइलो–सर्व० १ मेरा, मुझको। २ देखो 'मैलो'। ३ देखो 'मांयलो'।

मई–वि० विनीत, नम्र। –क्रि० वि० में, अन्दर। –पु० १ ईस्वी सन् का पांचवां मास। २ देखो 'मय'। ३ देखो 'महीन'। ४ देखो 'मही'।

मईथुन–देखो 'मैथुन'।

मईनो–देखो 'महीनो'।

मईयो–पु० [सं० मय] ऊंटनियों के झुण्ड में रहने वाला नर ऊंट।

मउंग–पु० १ एक प्रकार का बाद्य। २ देखो 'मूंग'।

मउ–देखो 'महुआ'।

मउड़–देखो 'मौड़'।

मउड़ो–देखो 'मोड़ो'।

मउज–१ देखो 'मौज'। २ देखो 'मूंज'।

मउठ–देखो 'मौठ'।

मउडउ, मउडि– १ देखो 'मौड़'। २ देखो 'मुकुट'।

मउनावणो (वो)–देखो 'मनावणो' (वो)।

मउर–१ देखो 'मौड़'। २ देखो 'मौर'।

मउरणो (वो)–देखो 'मौरणो' (वो)।

मउलसिरो–देखो 'बोलसरी'।

मउलिउ, मउलिउ–देखो 'मौलियो'।

मउळी–देखो 'मौळी'।

मउळूं, मउळू, मउलु–देखो 'मौळी'।

मऊ–पु० १ मालव प्रदेशान्तर्गत एक स्थान, शहर। –स्त्री० २ प्रजा।

मऊड़ो–देखो 'महुआ'।

मएड़ो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

मथोलिआ–देखो 'मौळियो'।

मकंद–पु० एक प्रकार का कंद।

मकड़–१ देखो 'मत्कुण'। २ देखो 'मरकट'।

मकड़ी–स्त्री० १ आठ पैरों का कीड़ा जो जाल फैलाकर शिकार फंसाता है। २ एक प्रकार का रोग। ३ एक प्रकार का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घास। ४ हाथी की पीठ पर होने वाला दाग या जख्म। ५ माया।

मकड़ूब–स्त्री० बंक, टेढ़ापन, ऐंठ।

मकड़ी–पु० [सं० मर्कट] १ मर्कट के रंग से मिलते-जुलते रंग का घोड़ा। २ घोड़ा। ३ एक प्रकार का घास जिसके बीजों की रोटी बनती है। ४ बड़ी मकड़ी।

मकतब–पु० [अ० मक्तब] पाठशाला, विद्यागृह।

मकतूल–वि० [अ० मकतूल] १ जो कत्ल कर दिया गया हो। २ प्रेमी।

मकदूर–पु० [अ० मकदूर] सामर्थ्य, शक्ति।

मकबोख–पु० हीरों का एक दोष।

मकबरा–पु० [अ०] शव दफन कर उस पर बनी इमारत। मजार।

मकलस–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मकबूजा–वि० [अ० मकबूजः] जिस पर अधिकार किया गया हो, अधिकृत।

मकरंद–पु० [सं०] १ पुष्परज, पराग। २ पराग कण, फूल का केसर। ३ कुंद पुष्प। ४ कोयल। ५ मधुमक्षिका। ६ भ्रमर, भौंरा। ७ एक मात्रिक छन्द विशेष। ८ डिंगल के वेलिया सांणोर का एक भेद। –वि० श्याम, कृष्ण।

मकर–पु०[सं०]१ज्योतिष की बारह राशियों में से एक। २ मगर नामक जल जंतु। ३ माघ मास। ४ एक प्रकार का लग्न। ५ नौ निधियों में से एक। ६ मछली। ७ एक प्राचीन पर्वत का नाम। ८ सेना की एक व्यूह रचना। ९ मस्ती, उन्माद। १० मौज। ११ ऐश्वर्य। १२ गर्व, अभिमान। १३ दर्पण। १४ छप्पय छंद का एक भेद। १५ छल, कपट फरेब। १६ नखरा, नाज, अदा। १७ देखो 'मक्कर'। —कुंडल–पु० मकर की शक्ल के कुण्डल। —केत, केतन केतु–पु० कामदेव। प्रद्युम्न। —ध्वज, ध्वज ध्वज–पु०–काम देव। रस सिंदुर। हनुमान का पुत्र। धृतराष्ट्र का एक पुत्र। —पत्न, पति, पती–पु० कामदेव। ग्राह, मकर राज। –राशि–स्त्री० बारह राशियों में से एक राशि। –व्यूह– पु० सेना की व्यूह रचना।–संक्रांत, संक्रायत, संक्रांति, संक्रायत–स्त्री० सूर्य का मकर राशि में प्रवेश वाला पर्व दिन। —सातम–स्त्री० माघ शुक्ला सप्तमी।

मकरमोयो–पु० कम घी का चूरमा।

मकरांण–पु० [फा० मकराना] १ बलूचिस्तान के पास का प्रदेश। २ देखो 'मकरांणी'।

मकरांणी–पु० १ बलूचिस्तान के मकरान प्रदेश का निवासी। २ उक्त प्रदेश का घोड़ा। ३ एक जाति विशेष। –वि० मकराने का, मकराना संबंधी।

मकरांणी–पु० १ बलूचिस्तान का एक प्रदेश, मकरान। २ संगमर-मर का पत्थर। ३ राजस्थान में वह स्थान जहाँ इस पत्थर की खान है। –वि० मकराने का।

मकराई–स्त्री० [अ० मक्र] १ धूर्तता, ढिठाई। २ ठगी, छल, प्रपंच। ३ गर्व, अभिमान।

मकराकर–पु० [सं० मकर-आकर] समुद्र, सागर।

मकराकृत, मकराकृति–वि० [सं० मकर+आकृत] मकर की आकृति का।

मकराक्ष, मकराख, मकराक्ष–पु० [सं० मकराक्ष] खर नामक राक्षस का पुत्र।

मकराळ, मकरालय– पु० [सं० मकरालय] समुद्र, सागर।

मकराश–पु० सागर।

मकरासन–पु० एक तांत्रिक आसन।

मकरास्य, मकरास्य–पु० [सं० मकरास्य] वरुण।

मकरी–स्त्री० मछली। –वि० १ अभिमानी, गर्वीली। २ टेढ़ी, तिरछी, व्यंग पूर्ण।

मकरूह–वि० अपवित्र, घृणित।

मकरोणी (बो)–क्रि० आटे आदि को भूनना।

मकवो–पु० १ मक्के का पौधा। २ एक अन्य पौधा विशेष।

मकसद, मकसब–पु० [अ० मक्सिद] १ उद्देश्य, आशय, मतलब। २ इच्छा, अभिलाषा।

मकसूद–वि० [अ० मक्सूद] १ अभिप्रेत, उद्दिष्ट। २ वांछित। ३ इच्छा, कामना।

मकांन–पु० [अ० मकान] १ गृह, भवन। २ इमारत। ३ आवास स्थान, निवास।

मकांम–देखो 'मुकाम'।

मकाई–वि० १ मक्के का, मक्के संबंधी। २ मक्के का निवासी। ३ देखो 'मक्की'।

मकार–पु० १ 'म' अक्षर, वर्ण। २ पिंगल में मगण का संक्षिप्त रूप। ३ देखो 'मक्कार'।

मकाळ–स्त्री० १ शीतकाल में ताप के लिये अग्नि जलाने का पात्र। २ अंगीठी।

मकियो–पु० १ मक्के अनाज का मुट्ठा। २ स्त्रियों के पैरों का आभूषण विशेष।

मकी–देखो 'मक्की'।

मकुनो–देखो 'मुकुनो'।

मकुर–देखो 'मुकुर'।

मकूनीरोटी–स्त्री० गेहूँ व चने के आटे के मिश्रण की रोटी।

मकोड़ी–स्त्री० चींटी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मकोड़ी–पु० १ बड़ा चींटा। २ लोहे पर खुदाई करने का औजार। ३ शृंखला, सांकल की कड़ी। ४ आभूषणों का कड़ीनुमा एक भाग।

मकोट, मकोड़ा– पु० बड़ा चींटा।

मकोय–पु० एक प्रकार का क्षुप।

मक्कर–पु० १ गर्व, अभिमान। २ छल, ढोंग, पाखंड। ३ धूर्तता, फरेब। ४ देखो 'मकर'।

मक्कल–पु० [सं० मक्कल्ल:] प्रसव के बाद जच्चा के पेट में होने वाला एक वात रोग।

मक्कार–वि० [अ०] १ दुष्ट, नीच। २ धूर्त, बदमाश। ३ दगाबाद, कृतघ्न।

मक्कारी–स्त्री० १ धोखा देने की प्रवृत्ति। २ छल, कपट।

मक्कासरीफ–पु० [अ०] हजरत मुहम्मद का जन्म स्थान, हज।

मक्की–स्त्री० १ मोटे दाने का प्रसिद्ध अनाज। २ देखो 'माखी'।

मक्कुन–पु० आंख का कवच।

मक्को–पु० [अ० मक्क:] मक्का शरीफ, हज।

मक्खण (न)–देखो 'माखण'।

मक्खी–देखो 'माखी'।

मक्खीचूस–वि० अति कृपण, महा कंजूस।

मक्खीमार–देखो 'माखीमार'।

मक्दूर–देखो 'मकदूर'।

मक्रंद–देखो 'मकरंद'।

मक्र–देखो 'मकर'। —केत, केतन='मकरकेत'।

मक्री–देखो 'मकरी'।

मक्षिका–स्त्री० [सं०] १ मक्खी। २ मधुमक्खी।

मक्सी–पु० १ एक रंग विशेष का घोड़ा। २ श्याम घोड़ा।

मख–पु० [सं०] १ यज्ञ। २ देखो 'माखी'।

मखड़पांव–पु० पैर घसीट कर चलने वाला घोड़ा।

मखण–देखो 'माखण'।

मखणी–पु० एक प्रकार की घास।

मखतूल–पु० [सं० महर्घतूल] काला रेशम।

मखतूली–वि० काले रेशम का बना। –स्त्री० एक सुगंधदार घास विशेष।

मखत्राता–पु० [सं०] १ यज्ञ रक्षक। २ श्रीरामचन्द्र।

मखदूम–वि० [अ०] (स्त्री० मखदूमा) १ जिसकी सेवा या खिदमत की जाय। २ मालिक, स्वामी। ३ पूज्य। –पु० मुसलमानों का एक धर्माधिकारी।

मखद्रोही (द्रोसी, द्रोखी, द्रोसी)–पु० [सं० मखद्रोहिन्] १ राक्षस असुर। २ शिव का नामान्तर।

मखन–देखो 'माखण'।

मखनाथ–पु० [सं०] विष्णु।

मखमी–वि० मस्त। (मेवात)

मखमल–पु० [अ०] मुलायम व चिकना वस्त्र विशेष।

मखमली–वि० [अ०] १ मखमल का बना। २ मखमल जैसा नर्म व चिकना।

मखरक्षक–पु० यज्ञ की रक्षा करने वाला ऋषि या व्यक्ति।

मखसाळा–स्त्री० [सं० मख शाला] यज्ञ शाला।

मखसूद–देखो 'मकसूद'।

मखहूळ–देखो 'मखतूळ'।

मखाणी–पु० १ तिल, इलायची आदि के दानों पर शक्कर का लेपन कर बनाई गई मिठाई। २ ताल मखाणा।

मखालय–पु० [सं०] यज्ञशाला।

मक्षिआरणी–पु० [सं० मक्षिका-आवरण] घोड़े या बैलों के मुख पर शोभा के लिये बांधी जाने वाली झल्लरी, तिल्हारी।

मक्षिका–स्त्री० १ एक प्रकार का आभूषण। २ मक्षिका।

मखी–देखो 'माखी'।

मखेना–स्त्री० बैलों की आंखों पर बांधने की चमड़े की पट्टी।

मखेस–पु० [सं० मखेश] राजसूय यज्ञ।

मखोळ (ल), मखौळ (ल)–स्त्री० हंसी, ठिठोली, हास्यास्पद बात, हास्य व्यंग।

मखौळिया–वि० मखौल करने वाला, मसखरा।

मख्ख–पु० [सं० मधुक] १ मधु, शहद। २ मख, यज्ञ।

मग–पु० [सं० मग] १ मगध देश। २ मगधदेश का निवासी। ३ शाकद्विपीय ब्राह्मणों का एक वर्ग। ४ देखो 'मारग'। ५ देखो 'मूंग'।

मगज–पु० [अ० मग्ज] १ मस्तिष्क, दिमाग। २ फल के अन्दर की गिरी, गूदा। ३ गर्व, अभिमान। ४ रौब, प्रभाव, दब-दबा। ५ देखो 'मगद'। —चट–वि० बातूनी। बकवादी। लबार। —चट्टी–स्त्री० बकवास।

मगजपच्ची, मगजमारी–स्त्री० किसी कार्य में व्यर्थ दिमाग लगाने की क्रिया, दिमागीश्रम।

मगजाई–स्त्री० १ गर्व, अभिमान। २ गौरव।

मगजी–स्त्री० [अ० मग्ज] १ गर्व, अभिमान। २ वस्त्र की किनार।

मगजू–पु० ढोल का एक उपकरण।

मगण–पु० [सं०] छन्द शास्त्र का एक गण, sss।

मगत, मगती–पु० भिखारी, याचक।—जण–पु० याचकगण।

मगथग–क्रि०वि० लड़खड़ाता हुआ, डोलता हुआ।

मगद–पु० १ मैदे में घी, शक्कर डाल कर सेक कर, बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ। २ देखो 'मगध'।

मगदळ (ल)–पु० १ उड़द या मूंग के आटे में घी-शक्कर मिला कर, भूनकर बनाया जाने वाला पदार्थ। २ मगद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मगदूर–देखो 'मकदूर'।

मगध–पु० [सं०] १ दक्षिणी बिहार प्रदेश का प्राचीन नाम। २ देखो 'मगद'। —पति–पु० मगध का राजा। जरासंध।

मगधवरभूषण–पु० एक प्रकार का आभूषण।

मगधाण–स्त्री० मूर्खता।

मगधेश, मगधेश्वर–पु० [सं० मगधेश, मगधेश्वर] एक प्रकार का आभूषण।

मगन–देखो 'मग्न'।

मगनता–स्त्री० १ प्रसन्नता, हर्ष, खुशी। २ तल्लीनता, एकाग्रता ३ मस्ती।

मगर–पु० [सं० मकर] १ घड़ियाल। २ मछली। ३ पीठ। ४ करील वृक्ष का पुष्प। –वि० पूर्ण पूरा। –अव्य० लेकिन, परन्तु।

मगरघर–पु० [सं० मकर गृह] सागर, समुद्र।

मगरपचीस (पच्चीस)–वि० भरपूर जवान, पूर्ण युवा।

मगरपचीसी (पच्चीसी)–स्त्री० पूर्ण जवानी, पूर्ण युवावस्था

मगरबी–वि० [अ० मगरिबी] पश्चिम का, पश्चिमी। –स्त्री० १ एक विशेष बनावट की तलवार। २ देखो 'मगरेब'।

मगरमच्छ–पु० [सं० मकर+मत्स्य] मगर नामक जल जंतु।

मगरि–१ देखो 'मगर'। २ देखो 'मगरी'।

मगरिब–पु० [अ०] पश्चिम दिशा।

मगरियो–पु० १ कृषक स्त्रियों का एक लोक गीत। २ गाँव या कस्बे का कोई मेला। ३ वह स्थान जहां मेला लगता हो। ४ देखो 'मगरी'। ५ देखो 'मगर'।

मगरी–देखो 'मगरी'।

मगरूर–वि० [अ०] १ गर्वयुक्त अहंकार युक्त, गर्वीला। २ वीर, जोशीला।

मगरूरी–स्त्री० १ गर्व, अहंकार। २ जोश, जोरावरी।

मगरेब–स्त्री० १ एक विशेष प्रकार की तलवार। २ तलवार।

मगरी–पु० [सं० मर्कर] १ पर्वत, पहाड़। २ कंकरीली धूल का टीबा। ३ कंकरीली, कठोर व ऊंची भूमि। ४ देखो 'मगर'।

मगवन–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मगवान–देखो 'मघवा'।

मगवाणी (बी)–देखो 'मंगाणी' (बी)।

मगविवसानु–पु० [सं० मार्गविवस्वत्] आकाश।

मगस–पु० शाकद्विपीय ब्राह्मणों के चार वर्णों में से एक।

मगसर–देखो 'मिगसर'।

मगससि–पु० [सं० मार्ग-शशि] आकाश।

मगसिर, मगसीर–देखो 'मिगसर'।

मगसुर–पु० [सं० सुर-मार्ग] आकाश।

मगसी–वि० (स्त्री० मगसी) १ कान्तिहीन, निष्प्रभ। २ सीमा मंद। ३ फीका, धुंधला। ४ हल्का। ५ मलिन। ६ तेजो-विहीन। ७ क्षीण। ८ प्रभावहीन।

मगह–देखो 'मगध'। —पति='मगधपति'।

मगहर–पु० [सं० मृगहर] १ वायु, पवन। २ देखो 'मगध'।

मगाड़णी (बी), मगाणी (बी), मगावणी (बी)–देखो 'मंगाणी' (बी)।

मगीयां–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मगेज–देखो 'मंगेज'।

मगेरणी–देखो 'बारणी'।

मगेहर–१ देखो 'मगहर'। २ देखो 'मघा'। ३ देखो 'मगध'।

मग्ग, मग्गड़, मग्गड़ी–देखो 'मारग'।

मग्गज–देखो 'मगज'।

मग्गाणी (बी)–देखो 'मंगाणी' (बी)।

मग्गि–देखो 'मारग'।

मग्गूर–देखो 'मकदूर'।

मग्न–वि० [सं०] १ किसी कार्य में लीन, निमग्न। २ भाव विभोर। ३ आनन्द या सुख में डूबा हुआ। ४ एकाग्रचित्त।

मघ–१ देखो 'मघा'। २ देखो 'मारग'। ३ देखो 'मघवा'।

मघड़, मघई–वि० [सं० मगध] मगध देश का। –पु० एक प्रकार का तांबूल।

मघवांण, मघवान, मघवांनु, मघव, मघवाण, मघवाणी, मघवान,

मघवा–पु० [सं० मघवन्] (स्त्री० मघवाणी) इन्द्र का नामान्तर।

मघवापुर–पु० [सं०] इन्द्रलोक, सुरलोक।

मघवारिपु–पु० [सं०] मेघनाद।

मघवाह–पु० [सं० मघः] १ मानव सृष्टि के मूल पुरुष, मनु। २ देखो 'मघवा'।

मघा–स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से एक।

मघाभव–पु० [सं०] शुक्र ग्रह का नामान्तर।

मघोनी–स्त्री० इन्द्र की पत्नी, शचि।

मड़क–स्त्री० १ मुड़ना क्रिया, मोड़। २ गर्व, अभिमान।

मड़कस–वि० १ क्षीण-काय, दुर्बल, कृशकाय। २ निर्बल, अशक्त।

मड़तंग–पु० १ सारंगी का भाग जहां सभी तार साथ बंधे रहते हैं। २ देखो 'मरतंग'।

मड़हट (ठ)–देखो 'मरघट'।

मड़ाघाट–पु० [सं० मृतः-घट्ट] नदी किनारे का मुरदाघाट, जल दाग देने का स्थान।

मड़ियल, मड़ियो–देखो 'मड़कल'।

मड़ेठी–देखो 'मरहठी'।

मड़ोड़, मड़ोड़ी–देखो 'मरोड़'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मड़ी–वि० [सं० मृत] १ मरा हुआ, मृत। २ दुर्बल क्षीण–काय। ३ अशक्त, निर्बल। –पु० शव, लाश।

मचंक–देखो 'मचक'।

मचकद (द)–देखो 'मुचुकुंद'।

मचकंदी–वि० हृष्ट-पुष्ट, उन्मत्त।

मच–पु० १ पुष्टता, सुडौलता। २ शक्ति, बल। ३ मस्ती, उन्माद –क्रि० वि० शीघ्रता से, जल्दी से।

मचक–स्त्री० १ मचकना क्रिया या भाव। २ लचक, दबाव। ३ मोच।

मचकणी (बी)–क्रि० १ आघात या बोझ से झुकना, दबना। २ लचकना, झूलना। ३ धक्के या आघात से हिलना-डुलना। ४ अडिग न रहना, डिग जाना, डोलना।

मचकाणी (बी), मचकावणी (बी)–क्रि० १ प्रहार करना, आघात करना, मारना। २ झूले में झटका लगाना। झोंके देना। झुलाना। ३ खाना, भोजन करना। ४ मसलना, मलना। ५ सभोग या मैथुन करना। ६ पीछे हटाना, अडिग न रहने देना। ७ तेज चलाना, गति देना। ८ व्यर्थ फिराना, चलाना।

मचकुंद–देखो 'मुचुकुंद'।

मचकूर–पु० १ विशेषतः लिखित विवरण। २ वृत्तान्त, हाल। विवरण। ३ सलाह, मंत्रणा, मशविरा। ४ फौज, सेना। ५ चर्चा, जिक्र। ६ वार्त्तालाप, बात। ७ सूचना, खबर।

मचकोड़णी (बी)–क्रि० १ पराजित करना, हराना। २ कुछ खाना, भोजन करना।

मचकोळणी (बी)–क्रि० मुखाकृति बिगाड़ना, बुरी मुद्रा बनाना।

मचको–पु० १ झोंका, झटका, धक्का। २ टक्कर आघात। ३ चापलूसी का कार्य। ४ रति क्रिया के समय का धक्का।

मचक–देखो 'मचक'।

मचकणी (बी)–देखो 'मचकणी' (बी)।

मचकी–देखो 'मचको'

मचणी (बी)–क्रि० १ होना, घटना। २ सहसा जोर से शुरू होना (आवाज आदि)। ३ प्रारंभ होना, शुरू होना। ४ चारों ओर फैलना, व्याप्त होना। ५ पुष्ट होना, मोटा ताजा होना। ६ प्रबल होना, उग्र होना। ७ मस्ती में आना। ८ जमना, अधिकार पूर्ण कार्य करना। ९ अनुचित हरकतें करना।

मचमचणी (बी), मचमचाणी (बी)–क्रि० १ इच्छा या लालसा जागृत होना। २ लालायित होना। ३ रति भाव जागृत होना, कामातुर होना। ४ देखो 'मचणी' (बी)।

मचमचाट, मचमचाहट, मचमची–स्त्री० १ मस्ती। २ कामातुरता ३ आतुराई, व्यकुलता।

मचरकी–पु० १ दबाव व धक्के से आने वाली भारी वस्तु की रगड़। २ बोझ का दबाव। ३ घर्षण।

मचळ, मचळण–स्त्री० १ मन की घबराहट। २ उबकाई। ३ देखो 'मचळांण'। ४ विचलन। ५ देखो 'मचळी'।

मचळणी (बी)–क्रि० १ व्याकुल होना, आतुर होना। २ बच्चे आदि का हठ करना जिद् करना। ३ रूठना। ४ इन्कार करना, मना करना। ५ चलना। ६ विचलित होना।

मचळांण, मचळाट–स्त्री० १ मन की घबराहट। २ दू, गंध, बदबू। ३ उबकाई।

मचळी–स्त्री० उबकाई, कै, वमन।

मचली–स्त्री० छोटी खाट, खटिया।

मचळी–वि० १ जो उबकाई पैदा करे, गंदा, अरुचिकर। २ अम्लयुक्त।

मचांण, मचान–पु० [सं० मंच] खेत की रखवाली या शिकार के लिये पेड़ पर बैठने के लिये बनाया गया स्थान।

मचाणी (बी)–क्रि० १ आरंभ करना, जारी करना। २ करना, मचाना। ३ सहसा जोर से कुछ करना। ४ चारों ओर फैलाना, व्याप्त करना। ५ जोर पकड़ाना, तेज करना। ६ पुष्ट या मोटा-ताजा करना। ७ प्रबल या उग्र बनाना। ८ मस्ती में लाना। ९ अनुचित हरकतें करना, अनीति करना।

मचामच–क्रि० वि० सहसा, दबादब।

मचावणी (बी)–देखो 'मचाणी' (बी)।

मचीड़ी–पु० जोर, ताकत।

मचोळ–स्त्री० १ लहर, तरंग, हिलोर। २ धक्का, झटका, झोला। ३ देखो 'मचोळी'।

मचोळणी (बी)–क्रि० १ विलोड़ित करना, मथना। २ विध्वंस करना, तहस-नहस करना। ३ झूले को धक्का लगाना। डोलाना। ४ भोजन करना, चबाना।

मचोळी–पु० १ झूले को लगाया जाने वाला झटका, धक्का। २ टक्कर। ३ मीट की लाव खींच कर चलने के स्थान का अंतिम शिरा। ४ मस्ती का झोंका, मस्ती।

मच्च–देखो 'मच'।

मच्चक–देखो 'मचक'।

मच्चकणी (बी)–देखो 'मचकणी' (बी)।

मच्चणी (बी)–देखो 'मचणी' (बी)।

मच्चु–देखो 'मृत्यु'।

मच्छ–पु० [सं० मत्स्य] १ बड़ी मछली। २ ग्राह, मकर। ३ दोहे का एक भेद। ४ छप्पय छन्द का एक भेद। ५ मत्स्य के आकार की हस्त रेखाएँ। ६ देखो 'मत्स्य'। –वि० १ प्रबल, शक्तिशाली। २ देखो 'माछर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मच्छ असवारी–पु० कामदेव, मदन ।

मच्छदेश–पु० [सं० मत्स्यदेश] भारत के एक प्रदेश का प्राचीन नाम, विराट देश ।

मच्छर–१ देखो 'मछर' । २ देखो 'माछर' ।

मच्छरमांण–पु० गर्व-हरण करने वाला ।

मच्छराळ, मच्छराळी–देखो 'मछराळ' ।

मच्छरि–१ देखो 'माछर' । २ देखो 'मछर' ।

मच्छरियो–१ देखो 'मछरीक' । २ देखो 'माछर' ।

मच्छरी–१ देखो 'मछर' । २ देखो 'माछर' ।

मच्छरूप–पु० [सं० मत्स्य-रूप] मत्स्यावतार ।

मच्छवेदणी–स्त्री० [सं० मत्स्य-वेधिनी] मछली पकड़ने का कांटा ।

मच्छावतार–पु० [सं० मत्स्यावतार] विष्णु का एक अवतार ।

मच्छिया–स्त्री० मक्षिका, मक्खी ।

मच्छी–स्त्री० [सं० मत्स्य] १ प्रसिद्ध जल प्राणी, मछली, मीन । २ बांह या भुजा की मांस पेशी । ३ ऐसी मांस पेशी का पका हुआ मांस । ४ मच्छी के आकार का आभूषण । ५ स्त्रियों के पैर का आभूषण विशेष ।

मच्छीकेतु–पु० [सं० मत्स्य केतु] कामदेव ।

मच्छीमार–पु० मछुआ ।

मछंदर, मछंदरनाथ, मछेंद्र, मछेंद्रांणी, मछेंद्री–पु० [सं० मत्स्य+इन्द्र] नौ प्रसिद्ध नाथों में से एक, मत्स्येन्द्रनाथ ।

मछ–पु० १ शक्ति, बल, पराक्रम । २ देखो 'मत्स्य' ।

मछकणी (बी)–देखो 'मचकणी' (बी) ।

मछकाणी (बी), मछकावणी (बी)–देखो 'मचकाणी' (बी) ।

मछकूर– देखो 'मचकूर' ।

मछगंधा–देखो 'मत्स्यगंधा' ।

मछगात–वि० बड़े शरीर वाला, महाकाय ।

मछट्यछ–स्त्री० निसाणी छंद का एक भेद ।

मछपति–पु० [सं० मत्स्यपति] वरुण देव ।

मछपळ–पु० [सं० मत्स्य+पाल] समुद्र ।

मछबारस–स्त्री० [सं० मत्स्य+द्वादशी] अगहन के शुक्ल पक्ष की द्वादशी ।

मछर–पु० [सं० मत्सर] १ गर्व, अभिमान । २ ओज, तेज । ३ जोश, साहस । ४ शौर्य, पराक्रम । ५ क्रोध, कोप, गुस्सा । ६ शत्रुता । ७ डाह, ईर्ष्या । ८ मलिनता, कलुषता । ९ प्रमाद, आलस्य । १० देखो 'माछर' ।

मछरगुर–वि० [सं० मत्सर+गुरु] १ वीर शिरोमणि । २ महा अभिमानी, गर्वीला ।

मछरणो (बो)–क्रि० १ गर्व करना, अभिमान करना । २ कोप करना, क्रोध करना । ३ आलस्य करना, प्रमाद दिखाना । ४ आनन्द करना ।

मछरमांण–देखो 'मच्छरमांण' ।

मछरां–स्त्री० आनन्द, मौज, मस्ती ।

मछराळ, मछराळी–वि० (स्त्री० मछराळी) १ वीर, बहादुर । २ गर्वीला, अभिमानी । ३ कोप करने वाला, क्रोधी । ४ योद्धा । ५ तेज, द्रुतगामी ।

मछरि, मछरी–१ देखो 'मछर' । २ देखो 'माछर' ।

मछरूप–देखो 'मच्छरूप' ।

मछरैत–पु० जबरदस्त, जोरदार, शक्तिशाली ।

मछळांण, मछळांव, मछळाट–देखो 'मचळांण' ।

मछळी–१ देखो 'मच्छी' । २ देखो 'मच्छ' ।

मछवा–स्त्री० मछली पकड़ कर बेचने वाली जाति ।

मछवो–पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।

मछांचर–पु० [सं० मत्स्यचर] १ छोटे जल जीव । २ बगुला, बक । –वि० मछली खाने वाला ।

मछावतार–पु० विष्णु का एक अवतार ।

मछियारी–पु० मछुआ ।

मछी–देखो 'मच्छी' ।

मछीपटण–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

मछेंदर, मछेंद्र–देखो 'मछंदर' ।

मछेछी–स्त्री० एक लता विशेष ।

मछोदरी–स्त्री० मत्स्य के उदर से जन्मी, सत्यवती, मत्स्यगंधा ।

मछोळो– देखो 'मचोळो' ।

मजकूर–वि० [अ०] १ पहले कहा हुआ, पूर्वोक्त । २ पूर्व वर्णित । ३ वर्तमान, हाजिर । –पु० १ विवरण । २ चर्चा, जिक्र । ३ उल्लेख, प्रसंग । ४ वृत्तान्त, हाल, वार्ता । ५ सलाह, मंत्रणा ।

मजणो (बो)–देखो 'मंजणो' (बो) ।

मजदूर–पु० १ श्रमिक । २ बोझा ढोकर वृत्ति कमाने वाला व्यक्ति ।

मजदूरी–स्त्री० १ श्रमिक की वृत्ति । २ बोझा आदि ढोकर की जाने वाली वृत्ति ।

मजनू–पु० लैला नामक नायिका का प्रेमी । –वि० किसी के प्रेम में पागल, प्रेमोन्मत्त ।

मजब–देखो 'मजहब' ।

मजबी–देखो 'मजहबी' ।

मजबूत–वि० [अ०] १ दृढ़, ठोस । २ जो आसानी से न टूटे । ३ जिसे नष्ट करना आसान न हो । ४ सबल, बलवान । ५ अटल, स्थिर । ६ स्थायी ।

मजबूती–स्त्री० [अ०] १ दृढ़ता, ठोसता । २ सबलता । ३ अटलता, स्थिरता । ४ स्थायित्व । ५ शक्ति, बल ।

मजबूर–वि० [अ०] विवश, लाचार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मजबूरी–स्त्री० [अ०] विवशता, लाचारी।

मजमून–पु० [अ०] १ ढांचा, खाका। २ इबारत, डौल। ३ लेख्य विवरण, लिखावट। ४ लिखने योग्य बातें, विषय। ५ प्रारूप।

मजमो–पु० [अ० मजम:] १ भीड़, लोगों का समूह। २ भीड़-भाड़ वाला स्थान।

मजराफ–पु० एक वाद्य विशेष।

मजल–देखो 'मंजिल'।

मजलस, मजलिस–स्त्री० [अ० मजलिस] १ सभा, बैठक। २ गोष्ठी। ३ महफिल, नाच-राग-रंग। ४ महफिल वाला स्थान।

मजलिसी–वि० [अ०] १ महफिल में बैठने वाला। २ सभासद।

मजलेम–देखो 'मजलिस'।

मजहब–पु० [अ०] १ धर्म। २ सम्प्रदाय, पंथ, मत। ३ धार्मिक दर्शन।

मजहबी–वि० [अ०] १ धार्मिक। २ मजहब से संबंधित। ३ साम्प्रदायिक।

मजाक (ख)–स्त्री० [अ०] १ हंसी, ठट्ठा, दिल्लगी, हास-परिहास, मखौल, व्यंग। २ तिरस्कार।

मजाकिया, मजाकी (खी)–वि० [अ०] हास-परिहास करने वाला, मनोरंजक।

मजाज–देखो 'मिजाज'।

मजार–पु० [अ०] १ कब्रिस्तान, समाधिस्थल। २ कब्र।

मजारी– देखो 'मारजार'।

मजाल–स्त्री० [अ०] १ शक्ति, सामर्थ्य। २ हौसला, हिम्मत।

मजासणी–पु० [सं० मसि-आसनम्] स्याही रखने का पात्र, दवात

मजाह–देखो 'मध्य'।

मजीठ–स्त्री० [सं० मजिष्ठा] १ एक लता विशेष के सूखे डंठल जो रंगाई व वैद्यक में काम आते हैं। २ लाल रंग का थोड़ा। ३ लाल रंग।

मजीठड, मजीठियो, मजीठी– वि० [सं० मजिष्ठा] १ 'मजीठ' के रंग का, लाल। २ मजीठ से रंगा हुआ। –पु० इस रंग का वस्त्र।

मजीठी–वि० [सं० मजिष्ठा] १ मजीठ का, मजीठ संबंधी। २ लाल। ३ देखो 'मजीठ'।

मजीत, मजीद–देखो 'मसजिद'।

मजीर–देखो 'मंजीर'।

मजूर–देखो 'मजदूर'।

मजूरड़ी–देखो 'मजदूरी'।

मजूरड़ो, मजूरियो–देखो 'मजदूर'।

मजूरी–देखो 'मजदूरी'।

मजूस, मजूसी–देखो 'मंजूसी'।

मजेज–क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत।

मजेदार–वि० [फा० मज:दार] १ स्वादिष्ट, जायकेदार। २ जिसमें मजा, मस्ती या मौज आती है। आनन्ददायक। ३ चश्केदार। ४ विशेष, असाधारण।

मजेदारी–स्त्री० [फा० मज: दारी] १ स्वाद, जायका। २ आनन्द, मजा। ३ विशेषता।

मजैरी–क्रि० वि० (स्त्री० मजैरी) अच्छी तरह, सुविधापूर्वक, संतोष पूर्वक। –वि० सुविधा जनक, संतोषप्रद।

मजो–पु० [फा० मज:] १ किसी कार्य या बात का आनन्द, मजा, मस्ती, मौज। २ स्वाद, जायका, रस,तृप्ति। ३ सुख, चैन, आराम। ४ मनोरंजन, हंसी। ५ तमाशा, खेल। ६ सैर। ७ दंड, सजा, फल। ८ रति सुख।

मज्ज–देखो 'मध्य'।

मज्जण–देखो 'मंजण'।

मज्जणो (बो)–क्रि० १ जमीन खोदना, गड्ढा करना। २ देखो 'मंजणो' (बो)।

मज्जन–देखो 'मंजण'।

मज्जा, मज्जाव–स्त्री० [सं० मज्जा] १ शरीर की हड्डी के भीतर का गूदा। २ फलों का गूदा। ३ पौधों के बीच की नश।

मज्जारस–पु० [सं० मज्जा+रस] शुक्र, वीर्य।

मज्जीठ–देखो 'मजीठ'।

मज्जीठी–देखो 'मजीठी'।

मज्झ–१ देखो 'मध्य'। २ देखो 'मुझ'।

मज्झली–१ देखो 'मझली'। २ देखो मध्य'।

मज्झारी–क्रि० वि० मध्य में।

मज्झि, मज्झिमझि, मज्झे–१ देखो 'मध्य'। २ देखो 'मध्ये'।

मझ–१ देखो 'मध्य'। २ देखो 'मुझ'।

मझताळी–पु० महादेव।

मझधार–स्त्री० १ जल प्रवाह या नदी का मध्य भाग। २ चालू कार्य की मध्य व कठिन स्थिति। ३ असहाय अवस्था।

मझम–देखो 'मध्यम'।

मझमांन–देखो 'मिजमांन'।

मझमांनी–देखो 'मिजमांनी'।

मझलोक–पु० [सं० मध्यलोक] सुमेरु पर्वत के मध्य ऊंचाई पर स्थित एक लोक।

मझली–वि० [सं० मध्य] (स्त्री० मझली) बीच का, मध्य का।

मझा–देखो 'मध्य'।

मझार, मझारि, मझारै–देखो 'मध्य'।

मझाली–देखो 'मझली'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मज्झि, मज्झिलो, मज्झो–देखो 'मध्य'।

मज्झे, मज्झेण, मज्झ–१ देखो 'मध्य'। २ देखो 'मध्ये'।

मज्झंन–पु० [सं०मध्याह्न] दोपहर का समय, दिन का मध्यभाग।

मटंब–स्त्री० वह बस्ती जिसके आस-पास पांच मील तक कोई बस्ती न हो।

मट–१ देखो 'मटकी'। २ देखो 'मठ'। ३ देखो 'मंढ'।

मटक–स्त्री० १ चाल,गति। २ चलने का विशेष ढंग। ३ नाज, नखरा। ४ गर्व, अभिमान। ५ आंख की एक मुद्रा।

मटकणी (बो)–क्रि० [सं० मठ्] १ विशेष ढंग या अदा से चलना। २ नाज-नखरे बनाना। ३ आंख की विशेष मुद्रा बनना। ४ गर्व करना, ऐंठना।

मटकाणी (बो)–क्रि० [सं० मठ्] १ चलते समय कमर को विशेष ढंग से हिलाना। २ शरीर के किसी अंग या आंखों से नखरे दिखाना, अदाएँ बताना। ३ गर्व या ऐंठन दिखाना। ४ खाना, निगलना।

मटकार–पु० [सं० मुष्ठिका-आकार] १ मुट्ठी के आकार का काचर, बड़ा काचर। २ देखो 'मटक'।

मटकारणी(बो)–देखो 'मटकाणी' (बो)।

मटकाळो–वि० (स्त्री० मटकाळी) अंग मटकाने वाला, नखरे बाज।

मटकावणी (बो)–देखो 'मटकाणी' (बो)।

मटकी–स्त्री० [सं० मार्तिकी] १ मिट्टी का जल-पात्र, चौड़े मुंह का घड़ा, घटक। २ एक प्रकार का लोक नृत्य। ३ एक वाद्य विशेष।

मटकीलो–देखो 'मटकाळो' (स्त्री० मटकीली)।

मटको–पु०[सं०मार्तिक]१ मिट्टी का बड़ा व चौड़े मुंहका जल-पात्र, बड़ा घड़ा। [सं०मटः स्फटि] २ नाज, नखरा,अदा।

मटखोरो–पु० एक प्रकार का हाथी।

मटणी (बो)–देखो 'मिटणी' (बो)।

मटमैलो–वि० मिट्टी जैसे रंग वाला।

मटर–पु० १ चने से कुछ बड़ा, गोल दाने वाला द्विदल अन्न। २ उक्त अन्न का पौधा।

मटरको–पु० नाज, नखरा, अदा।

मटरगस्त, मटरगस्ती–स्त्री० १ धीरे-धीरे घूमना। २ व्यर्थ भटकना।

मटरमाला–स्त्री० मटर के दाने जैसे मणिकाओं की माला।

मटलो–देखो 'मटको'।

मटल्लो–देखो 'मटको'।

मटवो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मटाणी (बो)–१ देखो 'मिटाणी' (बो)। २ देखो 'मठाणी'(बो)

मटि–देखो 'माटी'।

मटिया,मटीया–पु० मटमैला या खाखी रंग। –वि० उक्त रंग का।

मटियामेट–वि० नष्ट, ध्वस्त, तहस-नहस।

मटियाळ, मटियाळी–स्त्री० चिकनी व भूरी मिट्टी।–वि० खाखी, मटमैला।

मटियाळो–वि० (स्त्री० मटियाळी) १ चिकनी या भूरी मिट्टी वाला। २ खाखी, मटमैला।

मटियोनीलो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

मटु, मटुड़ी–स्त्री० हाथ की तीसरी अंगुली, अनामिका। –वि० प्रिय।

मटुकनाथ–पु० एक तीर्थ स्थान।

मटोटणी (बो)–देखो 'मठोठणी' (बो)।

मट्ट–१ देखो 'माट'। २ देखो 'मटको'। ३ देखो 'मठ'।

मट्टिया, मट्टी–देखो 'माटी'।

मट्टो–१ देखो 'माटो'। २ देखो 'मटको'। ३ देखो 'मठो'।

मट्ठ–१ देखो 'मठ'। २ देखो 'मठो'।

मट्ठो–पु० दही को मथकर मक्खन निकाल लेने के बाद बनने वाली छाछ तक्र। –वि० कृपण कंजूस।

मठ–पु० [सं० मठ] १ दशनामी साधुओं का गुरुद्वारा। २ दशनामी साधुओं का निवास स्थान। ३ प्राचीन काल में विद्यार्जन या ज्ञानार्जन का केन्द्र, आश्रम। ५ देवी का मंदिर। ६ गर्व, अभिमान। ७ तनाव, खिंचाव,ऐंठन। ८ छवि, शोभा। ९ आनन्द, सुख। १० मौज, मस्ती, मजा। ११ महत्व। १२ ऊंचा व लंबा टीला।– वि० कृपण, कंजूस।

मठठ–देखो 'मठोठ'।

मठणी (बो)–क्रि० १ मथा जाना,मथना। २ देखो मठाणी'(बो)

मठधारी, मठपति–पु० [सं०] १ दशनामी संन्यासी के गुरु द्वारे का महन्त। २ मठ का अधिष्ठाता। ३ आचार्य गद्दी का अधिकारी।

मठमठो–वि० (स्त्री० मठमठी) १ कृपण, कंजूस। २ जो अधिक सख्त या अधिक मुलायम न हो।

मठर–पु० १ हठ, जिद्द। २ देखो 'मटर'।

मठरी (लो)–स्त्री० पुड़ी की तरह बनी मैदे की पपड़ी।

मठसेडी (सेडी)–स्त्री० कठोर स्तनों वाली गाय या भैंस।

मठाठ–देखो 'मठोठ'।

मठाणी (बो)–क्रि० १ आटे को गूंदना। २ मथ कर गाढ़ा करना। ३ अच्छा बनाने की कोशिश करना।

मठाधीस–देखो 'मठधारी'।

मठारणी (बो), मठावणी (बो)–क्रि०१ लोहे की चद्दर या पत्तरों को 'मठरना' नामक औजार से पीटना। २ पत्तरों को पीटकर गोलाकार बनाना। ३ आटे या मैदे आदि को हाथों से गूंदना। ४ किसी वस्तु को संवारना। ५ बातों का रंग जमाना। ६ पत्थरों की घड़ाई करना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मठोटणी (बो)–देखो 'मठोठणी' (बो)।

मठोटी–स्त्री० १ मरोड़ने की क्रिया या भाव ऐंठन। २ मरोड़ने से पड़ने वाला बल, ऐंठन। ३ घुमाव-फिराव, चक्कर। ४ मानसिक पीड़ा, व्यथा। ५ पेट दर्द, पेचिश।

मठोठ–पु०१ गर्व, अभिमान। २ अकड़, हेंकड़ी। ३ स्वाभिमान। ४ कृपणता, कंजूसी। ५ मकानों के स्तंभ के ऊपर लगने वाला पत्थर।

मठोठणी (बो)–क्रि० १ खाना, निगलना। २ भक्षण करना। ३ गर्व करना, ऐंठना। ४ कंजूसी करना, कृपणता दिखाना। ५ ऐंठना, घुमाना।

मठौ, मठौं– १ देखो 'मटठौं'। २ देखो 'माठौ'। (स्त्री० मठी)

मडपफर–वि० गर्वित, गर्वीला।

मडि, मढी–देखो 'मंडी'।

मढ–देखो 'मंढ'।

मढगोरख–पु० द्वारिका के निकट एक तीर्थ, गोरखमढ़ी।

मढणौ (बो)–देखो 'मंढणौ' (बौ)।

मढपति (पत्ती)–देखो 'मठपति'।

मढाई–देखो 'मंडाई'।

मढाणौ (बो)–देखो 'मंढाणौ' (बौ)।

मढी–स्त्री० १ छोटा मठ। २ किसी साधु की झोंपड़ी, कुटिया। ३ देखो 'मडी'।

मढुली–देखो 'मंडी'।

मढौ–देखो 'मढ़ौ'।

मणंधर–देखो 'मणिधर'।

मण–पु० १ चालीस सेर का एक तौल। २ सुवृत्त। ३ देखो 'मणि'। ४ देखो 'मन'।

मणकौ–१ देखो 'मणिकौ'। २ देखो 'मणियौ'।

मणगयण–पु० [सं० गगनमणि] सूर्य, रवि।

मणगुत्ती–स्त्री० [सं०मन-गुप्ती] मन के भावों का केन्द्रीकरण।

मणछिउ–वि० [स० मनवांछित] इच्छित, मनवांछित।

मणणौ (बो)–देखो 'मुणणौ' (बौ)।

मणधर–देखो 'मणिधर'।

मणपुन्न–पु० [सं० मनः पुण्य] दान रूप, शील रूप आदि के शुभ भाव।

मणमय–देखो 'मणिमय'।

मणरथ–देखो 'मनोरथ'।

मणसमधि–स्त्री० मन समाधि।

मणहर, मणहारी–देखो 'मनोहर'।

मणांबंध–क्रि०वि० मनों की तादाद में।

मणा, मणाई–स्त्री० [सं० मनाक्] १ अभाव, कमी। २ चरम सीमा, पराकाष्ठा। ३ आवश्यकता।

मणारंभ–पु० सागर।

मणाळ–देखो 'मुणाळ'।

मणि–स्त्री० [सं०] १ बहुमूल्य रत्न, जवाहरात। २ हाथ की कलाई। ३ आभूषण। ४ घड़ा। ५ योनि का अग्र भाग। ६ लिंग का अग्र भाग। ७ विष का प्रभाव मिटाने वाला पदार्थ विशेष। ८ हथेली पर होने वाला एक सामुद्रिक चिह्न। ९ कुल या परिवार का श्रेष्ठ पुरुष। १० देखो 'मन'।

मणिआर, मणिआरौ–देखो 'मणियारौ'।

मणिक–स्त्री० १ घोड़े की चोटी पर होने वाली भंवरी। –पु० २ मन' वजन का तौल, बाट।

मणिकरणिका–पु० [सं० मणिकर्णिका] काशी के पास के पांच मुख्य घाटों में से एक।

मणिकार–देखो 'मणियारौ'।

मणिकूट–पु० [सं०] कामरूप देश के पास का एक पर्वत।

मणिकेतु–पु० [सं०] एक छोटा पुच्छल तारा।

मणिकौ–पु० चालीस सेर वजन वाला तौल, बाट।

मणिजळ–स्त्री० [सं० जलमणि] बिजली, विद्युत।

मणिजाळ, मणिजालक–पु० एक आभूषण विशेष।

मणिधर–पु० [सं०] १ काला सर्प जिसके मस्तक में विष नाशक मणि हो। २ सर्प, नाग। –वि० श्रेष्ठ, शिरोमणि।

मणिनील–स्त्री० नीलमणि।

मणिपुर, मणिपूरक–पु० योग साधना में माना जाने वाला एक चक्र।

मणिबंध–पु० [सं०] १ हाथ की कलाई। २ पुरुषेन्द्रिय का अग्र भाग।

मणिबंधन–पु० [सं०] अंगूठी का रत्न जड़ित भाग।

मणिबीज–पु० [सं०] अनार का पेड़।

मणिभद्र–पु० [सं०] शिव के एक गण का नाम।

मणिभू, मणिभूमि–स्त्री० [सं०] १ रत्नों की खान। २ हिमालय में एक तीर्थ स्थान। ३ रत्न जड़ित आंगन।

मणिमंडित–वि० [सं०] जिसमें रत्न जड़े हों।

मणिमइ–देखो 'मणिमय'।

मणिमथ–वि० [सं० मणि-मस्तक] श्रेष्ठ, शिरोमणि। –पु० सैंधा नमक।

मणिमय–वि० मणियों से युक्त। –पु० कर्नाटक पद्धति का एक राग।

मणिमाळ, मणिमाळा–स्त्री० १ रत्न या मणियों का हार। २ चमक, दीप्ति, आभा। ३ रति क्रीड़ा में गाल आदि पर होने वाले दांतों के निशान। ४ लक्ष्मी का एक नाम। ५ बारह अक्षरीय एक छन्द विशेष। ६ एक प्रकार का आभूषण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणियड़, मणियर, मणियाउर–पु० पश्चिमी राजस्थान का एक प्रदेश ।

मणियाबंधज्वर–पु० घोड़ों का एक रोग ।

मणियार, मणियारा–स्त्री० [सं० मणिकार] १ विसायती का काम करने वाली एक मुसलमान जाति विशेष । २ चूड़ीगर ।

मणियारी–स्त्री० १ उक्त जाति की स्त्री । २ सुई, धागा, चूड़ी आदि सामान का व्यवसाय ।

मणियारो–पु० [सं० मणिकार] १ मणियारा जाति का व्यक्ति । २ सुई, धागा, चूड़ी आदि का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति ।

मणियो–पु० [सं० मणिक] १ माला का मनिका, दाना । २ गर्दन पर उभरी हुई हड्डी । ३ गर्दन के पीछे की हड्डी । ४ गर्दन, ग्रीवा । ५ रत्न, मणि । –वि० चालीस सेर के तौल का ।

मणिरागग्यांन–पु० मणियों के रंगों का ज्ञान करने की कला ।

मणिवक–पु० [सं०] पुष्प ।

मणिवास–पु० [सं०] रत्न जड़ित वस्त्र ।

मणिहार, मणिहारा–देखो 'मणियार' ।

मणिहारी–देखो 'मणियारी' ।

मणिहारो–देखो 'मणियारो' ।

मणी–देखो 'मणि' ।

मणीकी–देखो 'मणिकी' ।

मणीची–देखो 'मळीची' ।

मणीधर–देखो 'मणिधर' ।

मणीमाळ, मणीमाळा–देखो 'मणिमाळा' ।

मणु–देखो 'मन' ।

मणुअ (य)–देखो 'मनुज' ।

मणूं, मणू–सर्व० १ मुझे, मुझको । २ देखो 'मन' । ३ देखो 'मण' । ४ देखो 'मनुज' ।

मणूआ–देखो 'मनुज' ।

मणेक–वि० एक मन के लगभग ।

मणेस–पु० चिंतामणि ।

मणोमय–पु० मन के भाव ।

मणोरम–देखो 'मनोरम' ।

मणोरथ मणोरह, मणोरहु–देखो 'मनोरथ' ।

मणोहर, मणोहार–देखो 'मनोहर' ।

मतंग–पु० [सं०] १ हाथी । २ एक ऋषि का नाम । ३ एक दानव । ४ ऐरावत हाथी । ५ व्याध योनि में गया एक प्राचीन राजा । ६ बिछौनों के कोने पर रखी जाने वाली भारी चीज, सीरफर्स ।

मतंगज–पु० [सं०] हाथी ।

मतंगरिप, मतंगरिपु–पु० [सं०] शेर, व्याघ्र ।

मतंगी–पु० [सं० मतंगिन्] १ बहुत से हाथियों का स्वामी । २ हाथी का सवार । ३ महावत । ४ मल्ला ।

मतंगौ–देखो 'मतंग' ।

मत–पु० [सं०] १ राय, विचार, सम्मति । २ सहमति, स्वीकृति । ३ उदाहरण, दृष्टान्त । ४ सोच समझ कर निश्चित की गई बात । ५ कोई सिद्धान्त । ६ धार्मिक या दार्शनिक विचारधारा । ७ सम्प्रदाय, पथ । ८ लोकतंत्र में किसी प्रतिनिधि को चुनने के लिये दिया जाने वाला वोट । –अव्य० १ नहीं, ना, न । २ शायद, संभवतः । ३ देखो 'मति' । ४ देखो 'मात्रा' । ५ देखो 'मत्त' ।

मतकुण–देखो 'मत्कुण' ।

मतकेमास, मतकेवास–वि० १ कुशाग्र बुद्धि । २ अद्वितीय शक्तिशाली ।

मतक्षेत्र–पु० [सं०] निर्वाचन क्षेत्र ।

मतगणना–स्त्री० १ जनमत संग्रह । २ वोटों की गणना ।

मतदांन–पु० [सं०] वोट देने की क्रिया । —**केन्द्र**–पु० वोट देने का निर्धारित स्थान ।

मतदाता–पु० १ वोट देने वाला पुरुष या स्त्री । २ जिसे वोट देने का अधिकार हो ।

मतपत्र पु० [सं०] किसी क्षेत्र के उम्मीदवारों के नाम व चुनाव-चिह्नों वाला पत्र, बेलेट पेपर ।

मतबाल मतबाळ, मतबालु–देखो 'मतवाळो' ।

मतभेद–पु० [सं०] १ किसी बात या सिद्धान्त के लिये होने वाली भिन्न विचारधारा । २ परस्पर विरोधी विचार धारा । मतांतर ।

मतमंद–देखो 'मतिमंद' ।

मतळब, मतलब–पु० [अ० मतलब] १ अर्थ, आशय । २ उद्देश्य, तात्पर्य । २ स्वार्थ, स्वहित । ३ विचार । ४ भाव । ५ संबंध, वास्ता ।

मतलबियो, मतलबी–वि० [अ० मतलबी] स्वार्थी, खुदगर्ज ।

मतवंत–देखो 'मतिवंत' ।

मतवाय–देखो 'मथवाय' ।

मतवारो–देखो 'मतवाळो' ।

मतवाळ–स्त्री० १ मस्ती, खुमारी । २ मजलिस, महफिल । ३ मदिरापान । ४ किसी उपकरण के दस्ते में मजबूती के लिये लगी पट्टी । ५ मजाक, हंसी । ६ शराब, मदिरा । ७ देखो 'मतवाळो' ।

मतवाळड़ो, मतवाळो–वि० (स्त्री० मतवाळी) १ नशे के प्रभाव में आया हुआ, नशे में चूर । २ मस्त, उन्मत्त । ३ किसी रस या राग में रंगा हुआ । ४ रसिक, रतिप्रिय । –पु० १ दुर्ग या पहाड़ी से लुढ़काया जाने वाला बड़ा पत्थर । २ देखो 'मलो' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मतवाळीलाग–पु० किसानों से लिया जाने वाला कर विशेष ।
मतांतर–देखो 'मतभेद' ।
मता–स्त्री० [अ० मताअ] १ लक्ष्मी, धन, दौलत । २ माल, असबाब ।
मतालब–पु० [अ० मतालिब] मतलब का बहु-वचन ।
मतालबी–पु० जागीरदारों से लिया जाने वाला कर विशेष ।
मताह–देखो 'मता' ।
मति–स्त्री० १ बुद्धि, अक्ल । २ राय, सम्मति । ३ इच्छा, कामना । ४ साहित्य में एक संचारी भाव । ५ देखो 'मती' । ६ देखो 'मिति' । ७ देखो 'मत' ।
मतिगुर, मतिगुरु–वि० तीक्ष्ण व कुशाग्र बुद्धि । प्रतिभावान ।
मतिथण–वि० विद्वान, पंडित ।
मतिजीवी–वि० १ बुद्धि जीवी । २ विवेकी ।
मतिधर, मतिधीर–वि० विवेकशील, विवेकी ।
मतिभ्रंस–पु० बुद्धि का ह्रास । बुद्धि भ्रंश ।
मतिभ्रम–पु० बुद्धि की भ्रमित अवस्था । गलतफहमी ।
मतिमंद–वि० [सं०] बुद्धिहीन, मूर्ख ।
मतिवंत, मतिवान–वि० चतुर, बुद्धिमान; विवेकशील ।
मतिवाळो–वि० १ बुद्धिमान । २ देखो 'मतवाळो' ।
मतिसार–वि० बुद्धिमान ।
मतिहीण (हीणो, हीन)–वि० [सं० मतिहीन] बुद्धिहीन, मूर्ख ।
मती–स्त्री० १ विषेधात्मक शब्द, ना, नहीं, मनाही । २ देखो 'मति' । ३ देखो 'मिति' ।
मतीर, मतीरड़ो मतीरो–पु० छोटा हिन्दवानी का फल ।
मतीहीण, मतीहीणो–देखो 'मतिहीण' ।
मतू–देखो 'मत्तू' ।
मते, मतेई–देखो 'मतै' ।
मतै–क्रि० वि० १ इच्छा से, विचार से, इरादे से, भरोसे में । २ उद्देश्य से, आशय से । ३ स्वतः, अपने आप । ४ हरगिज । ५ लिए, वास्ते । ६ सन्नद्ध, तैयार । ७ देखो 'मतो' ।
मतोमति–अव्य० इच्छानुसार, जिसके जैसा जंचे, जिसको जो अच्छा लगे ।
मतो–पु० १ विचार-विमर्श, परामर्श, सलाह । २ इरादा, विचार । ३ निर्णय, निश्चय । ४ उद्देश्य, लक्ष्य ।
मत्कुण–पु० [सं० मत्कुण] १ खटमल । २ मच्छर । ३ पांच वर्षों का हाथी । ४ बिना दांतों का हाथी । ५ छोटा हाथी ।
मत्त–वि० [सं०] १ मस्त, मतवाला । २ उन्मत्त, मदोन्मत्त । –पु० १ हाथी का मद । २ देखो 'मात्रा' । ३ देखो 'मात्र' ।
मत्तगयंद–पु० [सं०] १ सवैया छंद का एक भेद । २ मस्त हाथी ।
मत्तभाव–पु० [सं०] मस्ती, उन्मत्तता ।
मत्तवाळो–देखो 'मतवाळो' ।
मत्तायत–वि० १ मदमस्त । २ विचार करने वाला ।
मत्ति, मत्ती–१ देखो 'मति' । २ देखो 'मस्ती' । ३ देखो 'मती' । ४ देखो 'मिति' ।
मत्तू–पु० ऋण पत्र पर किये जाने वाले हस्ताक्षर ।
मत्तै, मत्तें–देखो 'मतै' ।
मत्तो–देखो 'मतो' ।
मत्थ–१ देखो 'माथ' । २ देखो 'माथो' ।
मत्थण–क्रि० वि० १ मथने के लिये, मथने को । २ देखो 'मंथन' ।
मत्थणो (बो)–देखो 'मथणो' (बो) ।
मत्थे–१ देखो 'माथै' । २ देखो 'माथो' ।
मत्थेन–पु० जैनियों का एक अभिवादन ।
मत्थै, मत्थो–१ देखो 'माथै' । २ देखो 'माथो' ।
मत्थ–१ देखो 'यति' । २ देखो 'मत्स्य' ।
मत्स–देखो 'मत्स्य' ।
मत्सर–पु० [सं०] १ क्रोध, कोप । २ डाह, ईर्ष्या । ३ गर्व, अभिमान ।
मत्सरता–स्त्री० [सं०] क्रोध, ईर्ष्या व अहंकार का भाव ।
मत्सरी–वि० क्रोध, ईर्ष्या व गर्व करने वाला ।
मत्सरीकृता–स्त्री० [सं०] संगीत में एक मूर्च्छना का नाम ।
मत्स्य–पु० [सं०] १ मछली । २ ज्योतिष की मीन राशि । ३ विष्णु का एक अवतार । ४ विराट देश, एक प्रदेश ।
मत्स्यगंधा–स्त्री० [सं०] कुरुराज शांतनु की दूसरी पत्नी ।
मत्स्यपुराण–पु० [सं०] अट्ठारह पुराणों में से एक ।
मत्स्यमुद्रा–स्त्री० [सं०] एक तांत्रिक मुद्रा विशेष ।
मत्स्यासन–पु० [सं०] एक योगासन विशेष ।
मत्स्येंद्रनाथ–पु० [सं०] गोरखनाथ के गुरु, एक सिद्ध ।
मत्स्येंद्रासन–पु० [सं०] योग का एक आसन ।
मथ–१ देखो 'माथो' । २ देखो 'माथै' ।
मथण–पु० [सं० मंथन] १ मंथन क्रिया, मंथन । २ समुद्र । ३ देखो 'मथन' ।
मथणी–स्त्री० १ दही मथने का मथ दण्ड । २ देखो 'मथाणी' ।
मथणो (बो)–क्रि० [सं० मंथनम्] १ मथानी या रई द्वारा दही मथना, बिलोना । २ विलोड़ित करना, मंथन करना । ३ उथल-पुथल करना । ४ नष्ट-भ्रष्ट करना । ५ अभ्यास करना ।
मथदंड–पु० [सं०] दही मथने का उपकरण ।
मथन–पु० [सं०] १ एक वृक्ष विशेष । २ छाछ, मट्ठा, तक्र । ३ दही, दधि । ४ प्राचीन काल का एक अस्त्र । ५ देखो 'मंथन' ।
मथपरवत–पु० मंदराचल पर्वत ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मथरा–देखो 'मथुरा'।

मथवाय–पु० [सं० मस्तवात] शिर की पीड़ा, शिरशूल।

मथवाळ–पु० स्त्रियों के शिर के टूटे बाल।

मथवाह–पु० महावत।

मथांण–पु० १ झुण्ड, समूह, दल। २ नाश, ध्वंस। ३ बड़ा शहर, नगर। ४ सागर। ५ देखो 'मंथांण'। ६ देखो 'मथाणी'। –वि० जो मथा गया।

मथांणा–पु० एक छन्द विशेष।

मथांणो, मथांनी–स्त्री० [सं० मंथनम्] १ दही मथने का पात्र। २ देखो 'मंथणी'।

मथाणो (बो)–क्रि० मंथन कराना, मथाना।

मथारी–स्त्री० १ कंटीली झाड़ियों का छोटा ढेर। २ 'सीवण' घास का ढेर।

मथारो–पु० १ बीच का सब से ऊंचा स्थान, शिखर। २ चर्मोत्कर्ष, चर्म बिन्दु। ३ ऊपरी शिरा या चोटी। ४ उद्गम स्थान। ५ अंतिम मंजिल। ६ किसी वंश का आदि पुरुष। ७ अंत, छोर, सीमा। ८ पूर्वजों का उद्गम स्थल।

मथावटी–स्त्री० १ शिर का ऊपरी भाग। २ शिर। ३ ऊपर का भाग।

मथासरो–देखो 'माथासरो'।

मथित–वि० मथा हुआ, विलोड़ित। –पु० दही।

मथिति–स्त्री० [सं० मथित] छाछ, मट्ठा।

मथियळ–पु० सागर, समुद्र।

मथिला–देखो 'मिथिला'।

मथी–स्त्री० [सं०] दही मथने का दण्ड, रई।

मथीत–देखो 'मथित'।

मथुरा, मथुरी–स्त्री० उत्तर भारत की एक नगरी

मथेण, मथेरण–पु० विवाहित जैन यति।

मथै–देखो 'माथै'।

मथोग–पु० कलंक, धब्बा, दाग।

मथ्थ, मथ्थई–१ देखो 'माथो'। २ देखो 'माथै'।

मथ्थणो (बो)–देखो 'मथणो' (बो)।

मथ्थै–देखो 'माथे, माथै'।

मदंती–स्त्री० [सं०] विकृत धैवत की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति का नाम।

मदंब, मदंध–देखो 'मदांध'।

मदंन–देखो 'मदन'।

मद–पु० [सं०] १ मादक पदार्थों के सेवन से होने वाला प्रभाव, नशा, खुमारी। २ अहंकार, गर्व। ३ मिथ्याभिमान। ४ कामोत्तेजना। ५ उन्मत्तावस्था, पागलपन। ६ हर्ष, आनन्द। ७ जोश, आवेग, उत्तेजना। ८ हाथी, ऊंट आदि के माथे से झरने वाला रस। ९ मदिरा, शराब। १० मधु-शहद। ११ कस्तूरी। १२ वृक्षों से झरने वाला रस। १३ वीर्य। १४ कामदेव, मदन। १५ एक दानव। १६ एक अन्य दानव। १७ छप्पय छंद का एक भेद। १८ एक वर्ण वृत्त विशेष। १९ मस्त हाथी। २० खाता या खाते का विभाग, लेखा। २१ बही में खींचने की एक लकीर। २२ कार्यालय, विभाग या शाखा। २३ किसी विभाग के व्यय या आय का निर्धारित शीर्षक या राशि। –वि० काला, श्याम। –अंध = 'मदांध'।

मदउत्कट–पु० [सं०] मस्त हाथी। –वि० १ नशे में चूर। २ अहंकारी। ३ कामुक।

मदकंध पु० [सं० मद+स्कंध] १ ऐरावत हाथी। २ हाथी।

मदक–पु० १ अफीम के सार की बनी मादक वस्तु। २ सांड।

मदकर–वि० मद वर्द्धक, नशीला।

मदकरण–पु० हाथी। –वि० मस्त, मतवाला।

मदकळ–वि० [सं०] १ मस्त, उन्मत्त। २ अस्पष्ट बोलने वाला। ३ धीरे-धीरे प्रेमालाप करने वाला। ४ मदमाता, मदोन्मत्त। ५ मंद, मधुर। –पु० १ मस्त हाथी। २ दोहे छन्द का एक भेद। ३ आर्या गीति का एक भेद।

मदगंध–देखो 'मदकंध'।

मदगंधा–स्त्री० [सं०] १ मदिरा, शराब। २ भांग।

मदगर मदगळ–देखो मदकल'।

मदगळत–वि० मदमत्त, मस्त।

मदगळित–वि० मदच्युत।

मदगू–पु० जलकाग।

मदग्गळ–देखो 'मदकल'।

मदड़ो–देखो 'मद'।

मदछकियो–वि० मद या नशे में चूर, मदमस्त।

मदछाक–स्त्री० मदिरा का प्याला।

मदजीवण–पु० मदिरा का व्यवसाय करने वाला, कलाल।

मदज्झर, मदझड़, मदझर–वि० जिसके मद स्राव होता हो। –पु० १ हाथी। २ ऊंट। ३ शेर।

मदत (नि, ती) मदत्तिय–देखो 'मदद'। –कार='मददगार'।

मदद–स्त्री० [अ०] १ सहायता, सहयोग। २ सहारा, आश्रय। –गार, गारो–वि० सहायता करने वाला। सहारा देने वाला।

मदधर (धारी)–पु० हाथी, ऊंट, शेर।

मदन–पु० [सं०] १ कामदेव। २ वसंत। ३ धतुरा। ४ रति क्रीड़ा, संभोग। ५ कामेच्छा। ६ भौरा। ७ मैना पक्षी। ८ मौलसिरी। ९ उड़द। १० ज्योतिष में जन्म से सातवें गृह का नाम। ११ डिंगल का एक छंद। १२ छप्पय छन्द का एक भेद। १३ आर्या गीति का एक भेद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मदनकंटक–पु० [सं०] साहित्य में सत्विक रोमांच।

मदनक–पु० १ मदन-वृक्ष, मैन फल। २ मोलसिरी। ३ धतूरा। ४ एक वर्ण वृत्त विशेष।

मदनकदन–पु० [सं०] शिव, महादेव।

मदनका–स्त्री० छः लघु वर्ण का एक वृत्त विशेष।

मदनगोपाळ–पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

मदनग्रह–पु० [सं० मदनगृह] १ योनि, भग। २ फलित ज्योतिष में जन्म कुण्डली में सातवां स्थान। ३ मदन हर नामक छन्द।

मदनचतुरवसो (चौथ)–स्त्री० [सं० मदनचतुर्दशी] चैत्र शुक्ला चतुर्थदशी।

मदनताळ–पु० संगीत में एक ताल विशेष।

मदनदमन–पु० [सं०] शिव का एक नाम।

मदनदिवस–पु० [सं०] मदनोत्सव का दिन।

मदनदौळा–स्त्री० इन्द्रताल के छः भेदों में से एक।

मदनपति–पु० [सं०] १ इन्द्र। २ विष्णु।

मदनपाठक–पु० [सं०] कोकिल, कोयल।

मदनफल–पु० [सं०] मैनफल।

मदनभवन–पु० १ योनि। २ जन्म कुण्डली में सातवां स्थान।

मदनभेरी–पु० एक वाद्य विशेष।

मदनमस्त–वि० [सं०] १ मतवाला, मस्त। २ कामोन्मत्त, विषयासक्त। ३ चम्पा जाति का एक फूल।

मदनमहोत्सव–पु० [सं०] चैत्र शुक्ला द्वादशी से चतुर्थदशी तक मनाया जाने वाला वसंतोत्सव।

मदनमोहन–पु० [सं०] १ योगीराज कृष्ण। २ ईश्वर। ३ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

मदनरस–पु० [सं०] औषध विशेष।

मदनरेखा–स्त्री० [सं०] एक महासती।

मदनसदन–देखो 'मदनभवन'।

मदनसाहो–पु० [सं०] प्राचीन झालावाड़ राज्य का सिक्का।

मदनांकुस–पु० [सं० मदनांकुश] १ लिंग, शिश्न। २ नख क्षत। ३ योनि, भग।

मदनांतक–पु० [सं०] शिव, महादेव।

मदनांध–वि० [सं०] कामांध, कामासक्त।

मदनातुर–वि० [सं०] मैथुन या संभोग के लिये आतुर।

मदनायुध–पु० [सं०] १ कामदेव का अस्त्र-शस्त्र। २ योनि, भग।

मदनारि–पु० [सं०] शिव, महादेव।

मदनालय–देखो 'मदनग्रह'।

मदनी–स्त्री० १ सुरा, वारुणी। २ कस्तूरी।

मदनोत्सव–देखो 'मदनमहोत्सव'।

मदन्न–देखो 'मदन'।

मदपअसण–पु० शराब के दौर के साथ खाया जाने वाला पदार्थ।

मदपटाधर–पु० हाथी, ऊंट। -वि० मदमत्त, मस्त।

मदपती–वि० १ शराब पीने वाला, शराबी। २ मदोन्मत्त, मस्त।

मदपान–पु० सुरापान, मदिरापान, नशा।

मदभाव–पु० हाथी का एक रोग।

मदभिभळ–वि० मद विह्वल, मदोन्मत्त।

मदमणी–स्त्री० युवती, महिला।

मदमत, मदमत्त, मदमसत, मदमस्त, मदमातो–वि० [सं०मद+फा०मस्त] (स्त्री०मदमती, मदमात्ती, मदमाती) १ मतवाला, मस्त। २ मदोन्मत्त। ३ कामातुर। -पु० हाथी।

मदमूक, मदमोख–पु० हाथी।

मदरसो–पु० [अ० मदरसा] पाठशाला, विद्यालय।

मदरा–देखो 'मदिरा'।

मदरागंध–पु० कदम का वृक्ष।

मदराळ–वि० मुद्रा धारी। -पु० योगी, सिद्ध।

मदळ–पु० मुख्य द्वार पर लगने वाला पत्थर विशेष।

मदलेखा–पु० एक वर्णिक छंद विशेष।

मदव–पु० एक वस्त्र विशेष।

मदवी–वि० मस्त, उन्मत्त, मदयुक्त।

मदवो–वि० (स्त्री० मदवी) १ शराबी, मदिरापान करने वाला। २ मदोन्मत्त, मस्त। ३ कामातुर, कामविह्वल। ४ गर्वीला, अहंकारी।

मदसुदन, मदसूदन–देखो 'मधुसूदन'।

मदाझर–देखो 'मदझर'।

मदांति–देखो 'वेदांतो'।

मदांध (धो)–वि० [सं०] १ अभिमानी, अहंकारी। २ नशे में चूर। ३ अहंकार में अंधा। ४ मदोन्मत्त, मतवाला। ५ कामातुर, कामांध।

मदा–देखो 'मदद'।

मदाखिलत–स्त्री० [अ०] १ दाखिल होने की क्रिया या भाव। २ दखल, हस्तक्षेप।

मदाखिलत-बेजा–पु० [अ०] अनावश्यक दखल, अतिक्रमण।

मदार–पु० [अ०] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। २ निर्भरता, आश्रय। ३ सहारा। ४ हाथी। ५ आक नाम का पौधा। ६ मुसलमानों का एक पीर।

मदारत–स्त्री० [अ० मुदारत] आदर, सत्कार, स्वागत।

मदारी–पु० [अ० मदार] १ रीछ-बन्दरों को नचाने वाला व्यक्ति। २ बाजीगर, तमाशा दिखाने वाला। ३ सूफी मत के अनुयायियों की एक शाखा। ४ शाह मदार नामक पीर का अनुयायी। ५ मिट्टी का हुक्का।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मदारी–पु० सीमा पर गड़ा पत्थर।
मदाळ–पु० [सं० मदकल] १ हाथी। २ एक रंग विशेष। –वि० मदोन्मत्त, मतवाला।
मदालसा–स्त्री० [सं०] काशी देश के ऋतुध्वज राजा की पत्नी।
मदाळी–देखो 'मदाळ'।
मदावर–पु० हाथी।
मदि–देखो 'मद'।
मदियो–पु० १ एक जंगली पौधा। २ देखो 'मदन'।
मदिरा–स्त्री० [सं०] १ एक नशीला पेय पदार्थ, शराब, सुरा २ आसव। ३ एक वर्णिक छंद विशेष। ४ रक्त वर्ण, लाल रंग। ५ समुद्र मंथन में निकली एक स्त्री। ६ श्रीकृष्ण की विमाता।
मदीनो–पु० [अ० मदीनः] अरब का एक नगर।
मदीय–सर्व० मेरा।
मदीयून–वि० [फा०] ऋणी जिस पर दावा किया गया हो।
मदीरा–देखो 'मदिरा'।
मदील–देखो 'मंदील'।
मदुरोग–पु० घोड़े का एक रोग विशेष।
मदुरो, मदूरो–पु० [सं० मधुज्वर] एक प्रकार का मयादी बुखार
मदेरो–देखो 'मधरो'।
मदोदधि–पु० [सं० महोदधि] सागर।
मदोद्धत–वि० [सं०] १ मदोन्मत्त, मदमत्त। २ गर्व में चूर, अभिमानी।
मदोनमत, मदोन्मत्त, मदोमत्त, मदोमव, मदोमसत–देखो 'मदमस्त'।
मद्द–देखो 'मद'।
मद्दगळ–देखो 'मदकळ'।
मद्दळ,मद्दल–पु० १ एक प्रकार का वाद्य विशेष। २ देखो 'मादळ'। ३ देखो 'मादळियो'।
मद्दोमत्त–देखो 'मदमत्त'।
मद्धरो–१ देखो 'मधरो'। २ देखो 'मधुरो'।
मद्धि–देखो 'मध्य'।
मद्धुरं, मद्धुरो–देखो 'मधुर'।
मद्य–देखो 'मद'
मद्यप–वि० [सं०] शराबी, नशेबाज।
मद्यपान–पु० [सं०] सुरापान, शराब पीना क्रिया।
मद्र–पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश। २ इस देश का राजा। ३ मारवाड़ प्रदेश। —वि० [सं०] प्रसन्न, खुश। खुशहाल। —धूय–स्त्री० माद्री।
मद्रक, मद्रकि–वि० मद्र देश का, मद्र देश संबंधी।
मद्राचळ–देखो 'मंदराचळ'।
मद्री–देखो 'माद्री'।
मध–१ देखो 'मध्याह्न'। २ देखो 'मध्य, मद' ३ देखो 'मधु'। ४ देखो 'मधुमास'।
मधक–पु० महुआ नामक वृक्ष।
मधकर–पु० १ एक लोक गीत। २ एक प्रकार का वाद्य विशेष। ३ देखो 'मधुकर'।
मधकीट, मधकीटभ, मधकेटभ–देखो 'मधुकैटभ'।
मधन–स्त्री० एक राग विशेष।
मधम–देखो 'मध्यम'।
मधमति–देखो 'मधुमति'।
मधर–क्रि०वि० १ भीतर, अन्दर। २ देखो 'मध्य' ३ देखो 'मधुर'।
मधरो–वि० (स्त्री०मधरी) १ मंद,धीमा,क्षीण। २ छोटे कद का ठिगना,नाटा। –पु०१ ऊंट की एक चाल। २ चाल विशेष।
मधवंन–देखो 'मधुवन'।
मधवो–देखो 'मदवो'।
मधि–देखो 'मध्य'।
मधिपंडव (पांडव)–पु० [सं० मध्य-पाण्डव] १ अर्जुन। २ भीम।
मधिम–देखो 'मध्यम'।
मधियो–देखो 'मदियो'।
मधिलोकेस–पु० [स० मध्यलोकेश] राजा।
मधीणी–स्त्री० दूध देनेवाली मवेशी का अभाव।
मधीणो–वि० दूध वाली मवेशी से रहित।
मधु–पु० [सं०] १ शहद। २ मदिरा। ३ चैत्रमास। ४ दूध। ५ घी। ६ मक्खन। ७ मिश्री। ८ शिव। ९ विष्णु द्वारा वधित एक दैत्य। १० एक असुर। ११ महुवे का पेड़। १२ फूलों का रस, पराग। १३ वसंत ऋतु। १४ मुलेठी। १५ अमृत। १६ वन, जंगल। १७ अशोक वृक्ष। १८ भौंरा। १९ जल, पानी। २० श्रीकृष्ण। २१ विष्णु। २२ एक राग। २३ घोड़ों का एक रोग। २४ एक वर्णिक छन्द विशेष। –वि० १ मीठा। २ मधुर। ३ पीला। —कंठ–स्त्री० कोयल। स्त्री। —ग्राहक–पु० भौंरा।—घास–पु० कोयल। —धूळ–स्त्री० शक्कर। —मक्खी, माखी–स्त्री० शहद बनाने वाली मक्खी। —मास–पु० चैत्रमास। वसंत ऋतु।
मधुक–देखो 'मधूक'।
मधुकर, (करि, करी)–पु० [सं० मधुकर] (स्त्री० मधुकरी) १ भौंरा, भ्रमर। २ चन्द्रमा। ३ डिंगल का एक गीत। ४ भिक्षा।
मधुकीट (कीटक, कीटभ, कीटभ, कैटव, कैटभ)–पु० [सं० मधुकैटभ] मधु व कैटभ नामक दो दैत्य।
मधुकर–देखो 'मधुकर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मधुजा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

मधुतम, मधुतर–पु० भौंरा, भ्रमर ।

मधुता–स्त्री० १ मीठापन, मधुरता । २ तमाल-पत्र ।

मधुत्रय–पु० [सं०] शहद, घी व चीनी का मिश्रण ।

मधुद–पु० भौंरा ।

मधुद्वीप–पु० कामदेव ।

मधुदैत्य–पु० १ मधु नामक दैत्य । २ सफेद कान व मस्तक वाला घोड़ा ।

मधुप–पु० [सं०] १ भौंरा, भ्रमर । २ शहद की मक्खी, मधु मक्खी । ३ उद्धव का एक नाम । –वि० काला, श्याम* ।

मधुपक्व–वि० जो शहद व शक्कर की चासनी से तैयार किया गया हो ।

मधुपति–पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।

मधुपर्क–पु० [सं० मधुपर्क] दही, घी आदि के मिश्रण से बना पदार्थ विशेष ।

मधुपुर (पुरी)–पु० मथुरा नगरी ।

मधुप्रकाशी–पु० [सं०] वन, जंगल ।

मधुप्रिय–पु० [सं०] श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम ।

मधुबन–देखो 'मधुवन' ।

मधुभार–पु० एक छन्द विशेष ।

मधुमई–स्त्री० मालती लता ।

मधुमती–स्त्री० १ पार्वती, दुर्गा । २ एक वर्ण वृत्त ।

मधुमथन–पु० [सं०] विष्णु ।

मधुमाखी–देखो 'मधुमक्खी' ।

मधुमाधव, मधुमाधवसारंग, मधुमाधवी–पु० एक राग विशेष ।

मधुमारण–पु० श्रीकृष्ण ।

मधुमालती–स्त्री० [सं०] एक लता ।

मधुमेह–पु० [सं०] प्रमेह रोग का बढ़ा हुआ रूप ।

मधुमेही–वि० उक्त रोग का रोगी ।

मधुरंगी–पु० बलराम का एक नामान्तर ।

मधुर–पु० [सं०] १ मीठा पदार्थ, रस, स्वर आदि । २ मीठास । ३ शक्कर, गुड़ । ४ लाल गन्ना । ५ मक्खन । ६ बादाम । ७ चावल । ८ आम । ९ जंगली बेर । १० मटर । ११ महुआ । १२ धान । १३ लोहा । १४ विष, जहर । १५ मक्खी । १६ एक छंद विशेष । १७ एक असुर । १८ स्कंद का एक सैनिक । १९ बिन्दुमत राजा का पुत्र, एक राजा । –वि० (स्त्री० मधुरी) १ मीठा, स्वादिष्ट । २ सुनने में प्रिय । ३ सुन्दर, मनोहर । ४ कटुता या तनाव रहित । ५ धीमा, मंद । ६ धीर, शांत । ७ सुस्त, उदास । ८ अच्छा । –क्रि० वि० मधुरता से ।

मधुरता–स्त्री० [सं०] १ मधुर होने की दशा या भाव । २ मीठापन, माधुर्य । ३ सुन्दरता, कोमलता । ४ प्रियत्व । ५ मोहकता । ६ अच्छाई, खुशहाली ।

मधुरत्रय–पु० [सं०] शहद, घी व शक्कर ।

मधुरमा–देखो 'मधुरिमा' ।

मधुरसा–स्त्री० [सं०] १ दाख, द्राक्ष । २ मुनक्का । ३ अंगूरों का गुच्छा ।

मधुराई–स्त्री० मधुरता ।

मधुराज–पु० [सं०] भौंरा, भ्रमर ।

मधुरामृत–पु० [सं० मधुरामृत] १ फूलों का रस, पराग । २ शहद । ३ अमृत ।

मधुरिपु–पु० [सं०] मधु राक्षस के शत्रु, विष्णु ।

मधुरिमा–स्त्री० [सं०] १ मधुर होने की दशा या अवस्था । २ मीठास, माधुर्य । ३ सुकुमारता, कोमलता ४ मोहकता ।

मधुरी–स्त्री० १ शराब । २ एक वाद्य विशेष । ३ देखो 'मधुर' ।

मधुरी–१ देखो 'मधुर' । २ देखो 'मदुरी' ।

मधुलोलुप–पु० [सं०] भ्रमर, भौंरा ।

मधुवन–पु० [सं०] १ मथुरा के पास का एक वन । २ ब्रज का एक वन । ३ किष्किन्धा के पास का एक वन । ४ वह वन जिसमें प्रेमी-प्रेमिका का मिलन हो । ५ कोयल, कोकिला ।

मधुवनमधुप, मधुवनसिधु–पु० १ ईश्वर, परमेश्वर । २ श्रीकृष्ण

मधुवनी–पु० श्रीकृष्ण ।

मधुव्रत–पु० [सं० मधुव्रत] भ्रमर, भौंरा ।

मधुसख (सखा, सहाय)–पु० [सं० मधुसखा] कामदेव, मदन ।

मधुसूदन, मधुसूधन–पु० [सं० मधुसूदन] १ विष्णु, ईश्वर । २ श्रीकृष्ण । ३ भ्रमर, भौंरा । ४ शहद की मक्खी, मधुमक्खी ।

मधुस्रवा–स्त्री० संजीवनी बूटी ।—**तीज**–स्त्री० श्रावण शुक्ला तृतीया तिथि ।

मधुस्वर–स्त्री० [सं०] कोयल ।

मधुस्वारथी–देखो 'मधुसख' ।

मधुहता–वि० १ शहद को नष्ट करने वाला । २ आगम बतलाने वाला । –पु० १ विष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ शिकारी पक्षी ।

मधुहेतु, मधुहेतू–पु० कामदेव, मदन ।

मधू–पु० १ युद्ध, समर । २ देखो 'मधु' ।

मधूक–पु० [सं०] १ महुए का पेड़ । २ उक्त पेड़ का फूल व फल । ३ मधुमक्खी । ४ भ्रमर । ५ मुलेठी । —**फल, फल**–पु० महुए का फल ।

मधूकर–देखो 'मधुकर' ।

मधूदीपक–देखो 'मधुदीप' ।

मधूधूळ–देखो 'मधुधूळ' ।

मधूप–देखो 'मधुप' ।

मधूप्रकाशी–देखो 'मधुप्रकाशी' ।

मधूमास–देखो 'मधुमास' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मधूर–पु० १ कामदेव, मदन । २ देखो 'मधुर' ।

मधूरता–देखो 'मधुरता' ।

मधूरस–देखो 'मधुरस' ।

मधूसारथी–देखो 'मधुसख' ।

मधूसूदन–देखो 'मधुसूदन' ।

मधै–देखो 'मध्ये' ।

मध्य, मध्यय–पु० [सं० मध्य] १ ठीक बीच का स्थान या भाग । २ बीच की स्थिति । ३ कमर, कटि । ४ घोड़े की कोख, बक्खी । ५ पेट, उदर । ६ संगीत में स्वरों के सप्तकों के बीच का स्वर । ७ पश्चिम दिशा । ८ विश्राम । ९ सोलह से सत्तर वर्ष की अवस्था । १० दश अरब की संख्या । –वि० १ बीच का, मध्य वाला, मध्यवर्ती । २ मझोला । ३ न अधिक बुरा न बहुत अच्छा, साधारण । ४ जो अधिक तीव्र या मंद न हो, मध्यम । ५ तटस्थ, निरपेक्ष । –क्रि०वि० ६ बीच में, मध्य में । ७ चालू कार्य के दौरान । ८ दरम्यान ।

मध्यकुरु–पु० [सं०] एक प्राचीन देश ।

मध्यखंड–पु० [सं०] उत्तर क्रान्तिवृत्त और दक्षिण क्रान्तिवृत्त के बीच पड़ने वाला पृथ्वी का भाग ।

मध्यता–स्त्री० [सं०] १ बीच का स्थान, अवस्था या भाव । २ बीच-बचाव । ३ बीच में होने की दशा ।

मध्यत्ररेख–पु० [सं०] शंख ।

मध्यनायक–पु० वक्ष पर धारण करने का आभूषण विशेष ।

मध्यपात–पु० ज्योतिष में एक पात ।

मध्यम–वि० [सं०] १ जो दो विपरीत दिशाओं या सीमाओं के बीच या मध्य में हो । २ जो अधिक बड़ा या अधिक छोटा न हो । ३ मझोला, उम्र में बीच का, क्रम में बीच का । ४ पक्षपात शून्य, निरपेक्ष । ५ हल्का । ६ साधारण । ७ नीच । –पु० १ संगीत में स्वर सप्तक का चौथा स्वर । २ एक राग विशेष । ३ साहित्य में एक प्रकार का नायक । ४ नायिका का उप पति । ५ मध्य प्रदेश । ६ प्रान्त का शासक, सूबेदार । ७ व्याकरण का मध्यम पुरुष ।

मध्यमहस्य–पु० हाथी के बराबर हीरे, माणिक की राशि का स्वामी ।

मध्यमान–पु० संगीत में एक मान ।

मध्यमा–स्त्री० [सं०] १ हाथ के बीच की अंगुली । २ विवाह योग्य लड़की, कन्या । ३ मध्य यौवना स्त्री । ४ रजस्वला स्त्री । ५ एक प्रकार की नायिका । ६ नाद के चार भेदों में से एक ।

मध्यमेळ–देखो 'तूंबेल' ।

मध्यरेखा–स्त्री० [सं०] ज्योतिष में देशान्तर निकालने की रेखा ।

मध्यलोक–पु० [सं०] पृथ्वी लोक ।

मध्यस्थ–वि० [सं०] १ दो प्रतिपक्षियों के बीच सुलह आदि का कार्य करने वाला । २ तटस्थ, निरपेक्ष । ३ पर उपकारी । ४ मध्यवर्ती, मझोला । ५ उदासीन । –पु० शिव की एक उपाधि ।

मध्यस्थता–स्त्री० १ दो पक्षों के बीच सुलह या समझौता कराने का कार्य । २ बीच-बचाव ।

मध्यांगुलीयक–पु० एक आभूषण विशेष ।

मध्यांन–देखो 'मध्याह्न' ।

मध्या–स्त्री० [सं०] एक प्रकार की नायिका ।

मध्याह्न, मध्याह्न–पु० [सं० मध्याह्न] दिन का मध्य भाग, दुपहरी ।

मध्ये–क्रि०वि० [सं०] १ बीच में, मध्य में, में । २ विषय में, बाबत, निमित्त । ३ लिए, वास्ते ।

मध्यावलब्धि–स्त्री० अट्ठाईस प्रकार की संधियों में से एक ।

मनंग–देखो 'मन' ।

मनछा–देखो 'मसा' ।

मनतर–देखो 'मन्वंतर' ।

मन–पु० [सं० मनस्] १ अन्तः करण, हृदय । २ प्राणियों के अन्तः करण की वृत्ति, चित्त, बुद्धि, मस्तिष्क । ३ न्याय के अनुसार आत्मा या जीव से भिन्न एक द्रव्य । ४ इच्छा, इरादा, कामना, अभिलाषा । ५ विचार, धारणा, कल्पना, खयाल । ६ प्रकृति, स्वभाव । ७ स्फूर्ति, उत्साह । ८ प्रतीति, आभास । ९ झुकाव । १० प्रतिभा । ११ सम्मान । १२ मान सरोवर । १३ भव्य, तुषित एवं साध्य देवों में से एक । –वि० १ श्वेत । २ चंचल * । –अव्य० निषेधार्थक अव्यय ।

मनउपंग, मनउपयंग, मनउपांग–पु० घोड़ा । –क्रि० वि० अपनी मर्जी या मनमाने ढंग से ।

मनऊंच–वि० दातार, दानी, उदार ।

मनऊंचो–पु० १ अभिमान, घमंड । २ देखो 'मनऊंच' ।

मनक–देखो 'मनुस्य' ।

मनकरी–स्त्री० एक प्रकार की घास ।

मनकांमना–देखो 'मनोकांमना' ।

मनफूळ, मनफूळा–वि० [अ० मन्कूल] १ चल, चलायमान, हस्तान्तरण योग्य । २ प्रतिलिपित ।

मनखंच–पु० मनमुटाव, वैमनस्य ।

मनखंची–वि० १ उदास, खिन्न । २ विरक्त । ३ अप्रसन्न ।

मनख–देखो 'मनुस्य' ।

मनखांमनसीहिणीमहा–स्त्री० पृथ्वी, धरती ।

मनखा–देखो 'मनीसा' ।

मनाखाचार–देखो 'मिनखाचार' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनखाजनम–पु० [सं० मनुष्य जन्म] मनुष्य जन्म, मानव योनि ।

मनखाधरम (ग्रम)–देखो 'मनुष्यधरम' ।

मनखिनाव–पु० १ मन मुटाव, वैमनस्य । २ वैर, दुश्मनी ।

मनखी देखो 'मनुष्य' ।

मनगढ़त–वि० कपोल कल्पित, अव्यावहारिक ।

मनगमणो (बो)–क्रि० [सं० मन गम्य] मन को भाना, रुचि कर लगना ।

मनगमनो–वि० [सं० मनगम्य] रुचिकर, मनवांछित ।

मनगाह (ई)–स्त्री० आवेश, जोश, उत्साह ।

मनगारो–वि० (स्त्री० मनगारी) १ जोशीला, साहसी । २ उत्साहित । ३ युद्ध के लिये तत्पर, कटिबद्ध । ४ खुश, प्रसन्न । ५ आन-बान वाला, स्वाभिमानी । ६ उदार, दानी । ७ मस्त, उन्मत्त । ८ अनुकूल ।

मनगुप्ति–स्त्री० चित्त की एकाग्रता ।

मनड़ु, मनड़ो–देखो 'मन' ।

मनचलो–वि० (स्त्री० मनचली) १ साहसी, हिम्मतवान । २ रसिक ।

मनचायो, मनचाह्यो–वि० इच्छित, अभिलषित ।

मनचीतउ मनचीतिउ, मनचीतियो, मनचीतो, मनचीतौ–वि० [सं० मनस्+चिन्तित] इच्छित, मनचाहा ।

मनछा–देखो 'मंसा' ।

मनछाफळ–पु० अभीष्ट फल, इच्छित कार्य, सिद्धि ।

मनजाणियो, मनजाणी–वि० १ जो मन को अभीष्ट हो, वांछित । २ अपने मते का कार्य ।

मनजात–पु० [सं०] १ कामदेव, मनोज, मदन । २ मन की उपज । –वि० मन से उत्पन्न ।

मनजीत–वि० संयमी, मितव्ययी । इन्द्रियजित ।

मनड़ु, मनड़ी–देखो 'मन' ।

मनण–देखो 'मनन' ।

मनणो (बो)–क्रि० [सं० मन्] १ राजी होना, खुश होना । २ परस्पर मेल होना । समझौता होना । ३ किसी बात को मान लेना, सहमत होजाना । ४ सम्मान पाना, मान्यता पाना । ५ श्रद्धा भक्ति से देखा जाना । ६ देखो 'मनणो' (बो) ।

मनदेवता–पु० विवेक, अन्तरात्मा ।

मनद्रोह–पु० छल, कपट ।

मनन–पु० [सं०] १ किसी बात या विषय का मन ही मन किया जाने वाला विचार । २ ध्यान, चिंतन । ३ अध्ययन । ४ कल्पना । ५ मन ही मन से अभ्यास । –शील–वि० चिंतन करने वाला । विचारशील ।

मननिध–पु० [सं० मनोनिधि] कवि, पंडित ।

मनपुण, मनपुण्य–वि० [सं० मनपुण्य] शुद्ध विचारों वाला ।

मनबंछत, मनबांछित–देखो 'मनवांछित' ।

मनभंग, मनभंगी–वि० (स्त्री० मनभंगी) १ निराश, हतोत्साह । २ उदास, खिन्न । ३ कायर, डरपोक ।

मनभरियो–वि० १ प्रिय, प्यारा । २ जिससे मन को संतोष हो ।

मनभामण, मनभाणी, मनभाइण, मनभायो, मनभावण, मनभावती, मनभावणी, मनभावन–वि० (स्त्री० मनभावणी, मनभावती) १ मन इच्छित । २ जो मन को अच्छा लगे । ३ प्रिय ।

मनभू–देखो 'मनोभव' ।

मनमंथ–वि० वश में करने वाला, वशीकरण ।

मनमट्ठो, मनमठी–वि० (स्त्री० मनमठी) १ कृपण, कंजूस । २ निश्चेष्ट, उदास ।

मनमति–वि० [सं०] स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला ।

मनमते, मनमतै, मनमरी–क्रि० वि० १ स्वतः ही, स्वेच्छा से ही । २ बिना किसी से पूछे या कहे । ३ स्वतन्त्रता से ।

मनमत्थ मनमथ–पु० [सं० मनमथनः] कामदेव, मदन । –हरण –पु० शिव, महादेव ।

मनमानियो, मनमानो–वि० इच्छित, अभीष्ट ।

मनमानी–स्त्री० १ स्वेच्छाचारिता । २ अनीति । ३ मन माना कार्य । –वि० स्वेच्छित, अभीष्ट ।

मनमुखी–वि० गुरु रहित ।

मनमुटाव–पु० १ राग, द्वेष । २ वैमनस्य ।

मनमेळग, मनमेळू–पु० १ पति, खाविन्द, प्रियतम । २ मित्र, दोस्त । ३ प्रेमी, स्नेही ।

मनमेली, मनमैली–वि० (स्त्री० मनमेली) जिसका मन साफ न हो, कपटी, धूर्त ।

मनमोट–वि० उदार चित्त, दानी, विशाल हृदय ।

मनमोद पु० १ डिंगल का एक छंद विशेष । २ दोहे छंद का एक भेद । ३ मन की खुशी ।

मनमोदक–पु० मन के लड्डू, खयाली पुलाव ।

मनमोह–देखो 'मनमोद' ।

मनमोहण–देखो 'मनमोहन' ।

मनमोहणहारो–वि० मन को मोहने वाला, लुभावना ।

मनमोहन–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण । २ एक मात्रिक छंद विशेष । –वि० १ चित्ताकर्षक, मोहित करने वाला । २ प्रेमी प्रियतम, प्यारा ।

मनमोजी–वि० १ स्वेच्छाचारी, स्वतंत्र । २ मस्त । ३ इच्छानुसार कार्य करने वाला ।

मनमौट–देखो 'मनमोट' ।

मनयस्ट–पु० [सं० मनईष्ट] पति, खाविंद ।

मनयोग–पु० शुभाशुभ विचार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनरंगी–वि० [सं० मन+रंग] मनमौजी, रसिक, मस्त ।

मनरंजण (न)–पु० [सं० मन+रंजन] १ आंख । २ धन, द्रव्य । –वि० १ मन को खुश करने वाला, मनोरंजन करने वाला । २ देखो 'मनोरंजन' ।

मनरख, मनरखमांणण–वि० १ याचक, मांगने वाला । २ खुशामद खोर ।

मनरखी–वि० (स्त्री० मनरखी) मन रखने वाला । –पु० दास, सेवक । परिचायक ।

मनरथ, मनरथ–देखो 'मनोरथ' ।

मनरळि, मनरळी (लो)–स्त्री० मन की मुराद, इच्छा, चाहना, कामना । –वि० मुदित, हर्षित ।

मनरसि–पु० मन का भाव ।

मनरूंगी–वि० १ अपनी लगन या धुन का पक्का । २ सनकी, तुनकमिजाज ।

मनसाणी (णो)–क्रि० १ विचारना, सोचना, मन में कोई बात लाना । २ किसी बात या विषय पर गौर करना ।

मनवंछत, मनवंछित, मनवंछितु–देखो 'मनवांछित' ।

मनवंछ्या–१ देखो 'मनवांछा' । २ देखो 'मनवांछित' ।

मनव–१ देखो 'मानव' । २ देखो 'मन' ।

मनवांछा–स्त्री० मन की इच्छा, वृत्ति, कामना अभिलाषा ।

मनवांछित–वि० [सं० मन+वांछित] १ अभीष्ट, इच्छित, चाहा हुआ । २ मन को अच्छा लगने वाला । ३ संतोषप्रद ।

मनवा–स्त्री० १ मनकी इच्छा । २ उमंग, तरंग ।

मनवाणो (णी)–क्रि० १ कोई बात मानने के लिये मजबूर करना, दबाव डालना । २ कबूल कराना । ३ सहमत कराना ।

मनवार, मनवारी–स्त्री० [सं० मान+हरण] १ सम्मान पूर्वक लेने के लिये कहना क्रिया । २ सादर आमन्त्रित करना क्रिया । ३ आदर, सत्कार । ४ निहोरा । ५ कुछ लेने, ग्रहण करने का प्रस्ताव । ६ रूठे हुए को मनाना क्रिया । ७ खुशामद, चापलूसी ।

मनवाह–पु० गरुड़ ।

मनवो–देखो 'मन' ।

मनसख–पु० एक प्रकार का वस्त्र

मनसप, मनसप्प, मनसफ–देखो 'मनसब' । –दार='मनसबदार' ।

मनसब–पु० [अ० मंसब] १ मुगल शासन में एक उच्च सैनिक पद, ओहदा । २ काम, कर्त्तव्य । ३ अधिकार, हक । ४ वृत्ति । ५ इरादा, इच्छा । —दार–पु० उच्च पदस्थ अधिकारी । मुगलकालीन सैनिक पदाधिकारी ।

मनसमी, मनसम्मी–देखो 'मनस्विनी' ।

मनसा–स्त्री० [सं०] १ कश्यप ऋषि की कन्या, मनसादेवी । २ सिंधु दैत्य की कन्या । ३ इरादा, कामना । –वि० १ मन से संबंधित । २ मन से उत्पन्न । ३ इच्छित । ४ देखो 'मंसा' ।

मनसादेवी–स्त्री० एक देवी विशेष ।

मनसापचमी (पांचम)–स्त्री० आषाढ़ कृष्णा पंचमी ।

मनसाल–स्त्री० [सं० मनः शल्य] मानसिक कष्ट, मन की दाह ।

मनसिज–पु० [सं०] १ कामदेव मदन । २ प्रेम ।

मनसूख–वि० [अ० मंसूख] १ त्यागा हुआ, परित्यक्त । २ निरस्त या रद्द किया हुआ । ३ टाला हुआ ।

मनसूखी–स्त्री० [अ० मंसूखी] त्यागना, निरस्त करना, टालना क्रिया ।

मनसूडी–देखो 'मंसा' ।

मनसूबो, मनसोबो, मनसूभो, मनसोभो–देखो 'मंसूबो' ।

मनस्तंभिनी–स्त्री० [सं०] एक महाविद्या ।

मनस्या–देखो 'मनसा' ।

मनस्विनी–स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता व सती स्त्री । २ उदारमना, स्वाभिमानी स्त्री । ३ दुर्गा का एक नाम । ४ मृकंडु ऋषि की पत्नी । ५ दक्ष प्रजापति की कन्या । ६ राजा उत्तानपाद की एक कन्या । ७ पुरुवंशीय सम्राट अन्तिनार की पत्नी ।

मनस्वी–वि० [सं० मनस्विन्] १ श्रेष्ठ विचारों वाला । २ बुद्धिमान, चतुर, प्रतिभाशाली । ३ दृढ़ मन वाला ।

मनहंस–पु० एक वर्णिक छंद विशेष ।

मनहर–पु० १ कुन्द पुष्प । २ सोना ३ कामदेव । ४ एक वर्णिक छंद । ५ देखो 'मनोहर' ।

मनहरण–देखो 'मनोहर' ।

मनहरणी–स्त्री० पृथ्वी ।

मनहरू–देखो 'मनोहर' ।

मनहार, मनहारि–देखो 'मनवार' ।

मनहित–पु० [सं० मन–हित.] मन का मित्र, दोस्त, प्रेमी ।

मनहूस–वि० [अ० मन्हूस] १ अशुभ बुरा । २ सुस्त, आलसी, निकम्मा । ३ उदास, मंद, नीरस । ४ अभागा, बदनसीब ।

मना–१ देखो 'मन' । २ देखो 'मांनी' । ३ देखो 'मना' ।

मनांमना–क्रि० वि० मन, विचार व ज्ञान से । मन ही मन ।

मना–वि० [अ०] १ वर्जित, निषिद्ध । २ प्रतिबंधित । ३ असहमत । –स्त्री० १ वर्जन, निषेध । २ प्रतिबंध, रोक । ३ असहमति । ४ देखो 'मन' ।

मनाई–देखो 'मनाही' ।

मनाणी (णो)–क्रि० १ राजी करना, खुश करना । २ परस्पर मेल कराना । ३ समझौता कराना । ४ किसी बात पर सहमत करना । ५ सम्मान या मान्यता दिलाना । ६ किसी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करना । ७ कबूल करवाना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८ आयोजन करना । ९ स्वागत, सत्कार करना । १० अभ्यर्थना करना, स्तुति करना ।

मनावणी–पु० मनाने की क्रिया या भाव अथवा प्रयास ।

मनावणी (बी)–देखो 'मनाणी' (बी) ।

मनाबी–स्त्री० [सं०] मनु की स्त्री का नाम ।

मनाही–स्त्री० [अ०] १ रोक, निषेध, वर्जना । २ निषेधाज्ञा ।

मनि–१ देखो 'मन' । २ देखो 'मनी' । ३ देखो 'मांनो' ।

मनिख–देखो 'मनुस्य' ।

मनियावट–स्त्री० प्रशंसा ।

मनियौ– १ देखो 'मिनियौ' । २ देखो 'मन' ।

मनिसउ–पु० [सं० मनीषा] विचार ।

मनिसि–देखो 'मनीसी' ।

मनी–देखो 'मन' ।

मनीसा–स्त्री० [सं० मनीषा] १ मानसिक शक्ति, बुद्धि, अक्ल, समझ । २ अभिलाषा, इच्छा, कामना । ३ प्रतिभा । ४ प्रशंसा, तारीफ । ५ विचार, खयाल । ६ स्तुति, प्रार्थना ।

मनीसि, मनीसी–वि० [सं० मनीषिन्] १ पण्डित, विद्वान् । २ प्रतिभाशाली, प्रभावशाली । ३ बुद्धिमान, चतुर, विवेकशील । –पु० १ ऋषि, मुनि, महात्मा । २ बुद्धिमान व्यक्ति ।

मनु–१ देखो 'मांनो' । २ देखो 'मन' । ३ देखो 'मनु' ।

मनुंतर–देखो 'मन्वंतर' ।

मनु–पु०[सं०] १ ब्रह्मा का पुत्र व मानव सृष्टि का आदि पुरुष । २ चौदह मन्वन्तरों का अधिपति । ३ ब्रह्मा । ४ विष्णु । ५ अग्नि । ६ मन्त्र । ७ एक रुद्र का नाम । ८ यज्ञ । ९ अन्तःकरण । १० जैनों के जिनदेव । ११ मत्स्यावतार के समय का एक राजा । १२ मनुस्मृति का रचयिता ऋषि । १३ एक अर्थशास्त्रकार । १४ एक ऋषि । १५ यादव राजा विशेष । १६ एक अग्नि । १७ एक गोत्रकार । १८ चौदह की संख्या ※ । –स्त्री० १९ मनु की स्त्री मानवी । २० एक अप्सरा जो कश्यप एवं प्रधा की कन्या थी । २१ वनमेथी । २२ देखो 'मन' । २३ देखो 'मांनो' ।

मनुआ–देखो 'मन' ।

मनुक्ष, मनुख–देखो 'मनुस्य' .

मनुज–पु० [सं० मनुजः] १ मनुष्य, मानव । २ मानव जाति । ३ दश विश्वेदेवों में से एक ।

मनुजात–वि० [सं०] मनु से उत्पन्न, मनु का । –पु० मनुष्य, मानव ।

मनुजाधिप–पु० [सं० मनुजः अधिपति] राजा, नरेश ।

मनुजुग–पु० [सं० मनुयुग] प्रत्येक मनु का युग, काल, मन्वंतर ।

मनुवार–देखो 'मनवार' ।

मनुस्मृति–स्त्री० [सं० मनुस्मृति] मनु द्वारा रचित धर्मशास्त्र का ग्रन्थ ।

मनुस्य–पु० [सं० मनुष्य] १ समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ एक स्थन पायी प्राणी, नर, मानव, आदमी । २ मानव जाति । —धरम–पु० मनुष्य का धर्म । कुबेर । —लोक–पु० मृत्युलोक, भू-लोक ।

मनुस्यता–स्त्री० [सं० मनुष्यता] १ मनुष्य होने की अवस्था, गुण व भाव । २ मानवीय गुण । ३ भले मनुष्य के कार्य, विचार, गुण ।

मनुस्रेस्ठ–पु० [सं० मनुश्रेष्ठ] विष्णु ।

मनुहरि–देखो 'मनोहर' ।

मनुहार–१देखो 'मनवार' । २ देखो 'मनोहर' ।

मनुहारणो (बी)–क्रि० [सं० मान-हरणम्] १ आतिथ्य सत्कार करना, आवभगत करना, स्वागत करना । २ आदर करना । ३ मान या क्रोध शान्त कराना । ४ किसी कार्य या बात पर सहमत करने के लिये मनाना । ५ कुछ स्वीकार करने के लिये आग्रह करना । ६ भोजन के लिये आग्रह करना ।

मनुहारि, मनुहारी–देखो 'मनवार' ।

मनूं, मनू–१ देखो 'मांनो' । २ देखो 'मनु' ।

मनेत्र–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

मनं–१ देखो 'मना' । २ देखो 'मांनो' ।

मनंगनं, मनंग्यानं–देखो 'मनांग्यांना' ।

मनोकांमणा–स्त्री० मन की इच्छा, अभिलाषा । चिर-अभिलाषा ।

मनोगत, मनोगति–वि० मन का; मन संबंधी, मन में रहने वाला, दिली । मन में होने वाला । –स्त्री० मन की गति, इच्छा ।

मनोगिन–देखो 'मनोग्य' ।

मनोगुप्ति–देखो 'मनगुप्ति' ।

मनोग्य–वि० [सं० मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर ।

मनोग्यता–स्त्री० [सं० मनोज्ञता] सुन्दरता, मनोहरता ।

मनोज–पु० [सं० मनस्+ज] कामदेव, मदन । –वि० मन से उत्पन्न । —धेनु–स्त्री० कामधेनु ।

मनोजव (बी)–पु० [सं०] १ छठे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम । २ रुद्र के एक पुत्र का नाम । ३ अनिल नामक वसु का जेष्ठ पुत्र । ४ सोमवंशीय एक राजा । ५ एक प्राचीन तीर्थ । –वि० १ मन के समान वेगवान । २ चुस्त, फुर्तिला । ३ कुशाग्र बुद्धि । ४ बाप का, पैतृक । ५ पिता तुल्य, बड़ों के समान ।

मनोजवा–स्त्री० [सं०] १ अग्नि की एक जिह्वा । २ क्रौंच द्वीप की एक नदी । ३ स्कंद की एक अनुचरी मातृका ।

मनोती–देखो 'मनौती' ।

मनोद्रव–पु० [सं० मनस्+द्रुह] कामदेव, मदन ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनोध्यान–पु० [सं०] एक राग विशेष।

मनोनिग्रह–पु० [सं० मन-निग्रह] संयम। इन्द्रियों को वश में रखने की क्रिया।

मनोनीत–वि० [सं०] १ मन के अनुकूल। २ पसंद। ३ चुना हुआ। ४ नियुक्त या पदासीन। ५ किसी स्थान, पद या उत्तराधिकार के लिये प्रस्तावित, नियत, निश्चित व समर्थित।

मनोन्य–पु० एक फल विशेष।

मनोभव–पु० [सं०] १ कामदेव, मदन। २ चन्द्रमा। ३ प्रेम, स्नेह। ४ कामवृत्ति।

मनोभाव–पु० [सं०] मन के विचार, भाव, इच्छा, खयाल कल्पना।

मनोभू–देखो 'मनोभव'।

मनोमथन–पु० [सं०] कामदेव।

मनोमय–वि० [सं०] १ मन से युक्त, मानसिक। २ आध्यात्मिक। —**कोश**–पु० वेदान्त के अनुसार शरीरस्थ एक कोश।

मनोयोग–पु० [सं० मनस्-योग] मन की एकाग्रता।

मनोरंजक–वि० [सं०] १ मन का रंज मिटाने वाला। २ हास्यास्पद।

मनोरंजन, मनोरंजन–पु० [सं० मनस्-रंजनम्] १ मनोविनोद, हंसी-खुशी का कार्य, दिल्लगी। २ दिल बहलाव। ३ रंज मिटाने का कार्य।

मनोरथ–पु० [सं०] १ अभिलाषा, इच्छा, कामना। २ संकल्प। ३ मन का विचार। ४ कल्पना।

मनोरथद्वादसी–स्त्री० [सं० मनोरथ द्वादशी] १ चैत्र शुक्ला द्वादशी की तिथि। २ इस दिन किया जाने वाला व्रत।

मनोरम–वि० [सं०] सुन्दर, मनोज्ञ। जिसमें मन रमे।

मनोरमा–स्त्री० [सं० मनस्-रमा] १ सुन्दर स्त्री। २ मात सरस्वतियों में से चौथी। ३ गौतम बुद्ध की एक शक्ति। ४ एक अप्सरा। ५ ध्रुवसंधि राजा की पत्नी। ६ एक गंधर्व कन्या। ७ आर्या छन्द का एक भेद। ८ एक छन्द विशेष। ९ दश अक्षर का एक वर्ण वृत्त। १० चौदह अक्षरों का एक छन्द। ११ दोधक छन्द का एक नाम। १२ गोरोचन।

मनोराज (राज्य)–पु० [सं० मनोराज्य] मानसिक कल्पना।

मनोरी–स्त्री० मन की भावना या इच्छा।

मनोवरी–देखो 'मनोहर'।

मनोवांछा–देखो 'मनवांछा'।

मनोविकार–पु० [सं० मनस्-विकार] १ चित्त वृत्ति, चित्त की अवस्था। २ मन के दूषित विचार। ३ ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि की भावना।

मनोविज्ञान–पु० [सं० मनोविज्ञान] मन की अवस्था या विचारों का विश्लेषण करने वाला शास्त्र या सिद्धान्त।

मनोवेग–पु० [सं०] मन का आवेश, जोश।

मनोवृत्ति–स्त्री० [सं० मनस्-वृत्ति] मन की प्रकृति, आदत। विचारधारा।

मनोहर–पु० [सं०] १ परमेश्वर, ईश्वर। २ श्रीकृष्ण। ३ एक राग विशेष। ४ छप्पय छन्द का एक भेद। –वि० १ मन का हरण करने वाला, चित्ताकर्षक। सुन्दर, मनोज्ञ। २ देखो 'मनहर'।

मनोहरता, मनोहरताई–स्त्री० सुन्दरता।

मनोहरा–स्त्री० अनुस्वारों की बाहुल्यता वाला गाथा छन्द।

मनोहरी–देखो 'मनोरी'।

मनोहारक–देखो 'मनोहर'।

मनौ–देखो 'मानौ'।

मनौती–स्त्री० १ किसी देवी-देवता की पूजा के लिये किया गया संकल्प। २ मनुहार, निहोरा।

मन्न–देखो 'मन'।

मन्नछा–देखो 'मंछा'।

मन्नणौ (बौ)–देखो 'मनणौ' (बौ)।

मन्नमोट–देखो 'मनमोट'।

मन्नि–देखो 'मन'।

मन्मथ–देखो 'मनमथ'।

मन्मथी–वि० [सं० मन्मथिन्] कामुक, कामी।

मन्यु, मन्यू–पु० [सं० मन्यु] १ यज्ञ, हवन। २ क्रोध, गुस्सा। ३ अभिमान, गर्व। ४ दुःख, शोक। ५ दीनता। ६ कर्म। ७ स्तोत्र। ८ अग्नि। ९ शिव, महादेव। १० वितथ राजा का पुत्र।

मन्वंतर–पु० [सं०] १ इकहत्तर चतुर्युगी काल। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवां भाग। २ प्रत्येक मनु के शासन की अवधि। ३ चौबीस अवतारों में से एक। ४ अकाल, दुर्भिक्ष।

मन्हा–देखो 'मना'।

मन्हे–सर्व० १ मुझको। २ देखो 'मना'।

मपणौ (बौ)–क्रि० मापा जाना, नाप किया जाना।

मपधुनि–स्त्री० ढोल की आवाज, ध्वनि।

मपारी–स्त्री० एक जाति विशेष।

मफरा–स्त्री० नशीली वस्तु।

मफी–देखो 'मापौ'।

ममंकार–देखो 'मकार'।

मम–सर्व० [सं०] मेरा, मेरी, मेरे, मुझ। –अव्य० [सं० म] नहीं, न, मत।

ममकार–देखो 'मकार'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ममत–देखो 'ममत्व'।

ममतमल–पु० ममता का मेल।

ममता–स्त्री० [सं०] १ माता का स्नेह, वात्सल्य। २ कृपा, दया, सहृदयता। ३ लोभ, लालच। ४ अहंकार, गर्व।

ममत्व–पु० [स०] १ स्नेह व वात्सल्य का भाव। २ कृपा, दया। ३ लोभ, लालच। ४ अहंकार, गर्व।

ममरणी (वी)–क्रि० चबाना।

ममाई–स्त्री० १ कस्तूरी। २ इजाजत।

ममारक (ख, खी)–देखो 'मुबारक'।

ममीरी–पु० [अ० ममीरान] एक जड़ीय पदार्थ विशेष।

ममु–पु० 'म' वर्ण।

ममे–स्त्री० अहंकार की भावना।

ममोह–स्त्री० बंबई नगर।

ममौलियो, ममोलो, ममोल्यो, ममौलो–पु० एक बरसाती कीड़ा विशेष, वीर-बहूटी।

ममो–पु० 'म' अक्षर।

मम्म–१ देखो 'मरम'। २ देखो 'मम'।

मम्मांणी–वि० मकराने का, मकारने संबंधी।

मयंक मयंकर–पु० [सं० मृगांक] १ चन्द्रमा। २ पवन। ३ कपूर।

मयंख–पु० १ महिष। २ देखो 'मयंक'।

मयग–देखो 'मतंग'।

मयंगळ–देखो 'मदकळ'।

मयंद, मयंदो–पु० [सं० मृगेन्द्र] (स्त्री० मयंदणा, मयंदणी) १ सिंह। २ हाथी, गज। ३ ऊंट। ४ राम की सेना का एक वानर। ५ चन्द्रमा। ६ काव्य छंद का एक भेद विशेष। ७ एक छन्द विशेष। ८ डिंगल के सिंहचले गीत का एक भेद। —गति–स्त्री० सिंह की चाल।

मयंमंत–देखो 'मैमंत'।

मयंमिरा–स्त्री० मदिरा, शराब।

मय–पु० [सं०] १ दानव जाति का एक शिल्पी। २ ऊंट। ३ घोड़ा। ४ हाथी। ५ खच्चर। ६ आराम, सुख। ७ एक प्रत्यय। ८ एक देश का नाम। ९ आधार या आश्रय रूप। १० देखो 'मद'। ११ देखो 'मैं'।

मयउं–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मयकाभा–स्त्री० मदिरा, शराब।

मयगळ, मयगल, मयगळि–देखो 'मदकळ'।

मयड़ी–देखो 'मैड़ी'।

मयण–पु० १ हाथी। २ देखो 'मदन'। ३ देखो 'मेंण'। ४ देखो 'मणि'।

मयणरेखा–देखो 'मदनरेखा'।

मयणहल्ल–पु० ग्राम विशेष।

मयणा–१ देखो 'मैणा'। २ देखो 'मेना'। ३ देखो 'मैना'।

मयणातुर–देखो 'मदनातुर'।

मयणि (णी)–देखो 'मदन'।

मयन–देखो 'मदन'।

मयनक–पु० १ जलंधरनाथ के गुरु का नाम। २ देखो 'मैनाक'।

मयना–१ देखो 'मेना'। २ देखो 'मैना'।

मयनाक–देखो 'मैनाक'।

मयमत, मयमंती, मयमत, मयमत्त (त्ती)–देखो 'मैमंत'।

मयरहरो–पु० समुद्र, सागर।

मयराळ, मयराल–देखो 'मराळ'।

मयलूं–देखो 'मैलो'। (स्त्री० मैली)

मयसुता–स्त्री० [सं०] रावण की पत्नी, मंदोदरी।

मयांनगर–स्त्री० तलवारों की म्यांने बनाने वाली जाति।

मया–स्त्री० [सं० माया, ममता,] १ कृपा, दया, अनुग्रह। २ प्रेम, ममता, स्नेह। [सं० मतं] ३ इजाजत, अनुमति, स्वीकृति। ४ छूट, रियायत। [सं० मातृ] ५ माता, माँ। –वि० दयालु, कृपालु।

मयाचळ–देखो 'मलयाचळ'।

मयाद–स्त्री० [अ० मीआद] १ वक्त, समय, काल। २ एक, निश्चित अवधि, मुद्दत। ३ वादा, वचन, करार।

मयादी–वि० [अ० मीआदी] १ समय से संबंधित। २ एक निश्चित समय के लिये होने वाला। ३ समय-समय पर होने वाला।

मयाळ, मयाळू–वि० दयालु, कृपालु।

मयावंत–वि० १ दयावान, कृपालु,। २ कृपापात्र।

मयु–पु० [सं०] १ किन्नर। २ मृग, हिरण। —राज–पु० किन्नरराज कुबेर।

मयुर–देखो 'मयूर'।

मयूख, मयूख–स्त्री० [सं० मयूखः] १ किरण, रश्मि। २ दीप्ति, आभा। ३ अंगारा। ४ सौन्दर्य।

मयूर–पु० [सं०] (स्त्री० मयूरणी) १ मोर,। २ एक पुष्प विशेष। ३ एक क्षुप विशेष। ४ सूर्य शतक का रचयिता कवि। ५ एक सुविख्यात असुर। ६ सुमेरु पर्वत के अधीन एक पर्वत। ७ काव्य छन्द का एक भेद। ८ डिंगल का एक छंद विशेष। ९ एक रंग विशेष का घोड़ा।

मयूरणी–पु० एक छन्द विशेष। –स्त्री० मोरनी, मादा मोर।

मयूरनृत्य–पु० [सं० मयूरनृत्य] नृत्य का एक भेद।

मयूरासन–पु० योग के चौरासी आसनों में से एक।

मयूरिय–स्त्री० घोड़ी।

मयूरेस–पु० [सं० मयूर+ईश] स्वामिकार्तिकेय।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मयेळी–स्त्री० १ उड़ते पक्षियों की पंक्ति । २ पंक्तिबद्ध उड़ने की क्रिया ।

मयेस्वर–पु० [सं० मयेश्वर] मय दैत्य का नामान्तर ।

मयें–देखो 'मय' ।

मयोमय–पु० [सं० महामहिम्न] शिव, महादेव ।

मयोर–देखो 'मयूर' ।

मयौ–वि० १ महीन, बारीक । २ देखो 'मईयौ' ।

मय्यासंभव–पु० श्रीकृष्ण ।

मरंद, मरंदक–पु० [सं०] फूलों का रस, पराग ।

मर–पु० [सं० मृ] १ मरण क्रिया, मौत, मृत्यु । २ नाश, विनाश । ३ संसार, जगत । ४ पृथ्वी । ५ ईश्वर । ६ देखो 'मुर' ।

मरक–पु० [सं० मर्क] १ शरीर, देह । २ प्राण । ३ बन्दर । ४ भेद, रहस्य । ५ आकर्षण, खिचाव । ६ अन्तरद्वेष । ७ मन की उमंग । ८ एक संक्रामक रोग विशेष ।

मरकट–पु० [सं० मर्कट] (स्त्री० मरकटी) १ वानर, बंदर । २ तांबा । ३ मकड़ी । ४ सारस । ५ एक प्रकार का विष । ६ संभोग का एक आसन । ७ दोहे छंद का एक भेद विशेष । ८ छप्पय छन्द का एक भेद । ९ देखो 'मरकटक' ।

मरकटक–पु० [सं० मर्कटक] १ एक मछली विशेष । २ मकड़ी । ३ छन्द शास्त्र में एक प्रत्यय ।

मरकत, मरकतमणि, मरकतमिणि, मरकति, मरकतिमणि, मरकतिमिणि–पु० [सं०] १ पन्ना । २ नीलम । ३ नग, नगीना ।

मरकब–पु० [अ० मर्कब] १ एक प्रकार का वाहन, सवारी । २ घोड़ा, अश्व ।

मरकलडइ–स्त्री० मुख की एक मुद्रा ।

मरकी–देखो 'मुरकी' ।

मरखण–पु० [सं० मर्षण] मरु राजा का प्रपौत्र एक प्राचीन राजा ।

मरग–देखो 'मिरग' ।

मरगज–पु० (स्त्री० मरगजी) १ विना सिर की देह, कबंध । २ मृग, हिरण ।

मरगजो–पु० एक प्रकार का मर्दन ।

मरगछाळा–देखो 'मिरगछाला' ।

मरगद–पु० हरे रंग का वस्त्र विशेष ।

मरगयजावर–पु० एक प्रकार का नीलम जड़ित जादर वस्त्र ।

मरगलो–देखो 'मिरग' ।

मरगाबू–पु० एक पक्षी, मुर्गाबी ।

मरगी–देखो 'मिरगी' ।

मरगोजो–पु० एक पदार्थ विशेष ।

मरगड–देखो 'मरगड' ।

मरघट–पु० [सं० मरघट्ट] श्मशान भूमि ।

मरघलियो, मरघलो–देखो 'मिरग' ।

मरड–देखो 'मरोड' ।

मरड़कणो (बो) क्रि० १ मारना, संहार करना । २ तोड़ना, फाड़ना ।

मरडको–पु० १ ऐंठन, मरोड़ । २ गुस्सा ।

मरडूसी–स्त्री० एक जंगली पौधा ।

मरच–देखो 'मिरच' ।

मरछा–देखो 'मुरछा' ।

मरछागत–देखो 'मुरछागत' ।

मरज–पु० [अ० मर्ज] १ रोग, बिमारी । २ ऐब, दोष, अवगुण । ३ बुरी आदत । —**दार**–वि० रुग्ण, बीमार । ऐबी, दोषी, अवगुणी । बुरी आदत वाला ।

मरजाद, मरजादा, मरजादो–स्त्री० [सं० मर्यादा] १ गौरव, मान, प्रतिष्ठा । २ नियम, विधान । ३ रीति-रिवाज, परम्परा । ४ हस्ती, औकात, ताकत । ५ सीमा, हद । ६ लाज, शर्म । ७ शान, शौकत । ८ शोभा । ९ महत्व । १० धर्म ।

मरजियो–वि० १ मरकर जीने वाला । २ मरणासन्न । ३ अधमरा । –पु० समुद्र का गोताखोर ।

मरजी–स्त्री० [अ० मर्जी] १ इच्छा, चाह । २ कामना, आशा । ३ मन की मौज । ४ खुशी । ५ स्वीकृति, अनुमति । ६ आज्ञा, आदेश । ७ रजामंदी । ८ कृपा, अनुग्रह । —**दान पात्र**–वि० कृपा पात्र । विश्वसनीय । प्रधान, मुख्य ।

मरजीयो, मरजीवउ, मरजीवो–देखो 'मरजियो' ।

मरज्यादा–देखो 'मरजादा' ।

मरट, मरठ, मरठ–पु० १ गर्व, अभिमान, घमंड । २ गौरव, मर्यादा । ३ ऐंठन, मरोड़, घुमाव । ४ समूह, फौज । ५ अत्यन्त क्रुद्ध, जला-भुना । ६ काव्य छन्द का एक भेद ।

मरड–देखो 'मरोड़' ।

मरड्डणी (बो)–देखो 'मरोड़णी' (बो) ।

मरण–पु० [सं०] १ मृत्यु, मौत, प्राणान्त । २ एक विष विशेष । ३ साहित्य में एक अनुभाव । —**दिन**–पु० किसी का मृत्यु दिवस ।

मरणांत–क्रि०वि० मृत्यु पर्यन्त, मरने तक, अन्त तक ।

मरणी–स्त्री० मौत, मृत्यु ।

मरणीक–वि० १ मरने को उद्यत, उत्सर्ग होने को तैयार । २ मरने-मारने को कटिबद्ध ।

मरणु (णु, णो)–वि० [सं० मृ] १ मरने-मारने को उतारू, तैयार । २ देखो 'मरण' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरणी (णो)–क्रि० [सं० म्रियते] १ किसी प्राणी का मरना होना, मृत्यु या प्राणान्त होना । मरना । २ दुर्गति पाना । ३ भूख, प्यास आदि से व्याकुल या त्रस्त होना । ४ हत्या द्वारा मारा जाना । ५ न्यौछावर या उत्सर्ग होना । ६ विकल या विह्वल होना । ७ कुम्हलाना, मुरझाना, सूख जाना । ८ कष्ट या विपत्ति से मृत प्रायः होना । ९ शक्ति, पौरुष आदि से हीन, निश्चेष्ट होना । १० बोझ से दबना । ११ शर्म, चिन्ता आदि से अधिक ग्रस्त होना । १२ अधिक श्रम करना, पचना । १३ किसी पदार्थ के गुण या शक्ति समाप्त होना, अप्रयोज्य होना । १४ इच्छा या वेग समाप्त होना । १५ खेल में परास्त होना । १६ जलन या ईर्ष्या होना । १७ पैठना, रिसना ।

मरण्ण–देखो 'मरण' ।

मरतंग–पु० मरण, गमी, मौत ।

मरत–पु० [सं० मर्तः] १ मनुष्य, आदमी, मानव । २ पृथ्वी । ३ मृत्यु लोक । ४ देखो 'म्रित्यु' । ५ देखो 'मरत्य' ।

मरतकाळ (ाळ)–पु० [सं० मृत्यु+काल] अन्तिम समय, मौत की घड़ी ।

मरतब–पु० [अ० मर्तबः] १ पद, दर्जा, श्रेणी । २ प्रतिष्ठा, इज्जत । ३ वर्ग ।

मरतबान–पु० १ आचार, मुरब्बा आदि रखने का बर्तन । २ अमृतबान ।

मरतबा–पु० [अ० मर्तबः] बार, दफा, पारी ।

मरतबी–देखो 'मरतब' ।

मरतलोक–देखो 'म्रित्युलोक' ।

मरतुंजय–देखो म्रित्युंजय' ।

मरतु–देखो 'म्रित्यु' ।

मरतुजामअली–स्त्री० हजरत अली की एक उपाधि ।

मरत्य–पु० [सं० मर्त्य] शरीर, बदन । –वि० १ मरणशील, मरणासन्न । २ देखो 'म्रित्यु' । –लोक='म्रित्युलोक' ।

मरबग–देखो 'म्रदंग' ।

मरब–पु० [फा० मर्द] १ पुरुष, नर, आदमी । २ पति, खाविंद । ३ मंत्री । ४ वीर पुरुष । ५ मनुष्य जाति, मानव वर्ग । ६ शक्ति, साहस व पौरुष वाला व्यक्ति । –वि० १ बल, पौरुष व साहस से युक्त । २ साहसी । ३ पुरुष का, पुरुष संबंधी । ४ कुचलने व नष्ट करने वाला । ५ पीसने वाला, घोंटने वाला ।

मरबक–वि० [सं० मर्दक] १ मर्दन करने वाला । २ चबाने वाला ।

मरबगी–देखो 'मरदांनगी' ।

मरबण–देखो 'मरदन' ।

मरबणो (णो)–क्रि० [सं० मर्दनं] १ मर्दन करना, मसलना, रगड़ना । २ मलना, मसलना, उबटन करना । ३ लेपन करना । ४ दबाव डालना, दबाना । ५ सन्तापित करना पीड़ित करना । ६ पीसना, घोंटना । ७ कुचलना, रौंदना । ८ नष्ट करना, उजाड़ना ।

मरबन–पु० [सं० मर्दन] १ मसलने या रगड़ने की क्रिया या भाव । २ मालिश, लेपन, उबटन । ३ संताप, उत्पीड़न । ४ दबाव । ५ विनाश । –वि० कुचलने वाला, पीसने वाला, नाश करने वाला । –काळो–पु० श्रीकृष्ण । ईश्वर । –मेघ–पु० श्रीकृष्ण ।

मरबनी–स्त्री० [फा० मुर्दनी] मूर्च्छा, उदासी, श्रीहीनता, कमजोरी ।

मरबनीयो–वि० मर्दन करने वाला, मालिश करने वाला । –पु० उबटन करने वाली जाति, वर्ग या व्यक्ति ।

मरबमी–स्त्री० [फा० मर्दुमी] १ बल, पौरुष, शक्ति । २ साहस, हिम्मत । ३ पुंसत्व गुण, स्तंभनशक्ति । ४ मानवता, इन्सानियत । ५ सुशीलता, शालीनता । –वि० बलशाली पुरुषार्थी, साहसी ।

मरबल–पु० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

मरबांनगी–स्त्री० [फा० मर्दानगी] १ मर्द होने की अवस्था या भाव । २ बल, पौरुष । ३ साहस, हिम्मत । ४ वीरता, बहादुरी । ५ पुंसत्व गुण ।

मरबांनी–वि०[फा०मर्दानी] मर्दों की, मर्दों के काम आनेवाली । –डोढ़ी, डोढ़ी–स्त्री० महल में पुरुषों का प्रवेश द्वार ।

मरबांनु (नो)–वि० [फा०मर्दानः] (स्त्री० मरबांनी) १ मर्दों का, मर्दों संबंधी । २ बल-पौरुष वाला, शूरवीर । –पु० बल, पौरुष व वीरता ।

मरबांमरब–वि० १ मर्दों में मर्द, नर श्रेष्ठ । २ अद्वितीय पुरुष, वीर, योद्धा । –पु० अर्जुन का एक नामान्तर । –क्रि० वि० जबरदस्ती, बलात् । येन-केन-प्रकारेण ।

मरबाई–स्त्री० मर्दानगी ।

मरबुम–पु० [फा० मर्दुम] मनुष्य, इन्सान । –सुमारी–स्त्री० जन-गणना ।

मरबूब–वि० [फा० मर्दूद] तिरस्कृत, बहिष्कृत, नीच ।

मरह– देखो 'मरद' ।

मरहक–देखो 'मरदक' ।

मरहब, मरहन–देखो 'मरदन' ।–काळी = 'मरदनकाळी' ।

मरहस–देखो 'मरदळ' ।

मरहां-मरह–देखो 'मरदांमरद' ।

मरहित–वि० [सं० मर्दित] १ मसला हुआ, जिसका मर्दन किया गया हो । २ पीसा हुआ । ३ नष्ट किया हुआ ।

मरपूरी–वि० भर-डूब कर किसी तरह पूरा किया गया ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरम–पु० [सं० मर्म] १ सत्य, यथार्थ । २ सार, तत्त्व । ३ आशय, अर्थ, भाव । ४ रहस्य, भेद । ५ कपट, छल । ६ शरीर का नाजुक भाग । ७ संधिस्थल । ८ हृदय । ९ एक वाद्य विशेष । –वि० गुप्त, छुपा हुआ ।

मरमक–पु० एक प्रकार का आभूषण ।

मरमग, मरमग्य वि० [सं० मर्मज्ञ] १ सत्य या यथार्थ जानने वाला । २ सार व तत्त्व बताने वाला । ३ अर्थ समझाने वाला । ४ रहस्य या भेद जानने वाला, भेदिया । ५ प्रकाण्ड पंडित । ६ विद्वान ।

मरमचर–पु० [सं० मर्म+चर] हृदय ।

मरमद–पु० १ गर्व, अभिमान । २ बल, पौरुष, शक्ति ।

मरमत–देखो 'मरम्मत' ।

मरमपीड़ा–स्त्री० १ आन्तरिक पीड़ा । २ मानसिक क्लेश ।

मरमप्रहार–पु० शरीर के नाजुक अंगों पर किया जाने वाला प्रहार ।

मरमबोध–पु० चोर ।

मरमर–स्त्री० [सं० मर्मर] १ पत्तों की हल्की खड़कन । २ पत्तों की परस्पर रगड़ । ३ पत्तों की रगड से होने वाली ध्वनि । ४ एक प्रकार का सफेद पत्थर ।

मरमराना (ना)–क्रि० १ पत्तों का परस्पर टकराना, रगड़ खाना । २ पत्तों की रगड़ से ध्वनि होना । ३ बोझ से झुकते हुए चरमराना ।

मरमरी–स्त्री० १ बेसन की पकौड़ी या सेंव । २ मरने की इच्छा । ३ दूध या छाछ में तैरने वाली घी की डली ।

मरमस्थल (स्थान)–पु० शरीर के नाजुक अंग, संधिस्थल ।

मरमी–वि० १ मर्म संबंधी, मर्म का । २ मर्म जानने वाला ।

मरमीक–देखो 'मरमग्य' ।

मरमु, मरमो, मरम्म–देखो 'मरम' ।

मरम्मत–स्त्री० [फा०] १ किसी वस्तु की टूट-फूट सुधारने का कार्य, जीर्णोद्धार । २ मारपीट, दण्ड ।

मरयाद, मरयादा–देखो 'मरजादा' ।

मरवट–देखो 'मरोट' ।

मरवण–स्त्री० १ स्त्री या पत्नी के लिये एक संबोधन । २ एक लोक गीत विशेष । ३ देखो 'मारवणी' ।

मरवो–पु० [सं० मरुबक:] १ तुलसी जाति का एक पौधा । २ एक लोक गीत विशेष । ३ दोहे का एक भेद ।

मरसियो–पु० मृतक के शोक में रचा गया पद्य या छन्द ।

मरहट–१ देखो 'मरघट' । २ देखो 'मरहठ' ।

मरहटो–पु० १ एक छन्द विशेष । २ देखो 'मरहठो' ।

मरहट्ट, मरहट्ठ, मरहट्ठय–१ देखो 'महरठ' । २ देखो 'मरहठो' ।

मरहट्टी–देखो 'मरहठी' ।

मरहट्ठो, मरहट्ठी–देखो 'मरहठो' । (स्त्री० मरहट्टी)

मरहठ–पु० [सं० महाराष्ट्र] १ दक्षिण भारत का एक प्रान्त, महाराष्ट्र । २ देखो 'मरघट' ।

मरहठी–वि०महाराष्ट्र का, महाराष्ट्र संबंधी । –स्त्री० १ महाराष्ट्र की भाषा । २ महाराष्ट्र की स्त्री ।

मरहठो–पु० १ महाराष्ट्र का निवासी । २ एक जाति विशेष ।

मराइणी (वी)–देखो 'मराणी' (वी) ।

मराज–देखो 'महाराज' ।

मराट–वि० १ मारने वाला, मर्दन करने वाला । २ नष्ट व विध्वंस करने वाला । ३ जबरदस्त, जोरदार । ४ शक्तिशाली, बलवान । ५ दृढ़, मजबूत । ६ सख्त, ठोस । ७ अधिक, बहुत ।

मराणी (वी)–क्रि० १ किसी जीवित प्राणी को मरवाना । वध या हत्या कराना । २ युद्ध में झूझने के लिये प्रेरित करना । ३ अधिक भूखा-प्यासा रखना । ४ पिटवाना । ५ कष्ट भोगाना । ६ पराजित कराना । ७ मैथुन या संभोग कराना ।

मरातब, मरातिब–पु० [अ० मरतब] १ अधिकार युक्त पद । २ दर्जा श्रेणी । ३ क्रमशः आने वाली अवस्थाएँ । ४ तह, पृष्ठ । ५ मकान । ६ मंजिल । ७ ध्वजा, पताका, झंडा । ८ प्रतिष्ठा, इज्जत ।

मराळ, मराल–पु० [सं० मराल] (स्त्री० मराळि, मराळी) १ हंस । २ एक जल पक्षी विशेष, कारण्डव । ३ घोड़ा, अश्व । ४ हाथी । ५ बादल, मेघ । ६ अंजन, सुरमा । ७ अनार के वृक्षों का कुंज या बाग । ८ दोहे छंद का एक भेद । –वि० १ कोमल, चिकना । २ छली, कपटी बदमाश ।

मरावणी (वी)–देखो 'मराणी' (वी) ।

मरिच–१ देखो 'मरीचि' । २ देखो 'मिरच' । ३ देखो 'मरीच' ।

मरियाद, मरियादा–देखो 'मरजाद' ।

मरी–स्त्री० १ एक संक्रामक रोग विशेष । महामारी । २ मृत्यु, मौत ।

मरीच–पु० [सं०] १ एक रघुवंशीय राजा । २ काली मिरच । ३ काली मिरच का पौधा । ४ देखो 'मारीच' । ५ देखो 'मरीचि' ।

मरीचि–पु० [सं०] १ ब्रह्मा का प्रथम पुत्र एक प्रजापति । २ भृगु के पुत्र एक ऋषि । ३ एक स्मृतिकार ऋषि । ४ एक ज्योतिष शास्त्रज्ञ । ५ एक मरुत का नाम । ६ एक दानव विशेष । ७ एक राजा । ८ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर । ९ कंजूस व्यक्ति । १० सूर्य । ११ प्रकाश का अणु । १२ किरण, मयूख, रश्मि । १३ मृग तृष्णा ।

मरीचिका–स्त्री० [सं०] १ किरण, रश्मि । २ मृगतृष्णा ।

मरीची–देखो 'मरीचि' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरीज–वि० [अ०] रोगी, बीमार, अधिकतर रुग्ण रहने वाला।
मरीयत–स्त्री० [सं० म्रिड्] महामारी, भयंकर संक्रामक रोग।
मरु–पु० [सं० मृ+उ] १ पानी के अभाव वाला, रेतीला-सूखा प्रदेश, रेगिस्तान। २ मारवाड़ प्रदेश। ३ जलहीन पर्वत। ४ एक सूर्यवंशी राजा। ५ विदेह का एक प्राचीन राजा। ६ एक दैत्य जो नरकासुर का प्रमुख सहायक था।
मरुआड़ि, मरुआडि–देखो 'मारवाड़'।
मरुक–पु० [सं०] १ मोर, मयूर। २ एक लोक-समूह। ३ देखो 'मरुग'।
मरुकांतर–पु० रेगिस्तान, मरुभूमि।
मरुआ–पु० मरु प्रदेश, मारवाड़, रेगिस्तान।
मरुत–पु० [सं०] १ वायु, पवन। २ वायु का अधिष्ठाता देव। ३ इन्द्र। ४ देवता। ५ कश्यप व दिति के पुत्र उनचास देवगण। ६ मनुष्य। ७ पहाड़, पर्वत। ८ मरुवक नामक पौधा। ९ श्रीकृष्ण के समकालीन एक महर्षि। —चक्र–पु० वात चक्र।—जण–पु० राक्षस। —सखा–पु० इन्द्र, पवन। —सुत, सुति–पु० हनुमान, बजरंग, भीम।
मरुत्त–पु० [सं०] १ वैशाली का तुर्वसु वंशीय एक राजा। २ एक यादव राजा। ३ देखो 'मरुत'।
मरुत्पति–पु० [सं०] देवराज इन्द्र।
मरुत्पथ–पु० [सं०] आकाश, अंतरिक्ष।
मरुत्वत–पु० [सं०] १ बादल, मेघ। २ इन्द्र। ३ हनुमान।
मरुत्सुत–देखो 'मरुतसुत'।
मरुथळ–देखो 'मरुस्थळ'।
मरुद–देखो 'मरद'।
मरुदेव–पु० [सं०] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा। २ एक देव विशेष।
मरुदेवी–स्त्री० भगवान ऋषभदेव की माता।
मरुद्रथ–पु० घोड़ा।
मरुद्विप–पु० १ हाथी। २ घोड़ा।
मरुदेस–पु० मारवाड़।
मरुधन्वा–पु० [सं० मरु+धन्वन्] मरुस्थल, मारवाड़।
मरुधर (ध्धर)–पु० मरु प्रदेश।
मरुधरा (भूमि)–स्त्री० १ मारवाड़। २ निर्जन भूमि ३ रेगिस्तान।
मरुधरियो–पु०मारवाड़ का निवासी, मारवाड़ी। –वि० मारवाड़ का, मारवाड़ संबंधी।
मरुभूमि–स्त्री० मारवाड़, मरुधरा।
मरुयउ–देखो 'मरवो'।
मरुवय–देखो 'मरवण'।
मरुवो–देखो 'मरवो'।
मरुस्थळ, मरुस्थळि–पु० निर्जल व रेतीला प्रदेश।
मरुंडियो–पु० १ एक वर्ग विशेष। २ देखो 'मुंड'।
मरू–पु० १ मूर्च्छा, गश। २ देखो 'मरु'।
मरूअउ–देखो 'मरवो'।
मरूआड़ि–देखो 'मारवाड़'।
मरूउ–पु० मुकुल।
मरूक–पु० [सं०] १ मोर, मयूर। २ एक प्रकार का मृग।
मरूत–देखो 'मरुत'।
मरूत्तयांन–पु० [सं० मरुत्यान] गरुड़।
मरूदेव–देखो 'मरुदेव'।
मरूदेवा (देवी)–देखो 'मरुदेवी'।
मरूधर (धरी)–देखो 'मरुधर'।
मरूमंडळ–पु० मारवाड़।
मरूवो–देखो 'मरवो'।
मरेठो (ठौ)–देखो 'मरहठो'।

मरोड़–स्त्री० [सं०मुरम्] १ मोड़ने, घुमाने या ऐंठने की क्रिया। २ ऐंठन, बल, डेढ़ापन। ३ पेट में होने वाला वात विकार, पीड़ा, दर्द। ४ विरोध, वैमनस्य। ५ गौरव, मान, प्रतिष्ठा इज्जत। ६ वीरता, पराक्रम। ७ गर्व, अभिमान, घमंड। ८ नायिका का गुमान, मान।

मरोड़णो(वो)–क्रि० [सं० मुरम्] १ वस्तु या अंग को घुमाना, फेरना, ऐंठन देना, बल डालना। २ घुमाकर टेढ़ा कर देना। ३ नष्ट करना, समाप्त करना। ४ कष्ट या पीड़ा देना। ५ तोड़ना। ६ कठना।

मरोड़फळी, मरोड़ाफळी–स्त्री० औषधि के काम की एक फली, आवर्तनी।

मरोड़ी–स्त्री० १ लोहे की बनी छोटी पेचदार कंटिया। २ देखो 'मरोड़ो'।

मरोड़ो–पु०१ पेट में होने वाला वात विकार, ऐंठन, दर्द, पीड़ा। २ रक्तातिसार रोग। ३ गर्व, अभिमान। ४ ऐंठन, बल घुमाव। ५ मोड़। ६ उमस, गर्मी।

मरोट (ठ)–देखो 'मारोट' (ठ)।

मरोडो–पु० एक प्रकार का अफीम।

मरौ–पु० मृत्यु, मौत।

मलंग (मलंगो)–पु० [फा०] १ मुसलमान साधु विशेष। २ सूंफी फकीरों की एक शाखा। ३ मस्त फकीर। ४ एक प्रकार का बगुला। ५ छलांग, झंप। ६ उछलते हुए चलने की क्रिया। –वि० १ छलांग लगाने वाला। २ मस्त, बेफिक्र। ३ पुष्ट, मोटा। ४ लापरवाह।

मलंगणो (वो)–क्रि० १ छलांग लगाना, कूदना। २ कूदते हुए चलना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मळ, मल–पु० [सं० मलः] १ मल, मूत्र। २ मैल, गंदगी। ३ शरीर के विकार। ४ पाप, दुष्कर्म। ५ अवगुण, दोष। ६ मनोविकार, दूषित भावना। ७ कपूर। ८ समुद्र का फेन। ९ मिलावटी धातु विशेष। १० मादा पशुओं के योनि द्वार से बहने वाली गंदगी। ११ धातु का मैल। १२ कमाया हुआ चमड़ा व चर्म वस्त्र। १३ कचरा। १४ देखो 'मल्ल'।

मलउसीउं–पु० एक वस्त्र विशेष।

मलकछ, मलकछी–पु० शुभ रंग व वर्ण का घोड़ा विशेष।

मलका–पु० १ एक छंद विशेष। २ देखो 'मलिका'।

मलकाहली–स्त्री० एक प्रकार का वाद्य।

मलक्का–पु० १ एक मांसाहारी पक्षी। २ देखो 'मलिका'।

मलखंभ (खंभ)–पु० १ कसरत के लिये बनाया गया लकड़ी का स्तंभ। २ इस स्तंभ से की जाने वाली कसरत।

मलजुद्ध, मलजुध–देखो 'मल्लयुद्ध'।

मळज्वर–पु० [सं० मल+ज्वर] मलावरोध से होने वाला ज्वर।

मळण–पु० मालिश, उबटन।

मळणो (वो)–क्रि० [सं० मलनं] १ मालिश या उबटन करना। २ लेपन करना, पोतना। ३ दबाना, अधिकार में करना। ४ हाथों से मसलना, मर्दन करना। ५ दो वस्तुओं को परस्पर रगड़ना। ६ हाथ फेरना। ७ मिटाना, नष्ट करना। ८ कुचलना। ९ मरोड़ना, ऐंठना। १० पीसना। ११ देखो 'मिळणो' (वो)।

मलतान–देखो 'मुलतांण'।

मळद्वार–पु० [सं० मलद्वार] गुदा द्वार, मल निकलने वाली इन्द्रियां।

मलप–देखो 'मलफ'।

मलपणो (वो), मलप्पणो (वो)–देखो 'मलफणो' (वो)।

मलफ–पु० १ छलांग, कूद, कुदान। २ उड़ान। ३ मस्ती, झूमना क्रिया। ४ प्रयाण।

मलफणो (वो), मलप्फणो (वो)–क्रि० १ छलांग लगाना, कूदना। २ फांदना। ३ उड़ना। ४ तेजी से आगे बढ़ना। ५ झूमते हुए चलना। ६ मंद गति या मस्ती से चलना। ७ प्रयाण करना, चलना। ८ फंदे में फंसना। ९ दौड़ना, भागना। १० दौड़ कर जाना।

मलबाथ–स्त्री० मल्ल युद्ध या कुश्ती का एक दाव।

मलबारी–स्त्री० १ एक प्रकार का वस्त्र। २ एक फल विशेष।

मळबो–पु० १ कचरा, कूड़ा-कर्कट का ढेर। २ टूटी-फूटी या निरर्थक वस्तुओं का ढेर। ३ गिरे हुए मकान की धूल-पत्थर का ढेर। ४ किसी बड़ी वस्तु के टूटे या नष्ट हुए भागों का ढेर। ५ प्राचीन समय में भू-स्वामियों से लिया जाने वाला एक कर।

मळमजण–पु० [सं० मल+मज्जन] पानी, जल।

मलम–पु० [फा० मर्हम] घाव पर लेपन करने की चिकनी औषधि। —**पट्टी**–पु० उक्त मलहम लगा कर बांधने की पट्टी। उक्त प्रकार का उपचार।

मलमल, मलमलसाही–स्त्री० एक प्रकार का बारीक वस्त्र।

मळमास–पु० [सं० मल-मास] १ मलिन मास। २ दो अमावस्या व संक्रांति के अभाव वाला चन्द्रमास।

मलमुलच–पु० [सं० मलिम्लुचः] चोर।

मळय–पु० [सं० मलय] १ चंदन के वृक्षों वाली, दक्षिण भारत की एक पर्वत माला। २ उक्त पर्वत माला के पास का प्रदेश, मालाबार। ३ उक्त, प्रदेश का निवासी। ४ इस प्रदेश का श्वेत चंदन। ५ एक उपद्वीप। ६ इन्द्र का नन्दन वन। ७ गरुड़ का एक पुत्र। ८ बाग। ९ एक प्राचीन राजा। १० छप्पय छंद का एक भेद। —**गिर, गिरि, गिरी**–पु० दक्षिण भारत का मलय पर्वत, इस पर्वत में होने वाला चंदन। एक प्राचीन देश।

मळयज–पु० [सं० मलयज] १ चन्दन। २ राहु नामक ग्रह। –वि० १ मलय पर्वत या प्रदेश में होने वाला। २ शीतल*।

मळयद्रुम–पु० चन्दन का वृक्ष।

मळयवासिनी–स्त्री० दुर्गा देवी।

मळयवासी–पु० मलय देश का निवासी।

मळयागिरि–पु० १ एक रंग विशेष। २ देखो 'मळयगिरि'।

मळयाचल, मलयाचल–पु० दक्षिण का मलय पर्वत।

मळयातर–देखो 'मलैतर'।

मळयानिळ–पु० [सं० मलय+अनिल] मलय पर्वत से आने वाली शीतल वायु, बयार।

मळयालम–पु० १ भारत का केरल प्रान्त। २ इस प्रान्त की भाषा।

मळयाळी–पु० मलयालम में बसने वाली एक जाति विशेष।

मलयुज–देखो 'मलयद्र'।

मळरोधक–वि० कब्ज करने वाला।

मलवरक–पु० एक प्राचीन कर।

मलविद्या–स्त्री० मल्ल विद्या।

मळसाणो (वो)–क्रि० चिढ़ना, तुनकना, झल्लाना।

मलांण–पु० १ वाहन, सवारी। २ देखो 'म्लांन'।

मलांणि (णी)–देखो 'मालांणी'।

मळाई–स्त्री० १ गर्म दूध या दही पर जमने वाली परत जिसमें घी अधिक होता है। दूध की साढ़ी। २ सार भाग, मुख्य तत्व। ३ मलने की क्रिया या भाव। ४ उक्त कार्य की मजदूरी। ५ देखो 'मिलाई'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मलाकरसी–पु० [सं० मलाकर्षिन्] १ भंगी, महत्तर, हरिजन। २ कूड़ा-कचरा साफ करने वाला।

मलाका–स्त्री० [सं०] १कामातुर स्त्री। २ दूती। ३ वेश्या, रंडी। ४ मादा हस्ती, हथिनी।

मलाखा–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मलाखी–वि० अज्ञानी, मूर्ख।

मलाखू–वि० ऐंचाताना।

मलागरी,मलागिरी–१ देखो 'मलयागिरी'। २ देखो 'मळयगिरि'।

मलाजमत–देखो 'मुलाजमत'।

मलाणी (बी)–देखो 'मल्हाणी' (बी)।

मलापणी (बी)–देखो 'मलाफणी' (बी)।

मळाफ–देखो 'मलफ'।

मळाफणी (बी)–क्रि० १ छलांग लगाना, उछलना, कूदना। फांदना। २ झूमते हुए चलना, झूमना। ३ मंद गति से मस्ती में चलना। ४ उड़ान भरना, उड़ना। ५ प्रयाण करना, चलना। ६ दौडना, भागना।

मलाबार–पु० भारत के दक्षिण का एक प्रान्त।

मलार–स्त्री० वर्षा ऋतु का एक राग।

मलारि, मलारी–स्त्री०वसंत ऋतु की रागिनी। –वि० १ मलार का, मलार संबंधी। २ आनन्द देने वाला।

मलाल–पु० [अ०] १ दुःख, रंज। २ पश्चाताप, अफसोस, उदासी। ३ कष्ट, तकलीफ। ४ रंग विशेष का घोड़ा।

मलाशय–पु० मल का स्थान, मलाशय।

मलि–देखो 'मैल'।

मलिक–पु० [अ०] (स्त्री० मलिका) १.बादशाह, सम्राट। २ शासक, अधीश्वर। ३ शाही दरबार की एक उपाधि।

मलिका–स्त्री० [अ०मलिकः] १ बादशाह की बेगम, साम्राज्ञी। २ रानी, महारानी। ३ देखो 'मल्लिका'।

मलिच्छ–देखो 'मलेच्छ'।

मलिन–पु० [सं०] १ अपराध, गुनाह। २ दोष, अवगुण। ३ रत्नों का एक दोष। ४ मट्ठा, तक्र। ५ सीहागा। ६ चन्दन, अगर। ७ गौ का ताजा दूध। ८ हंस। ९ दस्ता, मूठ, हत्था। १० नखरा। —वि० १ मल से युक्त, मैला, गंदा। २ अपवित्र, अशुद्ध। ३ दिल का काला, पापात्मा। ४ नीच, दुष्कर्मी। ५ कान्तिहीन, श्रीहीन, मंद, धीमा। ६ धुंधला। ७ उदास, म्लान। ८ दोष युक्त, दोषी।

मलिनता, मलिनाई–स्त्री० १ मलिन होने की दशा, अवस्था या भाव। २ गंदगी, मैल। ३ अपवित्रता। ४ उदासी। ५ फीकापन। ६ कालापन। ७ दोष, ऐब, खराबी। ८ पाप।

मलियागर (गरि, गरी, गिर, गिरि, गिरी)–देखो 'मळयगिरि'।

मलियाचळ–देखो 'मळयाचळ'।

मलियातर–देखो 'मलैतर'।

मलियेच–देखो 'मलेच्छ'।

मलियौ–पु० १ बंदर। २ देखो 'मल्लो'।

मली–स्त्री० १ जस्ते का फूला, एक औषधि। २ आफत, बला।

मली–स्त्री० १ ऊन भरने का बोरा। २ बला, आफत।

मलीआगिर (गिरि, गिरी)–देखो 'मलयागिरि'।

मळीच–देखो 'मळेच्छ'।

मळीची–पु० एक प्रकार का घास व इस घास के बीज।

मळीजी–स्त्री० आफत, बलाय।

मलीण–देखो 'मलिन'।

मलीणपुहकर–पु० चन्द्रमा।

मलीदो–पु० [फा० मलीद] १ चूरमा नामक खाद्य पदार्थ। २ विशिष्ट खाद्य पदार्थ, पकवान।

मलीन–देखो 'मलिन'।

मलीनमुख–वि० खिन्न चित्त, उदास।

मलीमलुच–देखो 'मलमुलच'।

मलीमस–पु० १ लोहा। २ पाप। ३ मलिन, मैला।

मळीयागर–देखो 'मळयगिरि'।

मलीर–पु० एक वस्त्र विशेष।

मलुक, मलूक–पु० [अ० मुलूक] १ युवक। २ बादशाह, राजा। ३ घोड़ा, अश्व। ४ बन्दर। ५ पुष्प, फूल। ६ एक प्रकार का पक्षी। ७ एक प्रकार का कीड़ा। ८ उदर, पेट। ९ एक बहुत बड़ी संख्या। –वि० १ कोमल, मुलायम। २ सुन्दर, मनोहर। ३ नाजुक, सुकुमार।

मलूकजादो–पु० शाहजादा, राजकुमार।

मलूकी–पु० हरिण्य कश्यप का वेश बनाने वाला व्यक्ति।

मलेच्छ, मलेछ–पु० [सं० म्लेच्छ] (स्त्री० मलेच्छणी, मलेछणी) १ भारतीय समाज की कोई शूद्र जाति या वर्ग। २ इस जाति का व्यक्ति। ३ यवन। ४ तांबा। ५ जंगली जातियों की बोली विशेष। ६ एक भाषा विशेष। –वि० १ निकृष्ट, नीच। २ गंदा, मैला। ३ अस्पष्ट बोलने वाला। ४ अनार्य। ५ जाति बहिष्कृत।

मलेछणी–वि० १ यवनों की। २ म्लेच्छों की; म्लेच्छ संबंधी।

मलेछमुख–पु० तांबा धातु।

मळै–देखो 'मळय'।

मळैअद्र–देखो 'मलयगिरि'।

मळैगिर (गिरि, गिरी)–देखो 'मळयगिरि'।

मळैतर, मळैतरि, मळैतर–पु० [सं० मलय तरु] चंदन का वृक्ष व इस वृक्ष की लकड़ी।

मळैयंद–देखो 'मलय'।

मलोमली–क्रि० वि० जबरदस्ती, बलात्।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मल्ली–पु० एक प्रकार की कंटीली झाड़ी ।

मल्ल–पु० [सं०] १ एक प्रचीन जाति । २ द्वन्द्व युद्ध करने वाला योद्धा । ३ द्वन्द्व युद्ध । ४ योद्धा, वीर, बहादुर । ५ पहलवान । ६ एक संकर जाति । ७ एक प्राचीन जन पद । ८ शक्तिशाली व्यक्ति । ९ प्याला, कटोरा । १० कपोल, कनपटी । ११ नैवेद्य । १२ श्रीराम के मंत्री सुज्ञ का पुत्र । १३ धर्म के सात पुत्रों में से एक । १४ एक राक्षस । –वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ मजबूत, दृढ़ । ३ कसरती । ४ रौबीला । ५ अच्छा, उत्तम ।

मल्लक–पु० एक व्यावसायिक जाति ।

मल्लजुद्ध (जुध्ध, जुद्ध)–देखो 'मल्लयुद्ध' ।

मल्लणो (बो)–१ देखो 'मलणो' (बो) । २ देखो 'मिलणो' (बो) ।

मल्लताळ–स्त्री० संगीत की एक ताल ।

मल्लभूमि–स्त्री० [सं०] १ मल्ल युद्ध की भूमि, युद्ध भूमि । २ कुश्ती का मैदान, अखाड़ा ।

मल्लयुद्ध–पु० [सं०] १ दो योद्धाओं का द्वन्द्व युद्ध । २ कुश्ती ।

मल्लयोद्ध (योद्धा)–पु० [सं०] द्वन्द्व युद्ध करने वाला योद्धा ।

मल्लविद्या–स्त्री० [सं०] कुश्ती की कला ।

मल्लसाळा–स्त्री० [सं० मल्लशाला] १ मल्ल युद्ध करने का स्थान । २ कुश्ती लड़ने का स्थान, अखाड़ा ।

मल्लाखाड़ो–पु० पहलवानों का अखाड़ा ।

मल्लारि–पु० [सं० मल्ल+अरि] 'मल्ल' नामक असुर के शत्रु श्रीकृष्ण, शिव ।

मल्लारी–स्त्री० वसंत ऋतु की एक रागिनी ।

मल्लाह–पु० [अ०] नाविक, धीवर, केवट ।

मल्लि–पु० जैनियों के एक तीर्थंकर ।

मल्लिक–पु० [सं०] एक प्रकार का हंस ।

मल्लिका–स्त्री० १ एक छंद विशेष । २ चमेली । ३ एक प्रकार का बेला ।

मल्लिकाक्ष–पु० [सं० मल्लिकाअक्षि] १ एक प्रकार का घोड़ा जिसकी आंखों में सफेद धब्बे होते हैं । २ उक्त प्रकार के सफेद धब्बे । ३ एक प्रकार का हंस ।

मल्लिकामोद–पु० ताल का एक भेद ।

मल्लिकार्जुन–पु० [सं० मल्लिकार्जुन] १ श्रीशैल पर प्रतिष्ठित एक शिव लिंग । २ एक राजा का नाम ।

मल्लिजिन (नाथ)–पु० जैनियों के तीर्थंकर ।

मल्लिवाल–पु० एक देश का नाम

मल्लीत–देखो 'मसलत' ।

मल्लूक–देखो 'मलूक' ।

मल्लो–पु० १ व्यायाम के लिये उठाने का पत्थर । २ उक्त पत्थर से किया जाने वाला व्यायाम । –वि० १ मस्त, मतवाला । २ केवल खाने-पीने की गरज वाला मित्र ।

मल्हको–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।

मल्हणो (बो)–देखो 'माल्हणो' (बो) ।

मल्हप्पणो (बो), मल्हप्पणो (बो)–देखो 'मलप्पणो' (बो) ।

मल्हम–देखो 'मलम' ।

मल्हांण–पु० पड़ाव ।

मल्हाणो (बो)–पु० १ मस्ती में झूमना, झूमते हुए चलना । २ अस्त-व्यस्त करना । ३ नाश करना, विध्वंस करना । ४ मलार राग गाना, अलापना ।

मल्हार–वि० १ प्यारा, प्रिय । २ देखो 'मलार' ।

मल्हारणो (बो)–क्रि० १ 'मल्हार' राग गाना । २ सुमिरन करना, भक्ति करना ।

मल्हावियो–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

मवइ–स्त्री० मनौती ।

मवकिल–पु० [अ० मुवक्किल] १ किसी वकील का आसामी । २ देवता, फरिश्ता । ३ अपना कार्य किसी अन्य को सौंपने वाला व्यक्ति ।

मवक्ष–पु० पाडल नामक वृक्ष ।

मवड़–१ देखो 'मौर' । २ देखो 'मौड़' । ३ देखो 'माता' ।

मवड़ी–देखो 'मोड़ी' ।

मवजूद–देखो 'मौजूद' ।

मवताहळ–देखो 'मुक्ताहल' ।

मवर–देखो 'मौर' ।

मवरणो (बो)–देखो 'मौरणो' (बो) ।

मवरात–स्त्री० पुण्य ।

मवरित–देखो 'मौरियोड़ी' ।

मवसर–देखो 'मौसर' ।

मवसी–१ देखो 'मौसी' । २ देखो 'मवेसी' ।

मवाद–पु० [अ०] १ घाव से बहने वाला पीप । २ सामग्री, सामान । ३ मसाला । ४ प्रमाण ।

मवेसो–पु० [अ० मवेशी] पशु धन, गाय, भैंस, आदि । —खानो–पु० पशुओं को रखने का स्थान । पवारा पशुओं को रखने का स्थान ।

मसंजर–पु० एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र ।

मसंत–देखो 'मस्त' ।

मसंद–पु० १ सामंत । २ राजा । ३ देखो 'मसनद' ।

मसंदो–वि० १ सामन्तों की । २ देखो 'मसनदी' ।

मसंध–पु० सीमा, हद ।

मस–पु० [सं० मश] १ मच्छर, बांस । २ गुनगुनाहट । ३ क्रोध । [सं० मस:] ४ एक प्रकार तौल । [सं० मशक] ५ शरीर पर होने वाला दाग, दाना । मस्सा । ६ घोड़े

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या बैल आदि का रोग विशेष। [सं० श्मश्रु] ७ मूंछ के बाल। ८ देखो 'मस्सी'। ९ देखो 'मिस'।

मसउ, मसक–पु० [सं० मशक] १ मच्छर, डांस। २ भिश्तियों द्वारा पानी ढोने का, चमड़े का थैला। ३ कलाई। ४ दोनों हाथों को पीठ पीछे बांधने की क्रिया। ५ मजबूती से बांधने की क्रिया या भाव। ६ मसकने की क्रिया या भाव।

मसकणी (नी)–क्रि० सरकना, पसरना, फैलना।

मसकत–स्त्री० [अ० मशक्कत] १ मेहनत, मजदूरी, श्रम। २ श्रमसाध्य कार्य, परिश्रम। ३ सेवा, चाकरी, नौकरी। ४ योग्यता।

मसकर–पु० [सं० मस्कर] १ बांस। २ ज्ञान। ३ वंशी, बांसुरी। ४ गति, चाल। ५ पोपली या पोथ वाली लकड़ी।

मसकरि, मसकरी–देखो 'मसखरी'।

मसकरी–देखो 'मसखरी'।

मसकली–पु० छुरी, चाकू आदि पर धार देने का पत्थर।

मसकित–देखो 'मसकत'।

मसकी–स्त्री० [सं०] गूलर। –वि० मशक से पानी भरने या ढोने वाला।

मसकीन–वि० [अ० मिस्की] १ प्रार्थी, विनीत, विनम्र। २ दीन, असहाय, दरिद्र, गरीब। ३ सरल, सीधा-सादा। ४ भिखारी। ५ त्यागी, विरक्त।

मसक्कत–देखो 'मसकत'।

मसक्की–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

मसखरी–स्त्री० [अ० मस्खरः] १ हंसी-मजाक, दिल्लगी। २ किसी का उपहास। ३ अवहेलना, बेइज्जती।

मसखरो–वि० [अ० मस्खरः] हंसी, दिल्लगी, उपहास करने वाला। –पु० १ मजाकी स्वभाव का व्यक्ति। २ हास्य अभिनेता। ३ विदूषक।

मसग–पु० १ एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र। २ देखो 'मसक'।

मसगूल–वि० [अ० मशगूल] १ व्यस्त, लीन। २ किसी कार्य में संलग्न, प्रयत्नशील।

मसजिद–स्त्री० [अ० मस्जिद] मुसलमानों का नमाज पढ़ने का मन्दिर, भवन।

मसज्जर–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मसट (ट्ट), मसठ–वि० [सं० मष्ठ] १ चुप, मौन। २ संस्कार शून्य। ३ भूला हुआ। ४ ध्वस्त, नष्ट।

मसत–देखो 'मस्त'।

मसतक (क्क, ग)–देखो 'मस्तक'।

मसतफी, मसतफा–पु० [अ० मुस्तफा] १ मोहम्मद साहब की एक उपाधि। २ पवित्र आत्मा, सत्पुरुष। –वि० १ शुद्ध, पवित्र, निर्मल। २ अवगुण रहित।

मसताक–वि० [अ० मुश्ताक] उत्कंठित, उत्सुक।

मसतान–देखो 'मस्त'।

मसताक–देखो 'मुस्ताक'।

मसती–देखो 'मस्ती'।

मसनद, मसनद–पु० [अ०मस्नद] १ गद्दी, तकिया की बिछायत। २ बड़ा तकिया ३ बड़ा तकिया लगाने का स्थान। —नशीन–वि० गद्दे तकियों पर बैठने वाला। अमीर।

मसनदी–वि० जहां मसनद लगे हों।

मसपूरक–स्त्री० हड्डी, अस्थि।

मसर-मसर–क्रि० वि० धीमी गति से। धीरे-धीरे।

मसरी–देखो 'मिसरी'।

मसरु, मसरू–पु० [अ० मशरूअ] १ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। २ रेशम व सूत का बना वस्त्र।

मसल–स्त्री० [अ०] १ कहावत, लोकोक्ति, मिसाल। २ समानता तुल्यता। ३ विषय, प्रसंग। ४ सलाह, परामर्श। ५ देखो 'मिसल'। ६ देखो 'मिसिल'।

मसलणी (नी)–क्रि० १ दोनों हाथों को परस्पर रगड़ना, मलना। २ दबाकर रगड़ना, दबाकर हिलाना। ३ जोर से दबाना, गूंदना। ४ दबाव देकर पेस देना, मार देना, नष्ट कर देना। ५ मर्दन करना।

मसलत, मसलति (ती, त्त, त्ती) मसलहत–स्त्री० [अ० मसलहत] १ परामर्श, सलाह, मशविरा। २ गुप्त परामर्श, गोपनीय वार्त्ता। ३ विचार-विमर्श, वार्त्तालाप। ४ ऐसी युक्ति जो सहज में जानी जासके। ५ भेद, रहस्य। ६ उल्लेख, वर्णन। ७ विचार, मंशा, आशय।

मसलाणी (नी)–क्रि० १ दोनों हाथों को परस्पर रगड़ाना, मलाना। २ दबा कर रगड़ाना, दबाकर हिलवाना। ३ जोर से दबवाना, हिलवाना। ४ मरवाना, पिसवाना, नष्ट कराना। ५ मर्दन कराना।

मसलि–१ देखो 'मिसल'। २ देखो 'मिसिल'। ३ देखो 'मसल'।

मसली–पु० १ व्यंग, ताना। २ समस्या, उलझन। ३ लोकोक्ति, कहावत। ४ परामर्श। ५ विषय, प्रसंग।

मसल्ल–देखो 'मसल', 'मिसल', 'मिसिल'।

मसवाड–पु० १ मासिक वृत्ति, वेतन। २ देखो 'मास'।

मसवाडि–क्रि० वि० मास में।

मसवाडी–देखो 'मास'।

मसवासि, मसवासी– पु० [सं० मासवासी] (स्त्री० मसवासिणी) एक ही स्थान पर एक मास तक रहने वाला वैरागी।

मसवासिणि, मसवासिणी–स्त्री० १ वेश्या, रण्डी। २ मासवासी।

मसविदौ–पु० [अ०मसविदः] १ किसी पत्र या लेख का प्रारूप। पांडुलिपि। २ किसी कार्य की भूमिका।

मसविरी–पु० [अ० मशविरा] विचार-विमर्श, परामर्श, सलाह।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मसहब–पु० मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान ।

मसहूर–वि० [अ० मशहूर] प्रसिद्ध, प्रख्यात, विख्यात ।

मसां–क्रि० वि० मुश्किल से, कठिनता से ।

मसाण–पु० [सं० श्मशान] १ मृतक का दाह संस्कार करने का स्थान, मरघट । २ मरघट की तरह लगने वाला स्थान या मकान । ३ युद्ध भूमि, रणस्थल । ४ भूत-पिशाचों के लिये प्रयुक्त स्थान । –वि० अतिवृद्ध । —खंभ–पु० श्मशान भूमि में खड़ा स्तंभ । —भोम–पु० श्मशान भूमि । —वासी–पु० शिव, महादेव । भूत-प्रेत । साधु, संन्यासी, फक्कड़ ।

मसांणियो–वि० [सं० श्मशान] श्मशान का, श्मशान संबंधी । –पु० १ श्मशानों में रहने वाला साधु या व्यक्ति । २ भूत प्रेत आदि । ३ जोगियो का एक भेद । —वैराग–पु० श्मशान के वातावरण से होने वाला अल्प-कालीन वैराग्य ।

मसांणी–स्त्री० [सं० श्मशान] प्रेतनी, पिशाचिनी ।

मसांणो, मसांन–देखो 'मसाण' ।

मसा–पु० [सं० मशक] मच्छर ।

मसारगल्ल, मसारी–पु० एक प्रकार का रत्न विशेष ।

मसाल, मसाल–स्त्री० [अ० मशाल] पुराने समय की एक बड़ी चिराग, बत्ती ।

मसालची–पु० १ मशाल जलाने वाला व्यक्ति । २ मसाल लेकर चलने वाला अनुचर, सेवक । ३ रसोईघर में मसाले पीसने वाला नौकर ।

मसाली, मसालेदार–वि० जिसमें मसाले मिले हों, चटपटा । –पु० अच्छे मसालों वाला व्यंजन, भोजन ।

मसालो–पु० [फा० मसालह] १ शाक-सब्जी आदि में पड़ने वाला मिरच, नमक आदि । २ मेवा, मिश्री आदि खाद्य पदार्थ । ३ औषधियों व रासायनिक पदार्थों का मिश्रण । ४ विशिष्ट वस्तु तैयार करने के लिये काम में ली जाने वाली वस्तुएँ । ५ साधन-सामग्री ।

मसाहणी–पु० [सं महासाधनिक] १ घुड़शाला का अधिकारी । २ घोड़ों को प्रशिक्षण देने वाला । –वि० श्मशान में तंत्र साधना करने वाला ।

मसि–स्त्री० [सं०] १ काली स्याही । २ स्याही । ३ कालिख, कालिमा । ४ काजल । ५ अंधेरा । ६ निर्गुंडी का फल । ७ कृष्ण वर्ण । काला रंग । ८ देखो 'मिस' । ९ देखो 'मिस्सी' ।

मसिबिंदु–पु० [सं०] काजल का छोटा टीका ।

मसिसत–देखो 'मसलत' ।

मसी–स्त्री० १ ऊंट, हाथी आदि पशुओं के झरने वाला मद । २ देखो 'मसि' । ३ 'मिस्सी' ।

मसीजणी–पु० मसिपात्र, दवात ।

मसीत, मसीति, मसीद–देखो 'मसजिद' ।

मसीन–स्त्री० [अं० मशीन] यंत्र, कल ।

मसीह, मसीहा–पु० [अ०] १ ईसाइयों के धर्म गुरु । २ ईसा का एक नाम ।

मसु–पु० [सं० मशक] मच्छर ।

मसुरी–देखो 'मसनद' ।

मसूड़ो मसूढ़–पु० [सं० श्मश्रु] मुंह का वह भाग जिसमें दांतों की जड़ें रहती हैं ।

मसूबो–देखो 'मसविदो' ।

मसूर–पु० [सं० मसुरः] १ एक प्रकार का द्विदल अन्न । २ देखो 'मसहूर' ।

मसूरति–स्त्री० सलाह, विचार, परामर्श ।

मसूरि–देखो 'मसूर' ।

मसूरिक–पु० एक कर्मचारी विशेष ।

मसूरिका–स्त्री० [सं०] १ मसूर के दाने जैसी चेचक । २ दूती ।

मसूरिया, मसूरीया–वि० तकिया रखकर चलने वाला ।

मसूरियो–पु० १ जोधपुर का एक स्थान । २ स्त्रियों के पाँव का आभूषण विशेष ।

मसूस–स्त्री० १ मन मसोसने की क्रिया या भाव । २ देखो 'महसूस' ।

मसोड़, मसोड़ि–स्त्री० सर्दी में, रजाई के अन्दर ओढ़ा जाने वाला वस्त्र, सोड़ ।

मसोड़ो–देखो 'मसूड़ो' ।

मसोतो–पु० १ रसोईघर में, रूमाल की तरह काम आने वाला वस्त्र । २ गन्ने का रस बनाने में काम आने वाला एक डंडा विशेष ।

मसोदो–१ देखो 'मसविदो' । २ देखो 'मसोतो' ।

मसोसणो (बो)–क्रि० १ सांस रोक कर मारना, समाप्त करना । २ मन की इच्छा या आवेश को बलात् दबाना, रोकना । ३ कुण्ठित होना, कुढना । ४ ऐंठना, मरोड़ना । ५ तंग या परेशान करना । ६ निचोड़ना ।

मसो–पु० [सं० मशक] १ मच्छर । २ देखो 'मस्सो' ।

मसोदेबाज–वि० १ अच्छी युक्ति करने वाला । २ मसविदा बनाने वाला । ३ धूर्त, चालाक, दुष्ट ।

मसोदो–१ देखो 'मसविदो' । २ देखो 'मसोतो' ।

मस्कोरणो (बो)–क्रि० १ बिगाड़ना, विकृत करना । २ मुंह बिगाड़ना ।

मस्जिद–देखो 'मसजिद' ।

मस्तंगो–१ देखो 'मस्त' । २ देखो 'मस्तगी' ।

मस्त–वि० [फा०] १ मतवाला, उन्मत्त । २ मदोन्मत्त, नशे में चूर । ३ मौज या मस्ती से परिपूर्ण । ४ बेपरवाह,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निश्चित। ५ खुश मिजाज, प्रसन्न रहने वाला। ६ अच्छी अनुभूति में मग्न। ७ जो अपने में लीन हो, अपने हाल से संतुष्ट। ८ किसी कार्य में लीन, संलग्न, रमा हुआ। ९ अनुरक्त, मोहित। १० यौवन में परिपूर्ण। ११ अभिमानी, गर्वीला। १२ भयंकर। १३ खिलाड़ी, रसिक। १४ पागल।

मस्तक, मस्तकु, मस्तक्क, मस्तग–पु० [सं० मस्तक] १ सिर, माथा, मुण्ड। २ भाग्य, तकदीर। ३ शिखर, चोटी।

मस्तगि, मस्तगी–पु० १ एक प्रकार का बढ़िया गूंद। २ देखो 'मस्तक'।

मस्तांन, मस्तांनि, मस्तांनी–वि० १ जो मस्ती में हो, मस्त, मदोन्मत्त। २ देखो 'मस्ती'।

मस्तांनो–वि० [फा० मस्तानः] (स्त्री० मस्तांनी) १ मस्तों की तरह का, मस्त, उन्मत्त। २ पागल। ३ मोटा, ताजा, तगड़ा।

मस्ताई–देखो 'मस्ती'।

मस्ताणो (णी)–क्रि० १ मस्त होना, उन्मत्त होना। २ पागल होना। ३ मुग्ध होना। ४ मोटा-ताजा होना। ५ मस्ती में झूमना। ६ मस्त करना, मस्ती में लाना। ७ मोहित करना मोहना।

मस्तिकि–देखो 'मस्तक'।

मस्ती–स्त्री० [फा०] १ मस्त होने की अवस्था या भाव। २ उन्मत्तावस्था, मतवालापन, उन्माद। ३ खुशी, आनन्द। ४ नशा। ५ संभोग की प्रबल इच्छा, काम-वेग। ६ शैतानी बदमाशी। ७ लापरवाही, निश्चितता। ७ पशुओं, वृक्षों आदि का रस स्राव। ९ ईश्वर उपासना में लीनता। १० मुग्धावस्था।

मस्तु–पु० [सं० मस्+तुन्] १ दही का पानी। २ फटे दूध का पानी।

मस्तूल–पु० [पुर्त०] नाव के बीच का बड़ा खंभा।

मस्थ–देखो 'मस्त'।

मस्स–देखो 'मसल'।

मस्सा–देखो 'मसा'।

मस्सी–१ देखो 'मसि'। २ देखो 'मिस्सी'।

मस्सो–पु० १ अर्श रोग। २ देखो 'मस'।

महं–देखो 'महा'।

महकणो (णी)–देखो 'महकणी' (णी)।

महगाई–देखो 'मूंगाई'।

महंगो–देखो 'मूंगो'।

महंत–पु० [सं०] १ किसी सम्प्रदाय का आचार्य, प्रधान साधु। २ सम्प्रदाय के किसी मठ का अधिष्ठाता, मठाधीश। ३ गुरु परंपरा में गद्दीधारी व्यक्ति। ४ ब्राह्मण, पंडित। –वि० प्रधान, मुखिया।

महंतमोह–पु० महामोह।

महतर–देखो 'महत्तर'।

महताई, महंति, महती–स्त्री० १ महंत होने की अवस्था या भाव। २ महंत के अधिकार। ३ महंत का पद।

महंथी–देखो 'मैंदी'।

महंमाई, महंमाय–देखो 'महामाया'।

मह–पु० [सं०] १ उत्सव, जुलूस। २ उत्साह, खुशी। ३ नैवेद्य, भेंट। ४ यज्ञ, हवन। ५ बलिदान, उत्सर्ग। ६ भैंसा। –स्त्री० ७ आभा, दीप्ति, चमक। –वि० मधुर, मीठा। –सर्व० [सं० अहम्] १ मैं, मेरा। २ देखो 'मही'।

महकंध–स्त्री० सुगंध, खुशबू, सौरभ। –वि० बड़े-बड़े कंधों वाला।

महक–स्त्री० १ सुगंध, सुवास, खुशबू, सौरभ। २ गंध, वास।

महकणी (णो)–क्रि० १ सुगंधित होना, सुवासित होना। २ गंध देना। ३ बोलना, कुहकना।

महकदार–वि० जिसमें खुशबू या सौरभ हो।

महकम–वि० [अ० महकूम] अधीन।

महकमो–पु० [अ० महकमः] १ अदालत, न्यायालय। २ विभाग, कार्यालय।

महकाणो (णी)–क्रि० १ सुगंधित या सुवासित करना। २ गंध युक्त करना। ३ बोलाना, कुहकाना।

महकाळी–देखो 'महाकाळी'।

महकासुर–देखो 'महिखासुर'।

महकी–देखो 'महिसी'।

महकीलो–वि० महकने वाला, खुशबूदार।

महक्कणी (णी)–देखो 'महकणी' (णी)।

महक्कत–देखो 'महाक्कत'।

महख, महखी–देखो 'महिस'।

महखि (खी)–देखो 'महिसी'।

महगळ (ल)–देखो 'मदकळ'।

महग्घ–वि० [सं० महार्घ्य] मूल्यवान, कीमती।

महइ–पु० गृहस्वामी (मेवात)।

महई–स्त्री० १ स्नाघ्य। २ गृहस्वामिनी (मेवात)।

महचक्क–पु० [सं० महस्चक्र] १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ प्रकाश का गोला।

महज–वि० [अ०] १ केवल, सिर्फ, मात्र। २ निर्मल, खालिस, शुद्ध। ३ निरा, अत्यल्प।

महजरनामो–देखो 'मेजरनामो'।

महजित, महजिद, महजीत, महजीद–देखो 'मसजिद'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महज्जुई–पु० [सं० महाद्युति] तेज प्रकाश, आभा, कान्ति।

महण–पु० [सं० महार्णव] १ महासागर, समुद्र। २ ईश्वर। ३ डिंगल का एक छन्द। —**मथ, मथ**–पु० विष्णु। –वि० महा शक्तिशाली।

महणमह–पु० ईश्वर, परमेश्वर।

महणारथ–पु० समुद्र।

महणि, महणी–१ देखो 'महण'। २ देखो 'मैणी'।

महणी–देखो 'मैणी'।

महण्णव–देखो 'महारणव'।

महत–वि० [स० महत्] १ महान्, श्रेष्ठ। २ विशाल, भीमकाय बड़ा, मोटा। ३ लंबा, चौड़ा, विस्तृत। ४ पर्याप्त, विपुल। ५ अत्यधिक, बहुत। ६ दृढ़, मजबूत। ७ ताकतवर, बलवान। ८ उग्र, प्रचड, तेज। ९ गाढ़ा, घना। १० आवश्यक, महत्वपूर्ण। ११ प्रसिद्ध, प्रख्यात। १२ उच्चकुलीन, सवर्ण। –पु० [सं० महत्व] १ आदर, मान, सम्मान। २ बड़प्पन, बड़ाई। ३ अनन्तता, अखंडता। ४ असंख्य होने की दशा। ५ राज्य, शासन। ६ प्रकृति का मूल तत्त्व। ७ ब्रह्म। ८ शिव। ९ जल, पानी। १० पवित्र ज्ञान। ११ ऊंट। १२ देखो 'महत्त्व'।

महतउ–१ देखो 'महत्व'। २ देखो 'महत्ता'।

महतकळायण, महकिलाण–स्त्री० १ बादल, मेघ। २ घन-घटा।

महतगुणा–पु० [सं० महागुण] हंस।

महतर–देखो 'महत्तर'।

महतरत्व–देखो 'महत्तत्व'।

महता–पु० [सं० महत्तर] १ राजा या किसी रईस के राज्य या जागीर का प्रबंधक। २ मुख्य या प्रधान व्यक्ति। ३ देखो 'महत्ता'।

महताप (ब)–पु० [फा०] १ चन्द्रमा। –स्त्री० २ चांद की चांदनी, चंद्रिका। ३ अग्नि। ४ रोशनी, चिराग, मोमबत्ती। ५ एक प्रकार की आतिशबाजी। ६ जहाज पर रात में लगाई जाने वाली एक रोशनी।

महताबी–वि० [फा०] १ 'महताब' का, महताब सम्बन्धी। २ 'महताब' की तरह चमकने वाला। –पु० १ सोने, चांदी आदि के चमकीले तारों का बना वस्त्र, जरबफ्त २ आतिशबाजी विशेष।

महतारी–स्त्री० [सं० माता] जननी, मां, माता।

महतिजसुर–पु० [सं० महतोजसुर] स्वामिकार्त्तिकेय।

महती–स्त्री० १ मंत्री, अमात्य या महामात्य की स्त्री। २ मुखिया या प्रधान की स्त्री। ३ नारद की वीणा का नाम। –वि० विशाल, दीर्घाकार।

महतीद्वादसी–स्त्री० [सं०] भाद्रपद शुक्ला द्वादशी तिथि जो श्रवण नक्षत्र में पड़े।

महतु–देखो 'महता'।

महत्तत्त्व–पु० [सं०] १ प्रकृति का विकार। मूलतत्त्व। २ पच्चीस तत्त्वों में से तीसरा तत्त्व।

महत्तम–वि० [सं०] १ सब से बड़ा। २ सब से ऊंचा, सर्व श्रेष्ठ। ३ सब से अधिक।

महत्तर–पु० [स०] १ सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति। २ मुख्य या प्रधान व्यक्ति। ३ गांव का मुखिया या बड़ा बूढ़ा। ४ राज्य या बड़ी जागीर का प्रबंधक। ५ भंगी या हरिजन का एक संबोधन।

महत्ता–स्त्री० १ बड़ाई, विशेषता, महत्व। २ सम्मान, आदर। ३ बड़प्पन। ४ देखो 'महता'।

महत्पुरुस–पु० [सं० महत्पुरुष] १ पुरुषोत्तम। २ महापुरुष।

महत्व–पु० १ महान होने की अवस्था या भाव। २ विशेषता खासियत। ३ विशालता, गुरुता।

महद– वि० १ उत्साहवर्द्धक। २ महान्, बड़ा। ३ विशाल।

महदालय–पु० आकाश, आसमान, नभ।

महदी–पु० [अ०] १ ठीक रास्ते पर चलने वाला। २ शीया मुसलमानों का धर्म गुरु। ३ शीया सम्प्रदाय के २२वें इमाम। ४ देखो 'मेंदी'। ५ देखो 'मैंदी'। –वि० दीक्षा प्राप्त, दीक्षित।

महदीप–देखो 'महद्वीप'।

महनत, महन्नत–देखो 'मैंनत'।

महनौ–देखो 'महिनो'

महपत, महपति, महपती, महपत्ति, महपत्नी–देखो 'महीपति'।

महपसमी–पु० [स० महत्+फा० पश्मी] बढ़िया ऊन का बना वस्त्र।

महपाळ–देखो 'महिपाळ'।

महपिता–देखो 'पितामह'।

महपुर–पु० [सं० महिपुर] भू-लोक, पृथ्वीलोक।

महफिल–स्त्री० [अ०] मजलिस, सभा, गोष्ठी।

महबदी–स्त्री० प्रेयसी, प्रेमिका, महबूबा।

महबर–पु० एक प्राचीन देश।

महबळी–देखो 'महाबळी'।

महबुब, महबूब–वि० [अ० महबूब] (स्त्री० महबूबा) १ अत्यधिक प्यारा, प्रिय। २ आशिक, प्रेमी। ३ प्रेम करने योग्य। ४ रसिया, शौकीन। ५ खुश मिजाज।

महमंत–देखो 'मैमंत'।

महमंतौ–१ देखो 'मैमंतौ'। २ देखो 'मैमंत'।

महमंद–१ देखो 'मैमंद'। २ देखो 'मैमंत'।

महम–देखो 'मुहिम'।

महमद–१ देखो 'मुहम्मद'। २ देखो 'मैमंद'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महमह–क्रि०वि० खुशबू के साथ।

महमहण–पु० [सं० महार्णव] १ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। २ ईश्वर, परमेश्वर। ३ विष्णु। ४ समुद्र, सागर।

महमहणी (णो)–क्रि० १ महकना, खुशबू देना। २ गंध देना।

महमा–देखो 'महिमा'।

महमाण, महमान–देखो 'मैमांन'।

महमानी–देखो 'मैं 'मानी'।

महमा–देखो 'महिमा'।

महमाई, महमाय, महमाया–देखो 'महामाया'।

महमाहण–देखो 'महमहण'।

महमुंद, महमुद–१ देखो 'महमूद'। २ देखो 'मुहम्मद'।

महमुदी, महमूंदी–पु० [अ० मुहम्दी] १ एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र। २ देखो 'मुहम्मदी'।

महमूद–वि० [अ०] १ श्रेष्ठ, उत्तम। २ शुभ, अच्छा। ३ प्रशसनीय, प्रशंसित। ४ हृष्ट। –पु० एक प्रसिद्ध मुसलमान बादशाह।

महमूदी–देखो 'महमूंदी'।

महमोहण–देखो 'मदनमोहन'।

महम्मह–वि० सब से बड़ा, सर्वश्रेष्ठ, महान।

महम्मा–देखो 'महिमा'।

महरंभ, महरंभ–पु० १ परमात्मा, ईश्वर ब्रह्म। २ ज्ञान, बोध। ३ आत्मा। –वि० १ भेदी, जानकार। २ ज्ञानी, विवेकी, तत्त्वज्ञ। ३ पवित्र, शुद्ध।

महर–स्त्री० [फा० मेह्र] १ दया, कृपा, अनुग्रह। २ सहानुभूति, हमदर्दी। ३ ममता, प्यार। ४ करुणा। ५ सूर्य, सूरज। ६ गूजर, ग्वाला, अहीर। ७ मुसलमानों में की ओर से कन्या को दिया जाने वाला धन। ८ देखो 'महिर'। ९ देखो 'मुहर'।

महरघ–वि० [सं० महार्घ] १ बहुमूल्य, कीमती। २ महंगा, दुर्लभ्य।

महरघता–स्त्री० [सं०महार्घ्य] महंगा होने की अवस्था या भाव।

महरबान–देखो 'मैंरबांन'।

महरबानगी, महरबानी–देखो 'मैंरबांनी'।

महरम–पु० [अ०] १ रहस्य, भेद या मर्म। २ जो जनानखाने में जा सके। ३ अंतरंगमित्र, दोस्त। ४ भीतरी रहस्य से परिचित। ५ जानकारी।

महरलोक–पु०[सं०महर्लोक]सात उर्ध्व लोकों में से चौथा लोक।

महरली–वि० (स्त्री० महरली) भीतर या अन्दर का।

महरबांन–देखो 'मैंरबांन'।

महरबांनगी, महरबांनी–देखो 'मैंरबांनी'।

महरसि, महरसी–पु० [सं० महर्षि] १ ऋषियों में महान, श्रेष्ठ २ ऋषियों की एक पदवी।

महरांण, महरांणी–देखो 'महारणव'।

महरा–स्त्री० एक प्रकार की कहार जाति।

महराई–स्त्री० १ उक्त जाति का कार्य। २ अहीर होने का भाव।

महराबदार–देखो 'मेहराबदार'।

महरावण–देखो 'महारावण'।

महरि–देखो 'महर'।

महरिख, महरिसि–देखो 'महरसि'।

महरु–देखो 'महर'।

महरूम–वि० [अ० महरूम] १ निराश, नाउम्मेद। २ वंचित। ३ अभागा, बदकिस्मत। ४ असफल, नाकामयाब।

महल–देखो 'महिला'।

महल–पु० [अ० महल] १ मकान, घर। २ कोई बड़ा भवन या राज प्रासाद। ३ देवालय, मंदिर। ४ रनिवास, जनानखाना। ५ स्थान, जगह। ६ अवसर, मौका। ७ देखो 'महिला'।

महलखाड़–पु० [सं० काष्ठ+फा० महल] चिता।

महलगत–पु० राजभवन, भवन।

महलि (ली)–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिला'।

महलौ–देखो 'महल्लौ'।

महल्ल–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिला'।

महल्लक–पु० राज्य कर्मचारी।

महल्लकल्लिका, महल्लिका–स्त्री० राज्य कर्मचारिणी।

महल्लो–पु० [अ० महल्लः] मुहल्ला, गवाड़, बास।

महवर–स्त्री० [सं० महोवर] अग्नि।

महवीर–देखो 'महावीर'।

महसइं–पु० ब्रह्मा।

महसल–पु० सलाहकार।

महसाण–देखो 'मसांण'।

महसा, महसासुर–देखो 'महिमासुर'।

महसी–देखो 'महिसी'।

महसूल–पु० १ कर, लगान, चूंगी। २ किराया, भाड़ा।

महसूस–वि० अनुभूत, आभासित, समझा हुआ।

महसेन–पु० एक राजा का नाम।

महां–सर्व० १ हम। २ देखो 'मांय'।

महांण, महांन–वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम। २ विशाल, बड़ा। ३ अत्यन्त, बहुत। ४ देखो 'महारणव'।

महांनता–स्त्री० १ श्रेष्ठता, उत्तमता। २ विशालता। ३ अधिकता।

महा–वि० [सं०] १ अत्यन्त, अति, बहुत। २ सर्वोच्च, उच्चतम, सर्वोत्तम। ३ भयंकर, घोर। ४ बड़ा, महान। ५ वीर, बहादुर। –स्त्री० [सं० मातृ] १ गाय। २ देखो 'महां'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाअग–पु० [स०] ऊंट।
महाअहि–पु० शेषनाग।
महाअत्तर–देखो 'महावर'।
महाऔखधी, महाओखध–स्त्री० [सं० महौषधं] १ सर्व रोग हरण दवा। २ सोंठ। ३ लहसुन। ४ बत्सनाभ। [स० महा+ औषधि] ५ बड़ी गुणकारी दवा। ६ दूब, दूर्वा घास।
महाकत–पु० [सं० महाकांत] शिव, महादेव।
महाकंबु–पु० [सं० महाकम्बु] शिव, महादेव।
महाकच्छ–पु० [स० महाकच्छः] १ समुद्र। २ वरुण। ३ पर्वत। ४ कच्छ की खाड़ी।
महाकल्प–पु० [स०] ब्रह्मा की पूर्ण आयु के बराबर का समय।
महाकवि–पु० [स०] १ शुक्राचार्य। २ कोई बड़ा कवि।
महाकष्ट–पु० १ भयंकर विपत्ति, संकट। २ बड़ा रोग या पीड़ा।
महाकांत–पु० [स०] शिव, महादेव।
महाकांता–स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि।
महाकाय–पु० [स०] १ हाथी, गज। २ विष्णु। ३ शिव। ४ शिव का एक गण, नन्दी।
महाकार्त्तिकी–स्त्री० [सं० महाकार्त्तिकी] रोहिणी नक्षत्र की कार्त्तिक पूर्णिमा।
महाकाळ–पु० [स० महाकाल] १ शिव। २ शिव का एक गण। ३ शिव की एक प्रलयकारिणी प्रतिमा। ४ विष्णु। ५ भयंकर दुर्भिक्ष, अकाल। ६ कठिन समय। ७ एक नदी विशेष।
महाकाळी–स्त्री० [सं० महाकाली] १ महाकाल स्वरूप शिव की पत्नी। २ दुर्गा, शक्ति, पार्वती। ३ शक्ति की एक अनुचरी। ४ जैनियों की एक देवी।
महाकाव्य–पु० [सं०] १ आठ या अधिक सर्गों में रचित कोई प्रबंध काव्य। २ बड़ा काव्य।
महाकुमार–पु० [सं०] किसी राजा का बड़ा पुत्र, युवराज।
महाकुस्ट–पु० [स० महाकुष्ठ] एक प्रकार का कुष्ठ रोग।
महाकोट–पु० एक तीर्थ विशेष।
महाक्षेत्र–पु० [स०] एक तीर्थ विशेष।
महाकृत, महाकृत–पु० [सं० महाकृत्य] दान, पुण्य आदि शुभ कार्य।
महाखरब–पु० [सं० महाखर्व] सौ खरब की एक संख्या।
महागणपति–पु० गणेश, गजानन।
महागरिस्ठ–वि० १ अत्यधिक ठोस, ठस। २ अधिक वजनी, भारी। ३ जो आसानी से हजम न हो।
महागिड़–पु० १ वराह अवतार का एक नाम। २ बड़ा वराह, सूअर।
महागिरी–पु० १ हिमालय आदि बड़े पहाड़। २ कुबेर के आठ पुत्रों में से एक।
महागौरी–स्त्री० १ दुर्गा। २ पार्वती। ३ विंध्य पर्वत से निकलने वाली एक नदी। ४ आठ विशिष्ट देवियों में से एक।
महाग्यानी–पु० [सं० महाज्ञानिन्] १ शिव। २ बहुत बड़ा विद्वान।
महाग्रह–पु० [सं० महाग्रह] १ सूर्य। २ राहु।
महाग्रीव–पु० [सं०] १ शिव। २ ऊंट।
महाघण–पु० [सं० महाघन] प्रलय कालीन मेघ।
महाघणरूप–पु० [सं० महाघन रूप] विष्णु, ईश्वर।
महाघोस–पु० [सं० महाघोष] भारी शब्द। नाद।
महाघृत–पु० [सं० महा घृत] एक सौ ग्यारह वर्ष पुराना घी।
महाचंड–वि० [स] भयंकर, जबरदस्त।
महाचंडी–स्त्री० [सं०] दुर्गा।
महाचक्रवरती, महाचक्रवरती–पु० सम्राट।
महाचक्री–पु० विष्णु।
महाचतुर–वि० [स०] १ पंडित। २ चतुर, दक्ष। ३ सतर्क, सावधान।
महाचपला–स्त्री० आर्या छन्द का भेद।
महाचाई–वि० महात्यागी।
महाचीण–पु० एक देश का नाम।
महाछत्र–पु० बड़ा क्षत्रिय, शूरवीर।
महाजग–पु० भयंकर युद्ध।
महाजग्य–पु० विशाल व बड़ा यज्ञ।
महाजटियाळ, महाजटीयाळ–पु० १ महादेव, शिव। २ बड़ी जटावाला।
महाजत–पु० [सं० महायति] संयमी, यति।
महाजन–पु० [सं०] १ धनी व अमीर व्यक्ति। २ व्यापारी, बनिया। ३ गुणवान व चरित्रवान पुरुष। ४ साधु पुरुष। ५ व्यापारी वर्ग का मुखिया। ६ व्यापारी वर्ग। ७ श्रेष्ठ पुरुष। ८ जन समुदाय।
महाजनिक–पु० जन समुदाय।
महाजनी–स्त्री० १ व्यापारिक गणित। २ बहियों की लिपि। ३ रुपयों के लेन-देन का व्यवसाय। ४ सज्जनता। –वि० महाजन का, महाजन संबंधी।
महाजन्म–देखो 'महाजन'।
महाजळ–पु० समुद्र, सागर।
महाजुग–देखो 'महायुग'।
महाजुध–देखो 'महायुद्ध'।
महाजोगी–देखो 'महायोगी'।
महाजोगेसर, महाजोगेस्वर–देखो 'महायोगेस्वर'।
महाजोधा, महाजोधार–पु० वीरों में अग्रणी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाज्वाळ (ज्वाळा)–स्त्री० [सं० महाज्वाला] १ यज्ञ की अग्नि। –पु० २ एक नरक का नाम। ३ महादेव।

महाडोल, महाडोल–स्त्री० १ बड़ी डोली, पालकी। २ एक प्रकार की पालकी जो सती होने वाली रानी को श्मशान तक ले जाने में उपयोग ली जाती थी।

महातंक–पु० [सं० महा-आतंक] १ भयंकर आतंक, डर, खौफ। [सं० महा-अंतक] २ भयंकर रोग। ३ मृत्यु, मौत। –वि० भयंकर।

महातत (त्त)–देखो 'महतत्त्व'।

महातप महातपि–पु० [सं० महातपस्] १ बड़ा तप, साधना। २ बड़ा तपस्वी। ३ विष्णु।

महातपोधन–पु० [सं०] बड़ा तपस्वी।

महातम–पु० [सं० माहात्म्य] १ महिमा, गौरव, बड़ाई, महत्व। २ आदर, मान, सम्मान। [सं० महा-तम] ३ घोर अंधकार। ४ देखो 'महात्मा'।

महातमा–देखो 'महात्मा'।

महातळ–पु० [सं० महातलम्] अधः लोकों में से पांचवां लोक।

महातळाय–पु० बड़ा तालाब।

महाताप–पु० [सं० महाताप] सिंह, शेर।

महातिक्ष–वि० [सं० महातीक्ष्ण] अत्यन्त तीक्ष्ण, तेज।

महातेज, महातेजस, महातेजेसुर–पु० [सं० महातेजस्] १ स्वामि कार्त्तिकेय। २ शिव। ३ अग्नि। ४ पारा, पारद। ५ शूर-वीर, बहादुर।

महात्मन, महात्मा–पु० [सं० महात्मन्] १ परम ब्रह्म। ईश्वर। २ शिव। ३ बड़ा साधु, संन्यासी। ४ ऊंचे विचार एवं श्रेष्ठ गुणों वाला पुरुष। ५ दानी, दातार। ६ धूर्त, चालाक।

महात्रिफळा–स्त्री० एक औषधि विशेष।

महाथंभ–पु० [सं० महास्तंभ] १ बड़ा व भीमकाय स्तंभ। २ मोटे तने वाला वृक्ष। –वि० दीर्घाकार, बड़ा।

महादंड–पु० [सं०] १ कठोर सजा। २ आर्थिक दृष्टि से भारी सजा। ३ यम का दंड। ४ बड़ा डंडा। ५ बड़ी बाहु, भुजा।

महादंडधारी–पु० [सं०] यमराज।

महादत (द्त)–पु० [सं० महादत्त] बड़ा दान। –वि० बड़ा दानी, उदार।

महादळ–पु० [सं० महादल] बड़ी सेना, फौज।

महादव–स्त्री० १ प्रचंड दावानल। २ देखो 'महादेव'।

महादसा–स्त्री० ज्योतिष के अनुसार मुख्य ग्रह की दशा।

महादान–पु० [सं० महादान] १ ग्रहण के समय सूर्य को दिया जाने वाला दान। २ स्वर्ग की कामना से दिया जाने वाला दान।

महादानी–वि० 'महादान' देने वाला। बड़ा दानी।

महादीन–वि० अत्यन्त निर्धन, गरीब।

महादीप, महादीव–देखो 'महाद्वीप'।

महादुकाळ, महादुकाल–पु० भयंकर दुष्काल, भारी अकाल।

महादुस्ट, महादुस्टी–वि० अत्यन्त नीच, आततायी, अत्याचारी।

महादे, महादेव–पु० [सं० महादेवः] शिव।

महादेवी–स्त्री० दुर्गा, पार्वती, शक्ति।

महाद्रह–पु० [सं० महाह्रद] बहुत बड़ा गर्त।

महाद्रुम–पु० [सं०] १ अश्वत्थ, पीपल। २ वट वृक्ष। ३ ताड़ वृक्ष। ४ बड़ा वृक्ष।

महाद्वीप–पु० [सं०] १ चारों ओर जल से घिरा भू-भाग जिसमें कई देश बसे हों। २ एक मात्रिक छन्द विशेष।

महाधन–वि० [सं०] १ बड़ा धनवान। २ बड़ा खर्चीला। –पु० [सं० महद्धन] १ सोना, स्वर्ण। २ बहुमूल्य पोशाक।

महाधनुस–पु० [स०] शिव का एक नामान्तर।

महाधातु–पु० [सं०] १ सोना, स्वर्ण। २ शिव, महादेव। ३ सुमेरु पर्वत।

महाधिराज, महाधीराज–पु० राजाओं में श्रेष्ठ।

महाधू–वि० [सं० महद्+धी] १ बुद्धिमान, ज्ञानी। २ सर्वोच्च; शिरोमणि। [सं० महा-ध्रु] ३ अटल, निश्चित।

महानंदी–स्त्री० [सं०] शराब, मदिरा।

महानट–पु० [सं०] १ शिव। २ श्रीकृष्ण।

महानद–पु० १ एक बड़ी नदी। २ एक प्राचीन तीर्थ।

महानदी–स्त्री० [सं०] १ गंगा, यमुना आदि बड़ी नदियां। २ बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक अन्य नदी।

महानरक–पु० इक्कीस बड़े नरकों में से एक।

महानवमी–स्त्री० आश्विन शुक्ला नवमी।

महानस–पु० [सं०] रसोईघर, पाकशाला।

महानाद–पु० [सं०] १ बादल की गरज। २ तेज आवाज, कोलाहल। ३ बड़ा ढोल या नगाड़ा। ४ सिंह, शेर। ५ हाथी। ६ ऊंट। ७ शिव, महादेव। ८ ज्ञान। ९ शंख। १० एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

महानारायण–पु० [सं०] विष्णु।

महानाव–स्त्री० [सं०] बड़ी नौका, जहाज, बेड़ा।

महानास–पु० १ प्रलय। २ कोई बड़ा विनाश। ३ प्रलय कालीन रुद्र।

महानिद्रा–स्त्री० मृत्यु, मौत।

महानिधान–पु० [सं०] धातु भेदी पारा। –वि० बुभुक्षित।

महानिसा, महानिसि–स्त्री० [सं० महानिशा] १ रात का मध्य भाग, अर्द्ध रात्रि। २ कल्पांत या प्रलय की रात। ३ रात का दूसरा या तीसरा भाग। ४ रात का समय।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महानींबू–पु० बड़ा नींबू, बिजौरा नींबू।

महानील–पु० [सं०] एक प्रकार का रत्न।

महानुभाव–पु० [सं०] १ सज्जन या सभ्य पुरुष। २ आदरणीय व्यक्ति। ३ सत्यनिष्ठ पुरुष।

महानेत्र, महानेत्र–पु० शिव, महादेव।

महान्नृत्य–पु० [सं० महानृत्य] शिव, महादेव।

महापंचमूल–पु० [सं०] बेल, अरनी, सोनापाढ़, काश्यरी व पाटला इन वृक्षों की जड़ों का समूह।

महापंचविस–पु० [सं०] शृंगी, कालकूट, मुस्तक, बछनाग व शंखकर्णी विषों का समूह।

महापंडित–पु० [सं०] १ बड़ा पंडित, पंडितों में श्रेष्ठ। २ प्रतिष्ठित विद्वान।

महापइण्ण–वि० [सं० महप्रतिज्ञ] दृढ़ प्रतिज्ञ। (जैन)

महापक्ष, महापक्षी–पु० [सं०] १ गरुड़। २ एक प्रकार की बतख। ३ उल्लू। ४ पेचक। ५ कोई बड़ा पक्षी।

महापच्चखाण–पु० [सं० महाप्रत्याख्यान] १ जैनियों का एक ग्रंथ विशेष। २ अनशन।

महापथ–पु० [सं०] १ हिमालय का एक तीर्थ। २ इक्कीस नरकों में से सोलहवां नरक। ३ परलोक का मार्ग। मौत, मृत्यु। ४ शिव, महादेव। ५ लंबा-चौड़ा रास्ता, राज पथ। ६ कई ऊंचे शिखरों के नाम।

महापथिक–पु० मरने के उद्देश्य से हिमालय में जाने वाला यात्री।

महापद्म, महापद्म–पु० [सं० महापद्म] १ कुबेर की नौ निधियों में से एक। २ आठ दिग्गजों में से एक। ३ हाथियों की एक जाति। ४ नागों के नौ वर्गों में से एक व इस वंश का नाग। ५ सफेद कमल। ६ सौ पद्म की एक संख्या। ७ एक नगर का नाम। ८ नारद का एक नामान्तर। ९ कुबेर का एक अनुचर।

महापद्म, महापद्म–देखो 'महापरब'।

महापरलै–देखो 'महाप्रलय'।

महापरब–पु० [सं० महापर्व] १ उत्सव, पुण्यकाल। २ सुअवसर, मौका। ३ यज्ञादि का महोत्सव। ४ त्यौहार।

महापरसाद–देखो 'महाप्रसाद'।

महापवित्तर, महापवित्र–पु० [सं० महापवित्र] विष्णु।

महापसाव–पु० [सं० महाप्रसाद] एक प्रकार का बड़ा इनाम या दान।

महापह–देखो 'महापथ'।

महापाणि–पु० [सं० महापाणि] आजानबाहु।

महापातक–पु० [सं०] १ ब्रह्म हत्या, चोरी, मद्यपान, गुरु पत्नी से संभोग आदिका पाप। २ अत्यन्त नीच कर्म। ३ देखो 'महापातकी'।

महापातकी–पु० [सं० महापातकिन्] १ महापातक कार्य करने वाला। २ दुष्ट, पापी।

महापातयोग–पु० [सं०] फलित ज्योतिष का एक योग।

महापाप–पु० १ बड़ा पाप। २ दुष्कर्म, हेय कर्म।

महापापी–पु० बड़ा पापी, दुष्ट, नीच।

महापास–पु० [सं० महापाश] १ यमपाश। २ यमदूत। ३ बहुत बड़ा बंधन।

महापीठ–पु० [सं०] १ कोई बड़ा पुण्य स्थान। २ देवी-देवता की स्थापित प्रतिमा वाला स्थान। ३ वह स्थान जहां दक्ष पुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु चक्र से कट कर गिरा हो। ४ शंकर मठ। ५ कोई केन्द्र।

महापुट–पु० [सं०] औषधि की भस्म तैयार करने की कोई विधि।

महापुरस–देखो 'महापुरुस'।

महापुरांण–पु० श्रीव्यास द्वारा रचित पुराण।

महापुरी–स्त्री० [सं०] १ राजधानी। २ कोई बड़ा नगर।

महापुरुस–पु० [सं० महापुरुष] १ नारायण, परमात्मा, ईश्वर। २ विष्णु का एक नामान्तर। ३ उच्च विचार व श्रेष्ठ गुणों वाला व्यक्ति। ४ दशनामी सन्यासियों का एक नाम। ५ दुष्ट, पाजी, मूर्ख व्यक्ति।

महापूजा–स्त्री० आश्विन के नवरात्रों में दुर्गा की पूजा।

महापूठ–पु० [सं० महापृष्ठः] ऊंट।

महापूर–वि० [सं० महा-पूर्ण] बड़ों में बड़ा, उच्चतर।

महाप्रतिभट–वि० १ बलवान, शक्तिशाली, महावीर। २ योद्धा।

महाप्रब्ब–देखो 'महापरब'।

महाप्रभु–पु० [सं०] १ ईश्वर, परमात्मा। २ विष्णु। ३ शिव, महादेव। ४ इन्द्र। ५ राजा। ६ प्रधान या मुखिया। ७ चैतन्य। ८ वल्लभाचार्य की एक पदवी। ९ संन्यासी। १० उच्चकोटी का साधु।

महाप्रळय (प्रळै)–पु० [सं० महाप्रलय] १ सब सृष्टि की जल में डूब जाने की स्थिति। २ महा विनाश का दृश्य।

महाप्रसाद–पु० [सं०] १ श्रीजगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ प्रसाद, नैवेद्य। २ किसी देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य। ३ किसी महंत या महात्मा के भोजन का उच्छिष्ट अंश। ४ कोई बड़ा अनुग्रह। ५ मांस, आमिष। ६ भोजन।

महाप्रस्थांन–पु० [सं०] १ मरने के उद्देश्य से की जाने वाली हिमालय की यात्रा। २ मृत्यु, देहान्त।

महाप्रांण–पु० [सं०] उच्चारण भेद के अनुसार वर्ण विशेष।

महाप्रांणध्यांन–पु० [सं० महाप्राणध्यान] प्राण।

महाबराह–पु० [सं० महावराह] १ वराहावतार का नामान्तर २ बड़ा सूअर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाबल–पु० [सं० महाबल] १ वायु, पवन। २ शिव का एक पार्षद। ३ विष्णु का एक पार्षद। ४ वैवस्वत मन्वन्तर का इन्द्र। ५ स्कन्द का एक सैनिक। ६ एक दानव विशेष। ७ एक पुरुवंशीय राजा। ८ हनुमान। ९ सीसा, रांगा। –वि० अत्यन्त बलवान। वीर शिरोमणि।

महाबला–स्त्री० [सं० महाबला] १ स्कन्द की एक अनुचरी। २ सहदेवी नामक जड़ी। ३ पीतल। ४ धौ का पेड़। ५ नील का पौधा। ६ एक मातृका। ७ एक बड़ी संख्या की संज्ञा।

महाबलि (ळी)–वि० [सं० महाबलिन्] १ शूरवीर, पराक्रमी, बड़ा योद्धा। –पु० १ आकाश, आसमान। २ मन।

महाबवाल–स्त्री० १ बड़ी बलाय, बड़ा संकट। २ झगड़ा।

महाबाहु, महाबाहू, महाबाहू–वि० [सं० महाबाहुः] १ लंबी भुजाओं वाला; आजानबाहु। २ शूरवीर, बलवान। –पु० १ विष्णु का एक नामान्तर। २ एक राक्षस जो कश्यप व दनु का पुत्र था। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४ मगध का एक राजा।

महाबिल, महाबिस–देखो 'महाविस'।

महाबिस–पु० [सं० महाबिसम्] १ आकाश। २ हृदय। ३ सुराख।

महाब्राह्मण–पु० [सं० महत्-ब्राह्मण] मृतक के पीछे दान लेने वाला निकृष्ट ब्राह्मण।

महाभंडारी–पु० [सं०] बड़ा कोषाध्यक्ष।

महाभगत–पु० भक्त शिरोमणि।

महाभड़, महाभड़ि, महाभड (ड़ी)–वि० [सं० महाभट] महान् योद्धा, जबरदस्त वीर। –पु० कामदेव, मदन।

महाभद्र–पु० १ पुराणानुसार एक पर्वत। २ एक व्रत विशेष। ३ देखो 'महाभद्रजिन'।

महाभद्रजाति (जाती)–पु० सफेद रंग का हाथी।

महाभद्रजिन–पु० जैनियों के अठारहवें विहरमान।

महाभद्रा–स्त्री० गंगा नदी।

महाभर–स्त्री० वर्षा की तेज बौछार।

महाभांडारिक–पु० भण्डार का मालिक, खजांची।

महाभागवत–स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार प्रसिद्ध बारह भक्त। २ परम वैष्णव। ३ श्रीमद्भागवत पुराण। ४ एक प्रकार का छंद।

महाभारत (भारथ)–पु० [सं महाभारत] १ वेदव्यास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध महाकाव्य। २ कौरवों तथा पांडवों का प्रसिद्ध महायुद्ध। ३ कोई भयंकर युद्ध, लड़ाई।

महाभाष्य–पु० [सं० महाभाष्य] १ पाणिनी के व्याकरण पर पतंजलि द्वारा लिखित भाष्य। २ बड़ी टीका।

महाभुजंग–पु० शेषनाग।

महाभुज–वि० [सं० महत्+भुज] आजानबाहु।

महाभूत–पु० [सं०] पृथ्वी, जल आदि पांच भौतिकतत्व।

महाभैरव–पु० [सं०] शिव।

महाभैरवी–स्त्री० [सं०] १ तांत्रिकों की एक विद्या। २ पार्वती, दुर्गा, शक्ति।

महाभोग–पु० महाप्रसाद।

महाभोगा–स्त्री० [सं०] दुर्गा, देवी।

महाभोगी–वि० महान् अध्याय। –पु० बड़े फण वाला सर्प।

महामंगळा–स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि। २ अग्नि।

महामंडळ–पु० [सं०] १ कोई बड़ा वृत्त या घेरा। २ कोई बड़ा संघ। ३ कोई बड़ा समुदाय जिसमें कई ईकाइयां हों।

महामंडळेश्वर–पु० कई मंडलेश्वरों का अधिपति या नेता।

महामंत–देखो 'महामत्त'।

महामंत्र–पु० [सं] १ कोई वेद मंत्र। २ सिद्धि प्राप्त करने का मंत्र। ३ ऐसा मंत्र जिसे जपने से संकट दूर होते हैं। ४ कोई चमत्कारिक मंत्र। ५ अच्छी सलाह, राय।

महामंत्रि, महामंत्री–पु० किसी राजा या राज्य का प्रधान मंत्री महामात्य।

महामणि–स्त्री० १ स्त्रियों का सौभाग्य सूचक चिह्न। २ हीरा।

महामणिमत्थ–पु० मद मस्त हाथी।

महामत, महामति, महामत्त–वि० [सं० महामति] १ महा बुद्धिमान। २ विद्वान, पंडित। ३ मदोन्मत्त, मस्त। ४ ज्ञानी। –पु० १ गणेश। २ एक बोधिसत्व।

महामद–पु० [सं०] १ मस्त हाथी। २ अत्यधिक गर्व।

महामन–वि० [सं०] १ उदार हृदय। २ दानी, दातार। ३ अभिमानी।

महामल्ल–वि० [सं०] १ बड़ा पहलवान। २ बड़ा योद्धा, वीर।

महामसाणी–देखो 'मसाणी'।

महामह–पु० [सं०] १ महोत्सव। २ समुद्र, सागर।

महामहण–देखो 'महमहण'।

महामहिमक, महामहीमक–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

महामहोपाध्याय–पु० १ गुरुओं का गुरु, आचार्य। २ एक उपाधि विशेष।

महामाणक– पु० एक रत्न विशेष।

महामाइ(ई)–देखो 'महामाया'।

महामात्य–देखो 'महामंत्री'।

महामाय, महामाया–स्त्री० [सं० महामाया] १ माता, जननी। २ प्रकृति। ३ देवी, दुर्गा। ४ पार्वती। ५ सीता। ६. अष्टसिद्धियों में से एक। ७ बुद्ध की माता का नाम ८ गंगा। ९ आर्या छंद का एक भेद। १० देखो 'मावलिया'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महामारी–स्त्री० [सं०] प्लेग आदि भीषण संक्रामक बीमारी।

महामुद्रा–स्त्री० योग साधना की एक मुद्रा विशेष।

महामुनि (मुनी)–पु० [स० महामुनि] १ मुनियों में श्रेष्ठ। २ कपटी या ढोंगी पुरुष।

महामूढ़–वि० [सं०] अत्यन्त मूर्ख, मूर्खों में सर्वोपरि।

महामेघ–पु० अष्टगण वर्ग में से एक।

महायज्ञ–पु० [सं० महायज्ञ] १ बड़ा यज्ञ। २ नित्य किये जाने वाले पांच प्रकार के यज्ञ।

महायान–पु० [सं० महायान] १ बौद्धों की दो मुख्य सम्प्रदायों में से एक। २ उत्तम व श्रेष्ठ मार्ग।

महायाम–पु० [स० महायाम्यः] विष्णु।

महायुग–पु० [स०] देवताओं का एक युग, चार युगों का समूह।

महायुध–पु० [सं० महा आयुध] १ शिव, महादेव। २ महायुद्ध, महाभारत।

महायोगनाथ–पु० [सं०] योगियों का एक विभेद।

महायोगी–पु० [सं०] १ शिव। २ विष्णु। ३ मुर्गा। ४ कोई बड़ा योगी या सिद्ध।

महायोगेश्वर (श्वर)–पु० [सं०] योगियों में वरिष्ठ, श्रेष्ठ योगी

महारंभ (म्भ)–पु० [सं०] १ किसी शुभ कार्य की शुरुआत। २ देखो 'महरंभ'।

महारउ–सर्व० मेरा।

महारजत–पु० [सं०] १ स्वर्ण, सोना, कनक। २ धतूरा। ३ कुसुम, पुष्प।

महारणव–पु० [सं० महार्णव] समुद्र, सागर।

महारथ–पु० [सं०] १ बड़ा रथ। २ बड़ा योद्धा, भट।

महारथी–पु० [सं०] १ सेना का अग्रणी योद्धा। २ हजार योद्धाओं से अकेला लड़ने वाला योद्धा।

महारस–पु० [सं०] १ अत्यानन्द, परमानन्द। २ लोहू, रक्त। ३ रसास्वादन। ४ स्वादिष्ट पेय पदार्थ। ५ वीर्य। ६ ऊख। ७ खजूर। ८ जामुन। ९ पारा। १० अभ्रक। ११ ईगुर। १२ कांतिसार लोहा। १३ सोना मक्खी। १४ रूपा मक्खी। १५ कांजी। १६ कसेरु। १७ नशा मादकता।

महारसायण–पु० [सं० महारसायन] जरा व्याधि नाशक औषधि।

महाराण(णी)–पु० [सं०महा राट्] (स्त्री० महाराणी)१ राजा, नरेश। २ बड़ा राजा, सम्राट। ३ मेवाड़ के राजा की उपाधि। ४ देखो 'महारणव'।

महारावण (णो)–देखो 'महारावण'।

महाराइ (इ)–देखो 'महराज'।

महाराज, महाराजा–पु० (स्त्री० महाराणी) १ राजाओं में श्रेष्ठ, बड़ा राजा। २ राजा, नृप। ३ साधु, संन्यासी। ४ ब्राह्मण। ५ एक सम्मान सूचक संबोधन।

महाराजाधिराज–पु० १ राजाओं में श्रेष्ठ नरेश, सम्राट। २ राजाओं की एक उपाधि।

महारात (रात्रि)–स्त्री० [स० महारात्रि] १ महाप्रलय की रात। २ काल रात्रि। ३ आधी रात बीतने पर दो मुहूर्त का समय।

महाराय–देखो 'महाराज'।

महाराव–पु० [सं० महाराट्] कोटा, बूंदी व सिरोही के राजाओं की उपाधि।

महारावण–पु० हजार मुख व दो हजार हाथों वाला रावण।

महारावत–पु० [सं० महाराज+पुत्र] महा योद्धा।

महारावळ–पु० जैसलमेर, डूंगरपुर आदि के राजाओं की उपाधि।

महाराष्टर, महाराष्ट्र–पु० [सं० महाराष्ट्र] १ भारत के दक्षिण का एक प्रान्त। २ बड़ा राष्ट्र।

महाराष्ट्री–वि० [सं०महाराष्ट्री] महाराष्ट्र की, महाराष्ट्र संबंधी। –पु० १ महाराष्ट्र का निवासी। २ महाराष्ट्र की भाषा, मराठी।

महारिख–देखो 'महरसि'।

महारिण–पु० [सं० महा-रण] बड़ा भारी युद्ध, महाभारत।

महारिस (रिसि, रोसी)–देखो 'महरसि'।

महारो–देखो 'म्हारी'।

महारुद्र (रुद्द)–पु० [सं०]महादेव।

महारूप–पु० [सं०] १ शिव का एक नामान्तर। २ महा सौन्दर्य।

महारोग–पु० असाध्य व भयंकर रोग।

महारोरव, महारौरव–पु० [सं० महारौरव] १ एक प्रकार का नरक। २ भयंकर दरिद्रता। ३ संकटकालीन अवस्था।

महारो–देखो 'म्हारो'।

महालक्ष्मी (लक्ष्मी)–स्त्री० [सं० महालक्ष्मी] १ विष्णु की अर्धांगिनी देवी। २ धन की अधिष्ठात्री देवी। ३ उक्त देवी की प्रतिमा जिसकी पूजा दीपावली को की जाती है। ४ नारायण की एक शक्ति। ५ तीन रगण का एक वर्ण वृत्त।

महालक्ष्मीव्रत–पु० आश्विन शुक्ला अष्टमी का व्रत।

महालछमी, (लच्छी, लछ, लछमी, लछी)–देखो 'महालक्ष्मी'।

महालिंग–पु० [सं० महालिंग] १ शिव, महादेव। २ शिव लिंग की प्रतिमा।

महालिछमी–देखो 'महालक्ष्मी'

महालोक–देखो 'महरलोक'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महावड़–पु० [सं० महावट] १ वट का बड़ा विशाल वृक्ष। २ प्रयाग का विशाल वट वृक्ष।

महावत–पु० [सं० महामात्र] हाथी का चालक, फीलवान।

महावन–पु० [सं०] १ बड़ा, विशाल जंगल। २ सघन वन। –स्त्री० [सं० महा-अवन] ३ गाय।

महावर–पु० [सं० महावर्ण] १ एक प्रकार का लाल रंग। २ सौभाग्य चिह्न।

महावरी–पु० १ अभ्यास। २ व्यसन, आदत। ३ देखो 'मुहावरी'।

महावाक्य–पु० [सं०] १ मोक्ष शब्द। २ महत्वपूर्ण वाक्य, बात या मंत्र। ३ दान देते समय कहा जाने वाला शब्द।

महावातव्याधि–पु० एक प्रकार का वात रोग।

महावारुणी–पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार एक योग।

महाविकल–वि० [सं० महाविकल] १ अत्यन्त दुःखी, त्रस्त, निराश। २ हर काम में असफल। ३ मूर्ख, मूढ़।

महाविक्रम–पु० [सं०] सिंह, शेर।

महाविज्ञान–पु० घुंघरू।

महाविदे, महाविदेह–पु० जैन मतानुसार एक प्रदेश। –वि० विरक्त, उदास।

महाविद्या–स्त्री० [सं०] १ तांत्रिकों की दश देवियां। २ दुर्गा। ३ गंगा।

महाविष–पु० [सं० महाविष] १ भयंकर विषैला सर्प। २ प्राण घातक विष।

महाविषुव–पु० [सं० महाविषुव] मेष या चैत्र की संक्रान्ति।

महावीथी, महावीही–स्त्री० [सं० महावीथी] बड़ा मार्ग, बड़ी गली।

महावीर–पु० [सं०] १ हनुमान, बजरंग। २ विष्णु। ३ गरुड़। ४ बाज पक्षी। ५ सिंह, शेर। ६ सफेद घोड़ा। ७ इन्द्र का वज्र। ८ योद्धा, वीर, भट। ९ जैनियों के २४वें तीर्थंकर। –वि० १ शक्तिशाली, बलवान। २ साहसी, बहादुर।

महावेग–पु० [सं०] १ गरुड़। २ वानर। ३ महादेव। ४ तीव्र या तेज चाल गति। ५ वज्र।

महावेध, महावेधक–पु० बड़ा जंग, युद्ध, संग्राम।

महावेल–वि० [सं० महाविल] बहुत बड़ा, विशाल, दीर्घाकार।

महावैद्य–पु० बड़ा वैद्य।

महाव्यतिपात–पु० महापात योग का एक भेद विशेष। –योग–पु० विष्कम्भ आदि योगों में एक।

महाव्यतिपात, महाव्यतीपात–पु० महापात योग का एक भेद विशेष।

महाव्याधि, महाव्याधी–स्त्री० १ दुस्साध्य व भयंकर बीमारी। २ कठिन संकट।

महाव्रत–पु० [सं०] १ कठिन व्रत। २ आश्विन की दुर्गा पूजा या नवरात्र। ३ बारह वर्ष तक जारी रहने वाला व्रत। ४ सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि का पालन। ५ जैन मतानुसार एक व्रत। –धारी–वि० 'महाव्रत रखने वाला।

महाव्रती–पु० [सं० महाव्रतिन्] १ शिव, महादेव। २ संन्यासी। ३ भक्त। ४ महाव्रतधारी।

महासंकट–पु० घोर विपत्ति, अति दुःख।

महासंख–पु० [सं० महाशंख] १ कुबेर की नौ निधियों में से एक। २ बहुत बड़ा संख। ३ ललाट। ४ कनपटी की हड्डी। ५ मनुष्य की ठठरी। ६ एक प्रकार का सर्प। ७ सौ संख की एक बड़ी संख्या। –वि० मूर्ख।

महासईय–देखो 'महासती'।

महासक्ति (सगत, सगति, सगती)–स्त्री० [सं० महाशक्ति] १ सृष्टि की रचना करने वाली मूल शक्ति। २ प्रकृति। ३ दुर्गा। ४ कोई बड़ी हस्ती। ५ शृगाली। ६ भैरवी व रूपारेल पक्षी। –पु० ७ शिव। ८ स्वामिकार्तिकेय।

महासतक–पु० एक तरवर। (जैन)

महासति–देखो 'महासती'।

महासतियां–स्त्री० राजाओं की श्मशान भूमि।

महासती–स्त्री० [सं०] पतिव्रता व साध्वी स्त्री।

महासत्ति–१ देखो 'महासती'। २ देखो 'महासक्ति'।

महासत्य–पु० यमराज।

महासद, महासद्द–पु० १ तुरंत का कटा ताजा मांस। [सं० महाशब्दी] २ तुमुलनाद।

महासभ्य–पु० राज दरबार की एक उपाधि।

महासय्या–स्त्री० [सं० महाशय्या] १ राजगद्दी। २ राजाओं की शय्या।

महासर–पु० १ बड़ा तालाब। २ समुद्र, सागर।

महासरग–पु० [सं० महासर्ग] प्रलय के बाद की सृष्टि रचना। सृष्टि का प्रारंभ।

महासरवर–पु० [सं०] बड़ा तालाब।

महासांतपन–पु० [सं०] एक व्रत विशेष।

महासांमंत–पु० राज दरबार का एक पदाधिकारी।

महासागर–पु० १ कोई बहुत बड़ा समुद्र। २ संसार, भव।

महासिंधु–पु० बड़ा समुद्र।

महासिंह–पु० [सं०] दुर्गा का वाहन सिंह।

महासिंहविक्रीड़ित–स्त्री० एक प्रकार का छंद।

महासिणाण–देखो 'महास्नान'।

महासिव–पु० [सं० महाशिव] शिव, महादेव। –रात, रात्रि–स्त्री० फाल्गुन कृष्णा चतुर्थदशी की रात।

महासूर–पु० [सं० महाशूर] १ हनुमान, महावीर। २ अर्जुन। ३ महायोद्धा, वीर, बहादुर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महासेत–पु० [सं० महाश्वेता] १ सरस्वती, शारदा। २ दुर्गा, भवानी।

महासेन–पु० [सं०] १ स्वामिकार्त्तिकेय। २ ऐरावत क्षेत्र के भावी जिनदेव। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र। ४ एक यादव।

महास्नान–पु० [सं०] आत्म शुद्धि हेतु आध्यात्मिक स्नान।

महास्रमी–वि० [सं० महाश्रमी] गृहस्थी।

महास्वास–पु० [सं० महाश्वासः] १ दमे का रोग। २ मृत्यु के पूर्व का स्वास।

महाहवि (हव्य)–पु० [सं० महाहव] युद्ध, संग्राम।

महि–१ देखो 'मही'। २ देखो 'माह'।

महिअळ (ळि)–देखो 'महीतळ'।

महिआ–स्त्री० [सं० महिका] कोहरा, पाला।

महिआर, महिआरा–स्त्री० दूध, दही का व्यवसाय करने वाली एक जाति।

महिआरी–पु० (स्त्री० महिआरण) उक्त जाति का व्यक्ति।

महिक–देखो 'महक'।

महिख–देखो 'महिस'।

महिखनखांडो–पु० एक प्रकार की तलवार।

महिखजीह–स्त्री० [सं० महिष-जिह्वा] कटार।

महिखधुज–देखो 'महिसधुज'।

महिखाक्ष–पु० [सं० महिषाक्ष] गुग्गुल नामक पदार्थ।

महिखासुर–देखो 'महिसासुर'।

महिखी–देखो 'महिसी'।

महिखु, महिख्ख, महिख्ख–देखो 'महिस'।

महिजा–देखो 'महीजा'।

महिजीत (द)–देखो 'मसजिद'।

महिड्डि–स्त्री० महर्द्धि, महाऋद्धि।

महिणारंभ–देखो 'महारणव'।

महिणी–देखो 'महिनी'।

महित–वि० [सं०] प्रतिष्ठावान, कीर्तिवान।
–पु० शिव का त्रिशूल।

महितळ–देखो 'महीतळ'।

महिताब–देखो 'महताब'।

महिथळ–देखो 'महीतळ'।

महिवउरज–पु० एक वस्त्र विशेष।

महिधर–देखो 'महीधर'।

महिनाथ–देखो 'महीनाथ'।

महिनी–देखो 'महीनी'।

महिप–देखो 'महीप'।

महिपड़–देखो 'महिघुड़'।

महिपत (पति, पती, पत्ति, पत्ती) महिपाळ महिप्पति–देखो 'महीपति'।

महिघुड़, महिघुड़ि–स्त्री० पृथ्वी भूमि।

महिबूब–देखो 'महबूब'।

महिमंडळ, महिमंडळी–पु० [सं० मही-मंडल] भूमण्डल, पृथ्वी।

महिम–१ देखो 'महिमा'। २ देखो 'मुहिम'।

महिमट्ट–पु० गर्व, अभिमान।

महिमद–देखो 'मैमंद'।

महिमन–देखो 'महिम्न'।

महिमानी–देखो 'मैं मानी'।

महिमा–स्त्री० [सं०] १ विशेष होने की अवस्था या भाव। २ महत्व, माहात्म्य, बड़ाई, गौरव। ३ यश, कीर्ति, प्रशंसा, तारीफ। ४ प्रभाव, प्रताप। ५ आदर, सत्कार, मान। ६ सुन्दरता, शोभा। ७ अणिमा आदि सिद्धियों में से एक।

महिमाथ–देखो 'महामाया'।

महिमावंत–वि० [सं०] जिसकी महिमा हो, विशेष गुणों वाला, प्रतिष्ठित, यशस्वी।

महिमाह–देखो 'माहोमाह'।

महिमुंदी–१ देखो 'महमूंदी'। २ देखो 'मुहम्मदी'।

महिमुंदी-घटी–स्त्री० १ वर-वधू के प्रणय बंधन का वस्त्र। २ देखो 'महमुदी'।

महिमुदी–देखो 'महमूंदी'।

महिमूद–देखो 'मुहम्मद'।

महिम्न–पु० [सं०] पुष्पदंताचार्य द्वारा रचित शिव का एक स्तोत्र।

महिय–पु० [सं० मथित] दधि, दही।

महियंद–पु० [सं० मही-इन्द्र] राजा, नृप।

महियळ, महियल, महियलि–देखो 'महीतळ'।

महियव–पु० राठौड़ों की एक शाखा।

महियार–देखो 'महिआर'।

महियारड़ो, महियारी–देखो 'महिआरी'।

महियो–१ देखो 'मयो'। २ देखो 'मईयो'

महिर–पु० [सं०] १ नृप, राजा। २ योद्धा। ३ देखो 'महर'। ४ देखो 'मिहिर'।

महिरवांन, महिरवांन–देखो 'मैंरवांन'।

महिरवांनी–देखो 'मैंरवांनी'।

महिरांण–१ देखो 'महारणव'। २ देखो 'महरांण'। ३ देखो 'महरांणी'।

महिरांणवर–पु० १ राजा, नृप। २ देखो 'महारणव'।

महिरांमण–देखो 'महिरावण'।

महिरावण–पु० १ रावण का पुत्र व पाताल का राजा अहिरावण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महिरिवाण–देखो 'मैरवांन'।
महिरी–देखो 'महर'।
महिरेळण–पु० १ इन्द्र। २ राठौड़ रायपाल की उपाधि। –वि० यशस्वी, कीर्तिवान।
महिळ–देखो 'महिळा'।
महिल–देखो 'महल'।
महिलांण–पु० डेरा, पड़ाव, विश्राम।
महिळा–स्त्री० [सं० महिला] १ स्त्री, औरत, नारी। २ पत्नी। ३ प्रिया, प्रेयसी। ४ स्त्रियों का आदर युक्त संबोधन। ५ मदमस्त महिला, मस्तानी स्त्री। ६ प्रियंगुलता। ७ रेणुका नामक पौधा।
महिलाइत, महिलायत–देखो 'महलायत'।
महिळि, महिली, महिल्ल, महिल्ली–१ देखो 'महिळा'। २ देखो 'महल'।
महिषट्टु–पु० एक प्रकार का सुगंधित पदार्थ।
महिस–पु० [सं० महिष] १ भैंसा, पाडा। २ महिषासुर। –वि० बहुत मोटा, सुस्त।
महिसघ्नी–स्त्री० [सं० महिषघ्नी] दुर्गा, देवी।
महिसधुज–पु० [सं० महिषध्वज] यमराज।
महिसमरदणी, महिसमरविणी–स्त्री० [सं० महिषमर्दनी] दुर्गा देवी।
महिसवाहण–पु० [सं० महिषवाहन] यमराज।
महिसासुर–पु० [सं० महिषासुर] मयासुर का पुत्र एक राक्षस।
महिसी, महिसी–स्त्री० [सं० महिषी] १ पटरानी, महारानी, साम्राज्ञी। २ भैंस। –वि० काली, कृष्ण।
महिसुत देखो 'महीसुत'।
महिसुर–देखो 'महीसुर'।
महिसूफ–पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।
महीं–१ देखो 'महीन'। २ देखो 'मही'।
मही–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती, धरा, भू। २ भू-सम्पत्ति। ३ रियासत, जागीर। ४ राज्य, देश। ५ मिट्टी। ६ समूह। ७ सेना, फौज। ८ खाली स्थान, अवकाश। ९ गाय, गौ। १० छाछ, मट्ठा, तक्र। ११ दहि, दधि। १२ एक नदी का नाम। १३ एक छन्द विशेष। १४ त्रिकोण। १५ एक की संख्या ※।
महीअर–देखो 'महीधर'।
महीअरी–स्त्री० मासी।
महीअळ, महीअळि–देखो 'महीतळ'।
महीआरी–देखो 'महिआरी'।
महीइंद–पु० [सं० महेन्द्र] १ देवराज इन्द्र। २ नेता, मुखिया, प्रधान। ३ राजा, नृप।
महीकाळवासर–पु० प्रलय दिवस।
महीख–पु० १ एक प्रकार का पक्षी। २ देखो महिस'।
महीखधुज–देखो 'महिषधुज'।
महीड़ी–देखो 'मही'।
महीज–पु० [सं० मही+जः] १ मंगल ग्रह। २ वृक्ष, पेड़। ३ अदरक।
महीजा–स्त्री० [सं०] सीता, जानकी।
महीजीत–पु० १ भूमि का विजेता। २ देखो 'मसजिद'।
महीणी–देखो 'महीनी'।
महीतळ, महीतळि, महीयळ–पु० [सं० महीतल] १ पृथ्वी का धरातल, सतह, भूमि। २ संसार, भव।
महीयळि, महीयळी–१ देखो 'मैथिली'। २ देखो 'महीतळ'।
महीदेव–पु० [सं०] ब्राह्मण, विप्र।
महीधर–पु० [सं०] १ विष्णु। २ पर्वत। ३ शेषनाग। ४ एक वर्ण वृत्त विशेष।
महीन–वि० [अ०] १ अत्यन्त लघु, बारीक। २ स्थूल का विपर्याय, सूक्ष्म। ३ तुच्छ। ४ जीर्ण-शीर्ण। ५ कमजोर, क्षीण। ६ अत्यन्त पतला झीना। ७ कोमल, मंद, धीमा। ८ जिसकी सतह अत्यन्त पतली हो। ९ महीना, मास।
महीनदार–पु० [अ०] मासिक वेतन पर कार्य करने वाला व्यक्ति।
महीनाथ–पु० राजा, नृप।
महीनो'क–वि० मास या महीने के लग-भग।
महीनौ–पु० [अ० महीनः] १ प्रायः तीस दिन की अवधि, वर्ष का बारहवां भाग, मास। २ प्रति मास का वेतन।
महीप–पु० [सं०] १ इन्द्र। २ राजा, नृप।
महीपत, महीपति (ती, त्ति, त्ती)–पु० [सं० महिपतिः] राजा नृप, भू-स्वामी।
महीपाळ (ल)–पु० [सं० महीपाल] १ राजा, नृप। २ मेघ।
महीपुत्र–पु० [सं०] मंगल ग्रह।
महीभरत–देखो 'महीभ्रत'।
महीभुजंग–पु० [सं०] १ राजा, नृप। २ मणिका का पति।
महीभ्रत–पु० [सं० महीभृत्] १ राजा, नृप। २ पर्वत, पहाड़।
महीमंडण–पु० [सं० मही मंडन] इन्द्र।
महीमंडळ–पु० भू-मंडळ, पृथ्वी।
महीमुंदीसाही–पु० एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र।
महीमुरतब(ब), महीमुरातब, महीमुरातिब–देखो 'माहीमुरातब'।
महीयळ (ळि)–देखो 'महीतळ'।
महीयां–वि० मूढ़, अज्ञानी।
महीरंजण–पु० मेघ, बादल।
महीर–वि० बड़ा, महान। –पु० १ पृथ्वी, भूमि। २ देखो 'मिहिर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महीरानाथ–पु० राजा, नृप ।
महीरुह-पु० [सं०] वृक्ष, पेड़ ।
महीवर–पु० [सं०] नृप, राजा ।
महीस– पु० [सं० महीश] राजा, नृप ।
महीसुत–पु०[सं०]१ मंगल ग्रह । २ वृक्ष, पेड़ । ३ बयुड़ा, बैल ।
महीसुर–पु० [सं०] ब्राह्मण, विप्र ।
महीसूर–पु० [सं० मही-शूर] अर्जुन ।
महूंर–देखो 'मोहर' ।
महु–देखो 'मधु' ।
महुअड़ी, महुअडो–देखो 'महुआ' ।
महुअर, महुअरि–वि० [सं० मधुकर] १ मीठा । २ पीछे का ।
महुआल–पु० [सं० मधुजाल] मधुजाल ।
महुक-देखो 'महुआ' ।
महुआ–पु० [सं० मधुक] १ एक वृक्ष विशेष । २ एक प्रकार का घोड़ा । –वि० मधुर ।
महुकम–वि० समर्थ ।
महुकर–देखो 'मधुकर ।
महुच्छव, महुछव–देखो 'महोत्सव' ।
महुआ– देखो 'महुआ' ।
महुत, महुत्त–१ देखो 'महुरत' । २ देखो 'महत्व' ।
महुयर, महुयरि (री)–स्त्री० १ एक प्रकार का वाद्य । २ एक प्रकार की वंशी ।
महुयरी-देखो 'मधुकर' ।
महुर, महुरउ–१ देखो 'मधुर' । २ देखो 'मोहर' ।
महुरत, महुरति–पु० [सं० महूर्त] १ काल का एक भाग, अंश रात व दिन का तीसवां भाग । २ शुभ घड़ी, शुभ अवसर । ३ प्रस्थान के लिये उचित समय । ४ निर्दिष्ट क्षण, काल समय । ५ प्रारंभ, श्रीगणेश ।
महुरी-देखो 'मौरी' ।
महुल (ल)–१ देखो 'महिळा' । २ देखो 'महल' ।
महुलेठी–पु० [सं० मधुयष्टि] मुलहठी, ईख ।
महुवा–देखो 'महुआ' ।
महूंता–देखो 'महता' ।
महू–१ देखो 'महुआ' । २ देखो 'मधु' ।
महूअउ (ओ)–देखो 'महुआ' ।
महूअर–देखो 'मधुकर' ।
महूड़ो, महूडो, महूयड़ी–देखो 'महुआ' ।
महूर–वि० १ प्रथम, पहला । २ देखो 'मधुर' । ३ देखो 'मोहर' ।
महूरत (ति, तो)–देखो 'महुरत' ।
महेंद्र–पु० [सं०] १ विष्णु । २ इन्द्र । ३ एक पर्वत का नाम ।
महेंद्राळ–स्त्री० गुजरात की एक नदी ।
महेछ–पु० [सं० महेच्छ] दातार, दानी ।
महेळ (ल)–१ देखो 'महल' । २ देखो 'महिळा' ।
महेलिआ, महेला, महेळि, महेळी, महेलोय–देखो 'महिळा' ।
महेव, महेवपुर–पु० मारवाड़ का मालानी प्रदेश ।
महेवंचा–स्त्री० राठौड़ों की एक शाखा ।
महेवंचो–पु० उक्त शाखा का राठौड़ ।
महेवो–पु० मालानी प्रदेश ।
महेस–पु० [सं० महेश] १ शिव, महादेव । २ ईश्वर । —**कंकण** –पु० शिव का कंकण, कड़ा ।
महेसचख–पु० [सं० महेश-चक्षु] आग, अग्नि ।
महेसर-देखो 'महेस्वर' ।
महेसरी–स्त्री० [सं० माहेश्वरी] वैश्यों की एक जाति ।
महेसवर–देखो 'महेस्वर' ।
महेसानी–स्त्री० [सं० महेशानी] १ दुर्गा, देवी । २ एक मातृका । ३ देखो 'महिसी' । ४ देखो 'महरसि' ।
महेसुर, महेस्वर–पु० [सं० महेश्वर] १ शिव, महादेव । २ ईश्वर ।
महैरांण–देखो 'महारणव' ।
महोछ–वि० [सं० महोक्ष] बड़ी आंख वाला ।
महोच्छव, महोच्छु, महोछब (व), महोछवि, महोछिव (व)–देखो 'महोत्सव' ।
महोतपळ, महोतपस–पु० [सं० महोत्पल] पुंडरीक, कमल ।
महोत्सव–पु० [सं०] १ कोई बड़ा उत्सव, शुभ व खुशी का अवसर । २ कामदेव ।
महोवद (धि, धो धि)–पु० [सं० महा-उदधि] १ महासागर, समुद्र । २ इन्द्र ।
महोवय–पु० [सं०] (स्त्री० महोदया) १ अधिपति, स्वामी । २ बड़ों के लिये सम्मान सूचक संबोधन । ३ महानुभाव, श्रीमान । ४ स्वर्ग । ५ कान्य कुब्ज प्रदेश का एक नाम ।
महोवया–स्त्री० [सं०] १ नाग बला, गुल शकरी, गंगेरन । २ सम्माननीय स्त्री ।
महोवर–पु० [सं०] १ कश्यप का पुत्र एक नाग । २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ३ एक राक्षस । ४ रावण का एक पुत्र । ५ रावण का प्रधान एक राक्षस । ६ रावण का एक भाई । ७ एक ऋषि । ८ प्रातः स्मरणीय एक राजा । ९ एक रोग विशेष । १० समुद्र । –वि० बड़े पेट या उदर वाला ।
महोवरमछवाळा–पु० यूरोप का निवासी, यूरोपियन ।
महोवव–पु०[सं० महत्-उदधि] समुद्र, सागर ।
महोव, महोबो–पु० बुंदेलखण्ड का एक प्राचीन नगर ।
महोर–देखो 'मोहर' ।
महोरत (थ)–देखो 'महुरत' ।
महोरह–क्रि० वि० आगे को, पूर्व को ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महोळ (ल)–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिळा'।

महोली–पु० १ झुक कर किया जाने वाला सलाम। २ मुजरा, अभिवादन। ३ किसी के स्वागत में गाया जाने वाला गीत। ४ उत्सव, समारोह। ५ स्वागत। ६ निवासस्थान डेरा। ७ सेना का पड़ाव। ८ काव्य रस। ९ देखो 'महल्लो'।

महोवध, महोदधि–देखो 'महोदधि'।

महोबत–देखो 'मुहब्बत'।

महोर (रि)–देखो 'मोहर'।

महौसधि–स्त्री० [सं० महा-औषधि] विशिष्ट औषधियों का समूह।

मह्युसाबु–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

मह्वी–देखो 'महुवी'।

मां–१ देखो 'मा'। २ देखो 'म्हां'। ३ देखो 'मांय'।

मांग्रडी–सर्व० १ मेरा। २ देखो 'मूंडो'।

मांइ–१ देखो 'माता'। २ देखो 'मांय।

मांई–१ देखो 'माईमां'। २ देखो 'माता'। ३ देखो 'मांय'।

मांईजायो–पु० [सं० मा+जात] विमाता का पुत्र। सौतेला भाई

माईमां–स्त्री० [सं० मूर्त-माता] विमाता, सौतेली मां।

मांऊं–क्रि०वि० १ अन्दर से, भीतर से। २ तरफ, ओर (मेवात)।

मांक–पु० [सं० मकि] अर्जुन का एक नामान्तर।

मांकड़–पु० [सं० मर्कट] (स्त्री० मांकड़ी) १ जाति विशेष का घोड़ा। २ देखो 'मरकट'। ३ देखो 'मत्कुण'।

मांकड़ा–देखो 'माकड़ा'।

मांकड़ियो–१ देखो 'मत्कुण'। २ देखो 'मरकट'।

मांकड़ी–देखो 'माकड़ी'।

मांकड–देखो 'माकड़'।

मांकण–पु० १ कीट जाति का कोई जीव। २ देखो 'मत्कुण'।

मांकणो (णी)–क्रि० १ मांगना। २ शोषण करना, खून चूसना।

मांकर–१ देखो 'मत्कुण'। २ देखो 'मरकट'।

मांकुण–देखो 'मत्कुण'।

मांखण–देखो 'माखण'।

मांखी–देखो 'माखी'।

मांग–स्त्री० [सं० मार्गण] १ खरीददारों की किसी वस्तु की आवश्यकता, चाह। २ चाही गई वस्तु की मात्रा। ३ किसी प्रकार की इच्छा। ४ आवश्यकता या हर्षों के प्रति उठाई जाने वाली आवाज। ५ वह कन्या जिससे प्रणय संबंध तय हो चुका हो। ६ स्त्रियों के शिर का सौभाग्यचिह्न। ७ देखो 'मांगण'।

मांगडोको–पु० स्त्रियों का सौभाग्य सूचक गहना, आभूषण।

मांगण–पु० [सं० मार्गण] १ मांगना क्रिया या भाव, याचना। २ पथ प्रदर्शक। ३ याचक, भिखारी। ४ बंदीजन, भाट,। ५ विप्र, ब्राह्मण। ६ ज्योतिषी, जोशी। ७ पंडित, कवि। –वि० मांगने वाला, याचक। —गार, यार, हार–पु० याचक, भिखारी। ढाढियों की एक शाखा।

मांगणी–स्त्री० याचना।

मांगणो–पु० भिक्षा।

मांगणो (णी)–क्रि० [सं० मार्गण] १ कुछ पाने के लिये याचना करना, हाथ फैलाना, प्रार्थना करना। २ इच्छा जाहिर करना, आवश्यकता बताना। ३ भिक्षा वृत्ति करना। ४ किसी को कुछ देने के लिये कहना। ५ ऋण के रूप में बकाया होना, लेनदारी होना। ६ कोई वस्तु लौटाने को कहना। ७ वस्तु की कीमत बताना, मोल कहना। ८ इजाजत लेना, पूछना, अनुमति लेना। ९ अफसोस आदि प्रगट या जाहिर करना। १० प्रस्ताव करना।

मांगत–स्त्री० १ हिस्सा, अंश, हक। २ कर्जा, ऋण।

मांगफूल–पु० स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष।

मांगळगीत–पु० [सं० मांगल्यगीत] शुभ अवसरों पर गाये जाने वाले लोक गीत।

मांगळिक, मांगलिक–वि० [सं० मंगल+ इक] १ मंगलदायक, शुभ। २ शुभ मानने योग्य। ३ शुभ अवसरों पर काम आने वाला। –पु० पुढ़।

मांगळियावटी–पु० मांगलिया गहलोतों के शासन वाला प्रदेश।

मां'गळी–स्त्री० १ जल पात्र। २ देखो 'मंगळा'। ३ देखो 'मांगळिक'।

मांगळीक–देखो 'मांगळिक'।

मांगलुरी–स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र।

मांगल्य–वि० [सं०] मंगलकारक, शुभ। –पु० शुभ या खुशी का अवसर।

मांगसर, मांगसुर–देखो 'मिगसर'।

मांगातांगी(गो)–स्त्री० १ मांगने की क्रिया या भाव। २ इधर-उधर से कुछ लेकर गुजर करने की अवस्था। ३ ऋण, कर्ज।

मांगिण–देखो 'मांगण'।

मांगिणहार–देखो 'मांगणगार'।

मांगी–पु० १ लड़के-लड़की के रिश्ते का प्रस्ताव। २ मांगने की क्रिया या भाव। ३ बड़े पात्र पर रखा जाने वाला छोटा जल-पात्र।

मांच–स्त्री० १ आरे के चारों ओर लगने वाला लकड़ी का चौखटा। २ ईंटों के लिये गीली मिट्टी ढोने का एक उपकरण। ३ रथ या बैलगाड़ी की मचान। ४ खाट के बीच की बनी हुई झोली।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांचइ (ई)–१ देखो 'मंच'। २ देखो 'मांची'।

मांचकरोत–पु० एक आरा विशेष।

मांचणी (णो)–देखो 'मचणी' (बो)।

मांची–१ देखो 'मंच'। २ देखो 'मांची'।

मांची–पु० [सं० मंच] १ चारपाई, खाट। २ जलाशय की मिट्टी खोदने का एक माप विशेष।

मांछ मांछली, मांछी–१ देखो 'मत्स्य'। २ देखो 'माछली'।

मांछळी (सी), मांछी–देखो 'मच्छी'।

मांज–स्त्री० श्रद्धा व भक्ति के साथ किसी को धन देने की क्रिया।

मांजण–स्त्री० [सं० मार्जन] १ मांजने की क्रिया या भाव, मार्जन, मज्जन। २ स्नान, परिमार्जन, मज्जन। –वि० सफाई करने वाला, मांजने वाला।

मांजणउ–देखो 'मांजण'।

मांजणियो, मांजणो–वि० [सं० मार्जक] १ मांजने वाला, साफ करने वाला। २ सफाई करने वाला। ३ स्वागत करने वाला, आदर सत्कार करने वाला।

मांजणो (बो)–क्रि० [सं० मार्जन] १ बर्तन या किसी वस्तु को धूल आदि से रगड़ कर साफ करना। मांजना। २ स्नान करना, नहाना। ३ सफाई करना, झाड़ना, पोंछना, पोंछकर साफ करना। ४ घोड़े, ऊंट आदि का शरीर साफ करना। ५ अभ्यास करना। ६ रगड़ना। ७ मिटाना, दूर करना। ८ नष्ट करना।

मांजरि, मांजरी–स्त्री० १ बिल्ली जैसी भूरी आंखें। २ किलंगी। ३ देखो 'मंजरी'।

मांजरो–वि० [सं० मार्जार] (स्त्री० मांजरी) १ बिल्ली जैसी भूरी आंखों वाला। २ भूरी आंखों वाला। –पु० १ भूरी आंखें वाला व्यक्ति। २ बिलाव। ३ छोटी बस्ती या गांव।

मांजवणी (बो)–देखो 'मांजणी' (बो)।

मांजा–पु० गाड़ी के अग्र भाग में लगी दो लकड़ियां, पट्टियां।

मांजाणी (बो)–देखो 'मजाणी' (बो)।

मांजिण, मांजिणउ–पु० [सं० मज्जन] स्नान।

मांजिणी (बो)–देखो 'मांजणी' (बो)

मांजिस्टो–देखो 'मजीठो'।

मांजी–देखो 'मांझी'।

मांजूफळ–देखो 'माजूफल'।

मांजोट–पु० बैलगाड़ी का एक उपकरण।

मांजो–पु० १ ताने के मध्य का भाग। २ खेत का वह टुकड़ा जो बचत होने पर बाद में जोता जाता है। ३ हल की दो रेखाओं के बीच छूटी हुई जमीन। ४ पतंग की डोर विशेष। ५ बैलगाड़ी का एक अवयव। ६ देखो 'मांहजो'।

मांझ–देखो 'मध्य'।

मांझर, मांझळ, मांझळि (ळी)–क्रि० वि० १ बीच या मध्य में। २ अन्दर, भीतर, में। ३ पर, ऊपर। —**निस, रात**–स्त्री० मध्य निशा, अर्ध रात्रि।

मांझवन–पु० रथ, स्यंदन।

मांझि–१ देखो मांझी'। २ देखो 'मध्य'।

मांझिम–देखो मांझळ'। —**रात**='मांझळरात'।

मांझियांमांझी–पु० सरदारों का सरदार, बड़ा सरदार।

मांझिळ–देखो 'मांझळ'।

मांझी–पु० [सं० मध्य] १ प्रधान, नेता, नायक, अगुवा। २ बलवान, वीर, योद्धा। ३ मुख्य, खास। ४ स्वामी, अधिष्ठाता। ५ मेणों की एक उपाधि। ६ केवट, मल्लाह नाविक। —**पण पणो**–पु० मांझी का कार्य, मांझी होने की अवस्था। मांझी का हक, हिस्सा या भाग।

मांझू–१ देखो 'मझ'। २ देखो 'मांझी'।

मांझो–पु० १ सुनहरी जरी का वस्त्र विशेष। २ देखो 'मांजो'।

मांट–देखो 'माट'।

मांटी, मांटोड़ो, मांटीलो–पु० (स्त्री० मांटण) १ पति, खाविंद, भर्ता, कंत। २ स्वामी, मालिक। ३ मर्द पुरुष। ४ दोस्त, मित्र, साथी। ५ वीर पुरुष। —**पण, पणो**–पु० क्षत्रित्व, मर्दानगी, पुंसत्व। साहस। स्वामीत्व।

मांठीड़ी–स्त्री०–मोठ की बड़ी।

मांड–स्त्री० [सं० मण्ड] १ रचना, बनावट, सृष्टि। २ वैभव, विस्तार। ३ किसी कूए या तालाब पर होने वाली भीड़। ४ दबाव। ५ एक रागिनी विशेष। ६ जैसलमेर का एक भाग जहां उक्त राग प्रथम गाई जाती थी। ७ देखो 'मोड़'। ८ देखो 'मांडै'।

मांड–स्त्री० १ कलफ। २ उबलने के बाद चावलों का निकाला जाने वाला पानी। ३ विवाह में कन्या पक्ष के लोग।

मांडइ–स्त्री० क्षण भर के लिये बना हुआ स्थानादि।

मांडण, मांडणउ, मांडणी–स्त्री० [सं० मण्ड] १ रचने या बनाने की क्रिया या भाव। २ बनाव, शृंगार। ३ सजावट। ४ व्यवस्था।

मांडणो–पु० [सं० मंडन] १ शुभ अवसरों में घर के आंगन में की जाने वाली चित्रकारी। २ चित्र। ३ चिह्न, निशान। ४ शृंगार, सजावट। ५ रंग-ढंग। ६ नतीजा, परिणाम। ७ प्रारंभ, शुरूआत।

मांडणो (बो)–क्रि० [सं० मण्डनम्] १ लिखना, लिखकर देना। २ वर्णन या विस्तार से कहना। ३ प्रारंभ करना, शुरू करना। ४ रचना करना, निर्माण करना, बनाना। ५ स्थिर करना, स्थापित करना। टिकाना। ६ सजाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७ चित्रित,चित्रांकित करना । ८ शृंगार करना । ९ चिह्नित करना, चिह्न लगाना । १० रोपना, दृढ़ करना । ११ ठानना निश्चय करना । १२ कुछ करना । १३ फैलाना, पसारना । १४ छितराना, बिखेरना । १५ सृष्टि करना, सृजन करना । १६ रचाना, बनाना । १७ उठाने, लेने के लिए तैयार करना । १८ जमाना, स्थिर करना । १९ हाट आदि लगाना । २० प्रबंध या व्यवस्था करना । २१ व्यक्त करना, जताना, दिखाना । २२ विचारना, सोचना । २३ शुरू करना, प्रारंभ करना । २४ घोड़े या ऊंट पर चारजामा कसना, बांधना । २५ कायम करना,तय करना । २६ संबंध जोड़ना । २७ किसी के सहारे टिकाना, खड़ा करना । २८ व्यवस्थित व स्थित करना । २९ रखना । ३० शस्त्र उठाना, प्रहार करने को तैयार होना । ३१ हठ करना । ३२ देखो 'मंडणो' (बो) ।

मांडबिक, मांडवीक–पु० मंडप के ऊपरी कार्य कर्त्ता ।

मांडळ–पु० चरस के मुख पर लगाया जाने वाला लोहे का गोलाकार कड़ा ।

मांडलीग्रो-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

मांडळो–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।

मांडव, मांडवउ–पु० १ मालवे का एक नगर । २ देखो 'मंडप' । ३ क्षणिक काल के लिए बना मंडप ।

मांडवगढ़-पु० एक नगर का नाम ।

मांडवी–स्त्री० [सं०] १ दशरथ सुत भरत की पत्नी । २ वात्सी-मांडवीपुत्र एक आचार्य की माता ।

मांडवीग्रो मांडवीयो-पु० मण्डप का अधिपति, व्यवस्थापक ।

मांडवु, मांडवो–देखो 'मांडो' ।

मांडव्य–पु० [सं०] १ एक आचार्य जो कौत्स ऋषि का शिष्य था । २ विदेहराज जनक का मित्र एक आचार्य । ३ एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि राजा ।

मांडह, मांडहडो–देखो 'मांडो' ।

मांडहो–देखो 'मांडो' ।

मांडहो–देखो 'मांडो' ।

मांडां, मांडांणी–देखो 'माडांणी' ।

मांडियो–पु० १ विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति । २ देखो 'मांडो' ।

मांडो–स्त्री०[सं०मण्डिका] १एक प्रकार की रोटी विशेष, बाटी । २ दूध की मलाई । –पु० [सं० मंडप] ३ विवाह में वधू पक्ष का व्यक्ति । ४ देखी 'मांड' ।

मांडूक–पु० [सं०] भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

मांडूकायनि–पु० [सं०] एक आचार्य ।

मांडूकायनीपुत्र–पु० [सं०] एक आचार्य ।

मांडूकेय–पु० [सं०] १ एक आचार्य समूह । २ एक आचार्य ।

मांडूक्य–पु० एक उपनिषद ।

माडे, मांडेई–देखो 'माडांणी' ।

मांडेतियो, मांडेतो, मांडैतो–पु०विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति ।

मांडोणी–देखो 'माडांणी' ।

मांडो–पु० [सं० मण्डप] १ विवाह के लिये बनाया हुआ मण्डप । २ विवाह में वधू का पक्ष । ३ विवाह में कन्या पक्ष का घर, डेरा या स्थान । ४ शिकार का मचान । ५ कच्चे दूध की साढ़ी । ६ देखो 'मंडको' । ७ देखो 'मूंडो' । –वि० खिन्न, उदास, मलिन ।

मांडवड़ो, मांडवो, मांडहड़ो, मांडहूड़ो, मांडहो–देखो 'मांडो' ।

मांण–स्त्री० १ शराब की भट्टी । २ देखो 'मांन' ।

मांणक–देखो 'मांणिक्य' । —**डंड**='मांणिक्यदंड' ।

मांणकयंत्र–पु० तेल की घाणी का एक उपकरण विशेष ।

मांणकरूप–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

मांणग–वि० १ भोग विलास करने वाला, रसिक, प्रेमी । २ उपभोग करने वाला । ३ देखो 'मांणिक्य' ।

मांणगर–देखो 'मांणीगर' ।

मांणगाळो–वि० शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला ।

मांणण–स्त्री० १ उपभोग करने की क्रिया या भाव । २ स्त्री, औरत । –वि० उपभोग करने वाला ।

मांणणि (णी)–स्त्री० स्त्री, रमणी । –वि० मान करने वाली, मानवती ।

मांणणो (बो)–क्रि० [सं० मण्] १ भोगना, संभोग करना । २ मौज लूटना, आनन्द करना । ३ ऐश्वर्य भोगना, सुख भोगना । ४ द्रव्य लुटाना, दान देना । ५ रखना । ६ करना । ७ देखो 'मांनणो' (बो) ।

मांणतुंबी–वि०१ मान हीन, मान भंग । २ अपमानित, तिरस्कृत ।

मांणभंग–वि० तिरस्कृत, अपमानित । –पु० अपमान ।

मांणयड़–देखो 'मणियड़' ।

मांणव–देखो 'मानव' ।

मांणस–पु० [सं० मनुष्य] १ मनुष्य, आदमी, मानव । २ परिवार, कुटुम्ब । ३ स्त्री, औरत । ४ पत्नी, अर्द्धांगिनी ५ दासी, परिचायिका । ६ पुत्र वधू । ७ जीवात्मा, जीव, प्राणी । ८ देखो 'मांनस' । —**खाणी**–वि० नर भक्षिणी ।

मांणसर, मांणसरोवर-देखो 'मानसरोवर' ।

मांणसाचार–देखो 'मिनखाचार' ।

मांणसियो–पु० १ आंख की पुतली । २ आंख में किसी पुरुष का दिखने वाला प्रतिबिंब । ३ देखो 'मांणस' ।

मांणातुंबी–वि० अपमानित, तिरस्कृत ।

मांणिक मांणिक्क, मांणिक्य–पु० [सं० माणिक्य] १ लाल रंग एक रत्न, पद्मराग । २ इस रत्न के रंग से मिलते-जुलते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंग का एक घोड़ा । ३ घोड़े की चोटी के नीचे की भौंरी । ४ ऐसी भौंरी वाला घोड़ा । ५ एक प्रकार का केला । –वि० लाल ।—**माळा**–स्त्री० उक्त रत्नों की माला, हार ।

मांणिक्यदंडउ–पु० १ एक प्रकार का हाथी । २ हाथी ।

मांणिक्यप्रस्तारिका–स्त्री० एक व्रत विशेष । (जैन)

मांणिग–१ देखो 'मांणग' । २ देखो 'मांणिक्य' ।

मांणिगर–देखो 'मांणीगर' ।

मांणिस–देखो 'मांणस' ।

मांणी–वि० १ मान वाला । २ वीर ।

मांणीगर–वि० १ वैभव को भोगने वाला । उपभोक्ता । २ संभोग या मैथुन करने वाला । ३ मौजी, रसिक । ४ दानी, उदार चित्त, दातार । ५ स्वाभिमान वाला । –पु० १ हाथियों की एक जाति विशेष । २ इस जाति का हाथी ।

मांणु–देखो 'मांन' ।

मांणुस–देखो 'मांनुस' ।

मांणुसहांणि–स्त्री० [सं० मानुषघ्राणिका] मनुष्य की गंध ।

मांणेतण–देखो 'मांनेतण' ।

मांणेराव–देखो 'मांणीगर' ।

मांणो–पु० [देशज] १ अनाज का एक माप । परिमाण । २ इस माप के बराबर का एक पात्र । ३ गर्व, मान । –सर्व० मेरा, अपना ।

मांत–देखो 'मौत' ।

मांत्रिक–वि० मंत्र साधने वाला ।

मांद–स्त्री० [सं० मान्द्य] १ मन्दा होने की अवस्था, दशा या भाव । २ अस्वस्थता, बीमारी, रुग्णता । ३ पीड़ा, दर्द । [फा०] ४ हिंसक जानवरों के रहने की गुफा, खोह । शेर की मांद । ५ चंद्र, सूर्य आदि की गति विशेष ।

मांदउ–देखो 'मांदो' ।

मांदगी–स्त्री० [फा०] १ बीमारी, रोग, अस्वस्थता । २ उदासी सुस्ती । ३ थकावट । ४ मंदापन, फीकापन ।

मांदळ–स्त्री० एक वाद्य विशेष ।

मांदळियो–देखो 'मादळियो' ।

मांदलियो–देखो 'मांदो' ।

मांदवाड़, मांदोवाड़, मांदीवाड़ी–पु० [सं० मान्द्यवृत्ति] १ बीमारी, अस्वस्थता । २ थकावट । ३ उदासी सुस्ती ।

मांदो–वि० [सं० मान्द्य] (स्त्री० मांदी) १ बीमार, रुग्ण, रोगी । २ थका हुआ । ३ उदास, सुस्त ।

मांन–पु० [सं० मान] १ प्रतिष्ठा, इज्जत, साख । २ गौरव । ३ आदर, सत्कार, स्वागत । ४ स्वाभिमान । ५ अहंकार, गर्व, मद । ६ स्त्री या नायिका के रूठने की अवस्था या भाव । ७ आकार, आयतन, प्रमाण । ८ सामर्थ्य, शक्ति । ९ वस्तु का भार, तौल, परिमाण । १० माप, पैमाना । ११ प्रमाण । १२ भूल के प्रति पश्चाताप । १३ वाद्य की गति में आने वाले विराम । १४ एक राठौड़ राजा । १५ एक मंत्र । १६ ग्रह । १७ मनुष्य, आदमी । १८ उत्तर दिशा का एक देश –वि० समान ।

मांनक–वि० [सं० मानक] १ जो आधारभूत माना जाय प्रामाणिक । २ देखो 'मांणिक्य' ।

मांनकी–देखो 'मांनुस' ।

मांनख–१ देखो 'मांनस' । २ देखो 'मांनुस' ।

मांनखी–देखो 'मांनवी' ।

मांनखो–पु० [सं० मानषः] १ जनसमूह, जन समुदाय । २ देखो 'मांनुस' ।

मांनगरो–देखो 'मांणीगर' । (स्त्री० मांनगरी)

मांनगृह–पु० [सं० मान-गृह] स्त्रियों (रानियों) का कोप भवन ।

मांनचित्र–पु० [सं०] कोई नक्शा, चित्र ।

मांनण–स्त्री० १ मानने की क्रिया, स्वीकृति । २ सहमति । ३ समझ ।

मांनणो (बो)–क्रि० [सं० मानं] १ स्वीकार करना, मंजूर करना । २ ध्यान देना, गौर करना । ३ किसी के निर्देशों पर चलना । ४ सहमति देना, सहमत होना । ५ मन में कोई धारणा बनाना । ६ ग्रहण करना । ७ किसी को मान्यता देना । ८ श्रद्धा, आस्था, विश्वास रखना । ९ खुश होना, राजी होना । १० पालन करना, धारण करना । ११ समझना, समझा जाना । १२ किसी बात पर एकमत होना । १३ अनुचित कार्य करते हुए रुकना । १४ विश्वास करना भरोसा करना । १५ महत्व देना, मान्यता देना । १६ किसी उक्ति या विचारधारा को मान कर चलना । १७ कल्पना करना । १८ अनुकूल व माफिक पड़ना । १९ सम्मान या आदर करना । २० दक्ष, पारंगत समझना । २१ पूजा करना, अर्चना करना । २२ प्रभावित या कायल होना । २३ प्रतिज्ञा या संकल्प करना । २४ धैर्य रखना । २५ स्थिर रहना ।

मांनता, मांनती–स्त्री० [सं० मान्यता] १ मनौती, मिन्नत । २ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान्यता । ३ श्रद्धा, भक्ति ।

मांनताळ–पु० मान सरोवर झील ।

मांनतालकार–पु० एक जाति या वर्ग विशेष ।

मांनधाता–पु० [सं० मान्धातृ] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्य वंशी राजा ।

मांनध्वज–पु० एक राठौड़ राजा ।

मानमंदिर–पु० [सं०] १ रानियों का कोप भवन । २ एकान्त कक्ष । ३ वैद्यशाला ।

मांनराजा–पु० एक राठौड़ राजा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानव-पु० [सं० मानवः] १ मनुष्य जाति का एक प्राणी, आदमी, इन्सान। २ सृष्टि के अनेक प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणियों का वर्ग, जाति। ३ मनुष्य जाति, वर्ग, समाज। ४ एक छन्द विशेष। ५ एक पुराण वेत्ता एवं धर्मशास्त्र कार। ६ अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। ७ उत्तम मन्वंतर का एक देव विशेष। –वि० १ मनु संबंधी, मनु का। २ मनु का वंशधर। ३ मनुष्य का।

मानवती-स्त्री० [सं० मानवती] १ रूठनेवाली नायिका, स्त्री। २ गर्वीता स्त्री।

मानवदेव-पु० राजा, नृप।

मानवधरमसास्त्र-पु० [सं० मानव-धर्म शास्त्र] मनुस्मृति।

मानवपति-पु० [सं० मानवपति] राजा, नरेश।

मानवसास्तर (सास्त्र)-पु० [सं० मानव शास्त्र] मानव की उत्पत्ति, विकास आदि के वर्णन वाला ग्रंथ।

मानवा मानवी-वि० [सं० मानव] १ मनुष्य की, मनुष्य संबंधी। इन्सानी। २ मनुष्योचित। –स्त्री० १ स्वयंभु व मनु की कन्या का नाम। २ परशु एवं इड़ा नामक वैदिक वाङ्मय में निर्दिष्ट स्त्रियों का पैतृक नाम। ४ देखो 'मानव'।

मानवीय-वि० [सं० मानवीय] इन्सानी।

मानवेंद्र-पु० [सं० मानव-इन्द्र] राजा, नरेश।

मानस-पु० [सं०मानस] १ मन की आन्तरिक सत्ता, मस्तिष्क, मन, चित्त। २ विचार, भाव। ३ हृदय, दिल। ४ संकल्प, विकल्प। ५ कामदेव। ६ विष्णु का एक रूप। ७ एक यक्ष विशेष। ८ पितरों का एक समूह। ९ वशवर्तिन देवों में से एक। १० एक नाग। ११ चर, दूत। १२ शाल्मली द्वीप का एक देश। १३ एक राग विशेष। १४ मानसरोवर झील। १५ पुष्कर द्वीप का एक पर्वत। १६ एक लक्षण विशेष। १७ मनुष्य, आदमी। १८ दो मात्राओं का समूह। १९ तुलसी कृत रामायण। २० देखो 'मानसर'। –वि० १ मन से उत्पन्न, मनोभव। २ मन से संबंधित। ३ मन से सोचा या विचारा हुआ। ४ मानसरोवर पर रहने वाला।

मानसओक-पु० [सं० मानस-ओकस्] १ हंस। २ कामदेव।

मानसचारी-पु० [सं० मानस चारिन्] हंस।

मानसपुतर, मानसपुत्र-पु० [सं०मानस पुत्र] मन इच्छा से उत्पन्न पुत्र।

मानसमुद्र-पु० मान सरोवर झील।

मानसर (सरवर, सरोवर,सरोवरि), मानससर-पु० [सं०मानसर] हिमालय के उत्तर की एक बड़ी झील।

मानसव्रत-पु० [सं० मानसव्रत] अहिंसा, ब्रह्मचर्य आदि का पालन।

मानससंन्यासी-पु० दशनामी संन्यासियों की एक शाखा।

मानससास्तर (सास्त्र)-पु० [सं० मानस शास्त्र] वह ग्रंथ जिसमें मन की वृत्तियों का विवेचन हो।

मानसिक-वि० १ मन से संबंधित, मन का। २ मन की कल्पना से उत्पन्न। ३ मन में होने वाला। ४ मनन करने लायक। ५ मस्तिष्क संबंधी —पु० विष्णु का एक नामान्तर।

मानसी-स्त्री० [सं० मानसी] १ एक विद्या देवी का नाम। २ एक नदी। ३ एक प्रकार की पूजा। —वि० १ मन का, मन संबंधी। २ मन से किया हुआ, मन से सम्पादित। ३ मानवी, इन्सानी।

मानसीगंगा-स्त्री० गोवर्धन पर्वत के समीपस्थ एक पर्वत।

मानसीपूजा-स्त्री० [स०] मन से की जाने वाली पूजा।

मानसूक-पु० [सं० मानसौका] हंस।

मानसून-पु० १ वर्षा के लिये चढ़कर आने वाले बादल। २ बादल। ३ उत्तर-पूर्व व दक्षिण-पश्चिम से चलने वाली हवा। ४ मौसम, वातावरण। ५ वर्षा ऋतु।

मानां-स्त्री० गाथा छन्द का एक भेद।

मानाथ-पु० [सं० मानाथ] लक्ष्मीपति विष्णु।

मानिख-देखो 'मानुस'।

मानिणी (णौ)-देखो 'मानणी' (णौ)।

मानिता-देखो 'मानता'।

मानिनी-स्त्री० [सं० मानिनी] १ वैशाली के राजा राज्यवर्द्धन की पत्नी। २ गर्वीली नायिका। ३ देखो 'मानी'।

मानी-वि० [सं० मानिन्] (स्त्री० मानिनी) १ स्वाभिमानी। २ माननीय, सम्माननीय, प्रतिष्ठित। ३ गर्वीला, अहंकारी। ४ आन-बान वाला। –पु० [अ०मा'नी] १ अभिप्राय, आशय, अर्थ। २ रहस्य मूलक तत्त्व, भेद। ३ प्रयोजन, उद्देश्य।

मानीतौ-वि० (स्त्री० मानीती) १ माना हुआ, प्रिय। २ खास विश्वसनीय। ३ मान, प्रतिष्ठा, गौरववाला। ४ कृपा पात्र। ५ प्यारा, दुलारा।

मानु-१ देखो 'मान'। २ देखो 'मानौ'।

मानुक्ष, मानुख, मानुस-पु० [सं० मानुष] (स्त्री० मानुसी) १ आदमी, इन्सान, नर। २ मिथुन, कन्या और तुला राशियों का नामान्तर। ३ प्रमाण के तीन भेदों में से एक। ४ मनुष्यत्व, इन्सानियत। ५ पुरुषार्थ। –वि० १ मनुष्य संबंधी, मानवी। २ अनुग्रहशील, दयालु।

मानुसता-स्त्री० इन्सानियत, मनुष्यता।

मानेतरा-स्त्री० [सं० मानित] १ पति की विशेष प्रिय स्त्री, नायिका। २ जिसकी मान्यता अधिक हो। ३ पति की कृपापात्र स्त्री। ४ मान करने वाली नायिका। –वि० १ मानवती, मानिनी। २ कृपा पात्र, विशेष प्रिय।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांनौ–अव्य० १ यथा, जैसे, गोया। २ देखो 'मांन'।

मान्य–वि० [सं० मान्य] १ मानने योग्य, माननीय। २ प्रामाणिक। ३ सम्माननीय, आदर योग्य। ४ उचित, ठीक। –पु० १ विष्णु। २ शिव। ३ मैत्रावरुण।

मांम–पु० [सं० माम] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा, गौरव। २ सम्मान, आदर। ३ जीत, विजय। ४ मर्यादा, सीमा, हद। ५ गर्व, अहंकार। ६ दृढ़ता। ७ पहाड़, पर्वत। ८ इच्छा, अभिलाषा। ९ युद्ध। १० शक्ति, बल। ११ बदला। १२ धन, दौलत, वैभव। १३ कार्य, काम। –वि० १ लायक, योग्य। २ युद्ध करने वाला योद्धा। ३ मेरा, अपना। ४ देखो 'मांमौ'। ५ देखो 'मोम'।

मांमउ–देखो 'मांमौ'।

मांमगर–पु० एक वर्ग विशेष।

मांमड़–पु० १ आवड़ देवी के पिता का नाम। २ देखो 'मांमौ'।

मांमड़ाई, मांमड़ियास–स्त्री० आवड़ देवी।

मांमलत, मांमलति, मांमलात–स्त्री० [अ० मुआमलत] १ पारस्परिक व्यवहार। २ विवादास्पद बात, मुकद्दमा। ३ कोई बात या विषय। ४ घटना।

मांमलागुजार–वि० 'मामला' नामक कर चुकाने वाला।

मांमलियौ–१ देखो 'मांमौ'। २ देखो 'ममोलौ'।

मांमलौ–पु० [अ० मुआमलः] १ युद्ध, लड़ाई, झगड़ा। २ आक्रमण, हमला। ३ समस्या, उलझन। ४ दुःसाध्य या दुष्कर कार्य। ५ कार्य या काम। ६ कोई विषय, बात। ७ विवाद, मुकद्दमा। ८ घटना। ९ वैभव, ठाट-बाट। १० व्यापार, व्यवसाय। ११ प्रभाव, रौब। १२ स्थिति, हालत, दशा। १३ वृत्तान्त, हाल। १४ समझौता। १५ व्यवस्था या परम्परा। १६ प्रधान या मुख्य बात। १७ कौल, वचन। १८ खिराज नामक कर।

मांमस–स्त्री० मामी सासू, सासू की भोजाई।

मांमसरौ–पु० सासू का भाई, मामा श्वसुर।

मांमांण, मांमांणी–पु० मामा का घर, ननिहाल।

मांमाई–पु० मामा का वंशज। –वि० मामा का, मामा से संबंधित।

मांमात–स्त्री० मामा की बेटी बहन।

मांमासुरकी–स्त्री० कान का आभूषण विशेष।

मांमारखी–देखो 'ममारखी'।

मांमाळ–पु० ननिहाल, मातृगृह, मामा का घर।

मांमालूणी–स्त्री० वर्षा ऋतु में होने वाला, छोटी पत्ती का एक घास विशेष।

मांमी–स्त्री० मामा की स्त्री। —सासू स्त्री० सासू की भोजाई। —सुसरौ, सुसरौ–पु० सासू का भाई।

मांमू–देखो 'मांमौ'।

मांमूर–पु० [अ०] १ बस्ती, आबादी। २ साधन, सामग्री। ३ व्यवस्था। –वि० १ जिसे आदेश दिया गया हो। २ तैनात, मुकर्रर, नियुक्त। ३ बसा हुआ, आबाद। ४ भरा हुआ, परिपूर्ण। ५ बंद। ६ खचाखच भरा हुआ। ७ समृद्ध। ८ बिल्कुल।

मांमूली–वि० [अ० मा'मूली] १ साधारण, सामान्य। २ अत्यल्प, थोड़ासा, छोटासा। ३ महत्वहीन, निरर्थक। ४ आसान, सरल, सीधा-सादा। ५ रोजमर्रा का। ६ प्रायः होने वाला। ७ परम्परागत, रस्मी। ८ निश्चित ढंग से होने वाला।

मांमूल्यौ, मांमोलियौ, मांमोलौ, मांमोल्यौ–पु० १ मामा का पुत्र भाई। २ देखो 'ममोलौ'।

मांमौ–पु० (स्त्री० मांमी) १ मां का भाई, नाना का पुत्र। २ भीलों का एक संबोधन।

मांमौजी–पु०१ परोपकार में वीरगति प्राप्त करने वाला व्यक्ति। २ मामा।

मांय–क्रि०वि० [सं० मध्य] १ भीतर, अन्दर, में। २ ओट में, आड़ में। ३ दरम्यान, बीच। ४ बहुतों के बीच, मध्य में। ५ देखो 'माता'।

मांयकर–अव्य० अन्दर से होकर।

मांयड़ौ–देखो 'माता'।

मांयनौ–पु० [अ० मुआयनः] १ गौर करके ठीक देखने की क्रिया या भाव। २ निरीक्षण, जांच पड़ताल। ३ अर्थ, मतलब।

मांयड़ली, मांयलोड़ी–देखो 'मांयलौ'। (स्त्री० मांयड़ली)

मांयलौ–वि० [सं० मध्य] (स्त्री० मांयली) १ बाहर वाले का विपर्याय, अन्दर का। २ किसी स्थान, क्षेत्र या परिधि के भीतर का। ३ अन्दर स्थित। ४ आंतरिक। ५ चारों ओर का। ६ कइयों के बीच का। ७ गुप्त, गोपनीय। –सर्व० मेरा।

मांया–स्त्री० १ सौतेली माता। २ देखो 'माया'।

मांर–देखो 'मोर'।

मां'रौ–देखो 'मेरौ'।

मांळ–देखो 'मौळ'।

मांवड़ी–देखो 'माता'।

मांवणी–स्त्री० [सं० म्नानी] पाठशाला के छात्रों द्वारा बोली जाने वाली गिनती।

मांवसी–स्त्री० मासी।

मांवीत–देखो 'माईत'।

मांस–पु० [सं०] १ मानव आदि प्राणियों के शरीर में हड्डियों पर होने वाला ठोस पदार्थ, गोश्त, आमिष। २ फल का गूदा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ मछली । —अहारी-पु० पशु-पक्षियों का मांस पकाकर खाने वाला । —कर, करण, कारि-पु० कसाई, मांस बेचने वाला । खटीक । रक्त, रुधिर । —खोर-वि० मांस भक्षी ।

मांसकेसी-पु० [सं० मांस केशिन्] वह घोड़ा जिसके पांवों में मांस के गुठले निकले हों ।

मांसचर-देखो 'मांसाचार' ।

मांसट्ट-पु० मांस पिंड या खंड ।

मांसती-देखो 'मासती' ।

मांसपिंड-पु० [सं०] शरीर, देह ।

मांसपिंडी-पु० शरीरस्थ मांस-ग्रंथि ।

मांसपेसी-स्त्री० प्राणियों के शरीर के अन्दर का एक अवयव ।

मांसभक्षी (क्षी)-वि० [सं० मांस-भक्षिन्] मांस खाने वाला, जिसका आहार मांस ही ।

मांसमौजी-वि० मांस खाने से तृप्त होने वाला ।

मांसरोहिणी-स्त्री० एक प्रकार का जंगली वृक्ष ।

मांसल-वि० १ मांस युक्त, मांस से परिपूर्ण । २ हृष्ट-पुष्ट । ३ स्थूलकाय ।

मांसलता-स्त्री० मांस से परिपूर्ण होने की अवस्था ।

मांसाचार (चारी)-पु० १ मांस खाने वाला प्राणी । २ जिनका आहार मांस हो, शेर, गिद्ध आदि ।

मांसाडी-पु० पशुओं के मुंह में होने वाला एक रोग ।

मांसाळ-पु० मामा का घर, ननिहाल ।

मांसाहार-पु० [सं०] मांस भक्षण ।

मांसाहारी-वि० [सं०] मांस भक्षी ।

मांसु-देखो 'मांस' ।

मांसुरोलोम-पु० मूछ ।

मांसेरी, मांसेरी-देखो 'मांसाहारी' ।

मांह-१ देखो 'मांय' । २ देखो 'माह' । ३ देखो 'मुख' । ४ देखो 'म्हां' ।

मांहंकर, मांहंकार-देखो 'मांयकर' ।

मांहगो-देखो 'मूंगो' ।

मांहंजो-सर्व० (स्त्री० मांहजी) हमारा, मेरा ।

मांहंडो, मांहडो-देखो 'मूंडो' ।

मांहणी-देखो 'म्हांणी' ।

मांहणो-देखो 'म्हांणो' । (स्त्री० म्हांणी)

मांहणो (बो)-देखो 'मोहणो' (बो) ।

मांहमां-देखो 'माहोमांहि' ।

मांहमुंदो-देखो 'महमूंदी' ।

मांहरइ-देखो 'म्हारै' ।

मांहरी-देखो 'म्हांरी' ।

मांहरे (रै)-देखो 'म्हारै' ।

मांहरो-देखो 'म्हारो' ।

मांहलु-देखो 'मांयलो' । (स्त्री० मांहली)

मांहलो-देखो 'मांयलो' । (स्त्री० मांहली)

मांहा, मांहा-१ देखो 'मांय' । २ देखो 'म्हां' ।

मांहारी-देखो 'म्हांरी' ।

मांहीनो-देखो 'महीनो' ।

मांहोलो-देखो 'मांयलो' । (स्त्री० मांहोली)

मांहे-देखो 'मांय' ।

मांहेमांहे-देखो 'माहोमांहि' ।

मांहेलो-देखो 'मांयलो' । (स्त्री० मांहेली)

मांहै-देखो 'मांय' ।

मांहोमां, मांहोमांह (हि,हो,हे,है), मांहोमाह-देखो 'माहोमांहि' ।

मा-स्त्री० [सं० मातृ] १ जननी, अंबा, माता । २ माता के स्थान वाली स्त्री, विमाता । ३ वृद्ध व आदरणीय स्त्री । ४ वृद्ध स्त्री का एक संबोधन । ५ लक्ष्मी । ६ सीता । ७ दुर्गा, देवी, शक्ति । ८ गौरी, गिरिजा, पार्वती । ९ पृथ्वी । १० गौ, गाय । —अव्य० १ मत, नहीं, न । २ अन्दर, में ।

मा'-देखो 'महा' ।

माइ, माइडी-देखो 'माता' ।

माइत-देखो 'माईत' । —पण, पणो='माईतपणो' ।

माइवाहक-पु० [सं० मातृ-वाहक] लकड़ी का घुण, कीड़ा ।

माई-देखो 'माता' ।

माईजायो-देखो 'माजायो' ।

माईत-पु० [सं० मातृ-पितृ] १ माता-पिता, मां-बाप । २ पूर्वज, बड़ेरे । ३ वृद्ध, बुजुर्ग । ४ संरक्षक, अभिभावक । —पण, पणो-पु० माता-पिता होने की अवस्था या भाव । बड़प्पन. छोटों पर किया जाने वाला अनुग्रह । अभिभावकत्व ।

माईय-देखो 'माता' ।

माईया-१ देखो 'माया' । २ देखो 'माता' ।

माईरीलाल-पु० साहस व परोपकार का कार्य करने वाला व्यक्ति ।

माउ, माउड़ी-देखो 'माता' ।

माउजी-देखो 'माजी' ।

माउलउ-देखो 'माउलो' ।

माउलाही-पु० [सं० मातुलीय] मामा का, मामा संबंधी ।

माउलो-पु० [सं० मातुलः] माता का भाई, मामा ।

माऊ-देखो 'माता' ।

माऊजी-देखो 'माजी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माऊलो–देखो 'माउलो' ।

माकव–पु० [सं०] १ आम का वृक्ष । २ उक्त वृक्ष का फल । ३ इन्द्र ।

माकंदी–पु० [सं०] युद्ध से पूर्व पांडवों द्वारा मांगे गये पांच गांवों का समूह ।

माक–पु० अर्जुन का एक नाम ।

माकड़–१ देखो 'मरकट' । २ देखो 'मत्कुण' ।

माकड़ा–पु० (ब.व.) १ बैलगाड़ी के दो अवयव । २ पशुओं के पुट्ठे ।

माकड़ी–स्त्री० १ पीठ । २ कान का एक आभूषण । ३ कूआ खोदते समय काम आने वाला एक उपकरण । ३ देखो 'चाखड़ी' । ४ देखो 'मकड़ी' । ५ गाय की विछिया ।

माकड़ो–पु० १ बैलगाड़ी का एक अवयव । २ मनुष्य व पशुओं के कूल्हे तथा घुटनों का मध्य भाग । ३ पशुओं के पुट्ठों के संधिस्थल । ४ देखो 'मरकट' ।

माकण–१ देखो 'मत्कुण' । २ देखो 'मरकट' । ३ देखो 'माखण' ।

माकरी–स्त्री० माघ शुक्ला सप्तमी तिथि ।

माकूल–वि० [अ० मा'कूल] १ उचित, मुनासिब । वाजिब । २ उत्तम, उम्दा, अच्छा, बढ़िया । ३ आवश्यक, वांछनीय, यथेष्ट । ४ योग्य, लायक । ५ सभ्य, शिष्ट ।

माख–पु० [सं० मक्ष] १ मक्खियों का झुण्ड, समूह । २ गर्व, अभिमान । ३ नशा, मद । ४ नाराजगी, क्रोध । ५ पश्चाताप, पछतावा । ६ देखो 'माखो' ।

माखण, माखणड़ो–पु० [सं० म्रक्षण] १ दही को मथने पर निकलने वाला नवनीत, मक्खन । २ सार वस्तु, तत्त्व ।

माखणियो–पु० १ एक प्रकार का कपड़ा । २ एक प्रकार का घास । ३ एक प्रकार का पत्थर । ४ देखो 'माखण' ।

माखन–देखो 'माखण' ।

माखी–स्त्री० [सं० मक्षिका] १ पतंगों की जाति का एक जीव । २ मधु मक्षिका । ३ बन्दूक की नाल पर बना एक नुक्का ।

माखीमार–पु० मक्खियों का शिकार करने वाला एक पतंगा ।

माखीमध–पु० [सं० मधु-मक्षिका] मधुमक्खियों का छत्ता ।

माखीमार–पु० १ मक्खियों को मार कर खाने वाला जानवर । २ मक्खियां उड़ाने की छड़ी । ३ कंजूस व्यक्ति ।

माखीमाळ, माखीमाळो–पु० मधुमक्खियों का छत्ता ।

माखो–पु० १ बड़ी मक्खी । २ सोना मक्खी । ३ बड़ा अफीमची ।

माग–स्त्री० १ घोड़े की एक चाल विशेष । २ देखो 'मारग' । ३ देखो 'माघ' ।

मागड़ी–देखो 'मारग' ।

मागज–देखो 'मांगण' ।

मागण–देखो 'मांगण' ।

मागणहार, मागिणहार–देखो 'मांगणहार' ।

मागणो (बो)–क्रि० [सं० मार्गण] १ खोजना, तलाशना । २ अनुसंधान या शोध करना । ३ देखो 'मांगणो' (बो) ।

मागध–पु० [स०] १ एक प्राचीन वर्णसंकर जाति । २ उक्त जाति का व्यक्ति । ३ बंदीजन, भाट । ४ मगध देश का राजा । ५ मगध का निवासी । ६ जरासंध का नामान्तर । ७ मगध की भाषा । ८ जीरा । ९ पिप्पली मूल । १० मगध । –वि० मगध का, मगध संबंधी ।

मागधक–पु० [सं० मगध+अक] १ मगध का निवासी । २ मागध भाट ।

मागधी–स्त्री० [सं०] १ मगध देश की प्राचीन भाषा । २ मगध की राजकुमारी । ३ जुही, यूथिका । ४ छोटी इलायची । ५ चीनी, शक्कर । ६ बड़ी, पीपल ।

मागधेय–पु० चुंगीकर, महसूल ।

मागनिसार–पु० [सं० मार्ग-निष्कासन] निकलने का रास्ता, निकास ।

मागरवाळ–पु० याचक, भिक्षुक ।

मागसिर, मागसिरि–देखो 'मिगसर' ।

मागि–देखो 'मारग' ।

मागिणहार, मागिलहार–देखो 'मांगणहार' ।

मागु–१ देखो 'मांग' । २ देखो 'मारग' ।

माघ–पु० [सं०] १ शिशिर ऋतु का प्रथम मास । ग्यारहवां चन्द्र मास । २ संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि । ३ इस कवि का प्रसिद्ध ग्रंथ 'शिशुपाल वधम्' । ४ कुंद का फल ।

माघजी–पु० [स० माघ] १ ज्योतिषी । २ देखो 'माघ' ।

माघव–देखो 'मघवा' ।

माघवई, माघवती–स्त्री० [सं० माधवती] १ सात नरकों में से एक । २ पूर्व दिशा ।

माघवन–वि० [सं०] इन्द्र का, इन्द्र द्वारा शासित ।

माघवांण, माघवांन–देखो 'मघवा' ।

माघि, माघी–स्त्री० [स० माघ] माघ मास की पूर्णिमा । –वि० १ माघ का, माघ संबंधी । २ मघा नक्षत्र युक्त ३ देखो 'माघ' ।

माछो–वि० [सं० मद] (स्त्री० माछी) १ अशुभ, खराब, खोटा । २ निम्न कोटी का, घृणित, हेय । ३ गंदा, भद्दा । ४ नीच, बुरा । ५ अनुचित, बुरा, खराब । ६ शोचनीय, चिंताजनक । ७ दुबला-पतला, कमजोर । ८ बीमार, रोगी । ९ खिन्न, उदास । १० अरुचिकर । ११ हल्के दर्जे का, न्यून ।

माच–देखो 'मोच' ।

माचणो (बो), माचवणो (बो)–देखो 'मचणो' (बो) ।

माछदर–देखो 'मछदर' ।

माछदरसिख–पु० गोरखनाथ ।

माछंद–देखो 'मछंदर' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माछ-पु० [सं० मत्सर] १ गाढ, दृढ़ता । २ देखो 'माछर' । ३ देखो 'मच्छ' ।

माछर-पु० [सं० मत्सर] मानव आदि प्राणियों का रक्त चूसने वाला एक सूक्ष्म पतंगा ।

माछळ, माछळउ-देखो 'मच्छ' ।

माछलड़ी, माछळी, माछली, माछि-देखो 'मच्छी' ।

माछळो-पु० वर्षा ऋतु में आकाश में बना मच्छी के आकार का चिह्न, जो वर्षा का सूचक माना गया है ।

माछिणि, माछिळी, माछिली-देखो 'मच्छी' ।

माछी-पु० १ धीवर, मछुआ । २ देखो 'मच्छी' ।

माछु, माछौ-अव्य० १ नहीं, न । २ मच्छ ।

माज-स्त्री० प्रतिष्ठा, इज्जत, मान ।

माजणउ-देखो 'मांजण' ।

माजणी (बी)-देखो 'मांजणी' (बी) ।

मा'जन-देखो 'महाजन' ।

मा'जनी-देखो 'महाजनी' ।

माजतूं माजनौ-पु० १ इज्जत, प्रतिष्ठा, मान । २ लक्षण, गुण । ३ बुद्धि, अक्ल । ४ अस्तित्व, हस्ती । ५ मान, आदर, सम्मान । ६ बड़ाई, तारीफ । ७ कृत्य, कर्म ।

माजम-स्त्री० भंग मिली बादाम की चक्की, स्वादिष्ट मादक पदार्थ ।

माजरि-देखो 'मांजरी' ।

माजरो-पु० [अ० माजरा] १ घटना । २ किसी घटना का विवरण । ३ मामला । ४ देखो 'मांजरो' ।

माजा-स्त्री० १ आज्ञा । २ मर्यादा, सीमा ।

माजाई माजायो-स्त्री० [स० मातृ+जाता] बहिन, सहोदरा ।

माजायो-पु० [सं० मातृ+जातः] भाई, सहोदर ।

माजियो-१ देखो 'मांझी' । २ देखो 'माजी' ।

माजी-स्त्री० [स०मा+जी] १ वृद्ध स्त्री, बुढ़िया । २ वृद्ध स्त्री का आदर युक्त संबोधन । ३ राजमाता । ४ मां, माता । ५ दुर्गा, देवी । ६ देखो 'मांझी' ।

माजुम-देखो 'माजम' ।

माजु-पु० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष ।

माजून-पु० [अ० मअजून] १ औषधि में काम आने वाला मीठा अवलेह । २ देखो 'माजम' ।

माजूफळ-पु० [फा०] एक औषधि विशेष ।

माजो-पु० [अ० मौजा] १ ग्राम, गांव । २ स्थान, जगह ।

मांज्झले-देखो 'मझि' ।

माझ-पु० [अ० मदाज] १ राज्य, देश । २ रियासत । ३ सीमा, हद । ४ मर्यादा । ५ छेह । ६ देखो 'मध्य' ।

माझम-स्त्री० १ मेवाड़ की एक नदी । २ देखो 'माजम' ।

माझळ, माझळि, माझळी-देखो 'मांझळ' । **--रात**='मांझळरात' ।

माझारो-क्रि०वि० भीतर, अंदर, मध्य में

माझि-१ देखो 'मध्य' । २ देखो 'मांझी' ।

माझिम-देखो 'मांझळ' । **—रात**= मांझळरात' ।

माझियो-देखो 'मांझी' ।

माझिळ-देखो 'मांझळ' ।

माझी-देखो 'मांझी' ।

माझीयो-देखो 'मांझीयो' ।

माझो-पु० हिफाजत, जाब्ता ।

माट-पु० [सं० मृद्-भांड] १ दही मथने की रेई । २ मटका, भाण्ड । ३ मिट्टी का बड़ा पात्र । ४ मालिक, स्वामी । ५ मुंह पर चमड़ा मंढा एक वाद्य । ६ खेत की मेंड़ । ७ देखो 'माठ' । ८ देखो 'माटी' ।

माटड-देखो 'माटे' ।

माटकी, माटली-१ देखो 'मटकी' । २ देखो 'माठी' ।

माटको-देखो 'मटको' ।

माटवी-स्त्री० चारणकुलोत्पन्न एक देवी ।

माटि, माटी-स्त्री० [सं० मृत्तिका] १ पृथ्वी की सतह पर रहने वाली धूल रेत, रज । मिट्टी । २ जल पात्र आदि बनाने की चिकनी मिट्टी । ३ तालाब की सतह में जमने वाली मिट्टी । ४ ताजा खोदी हुई रेत । ५ शरीर, देह । ६ मृत शरीर, शव । ७ मांस, आमिष । ८ वह तत्त्व जिससे प्राणियों के शरीर बनते हैं । ९ देखो 'मांटो' ।

माटुवो-पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

माटे (टैं)-क्रि०वि० १ लिए, वास्ते, निमित्त । २ केवल, सिर्फ, मात्र ।

माटो पु० [सं० मात्तिक] १ मिट्टी का बड़ा पात्र, मटका । २ विलक्षण कार्य करने वाले के प्रति एक संबोधन । ३ विवाह के बाद कन्या के साथ भेजा जाने वाला बड़ी, पापड़ आदि सामान ।

माठ स्त्री० [सं० मष्ठ] १ चालू कार्य की समाप्ति, अंत । २ सीमा, हद । ३ संतोष, सब्र, धीरज । ४ शांति, चुप्पी, मौन । ५ खेत की मेंड़ । ६ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत । ७ स्वाभिमान । ८ देखो 'माठी' ।

माठणो (बो)-क्रि० १ पत्थर पर घड़ाई करना । २ देखो 'मठारणो' (बो) ।

माठमो (धो)-पु० घड़कर साफ किया पत्थर ।

माठर-पु० [स०] १ वेदव्यास । २ सूर्य का एक गण । ३ अष्टादश विनायकों में से एक । ४ ब्राह्मण । ५ कलाल कलवार, शौण्डिक ।

माठल-स्त्री० एक प्रकार की अंगुठी ।

माठसेडो, माठसेढो-देखो 'मठसेडो' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माठा–स्त्री० १ एक मधुर रागिनी विशेष। २ कंजूसी।

माठाकर–वि० कंजूस, सूम।

माठादिन–पु० दुर्दिन, बुरे दिन, दुःख का समय।

माठामनी–वि० कृपण, कंजूस।

माठावरण–पु० भाग्य के बुरे लेख।

माठि–१ देखो 'माठ'। २ देखो 'माठी'।

माठी–स्त्री० १ पुरुषों की कलाई पर पहनने के कड़े। २ कवच, सन्नाह। ३ आवरण। ४ देखो माठौ'।

माठू, माठू, माठोड़ो, माठौ–वि० [सं० मष्ठ] (स्त्री० माठी) १ मंद गति से चलने वाला, धीमा। २ शिथिल, सुस्त, आलसी। ३ धृष्ट, बेशर्म। ४ उदास, मंद। ५ बुरा, खराब, खोटा। ६ अधम, नीच। ७ न्यून, निम्न। ८ अनुचित, नाजायज। ९ निरुत्साहित। १० मिथ्या, असत्य, झूठा। ११ गंदा, असभ्य। १२ कंजूस, सूम, कृपण। १३ मजबूत, दृढ़। १४ कठिन, कठोर। १५ जबरदस्त, भयंकर।

माडंबीक–पु० मंडप का ऊपरि कार्यकर्त्ता।

माड (इ)–पु० १ गर्व, अभिमान। २ ऊमरकोट राज्य का उत्तरी भाग। ३ जैसलमेर राज्य का एक नाम। ४ देखो 'माडैं'।

माडणी (बी)–देखो 'मांडणी' (बी)।

माडपंच–पु० १ मुखिया, प्रधान, नेता। २ पंचायती करने वाला व्यक्ति, पंच। ३ अनावश्यक नेतागिरी करने वाला।

माडां, माडांणी–क्रि०वि० १ जबरदस्ती, बलात्, हठात्, दबाव डालकर। २ न चाहते हुए भी, मजबूरी में, मन मार कर भी। ३ स्वतः ही, अपने आप। ४ बिना प्रयास के।

माडिय, माडी, माडीय–स्त्री० मां, माता।

माढू–पु० १ एक प्रकार की प्राचीन ढाल। २ तलवार। ३ देखो माढू'।

माडै–देखो 'माडां'।

माडेची–स्त्री० आवड़ देवी का एक नाम। –वि० जैसलमेर का, जैसलमेर संबंधी।

माडेचो–पु० जैसलमेर का निवासी।

माडैं, माडैई–देखो 'माडां'।

माढ–पु० १ हठ, बहस, हा-नां। २ देखो 'मांड'।

माढराखात–पु० जैसलमेर के राजा का संबोधन विशेष।

माढव, माढवी–देखो 'माढू'।

माढांणी–देखो 'माडांणी'।

माढी–स्त्री० पत्तों के अन्दर का रेसा।

माढू–पु० १ मानव, मनुष्य, आदमी। २ मित्र, दोस्त। ३ यार, प्रेमी।

माढ़ेची–देखो 'माडेची'।

माणो (बो)–क्रि० [सं० मा] १ समाना। २ निभना, निर्वाह होना, खटना। ३ सहन या बर्दाश्त होना। ४ हजम होना, पचना।

मातंग–पु० [सं०] (स्त्री० मातंगी) १ हाथी, गज। २ इन्द्र का हाथी, ऐरावत। ३ पीपल, अश्वत्थ। ४ संवर्तक, मेघ। ५ एक नाग का नाम। ६ चांडाल, हरिजन। ७ किरात शूद्र। ८ एक राक्षस का नाम। ९ वार-नक्षत्रों संबंधी एक योग। १० देखो 'मतंग'।

मातंगधू–पु० गणेश, गजानन।

मातंगपुर–पु० हस्तिनापुर।

मातंगर–पु० हाथी, गज।

मातंगी–स्त्री० [सं०] १ कश्यप की एक पुत्री। २ वशिष्ट की पत्नी। ३ पार्वती, गिरिजा। ४ दश महाविद्याओं में से एक। ५ चांडाल जाति की स्त्री। ६ विजिया, भंग। ७ हाथी।

मात–स्त्री० [अ०] १ हार, पराजय। २ सामर्थ्य, हस्ती। ३ गेहूँ के आटे व गुड़ की चासनी से बना एक खाद्य पदार्थ। –वि० १ नगण्य। २ देखो 'माता'। ३ देखो 'मात्र'। ४ देखो 'मात्रा'। ५ देखो 'मातो'।

मातउ–देखो 'मातो'।

मातजायो–देखो 'माजायो'।

मातबर–वि० [अ० मो'तबर] १ जिसका विश्वास किया जाय, खास विश्वसनीय। २ सम्पन्न, धनाढ्य। ३ प्रतिष्ठित, प्रभावशाली, सज्जन। ४ आन-बान व प्रतिभाशाली, स्वाभिमानी। ५ अच्छे स्वभाव व गुणों वाला।

मातबरी–स्त्री० [अ० मो'तबरी] १ 'मातबर' होने की दशा या भाव। २ विश्वसनीयता। ३ साहूकारी। ४ गंभीरता।

मातबो–पु० [सं० महात्मा] शादीशुदा जैन यति।

मातम–पु० [फा०] १ मृतक के पीछे किया जाने वाला शोक। २ दुःख, गम। ३ देखो 'महातम'। —पुरसो, पोसो–पु० मृतक के परिवार जनों को सांत्वना देने की क्रिया।

मातमा–देखो 'महात्मा'।

मातमी–वि० [फा०] १ शोक संबंधी, शोक सूचक। २ मातमपोसी।

मातमुख–वि० १ आलसी, सुस्त। २ मूर्ख, मूढ़, जड़मति।

मातर–१ देखो 'मात्र'। २ देखो 'मात्रका'। ३ देखो 'माता'। ४ देखो 'मात'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मातरा–स्त्री० १ धन, दौलत, सम्पत्ति। २ मात्रा। ३ माता।

मातरो–पु० मूत, पेशाब।

मातळ, मातळि–पु० [सं० मातलि] १ महावत। २ इन्द्र का सारथी, रथवान।

मातलोक–पु० [सं० मृत्यु लोक] १ मृत्युलोक, मनुष्य लोक। २ मातृ भूमि।

मातवट (टि)–देखो 'मथावटि'।

मातवर–देखो 'मातबर'।

माता–स्त्री० [सं० मातृ] १ जन्म देने वाली मां, जननी, अंबा। २ माता के स्थान वाली स्त्री। ३ आदरणीय व वृद्धा स्त्री। ४ पार्वती। ५ दुर्गा, देवी, शक्ति। ६ लक्ष्मी। ७ गौ। ८ पृथ्वी, भूमि। ९ धन, दौलत। १० शीतला या चेचक नामक रोग। ११ नव दुर्गाएँ। १२ इन्द्र वारुणी। १३ जटामासी।

मातामता–क्रि० वि० घूमते-फिरते।

मातामह–पु० माता का पिता, नाना।

मातीगोठ–स्त्री० बड़ी गोष्ठी।

मातीमुरगी–स्त्री० धनवान व सम्पन्न आसामी।

मातु–देखो 'माता'।

मातुळ (ल), मातुलि (ली)–पु० [सं० मातुल] १ मामा। २ धतूरे का पौधा। ३ एक सर्प विशेष। ४ देखो 'मातलि'।

माते–देखो 'माथै'।

मातेत–वि० [अ० मातहत] १ अधीनस्थ, अधीन रहने वाला। २ पराधीन। –पु० १ अधीनस्थ कर्मचारी। २ सहायक कार्यकर्त्ता।

मातेती–स्त्री० [अ० मातहती] १ 'मातहत' होने की दशा अवस्था या भाव। २ अधीनता।

मातैं–देखो 'माथै'।

मातो–वि० [सं० मत्त] (स्त्री० माती) १ मोटा-ताजा, स्थूल काय। २ हृष्ट-पुष्ट, तंदुरुस्त। ३ मस्त, मतवाला। ४ मदमस्त, नशे में चूर। गर्क, लीन। ५ घायल। ६ अभिमानी, अहंकारी। ७ प्रसन्न, खुश। ८ अधिक दिन का पड़ा हुआ, विकृत। ९ बलवान, शक्ति-शाली। १० भयंकर भयानक। ११ जबरदस्त, जोरदार। १२ सघन, घना, गहरा। १३ तेज, तीव्र, उग्र। १४ अत्यधिक। १५ भारी, वजनी। १६ देखो 'माता'।

मातंग–देखो 'मातंग'।

मात्र–अव्य० [सं०] १ केवल, सिर्फ। २ समान, भर। ३ देखो 'माता'।

मात्रक–पु० [सं०] माता का भाई, मामा।

मात्रका–स्त्री० [सं० मातृका] १ अंधकासुर का खून चूसने हेतु शिव द्वारा निर्मित शक्तियां। लोक देवियां। २ देवी, देव माता। ३ आर्यमा नामक आदित्य की पत्नी। ४ एक तांत्रिक यंत्र। ५ यंत्र में लिखे जाने वाले अंक या लिपि।

मात्रभोम–देखो 'मात्रिभूमि'।

मात्रा–स्त्री० [सं०] १ नाप या तौल के अनुसार कोई परिमाण। २ नाप या तौल का उपकरण। ३ अक्षर के आगे-पीछे व ऊपर लगने वाला चिह्न। ४ छन्दशास्त्र के अनुसार कला। ५ परिमाण, संख्या। ६ औषधि की मात्रा, खुराक। ७ अंश भाग। ८ कण, अणु। ९ पल, लहमा। १० धन, सम्पत्ति। ११ तत्त्व। १२ शक्ति, बल। १३ संगीत में ताल का निश्चित भाग। १४ स्वर के उच्चारण का समय। १५ संगीत में गीत और वाद्य का समय, निरूपण। १६ काम की बाली। १७ एक आभूषण या रत्न।

मात्रि–वि० [सं० मातृ] माता संबंधी, माता का।

मात्रिक–वि० [सं०] १ मात्रा संबंधी, मात्रा युक्त। २ मात्रा से बनने वाला। –पु० १ छन्दों का एक वर्ग व इस वर्ग का छन्द। २ देखो 'मात्रक'।

मात्रिभाखा (भासा)–स्त्री० [सं० मातृ भाषा] १ घर, परिवार प्रदेश व देश की भाषा, बोली। २ राष्ट्रभाषा।

मात्रिभूमि–स्त्री० [सं० मातृभूमि] जन्म भूमि, अपना देश, स्वदेश।

मात्रिमुख, मात्रीमुख–पु० [सं० मातृ मुख] मूढ या मूर्ख।

मात्रिरिस्ट–पु० [सं० मातृरिष्ट] अशुभ लग्न में संतान जन्मने पर माता-पिता पर आने वाला संकट।

माथ, माथह–१ देखो 'माथौ'। २ देखो 'माथै'।

माथइयो, माथउ, माथड़ो, माथलियो–देखो 'माथो'।

माथाकर–क्रि० वि० ऊपर होकर, ऊपर से।

माथाधोवण, माथानावण–पु० [सं० मस्तक+धोवनं, स्नान] १ प्रसव के कुछ दिन बाद जच्चा को कराया जाने वाला स्नान। २ घी और छाछ मिला, सिर धोने का पानी।

माथापच, माथापची, माथाफोड़, माथाफोड़ी–स्त्री० १ किसी बात या विषय पर दिमाग लगाने की क्रिया, बुद्धि का श्रम। २ प्रपंच, झंझट। ३ मन या बुद्धि पर अनावश्यक बोझा। ४ परिश्रम, मेहनत। ५ बहस, हुज्जत। ६ किसी बात या कार्य को समझने के लिये बुद्धि पर लगाया जाने वाला जोर।

माथायलो–वि० (स्त्री० माथायली) मस्तक के ऊपर वाला। ऊपर वाला।

माथारखो–स्त्री० १ छुपने की जगह। २ सुरक्षित स्थान।

माथासरो, माथासिरो–पु० १ शिखर, चोटी। २ उद्गम स्थान। ३ किसी वस्तु का सब से ऊपर का शिरा। ४ अन्तिम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंजिल। ५ किसी वंश का आदि पुरुष। ६ अंत, छोर, हद, सीमा। ७ पूर्वजों की जन्म भूमि, जन्म स्थान। ८ देखो 'मथारी'।

माथासून–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

माथासूल–पु० [सं मस्तक-शूल] शिर दर्द।

माथाहरी–देखो 'माथासरी'।

माथोबी–पु० गाड़ी के जूए के नीचे बांधा जाने वाला चमड़ा।

माथे, मार्थे–क्रि०वि० १ ऊपर, पर। २ मस्तक पर, शिर पर। ३ आसरे, भरोसे, सहारे। ४ विश्वास पर। ५ निकट, पास, नजदीक। ६ अवसर पर, मौके पर।

माथो–पु० [सं० मस्तक] १ मस्तक, शिर। २ बुद्धि, चित्त। ३ मनस्थिति, विचार। ४ मस्तक का ऊपरी भाग, खोपड़ी। ५ मस्तक की केश राशि। ६ मुखाकृति। ७ किसी वस्तु का अग्र भाग। ८ एक प्रकार की सवारी।

माद–पु० [सं०] १ नशा, मद। २ हर्ष, आनन्द। ३ गर्व अहंकार। ४ खलिहान में भूसे व अनाज का ढेर। ५ देखो 'मादा'।

मादक–वि० [सं०] १ नशा देने वाला, नशीला। २ आनन्द दायक, मस्तीदायक। –पु० मादक पदार्थ।

मादकता–स्त्री० [सं०] १ नशे का गुण, नशीलापन। २ नशा। ३ मस्ती। ४ आनन्द।

मादर–स्त्री० [सं०मातृ] माता, मां, जननी। –जात, जाद–वि० माता के उदर से निकले वैसा। मूर्ख। जन्म का, पैदाईसी। वस्त्रहीन, नगा। सगा, सहोदर।

मादळ, मादल–पु० [सं० मर्दल] १ पखावज या मृदंग से मिलता-जुलता एक वाद्य। २ ढोल। ३ मृदंग। ४ न अधिक उष्ण न शीतल, शीतोष्ण।

मादलियो, मादलीयो–पु० १ सोने-चांदी या धातु का बना ताबीज। २ ताबीज, गंडा। ३ ऊंट के पांवों में बांधने की नाल का एक अवयव। ४ रहट में लगने का एक डंडा। ५ मुखिया। ६ मित्र या दोस्त। ७ देखो 'मांदळ'।

मादिक–पु० १ मादक पदार्थ, मद्य। २ स्त्री, औरत, नारी। –वि० [सं० मंद] १ सुस्त, आलसी। २ रोगी। ३ कम, थोड़ा।

मादियो–पु० [सं० मध्यस्थ] गहरा एवं लंबा छेद करने का उपकरण। –वि० १ मस्त। २ लुच्चा लफंगा उद्दंड।

मादिसर–स्त्री० एक प्रकार का वाद्य विशेष।

मादी–देखो 'मादा'।

मादीकड़कम–पु० पुरुषों के कानों का आभूषण।

मादू–१ देखो 'यादू'। २ देखो 'साढ़ू'।

मा'देव–देखो 'महादेव'।

माद्री, माद्री–पु० [अ० मादः] १ कुछ समझने या सहन करने की शक्ति या गुण। २ सृष्टि की उत्पत्ति का मूल तत्त्व, प्रकृति। ३ किसी वस्तु का मूल तत्त्व। ४ व्याकरण में शब्द की उत्पत्ति।

माद्री–स्त्री० [सं०] मद्र राजा की पुत्री व कुरुराज पाण्डु की पत्नी।

माद्रेय–पु० [सं०] 'माद्री' के पुत्रों का एक संबोधन।

माधव–पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर, विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ इन्द्र। ४ कामदेव का सखा, वसंत ऋतु। ५ वैशाख मास। ६ परशुराम। ७ मालिक, स्वामी। ८ एक राग विशेष। ९ ऋग्वेद के भाष्य कर्त्ता। १० उत्तम मन्वन्तर के मनु का पुत्र। ११ भृगु कुल का एक गोत्रकार। १२ भौत्य मनु का एक पुत्र। १३ राजा विक्रम का पुत्र एक राजा। १४ एक यादव राजा। १५ एक धार्मिक ब्राह्मण। १६ मधु राक्षस के वंशज। १७ माधवाचार्य।

माधवमास–पु० वैशाख मास।

माधवरित (रितु)–स्त्री० [सं० माधव+ऋतु] वसंत ऋतु।

माधवाचारी, माधवाचार्य–पु० [सं० माधव-आचार्य] १ ऋग्वेद के भाष्यकर्त्ता एक प्रसिद्ध विद्वान। २ एक वैष्णव धर्माचार्य।

माधवी–स्त्री० [सं०] १ चमेली जाति की एक प्रसिद्ध लता। २ तुलसी। ३ मिश्री। ४ मधु से बनाई जाने वाली एक शराब। ५ दुर्गा। ६ दूती, कुटनी। ७ ओड जाति की एक रागिनी। ८ सवैया छन्द का एक भेद। ९ राजा ययाति की कन्या। १० रथध्वज राजा के पुत्र धर्मध्वज की पत्नी। ११ जन्मेजय प्रथम की पत्नी। १२ स्कंद की अनुचरी एक मातृका। –लता–स्त्री० चमेली जाति की लता विशेष।

माधवो, माधियो–देखो 'माधव'।

माधुर–पु० [सं०] १ चमेली, मल्लिका। २ देखो 'मधुर'।

माधुरी–स्त्री० [सं०] १ मधुर होने की अवस्था या भाव। २ मिठास, मीठापन। ३ शराब। ४ एक लता। –वि० १ मोहित करने वाली, मनोहर। २ सुन्दर। ३ मीठी, मधुर।

माधुर्य, माधुर्यय–पु० [सं० माधुर्य] १ मधुरता, मीठापन। २ मधुर होने की दशा या अवस्था। ३ सौन्दर्य, लावण्य। ४ मोहकता। ५ सात्विक नायक का एक गुण। ६ काव्य का एक गुण। ७ कर्नाटक पद्धति का एक राग।

माधो–देखो 'माधव'।

माध्यम–पु० [सं०] १ कार्य सिद्ध करने का साधन, उपाय, युक्ति। २ शिक्षा एवं विचारों की अभिव्यक्ति की भाषा। ३ प्रस्तुतीकरण का साधन। –वि० मध्यस्थ, बीच का, मध्यम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माध्याकरसण–पु० [सं० माध्याकर्षण] पृथ्वी के मध्य भाग का आकर्षण।

माध्री–देखो 'माधवी'।

माध्व–पु० [सं०] १ माधवाचार्य का वैष्णव संप्रदाय। २ इस संप्रदाय के अनुयायी। –वि० १ मधुर, मीठा। २ माधव।

माध्वी–स्त्री० [सं०] १ मदिरा, शराब। २ देखो 'माधवी'।

माप–पु० [सं० मापनं] १ माप-तौल करने की क्रिया या भाव। २ माप-तौल से निकलने वाला परिमाण, मान। ३ मात्रा। ४ माप, तौल। ५ सीमा, हद।

मापक–पु० १ वस्तु जिससे कुछ मापा जाय, माप का निश्चित मान। २ लंबाई-चौड़ाई निकालने का उपकरण। ३ माप का कार्य करने वाला व्यक्ति। ४ तराजू।

मा' पक्ष–पु० महापक्ष।

मापणि, मापणी–स्त्री० १ रस्सी, डोरी। २ मापने का कार्य। ३ अनाज मापने का पात्र।

मापणो (णौ)–क्रि० [सं० मापनं] १ किसी वस्तु का भार, तौल निकालना, तौलना। २ किसी वस्तु या क्षेत्र की लंबाई-चौड़ाई निकालना, वर्गत्व ज्ञात करना। ३ छूना, स्पर्श करना। ४ तुलना करना। ५ थाह लेना। ६ द्रव पदार्थ या अन्नादि को मापना।

मापती–स्त्री० किसानों से लिया जाने वाला कर विशेष।

मा'पदम–देखो 'महापदम'।

मापलो–पु० माप करने का पात्र।

मा' पातक (कौ)–देखो 'महापातकी,' 'महापातक'।

मापेट–पु० सहोदर।

मापो–पु० १ वस्तुओं के आयात-निर्यात पर लिया जाने वाला एक कर। २ औरतों के लिये गाड़ी में लगाने का पर्दा विशेष। पर्दे वाली गाड़ी। ३ मापने की क्रिया या भाव। ४ मापने का उपकरण, तुला, बर्तन। ५ सीमा, हद।

मा'प्रभु–पु० महाप्रभु।

मा'प्रळै–पु० महाप्रलय।

मा'प्रस्थान–पु० महाप्रस्थान।

मा'प्रसाद–पु० महाप्रसाद।

मा'प्रांण–पु० महाप्राण।

माफ–पु० [अ० मुआफ] क्षमा, माफी। –वि० क्षमा प्राप्त, क्षमित।

माफक–वि० [अ० मुआफिक] १ अनुसार, मुताबिक। २ अनुकूल। ३ ठीक, उचित। ४ थोड़ा, मामूली, साधारण, ठीक-ठीक। ५ समान। ६ अनुसार।

माफकत, माफगत–स्त्री० [अ० मुआफकत] १ समानता। २ अनुकूलता। ३ मैत्री, दोस्ती। ४ संयोग, इत्तिफाक।

माफड़दे (दै)–क्रि० वि० मुफ्त में।

माफिक–देखो 'माफक'।

माफी–स्त्री० [अ० मुआफी] १ क्षमा। २ क्षमा या अनुग्रह करने की क्रिया या भाव। ३ बख्शिश। ४ कर मुक्त भूमि। ५ देखो 'माफ'। —धार–वि० कर मुक्त भूमि का उपभोक्ता।

माफो–पु० १ हरिण की नाभि में होने वाली कस्तूरी की पोटली। २ देखो 'मापो'।

मा-बाप–पु० माता-पिता।

माबूद–वि० [अ० मा' बूद] पूजनीय। –पु० परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म।

मायं, माय–१ देखो 'माता'। २ देखो 'मात्रा'। ३ देखो 'मांय'।

मायइ (ई), मायड़, मायड़ी–देखो 'माता'।

मायत–देखो 'माईत'। —पणो='माईतपणो'।

मायताय–पु० [सं० मातृ-तात] माता-पिता।

मायदे (दै)–स्त्री० परमार चाहड़देव की पुत्री, एक देवी।

मायरावार–वि० माहेरा करने वाला।

मायरो–पु० [स० मातृ-भरह] विवाह में वर-वधू के नाना या मामा की ओर से दिया जाने वाला वस्त्र, धनादि सामान।

मायां–स्त्री० [सं० मातृ] १ विवाह के अवसर पर घर में किसी दीवार पर बनाई जाने वाली घी की रेखाएँ जो मातृका की प्रतीक होती हैं। २ मातृका, माता। ३ भावलियां। ४ माया।

माया–स्त्री० [सं०] १ धन की अधिष्ठात्री, लक्ष्मी देवी। २ द्रव्य, सम्पत्ति, वैभव। ३ ब्रह्म की अलौकिक शक्ति। ४ मन को बांध रखने वाला एक पास। ५ सृष्टि का मूल कारण। ६ छल, कपट, धोखा, प्रवंचना। ७ अविद्या, अज्ञान, भ्रम, मोह। ८ अनुराग, आसक्ति, ममत्व। ९ मन का दुष्ट विकार। १० बाजीगरी का खेल, ऐन्द्रजाल। ११ राजनैतिक धोखा-धड़ी। १२ मिथ्या या अवास्तविक धारणा। १३ गूढ़ बात। १४ लालच, लोभ। १५ मन की वृत्ति, वासना। १६ भोगविलास की सामग्री। १७ झंझट, झमेला। १८ तांत्रिक चमत्कार। १९ रचना, लीला, खेल। २० दैविक चमत्कार। २१ सृष्टि, संसार, जगत। २२ ठाट-बाट। २३ सांसारिक बंधन। २४ प्रकृति। २५ दुष्टता, मन की कुटिलता। २६ प्रज्ञा, बुद्धि, ज्ञान। २७ शक्ति, दुर्गा, देवी। २८ नारी का एक रूप। २९ गौतम बुद्ध की माता। ३० विष्णु की नौ शक्तियों में से एक। ३१ सप्त पुरियों में से एक। ३२ एक वर्णिक छन्द विशेष। ३३ माया। ३४ देखो 'मया'। ३५ देखो 'माता'।

मायाकर, मायाकार–पु० १ बाजीगर, ऐन्द्रजालिक। २ ईश्वर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मायागोलक–पु० पानी का बुलबुला ।

मायाजाळ (जाल)–पु० [सं० माया–जालं] १ सांसारिक बंधन, झंझट, प्रपंच । २ मोह जाल, ममत्व । ३ चमत्कार । ४ ऐन्द्रजाल, जादू । ५ धोखा, ठगी, प्रवंचना ।

मायातंत्र–पु० [सं०] एक प्रकार का तंत्र ।

मायाति–स्त्री० [सं०] दुर्गा पूजा में दी जाने वाली नर बलि ।

मायादोष (दोस)–पु० [सं० मायादोष] दगाबाजी से आहार लेने का दोष । (जैन)

मायापत (पति, पती)–पु० [सं० मायापति] १ परमात्मा, ईश्वर । २ धनवान, अमीर ।

मायापास (पासु)–पु० [सं० माया पाशः] माया का बंधन ।

मायामोसो–पु० कपट पूर्ण झूठी बात ।

मायामोह–पु० [सं०] १ विष्णु शरीर से निकला एक कल्पित पुरुष । २ विष्णु का एक अवतार । ३ भौतिक तत्त्वों के प्रति आकर्षण । ४ परिवार आदि से ममत्व ।

मायावंत, मायावत–पु० [सं० मायावत्] १ धनवान, धनाढ्य । २ कंस का एक नाम । ३ राक्षस । ४ ईश्वर ।–वि० १ छली कपटी, धोखेबाज । २ मायावी, बाजीगर, जादूगर । ३ भ्रमात्मक, असत्य ।

मायावती–स्त्री० [सं०] १ कामदेव की स्त्री रति का नाम । २ प्रद्युम्न की स्त्री ।

मायावाद–पु० [सं०] ब्रह्म सत्यं व जगत् मिथ्या का सिद्धान्त ।

मायावियो, मायावी–पु० [सं० मायाविन्] १ ईश्वर, का एक नाम । २ ऐन्द्रजालिक, बाजीगर । ३ कपटी, धोखेबाज । छलिया । ४ मय दानव के पुत्र का नाम । ५ माजूफल । ६ बिडाल, बिल्ला । ७ धनवान ।–वि० १ रहस्यपूर्ण एवं विचित्र कार्य करने वाला, चमत्कारिक । २ बाजीगरी में निपुण । ३ स्वांग रचने वाला । ४ मायाका, माया संबंधी । ५ मायामय । ६ जादू संबंधी ।

मायाबीज–पु० ह्रीं नामक तांत्रिक मंत्र ।

मायासंपत–स्त्री० [सं० माया संपत्ति] धन, दौलत ।

मायासीता–स्त्री० [सं०] सीता हरण से पूर्व रखी गई अग्नि रूप सीता ।

मायास्त्र–पु० [सं० मायास्त्र] एक प्रकार का अस्त्र ।

मायी–पु० [सं० मायिन्] १ माया पति, ईश्वर । २ छलिया । ३ बाजीगर, जादूगर । ४ मायावी ।–स्त्री० [सं० मातृ] ५ मौसी । ६ माता, मां ।

मायूस–वि० [अ०] १ निराश, हताश । २ उदास, खिन्न ।

मायूसी–स्त्री० [अ०] १ निराशा । २ उदासी, खिन्नता ।

मायो–देखो 'माता', 'माया', 'मईयो' ।

मार–पु० [सं०] १ कामदेव, मदन । २ श्रीकृष्ण पुत्र प्रद्युम्न का नामान्तर । ३ आघात, चोट, प्रहार । ४ युद्ध, लड़ाई, झगड़ा । ५ घावयुक्त, घायल । ६ विष, जहर । ७ नाग, सर्प । ८ अमृत । ९ निशाना, लक्ष्य । १० गोली, तीर या वार की संहारक सीमा । ११ संहारक, नाशक । १२ धतूरा । १३ कार्य का भार या उत्तरदायित्व । १४ विघ्न, अड़चन, बाधा । १५ प्रेम, अनुराग । १६ हनन, नाश । १७ चमड़ा भिगो कर रंगने का पानी । १८ श्वेत, सफेद । १९ मारने की क्रिया या भाव । २० पिटाई । २१ भूमि, पृथ्वी । २२ पराजय, हार । २३ मृत्यु, मौत । २४ हानि, नुकसान ।–अव्य० १ बुरी तरह से । २ बुरी दशा में । ३ लगातार । ४ जोर-शोर से ।

मारकंड (कंडे, कंडेय, कंडेव)–पु० [सं० मार्कण्डः] १ भृगु कुलोत्पन्न एक ऋषि । २ अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार । ३ एक अन्य ऋषि । ४ एक आचार्य विशेष ।

मारक–वि० [सं०] १ मारने वाला, घातक । २ प्रहार करने वाला, चोट करने वाला । ३ प्रतिघात करने वाला । ४ किसी के प्रभाव को नष्ट करने वाला ।–पु० [सं०] १ प्लेग आदि संक्रामक रोग । २ कामदेव । ३ हत्यारा । ४ बाजपक्षी । ५ बार, मार । ६ निशाना, लक्ष्य ।

मारकट–पु० १ शृंगार में एक आसन । २ मरकट ।

मारकण, मारकणी–वि० (स्त्री० मारकणी) १ मारने वाला, प्रहार करने वाला । २ संहारक । ३ देखो 'मारणी' ।

मारकाट–स्त्री० १ लड़ाई, झगड़ा । २ मारने-काटने की क्रिया ।

मारकीन–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

मारकुट्टी–पु० चोट, आघात, प्रहार सहने वाला, झेलने वाला ।

मारकेस–पु० [सं० मारकेश] जन्म कुण्डली का अमंगलकारी ग्रह योग ।

मारकी (क्की)–पु० [अ० मारिकः] १ युद्ध, लड़ाई, संग्राम । २ उपद्रव, हंगामा । ३ महत्वपूर्ण घटना या कार्य । ४ प्रहार । ५ योद्धा, वीर । ६ किसी का प्रतीक । ७ चिह्न, निशान । ८ व्यापारिक चिह्न । ९ सांकेतिक लिखावट । १० शिर से प्रहार करने वाला पशु ।–वि० १ मारने वाला, मार करने वाला । २ शक्तिशाली, प्रबल । ३ भयंकर, भयावह । ४ जबरदस्त । ५ आनबान वाला ।

मारखाई, मारखाही–स्त्री० चोरी के माल का पता लगाने वाले को दिया जाने वाला धन ।–वि० ऐसा कार्य करने वाला ।

मारग–पु०[सं०मार्गः]१ रास्ता, पथ, सड़क । २ पगडंडी, वीथि । ३ जगह, स्थान । ४ चिह्न, निशान । ५ सम्प्रदाय, पंथ । ६ अनुसंधान, खोज । ७ कार्य सिद्धि का माध्यम, साधन, उपाय । ८ ढंग, तौर, तरीका । ९ अभिनय, नृत्य व संगीत की एक उच्च श्रेणी । १० अगहन मास । ११ मृगशिरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नक्षत्र। १२ ग्रह का रास्ता। १३ विष्णु। १४ नहर। १५ नाली। १६ कस्तूरी। १७ मलद्वार, गुदा। १८ धर्म, कर्त्तव्य। १९ मृत्यु, मौत। २० तरीका, ढंग।

मारगण, मारगन–पु० [सं० मार्गण] १ भिक्षुक भिखारी, याचक। २ तीर, बाण, सर, सायक। ३ याचना, भिक्षा। ४ खोज, अनुसंधान, तलाश। ५ पांच की संख्या।

मारगमास–पु० [सं० मृगमासः] मार्गशीर्ष का महिना।

मारगसिर, मारगसिरि–पु० [सं० मार्ग शीर्ष] १ मार्गशीर्ष मास। २ पूष मास की पूर्णिमा। ३ मृगशिरस नक्षत्र।

मारगि, मारगियो–देखो 'मारग'।

मारगी, मारगु, मारगू–वि० [सं० मार्गिन्] १ मार्ग का, मार्ग संबंधी। २ किसी सम्प्रदाय या मत का अनुयायी। –पु० १ राहगीर, पथिक। २ संगीत में एक मूर्च्छना।

मारग्ग–देखो 'मारग'।

मारग्गण–देखो 'मारगण'।

मारच–पु० [अ० मार्च] १ गमन, प्रस्थान, कूच। २ ईसवी सन् का तीसरा मास।

मारजण (न)–पु० [सं० मार्जन] १ नहाने या सफाई करने की क्रिया या भाव। २ सफाई, स्वच्छता। ३ नहाने की क्रिया, स्नान। ४ उबटन, मालिश। ५ मज्जन क्रिया। ६ प्रतिलेपन। ७ सुधार, परिमार्जन। ८ अभ्यास, रियाज।

मारजनी–स्त्री० [सं० मार्जनी] १ झाड़ू, बुहारी। २ संगीत में एक श्रुति।

मारजर, मारजार, मारजारी–स्त्री० [सं० मार्जार] १ बिल्ली, बिलाव। २ ऊद बिलाव। ३ मुश्क, कस्तूरी—टोडी–स्त्री० एक रागिनी।

मारण–पु० [सं०] १ मारने या हत्या करने की क्रिया या भाव। २ विष, जहर। ३ एक मंत्र विशेष। ४ एक घातक तांत्रिक प्रयोग विशेष। –वि० १ मारने वाला, हनन करने वाला, नष्ट करने वाला। २ मिटाने व दूर करने वाला।

मारण-मरण–वि० मारकर मरने वाला।

मारणी–स्त्री० १ पाठशाला में सिखाई व बोलाई जाने वाली गिनती। २ मारना क्रिया।

मारणो–वि० [सं० मारण] (स्त्री० मारणी) १ मारने, संहार करने वाला। २ मार करने वाला। –पु० पास जाने पर अपने मस्तक से मार करने वाला पशु।

मारणो (णौ)–क्रि० [सं० मारण] १ किसी के जीवन का अन्त करना, प्राण लेना, हत्या करना। २ आघात या चोट करना, पीटना। ३ नष्ट करना, मिटाना। ४ सजा देना, दण्ड देना। ५ लूट-मार करना, छीनना। ६ कब्जे में करना। ७ दुःखी करना, परेशान करना, सताना। ८ इच्छा या भाव को बलपूर्वक दबाना। ९ पछाड़ना, पटकना। १० अपने विपक्षी को हराना। ११ प्रतिस्पर्धा में पीछे रखना। १२ खेल में मोहरे को परास्त करना। १३ निर्बल व निस्तेज करना। १४ मरणासन्न स्थिति में करना। १५ किसी वस्तु का कहीं पर आघात करना। १६ गुण समाप्त करना। १७ स्त्री-प्रसंग या मैथुन करना। १८ हथियाना, हड़पना। १९ धातु की भस्म बनाना। २० शिकार करना। २१ शरीरांगों को इधर-उधर चलाना। २२ व्यग्रता से प्रयास करना। २३ लगाना, देना, भिड़ाना। २४ सम्मिश्रण करना।

मारतंड–पु० [सं० मार्तण्ड] १ सूर्य, रवि, भानु। २ आक वृक्ष, मदार। ३ शूकर, सूअर। ४ बारह की संख्या। —मण्डल–पु० सौर मंडल।—सुत–पु० कर्ण। यमराज। सुग्रीव। शनि।

मारत–पु० मारुत, मारुति।

मारतुंड–देखो 'मारतंड'।

मारतौल–पु० [पु० मार्टेली] एक प्रकार का बड़ा हाथी।

मारपीट–स्त्री० १ मारने-पीटने की क्रिया या भाव। २ हाथापाई, झगड़ा।

मारफत–अव्य० १ द्वारा, जरिये, माध्यम से। २ किसी की मध्यस्थता से।

मारमिक–वि० [सं० मार्मिक] १ मर्म का, मर्म संबंधी। २ मर्म पर प्रभाव डालने वाला। ३ मर्म जानने वाला। ४ अन्तर्निहित तत्व के आधार पर होने वाला।

मारव–पु० १ राठौड़। २ मरु देवता। ३ मारवाड़ का निवासी, मारवाड़ी। ४ मारू।

मारवण (णि, णी)–स्त्री० १ प्रेयसी, प्रियतमा। २ पूगल की प्रसिद्ध राजकुमारी। ३ मरु देश की स्त्री। ४ एक लोक गीत। ५ देखो 'मरवण'।

मारवधरा–स्त्री० मरुधरा।

मारवराव–पु० मरु राजा।

मारवा–स्त्री० एक प्रकार की संकर राग।

मारवाड़–पु० [सं० मरु पाट] १ राजपुताने का वह प्रदेश जहां राठौड़ों का राज्य था। २ मरु प्रदेश, मरुभूमि।

मारवाड़ी–पु० १ मरु प्रदेश की भाषा। २ इस प्रदेश का निवासी। –वि० मारवाड़ का, मारवाड़ संबंधी।

मारवाड़ी–पु० १ मारवाड़ का अधिपति; राठौड़। २ यहां का निवासी।

मारवी–स्त्री० १ मरु प्रदेश की स्त्री। २ एक रागिनी विशेष। –राव–पु० मारू राजा।

मारहट (ठ)–पु० मरहठा।

मारहटी (ठी)–स्त्री० मरहठी, मराठी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मारहती (ती)–वि० मारने वाला, मार करने वाला ।
मारकुस–पु० [सं०] नाखून, नख ।
माराज, मा'राज–पु० महाराज, ब्राह्मण, पंडित, साधु ।
माराजा, मा'राजा–पु० महाराजा । बड़ा राजा ।
मारा-मार–स्त्री० मार-धाड, युद्ध ।
मारि–स्त्री० [सं०] १ नाश, विध्वंस, हनन । २ मरी, प्लेग ।
मारिक–देखो 'मारक' ।
मारिग–पु० मार्ग ।
मारिच–पु० मारीच ।
मारिणी (णी)–देखो 'मारणी' (णी) ।
मारित–वि० १ जो भस्म कर दिया गया हो । २ मृत, वधित । ३ पिटा हुआ, आहत ।
मारिस–पु० [सं० मारिष] १ नाटकों का सूत्रधार । २ प्रतिष्ठित, माननीय व्यक्ति ।
मारी–स्त्री० मरी, बीमारी ।
मा'री–देखो 'म्हारी' ।
मारीच (छ)–पु० [सं० मारीच] १ रावण का मामा एक राक्षस । २ एक ऋषि । ३ राजा, बादशाह की सवारी का बड़ा हाथी । ४ मरीचि ।
मारु, मारुअई, मारुअड–देखो 'मारू' ।
मारुअड़ि (आड़, आड, आडि)–देखो 'मारवाड़' ।
मारुओ–देखो 'मारूवो' ।
मारुड़ो–देखो 'मारूड़ो' ।
मारुजी–देखो 'मारूजी' ।
मारुणि, मारुणी–देखो 'मारूणी' ।
मारुत–पु० [सं०] १ हवा, पवन । २ वायु का अधिष्ठाता पवन देव । ३ स्वांस । ४ शरीर के त्रिदोषों में से एक । ५ हाथी की सूंड । ६ एक ऋषि । ७ एक गोत्रकार । ८ स्वाति नक्षत्र । ९ मारुति । –चक्र–पु० वातचक्र । –सखा–पु० अग्नि । –सुत–पु० हनुमान, भीम ।
मारुति–पु० [सं०] हनुमान, भीम ।
मारु-निसाणी–स्त्री० डिंगल का एक छन्द ।
मारुबेंगण (बेंगण)–पु० वृंताक की एक जाति व इस जाति का वृंताक ।
मारुवाड़ (ड़ि)–स्त्री० मारवाड़, मारवाड़ी ।
मारुवणी–देखो 'मारवणी' ।
मारुवो–देखो 'मारवी' ।
मारुवी–१ देखो 'मारूवो' । २ देखो 'मारू' ।
मारू–पु० १ मारवाड का राजा, अधिपति । २ राठौड़ । ३ मरु प्रदेश का निवासी । ४ मरु प्रदेश, मारवाड़ । ५ मारवाड़ी भाषा, बोली । ६ पति, प्रियतम । ७ नायक । ८ रसिक ९ एक रागिनी । १० एक लोक गीत । ११ युद्ध का एक राग । १२ युद्ध का वाद्य । १३ कुम्हारों की एक शाखा । १४ एक निसाणी छंद । –वि० १ मारने वाला, समाप्त करने वाला । २ मित्र, दोस्त, यार ।
मारूआड़–देखो 'मारवाड़' ।
मारूआडि–देखो 'मारवाड़ी' ।
मारूओराव–देखो 'मारूराज' ।
मारूड़ो, मारूड़ो–पु० १ एक लोक गीत । २ देखो 'मारू' ।
मारूजी–पु० प्रियतम, पति ।
मारूणी–स्त्री० १ मरुप्रदेश की स्त्री । २ मारवाणी ।
मारूत–देखो 'मारुत, मारुति' ।
मारूदेस (धर, धरा)–पु० मरु प्रदेश, मारवाड़ ।
मारूभाखा (भासा)–स्त्री० मारवाड़ी, राजस्थानी भाषा ।
मारूवाड़, मारूवाड़ि, मारूवाड (डि)–१ देखो 'मारवाड़' । २ देखो 'मार-वाड़ी' ।
मारूराण (राई, राज, राजा, राव) मारूवाराव–पु० [सं० मरु+राजा, राट्] १ मारवाड का राजा, अधिपति । २ राठौड़ ।
मारूवो–पु० १ राठौड़ । २ मरु प्रदेश का निवासी ।
मा'रे–सर्व० मेरे ।
मारेस–वि० १ दबा हुआ । २ थका हुआ । ३ घायल ।
मारोट (ठ)–स्त्री० १ विवाह के समय दूल्हे या दुल्हिन के मुख पर की जाने वाली सुनहरी चित्रकारी । २ एक प्रान्त का नाम ।
मारोमार–क्रि०वि० १ चोट पर चोट करते हुए । २ निरन्तर लगातार । २ अत्यन्त शीघ्रता से, द्रुतगति से । ३ क्रमशः एक के बाद एक । –पु० झगड़, हुल्लड़ ।
मारो–देखो 'मार' ।
मा'रो–देखो 'म्हारो' ।
माल(माल)–स्त्री० [सं०माला] १ किसी गांव या कस्बे की समस्त कृषि भूमि । २ खेत, भूमि । ३ वन, जंगल । ४ ऊंची भूमि । ५ कंकरीली भूमि । ६ स्थान, जगह । [सं० माला] ७ कुए पर चलने वाले रहट पर घूमने वाली, मिट्टी या धातु के पात्रों की माला । ८ चरखे की डोरी जो बेलन व तकुवे को घुमाती है । ९ किसी चक्र को घुमाने वाली रस्सी । १० नदी । ११ फसल की उपज । १२ मेघमाला, घनघटा । १३ फसल पर लिया जाने वाला कर, राजस्व । १४ बाल, केश । १५ पंक्ति, कतार, श्रेणी । १६ झुण्ड, समूह । १७ देखो 'माला' ।
माल–पु० [सं०] १ द्रव्य, धन । २ सम्पत्ति, जायदाद । ३ सामान सामग्री । ४ क्रय-विक्रय का सामान । ५ स्वादिष्ट या उत्तम भोजन । ६ हरताल । ७ किसी वस्तु का सार, तत्त्व । ८ सुन्दर स्त्री, युवती । ९ संग्रहीत वस्तुओं में से कीमती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामान। १० विष्णु का एक नामान्तर। ११ छल, कपट, दगा। १२ बंगाल का एक जिला। १३ मालवा देश। १४ एक प्राचीन अनार्य जाति। १५ सामर्थ्य, हस्ती। १६ शकुन चिड़ी जो दाहिनी ओर बैठकर शुभ शकुन देती है। १७ गणित में वर्ग का पात, वर्ग अंक। १८ देखो 'मल्ल'।

मालक–देखो 'मालिक'।

मालकत–देखो 'मालकियत'।

मालकपण (पणौ)–स्त्री० १ मालिकाना हक, स्वामित्व। २ बड़प्पन, दयालुता।

मालकांकणी, मालकांगणी–स्त्री० १ हिमालय में पाई जाने वाली लता विशेष। २ उक्त लता के बीज। ३ एक प्रकार का कदन्न।

मालकियत, मालकी–स्त्री० स्वामित्व।

मालकेत, मालकेतु–पु० १ लोहार्गल पर्वत के एक लोक देवता। २ इस पहाड़ का नामान्तर।

मालकोस–स्त्री० [सं० मालकोश] सम्पूर्ण जाति की एक राग।

मा लक्ष्मी–स्त्री० महालक्ष्मी।

मालखम–देखो 'मलखंभ'।

मालगाड़ी–स्त्री० माल, असबाब, व्यापारिक सामान ढोने की रेलगाड़ी।

मालगुजारी–पु० १ लगान। २ जमींदारों से लिया जाने वाला एक कर।

मालगुरजरी–स्त्री० एक राग विशेष।

मालगोडी–स्त्री० एक रागिनी विशेष।

मालगोदाम–पु० १ व्यापारिक माल संग्रह करने का स्थान। २ पार्सल संग्रह का स्थान।

मालड़ो पु० घोड़ों पर रखा जाने वाला चमड़े का उपकरण।

मालजादी–स्त्री० १ दुश्चरित्र व व्यभिचारिणी स्त्री, पतिता। २ वेश्या पुत्री, वेश्या।

मालजादो–पु० (स्त्री० मालजादी) १ दुश्चरित्र व वेश्यागामी व्यक्ति। २ वेश्यापुत्र।

मालटी–पु० लाल रंग की नारंगी विशेष।

मालण–स्त्री० [देश०] १ दुल्हा बारहठ की पुत्री एक देवी। २ देखो 'माली'। (स्त्री०)।

मालणी–स्त्री० १ ललाट प्रदेश की रक्षिका देवी मालाधरी। २ योग के अनुसार आत्मा। ३ देखो 'माळी'। (स्त्री०) ४ देखो 'मालिनी'।

मालणौ (णौ)–देखो 'मालहणौ' (णौ)।

मालति, मालती–स्त्री० [सं० मालती] १ एक लता विशेष जिसके फूल सुगंधित या श्वेत होते हैं। २ उक्त लता के फूल। ३ कली। ४ क्वांरी युवती। ५ जायफल का वृक्ष। ६ रात्रि, रात। ७ जोन्हा, चांदनी। ८ एक छन्द विशेष। ९ एक वर्ण वृत्त विशेष। १० मत्तगयंद छन्द का एक नाम। ११ एक मात्रिक छन्द। १२ मद्र देश के राजा की पत्नी। १३ शत्रुघातिन राजा की पत्नी।

मालतीटोडी–स्त्री० एक रागिनी विशेष।

मालतोड़–पु० बड़ा हथौड़ा।

मालदार–वि० [फा०] धनवान, अमीर।

मालदो–पु० एक प्रकार का आम।

मालनेरो–पु० एक प्रकार का मूल्यवान कपड़ा।

मालपुआ (पुवो, पूआ, पूवो)–पु० [सं० पूप] एक प्रकार का पकवान।

मालपसीसामेरी–स्त्री० एक रागिनी विशेष।

मालबंध–पु० बैलगाड़ी के अग्र भाग में बांधने की रस्सी।

माळबधण–स्त्री० तलवार।

मालम–वि० [अ०मालूम] १ जाना हुआ, ज्ञात, विदित। २ प्रगट, जाहिर। ३ स्पष्ट, साफ। ४ सूचित। ५ –पु० नाविक, मल्लाह।

मालमता, मालमत्ता–स्त्री० १ धन, दौलत, द्रव्य, सम्पत्ति। २ व्यापारिक सामान, सामग्री।

मालमलीदो–पु० बढ़िया भोजन, खाद्य सामग्री। पकवान।

मालमोटियार, मालमोट्यार–पु० पूर्ण युवा, जवान।

माळयो–देखो 'माळियो'।

माळव, मालव–पु० [सं० मालव] १ मध्य भारत का एक प्रदेश। २ पंजाब प्रान्त का एक प्राचीन भू-भाग। ३ इन प्रदेशों का निवासी। ४ एक राग विशेष।

माळवउ–देखो 'माळवो'।

मालवकौसिक–देखो 'मालकोस'।

माळवगिरी–पु० १ मालवा स्थित एक पर्वत। २ मालवा प्रदेश।

माळवगौड़–स्त्री० एक राग विशेष।

माळवण–स्त्री० १ मालवे की तम्बाखू। २ मालवा की स्त्री। ३ किसी देवस्थान के चारों ओर का छोटा वन।

माळवणी, मालवणी–स्त्री० १ मालव देश की स्त्री। २ एक प्रकार की लिपि।

मालवराउ (राजा, राव)–पु० मालव देश का राजा।

माळवळी–पु० मकान की छाजन के बीच लगने वाली लकड़ी।

माळवसिरी, मालवश्री–स्त्री० [सं० मालवश्री] एक रागिनी विशेष।

मालवाखर–पु० १ घोड़े का पाखर, कवच। २ धन, दौलत।

माळविउ–देखो 'माळवियो'।

माळविणी–देखो 'मालवणी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माळविया–स्त्री० लुहारों की एक शाखा ।

माळवियो–पु०१ मालव देश का निवासी । २ 'मालविया' शाखा का लोहार । –वि० मालव का, मालव संबंधी ।

माळवी, मालवी–पु० १ मालवा प्रान्त का घोड़ा । २ मालवे का निवासी । ३ एक रागिनी विशेष । ४ एक प्रकार का गुड़ । –वि० मालव का, मालव संबंधी ।

माळवीक, माळवीख–स्त्री० १ घोड़े की एक चाल विशेष । २ ऊंट की एक चाल ।

माळवीविद्या–स्त्री० मालव प्रदेश की विद्या ।

माळवो, मालवो–पु० मध्य भारत का एक प्रदेश ।

मालस–देखो 'मालिस' ।

मालसाहिब–पु० पूंजीपति, धनवान ।

मालसेरणी–पु० किसानों से लिया जाने वाला एक कर ।

मालांणी–स्त्री० मारवाड का एक प्रदेश ।

माळा, माला–स्त्री० [सं० माला] १ पुष्पहार, गजरा । २ हार, कण्ठहार । ३ आभूषण । ४ मणिकों की माला, सुमरणी । ५ पंक्ति, कतार, शृंखला । ६ नाम जप, जाप । ७ मुण्डों का हार । ८ क्रम, शृंखला । ९ झुण्ड, समूह । १० रेखा । ११ एक मात्रिक छन्द विशेष । १२ निसाणी छन्द का एक भेद । १३ उपजाति छन्द का एक भेद । १४ दूब । १५ आंवला । १६ एक प्राचीन नदी का नाम । १७ तलवार का एक भाग । १८ राठौड़ों की एक शाखा । १९ देखो 'माळ' ।

माळाकार, मालाकार–पु० [सं०माला-कर:]१ माली । २ मालियों की एक जाति । ३ विश्वकर्मा के वंशजों का एक वर्ग ।

मालाखाड–पु० [सं० मल्ल-अखवाट] व्यायामशाला, अखाड़ा ।

माळागर–देखो 'माळवगिरी' ।

माळागळ–स्त्री० मालवा की भूमि, प्रदेश ।

माळागिर–देखो 'माळवगिरी' ।

माळाजप–पु० नाम जप, रट, जाप । सुमिरन ।

माळादीपक–पु० दीपक अलंकार का एक भेद ।

माळादेवि, माळादेवी–स्त्री० विंध्याचल की एक देवी ।

माळाधर–पु० १ एक छन्द विशेष । २ एक अन्य वर्णिक छन्द ।

माळाधरा–पु० एक वर्णिक छन्द ।

माळाधार (धारी)–वि० माला धारन करने वाला –पु० १ संन्यासी । २ वैष्णव । ३ साधु ।

मालाळी–स्त्री० बायें से दाय आकर शकुन देने वाली चिड़िया ।

मालाळो–पु० १ शकुन देने वाला तीतर । २ बायें से दायें आकर शकुन देने वाला हरिन ।

मालावती–स्त्री० एक रागिनी विशेष ।

मालि–पु० [सं०] १ एक राक्षस । २ देखो 'माळा' । ३ देखो 'माळी' ।

माळिओ–देखो 'माळियो' ।

मालिक–पु० [अ०] १ ईश्वर, परमात्मा । २ अधिपति, स्वामी । ३ सम्पत्ति या जायदाद का हकदार, वारिस । ४ पति, खाविंद । ५ पदाधिकारी, अधिकारी । ६ अध्यक्ष, सरदार । ७ नरक का अधिपति, देव । ८ माली । ९ रंगरेज । १० चित्रकार, चितेरा ।

मालिकपणो–पु० १ मालिक होने की अवस्था या भाव । २ स्वामित्व । ३ हकदारी ।

माळिण, माळिणी, माळिन–स्त्री० [सं० मालिनी] माली जाति की स्त्री ।

मालिणी (नी)–स्त्री० [सं०मालिनी] १ दुर्गा का एक नामान्तर । २ सात वर्ष की कन्या । ३ गौरी । ४ स्कन्द की एक मातृ का । ५ आकाश गंगा । ६ रौच्य मनु की माता का नाम । ७ एक प्राचीन नदी । ८ विभीषण की माता का नाम । ९ अज्ञातवास में द्रौपदी का एक नाम । १० एक छन्द विशेष ।

मालिम–देखो 'मालम' ।

मालियत–स्त्री० [अ०] १ धन, द्रव्य । २ सम्पत्ति, जायदाद । ३ मूल्य, कीमत ।

माळियो, मालियो–पु० १ ऊपरी मंजिल पर बना कमरा । २ ऊपरी मंजिल का कक्ष । ३ महल, अटारी । ४ घर, मकान । ५ दालान ।

मालिस–स्त्री० [फा० मालश] १ मलने की क्रिया या भाव । २ उबटन, मर्दन । ३ उबटन करने का स्निग्ध पदार्थ । ४ चमकीला करने की क्रिया, रगड़न ।

माळी, माली–पु० [सं० मालिन्] (स्त्री० माळण) १ प्राय: बागवानी, साग-सब्जी व कृषि कार्य करने वाली जाति । २ उक्त जाति का व्यक्ति । ३ मिट्टी के कोठे में छोटी वस्तुओं के लिये बना कंगूरा, प्राचीर । ४ बागवानी का कार्य करने वाला कोई व्यक्ति । ५ राजीव-गण नामक छंद विशेष । –वि० १ माला धारी । २ माल संबंधी । ३ देखो 'माळा' ।

मालीड–देखो 'माळियो' ।

मालीकार–देखो 'माळाकार' ।

माळीड़ो–देखो 'माळी' ।

मालीत–स्त्री० [अ० मालियत] द्रव्य, सम्पत्ति, धन ।

माळीपनो, माळीपन्नो–पु० किसी धातु का अत्यन्त बारीक-पत्र ।

मालीबापची (बापनी)–स्त्री० एक औषधि विशेष ।

मालीयड़ी–पु० जंगली बाकुची ।

मालु–स्त्री० [सं०] १ स्त्री, औरत । २ एक लता विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मालुघांन–पु० [सं० मालु-धानः] १ आठ प्रमुख नागों में से एक। २ एक सर्प विशेष। ३ महापद्म।

मालुपड़ी–देखो 'मालपूओ'।

मालुम–देखो 'मालम'।

मालूपी–देखो 'मालपूओ'।

मालूम–देखो 'मालम'।

मालूर–पु० [सं०] १ बिल्व का वृक्ष। २ केथ का पेड़।

मालेरिया–स्त्री० रहट में लगने वाली लकड़ी।

मालोच–पु० १ आव भगत, आदर-सत्कार। २ उपचार।

मालोपमा–स्त्री० उपमा अलंकार का एक भेद।

मालोमाल–पु० [फा० मालामाल] धन से परिपूर्ण, सम्पन्न।

मालोवम–देखो 'मालीपमा'।

मालोहड़–पु० जैन धर्मानुसार एक दोष।

माळो, मालो–पु० [अ० महल] १ पक्षियों का घोंसला, नीड़। २ मंच, मचान। ३ तलवार में संधि स्थल या जोड़। ४ देखो 'मल्लो'।

माल्यवंत, माल्यवांन–पु० [सं० माल्यवत्] १ सुकेश नामक राक्षस का जेष्ठ पुत्र। २ पुष्पदंत नामक गंधर्व का नाम। ३ इलावृत्त एवं केतुमाल के बीच का एक पर्वत। –वि० जो माला पहने हुए हो।

माल्ह–पु० आनंद, मंगल।

माल्हण–स्त्री० दूल्हेराज बारहट की पुत्री एक देवी।

माल्हणो (वो)–स्त्री० १ मस्ती में झूमना, झूमते हुए चलना। २ आनन्द या मौज करना। ३ उपभोग करना, भोग करना। ४ मंदगति से निर्भय चलना। ५ जन्म लेना, अवतार लेना। ६ मस्ती में बोलना, झूमना। ७ मंडराना। ८ व्याप्त होना, जागृत होना, उद्दीप्त होना। ९ विध्वंस करना। १० ग्रस्त व्यस्त करना। ११ मलार राग गाना।

माल्हाळी–देखो 'मालाळी'।

माल्हाळी–देखो 'मालाळी'।

मावड़, मावड़ली–देखो 'माता'।

मावड़ियां–देखो 'मावलियां'।

मावड़ियो–वि० [सं० मातरि पुरुष] १ माता या औरतों के सानिध्य में शेखी बघारने वाला। २ कायर, डरपोक। ३ स्त्रियों जैसे हाव-भाव दिखाने वाला। ४ सदा माता के पास रहने वाला।

मावड़ी–देखो 'माता'।

मावड़–देखो 'मावउ'।

मावटी–स्त्री० स्त्रियों के शिर की मांग का आभूषण।

मावठी, मावठ, मावठो–पु० [सं० माघ-प्रावृष्ट] हेमंत ऋतु या माघ मास की वर्षा।

मावड़ी–देखो 'माता'।

मावणो (वो)–क्रि० [अ० समाना] १ किसी घेरे या क्षेत्र में आजाना, समाजाना। २ सीमा में रहना। ३ खटना, रहना। ४ निभना। ५ सहन होना। ६ हजम होना।

मा'वत–१ देखो 'महावत'। २ देखो 'माईत'।

मा'वतससतर–पु० हाथी को हांकने का शस्त्र। अंकुश।

मा'वध–देखो 'महावत'।

मावलियां–स्त्री० [सं० मातृका] सप्त लोक देवियों का समूह, स्कंद मातृकाएँ।

मावळियाई-भाई–पु० सहोदर भ्राता।

मावली–स्त्री० दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति।

मावस–स्त्री० अमावस की तिथि।

मावसी–देखो 'मासी'।

मावस्या–देखो 'अमावस'।

मावाळी–स्त्री० मिट्टी के बर्तन में वृद्धि के लिये लगाई जाने वाली मिट्टी।

मावित,मावित्र, मावीत, मावीत्र–देखो 'माईत'। –पण, पणो–'माईतपणो'।

मावोती–स्त्री० १ वात्सल्य, प्रेम। २ अपने से छोटे के प्रति स्नेह की भावना।

मावो–पु० [सं० मुंड] १ दूध का खोवा। २ किसी वस्तु का सार-तत्त्व, तत्त्व। ३ मसाला, सामग्री। ४ औषधि विशेष। ५ अफीम का नशा। ६ अफीम की मात्रा। ७ कद्र, इज्जत ८ प्रकृति। ९ रस, प्रेम।

मास–पु० [सं०] १ वर्ष का बारहवां भाग, महिना। २ अवधि समय। ३ ऋतु। ४ बारह की संख्या। ५ देखो 'मांस'।

मासउ– १ देखो 'मासो'। २ देखो 'मास'

मासक–पु० [सं०] १ महिना, मास। २ देखो 'मासूक' ३ देखो 'मासिक'। ४ देखो 'मासी'।

मासकल्प–पु० चातुर्मास के अलावा उन्नीस दिन की अवधि।

मासक्षमण, मासखमण–पु० एक मास तक किया जाने वाला व्रत।

मा'सगती–देखो 'महासक्ति'।

मासड़ी–१ देखो 'मास'। २ देखो 'मांस'।

मा'सती–स्त्री० [सं० महा-सती] वीर पुत्र की गोद में लेकर सती होने वाली स्त्री, माता।

मासदिवस–पु० १ एक मास की अवधि। २ तीस की संख्या।

मासद्ध–पु० [सं० अर्द्ध मास] एक पक्ष, आधा मास।

मासपदो–पु० एक वस्त्र विशेष।

मासपरणी–स्त्री० [सं० माष-पर्णी] जंगली उड़द।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मासफल–पु० [सं० मास-फलः] १ किसी मास का शुभाशुभ फल। २ वह पत्र जिसमें यह फल लिखा हो।
मासबारी–पु० एक महिने के बाद होने वाला प्रसूता का स्नान।
मासांत–पु० [सं० मास+अंत] १ महिने का अंतिम दिन। २ महिने का अन्त। ३ संक्रांति। ४ अमावस्या।
मासा अल्लाह–पु० [अ० माशा अल्लाह] वाह-वाही, साधु-वाद।
मासाधिप–पु० किसी मास का स्वामी ग्रह।
मासाब–स्त्री० माता साहिबा, माता तुल्य स्त्री के लिये आदर सूचक संबोधन।
मासास–पु० [स० मास-आसः] घोड़ा, अश्व।
मासि–१ देखो 'मास'। २ देखो 'मासी'।
मासिक–वि० १ मास का, मास संबंधी। २ मास में एक बार होने वाला। –पु० प्रति माह नियमित चलने वाला कार्य। —श्राद्ध, श्राद्ध–पु० स्त्रियों का मासिक रजोस्राव।
मासियाइ, मासियात, मासियाळ, मासिहाई–पु० [सं० मातृष्व स्रोय] मौसी की संतान।
मासी–स्त्री० [सं० मातृ-ष्वसा] १ माता की बहन, मौमी। २ मौसी के रूप में मानी जाने वाली लड़की, स्त्री। ३ बनास की एक सहायक नदी।
मासीसासु–स्त्री० सासू की बहन।
मासीसुसरो–पु० सासू का बहनोई।
मासीसो–पु० मृतक के पीछे प्रति मास किया जाने वाला भोज।
मासुधाकर–पु० [सं० महा-सुधाकर] चन्द्रमा।
मासुरी–स्त्री० [सं०] १ दाढ़ी। २ मूछ।
मासूक–वि० [अ० माशूक] (स्त्री० मासूका) १ प्रियतम, प्रेमी। २ प्रेम पात्र। ३ जिसके साथ प्रेम किया जाय।
मासूकी–स्त्री० [अ० मा' शूकियत] १ प्रेमी होने की अवस्था, किसी के प्रेम में दीवानगी। २ प्रेम पात्रता।
मासूम–वि० [अ० मा'सूम] १ दोष रहित, निर्दोष। २ निष्पाप। ३ नादान, भोला भाला।
मासूरी–देखो 'मासुरी'।
मासूल–देखो 'महसूल'।
मासोत्तम, मासोत्तम–पु० [सं० मास-उत्तम] १ उत्तम व श्रेष्ठ मास। २ अधिक मास। ३ मल मास।
मासो–पु०[सं०माषः] १ एक तोले का अठारहवां अंश, एक मान। २ मौसी का पति, माता का बहनोई।
मास्याई, मास्याही–देखो 'मासियाई'।
मास्यूक–देखो 'मासूक'।
माह–पु० [सं० माह] १ महिना, मास। २ देखो 'माघ'। ३ देखो 'मांय'। ४ देखो 'महा'।
माहअहि–देखो 'महाअहि'।
माहकंत–देखो 'महाकंत'।
माहकाळ–देखो 'महाकाळ
माहकाळी–देखो 'महाकाळी'।
माहकाव्य–देखो 'महाकाव्य'।
माहगणपति–देखो 'महागणपति'।
माहगौरी–देखो 'महागौरी'।
माहग्यांनी–देखो 'महाग्यांनी'।
माहग्रीव–देखो 'महाग्रीव'।
माहचंड–देखो 'महाचंड'।
माहचंडी–देखो 'महाचंडी'।
माहचीण–देखो 'महाचीण'।
माहजन–देखो 'महाजन'।
माहजी–देखो 'मांझी'।
माहजोगी–देखो 'महायोगी'।
माहज्वाळ, माहज्वाळा–देखो 'महाज्वाळा'।
माहठ–देखो 'मावट'।
माहण–पु० [सं० मा+हन्] (स्त्री० माहणी) १ अहिंसा का कट्टर समर्थक साधू। २ ब्राह्मण, विप्र। –वि० उच्च, सभ्य। —रूप–पु० ब्राह्मण का रूप, वेश।
माहणसंपाय–स्त्री० ब्राह्मण वर्ग, सम्प्रदाय।
माहणी–स्त्री० साध्वी स्त्री।
माहतमा–देखो 'महात्मा'।
माहतळ–देखो 'महातळ'।
माहतिरफळा–देखो 'महात्रिफळा'।
माहदंड–देखो 'महादंड'।
माहदांन–देखो 'महादांन'।
माहदेव–देखो 'महादेव'।
माहद्रुम–देखो 'महाद्रुम'।
माहद्वीप–देखो 'महाद्वीप'।
माहनद–देखो 'महानद'।
माहपक्ष (ख)–देखो 'महापक्ष'।
माहपथ–देखो 'महापथ'।
माहपथिक–देखो 'महापथिक'।
माहपद्म–देखो 'महापद्म'।
माहपरभु–देखो 'महाप्रभु'।
माहपरांण–देखो 'महाप्रांण'।
माहपवितर–देखो 'महापवित्र'।
माहपातक–देखो 'महापातक'।
माहपूजा–देखो 'महापूजा'।
माहपुरस–देखो 'महापुरुस'।
माहपुरांण–देखो 'महापुरांण'।
माहप्रसाद–देखो 'महाप्रसाद'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माहप्रस्थान–देखो 'महाप्रस्थान'।
माहप्राण–देखो 'महाप्राण'।
माहबली, माहबलीय–देखो 'महाबली'।
माहबाहु–देखो 'महाबाहु'।
माहभारत–देखो 'महाभारत'।
माहभास्य–देखो 'महभास्य'।
माहभूत–देखो 'महाभूत'।
माहभैरव–देखो 'महाभैरव'।
माहभोग–देखो 'महाभोग'।
माहमंतरी–देखो 'महामंत्री'।
माहरह–देखो 'म्हारै'।
माहरउं (उ)–देखो 'म्हारौ'।
माहरम–स्त्री० १ सूचना। २ देखो 'महरम'। ३ देखो 'मलम'। ४ देखो 'मुहरम'।
माहराज–देखो 'महाराज'।
माहरि (रो)–देखो 'म्हारो'।
माहरउं (उ, ओ)–देखो 'म्हारो'।
माहरे (रै)–देखो 'म्हारै'।
माहरौ–देखो 'म्हारो'।
माहलो–वि० १ अन्दरुनी, आंतरिक। २ अन्तःपुर संबंधी। –पु०– १ खोजा, दास-दासी, सेवक आदि। २ राजमहल; अन्तःपुर।
माहलो–देखो 'मांयलौ'।
माहव–देखो 'माधव'।
माहवठउ–देखो 'मावठौ'।
माहवत–देखो 'महावत'।
माहवार–पु० प्रतिमाह मिलने वाला वेतन। —वि० मासिक प्रतिमास का —अव्य० हर मास; प्रतिमास से।
माहवारी–वि० १ प्रतिमास चलने वाला, मासिक। २ हर मास मिलने वाला। —पु० १ स्त्रियों का मासिक धर्म। २ देखो 'माहवार'।
माहविदेह–देखो 'महाविदेह'।
माहवीर–देखो 'महावीर'।
माहवौ–देखो 'माधव'।
माहसुर–देखो 'महासुर'।
माहां–माहां–देखो 'माहोमांहि'।
माहा–स्त्री० [सं० माहेयी] १ गौ, गाय। २ देखो 'महा'। ३ देखो 'मांय'।
माहाकालियो–पु० १ एक असुर। २ काला नाग।
माहाचीण–देखो 'महाचीण'।
माहाडोळ, माहाडोळ–देखो 'महाडोळ'।
माहातम–देखो 'महातम'।
माहातमा–देखो 'महात्मा'।
माहाबळ–देखो 'महाबळ'।
माहामरातब, माहामरातब–देखो 'माहीमरातिब'।
माहामोट–पु० एक देश विशेष।
माहार–पु० कुम्हारों की एक शाखा।
माहाराज–देखो 'महाराज'।
माहाराजा–देखो 'महाराजा'।
माहारी–देखो 'म्हारी'।
माहारौ–देखो 'म्हारौ'।
माहाल्ह–देखो 'माळौ'।
माहासणी (वी)–देखो 'मासणी' (वी)।
माहावठौ–देखो 'मावठौ'।
माहावत–देखो 'महावत'।
माहावकाळ–देखो 'महावकाळ'
माहासंघ–देखो 'महासंघ'।
माहासती–देखो 'महासती'।
माहि, माहि–वि० १ माघ मास की। २ देखो 'मांय'।
माहित–स्त्री० [अ० माहीयत] १ वास्तविक ज्ञान, जानकारी। २ वस्तु स्थिति, हकीकत। ३ वस्तु का मूल गुण, तत्त्व। ४ प्रकृति। ५ विवरण।
माहिपत, माहिपति–देखो 'महीपति'।
माहिर–पु० [सं०] इन्द्र का नामान्तर। —वि० [अ०] १ दक्ष निपुण। २ चतुर, होशियार। ३ अभ्यस्त।
माहिलउ–देखो 'मांयलो'।
माहिलवाडिओ, माहिलवाडियो–पु० अन्तःपुर का परिचायक, अनुचर।
माहिल, माहिलु, माहिलो, माहिल्यु–देखो 'मांयलो'।
माहिस्मती–स्त्री० [सं० महिष्मती] एक प्राचीन नगर।
माहीं माही–स्त्री० [फा०] १ मछली। २ राजस्थान की एक नदी। ३ देखो 'माधी'। ४ देखो 'मांय'।
माहीदांत–पु० मछली का दांत।
माहीप–देखो 'महीप'।
माहीमरातिब, माहीमुरातब, माहीमुरातबो, माहीमुरातिब–पु० बादशाह की सवारी के आगे चलने वाले झंडों का समूह।
माहीसातम–पु० [सं० माघ-सप्तमी] माघ शुक्ल सप्तमी, सूर्य पूजन का पर्व दिवस।
माहुट, माहुटि–देखो 'मावट'।
माहुत, माहुति–देखो 'महावत'।
माहुर–पु० [सं० मधुर] १ विष। २ विष समान वस्तु। ३ मालियों का एक भेद। –वि० पहले का, पुराना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माहेंद्र–वि० [सं०] १ इन्द्र का, इन्द्र संबंधी। २ जिसके देवता महेन्द्र हों। –पु० १ ज्योतिष का एक योग। २ एक प्राचीन अस्त्र। ३ जैन मतानुसार चौथे स्वर्ग का नाम। ४ सुश्रुत के अनुसार एक देवग्रह।

माहेंद्री–स्त्री० [सं०] १ इन्द्र की शक्ति। २ इन्द्र की पत्नी। ३ सप्त मातृकाओं में से एक। ४ गौ, गाय।

माहे–देखो 'मांय'।

माहेरी, माहेयी, माहेरी–स्त्री० [सं० माहेयी] गाय, गौ।

माहेरी–देखो 'मायरो'।

माहेव–पु० १ बाड़मेर का प्राचीन नाम। २ देखो 'महादेव'।

माहेस–देखो 'महेस'।

माहेसख, माहेसखड–देखो 'महेसखड'।

माहेसर, माहेसवर, माहेसुर–देखो 'महेस्वर'।

माहेस्वर–पु० [सं० माहेश्वर] १ शिव के पुजारी, शैव। २ एक यज्ञ का नाम। ३ पाणिनी के प्रारंभिक चौदह मुख्य सूत्र।

माहेस्वरी–स्त्री० [सं० माहेश्वरी] १ पार्वती, गिरिजा। २ दुर्गा। ३ एक मातृका। ४ वैश्यों की एक जाति। –पु० इस जाति का व्यक्ति।

माहे–देखो 'मांय'।

माहोमाहि, माहोमाहि, माहोमाहैं, माहोमा, माहोमाह, माहोमाहि, माहोमाहे–क्रि० वि० [सं० मध्यस्य मध्यस्मिन:] परस्पर, आपस में। एक दूसरे के प्रति।

मि णो–देखो 'मींगणो'।

मिगणो–देखो 'मींगणो'।

मिजासणो–देखो 'मजासणो'।

मिठु–देखो 'मीठो'।

मिढ–देखो 'मींढो'।

मिढणो (बो)–क्रि० १ बराबर होना, समान होना। २ एक साथ रख कर मिलाया जाना। ३ देखो 'मींडणो' (बो)।

मिढपुख–पु० एक देश का नाम।

मित, मितर–१ देखो 'मित्र'। २ देखो 'मंत्र'।

मितरणो (बो)–देखो 'मंतरणो' (बो)।

मितरता, मितराई–देखो 'मित्रता'।

मितरी–देखो 'मंत्री, मित्र'।

मितरोळ, मितरोळियो–१ देखो 'मंत्र'। २ देखो 'मंतरोळियो'।

मित्ती–देखो 'मिति'।

मित्र–देखो 'मित्र'।

मित्राई–स्त्री० मित्रता, दोस्ती।

मित्री–देखो 'मंत्री'।

मिवर–१ देखो 'मंदिर'। २ देखो 'कठमंदिर'।

मियाळ–पु० कच्चे मकान की छाजन में लगने वाली लकड़ी विशेष।

मि–सर्व० मैं, मेरा, मेरे।

मिआंन–देखो 'म्यांन'।

मिआद–देखो 'मयाद'।

मिआदी–देखो 'मयादी'।

मिउ–देखो 'मिदु'।

मिकदार–पु० [अ० मिकदार] १ मात्रा, परिमाण। २ तौल, वजन। ३ अंदाज, अनुमान

मिग–देखो 'मिग'।

मिगसर, मिगसरी–पु० [सं० मार्ग शीर्ष] १ कार्तिक मास के बाद आने वाला मास। [सं० मृगशिरा] २ नक्षत्र विशेष, मृगशिरा।

मिगसरियो, मिगस्सर–देखो 'मिगसर'।

मिड़क्स–देखो 'मड़क्स'।

मिचकोड़णो (बो)–देखो 'मचकोड़णो' (बो)।

मिचणो (बो)–क्रि० बंद होना, झपक जाना (आंख)।

मिचळाप, मिचळोद, मिचळाट–देखो 'मचळाण'।

मिचळाणो (बो)–क्रि० १ उबकाई आना, मितली आना, कै होना। २ देखो 'मचळणो' (बो)।

मिचली–देखो 'मचली'।

मिच्छ–पु० [सं० म्लेच्छ] यवन।

मिच्छ–स्त्री० [सं०] आशा, अभिलाषा।

मिच्छत, मिच्छत्त–पु० [सं० मिथ्यात्व] सत्य को असत्य व असत्य को सत्य समझने की अवस्था।

मिच्छदिट्ठि, मिच्छदिट्ठी–स्त्री० मिथ्या दृष्टि। (जैन

मिच्छामिदुक्कड़–पु० मिथ्या दुष्कृत।

मिच्छा–स्त्री० मिथ्या।

मिच्छादंसण–पु० मिथ्या दर्शन।

मिच्छादिट्ठी–स्त्री० मिथ्या दृष्टि।

मिच्छादुक्कड़–देखो 'मिच्छामिदुक्कड़'।

मिछ–वि० मृत।

मिछत–पु० मिथ्यात्व, मिथ्यापन।

मिजनू–देखो 'मजनू'।

मिजबांनी–देखो 'मिजमांनी'।

मिजमांण, मिजमान–पु० [फा० मेहमान] अतिथि, मेहमान।

मिजमांनिय, मिजमानी–स्त्री० [फा० मेजबानी] १ आतिथ्य, सत्कार, स्वागत। २ आतिथ्य में दिया जाने वाला भोज। ३ अतिथि की भेंट।

मिजराब–पु० [अ०] तार वाद्य बजाने का छल्ला।

मिजलस–देखो 'मजलिस'।

मिजळी–वि० (स्त्री० मिजळी) हीन या ओछी प्रवृत्ति वाला, नीच, कृतघ्न।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिजान–पु० [अ० मीजान] १ तराजू, तुला। २ तुला राशि। ३ अंकों योग, जोड़।

मिजाज–पु० १ स्वभाव; प्रकृति। २ स्वभाव, आदत। ३ स्वास्थ्य तबियत। ४ किसी पदार्थ का मूल गुण। ५ गर्व, अभिमान, घमंड। ६ नाज, नखरा। ७ खुशी, मोद। ८ दिल, मन।

मिजाजआली–पु० [अ०] कुशल-मंगल पूछने का शब्द।

मिजाजदार–वि० गर्व व अभिमान करने वाली।

मिजाजवार–वि० [अ०] गर्व व अभिमान वाला।

मिजाजपुरसी–स्त्री० [अ०] १ कुशल पूछने की क्रिया। २ सहानुभूति का प्रदर्शन।

मिजाजसरीफ–देखो 'मिजाजआली'।

मिजाजी, मिजाजीड़ी, मिजाजी–वि० (स्त्री० मिजाजण) १ गर्वीला, अभिमानी। २ नाज, नखरेबाला।

मिजमान–देखो 'मिजमान'।

मिजमानदारी, मिजमानी–देखो 'मिजमानी'।

मिजलस–देखो 'मजलिस'।

मिटणो (बो)–क्रि० १ समाप्त होना, खतम होना। २ बंद होना, रुकना। ३ दूर होना, अलग होना, हटना। ४ नष्ट होना, क्षय होना। ५ निवारण होना, समाधान होना। ६ छूटना जाना। ७ शान्त होना। ८ कम होना, घटना, क्षीण होना। ९ मरना, अवसान होना।

मिटाणो (बो), मिटावणो (बो)–क्रि० १ समाप्त करना, कराना। २ बंद कराना, करना। रुकना, रोकना। ३ दूर, अलग करना, कराना। हटाना। ४ नष्ट करना, कराना। ५ निवारण करना, कराना। ६ छुड़ाना, पृथक करना। ७ शान्त करना, कराना। ८ कम करना, कराना। ९ क्षीण करना, कुराना।

मिटियाड़–स्त्री० कीचड़, पंक।

मिटियामेट–वि० नष्ट, बर्बाद, तहस-नहस, तबाह।

मिटी, मिट्टि, मिट्टी–देखो 'माटी'।

मिट्ठ, मिट्ठड़ी, मिट्ठी, मिठ, मिठड़ी–देखो 'मीठी'।

मिट्ठरस–पु० मीठा पदार्थ मीठा रस।

मिट्ठु, मिट्ठू–पु० तोता, सूआ, कीर।

मिठाण–देखो 'मिस्ठान'।

मिठाइ (ई)–स्त्री० १ लड्डू-पेड़े आदि पदार्थ, मीठे पकवान। २ मीठापन, मिठास।

मिठाबोली–वि० (स्त्री० मिठा बोली) मृदु भाषी।

मिठास, मिठियास–पु० १ मीठा होने की अवस्था, गुण। २ मीठा स्वाद, मीठापन। ३ मधुरता, माधुर्य।

मिट्ठी–१ देखो 'मीठी'। २ देखो 'मिट्ठू'।

मिणं–१ देखो 'मणि'। २ देखो 'मिण'। —धर='मणिधर'।

मिण–स्त्री० १ कूए के घेरे की दीवार, घेराव। २ देखो 'मणि'।

मिण्णजल–पु० [सं० मणिजल] विद्युत, बिजली।

मिणणो (बो)–क्रि० १ नापना, मिलाना। २ अंदाज करना। ३ देखो 'मुणणो' (बो)।

मिणधर, मिणधरण, मिणधारी–देखो 'मणिधारी'।

मिणसणो (बो)–क्रि० [सं० मनस्यन्] १ मन में इच्छा या विचार करना। २ दृढ़ निश्चय करना, संकल्प करना। ३ संकल्प पूर्वक दान करना।

मिणसीकर–पु० [सं० शीकरमणि] चन्द्रमा, चांद।

मिणि–देखो 'मणि'।

मिणिअड, मिणिअर मिणिअड़, मिणियर–देखो 'मणिधर'।

मिणिहार–देखो 'मणिहार'।

मिणिहारी–देखो 'मणियारी'।

मिणीयड़, मिणीयर–देखो 'मणिधर'।

मितंग, मितंगम–देखो 'मतंग'।

मितंपच–वि० [सं०] १ निर्धन, दरिद्र। २ कृपण, कंजूस। ३ थोड़ा पकाने वाला।

मित–वि० [सं०] १ परिमित थोड़ा। २ तुल्य, समान। –स्त्री० १ तरह, भांति, प्रकार। २ संख्या, गिनती। ३ पार, सीमा। ४ माप। ५ मृत्यु, मरण। ६ देखो 'मित्र'।

मितड़ी–देखो 'मित्र'।

मितभाखो–वि० [सं० मित-भाषी] आवश्यकता अनुसार बोलने वाला, जो बकवादी न हो।

मितर–देखो 'मित्र'।

मितराई–स्त्री० मित्रता, दोस्ती।

मितळणो (बो), मितळाणो (बो), मितळावणो (बो)–क्रि० जी घबराना, तबियत बिगड़ना, उबकाई होना, कै होना।

मितबो–देखो 'मित्र'।

मितव्यय, मितव्ययता–स्त्री० १ कम खर्च, खर्च में कमी। २ फिजूलखर्ची का अभाव। ३ किफायत, बचत।

मितव्ययी–वि० कम खर्च करने वाला, किफायती।

मिताई–स्त्री० मित्रता।

मिति, मिती–स्त्री० [सं० मिति] १ मान, परिमाण। २ सीमा हद। ३ समय की अवधि, दिया हुआ वक्त। ४ तिथि तारीख।

मितिकाटो–पु० १ व्यापारिक लेन-देन की एक विधि। २ ब्याज का एक नियम।

मितु मित्त, मित्तर–देखो 'मित्र'।

मित्र–पु० [सं०] १ सूर्य, भानु। २ बारह आदित्यों में से एक। ३ एक वैदिक देवता। ४ वार व नक्षत्रों का एक योग। ५ पुराणों के अनुसार मरुद्गण विशेष। ६ वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम। –वि० १ सुहृदय हितैषी, परोपकारी। २ प्रेमी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रियतम । ३ सखा, यार । ४ श्वेत, सफेद । —घात—स्त्री० मित्र की हत्या । —घातक—वि० मित्र का हत्यारा ।

मित्रकपि—पु० श्रीरामचन्द्र ।

मित्रता, मित्रताई—स्त्री० [सं० मित्रता] मित्र होने की अवस्था, धर्म या भाव ।

मित्रवान—पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । २ मनु का एक पुत्र ।

मित्रविंदा—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की एक पत्नी ।

मित्रसंजोग—पु० [सं० मित्रसंयोग] सुख ।

मित्रसप्तमी, मित्रसप्तम—पु० मार्गशीर्ष व माघ शुक्ला सप्तमी ।

मित्रसेन—पु० [सं०] १ बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम । २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

मित्रा—स्त्री० [सं०] सुमित्रा का एक नामान्तर ।

मित्राई—स्त्री० मित्रता ।

मिथ—पु० [सं० मिथ] १ संगम, सम्मिलन । २ प्रहार, आघात । ३ घायल, क्षत । ४ पहचान । ५ लड़ाई, झगड़ा । ६ मिथ्या ।

मिथन—देखो 'मिथुन' ।

मिथला—देखो 'मिथिला' ।

मिथलापतजा—स्त्री० [सं० मिथिलापतिजा] सीता, जानकी ।

मिथलापुरी—देखो 'मिथिलापुरी' ।

मिथळेस, मिथळेसर, मिथल्लेस—पु० [सं० मिथिला-ईश] राजा जनक ।

मिथाणी—स्त्री० मथ दण्ड, मथने का उपकरण ।

मिथ्या—देखो 'मिथ्या' ।

मिथ—पु० [सं०] विदेह देश का एक राजा ।

मिथिळा, मिथिळापुरी—स्त्री० [सं० मिथिला] १ वर्तमान तिरहुत प्रदेश का प्राचीन नाम । २ जनकपुरी ।

मिथिळेस, मिथिळेसर—पु० [सं० मिथिलेश] निमि के पुत्र राजा जनक ।

मिथुन—पु० [सं०] १ एक राशि । २ ज्योतिष में तीसरा लग्न । ३ एक साथ उत्पन्न दो बच्चे । ४ युग्म, जोड़ा । ५ संभोग मैथुन । ६ संगम, समागम ।

मिथुनचर—पु० [सं०] चकवाक पक्षी ।

मिथ्या—वि० [सं०] १ असत्य, झूठा । २ अज्ञानवश सत्य माना जाने वाला । ३ कृत्रिम, बनावटी । ४ निराधार । ५ कपट पूर्ण । ६ नीति या नियम विरुद्ध । ७ अस्थाई ।

मिथ्याचार—पु० [सं०] १ कपटपूर्ण आचरण या व्यवहार । २ बनावटी बातें ।

मिथ्याजोग—पु० [सं० मिथ्या योग] रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध कार्य ।

मिथ्यात—देखो 'मिथ्यात्व' ।

मिथ्याति (ती, ती)—देखो 'मिथ्यात्वी' ।

मिथ्यात्व—पु० [सं० मिथ्यात्व] वस्तु स्थिति के विपरीत धारना ।

मिथ्यात्वी—वि० सत्य व धर्म पर अविश्वास करने वाला ।

मिथ्यापुरुस—पु० छाया पुरुष ।

मिथ्यामत—पु० पाखण्ड, नास्तिकवाद ।

मिथ्यामति, मिथ्यामती—वि० १ दुष्ट बुद्धि, दुर्मति । २ नास्तिक । —पु० छल, कपट, धोखा ।

मिथ्यावाद—पु० नास्तिकवाद, पाखण्ड ।

मिधिलोकेस—पु० [सं० मध्यलोकेश] राजा, नृप ।

मिनक—१ देखो 'मनुस्य' । २ देखो 'मिनख' ।

मिनकी—देखो 'मिन्नी' ।

मिनकौ—देखो 'मिन्नौ' ।

मिनख, मिनख—पु० [सं० मनुष्य] १ स्त्री, औरत । २ पत्नी । ३ जनता, प्रजा । ४ पति । ५ मनुष्य । —जूण—स्त्री० मनुष्य योनि, मनुष्य जन्म । —पण, पणु, पणौ—पु० इन्सानियत मानवता । —मार—पु० मनुष्यों का हत्यारा, मानव भक्षी ।

मिनखांमनमोहणी—स्त्री० पृथ्वी, भूमि, जमीन ।

मिनखा—स्त्री० [सं० मनिषा] बुद्धि, अक्ल ।

मिनखाचार—पु० [सं० मनुष्य-आचार] मनुष्यों का आचार-व्यवहार ।

मिनखापण (पणौ)—देखो 'मिनखापण' ।

मिनखी—देखो 'मिन्नी' ।

मिनखीचार (चारी)—देखो 'मिनखाचार' ।

मिनखेड़ो—वि० (स्त्री० मिनखेड़ी) मनुष्यों की सोहबत में रहने का आदि (प्राणी) ।

मिनड़ी—देखो 'मिन्नी' ।

मिनड़ौ—देखो 'मिन्नौ' ।

मिनमिन—पु० धीमी व अस्पष्ट आवाज, गुन-गुन ।

मिनमिनाणो (णो)—क्रि० १ धीमे-धीमें बोलना, फुसफुसाना । २ गुनगुनाना । ३ मिमियाना । ४ धीरे-धीरे काम करना ।

मिनमिनो—वि० १ फुसफुसाने वाला, मिमियाने वाला । २ सुस्त, धीरे काम करने वाला । ३ तुनक मिजाज ।

मिनि, मिनी—१ देखो 'मन' । २ देखो 'मिन्नी' ।

मिनियौ, मिनीयौ—पु० बिल्ली का बच्चा ।

मिनौ—१ देखो 'मिन्नी' । २ देखो महिनौ' ।

मिन्नत—स्त्री० [अ०] विनती, प्रार्थना, दुआ । खुशामद ।

मिन्नी—स्त्री० १ बिल्ली, मार्जार । २ एक उपकरण विशेष ।

मिन्नौ—पु० बड़ा बिल्ला, बिलाव ।

मिमंत—देखो 'मैमंत' ।

मिमजर, मिमझर—स्त्री० बबूल, नीम आदि की बौर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिमता-देखो 'ममता'।

मिय-वि० [सं० मित] १ मित, परिमित। २ स्वल्प।

मियां-पु० [फा०] १ पति, खाविंद। २ स्वामी, मालिक। ३ प्रतिष्ठित व्यक्ति। ४ मुसलमान। ५ उत्तर भारत के पहाड़ी राजपूतों की उपाधि।

मियांमिट्ठू-वि० १ अपनी तारीफ खुद करने वाला। २ मधुरभाषी।

मिरक, मिरख-स्त्री० कांटे की छोटी नोक या सूक्ष्म भाग।

मिरखाबाद-देखो 'मिरसाबाद'।

मिरग-देखो 'मिग'। —अछ='मिगजळ'। —तसणा='मिगतसणा'।

मिरगचड़ी-पु० एक कीट विशेष।

मिरगलड़ी, मिरगली-देखो 'मिग'।

मिरगसिरा-देखो 'मिगसिरा'।

मिरगांक-देखो 'मिगांक'।

मिरगा, मिरगाळी-देखो 'मिग'। —नयन, नैणी, नैनी='मिगनैणी'।

मिरगी-देखो 'मिगी'।

मिरगेंद्र-देखो 'मिगेंद्र'।

मिरगेस-देखो 'मिगेस'।

मिरगो, मिरघ-देखो 'मिग'।

मिरघमाळ-स्त्री० १ एक प्रकार की भंग। २ मृगों की पंक्ति।

मिरघलो, मिरघांणु-देखो 'मिग'।

मिरघानैणी-देखो 'मिगानैणी'।

मिरघी-१ देखो 'मिगी'। २ देखो 'मिग'।

मिरड़, मिरड़ियो, मिरड़ो-पु० काटे हुए झाड़-वृक्षों का ढेर।

मिरच-स्त्री० [सं० मरीच] १ सब्जी आदि नमकीन पदार्थों में डाल कर खाने का तीक्ष्ण चरपरा प्रमुख पदार्थ। २ उक्त पदार्थ का पौधा। ३ 'ताश' के पत्तों का एक खेल। ४ बच्चों का एक खेल।

मिरचाई-स्त्री० मुनक्का दाख।

मिरचि-देखो 'मिरच'।

मिरचियाकंद-पु० औषध में काम आने वाला एक कंद।

मिरचियाघास-पु० रूसा नामक घास।

मिरचियो-पु० १ चंचल बालक। २ एक प्रकार का पौष्टिक पदार्थ।

मिरची, मिरच्च-देखो 'मिरच'।

मिरजो, मिरजो-पु० [फा० मीरजा] १ मीर या अमीर का लड़का। २ शाहजादा। ३ तैमूर के वंशजों की उपाधि। ४ मुसलमान। -वि० कोमल, नाजुक।

मिरजई-पु० [फा० मिराज] एक प्रकार की कुर्ती।

मिरतग-देखो 'मितक'।

मिरति-देखो 'मिति'।

मिरतिका-देखो 'मितिका'।

मिरतु, मिरत्यु-देखो 'मित्यु'। —लोक='मित्युलोक'।

मिरदंग-देखो 'मिदंग'।

मिरदंगी-देखो 'मिदंगी'।

मिरदु-देखो 'मिदु'।

मिरदुता-देखो 'मिदुता'।

मिरमरी-देखो 'मरमरी'।

मिरसावाद-पु० [सं० मृषावाद] १ असत्य भाषण। २ झूठ, मिथ्या। ३ झूठी बात। ४ फालतू, सारहीन बात। ५ चापलूसी। ६ व्यंग।

मिरा-स्त्री० [सं०] मदिरा, शराब।

मिरिगाखी-देखो 'मिगाखी'।

मिरिघ, मिरघो-देखो 'मिग'।

मिरिच-देखो 'मिरच'।

मिरियो-पु० तेल, घी आदि तरल पदार्थों में काम आने वाला कटोरीनुमा उपकरण जिसमें खड़ा डंडा लगा रहता है।

मिरी-स्त्री० मिर्च।

मिरी-पु० छोटा खंड।

मिल-देखो 'मैल'।

मिलक-देखो 'मलिक'।

मिळकणी-स्त्री० मुंह का फीकापन, स्वादहीनता।

मिळणी-स्त्री० १ मिलने-भेंटने की क्रिया या भाव। २ मिलन, भेंट। ३ विवाह के समय समधियों का सम्मिलन। ४ उक्त सम्मिलन के समय दिया जाने वाला धन।

मिळणो (णो)-क्रि० १ साक्षात्कार करना, मिलना, भेंट करना। २ मुलाकात करना। ३ मिलाप होना, सम्पर्क होना। ४ उपलब्ध होना, प्राप्त होना। ५ जानकारी प्राप्त होना, ज्ञान होना, खोज निकालना। ६ मिश्रित होना। ७ एकाकार होना। ८ पक्ष में होना, दल या संगठन में आना। ९ स्पर्श होना, छूना, अड़ना। १० लक्ष्य या सिद्धि प्राप्त होना। ११ एकत्र होना, जुड़ना। १२ सटना, लगना, जुड़ना। १३ इकट्ठा होना। १४ किसी में समाहित होना। १५ सम्मिलित होना, साथ होना। १६ टक्कर लेना, भिड़ना। १७ वाद्यों का एक स्वर में होना। १८ संलग्न होना। १९ जख्म भरना। २० दुधारू पशुओं का उनके बच्चों को स्तन पान कराना। २१ संगठित होना। २२ संभोग या मैथुन होना।

मिळणसार (क)-वि० १ मेल-जोल से रहने वाला, सम्पर्क बढ़ाने वाला। २ मिलनसार।

मिळतियांण, मिळतीयांण-पु० पूरे दांतों वाला युवा बैल।

मिळती-वि० १ मेल खाने योग्य। २ अवसर के अनुरूप। ३ हां में हां मिलाने की क्रिया या भाव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलतो–वि० (स्त्री० मिलती) समान, तुल्य, बराबर।

मिलमची–स्त्री० सप्तकोशी की एक सहायक नदी।

मिलान, मिलान–पु० १ मिलाने की क्रिया या भाव। २ साक्षात्कार, भेंट, मुलाकात। ३ हूबहू नकल की जांच। ४ एक वस्तु को दूसरी से तुलना। ५ एक कार्य का दूसरे से संयोग। ६ यात्रा का पड़ाव, डेरा, विश्राम।

मिलाई–स्त्री० १ तेंत कीट, कीटा, मैल। २ देखो 'मलाई'।

मिलाणो (बो), मिलाल्लो (बी)–क्रि० १ परस्पर भेंट या साक्षात्कार कराना। २ मेल-मिलाप कराना, सम्पर्क कराना। ३ सामने लाना, पास में लाना। ४ प्रकाश में लाना। ५ सिद्धि प्राप्त कराना, उपलब्धि कराना। ६ परिचय कराना। ७ ज्ञान कराना। ८ दल में लेना, पक्ष में करना। ९ स्पर्श कराना, छुआना। बढ़ाना, सटाना। १० जोड़ना, संलग्न करना। ११ बीच का फासला मिटाना। १२ सम्मिलित करना। १३ मिश्रण करना। १४ एकाकार करना। १५ संगठित या एकत्र करना। १६ बिछड़े हुए का साथ कराना। १७ टक्कर कराना, भिड़ाना। १८ स्त्री-पुरुष का संयोग कराना। १९ स्नेह या प्रेम कराना। २० गीता, गांठ लगाना। २१ सही नकल की जांच करना, कराना। २२ तुलना या मुकाबला करना। २३ जख्म भराना। २४ समान रूप-गुण वालों का साथ कराना। २५ केन्द्रित कराना। २६ वैवाहिक सूत्र में बांधना। २७ बाजों को एक स्वर में करना। २८ भावात्मक एकता बनाना।

मिलाप ,मिलाप–पु० १ मिलने की क्रिया या भाव। २ मिले हुए होने की अवस्था या भाव। ३ भेंट, साक्षात्कार, मुलाकात। ४ प्रेमपूर्वक मिलन। ५ स्नेह मिलन की दशा, भाव। ६ सामना। ७ प्रकाशन, विज्ञापन, जानकारी। ८ प्राप्ति-उपलब्धि। ९ परिचय, ज्ञान। १० समझौता। ११ स्पर्श। १२ स्त्री-समागम। १३ साथ। १४ मिलकर एकाकार होने की दशा। १५ ताल-मेल।

मिलाव–पु० १ मिलाने की क्रिया या भाव। २ देखो मिलावट'।

मिलावट–स्त्री० १ मिलाए जाने की क्रिया या भाव। २ अच्छे पदार्थ में उसी जाति के घटिया पदार्थ का मिश्रण। ३ इस प्रकार मिश्रित किया जाने वाला पदार्थ। ४ विपक्ष के सदस्य से होने वाली संधि। ५ साजिश, सांठ-गांठ। ६ सम्मिश्रण।

मिलावणी (बो)–देखो 'मिलाणो' (बो)।

मिलिंद–पु० [सं०] १ मधु मक्खी, मक्षिका। २ भौंरा, भ्रमर।

मिलित–वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित।

मिलिभगत–स्त्री० साजिश। षड्यंत्र।

मिलियागिरी–देखो 'मलयागिर'।

मिलीअनलि, मिलीयानल–देखो 'मलयानिल'।

मिल्कियत–स्त्री०[अ०] १ धन, सम्पत्ति, जायदाद। २ जागीर।

मिल्हणो(बो)–१ देखो 'मेलणो'(बो)। २ देखो 'मिलणो' (बो)।

मिसजर–पु० एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र।

मिसंद–देखो 'मसनद'।

मिस–पु० [सं० मिषम] १ बनावटी व्यवहार, बहाना। २ झूठा अभिनय, प्रदर्शन। ३ अवलंब, सहारा। ४ अवसर, मौका। ५ आड़। ६ छल, कपट, ढोंग, पाखंड। ७ कारण, हेतु। ८ समान, अनुरूप। –अव्य० १ बहाने से, कारण से, निमित्त। २ रूप में। ३ मानो।

मिसक–देखो 'मसक'।

मिसकरी–देखो 'मसखरी'।

मिसकरो–देखो 'मसखरी'।

मिसकीन–देखो 'मसकीन'।

मिसखरी–देखो 'मसखरी'।

मिसखरो–देखो 'मसखरो'।

मिसटाण, मिसठांण–देखो 'मिस्ठाण'

मिसतंगा–पु० एक प्रकार का खेल।

मिसतर–देखो 'मिस्तर'।

मिसतरी–देखो 'मिस्तरी'।

मिसन–पु० [अं०] १ विशेष कार्य के लिये भेजा जाने वाला दल। २ सम्प्रदाय। ३ उद्देश्य।

मिसर–पु० १ खाद। २ देखो 'मिस्र'।

मिसरस, मिसरित–वि० [सं० मिश्रित] मिला हुआ, घुला हुआ, सम्मिलित।

मिसरा–पु० [अं०] उर्दू, फारसी आदि कविता का पद्यांश।

मिसराई–पु० मसूड़ा।

मिसरी–स्त्री० [अ० मिस्री] १ चीनी को साफ कर जमाया हुआ पदार्थ, मिस्री। २ मिस्र देश का निवासी। ३ मिस्र देश की भाषा। ४ तलवार। –वि० १ अत्यन्त मीठा। २ शीतल। ३ मिस्र का, मिस्र संबंधी।

मिसरु (रू)–पु० एक प्रकार का कीमती रेशमी वस्त्र।

मिसल–स्त्री० १ राज-दरबार में सामंतों की पंक्ति। २ सामंत का पद। ३ वर्ग, समूह। ४ राज-सभा में बैठने का निश्चित स्थान। ५ सिक्खों के विभिन्न समूह। ६ सभा, समाज। –वि० समान तुल्य, अनुरूप। –क्रि० वि० तरफ, ओर। देखो 'मिसाल'। देखो 'मिसिल'।

मिसलणो (बो)–देखो 'मसलणो' (बो)।

मिसलत–देखो 'मसलत'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिसमसर–क्रि० वि० अपने स्थान, पद या वर्ग के अनुसार।

मिसल्लत–देखो 'मसलत'।

मिसवन–वि०[सं०मसि-वर्ण] १ कृष्ण; काला। २ अंधकारमय।

मिसापुग्गल मिसापुद्गल–वि० आत्म संयोगी।

मिसाल–स्त्री० [अ०] १ उदाहरण। २ उपमा। ३ दृष्टांत। ४ कहावत, लोकोक्ति। ५ नमूना। ६ आदर्श।

मिसि–१ देखो 'मिस'। २ देखो 'मसि'।

मिसिज्जाए–पु० साधु या गृहस्थ का मिश्रित दोष।

मिसिमिस–पु० अत्यन्त गुस्सा।

मिसियो–देखो 'मिस'।

मिसिर–देखो 'मिश्र'।

मिसिल–स्त्री० [अ०] १ किसी विवाद, मुकद्दमे की पत्रावली, फायल। २ किसी पुस्तक आदि के पृष्ठों का क्रम।

मिसिली–वि० [अ०] १ 'मिसिल' संबंधी। २ जिसकी मिसिल बन गई हो। ३ जिसको सजा मिल चुकी हो।

मिसी–स्त्री० [सं० मिश्र] १ विभिन्न पदार्थों का मिश्रण। सम्मिश्रण। २ देखो 'मिस्सी'। ३ देखो 'मिस'।

मिसु–देखो 'मिस'।

मिसूर–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मिसे–देखो 'मिस'।

मिस्कीन–देखो 'मिसकीन'।

मिस्कीनी–स्त्री० १ मसकीन होने की अवस्था या भाव। २ दीनता, गरीबी। ३ सरलता। ४ विरक्ति।

मिस्ट–वि० [सं० मिष्ट] १ मधुर, मीठा। २ स्वादिष्ट।

मिस्टान, मिस्टान्न, मिस्ठान, मिस्ठान्न–पु० [सं० मिष्ठान्न] १ मधुर एवं स्वादिष्ट भोजन, पदार्थ। २ मीठा अन्न। ३ मिठाइयां। ४ नैवेद्य।

मिस्तर–पु० १ लिखने-पढ़ने के काम आने वाला एक दस्ती का उपकरण। २ चूना, सीमेंट संबंधी कार्य का उपकरण विशेष।

मिस्तरी, मिस्त्री–पु० १ शिल्पकार, कारीगर। २ यांत्रिक, यंत्रकार।

मिस्र–पु० [अ०] १ अफ्रीका के उत्तर पूर्व में स्थित एक देश, अरब गणराज्य। [सं० मिश्र] २ एक ब्राह्मण वर्ग। ३ नाटकों की कथावस्तु का एक भेद। ४ व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से एक। ५ ज्योतिष में एक गण। ६ हाथियों की एक जाति। ७ सिंहों की एक जाति। ८ सन्निपात रोग। ९ खून, रक्त। १० सूली। ११ मिश्रित वस्तु। १२ सचित्त व अचित्त पदार्थों का योग। –वि० १ मिश्रित, संयुक्त, सम्मिलित। २ अनेक तत्त्वों के योग से बना। ३ माननीय, श्रेष्ठ, बड़ा।

मिस्केसी–स्त्री० [सं० मिश्रकेशी] एक अप्सरा विशेष।

मिस्रजाति–पु० वर्णसंकर जाति।

मिस्रण–पु० [सं० मिश्रण] १ मिलाने की क्रिया, सम्मिश्रण। २ मिले हुए कई पदार्थ। ३ विभिन्न औषधियों का योग। ४ कई वस्तुओं के योग से बना पदार्थ। ५ गणित में जोड़ लगाने की क्रिया।

मिस्रधानी–पु० धोवन (जैन)।

मिस्रित–वि० [सं० मिश्रित] १ मिला हुआ, सम्मिश्रण किया हुआ। २ संयुक्त। ३ मिलावट युक्त। –स्त्री० कृतिका एवं विशाखा की संक्रांति।

मिस्री–वि० [अ०] मिश्र का, मिश्र संबंधी, मिश्र का बना हुआ। –पु० १ मिश्र देश का निवासी। २ एक नाग विशेष। ३ देखो 'मिसरी'।

मिस्स–१ देखो 'मिसल'। २ देखो 'मिसिल'।

मिस्सी–स्त्री० [फा० मिसी] १ एक प्रकार का मंजन। २ मुसलमान वेश्या के प्रथम समागम का उत्सव।

मिहटणो (बो)–क्रि० [सं० मिह्] १ जलते हुए का बुझना, ठंडा होना। २ नम करना, तर करना। ३ छिड़कना। ४ मूत्र करना।

मिहनत–देखो 'मैंनत'।

मिहर–पु० [फा० महर] १ मुसलमानों में वर पक्ष से लिया जाने वाला स्त्री धन। २ देखो 'मिहिर'। ३ देखो 'महर'।

मिहरबाणी (बांणी)–देखो 'मैंरबांनी'।

मिहरबो–देखो 'मेहराब'।

मिहरी–देखो 'मिहिर'।

मिहल–१ देखो 'महिला'। २ देखो 'महल'।

मिहि–देखो 'महि'।

मिहिका–पु० [सं०] १ हिम, बर्फ। २ कोहरा। ३ ओस। ४ कपूर।

मिहिर–पु० [सं०] १ सूर्य, भानु, रवि। २ चन्द्रमा। ३ बादल, मेघ। ४ वायु, पवन। ५ राजा। ६ आक, मदार। ७ तांबा ८ वृद्धजन। ९ विक्रमादित्य की सभा का एक पंडित।

मिहिरकुल–पु० [सं०] १ एक प्राचीन राजा। २ सूर्यवंश

मिहिली–देखो 'महिला'।

मिहीं, मिहीन–देखो 'महीन'।

मींगणमाळा–स्त्री० ऊंट आदि की मिंगनी की माला।

मींगणी–स्त्री० भेड़, बकरी आदि के विष्टे की गोटी. मिंगनी।

मींगणो–पु० ऊंट के विष्टे की गोटी।

मींच–देखो 'मीच'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मींचणी (बो)–देखो 'मीचणी' (बो)।
मींचाणी (बो), मींचावणी (बो)–देखो 'मीचाणी' (बो)।
मींडि–देखो 'मीच'।
मींजणी (बो)–क्रि० १ मसलना, मलना। २ बंद करना, मूंदना।
मींजर–देखो 'मिमजर'।
मींजी–स्त्री० [सं० मज्जा] १ हड्डी के भीतर रहने वाला गूदा, मांस का गूदा। २ फल के भीतर का गूदा। ३ चर्बी वसा। ४ वीर्य, बीज। ५ अन्तःकरण, हृदय, मर्म।
मींट–देखो 'मीट'।
मींठी–देखो 'मीठी'।
मींड–पु० [सं० मीड़म्] १ तार वाद्यों में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने की विधि। २ समानता, तुल्यता, बराबरी।
मींडक–देखो 'मींडकी'।
मींडकी–स्त्री० १ मादा मेंढक, छोटा मेंढक। २ नीचे की ओर लटकते सींगों वाली गाय या भैंस।
मींडकीपाव–पु० नाथ सम्प्रदाय का एक सिद्ध।
मींडकी–पु० [सं० मण्डूक] (स्त्री० मींडकी) मेंढक, दादुर।
मींडणी (बो)–क्रि० १ तुलना करना, मिलान करना, जांच करना। २ अंकित करना, लिखना। ३ निरखना, देखना। ४ एक दूसरे की समता की जांच करना। ५ मुकाबला करना।
मींडल–१ देखो 'मींडी'। २ देखो 'मींढल'।
मींडली–देखो 'मींडी'
मींडाखड़बड़–स्त्री० १ बकझक। २ कलह, झगड़ा।
मींडासींगी–देखो 'मेढासींगी'।
मींडी–स्त्री० १ स्त्रियों/युवतियों के सिर में बालों की गुंथी हुई लट। २ नीचे लटकते सींगों वाली गाय या भैंस। ३ शून्य या बिन्दी का अंक '०'।
मींडो–पु० १ नीचे लटकते सींगों वाला पशु। २ शून्य या बिन्दी का अंक। ३ देखो 'मींढौ'।
मींढ–स्त्री० १ बराबरी, समता। २ तुलना करने की क्रिया। ३ जोड़। –वि० १ समान, बराबर। २ तुलना में देखा जाने वाला।
मींढणी (बो)–देखो 'मींडणी' (बो)।
मींढरी–वि० १ उपमा देने योग्य। २ बराबर का।
मींढळ–पु० १ वृक्ष विशेष। २ देखो 'मींडी'।
मींढली–देखो 'मींडी'।
मींढवणी (बो)–देखो 'मींडणी' (बो)।
मींढा–स्त्री० राजस्थान की एक नदी।
मींढासींगी–स्त्री० १ घोड़े के कानों के पास होने वाली एक भंवरी। २ देखो 'मेढासींगी'।
मींढी–देखो 'मींडी'।
मींढो–पु० [सं० मेण्ढक] नर मेष, भेड़ा। –वि० सींग रहित, बिना सींग का।
मींणा–देखो 'मीणा'।
मींत, मींत्र–देखो 'मित्र'।
मींदर–देखो 'मंदिर'।
मींन–देखो 'मीन'।
मींनमेख–देखो 'मीनमेख'।
मींचो–पु० बच्चों की छोटी तलवार।
मींह–देखो 'महीन'।
मी–स्त्री० १ रमा। २ यति।
मीआद–देखो 'मयाद'।
मीआदी–देखो 'मयादी'।
मीच–स्त्री० [सं० मृत्यु] १ मृत्यु, मौत। २ आंख का इशारा। ३ आंख बंद करने की क्रिया। —आळो–पु० यमलोक।
मीचणी (बो)–क्रि० [सं० मीलति] १ बंद करना, मूंदना। २ जोड़ना, मिलाना।
मीचाणी (बो), मीचावणी (बो)–क्रि० १ बंद कराना, मुंदवाना। २ जोड़ाना, मिलवाना।
मीजर–देखो 'मिमजर'।
मीजाजण–देखो 'मिजाजण'।
मीट–स्त्री० १ नजर, दृष्टि। २ ध्यान, याद। ३ एकाग्र बैठने की अवस्था। ४ निद्रा, नींद, तंद्रा। ५ नयन, नेत्र। ६ रोग, औषधि आदि के कारण होने वाली मूर्च्छा। ७ नशे का प्रभाव, नशा।
मीटवायु–पु० घोड़ों का एक रोग।
मीटि, मीटी–देखो 'मीट'।
मीठ–स्त्री० [सं० मिष्ट] १ मीठा होने की अवस्था या भाव। २ मधुरता, मीठापन, मिठास। –वि० १ मीठा, मधुर। २ देखो 'मीट'।
मीठड, मीठड़ड, मीठड़ी–देखो 'मीठी'।
मीठम–पु० [सं० मिष्टम्] मीठास, मधुरता।
मीठवांणीय–पु० [सं० मिष्ठ-पानीयं] मीठे पानी की सिंचाई से उत्पन्न गेहूँ।
मीठांण–देखो 'मिस्ठांन'।
मीठांणी, मीठांनी–स्त्री० [सं० मिष्ठ-पानीयं] मीठे पानी से सींचित भूमि।
मीठा–स्त्री० एक व्यावसायिक जाति।
मीठाखाऊ–वि० मीठा पदार्थ खाने वाला। स्वादलोलुप।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मीठागेहूँ–पु० मीठे पानी से उत्पन्न गेहूं ।

मीठापणो–पु० १. मीठा होने की अवस्था या भाव, मृदुता । २. मिठास, मधुरता ।

मीठापोइयां–स्त्री० घोडे की एक मध्यम चाल ।

मीठाबोलो–वि० (स्त्री० मीठाबोली) मृदुभाषी ।

मीठाबरो–वि० (स्त्री० मीठाबरी) मीठे पदार्थ खाने का इच्छुक ।

मीठास–पु० मधुरता, मीठापन ।

मीठी–वि० १. मधुर, सुरीली । २. देखो 'मिठीयां'

मीठीकोळी–स्त्री० [सं० मिष्ठ-कवल] देवता के लिये मीठा नैवेद्य ।

मीठीछुरी–वि० धोखेबाज, कपटी ।

मीठीबाळ–स्त्री० मीठे फल देने वाला जाल का वृक्ष ।

मीठीबाणी–स्त्री० मधुर वचन ।

मीठीबोरड़ी–स्त्री० मीठे बेरों वाला वृक्ष ।

मीठीमां–स्त्री० बड़ी मां, ताई ।

मीठीमार–स्त्री० १ तीक्ष्ण व्यंग, हास्य व्यंग । २ हंसते-हंसते कही गई तीखी बात ।

मीठू–१ देखो 'मीठौ' । २ देखो 'मिट्ठू' ।

मीठोउत्तर–पु० १ मीठी वाणी से दिया जाने वाला उत्तर, इन्कार । २ याचक को कुछ न्यूनाधिक दान ।

मीठोकवो–पु० १ मीठे पदार्थ का ग्रास । २ गुप्त वार्ता ।

मीठोड़ो–देखो 'मीठौ' । (स्त्री० मीठोड़ी)

मीठोठग–पु० मीठी बातों से भुलावा देकर धन लूटने वाला ठग, छलिया ।

मीठोतेल–पु० तिल्ली का तेल ।

मीठोनींब, मीठोनीम, (ड़ो)–पु० मीठे पत्तों वाला नीम वृक्ष ।

मीठोबच (बैण, वचन, वयन, बैण)–देखो 'मीठोवचन' ।

मीठोमाड–पु० प्रियतम, प्रेमी । पति ।

मीठोमेराणी–पु० सतलुज नदी की एक शाखा ।

मीठौ–वि० [सं० मिष्ट] (स्त्री० मीठी) १ शक्कर, गुड़, सहद आदि की तरह स्वाद में मधुर, मीठा । २ स्वादिष्ट, रुचिकर । ३ प्रिय व प्यारा लगने वाला । ४ सुशील, सरल, विनम्र । ५ सीधा-सादा, सरल । ६ मधुर, सुरीला, कर्ण प्रिय । ७ कोमल । ८ जिसमें कड़वाहट का अभाव हो । ९ मनवांछित । १० अच्छा, भला । ११ हल्का, मंद, धीमा । १२ लाभप्रद । १३ मोदभरा, प्रेमभरा । १४ धूर्त, पाखण्डी । १५ सुखद । –पु० १ मीठा खाद्य पदार्थ । २ मिठाई, मिष्ठान्न, पकवान । ३ नमक का नामान्तर । ४ गुदा मैथुन कराने वाला ।

मीठौवचन–पु० [सं० मिष्ट+वच्] १ कान व मन को अच्छा लगने वाला बोल, मधुर वचन । २ सुरीली आवाज । ३ प्रेम भरी बातें ।

मीड–देखो 'मींड' ।

मीडको–देखो 'मींडको' ।

मीडाआंवळ–स्त्री० एक प्रकार का क्षुप ।

मीढ–देखो 'मींढ' ।

मीढणी (बी)–देखो 'मींडणी' (बी) ।

मीढुस–पु० [सं० मीढुष] शक्र नामक आदित्य का एक पुत्र ।

मीढ़ी–देखो 'मींढी' ।

मीण–१ देखो 'मणि' । २ देखो 'मैण' । ३ देखो 'मीन' । ४ देखो 'मिण' ।

मीणमेख–देखो 'मीनमेख' ।

मीणवाखर–पु० एक प्रकार का घोड़े का पाखर ।

मीणा–स्त्री० एक जाति विशेष ।

मीणियो, मीणियौ–पु० १ एक वस्त्र विशेष । २ देखो 'मणियौ' ।

मीणी–देखो 'मणि' । —**धर**='मणिधर' ।

मी'णेदार–वि० मासिक वेतन पर रहने वाला ।

मीणो, मी'णो–पु० (स्त्री० मीणी) १ मीणा जाति का व्यक्ति । २ देखो 'महीनौ' ।

मीत, मीतो–देखो 'मित्र' ।

मीधौ–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

मीन–स्त्री० [सं०] १ मछली, मत्स्य । २ बारह राशियों में से एक (ज्योतिष) । ३ विष्णु एक अवतार, मत्स्यावतार । ४ मच्छी जैसी हस्तरेखा । ५ संशय, संदेह । ६ देखो 'मीनमारग' । –वि० मर्यादाच्युत, पतित, नीच ।

मीनकेत (केतन, केतु)–पु० [सं० मीनकेतुः] मदन, कामदेव ।

मीनख–देखो 'मिनख' ।

मीनगंधा–स्त्री० [सं०] मत्स्यगंधा, सत्यवती ।

मीनड़ो–देखो 'मिन्नो' ।

मीनति (ती)–देखो १. 'मिन्नत' । २ देखो विज्ञप्ति ।

मीननाथ–पु० [सं०] मत्स्येन्द्रनाथ ।

मीननिवास–पु० [सं०] जल, पानी । समुद्र, तालाब, जलाशय ।

मीनमारग–पु० [सं० मीनमार्ग] योगसाधन का एक मार्ग, विधि ।

मीनमेख–स्त्री० [सं० मीन-मेष] १ संशय, संदेह । २ कमी, खामी ३ आगा-पीछा, सोच विचार ।

मीनहा–स्त्री० मछली फंसाने का यंत्र, बंशी ।

मीना–स्त्री० १ उषा व कश्यप की कन्या । [फा०] २ आभूषणों पर की जाने वाली रंग-बिरंगी चित्रकारी । ३ रंग-बिरंगा शीशा । ४ नीला रत्न । ५ शराब की सुराही । ६ शराब की बोतल । ७ गिनती, संख्या । ८ देखो 'मीन' । **कार**–पु० आभूषणों पर 'मीना' करने वाला । **–कारी**–स्त्री० आभूषणों पर 'मीना' का कार्य ।

मीनाबाजार–पु० अकबर के शासनकाल में लगने वाला एक बाजार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मीनाबाव–पु० एक प्रकार का सरकारी लगान ।
मीनार–स्त्री० स्तम्भनुमा गोलाकार ऊंची इमारत ।
मीनारोग–पु० मीन की संक्रांति को होने वाला 'मीणा' लोगों का मेला । (सिरोही)
मीनालय–पु० [सं०] समुद्र, सागर ।
मीनी–१ देखो 'मिन्नी' । २ देखो 'मीन' ।
मीनोदर–पु० [सं०मीन-उदर] मछली का पेट, मत्स्यउदर ।
मीनो–पु० १ आभूषणों पर पच्चीकारी करने का रंगीन शीशा । २ देखो 'महीनो' ।
मीम–पु० दुशाला ।
मीमचियो, मीमचो–देखो 'मींमचो' ।
मीमजर–देखो 'मिमजर' ।
मीमलड, मीमसी–स्त्री० वीरबहूटी, लाल कीड़ा ।
मीमांस, मीमांसक–पु० [सं०मीमांसक] १ मीमांसा करने वाला २ मीमांसा शास्त्र का पंडित, दार्शनिक ।
मीमांसा–स्त्री० [सं०] १ किसी विषय, बात या तत्त्व का दार्शनिक विवेचन । २ एक वैदिक दर्शन ।
मीयण–१ देखो 'मेण' । २ देखो 'मींयो' (स्त्री०) ।
मीयां–देखो 'मिया' ।
मीयाद–देखो 'मयाद' ।
मीयादी–देखो 'मयादी' ।
मीरंबर–पु० अमीर, सामंत ।
मीर–पु० [अ०] १ बादशाह, सम्राट । २ राजा, नवाब । ३ सरदार, सामंत । ४ प्रधान, मुखिया, नायक । ५ बड़े सरदार का पुत्र । ६ बलवान, शक्तिशाली । ७ सय्यद जाति की उपाधि । ८ मुसलमान, यवन । ९ अगुआ, नेता । १० ताश का बड़ा पत्ता । ११ धार्मिक आचार्य । १२ प्रतियोगिता में प्रथम रहने वाला । १३ ईश्वर, मालिक । १४ पति स्वामी । [सं० मीरः] १५ समुद्र, सागर । १६ पर्वत, पहाड़ १७ सीमा, हद । १८ जल, पानी ।
मीरज–पु० [फा०] मुसलमान ।
मीरजादा, मीरजादू (जादो)–पु० [फा०] १ किसी सामंत या सरदार का पुत्र । २ शाहजादा ।
मीरजो, मीरज्यो–पु० [फा०मीरजा] १ किसी सरदार या सामंत का पुत्र, मीरजादा । २ मुसलमान । ३ सय्यदों की एक उपाधि । ४ शाहजादा ।
मीरतुजक, मीरतुजक–पु० [अ० मीरतुजुक] सेना का प्रबन्धक, सेनानायक ।
मीरपति–पु० [फा०] बादशाह ।
मीरबक्सी, मीरबख्सी–पु० [फा०] १ मुस्लिम शासन में कर्मचारियों को वेतन बांटने वाला अधिकारी । २ एक बड़ा पद ।
मीरबच्चा (बच्चा)–पु० [फा०] सरदार या सामंत का लड़का, शाहजादा ।
मीरबहर–पु० [अ०मीरबह्र] जल सेनाध्यक्ष ।
मीरबार–पु० [फा०] शाही दरबार का एक अधिकारी
मीरभुचड़ी–पु० हिजड़ों का आदि पुरुष, कल्पित ।
मीरमजलस–पु० [फा० मीर-मजलिस] सभापति ।
मीरमुंसी–पु० [अ० मीरमुंशी] प्रधान मुंशी ।
मीरमुल्ला–पु० [फा०] बड़ा मौलवी ।
मीरल–देखो 'मीर' ।
मीरसामां–पु० [फा०] १ शाही दरबार का एक अधिकारी। २ रसोड़े का दारोगा । ३ खान-सामा ।
मीरसिकार (सिकारु)–पु० [फा० मीरे शिकार] बादशाह की शिकारगाहों का प्रबन्धक ।
मीरां–स्त्री० १ मेड़ता के प्रसिद्ध शासक राव दूदा राठौड़ की पौत्री व राणा सांगा की पुत्रवधू, श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त एक प्रसिद्ध कवियत्री । –पु० [फा०] २ ईश्वर, परमात्मा । ३ स्वामी, मालिक । ४ सज्जन, सभ्य । ५ सुहृद व संत पुरुष । ६ अमीर, धनवान, उच्चकुलीन ।
मीरांबर–पु० मुसलमान ।
मीरांसा,मीरांसाह–वि० [फा० मीर-शाह] १ मीरों का शाह, बादशाह । २ उदार, सुहृद । ३ अमीर, धनवान ।
मीरात–पु० मवेशी, पशु ।
मीरावमीर–पु० १ बादशाह । २ राजा । ३ प्रमुख सरदार ।
मीरासी–पु० [अ०] एक मुसलमान गायक जाति विशेष ।
मीरी–देखो 'मीर' ।
मीरूं–पु० मवेशियों का एक रोग ।
मीरूंबरा–पु० [फा० मीर+उमराव] सामंत, सरदार, अमीर ।
मील–पु० [अ०] १ आठ फर्लांग या १७६०गज की दूरी का नाप । २ उक्त दूरी के स्थान पर लगा पत्थर । ३ अंजन या सुरमा लगाने की सलाई । [अं०] ४ बड़े पैमाने पर वस्त्र उत्पादन करने का कारखाना । ५ उक्त कारखाने में चलने वाली बड़ी मशीन ।
मीलणो–पु० देशी रियासतों से लिया जाने वाला एक लगान ।
मीलत–देखो 'मीलित' ।
मीलित–वि० [सं०] १ मिला हुआ । २ मुंदा हुआ, बंद । ३ अप्रसिद्ध । ४ पलक झपकाये हुए । ५ नष्ट, लुप्त । –पु० एक अलंकार विशेष ।
मीसंजर–देखो 'मसंजर' ।
मीसरी–देखो 'मिसरी' ।
मीसल–देखो 'मिसिल', 'मिसल' ।
मीहर–देखो 'मिहिर' ।
मुं–देखो 'मूं' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुंअंधारो–पु० १ अरुणोदय से पूर्व का समय। २ सूर्यास्त के प्रारंभ का समय।
मुंइयो–वि० अग्रणी, प्रधान, हुरावल।
मुंई–वि० [सं मृत] १ मृत, मरी हुई। २. सौतेली।
मुंओ–वि० [सं० मृत] मृत, मरा हुआ।
मुंकणो (बो)–देखो 'मूकणो' (बो)।
मुंकाणो (बो),मुंकावणो(बो)–देखो 'मूकाणो'(बो)।
मुंक्को–देखो 'मुक्को'।
मुंगउ– १ देखो गूंगो'। २ देखो 'मूंगो'।
मुंगतो–देखो मंगतो।
मुंगधणो–पु० [सं०मुग्धेन्धनम्] मांगलिक अवसरों पर लाया जाने वाला ईंधन की लकड़ियों का गाड़ा।
मुंगम–स्त्री० १ अतिथि सत्कार, स्वागत। २ प्रतिष्ठा, इज्जत।
मुंगलो–पु० मुसलमान।
मुंगवड़ो–देखो 'मूंगोड़ी'।
मुंगियो–देखो 'मूंगियो', 'मूंगो'।
मुंगीपटण–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
मुंगो–देखो 'मूंगो'।
मुंचणो (बो)–क्रि० [सं०मुच] १ झरना, टपकना। २ छूटना, मुक्त होना, रिहा होना।
मुंछ,मुंछ–देखो 'मूंछ'।
मुंछ्यो(बो)–देखो 'मूछणो' (बो)।
मुंछाणो (बो)–देखो 'मूछाणो' (बो)।
मुंछार–देखो 'मूंछार'।
मुंछाळ, मुंछाळो–देखो 'मूंछाळो'।
मुंज–देखो 'मुझ', 'मूंज'।
मुंजक–पु० घोड़ों की आंख का एक रोग।
मुंजकेतु–पु०[सं०] एक राजा विशेष।
मुंजकेस–पु० १ एक आचार्य। २ एक राजा।
मुंजमेखळा–स्त्री० मूंज की मेखला, कटिबंध।
मुंजमेखळो–पु० १ महादेव, शिव। २ विष्णु।
मुंजरी–देखो 'मुजरी'।
मुंजाळ–पु० मूंज का पौधा। मूंजघास।
मुंजेवड़ो, मुंजोवड़ो–पु० मूंज की रस्सी, घास की रस्सी।
मुंझाणो(बो)–देखो ' रूझाणो' (बो)।
मुंड–पु० [सं०] १ मनुष्य का शिर, मस्तक। २ कटा हुआ शिर। ३ गंजा या मुंडा शिर। ४ गंजा मनुष्य। ५ शाखा आदि रहित पेड़ का तना। ६ राहु नामक ग्रह। ७ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार। ८ एक दैत्य। ९ एक उपनिषद। १० शुंभ-निशुंभ का सेनापति एक असुर। ११ कौरव दल का एक योद्धा। १२ नाई। १३ लोहा। १४ मंडूर। १५ अनाज का एक प्रकार का नाप जो१० कलसी के बराबर होता था। –वि०१ मुंडा हुआ, गंजा। २ कटा हुआ। ३ नीच, कमीना।
मुंडक–पु० [सं०] १ शिर, मस्तक। २ एक उपनिषद। ३ नाई हज्जाम। –वि० मुण्डन करने वाला।
मुंडकी–स्त्री० शिर, खोपड़ी।
मुंडण–पु० [सं० मुण्डन] १ मस्तक के केशों का मुण्डन। २ यज्ञोपवीत के समय का मुण्डन संस्कार। ३ शिशु का प्रथम मुण्डन। ४ हजामत।
मुंडणो(बो)–क्रि० [सं० मुंड] १ मुंडा जाना, मुण्डन किया जाना, बाल काटे जाना। २ ठगा जाना। ३ पीसा जाना।
मुंडत–वि० [सं० मुण्डित] मुंडा हुआ, मुंडित।
मुंडमाळ (माळा)–स्त्री० [सं० मुण्डमाला] कटे हुए शिरों की माला।
मुंडमालिनी–स्त्री० [सं० मुण्डमालिनी] उक्त मालाधारी दुर्गा, महाकाली।
मुंडमाळी–पु०[सं०मुण्डमालिन]१ शिव, महादेव। २ मुंडमाला।
मुंडरुई,मुंडरुची–पु० [सं० मुण्डरुचि] पाखंडी साधु, ढोंगी साधु।
मुंडहा–स्त्री० [सं० मुंड-हन्] १ मुंड राक्षस को मारने वाली दुर्गा। २ देखो 'मूंडौ'।
मुंडाई–स्त्री० १ मूंडने या मुंडाने की क्रिया या भाव। २ उक्त कार्य का पारिश्रमिक।
मुंडाणो (बो)–क्रि० [सं० मुंड] १ शिर के बाल कटवाना। शिर मुंडवाना। २ मृतक के पीछे बाल मुंडवाना। ३ ठगाना।
मुंडाळियो, मुंडाळो–पु० [देश०] कूए का वह स्थान जहां से पानी आगे नाली में जाता है।
मुंडावणी (बो)–देखो 'मुंडाणी' (बो)।
मुंडासुर–पु० [सं० मुण्ड-असुर] 'मुंड' नामक असुर।
मुंडासो–देखो 'सुड़ासो'।
मुंडित–वि० [सं०] १ मुंडा हुआ, गंजा। २ कटा हुआ। –पु० लोहा।
मुंडिम–पु० एक प्राचीन आचार्य।
मुंडी–स्त्री० १ विधवा, रांड। २ एक प्रकार की सिपि।
मुंडीयो–पु० सरहद का पत्थर।
मुंडेर–देखो 'मंडेरो'।
मुंतजिम–वि० [अ०] १ व्यवस्थापक, प्रबंधक। २ प्रकाशमान।
मुंतणो (बो)–देखो 'मूतणो' (बो)।
मुंथा–पु० नवग्रहों के अतिरिक्त एक ग्रह विशेष। (ज्योतिष)
मुंदगर–देखो 'मुदगर'।
मुंदड, मुंदड़ी,मुंदडो–देखो 'मूंदड़ो'।
मुंदणो (बो)–क्रि०[सं०मुद्रण] १ खुली आंखें बंद होना,मिचना २ अंत या समाप्त होना।
मुंदरड़ो–देखो 'मूंदड़ी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुंवी–देखो 'मुदी'।
मुंद्र–पु० [सं० समुद्र] सागर, समुद्र।
मुंद्रड़ी–देखो 'मुंदड़ी'।
मुंद्रणी (णो)–देखो 'मुंदणी' (णो)।
मुंद्री–देखो 'मुंदड़ी'।
मुंध, मुंधि–स्त्री० [सं० मुग्धा] मुग्धा नायिका।
मुंनिंद्रस–देखो 'मुनींद्र'।
मुंसिफ–पु० [अ०] छोटी अदालत का न्यायाधीश।
मुंसिफी–स्त्री० [अ०] १ न्याय, इन्साफ। २ मुंसिफ का पद।
मुंसी–पु० [अ० मुंशी] १ लेखक। २ किसी कार्यालय का लिपिक, क्लर्क। ३ वकील, मुहर्रिर। ४ अर्जी नवीस।
—खांनो–पु० मुंशियों के बैठने का स्थान। कक्ष।
—गिरी–स्त्री० मुंशी का पद या कार्य।
मुंसो–देखो 'मूसो'।
मुंह–देखो 'मुख'।
मुंहकम–देखो 'मुहकम'।
मुंहकाण–देखो 'मुकाण'।
मुंहगउ, मुंहगो–देखो 'मूंगो'।
मुंहछोर–वि० मुंह छिपाने, नजर चुराने या दूर रहने वाला। कतराने वाला।
मुंहजोर–वि० १ अधिक बोलने वाला, वाचाल। २ बहस या हुज्जत करने वाला। ३ उद्दण्ड। ४ एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।
मुंजोरी–स्त्री० १ बकवास, प्रलाप। २ अशिष्टता, उद्दण्डता।
मुंहड–क्रि० वि० मुंह पर, मुंह के आगे।
मुंहडइ, मुंहडे मुंहडै–क्रि० वि० १ आगे, आगाड़ी। २ सम्मुख आमने-सामने। ३ सीमा पर। ४ मुंह पर। ५ मुंह से। ६ अनुपात में, परिमाण में। ७ भेंहदे पर।
मुंहडो–देखो 'मूंडो'।
मुंहना–देखो 'महता'।
मुंहनाप–पु० मुंह का कवच। –क्रि० वि० मुंह के बल, मुंह की ओर।
मुंहदिखाई–स्त्री० १ सुहागरात की एक रस्म। २ इस रस्म के अनुसार वधू को दिया जाने वाला धन।
मुंहनाळ–स्त्री० १ घोड़ों का एक रोग। २ तलवार का ऊपरी भाग।
मुंहपति (ती, त्ती)–स्त्री० [सं० मुख पट्टिका] मुंह पर बांधने की श्वेत वस्त्र की पट्टी।
मुंहपल्लो–पु० मृतक के पीछे रोते समय मुंह ढकने की क्रिया।
मुंहफट–वि० वाचाल, प्रलापी, स्पष्टवादी
मुंहम–देखो 'मुहिम'।
मुंहमीठड़ो (मीठो)–पु० एक प्रकार का घोड़ा। –वि० मृदु भाषी।
मुंहमेज, मुंहमेंज–देखो 'मुहमेज'।
मुंहसाळ–देखो 'मोसाळ'।
मुंहांणी, मुंहांणो–देखो 'मुहांणी'।
मुंहासो–पु० मुंह पर होने वाली फुंसी।
मुंहि–१ देखो 'मुख'। २ देखो 'मैं'।
मुंहिआं–वि० व्यर्थ, निरर्थक।
मुंहियड़–देखो 'मुहिअड़'।
मुंहियो–देखो 'मुहियो'।
मुंही–देखो 'मुख'/'मुही'।
मुंहुंगो–देखो 'मूंगो'।
मुंहुंडो–देखो 'मुख'।
मुंहे (है)–क्रि० वि० मुख पर।
मु–पु० [सं०] १ शिव का एक नाम। २ बंधन। ३ कारागार, कैद। ४ मोक्ष, मुक्ति। ५ ऋषि। ६ मुष्टिका, मुट्ठी। ७ चिंता। ८ देखो 'मूं'।
मुअत्तल–वि० [अ०] १ किसी कार्य या पद से निलंबित, अलग। २ बेकार, खाली। ३ जो कार्य नहीं कर रहा हो। ४ स्थगित।
मुअत्तली–स्त्री० [अ०] १ निलंबन। २ बेकारी, खालीपन। ३ मुअत्तल करने की क्रिया।
मुआवजो–पु० [अ० मुआवजा] १ कृषि भूमि पर सरकार या किसी शासक को दी जाने वाली रकम, धन। लगान। २ क्षति पूर्ति के लिये दिया जाने वाला धन। ३ बदला, प्रतिफल। ४ किसी कार्य या वस्तु की अपेक्षा में दिया जाने वाला धन।
मुइयड–क्रि० वि० आगे, आगाड़ी।
मुई–देखो 'मुं ई'।
मुओ–वि० [सं० मृत] (स्त्री० मुई) मरा हुआ, मृत।
मुकंद–देखो 'मुकुंद'।
मुकंदक–देखो 'मुकुंदक'।
मुकट, मुकटि–देखो 'मुकुट'। —बंध='मुकुटबंध'। मणि, मिण='मुकुटमणि'।
मुकटो–पु० १ एक प्रकार की रेशमी धोती। २ देखो 'मुकुट'।
मुकणो (णो)–देखो 'मूकणो' (णो)।
मुकत–देखो 'मुक्त' / 'मुक्ति'।
मुकतज–देखो 'मुक्तज'।
मुकतदा–वि० [सं० मुक्ति-दात्री] मोक्षदायिनी।
मुकतफळ–देखो 'मुक्ताफळ'।
मुकतमाळ, मुकतमाळा–देखो 'मुक्तामाळ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुक्तसांमीप–देखो 'सांमीप्यमुक्ति'।
मुक्तहार–देखो 'मुक्ताहार'।
मुकता–देखो 'मुक्ता'।
मुकतागळ–पु० मोतियों का झुण्ड, समूह।
मुकताछड–पु० एक डिंगल गीत विशेष। —जथा–स्त्री० डिंगल छंद रचना की एक विधि।
मुकताचर–देखो 'मुक्ताचार'।
मुकताफळ–देखो 'मुक्ताफळ'।
मुकतामाळ–देखो 'मुक्तामाळ'।
मुकताळ–१ देखो 'मुक्ताफळ'। २ देखो 'मुक्तावळी'।
मुकाळि, मुकतावळ, मुकतावळि, मुकतावलि, मुकतावळी (स्त्री)–देखो 'मुक्तावळी'।
मुकताहळ–देखो 'मुक्ताफळ'।
मुकताहार–देखो 'मुक्ताहार'।
मुकति (ती)–१ देखो 'मुक्ति'। २ देखो 'मुक्ता'।
मुकतिसाजोति–स्त्री० [सं० मुक्ति-स-ज्योति] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक।
मुकत्ता–देखो 'मुक्ता'।
मुकत्ति, मुकत्ती–देखो 'मुक्ति'।
मुकदम–देखो 'मुकद्दम'।
मुकदमेबाज–वि० [फा०] न्यायालय आदि में झगड़ों में लगा रहने वाला।
मुकदमो–पु० [अ० मुकद्दमः] १ न्यायालय आदि में पेश किया जाने वाला कोई विवाद, अभियोग, दावा। २ विवाद का विषय। ३ झगड़ा, लड़ाई। ४ एक प्रकार का कर।
मुकद्दम–वि० [अ०] १ प्रधान, मुख्य। २ विशेष, खास। ३ आवश्यक, जरूरी। ४ महत्वपूर्ण। –पु० १ गांव का मुखिया। २ अग्र भाग।
मुकद्दमी–देखो 'मुकदमी'।
मुकद्दर–पु० [अ०] १ भाग्य, प्रारब्ध, तकदीर। २ अदृश्य। ३ लुप्त शब्द। –वि० १ मलिन, मैला, गंदा। २ नाराज, अप्रसन्न। ३ दुःखी, उदास।
मुकन–पु० शत्रु, दुश्मन।
मुकनो–पु० १ सफेद बुर्रा। २ बिना दांत का हाथी। ३ बिना मूंछ का व्यक्ति।
मुकनोदुरंद (दुरत, हाथी)–पु० छोटे-छोटे दांतों वाला हाथी।
मुकम्मल–वि० [अ०] १ सब तरह से तैयार। २ पूर्ण, सर्वांगपूर्ण। ३ परिपूर्ण, समाप्त, पूर्णता को प्राप्त।
मुकरब–देखो 'मकरंद'।
मुकर–वि० [अ० मुकर्रर] १ तयशुदा, निश्चित, नियत। २ नियुक्त, तैनात। ३ यकीनी, विश्वसनीय। ४ पाबंद। –क्रि० वि० १ दुबारा, पुनः। २ देखो 'मुकुर'।
मुकरड–अव्य० एक मुश्त।
मुकरणो (बो)–क्रि० १ वादा, समझौता, बात आदि से फिर जाना, बात पर कायम न रहना। २ इन्कार कर जाना, मना कर देना। ३ छोड़ना, मुक्त करना।
मुकरर, मुकरिर–वि० [अ० मुकर्रर] १ निश्चित। २ तैनात, नियुक्त। ३ पाबंद। –क्रि० वि० दुबारा, दूसरी बार, पुनः।
मुकराण–देखो 'मकराणो'।
मुकळाइ, मुकळाई, मुकळायत–स्त्री० १ अधिकता, आधिक्य। २ गुंजाईश। ३ छूट। ४ सुविधा। ५ जगह, स्थान।
मुकळावणो (बो)–क्रि० [प्रा० मोक्कलई] १ विदा करना, भेजना। २ दूर करना, अलग करना। ३ छोड़ना मुक्त करना।
मुकळावो–पु० १ शादी के बाद कन्या की विदाई की एक रस्म। गौना, द्विरागमन। २ इस रस्म के अनुसार दिया जाने वाला वस्त्राभूषण।
मुकाण–पु० [सं० मुखकथानिका] मृतक के पीछे उसके संबंधियों के पास संवेदना प्रगट करने की क्रिया या भाव।
मुकांन, मुकांम–पु० [अ० मुकाम] १ निवास-स्थान, घर, मकान। २ आवास। ३ ठहरने का स्थान, विश्राम। डेरा पड़ाव। ४ जगह, स्थान। ५ ठौर-ठिकाना। ६ कब्रिस्तान। ७ अवसर, मौका। ९ जांभोजी का मन्दिर, स्थल। (विश्नोई)
मुकाणो (बो)–देखो 'मूकाणो' (बो)।
मुकातर–पु० मोक्ष, मुक्ति।
मुकातागीर–वि० 'मुकाता' की रकम भरने वाला।
मुकाती–स्त्री० १ 'मुकाते' की रकम, आय। २ 'मुकाता' देकर भूमि जोतने वाला कृषक।
मुकातो–पु० किसानों से लिया जाने वाला कर। कृषि भूमि का एक कर।
मुकाबलो–पु० [अ० मुकाबलः] १ साक्षात्कार। २ आमना-सामना ३ समता, बराबरी। ४ लड़ाई, कुश्ती। ५ प्रतियोगिता। ६ टक्कर, मुठभेड़। ७ तुलना, जोड़। ८ प्रतिस्पर्द्धा। ९ असल से नकल का मिलान। १० विरोध।
मुकाबिल–क्रि० वि० १ सम्मुख, सामने, प्रत्यक्ष में, आमने-सामने। २ तुलना, जोड़ या टक्कर में। ३ विरोध में। ४ अपेक्षा में। –वि० १ सामने वाला। २ प्रतिद्वन्दी, विरोधी। ३ शत्रु।
मुकालबो (बो)–देखो 'मुकाबलो'।
मुकावणो (बो)–देखो 'मूकाणो' (बो)।
मुकीम–वि० [अ०] अस्थाई निवासी, कुछ समय विश्राम लेने वाला। –पु० शाक-सब्जियों का थोक व्यापारी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुकुंद–पु० [सं०] १ ईश्वर, परमात्मा। २ भगवान विष्णु का एक नामान्तर। ३ श्रीकृष्ण। ४ नवनिधियों में से एक। ५ एक प्रकार का रत्न। ६ पारा, पारद। ७ सफेद कनेर। ८ ढोल विशेष। ९ मुक्तिदाता। १० एक प्राचीन राजा।

मुकुंदक–पु० [सं०] १ ब्याज। २ साठीधान।

मुकुंदि–देखो 'मुकुंद'।

मुकुट–पु० [सं०] १ राजा-महाराजा, देवी-देवता, देव प्रतिमाओं के शिर का ताज, किरीट। २ किलंगी। ३ शिखर, शृंग। ४ एक क्षत्रीय वंश। –वि० उत्तम, सर्वोत्तम।

मुकुटबंध (द्ध)–पु० १ राजाओं में श्रेष्ठ राजा। २ संन्यासी।

मुकुटमणि (णि)–वि० सर्वश्रेष्ठ, उत्तम।

मुकुटसप्तमी–स्त्री० जैनियों का एक व्रत।

मुकुटि, मुकुटी–वि० १ जो मुकुट धारण किये हो, मुकुटधारी। २ देखो 'मुकुट'।

मुकुटेश्वर–पु० [सं० मुकुटेश्वर] १ एक शिव लिंग विशेष। २ एक तीर्थ विशेष।

मुकुट्ट–देखो 'मुकुट'।

मुकुनी–देखो 'मुकनी'।

मुकुर–पु० [सं०] १ दर्पण, शीशा, आइना, काच। २ अविकसित फूल, कली। ३ बकुल वृक्ष विशेष। ४ बेर। ५ कुम्हार के चाक का डंडा।

मुकुळ–पु० [सं० मुकुल] १ शरीर, देह। २ जीवात्मा, आत्मा। ३ पृथ्वी। ४ कली। ५ जमाल गोटा। ६ गुग्गुल।

मुकुळित–वि० [सं० मुकुलित] १ अधखिला। २ कलियों से युक्त। ३ खिला हुआ। ४ शोभायमान, शोभित।

मुकेस मुर्कस–पु० [अ० मुर्कैश] १ सोने, चांदी आदि के चौड़े तार। २ ऐसे तारों का बना वस्त्र, बादला।

मुक्क–१ देखो 'मुक्त'। २ देखो 'मूक'। ३ देखो 'मुख'।

मुक्कणी (णी)–देखो 'मूकणी' (णी)।

मुक्कतामाळ–देखो 'मुक्तामाळ'।

मुक्कनी–देखो 'मुकनी'।

मुक्करांणी–देखो 'मुकरांणी'।

मुक्कांम–देखो 'मुकांम'।

मुक्की–स्त्री० [सं० मुष्ठिका] १ मुट्ठी। २ मुट्ठी का प्रहार।

मुक्केबाज–वि० १ मुष्ठिका प्रहार में दक्ष। २ मुष्ठिका मारने वाला। ३ बौक्सर।

मुक्केबाजी–स्त्री० १ मुक्के मारने का कार्य। २ बौक्सिंग प्रतियोगिता।

मुक्की–पु० १ प्रहार के लिये तैयार मुष्ठिका। २ घूंसे का प्रहार।

मुक्खमल–देखो 'मखमल'।

मुक्खहलि–पु० [सं० मोक्ष-स्थल] वैकुण्ठ, मोक्षधाम।

मुक्खि (क्खी)–१ देखो 'मुख'। २ देखो 'मुक्ति'।

मुक्त–वि० [सं०] १ जो बंधन में न हो, खुला, स्वतंत्र। २ जो पराधीन न हो। ३ सामाजिक या पारिवारिक दायरों से बाहर, समाज से तटस्थ। ४ पुनर्जन्म से छूटा हुआ। ५ कैद से बाहर। ६ त्यागा हुआ। ७ कार्य या उत्तरदायित्व से बरी, निवृत्त। ८ प्रदत्त। ९ गिरा हुआ। १० देखो 'मुक्ति'।

मुक्तकंठ–वि० [सं०] १ स्पष्टवादी, खुली बात कहने वाला। २ निर्भीक वक्ता। ३ जोर से बोलने वाला। ४ निस्संकोच।

मुक्तक–पु० [सं०] १ फुटकर कविता या छंद। किसी विषय या भाव विशेष की कविता या छन्द। २ छोटे वाक्यों का सरल गद्य। ३ 'गणों' से मुक्त कविता। ४ प्राचीनकाल का एक शस्त्र।

मुक्तकर–वि० [सं०] उदार, दानी।

मुक्तक्षेत्र–देखो 'मुक्तिक्षेत्र'।

मुक्तज–पु० मोती।

मुक्तपुरुष (स)–पु० [सं०] १ मोक्ष को प्राप्त पुरुष, मुक्ति प्राप्त आत्मा। २ संसार से विरक्त पुरुष।

मुक्तमाळ (माळा)–देखो 'मुक्तामाळ'।

मुक्तवसन–वि० निर्वसन, नंगा, दिगम्बर। –स्त्री० जैन यतियों का एक भेद।

मुक्तवेणी–स्त्री० पृथ्वी, धरती।

मुक्तहस्त–देखो 'मुक्तकर'।

मुक्ता–स्त्री० [सं०] १ मोती। २ वेश्या, रंडी। ३ बहुत, पर्याप्त।

मुक्ताग्रहजथा–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक विधि।

मुक्ताग्रहजुगबंध जथा–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक अन्य विधि।

मुक्ताचर–पु० हंस।

मुक्ताचूड़क–पु० एक आभूषण विशेष।

मुक्ताप्रसू–पु० [सं०] सीप।

मुक्ताफळ–पु० [सं० मुक्ताफलं] १ मोती। २ कपूर। ३ छोटा लिसोड़ा। ४ लवनीफल, हरफा, रेवरी। ५ नगीना, रत्न।

मुक्ताभक्षि (क्षी)–पु० हंस, मराल।

मुक्तामाळ–स्त्री० [सं० मुक्तामाल] मोतियों का हार, माला।

मुक्तामुक्त–पु० एक शस्त्र विशेष।

मुक्तालंकार–पु० एक आभूषण विशेष।

मुक्तावर–स्त्री० [सं० मुक्ता लतिका] मोतियों का हार।

मुक्तावळ, मुक्तावळि (ळी)–स्त्री० [सं० मुक्ता-अवलि] १ मोतियों की माला, हार। २ डिंगल का एक छन्द विशेष। ३ एक प्रकार की तपस्या, साधना। (जैन) ४ प्रायश्चित। (जैन)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुक्ताहळ–देखो 'मुक्ताफळ'।

मुक्ताहार–पु० [स०] मोतियों का हार (माला)।

मुक्ति, मुक्ती–स्त्री० [सं० मुक्ति] १ मुक्त करने की क्रिया या भाव। २ बंधन से छुटकारा, आजादी। ३ आत्मा का जन्म-मरण से छुटकारा, मोक्ष। निर्वाण। ४ दैहिक व भौतिक कष्टों से छुटकारा, मृत्यु, मौत। ५ कार्य या उत्तरदायित्व से निवृत्ति। ६ जेल, कैद से छुट्टी। ७ त्याग। ८ फेंकना क्रिया। ९ मुक्ति की पांच अवस्थाएँ होती हैं– १ सालोक्य। २ सामीप्य। ३ सारूप्य। ४ सार्ष्टि। ५ सायुज्य। —क्षेत्र–पु० काशी, वाराणसी। बकुलारण्य नामक तीर्थ। —पुरी–स्त्री० वैकुण्ठ पुरी।

मुक्तेश्वर–पु० [सं० मुक्तेश्वर] एक शिव लिंग विशेष।

मुखंढि–पु० एक शस्त्र विशेष।

मुख–पु० १ प्राणियों के शरीर का, खाने-पीने, बोलने, बात करने आदि क्रियाओं वाला अंग, मुंह। २ शक्ल, सूरत, चेहरा। ३ द्वार, दरवाजा। ४ बिवर। ५ थैले, बर्तन आदि का खुला भाग। ६ ऊपरी शिरा, छोर। ७ नोक। ८ आगे का हिस्सा, अग्रभाग। ९ हाव-भाव, प्रकृति। १० गर्दन के ऊपर या आगे का भाग। ११ पक्षी की चोंच। –वि० [सं० मुख्य] १ मुखिया, प्रधान, अगुवा। २ खास, विशेष। –क्रि० वि० ३ सामने, आगे, सम्मुख। —अग्र–पु० अधर, ओष्ठ, होठ। अग्रभाग।

मुखक–देखो 'मूसक'।

मुखखुर–पु० [सं० मुखः+खुरः] दांत।

मुखगंधक–पु० [सं०] प्याज।

मुखगा–देखो 'मुखाग्र'।

मुखड़ी–देखो 'मुख'।

मुखतंग–पु० एक प्रकार का वाद्य।

मुखचपल–वि० [सं० मुखचपल] १ वाचाल, बकवादी। २ कटु वक्ता। ३ लबार, बातें बनाने वाला।

मुखचपलता–स्त्री० १ बकवाद, वाचालता। २ कटु भाषण। ३ लबारपन।

मुखचपेटिका–स्त्री० [सं०] थप्पड़।

मुखचतु–पु० चार मुख वाला, ब्रह्मा, चतुरानन।

मुखचीरी–स्त्री० [सं०] जिह्वा, जीभ।

मुखछद्दा–स्त्री० सुपारी।

मुखज–पु० [सं०] ब्राह्मण।

मुखजबानी–वि० कंठस्थ।

मुखतार–वि० [अ० मुख्तार] १ प्रतिनिधि, एजेण्ट। २ किसी कार्य के लिये अधिकृत। ३ स्वतंत्र, आजाद, स्वच्छन्द।–पु० १ किसी जागीर का व्यवस्थापक। २ छोटी अदालतों का वकील। —आम–पु० समस्त कार्यों के लिये अधिकृत प्रतिनिधि। —खास–पु० किसी कार्य विशेष के लिये अधिकृत प्रतिनिधि।

मुखतारकार–वि० [अ०] किसी कार्य की देख-रेख करने वाला।

मुखतारकारी–देखो 'मुखतारी'।

मुखतारनामा–पु० [अ०] १ किसी को किसी कार्य के लिये अधिकृत करने का लेख-पत्र, अधिकार-पत्र। २ प्रतिनिधि का नियुक्ति पत्र।

मुखतारी, मुखत्यारी–स्त्री० [अ०] १ 'मुखतार' होने की दशा या भाव, प्रतिनिधित्व। २ 'मुखतार' का कार्य या पद। ३ कानून की एक परीक्षा विशेष।

मुखतियार, मुखत्यार–देखो 'मुखतार'।

मुखदरस–पु० शीशा, दर्पण, काच।

मुखदीपण (न)–पु० दांत, दसन।

मुखदूषण–पु० [सं० मुख दूषण] प्याज।

मुखधोवण–वि० १ कड़ुवा, कटु। २ स्वादहीन। ३ अप्रिय, कटु।

मुखनस, मुखन्नस–पु० [अ० मुखन्नस] १ हिजड़ा, नपुंसक। २ कायर, डरपोक।

मुखपट–पु० [सं०] १ घूंघट। २ नकाब।

मुखपति–देखो 'मुंहपति'।

मुखपाक–पु० मुंह का एक रोग।

मुखपिंड–पु० [सं० मुख्यपिंड] १ मृतक के पीछे किया जाने वाला प्रमख पिण्ड-दान। २ कौर।

मुखपूरण–पु० [सं०] कुल्ला, आचमन।

मुखप्रिय–पु० [स०] संतरा, नारंगी।

मुखबंध–पु० [सं०] भूमिका, प्रस्तावना।

मुखबंधन–पु० [सं०] १ ढक्कन, आवरण। २ भूमिका।

मुखबर, मुखबिर–पु० [अ० मुख्बिर] गुप्तचर, जासूस।

मुखबरी, मुखबिरी–स्त्री० १ गुप्तचरी, जासूसी। २ मुखबिर का पद।

मुखबास–पु० [स० मुख वास] १ भोजनोपरान्त मुख शुद्धि के लिये खाया जाने वाला सुगंधित पदार्थ। २ पान, ताम्बूल।

मुखबिसय–पु० बड़ा चमगादड़।

मुखभा–पु० तोता, कीर।

मुखमंडण (न)–पु० १ पान। २ चौसठ कलाओं में से एक।

मुखमल–पु० १ पुष्प, फूल २ देखो 'मखमल'।

मुखमली, मुखमलू–देखो 'मखमली'।

मुखमल्ल–देखो 'मखमल',

मुखमिट्ठ–देखो 'मुंहमीठो'।

मुखमुली–देखो 'मखमली'।

मुखम्मल–देखो मखमल'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुखर–पु० [सं०] १ प्रधान, पुरुष । २ शंख । ३ नेता । ४ नूपुर । ५ कौवा, काक । ६ मुख, चेहरा । ७ शब्द । –वि० १ बातूनी वाचाल । २ रुनझुन शब्द करने वाला । ३ द्योतक, प्रकाशक । ४ कटुभाषी । ५ उपहास करने वाला, मजाकिया । ६ मुख्य, प्रधान ।

मुखरालळ–स्त्री० १ दुर्गा, देवी । २ एक मांसाहारी पक्षी । ३ रक्त वर्ण मुख ।

मुखरिका, मुखरी–स्त्री० [सं०] लगाम, बागडोर ।

मुखरित–वि० [सं०] शब्दायमान, ध्वनिमान ।

मुखरूप–पु० अधर, ओष्ठ, होठ ।

मुखलांगळ–पु० [सं० मुख लांगल] सूअर, शूकर ।

मुखलेप–पु० [सं०] १ मुख शोभा के लिये किया जाने वाला लेपन । २ मुंह का एक रोग ।

मुखवयंड–देखो 'वयंडमुख' ।

मुखवयळ–स्त्री० मुख की शोभा, मुख की कांति ।

मुखवाद–पु० बहस, विवाद ।

मुखवास–देखो 'मुखबास' ।

मुखवासिणी (नी)–स्त्री० सरस्वती, शारदा ।

मुखवीणा–स्त्री० एक वाद्य विशेष ।

मुखसंभव–पु० ब्राह्मण, द्विज ।

मुखसिखसंधि–स्त्री० ललाट, भाल ।

मुखसोस–पु० [सं० मुख शोष] मुख सूजन का एक रोग ।

मुखसाव–पु० [सं०] थूक, खंखार ।

मुखसी–स्त्री० [सं० मुखश्री] मुख की शोभा, कांति ।

मुखांण–पु० १ मोक्ष, मुक्ति । २ देखो 'मुकांण' ।

मुखा–देखो 'मुख' ।

मुखाग्नि–स्त्री० [सं० मुख-अग्नि] १ दावानल । २ यज्ञीय अग्नि । ३ दाह संस्कार की अग्नि । ४ आगिया बैताल ।

मुखाग्र– वि० [सं०] जो जबानी याद हो, कंठस्थ । –क्रि० वि० सम्मुख, सामने, आगे ।

मुखाघाय–पु० मुख से बजने वाला वाद्य विशेष, अलगोजा ।

मुखात–वि० मौखिक, जबानी ।

मुखातर–देखो 'मुकातर' ।

मुखानिल–पु० [सं मुख अनिल] श्वास, सांस ।

मुखामुख, मुखामुखि–क्रि० वि० १ सम्मुख, आगे, प्रत्यक्ष, प्रगट । २ मुंह के सामने, चोड़े में । ३ एक दूसरे के देखादेखी ।

मुखारबंद, मुखारविंद–पु० [सं० मुख-अरविंद] कमल की तरह खिला हुआ मुख, सुन्दर मुख ।

मुखालिफ–वि० [अ०] १ विरोधी, शत्रु । २ प्रतिस्पर्द्धी, प्रतिपक्षी ।

मुखालिफत–स्त्री० १ शत्रुता, विरोध । २ प्रतिस्पर्द्धा ।

मुखि– १ देखो 'मुख' । २ देखो 'मुख्य' ।

मुखियौ–वि० [सं० मुख्य] १ प्रधान, मुख्य, खास । २ नेता, अगुवा । ३ अग्रगण्य ।

मुखो–वि० १ मुख वाला । २ विशेष दिशा में या अवस्था में मुख रखने वाला । ३ किसी ओर प्रवृत्त हुवा हुआ । ४ देखो 'मुख्य' । ५ देखो 'मुख' ।

मुखोयो–१ देखो 'मुखियौ' । २ देखो 'मूसक' ।

मुख्ख, मुख्खि–१ देखो 'मुख' । २ देखो 'मुख्य' ।

मुख्तसर–वि० [अ०] १ संक्षिप्त । २ सार, रूप, न्यून थोड़ा ।

मुख्य–वि० [सं०] १ जो सब से ऊपर हो, उच्चतम, श्रेष्ठ । २ प्रधान, खास, प्रमुख । ३ महत्वपूर्ण, आवश्यक । ४ अगुवा नेता, अग्रगण्य ।

मुख्यता–स्त्री० [सं०] खासियत, प्रधानता । विशेषता । अगुवाई नेतागिरी ।

मुख्यपति–पु० चूहा, मूषा ।

मुख्यौ–देखो 'मुखियौ' ।

मुगंध–देखो 'मुगध' ।

मुग–देखो 'मूंग' / 'मग' ।

मुगउ–देखो 'मूक' ।

मुगट–देखो 'मुकुट' ।

मुगटजथा–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक विधि ।

मुगटधर–पु० [सं० मुकुट-धारिन्] मुकुट धारन किया हुआ कोई राजा, देवी-देवता या प्रतिमा ।

मुगटबंध–देखो 'मुकुटबंध' ।

मुगटमण (मणि, मणी)–देखो 'मुकुटमणि' ।

मुगटियौ–देखो 'मुकुट' ।

मुगटो–पु० १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । २ देखो 'मुकुट' ।

मुगत–स्त्री० १ पृथ्वी । २ मोती । ३ आभूषण, अलंकार, भूषण । ४ देखो 'मुक्त' । ५ देखो 'मुक्ति' ।

मुगतकंठ–देखो 'मुक्तकंठ' ।

मुगतक–देखो 'मुक्तक' ।

मुगतज–देखो 'मुक्तज' ।

मुगतपुरी–देखो 'मुक्तिपुरी' ।

मुगतफळ–देखो 'मुक्ताफळ' ।

मुगतबसन–देखो 'मुक्तवसन' ।

मुगतमाळ–देखो 'मुक्तामाळ' ।

मुगता–देखो 'मुक्ता' ।

मुगताग्रहजथा–देखो 'मुक्ताग्रहजथा' ।

मुगताचर–देखो 'मुक्ताचर' ।

मुगताचाळ–पु० हंस ।

मुगताफळ–देखो 'मुक्ताफळ' ।

मुगताभखी–देखो 'मुक्ताभक्षि' ।

मुगतामाळ–देखो 'मुक्तामाळ' ।

मुगताळा, मुगतावळि, मुगतावळी–देखो 'मुक्तावळी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुगताहळ–देखो 'मुक्ताफळ'।
मुगति–१ देखो 'मुक्ति'। २ देखो 'मोती'।—क्षेत्र='मुक्तिक्षेत्र'।
मुगतिसिला–स्त्री० [सं० मुक्ति-शिला] स्वर्ग से ऊपर एक स्थान विशेष। (जैन)
मुगती–१ देखो 'मुक्ति'। २ देखो 'मोती'।
मुगतीक–देखो 'मोती'।
मुगते– क्रि० वि० मुक्ति को, मोक्ष को।
मुगतेसर–देखो 'मुक्तेस्वर'।
मुगत्त–१ देखो 'मुक्त'। २ देखो 'मुक्ति'।
मुगदर–पु० [सं० मुग्दर] १ व्यायाम के काम का एक पत्थर विशेष। २ व्यायाम के काम की मोटी लकड़ी, मोगरी। ३ गदा।
मुगदल्ल–पु० शस्त्र विशेष।
मुगध–पु० बलराम का एक नामान्तर। –वि० १ छिपा हुआ, गुप्त। २ देखो 'मुग्ध'। ३ देखो 'मुग्धा'।
मुगधता–देखो 'मुग्धता'।
मुगधप्रिय–पु० [सं० मुग्ध-प्रिय] शराब, मदिरा।
मुगधबुद्धि (बुद्धी)–देखो 'मुग्धबुद्धि'।
मुगधा–देखो 'मुग्धा'। —पण, पन='मुग्धापन'।
मुगपटण–पु० एक प्रकार का वस्त्र।
मुगरब–देखो 'मगरेब'।
मुगराटी–स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र।
मुगळ (ल)–पु० [अ० मुगल] (स्त्री० मुगलण, मुगलांणी) १ मुसलमान, यवन। २ मुसलमानों का एक वर्ग। ३ तुर्क। ४ तुर्कों की एक शाखा। ५ मंगोल देश का निवासी। ६ पवन, हवा। ७ देखो 'मदकल'।
मुगलांणी–वि० १ मुगलों का, मुगल संबंधी। २ मुगल जाति या वर्ग का। –स्त्री० मुगल स्त्री।
मुगलांराज–पु० मुसलमान बादशाह।
मुगळी–वि० १ मुगलों की, मुगलों संबंधी। २ देखो 'मुगल'।
मुगलेस–पु० मुगल बादशाह।
मुगल्ल, मुगाळ, मुग्गुल–देखो 'मुगल'।
मुग्ध–वि० [सं०] १ नया, नवीन। २ मोहित, आसक्त, लुब्ध। ३ अनजान, भोला, नादान। ४ सरल, सीधा-सादा। ५ स्तब्ध, भौचक्का। ६ मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी। ७ मस्त, मतवाला। ८ मद मस्त। ९ मनोहर, सुन्दर। १० निरीह। ११ पागल। १२ एक गण विशेष।
मुग्धता–स्त्री० [सं०] १ मुग्ध होने की अवस्था या भाव। २ मूढ़ता, मूर्खता, पागलपन। ३ नादानी। ४ सुन्दरता, मनोहरता। ५ सरलता, सादगी।
मुग्धबुद्धि–वि० [सं०] १ बुद्धि रहित, मूढ, मूर्ख। २ सीधा-सादा, भोला-भाला। ३ पागल।
मुग्धा–स्त्री० [सं०] १ साहित्य में एक प्रकार की नायिका। २ सुकुमारी, तरुणी, नव यौवना। ३ स्त्री, महिला।
मुग्धापण (न)–पु० [सं० मुग्धत्व] मुग्धा होने की अवस्था या भाव।
मुड़–स्त्री० [सं० मुच्] १ हाथ-पांव, संधिस्थलों आदि पर आने वाली मोच।
मुड़क–स्त्री० १ मुड़ने की क्रिया या भाव। २ लचीलापन। ३ नरमी। ४ देखो 'मुड'।
मुड़कणी (बी)–देखो 'मुड़णी' (बी)।
मुड़क्क–देखो 'मुड़क'।
मुड़क्कणी (बी)–देखो 'मुड़णी' (बी)।
मुड़णो(बो)–क्रि० [सं० मुरण] १ सीधी वस्तु में बल पड़ना, टेढ़ा या तिरछापन आना, झुकाव या घुमाव आना। २ नोक टेढ़ी होना। ३ चलते-चलते पीछे या अन्य दिशा में घूम जाना। ४ लौटना, वापस आना, पलटना। ५ पराङ्मुख होना, विमुख होना, पृष्ठ फेरना। ६ शरीरांग घुमाना। ७ टेढ़ा होना, सीधा न रहना। ८ करवट बदलना। ९ घुमाव लेना। १० विमुख या विरुद्ध होना। ११ पीछे हटना, खिसकना। १२ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त होना। १३ गिरना, पड़ना। १४ सलवट पड़ना।
मुड़वासंख, मुड़वासिंगी, मुड़वासिंघी–देखो 'मुरदासिंघी'।
मुड़वियो–देखो 'मुरदो'।
मुड़वियो-बुखार–पु० जीर्ण ज्वर।
मुड़वो–देखो 'मुरदो'।
मुड़ाणो (बो), मुड़ावणो (बो)–क्रि० १ सीधी वस्तु में बल पटकना, टेढ़ा करना, तिरछा करना। झुकाना, घुमाना। २ नोक टेढ़ी करना। ३ चलते हुए को पीछे मोड़ना, दिशा परिवर्तन करना। ४ लौटाना, वापस करना, पलटाना। बुलाना। ५ विमुख या विरुद्ध करना, पृष्ठ फेराना। ६ शरीरांग घुमवाना। ७ टेढ़ा कराना। ८ करवट बदलाना। ९ घुमाव देना। १० पीछे हटाना, खिसकाना। ११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त करना। १२ गिराना, पटकाना। १३ सलवट पटकना।
मुड़ासो–पु० १ सिर पर बोझा उठाने के लिये किसी वस्त्र की बनाई जाने वाली चकरी जो बोझे के नीचे सिर पर रखी जाती है। २ साफा।
मुड़ीयण–पु०मुड़ने वाला, भागने वाला।
मुड़ो–१ देखो 'मुरदो'। २ देखो 'मुड़ो'।
मुचकंद, मुचकंद मुचकुंद, मुचकुंध–देखो 'मुचुकंद'।
मुचकोड़णी (बो)–देखो 'मचकोळणी' (बो)।
मुचणी (बो)–क्रि० [सं० मुच्] १ किसी पात्र में मोच आना, किसी वस्तु का मोच खाजाना, बनावट में गड्ढे या झुकाव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ जाना। २ छूटना, अलग होना। ३ त्यागना।

मुचत–स्त्री० छोड़ने की क्रिया या भाव।

मुचलको–पु० [तु० मुचल्का] न्यायालय द्वारा अभियुक्त से लिखवाया जाने वाला प्रतिज्ञापत्र।

मुचिर–पु० [सं० मुचिर] १ देवता। २ पवन, हवा। ३ गुण। ४ भलाई।

मुचुकंद, मुचुकुंद–पु० [सं०] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक सुविख्यात राजा। २ एक वृक्ष विशेष।

मुच्छ–१ देखो 'मूंछ'। २ देखो 'मूछो'। **मुंड, मुंडो**=मूंछमुंडो।

मुच्छित, मुच्छिय–देखो मुरछित'।

मुछंदर–१ देखो 'मूंछंदर'। २ देखो 'मछंदर'।

मुछ, मुछार–देखो 'मूंछ'।

मुछाळ, मुछाळी, मुछियळ–१ देखो 'मूंछाळ'। २ देखो 'मूंछ'।

मुछि–देखो 'मूंछ'।

मुज–देखो 'मुझ'।

मुजनस–पु० घोडा, अश्व।

मुजब, मुजबब–क्रि० वि० १ अनुसार, मुताबिक, माफिक। २ तरह से, प्रकार से, भांति से। ३ अनुरूप, तुल्य।

मुजरउ–देखो 'मुजरो'।

मुजराई, मुजरायत–वि० किसी राजा या रईस को अभिवादन करने वाला। –पु० १ अभिवादन करने वाला व्यक्ति। २ मुजरा करने वाला कर्मचारी।

मुजरिम–पु० [अ०]१ अभियुक्त, अपराधी। २ जिस पर अपराध लगाया जाय।

मुजरो–पु०[अ०मुज्रा]१ किसी राजा या रईस या को किया जाने वाला अभिवादन। २ अभिवादन। ३ वेश्या द्वारा गाया जाने वाला एक गाना विशेष। ४ एक लोक गीत विशेष। ५ राज दरबार में उपस्थिति का एक भाव।

मुजलो–देखो 'मिजलो'।

मुजवर–देखो 'मुजावर'।

मुजाब–देखो 'मुजब'।

मुजायब–देखो 'मुजाहिद'।

मुजावर–पु० [अ० मुजाविर] १ पीर की दरगाह पर रह कर सेवा करने वाला मुसलमान। २ पड़ोसी।

मुजेवड़ी, मुजोवड़ी–देखो 'मुंजेवड़ी'।

मुज्ज, मुज्झ, मुज्झो–देखो 'मुझ'।

मुज्झिम–देखो 'मध्यम'।

मुझ–सर्व० [सं० मह्यम्] १ स्वयं के लिये आत्मवाची सर्वनाम मैं। २ मेरा, मेरी, मेरे। ३ स्वयं, खुद। - क्रि० वि० ४ मेरे लिये। –पु० अपनत्व।

मुझमांनो–देखो 'मिजमांनो'।

मुझाणो (बो)–देखो 'मुरझाणो' (बो)।

मुझारि–क्रि० वि० [सं० मध्यागारे] बीच में, मध्य में।

मुझि–१ देखो 'मुझे'। २ देखो 'मुझे'।

मुझे, मुझै–सर्व० [प्रा० मज्झम] कर्म और सम्प्रदान में होने वाला 'मैं' का रूप, मुझको, मुझ से।

मुटकणो–वि० [सं० मटकन्] बड़ा।

मुटकारणो (बो)–क्रि० [सं० मुट्] १ बोलना, कहना, बात करना। २ भर्त्सना करना, फटकारना। ३ कुचलना, पीसना।

मुटबोलो–वि० १ बढ़-बढ़ कर बातें करने वाला। २ झूठी मेखो बघारने वाला।

मुटाव–पु० १ तनाव, खिचाव। २ दूर, दूरस्थ होने की अवस्था।

मुट्ठी–स्त्री० [सं मुष्टिका]१ अंगुलियों को समेट कर बनाई गई हाथ की मुद्रा। मुष्टिका। २ उक्त मुद्रा में समाने वाली वस्तु की मात्रा। ३ मुष्टिका का धीरे-धीरे प्रहार। ४ शरीरांग को हाथों से दबाने की क्रिया या भाव।

मुठकाचर–पु० मुष्टिका में समाने लायक छोटी ककड़ी, बड़ा काचर।

मुठड़ी–१ देखो 'मुट्ठी'। २ देखो 'मूठड़ी'।

मुठभेड़–स्त्री० १ सामना। २ साक्षात्कार, भेंट। ३ दो पक्षों की लड़ाई, टक्कर। ४ प्रतिस्पर्धा, होड़।

मुठांगो–पु० तरकस, तूणीर।

मुठांणी–स्त्री० तलवार।

मुठाणो (बो), मुठाबणो (बो)–क्रि० तलवार पकड़ना।

मुठियो, मुठीयो–देखो 'मूठियो'।

मुठ्ठो–देखो 'मुट्ठी'।

मुडक–देखो 'मुड़क'।

मुडणो (बो)–देखो 'मुड़णो' (बो)।

मुडियांण–पु० मृगों की एक जाति व इस जाति का मृग।

मुडियाळ–पु० [देश०] डिंगल का एक गीत या छंद।

मुडियो–पु० १ सीमा पर गड़ा पत्थर। २ देखो 'मुंडियो'।

मुडुध–देखो 'मुकुटबद्ध'।

मुढ्ढो–पु० १ कुर्सी। २ सरकंडों की बनी कुर्सी या आसन। ३ मूंज की बनी चौकी, पीढ़ा।

मुढ्ढो–देखो 'मुड्ढो'।

मुढ–देखो 'मूढ'।

मुढलो–देखो 'मुड्ढो'।

मुढैस–देखो 'मूढेस'।

मुढो–देखो 'मूंडो'।

मुढ्ढ–देखो 'मूढ'।

मुण–१ देखो 'मुनि'। २ देखो 'मून'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुणणी (बी)–क्रि० [स० मुण] १ कहना, बोलना, कह कर सुनाना। २ वर्णन करना। ३ सुमिरन करना, ध्यान करना। ४ मनन करना। ५ प्रतिज्ञा करना। ६ पुकारना, पुकार कर कहना। ७ रचना, रचना करना। ८ गुन-गुनाना, गुंजन करना। ९ जानना।

मुणस–देखो 'मांणस'।

मुणाळ–पु० [सं० मृणाल] १ कमल। २ कमल की नाल। ३ कमल की जड़। ४ हंस।

मुणिंद–देखो 'मुनींद्र'।

मुणि–देखो 'मुनि'।—पवर = 'मुनिप्रवर'।—वर = 'मुनिवर'।

मुणिक्ष–पु० युद्ध।

मुणिसगुर–पु० योद्धा, सुभट, वीर।

मुणिसाळ–पु० मानव श्रेष्ठ।

मुणीसर–देखो 'मुनीस्वर'।

मुतअल्लिक–क्रि० वि० [अ०] विषय में, संबंध में।–पु० नौकर, मुलाजिम।–वि० संबंधित।

मुतफरकात–स्त्री० [अ० मुतफर्रिकात] १ भिन्न-भिन्न, विविध। २ फुटकर खर्च की मदें। ३ एक गांव की जमीन के अलग-अलग खंड।

मुतबळ–देखो 'मतळब'।

मुतरज्जिम–पु० [अ० मुतर्जिम] अनुवादक।

मुतसक–देखो 'मुतअल्लिक'।

मुतळब, मुतलब–देखो 'मुतळब'।

मुतळबिमो–देखो 'मतळबी'।

मुतळबी–देखो 'मतळबी'।

मुतल्लिक–देखो 'मुतअल्लिक'।

मुतसदी, मुतसद्दी–पु० [अ० मुतसद्दी] १ प्रबन्धक, व्यवस्थापक। २ मारवाड़ के ओसवालों का एक वर्ग। ३ रियासतों में होने वाला एक पद। ४ मुंशी, पेशकार, लिपिक। ५ लेखाकार, गुमास्ता। -खरच-पु० महाराजा भीमसिंह द्वारा लगाया गया कर विशेष।

मुताणी (बी)–देखो 'मूताणी' (बी)।

मुताबक, मुताबिक–क्रि० वि० [अ० मुताबिक] अनुसार, इस प्रकार से।–वि० सदृश्य, तुल्य, बराबर, समान।

मुताळब–वि० [अ०] १ तलब करने योग्य; मांगने योग्य। २ बकाया, बाकी।–पु० १ मांग, तकाजा। २ बकाया रकम। ३ प्रार्थना।

मुतालबी–देखो 'मतलबी'।

मुतालबो–पु० [अ० मुतालब] १ किसी की तरफ बकाया रकम। २ प्राप्त होने योग्य धन।

मुतावणी (बी)–देखो 'मूताणी' (बी)।

मुताहळ–देखो 'मुक्ताफळ'।

मुति–देखो 'मुक्ति'।

मुत्तफिक–वि० [अ०] जो सहमत हो, राजी हो।

मुत्ता–देखो 'मुक्ता'—हळ, हळि = 'मुक्ताफळ'।

मुत्ति–१ देखो 'मुक्ति'। २ देखो 'मोती'।

मुत्तिमाग–पु० [सं० मुक्ति-मार्ग] मुक्ति का मार्ग, तपस्या, साधना। भक्ति।

मुत्तियदांम–देखो 'मोतियदांम'।

मुत्ती–१ देखो 'मुक्ति'। २ देखो 'मोती'।

मुत्सद्दी, मुत्सद्दी–देखो मुतसद्दी'।

मुथकवा–पु० फलित ज्योतिष में एक योग।

मुथरा–देखो 'मथुरा'।

मुद–पु० [सं०] १ आनन्द, हर्ष, मोद। २ उत्साह।

मुदई–देखो 'मुद्दई'।

मुदक–पु० एक आभूषण विशेष।

मुदकारी–वि० [सं० मुदकारिन्] प्रसन्न करने वाला।

मुदग–पु० [सं० मुद्ग] १ मूंग। २ ढक्कन। ३ आच्छादन, गिलाफ।

मुदगर–देखो 'मुगदर'।

मुदत–१ देखो 'मुद्दत'। २ देखो 'मदद'।

मुदति–१ देखो 'मदद'। २ देखो 'मुदित'। ३ देखो 'मुद्दत'।

मुदमंगळ–पु० [सं० मुद-मंगल] आनन्द-मंगल, खुशहाली।

मुदर–देखो 'मुदिर'।

मुदरा–देखो 'मुद्रा'।

मुदराळ–देखो 'मुद्राळ'।

मुदल–देखो 'मुद्दळ'।

मुदांम–पु० आनन्द का स्थान।

मुदाइत–पु० [अ० मुद्दई] १ उत्तराधिकारी, वारिस, दावेदार। २ मुखिया, प्रधान। ३ खास, मुख्य। ४ जिम्मेदार, उत्तरदायी।

मुदाई–१ देखो 'मुद्दई'। २ देखो 'मुदाइत'।

मुदावसिल–पु० मोर के आकार का पत्थर।

मुदायत–देखो 'मुदाइत'।

मुदायले, मुदायलो–देखो 'मुद्दालेह'।

मुदार–पु० [अ० मदार] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, भार। २ निर्भरता। ३ आश्रय, सहारा, आधार।

मुदाळी–देखो 'मुद्दाल'।

मुदित–वि० [सं०] खुश, आनन्दित, प्रसन्न।–पु० १ रतिक्रिया में एक आलिंगन। २ देखो 'मदद'। मन–वि० प्रसन्नचित।

मुदिता–स्त्री० १ साहित्य में एक परकीया नायिका। २ प्रसन्नता।

मुदिर–पु० [सं०] १ बादल, मेघ। २ प्रेमी, आशिक। ३ लंपट व्यक्ति। ४ मेंढक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुदी–देखो 'मुद्दई'।
मुदु–देखो 'मृदु'।
मुदेत–देखो 'मुदाइत'।
मुदैं–देखो 'मुद्दई'।
मुद्दा–पु० [अ० मुद्दआ] १ अभिप्राय, तात्पर्य, आशय। २ उद्देश्य लक्ष्य। ३ अर्थ, मतलब, भाव। ४ वास्तविकता, असलियत। ५ स्वार्थ, गरज। ६ उत्तरदायित्व, भार. जिम्मेदारी। ७ प्रबंध। ८ अवसर, मौका। ९ विषय, प्रसंग, संबंध। १० खुलासा, स्पष्टीकरण। ११ मुख्य विषय, विषय का मुख्य भाग। १२ निर्भरता।
मुद्गर–पु० [सं०] १ वार व नक्षत्र संबंधी एक योग। २ तक्षक कुलोत्पन्न एक नाग।
मुद्दई–वि० [अ०] १ वादी, दावेदार। २ वारिस, हकदार, उत्तराधिकारी। ३ प्रधान, मुखिया, अगुवा। ४ प्रमुख, खास, मुख्य। ५ शत्रु, वैरी। ६ निर्भर, आश्रित।
मुद्दका–देखो 'मुद्रिका'।
मुद्दत–स्त्री० [अ०] १ लेन-देन की निर्धारित अवधि। २ समय, वक्त, काल। ३ बहुत लंबा समय, दीर्घकाल। ४ देर, विलंब। ५ देखो 'मदद'।
मुद्दति, मुद्दती–वि० १ जिसमें कोई अवधि निश्चित की गई हो। २ जो कोई निश्चित अवधि के लिये हो। –पु० एक प्रकार का बुखार।
मुद्दल–पु० [सं० मर्दलः] १ ऋण का मूल धन। २ एक वाद्य विशेष।
मुद्दालेह–पु० [अ० मुद्दआलैह] जिस पर कोई दावा या मुकद्दमा किया गया हो, प्रतिवादी।
मुद्दी, मुद्दे, मुद्दैं–देखो 'मुद्दई'।
मुद्दी–देखो 'मुदी'।
मुद्ध–पु० [सं० मूर्धन] १ मस्तक, शिर। २ मुंड, कटा हुआ शिर। ३ देखो 'मुग्ध'।
मुद्धरी–देखो 'मधुर'।
मुद्र–पु० १ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। २ देखो 'मद्र'। ३ देखो 'मुद्रिका'।
मुद्रक–पु० [सं०] १ मुद्रणालय या छापाखाने का कर्मचारी, अधिकारी। २ छपाई करने वाला। ३ किसी प्रेस का मालिक। ४ एक आभूषण विशेष।
मुद्रका–देखो 'मुद्रिका'।
मुद्रड़ी, मुद्रडो–देखो 'मूंदड़ी'।
मुद्रण–पु० [सं०] १ छपाई का कार्य, छापाखाने का कार्य। २ वस्त्रों की छपाई, रंगाई। ३ चिह्नांकन। —यंत्र –पु० छपाई का कोई यंत्र।
मुद्रणालय–पु० [सं०] छापाखाना, प्रेस।
मुद्रांक–पु० [सं० मुद्रा+अंक] १ अदालतों आदि में काम आने वाला सरकारी मुद्रांकित-पत्र, स्टाम्प। २ ऐसे कागज पर अंकित मुद्रा। ३ डाक टिकट। ४ छाप, मुहर (स्टाम्प)। ५ छाप लगाने का चिह्न, उपकरण।
मुद्रांकित–वि० [सं० मुद्रा+अंकित] १ जिस पर कोई मुहर, मुद्रा आदि अंकित हो। चिह्नित। २ विष्णु के आयुधों से चिह्नित। ३ सरकारी स्टाम्प लगा।
मुद्रा–स्त्री० [सं०] १ मुहर, छाप, सील। २ अंगूठी, छल्ला, मुद्रिका। ३ नामांकित मुद्रिका। ४ पत्र या परवाने पर लगाने की छाप। ५ लेन-देन में काम आने वाले रुपये, पैसे नोट आदि, करेंसी। ६ बैंक का चेक, ड्राफ्ट आदि पत्र। ७ कोई सिक्का। ८ पदक, तकमा। ९ चपरास का बिल्ला। १० मुद्रणालय में छापने के अक्षर। ११ योगियों के कान का आभूषण विशेष। १२ शरीर पर अंकित विष्णु आयुधों के चिह्न। १३ मुंह पर बदलते भावों का प्रभाव। १४ हाथ पांव आदि शरीरांग की कोई स्थिति। १५ नृत्य का कोई भाव। १६ देव पूजन में हाथों की कोई विशेष स्थिति। १७ हठ योग में शरीर या अंगों का विन्यास। १८ तांत्रिकों की एक साधना। १९ तांत्रिक गुह्य साधनाओं में वह रमणी जो तांत्रिक अनुष्ठानों में सहसाधिका रहती है। २० रहस्य, भेद। २१ साहित्य में एक अलंकार।
मुद्राअंश (यंत्र)–पु० मुद्रणयंत्र।
मुद्रानंदक–पु० एक आभूषण विशेष।
मुद्रामारग–पु० [सं० मुद्रामार्ग] योगियों का ब्रह्मरंध्र।
मुद्राळ–वि० कान में मुद्राधारी, मुद्रायाला।–पु० नाथ सम्प्रदाय का योगी।
मुद्राळी–स्त्री० १ दुर्गा, महाकाली। २ हठयोग में अंग विन्यास। ३ महादेव, शिव। ४ नाथ सम्प्रदाय का योगी। ५ महात्मा। –वि० जिसने मुद्रा धारण की हो।
मुद्रिका–स्त्री० [सं०] १ अंगूठी, छल्ला। २ हाथों की एक स्थिति। ३ योगियों की कर्ण मुद्रा। ४ सिक्का, नोट। ५ छाप, मुहर। ६ छाप वाली अंगूठी।
मुद्रित–वि० [सं०] १ छपा हुआ, छापा हुआ। २ चिह्नित, चिह्नांकित। ३ मोहर बंद, मुहर लगा हुआ। ४ रुका हुआ, बंद। ५ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। ६ अविकसित, अनखिला।
मुद्री–१ देखो 'माद्री'। २ देखो 'मुद्रिका'।
मुधप–देखो 'मधुप'।
मुधर, मुधरु, मुधरी–१ देखो 'मधुर'। २ देखो 'मधरी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुधा–अव्य० [सं०] १ व्यर्थ, निरर्थक, फालतू। २ भूल से। –वि० झूठ, मृषा, असत्य। –स्त्री० असत्यता, झूठ।

मुधि–१ देखो 'मुग्धा'। २ देखो 'मुग्ध'।

मुनंद, मुनंद्र–देखो 'मुनींद्र'।

मुन–१ देखो 'मुनि'। २ देखो 'मून'।

मुनकलब, मुनकलिब–वि० [अ० मुन्कलिब] १ पलटा हुआ, फिरा हुआ। २ औंधा, उल्टा। ३ अस्त-व्यस्त, उथल-पुथल।

मुनकिर–पु० [अ० मुन्कर] मुसलमानों का एक फरिश्ता।

मुनक्का–स्त्री० [अ०] मुनक्का दाख। बड़ी दाख।

मुनजन–देखो 'मुनिजन'।

मुनब्बतकारी–स्त्री० [अ०] लकड़ी पर की गई चित्रकारी।

मुनमथ–देखो 'मनमथ'।

मुनमाळ–स्त्री० [सं० मुनि–माला] मुनियों का समाज, मुनि वृंद।

मुनराज–देखो 'मुनिराज'।

मुनवर–देखो 'मुनिवर'।

मुनसप, मुनसफ, मुनसब, मुनसबत, मुनसम–देखो 'मनसब'। —दार='मनसबदार'।

मुनसी–देखो 'मुंसी'।

मुनहार–देखो 'मनवार'।

मुनादि, मुनादी–वि० [अ०] घोषणा करने वाला। –स्त्री० १ घोषणा, ऐलान। २ डुग्गी या ढोल पीटकर दी जाने वाली सार्वजनिक सूचना, ढिंढोरा। ३ मौकात, हैसियत।

मुनाफो–पु० क्रय-विक्रय या व्यापार में होने वाला लाभ।

मुनार, मुनारी–देखो 'मीनार'।

मुनाळ–स्त्री० १ एक प्रकार का सुन्दर पहाड़ी पक्षी। २ देखो 'मुंहनाळ'।

मुनासब, मुनासिब–वि० [अ० मुनासिब] १ उचित, ठीक, वाजिब। २ यथेष्ट, काफी, पर्याप्त। ३ योग्य, काबिल।

मुनितर–देखो 'मन्वंतर'।

मुनिंद, मुनिंद्र–देखो 'मुनींद्र'।

मुनि–पु० [सं०] १ महात्मा, तपस्वी, ऋषि, साधक, मौनव्रती, ब्रह्मज्ञानी। २ त्यागी, वैरागी साधू। ३ मौनव्रत धारी साधू। ४ नारद। ५ अगस्त्य। ६ वेदव्यास। ७ बुद्ध देव। ८ अहनु नामक वसु का एक पुत्र। ९ कुरु राजा के पांच पुत्रों में से एक। १० रैवत एवं वैवस्वत के सप्त ऋषियों में से एक। ११ दश विश्व देवों में से एक। १२ प्रसूत देवों में से एक। १३ अमिताभ देवों में से एक। १४ विदेह देश का एक राजा। १५ एक राजा जो द्युतिमान राजा के सात पुत्रों में से एक था। १६ आम का पेड़। १७ छप्पय छंद का एक भेद। –स्त्री० १८ कश्यप ऋषि की पत्नी। १९ सात की संख्या। २० देखो 'मणि'। —चीर–पु० वल्कल। —जण, जन–पु० ऋषि-समाज, मुनिगण। —पट–पु० वल्कल।

मुनिपुंगव, मुनिप्रवर–पु० [सं०] मुनि श्रेष्ठ, महर्षि, ऋषिराज।

मुनिबंद, मुनिबंद्र–देखो 'मुनींद्र'।

मुनिपद–पु० [सं० मुनिपद] मुनिपद या उपाधि।

मुनिराज (राव)–पु० [सं०] मुनियों में अग्रणी, प्रधान ऋषि।

मुनिवर–पु० [सं०] श्रेष्ठ मुनि।

मुनिव्रत–पु० ऋषि-मुनियों के व्रत, तपस्या।

मुनिसर, मुनिसर–देखो 'मुनीस्वर'।

मुनिसुव्रत, मुनिसुव्रत (जिन)–पु० जैनियों के बीसवें तीर्थंकर।

मुनींद्र–पु० [सं० मुनि-इन्द्र] मुनियों में श्रेष्ठ।

मुनी–देखो 'मुनि'।

मुनीउन–देखो 'उनमुनी'।

मुनीजन–देखो 'मुनिजन'।

मुनीब, मुनीम–पु० [अ० मुनीब] १ किसी व्यापारी का गुमास्ता, मुनीम। २ खजांची। ३ प्रतिनिधि। ४ अभिकर्ता।

मुनीमी–स्त्री० १ मुनीम का कार्य या पद। २ मुनीम का वेतन।

मुनीवर–देखो 'मुनिवर'।

मुनीस–पु० [सं० मुनि-ईश] १ मुनियों में श्रेष्ठ, प्रधान। २ नारद मुनि। ३ विष्णु। ४ गौतम बुद्ध।

मुनीसर, मुनीसर, मुनीसर मुनीसौ–देखो 'मुनीस्वर'।

मुनीस्वर–पु० [सं० मुनि-ईश्वर] १ मुनियों में श्रेष्ठ व प्रधान। २ बृहस्पति। ३ शुक्राचार्य। ४ नारद। ५ विष्णु। ६ शिव, महादेव।

मुनेंद्र–देखो 'मुनींद्र'।

मुनेस–देखो 'मुनीस'।

मुनेसर, मुनेस्वर–देखो 'मुनीस्वर'।

मुफत–देखो 'मुफ्त'। —खोर='मुफतखोर'।

मुफर–१ देखो 'मुफरेह'। २ देखो 'मुफिर'।

मुफरद–वि० [अ० मुफ़्रद] १ एक। २ अकेला।

मुफरि–१ देखो 'मुफिर'। २ देखो 'मुफरेह'।

मुफरेह, मुफरौ–पु० [अ० मुफर्रेह] एक प्रकार की पौष्टिक औषधि। –वि० उत्साह वर्धक।

मुफलिस–वि० [अ० मुफ्लिस] निर्धन, गरीब, दरिद्र, कंगाल।

मुफलिसी–स्त्री० [अ० मुफ़लिसी] निर्धनता, गरीबी, कंगाली, अभाव।

मुफसिल–वि० [अ० मुफस्सल] १ विस्तार वाला, विस्तृत; ब्योरेवार, सविवरण। २ स्पष्ट, सरल।

मुफस्सिर–पु० [अ०] भाषाकार, टीकाकार।

मुफिर–वि० [अ०] भागने वाला, पलायन करने वाला।

मुफीद–वि० [अ०] १ लाभदायक, उपयोगी। २ यथा योग्य, लायक, उपयुक्त। ३ अनुकूल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुफ्त–वि० [अ०] १ जिसका कोई मूल्य या कीमत न हो। २ जो बिना कुछ दिये प्राप्त होता है। ३ बिना मेहनत के मिलने वाला। ४ जो व्यर्थ में जा रहा हो, नष्ट हो रहा हो। ५ भेंट के रूप में लिया-दिया जाने वाला, फ्री। ६ अकारण, बेसबब।—खोर–वि० बिना श्रम के कुछ लेने या खाने वाला। दूसरों की कमाई व्यर्थ में काम लेने वाला, हरामखोर। जो दूसरों पर भार या बोझा हो।—खोरी–स्त्री० बिना श्रम के खाने, माल लेने, हरामखोरी करने की क्रिया। हरामखोरी की आदत।

मुफ्ती–पु० [अ०] मुसलमानों का धर्मशास्त्री, धर्माचार्य, मौलवी।

मुबारक, मुबारकी, मुबारिक–वि० [अ०] १ मंगलमय, शुभ, कल्याणकारी। २ धन्य, खुश-किस्मत। ३ लाभकारी। –स्त्री० बधाई, शुभकामना। —बाद, बाद–स्त्री० बधाई देने की क्रिया, धन्यवाद। खुश-खबरी। —बादी, बादी–वि० बधाई देने वाला, धन्यवाद करने वाला।

मुबालिग–स्त्री० [अ० मुबालग] १ किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहने की क्रिया या भाव। २ उक्त प्रकार से कही जाने वाली बात। ३ अतिशयोक्ति।

मुमकिन–वि० [अ० मुम्किन] संभव, शक्य।

मुमानियत–स्त्री० [अ०] मनाही, निषेध, रोक।

मुमारखी–देखो 'ममारखी'।

मुमुक्षा–स्त्री० [सं०] मोक्ष की इच्छा।

मुमुक्षु (क्षू)–वि० [सं०] मोक्ष का इच्छुक।

मुरंगी–वि० मृदुअंगी, कोमलांगी। नाजुक।

मुर–पु० [सं०] १ एक दैत्य। २ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक राक्षस। ३ एक यवन राजा। ४ तीन की संख्या। ५ कोई तीन। ६ कश्यप व दनु का पुत्र एक राक्षस। ७ वेष्ठन, घेरा। ८ मृदंग। –अव्य० दुबारा, फिर।

मुरकी, मुरकीय–स्त्री० [प्रा० मुरुक्की] १ पुरुषों के कान का आभूषण विशेष। २ स्त्रियों के नाक का आभूषण विशेष। ३ सफेद जलेबी, मिष्ठान्न। ४ नुकती, बूंदी। ५ संगीत में एक विधि। ६ एक प्रकार की गायन विधि। ७ तलवार की मूठ की कड़ी विशेष।

मुरकी–पु० बड़े व सुन्दर दांतों वाला हाथी।

मुरक्की–देखो 'मुरकी'।

मुरखंड–पु० तीन लोक।

मुरख–देखो 'मूरख'।

मुरखाई–देखो 'मूरखाई'।

मुरग–देखो 'मुरगी'।

मुरगखाना–पु० मुर्गे रखने या पालने का स्थान।

मुरगबाज–पु० [फा०] मुर्गे लड़ाने या खेलाने वाला।

मुरगाबी, मुरगाबी–स्त्री० [फा०] १ मुर्गे की जाति का एक पक्षी, जल-मुर्गा। २ एक प्रकार की तलवार। ३ जूती।

मुरगी–स्त्री० [फा० मुर्ग] मादा मुर्गा। एक पक्षी।

मुरगी–पु० [फा० मुर्ग] (स्त्री० मुरगी) १ शिर पर कलंगी वाला एक नर पक्षी। २ एक चिड़िया विशेष।

मुरड़–पु० १ एक प्रकार की मिट्टी जो चुनाई आदि में काम आती है। २ आत्म-गौरव, स्वाभिमान। ३ गर्व, अभिमान घमंड। ४ ऐंठन, अक्कड़। ५ क्रोध। ६ देखो 'मूठ' ७ देखो 'मुड़'।

मुरड़क, मुरड़फ–स्त्री० १ मरोड़ने की क्रिया या भाव। २ मोच मरोड़, ऐंठन।

मुरड़णी (बी)–क्रि० १ मुड़ना, बलखाना, ऐंठना, घुमाना। २ कुपित होना, क्रोधित होना, नाराज होना। ३ विरुद्ध, विपरीत होना। ४ पलटना, लौटना, घूमना। ५ भागना, पीछे हटना। ६ अलग हटना, दूर होना, विलग होना। ७ मोड़ना, मरोड़ना, बल देना, घुमाव देना। ८ गर्व करना अभिमान करना। ९ छीनना, झपटना। १० उखाड़ना। ११ नष्ट करना।

मुरड़, मुरड़ी–पु० १ चरणग्रंथि, पैर का मध्य भाग। २ टखना गुल्फ। ३ हाथ-पावों के संधिस्थल। ४ देखो 'मोरचो'।

मुरछा, मुरछ–देखो 'मुरछा'।—गत, गति='मुरछागत'।

मुरछणी (बी)–देखो 'मुरछाणी' (बी)।

मुरछल–वि० १ मूच्छित, बेहोश। २ देखो 'मोरछल'।

मुरछा–स्त्री० [सं० मूर्च्छा] १ बेहोशी या संज्ञा शून्य होने की अवस्था, अचेतनता। २ शिथिलता, कमजोरी। ३ प्रमाद, आलस्य। ४ गश। —गत, गति, गसी–वि० बेहोश, अचेतन, संज्ञा शून्य।

मुरछाणी (बी)–क्रि० [सं० मूर्च्छनम्] १ बेहोश, मूच्छित या संज्ञा शून्य होना। २ समाधिस्थ होना। ३ ऐन्द्रजालिक प्रभाव में आना।

मुरछावत–वि० मूछित, बेहोश। अचेत।

मुरछित–वि० [सं० मूच्छित] संज्ञा-शून्य, बेहोश, मूच्छित।

मुरज, मुरजा–पु० [सं०] १ मृदंग, पखावज। २ कुबेर की पत्नी का नाम।

मुरजाद, मुरजादा–देखो 'मरजादा'।

मुरजादी, मुरजादीक–वि० [सं० मर्यादिक] मर्यादा में रहने वाला।

मुरजीत–पु० श्रीकृष्ण।

मुरझणी (बी)–देखो 'मुरझाणी' (बी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुरझागत–देखो 'मुरझागत'।

मुरझाणो (बो), मुरझावणो (बो)–क्रि० [सं० मूर्च्छन्] १ कुम्हला जाना, सूखना। खिला हुआ न रहना। २ उदास या म्लान होना। ३ श्रीहीन या कांतिहीन होना। ४ खिन्न होना। ५ कुंठित होना। ६ विकल होना। ७ उत्साहहीन या निराश होना। ८ शिथिल या रुग्ण होना। ९ आलस्यमय होना। १० मूच्छित, बेहोश होना।

मुरट–पु० [देश०] १ एक प्रकार का घास। २ देखो 'मरट'।

मुरड–देखो 'मुरड़'।

मुरडणो (बो)–देखो 'मुरड़णी' (बो)।

मुरतब, मुरतबो–१ देखो 'मरतब'। २ देखो 'मुरत्तब'।

मुरति, मुरती–देखो 'मूरति'।

मुरत्तब–वि० [अ०] १ सिलसिले वार, क्रमबद्ध। २ श्रेणी या शृंखला बद्ध। ३ संग्रहीत। ४ सम्पादित। ५ तरीयुक्त, तर।

मुरत्ति–देखो 'मूरति'।

मुरद–पु० १ शब्द। २ देखो 'मुरदो'।

मुरदनी–स्त्री० म्लानता।

मुरदांणव–पु० मुर नामक दैत्य।

मुरदार–वि० [फा० मुर्दार] १ मृतक, मृत, निष्प्राण। २ अपनी मौत से मरा हुआ। ३ कमजोर, अशक्त, बेदम। ४ डरपोक कायर। ५ अपवित्र। ६ नपुंशक, नामर्द। ७ मवाद, पीव।

मुरदासंख, मुरदासिंगी, मुरदासिंघी, मुरदासिंही–स्त्री० सीसे और सिंदूर को फूंक कर बनाया हुआ औषध।

मुरदो–पु० [फा० मुर्दः] १ प्रेत, भूत। २ शव, लाश। –वि० १ मृत, निष्प्राण, मरा हुआ। २ मृत प्रायः अधमरा। ३ अशक्त, कमजोर। ४ पुंशत्वहीन। ५ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।

मुरद्धर–देखो 'मरुधर'।

मुरद्धरा–देखो 'मरुधरा'।

मुरधर–१ देखो 'मरुधर'। २ देखो 'मुरधरभाखा'।

मुरधरभाखा (सा)–स्त्री० मरुभाषा, मारवाड़ी, राजस्थानी।

मुरधरमंडण–वि०मारवाड़ की शोभा बढ़ाने वाला। –पु० एक प्रकार का जेवर।

मुरधरा–देखो 'मरुधरा'।

मुरधरियो–देखो 'मरुधरियो'।

मुरधा–स्त्री० [सं० मूर्धन्] १ शिर। २ देखो 'मरुधरा'।

मुरनयण, मुरनेण, मुरनैण–पु० शिव।

मुरपुर–पु० तीन लोक।

मुरपुरधणि (धणी, पत, पति, पती, पह)–पु० त्रिभुवन पति, श्रीविष्णु।

मुरब्बत–स्त्री० [अ० मुरव्वत] १ भद्र मनसाहत, इन्सानियत। २ लिहाज, रियायत। ३ परोपकार, भलाई। ४ शील, संकोच। ५ कृपा, अनुग्रह।

मुरब्बी, मुरब्बो–वि० [अ०] १ आश्रयदाता, संरक्षक। २ पोषक, पालक। ३ सहायक। ४ बड़प्पन रखने वाला, गौरवशाली। ५ प्रधान, मुखिया, अग्रणी। ६ कृपालु, दयालु।

मुरब्बो–पु० [अ० मुरब्बा] १ आंवला, सेव आदि फलों में शक्कर की चासनी मिलाकर बनाया गया पाक। २ कृषि भूमि का एक माप। ३ कृषि भूमि का एक भाग। ४ चौरस वस्तु या क्षेत्र।

मुरमथण (न)–पु० तीन लोक, त्रिलोकी।—पति—पु०श्रीविष्णु।

मुरभूम–देखो 'मरुभूमि'। —भाखा, भासा—'मुरधरभासा'।

मुरमंडळ, (ल)–पु० मारवाड़।

मुरमरदण (न)–पु० [सं० मुर-मर्दन] १ श्रीकृष्ण। २ श्रीविष्णु।

मुरमुर–पु० [स०] १ कामदेव, मदन। २ सूर्य के रथ के घोड़े। ३ अग्नि कण, चिनगारी।

मुरमुरया, मुरमुरिया–स्त्री० बेसन की नमकीन बूंदी।

मुरराधवेस–पु० श्रीकृष्ण, श्रीविष्णु।

मुररिप (रिपु)–पु० [सं० मुर-रिपु] १ श्रीकृष्ण। २ श्रीविष्णु।

मुरळिका, मुरळिया, मुरळी, मुरली–स्त्री० [सं० मुरली] बांस या धातु की छेदों वाली नलिका, बांसुरी, वाद्य। —धर–पु० श्रीकृष्ण। ईश्वर।—मनोहर–पु० श्रीकृष्ण।—वाळो–पु० श्रीकृष्ण।

मुरलोक–पु० तीन लोक, त्रिलोकी।

मुरलोकगत–पु० एक देव जाति।

मुरलोकनरेस–पु० श्रीविष्णु।

मुरलोचन (लोयण)–पु० शिव, महादेव।

मुरलोयो–पु० तीन लोक।

मुरलो–देखो 'मोर'।

मुरवा, मुरवि, मुरवी–स्त्री० [सं०मौर्वी] १ एक प्रकार की घास। २ धनुष की डोरी, प्रत्यंचा। ३ एक शस्त्र विशेष, आयुध।

मुरवैरी–पु० श्रीकृष्ण, श्रीविष्णु।

मुरवो–१ देखो 'मोर'। २ देखो 'मरवो'।

मुरसंडो–देखो 'मुस्टंड'

मुरसथळ–देखो 'मरुस्थळ'।

मुरसद–देखो 'मुरसिद'।

मुरसळ–देखो 'मुरसिल'।

मुरसिद–पु० [अ० मुर्शिद] १ गुरु, आचार्य। २ मुसलमानों का धर्म गुरु। पीर। ३ अध्यात्मवादी, उपदेशक। ४ पथ प्रदर्शक मार्ग दर्शक। ५ उस्ताद। ६ धूर्त, चालाक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुरसिल–पु० [अ० मुर्सिल] १ घोड़े पर नगाड़ा रख कर बजाने वाला। २ एक वाद्य विशेष। ३ भेजने वाला, प्रेषक।

मुरस्थळ, मुरस्थळी–देखो 'मरुस्थळ'।

मुरहरी, मुरहारी–पु० [सं० मुर-हारिन्] १ श्रीकृष्ण, विष्णु। २ एक प्रकार का घोड़ा।

मुरहेल–पु० हेल मछली का तेल।

मुराइ, मुराई–स्त्री० मसूड़ा।

मुराड़ी–पु० १ श्मशान की अग्नि, भूतों द्वारा प्रज्वलित अग्नि। २ अग्नि, आग। ३ आग की लपट, ज्वाला। ४ जलती हुई लकड़ी। ५ सूरत, शक्ल। ६ दाह क्रिया के लिये जलाया जाने वाला घास का पूवाल। ७ सूखे काँटों का संग्रह। –वि० १ क्रोध युक्त, कुपित। २ डरावना, भयानक। ३ प्रचंड। ४ मूढ़, मूर्ख।

मुरातब, मुरातबी–१ देखो 'मरातब'। २ देखो 'मुरत्तब'।

मुरातबा–वि० १ सुसज्जित, सजा हुआ। २ देखो 'मरातब'।

मुराद–स्त्री० [अ०] १ उत्कण्ठा, लालसा, त्वरा, तमन्ना। २ इच्छा, कामना। ३ उमंग, उत्साह। ४ अभिप्राय, आशय, मतलब प्रयोजन।

मुरादा–१ देखो 'मरजाद'। २ देखो 'मुराद'।

मुरादि, मुरादी–वि० [अ०] १ इच्छा या तमन्ना रखने वाला। २ आशय युक्त, मतलबी। ३ देखो 'मुराद'।

मुराफी–पु० [अ० मुराफक़] अपील।

मुरायळी (ळी)–स्त्री० १ एक प्रकार की कंटीली झाड़ी। २ देखो 'मुराई'।

मुरार–देखो 'मुरारी'।

मुरारमाळी–पु० मालियों की एक शाखा।

मुरारि, मुरारी–पु० [सं० मुर-अरि] १ श्रीकृष्ण। २ श्रीविष्णु। ३ ईश्वर।

मुराळ, मुराळी–स्त्री० १ दुम, पूंछ। २ देखो 'मराळ'। ३ देखो 'मुरायळी'। ४ देखो 'मुराई'।

मुरीद–पु० [अ०] १ चेला, शिष्य। २ अनुयायी, अनुगामी।

मुरु, मुरुक–देखो 'मुर'। —**लोक**='मुरलोक'।

मुरेठी–देखो 'मुळाटी'।

मुरैलो–देखो 'मोर'।

मुरोहा–देखो 'मुलेठी'।

मुरोबत, मुरोवत–देखो 'मुरव्वत'।

मुळ–अव्य० १ बिल्कुल, कतई। २ एकदम। ३ तनिक भी, थोड़ा भी, रंचमात्र। ४ मगर-मगर, किन्तु, परन्तु, लेकिन। ५ अन्ततः। ६ मूलतः।

मुळक–स्त्री० [सं० पुलक] मुस्कराहट, मंद हास्य, पुलक।

मुलक–पु०[अ० मुल्क] १ कोई बड़ा देश या राष्ट्र। २ रियासत, प्रान्त, सूबा। ३ विश्व, दुनिया। ४ कोई भू-भाग, क्षेत्र। ५ जन्म भूमि, वतन। ६ जनता, समाज, प्रजा। ७ विदेश, परदेश।

मुलकगिरी (गोरी)–स्त्री० [अ०] १ देश विजय, विश्व विजय। २ लूट-पाट, डकैती। ३ देशाटन, भ्रमण।

मुळकण, मुळकणी–स्त्री० १ मुस्कराहट, हंसी। २ मंदहास्य।

मुळकणो (बो)–क्रि० [सं० पुलकनम्] १ मंद-मंद हंसना, मुस्कराना। २ हंसना। ३ हुलसना, हुल्लासमय होना। ४ प्रसन्न, खुश होना।

मुळकाणो(बो)–क्रि०१ मंद-मंद हंसना। २ हंसाना। ३ हुलसाना हुलसित करना। ४ प्रसन्न व खुश करना।

मुळकी, मुळकी, मुळक्क–देखो 'मुळक'।

मुलक्क–देखो 'मुलक'।

मुळक्कणो (बो)–देखो 'मुळकणो' (बो)।

मुळक्या–देखो 'मुळक'।

मुळगुळ–देखो 'मुगळ'।

मुळगो–क्रि० वि० [सं० मूल] १ पूर्णतया। २ बिल्कुल। ३ तनिक भी, किंचित मात्र भी। –वि० १ मुख्य, मूल, असल।

मुलजिम–वि० [अ० मुल्जम] अपराधी, अभियुक्त।

मुळणो (बो)–क्रि० १ नटना, मुकरना, इन्कार करना। २ पलटना, बदलना।

मुळतांण, मुलतांण (न)–पु० [फा०] वर्त्तमान पाकिस्तान का एक नगर।

मुळतांणी, मुलतांणी (नी)–वि० [फा०] मुलतान का, मुलतान संबंधी। –स्त्री० १ चिकनी व पीली मिट्टी विशेष। २ एक रागिनी। —पु० ३ मुलतान का निवासी। ४ एक प्रकार का वस्त्र। —**लुहार**—पु० लुहारों की एक शाखा।

मुलमुल–देखो 'मलमल'।

मुळमुळच–देखो 'मलमुलच'।

मुळमुळाणो (बो), मुळमुळावणो (बो) –क्रि० १ फेरना। २ हिलाना। ३ मुंह में इधर-उधर घुमाकर स्वाद लेना।

मुलमूरण—वि० नाश करने वाला।

मुलम्मो–पु० [अ० मुलम्मा] सोने या चांदी की कलई, निकल।

मुलवारी–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

मुल्ला–देखो 'मुल्ला'।

मुलाकात–स्त्री० १ भेंट, साक्षात्कार। २ परिचय, जान-पहचान ३ प्रेम, मैत्री। ४ सहवास, रतिक्रीड़ा, मैथुन।

मुलाकाती–वि० १ परिचित, जाना-पहचाना। २ भेंट करने वाला। ३ प्रेमी, मित्र।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुलाखात–देखो 'मुलाकात'।
मुलाखाती–देखो 'मुलाकाती'।
मुलाजम, मुलाजिम–पु० १ नौकर, चाकर, सेवक। २ दास, गुलाम। ३ नौकरी। ४ सेवा, चाकरी।
मुलाजी–देखो 'मुलाहिजो'।
मुलाटी–पु० कपड़े का गोला, गेंदुरी, ईंडाणी।
मुलाणो (बो)–देखो 'मोलाणो' (बो)।
मुलाम–देखो 'मुलायम'।
मुलायजो–देखो 'मुलाहिजो'।
मुलायम–वि० [अ०] १ कोमल, नरम। २ नाजुक, सुकुमार। ३ शान्त, सरल।
मुलायमत, मुलायमी–स्त्री० [अ०] १ कोमलता, नाजुकता, नरमाई। २ सुकुमारता। ३ सरलता।
मुलावणो (बो)–देखो 'मोलाणो' (बो)।
मुलाहिजो–पु० [अ० मुलाहज]१ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आदर। २ लिहाज, संकोच। ३ प्रभाव, रौब। ४ विरोध या आपत्ति न करने की अवस्था। ५ निरीक्षण, गौर।
मुलिक–देखो 'मुलक'।
मुळ्क, मुलुक–देखो 'मुळक'।
मुळेट, मुळेठ–पु० कुंभकार द्वारा चाक पर से उतारे हुए कच्चे बर्तनों का प्रारंभिक रूप।
मुळेठी, मुलेठी–पु० [सं० मधुयष्ठि] १ एक प्रकार की लता। २ उक्त लता की जड़ जो मीठी होती है।
मुळो–देखो 'मुलगो'।
मुल्क–देखो 'मुलक'। —गिरो='मुलकगिरो'।
मुल्की–वि० [अ०] १ देश का, देश संबंधी। २ अपने देश का बना, देशी।
मुल्तवी–वि० [अ०] स्थगित, त्यागा हुआ।
मुल्ली–पु० [अ० मुल्ला] १ मस्जिद में अजान देने वाला, मौलवी। २ मुसलमानों का शिक्षक, विद्या गुरु।
मुवक्किल–पु० [अ०] १ मुसलमानों का एक कल्पित देवता। २ वह रूह या आत्मा जो आमिल द्वारा वश करली गई हो। ३ किसी वकील का आसामी, वादी या प्रतिवादी।
मुवाळ–स्त्री० मुखाकृति।
मुवोड़ो, मुवो–वि० [सं० मृत] मरा हुआ, मृत।
मुसं–वि० [सं० मषा] झूठा, असत्य। –स्त्री० झूठ, मिथ्या।
मुसंद–देखो 'मसंद'।
मुसक–१ देखो 'मसक'। २ देखो 'मुस्क'।
मुसकराणी (बो)–देखो 'मुसकाणी' (बो)।
मुसकराहट–देखो 'मुस्कराहट'।
मुसकल (लि, ल्ल)–देखो 'मुस्किल'।
मुसकाण, मुसकांन (नो)–देखो 'मुस्कान'।
मुसकाणो (बो), मुसकिराणो (बो)–क्रि० [सं० मृदु] १ मंद-मंद हंसना, मुस्कराना। २ पुलकित या हर्षित होना। ३ क्षणिक हंसी हंसना।
मुसकिल–देखो 'मुस्किल'।
मुसकी–देखो 'मुस्की'।
मुसकुराणो (बो)–देखो 'मुसकाणो' (बो)।
मुसट, मुसटक, मुसटि (ट्टी)–स्त्री० १ चुप्पी, मौन। २ देखो 'मुस्टो'।
मुसणो (बो)–देखो 'मूसणो' (बो)।
मुसता–स्त्री० नागर मोथा।
मुसताक (कि)–वि० [अ० मुश्ताक] १ उमंगित, उत्साहित, उत्तेजित। २ इच्छित, चाहा हुआ। ३ उत्कंठित, लालायित। ४ मस्त, मतवाला।
मुसद्दी (द्दी)–देखो 'मुतसद्दी'।
मुसन्ना–स्त्री० [अ०] १ नकल, प्रतिलिपि। २ रसोई का अधपका अंश।
मुसब्बर–पु० [अ०] १ एक औषधि विशेष, घी-कुंवार-रस। २ एलुवा।
मुसमल्ला, मुसमुल्ला–देखो 'मुसलमान'।
मुसमूरण–वि० [फा० मुसमूर] विनाशकारी।
मुसरफ, मुसरिफ–पु० [अ० मुशर्रफ] एक उच्चाधिकारी व ऐसा पद। –वि० १ प्रतिष्ठित, सम्मानित। [अ० मुस्रिफ] २ व्यय करने वाला, खर्चीला। ३ अपव्ययी।
मुसळ (स)–देखो 'मूसळ'।
मुसलमान–पु० [अ० मुसल्मान] १ मुहम्मद साहब द्वारा चलाया गया धर्म, सम्प्रदाय। २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी। ३ एक जाति।
मुसलमानी–स्त्री० १ मुसलमान बच्चों के की जाने वाली सुन्नत। खतना। २ मुसलमानों का धर्म, कर्तव्य। ३ इस जाति की स्त्री। –वि० मुसलमान का, मुसलमान संबंधी।
मुसलमोन–देखो 'मुसलमान'।
मुसला–पु० मुसलमान जाति या वर्ग।
मुसलायुद्ध, मुसलायुध–देखो 'मूसळायुध'।
मुसळि, मुसलि–देखो 'मूसळ, मूसळी'।
मुसळी (सो) १ देखो 'मुसलमान'। २ देखो 'मूसळ'। ३ देखो 'मुसल्ली'।
मुसल्मान–देखो 'मुसलमान'।
मुसल्ला–देखो 'मुसला'।
मुसल्ली–पु० [अ० मुसल्ला] १ नमाज पढ़ते समय बिछाने का वस्त्र, चद्दर। २ मुसलमान। ३ देखो 'मूसळ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुसवर–पु० वस्त्र विशेष ।

मुसव्विर–पु० [अ०] चित्रकार । चितेरा, चित्र-शिल्पी ।

मुसव्विरी–स्त्री [अ०] १ चित्रकारी । २ मुसव्विर का पेशा ।

मुसांण–देखो 'मसांण' ।

मुसाअला–स्त्री० मुसलमान जाति ।

मुसाणी (णो)–क्रि० [सं० मुष्] १ चोरी करवाना । २ लुटवाना । ३ अपहरण करवाना । ४ पकड़वाना । ५ ढकवाना । ६ लिपटवाना, घिरवाना । ७ छिनवाना, झपटवाना । ८ ग्रसवाना । ९ लुब्ध करना । १० मसोसना । ११ ठगवाना ।

मुसाप–१ देखो 'मुसाहब' । २ देखो 'मुसाफ' ।

मुसाफ–पु० [अ० मुसाफ] १ समर, युद्ध । २ लड़ाई का मैदान, रणक्षेत्र । ३ शत्रु के चारों ओर डाला जाने वाला घेरा । [अ० मुसहफ] ४ कुरान । ५ लेखों आदि का संग्रह ।

मुसाफर–देखो 'मुसाफिर' । —**खानो**='मुसाफिर खानो' ।

मुसाफरी–देखो 'मुसाफिरी' ।

मुसाफिर–पु० [अ०] यात्री, राहगीर, पथिक, बटोही । —**खानो** –पु० रेल या बस स्टेशन पर बना स्थान या कक्ष जहां यात्री कुछ देर ठहरते हैं । सराय, धर्मशाला ।

मुसाफिरी–स्त्री० [अ०] १ यात्रा, प्रवास, भ्रमण । २ मुसाफिर होने की अवस्था या भाव ।

मुसाफीर–देखो 'मुसाफिर' ।

मुसाब–देखो 'मुसाहब' ।

मुसायब–देखो 'मुसाहब' ।

मुसायबी, मुसायबी–देखो 'मुसाहबी' ।

मुसाल–१ देखो 'मूसाळ' । २ देखो 'मसाल' ।

मुसालो–देखो 'मसालो' ।

मुसावाई–वि० [सं० मृषा-वादिन्] झूठ बोलने वाला, झूठा ।

मुसावाद, मुसावाय–पु० [सं० मृषा-वाद] झूठ, असत्य ।

मुसाहब–पु० [अ० मुसाहिब] १ राज-दरबार में एक पद । २ उक्त पद का कार्य करने वाला व्यक्ति । ३ सामंत, पार्षद । ४ राजा या रईस का पार्श्ववर्ती, सहवासी ।

मुसाहबी–स्त्री० [अ०] 'मुसाहब' का पद या कार्य ।

मुसाहिब–देखो 'मुसाहब' ।

मुसिक्कल–देखो 'मुश्किल' ।

मुसियारो–पु० १ चोर । २ ठग, वंचक, कपटी । ३ दगा-बाज ।

मुसीबत–स्त्री० [अ०] १ आपत्ति, विपत्ति, संकट । २ कष्ट, परेशानी ।

मुसुकाणो (णो)–देखो 'मुसकाणो' (णो) ।

मुसैद–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ देखो 'मुस्तैद' ।

मुसोर–देखो मसोर' ।

मुस्क–पु० [फा० मुश्क] १ कस्तूरी, मृगमद । २ गंध, बू ।

मुस्कदाणो–पु० एक लता विशेष ।

मुस्कनाफो–पु० [फा० मुश्कनाफ] मृगनाभि में स्थित कस्तूरी की थैली ।

मुस्कबिलाई–पु० एक जंगली बिलाव ।

मुस्कराट, मुस्कराहट–स्त्री० मंद हास्य, मुस्कराहट, मुस्कान ।

मुस्कल–देखो 'मुश्किल' ।

मुस्कवत–पु० [सं० मुष्कवत्] इन्द्र नामक वैदिक सूक्त द्रष्टा का विशेषण ।

मुस्कांण (न)–स्त्री० मंद हास्य, धीमी हंसी ।

मुस्काणो (णो), मुस्कावणो (णो)–देखो 'मुसकाणो' (णो) ।

मुश्किल–वि० [अ० मुश्किल] १ कठिन, दुष्कर, दुःसाध्य । २ पेचीदा, जटिल । ३ गूढ़, सारगर्भित । ४ सूक्ष्म, बारीक । –स्त्री० १ कठिनाई, दिक्कत । २ विपत्ति,, संकट, बाधा । ३ पेचीदगी, उलझन । ४ गूढ़ता, गहराई । ५ सूक्ष्मता, बारीकी ।

मुस्की–वि० [फा० मुश्की] १ कस्तूरी का, कस्तूरी से संबंधित । २ कस्तूरी जैसा काला । –पु० इसी रंग का घोड़ा ।

मुस्कोरणो (णो)–देखो 'मस्कोरणो' (णो) ।

मुस्टड, मुस्टडो–वि० १ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा । २ चुप, मौन, खामोश । ३ देखो 'मुस्टी' ।

मुस्टि–देखो 'मुस्टी' ।

मुस्टिक–पु० [सं० मुष्टिक] १ कंस का एक पहलवान । २ सुनार । ३ मुक्का, घूंसा ।

मुस्टिका–पु० [सं० मुष्टिका] १ मुट्ठी । २ मुक्का, घूंसा ।

मुस्टिभेद–पु० [सं० मुष्टि-भेद] पुरुषों की एक कला ।

मुस्टी–स्त्री० [सं० मुष्टि] १ अंगुलियों को समेट कर बनाई गई हाथ की मुद्रा, मुट्ठी । २ मुट्ठी का प्रहार । ३ मुट्ठी में आने लायक वस्तु । ४ घूंसा । ५ पुरुषों की एक कला ।

मुस्टो–पु० मावा घोटने का एक उपकरण ।

मुस्त–स्त्री० [फा० मुश्त] १ मुट्ठी । २ मुक्की । ३ मुट्ठी भर वस्तु । ४ समूचा ।

मुस्तकिल–वि० [अ०] १ अटल, अडिग, दृढ़, मजबूत । २ निश्चित, स्थिर । ३ स्थायी । ४ पाबंद । ५ निरंतर, लगातार ।

मुस्तगीस–पु० [अ०] न्यायालय में दावेदार, वादी ।

मुस्तनद–वि० [अ०] १ विश्वास करने योग्य, विश्वस्त । २ प्रामाणिक, मान्य ।

मुस्तफी, मुस्तफो–वि० [अ० मस्तफा] १ पवित्र, पुनीत । २ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल । ३ गुणवान । ४ मुहम्मद साहब का खिताब । ५ पीर, पैगंबर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुस्तरका–वि० [अ० मुश्तरक:] सामूहिक, साझे का ।

मुस्तसना–वि० [अ० मुस्तस्ना] १ पाबंदी, दायरे आदि से परे, स्वतंत्र, मुक्त । २ प्रतिष्ठित । ३ चुना हुआ । ४ अपवाद स्वरूप ।

मुस्तहक–वि० [अ०] १ स्वत्वाधिकारी, हकदार । २ योग्य, लायक, सुपात्र । ३ जरूरत मंद ।

मुस्ताक–देखो 'मुसताक' ।

मुस्तीखांड–पु० शक्कर की एक किस्म, गुड़िया शक्कर ।

मुस्तैद–वि० [अ० मुस्तइद] १ सन्नद्ध, कटिबद्ध, तैयार, तत्पर । २ चुस्त, फुर्तीला । ३ सावधान, होशियार । ४ चालाक ।

मुस्तैदी–स्त्री० [अ० मुस्तइदी] १ 'मुस्तैद' होने की अवस्था या भाव । २ फुर्ती, चुस्ती । ३ तत्परता, सन्नद्धता । ४ सावधानी, होशियारी । ५ चालाकी ।

मुस्लमांण, मुस्लमांन, मुस्लसमांण, मुस्लसमांन–देखो 'मुसलमांन' ।

मुहंगौ–देखो मूंघौ' ।

मुहंडौ–देखो 'मूंडौ' ।

मुहंम–देखो 'मुहिम' ।

मुह–१ देखो 'मुख' । २ देखो 'मुझ' ।

मुहकणौ (णौ)–देखो 'मूकणौ' (णौ) ।

मुहकम–वि० [अ० मुहकम] १ दृढ, मजबूत, पक्का । २ टिकाऊ । ३ अटल, अडिग । ४ चिरस्थाई । ५ फंसा हुआ, जकड़ा हुआ ।

मुहकमौ–देखो 'महकमौ' ।

मुहकांण, मुहकांणि–देखो 'मुकांण' ।

मुहगौ (घौ)–देखो मूंगौ ।

मुहछाळ–देखो 'मूंछाळ' ।

मुहडउ, मुहडु–देखो 'मूंडौ' ।

मुहडे (डं)–देखो 'मुंहडैं' ।

मुहडौ–देखो 'मूंडौ' ।

मुहत, मुहतउ, मुहत्ता–देखो 'महता' ।

मुहताज–वि० [अ०] १ गरीब, निर्धन, धनहीन । २ दरिद्र, कंगाल । ३ परमुखापेक्षी, पराधीन, परवश । ४ जरूरत मंद । ५ इच्छा, कामना रखने वाला, अभिलाषी ।

मुहताजी–स्त्री० [अ०] १ 'मुहताज' होने की दशा या अवस्था । २ गरीबी, निर्धनता । ३ दरिद्रता कंगाली । ४ परवशता, विवशता ।

मुहतौ–देखो 'महता' ।

मुहपति (पती, पत्ति, पत्ती, पोती)–देखो 'मुंहपति' ।

मुहब्बत–स्त्री० [फा०] १ स्त्री-पुरुष या युवक-युवती का परस्पर प्रेम, प्रीति । २ परस्पर आसक्ति, लगाव ।

मुहम, मुहमह–देखो 'मुहिम' ।

मुहमांगी–वि० इच्छित, वांछित ।

मुहमेज, मुहमेजौ–पु० १ युद्ध, समर । २ मुठ-भेड़, टक्कर । –वि० वीरगति प्राप्त ।

मुहमेम–देखो 'मुहमेज' ।

मुहमेळ, मुहमेळु (ळू)–वि० १ मिलनसार, व्यावहारिक । २ तुकबंदी से युक्त । ३ देखो 'मुहमेज' ।

मुहम्म–देखो 'मुहिम' ।

मुहम्मद–पु० [अ०] इस्लाम धर्म के प्रवर्तक, मुहम्मद साहब । –वि० सराहनीय, प्रशंसनीय ।

मुहम्मदी–वि० [अ० मुहम्दी] मुहम्मद का, मुहम्मद संबंधी । –पु० १ मुहम्मद साहब का अनुयायी, मुसलमान । २ एक प्रकार का सिक्का । ३ एक प्रकार का उत्तम वस्त्र ।

मुहर (इं)–देखो 'मोहर' ।

मुहरखौ–वि० मन्देशवाहक ।

मुहरत–देखो 'महरत' ।

मुहरम–पु० [अ० मुहर्रम] इस्लामी व अरबी वर्ष का प्रथम मास । –वि० वर्जित, निषिद्ध ।

मुहरमुह–क्रि० वि० [सं० मुहस] बार-बार, पुनः । रह-रह कर ।

मुहराइ (ई)–स्त्री० मुख कांति, ओज । –क्रि० वि० १ आगे । २ देखो 'मुराई' ।

मुहरि–१ देखो 'मोहर' । २ देखो 'मोरी' ।

मुहरिर–पु० [अ० मुहर्रिर] १ वकील का मुंशी । २ लेखक । ३ लिपिक ।

मुहरिरी–स्त्री० १ 'मुहरिर' का पेशा, कार्य । २ मुंशीगिरी ।

मुहरी–देखो 'मोरी' ।

मुहरे–देखो 'मोहरे' ।

मुहरौ–पु० [सं०मधुर] १ विष, गरल, माहुर । २ देखो 'मोरौ' ।

मुहल–देखो 'महल' ।

मुहलत–देखो 'मोहलत' ।

मुहलाअत, मुहलायत–देखो 'महलायत' ।

मुहलौ (ल्लौ)–१ देखो 'महलौ' । २ देखो 'महल' ।

मुहवड (डि)–स्त्री० १ हाथी की सूंड का कवच । २ आगे का भाग, अग्रभाग ।

मुहांणौ, मुहांणौ–पु० १ प्रवेश द्वार । २ अग्रभाग । ३ नदी का मुख । ४ मुख, मुंह । –क्रि० वि० सम्मुख, सामने, आगे ।

मुहांमहि–क्रि० वि० सामने, सम्मुख ।

मुहा–स्त्री० [सं० मुधा] १ झूठ, असत्य, मिथ्या । २ व्यर्थ निरर्थक ।

मुहाजीवी–पु० भिक्षा वृत्ति करके जीने वाला ।

मुहाडि–पु० विचार-विमर्श ।

मुहाळ मुहाल–पु० १ मधु मक्खियों का छाता । २ पशुओं के मुंह का एक रोग । ३ प्रसन्नता, खुशी । ४ देखो 'मुहाळौ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुहाळो–पु० १ हाथी के दांतों पर लगाये जाने वाले पेवंद, चूड़ा। २ दरवाजे के ऊपर का भाग।

मुहावरेदार–वि० जिसमें मुहावरे हों, मुहावरों से संयुक्त।

मुहावरो–पु० [अ० मुहवर] १ विलक्षण व रोचक अर्थ बोध देने वाला शब्द या वाक्य। २ अभ्यास, आदत।

मुहासिर–पु० [अ० मुहासर] घेरा, घेराव, युद्ध का घेरा।

मुहाह–क्रि० वि० मुख पर।

मुहि–१ देखो 'मुख'। २ देखो 'मुहिम'। ३ देखो 'महि'।

मुहियड़ (ड), मुहिड़–वि० १ मुख्य, प्रधान। २ योद्धा, भट, वीर। ३ सामने का, आगे का। –क्रि० वि० सामने, आगे।

मुहिनाळ–देखो 'मुंहनाळ'।

मुहिम, मुहिम्म–पु० [अ० मुहिम] १ युद्ध, समर, संग्राम। २ सेना का प्रयाण, चढ़ाई। ३ महत्वपूर्ण कार्य के लिये प्रस्थान, यात्रा। ४ सेना, फौज। ५ फौज का अग्रभाग। ६ बड़ा व महत्वपूर्ण कार्य। ७ महिमा, प्रशंसा। ८ तपस्या। –क्रि० वि० १ सम्मुख, सामने, आगे। २ आमने-सामने। ३ अगाड़ी, हरावल। –वि० ४ भ्रामक, भ्रम में डालने वाला।

मुहियड़–देखो 'मुहियड़'।

मुहियो–वि० १ प्रधान, प्रमुख, नेता। २ व्यर्थ, निरर्थक। ३ कटा हुआ।

मुहिर–पु० [सं०] कामदेव, मदन। –वि० मूर्ख, मूढ़। –क्रि० वि० आगे, अगाड़ी।

मुहिलो–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिला'।

मुहिवटो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मुही–वि० १ प्राण दाता, जीवन दाता। २ पक्का, दृढ़। ३ देखो 'मुहिम'। ४ देखो 'में'।

मुहीओ–देखो 'मुहियो'।

मुहीम–देखो 'मुहिम'।

मुहुंगो–देखो 'मूंगो'।

मुहुतु–देखो 'महता'।

मुहुर–१ देखो 'मधुर'। २ देखो 'मोहर'।

मुहुरणो (बो)–देखो 'मोरणो' (बो)।

मुहुरत–देखो 'महुरत'।

मुहुरवाई–वि० परोक्षवादी, निंदक।

मुहुरियो–देखो 'मोर'।

मुहुल–देखो 'महल'।

मुहुसाळ–देखो 'मोसाळ'।

मुहूंड–देखो 'मुंहड़'।

मुहूरत–देखो 'महुरत'।

मुहेंगो–देखो 'मूंगो'।

मुहो–पु० सामना, आगा।

मूं–सर्व० [स० अस्मद्] १ मैं। २ मुझे, मुझको। ३ मेरा, मेरी।

मूं'–देखो 'मुख'।

मूं'ओढ़ो–वि० [सं० मृत] मृत, मरा हुआ।

मूंकगिर, मूंकगिरो–देखो 'रिसोमूक'।

मूंकणो (बो)–देखो 'मूकणो' (बो)।

मूंकाणो (बो), मूंकावणो (बो)–देखो 'मूकाणो' (बो)।

मूंको, मूंक्को–देखो 'मुक्को'।

मूंक्को–देखो 'मुक्को'।

मूंग–पु० [सं० मुद्ग] १ द्विदल अनाज विशेष, हरिया। २ इस अनाज का पौधा या फसल।

मूंगथाळ–पु० [सं० मुद्ग+स्थाल] बेसन आदि की जमाई हुई चक्की (मेवाड़)।

मूंगफळी (सो)–स्त्री० १ जमीन पर छितराने वाला एक पौधा जिसकी फली जमीन के अन्दर रह कर पकती है। २ इस पौधे के बीज जिनका खाद्य तेल निकलता है। ३ मूंग नामक पौधे की फली।

मूंगम–पु० १ आदर, सत्कार। २ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

मूंगळ, मूंगल–देखो 'मुगळ'।

मूंगाई (मूंगियाड़ो)–स्त्री० १ बाजार में वस्तुओं के दाम अधिक तेज या ऊंचे होने की अवस्था, महंगापन। २ राज्य कर्मचारियों को दिया जाने वाला एक प्रकार का भत्ता। ३ देखो 'मूंगम'।

मूंगियो, मूंगीयो–वि० १ लाल रंग का, लाल। २ हरा, हरे रंग का। –पु० १ एक प्रकार का वस्त्र। २ मकानों की छत या आंगन बनाने में काम आने वाली एक प्रकार की कंकरी। ३ देखो 'मूंगो'।

मूंगीवाड़ो–देखो 'मूंगाई'।

मूंगु–१ देखो 'मूंग / मूंगो'।

मूंगोड़ी (मूंगोड़ो)–स्त्री० मूंग की दाल की वटिका, बड़ी।

मूंगो–पु० १ प्रवाल, मूंगा। २ रत्न, नगीना। ३ सात प्रकार की उप धातुओं में से एक :– वि० लाल, हरा।

मूंगो, मूंघो–वि० [सं० महा+अर्घ] १ अधिक मूल्य व ऊंचे दामों वाला, महंगा। २ बहुमूल्य, कीमती। ३ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा वाला। ४ अधिक प्यारा, विशेष प्रिय।

मूंचणो (बो)–देखो 'मूंचणो' (बो)।

मूंछवर–वि० बड़ी–बड़ी मूंछोंवाला।

मूंछ, मूंछड़ली, मूंछड़ी–स्त्री० [सं० श्मश्रु] पुरुषों व कुछ जानवरों के मुंह पर नाक के नीचे होने वाले बाल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूंछण, मूंछणियो, मूंछणो–देखो 'मूछण'।

मूंछणो (बो)–क्रि० १ मूर्च्छित होना। २ देखो 'मूछणो' (बो)।

मूंछरेळ, मूंछाळ, मूंछाळ–वि० [सं० श्मश्रु+आलुच] १ मूछों वाला, बड़ी-बड़ी मूछों वाला। २ बल, पौरुष व गौरव वाला। ३ युवा, जवान। ४ देखो 'मूछ'।

मूंछाळी–स्त्री० १ तलवार। २ मूछ वाली स्त्री। ३ देवी, दुर्गा।

मूंछाळो–देखो 'मूंछाळ'।

मूंछियो–पु० काटना क्रिया या भाव।

मूंछीयड़–देखो 'मुरच्छित'।

मूंज–स्त्री० [सं० मुंज] १ सरकंडों की छाल जिसकी बुहारी बनती है तथा जिसे भिगोकर रस्सी बनाई जाती है। २ इस छालकी बनी रस्सी। ३ परमार राजा मुंज। ४ देखो 'मुझ'।

मूंजणो–देखो 'मुंगदणो'।

मूंजि, मूंजी, मूंजीड़ो–वि० कृपण, कंजूस, सूम।

मूंजीपणो–पु० कृपण होने की अवस्था या भाव, कंजूसी।

मूंजेवड़ी, मूंजौवड़ी–स्त्री० मूंज की रस्सी, डोरी।

मूं' जोर–देखो 'मुंहजोर'।

मूं'जोर–पु० बड़े जलपात्रों के मुंह पर लगाने का मूंज का बना ढक्कन जो गाड़ी पर रख कर लाये जाते हैं।

मूंझ–१ देखो 'मुझ'। २ देखो 'मूंज'।

मूंझणो (बो)– देखो 'अमूझणो' (बो)।

मूंझी–देखो 'मूंजी'।

मूंझीपणो–देखो 'मूंजीपणो'।

मूंठ, मूंठड़ी, मूंठि, मूंठी–१ देखो 'मूठ'। २ देखो 'मुट्ठी'।

मूंड–१ देखो 'मूठ'। २ देखो 'मुंड'।

मूंडकटाई, मूंडकटो–स्त्री० १ वीरतापूर्वक लड़ते हुए शिर कटाने की क्रिया या भाव। २ बलिदान होने की क्रिया या भाव। ३ मस्तक कटाने की क्रिया या भाव।

मूंडकी–स्त्री० [सं० मुण्ड] कटा हुआ शिर।

मूंडको, मूंडड़ो–पु० [सं० मुण्डक] १ मस्तक, शिर। २ व्यक्ति आदमी। ३ सीमांत पर गड़ा पत्थर।

मूंडण–देखो 'मुंडण'।

मूंडणो (बो)–क्रि० [सं० मुण्डनम्] १ उस्तरे आदि से शिर के बाल साफ करना। मुंडन संस्कार करना। २ भेड़ के बाल काटना। ३ दीक्षित करना, अनुयायी बनाना। ४ ठगना, धोखे से धन लेना, ऐंठना। ५ मृतक के पीछे उसके संबंधियों के बाल काटना।

मूंडत–देखो 'मुंडित'।

मूंडतहाथ–पु० १ हाथ का एक नाप विशेष। २ इस नाप की वस्तु।

मूंडवाळ–पु० नाई, नापित।

मूंडामूंड, मूंडामूंडी–क्रि० वि० सम्मुख, प्रत्यक्ष, रूबरू।

मूंडाणो (बो)–क्रि० १ मुंडन करवाना, बाल कटवाना। २ भेड़ के बाल कटवाना। ३ चेला या शिष्य बनवाना। ४ ठगवाना, धोखा दिराना। ५ मृतक के पीछे मद्र (मुंडन) करवाना।

मूंडापाती–स्त्री० एक प्रकार का पौधा, द्रोण पुष्पी।

मूंडाळ–देखो 'मूंडवाळ'।

मूंडी–देखो 'मूंड'/'मुंड'/'मूंडकी'।

मूंडेमूंड, मूंडैमूंड–देखो 'मूंडामूंड'।

मूंडो, मूंडो–पु० [सं०मुंड] १ मुंह, मुख। २ चेहरा, शक्ल। ३ पक्षी की चोंच। ४ थैली आदि का खुला भाग। ५ द्वार, दरवाजा। ६ छेद, विवर। ७ अग्रभाग, शिरा, नोक। ८ देखो 'मोडो'।

मूंढ–१ देखो 'मूढ'। २ देखो 'मूंड'।

मूंढो–देखो 'मूंडो'।

मूंण, मूंणि, (मूंणियो)–स्त्री० १ मिट्टी का बना बड़ा जल पात्र विशेष। २ देखो 'मोण'।

मूंत–देखो 'मूत'।

मूंतणियो, मूंतणो–देखो 'मूतणो'।

मूंतणो (बो)–देखो 'मूतणो' (बो)।

मूंता–देखो 'मछता'।

मूंदड़ी, (मूंदड़ी)–स्त्री० [सं० मुद्रिका] १ अंगुठी, मुद्रिका। २ पितृ कर्म के समय अंगुली में डालने की कुश की अंगुठी।

मूंदणो (बो)–क्रि० [सं० मुद्रण] १ बंद करना, मीचना, ढांपना। २ छेद या विवर बंद करना। ३ ढकना, आच्छादित करना। ४ अंत करना, समाप्त करना।

मूंदरड़ी, मूंदरी, मूंदली, मूंदड़ी–देखो 'मूंदड़ी'।

मूंद्रप्रभावि–पु० मुद्राप्रभाव।

मूंध–देखो मुग्ध'।

मूंधणो (बो)–देखो 'मूंदणो' (बो)।

मूंधारो–देखो 'मुंधारो'।

मूंधोकांटो–पु० ऊंधा कांटा नामक पौधा।

मूंन–देखो 'मून'।

मूंनाळ–देखो 'मुंहनाळ'।

मूंनी–देखो 'मूर्ति'।

मूंफाड़, मूंफाड़ो (ड़ो)–स्त्री० मुंह खोलते समय दिखने वाला अवकाश, आयतन।

मूं'बती, मूं'बत्ती–देखो 'मुंहपत्ती'/'मोमबत्ती'।

मूंम–देखो 'मोम'।

मूंमारकी, मूंमारखी–देखो 'मुबारक'।

मूंमीठी, मूं'मीठी–देखो 'मुंहमीठी'। (स्त्री० मुहमीठी)

मूंवो–वि० १ मृत, मरा हुआ। २ देखो 'मूंडो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूंसणो (बो)–देखो 'मूसणो' (बो)।
मूंसल–देखो 'मूसल'।
मूंमळी (बो)–देखो 'मूमली'।
मूंसारो–पु० चोर।
मूंसो–पु० [अ० मूसा] १ यहुदियों के एक पैगम्बर। २ चूहा।
मूंह, मूंहई–देखो 'मुख'।
मूंहगो–देखो 'मूं' गो'।
मूंहडउ, मूंहडो–देखो 'मूंडो'।
मूंहनाळ–देखो 'मुंहनाळ'।
मूंहो–१ देखो 'मुख'। २ देखो 'मुहो'।
मू–देखो 'मूं' / 'मु'।
मूअणो (बो)–क्रि० [सं० मृत] १ प्राणान्त होना, मरना। २ अत्यधिक कष्ट में पड़ना।
मूइमाटी, मुईमाटी–स्त्री० १ मृत शरीर, शव, लाश। २ मृत जीव का मांस।
मूउ–देखो 'मूंवो'।
मूओड़ो–वि० मृत, मरा हुआ।
मुओ–देखो 'मूंवो'।
मूक–वि० [सं०] १ वाणीविहीन, गूंगा। २ मौन, चुप, शान्त। ३ अवाक, स्तंभित। ४ विवश, लाचार। ५ दीन, अभागा। ६ पागल, मूर्ख। ७ मौनी। –पु० [सं० मूकः] १ दानव, दैत्य, राक्षस। २ गूंगा या मूक व्यक्ति, प्राणी। ३ तक्षक वंशीय एक नाग। ४ मछली।
मूकणो (बो)–क्रि० [सं०मुक्त] १ परित्याग करना, त्यागना, तज देना, छोड़ देना। २ फेंकना, चलाना। ३ घटाना, मिटाना लोपना, छोड़ना। ४ बंधन मुक्त करना, आजाद करना, मुक्त करना। ५ दूर करना, अलग करना, हटाना। ६ तय करना, निश्चित करना, निपटाना। ७ भेजना, पठाना। ८ प्रदान करना, देना। ९ झोंकना, डालना, पटकना। १० तोड़ना। ११ रखना, टिकाना, धरना। १२ निकालना, छोड़ना। १३ अंकुरित करना।
मूकता–स्त्री० 'मूक' होने की अवस्था या भाव, गूंगापन।
मूकपाहाड़–देखो 'रिसीमूक'।
मूकरड़–अव्य० एक मुश्त।
मूकाणो (बो), मूकावणो (बो)–क्रि० १ परित्याग करवाना, छुड़वाना। २ फिकवाना, चलवाना। ३ घटवाना, छुड़वाना, लोपवाना। ४ बंधन मुक्त कराना। ५ दूर करवाना। ६ तय कराना; सलटवाना, निपटवाना। ७ भिजवाना, पठवाना। ८ प्रदान कराना, दिलवाना। ९ झोंकवाना, डलवाना, छुड़वाना। १० तुड़वाना ११ रखवाना, धरवाना, टिकवाना। १२ अंकुरित कराना, निकलवाना।
मूंकि, मूकीं, मूकी, मूक्की–देखो 'मुक्की'।
मूको, मूक्को–देखो 'मुक्को'।
मूक्ता–देखो 'मुक्ता'।
मूख–देखो 'मुख'।
मूखक–देखो 'मूषक'।
मूखमल (लू)–देखो 'मखमल'।
मूखो–देखो 'मुख'।
मूगता–देखो 'मुक्ता'। — फळ, हळ='मुक्ताफळ'।
मूगनउ–पु० एक प्रकार का वस्त्र।
मूगळ–देखो 'मुगळ'।
मूगळी–देखो 'मुगळा'।
मूगोओ, मूगोयो–देखो 'मूंगियो'।
मूगोड़ो–देखो 'मूंगोड़ो'।
मूघो–देखो 'मूं' गो'।
मूचो–देखो 'मूछो'।
मूछ, मूछड़ी–देखो 'मूंछ'।
मूछण–स्त्री० १ काटने या छीलने की क्रिया या भाव। २ भोजनोपरांत मुख शुद्धि। ३ मुख शुद्धि वाला पदार्थ। ४ शराब व अफीम के साथ खाने का पदार्थ।
मूछणो (बो)–क्रि० १ लकड़ी आदि को काटना, छीलना। २ काटना, कटाई करना।
मूछरेल, मूछरैल–देखो 'मूंछाळ'।
मूछाणो (बो)–क्रि० १ लकड़ी आदि को कटवाना, छिलवाना। २ कटवाना, कटाई करवाना।
मूछाळ–देखो 'मूंछाळ'।
मूछाळी–देखो 'मूंछाळी'।
मूछाळो–देखो 'मूंछाळ'।
मूछियो, मूछो–पु० १ लकड़ी के शिरे की कारीगरी से की गई कटाई। २ तराश, कटाई। ३ काटना क्रिया।
मूज–देखो 'मूंज'।
मूजणो (बो)–देखो 'अमूझणो' (बो)।
मूजाणो (बो)–देखो 'अमूझाणो' (बो)।
मूजिब–देखो 'मुजब'।
मूजो–देखो 'मूंजो'।
मूझ–देखो 'मुझ'।
मूझणो (बो)–देखो 'अमूझणो' (बो)।
मूझाणो (बो)–देखो 'अमूझाणो' (बो)।
मूझे, मूझै–देखो 'मुझे'
मूटी–देखो 'मुट्ठी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूठ–स्त्री० [सं० मुष्टि] १ किसी औजार आदि का दस्ता, बैंट या मुट्ठी में पकड़ने का भाग। २ मुट्ठी। ३ मुट्ठीभर पदार्थ। ४ एक तांत्रिक क्रिया विशेष। ५ चोरी या लूट का माल।

मूठड़ी–स्त्री० [सं० मुष्टि] १ मुट्ठी के आकार की बाटी, रोटी। २ मुट्ठी की हल्की चोट। ३ देखो 'मुट्ठी'।

मूठदार–पु० १ मूठ या दस्ता लगा कोई उपकरण। २ पगड़ी बांधने का एक ढंग।

मूठरंधी–पु० बढ़ई का एक औजार विशेष।

मूठाणी (बी), **मूठावणी (बी)**–देखो 'मुठाणी' (बी)।

मूठामो–पु० तलवार।

मूठि–१ देखो 'मूठ'। २ देखो 'मुट्ठी'।

मूठियो–पु० १ स्त्रियों के हाथों की चूड़ियों का समूह। २ हाथ में समाने लायक घास, चारे आदि की मात्रा। ३ उपकरण का दस्ता। ४ पशु की टांग के नीचे का भाग। ५ मुट्ठी के आकार का कोई टुकड़ा, खंड।

मूठी–देखो 'मुट्ठी'।

मूठीक–वि० एक मुट्ठी के बराबर, मुट्ठीभर, मुट्ठी में समाने लायक।

मूड–१ देखो 'मूंड'। २ देखो 'मुंड'।

मूडणो (बो)–देखो 'मूंडणो' (बो)।

मूडधर–पु० रावण।

मूडाणी (बो), **मूडावणी (बो)**–देखो 'मूंडाणो' (बो)।

मूडोकट–पु० १ घोड़े की एक जाति। २ इस जाति का घोड़ा।

मूडो–१ देखो 'मुड्डो'। २ देखो 'मूंडो'। ३ देखो 'मोडो'।

मूढ–वि० [सं०] १ जड़ बुद्धि, मंद बुद्धि, मूर्ख। २ दुष्ट, कुबुद्धि। –स्त्री० १ योग में चित्त की एक वृत्ति। २ देखो 'मूंड'। ३ देखो 'मुंड'।

मूढगरभ–पु० [सं० मूढ-गर्भ] विकृत गर्भ।

मूढता–स्त्री० [सं०] १ मूढ होने की अवस्था या भाव, मूर्खता। २ बुद्धि का अभाव। ३ नासमझी, बेवकूफी। ४ असभ्यता। ५ अज्ञानता। ६ गंवारूपन।

मूढी–देखो 'मूंडी'।

मूण–देखो 'मूंण'।

मूणपठ्ठी–वि० मूण के आकार का, बड़ा।

मूणियड़–देखो 'मणियड़'।

मूत–पु० [सं० मूत्रम्] १ पेशाब, मूत्र। २ पैदाईश, वंशज।

मूतणो–स्त्री० मूत्रेन्द्रिय।

मूतणियो, मूतणो–पु० मूत्रेन्द्रिय (पशुओं की)।

मूतणो (बो)–क्रि० पेशाब करना, मूतना।

मूताणो (बो)–क्रि० पेशाब कराना, मूतने में सहायता देना, पेशाब करने की प्रेरणा देना।

मूतायो–वि० (स्त्री० मूताई, मूतायी) जिसे पेशाब की शंका हो, मूतने का इच्छुक।

मूती–स्त्री० [सं० मूत्र] पेशाब, मूत्र।

मूत्र–पु० [सं०] पेशाब, मूत। —कच्छ, कृच्छ्र–पु० पेशाब संबंधी एक रोग।

मूत्रग्रह–पु० [सं०] घोड़ों का एक रोग।

मूत्रदसक–पु० दश प्राणियों के मूत्र का मिश्रण।

मूत्रविज्ञान–पु० [सं० मूत्र विज्ञान] आयुर्वेदीय मूत्र परीक्षण विद्या।

मूत्राघात–पु० [सं०] पेशाब संबंधी एक रोग।

मूत्राशय–पु० [सं० मूत्राशय] शरीर का वह भाग जहां मूत्र संचित होता है।

मूंआ–देखो 'महता'।

मूंब–पु० कुल्हाड़ी आदि का पृष्ठ भाग।

मूंबड़ी–देखो 'मूंदड़ी'।

मूंबड़ो–देखो 'मूंदड़ो'

मूंबणो (बो)–देखो 'मूंदणो' (बो)।

मूंबति,मूंबती–१ देखो 'मुदित'। २ देखो 'मदद'। ३ देखो 'मुहूर्त'।

मूंबरा–देखो 'मुद्रा'।

मूंबो–देखो 'मुंदो'।

मून–स्त्री० [सं० मौन] १ चुप या मौन रहने की क्रिया या भाव। २ मौनव्रत, संकल्प। ३ चुप्पी, खामोशी, शान्ति। –वि० मौनी, मुनि।

मूनव्रत–देखो 'मौनव्रत'।

मूनाळ–देखो 'मुंहनाळ'।

मूनि, मूनी–१ देखो 'मुनि'। २ देखो 'मौनी'।

मूनेस–देखो 'मुनोभ'।

मूफट–देखो 'मुंहफट'।

मूफाड़–देखो 'मूंफाड़'।

मूम–देखो 'मोम'।

मूमळ–पु० एक लोग गीत।

मूमारखो–देखो 'मुवारकी'।

मूमाबड़ी–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मूर–१ देखो 'मूळ'। २ देखो 'मुर'।

मूरख–वि० [सं० मूर्ख] १ जिसमें बुद्धि का अभाव हो, मंद बुद्धि, मूढ़, बेवकूफ। २ बुद्धिहीन, विक्षिप्त। ३ असभ्य, गंवार। –पु० १ मूर्ख व्यक्ति। २ वन मूंग, उर्द। —वट –पु० मूरख विद्यार्थी।

मूरखता, मूरखाइ (ई)–पु० [सं० मूर्खता] १ मूर्ख होने की अवस्था या भाव। २ अज्ञानता, मूढ़ता, नादानी। ३ गंवारूपन। असभ्यता। ४ नासमझी का कार्य।

मूरखु–देखो 'मूरख'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूरखो–देखो 'मूरख'।

मूरच्छना– देखो 'मूरछना'

मूरच्छा– देखो 'मुरछा'

मूरछत–देखो 'मुरछित'।

मूरछन, मूरछना, मूरछा–पु० [सं० मूर्च्छना] १ मूर्च्छित होने की अवस्था या भाव। २ मूर्च्छा, बेहोशी। ३ एक मंत्र विशेष। ४ पारे का तीसरा संस्कार। ५ संगीत में आरोह-अवरोह। ६ काम का एक बाण।

मूरछागत (गति)–देखो 'मुरछागत'

मूरछाणी (बो)–देखो 'मुरछाणी' (बो)।

मूरछित–देखो 'मुरछित'

मूरट–देखो 'मरट'

मूरत–१ देखो 'मूरति'। २ देखो 'महुरत'।

मूरतवंत, मूरतवत–वि० [सं० मूर्तिमत] १ शरीरधारी, देहधारी, सशरीर। २ आकार-प्रकार या रूप वाला, साकार। ३. मूर्ति या प्रतिमा की तरह स्थिर, अचल। ४. प्रत्यक्ष, साक्षात्। ५ प्रतिमा के रूप में, प्रतिमा की तरह बना।

मूरति–स्त्री० [सं० मूर्ति] १ कोई देव प्रतिमा मूर्ति। २ पत्थर या धातु की पुतली, प्रतिमा। ३ चित्र, तस्वीर। ४ शक्ल, सूरत, आकृति। ५ स्वरूप, रूप। ६ शरीर, देह। ७ प्रतीक। ८ देवता की तरह माना जाने वाला प्राणी, साधू। ९ प्राचेतस दक्ष की एक कन्या। १० स्वारोचिष मन्वन्तर का एक प्रजापति। ११ ब्रह्म सावर्णि मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक। १२ देव प्रतिमा युक्त आभूषण। –कार–पु० मूर्तियें बनाने वाला शिल्पी। चित्रकार, चितेरा। –पु० पूजक–किसी देवता का पुजारी। सगुण भक्तिधारा का अनुगामी। —पूजा–स्त्री० सगुण भक्ति, देव पूजन।

मूरतिमत–पु० [सं० मूर्ति-मत] १ मूर्तरय राजा का एक नामान्तर। २ देखो 'मूरतवंत'

मूरतिमान–वि० [सं० मूर्ति-मान्] १ शरीरधारी, देहधारी, साकार। २ प्रत्यक्ष, साक्षात्।

मूरतिवंत (उ) मूरतिवंती–देखो 'मूरतवंत'।

मूरतिविद्या, मूरतिविद्यया–स्त्री० [सं०मूर्ति विद्या] १ प्रतिमा बनाने की विद्या, शिल्पी कर्म। २ चित्रकारी का कार्य।

मूरती–देखो 'मूरति'

मूरत्त, मूरत्ति–१ देखो 'मूरति'। २ देखो 'महुरत'।

मूरद्ध–पु० [सं० मूर्धन] शिर, मस्तक।

मूरद्धज–वि० [सं० मूर्धज] शिर से उत्पन्न होने वाला। –पु० केश, बाल।

मूरद्धज्योति (ती)–स्त्री० योग में ब्रह्मरंध्र।

मूरद्धन्य मूरधन्य–वि० [सं० मूर्द्धन्य, मूर्धन्य] १ मूर्द्धा से संबंध रखने वाला। २ शिर या मस्तक में स्थित। ३ चोटी का। ४ मुख्य, सर्वोत्तम।

मूरद्धन्यवरण–पु० [सं० मूर्धन्य-वर्ण] मूर्द्धा से उच्चारित होने वाले वर्ण।

मूरद्धा–स्त्री० [सं० मूर्धा] १ मस्तक, शिर। २ मुंह के अन्दर तालु व जिह्वा का अग्रभाग जो कुछ वर्णों के उच्चारण के समय परस्पर टकराता रहता है।

मूरद्धाभिसेक–पु० [सं० मूर्धाभिषेक] शिर पर किया जाने वाला अभिषेक, जल सिंचन।

मूरधन–पु० [सं० मूर्धन] १ शिर. मस्तक। २ भृकुटि, भौं। ३ शिखर, चोटी। ४ प्रधान, मुख्य। ५ नेता, नायक, अगुणी। ६. अगला, अग्र। ७. एक देव विशेष।

मूरधा–देखो 'मूरद्धा'।

मूरधा–देखो 'मुरधा'।

मूरिख–देखो 'मूरख'।

मू'री–देखो 'मो'री'।

मू'री–देखो 'मो'री'।

मूळ,मूल–पु० [सं० मूल] १ वृक्ष, पौधा, लता आदि की जड़, मूल। २ पेड़ का तना। ३ बीज। ४ जमीकंद, कंद मूल। ५ किसी वस्तु के नीचे का भाग। ६ पिप्पल की जड़। ७ प्रारंभ, शुरूआत, आदि। ८ उत्पत्ति, उद्भव। ९ कारण, प्रयोजन। १० नींव, बुनियाद, आधार। ११ आदि या बीज मंत्र। १२ सत्ताईस नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र। १३ असल पूंजी, शुद्ध धन। १४ मुद्रा विशेष। १५ दलाल। १६ तल। १७ छोर, सिरा। १८ वर्ग-मूल। १९ चन्दन। २० परम्परानुगत सेवक। २१ पड़ोस, सामीप्य। २२ असल कृति या लेख, Original। २३ रात में जलाशय के निकट शिकार में बैठने की क्रिया। २४ इस प्रकार बैठने का स्थान। २५ पूर्व दिशा। –वि० १ मुख्य, खास, प्रधान। २ असल। ३ मौलिक, निजी, खुद का। ४ पहला, प्रथम। ५ किंचित, थोड़ा। ६ दृढ़, मजबूत। —क्रि० वि० १ कतई, बिल्कुल। २. जड़ा मूल से,जड़ से।

मूस–देखो 'मूल्य'।

मूळकरम–पु० [सं० मूल-कर्मन्] १ औषधियों की जड़ों द्वारा किया जाने वाला प्रयोग। २ जादू, टोना, मूठ। ३ प्रधान कर्म।

मूळकवळ–पु० [सं०मूल-कमल] नाभि कमल (हठयोग)।

मूळकूण–पु० पूर्व दिशा।

मूळको, मूलको–पु० १ जड़ सहित उखाड़ा हुआ छोटा वृक्ष। २ देखो मुळगो'।

मूळगउं, मूलगउ, मूलगु मूळगू, मूळगो, मूलगी–देखो 'मुळगो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूलचक्र–पु० एक प्रकार का हाथी।

मूलछेद–पु० [सं० मूल-च्छेद] जड़ मूल से काटना क्रिया, समूल नाश।

मूलजग–पु० जगत का मूल,ब्रह्मा, विष्णु, महेश व शक्ति।

मूलजड़ी–स्त्री० [स०मूल-जड़ी] जीवन का मुख्य आधार।

मूलजांघल–पु० एक प्राचीन देश।

मूलजात–पु० आरंभ की जाति, वंश।

मूलतानि–देखो 'मुलतान'।

मूलत्रिकोण–पु० [सं०मूल-त्रिकोण] सूर्य आदि ग्रहों की कुछ विशेष स्थिति।

मूलथांण–देखो 'मुलतान'।

मूलदेवी, मूलवेवी–स्त्री० एक लिपि विशेष।

मूलद्रव–पु० [सं०मूल-द्रव्य] ऋण की शुद्ध रकम। असल पूंजी। मूलधन।

मूलद्वार–पु० [सं० मूल-द्वार] १ शरीर का गुदा द्वार। २ योनि, भग। ३ मुख्य दरवाजा, सिंहद्वार।

मूलधन–पु० [सं०मूल-धन] असल पूंजी, मूल धन।

मूलपुरुष, मूलपुरुस–पु० [सं० मूल-पुरुष] १ सृष्टि का आदि पुरुष। २ वंश का प्रथम पुरुष।

मूलप्रकृति–स्त्री० [सं० मूल-प्रकृति] १. सृष्टि की मूल प्राकृतिक सत्ता, कुदरत। २ मूल भूत गुण या प्रकृति। तासीर।

मूलबंध–पु० [सं०मूलबंध] १. हठयोग में एक क्रिया। २. एक प्रकार का अंगुली-न्यास।

मूलबटणो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मूलस्थान–पु० [सं० मूलस्थान] १ ईश्वर, परमात्मा। २ उत्पत्ति या उद्भव स्थान, आदि स्थान। ३ पूर्वजों का स्थान, जन्म भूमि। ४ प्रधान या मुख्य स्थान।

मूला–स्त्री० [स० मूला] १ पृथ्वी, धरती। २ सतावर। ३ पूना के पास बहने वाली एक नदी। ४ मूल नक्षत्र।

मूलागी–देखो 'मुळगो'।

मूलाधार–पु० [सं० मूलाधार] हठयोग में मानव-शरीर के छः चक्रों में से एक।

मूळाशी–वि० [सं०मूल-आश्रित] कंद-मूल के आहार पर आश्रित रहने वाला।

मूलिका, मूलिका–देखो 'मूळी'।

मूलिकाप्रयोग–पु० बहत्तर कलाओं में से एक।

मूलिम–क्रि० वि० बिल्कुल, कतई।

मूळी, मूली–स्त्री० [सं० मूलक] १ कुछ मोटी व लंबी जड़ तथा बड़े-बड़े पत्तों वाली एक सब्जी विशेष, मूली। २ जड़ी, बूटी। ३ कंद-मूल, आदि। ४ एक प्रकार का स्थावर विष। ५, छिपकली। ६ देखो 'मूल'।

मूलू–देखो 'मूळा'।

मूळो, मूलो–देखो 'मूळी'।

मूल्य–पु० [सं०] १ मुद्रा के रूप में या वस्तु के रूप में किसी चीज का भाव कीमत, बिक्री दर। २ महत्व, विशेषता। —वांन–वि० कीमती। महत्वपूर्ण।

मूवो–वि० [सं० मृत] मरा हुआ, मृत।

मूस–स्त्री० [सं० मूसिका] स्वर्णकारों का एक उपकरण।

मूसउ, मूसक–पु० [सं० मूषक] १ चूहा। २. चोर।

मूसककरणी–स्त्री० [सं०मूषककर्णी] एक लता विशेष।

मूसकवाहण (न)–पु० [सं० मूषक-वाहनम] गणेश, गजानन।

मूसकी (को)–पु० स्वर्ण पात्र।

मूसणो (बो)–क्रि० [सं० मूषण] १ चोरी करना, चुराना। लूटना, खसोटना। ३ ठगना। ४ अपहरण करना, उड़ा लेजाना। ५ मोहित करना लुब्ध करना। ६ मसोसना, दबोचना। ७ पकड़ना। ८ झोंकना, झपटना। ९ ढकना, लपेटना, छिपाना। १० ग्रसना।

मूसळ मूसल–पु० [सं० मुसल] १ ऊखली में अनाज आदि कूटने का मोटे लकड़े का उपकरण। २ बलराम का शस्त्र। ३ गदा का एक भेद। ४ स्वर्णकारों का एक उपकरण। ५ वार व नक्षत्रों संबंधी एक योग। –वि० मूर्ख व बेवकूफ।

मूसलदंती–वि० बड़े-बड़े दांतों वाला।

मूसळधार (धारा)–स्त्री० मोटी-मोटी छींटों की तेज वर्षा।

मूसळमांण (न)–देखो मुसलमांन'।

मूसलाधार–क्रि०वि० मूसल के समान मोटी धारा के रूप में।

मूसलायुद्ध, मूसलायुद्ध, मूसळायुध, मूसलायुध–पु० बलराम का आयुध।

मूसळियो–पु० १ दायें सफेद पैर वाला घोड़ा। २ देखो 'मूसण'।

मूसळी (ळी)–स्त्री० [सं० मुशली] १ एक प्रकार की जड़ीय औषधि। २ बलराम। ३ घोड़ों का एक रोग। ४ मूसल वाला।

मूसळो, मूसल्यो–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा। २ देखो 'मूसल'।

मूसाई–स्त्री० मादा चूहा, चुहिया।

मूसाळ–देखो 'मोसाळ'।

मूसावाहण–पु० गणेश, गजानन।

मूसिक–देखो 'मूसक'।

मूसिकांक–पु० [सं० मूषिकांक] गणेश का एक नामान्तर।

मूसिल्ल–देखो 'मूसल'।

मूसिल्लमांण (न)–देखो 'मुसलमांन'।

मूसो–पु० [सं० मूषक] १ चूहा। २ चोर। ३ ठग। ४ सिरस का पेड़। ५ अन्तः करण, मन। ६ एक देश का नाम। ७ स्वर्णकारों का एक छोटा पात्र। ८ यहूदियों के पैगम्बर। ९ देखो 'मोसो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूह, मूहड़–देखो 'मुख'।
मूहड़ी–देखो 'मूंडी'।
मूहमि–सर्व० मुझको, मुझे।
मूहमेज–देखो 'मुहमेव'।
मूहमेळ–देखो 'मुहमेळ'।
मूहरत्त–देखो 'महूरत'।
मूहळ–१ देखो 'मूसळ'। २ देखो 'महळ'।
मूहूरत, मूहूरत्त–देखो 'महूरत'।
में, मेंइ–अव्य० [सं० मध्य] १ अन्दर, भीतर। २ ऊपर, पर। ३ किसी क्षेत्र या परिधि के भीतर। ४ किसी अवधि के दरम्यान। ५ किसी के साथ, किसी में संलग्न। ६ कइयों में से। ७ मध्य या बीच। ८ का, के, को। ९ से। १० देखो 'मैं'।
मेंगणी–देखो 'मींगणी'।
मेंगळ–देखो 'मदकळ'।
मेंगाई–देखो 'मूंगाई'।
मेंढक, मेंढको–देखो 'मींडको'।
मेंढो–देखो 'मींढो'।
मेंणा–देखो 'मीणा'।
मेंणावती–स्त्री० राजा गोपीचंद का माता।
मेंदान–देखो 'मैदान'।
मेंदी–देखो 'मैंदी'।
मेंमत, मेंमत–देखो 'मैंमत'।
मेंमद–देखो 'मैंमद'।
मेंवासियो–देखो 'मेवासी'।
मेंहदी–देखो 'मैंदी'।
मे,मेंं–देखो 'मेह'।
मेंमाई–देखो 'मेहाई'।
मेंइण, मेंइणी–देखो 'मेदिनी'।
मेंउड़ो, मेंऊड़ो–देखो 'मेह'।
मेक–वि० [सं० एक] अकेला, एक मात्र। –पु० १ एक की संख्या, एक। [सं० मेकः] २ बकरा। ३ देखो 'मेख'।
मेकदसण, मेकदंत–पु० गणेश, गजानन।
मेकमो–देखो 'महकमो'।
मेकळ–पु० विंध्य पर्वत का एक नामान्तर।
मेकळकन्यका, मेकळकन्या, मेकळसुता, मेकळाद्रिजा–स्त्री० नर्बदा नदी का एक नामान्तर।
मेकवीस–स्त्री० इक्कीस की संख्या
मेकि, मेकी–देखो 'मेक'।
मेख–स्त्री० [फा०] १ काठ या धातु की कील। २ लोहे या लकड़ी की खूंटी। ३ स्त्री या पुरुष के दांत में जड़ी सोने की कील, चूंप। ४ पलक झपकने-खुलने की क्रिया, निमेष। ५ संवेह, असमंजस। ६ मेष।
मेखचो–पु० हथौड़ा।
मेखमी–स्त्री० स्वर्णकारों का एक उपकरण।
मेखळ–पु० १ हवन, कुंड। २ देखो 'मेखळा'।
मेखलगम–देखो 'मेसलग्न'।
मेखळा–स्त्री० १ करधनी नामक आभूषण। २ कमर का कटि सूत्र। ३ कमरबंद; इजारबंद। ४ चारों ओर लपटी रहने वाली वस्तु। ५ घेरा, वृत्त। ६ पहाड़ की ढलान। ७ हवन कुंड की पाज। ८ पर्वत का मध्य भाग। ९ कमर, कूल्हा। १० तलवार का परतला। ११ तलवार की मूठ के बंधी डोरी। १२ घोड़े का जेरबंध। १३ घोड़े की तोंद पर होने वाली भंवरी। १४ नर्मदा नदी का एक नाम। १५ देखो 'मेखळो'। १६ एक प्रकार की रस्सी जो संन्यासियों के कमर के चारों ओर बंधी रहती है।
मेखलिक–पु० एक वर्ग विशेष।
मेखळियो–पु० पहनने का कुर्ता।
मेखळी–स्त्री० १ योगियों के पहनने का चोगा। २ बड़ा झोला, थैला।
मेखळी (ल्यो)–देखो 'मेखळियो'।
मेखसंक्रांति, मेखसंक्रांयत–स्त्री० [सं० मेष-संक्रांति] मेष राशि में पड़ने वाली संक्रांति।
मेग–देखो 'मेघ'।
मेगळ (ल)–देखो 'मदकल'।
मेगवाळ–पु० एक अनुसूचित जाति। इस जाति का व्यक्ति।
मेघ–पु० [सं०] १ बादल, घन। २ वर्षा, बारिस। ३ रावण का पुत्र मेघनाद, इन्द्रजीत। ४ मेघ वर्ण, श्वेत-कृष्ण। ५ मेघ के समान। ६ छप्पय छंद का एक भेद। ७ तारकासुर के पक्ष का एक असुर। ८ स्वायंभू मनु का एक पुत्र। ९ एक प्राचीन राजवंश। –वि० मस्त, मत्त।
मेघअरि–पु० [सं०] पवन, हवा।
मेघईस–पु० [स०] इन्द्र।
मेघकरण–स्त्री० [सं०मेघकर्ण] स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।
मेघकाळ–पु० [सं० मेघकाल] वर्षा ऋतु।
मेघजळ–पु० [सं० मेघ-जलम्] वर्षा का पानी।
मेघजाति–पु० [सं०] एक राजा।
मेघडंबर, मेघडमर–देखो 'मेघाडंबर'।
मेघदुंदुभी–पु० [सं०] एक राक्षस।
मेघदेहा–वि० [सं० मेघदेहिन्] बादलों के रंग जैसे शरीर वाला।
मेघनाथ–पु० [सं०] १ इन्द्र। २ वरुण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेघनांद, मेघनाद–पु० [सं० मेघनाद] १ मेघों की गर्जना, घन गर्जना। २ वरुण। ३ रावण का ज्येष्ठ पुत्र, इन्द्रजीत। ४ घटोत्कच के एक पुत्र का नाम। ५ स्कन्द का एक सैनिक। ६ पलाश।

मेघनादांनळ मेघनादांतुळ–पु० [सं० मेघनादानुल] मयूर, मोर।

मेघनादि–देखो 'मेघनाद'।

मेघनाथ–पु० १ नागरमोथा, मुसता। २ देखो 'मेघनाथ'।

मेघपथ–देखो 'मेघपथ'।

मेघपति–पु० [सं०] इन्द्र।

मेघपथ–पु० [सं०] आकाश, व्योम।

मेघपुसप (पुस्प, पुहप)–पु० [सं० मेघ-पुष्प] १ इन्द्र का घोड़ा। २ श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा। ३ जल, पानी। ४ वर्षा के ओले, हिमकण। ५ नदी का जल। ६ बकरे का सींग। ७ मोथा। ८ कुसुम, फूल।

मेघमंडाण–पु० आकाश में छाये बादल। बादलों की घटा।

मेघमलार (मल्लार, मल्हार)–पु० १ वर्षा ऋतु की एक राग। २ एक प्रकार का बड़ा पक्षी।

मेघमाळ–पु० [सं० मेघमाल] १ रंभा का एक पुत्र। २ प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। ३ देखो 'मेघमाळा'।

मेघमाळा–स्त्री० [सं० मेघमाला] १ बादलों की घटा, पंक्ति, श्रेणी। २ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।

मेघमाळी (ळी)–पु० [सं० मेघमालिन्] १ खर राक्षस का एक अमात्य। २ स्कंद का एक पार्षद।

मेघराज–पु० इन्द्र।

मेघली–देखो 'मेघ'।

मेघवत–पु० [सं०] एक दानव विशेष।

मेघवनी–देखो मेघवरणी'।

मेघवरण, मेघवरणी–पु० [सं० मेघवर्ण] १ वरुण। २ घटोत्कच के पुत्र का नामान्तर। ३ एक यक्ष। ४ बादली रंग का वस्त्र। ५ बादली रंग की कोई वस्तु।

मेघवाळ–देखो 'मेघवाळ'।

मेघवाह (वाहण, वाहन)–पु० [सं० मेघवाहन] १ इन्द्र। २ वरुण। ३ जरासंध का अनुयायी एक नृप। ४ एक दैत्य विशेष।

मेघविज्जुरणी–स्त्री० एक वर्ण वृत्त विशेष।

मेघवेग–पु० [सं०] कौरव पक्ष का एक वीर।

मेघवन्न–देखो 'मेघवरण'।

मेघसंधि–पु० [सं०] जरासंध का एक पौत्र।

मेघसाद–पु० [सं० मेघ-शब्द] घन गर्जन, बादलों की आवाज।

मेघसार–पु० [सं०] चीनिया कपूर, घन सार।

मेघस्वना–स्त्री० [सं०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

मेघस्वाति–पु० [सं०] एक राजा।

मेघहंतरी–पु० [सं० मेघहन्तृ] सुमेघस देवों में से एक।

मेघहास–पु० [सं०] राहु का एक पुत्र।

मेघांण–देखो 'मेघ'।

मेघा–पु०१ मघा नक्षत्र। २ मेघ। —**जळ**–पु० वर्षा का पानी। —**डब, डंबर, डबरि, डंमर**–पु० मेघ गर्जना, घन गर्जना। घन समूह, बादल समूह। बड़ा सामियाना, तंबू। हाथी की अंबाड़ी। हौदा। एक प्रकार का वस्त्र। एक प्रकार का छत्र।

मेघावलि–स्त्री० १ एक प्रकार का वस्त्र। २ मेघ माला, मेघ पंक्ति।

मेघासुर–पु० [सं०] ४९ क्षेत्रपालों में से एक।

मेघास्त्र–पु० [स०] एक प्रकार का अस्त्र।

मेघु–देखो 'मेघ'।

मेड़–स्त्री० १ खेत की सीमा। २ सीमा, मर्यादा। ३ स्वर्णकारों की एक शाखा।

मेड़तिया–स्त्री० राठौड़ों की एक शाखा।

मेड़तियो–पु० १ राठौड़ वंश की मेड़तिया शाखा का व्यक्ति। २ मेड़ता शहर का निवासी।

मेढ़ी–देखो 'मेढ़ी'।

मेच–पु० १ अवसर, मौका। २ देखो 'मेछ'।

मेचक–पु० [सं०] १ कृष्ण पक्ष। २ कालापन, श्यामता। ३ अंधेरा। ४ धूंआ, धूम्र। ५ बादल। ६ काला नमक। ७ सुरमा। ८ स्तन के ऊपर की घुंडी। ९ स्त्रियों के चिबुक पर लगी बिंदी। —वि० कृष्ण, काला, श्याम।

मेचकता, मेचकताई–स्त्री० श्यामता, कालापन।

मेचसिगार–पु० पीतल।

मेचु–पु० [सं० मिथ्या] १ झूठ, असत्य। २ अवसर, मौका।

मेछ–देखो 'मेछ'।

मेछड–देखो 'मेछ'।

मेछ–पु० [सं० म्लेच्छ] १ असुर, दैत्य, दानव। राक्षस २ यवन। ३ नीच, शूद्र। ४ विधर्मी। ५ तांबा। ६ देखो 'मेघ'।

मेछक–देखो 'मेचक'।

मेछमुख–पु० [सं० म्लेच्छमुख] तांबा।

मेछांहण, मेछांण–देखो 'मेछ'।

मेछान, मेछाड़–देखो 'मेछ'।

मछाधिपति–पु० [सं० म्लेच्छाधिपति] १ दैत्यराज, असुर राज। २ यवन बादशाह।

मेछायण, मेछाळ, मेछी–देखो 'मेछ'।

मेज–पु० [फा०] १ लकड़ी आदि की बनी ऊंची चौकी, पाट, टेबल। २ दावत का सामान, भोज्य सामग्री।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेजपोस–पु० [फा० मेजपोश] मेज पर बिछाया जाने वाला वस्त्र, चादर।

मेजरनामी–पु० [अ० महजरनामा] १ कई व्यक्तियों का सामूहिक आवेदन-पत्र। २ वह पत्र जिसमें कई व्यक्तियों की गवाही हो। ३ प्रमाण या साक्षी-पत्र। ४ लोगों की उपस्थिति का स्थान। ५ हत्या संबंधी साक्षीपत्र।

मेट–स्त्री० १ मुल्तानी मिट्टी। २ मेटने की क्रिया या भाव। —पु० [अ०] ३ मजदूरों का जमादार। ४ जहाज पर कार्य करने वाला कर्मचारी।

मेटक–वि० मिटाने वाला।

मेटणछपा–पु० रात्रि को मिटाने वाला, सूर्य।

मेटणतम–पु० १ सूर्य, चन्द्र। २ दीपक। ३ ज्ञान।

मेटणो (बो)–क्रि० [सं० मृष्ट] १ समाप्त करना, नष्ट करना। २ दूर करना, हटाना, अलग करना। ३ निवारण करना, समाधान करना। ४ छोड़ना, त्यागना। ५ बंद करना, रोकना। ६ टालना। ७ शान्त करना। ८ कम करना, घटाना, क्षीण करना। ९ उल्लंघन करना, लोपना। १० मारना, समाप्त करना। ११ लिखावट या चिह्न मिटाना।

मेटली–स्त्री० रहट द्वारा कूए से पानी निकालने का मिट्टी का उपकरण।

मेठि–देखो 'मेट'।

मेठियो–पु० मेट के रंग का घोड़ा।

मेड–पु० १ तीर, बाण। २ सुनारों का एक वर्ग। ३ मकान का ऊपरी भाग (मेढ़ी)।

मेडल–पु० [अ०] पदक, तमगा।

मेडी–देखो 'मेढी'।

मेडो–देखो 'मैंढी'।

मेढ–पु० १ पशुओं को बांधने का खूंटा। २ देखो 'मींढ'। –वि० १ दृढ, अटल। २ देखो 'मेड'।

मेढक, मेढकी–देखो 'मींडकी'।

मेढासींगी–स्त्री० [सं० मेढ-शृंगी] १ औषधि के रूप में काम आने वाली एक झाड़ीदार लता। २ देखो 'मींढासींगी'।

मेढि, मेढी–पु० १ रहट या खलिहान में घूमने वाले बैलों में से अंदर का बैल। २ खलिहान के बीच गाड़ा जाने वाला बड़ा खूंटा। ३ स्तम्भ। ४ घोड़े के सिर पर होने वाली एक भंवरी। ५ स्त्रियों के बालों की गुंथी हुई लटें। –वि० मुखिया, प्रधान, पंच।

मेढीभणो–वि० वीर, बहादुर।

मेढो–देखो 'मींढो'।

मेण–देखो 'मैण'।

मेणका–देखो 'मैनका'।

मेणबती, मेणबत्ती–स्त्री० [फा० मोमबत्ती] मोमबत्ती, शमा।

मेणमाखी–स्त्री० मधुमक्खी।

मेणा–देखो 'मेना, मेणा'।

मेणियो–पु० मोम का रोगन लगा वस्त्र।

मेणी–स्त्री० १ मेणा जाति की स्त्री। २ गुंडी।

मे'णी–देखो 'मैंणी'।

मेणी, मे'नी–देखो 'मैणी'।

मेतर–देखो 'महत्तर'।

मेतळणो (बो)–क्रि० मुनना, तौलना।

मेती, मेथी–स्त्री० १ सीसफूल (आभूषण) में धागा पिरोने का स्थान। २ एक प्रसिद्ध खाद्य पदार्थ व उसका पौधा।

मेथी–पु० वन मेथी।

मेद–स्त्री०[सं०मेदः] १ चर्बी, वसा। २ शरीर के किसी भाग में बनी चर्बी की गांठ। ३ एक वर्णसंकर जाति। ४ एक नाग विशेष। ५ एक औषधि विशेष। ६ कस्तूरी। ७ देखो 'मेदनी'।

मेदक–पु०[सं० मेदकः]शराब खींचने के काम आने वाला द्रव्य।

मेदकर–पु० [सं० मेदकर] मांस।

मेदज–पु० [सं० मेदजमू] १ हड्डी, अस्थि। २ एक प्रकार का गूगल।

मेदणी–देखो 'मेदनी'।

मेदघरा–पु० [सं०] शरीर की झिल्ली जिसमें चर्बी रहती है।

मेदनी–स्त्री० [सं० मेदिनी] १ पृथ्वी, धरती। २ जगह, स्थान, स्थल। ३ संस्कृत का एक कोश। तळ, तल –पु० भूमितल, धरातल।

मेदपाट–पु० मेवाड़ प्रदेश का नामान्तर।

मेदा–स्त्री० १ अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि। २ देखो 'मेधा'।

मेदालकड़ी–स्त्री० एक औषधि विशेष।

मेदिन, मेदिनी–देखो 'मेदनी'।

मेदिय, मेदियो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

मेदी–पु० १ पक्वाशय, कोठा। २ पेट। ३ देखो 'मैदो'।

मेध–पु० [सं०] १ यज्ञ, हवन, मख। २ हवि, बलि। ३ बलि पशु। ४ हवन सामग्री। ५ सीमा, हद।

मेधज–पु० [सं०] भगवान् विष्णु का एक नामान्तर।

मेधा–स्त्री० [सं०] १ बुद्धि, ज्ञान, सोचने की शक्ति। २ सूझ-बूझ, समझ। ३ स्मरणशक्ति, याददाश्त। ४ मान्यता, धारणा। ५ सरस्वती का एक रूप। ६ सोलह मातृकाओं में से एक। ७ दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ८ सीमा, हद। ९ चोर। १० यज्ञ। ११ छप्पय छंद का एक भेद। —बध, बधि–पु० बुद्धि का सागर, कवि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेधावान, मेधावांन, मेधावाळ–वि० कुशाग्र बुद्धि, बुद्धिमान ।
मेधावी–वि० [सं० मेधाविन्] १ जिसकी बुद्धि विलक्षण हो, कुशाग्र बुद्धि । २ होनहार । ३ चतुर, बुद्धिमान । ४ पंडित, ज्ञानी, विद्वान ।
मेधि, मेधो–पु० कवि । —वि० बुद्धिमान, चतुर ।
मेन–पु० १ अंधकार । [सं० मदन] २ कामदेव । —वि० १ काला, श्याम । २ देखो 'मेण' ।
मेनका–स्त्री० [सं०] १ पुराण प्रसिद्ध स्वर्ग की एक अप्सरा, परी । २ पार्वती की माता का नाम । —आत्मजा–स्त्री० उमा, पार्वती, शकुन्तला ।
मेना–स्त्री० [सं०] १ पार्वती की माता का नाम । २ देखो 'मैना' ।
मेनाक–देखो 'मैनाक' ।
मेनाव–पु० [सं०] १ मयूर, मोर । २ बकरा ।
मेनाधव–पु० हिमालय ।
मेनिक–पु० मछुआ, मल्लाह ।
मेमंत–देखो 'मैमंत' ।
मेमटा–देखो 'मैमट' ।
मेमली, मेमत्तिय–देखो 'मैमंत' ।
मेमल–पु० एक बरसाती कीड़ा विशेष ।
मेमार–पु० [अ०] भवन का कारीगर, शिल्पी, राजगीर ।
मेमूदी–देखो 'महमूंदी' ।
मेय–स्त्री० [सं०] नाप-तौल या परिमाण निकालने की क्रिया । –वि० परिमाण निकालने योग्य । –अव्य० समान, तुल्य । –सर्व० मुझे, मुझको ।
मेर–पु० [सं० मेरु] १ अस्ताचल । २ सीमा, हद । ३ एक पहाड़ी जाति या इसका व्यक्ति । ४ डिंगल का एक छंद । ५ देखो 'मेरु' । ६ देखो 'मैर' ।
मेरउ–देखो 'मेरो' ।
मेरगरंब (गर, गिर, गिरव्वर, गिरि, गिर, गिरि)–देखो 'मेरुगिरि' ।
मेरडंड–देखो 'मेरुदंड' ।
मेरपब्बे, मेरपरबत, मेरपरवत, मेरपहाड़–देखो 'मेरुपरवत' ।
मेरम–१ देखो 'मरम' । २ देखो 'महरम' ।
मेरवाड़ी–पु० अजमेर तथा आस-पास का प्रदेश ।
मेरो–सर्व० खुद, स्वयं से संबंधित एक सार्वनामिक विशेषण रूप । –स्त्री० १ अहंभाव, अहंकार । २ मेर जाति की स्त्री ।
मेरु–पु० [सं०] १ पुराणोक्त एक स्वर्ण पर्वत । २ नाम जपने की माला का मध्य का बड़ा मणिया । ३ वीणा का एक अंग । ४ छन्द शास्त्र में गणना की एक पद्धति । ५ छप्पय छंद का एक भेद । ६ हुक्के का एक भाग । ७ पर्वत, पहाड़ । ८ हिरन की अधखचा के बीच पड़ने वाला कोड़ा । –वि० १ अटल, अडिग, दृढ़ । २ देखो 'मेरुदंड' । ३ देखो 'मेर' ।
मेरुगिर (गिरि, गिरी)–पु० सुमेरु पर्वत ।
मेरुदंड (दंड)–पु० [सं० मेरुदंड] १ रीढ़ की हड्डी । २ दो भ्रूवों के मध्य की एक कल्पित रेखा । ३ बड़े तंबू के मध्य का स्तंभ ।
मेरुदेवी–स्त्री० [सं०] ऋषभदेव की माता ।
मेरुधाया–पु० [सं० मेरुधायन] महादेव, शिव ।
मेरुपरवत (परवत)–पु० [सं० मेरु पर्वत] सुमेरु पर्वत ।
मेरुसिखर–पु० [सं०] १ मेरु पर्वत की चोटी । २ मस्तक के छः चक्रों में से एक (हठयोग) ।
मेरू–देखो 'मेरु' ।
मेरूवन–पु० मेरु पर्वत के आस-पास का जंगल, वन ।
मेरे, मेरें–सर्व० १ 'मेरा' का बहुवचन । २ देखो 'म्हारें' ।
मेरेय, मेरेअ–स्त्री० [सं० मैरेय] एक प्रकार की शराब, मदिरा ।
मेरो–सर्व० 'मैं' का सम्बंधकारक एक सर्वनाम रूप, मेरा । –पु० १ मेर जाति का व्यक्ति । २ देखो 'मेरु' ।
मेळ, मेल–पु० [सं० मेलः] १ मिलन, भेंट, साक्षात्कार । २ संयोग । ३ मिलने की क्रिया या भाव । ४ परस्पर एकता, प्रेम, स्नेह । ५ प्रेम सम्बन्ध । ६ मित्रता दोस्ती । ७ सुलह, समझौता, संधि । ८ समता, बराबरी, जोड़ । ९ ताल-मेल, सामंजस्य । १० अनुकूलता, उपयुक्तता ११ मिश्रण, मिलावट । १२ सम्बन्ध, लगाव । १३ यात्रा में सहगमन, सहचार्य, साथ । १४ एकाकार होने की स्थिति विलय । १५ किसी घटना का योग, संयोग । १६ व्यवस्था इन्तजाम । १७ अभिवृद्धि । १८ टकराव । १९ समूह । २० फौज, सेना । २१ मौका, अवसर । २२ विवाह के समय किया जाने वाला भोज । २३ मृतक का ग्यारहवां दिन । २४ द्वादशे के दिन आये हुए लोगों का समूह । २५ गाय के स्तनों में दूध उतरने की स्थिति । २६ आय-व्यय का प्रतिदिन का लेखा । २७ प्रकार, वर्ग; जाति । २८ वह गाड़ी, जिसमें डाक जाती है । २९ छंद का तुकांत । ३० योग, जोड़ । ३१ देखो 'मेल' । –वि० समान, तुल्य ।
मेळ–देखो 'महल' ।
मेळड़–देखो 'मेळ'
मेळकी–स्त्री० एक प्रकार का घास व उसके दाने ।
मेळण–पु० १ संग्रह । २ देखो 'मेजू' ।
मेळणर–वि० १ मेल-मिलाप करने वाला । २ एकत्र व इकट्ठा करने वाला । –पु० १ दर्शकगण । २ एक वर्ग विशेष ।
मेळड़ियां–देखो 'मावलियां' ।
मेळड़ी–देखो 'महल' ।
मेळखी–पु० मित्र, दोस्त, यार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेळजोळ–पु० १ दोस्ती, मित्रता। २ प्रेम। ३ परिचय, मुलाकात। ४ सम्बन्ध। ५ सुलह, संधि।

मेळण, मेलण–पु० १ दूध का दही बनाने के लिए मिलाया जाने वाला खट्टा दही या छाछ। २ आटा गूंदते समय डाला जाने वाला घी। ३ गोबर के ऊपले बनाते समय मिलाया जाने वाला घास का चूरा। ४ खाद्य पदार्थ में पड़ने वाले मसाले। ५ मिश्रण, मिलावट। ६ सम्बंध। ७ प्रेम, मेल। –वि० प्रेम या मेल करने वाला।

मेळणो (बो)–क्रि० [सं० मेलनं] १ भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाना। २ सम्मिलित या एकत्र करना, मिलाना। ३ जोड़ना, भिड़ाना। ४ प्रेम करना, स्नेह करना। ५ किसी को अपनी ओर करना। ६ जोड़ना, अड़ाना, सटाना। संसर्ग करना। ७ घाव की चिकित्सा करना। ८ मिश्रण करना। ९ आंख बंद करना, नींद लेना। १० धारण करना, ग्रहण करना, अपने में रमाना। ११ गाय, भैंस आदि के बच्चे को दूध पीने के लिये छोड़ना।

मेलणो (बो)–क्रि० [सं० मेलनं] १ जाने के लिये प्रेरित करना, भेजना, पठाना। २ वस्तु, पत्र, संदेश आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना। ३ प्रेषित करना। ४ रखना, धरना, टिकाना। रख कर छोड़ देना। रख जाना। ५ त्यागना, छोड़ना। ६ धारण करना, मानना।

मेळप–स्त्री० १ मित्रता, दोस्ती। २ स्नेह, प्रेम।

मेळवण, मेळवणी–देखो 'मेळण'।

मेळसरज, मेळसरोज, पु० मक्खन, नवनीत।

मेलांण–पु० १ यात्रा के बीच का पड़ाव, विश्राम। २ स्थान, मुकाम। ३ रहट की माल का अतिरिक्त भाग। ४ महल, प्रासाद आदि।

मेळाऊ–पु० १ एकत्रित जन समूह, भीड़। २ शत्रु पक्ष। –वि० १ गद्दार, छोड़े बाज, शत्रु पक्ष में मिलने वाला। २ मिला हुआ, इकट्ठा, मिश्रित।

मेळाणो (बो)–क्रि० १ भेंट करवाना, साक्षात्कार करवाना, मिलवाना। २ सम्मिलित करवाना, एकत्र करवाना। ३ जड़वाना, भिड़वाना, मिलवाना। ४ प्रेम कराना, स्नेह कराना। ५ किसी को अपनी ओर करवाना, मिलवाना। ६ अड़वाना, सटवाना, जुड़वाना। ७ घाव की चिकित्सा करवाना। ८ मिश्रण करवाना, मिलवाना। ९ आंख बंद कराना, नींद के लिये प्रेरित करना। १० गाय, भैंस के बच्चे को दूध पीने के लिये छुड़वाना।

मेलावणो (बो)–क्रि० १ जाने के लिये प्रेरित कराना, भिजवाना, पठवाना। २ वस्तु, पत्र या संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुंचवाना। ३ प्रेषित कराना। ४ रखाना, धराना, टिकवाना। ५ त्यागाना, छुड़वाना। ६ धारण कराना, मनवाना।

मेळाप, मेलाप, मेळापो, मेलापो–देखो 'मिलाप'।

मेळावड़ो–देखो 'मेळावो'।

मेलामतर–पु० तांत्रिक मंत्र विशेष।

मेलायत–देखो 'महलायत'।

मेळावड, मेलावड, मेलावड़ो, मेळावण, मेळावणी–देखो 'मेळावो'।

मेळावणी (बो)–देखो 'मेळाणो' (बो)।

मेलावणी (बो)–देखो 'मेलाणो' (बो)।

मेळावो–पु० [सं० मेलापकः] १ मिलने की क्रिया या भाव साक्षात्कार, भेंट, मिलाप। २ सम्मेलन, सामूहिक मिलन ३ कन्या पक्ष की वर पक्ष से भेंट। ४ सम्मिलित होने की अवस्था।

मेळू, मेलू–वि० १ परस्पर मिलाने वाला, मिलाप कराने वाला २ प्रेमी, मित्र, स्नेही, हितैषी। ३ मिलने वाला, परिचित। ४ पक्ष का, पक्ष वाला। ५ मिला हुआ, मिश्रित। ६ देखो 'मेळूजो'।

मेळूजो–पु० पहिये की मजबूती के लिए लगाया जाने वाला कड़ा।

मेळो–पु० [सं मेला] १ मिलने की क्रिया या भाव। २ किसी पर्व या दिन विशेष को किसी स्थान विशेष पर एकत्र होने वाला जन समूह। ३ क्रय-विक्रय के लिए एकत्र किया जाने वाला पशु धन। ४ मिलाप, भेंट, साक्षात्कार, समागम ५ एकत्र जन समूह। ६ खेल, तमाशा। ७ हुल्लड़। ८ योग संयोग। ९ सभा, सम्मेलन। १० फसल पर लिया जाने वाला एक लगान।

मेलो–१ देखो 'मैलो'। २ देखो 'मेळो'।

मेल्हणो (बो), मेल्हवणो (बो)–देखो 'मेलणो' (बो)

मेल्हांण–देखो 'मेलांण'।

मेल्हाणो (बो), मेल्हावणो (बो)–१ देखो 'मेलाणो' (बो)। २ देखो 'मेळाणो' (बो)।

मेल्हू–देखो 'मेळू'।

मेव–पु० १ एक जाति विशेष। २ इस जाति का व्यक्ति।

मेवड़लो–१ देखो 'मेह'। २ देखो 'मेवो'।

मेवड़ो–पु० १ दूत, चर, हलकारा। २ देखो 'मेवो'। ३ देखो 'मेह'।

मेवसी–पु० एक प्रकार की अफीम।

मेवसो–देखो 'मेह'।

मेवसियो–देखो 'मेवासी'।

मेवागोद–स्त्री० विवाह से पूर्व, इष्ट मित्रों से दूल्हे को मिलने वाली भेंट (ओसवाल)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेवाड़–पु० [सं० मेदपाट] राजस्थान के दक्षिण का एक प्रदेश।
मेवाड़ाकुमार–पु० कुम्हारों की एक शाखा।
मेवाड़ी–वि० मेवाड़ का, मेवाड़ संबंधी। –पु० मेवाड़ का निवासी, मेवाड़ का राजपूत। –स्त्री० मेवाड़ की बोली।
मेवाड़ो–१ देखो 'मेवाड़'। २ देखो 'मेवाड़ी'।
मेवाड–देखो 'मेवाड़'।
मेवात–पु० राजस्थान का एक पूर्वी प्रदेश।
मेवाती–वि० मेवात का, मेवात संबंधी। –पु० १ मेवात का निवासी। २ एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति। –स्त्री० एक प्रकार की बोली।
मेवाती–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
मेवाफरोस–पु० [फा० मेवाफरोश] मेवे का व्यापारी।
मेवास–पु० [सं० मेधा+वास] १ डाकू या लुटेरों के छुपने का स्थान। २ सुदृढ़ किला, कोट, गढ़। ३ स्थान, मुकाम, डेरा। ४ चोर, लुटेरा, डाकू। ५ पूर्व या आग्नेय कोण के मध्य की दिशा।
मेवासियो–देखो 'मेवासी'।
मेवासी–पु० १ चोर, लुटेरा, डाकू। २ उद्दण्ड, बदमाश, नटखट। ३ रसिक। ४ 'मेवास' दिशा में बोलने वाला तीतर। ५ देखो 'मेवास'।
मेवासो–पु० [सं० मेधावास] १ सुदृढ़ किला, कोट, गढ़। २ देखो 'मेवास'।
मेवो–पु० [सं० मेवः] १ बादाम, पिस्ता आदि सूखा मेवा। २ मिष्टान्न, पकवान।
मेस–पु० [सं० मेष] १ नर भेड़, मेष। २ ज्योतिष की बारह राशियों में से एक। ३ देखो 'महेस'। –लगन, लग्न–पु० मेष राशि का लग्न।
मेसर–देखो 'महेस्वर'।
मेसरी–देखो 'माहेस्वरी'।
मेसी–स्त्री० [सं० मेषी] मादा भेड़।
मेसूरथ–पु० [सं०] फलित ज्योतिष का दसवाँ लग्न।
मेसी–देखो 'माहेस्वरी'।
मेहंदी–देखो 'मैंदो'।
मेह–पु० [सं० मेघ] १ बादल, घन, मेघ। २ वर्षा, बारिस। [सं० मेह] ३ मूत्र, पेशाब।
मेहड़णो (णी)–क्रि० १ भोगना, उपभोग करना। २ आनन्द लूटना।
मेहड़लो, मेहड़ो–देखो 'मेह'।
मेहजाळ–देखो 'मेहझाळ'।
मेहबुज–वि० उन्मत्त।
मेहझाळ–स्त्री०[सं०मेघ-झार] वर्षा हेतु किया जाने वाला यज्ञ।
मेहणत–देखो 'मैंनत'।
मेहणी–देखो 'मैंणी'।
मेहणु, मेहणो–देखो 'मैंणो'।
मेहतर–देखो 'महत्तर'।
मेहबेहूजा–स्त्री० मेहा की पुत्री श्रीकरणी देवी।
मेहमत–देखो 'मैंनत'।
मेहनाम–पु० [सं० मेहनाम] अभ्रक।
मेहपाठ–पु० मेड़ता का प्राचीन नाम।
मेहपुर–पु० बाड़मेर जिले का एक प्राचीन नाम।
मेहमंत–देखो 'मैंमंत'।
मेहमांण (मान)–देखो 'मेंमांन'।
मेहमांणी (मानी)–देखो 'मैंमांनी'।
मेहमा–देखो 'महिमा'।
मेहर–१ देखो 'महर'। २ देखो 'मेर'।
मेहरबांनगी(बांनी, बांनगो बानो)–देखो 'मैंरबांनी'।
मेहरात–पु० एक वर्ग विशेष।
मेहराब–पु० [अ० मिहराब] किसी द्वार पर बना अर्द्ध मंडलाकार भाग। –दार–वि० जिस पर मेहराब बना हो।
मेहरित, मेहरितु–स्त्री० [सं० मेघ ऋतु] वर्षा ऋतु
मेहरु(क)–पु० महत्तर।
मेहरोमाग–पु० [स० मेघ मार्ग] आकाश, गगन।
मेहळ(स)–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिला'। ३ देखो 'मेखळा'
मेहलणी (णो)–देखो 'मेलणी' (णो)।
मेहळांण, मेहलांण–देखो 'मेलांण'।
मेहलाणी (णो)–देखो 'मेलाणी' (णो)।
मेहलायत–देखो 'महलायत'।
मेहलावणी (णो)–देखो 'मेलाणी' (णी)।
मेहलि(लो)–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिला'।
मेहलु (लू, लो)–देखो 'मेह'।
मेहवपुर–पु० राजस्थान का, बाड़मेर के आस-पास का, प्रदेश।
मेहसड़लो–देखो 'मेह'।
मेहांण–देखो 'महारणव'।
मेहांनंद–पु० करणीजी के पिता का नाम।
मेहा–पु० [स० मेघ] १ वर्षा। २ वर्षा के बादल। ३ देखो 'मेहाई'।
मेहाई–स्त्री० श्री करणीदेवी।
मेहागम–पु० [स० मेघ आगमन] वर्षा ऋतु का आगमन।
मेहावी–देखो 'मेधावी'।
मेहासवू, मेहासवू (घू) महासिघू–स्त्री० श्रीकरणी देवी का नामांतर।
मेहाही–देखो 'मेहाई'।
मेहिलो–देखो 'महिला'।
मेहू–१ देखो 'म्हैं'। २ देखो 'मेह'
मेहूड़ी–देखो 'मेह'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेहेरबान–देखो 'मेहरबान'।
मेहेराण–देखो 'महाराणा'।
मेहेली–देखो 'महिला'।
मैं–सर्व० उत्तम पुरुष का कर्त्ता रूप, स्वयं, खुद। –पु० १ बकरी की आवाज। २ अहंभाव, अहमन्यता। ३ देखो 'में'।
मैंगळ–देखो 'मदकळ'।
मैंगाई–देखो 'मू'गाई'।
मैंगी–देखो 'मू'गी'।
मैंडा–वि० मेरे, मेरा।
मैंण–पु० मोम।
मैंणका–देखो 'मेनका'।
मैंणा–देखो 'मैणा'।
मैंणावती–देखो 'मेंणावती'।
मैंणी–देखो 'मंणी'।
मैंत–देखो 'महंत'।
मैंतर–देखो 'महत्तर'।
मैंदान–देखो 'मैदान'।
मैंदालकढ़ी–देखो 'मैदालकढ़ी'।
मैंदी–स्त्री० [सं० मेंधी] १ प्रायः समस्त भारत में होने वाली एक झाड़ी। २ उक्त झाड़ी की सूखी पत्तियां व इन पत्तियों का चूर्ण। ३ एक लोकगीत।
मैं'नत–देखो 'मैं'नत'।
मैंपणी–पु० अभिमान, गर्व, अहंभाव।
मैंमंतक, मैंमट, मैंमत–देखो 'मैंमंत'।
मैंमंब–पु० स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष।
मैंहणो–देखो 'मू'णो'।
मैं–देखो 'मय'।
मैं'क–देखो 'महक'।
मैं'कणी (णो)–देखो 'महकणी' (णो)।
मैं'कमो–देखो 'महकमो'।
मैं'कार–स्त्री० महक, सुगंध।
मैंस–देखो 'महिस'।
मैंसास–देखो 'महिसासुर'।
मैंगळ–देखो 'मदकळ'।
मैंड़ी–स्त्री० १ मकान के ऊपर बना कमरा, अटारी। २ महल। ३ देखो 'मेंडी'।
मैंसाण, मैंसाणा–देखो 'मेंसु'।
मैंडड़ो–पु० कृषि भूमि समतल करने का काष्ठ का उपकरण।
मैंडर–पु० दबाव।
मैंड–देखो 'मेंड'।
मैंडल–पु० [सं० मदनफल] मैनफल।
मैंडी–१ देखो 'मेंढो'। २ देखो 'मंडी'।
मैंढी–देखो 'मेंढी'।
मैंणगना–स्त्री० [सं० मदनांगना] कामदेव की स्त्री, रति।
मैंण–पु० १ शिर का आभूषण, चूड़ामणि। २ देखो 'मैंण'। ३ देखो 'मदन'।
मैंणका–देखो 'मेनका'।
मैंणधार–देखो 'मणिधर'।
मैंणधुज–पु० मदनफल।
मैंणल–पु० हाथी।
मैंणसिल–देखो 'मैनसिल'।
मैंणा–स्त्री० १ एक जाति विशेष। २ देखो 'मैना'।
मैंणावे–देखो 'मैंणावती'।
मैंणी, मैं'णी–स्त्री० १ कटुवचन, ताना, व्यंग। २ मैंणा जाति की स्त्री। –वि० गुंडी, बदमाश।
मैंणीयात–वि० कलंकित, बदनाम।
मैंणी–पु० (स्त्री० मैंणी) मैंणा जाति का व्यक्ति।
मैं'णो–पु० व्यंग।
मैंतर–देखो 'महत्तर'।
मैं'ता–देखो 'महता'।
मैंताब–देखो 'महताब'।
मैंताबी–देखो 'महताबी'।
मैंतारी–देखो 'महतारी'।
मैंत्रकार–पु० एक वर्ग विशेष
मैंत्री–स्त्री० [सं०] १ दो या दो से अधिक व्यक्तियों का परस्पर प्रेम, मित्रता। २ मेल-जोल। ३ समानता। ४ अनुराधा नक्षत्र।
मैंथळी, मैंथली–देखो 'मैथिळी'।
मैंथिल–वि० मिथिला का, मिथिला संबंधी। –पु० १ मिथिला का निवासी। २ ब्राह्मणों का एक वर्ग।
मैंथिळी, मैंथिली–स्त्री० [सं० मैंथिली] १ सीता का एक नाम, जानकी। २ मिथिला प्रदेश की भाषा।
मैंथुन–पु० [सं०] १ किसी स्त्री के साथ किया जाने वाला संभोग, रति क्रीड़ा। २ काम-वासना की भावना से स्त्री के साथ किया जाने वाला व्यवहार।
मैंथुनी–वि० मैथुन संबंधी। मैथुन करने वाला। —प्रजा–स्त्री० मैथुन से उत्पन्न संतान।
मैंदड़ी–पु० पटेला (मेवात)।
मैंदर–स्त्री० मौसी, माता की बहन (मेवात)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मैदान–पु० [फा०] १ समतल तथा विस्तृत भू-खण्ड, क्षेत्र। २ खेल-कूद का स्थान। ३ युद्ध-भूमि, रणक्षेत्र। ४ किसी पदार्थ का विस्तार। ५ रत्न की लंबाई-चौड़ाई। ६ मल टट्टी। ७ मल त्याग करने का स्थान, जंगल।

मैदानी–वि० मैदान का, मैदान संबंधी।

मैदासकड़ी–स्त्री० एक प्रकार की काष्ठ-औषधि विशेष।

मैदो–पु० [फा० मेदः] १ गेहूँ का अत्यन्त महीन आटा। २ पक्वाशय, पेट, कोठा।

मैध–देखो 'मेध'।

मैधा–देखो 'मेधा'।

मैन–देखो 'मदन'।

मैनका–देखो 'मेनका'।

मै'नत–स्त्री० [अ० महनत] १ किसी कार्य के लिये होने वाला शारीरिक, मानसिक श्रम, परिश्रम। २ प्रयास, कोशिश।

मै'नती–वि० [अ० महनती] १ परिश्रमी, मेहनती। २ अपने कार्य के प्रति प्रयत्नशील।

मैनफल–पु० [सं० मदनफल] एक कंटीली झाड़ी व उसका फल।

मैनमूरत–पु० [सं० मदन-मूर्ति] कामदेव का स्वरूप।

मैनसिल–स्त्री० [सं० मनःशिला] पीली मिट्टी की तरह की एक धातु। —वि० पीला, पीत।

मैना–स्त्री० [सं० मदना] १ पीली चोंच व काले रंग का एक पक्षी। सारिका। २ देखो 'मेनका'। ३ देखो 'मैणा'।

मैनाक–पु० [सं०] १ हिमालय और मैना से उत्पन्न एक पर्वत। २ हिमालय की एक चोटी।

मैनावती–देखो 'मैणावती'।

मैनावली–स्त्री० एक वर्णवृत्त विशेष।

मै'पाळ–देखो 'महीपाळ'।

मै'फल, मै'फिल–स्त्री० [अ० महफिल] १ किसी अवसर विशेष पर की जाने वाली गोष्ठी, उत्सव, जलसा। २ सभा, बैठक। ३ सम्मेलन, समारोह। ४ उपासना, साधना का स्थान। ५ संसार, जगत।

मै'बूब–देखो 'महबूब'।

मैमंत–वि० [सं० मदमस्त] १ मदोन्मत्त, उन्मत्त, मस्त। —पु० १ हाथी, गज। २ मस्त हाथी, मदमस्त हाथी।

मैमद–१ देखो 'मुहम्मद'। २ देखो 'मैमंद'। ३ देखो 'मैमंत'।

मैम–स्त्री० १ अंग्रेज स्त्री। २ स्त्री के चित्र वाला ताश का पत्ता।

मैमट–पु० १ बादल, मेघ। २ देखो 'मैमंत'।

मैमंत, मैमत्तो, मैमत्त, मैमत्तो–देखो 'मैमंत'।

मैमद–१ देखो 'मैमंद'। २ देखो 'मैमंत'।

मै'मान–पु० [फा० मेहमान] १ अतिथि, मेहमान। २ दामाद, जवाई। ३ सगा, संबंधी।

मै'मानदारी–स्त्री० [फा० मेहमानदारी] अतिथि सत्कार।

मै'मानी–स्त्री० [फा० मेहमानी] १ मेहमान बनने की अवस्था या भाव। २ अतिथि सत्कार, स्वागत।

मै'मा–देखो 'महिमा'।

मै'मावंत–देखो 'महिमावंत'।

मैयण–देखो 'मदन'।

मैया–देखो 'माता'।

मैयो–देखो 'मयो'।

मै'र–पु० १ हाथी, गज। २ देखो 'महर'।

मै'रबान–देखो 'मै'रवान'।

मै'रबानी–देखो 'मै'रवानी'।

मै'रवान–वि० [अ० मेहरबान] १ जो दया, कृपा, अनुग्रह करता हो, कृपालु। २ दातार। ३ मित्र, दोस्त।

मै'रवानगी, मै'रवानी–स्त्री० [फा० मेहरबानी] १ कृपा, दया, अनुग्रह। २ तरस। ३ करुणा। ४ ममता, प्रेम।

मै'राब–देखो 'मेहराब'।

मै'राबदार–देखो 'मेहराबदार'।

मैरियाळ, मैरी–पु० रहट में चलने वाले बैलों में से अन्दर की ओर का बैल।

मैरो–पु० ऊँची व पथरीली भूमि।

मैल–पु० [सं० मलिन] १ शरीर या वस्त्र आदि पर आने वाला कीट, गंदगी। २ विकार, दोष। दूषण।

मै'स–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिला'।

मैलखोरो–वि० जो मैला न हो, जिस पर मैल न दिखे। —पु० १ ऐसा वस्त्र जिस पर लगा मैल न दिखे। २ मैल से बचाव के लिये वस्त्र के नीचे पहनने का वस्त्र। ३ मैल उतारने का छोटा पत्थर।

मैलझली–पु० १ घोड़े की पीठ पर रखने का वस्त्र विशेष। २ मैलखोरो वस्त्र।

मैलणी (बी)–देखो 'मेलणी' (बी)।

मैलमाळिया–पु० १ महल व उस पर बनी अटारी। २ दीपावली पर शक्कर के बनाये जाने वाले खिलौने।

मैलरखो–देखो 'मैलझलो'।

मैलाण–देखो 'मेलाण'।

मैलाकरम–पु० १ मानवीय व सामाजिक दृष्टि से अनुचित कार्य। कुकर्म। २ बाम मार्गियों के कार्य। ३ दुर्भाग्य।

मैलाणी (बी)–देखो 'मेलाणी' (बी)।

मैलात, मैलायत–देखो 'महलायत'।

मैलापण, मैलापणो–पु० गंदगी, विकार।

मैलामंतर–पु० तांत्रिक क्रिया विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंळू–पु० गाड़ी के चक्के में लगने का लोहे का बंद विशेष।

मंलो–वि० [सं० मलिन] (स्त्री० मैली) १ जिस पर मैल या गंदगी हो, मैला, गंदा। २ बदबूदार, दूषित। ३ विकार युक्त। ४ पतित, नीच, हीन। ५ बिना धुला। ६ जाति भ्रष्ट। –पु० १ मल, विष्ठा। २ कूड़ा, कचरा। ३ स्त्रियों का दूषित रज।

मैलोमाथो–पु० स्त्रियों की ऋतुमति की अवस्था, दशा।

मैल्हणो (णी)–देखो 'मेलणो' (णी)।

मैवट, (ट्ट)–वि० महान्, बड़ा।

मैवास–देखो 'मेवास'।

मैवासी–देखो 'मेवासी'।

मैवासो–देखो 'मेवासो'।

मैंसूस–देखो 'महसूस'।

मैंसूस–देखो 'महसूस'।

मैंहण–देखो 'महारणव'।

मैंहणी–देखो 'मैंणी'।

मैंहणो–देखो 'मैंणो'।

मैंहमंत, मैंहमत–देखो 'मैंमंत'।

मैंहमद–देखो 'मैंमंद'।

मैंहमानी–देखो 'मैंमानी'।

मैंहर–देखो 'महर'।

मैंहरवांन (वान)–देखो 'मैंरवांन'।

मैंहरवांनी (वानी)–देखो 'मैंरवानी'।

मैंहरांण–देखो 'महारणव'।

मैंहरात–स्त्री० एक जाति विशेष।

मैंहरी–स्त्री० दले हुए जौ, बाजरा या मक्का व छाछ के साथ बना पेय पदार्थ, रबड़ी।

मैंहल (क)–देखो 'महर'।

मैंहल–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिळा'।

मैंहलांण–देखो 'मेलांण'।

मैंहलाइत, मैंहलायत–देखो 'महलायत'।

मैंहेलो–पु० एक भोज्य पदार्थ विशेष।

मों–देखो 'मो'।

मोंड़ो–देखो 'मोड़ो'।

मोंच–देखो 'मोच'।

मोंचकरोत–स्त्री० लकड़ी चीरने की बड़ी आरी, करोत।

मोंची–स्त्री० १ कूए से पानी निकालने की चड़स को बांधने का लकड़ी का उपकरण। २ काष्ठ का एक अन्य उपकरण। ३ देखो 'मोचो'।

मोंडको–पु० कूए के ऊपर अन्दर की ओर बना एक भाग।

मोंण–देखो 'मैंण/मोण'।

मोंसर–देखो 'मोसर'।

मोंसी–देखो 'मासी'।

मोंहडो–देखो 'मूंडो'।

मो–सर्व० [सं० मम] १ मैं, मुझ। २ मुझे, मुझको। ३ मुझ पर, मुझ से। ४ मेरा, मेरी, मेरे।

मो'–देखो 'मोह'।

मो'इडको–पु० बच्चों का एक खेल।

मोइ–देखो 'मो/मोई'।

मोइल–देखो 'मोयल'।

मोई–स्त्री० १ एक प्रकार का पौधा, झाड़ी। २ मूंग के आटे का एक पौष्टिक पदार्थ। ३ मसालेदार मूखी भांग। ४ देखो 'मो'।

मोउ, मोऊ–देखो 'मऊ'।

मोकड़ी–देखो 'माकडो'।

मोकणो (णी)–देखो 'मूकणो' (णी)।

मोकदमो–देखो 'मुकदमो'।

मोकळ–स्त्री० १ इजाजत, आज्ञा। २ छुट्टी, अवकाश। ३ विशेष प्रकार से तैयार किया गया खरगोश का मांस। ४ देखो 'मुकळायत'। ५ देखो 'मोकळो'।

मोकळउ, मोकलउ–देखो 'मोकळो'।

मोकळणो (णी), मोकलणो (णी)–क्रि० [सं० मोक्षणम्] १ जाने के लिए प्रेरित करना, भेजना, पठाना। २ मुक्त करना, आजाद करना। ३ छोड़ना, त्यागना। ४ देना। ५ फैलना, बिखरना।

मोकळमुख (मुह,मूंडो, मूंवो)–वि० वाचाल, मुंहफट, लबार।

मोकळाण–देखो 'मुकळायत'।

मोकळाणो (णी)–क्रि० १ जाने के लिए प्रेरित करवाना, भिजवाना, पठवाना। २ मुक्त कराना, आजाद कराना। ३ छुड़वाना, त्याग कराना। ४ दिलाना। ५ फैलाना, बिखेरना। ६ तानना, फैलाना।

मोकळायत–देखो 'मुकळायत'।

मोकळावणो (णी), मोकलावणो (णी)–देखो 'मोकळाणो' (णी)

मोकळू, मोकळी, मोकलो–वि० (स्त्री० मोकळी) १ अत्यधिक ज्यादा। २ पर्याप्त, प्रचुर, काफी। ३ संख्या व मात्रा में अधिक, अनेक। ४ विस्तृत, चौड़ा। ५ तीव्र, तेज। ६ प्रभावशाली, प्रभावपूर्ण।

मोकस्यो–वि० मुक्त, स्वतंत्र, आजाद।

मोकुफ–देखो 'मौकूफ'।

मोकेवारदात–देखो 'मौकेवारदात'।

मोकी–१ देखो 'मोखी'। २ देखो 'मोकी'।

मोक्ख–देखो 'मोक्ष'। –मग, माग= मोक्षमार्ग'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोक्षकमणि–पु० एक रत्न विशेष ।

मोक्ष, मोक्ष–स्त्री० [सं मोक्ष] १ बंधन से मुक्ति, छुटकारा आजादी । २ निर्वाण, कल्याण । ३ स्वर्ग, वैकुण्ठ । ४ मृत्यु मौत । ५ अर्थ, धर्मादि कल्याण के चार पदार्थों में से एक । ६ उऋण होने की क्रिया या भाव । ७ बचाव । ८ छुट, ढील । ९ बहाव, पात । १० सूर्यादि ग्रहण की शुद्धि ।

मोक्षक–वि० [सं०] १ मोक्षदाता । २ मुक्तिदाता, आजाद करने वाला ।

मोक्षण–स्त्री० [सं०] १ मोक्ष देने की क्रिया या भाव । २ मुक्त होने की अवस्था । ३ स्वतंत्रता, आजादी ।

मोक्षद–वि० [स०] १ मोक्षदाता, मुक्तिदाता । २ छोड़ने वाला, मुक्त करने वाला ।

मोक्षदा–पु० [सं०] सिक्खों की पांच वस्तु, कड़ा, कंघी आदि का समूह । –वि० मोक्षदात्री ।

मोक्षदा एकादशी–स्त्री०[सं० मोक्षदा-एकादशी] मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी ।

मोक्षदाता–वि० मोक्ष या मुक्ति देने वाला ।

मोक्षपति–पु० [सं०] संगीत का एक भेद विशेष ।

मोक्षपद–पु० [सं०] किसी जीव को वैकुण्ठ में मिलने वाला स्थान । निर्वाण ।

मोक्षमारग–पु० [स०] मोक्ष प्राप्ति के प्रयास, आचरण, भक्ति व तपस्या ।

मोक्षविद्या–स्त्री० [सं०] १ आध्यात्मिक विद्या । २ वेदांतशास्त्र

मोक्षांत, मोक्षांतर–देखो 'मोक्ष' ।

मोख–पु० [सं०मयूख] १ प्रायः वर्षा ऋतु में सूर्योदय या सूर्यास्त के समय बादल की ओट से दिखने वाला किरण समूह । २ एक प्रकार का वृक्ष । ३ देखो 'सोक्ष' । ४ देखो 'मोखी' ५ देखो 'मोस' । ६ मुरुयता ।

मोखण–देखो 'मोक्षण' ।

मोखणो (बो)–क्रि० [सं० मोक्षणम] १ मुक्त करना, मुक्ति देना । २ बंधन से छुटकारा करना, छोड़ना, खोलना । ३ रिहा करना, आजाद करना । ४ फेंकना ।

मोखद–देखो 'मोक्षद' ।

मोखदा–देखो 'मोक्षदा' ।

मोखन–देखो 'मोक्षण' ।

मोखपद–देखो 'मोक्षपद' ।

मोखम–स्त्री० अनिश्चित अवस्था ।

मोखमल–देखो 'मखमल' ।

मोखविद्या–देखो 'मोक्षविद्या' ।

मोखाण–देखो 'मुकाण' ।

मोखांतर–देखो 'मुकांतर' ।

मोखाणो (बो), मोखावणो (बो)–क्रि० १ मुक्त कराना, मुक्ति दिलाना । २ बंधन से छुटकारा कराना, छुड़वाना, खुलवाना । ३ रिहा व आजाद कराना । ४ फिकवाना ।

मोखि–१ देखो 'मोक्ष' । २ देखो 'मोखी' ।

मोखी–स्त्री० १ मकान या कक्ष से पानी बाहर आने का नाला, मोरी । २ गुदा, मूल द्वार । ३ बारी, खिड़की ।

मोखो–पु० [सं० मुख] १ पानी के निकास का बड़ा नाला, मोरा । २ रोशनदान । ३ दीवार में बना बड़ा छेद, विवर । ४ देखो 'मोक्ष' । ५ देखो 'मोकी' ।

मोग–१ देखो 'मोख' । २ देखो 'मोगो' ।

मोगम–१ देखो 'मोखम' । २ देखो 'मूंगम' ।

मोगर–पु० [स०मुद्गर] १ गदा की तरह का एक शस्त्र विशेष । मुद्गर । २ सोना, फौज । ३ झुण्ड, समूह । ४ मूंग या माठ की धुली हुई दाल । ५ इस दाल की सब्जी । ६ मुसलमान । ७ देखो 'मोगरी' । ८ देखो 'मोगरो' ।

मोगरबेलि–स्त्री० मोगरे की लता ।

मोगरि, मोगरी–स्त्री० १ मूले की जाति के एक पौधे की फली, एक सब्जी । २ एक कंद विशेष । ३ काष्ठ का हथौड़ा । ४ स्वर्णकारों का काष्ठ का एक उपकरण । ५ छत कूटने का एक उपकरण । ६ छोटे मोगरे का फूल । ७ दुरमुस, दुरमच । ८ आटे, बेसन, मैदे आदि में थोड़ा घी व थोड़ा गर्म पानी डाल कर मसलने पर पड़ने वाले दाने ।

मोगरेल–पु०[सं० मुद्गर-तैल] मोगरे का तेल ।

मोगरो–पु० [सं० मुद्गर] १ बढ़िया जाति का बेल का पौधा । २ उक्त पौधे का फूल । ३ तलवार की मूठ का सब से ऊपरी भाग । ४ आभूषण पर लगने वाली गुंडी । ५ देखो 'मुद्गर' ।

मोगळ–१ देखो 'मोगर' । २ देखो 'मुगळ' ।

मोगिया–स्त्री० एक अनुसूचित जाति ।

मोगो–वि० (स्त्री० मोगी) १ अशक्त, कमजोर, निर्बल । २ मंद बुद्धि । ३ मूढ़, मूर्ख, अयोग्य । ४ चिड़-चिड़े स्वभाव वाला । ५. सिंचाई के पानी की नाली ।

मोघ–वि० [सं०] १ व्यर्थ, बेकार, निरर्थक, निष्फल । २ फालतू, निरर्थक । ३ निरुद्देश्य । ४ त्यागा हुआ, त्यक्त । ५ सुस्त । –पु० १ घेरा, अहाता । २ मेड़ । ३ देखो 'मोख' ।

मोघो–देखो 'मोगो' ।

मोड़–पु० १ मुड़ने की क्रिया या भाव । २ मार्ग, रास्ता, पगडंडी घुमाव । ३ बल, मुड़ी हुई अवस्था । ४ गर्व, अभिमान । ५ बनावट । ६ किरण । ७ देखो 'मोड़' ।

मोड़गर–वि० पराजित करने वाला ।

मोड़ण–स्त्री० मोड़ने की क्रिया या भाव । –वि० १ मोड़ने वाला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घुमाने वाला। २ झुकाने वाला, नमाने वाला। ३ मिटाने वाला।

मोड़णी (णो)–क्रि० [सं० मुरणम] १ किसी सीधी वस्तु में बल देना, खड़े को झुकाना, घुमाना। २ धारदार वस्तु की धार टेढ़ी करना। ३ ऐंठन देना, मरोड़ना। ४ किसी चलते हुए की दिशा परिवर्तन करना। ५ लौटने के लिये कहना, लौटाना। ६ वापस करना। ७ पराङ्मुख करना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख करना। ८ शरीरांग घुमाना। ९ लौट जाने के लिये मजबूर करना, पीछे हटाना, खिसकाना, भगाना। १० नष्ट करना, मिटाना, तोड़ना। ११ छिन्न-भिन्न करना, अस्त-व्यस्त करना। १२ टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में करना १३ विमुख करना, विरुद्ध करना। १४ गिराना, पटकाना। १५ कागज वस्त्रादि में सलवट डालना, समेटना। १६ काटना।

मोड़-तोड़–पु० घुमाव-फिराव, चक्कर।

मोड़बंध (धो)–देखो 'मोड़बंध'।

मोड़ाणी (णो)–क्रि० १ किसी सीधी वस्तु में बल दिराना, खड़े को झुकवाना घुमवाना। २ धारदार वस्तु की धार टेढ़ी कराना। ३ ऐंठन दिराना, मरोड़वाना। ४ चलते हुए की दिशा परिवर्तन कराना। ५ लौटने के लिए कहलाना, लौटवाना। ६ वापस कराना। ७ पराङ्मुख कराना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख कराना। ८ शरीरांग घुमवाना। ९ लौटने को मजबूर कराना, पीछे हटवाना, खिसकवाना, भगाना। १० नष्ट कराना। मिटवाना, तुड़वाना। ११ छिन्न-भिन्न कराना, अस्त-व्यस्त कराना। १२ टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में कराना। १३ विमुख कराना, विरुद्ध कराना। १४ गिरवाना, पटकवाना। १५ कागज वस्त्रादि में सलवट पटकवाना।

मोड़ि, मोड़ी–पु० खलिहान में घूमने वाले बैलों में से अन्दर की ओर घूमने वाला बैल।

मोड़ेरी–क्रि० वि० देर से, विलंब से।

मोड़ो–पु० १ दरवाजा, द्वार। २ विलंब, देरी। –क्रि० वि० (स्त्री० मोड़ी) १ विलंब से, देरसे। २ लंबी प्रतीक्षा के बाद।

मोचंग–देखो 'मुखचंग'।

मोच–स्त्री० [सं० मुच्] १ झटके से शरीर के संधि स्थलों की नश का हटना। २ संधिस्थलों पर सूजन आना। ३ आघात व झटका। ४ धातु आदि के पात्रों में होने वाले गड्ढे या उभार में पड़ने वाला बल। ५ हटना क्रिया या भाव। ६ नाश, समाप्ति। ७ शंका, संदेह। ८ त्याग, निवारण। ९ खड़ी लकड़ी को चीरने के लिए करोत के चारों ओर लगने वाली चौखट। [सं० मोच, मोचः] १० केले का फल या वृक्ष। ११ शोभांजन वृक्ष। १२ देखो 'मोक्ष'।

मोचक–पु० [सं०] १ साधु, भक्त। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ केले का पेड़। –वि० छुड़ाने या मुक्त करने वाला।

मोचड़ि, मोचड़ी–स्त्री० १ पैर की जूती। २ देखो 'मोछ'। ३ वह गाय जिसका बछड़ा मर गया हो और दूध देती हो।

मोचड़ो–पु० १ जूता, बूट। २ घोड़ों की आंख का एक रोग।

मोचण–पु० [सं० मोचनं] १ छोड़ना क्रिया या भाव। २ रिहाई छुटकारा, मुक्ति। ३ दूर करना, हटाना क्रिया। ४ उऋण होने की अवस्था या भाव। ५ बहाव, स्राव। ६ खींचा तानी, छीनाझपटी। ७ विनाश, समाप्ति। ८ मोची जाति की स्त्री। —अघ–वि० पाप या दोष मिटाने वाला।

मोचणी (णो)–क्रि० [सं० मोचनम] १ रिहा करना, मुक्त करना, छोड़ना। २ त्यागना, छोड़ना। ३ मिटाना, समाप्त करना। ४ बहाना, प्रवाहित करना।

मोचणो–पु० रबी की फसल की बुवाई से पूर्व की जाने वाली जुताई।

मोचन–देखो 'मोचण'। —अघ='मोचणअघ'।

मोचरस–पु० [सं०] १ सेमल वृक्ष का गोंद। २ सेवरी का फूल। ३ मोर पंख, मयूर पिच। ४ घोड़े के पैरों का एक रोग।

मोची–पु० (स्त्री० मोचन) जूते बनाने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।

मोचो–पु० १ झुकाव। २ जूता।

मोच्छ–देखो 'मोक्ष'।

मोच्छव, मोच्छव–देखो 'महोत्सव'।

मोच्छण–देखो 'मूछण'।

मोज–१ देखो 'मौज'। २ देखो 'मोजी'।

मोजड़ी–१ देखो 'मोचड़ी'। २ देखो 'मोजी'।

मोजड़ो–देखो 'मोजी'।

मोजांग–देखो 'मौज'।

मोजी–देखो 'मोजी'।

मोजूद–देखो 'मौजूद'।

मोजूदा–देखो 'मौजूदा'।

मोजो–पु० [फा० मोजः] १ पैर का जुर्राब, पायताबा। २ जूता। ३ पैर का कवच। ४ कुश्ती का एक दांव, पेच। ५ देखो 'मोजो'।

मोट, मोटउ–स्त्री० १ बड़प्पन, बड़ाई। २ गर्व, घमंड। ३ कूए से पानी निकालने की चड़स। ४ देखो 'मोटी'।

मोटकी–देखो 'मोटी'।

मोटड़ी–१ देखो 'मोठड़ी'। २ देखो 'मोटी'।

मोटनक–पु० [सं०] एक वर्ण वृत्त विशेष।

मोटम–स्त्री० १ बड़ाई, बड़प्पन। २ महत्व, विशेषता। ३ गर्व, अभिमान। ४ देखो 'मोटी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोटमति (ती)–वि० बुद्धिमान, समझदार।

मोटमन–वि० १ दाता, दानी। २ उदार, सहृदय। ३ महत्वाकांक्षी।

मोटमरजाद, मोटमलाद–स्त्री० १ स्वाभिमान। २ गर्व, अभिमान। ३ मर्यादा, प्रतिष्ठा।

मोटयार–देखो 'मोटियार'।

मोटर, मोटरगाड़ी–स्त्री० [सं०] १ वैद्युतिक यंत्र। २ पेट्रोल, डीजल या कोयले से चलने वाली गाड़ी, वाहन।

मोटाइ (ई), मोटापण (णी), मोटापो–पु० १ मोटा होने की अवस्था या भाव, मोटापन। २ लम्बाई-चौड़ाई। ३ स्थूलता। ४ बड़प्पन, बड़ाई। ५ उदारता।

मोटाघत–पु० [सं० मोट्टायिते] साहित्य में नायिका का एक हाव।

मोटिमसल (मल्ल)–वि० १ गर्व एवं गौरववाला, महान्। २ वीर, बहादुर, योद्धा।

मोटिम्म–देखो 'मोटम'।

मोटियार–पु० १ पुरुष आदमी। २ युवक, तरुण व्यक्ति। ३ पति, खाविंद। ४ पुत्र, लड़का। ५ युवकों का सम्बोधन। –वि० १ वीर, बहादुर। २ युवक, जवान। –पण, पणो–पु० पुरुषत्व, मर्दानगी। तरुणाई, जवानी। इन्सानियत, मनुष्यता।

मोटीनींद–स्त्री० महानिद्रा, मृत्यु, मौत।

मोटीयार–देखो 'मोटियार'।

मोटीयारगाळो–पु० युवावस्था, जवानी।

मोटेक, मोटेरो–वि० (स्त्री० मोटेरी) १ वृद्ध। २ जवान, युवा।

मोटोड़ो–वि० (स्त्री० मोटोड़ी) १ बड़ा। २ अग्रज।

मोटो–वि० [सं० महत्] (प्रा० मुट्ट) १ बड़ा। २ विशाल। ३ जो मान या परिमाण में बड़ा हो। ४ जो अपेक्षाकृत बड़ा हो। ५ उच्च, श्रेष्ठ; महान्। ६ आदरणीय। ७ विस्तृत, चौड़ा। ८ बड़े पद वाला, अधिक धन वाला। ९ प्रतिष्ठित। १० वयस्क, आयु में बड़ा। ११ लंबा, दीर्घ। १२ जिसका घनत्व बड़ा हो। १३ जिसकी गोलाई बड़ी हो। १४ बुरबुरा, दरदरा। १५ महत्वपूर्ण, विशेष। १६ अहंकारी, घमंडी। १७ गंभीर, गहरा। १८ कठिन, भारी, असाधारण। १९ अखरने वाला, खटकने वाला। २० खास, असल। २१ अत्यधिक, बहुत। २२ प्रशंसनीय। २३ तुलना में बढ़कर। २४ ज्येष्ठ। २५ खतरनाक। २६ अधिक दिनों का, पुराना। २७ गरिष्ठ, भारी। २८ जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली।

मोटो-ताजो–पु० हृष्ट-पुष्ट।

मोटोधणी–पु० ईश्वर।

मोट्यार–देखो 'मोटियार'। –पण, पणो='मोटियारपणो'।

मोठ–पु० [सं० मकुष्ठ] १ मूंग जाति का एक द्विदल अन्न। २ इसका पौधा। ३ देखो 'मोट'।

मोठउ–१ देखो 'मोठ'। २ देखो 'मोटो'।

मोठड़ो–पु० बिंदीदार रंगा हुआ एक साफा या ओढ़नी।

मोठफळी–स्त्री० मोठ नामक पौध की फली।

मोठा–स्त्री० पूना के पास की एक नदी।

मोठियार–देखो 'मोटियार'।

मोठेड़ी–स्त्री० मोठ की फली।

मोड–१ देखो 'मोडो'। २ देखो 'मौड़'।

मोडकी, मोडड़ी–देखो 'मोडी'।

मोडणी–देखो 'चोटीबडियो'।

मोडणो (णी)–देखो 'मोहणो' (णी)।

मोडलो–देखो 'माडो'।

मोडियाण–स्त्री० कृष्ण हिरन के बच्चे।

मोडियो, मोडो–वि० [सं० मुण्डित] (स्त्री० मोडी) १ जिसका शिर मुंडा हुआ हो, बिना बालों का। २ उद्दण्ड, बदमाश। ३ जो तीक्ष्ण न हो, भोंटा। ४ जिसके शिखर या चोटी न हो। –पु० १ मुंडित साधु, योगी। २ ढोंगी या पाखण्डी साधु। ३ भिखारी, भिक्षुक। ४ बिना सींग का पशु। ५ स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष।

मोढी–पु० मुसलमान, रंगरेज।

मोढो–पु० १ कंधा। २ देखो 'मूंढो'।

मोण–पु० १ आटे या मैदे आदि में, भिगोने से पूर्व थोड़ा घी व गर्म पानी मिलाकर तैयार किया गया दाना। २ वह परतदार रोटी जिस पर घी लगा हो। ३ देखो 'पौन'। ४ देखो 'मोम'।

मो'णो (णी)–देखो 'मोहणो' (णी)।

मोत–देखो 'मौत'।

मोतदिल–वि० [अ० मुअतदिल] शीतोष्ण।

मोतबर, मोतबिर–देखो 'मातबर'।

मो'ताज–देखो 'मुहताज'।

मो'ताजखानो–पु० याचकों को दान देने का स्थान।

मोताद–स्त्री० [अ० मुअताद] १ निश्चित मात्रा। २ खुराक।

मोताहल–पु० १ तारा। २ एक प्रकार का हाथी। ३ देखो 'मुक्ताफळ'।

मोतिड़ी–देखो 'मोती'।

मोतिणहार–पु० मोतियों का हार।

मोतियदाम–पु० [सं० मौक्तिकदाम] एक वर्ण वृत्त विशेष।

मोतियमाळ (माळा)–स्त्री० मोतियों की माला; हार।

मोतिया–वि० १ मोती संबंधी। २ मोती जैसे रंग का। ३ मोतियों के अनुरूप, मोती के आकार का। —पु० १ मोती जैसे रंग का वस्त्र। २ एक प्रकार का समोसा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–स्त्री० ३ एक प्रकार की लता ।

मोतियाबंध, मोतियाबिंद–पु० नेत्र संबंधी एक रोग ।

मोतियालाडू–पु० बूंदी का लड्डू, मिष्ठान्न ।

मोतियो–पु० १ मोती । २ मोथियो ।

मोतीड, मोतींडो–पु० [सं० मुक्ता-अंड] गाय या भैंस के बच्चा होने से पहले निकलने वाला पानी का मोटा अण्डा ।

मोती–पु० [सं० मौक्तिक] १ एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न । २ एक प्रकार का आभूषण । ३ घोड़ों का एक रंग या इस रंग का घोड़ा । ४ रहस्य सम्प्रदाय के अनुसार मन । ५ कसेरों का एक उपकरण । ६ एक प्रकार का सम्बोधन –वि० श्वेत, सफेद ।

मोतीआलाडू–देखो 'मोतियालाडू' ।

मोतीकड़ो–पु० १ मोती लगा, हाथ का स्वर्ण कंगन । २ मोतियों का हार ।

मोतीड़ो–देखो 'मोती' ।

मोतीचुर (चूर, चूरि)–पु० १ मोती जैसी बूंदियों का बना लड्डू, मिठाई । २ एक प्रकार का वस्त्र ।

मोतीचोकड़ो (चौकड़ो)–पु० कान का एक आभूषण ।

मोतीज्वर, मोतीझरो, मोतीझिरी–पु० एक प्रकार का ज्वर, मधुर ज्वर ।

मोतीदाम–देखो 'मोतियदाम' ।

मोतीनीलो–पु० एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।

मोतीपाक–पु० बूंदी व दूध के मावे का बना पकवान ।

मोतीपुड़ (पुड़ो)–पु० सीप के अन्दर का स्थान या भाग ।

मोतीबेल–स्त्री० बेल का एक भेद ।

मोतीभात–पु० एक प्रकार का भात ।

मोतीमाळ (माळा), मोतीयमाळा–स्त्री० १ मोतियों का हार । २ एक छन्द विशेष ।

मोतीयड़ो–देखो 'मोती' ।

मोतीयो–१ देखो 'मोती' । २ देखो 'मोथियो' ।

मोतीसर–पु० चारणों का याचक एक वर्ग व इस वर्ग का व्यक्ति ।

मोतीसरी (सिरी, हरी)–स्त्री० मोतियों की बनी कण्ठी, कण्ठ का एक आभूषण ।

मोतीहार–पु० मोतियों का हार ।

मोतो–पु० १ प्राणांत, मृत्यु । २ देखो 'मोथो' ।

मोथ–स्त्री० [सं० मुस्ता] १ एक प्रकार की घास विशेष । २ देखो 'मोथो' ।

मोथाब–पु० १ इनाम, पुरस्कार । २ धन्यवाद, वाहवाही, शाबासी

मोथामाळ–स्त्री० १ जैसलमेर राज्य का एक नामान्तर । २ मूर्ख मण्डली ।

मोथियो–पु० १ एक प्रकार का बारीक घास जिसकी जड़ मोती के समान होती है । २ देखो 'मोथो' ।

मोथू, मोथो–वि० १ मूर्ख, नासमझ । २ अनपढ़, गंवार, सुस्त । –पु० [सं० मुस्तक] १ नागर मोथा नामक घास व इसकी जड़ । २ सूअर, वराह ।

मोद–पु० [सं०] १ आनन्द, प्रसन्नता, खुशी, हर्ष । २ उत्साह, जोश । ३ गर्व, अभिमान । ४ मान, प्रतिष्ठा, गौरव । ५ सुगंध, महक । [सं० मधु] ६ शहद, मधु । [सं० मद] ७ शराब, मदिरा । ८ एक वर्ण वृत्त विशेष । ९ एक असुर । १० एक सर्प विशेष । ११ अनाज का गाडा ।

मोदक–पु० [सं०] १ लड्डू नामक मिष्ठान्न । २ किसी औषधि का लड्डू । ३ एक वर्ण वृत्त विशेष । ४ एक वर्ण संकर जाति । —वि० १ हर्षप्रद, आनन्ददायक । २ उत्साह वर्धक ।

मोदकर–पु० [सं०] एक प्राचीन मुनि । –वि० हर्षप्रद ।

मोदण–पु० १ ईश्वर । २ अनाज ढोते समय गाड़ी पर लगाया जाने वाला कपड़ा ।

मोदणो (जो)–क्रि० १ प्रसन्न होना, हर्षित होना । २ उत्साहित होना, उत्तेजित होना । ३ गर्वित होना, अभिमान करना । ४ महकना, सुगंध देना ।

मोदिक–देखो 'मोदक' ।

मोदिकवलभ–पु० गणेश, गजानन ।

मोदियउ–पु० एक वस्त्र विशेष ।

मोदियो–पु० १ अनाज की गाड़ी में लगने को घास-फूस की पट्टी । २ इस गाड़ी में भरी हुई वस्तु ।

मोदी–पु० [अ० मुद्दअ] किराणे का व्यापारी ।—**खानो**–पु० मोदी की दुकान । रसोईघर भण्डार । एक सरकारी विभाग जो खाद्य पदार्थों की खरीद आदि का हिसाब रखता था । (रियासती)

मोदीपगो–पु० एक प्रकार का बैल ।

मोदीलो–वि० (स्त्री० मोदीली) १ गर्विला, अभिमानी । २ प्रसन्न, खुश, हर्षित ।

मोदोख–पु० [सं० मोदोष] एक आचार्य विशेष ।

मोनि, मोनी–१ देखो 'मून' । २ देखो 'मौनी' ।

मोफत–देखो 'मुफत' ।

मोफतियो–देखो 'मुफ्तखोर' ।

मोब–पु० प्रथम प्रसव ।

मोबण–स्त्री० १ प्रथम प्रसव की पुत्री, लड़की । २ कन्या के विवाह के समय घर में रोपा जाने वाला काष्ठ का छोटा स्तंभ ।

मोबत–देखो 'मुहब्बत' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोबद, मोबिद–पु० [अ० मुग़्बिद] १ फ़ारसियों का धर्मोपदेशक। २ पुजारी।

मोबियो–पु० १ मोटो व चौड़ी खपरैल। २ देखो 'बोबियो'।

मोबी, मोभी–पु० (स्त्री० मोबणा) १ प्रथम प्रसव का पुत्र, ज्येष्ठ पुत्र। २ बड़ा भाई। ३ मकान की छत में लगाई जाने वाली महराब, कड़ी।

मोम–पु० [फा०] १ एक प्रकार का गाढ़ा व चिकना पदार्थ जिसकी बत्तियां बनती हैं। २ शहद की मक्खियों द्वारा छत्ता बनाने का चिकना पदार्थ। ३ यश, कीर्ति। ४ भूमि, पृथ्वी। ५ युद्ध। –वि० दयालु।

मोमजामो–पु० मोम का रोगन चढ़ा वस्त्र, मेणिया।

मोमदसाहिमोळियो–पु० कुछ विशेष रंगों का साफा।

मोमदिल–वि० सहृदय, भावुक।

मोमन–देखो 'मोमिन'।

मोमना–स्त्री० घोड़ों की एक जाति।

मोमनी–स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र।

मोमबत्ती–स्त्री० मोम की बनी बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमाखी–स्त्री० मधु मक्खी।

मोमाळ–पु० मामा का घर, ननिहाल।

मोमिन–पु० [अ०] १ धर्मनिष्ठ मुसलमान। २ इस्लाम व खुदा पर ईमान लाने वाला। ३ जुलाहा मुसलमान।

मोयला–स्त्री० १ कुम्हारों की एक शाखा। २ मिट्टी के बर्तन बनाने वाली एक मुसलमान जाति।

मोयलो–पु० उक्त 'मोयला' जाति का कोई व्यक्ति।

मोरंजदोस–पु० जैन धर्म में एक दोष।

मोर (उ)–पु० [सं० मयूर] (स्त्री० मोरनी) १ शिर पर कलंगी व लम्बी गर्दन का, गरुड़ जाति का एक बड़ा पक्षी। २ मुसलमानों की एक जाति। ३ एक रंग विशेष का घोड़ा। ४ देखो 'मौर'। ५ देखो 'मोहर'। ६ देखो 'मोरा'।

मोर–देखो 'मोहर'।

मोरउ–देखो 'मोरा'।

मोरख, मोरखी–स्त्री० १ हल में लगने का लोहे का एक उपकरण। २ देखो 'मूरख'।

मोरड़ी–स्त्री० १ कच्चे मकान के छाजन में लगने की एक लकड़ी। २ देखो 'भोरनी'। ३ देखो 'मोरी'।

मोरडो–पु० १ गेहूँ की बालों का गुच्छा। २ देखो 'मोर'। ३ देखो 'मोरा'।

मोरचंदरका, मोरचंद्रिका–स्त्री० [सं० मयूर-चन्द्रिका] मोर की पंख पर होने वाली चन्द्राकार बिन्दी।

मोरचाड़–स्त्री० आड़ी सीता, हल की रेखा।

मोरचाबंदी–स्त्री० जमीन में खाई खोदकर युद्ध के लिए बैठने की क्रिया।

मोरचो–पु० [फा० मोरचाल] १ जमीन में खोदा जाने वाला खड्डा या खाई जिसमें बैठ कर शत्रु का मुकाबला किया जाता है। २ गढ़ के चारों ओर सैनिकों के लिये खोदी जाने वाली खाई। ३ शत्रु से मुकाबला करने का सुरक्षित स्थान। ४ मुकाबला, सामना। ५ मुकाबले में आने की क्रिया या भाव। ६ लोहे का जंग। ७ दर्पण का मैल।

मोरछड़, मोरछल–पु० मोर की पांखों का बना चवर।

मोरछो–देखो 'मोरचो'।

मोरट–स्त्री० [सं०] १ मूंज की जड़। २ एक प्रकार की घास।

मोरण–पु० बाजरी की बाल को सेक कर निकाले जाने वाले कच्चे दाने।

मोरणा–स्त्री० सारंगी की खूंटी।

मोरणी–स्त्री० १ सारंगी में लगने की खूंटी। २ बाजरी की बाल से दाने निकालने की क्रिया या भाव। ३ देखो 'मोरनी'।

मोरणो–पु० एक प्रकार का सरकारी कर।

मोरणी (बी)–१ देखो 'मोरणो' (बी)। २ देखो 'मोड़णी' (बी)।

मोरत–देखो 'मुहूरत'।

मोरध्वज, मोरध्वज, मोरध्वज, मोरध्वजी, मोरध्वज–पु० [सं० मयूर-ध्वज] १ एक प्रसिद्ध, पौराणिक राजा। २ जोधपुर के किले का नाम।

मोरनदेवी–स्त्री० एक लोक देवी विशेष।

मोरनाच–स्त्री० नृत्य का एक भेद।

मोरनी–स्त्री० [सं० मयूर] १ मादा मयूर, मादा मोर। २ देखो 'मोरणी'।

मोरपंखी–स्त्री० १ मोर पंख की तरह बनी व रंगी वस्तु या नाव। २ मल्ल खंभ की एक कसरत। –वि० १ मोर की पंख का बना। २ मोर की पंख के समान।

मोरमौड़ली, मोरमौड़ी, मोरमौड़ी–स्त्री० १ स्त्रियों के सिर का आभूषण विशेष। २ स्त्रियों के बाल की लटिका।

मोरमुकट, मोरमुकुट, मोरमुगट–पु० [सं० मयूर-मुकुट] १ मोर की पंखों का मुकुट या ताज। २ वह मुकुट जिस पर मोर की पंख लगी हो।

मोररथ–पु० [सं० मयूर-रथ] स्वामिकार्त्तिकेय।

मोरलियो, मोरलो–देखो 'मोर'।

मोरसल–देखो 'मोरछड़'।

मोरसिका, मोरसिखा–स्त्री० [सं० मयूर-शिखा] १ मोर की चोटी। २ एक जड़ी विशेष।

मोरसिरो–देखो 'बोलसिरी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोरा–सर्व० मेरा ।

मोराइ, मोराई–देखो 'मुराई' ।

मोराकीन–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

मोरादे, मोरादेवी–देखो 'मरुदेवी' ।

मोरार, मोरारी–देखो 'मुरारी' ।

मोरिय–१ देखो 'मोरघ' । २ देखो 'मोरी' ।

मोरिया–पु० १ गाय-भैंस आदि का मृत शरीर जिसमें मसाला भर कर रखा गया हो । २ एक लोक गीत विशेष । ३ मोर, मयूर ।

मोरींगो–पु० जमीन में रुपा या दीवार में लगा छेददार पत्थर ।

मोरी–स्त्री० १ मकान से पानी बाहर आने की नाली । २ बांध का पानी निकालने का छोटा छेद । ३ तालाब का पानी बाहर करने की नाली । ४ छोटा द्वार या खिड़की । ५ बंदूक का मुख । ६ एक प्राचीन राजपूत वंश, मौर्य । –वि० खाली, रिक्त । –सर्व० मेरी ।

मो'री–स्त्री० ऊट की नकेल में बांधने की रस्सी ।

मोरोर–देखो 'मुहरिर' ।

मोरीसाली–पु० [अ० मूरिसे-आ'ला] गोद लेने का एक नियम ।

मोर्ड, मोर्व–देखो 'मोरो' ।

मोरढ़ो–पु० एक लोक गीत विशेष ।

मोरलो–देखो 'मोर' ।

मोर्ह–१ देखो 'मोर' । २ देखो 'मोरो' ।

मोरूसी–वि० वंशानुगत, परम्परागत ।

मोरेल–स्त्री० बनाव की एक सहायक नदी ।

मोरेवो–पु० गेहूं की फसल के साथ होने वाला एक घास ।

मो'रो–पु० [सं० मुकराकृति] १ ऊंट, बैल आदि के चेहरे पर सौन्दर्य के लिये लगाई जाने वाली जाली । २ हाथी के मुख पर लगाया जाने वाला एक उपकरण । ३ इसी तरह बैल के मुंह पर लगाने का चमड़े आदि का उपकरण । ४ आकृति चेहरा । ५ घास-फूस का पूला । ६ आग जलाने की कंटोली पतली लकड़ियों का समूह । ७ आग, अग्नि । ८ पशुओं का क्रोध या जोश । [फा० मुह्र] ९ सर्प का विष उतारने का पत्थर विशेष । १० बच्चों का ग्रह दोष मिटाने का एक मणिया विशेष । ११ शतरंज की गोटी । १२ सेना की अग्रिम पंक्ति । –सर्व० मेरा ।

मोर्यो–देखो 'मोर' ।

मोळ–देखो 'मौळ' ।

मोल–पु० [सं० मूल्य] १ मूल्य, कीमत । २ दर, भाव । ३ क्रयण, खरीद । ४ खरीद के लिये किया गया भुगतान । ५ महत्व, विशेषता, कद्र ।

मोलगत–देखो 'मोहलत' ।

मोळणो (बो)–क्रि० १ काटना, कतरना । २ उतारना, हटाना ।

मोलणो (बो)–देखो 'मोलाणो' (बो) ।

मोलत–देखो 'मोहलत' ।

मोलबो (बो)–देखो 'मौलवी' ।

मोलसरी, मोलसिरी, मोलश्री–देखो 'बोलसिरी' ।

मोलाई–स्त्री० किसी वस्तु की कीमत या भाव पूछने की क्रिया ।

मोलाकुमार–पु० मुसलमान कुम्हार ।

मोळाटो–पु० १ चोर, डाकुओं का मुंह ढकने का वस्त्र विशेष । २ बोझा उठाते समय सिर पर रखने की वस्त्र की पट्टी ।

मोळाणो (बो)–क्रि० १ कटवाना, कतरवाना । २ 'मौळ' आना या होना ।

मोलाणो (बो)–क्रि० १ खरीदने योग्य वस्तु या पशु धन का मूल्य पूछना, भाव पूछना । २ खरीदना, क्रय करना ।

मोळावटो–देखो 'मोळाटो' ।

मोलावणो (बो)–देखो 'मोलाणो' (बो) ।

मोलि–१ देखो 'मोल' । २ देखो 'मौळियो' ।

मोलियामंगळ–देखो 'मौळियामंगळ' ।

मोलियु, मोलियो–देखो 'मौळियो' ।

मोलियो–पु० १ पुरुषार्थहीन व्यक्ति, औरतों के लक्षण वाला या औरत के वशीभूत रहने वाला व्यक्ति । जनखा । २ अशक्त या कमजोर व्यक्ति । ३ कृषि कार्य का भागीदार व्यक्ति । ४ किराये किया हुआ हल । ५ काले मुंह का बंदर । ६ जोरू का गुलाम । ७ देखो 'मौळियो' ।

मोळी–१ देखो 'मोळो' । २ देखो 'मोळो' (स्त्री) ।

मोलो–वि० १ दुर्बल, अशक्त । २ मूल्य वाला, कीमत वाला, ३ मूल्यवान, कीमती । –स्त्री० [सं० मौलि:] १ मादा ऊंट । २ सिर की चोटी, बालों का जूड़ा । ३ जटाजूट । ४ मस्तक ५ मुकुट । ६ पगड़ी । ७ प्रधान व्यक्ति ।

मोळीओ–पु० १ एक प्रकार का वस्त्र । २ देखो 'मौळियो' ।

मोलीमोयो–पु० लकड़ी की वस्तुओं की किनार सुन्दर बनाने का औजार ।

मोळीयो–देखो 'मौळियो' ।

मोलीयो–देखो 'मोलियो' ।

मोळो–वि० (स्त्री० मोळी) १ जो अधिक खट्टा न हो । २ जो फीका हो । ३ उत्साह रहित, निरुत्साहित । ४ सुस्त, उदास । ५ स्वभाव या चरित्र से कमजोर, अविश्वसनीय । ६ मंद, धीमा । ७ नर्मदा । ८ ओजस्वहीन ।

मोलो–वि० १ कीमती, मूल्यवान । २ कीमत या दाम वाला । ३ देखो 'मोलियो' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोल्यो, मोलिह्यो, मोल्हीयो–देखो 'मोलियो'।
मोवण–१ देखो 'मोण'। २ देखो 'मोहन'।
मोवणी–देखो 'मोहनी'।
मोवणो–वि० (स्त्री० मोवणी) मोहित करने वाला, लुभावना, सुन्दर, आकर्षक।
मोवली (वी)–देखो 'मोहणी' (वी)।
मोवन–देखो 'मोहन'।
मोवनकठी–स्त्री० स्त्रियों के गले का हार।
मोवनी–देखो 'मोहनी'।
मोवनीइग्यारस (एकादसी)–स्त्री० वैशाख शुक्ला एकादशी।
मोस–पु० [सं० मोष] १ चोर, तस्कर, उचक्का। २ चोरी का माल। ३ लूट-खसोट। ४ वध, हत्या। ५ झूठ, मिथ्या। ६ दंड, सजा। ७ ताना, व्यंग।
मोसड़–देखो 'मसोड़'।
मोसणो (वो)–क्रि० १ झूठा दोषारोपण करना, कलंक लगाना। २ व्यंग करना, ताना मारना। ३ चोरी करना, लूटना। ४ देखो 'मसोसणो' (वो)।
मोसर–पु० १ शुभ अवसर, मौका। २ समय, वक्त। ३ संयोग। ४ मूंछे। ५ देखो 'मौसर'।
मोसार, मोसाळ, मोसाल–पु० १ मामा का घर, ननिहाल। २ पीहर, पिता का घर। ३ मामा।
मोसाळी–देखो 'मोसाळ'।
मोसी–देखो 'मासी'।
मोसेल–देखो 'मोसाळ'।
मोसो–पु० १ व्यंग, ताना। २ कटुवचन, आक्षेप। ३ उपालंभ। ४ देखो 'मासो'।
मोह–पु० [सं०] १ सांसारिक पदार्थों को सत्य मानने का भ्रम। अज्ञान। २ सांसारिक तत्वों के प्रति आसक्ति, झुकाव, लगाव। ३ लोभ। ४ ममत्व, वात्सल्य। ५ प्रेम, स्नेह, प्यार। ६ प्रसन्नता खुशी, मोद। ७ ब्रह्मा का एक पुत्र। ८ मोहित होने की अवस्था या भाव। ९ गर्व, अभिमान, घमंड। १० उद्विग्नता, आतुरता। ११ दया, कृपा। १२ साहित्य का एक संचारी भाव। १३ एक प्रकार की तान्त्रिक क्रिया। –वि० काला, श्याम।
मोहक–वि० [सं०] १ जिसके कारण मन में मोह उत्पन्न हो। २ मोहित करने वाला, आकर्षक, लुभावना। ३ अत्यन्त सुन्दर। ४ राजा सुरथ का एक पुत्र।
मोहकम–देखो 'मुहकम'।
मोहकार–पु० पीतल या तांबे के घड़े का ऊपरी भाग, मुख।
मोहड़ो, मोहडो–देखो 'मूंडो'।
मोहण–१ देखो 'मोहन'। २ देखो 'मोहनी'।
मोहणगति (गती)–पु० काजल।
मोहणवेलि (ली)–स्त्री० मन को आकृष्ट करने वाली लता।
मोहणिज्ज–पु० मोहनीय कर्म।
मोहणियो–वि० मोहित करने वाला।
मोहणी–स्त्री० १ एक नदी का नाम। २ देखो 'मोहनी'।
मोहणीमंत्र–देखो 'मोहनीमंत्र'।
मोहणीय–पु० मोहनीय कर्म (जैन)।
मोहणो (वो)–क्रि० [सं० मोहनम्] १ मोहित करना, लुब्ध करना, रीझाना, वश में करना। २ आकर्षित करना, ललचाना। ३ प्रेम पाश में बांधना। ४ भ्रमित करना, धोखे में डालना। ५ मूर्छित या बेहोश करना। ६ परेशान या तंग करना। ७ सांसारिक कार्यों में लगाना, माया में फंसाना।
मोहतसिम–पु० १ अधिकार सम्पन्न व्यक्ति जिसके अधीन कई व्यक्ति काम करते हों। २ प्रबंधकर्ता।
मोहताज, मोहताह–पु० १ भोजन सामग्री। २ मांस। ३ देखो 'मुहताज'। —खानो–पु० अपाहिजों को सहायता देने वाला विभाग।
मोहताजी–देखो 'मुहताजी'।
मोहन–पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर। २ श्रीकृष्ण का एक नाम। ३ शिव, महादेव। ४ माया, भ्रम। ५ कामदेव के पांच बाणों में से एक। ६ एक तांत्रिक प्रयोग विशेष। ७ उक्त प्रयोग में पढा जाने वाला मंत्र। ८ धतुरा। ९ स्त्री प्रसंग, मैथुन। १० परेशानी, व्याकुलता। ११ आंख। १२ एक वर्ण वृत्त विशेष। १३ बारह मात्राओं की एक ताल। –वि० १ मोहित करने वाला, मोहने वाला। २ आकर्षित करने वाला। ३ परेशान या व्याकुल करने वाला। ४ माया में डालने वाला। ५ फंसाने वाला।
मोहनकंठी–स्त्री० स्त्रियों के गले का एक आभूषण।
मोहनगारड (गारी)–वि० (स्त्री० मोहनगारी) मोहने वाला।
मोहनभोग–पु० १ एक प्रकार की मिठाई। २ एक प्रकार का हलवा। ३ एक प्रकार का धान्य। ४ केला।
मोहनमाळा–स्त्री० १ गले की एक माला। २ एक आभूषण।
मोहनाळ–स्त्री० १ पशुओं के नाक से सिर तक का भाग। २ देखो 'मुंहनाळ'।
मोहनास्त्र–पु० [सं० मोहन-अस्त्र] शत्रु को मूर्च्छित करने का अस्त्र।
मोहनि (नी)–स्त्री० [सं० मोहिनी] १ विष्णु का एक रूप। २ एक वेश्या। ३ वैशाख शुक्ला एकादशी। ४ सुन्दर स्त्री, सुंदरी। ५ माया। ६ एक देवी विशेष। ७ प्रीति। ८ वशीकरण मंत्र। ९ मूर्च्छित करने की क्रिया। १० भ्रम में डालने की क्रिया। ११ एक वर्ण वृत्त। १२ एक मात्रिक छन्द विशेष। १३ मोह का प्रभाव। –वि० १ मोहने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाली, लुभाने वाली । २ भ्रमित करने वाली, भ्रम में डालने वाली । ३ आकृष्ट करने वाली । ४ वश में करने वाली । —मंत्र—स्त्री० वशीकरण मंत्र ।

मोहनीय—वि० [सं०] १ मोहने योग्य, मोहित करने योग्य, सुन्दर, आकर्षक । २ मोह उत्पन्न करने वाला ।

मोहनीरूप—पु० [सं०] विष्णु का एक रूप ।

मोहनी—वि० (स्त्री० मोहनी) अत्यन्त सुन्दर, लुभावना ।

मोहपुर—पु० स्वर्ग, देवलोक ।

मोहम्मद, मोहम्मद—देखो 'मुहम्मद' ।

मोहमी—देखो 'मोमी' ।

मोहम्मदीय—वि० मुहम्मद का, मुहम्मद संबंधी ।

मोहम्मद—देखो 'मुहम्मद' ।

मोहर—स्त्री० [फा० मुहर] १ स्वर्ण मुद्रा, अशरफी । २ धातु का ठप्पा या रबर सील । पत्र या विभाग की मुद्रा । ३ इस ठप्पे द्वारा अंकित चिह्न । ४ लेना का अपभाव, हरावल । ५ सिंधी मुसलमानों की एक शाखा । ६ पद्य की द्वितीय व चतुर्थ पंक्ति का मेल । —वि० १ प्रधान, मुखिया, अग्रणी । २ प्रथम, पहला । —क्रि०वि० ३ पूर्व, पहले । ४ आगे, अगाड़ी । ५ सामने, आगे ।

मोहरत, मोहरत—देखो 'महूरत' ।

मोहरम—पु० [अ० मुहर्रम] १ इस्लामी वर्ष का प्रथम मास । २ इस महिने में इमाम हुसैन अली का मनाया जाने वाला शोक ।

मोहराज—पु० [सं०] मानव की पांच वृत्तियों में से प्रमुख वृत्ति

मोहरामेल—स्त्री० सुकवंदी ।

मोहरि—१ देखो 'मोरी' । २ देखो 'मोहर' । देखो 'मोहरी' ।

मोहरिवाल—वि० अग्रगामी, अग्रणी ।

मोहरी—स्त्री० १ किसी बर्तन आदि के मुंह का खुला भाग । २ पेन्ट, पाजामें आदि का नीचे का खुला भाग । ३ देखो 'मोहर' । ४ देखो 'मोरी' ।

मोहरे (रै)—क्रि० वि० १ अगाड़ी, आगे । २ सामने, सम्मुख ।

मोहरी—देखो मो'री ।

मोहल—१ देखो 'महल' । २ देखो 'महिला' ।

मोहलत—स्त्री० [अ०] १ अवकाश, छुट्टी । २ समय, वक्त, फुर्सत । ३ मयाद, अवधि । ४ ढील, छूट, रियायत । ५ विलम्ब, देर ।

मोहलाइत, मोहलायत—देखो 'महलायत' ।

मोहल्ली—१ देखो 'महोली' २ देखो 'महल्ली' । ३ देखो 'महल'

मोहल्ल—१ देखो 'महल' । २ देखो 'महिला' । ३ देखो मूल्य' ।

मोहल्ली—१ देखो 'महल्ली' । २ देखो 'महोली' ।

मोहामाही—देखो 'माहोमाह' ।

मोहाणी (णी)—देखो 'मोहणी' (णी) ।

मोहा—स्त्री० भूमि, जमीन ।—वि० मोहित, भ्रमित ।

मोहाग्नि मोहाग्नि—स्त्री० मोहरूपी आग ।

मोहाजाल—पु० १ मोह का बंधन । २ सांसारिक प्रपंच । ३ संसार को सत्य समझने का भ्रम ।

मोहायल—पु० मोह का स्थान ।

मोहि, मोहि—सर्व० [सं० मह्य] १ मुझे, मुझको । २ मेरा, मेरी । ३ मुझसे । ४ देखो 'मोह' ।

मोहिण—देखो 'मोहन' ।

मोहित—वि० [सं०] १ मोह में पड़ा हुआ । २ भ्रमित । ३ लुब्ध, मुग्ध, आसक्त । ४ मूर्च्छित, बेहोश ।

मोहिनी—देखो 'मोहनी' ।

मोहिम—देखो 'मुहिम' ।

मोहीं, मोही—देखो 'मोहि' ।

मोहीलो—वि० १ स्नेही, प्रेमी, प्यारा । २ देखो 'महल्ली' ।

मोहूरत—देखो 'महूरत' ।

मोहे—देखो 'मोहि' ।

मोहेर—देखो 'मोहर' ।

मोहोबत, मोहोब्बत—देखो 'मुहब्बत' ।

मोहोर—देखो 'मोहर' ।

मोहोल—१ देखो 'महल' । २ देखो 'महिला' ।

मोहोली—१ देखो 'महल्ली' । २ देखो 'महोली' ।

मोही—पु० [सं० मुख] १ कूए की जगत । २ कूए पर खड़े होकर पानी सींचने का स्थान । ३ देखो 'मोह' ।

मोहौल—१ देखो 'महल' । २ देखो 'महिला' ।

मोहोली—१ देखो 'महल' । २ देखो 'महोली' ।

मौं—देखो 'मो' ।

मौंघडो—देखो 'मूंडो' ।

मौंज—पु० [सं०] १ भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार । २ देखो 'मौज' ।

मौंजकेस—पु० [सं० मौंजकेश] अत्रि कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

मौंजवृष्टि—पु० [सं० मौंजवृष्टि] अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

मौंजा—देखो 'मांजा' ।

मौंजायन—पु० युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि ।

मौंजायनि—पु० विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

मौंजिबंधन (न)—पु० [सं० मौंजीबंधन] यज्ञोपवीत संस्कार, जनेऊ ।

मौंजी—देखो 'मौजी'

मौंठोड़ो—स्त्री० १ मोठ नामक अन्न की फली । २ मोठ की बनी बड़ी, वटिका ।

मौंडो—देखो 'मूंडो' ।

मौत—देखो 'मौत' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मौनाळ–देखो 'मुंहनाळ'।
मौसरां–स्त्री० [सं० मोसरी] मूछें।
मौहुंडी, मौहुंडो–देखो 'मूंडी'।
मौ–देखो 'मो'।
मौकणी (णौ)–देखो 'मूकणी' (णौ)।
मौकळणी (णौ)–देखो 'मोकळणी' (णौ)।
मौकळी–देखो 'मोकळी'।
मौकावारदात–स्त्री० [अ०] घटना-स्थल।
मौकूफ–वि० [अ०] १ रोका या स्थगित किया हुआ। २ बरखास्त। ३ दूर किया हुआ, अलग। ४ मिटाया हुआ।
मौकूफी–स्त्री० [अ०] १ स्थगन, रुकावट। २ बरखास्तगी ३ अलगाव। ४ मिटाना क्रिया।
मौकूब–देखो 'मौकूफ'।
मौको–पु० [फा०] १ शुभ अवसर, अच्छा मौका। २ कुछ करने या कहने का अवसर। ३ उचित समय। ४ शुभ संयोग। ५ कठिन समय। ६ घटना का काल, वारदात का समय। ७ स्थान, जगह। ८ अवधि, मोहलत, मयाद। ९ अवकाश, फुरसत।
मौक्तिक–पु० [सं०] मोती।
मौक्तिकअंग–पु० एक प्रकार का आभूषण।
मौक्तिकमाळा–स्त्री० १ मोतियों की माला। २ एक वर्ण वृत्त।
मौक्तिकसर–पु० एक आभूषण विशेष।
मौक्तिकहार–पु० मोतियों का हार।
मौख–१ देखो 'मोख'। २ देखो 'मोख'।
मौगी–देखो 'मोगी'।
मौड़–पु० [सं० मुकुट] १ दूल्हे–दुल्हिन के कान पर व सिर के बांधने का सेहरा। २ योद्धाओं के बांधने का सेहरा। ३ मुकुट। ४ स्त्रियों का एक आभूषण विशेष। –वि० १ श्रेष्ठ, शिरोमणि। २ प्रधान, मुखिया। ३ सर्वमान्य।
मौड़उ–१ देखो 'मोड़ो'। २ देखो 'मौड़'।
मौड़णी (णौ)–देखो 'मोड़णी' (णौ)।
मौड़बंध (बंधो)–पु० १ वर, दूल्हा। २ राजा। –वि० जिसके सेहरा बंधा हो।
मौड़बंधी–स्त्री० १ वधू, दुल्हिन। २ सेहरा बंधी स्त्री या लड़की। ३ मौड़ बांधने की क्रिया या भाव।
मौड़ो–देखो 'मोड़ो'।
मौच–देखो 'मोच'।
मौचणी (णौ)–देखो 'मोचणी' (णौ)।
मौछ–स्त्री० बछड़ा मरने के बाद भी दूध देने वाली गाय।
मौज–स्त्री० [अ०] १ आनन्द, खुशी, मस्ती। २ मस्ती, मजा। ३ सुख, आराम, चैन। ४ संतोष। ५ लहर, तरंग। ६ मन की उमंग, जोश। ७ लगन, धुन। ८ आवारागर्दी। निकम्मापन। ९ पुरस्कार, इनाम। १० दान।
मौजड़ी–१ देखो 'मोज'। २ देखो 'मोजड़ी'।
मौजड़ीयो–देखो 'मोचड़ो'।
मौजवत–पु० १ अक्ष नामक वैदिक सूक्त द्रष्टा का पैतृक नाम। २ मूजवंत का नामान्तर।
मौजी–वि० १ स्वेच्छाचारी। २ उन्मत्त, मद मस्त। ३ आनन्दित, प्रसन्नचित, खुश। ४ दयालु, कृपालु, दातार। ५ अशक्त, कमजोर। ६ कायर, डरपोक।
मौजीज–वि० [अ०] १ बुद्धिमान, समझदार। २ प्रतिष्ठित। ३ वृद्ध, ज्ञानी।
मौजूद–वि० [अ०] १ उपस्थित, हाजर। २ तैयार, प्रस्तुत। ३ विद्यमान, वर्तमान। ४ यथार्थ, वास्तविक।
मौजूदगी–स्त्री० [अ०] १ मौजूद होने की दशा या भाव। २ उपस्थिति, हाजरी। ३ तैयारी। ४ विद्यमानता। ५ यथार्थता, वास्तविकता।
मौजूदा–क्रि० वि० [अ०] वर्तमान का, वर्तमान में।
मौजो–पु० [अ० मौजा] १ ग्राम, गांव। २ जगह, स्थान। ३ देखो 'मोजो'।
मौटमन–देखो 'मोटमन'।
मौडची–स्त्री० देवी।
मौडिम–देखो 'मोटम'।
मौठ–देखो 'मोठ'।
मौड–देखो 'मौड़'। —बंध, बंधो=मौड़बंध।
मौत–स्त्री० [सं० मृत्यु] १ किसी प्राणी का निधन, अन्तकाल, देहान्त, प्राणान्त। २ आकस्मिक मृत्यु। ३ मृत्यु की सी दशा, हालत। –पु० ४ यम, काल। ५ ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ कामदेव। ८ अत्यन्त कष्ट, तकलीफ।
मौतबिर–देखो 'यातबर'।
मौतल–देखो 'मुअत्तल'।
मौताज (ज)–देखो 'मुहताज'।
मौताहळ–देखो 'मुक्ताफळ'।
मौती–देखो 'मोती'।
मौधिक–पु० एक प्रकार की मिठाई, लड्डू।
मौधिता–स्त्री० १ एक देवी का नाम। २ देखो 'मुदिता'।
मौद्गल–पु० एक आचार्य (पौराणिक)।
मौद्गल्य–पु० एक आचार्य विशेष।
मौद्गलायन–पु० भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मौद्गल्य–पु० १ कुछ आचार्यों का पैतृक नाम। २ मैत्रेय आचार्य का समकालीन एक ब्रह्मचारी। ३ एक ब्राह्मण। ४ अंगिरा कुलोत्पन्न एक प्रवर। ५ राम की सभा का एक मंत्री। ६ जनमेजय के सर्प सत्र का एक सदस्य।

मौन–पु० [सं०] १ अणीचिन् नामक आचार्य का पैतृक नाम। २ देखो 'मून'।

मौनव्रत पु० न बोलने का व्रत संकल्प।

मौनि, मौनी–पु० [सं० मुनि] १ न बोलने के व्रत वाला साधु या व्यक्ति, मुनि। २ मुनि, महात्मा। ३ देखो 'मून'।

मौने, मौनें–देखो 'मोनें'।

मौवत–देखो 'मुहब्बत'।

मौर, मौ र–पु० १ शरीर का पृष्ठ भाग। २ पीठ, पृष्ठ भाग। ३ वृक्षों की मंजरी। ४ देखो 'मोहर'। ५ देखो 'मोर'।

मौरक, मौरख–१ देखो 'मोरख'। २ देखो 'मूरख'।

मौरखी–स्त्री० बंदूक की नाल का मुख।

मौरछौ–पु० १ ऊंट, बैल आदि के मुख पर सौन्दर्य के लिये लगाई जाने वाली जाली। २ देखो 'मूरख'।

मौरछौ–देखो 'मोरचौ'।

मौरणौ (णौ)–क्रि० १ वृक्षों पर मंजरी आना, बौर आना। २ बाजरी की बाल को सेक कर दाने निकालना।

मौरत–देखो 'महुरत'।

मौरम–देखो 'मोहरम'।

मौरय–देखो मोर्य'।

मौरवी–देखो 'मुरवी'।

मौरवीकामकंटका–स्त्री० घटोत्कच की पत्नी का नाम।

मौरसली–स्त्री० एक प्रकार का पुष्प।

मौराटी–स्त्री० पीठ।

मौरामेळ–पु० पद्य या छंद के चरणों की तुक बंदी।

मौरित–वि० जिसमें मंजरी या बौर हो, मंजरी आया हुआ।

मौरियाळ–पु० जंगल में चरने जाने वाले पशु-समूह में से सबसे आगे चलने वाला पशु। –वि० अग्रणी, अग्रगामी।

मौरियौ–देखो 'मोर'

मौरी–स्त्री० १ बैल की कुकुद से पिछले पैरों तक होने वाली बालों की पंक्ति। २ तलवार की म्यान की डोरी। ३ प्याले का ऊपरी भाग। ४ देखो 'मोरी'। ५ देखो 'मौर'।

मौर्व, मौर्ह, मौर्क, मौर्क–देखो 'मौर'।

मौरूसी–वि० जो बाप-दादा के समय का हो पैतृक।

मौरो–देखो 'मोरो'।

मौर्य–पु० [सं० मौर्य] मगध का शासक, एक प्रसिद्ध राजवंश।

मौर्यौ–देखो मौर'।

मौळ–स्त्री० १ संतापन, मंदी। २ अभाव, कमी। ३ उदासी, सुस्ती। ४ कांतिहीनता, मंदता। ५ चहल-पहल या रौनक का अभाव। ६ उत्साह या जोश की कमी। ७ हल्कापन, न्यूनता। ८ फीकापन, रूखापन। ९ खटाई का अभाव। १० प्रभावहीनता।

मौल–देखो 'मोल'।

मौ'स–देखो 'महल'।

मौलगत–देखो 'मोहलत'।

मौळद–पु० बड़ा हथौड़ा'।

मौळणौ (णौ)–देखो 'मोळणौ' (णौ)।

मौलत–देखो 'मोहलत'।

मौलवी–पु० [अ०] १ इस्लाम धर्म का आचार्य। २ अरबी भाषा का विद्वान। ३ उर्दू, फारसी अरबी, पढ़ाने वाला अध्यापक।

मौलसरी, मौलसिरी, मौलस्री–देखो बोलसरी'।

मौळाणौ–वि० १ चटपटी वस्तु खाने का इच्छुक। २ कामेच्छा से व्याकुल।

मौलि–पु० [सं०] १ एक गोत्रकार। २ एक आचार्य। ३ देखो 'मोळी'।

मौलिक–वि० १ मूल्यवान, कीमती। २ मूल। ३ स्वयं का।

मौळियांमंगळ–पु० [सं० मौलि-मंगल] जन्म कुण्डली का एक योग।

मौळियौ–पु० [सं० मौलि] १ विविध रंगों का साफा। २ एक प्रकार की बच्चों के सिर पर धारण करने की छोटी पगड़ी।

मौळी–स्त्री० १ सूत के कच्चे तंतुओं का, लाल-पीले रंग का धागा। सूत्र। २ ईंधन की लकड़ियों का गट्ठर। ३ मस्तक; सिर। ४ देखो 'मोळो'।

मौळो–वि० [सं० मलिन] (स्त्री० मौळी) १ मंद गति से कार्य करने वाला। २ सुस्त, आलसी। ३ मंद, धीमा। ४ धुंधला, फीका, निस्तेज। ५ उदास, खिन्न। ६ शान्त, धीमा। ७ उत्साहहीन ठंडा। ८ निर्बल, कमजोर। ९ प्रभाव हीन, निष्फल। १० शर्मिंदा। ११ नामर्द। १२ हल्का, न्यून। १३ साधारण, ठीक-ठीक। १४ सस्ता, पोचा। १५ जो अधिक खट्टा न हो। १६ चरित्र का पोचा।

मौल्य–देखो 'मूल्य'।

मौसम–पु० [अ० मौसिम] १ ऋतु। २ जलवायु, आबोहवा, वातावरण। ३ उचित समय या अवसर।

मौसमी–वि० १ मौसम का, मौसम संबंधी। २ किसी ऋतु विशेष में होने वाला। ३ समयानुकूल। –स्त्री० नारंगी जाति का एक फल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोसर–पु० १ मृतक के पीछे किया जाने वाला भोज मृत्यु-भोज। २ धार्मिक या सामाजिक कार्य का विशेष अवसर। ३ देखो 'मोसर'।

मोसाड़ो–पु० पशुओं का एक रोग।

मोसाळ, मोसाळी (स्त्री)–देखो 'मोसाळ'।

मोसी–देखो 'मासी'। —हाई 'मासीयाइ'।

मोसौ–१ देखो 'मोसौ'। २ देखो 'मासौ'।

मोह–देखो 'मोह'।

मोहत–पु० [सं० महत्व] महत्ता, बड़ाई।

मोहताद–देखो 'मोताद'।

मोहतौ–देखो 'महता'।

मोहबत, मोहबति–देखो 'मुहब्बत'।

मोहमंद–देखो 'मुहम्मद'।

मोहम–देखो 'मुहिम'।

मोहर–देखो 'मोहर'।

मोहरत–देखो 'महुरत'।

मोहरलौ–वि० (स्त्री० मोहरली) आगेवाला, अग्रणी, प्रथम।

मोहरि–१ देखो 'मोहर'। २ देखो 'मोरी'।

मोहरियाळ–देखो 'मोहरियाळ'।

मोहरी–१ देखो 'मोरी'। २ देखो 'मोहर'।

मोहरु (क)–१ देखो 'मोहर'। २ देखो 'मोरी'।

मोहरे मोहरं–क्रि० वि० १ अग्रभाग में, आगे, आगाड़ी। २ सम्मुख, सामने। ३ किनारे, तट पर।

मोहरौ–१ देखो 'मोरी'। २ देखो 'मोहरौ'।

मोहल–१ देखो 'महल'। २ देखो 'महिला'।

मोहळियौ–देखो 'मौळियौ'।

मोहलौ–१ देखो 'महोलौ'। २ देखो 'महल'।

मोहली, मोहिली, मोहीली–देखो 'मोहनि'।

मोहूरत–देखो 'महुरत'।

मोहूरतिक–पु० एक देव, जो धर्म ऋषि एवं मुहुर्ता के पुत्रों में से एक था।

मोहौ–देखो 'मोसौ'।

म्यत–देखो 'मित्र'।

म्याउ (ऊ)–पु० बिल्ली की बोली।

म्यान–स्त्री० [फा० मियान] १ तलवार या कटार का कोष। खाना, कबर। २ शरीरस्थ अन्नमय कोश। ३ शरीर।

म्यानभाई–पु० वे दो पुरुष जिनका एक ही स्त्री से मैथुन संबंध हो।

म्यानी–स्त्री० [फा०] पाजामा या कच्छे के दोनों भागों को परस्पर जोड़ते हुए बीच में लगने वाले कपड़े के टुकड़े।

म्यानी–पु० [फा०] १ अर्थ, मतलब, अभिप्राय, तात्पर्य। २ कारण। ३ भेद, रहस्य। ४ खुशामद। ५ गूढ़ार्थ। ६ एक प्रकार की डोली, पालकी।

म्याव–देखो 'म्याऊ'।

म्याइ, म्याई–१ देखो 'माई'। २ देखो 'मांई'।

म्यावट–देखो 'मावट'।

म्याळ–पु० १ कच्चे मकान की छाजन के नीचे लगने का लकड़ी का लट्ठा। २ टांड। ३ कूए से पानी निकालने के चक्र के नीचे की पटरी। ४ कच्चे मकान की छाजन में लगने वाली धनुषाकार लकड़ी।

म्याळमिनौ (मिल्लौ)–पु० जंगली बिलाव।

म्यावट–स्त्री० [सं० मात्री-वृत्ति] १ तुरत की ब्याई हुई गाय, भैंस बकरी के दूध को आंच पर पकाने से बनने वाला गाढा पदार्थ। २ देखो 'मावठ'।

म्यौ–देखो 'म्याउ'।

म्रकंडु–पु० [सं०] मार्कंडेय ऋषि के पिता का नाम।

म्रखा–देखो 'म्रसा'।

म्रखावाद–देखो 'म्रिसावाद'।

म्रगंक–देखो 'म्रगांक'।

म्रग–देखो 'म्रिग'।

म्रगम्रक–देखो 'म्रगांक'।

म्रगम्रखो–देखो 'म्रयाखो'।

म्रगइंद (इंद्र)–देखो 'म्रगेंद्र'।

म्रगचरम (छाल, छाळा)–पु० [सं० मृग-चर्म] हरिण का चमड़ा, जो बिछाने के काम आता है।

म्रगछावड़–देखो 'म्रगसावक'।

म्रगजळ–देखो 'म्रिगजसणा'।

म्रगछंप–पु० एक डिंगल गीत (छंद) विशेष।

म्रगडवण–पु० सियार।

म्रगडांनी–वि० मृग के समान छलांग लगाने वाला।

म्रगणाळ–पु० [सं० मार्गण] तीर, बाण।

म्रगतरसणा (तिसणा, तिस्ण, म्रसना, म्रस्णाका, म्रिसणा म्रिसना)–देखो 'म्रिगम्रिसणा'।

म्रगदंस म्रगदंसक–पु० [सं० मृगदंशक] कुत्ता, श्वान।

म्रगधर–पु० [सं० मृगधर] चन्द्रमा, चांद।

म्रगनयणी (नी)–देखो 'म्रिगनयणी'।

म्रगनाभ (थि, भी)–देखो 'म्रिगनाभि'।

म्रगनिद्रा, म्रगनींद–स्त्री० नींद के समय आंखें कुछ खुली रहने की अवस्था।

म्रगनेणी–देखो 'म्रिगनयणी'।

म्रगपत (पति, पती)–देखो 'म्रिगपति'।

म्रगपाल–पु० तीर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अगमंदा–स्त्री० [सं० मृगमंदा] कश्यप ऋषि की दक्ष कन्याओं में से एक।

अगमद, अगमदा–देखो 'अिगमद'।

अगमरद, अगमारण–पु० सिंह, शेर।

अगमास–पु० मार्गशीर्ष मास।

अगमित्र–देखो 'अिगमित्र'।

अगमंद–देखो 'अगेंद'।

अगया–देखो 'अिगया'।

अगराज (राव)–देखो 'अिगराज'।

अगरिपु–पु० [सं० मृग-रिपु] सिंह, शेर।

अगलउ–देखो 'अिगा'।

अगलोअणी, अगलोअणी, अगलोअना, अगलोअनी, अगलोअण, अगलोअणी–स्त्री० [सं० मृगलोचना] वह सुंदर स्त्री जिसके नेत्र मृग के नेत्रों के समान हों।

अगली–देखो 'अिग'।

अगवाह, अगवाहण (न)–पु० १ चन्द्रमा, अग्नि। २ पवन हवा।

अगवीथी–देखो 'अिगवीथी'।

अगस–देखो 'अिग'।

अगसर–देखो 'मिगसर'।

अगसाखा–देखो 'अिगसाखा'।

अगसावक–पु० [सं० मृग-शावकः] हरिन का बच्चा।

अगसिर–१ देखो 'मिगसर'। २ देखो 'अिगसिरा'।

अगसोवक–देखो 'अगसावक'।

अगांक–पु० [सं० मृगाङ्क] १ चंद्रमा। २ एक प्रकार की रस औषधि।

अगांकलेखा–स्त्री० [सं० मृगाङ्कलेखा] चंद्रलेखा नामक महासती।

अगांण–देखो 'अिग'।

अगाल, अगाली अगाखी–स्त्री० [सं० मृग-अक्षि] मृगनयनी, मृग के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री।

अगाट–पु० १ हरिन। २ देखो 'अिगनेणी'।

अगावरद–पु० [सं० मृग-अदन] चीता।

अगाधिप, अगाधिपति, अगाधीस–पु० [सं०] सिंह, शेर।

अगानयनी, अगानेणी, अगानेंणी–देखो 'अिगनेणी'।

अगाळ–देखो 'अिग'।

अगासण–पु० [सं० मृग-आसन] १ मृग चर्म का आसन। [सं० मृग-अशनम्] २ सिंह, शेर। ३ चीता।

अगि, अगी–देखो 'अिगी'।

अगाखी–देखो 'अिगी'।

अगीस–देखो 'अगेस'।

अगु–देखो 'अिग'।

अगेंद, अगेंद्र–पु० [सं० मृगेन्द्र] १ सिंह, शेर। २ पद्य लघु की पांच मात्रा का नाम। ३ दो जगण का एक छन्द विशेष।

अगेस–पु० [सं० मृगेश] सिंह, शेर।

अगछाळा–देखो 'अगछाळा'।

अघ–देखो 'अिग'।

अघअखण–पु० [सं मृग-अक्षणम्] हवा, पवन।

अघवाहण–पु० [सं० मृग-वाहन] हवा, पवन।

अछ्य–देखो 'अिग'।

अड़ाणी, अड़ा–देखो 'अडा'।

अजा–देखो 'मरजाद'।

अजाद, अजादा, अजादि–देखो 'मरजाद'।

अजादालंगर–पु० श्रीराम की एक उपाधि।

अजादी–वि० [सं० मर्यादित] १ मर्यादा रखने या निभाने वाला। २ मर्यादा में रहने वाला।

अज्जाद–देखो 'मरजाद'।

अड–देखो 'अिड'।

अडमाळ–देखो 'मुंडमाळ'।

अडांणी, अडांनी, अडा–स्त्री० [सं० मृडानी] पार्वती, दुर्गा।

अण–देखो 'मरण'।

अणाळ, अणालिनि–स्त्री० [सं० मृणालं] १ कमलनाल, कमल का डण्ठल। २ कमल की जड़।

अतंजय–देखो 'अित्युंजय'।

अत–वि० [सं० मृत] १ मरा हुआ, निष्प्राण। २ व्यर्थ; निरर्थक। ३ देखो 'अित्यु'।

अतउ–देखो 'अित्यु'।

अतक–देखो 'अितक'।

अतककरम–पु० [सं० मृतक-कर्म] मृत व्यक्ति के पीछे किये जाने वाले कार्य।

अतकर–पु० [सं० मृत्यु+कर] यम।

अतका–देखो 'अितिका'।

अतकि, अतग–देखो 'अितक'।

अतगाळ–पु० [सं० मृत्युकाल] मौत की घड़ी, मृत्यु का क्षण।

अतघात–पु० [सं० मृत्यु-आघात] मौत का संदेश, मृत्यु का आघात।

अतजीवनी–स्त्री० [सं० मृत-जीवनी] संजीवनी विद्या।

अतबारितिथि–स्त्री० [सं०] ज्योतिष में एक योग विशेष।

अतबासर–पु० [सं० मृत्यु-वासर] मृत्यु दिवस, मौत का दिन।

अतभवण, अतभूवण–पु० [सं० मृत्यु-भवन] १ मृत्यु लोक। २ मौत का घर।

अतलोक–देखो 'अित्युलोक'।

अतलोकी–पु० मृत्यु लोक का प्राणी, जीव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतलोक–देखो 'अित्युलोक'।
अतवान–पु० [सं० मरुत्वत्] इन्द्र।
अति–देखो 'अित्यु'।
अतिका–देखो अितिका'।
अतिलोकी–देखो 'अतलोकी'।
अतु–देखो अित्यु'।
अतुत–पु० [सं० अमर्त्याऽऽत्तर] इन्द्र।
अत्तू, अत्य–देखो 'अित्यु'।
अत्थका–देखो 'अितिका'।
अत्यलोक, अत्यलोकि–देखो 'अित्युलोक'।
अत्यु जय–देखो 'अित्युंजय'।
अत्यु–देखो 'अित्यु'।
अत्युलोक–देखो 'अित्युलोक'।
अदंग, अदंगी, अदगी–पु० [सं० मृदंग] ढोलक के आकार का एक बाद्य।
अद–स्त्री० [सं० मृद] १ रज, मिट्टी। २ मिट्टी का ढेला। ३ मिट्टी का टीला। ४ एक प्रकार की गंधदार मिट्टी। ५ देखो 'मरद'। ६ देखो 'अदु'।
अदु–वि० [सं० मृदु] १ प्रिय, सुहावना। २ सुकुमार, नाजुक। ३ नरम, मुलायम, कोमल। ४ मधुर, मीठा। ५ मंद, धीमा, हल्का। ६ उग्र, प्रचंड आदि का विपर्याय। ७ निर्बल, कमजोर। –स्त्री० १ घृतकुमारी। २ जूही। ३ कोयल। ४ शनि ग्रह।
अदुका–स्त्री० [सं० मृद्वीका] दाक्षा, दाख।
अदुगण–पु० [सं० मृदुगण] चित्रा आदि चार नक्षत्रों का समूह।
अदुता–स्त्री० [सं० मृदुता] १ कोमलता। २ मधुरता।
अदुध्वनि–स्त्री० [सं० मृदुध्वनि] कोयल।
अदुल–वि० [सं० मृदुल] १ कोमल, नाजुक, नरम। २ सुकुमार। ३ दयालु, कृपालु। –पु० १ जल, पानी। २ अगर नामक काष्ठ। ३ अंजीर। ४ तकिया। ५ नारियल की एक जाति। ६ मार्गशीर्ष मास। ७ मृगशिरा नक्षत्र। ८ एक डिंगल छंद विशेष। –छाल, छाला–स्त्री० मृग का चर्म। –जल, तरलजा, तिरतरा, तिसरा, तिसरा, असरा, अस्त्रा–स्त्री० मृगतृष्णा, भ्रम, धोखा, असत्य वस्तु। –धर–पु० चन्द्रमा। –नयणी–स्त्री० सुन्दर स्त्री। –नाथ–पु० सिंह, शेर। –नाभ, नाभि–स्त्री० कस्तूरी, मृगनाभि। –नैणी, नैणी–स्त्री० सुन्दर स्त्री। –पत, पति, पती–पु० सिंह, शेर, चन्द्रमा। –बंध, बंध, मद–पु० कस्तूरी। आभूषण विशेष। –मिख–पु० चन्द्रमा, शशि। –राज, राड–पु० सिंह, शेर। –रिपु–पु० शेर। –लोअणि, लोअणी, लोअणी–स्त्री० सुन्दर स्त्री।
अिगया–स्त्री० [सं० मृगया] शिकार, आखेट।
अिगली–देखो 'अिग'।
अिगवोची–स्त्री० शुक्रग्रह की नौ वीथियों में से एक।
अिगसर–देखो 'अिगसर'।
अिगसाखा–पु० [सं० शाखा-मृग] बानर, बंदर।
अिगसिरा–पु० [सं० मृगशिरा] एक नक्षत्र विशेष।
अिगानयणी, अिगानेणी–स्त्री० सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री।
अिगि, अिगी–पु० [सं० मृगी] १ मादा हिरन, मृगी। २ अपस्मार का एक रोग। ३ एक प्रकार की स्त्री।
अिगेंद्र–देखो 'अगेंद'।
अिगेस–देखो 'अगेस'।
अिगेसर–देखो 'अिगसर'।
अिग, अिग, अिगली–देखो 'अिग'। –छाला=अिगछाला'।
अिड, अिड, अिड–पु० [सं० मृड] शिव, महादेव।
अिणाल, अिणालणि, अिणालणी, अिणाली–देखो 'अणाल'।
अित–देखो 'अत'/अित्यु'।
अितक, अितग–पु० [सं० मृतक] १ मुर्दा, मरा हुआ। २ शव, लाश। ३ पिशाच, प्रेत। ४ श्मशान।
अितदिन–पु० मौत का दिन, मरने का दिन।
अितमंदिर (मिंदर)–पु० १ चिता। २ श्मशान घाट।
अितलोक–देखो 'अित्युलोक'।
अितस्थान–पु० [सं० मृत्यु-स्थल] मृत्यु की जगह।
अिति–१ देखो 'अित्यु'। २ देखो 'अत'।
अितिका–स्त्री० [सं० मृत्तिका] १ गोपीचंदन। २ मिट्टी।
अितु, अितो–देखो 'अित्यु'।
अित्थ–वि० मृत, मरा हुआ।
अित्युंजय–पु० [सं० मृत्युंजय] १ शिवजी का एक नाम। २ अमर।
अित्यु–स्त्री० [सं० मृत्यु] १ प्राणी की प्राणहीन अवस्था, प्राणांत, मौत, मृत्यु। २ अंतिम अवस्था, समाप्ति, अंत। ३ माया। ४ काली। –पु० ५ यम, काल। ६ ब्रह्मा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७ विष्णु । ८ कामदेव । ९ कलियुग । १० एक साम मंत्र । ११ ज्योतिष का एक योग ।

मित्युयोग–पु० [सं०] एक अशुभ योग ।

मित्युलोक–पु० [सं० मृत्युलोक] १ संसार, मनुष्य लोक, सृष्टि, पृथ्वी लोक । २ यम लोक ।

मिदंग–देखो 'मृदंग' ।

म्लान–वि० [सं०] १ मुरझाया हुआ । २ उदास, खिन्न । ३ थका हुआ, दुर्बल । ४ मलिन, मैला ।

म्लेच्छ, म्लेच्छ–पु० [सं० म्लेच्छ] १ वर्णाश्रम धर्म से च्युत जाति । २ अनार्य, जंगली व्यक्ति । ३ विदेशी । ४ यवन । ५ अनार्यों की भाषा । ६ तांबा ।–वि० १ नीच, पापी, दुष्ट । २ जाति च्युत ।—राज–पु० एक प्राचीन राजा ।

म्ह–सर्व० मेरा ।

म्हनें–सर्व० मुझे, मुझको ।

म्हल–देखो 'महल' ।

म्हां–सर्व० १ हम । २ हमारा । ३ मेरे, हमारे ।

म्हांकउ, म्हांकी–सर्व० (स्त्री० म्हांकी) मेरा, हमारा ।

म्हांजळो, म्हांजो, म्हांजी–सर्व० हमारा, मेरा ।

म्हांणी–सर्व० हमारी ।

म्हांले (णै)–सर्व० हमारे ।

म्हांणो–सर्व० हमारा ।

म्हानु (नू, ने, नै)–सर्व० हमें, हमको ।

म्हारी–सर्व० हमारी ।

म्हारे, म्हारें–सर्व० हमारे ।

म्हारो–सर्व० हमारा ।

म्हासुं (सूं)–सर्व० हमसे मुझसे ।

म्हाहरी–सर्व० हमारी ।

म्हाहरे (रें)–सर्व० हमारे ।

म्हाहरो, म्हाहरोड़ो–सर्व० हमारा ।

म्हा–सर्व० हम ।

म्हाइ (ई)–सर्व० हम भी ।

म्हाहनुं (नूं)–सर्व० हमको भी ।

म्हाचीन्ह–पु० एक देश ।

म्हाजण (न)–देखो 'महाजन' ।

म्हाटो–देखो 'माटो' ।

म्हारउ–सर्व० मेरा ।

म्हारवां–सर्व० मेरी, हमारी ।

म्हारसो–सर्व० (स्त्री० म्हारली) मेरे वाला ।

म्हारा–सर्व० मेरा, हमारा ।

म्हाराज–देखो 'महाराज' ।

म्हाराजा–देखो 'महाराजा' ।

म्हारी–सर्व० मेरी, हमारी ।

म्हारड़ो, म्हारड़ी–देखो 'म्हारो' ।

म्हारे, म्हारें–सर्व० मेरे, हमारे ।

म्हारेइ (ई)–सर्व० मेरे भी ।

म्हारोड़ा, म्हारोड़ो–सर्व० मेरे वाला ।

म्हारो–सर्व० मेरा, हमारा ।

म्हालणो (णी)–देखो 'माल्हणो' (णी) ।

म्हावत–देखो 'महावत' ।

म्हासती–देखो 'महासती' ।

म्हूं, म्हू–सर्व० मैं ।

म्हें, म्हे–देखो 'म्हूं' ।

म्हेमान–देखो 'मैमान' ।

म्हेल–देखो 'महल' ।

म्हेलणो (णी)–देखो 'मेलणो' (णी) ।

म्हेसुरो–देखो 'माहेश्वरी' ।

म्हें, म्हैं–सर्व० हम मैं ।

म्हेइ (ई)–सर्व० हम भी । मैं भी ।

म्हेमानो–देखो 'मैमानी' ।

म्हेर–देखो महर' ।

म्हेरबानी–देखो 'मैं' रबानी ।

म्हैल–१ देखो 'महल' । २ देखो 'महिला' ।

म्हेलणो (णी)–देखो 'मेलणो' (णी) ।

म्होंड़ो–देखो 'मूंडो' ।

म्होड़ी–स्त्री० एक प्रकार का वस्त्र ।

म्होड़ो–देखो 'मोड़ी' ।

म्होटो–देखो 'मोटो' ।

म्होबत–देखो 'मुहब्बत' ।

म्होर–१ देखो 'मोहर' । २ देखो 'मोर' ।

म्होरो–देखो 'मोरो' ।

म्होड़ी–देखो 'मोड़ी' ।

म्होरी–देखो 'मोरी' ।

म्होरो–१ देखो 'मोरो' । २ देखो 'म्हारो' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(य)

य–देवनागरी वर्णमाला का २६ वां व्यंजन ।

यछां, यछा–देखो 'इच्छा' ।

यत, यता–पु० [सं० यंतृ] १ सारथी, गाड़ीवान । २ चालक, परिचालक ।

यंत्र–पु० [सं० यंत्रम्] १ कल, मशीन । २ औजार, उपकरण । ३ अस्त्र, हथियार । ४ वाद्य, बाजा । ५ ताबीज, गंडा । ६ जादू, टोना ।—कार–पु० यंत्र निर्माता या यंत्र संचालक । —वाहक–पु० यंत्र चलाने वाला । मशीनमेन ।

यंत्रणा–स्त्री० [सं०] १ कष्ट, पीड़ा । २ कष्टदायक सजा ।

यंत्रमात्रका–स्त्री० [सं० यंत्रमातृका] ६४ कलाओं में से एक ।

यंत्रमुक्त–पु० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

यंत्रराज–पु० [सं०] ज्योतिष संबंधी एक यंत्र ।

यंत्रवाद–पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक ।

यंत्रवादी–वि० [सं०] यंत्रवाद का ज्ञाता ।

यंत्रविद्या–स्त्री० [सं०] यंत्र या कल बनाने अथवा संचालन करने की विद्या ।

यंद, यंदर–देखो 'इंद्र' ।

यंदरा–१ देखो 'इंदिरा' । २ देखो 'इंद्राणी' ।

यंदु, यंदू–देखो 'इंदु' ।

यंद्र–देखो इंद्र' ।—जीत = 'इंद्रजीत' ।—पुर, पुरी = 'इंद्रपुरी' ।

यंद्राण–देखो इंद्र' ।

यंद्राणी–देखो 'इंद्राणी' ।

यंद्रावरज–देखो 'इंद्रावरज' ।

यंद्रावरध–देखो 'इंद्रावध' ।

यंद्रासण–देखो 'इंद्रासण' ।

यंद्रिय, यंद्री–देखो 'इंद्रिय' ।

यंनामी–वि० १ इनाम प्राप्त करने वाला । २ जहां पर इनाम का प्रावधान हो ।

यंबर–देखो 'अंबर' ।

यंम–पु० १ कपट, छल । २ देखो 'यम' ।

य–पु० [सं०] १ गाड़ी,यान, सवारी । २ हवा, वायु । ३ कीर्ति, यश । ४ सम्मेलन । ५ यव, जौ । ६ बिजली, विद्युत । ७ रोक, रुकावट । ८ यमराज । ९ त्याग । १० योग । ११ संयम । १२ प्रकाश, रोशनी । १३ गणेश । १४ ईश्वर । १५ पुरुष । १६ छन्द शास्त्र में यगण का संक्षिप्त रूप । –वि० जाने वाला ।–क्रि०वि० पुनः और ।

यक–देखो 'एक' ।

यकअंगी–वि० [सं० एक-अंगी] १ एक अंग वाला । २ जिसके एक ही पति या पत्नी हो ।

यककुंडळ–पु० [सं० एक-कुंडल] शेषनाग ।

यकता–देखो 'एकता' ।

यकलंक, यकलिंग–देखो 'एकलिंग' ।

यकलास–देखो 'इकळास' ।

यकवीस, यकवीस–देखो इक्कीस' ।

यकहत्तर–देखो 'इकोतर' ।

यकावन–देखो 'इक्यावन' ।

यकार–पु० [सं० यः+कार] १ छन्दशास्त्र में यगण का नाम । २ 'य' वर्ण का नाम ।

यकावन–देखो 'इक्यावन' ।

यकीन–पु० [अ०] विश्वास, प्रतीति ।

यक्ष–पु० [सं०] (स्त्री० यक्षणी, यक्षिणी, यक्षी) १ एक देव जाति विशेष व इस जाति का देव । २ कुबेर का एक नाम । ३ इन्द्र के राजभवन का नाम । ४ आत्मा विशेष । —नायक, पति, पती–पु० कुबेर ।—पुर, पुरी–स्त्री० अलकापुरी ।—राज–पु० कुबेर ।—लोक–पु० अलकापुरी ।

यक्षकर्दम–पु० [सं० यक्षकर्दम] एक प्रकार का लेपन ।

यक्षग्रह–पु० [सं०] १ एक कल्पित ग्रह विशेष । २ प्रेत-बाधा ।

यक्षतरु–पु० [सं०] वट वृक्ष, बड़ का पेड़ ।

यक्षधूप–पु० [सं०] गूग्गल धूप, लोबान ।

यक्षरात्र (रात्रि)–स्त्री० [सं० यक्ष-रात्रि] कार्तिक मास की अमावस्या या पूर्णिमा की रात ।

यक्षरूप–पु० [सं०] महादेव ।

यक्षवित्त (वित्त)–पु० [सं० यक्षवित्त] कजूस, कृपण ।

यक्षस्थळ–पु० एक प्राचीन तीर्थ ।

यक्षावास–पु० [सं०] वट वृक्ष ।

यक्षिणी, यक्षी–स्त्री० १ यक्ष की स्त्री । २ कुबेर की पत्नी का नाम । ३ दुर्गा की एक अनुचरी । ४ एक अप्सरा ।

यक्षेंद्र, यक्षेश्वर–पु० कुबेर ।

यधु–पु० [सं० इषु] तीर, बाण ।

यधुआस–पु० [सं० इषु-आस] धनुष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यखूधीयता-पु० तरबूज ।

यगण-पु० छन्दशास्त्र में एक गण ।

यगताळीस-देखो 'इकताळीस' ।

यज्ञ-पु० [सं० यज्ञ] १ वेद मंत्रों सहित हवन करते हुए किया जाने वाला पूजन । २ पूजन की क्रिया । ३ अग्नि का एक नाम । ४ विष्णु का एक नामान्तर । ५ अग्निहोत्र । —अधिपति आत्मा-पु० विष्णु ।—कारी-पु० यज्ञ करने वाला ।—क्रतु-पु० विष्णु का एक नामान्तर । —क्रिया-स्त्री० यज्ञ कर्म । कर्म कांड ।—पति-पु० विष्णु भगवान । एक गोत्रकार ।—पशु-पु० यज्ञ का बलि पशु, घोड़ा, बकरा आदि ।—पात्र-पु० यज्ञ के काम आने वाला पात्र । —पाळ-पु० यज्ञ का संरक्षक । —पुरुष-पु० विष्णु । —भाग-पु० यज्ञ में किसी देवता का भाग । इन्द्रादि देवता ।—भाजन-पु० यज्ञ का पात्र ।—भूमि-स्त्री० यज्ञ करने का स्थान । -मंडप-पु० यज्ञ के लिये निर्मित मंडप ।-मंडळ-पु० यज्ञ कार्य के लिये घेरा गया स्थान ।-मंदिर- पु० यज्ञशाला । —मय-पु० विष्णु ।-यूप-पु० यज्ञ के बलि पशु को बांधने का खंभा । -वराह-पु० विष्णु एक का नामान्तर ।-वाह-पु० यज्ञ करने वाला । स्कंद का एक अनुचर । एक गोत्रकार ।—वाहन-पु० विष्णु । ब्राह्मण । शिव । याज्ञिक । —वृक्ष-पु० वट वृक्ष ।—शरण-पु० यज्ञ मण्डप ।—शाळा-स्त्री० यज्ञ करने का स्थान । कक्ष ।—शास्त्र-पु० यज्ञ की विधि एवं महत्व बताने वाला ग्रंथ ।—शील-पु० ब्राह्मण । यज्ञ करने वाला । —शूकर-पु० विष्णु । —सूत्र-पु० जनेऊ, यज्ञोपवीत । —स्तंभ-पु० बलिपशु बांधने का खंभा ।—स्थळ-पु० यज्ञ करने का स्थान ।—होता, होत्र-पु० यज्ञ कर्ता । देवता का आह्वान करने वाला । मनु का एक पुत्र ।

यज्ञकोप-पु० [सं० यज्ञकोप] विष्णु का एक नामान्तर ।

यज्ञदत्त-पु० [सं० यज्ञदत्त] १ कापिल्य नगर का एक अग्निहोत्री ब्राह्मण । २ अगदत्त राजा के पुत्र का नामान्तर । ३ यज्ञ कर्म में निपुण एक ब्राह्मण । ४ एक प्राचीन राजा ।

यज्ञबाहु-पु० [सं०यज्ञ बाहु] १ अग्नि का एक नाम । २ शालमलि द्वीप का एक राजा ।

यज्ञसेन-पु० [सं० यज्ञसेनः] १ पांचाल नरेश द्रुपद का एक एक नाम । २ विष्णु ।

यज्ञांग-पु० [सं० यज्ञ+अंग] १ यज्ञ की सामग्री । २ विष्णु । ३ गूलर । ४ खदिर ।

यज्ञारमों-देखो 'इगियारमों' ।

यज्ञारि-पु० [सं० यज्ञारि] १ शिव महादेव । २ राक्षस ।

यछं-अव्य० चाहे भले । अगर, यदि ।

यजंगम-देखो अजंगम' ।

यज-पु० [सं०] १ विजय, जीत । २ वस्त्र विशेष । ३ यज्ञ । ४ बलिदान । ५ नैवेद्य । ६ पूजन ।

यजदा-पु० ईश्वर का नाम (फारसी) ।

यजन-देखो 'जजण' ।

यजमांन-देखो 'जजमांन' ।

यजमांनी-देखो 'जजमांनी' ।

यजार-देखो 'इजारबंद' ।

यजुरवेद-पु० [सं० यजुर्वेद] एक प्रकार का वेद ।

यजुरवेदियो, यजुरवेदीयो-पु०[सं०यजुर्वेदिन्] यजुर्वेद का ज्ञाता ।

यण-देखो 'अण' ।

यणणो (णो)-देखो 'जणणो' (णो) ।

यतन (त्न)-देखो 'जतन' ।

यतमांमां-पु० व्यवस्थापक ।

यतलाकनवेस-पु० एक राज्य अधिकारी ।

यतवत-क्रि० वि० इधर-उधर ।

यति-देखो 'जती' ।

यतिदेवर-पु० [सं०] चूहा ।

यतिधरम-पु० [सं० यति-धर्म] १ संन्यास । २ यतियों के आचरण ।

यतिभग (भ्रस्ट)-पु० [सं०] छन्द शास्त्र संबंधी एक दोष ।

यतिसांतपन-पु० तृदिवसीय एक व्रत ।

यतो-सर्व० १ इतना । २ देखो 'जतो' ।

यतीम-पु० [अ०] १ बिना मां-बाप का बच्चा, अनाथ । २ एक बड़ा मोती । ३ बहुमूल्य रत्न । —खांनो-पु० अनाथालय ।

यतीस्वर-पु० [सं० यतीश्वर] योगीराज, यतिराज ।

यतो-सर्व० १ इतना । २ जहां । ३ देखो 'जती' ।

यत्न देखो 'जतन' ।

यत्र-देखो 'जत्र' ।

यत्र-तत्र-अव्य० [सं०] १ जहां-तहां, इधर-उधर । २ यहां-वहां । ३ कुछ-कहां, कुछ-वहां ।

यथा-देखो 'जथा' ।

यथाक्रम-देखो 'जथाक्रम' ।

यथानियम-देखो 'जथानियम' ।

यथापूरव-अव्य० [सं० यथा-पूर्व] जैसा पहले था, पूर्ववत्, ज्यों का त्यों ।

यथायोग्य-देखो 'जथाजोग' ।

यथाविधि-देखो 'जथाविधि' ।

यथासक्ति (सगती)-देखो 'जथासकती'

यथोचित-अव्य० जो उचित हो, उपयुक्त ।

यदपि-देखो 'जदपि' ।

यदि-देखो 'जदी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यदु–देखो 'जदु'।
यदुनदन–देखो 'जदुनदन'।
यदुनाथ–देखो 'जदुनाथ'।
यदुपति–देखो 'जदुपति'।
यदुभूप (राज)–पु० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुवस–देखो 'जदुवंस'।
यदुवसमणि–पु० श्रीकृष्ण।
यदुवंसी–देखो 'जदुवंसी'।
यदुवर, यदुवीर–देखो 'जदुवर'।
यद्म–देखो 'इम'।

यम–पु० [सं० यमं] १ दमन, निग्रह। २ नियंत्रण। ३ आत्म संयम। ४ चित्त को धर्म में स्थिर रखने का साधन। ५ योग के आठ अंगों में से एक। ६ युग्म, जोड़ा। ७ देखो 'जम'। –क्रि० वि० १ ऐसे, इस प्रकार। २ क्यों, जैसे।

यमक–पु० [सं०] एक शब्दालंकार विशेष।
यमककरिणिक–पु० सेना में व्यूह रचना का प्रबंधक।
यमघंट–देखो 'जमघंट'।
यमचक्क–देखो 'जमचक्क'।
यमजातना–देखो 'जमयातना'।
यमजित–वि० [सं०] मृत्युंजय। –पु० शिव, महादेव।
यमणी (वी)–१देखो 'जीमणी' (वी)। २ देखो 'जमणी' (वी)।
यमदंड–देखो 'जमदंड'।
यमदग्नि–देखो 'जमदग्नि'।
यमदूत–पु० [सं०] १ कौआ। २ नौ यज्ञ-समिधों में से एक। ३ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र। ४ एक प्रकार का घोड़ा। ५ देखो 'जमदूत'।
यमन–स्त्री० एक राग विशेष।
यमनाथ यमनाह–देखो 'जमनाह'।
यमपत्र–पु० शाक विशेष।
यमपुर, यमपुरी–देखो 'जमपुर'।
यमभगनी, यममगिनी–देखो 'जमभगनी'।
यमया–देखो 'जमया'।
यमयातना–स्त्री० [सं०] यमपुरी में जीव को दी जाने वाली सजा।
यमराज–पु० [सं०] १ ज्ञानार्णवतंत्र के रचयिता एक ग्रंथकार। २ देखो 'जमराज'।
यमल–पु० १ एक प्रकार का वाद्य। २ देखो 'जमल'।
यमलोक–देखो 'जमलोक'।
यमवारी–देखो 'जमारी'।
यमवाहण–देखो 'जमवाहन'।
यमहता–देखो 'जमहंता'।
यमहर–देखो 'जमहर'।
यमालय–पु० [सं०] यमपुर।
यमि–वि० [सं०] इन्द्रियों को वश में रखने वाला। –स्त्री० यमुना नदी।
यमुना–देखो 'जमना'।
यमेस–पु० [सं० यमेश] भरणी नक्षत्र का एक नाम।
ययाति–पु० [सं०] पुराण प्रसिद्ध एक राजा।

ययी–पु० १ शिव। २ बलि का घोड़ा। ३ कोई घोड़ा। ४ मार्ग, रास्ता। ५ बादल।

यरंद यर–देखो 'अरि'।
यरघाट–देखो 'अरिघाट'।
यरहर–देखो 'अरिहर'।
यरावी–देखो 'इरावी'।
यल–देखो 'इला'।
यलधीस, यलनाथ–पु० [सं० इल-धीश, नाथ] राजा, नृप।
यलप्रभ–पु० [सं० इलाप्रभा] नगर, शहर।
यलम–देखो 'इलम'।
यलल्लाह–देखो 'इलल्ला'।
यलसुवन–पु० [सं० इला-सूनु] पृथ्वी पुत्र, मंगल।
यला–स्त्री० [सं० इला] १ इन्द्र की रानी, इंद्राणी। २ इला, पृथ्वी।
यलाइव–पु० [सं० इला-इन्द्र] राजा नृप।
यलावत (पति)–पु० [सं० इला-पति] राजा, नृप।
यव–देखो 'जव'।

यवन–पु० [सं०] १ कालयवन राजा का एक नाम। २ हैहय राजा का एक साथी। ३ एक लोक समूह। ४ देखो 'जवन'।
यवमध्य–पु० [सं०] १ एक प्रकार का व्रत। २ पांच दिवसीय यज्ञ। ३ एक प्राचीन नाप।
यवरोटिका–स्त्री० जव की रोटी।
यवागू–पु० जव या चावल का मांड।
यविनर–पु० [सं०] १ इक्ष्वाकुल का एक राजा। २ उत्तर पांचाल का एक राजा।
यवियस–पु० [सं०] १ एक प्राचीन राजा। २ एक आचार्य।
यस–पु० १ भोजन, अन्न। २ सुतभ देवों में से एक। ३ विकुंठ देवों में से एक। ४ देखो 'जस'।
यसड़ी–देखो 'इसड़ी'।
यसनामिक–वि० [सं० यशनामिक] यशस्वी।
यसब–पु० [अ० यशब] औषध के काम आने वाला एक पत्थर।
यसवंत–वि० यशस्वी।
यसस्कर–पु० [सं० यशस्कर] शिव देवों में से एक। –वि० यशस्वी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यसस्वी–वि० [सं० यसस्विन्] यश या ख्याति प्राप्त ।
यसारत–देखो 'इसारो' ।
यसु–पु० [सं० अयस्] लोहा ।
यसुमति–देखो 'जसुमति' ।
यसू–वि० [सं० यादृशकम्] जैसा ।
यसोदा–देखो 'जसोदा' ।—नंदन='जसोदानंदन' ।
यसोदेवी–स्त्री० सम्राट बृहत्मनस की पत्नी ।
यसोधर–पु० [स० यशोधर] १ भूतकाल के १८ वें तथा भविष्यत्काल के १६ वें तीर्थंकर का नाम । २ देखो 'जसोधरा' ।
यसोधरा–देखो 'जसोधरा' ।
यस्टकुटी–स्त्री० पहाड़ ।
यस्टि–स्त्री० लकड़ी का शस्त्र ।
यह–सर्व० [सं० इदं] निकट की वस्तु, व्यक्ति या संज्ञा के लिये प्रयुक्त संबोधन । –वि० पास का, प्रत्यक्ष का ।
यहां–क्रि० वि० [स० इह] इस स्थान या क्षेत्र में ।
यहि, यही–सर्व० 'यह' का निश्चयात्मक रूप ।
यहीं–क्रि० वि० इसी स्थान पर ।
यहु–देखो 'यही' ।
यहूब–पु० हजरत ईसा की जन्म भूमि का देश ।
यहूदी–पु० १ उक्त देश का निवासी । २ एक जाति विशेष । –स्त्री० ३ उक्त देश की भाषा । –वि० यहूद देश का, यहूद देश संबंधी ।
यां–सर्व० १ इन । २ इन्होंने । ३ इस ।—क्रि० वि०–१ इस प्रकार, इस तरह । २ इससे । ३ यहां ।
यान–पु० १ सवारी, वाहन । २ विमान । ३ गति, चाल । –क्रि०वि० ऐसे, इस तरह ।
यानी, याने, यानें–अव्य० अर्थात्, मतलब कि ।
याह–१ देखो 'यहां' । २ देखो 'यां' ।
या–सर्व० यह । –क्रि०वि० अथवा ।
याक–पु० हिमालय क्षेत्र का एक पहाड़ी चौपाया जानवर ।
याकूत–पु० [अ०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर ।
याग–देखो 'जाग' ।
यागवलक–देखो जागवलिक' ।
यागि–देखो 'जाग' ।
याज्य–पु० भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
याज्यतुर–पु० ऋषभ नामक अश्वमेध करने वाला राजा ।
याज्यवल्त–पु० याज्ञवल्क्य नामक गोत्रकार का नामान्तर ।
याज्यवल्क्य–पु० १ विश्वमित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार । २ वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार । ३ एक आचार्य । ४ विश्वामित्र का एक पुत्र । ५ एक ऋषि विशेष । ६ राजा जनक के दरबारी एक ऋषि । ७ एक स्मृतिकार ।
याज्यसेनी–पु० द्रौपदी का एक नामान्तर ।
याज्यिक–वि० यज्ञ करने या कराने वाला ।
याचक–देखो जाचक' ।
याचनी–वि० वस्तु विशेष की याचना करने वाला ।
याजक–पु० [सं०] १ यज्ञ करने वाला । २ राजा का हाथी । ३ मस्त हाथी ।
याजन–स्त्री० [सं०] यज्ञ की क्रिया ।
याजि–वि० यज्ञ करने वाला ।
यातना–स्त्री० [सं०] १ शारीरिक या मानसिक पीड़ा, कष्ट । २ असाध्य रोग । ३ यम द्वारा दी जाने वाली सजा ।
यातायात–वि० [सं०] १ आवागमन का साधन, यात्रा की सवारी, वाहन आदि । २ यात्रा ।
यातुधान–देखो 'जातुधान' ।
यात्र, यात्रा–देखो 'जातरा' ।
यात्राळू–वि० यात्री ।
यात्री–देखो जातरी' ।
याद–स्त्री० [फा०] १ स्मरण शक्ति, स्मृति । २ स्मरण क्रिया ।
यादगार यादगारी, यादगीर, यादगीरी–स्त्री० [फा० यादगार] १ स्मृति का चिह्न, स्मारक या वस्तु । २ स्मरण शक्ति ।
यादवास्त–स्त्री० [फा० यादवाश्त] १ स्मरणशक्ति, स्मृति । २ स्मरण के लिए लिखी हुई बात ।
यादवगसी–पु० [फा०] राज्य का एक अधिकारी विशेष ।
यादम–पु० [अ० आदम] आदमी, पुरुष ।
यादव–देखो 'जादव' । —कुळ, कुळि='जादवकुळ' ।—पति, पति= 'जादवपति' । —राई–पु० यादवों के राजा । श्रीकृष्ण । —वंश='जादववंश' ।
यापू–पु० [फा०] छोटा घोड़ा, टट्टू ।
यापावर–पु० [स०] १ इधर–उधर घूमने वाला प्राणी । २ एक ही स्थान पर न रहने वाला, अरत्कारु ऋषि । ३ चारण ।
यार–पु० [फा०] १ मित्र, दोस्त । २ साथी, मददगार, सहायक । ३ प्रेमी । ४ किसी स्त्री का उप पति ।
यारी–स्त्री० [फा०] १ मित्रता, दोस्ती । २ स्नेह संबंध । ३ स्त्री-पुरुष का अनुचित संबंध ।
याल–स्त्री० [तु०] १ घोड़े, सिंह आदि के गर्दन के बाल, अयाल । २ गर्दन ।
यासुक–वि० अनन्त, असीम ।
यावनी–पु० करंक शालिनामक ईख, रसाल ।
यास्क–पु० [सं०] निरुक्त नामक विख्यात ग्रंथ का कर्ता ।
यि–सर्व० ये ।—क्रि०वि० भी, अपि ।
यिऊं–क्रि०वि० ऐसा, ऐसे, भी ।
यिव–देखो 'इव' ·
यिम–देखो 'इम'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यिमरत–देखो 'अमरत'।
यिहां–क्रि०वि० यहां।
यी–सर्व० यह।
यु–देखो 'यू'।
युंमल–देखो 'जमल'।
युक्त–देखो 'जुगत'।
युक्ति–स्त्री० [सं०] १ साहित्य में एक अलंकार। २ देखो 'जुगती'।
युक्तियुक्त–वि० [सं०] ठीक, वाजिब, उपयुक्त। युक्ति से पुष्ट।
युग–देखो 'जुग'।
युगति–देखो 'जुगती'।
युगमंधर–देखो 'जुगमंधर'।
युगळ युगल–देखो 'जुगळ'।
युगलियो–वि० युग्म।
युगवर–देखो 'जुगवर'।
युगांतक–देखो 'जुगंतक'।
युगादि–देखो 'जुगादि'।
युगादिदेव–पु० [सं०] सृष्टि के प्रारंभ के देवता।
युगेस–पु० १ बृहस्पति के साठ वर्षों के राशिचक्र में पांच-पांच वर्षों के युगपति। २ देखो 'जुगेस'।
युग्मपद–पु० [सं०] शृंगार में एक आसन विशेष।
युतवेध–देखो 'जुतवेध'।
युतिस्ट–पु० छप्पय छंद का एक भेद।
युत्थ–देखो 'जूथ'।
युद्ध–देखो 'जुद्ध'।
युद्धवाद–पु० [सं०] ७२ कलाओं में से एक।
युद्धसत्रि–पु० [सं० युद्धसत्र] युद्ध में बलिदान होने या करने का भाव।
युधिस्ठिर–देखो 'जुधिस्ठर'।
युवक–पु० [सं०] १.१६ से ३५ वर्ष की आयु का पुरुष, जवान व्यक्ति। नौजवान।–वि० युवा, जवान, वयस्क।
युवति (ती)–स्त्री० [सं०] जवान स्त्री, युवा स्त्री या लड़की।
युवराज, युवराजकुमार–पु० [सं० युवराज] १ बड़ा राजकुमार। २ राजा का उत्तराधिकारी।
युवरासी–स्त्री० एक तीर्थ का नाम।
युवा–देखो 'जवांण'।
युवावरस्ती–स्त्री० जवान स्त्री।
युव्वनास–देखो 'जुवनासव'।
यूं–क्रि०वि० इस प्रकार, ऐसे।
यूंही–क्रि०वि० अकारण ही, वैसे ही।
यूथ–देखो 'जूथ'।—नाथ='जूथनाथ'।—पति = 'जूथपति'।—पाळ – 'जूथपाळ'।
यूथप–देखो 'जूथप'।
यूनांन–पु० एशिया के पास का एक यूरोपीय देश।
यूनानी–वि० यूनान का; यूनान संबंधी, यूनान देश का बना।–पु० १ यूनान का निवासी। २ इस देश की भाषा। ३ चिकित्सा की एक विधि।
यूराल–पु० १ एशिया व यूरोप महाद्वीपों के बीच स्थित एक पहाड़। २ इस पहाड़ के पास का प्रदेश। ३ इस पहाड़ से निकलने वाली नदी।
यूह–देखो 'जूथ'।
यूंही–देखो 'यूंही'।
ये–सर्व० 'यह' का बहुवचन, ये।
येऊ–अव्य० यह भी।
येक–देखो 'एक'।
येकण–देखो 'एकण'।
येकलि–क्रि०वि० अकेले ही, अकेले में, एकान्त में।
येकस–देखो 'एकस'।
येकसो–देखो 'एकसौ'।
येटलो–वि० (स्त्री० येटली) जितना।
येठीमधु–स्त्री० मुलैठी।
येण–सर्व० इस।
येसा–क्रि०वि० जिस प्रकार, जैसे।
येसो–सर्व० (स्त्री० येती) इतना।
येम–क्रि०वि० १ जिस प्रकार, जैसे। २ जिससे।
येसम–देखो 'इलम'।
येळा–देखो 'इळा'।
येळापत (पति, पती)–देखो 'इळापत'।
येह–देखो 'यह'।
येहड़ो–सर्व० (स्त्री० येहड़ी) ऐसा।
येहां–अव्य० १ यहां। २ ऐसे।
यैं–सर्व० इस, इन।
यैसें–क्रि०वि० ऐसा, इस प्रकार।
यों–क्रि०वि० [सं० एवमेव] १ इस प्रकार, ऐसे। २ उसी तरह वैसे ही।–सर्व० इसके।
योंही–क्रि०वि० १ इसी प्रकार से, इसी तरह से। २ देखो 'यूंही'।
यो–देखो 'यों'।
योई–देखो 'यही'।
योग–देखो 'जोग'।
योगकन्या–स्त्री० [सं०] यशोदा के गर्भ से उत्पन्न कन्या रूप में श्रीकृष्ण की माया।
योगज–पु० [सं०] योगी को मिलने वाली एक प्रकार की सिद्धि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगजात्रा–देखो 'योगयात्रा'।

योगदंड–पु० [सं०] योगी के हाथ में रहने वाला दंड।

योगदरसन–पु०[स०योगदर्शन] महर्षि पतंजलि रचित योग सूत्र।

योगनाथ–पु० [सं०] शिव।

योगनिद्रा–देखो 'जोगनिद्रा'।

योगनिद्राळु–देखो 'जोगनिद्राळु'।

योगनी–देखो 'जोगणी'।

योगनीइग्यारस (एकादसी)–स्त्री० [सं० योगिनीएकादशी] आषाढ़ कृष्णा एकादशी।

योगपट्ट–पु० [सं०] एक प्रकार का पहनावा (प्राचीन)।

योगपति–पु० [सं०] १ विष्णु। २ शिव।

योगपदक–पु० [सं० योग-पदक] एक प्रकार का उत्तरीय वस्त्र।

योगपाद–पु० [सं०] अभीष्ट की प्राप्ति हेतु किया जाने वाला कर्म।

योगपारंग–पु० [सं०] शिव, महादेव। –वि० योग-साधना में प्रवीण।

योगपीठ–स्त्री० [सं०] देवताओं का योगासन।

योगफळ–पु० अंकों की जोड़, जोड़ का परिणाम।

योगबळ–देखो 'जोगबळ'।

योगभ्रस्ट–देखो 'जोगभ्रस्ट'।

योगमाता, योगमाया–देखो 'जोगमाया'।

योगमाळ–स्त्री० बहत्तर कलाओं में से एक।

योगमूरतिधर–पु० [सं०] शिव, महादेव।

योगयात्रा–पु० [सं०] यात्रा के लिये उपयुक्त योग।

योगराजगुग्गळ–पु० गुग्गल प्रधान एक औषधि विशेष।

योगरूढ, योगरूढ़ि–पु० [सं० योग-रूढ़] दो शब्दों के योग से बना विशेष अर्थबोधक शब्द।

योगरोचना–स्त्री० [सं० योग–रोचना] एक प्रकार का लेपन।

योगवाणी–स्त्री० [सं० योगवाणी] योग का उपदेश।

योगवांन–पु० [सं० योगवत्] योगी।

योगवासिस्ठ–पु० [सं० योग वाशिष्ठ] वशिष्ठ मुनि द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ग्रंथ।

योगवाही–पु० [सं० योग-वाहिन्] दो औषधियों के योग से बनी औषधि विशेष।

योगवृत्ति–स्त्री० [सं० योगवृत्ति] योग के द्वारा प्राप्त होने वाली चित्त वृत्ति।

योगसंक्ति (सगति)–देखो 'जोगसगति'।

योगसास्तर (सास्त्र)–पु० [सं० योग शास्त्र] पतंजलि ऋषि का योग संबंधी ग्रंथ।

योगसास्तरी (सास्त्री, सास्त्री)–वि० योग शास्त्र का ज्ञाता।

योगसिद्ध(सिद्धि,सिध,सिधी)–स्त्री० [सं०] योग से प्राप्त सिद्धि।

योगसूत्र–पु० [सं०] योग संबंधी सूत्र।

योगांग–पु० [स०] योग के आठ अंगों में से कोई एक।

योगांत–पु० [स०] मंगलग्रह का कक्षा के सातवें भाग का एक अंश।

योगागम–पु० [सं०] योग-दर्शन।

योगाचार–पु० [सं०] १ योग का आचरण, योग साधना। २ एक बौद्ध सम्प्रदाय विशेष।

योगाभ्यास–पु० [सं०] योग-साधना।

योगाभ्यासी–पु० [सं०] योग साधना करने वाला।

योगारूढ़–पु० [सं०] योग साधना में निमग्न।

योगासन–पु० योग-साधना का आसन।

योगिणी (नी)–देखो 'जोगणी'। –पुर=जोगणीपुर'।

योगिनी–देखो 'जोगणी'।

योगिराज–देखो 'योगीराज'।

योगींद्र–देखो 'जोगींद्र'।

योगी–देखो 'जोगी'।

योगीकुंड–पु० [सं०] हिमालय के अन्तर्गत एक तीर्थ।

योगीनाथ–पु० [सं०] शिव, महादेव।

योगीराज, योगीस, योगीस्वर, योगींद्र, योगेस, योगेस्वर–पु० [सं०] योगियों में श्रेष्ठ।

योगीस्वरी, योगेस्वरी–स्त्री० [सं० योगेश्वरी] दुर्गा, देवी।

योग्य–वि० [सं०] १ उपयुक्त, ठीक। २ लायक, काबिल। ३ प्रवीण, चतुर। ४ अच्छे चरित्रवाला। ५ सुन्दर, दर्शनीय। ६ आदरणीय, सम्माननीय। ७ उचित, ठीक।

योग्यता–स्त्री० [सं०] १ योग्य होने की अवस्था या भाव। २ क्षमता, सामर्थ्य। ३ लायकी काबलियत। ४ विद्वत्ता, गुण। ५ उपयुक्तता। ६ शक्ति, सामर्थ्य, औकात। ७ बड़प्पन, महत्ता। ८ इज्जत, प्रतिष्ठा।

योजक–वि० [सं०] जोड़ने या मिलाने वाला।

योजन–पु० [सं०] दूरी का एक माप।

योजनगंधा–स्त्री०[सं०]१ मत्स्यगंधा का नामान्तर। २ कस्तूरी। ३ सीता।

योजना–स्त्री० [सं०] १ कार्यक्रम, कार्य योजना २ व्यवस्था, आयोजन। ३ प्रस्ताव। ४ प्रयोग।

योतिस–देखो 'ज्योतिस'।

योत्राणी (बी)–क्रि० [सं० युज्] जुतवाना।

योनि–स्त्री० [सं०] १ स्त्री की जननेन्द्रिय, भग। २ उद्भव, जन्म। ३ उद्भव स्थान। ४ खान। ५ देह, शरीर। ६ प्राणियों का वर्ग या विभाग। ७ जल, पानी। ८ अन्तःकरण। ९ पुराणानुसार कुश द्वीप की एक नदी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योनिकंद–पु० [सं०] स्त्रियों का योनि संबंधी एक रोग।
योनिशूल–पु० [सं०] स्त्रियों की योनि के अन्दर का एक भाग।
योनिसूल–पु० एक रोग विशेष।
योन्यासन–पु० योग के ८४ आसनों में से एक।
योवन–पु० यथावस्था, जवानी।
योसा–स्त्री० [सं० योषा] युवती, नारी।
योही–देखो 'यही'।
यौं–क्रि० वि० ऐसे, इस प्रकार।
यौ–सर्व० यह। –क्रि० वि० ऐसे। इस तरह।
यौगिक–पु० [सं०] १ एक प्रत्यय शब्द। २ अढ़ाई मात्रा के छंदों की संज्ञा।–वि० १ मिश्रित, मिला हुआ। २ जोड़ से संबंधित।
यौध–देखो 'जोध'।
यौवनियो, यौवन, यौवण (न)–देखो 'जोबन'।
यौवना–वि० यौवन संबंधी।
योही–देखो 'यही'।

(र)

र–पु० [सं०] देवनागरी वर्णमाला का सत्ताईसवां व्यंजन-वर्ण।
रंक–वि० [सं०] १ निर्धन, गरीब। २ दरिद्र, कंगाल। ३ भिखारी, फकीर। ४ कायर, डरपोक। ५ कृपण, कंजूस। ६ क्षुधित, भूखा। ७ नीच। ८ आलसी, सुस्त। ९ उदास, खिन्न।
रंकता–स्त्री० [सं०] १ गरीबी, निर्धनता। २ कृपणता, कंजूसी। ३ नीचता। ४ फकीरी। ५ आलस्य, सुस्ती।
रंकार–देखो 'ररंकार'।
रंकि–देखो 'रंक'।
रंकु, रंकू, रंकी–पु० [सं० रंकु] १ एक प्रकार का हरिन। २ मृग, हरिन। ३ देखो 'रंक'।
रंगंगण, रंगंगणि (णी)–पु० [सं० रंग-अंगणम्] १ रंगमंच, अभिनय स्थल। २ रणभूमि।
रंग–पु० [सं०] १ किसी प्राणी या पदार्थ का काला, पीला, श्वेत आदि वर्ण। २ रासायनिक क्रिया से बना पदार्थ, जिससे कोई वस्त्रादि रंगा जा सके। ३ रूप, स्वरूप। ४ शारीरिक बनावट। ५ छवि, नूर, सौंदर्य। ६ रौनक, शोभा, ठाट। ७ अनुराग, लगाव। ८ हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता। ९ रति क्रीड़ा, मैथुन। १० सुख। ११ उत्सव। १२ नृत्य, गायन। १३ अभिनय। १४ खेल, तमाशा। १५ अभिनय स्थल, रंगमंच। १६ सभा स्थान। १७ वेश्या, गणिका। १८ युवावस्था, यौवन। १९ मन की मर्जी, मन की मौज। २० नशा, मस्ती। २१ स्वभाव, प्रकृति। २२ दशा, हालत, ढंग। २३ चाल-ढाल, गति-विधि। २४ आसार, वातावरण। २५ व्यवहार। २६ प्रभाव, रौब। २७ आमोद-प्रमोद, मनोरंजन। २८ गौरव, प्रतिष्ठा, मान, इज्जत। २९ धन्यवाद, साधुवाद। ३० कृपा, अनुग्रह। ३१ जोश, आवेश। ३२ युद्धभूमि, रणांगन। ३३ पानी, जल। ३४ चौपड़ के खेल में गोटों की विजय-अवस्था। ३५ युद्ध, लड़ाई। ३६ ताश के खेल में काट वाला पत्ता। ३७ एक प्रकार का घोड़ा। ३८ तरह, भांति, प्रकार। ३९ रांगा नामक धातु। ४० सुहागा। ४१ अमल आदि की महफिल में पढ़ा जाने वाला छंद विशेष।—**आंमास**–पु० केलिगृह, रंगमहल। —**कार**–पु० चित्रकार, रंगरेज। —**केळ, केळि**–स्त्री० रतिक्रीड़ा, मैथुन। आनन्द, मौज। —**क्षेत्र**–पु० अभिनय स्थल। रंगमंच। युद्ध भूमि। —**जीव**–पु० चित्रकार। —**थळ**='रंगस्थळ'। —**निवास, पुर, भवन**–पु० अन्तःपुर, महल। केलिगृह। —**भू, भूमि, भोमि, भोमी, भोमि, भौमी**–स्त्री० रंगमंच, युद्ध स्थल। —**महळ, महलि**–पु० अन्तःपुर। केलिगृह। —**मातो**–पु० प्रेम, अनुराग में उन्मत्त। रसिया, रसिक। —**रळियात, रळी**–स्त्री० रतिक्रीड़ा, मैथुन, संभोग। हर्ष खुशी। आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, चैन, आराम, सुख। प्रेम अनुराग। —**रस**–पु० आनन्द, हर्ष, आमोद-प्रमोद, मनोरंजन। रतिक्रिया। —**रसियो**–पु० प्रेमी, रसिक, भोग विलास में मस्त। —**रातो**–पु० प्रेम, अनुराग में मस्त। भोग विलास में रत। मौजी।—**रास**–पु० रतिक्रीड़ा, भोग-विलास। आमोद-प्रमोद। हर्ष, आनन्द। नृत्य, गायन। खेल-तमाशा। —**रेळ, रेळि, रेळी** = 'रंगरळी'। —**रोळ, रोळि, रोळी, रोली रोलो** = 'रंगरळी'। —**साळ,**

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साळा–स्त्री० नाट्यशाला, रंगमंच, महफिल । —स्थळ–-पु० युद्धस्थल, रणभूमि । रंगमंच । क्रीड़ागृह ।

रंगड़ रघड़–पु० १ एक राजपूत वंश । –वि० १ वीर, बहादुर । २ उद्दण्ड, उत्पाती ।

रंगजणणी (जननी)–स्त्री० [सं० रंग-जननी] लाख, लाक्षा ।

रंगट–देखो 'रंघड़' ।

रंगढंग–पु० १ हाल-चाल, हालात । २ व्यवहार, बर्ताव । ३ चाल-ढाल, गतिविधि । ४ सजावट । ५ लक्षण, गुण ।

रंगणो (बो)–क्रि० १ लीन होना, तल्लीन होना, तन्मय होना । २ आसक्त, अनुरक्त होना । ३ मोहित होना, मुग्ध होना । ४ रंग से युक्त होना । ५ भीगना । ६ किसी रंग विशेष से रंगाजाना, रंगना । ७ अनुकूल करना । ८ प्रभाव में करना । ९ प्रेम में फंसाना । १० अधिक लिखना, विरुद्ध लिखना ।

रंगत–स्त्री० [सं०] १ दशा, हालत, अवस्था, ढंग । २ आनन्द, मौज । ३ रंग, वर्ण । ४ शोभा, छवि । ५ सुर्खी, आभा, कांति, झलक । ६ प्रभाव, छाप । ७ संतोष । ८ चैन, शांति, आराम । ९ तृप्ति । १० गोष्ठी, महफिल । ११ रंगमय होने की अवस्था । १२ रंगने का कार्य । १३ राग विशेष (मेवात) ।

रंगना–स्त्री० १ स्त्री, औरत । २ रमणी, सुंदरी ।

रंगनाथ–पु० १ विष्णु का एक नामान्तर । २ एक तीर्थस्थान ।

रंगपंचमी (पांचम)–स्त्री० चैत्र कृष्णा पंचमी ।

रंगपीत–पु० [सं० पीतरंग] १ बृहस्पति का एक नाम । २ ब्रह्मा ।

रंगबिरंगु (बिरंगो)–वि० (स्त्री० रंगबिरंगी) अनेक रंगों से युक्त । विविध रंगी, बहुरंगी ।

रंगभोनी–स्त्री० १ वेश्या, रंडी । २ प्रेम आदि में निमग्न स्त्री । ३ अनुरक्त, आसक्त । ४ किसी रंग में भीगी हुई, तर । ५ सुन्दरी ।

रंगभोनो–वि० (स्त्री० रंगभोनी) १ प्रेम या रतिक्रीड़ा में निमग्न २ प्रेमी, रसिक । ३ रंग में रत्ता, रंग से सना, तर । ४ रंगवाला ।

रंगभूति–स्त्री० आश्विन मास की पूर्णिमा की रात्रि ।

रंगमल्लो–स्त्री० [सं०] बीन, वीणा ।

रंगमाण–पु० रतिक्रीड़ा, भोग विलास ।

रंगमाळ–पु० १ एक मात्रिक छन्द विशेष । २ देखो 'रंगमहल' ।

रंगरंगीलो–वि० (स्त्री० रंगरंगीली) १ छैल-छबीला, शौकीन । २ प्रेमी, रसिक । ३ विभिन्न रंगों वाला ।

रंगरजबो–देखो 'रंगरेजो' ।

रंगराग–देखो 'रागरंग' ।

रंगराज–पु० ताल का एक भेद । (संगीत)

रंगरातो–वि० [सं० रंगरक्त] (स्त्री० रंगराती) १ प्रेम या अनुराग में मग्न, प्रेमासक्त, अनुरक्त । २ भोग-विलास व रतिक्रीड़ा में रत, विलासी । ३ छैल-छबीला, रसिक प्रेमी । ४ किसी के प्रभाव में आया हुआ ।

रंगरूट–पु० नया भर्ती किया गया सिपाही ।

रंगरेज (जो)–पु० [फा०] (स्त्री० रंगरेजण, रंगरेजणी) १ वस्त्र रंगाई का कार्य करने वाली एक जाति । २ इस जाति का व्यक्ति ।

रंगरेटा–स्त्री० सिक्ख सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक जाति ।

रंगरेलो–देखो 'रंगीलो' ।

रंगलो–देखो 'रंगीलो' ।

रंगवाग–पु० जनाना बाग, महिला उद्यान ।

रंगविद्याधर–पु० ताल का एक भेद ।

रंगसाई–स्त्री० रंग से सज्जित करने की क्रिया ।

रंगसाज–पु० [फा०] १ वस्त्रों की रंगाई करने वाला व्यक्ति, रंगरेज । २ चित्रकार, चितेरा । ३ रंग बनाने वाला ।

रंगाई–स्त्री० १ रंगने का कार्य । २ इस कार्य का पारिश्रमिक ।

रंगाउळि, रंगाउळिय, रंगाउळीय–देखो 'रंगावली' ।

रंगाणो(बो)–क्रि० १ लीन या तल्लीन कराना । २ अनुरक्त या आसक्त कराना । ३ मोहित या मुग्ध कराना । ४ रंग से युक्त कराना । ५ भीगाना । ६ किसी रंग विशेष से रंग वाना । ७ अनुकूल कराना । ८ प्रभाव में कराना । ९ प्रेम में फंसवाना । १० अधिक लिखवाना, विरुद्ध लिखवाना ।

रंगाभरण–पु० ताल का एक भेद विशेष । (संगीत)

रंगार–पु० १ मेवाड़ क्षेत्र की एक राजपूत जाति । २ रंग देने देने वाला व्यक्ति ।

रंगाळ, रंगाल–वि० १ रंग का, रंग सम्बंधी । २ रंगीन । ३ रंगीला ।

रंगालय–पु० [स०] १ नाट्यशाला, रंगमंच । २ युद्ध भूमि, रणक्षेत्र ।

रंगाळो–वि० (स्त्री० रंगाळी) १ रंग का, रंग सम्बन्धी । २ रंग वाला, रंग से युक्त । ३ देखो 'रंगीलो' ।

रंगावट–स्त्री० १ रंगने की क्रिया । २ रंगने की कला, रंगाई ।

रंगावणो (बो)–देखो 'रंगाणो' (बो) ।

रंगावळ, रंगावळि, रंगावळो–पु० १ एक प्रकार का कवच । २ रान का कवच, ऊरुत्र ।

रंगि–१ देखो 'रंग' । २ 'रंगी' ।

रंगिका–स्त्री० एक छन्द विशेष ।

रंगिया–स्त्री० मृत पशु की खाल को रंगने का कार्य करने वाली एक जाति ।

रंगिरोळ, रंगिरोळो, रंगिरोळ–देखो 'रंगरळा' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंगी–स्त्री० १ शारदा, सरस्वती । २ शतमूली । ३ एक छन्द विशेष । ४ कैवर्त्ति की लता । ५ सिंहाणी छंद का एक भेद । –वि० १ हंसमुख, विनोदशील । २ मनमौजी, मस्त । ३ छैल-छबीला, शौकीन । ४ सुन्दर, मनोहर । ५ देखो 'रंग' ।

रंगीन–वि० [फा०] १ रंग चढ़ा हुआ, रंगा हुआ । रंगदार । २ चित्रित, शोभित । ३ चमत्कार पूर्ण, अद्भुत । ४ विनोदप्रिय । ५ मस्त, मौजी । ६ विलासप्रिय, विलासी

रंगीली–स्त्री० १ स्त्री, नारी । २ प्रेमिका, प्यारी । –वि० १ हर्ष व आनन्द से भरी हुई । २ विविध रंगों से युक्त ३ सुन्दर, खूबसूरत । ४ मजेदार, बढ़िया । ५ छैल-छबीली शौकीन । ६ छिनाल, अवारा ।

रंगीलीटोड़ी–स्त्री० सम्पूर्ण जाति की एक राग ।

रंगीलो–वि० (स्त्री० रंगीली) १ रंग से भरा, रंगोंवाला । २ आकर्षक । ३ आनन्द व हर्ष से भरा । ४ प्रेमासक्त, प्रेमी प्रिय । ५ रंग से भीना, रंगयुक्त ।

रंगीलेंगी–वि० (स्त्री० रंगीलेंगी) १ बढ़िया, मजेदार । २ हर्षित आनन्दित । ३ मस्त, मौजी । ४ स्वस्थ ।

रंघड़–पु० १ राजपूत । २ एक राजपूत जाति जो अब मुसलमान हो गई है । ३ सैनिक, योद्धा, भट । –वि० १ वीर, बहादुर । २ अड़ियल, अक्खड़ ।

रंच, रंचक–वि० [सं० न्यंच] १ अत्यन्त थोड़ा, किंचित, तनिक । २ तुच्छ, न्यून । –स्त्री० पार्वती, दुर्गा, देवी ।

रंज–पु० [फा०] १ दुःख, गम । २ मृतक का शोक । ३ खेद, अफसोस । ४ चिंता, फिक्र । ५ दर्द, पीड़ा, संताप । ६ नाराजगी । ७ विपत्ति, मुसीबत । ८ आघात, चोट । ९ परेशानी । –वि० [सं०] १ अनुरक्त, आसक्त । २ निप्त, संलग्न । ३ रंगा हुआ । ४ प्रसन्न, खुश । ५ देखो 'रज' ।

रंजक–पु० [सं०] १ चित्रकार, चितेरा । २ लाल चन्दन । ३ सिंदूर । ४ एक प्रकार का हरिण, मृग । ५ पित्त के अंतर्गत पेट की एक अग्नि । [फा०] ६ रंगरेज, रंगसाज ७ अग्नि । ८ बंदूक या तोप को प्याली पर रखने का बारूद । –वि० १ रंगने वाला, रंग चढ़ाने वाला । २ रंज या उदासी मिटाने वाला । ३ हर्ष या खुशी देने वाला, आनन्द कारक । ४ उत्तेजना, प्रोत्साहन देने वाला । ५ आकर्षित या मोहित करने वाला ।

रंजण–पु० [सं० रंजनम्] १ चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव । २ आनन्द, हर्ष । ३ पित्त । ४ लालचंदन की लकड़ी । ५ मूंज । ६ सोना, स्वर्ण । ७ जायफल । ८ कमीला नामक वृक्ष । ९ छप्पय छंद का एक भेद । –वि० १ उदासी मिटाने व खुशी देने वाला । २ पालन-पोषण करने वाला । ३ शांति या संतोष देने वाला ।

रंजणी–वि० (स्त्री० रंजणी) १ खुश होने वाला । २ खुश करने वाला । ३ रंगने वाला । ४ तृप्त करने या होने वाला ५ दीप्तिमान करने वाला ।

रंजणो(बो)–क्रि० [सं० रंजनम्] १ प्रसन्न होना, खुश होना । २ तृप्त होना, संतुष्ट होना । ३ मोहित, मुग्ध या आकर्षित होना, रीझना । ४ शोभित होना ५ उलझना, फंसना । ६ प्रभावित होना, प्रभाव में आना । ७ रंगीजना, रंग में आना । ८ चमकना दीप्तिमान होना । ९ प्रसन्न करना, खुश करना, खुशी देना । १० तृप्त करना, संतुष्ट करना । ११ निर्भय करना, भय मुक्त करना ।

रंजत–स्त्री० [सं० रज] १ तृप्ति, संतोष । २ हर्ष, खुशी ।

रंजन–देखो 'रंजण' ।

रंजबणो(बो)–देखो 'रंजणो' (बो) ।

रंजाट–वि० रंगा हुआ, लीन ।

रंजाणो (बो)–क्रि० १ प्रसन्न या हर्षित करना, कराना । २ तृप्त या संतुष्ट करना, कराना । ३ मोहित या मुग्ध करना, कराना । ४ शोभित कराना । ५ उलझवाना, फंसवाना । ६ प्रभावित कराना । ७ चमकाना । ८ रंगाना । ९ भय मुक्त कराना ।

रंजि–१ देखो रंज' । २ देखो 'रज' ।

रंजित–वि० [सं० रञ्ज] १ रंगयुक्त, रंगीन । २ भीगा हुआ, सना हुआ । ३ रज से भरा हुआ । ४ प्रेम में अनुरक्त । ५ लिप्त, संलग्न ।

रंजिस–स्त्री० [फा० रंजिश] १ किसी प्रकार की चिंता, फिक्र उदासी । २ अप्रसन्नता, नाराजगी । ३ मन-मुटाव । ४ द्वेष । ५ शत्रुता । ६ दुःख ।

रंजी–देखो 'रंज', 'रज' ।

रंजीदगी–देखो 'रंजिस' ।

रंजीदो–वि० [फा० रंजीद] (स्त्री० रंजीदी) १ दुःखी, संतप्त, गमगीन । २ नाराज, अप्रसन्न । ३ असंतुष्ट ।

रंजेट–देखो 'रांझट, रांझौ' ।

रंड–स्त्री० [सं० रंडः] १ बिना फल की एक लता । २ देखो 'रांड' ।

रंडकारो–पु० स्त्री के प्रति कहा जाने वाला एक अपशब्द ।

रंडमी–देखो 'रंडी'/रांड' ।

रंडपोखो–पु० [सं० रंडा+पोषकः] वेश्याओं का पोषण करने वाला, वेश्यागामी, व्यभिचारी ।

रंडमाळ (माळा, माला)–देखो 'रंडमाळा' ।

रंडवो–पु० [सं० रंडः] १ विधुर व्यक्ति । २ अविवाहित व्यक्ति ।

रंडा–वि० १ मूर्ख, अज्ञानी । २ देखो रांड' । ३ देखो 'रंडी' ।

रंडातक–वि० विधवा स्त्री के समान ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंडापण (पणो), रंडापो–पु० १ विधवापन, वैधव्य। २ दुःखी जीवन।

रंडाल–१ देखो 'रांड'। २ देखो 'रंढाळ'।

रंडाळी–वि० १ व्यभिचारी। २ देखो 'रंढाळ'।

रंडि, रंडी–स्त्री० [सं० रंडा] १ पैसा लेकर नाच-गाना करने व संभोग कराने वाली स्त्री। २ व्यभिचार से धन कमाने वाली स्त्री। ३ स्त्रियों को एक गाली। ४ देखो 'रांड'।

रंडीजणो (बो)–देखो 'रांडीजणो' (बो)।

रंडीबाज–वि० वेश्यागामी, व्यभिचारी।

रंडीबाजी–स्त्री० १ वेश्याओं के यहाँ नियमित जाने की क्रिया या अवस्था। २ वेश्या के साथ किया जाने वाला व्यभिचार।

रंडुओ (बो)–देखो 'रंडवो'।

रंडेपड़ो–देखो 'रंडापो'।

रंढ–देखो 'रढ'।

रंढरांण (णो)–देखो 'रढरांण'।

रंढाळ, रंढाल, रंढाळी, रढालो–देखो 'रंढाळ'।

रंदु, रंदू–देखो 'रांदू'।

रंत–देखो 'रत्त'।

रंति–देखो 'रति'।

रंध–देखो 'रंध'।

रंधणो (बो)–क्रि० १ 'रंदा' लगाकर लकड़ी साफ करना। (बढ़ई) २ देखो 'रंधणो' (बो)।

रंदाई–स्त्री० १ रंदे से लकड़ी साफ करने की क्रिया या भाव। २ देखो 'रंधाई'।

रंदाणो (बो)–क्रि० १ लकड़ी पर 'रंदा' लगवाना। २ देखो 'रंधाणो' (बो)।

रंदेज, रंदोज–देखो 'रंधोण'।

रंदो–पु० १ लकड़ी को साफ व चिकनी बनाने का एक उपकरण। २ कमान की डोरी, प्रत्यंचा। ३ ऊँटों का एक रोग।

रंध–देखो 'रंध'।

रंधक–पु० [सं०] रसोइया, बावरची। –वि० अनिष्टकारक।

रंधण, रंधन–पु० भोजन बनने या पकने की क्रिया। २ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक।

रंधणो (बो)–क्रि० १ भोजन पकना। २ खिचड़ी आदि पकना। ३ देखो 'रंदणो' (बो)।

रंधर–देखो रंध्र'।

रंधाण–देखो 'रंधोण'।

रंधाई–स्त्री० भोजन, खिचड़ी आदि का पकना, पकाना क्रिया।

रंधाणो (बो), रंधावणो (बो)–क्रि० १ भोजन आदि बनवाना। २ खिचड़ी पकवाना। ३ कुछ पकाने के लिये प्रेरित करना।

रंधीण, रंधीन, रंधेज–पु० १ खीच, खिचड़ी आदि पकवान। २ ठण्डी रोटियों को पकाकर बनाया गया खाद्य पदार्थ।

रंध्र–पु० [सं०] १ छिद्र, छेद, सूराख। २ गह्वर, गुफा। ३ दीवार में बना छेद, तोरकश। ४ तूणीर। ५ योनि, भग। ६ त्रुटि, कमी, दोष। ७ दुर्बल या कमजोर स्थान।

रंब–देखो 'रंभा'।

रंबी–पु० १ लोहे का मोटा छड़ विशेष। २ दीवार में छेद करने का लोहे का मोटा डंडा।

रंभ–पु० [सं० आरम्भ] १ शुरुआत, आरंभ, प्रारंभ। २ युद्ध, समर। ३ एक प्रकार का तीर, बाण। ४ बांस। ५ जोर का शब्द या आवाज। ६ एक प्रकार का हरिन। ७ महिषासुर का पिता। ८ आयु राजा का पुत्र एक राजा। ९ एक अन्य राजा। १० राम की सेना का एक वानर। ११ एक दानव। १२ देखो 'रंभा'।

रंभगाण–पु० [सं० रंभा-गायन] रंभा आदि अप्सराओं का गायन।

रंभा–स्त्री० [सं०] १ इन्द्र सभा की एक अप्सरा। २ परी, अप्सरा। ३ पार्वती, गौरी। ४ मयदानव की पत्नी का नाम। ५ प्रेमिका। ६ वेश्या, रंडी। ७ उत्तर दिशा। ८ कदली, केला। —तर, तरु–पु० कदली वृक्ष, केला। —पत, पति, पती–पु० इन्द्र। कुबेर का पुत्र, नलकूबर।

रंभाणो (बो)–क्रि० [सं० रवण] १ गाय का बोलना। २ ममत्व भाव से दौड़ कर आना।

रंभातीज–स्त्री० [सं० रंभा- तृतीया] ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया।

रंभाळ–देखो 'रंभा'।

रंभावणो (बो)–देखो 'रंभाणो' (बो)।

रंभोरू–वि० [सं० रंभा ऊरु] सुन्दर जंघोंवाली स्त्री।

रंमताराम–पु० भ्रमणशील साधु।

रंमाझंमा–देखो 'रिमझिम'।

रंयणो (बो)–देखो 'रहणो' (बो)।

ररंकार–देखो 'ररंकार'।

र–पु० [सं०] १ पावक, अग्नि, आग। २ कामाग्नि, काम पिपासा। ३ जलन। ४ ताप, गर्मी। ५ प्रेम, स्नेह। ६ गति, वेग, रफ्तार। ७ स्वर्ण। ८ रगण का संक्षिप्त रूप –वि० प्रखर तीव्र, तेज।

रइअत–देखो 'रइयत'।

रइ–देखो 'रइ', 'रई', 'रति'।

रइण(णि, णी)–देखो 'रयण'।

रइ–पु० १ धैर्य, संतोष। २ देखो 'रति'। ३ देखो 'रे', 'रई'।

रइयत–देखो 'रइयत'।

रइण–देखो 'रयण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहणाहर–देखो 'रत्नाकर' ।
रहणि, रहन–देखो 'रयण' ।
रहबारी–देखो 'रैबारी' ।
रहयत (ति)–स्त्री० [अ० रईयत] प्रजा, जनता ।
रहवल्लह–पु० [सं० रति-वल्लभ] रति का पति, कामदेव ।
रहवास–देखो 'रहवास' ।
रहहीण, रहहीण (ण)–वि० [सं० रति+हीन] १ रति विहीन, कामेच्छा से विरक्त । २ कान्तिहीन ।
रई–स्त्री० १ दही बिलोने का दण्ड, मथ-दण्ड । २ भूसी, चोकर । ३ देखो 'रति', 'रई' ।
रईय–देखो 'रचित' ।
रईयत–देखो 'रइयत' ।
रईवत–देखो 'रैवत' ।
रईस–पु० [अ०] १ अमीर, धनवान । २ नाजुक, कोमल । ३ प्रतिष्ठित । ४ रियासत का स्वामी, भू-स्वामी, शासक । ५ अध्यक्ष, प्रधान ।
रउ–देखो 'रव', 'रौ' ।
रउद, रउद्द, रउद्ध, रउद्र, रउद्रि–१ देखो 'रौद्र' । २ देखो 'रुद्र' ।
रकतअंबर–देखो 'रक्तअंबर' ।
रकत–देखो 'रक्त' ।
रकतकंद–देखो 'रक्तकंद' ।
रकतबीज–देखो 'रक्तबीज' ।
रकतांक रकतांग–देखो 'रक्तांग' ।
रकथ–देखो 'रिकथ' ।
रकबो–पु० [अ० रकबः] क्षेत्रफल ।
रकम (रकमाणा)–स्त्री० [अ० रकम] १ धन, दौलत, सम्पत्ति । २ गहने, आभूषण । ३ व्यापारिक पूंजी । ४ रुपया, पैसा । ५ पूंजी की निश्चित मात्रा । ६ लगान, कर, राजस्व । ७ आमदनी, आय । ८ छाप, मुहर । ९ लिखावट । १० चलता-पुर्जा व्यक्ति, धूर्त, पाजी व चंट व्यक्ति ।
रकांन–पु० नियम, प्रथा, लाग, दस्तूर ।
रकाब–स्त्री० [फा०] १ ऊंट, घोड़े आदि की जीन का पांवदान, पायदा । २ रकाबी ।
रकाबदार–पु० [फा०] १ मिठाई बनाने का कारीगर, हलवाई । २ खानसामा । ३ खाना लेकर चलने वाला नौकर । ४ रकाब पकड़ कर घोड़े पर चढ़ाने वाला, सईस ।
रकार–पु० [सं०] १ 'र' वर्ण । २ राम नाम का पूर्वाक्षर । ३ रगण का संक्षिप्त रूप ।
रकाब–देखो 'रकाब' ।
रकेब, रकेबी–१ देखो 'रकाब' । २ देखो 'रकाबी' ।
रक्कम–देखो 'रकम' ।
रक्केब–देखो 'रकाब' ।
रक्खण–वि० १ रखने वाला । २ देखो 'रक्षण' ।
रक्खणी–देखो 'रखणी' ।
रक्खणी (णी)–१देखो 'रखणी' (णी); २ देखो 'राखणी' (णी) ।
रक्खपाळ–देखो 'रक्षपाळ' ।
रक्खबाळी–देखो 'रखाळी' ।
रक्खस–देखो 'राक्षस' ।
रक्खसी–स्त्री० १ एक प्रकार की लिपि । २ राक्षसी ।
रक्खी–१ देखो 'रखी' । २ देखो 'रिसि' ।
रक्त–पु० [सं० रक्तं, रक्तः] १ लहू, रुधिर, शोणित । २ लाल रंग । ३ केसर । ४ सिंदूर । ५ लाल चंदन । ६ कुसुंभ । ७ आंवले का फल । ८ कमल । ९ पुष्प, फूल । १० ताम्र, तांबा । ११ पतंग नामक वृक्ष की लकड़ी । १२ एक प्रकार की बेंत । १३ एक प्रकार की मछली । १४ एक जहरीला मेंढक । १५ एक विच्छू विशेष । १६ प्रवाल । —वि० १ रंगा हुआ, रंगीन । २ लाल, सुर्ख । ३ जिसका रंजन हुआ हो । ४ अनुरक्त, आसक्त । ५ प्रिय, प्यारा, माशूक । ६ सुन्दर, मनोज्ञ मनोहर । ७ खिलाड़ी, विनोदप्रिय । ८ शुद्ध स्वच्छ । ९ भक्ति में मस्त । –अंबर–पु० लाल वस्त्र । संन्यासी, परिव्राजक । सूर्य रवि ।–कंठ–पु० कोयल । बैंगन ।—वि० मधुरभाषी ।–कंद–पु० प्रवाल, मूंगा । लाल चंदन । केसर –कमळ–पु० लाल कमल । —काष्ठ–पु० लाल चंदन । पतंग की लकड़ी ।–ग्रीव–पु० कबूतर । राक्षस ।–चंचु पु० तोता । शुक ।–चंदन–पु० लाल चंदन ।–तुंड–पु० तोता, सुग्गा ।–नेत्र–पु० कोयल । चकोर । कबूतर । सारस पक्षी ।–पात–पु० खून गिरने या टपकने की स्थिति । मारकाट ।–पिंड–पु० रक्त से सना कोई पिंड ।–मोचन–पु० शरीर से खून का निवारण । –मोचन='रक्तनेत्र' ।–बिंदु–स्त्री० खून की बूंद । लाल चिह्न या दाग ।
रक्तकुष्ठ–पु० [सं० रक्त-कुष्ठ] एक प्रकार का रोग ।
रक्तगंध (गरभ)–पु० [सं० रक्त-गर्भ] मेंहदी ।
रक्तगुल्म–पु० [सं०] गर्भाशय का एक ग्रंथि रोग ।
रक्तता–स्त्री० [सं०] ललाई, लालिमा, सुर्खी ।
रक्तदंता (दंतिका, दंती)–स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक रूप ।
रक्तधरा–स्त्री० [सं०] मांस के भीतर की झिल्ली जिसमें रक्त रहता है ।
रक्तनायक–पु० एक आभूषण विशेष ।
रक्तपक्ष (पक्ष)–पु० [सं०] गरुड़ ।
रक्तपित (पित्त), रक्तपित्ती–पु० [सं० रक्तपित्त] एक रोग विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रक्तप्रदर–पु० स्त्रियों का एक रोग ।

रक्तप्रमेह–पु० पुरुषों का एक रोग ।

रक्तबीज–पु० [सं०] १ शुंभ-निशुंभ का सेनापति एक असुर । २ अनार, दाड़िम ।

रक्तमंडळ–पु० एक प्रकार का साँप ।

रक्तलोचण (न)–पु० १ रक्त नेत्र वाला । २ एक असुर का नाम ।

रक्तवरण–पु० [सं० रक्तवर्ण] लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा । वीर बहूटी ।

रक्तवात–पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग ।

रक्तबीज–देखो 'रक्तबीज' ।

रक्तवृष्टि–स्त्री० [सं० रक्तवृष्टि] लाल रंग के पानी की वर्षा । रक्त की वर्षा ।

रक्तस्राव–पु० [सं०] १ रक्त का पतन, गिरना । २ घोड़ों का एक रोग ।

रक्तांग–पु० [सं०] १ केसर । २ लाल चंदन । ३ मंगल ग्रह । ४ एक नाग विशेष । ५ प्रवाल, मूँगा ।

रक्ता–स्त्री० [सं०] १ संगीत में एक श्रुति । २ गुंजा का पौधा । ३ लाख ।

रक्ताकार–पु० [सं०] मूँगा, प्रवाल ।

रक्ताचळ–पु० [सं० रक्ताचल] उदियाचल नामक पर्वत ।

रक्तातिसार–पु० [सं०] एक प्रकार का अतिसार रोग ।

रक्तोत्पळ–पु० [सं० रक्तोत्पल] लाल रंग का कमल ।

रक्ष, रक्स–पु० [सं० रक्ष] १ बचाव, रक्षा हिफाजत । २ रखवाली, चौकीदारी, चौकसी । ३ प्रशासन, शासन । ४ छप्पय छंद का एक भेद । ५ देवता । ६ एक संस्कृति विशेष ।—वि० रक्षा या बचाव करने वाला ।

रक्षक–वि० [सं०] १ रक्षा करने वाला । २ पालन-पोषण करने वाला । ३ चौकसी या रखवाली करने वाला । —पु० चौकीदार, पहरेदार ।

रक्षण–पु० [सं०] १ रक्षा, बचाव । पालन-पोषण । २ चौकसी, देख-रेख । २ सहारा, आश्रय ।—वि० रक्षक ।

रक्षपाळ–वि० [सं० रक्षपाल] रक्षा व पालन करने वाला ।

रक्षफळ–पु० [सं०] बेहड़ा ।

रक्षस–देखो 'राक्षस' ।

रक्षा–स्त्री० [सं०] १ सुरक्षा, हिफाजत, बचाव । २ सहारा, आश्रय, शरण । ३ देख-रेख, निगरानी । ४ गोद । ५ यंत्र, ताबीज, सूत्र । ६ राखी का बंधन । ७ भस्म ।

रक्षाप्रदीप–पु० [सं०] प्रेत बाधा से बचाव के लिये जलाया जाने वाला दीपक ।

रक्षाबंधन–पु० [सं०] १ श्रावण की पूर्णिमा को बहनों द्वारा भाई के हाथ के बांधी जाने वाली राखी, बंधन सूत्र । २ इस दिन का त्यौहार ।

रक्षाभूषण–पु० [सं० रक्षाभूषण] प्रेत बाधा से बचने का यंत्र, ताबीज ।

रक्षामंडळ–पु० [सं०] एक प्रकार का तांत्रिक अनुष्ठान ।

रक्षामण (मणि, मिण)–स्त्री० [सं० रक्षामणि] एक प्रकार की मणि ।

रक्षारांम–देखो 'रांमरक्षा' ।

रक्षावत–वि० रक्षक, सहायक ।

रक्षित–वि० [सं०] १ जिसकी सुरक्षा हो रही हो, सुरक्षित । हिफाजत किया हुआ । २ पालित, पोषित । ३ जिसकी रखवाली, चौकीदारी का प्रबंध हो । ४ व्यवस्थित, प्रबंधित । ५ आरक्षित, रिजर्व । ६ संचित ।

रख–देखो 'रिसि', 'रिख', 'रक्ष' ।

रखडणी (बो)–क्रि० भटकना, मारा-मारा फिरना ।

रखडी–१ देखो 'राखडी' । २ देखो 'राखी' ।

रखण–देखो 'रक्षण' ।

रखणआतप–पु० [सं० आतप-रक्षण] सूर्य, रवि ।

रखणी–स्त्री० १ रखने की क्रिया या भाव । २ रखने का ढंग ।

रखणी–वि० १ रक्षा करने वाला । २ रखने वाला ।

रखणी (बो)–देखो 'राखणी' (बो) ।

रखत (त्त)–पु० [सं० ऋक्ष] १ धन, द्रव्य । २ आभूषण, गहना, जेवर, । ३ सामान । ४ सम्पत्ति, जायदाद । ५ स्वर्ण, सोना । ६ मोती । [सं० ऋक्षः] ७ नक्षत्र, तारा । ८ रक्षित व्यक्ति । ९ रक्षित भूमि । १० रक्षा । ११ रखवाली । १२ पालन-पोषण । १३ परहेज ।

रखतैत–वि० रक्षक, रखवाला ।

रखपाळ–देखो 'रक्षपाळ' ।

रखफळ–देखो 'रक्षफळ' ।

रखम (ब)–देखो 'रिसभ' ।

रखमंडळ–देखो 'रिखमंडळ' ।

रखवाई–स्त्री० १ रखने की क्रिया या भाव । २ रखने की मजदूरी । ३ देखो 'रखवाळी' ।

रखवाणी (बो)–देखो 'रखाणी' (बो) ।

रखवार, रखवारी–वि० रक्षा करने वाला, रक्षक, रखवाला, चौकीदार ।

रखवाळ, रखवाल, रखवाळक, रखवालक, रखवाळण, रखवालण–देखो 'रुखाळी' ।

रखवाळणी (बो)–देखो 'रुखाळणी' (बो) ।

रखवाळी–स्त्री० १ रक्षा, हिफाजत, बचाव । २ निगरानी, चौकसी । ३ निरीक्षण, देख-रेख । ४ रखवाली की मजदूरी । ५ निगरानी का कार्य, चौकीदारी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रखवाळु (ळ्, ळी)–देखो 'रुखाळौ'।

रखस–देखो 'राक्षस'।

रखांराज–देखो 'रिसिराज'।

रखाई–स्त्री० १ रखने की क्रिया या भाव। २ हिफाजत, रक्षा। ३ निगरानी, चौकसी।

रखाणौ (बौ)–क्रि० १ किसी आधार या तल पर ठहराना, धरवाना, टिकवाना। २ रक्षा या बचाव कराना। ३ नष्ट होने या बिगड़ने से बचवाना। ४ पालन-पोषण कराना। ५ एकत्र कराना, इकट्ठा कराना। ६ सुपुर्द कराना। ७ अधिकार या कब्जे में कराना, अधीन कराना। ८ नियुक्त कराना। ९ रुकवाना। १० पकड़वाना। ११ चोट कराना। १२ धारण कराना। १३ आरोपित कराना, आक्षेप लगवाना। १४ लदवाना। १५ प्रस्तुत कराना, सामने धराना। १६ ठहराना, आवास कराना। १७ गिरवी या रेहन धराना। १८ रखवालो, निगरानी या देख-रेख कराना। १९ संबंध बनवाना। २० अवलंबित कराना। २१ धारक्षित कराना, सुरक्षित कराना।

रखाळु (ळ्)–देखो 'रुखाळौ'।

रखि–देखो 'रिसि'।

रखित–देखो 'रखत'/'रक्षित'।

रखिस–देखो 'रिखीस'।

रखो–स्त्री० [सं० रक्षी] १ कंधों पर लटकाने का थैला विशेष। २ देखो 'रिसि'।

रखीकेस–देखो 'रिसिकेस'।

रखीराज–देखो 'रिसिराज'।

रखीसर (सुर, स्वर)–देखो 'रिसीस्वर'।

रखे–अव्य० १ कदाचित्, शायद, संभवतः। २ ऐसा न हो। ३ देखें।

रखेड़ियो–पु० १ केवल राख लपेट कर घूमने वाला साधु। २ ढोंगी साधु।

रखेल, रखेली–स्त्री० उप पत्नी, बिना विवाह के पत्नी के रूप में रखी जाने वाली स्त्री।

रखेवाळ–देखो 'रखवाळ'।

रखें–देखो 'रखे'।

रखोपौ–पु० रक्षा का स्थान।

रखौ–पु० [सं० रक्षा] १ परहेज। २ सुरक्षा, बचाव।

रख्ख–देखो 'रक्ष'।

रख्खण–देखो 'रक्षण'।

रख्खा–देखो 'रक्षा'।

रग–स्त्री० [फा०] १ शरीर के अन्दर की नश, रक्त सिरा, नाड़ी, स्नायु। २ पत्ते की नश। ३ ऋग्वेद। ४ ओढ़ने का मोटा ऊनी वस्त्र।

रगड़, रगड़क, रगड़की–स्त्री० [सं० घर्षणम्] १ रगड़ने की क्रिया या भाव। २ किन्हीं दो वस्तु या अंगों में होने वाला घर्षण। ३ उक्त घर्षण से होने वाला निशान, चिह्न। ४ उलझन, झगड़ा। ५ कठोर परिश्रम। ६ गतिमान वस्तु का किसी से होने वाला स्पर्श। ७ घिसाव।

रगड़णौ (बौ)–क्रि० [सं० घर्षणम्] १ घर्षण करना, घिसना। २ किन्हीं दो वस्तुओं या अंगों का परस्पर स्पर्श कराना। ३ पीसना, घोटना। ४ अभ्यास के लिये कोई कार्य बार-बार करना। ५ श्रम करना। ६ व्यर्थ तंग करना, परेशान करना। ७ घसीट में लिखना। ८ घसीटना। ९ मसलना। १० संभोग या मैथुन करना। ११ घोखना, रटना। बार-बार पढ़ना।

रगड़ाणौ (बौ), रगड़ावणौ (बौ)–क्रि० १ घर्षण कराना, घिसवाना। २ किन्हीं दो वस्तु या अंगों का स्पर्श करवाना। ३ पिसवाना, घुटवाना। ४ अभ्यास के लिये कोई कार्य बार-बार कराना। ५ परिश्रम कराना। ६ व्यर्थ तंग करवाना। परेशान करवाना। ७ घसीट में लिखवाना। ८ मसलवाना। ९ घसीटवाना। १० संभोग या मैथुन कराना।

रगड़ी–वि० रगड़ा या झगड़ा करने वाला। झगड़ालू।

रगड़ौ–पु० १ झगड़ा, टंटा, फिसाद। २ उलझन, समस्या, झंझट। ३ विपत्ति, संकट। ४ निरंतर किया जाने वाला श्रम। ५ रगड़ने की क्रिया या भाव।

रगटळ, रगटाळ–पु० १ ऊंटों का एक रोग। २ ऊंटों का एक अवगुण। ३ देखो 'रुगटाळ'।

रगण–पु० १ छंदशास्त्र में एक गण। २ गजानन, गणेश।

रगणौ (बौ)–क्रि० १ रेंगना, रेंगते हुए चलना। २ पशु का रभाना।

रगत–देखो 'रक्त'। —**कमळ**='रक्तकमळ'। —**कास्ट**='रक्तकास्ट'। -**कुस्ठ, कोढ**='रक्तकुस्ठ'। -**गुल्म**–'रक्तगुल्म'। —**चंदण, चंदन**='रक्तचंदण'। -**चुंच**='रक्तचंचु'। —**चुंचु**='रक्तचंचु'। -**तुंड**='रक्ततुंड'। —**दंता, दंतिका, दंती**='रक्तदंता'। —**धरा**='रक्तधरा'। -**धारा**='रक्तधारा'। —**नेत्र**='रक्तनेत्र'। -**पक्ष, पख, पांख**='रक्तपक्ष'। -**पित, पित्त**='रक्तपित्त'। -**प्रवर**='रक्तप्रदर'। -**बिंदू**='रक्तबिंदू'। **बीज**='रक्तबीज'। —**मंडळ**='रक्तमंडळ'। -**मोचन**='रक्तमोचन'। -**वरण**='रक्तवरण'। **बिंदु**='रक्तबिंदू'। —**बीज**='रक्तबीज'। —**वस्टि**='रक्तवस्टि'। —**स्राव**='रक्तस्राव'।

रगतधातु–पु० [सं० रक्तधातु] १ लाल रंग का कोई धातु, तांबा। २ गेरू।

रगतबंवाळी–स्त्री० दुर्गा का एक नामान्तर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रगतभव–पु० [सं० रक्तभव] मांस, आमिष ।
रगतमल–पु० [स० रक्त-मल्ल] भैरव ।
रगतमोयण–देखो 'रक्तलोचण' ।
रगतवसी–पु० [स० रक्तवंशी] एक प्रकार का विषैला सर्प ।
रगतसंधक (सिधक)–पु० [सं० रक्त-संध्यक] १ फूल, पुष्प । २ लाल कमल ।
रगतांग–देखो 'रक्तांग' ।
रगता–देखो 'रक्ता' ।
रगताकार–देखो 'रक्ताकार' ।
रगतातिथ (तिथि)–देखो 'रिक्ता' ।
रगतातिसार–देखो 'रक्तातिसार' ।
रगताळ–पु० [सं० रक्त+आलुच्] रक्त प्रवाह, खून की धारा ।
रगतासुर–पु० [सं० रक्तासुर] एक असुर ।
रगति–देखो 'रक्त' ।
रगतेस–देखो 'रगतासुर' ।
रगतोत्पळ–देखो 'रक्तोत्पळ' ।
रगत्त, रगत्तर–देखो 'रक्त' ।
रगत्थो–पु० १ बलि किया हुआ बकरा । २ चौसठ भैरवों में से एक ।
रगत्र–देखो रक्त' ।
रगदण–स्त्री० १ हृष्ट-पुष्ट व तगड़ी स्त्री । २ बेडौल व कुरूप स्त्री ।
रगदळ–वि० कुबड़ा ।
रगदोळणो (बो)–क्रि० १ वस्त्र आदि को मिट्टी-कीचड़ में पटक देना, मसलना, रुलाना । २ रगड़ना, मसलना । ३ लापरवाही से उपयोग करना । ४ पछाड़ना, झकझोरना ।
रगवेद (वेद)–देखो 'रिगवेद' ।
रगी–स्त्री० १ सरस्वती । २ देखो 'रग' ।
रगुवसी–देखो 'रघुवंसी' ।
रग्ग–१ देखो 'रग' । २ देखो 'राग' ।
रघुवीर–देखो 'रघुवीर' ।
रत्त–देखो 'रक्त' ।
रघुंस–१ देखो 'रिगवेद' । २ देखो 'रघुवंस' ।
रघु–पु० [स०] १ सूर्यवंशी एक लब्ध प्रतिष्ठित राजा । २ श्री राम । ३ 'रघु' राजा के वंशज । ४ देखो 'रघुवंस' । —इंद्र–पु० श्रीरामचद्र । —ईस–पु० श्रीरामचन्द्र । —कुळ–पु० रघु राजा का वंश ।—चंद, वेद, नव, नवण, नंदन, नाथ, नायक, पत, पति, भूप–पु० श्रीरामचन्द्र ।
रघुवर–देखो 'रघुवर' ।
रघुवीर–देखो 'रघुवीर' ।
रघुराज–पु० [सं० रघुराज] श्रीरामचन्द्र ।
रघुराणी–स्त्री० [सं० रघुराज्ञी] सीता, जानकी ।
रघुरांम–पु० श्रीरामचन्द्र ।
रघुराइ (ई), रघुराज (राजा, राय, राया)–पु० [सं० रघुराज] १ श्रीरामचन्द्र । २ ईश्वर, परमेश्वर । ३ विष्णु का एक नाम ।
रघुवंस–पु० [सं० रघुवंश] १ राजा रघु का वंश । २ श्री रामचन्द्र । ३ ईश्वर, परमात्मा । ४ कालिदास द्वारा रचित एक महाकाव्य ।—कुमार–पु० श्रीरामचन्द्र । रघुवंश का कोई राजकुमार ।–मणि–पु० श्रीरामचन्द्र ।–रव, रवि–पु० श्रीरामचन्द्र ।
रघुवंसी–पु० [सं० रघुवंशी] १ राजा रघु के वंशज । २ श्री रामचन्द्र ।
रघुवर–पु० [सं०] १ रघु के वंश में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र । २ ईश्वर, परमात्मा । ३ विष्णु ।
रघुवीर–पु० [सं०] १ श्रीरामचन्द्र । २ लक्ष्मण । ३ विष्णु, ईश्वर ।
रघुवेदी–देखो 'रिगवेदी' ।
रघूपति, रघूपती–देखो 'रघुपति' ।
रड़–स्त्री० १ करुण-क्रन्दन । २ रुदन । ३ चीख, पुकार, चिल्लाहट । ४ देखो 'रड़ी' । ५ देखो 'रड़ी' ।
रड़क–स्त्री० १ आंख में फूस पड़ने या कोई छोटा कांटा गड़ जाने से अंग में होने वाली चुभन, पीड़ा । २ टक्कर । ३ हमला । ४ कसक । ५ ध्वनि विशेष । ६ खरोंच । ७ वैर, बदला, दुश्मनी । ८ इच्छा (मेवात) । ९ देखो 'रिड़क ।
रड़कणो (बो)–क्रि० १ आंख में कोई चीज खटकना, चुभना । २ मन में कोई बात खटकना । ३ कांटा आदि चुभना । ४ पीड़ा, दर्द होना । ५ टक्कर होना, लगना । ६ बुरा मालूम होना, बुरा लगना । ७ ध्वनि या आवाज होना, बजना । ८ लुढ़कना, घुड़कना । ९ परस्पर टकराना । १० देखो 'रिड़कणो' (बो) ।
रड़कती–स्त्री० कोई छोटी पहाड़ी ।
रड़कणो (बो)–देखो 'रड़कणो' (बो) ।
रड़ड़ाट–स्त्री० ध्वनि विशेष ।
रड़णो (बो)–क्रि० [सं० रद्] १ रुदन करना; रोना । २ चिल्लाना, चीखना । ३ क्रन्दन करना, करुणा करना । ४ कुचलना, रौंदना । ५ उथल-पुथल, अस्त-व्यस्त होना । ६ युद्ध करना । ७ प्रवाहित होना, बहना । ८ घुड़कना, डोलना । ९ दूध का गर्म होना । १० लुढ़कना ।
रड़व, रड़वो–पु० अत्यधिक श्रम का कार्य ।
रड़बड़–स्त्री० १ लुढ़कने या घुड़कने की क्रिया या भाव । २ वस्तुओं की परस्पर टक्कर । ३ टक्कर से होने वाली

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्वनि । ४ कार्य । ५ अवारागर्दी । ६ कुचलने की क्रिया या भाव ।

रड़बड़णो (बो)–क्रि० १ इधर-उधर लुढ़कना, पड़ना ।२ भटकना, ठोकरें खाना । ३ आवारागर्दी में फिरना । ४ ध्वनि होना, आवाज होना । ५ टकराना, भिड़ना ।

रड़बड़ाट–स्त्री० ध्वनि विशेष ।

रड़बी–पु० १ बूढ़ा व बदसूरत ऊंट । २ दूषित व विकृत तरबूज ।

रड़बड़–देखो 'रड़बड़' ।

रड़बड़णो (बो)–देखो 'रड़बड़णो' (बो) ।

रड़मड़–देखो 'रड़बड़' ।

रड़मड़णो (बो)–देखो 'रड़बड़णो' (बो) ।

रड़मड़ाट–देखो 'रड़बड़ाट' ।

रड़मलपण (णो)–पु० वीरता, बहादुरी ।

रड़माल–देखो 'रिड़माल' ।

रड़बड़णो,(बो)–देखो 'रड़बड़णो (बो) ।

रड़ब्बड़–देखो 'रड़बड़' ।

रड़ी–स्त्री० १ टीला, मगरा । २ छोटी पहाड़ी । ३ कंकरीली पहाड़ी भूमि । ४ देखो 'रड़' ।

रडक–पु० [सं०] १ घोबी । २ टक्कर, भिड़ंत । ३ चोट, आघात, प्रहार । ४ लड़ाई, युद्ध । –वि० रचयिता । रचना करने वाला ।

रडण–वि० रचने वाला, रचयिता ।

रडणजजवाली–पु० परमात्मा, ईश्वर ।

रडणा–देखो 'रचना' ।

रडणी–स्त्री० १ रचने की क्रिया या भाव । २ रचने का ढंग । ३ देखो 'रचना' ।

रडणी–वि०(स्त्री०रडणी) १ बनाने वाला, तैयार करने वाला । २ निर्माण करने वाला, सृष्टा, निर्माता । ३ उत्पन्न करने वाला, उत्पादक । ४ शृंगार करने वाला, सजाने वाला । ५ स्थापित करने वाला । ६ फैलाने वाला । ७ कुछ करने वाला । ८ लगाने वाला । ९ लेख-लिखने वाला । १० निश्चित करने वाला । ११ एकत्र करने वाला ।

रडणी (बो)–क्रि० [सं०रचन]१ बनाकर तैयार करना बनाना । २ सृजन करना, निर्माण करना, । ३ उत्पादन करना । ४ शृंगार करना, सजाना । ५ स्थापित करना ।६ फैलाना । ७ कुछ करना । ८ लगाना । ९ लेख-लिखना, रचना । करना । १० निश्चित करना । ११ एकत्र करना । १२ देखो 'राचणी' (बो) ।

रडन–स्त्री० १ रचने की क्रिया या भाव । २ रचने का ढंग ।

रडना–स्त्री० [सं०] १ रचने की क्रिया या भाव, सृष्टि, निर्माण । २ लीला, माया । ३ निर्माण कला, कौशल । ४ उत्पादन, उत्पत्ति । ५ निर्मित या उत्पादित वस्तु । ६ बनावट, स्वरूप । ७ बनाने का ढंग । प्रकार । ८ सजावट, शृंगार । ९ केश विन्यास । १० व्यूह, जाल, फंदा । ११ कोई लेख, काव्य, कृति । ग्रंथ । १२ कल्पना । १३ स्थापना । १४ कार्य, काम । १५ विश्वकर्मा की पत्नी का नाम । – कार–वि० निर्माता । लेखक ।

रडयिता–वि० [सं० रचयितृ] निर्माता, सृष्टा, लेखक ।

रडानी–देखो 'रछानी' ।

रडाड़णो (बो), रडाणो (बो), रडावणो (बो)–क्रि० १ बनाकर तैयार करवाना, बनवाना । २ सृजन कराना, सृष्टि कराना । ३ उत्पादन कराना, उत्पन्न कराना । ४ शृंगार कराना, सजवाना । ५ स्थापित कराना । ६ फैलवाना । ७ कुछ करवाना । ८ लगवाना । ९ लेख लिखवाना । १० निश्चित कराना । ११ एकत्र कराना । १२ जमवाना । १३ आयोजन करना, कराना । १४ रंजित करना, कराना । १५ अनुरक्त करना, कराना । १३ शोभित करना, कराना । १७ प्रसन्न करना, कराना । १८ प्रभावित करना, कराना ।

रडित, रडिय–वि० [सं० रचित] १ रचा हुआ, बनाया हुआ । २ निर्मित, सृजित । ३ उत्पादित । ४ सज्जित, शृंगारित । ५ लिखित । ६ स्थापित ।

रडण–देखो 'रचण' ।

रडणी–देखो 'रचणी' ।

रडणी (बो)–१ देखो'रचणी' (बो) । २ देखो'राचणी' (बो) ।

रछ–देखो 'रक्ष' ।

रछक–देखो 'रक्षक' ।

रछया, रछा, रछ्या–देखो 'रक्षा' ।

रछिक–देखो 'रक्षक' ।

रछित–देखो 'रक्षित' ।

रछी–स्त्री० धूलि, रज ।

रछक–देखो 'रक्षक' ।

रछपाळ–देखो 'रक्षपाल' ।

रछस–देखो 'राक्षस' ।

रछानी–स्त्री० नाइयों के औजार रखने की सन्दूकची ।

रछाकरण–स्त्री० माता, जननी ।–वि० रक्षक, पोषक ।

रछिपाळ–स्त्री० १ रक्षा । २ देखो 'रिछपाळ' ।

रछिया–देखो 'रक्षा' ।

रज–स्त्री० [सं० रजस्] १ धूल, रेत । २ बालू रेत । ३ गर्द, रंडी । ४ पृथ्वी, भूमि । ५ रात, रात्रि । ६ गौरव, प्रतिष्ठा, इज्जत । ७ मर्यादा । ८ कीर्ति, यश । ९ चांदी रजत ।—पु० १० जल, पानी । ११ बादल, मेघ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२ धान्य; कोहरा। १३ मादा प्राणियों के ऋतुकाल में स्रवित होने वाला रक्त। १४ पुष्प पराग, मकरंद। १५ केसर। १६ रजोगुण। १७ आकाश, नभ। १८ धूल का कण, जर्रा। १९ अंधकार। २० अज्ञान। २१ मैल, कीट। २२ पाप। २३ भुवन, लोक। २४ प्रीति, आभा। २५ शौर्य, पराक्रम। २६ रौब, प्रभाव। २७ क्षत्रित्व, रजपूती। २८ राजपूत, क्षत्रिय। २९ राज्य, सत्ता, आसन। ३० टुकड़ा, खण्ड। ३१ वीर्य की बूंद। ३२ सप्त ऋषियों में से एक। ३३ ध्रुव सप्तक वसु का एक पुत्र। ३४ एक राजा। ३५ स्कंद का एक सैनिक।

रजक, रजग–पु० (स्त्री० रजकी) १ धोबी। २ देखो 'रिजक'।

रजडंबर, रजडंमर–पु० [सं० रजस्-आडंबर] धूल का बादल, गुब्बारा, आंधी।

रजढांमी–स्त्री० राजधानी।

रजणी–देखो 'रजनी'। —चर = 'रजनीचर'।

रजणी (वी)–देखो 'राजणी' (वी)।

रजतंत–पु० [सं० राज-तत्त्व] शूरता, वीरता।

रजत–स्त्री० [सं० रजतम्] १ चांदी, रूपा। २ स्वर्ण, सोना। ३ पृथ्वी, भूमि। ४ रक्त, रुधिर। ५ हाथी-दांत। ६ कंठ हार। ७ शाकद्वीप के अस्ताचल का नाम। ८ नक्षत्र। —वि० १ लाल। २ शुभ्र, श्वेत। ३ चांदी का बना, रूपाहेला। ४ उज्ज्वल।

रजतकूट–पु० [सं०] मलय पर्वत की एक चोटी।

रजतधातु (धाता, धातु, ढातू)–पु० [सं० रजतधातु] १ स्वर्ण, सोना। २ चांदी।

रजताचळ–पु० [सं० रजताचल] १ कैलाश पर्वत। २ अस्ताचल।

रजतांत–पु० [सं० रजतांत:] सूर्य, भानु।

रजताद्रि–पु० [सं०] कैलाश पर्वत।

रजथांन–देखो 'राजस्थांन'।

रजधर–देखो 'राजधर'।

रजधरम–पु० [सं० राजधर्म] १ क्षत्रित्व, रजपूती। २ वीरत्व, पराक्रम, शौर्य। ३ राज्य धर्म। ४ रजोधर्म।

रजधांणी, रजधांन, रजधांनी–देखो 'राजधांनी'।

रजधारी–देखो 'राजधर'।

रजन–पु० बादल।

रजना–स्त्री० संगीत की एक मूर्च्छना।

रजनि, रजनी–स्त्री० [सं०] १ रात्रि, निशा। २ लाख, लाक्षा। ३ हल्दी। ४ ऋतुका नामक लता। ५ दारु हल्दी। ६ एक पौराणिक नदी। ७ हाथी। ८ गर्द।

रजनीकर–पु० [सं०] चन्द्रमा।

रजनीचर–पु० [सं०] १ चन्द्रमा, शशि। २ राक्षस, असुर।

रजनीति–देखो 'राजनीति'।

रजनीपत (पति, पती)–पु० [सं० रजनी-पति] चन्द्रमा।

रजनीमुख–पु० [सं०] संध्या, सायंकाल।

रजनीस–पु० [सं० रजनीश] चन्द्रमा।

रजपती (पत्ती)–पु० भूमि पति, राजा।

रजपाट–देखो 'राजपाट'।

रजपूत–पु० [प्र० राज्य-पुत्र] (स्त्री० रजपूतणी) १ सिपाही, सैनिक। २ योद्धा, वीर, भट। ३ अनुचर, सेवक। ४ राजपूत। —पण, पणो–पु० क्षत्रित्व, वीरत्व, रजपूती। —वट–पु० क्षत्रित्व का गौरव।

रजपूतरण, रजपूतांणी–देखो 'राजपूतांणी'।

रजपूताई, रजपूती–देखो 'राजपूती'।

रजबद, रजबंध–पु० [सं० रजबध] १ मासिक धर्म बंद होने की अवस्था। २ देखो 'रजामंद'।

रजबट–देखो 'रजवट'।

रजबनांमो–पु० [फा० रजम-नाम] फारसी भाषा में अनुदित महाभारत का ग्रंथ।

रजबळी, रजबली–पु० १ राजा। २ वीर, बहादुर।

रजबो–पु० १ साग में दी जाने वाली खटाई। २ देखो 'रजमो'।

रजमडळ–पु० धूल का बादल, गुब्बारा।

रजमो–स्त्री० एक प्रकार की मिट्टी।

रजमो–पु० १ साहस, पुरुषार्थ, वीरत्व। २ शक्ति, बल। ३ रजोगुण।

रजरोगी–वि० राज्य प्राप्त करने का अति इच्छुक।

रजवती–स्त्री० [सं० ऋतुमति] रजस्वला स्त्री।

रजवड़–१ देखो 'राजवण'। २ देखो 'रजवाड़ो'।

रजवट, रजवट्ट–पु० क्षत्रित्व, वीरत्व, रजपूती।

रजवण–देखो 'राजवण'।

रजवांण–स्त्री० राजपूती, क्षत्रित्व।

रजवादूत–पु० १ राज्यत्व, राजापन। २ राज्य करने की क्रिया या भाव।

रजवाड़, रजवाड़ो–पु० १ रियासत या राज्य। २ राजमहल।

रजवाट–देखो 'रजवट'।

रजवाड़ी–देखो 'रजवाड़ो'।

रजवार–देखो 'राजकुमार'।

रजवट–देखो 'रजवट'।

रजस्वळा–स्त्री० [सं० रजस्वला] ऋतुमति स्त्री।

रजा–स्त्री० [अ०] १ इच्छा, मर्जी, मंसा। २ कृपा, दया, अनुग्रह। ३ आज्ञा, हुक्म। ४ अनुमति, स्वीकृति। ५ छुट्टी, रुखसत। ६ खुशी, प्रसन्नता। ७ आशा, उम्मीद, चाह। ८ राजा होने का भाव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रजाइस–स्त्री० १ आज्ञा, हुक्म । २ राज्यत्व ।

रजाई–स्त्री० सर्दी से बचाव के लिये ओढ़ने का, रूई से भरा बिस्तर । लिहाफ ।

रजापण (पणो)–पु० १ हर्ष, प्रसन्नता, खुशी । २ सहमति । ३ देखो 'राजापणो' ।

रजाबद (बंध)–देखो 'रजामंद' ।

रजाबंधी (बंधी)–देखो 'रजामंदी' ।

रजामंद–वि० [फा० रिजामंद] १ प्रसन्न, खुश । २ संतुष्ट । ३ सहमत, राजी ।

रजामंदी–स्त्री० [फा० रिजामंदी] १ 'रजामंद' होने की अवस्था या भाव । २ प्रसन्नता, खुशी । ३ सहमति, स्वीकृति । ४ इच्छा, मर्जी ।

रजायस–देखो 'रजाइस' ।

रजि–देखो 'रज' ।

रजिक–१ देखो 'रजक' । २ देखो 'रिजक' ।

रजित–देखो 'रजत' ।

रजितमइं (मय)–वि० १ चांदी का, चांदी संबंधी । २ श्वेत ।

रजी–देखो 'रज' ।

रजीवांनो–स्त्री० बारीक रेत रखने का पात्र ।

रजोनी–देखो 'रजनी' ।

रजु–१ देखो 'रज्जु' । २ देखो 'रज्जू' ।

रजुआत–स्त्री० [प० रजूआत] १ मित्रता, मेल-जोल । २ लगाव झुकाव ।

रजुता–स्त्री० १ रज्जु होने की अवस्था या भाव । २ सरलता, सीधापन । ३ सहमति ।

रजू–१ देखो 'रज्जू' । २ देखो 'रज्जु' ।

रजूनांमो–पु० [प०] स्वीकृति या सहमति पत्र ।

रजूवाको–स्त्री० ऋण की बकाया राशि ।

रजोकुळ–पु० राज्य कुल ।

रजोगुण–पु० [सं०] सात्विक एवं तामसी गुणों के बीच का एक गुण, वृत्ति, दशा ।

रजोगुणी–पु० १ ब्रह्मा । २ रजोगुण युक्त दशा या भावना । –वि० रजोगुण वाला ।

रजोवरसण (स)–पु० स्त्रियों की रजस्वला अवस्था ।

रजोधरम–पु० स्त्रियों का मासिक धर्म ।

रजोमूरति (ती)–पु० [सं० रजोमूर्ति] ब्रह्मा ।

रज्ज–१ देखो 'रज' । २ देखो 'राज्य' ।

रज्जणी (बी)–देखो 'राजणी' (बी) ।

रज्जसुळा–देखो 'रजस्वळा' ।

रज्जियो–देखो 'राजवी' ।

रज्जी–देखो 'रज', 'रज्जु', 'रज्जू', 'राजा' ।

रज्जु–पु० [सं०] १ रस्सी, डोरी, रस्सा । २ बागडोर । ३ स्त्रियों के सिर की चोटी । ४ शरीरस्थ रंग विशेष । ५ एक प्रमाण विशेष । ६ देखो 'रज' । ७ देखो 'रज्जू' ।

रज्जुनांमो–देखो 'रजूनांमो' ।

रज्जु–वि० १ प्रसन्न, खुश । २ सहमत, एकमत । ३ अनुकूल । ४ प्रत्यक्ष, सामने, रूबरू । ५ देखो 'रज्जु' ।

रटंती–स्त्री० माघ कृष्णा चतुर्थी, एक पर्व दिवस ।

रट–स्त्री० १ ईश्वर नाम की माला, जप, उच्चारण । कीर्त्तन । २ किसी शब्द, बात, इच्छा, कार्य को बार-बार दोहराने की क्रिया । ३ पाठ याद करने की क्रिया ।

रटक–स्त्री० १ भिड़ंत, मुकाबला, सामना, टक्कर । २ तीव्र गति से आक्रमण । ३ युद्ध, लड़ाई, झगड़ा । ४ चाव, उत्साह । ५ दौड़, गति ।

रटकणो (बो)–क्रि० १ दौड़ना, भागना । २ मुकाबला करना । सामना करना । टक्कर लेना । ३ आक्रमण, हमला करना । ४ युद्ध या लड़ाई करना ।

रटको–देखो 'रटक' ।

रटक्क–देखो 'रटक' ।

रटक्कणो (बो)–देखो 'रटकणो' (बो) ।

रटक्को–देखो 'रटक' ।

रटण, रटणी–स्त्री० १ रटना क्रिया या भाव, रटाई, जाप । २ घोषणा । ३ जिह्वा, जीभ ।

रटणो (बो)–क्रि० [सं० रटनम्] १ ईश्वर नाम का जाप करना; रटना, ध्वनि लगाना । २ किसी कार्य, शब्द, इच्छा को बार-बार दोहराना । ३ यशगाना, गुणगान करना । ४ कहना, बोलना । ५ विलाप करना, रोना । ६ चिल्लाना; चीखना । ७ घोषणा करना । ८ गर्जना । ९ भूंकना ।

रटांण–स्त्री० १ अनाज या फलादि की परिपक्वावस्था । २ रटने की ध्वनि ।

रटा–स्त्री० टक्कर, मुकाबला । –वि० गानेवाला, गायक ।

रटाका–देखो 'रटक' ।

रटाणो (बो)–क्रि० १ ईश्वर नाम का जाप कराना, रटाना, ध्वनि, लगवाना । २ किसी शब्द का बार-बार उच्चारण कराना । ३ यशोगान कराना, गुणगान करना । ४ कहलाना, बोलाना । ५ विलाप कराना, रुलाना । ६ चीखाना । ७ घोषणा कराना । ८ गर्जना करना । ९ भूंकाना ।

रटावणो (बो)–देखो 'रटाणो' (बो) ।

रट्टक–देखो 'रटक' ।

रट्टणो (बो)–देखो 'रटणो' (बो) ।

रट्ठ–स्त्री० १ कड़ाके की सर्दी, तेज सर्दी । २ देखो 'राष्ट्र' ।

रट्ठवड़,रट्ठवर, रट्ठोड़, रट्ठोर, रट्ठौड़, रट्ठौर–देखो 'राठौड़' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रठ–वि० दृढ़, मजबूत।

रठठ–स्त्री० १ भारी बोझ से लदी गाड़ी के चलने से होने वाली ध्वनि विशेष। २ तलवार। ३ कसमसाहट।

रठठणो (बो)–क्रि० १ बोझ से लदी गाड़ी के चलने से ध्वनि होना। २ कसमसाना।

रठठाणो (बो)–क्रि० घसीटना, घींसना।

रठणो (बो)–देखो 'रटणो' (बो)।

रठवड़–देखो 'राठौड़'।

रठावठ–स्त्री० मारकाट, मारपीट।

रठीठ–वि० दृढ़, मजबूत।

रठौर–देखो 'राठौड़'।

रड–१ देखो 'रढ'। २ देखो 'रड़'।

रडकबी–देखो 'रड़ी'।

रडणो (बो)–देखो 'रड़णो' (बो)।

रडयड, रडवड–देखो 'रड़वड़'।

रडवडणो (बो)–देखो 'रड़बड़णो' (बो)।

रडवड–देखो 'रड़वड़'।

रडाळ, रडाळो–देखो 'रढाळ'।

रडी–देखो 'रड़ी'।

रडो–देखो 'रड़ो'।

रड्डु–देखो 'रढ'।

रढ़–स्त्री० १ हठ, जिद्द। २ गर्व, अभिमान। ३ कष्ट, संकट। ४ बल, शक्ति, पौरुष।–वि० १ आन-बान वाला, स्वाभिमानी। २ महान, बड़ा। ३ वीर, बलवान। ४ दृढ़, मजबूत।

रढ़णो (बो)–देखो 'रड़णो' (बो)।

रढ़राण, रढ़रांमण, रढ़रांवण, रढ़राव, रढ़रावण–वि० १ दृढ़, मजबूत, अडिग। २ दृढ प्रतिज्ञ। ३ बलवान, शक्तिशाली। ४ हठी जिद्दी। ५ वीर, बहादुर। ६ दुष्ट।

रढ़ळो–देखो 'रढ़ाळ'।

रढ़ाळ, रढ़ाळो–वि० १ हठी, जिद्दी। २ वीर, योद्धा। ३ शक्तिशाली, बलवान। ४ दृढ प्रतिज्ञ, आन-बान वाला।

रढि–१ देखो 'रड़ी'। २ देखो 'रढ'।

रढिआळी–देखो 'रढाळी'।

रढ़ोळो–देखो 'रढाळो'।(स्त्री० रढ़ोली)।

रढु, रढू, रढ्ढ–देखो 'रढ'।

रणकणो(बो)–देखो 'रणकणो' (बो)।

रणको–पु० किसी वाद्य, आभूषण आदि की झंकार, ध्वनि

रणजय–पु० सूर्यवंशी एक राजा। –वि० युद्ध विजयी।

रणताल–देखो 'रणताल'।

रण–पु०[सं० रण, रणम्] १ युद्ध, समर, जंग। २ रणक्षेत्र, समरभूमि, मैदान। ३ शोरगुल, आवाज, ध्वनि। ४ वीणा का स्वर। ५ गति, चाल। ६ स्वर का अल्पांश। ७ निर्जन वन। ८ नमक की झील। ९ वीणा बजाने का गज। १० ऋण, कर्जा। –अटल–वि० युद्ध भूमि में दृढ़ रहने वाला। –कामी–वि० युद्धोन्मत्त। –कोविद–वि० युद्ध कला में प्रवीण। –क्षेत्र,खेत–पु० युद्ध का मैदान, रणभूमि। –गहल, गहलउ, गहली–वि० रणोन्मत्त।–चणी–वि० युद्ध में कुशल। –बंकडो, बंको, बांकुरो,बांको–वि० युद्ध में प्रवीण, कुशल वीर, योद्धा।–बुद्ध–वि० युद्ध में कुशल।–भूमि, भोम, –स्त्री० लड़ाई का मैदान, युद्धस्थल। –रिझळ, रिझळ –वि० युद्धोन्मत्त।

रणककण–पु० राजा की सवारी के आगे बजने का एक बाजा।

रणक–स्त्री० १ पायल की झंकार नूपुर ध्वनि। २ शस्त्रों की खनक। ३ याद, स्मरण।

रणकणो(बो)–क्रि० १ किसी आभूषण या वाद्यों की खनक होना, बजना। २ शस्त्रों की खन–खनाहट होना।३ रटने की ध्वनि होना। ४ घुंघरू बजना

रणकाणो (बो)–क्रि० १ किसी वाद्य या आभूषण को बजाना, खनकाना। २ रट लगवाना। ३ शस्त्रों की आवाज करना। ४ घुंघरू बजवाना।

रणकार–स्त्री० १ किसी वाद्य या आभूषण की झन्कार, खनक। २ शस्त्रों की ध्वनि। ३ नाम जपने या रटने की ध्वनि। ४ घुंघरू की छमछम। ५ गुंजन। ६ नगारे की आवाज।

रणकारणो (बो)–देखो 'रणकाणो' (बो)।

रणकारो–देखो रणकार'।

रणकावणो(बो)–देखो 'रणकाणो' (बो)।

रणकाहल–पु० युद्ध का एक वाद्य विशेष।

रणकी–देखो 'रणकार'।

रणखण–अव्य० [सं० रण क्षण] युद्ध के समय।

रणगळियार–वि० १ घायल। २ रणोन्मत्त।

रणचाचर–स्त्री० युद्धभूमि, युद्धस्थल।

रणचरचा–स्त्री० एक प्रकार की कला।

रणछोड़–पु० १ श्रीकृष्ण। २ परमेश्वर। –वि० युद्ध से भागने वाला, कायर।

रणजीत–वि० युद्ध में विजयी होने वाला।

रणजेब–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

रणझंण, रणझण, रणझणकार, रणझणण–स्त्री० झन्कार। मधुर झन्कार।

रणझणणो(बो)–क्रि० मधुर ध्वनि होना।

रणझुणो–पु० झन्कृत होने वाला खिलौना या आभूषण।

रणणक–देखो 'रणकार'।

रणणकणी(बो)–देखो 'रणकणो' (बो)।

रणण–देखो 'रणक'।

रणणो (बो)–देखो 'रणकणो' (बो)।

रणतभंवर–पु० [सं० रणस्तम्भपुर] १ राजस्थान का एक ऐतिहासिक नगर। २ इस नगर में बना किला। ३ इस किले में स्थित गणेश की मूर्ति। ४ एक लोक गीत विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रणताळ,रणताळि,रणतालो–पु० १ रणभूमि, युद्धस्थल । २ युद्ध, संग्राम ।

रणतुर (तूर, तूरघ)–पु० एक समर वाद्य विशेष ।

रणत्कार–स्त्री० शस्त्र की ध्वनि, झन्कार ।

रणथंभ, रणथंभोर, रणथंभ, रणथंभोर–पु० [सं०रणस्तम्भपुर] १ राजस्थान का एक ऐतिहासिक नगर या प्रदेश । २ यहां का गढ । ३ विजय स्मारक ।

रणथंभण–वि० [सं० रणस्तम्भन] योद्धा, वीर ।

रणथट्ट–पु० १ युद्ध की स्थिति या दशा । २ सेना ।

रणथळ–देखो 'रणस्थळ ।'

रणधीर–पु० १ विष्णु, परमात्मा । २ श्रीकृष्ण । ३ योद्धा, वीर । –वि० रण में धैर्य रखने वाला ।

रणनंदीतूरघ–पु० एक समर वाद्य विशेष ।

रणपखर–पु० एक प्रकार का कवच ।

रणप्रिय–पु० [सं०] १ विष्णु । २ बाज पक्षी । ३ रणरत्त ।

रणभण (णु, णू)–पु० ध्वनि विशेष ।

रणभमर, रणभांवर–वि० [सं० रणभ्रमर] युद्धोन्मत्त युद्धप्रिय ।

रणमंडण–पु० [सं० रणमंडणम्] युद्ध का साज सामान । –वि० युद्ध की शोभा बढ़ाने वाले वीर ।

रणमंडप–पु० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि । २ रणभूमि ।

रणमंडा–स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।

रणमत्त–पु० [सं०] हाथी, गज ।–वि० युद्ध का मतवाला ।

रणमल्ल–पु० [सं०] योद्धा, वीर ।

रणमांडण–देखो 'रणमंडण' ।

रणमांनो वि० [सं० रणमानिन्] वीर, बहादुर, पराक्रमी ।

रणरक–पु० हाथी के दांतों के बीच वाला स्थान ।

रणरंग–पु० [सं०] १ युद्ध की उमंग । २ समर भूमि, युद्ध स्थल । ३ युद्ध, संग्राम ।

रणरणक–पु० १ कामदेव का एक नामान्तर । २ प्रबल या तीव्र इच्छा । ३ विकलता, घबराहट, त्वरा । ४ देखो 'रणकार' ।

रणरणाट (ट)–देखो 'रणकार' ।

रणरसियो (रसु)–वि० युद्ध का रसिक, प्रिय ।

रणराग–स्त्री० युद्ध की राग, सिंधुराग, वीर राग ।

रणरीढ–वि० तलवार कला में प्रवीण ।

रणरुह, रणरूह–वि० जिसे युद्ध की उमंग हो, उत्साह हो ।

रणरोहि (ही)–स्त्री० निर्जन वन, बीहड़ वन ।

रणलक्ष्मी (लखमी, लिखमी)–स्त्री० विजय लक्ष्मी ।

रणवंको–देखो 'रणबंको' ।

रणवट्ट–पु० १ क्षत्रित्व, वीरत्व । २ युद्ध का मार्ग ।

रणवणी (वो)–देखो 'रणकणो' (वो) ।

रणवाइ–स्त्री० युद्ध की चुनौती ।

रणवाट–देखो 'रणवट्ट' ।

रणवाद–देखो 'रणवाइ' ।

रणवाही–वि० योद्धा, वीर ।

रणवास–पु० १ अन्तःपुर, जनानखाना, रनिवास । २ अंतःपुर का स्त्री समाज । ३ रानी ।

रणवति, रणवती–पु० सैनिक, योद्धा ।

रणसिंगी, रणसिंघो, रणसींगो–पु० युद्ध के समय बजाया जाने वाला वाद्य ।

रणसुणो, रणसूणो–वि० युद्ध में जूझकर वीरगति पाने वाला ।

रणस्थळ–पु० [सं०] युद्ध का मैदान, रणक्षेत्र ।

रणांगण, रणांगन–पु० [सं०] रणभूमि, रणक्षेत्र ।

रणि–१ देखो 'रण' । २ देखो 'रिण' ।

रणिय–देखो 'रिणी' ।

रणिवाउल, रणिवाउलो–वि० [सं० रणवातुल] युद्धोन्मत्त, युद्ध के लिये पागल ।

रणिवास–देखो 'रणवास' ।

रणी–वि० १ योद्धा, वीर । २ देखो 'रण' । ३ देखो 'रिणी' ।

रणुंकार–देखो 'रणकार' ।

रणु–देखो 'रण' ।

रणेचर–पु० [सं० रणचर] १ विष्णु । २ शिव ।–वि० १ योद्धा वीर । २ मांसाहारी ।

रणेस–पु० [सं० रणेश] १ विष्णु । २ शिव ।–वि० योद्धा, वीर ।

रणोई–स्त्री० १ रणक्षेत्र, युद्धस्थल । २ निर्जन वन । ३ श्मशान भूमि ।

रणो–देखो 'रण' ।

रतंग–पु० रक्त, खून । –वि० [सं० रक्त-अंग] रक्तिम, लाल ।

रतंनागर–देखो 'रत्नाकर' ।

रतंबर–वि० [सं० रक्ताम्बर] रक्त वर्ण, लाल ।

रत–पु० [सं० रतम्] १ रतिक्रीडा, मैथुन, संभोग । २ प्रेम, प्रीति, प्यार ।–स्त्री० ३ कामदेव की स्त्री, रति । ४ गुप्तांग । ५ हर्ष, खुशी, आनन्द । [सं० रात्रि] ६ रात्रि, रात । [सं० ऋतु] ७ ऋतु, मौसम । [सं० रक्तः] ८ खून, रक्त, रुधिर । –वि० [सं० रत] १ अनुरक्त, आसक्त । २ मुग्ध, मोहित । ३ मस्त, मग्न । ४ लीन, तल्लीन, तन्मय । ५ प्रसन्न, खुश । ६ प्रिय । ७ युक्त, संयुक्त । [सं० रक्त] ८ लाल ।

रतकील, रतकीलर–[सं० रतकीलः] पु० श्वान, कुत्ता ।

रतखाळ, रतखाळी–पु० [सं० रक्त+रा. खाळा] रुधिर की नाली, खून की धारा ।

रतग–स्त्री० कोयल ।

रतगुरु–पु० [सं०] पति, खाविंद ।

रतचंदण (न)–देखो 'रक्तचंदन' ।

रतजगो–देखो 'रातीजोगो' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रतण–देखो 'रत्न'।
रतणाकर–देखो 'रत्नाकर'।
रतदान–देखो 'रतिदान'।
रतद्रग–देखो 'रक्तनेत्र'।
रतन–पु० १ सूर्य, रवि। २ चन्द्रमा, शशि। ३ उडगन, तारा। ४ दृग नेत्र, आंख। ५ अमृत, सुधा। ६ संख। ७ छप्पय छद का एक भेद। ८ एक त्रिगल छंद विशेष। ९ एक मात्रिक छद। १० देखो 'रत्न'।–कर=='रत्नकर'।
रतनकचोळियो (कचोळो)–पु० रत्नों से बना प्याला, कटोरा।
रतनकांबळ (ल)–देखो 'रत्नकंबळ'।
रतनकूट–देखो 'रत्नकूट'।
रतनगरभ–देखो 'रत्नगरभ'।
रतनगरभा–देखो 'रत्नगरभा'।
रतनगिरि (गिरी)–देखो 'रत्नगिरि'।
रतनघर–देखो 'रत्नघर'।
रतनचंद्र–देखो 'रत्नचंद्र'।
रतनचोक–पु० एक आभूषण विशेष।
रतनजोत (जोतियो, जोत)–स्त्री० १ एक प्रकार की मणि। –पु० २ एक क्षुप विशेष। ३ पुनर्नवा नामक क्षुप विशेष। ४ घाव ठीक करने की एक बूंटी।
रतनपारखो–देखो 'रत्नपरीक्षक'।
रतनपेच–पु० पगड़ी पर धारण करने का आभूषण विशेष।
रतनभरी–देखो 'रत्नभरिता'।
रतनमालती–स्त्री० १ एक प्रकार की लता। २ उक्त लता का फूल।
रतनमै–वि० [सं० रत्नमय] रत्नों से युक्त।
रतनराणो–पु० ऊमरकोट के राणा रतन की स्मृति में गाया जाने वाला एक लोक गीत।
रतनरासि (रासो)–देखो 'रत्नराशि'।
रतनसांन (सानु)–देखो 'रत्नसानु'।
रतनांगरभ–देखो 'रत्नगरभा'।
रतनांळिय–पु० १ एक मांसाहारी पक्षी विशेष। २ शरीर की नाली।
रतनाकर (गर, घर)–देखो 'रत्नाकर'।
रतनार–वि० १ लाल रंग का, लाल। २ सुर्ख। –पु० पुरुवंशीय राजा रंतिभार का नामान्तर।
रतनारा, रतनारी–स्त्री० १ लालिमा, लाली। २ सुर्खी।
रतनाळ, रतनाळिय, रतनाळी, रतनाळीय, रतनाळो–वि० लाल, सुर्ख। २ देखो 'रतनांळिय'।
रतनावळी–देखो 'रत्नावली'।
रतन्न (न्नि,न्नी)–१ देखो 'रतन'। २ देखो 'रत्न'।–गरभा, प्रभा 'रत्नगरभा'।
रतनासबोध–पु० सागर, समुद्र।
रतपंड–देखो 'रक्तपिंड'।
रतपति, रतपती–देखो 'रतिपति'।
रतपरस–पु० [सं० ऋतु-स्पर्श] श्वान, कुत्ता।।
रतपिंड–देखो 'रक्तपिंड'।
रतफळ–पु० वट, वृक्ष।
रतबध–देखो 'रतिबंध'।
रतमुंहो–वि० [सं० रक्त-मुख] १ लाल मुंह वाला। २ जिसका मुंह खून से भरा हो।
रतमेळ–देखो 'रतिमेळ'।
रतरस–पु० [सं० रतिरस] शृंगार रस, प्रेम रस।
रतराज–देखो 'रितुराज'।
रतळू–देखो 'रताळू'।
रतवंती–स्त्री० १ गजल की तरह का गाना एक लोक गीत विशेष (मेवात)। २ देखो 'रतिवंती'।
रतवा–स्त्री० १ एक प्रकार की घास। २ गेहूं की फसल का एक रोग। ३ बच्चों संबंधी एक रोग।
रतवाह, रतवाही–देखो 'रातीवाही'।
रतसांई–पु० [सं० ऋतुस्वामी] कुत्ता, श्वान, भेड़
रतांजणि, रतांजणी–स्त्री० १ वनस्पती। २ आंख की पलक पर की फुंसी।
रतांनी–वि० लाल मुंह वाली। (भेड़)
रता–स्त्री० दक्ष प्रजापति की एक कन्या।—वि० अनुरक्त, आसक्त।
रताळ, रताळू, रतालू–पु० पिंडालू नामक कंद।
रति–स्त्री० [सं०] १ कामदेव की स्त्री। २ रतिक्रिया, संभोग, मैथुन। ३ कामेच्छा, वासना। ४ प्रेम, अनुराग। ५ आनन्द ६ तृप्ति, संतुष्टि। ७ आसक्ति, प्रेम भावना। ८ कांति, दीप्ति, आभा। ९ सौभाग्य। १० गुप्त भेद, रहस्य। ११ शृंगार रस में स्थाई भाव। १२ अलकापुरी की एक अप्सरा। १३ ऋषभदेव के वशज विमुराजा की पत्नी। १४ स्वर्ण आदि का एक तौल। १५ घुंघची। चिरमी। १६ देखो 'रितु'। १७ देखो 'रात'। १८ देखो 'रत'। १९ देखो 'रती'। २० देखो 'रितु'।–कर–वि० आनन्द, सुखप्रद। कामी, विलासी।–कळह–पु० रतिक्रीड़ा, मैथुन। –कळा–स्त्री० संभोग कला।–कांस–पु० कामदेव। –कुहर–पु० योनि, भग।–क्रिया, केळि–स्त्री० संभोग। –गृह–पु० योनि, भग, केलिगृह।–दांन–पु० किसी स्त्री को मांग या इच्छा करने पर किया जाने वाला मैथुन।–नाथ, नायक, नाह–पु० कामदेव।–पति, पती–पु० कामदेव।–प्रिय–पु० कामदेव। विलासी प्राणी।–प्रोता–स्त्री०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिक मैथुन कराने वाली, कामुक स्त्री ।-भवन, मंदिर-पु० योनि, भग केलिगृह ।-रमण, रयन-पु० कामदेव । रतिक्रीड़ा ।-राज, राय-पु० कामदेव ।-रास-पु० रतिक्रीड़ा । -सोभा-स्त्री० रतिक्रीड़ा ।-वर-पु० कामदेव ।-वल्लभ-पु० कामदेव ।

रतिक-देखो 'रत्तीक' ।

रतिका-स्त्री० [सं०] संगीत में एक श्रुति ।

रतिकील-पु० [सं०] कूकर, श्वान ।

रतिगुण-पु० [सं०] एक देव गंधर्व विशेष ।

रतिताल-स्त्री० संगीत में एक ताल विशेष ।

रतिनाथ-पु० [सं०] रतिभार राजा का नामान्तर ।

रतिपद-पु० एक वृत्त विशेष ।

रतिप्रिया-स्त्री० १ शक्ति की एक मूर्ति । २ अति कामुक स्त्री ।

रतिबंध-पु० [सं०] मैथुन सम्बन्धी एक आसन ।

रतिबाह-देखो 'रातीवाहो' ।

रतिभाव-पु० [सं०] १ शृंगार रस का स्थाई भाव । २ प्रेम, प्रीती । ३ स्त्री-पुरुष का परस्पर प्रेम ।

रतिमित्र-पु० मैथुन सम्बन्धी एक आसन ।

रतिमेल-पु० मैथुन क्रिया ।

रतिया-देखो 'रात' ।

रतिलील-पु० संगीत में ताल का एक भेद ।

रतिवंत-वि० (स्त्री० रतिवंती) १ सुन्दर, खूबसूरत, मनोरम । २ प्रियतम प्रेमी । ३ रसिक । ४ बलवान, शक्तिशाली ।

रतिवंती-वि० १ प्रेम से युक्त, प्रेममय । २ सुन्दरी, रूपसी । ३ प्रियतमा, प्रेमिका ।

रतिवरद्धन (वरधन)-पु० [सं० रतिवर्द्धन] एक पौष्टिक औषधि विशेष ।

रतिवाउ, रतिवास(वासो, वाह, वाहो)-देखो 'रातीवाहो' ।

रतिसाधन-पु० [सं०] १ पुरुष का लिंग । २ मैथुन सम्बन्धी साधन ।

रतिसास्त्र-पु० [सं० रतिशास्त्र] कामशास्त्र ।

रतिसुंदर-पु० [सं०] एक प्रकार का रतिबंध ।

रती-स्त्री० १ शक्ति, बल । २ देखो 'रत्ति', 'रति', 'रात' ।

रतीपति, रतीपती-देखो 'रतिपति' ।

रतीयन, रतीयेक-देखो 'रत्तीक' ।

रतीवांत-देखो 'रतिवंत' ।

रतीवाही-देखो 'रातीवाही' ।

रतुओ-पु० एक पौधा विशेष ।

रतोर-पु० लाल मुंह का चूहा ।

रतो-देखो 'रातो' ।

रत्त, रत्त,रत्तड-१ देखो 'रक्त' । २ देखो 'रत' । ३ देखो 'रात' ४ देखो 'रातो' ।

रत्तक-पु० लालरंग का पत्थर विशेष ।

रत्तड़ी-१ देखो 'रात' । २ देखो 'रक्त' ।

रत्तड़ी,रत्तडउ, रत्तडो-देखो 'रातो' ।

रत्तर-देखो 'रक्त' ।

रत्तळ, रत्तळी-देखो 'रक्त' ।

रत्ति, रत्ती-स्त्री० [सं० रक्तिका] १ स्वर्ण आदि का एक तौल २ इस तौल जितनी मात्रा । ३ इस तौल का बाट, तौला । ४ चिरमी घुंघची । [सं० रक्ती] ५ शोभा, छवि, कांति । ६ प्रेम, अनुराग ।-वि० १ तनिक, रंच । २ लाल, रक्ताभ । ३ अनुरक्त, आसक्त । ४ लीन । ५ देखो 'रात' । ६ देखो 'रति' ।

रत्तोक-वि० रत्तिभर, थोड़ासा ।

रत्तो-१ देखो 'रक्त' । २ देखो रातो ।

रत्थ-देखो 'रथ' ।

रत्थी-देखो 'रथी' ।

रत्थो-देखो 'रथ' ।

रत्थ्या-पु० [सं०] मार्ग ।

रत्न-पु० [सं०] १ हीरे, मोती, मणियां आदि कीमती पत्थर, जवाहरात । २ आभूषणों में जड़े जाने वाले चमकीले नगीने, नग । ३ कोई बहुमूल्य वस्तु । ४ विशिष्ट या श्रेष्ठ गुणों वाली वस्तु । ५ बहत्तर कलाओं में से एक । ६ पांच, नो, चोदह की संख्या । -वि० जो अमूल्य हो सर्वश्रेष्ठ ।

रत्नकंबळ, रत्नकंबळ-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

रत्नकर-पु० [सं०] कुबेर ।

रत्नकूट-पु० [सं०] १ एक पर्वत का नाम । २ एक बोधिसत्व ।

रत्नकूटा-स्त्री० [सं०] अत्रि ऋषि की पत्नियों में से एक ।

रत्नगरभ-पु० [स० रत्नगर्भ] समुद्र, सागर ।

रत्नगरभा-पु० [सं० रत्नगर्भा] १ पृथ्वी, भूमि । २ रत्न उत्पन्न करने वाली खान ।

रत्नगिरि--पु० [सं०] बिहार का एक पर्वत ।

रत्नग्रीव-पु० [सं०] एक प्राचीन राजा ।

रत्नघर-पु० [सं०] समुद्र, सागर ।

रत्नचंद्र-पु० [सं०] एक देवता ।

रत्नचूड-पु० [सं०] पाताल का एक राजा ।

रत्नजटित (जड़ित, जड़ित)-वि० [सं० रत्नजठित] जिसमें रत्न जड़े हों ।

रत्नजालक, रत्नजालि-पु० एक प्रकार का आभूषण ।

रत्नदामा-स्त्री० सीता की माता व जनक राजा की रानी ।

रत्नधेनु-स्त्री० [सं०] दान के लिये, रत्नों की बनी गाय ।

रत्ननाभ-पु० [सं०] विष्णु का एक नामान्तर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रत्ननिधान–वि० [सं०] रत्नों की निधि वाला। समुद्र।

रत्ननिधि–पु० [सं०] १ समुद्र, सागर। २ सुमेरु पर्वत। ३ विष्णु का एक नामान्तर।

रत्नपरीक्षक–पु० जौहरी।

रत्नपरीक्षा–स्त्री० १ रत्नों की जाँच। २ पुरुषों की एक कला।

रत्नपारख, रत्नपारखी, रत्नपारखी–देखो 'रत्नपरीक्षक'।

रत्नप्रदीप–पु० [सं०] १ दीपक की तरह चमकने वाला एक रत्न विशेष। २ रत्न का दीपक।

रत्नप्रभा–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, भूमि। २ एक नरक।

रत्नबाहु–पु० [सं०] विष्णु का एक नाम।

रत्नभरिता, रत्नभारिता–वि० [सं०] रत्नों से परिपूर्ण।

रत्नमाळया, रत्नमाळा, रत्नमालिका–स्त्री० [सं० रत्नमाला] १ रत्नों का हार। २ राजा बलि की एक कन्या।

रत्नमाळी–पु० एक प्रकार का देवता।

रत्नराशि (रासी)–स्त्री० [सं०] १ रत्नों का ढेर, समूह। २ समुद्र, सागर।

रत्नवसी–स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

रत्नसानु–पु० [सं०] सुमेरु पर्वत का नाम।

रत्नसागर–पु० [सं०] १ समुद्र, जिसमें रत्न निकलते है। २ समुद्र, सागर।

रत्नसाळा–स्त्री० [सं० रत्नशाला] १ रत्न रखने का स्थान, कक्ष। २ रत्न जड़ित भवन या कक्ष।

रत्नांगद–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा।

रत्नाकर–पु० [सं०] राजा अक्रूर की एक पत्नी।

रत्नाकर–पु० [सं०] १ समुद्र, सागर। २ रत्नों की खान। ३ गौतम बुद्ध का एक नाम। ४ वाल्मीकि ऋषि का प्रथम नाम।

रत्नागरि, रत्नागिरि–देखो 'रत्नगिरि'।

रत्नाचळ–पु० [सं०] १ बिहार का एक पर्वत। २ पहाड़ की तरह रत्नों का ढेर।

रत्नाद्रि–पु० [सं०] एक पर्वत विशेष।

रत्नाधिपति–पु० [सं०] १ धनपति, कुबेर। २ सेठ, जौहरी, अमीर।

रत्नाभूसण–पु० [सं० रत्नाभूषण] रत्न जड़ित आभूषण।

रत्नावळि (लि), रत्नावळी (ली)–स्त्री० [सं० रत्नावली] १ पुराण प्रसिद्ध एक राजकन्या। २ एक व्रत विशेष (जैन)। ३ एक राग विशेष। ४ एक अलंकार विशेष।

रत्नोत्सवा–स्त्री० एक तांत्रिक देवी विशेष।

रत्याव–देखो 'रातीवाही'।

रत्र–देखो 'रत्त'।

रथंतर–पु० [सं०] १ एक अग्नि। २ ब्रह्मा की सभा का एक साम।

रथंतरी–स्त्री० [सं० रथन्तरी] राजा दुष्यन्त की माता।

रथ–पु० [सं] १ प्राचीनकाल की एक घोड़ा गाड़ी, स्यंदन। २ गाड़ी, बहल। ३ वाहन, सवारी। ४ सप्त राज्यलक्ष्मियों में से एक। ५ आत्मा का यान, शरीर। ६ सेना। ७ पैर, पग। ८ क्रीड़ा या विहारस्थल। ९ एक सामुद्रिक चिह्न विशेष। १० किसी चट्टान का बना शिखा मंदिर। ११ उगण का द्वितीय भेद। —करता, कार, कारक–पु० बढ़ई, कारीगर। —कार्तिक–पु० मोर, मयूर। —कुमार–पु० मोर। —खानो–पु० रथ खड़ा करने या रखने का कक्ष। —जातरा, जात्रा='रथयात्रा'। —पति, पती–पु० रथ का मालिक, रथी। —यात्रा–पु० एक पर्व विशेष। —वान–पु० रथ का सारथी। रथवाला। —वाह–पु० घोड़ा, अश्व। —वाहक–पु० रथ चालक। —साळ, साळा, सासा–स्त्री० रथ रखने का कक्ष।

रथकृत–पु० [सं० रथकृत] एक यक्ष विशेष।

रथक्रांत–पु० संगीत में एक ताल।

रथड़ो–देखो 'रथ'।

रथचरण–पु० [सं०] चक्रवाक पक्षी।

रथचर्या–स्त्री० [सं० रथचर्या] एक प्रकार की विद्या।

रथध्वज–पु० [सं०] राजा जनक के पिता का नाम।

रथध्वान, रथप्रभु–पु० [सं०] १ वीर नामक अग्नि का नामांतर। २ रथ का मालिक।

रथबाहण–देखो 'रथवाहन'।

रथमोड़ण–वि० शत्रु के रथ को मोड़ देने वाला, वीर।

रथराजो–स्त्री० वसुदेव की एक पत्नी।

रथवर–पु० [सं०] एक यादव राजा।

रथवाहन–पु० [सं०] विराट राजा का भाई।

रथसप्तमी, रथसातम–स्त्री० [सं० रथसप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी तिथि।

रथसेन–पु० [सं०] पाण्डव पक्ष का एक रथी।

रथस्वन–पु० [सं०] एक यक्ष विशेष।

रथांग–पु० [सं०] १ रथ या गाड़ी का कोई भाग, अंग। २ रथ का पहिया। ३ सुदर्शन चक्र। ४ चक्रवाक नामक पक्षी। ५ कुम्हार का चक्र।

रथांगधर, रथांगपाणि–पु० [सं०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रथाक्ष–पु० [सं०] स्कन्द का एक सैनिक।
रथाग्रणी–पु० [सं०] श्रीराम की सेना का एक योद्धा।
रथाळि (ळी)–स्त्री० रथों की पंक्ति। कतार।
रथि, रथी–पु० [सं०] १ रथ में बैठकर लड़ने वाला योद्धा। २ रथ में बैठकर हजार योद्धाओं से लड़ने वाला योद्धा। ३ सारथी। ४ रथ की सवारी करने वाला। ५ शवयान। ६ चिता। ७ देखो 'रथ'।
रथोतर–पु० [सं] १ एक राजा। २ एक आचार्य।
रथ्, रथ्य–देखो 'रथ'।
रद–पु० [सं०] १ दांत, दंत। २ हाथी दांत। ३ चीर फाड़। ४ खरोंच। ५ वस्त्र विशेष। ६ श्वेत। ७ देखो 'रद्द'।
रदएक–पु० गजानन, गणेश।
रदकार–स्त्री० पुरुषों की एक कला।
रदछद (च्छद, च्छदन)–पु० ओष्ठ, होठ।
रदछदरमण–पु० पान, ताम्बूल।
रददान–पु० रतिक्रिया में दांतों से अंग दबाने से होने वाला निशान।
रदधर–पु० [सं०] ओष्ठ, होठ।
रदन–पु० [सं०] दंत समूह, दंत पंक्ति।
रदनच्छद (च्छद, च्छदन)–पु० [सं० रदन छदः] ओष्ठ, होठ।
रदनवसन–पु० [सं०] ओष्ठ, होठ।
रदनावळि, रदनावळी–स्त्री० [सं० रदनावलि] दंत पंक्ति।
रदनोरी–स्त्री० १ लक्ष्मी, गृह लक्ष्मी। २ सुदन्ती, सुन्दरी।
रदपट–पु० [सं०] ओष्ठ, होठ।
रदबद–पु० घुल-मिल जाने की अवस्था।
रदबदळ, रदळबदळ–देखो 'रद्दोबदळ'।
रदबोहो–पु० रक्तातिसार।
रदि, रदी–पु० १ हाथी, गज। २ देखो हिरदो। ३ देखो 'रद्दी'।
रदीफ–पु० [अ०] १ घोड़े पर सवार के पीछे बैठने वाला व्यक्ति। २ गजल के कुछ शब्द विशेष। ३ पीछे वाली स्त्री। ४ पीछे वाली सेना।
रदो–१ देखो 'हिरदो'। २ देखो 'रंदो'। ३ देखो 'रद्दी'
रद्द–वि० [अ०] १ निरस्त, खारिज। २ व्यर्थ, निष्प्रयोज्य। ३ परिवर्तित बदला हुआ। ४ नापसंद। ५ दूषित। ६ हीन, न्यून। ७ पराजित। ८ देखो 'रद'। ९ देखो 'रुद्र'।
रद्दी–वि० [अ० रद्दी] १ विकृत, दूषित। २ बेकार, खराब। ३ जो उपयोगी न हो। ४ निम्न कोटी का, न्यून। ५ निकम्मा। –स्त्री० पुराने अखबार या ऐसे कागज जो लिखने-पढ़ने के काम के न हों। —खानो–पु० फालतू या बेकार वस्तुएँ रखने का कक्ष या स्थान
रद्दोबदळ–देखो 'रद्दोबदळ'।
रद्दो–पु० १ ऊंची किनारों का लोहे या पीतल का बड़ा थाल। २ दीवार में चुने पत्थरों की पंक्ति। ३ मिट्टी की दीवार का चारों ओर से उठा हुआ भाग।
रद्दोबदळ–स्त्री० [अ०] १ अदल–बदल, हेर–फेर। २ किन्हीं दो या अधिक वस्तुओं का परस्पर होने वाला स्थानान्तरण या हस्तान्तरण।
रन–देखो 'रण'।
रनक–पु० १ लोहा। २ लाश, शव। ३ देखो 'रणक'।
रनधीस–पु० [सं० हिरण्याधीश] कुबेर।
रनबंको–देखो 'रणबको'।
रनरोई (हि, हो)–देखो 'रणरोही'।
रनवा, रनवास–देखो 'रणवास'।
रनारांणी, रनारांणो–स्त्री० १ युद्ध की देवी। २ दुर्गा का एक नामान्तर। ३ वन देवी।
रनिवास–देखो 'रणवास'।
रनेत–पु० भाला।
रन्न (ए,–देखो 'रण'।
रपछूतांणी–देखो 'राजपूतांणी'।
रपट–स्त्री० १ फिसलने की क्रिया या भाव। २ चिकना या फिसलने योग्य स्थान। ३ ढाल, ढलान, उतार। ४ देखो 'लपट'। ५ देखो 'रिपोट'।
रपटक–स्त्री० ऊंट की एक चाल।
रपटणो (नो)–वि० चिकनी, फिसलन वाली। ढालु।
रपटणो (नो)–क्रि० १ फिसलना, फिसलकर गिरना। २ तीव्र चलना। ३ सरपट दौड़ना। ४ झपटना, छलांग लगाना। ५ घसीटना।
रपुर–पु० [सं० हरिपुर] स्वर्ग।
रपोट–स्त्री० [अ० रिपोर्ट] १ सूचना, इत्तला। २ शिकायती पत्र, प्रतिवेदन। ३ किसी घटना का लिखित ब्योरा। ४ टिप्पणी।
रफ–वि० [अ०] १ जो चिकना या सफाई वाला न हो। २ जो विचारार्थ तैयार किया गया हो। ३ जो नाजुक या कोमल न हो। –पु० [अ०] १ मचान, मंच। २ दरवाजे का बड़ा ताक। ३ स्वर्णकारों का एक औजार।
रफड़णो (नो)–क्रि० १ रगड़ना, मलना। २ देखो 'रपटणो'(नो)।
रफतह–वि० दूर किया हुआ।
रफता-रफता, रफते-रफते–क्रि० वि० [फा०] १ शनैः शनैः, धीरे–धीरे। २ क्रमशः।
रफनाळ–स्त्री० एक प्रकार की बन्दूक।
रफा– वि० [अ० रफ्अ] १ पोंछा हुआ, साफ किया हुआ। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ। ३ निवृत्त। ४ शांत। ५ पूर्ण। ६ दबाया हुआ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रफादफा–वि० [अ०] १ मिटाया हुआ, साफ किया हुआ। २ निपटाया हुआ, पूरा किया हुआ। ३ तय किया हुआ। ४ शांत किया हुआ।

रफू–पु० [फा०] १ भागने की क्रिया का भाव। २ वस्त्र के छेद में डोरे भर कर ठीक करने की क्रिया।–वि० लुप्त, गायब, अलोप।

रफ्फी–स्त्री० रज, गर्द।

रब–पु० [अ०] १ परमात्मा, ब्रह्म। २ मालिक, पति। ३ बड़ा भाई।–वि० १ अभिभावक। २ पालन-पोषण करने वाला।

रबकणी (वी)–क्रि० आवारा घूमना, भटकना।

रबकी–पु० १ संकट, कष्ट। २ भटकन।

रबड़–पु० [अं०] १ वट जाति के एक वृक्ष विशेष का सूखा दूध जिसकी कई वस्तुएँ बनती हैं। २ इस पदार्थ का कोई टुकड़ा या अंश।

रबड़कणी (वी)–क्रि० भैंस का दौड़ना, दौड़ कर आना।

रबड़की–पु० भैंस के दौड़ने की क्रिया।

रबड़णी (वी)–क्रि० १ किसी तरल पदार्थ को कलछी से हिलाना। २ मारा–मारा फिरना।

रबड़ी–स्त्री० दूध को गाढ़ा औटाकर बनाया गया लच्छेदार मीठा पदार्थ।

रबद–देखो 'रुद'/'रौद्र'।

रबाण, रबाणी–वि० [अ० रब] ईश्वर का, ईश्वरीय।

रबाब–पु० १ एक प्रकार का वाद्य। २ रोब, प्रभाव। ३ भय, आतंक।

रबाबियो–पु० १ 'रबाब' बजाने वाला व्यक्ति। २ ढोलियों की एक शाखा।

रबारी–देखो 'रैबारी'।

रबिआलमीना, रबिलआलमीन–पु० [अ० रब्बुलआलमीन] समस्त ब्रह्माण्ड का नायक, ईश्वर।

रबी–स्त्री० [अ० रबीअ] १ वसंत ऋतु। २ इस ऋतु में पकने वाली फसल। ३ देखो 'रवि'।

रब्ब–देखो 'रब'।

रब्बलआलमीन–देखो 'रबिलआलमीन'।

रब्बारी–देखो 'रैबारी'।

रभस–स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।

रभेणक–पु० एक नाग विशेष।

रमकी–पु० [सं० रम्] आभूषण की ध्वनि।–वि० खेलने का आदी। (स्त्री० रमकी)

रम–पु० [सं०] १ हर्ष, आनन्द। २ कामदेव। ३ पति। ४ प्रेमी, आशिक। ५ शत्रु, वैरी।–वि० १ सुन्दर, मनोहर। २ प्रिय, प्यारा। ३ आनन्ददायक।

रमइयो–देखो 'रांमइयो'।

रमक–स्त्री० १ ध्वनि विशेष, झनकार। २ एक चाल विशेष। ३ लहर, तरंग। ४ प्रेमी, आशिक। ५ प्रेम-पात्र।

रमकड़ो–देखो 'रमेकड़ो'।

रमकियो–देखो 'रांमतियो'।

रमकीलो–वि० (स्त्री० रमकीली) छैल-छबीला, लौकीन।

रमड़णी (वी)–देखो 'रमणी' (वी)।

रमजा–स्त्री० १ छवि, शोभा। २ हंसी, मुस्कराहट। ३ मजाक।

रमजान–पु० एक अरबी महीना जब रोजा रखा जाता है।

रमझट–देखो 'रांझट'।

रमझम–देखो 'रिमझिम'।

रमझमक–देखो 'रिमझिमक'।

रमझोळ–देखो 'रिमझोळ'।

रमझोळी–पु० १ हमजोली, साथी। २ देखो 'रिमझोळ'।

रमठ–पु० एक म्लेच्छ जाति व इस जाति का व्यक्ति।

रमडोळ–पु० [सं० रिपु+दल] शत्रु दल।

रमढोळ–वि० सीधा-सादा, भोला-भाला।

रमण–पु० [स०] १ हर्ष, आनन्द, आमोद-प्रमोद। २ रतिक्रीड़ा, संभोग। ३ कामदेव। ४ पति, स्वामी। ५ सुख। ६ विहार भ्रमण। ७ सूर्य का सारथी, अरुण। ८ ब्रह्माण्डकोश। ९ कूल्हा, कमर। १० एक वसु। ११ दो सगण का एक छन्द। १२ एक अन्य छन्द विशेष। १३ योद्धा, वीर।–वि० १ सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ। २ आनन्ददायक। ३ रतिक्रीड़ा, आमोद-प्रमोद करने वाला या करने योग्य। ४ प्रिय, प्यारा। ५ देखो 'रमणी'।

रमणक–पु० [सं०] १ जम्बूद्वीप का एक खण्ड। २ इस खण्ड का राजा।–वि० रमणीक।

रमणि–देखो 'रमणी'।

रमणियो–वि० १ रमण करने या खेलने वाला। २ भोगने वाला, भोक्ता।

रमणी–स्त्री० [सं०] १ स्त्री, औरत, नारी। २ सुन्दर स्त्री, युवती। ३ पत्नी, प्रियतमा। ४ सुगन्ध बाला। ५ एक रागिनी। ६ यात्रा, भ्रमण।

रमणीक, रमणीय–वि० [सं०] १ सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ। २ रमण करने योग्य। ३ भ्रमण-विहार करने योग्य। सुहावना।–स्त्री० १ स्त्री, सुन्दरी। २ एक छन्द विशेष।

रमणीयता–स्त्री० [सं०] सुन्दरता। आकर्षण।

रमणो–पु० १ खिलौना। २ खेलने का उपकरण। ३ शिकार गाह। ४ भ्रमण योग्य स्थान। ५ जंगल, वन, अरण्य।–वि० खेलने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रमणी (बी)–क्रि० [सं० रमण] १ कोई खेल खेलना। २ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा करना। ३ नाटक, तमाशा करना। ४ भोग-विलास करना। ५ मन लगना, बहलना, मग्न होना। ६ आनन्द करना, मौज करना। ७ शिकार करना। ८ भ्रमण व यात्रा करना, घूमना-फिरना, विचरना। ९ लुप्त हो जाना, चला जाना। १० व्याप्त होना, फैलना। ११ लिप्त होना, संलग्न होना। १२ अनुरक्त होना, आसक्त होना। १३ व्यापक होना, लोकप्रिय होना। १४ युद्ध करना, रणक्रीड़ा करना।

रमत–देखो 'रांमत'।

रमतारांम–वि० निरन्तर भ्रमण करते रहने वाला। —पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ साधु।

रमतियो–देखो 'रांमतियो'।

रमतू–पु० एक पक्षी विशेष।

रमल–पु० [अ०] ज्योतिष की एक विधि।

रमलि, रमली–स्त्री० [सं० रमणिका] १ क्रीड़ा, खेल, विनोद। २ रतिक्रीड़ा। ३ शिकार।

रमाइण, रमाइण–देखो 'रांमायण'।

रमा–स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी, कमला। २ सीता। ३ दुर्गा। ४ पत्नी। ५ स्वामिनी। ६ प्रजा। ७ सम्पत्ति, धन। ८ चंचलता।–कांत–पु० विष्णु, राम।

रमाएकादसी–स्त्री० कार्तिक कृष्णा एकादशी।

रमाखोर–पु० [सं०] रावण।

रमाज–वि० [अ०रम्माज] १ भेद जानने वाला, भेदिया। २ गुप्तचर, जासूस।

रमाडणो (बी)–देखो 'रमाणो' (बी)।

रमाणो (बी)–क्रि० १ खिलाना, खेल खेलाना। २ नाटक या तमाशा कराना। ३ मौज या आनन्द कराना। ४ रति क्रीड़ा कराना, संभोग कराना। ५ खिलवा देना, बहला देना। ६ शिकार कराना। ७ भ्रमण व विहार कराना। ८ गायब या लुप्त कराना। ९ लीन या मग्न कराना। १० आकर्षित करना, मोहित करना। ११ मनोविनोद आमोद-प्रमोद कराना। १२ लेपन करना, वेष्ठन करना। १३ फुसलाना, भ्रमित करना।

रमाद–पु० [सं० रमा+द] कुबेर।

रमाधव–पु० [सं०] विष्णु।

रमानंद (नवण, नंदन)–पु० [सं०] कामदेव।

रमानरेस–पु० [सं० रमानरेश] विष्णु।

रमानाथ–पु० [सं०] विष्णु।

रमानिवास–पु० [सं०] विष्णु।

रमापत, रमापति (ती)–पु० [सं० रमापति] विष्णु।

रमावर–देखो 'रमावर'।

रमाय–देखो 'रमा'।

रमायण–देखो 'रांमायण'।

रमारम, रमारमण–पु० [सं० रमा+रमण] लक्ष्मीपति, विष्णु।

रमाराव–पु० [सं० रमाराज] विष्णु।

रमावणी (बी)–देखो 'रमाणी' (बी)।

रमावर–पु० [सं०] लक्ष्मीपति विष्णु।

रमाबीज–पु० [सं०] एक तांत्रिक मंत्र, श्रीं।

रमीईयो–देखो 'रांमइयो'।

रमीस–देखो 'रमेस'।

रमूजां, रमूजा–देखो 'रमजां'।

रमेकड़ो–पु० [सं० रम्+प्रा०एकड़ो] १ खिलौना, खेलने का उपकरण। २ योनि, भग।

रमेस–पु० [सं० रमेश] विष्णु।

रमेस्वर–पु० [सं० रमेश्वर] १ विष्णु। २ देखो 'रांमसर'।

रमैनी–स्त्री० कबीर के बीजक का एक भाग।

रमैयो–देखो 'रांमइयो'।

रम्म–देखो 'रम्य'।

रम्मणी (बी)–देखो 'रमणी' (बी)।

रम्मत–देखो 'रांमत'।

रम्माल–पु० [अ०] 'रमल' विद्या का ज्योतिषी।

रम्य–वि० [सं०] १ जिसमें मन रमे, रमणीक। २ मनोहर, सुन्दर, मनोज्ञ। ३ प्रिय। ४ आकर्षक।—पु० १ वीर्य। २ चम्पा का पेड़। ३ वायु का एक भेद।

रम्या–स्त्री० [सं०] १ मेरु की नौ कन्याओं में से एक। २ संगीत में एक श्रुति। ३ महेन्द्र वारुणी। ४ लक्ष्मणा नामक छंद। ५ गंगा नदी। ६ रात, रात्रि।

रय–पु० [सं०] १ प्रवाह, धारा। २ वेग, गति। ३ उत्साह। ४ लगन, धुन। ५ संतोष, सब्र। ६ एक प्रजापति। ७ पुरुरवस राजा का पुत्र एक राजा। ८ देखो 'रव'/'रव'।

रयण–पु० [सं० रत्न, रजनी] १ रत्न। २ राजा, नृपति। ३ समुद्र।—स्त्री० ४ रात, रात्रि, निशा। ५ पृथ्वी, भूमि। ६ धूलि, रज। ७ मोतियों से की स्वस्तिक की रचना। —यर, पति, पती–पु० चन्द्रमा, शशि। राजा।—मइ, माई, मए, मय–वि० रत्नों से युक्त।

रयणा–स्त्री० १ गति, चाल। २ रचना। ३ देखो 'रैणा'।

रयणागर (यर, यह)–देखो 'रत्नाकर'।

रयणावळी–देखो 'रत्नावळी'।

रयणि, रयणीय–देखो 'रजनी'/'रैणा'।

रयणीहृत–पु० [सं० रजनी-हृत] सूर्य, रवि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रयणी–देखो 'रयण' ।
रयत–देखो 'रय्यत' ।
रयतदोस (दोस)–पु० दूषित आहार लेने का एक दोष (जैन) ।
रयनाक–पु० समुद्र, सागर ।
रयनि (नी)–देखो 'रजनी' ।
रयबारी–देखो 'रैबारी' ।
रयवाड़ी–देखो 'रैवाड़ी' ।
रया–स्त्री० [अ० रिआया] प्रजा, जनता ।
रयिस्ठ–पु० [सं० रैस्ठ, रजस्थ] १ कुबेर । २ अग्नि, आग ।
रयी–देखो 'रई' ।
रयोसयो–वि० बचा-खुचा, शेष, अवशिष्ट ।
रय्यत–स्त्री० [अ० रअय्यत] प्रजा, जनता ।
ररंकार–पु० [सं० रकार] १ रामनाम की माला जाप । २ राम जप से होने वाली ध्वनि । ३ रामनाम । ४ 'र' का उच्चारण ।
रर–स्त्री० [प्रा० रड] रट, रटन ।
ररणी (बौ)–क्रि० १ रटना, जपना । २ कहना, कथना । ३ बोलना ।
ररो–पु० १ 'राम' नाम का प्रथमाक्षर । २ 'र' वर्ण ।
रळ, रळ–वि० १ तुच्छ, न्यून । २ नीच, जघन्य । ३ घृणा योग्य, घृणित ।
रळक रळकण (न)–स्त्री० १ फिसलन । २ लपट । ३ इच्छा । ४ अनाजादि पदार्थों का अच्छा भाग अलग या ऊपर करने की हाथों की क्रिया ।
रळकणो (बौ)–क्रि० १ फिसलना, सरकना, रपटना । २ प्रगट होना, निकलना । ३ टपकना, गिरना, ढुलकना । ४ उछलकर छंटना, अलग होना । ५ लटकना, लूमना । ६ हिलना-डुलना । ७ हिलने से अच्छी झलक दिखाई देना । ८ धीरे-धीरे बहना । ९ जाना, प्रस्थान करना । १० मिटना, धुमिल होना ।
रळकाणो (बौ), रळकावणो (बौ)–क्रि० १ फिसलाना, सरकाना, रपटाना । २ प्रगट करना, निकालना । ३ टपकाना, गिराना ढुलकाना । ४ उछालकर छांटना । अलग करना । ५ लटकाना, लूमाना । ६ हिलाना-डुलाना । ७ हिलाकर झलक दिखाना । ८ धीरे-धीरे बहाना । ९ प्रस्थान कराना १० मिटाना, धुमिल करना ।
रळको–पु० १ ठण्डी हवा का झोंका । २ वर्षा की फुहार । ३ हल्का बहाव । ४ सिंचाई की एक क्रिया । ५ गोबर का पतला लेपन । ६ हलकासा झटका ।
रळचळ–पु० प्रवाह, बहाव ।
रळणो (बौ)–क्रि० १ मिलना, सम्मिलित होना । २ मिश्रण होना, मिश्रित होना । ३ घुलना, मिलना, रमना । ४ समाना, मिलना, विलीन होना । ५ शोभित होना । ६ प्रवेश पाना, पैठना, घुसना । ७ फैलना, छितरना । ८ उछलकर गिरना । ९ लीन होना, मग्न होना । १० पड़ना । ११ लगना, स्पर्श होना । १२ बरसना, वृष्टि होना । १३ नष्ट होना, बरबाद होना । १४ चिरना, फटना । १५ ढलना । १६ देखो 'रळकणो' (बौ) ।
रळतळ–देखो 'रळत्तळ' ।
रळतळणो (बौ)–क्रि० १ फिसलना, रपटना । २ फैलना । ३ गिरना, पड़ना, धराशायी होना । ४ बिखरना ।
रळतळो, रळत्तळ–स्त्री० १ 'गोगा' राठौड़ की तलवार का नाम । २ प्रसार, फैलाव । ३ प्रवाह ।—क्रि०वि० तीव्र गति या वेग से ।
रळत्तळणो (बौ)–देखो 'रळतळणो' (बौ) ।
रळथळो–देखो 'रळत्तळ' ।
रळपट–स्त्री० १ हंसी, दिल्लगी, मजाक, मखौल । २ उद्दण्डता, बदमाशी । –वि० १ उद्दण्ड, बदमाश । २ व्यर्थ, फालतू । ३ अविश्वसनीय । ४ लम्पट, बदचलन । ५ अवारा ।
रळमिळ–देखो 'रिळमिळ' ।
रळमिळणो (बौ)–क्रि० १ हिलना - मिलना, मिलना-जुलना । २ फैलना, व्याप्त होना । ३ सम्मिलित होना, मिश्रित होना । ४ घुलना–मिलना ।
रळरळ–वि० सुन्दर, मनोहर ।
रळरळक, रळळळक–स्त्री० सुन्दरता, चमक, आभा, प्रकाश ।
रळवळणो (बौ)–देखो 'रळमिळणो' (बौ) ।
रळा–स्त्री० याद ।
रळाणो (बौ)–क्रि० १ मिलाना । २ मिश्रित करना । ३ आत्मसात करना । ४ लीन करना, मग्न करना । ५ घुलाना, घोलना । ६ शोभित करना । ७ फैलाना, छितराना, बिखेरना । ८ प्रवेश कराना, पैठाना । ९ गिराना, पटकना । १० बरसाना, वृष्टि करना । ११ नष्ट करना, बरबाद करना । १२ चीरना, फाड़ना । १३ रगड़ना । १४ टपकाना ।
रळावळो–वि० मिश्रित, मिला हुआ ।
रळावणो–देखो 'रळियांमणो' ।
रळावणो (बौ)–देखो 'रळाणो' (बौ) ।
रळि–देखो 'रळो' ।
रळिआंमणउ, रळिआंमणु, रळिआमणो–देखो 'रळियांमणो' ।
रळिमळि–देखो 'रिळमिळ' ।
रळिमिळणो (बौ)–देखो 'रळमिळणो' (बौ) ।
रळिय, रळिय, रळिमां–देखो 'रळो' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रळियांवणी, रलियांमणी, रळियावणी, रलियावणी–वि० (स्त्री० रळियांमणी, रळियावणी) १ सुन्दर, मनोहर। २ आनन्द दायक, हर्षप्रद। ३ मौज व मस्ती देने वाला। ४ मोहक आकर्षक। ५ मधुर, प्रिय। ६ सुखी। ७ श्रेष्ठ, उत्तम। ८ प्रसन्न, खुश।

रळियाअति, रळियाइत रळियात, रळियाति, रळियायत, रळियायित, रळियारत, रळियावत–स्त्री० १ आनन्द, खुशी। २ लाड, प्यार। –वि० १ प्रसन्न, खुश, मुदित। २ उत्साहित, आशान्वित। ३ आसक्त।

रळियालउ, रळियाळी, रलियाली–वि० 'स्त्री० रलियाली' १ सुन्दर, मनोहर। २ प्रिय, प्यारा। ३ प्रसन्न, खुश, आनन्दित। –पु० ईश्वर, परमात्मा।

रळी, रली–स्त्री० [सं० रति] १ चाह, इच्छा। २ उत्कंठा। ३ उमग, उत्साह। ४ उत्साह पूर्वक किया जाने वाला कार्य। ५ आनन्द, हर्ष, खुशी। ६ खेल, क्रीड़ा, रास। ७ रतिक्रीड़ा, विलास। ८ मनोरंजन, विनोद, मौज। विहार। १० ठाट-बाट, वैभव।

रळीआंमणू, रळीआंमणी–देखो 'रळियांमणी'। (स्त्री० रळिआंमणी)

रळीआइत, रळीआईत, रळीआईती, रळीयात, रळीयायत, रळीयाति–देखो 'रळियायत'।

रळीमण–वि० प्रसन्न, खुश।

रळीयांमण, रळीयांमणी, रलीयांमण, रलीयांमणी, रळिया, रळीयाइत (याईत, याईती, यात, यायत, यायित, यावत) देखो 'रळियायत'।

रळीरग–स्त्री० खुशी व आनन्द के अवसर या कार्य।

रळो–वि० (स्त्री० रळी) १ कायर, डरपोक। २ अशक्त, कमजोर। –पु० १ ऊंट की एक चाल। २ देखो 'रळी'।

रवंद–वि० १ तीव्र, तेज। २ कोलाहल युक्त।

रव–पु० [सं०] १ शब्द, आवाज, ध्वनि। २ गुंजार, चहचाहट, कलरव। ३ शोरगुल, कोलाहल। ४ करुण क्रन्दन। चीख पुकार। ५ गर्जना, नाद। ६ महीन धूल, रज, गर्द। ७ कण, जर्रा। ८ दो लघु रगण के भेद का नाम। ९ देखो 'रवि'।

रवक–स्त्री० १ अच्छी घास वाला स्थल या स्थान। २ एरंड वृक्ष।

रवड़ताळ–पु० १ एक प्रकार का वाद्य। २ देखो 'रव'

रवजा–देखो 'रविजा'।

रवण–पु० [सं०] १ ऊंट। २ कोयल। ३ फूल। ४ कांसा नामक धातु। ५ शब्द, ध्वनि, आवाज, बोली। ६ पीतल। ७ धूलि गर्द। ८ विदूषक। –वि० १ शब्दयुक्त, शब्दायमान। २ चिल्लाने वाला, पुकारने वाला। ३ उष्ण, गर्म तपा हुआ। ४ तीक्ष्ण, उग्र। ५ चंचल, चपल।

रवणक–पु० [सं०] ऊंट।

रवणरेती–स्त्री० १ यमुना किनारे की रेतीली भूमि। २ गोकुल के पास की भूमि।

रवणि–स्त्री० वनस्पती विशेष।

रवणी (बो)–क्रि० १ आवाज करना, बोलना। २ शब्दायमान या ध्वनिमान होना।

रवत–देखो 'रावत'।

रवतांडव–पु० [सं० रवि-तांडव] १ सूर्य का नग्न व प्रलय नृत्य। २ नृत्य-गान।

रवतांणी–देखो 'रावतांणी'।

रवताई–देखो 'रावताई'।

रवताळ (ळो)–१ देखो 'रावताळो'। २ देखो 'रवत्ताळ'।

रवतेस–देखो 'रावतेस'।

रवतो–देखो 'रावत'।

रवत्ताळ–पु० १ घोड़ा। २ घोड़े की टाप। ३ योद्धा, वीर।

रवद १ देखो 'रुद्र'। २ देखो 'रौद्र'।

रवदांण–१ देखो 'रुद्र'। २ देखो 'रौद्र'।

रवदांराव–पु० यवन बादशाह।

रवबाळ, रवद्द, रवद्दि–१ देखो 'रुद्र'। २ देखो 'रौद्र'। ३ देखो 'रव'

रवद्र–१ देखो 'रौद्र'। २ देखो 'रुद्र'।

रवन–देखो 'रमण'।

रवनांमी–देखो 'रविनांमी'।

रवनि (नी)–देखो 'रमणी'।

रवन्नी–देखो 'रवांनी'।

रवमडळ–देखो 'रविमडळ'।

रवमुखी–देखो 'रविमुखी'।

रवरवी–पु० बोल-बाला, दबदबा, प्रभाव।

रवरायां–वि० दयालु, कृपालु।

रववंसी–देखो 'रविवंसी'।

रवस–देखो 'रहस्य'।

रवसुत–देखो 'रविसुत'।

रवां–स्त्री० [फा०] १ प्राण। २ प्राण वायु। –वि० १ अभ्यस्त। २ प्रवाहित। ३ तीक्ष्ण, धारदार। ४ बिना अटके काम आने योग्य। ५ देखो 'रवा'।

रवांमणी–स्त्री० प्रस्थान।

रवांना–वि० [फा० रवान:] १ प्रस्थान किया हुआ। २ विदा हुवा हुआ। ३ प्रेषित। ४ चल पड़ने वाला।

रवांनी–पु० [फा० रवान:] १ प्रस्थान, कूच, प्रयाण। २ प्रस्थान का अनुमति पत्र। ३ प्रेषित वस्तु का विवरण-पत्र ४ चुंगी की रसीद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रवा–वि० [फा०] १ उचित, वाजिब। २ इच्छित, वांछित। ३ जाहिर, प्रगट। ४ प्रसिद्ध, मशहूर।–स्त्री० [फा०रवाई] १ रौनक, शोभा। २ परम्परा, रूढ़ी, प्रथा। ३ इच्छा, मंशा, कामना। ४ दया, कृपा।

रवाकातर–स्त्री० स्वर्णकारों का एक औजार।

रवाकी–वि० रहने वाला।

रवाड़ी, रवाडी–देखो रैवाड़ी'।

रवाज–देखो 'रिवाज'।

रवाबार–वि० कृपा या दानेदार।

रवायत–देखो 'रियायत'।

रवाळ–देखो 'रैवाळ'।

रवाळी, रवाळी–पु० स्वर्णकारों का एक औजार।

रवि–पु० [सं०] १ सूर्य, सूरज, आदित्य। २ अग्नि। ३ नायक। ४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ५ ठगण के द्वितीय भेद का नाम। ६ बारह की संख्या। ७ अशोक वृक्ष। ८ आक।
—अस–पु० सूर्य का अश।—असिय, असी='रविवंसी'।
—उवै, ऊगो–अव्य० सूर्योदय के समय।—कर–पु० सूर्य किरण।—किरण–स्त्री० सूर्य की किरण, प्रकाश।
—कुळ–पु० एक प्रसिद्ध क्षत्रिय वश, सूर्य वंश।—चक्र–पु०४ सूर्य मंडल। सूर्य-रथ का चक्र। ज्योतिष में एक चक्र। एक की संख्या।—तनय, तणै–पु० शनिश्चर। यमराज। कर्ण। बालि। सुग्रीव। अश्विनी कुमार। वैवस्वतमनु।
—तनया, तनुजा–स्त्री० यमुना नदी। सूर्य की पुत्री।
—दिन, दिव, दिवस–पु० रविवार, सप्ताह का प्रथम दिन।
—नंद, नंदन= रवितनय'।—नंदिनी='रवितनया'।
पुत्र, पूत= रवितनय'।—मंडळ–पु० सूर्य मंडल, सौर मडल, सूर्य की परिधि।—वंस–पु० सूर्यवश, क्षत्रिय वंश।
—वंसी–पु० सूर्यवंशी।—वार, वासर–पु० सप्ताह का प्रथम दिन।—सारथी–पु० अरुण।—सुअन, सुत, सुवन= 'रवितनय'।—सुता='रवितनया'।

रविकांतमणि–पु० [सं०] सूर्यकान्त मणि विशेष।

रविचंचळ–पु० [सं०] काशी का एक तीर्थ-स्थल।

रविचक्कळ (ळि, ळी)–पु० [सं०] पृथ्वी मंडल। भू-मंडल।

रविज–पु० [सं०] १ शनिश्चर। २ यम। ३ कर्ण। ४ बालि, सुग्रीव। ५ अश्विनी कुमार। ६ वैवस्वत मनु।—केतु–पु० पुच्छल तारा।

रविजा–स्त्री० [सं०] सूर्य पुत्री, यमुना।

रविजात–स्त्री० [सं०] १ सूर्य की किरण। २ कर्ण, यम।

रविजोग–पु० [स० रवियोग] सूर्य नक्षत्र से बनने वाला एक योग (ज्योतिष)।

रविनाम (नामी)–पु० १ ऐश्वर्य, वैभव। २ प्रताप, शौर्य। ३ कीर्ति, यश।

रविवंसमनि–पु० सूर्य वंश का रत्न।

रविमणि (णी)–स्त्री० [सं०] सूर्यकान्त मणि।

रविमुखी–पु० सूर्यमुखी नामक फूल।

रवियाण–पु० सूर्य के सात घोड़ों में से एक, सप्ताश्व।

रवियोग–पु० सत्ताईस नक्षत्रों में से सूर्य के प्रभाव में रहने वाला नक्षत्र और उक्त नक्षत्र के रहने का समय।

रविराई–पु० [सं० रविराज] सूर्य, रवि।

रविसंक्राति, रविसक्रांति–स्त्री० [सं०] सूर्य का संक्रमण।

रविस–स्त्री० [फा० रविश] १ गति, चाल। २ तर्ज शैली। ३ व्यवहार, बर्ताव। ४ चाल-चलन, आचरण।

रवींदू–पु० [सं० रवि-इदु] सूर्य, चन्द्र।

रवी–स्त्री० १ गेहूँ के आटे का एक तरल खाद्य पदार्थ। २ रवि।

रवीपुत्र (पूत, सुत)–देखो 'रवितनय'।

रवेची–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

रवेज–देखो 'रिवाज'।

रवेस–पु० [सं० रवि-ईश] १ सूर्य, रवि। २ रहना क्रिया, रहवास।

रवै–स्त्री० १ मादा पशु की ऋतुमति की अवस्था। २ खेत या भूमि की बुवाई योग्य अवस्था।

रवो–पु० [सं०रज] १ छोटा कण, दाना। २ घुंघरुओं का छर्रा।

रस–पु० [सं०] १ किसी वस्तु का सार, तत्व, शोरबा, जूस। २ खाने की वस्तु का स्वाद, जायका, चस्का। ३ आनन्द हर्ष, खुशी। ४ प्रेम, अनुराग, प्रीति। ५ रतिक्रिया, संभोग। संभोग सुख। ६ सुख, सुख की अनुभूति। ७ कामेच्छा। ८ मौज, मस्ती। ९ उमंग, जोश, मनोबल। १० अनुराग का संचार। ११ इन्द्रिय सुख। १२ मेल-जोल, प्रेम संबंध। १३ माधुर्य। १४ अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियों के वशीभूत रहने की अवस्था। १५ इच्छा, भावना, भाव। १६ साहित्य में आनन्दात्मक चित्त वृत्ति। १७ साहित्य में दश प्रकार के रस। १८ सुन्दरता; मनोहरता। १९ तौर तरीका, ढंग। २० गुण, विशेषता, महत्व। २१ शरीरस्थ सप्तधातुओं में से प्रथम धातु। २२ रक्त, रुधिर। २३ शरीर से निकलने वाला तरल पदार्थ। २४ जल, पानी, द्रव। २५ वनस्पती आदि औषधि का सार। २६ आसव, शराब। २७ विष, जहर। २८ अमृत। २९ वीर्य। ३० पारा। ३१ मीठा पेय। ३२ गोरस। ३३ गंध रस। ३४ शिलारस। ३५ हिंगुल। ३६ मोती। ३७ कोई खनिज पदार्थ। ३८ कोई औषधि। ३९ घी, घृत। ४० उत्तम खाद्य। ४१ गूदा, मींगी। ४२ वनस्पती। ४३ वृक्षों का मद। ४४ हाथी आदि का मद। ४५ मीठा पानी, चासनी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४६ स्वादिष्ट पदार्थ। ४७ चटनी, मसाला। ४८ तरह भांति। ४९ जीत, विजय। ५० हार, पराजय। ५१ वश, काबू। ५२ सबक। ५३ आनन्द स्वरूप ब्रह्म। ५४ फसल की परिपक्वावस्था। ५५ पाताल। ५६ पृथ्वी, धरती। ५७ डिंगल का एक छन्द। ५८ एक लघु व एक गुरु का नाम। ५९ तीन लघु के गण के तृतीय भेद का नाम। ६० रगण या सगण की संज्ञा। ६१ छः की संख्या। ६२ नौ की संख्या।—वि० १ उपयोगी, कामयाब। २ अनुकूल, माफिक। ३ वश में, काबू में। ६ शीघ्र, जल्दी।—दायक, दायनी, दायी—वि० आनन्ददायक, रमणीय। रसदार, स्वादिष्ट।—दार—वि० रसयुक्त, रसवाला। स्वादिष्ट, मजेदार।—पति—पु० चन्द्रमा, शशि। शृंगार रस।—पूर—वि० खीररस पूर्ण। रस से परिपूर्ण।—मय—वि० रसों से युक्त, आनन्ददायक।—लोभी, लोलुअ, लोलुप—वि० कामुक, कामी। प्रेम में मग्न। कवि। भ्रमर।—वंछक—वि० प्रेम का इच्छुक। कामी।

रसउगाळ (ओगाळ)—पु० १ जुगाली के समय पशु के मुंह से गिरने वाला द्रव, रस। २ देखो 'रसूगाळ'।

रसउत्तम—पु० [सं० उत्तम-रस] दूध।

रसउद्भव—पु० [सं०] मोती।

रसउल्लाला—पु० एक मात्रिक छन्द विशेष।

रसक—देखो 'रसिक'।

रसकपूर—पु० [सं०] पारा के योग से बनी रसौषधि।

रसकरम (करम्म)—पु० [सं० रसकर्म्म] एक रसौषधि विशेष।

रसकळ—पु० एक मात्रिक छंद विशेष।

रसकस—स्त्री० १ स्वाभाविक स्थिति। २ सार, तत्त्व। ३ आनन्द मौज।

रसकार—पु० [सं०] शराब बनाने वाला।

रसकुंड—पु० अमृत का कुंड।

रसकुळणी—स्त्री० घोड़ों का एक रोग।

रसकूपका (कूपिका)—स्त्री० योनि, भग।

रसकेळि (ळी)—स्त्री० [सं० रसकेलि] १ रतिक्रीड़ा, संभोग। २ हंसी, दिल्लगी, मजाक।

रसकेसर, रसकेसरी—स्त्री० [सं० रसकेसर] १ कपूर। २ पारा, गंधक आदि के योग से बनी एक औषधि।

रसग, रसगना, रसगिना—स्त्री० [सं० रसज्ञा] जिह्वा, जीभ।

रसगुल्लियो, रसगुल्लो—पु० दूध को फाड़कर बनाई जाने वाली एक रसदार मिठाई।

रसग्य—वि० [सं० रसज्ञ] १ काव्यरस का ज्ञाता। मर्मज्ञ। २ रसों को जानने वाला। ३ किसी विषय का पंडित। ४ पारद के योग से औषधियां बनाने वाला। ५ समालोचक। ६ रसायनी। ७ कवि। ८ वैद्य।

रसग्यता—स्त्री० [सं० रसज्ञता] १ रसज्ञ होने की अवस्था या भाव। २ पंडिताई।

रसग्या—स्त्री० [सं० रसज्ञा] १ जीभ, जिह्वा। २ गंगा।

रसग्रंथ—पु० [सं०] १ शृंगार रस का ग्रंथ या काव्य। २ वह ग्रंथ जिसमें साहित्यिक रसों का विवेचन हो।

रसघण—स्त्री० [सं० घनरसा] इन्द्र की माया।

रसघन—पु० श्रीकृष्ण।—वि० १ रसदार, रसवाला। २ स्वादिष्ट।

रसड़ो—१ देखो 'रस'। २ देखो 'रसोड़ो'।

रसचारी—वि० रसज्ञ, रसों का ज्ञाता।

रसजाणण—वि० [सं० रसज्ञा] रस या स्वाद का अनुभव करने वाला। रसज्ञ।—स्त्री० जिह्वा।

रसण—पु० १ सूर्य, भानु। २ देखो 'रसना'।

रसणा रसणा, रसणि—स्त्री० [सं० रश्मि] १ किरण। २ पृथ्वी। ३ क्षितिज। ४ देखो 'रसना'।

रसणो (णो)—क्रि० [सं० रसनं] १ पानी आदि द्रव पदार्थ का धीरे-धीरे बहना। रिसना। २ टपकना, चूना। ३ रसमय होना, रसोजना, रस या स्वाद जमना। ४ वश में होना काबू में होना। ५ अनुरक्त या आसक्त होना। ६ प्रसन्न या खुश होना। ७ स्वाद लेना, रस लेना, रसास्वादन करना। ८ चीखना, चिल्लाना। ९ दहाड़ना, गर्जना। १० शोर-गुल करना, बोलना। ११ ध्वनि करना।

रसत—पु० [सं० रसित] १ शब्द, ध्वनि, आवाज। २ निर्घोष, गर्जन। ३ एक प्रकार का सरकारी कर। ४ देखो 'रसद'।

रसतरंग—पु० १ एक प्रकार का वाद्य विशेष।—स्त्री० २ लहर, तरंग, हिलोर।

रसतळ (तल, तलि)—देखो 'रसातळ'।

रसता—पु० दुकानों पर लगने वाला टेक्स।

रसतारव—पु० मेघ गर्जन के समान शब्द।

रसतो (त्तो)—देखो 'रस्तो'।

रसत्याग—पु० [सं०] स्वादिष्ट पदार्थों के त्याग का व्रत।

रसद—स्त्री० [अ०] १ अनाज आदि खाद्य पदार्थ। २ खाद्य सामग्री। ३ सेना के प्रयाण के समय साथ लीजाने वाली सामग्री। ४ अंश, हिस्सा, भाग। ५ बंटवारे का हिस्सा। ६ चिकित्सक। ७ एक प्रकार का गुप्तचर। (मध्ययुगीन)—वि० रसदायक, मजेदार, हर्षप्रद। आनन्दमय।

रसधातु—पु० [सं०] १ पारद, पारा। २ शरीरस्थ प्रथम धातु।

रसधेनु—स्त्री० [सं०] दान हेतु बनी गुड़ आदि की गाय।

रसन, रसना—स्त्री० [सं० रसना] १ जिह्वा, जीभ। २ वाणी, आवाज। ३ करधनी, मेखला, किंकिणि। ४ चन्द्रहार,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आभूषण। ५ कमरबंद, कमर पेटी। ६ रस्सी, डोरी। ७ रास, लगाम। ८ हठयोग में पिंगला नाड़ी। ९ बलगम, कफ। १० प्रथम गुरु के ठागण का नाम। –वि० रक्ताभ, लाल। —ग्रह–पु० मुख, मुंह। —लट; लोह–पु० श्वान, कुत्ता।

रसनेंद्रिय–स्त्री० [सं०] जिह्वा, जीभ।

रसनोपमा–स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार।

रसप्र–देखो 'रसना'।

रसपति–पु० [सं०] १ चन्द्रमा, अग्नि। २ शृंगार रस।

रसपरपटी–स्त्री० [सं० रसपर्पटी] एक औषधि विशेष।

रसपोटली, रसपोटी–स्त्री० घोड़ों का एक रोग।

रसबत्ती–पु० बन्दूक या तोप का पलीता (प्राचीन)।

रसबाय–पु० हाथियों का एक रोग।

रसभरी–स्त्री० [अं० रैप्सबेरी] १ लाल-पीला एक स्वादिष्ट फल। २ इस फल का बना पेय पदार्थ। ३ रस से परिपूर्ण एक मिठाई।

रसभाव–पु० हाथियों का एक रोग।

रसमंडूर–पु० [सं०] मंडूक के योग से बनी एक औषधि।

रसमंत्री–पु० संधि आदि का कार्य कराने वाला मंत्री।

रसम–स्त्री० [अ० रस्म] १ परंपरा, रीति-रिवाज। २ प्रथा रूढ़ि। ३ रीति-रिवाज के अनुसार दिया जाने वाला धन। ४ कर, लगान। ५ वेतन, तनख्वाह। ६ न्यायालय शुल्क। ७ संस्कार। ८ देखो 'रश्मि'।

रसमय–वि० १ रस से परिपूर्ण। रस युक्त। २ मधुर, मीठा। –पु० मकरंद, पराग।

रसमाण–पु० [सं० रश्मि] १ सूर्य का प्रकाश, तेज। २ सूर्य की किरण, रश्मि।

रसमाता–स्त्री० [सं०] जिह्वा, जीभ।

रसमि, रसमी–देखो 'रश्मि'।

रसमेत्री–स्त्री० [सं०] विभिन्न रसों का योग।

रसम्म–१ देखो 'रसम'। २ देखो 'रश्मि'।

रसयो–पु० रस से उत्पन्न होने वाला कीड़ा। कीटाणु।

रसरंग–पु० १ आनन्द, उत्साह, खुशी आदि। २ एक छन्द विशेष।

रसरसाट–स्त्री० आवाज, ध्वनि।

रसराज–पु० १ पारद, पारा। २ पारे के योग से बनी औषधि। ३ रसांजन, रसौत। ४ साहित्य में शृंगार रस। ५ रतिफल।

रसरी–स्त्री० [सं० रसना] डोरी, रस्सी।

रसळ–स्त्री० छत पर मुरब्ब (चिकनी मिट्टी) जमाने की क्रिया।

रसवंत, रसवत–वि० [सं० रसवत्] (स्त्री० रसवंती) १ रसदार, रस से पूर्ण। २ स्वादिष्ट, जायकेदार। ३ भोगा हुआ, नम, तर। ४ मनोहर, सुन्दर, मनोज्ञ। ५ भाव पूर्ण। ६ प्रीति पूर्ण, प्रेममय। ७ प्रेमी, रसिक। ८ रसज्ञ। ९ दिलचस्प, आकर्षक।

रसवतमन–पु० सुन्दर।

रसवति, रसवती–स्त्री० [सं०] १ रसोईघर, पाकशाला। २ खाद्य सामग्री, भोजन। ३ पकाया हुआ भोजन। ४ शाक सब्जी। ५ पृथ्वी, धरा, धरती। ६ रामबेलि नामक लता। ७ सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी। –वि० १ रस भरी, रस पूर्ण। २ रसीली, रंगीली। ३ रमणी, सुन्दरी, प्रिया। ४ स्वादिष्ट, रुचिकर। ५ दिलचस्प।

रसवतीकरम–पु० [सं० रसवतीकर्म] १ भोजन बनाने की क्रिया। २ बहत्तर कलाओं में से एक।

रसवतीग्रह–पु० [सं० रसवतीगृह] पाकशाला, रसोईघर।

रसवत्ता–स्त्री० १ रसीलापन, स्वाद। २ मीठास। ३ सुन्दरता। ४ प्रसन्नता।

रसवान–पु० [सं० रसवान्] रस या स्वाद युक्त पदार्थ। –वि० रसदार, रसवाला।

रसवाद–पु० [सं०] १ रस प्रधान काव्य या साहित्य। २ रस की बात। ३ छेड़-छाड़। ४ बहत्तर कलाओं में से एक।

रसवायो–वि० (स्त्री० रसवायी) १ उमंग या जोश युक्त, उत्साहित। २ प्रसन्न, हर्षित।

रसवाळो–वि० [सं० रस-आलय] (स्त्री० रसवाळी) १ रसों से पूर्ण। २ जायकेदार, स्वादिष्ट। ३ दिलचस्प। ४ मधुर।

रसवाह–पु० ढगण के प्रथम भेद का नाम।

रसविरोध–पु० [सं० रसविरोध] वे विभिन्न रस जिनका मेल उचित नहीं माना जाता है।

रसविलास–पु० [सं०] रतिक्रीड़ा, मैथुन।

रसवीर–देखो 'वीररस'।

रसवेता, रसवेत्ता–वि० [सं०] रस मर्मज्ञ, रसज्ञ।

रसवेलि–स्त्री० रस की बेल, लता।

रससंस्कार–पु० पारे का संस्कार (वैद्यक)।

रससागर–पु० १ सात समुद्रों में से एक। २ प्रेम का सागर।

रससात–पु० दूध, दुग्ध।

रससार–पु० १ शहद, मधु। २ विष, जहर।

रससिंगार–पु० शृंगार रस। –वि० मधुर।

रससिंदूर–पु० [सं०] पारे के योग से बनी औषधि। (वैद्यक)

रससिंधु–देखो 'रससागर'।

रससिद्धि, रससिद्धी–स्त्री० [सं०] १ रसायन विद्या में कुशलता निपुणता। २ औषधि बनाने की सफलता।

रससेव–पु० बलराम का एक नामान्तर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसांण–क्रि०वि० १ उचित ढंग पर, उपयुक्त स्थिति में, सही रास्ते पर। २ देखो 'रसायण'। ३ ठीक ढंगसे,अच्छी तरह।

रसांणी–स्त्री० रसायन विद्या। –वि० रसज्ञ।

रसांमणा–स्त्री० [सं० रश्मि] सूर्य किरण, रश्मि।

रसा–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी,धरती, धरा। २ दुनिया, जगत, ससार। ३ जिह्वा, जीभ। ४ रसातल, पाताल। ५ नरक। ६ वेग, गति। ७ देखो 'रस'।

रसाइण (न)–देखो 'रसायण'।

रसाई–स्त्री० [फा०] १ पहुंच, क्षमता। २ सुलह, संधि।

रसाउलु–देखो 'रसवालो'।

रसागर–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

रसाणो (बो)–क्रि० १ पानी आदि द्रव को धीरे-धीरे बहाना। २ टपकाना, चुआना। ३ रसयुक्त करना, स्वादिष्ट बनाना ४ आसक्त, अनुरक्त करना। ५ प्रसन्न करना, खुश करना। ६ वश मे करना, अधिकार में करना। ७ रसास्वादन कराना, चखाना। ८ शोरगुल कराना, बोलाना। ९ ध्वनि कराना।

रसातळ, रसातळि–पु० [सं० रसातल] १ पृथ्वी के नीचे का एक लोक। २ पाताल। ३ अधोलोक। ४ अधोगति, नाश, पतन। ५ पृथ्वी, भूमि, धरती।

रसादार–वि० रसदार, रसवाला।

रसाधार–पु० [सं०] १ सूर्य, रवि। २ शेषनाग।

रसाधी–स्त्री० पृथ्वी, धरती माता। मातृभूमि।

रसापत, रसापति–पु० [सं० रसापति] राजा, नृप।

रसाभाव–पु० [सं०] १ रस का अभाव। २ मन-मुटाव।

रसाभास–पु० [सं०] किसी कविता या लेख में किसी रस की होने वाली अनुभूति।

रसायक–देखो 'रसायण'।

रसायण–पु० [सं० रसायन] १ पारे के योग से बनी औषधि। २ तांबे से सोना बनाने की एक कल्पित विधि। ३ धातुओं की भस्म बनाने की विधि। ४ रस या आनन्ददायक बात या विषय। ५ इच्छित सिद्धि, मनोकामना की पूर्ति। ६ परिपक्वावस्था। ७ रस काव्य। ८ मधुर पेय, रस। ९ उत्तम खाद्य पदार्थ। १० कटि, कमर। ११ गरुड़ पक्षी। १२ बहत्तर कलाओं में से एक।

रसायणज्ञ–वि० [सं० रसायनज्ञ] रसायन बनाने की विधि का जानकार, वैद्य।

रसायणविज्ञान–पु० [सं०] विभिन्न पदार्थों के गुण-दोष बताने तथा परस्पर सम्बन्ध व प्रतिक्रियाएँ आदि का विवेचन करने वाला शास्त्र या सिद्धांत।

रसायणसास्त्र–पु० [सं०] विभिन्न प्रकार की रस औषधियों की विधियां बताने वाला शास्त्र। विज्ञान।

रसायणी–वि० [सं०] १ कोई रासायनिक औषधि। २ ऐसी औषधि बनाने की विद्या। ३ इस विद्या का जानकार वैद्य

रसायन–देखो 'रसायण'।

रसायनचवणा (ना)–स्त्री० बहत्तर कलाओं में से एक।

रसायनसास्त्र–देखो 'रसायणसास्त्र'।

रसायनी–देखो 'रसायणी'।

रसाळ, रसाल–वि० [सं०रस+आलय] १ रसयुक्त, रसमय। २ मीठा, मधुर। ३ ठण्डा,शीतल। ४ सुन्दर,मनोहर, मोहक, ५ प्रिय, प्यारा। ६ फलदायक। ७ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल। ८ जोश पूर्ण। ९ रसिक, प्रेमी। १० आनन्ददायक। –पु० १ रसमय वस्तु पदार्थ। २ आम, सेब, आदि फल। ३ ऋतु फल। ४ गन्ना। ५ कटहल। ६ कंदुर, तृण। ७ बोलसर नामक गंध द्रव्य। ८ आमलबेत। ९ हल्दी। १० गेहूं। ११ वनस्पती विशेष। १२ एक छन्द विशेष। १३ एक वर्णिक छन्द विशेष। [अ० इसति, इरसाल] १४ भेंट, सौगात। १५ कर, महशूल, लगान।–दार–वि० रसयुक्त, रसदार।

रसाळू, रसालु, रसाळो, रसालो–१ देखो 'रिसालो'। २ देखो 'रसवाळो'।

रसावळ–पु० १ एक मात्रिक छन्द विशेष। २ देखो 'रसाळ'।

रसास्वादी–वि० [सं० रसास्वादिन] १ रस का स्वाद या मजा लेने वाला। २ किसी विषय का आनन्द लेने वाला। ३ रसिक, रसिया।

रसि–१ देखो 'रस'। २ देखो 'रसी'। ३ देखो 'रस्सी'।

रसिक–वि० [सं०] (स्त्री० रसिका) १ किसी विषय का मर्मज्ञ, काव्य मर्मज्ञ। २ गुणग्राही। ३ रसपान करने वाला ४ विलास प्रिय। ५ मौजी, विनोदी। ६ रस लोलुप, लपट। ७ भावुक, सहृदय। ८ रसयुक्त, रसमय। ९ स्वादिष्ट जायकेदार। १० सुन्दर, मनोहर। –पु० १ प्रेमी, प्रिय व्यक्ति। २ सारस पक्षी। ३ घोड़ा, अश्व। ४ हाथी, गज। ५ एक छन्द विशेष।

रसिकता–स्त्री० [सं०] १ रसिक होने की अवस्था या भाव। २ मौज, मस्ती। ३ परिहास, हंसी, आनन्द। ४ सुंदरता, मनोहरता।

रसिकबिहारी–पु० [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

रसिका–स्त्री० १ एक छन्द विशेष। २ रमण करने योग्य स्त्री।

रसिकेस्वर–पु० [सं० ऋषिकेश्वर] श्रीकृष्ण।

रसियापण (पणो)–पु० १ रसिक होने की अवस्था या भाव। २ रसिकता, विलासिता, मौज, मस्ती। ३ रसिक होने का गुण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसियो-वि० [सं० रसिक] १ आनन्द या रस लेने वाला रसिक २ रसज्ञ, मर्मज्ञ। ३ शौकीन, किसी कार्य का विशेष शौकीन ४ रतिक्रीड़ा का लोलुप, कामी, विलयी। ५ वेश्यागामी। ६ विनोदी, मनोरंजक। ७ मस्त, मौजी। ८ प्रिय, प्यारा। -पु० १ पति, प्रियतम। २ एक लोकगीत विशेष।

रसो-स्त्री० १ घाव या फोड़े में होने वाला मवाद। २ देखो 'रस्सो'

रसीद-स्त्री० [फा०] १ रुपये जमा कराने या देने के बदले में दी जाने वाली पर्ची, पहुंच, प्राप्ति, पावती। २ इस पर्ची में लिखी जाने वाली इबारत।

रसीलो-पु० प्रेमी।

रसीयो-देखो 'रसियो'।

रसील-वि० १ रसयुक्त, रसदार। २ मीठा, मधुर।

रसीलगो-वि० (स्त्री० रसीलणी) प्रेम या आनन्द में मग्न रहने वाला।

रसीलापण(पणो)-पु० १ रसयुक्त होने की अवस्था। २ रसिकता। प्रियता। ३ विलासप्रिय या कामुक होने की अवस्था। ४ मीठास, मधुरता।

रसीलो-वि० (स्त्री० रसीली) १ रसयुक्त, रसमय। २ स्वादिष्ट जायकेदार। ३ मधुर। ४ दिलचस्प, मजेदार। ५ आनन्ददायक। ६ विलास प्रिय. कामुक। ७ बांका छबीला। ८ सुन्दर, मनोहर, कमनीय। ९ नाजुक कोमल। १० प्रियतम, प्रेमी। रसिक। ११ रसज्ञ, रस मर्मज्ञ। १२ सारयुक्त।

रसूक-पु० संबंध, व्यवहार। सम्पर्क।

रसूगाळ-पु० १ पशुओं के जुगाली करते समय खाद्य पदार्थ का रस मुंह से बाहर गिरने का एक रोग। २ इस रोग से पीड़ित पशु।

रसूल-पु० [अ०] १ ईश्वर का दूत। २ ईश्वर का अवतार। ३ पैगंबर। ४ ईश्वर।

रसेंद्र-पु० [सं०] पारा।

रसेश्वर-पु० १ पारा, पारद। २ छः दर्शनों से अलग एक अन्य दर्शन।

रसोइ-देखो 'रसोई'।

रसोइयो-पु० १ भोजन बनाने वाला, बावर्ची। २ पाक शास्त्री, कंडोई।

रसोई-स्त्री० [सं० रसवती] १ भोजन के रूप में बनने वाली सामग्री, खाना, भोजन। २ नित्य भोजन बनाने व भोजन सामग्री रखने का स्थान, कक्ष, पाकशाला। ३ देव मंदिर, ब्राह्मण आदि को दी जाने वाली सूखी भोजन सामग्री, आटा, दाल आदि। ४ रामद्वारा या मठ में रहने वाले साधुओं को दिया जाने वाला भोज।—घांनी, घर-पु० भोजन बनाने का कक्ष, पाकशाला।—वार-पु० बावर्ची, पाकशास्त्री, रसोइया।—वारी-स्त्री० भोजन बनाने का कार्य। भोजन बनाने का व्यवसाय या वृत्ति।

रसोईबरदार-पु० [फा०] खाना लेजाने वाला व्यक्ति।

रसोईयो-देखो 'रसोइयो'।

रसोगाळ-देखो 'रसूगाळ'।

रसोड़वार-देखो 'रसोईदार'।

रसोड़ो-देखो 'रसोई'।

रसोन-पु० [सं०] लहसुन।

रसोपल-पु० [सं०] मोती।

रसोयोईस-पु० पाकशाला का अधिकारी। रसोई दारोगा।

रसोलो-स्त्री० १ घोड़ों का एक रोग। २ कान में होने वाला एक फोड़ा। ३ आंख का एक रोग। ४ शरीर में होने वाली कोई ग्रंथि।

रसोवड़, रसोवड़ो-देखो 'रसोई'।

रसोत-देखो 'रसोत'।

रसो-पु० [सं० रस] १ गुड़ आदि का मीठा पानी, रस। २ जूस, शोरबा। ३ रस्सो। ४ देखो 'रसोई'।

रसौड़ो-देखो 'रसोई'।

रसौलो-देखो 'रसोलो'।

रस्त-देखो 'रसद'।

रस्तागीर-देखो 'रास्तागीर'।

रस्तो-देखो 'रास्तो'।

रस्म-१ देखो 'रसम'। २ देखो 'रश्मि'।

रश्मि-स्त्री० [सं० रश्मि] १ किरण, रश्मि। २ आभा, कांति दीप्ति। ३ प्रकाश। ४ बागडोर, लगाम। ५ रस्सी, डोरी। ६ अंकुश। ७ चाबुक।

रस्य-वि० [सं०] १ रसवाला, रसदार। २ रसीला।—पु० १ रक्त, खून। २ शरीर का मांस। ३ रहस्य।

रस्स-देखो 'रस'।

रस्सण-देखो 'रसना'।

रस्सम-देखो 'रसम'।

रस्सो-स्त्री० [सं० रसना] १ सूत, मूंज आदि की डोरी, रज्जू। २ घोड़ों की एक बीमारी। ३ देखो 'रसी'।

रस्सो-पु० [सं० रसना] १ सूत, मूंज, पशु चर्म आदि का मोटा व लम्बा डोरा, रस्सा, बंधन, पाश। २ घोड़ों की एक बीमारी। ३ देखो 'रसी'।

रहंचणो (बो)-देखो 'रहचणो' (बो)।

रहंतणो (बो)-क्रि० संहार करना, मारना।

रहंम-१ देखो 'रहम'। २ देखो 'रहीम'।

रह-पु० [सं० रथ] १ रथ। २ एकान्त। ३ प्रेम, नेह। ४ देखो 'राह'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहकळी–देखो 'रंकली' ।

रहवकणी (बो)–क्रि० गाया जाना, गाना ।

रहवणी (बो)–क्रि० १ लूटमार करना, लूटना । २ जीतना अधिकार में करना ।

रहवू–देखो 'रहडू' ।

रहव–देखो 'रहवण' ।

रहवक (क्क)–पु० युद्ध, लड़ाई ।

रहवड–स्त्री० तेज दौड़, गति ।

रहवण–स्त्री० १ संहार, नाश । २ कष्ट, दुःख, विपत्ति ।—वि० मारने वाला ।

रहवणी (बो)–क्रि० १ मार-काट करना, संहार करना । २ मारना । ३ पराजित करना, हराना । ४ वीर गति प्राप्त होना, जूझकर मरना । ५ युद्ध करना ।

रहवाणी (बो), रहवावणी (बो)–क्रि० १ संहार कराना, मार-काट कराना, मरवाना । २ पराजित कराना, हराना । ३ वीर गति दिलाना ।

रहव्वक, रहव्वक्क–देखो 'रहवक' ।

रहव्वण–देखो 'रहवण' ।

रहव्वणी (बो)–देखो 'रहवणी' (बो) ।

रहछह–स्त्री० महफिल, गोष्ठी ।

रहट–देखो 'अरट' ।

रहडण–वि० रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला ।

रहडणी (बो)–क्रि० १ रोकना, अवरुद्ध करना । २ तहस-नहस करना ।

रहडू, रहडूओ–पु० १ भार लादने की गाड़ी विशेष । शकट । २ बैलों को प्रशिक्षित करने निमित्त बनाया गया वाहन विशेष । ३ छोटे बच्चों को पैरों से चलना सिखाने निमित बनाया गया तीन पहियों का खिलौना ।

रहण–पु० १ घर, गृह, आवास । २ निवास, रहना क्रिया । –वि० १ रहने वाला । २ देखो 'रहणी' ।

रहणाक–पु० गृह, सदन, घर ।

रहणि, रहणी–स्त्री० [सं० रह] १ रहने की क्रिया या भाव । २ रहने का ढंग, तौर, तरीका । ३ जीवन निर्वाह, व्यवहार, आचरण । ४ आचरण के सिद्धान्त । ५ आवास, निवास, ठहराव । ६ निष्ठा, श्रद्धा ।

रहणी (बो)–क्रि० १ एक ही स्थिति में अवस्थान होना, रहना । स्थाई निवास करना । २ कहीं ठहरना, टिकना, विश्राम करना । ३ चलते हुए रुकना, जाते हुए ठहरना । ४ कम का रुकना, ठहरना । ५ बसना । ६ वर्त्तमान या मौजूद होना । ७ स्थित होना, स्थापित होना । ८ आधारित होना । ९ विशेष स्थिति में होना । १० सम्पर्क में आना, साथ रहना । ११ जीवन यापन करना, जीवित रहना । १२ बचना, शेष रहना, अवशिष्ट रहना । १३ छूट जाना, पीछे रहना । १४ काम पर लगना, नौकर रहना । १५ शांति से बैठना । १६ किसी कार्य में संलग्न होना । १७ होना ।

रहत–देखो 'रहित' ।

रहतिका–स्त्री० प्रथा, परम्परा, रीति, रिवाज, रूढ़ि ।

रहती–वि० १ रहने वाला, । २ अमिट, स्थाई ।

रहन, रहनी–देखो 'रहणी' ।

रहम–पु० [अ०] कृपा, अनुग्रह, दया ।

रहमत, रहमति–स्त्री० [अ० रहमत्त] दया, करुणा ।

रहमदिल–वि० [अ०] दयालु, कृपालु । दया करने वाला ।

रहमदिली–वि० [अ०] १ कृपा या दया करने की क्रिया या भाव । २ दया तरस, करुणा ।

रहमाण, रहमान–वि० [अ० रहमान] दयालु, कृपालु, मेहरबान । –पु० ईश्वर, परमात्मा, खुदा ।

रहमाणघंस–पु० ईश्वर का अंश ।

रह-रह–अव्य० रुक-रुक कर ।

रहरू, रहरू–पु० रक्त, खून ।

रहळ, रहल, रहळि, रहळी–स्त्री० [अ०] १ पुस्तक रखने का एक आधार या स्टेण्ड । २ मंद व ठण्डी हवा का झोंका, लहर ।

रहळू, रहळू–वि० खाली, रिक्त ।

रहवइ–पु० [सं० रथपति] रथ में बैठने वाला, रथ का पति ।

रहवणी (बो)–देखो 'रहणी' (बो) ।

रहवर–पु० [सं० रथ वर] उत्तम रथ, सुन्दर रथ ।

रहवाण–देखो 'रहाण' ।

रहवाळ–स्त्री० [फा० रहवार] घोड़े की एक चाल विशेष ।

रहवास–पु० १ रहने की क्रिया या भाव, निवास । २ विश्राम, ठहराव । ३ मकान, घर । ४ रहने का स्थान, निवास स्थान । ५ निजी कक्ष । ६ अन्तः पुर, रनिवास ।

रहवासि, रहवासी–पु० १ रहने वाला, निवासी । २ देखो रहवास ।

रहस–१ देखो 'रहसि' । २ देखो 'रहस्य' ।

रहसणी (बो)–देखो रहवणी' (बो) ।

रहसि (सी)–पु० [सं० रहस्] १ संभोग, मैथुन । २ रहस्य ।

रहस्य–पु० [सं०] १ गुप्त बात, भेद, गुप्त सूचना । २ छिपी हुई कोई गूढ या सूक्ष्म बात । ३ मर्म, तत्व । ४ गुप्त सिद्धांत या विषय । ५ ईश्वर संबंधी सूक्ष्म ज्ञान । ६ एक तांत्रिक प्रयोग । ७ रति क्रीड़ा ।—मंदिर-पु० केलिगृह, रंगमहल ।

रहस्स, रहस्सी–१ देखो 'रहस्य' । २ देखो 'रहसि' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहां, रहाण-पु० १ गांव के बीच की चौपाल, बैठक, मोहल्ले के बीच बैठने का स्थान । २ देखो 'रहणी' ।

रहा-स्त्री० श्रवणेन्द्रिय कान ।

रहाड़णो (बो)-देखो 'रहाणो' (बो) ।

रहाणो (बो)-क्रि० १ एक ही स्थिति में अवस्थान कराना । स्थाई निवास कराना । २ कहीं ठहराना, टिकवाना, विश्राम कराना । ३ चलते को रोकना, ठहराना । ४ क्रम रोकना । ५ जमाना । ६ स्थित या स्थापित करना । ७ आधारित करना । ८ किसी विशेष अवस्था में रखना । ९ सम्पर्क कराना, साथ कराना । १० जीवन यापन कराना, जीवित रखना । ११ बचाना, शेष रखना । १२ पीछे छोड़ देना । १३ काम पर लगाना । १४ शांत बैठाना । १५ कार्य में संलग्न करना । १६ कुछ करना ।

रहावण-स्त्री० १ रहने की क्रिया या भाव । २ रहने का ढंग, तरीका । ३ सभा, बैठक ।-वि० १ रहने वाला, रहने योग्य । २ रखने वाला । ३ देखो 'रहाण' ।

रहावणो-वि० रखने वाला ।

रहावणो (बो)-देखो 'रहाणो' (बो) ।

रहास-देखो 'रहवास' ।

रहिचणो (बो)-देखो 'रहचणो' (बो) ।

रहिणि, रहिणी-देखो 'रहणी' ।

रहित-वि० [सं०] १ हीन, विहीन । २ बगैर, बिना । ३ अभाव पूर्ण, अपूर्ण । ४ पृथक, अलग, मुक्त । ५ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, त्यक्त । ६ निर्जन । ७ अकेला ।

रहिमाण-देखो 'रहमाण' ।

रहिय-देखो 'रहित' ।

रहिल-देखो 'रहळ' ।

रहिस-देखो 'रहस्य' ।

रहीम-पु० [अ०] १ परमात्मा, ईश्वर, खुदा । २ बादशाह अकबर एक मंसबदार व कवि ।-वि० दयालु, कृपालु ।

रहीस-देखो 'रईस' ।

रहूगाळ, रहोगाळ-देखो 'रसूगाळ' ।

रां-देखो 'रा' ।

रांहणि (णी)-देखो 'रांयण' ।

रांक, रांकड़ो-वि० [सं० रंक] १ कायर, डरपोक । २ रंक ।

रांकावत-पु० वैष्णवों साधुओं की एक शाखा व इस शाखा के साधु ।

रांम-स्त्री० १ मकान या इमारत आदि की नींव । २ दरार । ३ बबूल या बेर वृक्ष की छाल । ४ बेर का वृक्ष । ५ देखो 'रान' ।

रांमड़, रांमड़ियो, रांमड़ो-पु० १ पाड़ा, भैंसा । २ रांपा के बर्तन बनाने वाला सुनार । ३ देखो 'रंमड़' ।

रांमड़पण (पणो)-पु० वीरत्व, योद्धापन ।

रांमखड़-स्त्री० बेर वृक्ष की जड़ ।

रांमणवाय-स्त्री० [सं० रिम] शरीर के अधोभाग में होने वाला एक वात रोग ।

रांमरंगीलो-देखो 'रंगरंगीलो' । (स्त्री० रांमरंगीली) ।

रांमलो-वि० रंगदार, रंगीन ।

रांमै-क्रि० वि० १ सही रास्ते पर, ठीक-ठिकाने । २ सामान्य दशा में ।

रांमो-पु० [सं० रंग] एक धातु विशेष, जस्ता ।

रांमड़, रांमड़ो-१ देखो 'रंमड़' । २ देखो 'रांगड़ो' ।

रांवणो (बो)-क्रि० १ खड़े-खड़े तकना, लालायित होना, ललचायी नजरों से देखना । २ ताक लगाना, घात लगाना । ३ ध्यान रखना, ध्यान देना । ४ देखो 'राचणो' (बो) ।

रांसट-पु० विवाद, झगड़ा, तकरार ।

रांझो-पु० १ विघ्न, व्यवधान । २ अड़चन, बाधा । ३ समस्या, उलझन ।

रांटलो, रांटो-वि० (स्त्री० रांटी) १ मुड़ा हुआ, टेढ़ा । २ टंटा फिसाद करने वाला, झगड़ियल ।

रांड-स्त्री० [सं० रण्डा] १ विधवा स्त्री, पति विहीना । २ वेश्या, रण्डी । ३ व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री । ४ गाली, अपशब्द । ५ एक गाथा छन्द विशेष ।

रांडणो(बो), रांडावणो (बो)-क्रि० [सं० रण्डा] किसी स्त्री के पति को मारना, विधवा करना ।

रांडापो-देखो 'रंडापो' ।

रांडियो-वि० १ विधुर, बिना स्त्री का । २ स्त्री-लोलुप । ३ स्त्रियोचित स्वभाववाला । ४ कायर, नामर्द ।

रांडो-देखो 'रांड' ।

रांडोरांड-स्त्री० विधवा स्त्री ।

रांडीरोणो (बो), रांडीरोवणो (बो)-क्रि० स्त्रियों की तरह हर छोटी-मोटी बात पर बकना, टांय-टांय करना ।

रांडेपो-देखो 'रंडापो' ।

रांडोलियो, रांडोलो, रांडोल्यो-वि० १ स्त्रियों के से स्वभाव वाला । स्त्रियों के संग रहने वाला । २ विधुर, बिना स्त्री का ।

रांडोली-देखो 'रांड' ।

रांदु, रांदू-पु० मोटा रस्सा ।

रांण-पु० [सं० राट] १ राजा, नृप । २ रावण, दशानन । ३ स्वामी, मालिक । ४ देखो 'रांणो' ।

रांणखमाण, रांणखुमाण-पु० छोटे-बड़े जलाशय ।

रांणदे-स्त्री० सूर्य देव की स्त्री ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रांणपर–पु० एक प्राचीन नगर विशेष ।

रांणबांण–वि० १ निपुण, दक्ष । २ चतुर, बुद्धिमान । ३ दृढ, पक्का । ४ पूर्ण स्वस्थ ।

रांणवाळी–वि० १ महाराणा संबंधी, महाराणा के योग्य । २ रावण का, रावण संबंधी ।

रांणा–स्त्री० [सं० राट] १ भिन्न-भिन्न राजवंशों का उपटंक, उपाधि । २ ढोलियों के लिए सम्मान सूचक शब्द । ३ देखो 'रांना' ।

रांणाई–स्त्री० १ 'रांणा' की उपाधि । २ 'रांणा' का पद, इस पद पर होने की अवस्था । ३ इस पद का गौरव । ४ राज्यत्व, शासन ।

रांणादे–देखो 'रांणदे' ।

रांणापण (पणो)–पु० १ वीरता, बहादुरी । २ राणा की पदवी, उपाधि ।

रांणापति–पु० सूर्य का एक नाम ।

रांणाराव–पु० १ महाराणा । २ श्रेष्ठ पुरुष ।

रांणिम–स्त्री० राज्यत्व ।

रांणी–स्त्री० [सं० राज्ञी] १ किसी राजा की पत्नी, रानी । २ स्त्री के चित्र वाला ताश का पत्ता । ३ स्वामिनी, मालकिन । ४ वर्षा ऋतु में होने वाला एक कीड़ा विशेष । —जणियो, जायो–पु० रानी का पुत्र, राजकुमार । क्षत्रिय । —पद, पदो–पु० रानी होने की अवस्था, रानी का अधिकार ।

रांणीमणभट–पु० केवल रानियों की नामावली लिखने वाले भाट, भाटों की एक शाखा ।

रांणेराव–पु० महाराणा ।

रांणेस–पु० राजाओं में श्रेष्ठ, राजेश, महाराणा ।

रांणोरांण–पु० प्रमुख व प्रतिष्ठित व्यक्तियों का समूह । –वि० समस्त, सब । २ शुरु से अन्त तक ।

रांणो–पु० [सं० राट्] (स्त्री० रांणी) १ 'राणा' पदवी वाले राजवंश का राजा । २ उदयपुर के राजा की उपिधि । ३ उदयपुर का राजवंश । ४ उदयपुर का राजा, महाराणा । ५ राजा, नृप । ६ रावण, दशानन । ७ नक्कारची, ढोली ।

रांणोरांण–देखो 'रांणोरांण' ।

रांतो–वि० पतला-दुबला, क्षीण-काय, कृशतन ।

रांधण–पु० १ पकाने की क्रिया या विधि । २ पकाने का सामान । ३ पका हुआ खाना । ४ देखो 'रंधीण' ।

रांधणछठ–स्त्री० भादव शुक्ला षष्ठी ।

रांधणां-सीधणां–पु० भोजन सामग्री, भोज्य पदार्थ ।

रांधणो (णो)–क्रि० [सं० रंधन] १ खिचड़ी, चावल आदि पकाना । २ खाना पकाना । ३ कष्ट देना, तंग करना ।

रांन–स्त्री० [फा० रान] १ जंघा, जांघ । [सं० अरण्य] २ वन, जंगल । ३ देखो 'रांण' ।

रांनळ,रांना, रांनिळ, रांनिल्ळ–स्त्री०सूर्य की पत्नी ।—पत, पति, पती–पु० सूर्य, भानु —वर, सुवर–पु० सूर्य, रवि ।

रांनुड़ो–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

रांप–स्त्री० जल सूखने पर जलाशय में दिखने वाली चिकनी मिट्टी की परत ।

रांपलो, रांपो–वि० वात रोग से अशक्त पैर वाला ।

रांपो–स्त्री० मोचियों का एक औजार विशेष ।

रांफळ–स्त्री० १ लोगों की भगदड़ । २ लड़ाई, फिसाद ।

रांफळणो (णो)–देखो 'आफळणो' (णो) ।

रांभणो (णो)–देखो 'रंभाणो' (णो) ।

रांमस–स्त्री० एक प्रकार की घास ।

राम–पु० [सं० राम] १ ईश्वर, परमात्मा । २ ब्रह्म । ३ विष्णु का एक नामान्तर । ४ राजा दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र । ५ बलराम का एक नामान्तर । ६ परशुराम । ७ श्रीकृष्ण, श्याम । ८ घोड़ा । ९ एक मृग विशेष । १० सार, तत्त्व । ११ ईमान । १२ शक्ति, सामर्थ्य । १३ योग्यता । १४ खुद के लिये एक सम्बोधन । १५ वरुण । १६ अशोक वृक्ष । १७ हरीतकी, हरड़े । १८ एक मात्रिक छन्द विशेष । १९ देखो 'रामदेव' ।—वि० १ सुन्दर, मनोहर, अभिराम । २ हर्षप्रद, आनन्ददायक । ३ श्वेत, सफेद । ४ कृष्ण, श्याम ।—कचेड़ी–स्त्री० ईश्वर का न्यायालय ।—जन–पु० ईश्वर के भक्त, साधु, संत ।—जनणी–स्त्री० माता कौसल्या ।—प्रिया–स्त्री० श्री, सीता ।—बांम–स्त्री० श्री, सीता ।— भक्त–पु० हनुमान, बजरंग ।—बीज–पु० हनुमान का एक नामान्तर ।—मंत्र–पु० 'रां रामाय: नमः' नामक मंत्र ।— राज, राज्य–पु० श्रीरामचन्द्र का शासन, राज्य । श्रीराम के शासन की अवधि । आदर्श व सुखदायी शासन । —लीला–स्त्री० श्रीराम के चरित्र का अभिनय । रामायण संबंधी नाटक या खेल । ईश्वर की माया, लीला । —सखा–पु० सुग्रीव ।

रांमअजीर–पु० पाकर वृक्ष ।

रांमअजवांण–पु० अजवांण की गंध वाला एक पौधा विशेष ।

रांमदेओ (ओ)–पु० १ रुणिचा का रामदेव पीर । २ देखो 'राम' ।

रांमकळी–स्त्री० भैरव राग की स्त्री एक रागिनी ।

रांमकी–स्त्री० किसी साधु की शिष्या ।

रांमकेळी–पु० १ एक प्रकार का केला । २ आम की एक जाति ।

रांमक्षेत्र–पु० दक्षिण का एक प्राचीन तीर्थ ।

रामखंड–पु० एक तीर्थ विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रामगंगा–स्त्री० कन्नौज की एक नदी।

रामगिरि–पु० १ नागपुर के पास का एक पहाड़। २ एक राग विशेष।

रामगीता–स्त्री० १ एक मात्रिक छन्द विशेष। २ वेदान्त का एक ग्रंथ।

रामड़ो–देखो 'राम'।

रामचंग, रामचंगा, रामचंगी (य)–स्त्री० १ एक प्रकार की बन्दूक। २ एक प्रकार की तोप।

रामचंद, रामचंद्र, रामचंद्रेस–पु० [सं० रामचन्द्र] १ सूर्यवंशीय राजा दशरथ के बड़े पुत्र। २ ईश्वर, परमात्मा।

रामचरण–पु० शाहपुरा के रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रवर्तक।

रामचरितमानस–पु० गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामायण।

रामचिड़ी–स्त्री० एक प्रकार का जल पक्षी।

रामजणी (नी)–स्त्री० १ हिन्दू वेश्या, रंडी। २ वह स्त्री जिसके पति का पता न हो।

रामजयंती–स्त्री० [सं० रामजयन्ती] रामनवमी।

रामजांमुन–पु० एक प्रकार का जामुन।

रामजी–देखो 'राम'।

रामजोरीगाय–स्त्री० वीर बहूटी।

रामजोत, रामजोती–स्त्री० [सं० रामज्योति] १ ब्रह्म की ज्योति, प्रकाश। २ मोक्ष, मुक्ति।

रामझारी, रामझारो–पु० लंबी टूंटी का एक जल-पात्र विशेष।

रामटेक, रामटेकरी–देखो 'रामगिरि'।

रामण–देखो 'रावण'।

रामणखंड, रामणखंडी–देखो 'रावणखंडी'।

रामणगढ़–देखो 'रावणगढ़'।

रामणगांजी–पु० एक प्रकार का भाला, शैल।

रामणरिप (रिपु)–देखो 'रावणरिपु'।

रामणहत्थो (हत्थियो, हत्थी)–पु० [सं० रावण-हस्त] एक प्रकार का तार वाद्य।

रामणारि–देखो 'रावणारि'।

रामणी (णो)–देखो 'रमणी' (णी)।

रामत–स्त्री० [सं० रम्यति] १ क्रीड़ा, खेल। २ मनोविनोद। ३ हंसी, मजाक, ठिठोली ४ अभिनय, नाटक। ५ तमाशा खेल। ३ परिभ्रमण, देशाटन। ७ नौटंकी का खेल। ८ द्यूत क्रीड़ा, खेल।

रामतरुणी–स्त्री० [सं०] १ श्रीराम की पत्नी, सीता। २ सफेद गुलाब, सेवती।

रामतारक–पु० [सं० रामतारक] 'रां रामाय नमः' मंत्र।

रामति (ती)–देखो 'रामत'।

रामतियो–पु० १ खेलने का उपकरण, खिलौना। २ योनि, भग।

रामतीरथ–पु० [सं० रामतीर्थ] रामगिरि नामक तीर्थ।

रामतोरइ (ई)–स्त्री० भिंडी नामक फली जिसकी सब्जी बनती है।

रामदळ–पु० [सं० रामदल] १ श्रीराम की वानर सेना। २ कोई विशाल सेना।

रामदवाई–देखो 'रामदुहाई'।

रामदवारो–पु० [सं० राम-द्वारा] रामस्नेही साधुओं का निवास स्थान, मकान या आश्रम।

रामदास–पु० [सं० रामदास] १ श्रीराम भक्त हनुमान। २ शिवाजी के गुरु, समर्थ गुरु रामदास। ३ रामस्नेही सम्प्रदाय (सेड़ापा) के प्रसिद्ध महात्मा।

रामदुहाई, रामदुवाई (दुहाई)–स्त्री० १ राम या ईश्वर की शपथ, सौगंध। २ राम-नाम की दुहाई।

रामदुवारो–देखो 'रामदवारो'।

रामदूत–पु० [सं० राम-दूत] हनुमान, बजरंग।

रामदे, (दे)–देखो 'रामदेव'।

रामदेरो–देखो रामदेवरो'।

रामदेव–पु० १ पश्चिमी राजस्थान (पोकरण क्षेत्र) के तुंवर क्षत्रीय वंशीय सिद्ध पुरुष जो पीर माने जाते हैं। रामदेव। २ उक्त पुरुष की प्रशस्ति में गाया जाने वाला एक लोक गीत। ३ इस सिद्ध के नाम का सम्प्रदाय विशेष। ४ श्रीरामचन्द्र।

रामदेवरो रामदेवरो–पु०१ रामदेव सिद्ध की समाधि पर बना मंदिर, देवालय। समाधिस्थल। २ रुणेचा गांव का नाम।

रामद्वारो–देखो 'रामदवारो'।

रामधरम (धम)–पु० १ ईश्वर को साक्षी बनाने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ मर्यादा में रहने की दशा। ३ ईमान।

रामधाम–पु० १ साकेतधाम, अयोध्या। २ वैकुण्ठ।

रामनम (नमी, नवमी)–स्त्री० [सं० राम नवमी] चैत्र शुक्ला नवमी तिथि। पर्व दिन।

रामनामी–स्त्री० १ रामनाम अंकित वस्त्र, दुपट्टा या चादर। २ गले का स्वर्णहार विशेष। ३ आभूषणों की खुदाई का ओजार विशेष।

रामनोमी, रामनौमी,–देखो 'रामनवमी'।

रामपद–पु० मोक्ष, मुक्ति।

रामपयोध (धि)–पु०[सं० रामपयोधि] राम के यश का समुद्र।

रामपुर–पु० १ अयोध्या नगरी। २ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

रामपुरा–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

रामपुरी–स्त्री० १ अयोध्या नगरी। २ स्वर्गलोक, वैकुण्ठ। ३ एक प्रकार की तलवार।

रामपुरीकत्ती–स्त्री० उक्त तलवार के आकार की एक कत्ती विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रांमफळ–पु० सीताफल, सरीफा।
रांमफळी–स्त्री० ग्वार की सूखी फली।
रांमबांस–पु० १ केवड़े की जाति का एक पौधा। २ एक प्रकार का बांस।
रांमभोग–पु० १ एक प्रकार का चावल। २ एक प्रकार का आम। ३ राम के आगे चढ़ाया जाने वाला नैवेद्य।
रांममन–पु० [सं० राममन] हनुमान।
रांमयौ–पु० १ काव्य छन्द का एक भेद विशेष। २ देखो 'राम'। ३ देखो 'रांमइयौ'।
रांमरक्षा–स्त्री० [सं० रामरक्षा] श्रीराम का एक स्तोत्र।
रांमरज–स्त्री० वैष्णव लोगों के तिलक लगाने की पीली मिट्टी विशेष।
रांमरमी–स्त्री० परस्पर रामा-सामा, अभिवादन।
रांमरस–पु० १ राम की भक्ति का आनन्द। राम की भक्ति रूपी अमृत। २ नमक।
रांमरांम–पु० १ 'राम'मंत्र का जाप। २ राम शब्द से किया जाने वाला अभिवादन।
रांमलवण–पु० सांभर का नमक।
रांमलाल–पु० एक लोक गीत।
रांमलि–देखो 'रांमत'।
रांमलीला–स्त्री० १ एक मात्रिक छंद विशेष। २ राम के चरित्र पर किया जाने वाला नाटक।
रांमवाड़ी–पु० पश्चिमी भारत का एक तीर्थ।
रांमसखी–पु० १ राय के सखा। २ देखो 'रांमचंगी'।
रांमसनेह–पु० [सं० रामस्नेही] राम से प्रीति, राम की भक्ति।
रांमसनेही–पु० [स० रामस्नेही] १ राजस्थान का एक प्रसिद्ध निर्गुणी साधु सम्प्रदाय जिसके सिंहस्थल, खेड़ापा, रेण, शाहपुरा आदि प्रमुख केन्द्र हैं। २ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी व साधु।
रांमसरण–पु० [सं० रामशरण] १ मोक्ष, मुक्ति। २ देहान्त, स्वर्गवास। –वि० स्वर्गवासी, मृत।
रांमसरी–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया।
रांमसाख–पु० एक फल विशेष।
रांमसागर–पु० १ लंबी टूंटी का बड़ा जल-पात्र। २ तरल पदार्थ परोसने का एक पात्र विशेष। ३ रामपयोधि।
रांमसापीर–पु० रामदेव।
रांमसिला–पु० [स० रांमशिला] गया की एक पहाड़ी।
रांमसेतु–पु० [सं रामसेतु] लंका पर चढ़ाई के समय श्रीराम द्वारा बनाया गया सेतु।
रांमा–स्त्री० [सं० रामा] १ लक्ष्मी। २ रुक्मणी। ३ सीता। ४ राधा। ५ सुन्दर स्त्री। ६ प्रेमिका, प्रेयसी। ७ भार्या, पत्नी, स्त्री। ८ सती-साध्वी स्त्री। ९ निपुण गायिका, स्त्री। १० नदी। ११ कार्त्तिक कृष्णा एकादशी। १२ आर्या छन्द का एक भेद।
रांमाइण–देखो 'रांमायण'।
रांमातुळसी–स्त्री० तुलसी की एक जाति।
रांमादेवी–स्त्री० एक देवी विशेष।
रांमानद–पु० १ रामावत सम्प्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध वैष्णवी आचार्य। २ इस आचार्य का सम्प्रदाय।
रांमानदी–पु० 'रामानंद' सम्प्रदाय का अनुयायी।–वि० रांमानंद का, रामानन्द संबंधी।
रांमानुज–पु० [सं० राम–अनुज] १ श्रीराम के लघु भ्राता, लक्ष्मण। भरत, शत्रुघ्न। २ वैष्णवी सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध आचार्य। ३ इस आचार्य का सम्प्रदाय।
रांमानुजी–पु० 'रांमानुज' सम्प्रदाय का अनुयायी। –वि० 'रांमानुज' का, 'रांमानुज' संबंधी।
रांमाभ्रत–पु० ईश्वर।
रांमायण–स्त्री० [सं० रामायण] १ 'राम' के अवतार व जीवन चरित्र संबंधी, वाल्मीकि ऋषि द्वारा रचित प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ। २ जीवन-गाथा। ३ व्यर्थ का प्रवचन।
रांमायणी–वि० १ रामायण का, रामायण संबंधी। २ रामायण का अध्ययन व उसकी व्याख्या, प्रवचन आदि करने वाला।
रांमावत–पु० एक वैष्णवी सम्प्रदाय इस संप्रदाय का अनुयायी।
रांमा-सांमा–पु० १ 'राम-राम' कहकर किया जाने वाला अभिवादन। २ दीपावली या होली के दूसरे दिन किया जाने वाला मिलना-भेंटना।
रांमूढ़ी–१ देखो 'रांम'। २ देखो 'रांमदेव'।
रांमेस्वर–पु० [सं० रामेश्वर] १ राम के इष्ट शिव। २ दक्षिण में समुद्र तट पर राम द्वारा स्थापित शिव लिंग, जो प्रमुख तीर्थ माना जाता है।
रांमौ–१ देखो 'रांम'। २ देखो 'रांमदेव'।
रांमौपीर–देखो 'रांमदेव'।
रांयकंवरी–देखो 'राजकुमारी'।
रांयण, रांयन–स्त्री० १ एक बड़ा वृक्षविशेष। २ इस वृक्ष का फल।
रांवटी–देखो 'रावटी'।
रांवण–पु० [सं० रावण] १ पुलस्त्य ऋषि का पौत्र व विश्रवा ऋषि का पुत्र प्रसिद्ध राक्षस राजा, दशानन। २ ओष्ठ, अधर। –वि० १ दूसरों को रुलाने वाला। २ रोने-चिल्लाने वाला।
रांवणखंड (खड़ौ)–वि० जिसका ओष्ठ खंडित हो।
रांवणगढ़–पु० रावण की लंका।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रावणपण (पणो)–पु० दुराग्रह, हठ, जिद्द ।
रावणरड़–देखो 'रड़रांण' ।
रावणरिप (रिपु)–पु० [सं० रावण-रिपु] १ श्रीरामचन्द्र । २ ईश्वर, परमात्मा ।
रावणहथी–देखो 'रांमणहथी' ।
रावणारि (री)–पु० [सं० रावण-अरि] १ श्रीरामचन्द्र । २ ईश्वर, परमात्मा ।
रांसीलो–वि० (स्त्री० रांसीली) १ रसपूर्ण, रसीला । २ रसिक रसिया ।
रा–वि०भ० १ षष्ठी विभक्ति चिह्न, के । २ देखो 'रै' । २ देखो 'राउ' ।
रा'–देखो 'रास', 'राय', 'राह' ।
राअठोड़–देखो 'राठौड़' ।
राइं–देखो 'राइ' ।
राईदिन (दिव)–देखो 'राइदिन' ।
राइ–पु० [सं० राजा] १ राजा नृप । २ छोटा राजा, सामंत । —स्त्री० [सं० राजि:] ३ पंक्ति, कतार । ४ रात्रि, रात । —वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।—अंगण, आंगण–पु० राजमहल, राजमहल का आंगन ।—कंवर, कुंअर, कुंवर–पु० राजा का पुत्र, राजकुमार ।—कंवरि, कुंअरि, कुंवरि–पु० राजा की पुत्री, राजकुमारी ।—जाधी–स्त्री० दुल्हिन, राजा की पुत्री । —जादो–पु० दुल्हा, राजकुमार ।—दिन, दिव–क्रि०वि० रात-दिन ।—धी, पुत्री–स्त्री० राजकुमारी ।
राइजी–देखो 'रायजी' ।
राइठोड़–देखो 'राठौड़' ।
राइण (णि, णी)–देखो 'रांयण' ।
राइवेल (लि, ली), राइवेल (लि, ली)–देखो 'रायवेल' ।
राइहार–देखो 'रायहर' ।
राई–स्त्री० [सं० राजिका] १ सरसों की जाति का एक पदार्थ जिसका दाना छोटा व काला तथा स्वाद चरपरा होता है । २ एक प्रकार का शाक । ३ अत्यन्त थोड़ी मात्रा । ४ एक लोक गीत विशेष । [सं० राधिका] ५ राधा । ६ देखो 'रांई' ।
राईआ–देखो 'राजा' ।
राईक–वि० १ अत्यन्त लघु, तुच्छ । २ राई के बराबर ।
राईका–स्त्री० भेड़-बकरी व ऊंटों का पालन तथा व्यवसाय करने वाली एक जाति ।
राईको–पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।
राईगूंदी–स्त्री० एक वृक्ष विशेष व इसके फल ।
राईण–देखो 'रांयण' ।
राईतम–पु० [सं० राजा-तनय] राजवंश ।
राईतो–देखो 'रायतो' ।
राईवर–देखो 'रायवर' ।
राईबोर–पु० झड़बेरी के फल, छोटे बेर ।
राईभोजण (भोयण)–पु० रात्रि भोजन ।
राईया–देखो 'राजा' ।
राईलूण–पु० राई व लूण का मिश्रण जो मंगल कामना के लिये किसी के ऊपर से वारा जाता है ।
राईवर–देखो 'रायवर' ।
राईवाई–स्त्री० १ व्यवस्था, इंतजाम ।—पु० २ कृषि कार्य में अभ्यस्त बैल ।—वि० सीधा-सादा, सरल ।
राईसर–पु० राजेश्वर ।
राउ–पु० [सं० राजा] राज, नृप, राव ।
राउत–देखो 'रावत' ।
राउतआई, राउतणी–स्त्री० १ वीरांगना । २ राजकुमारी,
राउतवट–देखो 'रावतवट' ।
राउति–१ देखो 'रावत' । २ देखो 'रावती' ।
राउत्त–देखो 'रावत' ।
राउळ (ल, ळी)–१ देखो 'रावळ' । २ देखो 'रावळो' ।
राउळी (ली)–देखो 'रावळो' ।
राऊ, राए–देखो 'राउ' ।
राकस–देखो 'राक्षस' ।
राकसराय–पु० [सं० राक्षस-राजा] रावण, दसानन ।
राकसरोळण–पु० विष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण ।
राकसवांणी (वांणी)–स्त्री० पिशाची भाषा ।
राकसांमयंकर–पु० ईश्वर, विष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण ।
राकसि, राकसी, राकस्सी–देखो 'राक्षसी' ।
राकां, राका–स्त्री० [सं० राका] १ पूर्णिमा की रात्रि । २ पूर्णिमा की तिथि । पर्व दिन । ३ पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी । ४ रात, रात्रि । ५ प्रथम बार की रजस्वला युवती । ६ खुजली रोग । ७ सूर्पनखा की माता ।—पत, पति–पु० चन्द्रमा ।
राकेस (सि)–पु० [सं० राकेश] १ पूर्णिमा का चन्द्रमा । २ चन्द्रमा । ३ श्रीकृष्ण ।
राक्षस–पु० [सं०] (स्त्री० राक्षसी) १ एक प्राचीन जाति जो मनुष्यों व देवताओं की शत्रु रही थी । २ इस जाति का प्राणी । ३ अत्यन्त क्रूर व दुष्ट व्यक्ति । ४ आठ प्रकार के विवाहों में से एक । ५ साठ संवत्सरों में से उन्चासवां संवत्सर । ६ वार व नक्षत्रों का एक योग । ७ वैद्यक में एक रस । ८ एक देव जाति ।—पुर, पुरि, पुरी–स्त्री० राक्षसों का नगर, लंका ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राक्षसकेवी–पु० राक्षसों को कैद करने वाला, इंद्र ।

राक्षसी–वि० १ राक्षस का, राक्षस संबंधी । २ राक्षसों के अनुरूप, अमानुषिक ।—स्त्री० १ राक्षस जाति की स्त्री । २ क्रूर या दुष्ट स्त्री ।

राक्षा–स्त्री० [सं० लाक्षा] लाख, लाह, जतु ।

राक्षिसी–देखो 'राक्षसी' ।

राखंद, राखदी–वि० रक्षण ।

राख–स्त्री० १ पूर्ण जल जाने वाले पदार्थ का रहने वाला मिट्टी-नुमा अंश, भस्म । २ धूल, खाक । ३ भूमि । –क्रि० वि० नहीं हो, ऐसा न हो ।

राखउड़ियो–वि० निर्लज्ज, बेशर्म । –स्त्री० एक गाली ।

राखड़ी–स्त्री० [सं० राखिका] १ स्त्रियों के सिर का स्वर्णाभूषण । २ शीशफूल । ३ रक्षा-सूत्र, गंडा, ताबीज । ४ ऊंट की गर्दन व बैलों के सींगों में बांधा जाने वाला डोरा विशेष । ५ देखो 'राखी' ।

राखड़ीडोरी (ओरी)–देखो 'राखी' ।

राखड़ो–पु० १ शिरोभूषण, चूड़ामणि । २ देखो 'राख' ।

राखडो–देखो 'राखड़ी' ।

राखण–वि० रखने वाला, रक्षा करने वाला ।—स्त्री० रखने की क्रिया या भाव ।

राखणभगत–पु० ईश्वर, विष्णु ।

राखणीआंण–पु० कवच, जाली ।

राखणो–वि० (स्त्री० राखणी) रखने वाला, रक्षा करने वाला ।

राखणो (बो)–क्रि० [सं० रक्षण] १ किसी आधार पर किसी वस्तु को टिकाना, धरना । २ रक्षा करना, बचाना, उबारना । ३ पालन-पोषण करना । ४ अपने अधिकार, कब्जे या देख-रेख में करना, रखना । ५ सुपुर्द करना, सौंपना । ६ एकत्र या संग्रहीत करना । ७ नियुक्त या तैनात करना, काम पर लगाना । ८ रोकना अवरोध करना, वर्जन करना । ९ ठहराना, गतिरोध करना । १० आश्रय देना, संरक्षण देना । ११ आवास कराना, बसाना । अपने पास रखना । १२ धारण करना, मानना, वहन करना, स्वीकार करना । १३ चोट करना । १४ आरोपित करना, मढ़ना, घोपना, लादना । १५ रेहन या गिरवी रखना । १६ सामने लाना, आगे रखना, प्रस्तुत करना । १७ पारिवारिक या सामाजिक संबंध बनाना, मेल-जोल करना । १८ रखवाली करना, चौकसी करना । १९ अवलंबित करना, आधारित करना । २० निभाना, पालन करना । २१ कुछ तैयार करना । २२ करना । २३ रखना ।

राखदुपी–पु० १ चीता, तेंदुआ । २ रखने का ढंग ।

राखबरण (बरणी)–वि० (स्त्री० राखबरणी) राख जैसे रंग या वर्ण का । श्याम ।—पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

राखस–देखो 'राक्षस' ।—पुरि, पुरी= राक्षसपुरी' ।

राखसि, राखसी–देखो 'राक्षसी' ।

राखसु–देखो 'राक्षस' ।

राखी(पूनम)–स्त्री० १ श्रावण शुक्ला पूर्णिमा की तिथि जो रक्षा बंधन का पर्व दिन होता है । २ इस दिन बांधा जाने वाला मंगल सूत्र जो बहनें भाइयों के तथा ब्राह्मण आदि यजमानों के हाथ में बांधते हैं । ३ गंडा-ताबीज ।

राखीबंध (बंधण, बंधन)–पु० [सं० रक्षाबंधन] मंगलसूत्र, रक्षा बंधन ।

राखीबंधभाई–पु० जिसको राखी बांध कर भाई बनाया गया हो ।

राखेड़ियो, राखोड़ियो, राखोड़ो–पु० १ राख का ढेर, राख । २ देखो 'रखड़ियो' ।

राखो–पु० रोग निवारणार्थ गर्म लोहे का किया जाने वाला दाग ।

रागंगो–वि० गायक, गवैया ।

राग (गु)–पु० [सं०] १ अनुराग, प्रेम, स्नेह । २ ममत्व, ममता, मोह । ३ लगाव, संबंध । ४ आकर्षण । ५ श्रद्धा, भक्ति, आस्था, विश्वास । ६ मैथुन की भावना । ७ इच्छा, अभिलाषा, कामना । ८ राग-रंग । ९ मन की सुखद अनुभूति । १० सुन्दरता, खूब सूरती । ११ आभा, कांति, शोभा । १२ हर्ष, खुशी, आनन्द । १३ मनोरंजन । १४ चुटकी, व्यंग । १५ भाव, आशय । १६ खेद, शोक । १७ ईर्ष्या, द्वेष । १८ क्लेश, पीड़ा । १९ क्रोध, गुस्सा । २० स्वर या ध्वनि की विशेष संरचना (संगीत) । २१ संगीत की कोई राग–रागिनी । २२ वाद्य की धुन, तान, लय । २३ आवाज, स्वर, ध्वनि । २४ आत्मा की मूर्च्छित अवस्था । २५ रंग । २६ लाल रंग । २७ ललाई, लालिमा । २८ हाथ का कवच । २९ छोटा हरिण । ३० घोड़ा । ३१ राजा । ३२ सूर्य । ३३ चन्द्रमा । ३४ पैर में लगने वाला अलता । ३५ एक वर्ण वृत्त विशेष । ३६ कवच । ३७ रात । –स्त्री० ३८ छः की संख्या । –वि० छः ।

रागकर–पु० एक प्रकार का रत्न ।

रागड़, रागड़ियो, रागड़ो–पु० १ भैंसा । २ बड़ी उम्र का काला हरिण ।

रागजांगड़ो–पु० वीररस पूर्ण राग । सिंधुराग ।

रागजोगिया–स्त्री० एक राग विशेष ।

रागण (णि, णी)–स्त्री० [सं० रागिणी] १ किसी राग की स्त्री, रागिनी । २ कोई राग । ३ चतुर स्त्री । ४ मैना की बड़ी कन्या । ५ जयश्री नामक लक्ष्मी । ६ स्वेच्छाचारिणी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व छिनाल स्त्री। ७ छत्तीस की संख्या ३६। –वि० १ प्रेम से अनुरक्त। २ छत्तीस।

रागणी (वी)–क्रि० १ कोई राग गाना, अलापना, साधना। २ अनुराग या प्रेम करना। ३ अनुरक्त होना। ४ लीन या लिप्त होना।

रागद्वेष (षीस, द्वेस)–पु० [सं० राग-द्वेष] १ प्रेम-ईर्ष्या आदि भाव, राग-द्वेष। २ छल, कपट, पक्ष-पात।

रागनि–स्त्री० १ जांघ, जंघा, रान। २ देखो 'रागण'।

रागमाळा–स्त्री० १ समान रूप वाली विभिन्न रागों की शृंखला। २ रागों के देवमय स्वरूप का काव्यात्मक वर्णन एवं चित्रांकन।

रागरंग–पु० १ आनन्द, उत्साह प्रसन्नता। २ उत्सव, समारोह। ३ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा। ४ नृत्य-गायन। ५ हास-विलास, मौज मस्ती। ६ प्रेम, प्रीति। ७ रति क्रीड़ा।

रागरजु–पु० कामदेव।

रागरस–देखो 'रागरंग'।

रागलता–स्त्री० कामदेव की स्त्री रति।

रागळी–देखो 'राग'।

रागली–वि० (स्त्री० रागली) राग-द्वेष वाला।

रागवडाळो–पु० वीररस पूर्ण राग, सिंधुराग।

रागारळ, रागारळी–स्त्री० आमोद-प्रमोद, हंसी-खुशी से होने वाली तृप्ति।

रागातुर, रागातुर–वि० [सं० राग-आतुर] प्रेम, मोह आदि के लिये आतुर। व्याकुल।

रागि–देखो 'रागी'।

रागिणी, रागिनी–देखो 'रागणी'।

रागी–वि० [सं० रागिन्] (स्त्री० रागणी, रागिणी) १ राग से युक्त रागमय। २ मोह-माया में फंसा हुआ। ३ ईर्ष्यालु द्वेष करने वाला। ४ अनुरक्त, आसक्त, मोहित। ५ विषयी, कामी, वासना में लीन। ६ प्रेमी, अनुरागी। ७ प्रेम-पूर्ण, प्रीति युक्त। ८ लाल रंग का, लाल। ९ रंगा हुआ, रंजित। –पु० १ अशोक वृक्ष। २ मंडवा या मकरा नामक कदन्न। ३ छः मात्रा का एक छन्द। ४ आभूषणों पर खुदाई करने का औजार विशेष।

रागु–देखो 'राग'।

राघव–पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर। २ विष्णु का एक नामान्तर। ३ दशरथ सुत श्रीरामचन्द्र। ४ रघु का वंशधर। ५ अज। ६ एक प्रकार की बड़ी मछली।

राघवराई–पु० [सं० राघवराजा] १ श्रीरामचन्द्र। २ ईश्वर।

राघवानंदी–स्त्री० एक वैष्णवी सम्प्रदाय।

राघवि (वी)–देखो 'राघव'।

राघवेंद्र–पु० [सं०] रघुवंशियों में इंद्र, श्रीरामचन्द्र।

राघवेस–पु० [सं० राघवेश] श्रीरामचन्द्र।

राघवो, राघव्व, राघी–देखो 'राघव'।

राड़–स्त्री० [सं० राटि] १ युद्ध, झगड़ा, समर। २ कलह, गृह-कलह। ३ तकरार, हुज्जत। ४ विपत्ति, समस्या, रगड़ा। ५ दरार। ६ शाप, बद्दुआ।

राड़क–पु० योद्धा, वीर।—वि० कलह-प्रिय, झगड़ालू।

राड़गारो–देखो 'राड़ीगारो' (स्त्री० राड़ीगारी)।

राड़धंभ–पु० योद्धा, वीर।

राड़धड़ा, राड़धरा–स्त्री० बाड़मेर जिलान्तर्गत एक क्षेत्र, जहां के घोड़े उत्तम माने जाते थे।

राड़धरी–वि० 'राड़धरा' की, राड़धरा संबंधी।

राड़ांजीत, राड़ाजीत, राड़ाजीती–वि० (स्त्री० राड़ांजीतणी, राड़ांजीती) वीर योद्धा, युद्ध में सफल रहने वाला।

राड़ि–१ देखो 'राड़'। २ देखो 'राड़ी'।

राड़िगार, राड़िगारो–देखो 'राड़ीगारो'।

राड़ी–वि० १ लड़ाई करने वाला, झगड़ने वाला। २ जबरदस्त, जोरदार। ३ योद्धा, वीर। ४ देखो 'राड़'।—गार, गारो–वि० योद्धा, वीर। कलहप्रिय, झगड़ालू।

राड़ो–देखो 'राड़'।

राचणी–वि० १ जिसका रंग गहरा व अच्छा जमता हो, रंजित होने वाली। २ शोभा देने वाली, शोभित होने वाली। ३ अनुरंजित होने वाली।—स्त्री० मेहंदी।

राचणो–वि० (स्त्री० राचणी) रंजित होने वाला शोभा देने वाला।

राचणो (वो)–क्रि० [सं० रक्तिति] १ किसी वस्तु पर कोई रंग अच्छा बैठना, जमना, खिलना। २ मेहंदी का रंग जमना, गहरा बैठना। ३ रंजित होना, रंगा जाना। ४ अनुरक्त या आसक्त होना, प्रेम में फंसना। ५ लीन, मग्न या मस्त होना। ६ लिप्त होना उलझना, फंसना। ७ प्रभावित होना। ८ शोभित होना, फबना। ९ प्रसन्न या खुश होना। १० फैलना, छा जाना।

राचोड़ी–स्त्री० १ बढ़ई की औजार रखने की पेटी, संदूक। २ देखो 'रछांनी'।

राछ–पु० [सं० रक्ष] १ औजार, उपकरण। २ अस्त्र-शस्त्र।

राछांनी, राछोडी–१ देखो 'रछांनी'। २ देखो 'राचोड़ी'।

राछपोछ, राछापूंजी–स्त्री० १ औजार या उपकरणों का समूह। २ घर गृहस्थी का सामान।

राजंद राजइंद्र–देखो 'राजेंद्र'।

राजसी–वि० [सं० राज-वंशी] राजा के वंश या खान-दान का।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राज–पु० [सं० राज्य] १ राजा का शासन। २ किसी राजा के शासन का देश, राज्य, जनपद। ३ सत्ता। ४ सरकार, प्रशासन करने वाली संस्था। ५ सामर्थ्य, अधिकार। ६ शासन काल, राज्य काल। ७ एक योग। ८ प्रभाव, नियंत्रण। [सं० राज्,राजन्] ९ राजा, नृप। १० प्रियतम पति। ११ स्वामी, मालिक। १२ प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिये आदर युक्त संबोधन। १३ राजा द्वारा मनोनीत व्यक्तियों की उपाधि सूचक शब्द। १४ धर्मराज। १५ कवि। १६ मिस्त्री, शिल्पी। १७ दीपक बुझने की अवस्था। १८ अंधेरा। १९ गीत की लय। [फा० राज] २० गुप्त बात भेद, रहस्य।—सर्व० आप, श्रीमान।–वि० १ प्रिय, प्यारा। २ प्रमुख, मुख्य।—अंग–पु० मंत्री।—इव= 'राजेंद्र'।—कथा–स्त्री० राजाओं की कथा, तवारीख। राजनीतिक चर्चा।—कन्या–स्त्री० राजा की पुत्री। राजकुमारी।—कमला–स्त्री० राज्यलक्ष्मी।—कर–पु० राज्य का कर।—करता–वि० राज्य करने वाला। राजा। —काज–पु० राज्य या शासन संबंधी कार्य।—कार–पु० राज्य कर्मचारी।—कारिज–पु० राज्य संबंधी कार्य। —किरिया–स्त्री० राजनीति।—कुंअर, कुंवर–पु० राज-कुमार।—कुंअरि, कुंअरी, कुंआरी, कुंवार, कुंवारि, कुंवारी, कुमरि, कुमारी–स्त्री० 'राजकुंवारी'। —कुमार–पु० राजा का पुत्र।—कुमारी –स्त्री० राजा की पुत्री।—कुळ, कुल–पु० राजा का वंश, राजवंश। राजा का दरबार, न्यायालय। –कुळि, कुळी, कुलि, कुली–वि० राजा के वंश का, राजा का समाज। राजा के परिवार का सदस्य।—क्रिया–स्त्री० राजनीति। राज्य का विधान।–गद्दी, गादी, गोदी–स्त्री० राज्य सिंहासन। राज्याधिकार। –गुर, गुरु–पु० राजा का गुरु। राजपुरोहित।—गृह–पु० राजमहल। राजगृह। —ठौड़–स्त्री० राजधानी।—दंड–पु० राजा या राज्य की ओर से तय किया जाने वाला दंड, सजा। राज्य का दण्ड विधान।—दरबार–पु० राजा, मंत्री व सामंतों की सभा जिसमें राज्य-संचालन के आदेश दिये जाते थे। वह कक्ष या स्थान जहां यह सभा होती थी। राजा की कचहरी, अदालत।—दुआर, दुवार, दुवार='राजद्वार'।

राजकदंब–पु० [सं०] १ स्वादिष्ट फलों वाला एक कदम्ब वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष का फल।

राजकोलाहल–पु० संगीत में एक ताल।

राजखग–पु० [स० खगराज] गरुड़।

राजगति (ति, त्ति)–स्त्री० [सं० राज्य-गति] १ राजनीति। २ राज्य या शासन की प्रणाली, विधि। ३ भाग्य की अदृश्य गति।

राजगहेली–वि० प्रीत में बावली।

राजगीर (री)–पु० भवन बनाने वाला शिल्पी।

राजचमेली–स्त्री० राम बेलि लता।

राजड़–स्त्री० १ लंगा जाति विशेष। २ देखो 'राजवाई'।

राजचंपक, राजचंपो–पु० [सं० राजचंपक] सुल्ताना चंपा, एक प्रकार का पुष्प।

राजचोल–पु० [स०] शेष नाग।

राजचूड़ामणि–स्त्री० [सं०] संगीत में एक ताल।

राजजांमुन–पु० एक प्रकार के जामुन।

राजणो (बो)–क्रि० [सं० राज्] १ आसीन होना, बैठना। २ शोभित होना, फबना। ३ सुन्दर लगना। ४ चमकना। ५ राज्य या शासन करना।

राजत–देखो 'राजित'।

राजतरणी–स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब की लता, बड़ी मेवती।

राजतिलक (तीलक)–पु० [सं०] १ राजा बनाने के लिये राज्य सिंहासन पर बैठा कर किया जाने वाला तिलक, टीका। राज्याभिषेक। २ राजा बनाने की विधि। ३ इस अवसर पर होने वाला उत्सव।

राजतीमुद्रा–स्त्री० चांदी की मुद्रा, सिक्का।

राजतेज–पु० १ सत्ता या शासन की शक्ति, रौब, प्रभाव। २ राजा जैसा व्यक्तित्व, गुण। ३ राजसी ठाट, चमक-दमक।

राजथंभ–पु० [स० राज्य-स्तंभ] १ राज्य के कार्यों का संचालन करने वाला प्रमुख व्यक्ति, मंत्री। २ राजा, नृप।

राजथांण (न)–देखो 'राजस्थान'।

राजथाट–पु० राजसी ठाट-बाट।

राजदुलारी–स्त्री० राजकुमारी।

राजदूत–पु० [सं०] १ किसी राज्य या राष्ट्र का, अन्य राज्य या राष्ट्र में प्रतिनिधित्व करने वाला अधिकारी, व्यक्ति। २ राजा का दूत या संदेश वाहक। ३ राजाज्ञा प्रसारित करने वाला कर्मचारी या व्यक्ति।

राजद्रोह–पु० [सं०] १ राज्य, राजा या शासन के प्रति प्रजा, सेना या व्यक्ति का विरोध, विद्रोह, बगावत। २ राज्य का अहित करने वाला कार्य।

राजद्रोही–वि० [सं०] १ विद्रोही, बागी। २ राज्य विरोधी कार्य करने वाला।

राजद्वार (द्वारो)–पु० [सं०] १ राजमहल या किले का द्वार। २ राज दरबार। ३ कचहरी, न्यायालय।

राजद्वारिक, राजद्वारी–पु० राज दरबार या राज्य के पदाधिकारी।

राजधणी–पु० १ राजा, नृप। २ राज्य का अधिपति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजधर–पु० राजा, नृप ।

राजधरम (म्म)–पु० [सं० राज-धर्म] १ राजा का धर्म, कर्तव्य । २ राज्य द्वारा मान्य घोषित धर्म या मत । ३ महाभारत का एक विभाग विशेष (अध्याय) ।

राजधानी–स्त्री० [सं०] १ राज्य, राष्ट्र या देश के शासन का केन्द्र । २ वह नगर या स्थान जहां यह केन्द्र हो ।

राजन–पु० [सं०] १ राजा, नृप । २ पति, प्रियतम ।

राजनीत (नीति)–स्त्री० [सं० राजनीति] १ राज्य या राष्ट्र का शासन चलाने की विधि, नियम आदि । २ कूटनीति, भेद नीति । ३ साम, दाम, दंड व भेद, नीतियां । ४ बहत्तर कलाओं में से एक ।

राजनीतिक–वि० [सं०] १ राजनीति संबंधी । २ राजनीति का जानकार ।

राजनील–पु० [सं०] १ मरकत मणि, पन्ना । २ सरदार, सामन्त ।

राजन्य–पु० [सं०] १ क्षत्रिय । २ सामन्त, सरदार ।

राजपंख (पंछ)–पु० [सं० पक्षिराज] गरुड़ ।

राजपंथ–पु० [सं० राजपथ] शहर, राज्य या देश का प्रमुख राज मार्ग । आमरास्ता ।

राजपट्ट–पु० १ एक प्रकार का वस्त्र । २ देखो 'राजपाट' ।

राजपति–पु० [सं०] १ राजा, सम्राट, नृपति । २ राज्य का अधिपति, शासक ।

राजपत्नी–स्त्री० [सं०] राजा की पत्नी, रानी, साम्राज्ञी ।

राजपद–पु० [सं०] १ राजा का पद या अधिकार । २ राजत्व । ३ कम कीमत का हीरा ।

राजपद्धति–स्त्री० [सं०] १ शासन प्रणाली, विधि । २ राजनीति । ३ राजमार्ग, राजपथ ।

राजपाट–पु० [सं० राज्य+पट्ट] १ राजसिंहासन, राजपद्दी । २ राजा के अधिकार ।

राजपात्र–पु० [सं०] एक वर्ण विशेष ।

राजपाळ (ल)–पु० १ एक राजवंश । २ देखो 'राजपाल' ।

राजपिंड–पु० राजा द्वारा प्रदत्त पिंड, आहार ।

राजपुत्र–पु० [सं०] (स्त्री० राजपुत्री) १ राजा का पुत्र, राजकुमार । २ राजपूत, क्षत्रिय । ३ बुध ग्रह ।

राजपुत्री–स्त्री० [सं०] १ राजकुमारी । २ क्षत्रिय कन्या ।

राजपुरस, राजपुरुस–पु० [सं० राज पुरुष] १ राजा के परिवार या वंश का व्यक्ति । २ अमात्य, मंत्री । ३ राज्य कर्मचारी ।

राजपुस्पी–पु० [सं० राजपुष्पी] वन मल्लिका, जाति पुष्प ।

राजपूत–पु० [सं० राज-पुत्र] (स्त्री० राजपूतण, राजपूतांणी) १ क्षत्रिय वर्ण या जाति । २ इस जाति का व्यक्ति । ३ राजा का पुत्र । ४ योद्धा, वीर । ५ देखो 'रजपूत' ।

राजपूतांणी–स्त्री० क्षत्रिय जाति की स्त्री ।

राजपूतानो–पु० राजस्थान प्रदेश का प्रारंभिक नाम ।

राजपूताई, राजपूती–स्त्री० १ राजपूत होने की अवस्था या भाव । २ क्षत्रियत्व । ३ शौर्य, पराक्रम, बहादुरी ।

राजबस (स)–देखो 'राजवण' ।

राजबळ–पु० सत्ता, शासन या राज्य की शक्ति ।

राजबाई–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी विशेष ।

राजबाड़ी–स्त्री० [सं० राज-वाटिका] किसी राजा का उद्यान ।

राजभंडार–पु० [सं०] १ राज्य का खजाना, कोष । २ शस्त्र सामग्री का कक्ष, भण्डार ।

राजभक्त (भगत)–पु० [सं०] राजा का स्वामी भक्त अनुचर ।

राजभक्ति (भगति)–स्त्री० [सं०] राजा या राज्य के प्रति स्वामी-भक्ति ।

राजभवन–पु० [सं०] १ राजमहल, राज प्रासाद । २ जन्म पत्री में दशवां स्थान ।

राजभोग–पु० [सं०] १ मंदिरों में मध्याह्न के समय भगवान को चढ़ाया जाने वाला नैवेद्य, भोग । २ एक प्रकार की मिठाई । ३ प्रसाद, नैवेद्य । ४ राजा को दिया जाने वाला कृषि उपज का अंश ।

राजमंडळ (ल)–पु० [सं०राजमंडल] १ राज्य का घेरा, वृत्त, परिधि । २ किसी राज्य की इकाइयों का समूह ।

राजमंदिर–पु० [स०] १ राजमहल, राज प्रासाद । २ राज महलों में बना देव मंदिर ।

राजमग–देखो 'राजमार्ग' ।

राजमद–पु० [सं०] सत्ता का गर्व या नशा ।

राजमराळ (ल)–पु० राज हंस ।

राजमहल (लि), राजमैल–पु० राजा का महल, राज प्रासाद ।

राजमारग (गि गी)–पु० राज्य, नगर या क्षेत्र का मुख्य मार्ग, सड़क । आम रास्ता ।

राजमिरगांक–पु० [स०] एक रस–औषधि विशेष ।

राजयोग–पु० [स०] १ अष्टांग-योग, मूल योग । २ जन्म कुण्डली में ग्रहों का योग ।

राजरथ–पु० [सं०] १ राजा का रथ । २ पालकी ।

राजरमणी–स्त्री० [सं०] १ राजरानी । २ राजमहलों की स्त्रियां ।

राजरसि––देखो 'राजरिसि' ।

राजरांणी –स्त्री० १ राजा की रानी । २ दुर्गा देखो ।

राजराज, राजराजा–पु० १ कुबेर का एक नामान्तर । २ राजेश्वर । ३ सम्राट । ४ चन्द्रमा ।

राजराजाखाड़ी–स्त्री० बच्चों का एक खेल ।

राजराजेसर (राजेस्वर)–पु० [सं० राजराजेश्वर] (स्त्री० राज राजेसरी, राजराजेस्वरी) राजाओं में श्रेष्ठ, सम्राट ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजराजेश्वरी-स्त्री० [सं०] पटरानी, महारानी।

राजरिख राजरिखि-पु० राजर्षि।

राजरिद्धि, राजरिध-स्त्री० [सं० राजऋद्धि] राज्य की समृद्धि, राज्य लक्ष्मी।

राजरिसि, राजरिसी-पु० [सं० राजर्षि] १ राजकुल या क्षत्रिय वंश का ऋषि। २ ऋषियों की उपाधि विशेष।

राजरीत, राजरीति-स्त्री० १ शासन की पद्धति, राजनीति। २ राजवंश की परंपरा। ३ शासक वर्ग का आचरण। व्यवहार।

राजरोग-पु० [सं०] १ क्षय रोग। २ कोई असाध्य रोग।

राजरोगी-वि० उक्त रोग से पीड़ित।

राजल-स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी विशेष।

राजलक्षण-पु० बहत्तर कलाओं में से एक।

राजलक्ष्मी (लछमी)-स्त्री० [सं० राजलक्ष्मी] राज्य का वैभव, समृद्धि।

राजलोक (लोग)-पु० [सं०] १ राजमहल की स्त्रियों, रानियों का समूह। २ अन्तःपुर, रनिवास। ३ परिजन, परिवार।

राजवंस-पु० [सं० राजवंश] राजा का वंश।

राजवट-पु० १ हुकूमत, सत्ता, शासन। २ क्षत्रित्व, वीरत्व। ३ डिंगल का एक छन्द विशेष।

राजवण-स्त्री० १ राजकुमारी। २ रानी। ३ पत्नी, स्त्री, प्रियतमा। ४ सुन्दर स्त्री।

राजवनी-पु० (स्त्री० राजवनी) १ राजकुमार। २ दूल्हा। ३ पति, प्रियतम।

राजवरग-पु० [सं० राज्यवर्ग] १ राजकुल, राजवंश। २ शासक वर्ग, समुदाय। ३ राज्य के पदाधिकारी वर्ग। ४ राज्य का सुख, वैभव।

राजवरगी-वि० [सं० राज्य-वर्गी] १ शासक समुदाय का, शासक वर्ग संबंधी। २ राजकुल का, राजवंश का। ३ वंश परम्परानुसार राज्य में नौकरी पाने वाला।

राजवाटिका-स्त्री० [सं०] राजा का निजी उद्यान।

राजवाह-पु० [सं०] घोड़ा, अश्व।

राजविद्या-पु० [सं०] राजनीति।

राजविद्रोह-पु० [सं०] शासन का विरोध, विद्रोह बगावत।

राजविद्रोही-वि० [सं०] बागी, विद्रोही।

राजविहग (विहगी)-पु० राजहंस।

राजवी, राजवीय-पु० १ राजा, नृपति। २ राज पुरुष। ३ राजा का पारिवारिक व्यक्ति। ४ राजेश्वर, सम्राट। ५ राजा का छोटा भाई या छोटा भाई का वंशज।

राजवैद-पु० [सं० राज-वैद्य] राजा या राजघराने के लिये नियुक्त वैद्य, वैद्यराज।

राजव्यास-पु० [सं०] दरबार का ज्योतिषी

राजसंसद-स्त्री० [सं०] राज्य परिषद्, राज्य-सभा।

राजस-स्त्री० [सं०] १ राज्य, हुकूमत, सत्ता। २ राजधानी। ३ शासन-काल, राज्य-काल। ४ राजसी वैभव, ठाट-बाट। ५ भोग विलास, सुख। ६ काम-क्रीड़ा, मैथुन। ७ राज्य। ८ राजा, नृप। ९ राज्यत्व। १० राज दरबार या सभा। ११ रजोगुण। १२ रजोगुण संबंधी। १३ आवेश, जोश। १४ क्रोध।

राजसगुण-पु० रजोगुण।

राजसठाट-पु० राजसी वैभव।

राजसत्ता-स्त्री० शासन के अधिकार।

राजथान-पु० राजस्थान।

राजथानी-वि० राजस्थानी।

राजसधारी-वि० पौरुष या वीरत्व वाला।

राजसनगर-पु० राजधानी का नगर।

राजसभा-स्त्री० राजाओं की सभा। राज्य परिषद्।

राजसमाज-पु० [सं०] नृप मंडली, राजा लोग। शासक वर्ग।

राजसर-पु० उदयपुर के पास का एक बड़ा तालाब, राज समंद।

राजसरप-पु० [सं० राज सर्प] दो मुंह वाला सर्प।

राजसवकी-वि० १ राजनीति में निपुण राजा। २ अच्छा राजनीतिज्ञ ३ शासन में शक्तिशाली।

राजसिंहासन (सींघासण)-पु० राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी।

राजसिरी-स्त्री० [सं० राज्य श्री] राज्य लक्ष्मी।

राजसी-वि० १ राजाओं के योग्य या समान। २ राजसी वैभव वा शान वाला। ३ रजोगुण की प्रधानता वाला। ४ रजोगुणी वृत्ति वाला।

राजसीवत्ती-स्त्री० रजोगुणीवृत्ति।

राजसुजगन-पु० [सं० राजसूय यज्ञ] राजसूय यज्ञ।

राजसू, राजसूय-पु० राजाओं द्वारा किया जाने वाला यज्ञ विशेष।

राजस्थान-पु० [सं०] १ भारत का एक पश्चिमोत्तर प्रदेश या राज्य। राजपूताना। २ राजधानी। ३ राज्य।

राजस्थानी-वि० 'राजस्थान' का, राजस्थान संबंधी।-पु० १ इस प्रदेश का निवासी।-स्त्री० २ इस प्रदेश की भाषा, बोली।

राजस्स-देखो 'राजस'।

राजस्सी-देखो 'राजसी' / 'राजरिसि'।

राजहंस-पु० [सं०] १ बड़े सरोवर, झीलों, समुद्रों के किनारे रहने वाला प्रायः सफेद पंखों वाला पक्षी विशेष। २ एक प्रकार की लता। ३ एक राग विशेष।

राजान-देखो 'राजा'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजान-सिलामति–देखो 'हुजूर-सलामत'।

राजा–पु० [सं० राजन्] १ किसी देश, राज्य या जनपद का राज्य करने का अधिकारी। शासक, नृप। २ स्वामी, मालिक। ३ क्षत्रिय। ४ युधिष्ठिर का एक नाम। ५ इन्द्र का एक नामान्तर। ६ चन्द्रमा। ७ उल्लू पक्षी। ८ यज्ञ। ९ वीर्य, शुक्र। १० पति या प्रियतम का एक प्रियवाची सम्बोधन। ११ ताश का एक पत्ता। १२ रईस, जमींदार या शासक की उपाधि। १३ धनवान या समृद्ध व्यक्ति। १४ जयपुर के राजा की उप पत्नी की संतान को दी जाने वाली पदवी। १५ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ८४ वां ग्रह। —वि० १ उदार, दानी। २ राजा के समान माना जाने वाला।— पत, पति, पती–पु० राजेश्वर, सम्राट।

राजाई–स्त्री० १ राजा होने की अवस्था या भाव, राज्यत्व। २ राजा का पद या अधिकार। ३ सत्ता, हुकूमत।

राजाधिकारी–पु० [स०] १ राजा, राज्य का अधिकारी। २ न्यायाधीश।

राजाधिराज–पु० [सं०] १ राजाओं का राजा, सम्राट। २ मुगलकालीन एक पदवी।

राजापण, राजापणी–पु० [सं० राजत्व] १ राजा होने की अवस्था या भाव, राजत्व। २ राजा का पद या अधिकार।

राजाराज–पु० १ चन्द्रमा, शशि। २ कुबेर। ३ सम्राट, राजेश्वर।

राजालावु–पु० [सं०] एक प्रकार का कद्दू।

राजावटी–स्त्री० जयपुर राज्यान्तर्गत एक क्षेत्र।

राजावत–स्त्री० कछवाहा क्षत्रियों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

राजावरत्त–पु० [सं० राजावर्त] एक प्रकार का रत्न। लाजवर्द

राजावली–स्त्री० [सं० राजन्+अवली] १ राजा के वंश की विगत। २ राजाओं की पंक्ति।

राजासन–पु० [सं०] राजसिंहासन।

राजिंद, राजिंदर, राजिंदो, राजिंद्र, राजिंद्रो–देखो 'राजेंद्र'।

राजि–१ देखो 'राज', 'राजी'। २ देखो 'राज्य'।

राजित–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

राजिक–वि० [अ०] पालन-पोषण करने वाला। ईश्वर परमात्मा।

राजिकापति–पु० एक प्रकार का रोग।

राजित–वि० [सं०] शोभित, सुशोभित।

राजिम–देखो 'राजा'।

राजियउ राजियो–पु० [सं० राज्] १ राज्य का स्वामी, राजा। २ राजा के वंश का, राजा का वंशज। ३ कवि कृपाराम का अनुचर।

राजिल–पु० [सं०] १ सर्पों की एक जाति। २ भयंकर विषैला सर्प।

राजिव–देखो 'राजीव', 'राजवी'।

राजींद, राजींद्र–देखो राजेंद्र'।

राजी–वि० [अ०] १ प्रसन्न, खुश। २ उत्साहित, आनन्वित। ३ अनुकूल, अनुग्रहीत, मेहरबान। ४ सहमत, तैयार। ५ संतुष्ट। ६ तुष्टमान। ७ मस्त, मग्न। ८ निरोग, स्वस्थ।—स्त्री० [सं०] १ पंक्ति, कतार। २ रेखा, लकीर।

राजी-खुसी–वि० [अ०] प्रसन्न खुश। स्वस्थ। आराम में। सुखी।—स्त्री० प्रसन्नता, खुशी। स्वस्थता। सुख, चैन, आराम।

राजोड़ी–पु० १ पति, प्रियतम। २ राजा, नृप।

राजीनांमो–पु० १ विवाद के प्रति दोनों पक्षों में होने वाली संधि, सुलह, सहमति। २ इस संधि का लिखित-पत्र, सुलहनामा।

राजीपौ–पु० १ खुशी, प्रसन्नता। २ विवाद पर संधि। सुलह।

राजीयौ–देखो 'राजियो'।

राजीव–पु० [सं०] १ नील कमल, कमल। २ हाथी। ३ एक प्रकार का सारस। ४ एक प्रकार का मृग। ५ रैया मछली। —लोचन–पु० कमल के समान नेत्र। ऐसे नेत्रों वाला प्राणी।

राजु–देखो 'राज'।

राजुल–देखो 'राजल'।

राजेंद्र–पु० [सं०] १ राजाओं का राजा, राजेश्वर, सम्राट। २ इन्द्र। ३ प्रिय, प्रियतम। ४ किसी प्रिय व्यक्ति के लिये आदर युक्त संबोधन।

राजेस, राजेसर, राजेस्वर, राजेस्वुर, राजैसर–पु० [सं० राजेश्वर] १ राजाओं का राजा, सम्राट। २ इन्द्र।

राजोई–देखो 'राजाई'।

राजोधर–देखो 'राजधर'।

राजौ–देखो 'राजा'।

राज्यं–देखो 'राज्य'।

राज्यव, राज्यंद्र–देखो 'राजेंद्र'।

राज्य–पु० [सं०] १ किसी राजा या शासक के अधीन रहने वाला क्षेत्र या प्रदेश। २ शासन, हुकूमत। ३ शासन के अधिकार।—कला–स्त्री० राज्य करने की विधि, प्रणाली। राजनीति।—काल–पु० राज्य या शासन की अवधि। —तिलक='राजतिलक'।— लक्ष्मी, लिछमी='राजलक्ष्मी'। —व्यवस्था–पु० शासन का प्रबंध। ढंग।

राज्यसभा–स्त्री० भारतीय संसद का एक अंग। एक सदन।

राज्याभिषेक–पु० राजतिलक।

राज्येंद्रो, राज्येंद्री–देखो 'राजेंद्र'।

राट–पु० १ राजा, नृप। २ प्रधान या श्रेष्ठ पुरुष। ३ देश, राष्ट्र, राज्य।

राटक–पु० १ शस्त्र प्रहार। २ शस्त्र प्रहार का शब्द, ध्वनि। ३ युद्ध के नगाड़े की ध्वनि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राटणी–स्त्री० बाद की ध्वनि ।
राटपाट–वि० नष्ट-भ्रष्ट ।
राटी–स्त्री० साधारण या सामान्य स्त्री ।
राटेस्वरी–स्त्री० राठौड़ों की कुल देवी ।
राट्ठ–देखो 'राष्ट्र' ।
राठ–पु० १ एक भाटी राजपूत वंश जो मुसलमान हो गया । २ इस वंश का व्यक्ति । ३ एक अन्य प्राचीन राजवंश । ४ एक प्रकार का पौधा । [सं० विराट] ५ विराट प्रदेश, जहाँ की गायें प्रसिद्ध हैं । ६ देखो 'विराट' ।
राठउड–देखो 'राठौड़' ।
राठरीठ–स्त्री० १ शस्त्र प्रहार । २ शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।
राठवड (ड)–देखो 'राठौड़' ।
राठारीठ, राठारीठी–देखो 'राठरीठ' ।
राठासण, राठासेण–स्त्री० [सं० राष्ट्र-श्येना] राठौड़ों की कुलदेवी ।
राठोड़–देखो 'राठौड़' ।
राठोड़ी–देखो 'राठौड़ी' ।
राठो–पु० भेड़ की हड्डी ।
राठौड़–पु० [सं० राष्ट्रवर] १ भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय वर्ग एवं राजवंश । २ इस वंश का व्यक्ति ।
राठौड़पै (पे)–पु० [सं० राष्ट्रवर पति] राठौड़ वंश का राजा ।
राठौड़ी–वि० राठौड़ों का, राठौड़ों जैसा, राठौड़ संबंधी ।–स्त्री० १ राठौड़ों की हुकूमत । २ राठौड़ों की शासन पद्धति । ३ जोर-जबरदस्ती । ४ साफा बाँधने का एक ढंग ।
राठौर–देखो 'राठौड़' ।
राड, राडा–स्त्री० १ जिद्द हठ । २ शोभा, छवि ।
राडांमणि (णी)–स्त्री० काच की मणि ।
राड़ाळी–वि० हठीली, जिद्दी ।–स्त्री० १ लड़ाई, झगड़ा । २ संकट ।
राडि–देखो 'राड़' ।
रातंक–देखो 'रातंग' ।
रातखी–स्त्री० १ चील रूपधारी देवी । २ देखो 'रातंग' ।
रातंग–पु० १ लाल चोंच का एक मांसाहारी पक्षी । २ गिद्ध । ३ चील ।
रातंब, रातंबर–देखो 'रक्तांबर' ।
रातंबरी–वि० [सं० रक्त-अंबर] रक्त वर्ण की, लाल ।
रातंमर–देखो 'रक्तांबर' ।
रात–स्त्री० [सं० रात्रि] सायंकाल से प्रातः तक का समय, निशा, रजनी ।—जगम–पु० रात में जगने की क्रिया या भाव । स्वान, कुत्ता ।—मिण, रतन–पु० चन्द्रमा ।—राजा–पु० उल्लू पक्षी ।—वास–पु० रात्रि विश्राम । —वासी–वि० रात्रि विश्राम करने वाला । केवल रात में ही रहने वाला । रात्रि विश्राम ।—वासो, वाह, वाहो–पु० रात्रि विश्राम । रातीवाहो ।
रातउ–पु० १ एक वस्त्र विशेष । २ देखो 'रातो' ।
रातकडाहउं–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।
रातड़, रातड़ली–स्त्री० १ ललाई, लालिमा । २ देखो 'रात' ।
रातड़ामुखी–वि० लाल मुख का, रक्त मुखी ।
रातड़ियो–पु० १ एक असुर का नाम । २ गिद्ध । ३ देखो 'रातो' ।
रातड़ी–देखो 'रात' ।
रातड़ो–देखो 'रातो' ।
रातजगण–पु० १ श्वान, कुत्ता । २ रात्रि जागरण ।
रातडि (डी)–देखो 'रात' ।
रातणी (णी)–देखो 'राचणी' (णी) ।
रातदिन–पु० [सं० रात्रि-दिवं] १ चौबीस घंटे की अवधि, रात्रि व दिवस । २ नित्य व प्रतिदिन ।
रातब–देखो 'रातिब' ।
रातमुख (मुखी)–पु० [सं० रक्त मुख] मुसलमान, यवन ।–वि० लाल मुख वाला, रक्त मुखी ।
रातरळी–देखो 'रात' ।
रातरांणी–स्त्री० १ रात को सुगंध देने वाले फूलों का पौधा । २ इन फूलों का इत्र ।
रातरी–देखो 'रात्रि' ।
रातरोळो–पु० रात का आक्रमण, झगड़ा ।
रातळ, रातल, रातल्ल–स्त्री० १ मादा गिद्ध, गिद्धनी । २ मादा ऊंट ।
रातळी–वि० (स्त्री० रातली) १ लाल रंग का, रक्त वर्ण का । २ क्रुद्ध, क्रोधित ।–पु० ऊंट ।
रातविरात–क्रि० वि० रात के समय, रात में किसी समय ।
रातांखियो–वि० [सं० रक्त-अक्षि] (स्त्री० रातांखी, रातांखो) १ आरक्त या लाल नेत्रों वाला । २ सिंह, शेर ।
रातादेई–स्त्री० माता के लिये प्रयुक्त होने वाला एक विशेषण शब्द ।
रातापात–स्त्री० [सं० रक्त पत्र] रंगशाल नामक पौधा ।
रातिदी–देखो 'रातीदी' ।
राति–देखो 'रात' ।
रातिचर–पु० निशाचर, राक्षस ।
रातिजागर–देखो 'रातीजागर' ।
रातिब–पु० [अ०] १ घोड़े आदि जानवरों को खिलाने का पौष्टिक पदार्थ । २ इस पदार्थ की नियमित दी जाने वाली खुराक । ३ मांस ।—बंध–पु० 'रातिब' की नियमित खुराक ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रातिवास (सो), रातिवाहि (वाही)–देखो 'रातीवासो'।

रातिरिया–वि० लाल, रक्ताभ।

रातौंधी (धो)–पु० [सं० रात्रि-अंध] १ एक प्रकार का नेत्र रोग। रात में २ दिखने का रोग।

रातो–वि० [सं० रक्त] १ लाल। २ रंगी हुई, रंजित। ३ अनुरक्त आसक्त। ४ मस्त, मग्न। ५ क्रोधित, क्रुद्ध। ६ देखो 'रात'।

रातोखाखी–स्त्री० लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।

रातोखोछ–वि० लाल सुर्ख।

रातोजगड, रातोजगो–देखो 'रातीजागो'।

रातोजवार–स्त्री० लाल रंग की जवार। ज्वार।

रातोजागर–पु०[सं० रात्रि–जागरः] कुत्ता, श्वान।

रातीजागो (जुगो, जोगो)–पु० [सं० रात्रि-जागरण] १ ईश्वर भजन या सत्संग करते हुए रात में जगना। २ मांगलिक अवसरों पर रात में देवी–देवताओं के गीत गाते हुए जगना।

रातोवासो (वाही)–देखो 'रातीवासो'।

रातोभाजो–स्त्री० मांस।

रातोवाय, रातीवास, रातीवासो, रातोवाह (हि, हो)–पु० [सं० रात्रि-वस, रात्रि-वा] १ रात्रि-विश्राम, रात्रिवास। २ रात में किया जाने वाला हमला, आक्रमण। ३ रात में डाला जाने वाला डाका, लूट-पाट।

रातु रातूं–वि० १ रात में, रात के समय। २ देखो 'राती'। ३ देखो 'रात'।

रातेलो–वि० (स्त्री० रातूली) रक्तवर्ण, लाल।

रातेरीगं–वि० क्रुद्ध।

रातोरात–देखो 'रातोरात'।

रातोकोट–पु० पोकरण का कोट या गढ़।

रातोड़–स्त्री० १ ललाई, लालिमा। २ घाव, फोड़े या दर्द वाले स्थान पर पड़ने वाला दाग।

रातोचंदण–पु० [सं० रक्तचंदन] लाल चंदन।—वि० रक्त वर्ण लाल।

रातोचुरंग–देखो 'रातोकोट'।

रातोचंब–वि० गहरा लाल, रक्ताभ।

रातोमासो–वि० हृष्ट-पुष्ट, तंदुरुस्त। मोटा-ताजा।

रातोरात–क्रि०वि० रात-रात में, दिन होने से पहले-पहले।

रातो–वि० [सं० रक्तः] (स्त्री० राती) १ रक्त वर्ण, लाल, सुर्ख। २ रंगा हुआ, रंजित। ३ लाल रंग से रंजित। ४ आसक्त, अनुरक्त। ५ तल्लीन, मग्न। ६ उन्मत्त, मदमस्त। ७ प्रसन्न, खुश। ८ उलझा हुआ, फंसा हुआ, संलग्न। ९ तमतमाया हुआ। १० अत्यधिक गर्म।—पु० [सं० रक्त] खून, रक्त।

रातोदोह–देखो 'रातदिन'।

रात्य–देखो 'रात'।

रात्यूं–१ देखो 'रातू'। २ देखो 'रात'।

रात्यूंरात–देखो 'रातोरात'।

रात्रि–स्त्री० [सं०] १ रात, रजनी, निशा। २ रात की अधिष्ठात्री एक देवी। ३ निराशापूर्ण स्थिति या दशा। ४ जैन मतानुसार एक सप्ताह का समय।—कार–पु० चन्द्रमा। —चर–पु० निशाचर, राक्षस।—चल–पु० राक्षस, असुर।

रात्रिज–पु० [सं०] तारा, नक्षत्र।

रात्रिंचर, रात्रिंचर–देखो 'रात्रिचर'।

राद–पु० घाव या फोड़े में होने वाली पीप। मवाद।

रादनी–स्त्री० [सं० ह्लादनी] १ बिजली, विद्युत। २ वज्र।

रादरड़ी–देखो 'राद'।

रा'दारी–देखो 'राहदारी'।

रादोड़ी, रादोड़ी–देखो 'राद'।

राध, राध-मास–पु० [सं० राधः] १ वैशाख मास का नामान्तर। २ ज्येष्ठ मास का नामान्तर। ३ ग्राम। ४ देखो 'राद'।

राधा, राधाई–स्त्री० [सं०] १ श्रीकृष्ण की प्राण सखी एक गोपी। २ विष्णु की पांच शक्तियों में से एक। ३ कर्ण की धाय माता सूत-पत्नी। ४ बिजली, विद्युत। ५ वैशाख की पूर्णिमा। ६ विशाखा नक्षत्र। ७ समृद्धि, सफलता। ८ विष्णुकांता नामक एक लता। ९ आंवला। १० एक वर्ण वृत्त विशेष।—अस्टमी, आठम–स्त्री० भादव शुक्ला अष्टमी तिथि।—कांत–पु० श्रीकृष्ण।—कुंड–पु० गोवर्धन के समीप का एक सरोवर।—तनय–पु० कर्ण।—रमण–पु० श्रीकृष्ण। श्रीविष्णु।—वल्लभ, वल्लभ–पु० श्रीकृष्ण। श्रीविष्णु।

राधावल्लभी–पु० १ एक वैष्णवी, सम्प्रदाय। २ इस सम्प्रदाय का अनुगामी।

राधि–देखो 'राधा'।

राधिका–स्त्री० [सं०] १ एक मात्रिक छन्द विशेष। २ देखो 'राधा'।

राधेय–पु० [सं०] १ राजा कर्ण। २ अंगद।

राधो, राध्य–देखो 'राद'।

राप्तो, राप्तीनदो–स्त्री० धवलागिरि पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

राफ–स्त्री० १ मुंह के दोनों होठों का संधि स्थान। २ फन। ३ यवन, मुसलमान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राफटरोळ, राफटरोळियो, राफटरोळीयो, राफटरोळी-पु० गड़बड़ी, अव्यवस्था। रोला-दंगा। उपद्रव।

राफसी-पु० एक मुसलमान या यवन जाति व इस जाति का व्यक्ति।

राफो-पु० १ ऊंटों का एक रोग। २ इस रोग से पीड़ित ऊंट।

राब-स्त्री० १ बाजरा, ज्वार, मक्का आदि के आटे को छाछ में पका कर बनाया जाने वाला तरल खाद्य-पदार्थ। २ गन्ने का गाढ़ा रस। ३ रबड़ी। ४ कोई गाढ़ा पेय पदार्थ।

राबड़यो, राबड़ियो-पु० औटा कर गाढ़ा किया हुआ दूध।

राबड़ियो-दूध-पु० कढ़ी नामक पेय पदार्थ।

राबड़ी-देखो 'राब'।

रायंगण (ण, णी)-देखो 'रायआंगण'।

राय-पु० [सं० राजा] १ राजा, नृप। २ स्वामी, मालिक। ३ धन, द्रव्य। ४ एक उपाधि विशेष। ५ कायस्थों की उपाधि। ६ बंगाली कायस्थों का एक भेद। [अ० राए] ७ दरार। ८ सलाह, सुझाव, परामर्श। १० विचार, खयाल।—आंगण, आंगणि, आंगणी, आंगण-पु० राजमहल। राजमहल का आंगन, चौक।—कंवर-पु० राजकुमार। दूल्हा।—कंवरी-स्त्री० राजकुमारी, दुल्हिन।—कन्या='राजकन्या'।—कुंवरी-स्त्री० राजकुमारी।—कूंअर, कूंयर, कूंवर-पु० राजकुमार।—खाती-पु० राजा का बढ़ई।—गुर-पु० राजगुरु। राजाओं में श्रेष्ठ।—घर-पु० राजगृह।—जाबी-स्त्री० राजकुमारी, दुल्हिन।—जाबो, जाधो-पु० राजकुमार, दूल्हा। वर।—पुत्त, पुत्र-पु० राजपुत्र, राजकुमार।—पुत्तिय, पुत्री-स्त्री० राजकुमारी।

रायकेळ-पु० केले की एक जाति। इस जाति का केला।

रायचंपेली-स्त्री० सुगंधित फूलों वाली एक लता।

रायचंपो-पु० एक वृक्ष विशेष।

रायचोक (चौक)-पु० राजमहल का चौक, राजमहल का आंगण।

रायजण (न)-पु० राजा। राजा लोग।

रायजी-पु० कायस्थों का एक संबोधन।

रायजोध-पु० राजाधिराज।

रायडोडो-स्त्री० राजमहल का द्वार, ड्योढ़ी।

रायण (ण, णी)-स्त्री० [सं० राजादनी] १ एक प्रकार का वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष का फल।

रायतेली-पु० राजा का तेली।

रायती-पु० [सं० राजिकाक्त] दही, छाछ में मसाले डाल कर बनाया जाने वाला पेय पदार्थ।

रायथान-देखो 'राजस्थान'।

रायघर-देखो 'राजघर'।

रायपसेणिय, रायपसेणियो, रायसेमणी, रायपसेणीह, रायपसेणीय, रायप्पसेणइज्ज-पु० राज प्रश्नी नामक सूत्र।

रायफळ-देखो 'राइफळ'।

रायफुल-पु० हाथ का आभूषण विशेष।

रायब-स्त्री० बांसवाड़ा से पास बहने वाली एक नदी।

रायबर-देखो 'रायवर'।

रायबहादुर-पु० एक प्रकार की उपाधि।

रायबेल (बेलो)-देखो 'रायवेल'।

रायबोर-पु० झड़बेर के आकार का बेर।

रायभोग-देखो 'राजभोग'।

रायरसोई (यो)-स्त्री० पाकशाला, रसोई।

रायराणा-देखो 'रायरांणा'।

रायरातीजंबो-पु० एक प्रकार का लोक-गीत।

रायरायान-स्त्री० [सं० राज-राज] मुगलकालीन एक उपाधि विशेष।

रायरिख (रिसि, रिसी)-देखो 'राजरिसि'।

रायरी-पु० गेहूँ की फसल के साथ होने वाला राई जैसे बीजों का एक घास।

रायलोप-देखो 'लोमंजदराव'।

रायवनी-पु० १ दूल्हा, वर। २ राजा।

रायवर-पु० [सं० राज वर] १ बड़ा राजा, महाराजा। २ पति, खाविंद। ३ दूल्हा, वर।

रायविधाड़ (ड)-वि० राजाओं को पराजित करने वाला।

रायवेल-स्त्री० सुगंधित फूलों वाली एक लता विशेष।

रायवैकुंठ-पु० [सं० वैकुंठ-राज] श्रीविष्णु।

रायसालि-पु० वृक्ष विशेष।

रायसाहब-पु० ब्रिटिशकाल में दी जाने वाली एक उपाधि।

रायसेण-पु० एक प्रकार का वृक्ष।

रायहंस-देखो 'राजहंस'।

रायहर-पु० राजा का वंशज, राजा।

रायहांणी-देखो 'राजधांनी'।

रायहींदवो-पु० हिन्दुस्तान या हिन्दुओं का राजा।

रायांकवर-देखो 'राजकुमार'।

रायांगण-देखो 'रायआंगण'।

रायांगुर-पु० १ श्रेष्ठ राजा, सम्राट। २ राजगुरु।

रायांतिसक-पु० १ श्रेष्ठ राजा। २ राजतिलक।

रायांराव-पु० मुगलकाल में दी जाने वाली एक पदवी।

राया-स्त्री० १ सोलंकीवंश की एक शाखा। २ देखो 'राजा'।

रायातन-पु० राजा, नृप।

रायि, रायी-१ देखो 'राइ'। २ देखो 'राय'।

रायो-देखो 'राजा'।

रारंग, रार, रारि, रारी-स्त्री० [सं० राजु] १ नेत्र, आंख। २ वृद्ध मादा ऊंट। ३ देखो 'राड़'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रारो–पु० राजा, नृप ।

राळ, राल–स्त्री० १ एक सदाबहार वृक्ष । २ इस वृक्ष से निकलने वाला रसदार पदार्थ । ३ बच्चों या बूढ़ों के मुंह से गिरने वाली थूक की बूंद । ४ एक रोग विशेष । ५ आवाज, ध्वनि । ६ पशुओं का एक रोग ।

राळक–पु० वृक्ष, पेड़ ।

रासड़–देखो 'रासो' ।

राळणो (बो), रालणो (बो)–क्रि० १ ओढना, ढकना । २ बिछाना, फैलाना, छितराना । ३ पहनना, धारण करना । ४ ऊपर से गिराना, पटकना, डालना फेंकना । ५ ढहाना । ६ चलाना, फेंकना । ७ किसी के आगे या आस-पास रखना । ८ त्यागना । ९ लुढ़काना, टपकाना, बहाना । १० लगाना, देना । ११ रखना, धरना ।

राळाबोळी–पु० १ उपद्रव, उत्पात, झगड़ा । २ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।

रालो–स्त्री० बिछाने या ओढने की गुदड़ी । बिस्तर ।

राव–पु० [सं० राजा] १ राजा, नृप, अधिपति । २ स्वामी, मालिक । ३ सरदार, सामंत । ४ राजस्थान के कुछ राजाओं का उपटंक । ५ रईस, अमीर । ६ बंदीजन, भाट । ७ शब्द, आवाज । ८ चीख, चीत्कार । ९ नाद, गर्जन । १० गुंजार । ११ घोड़ों की एक चाल । १३ छोटे आकार का एक वृक्ष ।

रावउत (त्त)–पु० [सं० राज-पुत्र] १ राजा का पुत्र, राजकुमार । २ देखो 'राजपूत' ।

रावड़, रावड़ियो–पु० अनाज में होने वाला धूल का कण ।

रावजादो पु० राजकुमार ।

रावट–देखो 'रावत' ।

रावटो–स्त्री० [सं० राज-कुटी] १ राजा-महाराजाओं का एक हवादार खुला पहनावा । २ एक प्रकार का छोटा तंबू । ३ मकान । (मेवात)

रावडी–स्त्री० [सं० राव+डी] १ फरियाद, पुकार । २ देखो 'रावडी' ।

रावण–देखो 'रावण' ।

रावणखंड (खंडी)–देखो 'रावणखंडी' ।

रावणरिव (रिपु)–देखो 'रावणरिपु' ।

रावणसिर–पु० दस की संख्या ।

रावणा–स्त्री० राजमहलों में काम करने वाले नौकरों की एक जाति ।

रावणारि–देखो 'रावणारि' ।

रावणि (णी)–पु० १ रावण का पुत्र, मेघनाद । २ देखो 'रावण' ।

रावणी–पु० 'रावणा' जाति का व्यक्ति ।

रावत–पु० [सं० राज-पुत्र] १ राजा, नृप । २ छोटा राजा । ३ सामंत, सरदार । ४ योद्धा, वीर, शूरवीर । ५ राजा महाराजाओं द्वारा सामंतों को दी जाने वाली पदवी । ६ दोने-पत्तल बनाने वाली एक व्यावसायिक जाति । ७ इस जाति का व्यक्ति । ८ पति, प्रियतम ।

रावतबट–देखो 'रावतवट' ।

रावतरियां–देखो 'रावत्रियां' ।

रावतरी–स्त्री० सोने-चांदी के आभूषणों में लगाया जाने वाला जोड़ ।

रावतवंस–पु० क्षत्रियवंश ।

रावतवट–पु० १ क्षत्रियत्व, वीरत्व । २ सत्ता, हुकूमत । ३ शौर्य, पराक्रम ।

रावताणी–स्त्री० १ राजपूतानी, क्षत्रिय स्त्री । २ 'रावत' जाति की स्त्री ।

रावताळो–पु० [सं० राजपुत्र] योद्धा, वीर ।

रावतियो–देखो 'रावत' ।

रावती–स्त्री० १ 'रावत' होने की अवस्था या भाव । २ रावत' को पदवी ।

रावतेस, रावत्तेस–पु० १ राजा, नृप । २ श्रेष्ठ राजा । ३ योद्धा, वीर ।

रावत्त–देखो 'रावत' ।

रावत्रियां–स्त्री० कुछ लोक देवियों का समूह ।—वि० वि० देखो 'मावलियां' ।

रावनागा–पु० [सं० नाग-राज] शेष नाग ।

रावमारू–पु० १ मरु प्रदेश का राजा । राठौड़ राजा । २ प्रियतम, पति ।

रावराजा–पु० १ कुछ राजाओं की उपाधि । २ जोधपुर के राजा की उप पत्नी की संतान की उपाधि ।

रावरो–देखो 'रावळो' ।

रावळ, रावल–पु० [सं० लाकुलि] १ राजपुताना के कुछ राजाओं की उपाधि । २ इस उपाधि वाला राजा । ३ नाथ सम्प्रदाय की एक शाखा व इस शाखा का नाथ । ४ भिक्षा वृत्ति वाले जोगी । ५ चारणों के याचकों की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति । ६ प्रधान, सरदार । ७ बद्रीनारायण के प्रधान पण्डे की उपाधि । ८ एक ब्राह्मण वंश ।

रावळड़–देखो 'रावळो' ।

रावळगन–पु० [सं० राजकुल+गण] १ राज परिवार के लोग । २ राजा के भाई-बंधों के निवास का मोहल्ला ।

रावळांसा–पु० चारण, राजपूतों की स्त्रियों के प्रति, उनसे संबंधियों का संबोधन विशेष ।

रावळा रावळे–सर्व० आपके ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रावळाई–स्त्री० रावल की पदवी।
रावलि (ली)–वि० राजा की, जगीरदार की। वि० आपकी।
रावलियौ, रावलियौ–१ देखो 'रावळ'। २ देखो 'रावळौ'।
रावळे (ळै)–सर्व० १ मध्यम पुरुष का संबोधन, आप। २ आप, श्रीमान।–वि० १ आपका। २ अन्तःपुर का।–पु० १ जनानी ड्योढी, अंतःपुर। २ राज दरबार।
रावळौ (ळो)–पु० [सं० राजकुल] १ राजमहल, राजगृह। २ राजदरबार। ३ अन्तःपुर, रनिवास।– सर्व० आपका, श्रीमानका।–वि० राजा का, राजा संबंधी। आपका।
रावांराव–पु० राजाओं का राजा, राजेश।
रावा–स्त्री० गाय रंभाने की ध्वनि।
रावाई–स्त्री० १ 'राव' की पदवी या अधिकार। २ राव होने की अवस्था। ३ सत्ता।
रावी–स्त्री० [सं० ऐरावती] पश्चिमी पंजाब में बहने वाली एक नदी।
रावेटउं–पु० एक प्रकार का वस्त्र।
रावौ–देखो 'राव'।
रास–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण व गोपियों की नृत्य लीला। २ गोप लोगों का एक प्रकार का नृत्य-गायन। ३ वृत्ताकार सामूहिक नृत्य-क्रीड़ा। ४ नृत्य। ५ खेल, अभिनय। ६ हास विलास। ७ काव्य। ८ कोलाहल, शोरगुल। ९ जोर की ध्वनि, शब्द। १० वाणी। ११ तेरह मात्राओं की एक ताल।–स्त्री० [सं० रश्मि] १२ बागडोर, लगाम। १३ बैलों की रस्सी। १४ घोड़े की चाल विशेष। १५ रस्सी, डोरी। १६ जंजीर, शृंखला। १७ प्रत्यंचा, डोर। १८ तिलों से निकलने वाला भूसा। [सं० राशि] १९ खलिहान में अनाज का ढेर। २० बारह की संख्या। २१ देखो 'रासि'।
रासड़सी–देखो 'रास'।
रासचक्र–देखो 'राशिचक्र'।
रासट–पु० [सं० राष्ट्र] देश, मुल्क।
रासत–स्त्री० रियासत, राज्य।
रासती–स्त्री० मित्रता, दोस्ती।
रासतीक–वि० मित्रता करने वाला।
रासतौ–पु० रास्ता, पथ, मार्ग।
रासथळ–पु० [सं० रास–स्थल] १ रंगशाला, नृत्यशाला। २ क्रीड़ा स्थल।
रासधारी–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण। २ रास क्रीड़ा करने वाला।
रासन–पु० १ खाद्य सामग्री की निश्चित मात्रा। २ सरकारी स्तर पर की जाने वाली खाद्य सामग्री की वितरण व्यवस्था। ३ इस व्यवस्था के अन्तर्गत प्रत्येक परिवार का बनाया जाने वाला प्रपत्र, कार्ड। ४ खाद्य सामग्री।
रासना–देखो 'रास्ना'।
रासनृत्य, रासनृत्य–पु० [सं० रास–नृत्य] एक प्रकार का नृत्य विशेष।
रासपूनम (पूरनिमा)–स्त्री० [सं० रासपूर्णिमा] मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा।
रासभ रासभ–पु० [सं० रासभ] गधा, गर्दभ।
रासभूमि–स्त्री० [सं०] रासक्रीड़ा या रास नृत्य का स्थान।
रासमंडळ–पु० १ रास नृत्य का घेरा या वृत्त। २ रास नृत्य का स्थान। ३ रास क्रीड़ा करने वालों का समूह।
रासमंडळी–स्त्री० रास नृत्य या रास नृत्य का अभिनय करने वाले कलाकारों का दल, टोली।
रासरमण (न)–पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ श्रीकृष्ण।
राससीला–स्त्री० [सं०] १ श्रीकृष्ण की रास क्रीड़ा का अभिनय। २ श्रीकृष्ण व गोपियों का रास नृत्य।
रासव–देखो 'रासभ'।
रासविलास–पु० [सं०] रासक्रीड़ा।
रासविहारी–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण। २ ईश्वर, परमात्मा।
रासायण, रासायन–वि० [सं०] रसायन का, रसायन संबंधी।
रासायनिक–वि० [सं०] १ रसायन शास्त्र का, रसायन शास्त्र संबंधी। २ रसायन शास्त्र का ज्ञाता।
रासि–स्त्री० [सं० राशि] १ किसी वस्तु का ढेर, समूह, पुंज। २ जोड़-बाकी आदि से निकलने वाली कोई संख्या। ३ कोई रकम (Amount)। ४ किसी का उत्तराधिकारी। ५ क्रांति वृत्त के बारह तारों का समूह। ६ बारह की संख्या। ७ देखो 'रास'। ८ देखो 'रश्मि'।—चक्र–पु० ज्योतिष की राशियों का वृत्त या मंडल। ग्रहों के चलने का मार्ग।—नाम–पु० बच्चे के जन्म के समय होने वाली राशि के अनुसार नाम।
रासिप–पु० [सं० राशिप] किसी राशि का अधिपति देवता।
रासिबि–देखो 'रासभ'।
रासिभाग–पु० [सं० राशि–भाग] ज्योतिष में राशि का भाग।
रासी–देखो 'रासि'।
रासीक–वि० साधारण, मामूली।
रासु, रासू–देखो 'रासौ'।
रासेस्वरी–स्त्री० [सं० रासेश्वरी] राधा।
रासौ–पु० १ युद्ध संबंधी काव्य या पद्यमय रचना। २ ऐसे काव्य की पुस्तक। ३ युद्ध, लड़ाई। ४ विवाद, झंझट, बखेड़ा। ५ अव्यवस्था। ६ उलझन, समस्या। ७ तमाशा, खेल। ८ ढंग। ९ कार्यक्रम, ढांचा।
रास्ट, रास्ट्र–पु० [सं० राष्ट्र] १ राज्य, साम्राज्य। २ देश, राष्ट्र, मुल्क। ३ एक ही शासन के अधीन आने वाला क्षेत्र या जनता। ४ देशव्यापी बाधा, उपद्रव, ईति। ५ पुरुरवा का वंशज एक राजा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राष्ट्रकूट–पु० [सं० राष्ट्रकूट] एक क्षत्रिय वंश, राठौड़ ।

राष्ट्रपति–पु० [सं०राष्ट्रपति] किसी देश का संवैधानिक सर्वोच्च शासक । राष्ट्राध्यक्ष ।

राष्ट्रपाळ–पु० [सं० राष्ट्रपालक] १ राजा । २ कंस का एक भाई ।

राष्ट्रभंगी–पु० [सं० राष्ट्रभंगी] पीठ पर भंवरी वाला एक घोड़ा विशेष ।

राष्ट्रभेद–पु० [सं० राष्ट्र भेद] एक प्रकार की राजनीति ।

राष्ट्रवासी–पु० [सं० राष्ट्रवासिन्] देश का निवासी ।

रास्तागीर–पु० पथिक, राहगीर ।

रास्तो–पु० [फा० रास्तः] १ मार्ग, पथ, राह, रास्ता । २ उपाय तरीका, तरकीब । ३ परंपरा, रीति, प्रथा । ४ कार्य की विधि । ५ सिद्धान्त ।

रास्ना–स्त्री० [सं०] १ गंधनाकुली नामक काष्ट औषधि विशेष । २ रुद्र की प्रधान पत्नी ।

राह–स्त्री० [फा०] १ मार्ग, रास्ता, पथ । २ परंपरा, प्रथा, रीति । ३ ठीक आचरण-व्यवहार । ४ धार्मिक मत, सिद्धान्त । ५ धर्म, कर्त्तव्य । ६ मर्यादा, गौरव । ७ कार्य, कर्म । ८ प्रतीक्षा, इंतजार । ९ आशा, उम्मीद । १० प्रयत्न, कोशिश । ११ युक्ति, तरकीब, उपाय । १२ तरह, भांति, प्रकार । १३ ढंग, तरीका । १४ मस्तक, सिर । १५ घोड़े की एक चाल । १६ देखो 'राहु' ।—खरच—पु० यात्रा के लिये होने वाला खर्च, यात्रा में साथ रखा जाने वाला द्रव्य ।

राहगीर–पु० [फा०] पथिक, राही, बटाऊ ।

राहड़–स्त्री० संध्या, शाम ।

राहड़ो–स्त्री० १ रस्सी, डोरी, रज्जु । २ देखो 'राह' ।

राहड़ो–देखो 'राह' ।

राहचक (चकी, चक्क, चक्क)–पु० लड़ाई, युद्ध ।

राहजनी–स्त्री० [फा०] यात्रियों की लूट-पाट, बटमारी ।

राहणी–पु० परिग्रह, घरबारी ।

राहणो (णी)–क्रि० १ युद्ध करना, लड़ाई करना । २ मारना, संहार करना । ३ उद्दण्ड पशु को ठीक करना ।

राहत–स्त्री० [अ०] चैन, आराम, सुख ।

राहदार–वि० १ राह चलने वाला । २ 'राह' वाले से चलने वाला । (घोड़ा) [फा०] १ चौकीदार, प्रहरी । २ रास्ते के यात्रियों से कर वसूल करने वाला कर्मचारी । ३ पथिक ।

राहदारी–स्त्री० १ चौकीदारी । २ यात्रा । ३ यात्रा कर वसूल करने की क्रिया ।

राहबंधी–स्त्री० सलाह, राय, मशविरा ।

राहबेधी–देखो 'राहवेधी' ।

राहरीत, राहरीति–स्त्री० १ परंपरा, प्रथा, रूढ़ि, रीति-रिवाज । २ आचार-व्यवहार, । ३ लेन-देन । ४ व्यवहार ।

राहरुद्ध–वि० १ रास्ता रोकने वाला । २ व्यवधान करने वाला ।

राहरुन्त–वि० राहु ग्रह के समान ।

राहसणो (णी)–क्रि० राह पर लाना, सीधा करना, ठीक राह बताना ।

राहसणी (णी)–क्रि० १ राह पर चलना । २ परंपरा निभाना, प्रथा का अनुकरण करना । ३ रक्षा करना ।

राहवेधी–वि० १ लुटेरा डाकू । २ कूटनीतिज्ञ । राजनीतिज्ञ । ३ दूरदर्शी । ४ नीति निपुण, नीतिज्ञ । ५ चतुर, प्रवीण । बुद्धिमान । ६ बड़ा वीर, योद्धा । ७ राह रोकने वाला । ८ रास्ते का जानकार ।

राहाड़–पु० लड़ाई, झगड़ा ।

राहाचरक, राहाचरक–देखो 'राहचक' ।

राहाली–वि० १ युद्ध कराने वाली । २ राह या मार्ग धारण करने वाली ।

राहाली–वि० १ राह पर चलने वाला । २ रीति या परंपरा निभाने वाला । ३ न्याय प्रिय । ४ चरित्रवान ।

राहावेधी–देखो 'राहवेधी' ।

राहावेहु–देखो 'राहावेध' ।

राहि राही–पु० [फा०] राहगीर, पथिक, यात्री ।–वि० १ राह चलने वाला । २ अनुगामी ।

राहु–पु० [सं०] १ नव ग्रहों में से एक । २ इस नाम का दानव, असुर । ३ ग्रहण । ४ गेहू नामक मछली । ५ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ४४ वां ग्रह ।—ग्रसण, ग्रसन–पु० सूर्य या चंद्र ग्रहण ।—ग्रास–पु० ग्रहण ।—वरसण–पु० ग्रहण । —सूतक–पु० ग्रहण ।

राहुभेदी–पु० [सं० राहु-भेदिन्] विष्णु ।

राहुरत्न–पु० [स०] गोमेद मणि ।

राहू–वि० १ काला । २ श्वेत । ३ देखो 'राहु' ।

राहूड़ो–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ देखो 'राहु' ।

रिछ–पु० रीछ ।

रिछ्या–देखो 'रक्षा' ।

रिछक, रिछळो–देखो 'रिझाली' ।

रिझणो (णी)–देखो 'रींझणो' (णी) ।

रिझावन–स्त्री० मुग्ध करने की क्रिया ।

रिड़ो–स्त्री० पीठ की ओर मुड़े हुए सींगों वाली गाय ।

रि–स्त्री० १ चलने की क्रिया या भाव । २ देखो 'रे' ।

रिझायत–स्त्री० [अ०] १ नियम, कानून या व्यवस्था में दी जाने वाली छूट, शिथिलता, ढील । २ सहूलियत, राहत,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुविधा। ३ अनुग्रह, नर्माई। ४ पक्षपात। ५ विशेष ध्यान, खयाल। ६ वस्तु के मूल्य में होने वाली कमी या छूट।

रिआया–स्त्री० [अ० रआया] प्रजा, जनता।

रिउ–पु० [सं० रिपु] १ शत्रु, दुश्मन। २ देखो 'रो'।

रिक–देखो 'रिक्त'।

रिक्तता– १ देखो 'रिक्तता'। २ देखो 'रिक्तता'।

रिकब–देखो 'रिकाब'।

रिकसो–पु० तीन पहियों की एक साइकिल गाड़ी।

रिकाब–पु० [अ०] १ सवारी का ऊंट। २ देखो 'रकाब'।

रिकारी–देखो 'रैकारी'।

रिक्ख–१ देखो 'रिसि'। २ देखो 'रिक्ष'।

रिक्खम–देखो 'रिसभ'।

रिक्खि–देखो 'रिसि'।

रिक्त–वि० [सं०] १ खाली किया हुआ, रीता। २ रहित, विहीन। ३ शून्य। ४ खोखला, पोला। ५ विमुक्त, वियुक्त,। ६ गरीब, निर्धन, मुहताज।–पु० १ खाली जगह। २ वन, जंगल। ३ आकाश। ४ अवकाश।

रिक्तता–स्त्री० [सं०] १ खालीपन, रीता होने की अवस्था। २ अभाव। ३ खोखलापन। ४ गुंजाइश, अवकाश। ५ शून्यता। ६ गरीबी, निर्धनता। ७ विहीनता।

रिक्ता–स्त्री० [सं०] शुभ कार्य के लिये वर्जित तिथि।–वि० विहीन।

रिक्तारक–पु० [सं० रिक्तार्क] रविवार को पड़ने वाली चतुर्थी, नवमी व चतुरदशी की तिथि।

रिक्थ–स्त्री० [सं० ऋक्थम्] १ पूंजी, धन, द्रव्य। २ उत्तराधिकार में मिली सम्पत्ति। ३ स्वर्ण, सोना। ४ व्यापार या व्यवसाय में लगी पूंजी।

रिक्ष–देखो 'रिसि', 'रिख'।

रिक्षा–स्त्री० [सं० लिक्षा] १ जूं का अंडा, लीख, लिक्षा। २ एक तौल विशेष। ३ रक्षा।

रिक्षास्त्र–पु० एक प्रकार का अस्त्र।

रिखभ–देखो 'रिसभ'।

रिख–पु० [सं० ऋक्षः] १ तारे, नक्षत्र। २ सूर्य। ३ ऋषि, सप्तर्षि। ४ सात की संख्या। ५ वन, जंगल। ६ वट वृक्ष। ७ रामदेव के उपासक एक वर्ग का नाम। ८ देखो 'रिसि'।

रिखअंख–पु० तीन अथवा सात नेत्र।

रिखगण–पु० [सं० ऋक्षः] तारा, उडगन।

रिखड़ु, रिखड़ो–१ देखो 'रिसि'। २ देखो 'रिख'।

रिखप–देखो रिक्थ'।

रिखदेव–पु० महादेव, शिव।

रिखधुनि–स्त्री० [सं० ऋषि-ध्वनि] गंगा नदी।

रिखपंति–स्त्री० [सं० ऋक्ष-पंक्ति] नक्षत्रों की पंक्ति या कतार।

रिखपत (पति)–पु० [सं० ऋषि-पति] ऋषि श्रेष्ठ, ऋषिराज।

रिखपांचम–देखो 'रिसिपांचम'।

रिखपूनम–देखो 'रिसिपूरणिमा'।

रिखप–पु० [सं० ऋक्षः] १ इन्द्र। २ सूर्य। ३ अग्नि। ४ देखो 'रिसभ'।

रिखभदेव–देखो 'रिसभदेव'।

रिखभ–देखो 'रिसभ'।

रिखभदेव–देखो 'रिसभदेव'।

रिखभधुज–पु० [सं० ऋषभध्वज] शिव, महादेव।

रिखभानन–पु० [सं० ऋषभानन] सातवें विहरमान का नाम।

रिखमंडल–पु० [सं० ऋक्षः मण्डल] १ नक्षत्र मण्डल, तारामण्डल। २ आकाश, नभ। ३ तारा, नक्षत्र। [सं० ऋषि मण्डल] ४ ऋषि मंडली।

रिखमंडली (ली)–पु० [सं० ऋषि-मंडली] १ ऋषि समूह, ऋषि समाज। २ हंस।

रिखमातंग–पु० मातंग ऋषि।

रिखमूक–देखो 'रिस्यमूक'

रिखयंद–पु० [सं० ऋषि-इन्द्र] मुनीश्वर, ऋषीश्वर।

रिखय–देखो 'रिसि'।

रिखया–स्त्री० [सं० ऋषि] रामदेवपीर की भक्त, एक मेघवाल जाति। चमार।

रिखराज (राज)–देखो 'रिसिराज'।

रिखराजि–स्त्री० [सं० ऋक्ष-राजि] तारों की पंक्ति।

रिखभ–देखो 'रिसभ'।

रिखवर–देखो 'रिसिवर'।

रिखवरणी–देखो 'रिसिवरणी'।

रिखव्रत–देखो 'रिसिव्रत'।

रिखसपत–देखो 'सप्तरिसि'।

रिखसर–देखो 'रिसीश्वर'।

रिखसात–देखो 'सप्तरिसि'।

रिखस्त–पु० [सं० ऋषि-अस्थि] वज्र।

रिखहेसर–देखो 'रिसीश्वर'।

रिखि–देखो 'रिसि'। देखो 'रिख'।

रिखियो–पु० 'रिखया' जाति का चमार।

रिखिराज (राय)–देखो 'रिसिराज'।

रिखो–देखो 'रिसी'।

रिखीकेस (केसु)–देखो 'रिसीकेस'।

रिखीपंचमी (पांचम)–देखो 'रिसीपांचम'।

रिछीमूक–देखो 'रिस्यमूक'।

रिछीराज (राय)–देखो 'रिसिराज'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिखीस, रिखीसर, रिखीसुर, रिखीस्वर–देखो 'रिसीस्वर'
रिखु–देखो 'रिसी'।
रिखेंद्र–देखो 'रिसींद्र'।
रिखेस, रिखेसर, रिखेसुर, रिखेस्वर–देखो 'रिसीस्वर'।
रिख्ख–देखो 'रिखी', 'रिख'।
रिख्या–देखो 'रक्षा'।
रिख्यावत–वि० [सं० रक्षा-वत्] रक्षा करने वाला।
रिगटोळ–स्त्री० हंसी, मजाक।
रिगणी(बो), रिगतणी(बो)–क्रि० खसकाना, तकना, झींकना।
रिगतभिच्छा–स्त्री० तुच्छ वस्तुओं की भिक्षा।
रिगतियो, रिगत्यो–देखो 'रमत्यो'।
रिगदोळणी (बो)–देखो 'रगदोळणी' (बो)।
रिगरिगाड़–स्त्री० हिचकिचाहट।
रिगस–स्त्री० दिल्लगी, हंसी-मजाक।
रिगवेद–पु० [सं० ऋग्वेद] चार वेदों में से एक। ऋग्वेद।
रिगवेदी–वि० [सं० ऋग्वेदी] ऋग्वेद का ज्ञाता।
रिगसणो (बो)–क्रि० [स० रिस] १ शरीर या किसी अंग को घसीटते हुए चलना। २ चलायमान या गतिमान होना। ३ खिचना, तनना। ४ घूमना, टहलना।
रिड़–पु० १ भैंस के बोलने की क्रिया या ध्वनि। २ कंकरीली भूमि। ३ भीड़, समूह। ४ युद्ध, झगड़ा।
रिड़क–पु० भैंस के बोलने का शब्द।
रिड़कणो (बो)–क्रि० १ भैंस का बोलना, बोलते रहना। २ लुढ़कना, फिसलना।
रिड़कली (बो)–स्त्री० छोटी पहाड़ी।
रिड़णी (बो)–क्रि० १ नगाड़े या ढोल का बजना। २ युद्ध करना, लड़ना। ३ देखो 'रिड़णो' (बो)।
रिड़मल–पु० [सं० रण-मल्ल] १ योद्धा, वीर। २ जोधपुर के संस्थापक राव जोधा के पिता। ३ राठौड़ क्षत्रियों की एक उप शाखा व इसका व्यक्ति।
रिड़मलवट–स्त्री० शूरता, बहादुरी।
रिड़मलोत–पु० राठौड़ों की रिड़मल शाखा के व्यक्ति।
रिड़मल्ल (माल)–देखो 'रिड़मल'।
रिड़ारिड़, रिड़ोरिड़–स्त्री० एक ध्वनि विशेष।—क्रि० वि० लगातार, क्रमशः।
रिड़ी–वि० पड़ा हुआ, गिरा हुआ।
रिचा–स्त्री० [सं० ऋचा] १ वेद मंत्र, वेद स्तोत्र। २ ऋग्वेद की ऋचा। ३ ऋग्वेद। ४ चमक, कांति। ५ प्रशंसा।
रिच्छक–देखो 'रक्षक'।
रिच्छ्या, रिच्छा, रिच्छ्या–देखो 'रक्षा'।
रिच्छक–देखो 'रक्षक'।
रिच्छपाळ (ळो)–देखो 'रक्षपाल'।
रिछ्या–देखो 'रक्षा'।
रिजक–पु० [अ० रिज्क] १ आजीविका, रोजी, वृत्ति। २ आमदनी, आय। ३ रोटी, भोजन। ४ अन्न, अनाज। ५ सेवा-चाकरी में मिलने वाली जागीर। ६ प्रतिष्ठा। ७ धन, द्रव्य। ८ अच्छी किस्म का बारूद।
रिजकणो (बो)–क्रि० लिखा होना, बदा होना, प्राप्य होना।
रिजकदांणी (दांनी)–स्त्री० बन्दूक या तोप छोड़ने का बारूद रखने की डिबिया।
रिजकि, रिजक्क, रिजग–देखो 'रिजक'।
रिजगो–पु० एक प्रकार का पत्तीदार घास। (घोड़ों का)
रिजवार–देखो 'रिझवार'।
रिजाळी–स्त्री० बदमाश या बदचलन औरत।
रिजाळो–वि० (स्त्री० रिजाळी) १ बदचलन। २ नीच, दुष्ट। ३ धूर्त, चालाक।
रिजिक–देखो 'रिजक'।
रिजु, रिजू–देखो 'रज्जु'/'रज्जू'।
रिज्झणो (बो)–क्रि० १ दया उत्पन्न हो ऐसी वाणी। २ देखो 'रीझणो' (बो)।
रिझकवार, रिझवार–वि० १ रीझने वाला, मुग्ध होने वाला। २ प्रसन्न या खुश होने वाला। ३ मस्त, मतवाला। ४ रसिक। ५ उदारचित्त, दातार। ६ कृपा, अनुग्रह करने वाला।
रिझवाणी (बो)–देखो 'रीझाणी' (बो)।
रिझाणी (बो), रिझावणी (बो)–देखो 'रीझाणी' (बो)।
रिट्ठ–देखो 'रीठ'।
रिट्ठनेमि–पु० जैनियों के बाईसवें तीर्थ कर।
रिट्ठा–स्त्री० धूम प्रभा नामक नर्क। (जैन)
रिठ, रिठि–देखो 'रीठ'।
रिड़णो (बो)–क्रि० १ बहना, गतिमान होना। २ डाला जाना।
रिड्डु–पु० कष्ट, दुःख।
रिढ–स्त्री० भेड़।
रिणंगण, रिणंगणि–देखो 'रणांगण'।
रिण–पु० [सं० ऋण] १ कर्जा, कर्ज, उधार। २ दुर्ग, किला। ३ जल, पानी। ४ भूमि। ५ एक प्रकार का यज्ञ। ६ वेदाध्ययन एवं संतानोत्पत्ति का कर्तव्य। ७ देखो 'रण'।
रिण-अठैल–वि० युद्ध में अडिग रहने वाला वीर।
रिणउ–देखो 'रिण', 'रण'।
रिणकाली–देखो 'रणकाली'।
रिणकाहल–पु० युद्ध का एक बाजा।
रिणखंभ–देखो 'रणखंभ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिणखळी-पु० युद्धस्थल, युद्ध भूमि।
रिणखेत (खेति, खेत्रि)-देखो 'रणक्षेत्र'।
रिणजग्ग-पु० घोड़ा, अश्व।
रिणगहिलो-देखो 'रणगहिलउ'।
रिणघटियो-पु० खरगोश।
रिणघोर-पु० रणनाद, समरनाद।
रिणछोड़-देखो 'रणछोड़'।
रिणछोड़राय-पु० श्रीकृष्ण। ईश्वर।
रिणजंग-पु० युद्ध।
रिणजोहल-वि० युद्ध में आनन्द लेने वाला वीर।
रिणठाण-पु० [सं० रणस्थान] रणक्षेत्र, युद्धस्थल।
रिणताळ (ताळी)-देखो 'रणताळ'।
रिणतूटो-वि० युद्ध में मरने वाला।
रिणतूर-देखो 'रणतूर'।
रिणथम (थंभर, थंभोर)-देखो 'रणथंभ'।
रिणस्थल-देखो 'रणस्थल'।
रिणधीर-देखो 'रणधीर'।
रिणबंध-पु० योद्धा, भट।
रिणभिक्खण-पु० [सं० रण-भक्षण] योद्धा।
रिणभुइ (भूमि, भोम)-देखो 'रणभूमि'।
रिणमंडप-देखो 'रणमंडप'।
रिणमल (मल्ल)-पु० १ देवी, शक्ति, दुर्गा। २ देखो 'रणमल्ल'।
रिणम्मल-देखो 'रणमल्ल','रिणमल'।
रिणयोद्धा-पु० वीर पुरुष।
रिणराव-पु० महावीर।
रिणरिण-स्त्री० दुःख भरी आवाज, कराहने का शब्द।
रिणरीछळ, रिणरीछळ (रीछळ)-वि० युद्धोन्मत्त योद्धा।
रिणवट (वटि, वट्ट)-देखो 'रणवट्ट'।
रिणवत (वत्त, वत्ता)-स्त्री० [सं० रण-वार्ता] युद्ध संबंधी वार्ता, विचार-विमर्श।
रिणवाउलो-देखो 'रणगहिलउ'।
रिणवाट-देखो 'रणवट्ट'।
रिणवास-देखो 'रणवास'।
रिणसाल-पु० [सं० रणशल्य] १ योद्धा, वीर। २ युद्ध, झगड़ा।
रिणसींग-देखो 'रणसींगो'।
रिणसेज्ज-स्त्री० युद्ध भूमि।
रिणसोर-पु० युद्ध का कोलाहल, युद्ध का शोर।
रिणसोहो-वि० युद्ध का इच्छुक।
रिणाई-वि० १ ऋणदाता, कर्ज देने वाला। २ देखो 'रणोई'।
रिणायर-देखो 'रत्नाकर'।
रिणि-देखो 'रिणी', 'रण'।
रिणिखेत, रिणिखेत्र-देखो 'रणक्षेत्र'।
रिणिताळ, रिणितालो-देखो 'रणताळ'।
रिणिरित-देखो 'रिणीरित'।
रिणिवट-देखो 'रणवट्ट'।
रिणी-वि० [सं० ऋणी] १ जिसने कर्ज लिया हो, कर्जदार। २ अहसानमंद। ३ उपकार मानने वाला, कृतज्ञ। ४ देखो 'रण'।
रिणीरित (रितु)-स्त्री० ग्रीष्म ऋतु। अत्यधिक गर्मी वाला मौसम।
रिणोइ, रिणोई, रिणोही-देखो 'रणोई', 'रिणाई'।
रिणो-देखो 'रण', 'रिण'।
रित-१ देखो 'रितु'। २ देखो 'रति'।—पत, पति, पती='रितुपति'। —परस='रितुपरस'।—मांन='रितुमान'।—रमण='रितुरमण' 'रतिरमण'—राज, राव='रितुराज'।
रितवसंत-पु० वसंत ऋतु।
रितविधी-वि० निर्बल, अशक्त, कमजोर।
रितवीर-पु० [सं० रिक्तवीर] तरकस, तूणीर।
रितसांई-पु० [सं० ऋतुस्वामी] श्वान, कुत्ता।
रितहेमत-स्त्री० हेमंत ऋतु।
रितावणो (वो)-क्रि० खाली करना, रिक्त करना।
रिति-१ देखो 'रितु'। २ देखो 'रीति'। ३ देखो 'रति'।
रितिपालटि-पु० ऋतु परिवर्तन।
रितिफळ, रितिफल-पु० [सं० ऋतु-फलम्] ऋतु के अनुसार होने वाला फल।
रितिराइ (राउ, राज)-देखो 'रितुराज'।
रितु, रितू-स्त्री० [सं० ऋतु] १ ऋतु, मौसम। २ जलवायु, आबोहवा। ३ शब्द प्रवर्तक काल। ४ उपयुक्त या निर्धारित समय। ५ रजोदर्शन। ६ रजोदर्शन के उपरांत गर्भाधान का उपयुक्त समय। ७ प्रकाश, चमक। ८ सत्य व उच्च वृत्ति युक्त निर्वाह, व्यवहार। ९ छः की संख्या।—काळ-पु० रजस्वला होने का समय। रजोदर्शन के बाद का समय।—गमन-पु० ऋतुकाल में किया जाने वाला मैथुन।—गामी-वि० समयानुसार संभोग करने वाला।—चरय्या-स्त्री० मौसम के अनुकूल आहार-विहार। —दांन-पु० संतान की इच्छा से किया जाने वाला संभोग। गर्भाधान की क्रिया।—पति-पु० वसंत।—परस-पु० श्वान, कुत्ता।—मती-स्त्री० रजस्वला।—मांन-पु० कामदेव।—रमण-पु० ऋतु के अनुरूप रमण करने वाला। —राई, राउ, राज-पु० वसंतऋतु।—वंती, वती-स्त्री० रजस्वला।
रितेज-पु० [सं० रिक्त-तेज] तारा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिक्षपरण–पु० [सं० ऋक्ष-पर्ण] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा ।

रिक्षिज–पु० [सं० ऋत्विज्] यज्ञ का पुरोहित ।

रिख–पु० [सं० ह्रद] १ जलाशय, सरोवर, तालाब । २ झील । ३ ध्वनि, आवाज । ४ किरण । ५ देखो 'हिरदी' ।

रिखय, रिखि, रिखी–देखो 'हिरदी' ।

रिछ–पु० [सं० ऋक्ष] १ विष्णु का एक नामान्तर । २ देखो 'रिद्धि' ।

रिछि–स्त्री० [सं० ऋद्धि] १ लक्ष्मी देवी । २ पार्वती देवी । ३ कुबेर की पत्नी । ४ गणेश की अनुचरी एक देवी । ५ वरुण की पत्नी । ६ एक अलौकिक शक्ति । ७ धन, द्रव्य, पूंजी, निधि । ८ ऐश्वर्य, वैभव । ९ सफलता । १० वृद्धि, बढ़ोतरी । ११ पूर्णता । १२ एक लता विशेष । १३ एक ओषधि विशेष । १४ आर्या छन्द का भेद विशेष । —दाता–वि० दानी । लक्ष्मी ।—नायक–पु० गणेश । वजानन ।–वत, वती–पु० धनवान, वैभवशाली ।—सार–वि० धनवान ।

रिछि-सिछि–स्त्री० [सं० ऋद्धि-सिद्ध] १ गणेश की दो पत्नियां, देवियां । २ समृद्धि, वैभव, यश, प्रभाव । ३ द्रव्य, धन ।

रिछी, रिछो–देखो 'रिद्धि' ।

रिछ–पु० १ तरह, भांति, प्रकार । २ घर, मकान । ३ बड़े या विशेष भोज में, सर्वप्रथम अलग लेकर रखा जाने वाला भोजन का अंश । ४ देखो 'रिद्धि' ।—दाता='रिद्धि-दाता' । —वत, वत='रिद्धिवंत' ।—सार='रिद्धिसार' ।

रिछ-सिछ–देखो 'रिद्ध-सिद्धि' ।

रिछि, रिछी–देखो 'रिद्धि' ।

रिछि-सिछि, रिछीसिछी–देखो 'रिद्धि-सिद्धि' ।—दाता= 'रिद्धि-दाता' ।

रिछु, रिछू–वि० १ निश्चित, तय । २ अटल, कायम, स्थिर । ३ समृद्धिशाली, वैभवशाली । ४ उत्तम, श्रेष्ठ ।–क्रि०वि० १ नित्य, हमेशा, प्रतिदिन । २ देखो 'रिद्धि' ।

रिछि–देखो 'रिद्धि' ।

रिन–देखो 'रण' ।

रिप–देखो 'रिपु' ।

रिपइयो–देखो 'रपयो' ।

रिपनाट–वि० शत्रु के आगे न झुकने वाला ।

रिपपतंग–पु० [सं० पतंग-रिपु] दीपक ।

रिपबली–पु० इन्द्र ।

रिपियो–देखो 'रपयो' ।

रिपु, रिपुआ–पु० [सं० रिपुः] १ शत्रु, वैरी, दुश्मन । २ वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तु के गुण या प्रभाव नष्ट करदे । ३ जन्म-कुंडली में लग्न से छठा स्थान ।

रिपुता–स्त्री० शत्रु होने की अवस्था या भाव, शत्रुता ।

रिपुप्रताप–पु० शत्रु का प्रभाव, रौब । –वि० गर्व ।

रिपू–देखो 'रिपु' ।

रिबकणी (बो)–क्रि० इधर-उधर भटकना, भटकते फिरना ।

रिबको–पु० कष्ट, तकलीफ ।

रिबणो (बो)–क्रि० १ कष्ट या तकलीफ पाना । २ व्याकुल होना, त्रस्त होना । ३ तड़फना, छटपटाना ।

रिभु, रिभू–पु० [सं० ऋभु] देवता ।

रिभूक्षो, रिभूक्षो–पु० [सं० ऋभुक्षिन्] इन्द्र ।

रिमद, रिम–पु० [सं० अरिम] शत्रु, दुश्मन, वैरी ।

रिमक-झिमक–देखो 'रिमझिम' ।

रिमजोळ–देखो 'रिमझोळ' ।

रिमझिम–स्त्री० [अनु०] १ छोटी-छोटी बूंदों की धीमी वर्षा, वर्षा की फुहार । २ पायल या नूपुर की ध्वनि । ३ झनकार ध्वनि, शब्द ।—क्रि० वि० धीरे-धीरे, हल्का शब्द करते हुए ।

रिमझिमक–स्त्री० झनकार, ध्वनि ।

रिमझोळ–स्त्री० १ घुंघरूदार, पैर की चूड़ी, नूपुर, पायल । २ मस्त घूमने की क्रिया ।

रिमझाटचुर–वि० शत्रुदल का संहारक ।

रिमझाथल–वि० शत्रुदल को मार कर भगाने वाला ।

रिमराह–वि० शत्रुओं के लिए राहु या काल रूप ।

रिमरेसो–वि० शत्रुओं को पराजित करने वाला ।

रिमहर रिमहरि रिमहरी–वि० शत्रु का वंशज, शत्रु ।

रिमांराहु–देखो 'रिमराह' ।

रिमांसाळ–वि० शत्रुओं के लिये लक्ष्य रूप ।

रिमि–देखो 'रिम' ।

रिमिक-झिमक–क्रि०वि० छम-छम करती, छन-छन करती ।

रिमिजोळ–देखो 'रिमझोळ' ।

रिमिझिमि–स्त्री० १ वर्षा की हल्की फुहार । २ पावों की पायल, नूपुर । ३ शब्द, ध्वनि, झनकार ।—क्रि० वि० १ नन्ही नन्ही बूंदों के रूप में, धीरे-धीरे । २ छम-छम करते हुए ।

रिमिझिमि–देखो 'रिमझिम' ।

रिमिझोळ–स्त्री० १ स्त्रियों के पैरों की घुंघुरूदार पायल, चूड़ी । २ नूपुर । ३ मस्ती में घूमने की क्रिया या भाव ।

रिमियाटचुर–वि० शत्रु दल का संहारक ।

रिमियाथल–वि० शत्रु-दल को पराजित करने वाला ।

रिमिराह–पु० शत्रुओं के लिये राहु रूप ।

रिमिरेसो–वि० शत्रुओं को परास्त करने वाला ।

रिमिहुर, रिमिहुरि, रिमिहुरी–वि० शत्रु का वंशज, शत्रु ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिमीराह–देखो 'रिमराह'।

रिमीसाल–वि० शत्रुओं के लिये अल्प रूप।

रिमी–देखो 'रिम'।

रिमीझिमी–देखो 'रिमझिम'।

रिमीराह–देखो 'रिमराह'।

रिमुकत, रिमुक्त–पु० [सं० ऋमुक्त] ४९ क्षेत्रपालों में से आठ वां क्षेत्रपाल।

रिमेस–पु० शत्रुओं का अधिपति।

रिम्म–देखो 'रिम'।

रिम्मराह–देखो 'रिमराह'।

रियांण–पु० १ सगाई (मगनी) की एक रस्म (बांधो)। २ बैठक, चौपाल।

रियाबेल–स्त्री० एक लता विशेष।

रियायत–देखो 'रिआयत'।

रियासत–स्त्री० [अ०] राज्य, जागीर। किसी राजा के अधीन आने वाला क्षेत्र।

रिरावणी (बी)–देखो 'रीरावणी' (बी)।

रिळ–पु० मिलने की या एक होने की अवस्था या भाव।

रिलकियो–पु० कई जगह चिथड़े भरकर बनाई गई छोटी गुदड़ी या गद्दी।

रिळणी (बी)–देखो 'रळणी' (बी)।

रिळमिळ–क्रि०वि० हिल-मिल कर, साथ-साथ।

रिळमिळणी (बी)–देखो 'रळमिळणी' (बी)।

रिळणी (बी)–देखो 'रळणी' (बी)।

रिव–१ देखो 'रवि'। २ देखो 'रव'।

रिवताळ, रिवताळी–देखो 'रावताळी'।

रिवमंडळ–देखो 'रविमंडळ'।

रिवदास–देखो 'रैदास'।

रिववंसी–देखो 'रविवंसी'।

रिवाज–पु० [अ०] प्रथा, रस्म।

रिवाड़ी–देखो 'रेवाड़ी'।

रिस–स्त्री० १ क्रोध, गुस्सा। २ देखो 'रिसि'।—गारो–वि० क्रोधी, गुस्सैल।

रिसणी (बी)–क्रि० [सं० रसन] १ द्रव पदार्थ का धीरे-धीरे बहना, रसना। २ टपकना, चूना, झरना। ३ समाना, आत्मसात होना। ४ सोखा जाना।

रिसतेदार–देखो 'रिस्तेदार'।

रिसती–देखो 'रिस्ती'।

रिसपत–देखो 'रिस्वत'।—खोर='रिस्वतखोर'।

रिसपतिणी, रिसपती–देखो 'रिस्वती'।

रिसवत–देखो 'रिस्वत'।—खोर='रिस्वतखोर'।—खोरी='रिस्वतखोरी'।

रिसभ–पु० [सं० ऋषभ:] १ एक प्राचीन राजा। २ विष्णु का एक अवतार। ३ वाराह कल्प में शिव का एक अवतार। ४ इन्द्र आदित्य का पुत्र। ५ सप्त ऋषियों में से एक। ६ इन्द्र का एक पुत्र। ७ एक चंद्रवंशी राजा। ८ कुल वंशीय एक राजा। ९ मेरु के पास का एक पर्वत। [सं० ऋक्ष] १० तारा, नक्षत्र। ११ सप्तस्वरों में से दूसरा स्वर। १२ पन्द्रहवां कल्प जहां से ऋषभ स्वर की उत्पत्ति हुई। १३ सांड। १४ बैल। १५ राम की सेना का एक वानर। १६ इन्द्र। १७ अग्नि।—वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ। २ देखो 'रिसभदेव'।

रिसभजिन, रिसभदेव, रिसभेसुर, रिसभेस्वर–पु० जैनियों के तीर्थंकर जो विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक माने गये हैं।

रिसभ-धुज–पु० [सं० ऋषभ-ध्वज] शिव, महादेव।

रिसवत–देखो 'रिस्वत'।—खोर='रिस्वतखोर'।—खोरी='रिस्वतखोरी'।

रिसह–१ देखो 'रिसभ'। २ देखो 'रिसभदेव'।

रिसहेसर, रिसहेसुर–१ देखो 'रिसीस्वर'। २ देखो 'रिसभदेव'।

रिसांण, रिसाणी–वि० [सं० रिष] (स्त्री० रिसाणी) १ नाराज, नाखुश, अप्रसन्न। २ क्रोधी स्वभाव का, कठने वाला।—पु० १ गुस्सा करने, कठने या नाराज होने की क्रिया या भाव। २ क्रोध, गुस्सा, नाराजगी। ३ मान, कठन।

रिसाघाती–पु० शत्रु, वैरी।

रिसाणी (बी)–देखो 'रीसाणी' (बी)।

रिसायल–वि० क्रोधी स्वभाव का, गुस्सैल।

रिसालदार–पु० [अ०] १ अश्वारोही सेना के एक दल का नायक। २ एक सैनिक पद।

रिसाला–पु० [अ० रिसाल:] १ अश्वारोही सेना। २ सैनिकों की टुकड़ी। ३ सेना, फौज। ४ राजपूतों के लिये प्रयुक्त होने वाला एक सम्मान सूचक शब्द।—वि० गुस्सैल, क्रोधी।

रिसि–पु० [सं० ऋषि] १ तपस्वी, मुनि, संन्यासी, ऋषि। २ श्रुति, सत्य और तप में पूर्ण निरत रहने वाला मंत्र स्रष्टा, वेद मंत्रों का आचार्य। ३ अनुष्ठानादि कर्म बतलाने वाले सूत्रों का रचयिता। ४ कोई सिद्ध पुरुष, महात्मा, साधु। ५ नारद मुनि। ६ बृहस्पति। ७ एक देव जाति। ८ ऋषिकेश नामक तीर्थ। ९ प्रकाश की किरण। १० मत्स्य विशेष। ११ सात तारे, सप्तर्षि। १२ सात की संख्या।—अस्त–पु० उत्तर व वायव्य के मध्य की दिशा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—राई, राज, राय–पु० नारदादि बड़े ऋषि।—वर–पु० ऋषियों में श्रेष्ठ, ऋषि श्रेष्ठ।—व्रत–पु० ऋषियों की तपस्या, साधना, नियमादि।

रिसिक–स्त्री० [स० रिषीक] तलवार।

रिसिदत्ता–स्त्री० एक सती (जैन)।

रिसिपूनम, रिसिपूरणिमा–स्त्री० श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।

रिसिप्रतत्थ–पु० ऋषियों द्वारा रचित शास्त्र।

रिसिवरणी (नी)–स्त्री० [सं० ऋषि-वनिता] गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या।

रिसिसूवन–पु० ४९ क्षेत्रवालों में से सातवां।

रिसीव, रिसीह–पु० [सं० ऋषि-इन्द्र] ऋषियों में श्रेष्ठ।

रिसी–देखो 'रिसि'।—ग्रस्त='रिसिग्रस्त'।

रिसीकुल्या–स्त्री० एक पौराणिक नदी।

रिसीकेस–पु० [सं० हृषीकेश] १ विष्णु का एक नाम, ईश्वर। २ श्रीकृष्ण। ३ एक तीर्थ विशेष।

रिसीपचमी (पांचम)–स्त्री० [सं० ऋषि-पंचमी] भादव शुक्ला पचमी तिथि।

रिसीस, रिसीसर, रिसीस्वर–पु० [सं० ऋषीश] ऋषियों में श्रेष्ठ, ऋषीश्वर।

रिस्ट–पु० [सं० रिष्ट] १ सौभाग्य, समृद्धि, ऐश्वर्य। २ अनिष्ट, हानि, नाश। ३ दुर्भाग्य, अभाग। ४ पाप। ५ उपद्रव।

रिस्टा, रिस्टि–स्त्री० [सं० रिष्टिः] तलवार।

रिस्तेदार–पु० [फा० रिश्तःदार] १ नातेदार, संबंधी। २ बंधाज, बंधु, बांधव।

रिस्तेदारी–पु० [फा० रिश्तःदारी] नाता, रिश्ता, संबंध।

रिस्तेमंद–पु० [फा० रिश्तेमंद] संबंधी, नातेदार।

रिस्तो–पु० [फा० रिश्त] १ नाता, संबंध, लगाव। २ किसी प्रकार का सम्पर्क।

रिस्यमूक–पु० [सं० ऋष्य-मूक] पंपापुरी के पास का एक पर्वत।

रिस्वत–स्त्री० [फा० रिश्वत] १ घूंस, उत्कोच। २ अधर्म करवाने का द्रव्य।—खोर–वि० घूंस लेकर अधर्म करने वाला।—खोरी–स्त्री० घूंस लेने का कार्य।

रिस्वतियो, रिस्वती–वि० रिश्वत लेने वाला, घूंसखोर।

रिहणी (बी)–देखो 'रहणी' (बी)।

रिहा–वि० [फा० रहा] १ बंधन मुक्त, कैद से छूटा हुआ। २ मुक्त।

रिहाई–स्त्री० मुक्ति, छुटकारा। कैद या अपराध से मुक्ति।

रिहाड़–स्त्री० अबरदस्ती (मेवात)।

रिहैसर (ड, ड)–देखो 'रिसीस्वर'।

रींकणो (बी)–क्रि० १ रोना, विलाप करना। २ दुःखी होना रंज करना पछताना। ३ तरसना, लालायित होना। ४ करुणा करना। ५ बड़बड़ाना।

रींकाणो (बी)–क्रि० १ रुलाना विलाप कराना। २ दुःखी करना, दुःख देना। ३ रंज कराना, पश्चाताप कराना। ४ करुणा कराना।

रींखण–स्त्री० टिड्डी का छोटा बच्चा।

रींगटियो, रींगटो–वि० कृशकाय, पतला-दुबला।

रींगी–स्त्री० शिकार किये गये खरगोश का सिर।

रींगो–पु० द्रव पदार्थ की धारा।

रींछ–पु० [सं० ऋक्ष] (स्त्री० रींछड़ी, रींछी) १ समस्त शरीर पर लंबे काले बालों वाला एक चौपाया जंगली जानवर। भालू ऋक्ष। २ जाम्बुवान।—वि० कृष्ण वर्ण, काला।—पत, पति, राज–पु० जाम्बवंत।

रींछड़ी–स्त्री० १ मादा भालू, ऋक्षी। २ श्रीकृष्ण की पत्नी जांबवंती।

रींझी, रींझोट–स्त्री० १ धूंए का बादल, धुंध, कोहरा। २ पशुओं की मस्ती। मस्त अवस्था।

रींझी-पाखर–पु० घोड़े की गर्दन के बांधने का, चमड़े या कपड़े का उपकरण विशेष।

रीज–देखो 'रीझ'।

रीजणी (बी)–देखो 'रीझणी' (बी)।

रीझ–देखो 'रीझ'।

रीझणी (बी), रीझवणी (बी)–देखो 'रीझणी' (बी)।

रीझवार–देखो 'रिझवार'।

रीझाणी (बी)–देखो 'रीझणी' (बी)।

रींटो–पु० कच्ची ककड़ी।

री–स्त्री० [सं०] १ गति, चाल। २ बहाव, प्रवाह। ३ ध्वनि, शब्द। ४ वध, हत्या।—विभ० की।

रीख–देखो 'रिसि'।

रीखण–देखो 'रींखण'।

रीखाराज–देखो 'रिसिराज'।

रीखीकेस–देखो 'रिसिकेस'।

रीख्या–देखो 'रक्षा'।

रीगटो–पु० युवा हरिण।

रीछ–देखो 'रींछ'।

रीछड़ी–देखो 'रींछड़ी'।

रीछपत (पति, राज)–देखो 'रींछपति'।

रीछी–देखो 'रींछी'।

रीछीओ–पु० १ एक प्रकार का सिंह। २ देखो 'रींछ'।

रीज–देखो 'रीझ'।

रीजक–देखो 'रिजक'।

रीजणी (बी), रीजवणी (बी)–देखो 'रीझणी' (बी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रीजवार–देखो 'रिझवार'।

रीजाणी (बो), रीजावणी (बो)–देखो 'रीझाणी' (बो)।

रीझ (मु)–स्त्री० [सं० ऋद्धि] १ प्रसन्न, खुश या मुग्ध होने की क्रिया या भाव। २ प्रसन्नता, खुशी। ३ पुरस्कार, इनाम। ४ बख्शीश। ५ उदारता। ६ अनुग्रह, कृपा।

रीझण, रीझणी–वि० (स्त्री० रीझणी) १ मोहित या मुग्ध। २ प्रसन्न, खुश।

रीझणी (बो)–क्रि० [सं० ऋध्] १ प्रसन्न होना, खुश होना। २ मोहित होना, मुग्ध होना। ३ मस्त होना मग्न होना। ४ तुष्टमान होना। ५ पुरस्कार देना, इनाम देना। ६ उमंगित होना, उत्साहित होना। ७ पुलकित होना।

रीझाळ–वि० १ प्रसन्न होने वाला, खुश होने वाला। २ मोहित या मुग्ध होने वाला। ३ जानने वाला। ४ दातार, दानी।

रीझावणी (बो)–देखो 'रीझाणी' (बो)।

रीझवार–देखो 'रिझवार'।

रीझवारणी–स्त्री० १ रिझवार होने की अवस्था या भाव। २ दान करने की प्रवृत्ति या स्वभाव।

रीझविहापत–वि० दातार, दानी।

रीझाणी (बो)–क्रि० १ प्रसन्न करना, खुश करना। २ मोहित करना, मस्त करना। ३ मस्त करना, मग्न करना। ४ तुष्ट होने को प्रेरित करना। ५ उमंगित, उत्साहित करना। ६ पुलकित करना।

रीझाळ, रीझाळू, रीझाळी–वि० (स्त्री० रीझाळी) १ खुश व प्रसन्न करने वाला। २ मोहित या मुग्ध करने वाला। ३ उदार, दानी। ४ रसिक।

रीझावणी (बो)–देखो 'रीझाणी' (बो)।

रीझु–देखो 'रीझ'।

रीझो–वि० रीझने वाला।

रीठ–पु० [सं० रिष्ट-रिष्टि] १ युद्ध, समर। २ तलवार। ३ शस्त्र। ४ शस्त्र प्रहार या आघात। ५ शस्त्र प्रहार की ध्वनि, शब्द। ६ असह्यशीत, तीव्र सर्दी।

रीठल–देखो 'रीठ'।

रीठो–पु० १ एक बड़ा जंगली वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल। ३ देखो 'रीठ'।

रीढ, रीढक–पु० [सं० रीढक] १ मनुष्य आदि प्राणियों के पृष्ठ भाग की खड़ी हड्डी, मेरुदंड। २ किसी बात या विषय का मूल आधार। ३ नाश, संहार। ४ फूंक या वायु से बजने वाले वाद्यों का स्वर बनाने वाला उपकरण।

रीढणी (बो)–क्रि० मर्यादा भंग करना, अवज्ञा करना।

रीढा–स्त्री० हठ, जिद्, दुराग्रह।

रीणथंबर–देखो 'रणथंबोर'।

रीणवास–देखो 'रणवास'।

रीणायर–देखो 'रत्नाकर'।

रीणो–वि० १ हतभाग्य। २ नीच, तुच्छ। ३ देखो 'रण'।

रीत–स्त्री० [सं० रीति] १ प्रथा, रस्म, परम्परा, रीति। २ तौर, तरीका, ढंग, विधि। ३ नियम, कायदा। ४ स्वभाव, आदत, प्रकृति। ५ मर्यादा। ६ स्थिति। ७ धार्मिक विधान। ८ वर या वर पक्ष की ओर से कन्या के पिता को कन्या के बदले में दिया जाने वाला धन। —भांत–स्त्री० तौर, तरीका, ढंग।—रिवाज–पु० रस्मो-रिवाज। परम्परा।

रीतवणी (बो)–क्रि० खाली होना, रिक्त होना।

रीतहड़, रीतहर, रीतहरी–स्त्री० शकुनशास्त्र में ऊंध दिशा का नाम।

रीति, रीती–स्त्री० [सं० रीतिः] १ गीत या गायन की लय, तर्ज। २ संस्कृत साहित्य में ओज, माधुर्य या प्रसाद गुण युक्त एक वर्णन शैली। ३ हिन्दी व राजस्थानी साहित्य में मध्ययुगीन काव्य रचना की शैली। ४ देखो 'रीत'। ५ बहाव। ६ नदी। ७ स्रोत। ८ रेखा, सीधा। ९ ढंग। १० शैली।

रीतीड़–पु० [सं० रिक्त] चरस वाले (जेलमी) कूए पर बैलों के चलने व वापिस लौटने का रास्ता।

रीतो–वि० [सं० रिक्त] (स्त्री० रीती) १ रिक्त, खाली। २ अज्ञ, अज्ञानी। ३ परवश, पराधीन। ४ मोहताज। ५ निर्धन, गरीब, कंगाल। ६ हताश, निराश। ७ रहित, विहीन।

रीध–देखो 'रिद्धि'।

रीधणी (बो)–देखो 'रीझणी' (बो)।

रीधल–देखो 'रीझल'।

रीम–स्त्री० १ तलवार। २ एक ही प्रकार व माप के ५०० कागजों की गड्डी।

रीर, रीराटो–पु० १ प्रलाप। २ दर्द भरी आवाज, करुण पुकार, कराहट।

रीरणी (बो), रीराणी(बो), रीरावणी (बो)–क्रि० १ गिड़गिड़ाना। २ रुदन करना, रोना। ३ दुःख प्रगट करना।

रीरी–पु० [सं० रिरी] पीतल।

रीरीया–स्त्री० गिड़गिड़ाहट, बिलबिलाहट।

रीळ–स्त्री० १ शरीर में रह-रह कर या सहसा उठने वाला तीव्र दर्द। २ तीव्र शीत लहर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रील–स्त्री० १ एक प्रकार का प्लास्टिक का फीता, जिस पर किसी चित्र या दृश्य की प्रतिछाया ली जाती है। सिनेमा की रील। २ बारीक व पक्के डोरे का गट्टा।

रीव–स्त्री० [सं० रव:] १ हाहाकार, करुण क्रन्दन। २ पीड़ा कष्ट। ३ चिल्लाहट।

रीवणो (बो)–क्रि० रोना, रुदन करना।

रीधो–देखो 'रीव'।

रीस–स्त्री० [सं० रिष्] १ क्रोध, गुस्सा, कोप। २ डाह, ईर्ष्या।

रीसड़सी–देखो 'रीस'।

रीसट, रीसटाळ, रीसटाळू, रीसटियो, रीसटो, रीसट्ठ–वि० कोप या क्रोध करने वाला, क्रोधी, गुस्सैल।

रीसणो (बो)–क्रि० [सं० रिष] क्रुद्ध होना, खफा होना।

रीसवंतो (वतो)–वि० (स्त्री० रीसवंती) क्रोधी, क्रुद्ध स्वभाव वाला।

रीसवाड़णो (बो)–देखो 'रीसाणो' (बो)।

रीसांणउ, रीसांणो–देखो 'रिसांणो'।

रीसाणो (बो)–क्रि० क्रोध करना, कोप करना, रूठना, नाराज होना, अप्रसन्न होना।

रीसाळ, रीसाळू–वि० क्रोध करने वाला, गुस्सा करने वाला।

रीसावणो (बो)–देखो 'रीसाणो' (बो)।

रीसोड–वि० क्रोध या कोप करने वाला।

रीसो–देखो 'रीस'

रुं–देखो 'रोम'।

रुंआळी–देखो 'रोमावळी'।

रुंआं–देखो 'रोम'।

रुंज–पु० एक प्रकार का वाद्य विशेष।

रुंड–पु० [सं० रुण्ड] १ मस्तक रहित शरीर। धड़, कबंध। २ हाथ-पांव कटा हुआ शरीर। ३ शिर, मस्तक। ४ एक प्रकार का रण वाद्य।—माळ, माळका, माळा–स्त्री० वीर गति प्राप्त वीरों के शिरों की माला।

रुंडमाळी–वि० १ वीरों के शिर की माला पहनने वाला, (महादेव, दुर्गा)। २ देखो 'रुंडमाला'।

रुंडमुंड–वि० मुंडे हुए शिर का या मुंडित शिर।

रुंडळ, रुंडळी–देखो 'रुंड'।

रुंडहार, रुंडावळ, रुंडावळी–देखो 'रुंडमाळा'।

रुंडिका–स्त्री० रण-भूमि, युद्धस्थल।

रुंधणो (बो)–क्रि० १ पैरों तले रौंदा जाना, कुचलना। २ रौंदना। ३ रुंधना, रुकना।

रुंमड़ी–स्त्री० १ एक प्रकार की वनस्पती। २ फोड़ा, फुन्सी।

रुंवाळी–देखो 'रोमावळी'।

रुंसाड़णो (बो)–क्रि० क्रुद्ध करना।

रुग्गड़ो, रुग्गड़ो (डो)–देखो 'रुड़ो'। (स्त्री० रुग्गड़ी)

रुग्गामळ–पु० रूमाल।

रुइ (ई)–देखो 'रुचि'।

रुहर–देखो 'रुधिर'।

रुक, रुकड़–देखो 'रूक'।

रुकणी–स्त्री० रुकावट, रोक, बंधन।

रुकणो (बो)–क्रि० १ ठहरना, ठहर जाना, रुकना। आगे कदम न बढ़ाना। २ थमना, रुकना। ३ गतिमान न रहना। ४ क्रम बंद हो जाना। ५ अवरुद्ध होना बाधा पड़ना। ६ विकास या प्रगति न होना। ७ कार्य आगे न बढ़ना, कार्यवाही रुक जाना। ८ स्तंभन होना।

रुकनाबाद–पु० [फा० रुक्नाबाद] १ मुसलमानों का एक तीर्थ। २ ईरान की एक नदी।

रुकम पु० [सं० रुक्म] १ स्वर्ण, सोना। २ रुक्मणी के बड़े भाई का नाम। ३ एक मात्रिक छंद विशेष।

रुकमइयो–पु० [सं० रुक्मी] रुकमणी के बड़े भाई का नाम।

रुकमकर–पु० [सं० रुक्मकर] पारस।

रुकमकारक–पु० [सं० रुक्मकारक] सोना, स्वर्ण।

रुकमकेस–पु० [सं० रुक्मकेश] रुक्मणी का एक भाई।

रुकमण–स्त्री० रुक्मणी।

रुकमणकंत (कंथ)–पु० [सं० रुक्मिणीकांत] १ श्रीकृष्ण। २ ईश्वर।

रुकमणवर, रुकमणवरण–पु० [स० रुक्मिणी+वरण] श्रीकृष्ण।

रुकमणि–देखो 'रुकमणी'।

रुकमणियो–देखो 'रुकम'।

रुकमणिरमण (वींद, हार)–पु० [सं० रुक्मिणी-रमण] १ श्रीकृष्ण। २ विष्णु।

रुकमणी–स्त्री० [सं० रुक्मिणी] विदर्भ की राजकुमारी व श्रीकृष्ण की पटरानी।

रुकमबाहु–पु० [सं० रुक्मबाहु] विदर्भ का एक राजकुमार।

रुकमपुर–पु० [सं० रुक्मपुर] गरुड़ के निवास स्थान का एक प्राचीन नगर।

रुकममाळी–पु० [सं० रुक्ममालिन्] विदर्भ का एक अन्य राजकुमार।

रुकमरथ–पु० [सं० रुक्मरथ] विदर्भ का एक राजकुमार।

रुकमांगद–देखो 'रुकमांगद'।

रुकमिणी–देखो 'रुकमणी'।

रुकमियो, रुकमंयो, रुकमो–देखो 'रुकम'।

रुकम्मणि–देखो 'रुकमणी'।

रुकरुवंती–स्त्री० एक वृक्ष विशेष।

रुकवाणो (बो)–देखो 'रुकाणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुकसत, रुकस्त–देखो 'रुखसत'।

रुकाना (औ)–क्रि० १ रुकवाना, रोकने का कार्य कराना। २ बंद करवाना, चलने न देना, रोकने के लिये प्रेरित करना।

रुकाव, रुकावट–स्त्री० १ बाधा, अड़चन, विघ्न, रोक। अवरोध गतिरोध। २ अवरोधक तत्त्व, बाधक। ३ प्रभावरोध, कब्ज। ४ स्तंभन।

रुकुम, रुकुमी–देखो 'रुकम'।

रुक्का, रुक्को–पु० [अ० रुक्अह्] १ छोटा पत्र या चिट्ठी, कागज का परचा। २ चिट्ठी, पत्र। ३ प्रमाण-पत्र, सनद। ४ प्रेम पत्र। ५ ऋण-पत्र।

रुक्ख–१ देखो 'रूख'। २ देखो 'रुख'।

रुखमणी–देखो 'रुकमणी'।

रुखमांगद–पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशीय एक प्राचीन राजा।

रुखिमणि (णी)–देखो 'रुकमणी'।

रुखसत–देखो 'रुखसत'।

रुख–स्त्री० [फा०] १ गाल, कपोल। २ क्रोध, कोप। ३ चहरे का हाव-भाव। ४ आशय, मतलब। ५ मनोभाव, इच्छा। ६ भावना। ७ इशारा। ८ कृपादृष्टि, मेहरबानी। ९ सामने या आगे का भाग। १० साक्षात्कार। ११ शतरंज का हाथी नामक मोहरा। १२ तरह, भांति, प्रकार। १३ पक्ष। १४ सापेक्ष दृष्टिकोण।—वि० १ समान, सदृश, तुल्य। २ ओर, तरफ, सामने।

रुखभदेव–देखो 'रिसभदेव'।

रुखम, रुखमइयो, रुखमईयो–देखो 'रुकम'।

रुखमणहरण, रुखमणिहर–देखो 'रुकमणहर'।

रुखमणि, रुखमणी (नी)–देखो 'रुकमणी'।

रुखमांगद–देखो 'रुकमांगद'।

रुखमी–देखो 'रुकम'।

रुखमीची, रुखमीनी रुखम्मी–देखो 'रुकमणी'।

रुखलाणो (औ)–क्रि० १ रक्षा होना, रक्षित होना। २ किसी की निगरानी या चौकसी में होना।

रुखवाळ–देखो 'रुखाळी', 'रुखवाळी'।

रुखवाळणो (औ)–देखो 'रुखाळणो' (औ)।

रुखवाळी–देखो 'रुखवाळी'।

रुखसत–स्त्री० [अ० रुख्सत] १ विदा होने की क्रिया, विदाई। २ कार्य से मुक्ति, छुट्टी। ३ सेवा निवृत्ति। ४ अनुमति, इजाजत।

रुखसति, रुखसती–वि० १ विदा होने वाला। २ निवृत्त या मुक्त होने वाला। ३ रुखसत, संबंधी।—स्त्री० १ विदाई। २ कन्या की विदाई होना। ३ गौने के समय दामाद को दिया जाने वाला धन (मुसलमान)।

रुखांनी–स्त्री० १ बढ़ई का एक औजार विशेष। २ संगतराशों की टांकी।

रुखाई–स्त्री० रस का अभाव, सरसता का अभाव, रूखापन। नीरसता, कठोरता।

रुखानळ–स्त्री० [सं० रोषानल] क्रोधाग्नि, क्रोधानल।

रुखापण, रुखापणो–देखो 'रुखाई'।

रुखावळी–स्त्री० लिहाज।

रुखाळणो (औ)–क्रि० [सं० रक्ष] १ रक्षा करना। २ निगरानी या चौकसी करना। ३ खेती की देखभाल करना। ४ चौकीदारी करना।

रुखाळी–स्त्री० [सं० रक्षा] रखवाली, चौकसी, देख-रेख, निगरानी। चौकीदार का काम, चौकीदारी।
—वि० रखवाली करने वाला।

रुखाळो–वि० [सं० रक्षक] (स्त्री० रुखाळी) १ रक्षा करने वाला, रक्षक। २ चौकसी करने वाला, चौकीदार।

रुखावट, रुखाहट–स्त्री० रुखाई, रूखापन।

रुखिता–स्त्री० क्रोध करने वाली नायिका।

रुखी–देखो 'रिसी'।

रुखीसर, रुखीस्वर, रुखेस्वर–देखो 'रिसीस्वर'।

रुखो–वि० (स्त्री० रुखी) १ बिना, रहित। २ देखो 'रूखो'।

रुग–पु० [सं० रुग्ण] १ बीमार, रोगी। २ रोग, बीमारी। ३ पीड़ा, दर्द। ४ तीर चलने या पक्षियों के उड़ने से उत्पन्न ध्वनि।

रुगड़, रुगट–पु० खेल में किया जाने वाला छल।

रुगटाळ–वि० १ खेल में छल करने वाला, कपट से खेलने वाला। २ धूर्त, चालाक, दुष्ट। ३ कपटी।

रुगटी–वि० १ खेल में की जाने वाली बदमाशी, भूल, कपट। २ देखो 'रुगटाळ'।

रुगड–वि० १ मूर्ख, नासमझ। २ दुष्ट, पतित नीच।

रुगद्य–वि० [सं० रुग्ण] १ बीमार, अस्वस्थ। २ रोगग्रस्त, रोगी। ३ सुस्त, उदास।

रुगदवंसी–पु० अति विषैला एक सर्प विशेष।

रुगनाथ–देखो 'रघुनाथ'।

रुगी-टुगी–पु० काम चलाऊ पदार्थ।—वि० खिन्न, उदास।

रुगी-चुगी–वि० बचा हुआ, अवशिष्ट।

रुग्ग–१ देखो 'रिगवेद'। २ देखो 'रघु'।

रुघईस, रुघकुळतिलक–देखो 'रघुकुळतिलक'।

रुघचंद, रुघदेव, रुघनंद (नंदण, वदन)–देखो 'रघुनंदन'।

रुघनाथ, रुघनाथु–देखो 'रघुनाथ'।

रुघनायक–देखो 'रघुनायक'।

रुघपत, रुघपति, रुघपत्ति–देखो 'रघुपति'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रघवर, रघवरू, रघवंद, रघवंदि–देखो 'रघुवर'।
रघवरज, रघवरोज–देखो 'रघुराज'।
रघवरोजी–देखो 'रघुराणी'।
रघवरोम–देखो 'रघुराम'।
रघवराइ (राई, राउ, राज, राजा)–देखो 'रघुराज'।
रघवंस–देखो 'रघुवंस'।
रघवंसमणि (णी)–देखो 'रघुवंसमणि'।
रघवंसरज (रवि)–देखो 'रघुवंसरवि'।
रघवंसी–देखो 'रघुवंसी'।
रघवर–देखो 'रघुवर'।
रघवीर–देखो 'रघुवीर'।
रघवेद–देखो 'रिगवेद'।
रघुनंदन–देखो 'रघुनंदन'।
रघुनाथ–देखो 'रघुनाथ'।

रड़, रड़क–स्त्री० १ नगाड़े की ध्वनि। २ तेज भागने की क्रिया। ३ वीररस पूर्ण एक राग या लय। ४ देखो 'रड़क'।

रड़कणी (बो)–क्रि० १ लुढकना, पड़ना। २ देखो 'रड़कणी'(बो) ३ देखो 'रुड़णी' (बो)।

रड़काणी (बो)–क्रि० १ लुढ़काना, पटकना। २ देखो 'रुड़ाणी' (बो)।

रड़णी (बो)–क्रि० १ नगाड़े बजना। २ गुड़कना, लुढ़कना। ३ घूमना, चक्कर काटना। ४ वीररस में गाना। ५ रोना।

रड़पाणी (बो)–देखो 'रुड़ाणी' (बो)।

रड़बाणी (बो), रड़ाणी (बो), रड़ावणी (बो)–क्रि० १ नगाड़ादि बजाना, बजगाना। २ वीररस पूर्ण राग गाना। ३ गुड़काना, चक्कर कटाना। ४ रुलाना, रुदन कराना।

रड़ी–देखो 'रुड़ी' (स्त्री रुड़ी)।

रत–पु० [सं०] सूनीथ राजा के पुत्र का नाम।—वि० १ सुन्दर, मनोहर। २ देखो 'रुचि'।

रचक–पु० [सं० रुचक] १ सुमेरु पर्वत के निकट का एक पर्वत। २ एक यादव राजा। ३ इक्ष्वाकुवंशीय भद्रक राजा का नाम। ४ वास्तुविद्या में भवन की एक बनावट विशेष। ५ घर, मकान। ६ घोड़े के आभूषण। ७ दक्षिण दिशा। ८ कबूतर। [सं० रुचकम] ९ गले का हार आदि आभूषण।—वि० [सं० कचक] १ रुचिकर, रोचक, अच्छा, पसंद लायक। २ स्वादिष्ट जायकेदार।

रचणी (बो)–क्रि० १ प्रिय या प्यारा लगना, अच्छा लगना। २ रुचि के अनुसार लगना। ३ पसंद आना।

रचर–देखो 'रुचिर', 'रुचिकर'।

रचरच, रचारच–पु० [सं० रुधिरपु] रक्त, खून, रुधिर।

रचि–पु० [सं०] १ ब्रह्मा के मन से उत्पन्न एक प्रजापति।—स्त्री० २ किरण। ३ शोभा, सुन्दरता। ४ आभा, दीप्ति, प्रकाश। ५ अभिलाषा, इच्छा, कामना। ६ एक अप्सरा का नाम। ७ कोई अप्सरा। ८ पसंदगी, अभिरुचि। ९ स्वाद, जायका।—वि० सुन्दर, मनोहर।—कर, कारक, कारी–वि० अभिरुचि जागृत करने वाला। स्वादिष्ट, जायकेदार। भूख बढ़ाने वाला।

रचिअंस–पु० [सं०] सूर्य, रवि।

रचिअरता–पु० [सं० रुचि-भर्तृ] सूर्य, रवि।

रचिर–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक पौत्र। २ एक कुरुवंशीय राजा। ३ केसर।—वि० १ सुन्दर, मनोहर। २ अच्छा, भला। ३ मीठा, मधुर।

रचिरा–स्त्री० १ केसर। २ सुप्रिया छंद का नाम। ३ एक वर्ण वृत्त विशेष।

रचिरोमा–स्त्री० [सं०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

रचिसती–स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की नानी।

रज–पु० [सं] १ रोग, बीमारी। २ पीड़ा, वेदना।

रजक–देखो 'रिजक'।

रजगार–देखो 'रोजगार'।

रजा–स्त्री० [सं०] रोग, बीमारी। थकावट, श्रान्ति।

रस–देखो 'रोझ'।

रसणी–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया।

रसणी (बो)–क्रि० अवरुद्ध होना, रुकना।

रट (ठ)–पु० [सं० रुष्ट] रूठने की क्रिया या भाव, क्रोध, कोप, गुस्सा।

रटठणी (बो)–देखो 'रूठणी' (बो)।

रठाणी (बो)–देखो 'रूठाणी' (बो)।

रड़णी (बो)–देखो 'रुड़णी' (बो)।

रड़ाणी (बो) रड़ावणी (बो)–देखो 'रुड़ाणी' (बो)।

रणउखणी (बो)–क्रि० भौंरे का मंडराना।

रणक–स्त्री० १ याद, स्मृति। २ इच्छा। ३ ध्वनि, झनकार।

रणकजुअक–स्त्री० नूपुर की ध्वनि, झनकार।

रणजुण–देखो 'रणझुण'।

रणझणणी (बो)–देखो 'रणझुणणी' (बो)।

रणझुण–स्त्री० १ नूपुर की ध्वनि। २ पायल की झनकार। २ झनझनाहट। ४ मधुर ध्वनि।

रणझुणकणी (बो)–देखो 'रणझुणणी' (बो)।

रणझुणणी (बो),–क्रि० नूपुर, पायल आदि का बजना। झनकृत होना। मधुर ध्वनि होना। छम-छम करना।

रणझुणि–देखो 'रणझुण'।

रणझुणियो–पु० १ छन-छन बोलने वाला खिलौना। २ एक लोक-गीत विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुणा–स्त्री० सरस्वती नदी की एक सहायक नदी।
रुवाबली–देखो 'रोमावली'।
रुसी–स्त्री० घोड़ों की एक जाति।
रुत–स्त्री० १ रुई, कपास। २ ऋतु, मौसम। ३ ऋतु के अनुसार होने वाला कार्य या वस्तु। ४ समय, अवसर।
रुतबा–पु० [अ० रुत्बः] १ समाज, परिवार या किसी क्षेत्र में किसी व्यक्ति का होने वाला प्रभाव, रोब। २ प्रतिष्ठा, गौरव, मर्यादा। ३ पद की गरिमा। ४ उच्च पद। ५ श्रेष्ठता, बड़ाई।
रुति, रुत्ति, रुती–देखो 'रितु'।—राज='रितुराज'।
रुदंती–देखो 'रुद्रवंती'।
रुदन–पु० [सं०] १ रोने की क्रिया या भाव। २ रोने का शब्द, आवाज।
रुदर–१ देखो 'रुद्र'। २ देखो 'रुधिर'।
रुदरांणी–देखो 'रुद्राणी'।
रुदराख, रुदराछ–देखो 'रुद्राक्ष'।
रुदित–वि० [सं०] १ रोता हुआ। २ व्याकुल। ३ दुःखी।
रुद्दबीख, रुद्दबीणा–देखो 'रुद्रवीणा'।
रुद्दांणी–देखो 'रुद्राणी'।
रुद्ध (रुद्)–वि० [सं०] १ जिसकी चाल या गति बंद हो गई हो, बंद। २ रुका, हुआ, अवरुद्ध। ३ घिरा हुआ, घेरा हुआ। ४ पकड़ा हुआ।
रुद्धणी 'बी)–देखो 'रूंधणी' (बी)।
रुद्धा–वि० १ रोकने वाली। २ मिटाने वाली।
रुद्धि–देखो 'रिद्धि'।
रुद्र–पु० [सं०] १ पुराण प्रसिद्ध ग्यारह देवताओं का एक समूह या इस समूह का कोई देवता। २ शिव का एक नाम। ३ शिव का रौद्र रूप। ४ शनिश्चर। ५ घोड़े के कर्ण मूल पर होने वाली भौंरी। ६ वट वृक्ष। ७ ग्यारह की संख्या।—वि० १ भयंकर, भयावह। २ देखो 'रौद्र'। ३ देखो 'रुधिर'। —आतमज='रुद्रात्मज'।—कड़ी–पु० मन्माथुर को मारने वाला शिव का कड़ा।—गण–पु० शिव के गण, पार्षद। —घरणी–स्त्री० पार्वती, दुर्गा। —तनय–पु० स्वामि कार्तिकेय, गणेश। श्रीकृष्ण का एक नाम।—पत, पति–पु० शिव, महादेव। बादशाह।—पत्नी–स्त्री० पार्वती, दुर्गा का एक नाम।—प्रिया–स्त्री० पार्वती, हरीतकी, हरड़े। —राय, राव–पु० महादेव, शिव, बादशाह।—लोक–पु० रुद्र गणों का निवास स्थान। —वदन–पु० शिव के पांच मुख। पांच की संख्या।
रुद्रक–देखो 'रुद्राक्ष'।
रुद्रकरण–पु० [सं० रुद्रकर्ण] एक तीर्थ विशेष।
रुद्रकलस–पु० [सं० रुद्रकलश] ग्रहों की शांति के लिये स्थापित कलश।
रुद्रकाळी–स्त्री० [सं० रुद्रकाली] दुर्गा की एक मूर्ति।
रुद्रकुंड–पु० [सं०] रूपकुंड का नामान्तर। ब्रज का एक तीर्थ।
रुद्रकोट, रुद्रकोटि–पु० एक प्राचीन तीर्थ।
रुद्रगरभ–पु० [सं० रुद्रगर्भ] अग्नि, आग।
रुद्रघांण–पु० संहार, ध्वंस।
रुद्रज–पु० [सं०] पारा।—वि० रुद्र से उत्पन्न।
रुद्रजटा–स्त्री० १ शिवजी की जटा। २ एक प्रकार का क्षुप। ३ सौंफ। ४ इसरोल।
रुद्रताळ–स्त्री० [सं० रुद्रताल] संगीत में एक ताल।
रुद्रतेज–पु० [सं०] स्वामिकार्त्तिकेय।
रुद्रथानक–पु० [सं० रुद्रस्थान] कैलाश पर्वत।
रुद्रप्रयाग–पु० गढ़वाल जिले का एक तीर्थ।
रुद्रबीसी–देखो 'रुद्रवीसी'।
रुद्रभू, रुद्रभूमि–स्त्री० [सं०] श्मशान, मरघट।
रुद्रभैरवी–स्त्री० [सं०] दुर्गा की एक मूर्ति।
रुद्रमाळ, रुद्रमाळका–देखो 'रुद्रमाळा'।
रुद्रमाळय–पु० एक तीर्थ का नाम।
रुद्रमाळा–स्त्री० [सं० रुद्रमालिका] १ शिव के गले का हार। २ मुंडमाला।
रुद्ररस–देखो 'रौद्ररस'।
रुद्ररांणी–देखो रुद्राणी'।
रुद्ररोवन–पु० [सं०] स्वर्ण, सोना।
रुद्ररोमा–स्त्री० एक स्कन्द मातृका।
रुद्रलता–स्त्री० [सं०] रुद्रजटा।
रुद्रवंती–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध औषधि।
रुद्रवाचा–स्त्री० [सं०] सर्वथा सत्य वचन।
रुद्रवीणा–स्त्री० नारद की वीणा, एक प्रकार की वीणा।
रुद्रसावरणी–पु० [सं० रुद्रसावर्णि] बारहवें मन्वंतर का अधिपति मनु।
रुद्रसुंदरी–स्त्री० [सं०] दुर्गा की एक मूर्ति।
रुद्रांणी,रुद्राणी–स्त्री० [सं०रुद्राणी] १ शिव की पत्नी पार्वती, शिवा। २ रुद्रजटा लता। ३ एक रागिनी। ४ ग्यारह वर्ष की कन्या।
रुद्राक्ष, रुद्राख, रुद्राछ–पु० [सं० रुद्राक्ष] एक वृक्ष विशेष के मोटे बीज जिसके मणिये बना कर माला बनाई जाती है।—माळ, माळा–स्त्री० उक्त मणियों की माला।
रुद्रात्मज (आतमज)–पु० [सं० रुद्रात्मज] स्वामिकार्त्तिकेय गणेश।
रुद्राधण–पु० मुसलमान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुद्रारि–पु० [सं०] कामदेव, मदन ।

रुद्राल–वि० [सं० रुद्राल] रुद्र का, रुद्र सम्बन्धी ।—पु० १ महादेव, शिव । २ यवन, मुसलमान । ३ रुधिर ।

रुद्राल्हु, रुद्राळू–वि० भयंकर, भयावह ।

रुद्रावास–पु० [सं० रुद्र-आवास] शिव का निवास स्थान, काशी, कैलास, श्मशान ।

रुद्री–स्त्री० [सं०] १ रुद्र संबंधी वेद मंत्रों का लघु संग्रह । २ एक प्रकार की वीणा ।

रुद्री–देखो 'रुद्र' ।

रुधक्क, रुधर–देखो 'रुधिर' ।

रुधिर–पु० [सं०] १ प्राणियों का खून, रक्त । २ रक्तवर्ण । —वि० लाल ।

रुधिरगुल्म–पु० [सं०] एक प्रकार का स्त्री रोग ।

रुधिरांध–पु० एक नरक का नाम ।

रुधिरानन–पु० [सं०] मंगल ग्रह की एक गति ।

रुधिराळ–देखो 'रुधिर' ।

रुधिरासन–पु० [सं० रुधिराशन] १ श्रीराम द्वारा मारा गया एक राक्षस । २ राक्षस, असुर । ३ खटमल, बीरु, मच्छर आदि जीव ।

रुपइयो–देखो 'रुपयो' ।

रुपट्टी–देखो 'रुपयो' ।

रुपणो (णी)–क्रि० १ नुकीली वस्तु का किसी पदार्थ में धंसना, गड़ना । २ जमीन में धंस कर स्तंभ की तरह सीधा या आड़ा-टेढ़ा अवस्थित होना । ३ जमीन में धंस कर स्थिर होना । ४ ठहरना, टिकना, रुकना । ५ निश्चल या स्थिर होना । ६ मुकाबले में डटना, अड़ना, अडिग होना ।

रुपयो–पु० [सं० रूप्यक] १ चांदी का सिक्का, रुपया । २ पूर्व में सोलह आने तथा वर्तमान में सौ पैसे के मान वाला धातु का सिक्का या कागज का नोट । ३ कागजी मुद्रा । ४ धन, दौलत ।

रुपारेल–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया जिसके शकुन लिए जाते हैं ।

रुपावमास–पु० जैनियों के ८८ ग्रहों में से २८ वां ग्रह ।

रुपियो–देखो 'रुपयो' ।

रुपो–पु० जैनियों के ८८ ग्रहों में से २७ वां ग्रह ।

रुपेलो–वि० (स्त्री० रुपेली) १ श्वेत प्रकाश वाला । २ रुपहला ।

रुबाई–स्त्री० [अ०] १ उर्दू-फारसी की एक कविता विशेष । २ एक प्रकार का तराना, गाना ।

रुमझुम–देखो 'रिमझिम' ।

रुमहरो–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

रुमा–स्त्री० सुग्रीव की पत्नी का नाम ।

रुमापुर, रुमापुरी–स्त्री० सांभर नगर का प्राचीन नाम ।

रुरुगो–पु० एक प्रकार का उल्लू ।

रुरु–पु० [सं०] १ मृग, कस्तूरी मृग । २ एक राक्षस विशेष । ३ राम शब्द की ध्वनि ।

रुरुक–पु० एक सूर्यवंशी राजा ।

रुरुभैरव–पु० दुर्गा के साथ पूजा जाने वाला भैरव विशेष ।

रुरुरियो–पु० मारवाड़ में चलने वाला एक प्राचीन सिक्का ।

रुलकणो, (णी)–देखो 'रळकणो' (णी) ।

रुलणो (णी), रुलणी (णी)–क्रि० [सं० लुलनम्] १ बर्बाद होना क्षतिग्रस्त होना, इतना नुकसान उठाना कि पूर्ति न हो सके । २ बुरी दशा में पड़ना, बिचड़ना । ३ मन या विचारों से भटकना । ४ फैलना, छितरना, बिखरना । ५ भारी अव्यवस्था होना, स्थिति बिगड़ना । ६ भ्रम में पड़ना, गुमराह होना । ७ घुसना, प्रविष्ट होना । ८ चरित्रहीन होना । ९ निरुद्देश्य भटकना । १० स्थिर न रहना, स्थाई आवास का अभाव होना । ११ ठोकरें खाना, ठोकरों में पड़े रहना । १२ युद्ध के बाजे बजना । १३ विवशता में मारा-मारा फिरना । १४ लटकना, लहराना ।

रुलपट–पु० १ अव्यवस्था, कुशासन । २ देखो 'रळपट' ।

रुळयो–देखो रुळो' ।

रुळाई–स्त्री० १ रोने की क्रिया या भाव । २ अव्यवस्था । ३ लटकना ।

रुळाणो' (णी)–क्रि० १ बिगाड़ा करना, बिगाड़ना, बर्बाद या खराब करना । २ अव्यवस्था, कुशासन, कुप्रबंध कराना । ३ छितराना, फैलाना । ४ बिखेरना, तितर-बितर कराना । ५ घुसाना, प्रवेश कराना । ६ रणवास बजवाना । ७ रुलाना । ८ इधर-उधर फैलना, बिखरना । ९ ध्वनिमान होना ।

रुळियाउति, रुळियाउति (ती), रुळियाइत–देखो 'रळियाइत' ।

रुळियामणी–देखो 'रळियामणी' ।

रुळियार–वि० १ उद्दण्ड, बदमाश । २ लुच्चा, लफंगा, दुष्ट । ३ दुष्ट, पाजी, नीच । ४ जिसका कोई ठौर-ठिकाना न हो । ५ निरुद्देश्य भटकने वाला । ६ चरित्रहीन, व्यभिचारी । ७ अनुशासनहीन, आजाद, अवारा । ८ जिसका कोई सहारा न हो, बेसहारा ।

रुळियारणी–स्त्री० १ बदमाशी, लंपटता, उद्दण्डता, अव्यवस्था । अवारागर्दी । २ चरित्रहीनता ।

रुळियारराजो–पु० १ अराजकता । २ अव्यवस्था ।

रुळियारो–स्त्री० लंपटता, बदमाशी, अवारापन ।

रुळियारो–पु० गड़बड़ी, अव्यवस्था । अराजकता ।

रुळीयामणो–देखो 'रळियामणो' ।

रुळी, रुळी–देखो 'रळी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रळीयायत–देखो 'रळियाइत'।

रळेट–वि० १ अवारा, चरित्रहीन, व्यभिचारी। २ दुष्ट, नीच, उद्दण्ड।

रळो, रुल्यो–वि० (स्त्री० रुळी) १ बिना स्वामी या मालिक का अवारा। २ बिना देखभाल का। ३ निर्जन। ४ अवारा। ५ चरित्रहीन। ६ व्यर्थ, फिजूल।

रवो–देखो 'रुणो'।

रसनाई–स्त्री० [फा० रोशनाई] १ चमक-दमक। २ प्रकाश, रोशनी। ३ आनन्द, हर्ष, खुशी। ४ स्याही।

रसा–देखो 'रसा'।

रसाणो (बो)–क्रि० [सं० रुष्ट्] नाराज होना, क्रुद्ध होना। मान करना।

रस्ट–वि० [सं० रुष्ट] नाराज, अप्रसन्न। क्रुद्ध।

रस्टता–स्त्री० [सं० रुष्टता] अप्रसन्नता, नाराजगी। क्रोध।

रस्ट-पुस्ट–वि० [सं० हृष्ट-पुष्ट] मोटा-ताजा, स्वस्थ।

रस्टि–स्त्री० [सं० रुष्टि] कोप, गुस्सा, क्रोध।

रस्तक–पु० एक प्रकार की मिठाई।

रस्तम–पु० १ फारस का एक इतिहास प्रसिद्ध पहलवान। २ कोई बड़ा वीर व्यक्ति।

रस्तमी–स्त्री० वीरता, बहादुरी।

रहपत–स्त्री० [सं० पत्ररुह] पृथ्वी, धरती।

रहराळ–देखो 'रुधिर'।

रहराळी–स्त्री० [सं० रुधिर+आलुच] रक्त की, रक्त संबंधी।

रहाड़, रहाड़ी–स्त्री० मनोरथ, इच्छा।

रहिनाळ–पु० रक्त का नाला, धारा।

रहिर–देखो 'रुधिर'।

रहिराख–पु० [सं० रुधिराक्ष] एक प्रकार का रत्न या मणि।

रहिराळ–देखो 'रुधिर'।

रहुला–देखो 'रहेला'।

रहेलखंड–पु० अवध के उत्तर में, रहेला पठानों का एक क्षेत्र।

रहेला–स्त्री० उक्त प्रदेश के पठानों की एक शाखा।

रूं–देखो 'रूई', 'रोम'।

रूंआळी–स्त्री० १ कांति, दीप्ति। २ रोमावली।–वि० १ सुंदर मनोहर। २ 'देखो रुंवाली'।

रूंआळो–वि० (स्त्री० रूंआळी) १ रोमयुक्त, रोमवाला। २ सुन्दर, कांतिवान।

रूंख पु० [सं० वृक्ष] १ पेड, वृक्ष। २ पौधा। ३ वंश वृक्ष।

रूंखड़, रूंड़खलो–पु० १ दरियायी नारियल का खप्पर लेकर अलख जगाने वाला फकीर। २ बंदर। ३ रूंख, पेड़।

रूंखड़ियो–वि० १ वृक्षों पर बसने वाला। २ मूर्ख।–पु० १ बंदर। २ पेड़, रूंख।

रूंखड़ी–स्त्री० जड़ी-बूंटी। वनस्पती।

रूंखड़ो, (ड़ो)–देखो 'रूंख'।

रूंखराइ (ई)–स्त्री० [सं० वृक्ष-राजि] १ वृक्षों की कतार। २ वनस्पती।

रूंखां-सिणगार–पु० [सं० वृक्ष–शृंगार] १ चंदन। २ पत्ते, फूल-फल।

रूंखाबळि(ळी)–स्त्री० १ वृक्षों की कतार, श्रेणी। २ वनस्पती।

रूंखाबाळो, रूंखाळो–पु० बंदर।

रूंखो–देखो 'रूंख'।

रूंग, रूंगटो, रूंगतो–पु० केश, रोम, बाल।

रूंगटाळी–स्त्री० मेंड़।–वि० जिसके बाल अधिक हों।

रूंगी–स्त्री० सनक।

रूंगीलो–वि० (स्त्री० रूंगीली) सनकी, तुनक मिजाज।

रूंगू, रूंगो–पु० अश्रु बूंद, आंसू।

रूंचो–वि० जिसके पांव तिरछे पड़ते हों।

रूंज, रूंजड़ो–पु० एक प्रकार का कंटीला वृक्ष।

रूंझट–पु० १ झंझट, झमेला। २ रूंझ।

रूंठ–पु० १ लक्कड़, लकड़ा। २ सूखा पेड़।

रूंड–पु० १ एक मात्रिक छंद विशेष। २ देखो 'रुंड'।

रूंडमाळ–देखो 'रुंडमाळ'।

रूंडळो–देखो 'रूंड'।

रूंण–देखो 'रूण'।

रूंणझूण–देखो 'रुणझुण'।

रूंणझूणणो (बो)–देखो 'रुणझुणणो' (बो)।

रूंतोड़–पु० रोम के जड़ से उखड़ने से होने वाला फोड़ा।

रूंदणो (बो), रूंदळणो (बो)–क्रि० १ पैरों से कुचलना, रौंदना। मसलना। २ अधिकार में करना। ३ रोकना।

रूंदाणो (बो), रूंदावणो (बो)–क्रि० १ पैरों तले कुचलवाना, रुंदवाना। मसलाना। २ अधिकार में कराना। ३ रुकवाना।

रूंधणो (बो)–क्रि० [सं० अवरुद्धनम्] १ रोकना। २ अवरुद्ध करना। ३ आच्छादित करना। ४ विचारों में उलझाना, फंसाना। ५ घेरना, आवेष्टित करना। ६ रौंदना, मसलना।

रूंधाड़णो (बो), रूंधाणो (बो), रूंधावणो (बो)–क्रि० १ रुकवाना। २ अवरुद्ध कराना। ३ आच्छादित कराना। ४ विचारों में उलझाना। ५ घेराना, आवेष्टित कराना। ६ रौंदाना, मसलाना।

रूंन–स्त्री० रोने की अवस्था या भाव, रुलाई।

रूंबड़ी–स्त्री० १ विकृत खून बाहर निकालने का उपकरण। २ फोड़ा, फुंसी।

रूंबरो–पु० जाति विशेष का घोड़ा।

रूंम–देखो 'रोम'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूंस–स्त्री० १ तरह, भांति, प्रकार। २ शोभा, छवि, सुन्दरता। ३ इच्छा, चाह। ४ क्रोध, गुस्सा रोष। ५ खाद्य पदार्थ। –वि० समान, सदृश।

रूंसणो–देखो 'रीसणो'।

रूंसमो(बो), रूंसावणो (बो)–१ देखो 'रीसणो'(बो)। २ देखो 'रीमाणो'(बो)।

रूंसवार–वि० १ शानदार, सुन्दर। २ शान शौकत वाला।

रूंसाणो (बो), रूंसावणो (बो)–देखो 'रीसाणो' (बो)।

रूंसियो–पु० १ खलिहान के चारों ओर खोदी जाने वाली खाई। २ एक प्रकार का घास।

रूंसो–पु० १ प्रेत। २ राक्षस।

रूंह–देखो 'रूह'।

रू–१ देखो रोम'। २ देखो 'रुई'।

रूअड़ड, रूअड़ो, रूअड़ड, रूअड़ु, रूअड़ो–देखो 'रूड़ो'। –(स्त्री० रूअड़ी, रूअडी)।

रूई–स्त्री० कपास के डोडे से निकलने वाला घूआ, कोटन। —दार–वि० जिसमें रूई भरी हो। जो रुई जैसा नर्म हो।

रूउ–पु० [सं० रूपक:, प्रा० रूअओ:] १ चांदी का एक सिक्का विशेष। २ गायों का झुण्ड या समूह।

रूक, रूकड़–स्त्री० तलवार कृपाण। —धराक, धारक–पु० योद्धा, वीर।—धाळो–पु० युद्ध। लड़ाई। —झड़ो–स्त्री० तलवारों के प्रहारों की झड़ी।

रूकड़धर–वि० खड्गधारी, तलवारधारी योद्धा।

रूकमणी–देखो 'रुकमणी'।

रूकरस–पु० युद्ध, संग्राम।

रूकसधोधा–वि० तलवारधारी योद्धा का वंशज।

रूकहत्थ (हत्थो, हथ, हथो)–वि० [सं० रूक+हस्तं] जिसके हाथ में खड्ग या तलवार हो, तलवारधारी।

रूकमणी–देखो 'रुकमणी'।

रूखड़ु, रूखड़ो–१ देखो 'रुख', 'रूंख'।

रूखो–वि० (स्त्री० रूखी) १ जिसमें चिकनाहट की कमी हो, शुष्क। २ खुरदरा। ३ जिसमें रस या तरलता न हो। नीरस। ४ अप्रिय। ५ जिसके चरित्र में आत्मीयता या कोमल भावों का अभाव हो। ६ उदासीन, विरक्त।

रूड़उ, रूड़ो–वि० (स्त्री० रूड़ी) १ सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट। २ बढ़िया, श्रेष्ठ। ३ समर्थ, सक्षम। ४ आकर्षक, मोहक, सुन्दर। ५ श्रेष्ठ-कुलीन, चरित्रवान। ६ योग्य, चतुर, दक्ष। ७ पावन, पवित्र। ८ बल, पौरुष वाला। ९ स्वादिष्ट, रुचिकर। १० सिद्धिदायक। ११ उत्कृष्ट, बेहतर। १२ स्वस्थ, तंदुरुस्त। १३ शोभावान। १४ जबरदस्त। १५ प्रिय, प्यारा। १६ उपयुक्त, उचित। १७ अद्भुत, विचित्र।—क्रि०वि० १८ अच्छे ढंग से। १९ बहादुरी से, वीरता से।

रूठणो (बो)–क्रि० १ अप्रसन्न होना, नाराज होना। २ कोप करना, क्रोध करना। ३ मान करना, गुमान करना।

रूठाणो (बो), रूठावणो (बो)–क्रि० १ अप्रसन्न करना, नाराज करना। २ कोप कराना, क्रोध कराना। ३ मान कराना, गुमान कराना।

रूठोड़ो, रूठोंउ, रूठो–वि० (स्त्री०रूठी,रूठोड़ी)अप्रसन्न, नाराज, रूठा हुआ। मान किया हुआ।

रूड़णो (बो)–देखो 'रुड़णो' (बो)।

रूड़ीयाळ–वि० बजने वाला।

रूड़ु, रूड़ो–देखो 'रूड़ो'।

रूड़यौवना–स्त्री० पूर्ण युवा नायिका।

रूढ़ा–स्त्री० लक्षणा शब्द शक्ति का एक भेद।

रूढ़ि, रूढ़ी–स्त्री० [सं० रूढ़ि] १ प्रथा, चाल, परम्परा। २ विचार। ३ निश्चय। ४ साहित्य में रूढ़ अर्थ बोध करने वाला शब्द।

रूणंझण–देखो 'रणझण'।

रूण–स्त्री० १ मूल्य, भाव, कीमत। २ चेहरे पर लक्षित भाव। ३ इच्छा, भाव, रुख।

रूणझुण, रूणझुणि–देखो 'रुणझुण'।

रूणावळी–देखो 'रोमावली'।

रूणेचो–पु० जैसलमेर जिलान्तर्गत रामदेव सिद्ध या रामापीर का स्थान, गांव या मंदिर।

रूणो–पु० १ जीने या सीढी का सब से ऊपर का पत्थर या चौकी। २ शतरंज का एक मोहरा।

रूपंतर–वि० [सं० रूप-अंतर] १ रूप या बनावट का भेद, अन्तर। २ दूसरा रूप, अन्य रूप, रूप भेद। ३ एक भूभाग विशेष।

रूप (रूपु)–पु० [सं०] १ सौंदर्य, सुन्दरता। २ बनावट, रचना। ३ सूरत, शक्ल ४ प्रकार, भेद भांति। ५ दृश्य पदार्थ या वस्तु। ६ प्रकृति, स्वभाव, आदत। ७ शोभा। ८ विशेष आकृति का शरीर। ९ शरीर, देह। १० कार्य का ढंग, प्रणाली। ११ आकृति। १२ रचना। १३ शब्द या वर्ण का आकार। १४ वृक्ष। १५ रूपा, रौप्य, चांदी। १६ तुल्यता, बराबरी। १७ दो लघु मात्रा का नाम। १८सादृश्यता, समानता, प्रतिकृति। १९आकार। २० लक्षण, पहिचान। —वि० १ सुन्दर, मनोहर। २ समान, तुल्य, बराबर।

रूपकंठीर–पु० नृसिंहावतार।

रूपक, रूपकउ–पु० [सं० रूपकम्] १ वह काव्य या रचना जिसमें किसी महान योद्धा या व्यक्तिका चरित्र-चित्रण हो। २ काव्य, कविता। ३ डिंगल के गीत (छंद) विशेष जिसकी संख्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चौरासी मानी जाती है। ४ वर्ण-वृत्त या मात्रिक छंद। ५ कीर्ति, यश। ६ प्रशंसात्मक गीत या कविता। ७ दृश्य काव्य, नाटक। ८ किसी रूप की मूर्ति, चित्र, प्रतिकृति। ९ चांदी का बना कंठाभरण [सं० रूप्यक] १० रुपया नामक सिक्का। ११ चांदी। १२ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार। १३ एक शिव भक्त राक्षस।

रूपकरण-पु० एक प्रकार का घोड़ा।

रूपकातिसयोक्ति, रूपकातिश्योक्ति-पु० [सं० रूपकातिश्योक्ति] एक अर्थालंकार विशेष।

रूपकार-पु० शिल्पी।

रूपकीस-पु० [सं० कीसरूप] हनुमान।

रूपकुंड-पु० [सं०] हिमालय स्थित एक तीर्थ कुंड।

रूपक-देखो 'रूपक'।

रूपकांता-स्त्री० सत्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।

रूपग-देखो 'रूपक'।

रूपगरविता-स्त्री० [सं० रूपगर्विता] अपने रूप पर गर्व करने वाली नायिका।

रूपगृह-पु० [सं० रूपगृह] आंख, नेत्र।

रूपघर-पु० [सं० रूपगृह] १ आंख, नेत्र। २ सुन्दरता का घर। [सं० रौप्यगृह] ३ खजाना, कोष। ४ चांदी का खजाना।

रूपजीवनी-स्त्री० [सं०] वेश्या, रंडी।

रूपटियो-देखो 'रूपयो'।

रूपण-पु० [सं० रूपणम्] १ आलंकारिक वर्णन। २ शोध, अनुसंधान। ३ वर्णन, चित्रण।

रूपणी-वि० रूप की, रूपी, रूप धारण करने वाली।

रूपदे-देखो 'रूपारेल'।

रूपधर-वि० १ स्वरूपवान। २ किसी का रूप या स्वांग धरने वाला।

रूपनाथ-पु० पाबू राठौड के गुरु का नाम।

रूपनिधान-वि० [सं०] अत्यन्त सुन्दर, रूप का भण्डार।

रूपफौज-पु० सेना का रूप, योद्धा, वीर।

रूपमान-वि० [सं० रूपवान] स्वरूपवान, सुन्दर।

रूपमाळा-स्त्री० एक मात्रिक छंद विशेष।

रूपमाळा-निसांणी-स्त्री० डिंगल का एक छंद।

रूपमाळी-स्त्री० एक वर्णिक छंद।

रूपमिण-पु० [सं० रूपमणि] तारा।

रूपराय-पु० १ चांदी के रंग का घोड़ा। २ रूप का राजा।

रूपरासिक-पु० वह घोड़ा जिसका बायां पैर (पिछला) श्वेत हो।

रूपरासो-वि० [सं० रूपराशि] रूप वान मनोहर, रूप का भण्डार।

रूपरेखा, रूपरेह-स्त्री० [सं० रूपरेखा] १ मूल विषय की प्रस्तावना, भूमिका, ढांचा। २ किसी लेख का डौल। ३ किसी चित्र का रेखांकन। ४ निर्माणाधीन वस्तु का ढांचा, नमूना।

रूपळ-देखो 'रूपो'।

रूपवंत-वि० [सं० रूपवत्] (स्त्री० रूपवंती, रूपवती) १ सुन्दर, मनोहर, रूपवान। २ शरीर या रूपधारी।

रूपवंती, रूपवती-वि० [सं० रूपवती] सुन्दरी, सुन्दर।

रूपव-पु० सात मात्राओं की ताल विशेष।

रूपवन-पु० चंदन।

रूपवांन-वि० सुन्दर।

रूपसी-स्त्री० [सं० रूपश्री] एक संकर रागिनी।

रूपहरो-वि० रूपे की बनी, चांदी जैसे वर्ण की।

रूपांण-देखो 'रूप'।

रूपाजीवा-स्त्री० [सं०] वेश्या, रण्डी।

रूपामाखी-स्त्री० [सं० रूप्यमाक्षिका] औषधियों में काम आने वाला एक खनिज पदार्थ।

रूपाराम-स्त्री० दक्षिण व आग्नेय के मध्य की दिशा।

रूपारेल-स्त्री० १ शकुन देने वाली एक चिड़िया विशेष। २ तेज हवा या आंधी से उड़ने वाली गर्द। ३ वात चक्र। ४ एक प्रकार का खेल।

रूपालहरी-स्त्री० स्त्रियों का एक आभूषण विशेष।

रूपाळ, रूपाळो-वि० [सं० रूप+आलुच] (स्त्री० रूपाळी) सुन्दर, मनोहर।

रूपिका-स्त्री० [सं०] श्वेत पुष्प वाला मदार का पौधा।

रूपिणी-स्त्री० १ श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मिणी। २ देखो 'रूपणी'।

रूपी-वि० [सं०] १ रूप या आकार प्रकार वाला। २ रूपधारी, स्वरूपधारी। ३ किसी के तुल्य, समान, सदृश्य। ४ सुन्दर, मनोहर।

रूपीयो-देखो 'रुपयो'।

रूप-१ देखो 'रूप'। २ देखो 'रूपो'।

रूपेंद्रिय-पु० [सं०] नेत्र, नयन, आंख।

रूपेटो-पु० [सं० रूप्य+रा०एटो] चांदी का प्याला विशेष।

रूपेरण-स्त्री० चांदी की मूठ वाली तलवार।

रूपेस्वर-पु० [सं० रूपेश्वर] एक शिव लिंग विशेष।

रूपेस्वरी-स्त्री० एक देवी का नाम।

रूपैयो-देखो 'रूपयो'।

रूपोटो-देखो 'रूपेटो'।

रूपो-पु० [सं० रूप्य] १ चांदी, रजत, रूपा। २ हंस। ३ श्वेत वर्ण का अश्व। ४ देखो 'रूप'।

रूबकार-पु० [फा०] १ अदालत में हाजिर होने का आदेश-पत्र। २ उपस्थिति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुबकारी–स्त्री० [फा०] १ मुकद्दमे की पेशी या कार्यवाही। २ किसी के आगे उपस्थिति।

रुबरू–क्रि० वि० [फा०] प्रत्यक्ष, सामने सम्मुख। सशरीर।

रूम–पु० [फा०] १ एक देश का नाम। २ देखो 'रोम'।

रूमवंत–देखो 'रूपवंत'।

रूमा–स्त्री० नमक की खान।

रूमाल–पु० [फा०] १ हाथ-मुंह पोंछने का छोटा वस्त्र, दस्ती। २ पायजामें की मियानी।

रूमाली–स्त्री० १ एक प्रकार का छोटा रूमाल। २ लंगोट।

रूमी–स्त्री० १ एक प्रकार की छुरी। २ घोड़ा। ३ रोम देश का घोड़ा। ४ रोम देश का निवासी, व्यक्ति।

रूमीसूरी–पु० एक प्रकार का खड्ग।

रूय–देखो 'रूप'।

रूयड़ो, रूयडु, रूयडो–देखो 'रूड़ो'। (स्त्री० रूयड़ी)

रूळणो (बो)–देखो 'रुळणो' (बो)।

रूळीयारो-जोड–वि० भटकते को आश्रय देने व बिछुड़ों को मिलाने वाला।

रूळो–पु० (स्त्री० रूळी) १ छोटा वातचक्र, बगूला। २ कमर व पैर खराब होजाने के कारण ठीक से न चलने वाला। ३ पेट में होने वाला एक वातविकार।

रूव–देखो 'रूप'।

रूवडउ,रूवड़ो, रूवडउ रूवडो–देखो 'रूड़ो'। (स्त्री० रूवड़ी)।

रूस–पु० १ एशिया के उत्तर में स्थित एक बड़ा देश। २ देखो 'रूंस'।

रूसणो–देखो 'रिसाणो'।

रूसणो (बो)–देखो 'रीसाणो' (बो)।

रूसी–पु० १ रूस देश का निवासी। २ रूस देश की भाषा।–वि० रूस देश का, रूस देश संबंधी।

रूह–स्त्री० [अ०] १ आत्मा। २ प्राणवायु। ३ कई बार खींचा हुआ अर्क। ४ इत्र विशेष। ५ एक प्रकार की मच्छी।

रूहराळ–देखो 'रुधिर'।

रूहाड़–देखो 'रुहाड़'।

रूहि–देखो 'रुधिर'।

रूहिवाळ, रूहीवाळ–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

रूहिर, रूहो–देखो 'रुधिर'।

रेंगणो (बो)–देखो 'रींगणो' (बो)।

रेंण–देखो 'रयण'।

रेंणको–देखो 'रैणको'।

रें-रें–अनु० १ छोटे बच्चे का धीरे-धीरे रुदन। २ बकझक।

रेंवत–देखो 'रेवंत'।

रेंवहर–वि० १ अधीन, मातहत। २ पराजित।

रेंहर–देखो रेंवहर।

रे–पु० १ निकृष्ट या नीच कार्य। २ खेद, कष्ट। ३ सुख। ४ नभ। ५ काग, कौआ। –अव्य० सम्बोधनात्मक अव्यय, अरे।

रेकारी–देखो 'रेंकारी'।

रेख–स्त्री० [सं० रेखा] १ लकीर रेखा। २ हाथों व पैरों में बनी लकीरें। ३ मूल्य, कीमत। ४ आय, आमदनी। ५ जागीरदारों से लिया जाने वाला एक सैनिक कर विशेष। ६ प्रतिष्ठा, मान, इज्जत। ७ आंख का काजल। ८ आकृति, सूरत, ढांचा। ९ सीमा, हद। १० भाग्य, प्रारब्ध।

रेखग–पु० शिर, मस्तक।

रेखड़ी–देखो 'रेख'।

रेखतो–पु०[फा०रेखतः] एक प्रकार की कविता या छन्द विशेष।

रेखळो–देखो 'रेंकळो'।

रेखांकन–पु० [सं०] १ रेखाचित्र। २ रेखा खींचकर बनाई गई सीमा। ३ रेखा चिह्न।

रेखांस–पु० [सं० रेखांश] १ भूगोल में देशान्तर। २ याम्योत्तर वृत्त का कोई अंश। द्राघिमांश। ३ लंबी रेखा का भाग।

रेखा–स्त्री० [सं०] १ लंबी और पतली लकीर या धारनुमा चिह्न लकीर। २ ज्योतिष के अनुसार अक्षांश सूचित करने वाली लकीर। ३ सीमा रेखा। ४ गिनती, शुमार। ५ रेख।—गणित–स्त्री० गणित विद्या का एक विभाग।

रेखाभूमि–स्त्री० प्राचीन समय की, सुमेरू से लंका तक की एक कल्पित रेखा व इसके आस-पास की भूमि।

रेखो–स्त्री० मांडी जाति की स्त्री।

रेग–स्त्री० [फा०] बालू रेत।

रेगर–पु० एक अनुसूचित जाति।

रेगिस्तान, रेगिस्तान, रेगिस्थान–पु० १ मरुस्थल, मरुभूमि। २ मरुस्थल वाला क्षेत्र।

रेगिस्तानी, रेगिस्थानी–वि० मरुस्थल का, रेगिस्तान संबंधी।

रेड़णो (बो)–क्रि० १ बहाना, टपकाना। २ गिराना, डालना, उड़ेलना। ३ मथाना। ४ नगाड़ा आदि बजाना। ५ मवेशियों को हांकना।

रेड़ाणो (बो), रेड़ावणो (बो)–क्रि० १ बहवाना, टपकवाना २ गिरवाना, उड़ेलवाना डलवाना। ३ मथवाना। ४ नगाड़ा आदि बजवाना। ५ मवेशियों को हंकवाना।

रेड़ूंबो, रेड़ूंबो–पु० विकृत आकृति का मतीरा, तरबूज।

रेचक–वि० [सं०] १ दस्तावर, दस्त लाने वाला। २ फेंफड़ों को साफ करने वाला।–पु० १ प्राणायाम की तीसरी क्रिया। २ जमालगोटा। ३ विरेचन औषधि। ४ चित्त की एकाग्रता। ५ ध्यान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेचन–पु० [सं०] १ मल साफ करने की क्रिया, विरेचन, जुलाब। २ मल विष्टा। ३ दस्तावर औषधि। ४ श्वास बाहर निकालने की क्रिया।

रेच्य–पु० [सं०] १ प्राणायाम से बाहर निकलने वाली वायु। २ जुलाब।

रेजकी, रेजगारी, रेजगी–स्त्री० [फा०] १ पैसा दो पैसा पांच पैसा आदि सिक्कों का समूह। २ छोटे सिक्के। ३ चांदी सोने के तारों के छोटे टुकड़े।

रेजमाल–पु० काच का बुरादा लगा कागज।

रेजलो–पु० १ थकान, थकावट। २ अवसर।

रेजारंगाई–स्त्री० रंगरेजों से लिया जाने वाला कर विशेष।

रेजो–पु० [फा० रेज:] १ बहुमूल्य कपड़े का थान, अंश। २ हाथ का बना मोटे सूत का वस्त्र। ३ स्वर्णकारों का एक उपकरण। ४ वेश्या वृत्ति के लिये पाली-पोसी लड़की।

रेट–स्त्री० [अं०] १ वस्तु की दर, भाव, कीमत। २ गति, चाल। ३ एक प्रकार का वस्त्र।

रेटणो (बो)–क्रि० १ धारण करना, पहनना। २ मिटाना, रद्द करना। ३ आज्ञा या नियम का उल्लंघन करना, विरोध करना।

रेटाणो (बो), रेटावणो (बो–क्रि० १ धारण कराना, पहनाना। २ मिटवाना, रद्द करवाना। ३ आज्ञा या नियम का उल्लंघन कराना, विरोध कराना।

रेटो–पु० १ पराजित करने की क्रिया या भाव। २ छोटी पगड़ी।

रेड़णो (बो)–देखो 'रेड़णो' (बो)।

रेड़ाणो (बो)–देखो 'रेड़ाणो' (बो)।

रेडो–वि० १ ठिगना, छोटे कद का। २ देखो 'रेढो'।

रेढ–स्त्री० जिद्द, हठ।

रेढो–पु० सूअर का बच्चा।

रेण–स्त्री० [सं० रेन] १ रात्रि, रात, निशा। २ गिरवी रखने की क्रिया, रेहन।

रेणका–१ देखो 'रेणुका'। २ देखो 'रयण'।

रेणदार–पु० जायदाद या वस्तु गिरवी रख कर पैसा देने वाला।

रेणनांमो–पु० रेहन की शर्तों वाला कागज।

रेणबिल–पु० [फा०] गिरवी, बंधक, रेहन।

रेणव–पु० [सं० रेणवह] १ चारणों का पर्यायवाची संबोधन। २ कवि, काव्यकार।

रेणवा–स्त्री० झाला राजपूतों की एक शाखा।

रेणा, रेणा–१ देखो 'रेणुका'। २ देखो 'रयण'।

रेणादे–देखो 'रांणादे'।

रेणाधर–पु० [सं० रत्नधर] समुद्र।

रेणायर, रेणायुर–देखो 'रत्नाकर'।

रेणाविखमी–स्त्री० सेना, फौज।

रेणि, रेणी–देखो 'रेणु'।

रेणु–पु० [सं० रेणुः] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक प्राचीन राजा। २ बालू रेत, धूल, रज। ३ पृथ्वी, भूमि।

रेणुका–स्त्री० [सं०] १ महर्षि जमदग्नि की पत्नी व परशुराम की माता। २ पृथ्वी। ३ बालू रेत। ४ रज, गर्द। ५ सह्याद्रि पर्वत का एक तीर्थ।

रेणू, रेणु–१ देखो 'रेणु'। २ देखो 'रेणव'।

रेत–स्त्री० १ धूल, रेत। २ रज, गर्द। ३ पृथ्वी, भूमि। ४ देखो 'रम्मत'। ५ देखो 'रेतस'। ६ देखो 'रेती'।

रेतकुंड–पु० [सं०] १ एक नरक का नाम। २ कुमायूं के पास का एक तीर्थ स्थान।

रेतड़ली–देखो 'रेत'।

रेतणो (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु पर रेती (औजार) फेरना, लगाना। २ किसी धारदार वस्तु से कोई चीज काटना। ३ घोड़े का स्खलित होना। ४ कोमल रेत से सहलाने के कारण ऊंट का स्खलित होकर अशक्त होना। ५ ऊंट की मूत्रेन्द्रिय पर शोथ आना।

रेतस–पु० [सं० रेतस्] वीर्य, शुक्र।

रेती–स्त्री० १ एक औजार विशेष। २ नदी के बीच ऊभरी हुई जमीन, नदी के बीच का टापू।

रेतीलो–वि० (स्त्री० रेतीली) अधिक रेत वाला, रेत के टीबों वाला।

रेयण–देखो 'रयण'।

रेर–स्त्री० राम शब्द की ध्वनि। ररंकार।

रेलणो (बो)–पु० बड़ा उल्लू, एक पक्षी।

रेळ–पु० प्रातःकालीन गायन।

रेल–स्त्री० १ लोहे की पटरी पर, भाप व डीजल के इंजन से चलने वाली लंबी गाड़ी, रेलगाड़ी। २ बहाव, धारा। ३ वर्षा के पानी से रबी की फसल होने वाला खेत। ४ वर्षा के पानी का नदी की तरह का बहाव। ५ प्रचुरता, आधिक्य।

रेलचीळा–स्त्री० १ रतिक्रीड़ा का आनन्द। २ संभोग के कारण नवोढ़ा की योनि से रक्त आने की अवस्था।

रेलठेल–देखो 'रेलपेल'।

रेलणो (बो)–क्रि० १ पृथ्वी पर जल का फैलाव, विस्तार। २ पानी से नम होना, भीगना। ३ जल से प्लावित होना। ४ प्रवाहित होना, बहना। ५ भीगना, भिगोना, तर करना। ६ देना, अर्पण करना, देकर संतुष्ट करना। ७ तीव्र प्रवाह से बहा लेजाना। ८ चलना, बहना। ९ नष्ट होना, मिटना। १० बिखरना।

रेलत–स्त्री० [अ० रिहलत] मृत्यु।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रेळपेळ, रेलपेल–स्त्री० १ भीड़-भाड़ । २ धक्का-मुक्की । ३ भरमार, अधिकता ।

रेळापेळी–देखो 'रेलपेल' ।

रेलि–स्त्री० धार, धारा, प्रवाह ।

रेळी–स्त्री० १ शीतल वायु की लहर । २ बारीक धूल की तह कण । ३ गेहूँ के पौधों की जड़ों में होने वाला रोग ।

रेलो–पु० १ पानी आदि तरल पदार्थ की जमीन पर बहने वाली छोटी धार । २ तबला बजाने का एक ढंग । ३ भीड़, जम घट ।

रेवंत–पु० १ अश्व के रूप में उत्पन्न सूर्य का एक पुत्र । २ अश्व, घोड़ा ।

रेव–स्त्री० [सं० रव] १ दर्द भरी आवाज, चीख, पुकार । २ आवाज, पुकार । ३ गिड़गिड़ाहट । ४ शर्याति वंशीय एक राजा ।

रेवड़–पु० भेड़, बकरियों का झुंड या दल ।

रेवड़ा–स्त्री० बड़ी रेवड़ी ।

रेवड़ियो–देखो 'रेवड़' ।

रेवड़ी–स्त्री० सफेद तिलों की, गुड़ या शक्कर की चाशनी मिला कर बनाई गई टिकिया ।

रेवट–पु० [सं०] १ दक्षिणावर्त शंख । २ शूकर, सूअर ।

रेवत–पु० [सं०] १ शर्याति वंशीय एक राजा । २ वायु पुराण के अनुसार एक अन्य राजा । ३ एकादश रुद्रों में से एक ।

रेवतबीजी–स्त्री० औषधि में काम आने वाला एक प्रकार का क्षुप ।

रेवति, रेवती–स्त्री० [सं० रेवती] १ रेवत मुनी की माता का नाम । २ श्रीकृष्ण की भोजाई व बलराम की पत्नी । ३ महर्षि भारद्वाज की बहन । ४ गोदावरी के समीप का एक तीर्थ । ५ अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से एक । ६ एक मातृका का नाम । ७ एक बाल ग्रह विशेष ।

रेवतीभव–पु० [सं०] शनिश्चर ।

रेवतीरमण, रेवतीरवण–पु० [सं० रेवतीरमण] बलराम ।

रेवल–पु० दीवार की सतह नापने का लकड़ी का एक उपकरण ।

रेवा–स्त्री० नर्मदा नदी का एक नाम ।

रेवाउत्तन–पु० हाथी, गज ।

रेवाकंकर–पु० रेवा या नर्मदा नदी के कंकर, सब शंकर ।

रेवाड़ी–देखो 'रेवाड़ी' ।

रेवाड़ी–पु० भेड़ या बकरियों को रखने का बाड़ा, आहता या स्थान ।

रेवानद (नदी)–पु० रेवा नदी । नर्मदा नदी ।

रेवाळ–देखो 'रहवाळ', 'रेवाळ' ।

रेवास, रेवासी–देखो 'रहवास' ।

रेस–स्त्री० [सं० रुक्ष या रिष] १ पराजय, हार । २ नाश, संहार । ३ मजा, दण्ड । ४ दबाव । ५ शल्य, कसक । ६ क्षति, हानि । ७ भय, आतंक । ८ कारण, निमित्त, हेतु । ९ निर्धनता, कंगाली । १० चाह, इच्छा । ११ तात्त्विक ज्ञान, रहस्य, मर्म । [अं०] १२ जाति, नस्ल । १३ घुड़ दौड़ ।—वि० किंचित, जरा ।—क्रि०वि० लिए ।

रेसकोरस, रेसकोस–पु० [अ० रेसकोर्स] १ धावन, पथ । २ अश्व धावन भूमि, घुड़ दौड़ का मैदान । ३ घुड़ दौड़ ।

रेसण–वि० १ मारने वाला, संहार करने वाला । २ पराजित करने वाला, पराजय देने वाला ।

रेसणो (बो)–क्रि० १ पराजित करना, हराना । २ मारना, संहार करना । ३ मिटाना, नष्ट करना ।

रेसम–पु० [फा० रेशम] १ बारीक, मुलायम व चिकना रेशा जिसके कपड़े बुने जाते हैं । २ इन रेशों का बना वस्त्र । ३ इन रेशों की डोरी । ४ तलवार, खड्ग ।

रेसमियो–पु० १ रोगी को दिया जाने वाला बाजरी के आटे का तरल खाद्य । २ एक प्रकार का घोड़ा । ३ शीतलकाल की तीक्ष्ण वायु ।—वि० १ रेशम का, रेशम संबंधी । २ देखो 'रेसम' ।

रेसमी–वि० [फा० रेशमी] १ रेशम का, रेशम संबंधी । २ रेशम का बना । ३ कोमल, मुलायम, चिकना ।

रेसमीघाट–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

रेसमीभड़ख–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

रेसि–देखो 'रेस' ।

रेसो–पु० [फा० रेशः] १ पौधों की छाल के महीन तंतु । २ शरीर के अंग बनाने वाले तंतु । ३ सूत आदि के बारीक तंतु । ४ शरीरस्थ नाश । ५ असर । ६ हिस्सा, भाग । ७ अत्यन्त सूक्ष्म अंश, अणु । ८ लहर, प्रवाह । ९ देखो रेस' ।

रेह–स्त्री० [सं० रेखा] १ कपट, धोखा । २ सन्देह, शक । ३ कलंक, दाग । ४ धूल का कण । ५ परिखा, खाई । —वि० १ किंचित, थोड़ा, लेश मात्र । २ देखो 'रेख', 'रिख' ।

रेहड़ली–स्त्री० धूल ।

रेहण–पु० मैल, मल कीट ।

रेहणो (बो)–क्रि० १ शोभित होना । २ देखो 'रहणो' (बो) ।

रेहळणो (बो)–क्रि० पराजित करना, हराना ।

रेहा–देखो 'रेखा', 'रेह', 'रेख' ।

रेहिणी–देखो 'रोहिणी' ।

रें–देखो 'रे' ।

रेंकणो (बो)–क्रि० गधे का बोलना ।

रेंग–स्त्री० रेंगने की क्रिया या भाव ।

रेंगणो (बो)–क्रि० भूमि या आंगन में पेट के बल सरक कर चलना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रैंडो–स्त्री० गायों की एक नस्ल या इस नस्ल की गाय।
रैंडो–पु० उक्त नस्ल का बैल।
रैंण–देखो 'रयण'।
रैंणकी–स्त्री० राजस्थानी का एक छंद।
रैंणायर–देखो 'रत्नाकर'।
रैंणु, रैंणू–देखो 'रेणु'।
रैंणी (बो)–देखो रहणी' (बो)।
रैंदी–स्त्री० खरबूजे की फांक।
रैंन–देखो 'रयण'।
रैंवणी (बो)–देखो 'रहणी' (बो)।
रैंवत–देखो 'रेवंत'।
रैंहट–देखो 'अरट'।
रै–पु० [सं०] १ धन, द्रव्य। २ राजा, नृप। ३ सुखघर। ४ श्याम रंग। ५ धैर्य, संतोष।—अव्य० के।
रैंक–पु० [अ०] पुस्तकें, सामान आदि रखने की खुली आलमारी।
रैंकळियो, रैंकळो–पु० [स० रेखागतो] १ वह छकड़ा जिस पर बहुतसी बंदूकें लगी हों। २ सवारी के काम की छोटी व हल्की बैलगाड़ी। ३ एक प्रकार की तोप।
रैंकारो–पु० 'तू', 'तुम' आदि का छोटा, हल्का संबोधन।
रैंडू–देखो 'रहडू'। 'रहडुओ'।
रैंज–पु० वर्षा के पानी से रबी की फसल होने वाला खेत।
रैंडो–पु० बड़ा पत्थर।
रैंण–पु० १ राज्य। २ देखो 'रयण'। ३ देखो 'रेणु'। ४ देखो 'रहणी'।
रैंणका–देखो 'रेणुका'।
रैंणपत (पति, पती)–देखो 'रयणपति'।
रैंणय–देखो 'रयण'।
रैंणा–स्त्री० [सं० रज, रजनी] १ पृथ्वी, भूमि। २ रत्न। ३ धूल, रेत, बालू। ४ रात, रात्रि।
रैंणाइर, रैंणायर–देखो 'रत्नाकर'।
रैंणादे–देखो 'रांणादे'।
रैंणापत (पति, पती)–देखो 'रयणपति'।
रैंणायर–देखो 'रत्नाकर'।
रैंणावर–देखो रत्नाकर'।
रैंणावळि (ळी)–स्त्री० [सं० रजनी] रात, रात्रि।
रैंणि, रैंणिका, रैंणी–स्त्री० [सं० रजनी] रात, रात्रि।
रैंणो–देखो 'रहणी'।
रैंणीचर–पु० [सं० रजनीचर] निशाचर, राक्षस।—वि० रात में खाने वाला, रात में चलने वाला, विचरण करने वाला।
रैंणीपत (पति, पती)–देखो 'रयणपति'।
रैंणो, (बो)–देखो 'रहणी' (बो)।
रैंत, रैंति, रैंती–१ देखो 'रय्यत'। २ देखो रेत'।
रैंदास–पु० चमार जाति के एक प्रसिद्ध संत।
रैंदासी–पु० 'रैंदास' की सम्प्रदाय का अनुयायी।
रैंन, रैंनि, रैंनी–देखो 'रयण'।
रैंबारण–स्त्री० रैंबारी' जाति की स्त्री।
रैंबारी–पु० (स्त्री० रैंबारण) भेड़, बकरी व ऊंटों का पालनपोषण तथा व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति।
रैंबूद रैंबूदो–वि० [फा० रहबूत] (स्त्री० रैंबूदण) १ भोला-भाला, सीधा-सादा। २ जिसे सुबह-शाम का कोई ज्ञान न हो।
रैं'भ–देखो 'रहम'।—दिल= रहमदिल'।
रैंयत–देखो 'रय्यत'।
रैंयांण–स्त्री० गांव की चौपाल, अथाई, बैठक।
रैंळ, रैंळी–स्त्री० [अ०रइल] १ ठंडी हवा का झोंका। २ लहर। ३ देखो 'रहल'।
रैंळो–पु० कलंक, दोष।
रैंवंत–देखो 'रेवंत'।
रैंवणी (बो)–देखो 'रहणी' (बो)।
रैंवत–१ देखो 'रैंवंत'। २ देखो 'रैंवतक'।
रैंवतक–पु० [सं०] १ गिरनार नामक पर्वत। २ पांचवें मन्वन्तर के मनु का नाम।
रैंवतीरमण, रैंवतीरवण–देखो 'रेवतीरमण'।
रैंवाणनव (नदी)–देखो 'रेवानदी'।
रैंवा देखो 'रेवा'।
रैंवाड़ी–स्त्री० [सं० राजपाटिका, प्रा० रायवाडी] १ देवताओं की सवारी निकालने का पालकीनुमा वाहन। २ राजा की सवारी का वैभव पूर्वक परिभ्रमण।
रैंवाड़ीएकादसी–स्त्री० भादव शुक्ला एकादशी, झूलनी ग्यारस।
रैंवाळ–पु० खनिहान में जागीरदार का हिस्सा देने के बाद रहने वाला अनाज।
रैंवास, रैंवासो–देखो 'रहवास'।
रैंहणी (बो)–देखो 'रहणी' (बो)।
रैंहळ–स्त्री० १ शीतल वायु की लहर। २ देखो 'रहळ'।
रों–पु० एक प्रकार की घास।
रोंख, रोंखड़ो–देखो 'रूंख'।
रो–पु० १ उदर, पेट। २ बाल, रोमावली। ३ ऋषि, मुनि। ४ तृष्णा। ५ त्रास। ६ रोग, बीमारी। ७ देखो 'रौ'।
रोअणी (बो)–देखो 'रोवणी' (बो)।
रोआवणी (बो)–देखो 'रोवाणी' (बो)।
रोई–देखो 'रोही'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोईड़ो–देखो 'रोहिड़ो'।

रोक–स्त्री० १ रुकावट, प्रतिबंध। २ प्रतिबंध लगाने की क्रिया या भाव। ३ रुकावट करने वाली वस्तु। ४ निषेध, मनाही। ५ कैद। ६ देखो 'रोकड़'।

रोकड़–स्त्री० १ नोट, सिक्कों के रूप में रुपया, पैसा, द्रव्य, नगदी। २ धन, पूंजी, द्रव्य। ४ किसी वस्तु का नगद भुगतान। ५ व्यापारी की प्रमुख बही। ६ मूल धन। पूंजी।

रोकड़बही–स्त्री० व्यापारी की रोज के हिसाब की मुख्य बही।

रोकड़बाकी–स्त्री० आय में से व्यय को घटाने पर बचने वाला धन, नगदी।

रोकड़बिक्री–स्त्री० केवल नगद भुगतान पर की जाने वाली बिक्री।

रोकड़भंडार–पु० राज्य का कोषागार।

रोकड़भंडारी, रोकड़ियो–पु० खजांची।

रोकड़ी–देखो 'रोकड़'।

रोकड़ो–पु० १ एक रुपये का सिक्का। २ देखो 'रोकड़'।

रोकणो (बो)–क्रि० १ रोकना, रुकावट डालना। २ विघ्न या बाधा डालना। ३ क्रिया या गति को रोकना। ४ मार्ग बंद करना, अवरुद्ध करना। ५ किसी कार्य के लिये मनाही करना, वर्जन करना। ६ किसी चालू क्रम को रोक देना। ७ कुरीति वाली रूढ़ियां मिटाना, बंद कराना। ८ आघात या प्रहार को बीच में निष्फल कर देना। ९ सामान्य कार्य प्रणाली को प्रतिबंधित करना। १० वश या काबू में करना। ११ कैद करना, नजरबंद करना। १२ प्रवास आदि रोकना। १३ ठहराना।

रोकाई–स्त्री० १ रोकने की क्रिया या भाव। २ द्वार रोकने की भेंट (विवाह)।

रोकाणो (बो)–क्रि० १ रुकवाना, रुकावट डलवाना। २ विघ्न या बाधा डलवाना। ३ क्रिया या गति को रुकवाना। ४ मार्ग बंद कराना, अवरुद्ध कराना। ५ किसी कार्य के लिये मनाही कराना, वर्जन कराना। ६ किसी चालू क्रम को रुकवाना। ७ कुरीतियां मिटवाना, बंद कराना। ८ आघात या प्रहार को बीच में ही निष्फल कराना। ९ सामान्य कार्य प्रणाली को प्रतिबंधित कराना। १० वश या काबू में कराना। ११ कैद कराना, नजर बंद कराना। १२ प्रवास आदि रुकवाना। १३ ठहरवाना।

रोकायत–वि० १ रोकने या रुकावट डालने वाला। २ कैद करने वाला।

रोकावणो (बो)–देखो 'रोकाणो' (बो)।

रोखंगी–वि० [सं० रोष+अंग] १ जोश वाला, जोशीला। २ उत्साही।

रोख–देखो 'रोस'।

रोखाणो(बो)–क्रि० कुपित होना, क्रुद्ध होना।

रोखायत–वि० १ क्रोध करने वाला, कुपित। २ रोकने वाला।

रोखि, रोखी–वि० [सं० रोषिन्] १ क्रोधालु, क्रोधी। २ ईर्ष्या करने वाला, ईर्ष्यालु।

रोग–पु० [सं०] १ बीमारी। २ पीड़ा, कष्ट। ३ कलंक, दाग। ४ निरंतर कष्ट देने वाली मानसिक या शारीरिक पीड़ा। ५ व्यसन, आदत। ६ भेदभाव। ७ सात प्रकार के चौपड़ियों में से एक। —कारक–वि० जो रोग पैदा करे या लगावे।—ग्रस्त–वि० रोगी, बीमार, किसी पीड़ा से दुःखी।—जाळो–पु० किसी रोग विशेष का उपद्रव।—नाशक–वि० रोग या व्याधि नष्ट करने वाला।

रोगण–स्त्री० [सं० रोगिनी] १ रोगग्रस्त स्त्री। २ देखो 'रोगन'।

रोगन–पु० [अ०] १ तेल आदि स्निग्ध पदार्थ। २ घी। ३ लकड़ी लोहे आदि की वस्तुओं व दीवारों आदि पर सौंदर्य या सफाई के लिये किया जाने वाला लेपन, वारनिश, पेंट। ४ मिट्टी के बर्तनों, पात्रों पर लेपने का मसाला। ५ तेल। ६ बादाम का तेल। दार–वि० जिस पर रोगन चढ़ा हो।

रोगनिदान–पु० रोग की चिकित्सा।

रोगनिवारक–वि० रोग का निवारण करने वाला।

रोगनी–वि० जिस पर रोगन चढ़ा हो।

रोगलो–देखो 'रोगी'। (स्त्री० रोगली)।

रोगवाळ–वि० रोग को मिटाने वाला।

रोगहर, रोगहारी–पु० १ चिकित्सक, वैद्य। २ एक रत्न विशेष।

रोगांनो–वि० १ घी या तेल में तला हुआ। २ 'रोगन' चढ़ा हुआ।

रोगातुर–वि० किसी रोग से व्याकुल। रोग से पीड़ित।

रोगित–वि० रोगी, बीमार।

रोगियो, रोगिस, रोगी, रोगीयो, रोगीलो–वि० [सं० रोगिन् रुग्ण] (स्त्री० रोगीली) रोग से पीड़ित, व्याधिग्रस्त, बीमार।

रोड़–पु० १ नगाड़ा, नक्कारा। नक्कारा की ध्वनि। २ कैद, दीखाना। ३ बाधा, रोड़ा। [अ०] ४ सड़क, पथ।

रोड़क–स्त्री० धमकी, ललकार। दौड़-भाग।

रोड़णो–वि० (स्त्री० रोड़णी) १ रोकने वाला, अवरुद्ध करने वाला। २ बजाने वाला।

रोड़णो (बो)–क्रि० १ नगाड़ा, ढोल आदि बजाना। २ रोकना, अवरुद्ध करना। ३ घेरना, आवेष्टित करना। ४ बोलना, कहना। ५ लौटना, लेटना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोड़ी–स्त्री० १ फूस–कचरा आदि डालने की जगह। २ नगाड़े की ध्वनि। ३ एक प्रकार का वाद्य।

रोड़ो–पु० १ पत्थर या ईंट-मिट्टी का बड़ा खंड, ढेला। २ बाधा रुकावट, विघ्न। ३ देखो 'रुड़ो'।

रोड़ो-झोड़ो–पु० लड़ाई, झगड़ा।

रोचक–वि० [सं०] १ रुचिकर, प्रिय, अच्छा लगने वाला। २ मनोरंजक।

रोचकता–स्त्री० मनोहरता, अच्छाई।

रोचणो (बो)–क्रि० शोभित होना, फबना।

रोचन–वि० [सं०] १ शोभाप्रद, दीप्तिमान, मनोहर, सुन्दर, प्रिय। २ पाकस्थली संबंधी।–पु० १ 'काम' के पांच बाणों में से एक। २ गोरोचन। ३ घोड़े की गर्दन के बालों का झूड़ा।

रोचना–स्त्री० १ गोरोचन। २ वसुदेव की एक पत्नी। ३ अनिरुद्ध की एक पत्नी। ४ लाल कमल। ५ सुन्दरी, स्त्री।

रोचमान–वि० [सं०] १ चमकता हुआ, चमकीला। –पु० २ मनोहर, सुन्दर। ३ प्रिय —स्त्री० १ घोड़े के गर्दन पर होने वाली एक भंवरी।—पु० २ एक प्राचीन राजा।

रोचि, रोची–स्त्री० [सं० रोचिस्] १ दीप्ति, कांति, आभा। २ चारों ओर फैली हुई शोभा।३ किरण, रश्मि।

रोज–पु० [सं० रुदन] १ रुदन, रोना-पीटना। २ शोक, कष्ट। [फा० रोज] ३ दिन, दिवस।–अव्य० १ प्रतिदिन, नित्य, हमेशा। २ देखो रौझ'।

रोजगार–पु० १ काम, धंधा। २ पेशा, वृत्ति। ३ आजीविका का कार्य। ४ वाणिज्य, व्यवसाय। ५ वेतन, तनख्वाह। ६ पारिश्रमिक, मजदूरी। ७ रोजी।

रोजगारी–पु० [फा०] १ व्यापारी, सौदागर। २ आजीविका कमाने वाला। ३ पेशा, वृत्ति करने वाला। ४ देखो 'रोजगार'।

रोजगारी–पु० रोजगार पर कार्य करने वाला व्यक्ति, मजदूर।

रोजनामचो, रोजनामो–पु० [फा० रोजनामचः] १ प्रतिदिन के कार्य का विवरण लिखने की पुस्तक, चोपड़ो। २ रोज का आय-व्यय लिखने की चोपड़ी।

रोजमेळ–पु० १ रोकड़ बही। २ प्रतिदिन का लेखा–जोखा।

रोजाना–क्रि० वि० [फा० रोजानः] नित्य, प्रतिदिन, हमेशा।

रोजायत–पु० 'रोजा' रखने वाला मुसलमान। कोई मुसलमान।

रोजि–देखो 'रोजी'।

रोजिना–देखो 'रोजीना'।

रोजी–स्त्री० [फा०] १ आजीविका। २ जीविका का अवलंबन। ३ तनख्वाह, वृत्ति। ४ प्रारब्ध, भाग्य। ५ देखो 'रोज'।

—दार–पु० जीविका के लिये कार्य करने वाला व्यक्ति। दैनिक मजदूरी पर कार्य करने वाला व्यक्ति। नौकरीदार।

रोजीनदार–पु० रोजीदार।

रोजीना, रोजीनो–वि० नित्य का, रोज का।—क्रि० वि० नित्य, प्रतिदिन, सदैव।

रोजु–देखो 'रोजो'।

रोजेदार–देखो 'रोजायत'।

रोजो–पु० १ व्रत, उपवास। २ रमजान के महीने में मुसलमानों द्वारा किया जाने वाला उपवास। ३ देखो 'रोजो'।

रोझ, रोझड़ो, रोझो–स्त्री० (स्त्री० रोझड़ी) १ नील गाव (नर)। २ नील गाय जैसा घोड़ा विशेष।

रोट–पु० मोटी व बड़ी रोटी।

रोटाऊ–वि० १ अधिक रोटी खाने वाला। भोजन भट्ट। २ मुफ्त की खाने वाला।

रोटी–स्त्री० १ गेहूँ या जौ की चपाती। २ प्रतिदिन का भोजन, खाना। ३ भोजन का निमंत्रण। ४ आजीविका, वृत्ति। ५ संपत्ति, दौलत। ६ सिरोही की बनी एक प्रकार की तलवार।

रोटीराव, रोटेराव–वि० आतिथ्य सत्कार करने वाला। २ वैभवशाली, धनाढ्य।

रोटो, रोठ–पु० १ बड़ी व मोटी रोटी। २ गेहूँ के आटे को अंगारे पर सिकी आलू की तरह की बाटी। ३ सद्यप्रसूता गाय भैंस या बकरी का दूध। ४ रहट के बीच लगने का लोहे का उपकरण।—वि० टेढ़ा।

रोड–पु० १ बुवाई के बाद शीघ्र वर्षा होने से बनने वाली फसल की पोची स्थिति। २ इस स्थिति से अर्ध विकसित रहने वाली फसल। ३ छोटा घोड़ा।—वि० १ वर्ण संकर, दोगला। २ मूर्ख। ३ देखो 'रोड़'।

रोडणो (बो)–१ देखो 'रोडणो' (बो)। २ देखो 'रोठणो' (बो)।

रोडलो–देखो 'रोड'। (स्त्री० रोडली)।

रोडियो–देखो 'रोड'।

रोडो–वि० १ छोटे कद का, ठिगना, नाटा। २ देखो 'रोड़ो'।

रोढ–देखो 'रोड'।

रोढणो (बो)–क्रि० १ काटना। २ नष्ट करना, नाश करना।

रोढलो–१ देखो 'रोड'। २ देखो 'रोडो'। (स्त्री० रोढली)

रोढो–१ देखो 'रोडो'। २ देखो 'रोड'।

रोण–स्त्री० [सं० रवण] ध्वनि, आवाज। (मेवात)

रोणो–देखो 'रोवणो'।

रोणो (बो)–देखो 'रोवणो' (बो)।

रोतासळो–पु० मोती जड़ित छत्र।

रोदगो–वि० १ जबरदस्त, भयंकर। २ क्रोधपूर्ण, क्रोधयुक्त।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोद–देखो रौद्र'।—कार='रौद्रकार'।

रोदन–पु० [सं० रोदनम्] १ रोने की क्रिया या भाव, रुदन, क्रन्दन, विलाप। २ आंसू।

रोदपत (पति)–१ देखो 'रौद्रपत'। २ देखो 'रुद्रपत'।

रोदराव–देखो 'रौद्रराव'।

रोदसी–वि० [सं०] स्वर्ग और पृथ्वी का।

रोदाळ, रोद्र–देखो 'रौद्र'।

रोद्राणी, रौद्रांणी, रोद्रायणि, रोद्रांयणी, रोद्रायणि, रोद्रायणी–स्त्री० १ यवन या मुसलमानों की सेना। २ मुसलमान या यवन स्त्री। ३ असुर सेना। ४ देखो 'रुद्रांणी'।

रोध–स्त्री० [सं०] १ रोक, रुकावट, अवरोध। २ बाधा, विघ्न, अड़चन। ३ आवेश, जोश। ४ क्रोध, गुस्सा। ५ किनारा, तट। ६ बांध सेतु।

रोधक–वि० रुकावट पैदा करने वाला, रोकने वाला, बाधक।

रोधणो (बो)–क्रि० १ रुकावट पैदा करना, रोकना। २ कैद करना, बंदी बनाना।

रोधांण–पु० नाश, संहार।

रोप–पु० [सं०] १ बाण, तीर। २ छेद, बिवर। ३ प्याज, मिरच आदि के पौधों की रुपाई, फसल उगाने का एक ढंग। ४ इस तरह उगाये जाने वाले पौधे।

रोपणो (बो)–क्रि० १ स्थिर करना, जमाना। २ ठानना, निश्चित करना। ३ किसी में कुछ फंसा कर स्थिर करना। ४ जमीन में गाडना, फंसाकर खड़ा करना। ५ टिकाना, रोकना, ठहराना। ६ डटाना, अटल करना। ७ बीज बोना। ८ पौधों को पुनः उगाना। ९ सम्बन्ध करना। १० धारण करना, पहनना।

रोपाणो (बो), रोपावणो (बो)–क्रि० १ स्थिर कराना, जमवाना। २ ठनवाना, निश्चित कराना। ३ किसी में कुछ फंसवाना, स्थिर कराना। ४ जमीन में गड़वाना। फंसा कर खड़ा कराना। ५ टिकवाना, रुकवाना, ठहरवाना। ६ डटवाना, अटल कराना। ७ बीज बोवाना। ८ पौधों को रुपाई कराना, उगवाना। ९ संबंध कराना। १० धारण कराना, पहनाना।

रोब–पु० [फा०] १ आतंक, दाब। २ प्रताप, तेज। ३ धाक, डर। ४ प्रभाव।

रोबकार–पु० वह आदेश या पत्र जो शासक अपने अधीनस्थों के नाम प्रसारित करता है।

रोबणो (बो)–देखो 'रोवणो' (बो)।

रोबदार–वि० [फा०] १ आतंकित करने वाला। २ प्रतापी तेजस्वी। ३ डराने वाला। ४ प्रभाव रखने वाला।

रोबीलो–वि० (स्त्री० रोबीली) १ जिसका रोब हो। २ जिसको धाक हो। ३ जिसका चेहरा रोबदार हो।

रोबो, रोमो–पु० आपत्ति, कष्ट, तकलीफ संकट।

रोमच–देखो 'रोमांच'।

रोमंचणो (बो)–क्रि० रोमांचित होना, कंपकंपी होना, रोम खड़े होना।

रोम–पु० [सं० रोमन्] १ शरीर के महीन छोटे बाल, रोम, लोम। २ छेद, छिद्र। ३ रोम के छिद्र। ४ जल, पानी। ५ रूम देश। ६ रूम देश का घोड़ा। ७ घोड़ा, अश्व। ८ हरड़, हर्रे, हरीतकी। ९ एक द्वीप का नाम।

रोमकद, रोमकंदी–पु० एक राजस्थानी छंद विशेष।

रोमक–पु० १ सांभर झील का नमक, नमक। २ 'रोम' का निवासी। ३ ज्योतिष का एक सिद्धान्त।

रोमकूप–पु० रोम या लोम के छिद्र।

रोमकेसर, रोमगुच्छ–पु० चंवर, चामर।

रोमचरमा–पु० ऊट की चमड़ी का बर्तन।

रोमछर–पु० १ मूर्ति, प्रतिमा। २ शरीर की कांति, शोभा।

रोमणकाच–पु० एक प्रकार का आइना।

रोमत–पु० लालायित होने की क्रिया या भाव।

रोमपट–पु० [सं०] ऊन का वस्त्र, ऊनी वस्त्र।

रोमबद्ध–वि० १ ऊन का बुना या बना। २ ऊन के योग से बना। —पु० ऊन का वस्त्र। ऊनी वस्त्र।

रोमभूमि–स्त्री० चर्म, चमड़ी।

रोमराइ, रोमराजी, रोमलता–स्त्री० रोमों की पंक्ति, रोमावली।

रोमांच–पु० [सं०] हर्ष, भय आदि के कारण शरीर के रोम खड़े होने की अवस्था।

रोमांचित–वि० [सं०] भयभीत, हर्षित, जिसके रोम खड़े हों।

रोमांत–पु० [सं०] हथेली की पीठ के बाल।

रोमांतिक–स्त्री० बालकों का एक चर्मरोग।

रोमाळी, रोमावळ, रोमावळि, रोमावळी–स्त्री० [सं० रोमन्+आली] १ रोमों की पंक्ति, कतार। २ नाभि पर होने वाली रोमों की पंक्ति। ३ शरीर के बाल।–वि० सुन्दर, रूपवती।

रोमि–देखो 'रोम'।

रोयण, रोयणि (णी)–देखो 'रोहिणी'।

रोयणो (बो)–देखो 'रोवणो' (बो)।

रोर–पु० १ दुःख, कष्ट। २ कंगाली, निर्धनता। ३ काला रंग, श्याम वर्ण। [सं० रवण] ४ तरल हलुवा। ४ कोलाहल, शोरगुल। ६ कौतुहल। ७ देखो रोड़'।

रोरप्रचार–पु० दुःख, कष्ट।

रोरव–पु० १ कंगाली, निर्धनता, गरीबी। २ देखो 'रौरव'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोरहर–पु० राजा, नृप ।

रोरहरणाळ–वि० १ दुःखों को मेटने वाला । २ दातार, उदार ।

रोरांकुर–पु० कष्ट, दुःख ।

रोरि, रोरी–देखो 'रोर', 'रोळी' ।

रोलंब–पु० [सं०] भ्रमर, भौरा ।

रोळ, रोल–स्त्री० १ ध्वनि, आवाज । २ स्त्रियों के पैरों का एक घुंघरूदार आभूषण । ३ दल, समूह । ४ उबटन, लेप । ५ युद्ध । ६ फसल को हानि पहुचाने वाला उद्दण्ड पशु । ७ हल्ला, शोरगुल । ८ भय, आतंक, डर । ९ उपद्रव, उत्पात । १० अव्यवस्था, गड़बड़ी ।–वि० १ आवारा फिरने वाला । २ बदचलन । ३ उत्पाती, उद्दण्ड । ४ देखो 'रौळ' ।

रोळगिबोळ–स्त्री० बने कार्य को बिगाड़ने की क्रिया या भाव ।

रोलड़–पु० कृषि भूमि को कुछ समय पड़ा रखने की क्रिया । इजराअ ।

रोळण, रोळणी–वि० विध्वंस, विनाश करने वाला, संहारक ।

रोळणी (बो), रोलणी (बो)–क्रि० १ बजाना, ध्वनियुक्त करना । २ प्रहार करना । ३ गवां देना । ४ मिटा देना । ५ मारना । ६ फेंकना । ७ गिराना, डालना । ८ बिखेरना । ९ आच्छादित करना, ढकना । १० भयभीत होना, कांपना । ११ लुढ़कना, ढुलकना । १२ पतन होना, गिरना । १३ शस्त्र, घुमाना । १४ इधर-उधर करना या गिराना ।

रोळपट, रोळपट, रोळपट्ट–स्त्री० १ अव्यवस्था, गड़बड़ी । २ गफलत, असावधानी । ३ जब उचित-अनुचित का विचार न हो । ४ खेल, तमाशा, मजाक ।

रोळरिगटोळ, रोळरिगटोळी–स्त्री० १ मखोल, हंसी । २ न्यून स्तर की हरकत ।

रोळवणी (बो)–देखो 'रोळणी' (बो) ।

रोळा, रोला–पु० स्त्रियों का एक आभूषण ।

रोळागार (गारी)–वि० (स्त्री० रोळागारी) झगड़ालू, कलह प्रिय ।

रोळाटो–पु० १ हुल्लड़, शोरगुल । २ उपद्रव ।

रोळारोळ, रोळारोळि–स्त्री० खलबली, भगदड़ ।

रोळि, रोळी, रोलि, रोली–स्त्री० १ गेहूँ की फसल का एक रोग । २ विघ्न, बाधा । ३ भ्रम, संभ्रम । ४ हल्दी और चूने के योग से बना पदार्थ जो मांगलिक अवसरों में काम आता है ।

रोळी (लो)–पु० १ एक छन्द विशेष । २ देखो 'रौळी' ।

रोवण–पु० रोना क्रिया, रोने वाला ।

रोवणकाळो, रोवणकियो, रोवणको–वि० (स्त्री० रोवणकाळी, रोवणकी) १ रुआंसा, रोने की स्थिति में, रोने वाला । २ शीघ्र रोने वाला ।

रोवणघन–वि० डरपोक, कायर, बिना बात रोने वाला ।

रोवणो–वि० रोने वाला, रुंआंसा ।–पु० १ रुदन, रोना । २ दुःख, कष्ट ।

रोवणो (बो)–क्रि० [सं० रोदनम्] १ विलाप करना, रोना, रुदन करना । २ कष्ट के कारण करुण क्रंदन करना । ३ बुरा-भला कहते हुए बकना । ४ रुंआंसा होना ।

रोवा-कूकी–पु० हाय-त्राय, चीख-चिल्लाहट ।

रोवाड़णो (बो), रोवाणो (बो)–क्रि० १ विलाप कराना, रुलाना, रुदन कराना । २ कष्ट देकर करुण क्रन्दन कराना । ३ बकवाना । ४ रुंआंसा करना ।

रोस, रोसंग–पु० १ वैभव, ऐश्वर्य । २ सुख, आराम । ३ रोष ।

रोसंगी–देखो 'रोखंगो' ।

रोस–पु० [सं० रोष] १ कोप, क्रोध, गुस्सा । २ आवेश, जोश । ३ डाह, ईर्ष्या । ४ शत्रुता, वैर, दुश्मनी । ५ जोश, आवेश । ६ कष्ट, पीड़ा । ७ खुशी, हर्ष । ८ मकान में लगने का मोटा व लंबा-चौड़ा पत्थर विशेष । ९ प्रकाश, रोशनी ।

रोसकसाइयो–वि० क्रोधपूर्ण ।

रोसणी–देखो 'रिसाणी' ।

रोसणी (बो)–क्रि० १ कष्ट देना, परेशान करना । दुःखी करना । २ बांधना, कसना । ३ कोप करना, क्रोध करना । ४ मारना, काटना ।

रोसगर–वि० [सं० रुष-गर] १ कोप करने वाला, क्रोधी । २ इन्द्र ।

रोसन–वि० [फा० रोशन] १ प्रदीप्त, प्रकाशित । २ पहल-पहल व हंसी-खुशी वाला । ३ यशस्वी, कीर्तिवान । ४ प्रसिद्ध, विख्यात । ५ प्रकट, जाहिर, विदित ।

रोसनचौकी–स्त्री० [फा० रोशन-चौकी] शहनाई या नफीरी नामक वाद्य ।

रोसनदांन–पु० [फा० रोशन-दान] कक्ष, कमरे या मकान में हवा व प्रकाश के लिये, ऊंची बनी जालीबंध छोटी खिड़की, बारी, वातायन । (वेंटीलेटर)

रोसनी–स्त्री० [फा० रोशनी] १ उजाला, प्रकाश । २ मांगलिक या खुशी के अवसर पर भवनों पर जलाई जाने वाली दीप मालाऐं, बत्तियां । ३ चिराग, दीपक । ४ एक प्रकार का शहतूत । ५ देखो 'रोसनी' ।

रोसांग–देखो 'रोस' ।

रोसाग–वि० [स० रोष+अग्नि] १ जोशीला, ओजस्वी । २ क्रोधी ।–स्त्री० क्रोधाग्नि ।

रोसाजळ–वि० क्रोध से जला भुना ।

रोसानळ–स्त्री० [सं० रोष+अनल] क्रोधाग्नि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोसारी–वि० [सं० रोष+अरि] १ शत्रुओं पर क्रोध करने वाला। २ जोशीला, क्रोधयुक्त।

रोसारुण–वि० क्रोध से लाल

रोसाळ, रोसाळी–वि० (स्त्री० रोसाळी) १ क्रोध करने वाला, क्रोधी। २ तेजस्वी, पराक्रमी।

रोसावणो (बो)–क्रि० १ मरवाना, कटवाना। २ बंधवाना, कसवाना। ३ क्रोध करवाना।

रोसीलो, रोसेल, रोसैल–वि० (स्त्री० रोसीली, रोसेली) १ जोश वाला, जोशीला। २ निर्भीक, निडर। ३ क्रोधी, क्रुद्ध। ४ तेजस्वी, ओजस्वी।

रोसो–देखो 'रोस'।

रोह–पु० [स० रोध] १ रास्ता, मार्ग। २ बाधा रोक, रुकावट।

रोहज–पु० नेत्र, नयन।

रोहड़–देखो 'रोहिड़ो'।

रोहण–पु० [सं०] १ वीर्य, शुक्र। २ देखो 'रोहणगिरी'। ३ देखो 'रोहिणी'।

रोहणगिर, रोहणगिरि, रोहणचल–पु० [सं० रोहण-गिरि] रत्नों की खान वाला एक पर्वत विशेष।

रोहणदे–स्त्री० [सं० रोहणदेवी] चन्द्रमा की पत्नी, रोहिणी।

रोहणद्रुम–पु० [सं० रोहण-द्रुमः] चंदन।

रोहणधव–पु० [सं० रोहिणधव] चन्द्रमा, चांद।

रोहणप–पु० [सं०] चन्दन।

रोहणाचळ–देखो 'रोहणगिरि'।

रोहणि–देखो 'रोहिणी'।

रोहणियाळ–वि० शत्रुदल को रोकने वाला।

रोहणी–देखो 'रोहिणी'।

रोहणीजोग–देखो 'रोहिणीयोग'।

रोहणीवर–देखो 'रोहिणीवर'।

रोहणीसिद्धयोग–देखो 'रोहिणीयोग'।

रोहणेय–देखो 'रोहिणेय'।

रोहणो (बो)–क्रि० १ रोकना, अवरुद्ध करना। २ मारना, संहार करना। ३ घेरना, आवेष्टित करना।

रोहतास–देखो 'रोहितास'।

रोहर–देखो 'रुधिर'।

रोहराळ–देखो 'रुधिर'।

रोहलो–पु० रंग विशेष का घोड़ा।

रोहवास–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

रोहि–पु० [सं०] १ मृग विशेष। २ वृक्ष। ३ बीज। ४ रोही।

रोहिड़ो–पु० एक वृक्ष विशेष।

रोहिण–पु० १ एक वृक्ष विशेष। २ रोहिणी।

रोहिणगिर–देखो 'रोहणगिरि'।

रोहिणी–स्त्री० [सं०] १ गौ, गाय। २ बिजली, विद्युत। ३ त्वचा की छठी परत। ४ बलदेव की माता। ५ चन्द्रमा की एक पत्नी। ६ श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ७ हिरण्यकशिपु की स्त्री का नाम। ८ जैनियों की एक देवी। ९ रजस्वला होने की अवस्था वाली एक कन्या। १० धैवत स्वर की तीसरी श्रुति। ११ पांच तारों वाला, रथ की आकृति का एक नक्षत्र। १२ एक प्रकार का संक्रामक रोग।

रोहिणी-आठम–स्त्री० [स० रोहिणी-अष्टमी] भादव मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि।

रोहिणीतप–पु० एक प्रकार का व्रत विशेष।

रोहिणीद्रुम–देखो 'रोहणद्रुम'।

रोहिणीपत (पति, पती)–पु० [सं० रोहिणी पति] १ चंद्रमा। २ बलराम के पिता। ३ सांड।

रोहिणीयोग–पु० [सं०] आषाढ़ के कृष्ण पक्ष में होने वाला एक चन्द्र योग।

रोहिणीरमण, रोहिणीवर, रोहिणीवलभ (वल्लभ)–पु० [स०] १ चन्द्रमा। २ वासुदेव। ३ सांड।

रोहिणेय–पु० [सं० रोहिणेय] रोहिणी के पुत्र बलराम।

रोहित–वि० [सं० रोहितम्, रोहितः] लाल रंग का।–पु० १ एक मृग विशेष। २ एक प्रकार का वृक्ष विशेष। ३ मछली विशेष। ४ लाल रंग। ५ लोमड़ी। ६ रोहितास।

रोहितवाह (वाह)–पु० [सं०] अग्नि, आग।

रोहितास–पु० [सं० रोहिताश्व] १ अग्नि, आग। २ रोहिणी का एक पुत्र। ३ सत्यवादी हरिश्चन्द्र का पुत्र।

रोहिलो–पु० एक प्रकार का वाद्य।

रोहिस–पु० [सं० रोहिष] १ एक प्रकार का मृग। २ एक मछली विशेष। ३ एक प्रकार का घास।

रोही–वि० [सं० रोहिन्] (स्त्री० रोहिणी) ऊपर की ओर जाने वाला, उन्नतमुखी।–पु० १ एक प्रकार का मृग। २ रोहिड़ा नामक वृक्ष। ३ रोहू नामक मछली। ४ रीढ़ हड्डी। ५ वन, जंगल।

रोही–पु० १ घेरा, वृत्त। २ आक्रमण। ३ क्रोध, गुस्सा। ४ वैमनस्य। ५ युद्ध।–वि० रोकने वाला, थामने वाला।

रौंस–देखो 'रूंझ'।

रौंसट–पु० १ युद्ध, लड़ाई। २ झंझट, बखेड़ा।

रौंद, रौंदग–देखो 'रौद्र'।

रौंदणो (बो)–देखो 'रूंदणो' (बो)।

रौंदाळ–देखो 'रौद्र'।

रौंधणो (बो)–देखो 'रूंदणो' (बो)।

रौंस–पु० १ रहस्य, गुप्त बात। २ केलि, क्रीड़ा। ३ समानता, बराबरी। ४ देखो 'रौंस'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रो–पु० षष्ठी विभक्ति का चिह्न ।

रोगन–देखो 'रोगन' ।

रोड़–पु० १ युद्ध, लड़ाई । २ देखो 'रोड़' ।

रोड़ो–पु० १ भैंस । २ मादा ऊंट । ३ रोड़ा बाधा ।

रोजो–पु० [अ० रौज:] १ उद्यान, बगीचा । २ हरा भरा मैदान । ३ पीर, बादशाह आदि की कब्र ।

रोणो–पु० [सं० आरण्य] वन, जंगल ।

रोद–देखो 'रौद्र' ।

रोबघड़, रोबघड़ा–स्त्री० मुसलमान सेना ।

रोबाळ–देखो 'रौद्र' ।

रौद्र–वि० [सं०] १ रुद्र संबंधी, रुद्र का । २ अत्यन्त उग्र, प्रचंड । भीषण ।–पु० [सं०] १ क्रोध, गुस्सा, रोष । २ भयंकरता, भीषणता । ३ यमराज । ४ साहित्य में एक रस । ५ गर्मी, तेजी । ६ असुर, राक्षस । ७ म्लेच्छ जाति का मनुष्य । ८ मुसलमान । ९ बादशाह ।

रौद्रकार–स्त्री० [सं०] भयानक ध्वनि या आवाज।

रौद्रकेतु–पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार एक केतु ।

रौद्रपत (पति, पती) रौद्रराव–पु० बादशाह ।

रौद्रव–देखो 'रौद्र' ।

रौद्रसंप्रदाय–पु० रुद्र को मनाने वाला संप्रदाय ।

रौद्राण–देखो 'रौद्र' ।

रौद्राइण, रौद्रायण, रौद्राळ–पु० १ बादशाह । २ देखो 'रौद्र' ।

रौद्राकार–देखो 'रौद्रकार' ।

रौद्री–स्त्री० १ शिव की पत्नी, पार्वती । २ संगीत में एक श्रुति ।

रौनक–स्त्री० [अ० रौनक] १ सुंदर वर्ण, आकृति या रूप । २ चमक-दमक, ठाट-बाट । ३ चहल-पहल । ४ हंसी-खुशी का वातावरण ।

रौर–स्त्री० १ मादा ऊंट, सांड । २ देखो 'रोर' ।

रौरव–पु० [सं० रौरव] इक्कीस प्रकार के नरकों में से एक । —वि० घोर, भयंकर ।

रौळ–स्त्री० १ हंसी, मजाक, दिल्लगी । २ देखो 'रोळ', 'रोळी' ।

रौळणो (बो), रौळवणो (बो)–क्रि० १ हजम करना, पचाना । २ घोड़े की पीठ को खुरहरे से साफ करना । ३ मिश्रण करना । ४ अनाज के ढेर पर हाथ फेर कर अच्छा-अच्छा अनाज अलग करना । ५ आलोड़ित करना, सानना । ६ देखो 'रोळणो' (बो) ।

रौळि, रौळो, रौळी–पु० १ युद्ध, झगड़ा, जंग । २ उपद्रव, विद्रोह । ३ उत्पात, बखेड़ा । ४ शोर, हल्ला । ५ एक छंद विशेष ।

रौस–स्त्री० १ तरह, भांति, प्रकार । २ देखो 'रोस' ।

रौसन–देखो 'रोसन' ।

रौसनदांन–देखो 'रोसनदांन' ।

रौसनाई–देखो 'रुसनाई' ।

रौसनी–स्त्री० १ सफेद रंग की मिठाई विशेष । २ देखो 'रोसनी' ।

रौसाळ–देखो 'रोसाळ' ।

(ल)

ल–नागरी लिपि का अट्ठाईसवां व्यंजन वर्ण ।

लं–पु० १ लोक । २ वचन । ३ सुख ।

लंक–स्त्री० १ कटि, कमर । २ राशि, ढेर, समूह । ३ कलह लड़ाई । ४ लंका ।–वि० १ पतली, कृश । २ अत्यधिक, बहुत ।

लंकक–वि० लंका का, लंका संबंधी ।

लंक-टंकटा–स्त्री० १ सुरभा की कन्या का नाम । २ एक राक्षसी ।

लंकणी–स्त्री० [सं० लंकिनी] लंका की पहरेदार एक राक्षसी ।

लंकदाह–पु० १ हनुमान । २ लंकादहन ।

लंकद्वीप–पु० लंकाद्वीप ।

लंकनाथ, लंकनायक–देखो 'लंकानाथ' ।

लंकप, लंकपत (पति, पती)–पु० [स०लंकप] १ रावण । २ विभीषण।

लंकपुरी–स्त्री० लंका नगरी ।

लंकवरीस–देखो 'लंकावरीस' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लंका–स्त्री० १ भारत के दक्षिण में स्थित एक बड़ा द्वीप। २ इस द्वीप पर स्थित देश, राष्ट्र। ३ दक्षिण दिशा। ४ वेश्या।

लंकाऊ–वि० १ लंका की ओर का।–क्रि० वि० २ दक्षिण की ओर।

लंकाद–देखो 'लंकाध'।

लंकादनी–पु० लंका का दान करने वाले श्रीराम।

लंकादहण (न) लंकादाह, (दाही)–पु० १ लंका का दहन। २ ईश्वर, परमात्मा। ३ श्रीराम। ४ हनुमान।

लंकाद्वीप–देखो 'लंका'।

लंकाधु, लंकाधू, लंकाध, लंकाधु (धू) –पु०[सं० लंका-ध्रुव] १ दक्षिण दिशा। लंका की दिशा। २ दक्षिणी ध्रुव। –वि० दक्षिण दिशा संबंधी।–क्रि०वि० दक्षिण की ओर।

लंकानगरी–स्त्री० रावण की राजधानी का नगर।

लंकानाथ, लंकानायक–पु० [सं०] १ लंका का अधिपति। २ रावण। ३ विभीषण।

लंकानाह, लंकापत (पति, पती)–देखो 'लंकानाथ'।

लंकापुरी–स्त्री० लंका नगरी।

लंकारि (री)–पु० [सं०] श्रीराम।

लंकाळ–पु० [सं० लंका-आलुच] १ श्रीरामचन्द्र। २ रावण। ३ विभीषण। ४ सिंह, शेर। ५ राजा। ६ अगस्त्य तारा। ७ ललाट, भाल। ८ राक्षस। –वि० १ वीर, योद्धा। २ भयंकर, भयानक। ३ जबरदस्त, जोरदार। ४ लंका का, लंका संबंधी। ५ दक्षिण का, दक्षिण संबंधी।

लंकालियण–पु० १ परमेश्वर। २ श्रीरामचन्द्र।

लंकाळी, लंकाली–देखो 'लंकाळ'।

लंकाधरीस–पु० लंका का दान करने वाले, श्रीराम।

लंकियो–पु० अगस्त्य तारा।

लंकी–वि० सिंह की कमर के समान पतली कमर वाली।–पु० १ कबूतर विशेष। २ कबूतरों की एक जाति। ३ सिंह। ४ योद्धा, वीर। ५ ताम्बूल की एक जाति। ६ देखो 'लंक'।

लंकीसी–वि० सुन्दर व पतली कमर वाली।

लंकेंद्र–पु० [सं०] रावण, विभीषण।

लंकेस, लंकेसर (रि,री), लंकेसुर (रि,री), लंकेस्वर (रि री) –पु० [सं० लंका+ईश, ईश्वर] १ रावण। २ विभीषण। ३ अगस्त्य नामक तारा।

लंक, लंक्कि–देखो 'लंक'/ लंका'।

लंख–स्त्री० नटों की एक जाति।

लंग–देखो 'लिंग'/लांग'।

लंगड़ाणो (णी)–क्रि० पैरों से लड़खड़ाना, लड़खड़ा कर चलना।

लंगड़ी–वि० शक्तिशाली, बलवान।–पु० १ हनुमान। २ एक प्रकार का खेल। ३ घोड़े की एक चाल। ४ एक प्रकार का छन्द। ५ देखो 'लंगरी'।

लंगड़ो, लंगडो–पु० आमों की एक जाति।–वि० [फा० लंग] (स्त्री० लंगड़ी) १ जिसके पांव विकृत हों, जिसके पांव पूरे न हों, पंगु, पांगला। २ खड़ा रहने में असमर्थ, आधार हीन।

लंगर–वि० १ अत्यधिक, बहुत। २ दुष्ट, निर्लज्ज, ढीठ। ३ भारी, वजनदार। ४ नटखट, शरारती। –स्त्री० १ शृंखला, सांकल, जंजीर। २ हाथी को बांधने की जंजीर। ३ बंधन। ४ पैरों का आभूषण विशेष। ५ पानी में जहाज को ठहराने के लिये लटकाये जाने वाले वजनदार उपकरण ६ कैदियों की बेड़ी। ७ जहाज पर काम आने का मोटा रस्सा। ८ सिलाई के कच्चे टांके। ९ कतार, पंक्ति। १० समूह, झुंड। ११ फौज, सेना। १२ वीर, योद्धा। १३ भोजन। १४ भिखारियों को बांटने का भोजन। १५ भोजनालय, भोजनशाला। १६ वीरघंट के बीच लटकने वाला गुटका।—खानो–पु० गरीबों को रोटी बांटने का स्थान। —गाह–पु० समुद्र में जहाज ठहराने का स्थान।

लंगरलार–क्रि० वि० पंक्तिबद्ध, पंक्तियुक्त। क्रमशः, लगातार।

लंगराई–स्त्री० शैतानी, दुष्टता, ढीठाई।

लंगरी, लंगरीराव–पु० १ योद्धा, वीर। २ सेनापति।

लंगस–देखो 'लगस'।

लंगा–स्त्री० मुसलमानों में एक गायक जाति।

लंगार–स्त्री० पंक्ति, कतार।

लंगी–स्त्री० [फा० लंग] कुश्ती का एक दांव।

लंगूर, लंगूरियो–पु० [सं० लांगूलिन्] (स्त्री० लंगूरी) १ काले मुंह व लंबी पूंछ का बंदर। २ बंदर की लंबी पूंछ। ३ उद्दण्ड बच्चों के लिये एक उपाधि सूचक शब्द। ४ देखो 'लांगूळो'।

लंगूरी–स्त्री० [सं० लंघन] १ घोड़े की एक चाल विशेष। २ चोरे हुए पशु को ढूंढ कर लाने पर दिया जाने वाला पुरस्कार ३ मादा लंगूर।–वि० लंगूर संबंधी।

लंगूळ–देखो 'लांगुळ'।

लंगोचा–पु० एक प्रकार का मांस, कुलमा, गुलाम।

लंगोट–स्त्री० कमर व उपस्थ पर बांधने का पट्टीदार अधोवस्त्र। कोपीन।—बंद, बध–वि० सदैव लंगोट बांधे रहने वाला। ब्रह्मचारी।

लंगोटियोयार–पु० बचपन का मित्र, बालगोटिया।

लंगोटी–स्त्री० छोटी लंगोट, कोपीन।

लंगोटो–देखो 'लंगोट'।

लंगोर–पु० योद्धा, बहादुर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लंगोलार–क्रि० वि० १ क्रमशः। २ पंक्ति बद्ध।

लंगो–पु० 'लंगा' जाति का पुरुष।

लंघक–वि० [सं० लंघ] १ लांघने वाला, उल्लंघन करने वाला। २ नियम तोड़ने वाला।

लंघण–देखो 'लांघण'।

लंघणीक–देखो 'लांघणीक'।

लंघणो (बो)–देखो 'लांघणो' (बो)।

लंघाणो (बो), लंघावणो (बो)–क्रि० लांघने के लिये प्रेरित करना, लंघन कराना।

लंघो–वि० [सं० लंघन] भूखा, क्षुधित।

लंचणो (बो)–देखो 'ललचणो' (बो)।

लंच्छण, लंच्छन, लंछन–१ देखो 'लक्षण', 'लांछन'। २ देखो 'लक्ष्मण'।

लंछणि–देखो 'लक्षण'।

लंछो–पु० स्वभाव।

लंजा लज्जा–स्त्री० १ लक्ष्मी। २ धन, दौलत। ३ सीता। ४ वेश्या। ५ व्यभिचारिणी या कुटिनी स्त्री।

लंजो, लंझो–वि० (स्त्री० लंजा, लंझी) १ सुंदर, सुकुमार। २ शौकीन। अलबेला। ५ रसिक, रसिया। ४ लंपट। –पु० हंस।

लंठ–वि० १ दुष्ट, कृतघ्न। २ मूर्ख, उज्जड़।

लंठई (ई)–स्त्री० १ दुष्टता, कृतघ्नता। २ मूर्खता, उज्जड़पन।

लंड–पु० पुरुषेन्द्रिय, शिश्न।

लंडो–स्त्री० कुलटा व दुश्चरित्रा स्त्री।

लंडूरो–वि० (स्त्री० लंडूरी) १ बिना पूंछ का, जिसकी पूंछ कटी हुई हो। २ अंग भंग।

लंतग–पु० देव लोक (जैन)।

लंप–पु० १ मिट्टी का तेल। २ इस तेल का दीपक।

लंपक–पु० लामघम देश।

लंपट–वि० [सं०] १ व्यभिचारी, विषयी, कामी। २ ऐय्याश। ३ लालची। ४ अनुरक्त, लीन। ५ दुष्ट, नीच। ६ उप पति, यार।

लंपटता–स्त्री० १ लंपट होने की अवस्था या भाव। २ कुकर्म, व्यभिचार। ३ दुष्टता, नीचता।

लंपटी–देखो 'लंपट'।

लंपाक–वि० [सं०] लंपट, दुराचारी।–पु० भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित मुरड नामक एक देश।

लंपी–स्त्री० वस्त्रों की किनार पर लगने की जरी-गोटे की पट्टी।

लंफणो (बो)–क्रि० [सं० लंफ] कूदना, छलांग लगाना।

लंब–पु० [सं०] १ प्रलंबासुर, राक्षस। २ खर नामक दैत्य का भाई। ३ एक मुनि। ४ एक राग। ५ ग्रहों की गति विशेष। ६ सीधी व खड़ी गिरने वाली रेखा। ७ दूरी, फासला।

लंबउ–देखो 'लांबो'।

लंब-कंचुक–स्त्री० [सं०] विधवा स्त्रियों की अंगिया विशेष।

लंबक–पु० १ फलित ज्योतिष का एक योग। २ देखो 'लंब','लंबक'।

लंबकण्ण, लंबकरण–वि० [सं० लंब-कर्ण] १ लंबे कानों वाला। २ मूर्ख।–पु० १ गधा। २ बिलाव। ३ बकरा। ४ खर-गोश। ५ हाथी। ६ राक्षस।

लंबकराड़ियो, लंबग्रीव–वि० [सं० लंब+रा०कराड़ी] लंबी गर्दन वाला।–पु० ऊंट।

लंबड़ाणो (बो)–क्रि० खेत में चराने के लिये भेड़ को लंबी रस्सी से बांध देना।

लंबछड–देखो 'लांमछड़'।

लंबजीभो–वि० [सं०लंब+जिह्वा] लंबी जबान वाला, वाचाल।

लंबत–देखो 'लंबित'।

लंबतड़ंग, लंबधड़ंग–वि० अत्यधिक लंबा, ताड़ के समान।

लंबपयोधरा–स्त्री० एक स्कंद मातृका।

लंबमाण–वि० [सं० लंबमान] दूर तक फैलाया हुआ।

लंबराणो (बो)–देखो 'लंबड़ाणो' (बो)।

लंबहत (हत्थ), लंबहात (थ)–वि० आजानुबाहु।

लंबाई–स्त्री० सीधी या खड़ी स्थिति का माप, दूरी; आयाम, वस्तु या क्षेत्र के मुख्य पक्ष का माप।

लंबाणो (बो)–क्रि० १ लंबा करना, बढ़ाना। २ द्रुत करना।

लंबायत–वि०[सं०] १ लंबायमान। २ लंबा।

लंबिका–स्त्री० [सं०] गले के अन्दर का टेंटुआ, कौआ।

लंबित–वि० [सं०] १ लंबा किया हुआ। २ निश्चित किया हुआ। ३ स्थगित किया गया। ४ लटका हुआ। ५ झूलता हुआ। ६ लंब के रूप में आया हुआ। ७ आधारित, आश्रित।

लंबो–देखो 'लांबो'।

लंबोड़ो–देखो 'लांबो'।

लंबोतड़ंग, लंबोतड़ंग–वि० ताड़ के समान लंबा।

लंबोदर, लंबोदरो, लंबोधर–पु० [सं० लंब+उदर] १ जिसका पेट बड़ा हो। २ भोजनभट्ट। ३ गणेश, गजानन।

लंबो–देखो 'लांबो'।

लंबोस्ट–पु० [सं० लंबोष्ठ] १ ऊंट। २ एक क्षेत्रपाल विशेष।

लंभ–पु० [सं०लंभस्] १ धन, दौलत। २ दान।

लंहगो–देखो 'लहंगो'।

ल–पु० [सं०] १ इंद्र। २ चिह्न। ३ पैर। ४ छंदों में लघु मात्रा।–स्त्री० ५ पृथ्वी।

लइ (ई)–स्त्री० १ लक्ष्मी। २ एक पौधा विशेष। ३ देखो 'लेई'।

लउडो–देखो 'लकड़ो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लउस–पु० एक देश विशेष ।

लक–पु० १ पसलियों व कटि के मध्य का भाग । २ कटि ।

लकड़–पु० लकड़ा, लकड़ी ।

लकड़ी–स्त्री० १ किसी पेड़ या झाड़ी के तने या शाखा का सूखा या गीला भाग, काष्ठ खंड । २ ईंधन का काष्ठ । ३ लाठी, डंडा, बेंत ।—कार–पु० सुथार, बढ़ई ।

लकड़ो–पु० १ काष्ठ का लट्ठा, लक्कड़ । २ लकड़ी ।

लकलक–पु० १ कुत्ता, सर्प आदि प्राणियों की जीभ हिलाने की क्रिया । २ व्यर्थ की बक-झक ।

लकसकणो (बो), लकसवकणो (बो)–क्रि० तलवार आदि शस्त्र को घुमाना, फिराना ।

लकवो–पु० [अ० लकवा] एक प्रकार का पक्षाघात रोग, अर्दित ।

लकार–पु० [स०] १ संस्कृत व्याकरण का ल । २ 'ल' वर्ण ।

लकारी–पु० सैय्यद मुसलमानों की एक शाखा ।

लकीर–स्त्री० [सं० रेखा] १ रेखा, रेखा चिह्न, लाइन । धारी । २ पंक्ति, कतार । ३ प्रथा, परम्परा, रूढ़ि ।

लकोरियो (यो)–पु० सिंह की जाति का एक हिंसक जानवर ।

लकुट–पु० लकड़ी ।

लकूंदर–पु० १ बंदर । २ बंदूक को दागने की क्रिया करने वाला पुर्जा, भाग । ३ बदमाश, लफंगा ।

लकोणो (बो), लकोवणो (बो)–देखो 'लुकाणो' (बो) ।

लक्क–स्त्री० ललकार, हाक ।

लक्कड़–वि० १ बैठे-बैठे घर की खाने वाला, निकम्मा, निठल्ला । २ देखो 'लकड़ो', 'लकड़ी' ।

लक्कड़ी–देखो 'लकड़ी' ।

लक्ख–देखो 'लक्ष' ।

लक्खण–पु० १ लक्षण । २ लक्ष्मण ।

लक्खणिण–वि० लक्षणों का ज्ञाता ।

लक्खणो (बो)–देखो 'लखणो' (बो) ।

लक्खारो–देखो 'लखारो' ।

लक्खि लक्खी–१ देखो 'लक्ष' । २ देखो 'लखो' । ३ देखो 'लखपति' (मेवाति) ।

लक्खीवाळियो, लक्खीविणजारो–पु० [सं० लक्ष-वाणिज्यकर] १ लाख बैलों पर सामान लादकर व्यापार करने वाला व्यापारी । २ लोक कथाओं में वर्णित ऐसा ही कोई चरित्र नायक ।

लक्ष–वि० [सं०] शत-सहस्र, लाख ।–पु० १ लाख की संख्या । २ देखो 'लक्ष्य' ।

लक्षक–पु० [स०] १ संबंध या प्रयोजन से अर्थ सूचित करने वाला शब्द ।–वि० १ दिखाने वाला, दर्शक । २ सचेत करने वाला, सूचक ।

लक्षण–पु० [सं०] १ किसी जीव या वस्तु का गुण या विशेषता । २ कोई अद्वितीय गुण । ३ रोगादि को लक्षित करने वाला चिह्न । ४ सामुद्रिक चिह्न । ५ चाल-चलन, कर्म, चरित्र । ६ स्वभाव, आदत । ७ मानव शरीर संबंधी शुभ चिह्न । ८ बुद्धि, अक्ल । ९ करामात, चमत्कार । १० शब्द या पद की परिभाषा या व्याख्या विशेष । ११ बत्तीस की संख्या । १२ देखो 'लक्ष्मण' ।—वंत, वत, वंतो–वि० शुभ गुणों वाला, बुद्धिमान, चतुर ।—हीन–वि० गुणरहित, मूढ़,मूर्ख ।

लक्षणा–स्त्री० एक प्रकार की शब्द शक्ति ।

लक्षणो–वि० [सं० लक्षण] १ लक्षणों से युक्त, लक्षणों वाला । २ समझदार ।

लक्षवरीस–वि० लाख रुपयों का पुरस्कार देने वाला ।

लक्षिता–स्त्री० परकीया नायिका विशेष ।

लक्षेसरी (स्वरी)–पु० [सं० लक्ष+ईश्वरी] लखपति, धनवान ।

लक्ष्मण–पु० [स०] १ अयोध्या के राजा दशरथ व सुमित्रा का पुत्र । २ दुर्योधन का एक पुत्र । ३ अंगिरसकुलोत्पन्न एक मन्त्रकार । ४ करुणादेवी का एक पुत्र । ५ सारस । ६ नाग । –वि० भाग्यवान ।

लक्ष्मणा–स्त्री० [सं०] १ श्रीकृष्ण की एक पटरानी । २ एक अप्सरा । ३ राजा दुष्यन्त की प्रथम पत्नी । ४ पुत्रदा एक वनस्पती । ५ दुर्योधन की एक पुत्री ।

लक्ष्मी–स्त्री० [सं०] १ भगवान विष्णु की पत्नी । २ धन की अधिष्ठात्री देवी, श्री । ३ सद्गृहिणी, वीर पत्नी । ४ विजय श्री । ५ सौभाग्य । ६ राज्य शक्ति । ७ धन सम्पत्ति, वैभव । ८ शोभा । ९ सीता का एक नाम । १० दुर्गा का एक नाम । ११ रुक्मिणी का एक नाम । १२ हल्दी । १३ समी वृक्ष । १४ राख, भस्मी । १५ मिट्टी, धूल । १६ सफेद तुलसी । १७ ऋद्धि व वृद्धि नामक ओषधियां । १८ आर्या का एक भेद । १९एक वर्ण वृत्त । २०मोती । —कंत, कांत–पु० विष्णु भगवान ।—कारी–वि०धन-सम्पत्ति, सौभाग्य देने वाला ।—नाथ–पु० विष्णु, नारायण । धनवान, धनाढ्य । एक छंद ।—नाथ–पु० विष्णु भगवान ।—नारायण–पु० लक्ष्मी सहित विष्णु । काले शालिग्राम ।—निवास–पु० विष्णु, नारायण ।—पति–पु० विष्णु, श्रीकृष्ण ।—पुत्र–पु० कामदेव, मनमथ । अमीर, धनवान । अश्व ।—भरतार–पु० विष्णु ।—रमण–पु० विष्णु ।—वंत, वत्–पु० विष्णु, नारायण । अमीर, धनी । —वर–पु० विष्णु, श्रीकृष्ण, परमेश्वर, ईश्वर ।—वान–पु० विष्णु श्रीकृष्ण, धनवान, सुंदर, मनोहर ।—वल्लभ–पु० विष्णु ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्ष्मीटोडी–स्त्री० एक रागिनी ।

लक्ष्मीताळ (ताल)–स्त्री० १ अठारह मात्रा की एक ताल । २ श्रीताल वृक्ष ।

लक्ष्मीनिधि–पु० राजा जनक का एक पुत्र ।

लक्ष्मीनिवास–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

लक्ष्मीनृसिंह–पु० दो चक्र व वनमाला वाली विष्णु की मूर्ति ।

लक्ष्मीपति–पु० [सं०] १ नारायण, श्रीकृष्ण । २ राजा । ३ सुपारी का पेड़ । ४ लवंग का वृक्ष । ५ धनाढ्य ।

लक्ष्मीवंत (वत)–पु० [सं० लक्ष्मी-वत] १ विष्णु, नारायण । २ धनी व्यक्ति । ३ पीपल का वृक्ष । ४ कटहल का वृक्ष ।

लक्ष्मीस–पु० [सं० लक्ष्मी-ईश] १ विष्णु, नारायण । २ श्री रामचन्द्र । ३ धनाढ्य व्यक्ति ।

लक्ष्मीसहज–पु० [सं०] १ समुद्र मंथन के समय लक्ष्मी के साथ निकला रत्न । २ चन्द्रमा । ३ कपूर । ४ इन्द्र का घोड़ा । ५ शंख ।

लक्ष्य–पु० [सं०] १ निशान । २ उद्देश्य । ३ अस्त्र संहार । ४ आय-व्यय तथा कार्य का निर्धारित मान । ५ आशय, इशारा । ६ लक्षणा शक्ति से निकलने वाला किसी शब्द का अर्थ ।

लक्ष्यभेद, लक्ष्यवेध–पु० [सं०] निशान लगाने या मारने की क्रिया विशेष ।

लख–१ देखो 'लक्ष' । २ देखो 'लाखपसाव' ।

लखचौरासी–स्त्री० ८४ लाख जीव योनियां ।

लखण–१ देखो 'लक्षण' । २ देखो 'लक्ष्मण' ।

लखणवत (वंती)–देखो 'लक्षणवंत' ।

लखणी–वि० लक्षणों वाला, गुणी ।

लखणौ (बौ)–क्रि० [सं० लक्ष्] १ दिखना । २ मालूम या प्रतीत होना । ३ देखना । ४ लक्ष्य करना, ध्यान करना । ५ समझना, ताड़ना । ६ अनुभव करना । ठीक समझना । ७ सावधान होना, सतर्क होना । ८ लिखना, लेखनी बद्ध करना ।

लखण, लखन–देखो 'लक्षण', 'लक्ष्मण' ।

लखपत (पति, पती, पत्ती, प्पति), लखखपति–पु० [सं० लक्ष-पति] १ धनपति, कुबेर । २ लाख रुपये या मुद्रा रखने वाला व्यक्ति, लाखों की संपत्ति वाला व्यक्ति । ३ एक लोक गीत ।

लखबरीस–देखो 'लक्षवरीस' ।

लखमण–देखो 'लक्ष्मण' ।

लखमणा–देखो 'लक्ष्मणा' ।

लखमी–देखो 'लक्ष्मी' ।

लखमीकंत (कांत)–देखो 'लक्ष्मीकांत' ।

लखमीनाथ–देखो 'लक्ष्मीनाथ' ।

लखमीनारायण–देखो 'लक्ष्मीनारायण' ।

लखमीपत (पति, पती)–देखो 'लक्ष्मीपति' ।

लखमीवर–देखो 'लक्ष्मीवर' ।

लखमीरमण–देखो 'लक्ष्मीरमण' ।

लखमीश्वर–देखो 'लक्ष्मीवर' ।

लखमीस–देखो 'लक्ष्मीस' ।

लखमोलौ–वि० [सं० लक्ष-मूल्यं] (स्त्री० लखमोली) लाख रुपये के मूल्य वाला ।

लखम्मण–देखो 'लक्ष्मण' ।

लखम्मी–देखो 'लक्ष्मी' ।

लखवरीस–देखो 'लक्षवरीस' ।

लखवांन–पु० सूर्य, भानु ।

लखाई–स्त्री० देखने, जानने, लक्ष्य करने की क्रिया या भाव ।

लखाउ–पु० [सं० लक्षं] लक्षण, पहचान ।

लखाणौ (बौ)–क्रि० १ दिखाना । २ समझाना, बताना । ३ आभास या प्रतीत कराना । ४ लक्ष्य या ध्यान कराना । ५ अनुभव कराना । ६ सावधान करना, सतर्क करना । ७ लिखवाना । ८ महसूस करना । ९ भार समझना ।

लखारस–पु० वस्त्र विशेष ।

लखारा–स्त्री० लाख की चूड़ियां बनाकर बेचने वाली जाति ।

लखारौ–पु० उक्त जाति का व्यक्ति ।

लखाव–पु० जानकारी, अनुभव, महसूसगी ।

लखावट–देखो 'लिखावट' ।

लखावणौ (बौ)–देखो 'लखाणौ' (बौ) ।

लखिण, लखिणउ–१ देखो 'लक्ष्मण' । २ देखो 'लक्षण' ।

लखित–देखो 'लिखित' ।

लखिन–देखो 'लक्ष्मण' ।

लखिमी–देखो 'लक्ष्मी' ।

लखो–पु० १ एक रंग विशेष का घोड़ा । २ चुनाई का कार्य करने वाली एक मुसलमान जाति । ३ इस जाति का व्यक्ति । ४ देखो 'लखीबिणजारो' । ५ लाख जैसे रंग वाला । ६ लक्ष रुपयों का स्वामी ।

लखोणौ–देखो 'लाखोणौ' ।

लखीबाळियो, लखीबिणजारो–देखो 'लखीबिणजारो' ।

लखु–१ देखो 'लक्ष्य' । २ देखो 'लक्ष्मी' ।

लखेसरी, लखेस्वरी–देखो 'लक्षेसरी' ।

लख्ख–देखो 'लक्ष' ।

लख्खण–१ देखो 'लक्षण' । २ देखो 'लक्ष्मण' ।

लख्खमी–देखो 'लक्ष्मी' ।

लख्य–पु० १ कपट, छल । २ लक्ष्य ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लछ्यण–१ देखो 'लक्ष्मण'। २ देखो 'लक्षण'।

लछ्यणौ–देखो 'लक्षणौ'।

लग–स्त्री० १ लगे हुए होने की अवस्था या भाव। २ लग्न, लाग। ३ प्रेम, अनुराग। ४ मकान के ऊपर ऐसा स्थान जहां से कूद कर अन्य मकान में जाया जा सके। ५ दीवार की ऊंचाई। ६ जमीन से भारी पत्थर को अलग करने का लोहे का उपकरण। ७ कक्ष या कमरे के बीच की ऊंचाई। —अव्य० १ तक, पर्यन्त। २ लिए, वास्ते। ३ निकट पास। ४ साथ। ५ इसलिए, इस कारण से।

लगइ (ई)–अव्य० १ के कारण, से। २ से, द्वारा। ३ लगातार। ४ देखो 'लग'।

लगड़–पु० गधे की पीठ पर रखकर पानी के पात्र ढोने का लकड़ी का ढांचा।

लगड़फोड़ोरो–वि० माता से कुकर्म करने वाला।

लगड–पु० एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

लगडो–पु० पुरुषेन्द्रिय, शिश्न, लिंग।

लगण–पु० छत्तीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों में से एक।

लगणो (बो)–देखो 'लागणो' (बो)।

लगत–देखो 'लग'।

लगतर–देखो 'लिगतर'।

लगतूं, लगतू–देखो 'लगड'।

लगतो–वि० (स्त्री० लगती) १ लगा हुआ, संलग्न। २ निकट, पास। ३ पीछे लगा हुआ। ४ निरंतर, लगातार। ५ साथ ही साथ।

लगधग–स्त्री० लचक, लचकनी, लोच।

लगधगणो (बो)–क्रि० १ लचकना, लोच खाना। झुकना। २ सुन्दर स्त्री का कमर लचकाते हुए चलना।

लगन–पु० [सं० लग्न] १ मन की एकाग्रता, ध्यान लगाने की क्रिया या भाव। २ लगने की क्रिया। ३ तल्लीनता, संलग्नता। ४ प्रेम, प्रीति। ५ चाह, इच्छा। ६ देखो 'लग्न'।

लगनपत्रिका (पत्री)–देखो 'लग्नपत्र'।

लगनयार–पु० श्रीमाली ब्राह्मणों में विवाह की एक रश्म।

लगनि, लगन्य–देखो 'लगन'।

लगभग–अव्य० अनुमानतः, करीबन। निश्चित अंदाज के आस-पास।

लगर–वि० फुर्तिला, चंचल।

लगरो, लगरचो–पु० १ फटा वस्त्र, चिथड़ा। २ एक झाड़ी विशेष।

लगलगाट–स्त्री० लपलपाट, लप-चप।

लगलगी–स्त्री० झगड़ा या कलह के लिये उत्तेजित करने की क्रिया या भाव।

लगवाड़–स्त्री० १ अनुचित संबंध रखने वाला पुरुष या स्त्री। २ परस्त्री से लगा हुआ पुरुष। ३ सौंध।

लगवाणो (बो)–क्रि० १ स्पर्श कराना, छुवाना। २ मिलवाना, जुड़वाना, सटवाना। ३ खर्च कराना, व्यय कराना। ४ नियोजित कराना। ५ अनुभव कराना। ६ प्रारंभ कराना, शुरू कराना। ७ फैलवाना, पसरवाना, बिखरवाना। ८ दो वस्तुओं का मेल कराना। ९ तरल पदार्थ का लेप कराना। १० एकत्र या सम्मिलित कराना। ११ आघात या चोट दिलाना। १२ पेड़–पौधे आदि रोपित कराना। १३ स्थापित कराना। १४ प्रभाव डलवाना। १५ आरोपित कराना। १६ प्रज्वलित कराना। १७ किसी से संबंध करवाना। १८ कार्य में प्रवृत्त कराना। १९ चिपकवाना, लिपटवाना। २० पहुंचवाना, भेजाना। २१ व्यतीत कराना, बितवाना। २२ प्रतीत या आभास कराना। २३ प्रेरित कराना, प्रोत्साहित कराना। २४ फैलवाना, पसरवाना। २५ किसी में प्रविष्ट या आवेष्टित कराना। २६ बजवाना। २७ वृत्त, मंडल या क्षेत्र के अन्तर्गत कराना, अधीन या अनुगत कराना। २८ दुःखदायी या कष्टप्रद संबंध जुड़वाना। २९ प्रेम, भक्ति आदि से अनुरंजित कराना। ३० विशेष सामान या उपकरणों से युक्त कराना। ३१ अभ्यस्त कराना। ३२ बंद कराना। ३३ शस्त्रादि की चोट, आघात या खुरच लगवाना। ३४ मौका या अवसर देना। ३५ तनवाना, ऊपर छवा देना। ३६ अर्पित या प्रस्तुत कराना। ३७ उपयोग या प्रयोग में लिवाना। ३८ संबंध या रिश्ता स्थापित कराना। ३९ कुछ करवाना। ४० लागू कराना। ४१ यश, कीर्ति, निंदा आदि करवाना। ४२ क्रम पर करवाना, रखवाना। ४३ अंकित कराना। ४४ अनैतिक संबंध करवाना। ४५ कष्टदायक वस्तु का स्पर्श कराना। ४६ मैथुन करवाना। ४७ पूर्णता की स्थिति में करवाना। ४८ घटित करवाना। ४९ टंकवाना, जुड़वाना। ५० आदी करवाना। ५१ अनुसरण के लिये प्रवृत्त करना।

लगवाळ–पु० १ ऊपरी भाग। २ अनुचित संबंध वाला, स्त्री-पुरुष।—वि० १ लगा हुआ। २ पीछा करने वाला। ३ सहारा देने वाला, सहायक। ४ विलासी, कामुक।

लगवावणो (बो)–देखो 'लगवाणो' (बो)।

लगस, लगस्स–पु० १ झुंड, समूह। २ घटा समूह। ३ फौज, सेना, दल। ४ अधिकता, प्रचुरता। ५ कतार, पंक्ति। —वि० १ साथ-साथ, एक साथ। २ पंक्तिबद्ध। ३ लगायमान।

लगां–देखो 'लग'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लगांण-१ देखो 'लगांम'। २ देखो 'लगांन'।

लगांन–पु० १ भू-राजस्व। २ कृषि भूमि पर लगने वाला कर।

लगाम, लगामी–स्त्री० [फा०]१ घोड़े की बाग, रास। २ रोक, नियंत्रण।

लगांवण–पु० १ लगाने की क्रिया या भाव। २ रोटी के साथ खाने का पदार्थ, सब्जी आदि।

लगा–क्रि० वि० १ तक, पर्यन्त। २ अन्त तक।

लगाड़णो (बो), लगाड़ण (बो)–देखो 'लगाणो' (बो)।

लगाणो (बो)–क्रि० १ स्पर्श करना, छूना। २ सम्पर्क में करना। ३ मिलाना, जोड़ना, सटाना। ४ शामिल करना, सम्मिलित करना। ५ तरल पदार्थ का लेप करना, मलना। ६ चिपकाना, लिपटाना। ७ पहुँचाना। ८ खर्च कराना, व्यय कराना। ९ दो वस्तुओं को परस्पर मिलाना। १० प्रतीति या अनुभव कराना। ११ आघात या चोट पहुंचाना। १२ कष्टप्रद वस्तु का स्पर्श कराना। १३ उगाना, अंकुरित करना। १४ प्रतीत करना। १५ नियोजित करना। १६ झुंड एकत्र करना। १७ आरोप या आक्षेप करना। १८ प्रज्वलित करना। १९ प्रभाव बताना, असर करना। २० कार्य में प्रवृत्त करना। २१ आफत या व्याधि लगाना। २२ वस्तु को यथा-स्थान रखना। २३ आरंभ करना, शुरू करना। २४ छिपवाना, बंद कराना। २५ फैलाना, बिखेरना, पसारना। २६ अस्त्रादि चुभाना। २७ चिढ़ाना, कुढ़ाना। २८ ध्यान में बैठना। २९ करना। ३० जुड़ाना, जोड़ना। ३१ अनुगमन करना। ३२ अन्तर्गत करना। ३३ आश्रित करना। ३४ आदी करना, अभ्यस्त करना। ३५ अनिष्ट कर्म की जिम्मेदारी आना। ३६ किसी प्रकार की सिद्धि या स्थापना करना। ३७ किसी प्रकार के उपयोग या व्यवहार के लिये आवश्यक करना। ३८ दातव्य राशि को निश्चित करना, हिस्से करना। ३९ किसी काम को घटित करना। ४० गणित क्रिया पूर्ण करना। ४१ क्रम पर रखना। ४२ मूल्यांकन करना। ४३ अंकित या चिह्नित करना। ४४ स्त्री-प्रसंग या मैथुन करना। ४५ पीछा करना। ४६ नाजाइज संबंध बनाना।

लगाय, लगायत–अव्य० लगाकर, से।

लगार–वि० किंचित, थोड़ा, लेशमात्र।

लगालगी–क्रि० वि० साथ-साथ, चलते कार्य में। क्रमशः।

लगाव, लगावट–पु० १ लगे होने की अवस्था या भाव। २ दीवार पर आसानी से चढ़ने का स्थान। ३ संबंध। ४ दिलचस्पी शौक। ५ पक्षपात।

लगावण–पु० रोटी के साथ खाने का पदार्थ, सब्जी आदि।

लगावणी-स्त्री० लड़ाने-भिड़ाने की क्रिया या भाव।

लगावणी (बो)–देखो 'लगाणो' (बो)।

लगावू–वि० लगाने वाला।

लगि, लगी–स्त्री० १ कलह, लड़ाई। २ लड़ाई के लिये उकसाने की क्रिया या भाव। ३ देखो 'लग'।

लगुड–पु० [सं०लगुड] छड़ी, लकड़ी, लाठी।

लगुळ–देखो 'लांगुळ'।

लगुवेस–देखो 'लघुवेस'।

लगे-लगे–क्रि० वि० उत्तेजना या प्रोत्साहन के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

लगै–देखो 'लग'।

लगैटगै–क्रि० वि० १ निकट, पास। २ लग-भग।

लगोबग–क्रि० वि० १ बराबर। २ लगभग।

लगोलग, लगोलगि–क्रि० वि० निरन्तर, लगातार।

लगो–वि० (स्त्री० लगी) लगा हुआ, संलग्न।

लग्ग–देखो 'लग'।

लग्गणी (बो)–देखो 'लागणी' (बो)।

लग्गन–१ देखो 'लगन'। २ देखो 'लग्न'।

लग्गांण–१ देखो 'लगांन'। २ देखो 'लगांम'।

लग्गाणी (बो)–देखो 'लगाणी' (बो)।

लग्गाव–देखो 'लगाव'।

लग्गावणी (बो)–देखो 'लगाणी' (बो)।

लग्गी–देखो 'लगी'।

लग्गू–वि० १ लगने वाला। २ लगा हुआ, संलग्न। ३ लीन, अनुरक्त। —क्रि०वि० ४ निरन्तर, लगातार।

लग्न–पु० [सं० लग्नम्] १ समय का वह अंश जिसमें कोई राशि वर्त्तमान मानी जाती है। (ज्योतिष) २ मांगलिक कार्य का अवसर, शुभ मुहूर्त। ३ सूर्य का किसी राशि में प्रवेश करने का समय। ४ पाणिग्रहण का समय। —कुंडळी–स्त्री० जन्म कुंडली। राशियों की स्थिति जानने का चक्र। —दिन–पु० पाणिग्रहण के मुहूर्त वाला दिन। —पत्र, पत्रिका–पु० पाणिग्रहण के 'लग्न' की सूचना देने का पत्र।

लग्नबंध–पु० [सं०] वादन के समय स्वर के मुख्य अंश का सुंदरता से संयोग करने की क्रिया।

लग्नायु–स्त्री० [सं०] लग्न कुंडली के अनुसार स्थिर होने वाली आयु।

लग्नेस–पु० [सं० लग्न-ईश] लग्न का स्वामी ग्रह।

लग्नोदय-पु० [सं० लग्न-उदय] लग्न के उदय का समय।

लघमा, लघिमा–स्त्री० [सं० लघिमन्]१ एक प्रकार की सिद्धि। २ लघुता, हल्कापन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लघु–वि० [सं०] १ उम्र या तुलना में छोटा। २ तुच्छ। ३ हल्का। ४ तनिक, थोड़ा। ५ दुबला, पतला। ६ संक्षिप्त।—क्रि०वि० ७ शीघ्र, सत्वर।—पु० १ समय का एक परिमाण। २ अश्विनी, हस्त व पुष्य नक्षत्रों का समूह। ३ एक प्रकार का प्राणायाम। ४ एक मात्रा का ह्रस्व स्वर। ५ छोटा भाई।—अंक–पु० एक मात्रिक वर्ण। —गण–पु० अश्विनी, हस्त, पुष्य नक्षत्र।

लघुग्रसण–पु० गरुड़।

लघुचंदन–पु० अगर की लकड़ी।

लघुचित्तविलास–पु० डिंगल का एक गीत या छंद।

लघुचित्त–वि० [सं० लघु-चित्त] दुर्बल या चंचल मन वाला।

लघुचूड़क–पु० वस्त्र विशेष।

लघुता, लघुताई–स्त्री० १ छोटापन, लघुत्व। २ तुच्छता, न्यूनता। ३ हल्कापन। ४ नीचता। ५ दुर्बलता, कमजोरी।

लघुतुपक–स्त्री० छोटी बन्दूक, तमंचा।

लघुत्व–पु० [सं०] १ छोटापन, लघुता। २ हल्कापन। ३ तुच्छता।

लघुदंती–पु० प्रथम लघु से पांच मात्रा का नाम।—वि० छोटे दांत वाला।

लघुनजर–पु० हाथी, गज।

लघुनाळीक–पु० छप्पय छंद का एक भेद।

लघुनीत–पु० पेशाब, मूत्र।

लघुपंचक लघुपंचमूळ–पु० पांच जड़ीय ओषधियों का समूह।

लघुपण–पु० छोटापन, लघुता।

लघुपाक–पु० सहज में पकने वाला खाद्य पदार्थ।

लघुमति–वि० छोटी बुद्धि वाला, मूर्ख, नादान।

लघुमांण, लघुमांन–पु० १ लघुता का मान। २ नायक को अन्य स्त्री से बात करते देख नायिका के मन में होने वाला द्वेष।

लघुमा–देखो 'लघिमा'।

लघुवय–स्त्री० [सं०] छोटी उम्र।

लघुवयस, लघुवेस–पु० [सं० लघु+वयस्] १ छोटी उम्र का। २ बालक।

लघुसंका–स्त्री० पेशाब की हाजत, मूत्र त्याग।

लघुसांमंत–पु० [सं०] छोटा राजा।

लघुहस्त–वि० [सं०] १ छोटे हाथों वाला। २ द्रुतगति से बाण चलाने वाला।

लड़ंग–वि० लम्बा, लम्बायमान।—पु० १ घोड़ा, अश्व। २ कतार, पंक्ति। ३ फौज की टुकड़ी, दल। ४ फैलाव, विस्तार। ५ झुंड, समूह।

लड़ंत–स्त्री० लड़ाई, भिड़ंत, मुकाबला।

लड़–स्त्री० [सं. लटिका] १ मणियों की माला। २ मोती आदि की लटिका, हार। ३ फूलों का हार। ४ माला की तरह बना एक ही तरह की वस्तुओं का झुंड, समूह। ५ कतार, पंक्ति। ६ रेखा, लकीर। ७ रस्सी। ८ युद्ध, लड़ाई। ९ झड़ी या माला की तरह चलने वाला कोई क्रम।

लड़कपण (पणो)–पु० १ बाल्यावस्था। २ बाल सुलभ नादान चेष्टाएँ, कार्य। ३ चंचलता, उद्दण्डता।

लड़कबुद्धि–स्त्री० बालकों जैसी बुद्धि, समझ।

लड़काई–स्त्री० नादानी।

लड़को–पु० (स्त्री० लड़की) १ छोटी अवस्था का बालक, लड़का। २ पुत्र, बेटा।

लड़कणो (णी)–क्रि० परस्पर टकराना, भिड़ना।

लड़कड़णो (णी), लड़कड़ाणो (णी), लड़कड़ावणो (णी)–क्रि० १ डगमगाना, हिलना। २ कांपना, धूजना, थर्राना। ३ दृढ़ व अडिग न रहना। ४ धमकाना, आतंकित करना।

लड़ड़–क्रि०वि० निरंतर, लगातार।—स्त्री० लगातार बढ़ने की क्रिया व इस क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।

लड़लड़णो (णी)–क्रि० बकझक करना, बड़बड़ाना।

लड़णो (णी)–क्रि० १ शस्त्रास्त्रों द्वारा युद्ध करना, लड़ना। २ मल्लयुद्ध या वाकयुद्ध करना। परस्पर हाथापाई करना। ३ कलह करना, झगड़ा करना। ४ बहस करना, हुज्जत करना। ५ टकराना, भिड़ना। ६ विषैले जानवरों का खाना, डंक मारना। ७ नाराज होना। ८ कार्य सिद्धि के लिये जूझना। ९ अनुकूल स्थिति बनाने का श्रम करना। १० न्यायालय में कोई मामला पेश करना, विरोध करना।

लड़थड़णो (णी), लड़थड़ाणो (णी), लड़थड़ावणो (णी)–क्रि० १ डगमगाना, स्थिर न रहना। २ कांपना, थर्राना। ३ अडिग या दृढ़ न रहना। ४ डोलायमान होना।

लड़दादो–पु० प्रपितामह का पिता।

लड़दो, लड़द्यो–वि० (स्त्री० लड़दी, लड़द्यी) १ हृष्ट-पुष्ट, युवा। २ मस्त मौजी। ३ मुफ्त खोर।

लड़पोतो–पु० (स्त्री० लड़पोती) पौत्र का पौत्र।

लड़मूरत–पु० गले का आभूषण विशेष।

लड़लूंब (म, मो)–देखो 'लड़ालूंम'।

लड़ाई–स्त्री० १ युद्ध, संग्राम, संघर्ष। २ लड़ने की क्रिया। ३ मल्लयुद्ध या वाकयुद्ध। ४ मारपीट, हाथापाई। ५ कलह झगड़ा, विरोध। ६ बहस, हुज्जत। ७ टक्कर, भिड़ंत। ८ विषैले जीवों के काटने या डंक मारने की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रिया। ९ नाराजगी। १० कार्य सिद्धि का प्रयत्न या पारिश्रमिक। ११ शत्रुता, वैमनस्य। १२ प्रतिस्पर्धा। —खोर, खोरी–वि० लड़ने वाला, कलहप्रिय।

लड़ाक, लड़ाकी, लड़ाकू, लड़ाकी–वि० १ प्रायः झगड़ते रहने वाला। २ योद्धा, वीर। ३ कुश्ती लड़ने वाला।

लड़ामूंब, लड़ामूंम, लड़ामूम–देखो 'लड़ालूंब'।

लड़ाणी (बो)–क्रि० १ शस्त्रास्त्रों से युद्ध कराना, झगड़ा कराना। लड़ाना। २ मल्ल युद्ध या वाक् युद्ध कराना। ३ परस्पर हाथापाई कराना। ४ कलह कराना, झगड़ा कराना। ५ बहस या हुज्जत कराना। ६ टकराने या भिड़ाने की प्रेरणा देना। ७ नाराज कराना। ८ कार्य सिद्धि के लिये श्रम या प्रयत्न कराना। ९ मुकाबला कराना। १० इशारे करना।

लड़ालंब, लड़ालूंब, लड़ालूंम, लड़ालूंब–वि० १ आभूषणों से पूर्ण सुसज्जित। २ फल-फूलों से लदा हुआ, आच्छादित। ३ जिसके मालाएँ, लटिकाएँ झूम रही हों।

लड़ावणी (बो)–देखो 'लड़ाणी' (बो)।

लड़ियंग–स्त्री० पंक्ति, समूह।

लड़ियो–पु० १ 'खींप' नामक क्षुप के रेशों की रस्सी। २ भेड़ का बच्चा।

लड़ी–स्त्री० १ बेल, लता। २ लटिका, माला, लड़। ३ कड़ी, शृंखला। ४ झड़ी, क्रम।

लंड़ी–स्त्री० भेड़, मादा मेष।

लड़ीयाळ, लड़ेत, लड़ोकड़, लड़ोकड़ी–वि० (स्त्री० लड़ेतण, लड़ोकड़ी) १ वीर, योद्धा, लड़ाकू। २ कलहप्रिय। ३ शीघ्र लड़ पड़ने वाला।

लच, लचक–स्त्री० १ लचकने की क्रिया या भाव, लोच। २ दबने, झुकने, मुड़-कर पुनः ठीक होने का गुण। ३ शरीर के किसी भाग में झटके से होने वाला विकार, दर्द।

लचकण–स्त्री० लचीलापन, नर्मी, कोमलता।

लचकणी–वि० (स्त्री० लचकणी) लोच या लचकवाला, नर्म, कोमल।

लचकणी (बो)–क्रि० १ झटके या दाब से झुकना, झुक कर पुनः सीधा हो जाना। २ दबना, झुकना। ३ मुड़ना। ४ चाल के कारण अंग में लोच या थिरकन होना। ५ लहराना।

लचकांणी–वि० (स्त्री० लचकांणी) १ लज्जित, शर्मिन्दा। २ झेंपा हुआ।

लचकाणी (बो)–क्रि० १ चलते समय अंगों को थिरकाना। २ झुकाना, दबाना। ३ दाब या भार डालकर लोच पटकना।

लचकार–स्त्री० लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव, लचक।

लचकावणी (बो)–देखो लचकाणी' (बो)।

लचकीलो–वि० (स्त्री० लचकीली) लोच, झटका या दाब सहने वाला, नर्म, कोमल।

लचको–पु० १ लचकने की क्रिया या भाव, लोच। २ चोट, झटका, दबाव। ३ लोंदा।

लचक्क–देखो 'लचक'।

लचक्कणी (बो)–देखो 'लचकणी' (बो)।

लचखांणी–देखो 'लचकांणी'।

लचणी (बो)–देखो 'लचकणी' (बो)।

लचपच, लचपची–वि० (स्त्री० लचपची) १ तर, तरीवाला, आर्द्रता वाला। २ पिलपिला।

लचपच्च–क्रि० वि० १ लपकती हुई, लपलपाती हुई। २ देखो 'लचपच'।

लचरको–पु० १ हिलने-डुलने या झुकने की क्रिया या भाव। २ फहराहट, लहराहट।

लचलची–वि० (स्त्री० लचलची) १ नर्म, कोमल। २ लोच वाला। ३ लचपचा।

लचाकेवार–वि० बढ़िया, उम्दा, श्रेष्ठ।

लचाणी (बो), लचावणी (बो)–देखो 'लचकाणी' (बो)।

लचोळो–पु० लचकने की क्रिया या भाव। लचका।

लच्चर–क्रि० वि० झपक-झपक।–वि० लचीला।

लच्छ–देखो 'लक्षण'/'लक्ष'/'लक्ष्मी'/'लक्ष्मण'/'लक्ष्य'।

लच्छण, लच्छन–देखो 'लक्षण' / 'लक्षणी'।

लच्छमण–वि० १ धनवान, अमीर। २ देखो 'लक्ष्मण'।

लच्छमी–देखो 'लक्ष्मी'।

लच्छि–देखो 'लच्छी'। देखो 'लक्ष्मी'।

लच्छि भरतार (भ्रतार)–देखो 'लक्ष्मीभरतार'।

लच्छिवर–देखो 'लक्ष्मीवर'।

लच्छी–पु० १ सूत, रेशम, ऊन आदि के रेशों की लटिका, गुच्छी। २ देखो 'लक्ष्मी'।

लच्छीवर–देखो 'लक्ष्मीवर'।

लच्छीवालापूत–पु० घोड़ा, अश्व।

लच्छेदार–वि० १ जिसमें लच्छे या गुच्छे बने हों। २ रुचिकर, स्वादिष्ट।

लच्छो–देखो 'लछो'।

लछ–देखो 'लक्षण'/ लक्ष्मी'/'लक्ष्मण'/'लक्ष'/'लक्ष्य'।

लछकांणी–देखो 'लचकांणी'। (स्त्री० लछकांणी)

लछण, लछन–१ देखो 'लक्षण'। २ देखो 'लक्ष्मण'।

लछणहीन–देखो 'लक्षणहीन'।

लछवर–देखो 'लक्ष्मीवर'।

लछमण (न)–देखो 'लक्ष्मण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लक्ष्मणझूली–पु० हृषिकेश व बद्रीनारायण के बीच का एक तीर्थ स्थान।

लक्ष्मी–देखो 'लक्ष्मी'।

लक्ष्मीकांत (कांत)–देखो 'लक्ष्मीकांत'।

लक्ष्मीधर–देखो 'लक्ष्मीधर'।

लक्ष्मीपत (पति, पती)–देखो 'लक्ष्मीपति'।

लक्ष्मीवर–देखो 'लक्ष्मीवर'।

लक्ष्मीवान–पु० [सं० लक्ष्मी+आनुच] धनवान, अमीर।

लछबर–देखो 'लक्ष्मीवर'।

लछवि, लछवी लछि–देखो 'लक्ष्मी', 'लच्छि'।

लछिपती–देखो लक्ष्मीपति'।

लछिमरतार–देखो 'लक्ष्मीभरतार'।

लछिमन–देखो 'लक्ष्मण'।

लछी–देखो 'लक्ष्मी'। देखो 'लच्छी'।

लछीधर–पु० १ एक वर्णिक छंद विशेष। २ देखो 'लक्ष्मीधर'।

लछीनाथ–देखो 'लक्ष्मीनाथ'।

लछीबर–देखो 'लक्ष्मीवर'।

लछीभरतार–देखो 'लक्ष्मीभरतार'।

लछीवर–देखो 'लक्ष्मीवर'।

लछीवान–देखो लक्ष्मीवान'।

लछोम–देखो 'लक्ष्मीस'।

लछो–पु० १ रेशम की डोरियों का रंगीन रस्सा। २ पके हुए खाद्य पदार्थ के रेशे। ३ चांदी के तारों का पांव का आभूषण विशेष। ४ हाथ की चूड़ियों का समूह। ५ हाथी के गर्दन पर बांधने की रंगीन डोरी।

लज–देखो 'लज्जा'।

लजकांणी, लजखांणी–देखो 'लचकांणी'।

लजणी–स्त्री० एक पौधा विशेष।

लजणी (बो)–देखो 'लाजणी' (बो)।

लजदार–वि० लाज-शर्म वाला, शर्मीला।

लजरख–वि० [सं० लज-रक्ष] इज्जत या लज्जा रखने वाला। —पु० वस्त्र।

लजराह–पु० [सं०] लज्जा का मार्ग।

लजवाळो–वि० (स्त्री० लजवाळी) लज्जाशील, शर्मीला।

लजाणो–वि० लज्जित करने वाला, इज्जत गंवाने वाला।

लजाणो (बो)– क्रि० १ लज्जित करना, शर्मिंदा करना। २ संकोच करना।

लजार्थम–वि० लाज या इज्जत का रक्षक।

लजाधुर–वि० शर्मीला।

लजाळु, लजाळू–वि० [सं० लज्जालु] लज्जाशील शर्मीला।

लजालूपण, लजालूपणो–पु० लज्जा की ओट में रहने की क्रिया या भाव।

लजावत लजावंती–देखो 'लज्जावंत'।

लजावण, लजावणो–देखो 'लजाणो'।

लजावणी (बो)–देखो 'लजाणो' (बो)।

लजीज–वि० स्वादिष्ट, उत्तम।

लजीलो–वि० (स्त्री० लजीली) लज्जावाला, शर्मीला।

लज्ज–देखो 'लाज'।

लज्जणो (बो)–देखो 'लाजणो' (बो)।

लज्जत–स्त्री० १ खाद्य पदार्थ का जायका, स्वाद। २ आनन्द। —दार–वि० जायकेदार। आनन्ददायक।

लज्जा–स्त्री० १ शर्म, लाज, संकोच। २ मान-मर्यादा। ३ प्रतिष्ठा, इज्जत। ४ एक मात्रिक छंद विशेष (गाथा)।

लज्जाणी (बो)–देखो 'लजाणो' (बो)

लज्जाप्रद–वि० लज्जाजनक।

लज्जालु (लू)–देखो 'लजाळू'।

लज्जावंत, लज्जावत–वि० (स्त्री० लज्जावंती) शर्मीला, लज्जाशील।

लज्जावणी (बो)–देखो 'लजाणो' (बो)।

लज्जावती, लज्जावान, लज्जासील–वि० लज्जाशील, शर्मीला।

लज्जु–वि० लाज-शर्म व इज्जतवाला।

लज्ज्या, लज्ज्या–देखो 'लाज'।

लञ्जिका–स्त्री० १ वेश्या, गणिका। २ विपरीत लक्षणा व निर्लज्ज स्त्री।

लट–स्त्री० [सं० लट्वा] १ बालों की अलक, जुल्फ। २ शिर के बालों का गुच्छा। ३ छोटा पर कुछ लंबा, रेंगने वाला कीड़ा। ४ कृशकाय, दुर्बल। ५ देखो 'लठ'। ६ देखो 'लट्टू'।

लटक (उ)–१ देखो 'लटकण'। २ देखो 'लटको'।

लटकजुहार–स्त्री० झुककर किया जाने वाला अभिवादन।

लटकण–स्त्री० १ लटकने की क्रिया या भाव। २ लटकती हुई वस्तु। ३ वीरघट के बीच लटकने वाला उपकरण। ४ नाक का आभूषण। ५ आकर्षक चाल या गति। ६ आकर्षक भाव-भंगिमा। ७ कान का आभूषण। ८ सिन्दूर पुष्पी नामक क्षुप।

लटकणो (बो)–क्रि० [सं० लडन्] १ किसी वस्तु या प्राणी का, ऊपर कहीं अटक कर, झूलती हुई दशा में होना, झूल कर रह जाना, लटकना। २ झुकना। ३ बात या कार्य में कोई बाधा पड़ने पर अपूर्ण रहना। ४ वंचित होना। ५ अनिश्चित स्थिति में होना।

लटकबार–वि० १ जो झूलता हुआ हो, लटकने वाला। २ जिसमें कुछ आकर्षण या रोचकता हो।

लटकन–देखो 'लटकण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लटकाणी (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु या प्राणी को ऊपर कहीं अटका कर झूलती हुई दशा में करना, झुलाना, लटकाना। २ झुकाना। ३ बाधा डाल कर अपूर्ण रखना। ४ वंचित करना। ६ अनिश्चित अवस्था में करना।

लटकाळु (ळू ळी, ळो)–वि० (स्त्री० लटकाळी) १ झूलता हुआ, लटकने वाला। २ सुन्दर। ३ आकर्षक भाव-भंगिमा वाला।

लटकावणी (बो)–देखो 'लटकाणी' (बो)।

लटकीलो–वि० (स्त्री० लटकीली) १ लटक-मटक वाला, नखरे-बाज। २ सुन्दर, रोचक।

लटको–पु० १ गति या चाल में होने वाली लचक, रोचकता। २ सलाम, अभिवादन। ३ स्वीकृति में गर्दन हिलाने की क्रिया। ४ अंग हिलाकर की जाने वाली क्रियाएं, भाव-भंगिमा। ५ नखरा, चोंचला। ६ बात करने, बोलने का ढंग, तौर-तरीका। ७ हल्की नींद, झपकी। ८ केलि-क्रीड़ा। ९ संगीत की ध्वनि से शरीरांगों पर होने वाली प्रतिक्रिया। १० मंत्र-तंत्र, चिकित्सा आदि में, अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने की कोई युक्ति। ११ चित्त प्रसन्न करने वाला कोई गायन। १२ देखो 'लटक'।

लटकणी (बो)–देखो 'लटकाणी' (बो)।

लटणी (बो)–क्रि० १ दबना, झुकना, लचक खाना। २ शिथिल या क्षीण होना।

लटपट, लटपटाट, लटपटी–स्त्री० १ खुशामदी की चिकनी चुपड़ी बातें खुशामद। २ तड़फना क्रिया। ३ लगातार हिलने-डुलने की क्रिया। ४ चाल का आकर्षण, रोचकता। ५ चलने से उत्पन्न ध्वनि। ६ लोट-पोट होने की क्रिया।

लटपटाणी (बो)–क्रि० १ तड़फना, छटपटाना। २ खुशामद करना। ३ अनुरक्त करना, लुभाना।

लटपटियो, लटपटो–वि० १ बेढंगा, अटपट। २ खुशामदी। ३ अवलेह की तरह गाढ़ा। ४ लटकता व झूलता हुआ।

लटपा–स्त्री० खुशामद, चाटुकारिता।

लटांचटूं–वि० गुत्थमगुत्था।

लटांण–पु० टांड।

लटा–स्त्री० बालों की लट बालों का समूह।

लटापट, लटापटी–स्त्री० १ बंधने की क्रिया, बंधन। २ छट पटाहट। ३ खुशामद।–वि० दृढ मजबूत।

लटापुरी–देखो 'लटापोरी'।

लटापोट–देखो 'लोट-पोट'।

लटापोरी–स्त्री० खुशामद, मनुहार, आग्रह।

लटारां–देखो 'लटा'।

लटारी–पु० उपज का हिस्सा लेने वाला भूस्वामी या सामंत।

लटाळी–स्त्री० बालों वाली।

लटिया–स्त्री० उलझे बालों की लट, बाल।

लटिआळी, लटियाळ (स), लटियाळी–पु० १ भैरव का एक नाम। २ पुष्प, फूल। ३ केशों की अयाल। ४ आवड़ देवी की छोटी बहन का नाम। ५ एक प्रकार की मंग।

लटियाळी–वि० (स्त्री० लटियाळी) जटाधारी, अयाल वाला।

लटी–स्त्री० १ झूठी बात, गप्प। २ वेश्या। ३ साधु स्त्री। ४ केश, सूत आदि की लटिका, लच्छी। ५ घोड़े के गर्दन की अयाल।–वि० बलवान, जबरदस्त।

लटूंबणी (बो)–क्रि० १ लटकना, झूलना। २ कोई चीज पकड़ कर लटकना।

लटू–१ देखो 'लट'। २ देखो 'लट्टी'।

लटूंचटूं–देखो 'लटांचटां'।

लट्टू–पु० फिरकी की तरह घूमने वाला लकड़ी का एक खिलौना।–वि० किसी पर मोहित, फिदा।

लट्टी–पु० १ कुत्ता, श्वान। २ देखो 'लट्ठी'।

लट्ठ–पु० १ बड़ा डंडा, लकड़ी, लाठी। २ मोटी लकड़ी। ३ देखो 'लठ'।–**बाज**–वि० लाठी चलाने में दक्ष।–**बाजी**–स्त्री० लाठी चलाने की कला। लाठी से की जाने वाली लड़ाई।–**मारतो, मार**–वि० लाठी से लड़ने वाला, उद्दण्ड, उत्पाती।

लट्ठो–देखो 'लाठी'।

लट्टो–पु० १ मोटा सूती वस्त्र। २ बड़ी व मोटी लकड़ी लट्ठ। ३ भेड़िया।

लठ–वि० १ हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ठ। २ मजबूत, जबरदस्त। ३ मूर्ख, बेवकूफ।–पु० १ झुकड़ा। २ भेड़िया। ३ लाठी।–**बाज**= 'लट्ठबाज'।–**मारती, मार**= लट्ठमारती'।

लठाबन–वि० लाठी चलाने में प्रवीण।

लठीझल–देखो 'लाठीझल'।

लठंत–वि० लट्ठधारी।

लठ्ठी–पु० १ इमारत में लगने वाला लकड़ी का पाट, शहतीर। २ देखो 'लट्ठी'।

लडणी (बो)–क्रि० १ प्यार किया जाना, प्यार में इतराना। २ देखो 'लडणो' (बो)।

लडथड, लडथडो–वि० झूमता हुआ।–पु० लड़ने वालों का समूह।

लडथडणी (बो)–देखो 'लडथडणो' (बो)।

लडल्लड़–क्रि० वि० धड़ाधड़।

लडथडणो (बो)–क्रि० लटकना।

लडसडणी (बो)–क्रि० १ मस्ती से झूमते हुए चलना। २ गर्व व अभिमान में रहना।

लडहि (ही)–वि० [सं० लटभ] सुन्दर।

लडहियतण (णि, णी)–स्त्री० [सं० लटभिकत्वन] सौन्दर्य।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लड़ाई–देखो 'लड़ाई'।

लड़ाड़णो (बो), लड़ाणो (बो)–क्रि० १ लाड-प्यार करना। दुलारना। २ इतारना, फुसलाना। ३ देखो 'लड़ाणो' (बो)।

लड़ायत, लड़ायतो, लड़ालो–वि० (स्त्री० लड़ायती, लड़ाळी) प्रिय, प्यारा, लाडला।

लड़ावणो (बो)–देखो 'लड़ाणो' (बो)।

लड़ाधिया–स्त्री० घोड़ों की एक जाति।

लड़ीड़, लड़ीड़ो–पु० १ बड़े शस्त्र, लाठी या हाथ का भारी प्रहार। २ ऐसे प्रहार से उत्पन्न ध्वनि। ३ हानि, नुकसान। ४ चोट।

लड़ीयाळ–देखो 'लड़ीयाळ'।

लड्डूकार, लड्डूयार–पु० [सं०]लड्डू बनाने वाला, कंदोई।

लड्डंत–वि० लाड-प्यार से इतरा हुआ।

लड्डोकड़ो–वि० १ प्रिय, प्यारा। २ देखो 'लड़ोकड़ो'।

लड्डु–देखो 'लाडू'।

लड्डू–देखो 'लाडू'।

लढ़–क्रि०-वि० १ लोट-पोट कर। २ लड्डू की तरह गुड़क कर।

लढ़कणो (बो)–देखो लुढ़कणो' (बो)।

लढ़काणो (बो), लढ़कायणो (बो)–क्रि० १ बांधना। २ देखो 'लुढ़काणो' (बो)।

लढ़ाक–पु० छद्म वेश में किसी समूह में भोजन करने वाला व्यक्ति।–क्रि० वि० सहसा, गुड़ककर, लुढ़ककर।

लढ़ार–पु० कायस्थों की एक वैवाहिक रस्म।

लढ़ो–पु० १ बैलगाड़ी। २ बैलगाड़ी में भरे सामान की सुरक्षा के लिये लगाया जाने वाला वस्त्र।

लणणो (बो)–देखो 'लुणणो' (बो)।

लणियार, लणिहार–देखो 'लैणियार'।

लणीहार–देखो 'लैणिहार'।

लत–स्त्री० [अ० इल्लत] १ बुरी आदत, आदत। २ ऐब, अवगुण। ३ देखो 'लात'।—छोर छोरो–वि० बुरी आदत या ऐब वाला। नीच।

लता–स्त्री० [सं०] रस्सी या माला की तरह, किसी सहारे से लिपट कर बढ़ने वाली वनस्पती, बेल।—अंत–पु० पुष्प, फूल।—कुंज–पु० लता समूह।—गृह, घर–पु० लताओं से आच्छादित स्थान या मंडप। —भवन='लतागृह'। —मंडप–पु० लताओं से आच्छादित मंडप।—मंडल–पु० लताओं का समूह।

लताकर–स्त्री० नृत्य की एक मुद्रा या क्रिया।

लतास्तूरिका, लताकस्तूरी स्त्री० एक वनस्पती विशेष।

लताड़–स्त्री० १ प्रताड़ना, डांट-फटकार। २ डराने, धमकाने की क्रिया।

लताड़णो (बो)–क्रि० १ लातों से कुचलना, रौंदना। २ लातों से मारना। ३ फटकारना, प्रताड़ना देना, भर्त्सना करना। ४ डांटना, अपमान करना। ५ परेशान करना हैरान करना।

लतामणि–पु० [सं०] मूंगा, प्रवाल।

लतावेस्ठ, लतावेस्ठण–पु० [सं० लतावेष्ट] १ काम शास्त्रानुसार एक रतिबंध। २ द्वारकापुरी के पास का एक पर्वत। –वि० लताओं से वेष्टित।

लतासाधन–पु० [सं०] एक तांत्रिक साधना विशेष।

लतिका–स्त्री० छोटी लता।

लतियापण (पणो)–पु० अप्राकृतिक मैथुन की आदत।

लतियो–वि० अप्राकृतिक मैथुन करने, कराने वाला।

लतीफो–पु० [अ० लतीफो] हास्य व्यंग, चुटकला।

लतेड़–देखो 'लताड़'।

लतेड़णो, लतेड़बो–देखो 'लताड़णो' (बो)।

लत्त–१ देखो 'लत'। २ देखो 'लत्ती'।

लत्ता–स्त्री० १ विवाह के मुहूर्त में होने वाला एक दोष। २ देखो 'लता'।

लत्ती–स्त्री० १ पशु द्वारा किया जाने वाला पैर का आघात। २ चलने वाले या दौड़ने वाले के पांव में पांव अड़ाने की क्रिया।

लत्तो–पु० [सं०लत्तक] १ फटा-पुराना वस्त्र। २ पहनने का वस्त्र।

लत्थबत्थ, लत्थोपत्थि, लत्थोबत्थ, लत्थोबथ, लत्थोबथ्थ, लत्थोबत्थाणा–देखो 'लथ-बथ'।

लथपथ–वि० १ तरल पदार्थ में भीगा हुआ, तरबतर। २ मिट्टी कीचड़ आदि से सना हुआ।

लथबत्थ, लथबथ, लथुबत्थ, लथुबथ, लथोबत्थ, लथोबथ, लथोबथ्थ–वि० १ गुत्थमगुत्था, उलझा हुआ, भिड़ा हुआ। २ आलिंगनबद्ध।

लदणो (बो)–क्रि० १ भार, वजन से युक्त होना। २ वाहन या पशु की पीठ पर वजनदार वस्तु या सामान रखा जाना। ३ परिपूर्ण होना, आच्छादित होना। ४ किसी पर अधिक सामान या काम का बोझ पड़ना। ५ व्यतीत होना, काला-तीत होना। ६ पलायन, प्रस्थान या गमन करना। ७ अत्यधिक फल-फूल आना।

लदपड़ो–पु० लंबे कानों वाला।

लदाऊ–वि० लादने वाला।–पु० लदाव, भराव।

लदाणो (बो)–क्रि० १ भार, वजन से युक्त करना, कराना। २ वाहन या पशु की पीठ पर वजनदार वस्तु या सामान रखना, रखाना। ३ परिपूर्ण करना, आच्छादित करना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करानाः । ४ सामान या कार्य का अधिक बोझ डालना । ५ व्यतीत कराना । ६ पलायन या प्रस्थान कराना ।

लदारी–पु० गुदा द्वार ।—वि० लदने वाला ।

लदाव–पु० १ लादने की क्रिया या भाव । २ बोझ, भार । ३ छत पाटने की एक क्रिया विशेष ।

लदावणो–वि० (स्त्री० लदावणी) लदाने वाला ।

लदावणो (बो)–देखो 'लदाणो' (बो) ।

लदणो (बो)–देखो 'लदणो' (बो) ।

लद्दू–पु० भार ढोने वाला पशु । बोझा उठाने वाला ।

लद्ध–वि० [सं० लब्ध] १ मुग्ध, मोहित । २ मिला हुआ, प्राप्त ।

लद्धणो (बो), लद्धणो(बो), लब्धणो(बो)–देखो 'लाभणो' (बो) ।

लप–स्त्री० १ हाथ की अंगुलियों को परस्पर सटाकर पात्र की तरह बनाई गई हाथ की मुद्रा, अंजली, पसर । २ वस्तु की उतनी मात्रा जो उक्त स्थिति में हाथ में आती हो । ३ बेंत आदि लचीली वस्तु को हिलाने से उत्पन्न ध्वनि । ४ बरछी, तलवार आदि की चमक या गति । ५ ध्वनि विशेष । –क्रि० वि० अति शीघ्र, लपक कर । तुरंत ।

लपक–स्त्री० १ चमक, कांति, आभा । २ स्फूर्ति ।

लपकणो(बो)–क्रि० १ शीघ्रता से जाना, दौड़ कर जाना । २ तेजी से आना । ३ किसी पर झपटना । ४ लपक कर कोई चीज लेना, झपटो मारना ।

लपकाणो (बो), लपकावणो (बो)–क्रि० १ खाना । २ शीघ्रता से जाने, दौड़ने के लिये प्रेरित करना । ३ तेजी से आने की प्रेरणा देना । ४ किसी पर झपटाना । ५ झपटने, झपटी मारने को कहना ।

लपको–पु० १ किसी बात के बीच में बोलने या व्यर्थ बात करने की क्रिया । २ बड़ा ग्रास ।

लपड़कनो, लपडकन्नो–वि० (स्त्री० लपड़कन्नी) लंबे कानों वाला ।

लपड़ो–देखो 'लफड़ो' ।

लपचप–स्त्री० १ किसी के बीच में अनावश्यक बात-चीत, व्यर्थ बात । २ चंचलता । ३ अशिष्ट मानी जाने वाली बात ।

लपचड़ो, लपचेड़ू, लपचेडो–देखो लफड़ो' ।

लपचोळी, लपचोली–वि० लालची, लोभी ।

लपलप–क्रि० वि० १ दीपक की लौ की झपको । २ देखो 'लपचप' ।

लपट–स्त्री० १ आग की लपट, अग्नि शिखा । २ दीप्ति, कांति, शोभा । ३ प्रभाव, असर । ४ तलवार । ५ वायु का झोंका । ६ सुगंधित वायु । ७ चमक । ८ वेष्टन ।

लपटणो (बो)–क्रि० १ किसी चीज पर कोई अन्य चीज चिपकना, संलग्न होना । २ स्पर्श करना छूना । ३ आवृत्त होना, आवेष्टित होना । ४ लिप्त होना । ५ आलिंगन करना ।

लपटाणो (बो), लपटावणो (बो)–क्रि० १ चिपकाना, लेप करानाः, संलग्न करना । २ स्पर्श कराना, छुवाना । ३ आवृत्त करना, आवेष्टित करना । ४ लिप्त कराना । ५ आलिंगन कराना ।

लपटो–पु० १ कम घी का, अवलेह की तरह का हलवा । २ इसी तरह का कोई पदार्थ । ३ गीली व नर्म वस्तु ।

लपणो (बो)–देखो 'लपकणो' (बो) ।

लपतरो–पु० १ मांस सहित त्वचा का टुकड़ा । २ जूता ।

लपता-छिपता–क्रि० वि० छिप-छिप कर ।

लपतोळणो (बो)–क्रि०लथ-पथ करना । लथ-पथ होना ।

लपत्तड़–वि० फटा हुआ जीर्ण-शीर्ण ।

लपन–पु० [सं०] १ मुंह, मुख । २ भाषण, कथन ।

लपना–स्त्री० १ जीभ, जिह्वा । २ बोली ।

लपर– वि० वाचाल, बातूनी ।

लपरक, लपरको–पु० १ सर्प की तरह बार-बार जीभ निकालने की क्रिया । २ बार-बार बीच में (बात के) बोलने की क्रिया । ३ निरर्थक बात करने की क्रिया । ४ जीभ से चाटने की ध्वनि ।

लपरणो (बो)–क्रि० १ जीभ से चाटना । २ बार-बार जीभ निकालना ।

लपराइ (ई)–स्त्री० १ वाचालता, लबारपन । २ चापलूसी ।

लपराणो (बो)–क्रि० १ बार-बार बीच में बोलना । २ बार-बार जीभ बाहर निकालना । ३ निरर्थक बात कहना ।

लपरो–देखो 'लपर' ।

लपळको–देखो 'लपरको' ।

लपचप, लपलपाट–स्त्री० १ बार-बार बोलने की क्रिया । २ लप लप करने की क्रिया । ३ बकवास । ४ चमक, कौंध । ५ जीभ निकालने की क्रिया विशेष ।

लपसी देखो 'लापसी' ।

लपाक–क्रि० वि० शीघ्रता से, तुरंत, तपाक ।

लपाबार–पु० तार मोटे की लपी (पट्टी) लगा वस्त्र ।

लपालप, लपालपी–क्रि० वि० झटपट, शीघ्रता से, तेजी से, फटाफट । लपलप ।

लपेक–वि० करीब एक पसर में समाए जितना ।

लपेट, लपेटण–स्त्री० १ लिपटाने की क्रिया । २ आवरण । ३ आवृत्ति का क्रम, फेरा, बंधन । ४ सलवट । ५ ऐंठन बल, मोड़ । ६ घेरा, परिधि । ७ उलझन, फंसाव, पकड़, बंधन । चक्कर । ८ कुश्ती का दाव ।

लपेटणो–स्त्री० जुलाहों के काम आने वाली एक प्रकार की लकड़ी ।

लपेटणो (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु को अन्य वस्तु में समेटना, बांधना, चारो ओर ढककर बांधना । २ आवेष्टित करना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ रस्सी, डोरी आदि से चारों ओर बंधन लगना। ४ घेरना, आवृत करना। ५ बनाव शृंगार करना। ६ काबू या वश में करना। ७ उलझन में फंसाना। ८ किसी लड़ाई में सम्मिलित करना। ९ बहाव या झपट से आना। १० आच्छादित करना, ढकना। ११ लेप करना पोतना।

लपेटणी (बी)–वि० १ लिपटा कर रखा या बनाया गया, सिमटवां। २ किसी की लपेट में आया हुआ। ३ लपेटने योग्य। ४ चक्करदार, गूढ।

लपेटियो–देखो 'लपेटो'।

लपेटो–पु० १ दाम्पत्य बंधन। २ विवाह, विवाह में होने वाली भांवर, फेरा। ३ सिर पर बांधने का वस्त्र, साफा, पगड़ी। ४ टोप के नीचे बांधने का वस्त्र। ५ षड्यंत्र, जाल। ६ चक्कर, दाव।–वि० लपेटा हुआ, बांधा हुआ।

लपेदार–पु० तार गोटे की पट्टी लगा वस्त्र।

लपोड़, **लपोड़ो**, **लपोड़ो**, **लपोळ**–वि० मूर्ख, नासमझ।

लपो–देखो 'लप्पो'।

लपोसप–क्रि० वि० १ शीघ्रता से, जल्दी से, तुरंत। २ फटाफट। ३ हाथोहाथ।

लप्पड़–स्त्री० थप्पड़, तमाचा, झापट।

लप्पी–स्त्री० १ महीनतम रजकण, मिट्टी। २ तार गोटे की पट्टी।

लप्पो–पु० तार गोटे की पट्टी, मोटी किनारी।

लफंगो–वि० [फा० लफंग] (स्त्री० लफंगी) १ चरित्रहीन, दुश्चरित्र। २ लपट, व्यभिचारी। ३ लुच्चा, बदमाश, उद्दण्ड। ४ चोर, लुटेरा।

लफ–देखो 'लप'।

लफड़ो–पु० १ बंधन, झंझट। २ अनावश्यक कार्य, प्रपंच। ३ काम-धंधा। ४ भूत, प्रेत, शैतान। ५ आफत।

लफज–देखो 'लपज'।

लफरो–देखो 'लफड़ो'।

लफलफणी (बी)–देखो 'लपलपणी' (बी)।

लफ्ज–पु० [अ०] १ शब्द, बोल। २ बात। ३ वचन।

लबकणी (बी)–क्रि० १ भक्षण करना, खाना। २ हल्का दर्द या चीस उठना। ३ झपट कर खाना।

लबको–पु० १ मोटा ग्रास, लोंदा। २ आनन्द, रस।

लबडकाणी (बी), **लबडकावणी (बी)**–क्रि० १ परेशान करना, तंग करना। २ परिश्रम कराना। ३ फटकारना, दुतकारना।

लबड़णी (बी)–क्रि० फटकारना, डांटना।

लबड़ाक–वि० वाचाल, बकवादी।

लबथब–देखो 'लबालब'।

लबथबणी (बी)–क्रि० १ पूर्ण भरा जाना, लबालब होना। २ डगमगाना, लड़खड़ाना।

लबद–वि० मुलायम, कोमल, नर्म।

लबधणी (बी)–क्रि० [सं० लब्ध] प्राप्त करना, पाना, उपलब्ध होना।

लबरो–देखो 'लपर'।

लबलबो–स्त्री० १ बंदूक, पिस्तौल आदि का खटका। २ तरलता।

लबलबो–वि० (स्त्री० लबलबी) तर, आर्द्र, नम। लचीला।

लबाणा–पु० मुसलमान भाटों की एक जाति।

लबाडी, **लबाड**–देखो 'लबाळी'।

लबादो–पु० [फा० लबादः] रूईदार चोगा।

लबायचो–पु० [फा० लबाचः] पहनने का वस्त्र विशेष।

लबार, **लबारी**, **लबाळ**, **लबास**–वि० वाचाल, बातूनी। बकवादी।

लबालब–वि० ऊपरी किनारे तक भरा हुआ, छलकने की स्थिति में।

लबाळी–वि० बातूनी, बकवादी, वाचाल

लबूकणी (बी)–क्रि० १ हरा-भरा होना, लहलहाना। २ फल-फूलादि आकर डालों पर झूलना। ३ लटकना।

लबूरणी (बी)–क्रि० १ नाखूनों से नोचना, खरोचना। २ छीनना, झपटना।

लबोळ (ल)–देखो 'लबाळी'।

लब्ज–देखो 'लपज'।

लब्ध–वि० १ मिला हुआ, प्राप्त। २ कमाया हुआ, उपलब्ध। ३ भाग फल। ४ स्मृति के अनुसार एक प्रकार का दास।

लब्धक–वि० प्राप्त करने वाला, पाने वाला, उपार्जन करने वाला।

लब्धवरण–पु० [सं० लब्धवर्ण] पंडित, ज्ञानी, कवि।

लब्धि–स्त्री० १ प्राप्ति उपलब्धि। २ लाभ, फायदा। ३ तप संयम आदि से प्राप्त आत्मिक शक्ति।–वंत, वत–वि० प्राप्तकर्ता, जिसे प्राप्ति हुई हो।

लभणी (बी) **लभणी (बी)**–देखो 'लाभणी' (बी)।

लभस–स्त्री० १ घोड़े बांधने की रस्सी। २ धन, दौलत। वि० याचक।

लभो–पु० १ लाभ, फायदा। २ मिला हुआ प्राप्त।

लभ्भणी (बी)–देखो 'लाभणी' (बी)।

लमछड़–पु० १ भाला, बरछा। २ सांग। ३ छड़ी के समान लंबा। ४ देखो 'लामछड़'।

लमझम–देखो 'रिमझिम'।

लमटंगो–वि० लंबी व पतली टांगों वाला।

लमतड़ंग–वि० छड़ी की तरह लम्बा।

लमेक–क्रि०वि० एक क्षण या क्षण भर के लिये।

लय–पु० [सं०] १ विनाश, समाप्ति। २ विलय, मिल जाना क्रिया, विलीनीकरण। ३ एकाग्रता। ४ कार्य की कारण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में परिणति । ५ प्रलय विनाश । ६ लोप । ७ एक प्राचीन नरेश – स्त्री० ८ संगीत एवं कविता में गति सामंजस्य रखने वाला तत्त्व । ९ गीत की धुन या गाने का स्वर । १० संगीत में ताल की गति । ११ वार्त्तालाप का ढंग, लहजा । १२ अवसर, मौका ।

लयण–स्त्री० [सं० लयन] १ लय होने की अवस्था या भाव । २ आराम, विश्राम । ३ विश्राम गृह । ४ गुफा, कन्दरा ।

लयता–स्त्री० लय होने की अवस्था या भाव ।

लयनपुन्न–पु० [सं० लयन-पुण्य] भूमि, स्थान आदि के दान का पुण्य (जैन) ।

लयलीन–वि० [सं०] १ ध्यान या प्रेम में मग्न, लीन । २ लिप्त, लगा हुआ, फंसा हुआ, समाहित ।

लया–देखो 'लता' ।

लरड़–देखो 'लड़ड' ।

लरडियो–पु० १ भेड़ का बच्चा । २ भेड़ ।

लरड़ी–स्त्री० १ मादा भेड । २ एक लाक्षणिक संबोधन ।

लरड़ो–पु० (स्त्री० लरड़ी) १ नर भेड़, भेड़ा । २ एक लाक्षणिक संबोधन ।

लरज–स्त्री० सितार का पांचवां तार ।

लरियाळ–देखो लटियाळ' ।

लळ–स्त्री० उत्कंठा, आशा ।

लल–स्त्री० १ मंद तल वायु । २ ठंडी हवा का झोंका । ३ बुद्धि, विचार । ४ शक्ति का अंश । ५ शुभ लक्षण, गुण ।

लळक–स्त्री० १ लचीलापन, लचक । २ मोच । ३ झुकाव ।

ललक–स्त्री० १ गहरी अभिलाषा । २ उत्साहित करने की क्रिया, प्रोत्साहन । ३ गायन की तीखी व ऊंची धुन । ४ पक्षियों का मधुर कलरव । ५ लोच, लचक, झुकाव ।

लळकणो (बो)–क्रि० १ झुकना, लचकना, लोच खाना । २ मुड़ जाना ।

ललकणो (बो)–क्रि० १ ललचाना, लालायित होना । २ आकर्षित होना । ३ उत्साहित होकर भागना । ४ तीखी व ऊंची ध्वनि होना, बजना । ५ मधुर कलरव होना । ६ गर्जना, दहाड़ना । ७ ढीला पड़ना । ८ रक्षा करने के लिये भागना । ९ देखो 'लळकणो' (बो) ।

ललकार–पु० १ युद्ध आदि के लिये चुनौती, आह्वान । २ मुकाबले के लिये उत्साहित करना आदि क्रिया । ३ युद्ध का उद्घोष । ४ हल्ला, कोलाहल । ५ गायन में ऊंची व तीक्ष्ण ध्वनि । ६ जोश पूर्ण आवाज । ७ वायु का प्रवाह । ८ फटकार ।

ललकारणो (बो)–क्रि० १ युद्ध या मुकाबले में आने की चुनौती देना । २ जोश दिलाना, उत्साहित करना । ३ तेज वायु बहना । ४ युद्ध का उद्घोष करना । ५ हल्ला करना । ६ फटकारना, भर्त्सना करना । ७ ऊंची आवाज में गाना । ८ जोशपूर्ण आवाज करना । ९ तेज हांकना, तेज चलाना ।

ललकारो पु० १ झूले को दिया जाने वाला धक्का । २ देखो 'ललकार' ।

लळको–पु० १ झटका, धक्का । २ लचका, झुकाव नमन । ३ मस्ती में झूमने की क्रिया । ४ हाथ का झटका, इशारा ।

ललको–पु० १ गाने की तेज ध्वनि । २ लहर ।

ललक्क–देखो 'ललक' ।

लळक्कणो (बो)–देखो 'लळकणो' (बो) ।

ललक्कणो (बो)–देखो 'ललकणो' (बो) ।

ललक्को–देखो 'ललको' ।

ललचणो (बो)–क्रि० १ लालच में पड़ना, लोभ करना । २ लालायित होना, अधीर होना, ललचाना । ३ आसक्त होना ।

ललचाणो (बो)–क्रि० १ लालच करना, लोभ करना । २ लालायित होना, ललचाना । ३ आसक्त या मोहित होना । ४ उत्कण्ठा होना, प्रबल इच्छा होना । ५ उमंगित या उत्साहित होना ।

ललचावण (णी)–स्त्री० १ ललचाने या लालायित करने की क्रिया या भाव । २ आसक्ति का भाव । ३ उत्कण्ठा, तीव्र इच्छा । ४ लालच या लालसा जगाने की क्रिया ।

ललचावणो (बो)–देखो 'ललचाणो' (बो) ।

ललच्चणो (बो)–देखो 'ललचणो' (बो) ।

ललणा–देखो 'ललना' ।

लळणो (बो)–देखो 'लुळणो' (बो) ।

ललत–देखो 'ललित' ।

ललतमुकट–पु० डिंगल का एक गीत ।

ललता–देखो 'ललिता' ।

ललना–स्त्री० [सं०] १ स्त्री, औरत । २ रमणी, युवती । ३ जिह्वा । ४ एक वर्णवृत्त विशेष ।

ललपत–स्त्री० खुशामद, चाटुकारिता ।

लळभख–पु० मांस ।

ललयांगी–वि० ललितांगी ।

ललरणो (बो), ललराणो (बो), ललरावणो (बो)–क्रि० बोलते हुए अटकना, लड़खड़ाना । तुतलाना ।

लळवळ–स्त्री० मुड़ने की क्रिया ।

लळवळणो (बो)–क्रि० १ कोमल व लचीली वस्तु का हिलते हुए मुड़ना । २ मस्ती में झूमना । ३ लचकना ।

ललबलउ, लळवळो, ललवलो, लळबळियो–वि० १ कोमल, सुन्दर, मृदुल । २ लचीला, लोचदार ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ललांम–पु० [सं० ललामः] १ घोड़ा। २ घोड़े का आभूषण विशेष।–वि० १ सुन्दर, रमणीय। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ प्रधान, मुख्य। ४ लाल रंग का। ५ देखो 'लीलांम'।

ललां–पु० १ एक पौधा विशेष। २ देखो 'लालो'।

ललाइ (ई)–स्त्री० लालिमा।

ललाक–क्रि० वि० लचक के साथ, लचकता हुआ।

ललाड–देखो 'ललाट'।

ललाट–पु० [सं०] १ माथा, मस्तक, भाल। २ भाग्य, तकदीर। ३ भाग्य के लेख, तकदीर।

ललाट-पटळ–पु० [सं० ललाट+पटल] माथे का तल, भाल।

ललाटरेखा–स्त्री० [सं०] भाग्य की रेखा, प्रारब्ध।

ललाटाक्षि–स्त्री० रावण की अनुचरी एक राक्षसी।

ललाटि–देखो 'ललाट'।

ललाणो (बो)–देखो 'ललावणो' (बो)।

ललाबट–स्त्री० झुकाव, रुख।

ललाबणो (बो)–क्रि० मोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना।

ललावणो (बो)–क्रि० टिलाना, फुसलाना।

ललित–पु० [सं०] १ शृंगार रस में शरीरांगों के सुन्दर हाव-भाव। २ एक विषम वर्ण-वृत्त। ३ संगीत में एक राग। ४ एक गौण अलंकार। ५ एक वर्णिक छंद। ६ बालक। ७ एक गंधर्व।–वि० १ सुन्दर, कमनीय। २ कोमल, नाजुक ३ शुभ, कल्याणप्रद।

ललितकांता–स्त्री० [सं०] दुर्गा, देवी।

ललितकीसवर–पु० हनुमान, बजरंग।

ललितगरभेसर–पु० [सं० ललित गर्भेश्वर] एक प्रकार का द्रव्य।

ललितलता–स्त्री० माधवी लता।

ललिता–स्त्री० [सं०] १ राधिका की मुख्य सखियों में से एक। २ दक्ष सुता सती। ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ४ रमणी। ५ स्वेच्छाचारिणी स्त्री। ६ दुर्गा देवी का एक रूप। ७ कस्तूरी, मुश्क। ८ एक वर्ण वृत्त विशेष।

ललिताई–स्त्री० सौन्दर्य, मनोहरता।

ललितापंचमी–स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ला पंचमी तिथि।

ललितासस्ठी–स्त्री० [सं० ललिता-षष्ठी] भादव कृष्णा षष्ठी तिथि।

ललितासप्तमी, ललितासातम–स्त्री० [सं०] भादव शुक्ला सप्तमी तिथि।

ललितोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद।

ललित्ता–देखो 'ललिता'।

ललित्थ–पु० [सं०] १ एक प्राचीन राजा। २ कौरव पक्षीय एक राजा। ३ एक लोक समूह (प्राचीन)।

ललुडो–देखो 'लालो'।

ललूना–देखो 'ललना'।

ललोचपो, ललोचंपो, ललोचप्पो, ललोपतो–पु० १ चापलूसी, चाटुकारिता, खुशामद। २ चिकनी-चुपड़ी व मीठी बातें। ३ फुसलाने की बातें। ४ हाथाजोड़ी।

ललोपतो–क्रि० वि० बिना पते, बेखबर।–पु० मेल-जोल, संपर्क।

ललो–पु० १ 'ल' वर्ण। २ लालो।

लल्ल–देखो 'लल'।

लल्लउ–देखो 'ललो'।

लल्लवळ–देखो 'लळवळ'।

लल्लू–देखो 'लालो'।

लल्लूलप्पू–देखो 'ललोचपो'।

लवंग–पु० [सं०] १ एक वृक्ष जिसकी कलियां व फूल औषधि, मसाला आदि में काम आती हैं। २ इस वृक्ष के फूल व कलियां ३ स्त्रियों के नाक का आभूषण विशेष। ४ कानों का आभूषण।

लवंगादिचूरण–पु० लवंग के योग से बना चूर्ण (औषधि)।

लवंगादिवटी–स्त्री० औषधि विशेष।

लवंगि–देखो 'लवंग'।

लवड–पु० दीवारों से उतरने वाली चूने आदि की पपड़ी।

लव–स्त्री० [सं०] १ भेड़ की ऊन। २ ऊन उतारने का कार्य। ३ अल्प मात्रा, लेश मात्रा। ४ कवि, पंडित। ५ काल का एक छोटा भाग। ६ श्रीराम का एक पुत्र। ७ लवा नामक एक चिड़िया। ८ लवंग, लौंग। ९ सुरा गाय की पूंछ का बाल। १० जायफल। ११ देखो लिव'।–वि० १ किंचित सूक्ष्म। २ समान, सदृश।

लवकव–वि० भयभीत, आतंकित।

लवण–पु० [सं० लवण] १ नमक। २ क्षार। ३ एक राक्षस लवणासुर। ४ समुद्र, सागर। ५ एक नरक का नाम।–वि० १ नमकीन, खारा। २ लावण्य युक्त।

लवणजंत्र–पु० [सं० लवण-यन्त्र] औषध बनाने का पात्र विशेष।

लवणत्रय–पु० [सं०] सेंधव, बिट और संचल, तीनों लवणों का समूह।

लवणधेनु–स्त्री० दान के लिये बनाई गई नमक की गाय।

लवणभास्कर–पु० [सं०] एक प्रकार का चूर्ण।

लवणवरस–पु० [सं० लवणवर्ष] कुश द्वीप के अन्तर्गत एक प्रदेश।

लवणसमंद (समुद्र)–पु० विशेष खारे पानी का समुद्र।

लवणांतक–पु० [सं०] १ लवणासुर को मारने वाला, शत्रुघ्न। २ नींबू।

लवणा–स्त्री० १ दीप्ति, आभा, कांति। २ देखो 'लवल्या'।

लवणाइ (ई)–स्त्री० [सं० लावण्य] १ सौन्दर्य, सुन्दरता। २ लूणी नदी का एक नाम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लवणाकार–पु० [सं०] समुद्र, सागर ।
लवणाचळ–पु० [सं० लवण-चल] नमक का पहाड़नुमा ढेर ।
लवणालय–पु० [सं०] १ मथुरा का एक नाम । २ नमक का घर ।
लवणासुर पु० [सं०] मधु राक्षस व रावण की मौसी का पुत्र एक राक्षस ।
लवणिम, लवणिमा–स्त्री० [सं० लवणिमन्] १ सुन्दरता, लावण्य । २ नाजुकता, कोमलता ।
लवणेश्वर–पु० [सं० लवणेश्वर] शिव का एक नाम ।
लवणोद, लवणोदक (दधि)–पु० [सं०] समुद्र, सागर ।
लवणी–पु० १ कनपटी । २ एक प्रकार की घास ।
लवणी (बो)–क्रि० [सं० लवनं] १ पक्षियों का बोलना, ध्वनि करना । २ गाय का रंभाना । ३ कुत्तों का भौंकना । ४ भेड़क का टर्राना । ५ भेड़ की ऊन कतरना । ६ फड़कना ।
लवधवरण–देखो 'लब्धवरण' ।
लवधुलउ, लवधुलो–वि० [सं० लुब्ध] आसक्त, लुब्ध ।
लवन–स्त्री० १ छेदन क्रिया । २ लवण ।
लवबांन–देखो 'लोबान' ।
लवर (रू)–पु० एक पक्षी विशेष ।
लवल–स्त्री० अग्नि की ज्वाला, शिखा ।
लवलबी–देखो 'लबलबी' ।
लवळी–पु० १ हरफखोरी नामक वृक्ष व उसका फल । २ एक विषम वर्ण-वृत्त । ३ एक लता विशेष ।
लवलीन–वि० [सं० लयलीन] १ तल्लीन, मग्न, तन्मय । २ लयलीन ।
लवलेस–वि० [सं० लव-लेश] किंचित, लेशमात्र ।
लवल्या–स्त्री० १ लगन, सुधि । २ इच्छा, उत्कण्ठा । ३ एकाग्रता, तन्मयता ।
लवाजमी, लवाजीवी–पु० [अ० लवाजिम] १ राजा-बादशाह की सवारी के साथ चलने वाला साज-सामान, नौकर-चाकर आदि । २ सामग्री, सामान ।
लवार, लवारकी–पु० १ पशु का छोटा बच्चा । २ देखो 'लुहार' ।
लवारणव–पु० [सं० लवाणंव] एक क्षेत्रपाल ।
लवारियो, लवारी–१ देखो 'लुहार' । २ देखो 'लवार' ।
लवावसण्यो लवावसरयो–पु० जो कर्म बंधन वाले अनुष्ठानों से दूर रहता हो ।
लविंग, लवींग–देखो 'लवंग' ।
लवीरी–स्त्री० एक प्रकार की सब्जी ।
लवेष–देखो 'लिबास' ।
लवें–देखो 'लव' ।
लवो–पु० १ भवन निर्माण में दीवार नापने का उपकरण विशेष । २ एक वृक्ष विशेष । ३ भुना व फूला हुआ अनाज का दाना । ४ तीतर जाति का छोटा पक्षी ।
लस–पु० [सं० लस्] १ चिपचिपाहट, चिपकने का गुण । २ लंबी लकीर ।—वि० पतला व लम्बा ।
लसकर, लसकरि–पु० [फा० लश्कर] १ सेना, फौज । २ समूह, झुण्ड । ३ फौज का सामान । ४ सेना का पड़ाव, छावनी । ५ जहाज पर काम करने वालों का दल । ६ भाला, बरछा । ७ लुटेरा ।
लसकरी–पु० १ सैनापति । २ जहाज संबंधी । ३ देखो 'लसकर' ।
लसक्कर–देखो 'लसकर' ।
लसड़की–पु० १ रगड़, खरोंच । २ टक्कर, धक्का, झटका । ३ सिल पर कोई चीज पीसने की क्रिया । ४ सहारा, मदद । ५ खुशामद, चापलूसी ।
लसण–पु० १ प्याज जाति का एक अन्य पौधा व इस पौधे के नीचे की गांठ । २ जन्म से ही शरीर पर अंकित कोई दाग । ३ मानक एक दोष । ४ एक रत्न विशेष ।
लसणि–स्त्री० १ भाव-भंगिमा । २ लसण ।
लसणियाहींग–स्त्री० एक प्रकार की हींग ।
लसणियो–देखो 'लसण' ।
लसणी–स्त्री० १ एक प्रकार की गाय । २ घर, दर ।
लसणीओ–देखो 'लसण' ।
लसणी (बो)–क्रि० १ शोभित होना, शोभा देना । २ लज्जित या शर्मिन्दा होना । ३ युद्धस्थल से भागना ।
लसन–देखो 'लसण' ।
लसपस–देखो 'लचपच' ।
लसरकी–देखो 'लसड़की' ।
लसलसाट, लसलसाहट–स्त्री० चिपचिपाहट ।
लसलसाणी (बो)–क्रि० चिपचिपाना, चिप-चिप करना ।
लसलसी–वि० (स्त्री० लसलसी) चिपचिपा ।
लसाणी (बो), लसावणी (बो)–क्रि० १ शोभित करना । २ पराजित कर भगाना । ३ शर्मिन्दा करना, फीका पटकना । ४ लिप्त करना ।
लसी–स्त्री० १ चिपचिपाहट, चेप । २ लस्सी ।
लसीका–पु० [सं० लसिका] थूक, लार ।
लसीली–वि० (स्त्री० लसीली) १ चिपचिपा । २ सुन्दर ।
लसूंबी–पु० १ लालिमा । २ चमक ।
लसोड़ी–पु० गूंदे का पेड़ व फल ।
लस्कर–देखो 'लसकर' ।
लस्सी–स्त्री० दही का गाढ़ा मट्ठा, पेय पदार्थ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहंगो–पु० स्त्रियों का घाघरा, अधोवस्त्र । गाउन ।
लहरिओ, लहंरीओ–देखो 'लहरियो' ।
लहरी–देखो 'लहर' ।
लहक–स्त्री० १ शोभा, सुन्दरता । २ लहकने की क्रिया या भाव । ३ ढंग या तरीका । ४ गायन की लय । ५ देखो 'लहको' ।
लहकडउ, लहकुडलउ–पु० [सं० लसत-कुत] कटाक्ष ।
लहकणो (बो)–क्रि० १ उड़ना, फहरना, हवा में लहराना । २ लटकना झूलना । ३ झूमना । ४ झूमते हुए चलना । ५ आग दहकना, लपटें निकलना । ६ लंगड़ाते हुए चलना । ७ हवा का झोंका लगना । ८ लहलहाना । ९ इच्छा करना । १० कटाक्ष करना । ११ लपलपाना, लचकना ।
लहकाणो (बो), लहकावणो (बो)–क्रि० १ उड़ाना, फहराना, हवा में लहराना । २ लटकाना, झुलाना । ३ झूमाना । ४ झूमते हुए चलाना । ५ आग दहकाना । ६ लंगड़ाते हुए चलाना । ७ हवा का झोंका लगाना । ८ लहलहाना । ९ इच्छा जगाना । १० कटाक्ष कराना ।
लहकुडलणो (बो)–देखो 'लहकणो' (बो) ।
लहको–पु० १ झलक, आभास । २ ढंग, तरीका ।
लहक–देखो 'लहक' ।
लहकणो (बो)–देखो 'लहकणो' (बो) ।
लहचाळ–देखो 'लैंचाल' ।
लहजो–पु० [अ० लहज] १ बात करने या बोलने का ढंग । २ स्वर, आवाज, लय । ३ अल्पकाल, क्षण ।
लहण–वि० १ लेने वाला । २ देखो 'लखण' ।
लहणायत–देखो लैंणायत' ।
लहणो–देखो 'लैंणो' ।
लहणो (बो)–देखो 'लैंणो' (बो) ।
लहण्यो–देखो 'लैंणो' ।
लहर–स्त्री० [सं० लहरि:] १ तरंग, हिलोर । २ पौधों का हिलना-डुलना, कंपन । ३ मन की मौज । ४ मन की उमंग । ५ आवेश, जोश । ६ क्षण, पल । ७ नशे का प्रभाव, तरंग । ८ अनुराग, प्रेम । ९ वायु का झोंका । १० महक, खुशबू । ११ कृपा, महर । १२ आनन्द, सुख का समय । १३ वस्त्रादि की छपाई की तिरछी रेखाएँ । १४ स्त्रियों के कान का एक आभूषण । १५ स्फुट गायन की क्रिया । १६ शंख की आवाज ।
लहरकणो (बो)–देखो 'लहरणो' (बो) ।
लहरकी–देखो 'लहर' ।
लहरणो (बो)–क्रि० १ बरसना, वर्षा होना । २ मंडराना, झूमना । ३ तरगें उठना, तरंगित होना । ४ प्रसन्न होना । ५ लहरें बनना । ६ वायु से हिलना, लहलहाना । ७ लपटें उठना, लपटें हिलना । ८ शोभित होना, फबना । ९ नशे का प्रभाव होना । १० अनुरक्त होना, आसक्त होना । ११ मन में उमंगें उठना ।
लहरदार–वि० जिसमें लहरें या तरगें हों धारीदार ।
लहरनिध (निधि)–पु० [सं० लहर-निधि] समुद्र, सागर ।
लहरबखाळ–वि० बड़ा दाता, उदारचित्त ।
लहरसख–पु० अर्थ सिद्धि के लिये बोलने वाला शंख ।
लहरांण–स्त्री० लहरें, लहर ।
लहराज–पु० शेष नाग ।
लहराणो (बो), लहरावणो (बो)–क्रि० फहराना, हवा में उड़ना, लहरें खाना । लहरें उठना ।
लहरि–देखो 'लहर' ।
लहरियादार–वि० लहरदार, तिरछी व रंग-बिरंगी रेखाओं वाला ।
लहरियो–पु० १ रंग-बिरंगी व तिरछी रेखाओं का वस्त्र । २ एक लोक गीत ।
लहरी–वि० १ लहरों वाला । २ मन मौजी । ३ दातार, दानी । ४ जोशीला । ५ खुश-मिजाज ।—पु० १ समुद्र, सागर । २ देखो 'लहर' ।
लहरीओ–देखो 'लहरियो' ।
लहरी–देखो 'लहर' ।
लहरीयो–देखो 'लहरियो' ।
लहरीरव, लहरीरवण–पु० [सं०] समुद्र, सागर ।—वि० १ लहरों वाला । २ उदार, दानी ।
लहरीस–पु० [सं०] १ समुद्र, सागर । २ जोश व आवेश युक्त । ३ उमंगों वाला ।
लहरीसमव–वि० दानवीर, उदार ।—पु० समुद्र ।
लहरी–देखो 'लहर' ।
लहरियो–देखो 'लहरियो' ।
लहल–पु० एक प्रकार की राग ।
लहलहणो (बो), लहलहाणो (बो), लहलहावणो (बो)–क्रि० १ हवा मे हिलना, झोंका खाना । २ हिलना, कांपना । ३ फहराना, उड़ना । ४ पुष्पित, पल्लवित होना । ५ हरा-भरा होना । ६ स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट होना । ७ आनंदित होना, खुश होना ।
लहल्लह–स्त्री० युद्ध में भैरव या युद्ध के देवता की आवाज ।
लहवाणो (बो)–क्रि० छोटा होना, लघु होना ।
लहसण–देखो 'लखण' ।
लहसणो (बो)–क्रि० प्राप्त होना, मिलना ।
लहि–अव्य० तक, पर्यन्त ।
लहिट्टयो–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।
लहिर, लहिरी–देखो 'लहर' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहीढोळणी–पु० प्रसव संबंधी एक संस्कार ।

लहु–वि० १ शीघ्र कार्य करने वाला । २ हलका । ३ निस्सार । —अव्य० तक, पर्यंत । देखो 'लघु' ।—पु० १ एक मात्रिक छन्द । २ खून ।

लहुड़ियो, लहुड़ो लहुड़उ, लहुडी–देखो 'लघु' ।

लहुरा–वि० लघु छोटा ।

लहुवय–देखो 'लघुवय' ।

लहू–१ देखो 'लघु' । २ देखो 'लहु' ।

लहूअउ, लहूडी–देखो 'लघु' । (स्त्री० लहूअडी)

लहेरी–पु० समुद्र, सागर ।—वि० लहरों वाला, लहरदार ।

लहेरी–पु० एक छोटा पौधा ।

लहोड़ा–पु० १ शस्त्र, प्रहार । २ देखो 'लोह' । ३ देखो 'लघु' ।

लह्यु–पु० एक ऋषि ।

लह्यणो (बो)–देखो 'लैणो' (बो) ।

लाई–वि० बाया, वाम ।

लांक, लांकड़ी–स्त्री० १ छवि, भंगिमा । २ देखो 'लंक' ।

लांकी–स्त्री० लोमड़ी ।

लांकीमूळी–पु० एक गंदा उद्भिद ।

लांकोलो–वि० (स्त्री० लांकोली) १ सुन्दर । २ रंगीन ।

लांको–पु० नर लोमड़ी लुमड़ ।

लांखणो (बो)–क्रि० गिराना, डालना, फेंकना ।

लांग–स्त्री० १ लावड़ देवी की एक बहन । २ धोती या लंगोट का वह छोर जो दोनों जांघों के बीच से कमर के दोनों ओर बंधा रहता है ।३ धोती की छोर,किनार । ४ देखो 'लवंग' ।

लांगड़–पु० [सं० लांगलम] १ सूअर, वराह । २ देखो 'लांगळ' । ३ देखो 'लंगड़ो' ।

लांगड़अस्त्र–पु० सूअर, वराह ।

लांगड़ी–१ देखो 'लांगी' । २ देखो 'लंगड़ी' । (स्त्री० लांगडी)

लांगटियो–पु० बाजरी के आटे का बना खाद्य पदार्थ विशेष ।

लांगडी–पु० चकमक के लगने वाली डोरी ।

लांगदार–वि० लांग वाली ।—पु० धोती पहनने का एक ढंग ।

लांगळ–पु० [सं० लांगल] १ खेत जोतने का हल । २ एक देश का नाम ।—धुज, ध्वज–पु० बलराम । हलधर ।

लांगलचक्र (क्क)–पु० [सं० लांगलम्+चक्र] ज्योतिष में एक चक्र विशेष ।

लांगळो–पु० [सं० लांगलिन्] १ बलराम, हलधर । २ नारियल का पेड़ । ३ सांप, सर्प । ४ एक पौराणिक नदी । ५ कृष्ण-भक नामक औषधि । ६ देखो 'लांगूळो' ।

लांगळीस–पु० [सं० लांगलं-ईश] १ बलराम । २ शिव लिंग ।

लांगुळ, लांगुल, लांगूल–पु० [सं० लांगुलं, लांगलं] १ पूंछ, दुम । २ बन्दर, वानर । ३ शिश्न, पुरुषेन्द्रिय । ४ हल की तरह का एक शस्त्र । ५ देखो 'लंगूर' ।

लांगूळी–पु० [सं० लांगूलिन्] १ बंदर, वानर । २ लंगूर । ३ हनुमान, बजरंग ।

लांगेरी–पु० झड़बेरी के सूखे कांटों का समूह ।

लांगोदर–पु० एक लोक गीत ।

लांगो–पु० [सं० लांगूलिन्] १ बंदर, वानर । २ लंगूर । ३ हनुमान, बजरंग । ४ भैरव । ५ वीर, बहादुर । ६ देखो 'लंगड़ी' ।

लांघड़ी–देखो 'लंगडी' ।

लांघण–पु० [सं० लंघनम्] १ भोजन का त्याग । २ व्रत, उपवास । ३ कूद, फांद, उछल । ४ घोड़े की एक चाल । ५ उल्लंघन । ६ सीमा का उल्लंघन ।

लांघणिओ लांघणियो–वि० १ जिसने भोजन का त्याग किया हो, लंघन किया हो । २ व्रत रखने वाला । ३ कूद-फांद करने वाला । ४ देखो 'लांघण' ।

लांघणीक–वि० १ भूखा । २ कृशोदर ।

लांघणो–देखो 'लांघणियो' ।

लांघणो (बो)–क्रि० [सं० लंघनम्] १ किसी चीज के ऊपर होकर जाना, उल्लंघन करना, पार करना । २ छलांग लगाकर किसी के ऊपर से जाना, कूदना । ३ पार करना, तय करना । ४ किसी के ऊपर से गुजरना । ५ सीमा के बाहर होना । ६ व्यतीत होना, करना । ७ त्यागना, छोड़ना । ८ नियम भंग करना, तोड़ना ।

लांघियो–देखो 'लांघणियो' ।

लांघो–देखो 'लांगो' ।

लांच–स्त्री० १ कमी, अभाव । २ दोष, कलंक । ३ घूंस, रिश्वत । ४ बाधा, कठिनाई । ५ छुकाव । ६ दंगा, फरेब । ७ किंचित शंका ।

लांछण (न)–देखो 'लांछन' ।

लांछी–स्त्री० विलंब, देरी ।

लांछो–पु० १ भविष्य के लिये सुरक्षित कर रखने का अच्छा चारा, घास । २ खर्च की पूर्ति के लिये लिया जाने वाला कर । —वि० बुरा, अशुभ ।

लांछण (न)–पु० [सं० लक्षण] १ दाग, धब्बा । २ दोष या आरोप । ३ कलंक ।

लांजउ–पु० एक प्राचीन देश ।

लांजो–देखो 'लंजो' ।

लांठ–पु० १ पशु या मवेशियों का समूह । २ देखो 'लांठो' ।

लांठाई–स्त्री० १ जोरावरी, जबरदस्ती । २ सीनाजोरी, ज्यादती । ३ बड़प्पन ।

लांठापण (पणो), लांठापो–पु० १ बड़प्पन । २ जोरावरी, जबरदस्ती । ३ सीनाजोरी ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लांठो–वि० [सं० लुंठकः] (स्त्री० लांठी) १ जबरदस्त, जोरदार। २ शक्तिशाली, बलवान। ३ वीर। ४ बड़ा। ५ दृढ़, मजबूत। ६ विशाल, भारी। ७ प्रतिष्ठित, सम्मानीय। ८ आयु में बड़ा, वयस्क। ९ दीर्घ, लंबा। १० अत्यधिक, बहुत। ११ महान्, बड़ा। १२ समर्थ, सक्षम। १३ महत्वपूर्ण। १४ श्रेष्ठ, उत्तम। १५ खराब, बदतर। १६ बड़ा भारी। १७ संख्या, मान, मात्रा में जो अधिक हो। १८ कठिन मुश्किल। १९ धनी, अमीर।

लांड–वि० १ जबरदस्त, जोरदार। २ शक्तिशाली, बलवान।

लांण–वि० बेचारी।

लांणत (ति)–स्त्री० १ धिक्कार, फटकार, भर्त्सना। २ निंदा अपकीर्ति।

लांणी–पु० एक प्रकार का पौधा।

लांनत (ती)–देखो 'लांणत'।

लांप, लांपड़ी, लांपड़ो, लांपळियो, लांपळो–पु० अत्यन्त बारीक सींक वाला, छोटा घास विशेष।

लापो–पु० [सं० ज्वालाप] १ दाह क्रिया में रथि में आग लगाने के लिये जलाया जाने वाला घास। २ शव-दाह की अग्नि। ३ अग्नि, आग। ४ निर्लज्जता पूर्ण बात या काम। —वि० निर्लज्ज।

लांफु, लांकू, लांफी–वि० १ सीधा-सादा, सरल। २ लुच्चा, लफंगा।

लांब–स्त्री० समय की लंबाई, दूरी।

लांबक-झूंबक–पु० गुच्छा।—क्रि० वस्त्र-गहनों से अलंकृत।

लांबड़धकै–क्रि०वि० फटकारने, डांटने, बुरा भला कहने के लिये।

लांबछड़–देखो 'लांमछड़'।

लांबाहाथ–पु० १ आजानबाहु। २ अपना कार्य साधने की शक्ति।

लांबीकांचळी, लांबाबायांरी–स्त्री० विधवा स्त्रियों के पहनने की कचुकी।

लांबेड़ो–पु० उद्दण्ड पशु को बांधने का लंबा रस्सा।

लांबोड़ो, लांबो–वि० [सं० लंब] (स्त्री० लांबी) १ जिस की समानान्तर दूरी बहुत हो, लंबा। २ काफी ऊंचा उठा हुआ। ३ समय या अवधि में बड़ा, लंबा। ४ विस्तृत। ५ बहुत देर में पूरा होने वाला। ६ विशाल।

लांम–स्त्री० लड़ाई, युद्ध।

लांमछड़–स्त्री० एक प्रकार की बंदूक।—वि० छड़ी की तरह लंबा।

लांमण–देखो 'लांवण'।

लांमणीजणो (बो)–देखो 'लांवणीजणो' (बो)

लांमी–वि० हल्की, ओछी।

लांमो–पु० (स्त्री० लांमी) १ बौद्धों के धर्माचार्य। २ ऊंट की तरह पागुर करने वाला एक घास भक्षी जीव। ६ देखो 'लांबो'।—वि० हल्का, छोटा, तुच्छ।

लांयणी–देखो 'लाइणी'।

लांवण–स्त्री० १ स्त्रियों के लहंगे या घाघर का निचला किनारा। २ ऋतुमति स्त्रियों के ससर्ग से कुछ वस्तुओं में होने वाला विकार।

लांवणीजणो (बो)–क्रि० १ ऋतुमति स्त्रियों के संसर्ग से वस्तुओं मे विकार होना। २ इसी तरह अन्यत्र कहीं प्रभाव होना।

लांवणो–पु० १ बांटी जाने वाली मिठाई का भाग। २ देखो 'लवणो'।

लांवमुहो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

लांहण–देखो 'लाहण'।

ला–पु० १ खून, रक्त। २ रंग। ३ नालिका। ४ स्त्री के बाल। ५ रति। ६ लक्ष्मी। ७ कुछ शब्दों के आगे लगने वाला एक उपसर्ग। ८ देखो 'लाह'।

लाइ–देखो 'लाय'।

लाइक–देखो 'लायक'।

लाइकी–देखो 'लायकी'।

लाइणी–पु० अग्नि काण्ड, आग।

लाइणी(बो)–क्रि०१ स्पर्श करना, लगाना। २आलिंगन में लेना। ३ देखो 'लाणी' (बो)।

लाइन–स्त्री० [अं०] १ पंक्ति, कतार, शृंखला। २ रेखा, लकीर। ३ रेल की पटरी। ४ व्यवसाय, पेशा। ५ विषय। ६ स्वभाव, प्रकृति।

लाई–वि० (स्त्री० लांण, लायण) १ बेचारा, गरीब। २ दया का पात्र। [सं० लात] ३ अपनाया हुआ, ग्रहीत।

लाईरांड–वि० १ कमजोर, डरपोक। २ बेचारा, असहाय। ३ बिगड़ा हुआ, बेकार। ४ खेदजनक, लज्जाजनक। ५ मूर्ख।

लाउबो–देखो 'लाबो'।

लाऊड़ो–देखो 'लासू'।

लाऊलपो, लाऊलाऊ–स्त्री० हर समय की हाय-तोबा, हाय-हाय, हा-हुल्लड़।

लाकड़, लाकड़ि–पु० १ लकड़ी का कुंदा। २ लकड़ी।

लाकड़ियो–पु० खूबकला नामक घास या उसकी औषधि।

लाकड़ी (डि, डी)–स्त्री० लकड़ी।

लाकड, लाकडियो, लाकडो–देखो 'लकड़ी'।

लाकिनी–स्त्री० मांस योगिनी, एक देवी।

लाको–पु० आबादी के पास का ऊंचा स्थान।

लाक्षकी–स्त्री० [सं०] जानकीजी का एक नाम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाक्षणिक–पु० [सं०] १ लक्षण जानने वाला व्यक्ति। २ एक मात्रिक छंद।—वि० १ लक्षण जानने वाला। २ लक्षणों से युक्त। ३ जिससे लक्षण प्रगट हों। ४ गौणार्थवाची। ५ लक्षणा-शक्ति पर आधारित।

लाक्षा–स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का लाल रंग, महावर। २ लाख।

लाक्षागृह–पु० [सं०] कौरवों द्वारा पांडवों को जलाने के लिये निर्मित लाख का घर।

लाक्षातैल, लाक्षादितैल–पु० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का तेल।

लाछमण–देखो 'लक्ष्मण'।

लाख–स्त्री० [सं० लाक्षा] १ राल, चपड़ी आदि की तरह का एक लाल पदार्थ। २ एक वृक्ष विशेष।—वि० १ एक हजार का सौगुणा। २ इस परिमाण के समान।–क्रि०वि० अनेक बार। देखो 'लक्ख'।—पत, पति, पती, पत्ति, पत्ती––वि० लाखों का स्वामी, धनी।—पसाउ, पसाव–पु० चारणों आदि को दिया जाने वाला लाख रुपयों का पुरस्कार।

लाखण–देखो 'लक्षण'।

लाखणउ–देखो 'लाखीणो'।

लाखमण–देखो 'लक्ष्मण'।

लाखर, लाखरी–देखो 'लाखेरो'।

लाखलाखिणी–स्त्री० स्त्रियों की एक कीमती ओढ़णी।

लाखवरीस–देखो 'लक्षवरीस'।

लाखहरह (हर, हरे)–देखो 'लाक्षागृह'।

लाखांणी–स्त्री० 'लाखा-फूलांणी' के नाम का एक लोक गीत।—वि० लाख से संबंधित।

लाखांपसाउ (पसाव)–देखो 'लाखपसाव'।

लाखाघर (घर)–देखो 'लाक्षागृह'।

लाखारस–देखो 'लखारस'।

लाखावट–पु० सिवाना के किले का नाम।

लाखिक–देखो लाखीक'।

लाखिराज–वि० कर मुक्त।

लाखो लाखीक, लाखीकउ, लाखोको–वि० (स्त्री० लाखीकी) १ लाख रुपये मूल्य का। २ लाख का।

लाखीणी–स्त्री० दुल्हिन के पहनने की लाख की चूड़ी।—वि० १ लाखों की। २ अति कीमती या महत्वपूर्ण।

लाखीणो–वि० [सं० लक्षम्] (स्त्री० लाखीणी) १ लाख रुपये मूल्य का। २ लाखों में एक। ३ उत्तम व श्रेष्ठ गुणों वाला। ४ पवित्र, पावन। ५ मूल्यवान, कीमती। ६ अति महत्वपूर्ण। ७ दुर्लभ्य। ८ अमूल्य।

लाखोटी (खेटो)–देखो 'लाखोटो'।

लाखेक–वि० लाख के लगभग।

लाखेर, लाखेरी–स्त्री० हल्के लाल व श्याम वर्ण की गाय या बकरी।

लाखेरो–पु० हल्के लाल व श्याम वर्ण का घोड़ा, बैल आदि।

लाखेसरी, लाखेस्वरी–देखो 'लक्षेसरी'।

लाखोटी–पु० १ तालाब के मुख्य घाट के सामने बना मिट्टी का ऊंचा ढेर। २ लाख की मुद्रा (सील)।

लाखोफूलांणी–पु० एक यादव राजा जिसके नाम के लोक गीत गाये जाते हैं।

लाखो–पु० एक रंग विशेष।

लाग–स्त्री० १ लगने की क्रिया या भाव। २ अनुराग, प्रेम। ३ लगन, लौ, धुन। ४ इच्छा, चाह। ५ ईर्ष्या। ६ संबंध, सम्पर्क। ७ मौका, अवसर। ८ कुछ देने की रस्म। ९ दक्षिणा, भेंट। १० लगान, कर। ११ औषधि या खाद्य पदार्थ में दिया जाने वाला किसी अन्य वस्तु का पुट, मिश्रण। १२ नशे का व्यसन। १३ किसी कार्य के प्रति लगाव या उत्तरदायित्व। १४ एक प्रकार का नृत्य। १५ प्रतिस्पर्धा, होड़। १६ जागीरदारों द्वारा अपनी प्रजा से ली जाने वाली बेगार।—वि० योग्य, काबिल।—क्रि०वि० लिए, वास्ते।

लागट–पु० ऊंट के पैर और 'हौदर' के रगड़ खाने से होने वाला घाव तथा ऐसे घाव से पीड़ित ऊंट।

लागणियो–देखो 'लागणो'।

लागणी–वि० (स्त्री० लागणी) १ मारने वाला, चोट या घात करने वाला। २ हानि करने वाला। ३ आकृष्ट या मोहित करने वाला। ४ लगने वाला। ५ देखो 'लागट'।

लागणो (णी)–क्रि० १ स्पर्श होना, छूना। २ चिपकना, लिपटना। ३ पहुँचना। ४ खर्च होना, व्यय होना। ५ बीतना, व्यतीत होना। ६ नियोजित होना। ७ प्रस्फुटित होना, अंकुरित होना। ८ पुष्पित-पल्लवित होना। ९ अनुभूति होना, आभास होना। प्रतीत होना। मालूम होना। १० प्रभाव या असर होना। ११ चोट लगना। १२ लगना। १३ मन को भाना। १४ प्रवृत्त होना, संलग्न होना। १५ करना। १६ होना। १७ प्रारंभ होना, शुरू होना। १८ फैलना, पसरना। १९ छाना, आच्छादित होना। २० प्रविष्ट होना। २१ प्रेरित होना। २२ अनुगत होना, पीछे लगना। २३ पीछे पड़ना। २४ रंग, दाग आदि का लगना, पड़ना, चढ़ना। २५ किसी विशेष स्थिति में होना। २६ जुड़ना, टंकना, जड़ा जाना। २७ प्रज्वलित होना। २८ नशे का आदी होना। २९ लेपन होना, पोता जाना। ३० जुड़ना, संलग्न होना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३१ अभ्यस्त होना। ३२ काम करने की दशा में होना। ३३ चुभना, गड़ना। ३४ उपयोग होना। ३५ मंडराना। ३६ लाक्षणिक अर्थ में कलंक, दोष आदि की दशा होना। ३७ खपत होना। ३८ संबंध होना, संबंधित होना। ३९ रगड़ खाना। ४० कर, लगान, भेंट, रस्म के रूप में कुछ दिया जाना। ४१ किसी पदार्थ को विकृत करने वाले कीड़े या जीव पैदा होना, लगना। ४२ पकाते समय बर्तन के पैंदे मे कुछ चेंठ जाना चिपकना। ४३ टकराना। ४४ अच्छा-बुरा दिखना। ४५ क्रम पर आना। ४६ अंकित होना। ४७ अनैतिक संबंध होना। ४८ मैथुन किया जाना। ४९ हर्ष, ईर्ष्या, क्रोध जैसी मानसिक स्थिति बनना।

लागत–स्त्री० १ व्यय, खर्च। २ खपत। ३ देखो 'लागट'।

लागतीरकम–स्त्री० विविध करों, लागों आदि से मिलने वाली रकम।

लागदार–वि० १ नेग या दस्तूर लेने वाला, नेगदार। २ कर, लगान आदि लेने वाला। ३ करदाता।

लागबाग, लागभाग–पु० १ लगान, कर। २ दक्षिणा। ३ भेंट। ४ दस्तूर, नेग।

लागमी–देखो 'लाग'।

लागलपेट–स्त्री० १ लुकाव-छुपाव। २ छल, कपट। ३ अस्पष्टता। ४ शंका, लिहाज, शर्म। ५ संबंध, लगाव।

लागव–पु० वैरी, शत्रु।

लागवाग–देखो 'लागबाग'।

लागु, लागू–वि० १ वैरी, दुश्मन। २ पीछे पड़ने वाला। ३ हर समय पीछे-पीछे रहने वाला, पीछे लगा रहने वाला। ४ कायम, मुकर्रर। ५ लगने योग्य। ६ प्रयुक्त होने योग्य।

लागोड़ो–वि० लगा हुआ। संबंध जुड़ा हुआ।

लाघव–पु० [सं० लाघवं] १ लघुता, छोटापन। २ कमी अल्पता। ३ हल्कापन। ४ अप्रतिष्ठा, निंदा, अपकीर्ति। ५ शीघ्रता, तेजी, फुर्ती। ६ तत्परता। ७ वेग। ८ हाथ की सफाई, चालाकी, दक्षता। ९ संक्षिप्तता। १० नपुंसकता। ११ आरोग्यता।

लाड़वाड़ लाड़वाड़ियो–देखो 'लारवाळ'।

लाड़ायी, लाड़ेची–पु० (स्त्री० लड़ायी) १ बुरी आदत वाला पशु। २ बिना निमंत्रण भोजन करने वाला व्यक्ति।

लाड़ो–वि० वृद्ध, बूढ़ा।

लाचार–वि० [अ०] १ विवश, मजबूर। २ दीन, दुःखी, बेचारा। ३ असमर्थ, असहाय।

लाचारगी, लाचारी–स्त्री० [अ०] १ विवशता, मजबूरी। २ असमर्थता, असहायावस्था। ३ दीनावस्था।

लाच्छ, लाच्छी, लाछ–देखो 'लक्ष्मी'। —वर='लक्ष्मीवर'। —वर=लक्ष्मीवर'।

लाछरी–स्त्री० एक वस्त्र विशेष।

लाछि, लाछी–देखो 'लक्ष्मी'। —वर, वर='लक्ष्मीवर'।

लाछुबाई–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

लाज–स्त्री० [सं० लज्जा] १ लज्जा, शर्म। २ संकोच, झिझक। ३ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। ४ मर्यादा, गौरव। ५ लगाम, बाग। नकेल। ६ रस्सी।

लाजणो (बो)–क्रि० १ लज्जित या शर्मिन्दा होना। २ संकोच करना, झिझकना। ३ अप्रतिष्ठा होना, निंदा, अपकीर्ति होना। ४ असम्मान होना, अपमान होना। ५ हल्का या लघु महसूस करना।

लाजम, लाजमी–देखो 'लाजिमी'।

लाजमी–पु० १ सभ्यता, शिष्टता। २ देखो 'लवाजमो'।

लाजलज्जाळु (ळू)–देखो 'लजाळू'।

लाजवंत–देखो 'लज्जावंत'।

लाजवंती, लाजवती–स्त्री० १ एक वनस्पती (क्षुप) विशेष। २ देखो 'लज्जावंती'।

लाजवरद–पु० [सं० राजवर्त्तक] १ एक रत्न विशेष। २ विलायती नील। ३ हल्का नीला रंग।

लाजवरदो–वि० हल्के नीले रंग का।

लाजवाब–वि० [फा०] १ निरुत्तर, जवाब देने में असमर्थ। २ जिसका जवाब न हो। ३ अद्वितीय, बेजोड़।

लाजा–देखो लाज'।

लाजामुख–स्त्री० आंख की शर्म, लाज।–वि० लज्जित रहने वाली, लज्जाशील।

लाजाळु (ळू)–देखो लजाळू'।

लाजि–देखो 'लाज'।

लाजिम (मो)–वि० [अ०] १ उचित, मुनासिब। २ आवश्यक, जरूरी। ३ निश्चय।

लाजी–पु० १ एक प्राचीन प्रदेश। २ देखो 'लाज'।

लाजु-काजु–पु० बारात की सूचना कन्या पक्ष को देने वाले को दिया जाने वाला एक पुरस्कार।

लाजो–देखो 'लाज'।

लाट–पु० १ एक देश का नाम। २ गुजरात के एक प्रदेश का नाम। [अं० लॉर्ड] ३ ब्रिटिश शासन काल की एक उपाधि। ४ ब्रिटिश संसद के उच्च सदन के सदस्यों की उपाधि। ५ वस्तु का ढेर या समूह। ६ समूह, झुण्ड। ७ एक व्यावसायिक जाति व उसका व्यक्ति। ८ लाटानुप्रास, एक अलंकार। ९ कसक। १० लूटने की क्रिया। ११ बड़ा सरदार। [सं० लाटः] १२ पुराना कपड़ा, जीर्ण वस्त्र। –वि० १ शक्तिशाली, जबरदस्त। २ देखो 'लाठी'। ३ देखो 'लाठ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाटणी–स्त्री० १ खलिहान में काम आने वाला एक उपकरण। २ जागीरदार या भू-स्वामी द्वारा उपज का भाग लेने की क्रिया।

लाटणो (बो)–क्रि० [सं० लाटनम्] १ जागीरदार या भूस्वामी द्वारा कृषि उपज से अपना भाग लेना। २ ऋण के बदले में अनाज आदि वसूल करना।

लाटरी–स्त्री० [अं०] टिकट बेचकर या चंदा एकत्र कर संग्रहीत धन में से कुछ निश्चित राशि को चिट द्वारा या नंबरों द्वारा सीमित लोगों में पुरस्कार की तरह बांटना क्रिया।

लाटानुप्रास–पु० एक प्रकार का अलंकार।

लाटियो–पु० चड़स निकालने के चक्र की धुरी।

लाटूपाटू–वि० १ डरपोक, कायर। २ कमजोर, अशक्त। ३ असाधारण। ४ तुच्छ, नगण्य।

लाटो–पु० १ खलिहान। २ खलिहान में पड़ा अनाज। ३ हिस्सा, बंटवारा।

लाठ–स्त्री० १ काफी ऊंचा व मोटा खंभा, स्तंभ। २ कोल्हू में फिरने वाला लकड़ी का स्तंभ। ३ रहट में लगा मोटा लट्ठा इसी तरह छाजन आदि में लगा लट्ठा, बल्ली। ४ देखो 'लाट'। ५ कपास से रूई छांटने का उपकरण।

लाठा–स्त्री० एक जाति विशेष।

लाठी–स्त्री० [सं० यष्ठी] १ पतली व लंबी लकड़ी। २ घोड़ों के सूम पर होने वाला एक रोग।—**अल, अल्ल**–वि० हाथ में लाठी रखने वाला।—**बाज**–वि० लट्ठबाज।

लाठो–देखो 'लट्ठो'।

लाड–पु० [सं० लाड्] १ बच्चों को किया जाने वाला प्यार, दुलार। २ प्यार, प्रेम। ३ एक देश का नाम।

लाडउ, लाडकड़ो, लाडकलो–देखो 'लाडको'। (स्त्री० लाडकी)

लाडकवायो–वि० जिसका बहुत लाड या प्यार हो। लाडला।

लाडकियो–देखो 'लाडको'। (स्त्री० लाडकी)

लाडको–वि० प्यारी, दुलारी।

लाडकोड–पु० १ हर्ष, खुशी। २ प्यार-दुलार संबंधी क्रियाएँ।

लाडको–वि० (स्त्री० लाडकी) अधिक प्यारा, दुलारा, प्रिय।

लाडगहेलो, लाडगेलो–वि० (स्त्री० लाडगहेली) अधिक प्यार दुलार के कारण इतरा हुआ, उद्दण्ड।

लाडडो–देखो 'लाडलो'।

लाडण–पु० [सं० लालन] १ सुन्दर पति। २ दूल्हा या दुल्हिन। –स्त्री० ३ पत्नी।–वि० लाडला, प्यारा।

लाडणउ, लाडणो–पु० १ ऊंट के तंग के साथ लटकने वाला फूलों का गुच्छा। २ स्त्रियों के लहंगे के नाड़े के शिरों पर बने फूंदे। ३ देखो 'लाडलो'।

लाडणी–देखो 'लाडो'।

लाडणो (बो)–क्रि० लाड करना, प्यार करना।

लाडबाई–स्त्री० एक देवी का नाम।

लाडल, लाडलड़ो–वि० (स्त्री० लाडली, लाडलड़ी) प्यारा, दुलारा।

लाडळदे (वे)–देखो 'लाडली'।

लाडलिपि–स्त्री० एक प्रकार की लिपि।

लाडली–स्त्री० १ पत्नी, भार्या। २ दुल्हिन, नववधू। ३ राधिका।–वि० प्यारी, दुलारी।

लाडलो–पु० १ पति। २ दूल्हा।–वि० (स्त्री० लाडली) प्यारा, प्रिय, दुलारा।

लाडवो–देखो 'लाडू'।

लाडिकूं, लाडिको–देखो 'लाडको'। (स्त्री० लाडकी)

लाडिलउ, लाडिलो–देखो 'लाडलो'। (स्त्री० लाडली)

लाडी–स्त्री० [सं० लालनी] १ पत्नी, स्त्री। २ सुंदर नायिका। ३ दुल्हिन, नव-वधू। ४ जागीरदार, सामंतों की स्त्रियों के प्रति एक सम्मान सूचक संबोधन शब्द। ५ पुत्री, बेटी। ६ छोटों के प्रति प्रियवाचक संबोधन।–वि० प्यारी, दुलारी।

लाडु, लाडू, लाडूड़ो, लाडूव–पु० १ मिठाई या किसी वस्तु का गेंद की तरह बनाया हुआ गोला। २ प्रिय वाचक संबोधन।

लाडेलड़ो लाडेलो–देखो 'लाडलो'।

लाडेसर–वि० १ अधिक प्यारा, प्रिय। २ प्यार में उद्दण्ड हुवा हुआ।

लाडो–पु० (स्त्री० लाडी) १ दूल्हा, वर। २ मालिक, पति, स्वामी।–वि० प्यारा।

लाढ–पु० प्रासुक आहार-निर्वाह करने वाला।

लाणो (बो)–क्रि० १ कुछ लेकर आना। २ लाकर रखना। ३ खरीदना। ४ दिखाना, प्रगट करना। ५ उत्पन्न करना।

लात–स्त्री० १ पांव, पैर। २ पैर का आघात।

लातर–स्त्री० १ फटकार, प्रताड़ना। २ थकान। ३ परेशानी।

लातरणो–वि० १ थकने वाला, हैरान होने वाला। २ पथ भ्रष्ट होने वाला। ३ शर्मिंदा, लज्जित। ४ हारने वाला। ५ फटकारने वाला।

लातरणो (बो)–क्रि० १ थकना, हैरान होना। २ पथ-भ्रष्ट होना। ३ फटकारना।

लातरो–पु० ककड़ी आदि का सूखा छिलका।

लाद–स्त्री० १ पशु की पीठ पर लादा जाने वाला बोझा। २ ऊंट की पीठ पर लदा भूसे का बोरा या चारे का गट्ठर। ३ चमड़े का जल-पात्र। ४ देखो 'लीद'।

लादक–स्त्री० लद्दू पशु की पीठ।–वि० सवारी करने या लादने योग्य।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लावड़ी–देखो 'लाद' ।

लावणभार–पु० गधा, खर ।

लावणी(नी)–क्रि० १ बोझा लादना, पशु की पीठ या किसी वाहन पर बोझा रखना । २ भार से परिपूर्ण होना, आच्छादित करना । ३ अनिच्छित अधिक उत्तरदायित्व डालना । ४ कुश्ती में विपक्षी को पीठ पर उठाना ।

लादियो–पु० १ घोड़े की गुदा । २ देखो 'लादी' ।

लादी–स्त्री० १ चौड़ा, चौकोर पत्थर । २ घास आदि का छोटा गट्ठर ।

लादी–पु० १ पशु पर लाद कर या शिर पर उठाकर लाने का लकड़ियों का गट्ठर । २ वजन, बोझ । ३ ओस, शबनम ।

लाधउ–देखो 'लाभ' ।

लाधणो (नी)–देखो 'लाभणो' (नी) ।

लापड़–देखो 'लापड़ी' ।

लापड़कनो–पु० बड़े कानों वाला पशु ।

लापड़ी–वि० (स्त्री० लापड़ी) बड़ा और लंबा (कान) ।–पु० १ बड़े कानों वाला पशु । २ मोट के साथ लगा रहने वाला चमड़े का टुकड़ा ।

लापता–वि० १ जिसका पता न हो, लुप्त । २ जो खोगया हो, गायब । ३ छिपा हुआ, गुप्त । ४ बिना पता लिखा ।

लापर–देखो 'लोफर' ।

लापरपण (पणो)–देखो 'लोफरपणो' ।

लापरवा (ह)–वि० १ जिसे चिन्ता, फिकर न हो, बेफिक्र, निश्चिन्त । २ असावधान । ३ कार्य व उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन ।

लापरवाई (ही)–स्त्री० १ निश्चिन्तता, बेफिक्री । २ असावधानी । गफलत । ३ अनुत्तरदायित्व ।

लापळी–देखो 'लांप' ।

लापसड़ी, लापसी, लापी, लाफसी–स्त्री० [सं० लप्सिका] गुड़ व गेहूं के दलिये का बना भोज्य पदार्थ ।

लाबाळी–देखो 'लबाळी' ।

लाभकर–देखो 'लाभकर' ।

लाभ–पु० [सं० लभ्] १ प्राप्ति । २ हित । ३ सुअवसर । ४ फल, नतीजा । ५ उपकार, भलाई । ६ ब्याज का धन । ७ मुनाफा, फायदा । ८ व्यापार में कमाई । ९ आनन्द, मौज । १० सुधार, सुफल । ११ एक प्रकार का चौघड़िया । —कर, कारक, कारी–वि० फायदा या लाभ पहुंचाने वाला ।

लाभणो (नी)–क्रि० [सं० लब्ध] १ प्राप्त करना, पाना, मिलना । २ जानना, पहचानना । ३ प्राप्त होना । ४ अचानक उपलब्ध होना । ५ ढूंढने, खोजने से मिलना, पाजाना । ६ मन में सूझना, उपजना । ७ लाभ होना, फायदा होना ।

लाभस्थान–पु० [सं० लभ्-स्थान] जन्म कुण्डली में एक स्थान ।

लाभांतराय–पु० [सं०] लाभ में विघ्न पड़ने का कर्म विशेष (जैन) ।

लाय–स्त्री० [सं० ज्वलात] १ दावानल, अग्नि, आग । २ लपट, ज्वाला । ३ जलने की क्रिया या भाव । ४ प्रचंड गर्मी ।

लायक–वि० [अ० लाइक] १ सुयोग्य, । २ उचित, ठीक । ३ गुणवान, गुणी । ४ समर्थ ५ भला, सीधा । ६ किसी कार्य के लिये उपयुक्त । ७ शिष्ट ।—पु० मंत्री ।

लायकी–स्त्री० सभ्यता, शराफत, बड़प्पन । शिष्टता ।

लायक–देखो 'लायक' ।

लायझळ–स्त्री० आग की ज्वाला, लपट ।

लायण–देखो 'लांण' ।

लायणी–देखो 'लाइणी' ।

लायपाय (लायफाय)–स्त्री० १ हाय-तोबा । २ बेचैनी, व्यग्रता, आतुराई । ३ अत्यन्त उत्कण्ठा । ४ प्राप्ति की लालसा ।

लायपूळी–पु० १ अत्यन्त क्रोध पूर्ण अवस्था । २ क्रोध भड़कने की दशा । ३ आग में पूआल डालने जैसी स्थिति ।–वि० अत्यन्त क्रुद्ध, उग्र ।

लार–पु० किसान से खलिहान में उसके हिस्से से ली जाने वाली एक लाग ।–क्रि०वि० [सं० लहर] १ पीछे । २ साथ, संग । ३ लिए, कारण । ४ देखो 'लाळ' ।

लारणी–पु० ग्रामीण स्त्रियों के अधोवस्त्र पर बांधने का एक प्रकार का डोरा ।

लारलड़ी–देखो 'लारली' ।

लारली–वि० (स्त्री० लारली) १ पीछे का, पीछे वाला । २ भूतपूर्व, विगत । ३ बीता हुआ, गया हुआ । ४ बाद वाला, अगला । ५ पहले वाला, पूर्व का । ७ पूर्व जन्म संबंधी । ८ नीचे का, निचला । ९ अन्य, अतिरिक्त ।

लारवाळ, लारवाळियो–पु० विधवा स्त्री की संतान, जो पुनर्विवाह के समय उसके साथ रहे ।

लारां लारा लारि, लारियां, लारी, लारीयां, लारे, लारें–क्रि०वि० १ पीछे । २ बाद में । ३ मरणोपरान्त, मृतक के पीछे । ४ कुछ कर लेने के बाद । ५ बढ़कर । ६ साथ में ।

लारें-लारें–क्रि०वि० पीछे-पीछे ।

लारोलार, लारोलारि–क्रि०वि० १ पीछे के पीछे । २ क्रमशः एक के बाद एक । ३ निरंतर । ४ एक के साथ एक ।

लारो–पु० १ पीछे पड़ने या पीछा करने की क्रिया, पीछा । २ साथ, लगाव । ३ पृष्ठ भाग, पीछे का भाग । ४ देखो 'लारें' ।

लार्यां–देखो 'लारें' ।

लालंबर, लालंबर–वि० रक्तवर्ण युक्त, पूरा लाल '–पु० सूर्य, रवि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाळ–स्त्री० [सं० लाला] १ मुंह से निकलने वाली लार, थूक। २ घंटे के बीच लटकने वाला धातु का गुटका, लगर, लोलक। ३ पशुओं के मुंह में होने वाला एक रोग।

लाल–पु० (स्त्री० लाली) १ पुत्र, वत्स, बेटा। २ लड़का, बालक। ३ श्रीकृष्ण का एक नाम। ४ पुत्र के लिये वात्सल्ययुक्त संबोधन। ५ एक जलचर पक्षी। ६ देखो 'लालसा'। ७ ताश के पत्तों का एक रंग। ८ हरिजनों का गुरु। ९ खेल में पहले जीता हुआ खिलाड़ी।–स्त्री० १० मानिक, रत्न। ११ लाल रंग की छोटी चिड़िया। १२ श्रीकरनीदेवी की बहन का नाम। १३ बच्चों के खेल में प्रथम जीती हुई बाजी। १४ इच्छा, कामना, लालसा।–वि० १ रक्ताभ रक्तवर्ण युक्त। २ क्रुद्ध, आग बबूला। ३ तपा हुआ, अत्यन्त गर्म। ४ लज्जा युक्त। ५ प्रिय, प्यारा। ६ खेल में प्रथम जीता हुआ।

लालकणेर (कनेर)–पु० गुलाब की तरह लाल फूलों वाला एक पौधा व इसके फूल।

लालकबांण, लालकमांण–स्त्री० एक प्रकार का धनुष।

लाळकी, लालकी–स्त्री० १ जिह्वा, जीभ। २ जबान, बोली। ३ देखो 'लाली'।

लालकेसियो–पु० एक प्रकार का अश्लील लोक गीत।–वि० रसिक।

लालड़ो–देखो 'लाल'।

लालड़ो–वि० (स्त्री० लालड़ी) लाल रंग का।

लालचदन–पु० लाल रंग का चंदन, रक्तचंदन।

लालच–पु० [सं० लालसा] १ किसी वस्तु या धन को प्राप्त करने की उत्कट इच्छा, लोभ,लालसा। २ कुछ व्यय करने या देने में की जाने वाली कंजूसी, अनुदारता। ३ उत्कण्ठा, तृष्णा।

लालचखू, लालचखु–पु० भैंसा।

लालचट–देखो 'लालचुट'।

लालचांच–पु० तोता, सुग्गा।

लालचियो–वि० १ लाल रंग वाला। २ देखो 'लालची'।

लालची–वि० लालच करने वाला, लोभी, कंजूस।

लालचीणी–पु० एक प्रकार का कबूतर।

लालचुट–वि० अत्यधिक लाल।

लालचोळ–वि० १ गहरा लाल। २ क्रुद्ध, आवेशयुक्त।

लालच्च–देखो 'लालच'।

लालजटा–पु० मुर्गा।

लालजी–पु० १ एक सम्मान सूचक संबोधन। २ देवर के लिये संबोधन। ३ राजा की उपपत्नी के लिये संबोधन। (जयपुर)

लालटेण (न)–स्त्री० मिट्टी के तेल से जलने वाला, काच के गोले वाला एक दीपक।

लालण–पु० १ अत्यन्त स्नेह, प्यार, लाड। २ प्यारा बच्चा।

लाळणो (बो)–क्रि० मोड़ना, टेढ़ा करना, बल पटकना।

लालणो (बो)–क्रि० लाड-प्यार करना।

लालतातो–वि० अत्यन्त क्रुद्ध।

लालधजा–स्त्री० [सं० लालध्वज] लाल पताका, हनुमानजी के मंदिर की ध्वजा।

लालन–देखो 'लालण'।

लालपाणी (नी)–पु० शराब, मदिरा।

लालपिलकौ–पु० सफेद रंग का एक कबूतर।

लालपोस–पु० हरिजन, भंगी।

लालफूल–स्त्री० अनार, दाड़म।

लालबंद–वि० गहरा लाल।

लालबजार, लालबाग, लालबाजार–पु० वेश्याओं का मुहल्ला।

लालबुझक्कड़–पु० हर समस्या का समाधान करने या हर बात का जवाब बताने वाला ज्ञानी व अनुभवी व्यक्ति।

लालबुरज–पु० कपड़ों पर लगाने की नील।

लालबेग–पु० १ लाल रंग का, परों वाला, क्रीड़ा विशेष। २ मुसलमान भंगी। ३ हरिजनों का एक पीर।

लालमन–पु० १ श्रीकृष्ण। २ एक प्रकार का तोता।

लालमरच–स्त्री० पककर लाल हुई मिरच, जो भोजन में काम ली जाती है।

लालमी–वि० स्वाद के लिये लालायित, जिसके लार टपकती हो।

लालमुरगा–पु० १ मयूर शिखा नामक पौधा। २ एक प्रकार की पहाड़ी पक्षी।

लालमूलो–स्त्री० शलगम, शलजम।

लालमेह–पु० पुरुषों का रक्त प्रमेह रोग।

लालर–स्त्री० १ विधवा स्त्रियों की ओढ़नी। २ व्यर्थ बकवास।

लालरणो (बो)–देखो 'ललरणो' (बो)।

लालरियो–पु० १ खुशामद, चापलूसी। २ लगाव।

लालरी–स्त्री० चमड़ी।

लालसर–पु० लाल रंग की गर्दन वाला एक पक्षी।

लाळसा, लालसा–स्त्री० [सं० लालसा] १ कुछ प्राप्ति की प्रबल इच्छा, लिप्सा। २ आतुरता, व्यग्रता। ३ कामना, अभिलाषा। ४ गर्भवती स्त्री की कुछ विशेष इच्छा, साध।

लालसाटी–पु० लाल रंग का पुनर्नवा, छितरने वाली वनस्पती।

लालसिखो–पु० मुर्गा।

लालसी–वि० लालसा रखने वाला।

लालमुरग–वि० गहरा लाल।

लालां–स्त्री० श्रीकरनी देवी की एक बहन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाला–पु० १ कायस्थों का एक संबोधन। २ बनिया, व्यापारी। ३ छोटों के लिये स्नेह युक्त संबोधन। ४ प्रभाव, कमी। ५ मुश्किल, मुसीबत। ६ ध्यान, समाधि। ७ देखो 'लालसा'।

लालाटि–पु० १ भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार। २ ललाट।

लालाटिक–पु० [सं०] १ सावधान अनुचर। २ निठल्ला। ३ एक प्रकार का आलिंगन।–वि० १ माल संबंधी। २ भाग्यवादी। ३ नीच, कमीना। ४ निरर्थक।

लालभिक–पु० एक नरक का नाम।

लालाभक्ष–पु० एक नरक का नाम।

लालास्रव, लालासव, लालास्रव, लालास्राव–स्त्री० १ मकडी। २ मकड़ी का जाला। ३ मुंह से लार गिरने की क्रिया।

लालिमा–स्त्री० ललाई सुर्खी, अरुणता।

लालियो–पु० १ शिशुओं की छाती पर लटका रहने वाला एक छोटा वस्त्र। २ ज्वार के डंठल व पत्तियां। ३ देखो 'लाळो'। ४ वह बच्चा जिसके लार टपकती हो।

लाळी–स्त्री० १ बाजरी या ज्वार की बालों पर आने वाली बारीक फूंवी, कपी। २ भूसे का बारीक भाग। ३ देखो 'ल्याळी'।

लालो–स्त्री० १ लाल रंग की झांई, ललाई, लालिमा; सुर्खी। २ प्रतिष्ठा, इज्जत। ३ जीभ, जबान। ४ रौनक, शोभा।

लालुरणो (बो)–देखो 'लालरणो' (बो)।

लालु.लालू,लालूडो–अव्य० १ पादपूरक अव्यय। २ देखो 'लालो'।

लालूवाड़–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

लाळो–पु० १ घोड़े की मोरी के नीचे लगने वाली कपड़े की पट्टी २ घोड़े के मुंह का छोर।

लालो–पु० १ पुत्र, बेटा। २ लड़का, बालक। ३ स्नेहयुक्त संबोधन। ४ कायस्थ, बनिया आदि का संबोधन।

लाल्हरणो (बो)–देखो 'ललरणो' (बो)।

लाल्हरियो–पु० ऊंटों के खाने का पौधा विशेष।

लाल्हरो–पु० 'ल' वर्ण या अक्षर।

लाव–स्त्री० १ कूए से मोट खींचने का मोटा रस्सा।–पु० २ लाभ।

लावक (कि, को)–पु० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।–वि० १ लाने वाला। २ काटने वाला। ३ योग्य, लायक।

लावड़ो–पु० लोमड़ी। लूमड़।

लावण–पु० १ गायन विशेष। २ नमकीन पदार्थ। ३ रोटी से लगाकर खाने का पदार्थ। ४ देखो 'लांवण'।–वि० नमकीन।

लावणता–देखो 'लावण्यता'।

लावणियो, लावणीयो–पु० बेरों की एक अवस्था या इस अवस्था में आये हुए बेर।

लावणी–स्त्री० १ एक चतुस्पदी छंद। २ गीत या ख्याल गायन की एक शैली। ३ तारक छंद का एक भेद। [सं० लव] ४ फसल काटने की विधि विशेष।

लावणी–पु० पड़ोसियों एवं संबंधियों में बांटा जाने वाला मिष्ठान्न।

लावणी (बो)–देखो 'लाणो' (बो)

लावण्य, लावण्य लावण्यता–पु० [सं० लावण्यता] १ सुन्दरता, सौन्दर्य। २ मोहकता, मनोहरता। ३ चातुर्य, सुघड़ता। ४ नमकीनपना।

लावण्यवती–स्त्री० १ सुंदर अंगों वाली स्त्री। २ रथंतर कल्प के राजा पुष्पवाहन की पत्नी।

लावण्य, लावन्य–देखो 'लावण्य'।

लावर–पु० कटु शब्द, क्रोधपूर्ण भाषा।

लावरो–पु० कुत्ता, श्वान।

लावल्द–वि० [अ०] निः संतान।

लावल्दी–स्त्री० [अ०] निः संतान होने की दशा या अवस्था।

लावा–वि० खराब, बुरा।

लावारिस–वि० १ जिसका उत्तराधिकारी या वारिस न हो। २ जिसका स्वामी, मालिक न हो।

लावाळो–स्त्री० 'रहट' का एक उपकरण।

लावालूत्र–स्त्री० लबालीपन।

लावो–पु० [सं० लवा] १ एक पक्षी विशेष। [सं० लाभ] २ आनन्द,मौज। ४ लाभ। ४ नव-वधू या पुत्री को ससुराल से लाने वाला व्यक्ति। ५ ज्वालामुखी का लावा। ६ बुरा शकुन।

लास–स्त्री० १ मृत शरीर, शव। २ पशुओं को भूसी चराने का काष्ठ का उपकरण। ३ दल, समूह। ४ देखो 'ल्हास'। ५ देखो 'लासू'।

लासक–पु० [सं०] (स्त्री० लासकी) १ मोर, मयूर। २ मटका, घड़ा। ३ नाचने वाला। ४ पक्षाघात जैसा कोई रोग।

लासरियेगाळो–पु० बिना मूंछों वाला युवक।

लासरीक–वि० [अ०] जिसका सहायक न हो, निःसहाय, असहाय।

लासलूसणो–क्रि० वि० पोंछने की क्रिया, पोंछ।

लासियो देखो 'ल्हासियो'।

लासू लासूड़ो–पु० १ फोग वृक्ष की पतली टहनी। २ वृक्ष के तार।

लास्य–पु० [सं०] एक प्रकार का नृत्य।

लास्यप्रिया–स्त्री० एक देवी विशेष।

लाह–पु० १ दौड़ में छलांग लगाकर आगे निकल जाने वाला घोड़ा।–स्त्री० २ छलांग, कूद। ३ देखो 'लाख'। ४ देखो 'लाभ'। ५ देखो 'ल्हास'।

लाहण–स्त्री० एक जाति विशेष।

लाहणी (बो)–देखो 'लाभणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाहरणी (बो)–देखो 'लसरणी' (बो)।

लाहरा, लाहरे, लाहर्र–देखो 'लारे'।

लाहानूर–वि० [फा० लाह+अ० नूर] कच्चे रेशम का बना, चमकदार।

लाहाली–देखो 'लिहालु'।

लाहि–स्त्री० १ वनस्पती विशेष। २ देखो 'लाही'।

लाहिण–देखो 'लाहण'।

लाही–स्त्री० [सं० लाक्षा] १ लाख, चपड़ी। २ एक प्रकार का वस्त्र।

लाहीण–देखो 'लाहण'।

लाहु–देखो 'लाभ'।

लाहुड़ी, लाहूड़ी–देखो 'लासू'/'लघु'।

लाहोरणी–स्त्री० एक प्रकार की बंदूक।

लाहोरी–पु० १ एक प्रकार का शिकारी कुत्ता। २ लाहौर में निर्मित एक बंदूक विशेष।–वि० लाहौर का, लाहौर संबंधी। लाहौर में बना।—नमक—पु० सेंधा नमक।

लाहो–देखो 'लाभ', 'लाभो'।

लाहौल–स्त्री० [अ०] घृणा व आश्चर्य सूचक शब्द। अफसोस।

लिंग–पु०[सं० लिंगम्] १ चिह्न, निशान। २ नर-मादा के पहचान का चिह्न, लक्षण। ३ नर-मादा की पहचान सूचक शब्द। ४ किसी बात, वस्तु की जानकारी का साधन, हेतु(न्याय)। ५ प्रमाण, साक्षी। ६ रोग के लक्षण ७ शिव लिंग। ८ देव प्रतिमा। ९ सूक्ष्म शरीर। १० मूल प्रकृति (सांख्य)। ११ एक प्रकार का संबंध या सूचक। १२ जननेन्द्रिय शिश्न (पुरुष)। १३ आत्मा का सूक्ष्म रूप। १४ लिंगायतों द्वारा गले में लटकाई जाने वाली मूर्ति। १५ व्याकरण में शब्दों का वर्गीकरण।

लिंगटो–देखो 'लींगटी'।

लिंगतियो–देखो 'रिंगतियो'।

लिंगदेह–स्त्री० [सं०] स्थूल शरीर नष्ट होने पर मिलने वाला सूक्ष्म शरीर।

लिंगनास–पु० [सं०] एक प्रकार का नेत्ररोग।

लिंगपुराण–स्त्री० [सं०] शिव पूजा की विधि एवं माहात्म्य संबंधी एक पुराण।

लिंगपूजा–स्त्री० शिव लिंग की पूजा।

लिंगसरीर–देखो 'लिंगदेह'।

लिंगायत–पु० १ एक शैव सम्प्रदाय विशेष। २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी।

लिंगूर–देखो 'लंगूर'।

लिंगेंद्रिय, लिंगेंद्री–पु० [सं० लिंगेन्द्रिय] पुरुष जननेन्द्रिय शिश्न।

लिंघो–पु० वस्त्र विशेष।

लिंडवा–पु० मलवर रियासत में बहने वाली एक नदी विशेष।

लिंपणी (बो)–देखो 'लीपणी' (बो)।

लि–स्त्री० १ दासी। २ बिछी। ३ सखी, सहेली।–पु० ४ सर्प, सांप। ५ चूहा।

लिअण–देखो 'लियण'।

लिए–अव्य० व्याकरण में सम्प्रदान कारक में प्रयुक्त होने वाला शब्द, हेतु, निमित्त। वास्ते।

लिकणी–स्त्री० १ मुहल्ले के बीच रखी रहने वाली जूठन आदि डालने की पत्थर की कूंडी। २ लिक-लिक करने की क्रिया या भाव। ३ खाते-पीते समय कुत्ते के मुंह से होने वाली आवाज।

लिकणी (बो)–क्रि० १ कुत्ता, सियार आदि की कुछ पीने की क्रिया करना। २ देखो 'लिखणी' (बो)।

लिकलिक–देखो 'लकलक'।

लिकाणी (बो), लिकावणी (बो)–क्रि० १ कुत्ता, बिल्ली आदि का मुंह लगवा देना, पिला देना। २ देखो 'लिखाणी' (बो)।

लिखणी (बो)–देखो 'लिखणी' (बो)।

लिक्खाणी (बो), लिक्खावणी (बो)–देखो 'लिखाणी' (बो)।

लिख–देखो 'लीख'।

लिखण–देखो 'लिखत'।

लिखणी–पु० लिखने की क्रिया या भाव।

लिखणी (बो)–क्रि० १ कलम आदि से पट्टी या कागज पर कुछ लिखना। २ अपने विचारों आदि को लेखबद्ध करना, लिपिबद्ध करना। ३ तीक्ष्ण या नुकीली वस्तु से कुछ अंकित करना। ४ लिखकर प्रेषित करना। ५ लेखन कार्य करना। ६ साहित्य सृजन करना। ७ कूंची, ब्रुश आदि से चित्र बनाना। ८ भाग्यवश संयोग-कुयोग बनना। प्रारब्ध बनना।

लिखत–पु० १ लिखने की क्रिया या भाव। २ लिखा हुआ लेख इबारत। ३ नियम। ४ लिखा हुआ प्रामाणिक दस्तावेज। ५ भाग्य का लेख।

लिखमण–देखो 'लक्ष्मण'।

लिखमी, लिखम्मी–देखो 'लक्ष्मी'।—नारायण='लक्ष्मीनारायण'।—नाह='लक्ष्मीनाथ'।—वर='लक्ष्मीवर'।—भरतार='लक्ष्मीभरतार'।—वंत='लक्ष्मीवंत'।—वर='लक्ष्मीवर'।

लिखाइ (ई)–स्त्री० १ लिखने की क्रिया या भाव। २ लिखने का तरीका ढंग। ३ लिखने का पारिश्रमिक। ४ चित्रांकन।

लिखाणी (बो)–क्रि० १ कलम आदि से पट्टी या कागज पर कुछ लिखाना। २ लेखबद्ध कराना, लिपिबद्ध कराना। ३ तीक्ष्ण या नुकीली वस्तु से कुछ अंकित कराना। ४ लिखकर प्रेषित कराना। ५ लेखन कार्य कराना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ साहित्य सृजन कराना। ७ कूंची-ब्रुश आदि से चित्र बनवाना।

लिखापढ़ी–स्त्री० १ लिखने-पढ़ने का कार्य। २ पत्र-व्यवहार, पत्राचार। ३ दो पक्षों का कोई लिखित अनुबंध, शर्तनामा, राजीनामा।

लिखावट (टि, टो)–देखो 'लिखावट'।

लिखारो–वि० लिखने वाला, लेखक।

लिखावट–स्त्री० १ लिखने का ढंग, तरीका। २ लेखन शैली। ३ अक्षर, लिपि। ४ हस्ताक्षर, खत। ५ किसी के हाथ का लिखा लेख। ६ लिखि जाने वाली इबारत।

लिखावणी–स्त्री० १ लिखाने का कार्य। २ लिखाने का पारिश्रमिक।

लिखावणो (बो)–देखो 'लिखाणो' (बो)।

लिखावत (तु, तू)–पु० बादशाह एवं राजा-महाराजाओं द्वारा सम्मानित व्यक्तियों के लिये प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

लिखित–वि० १ लिखित, लिखा हुआ, लिपिबद्ध। २ प्रमाण के लिये लिख कर दिया हुआ।–पु० १ एक प्राचीन मुनि। २ चंपकापुरी के हंसध्वज राजा का एक दुष्ट कर्मा पुरोहित।

लिखितकळा–स्त्री० ७२ कलाओं में से एक।

लिखू–स्त्री० सप्तकोशी नदी की एक सहायक नदी।

लिछमीवंत–देखो 'लक्ष्मीवंत'।

लिग–वि० १ किंचित, थोड़ा। २ रंच मात्र।

लिगतर, लिगतरो–पु० १ फटा-पुराना जूता। २ चिथड़ा।

लिगतो–पु० (स्त्री० लिगती) कुत्ता, श्वान।–वि० पीछे रहने वाला, पिछलग्गू।

लिगबो–वि० (स्त्री० लिगदी) अशक्त, दुर्बल।–पु० लौंदा, गोला।

लिगन, लिगन्न–देखो 'लग्न', 'लगन'।

लिगरियो–पु० एक प्रकार का पौधा या घास।

लिगलिगाट–पु० १ बिलखना क्रिया, बिलबिलाहट। २ बकझक।

लिगार, लिगारइ, लिगारि, लिगारी, लिगारे, लिगारें–देखो 'लगार'।

लिगतर, लिगतरो–देखो 'लिगतर'।

लिड़को–स्त्री० उद्दण्ड गाय के गले व सींगों के बांधी जाने वाली रस्सी, बंधन।

लिड़णो (बो)–क्रि० १ बांधना, कसना। २ दग्ध करना, दागना।

लिचणो–स्त्री० पांव के पुटने के पीछे का भाग।

लिचपिच, लिचपिचो–देखो 'लचपच'।

लिचापिच्च–स्त्री० १ थबराहट, हड़बड़ी। २ चिंता। ३ देखो 'लचपच'।

लिच्छमी, लिछमी–देखो 'लक्ष्मी'।—**कंत, कांत**=लक्ष्मीकांत'। –**नाथ, नाह**='लक्ष्मीनाथ'।–**नारायण**='लक्ष्मीनारायण'। —**पत, पति**='लक्ष्मीपति'।—**बर, वर**='लक्ष्मीवर'।

लिच्छवी–पु० १ एक प्राचीन राजवंश। २ देखो 'लक्ष्मी'।

लिछपचमी–वि० कोमल, मुलायम। नरम, पिलपिली।

लिछमण, लिछमन–देखो 'लक्ष्मण'।

लिछमीस–देखो 'लक्ष्मीस'।

लिछम्मी–देखो 'लक्ष्मी'।—**कंत, कांत**= लक्ष्मीकांत'।—**नाथ, नाह**='लक्ष्मीनाथ'।

लिटणो (बो)–क्रि० लोट-पोट होना, लुटना।

लिता–देखो 'लता'।

लित्त–पु० आहार लेने संबंधी एक दोष (जैन)।

लिद्ध–देखो 'लिद्ध'।

लिप–स्त्री० १ प्लीहा, तिल्ली। २ देखो 'लप'।

लिपटणो (बो)–देखो 'लपटणो' (बो)।

लिपटाणो (बो), लिपटावणो (बो)–देखो 'लिपटाणो' (बो)।

लिपणो (बो)–क्रि० लेपन किया जाना, पोता जाना, पुताई किया जाना।

लिपत–देखो 'लिप्त'।

लिपरको–पु० १ भय, चिंता आदि से शरीर के किसी अंग में होने वाली स्फुरन। २ देखो 'लपरको'

लिपळी–स्त्री० १ लार, थूक। २ व्यभिचारिणी, बाजारू स्त्री। –वि० १ जिसकी बात या चरित्र अच्छा न हो, हल्के स्तर की। २ चिपचिपी, चिकनी।

लिपळो–वि० (स्त्री० लिपळो) १ अस्थिरचित्त एवं निम्न चरित्र वाला। २ मूर्ख। ३ व्यभिचारी, जार। ४ चिपचिपा, चिकना।

लिपसा–देखो 'लिप्सा'।

लिपाई–स्त्री० १ लेपन क्रिया या भाव, लेपन। २ इस कार्य की मजदूरी।

लिपाणो(बो), लिपावणो (बो)–क्रि० १ लेपन कराना, पुतवाना। २ आंगन बनवाना।

लिपि, लिपी–स्त्री० [सं०] १ कोई भाषा या शब्द लिखने के वर्णाक्षर। रेखाओं की वह बनावट जो अक्षर या शब्द बनाती हो। २ लेख, लेखन। ३ लेपन। ४ मालिश, उबटन। ५ लेपन के लिये तैयार किया गया पदार्थ। ६ चित्रण। ७ हस्तलेख।

लिपिभेद–पु० ७२ कलाओं में से एक।

लिपोड़–वि० बकवादी।

लिप्त–वि० [सं०] १ लिपा हुआ, पुता हुआ, लेपित। २ ढका हुआ, छिपा हुआ। ३ लगा हुआ, संलग्न। ४ फंसा हुआ। ५ व्यसनादि में डूबा हुआ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिप्तर–स्त्री० १ फटी-पुरानी जूती। २ चलते समय ऐसी जुती से होने वाली आवाज।

लिप्ता–स्त्री० समय का बहुत छोटासा मान।

लिप्सा–स्त्री० [सं०] १ कुछ प्राप्त करने की प्रबल इच्छा, अभिलाषा। २ लालच, लोभ। ३ तृष्णा।

लिप्सु–वि० [सं०] लालची, लोलुप।

लिफाफा–पु० [अ० लिफाफः] १ पत्र आदि डालने की कागज की छोटी थैली। २ बाह्य आडंबर। ३ हल्की या नाजुक वस्तु।

लिबास–पु० वेश-भूषा, वस्त्रादि।

लियरा–वि० लेने वाला।

लियरी (बो)–देखो 'लैणी' (बो)।

लियाकत–स्त्री० [अ०] १ योग्यता, काबलियत। २ सामर्थ्य, शक्ति, उत्साह। ३ विद्वता। ४ शिष्टता, शालीनता। ५ आचार-विचार या बोल-चाल की गंभीरता।

लिराणी (बो), लिरावणी (बो)–क्रि० १ किसी पदार्थ या वस्तु को लेने के लिए प्रेरित करना। २ किसी से किसी को कुछ दिलवाना, देन-लेन कराना। ३ खरीदवाना। ४ संग्रह कराना। ५ मंगाना। ६ केश, नाखून आदि कटवाना।

लिलड़ी–देखो 'लीली'।

लिलवट–देखो 'निर्ल'।

लिलांम–देखो 'लीलांम'।

लिलाड़, लिलाड़ी लिलाट, लिलार–देखो 'ललाट'।

लिल्ला–क्रि० वि० खुदा के नाम पर।

लिवंग–देखो 'लवंग'।

लिव–स्त्री० लगन, ध्यान; चित्तवृत्ति। एकाग्रता।

लिवणी (बो)–१ देखो 'लैणी' (बो)। २ देखो 'लीपणी' (बो)।

लिवाणी (बो)–देखो 'लिराणी' (बो)।

लिवाळ–देखो 'लेवाळ'।

लिवावणी (बो)–देखो 'लिराणी' (बो)।

लिवास, लिवासड़ी–स्त्री० १ छिपकली। २ देखो 'लिबास'।

लिविंग–देखो 'लवंग'।

लिसब–स्त्री० यश, कीर्ति।

लिसोड़ा–देखो 'लसोड़ा'।

लिह–वि० चाटने वाला।

लिहणी–देखो 'लैणी'।

लिहणी (बो)–क्रि० १ चाटना। २ देखो 'लिखणी' (बो)।

लिहाड़ी–स्त्री० मसाले पीसने की सिल।

लिहाज–पु० [अ०] १ आदर, मान, मर्यादा। २ विरोध या प्रतिवाद न करने की दशा या भाव। ३ संकोच। ४ शर्म, लज्जा। ५ ध्यान। ६ पक्षपात; तरफदारी।

लिहाणी (बो)–क्रि० १ चाटना। २ देखो 'लिखाणी' (बो)।

लिहाफ–पु० [अ०] सर्दी से बचाव के लिये ओढ़ने का रूईदार मोटा वस्त्र।

लिहालु–पु० कोयला, बुझा हुआ अंगारा।

लिहालू–पु० कोयला। अंगारा।

लिहावणी (बो)–१ देखो 'लिहाणी' (बो)। २ देखो 'लिखाणी' (बो)।

लिहोजणी (बो)–क्रि० लिखा जाना।

लींगटी–स्त्री० १ रेखा, लकीर। २ पंक्ति, लाइन। कतार। ३ परंपरा, प्रथा, रूढ़ी। ४ रस्म, रिवाज।

लींड, लींडी, लींडो–पु० १ मल या विष्टे की, लकड़ी की तरह बंधी अवस्था, मल की मोटी मींगड़ी। २ हाथ का अंगूठा उठाकर चिढ़ाने की एक क्रिया।

लींण–देखो 'लोन'।

लींब–पु० १ नींबू। २ नीम।

लींबड़ी–पु० नीम।

लींबर (रू)–पु० वृक्ष विशेष।

लींबू–पु० नींबू।

लींबोड़ (ई)–स्त्री० वृक्ष विशेष।

ली–पु० १ भौंरा, भ्रमर। २ ईश्वर। ३ मिलन, संगम, साक्षात्कार।–स्त्री० ४ सखी, सहेली। ५ पृथ्वी। ६ घुलना क्रिया।

लीक, लीकटी–स्त्री० १ रेखा, लकीर। २ लकीर की तरह का चिह्न। ३ रास्ता, मार्ग। ४ पगडंडी। ५ परंपरा, प्रथा, रूढ़ी। ६ रीति-रिवाज, रस्म। ७ सत्य वचन। ८ सीमा, मर्यादा। ९ प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा। १० दोष, कलंक। ११ गणना, गिनती। १२ लंबी, संकरी जमीन, भू-खंड। १३ मटियाले रंग की एक चिड़िया विशेष। १४ देखो 'लीख'। १५ देखो 'लीकी'।

लीकियो–पु० १ लकड़ी पर रेखा बनाने का उपकरण। २ देखो 'लीकी'।

लीकी–स्त्री० १ कृषि योग्य लंबी एवं संकरी जमीन। २ ऐसी भूमि का स्वामी। ३ देखो 'लीक'।

लीख–स्त्री० [सं० लिक्षा] जूं का अंडा।

लीखणी (बो)–देखो 'लिखणी' (बो)।

लीगटी–देखो 'लींगटी'।

लीड़ी, लीड़ो–स्त्री० १ शरीर पर गर्म शलाका से दग्ध करने का चिह्न, डाम, दग्ध रेखा। २ रेखा, लकीर। ३ मारने के कारण शरीर पर उभरने वाले निशान।

लीची–स्त्री० १ मीठे फलों वाला एक सदाबहार वृक्ष। २ इस वृक्ष का फल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीछम्मि (म्मी)–देखो 'लछमी'।

लीडोकट-पु० तलवार की बनावट विशेष।

लीण–पु० १ बरसात के समय धुंए की तरह उड़ने वाले बादल। लौर। २ बादल। ३ उचित, वाजिब। ४ देखो 'लीन'।

लीणता–देखो 'लीनता'।

लीद, लीदड़–स्त्री० हाथी, घोड़े, गधे आदि का मल।

लीध, लीधुं, लीधु, लीधू, लीधो–देखो 'लीन्हो'।

लीधड़–पु० छोटा बाज पक्षी।

लीधमिण–स्त्री० [सं० ऋद्ध-मणि] मूंगा, प्रवाल।

लीन–वि० [सं०] १ समाविष्ट, मिला हुआ। २ अनुरक्त, आसक्त। ३ लुप्त, गायब। ४ किसी ध्यान में निमग्न, तल्लीन। ५ किसी कार्य में पूर्ण मनोयोग से संलग्न। ६ चिपटा या सटा हुआ। ७ देखो 'लीन्हो'।

लीनता-स्त्री० लीन हो जाने की अवस्था या भाव, तल्लीनता।

लीनोड़ो, लीलो–देखो 'लीन्हो'।

लीन्ह, लीन्हउ, लीन्होड़ो, लीन्हो–वि० (स्त्री० लीन्होड़ी) लिया हुआ।

लीपणो (बो)–क्रि० १ लेपन करना, पोतना। २ लिप्त होना। ३ डूबना।

लीपाणो (बो), लीपावणो (बो)–क्रि० १ लेपन कराना, पुतवाना। २ लिप्त कराना। ३ डुबाना।

लीपियोपूपियो, लीपियोचूपियो–वि० लिपा हुआ, पुता हुआ, लिप्त, डूबा हुआ।

लीपी–स्त्री० १ जलाशयों में पानी सूखने पर जमीन पर जमने वाली पपड़ी। २ चूने का अवलेह, भीगा हुआ चूना।

लीब–१ देखो 'नीम'। २ देखो 'नींबू'।

लीर–वि० १ फटा हुआ, जीर्ण-शीर्ण। २ देखो 'लीरो'।

लीरड़ो, लीरड़ी–देखो 'लीडो'।

लीरो, लीरी–पु० १ वस्त्र, कागज आदि का लंबा या छोटा टुकड़ा। २ धज्जी, पट्टी। ३ फल की लंबी फांक। ४ देखो 'लीड़ो'।

लीलंग–पु० १ हंस। २ डिंगल का एक छंद।–वि० लीला करने वाला।

लीलंगरित–पु० तोता, सुवा, शुक।

लीलंबर–पु० [सं० नील-अंबर] नीला आकाश, नील गगन।

लील–पु० १ आनन्द-मंगल, परमसुख। २ पानी की काई। ३ हरियाली। ४ प्रहार या चोट के कारण शरीर पर बनने वाला निशान, चिह्न। ५ श्याम स्तनों वाली गाय। ६ रंग विशेष की घोड़ी। ७ सारस्वत नगर के वीर-वसंत राजा का पुत्र। ८ देखो 'लीला'।

लीलग–देखो 'लीलंग'।

लीलगर–देखो 'नीलगर'।

लीलगरी–देखो 'नीलगरी'।

लीलगवाहणी–स्त्री० हंसवाहिनी, सरस्वती।

लीलड़–पु० ऊंटों का एक रोग।

लीलड़ी–स्त्री० १ न्यौहरा, खुशामद। २ गहरे बैंगनी रंग का एक बड़ा भ्रमर। ३ देखो 'लीली'।

लीलड़ो–पु० १ सब्जी के काम का एक प्रकार का मोटा पापड़ २ देखो 'नीलो'।

लीलणो (बो)–क्रि० १ नीला होना, हरा होना। २ निगलना।

लीलपत–देखो 'लीलापत'।

लीलभवाळ (भुआल, भुवाळ)–पु० इन्द्र, सुरपति।–वि० उदार, दातार।

लीलरी–स्त्री० छुरी, सलवट।

लीलवण–देखो 'नालवण'।

लीलविलास–पु० १ इन्द्र, सुरपति। २ समुद्र, सागर। ३ अष्ट वर्णी एक छन्द। ४ आनन्द, मंगल।–वि० १ लीला करने वाला। २ दातार, उदार।

लीलाण–स्त्री० हरियाली।

लीलाम–पु० [पुर्त० लेलम] १ किसी वस्तु या सामान को क्रय करने के लिये क्रेताओं द्वारा कीमत बोलने की प्रक्रिया। २ इस प्रक्रिया से की जाने वाली बिक्री।—घर–पु० उक्त प्रकार का कार्य या व्यापार करने का स्थान कक्ष।

लीलामी–स्त्री० १ वस्तु या सामान के क्रय-विक्रय के लिये लगाई जाने वाली खुली बोली। २ नीलाम करने की क्रिया या भाव।

लीला–स्त्री० [सं०] १ आनन्द, मौज। २ मनोरंजन का कार्य, खेल। ३ खेलने में की जाने वाली अद्भुत या विचित्र चेष्टाएँ। ४ ईश्वर द्वारा अपने विभिन्न अवतारों में किये गये अलौकिक कार्य। ५ ईश्वर की माया। ६ रचना, बनावट। ७ चरित्रगान। ८ गुण। ९ नायिका का एक भाव, चेष्टा। १० विशेषक नामक छंद का दूसरा नाम। ११ एक छन्द विशेष। १२ एक अन्य वर्ण वृत्त। १३ हरी घास। १४ निसाणी छंद का एक भेद। १५ नाटक, अभिनय।—करण–वि० लीला करने वाला।–पु० ईश्वर।—स्त्री० स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

लीलाड़ी–देखो 'ललाट'।

लीलाती–स्त्री० [अ० लीलायत] मनोरंजन, आनन्द।

लीलाधण–पु० लीला के स्वामी, ईश्वर।

लीलाधर–पु० [सं०] ईश्वर, परमात्मा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीलापत (पत्ति)–पु० १ ईश्वर, लीला का स्वामी। २ इन्द्र।
लीलापुरुषोत्तम–पु० श्रीकृष्ण।
लीलाधर–पु० [सं० लीला-धर] ईश्वर।
लीलाधराळ (भुधाळ, भुधाळ)–पु० इन्द्र।—वि० उदार, दाता
लीलामय–वि० [सं०] क्रीड़ा युक्त, लीलामय।
लीलावंती–पु० एक वृक्ष विशेष।
लीलावती–स्त्री० १ ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की कन्या जो गणितज्ञ थी। २ एक देवी। ३ एक रागिनी। ४ एक छन्द विशेष।
लीलावर–वि० लीला करने वाला।–पु० श्रीविष्णु, श्रीकृष्ण।
लीलासंघ–वि० अद्भुत क्रीड़ाएँ करने वाला।
लीलासागर–पु० श्रीविष्णु, श्रीकृष्ण।
लीलीसाड़ी–स्त्री० एक लोक गीत।
लीलोती, लीलोतरी, लीलोत्री–स्त्री० १ हरी घास। २ वनस्पती। २ हरी सब्जी।
लीलो–पु० १ हरा घास, हरा चारा। २ हरा रंग।–वि० १ हरे रंग का, हरा। २ देखो 'नीलो'।
लीलोचेर–वि० १ गहरा हरा। २ हरियाली युक्त।
लीवड़ी–पु० नीम।
लीवलीण–देखो 'लयलीन'।
लीह–देखो 'लीक'।
लीहटी–देखो 'लीकटी'।
लीहवणो (बो)–क्रि० झींगुरों का ध्वनि करना।
लुंकड़ो, लुंकडी–पु० १ एक वृक्ष विशेष। २ देखो 'लांकी'।
लुंकारियो–देखो 'लूंकार'।
लुंकालु–वि० कृश, पतला।
लुंगाड़, लुंगाड़ो–वि० बदमाश, धूर्त, चालाक।
लुंगी–देखो 'लूंगी'।
लुंचन–स्त्री० [सं०] बाल आदि नोचना क्रिया।
लुंचित–वि० १ नोचा हुआ। २ उखाड़ा हुआ। ३ काटा हुआ।
लुंछणो (बो)–देखो 'लूंछणो' (बो)।
लुंजो–देखो 'लूंजो'।
लुंठक–वि० लुटेरा।
लुंठि, लुंठी–स्त्री० १ छत्तीस प्रकार के दण्डायुधों में से एक। २ घोड़े या गधे का लोटना क्रिया।
लुंणणो (बो)–देखो 'लूणणो' (बो)।
लुंणाणो (बो), लुंणावणो (बो)–देखो 'लूणाणो' (बो)।
लुंपट–देखो 'लंपट'।
लुंबक–पु० फलित ज्योतिष में एक योग।
लुंबणो (बो)–देखो 'लूंबणो' (बो)।
लुंबाळो (लो)–वि०(स्त्री० लुंबाळी) १ आरामतेह। २ झूमता हुआ। ३ जिसके लाल व मोतियों की लड़ें लटक रही हों।
लुंबनी–स्त्री० [सं०] कपिलवस्तु के पास का एक वन।
लुंबेक–पु० नक्षत्रों संबंधी एक योग।
लुंभणो (बो)–देखो 'लूंबणो' (बो)।
लु–स्त्री०१ पृथ्वी।–पु० २ माली। ३ संसार। ४काटना क्रिया।–वि० भक्षण करने वाला।
लुआब–पु० [अ०] चिपचिपा पदार्थ।
लुआरियो, लुआरो–पु० (स्त्री० लुआरी) १ गाय का छोटा बच्चा। २ देखो 'लुहार'।
लुआळ–स्त्री० ज्वाला, लपट।
लुकंजण–पु० एक प्रकार का अंजन।
लुक–वि० १ तीव्र रूप से प्रज्वलित। २ लुप्त, छुपा हुआ।
लुकड़ी–स्त्री० लोमड़ी।
लुकट–स्त्री० [सं० लकुट] १ लकड़ी। २ बांसुरी।
लुकणाडाइ (ई)–स्त्री० बच्चों का एक खेल।
लुकणो (बो)–क्रि० [सं० लुक] १ छुपना, छुपजाना। २ ओट या आड़ लेना। ३ लुप्त होना। ४ गुप्त स्थान पर रहना। ५ अदृश्य होना। ६ आवरण या कृत्रिमता की ओट में रहना, छद्म रूप में होना। ७ दब जाना। ८ मिलना, झुकना (पलक)।
लुकमान–पु० [अ० लुक्मान] १ कुरान के अनुसार एक प्रसिद्ध वैद्य, हकीम।–स्त्री० २ तोप। ३ बंदूक।
लुकमीचणी–स्त्री० आंखमिचौनी का खेल।
लुकमी–पु० [अ० लुक्म] ग्रास, निवाला।
लुकम्मीनाळ–स्त्री० १ तोप। २ बन्दूक।
लुकलुकमीचणी–देखो 'लुकमीचणी'।
लुकवेस–पु० कुंज।
लुकसाज–पु० तैयार किया हुआ चमड़ा विशेष।
लुकाणो (बो), लुकावणो (बो)–क्रि० १ किसी गुप्त स्थान में रखना। २ छुपाना, छुपा देना। ३ ओट या आड़ में रख देना, करना। ४ लुप्त करना। ५ अदृश्य करना। ६ छद्मता या कृत्रिमता की ओट में करना। ७ दबाना। ८ मिलाना, झुकाना, झपकाना।
लुक्कणो (बो)–देखो 'लुकणो' (बो)।
लुक्ख, लुक्खो, लुख, लुखो–देखो 'लूखो'।
लुगथुगो–वि० (स्त्री० लुगथुगी) १ कांतिहीन, शोभाहीन। २ शुष्क, रूखा।
लुगदी–स्त्री० किसी वस्तु को गीला करके कूट या पीस कर बनाया हुआ गोला। लौंदा।
लुगाई, लुगाबड़ी–स्त्री० १ औरत, स्त्री, नारी। २ पत्नी, जोरू, भार्या।
लुध–देखो 'लुब्ध'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लघता–देखो 'लघुता'।
लघवी–देखो 'लघु'।
लघसंधानिक–वि० तीर चलाने में दक्ष, चतुर।
लघु–देखो 'लघु'।
लुढ़णी (बो)–क्रि० मुड़ना, हटाना।
लुढ़कणी (बो)–देखो 'लुढकणी' (बो)।
लुढकाणी (बो)–देखो 'लुढकाणी' (बो)।
लुढ़की–स्त्री० दही में तैयार की हुई भंग।
लुढ़खणी (बो)–देखो 'लुढकणी' (बो)।
लुढ़णी (बो)–देखो 'लुढणी' (बो)।
लुढ़ाणी (बो)–देखो लुढाणी' (बो)।
लुढ़ोंद–वि० प्रिय, प्यारा।
लुचाई, लुच्चाई–स्त्री० १ धूर्तता, दुष्टता, नीचता। २ कमीनापन। ३ चोरी, बदमाशी। ४ पाखंड, ढोंग। ५ बेईमानी।
लुच्चो–वि० [सं० लुंच्] (स्त्री० लुच्ची) १ दुराचारी, दुष्ट, नीच। २ कमीना। ३ चोर, बदमाश। ४ पाखंडी, ढोंगी। ५ बेईमान।
लुटकणियो–पु० किसी बकरी के गले के नीचे लटकने वाला मांस।
लुटणी (बो)–क्रि० १ लुट जाना, लूट लिया जाना। २ चोरी या डकैती होना। ३ महत्वपूर्ण वस्तु या सामान बलात् चला जाना। ४ किसी की इज्जत लिया जाना या शील भग किया जाना। ५ अभिवादन की दृष्टि से सोना। ६ मौज, मस्ती लेना, आनन्द लेना। ७ देखो 'लोटणी' (बो)।
लुटाणी (बो), लुटावणी (बो)–क्रि० १ लूटने या लूट ले जाने के लिये छोड़ देना, रख देना। २ उदारता पूर्वक देना। ३ चोरी या डकैती कराना। ४ लूटने के लिये प्रेरित करना। ५ इज्जत लिराना या शील भग कराना। ६ दण्डवत कराना, चरणों में लोटाना। ७ मौज, मस्ती या आनन्द कराना। ८ अपव्यय करना। ९ लोट-पोट कराना। १० सस्ते मोल बेचना।
लटेरो–वि० लूटने या लूट-पाट करने वाला, डकैती करने वाला डाकू।
लुट्टणी (बो)–देखो 'लुटणी' (बो)।
लुडणी (बो)–देखो 'लुढणी' (बो)।
लुढकणी (बो)–क्रि० १ गिरना, गिरते जाना। २ गुढ़कते हुए नीचे की ओर आना। ३ गिर पड़ना। ४ मर जाना। ५ परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना।
लुढकाणी (बो), लुढकावणी (बो)–क्रि० १ गिराना, गिराते जाना। २ गुढ़काते हुए लाना, नीचे की ओर चलाना। ३ धक्का या टक्कर से पटकना। ४ मार देना। ५ अनुत्तीर्ण करना।
लुढणी (बो)–क्रि० १ लटकना, झिलना, झूलना। २ मस्ती में झूमना। ३ उत्साहित होना। ४ नुकसान उठाना। ५ लुढकना, गिरना।
लुढ़ाणी (बो), लुढ़ावणी (बो)–क्रि० १ लटकाना, झिलाना, झुलाना। २ मस्ती में झुमाना। ३ उत्साहित करना। ४ नुकसान पहुंचाना। ५ लुढ़काना, गिराना।
लुणणी (बो)–क्रि० [सं० लुंचनम्] १ काटना, काटा जाना। २ भेड़ों की ऊन कतरना। ३ नोंचना, लुंचन करना।
लुणाई–स्त्री० [सं० लुंचन] १ भेड़ों के बालों को कटाई। २ इस कार्य की मजदूरी। ३ इस कार्य का मौसम।
लुणाणी(बो), लुणावणी (बो)–क्रि० १ कटवाना, कतरवाना। २ भेड़ों की ऊन कटवाना। ३ नोंचाना, लुंचन कराना।
लुतफ–देखो 'लुत्फ'।
लुत्तकेस–वि० केशों का लुंचन करने वाला, जिसके केशों का लुंचन कर दिया गया हो।
लुत्थबत्थ–देखो 'लथबथ'।
लुत्थि–देखो 'लोथ'।
लुत्फ–पु० [अ०] १ आनन्द, मजा। २ स्वाद, रस, रोचकता।
लुथबत्थ, लुथबथ, लुथबुथ–देखो 'लथबथ'।
लुदराक, लुदराक्ख, लुदराख–देखो 'रुद्राक्ष'।
लुदरी–स्त्री० १ एक आभूषण विशेष। २ देखो 'रुद्री'।
लुद्ध–वि० [सं० लुब्ध] लोभी, लालची।
लुद्राक, लुद्राक्ख, लुद्राख–देखो 'रुद्राक्ष'।
लुब्ध, लुब्धो–वि० [सं० लुब्ध] १ लालची, लोभी। २ चाहने वाला, इच्छुक, अभिलाषी।
लुप–देखो 'लप'।
लुपके-छुपके, लुपकै-छुपकै–क्रि० वि० छुपे तौर से, गुप्त रूप से।
लुपणी (बो)–देखो 'लुकणी' (बो)।
लुपत–देखो 'लुप्त'।
लुपतोतमा–देखो 'लुप्तोपमा'।
लुप्त–वि० १ छुपा हुआ। २ गुप्त, गोपनीय। ३ नष्ट, भग्न। ४ अदृश्य, गायब।
लुप्तोतमा–स्त्री० उपमा अलंकार का एक भेद।
लुब–पु० १ चाह, इच्छा। २ लोभ, लालच। ३ स्त्रियों का एक कर्णाभूषण विशेष।
लुबको–पु० (स्त्री० लुबकी) गाय का नवजात बच्चा।
लुबध, लुबधक–देखो 'लुब्ध'।
लुबधो, लुबधी–वि० १ लोभी, लालची। २ इच्छुक। ३ रस लोलुप। ४ मोहित, आसक्त।
लुबान–देखो 'लोबान'।
लुबुध, लुबुध, लुब्ध–वि० [सं० लुब्ध] १ लोभ से ग्रसित, लोभी। २ मुग्ध, मोहित, आसक्त। ३ अभिलाषी, इच्छुक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लुब्धक–पु० [सं० लुब्ध] १ बहेलिया, व्याध, शिकारी। २ उत्तरी गोलार्द्ध का एक तेजस्वी तारा। ३ देखो 'लुब्ध'।

लुब्धणो (बो)–क्रि० १ लोभ या लालच से ग्रसित होना। २ मुग्ध होना, मोहित होना। ३ इच्छा करना, अभिलाषा करना।

लुभाणो (बो), लुभावणो (बो)–क्रि० १ मोहना, मोहित करना। २ आकर्षित करना। ३ लोभ, लालच में पड़ना। ४ मोह माया में फंसाना। ५ लोभ-लालच जगाना। ६ लुब्ध होना।

लुभावणो–वि० (स्त्री० लुभावणी) १ मोहित करने या मोहने वाला। २ आकर्षक। सुन्दर। ३ लोभ जगाने वाला, लुब्ध करने वाला।

लुरड़णो (बो)–क्रि० १ तोड़ना। २ रगड़ या खींचकर तोड़ना।

लुरणो (बो)–देखो 'लुळणो' (बो)।

लुरियो–पु० ऊंट की एक चाल विशेष।

लुरी–स्त्री० १ लंबे कानों वाली बकरी। २ अत्यधिक शीतल वायु।

लुळणो (बो)–क्रि० १ झुकना, नीचा होना। २ अभिवादन करना, नम्रता दिखाना। ३ झुकना, बल खाना। ४ मोच खाना, मुचना। ५ भार, बोझ के कारण नीचे झुकना, लचकना। ६ प्रवृत्त होना, उन्मुख होना। ७ टेढ़ा होना। ८ स्वभाव में लचीलापन लाना। ९ उमड़ कर आना। १० घूम कर आना, मुड़ना। ११ आघात या चोट से इधर-उधर होना, हिलना। १२ अंगों का हिलना-डुलना। १३ लथपथ होना। १४ देखो 'रळकणो' (बो)।

लुळताइ (ई)–स्त्री० १ लचीलापन, लचक, कोमलता। २ विनम्रता, नम्रता। ३ व्यवहार में मधुरता। ४ शिष्टता, सभ्यता।

लुळाणो (बो)–क्रि० १ झुकाना, नीचा करना। २ अभिवादन कराना। ३ झुकाना, बल देना, मोड़ना। ४ मोचना, मुचाना। ५ भार से झुकाना, लचकाना। ६ प्रवृत्त करना, उन्मुख करना। ७ टेढ़ा करना। ८ स्वभाव में नरमी लाने को कहना। ९ घुमाना, मोड़ना। १० इधर-उधर हिलाना। ११ अंगों को हिलाना। १२ लथपथ करना। १३ देखो 'रळकाणो' (बो)।

लुलाय–पु० [सं० लुलायः] भैंसा।

लुळावणो (बो)–देखो 'लुळाणो' (बो)।

लुलूसिया, लुलूसाहो–पु० मारवाड़ का एक प्राचीन सिक्का।

लुवणो (बो)–क्रि० १ पोंछना। २ ढलकाना।

लुवरड़ो (डो)–पु० (स्त्री० लुवरड़ी) बेटा, पुत्र।

लुवार–देखो 'लुहार'।

लुवारियो, लुवारो–पु० १ गाय का छोटा बच्चा। २ देखो 'लुहार'।

लुह–पु० १ शस्त्र प्रहार। २ लुखा, रुक्ष। ३ चूसना क्रिया। शोषण।

लुहण–वि० चूसने वाला, शोषक।

लुहणो (बो)–क्रि० १ चूसना, शोषण करना। २ शस्त्र प्रहार करना। ३ देखो 'लुधणो' (बो)।

लुहार–पु० [सं० लोहा-कार] (स्त्री० लुहराण, लुहारी) १ लोहे का काम करने वाला वर्ग। जाति। २ इस वर्ग का व्यक्ति। ३ लोहे का कारीगर। ४ चौरासी प्रकार के चोहटों में से एक।—खातो–पु० बढ़ई जाति का लुहार।

लुहास–पु० श्याम घटा के शिखर पर उठने वाला बादल।

लुहो–देखो 'लोही'।

लूंक–देखो 'लूंग'/'लांकी'।

लूंकड़ियो–पु० नर लोमड़ी, लूमड़।

लूंकड़ी–देखो 'लांकी'।

लूंकार–पु० ओढ़ने का छोटा ऊनी वस्त्र।

लूंकी–देखो 'लांकी'।

लूंकीमूळो–देखो 'लांकीमूळो'।

लूंको–देखो 'लांको'।

लूंग–पु० १ शमी या बबूल वृक्ष के पत्ते जो ऊंट, बकरी आदि का चारा होता है। २ बंदूक पर बारूद रखने का स्थान। ३ एक पक्षी विशेष। ४ देखो 'लवंग'।

लूंगाकरो–पु० एक लोक गीत।

लूंगी–स्त्री० १ एक प्रकार का अधोवस्त्र, तहमद। २ एक प्रकार का वस्त्र। ३ स्त्रियों की ओढनी विशेष। ४ एक लोक गीत। ५ बच्चे का शिश्न।

लूंचणो (बो)–क्रि० हड़पना। लूटना।

लूंचाणो (बो), लूंचावणो (बो)–क्रि० हड़पवाना, लुटवाना।

लूंछण–स्त्री० १ शिर पर न्यौछावर करके दिया जाने वाला दान। २ वस्त्र विशेष।

लूंछणो (बो)–क्रि० १ न्यौछावर करना, वारना। २ देखो 'लूंचणो' (बो)।

लूंजो–स्त्री० आचार या चटनी जैसा खाद्य पदार्थ।

लूंटणो (बो)–देखो 'लूटणो' (बो)।

लूंठाई–देखो 'लांठाई'।

लूंठापण, लूंठापणो, लूंठाणो–देखो 'लांठापणो'।

लूंठो–देखो 'लांठो'।

लूंड, लूंडो–वि० (स्त्री० लूंडी) १ मूर्ख, बेवकूफ। २ लुच्चा, लफंगा। ३ देखो 'लौंडो'।

लूंण–देखो 'लूण'।—हरांम='लूणहरांम'।—हरांमी='लूणहरांमी'।

लूंणो–देखो 'लुणो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लूंणी (बी)–देखो 'लुवणी' (बी)।
लूंथ–देखो 'लोथ'।
लूंबो–पु० गीली मिट्टी आदि का पिंड, लौंदा।
लूंधियो–पु० सायंकाल का अंधेरा।
लूंब–स्त्री० [सं० लंबुक] १ आभूषण में लटकाई जाने वाली छोटी लड़ी। २ ऊंट या घोड़े के साजमें के लटकने वाला कोड़ियों का गुच्छा, झूमका। ३ वस्तुओं का पुंज। ४ वर्षा की फुहार। ५ दीपक रखने हेतु दीवार में लगाया हुआ पत्थर। ६ छज्जे के नीचे के पत्थर में खोदे हुए गोले। ७ झूले की अवरोह गति। ८ नारियल की जटा। चोटी।
लूंबड़ो–पु० जटा या चोटी वाला नारियल।
लूंबझूंब–वि० १ सुसज्जित, शृंगारित,। २ आच्छादित, आवेष्टित।
लूंबणी (बी)–क्रि० १ लटकना, झूमना। २ लटक कर झूलना। ३ लिपटना, चिपटना। ४ आक्रमण या हमला करना। ५ घेरना, आवेष्टित करना। ६ लूटना। ७ उमड़कर आना।
लूंबलूंबाळी–वि० जिसके किनारों में लूंबें लगी हों।
लूंबाझूंब–वि० 'लूंबों' से परिपूर्ण।
लूंबाळो–देखो 'लुंबाळी'।
लूंबो–पु० १ धन, सम्पत्ति। २ लाभ।
लूंम–देखो 'लूम'।
लूंमझूम–देखो 'लूंबझूम'।
लूंमणी (बी)–देखो 'लूंबणी' (बी)।
लूंमो–देखो 'लूम'।
लू, लूअ–पु० १ लोप। २ काल। ३ प्रलय। ४ छेदन। ५ गुदा। ६ रुद्र।–स्त्री० ७ ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली अत्यन्त गर्म हवा। ८ पोंछना क्रिया।
लूअणो (बी)–क्रि० पोंछना।
लूअर–देखो 'तूर'।
लूकड़ो–देखो 'लांकी'।
लूकमुख–पु० एक देश का नाम।
लूको–पु० १ लुच्चा, बदमाश। २ लफंगा, चोर।
लूखट–पु० वृक्ष विशेष।
लूखाणो (बी)–क्रि० सूखना, रूखा होना, शुष्क होना।
लूखाणो, लूखासणो, लूखाहणो–वि० १ किसी परिवार में दूध दही आदि का पूर्ण अभाव। २ ऐसे मवेशियों का आभाव।
लूखो–वि० (स्त्री० लूखी) १ जिसमें चिकनाहट या स्निग्धता न हो। २ पौष्टिक तत्त्व की कमी वाला। ३ निस्सार। ४ नीरस, फीका। ५ शुष्क, रूखा। ६ अप्रिय, अरुचिकर। ७ बिना चुपड़ा। ८ जो नम्र या शिष्ट न हो। ९ स्नेह, दया जैसी कोमल भावनाओं के अभाव वाला। १० खुरदरा।
लूगड़ी–स्त्री० स्त्रियों की ओढ़नी।
लूगड़ु (ड़, ड़ो) लूगडू, लूघडो–पु० १ ओढने का वस्त्र विशेष। २ वस्त्र, कपड़ा।
लूघा–स्त्री० मुसलमानों की एक जाति।–वि० ढीला-ढाला।
लूचबाण–पु० एक प्रकार का कुत्ता।
लूट–स्त्री० १ बलपूर्वक कोई वस्तु या धन लेना क्रिया, डाका, डकैती। २ चोरी, अपहरण। ३ इस प्रकार से लिया गया सामान। ४ खुली वस्तु की अधिक से अधिक लेने की क्रिया। ५ अधिक लाभ उठाने की प्रवृत्ति।
लूटक–वि० लूटने वाला, लुटेरा।
लूटखसोट–स्त्री० १ छीना-झपटी। २ लूटना क्रिया।
लूटणू–पु० लुटेरा, डाकू।
लूटणी (बी)–क्रि० [सं० लुट्] १ लूटना, डाका डालना। २ कोई वस्तु या धन बलात् लेना, छीनना। ३ बलपूर्वक चोरी करना। ४ धोखे या बईमानी से कोई वस्तु या धन लेना, कमाना। ५ छीनना, झपटना। ६ खुली वस्तु को अधिक से अधिक लेना। ७ मजा, आनन्द या रसास्वादन करना। ८ किसी साधन या सुविधा का नाजायज उपयोग करना। ९ मोहित या आकर्षित करना। १० व्यापार में ठगी या चोर बाजारी करना। ११ नष्ट करना, बरबाद करना।
लूटमार–स्त्री० लूटने व मारने की क्रिया, तबाही।
लूटाणो (बी), लूटावणो (बी)–देखो 'लुटाणो' (बी)।
लूटी–स्त्री० चिपके या पिचके कानों वाली बकरी।
लूटेरो–देखो 'लुटेरो'।
लूठानह (ई)–देखो 'लांठो'।
लूड–वि० बदमाश, शैतान।
लूडणी (बी), लूडाणी (बी), लूडावणी (बी)–क्रि० लड़खड़ाना। डिगना।
लूण–पु० नमक, क्षार।
लूणणी (बी)–क्रि० १ भेड़ों की ऊन कतरना, काटना। २ फसल काटना।
लूणपण (णी)–पु० स्वामी भक्ति। नमक हलाली।
लूणहरांम–वि० कृतघ्न, दुष्ट। बईमान।
लूणहरांमी–स्त्री० कृतघ्नता, बईमानी।
लूणाई–देखो 'लुणाई'।
लूणागर–पु० लूणी नदी का एक नाम।
लूणाणो (बी), लूणावणो (बी)–क्रि० १ भेड़ की ऊन कतरवाना। २ फसल कटवाना।
लूणि–पु० मांस, गोश्त।
लूणियो–पु० १ एक प्रकार का घास। २ मक्खन ३ वर्षा कालीन एक वनस्पती।–वि० नमक का बना, नमकीन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लूणी–पु० १ बच्चों का एक खेल। २ लूणी नदी।

लूनी (बी)–देखो 'लूवणी' (बी)।

लूत, लूता, लूतार–स्त्री० [सं० लूता] १ मकड़ी, ऊर्णनाभ। २ चींटी।

लूतरी–वि० ढीट, निर्लज्ज।

लूथ–स्त्री० कुंज।

लूथकत्थ (थ्थ बाथ, थ्थ)–देखो 'लथबथ'।

लूधड़ो–वि० [सं० लुब्ध] (स्त्री० लूधड़ी) आसक्त।

लूबड़ो–देखो 'लूंबड़ो'।

लूम–स्त्री० १ पूंछ, दुम। २ कपड़ा बुनने का करघा। ३ एक राग विशेष। ४ देखो 'लूंब'।

लूमकझूमक, लूमझूम–देखो 'लूंबझूंब'।

लूमड़ी–देखो 'लोमड़ी'।

लूमणो (बी)–देखो 'लूंबणो' (बी)।

लूमाणो (बी)–देखो 'लूंबाणो' (बी)।

लूमाळी–देखो 'लूंबाळी'।

लूम्यांरीओरी–स्त्री० एक लोक गीत विशेष।

लूय–देखो 'लू'।

लूर, लूर, लूरड़ी–स्त्री० १ एक प्रकार के लोकगीत जो फाल्गुन में स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं। २ इन गीतों के साथ किया जाने वाला वृत्ताकार नृत्य। ३ गणगौर के के अवसर पर वेश्याओं द्वारा नृत्य के साथ गाया जाने वाला लोक गीत। (बीकानेर) ४ श्रावण की तीजणियों द्वारा गाया जाने वाला अन्य लोकगीत। ५ देखो 'लोर'।

लूवण–पु० शिश्न, मूत्रेन्द्रिय।

लूली–देखो 'लूली' (स्त्री०)।

लूलू–वि० मूर्ख, बेवकूफ।

लूली–पु० शिश्न, मूत्रेन्द्रिय।–वि० (स्त्री० लूली) १ जिसके हाथ पांव कटे हों। २ कार्य करने में असमर्थ।

लूवणो (बी)–क्रि० १ पोंछना, साफ करना। २ पेड़-पौधों के पत्ते व फल खींच कर ऐसे तोड़ना कि पीछे डंठल रह जाय। सूत लेना। ३ कुत्तों का जोर से भौंकना।

लूवर–देखो 'लूर'।

लूस–स्त्री० सार, तत्त्व।

लूसणो (बी)–क्रि० १ लूटना। ३ छीना-झपटी करना।

लूसाणो (बी)–क्रि० १ लुटाना, लुटवाना। ३ छीना-झपटी करवाना।

लूहणो (बी)–क्रि० १ बाल नोंचना, उखेड़ना। २ देखो 'लूवणो' (बी)।

लूहर–देखो 'लूर'।

लेंग–पु० एकाकी व्यक्ति, बिना बीबी-बच्चों वाला व्यक्ति।

ले–पु० १ दान। २ वार। ३ पुत्र, सुत। ४ राम। ५ दक्षता। ६ वस्तु। ७ मलिनता। ८ ढंग, तरीका। ९ मेल, मित्रता।–अव्य० तक, पर्यन्त।

लेइणो (बी)–देखो 'लैणो' (बी)।

लेइ (ई)–स्त्री० कागज आदि चिपकाने के लिये, आटे-मैदे को पानी में घोलकर पकाया हुआ अवलेह या पदार्थ।

लेकण–देखो 'लेखण'।

लेखंगो–वि० लिखने वाला। लेखक।

लेख–पु० [सं०] १ लिखे हुए अक्षरों का समूह। २ लिखावट। ३ पत्र, चिट्ठी। ४ निबंध, रचना। ५ कुशल समाचार। ६ हाथ से लिखी इबारत। ७ लिपिबद्ध किये हुए विचार। ८ देव, देवता। ९ प्रारब्ध, भाग्य। १० भाग्य में लिखा शुभाशुभ फल। ११ प्रतिज्ञा पत्र। १२ परस्पर लिखा इकरारनामा। १३ लिख कर दिया गया अधिकार। १४ पाप, कुकर्म।

लेखइ–पु० हिसाब।

लेखउ–देखो 'लेखो'।

लेखक–पु० १ लेखन कार्य करने वाला व्यक्ति। २ किसी लेख, रचना आदि का रचयिता। ३ साहित्यकार। ४ मुंशी आदि कार्यकर्त्ता।

लेखण–पु० १ लिखना क्रिया या भाव। २ लिखावट। ३ समझने या जानने की क्रिया। ४ लेखा-जोखा, हिसाब-किताब। ५ वमन, कै। ६ खांसी रोग। ७ बहत्तर कलाओं में से एक। ८ देखो 'लेखणि'।

लेखणि (णी)–स्त्री० १ लिखने की वस्तु, कलम, लेखनी। २ लिखावट।

लेखणो (बी)–क्रि० १ लिखना। २ लिखकर भेजना। ३ समझना लक्ष्य करना। ४ सोचना, विचारना। ५ मानना, स्वीकार करना। ६ देखना। ७ हिसाब लगाना, गिनती करना।

लेखप्रणाळी–स्त्री० लिखने की शैली, ढंग, तरीका।

लेखरिखभ–पु० [सं० लेखर्षभ] इन्द्र, सुरपति।

लेखवणो (बी)–देखो 'लेखणो' (बी)।

लेखवळि–क्रि० वि० भाग्यवश, संयोग से।

लेखवि–स्त्री० १ लक्ष्मी। २ पुष्प, सुमन।

लेखसाळ–स्त्री० [सं० लेखशाला] पाठशाला। लेखन कक्ष।

लेखांतर–पु० [सं०] भाग्य, प्रारब्ध।

लेखापासे–वि० १ अपार, असंख्य। २ देखो 'लेखेपासी'।

लेखाफाड़, लेखाबही–स्त्री० लेन-देन का हिसाब रखने की चौपड़ी बही।

लेखारिखभ–देखो 'लेखरिखभ'।

लेखि–देखो 'लेख'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेखिणि (णी)–देखो 'लेखणी'।
लेखिराति (ती)–पु० [सं० लेख्यराति] कुत्ता, श्वान।
लेखूं–देखो 'लेखो'।
लेखे, लेखें–अव्य० १ किसी के नाम। २ किसी के निमित्त। ३ किसी के खाते में। ४ हिसाब में, गिनती में। ५ अनुसार। ६ काम में, उपयोग में।
लेखेपासो–पु० बही का दाहिना भाग, नाम, खर्च या बकाया लिखने वाला भाग।
लेखो–पु० १ हिसाब–किताब, आय-व्यय विवरण। २ खाता। ३ गणना, हिसाब। ४ गिनती, गणना। ५ व्यवहार। ६ समता, बराबरी।।
लेड़ी–पु० ऊंट का पतला मल।
लेवि (छी)–देखो 'लैंची'।
लेजम–स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार का धनुष। २ धनुष चलाने के अभ्यास हेतु बनी लचकदार कमान।
लेट–स्त्री० १ लेटने की क्रिया या भाव, सोना। २ विलंब, देरी।
लेटणी (बो)–क्रि० [सं० लेटनम्] १ सोना, सोजाना। २ जमीन पर लंबा पड़ जाना। ३ नींद में सो जाना। ४ आराम करना।
लेटाणी (बो), लेटाधणी (बो)–क्रि० १ सुलाना, सोने के लिये प्रेरित करना। २ लंबा पटकना। ३ आराम कराना।
लेठी–पु० कमी।
लेड–पु० आभूषण विशेष।
लेलेड़ी–वि० (स्त्री० लेडी) १ मूर्ख, बेवकूफ। २ कायर, डरपोक।
लेण-देण–देखो 'लेन-देन'।
लेणहिरि–पु० भिखारी, याचक।
लेणहार–वि० लेने वाला।
लेणी (बो)–देखो 'लैणी' (बो)।
लेन-देन–पु० १ लेने-देने की क्रिया। २ गिरवी का धंधा। ३ व्यापार।
लेप–पु० [सं०] १ दीवार या किसी वस्तु पर पोतने का गाढा पदार्थ, लेपन। २ लेपन या पुताई की क्रिया। ३ उबटन, मालिश। ४ उबटन का पदार्थ।
लेपक–वि० लेप करने वाला।
लेपकरम (र्म)–पु० १ लेपन का कार्य। २ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक।
लेपणी (बो)–क्रि० [सं० लेपनम्] १ पोतना, पुताई करना। २ उबटन करना, मालिश करना। ३ कोई लेप चढाना।
लेपन–स्त्री० चौसठ कलाओं में से एक, लेप।
लेबो–वि० ढीला, झुकने की अवस्था जैसा, तीखा। लंबा।
लेमटो–पु० बाजरी या ज्वार का दलिया।
लेरियो–पु० विभिन्न रंगों की धारियों वाला ओढने का वस्त्र,साफा।
लेलरी, लेलरी-स्त्री० १ दीवार या पत्थर पर लगने वाला रोग, कीटाणु। २ एक प्रकार की चिड़िया।
लेलरू–पु० एक प्रकार का घास।
लेलहांन, लेलिह, लेलिहांन–पु० सर्प, सांप।
लेळी–वि० १ जिसके लार टपकती हो। २ भोला।
लेव–पु० [सं० लेप] १ लेप, लेपन। २ स्पर्श, असर। ३ पपड़ी।
लेवड़, लेवड़ी–पु० चूने, रंग आदि की पपड़ी।
लेवणी (बो)–देखो 'लेणी' (बो)।
लेवाड़, लेवाड़ी, लेवाळ–वि० १ लेने वाला। २ खरीददार, ग्राहक।
लेवी–स्त्री० सरकार द्वारा किसानों से की जाने वाली अनाज वसूली।
लेवो–पु० ऊनी वस्त्रों में लगने वाला कीड़ा विशेष।
लेस–वि० [सं० लेश] १ अत्यल्प, थोड़ा, किंचित। २ सूक्ष्म। ३ रंच मात्र। ४ तनिक। ५ अणुमात्र।–पु० १ एक अलंकार विशेष। २ देखो 'लेस'।
लेसाळ, लेसाळा–देखो 'नेसाळ'।
लेसाळियो, लेसाळीयउ–देखो 'नेसाळियो'।
लेस्या–स्त्री० जीव की आत्मा की, कर्मों से संबंध की एक अवस्था।
लेहंगा–देखो 'लहंगो'।
लेह, लेहण–पु० [स० लेह्य] १ भोजन, आहार। २ आनन्द, मजा। ३ चाटकर खाने की वस्तु। ४ चटनी, चाट, अवलेह। ५ ग्रहण का एक भेद।
लेहणो–देखो 'लैणो'।
लेहणो (बो)–क्रि० [सं० लेह्य] १ चाटना। २ स्वाद लेना। ३ चखना।
लेहल्ल–वि० पकड़ रखने वाला।
लेहासमा–स्त्री० लेखक सभा, लेखक मंडली।
लेह्य–वि० चाटने योग्य।
लैंगिक–पु० [सं०] लिंग द्वारा प्राप्त ज्ञान या अनुमान।–वि० १ लिंग संबंधी, लिंग का। २ चिह्न संबन्धी। ३ अनुमानित।
लैंगो–देखो 'लहंगो'।
लैंसर–पु० [अं०] फौजी रिसाले का एक भेद।
लै–पु० १ राम। २ प्रलय। ३ उमा। ४ रमा। लक्ष्मी। ५ करुणा, दया। ६ अवसर, मौका। ७ ध्यान, लगन। ८ वश, अधिकार।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लंकार–स्त्री० १ लयपूर्ण ध्वनि । २ मधुर ध्वनि ।–पु० [सं० लय-कार] ३ विनाश, संहार ।

लंकी–देखो 'लहकी' ।

लंखव–देखो 'लेख' ।

लंचाळ–स्त्री० १ तलहटी । २ डिंगल का एक छंद (गीत) ।

लंजी–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी ।

लंजो–देखो 'लहजो' ।

लंण–स्त्री० १ तुरंत की ब्याई हुई गाय । २ मृत्युभोज के साथ सगे संबंधियों को दिया जाने वाला लौटा, बर्तन आदि । –वि० बेचारी ।

लंणदार–वि० ऋण वाला ।

लंणदेण–देखो 'लेन-देन' ।

लंणायत, लंणायती–वि० १ ऋणदाता । जिसका ऋण देना बाकी हो । २ मांगने वाला । ३ लेने वाला ।

लंणार, लंणियार–वि० लेने वाला ।

लंणियो, लणो–पु० १ लाभ, फायदा । २ कर्ज, ऋण । ३ हित, भलाई ।

लंणो (बो)–क्रि० १ लेना, प्राप्त करना । पाना । २ खरीदना, मोल लेना । ३ हस्तगत करना, ग्रहण करना । ४ कहीं ले जाने के लिये साथ रखना । ५ अधिकार या कब्जे में करना । ६ सेवन करना, खाना । ७ पहुंचना । ८ उपयोग करना । ९ पूछना, राय मांगना ।

लंणो-दंणो–पु० १ ताल्लुक, मतलब, संबंध । २ लेन-देन ।

लंन-दंन–देखो 'लेन-देन' ।

लंभ–पु० थोड़ा समय, पल, किंचित समय ।

लंर–क्रि० वि० १ लेकर, लेते हुए । २ पीछे । ३ देखो 'लहर' ।

लंरको, लंरड़ो–देखो 'लहर' ।

लंरदार–देखो 'लहरदार' ।

लंरां–देखो 'लारैं' ।

लंराणो (बो)–देखो 'लहराणो' (बो) ।

लंरिया–देखो 'लारैं' ।

लंरियो–देखो 'लहरियो' ।

लंरो–देखो 'लहर', 'लहरियो' ।

लंर्यां–देखो 'लारैं' ।

लंर्यो–देखो 'लहरियो' ।

लंलहाणो (बो)–देखो 'लहलहाणो' (बो) ।

लंलो–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया ।

लंस–पु० १ लंबी नोक वाला एक बाण विशेष । २ माला । ३ कपड़ों पर लगाने का बेल बूंटेदार फीता ।–वि० पूर्ण सुसज्जित एवं तैयार ।

लों–देखो 'लौ' ।

लोंक–स्त्री० १ लचक । २ देखो 'लांक' ।

लोंगो–देखो 'लूंगो' ।

लोंदो–देखो 'लूंदी' ।

लो–पु० १ मोह । २ प्रीति । ३ मछली । ४ शिला ।

लो'–देखो 'लोह' ।

लोअड़ो–देखो 'लोड़ो' ।

लोअण, लोअणडो–देखो 'लोचन' ।

लोइ–१ देखो 'लोक' । २ देखो 'लोई' ।

लोइण–देखो 'लोचन' ।

लोइयो–पु० कच्चा तरबूज, मतीरा ।

लोई–स्त्री० १ गूंदे हुए आटे की लंबी बेल, लोंद । २ स्त्रियों के ओढ़ने का ऊनी वस्त्र विशेष । ३ प्रसव के बाद जच्चा-बच्चा के को जाने वाली मालिश । ४ संत कबीर की पत्नी का नाम । ५ देखो 'लोवड़ी' । ६ देखो 'लोही' । ७ देखो 'लोक' ।

लोईझांण–देखो 'लोहीझांण' ।

लोईयाळ–वि० रक्त से भरा हुआ, रक्तपूर्ण ।

लोकंजन–पु० एक प्रकार का कल्पित अंजन ।

लोक, लोकड़ो–पु० १ संसार, जगत । २ समाज । ३ मनुष्य, व्यक्ति । ४ प्रजा, जनता । ५ सेना, फौज । ६ वह स्थान जिसका बोध देखने से होता है । ७ मृत्युलोक, नागलोक आदि स्थान । ८ पुराणानुसार जीव के मरणोपरान्त जाने का स्थान । ९ नागरिक । १० परिजन, परिग्रह । ११ दल, समूह । साथ । १२ कृषक, किसान । १३ पति, स्वामी । १४ वस्त्र की तरह एक पक्षी विशेष । १५ सात व चौदह की संख्या ।—ईस–पु० ब्रह्मा ।—धारणो, धारिणी–स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।—नाथ–पु० ईश्वर, राजा, नृप ।—प, पत, पता, पति, पती–पु० ब्रह्मा । ईश्वर, प्रभु । नृप, राजा । पाळ, पाल–पु० राजा, नृप । ईश्वर, प्रभु ।—पितामह–पु० ब्रह्मा ।—बंधु, बंधू–पु० सूर्य, भानु । शिव, महादेव । —बळ–पु० जन शक्ति ।—माता–स्त्री० जगत्जननी, लक्ष्मी ।

लोकचख–पु० [सं० लोक-चक्षु] सूर्य, भानु ।

लोकधुन, लोकधुनि–स्त्री० जनश्रुति । अफवाह, जनरव ।

लोकनीत (नीति)–स्त्री० [सं० लोकनीति] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।

लोकलाज–स्त्री० लोक या समाज के प्रति लज्जा या सम्मान अथवा शिष्टता का भाव ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोकलोक–स्त्री० लोक मर्यादा ।

लोकवी–वि० लुप्त ।

लोकव्यवहार–पु० १ लोगों का परस्पर शिष्ट व्यवहार, लौकिक रीति । २ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।

लोकस–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

लोकांतर–पु० [सं०] मरणोपरांत मिलने वाला परलोक ।

लोका–देखो 'लांको' ।

लोकाई–स्त्री० प्रजा, जन-समूह ।

लोकाचार (क)–पु० [सं०] १ समाज के आचार-व्यवहार । २ मेल-जोल व शिष्ट व्यवहार । ३ मृतक के दाह संस्कार आदि की क्रिया । ४ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक ।

लोकाचारियो–वि० १ समाज के लौकिक व्यवहार का पालन करने वाला । २ दाह संस्कार में सम्मिलित होने वाला ।

लोकाट–पु० एक प्रकार का पौधा ।

लोकाधिप, लोकाधिपति (ती)–पु० [स०] १ ईश्वर, परमात्मा । २ ईश्वर, प्रभु ।

लोकाध्यक्ष–पु० [सं०] १ ईश्वर । २ ऐसे किसी पद का अधिकारी ।

लोकाय, लोकायक–पु० १ संसार, जगत । २ प्रजा, जगत के लोग ।

लोकायत–पु० [सं०] १ समाज । २ भारतीय दर्शन में एक प्राचीन भूतवादी नास्तिक सम्प्रदाय । ३ चार्वाक दर्शन । ४ दुर्मिल छंद का एक नाम ।

लोकालाज–स्त्री० १ परिवार-समाज आदि के प्रति होने वाली शर्म, शंका । २ लोक निंदा का भय ।

लोकालोक–पु० १ संसार, जगत । २ एक प्राचीन पर्वत ।

लोकोक–देखो 'लौकिक' ।

लोकेस, लोकेसवर, लोकेस्वर–पु० [सं० लोक-ईश, लोक-ईश्वर] १ ब्रह्मा । २ राजा, नृप । ३ इन्द्र ।

लोकेसणा–स्त्री० [सं० लोक-एषणा] १ संसार में यश एवं प्रतिष्ठा की कामना । २ स्वर्ग के सुख की कामना ।

लोकोकत, लोकोकती, लोकोक्ति, लोकोक्ती–स्त्री० [सं० लोक-उक्ति] १ कहावत, जनश्रुति । २ एक अलंकार विशेष ।

लोकोत्तर–वि० [सं०] अलौकिक, विलक्षण ।

लोकी–देखो 'लोक' ।

लोग, लोगड़ो–पु० (स्त्री० लुगाई) १ आदमी । २ अपरिचित पुरुष । ३ पराया व्यक्ति । ४ समाज । ५ देखो 'लोक' ।

लोगाइ (ई)–देखो 'लुगाई' ।

लोड़–स्त्री० १ बलात्कार । २ लूट । ३ लघुता । ४ इच्छा ।

लोड़णो (बो)–क्रि० १ लूटना, खोसना । २ हड़पना, छीनना, झपटना । ३ प्राप्त करना, लेना, पाना । ४ स्पर्श करना, छूना । ५ मस्ती में झूमना । ६ उमंगित होना । ७ जोड़ना ।

लोड़वड़ाई–स्त्री० छोटे-बड़े का अन्तर ।

लोड़ाऊ–वि० लुटाने वाला, उड़ाने वाला, खर्चने वाला ।

लोड़ियो, लोड़ो–देखो 'लघु' ।

लोच–स्त्री० [सं०] १ लचक या लचीनेपन का गुण, अवस्था । २ नरमी, कोमलता । ३ अभिलाषा, इच्छा । ४ सार; तत्त्व । ५ गूंदे हुए आटे का एक गुण । ६ चाहे जैसे ऐंठने; मरोड़ने पर न टूटने का गुण । ७ आंसू ।

लोचक–पु० [सं०] १ मूर्ख व्यक्ति । २ आंख की पुतली ३ काजल, अंजन ।

लोचण–देखो 'लोचन' ।

लोचणियो–पु० १ नाश्ता । २ लोचन ।

लोचणो (बो)–क्रि० १ सोचना, विचारना, कल्पना करना । २ पक्षपात करना । ३ कोशिश करना, प्रयत्न करना । ४ लचकाना, लचक पैदा करना ।

लोचन (न्न)–स्त्री० [सं०] १ आंख, नेत्र । २ दृष्टि, देखना क्रिया । ३ खिड़की ।

लोचपलोच–पु० १ आवेष्टन करने या घेरने की क्रिया । २ क्रोध-प्रोध होने की अवस्था ।

लोचालाचो–पु० १ अधिक खाने का प्रयास । २ शीघ्र पूरा करने का यत्न ।

लोचून–पु० [सं० लोह-चूर्ण] लोहे का चूर्ण, बुरादा ।

लोट–स्त्री० १ लोटना क्रिया । २ कागजी मुद्रा । ३ लूट । ४ लुटना क्रिया । ५ वापसी ।

लोटड़ी–स्त्री० मिट्टी का जलपात्र विशेष ।

लोटण–वि० लोटने वाला, लोट-पोट होने वाला ।–पु० १ लंका कबूतर । २ लोटना क्रिया । ३ वापसी ।

लोटणकरखी, लोटणकरियो–पु० एक लोक गीत विशेष ।

लोटणो (बो)–क्रि० [स० लुट] १ सोते हुए इधर-उधर लुढ़कना । लुटना । २ शयन करना, सोना । ३ विश्राम करना । ४ खुशामद करना । ५ वापस आना ।

लोटपोट–वि० अस्त-व्यस्त, विपर्यस्त ।–स्त्री० १ लुढ़कने की क्रिया, अवस्था या भाव । २ कुलांच खाने की क्रिया । ३ मस्त, उन्मत्त । ४ धुत, बेहोश, मूर्च्छित । ५ नष्ट । ध्वस्त ।

लोटमाळो–स्त्री० कच्ची दीवार पर लगाया हुआ घास-फूस आदि का छप्पर । छाजन ।

लोटाणो (बो), लोटावणो (बो)–क्रि० १ सोते हुए या पड़े हुए लुढ़काना, घुड़काना, लुटाना । २ वापस भेजना, वापस देना । ३ शयन कराना । ४ विश्राम कराना ५ धराशायी करना, गिराना । ६ खुशामद कराना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोटियो–पु० १ मिट्टी का कुल्हड़ । २ देखो 'लोटी' ।

लोटी, लोटीका–स्त्री० पीतल आदि धातु का छोटा लौटा, जल पात्र ।

लोटीगण–देखो 'लोटण' ।

लोटो, लोठो–पु० पीतल, तांबा, चांदी आदि धातु का जल पात्र, लौटा, लुटिया ।

लोडण–पु० 'कुळी' नामक कृषि उपकरण का लकड़ो मोटा तख्ता ।

लोडणो (बो)–क्रि० १ साफ रूई की पूनियां बनाना । २ कपास से रूई छांटना । ३ पत्थर पर मसाला पीसना । ४ मस्ती में झूमना । ५ देखो 'लोड़णो' (बो) ।

लोडाउ, लोडाऊ–देखो 'लोड़ाऊ' ।

लोडो–१ देखो 'लघु' । २ देखो 'लोढो' ।

लोड–पु० १ झुण्ड, समूह । २ वजन, भार । ३ तरंग । ४ लोक वाहन ।

लोढणो (बो)–देखो 'लोडणो' (बो) ।

लोढियो–१ देखो 'लघु' । २ देखो 'लोढो' ।

लोढी–स्त्री० १ चूड़ा उतारने लायक हाथी दांत का भाग । २ देखो 'लोढो' ।

लोढो–पु० १ शिल-बट्टा । शिला पर मसाले पीसने का पत्थर । २ मस्ती में झूमने की क्रिया ।

लोणी–स्त्री० हरी सब्जी विशेष ।

लोतर–पु० गुण, चतुराई । ज्ञान ।

लोतंआळ–पु० जंजाळ-चक्र ।

लोथ, लोथड़ो, लोथड़ी–स्त्री० १ शरीर, तन, देह । २ निष्प्राण शरीर, शव, लाश । ३ किसी गीली वस्तु का लौंदा । ४ गूंदा हुआ आटा । ५ ऐसे आटे के बड़े-बड़े पिंड ।

लोथबथ–देखो 'लथबथ' ।

लोधि–देखो 'लोध' ।

लोदंग–पु० शिव, महादेव ।

लोध–देखो 'लोध', 'लोधी' ।

लोदरवो–पु० जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन नगर ।

लोधी–स्त्री० १ मुसलमान पठानों की एक जाति । २ कपड़े की गठरी ।

लोध–स्त्री० [सं० लोध्र] १ एक वृक्ष विशेष । २ इस वृक्ष की छाल जो औषध में काम आती है ।

लोधा–स्त्री० एक राजपूत जाति ।

लोधी–देखो 'लोदी' ।

लोधेस्वर–पु० [सं० लोधेश्वर] एक तीर्थ का नाम ।

लोप–पु० १ क्षय, नाश । २ लुप्त या गायब होने की अवस्था । ३ व्यतीत होना, बीतना क्रिया । ४ अभाव, कमी । ५ मिटने की अवस्था । ६ व्याकरण में शब्द के साधन में कोई वर्ण उड़ने या हटने की अवस्था । ७ लंघन ।

लोपणो (बो)–क्रि० [सं० लोपनं] १ उल्लंघन करना । २ पार करना, लांघना । ३ जब्त करना । ४ क्षय करना, नाश करना । ५ लुप्त या गायब करना । ६ साफ करना, मिटाना । ७ अन्तर्धान करना ।

लोपन–पु० १ लुप्त करना या लोपना क्रिया । २ नाश, क्षय । ३ लंघन, उल्लंघन । ४ अवहेलना, उपेक्षा । ५ मिटाना क्रिया । ६ अन्तर्धान ।

लोपा–स्त्री० प्रयाग में एक देवी ।

लोपाणो (बो)–क्रि० १ उल्लंघन कराना । २ पार कराना । ३ जब्त कराना । ४ क्षय कराना, नाश कराना । ५ लुप्त या गायब कराना । ६ साफ कराना, मिटवाना । ७ अन्तर्धान कराना ।

लोपामुद्रा–स्त्री० अगस्त्य ऋषि की पत्नी का नाम ।

लोपावणो (बो)–देखो 'लोपणो' (बो) ।

लोफर–पु० [अ०] अवारा व्यक्ति ।–वि० १ धूर्त, कपटी । २ व्यभिचारी लंपट । ३ बातूनी । ४ अवारा । ५ उचक्का । —पण, पणो–पु० अवारापन, धूर्तता, व्यभिचार । लम्पटता ।

लोबान–पु० [फा०] धूप करने के काम का एक प्रकार का गोंद, गंध द्रव्य ।

लोबाणो (बो)–देखो 'लुभाणो' (बो) ।

लोबियाकज–पु० एक प्रकार का गहरा रंग ।

लोबो–देखो 'लोभो' ।

लोभ–पु० १ लालच, लिप्सा । २ कृपणता, कंजूसी । ३ इच्छा, चाह । लालसा । ४ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।–वि० काला, श्याम ।

लोभणो (बो)–क्रि० १ लोभ करना, लालच करना । २ कृपणता या कंजूसी करना । ३ इच्छा या अभिलाषा करना, चाहना । ४ देखो 'लुभाणो' (बो) ।

लोभाऊ–देखो 'लोभी' ।

लोभाणो (बो)–देखो 'लुभाणो' (बो) ।

लोभाळ, लोभियो–देखो 'लोभी' ।

लोभी–वि० [सं० लोभ-इन] (स्त्री० लोभण, लोभणी) १ किसी वस्तु को पाने की उत्कट इच्छा करने वाला । २ कामना, अभिलाषा करने वाला । ३ लालच या लोभ करने वाला, लालची । ४ कृपण, कंजूस । ५ याचक, भिखारी । ६ प्रिय, प्यारा ।

लोभीगुण–पु० कवि ।

लोभीड़ो–देखो लोभी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोम–पु० रोम, रोमावली । रोंएं ।

लोमकरणी–स्त्री० हिमालय में पाई जाने वाली एक सुगंधित वनस्पती की जड़ । जटामासी ।

लोमड़ी–स्त्री० कुत्ते की तरह का एक छोटा जंगली पशु ।

लोमविलोम–पु० साहित्य में एक शब्दालंकार विशेष ।

लोमस, लोमसरिख–पु० [सं० लोमश-ऋषि] पुराण प्रसिद्ध एक महर्षि ।

लोमहरसण–पु० [सं० लोम-हर्षन] १ सूत कुलोत्पन्न एक मुनि । २ एक प्रकार की खुशी ।

लोय–स्त्री० [सं० लोक] १ स्त्री, औरत । २ पत्नी । ३ लक्ष्मी । ४ लोकगीतों में एक संबोधन । ५ देखो 'लोक' । ६ देखो 'लो' ।

लोयण–देखो 'लोचण' ।

लोयणकमल–पु० [सं० लोचनकमल] विष्णु ।

लोयणधूम्र–देखो 'धूमलोचण'

लोयणि, लोयन–देखो 'लोचन' ।

लोयी–पु० आटे का लौंदा ।

लोर–पु० १ वर्षा की झड़ी । २ वर्षा की लहर । ३ टेर, रट, तेज ध्वनि । ४ समूह, झुण्ड । ५ तरंग, लहर । ६ वृक्षों की कतार ।

लोरिघी–पु० चुम्बक का टुकड़ा विशेष ।

लोरी–स्त्री० [सं० लोल] बच्चे को सुलाने के लिये गाया जाने वाला गीत ।

लोळ–स्त्री० १ कान का निचला भाग । २ अग्नि की लपट । ३ झुण्ड, समूह । ४ पतंग में धनुषाकार लगने वाली सीक । ५ एक प्रकार का कर्णाभूषण । ६ एक अस्त्र विशेष । ७ वीरघंट के बीच लटकने वाला गुटका । ८ ऐंठन ।–वि० चचल, चपल ।

लोल–वि० १ परिवर्तनशील । २ क्षणिक । ३ मूर्ख, बेवकूफ ।–पु० किलोल, कल्लोल ।

लोळणो (बो)–क्रि० १ मिट्टी, कीचड़ आदि से लथपथ करना, सनाना । २ मोड़ना, मुड़ाना । बल देना । ३ ऐंठन देना । ४ लिप्त करना, लिपटाना । ५ पकड़ना, उलझाना ।

लोलणो (बो)–क्रि० १ तड़फना, पड़ना, लोट-पोट होना । २ देखो 'लोळणो' (बो) ।

लोळमी (बो)–वि० मुड़ने वाली, मुड़ने योग्य ।

लोला–स्त्री० जिह्वा, जीभ ।

लोळाणो (बो)–क्रि० १ मिट्टी, कीचड़ आदि से लथ-पथ कराना, सनाना । २ मुड़वाना । बल दिराना । ३ ऐंठन दिराना । ४ लिप्त कराना, लिपटवाना । ५ पकड़वाना, उलझवाना ।

लोलाणो–(बो) क्रि० तड़फाना, लोट-पोट कराना ।

लोळावट–स्त्री० मुड़ने या झुकने की क्रिया या गुण ।

लोळावणो (बो)–देखो 'लोळाणो' (बो) ।

लोलासन–पु० एक प्रकार का योगासन ।

लोलो–स्त्री० मस्ती में शिर हिलाने की क्रिया ।

लोलु–वि० रस लोलुप ।

लोलुप–वि० लालची, लोभी, लालायित ।

लोळो–पु० १ बाण, शर । २ कुत्ता, झांसा । ३ मांस, पिंड ।

लोलो–पु० १ पुरुषेन्द्रिय, शिश्न ।–स्त्री० २ योनि, भग ।–वि० १ मूर्ख, अज्ञानी । २ भोला-भाला, सीधा-सादा ।

लोल्या–स्त्री० वासना, इच्छा ।

लोव–देखो 'लोह' ।

लोवड़–देखो 'लोई' / 'लोवड़ो' ।

लोवड़ियाळ (ळी), लोवडियाळ (ळी)–स्त्री० देवी, दुर्गा, शक्ति ।

लोवड़ो (डो)–स्त्री० १ देवी । २ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र । ३ लूंकार ।

लोवळवाळी–वि० 'लोवड़ो ओढ़ने वाली ।

लोवांणियो–पु० एक जाति विशेष का मुसलमान ।

लोवा–स्त्री० लोमड़ी ।

लोसक–पु० ताना, व्यंग ।

लो' सार–देखो 'लोहसार' ।

लोह–पु० [सं०] १ लोह नामक प्रसिद्ध धातु । २ शस्त्र प्रहार । ३ शस्त्र, हथियार । ४ तलवार । ५ लगाम, वल्गा ।–वि० १ शक्त, कठोर । २ काला, श्याम ।

लोहअभिसार–पु० १ दशहरे के दिन तलवार का पूजन । २ एक सामरिक रीति ।

लोहउ–देखो 'लोह' ।

लोहकरम–पु० १ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक । २ लोहे का काम ।

लोहकार–देखो लुहार' ।

लोहड़, लोहड़ड–देखो 'लघु' / 'लोह' ।

लोहड़ियाळ, लोहड़ियाळी–देखो 'लोवड़ियाळ' ।

लोहड़ो–देखो 'लोवड़ो' ।

लोहड़ो–देखो 'लोह' / 'लघु' ।

लोहछक (छक, छाक)–वि० शस्त्र प्रहारों से घायल, क्षत-विक्षत ।

लोहटिया–स्त्री० एक जाति विशेष ।

लोहड–देखो 'लोह' ।

लोहडियाळ–वि० शस्त्रों से सुसज्जित ।

लोहडो–देखो 'लोह' / 'लघु' ।

लोहण–देखो 'लोहो', 'लघु', 'लोह' ।

लोहणी (बो)–क्रि० पोंछना ।

लोहतम–पु० [सं० लोह+उत्तम] सोना, स्वर्ण ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लोहतरंग–पु० लोहे का एक वाद्य विशेष ।
लोहतोड़ी–पु० ऊंट ।
लोहधात–स्त्री० तलवार ।
लोहबद्ध–पु० हथियार विशेष ।
लोहभोगळ (भोगस)–पु० लोहे की अर्गला ।
लोहमइआंगी–पु० कवच विशेष ।
लोहमराट–देखो 'लौहमराट' ।
लोहमिणोलि–पु० लोहे के दरवाजे वाली पोल ।
लोहमिसाड़–वि० शस्त्रों से सुसज्जित ।
लोहमे, लोहमं–वि० [सं० लौहमय] लोहे का, लोह निर्मित ।
लोहर–पु० एक देश का नाम ।
लोहलंगर–पु० जहाज का लंगर । –वि० दृढ़, मजबूत ।
लोहलटोप–पु० लोहे का टोप, माथे का कवच ।
लोहलठ (लठ्ठ, लाठ, लाठियांणी)–पु० शेर, सिंह ।–वि० दृढ़, मजबूत ।
लोहवात–पु० एक प्रकार का वात रोग ।
लोहसंकु–पु० [सं० लोहशंकु] १ पुराणानुसार एक नरक । २ लोह का कांटा ।
लोहसार–स्त्री० १ तलवार । २ लोह भस्म ।
लोहांण–देखो 'लोहाणा' ।
लोहांबोह–पु० शस्त्र प्रहार ।
लोहाकार–देखो 'लुहार' ।
लोहागर–पु० लोहे की खान ।
लोहागिरि–स्त्री० वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा ।
लोहायळ–पु० नाथ सम्प्रदाय का संन्यासी ।
लोहार–देखो 'लुहार' ।
लोहाळ–पु० शस्त्र प्रहार ।
लोहित–पु० [सं०] १ रंगशाल, रंगशाला । २ शिव का त्रिशूल । [सं० लोहित] ३ रक्त, खून । ४ मंगलग्रह । ५ सर्प विशेष ।–वि० १ रक्त रंजित । २ लाल रंग का ।
लोहितक–पु० [सं०] १ लालमणि । २ मंगल ग्रह ।
लोहितचंदन–पु० १ केसर । २ लाल चंदन ।
लोहितभाळ–पु० शिव, महादेव ।
लोहितांग–पु० [सं०] मंगल ग्रह ।
लोहिताक्ष–पु० १ एक प्रकार का रत्न । २ जैनमतानुसार एक ग्रह ।
लोहित्त–देखो 'लोहित' ।
लोहियो–पु० लोहे का व्यापारी ।
लोही, लोहीड़ी–पु० रक्त, खून ।
लोहीझाण–वि० खून झरने की अवस्था में । लहू-लुहान ।
लोहू–देखो 'लोही' ।
लौ–अव्य० तक, पर्यन्त ।
लौंग–देखो 'लवंग' ।
लौंठी–देखो 'लांठी' ।
लौंड–देखो 'लौंडो' ।
लौंडापण (पणो)–पु० १ लड़कपन । २ लौंडेबाजी का काम ।
लौंडाबाज–देखो 'लौंडेबाज' ।
लौंडाबाजी–देखो 'लौंडेबाजी' ।
लौंडी–स्त्री० दासी, सेविका ।
लौंडेबाज–पु० १ लड़कों के साथ गुदा मैथुन करने/कराने वाला व्यक्ति । २ नव युवकों को फंसाने वाली स्त्री ।
लौंडेबाजी–स्त्री० 'लौंडेबाज' का कार्य ।
लौंडो–पु० (स्त्री० लौंडी, लौंडिया) १ लड़का, नवयुवक । २ अबोध बालक । ३ गुदा मैथुन करवाने वाला लड़का ।
लौंण–देखो लवण' ।
लौंद–पु० अधिक मास, मलमास ।
लौंदो–देखो 'लूंदो' ।
लौ–स्त्री० १दीप शिखा । २ ज्योति । ३ आग की लपट, ज्वाला । ४ इच्छा चाह । ५ लगन, चित्तवृत्ति । ६ ध्यान । ७ लय । ८ देखो 'लौं' ।
लौकिक, लौकीक–स्त्री० [सं० लौकिक] १ परम्परा । २ लोक समाज की व्यवस्था, रीति । ३ समाज । ४ लोक दिखावे के लिये किया जाने वाला कार्य । ५ लोक वृत्तान्त ।–वि० १ लोक का, समाज का व इससे संबंधित । २ लोक से संबंध व्यवहार करने वाला ।
लौकेस–देखो 'लोकेस' ।
लौड़णी (बो)–देखो 'लोड़णी' (बो) ।
लौड़ी–स्त्री० १ द्वितीय पत्नी । २ छोटी ।
लौड़ो–देखो 'लघु' ।
लौट–देखो 'लोट' ।
लौटण–देखो 'लोटण' ।
लौडो-देखो 'लघु' ।
लौर–देखो 'लोर' ।
लौलीण–देखो 'लवलीन' ।
लौह–देखो 'लोह' ।
लौहचारक–पु० एक नरक का नाम ।
लौहमराट–वि० १ शस्त्र चलाने में प्रवीण । २ दृढ़, मजबूत ।
लौहसार–देखो 'लोहसार' ।
लौहांण–पु० एक राजपूत वंश ।
लौहित, लौहित्य–पु० १ ब्रह्मपुत्र नदी का नाम । २ एक पर्वत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का नाम। ३ बरमा की सीमा पर स्थित एक प्रदेश। ४ लाल सागर का पुराना नाम।

लोहोडो–देखो 'लघु'।

ल्याकत–देखो 'लियाकत'।

ल्याणो (बो)–देखो 'लाणो' (बो)।

ल्याळ–देखो 'लाळ'।

ल्याळो–पु० भेड़िया।

ल्यावणो (बो)–देखो 'लाणो' (बो)।

ल्यो–देखो 'लो'।

ल्यूपक–पु० [सं० लूपक] ४१ वां क्षेत्रपाल।

ल्यूपतकेस–पु० [सं० लूपतकेस] ४२ वां क्षेत्रपाल।

ल्हसकर–देखो 'लसकर'।

ल्हसकरियो–देखो 'लसकरियो'।

ल्हसण–देखो 'लसण'।

ल्हास–स्त्री० १ गोष्ठी की तरह किया जाने वाला फसल की कटाई का कार्य। २ देखो 'लास'।

ल्हासक–वि० [सं० लासक] १ खिलाड़ी, क्रीड़ाप्रिय। २ इधर-उधर हिलने वाला।

ल्हासणो (बो)–क्रि० भागना, दौड़ना।

ल्हासियो–वि० 'ल्हास' में काम करने वाला।

ल्हेस–देखो 'लेस'।

ल्हैसबो–देखो 'लखोड़ो'।

ल्होड़–स्त्री० [सं० लघु] १ लघुता, छोटापन। २ छोटी पत्नी, द्वितीय पत्नी।

ल्होड़तो–वि० छोटी वाली।

ल्होड़ियो, ल्होड़ो, ल्होड़यो–देखो 'लघु'।

[व]

व, व्–देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन वर्ण। राजस्थानी में इसका उच्चारण भेद अंग्रेजी के W के समान भी मिलता है जो 'ब' तथा 'भ' के बीच की ध्वनि होती है।

वंक, व्रंक, वंकड़–पु० १ गर्व, अभिमान, घमण्ड। २ देखो 'बांक'। ३ देखो 'बांको'। ४ देखो 'वक्र'। ५ देखो 'बंक'।

वंकड़ो, व्रंकड़ो–देखो 'बांको'।

वंकड़ो, व्रंकड़ो–देखो 'बांको' (स्त्री० वंकड़ी)

वंकट–देखो 'बंकट'।

वंकति–देखो 'वक्र'।

वंकनाळ (ळि, ळी)–देखो 'बंकनाळ'।

वंकि, व्रंकि वंकी–देखो 'वंक', 'बांको'।

वंकीनाळि (ळी)–देखो 'वंकनाळ'।

वंकेण, वंकी, वंकत–देखो 'बांको', 'वक्र'।

वंग, व्रंग–पु० [सं०] १ जस्ता या रांगा नामक धातु। २ इस धातु की औषधि, भस्म। ३ प्रेम, मुहब्बत। ४ अधिकार, कब्जा। ५ वंश। ६ सीधापन, सरलता। ७ सुगम कार्य। ८ अवसर, मौका। ९ चंद्रवंशी राजा। १० कपास। ११ बैंगन। १२ देखो 'बंग'।

वंगर–वि० एकाकी, अकेला।

वंगस, वंगसी, वंगस्स–देखो 'बंगस'।

वंगा–देखो 'बंगाळ'।

वंगार, व्रंगार–देखो 'बघार'।

वंगारणो (बो)–देखो 'बघारणो' (बो)।

वंगाळ (ल)–देखो 'बंगाळ'।

वंगाळी (ली)–देखो 'बंगाळी'।

वंगास्टक–पु० [सं० वंगाष्टक] रांगा आदि धातुओं के योग से बना रसौषध।

वंगेसरी–देखो 'वागीस्वरी'।

वंगेस्वर–पु० [सं० वंगेश्वर] एक रसौषध।

वंगेस्वरी, व्रंगेस्वरी–देखो 'वागीस्वरी'।

वंगोवंग, व्रंगोबंग–क्रि० वि० यथास्थान, उचित जगह। व्यवस्थानुसार।

वंच, व्रंच–पु० [सं०] १ सूर्य। २ तोता। ३ ठगी, धोखा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वंचक, वंचक–वि० [सं०] १ छल, प्रपंच से ठगने वाला, ठग, धोखेबाज । २ धूर्त, खल । ३ पढने वाला, पाठक । ४ सोंधियार, चोर ।

वंचकता, वंचकता–स्त्री० [सं० वंचकता] १ छल, प्रपंच, धोखा, ठगी । २ चोरी । ३ धूर्तता ।

वंचणा–देखो 'वंचना' ।

वंचणी, वंचणी (बो)–क्रि० [सं० वंचनम्] १ ठगना, धोखा देना । २ चालबाजी करना, बईमानी करना । ३ देखो 'वांचणी' (बो) । ४ देखो 'बचणी' (बो) ।

वंचत, वंचत–१ देखो 'वंचित' । २ देखो 'वांछित' ।

वंचना, वंचस–स्त्री० [सं०] ठगी, धोखा, जाल, फरेब, प्रपंच ।

वंचाणी (बो), वंचावणी (बो)–क्रि० १ ठगवाना, धोखा दिलाना । २ चालबाजी या बेईमानी करवाना । ३ देखो 'बचाणी' (बो) ।

वंचित, वंचित–वि० [सं०वंचित] १ जो ठगा गया हो,धोखा खा गया हो । २ जो कुछ उपलब्धि या प्राप्ति न कर सका हो । ३ अभीष्ट पाने से रहित । ४ विमुख । ५ हीन

वंछक, वंछक–वि० (स्त्री० वंछकी) १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला । २ कामना करने वाला । ३ देखो 'वंचक' ।

वंछणी (बो), वंछणी(बो)–क्रि० [सं०वांछम्] १ चाहना, इच्छा करना । २ आशा, अभिलाषा रखना । ३ जिज्ञासा करना । ४ प्रेम करना ।

वंछत, वंछतो, वंछतो, वंछत, वंछती, वछतो–देखो 'वांछित' ।

वंछना–देखो 'वांछना' ।

वंछाणी (बो–क्रि० १ चाह कराना, इच्छा कराना । २ कामना या अभिलाषा करवाना ।

वंछासुर–देखो 'वत्सासुर' ।

वंछित, वंछित–देखो 'वांछित' ।

वंजण, वंजण–पु० [देश०] १ घास । २ शरीरांग अंग-उपांग । ३ शरीर की बनावट, शरीर का पहचान चिह्न । ४ देखो 'व्यंजन' ।

वंजणी (बो)–क्रि० [सं० वज्-गति] १ पराजित होना, भागना । २ चलना ।

वंजन, वंजन–देखो 'वंजण', 'व्यंजन' ।

वंझ, वंझ–देखो 'बंझा' ।

वंझणी (बो)–देखो 'वंजणी' (बो) ।

वंझि–देखो 'बंझा' ।

वंट, वंट–पु० [सं० वट] १ बंटवारा, विभाजन । २ विभाजन से होने वाला हिस्सा, भाग । ३ अंश, भाग । ४ पीसने की क्रिया या भाव । ५ विधुर । ६ हसिया नामक उपकरण का बेंट या दस्ता । ७ देखो 'वाट' ।

वंटणी (बो), वंटणी (बो)–देखो 'वंटणी' (बो) ।

वंटाणी (बो), वंटावणी (बो)–देखो 'बंटाणी' (बो) ।

वंटीलो, वंटीलो–वि० [सं० वट+आलुच्] (स्त्री० वंटीली) १ हिस्सेदार, भागीदार । २ साझीदार । ३ हक या भाग की अधिकारी ।

वंठ, वठी,वंठ, वंठी–वि० [स० वंठ] (स्त्री० वंठी) १ उद्दण्ड । २ अविवाहित, कुंआरा । ३ बौना । ४ पंगु, अंगहीन । –पु० १ अविवाहित व्यक्ति । २ नौकर, सेवक । ३ भाला, बरछा, शूल ।

वठणी (बो) वंठणी (बो)–क्रि० पीसना ।

वंडो–वि० [सं० वण्ड] १ सुन्नी, बधिया या आस्ता किया हुआ । २ अंग-भंग, पंगु । ३ अविवाहित ।

वणरायो–पु० [सं० वनराजि] वनस्पती ।

वणी–देखो 'वणी' ।

वंतळ–स्त्री० [सं० वर्तनम्] १ चित्त का किसी कार्य में लग जाना, मन बहलाव । २ बातचीत, वार्त्तालाप ।

वंतूळो, वनोळ, वंतोल, वंतोळियो, वंतोसियो, वंतोलीयो, वंथूळियो, वंथूलो–देखो 'बथूळो' ।

वद–१ देखो 'वंद्य' । २ देखो 'वंदन' ।

वंदगण–पु० १ पत्थर । २ बन्दीजन ।

वदगी–देखो 'बंदगी' ।

वंदण–१ देखो 'वंदन' । २ देखो 'वंदिण' ।

वंदणा–देखो 'वंदना' ।

वंदणी (बो)–क्रि० [सं० वंदनम्] १ नमस्कार, प्रणाम या अभिवादन करना । २ स्तुति या प्रार्थना करना । ३ पूजा करना, अर्चना करना । ४ प्रशंसा करना ।

वंदन–पु० [सं०] १ नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन । २ प्रार्थना स्तुति । ३ पूजा, अर्चना ।

वंदनमाळ (माळा, वार)–देखो 'बांदरमाळ' ।

वंदना स्त्री० [सं० वंदन] १ नमस्कार, अभिवादन, प्रणाम । २ स्तुति, प्रार्थना । ३ पूजा, अर्चना ।

वंदनी–स्त्री० [सं० वन्दनी] १ एक औषधि विशेष । २ गोरोचन । ३ तिलक । ४ वटी । ५ याचना कर्म । ६ देखो 'वंदना' ।

वंदनीक, वंदनीय–वि० [सं० वन्दनीय] १ प्रणाम या नमस्कार करने योग्य । २ स्तुति व प्रार्थना योग्य, प्रार्थनीय । ३ पूजा या अर्चना योग्य ।

वंदर–देखो 'बंदर' / 'वांनर' ।

वंदरमाळ (माळा, वाळ, वास, वाळा)–देखो 'बांदरमाळ' ।

वंदरियो–१ देखो 'बंदर' । २ देखो 'बदरियो' ।

वंदाणी (बो), वंदावणी (बो)–क्रि० [सं० वंदनम्] १ स्वागत करना, सम्मान करना, अगवानी करना । २ अभिवादन,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नमस्कार कराना। ३ स्तुति या प्रार्थना कराना। ४ पूजा, अर्चना कराना।

वंदित–वि० [सं०] १ पूजित, प्रार्थित, अभिवादित। २ स्तुत्य।

वंदीजण (न)–देखो 'बंदीजन'।

वंदीदाद–स्त्री० फारसी लोगों की धार्मिक पुस्तक।

वंदुरवाळ, वंदुरवाळि–देखो 'बांदरमाळ'।

वंदेणी (णी)–देखो 'वंदणी' (णी)।

वंदोबस्त–देखो 'बंदोबस्त'।

वंदौ–देखो 'वंदौ'।

वंद्य–वि० [सं०] १ नमस्कार या प्रणाम योग्य, वंदनीय। २ पूज्य, स्तुत्य। ३ प्रार्थनीय।

वंद्रावनवासी–देखो 'वृंदावनवासी'।

वंधव–देखो 'बंधु'।

वंध्या–देखो 'बंध्या'।

वंध्याचळ (लि)–देखो 'विंध्याचळ'।

वंध्यापण (पणो)–देखो 'बांझपणो'।

वंनरमाळ–देखो 'बांदरमाळ'।

वंनोळी–देखो 'बंदोळी'।

वंबि, वंबी–देखो 'बंबी'।

वंभ–१ देखो 'ब्रह्मा'। २ देखो 'ब्रह्म'।

वंभर, वंभार–देखो 'बंबार'।

वंस, वंस–पु० [सं० वंश] १ कुल, खानदान, गोत्र। संतान परम्परा। २ संतान, संतति, परिवार। ३ बेड़ा। ४ मनुष्य समूह। ५ खड्ग के बीच का चौड़ा भाग। ६ युद्ध की सामग्री। ७ रीढ़ की हड्डी। ८ गांठ। ९ गन्ना ऊख। १० साल वृक्ष। ११ शहतीर, बल्ला, लट्ठा। १२ पुष्प, फूल। १३ विष्णु का एक नाम। १४ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। १५ वंसलोचन। १६ बारह हाथ का एक नाप। १७ देखो 'बांस'। १८ देखो 'वंसी'।—कर–पु० किसी वंश का मूल पुरुष।

वंसक–वि० [सं० वंशक] वंश का, वंश संबंधी।–पु० १ बांस वृक्ष। २ बांस की गांठ। ३ अगर की लकड़ी। ४ मछली।

वंसकार–पु० एक राजवर्ग विशेष।

वंसक्षेतर–पु० [सं० वंशक्षेतृ] १ किसी वंश का अंतिम पुरुष। २ एक सर्प विशेष।

वंसज, वंसज–पु० [सं० वंशज] संतान, संतति, औलाद, पुत्र, पौत्र-प्रपौत्र आदि।–वि० बांस का बना।

वंसजा–स्त्री० [सं० वंशजा] १ पुत्री, पौत्री। २ वंसलोचन।

वंसधर–पु० [सं० वंश-धर] १ वंशज, सन्तान, संतति। २ वंश की मर्यादा या गौरव रखने वाला।

वंसनास–पु० [सं० वंश-नाश] १ किसी वंश का विनाश। २ ज्योतिष का एक विनाशकारी योग। ३ एक भयंकर विषैला सर्प।

वंसपरिपाटी–स्त्री० [सं०] १ वंश परम्परा, पीढ़ी, शृंखला। २ वंशगौरव।

वंसभाई–पु० [सं० वंश-भ्रातः] कुटुंबी बंधु। सगोत्री भाई।

वंसरी, वंसरी, वंसळी–देखो 'वंसी' / देखो 'बांसरी'।

वंसलोचण (न), वंसलोचन–पु० [सं० वंश-लोचन] बांस की गांठों से निकलने वाला सफेद पदार्थ, वंश कर्पूर।

वंसवृक्ष, वंसवृक्ष–पु० [सं० वंशवृक्ष] १ किसी पुरुष की संतति, पीढ़ी। २ किसी पुरुष की संतान का वृक्ष की तरह तैयार किया हुआ विवरण।

वंसस्थ–पु० [सं० वंशस्थ] एक वर्ण वृत्त विशेष।

वंसा–पु० १ शकरि प्रभा नर्क। २ देखो 'बांस'।

वंसावली, वंसावली–स्त्री० [सं० वंशावली] १ किसी वंश का क्रम, सूची, विवरण। २ वंश, कुल।

वंसावळीयो–पु० वंश गुरु, कुल गुरु।

वंसि, वंसी–वि० [सं० वंशी] किसी वंश का, वंश संबंधी।–स्त्री० १ बांसुरी, मुरली। २ रक्तवाहिनी सिरा, नश। ३ तोले का एक मान। ४ वंशलोचन। ५ घोड़े का नथुना। ६ देखो 'बंसी'।

वंसीधर (धरण,धारी) वंसीधर (धरण,धारी)–पु०[सं०वंशीधर] १ श्रीकृष्ण। २ ईश्वर।–वि० वंशी बजाने वाला।

वंसीवट–पु० [सं० वंशीवट] वृंदावन का एक वट वृक्ष।

वंसीवाळो, वंसीवाळो–पु० १ श्रीकृष्ण। २ वंशीवादक।

वंसु वंसू–देखो 'वंसी'।

वंसीधर, वंसोधर–देखो 'वंसधर'।

वंसी–१ देखो 'वंस'। २ देखो 'बांस'।

व (व)–पु० [सं०] १ वर्ण। २ वायु, पवन, हवा। ३ बाण, तीर। ४ शिव। ५ उपमा। ६ सुख। ७ अव्यय। ८ अर्थ। ९ वरुणदेव। १० समुद्र। ११ राहु का नाम। १२ कल्याण। १३ सांत्वना। १४ तुष्टि, साधन। १५ बस्ती। १६ वास,निवास। १७ सम्बोधन। १८ मंत्रणा। १९ बाहु। २० वस्त्र। २१ शार्दूल। २२ चीता। २३ कलस से उत्पन्न ध्वनि। २४ वंदय। २५ वृक्ष। २६ मूर्खता। २७ अस्त्र। २८ खड्गधारी। २९ सेरुकी कंद। ३० जल-कंद, शालूक। ३१ मद्य। ३२ प्रचेता।—सर्व० 'वह' का संक्षिप्त रूप।—अव्य० [फा०] तथा, और।

वइ–देखो 'वय'।

वइगण, वइगणीउ, वइगणु–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

वइ–देखो 'वय'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बइंड-देखो 'बिंड'।
बइअर-देखो 'बैर'।
बइगरणा-पु० व्यय को देख-रेख करने वाला राज्य कर्मचारी वर्ग
बइठणो (बो), बइट्ठणो (बो)-देखो 'बैठणो' (बो)।
बइण-देखो 'वचन'।
बइताळ-देखो 'बैताळ'।
बइदज-देखो 'वैद्यक'।
बइन-देखो 'वचन'।
बइर-१ देखो 'वैर'। २ देखो 'बैर'। ३ देखो 'बैरी'।
बइराग-देखो 'वैराग्य'।
बइरागर-पु० १ एक प्रकार का वस्त्र। २ देखो 'बैरागर'।
बइरागी-देखो 'बैरागी'।
बइराट-१ देखो 'बिराट'। २ देखो 'बैराट'।
बइरि, बइरी-१ देखो 'बैरी'। २ देखो 'बैर'।
बइवस्तु-देखो 'वैवस्वत'।
बइस-देखो 'वैस्य'।
बइसणो (बो)-देखो 'बैठणो' (बो)।
बइसनव-देखो 'वैस्णव'।
बइसाणो (बो)-देखो 'बैठाणो' (बो)।
बइसाह-देखो 'वैसाख'।
बइहन, बइहनड़ी-देखो 'बहन'।
बई, बई-देखो 'बेई'।
बईअर-१ देखो 'बहीर'। २ देखो 'बैर'।
बईकुंठ-देखो 'बैकुंठ'।
बईजयंती-देखो 'वैजयंती'।
बईदराज-देखो 'वैद्यराज'।
बइदब्भा-देखो 'विदरभा'।
बईयर-१ देखो 'बैर'। २ देखो 'बैर'।
बईर बईर-देखो 'बहीर'।
बउल-देखो 'बकुल', 'बोलसरी'।
बउळणो (बो) बउलणो (बो)-१ देखो 'बोळणो' (बो)। २ देखो 'बोळणो' (बो)।
बउळाणो (बो), बउलाणो (बो), बउळावणो (बो), बउलावणो (बो)-१ देखो 'बोळाणो' (बो)। २ देखो 'बोळाणो' (बो)।
बउळाबू, बउळावो-देखो 'बोळाऊ'।
बएसा-देखो 'वेस्या'।
बक-देखो 'बक'।
बकट-देखो 'विकट'।
बकणो (बो)-देखो 'बकणो' (बो)।
बकतर-१ देखो 'बकत्र'। २ देखो 'बखतर'।
बकता-स्त्री० [सं० वक्तृ] १ जिह्वा, जीभ, रसना २ देखो 'वक्ता'।
बकतावर, बकतावर-देखो 'बखतावर'।
बकत्र-पु० [सं० वक्त्र] १ मुख, मुंह, वदन। २ जानवरों की थूथन। ३ पक्षियों की चोंच ४ अग्रभाग या नोक। ५ आरम्भ। ६ अनुष्टप छंद। ७ जिह्वा, जीभ।
बकपंचक-देखो 'बकपंचक'।
बकफ-पु० [अ० वक्फ] १ देवी-देवताओं, मंदिरों आदि में भेंट या दान की जाने वाली सम्पत्ति। २ भेंट, उत्सर्ग। ३ दान। ४ वर्षा में छत के टपकने या चूने की अवस्था। ५ विद्वानों, कलाकारों आदि को जीवन-यापन के लिये दी जाने वाली जागीर।—बार-वि० 'बकफ' की जागीर वाला।—नामो-पु० दान पत्र।
बकर-पु० १ बलिदान, वध। २ देखो 'बक्र'।—गति, गतो= 'बक्रगति'।—गामी='बक्रगामी'।
बकरणो (बो)-देखो 'बकरणो' (बो)।
बकराणो (बो)-देखो 'बकराणो' (बो)।
बकळ-१ देखो 'विकल'। २ देखो 'बकळ'।
बकवाद-देखो 'बकवाद'।
बकाइण, बकाईण, बकायण, बकायन-देखो 'बकायन'।
बकार-पु० १ 'ब' अक्षर या वर्ण। २ देखो 'बाकार'।
बकारणो (बो)-देखो 'बाकारणो' (बो)।
बकाळ-देखो 'बक्काल'।
बकालत वकालत-स्त्री० [फा०] १ न्यायालय में वादी-प्रतिवादी के पक्षों को कानून के संदर्भ में प्रस्तुत करने की क्रिया। २ अपने पक्ष पर की जाने वाली बहस। ३ वकीलों का कार्य वा पेशा।—नामो-पु० पक्षकारों की ओर से वकील को दिया जाने वाला अधिकार-पत्र।
बकासुर-देखो 'बकासुर'।
बकी-देखो 'बकी'।
बकील वकील-पु० [फा०] १ विधि अभिभाषक। २ कानून की योग्यता रखने व न्यायालयों में मुकदमें लड़ने वाला। ३ पक्षकार का प्रतिनिधि, हिमायती। ४ संदेश वाहक, दूत।
बकुल-देखो बकुल'
बकूमो-पु० [अ० वकूफ] १ प्रकटीकरण। २ देखो 'बाकी'।
बकूफ-देखो 'बाकिफ'।
बक्कतण-देखो 'बक्रता'।
बक्कर-१ देखो 'बक्र'। २ देखो 'बकरी'। ३ देखो 'बकर'।
बक्करणो (बो)-क्रि० १ विरुद्ध होना। २ कोप करना। ३ देखो 'बकरणो' (बो)।
बक्काल-देखो 'बक्काल'।
बक्त, बक्त-पु० [अ०] १ समय, काल, वेला। २ अवसर, मौका। ३ किसी कार्य का निश्चित समय। ४ पल, घड़ी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ दिन। ६ विलंब, देरी। ७ अवकाश, फुरसत। ८ मौत का क्षण। ९ किसी कार्य में लगने वाला समय।

वक्तव्य–पु० [सं०] १ किसी बात, विषय आदि पर की जाने वाली टिप्पणी, कथन, स्पष्टीकरण। २ वक्ता की बात। –वि० कहने, व्यक्त करने या निरूपण करने योग्य।

वक्ता, वक्ता–पु० [सं० वक्तृ] १ कहने वाला व्यक्ति, बोलने वाला व्यक्ति। २ प्रवचन, भाषण या उपदेश करने वाला व्यक्ति। ३ शिक्षक। ४ विद्वान, पंडित।–वि० १ कहने बोलने या प्रवचन करने वाला। २ बोलने में चतुर, वाक्पटु।

वक्फ–देखो 'वकफ'।–दार='वकफदार'।–नामो='वकफनामो'।

वक्र–वि० [सं०] १ टेढ़ा, तिरछा, बांका। २ झुका हुआ मुड़ा हुआ, नत। ३ छलेदार, घुंघराला। ४ कुटिल, धूर्त, बेईमान। ५ निष्ठुर, निर्दयी। ६ दीर्घ।–पु० १ मुख। २ रुद्र। ३ मंगलग्रह। ४ शनि। ५ त्रिपुरासुर। ६ नदी का मोड़। ७ प्रथम गुरु के गणेश का नाम।—गति–वि० जिसकी गति टेढी हो, आचार-विचार से कुटिल। विपरीत दशा में चलने वाला।–पु० सर्प, सांप, मंगल ग्रह। सूर्य से पांचवें, छठे, सातवें तथा आठवें ग्रह।—गामी–वि० टेढ़ी चाल व विपरीत आचरण वाला, कुटिल।—ग्रीव–पु० ऊंट।—तुंड–पु० गणेश। तीता।—दंष्ट्र–पु० सूअर, वराह।—पुच्छ–पु० कुत्ता, श्वान।

वक्रकोटी–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

वक्रता–पु० [सं०] १ टेढ़ा व तिरछापन। २ वक्र होने की दशा। ३ साहित्य रचना की एक शैली।

वक्रति–देखो 'विकृति'।

वक्रदृष्टि–वि० [सं० वक्रदृष्टि] १ जिसकी नजर में क्रूरता भरी हो, अमंगलकारी दृष्टि वाला। २ क्रोधी। ३ ईर्ष्यालु, डाही। ४ मंद दृष्टि वाला।–स्त्री० १ तिरछी नजर। २ क्रोध पूर्ण आंखें। ३ मंद दृष्टि। ४ ऐंचाताना।

वक्रांग–वि० [सं०] १ जिसका अंग तिरछा या टेढ़ा हो। २ कूबड़वाला।–पु० १ हंस। २ चक्रवाक, चकवा। ३ सर्प, सांप।

वक्री–वि० [सं० वक्रिन्] १ विपरीत मार्ग पर जाने वाला। २ टेढे अंगों वाला। ३ क्रोधी। ४ विपरीत, उल्टा। ५ टेढा चलने वाला, विरुद्ध दिशा की ओर बढने वाला।—पु०ज्योतिष में वह ग्रह जो अपनी गति से टेढी गति पर आगे बढता हो और कुछ समय उपरान्त पुनः अपनी पूर्व गति पर आता हो। (मार्गी)

वक्रोक्ति–स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का काव्यालंकार। काकुक्ति। २ चमत्कारपूर्ण कथन।

वक्रोदर–देखो 'वकोदर'।

वक्ष, वक्षस्थल, वक्षोज–पु० [सं० वक्षत्] १ छाती, सीना। २ स्त्रियों के कुच, स्तन।

वक्ष्यमाण–वि० [सं० वक्ष्यमाण] १ कथनीय, वर्णनीय। २ जो कहा जा रहा हो।

वख–१ देखो 'विख'। २ देखो 'वक्ष', 'वख'।

वखत, वखत–देखो 'वक्त'। 'वखत'।—वंत = 'वखतवत'।—वडाल = वखतवडाल'।—बायरो = 'वखतबायरो'।

वखतसर–क्रि०वि० [अ० वक्त+राज० सर] ठीक समय पर, उपयुक्त समय पर।

वखतावर (र, रू) वखतावर–देखो 'वखतावर'।

वखतावरी–देखो 'वखतावरी'।

वखती–देखो 'वगती'।

वखत्त, वखत्त–देखो 'वकत्र', 'वक्त', 'वखत'

वखमी–देखो 'विषम'।

वखर–देखो 'भखारी'।

वखसीस–देखो 'बकसीस'।

वखाण, वखाण–देखो 'बखाण'।

वखाणणी (वी)–देखो 'बखाणणी' (वी)।

वखाणिबू–वि० [सं० व्याख्यातव्य] व्याख्या करने योग्य। जिसकी व्याख्या आवश्यक हो।

वखाणु (णी)–देखो 'बखाण'।

वखात–देखो 'विख्यात'।

वखारी–देखो 'भखारी'।

वखिस्थळ–देखो 'वक्षस्थल'।

वखे–देखो 'पखे'।

वखेड़ी–देखो 'बखेड़ी'।

वखेर–देखो 'बिखेर'।

वखेरणी (वी)–देखो 'बिखेरणी' (वी)।

वखो–देखो 'विखो'।

वख्तर, वख्तर–देखो 'बखतर'।

वग–१ देखो 'बाग'। २ देखो 'वरग'।

वगड़, वगड़–देखो 'बगड़'।

वगड़ावत, वगड़ावत–पु० [सं० व्याघ्र-पुत्र] १ बाघ नामक क्षत्रिय के वंशज जो २४ विभिन्न जाति की लड़कियों से उत्पन्न हुए थे। २ एक प्रकार का लोक गीत।–वि० वीर, बहादुर।

वगट–पु० [सं० भृकुट] शिर; मस्तक।

वगणी (वी)–१ देखो 'बजणी' (वी)। २ देखो 'बाजणी' (वी)।

वगत, वगत–१ देखो 'वक्त'। २ देखो 'वखत'।

वगतर, वगतरियो, वगतरो–देखो 'बखतर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बगता–देखो 'बकता'।
बगतावर, बगतावर–देखो 'बखतावर'।
बगती–पु० लूट का माल या दौलत।
बगर, बगर–पु० [देश०] १ एक देश जहाँ के ऊंट अच्छे होते हैं। २ देखो 'बगैर'। ३ देखो 'बगड़'।
बगरु (रू)–पु० १ 'बगर' देश का ऊंट। २ देखो 'बगरू'।
बगल बगल–देखो 'बगल'।
बगसणो(बो)–१ देखो 'बिकसणो'(बो)। २ देखो 'बकसणो'(बो)।
बगसाणो (बो)–देखो 'बकसाणो' (बो)।
बगसी–देखो 'बकसी'।
बगहरा–देखो 'बगैरह'।
बगाणो (बो), बगारणो (बो)–१ देखो 'बगाणो' (बो)। २ देखो 'बजाणो' (बो)।
बगार, बगार–देखो 'बघार'।
बगारणो(बो), बगारणो–(बो) देखो 'बघारणो (बो)।
बगावणो (बो), बगावणो (बो)–१ देखो 'बगाणो' (बो)। २ देखो 'बजावणो' (बो)।
बगि–देखो 'बरग'।
बगीचो, बगीचो–देखो 'बगीचो'।
बगोचो, बगोचो–देखो 'बगीचो'।
बगूतणो (बो)–देखो 'बिगूतणो' (बो)।
बगेरे, बगेरै, बगेरे–देखो 'बगैरह'।
बगेसरी, बगेस्वरी–देखो 'बागेस्वरी'।
बगैरह–अव्य० [फा० बगैरः] १ आदि, इत्यादि। २ इसी प्रकार। ३ संबंधित। ४ शेष। ५ प्रभृति। ६ प्रमुख।
बगोरणो (बो)–क्रि० [सं० विकुर्वम्] १ प्रव्यंजन करना, व्यक्त करना। २ प्रगट करना, बताना। ३ शैतान बनाना, आततायी बनाना।
बग्ग–१ देखो 'बरग'। २ देखो 'बाग'।
बग्गणो (बो)–१ देखो 'बजणो' (बो)/ 'बाजणो' (बो)। २ देखो 'भागणो' (बो)।
बग्गय–देखो 'बाग'।
बग्घ–देखो 'बाघ', 'बाग'।
बग्रहणो (बो)–देखो 'बिग्रहणो' (बो)।
बघंबर–देखो 'बाघंबर'।
बघडाव, बघवाय (वाव, वाह)–देखो 'बघवाव'।
बघार, बघार–देखो 'बघार'।
बघारणो, बघारणो (बो)–देखो 'बघारणो' (बो)।
बघेरो–देखो 'बघेरो'।
बघेल बघेल–देखो 'बघेल', 'बाघेल'।—खंड = 'बाघेलखंड'।
बड़–देखो 'वट', 'बड़ो'।
बड़छणो(बो)–क्रि०१ काटना, कतरना। २ देखो 'बुड़चणो'(बो)।
बड़णो (बो), बड़ण्यो (बो)–देखो 'बढ़णो' (बो)।
बड़लो, बड़लो–देखो 'वट'।
बड़वड़–देखो 'बड़बड़'।
बड़वड़णो (बो)–देखो 'बड़बड़णो' (बो)।
बड़वा–देखो 'बड़वा'।
बड़वाअगन (अनल),बड़वाग(गि,गी),बड़वाग्नि, बड़वानळ (ल)–देखो 'बडवानळ'।
बड़वामुख–देखो 'बड़वामुख'।
बड़वाय–स्त्री० वट वृक्ष की उप शाखा।
बड़सावत्रीव्रत, बड़सावित्रीव्रत–देखो बटसावित्रीव्रत'।
बड़सी, बड़सी–स्त्री० [सं० वार्षिकी] १ मृतक का वार्षिक दिन। २ इस दिन किया जाने वाला भोजन आदि का कार्यक्रम। ३ काम के बदले काम या वस्तु के बदले वस्तु ऐसा व्यवहार।
बड़ारण–देखो 'बडारण'।
बड़ि, बड़ि, बड़ी, बड़ी–१ देखो 'वट'। २ देखो 'बड़ो'। ३ देखो 'बड़सी'।
बड़ो, बड़ो–१ देखो 'बड़ो'। २ देखो 'बडो'।
बच–पु० [सं० वच्] १ वचन, वाक्य।–स्त्री० [सं० वचा] २ सरस्वती, शारदा। ३ औषधि विशेष। ४ देखो 'बीच'।
बचकळा (ला)–स्त्री० [सं० वचःकला] १ पढ़ने की कला। २ उच्चारण की कला।
बचखण–देखो 'विचक्षण'।
बचणो (बो)–देखो 'बचणो' (बो)।
बचत, बचत–१ देखो 'बचत'। २ देखो 'बिचित्र'।
बचत्र, बचत्र–देखो 'बिचित्र'।
बचन, बचन–पु० [सं०] १ बोलना क्रिया, उच्चारण। २ बोला हुआ शब्द, वाक्य, वाणी। ३ कथन, बात, उक्ति। ४ प्रण, संकल्प, वादा। ५ घोषणा। ६ उपदेश, मार्ग दर्शन, निर्देश। ७ आज्ञा, आदेश। ८ सलाह, परामर्श। ९ वर्णन, बयान, उल्लेख। १० अभिव्यक्ति। ११ पुनरावृत्ति। १२ नियम। १३ शब्द का रूप विधान। १४ सरस्वती। १५ भाषा, बोली।—कारी–वि० आज्ञाकारी, अनुयायी।–पाटव–स्त्री० वाक्पटुता।–प्रतिस्ठा–स्त्री० बचनों की मर्यादा।—युद्ध–पु० वाग्युद्ध।—सिध–वि० जिससे वचनों में सिद्धि हो, सिद्ध महात्मा।
बचनका, बचनका–देखो 'बचनिका'।
बचनगुप्ति, बचन–गुप्ति स्त्री० वाणी का संयम।
बचनयोग, बचनयोग–पु० उच्चारण की क्रिया, भाषा, बोली।
बचनलक्षिता–स्त्री० [सं०] परकीया नायिका विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचनविदग्धता (विदग्धता)–स्त्री० वाक्चातुर्य, बोलने की चतुराई ।

वचनविदग्धा–स्त्री० [सं०] १ परकीया नायिका । २ मधुरभाषी स्त्री, नायिका ।

वचनात–पु० [देश०] राजा-महाराजा द्वारा अधीनस्थों को लिखा जाने वाला आदेशात्मक शब्द ।

वचनि–देखो 'वचन' ।

वचनिका, वचनिका–स्त्री० १ गद्य-पद्य मय रचना की राजस्थानी साहित्य की एक विधि । २ गद्य रचना में छोटे-छोटे युग्म रूप । ३ कोई गद्य रचना । ४ चम्पूकाव्य । ५ वृत्त गंधा नामक काव्य रचना का एक विधान ।

वचनीय–वि० [सं०] १ कहने योग्य । २ उल्लेखनीय । ३ प्रशंसनीय ।

वचन, वच्चन–देखो 'वचन' ।

वचा–देखो 'वाचा' ।

वचाणी (बो), वचाणो (बो)–देखो 'बचाणी' (बो) ।

वचार–देखो 'विचार' ।

वचाळे (ळै)–देखो 'बिचै' ।

वचाव–देखो 'बचाव' ।

वचावणी, वचावणो–वि० बचाने या रक्षा करने वाला ।

वचावणी (बो)–देखो 'बचाणी' (बो) ।

वचिक्षण–देखो 'विचक्षण' ।

वचे (चै)–देखो 'बिचै' ।

वच्चंसी–वि० [सं० वर्चस्विन्] जिसके वचनों में प्रभाव हो । (जैन)

वच्चक–वि० [सं० वाचक] १ पढ़ने वाला, पढ़कर सुनाने वाला । २ देखो 'वंचक' ।

वच्चणी (बो), वच्चणो (बो)–क्रि० [सं० व्रज्] १ जाना, गमन करना । २ यात्रा करना । ३ निर्वासित करना, होना । ४ देखो 'बचणी' (बो) ।

वच्चन, वच्चन–देखो 'वचन' ।

वच्चाळइ–देखो 'बिचै' ।

वच्छ–१ देखो 'वत्स' । २ देखो 'वक्ष' ।

वच्छड़ी, वच्छड़ो–देखो 'वत्स' ।

वच्छनाग, वच्छनाभ, वच्छनाभ–देखो 'वत्सनाभ' ।

वच्छर, वच्छरी, वच्छरी–देखो 'वत्सर' ।

वच्छळ, वच्छल–देखो 'वत्सळ' ।

वच्छळता–देखो 'वत्सळता' ।

वच्छि, वच्छ–१ देखो 'वृक्ष' । २ देखो 'वत्स' ।

वच्छक–देखो 'वत्सक' ।

वच्छड़ी, वच्छड़ी–पु० [सं० वत्स] (स्त्री० वच्छड़ी) गाय का बच्चा ।

वच्छचोर–पु० [सं० वत्स-चोर] ब्रह्मा ।

वच्छबारस, वच्छबारस–पु० [सं० वत्स-द्वादशी] भादव कृष्णा द्वादशी ।

वच्छर–देखो 'वत्सर' ।

वच्छराज, वच्छराज–देखो 'वत्सराज' ।

वच्छरि–देखो 'वत्सर' ।

वच्छळ–देखो 'वत्सळ' ।

वच्छाणी (बो), वच्छावणी (बो)–देखो 'बिछाणी' (बो) ।

वच्छी–स्त्री० [सं० वत्सा] बच्ची, लड़की ।

वच्छूटणी (बो)–देखो 'बिछूटणी' (बो) ।

वच्छेक–देखो 'विसेस' ।

वच्छेदणी (बो)–देखो 'विच्छेदणी' (बो) ।

वच्छेर, वच्छेरियो, वच्छेरो–देखो 'बछेरो' ।

वच्छोड़णी (बो), वच्छोडणी (बो)–देखो 'बिछोड़णी' (बो) ।

वच्छोहणी (बो)–देखो 'बिछोहणी' (बो) ।

वच्छो–देखो 'वत्स', 'बच्चो' ।

वजंतरी, वजंत्री–देखो 'वजंत्री' ।

वजद्र–पु० [सं० वज्र] कुलिश, वज्र ।

वज–स्त्री० १ शरीर की बनावट, रचना, शरीर सौष्ठव । २ बनावट का ढंग, रचना प्रणाली । ३ अवस्था, दशा, हालत । ४ देखो 'बज' । ५ देखो 'वज्र' ।

वजड़–देखो 'वज्र' ।

वजण–१ देखो 'बाजण' । २ देखो 'वजन' ।

वजणी (बो)–१ देखो 'बाजणी' (बो) । २ देखो 'बजणी (बो) ।

वजन, वजन–पु० [फा०] १ बोझ, भार । २ भार का परिमाण तौल । ३ भारीपन गुरुता । ४ महत्व या मान का सूचक । ५ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी । ६ दाब, दबाव ।

वजनदार, वजनदार–पु० १ वजन या तौल करने वाला । २ देखो 'वजनी' ।

वजनी, वजनी–वि० [फा० वजनी] १ भारी, बोझिल । २ तौल में अधिक । ३ जो हल्का न हो । ४ गुरुतर । ५ ठोस । ६ महत्वपूर्ण । ७ गंभीर महान् ।

वजरंग, वजरंगी वजरंगी–वि० [सं० वज्रांग] १ वज्र के समान कठोर, सुदृढ़ । २ धूल से लथ-पथ ।–पु० [सं० वज्र-अंग] १ पवनसुत हनुमान का एक नामान्तर । २ वज्र के समान दृढ़ शरीर ।

वजर–पु० [फा० फजर] १ प्रातःकाल, प्रभात, सवेरा । २ देखो 'वज्र' ।—आसण, आसन='वज्रासन' ।—आयुध= 'वज्रायुध' ।—तुंड = 'वज्रतुंड' ।—दंड = 'वज्रदंड' । —दंत = 'वज्रदंत' ।—धर = 'वज्रधर' ।—पांण, पांणि, पांणी = 'वज्रपाणि' ।—बांह = 'वज्रबाहु' ।—मूठ, मूठी = 'वज्रमुष्टि' ।—सार = 'वज्रसार' ।

वजरदंती–देखो 'वज्रदंती' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वजराक (ग)–देखो 'बजराक' ।

वजरेसुरी (स्वरी)–देखो 'वज्रेस्वरी' ।

वजवजणो (बो)–क्रि० [सं० भज्] १ प्रतिष्ठा पाना, प्रसिद्धि पाना, प्रभाव रखना । २ वैभव प्राप्त करना ।

वजह–स्त्री० [अ० वजह] १ कारण, हेतु, निमित्त । २ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन । ३ कोई असाधारण परिस्थिति । ४ मुखाकृति, चेहरा । ५ प्रकृति ।

वजाड़णो(बो),वजाणो(बो) वजावणो(बो)-देखो 'बजाणो'(बो) ।

वजित्र, वजित्रि–देखो 'वाद्ययंत्र' ।

वजीफाखार–वि० [फा०] वजीफा या सहायता पाने वाला ।

वजीफो–पु० [फा० वजीफः] १ आर्थिक सहायता, निर्वाह भत्ता । २ पेंशन । ३ छात्रवृत्ति । ४ मंत्र पाठ, जाप ।

वजीर, वजीर–पु० [फा०] १ बादशाह का प्रधान, सचिव, मंत्री, अमात्य । २ राजदूत । ३ रावणा राजपूतों का एक संबोधन । ४ शतरंज का एक मोहरा ।

वजीरात, वजीरात–स्त्री० [फा०] १ वजीर का कार्य या पद । २ वजीर का कार्यालय, कचहरी ।

वजीरी–स्त्री० [फा०] १ वजीर का कार्य, पद, नौकरी । २ बलूचिस्तान के घोड़ों की एक जाति ।

वजुग्रात, वजुग्रात–स्त्री० [फा०]१ वजह का बहुवचन ।२ कारण समूह ।

वजू–पु० [अ० वुजू] नमाज से पूर्व हाथ-पांव धोने की क्रिया ।

वजूद–पु० [अ०] १ शरीर, देह । २ सत्ता, अस्तित्व ।

वजे–स्त्री० १ तरह, भांति, प्रकार । २ देखो 'वजह' ।

वजोग–१ देखो 'बिजोग' । २ देखो 'वियोग' ।

वज्जणो (बो)–देखो 'बजणो' (बो) ।

वज्जपाणि (णी) देखो 'वज्रपाणि' ।

वज्जमओ–देखो 'वज्रमय' ।

वज्जया–देखो 'विजया' ।

वज्जर, वज्जर–देखो 'वज्र' ।

वज्जरणो (बो) क्रि० [सं० वज्जर]–१ कहना, बोलना । २ क्रोध में बड़बड़ाना ।

वज्जरंगो–देखो 'वजरंग' ।

वज्जंद–वि० [सं० वज्र + इंद्र] १ जबरदस्त, जोरदार । २ प्रचंड, भयंकर । ३ महान् । –पु० इन्द्र का वज्र ।

वज्र, वज्र (वज्रउ)–पु० [सं०] १ इन्द्र का प्रधान शस्त्र । २ सुदर्शन चक्र । ३ विनाशकारी शस्त्र-अस्त्र । ४ भाला बरछा । ५ शिव का त्रिशूल । ६ तलवार । ७ विद्युत, बिजली । ८ फौलाद धातु, स्टील । ९ हीरा । १० हीरा काटने का उपकरण ।११ एक प्रकार का खंभा (वास्तुविद्या)। १२ चन्द्रमा की एक बनावट । १३ व्यूह रचना विशेष । १४ विश्वामित्र का एक पुत्र । १५ श्रीकृष्ण का एक प्रपौत्र । १६ वार-नक्षत्रों का एक योग । १७ फलित ज्योतिष में एक योग । १८ कोकिलाक्ष नामक वृक्ष । १९ सफेद कुश । २० सेहुड़, सेंहुड़ । २१ अकलबीर पौधा । २२ वज्र पुष्प । २३ त्रिकोण ❋ । –वि० [सं०] १ अत्यधिक कठोर सख्त, कड़ा । २ दृढ़, मजबूत । ३ तीव्र,उग्र ।—अंग,अंगो = 'वजरंगी' ।—कंकट–पु० हनुमान । होरकणो । कोकिलाक्ष वृक्ष । थूहड़ ।—कपाट–पु० वज्र के बने अथवा दृढ़ व मजबूत कपाट ।—तुंड–पु० गणेश । गरुड़ । गिद्ध । मच्छर । थूहड़ ।—दंड–पु० इन्द्र से प्राप्त अर्जुन का एक अस्त्र ।—दंत–पु० सूअर, शूकर, वराह । चूहा ।—धर–वि० शस्त्र धारी ।–पु०–इन्द्र । आदि बुद्ध ।—धार, धारिन, धारी–पु० इन्द्र । विष्णु ।—पांण, पांणि, पांणी–पु०इन्द्र विष्णु, शस्त्र धारी । ब्राह्मण, एक देवयोनि ।—पात–पु० बिजली का गिरना । विनाशकारी अस्त्र का पात । इससे होने वाली क्षति । शस्त्र प्रहार । दुर्घटना । भयंकर विपत्ति ।—बाहु–पु० इन्द्र, विष्णु । रुद्र । अग्नि ।—मय–वि० दृढ़, मजबूत । प्रबल, शक्तिशाली । हीरे का,हीरे संबंधी । लोह संबंधी ।—माग– पु०आकाश, व्योम । —सरीर–वि० बलवान ।—सार –वि० अत्यन्त, कठोर । –पु० हीरा ।—सोह–पु० वज्र की चोट, प्रहार ।

वज्रक वज्रक-पु० [सं०] १ हीरा । २व ज्रक्षार । ३ सूर्य का एक उपग्रह । ४ चर्म रोग का एक तेल ।

वज्रकीट वज्रकीट–पु०[सं०] पत्थर में छेद करने वाला एक कीड़ा, बनरोहू ।

वज्रकूट–पु० [सं०] हिमालय का एक शिखर, चोटी ।

वज्रक्षार–पु० [सं०] वैद्यक का एक रसायन योग ।

वज्रगोप–पु० [सं०] बीरबहूटी नाम कीट ।

वज्रघट–पु० [सं०] लंका का एक राक्षक ।

वज्रदंती, वज्रदंती–स्त्री [सं०] १ औषधि विशेष । २ इस औषधि का पौधा ।

वज्रनाभ (नाभ्र)–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक चक्र । २ एक सूर्यवंशी राजा । ३ एक राक्षस विशेष । ४ स्कन्द का एक सैनिक । ५ प्रद्युम्न का एक पुत्र । ६ विश्वामित्र का एक पुत्र ।

वज्रपोस–पु० कवचधारी योद्धा ।

वज्रप्राणघातक–पु० एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

वज्रभाखी–वि० [सं० वज्रभाषिन्] दृढ़ प्रतिज्ञ ।

वज्रभास–वि० दृढ़, मजबूत ।

वज्रमुष्ठि–स्त्री० [सं० वज्र मुष्ठि] १ इन्द्र । २ तीर चलाते समय की हाथ की मुद्रा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वज्रवारक–वि० [सं०] वज्र प्रहार को रोकने वाला । –स्त्री० देवी, दुर्गा ।

वज्रविसन–पु० [सं० विष्णु-वज्र] सुदर्शन चक्र ।

वज्रसरीर–पु० [सं० वज्र+ शरीर] दृढ़ शरीर ।

वज्रांग वज्रांग–देखो 'वजरंग' ।

वज्रांगी–स्त्री० [सं०] हड्जोड़ पर लगाई जाने वाली लता ।

वज्राग वज्राग्नि–देखो 'बजराग' ।

वज्रागरा–स्त्री० पृथ्वी, धरती, धरा ।

वज्रायुध (धी)–पु० [सं०] इन्द्र ।

वज्रासन–पु० [सं०] १ योग के चौरासी आसनों में से एक । २ गया में बोधिवृक्ष के नीचे की शिला, जिस पर बुद्ध ने सिद्धि प्राप्त की थी ।

वज्री–पु० इंद्र ।

वज्रेसरी (सुरी, स्वरी)–स्त्री० [सं० वज्र-ईश्वरी] १ देवी, दुर्गा । २ एक तांत्रिक अनुष्ठान ।

वज्रोली–स्त्री० [सं०] १ योग में हाथ की अंगुलियों की एक मुद्रा । २ एक यौगिक क्रिया ।

वझणो (बो)–क्रि० १ फैलना, विस्तृत होना । २ देखो 'बझणो (बो)' । ३ देखो 'वजणो (बो)' ।

वझो–देखो 'बजो' ।

वट–पु० [सं० वट] १ बरगद का पेड़, वट । [सं० वर्मक] २ अभिमान, गर्व । २ मर्यादा गौरव । ३ परंपरा । ४ गुण, धर्म । ५ ऐंठन, बल, मोड़ । ६ शृंखला, सांकल । ७ एक वर्ण ।—वि० (सं० वट-शून्य] १ भयानक, भयावह । २ देखो 'बाट' ।

वटकणो (बो), वटक्कणो (बो)–देखो 'बटकणो' (बो) ।

वटको, वटक्को–१ देखो 'बटको' । २ देखो 'बाटको' ।

वटचड़–पु० बेचैनी में बड़बड़ाने की क्रिया व इसकी आवाज़ ।

वटणो (बो), वट्टणो (बो–१ देखो 'बटणो' (बो) । २ देखो 'बाँटणो' (बो) ।

वटतर–पु० वैर, दुश्मनी ।

वटपत्री–स्त्री० [सं० वटपत्र, वटपत्रा] १ राम तुलसी २ चमेली । ३ एक वनस्पती विशेष ।

वटपाड़ो–देखो 'बटपाड़ो' ।

वटभरणी–पु० रस्सी बनाने का, काष्ठ का, धनुषाकार एक उपकरण ।

वटर–पु० [सं०] १ चोर, डाकू । २ बटेर पक्षी । ३ बिस्तर, चटाई । ४ पगड़ी । ५ मथाणी । ६ मुर्गा । ७ एक प्रकार का घास ।

वटळणो (बो)–देखो 'बिटळणो' (बो) ।

वटसावित्रीपूनम–स्त्री० जेष्ठ मास की पूर्णिमा ।

वटसावित्रीव्रत–पु० जेष्ठ मास में किया जाने वाला एक व्रत विशेष ।

वटाउ (ड़ो), वटाऊ, वटाऊ (ड़ो)–देखो 'बटाऊ' ।

वटाणो (बो)–देखो 'बटाणो' (बो) ।

वटारक–स्त्री० [सं०] डोरी, रस्सी ।

वटाळ, वटाळो–वि० (स्त्री० वटाळी) दुष्ट, नीच, धूर्त ।

वटाळणो (बो)–देखो 'बिटाळणो' (बो) ।

वटाव–देखो 'बाट' ।

वटावणो (बो), वट्टावणो (बो)–देखो 'बटाणो' (बो) ।

वटाहू–देखो 'बटाऊ' ।

वटी–पु० [सं०] १ रस्सी, डोरी । २ गोली या टिकिया । ३ उपवन, बगीचा, उद्यान ।

वटु, वटुक–पु० [सं० वटुकः] १ बालक, लड़का । २ ब्रह्मचारी । ३ धर्मशास्त्र का विद्यार्थी । ४ एक भैरव ।–वि० मूर्ख, मूढ़ ।

वटुकणो (बो)–देखो 'बटुकणो' (बो) ।

वटुकरण–पु० उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत ।

वटेवाहु, वटेत–देखो 'बटाऊ' ।

वट्ट, वट्टि–१ देखो 'बाट' । २ देखो 'वट' ।

वट्टी–पु० [सं० वट] १ गोला, गोली । २ आर्यावर्त का एक प्राचीन जनपद । ३ देखो 'बट्टी' ।

वठ–पु० १ अनुसार, अनुरूप । २ देखो 'बठै' ।

वठळ–पु० एक वृक्ष विशेष ।

वठाऊं–क्रि० वि० वहां से, उधर से ।

वठो, वठे, वठै–क्रि० वि० वहां, उधर ।

वड–पु० १ घूंघट वाला ओढनी का छोर । २ देखो 'बड़ो' । ३ देखो 'वट' ।

वडउ–देखो 'बड़ो' ।

वडकंवार (कुंवार), वडकंवर–देखो 'बडकुमारी' ।

वडकारण–वि० प्रशंसक, यश गाने वाला ।

वडगात–वि० १ शक्तिशाली, वीर । २ बड़े शरीर वाला ।

वडगूजर, वड्डगूजर–पु० एक क्षत्रिय वंश व इसका व्यक्ति ।

वडगोळो, वडगोळो–वि० १ दानवीर, उदारचित्त, महान् । २ वीर, साहसी ।

वडघोत–वि० १ दानवीर, उदार । २ महान्, श्रेष्ठ । ३ वीर, साहसी ।

वडजांनो–पु० वर के दादा, पिता, ताऊ, चाचा जो बरात में हों ।

वडणी (बो), वड्डणी (बो)–देखो 'बड्डणी' (बो) ।

वडत्यागी–वि० दानी, त्यागी, दानवीर ।

वडनाळ–स्त्री० तोप ।

वडप्पण (प्पणो, प्पण, प्पणो)–देखो 'बड़प्पण' ।

वडफर, वड्डफरि, वड्डफर–वि० [सं० वड्-फलक] रक्षा करने वाला, रक्षक ।–पु० ढाल ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वडवडणी (णो)–देखो 'बड़बड़णी' (णो)।
वडवेगि–स्त्री० शीघ्रता, त्वरा।
वडवेहड़ी–देखो 'बडबेड़ी'।
वडबोर (ड़ी), वड़बोर (ड़ी), वडबोरी–देखो 'बडबोर'।
वडभाग, वडभागी–देखो 'वडभाग', 'बड़भागी'।
वडमंन–वि० उदारचित्त, दयालु।
वडम–पु० १ यश, कीर्ति, प्रशंसा। २ महत्व विशेषता, गुण। ३ बुजुर्ग, पूर्वज। ४ बड़प्पन, महानता। ५ सज्जनता। ६ देखो 'बडी'।
वडमन (नो, प्र)–देखो 'वडमंन'।
वडमपण (णो)–पु० १ वृद्धपना, बुजुर्गियत। दानापन। २ देखो 'वडप्पण'।
वडमि–देखो 'वडम'।
वडराग, वडराग–देखो 'बडोराग'।
वडलाज–वि० अधिक लजालु।
वडवडाळी–वि० बड़ों में बड़ा।
वडवांनळ–देखो 'बड़वानळ'।
वडवार–देखो 'वडवार'।
वडवामुख–पु० [सं० वडवा-मुख] पाताल।
वडवालु (लो)–पु० वट वृक्ष का फल।
वडवड–क्रि० वि० बढ़-बढ़ कर।
वडस–देखो 'विडस'।
वडहठ–पु० युद्ध, लड़ाई, जंग।
वडहत (त्थ, थ)–वि० [सं० वड्र-हस्त] आजानबाहु।
वडहर, वडहार–वि० उच्चकुल का।
वडांवडी–वि० बड़ों में बड़ी। समर्थ।
वडाई, वड़ाई–देखो 'बडाई'।
वडाक–पु० भेड़िया।
वडापण (णो), वड़ापण (णो)–देखो 'बडप्पण'।
वडार, वड़ार–देखो 'वडहार'।
वडारण, वड़ारण–स्त्री० [सं० अवदरिका] दासी, सेविका। बांदी।
वडाल (लो), वड़ाल (लो)–पु० १ रथ। २ देखो 'बडी'। (स्त्री० वडाळी)
वडालोराग–देखो 'बडोराग'।
वडावड, वडावडी–१ देखो 'बढ़ाबढ़ी'। २ देखो 'बड़ांबडी'।
वडिव, वडिम, वडिमि (मी)–देखो 'वडम'।
वडियासुर–पु० (स्त्री० वडियासासु) श्वसुर का बड़ा भाई।
वडिस–पु० [सं० वडिश] मछली पकड़ने का कांटा, वंशी।
वडी–देखो 'बडी'।
वडोतीज–देखो 'बडोतीज'।
वडीदेवी–स्त्री० १ श्रीकरणी देवी। २ भगवती दुर्गा।
वडीनाळ–देखो 'वडनाळ'।
वडीम–देखो 'वडम'।
वडीमां, वडीमां–स्त्री० पिता की भौजाई, ताई।
वडु–१ देखो 'बडी'। २ देखो 'वट'।
वडुआर–देखो 'बडो'।
वडुजा–देखो 'विडुजा'।
वडेर, वडेर–पु० १ पूर्वजों का मकान, बड़ा घर। २ अनाज भरने की बड़ी कोठी।
वडेरउ, वडेरी, वडेरो–१ देखो 'बडी'। २ देखो 'बडेरी'।
वडें–वि० समान, बराबर।
वडेरी वड़ेरी–देखो 'बडेरी'।
वडोड़ी, वडी, वडी–देखो 'बडी'।
वडोदूहो–पु० दूहा छंद का एक भेद।
वडोभाव–पु० हाथी का एक रोग।
वडोराग–देखो 'बडोराग'।
वडोराज–पु० [सं० वड्र-राज] बड़ा साम्राज्य।
वडोरावळो, वडोरावळो–पु० बड़े ठाकुर या राजा का घर।
वडोसांणोर–पु० एक प्रकार का डिंगल गीत (छंद)।
वडुवड्डी–स्त्री० सर्व शक्तिमान देवी, दुर्गा।
वडुाक, वडुाख–देखो 'वडाक'।
वडो वडी–देखो 'बडो'/'बढो'। (स्त्री० वडी)
वढणो (णो)–१ देखो 'वढणो' (णो)। २ देखो 'बधणो' (णो)।
वढ, वढ़–पु० [सं० वर्ध] १ घाव। २ कटाव। ३ काट-छांट। ४ देखो 'बढ'/'बढो'।
वढणी, वढणी–स्त्री० १ पेट का दर्द, ऐंठन। २ काटना क्रिया।
वढणो (णो), वढणो (णो)–१ देखो 'वढणो' (णो)। २ देखो 'वधणो' (णो)।
वढवार–देखो 'वढवार'।
वढाणो (णो), वढाणो (णो)–देखो 'बढाणो' (णो)।
वढाळ (ळो, ली) वढ़ाळ–स्त्री० तलवार।
वढावणो (णो), वढावणो (णो)–देखो 'बढाणो' (णो)।
वढी–स्त्री० युद्ध, लड़ाई झगड़ा।
वढूलियो–देखो 'बथूलो'।
वढ्ढ–देखो 'वढ'।
वढ्ढणो (णो), वढ्ढणो (णो)–१ देखो 'वढणो' (णो)। २ देखो 'बधणो' (णो)।
वढेरउ–देखो 'बडेरो'।
वढो–पु० १ ऋण चुकाने के लिये दिया जाने वाला पशुधन या सामान। २ बंधन का निशान। ३ देखो 'वढ'।
वण–सर्व० १ उस, उन। २ देखो 'वणो'। ३ देखो 'बिना'। ४ देखो 'वन'। ५ देखो 'व्रण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वणक–देखो 'वणिक'।
वणकर–देखो 'बुनकर'।
वणगत–स्त्री० १ मेलजोल, प्रेम। २ बुनाई।
वणचर, वणचरि (री)–देखो 'वनचर'।
वणज–१ देखो 'विणज'। २ देखो 'वाणिज्य'।
वणजणो (बो)–देखो 'विणजणो' (बो)।
वणजार–१ देखो 'विणजार'। २ देखो 'विणजारो'।
वणजारड़ी–देखो 'विणजारो' (स्त्री०)।
वणजारा–देखो 'विणजारा'।
वणजारो–देखो 'विणजारो'।
वणणो (बो)–देखो 'वणणो' (बो)।
वणता–देखो 'वनिता'।
वणराइ, वणराई (राज, राय)–देखो 'वनराज'।
वणराय–देखो 'वनराज'।
वणरायमुनि–पु० नारदमुनि।
वणवास (सु)–देखो 'वनवास'।
वणसणो (बो)–देखो 'विणसणो' (बो)।
वणस्टी–पु० [सं० वणयष्टि] कपास के पौधे का डंठल।
वणस्सइ, वणस्सइ–देखो 'वनस्पति'।
वणाक–१ देखो 'वणाक'। २ देखो 'विनायक'।
वणाणो (बो), वणाणो (बो)–देखो 'वणाणो' (बो)।
वणायतो–वि० १ प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व वाला। २ सुन्दर, ओजस्वी।
वणारसी–१ देखो 'बनारसी'। २ देखो 'बनारस'।
वणारिस–पु० १ वाचनाचार्य। २ देखो 'बनारस'।
वणाव–देखो 'वणाव'।
वणावटी–देखो 'बनावटी'।
वणावणो–वि० १ बनाने वाला, बनाने योग्य। २ बनाने का साधन।
वणावणो (बो), वणावणो (बो)–देखो 'वणाणो' (बो)।
वणावि–देखो 'वणाव'।
वणास–१ देखो 'विनास'। २ देखो 'बनास'।
वणासणो (बो)–देखो 'विनासणो' (बो)।
वणासपति–देखो 'वनस्पति'।
वणिक–पु० [सं०] (स्त्री० वणियाणी) १ व्यापार करने वाला, व्यापारी, बनिया। २ व्यापारी समुदाय। ३ वैश्य।
वणिकपण–पु० १ व्यापारी होने का गुण, भाव। २ बनिये का स्वभाव, नीति।
वणिग्घो–पु० सूत खोलने का डंडा विशेष।
वणिज–देखो 'वाणिज्य'।
वणिजारो–देखो 'विणजारो'। (स्त्री० वणिजारी)
वणिज्ज–देखो 'वाणिज्य'।
वणियाणी–स्त्री० १ एक बरसाती कीड़ा। २ एक पौधा विशेष। ३ वणिक जाति की स्त्री।
वणियो–देखो 'वणिक'।
वणो–स्त्री० [सं० वनज] १ कपास का पौधा। २ कपास का डोडा। ३ करघा। ४ देखो 'वन'/'वण'/'वन्न'/'वनी'। ५ देखो 'वनस्पति'।
वणोठणो, वणोठणो–वि० १ बनठन कर तैयार। सुसज्जित। २ व्यवस्थित। ३ तयशुदा।
वणोमग–पु० [सं० वनीपक] १ भिक्षुक, भिखारी। २ याचक।
वणोमगठ्ठी, वणोमगवोस–पु० एक प्रकार का दोष (जैन)।
वणस्सइ–देखो 'वनस्पति'।
वणोयण–वि० १ आतंक फैलाने वाला। २ बनाने वाला।
वणोच–पु० आभूषण विशेष।
वणोखड़ो–देखो 'वणोखड़ी'।
वणोड़ो–देखो 'वणोड़ो'।
वणोद–देखो 'विनोद'।
वण्णी–वि० १ अचल, अटल, शाश्वत। २ बना हुआ।
वत–वि० [सं० वत्] १ संज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय। २ समान, तुल्य। ३ सुखी।–पु० १ शरीर। २ आकार, प्रकार। ३ कष्ट। ४ दया। ५ विस्मय। ६ आमंत्रण। ७ देखो 'वित्त'। ८ देखो 'बात'।
वतक–देखो 'वतक'।
वतका, वतड़ी–देखो 'बात'।
वतकाव, वतगाव–देखो 'बतळाव'।
वतन–पु० [फा०] १ जन्म भूमि, स्वदेश। २ राष्ट्र, देश।
वतळाणो (बो)–क्रि० १ ललकारना। २ देखो 'बतळाणो' (बो)। ३ देखो 'बताणो' (बो)।
वतळाव, वतळावण (णो)–देखो 'बतळावण'।
वतसर–देखो 'वत्सर'।
वतहा–पु० [फा०] मदीना शहर का नामान्तर।
वतागर–पु० सलाहकार, परामर्शदाता।
वताणो (बो), वतावणो (बो), वताणो (बो), वताधणो (बो)–देखो 'बताणो' (बो)।
वती वती–वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम बढ़िया। २ अधिक, ज्यादा। ३ अक्षय, स्थायी।–पु० १ प्रजा से लिया जाने वाला कर विशेष। २ देखो 'बत्ती'। ३ देखो 'बात'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वतीकर–पु० कपट।
वतीत–देखो 'व्यतीत'।
वतीतणो (बो)–देखो 'व्यतीतणो' (बो)।
वतूळियो, वतूळो–देखो 'बघूळो'।
वतेरो–देखो 'बत्तेरो' (स्त्री० वतेरी)।
वतं–पु० प्रकार।
वतोकड़–वि० (स्त्री० वतोकड़ी) १ अधिक बोलने वाला, वाचाल। २ अधिक बातें करने वाला।
वतो–देखो 'वत' / 'वत्तो'।
वत्त, वत्तड़ो–देखो 'बात'।
वत्ति, वत्तो–देखो 'बत्तो'।
वत्तीस–देखो 'बत्तीस'।
वत्तो, वत्तो–वि० (स्त्री० वत्ती) १ अधिक, बढ़कर। २ विशेष।
वत्थपुन्न–पु० वस्त्र दान का पुण्य। (जैन)
वत्थिरि–क्रि० वि० विस्तार से।
वत्थु–देखो 'वस्तु'।
वत्री–देखो 'बात'।
वत्रीस–देखो 'बत्तीस'।
वत्स–पु० [सं०] १ बेटा, पुत्र। २ गाय का बछड़ा। ३ जानवर का बच्चा। ४ छोटा बच्चा, बालक। ५ संतान, औलाद। ६ इन्द्र। ७ कंस का एक अनुचर। ८ एक प्राचीन देश।
वत्सक–पु० [सं०] १ छोटा बछड़ा, बच्चा। २ कुटज का पौधा। ३ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा। ४ यादव वंशीय एक राजा। ५ पुष्प कसीस। ६ कुटज। ७ निर्गुण्डी।
वत्सनाभ–पु० [सं०] १ हिमालय की तराई में होने वाला एक पौधा २ उक्त पौधे का मीठा विष। ३ एक महर्षि।
वत्सर–पु० [सं०] १ बारह मास की अवधि। वर्ष। २ विष्णु का एक नामान्तर। ३ ध्रुव राजा का छोटा पुत्र। ४ किशोर बछड़ा।
वत्सराज–पु० [सं०] १ गाय का बछड़ा। २ राजा उदयन का नामान्तर। ३ कौशल देश का एक राजा। ४ अजमेर का गौड़ वंशीय एक राजा।
वत्सल (ल)–वि० (स्त्री० वत्सळा) १ संतान के प्रति अत्यन्त दयालु। २ छोटों पर स्नेह, दया कृपा करने वाला। दयालु, कृपालु।–पु० १ अनुराग, प्रेम। २ वात्सल्य रस।
वत्सलता–स्त्री० दया, कृपा, ममता, वात्सल्य, प्रेम, अनुराग। अनुग्रह।
वत्सासुर–पु० [सं०] 'वत्स' नामक असुर।
वथ–देखो 'बाथ'।
वथवो, वथूअउ–देखो 'बधवो'।
वथूळियो, वथूळो–देखो 'बघूळो'।
वद, वद–पु० १ धार्मिक व आध्यात्मिक विषय का वास्तविक ज्ञान। २ वृत्त। ३ चारों वेद। ४ मास का पूर्व पक्ष, कृष्ण पक्ष। ५ एक रोग विशेष। ६ वृद्धि को प्राप्त करने की क्रिया।–वि० [सं० वद्] १ बोलने वाला। २ देखो 'वद'।
वदक–वि० [सं० वद्] १ बोलने वाला, वक्ता। २ कहने वाला, बताने वाला। ३ देखो 'वध'।
वदकी–वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। २ सज्जन, भला। ३ अधिक।
वदखोर (रो)–देखो 'बदखोरी'।
वदगढ–पु० दिल्ली का एक नामान्तर।
वदणो (बो), वबणो (बो)–क्रि० [सं० वद्] १ कहना। २ उच्चारण करना, बोलना। ३ उल्लेख करना, निरूपण करना। ४ बात-चीत करना। ५ सूचना देना, बताना। ६ पुकारना, चिल्लाना। ७ महत्व देना, मान देना। ८ गणना करना, मान्यता देना। ९ मानना, स्वीकार करना। १० आज्ञा, निर्देश देना। ११ बाजी लगाना, दाव लगाना। १२ प्रतिस्पर्धा करना। १३ डींग मारना। शेखी बघारना। १४ बहस या जिद् करना। १५ निश्चय, नियत या तय करना। १६ परिश्रम करना। उद्योग करना। १७ देखो 'बधणो' (बो)।
वदन, वदनि–पु० [सं०] १ मुख, मुंह। २ चेहरा, शक्ल, सूरत। ३ रूप, आभा। ४ अग्रभाग, अगला हिस्सा। ५ प्रथम संख्या। ६ कहने या बोलने की क्रिया या भाव। ७ देखो 'बदन'।
वदनीत, वदनीत–देखो 'बदनीयत'।
वदम–देखो 'वदन'।
वदपख–पु० [सं० वदि-पक्ष] कृष्ण पक्ष।
वदरंग, वदरंग–देखो 'बदरंग'।
वदरगी, वदरंगी–देखो 'बदरंगी'।
वदरा–स्त्री० धन, दौलत, वित्त।
वदरीनाथ–देखो 'बदरीनाथ'।
वदळ–देखो 'बादळ'।
वदळणो (बो), वबळणो (बो)–देखो 'बदलणो' (बो)।
वदळाणो (बो), वबळावणो (बो), वबळाणो (बो)–देखो 'बदलाणो' (बो)।
वदळायत, वदळायत–देखो 'बदलायत'।
वदळी, वदळी–१ देखो 'बदळी'। २ देखो 'बादळ'।
वदळे (ळै), वदळे (लै)–देखो 'बदले'।
वदळो, वदळो–देखो 'बदलो'।
वदान्य–वि० [सं० वदान्य] १ मधुर या मृदुभाषी। २ दयालु, उदार चित्त। ३ बात-चीत में प्रवीन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वदान्यता–स्त्री० [सं० वदान्यता] १ मृदुता, माधुर्य। २ उदारता दयालुता। ३ शालीनता।

वंदाणी (बो), वदावणी (बो), वदावणी (बो)–क्रि० १ कहलाना। २ उच्चारण कराना, बोलना। ३ बात कराना। ४ उल्लेख कराना। ५ सूचना दिलाना, बतलाना। ६ आवाज दिराना। ७ मान-सम्मान कराना। ८ मान्यता दिराना। ९ स्वीकार कराना। १० आज्ञा या निर्देश दिलवाना। ११ बाजी या दाव लगवाना। १२ प्रतिस्पर्धा कराना। १३ बढ़-बढ़ कर बातें करवाना। १४ निश्चय, नियत या तय करवाना। १५ बहस या जिद्द कराना। १६ परिश्रम या उद्यम कराना। १७ देखो 'बधाणी' (बो)।

वदावण, वदावण–स्त्री० १ स्वागत, सत्कार। २ अगवानी।

वदि, वदी, वदी–स्त्री० कृष्णपक्ष, माह का पूर्वार्द्ध –अव्य० कृष्ण पक्ष में।

वदीत (उ), वदीतु, वदीते (तै)–१ देखो 'व्यतीत'। २ देखो 'विदित'।

वदीतो–वि० [सं० विदित] १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ देखो 'व्यतीत'। ३ देखो 'विदित'।

वदूळ–देखो 'बादळ'।

वदेस–देखो 'विदेस'।

वदोतर–वि० [सं० वृद्धोत्तर] १ बढ़ा हुआ, अधिक। २ बढ़ने योग्य। ३ समाप्त प्राय:।

वदोवदि–स्त्री० बढ़ा-बढ़ी, होड, जिद्द, प्रतिस्पर्धा।

वद्दळ (ळी), वद्दूळ (ळी)–देखो 'बादळ'।

वद्धणी (बो), वद्धणी (बो)–देखो 'बधणी' (बो)।

वद्धांमणी–स्त्री० १ बधाई। २ देखो 'वदावण'।

वद्धाणी (बो), वद्धावणी (बो)–देखो 'बधाणी' (बो)।

वध–पु० [सं०] १ मारना क्रिया, हत्या। २ विध्वंस, विनाश। ३ विरोध, वैमनस्य। ४ आघात, प्रहार। ५ युद्ध। ६ देखो 'व्रध'।

वधक–पु० १ मछली पकड़ने का कांटा। २ देखो 'बधिक'।

वधण–स्त्री० [सं० वृद्धि] वृद्धि, बढ़ोतरी।

वधणी (बो), वधणी (बो)–देखो 'बधणी' (बो)।

वधतीवेस–देखो 'बधतीवेस'।

वधतेरो, वधतो, वधतेरो, वधतो–देखो 'बधतो'।

वधरणी (बो), वधरणी (बो)–क्रि० [सं० वर्धनम्] १ आगे बढ़ना, अग्रसर होना। २ वृद्धि होना। ३ टूटना, खंडित होना (चूड़ी)। ४ बुझना (दीप)। ५ नारियल फोड़ा जाना। ६ विस्तृत या लंबा होना। ७ बोला जाना।

वधरोम (मो)–पु० सूअर, वराह।

वधांमण (उ), वधांमणी (णी)–पु० [सं० वर्द्धमानकम् वर्द्धापनिका] १ स्वागत, अगवानी। २ आदर, सत्कार, मान-सम्मान। ३ आनन्द, उत्साह, खुशी। ४ स्वागत गीत। ५ बधाई।

वधांमणी (बो), वधामणी (बो)–देखो 'बधाणी' (बो)।

वधाइ (ई), वधाइ (ई)–देखो 'बधाई'।

वधाइदार, वधाईदार–देखो 'बधाईदार'।

वधाऊ (ड़ो), वधाऊ (ड़ो)–देखो 'बधाऊ'।

वधाऊहार–देखो 'बधाईदार'।

वधाणी (बो), वधाणी (बो)–देखो 'बधाणी' (बो)।

वधापो, वधापो–देखो 'बधापो'।

वधायक–वि० [सं० वृध्–वर्धयते] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला। २ देखो 'विधायक'।

वधारण–वि० [सं० वृद्धि-कार] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला। २ खोचने वाला, लंबा करने वाला। ३ तोड़ने-फोड़ने वाला।

वधारणी (बो), वधारणी (बो)–क्रि० १ आगे बढ़ाना, अग्रसर करना। २ वृद्धि करना, बढ़ाना। ३ विस्तार करना, फैलाना। ४ लंबा करना। ५ मान देना। ६ काटना-टुकड़े करना। ७ तोड़ना, फोड़ना।

वधारी–देखो 'बधारो'।

वधाव–देखो 'वधाव'।

वधावणी, वधावणी–देखो 'वधांमणी'।

वधावणी (बो)–देखो 'बधाणी' (बो)।

वधावधि (धी)–देखो 'बढ़ाबढ़ी'।

वधावो–देखो 'वधावो'।

वधिक–वि० [सं० वधकः] १ हत्या करने वाला, हत्यारा। २ प्रहार व घात करने वाला। ३ जल्लाद। ४ शिकारी, व्याध।

वधिर–देखो 'बधिर'।

वधु, वधू–स्त्री० [सं० वधू] १ नवविवाहिता लड़की, युवती। २ दुल्हिन। ३ नई बहू। ४ पुत्र की पत्नी। ५ छोटे की स्त्री। ६ पत्नी। ७ स्त्री, औरत।—वर–पु० दूल्हा, पति।

वधेवधि–देखो 'बढ़ाबढ़ी'।

वधोतरी–देखो 'बढ़ोतरो'।

वधोवधू (धो)–पु० भवेशी हांकने की आवाज विशेष।

वधो–देखो 'बाधो' (स्त्री० वधी)।

वध्धाई, वध्धाई–देखो 'बधाई'।

वध्धाईदार–देखो 'बधाईदार'।

वध्धाणी (बो), वध्धावणी (बो)–देखो 'बधाणी' (बो)।

वध्नारु (रू)–पु० शाक विशेष।

वनंचर–देखो 'वनचर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वन, वन–पु० [सं० वन] १ जंगल, विपिन, वन। २ जल, पानी। ३ जल स्रोत। ४ वाटिका, बगीचा। ५ कमल। ६ कमल के फूलों का दस्ता। ७ आवास, घर। ८ काष्ठ, लकड़ी। ९ किरण, रश्मि। १० दशनामियों की एक शाखा। —अगनि, अगनी, अग्नि–स्त्री० दावानल, जंगल की आग। —उक, ओक–पु० वानर, बंदर। वन्य पशु। तपस्वी, मुनि।–वि० वन का निवासी, वनवासी।—खंड–पु० वन जंगल।—खंडी–पु० साधु, संन्यासी। वनवासी।—चर, चरी, चरु, चारी–वि० वन में रहने व विचरने वाला। विरक्त, उदासी।–पु० जंगली प्राणी, पशु। वानर, बंदर। हरिण। बजरंगी। जंगली घास। शरभ नामक जीव। —झंगर–पु० वन का झाड़ी समूह।—देव–पु० वन का अधिष्ठाता देव विशेष।—नाथ–पु० मलय वन, समुद्र। —निधि–पु० समुद्र।—पत, पति, पती—पु० वन का राजा सिंह, शेर।—पाळ, पालक–पु० वन या बाग का रक्षक, चौकीदार।—फळ–पु० वन के फल-फूल। —बिलाव–पु० जंगली बिल्ला व इसकी जाति।—भ्रंग–पु० जंगली भ्रमर।—मय–वि० वनों से युक्त, परिपूर्ण। —मुरगी–पु० जंगली मुर्गा।—लक्ष्मी–स्त्री० वनश्री, वन की शोभा, केला।—वास–पु० जंगल, निर्जन वन में निवास, नगर ग्राम से दूर विरक्त व उदासी जीवन। वासी–वि० वन में रहने वाला, साधु, संन्यासी, उदासी।—वासु, वासी= वनवास'।

वनअमावस (स्या), वनअमावस–स्त्री० श्रावण की अमावस्या तिथि। हरियाली अमावस्या।

वनकर–पु० [सं० वन्य-कर] सूर्य, रवि।

वनगय (गाय, गाव)–स्त्री० १ नील गाय, एक वन्य पशु। २ एक प्रकार का तेंदू वृक्ष।

वनड़ी, वनड़ी–देखो 'बनी'। (स्त्री० वनड़ी)

वनचर, वनचर, वनचर–पु० वन में परिभ्रमण करने वाला, वनचर, जंगली।

वनज, वनज–वि० [सं०] वन में उत्पन्न।–पु० १ कमल। २ वृक्ष। ३ वनस्पती। ४ हाथी। ५ सुगंध युक्त तृण विशेष। ६ नील कमल का पुष्प। ७ जंगली कपास।

वनजा–देखो 'वनिता'।

वनतुळसी–स्त्री० [सं०] तुलसी जाति का एक पौधा, बर्बरी।

वनद–पु० [सं० वनदः] मेघ, बादल।

वनदरसाव–पु० [सं०] इन्द्र।

वनदेव वनदेव–पु० [सं० वनदेवता] (स्त्री० वनदेवी) वन का अधिष्ठाता देव।

वनमानस (मानुस), वनमानस–पु० [सं० वनमानुष] वानर और मनुष्य के आकार से मिलता-जुलता एक जंगली प्राणी। गुरिल्ला व चिपांजी इसी वर्ग के प्राणी हैं।

वनमाळ (माळा), वनमाळ–स्त्री० [सं० वनमाला] कंठ से पांव तक लटकने वाली वन-पुष्पों की माला।

वनमाळी, वनमाळी–पु० [सं० वन-मालिन्] १ ईश्वर, विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ बागवान, माली।

वनमूल–पु० [सं०] बादल, मेघ।

वनर–देखो 'वानर'।

वनराइ (राई, राज, राय, राव), वनराइ (राई, राज, राजा, राव)–पु० [सं० वनराज] १ सिंह, शेर। २ बड़ा जंगल, विशाल वन। [सं० वनराजि] ३ वृक्ष समूह, पंक्ति। ४ वनस्पती। ५ जंगल, वन। ६ वन खंड।

वनरवाळ (ळि)–देखो 'बांदरमाळ'।

वनरावन–देखो 'वृंदावन'।

वनरुह (रूह)–पु० [सं०] कमल का फूल।

वनरोइ (ई, ही) वनरोइ (ई, ही)–पु०१ वन, जंगल। २ बीहड़ वन, दुरूह जंगल।

वनली–देखो 'बनी'।

वनवारी, वनवारी–देखो 'वनमाळी'।

वनसण–स्त्री० [सं० वनशण] शण-पुष्प नामक औषधि।

वनसपति (पती), वनसपति–देखो 'वनस्पति'।

वनसी, वनसी–देखो 'बसी'।

वनस्थळि (ळी)–पु० [सं० वनस्थली] १ वन, जंगल, अरण्य देश। २ वन का कोई भाग।

वनस्पति, वनस्पति–स्त्री० [सं० वनस्पती] १ पेड़, पौधे, लताएं आदि। २ बिना पुष्प के फल लगने वाला वृक्ष विशेष। —सास्त्र–पु० पेड़-पौधों के गुण धर्म, उत्पत्ति आदि का ज्ञान कराने वाला शास्त्र, विज्ञान।

वनात–देखो 'बनात'।

वनाती–देखो 'बनाती'/'बनात'।

वनाधिप (धिपति)–पु० [सं० वनाधिपति] सिंह, शेर।

वनापार–वि० अत्यधिक, अपार।

वनायु–पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश। २ इस देश का निवासी। ३ उर्वशी का पुत्र एक राजा। ४ एक दानव।

वनायुज–पु० [सं०] १ 'वनायु' देश का घोड़ा। २ घोड़ा।

वनारणी (बी)–क्रि० सब्जी आदि काटना, छोटे टुकड़े करना।

वनाळ–स्त्री० [सं० वन अलिका] १ सूरजमुखी। २ देवदाली औषध, बंदाल।

वनास–देखो 'बनास'।

वनासपति (ती), वनासपति–१ देखो 'वनस्पति'। २ देखो 'बनासपति'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वनि, वनि–स्त्री० [सं० वह्नि, वनि] १ अग्नि, आग। २ अभिलाषा, कामना। ३ याचना। ४ देखो 'धनी'/'बनी'।

वनिआगनी–देखो 'वन-अग्नि'।

वनिता (त्ता)–स्त्री० [स०] १ पत्नी, भार्या। २ प्रियतमा, प्रेयसी, प्रिया। ३ स्त्री, औरत, नारी। ४ स्वामिनी, मालकिन। ५ वेश्या। ६ एक वर्णवृत्त। ७ मादा पशु।

वनितामुख–पु० एक मानव जाति।

वनितासुत–पु० [सं० वैनतेय] गरुड़।

वनिस्पत–देखो 'वनिस्पत'।

वनी, वनी–स्त्री० [सं० वनी] १ छोटा वन, वाटिका। २ बीहड़ जंगल। ३ वनस्थली। ४ झाड़ी, कुंज। ५ देखो 'बनी'/'वनि'।

वनीता–देखो 'वनिता'।

वनीपक, वनीयक–पु० भिखारी, भिक्षुक, याचक।

वनीसिख–स्त्री० [सं वह्नि-शिख] केसर।

वनु–देखो 'वन'।

वनोक–पु० [सं० वनौकस्] वानर।

वनोड़ी–देखो 'वणोड़ी'।

वनोत्सरग–पु० [सं० वन-उत्सर्ग] १ देव मंदिर, बावी आदि बनाकर उनका जन उपयोग के लिये दान, उत्सर्ग। २ उक्त प्रकार के दान की विधि।

वनोद–पु० [सं० वनोदय] १ कमल। २ देखो 'विनोद' —नैणी –स्त्री० कमलनयनी।

वनोळी, वनोळी–देखो 'वंणोळी'।

वनोवास–देखो 'वनवास'।

वनो वनो–देखो 'बनी'। (स्त्री० वनी)

वनौकस–पु० [सं०] १ बंदर, वानर। २ वनवासी।

वनौषद, वनौषद–स्त्री० [सं० वन-औषधि] जंगल में पैदा होने वाली औषधि, जड़ी, बूटी।

वन्न–देखो–'वन'।

वन्नणी (बी)–क्रि० वर्णन करना, चित्रण करना।

वन्नमाळी, वन्नमाळी–देखो 'वनमाळी'।

वन्नर, वन्नर–देखो 'वानर'।

वन्नरमाळ (माळा वाळ), वन्नरमाळ–देखो 'बांदरमाळ'।

वन्नि–देखो 'वन'/'वनि'।

वन्निअणी (बी), वन्नीयणी (बी)–१ देखो 'वरणणी' (बी)। २ देखो 'विणजणी' (बी)।

वन्य–वि० [सं०] १ वन का, वन संबंधी, जंगली। २ वन में उत्पन्न। ३ बर्बर, हिंसक। ४ असभ्य, अशिष्ट।–पु० १ जंगली सूरन। २ क्षीर विदारी। ३ वाराही कंद। ४ राख।

वन्यकर–देखो 'वनकर'।

वन्या–स्त्री० [सं०] १ बड़ा वन, अनेक वन। २ बाढ़, जल प्लावन। ३ अश्वगंध। ४ गोपाल ककड़ी। ५ मुद्गपर्णी। ६ गुंजा।

वन्यमाळ, वन्यमाल–देखो 'बांदरमाळ'।

वन्हि, वन्ही–१ देखो 'वनि'। २ देखो 'बनी'। ३ देखो 'वन'। ४ देखो 'वणी'।

वन्ही–देखो 'बनी'।

वप–देखो 'वपु'।

वपणी–स्त्री० १ नाइयों का, हजामत करने बैठने का स्थान। २ विपणी।

वपन–पु० [सं०] १ बीज बोने की क्रिया या भाव। २ शिर मुंडाई, हजामत। ३ वीर्य।

वपराणो (बो), वपराणो (बो)–क्रि० [सं० व्यापारणम्] १ किसी वस्तु की व्यवस्था करना, प्राप्त व उपलब्ध करना। २ घर में कोई चीज लाना, खरीदना। ३ उपयोग करना, इस्तेमाल करना। ४ व्याप्त करना, संचार करना, फैलाना।

वपरीत–देखो 'विपरीत'।

वपरुच–पु० [सं० वपु-रुचि] खून, रक्त।

वपा–स्त्री० [सं०] १ चर्बी। २ मेद। ३ गुफा। ४ दीमक द्वारा बनाया मिट्टी का ढेर। ५ बांबी।

वपि–देखो 'वपु'।

वपु–पु० [सं० वपुष्] १ शरीर, देह, अंग, काया। २ रूप, सौन्दर्य। ३ आकार-प्रकार। ४ आकृति, शक्ल।

वपुख, वपुस–पु० [सं० वपुषः] देवता।

वप्प–देखो 'वपु'।

वप्र–पु० [सं०] १ मिट्टी की दीवार। २ शहर पनाह। ३ मिट्टी का टीला। ४ चोटी या शिखर। ५ नदी तट। ६ भवन की नींव। ७ पहाड़ की ढलान। ८ शहर पनाह का द्वार। ९ वृत्त, व्यास। १० खेत। ११ मिट्टी, धूल, रेणु। [स० वप्रिन्] १२ प्रजापति। १३ द्वापर युग का व्यास।

वप्रवरण–पु० [सं० वप्रावरण] गढ़, किला।

वप्रोढो–पु० [सं० विवोढृ] १ पति। २ दूल्हा, वर।

वफा–स्त्री० [फा०] १ निर्वाह, पालन, अमल। २ सद्व्यवहार, बर्ताव। ३ प्रेम, मुहब्बत। ४ निष्ठा, आस्था, भक्ति। ५ सुशीलता, सभ्यता।—दार–वि० स्वामीभक्त, नमक हलाल। कृतज्ञ। दृढप्रतिज्ञ, कर्त्तव्यनिष्ठ। सच्चा, ईमानदार। वादा निभाने वाला।—दारी–स्त्री० स्वामीभक्ति, कृतज्ञता। कर्त्तव्यनिष्ठा। सच्चाई वफादार होने की अवस्था या भाव।

वभीखण, वभीखणी–देखो 'विभीसण'।

वभक–देखो 'भभक'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बभकणी (बौ), बभकणो–देखो 'भभकणी' (बौ)।
बभकाणी (बौ), बभकावणी (बौ), बभकाणी (बौ)–देखो 'भभकाणी' (बौ)।
बभकार, बभकार–देखो 'भभकार'।
बभकी, बभकी–देखो 'भभकी'।
बभक्कणी (बौ), बभक्कणो (बौ)–देखो 'भभकणी' (बौ)।
बभक्काणी (बौ), बभक्कावणी (बौ) बभक्काबणी–देखो 'भभकाणी' (बौ)।
बभयंद्री–पु० [सं०] इन्द्रिय-विभु] इन्द्र।
बभाड़–देखो 'बिभाड़'।
बभीखण, बभीसण, बभीसण–देखो 'बिभीसण'।
बभुत, बभूत, बभूति, बभुत, बभूति–१ देखो 'बिभूति'/'बिभुता'। २ देखो 'भभूत'।
बभ्भीखण, बभ्भीखण–देखो 'बिभीसण'।
बभ्रु–देखो 'बभ्रु'।
बभ्रुपिपळा–स्त्री० शनि।
बभ्रुवाहन–देखो 'बभ्रुवाहन'।
बमणो (बौ)–क्रि० [सं० वमनम्] १ उल्टी; वमन, कै करना। २ उगलना, उगल देना। ३ थूकना। ४ उड़ेलना। ५ प्रगट करना, भेद देना। ६ असल बात कह देना। ७ फेंकना। ८ त्यागना।
बमधु (बू)–पु० [सं० वमधुः] १ हाथी की सूंड द्वारा फेंका हुआ पानी। २ कै, वमन।
बमन–पु० [सं०] १ उल्टी, कै। २ थूक। ३ उगाल। ४ उड़ेलना प्रगट करना, भेद देना क्रिया। ५ त्याग।
बमर–देखो 'बिवर'।
बमुख, बमुह–देखो 'बिमुख'।
बमेक–देखो 'बिवेक'।
बम्मरी–देखो 'बिवर'।
बयड–देखो 'बितंड'।
बयडकनी–स्त्री० [सं० खंड-कर्णिक] कटे कान वाली।
बयंडखर–पु० [सं० बितंड-वर] अनल पक्षी।
बयंडमुख–देखो 'बितंडमुख'।
बयंद–देखो 'बियत'।
बय–स्त्री० [सं०] १ आयु, उम्र। २ गुजरा हुआ समय; जीवन काल। ३ समय, काल। ४ जवानी; युवावस्था। ५ क्रम। ६ विस्तार। ७ बल, शक्ति। ८ पक्षी, विहंग। [सं० वच्] ९ वचन, वाणी। १० स्वर, आवाज। ११ छप्पय छंद का एक भेद। १२ जुलाहा। १३ वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्र कार।–वि० [सं० वयस्य] समान, तुल्य, बराबर।
बयअभीत–पु० [सं० अभीत-वय] युधिष्ठिर।
बयगरणी, बयगरण (णौ)–देखो 'व्यवकरणिक'।
बयण, बयणड़ो–१ देखो 'वचन'। २ देखो 'बदन'।
बयणबूठ–वि० वचन पर दृढ़ रहने वाला।
बयणपुन्न–पु० [सं० वचन-पुण्य] शुभ बोलने का पुण्य।
बयणसगाई, बयणसगाई–स्त्री० डिंगल काव्य का एक शब्दालंकार, वर्ण मैत्री।
बयद–१ देखो 'बियत'। २ देखो 'बैद्य'।
बरकरार–देखो 'बरकरार'।
बयर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'बैरी'।
बयरणोप्रो–पु० शत्रु, बैरी।
बयराग–देखो 'बैराग'।
बयरागर (रौ)–१ देखो 'बैरागर'। २ देखो 'बइरागर'।
बयरागियो–१ देखो 'बैरागियो'। २ देखो 'बैराग्य'।
बयरागी–देखो 'बैरागी'।
बयराड़ी–स्त्री० एक प्रकार की रागिनी विशेष।
बयराजी–देखो 'बेराजी'।
बयराजीउ–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
बयराट–१ देखो 'बैराट'। २ देखो 'विराट'।
बयरि, बयरी–देखो 'बैरी'।
बयळ–देखो 'बयळ'।
बयसधि–पु० [स०] दो अवस्थाओं के बीच की स्थिति।
बयस–पु० [सं० वयस्, वयस्य] १ उम्र। २ जवानी। ३ साथी, मित्र। ४ सहयोगी। ५ हमउम्र।
बयसाही–देखो 'बैसाखो'।
बयस्थविर–वि० साठ वर्ष की अवस्था का।
बयस्य–देखो 'बयस'।
बयांणो–पु० [सं० विद्यान] १ विवाह के, प्रातःकालीन मांगलिक गीत। २ ऐसे गीत गाने वाली स्त्रियों को दी जाने वाली मिठाई, वस्तु आदि।
बयार देखो 'बयार'।
बयाळ–देखो 'व्याळ'।
बयोधर–वि० [सं० वयोधस्] (स्त्री० बयोधरी) युवा, तरुण।
बयोम–देखो 'व्योम'।
बयोवरध (वद्ध, वध, विध)–वि० [सं० वयोवृद्ध] १ आयु से वृद्ध, बूढ़ा, बुजुर्ग। २ अवस्था, अनुभव व ज्ञान में बड़ा।
बरग–पु० [सं० वर-अंगम्] १ शिर, मस्तक। २ उत्तम शरीरांग। ३ सुडौल शरीर। ४ देखो 'बरांग'। ५ देखो 'बरंग'।
बरंगन–देखो 'बारांगना'।
बरंगो–वि० बरंग का, बरंग संबंधी।
बरंच–अव्य० [सं०] १ अपितु बल्कि। २ परन्तु किन्तु, लेकिन। ३ देखो 'बिरंची'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरंड–पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड । २ समुदाय । ३ घास का ढेर, गट्ठर । ४ मुंडासे । ५ जेब, खीसा । ६ बंशी की डोर । [सं० वितंड] ७ हाथी व गज । ८ फीलखाने में हाथी बांधने के स्थान पर बीच-बीच में बनी दीवार ।

वरंडक–पु० [सं०] १ हाथी का होदा, अंबाड़ी । २ मिट्टी का टीला । ३ दीवार ।

वरंडा–स्त्री० [सं०] १ छुरी, खंजर । २ सारिका पक्षी । ३ दिये की बत्ती ।

वरंडो, वरंडो–पु० [सं० वरंडः] बरामदा ।

वर, वर–पु० [सं० वर] १ पति, भरतार । २ वधू प्रार्थी, दूल्हा । ३ स्वामी, मालिक । ४ दामाद, जमाता । ५ अभीष्ट वस्तु, इच्छा या अवस्था जिसकी प्राप्ति के लिये देवी-देवताओं से याचना की जाती है । ६ इस याचना से होने वाली अभीष्ट की पूर्ति, तुष्टि । ७ देवता से प्राप्त सिद्धि, अनुग्रह । ८ इच्छा, अभिलाषा, कामना । ९ भेंट, पुरस्कार । १० पसंदगी । ११ चुनाव, चयन । १२ वरण, ग्रहण । १३ दहेज । १४ लंपट व्यक्ति । १५ गेरुंया पक्षी । १६ केसर । १७ हल्दी । १८ दाल चीनी । १९ अदरक । २० सुगंधित तृण । २१ मौलसिरी । २२ सेंधा नमक । २३ मधु मक्खी का छाता । २४ गुग्गुल । २५ श्रीकृष्ण । २६ रहट की एक लकड़ी । २७ एक प्रत्यय (फा०) ।–वि० १ श्रेष्ठ, सर्वोत्तम । २ बढ़कर । ३ चुनाव योग्य । ४ दानी । ५ सुंदर । ६ भला । —उमिया–पु० शिव, महादेव ।—दळ, दल, दळि, दळी–पु० वरपक्ष, बरात । दूल्हा । —माळ, माळा, माला, स्माळ, स्माळा–स्त्री० दूल्हे-दुल्हिन को विवाह के समय पहनाई जाने वाली माला, हार, जयमाला ।—यात्रा–स्त्री० विवाह के के लिये वर व बरात का प्रस्थान, प्रयाण ।

वर'–देखो 'वरस' ।

वरकंठ–पु० [सं०] सुग्रीव ।

वरक, वरक–पु० [फा०, सं० वरक] १ मिठाई आदि पर लगाने की सोने या चांदी की बारीक झिल्ली पत्र । २ पृष्ठ, पन्ना, पत्र । ३ पत्ता, दल । ४ टिकट, प्रवेश-पत्र । ५ इच्छा, चाह, बर । ६ चुग्गा । ७ बन मूंग । ८ कपड़ा, वस्त्र । ९ तौलिया, झाड़न । १० नाव की छाजन । ११ देखो 'विरक' ।

वरकरार–देखो 'बरकरार' ।

वरख–देखो 'वरस' ।

वरक्तु, (क्त, क्तू, क्ति)–पु० [सं० वरक्तु] इन्द्र ।

वरख–देखो 'वरस' ।

वरखणो (बो)–देखो 'वरसणो' (बो) ।

वरखम–पु० [सं० वर्त्मन्] १ शरीर, देह । २ ऊंचाई, माप ।

वरखा, वरखा–देखो 'वरसा' ।

वरखाकरण–पु० [सं० वर्षाकरण] देवराज इन्द्र ।

वरखामापक–पु० वर्षा मापने का यंत्र ।

वरखारत (रित, रिति, रितु, रुत, रुति)–देखो 'वरसारितु' ।

वरखात–पु० सरोवर, तालाब ।

वरग–पु० [सं० वर्ग] १ श्रेणी, जमात । २ जाति, समुदाय, समाज । ३ प्राणी जाति, प्राणी समूह, झुंड । ४ समान धर्मी व समानकर्मी प्राणी । ५ नस्ल । ६ भाग, विभाग । ७ उद्देश्य विशेष से बना व्यक्ति समूह, संघ । ८ किसी एक वर्ण से उच्चरित प्राणी का नाम (ज्योतिष) ९ न्याय शास्त्र के नौ या सप्त पदार्थ विभाग । १० एक ही स्थान से उच्चरित होने वाला वर्ण समूह । ११ ग्रंथ का भाग, अध्याय, परिच्छेद । १२ दो समान अंकों या राशियों का गुणनफल । १३ समकोण क्षेत्र । १४ समान लंबाई-चौड़ाई का माप । १५ शक्ति, ताकत । १६ शत्रु दल । १७ पत्र, पत्ता । १८ पांच की संख्या※ ।–वि० पांच ।

वरगड़ो (डु)–पु० १ सिंह । २ देखो 'बरगड़ो' ।

वरगफळ वरगफळ–पु० [सं० वर्गफल] किसी अंक को उसी से गुणा करने का परिणाम ।

वरगमूळ वरगमूल–पु० [सं० वर्ग मूल] गुणन किया जाने वाला वर्गांक ।

वरगळणो (बो)–क्रि० १ गुमराह होना, भ्रम में पड़ना । २ उत्तेजित होना, भड़कना ।

वरगळाणो (बो) –क्रि० १ गुमराह करना, भ्रम में डालना । २ उत्तेजित करना, भड़काना ।

वरगिरजा, वरगिरजा–पु० [सं० गिरिजा-वर] शिव, महादेव ।

वरगोत्तम–पु० [सं० वर्गोत्तम] राशियों का श्रेष्ठ अंश (ज्योतिष) –वि० वर्गों में उत्तम ।

वरग–देखो 'वरग' ।

वरघू–देखो 'वरघू' ।

वरड़णो (बो)–देखो 'बरडणो' (बो) ।

वरड़ो वरड़ो–स्त्री० १ लाल मिट्टी । २ देखो 'बरड़ो' ।

वरचणो (बो)–देखो 'विरचणो' (बो) ।

वरचस–पु० [सं० वर्चस्] १ प्रकाश, उजाला, तेज । २ कान्ति, दीप्ति । ३ रूप, शक्ल । ४ शक्ति, पराक्रम । ५ विष्ठा । ६ वृक्ष, पेड़ ।

वरछणो (बो)–क्रि० [सं० व्रश्चम्] १ घाव करना, काटना । २ चीरना, फाड़ना । ३ काट कर अलग-अलग करना । ४ देखो 'विचरणो' (बो) ।

वरजण–देखो 'वरजन' ।

वरजणीक–देखो 'बरजनीक' ।

वरजणो (बो), वरजणो (बो)–देखो 'बरजणो' (बो) ।

वरजत–वि० [सं० वर्ज्य] निषिद्ध, वर्जित ।–पु० १ निषेध । २ निषिद्ध कार्य । ३ पाप ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरजन–स्त्री० [सं० वर्जनम्] १ निषेध करने की क्रिया या भाव। २ रोक, मनाही, निषेध। ३ व्यवधान, बाधा, अवरोध। ४ परित्याग, त्याग। ५ वैराग्य, विरक्ति।

वरजाग (गी)–देखो 'बजराक'।

वरजाणी (बी)–देखो 'बरजाणी' (बी)।

वरजिस, वरजिस–स्त्री० [फा० वर्जिश] १ श्रमसाध्य कार्य, कठिन श्रम। २ कसरत, व्यायाम। ३ अभ्यास, रियाज। प्रयास।

वरजोर, वरजोर–देखो 'बरजोर'।

वरट–पु० [सं० वरट] (स्त्री० वरटा) १ हंस। २ बर्रया। ३ विर्रा अनाज। ४ कुन्द का फल। —पति–पु० हंस।

वरडी (ढी), वरडी–देखो 'बढी'

वरण, वरण–पु० [सं० वरणः] १ इच्छा व रुचि के अनुसार चयन। २ कन्या के योग्य वर का चयन। ३ पत्नी व पति के रूप में परस्पर ग्रहण, स्वीकार, शादी, विवाह। ४ आदर, सत्कार। ५ याज्ञिक ब्राह्मण का चयन, उसका आदर। ६ दान। ७ पूजन, अर्चना, धर्मानुष्ठान। ८ याचना। ९ ढकने-लपेटने की क्रिया या भाव। १० आवरण, आच्छादन। ११पर्दा। १२चादर। १३परकोटा, प्राचीर। १४ घेरा। १५ पुल, सेतु। १६ आर्या गीति या स्कंधांग का एक भेद। १७ गाने में स्वर विस्तार की क्रिया। [सं० अवरण-भागुरि अलोप] १८ ऊंट। [सं० वणिणी] १९ स्त्री पत्नी। [सं० वर्ण] २० रंग-रूप। २१ अक्षर, स्वर। २२ अकारादि क्रम। २३ प्रार्थना, स्तुति। २४ गुण। २५ हिन्दू समाज के चार विभाग। २६ भेद, किस्म। २७ यश कीर्ति। २८ देखो 'वरुण'। २९ देखो 'व्रण' ३० देखो 'वरणन'।

वरणखडमेरु, वरणखंडमेरु–पु० छन्द शास्त्र की एक क्रिया।

वरणछया, वरणछया–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक विधि।

वरणज्येस्ठ–पु० [सं० ज्येष्ठ वर्ण] ब्राह्मण वर्ण।

वरणण, वरणण–देखो 'वरणन'।

वरणणो (णी), वरणणो (णी)–क्रि० [सं० वर्णनम्] १ वर्णन करना। २ उल्लेख करना। ३ रचना करना; लिखना। ४ व्याख्या करना। ५ प्रशंसा करना, सराहना। ६ निवेदन करना। ७ चित्रण करना।

वरणदूत–पु० १ पत्र। २ लिपि। ३ चिट्ठी।

वरणन–पु० [सं० वर्णन] १ किसी घटना, विषय, बात आदि का कथन। २ वृत्तान्त। ३ बयान, उल्लेख। ४ चित्रांकन, रंगाई। ५ व्याख्या। ६ निवेदन, स्तुति, प्रार्थना। ७ प्रशंसा, सराहना। बखान। ८ लेखन।

वरणनस्ट, वरणनस्ट–पु० [सं० वर्णनष्ट] छन्द शास्त्र की एक क्रिया।

वरणना–स्त्री० [सं० वर्णनम्] गुण कथन।

वरणनास, वरणनास–पु० [सं० वर्णनाश] व्याकरण में उच्चारण संबंधी दोष।

वरणपताका, वरणपताका–स्त्री० [सं० वर्णपताका] छंदों के लघु गुरु जानने की क्रिया।

वरणपात, वरणपात–पु० [सं० वर्णपात] शब्द से वर्ण का क्षय।

वरणपाताळ, वरणपाताळ–पु० [सं० वर्ण-पाताल] छन्द शास्त्र की एक क्रिया।

वरणपास, वरणपास–पु० [सं० वरुण-पाश] १ वरुण देव, वरुण। २ सामुद्रिक जंतु, शार्क। ३ वरुण का शस्त्र। ४ कठिन पाश, बंधन।

वरणपुर, वरणपुर–पु० [सं०] १ वरुण लोक। २ शुद्ध राग का एक भेद।

वरणप्रत्यय, वरणप्रत्यय–पु० [सं० वर्ण-प्रत्यय] छन्द शास्त्र की एक प्रक्रिया।

वरणप्रस्तार, वरणप्रस्तार–पु० [सं० वर्ण-प्रस्तार] छन्दों के भेद जानने की क्रिया।

वरणमाता, वरणमाता–स्त्री० [सं० वर्ण-मातृका] १ सरस्वती। २ लेखनी।

वरणमाळा, वरणमाला–स्त्री० [सं० वर्णमाला] १ किसी भाषा या लिपि के अक्षर, वर्ण समूह। २तेरेसठ की संख्या※।

वरणविपरज (विपरय)–पु० [सं० वर्णविपर्यय] वर्णों के उलट-फेर की स्थिति।

वरणव्यवस्था, वरणव्यवस्था–स्त्री० भारतीय हिन्दु समाज की व्यवस्था या संगठन।

वरणव्रत, वरणव्रत–पु० [सं० वर्णवृत्त] एक वृत्त वर्ण विशेष।

वरणसंकर, वरणसंकर–पु० [सं० वर्णसंकर] १ भिन्न-भिन्न जाति के स्त्री-पुरुषों से उत्पन्न संतान। २ रंगों का मिश्रण।

वरणसमाम्नाय, वरणसमाम्नाय–पु० [सं० वर्ण-समम्नाय] वर्ण माला।

वरणसरिक, वरणसरिक–पु० [सं० वर्ण+सरिक] एक आभूषण विशेष।

वरणसूची, वरणसूची–स्त्री० [सं० वर्ण-सूची] छन्द शास्त्र की एक क्रिया।

वरणसेस्ठ, वरणसेष्ठ–पु० [सं० वर्ण-श्रेष्ठ] ब्राह्मण वर्ण।

वरणा–स्त्री० [सं० वरुणा] १ काशी के उत्तर में बहने वाली एक नदी। २ पंजाब की वरुणा नदी। ३ एक प्राचीन आर्य जनपद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरणागियो, वरणागियो–पु० [स० वर्ण] रूप-रंग, वर्ण ।

वरणाधिप, वरणाधिप–पु० [सं० वर्णाधिप] ब्रह्मादि वर्णों के अधिपति ग्रह ।

वरणाभव, वरणाभव–पु० १ सूर्य । २ इन्द्र । ३ वरुण । ४ जल ।

वरणाव, वरणाव–देखो 'वरणन' ।

वणाश्रम, वरणाश्रम–पु० [सं० वर्णाश्रम] १ आर्य संस्कृति के अनुसार समाज की व्यवस्था । २ ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम ।

वरणि, वरणि–देखो 'वरणी' ।

वरणियो, वरणियो–पु० ऊन का बना मोटा रस्सा ।

वरणी, वरणी–वि० [सं० वर्णिन्] १ वर्ण का, वर्ण संबंधी । २ किसी रंग से संबंधित । ३ रंग-रूप से युक्त ।–स्त्री० १ यज्ञ, अनुष्ठान आदि में नियोजित ब्राह्मण मंडली । [सं० वर्णिनी] २ अनुष्ठान विधि, साधना । ३ स्त्री, अर्धांगिनी, पत्नी । ४ हल्दी । ५ नियोजन की क्रिया ।

वरणोद्दिष्ट, वरणोद्दिष्ट–पु० छंद शास्त्र की एक क्रिया ।

वरणो, वरणो–वि० [सं० वर्णिन्] (स्त्री० वरणी) १ वर्ण का, वर्ण संबंधी । २ किसी वर्ण या जाति से संबंधित । ३ रंग संबंधी । ४ रूप-रंग से सम्पन्न ।

वरणो(बो), वरणो (बो)–क्रि० [सं० वरणम्] १ वरण करना, अंगीकार व स्वीकार करना, शादी करना । २ चुनाव करना, पसंद करना । ३ स्वीकार करना, मानना । ४ वरदान या आशीर्वाद देना । ५ निगलना, खाना । ६ मांगना, याचना करना ।

वरणो (बो), वरणो (बो)–देखो 'वरसणो' (बो) ।

वरत, वरत–स्त्री० १ कूए से पानी की मोट निकालने, हाथी बांधने का चमड़े का मोटा रस्सा । २ नट क्रीड़ा में काम आने वाली रस्सी या डोरा । ३ देखो 'विरंत' । ४ देखो 'व्रत' । ५ देखो 'व्रती' ।

वरतण, वरतण–१ देखो 'वरतणा' । २ देखो 'वरतन' ।

वरतणि (णी), वरतणि–देखो 'वरतणी' ।

वरतणो, वरतणो–देखो 'वरतणो' ।

वरतणो (णो), वरतणो (बो)–क्रि० १ घूमना, फैलना । २ विद्यमान होना, वर्तमान होना । ३ देखो 'वरतणो' (बो)

वरतन, वरतन–१ देखो 'वेतन' । २ देखो 'वरतन' ।

वरतमाण (माण), वरतमाण–वि० [सं० वर्तमान] १ विद्यमान, मौजूद । २ जीवधारी, जिन्दा । ३ जो अपने अस्तित्व या सत्ता में हो । ४ घूमने-फिरने वाला । ५ प्रभावशील, लागू । –पु० १ व्याकरण में क्रियाओं के तीन कालों में से एक । २ मौजूदा समय । ३ समय, वक्त ।

वरतमा–देखो 'वरत्म' ।

वरतर, वरता–देखो 'वरत'

वरताइणी (बो), वरताणी, (बो) वरताणो (बो) –देखो 'वरताणी' (बो) ।

वरतार, वरतार–१ देखो 'भरतार' । २ देखो 'वरतारी' ।

वरतारी–देखो 'वत्तोरि' ।

वरतारो, वरतारी–पु० [सं० वृत्तचार] १ प्रयोग, इस्तेमाल करने की क्रिया । २ समय, वक्त । ३ देव योनि या प्रेत योनि में गई मृतात्मा का किसी प्राणी के शरीर में प्रवेश एवं उसकी क्रियाएं । ४ छंद रचना संबंधी पद्य विशेष । ५ आधार, सहारा ।

वरताव, वरताव–देखो 'वरताव' ।

वरतावणी (बो), वरतावणी (बो)–देखो 'वरताणी' (बो) ।

वरतियो, वरतीयो, वरतियो, वरतियो–देखो 'भरतियो' ।

वरतुळ, वरतूळ–पु० [सं० वर्तुल] १ चक्कर, गोला । २ चक्र । ३ वात चक्र ।–वि० चक्करदार, गोल ।

वरत्त, वरत्त–१ देखो 'वरत' । २ देखो 'व्रत' । ३ देखो 'व्रती' ।

वरत्तणो (बो)–देखो 'वरतणो' (बो) ।

वरत्तिकाविदु–पु० [सं० वर्त्तिकाविदु] हीरे का एक दोष ।

वरत्तूळ, वरत्तूळ, वरत्तूळो, वरत्तूळो–देखो 'वरतुळ' ।

वरत्म–पु० [सं० वर्त्मन्] १ मार्ग, पथ, रास्ता, राह । २ सड़क । ३ पगडंडी । ४ पंथ । ५ स्थान । ६ लीक, रूढ़ि । ७ पद्धति परम्परा, चलन । ८ किनारा, तट ।

वरत्री–स्त्री० [सं० वर्त्तनिः] मार्ग, रास्ता, सड़क ।

वरद–वि०[सं०] १ वरदाता । वरदान दाता । २ शुभ ।–पु० १ देवता । २ देखो 'विरुद' ।

वरदउदात–स्त्री० [सं० उदात्-वरद] सरस्वती, शारदा ।

वरदपत (पति)–देखो 'विरुदपति' ।

वरबळ, वरबल (ळि, लि) वरबळ, वरबल–पु० १ दूल्हा, वर । २ वर पक्ष । ३ बारात ।

वरदांणी, वरदांणी–देखो 'वरदायिणी' ।

वरदान, वरदान–पु० [सं० वरदान] १ अभीष्ट की पूर्ति हेतु इष्ट देव द्वारा प्राप्त सिद्धि । २ आशीर्वाद । ३ अभीष्ट वस्तु ।

वरदांनी, वरदांनी–वि० १ वरदान देने वाला, मनोरथ सिद्ध करने वाला । २ सिद्धिधारी ।

वरदा, वरदा–स्त्री० १ कुंवारी कन्या, लड़की । २ अश्वगंधा । ३ एक नदी का नाम । ४ अड़हुल । ५ सरस्वती, शारदा ।

वरदाइ, वरदाइक, वरदाई, वरदाह, वरदाहक, वरदाई–वि० [सं० वरदात] १ वर देने वाला, वरदाता । २ श्रेष्ठ, उत्तम ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ यशस्वी। ४ वीर। ५ वरदान या सिद्धि। ६ वरदान से उत्पन्न। ७ अनुकूल, लाभप्रद।

वरदाचतुरथी, वरदाचौथ–स्त्री० [सं० वरदाचतुर्थी] माघ शुक्ला चतुर्थी।

वरदात–वि० [सं० वरदातृ] वर देने वाला, वरदाता।–स्त्री० [सं० वरदात्री] सरस्वती, पार्वती, गिरिजा।

वरदाता, वरदाता–वि० [सं० वरदातृ] वर देने वाला, वरदायक।–पु० १ ब्रह्मा, विष्णु, महेश। २ कोई देव।

वरदाय, वरदायक, वरदायक, वरदायक–वि० १ वर देने वाला, वरदाता। २ सिद्धि देने वाला। ३ श्रेष्ठ। ४ यशस्वी; कीर्तिवान। ५ वीर। ६ सिद्धि प्राप्त। ७ वरदान प्राप्त। ८ फलदायक।

वरदायण, वरदायणि वरदायणी, वरदायिनी, वरदायिणी–स्त्री० [सं० वर-दायिनी] सरस्वती।–वि० १ सिद्धि व सफलता देने वाली। २ वर देने वाली।

वरदायी–देखो 'वरदाई'।

वरदाल (ळी)–देखो 'विरुदाळी'।

वरदी–स्त्री० [अ० वर्दी] किसी विभाग या संस्था के कर्मचारियों की निर्धारित पोशाक।

वरदेत, वरदैत–देखो 'वरदाता'।

वरद्धक–वि० [सं० वर्द्धक] १ वृद्धि करने वाला, बढ़ाने वाला। [सं० वधक] २ काटने वाला। ३ विभाजित करने वाला।

वरद्धन–पु० [सं० वर्द्धन] १ वृद्धि, बढ़ोतरी। २ उन्नति। ३ बढ़ने की स्थिति।

वरद्धमांण, वरद्धमांन–वि० [सं० वर्द्धमान] १ जो बढ़ रहा हो, बढ़ने योग्य। २ बढ़ने की प्रवृत्ति वाला। ३ उन्नति के लिये उन्मुख।–पु० १ जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर, महावीर स्वामी। २ एक वर्णवृत्त। ३ बार-नक्षत्रों संबंधी एक योग। ४ जैन मतानुसार एक ग्रह।

वरद्धमांनतप–पु० एक व्रत विशेष। (जैन)

वरधक, वरधक–पु० [सं० वर्धक] १ बढ़ई; तक्षक। २ देखो 'वरद्धक'।

वरधका–स्त्री० [सं० वृद्धा] १ गाथा छंद का एक भेद। २ देखो 'वृद्धा'।

वरधापन–देखो 'वृद्धापन'।

वरन्–अव्य० [सं०] १ बल्कि। २ ऐसा नहीं।

वरन–देखो 'वरण'।

वरनसन–पु० कवि, पंडित।

वरना–अव्य० [फा० वर्ना] १ अन्यथा; नहीं तो। २ ऐसा न हुआ तो।

वरनोळी (ली), वरनोळी–देखो 'बंदोळी'।

वरनो, वरनो–देखो 'वरणो'।

वरन्न–देखो 'वरण'।

वरन्नी–देखो 'वरणी'।

वरन्नो–देखो 'वरणो'।

वरपूर–देखो 'भरपूर'।

वरम–पु० [सं० वर्मन्] १ कवच, बख्तर। २ घर, मकान। ३ छाल, गूदा। ४ पित्त पापड़ा। [फा० वरम] १ सूजन, शोथ। ६ घाव। ७ देखो 'ब्रह्म'।

वरमा,–स्त्री० [सं० वर्मन्] १ उपनाम। २ कुछ जातियों के लोगों के नाम के पीछे लगने वाली उपाधि। ३ देखो 'ब्रह्मा'।

वरमाळ, वरमाल–देखो 'वरमाळा'।

वरमाळणो (बो), वरमाळणो (बो)–क्रि० १ दुल्हे-दुल्हिन द्वारा परस्पर माला पहनाना, डालना। २ जयमाला डालना। ३ विवाह, शादी या वरण करना। ४ स्वीकार या अंगीकार करना।

वरमाळा (ला), वरमाला–पु० [सं० वर+माला] १ दुल्हिन द्वारा दूल्हे के गले में पहनाई जाने वाली माला, हार, पुष्पहार। २ जयमाला।

वरम्म–देखो 'वरम'।

वरम्मा–देखो 'ब्रह्मा'।

वरम्माळ, वरम्माळा(ला),वरम्माल,वरम्माळा–देखो 'वरमाळा'।

वरय–देखो 'वरद'।

वरयता–पु० [सं० वरयिता] स्त्री का पति, भर्ता, स्वामी।–वि० वरण करने वाला।

वरयात्रा–स्त्री० [सं०] १ विवाह के लिये दूल्हे का बारात सहित गमन, प्रस्थान। २ बारात।

वररमा, वररमा–पु० [सं० रमा-वर] विष्णु; श्रीराम।

वररुचि–पु० [सं०] १ सुविख्यात प्राकृत व्याकरणकार। २ नाट्य शास्त्र के प्रणेता विशेष।

वरळ, वरळक–पु० [सं० वरलः] १ सूर्य, सूरज। २ हंस। ३ बर्रैया। ४ प्रकाश, उजाला, रोशनी।

वरलच्छि–पु० [सं० लक्ष्मी-वर] विष्णु।

वरळणो (बो)–देखो 'विरळणो' (बो)।

वरला–स्त्री० [सं०] हंसनी, मादा हंस।

वरळु (लु)–देखो 'विरळो'। (स्त्री० वरळी)

वरवंछक, वरवंछत–वि० बुरा चाहने वाला।

वरवड़ी–स्त्री० चारण वंशोत्पन्न एक देवी।

वरवती, वरवती–वि० १ सौभाग्यवती, सुहागन। २ जिसे वरदान प्राप्त हो।–स्त्री० सुहागन स्त्री।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरवरण, वरवरण–पु० [सं० वर-वर्ण] १ स्वर्ण, सोना। २ अच्छा व सुन्दर वर्ण।

वरवरणी, वरवरणी–स्त्री० [सं० वरवर्णिनी] १ लक्ष्मी। २ दुर्गा। ३ सरस्वती। ४ सुन्दर स्त्री। ५ उत्तम स्त्री। ६ लाख। ७ हल्दी। ८ प्रियंगुलता।

वरवरणो (बो)–देखो 'बड़बड़णो' (बो)।

वरवासण (णी)–स्त्री० [सं० वरवासिनी] कछवाहों की कुल देवी।

वरवीर–पु० [सं० वर-वीर] १ श्रेष्ठ वीर। २ श्रेष्ठ विद्वान, पंडित। ३ बुद्धिमान, विवेकी। ४ एक छन्द विशेष।

वरवेरण–पु० [सं० वडवा-रमण] घोड़ा।

वरसंत (ति)–पु० [सं० वर्ष + अंत] किसी वर्ष का अंत, साल की समाप्ति।

वरस–पु० [सं० वर्ष] १ बारह मास की अवधि। २ संवत्सर, साल, वर्ष। ३ भारतवर्ष। ४ सप्तद्वीपों का एक विभाग। ५ बादल। ६ पाणिनी का गुरु। ७ वसुदेव व उपदेवी का एक पुत्र। ८ सहस्रार्जुन का एक पुत्र।

वरसकटी–स्त्री० [सं० वर्ष + कट्य] १ भूमि पर ऋण देने पर, भूमि के उपयोग संबंधी एक करार। २ ऋण के ब्याज पर भी ब्याज जोड़ने की एक विधि।

वरसट, वरसठ–पु० [सं० वरिष्ठ] ताम्र, तांबा।

वरसण, वरसण–पु० [सं० वर्ष्ण] बादल, मेघ।–वि० १ बरसने वाला। २ दानी, दातार।

वरसणी, वरसणी–स्त्री० [सं० वर्षणि] १ वृष्टि। २ व्यवहार, बर्ताव। ३ यज्ञीय कर्म, यज्ञ। ४ क्रिया। ५ एक महाविद्या।

वरसणो (बो), वरसणो(बो)–क्रि० [सं० वर्षण] १ बदलों से पानी बरसना, वर्षा होना। २ आंसुओं की झड़ी लगना। ३ फूल आदि कोई वस्तु ऐसे उछाला जाना कि वर्षा की तरह गिरे। ४ लगातार मधुर वाणी बोलना। ५ अत्यधिक देना। ६ अनायास ही खूब आमदनी होना। ७ क्रोध या आवेश में फटकारना, भला-बुरा कहना। ८ लगातार शस्त्र प्रहार होना। ९ चेहरे पर कांति झलकना। १० किसी पर तुष्ट मान होना।

वरसधर–पु० [सं० वर्ष-धर] बादल, मेघ।

वरसप, वरसपत (पति, पती)–पु० [सं० वर्षप, वर्षपति] किसी वर्ष या संवत्सर का अधिपति ग्रह।

वरसफळ, वरसफळ–पु० [सं० वर्ष-फल] १ वर्ष भर के शुभाशुभ कार्य या घटनाएं। २ इन बातों को प्रगट करने वाली कुंडली।

वरसवियायणि, वरसवियायणि वरसव्यावणी, वरसव्यावणी–वि० जिसके प्रति वर्ष प्रसव होता हो।

वरससत–पु० [सं० शत-वर्ष] सौ वर्ष।

वरसा, वरसा–स्त्री० [सं० वर्षा] १ आकाश से मेघों से पानी की वर्षा, वृष्टि बारिस। २ बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु। ३ बरसने की क्रिया या भाव। ४ किसी वस्तु की वृष्टि, बौछार। ५ अधिक मात्रा में आय होने या देने की क्रिया या भाव। ६ प्रहारों की झड़ी।—काळ–पु० वर्षा ऋतु। —रित, रितु—स्त्री० वर्षा ऋतु, मौसम।

वरसाउ (ऊ), वरसाऊ–वि० १ बरसने योग्य, बरसने वाला। २ आभा, कांति वाला।

वरसाकरण (न)–पु० इन्द्र।

वरसागम–पु० [सं० वर्षा आगम] वर्षा का आगमन, वर्षारंभ।

वरसाणो(बो), वरसाणो(बो)–क्रि० १ पानी बरसाना, वर्षा करना २ आंसुओं की झड़ी लगाना। ३ फूल आदि वस्तुओं को उछाल कर वर्षा करना। ४ मधुर शब्द कहना, बोलना। ५ खूब आय कराना। ६ अत्यधिक देना। ७ क्रोध दिलाकर भला-बुरा कहाना। ८ प्रहारों की झड़ी लगाना। ९ तुष्ट मान करना। १० दान दिलाना।

वरसात, वरसात–देखो 'वरसा'।

वरसाति, वरसाती, वरसाद–वि० १ वर्षा का, वर्षा संबंधी। २ वर्षा की सूचना या आभास देने वाला। ३ वर्षा ऋतु में होने वाला।

वरसाति, वरसाती–स्त्री० १ वर्षा ऋतु में पहनने का 'ओवर कोट'। २ घोड़ों का एक रोग। ३ देखो 'वरसा'।

वरसाभू–पु० [सं० वर्षाभू] १ मेंढक। २ इन्द्र गोप या वीर बहूटी नामक कीट। ३ लाल पुनर्नवा।

वरसायत–देखो 'वरसा'।

वरसाळ (ल)–स्त्री० १ वर्षा, वृष्टि, बारिस। २ वर्षा ऋतु।

वरसाळइ (उ)–देखो 'वरसाळी'।

वरसाळा (ला), वरसाळा–देखो 'वरसाळ'।

वरसाळी (ली), वरसाली–वि० १ वर्षा का, वर्षा संबंधी। २ वर्षा ऋतु में होने वाला।–स्त्री० १ वर्षा ऋतु की खरीफ की फसल। २ इस फसल के मुआवजे का हिस्सा या अंश। ३ देखो 'वरसाळी'।

वरसाळु (ळू), वरसालु–वि० १ बरसने की स्थिति में, बरसने योग्य। २ बरसने वाला। ३ वर्षा ऋतु संबंधी। ४ वर्षा ऋतु में चलने या होने वाला।–स्त्री० १ वर्षा, बारिस। २ वर्षा ऋतु। ३ खरीफ की फसल। ४ इस मौसम होने वाला विषम ज्वर।

वरसाळे (ळै) वरसाले–क्रि० वि० वर्षा ऋतु में।

वरसाळो (लो) वरसालो–पु० १ वर्षा या पावस ऋतु। २ इस ऋतु की अवधि, चातुर्मास। ३ इस ऋतु का एक लोक गीत विशेष। देखो 'वरसाळु'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरसावरस (सो)–अव्य० प्रति वर्ष , हर साल ।
बरसि बरसि, बरसि–१ देखो 'बरस' । २ देखो 'बरसी' ।
बरसिउ–क्रि० वि० वर्ष पर्यन्त ।
बरसिण–देखो 'बरसण' ।
बरसी, बरसी–स्त्री० [सं० वार्षिकी] १ प्रति वर्ष आने वाली मृतक की मृत्यु तिथि । २ इस तिथि को किया जाने वाला श्राद्ध, भोजन, दान-पुण्यादि । ३ द्वादशी तिथि ।
बरसेस–पु० [सं० वर्ष-ईश] वर्ष का अधिपति ग्रह ।
बरसोत (व)–स्त्री० [सं० वर्षोत्थ, वर्षोदय] १ वार्षिक वेतन, सालभर की मजदूरी । २ वार्षिक लगान, कर । ३ वार्षिक सहायता, अनुदान । ४ वार्षिक पुरस्कार ।
बरसोदण–वि० [सं० वर्षोदयन] १ प्रति वर्ष फल देने वाली, लाभकारिणी । २ वर्ष भर चलने वाली । ३ प्रति वर्ष उत्थान या उन्नति करने वाली ।
बरसोदियो,बरसोदीयो–वि० [सं० वर्षोदयन] (स्त्री०बरसोदणी) १ प्रति वर्ष प्राप्त होने वाला । २ प्रति वर्ष उन्नति देने वाला । ३ वर्ष भर विद्यमान रहने वाला । ४ प्रति वर्ष आने वाला ।
बरसोदी–क्रि० वि० प्रति वर्ष ।
बरसोळी–पु० [सं० वर्षोपलः] १ वर्षा में गिरने वाला हिमकण; ओला । २ एक खाद्य पदार्थ विशेष । ३ बढ़ई का एक औजार, उपकरण ।
बरसोह–पु० [सं० वर्ष्मन्] १ विवाह के समय दूल्हा-दुल्हिन के चेहरे पर आने वाली कांति, आभा । २ ओज ।
बरस्ट–देखो 'बरसट' ।
बरस्वरग–पु० १ मुक्ति । २ जीना, सीढ़ी । ३ निश्रेणी ।
बरस्स–देखो 'बरस' ।
बरस्सोह–देखो 'बरसोह' ।
बरह, बरहण–पु० [सं० बर्ह] १ मोर की पूंछ । २ मोर-पुच्छ का चंदोवा । ३ पक्षी की पूंछ । ४ पत्ता, पत्र । ५ अनुचर वर्ग । ६ देखो 'बिरह' ।
बरहमुख–पु० [सं० बर्हिमुख] देवता, देव । अग्नि मुख ।
बरहार–पु० एक प्राचीन देश ।
बरहास–पु० [सं० वर+अश्व] १ घोड़ा, अश्व । २ ऊंट; उष्ट्र ।
बरहि (हो)–देखो 'बरही' ।
बरहोवाह–पु० [सं० बर्ही-वाह] स्वामिकार्त्तिकेय ।
बरहु–देखो 'बिरह' ।
बराग–पु० [सं० वर+अंग] १ हाथी । २ सिर, मस्तक । ३ सुडौल अंग, शरीर । ४ विष्णु । ५ ३२४ दिनों का एक नक्षत्र, वत्सर । ६ दालचीनी । ७ वृक्ष की शाखा, टहनी । ८ गुदा । ९ योनि, भग ।–वि० [सं० वर+अंगी] सुन्दर अंगों वाला ।
बरांगना–देखो 'वरांगना' ।
बरांगी–स्त्री० [सं० वर-अंगी] १ हल्दी । २ मजीठ । ३ देखो 'बरांग' ।
बरांसइ (उ), बरांसिउ–वि० [सं० विपर्यस्त] १ परिवर्तित, बदला हुआ । २ भ्रामक । ३ प्रतिकूल, उल्टा ।
बरांसीयइ–पु० १ अभाव, अस्तित्व का अभाव । २ उल्टापन, विरुद्धता । ३ अदला-बदली ।
बरा–स्त्री० [सं०] १ पार्वती । २ लक्ष्मी । ३ हल्दी । ४ त्रिफला । ५ रेणुका नामक गंध द्रव्य । ६ ब्राह्मी बूंटी । ७ मजीठ । ८ मदिरा, शराब । ९ गुड़च । १० बिडंग । ११ चित्रकला । १२ मेदा ।
बराक–वि० [सं०] १ तुच्छ, नगण्य । २ नीच, पामर, हीन । ३ अभागा, बेचारा, दीन, गरीब ।–पु० १ शिव, महादेव । २ युद्ध, लड़ाई । ३ पांपड़, पर्पट । ४ योनि । ५ बगला । ६ दूध भरने से उभरे हुए स्तन ।
बराड़–पु० [सं० वरऽऽर] १ विचार । २ चंदा । ३ देखो 'बराड़' ।
बराचक (चख, छक)–देखो 'बराछक' ।
बराट, बराटक–पु० [सं०] १ कौड़ी । २ रस्सी, डोरी । ३ कमलगट्टा ।
बराटिका–स्त्री० [सं०] १ कौड़ी । २ तुच्छ वस्तु ।
बराणो (बो); बराणो(बौ)–क्रि० १ वरण कराना, शादी कराना २ चुनाव कराना, पसंद कराना । ३ स्वीकार करवाना, मनवाना । ४ खिलाना, निगलाना । ५ वरदान, आशीर्वाद दिलाना । ६ याचना कराना ।
बरात, बरात–स्त्री० १ वर्षा । २ देखो 'बरात' ।
बराती, बरातो–देखो 'बराती' ।
बरापूर–देखो 'बरापूर' ।
बरारक–पु० [सं०] हीरा ।
बराळ, बराल–पु० १ आग की लौ, लपट । २ वाष्प । ३ तीव्र उष्णता । [सं० वराल] ४ लौंग, लवंग ।
बराळी–देखो 'बरसाळी' ।
बराळु–देखो 'बरसाळु' ।
बराळो–देखो 'बरसाळी' ।
बरावणो (बो)–देखो 'बराणो' (बो) ।
बरास–देखो 'बरहास' ।
बरासण–पु० [सं० वर-आसन] १ उच्च व श्रेष्ठ आसन । २ वर के बैठने का आसन । ३ दरबार । ४ अहहास । ५ नपुंसक ।
बराह, बराहउ–पु० [सं० वराह] १ शूकर, सूअर । २ विष्णु का तीसरा अवतार । ३ मेढ़ा । ४ सांड । ५ बादल । ६ युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि । ७ एक पुराण ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

८ शूकर के रूप में सैन्य व्यूह । ९ वाराही कंद । १० घड़ियाल, नक्र । ११ एक प्राचीन पर्वत ।

वराहक–पु० [सं०] १ कुबेर सभा का एक यक्ष । २ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग ।

वराहजयंती–स्त्री० [सं०] भादव सुदी तृतीया तिथि ।

वराहजी–पु० [सं० वराह] १ वराह अवतार । २ देखो 'वाराही' ।

वराहदूही–पु० दूहा छंद का एक भेद ।

वराहमिहिर–पु० ज्योतिष के एक प्रसिद्ध आचार्य ।

वराहमोती–पु० [सं० वराह+मौक्तिक] सूअर के मस्तिष्क से निकला मोती ।

वराहसंहिता–पु० 'वराह मिहिर' द्वारा रचित ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रंथ ।

वराहावतार–पु० [सं०] 'वराह रूप में' विष्णु का तीसरा अवतार ।

वराही–देखो 'वाराही' ।

वरि–क्रि० वि० [सं० उपरि] १ ऊपर, पर । २ फिर, पुनः, बाद में ।–वि० समान, अनुरूप ।–स्त्री० तरह, भांति, प्रकार ।

वरियान, वरियाम–पु० १ एक वर्ण वृत्त । २ देखो 'वरियाण' । ३ देखो 'वरियाम' ।

वरिखा, वरिखा–देखो 'वरसा' ।—रित, रितु, रुत, रुति = 'वरसारितु' ।

वरिठ–देखो 'वरिस्ठ' ।

वरियण–स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।

वरियां–देखो 'वेळा' ।

वरियाण–पु० [सं० वरियाण] ज्योतिष में एक योग ।

वरियाम–वि० [सं० वरेण्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम । २ प्रवीण, चतुर । ३ वरण करने योग्य । ४ सुन्दर, रूपवान । ५ वीर, बहादुर, योद्धा । ६ जोरावर, जबरदस्त । ७ प्रमुख, मुख्य ।–पु० मंत्री, वजीर ।

वरिस–देखो 'वरस' ।

वरिसणी (णी)–१ देखो 'वरणी'(णी) । २ देखो 'वरसणी'(णी) ।

वरिसि–देखो 'वरस' ।

वरिस्ठ–वि० [सं० वरिष्ठ] १ श्रेष्ठ, उत्तम, उच्च । २ पूजनीय, पूज्य । ३ पुराना, बुजुर्ग । ४ तुलना में किसी से बढ़कर । ५ सब से बड़ा । ६ सबसे लंबा । ७ सबसे भारी ।–पु० [सं० वरिष्ठः, वरिष्ठ] १ तीतर पक्षी । २ नारंगी का वृक्ष । ३ ताम्र, तांबा । ४ मिर्च ।

वरी, वरी–स्त्री० [सं० वरी] १ सूर्यपत्नी छाया का नाम । २ शतावरी का पौधा । ३ विवाह के समय वर पक्ष की ओर से वधू के लिए भेजी जाने वाली पोशाक । ४ दूल्हे-दुल्हिन की पोशाक । ५ कूए से पानी निकालने की छोटी रस्सी ।

वरीयांम–देखो 'वरियांम' ।

वरीयां–देखो 'वेळा' ।

वरीयाण, वरीयांन, वरीयांम–देखो 'वरियांम' ।

वरीस–पु० [सं० वारि-ईश] १ समुद्र, सागर । २ देखो 'वरीसण' । ३ देखो 'वरस' ।

वरीसण (णी)–वि० [सं० वर्षणम्] दानदाता, उदारचित्त । –पु० दान, उत्सर्ग ।

वरु–देखो 'वर' ।

वरुओ–पु० [सं० वटुक] १ ब्रह्मचर्यावस्था का वटुक, ब्रह्मचारी । २ उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत । ३ इस संस्कार के अवसर पर गाया जाने वाला गीत । ४ ब्राह्मण बालक । ५ पुरोहित कर्म करने वाला विद्वान ब्राह्मण ।

वरुण–पु० [सं०] १ जल का अधिष्ठाता एक वैदिक देवता । २ समुद्र, सागर । ३ जल, पानी, नीर । ४ पश्चिम दिशा । ५ पश्चिम दिशा का दिक्पाल । ६ बारह आदित्यों में से नौवें आदित्य का नाम । ७ सूर्य । ८ आकाश । ९ सौर जगत का सबसे दूरस्थ ग्रह (नेपचून) । १० एक मरुत । ११ एक गंधर्व ।

वरुणग्रह–पु० १ घोड़ों का एक रोग । २ देखो 'वरुण' ।

वरुणदेव–देखो 'वरुण' ।

वरुणपुरी, वरुणलोक–पु० [सं०] वरुणदेव का निवास स्थान ।

वरुणालय–पु० [सं०] समुद्र, सागर ।

वरुण, वरुथी, वरूथ–पु० [सं० वरूथं] १ लोहे की चद्दर या जाली का बना रथ का कवच । २ कवच, बख्तर । ३ ढाल । ४ सैन्य दल, सेना । ५ समूह, समुदाय । [सं० वरुथिन्] ६ रथ ।–वि० १ कवचधारी । २ रक्षक । २ रथारूढ़ ।

वरुथणी (नी), वरुथणी (नी), वरुथिनी–स्त्री० [सं० वरुथी] सेना, फौज ।

वरूड–वि० [सं० विरूप] भद्दा, असुहावना, असुंदर ।

वरूथिनीएकादसी–स्त्री० वैशाख कृष्णा एकादशी ।

वरूथी–देखो 'वरूथ' ।

वरूथो–वि० [सं० वरूथिन्] १ प्रचंड, भयंकर, जबरदस्त । २ वीर, योद्धा । ३ कवचधारी ।–पु० १ सेनापति । २ देखो 'वरूथ' ।

वरे, वरें–क्रि० वि० अधिकार या कब्जे में ।–वि० माफिक, अनुकूल ।

वरोठी–पु० वर पक्ष द्वारा किया जाने वाला प्रीतिभोज ।

वरोळ–पु० [सं० वह्नि] १ बर्र । २ देखो 'विरोळ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरोळण (न)–वि० नाश या संहार करने वाला ।

वरोळणी (बो)–देखो 'विरोळणी' (बो) ।

वरी–पु० [सं० वराटः] १ कूए-वापी आदि से पानी निकालने की रस्सी । २ हाथी को बांधने का मोटा रस्सा । ३ आश्रय ।

वळ, वळ–पु० [सं० बल] १ भोजन, खाना । २ भोज्य सामग्री । ३ बलि । ४ गोष्ठी । ५ भोज या बलि पर लिया जाने वाला कर । ६ शरीर के संधिस्थलों में होने वाली ग्रन्थि, शोथ । ७ घुमाव, मोड़ । ८ टेढापन, लचक । ९ ऐंठन, मरोड़, बांक । १० दिशा । ११ मेघ, बादल । १२ एक असुर । १३ पार्श्व, पहलू । १४ सिकुड़न । १५ झुकाव । –सर्व० छन ।–क्रि० वि० [सं० वलन्] १ फिर, ओर । २ ओर, तरफ । ३ देखो 'बळ' ।

वलउ, वळक, वलक–स्त्री० [सं० वलकः] १ प्रकाश, चमक । २ आभा, कांति, तेज । ३ किरण, रश्मि । ४ शत्रु, दुश्मन । ५ आवेश, तेजी । ६ काष्ठ का लट्ठा । ७ तामस मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक । ८ कटि, कमर ।

वळकणो (बो)–क्रि० १ बादलों के बीच बिजली का बल खाते हुए चमकना, दमकना । २ किसी वस्तु का चमकना । ३ आभा, कांति या तेज का झलकना । ४ प्रकाशमान या प्रकाशित होना ।

वळकतीकेळ–पु० यौ० माला, वल्लम ।

वळका–स्त्री० संजीवनी बूंटी ।

वळकी–देखो 'वल्लकी' ।

वळक्कणो (बो)–देखो 'वळकणो' (बो) ।

वळख–पु० [सं० अवलक्ष] १ उज्ज्वल, शुभ्र । २ श्वेत, सफेद ।

वलगणो (बो)–क्रि० [सं० वलगनं] १ लूंबना, लटकना, झूमना । २ लिपटना । ३ उछलना, कूदना । ४ उछलकूद करना । ५ उछलते हुए चलना । ६ छलांग लगाना । ७ पकड़ना । ८ अवलंबन करना । ९ उलझना, फंसना ।

वळगत, वळगताऊ–क्रि० वि० [सं० वलितं] राह चलते हुए ।

वलगा–देखो 'वल्गा' ।

वलगार–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

वलग्गणो (बो)–देखो 'वलगणो' (बो) ।

वळण (णि, णी)–पु० [सं० वल] १ प्रस्थान, गमन । २ लौटना क्रिया । ३ आगमन । ४ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव । ५ घूमने या मुड़ने की क्रिया या भाव । ६ घूमने या चक्कर खाने की क्रिया या भाव । ७ भुगतान । ८ ग्रहों की एक चाल ।

वळणो (बो), वलणो (बो), वळणो (बो)–क्रि० [सं० वल्] १ वापस लौटना, लौट कर जाना । २ प्रस्थान करना, गमन करना । ३ लौटकर वापस आना । ४ प्राप्त होना, आना । ५ घूमना; फिरना । ६ मुड़ना, घूमना । ७ बल खाना । ८ वक्र चाल चलना । ९ आगे बढ़ना । १० ढलना । ११ प्राप्त होना मिलना । १२ आकर्षित होना । १३ अंकन होना, लिखा जाना । १४ आना । १५ लगना, पड़ना । १६ प्रविष्ट होना, घुसना । १७ ढकना, लपेटना । १८ लौटाना, देना । १९ भरपाई या चुकता करना । २० देखो 'वळणो' (बो) ।

वळतपूंछ–पु० [सं० वलित-पुच्छ] श्वान, कुत्ता ।

वळतासख–पु० छप्पय छंद का एक भेद ।

वळव–देखो 'वळद' ।

वळवार, वळवार–वि० मुड़ा हुआ, ऐंठा हुआ, घुमावदार ।

वळवियो–देखो 'वळद' ।

वळद्दिख–पु० [सं० वलिद्दक] इन्द्र ।

वलन–देखो 'वळण' ।

वलनास–पु० [सं० वलनाशं] किसी ग्रह के चलने की दूरी का अंश ।

वळपूरण–वि० [सं० बल-पूर्ण] भोजन देने वाला, अन्नदाता । –स्त्री० १ अन्नपूर्णा । २ वरवड़ी देवी का नाम ।

वळबंड–देखो 'बळबंड' ।

वलभ–देखो 'वल्लभ' ।

वलभजन (भज्यन)–पु० [सं० वल्लभ-जन] १ श्रीकृष्ण । २ मित्र वर्ग, मित्रगण । ३ बंधव जन ।

वलभतन–पु० [सं वल्लभ-तनु] मित्र ।

वळभद्र–देखो 'बळभद्र' ।

वळभन–पु० [सं० वल्लभ] भोजन ।

वळभा–देखो 'वल्लभा' ।

वळभाचारी–देखो 'वल्लभाचारी' ।

वळभि, वळभी, वलभी–स्त्री० [सं० वलभिः] १ मकान के ऊपर बना मंडप, गुंबज, गुमटी । २ छत । ३ छप्पर । ४ मकान का ऊपरी भाग; हिस्सा । ५ शिखर । ६ झोंपड़ी । ७ काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी ।

वलभीउत्तग–पु० यौ० [सं० वलभी उत्तुंग] ऐरावत, इन्द्र का हाथी ।

वलय–१ देखो 'वल्लम' । २ देखो 'वल्लभ' ।

वलय–पु० [सं० वलयः, वलयं] १ कंकण, कंगन । २ स्त्रियों की चूड़ियां । ३ बाजूबंध । ४ कड़ा, छल्ला । ५ घेरा, कुंज । ६ वृत्त, परिधि । ७ व्यूह रचना विशेष । ८ वेष्ठन । ९ कमर पेटी हजारबंध । १० किनारा, छोर ११ गल गंड नामक एक रोग । १२ छंदशास्त्र के प्रथम भेद, आदि ह्रस्व मात्रा का नाम । १३ गणशास्त्र के प्रथम भेद, दीर्घ मात्रा का नाम ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वलयावलि–पु० [सं० वलय-अवलि] कंगन ।

वळराव–देखो 'बळिराव' ।

वळवंड–देखो 'वळवड' ।

वळवत (ती)–देखो 'बळवंत' ।

वळवत्त–पु० १ एक देश का नाम । २ देखो 'बळवंत' ।

वळवळ–पु० [सं० वल] १ विलाप, रुदन । २ प्रकाश, चमक । ३ झलक । ४ जलन, दाह । ५ कंपन ।–क्रि० वि० १ चारों ओर । २ फिर-फिर कर, रह-रह कर, पुनः-पुनः । ३ क्रमशः । ४ निरंतर ।

वळवळणी (बो), **वळवळणी (बो)**, **वलवलणी(बो)**, **वळवळणी (बो)**–क्रि० १ चमकना, प्रकाशमान होना । २ धीरे-धीरे, शनैः-शनैः जलना । ३ जलन, दाह होना । ४ झिलमिलाना, झलकना । ५ कम्पायमान होना । ६ रुदन करना, नीलाम करना । ७ सेक करना ।

वळवळां–देखो 'वळवळ' ।

वळवळाट, वलवळाट–पु० १ चमक, प्रकाश, रोशनी । २ झलक । ३ जलन, दाह । ४ कंपन । ५ व्यर्थ प्रलाप ।

वळवांण–देखो 'बळवांन' ।

वलसणी (बो)–देखो 'विलसणी' (बो) ।

वळसवन–देखो 'बळसदन' ।

वलसाणी (बो), **वलसावणी (बो)**–देखो 'विलसाणी' (बो) ।

वलसूदन–पु० [सं० वल-ल्यु-अन] इन्द्र ।

वलहंता–पु० इन्द्र ।

वळहट (ठ)–देखो 'बळहट' ।

वळहटमल (मल्ल)–देखो 'वळहटमल्ल' ।

वळहळ–स्त्री० चमक-दमक, झलकन ।

वळहणे (बो)–क्रि० बढना ।

वलहो–देखो 'वल्लभ' ।

वळां, वळां–क्रि० वि० १ ओर, तरफ । २ दफा, मर्तबा, बार ।

वळांणी, वळांणी–देखो 'बळाणी' ।

वळांपूरण–देखो 'बळपूरण' ।

वळांमण–पु० ढंग, तरीका, रीति ।

वळां, वळां–क्रि० वि० चारों ओर, चारों तरफ ।

वळा, वळा–क्रि० वि० १ ओर, तरफ । २ बार, दफा, मरतबा । –स्त्री० १ खलिहान । २ अफगानिस्तान का निवासी, अफगान । [अ० वला] ३ लोभ, लालच । ४ आसक्ति, मोह । ५ इश्क, प्रेम । ६ देखो 'वलय' ।

वळाकी, वळाकी–पु० [सं० वल्ल+रा. की] १ चक्कर, फेरा, टिप, आना-जाना । २ घुमाव, मोड़, टेढापन । ३ ऐंठन, मरोड़ । ४ मोच । ५ कसक ।

वळाबंध–पु० अरावली पर्वत का एक नाम ।

वळायत–देखो 'बिलायत' ।

वलारा–पु० अनाज सहित कुचले हुए भूसे के ढेर के दोनों किनारे ।

वलालो–देखो 'विलालो' ।

वळाव–पु० १ दिशा । २ खलिहान । ३ खलिहान स्थल ।

वळावणी (बो)–देखो 'बोळाणी' (बो) ।

वळावळ–देखो 'बळवळ' ।

वळाहक–देखो 'बळाहक' ।

वळि वलि–क्रि० वि० [सं० वलित] १ फिर, और । २ पुन, दुबारा । ३ इस पर भी । ४ तब । ५ ओर, तरफ । ६ बार, दफा, मर्तबा ।–स्त्री० १ रेखा, लकीर । २ झुर्री, सिकुड़न । ३ छप्पय छंद का एक भेद । ४ देखो 'बळि' ।

वलित–वि० [सं०] १ गतिशील । २ घूमा हुआ । मुड़ा हुआ । ३ गुंथा हुआ । ४ लिपटा हुआ, वेष्टित । ५ झुर्री पड़ा हुआ ।

वळिभद्र–देखो 'बळभद्र' ।

वलिमधु–पु० मधुप ।

वळिमुख–पु० [सं०] वानर, बंदर ।

वलिय–१ देखो 'वलि' । २ देखो 'वलित' ।

वळियोभंवर–पु० रेगिस्तान का वह स्थल जहां चलते समय पांव अंदर धंसते जाते हैं ।

वळियो–पु० १ समय । २ अवसर । ३ बैलों के सींगों पर बांधने की रंगीन डोरी । ४ बल खाई हुई कोई वस्तु । ५ देखो 'बळियो' । ६ देखो 'वळि' । ७ देखो 'वळी' ।

वळिराज (राजा, राव)–देखो 'बळिराज' ।

वळिहारी, वलिहारी–देखो 'बळिहारी' ।

वळी, वली–स्त्री० [सं० वली] १ त्वचा की सिकुड़न । झुर्री । २पेट आदि पर सिकुड़न की रेखा । ३ रेखा, लकीर । ४ पंक्ति । ५ पहाड़ की तलहटी की लंबी भूमि । ६ रेतीले टीबे पर पड़ी लहरिया । ७ 'चकचूंदियो' नामक उपकरण । ८ रुपया-पैसा । ९ रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड । १० साधु पुरुष । ११ हाकिम । १२ शासक, बादशाह । १३ उत्तराधिकारी, वारिस । १४ देखो 'वळि' ।

वलीअहद, वलीअहव–पु० [अ० वलीअहद] १ शाहजादा, युवराज, राजकुमार । २ उत्तराधिकारी, वारिस । ३ संतान ।

वळीगण–पु० [सं० अवलिगन] चूल्हे पर चढाये जाने वाले बर्तनों के पैंदे पर मिट्टी का लेपन ।

वळीठ, वळीठ–देखो 'बलिस्ठ' ।

वलीय–देखो 'वळि' ।

वळू, वळू–वि० १ मददगार, सहायक । २ रक्षक । ३ तरफ का, पक्ष का । ४ अनुकूल ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बळे, बले–देखो 'बळै'।

बळरण–स्त्री० मकान की छाजन के नीचे लगायी जाने वाली लंबायमान लकड़ी।

बळेवड़ी–पु० [देश०] १ बैल के सींगों पर बांधने की डोरी, रस्सी। २ ऊंट या बैल की गर्दन पर बांधने का आभूषण विशेष।

बळै–क्रि० वि० १ फिर, और। २ पुनः, दुबारा। ३ पीछे, बाद में।–वि० ४ अतिरिक्त, अन्य।–स्त्री० तरह, भांति, प्रकार।

बळोबळ, बळोबळी–पु० भोजन।–क्रि० वि० १ चारों ओर, चारों तरफ। २ यत्र-तत्र, इधर-उधर। ३ पृथक्-पृथक्। ४ अपने-अपने मन से। ५ पुनः-पुनः, बार-बार। ६ निरन्तर, लगातार।

बळौ, बळौ–पु० १ अरावली पर्वत। २ पर्वत श्रेणी। ३ स्तंभ, खंभा। ४ बांस। ५ मकान की छाजन के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी कड़ी। ६ हुक्के की 'नै' के ऊपरी भाग में लगाया जाने वाला सोने-चांदी आदि का छल्ला।

बळोबळ, बळोबळी–देखो 'बळोबळ'।

बल्कल–पु० [सं० वल्कल] १ वृक्ष की छाल। २ ऐसी छाल का वस्त्र। ३ ऋषि, मुनि, महात्मा के पहनने का वस्त्र। ४ छिलका। ५ ऋग्वेद की वाष्फल नामक शाखा।

बल्गन–स्त्री० [सं० वल्ग-ल्युट्, वल्गनं] १ घोड़े की एक चाल, दुलकी। २ छलांग, उछल-कूद।

बल्गा–स्त्री० [सं०] लगाम, रास, बागडोर।

बल्गित–स्त्री० [सं०] १ घोड़े की सरपट चाल। २ डींग, शेखी।

बल्ब–पु० [अ०] पुत्र, तनय, सुत, बेटा।

बल्दियत–स्त्री० [अ०] १ पिता का नाम। २ पिता का नामोल्लेख। ३ पुत्र होने की अवस्था या भाव।

बल्ल–पु० [सं०] १ गिलाफ, आवरण। २ चादर। ३ तीन घुंघची के बराबर का तौल विशेष। ४ वर्जन, निषेध। ५ गमन, चाल।

बल्लकी–स्त्री० [सं०] १ नारद की वीणा का नाम। २ वीणा। ३ सलई का पेड़।

बल्लणो (बो)–देखो 'बळणो' (बो)।

बल्लभ,बल्लभ–वि०[सं०वल्लभ] (स्त्री०वल्लभा)१ प्रिय, प्यारा, स्नेही। २ सुखद, सुखप्रद। ३ वांछनीय। ४ सर्वोपरि, श्रेष्ठ, उत्तम। ५ सुन्दर।–पु० १ पति, स्वामी, प्रियतम। २ प्रिय व्यक्ति, प्रेमी। ३ स्वामी, मालिक। ४ अध्यक्ष। ५ मित्र, दोस्त। ६ पर्यवेक्षक। ७ प्रधान या मुख्य रखवाला, गोप। ८ वैष्णव-सम्प्रदाय का एक आचार्य। ९ शुभ लक्षणों का घोड़ा, अश्विनी। १० पांडव पुत्र भीम का एक नामान्तर। ११ ज्योतिष में एक करण।

बल्लभा–वि० प्रिया, प्यारी।–स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्या।

बल्लभाचार्य–पु० [सं० वल्लभाचार्य] वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रमुख आचार्य।

बल्लव–देखो 'वल्लभ'।

बल्लवसिवा–पु० [सं० शिवा-वल्लभ] चंदन।

बल्लह (उ)–देखो 'वल्लभ'।

बल्लही–देखो 'वल्लभा'।

बल्लहु, बल्लही–देखो 'वल्लभ'।

बल्लाह–अव्य० [अ०] १ ईश्वर की शपथ से। २ सचमुच।

बल्ली–स्त्री० [सं०] १ लता, वल्लरी, बेल। २ पृथ्वी। ३ मिट्टी। ४ शाल वृक्ष। ५ अग्नि, दमयंती। ६ केवटी मोथा। ७ काली अपराजिता।

बल्लुर, बल्लूर–पु० [सं० वल्लुरं, बल्लूरं] १ लता कुंज। लता मंडप। २ पवन। ३ मंजरी। ४ 'पड़त' रखा हुआ खेत। ५ रेगिस्तान। ६ वीरान जंगल, वन। ७ उपवन। ८ जंगली सूअर का मांस। ९ सूखा मांस।

बल्ह, बल्हम ,बल्ही–देखो 'वल्लभ'।

बव–पु० [सं०] फलित ज्योतिष में एक करण।

बवकणी (बो), बवकणी (बो)–देखो 'भभकणी' (बो)।

बवड़, बवड़ी–देखो 'बघू'।

बवज–पु० १ व्यवधान, बाधा। २ कारण।

बवणी (बो)–क्रि० [सं० वपनम्] बोवाई होना, बोया जाना।

बवयण–पु० [सं० वि+वचन] यश, कीर्ति, प्रशंसा।

बवळाणी (बो)–देखो 'बोळाणी' (बो)।

बवहाणी (बो)–देखो 'वहाणी' (बो)।

बवहार–देखो 'व्यवहार'।

बवहाररासि–पु० जीवाणु समूह का अंश (जैन)।

बवांण–देखो 'विमान'।

बवासीर–देखो 'बवासीर'।

बसग, बसग–देखो 'वासुकि'।

बसत,बसंत–पु०[सं०वसंत]१ षड् ऋतुओं में प्रथम व प्रमुख ऋतु; वसंत ऋतु। २ माघ शुक्ला पंचमी को होने वाला पर्व। ३ एक ताल। ४ फूलों का गुच्छा। ५ मूर्तिमान ऋतु जो कामदेव का सखा माना जाता है। ६ संगीत में एक राग। ७ एक वस्त्र विशेष। ८ अतिसार रोग। ९ शीतला या चेचक की बीमारी। १० मसूरिका नामक रोग। ११ पीला रंग।

बसंतजा–स्त्री० [सं०] १ वासंती या माधवी लता। २ सफेद जूही। ३ वसंतोत्सव।

बसंतड़ी–देखो 'बसंत'।

बसंततिलक–पु०[सं०]१वसंत का तिलक।२देखो 'बसंततिलका'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वसंततिलका–पु० [सं० वसंततिलकः] एक वर्णिक छन्द विशेष।

वसंतदूत–पु० [सं०] १ कोयल। २ चैत्र मास। ३ आम का वृक्ष। ४ पंचम राग।

वसंतदूती–स्त्री० [सं०] १ कोयल। २ माधवीलता।

वसंतपंचमी (पांचमि, पांचमी)–स्त्री० [सं० वसंतपंचमी] १ माघ शुक्ला पंचमी। २ इस दिन मनाया जाने वाला पर्व।

वसंतबंधु–पु० [सं०] कामदेव।

वसंतभैरवी–स्त्री० [सं०] एक रागिनी का नाम।

वसंतमारु–पु० सम्पूर्ण जाति का एक राग।

वसंतमालतीरस–पु० एक प्रसिद्ध रसौषधि, 'स्वर्ण-मालिनी-रस'।

वसंतरत–देखो 'वसंत'।

वसंतरमण (णि, णी)–पु० एक छंद विशेष।

वसंतरितु (रितु)–देखो 'वसंत'।

वसंतवाक–पु० [सं० वसंतवाक्] संगीत दामोदर के चौदह तालों में से एक।

वसंतसख (सखा)–पु० [सं० वसंतसखः] कामदेव का एक नाम।

वसंति (ती)–वि० [सं० वसंती] १ वसंत ऋतु का, वसंत ऋतु संबंधी। २ वसंत में होने वाला, चलने वाला। ३ वसंती (पीले) रंग का।–स्त्री० १ वसंत ऋतु की देवी, सरस्वती। २ हलका पीला रंग। ३ जूही।

वसख–देखो 'विसिख'।

वसगु–१ देखो 'व्यसन'। २ देखो 'बसण'।

वसणी (णी)–देखो 'बसणी' (णी)।

वसतु, वसत्त–देखो 'वस्तु'।

वसत्र–देखो 'वस्त्र'।

वसदे, वसदेव–१ देखो 'वसुदेव'। २ देखो 'वासुदेव'।

वसधा–देखो 'वसुधा'।

वसधापत (पति)–देखो 'वसुधापति'।

वसन–पु० [सं० वसनं] १ वस्त्र, कपड़ा, परिधान। २ कफन। ३ आवरण, गिलाफ, आच्छादन ४ स्त्रियों के कमर का आभूषण, करधनी। ५ देखो 'विष्णु'। ६ देखो 'बसण'।

वसनस–पु० [सं० वस्नसा] स्नायु, रग, नाड़ी।

वसना–देखो 'वसन'।

वसन्न–देखो 'वसन'।

वसमगत (गति)–देखो 'विसमगति'।

वसरामणी (णी)–देखो 'विसरामणी' (णी)।

वसराळ–देखो 'विसराळ'।

वसव–१ देखो 'विस्व'। २ देखो 'विस'।

वसवान–देखो 'वसीवान'।

वसांमध–पु० पाटल नामक वृक्ष।

वसा–स्त्री० [सं० वशा, वसा] १ औरत, नारी, स्त्री। २ पत्नी; भार्या, जोरू। ३ लड़की, पुत्री। ४ पति की बहन, ननद। ५ बंध्या स्त्री। ६ गौ, गाय। ७ बांझ गौ। ८ हथिनी। ९ मेद। १० चरबी, मांस। ११ मस्तिष्क।

वसाकेतु–पु० [सं०] पश्चिम में उदय होने वाला एक तारक पुंज।

वसाड़णी (णी), वसाणी (णी)–देखो 'बसाणी' (णी)।

वसारेळ–पु० [सं० वसु+रा० रेळ] इन्द्र।

वसाळ–पु० भेड़।

वसाव, वसावट–देखो 'बसाव'।

वसावणी (णी), वसावणी (णी)–देखो 'बसाणी' (णी)।

वसाह–पु० नगर या शहर के चौहटे का नाम।

वसि–१ देखो 'बसी'। २ देखो 'बस'।

वसितव, वसिता–देखो 'वसित्व'।

वसितागाथा–स्त्री० गाथा छंद का एक भेद।

वसित्व–पु० [सं० वशित्व] १ वशता, अधीनता। २ एक प्रकार की सिद्धि।

वसिमा–देखो 'वसी'।

वसियकरण–देखो 'वसीकरण'।

वसिस्ट, वसिस्ठ–पु० [सं० वसिष्ठ] १ ब्रह्मा का मानस पुत्र एक लब्ध प्रतिष्ठित ऋषि। २ अयोध्या के सूर्यवंशीय नरेशों के पुरोहित की उपाधि। ३ एक स्मृतिकार ऋषि। ४ रैवत मन्वन्तर के एक ऋषि। ५ आठवां वेदव्यास जिसे इन्द्र ने ब्रह्माण्ड पुराण सिखाया था। ६ एक शिल्प शास्त्रज्ञ। ७ विदेह-राज निमि का पुरोहित, अगस्त्य ऋषि का छोटा भाई।

वसिस्ठपुरांण–पु० [सं० वसिष्ठ पुराण] लिंग पुराण नामक एक उप पुराण।

वसी–पु० [सं० वसिः] १ गृह, घर, निवास स्थान। २ वस्त्र। [सं० वश्यः, वशिः] ३ नौकर, चाकर, दास, अनुचर। ४ जागीरदारों द्वारा लिया जाने वाला एक कर विशेष। ५ जागीरदार का विशेष कृपापात्र व्यक्ति। ६ बसने के लिये दी जाने वाली जागीरी, स्थान। ७ निवास। ८ अधिकार, कब्जा। ९ अधीनता। १० मन मोहकता।–वि० १ बसाया हुआ। २ आकर बसा हुआ। ३ वश में रहने वाला।

वसीकर, वसीकर–वि० [सं० वशीकर] १ वश में करने वाला। २ मोहित या मुग्ध करने वाला।

वसीकरण, वसीकरणि, वसीकरण, वसीकरणि–पु० [सं० वशीकरण] १ वश में करने की क्रिया या भाव। २ किसी को वश में करने संबंधी एक मंत्र। ३ अष्टसिद्धियों में से एक सिद्धि। ४ कामदेव के पांच बाणों में से एक। ५ वश में करने का कोई साधन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वसीका–स्त्री० [अ० वसिका] अगर की लकड़ी।

वसीकी–वि० [अ० वसिक] १ शून्य, रहित। २ रीता, खाली। [अ० वसीक:] ३ पेंशन पाने वाला।–पु० १ ऋणपत्र। २ दस्तावेज। ३ इकरारनामा। ४ सरकारी खजाने में जमा करवाया जाने वाला धन।

वसीकृत–वि० [सं० वशीकृत] १ मोहित, मुग्ध। २ वश में किया हुआ।

वसीटाळू–देखो 'विस्टाळू'।

वसीटाळी–देखो 'विस्टाळी'।

वसीठ्ठी–पु० १ दूत। २ देखो 'वसीठी'।

वसीठ–पु० १ संदेशवाहक, दूत। २ राजदूत। ३ देखो 'वसिस्ठ'।

वसीठी–स्त्री० १ वसीठ का कार्य। २ संदेश लेजाने का कार्य।

वसीता–देखो 'वसित्य'।

वसीतुनीर–पु० तीर, बाण।

वसीभूत–वि० [सं० वशीभूत] १ वश में किया हुआ। २ अधीन, नियंत्रित। ३ मोहित, मुग्ध। ४ दूसरों की इच्छा के अधीन रहने वाला।

वसीयत–स्त्री० [अ०] १ अपनी संपत्ति या जायदाद का उत्तराधिकार देने की एक प्रणाली। २ इस विधि से की गई व्यवस्था। ३ उत्तराधिकार के लिये लिखा गया दस्तावेज। ४ मरणासन्न व्यक्ति का अपनी जायदाद के प्रति अंतिम कथन या इच्छा।

वसीयतनामा–पु० [अ० वसीयतनाम:] १ अपनी जायदाद का वारिस बनाने या उत्तराधिकार देने संबंधी कानूनी दस्तावेज। २ इच्छा-पत्र।

वसोरी–पु० [सं० अवसिक्त] १ प्रजा। २ प्रजा का कोई वर्ग या परिवार जो जागीरदार का विशेष कृपा पात्र हो।

वसीला–पु० [फा० वसील:] १ आश्रय, सहारा। २ संबंध लगाव। ३ साधन, जरिया, माध्यम। ४ उपकरण। ५ बिचौलिया।

वसीवान–वि० [सं० वसि-प्रा० वत्] १ बसने, निवास करने वाला। २ वंश परंपरा से रहने वाला, स्थाई निवासी। ३ जो मकान आदि बनवा कर बस गया हो।

वसुंधरा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि, धरती।

वसु–पु० [सं०] १ धन, दौलत, द्रव्य। २ प्रकाश, तेज। ३ रत्न। ४ देवता, सुर। ५ स्वर्ण, सोना। ६ आठ देवगणों का एक समूह। ७ कुबेर। ८ इंद्र। ९ मेघ, बादल। १० सूर्य। ११ विष्णु। १२ शिव, रुद्र। १३ जल, पानी। १४ वायु। १५ प्रजापति। १६ तालाब, सरोवर। १७ मरुद्गण। १८ वस्तु, पदार्थ। १९ लवण विशेष। २० अगस्त्य का वृक्ष। २१ वक वृक्ष। २२ छप्पय छन्द का एक भेद। २३ साधु पुरुष, सज्जन। २४ अधिकार, कब्जा, वश। २५ आभा, कांति, दीप्ति। २६ अग्नि, आग। २७ किरण, रश्मि। २८ पृथ्वी, धरती। २९ उषा। ३० अश्वी। ३१ इन्द्रपुरी। ३२ स्वर्ग की एक नदी। ३३ अलकापुरी। ३४ प्रजापति दक्ष की एक कन्या। ३५ मोलश्री। ३६ वृद्धि नामक औषधि। ३७ लगाम, रास, बागडोर। ३८ आठ की संख्या※।–वि० १ जो सब में निवास करता हो। २ जिसमें सब का निवास हो। ३ अधीन, अवलम्बित।–क्रि० वि० ४ अधिकार में, कब्जे में।

वसुचरण–पु० द्रगण के चौथे भेद का नाम।

वसुज–पु० [सं० वसु+अ० द०] १ विष्णु। २ कुबेर।

वसुतरम (धरम)–पु० [सं० वसु धर्म] इन्द्र।

वसुदा–देखो 'वसुधा'।

वसुदेव–पु० [सं०] श्रीकृष्ण के पिता।

वसुधर, वसुधरा–देखो 'वसुंधरा'।

वसुधान, वसुधा–स्त्री० [सं० वसुधा] पृथ्वी, धरती, भूमि।—धर–पु० विष्णु। शेषनाग। पर्वत।—धिप, धिपति–पु० राजा, नृप।—धोद–पु० पानी, जल।—पति–पु० राजा, नृप। जागीरदार। जमीदार।

वसुधारा–स्त्री० [सं०] १ कुबेर की राजधानी अलकापुरी। २ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। ३ जैनों की देवी, शक्ति। ४ आकाश से स्वर्णवृष्टि।

वसुधेस–पु० [सं० वसुधा-ईश] १ ईश्वर। २ राजा, नृप।

वसुध्या–देखो 'वसुधा'।

वसुपय–पु० द्रगण के चतुर्थ भेद का नाम।

वसुप्रसून–पु० [सं० विष-प्रसून] कमल, नील कमल।

वसुमता (मति, मती, मत्ती)–स्त्री० [सं० वसुमति] पृथ्वी, धरती।

वसुरेता–पु० [सं० वसुरेतस्] १ अग्नि। २ शिव।

वसुरोधो–पु० शिव।

वसुहा–देखो 'वसुधा'।

वसूली–देखो 'वसूली'।

वसू–देखो 'वसु'।

वसूधा–देखो 'वसुधा'।

वसूप्रसून–देखो 'वसुप्रसून'।

वसूमती–देखो 'वसुमती'।

वसूल–वि० [अ०] १ किसी में बकाया का प्राप्त। २ प्राप्त, लब्ध। ३ श्रम के प्रतिफल में प्राप्त।–पु० १ आय, प्राप्ति। २ प्राप्त रकम।

वसूली–स्त्री० [अ०] १ बकाया की उगाही। २ बकाया धन एकत्र करने की क्रिया।

वसूली–पु० [सं० वासि:] १ बढ़ई का एक औजार। २ ईंट काटने का औजार।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वसेक, वसेख, वसेखो–देखो 'विसेस'।
वसेरो–देखो 'बसेरो'।
वसेस–देखो 'विसेस'।
वसोख–पु० [सं० विशिखा] राजमार्ग, आम रास्ता।
वसोली–देखो 'वसूली'।
वसो–क्रि० वि० १ वैसा-तैसा। २ लिये, निमित्त हेतु।
वस्त–पु० [सं० वस्तु] १ वासा, डेरा। २ गमन। ३ मांगना क्रिया, याचना। ४ मार-पीट। ५ नाभि के नीचे का हिस्सा, मूत्राशय। ६ परवस्ती, कृपा। [सं० वस्तः] ७ बकरा। [प्र०] ८ बीच का भाग, मध्य भाग। ९ देखो 'वस्तु'।
वस्तपांचम, वस्तपांचम–देखो 'वसंतपांचम'।
वस्तर, वस्तर–देखो 'वस्त्र'।
वस्तवंत–वि० [सं० वस्तु-वत्] वस्तुओं से परिपूर्ण, वस्तु युक्त।
वस्ति, वस्ति–स्त्री० [सं० वस्तिः] १ निवास, ठहराव। २ नाभि के नीचे का, पेट का भाग। ३ कोख। ४ मूत्राशय। ५ पिचकारी। ६ उदर शुद्धि हेतु एक यौगिक क्रिया। ७ देखो 'बस्ती'।
वस्तिकरम–पु० [सं० वस्तिकर्म] १ पिचकारी देने की क्रिया। २ 'एनिमा' देने की क्रिया। ३ योग की एक क्रिया।
वस्तिमळ–पु० [सं० वस्ति-मल] पेशाब, मूत्र।
वस्ती, वस्ती–१ देखो 'बस्ती'। २ देखो 'वस्ति'।
वस्तु,वस्तु–स्त्री० [सं०वस्तु] १ पदार्थ, चीज। निश्चित आकार-प्रकार वाला कोई तत्त्व। २ सारवान चीज, धन, दौलत। ३ साधन-सामग्री, साज-सामान। ४ सार, तथ्य। ५ खाका; ढांचा। ६ श्रम से निर्मित कोई चीज। ७ विचार-विमर्श योग्य विषय-वस्तु। ८ कथानक, कथावस्तु।
वस्तुनिरदेस–पु० [सं० वस्तु-निर्देश] नाटक में मंगलाचरण का एक भेद।
वस्तो, वस्तो–देखो 'बस्ती'।
वस्य–पु० [सं० वश्य] १ अनुचर, नौकर, दास। २ देखो 'वश्या'।
वस्यकरम–पु० [सं० वश्यकर्म] ७२ कलाओं में से एक।
वस्या–स्त्री० [सं० वश्या] आज्ञाकारिणी स्त्री।
वस्त्र, वस्त्र–पु० [सं० वस्त्र] १ कपड़ा। २ पोशाक, परिधान। —गांठ, ग्रंथि–स्त्री० वस्त्रों की पोट, गांठ, बंडल।
वस्त्रकार–पु० [सं०] १ वस्त्र व्यवसायी, व्यापारी, बजाज। २ वस्त्रागार का अधिकारी। ३ वस्त्र निर्माता।
वस्त्रगोपना–स्त्री० १ वस्त्रों की रक्षा। २ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।
वस्त्रपरिधायक–वि० वस्त्र पहनाने वाला, शृंगार कराने वाला।
वस्त्रागार–पु० [सं०] १ वस्त्र रखने का कक्ष, वस्त्र धारण करने का कक्ष। २ वस्त्र-भण्डार।
वहंग–देखो 'विहंग'।—पत, पति = 'विहंगपति'।—राज,राजा = 'विहंगराज'।
वहंडणी (बी)–देखो 'विहंडणी' (बी)।
वहंत–पु० [सं० वहन्त] १ हवा, पवन। २ बवंडर।
वह–सर्व० [सं० वह्] कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम जो किसी संदर्भ का अनुमान देता है।–पु० [सं० वहः] १ परोक्ष वस्तु का संकेत कारक शब्द। २ समर्थन, सहमति। ३ लेजाने की क्रिया। ४ वाहन, सवारी। ५ घोड़ा। ६ हवा, पवन। ७ मार्ग सड़क। ८ नद। ९ बैल का कंधा। १० कंधा, स्कंध। ११ चार सौ द्रोण भर का एक नाप। १२ देखो 'वाह'।
वहकणी (बी), वहकणी (बी)–देखो 'महकणी' (बी)।
वहचरा, वहचराय–देखो 'बहचराय'।
वहजावणी (बी), वहजावणी (बी)–देखो 'बजाणी' (बी)।
वहण–वि० १ वार करने वाला, मारने वाला। २ चलने वाला, गमन करने वाला। ३ धारण करने वाला।–पु० [सं०वहन] १ वाहन, सवारी। २ रथ। ३ नाव, नौका। ४ नदी सरिता। ५ समय। ६ वार,प्रहार। ७ चाल,गति। ८ देखो 'वहन'।
वहणी–स्त्री० १ चलने की क्रिया या भाव। २ आचार-व्यवहार, चाल-चलन। ३ बतर्व। ४ तेज चलने वाली, शीघ्रगामी। ५ चाल, गति। ६ बहने की क्रिया या भाव।
वहणी, वहणी–वि०[सं० वह्] (स्त्री० वहणी) १ चलने वाला; गतिशील। २ घूमने वाला, टहलने वाला। ३ तेज चाल वाला। ४ बहने वाला।
वहणो (बी)–क्रि० [सं० वहन] १ चलकर कहीं जाना। २ गमन करना, चलना। ३ गतिशील होना। ४ पास से गुजरना। ५ बहना, प्रवाहित होना। ६ भटकना। ७ भ्रमण करना, घूमना। ८ आचरण करना। ९ चलना। १० छूटना। ११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी लेना। १२ कीर्ति या विरुद धारण करना। १३ स्वाभिमान रखना। १४ घुसना, धंसना। १५ कूए से पानी निकालने की क्रिया होना। [सं० वह] १६ प्रचलित होना, फैलना। १७ झरना, टपकना। १८ फसल की बुवाई होना। १९ आघात या वार होना। २० वीरगति प्राप्त होना। २१ उछलना। २२ वध करना, मारना, समाप्त करना। २३ लादकर लेजाना, ढोना। २४ धारण करना।
वहत–पु० [सं० वहतः] १ यात्री। २ बैल।
वहतिक–१ देखो 'वहित्रिक'। २ देखो 'बोहित्त'।
वहतीवाण–पु० १ सीमा में होकर चलने का महसूल। २ देखो 'वैतियाण'।
वहत्तर, वहत्तरि–देखो 'बहोतर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहद–देखो 'बेहद'।

बहन–पु० [सं०] १ ग्रहण या धारण करने की क्रिया या भाव। २ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी लेने की क्रिया या भाव। ३ बोझे को ढोवाई, लदाई। ४ सवारी। ५ नाव या बेड़ा। ६ ध्वजा। ७ खंभे के नौ भागों में से सब से नीचे का भाग। ८ देखो 'बहन'। ९ देखो 'बत्ति'।

बहनि(नी)–१ देखो 'बहनी'। २ देखो 'बहन्य'। ३ देखो 'बाह्न'।

बहनोसिखा–देखो 'बह्निसिख'।

बहम्न, बहम्नि–१ देखो 'बह्नि'। २ देखो 'बहन'।

बहन्य–पु० एक सूर्यवंशी राजा।

बहम, बहम–पु० [अ०] १ संदेह, आशंका, भय की कल्पना। २ संदेह, भ्रम। ३ शक-सुबा। ४ गलतफहमी। ५ अंध-विश्वास। ६ अविश्वास।

बहमी, बहमी–वि० [अ०] १ बहम करने वाला, शक करने वाला। २ किसी पर अविश्वास करने वाला। ३ स्वभाव से शकी।

बहरणी (बी)–देखो 'बैरणी' (बी)।

बहरामंसद–वि० [फा० बहरामंद] सम्पन्न भाग्यशाली, धनाढ्य।

बहराइणी (बी), बहराणी (बी), बहरावणी (बी)–देखो 'बैराणी' (बी)।

बहळ, बहल, बहलि, बहली–१ देखो 'बहल'। २ देखो 'बेहळ'। ३ देखो 'बळद'।

बहलियो–१ देखो 'बळद'। २ देखो 'बहलियो'।

बहली–स्त्री० [सं० बहला, बहल] १ बड़ी इलायची। २ ऊख विशेष।

बहव, बहव–देखो 'बहू'।

बहवारियो, बहवारिया–देखो 'ब्यवहारियो'।

बहाइणी (बी), बहाणी (बी), बहारणी (बी)–क्रि० १ कहीं जाने के लिये प्रेरित करना, चलाना, गमन कराना। २ बहाना, प्रवाहित करना। ३ तिराना, डुबाना। ४ भटकाना, घुमाना। ५ गतिमान करना, गति देना, चलाना। ६ घमाना, टहलाना। ७ आचरण कराना। ८ अलग हटाना, दूर कराना। ९ प्रहार कराना, आघात कराना। १० वध कराना, मरवाना। ११ उछालना। १२ प्रचलित कराना। १३ टपकाना, झरवाना। १४ बोवाई कराना। १५ जिम्मेदारी डालना। १६ लदवाकर लेजाना। १७ शपथ दिलवाना।

बहानो–देखो 'बहानो'।

बहार–देखो 'बहार'।

बहाळो–देखो 'बा'ळो'।

बहालो–देखो 'बा'लो'।

बहाव–देखो 'बहाव'।

बहावणी (बी), बहावणी (बी)–देखो 'बहाणी' (बी)।

बहिचणी (बी)–देखो 'बैचणी' (बी)।

बहि, बहि–देखो 'बही'।

बहिउ–वि० [सं० व्यूह] १ फैला हुआ, चौड़ा, प्रशस्त। २ वृद्धि को प्राप्त। ३ वृद्ध, बूढ़ा। ४ दृढ़, सशक्त। ५ विवाहित।

बहिचणी (बी)–देखो 'बैचणी' (बी)।

बहिण, बहिणि (णी)–देखो 'बहन'।

बहित्तिक, बहित्र, बहित्रक, बहित्रिक–स्त्री० [सं० बहित्रकं] १ नाव, जहाज। २ बेड़ा, पोत।

बहित्थ–पु० [सं० बाहित्थं] हाथी का मस्तक।

बहित्री–पु० नगर का चौहटा।

बहिन–१ देखो 'बत्ति'। २ देखो 'बहन'। —मुख= बह्निमुख'।

बहिनी–स्त्री० [सं०] १ नाव, नौका। २ बेड़ा, पोत। ३ देखो 'बाहनी'। ४ देखो 'बहन'। ५ देखो 'बह्नि'।

बहिरंग–देखो 'बहिरंग'।

बहिरउ–देखो 'बहरो'।

बहिरणी (बी)–देखो 'बैरणी' (बी)।

बहिरत्तापिका–स्त्री० [सं० बहिर्तापिका] पहेली, समस्या।

बहिराणी (बी)–देखो 'बैराणी' (बी)।

बहिरांमण–पु० महादि क्षेत्र के तीर्थंकर।

बहिरी–देखो 'बहरो'।

बहिस–१ देखो 'बहल'। २ देखो 'बैल'।

बहिलउ, बहिलु–देखो 'बहिलो'।

बहिळो (लो)–क्रि० वि० [सं० बहिल्ल] (स्त्री० बहिली) १ शीघ्र, तुरंत, जल्दी। २ पहले, पूर्व। ३ बिरला।

बहिल्ल–१ देखो 'बैल'। २ देखो 'बहल'।

बहिस–अव्य० १ अच्छे समय पर। २ देखो 'बहिस'।

बहीं–अव्य० १ उसी जगह, स्थान या क्षेत्र में। २ उसी समय, क्षण या घटना के साथ। ३ उसी।

बही, बही–अव्व० व्यक्ति या वस्तु के प्रति संकेत देने वाला सर्वनाम। उस।–स्त्री० [सं० वयस] १ आयु उम्र। २ देखो 'बही'।

बहीण–देखो 'बिहीन'।

बहीणी (बी)–देखो 'बहणी' (बी)।

बहीर–पु० १ प्रस्थान, गमन, प्रयाण, कूच। २ सदा साथ रहने वाला नौकर, अनुचर, परिजन। ३ कुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार। ४ सेना।

बहीलो–देखो 'बहिलो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वहीवेस–स्त्री० [सं० वय-वयस्] १ युवावस्था, जवानी। २ बीतने योग्य उम्र। ३ अस्थाई व्यवस्था।

वहु, वहु, वहुअड़, वहुअर, वहुअरी, वहुआरी, वहुआरी–देखो 'बहू'।

वहुराणी (बी)–देखो 'बैरागी' (बी)।

वहुव, वहू, वहूअड़, वहूअर, वहूवड़, वहूवर–देखो 'बहू'।

वहूवासो–पु० [सं० वधू+वास] ससुराल में वधू को वधूपन के कारण मिलने वाला कष्ट।

वहूवक–पु० [सं०] चार प्रकार के संन्यासियों में से एक।

वहेड़ो–देखो 'बेड़ो'।

वहेणी (बी)–देखो 'वहणी' (बी)।

वहेली–देखो 'वहिली'।

वहो–देखो 'बहुत'।

वहोत–देखो 'बहुत'।

वहोत्तर–देखो 'बहोत्तर'।

वह्नि–स्त्री० [सं०] १ अग्नि, आग। २ पाचन शक्ति। ३ भूख। ४ जठराग्नि। ५ सवारी। ६ राम की सेना का एक वानर।—कर–वि० जलाने वाला। भूख बढ़ाने वाला। आग पैदा करने वाला।—स्त्री० बिजली। चकमक। पथरी।

वह्निवोज–पु० [सं०] १ सोना, स्वर्ण। २ नौवू।

वह्निमुख–पु० [सं०] देवता।

वह्निसिख–स्त्री० [सं०] १ केसर। २ कुंकुम। [सं० वह्निमख] ३ हवा, पवन।

वह्नु–देखो 'बहू'।

वां–सर्व० १ उन, उन्होंने। २ वहां, उस जगह।

वांइटो–पु० कूड़ा, कचरा।

वांइटी, वांइटो–पु० [सं० वात-घटी] १ वातविकार के कारण शरीर या मल में होने वाली ऐंठन। २ सुन्नता। ३ पेट की मरोड़, ऐंठन।

वांई, वांई–स्त्री० [सं० वायी] १ सर्प का बिल। २ खाट को बुनाई के बीच लगाया जाने वाला आड़ा बंधन। ३ करधनी।

वांईटी–देखो 'वांइटी'।

वांक–देखो 'बांक'।

वांकउ, वांकड़, वांकड़ली–देखो 'बांकी'।

वांकड़ी–१ देखो 'बांकी'। २ देखो 'बांकड़ी'। ३ देखो 'बांकली'।

वांकड़ी–१ देखो 'बांकी'। २ देखो 'बांकड़ी'।

वांकम (मि, मी)–देखो 'बांकम'।

वांकल–१ देखो 'बांक'। २ देखो 'बांकल'।

वांकस–देखो 'बांक'।

वांकिम (म्म)–देखो 'बांकम'।

वांकियो, वांकियो–पु० १ रथांग विशेष। २ देखो 'बांकियो'। ३ देखो 'बांक'।

वांकी, वांकी–देखो 'बांकी'।

वांकु, वांकी, वांकी–देखो 'बांकी'।

वांग–देखो 'बांग'।

वांगड़, वांगड़–वि० वीर, बहादुर।

वांगण–पु० [सं० प्रवाञ्जन] १ चक्के की धुरी या मशीन आदि में लगाया जाने वाला स्निग्ध पदार्थ। २ ऐसा पदार्थ लगाने की क्रिया या भाव।

वांगणो (बो)–क्रि० [सं० प्रवाञ्जनम्] १ चक्के, मशीन आदि में तेल या स्निग्ध पदार्थ लगाना। २ पीटना, मारना। ३ संभोग या मैथुन करना। ४ गमन करना।

वांगरी, वांगरी–स्त्री० एक प्रकार की घास।

वांगळो–स्त्री० रेत या टीबों पर पड़ने वाली लहरिया।

वांगलो–देखो 'बांघलो'।

वांगारो–पु० तेज चाल वाला बैल।

वांगी, वांगी–पु० १ प्रवाह, गति, चाल। २ बहाव से पड़ा निशान। ३ बहाव की गति। ४ प्रथा, परंपरा। ५ चक्कर। ६ लड़ाई की दर।

वांघलो–देखो 'बांघलो'।

वांचणो (बो), वांचणो (बो)–१ देखो 'बांचणो' (बो)। २ देखो 'वांछणो' (बो)।

वांच्छित–देखो 'वांछित'।

वांछक–वि० [सं०] इच्छा, अभिलाषा, चाह करने वाला।

वांछणो (बो)–क्रि० [सं० वांछनम्] १ चाहना, इच्छा करना, अभिलाषा करना। २ जिज्ञासा करना। ३ प्रेम करना।

वांछना–स्त्री० [सं० वांछा] १ चाहना, चाह। २ इच्छा अभिलाषा। ३ कामना। ४ जिज्ञासा।

वांछनीय–वि० १ इच्छित, अभिलषित। २ चाहने योग्य।

वांछा–स्त्री० [सं० वाञ्छा] १ इच्छा, चाह। २ अभिलाषा। ३ कामना। ४ जिज्ञासा।

वांछित–वि० [सं०] चाहा हुआ, इच्छित। मनचाहा।

वांझ, वांझ–देखो 'वंध्या'।

वांझगाई, वांझगाय–स्त्री० [सं० वंध्या-गो] वंध्या गाय।

वांझड़ी, वांझणी, वांझि, वांझिणी–देखो 'वंध्या'।

वांझीयो, वांझोयो–वि० [सं० वंड] १ विधुर, रंडुआ, अविवाहित। २ वह जिसके संतान न हो।

वांट, वांट–देखो 'वंट'।

वांटणी–देखो 'बांटणी'।

वांटणी (बो), वांटणी (बो)–देखो 'बांटणी' (बो)।

वांटी, वांठ, वांठी–१ देखो 'बांटी'। २ देखो 'वंट'।

वांठि, वांठी–पु० अहंकार, गर्व।

वांड, वांड–पु० खंड, टुकड़ा।

वांडणी (बो), वांडणी (बो)–देखो 'बांडणी' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वांडो, वांडो, वांडो, वांडी–वि० [सं० वंठ] १ अविवाहित। २ रंडुआ, विधुर। ३ मूर्ख, मूढ़। बेवकूफ।–पु० १ अविवाहित व्यक्ति। २ एकाकी व्यक्ति।

वांण वाण–स्त्री० [सं० वाणि] १ बनावट, रचना। २ मूर्ति। ३ आदत, स्वभाव।–पु० १ पंडित, कवि। २ सिंह, शेर। ३ बुनावट में काम आने वाली रस्सी। [सं० यान] ४ गाड़ी। ५ विमान, वायुयान। ६ एक प्रकार का वातरोग। ७ मादा पशुओं के ऋतुमति होकर गर्भ धारण की अवस्था। ८ देखो 'वांणी'। ९ देखो 'बांण'।

वांणक, वांणवक, वांणक, वांणवक–स्त्री० [सं० वाणि] १ कांति, शोभा, दीप्ति। २ सौन्दर्य, रूप। ३ सूरत, शक्ल। ४ आकृति, बनावट। ५ सजावट, ठाट-बाट। ६ रंग-ढंग। ७ ढंग, प्रकार। ८ एक वर्ण वृत्त विशेष। ९ देखो 'वणमत'।

वांणस, वांणसी–देखो 'वणियांणी'।

वांणप्रस्थ–देखो 'वानप्रस्थ'।

वांणरस–देखो 'वाराणसी'।

वांणवहल–पु० १ नाव, जहाज। २ एक प्रकार का दैवी प्रकोप।

वांणाही–स्त्री० [सं० उपानह] जूती, पनरखी।

वांणा–देखो 'वांणी'।

वांणारसी–देखो 'वाराणसी'।

वांणाळ–१ देखो 'बांण'। २ देखो 'वांणावळी'।

वांणावळी–पु० रथ।

वांणि–देखो 'वांणी'।

वांणिक–१ देखो 'वांणक'। २ देखो 'वणिक'।

वांणिज, वांणिजु–१ देखो 'वाणिज्य'। २ देखो 'वणिक'।

वाणिज्य–पु० [सं० वाणिज्य] १ वस्तुओं का क्रय-विक्रय, व्यापार, व्यवसाय। २ लेन-देन।

वाणिनी–स्त्री० [सं० वाणिनी] १ चालाक स्त्री, धूर्त स्त्री, छिनाल। २ स्वेच्छाचारिणी व व्यभिचारिणी स्त्री। ३ नर्तकी, अभिनेत्री। ४ दूती। ५ मदोन्मत्त स्त्री। ६ एक वर्ण वृत्त विशेष।

वाणिया-कूटावणियो–पु० लुब्धक नामक तारा।

वाणिया-री-वेवळ–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला एक उद्भिज पदार्थ, 'लांकी मूळी'।

वाणियावही, वाणियावाटो–स्त्री० [सं० वणिक-वृत्ति] १ महाजनी गणित, देशी व्यापारियों द्वारा काम में ली जाने वाली एक प्रकार की गणित विद्या। २ बनियों की बही में लिखी जाने वाली लिपि विशेष। ३ बनिये का कर्म।–वि० १ बनिये की, बनिक संबंधी। २ महाजनी।

वांणियो–देखो 'वणिक'।

वां' णी–देखो 'वाहणी'।

वांणी, वांणी–स्त्री० [सं० वाणी] १ सरस्वती, शारदा। २ मुंह से उच्चारित शब्द, आवाज, भाषा। ३ निश्चित अर्थ बोधक शब्द, वचन वाक्य, भाषा। ४ वाक् शक्ति। ५ स्वर, ध्वनि, नाद। ६ जिह्वा, जीभ। ७ बोली, बोलने की क्रिया। ८ योग के अनुसार चार प्रकार की वाणियों में से एक। ९ संत-महात्माओं द्वारा लोकोपदेश के लिये रचे गये छन्द या पद्यों का संग्रह। १० निर्गुण भक्ति का कोई पद। ११ साहित्यिक निबंध। १२ एक छंद। १३ केवट, नाविक। १४ प्रशंसा। १५ ध्रुपद की चार वाणियों में से कोई एक।

वांणीमड–पु० [सं० वाणीमण्ड] दांत।

वांणीरणजोधार–पु० पंडित, विद्वान, कवि।

वांणोतरी–पु० बनिक समाज।

वांणो, वांणी–पु० [सं० वाहन] १ पानी लाने के लिये गाड़ी पर रखे गये जल-पात्रों का समूह। २ उक्त प्रकार से पानी लाने का कार्य।

वांण्यो, वांण्यो–देखो 'वणिक'।

वांति–स्त्री० [सं० वांतिः] १ वमन, कै। २ उगाल।

वांतो–पु० अन्तर, फर्क।

वांध–देखो 'बाध'।

वांद, वांद–१ देखो 'बांदो'। २ देखो 'बांद'।

वांदणी (बी)–देखो 'बांदणी' (बी)।

वांदर, वांदर–देखो 'वांनर'।

वांदरपगो–पु० वह बैल जिसके पिछले पैर के टखने जमीन पर टिकते हों।

वांदरमाळ, वांदरमाल–देखो 'वांदरमाळ'।

वांदरी, वांदरी–स्त्री० [देश०] मोट की रस्सी में लगने वाला लकड़ी का उपकरण।

वांदरो, वांदरो–देखो 'वांनर'। (स्त्री० वांदरी)

वांदी–देखो 'बांदी'।

वांधण (बी)–देखो 'बांधणी' (बी)।

वांन–पु० १ यश, कीर्ति, शोभा। २ हौसला, साहस, जोश। ३ उत्साह, उमंग। ४ इज्जत, प्रतिष्ठा। ५ तेज, दीप्ति कांति। ६ वचन। ७ स्वाद, जायका। ८ सम्पन्नता सूचक प्रत्यय। ९ देखो 'बांद'।

वांनइल–देखो 'बानैत'।

वांनक–देखो 'वाणक'।

वांनकी–देखो 'वांनगी'।

वांनप्रस्थ–पु० [सं० वानप्रस्थ] जीवन की तीसरी अवस्था, गृहस्थाश्रम के बाद की अवस्था।

वांनर–पु० [सं० वानर] १ मनुष्य से मिलता-जुलता एक प्राणी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंदर, कपि। २ दोहा छंद का एक भेद। ३ बढ़ई का एक औजार। ४ देखो 'बंदर'।

बांनरमाळ–देखो 'बांदरमाळ'।

बांनरमुख–पु० नारियल।

बांनरी–वि० १ बंदर की, बंदर संबंधी। २ बंदर के समान। ३ बंदरों की। –स्त्री० १ मादा बंदर। २ केंवाच, कौंछ।

बांनरी–देखो 'बांनर'।

बांनवासिका–पु० एक छन्द विशेष।

बांना–स्त्री० [सं० बाना] बटेर, लवा।

बांनाबंध (बंधण, बंधण)–देखो 'बांनाबंध'।

बांनायुज–देखो 'बनायुज'।

बांनी, बांनी–स्त्री० राख, भस्मी।

बांनीर–पु० [सं० बानीर] १ बेंत। २ पाकर का पेड़।

बांने–क्रि०वि० ओर, तरफ।

बांनेत, बांनेत–देखो 'बांनेत'।

बांनो–देखो 'बांनी'।

बांबासणी (बो)–क्रि० जीभ दिखाना।

बांभ–देखो 'भांभ'।

बांभण, बांभणी, बांभण, बांभणी–स्त्री० १ मेघवाल स्त्री। २ देखो 'ब्राह्मण'।

बांभी, बांभी–देखो 'भांभी'।

बांमंग–देखो 'बांमांग'।

बांम–पु० [सं० बाम.] १ शिव, महादेव। २ एक रुद्र। ३ काम देव। ४ सूर्य। ५ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ६ चन्द्रमा के रथ का एक घोड़ा। ७ एक जंतु। ८ सर्प। ९ स्तन, कुच। १० एक वर्ण वृत्त विशेष। ११ एक मात्रिक छंद विशेष। [सं० श्याम.] १२ समानान्तर फैली दोनों भुजाओं की लंबाई का एक नाप। १३ धन। १४ एक प्रकार की मछली। १५ पृथ्वी, भूमि।–वि० [सं० वाम] १ बायां, दाहिने का विपर्याय। २ बायीं ओर स्थित। ३ उल्टा, औंधा, विपरीत। ४ विरुद्ध। ५ कुटिल। ६ नीच, दुष्ट। ७ सुन्दर, मनोहर। ८ देखो 'बामा'।

बांमअरधपदासन, बांमअर्धपद्मासन–पु० एक योगासन विशेष।

बांमण, बांमणदेव, बांमण, बांमणदेव–१ देखो 'बांमन'। २ देखो 'ब्राह्मण'।

बांमणबारस–देखो 'बामन द्वादसी'।

बांमणी–वि० [सं० बाम] (स्त्री० बांमणी) १ विरुद्ध, प्रतिकूल। २ तिरछा, टेढ़ा।

बांमणी (बो)–क्रि० पार निकालना, प्रसार करना, निकालना।

बांमदक्षिणपादासन, बांमदक्षिणस्वासगमनासन–पु० एक योगासन विशेष।

बांमदेव–पु० [सं० बामदेव] शिव, महादेव।

बांमदेवी–स्त्री० [सं० बाम देवी] १ दुर्गा, पार्वती। २ सावित्री।

बांमन–पु० [सं० बामन] १ ईश्वर। २ विष्णु का एक अवतार। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ दक्षिणी दिग्गज का नाम। ६ बौना या ठिगना आदमी। ७ एक पुराण। ८ एक वृत्तिकार। ९ अंकोट वृक्ष।–वि० १ ठिगना, बौना, नाटा। २ नम्र। ३ नीच, कमीना, शठ।

बांमनजयंती, बांमनद्वादसी–स्त्री० भादव शुक्ला द्वादशी तिथि।

बांममारग–पु० [सं० बाममार्ग] वेद विरुद्ध एक तांत्रिक मत।

बांमलोचना–स्त्री० [सं० बाम लोचन] १ सुंदर स्त्री। २ स्त्री, नारी।

बांम वक्रासन–पु० योग के चौरासी आसनों में से एक।

बांमसर, बांमसुर–पु० [सं० बाम-सर] महादेव, शिव।

बांमहूंणो–पु०अयाल में अशुभ भौंरी वाला घोड़ा।

बांमांग–वि० [सं० बाम-अंग] १ बायें अंग का, बायें अंग संबंधी २ बायीं ओर का।

बांमांगिनी, बांमांगी–स्त्री० [सं० बाम-अंगी] पत्नी, स्त्री।

बांमा–स्त्री० [सं० बामा] १ धर्मपत्नी, स्त्री, भार्या। २ सरस्वती शारदा। ३ लक्ष्मी। ४ रमणी, युवती। ५ सुन्दरी, स्त्री। ६ पृथ्वी। ७ एक वर्ण वृत्त विशेष।

बांमाचार–पु० [सं० बामाचार] तांत्रिक उपासना का एक भेद।

बांमादेवी–स्त्री० [सं० बाम देवी] पारसनाथ की माता का नाम।

बांमासर–पु० पाडल नामक वृक्ष।

बांमी–क्रि० वि० [सं० बाम] १ बायीं ओर, बायीं तरफ।–वि० २ बाममार्गी।–स्त्री० [सं० बामी] १ घोड़ी २ मधी। ३ हस्तिनी। ४ गीदड़ी।

बांमीजव (ज्ज)–पु० १ राठौड़ों का विशेषण सूचक शब्द २ राठौड़ राजपूत। ३ गौड़ राजपूत। ४ बायीं तरफ खड्ग बांधने वाला योद्धा, वीर।

बांमे, बांमें–क्रि० वि० [सं० बाम] बायीं ओर।

बांमौ–वि० [सं० बाम] (स्त्री० बांमी) १ दायां का विपरीत बायां। २ प्रतिकूल, उल्टा, विरुद्ध। ३ दुष्ट, नीच, शठ।

बांयलो–वि० (स्त्री० बांयली) पिछला, पीछे का, शेष।

बांरुबो–पु० वात रोग की चिकित्सा।

बांस–वि० १ वंश का, वंश संबंधी। २ देखो 'बंस'। ३ देखो 'बांस'।

बांसइ–अव्य० १ पीछे। २ निकट, समीप, पास। ३ पीठ पीछे

बांसरी–देखो 'बंसी'।

बांसली–वि० १ पिछली, पीछे की। २ देखो 'बंसी'। ३ देखो 'बांसरी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वांसळी (ळो)–वि० [सं० वंश-ळी] (स्त्री० वांसळी) १ वंशज, वंश का। २ पीछे का, पिछला। ३ शेष, अवशिष्ट।

वांसा–स्त्री० [देश०] १ घोड़े की जीन। २ देखो 'वांसै'।

वांसावळी–१ देखो 'वंसावळी'। २ देखो 'वासावळी'।

वांसियो–पु० १ अनाज बोने का बांस का बना उपकरण। २ अर्द्ध चंद्राकार घड़ा हुआ पत्थर।

वांसी–क्रि० वि० १ पीछे, पीछे से। २ देखो 'वंसी'।

वांसै, वांसें–क्रि० वि० १ पीछे से, पीछे। २ पश्चात् बाद में। ३ शेष, अवशिष्ट। ४ समीप, पास। ५ साथ में। ६ मदद में, इमदाद में। –वि० अधीन, अन्तर्गत।

वांसो–पु० १ पीछा। २ पिछला भाग, पीठ। ३ साथ। ४ मदद, इमदाद। ५ बेंट, दस्ता, मूठ।

वांह, वांहड़ी–देखो 'बांह'।

वांहणो–देखो 'बांणो'।

वांहळो (ळी)–१ देखो 'वंसो'। २ देखो 'बांसली'।

वा, वा–सर्व० १ वह। २ उन, उस (स्त्री वाची सर्वनाम)। –अव्य० १ अथवा, या। २ जैसा, सदृश। ३ विकल्प, संदेह-वाचक। ४ समाप्ति सूचक अव्यय, इति, बस। ५ तथा, और, भी। –स्त्री० १ अंबा। २ विकल्प। ३ प्रेम, स्नेह। ४ प्रति। ५ प्रहार, चोट। ६ देखो 'वायु'।

वा' वा'–१ देखो 'वाह'। २ देखो 'वास'। ३ देखो 'वायु'।

वाग्रणो, वाग्रणी–१ देखो 'वाहनी'। २ देखो 'वाहणो'।

वाग्रणो (णी), वाग्रणी (णी)–१ देखो 'बाजणो' (णी)। २ देखो 'बावणो' (णी)।

वाग्रवो, वाग्रवे, वाग्रवी, वाग्रवे–देखो 'वासदे'।

वाइटो, वाइंटो–देखो 'वांडटो'।

वाइवो, वाइंवो–पु० फूस, कचरा।

वाइ, वाइ–स्त्री० [सं० वाद] १ आवाज, ध्वनि। २ देखो 'वायु'। ३ देखो 'वापी'। ४ देखो 'वादी'। ५ देखो 'वाई'।

वाइक–पु० १ मित्र, दोस्त। २ देखो 'वाक्य'। ३ देखो 'वायक'।

वाइकचर–पु० [सं० वाक्य-चर] श्रवण, कान।

वाइड़ (ड़ि), वाइड़–देखो 'बायड़'।

वाइड़ियो, वाइड़ियो–देखो 'बायड़ियो'।

वाइड़ो, वाइड़ो–देखो 'बायड़ो'।

वाइणो (णी), वाइणी (णी)–१ देखो 'बावणो' (णी)। २ देखो 'बाजणो' (णी)।

वाइमल्ल–पु० वादियों में मल्ल।

वाइर–देखो 'बैर'।

वाइरियो, वाइरो, वाइरियो, वाइरो–देखो 'बायरो'।

वाइस–१ देखो 'बायस'। २ देखो 'बाईस'।

वाइसी–देखो 'बाईसी'।

वाई, वाई–वि० कृषि कार्य में अभ्यस्त (बैल)।–स्त्री० १ बैल को कृषि कार्य के लिये अभ्यस्त करने की क्रिया। २ देखो 'बादी'। ३ देखो 'वायु'।

वाईवड़ो, वाईवड़ो–देखो 'बायड़ो'।

वाईसी–देखो 'बाईसी'।

वाउ–देखो 'वायु'।

वाउकाई, वाउकाय–पु० वायु के जीव, वायु में रहने वाले जीव। हवा के जीवाणु।

वाउदेव, वाउदेवता–देखो 'वायुदेवता'।

वाउमंडळ–देखो 'वायुमंडळ'।

वाउळ–१ देखो 'बथूळो'। २ देखो 'बावळ'। ३ देखो 'बांवळ'।

वाउलउ–१ देखो 'बावळो'। २ देखो 'बावळ'।

वाउलि (ळी)–१ देखो 'बाउल'। २ देखो 'बावळो'। ३ देखो 'बांवळो'। ४ देखो 'बावळ'।

वाउलीउ–देखो 'बांवळ'।

वाउळो (ळी)–१ देखो 'बावळो'। २ देखो 'बावळ'।

वाउवो–वि० [सं० वातिक] वात रोग से ग्रस्त, बावाल।

वाउसू–देखो 'बावसू'।

वाएक–१ देखो 'वाक्य'। २ देखो 'वायक'।

वाएरी, वाएरो–देखो 'बायरो'।

वाओकळो–पु० [सं० वायुस्थलम्] १ हवादार व खुला स्थान। २ वायु के आगमन का स्थान, जहां वायु आती हो

वाक–स्त्री० [सं० वाक्] १ सरस्वती, शारदा। २ जिह्वा, जीभ। ३ वाणी, वचन, वाक्य। ४ ध्वनि, आवाज। ५ देखो 'बाकी'।

वाकई–क्रि० वि० [अ० वाकई] यथार्थ में, वास्तव में, वस्तुतः।

वाकचपळ–वि० [सं० वाक् चपल] बातूनी, बकवादी। लबार।

वाकप–देखो 'वाकिफ'।

वाकपटु–वि० [सं० वाक्पटु] बातों में या बोली में चतुर।

वाकपति–पु० [सं० वाक्पति] १ बृहस्पति। २ विष्णु। ३ सत्य देवों में से एक।

वाकपतिराज–पु० [सं० वाक्पतिराज] १ मालवा का एक परमार राजा। २ राजा यशोवर्मा का आश्रित एक राजा।

वाकफ–देखो 'वाकिफ'।

वाकफियत (बियत)–स्त्री० [अ० वाकफीयत] १ जानकारी, परिज्ञान। २ अनुभव।

वाकब, वाकबो–देखो 'वाकिफ'।

वाकयो–देखो 'वाकियो'।

वाकळ–पु० [सं० वाष्पकल] १ कूए का पानी। [सं० वल्कल] २ एक प्रकार का वस्त्र।

वाकळा–देखो 'बाकळा'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाकवांणी–स्त्री० [सं० वाकवाणी] १ सरस्वती, शारदा । २ वाणी ।

वाकस–देखो 'वाकस' ।

वाकसाळी–स्त्री० [सं० वाक शालिन्] एक देवी विशेष । –वि० बोलने में चतुर या दक्ष ।

वाकानवीस–वि० [अ० वाकिअ-नवीस] १ घटना का उल्लेख करने वाला, वृत्तान्त लिखने वाला । २ इतिहासकार । ३ संवाददाता ।

वाकार–स्त्री० १ ललकारने की क्रिया या भाव । २ ललकार, वीरहाक, । ३ संयोग की क्रिया या भाव । ४ बिखराने की क्रिया । ५ पुकार । ६ 'व' अक्षर या वर्ण ।

वाकारणो (वो)–क्रि० [सं० वक आकारण] १ युद्ध के लिये ललकारना । २ उत्तेजित करना, जोश दिलाना । ३ आह्वान करना, बुलाना । ४ पुकारना, । ५ संबोधित करना । ६ प्रशंसा करना ।

वाकिफ–वि० [अ०] १ जानकार । २ अनुभवी, ज्ञाता । –स्त्री० १ जानकारी, खबर, पता । २ ज्ञान, अनुभव ।

वाकिफकार–वि० [अ० वाकिफ़कार] जानकारी रखने वाला, अनुभवी, ज्ञाता ।

वाकिमी–देखो 'वांकम' ।

वाकियो–पु० [अ० वाकिअ] १ कोई दुर्घटना, कोई घटना । २ वृत्तान्त, हाल, चर्चा । ३ समाचार, खबर ।

वाकी–देखो 'बाकी' ।

वाकुलिप–स्त्री० सर्प की कुंडली ।

वाकुश–पु० एक वृक्ष विशेष ।

वाकुशीय–पु० एक कंद विशेष ।

वाकी–वि० [अ० बाकिअ] १ जो घटित हो चुका है । २ घटित होने वाला । ३ देखो 'बाकियो' । ४ देखो 'बाकी' ।

वाक्य–पु० [सं०] १ निश्चित विचार या कोई मंतव्य स्पष्ट करने वाला शब्द-समूह । २ कथन । ३ भाषण ।

वाक्यकर–पु० दूत, संदेश वाहक । –वि० बातें बनाने वाला ।

वाक्यानवीस–पु० मुगलकालीन एक शासकीय पद, ओहदा ।

वाखर–देखो 'बाखर' ।

वाखळ–देखो 'बाखळ' ।

वाखांण–देखो 'बखांण' ।

वाखांणणो (वो)–देखो 'बखांणणो' (वो) ।

वागबर–देखो 'बाघबर' ।

वाग–स्त्री० १ मोट की गुंज के नीचे का वह भाग जिसके रस्सी बांधी जाती है । २ देखो 'तरग' । ३ देखो 'बाज' । ४ देखो 'बाग' ।

वागड़–पु० १ डूंगरपुर-बांसवाड़ा प्रदेश का एक प्राचीन नाम । २ वर्तमान हिसार का पुराना नाम । ३ एक वैश्य जाति । ४ खादर का विपर्याय एक प्रकार का भू-भाग । ५ कच्छ राज के एक भू-भाग का नाम । ६ देखो 'बगड़' ।

वागड़णो (वो)–क्रि० चलना फिरना ।

वागड़ियो–वि० वागड़ का, वागड संबंधी । –पु० १ वागड़ प्रदेश का निवासी । २ वागड़ जाति का वैश्य । ३ रहट की माल में लगाने की कीली विशेष ।

वागड़ी–पु० १ खेतों की रखवाली करने वाली एक जंगली जाति । २ इस जाति का व्यक्ति ।

वागडोर–देखो 'बागडोर' ।

वागढाळ–पु० घोड़े की लगाम का ढीलापन, विश्राम ।

वागणो (वो)–१ देखो 'बाजणो' (वो) । २ देखो 'भागणो (वो) ।

वागमी–देखो 'वाग्मी' ।

वागर–पु० [सं०] १ विद्वान, पंडित गुणी । २ ऋषि, मुनि, महात्मा । ३ शूरवीर, योद्धा । ४ देखो 'वागड़' । ५ देखो 'वाग्गर' ।

वागरवाळ–वि० [सं० वाग्वर-पावक] कवि, विद्वान, पंडित ।

वागरी–देखो 'बागरी' ।

वागळ–देखो 'बागळ' ।

वागळी (ळी)–१ देखो 'बागळी' । २ देखो 'बागळ' ।

वागवांणी–स्त्री० [सं० वाग्वाणी] सरस्वती, शारदा ।

वागसणो (वो)–देखो 'बकसणो' (वो) ।

वागांसपुर–देखो 'बागांसपुर' ।

वागी–देखो 'बागी' ।

वागीचो–देखो 'बगीचो' ।

वागीस–पु० [सं० वागीश] १ ब्रह्मा । २ बृहस्पति । ३ कवि । ४ वक्ता ।

वागीसा–स्त्री० [सं० वागीशा] सरस्वती ।

वागीस्वर–पु० [सं० वागीश्वर] १ ब्रह्मा । २ बृहस्पति । ३ कवि ।

वागीस्वरी–स्त्री० [सं० वागीश्वरी] १ सरस्वती, शारदा । २ एक रागिनी विशेष । ३ एक महाविद्या ।

वागुर (रि, री) वागुरीय–स्त्री० [सं० वागुरा] फंदा, जाल । –पु० [सं० वागुरिक] बहेलिया, शिकारी ।

वागुळि–स्त्री० [सं० वल्गुलिका] १ मंजूषा, पेटी । २ पिटारी । ३ एक प्रकार का कीट ।

वागेलो–पु० गायों का समूह ।

वागेसरी, वागेस्वरी–देखो 'वागीस्वरी' ।

वागोलणो (वो), वागोसणो (वो)–देखो 'बागोलणो' (वो) ।

वागो, वागौ–देखो 'बागी' ।

वाग्गेयकार–पु० संगीत एवं पद रचयिता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाग्देवी–स्त्री० [सं० वाक्-देवी] १ सरस्वती, शारदा। २ वाणी।

वाग्दोष–पु० [सं० वाग्दोष] बोली में व्याकरण संबंधी त्रुटि।

वाग्मिता–स्त्री० वाक पटुता।

वाग्मी–पु० [सं० वाग्मिन] १ बृहस्पति। २ वाक्पटु व्यक्ति। –वि० १ अच्छा वक्ता, वाक्पटु। २ बातूनी, वाचाल। ३ बहुवादी, अधिक बोलने वाला। ४ पंडित, कोविद। ५ कवि।

वाग्युद्ध–पु० [सं०] १ जबानी झगड़ा, बोली की लड़ाई। २ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।

वाघंबर–देखो 'बाघंबर'।

वाघ–१ देखो 'बाघ'। २ देखो 'बाग'। (स्त्री० वाघणी, वाघिणि)

वाघचब, वाघचरम–देखो 'बाघचरम'।

वाघनख (खी, खो)–१ देखो 'बाघनख'। २ देखो 'बाघनखी'।

वाघमुख (खी)–देखो 'बाघमुखी'।

वाघलउ–देखो 'बाघ'।

वाघूळ–पु० [सं० वाह-घूल] १ बादल, वारिद, मेघ। २ वात-चक्र।

वाघेसुरी, वाघेस्वरी–देखो 'वागीस्वरी'।

वाड़, **वाड़**–स्त्री० १ आड़, ओट। २ देखो 'बाड़'।

वाड़मेय–देखो 'वाडवेय'।

वाड़लियो, वाड़लियो–देखो 'बाड़लो'।

वाड़ली, वाड़लो, वाड़ली, वाड़ली–देखो 'बाड़लो'।

वाड़व, वाड़वा–१ देखो 'बाड़व'। २ देखो 'बड़वा'।

वाड़वाग, वाड़वागि, वाड़वाग्नि–देखो 'बड़वाग्नि'।

वाड़वामुख–पु० पाताल।

वाड़वेय, वाड़िवेय, वाड़िवेय–पु० [सं० वाडवेय] १ बैल। २ सांड।

वाड़ि वाड़ी, वाड़ि, वाड़ी–देखो 'बाड़ी'।

वाड़ोटियो, वाड़ी, वाड़ोटियो वाड़ी–देखो 'बाड़ी'।

वाच–स्त्री० [सं० वाक्] १ सरस्वती का एक नाम। २ जिह्वा। ३ वाणी, शब्द, वचन। ४ ध्वनि। ५ वर्णन, उल्लेख, बयान। ६ वादा, कौल, वचन। ७ प्रतिज्ञा, प्रण। ८ यश, कीर्ति। ९ प्रशंसा, स्तुति। १० मछली। ११ मदन नामक पौधा। १२ देखो 'वत्स'।

वाचक, वाचक–वि० [सं०] १ कहने वाला, बोलने वाला। २ बताने वाला, बोध कराने वाला। ३ वाचन करने वाला, पढ़कर सुनाने वाला। ४ साधक। ५ द्योतक, सूचक, प्रतीक। ६ वक्ता, व्याख्याता। ७ वाणी संबंधी। ८ शाब्दिक। ९ मौखिक।–पु० १ व्यंजक शब्द। २ पाठक। ३ दूत, संदेशवाहक। ४ समाचार, संदेश, खबर ५ साक्षात् अर्थ बोधक शब्द, नाम, संज्ञा।

वाचकधरमलुप्ता, वाचकलुप्ता–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद।

वाचकवर–पु० उपाध्याय वर्य।

वाचणी (बी), वाचणी (बी)–देखो 'बांचणी' (बी)।

वाचन, वाचना–पु० [सं० वाचनं] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। २ पढ़ने का ढंग। ३ पठन, पाठ। ४ कथन। ५ घोषणा। ६ प्रतिपादन, व्याख्या। ७ बताना क्रिया। ८ वाक्य, शब्द।

वाचनालय–पु० [सं०] समाचार-पत्र, पत्रिकाएं आदि पढ़ने का सार्वजनिक कक्ष या स्थान।

वाचनिकळंक–पु० [सं० वाच-निष्कलंक] युधिष्ठिर का एक नामान्तर।

वाचबोह–देखो 'बांहबोल'।

वाचलो–वि० [सं० वात्सल्य] प्रेम करने वाला।

वाचस्पति, वाचस्पति–पु० [सं० वाचस्पति] १ बृहस्पति की उपाधि। २ प्रजापति ब्रह्मा। ३ सोम। ४ कोई बहुत बड़ा विद्वान।

वाचा–स्त्री० १ वाणी, बोली। २ जिह्वा, जीभ। ३ वाक्य, वचन, शब्द। ४ बोलने की शक्ति। ५ वादा, कौल, इकरार। ६ प्रतिज्ञा, प्रण। ७ उपदेश। ८ सिद्धान्त श्रुति वाक्य।

वाचाइ–स्त्री० चारण वंशोत्पन्न एक देवी।

वाचाछळ–वि० वचनबद्ध होकर धोखा देने वाला। –स्त्री० चौहानों की एक देवी।

वाचाबंध–वि० [सं० वाचा-बद्ध] वचनबद्ध, प्रतिज्ञाबद्ध।

वाचाबंधन–पु० [सं० वाचा-बंधन] १ प्रतिज्ञा या वचनबद्ध होने की स्थिति। २ वचनबद्धता।

वाचाळ, वाचाल–वि० [सं० वाचाल] १ जो बोलने में चतुर हो, वाक्पटु। २ बात पर कायम रहने वाला, दृढ़प्रतिज्ञ। ३ बहुत बोलने वाला। ४ उद्दण्डता पूर्ण बातें करने वाला। –पु० बहुत बोलने का रोग विशेष।

वाचाळता–स्त्री० १ वाचाल होने की अवस्था या भाव। २ बकवास। ३ वाक्पटुता।

वाचि, वाचिक, वाची–देखो 'वाचक'।

वाच्य–वि० [सं०] १ जो पढ़ने या बांचने योग्य हो। २ कहने योग्य, जो कहा जा सके। ३ जिसका शाब्दिक संकेत द्वारा बोध हो। ४ जो अभिधा में जाना जाय, अभिधेय। ५ निंदनीय, तिरस्करणीय। –पु० १ कठोर शब्द। २ कलंक, दोष। ३ भर्त्सना, निंदा। ४ क्रिया का वाचक।

वाच्छि–देखो 'वत्स'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाच्छिल, वाछित्य–देखो 'वात्सल्य'।
वाच्यन–देखो 'वाचन'।
वाछ–१ देखो 'वत्स'। २ देखो 'बछड़ो'।
वाछड़उ, वाछड़ो, वाछरु, वाछुरो–देखो 'वत्स'।
वाछल, वाछल्य–देखो 'वात्सल्य'।
वाछाट–स्त्री० वायु के साथ आने वाली वर्षा की छींटे, बौछार।
वाछिस–देखो 'वत्सल'।
वाछोड़–पु० [सं० वात्सकम्] गायों के बछड़ों का समूह।
वाछोड़ियो, वाछोलियो, वाछोलो–पु० [सं० वात्सकम्] १ गाय-भैंस के मरे बच्चे का, मसाला भर कर रक्खा, मरीर। २ गाय के बछड़े का चर्म। ३ देखो 'वत्स'। ४ देखो 'बछड़ो'।
वाछो–देखो 'वत्स'।
वाजंत, वाजंत्र–देखो 'वाद्ययंत्र'।
वाजद, वाजंद्र–देखो 'बाज'।
वाज–पु० [सं०, फा०] १ संग्राम, युद्ध। २ ध्वनि, नाद। ३ घृत, घी। ४ यज्ञ। ५ अन्न। ६ जल। ७ बल। ८ पलक। ९ मुनि। १० धार्मिक उपदेश। ११ सीख, नसीहत।–वि० १ स्पष्ट, खुला। २ व्यक्त, प्रकट। ३ देखो 'बाज'।
वाजण, वाजणी, वाजत, वाजणो–देखो 'बाजणी'।
वाजणु, वाजणो–देखो 'बाजणो'।
वाजणो (बो), वाजणो (बो)–देखो 'बाजणो' (बो)।
वाजत्र–देखो 'वाद्ययंत्र'।
वाजपत, वाजपति–पु० [सं० वाजपति] अग्नि, आग।
वाजपेई, वाजपेय, वाजपेयी–पु० [सं० वाजपेयी] १ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की उपाधि। २ कुलीन पुरुष। ३ एक यज्ञ विशेष।
वाजब, वाजब–देखो 'वाजिब'।
वाजबी–देखो 'वाजिबी'।
वाजाछ–१ देखो 'बाज'। २ देखो 'बाज'।
वाजित्र–देखो 'वाद्ययंत्र'।
वाजिब, वाजिद, वाजिद्दक–देखो 'बाज'।
वाजिबी, वाजिदी–देखो 'बाजिदी'।
वाजि–देखो 'बाज'।
वाजित्र–देखो 'वाद्ययंत्र'।
वाजिनी–स्त्री० [सं०] घोड़ी।
वाजिन्न–पु० [सं० वाजिन] १ घोड़ा, अश्व। [सं० वाद्य] २ बाजा, वाद्य। [सं० बाज-घन] ३ शक्ति। ४ होड़। ५ संघर्ष।
वाजिब, वाजिबी, वाजिब–वि० [अ०] १ ठीक, उचित, मुनासिब। २ आवश्यक, जरूरी। ३ योग्य, लायक।
वाजी–देखो 'बाजी'।
वाजीकरण–देखो 'बाजीकरण'।
वाजीगर–देखो 'बाजीगर'।
वाजूपुरी–देखो 'बाजूपुरी'।
वाजूबद (बंध)–देखो 'बाजूबंध'।
वाजेंद्र–देखो 'बाज'।
वाजोट–देखो 'बाजोट'।
वाजो–देखो 'बाजो'।
वाट, वाट–स्त्री० [सं० वाटः] १ मार्ग, रास्ता, राह। २ प्रतीक्षा-इंतिजार। ३ दीपक की लो। ४ दीपक की बत्ती। ५ दिशा, कोण। ६ चक्कर। ७ घेरा, आहता। ८ बाग, उद्यान। ९ लता मंडप। १० समय, वक्त। ११ कमर, कटि, कूल्हा। १२ पेट में होने वाला मरोड़ा, ऐंठन। १३ वस्तु। १४ अन्न विशेष। १५ इमारत। १६ घोड़े-घोड़ी का पेशाब। १७ घोड़ी की योनि। १८ तोलने का पाषान, तौल, बाट। १९ विवाह मंडप में अग्नि परिक्रमा के बाद कन्या को पहनाई जाने वाली पोशाक।
वाटकड़ो, वाटकड़ो–देखो 'बाटकी'।
वाटकियो, वाटकियो–देखो 'बाटकी'।
वाटकी, वाटको–देखो 'बाटकी'।
वाटकी, वाटको–देखो 'बाटकी'।
वाटड़, वाटड़ो–देखो 'वाट'।
वाटड़ो–देखो 'वाट'।
वाटपाड़उ, वाटपाड़ो–देखो 'बटपाड़ो'।
वाटभोजन–पु० [सं०] यात्रा में साथ लिया जाने वाला भोजन, खाद्य सामग्री।
वाटलउ–१ देखो 'वाट'। २ देखो 'वाटलो'।
वाटली–स्त्री० [सं० वर्तुलिका] १ अंगूठी, मुद्रिका। २ देखो 'वाट'। ३ देखो 'वाटी'। ४ देखो 'बाटली'।
वाटलीयो–पु० १ एक वस्त्र विशेष। २ देखो 'बाटलो'
वाटलु, वाटलो–पु० [प्रा० वट्ट] प्याला, पात्र।–वि० वृत्ताकार, गोल।
वाटवड़–देखो 'वाटवड़'।
वाटवागो–पु० विवाह मंडप में अग्नि परिक्रमा के पश्चात कन्या को पहनाई जाने वाला पोशाक।
वाटवासनु–पु० १ राह चलने की क्रिया, यात्रा। २ प्रतीक्षा।
वाटाउ (ऊ)–देखो 'बटाऊ'।
वाटि, वाटि–देखो 'वाट'।
वाटिका–स्त्री० १ छोटा बगीचा, फूल बगिया, उपवन। २ इमारत। ३ वह भू-खंड जिस पर कोई इमारत खड़ी हो।
वाटी–स्त्री० [सं०] १ अनाज पीसने की घरेलू चक्की के चारों तरफ लगा घेरा। २ घेरा, आहता। ३ कर, टैक्स। ४ कमर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कटि । ५ देखो 'बाटी' । ६ देखो 'वाट' । ७ देखो 'वाटिका' ।

वाटीह–देखो 'बाटी' ।

वाटीकोळो–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला कुष्मांडु ।

वाटीपच–देखो 'पंचवटी' ।

वाटुली–देखो 'बाटली' ।

वाटुलो–पु० पात्र विशेष, कटोरा ।

वाठो, वाटी–देखो 'बाटी' ।

वाड, वाड–१ देखो 'वाढ़' । २ देखो 'वाट' । ३ देखो 'बाढ' ।

वाडगिरी–पु० पर्वतों में श्रेष्ठ, हिमालय पर्वत ।

वाडचर–पु० सूअर, वराह ।

वाडणी, वाडणी–देखो 'बाढणी' ।

वाडणी (बी)–देखो 'बाढणी' (बी) ।

वाडभेव–देखो 'वाडवेय' ।

वाडम–देखो 'वडम' ।

वाडली–पु० १ ऊंट आदि पशु को खुला छोड़ते समय पांवों में लगाया जाने वाला बंधन । २ देखो 'बाढली' ।

वाडव–पु० [सं० वाडव्य] ब्राह्मण ।

वाडवक–पु० शृंगार में एक आसन विशेष ।

वाडवेय–पु० १ सांड । २ बैल ।

वाडहोळो–पु० भय, आतंक ।

वाडि–१ देखो 'वाटिका' । २ देखो 'वाटो' ।

वाडिभेव–देखो 'वाडवेय' ।

वाडिम–१ देखो 'वडम' । २ देखो 'वडो' ।

वाडी–स्त्री० १ रथ । २ हाथी का हौदा, अंबाड़ी । ३ देखो 'बाटी' । ४ देखो 'वाटिका' ।

वाढ, वाढ–देखो 'बाढ' ।

वाढण–देखो 'बाढ़ण' ।

वाढणी (बी), वाढणी (बी)–देखो 'बाढणी' (बी) ।

वाढाळ–देखो 'बाढाळी' ।

वाढाळो–देखो 'बाढाळी' ।

वाढेस, वाढेसो–वि० वीर, योद्धा, बहादुर ।

वाढोवाढ–पु० १ प्रहार पर प्रहार । २ घाव पर घाव ।

वा'णो (बो), वा'णो (बो)–देखो 'बावणो' (बो) ।

वात, वात–पु० [सं० वात] १ वायु का अधिष्ठाता पवनदेव २ आठ दिग्पालों में से एक । –स्त्री० ३ वायु, हवा । ४ शरीरस्थ एक तत्त्व । ५ अपानवायु, अधोवायु । ६ देखो 'बात' ।

वातकंटक–पु० [सं०] ग्रंथि-वायु रोग ।

वातकार–वि० [सं०] वायुकारक, वायु उत्पन्न करने वाला । –पु० १ वायुकारक खाद्य पदार्थ । २ देखो 'बातकार' ।

वातकुंभ–पु० हाथी के मस्तक का भाग विशेष । हाथी की ललाट के नीचे वाला का भाग ।

वातकोप–पु० [सं०] शरीरस्थ वात-तत्त्व का प्रकोप ।

वातगर–देखो 'बातकर' ।

वातगुल्म–पु० [सं०] १ वात विकार से होने वाला गुल्म रोग । २ वातचक्र अंधड़ ।

वातड़ली, वातड़ी, वातड़ली, वातड़ी–देखो 'बात' ।

वातचक्र–पु० [सं०] १ आषाढ़ की पूर्णिमा को होने वाला एक ज्योतिष का योग । २ देखो 'बघूळो' ।

वातचीत, वातचीत–देखो 'बातचीत' ।

वातज–वि० [स० वात-जायते] १ हनुमान । २ भीम ।

वातज्वर–पु० [सं०] वायु विकार से होने वाला ज्वर ।

वातप–पु० हरिण, मृग ।

वातपुत्र–पु० [सं०] १ हनुमान । २ भीम ।

वातपोत, वातपोथ–पु० [सं० दाक्षपोमः] पलास का वृक्ष ।

वातपोस–देखो 'बातपोस' ।

वातप्रकृति (प्रगति)–स्त्री० [सं० वातप्रकृति] १ शरीर की वायु प्रधान प्रकृति । २ वायुकारक पदार्थ । –वि० ऐसी प्रकृति वाला, ऐसे गुण वाला ।

वातरक्त, वातरगत–पु० [सं० वात-रक्त] वात विकार से होने वाला रक्त दोष ।

वातरोहिणी–स्त्री० एक रोग विशेष ।

वातळ (ळो)–पु० [सं० वाताल:] चना । –वि० १ वायु वर्द्धक । २ वातयुक्त, वायु प्रधान । ३ देखो 'वातोल' ।

वातसड़ो–देखो 'बात' ।

वातबेरी–पु० बादाम ।

वातव्याधि–स्त्री० गठिया रोग ।

वाताट–पु० १ सूर्य का घोड़ा । २ मृग या हरिण ।

वातात्मज–पु० [सं०] १ हनुमान । २ भीम ।

वातापि, वातापी–पु० [सं० वातापि] १ एक पौराणिक राक्षस विशेष । २ हरिण, मृग ।

वातायण (न)–पु० [सं० वात-अयन] १ खिड़की । २ झरोखा । ३ रोशनदान । ४ गृहद्वार के आगे पटी हुई भूमि । ५ फर्श गच । ६ जाली । ७ घोड़ा, अश्व ।

वातायनासन पु० योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वातायु (यू)–पु० [सं० वातायु:] १ हरिण । २ बारहसिंगा ।

वातारि–पु० [सं] १ एरंड । २ अजवायण । ३ बायबडिंग । ४ सतावर । ५ बेल का पौधा ।

वाताळ, वाताळ–वि० बातें करने वाला, बातूनी ।

वातालणो–पु० वार्तालाप, बात-चीत

वाति–स्त्री० १ घोड़े का मूत्र । २ देखो 'वात' । ३ देखो 'बात' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाती–स्त्री० १ कच्चे मकानों की छाजन में लगाया जाने वाला पतली लकड़ियों का बंधन। २ देखो 'बात'। ३ देखो 'बात'।

बातुनी, बातूनी–देखो 'बातूनी'।

बातुल, बातूल–वि० [सं० बातुल] १ उन्मत्त, मस्त। २ पागल। ३ सनकी। ४ बात रोग से पीड़ित, गठिया का रोगी।

बातोदर–पु० एक प्रकार का वात रोग।

बातोरमी–स्त्री० [स० बातोर्मी] एक वर्ण वृत्त विशेष।

बातोळ, बातोस–स्त्री० रबी की फसल से पूर्व खेत की जुताई।

बातौण–पु० बात-चीत।

बात्रक–स्त्री० ईडर राज्य की एक नदी।

बात्सल्य–पु० [सं० बात्सल्यं] १ माता का संतान के प्रति स्नेह, प्रेम। २ ममत्व, प्रेम।

बात्स्यायन–पु० [सं०] १ काम-शास्त्र के रचयिता एक ऋषि। २ न्याय सूत्रों के भाष्यकार। —शास्त्र–पु० कामशास्त्र।

बाद, बाद–पु० [सं० वाद] १ हठ, जिद्द। २ वादा, कौल, वचन। ३ प्रतिवाद, विवाद। ४ तर्क, दलील, बहस। ५ प्रण, प्रतिज्ञा। ६ बात-चीत, कथन। ७ वाणी। ८ शब्द, वचन, वाक्य। ९ बयान, वर्णन, निरूपण। १० टीका, व्याख्या, भाष्य। ११ उत्तर। १२ अफवाह, किंवदंती। १३ तर्क शास्त्र। १४ शास्त्रार्थ। १५ तत्त्वज्ञों द्वारा निर्धारित कोई सिद्धान्त। १६ अभियोग, मुकद्दमा। १७ दुराग्रह। १८ संज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय। १९ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक। २० भैंस के चर्म की पतली रस्सी। २१ भैंस का चमड़ा। २२ राजनीतिक मत। २३ एक प्रकार का फूंक वाद्य।

बादक–पु० [सं०] १ गवैया, गायक। २ संगीतज्ञ। ३ बाजा बजाने वाला। ४ वक्ता। ५ तर्क या बहस करने वाला।

बादण–पु० [सं० वादनं] १ वाद्य बजाने की क्रिया। २ बोलना क्रिया। ३ वाद्य, बाजा। ४ भैंस के चर्म की रस्सी। ५ वादी जाति की स्त्री।

बादणो(बो), बादणौ (बौ)–क्रि० [सं०वादनं] १ वाद-विवाद या बहस करना। २ वादन करना, बजाना। ३ युद्ध करना। ४ देखो 'बाजणो' (बो)।

बाद-प्रतिबाद–पु० १ तर्क-वितर्क, बहस। २ वाद-विवाद।

बादरंग–पु० [सं०] १ वट वृक्ष। २ अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।

बादरायण–पु० वेदव्यास का एक नाम।

बादरायणि–पु० व्यास पुत्र शुकदेव मुनि।

बादरी–स्त्री० घोड़े के चारजामे के साथ रकाब में कसा जाने वाला तस्मा।

बादल, बादलउ, बादलियो, बादळो, बादळी, बादळ, बादलियो, बादळी, बादळी–१ देखो 'बादळ'। २ देखो 'बादळी'।

बादविवाद–पु० १ तर्क-वितर्क, बहस। २ शास्त्रार्थ।

बादवी–स्त्री० [सं०] सेना, फौज।

बादसाह–देखो 'बादसाह'।

बादसाही–देखो 'बादसाही'।

बादानुबाद–देखो 'वादविवाद'।

बादाळ, बादाळक–पु० [सं० बादालः] सहस्र दंष्ट्र नामक मछली।

बादासिर–क्रि० वि० वादानुसार, प्रतिज्ञानुसार।

बादि–वि० [सं०] १ विद्वान। २ निपुण, दक्ष। ३ देखो 'बादी'। ४ देखो 'बाद'।

बादित्र–स्त्री० १ चौसठ कलाओं में से एक। २ देखो 'वाद्ययंत्र'।

बादियो–पु० सोने-चांदी के आभूषणों पर चमक करने का एक औजार।

बादी–पु० १ पक्षकार, वाद प्रस्तुत करने वाला। २ बात विकार। ३ देखो 'बादी'।

बादीकर–देखो 'बादीकर'।

बादीगर–देखो 'बाजीगर'।

बादीली, बादीलौ–देखो 'बादीलौ'। (स्त्री० बादीली)

बादीवाय–पु० ऊंटों का एक रोग।

बादीसर–वि० वाद या बहस करने में मुख्य।

बादे, बादें–क्रि० वि– [सं० वाद] शास्त्रार्थ में, वाद में।

बादोधुनि–देखो 'वेदध्वनि'।

बादोबदि–देखो 'बदोबदि'।

बादोबाद, बादोवाद–देखो 'बादोबाद'।

बाधो, बाधौ–पु० [फा० बादः] १ कौल, वचन, वादा। २ प्रण, प्रतिज्ञा। ३ दृढ़ निश्चय, संकल्प। ४ कार्य के लिये निश्चित किया गया समय।

बाद्य–पु० [सं०] १ वाद्य यंत्र, बाजा। २ उक्त यंत्र की ध्वनि। ३ बहत्तर कलाओं में से एक। ४ चौसठ कलाओं में से एक।

बाद्यक–देखो 'वादक'।

बाद्यकला–स्त्री० [सं०] वाद्य बजाने की कला।

बाद्ययंत्र–पु० [सं०] बाजा, वाद्य।

बाध–वि० १ अधिक, विशेष। २ बढ़कर, बढ़ती हुई। ३ देखो 'बाद'।

बाधक–वि० १ वृद्धि कर्त्ता। २ बढ़िया। ३ देखो 'बाधक'।

बाधण–स्त्री० १ वृद्धि, बढ़ोतरी। २ बढ़ने की स्थिति या दशा। ३ बढ़ने की क्रिया।

बाधणो(बो)–१ देखो 'बधणो'(बो)। २ देखो 'बांधणी'(बो)।

बाधरी–स्त्री० भैंस के चमड़े की डोरी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाघांमणी (बी)–देखो 'बघाणी' (बी)।
वाघाऊ–देखो 'बघाऊ'।
वाघारणी (बी)–देखो 'बघारणी' (बी)।
वाघारी–देखो 'बघारी'।
वाघावणी (बी)–देखो 'बघाणी' (बी)।
वाधि, वाधी–१ देखो 'बढी'। २ देखो 'व्याधि'। ३ देखो 'बाधा'।
वाधी–देखो 'बाधा'।
वापक–देखो 'व्यापक'।
वापणी–वि० [सं० व्यापनं] १ भीतर–बाहर सर्वत्र व्याप्त होने वाली शक्ति। २ व्यापने वाली।
वापणी (बी)–देखो 'व्यापणी' (बी)।
वापरणी (बी), वापरणी (बी)–क्रि० [सं० व्याप्तरणम्] १ उपयोग में लाना, काम में लेना। २ खाना। ३ लेकर आना, लाना। ४ व्याप्त होना, फैलना। ५ आना। ६ उदय होना, पैदा होना। ७ सुख–दुःख का संचार होना। ८ शुरू होना, प्रारंभ होना।
वापस–वि० [फा०] १ लौटा हुआ, प्रत्यागत। २ लौटाया हुआ, फेरा हुआ, प्रतिदत्त। ३ छिपा हुआ। –क्रि०वि० ४ पुनः, दुबारा।
वापसी–स्त्री० [फा०] १ लौटने या वापस आने की क्रिया या भाव। २ लौटाने या फेरने की क्रिया या भाव।
वापार–देखो 'व्यापार'।
वापारी–देखो 'व्यापारी'।
वापि, वापिका, वापी–स्त्री० [सं० वापी] कूए या कुण्डनुमा जलाशय जिसमें सीढ़ियां बनी होती हैं।
वाफणी (बी)–देखो 'बाफणी' (बी)।
वाफती–देखो 'बाफती'।
वाभराभूत–देखो 'भाभराभूत'।
वाभी, वामी–देखो 'भाभी'।
वामीजी, वामीसा, वामीजो, वामीसा–देखो 'भाभीजी'।
वामो, वामोजी, वामो, वामोजो–देखो 'भामीसा'।
वायंगणनेत्र–पु० एक वस्त्र विशेष।
वाय–स्त्री० [फा० वायः] १ मनोकामना, मुराद, इच्छा। २ अफीम की खुराक, मात्रा। [सं० वायः] ३ बुनावट, बुनाई। ४ सिलाई। [सं० वायुः] ५ पश्चिमोत्तर कोण, वायव्य कोण, [सं० वचन] ६ वाणी, वचन। ७ देखो 'बापो'। ८ देखो 'वायु'।
वायइ–पु० [सं० वातिः] १ सूर्य, चन्द्रमा। ३ देखो 'वात'।
वायक–पु० [सं० वायकः] १ जुलाहा। २ ढेर, संग्रह। ३ समुदाय। ४ संदेश, खबर, समाचार। –वि० [सं० वाचक] १ संदेशा लाने वाला, सूचना देने वाला, दूत। २ कहने वाला, वक्ता, व्याख्याता। ३ पढ़ने वाला, पाठक। ४ देखो 'वाक्य'।
वायकचर–देखो 'वाइकचर'।
वायकुंडो, वायकूंडो–पु० [सं० वात-कुण्ड] १ चन्द्रमा के चारों ओर दिखने वाला एक वृत्त विशेष। २ इसी प्रकार सूर्य के चारों ओर दिखने वाला घेरा।
वायड़, वायड़ियो, वायड़ो, वायड़, वायड़ियो, वायड़ो–पु० [सं० वातकारक] १ पागल कुत्ता। २ उक्त कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग। ३ पागल, दिवाना। ४ वात-विकार से पीड़ित। ५ ज्वर प्रलाप। ६ वात कारक।
वायण (णि, णी)–स्त्री० १ दुर्गा का एक नामांतर, देवी २ गहलोतों की कुल देवी। ३ वाद्य बजाने वाली।
वायणी–देखो 'बाजणी'।
वायणी (बी)–१ देखो 'बाजणी' (बी)। २ देखो 'बावणी' (बी)।
वायदो–देखो 'वादो'।
वायनद–पु० [सं० वायु-नंदन] १ हनुमान। २ भीम।
वायपुरी–स्त्री० [सं० वायु-पुरी] पवनदेव की पुरी।
वायब–देखो 'वायव्य'।
वायविडंग, वायविड़ंग–स्त्री० [सं०] औषधि में काम आने वाली एक प्रकार की झाड़ी जो बहुत तेजी से फैलती है। यह हिमालय व भारत के पहाड़ी भागों में सर्वत्र पाई जाती है।
वायर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'वायु'।
वा'यर–देखो 'बाहर'।
वायरियो, वायरो, वायरियो, वायरो–पु० १ एक लोक गीत विशेष। २ देखो 'बा'यरो'।
वा'यरो–देखो 'बा'यरो'।
वायल–स्त्री० १ स्त्रियों के पावों की पायल। २ बारीक सूती वस्त्र। ३ वह खेत जिसमें खेती की जाती है।
वायव–देखो 'वायव्य'।
वायवी–स्त्री० १ एक महाविद्या। २ वायव्य कोण की। ३ देखो 'वायव्य'।
वायव्य–पु० उत्तर–पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण। –वि० वायु संबंधी।
वायस, वायसड़ो–पु० [सं० वायसः] १ कौवा, काक। २ अगरू का वृक्ष। ३ तारपीन। ४ कौर, निवाला। ५ सूर्य या चंद्र ग्रहण। ६ पकड़, गिरफ्त।
वायससात्रव–पु० [सं० वायसःशात्रव] जल कौआ, जलकाक।
वायसूळ–पु० [सं० वायु-शूल] १ घोड़ों का रोग विशेष। २ वात विकार से उत्पन्न फोड़ा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वायां–१ देखो 'बाचा'। २ देखो 'वायु'।

वायार–पु० [सं० वातार] वरुण।

वायु–पु० [सं०] १ वायु का अधिष्ठाता एक देव। २ पवन, हवा, वात। ३ त्रिदोषों में से एक। ४ अपान वायु।

वायुकाय–देखो 'वाउकाय'।

वायुकुमार–पु० [सं०] १ भुवन पति जाति के देव (जैन)। २ हनुमान। ३ भीम।

वायुघ्न–पु० [सं०] १ गुग्गल, गूगल। २ देखो 'वायुहन'।

वायुदेवता–पु० पवन देव।

वायुमंडल (ल)–पु० [सं०] १ पृथ्वी के चारों ओर का वाष्पीय आवरण या घेरा। २ किसी क्षेत्र विशेष की जलवायु, आबोहवा, वातावरण।

वायुविरोधी–पु० गरुड़।

वायुसखा–पु० [सं० वायुसखः] अग्नि, आग।

वायुसुत–पु० [सं०] हनुमान, भीम।

वायुहन–पु० [सं० वायुघ्न] १ मंकण ऋषि के पुत्र एक ऋषि। २ देखो 'वायुघ्न'।

वायू–देखो 'वायु'।

वायेरी, वायेरो–देखो 'बा'येरी'।

वायेली, वायेलो–देखो 'भायेली'। (स्त्री० वायेली)

वायो–वि० [सं० वातल] १ उन्मत्त, मस्त। २ बावरा, पागल।

वारग–स्त्री० [सं० वारंग] १ तलवार की मूठ। २ छुरी का दस्ता. ३ वारांगना। ४ एक वृक्ष विशेष।

वारंगना, वारंगा–स्त्री० [सं० वारंगना] १ अप्सरा, परी। २ देव कन्या। ३ गणिका, नर्तकी। ४ नारी, स्त्री, औरत। ५ वेश्या, रण्डी।

वारंबार–देखो 'बारंबार'।

वार–पु० [सं०] १ दिन, दिवस। २ सप्ताह के दिनों के अंत में लगने वाला समयावधि सूचक शब्द-ज्यों सोमवार, मंगलवार। ३ समय, वक्त। ४ देर, विलंब। ५ काल, युग। ६ समय, अवसर, कार्यकाल। ७ ऋतु, मौसम। ८ आघात, प्रहार, चोट। ९ युद्ध। १० तीर, बाण। ११ समुद्र, सागर। १२ नदी। १३ दशा, हालत, परिस्थिति। १४ किनारा; तट। १५ ओट, आड़। १६ अवरोध, रुकावट। १७ शिव, महादेव। १८ क्षण, पल। १९ कुज नामक वृक्ष। २० एक गज की लंबाई का नाप। २१ जल, पानी। २२ सात की संख्या। २३ एक मात्रिक छन्द विशेष। २४ काम, काज। २५ दफा, मरतबा। –क्रि० वि० १ ओर, तरफ। २ किनारे। ३ क्रमशः ४ देखो 'बा'र'। ५ देखो 'बारी'।

बा'र–देखो 'बाहर'। (१) से (६)

वारक–पु० [सं०] १ निषेध करने वाला घोड़ा। २ घोड़े की एक चाल। ३ वह स्थान जहां पीड़ा होती है। ४ बालछड़, हौबेर। [सं० वारकिन्] ५ विरोधी, शत्रु। ६ समुद्र। ७ शुभ लक्षणों वाला घोड़ा। ८ पत्ते खाकर रहने वाला तपस्वी। –वि० अड़चन डालने वाला, अवरोध करने वाला।

वारकन्या–स्त्री० [सं०] वेश्या, रण्डी।

वारख–देखो 'बारिख'।

वारगह, वारगाह–देखो 'बारिगह'।

वारगिरी, वारगीर–पु० १ किराये का सामान्य सिपाही। २ देखो 'बारगीर'।

वारड़–देखो 'वारड'।

वारड़ी–१ देखो 'वार'। २ देखो 'बारी'।

वारचर–पु० [सं० वारिचर] १ जल में रहने वाला जंतु, जल जंतु। २ मत्स्य, मछली।

वारज–देखो 'वारिज'।

वारड–पु० १ रक्षा, हिफाजत। २ विभाग। ३ क्षेत्र।

वारण–स्त्री० [सं०] १ निषेध, मनाही। २ रोक, रुकावट, अवरोध। ३ बाधा। ४ सुरक्षा, सहायता। ५ न्यौछावर होने या बलैयां लेने की क्रिया या भाव। ६ हरताल। ७ सफेद, गोरैया।–पु० ८ हाथी, गज। ९ हाथी का अंकुश। १० संयम। ११ कवच, बख्तर। १२ आर्या गीति या स्कंधाणा का एक भेद। १३ एक मात्रिक छंद। १४ छप्पय का एक भेद। -वि० १ मिटाने वाला, निवारण करने वाला। २ सामना या मुकाबला करने वाला। ३ मना करने वाला, रोकने वाला। ४ जबरदस्त। –क्रि० वि० ५ रोकने हेतु। ६ रक्षा करने हेतु। –पति–पु० महावत, हाथी।

वारणा, वारणा–पु० [ब.व.] १ न्यौछावर, बलिहारी। २ बलैया लेने की क्रिया या भाव।

वारणावत–पु० [सं०] गंगा किनारे का एक प्राचीन नगर।

वारणी, वारणी–पु० [सं० वारण] १ नाचने वाली स्त्री पर से पैसे वारने की क्रिया या भाव। २ देखो 'वारुणी'।

वारणीय–वि० १ न्यौछावर योग्य, उत्सर्ग योग्य। २ निषेध योग्य।

वारणू वारणो, वारणू, वारणो–पु० १ वारी जाना क्रिया। २ न्यौछावर किया जाने वाला पदार्थ। ३ देखो 'बारणो'। ४ देखो 'वारण'।

वारणी (बो), वारणी (बो)–क्रि०[सं० वारण] १ बलिहारी जाना, बलैया लेना, वारी जाना। २ न्यौछावर करना, उत्सर्ग करना। ३ दूल्हे-दुल्हिन के सामने नाचने वाली स्त्री पर पैसे वारना। ४ सामना करना, रोकना। ५ रक्षा करना, सहायता करना। उबारना। ६ इन्कार करना,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मना करना। ७ निवारण करना, छोड़ना। ८ दूर करना, हटाना, मिटाना।

वारता–स्त्री० [सं० वार्ता] १ जनश्रुति, अफवाह, किंवदंति। २ वार्तालाप, कथोपकथन। ३ संवाद, संदेश। ४ सूचना, समाचार। ५ हाल-चाल, कुशल समाचार। ६ बात। ७ चर्चा, विचार-विमर्श। ८ मामला, विषय। ९ घटना, वृत्तान्त। १० कहानी, आख्यान। ११ क्रिया-कलाप। १२ राजस्थानी गद्य। १३ ऐतिहासिक आख्यान।

वारतालाप–पु० [सं० वार्तालाप] परस्पर की जाने वाली बातचीत, चर्चा, संवाद।

वारतिक (क)–पु० [सं० वारतिकम्, वार्तिक:] १ किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करने वाला वाक्य, शब्द या व्याख्या। २ एक प्रकार का तुकांत गद्य। ३ कात्यायन का एक प्रसिद्ध ग्रंथ। ४ वृत्तान्त, हाल। ५ जासूस। ६ दूत, चर। ७ किसान। –वि० १ वार्ता या संवाद संबंधी। २ व्याख्याकारी। ३ खबर लाने वाला।

वारतिय–स्त्री० [सं० वारस्त्री] वेश्या, रण्डी।

वारथा–देखो 'वारता'।

वारद–देखो 'वारिद'।

वारबधू–पु० [सं० वारिद-द्रु] इन्द्र।

वारदात–स्त्री० [फा० वारिदात] १ कोई सोचनीय काण्ड, दुर्घटना। २ दंगा-फसाद, मारकाट। ३ चोरी, डकैती। ४ वृत्तांत, हाल, हकीकत।

वारद्ध–१ देखो 'वारिद'। २ देखो 'वारिधि'।

वारद्धक–पु० [सं० वार्द्धक्य] १ वृद्धावस्था, बुढ़ापा। २ वृद्धि, बढ़ोतरी। ३ बुढ़ापे की शिथिलता।

वारध, वारधी, वारधीस, वारधेस–देखो 'वारिधि'।

वारनारी–स्त्री० [सं०] वेश्या, रंडी।

वारनिध, वारनिधि–देखो 'वारिनिधि'।

वारनिसांनी–स्त्री० एक छन्द विशेष।

वारपार–पु० [सं० अवर-पार] १ एक पार्श्व से दूसरे तक की चौड़ाई, मोटाई। २ विस्तार। ३ सीमा, मर्यादा। –वि० १ पारंगत दक्ष। २ इस छोर से उस छोर तक।

वारबधू–देखो 'वारवधू'।

वारबुंद–वि० [सं० वारिबुंद] तुच्छ, सूक्ष्म।

वारमुखी–स्त्री० [सं०] रण्डी, वेश्या।

वारमी–देखो 'बारमी'।

वारली, वारली–देखो 'बाड़ली, बाड़ली'।

वारवधु, वारवधू–स्त्री० [सं० वारवधू] १ वेश्या, रण्डी। २ नर्तकी, गणिका।

वारबार–देखो 'बारंबार'।

वारवाह–देखो 'वारिवाह'।

वारविलासणी, वारविलासनी वारविलासिनी–स्त्री० [सं० वार विलासिनी] १ वेश्या, रण्डी। २ नर्तकी, गणिका,।

वारविलोयण–वि० [सं० वारि-विलोचन] समुद्र मंथन करने वाला। –पु० विष्णु, हरि।

वारस–१ देखो 'बारस'। २ देखो 'वारिस'।

वारसार–देखो 'वारिसार'।

वारसिक–वि० [सं० वार्षिक] १ एक वर्ष भर या एक वर्ष तक रहने वाला। २ सालाना। ३ वर्षा ऋतु या वर्षा संबंधी। ४ वर्ष में एक बार मिलने वाला। ५ वर्ष में एक बार दिया जाने वाला। ६ प्रति वर्ष का। –पु० वार्षिक कर, वार्षिक लाभ।

वारसी–स्त्री० १ बाला, युवती। २ रक्षा, सहायता, मदद। ३ पक्षपात। ४ देखो 'वारस्त्री'। –वि० वर्ष की, वर्ष संबंधी।

वारसुंदरी–स्त्री० [सं०] १ वेश्या, रंडी। २ नर्तकी, गणिका।

वारसूळ–पु० [सं० वारशूल] ज्योतिष में 'शूल' की विशेष स्थिति।

वारस्त्री–स्त्री० [सं०] १ वेश्या, रंडी। २ नर्तकी, गणिका।

वारही–पु० यवन, मुसलमान।

वारांगना–देखो 'वारंगना'।

वाराणसी–स्त्री० [सं० वाराणसी] बनारस नगर का एक नामान्तर।

वाराह–देखो 'वराह'।

वारा–स्त्री० [सं० वार] १ मदिरा, शराब। २ देखो 'वराह'। ३ देखो 'बार'।

वाराधिप–पु० [सं० वारि-अधिप] समुद्र।

वारापार–देखो 'वारपार'।

वाराह, वाराहउ, वाराहर–देखो 'वराह'।

वाराहिकंद–देखो 'वाराहीकंद'।

वाराही–स्त्री० [सं०] १ ज्योतिष में एक देवी। २ पृथ्वी। ३ सूअर के रूप में विष्णु की एक शक्ति। ४ सूअरी। ५ सप्त मातृकाओं में से एक। ६ एक माप विशेष।

वाराहीकंद–पु० [सं०] औषधियों में काम आने वाला महाकंद।

वारि–पु० [सं०] १ पानी, जल। २ कोई तरल पदार्थ। ३ सरस्वती वाणी। ४ निसानी छंद का एक भेद। ५ देखो 'बारी'। ६ देखो 'बार'।

वारिईस–देखो 'वारीस'।

वारिख–पु० [सं० वार्क्षम्] वन, जंगल।

वारिगह (ग्रह)–देखो 'वारिगृह'।

वारिचर–पु० [सं०] १ जल के प्राणी, जीव। २ मछली, मत्स्य ३ शंख।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वारिज–पु० [सं०] १ कमल । २ शंख । ३ घोंघा । ४ मत्स्य, मछली ।

वारिजपुंड्र–पु० [सं०] श्वेत-कमल ।

वारिजलोचण (न)–पु० [सं० वारिजलोचन] विष्णु, परमेश्वर ।

वारिद, वारिद्द–पु० [सं० वारिद] बादल, मेघ ।

वारित्र–पु० [सं०] चातक पक्षी ।

वारिध–देखो 'वारिधि' ।

वारिधर–पु० [सं०] १ बादल मेघ । २ समुद्र । ३ नागर मोथा । ४ वर्णिक छन्द विशेष ।

वारिधि–पु० [सं०] समुद्र, सागर ।

वारिनाथ–पु० [सं०] १ समुद्र । २ वरुणदेव । ३ बादल ।

वारिनिधि–पु० [सं०] समुद्र ।

वारियां, वारिया–देखो 'वेळां' ।

वारियो, वारियौ–देखो 'बारियो' ।

वारिरुह–पु० [सं०] कमल ।

वारियारि, वारियारि–१ देखो 'बारंबार' । २ देखो 'बारी-बारी' ।

वारिविरोळण–देखो 'वारधिलोवण' ।

वारिस–वि० [फा०] १ सम्पत्ति या जायदाद का हकदार, अधिकारी २ उत्तराधिकारी ।

वारिसार–पु० 'बिदुसार' का एक नामांतर ।

वारिसास्त्र–पु० [सं० वारिशास्त्र] गर्ग मुनि द्वारा रचित फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ ।

वारी, वारी–स्त्री० [सं० वारी] १ अवसर, मौका, पारी । २ न्यौछावर, उत्सर्ग । ३ निवारण, निवृत्ति । ४ धन्यवाद या साधुवाद देने क्रिया या भाव । [सं० वारि:] ५ हाथी बांधने की रस्सी या डोरी, जंजीर आदि । ६ हाथी पकड़ने के लिए बनाया हुआ गड्ढा । [सं० वारी] ७ हाथी बांधने का स्थान । ८ कैदी, बंदी । ९ जल-पात्र । १० तरल पदार्थ रखने का टोंटीदार पात्र । ११ सरस्वती का एक नाम । १२ देखो 'बारी' ।

वारीवारी, वारोवारी–देखो 'बारीबारी' ।

वारीस–पु० [सं० वारि-ईश] १ समुद्र । २ जल के अधिष्ठाता वरुण देव ।

वारुंवार, वारुंवार–देखो 'बारंबार' ।

वारु, वारु–पु० [सं० वारु:] १ वह हाथी जिस पर विजय का झंडा रहता है, विजय कुंजर । २ देखो 'वारू' ।

वारुण–वि० [सं०] १ वरुण का, वरुण संबंधी । २ वरुण को समर्पित किया हुआ । –पु० १ भारत के नौ खण्डों में से एक २ शतभिषा नक्षत्र । ३ देखो 'वरुण' ।

वारुणास्त्र–पु० एक प्राचीन अस्त्र ।

वारुणी–पु० [सं० वारुणी] १ पक्षिराज गरुड़ । –स्त्री० २ एक विद्या । ३ उपनिषद विद्या । ४ पश्चिमी दिशा । ५ स्वायंभुव मनवन्तर के वरुण की पत्नी । ६ अरण्य प्रजापति की कन्या । ७ मदिरा, शराब । ८ चैत्रकृष्ण त्रयोदशी को पड़ने वाला शतभिषा नक्षत्र । ९ इस दिन का पर्व । १० दूर्वा, दूब । ११ घोड़े की एक चाल । १२ हस्तिनी, हथनी ।

वारुध–देखो 'वारिधि' ।

वारुंवार, वारुंवार–देखो 'बारंबार' ।

वारू, वारू–वि० [सं० वर:] १ वर, श्रेष्ठ, उत्तम । २ सुन्दर, मनोहर । ३ स्वादिष्ट । –पु० हाथी जिस पर विजय पताका रहती है ।

वा'रू–देखो 'बाहरू' ।

वारूप, वारूपी–पु० एक कारीगर, विशेष ।

वारूबार–देखो 'बारंबार' ।

वारूवारू–क्रि० वि० ठीक, उपयुक्त ।

वारेवौ–पु० त्यागने, निवारण करने की क्रिया या भाव ।

वारोवार, वारोवारी, वारोवारू–१ देखो 'बारंबार' । २ देखो 'बारीबारी' ।

वारी, वारो–पु० १ कूए से पानी निकालने की चरस, मोट । २ एक लोक गीत । ३ (मारा) ऊंटों के झुण्ड का रात्रि में बैठने का स्थान । ४ उजाड़, जंगल । ५ लघु शंका करने की क्रिया । ६ समय, काल । ७ क्रम, पारी । ८ चेचक । ९ नवजात बच्चे के शिर से वारा जाने वाला जल । १० तीज के पर्व पर लड़की के पिता द्वारा उसके ससुराल भेजी जाने वाली मिठाई । (ऐसी मिठाई शादी से पहले पुत्र वधू के लिये भी भेजी जाती है) । ११ देखो 'वार' ।

वालंध–पु० एक जाति या वर्ग ।

वालभ–देखो 'वल्लभ' ।

वाळ, वाल–पु० [सं० वल्ल] १ चादर, गिलाफ । २ पर्वत की तलहटी । ३ पर्वत की तलहटी स्थित क्षेत्र । ४ घुड़साल, अस्तबल । ५ घोड़ों का समूह । ६ तीन घुंघची के बराबर का एक तौल । ७ निषेध, वर्जन । ८ जाली काटने का एक औजार विशेष । ९ एक प्रत्यय । १० देखो 'बाल' । ११ देखो 'बाला' ।

वालइ, वालई, वालउ–१ देखो 'वाल' । २ देखो 'बाला' ।

वाळक–पु० [देश०] १ जंगल में स्वतंत्र फिरने व चरने वाला पशु । –स्त्री० २ नव-प्रसूता मादा ऊंट । ३ हाथ में पहनने का कंगन, बाल छड़ । –वि० स्वच्छन्द, आवारा ।

वलट्टादोस–पु० बालक के खाने की वस्तु को लेने का दोष । (जैन)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बाळण–वि० [सं० वलनं] १ रोकने वाला, सामना करने वाला। २ लौटाने वाला। ३ मोड़ने वाला। ४ प्रतिशोध लेने वाला। ५ वापस लेने वाला। ६ आने वाला।

बाळणी (बी), बाळणो (बी)–क्रि० [सं० वलनं] १ वापस लौटाना, लौटा कर लाना। २ वापस लेना, प्राप्त करना अधिकार में करना। ३ प्रतिशोध लेना। ४ रोकना, सामना करना। ५ वापस बुलाना। ६ घुमाना, फिराना, चक्कर लगवाना। ७ विदा करना, लौटाना। ८ मोड़ना। ९ खारिज करना, निरस्त करना। १० मिटाना। ११ झुकाना। १२ वसूल करना, लेना। १३ जेवरी गूंथना। १४ हवा करना, पंखा डुलाना। १५ निपटाना चुकाना। १६ पशुओं को एक स्थान पर एकत्र करना। १७ देखो 'बाळणी' (बी)।

बाळध–पु० श्वान, कुत्ता।

बालम, बालमियो–१ देखो 'बालम'। २ देखो 'वल्लभ'।

बालमकाकड़ो–स्त्री० लंबे आकार की ककड़ी विशेष।

बालमिक, बाल्मीक–पु० [सं० वाल्मीक, वाल्मीकि] आदि काव्य श्रीमद्रामायण के रचियता का नाम। आदिकवि।

बालर–पु० हरिण, मृग।

बालरकाकड़ी–स्त्री० [सं० वल्लुर-ककंटी] रेगिस्तान में होने वाली एक ककड़ी विशेष।

बाळली, बाळलो–पु० स्त्रियों का एक आभूषण।

बाळव–पु० [सं० बालव] फलित ज्योतिष में दूसरा करण।

बालहउ–देखो 'बाली'।

बालहली–स्त्री० [सं० वल्ल फल्लिका] लता की फली।

बाळहो–देखो 'बाळो'।

बालहो–देखो 'बाली'।

बाला–स्त्री० १ वस्त्र विशेष। २ वधुओं के लिये एक संबोधन। ३ देखो 'बाला'।

बालिभ, बालिमि–देखो 'वल्लभ'।

बासि–१ देखो 'बास'। २ देखो 'बाली'।

बालिद–पु० [अ०] पिता, जनक।

बालिदा–स्त्री० [अ०] माता, जननी।

बालिबध–पु० एक प्रकार का घोड़ा, जो उत्तम गिना जाता है।

बालिभ–देखो 'वल्लभ'।

बाळी, बाळी–स्त्री० [सं० बाली] आभूषण विशेष, बाला।

बाली बाली–वि० १ प्रिय, प्यारो। २ देखो 'बाल'। ३ देखो 'बाळो'। ४ देखो बालो'।

बालु–पु० एक शाक विशेष।

बालुका–स्त्री० [सं०] १ ककड़ी विशेष। २ देखो 'बालु'।

बाळुकाजंत्र–देखो 'बाळुकाजंत्र'।

बालुकाप्रभा–पु० [सं०] एक नरक का नाम।

बाळुची, बाळुछी, बाळूची–पु० १ घोड़े की पूंछ व पूंछ के बाल। २ देखो 'बाळछी'।

बालेय–देखो 'बालेय'।

बालेसर–देखो 'बालो'।

बालोच, बालोज–पु० प्रेम, प्यार।

बालोळ, बालोळ–स्त्री० सेम की फली जिसकी तरकारी बनती है।

बाळी, बाळी–पु० १ वर्षा आदि के पानी से गली-सड़कों पर बहने वाला पानी, बहाव। २ वर्षा के पानी का नाला। ३ नेहरुवा नामक रोग व इसका कीड़ा। ४ संज्ञा शब्दों के आगे लगकर विशेषण बनाने वाला प्रत्यय शब्द। ५ संबंध-अर्थ बोधक शब्द। ६ षष्ठी विभक्ति का चिह्न, का। ७ देखो 'बाळो'।

बालो, बाल्ली–पु० [सं० वल्लभ] १ पति, खाविंद। २ स्वामी, मालिक। ३ चुंबन, बोसा।–वि० (स्त्री०बाली) १ प्यारा, प्रिय, स्नेही। २ मनोहर, मोहक। ३ मीठा, मधुर।

बाल्मीक, बाल्मीकि–देखो 'बालमीक'।

बाल्हम–१ देखो 'वल्लभ'। २ देखो 'बालम'।

बाल्हा–देखो 'बाला'।

बाल्हीक–पु० [सं०] १ भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर स्थित एक प्राचीन जन-पद। २ आधुनिक बलख का पूर्व नाम। ३ बलख देश का घोड़ा। ४ केसर। ५ हींग। ६ एक गंधर्व।

बाल्हूं–देखो 'बालो'।

बाल्हेसर–देखो 'बालो'।

बाल्हो–देखो 'बालो'।

बाव–स्त्री० [सं० वात] १ पवन, हवा। २ अपानवायु। ३ पताका, ध्वजा। ४ देखो 'बावो'।

बावड़णी (बी)–देखो 'बावड़णी' (बी)।

बावड़ी, बावड़ी–देखो 'बावड़ो'।

बावची–देखो 'बापची'।

बावणी(बी)–१ देखो 'बावणी'(बी)। २ देखो 'बाजणी' (बी)।

बावतूक–वि० [सं०] १ बातूनी, बकवादी। २ वक्ता। ३ वाक्पटु।

बावरोटो–स्त्री० घोड़ों का एक रोग।

बावरणी (बी)–देखो 'बापरणी' (बी)।

बावरवी–वि० वरदी सहित।

बावरी–देखो 'बावरी'।

बावळ, बावल, बावळ–स्त्री० [सं० वायुगुल्म] १ प्रचण्ड हवा, तूफान, झंझावात। २ आंधी। ३ वायु हवा, समीर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–वि० १ मस्त, मदोन्मत, उन्मत्त । –क्रि०वि० २ ओर, तरफ ।

बावळि, बाबळी, बाबळी–१ देखो 'बावळ' । २ देखो 'बावड़ी' । ३ देखो 'बावळी' । ४ देखो 'बावळी' ।

बाबळी, बाबली– १ देखो 'बावळी' । (स्त्री० बावळी') २ देखो 'बावळ' ।

बावल्ल–पु० १ आयुध या शस्त्र विशेष । २ देखो 'बावळ' ।

बावसू–पु० [सं० वाहवसु] १ दूत, चर, संदेश वाहक । २ जासूस ।

बाबार–देखो 'व्यवहार' ।

बावि, बाविय–देखो 'बापी' ।

बावी–देखो 'बापी' ।

बाबु, बाबू–देखो 'बायु' ।

बावेळी, बावेली–पु० [फा० बावैला] १ कोलाहल, शोरगुल । २ दंगा, फसाद । ३ रोना-पीटना, चिल्लाना, त्राहि-त्राहि । ४ उपद्रव, विप्लव ।

बाबोकळी–पु० [सं० वातकुल्य] हवादार स्थान ।

बावो–पु० [सं० वपनम्] १ रबी फसल की बुवाई । २ इस फसल का बीज ।

बाब्य–देखो 'बाबी' ।

बासंत–स्त्री० [सं० वासंतः] १ ऊंट । २ हाथी । ३ देखो 'बसंत' ।

बासंती–स्त्री० १ एक वर्ण वृत्त । २ देखो 'बसंती' ।

बासंदर–देखो 'वैस्वानर' ।

बास, बास–पु० [सं० वास] १ रहना क्रिया, निवास, आवास । २ विश्राम, आराम । ३ रहने का स्थान, डेरा । ४ घर, गृह । ५ मुहल्ला । ६ जगह, स्थान । ७ शरण, पनाह, आसरा । ८ पास रखना या बसाना क्रिया । ९ गंध, बू । १० सुगंध, महक । ११ वस्त्र, परिधान, पोशाक । [सं० बाश] १२ गर्जना, दहाड़ना क्रिया । १३ चिल्लाहट । १४ भौंकना क्रिया । १५ गुंजन, गुंजार । १६ बुलावा, पुकार । १७ वस्तु, पदार्थ । १८ जागीर ।

बासइ (ई, उ)–देखो 'बास' ।

बासक–पु० [सं० वासकं, वासक] वस्त्र, कपड़ा ।–वि० १ बसने वाला, निवास करने वाला । २ बसाने वाला, आबाद करने वाला । ३ दहाड़ने वाला, गर्जने वाला । ४ ध्वनि करने वाला । ५ देखो 'वासुकि' ।

बासकसज्जा (सज्य)–स्त्री० [सं०] नायक से मिलने के लिये सजी-धजी बैठी नायिका ।

बासग, बासगनाग, बासगेस–देखो 'वासुकि' ।

बासड़सी–देखो 'बास' ।

बासड़ियो–पु० १ गांव के एक मुहल्ले का जागीरदार । २ देखो 'बास' । ३ देखो 'बासी' ।

बासड़े (ड़ै)–क्रि० वि० निकट, समीप, नजदीक, पास ।

बासड़ो–देखो 'बास' ।

बासण–पु० [सं० वासन] १ सुगंध या दुर्गन्ध फैलने की अवस्था । २ बसावट, निवास । ३ घर, मकान । ४ कोई पात्र, टोकरी, पेटी आदि । ५ वस्त्र, परिधान । ६ चादर, गिलाफ । ७ आच्छादन । ८ ज्ञान ।

बासणो (बो)–पु० १ सुगंध लेना, सूंघना । २ देखो 'आसणो' (बो) । ३ देखो 'बासणो' (बो) । ४ देखो 'बसाणो' (बो) ।

बासत–पु० [सं०] गधा ।

बासतपत (पति)–पु० [सं० वास्तोपति] १ इन्द्र । २ वास्तुपति ।

बासते (तै)–देखो 'बास्तै' ।

बासवड़ो, बासवो, बासवे, बासदेव–पु० [सं० विश्वेदेव] १ यज्ञ का अधिष्ठाता अग्निदेव । २ अग्नि, आग । ३ देखो 'वासुदेव' ।

बासना–स्त्री० [सं०] १ अभिलाषा, इच्छा, मनोकामना चाह । २ जन्मान्तर के जमे हुए संस्कारों से उत्पन्न सुख-दुःख के भाव, विचार । ३ भावना, खयाल, धारणा । ४ न्याय के अनुसार देहात्मक बुद्धिजन्य मिथ्या संस्कार, विचार । ५ कल्पना । ६ स्मृति । ७ ज्ञान । ८ दुर्गा का एक नाम । ९ अर्क नामक वसु की पत्नी । १० भोग विलास, विषय भोग की इच्छा । ११ गंध, बू । १२ सुगंध, महक ।

बासनी–स्त्री० शराब, मदिरा । –वि० निवास करने वाली, बसने वाली ।

बासन्न–वि० १ सुगंधित, सुवासित । २ देखो 'बसन' ।

बासपुज्ज, बासपूज, बासपूज्य– देखो 'बासुपूज्य' ।

बासमती–पु० सफेद चावलों की एक जाति ।

बासर–पु० [सं० बासरः] १ दिन, दिवस । २ प्रातः काल, सवेरा ।

बासरकर, बासरकिरण–पु० [सं० बासर-कर] सूर्य, भानु ।

बासरमणि–पु० [सं०] सूर्य, भानु ।

बासव–पु० [सं० बासवः] १ इन्द्र का एक नामान्तर । २ महादेव, शिव । –वि० [सं० वसव] इन्द्र का, इन्द्र संबंधी ।

बासवांणी–पु० [सं० वस्] निवास स्थान, निवास ।

बासवि, बासवी–स्त्री० [सं० बासवी] सत्यगंधा व सत्यवती का एक नामान्तर । –पु० १ अर्जुन । २ इन्द्र पुत्र जयन्त ।

बासवीदिसा–पु० [सं०] इन्द्र की दिशा, पूर्व दिशा ।

बाससुद्रुम–पु० चन्दन ।

बाससुमेर, बाससुमेरु–वि०[सं०बास-सुमेरु] सुमेरु पर्वत का निवासी । –पु० देवता ।

बासावळी–स्त्री० [सं०बास-अवळी]१ सुगंध, महक । २ सुगंधित पदार्थों का समूह ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वासिग–देखो 'वासुकि'।

वासिदी–देखो 'बासिदी'।

वासि–पु० [सं० वाशिः, वासि] १ अग्निदेव। २ वसूला। ३ कुठार। ४ छैनी। ५ देखो 'बास'।

वासिग–देखो 'वासुकि'।

वासिद्–पु० शिव, महादेव।

वासिंदो–वि० निवास करने वाला, निवासी।

वासिध–देखो 'वासव'।

वासिस्टी, वासिस्ठ–स्त्री० [सं० वाशिष्ठी] राजस्थान की बनास नदी का एक नाम।–वि० १ वसिष्ठ का, वसिष्ठ, संबंधी। २ वसिष्ठ का वंशज।

वासीदो–देखो 'बासिदो'।

वासी–वि० [सं० वासिन्] १ निवास करने वाला, रहने वाला, निवासी। २ मुहल्ले का, मुहल्ले संबंधी। ३ किसी मुहल्ले का जागीरदार। ४ देखो 'बासी'।

वासीजवारी–स्त्री०दूल्हे को ससुराल से दी जाने वाली एक भेंट।

वासीरुड़–पु० मृतक के बारहवें दिन स्त्रियों द्वारा प्रातःकाल किया जाने वाला रुदन।

वासु–पु० [सं०] १ जीव, आत्मा। २ विश्वात्मा, परमात्मा। ३ विष्णु का एक नामान्तर।

वासुकि (की, गि, गी)–पु० [सं० वासुकिः] १ आठ नाग राजाओं में से एक। २ शेषनाग। ३ एक प्राचीन देवता। ४ सर्प सांप।

वासुदे वासुदेव–पु० [सं० वासुदेव] १ श्रीकृष्ण। २ परमेश्वर, ईश्वर। ३ वासुदेव के वंशज।

वासुदेवक–पु० श्रीकृष्ण का उपासक।

वासुदेवा–पु० भाटों की एक शाखा।

वासुदेवी–पु० उक्त शाखा का भाट।

वासुपुज्य, वासुपूज्य–पु० [सं० वासुपूज्य] जैनियों के बारहवें तीर्थंकर।

वासुभद्र–पु० [सं०] श्रीकृष्ण।

वासुर–देखो 'वासर'।

वासुरा–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती। २ रात्रि, रात। ३ स्त्री, नारी। ४ हथिनी।

वासू–स्त्री० [सं०] १ जवान लड़की। २ कुंवारी लड़की। कन्या।

वासूळी–देखो 'वसूली'।

वासें, वासें–देखो 'वासैं'।

वासो–पु० [सं० वासः] १ रहने की क्रिया या भाव, निवास। २ निवास स्थान। ३ विश्राम। ४ विश्रामस्थल, डेरा। ५ गांव। ६ पड़ाव। ७ एक शिकारी पक्षी। ८ भोजन करने की दुकान, भोजनालय।

वास्तव–वि० [सं०]१ असली, मूल, सही, सच्चा। २ प्राकृतिक। ३ सारयुक्त, तथ्य युक्त। ४ निश्चित।

वास्तवा–स्त्री० [सं०] उषाकाल, प्रातःकाल।

वास्तविक–वि० [सं०] १ सत्य, यथार्थ प्राकृतिक, असली। २ ठीक, उचित।

वास्तविकता–स्त्री० [सं०] १ सच्चाई, असलियत। २ औचित्य।

वास्तुपूजा–स्त्री० [सं०] नवीन गृह प्रवेश पर की जाने वाली एक पूजा विशेष।

वास्तुविद्या–स्त्री० [सं०] १ भवन निर्माण कला, अभियान्त्रिकी। २ शिल्प। ३ चौसठ या बहत्तर कलाओं में से एक।

वास्तुसांति–स्त्री० [सं० वास्तु-शांति] नवीन गृह प्रवेश के समय किया जाने वाला शांति कर्म।

वास्तुसास्त्र–पु० [सं० वास्तु शास्त्र] भवन निर्माण या शिल्प संबंधी शास्त्र।

वास्तुसिद्धि–स्त्री० [सं०] स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक।

वास्ते, वास्तै–अव्य० १ निमित्त, लिये। २ कारण से, प्रयोजन से।

वास्तो–पु० [सं० वास्तः]१ संबंध, लगाव। २ प्रयोजन, मतलब। ३ माध्यम, जरिया। ४ कारण। ५ शक्ति, बल। ६ पुरुषार्थ।

वास्प–स्त्री० [सं० वाष्पः] १ आंसू। २ भाप। ३ कोहरा। ४ लोहा।

वाह–स्त्री० [सं०] १ शस्त्र प्रहार, चोट। २ आक्रमण, हमला। ३ युद्ध। ४ प्रवाह। ५ प्रहार की सीमा, परिधि, क्षेत्र। ६ शस्त्र, आयुध। ७ धनुष। ८ गति, चाल। ९ वाहन, सवारी। १० घोड़ा, अश्व। ११ बैल। १२ बोझा लादने वाला पशु। १३ नदी। १४ मदद। १५ वायु, हवा। १६ सुगंध, महक। १७ बदबू, दुर्गन्ध। १८ खेत में हल चलाने की अवस्था, दशा, मौसम।–अव्य० १ धन्य, शाबास। २ आश्चर्य, हर्ष, घृणा सूचक ध्वनि। ३ खूब, अत्यन्त। ४ बस।

वाहक–वि० [सं०] १ लेजाने वाला, ढोने वाला। २ वहन करने वाला।–पु०१ कुली, हमाल। २ गाड़ीवान। ३ घुड़सवार। ४ एक विषैला कीड़ा।

वाहण–देखो 'वाहन'।

वाहणगरुड़–पु० विष्णु।

वाहणवसभ–देखो 'वाहनवृषभ'।

वाहणसंभु–पु० १ नन्दी बैल। २ वृषभ, बैल।

वाहणसिखी–पु० स्वामिकार्त्तिकेय का एक नाम।

वाहण, वाहणी–स्त्री० १ एक प्रकार की, खेत की जुताई। २ देखो 'वाहन'। ३ देखो 'वाहनी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाहणी–देखो 'वाहन'।
वाहणी (बो)–क्रि० १ ठगना, धोखा देना, छलना। २ देखो 'बावणी' (बो)।
वाहन–पु० [सं०] १ वहन करने या ढोने की क्रिया या भाव। २ सवारी, सवारी करने का साधन। ३ घोड़ा। ४ हाथी। ५ रथ। ६ नाव, जहाज। ७ सवार। ८ लश्कर। ९ उद्योग, प्रयत्न। १० सेना। ११ नदी।
वाहनवृषभ–पु० [सं० वाहन-वृषभ] शिव, महादेव।
वाहनी–स्त्री० [सं० वाहिनी] १ सेना, फौज। २ सेना का एक दल। ३ सेना का एक विभाग। –वि० चलाने वाली।
वाहपत्री–स्त्री० [सं० पत्रवाह] शर, बाण, तीर।
वाहर, वाहरि–देखो 'बाहर'। (३ से ६)
वाहरु, वाहरुओ, वाहरू–देखो 'बाहरु'।
वाहळ–पु० १ घी परोसने का टोंटीदार पात्र। २ बैल के पिछले पैरों में होने वाली रोमावली विशेष। ३ देखो 'बहल'।
वाहसउ–१ देखो 'वालौ'। २ देखो 'वाळौ'।
वाहसकड़ (ड़ो), वाहळि, वाहळी–देखो 'वाळो'।
वाहसोकवा–देखो 'वाल्होक'।
वाहळु, वाहसु, वाहळू, वाहसू, वाहळो, वाहली, वाहस्यो–१ देखो 'वाळो'। २ देखो 'वालो'। ३ देखो 'वल्लभ'। (स्त्री० वाहळी)
वा'वा'–देखो 'वाहवाह'।
वाहवाह–अव्य० [फा०] धन्य-धन्य, साधु-साधु।
वाहवाही–स्त्री० [फा०] १ प्रशंसा, साधुवाद, धन्यवाद। २ आश्चर्य।
वाहाऊ–देखो 'बघाऊ'।
वाहादर–देखो 'बहादुर'।
वाहार–१ देखो 'वा'र'। २ देखो 'बाहर'।
वाहाळी, वाहाली–१ देखो 'वा'ळो'। २ देखो 'वालो'।
वाहि–क्रि० वि० मार्ग में, रास्ते में।
वाहिण–देखो 'वाहन'।
वाहिणि, वाहिणी–देखो 'वाहनी'।
वाहित्थ–पु० [सं० वाहित्थ] हाथी के ललाट के नीचे का भाग।
वाहियात–वि० व्यर्थ, निरर्थक।
वाहिर–देखो 'बाहर'।
वाही–१ देखो 'वही'। २ देखो 'व्याधि'।
वाहुड़णो (बो)–देखो 'बावड़णो' (बो)।
वाहुणु (लो)–१ देखो 'वा'ळो'। २ देखो 'वालो'।
विचियो, विछियो–देखो 'बिछियो'।
विछुड़ी–देखो 'बिछुड़ी'।
विछ्या–देखो 'बांछा'।
विजणो (बो), विजणो (बो)–देखो 'बीजणो' (बो)।
विजन–देखो 'व्यंजन'।
विजाहरि–देखो 'विजयहरी'।
विजुल-सोल–स्त्री० [सं० बजुल-शोक:] १ कुंज, कुंज गली। २ अशोक वृक्ष।
विझगिरी–देखो 'विंध्यागिरि'।
विझलो–पु० [सं० वीजन:] चक्रवाक नामक पक्षी।
विंझाचळ–देखो 'विंध्याचळ'।
विंट–देखो 'वींट'।
विटणो (बो), विट्ठणो (बो)–देखो 'वींटणो' (बो)।
विंटाणो (बो), विट्ठाणो (बो)–देखो 'वींटाणो' (बो)।
विंठणो (बो)–क्रि० [स० विनष्टनम्] १ नष्ट होना, बरबाद होना। २ भ्रष्ट होना, बिगड़ना। ३ अदृश्य होना, गायब होना।
विठोरो, विठोरो–देखो 'भींठोरो'।
विण–देखो 'बिना'।
विणणो (बो), विणलो(बो)–१ देखो 'बिणणो' (बो)। २ देखो 'बुणणो' (बो)।
वितर–देखो 'व्यंतर'।
विंतणो (बो)–देखो 'बींतणो' (बो)।
विद–पु० [सं०] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक। २ भारतीय युद्ध में कौरव पक्ष का एक योद्धा। ३ अवंती देश का एक राजकुमार। ४ देखो 'बींद'। ५ देखो 'बूंद'। ६ देखो 'बिंदु'। ७ देखो 'बिंदी'। ८ देखो 'बंद'।
विंदक–वि० १ जानने वाला, ज्ञाता। २ जन्म देने वाला। ३ देखो 'बिंदक'।
विंदगी–देखो 'बंदगी'।
विंदणो (बो), विंदणो (बो)–देखो 'बंदणो' (बो)।
विंदली–देखो 'बिंदी'।
विंदयो–देखो 'बिंदणो'।
विंदसरोवर–पु० गुजरात का एक तीर्थ विशेष।
विंदावन–देखो 'वृंदावन'।
विंदी–देखो 'बिंदी'।
विंदु–१ देखो 'बिंदु'। २ देखो 'बूंद'। ३ देखो 'बिंदी'। ४ देखो 'बंद'।
विंदुआंगिरस–पु० वेदों के एक सूक्त द्रष्टा का नाम।
विंदुचित्रक–पु० [स०] सारे शरीर पर गोल चित्तियों वाला एक मृग।
विंदुजाळ, विंदुजाळक–पु० [सं० विंदुजाल] १ हाथी के मस्तक पर बनाई गई बिंदियों का समूह। २ हाथियों का एक रोग।
विंदुतीरथ–पु० [सं० विंदुतीर्थ] काशी के पंचनद तीर्थ का एक नाम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिंदुत्रिवेणी–स्त्री० [सं०] स्वर साधन की एक प्रणाली।
बिंदुमति (ती)–स्त्री० अयोध्या के राजा मान्धाता की पत्नी।
बिंदुमाधव–पु० [सं०] काशी में स्थित विष्णु की मूर्ति का नाम।
बिंदुलरखी–स्त्री० [सं० विदुल-रथ्या] कुंज गली।
बिंदुली–देखो 'बिंदी'।
बिंदुसर–पु० [सं०] १ कैलाश पर्वत स्थित एक सरोवर। २ एक प्राचीन नदी।
बिंदो–१ देखो 'बींद'। २ देखो 'बंदी'।
बिंध–देखो 'विंध्य'।
बिंधणी (बी), बिंधणी (बी)–देखो 'बिंधणी' (बी)।
बिंधर–वि० अशब्दभावी।
बिंधाचळ–देखो 'विंध्याचळ'।
बिंध्य–पु० [सं०] १ उत्तर भारत के दक्षिण में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत, विंध्याचळ। २ रैवत मुनि के पुत्रों में से एक।
बिंध्यकूट–पु० [सं० विंध्यकूटनं] १ अगस्त्य मुनि की एक उपाधि। २ विंध्य पर्वत।
बिंध्यगिरि–पु० [सं०] विंध्य पर्वत, विंध्याचल। —पादमूळ–पु० इस पर्वत की तलहटी।
बिंध्यवासिणी (नी)–स्त्री० [सं० विंध्य वासिनी] १ मिर्जापुर जिले में विंध्य पर्वत के एक टीले पर स्थित देवी मूर्ति विशेष। २ दुर्गा की एक उपाधि।
बिंध्यवासी, बिंध्यस्थ–पु० [सं०] संस्कृत के व्याडि मुनि की उपाधि।
बिंध्याचळ–पु० [सं०] भारत के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई एक पर्वत श्रेणी, विंध्यगिरि, विंध्याद्रि।
बिंध्यावळि (ळी)–स्त्री० [सं० विंध्यावलि] दैत्यराज बलि की पत्नी का नाम।
बिंबार, बिंभार–देखो 'बंबार'।
बिंभी–देखो 'बैंभव'।
बिंयासियौ–देखो 'बयासियौ'।
बिंस–वि० [सं० विंश] बीसवां। –पु० १ एक प्राचीन राजा। २ देखो 'बीस'।
बिंसतिबाहु–पु० [सं० विंशतिबाहु] रावण का एक नामान्तर।
बिंसोत्तरी–स्त्री० [सं० विंशोत्तरी] शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।
बिंहणी (बी)–देखो 'बैंणी' (बी)।
बि–अव्य० [सं०] १ किसी शब्द के पूर्व लगकर विशेष अर्थ उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग। २ भी। ३ ही। –पु० [सं० विः] १ रवि। २ अग्नि। ३ वह्नि। ४ पक्षी। ५ गरुड़। ६ लवा। ७ घोड़ा। ८ आंख। ९ आकाश। १० अन्न। ११ देखो 'बी'।
बिअक्खण (णि, णु)–देखो 'विचक्षण'।
बिअखरी, बिअक्खरी–देखो 'वैअखरी'।
बिअद–पु० [सं० वियत्] आकाश, नभ।
बिआपणी (बी)–देखो 'व्यापणी' (बी)।
बिआपी–१ देखो 'व्यापी'। २ देखो 'वापी'।
बिआरणम–स्त्री० [सं० वि-प्रतारणम्] मार-पीट। प्रताड़ना।
बिआस–देखो 'व्यास'।
बिइगिच्छा–स्त्री० विचिकित्सा।
बिइत्तु–वि० [सं० विदित्वा] जानकार।
बिइय–वि० [सं० द्वितीय] १ दूसरा। २ विदित।
बिउड–देखो 'विकट'।
बिउरण–देखो 'विवरण'।
बिउल–देखो 'विपुल'।
बिउलअसणपाण–पु० [सं० विपुलाशनपान] विपुल खान-पान, पुष्कल भोज्य-पदार्थ।
बिउलतव–पु० [सं० विपुलतप] विपुल या कठोर तप।
बिउलधण–पु० [सं० विपुलधन] विपुल या पर्याप्त धन।
बिउलसग्ग–पु० [सं० विपुल सर्ग] व्युत्सर्ग, कायोत्सर्ग, एक तप विशेष।
बिउलसिरी–देखो 'भोलसिरी'।
बिऊ–वि० [सं० विद्] जानकार, वेत्ता।
बिओग, बियोग–देखो 'वियोग'।
बिकंपन–पु० [सं०] १ रावण पक्ष के एक राक्षस का नाम। २ रुद्रगणों में से एक।
बिकंपुर–देखो 'विक्रमपुर'।
बिकच–पु० [सं०] १ एक प्रकार के धूमकेतु जिनकी संख्या ६५ है। २ बौद्ध भिक्षुक। ३ केतु का नामान्तर।–वि० १ खिला हुआ, फैला हुआ। २ बिखरा हुआ। ३ बाल या केश रहित।
बिकचा–स्त्री० [सं०] विरूपक नामक नैर्ऋत राक्षस की पत्नी।
बिकट–वि० [सं०] १ भयंकर, भीषण, विकराल। २ चौड़ा, प्रशस्त। ३ विशाल, बड़ा। ४ जबरदस्त। ५ बलवान, शक्तिशाली। ६ दुर्गम, दुरूह, दुस्साध्य। ७ कठिन, मुश्किल। ८ बदशक्ल, कुरूप, भौंडा, भद्दा। ९ उग्र, तीव्र। १० टेढ़ा, वक्र। ११ अहंकारी, अभिमानी। १२ जंगली, असभ्य। –पु० १ विस्फोट। २ बाल-तोड़, फोड़ा। ३ सेना, फौज। ४ सोमलता। ५ एक डिंगल गीत। ६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ७ रावण पक्ष का एक राक्षस। ८ रुद्र गणों में से एक। ९ सिंह, शेर। १० जैनियों के ८८ ग्रहों में से ५० वां ग्रह।
बिकटाणण (नन)–देखो 'विकटानन'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकटा–स्त्री० [सं०] १ बुद्धदेव की माता का नाम। २ रावण की अनुचरी एक राक्षसी।

विकटानन–पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

विकटी, विकटु, विकटी–देखो 'विकट'।

विकणी (वी)–देखो 'बिकणी' (वी)।

विकत्ता–वि० [सं० विकर्त्तृ] नहीं करने वाला, अकर्ता।

विकत्थन–पु० [सं०] १ शेखी, डींग। २ व्यंग। ३ झूठी प्रशंसा।

विकत्थां, विकथा–स्त्री० [सं०] १ अफवाह, जनश्रुति। २ झूठी प्रशंसा। ३ व्यंग। ४ शेखी, डींग। ५ निरर्थक या बेहूदी बात। ६ चुगली।

विकप्पणा–स्त्री० [सं० विकल्पना] संदेह, भ्रम। (जैन)

विकम–देखो 'विक्रम'।

विकमाईत–देखो 'विक्रमादित्य'।

विकमायत–स्त्री० [सं० विक्रम+आदित्य] १ राठौड़ों की एक उप शाखा। २ देखो 'विक्रमादित्य'।

विकरद–स्त्री० [सं० विकर-गंध] बदबू, दुर्गंध।

विकर–पु० [सं०] १ रोग, बीमारी। २ तलवार चलाने का एक ढंग। ३ राक्षस। ४ देखो 'विकार'।

विकरण–पु० [सं० विकरण] १ धातु व प्रत्यय के बीच में होने वाला वर्णागम। २ एक शिव भक्त महर्षि। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४ कर्ण का एक पुत्र। ५ एक प्रकार का सर्प। ६ एक प्रकार का तीर। –वि० [अं० वि+करणम्] १ इन्द्रिय रहित। [सं० वि+कर्ण] २ जिसके कान न हो, कर्ण रहित। ३ जो सुन न सके बहरा।

विकरतन, विकरत्तन–पु० [सं० विकर्तन] १ सूर्य। २ आक, मंदार। ३ पिता से राज्य छीनने वाला राजकुमार। ४ एक सूर्यवंशी राजा।

विकरम–पु० [सं० विकर्म] १ वेद विरुद्ध कर्म, दुष्कर्म, पाप। २ विरुद्धाचार। ३ देखो 'विकम'।

विकरमादित्य, विकरमाजीत–देखो 'विक्रमादित्य'।

विकरमी–वि० [सं० विकर्मन्] १ निषिद्ध कर्म करने वाला, कुकर्मी। २ देखो 'विक्रमी'।

विकरस–पु० [सं० विकर्ष] १ बाण, तीर। २ धनुष की प्रत्यंचा खींचने का कार्य। ३ अन्तर, दूरी, फासला।

विकरसण–पु० [सं० विकर्षण] १ आकर्षण, खिचाव। २ कामदेव के पांच बाणों में से एक।

विकरात–देखो 'विक्रांत'।

विकरार, विकराल, विकराळ (ल, ळो)–वि० [सं० विकराल] (स्त्री०विकराली) १ भयंकर, भयावह, डरावना। २ भीषण आकृति या डील डौल वाला। ३ जबरदस्त, जोरदार। ४ प्रचंड, तीव्र, तेज। ५ व्याकुल। ६ क्रुद्ध, क्रोधित। ७ विशाल, दीर्घ, बड़ा, लंबा। –पु० १ सिंह, शेर। २ युद्ध।

विकरी–देखो 'विकरो'।

विकरूल्यो, विकरोळ–देखो 'विकराळ'।

विकरो, विकरो–पु० [सं० विक्रयः] १ द्रव्य लेकर वस्तु देना, बेचना, मोल के हिसाब से देने का कार्य। २ दुकान पर वस्तुओं को बिक्री। ३ व्यापार। ४ बेचने से प्राप्त धन।

विकळ, विकल, विकल–वि० [सं० विकल] (स्त्री० विकळा) १ व्याकुल, बेचैन, दुःखी। २ उदास, खिन्न-चित्त। ३ भयभीत, डरा हुआ। ४ भावविभोर, विह्वल। ५ क्षुब्ध। ६ खंडित, भग्न। ७ हीन, रहित। ८ मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ। ९ सड़ा हुआ। १० शक्ति रहित, असमर्थ। ११ क्रोधित, क्रुद्ध। १२ अस्वाभाविक। १३ झूठ, अनृत्य, मिथ्या। १४ चंचल, अस्थिर। १५ कल या कला से रहित। –पु० १ कपट, छल। २ देखो 'बेअकल'। —अंग-वि० जिसका कोई अंग टूटा हो, अंग-भंग। —कामी–वि० काम वासना से व्याकुल। –पु० नारद। —चित्त–वि० चंचल। अस्थिर चित्त। – ता, ताई–स्त्री० व्याकुल, बेचैनी, आतुराई।

विकळप, विकलप–पु० [सं० विकल्पः] १ भ्रम, भ्रान्ति। २ धोखा। ३ विरुद्ध कल्पना। ४ मन की दुविधा। ५ योग में पंच विधि चित्त वृत्तियों में से एक। ६ मन की कल्पना या आने-जाने वाले भाव। ७ निर्धारण। ८ संदेह, हिचकिचाहट, संकोच। ९ इच्छा, अभिरुचि। १० भूल-चूक। ११ अज्ञानता। १२ उपाय। १३ स्थानापन्न रूप से काम लिया जाने वाला साधन। १४ वस्तु रहित केवल मन की कल्पना।

विकळा, विकळा–स्त्री० [सं० विकला] १ वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बन्द हो गया हो। २ कला का सातवां अंश। ३ उपद्रव। ४ कलह। ५ बुध ग्रह की गति। ६ दुर्गा देवी का नामान्तर। ७ कला का ६०वां अंश। –वि० चंचल, अस्थिर।

विकलिंदी–देखो 'विकलेंद्रिय'।

विकळी–वि० १ चिरस्थाई, अमिट। २ देखो 'विकळी'।

विकळेंद्रि, विकळेंद्रिय–वि० [सं० विकलेंद्रिय] १ जिसकी इंद्रियां वश में न हो। २ जिसकी इंद्रियों में दोष हो। –पु० द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरेंद्रिय जीव समूह। (जैन)

विकळी–वि० (स्त्री० विकळी) १ अविश्वास पात्र। २ बद चलन, दुश्चरित्र। ३ देखो 'विकळप'।

विकल्प–देखो 'विकळप'।

विकस–पु० [सं० विकसः] चन्द्रमा, चांद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकसणी (बी)–क्रि० [सं० विकाशनम्] १ विकसित होना। २ खिलना, फूलना। ३ वृद्धिमान होना, बढ़ना। ४ आगे बढ़ना, प्रगति करना। ५ हर्षित होना, प्रफुल्लित होना। ६ प्रकाशित होना।

विकसाणी (बी), विकसावणी (बी)–क्रि० १ विकसित करना, कराना। २ बढ़ाना, वृद्धि कराना। ३ प्रगति कराना। ४ प्रफुल्लित करना, हर्षित करना।

विकसावण (णी)–वि० १ विकसित करने वाला। २ वृद्धि करने वाला, बढ़ाने वाला। ३ खिलाने वाला, प्रस्फुटित करने वाला। ४ आगे बढ़ाने वाला। ५ हर्षित करने वाला।

विकस्सणी (बी)–देखो 'विकसणी' (बी)।

विकस्साणी (बी), विकस्सावणी (बी)–देखो 'विकसाणी' (बी)।

विकहा–देखो 'विकत्था'।

विकाणी (बी)–देखो 'विकाणी' (बी)।

विकाथिनी–स्त्री० [सं०] स्कन्द की एक अनुचरी, एक मातृका।

विकार–पु० [सं०] १ रूप, गुण, स्थिति आदि में होने वाला परिवर्तन, रूपान्तरण। २ रूप, गुण आदि में आने वाला दोष, विकृति। ३ विकृत करने वाला तत्त्व। ४ क्रोध-लोभादि भाव, हीन मनोभाव। ५ बीमारी, रोग। ६ वेदान्त व सांख्य दर्शनानुसार पदार्थ का रूपान्तरण। ७ भाव परिवर्तन। ८ मनोवेग। ९ उद्वेग, विकलता। १० दोष। ११ वासना। १२ अवगुण, ऐब, बुराई। १३ वैमनस्य, शत्रुता। १४ परिवर्तन, बदलाव। १५ बदहजमी। १६ स्वाद, जायका।

विकारि, विकारी–वि० [सं० विकारिन्] १ जिसमें कुछ विकार होता हो, विकृत होने लायक। २ परिवर्तनीय, परिवर्तनशील। ३ विकार उत्पन्न करने वाला। ४ रूपान्तरित होने वाला। –पु० १ साठ संवत्सरों में से तेतीसवां संवत्सर। २ रूपान्तरित होने वाला शब्द।

विकाल–देखो 'विकार'।

विकाळ–पु० [सं० विकालः] १ शुभ कार्यों के लिये असमय। २ देर, विलंब। ३ संध्या का समय, शाम।

विकावणी (बी), विकावणी (बी)–देखो 'विकाणी' (बी)।

विकास–पु० [सं०] १ प्रदर्शन, प्रगटन। २ प्रकाश। ३ विस्तार फैलाव। ४ प्रसार। ५ आकाश। ६ प्रस्फुटन, खिलाव। ७ उन्नति, बढ़ोतरी, वृद्धि। ८ हर्ष, आनन्द।

विकासणी (बी)–क्रि० १ प्रगट होना, प्रकाश में आना, प्रदर्शित होना। २ रोशन होना, प्रकाशित होना। ३ विस्तृत होना, फैलना। ४ प्रसारित होना। ५ प्रस्फुटित होना, खिलना। ६ उन्नति करना, बढ़ना, वृद्धि होना। ७ हर्षित या आनन्दित होना।

विकिर–पु० [सं० विकिरः] १ पूजा के समय विघ्न निवारणार्थ चारों ओर फेंके जाने वाले अभिमंत्रित चावल। २ पक्षी। ३ कूप, कुआ। ४ पेड़, वृक्ष।

विकीरण–वि० [सं० विकीर्ण] १ चारों ओर फैला हुआ। २ प्रसिद्ध, मशहूर।

विकुंठ–वि० [सं०] १ अत्यधिक तीक्ष्ण, नुकीला, २ जो कुंठित न हो। ३ जो रोका न जा सके। –पु० १ रैवत मन्वन्तर का एक देव-समूह। २ देखो 'वैकुंठ'।

विकुंठा–स्त्री० [सं०] १ मन का केन्द्रीकरण। २ विष्णु की माता।

विकुंडमांड–पु० [सं०] एक दानव का नाम।

विकुक्ष, विकुक्षी, विकुक्षि, विकुख, विकुखी–पु० [सं० विकुक्षी] सूर्यवंशी इक्ष्वाकु का ज्येष्ठतम पुत्र, अयोध्या का प्रसिद्ध राजा। –वि० बड़ी तोंद वाला, तोंदी।

विकुट–पु० एक डिंगल छंद विशेष।

विकूरबी, विकूरवी–वि० कृत्रिम, बनावटी।

विकेस–वि० [सं० विकेश] १ केश रहित, गंजा। २ जिसके सिर के बाल खुले हों। –पु० १ पुच्छल तारा। २ एक प्रकार का प्रेत।

विकेसी–स्त्री० [सं० विकेशी] १ सिर के खुले बालों वाली स्त्री। २ गंजे सिर वाली स्त्री गंजी। ३ शिव की पत्नी का नाम। ४ अग्नि की एक पत्नी का नाम। ५ पूतना राक्षसी का एक नाम। ६ बालों की लटों की चोटी, वेणी।

विकोक–पु० [सं०] बकासुर का पुत्र।

विकोदर–देखो 'वृकोदर'।

विकोस–वि० [सं० विकोश] १ म्यान से निकला (शस्त्र)। २ बिना भूसे का। ३ खुला, अनाच्छादित।

विक्क–पु० [सं० विक्क] १ हाथी का बच्चा। २ देखो 'विक्क'।

विक्कटा–देखो 'विकटा'।

विक्कमपुर (रि. रो)–देखो 'विक्रमपुर'।

विक्कय–देखो 'विक्रय'।

विक्करांळ (ल), विक्करू–देखो 'विकराळ'।

विक्कसणी (बी)–देखो 'विकसणी' (बी)।

विक्कासणी (बी)–देखो 'विकासणी' (बी)।

विक्ख, विक्ख–१ देखो 'विस'। २ देखो 'विसम'। ३ देखो 'वीख'।

विक्खणी–स्त्री० थोड़ों की खुरताल को टक्कर से उठने वाली चिनगारी।

विक्खधर–देखो 'विसधर'।

विक्खम (मी, म्म, म्मी)–देखो 'विसम'।

विक्खहर–१ देखो 'विसधर'। २ देखो 'विसहर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विकतंड–देखो 'वक्रतुंड'।

विकत–वि० [सं० विकृत] १ विकार युक्त, विकृत। २ कुरूप, भद्दा। ३ अस्वाभाविक। ४ अधूरा, अपूर्ण। ५ बीमारी, रोग ग्रस्त। ६ अंगहीन, विकलांग। ७ उद्विग्न। ८ घृणास्पद। ९ अरुचिकर। १० असाधारण।–पु० १ दूसरे प्रजापति का नाम। २ एक संवत्सर। ३ एक राक्षस। ४ कामदेव का एक वेश।

विकता–स्त्री० [सं० विकृता] एक योगिनी का नाम।

विकति–स्त्री० [सं० विकृतिः] १ विकृत होने की अवस्था या भाव। २ विकार या खराबी। ३ विकार से बना रूप। ४ बीमारी, रोग। ५ परिवर्तन। ६ परिणाम। ७ मानसिक क्षोभ। ८ एक छन्द विशेष। ९ विकार आने पर होने वाला प्रकृति का मूल रूप। १० मूल धातु से विकृत होने पर बनने वाला शब्द का रूप। ११ एक यादव राजा।

विकतुंड–देखो 'वक्रतुंड'।

विक्रम–पु० [सं० विक्रमः] १ विपरीत गति। २ कदम, डग। ३ पराक्रम, दक्ष, शौर्य। ४ बहादुरी, वीरता। ५ चाल, गति। ६ विष्णु। ७ एक संवत्सर। ८ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ९ योद्धा, वीर। [सं० विकर्म] १० दुष्कर्म, पाप। ११ तीन की संख्या।–वि० १ बिना क्रम का, क्रम रहित। २ देखो 'विक्रमादित्य'। ३ देखो 'विक्रम संवत'। –अब्द–पु० विक्रम संवत्।

विक्रमक–पु० स्वामिकार्तिकेय का एक अनुचर।

विक्रमगढ़, विक्रमनगर, (नगरि, नगरी, पुर पुरी)–पु० १ बीकानेर शहर का एक नाम। २ जैसलमेर राज्यान्तर्गत एक प्राचीन नगर।

विक्रमसोम–पु० एक राजा विशेष।

विक्रमांत–पु० [सं० विक्रम-अंत] योद्धा, वीर।

विक्रमाजीत, विक्रमादित (दित्य, दीत)–पु० [सं० विक्रमादित्य] उज्जयिनी के प्रसिद्ध राजा जिनके नाम से विक्रमी संवत् चलती है।

विक्रमि, विक्रमी–वि० [सं० विक्रमिन्] १ वीर, बहादुर, शूरवीर। २ पराक्रम वाला, साहसी। ३ विक्रम संबंधी; विक्रम का।–पु० १ सिंह, शेर। २ विष्णु का एक नामान्तर। ३ विक्रमादित्य के नाम से चलने वाला संवत्।

विक्रय–पु० [सं०] बेचना क्रिया, बिक्री।

विक्रांत (विक्रम-अंत)–वि० [सं० विक्रान्तः] १ शूरवीर; बहादुर। २ विजयी, प्रतापी।–पु० १ सिंह, शेर। २ विष्णु का एक नामान्तर। ३ एक प्रजापति। ४ हिरण्याक्ष राजा का एक पुत्र। ५ वैक्रान्तमणि।

विक्रांति–स्त्री० [सं० विक्रान्तिः] १ गति, चाल। २ घोड़ों की सरपट चाल। ३ वीरता, बहादुरी।

विक्री–देखो 'विक्रय'।

विक्रुस्ट–स्त्री० [सं० विक्रुष्ट] १ बुलाने की क्रिया, पुकार २ गाली। ३ आवाज। ४ चिल्लाहट। ५ संगीत में एक क्रिया।–वि० निष्ठुर, बेरहम।

विक्रेता–वि० [सं०] बेचने वाला, विक्रय करने वाला। व्यापारी।

विक्रेय–वि० बेचने योग्य, बिकाऊ।

विक्रोस–स्त्री० [सं० विक्रोशनम्] १ गाली। २ चिल्लाहट। ३ चीत्कार।

विक्री–देखो विक्रय'।

विक्लव (व)–वि० [सं० विक्लव] १ भीरु, डरपोक। २ डरा हुआ, भीत। ३ पीड़ित, दुःखी। ४ बेचैन, विह्वल। ५ उद्विग्न, व्याकुल।

विक्षत–वि० [सं०] घायल, आहत।

विक्षय–पु० अधिक मद्यपान से होने वाला एक रोग।

विक्षर–पु० १ भगवान विष्णु। २ कश्यप पुत्र एक दैत्य।

विक्षात, विक्षाति (मान)–वि० प्रसिद्ध, मशहूर। ख्याति प्राप्त।

विक्षिप्त–वि० [सं०] १ व्याकुल, बेचैन। २ घबराया हुआ, भीत। ३ खारिज किया हुआ, त्यक्त। ४ भेजा हुआ। ५ खण्डन किया हुआ। ६ बिखरा या फैला हुआ। ७ पागल।

विक्षिप्तता–स्त्री० १ विक्षिप्त होने की अवस्था या भाव। २ पागलपन।

विक्षेप–पु० [सं० विक्षेपः] १ ऊपर या इधर-उधर फेंकना क्रिया। २ बिखेरना, छितराना क्रिया। ३ झटका, खटका। ४ भटकाव। ५ विघ्न, बाधा। ६ खण्डन। ७ असंयम। ८ सेना का पड़ाव। ९ एक प्रकार का अस्त्र।

विक्षोभ–पु० [सं०] १ मानसिक कष्ट, क्षोभ, दुःख, उद्विग्नता। २ झगड़ा, टंटा।

विखंड–वि० [सं० विखण्डित] १ खण्ड-खण्ड, टुकड़ों में। खण्डित। २ विघटित। ३ खण्डित करने वाला।–पु० १ खण्ड, टुकड़ा। २ नाश, संहार।

विखंडण–वि० खण्डन या नाश करने वाला।

विखंडणो (णी)–क्रि० १ खण्ड-खण्ड करना, टुकड़े करना। २ खण्डित होना। ३ मिटना। ४ नाश-संहार करना। ५ तोड़ना, मिटाना।

विखंडा–वि० नाश करने वाली।

विख–वि० [सं० विख, विखय] १ कटी नाक वाला, नकटा। २ देखो 'विस'।

विखयंक–पु० सर्प, सांप।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विखइ (ई)–स्त्री० १ इन्द्रिय । २ देखो 'विसयी' ।
विखउ–देखो 'विखो' ।
विखकन्या–देखो 'विसकन्या' ।
विखकर–पु० [सं० विषकिरि] मयूर, मोर ।
विखकसेन–पु० [सं० विष्वक्सेन] १ ईश्वर, विष्णु । २ श्रीकृष्ण ।
विखगामी–वि० [सं० विषमगामी] (स्त्री० विषगामिणी) विषम गति से चलने वाला ।
विखणी (णी)–देखो 'वीखणो' (वी) ।
विखदातो–पु० [सं० विषदान्त] १ नाखून । २ सर्प, सांप ।
विखधर (धार, धारी)–देखो 'विसधर' ।
विखनग–पु० १ एक स्थावर विष । २ वछनाग नामक विष ।
विखनजर–स्त्री० १ कुटिल दृष्टि, बुरी निगाह, कुदृष्टि । –पु० २ शिव, महादेव ।
विखम (भ)–देखो 'विखभ' । —धुज = 'विखभधुज' ।
विखम–देखो 'विसम' ।—गत, गति, गती='विसमगति' ।—जुर, ज्वर ='विसमज्वर' । —नयण, नेण, नेत्र, नैण='विसम-नयण' । —बांण, बांण = 'विसमबांण' ।
विखमता–देखो 'विसमता' ।
विखमाजुध (जुध्ध युद्ध, युध)–देखो 'विसमायुध' ।
विखमारिख–पु० [स० विषम-ऋक्ष] छोटे नक्षत्र ।
विखमाखरण–पु० [सं० विषम-वर्ण] १ दग्धाक्षर । २ विषम वर्ण ।
विखमी–देखो 'विसम' । —बार, वार = 'विसमबार' ।
विखमेखु–पु० [सं० विषम-ईषु] कामदेव ।
विखम्मी–देखो 'विसम' । —बार, वार='विसमबार' ।
विखयंतकृत–पु० [स० विषयान्तकृत] शिव, महादेव ।
विखय–१ देखो 'विक्षय' । २ देखो 'विसय' ।
विखयारस–पु० [सं० विषयरस] विषय भोग, विलासिता ।
विखरणी (वी)–देखो 'बिखरणी' (वी) ।
विखरतन–पु० [सं० विकर्तन] सूरज, सूर्य, रवि ।
विखराणी (वी), विखरावणी (वी)–देखो 'बिखराणी' (वी) ।
विखवांन–वि० [सं० विषवान्] विष युक्त, जहरीला ।
विखवाद–वि० [सं० विषवाद] विषके समान, तुल्य । –पु० १ दुःख, पश्चाताप । २ कलह, झगड़ा । ३ विरोध ।
विखसुधार–पु० घृत, घी ।
विखहर–वि० विष का प्रभाव मिटाने वाला, विष नाशक । –पु० १ गरुड़ । २ विष नाशक औषधि । ३ विष निवारण मंत्र । ४ देखो 'विसधर' ।
विखहा–पु० [सं० विषहा] गरुड़ ।
विखांण–१ देखो 'विसांण' । २ देखो 'बखांण' ।
विखांणण–पु० [सं० विष+आनन] विषधर सर्प ।
विखांणू–देखो 'बखांण' ।
विखांतक–पु० [सं० विष-अन्तक] शिव, महादेव ।
विखांन–देखो 'विसांण' ।
विखाइत, विखाती–देखो 'विखायत' ।
विखाद–देखो 'विसाद' ।
विखादो–देखो 'विसादी' ।
विखायत (तो, ती)–वि० १ राज द्रोही, बागी । २ संकटावस्था में, संकट से पीड़ित, दुःखी । ३ लुटेरा, डाकू । –पु० १ संकट से घिरा व्यक्ति, आफत में फंसा व्यक्ति । २ संकट पूर्ण स्थिति, आपात् काल ।
विखारी–देखो 'भिखारी' ।
विखावण–वि० [सं० विष्वाणः] १ कष्ट से पीड़ित, आपात् ग्रस्त । २ भूखा क्षुधा पीड़ित । –पु० भोजन ।
विखासइ–पु० दृढ़ विश्वास ।
विखिक–देखो 'विसख' ।
विखिया–देखो 'विसय' ।
विखियात–देखो 'विख्यात' ।
विखोया–देखो 'विसय' ।
विखुकसेन–देखो 'विखकसेन' ।
विखुटणी (वी)–देखो 'विक्षेप' ।
विखेर, विखेर–स्त्री० बिखेरने की क्रिया या भाव, बिखराव ।
विखेराणी (वी), विखेरावणी (वी)–देखो 'बिखराणी' (वी) ।
विखेरी, विखेरी–पु० [सं० विकीर्ण] १ बिखरे होने की अवस्था या स्थिति । २ बिखरी हुई सामग्री । ३ बिखरा सामान या कचरा । –वि० फैला हुआ, व्याप्त ।
विखं–क्रि० वि० १ समय में । २ देखो 'विसय' ।
विखंआगळ–वि० [सं० विपद्-अर्गला] विपत्ति में साथ देने वाला, दुःख का साथी, मददगार ।
विखोड़–स्त्री० अप्रशंसा, निन्दा हंसी ।
विखोड़णी (वी)–क्रि० १ अप्रशंसा करना, निंदा करना । २ हंसी करना ।
विखोरणी (वी), विखोरणी (वी)–देखो 'बखेरणी' (वी) ।
विखोरी, विखोरी–देखो 'विखेरी' ।
विखो, विखो–पु० [सं० विष्] १ किसी भी प्रकार का संकट या दुःख । २ राजद्रोह, बगावत । ३ कष्ट, दुःख, विपत्ति, संकट । ४ अशांति, क्षोभ । ५ संकट का समय, कष्ट का समय । ६ उपद्रव । ७ निर्धनता । ८ विछोह, वियोग ।
विख्ख–देखो 'विस' ।
विख्यात–वि० [सं०] प्रसिद्ध, मशहूर । –(स्त्री० विख्याता) १ कवि । २ एक राक्षस ।
विख्याति–स्त्री० [सं०] १ प्रसिद्धि, शोहरत । २ कीर्ति, यश ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विगंछावात–पु० एक प्रकार का वात रोग।

विगंध–वि० [सं० वि+गन्ध] १ जिसमें किसी प्रकार की कोई गंध न हो। गंध रहित। २ सुगंधदार।

विगड़णो (बो)–देखो 'बिगड़णो' (बो)।

विगड़ाणो (बो)–देखो 'बिगड़ाणो' (बो)।

विगड़ायळ–देखो 'बिगड़ायल'।

विगड़ी–देखो 'विकट'।

विगट–देखो 'विकट'।

विगड़ु–वि० दृढ़।

विगत–वि० १ अतीत, बीता हुआ, वर्तमान से पूर्व का। २ अंतिम या बीते हुए से पूर्व का। ३ इधर-उधर गया हुआ। ४ निष्प्रभ, कान्तिहीन। ५ रहित, विहीन। –वि० १ विवरण, ब्योरा। २ वृत्तान्त, हाल। ३ इतिहास। ४ हिसाब। ५ परिचय, जानकारी। ६ सूची, नामावली। ७ घटना। ८ वर्णन सूची, तफसील। ९ संख्या, गिनती। १० विशेष मुक्ति, मोक्ष। ११ अधोगति गया हुआ प्राणी।

विगतवार–क्रि० वि० १ ब्योरे वार, क्रमशः। २ विस्तार सहित। ३ विस्तार के साथ।

विगतावणो (बो)–क्रि० १ सूचित करना, सूचना देना। २ सावधान करना, सतर्क करना। ३ समझाना, समझाकर कहना।

विगताळ (छू, ळी, ळो)–वि० (स्त्री० विगताळी) १ चरित्र वाला, लीलाधारी। २ सुन्दर, मनोहर। ३ अपवित्र। ४ सुरुचि पूर्ण। ५ शौर्य पूर्ण, वीरता युक्त। ६ प्रिय, प्यारा। ७ बहादुर, वीर।

विगतावणो (बो)–देखो 'विगतावणो' (बो)।

विगतावळी–स्त्री० सूची, विवरणिका।

विगति (ती)–स्त्री० १ अवस्था व हालत। २ फर्क, अन्तर। ३ देखो 'विगत'।

विगत्त, विगत्ति (त्ती)–वि० [सं० वि-गति] १ तेज गति वाला, तीव्रगामी। २ देखो 'विगत'।

विगन–देखो 'विघ्न'।

विगमान, विगम्यान–देखो 'विग्यान'।

विगयति–देखो 'विग्यप्ति'।

विगय–देखो 'विगत'।

विगर–देखो 'बगैर'।

विगलिंदिय, विगलिंद्रिय–देखो विकलेंद्रिय'।

विगलित–वि० [सं०] १ टपक कर या चू कर निकला हुआ। २ पिघला हुआ। ३ शिथिल। ४ बिगड़ा हुआ। ५ म्लान। ६ विसर्जित। ७ अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ।

विगवत–वि० लम्बी यात्रा करने में समर्थ।

विगसणो (बो)–देखो 'विकसणो' (बो)।

विगसाड़णो (बो), विगसाणो (बो), विगसावणो (बो)–देखो 'विकसाणो' (बो)।

विगहा–देखो 'विकत्था'।

विगानो–देखो 'बेगानो'।

विगाड़–देखो 'बिगाड़'।

विगाड़णो (बो)–देखो 'बिगाड़णो' (बो)।

विगाड़ू–वि० १ हानिकारक। २ नुकसान करने वाला। ३ विध्वंसक।

विगाड़ो–देखो 'बिगाड़'।

विगाथा–देखो 'विगाहा'।

विगारणो (बो)–देखो 'बिगाड़णो' (बो)।

विगारु (रू)–देखो 'बिगाड़ू'।

विगास–देखो 'विकास'।

विगाह–देखो 'विगाहा'।

विगाहन–पु० एक प्राचीन राजा।

विगाहा–पु० [सं० विगाथा] आर्या छन्द का एक भेद।

विगिति–देखो 'विगत'।

विगुण–वि० गुण रहित, निर्गुण।

विगुल–देखो 'बिगुण'।

विगूंचणो (बो), विगूचणो (बो), विगूंचणो (बो), विगूवणो (बो)–देखो 'विगूचणो' (बो)।

विगूत–वि० [सं० विगुप्त] छुपा हुआ, गुप्त। (स्त्री० विगूती)

विगूतणो (बो), विगूतणो (बो)–क्रि० १ कष्टमय होना, दुःखित होना। २ निन्दित होना। ३ बरबाद होना, नष्ट होना। ४ छुपना, लुकना। ५ व्याकुल होना। ६ कोसना। ७ ढका हुआ होना, आवेष्टित होना।

विगूवणो (बो)–देखो विगोणो' (बो)।

विगे (गं)–पु० १ दूध, दही, घृत आदि छः खाद्य पदार्थ। २ इन पदार्थों का परहेज। (जैन)

विगोचणो (बो)–देखो 'विगोचणो' (बो)।

विगोणो (बो), विगोणो (बो)–क्रि० १ नष्ट करना, बरबाद करना। २ नाश करना, विध्वंस करना। ३ दुख देना, कष्ट देना। ४ बदनाम करना, निंदा करना। ५ दुर्दशा करना। ६ छिपाना। ७ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना। ८ खराब करना, गन्दा करना। ९ भिगोना, गीला करना।

विगोणो विगोनो–पु० १ झगड़ा, कलह। २ विवाद, समस्या, टंटा। ३ देखो 'बेगानो'।

विगोरणो (बो)–देखो 'बगोरणो' (बो)।

विगोवणो (बो)–देखो 'विगोणो' (बो)।

विगो–देखो 'विगो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विग्गाहा–देखो 'विणाहा'।

विग्घ–देखो 'विघ्न'।

विग्य–पु० [सं० विज्ञ] ब्रह्मा।–वि० १ बुद्धिमान, समझदार। २ विद्वान, पंडित। ३ विशेष जानकार।

विग्यता–स्त्री० [सं० विज्ञता] १ बुद्धिमत्ता, समझदारी। २ पांडित्य, विद्वत्ता। ३ विशेष जानकारी।

विग्यप्त–वि० [सं० विज्ञप्त] बतलाया हुआ, सूचित।

विग्यप्ति (प्ती)–स्त्री० [सं० विज्ञप्ति] १ बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव। २ इश्तिहार, विज्ञापन।

विग्यान–पु० [सं० विज्ञान] १ जानकारी, ज्ञान। २ आविष्कृत सत्य व प्राकृतिक नियमों पर आधारित क्रमबद्ध, व्यवस्थित ज्ञान। ३ भौतिक जगत् से संबंधित उक्त प्रकार का ज्ञान। ४ आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। ५ आत्मा। ६ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। ७ कर्म। ८ कला। ९ ब्रह्म साक्षात्कार का ज्ञान। १० निश्चयात्मक बुद्धि। ११ एक शास्त्र विशेष।

विग्यानपाद–पु० [सं० विज्ञान पाद] वेदव्यास का एक नाम।

विग्यानवाद–पु० [सं० विज्ञानवाद] १ ब्रह्म व आत्मा की एकता प्रतिपादित करने वाला सिद्धान्त। २ विज्ञान संबंधी सिद्धान्त।

विग्यानवादी–पु० [सं० विज्ञानवादिन्] १ विज्ञान शास्त्र का समर्थक। २ योग मार्ग का अनुसरण करने वाला योगी।

विग्यानी–वि० [सं० विज्ञानिन्] १ विज्ञान शास्त्र का पंडित, वैज्ञानिक। २ ज्ञानी, पंडित।–स्त्री० १ एक देवी विशेष। २ देखो 'विग्यान'।

विग्यापक–वि० [सं० विज्ञापक] १ दूसरों को जानकारी कराने वाला। २ किसी प्रकार का ज्ञापन या प्रचार कराने वाला।

विग्यापणी (नी)–क्रि० [सं० विज्ञापनम्] १ सब को बताना, जानकारी देना। २ प्रचार करना। ३ प्रकाशित करना।

विग्यापन–पु० [सं० विज्ञापन] १ जानकारी देने, सूचना देने की क्रिया। २ प्रचार करने की क्रिया। ३ प्रचार के लिये प्रकाशित की गई सूचना, इश्तिहार।

विग्रह–पु० [सं० विग्रहः] १ पृथक करने की क्रिया, विच्छेद। २ वैर, विरोध। ३ कलह-झगड़ा। ४ युद्ध, समर। ५ नीति के छः गुणों में से एक। ६ सेना, फौज। ७ घोड़ा, छल। ८ शिव का एक नाम। ९ प्रतिमा, मूर्ति १० कोई तत्त्व विशेष। ११ शृंगार, सजावट। १२ कष्ट, पीड़ा, दुःख। १३ फैलाव, प्रसार। १४ रूप, आकृति। —चारी–पु० लड़ाई, टंटा।

विग्रहणी (नी)–क्रि० १ युद्ध या लड़ाई करना। २ संहार करना, मारना। ३ नाश या नष्ट करना। ४ षड्यन्त्र करना। ५ शृंगारना, सजाना। ६ घेरा डालना, घेरना। ७ दूर करना, हटाना। ९ कलह करना। १० वीरगति प्राप्त होना।

विग्रही–वि० [सं० विग्रहिन्] १ लड़ाई-झगड़ा करने वाला, युद्ध करने वाला। २ संहार करने वाला, मारने वाला। ३ नष्ट करने वाला। ४ षड्यंत्रकारी। ५ शृंगारने वाला, सजाने वाला। ६ घेरा डालने वाला। ७ दूर करने या हटाने वाला।

विघटण (न)–पु० [सं० विघटनम्] १ संयोजक अंगों को अलग अलग करने की क्रिया। २ बिखराव, गठन का अभाव। ३ तोड़-फोड़। ४ गठन का निरस्तीकरण।

विघटिका–स्त्री० [सं०] घड़ी का ६० वां अंश, २४ सैकण्ड।

विघटित–वि० [सं०] १ जिसके संयोजक अंग बिखर गये हों। २ बिखरा हुआ, जो गठित न हो। ३ तोड़ा-फोड़ा, निरस्त किया हुआ।

विघन, विघ्न–पु० [सं० विघनः] १ घन, हथौड़ा। २ देखो 'विघ्न'।—क, करण, कारी = 'विघ्नकारी'।—जीत = 'विघ्नजीत'।—नायक='विघ्ननायक'।—नासक= 'विघ्ननासक'।—पत, पति, पती = 'विघ्नपति'।—प्राण= 'विघ्नप्राण'।—राज='विघ्नराज'।—विनायक= 'विघ्नविनायक'।—हरण='विघ्नहरण'।

विघनेस–देखो 'विघ्नेस'।

विघस–देखो 'विघ्न'।

विघसणी (नी)–क्रि० नष्ट होना, मिटना।

विघसी–वि० विघ्नकारक, बाधक।

विघात–पु० [सं० विघातः] १ नाश। २ आघात, प्रहार, चोट। ३ विघ्न, बाधा।

विघातक (ती)–वि० १ विघ्न डालने वाला, बाधक। २ आघात करने वाला, प्रहार करने वाला। ३ नाश करने वाला।

विघातकारिणी–स्त्री० [सं०] एक प्रकार की विद्या विशेष।

विघातन–स्त्री० [सं०] १ नाश करने की क्रिया या भाव। २ हत्या करने की क्रिया या भाव। ३ बाधा डालने की क्रिया। ४ प्रहार की क्रिया।

विघ्न–पु० [सं०] १ विघ्न, बाधा, व्यवधान। २ रोक, रुकावट। ३ समर। ४ अमंगल, अशुभ। ५ एक राक्षस विशेष। —क, करण, कारी–वि० बाधा, व्यवधान डालने वाला। शत्रु, वैरी।—जित, जीत–पु० गणेश।—नायक, नासक, पत, पति, पती–पु० गणेश, गजानन।—प्राण–पु० बलराम, हलधर।—हरण–पु० गणेश, गजानन।

विघ्नसंतुस्ट–पु० [सं० विघ्नसंतुष्ट] चौसठ भैरवों में से एक।

विघ्नेस–पु० [सं० विघ्न-ईश] गणेश, गजानन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिड़ंग (गि, गी)–देखो 'बिडंग'।

बिड़–पु० १ बीहड़ वन, जंगल। २ विषयभोग, काम क्रीड़ा। ३ शत्रु, दुश्मन।–वि० [सं० घिट] विषयी, कामी।

बिड़ओजा–देखो 'बिडूजा'।—वाह='बिडूजावाह'।

बिड़णी (बी)–देखो 'बिठणी' (बी)।

बिड़द–१ देखो 'बिरुद'। २ देखो 'बिड़द'।

बिड़वड़ी–स्त्री० १ वृद्धि, बढ़ोतरी। २ विवाहादि के मांगलिक कार्य या अवसर।

बिड़वड़ी–स्त्री० [सं० वृद्धि वटी] विवाहारंभ में मातृका पूजन के लिये बनाई जाने वाली बड़ी, मूंगोड़ी।

बिड़वविनायक–पु० [सं० वृद्धि विनायक] मांगलिक कार्यारंभ के समय प्रथम पूजे जाने या स्थापित किये जाने वाले विनायक, गणेश।

बिड़वाणी (बी), बिड़वाड़णी (बी)–देखो 'बिरुदाणी' (बी)।

बिड़वाव–देखो 'बिरुद'।

बिड़ली–पु० १ ढेर, समूह। २ देखो 'बिड़ली'।

बिड़ाणी–देखो 'बिडांणी'।

बिड़ूजा–देखो 'बिडूजा'।—वाह = 'बिडूजावाह'।

बिड़ोजा–देखो 'बिडूजा'।

बिड़ी–पु० घूहर के नीचे का भाग।

बिणमा–क्रि० वि० बीच में, मध्य में।

बिण, बिणइ–देखो 'बीच'।

बिणकणी (बी)–देखो 'बिचकणी' (बी)।

बिणकाक्ष–पु० एक प्राचीन राजा।

बिणकाणी (बी),, बिणकाड़णी (बी)–क्रि० १ चौंकाना। २ बिगाड़ना, विकृत करना।

बिणकिल–पु० १ कुसुम विशेष। २ एक सुगन्धित वृक्ष।

बिणक्खण, बिणक्खणि–देखो 'बिचक्षण'।

बिणक्ष–पु० एक दानव विशेष।

बिणक्खण–वि० [सं० विचक्षण](स्त्री० बिणक्खणा) १ पारदर्शी। २ सतर्क, सावधान। ३ बुद्धिमान, चतुर। ४ पंडित, कवि। ५ निपुण, योग्य, काबिल। ६ विचित्र, अद्भुत। ७ शुभ।

बिणक्खणा–स्त्री० १ चतुर स्त्री। २ कुंआ नामक औषधि।

बिणक्खिण–देखो बिचक्षण'।

बिणक्ख–वि० [सं० विचक्षुस्] १ दृष्टिहीन, अंधा। २ उदास, परेशान।–पु० एक पौराणिक राजा।

बिणक्खण–देखो 'बिचक्षण'।

बिणक्खणी–१ देखो 'बिचक्षणा'। २ देखो 'बिचक्षण'।

बिणक्खण–देखो 'बिचक्षण'।

बिणक्खनु, बिणक्खण–देखो 'बिचक्षण'।

बिणड़ण–देखो 'बिछुड़ण'।

बिणड़णी (बी)–देखो 'बिछुड़णी' (बी)।

बिणक्खण बिणक्खण, बिणक्खणी, बिणक्खन–देखो 'बिचक्षण'।

बिणत्र–देखो 'बिचित्र'।

बिणत्रांण–देखो 'बिचित्र'।

बिणबिणभू–पु० चांद, चंद्रमा।

बिणमां–देखो 'बीच'।

बिणरण–पु० १ पैर, चरण।–स्त्री० २ चलना क्रिया। ३ यात्रा, पर्यटन। भ्रमण।

बिणरणी (बी)–क्रि० १ व्यापक होना। व्याप्त होना। २ गमन करना घूमना। ३ गुजरना, जाना। ४ देखना, अवलोकन करना। ५ भिक्षाटन करना।

बिणरन–देखो 'बिचरण'।

बिणरवणी (बी)–देखो 'बिचरणी' (बी)।

बिणळ (ल)–वि० [सं० विचल] १ जो स्थिर न हो, हिला हुआ, अस्थिर। २ प्रतिज्ञाच्युत।

बिणळकी–वि० बीच का।–क्रि० वि० बीच में।

बिणळणी (बी), बिणलणी (बी)–क्रि० १ विचलित होना। २ पदच्युत होना। ३ हिम्मत हारना। निरुत्साहित होना। ४ वादे से मुकरना, बात से पीछे हटना। ५ प्रतिज्ञाच्युत होना। ६ विकृत, खराब होना। ७ बिखरना, तितर-बितर होना। ८ भाग जाना, मैदान छोड़ देना। ९ अस्थिर होना, चंचल होना। १० घबराना, भयभीत होना।

बिणळता, बिणलता–स्त्री० १ चंचलता। २ अस्थिरता। ३ घबराहट। ४ भयभीत होने की अवस्था या भाव।

बिणळाणी (बी), बिणलाणी (बी), बिणळावणी (बी), बिणलावणी (बी)–क्रि० १ विचलित करना। २ पदच्युत करना। ३ हिम्मत हराना। निरुत्साहित करना। ४ वादे से मुकराना, बात से पीछे हटाना। ५ प्रतिज्ञाच्युत करना। ६ विकृत या खराब करना। ७ बिखराना, तितर-बितर करना। ८ मैदान से भगाना। ९ अस्थिर करना। १० भयभीत करना। ११ परस्पर भिड़ाना, टक्कर दिलाना। १२ ध्वनि करना। १३ बीच में आना।

बिणळित, बिणलित–वि० [सं० विचलित] १ घबराया हुआ, भयभीत। २ पदच्युत। ३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साहित। ४ वादे से मुकरा हुआ, प्रतिज्ञाच्युत। ५ अस्थिर, चंचल। ६ विकृत। ७ बिखरा हुआ। ८ मैदान से भागा हुआ।

बिणळी–वि० (स्त्री० बिणळी) मध्य का, बीच का।

बिणळी-वासो–देखो 'बिचली-वासो'।

बिणवला (ल्ला)–स्त्री० मध्यस्थता, बीच-बचाव।

बिणवाळी–वि० १ बीच-बचाव करने वाला, मध्यस्थ। २ बीच का, बीच वाला।–पु० मध्यस्थता, बीच-बचाव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विचा–देखो 'बीच'।

विचार–पु० [सं० विचारः] १ किसी बात या विषय पर किया जाने वाला विचार-विमर्श। २ मनोभाव, खयाल, इरादा। ३ किसी मुकदमें का फैसला, निर्णय। ४ विचरने, घूमने-फिरने की क्रिया या भाव। ५ ज्ञान। ६ ध्यान, गौर। ७ निर्माण, बनावट, रचना। ८ निर्णय, फैसला। ९ निश्चय। १० संदेह, शंका, भ्रम। आशंका.

विचारक (करता)–वि० [सं० विचारकः] १ विचार करने वाला। २ तत्त्वचिंतक, मीमांसक। ३ न्यायकर्त्ता, न्यायाधीश। ४ निर्माण कर्त्ता, रचयिता। ५ विद्वान, बुद्धिमान। ६ ध्यान करने, गौर करने वाला। ७ संकल्प कर्त्ता। ८ सन्देह कर्त्ता।

विचारज्ञ–वि० [सं० विचारज्ञ] १ विचारक, मीमांसक। २ न्यायकर्त्ता।

विचारचतुर–वि० बुद्धिमान, विद्वान, समझदार।

विचारणीय–वि० १ विचार करने योग्य। २ जिस पर विचार किया जाना है।

विचारणो (बी)–क्रि० १ किसी बात या विषय पर विचार करना, सोचना। विचार-विमर्श करना। २ मुकदमे की सुनवाई करना। ३ सोचना-समझना। ४ ध्यान देना। ५ निर्माण करना, रचना करना। ६ निश्चय या संकल्प करना। ७ संदेह, शंका करना। ८ चिन्तन-मनन करना। ९ अनुसंधान या शोध करना। १० सोचना। ११ योजना बनाना।

विचारमान (वान)–वि० [सं० विचारवान्] विचार करने वाला, मीमांसक, समझदार।

विचारशक्ति (शक्ती, शक्त्ति, शगति, शगती)–स्त्री० [सं० विचारशक्ति] सोचने-विचारने की शक्ति, बुद्धि।

विचारशील–वि० [सं० विचारशील] विचारवान, समझदार, सोचविचार कर काम करने वाला।

विचारशीलता–स्त्री० सोचने-विचारने की भावना, बुद्धिमत्ता।

विचारस्थल, विचारालय–पु० १ विचार-विमर्श करने का स्थान। २ न्यायालय।

विचारि–देखो 'विचार'।

विचारिका–स्त्री० दासी, नौकरानी।

विचारित–वि० १ जिस पर विचार हो चुका हो। २ सोचा हुआ। ३ पूर्व निश्चित।

विचारी–स्त्री० [सं० विचारिन्] १ पृथ्वी, धरती। २ बेचारी। –पु० कबंध नामक राक्षस का एक पुत्र।

विचारु–देखो 'विचार'।

विचारी–देखो 'बेचारी'।

विचाळ, विचाल (ळा, ळि, ळी, ळु, ळे, ळं)–देखो 'बिचै'।

विचाळी–वि० बीच का, मध्यस्थ।

विचि–स्त्री० [सं०] १ लहर, तरंग। २ कटि, कमर। ३ देखो 'बीच'।

विचित (त्त)–वि० [सं०] १ अचेत, बेहोश। २ अनवस्थ, मग्न। ३ देखो 'विचित्र'।

विचित्र–वि० [सं०] १ अद्भुत, अनोखा, विलक्षण, विस्मयकारी। २ सुन्दर, मनोहर। ३ कई प्रकार के रंग एवं बलों वाला। ४ चतुर, होशियार, बुद्धिमान। ५ चित्रित ६ मनोरंजक। –पु० १ रौच्य मुनि का एक पुत्र। २ अशोक वृक्ष। ३ तिलक वृक्ष। ४ भोज पत्र वृक्ष। ५ धर्मराज का एक लेखक। ६ मुसलमान, यवन।

विचित्रता–स्त्री० १ विचित्र होने की अवस्था या भाव। २ अनोखापन, मनोहरता, सुन्दरता।

विचित्रवीरज (य, यु, यू य्य) विचित्रवीरज (य, यु, यू, य्य)–पु० [सं० विचित्रवीर्य] १ कुरुवंशीय राजा शान्तनु व सत्यवती के द्वितीय पुत्र का नाम। २ एक शिव भक्त विशेष। ३ वीरभद्र नामक शिव का गण।

विचित्रशाळा–स्त्री० [सं० विचित्रशाला] विचित्र वस्तुओं का संग्रहालय।

विचित्रांण–देखो 'विचित्र'।

विचित्रा–स्त्री० एक रागिनी।

विचित्रित–वि० [सं०] १ अनेक रंगों से चित्रित, रंग-बिरंगा। २ अनोखा, अद्भुत।

विची–१ देखो 'विचि'। २ देखो 'बीच'।

विचेटियो, विचेटियो–पु० (स्त्री० विचेटकी) मंझला पुत्र या भाई।–वि० मध्य का, बीच का, मझोला।

विचेत–देखो 'बेचेत'।

विचेतन–वि० [स०] १ अचेत, संज्ञाहीन। बेहोश। २ जीव रहित, मृत। ३ जड़।

विचेतस–पु० [सं०] मध्य देवों में से एक।–वि० १ विवेकहीन। २ दुष्ट। ३ विकल, परेशान।

विचेरण–क्रि० वि० मध्य में, बीच में।

विचेस्ट–वि० [स० विचेष्ट] चेष्टाहीन, निश्चेष्ट।

विचै–देखो 'बिचै'।

विच्छक्षण–देखो 'विचक्षण'।

विच्छार–देखो 'विचार'।

विच्छवांन–देखो 'बिछियो'।

विच्छाय, विच्छाया–पु० [सं० वि+छाया] १ पक्षियों की छाया। २ भूत, प्रेतादि, जिनकी छाया नहीं पड़ती।

विच्छिअ–पु० [सं० वृश्चिक] बिच्छु।

विच्छिण्ण (ण्ण)–वि० [सं० विस्तीर्ण] १ फैला हुआ, विस्तीर्ण। २ देखो 'विच्छिन्न'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिच्छिति, बिच्छित्ति-स्त्री० [सं बिच्छित्तिः] १ काटना, टुकड़ा करना क्रिया। २ विच्छेदन। ३ अलगाव। ४ लापरवाही, बेढंगापन। ५ स्त्रियों की एक शृंगारिक चेष्टा। ६ साहित्य का चमत्कार। ७ एक स्वाभाविक अलंकार विशेष।

बिच्छिन्न (न्न)-वि० [सं० बिछिन्न] १ जुदा, पृथक, अलग। २ जिसका विच्छेद हुआ हो। ३ समाप्त किया हुआ।

बिच्छु-देखो 'बिच्छू'।

बिच्छुड़णी (बी)-देखो 'बिछूटणी' (बी)।

बिच्छुड़ी-देखो 'बिच्छुड़ी'।

बिच्छुड़ो, बिच्छू (डू)-देखो 'बिच्छू'।

बिच्छेद-पु० [सं०] १ छेद कर या काट कर अलग करने की क्रिया। २ क्रम भंग की स्थिति। ३ नाते-रिश्ते टूटने की दशा। ४ निषेध। ५ परिच्छेद, अध्याय। ६ बीच का खाली स्थान, अवकाश। ७ विभाग या टुकड़े करने की क्रिया।

बिच्छेदक-वि० [सं०] १ काटने वाला, अलग करने वाला। २ नाते-रिश्ते तोड़ने वाला। ३ विभाग करने वाला।

बिच्छेदण (न)-पु० [सं०] काट-छांट, अलगाव।

बिच्छेदणो (बी)-पु० १ छेद कर या काट कर अलग करना। २ नाते-रिश्ते तोड़ना। ३ टुकड़े करना, अलग करना। ४ छोड़ना, मुक्त करना। ५ खोलना। ६ बीच में क्रम तोड़ना।

बिच्छेदो-वि० [सं० बिच्छेदिन्] बिच्छेद करने वाला।

बिच्छोड़णी (बी), बिच्छोटणी (बी)-देखो 'बिछोड़णी' (बी)।

बिच्छोह, बिच्छोह-देखो 'बिछोह'।

बिच्छोहणी (बी)-देखो 'बिछोहणी' (बी)।

बिच्यत्रि-देखो 'बिचित्र'।

बिछंडणी (बी), बिछडणी (बी)-क्रि० १ मारना, संहार करना। २ देखो 'बिछोड़णी' (बी)।

बिछड़णी (बी), बिछड़णी (बी)-देखो 'बिछुड़णी' (बी)।

बिछड़ाणी (बी), बिछड़ावणी (बी), बिछड़ाणी (बी), बिछड़ावणी (बी)-देखो 'बिछुड़ाणी' (बी)।

बिछटणी (बी), बिछटूणी (बी)-देखो 'बिछूटणी' (बी)।

बिछण, बिछण-पु० गाय के स्तन होने का पानी।

बिछणी (बी), बिछणी (बी)-देखो 'बिछणी' (बी)।

बिछरणी (बी), बिछरणी (बी)-१ देखो 'बिचारणी' (बी)। २ देखो 'बिछुड़णी' (बी)।

बिछळणी (बी)-क्रि० १ साफ करना, धोना। २ देखो 'बिचळणी' (बी)।

बिछळाणी (बी), बिछळावणी (बी)-१देखो 'बिचलाणी' (बी)। २ देखो 'बिचळणी' (बी)।

बिछवाणी (बी), बिछवावणी (बी)-क्रि० बिछायत कराना, बिछवाना। बिछाने का कार्य कराना।

बिछवो (ह्वो)-१ देखो 'बिछवो'। २ देखो 'बिछोह'।

बिछांणी (नी), बिछांणो-देखो 'बिछांणी'।

बिछाइत, बिछाइत-देखो 'बिछायत'।

बिछाणी (बी), बिछाणो (बो)-देखो 'बिछाणी' (बी)।

बिछात, बिछाति, बिछायत-देखो 'बिछायत'।

बिछायतु-पु० बिछाने का वस्त्र।

बिछाळ (ल)-देखो 'बिसाल'।

बिछावण (णी नी), बिछावण-देखो बिछाणी'।

बिछावणी (बी), बिछावणी (बी)-देखो 'बिछाणी' (बी)।

बिछियो, बिछियो, बिछोयो-देखो 'बिछियो'।

बिछुड़णी (बी), बिछुड़णी (बी)-देखो 'बिछुड़णी' (बी)।

बिछुड़ाणी (बी), बिछुड़ावणी (बी), बिछुड़ाणी (बी), बिछुड़ावणी (बी)-देखो 'बिछुड़ाणी' (बी)।

बिछुटणी (बी), बिछुटूणी (बी)-देखो 'बिछूटणी' (बी)।

बिछुटाणी (बी), बिछुटूणी (बी)-देखो 'बिछूटाणी' (बी)।

बिछुळणी (बी)-क्रि० धुलाई करना, धोना।

बिछुळाणी (बी), बिछुळावणी (बी)-क्रि० धुलाई कराना, धुलवाना।

बिछुवो (ह्वो)-देखो 'बिछोह'।

बिछू, बिछू-पु० १ विशाखा नक्षत्र का एक नाम। २ एक प्रकार का घोड़ा जिसकी पूंछ का अग्र भाग वक्र होता है। ३ देखो 'बिच्छू'।

बिछूट-स्त्री० छूटने की क्रिया या भाव।

बिछूटणी (बी)-१देखो 'बिछूटणी' (बी)। २ देखो 'बिछुड़णी' (बी)।

बिछूटाणी (बी), बिछूटूणी (बी)-१ देखो 'बिछूटाणी' (बी)। २ देखो बिछूवाणी' (बी)।

बिछेड़ो-पु० बिछोह, वियोग जुदाई।

बिछेव-पु० १ वियोग, बिछोह, जुदाई। २ देखो बिच्छेद'।

बिछेवो-पु० भंग होने की क्रिया, नाश।

बिछेरियो, बिछेरो-देखो 'बछेरो'।

बिछोई-वि० वियोगी।

बिछोड़णी (बी), बिछोड़णी (बी)-क्रि० १ साथ-साथ रहने वालों को पृथक करना, जुदा करना। २ वियोग में डालना। ३ साथी से अलग कर देना। ४ काटना।

बिछोटो, बिछोटो-पु० छुटकारा, मुक्ति।

बिछोडणी (बी)-देखो 'बिछोड़णी' (बी)।

बिछोणी, बिछोणी-देखो 'बिछोणी'।

बिछोणो (बी)-देखो 'बिछाणी' (बी)।

बिछोब-देखो 'बिछोह'।

बिछोवो, बिछोवो-देखो 'बिछोह'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिछोह, बिछोह–पु० १ जुदाई, वियोग, विरह। २ वियोग काल।

बिछोहणो (बो), बिछोहणो (बो)–क्रि० बिछुड़ना, जुदा होना, अलग होना। वियोग होना।

बिछोही–वि० वियोगी, विरही।

बिछोही, बिछोही–देखो 'बिछोह'।

बिछौनौ, बिछौनो–देखो 'बिछाणो'।

बिज–१ देखो 'बीजळी'। २ देखो 'बीजळा'।

बिजई–देखो 'बिजयी'।

बिजउरौ–देखो 'बिजोरो'।

बिजकणो (बो), बिजकणो (बो)–देखो 'बिचकणो' (बो)।

बिजकाणो(बो),बिजकावणो(बो),बिजकाणो(बो), बिजकावणो–(बो)देखो 'बिचकाणो' (बो)।

बिजड़ (बो)–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।

बिजड़हुत (ति, तो, तौ, त्थ, त्थी, त्थौ, थ, थी, थौ), बिजड़ाहुत (ति, तो, तौ, त्थ, त्थी, त्थौ, थ, थी, थौ, त्थौ)–देखो 'बीजळाहुथ'।

बिजड़ी–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।

बिजड़ोहुथ–देखो 'बीजळाहुथ'।

बिजड, बिजडी–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।

बिजति–वि० जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला।

बिजन–वि० [सं०] एकान्त, जन शून्य। –पु० [सं० व्यजनम्] १ हवा करने का पंखा, बीजन। २ देखो 'व्यजन'।

बिजनस–वि० १ दृढ़, पक्का। २ वास्तविक, बिलकुल।–क्रि०वि० १ निश्चित ही, अवश्य ही। २ जब, जिस समय।

बिजनाळियो–पु० एक प्रकार का नकुल, नेवला।

बिजनिस, बिजनेस–देखो 'बिजनस'।

बिजपंजर–देखो 'बिजयपंजर'।

बिजय(यु), बिजय–पु० [सं० विजयः] १ जीत, पराजय का विपर्याय। २ विवाद या लड़ाई में सफलता, जीत। ३ विष्णु का एक पार्षद। ४ अर्जुन का एक नाम। ५ यमराज। ६ विष्णु का एक नामान्तर। ७ बृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष। ८ शिव के त्रिशूल का नाम। ९ परशुरामजी द्वारा प्राप्त कर्ण के धनुष का नाम। १० राजा दशरथ का एक मंत्री। ११ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। १२ द्रुतविलंबित छंद का एक भेद।

बिजयक–वि० [सं० विजय-वकन] सदा विजयी रहने वाला।

बिजयकुंजर–पु० १ राजा की सवारी का हाथी। २ युद्ध के काम का हाथी; जिस पर विजय पताका रहती है।

बिजयकेतु–पु० [सं०] विजयपताका, ध्वज।

बिजयखंभ–पु० [सं० विजयस्तम्भ] कीर्तिस्तंभ, विजयस्तम्भ।

बिजयखार–देखो 'बिजयसार'।

बिजयघंट–पु० १ मंदिरों का बीरघंट। २ हाथी की झूल में बंधा रहने वाला घंटा।

बिजयछंद–पु० [सं० विजय.छंद] पांच सौ लटिकाओं का हार।

बिजयडिंडिमि–पु० [सं०] एक प्रकार का युद्ध वाद्य।

बिजयतीरथ–पु० [सं० विजयतीर्थ] एक तीर्थ विशेष।

बिजयदंड–पु० [सं० विजयदण्ड] सैनिकों का एक विभाग।

बिजयदसम (दसमी)–देखो 'बिजयादसमी'।

बिजयदुंदुभ (भि)–पु० युद्ध का विजय-वाद्य।

बिजयपंजर–पु० [सं० विजयः-पञ्जर] विजय प्राप्ति के लिये पढ़ा जाने वाला स्तोत्र।

बिजयपताका–स्त्री० [सं०] विजय का सूचक-ध्वज, चिह्न, पताका।

बिजयपरपटी–स्त्री० [सं० विजय पर्पटी] संग्रही रोग की एक औषधि।

बिजयपूनम (पूरणिमा)–स्त्री० [सं० विजयपूर्णिमा] विजय दशमी के बाद की पूर्णिमा।

बिजयभैरव–पु० वैद्यक में एक रसौषधि।

बिजयमरबळ–पु० [सं० विजय-मर्दल] एक प्रकार का ढोल।

बिजयमाळा (ला)–स्त्री० [सं० विजय माला] विजय के लिये पहनाई जाने वाला माला।

बिजयमेरु–पु० [सं०] सुमेरु पर्वत का एक नाम।

बिजययात्रा–स्त्री० [सं०] विजय प्राप्त करने का प्रयाण, यात्रा।

बिजयरस–पु० [सं०] वैद्यक में एक रस।

बिजयरूपपद्म–पु० [सं० विजय रूप पद्म] एक प्रकार का घोड़ा।

बिजयलक्ष्मी (लखमी, लखमी, लिखमी, लिखमी)–स्त्री० [सं० विजयलक्ष्मी] विजय की अधिष्ठात्री एक देवी।

बिजयवसंत, बिजयसरसती (सरस्वती)–स्त्री० एक रागिनी।

बिजयसामंत, बिजयसारंग–पु० [सं०] एक राग विशेष।

बिजयसार–पु० [सं०] १ उत्तम श्रेणी का लोहा, जिसके अस्त्र बनते थे। २ एक प्रकार का वृक्ष, जिसकी लकड़ी इमारती सामान के काम आती है।

बिजयसाहो–पु० मारवाड़ का एक प्राचीन सिक्का।

बिजयसिद्धि–स्त्री० [सं० विजयः+सिद्धि] विजय, जीत, सफलता।

बिजयसील–वि० सदा विजयी या सफल रहने वाला।

बिजयसूर–पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा।

बिजयसी–स्त्री० [सं० विजयश्री] १ एक रागिनी विशेष। २ विजयलक्ष्मी।

बिजयहरि (हरी, हारी)–पु० सुदृढ़ मोर्चा।

बिजया–स्त्री० [सं०] १ दुर्गा, देवी। २ दुर्गा की एक सहचरी। ३ गौतम की एक पुत्री। ४ यम की पत्नी। ५ वर्तमान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवसर्पिणी के दूसरे अर्हंत् की माता का नाम। ६ विश्वामित्र द्वारा श्रीराम को सिखाई गई एक विद्या। ७ श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ८ हरड़े, हरीतकी। ९ भंग, भांग। १० काश्मीर स्थित एक पवित्र तीर्थ। ११ एक प्रकार का शमी वृक्ष। १२ एक शुभ मुहूर्त। १३ एक वर्ण वृत्त। १४ एक मात्रिक छन्द विशेष। १५ देखो 'विजयादसमी'।

विजयाएकादसी–स्त्री० [सं० विजया एकादशी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। २ फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

विजयानंद–पु० [सं० विजयानन्द] संगीत में एक ताल।

विजयादसम (मी)–स्त्री० [सं० विजयादशमी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि। २ इस तिथि का पर्व या त्यौहार।

विजयासप्तमी (सातम)–स्त्री० [सं० विजयासप्तमी] रविवार को आने वाली सप्तमी, इस दिन श्रीराम की पूजा का विधान है।

विजयी, विजयु–वि० १ जीतने वाला। २ देखो 'विजय'।

विजयेस–पु० [सं० विजय-ईश] १ शिव, महादेव। २ विजय का अधिष्ठाता देव।

विजयोत्सव–पु० [सं० विजय-उत्सव] विजयदशमी का उत्सव।

विजर–पु० एक राक्षस।

विजरा–स्त्री० [सं०] ब्रह्म पुराण के अनुसार ब्रह्मलोक की एक नदी।

विजराज–देखो 'व्रजराज'।

विजळ (ळी), विजळी–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।

विजहारी–देखो 'विजयहारी'।

विजानु–पु० [सं० विजानु] तलवार चलाने का एक हाथ।

विजा–स्त्री० विद्या।

विजाइ (ई)–वि० [सं० विजाति] १ वंशज। २ विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

विजात–वि० [सं०] १ वर्ण संकर, दोगला। २ जन्म लिया हुआ।–पु० सखी छन्द का एक भेद।

विजाता–स्त्री० [सं०] १ सद्य प्रसूता स्त्री। २ वर्ण संकर स्त्री।

विजाति–स्त्री० [सं०] १ भिन्न या दूसरी जाति। २ भिन्न किस्म।

विजातीय–वि० [सं०] १ अन्य जाति का, भिन्न जाति का। २ चर्बीदार।

विजावत–पु० राठौड़ों की एक उपशाखा।

विजासण (णी)–देखो 'मावलिया'।

विजितास्व–पु० [सं० विजिताश्व] राजा पृथु का एक पुत्र।

विजित्वरा–स्त्री० [सं०] भगवती का एक नाम।

विजियामखी–पु० शिव, महादेव।

विजुजल, विजुजला, विजुजल, विजुजला–१ देखो 'बीजूझळ'। २ देखो 'बिजळी'।

विजुला–देखो 'बीजळा'।

विजुली–स्त्री० १ एक देवी का नाम। २ देखो 'बीजळा'। ३ देखो 'बीजळी'।

विजू–देखो 'विज्जु'।

विजूजळ, विजूजला, विजूजल–देखो 'बीजूझळ'।

विजूदूही–पु० दूहा छन्द का एक भेद।

विजेत, विजेता–वि० १ विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला। २ सफल रहने वाला।

विजै–देखो 'विजय'।

विजैउच्छव (उच्छव, उछब, उछव)–देखो 'विजयोत्सव'।

विजैकारी–वि० विजय कराने वाला।

विजैकारो–वि० विजय कराने वाला।

विजैखार–पु० [सं० विजय-क्षार] १ विजयसार लोह के क्षार से बनी औषधि। २ देखो 'विजयसार'।

विजैजात्रा–देखो 'विजययात्रा'।

विजैदसम (मी, म्मी) विजैदसम–देखो 'विजयादसमी'।

विजैमद–स्त्री० [सं० विजयमद] विजय की शोभा।

विजैमाळा–देखो 'विजयमाळ'।

विजैयात्रा–देखो 'विजययात्रा'।

विजैलछमी (लखमी, लछमी, सिखमी, सिलमी)–देखो 'विजयलक्ष्मी'।

विजैसाई (साही)–देखो 'विजयसाही'।

विजोग, विजोग–पु० १ वियोग। २ बिजोग।–वि० तप्त गर्म।

विजोगड़े (ड़ै), विजोगड़े–क्रि० वि० निमित्त हेतु, लिये।

विजोगिण (गिणी, गिन, गिनी)–देखो 'वियोगणी'।

विजोरी–स्त्री० खजूर का वृक्ष या पेड़।

विजोरी–देखो 'विजोरी'।

विजोहा–पु० [सं० विमोहा] एक वर्णिक छंद विशेष।

विज्ज, विज्जड़–१ देखो 'बीजळी'। २ देखो 'बीजळा'।

विज्जमाळ (माळा, माळि, माळी)–१ देखो 'विद्युन्माळ'। २ देखो 'विजयमाळ'।

विज्जल (ल)–१ देखो 'बीजळी'। २ देखो 'बीजळा'।

विज्जा–देखो 'विद्या'।

विज्जाओस–पु० १ विद्या या सिद्धि के बल पर आहार प्राप्त करने का दोष। २ विद्या या सिद्धि से बदला लेने का दोष।

विज्जाहार–देखो 'विद्याहर'।

विज्जु (ज्जू)–१ देखो 'विज्जु'। २ देखो 'बीजळी'।

विज्जुमाळी–पु० [सं० विद्युन्माली] पश्चिम स्थित एक पर्वत।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज्जूर–पु० खजूर का पेड़ विशेष ।
विज्जै–देखो 'विजय' ।
विज्जैदसम (मी, स्मी)–देखो 'विजयादसमी' ।
विज्या–स्त्री० आर्या या गाहा छन्द का एक भेद विशेष ।
विज्झगिरि (गिरि, गिरी)–पु० विंध्याचल पर्वत ।
विज्झासणि (णी)–देखो 'मावलियां' ।
विज्झोहा–देखो 'विजोहा' ।
विटंब–देखो 'विडंब' ।
विटंबण, विटंबणा (न, ना)–स्त्री० १ दुःख, कष्ट, पीड़ा । २ देखो 'विडंबना' ।
विटंबी–वि० १ दुःखी, पीड़ित । २ लंपट ।
विट–वि० [सं० विट] १ काम वासना अधिक रखने वाला, कामी । कामुक । २ धूर्त, चालाक । ३ मैथुन करवाने का आदी । ४ विषयी, ऐयाश । –पु० १ साहित्य में एक प्रकार का नायक । २ नारंगी का पेड़ । ३ मल, विष्ठा । ४ एक प्रकार का वर्ण ।
विटंक–पु० [सं०] १ आर्यावर्त के दक्षिण में नर्मदा के किनारे का एक प्राचीन प्रदेश । २ उक्त प्रदेश की एक प्राचीन जाति ।
विटंचर–पु० [सं०] ग्राम्य शूकर, गंडसूयर ।
विटणो (बो)–क्रि० [सं० वेष्टन्] आवेष्टित होना ।
विटप–पु० [सं० विटप.] १ वृक्ष, पेड़ । २ पेड़ या लता की शाखा । ३ अण्डकोशों के बीच का परदा ।
विटपल्ली–स्त्री० कुंज गली ।
विटपी–पु० [सं० विटपिन्] १ जिस वृक्ष में नई शाखाएँ या कोंपलें निकली हों । २ वृक्ष, पेड़ । ३ वन, जंगल । ४ वट वृक्ष । ५ अंजीर का वृक्ष ।
विटप–पु० प्रपंच, झंझट ।
विटभूत–पु० [सं०] वरुण की सभा में उपासना करने वाला एक असुर ।
विटल, विटल, विटळ–वि० (स्त्री० विटली) १ बिगड़ा हुआ, विकार युक्त । २ पतित, पथभ्रष्ट, भ्रष्ट । ३ व्यभिचारी । ४ दुष्ट । ५ बिगड़ा हुआ, बिगड़ैल ।
विटलणो (बो), विटलणो (बो), विटळणो (बो)–क्रि० १ विचलित होना, अस्थिर होना । २ मर्यादा रहित होना, कुनीति पूर्ण होना । ३ पथ भ्रष्ट होना, धर्मच्युत होना ।
विटलाणो (बो), विटलाणो (बो), विटळाणो (बो), विटळावणो (बो), विटलावणो (बो)–क्रि० १ विचलित करना, अस्थिर करना । २ मर्यादा रहित करना । ३ भ्रष्ट या धर्मच्युत करना ।
विटलियो, विटळो, विटलियो, विटळो–देखो 'विटळ' । (स्त्री० विटळी)
विटाणो (बो)–क्रि० सिकुड़ना ।
विटाळण, विटाळणो–वि० १ लज्जित करने वाला, कलंकित करने वाला । २ भ्रष्ट करने वाला ।
विटाळणो (बो), विटासणो (बो)–क्रि० १ विचलित करना, अस्थिर करना । २ पथ भ्रष्ट करना, धर्मच्युत करना । ३ कलंकित करना । ४ बदनाम करना ।
विटाळो–देखो 'वटाळो' । (स्त्री० विटाळी)
विटोप–पु० लोहे का टोप ।
विट्ठळ (ल), विट्ठळो (लो), विठळ (ल)–पु० [सं० विट्ठल] १ विष्णु का एक नाम । २ ईश्वर, परमेश्वर । ३ श्रीकृष्ण । ४ विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति । ५ पुष्टि मार्ग के प्रथम उत्तराधिकारी एवं वल्लभाचार्य के पुत्र । —नाथ–पु० भगवान विष्णु । पुष्टिमार्गी विट्ठलनाथ ।
विठलेसवर (स्वर)–देखो 'विट्ठळ' ।
विठायत–पु० बैठने का स्थान, बैठक ।
विठोरो–देखो 'मीठोरो' ।
विडंग–पु० [सं० वितुण्ड] (स्त्री० विडंगी) १ अश्व, घोड़ा । २ ऊंट । ३ वायविडिंग नामक झाड़ी । –वि० १ मस्त, उन्मत्त । २ बेपरवाह, निःशंक । ३ आजाद, स्वतंत्र । ४ उदासीन । ५ वीर, बहादुर ।
विडंगळी–स्त्री० बैलगाड़ी के अग्र भाग में बंधी रहने वाली दो लंबी लकड़ियां (डाई) ।
विडंगाळ–स्त्री० १ घोड़ी । २ देखो 'विडंग' ।
विडंगि (गो, गी)–देखो विडंग' । (स्त्री० विडंगी) ।
विडंब–पु० [सं० विडंब] १ नकल । २ कष्ट, पीड़ा, सन्ताप । ३ हंसी, मखौल, उपहास । ४ चाल-ढाल का अनुकरण ।
विडंबक–वि० [सं०] १ नकल, अनुकरण करने वाला । २ अपमान, तिरस्कार करने वाला । ३ हंसी, उपहास करने वाला । ४ कष्ट, संताप देने वाला ।
विडंबणो (बो)–क्रि० १ नकल या अनुकरण करना । २ अपमान तिरस्कार करना । ३ हंसी, उपहास करना । ४ प्रपंच या जाल फैलाना । ५ उद्वेग या दुःख उत्पन्न करना । ६ वेश बदलना ।
विडंबन, विडंबना–स्त्री० [सं० विडंबन] १ किसी की चाल-ढाल की नकल, अनुकरण । २ अपमान, तिरस्कार । ३ चिढ़ाना क्रिया । ४ उपहास, हंसी मजाक । ५ हास्यास्पद स्थिति । ६ प्रपंच, जंजाल । ७ उद्वेग, दुःख ।
विडंबी–देखो 'विडंबक' ।
विड–वि० १ अज्ञानी, अनजान । २ शत्रु, दुश्मन । ३ देखो 'विड' । ४ देखो 'विट' ।
विडओजा–देखो 'विडूजा' ।
विडणो (बो)–देखो 'विढणो' (दो)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विडद–देखो 'विरुद'।

विडरणी (की), विडरणी (बी)–क्रि० १ क्रोध करना, गुस्सा होना। २ नष्ट होना। ३ डरना।

विडरावणी (की), विडरावणी (बी), विडरावणी (बी)–क्रि० डराना, भयभीत करना।

विडरो–वि० १ कायर, डरपोक। २ दुःखी, व्याकुल।

विडरूप (पी), विडरूप–वि० १ कुरूप, बदसूरत। २ भयंकर, डरावना।

विडरूपता, विडरूपता–स्त्री० १ कुरूपता, बदसूरती। २ भयानकता, भयंकरता।

विडलूंण, विडलूण–पु० [सं० विडलवण] एक प्रकार का नमक, साँचर नामक।

विडस–पु० [सं० वडिश] मछली फंसाने का एक यन्त्र विशेष।

विडाण–देखो 'विड'।

विडाणो–वि० (स्त्री० विडाणी) १ भयंकर, भयावह। २ पराया, दूसरों का। ३ नाशवान। ४ अन्य। ५ दुश्मन का, शत्रु का।

विडांमण–वि० भयंकर, भयावह।

विडार–पु० नाश, संहार।–वि० नाश करने वाला, संहार करने वाला।

विडारक–पु० [सं०] बिल्ली, बिड़ाल।–वि० नाश, संहार करने वाला।

विडारण, विडारणो–वि० नाश करने वाला मिटाने वाला, संहारक, विध्वंसक।

विडारणी (बी)–क्रि० १ चीरना, फाड़ना। २ नाश करना, ध्वंस करना। मिटाना। ३ निवारण करना, मिटाना। ४ बिगाड़ना, बरबाद करना। ५ मारना। ६ तोड़ना। ७ पृथक करना, दूर हटाना, भगाना। ८ चीरना, विभक्त करना। ९ कुपित करना, क्रुद्ध करना। १० बिखेरना। ११ तोड़ना। १२ त्याग करना, छोड़ना। १३ उजाड़ करना, उजाड़ना।

विडाल (ल)–देखो 'विडाळ'।

विडालदृग–वि० बिल्ली के समान आँखों वाला।–पु० यवन, मुसलमान।

विडालव्रत्तिक–वि० बिल्ली के समान वृत्ति वाला।

विडालाक्ष–पु० [सं०] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा।

विडाव–पु० विशेष प्रकार का दाव।

विडावणो–वि० जो सुहावना न हो, अप्रिय, अरुचिकर।

विडूआ–पु० [सं० विडौजस्] इन्द्र।—वाज–पु० इन्द्र का वाहन, हाथी, ऐरावत।

विडुर–देखो 'विरुद'।

विडूरथ–पु० १ एक यादव। २ वसुदेवक का एक भाई। ३ एक पुरुवंशीय राजा।

विडोला–देखो 'विडूआ'।

विडोळ, विडोळ–वि० आकार रहित, बिना आकार का।

विडोळणी (बी), विडोळणी (बी)–क्रि० कम्पाना, कम्पित करना।

विड्डारणी (बी)–देखो 'विडारणी' (बी)।

विड्ढणी (बी)–देखो 'विढणी' (बी)।

विढ, विढक, विढण, विढणि–देखो 'वेढ'।

विढणी (बी)–क्रि० १ युद्ध करना संग्राम करना। २ लड़ना, झगड़ना। ३ भिड़ना, टक्कर लेना। ४ वीरगति प्राप्त करना। ५ फटना। ६ कटना।

विढाळ–पु० योद्धा।

विढंग–देखो विडंग'।

विणठणी (बी)–देखो 'वणठ्ठणी' (बी)

विण–१ देखो 'बिना'। २ देखो 'वण'।

विणग–देखो 'वाणिज्य'।

विणज विणज–पु० [सं० व्यंजन] १ पकाए हुए मीठे चावल। २ मिष्ठान्न, मिठाई। ३ देखो 'वाणिज्य'।

विणजणो (बी)–क्रि० १ व्यापार करना, व्यवसाय करना। २ रुपये कर्ज देना, उधार देना। ३ पूंजी का विनियोग करना।

विणजार, विणजारो, विणजारी–१ देखो 'विणजार'। २ देखो विणजारी' (स्त्री० विणजारड़ी)।

विणजारण, विणजारण–स्त्री० १ एक प्रकार की मैस २ बनजारिन स्त्री।

विणजारा, विणजारा–देखो 'विणजारा'।

विणजारियो–१ देखो 'विणजारी'। २ देखो 'विणजारी'।

विणजारी–पु० १ कमजोर जीवात्मा। २ देखो 'विणजारो'।

विणज्ज–१ देखो 'विणज'। २ देखो 'वाणिज्य'।

विणट्ठणी (बी)–देखो 'विणट्ठणी' (बी)।

विणट्ठो–देखो 'विणठो'।

विणठणी (बी)–देखो 'विणट्ठणी' (बी)।

विणठो–वि० (स्त्री० विणठी) १ खराब, बुरा। २ विनष्ट, नाश हुवा हुआ।

विणणी (बी)–१ देखो 'विणणी' (बी)। २ देखो 'वुणणी' (बी)। ३ देखो 'वणणी' (बी)।

विणति (ती), विणति–देखो 'वीणती'।

विणपक्ख–पु० [सं० वेणु-पक्ष] बाण, तीर।

विणमणा–वि० कमी रहित, पूर्ण।

विणय–देखो 'विनय'।

विणयाणी–देखो 'वणियाणी'।

विणवाट (ठ)–वि० मूर्ख।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विणसणकाळ–देखो 'विणसिणकाळ'।
विणसणो (बो)–क्रि० १ नाश होना, मिटना। २ बिगड़ना, खराब होना। ३ मरना, खत्म होना। ४ नाश करना मिटाना। ५ मारना, संहार करना। ६ बिगाड़ना, खराब करना।
विणसाडणो (बो), विणसाणो (बो)–देखो 'विणासणो' (बो)।
विणसिणकाळ–पु० [सं० विनाशकाल] १ बुरा समय, विनाश-काल। २ आपात काल।
विणा–देखो 'विना'।
विणाठणो (बो)–देखो 'विणट्ठणो (बो)'।
विणायक–देखो 'विनायक'।
विणावड, विणावटी–देखो 'वनावटी'।
विणास–देखो 'विनास'।
विणासणो (बो)–क्रि० १ नष्ट करना, नाश करना, मिटाना। २ मारना, संहार करना। ३ बिगाड़ करना, नुकसान करना। ४ बुरा करना।
विणासो, विणासु (सु)–१ देखो 'विनास'। २ देखो 'विनासी'।
विणि (णी)–१ देखो 'विना'। २ देखो 'वणी'। ३ देखो 'वीणी'।
विणियांणो, विणीयांणो, विणियाणी, विणीयांणी–देखो 'वणियांणी'।
विणु, (णु)–देखो 'विना'।
विणोकड़ी, विणोखड़ी विणोकड़ी, विणोखड़ी–स्त्री० [सं० वाणि-यष्टि] कपास का पौधा।
विणोद (वि)–पु० १ एक छन्द विशेष। २ देखो 'विनोद'।
वितंड, वितंड–पु० [सं०] १ हस्ती, हाथी। २ घोड़ा, अश्व। ३ सूरज, सूर्य। ४ घटखनी। –वि० १ जबरदस्त, जोरावर। २ मनमौजी, मस्त। ३ मूर्ख। ४ पागल। ५ उद्दण्ड, झगड़ालु। —मुख–पु० गजानन, विनायक।
वितंडा–स्त्री० [सं० वितण्डा] १ कुतर्क, अपनी बात पर किया जाने वाला जिद्द। २ व्यर्थ का झगड़ा, कहा-सुनी।
वितंडावाद–पु० [सं० वितण्डावाद] १ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। २ अपना मत स्थापन करने की क्रिया। ३ व्यर्थ का झगड़ा या कहा सुनी।
वितंती–देखो 'वितत'।
वित, वित–वि० [सं०] १ चतुर, निपुण। २ ज्ञाता। –पु० [सं० वित्त] १ पशु धन, मवेशी। २ धन दौलत, द्रव्य, सम्पत्ति।
वितकर–पु० धोखा, कपट।
वितड़णो (बो), वितड़णो (बो)–क्रि० बिगड़ना, विकृत होना।
वितड़ी (ड़ी)–देखो 'वित'।
वितणो (बो)–देखो 'बोतणो' (बो)।
वितत–पु० [सं०] १ तंतु या तारवाद्य। २ वाद्य ध्वनि। ढमाका। ३ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७४ वां ग्रह। –वि० विस्तृत, फैला हुआ; लंबा-चौड़ा।
विततपक्ष (पख)–पु० एक पक्षी विशेष।
वितत्य–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।
वितथ (थ्य)–पु० [सं०] १ झूठ, असत्य। २ भरद्वाज ऋषि का एक नाम। –वि० असत्य, झूठा।
वितदाता–पु० पिता। –वि० धन देने वाला, दातार।
वितद्रु–पु० [सं०] १ पंजाब की झेलम नदी का नाम। २ एक यादव।
वितपन्न–वि० [सं० व्युत्पन्न] शास्त्र आदिका पूर्ण ज्ञाता।
वितरक–वि० [सं०] वितरण करने वाला। –पु० [सं० वितर्क] १ तर्क के जवाब में तर्क, विवाद। २ संदेह, शक। ३ अनुमान। ४ धृतराष्ट्र का पुत्र एक राजा।
वितरण (न)–पु० [सं०] १ दान। २ अर्पण, समर्पण। ३ देना या बांटना क्रिया।
वितरणवांन (वांनी)–पु० दातार, दानी।
वितरणो (बो)–क्रि० १ अर्पण करना। २ बांटना, वितरण करना। ३ दान देना। ४ पुण्य करना।
वितरां–क्रि० वि० इतने में।
वितरित–वि० [सं०] १ बांटा हुआ। २ दान दिया हुआ। ३ अर्पण किया हुआ, अर्पित।
वितरेक–पु० एक उपमालंकार विशेष। –क्रि० वि० [सं० व्यतिरिक्त] छोड़कर, सिवा, अतिरिक्त।
वितरेकजथा–स्त्री० डिंगल-गीत रचना का एक अलंकार।
वितल (ल)–पु० [सं० वितल] १ सात पातालों में से तीसरा पाताल। २ पाताल। –वि० नीच, अधम, पतित।
वितसार (रं)–अव्य० यथा शक्ति।
वितस्ता–स्त्री० पंजाब की झेलम नदी का नाम।
वितान (क)–पु० [सं० वितानः] १ विस्तार, फैलाव। २ बड़ा चंदोवा। ३ सूर्य, रवि। ४ यज्ञ, हवन। –वि० १ रीता, खाली। २ उदास, खिन्न। ३ मूढ़। ४ पतित।
वितानां–स्त्री० [सं० विताना] भौत्य मनवन्तर के बृहद्भानु की माता का नाम।
विताणो (बो), विताणो (बो)–देखो 'विताणो' (बो)।
विताव–वि० [सं० वि-ताव] १ मंद, ठंडा। २ नम्र। ३ जोश या क्रोध रहित। ४ ताप रहित।
वितावणो (बो), विताबणो (बो)–देखो 'विताणो' (बो)।
विति–पु० [सं०] तुषित तथा साध्य देवों में से एक।
वितिक्रम–देखो 'व्यतिक्रम'।
वितिक्रमो–देखो 'व्यतिक्रमो'।
वितिपात–देखो 'व्यतिपात'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वितीत (त, ती)–देखो 'व्यतीत'।
वितीपात–देखो 'व्यतिपात'।
वितीपाती–देखो 'व्यतिपाती'।
वितुंड–देखो 'वितंड'।—वाद = 'वितंडावाद'।
वितु–वि० [सं० वर्तुल] १ गोलाकार, वर्तुलाकार। २ देखो 'वित'।
वितोड़णो (बो)–क्रि० तोड़ना।
वितोल–वि० [सं० वितुल्य] अतुल्य बलशाली।
वित्त–पु० [सं०] १ धन, सम्पत्ति, द्रव्य। २ एक आचार्य। ३ एक देव। ४ देखो 'वित'।
वित्तगोप्ता–पु० [सं०] कुबेर के भण्डारी का नाम।
वित्तज्ञान–पु० [सं० वित्त-ज्ञान] ७२ कलाओं में से एक।
वित्तणो (बो)–देखो 'बीतणो' (बो)।
वित्तदा–स्त्री० [सं०] एक स्कन्द मात्रिका विशेष।
वित्तनाथ–पु० [सं० वित्त-नाथ] १ कुबेर। २ कोषाधिकारी।
वित्तप (पत, पति, पती)–पु० [सं० वित्तप, वित्तपति] १ धन पति, कुबेर। २ कोषाध्यक्ष।
वित्तपाळ (ल)–पु० कुबेर का एक नाम।
वित्तपुर (पुरी)–स्त्री० कुबेर की अलकापुरी।
वित्तरणो (बो)–१ देखो 'विस्तरणो' (बो)। २ देखो 'वितरणो' (बो)।
वित्तहीण (न)–वि० [सं० वित्त-हीन] १ धन के अभाव वाला। २ गरीब, निर्धन। ३ दरिद्र।
वित्ति–देखो 'वीति'।
वित्तिकर (रु)–वि० [सं०] वृत्तिकर्ता।
वित्तेस–पु० [सं० वित्त-ईश] धनपति कुबेर।
वित्तेसर (सुर, स्वर)–पु० [सं० वित्त-ईश्वर] धनपति कुबेर।
वित्तो–सर्व० उतना।
वित्थर (रि, री)–देखो 'विस्तार'।
वित्थरणो (बो)–देखो 'विस्तरणो' (बो)।
वित्थार–देखो 'विस्तार'।
वित्थारणो (बो)–देखो 'विस्तारणो' (बो)।
वित्थुरणो (बो)–देखो 'विस्तरणो' (बो)।
वित्रप्त–वि० [सं० वितृप्त] १ जो तृप्त न हो, अतृप्त। २ असंतुष्ट।
वित्रभव–स्त्री० पूर्व व ईशान दिशा के मध्य की दिशा, कोण।
वित्रस–वि० [सं० वितृष] तृषा रहित, संतुष्ट।
वित्रस्थ–वि० [सं० वितृष्ण] तृष्णा रहित, निस्पृह, उदासीन।
वित्रहोत (होत्र)–देखो 'वीतिहोत्र'।
वित्रा, वित्रासुर–देखो 'व्रत्रासुर'।
वित्थ–देखो 'व्यथा'।
वित्थक–वि० थका हुआ।
वित्थकणो (बो)–क्रि० थकना, थकावट महसूस करना।
वित्थत–देखो 'वितथ'।
वित्थरणो (बो)–देखो 'विस्तरणो' (बो)।
वित्थराणो (बो)–देखो 'विस्तारणो' (बो)।
वित्था–देखो 'व्यथा'।
वित्थार–देखो 'विस्तार'।
वित्थारग–वि० विस्तार करने या फैलाने वाला।
वित्थारणो (बो)–देखो 'विस्तारणो' (बो)।
वित्थित–देखो 'व्यथित'।
वित्थुरणो (बो)–देखो 'विस्तरणो' (बो)।
वित्थ्य–पु० [सं० वीथि] पथ, मार्ग, रास्ता।
विदड–पु० [सं०] द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा।
विद–वि० [सं०] १ जानकार, ज्ञाता। २ पंडित, कवि। –पु० १ एक प्राचीन ऋषि। २ देखो 'विध'।
विदकणो (बो), विदकणो (बो)–क्रि० चौकना, चमकना।
विदकाउ–देखो 'विदको'।
विदग–देखो 'वोदग'।
विदर–१ देखो 'विदरी'। २ देखो 'विदुर'।
विदरण–देखो 'विदीरण'।
विदरणो (बो)–देखो 'विदीरणो' (बो)।
विदरभ–पु० [सं० विदर्भ] १ नौखण्डाधिपति ऋषभदेव के नौ पुत्रों में से एक। २ आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम। ३ एक यदुवंशी राजा। ४ एक ऋषि।
विदरभजा–स्त्री० [सं० विदर्भजा] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का एक नाम। २ राजा नल की पत्नी दमयन्ती का एक नाम। ३ श्रीकृष्ण की रानी रुक्मिणी का एक नाम।
विदरभा–स्त्री० [सं० विदर्भा] विदर्भ देश की राजधानी।
विदरभि–स्त्री० [सं० विदर्भि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।
विदराणी–स्त्री० दासी, सेविका।
विदरी–स्त्री० १ हुक्का। २ देखो 'विदुर'।
विदळ (ल)–पु० [सं० वि-दल] १ हौजड़ा, जनखा। २ शत्रु सेना। ३ एक राक्षस। ४ लाल रंग का सोना।
विदळणो (बो)–क्रि० दलित करना, नष्ट करना।
विदल्ल–पु० ध्रुव संधि नामक राजा का मंत्री।
विदवान–देखो 'विद्वान'।
विदवी–वि० सुन्दर, मनोहर।
विदवेस–देखो 'विद्वेष'।
विदवेसक–देखो 'विद्वेषक'।
विदवेसणी, विदवेसिणी–देखो 'विद्वेषिणी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिदवेसी–देखो बिद्देसी'।

बिदांत, बिदांती–देखो 'वेदांत'।

बिदाम–पु० १ एक छोटा सिक्का (महाजनी)। २ देखो 'बिदाम'। ३ देखो 'बादाम'।

बिदामी–देखो 'बादामी'।

बिदा, बिदाई, बिदायी, बिदा–स्त्री० [अ० वदाअ] १ प्रस्थान, रवानगी। रुखसत। २ प्रस्थान की अनुमति। ३ प्रयाण या पलायन की क्रिया। ४ प्रस्थान के समय दी जाने वाली भेंट। ५ कार्य मुक्त करने की क्रिया।

बिदारक–वि० [सं०] १ चीरने वाला, फाड़ने वाला, विदीर्ण करने वाला। २ संहार करने वाला।–पु० नदी की पहाड़ी या वृक्ष।

बिदारण–पु० [सं० बिदारणः] १ अधर्मियों का नाश करने वाले भगवान विष्णु। २ युद्ध, संग्राम। ३ नदी के बीच का वृक्ष। ४ चीर-फाड़। ५ मारना, हत्या करना क्रिया।

बिदारणी (बी)–क्रि० [सं० बिदारणम्] १ चीरना, फाड़ना; विदीर्ण करना। २ मारना, हत्या करना, संहारना। ३ नाश करना, मिटाना।

बिदारिकंद–देखो 'बिदारीकंद'।

बिदारिक–पु० शरीर के संधि स्थलों में होने वाला एक फोड़ा।

बिदारीकंद–पु० [सं०] एक प्रकार की लता व उसका कंद।

बिदारीगंधा–स्त्री० [सं०] शालपर्णी नामक झाड़ी विशेष।

बिदारुण–पु० एक प्राचीन राजा।

बिदावत–पु० १ कुटिल युक्ति, छल, प्रपंच। २ गुप्त रहस्य।

बिदाह–पु० [सं०] १ पित्त प्रकोप आदि से होने वाली शरीर में जलन। २ उत्सर्ग, दान।

बिदाहक–वि० [सं०] विदाह से उत्पन्न।

बिदाही–पु० [सं० बिदाहिन्] जलन उत्पन्न करने वाला पदार्थ।

बिदित–वि० [सं०] १ अवगत, ज्ञात। २ सूचित किया हुआ। ३ प्रसिद्ध, विख्यात। ४ इकरार किया हुआ।

बिदिया–देखो 'विद्या'।—धर = 'विद्याधर'।

बिदिस, बिदिसा, बिदिसि, बिदिसी–स्त्री० [सं० विदिशा] १ मालवा की एक पौराणिक नदी। २ एक प्राचीन राजधानी।

बिदीया–देखो 'विद्या'।

बिदीरण–वि० [सं० विदीर्ण] १ बीच से चिरा हुआ। फाड़ा हुआ। २ त्रुटित, नष्ट। ३ संहार किया हुआ, मृत।

बिदीरणी (बी)–क्रि० [सं० विदीर्णम्] १ फाड़ना, चीरना। २ मारना, संहार करना। ३ नाश करना। ४ मिटाना।

बिदु–पु० [सं०] १ घोड़े के कान के नीचे का हिस्सा। २ हाथी के मस्तक के बीच का भाग।–वि० विद्वान, पंडित।

बिदुख–देखो 'बिदुस'।

बिदुत, बिदुति–देखो 'विद्युत'।

बिदुसम–पु० भगवान विष्णु का एक नाम।

बिदुर (र)–पु० [सं० विदुर] १ पांडु के छोटे भाई जो अर्थ, धर्म व राजनीति में निपुण थे। २ पंडित व ज्ञानी पुरुष। ३ दासी पुत्र, सेवक। ४ विदूषक, मसखरा।

बिदुला–स्त्री० [सं०] सौवीर देश की राजरानी व संजय की माता।

बिदुस–वि० [सं० विदुष] (स्त्री० बिदुसी) १ विद्वान, पंडित, ज्ञानी। २ कवि। ३ चतुर, होशियार। ४ ज्योतिषी।

बिदुसणी (बी)–देखो 'बिदूसणी' (बी)।

बिदूण–पु० विभीषण का एक मंत्री।

बिदूर–वि० [सं०] बहुत, दूर।–पु० १ एक पर्वत जहां वैदूर्य मणि मिलती है। २ पुरु राजा बिदूरथ का एक नामान्तर।

बिदूरथ–पु० [सं०] १ पुरुवंश का एक राजा। २ एक यदु वंशीय राजा। ३ सावर्णि मनु के पुत्रों में से एक। ४ वृष्णिवंशीय एक क्षत्रिय। ५ श्रीराम की सेना का एक वानर।

बिदूसक–पु० [सं० बिदूषक] (स्त्री० बिदूसिका) १ दूसरे के दोष बताकर हंसी करने वाला व्यक्ति। २ हास्यास्पद चेष्टाएं करने वाला व्यक्ति, हास्य अभिनेता, मसखरा। ३ एक प्रकार का नायक। ४ कामुक या विषयी व्यक्ति।

बिदूसण–पु० [सं० बिदूषण] किसी पर विशेष रूप से दोष लगाने की क्रिया या भाव।

बिदूसणी (बी)–क्रि० १ कलंकित करना, दोष लगाना। २ कष्ट देना दुःख देना, सताना।

बिदे'–पु० [सं० विदेश] अन्य देश, पराया देश।

बिदेसि, बिदेसी (ड़ी)–वि० [सं० विदेशी] परदेश का, परदेश संबंधी।–पु० १ परदेश का निवासी। २ परदेश की वस्तु।

बिदेह–पु० [सं०] १ मिथिला नरेश निमि तथा सीरध्वज जनक का एक नाम। २ मिथिला नगर। ३ मिथिला का निवासी। ४ अन्य देह, देह परिवर्तन। ५ कामदेव।–वि० १ देह रहित, निराकार। २ देह की चिंता से मुक्त। ३ मृत।—कुमारी–स्त्री० सीता, जानकी।—पुर, पुरी–स्त्री० मिथिला नगरी।

बिदेहक–पु० [सं०] एक पर्वत का नाम।

बिदेहधी–स्त्री० [सं० विदेह-धीता] जनक सुता, जानकी, सीता।

बिदेहपुर (पुरी)–स्त्री० [सं० विदेह-पुर] मिथिला पुरी।

बिदेहा, बिदेही–स्त्री० [सं०] १ जनक पुरी, मिथिला। २ जानकी, सीता।–पु० १ ब्रह्म।

बिदेहेस–पु० [सं० विदेह-ईश] राजा जनक।

बिदोखणी (बी)–क्रि० १ अवलोकन करना, देखना। २ देखो 'बिदूसणी' (बी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विदोगत (ति)–देखो 'वेदोक्त'।
विदोसणी (णी)–देखो 'विदूसणी' (णी)।
विद्द–१ देखो 'विदा'। २ देखो 'विद्ध'।
विद्दत–पु० [अ० वहदत] अद्वैत भाव।
विद्दमान–देखो 'विद्यमान'।
विद्दस–वि० १ दुस्सह, असह्य। २ देखो 'विदुस'
विद्दा–देखो 'विदा'।
विद्दंस (स)–देखो 'विध्वंस'।
विद्ध–पु० १ कलह, झगड़ा। २ युद्ध, समर।–वि० [सं०] १ बीच में छेद किया हुआ। २ जिसमें बाधा पड़ी हो, बाधाग्रस्त। ३ चोट ग्रस्त। ४ देखो 'विध'।
विद्धि–१ देखो 'विध'। २ देखो 'विधि'।
विध्न–पु० [सं०] १ विश्वामित्र के कुल का एक गोत्रकार। २ देखो 'विद्या'।
विद्यमान–वि० [सं० विद्यमान] उपस्थित, मौजूद।
विद्यमानता–स्त्री० [सं० विद्यमानता] विद्यमान होने की अवस्था या भाव। मौजूदगी।
विद्या–स्त्री० [सं०] १ शिक्षा आदि से मिलने वाला ज्ञान। २ मोक्ष प्राप्ति या सिद्धि दिलाने वाला ज्ञान। ३ दुर्गा देवी का नामान्तर। ४ दुर्गा देवी का मंत्र। ५ सीता की एक सखी। ६ चौदह की संख्या। ७ इल्म, हुनर, कला। ८ जादू-मंत्र। ९ किसी विशेष विषय की शाखा। १० किसी विषय का व्यवस्थित ज्ञान। ११ आर्या छन्द का एक भेद विशेष। १२ निसाणी छन्द का एक भेद। १३ देखो 'विदा'।
विद्याघर–पु० [सं० विद्या-गृह] विद्या पढ़ाने का स्थान, पाठशाला।
विद्याधारण–स्त्री० २८ प्रकार की लब्धियों में से दसवीं लब्धी।
विद्याता, विद्यातानाथ–देखो 'विधाता'।
विद्यादान–पु० पढ़ाने का कार्य।
विद्यादाता–पु० पढ़ाने वाला, अध्यापक।
विद्याधन–पु० [सं०] १ ज्ञान का संग्रह, विद्या रूपी धन। २ विद्या से उपार्जित धन।
विद्याधर (र)–पु० [सं०] १ एक देवयोनि विशेष। २ कवि, पंडित। ३ एक रसौषधि विशेष। ४ एक रतिबंध। ५ एक वर्ण वृत्त।—रस–पु० वैद्यक में एक रस।
विद्याधरराज–वि० विद्वान, पंडित, चतुर।
विद्याधरेंद्र–पु० [सं० विद्याधरेन्द्र] रीछपति, जाम्बवंत।
विद्याधरेसुर, विद्याधरेस्वर–पु० [सं० विद्याधरेश्वर] शिव की एक मूर्ति का नाम।
विद्याधर–देखो 'विद्याधर'।
विद्याधारी–देखो 'विद्याधर'।
विद्याधिदेवता–स्त्री० [सं०] विद्या की देवी, सरस्वती।
विद्यानुवाद–स्त्री० [सं०] ७२ कलाओं में से एक।
विद्यापति–पु० गुरु, शिक्षक।
विद्यापात्र–वि० विद्वान, पंडित।
विद्यापीठ–पु० [सं०] १ शिक्षा का प्रमुख केन्द्र। २ महाविद्यालय।
विद्यापुरी–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
विद्यामंदिर–पु० [सं०] विद्यालय, पाठशाला।
विद्यामय–वि० विद्वान, पंडित।
विद्यामहेसुर (महेस्वर)–पु०[सं० विद्यामहेश्वर] शिव, महादेव।
विद्यारंभ–पु० [सं० विद्यारंभ] विद्या-प्रारंभ का संस्कार।
विद्यारथी–पु० [सं० विद्यार्थिन्] विद्या-अध्ययन करने वाला छात्र, विद्यार्थी, शिष्य।
विद्याराज–पु० [सं०] भगवान विष्णु की एक मूर्ति।
विद्यारासि–पु० [सं० विद्याराशि] शिव, महादेव।
विद्यालय–पु० [सं०] पाठशाला, स्कूल। विद्याध्ययन का स्थान।
विद्यावान–वि० [सं० विद्यावान] १ विद्वान, पंडित। २ ज्ञानी। ३ बुद्धि सागर।
विद्याविलास–वि० विद्या रसिक।
विद्यावेता–वि० [सं० विद्या-वेता] विद्वान, पंडित।
विद्याव्रत–पु० [सं०] विद्याध्ययन के लिये गुरु गृह में रह कर किया जाने वाला व्रत।
विद्यासंजीवन–पु० [सं० विद्या-संजीवन] दैत्य-गुरु, शुक्र।
विद्यासिद्धि (द्धी)–स्त्री० [सं०] विद्या का निष्पादन करने की क्रिया।
विद्युच्छत्रु–पु० मार्गशीर्ष मास में सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक राक्षस।
विद्युज्जिह्व, विद्युज्जिह्वा, विद्युज्जिह्व, विद्युज्जिह्वा–पु० [सं० विद्युत-जिह्वा] १ रावण की बहन सूर्पनखा का पति एक राक्षस। २ एक यक्ष का नाम। ३ घटोत्कच का मित्र एक राक्षस। ४ विद्युत के समान जिह्वा वाले दो सर्प जो अमृत की रक्षा करते थे। ५ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।
विद्युत–स्त्री० [सं० विद्युत] १ बिजली। २ एक प्रकार की वीणा। ३ वज्र। ४ एक राक्षस विशेष। ५ एक छन्द विशेष।–वि० जिसमें अधिक कांति या दीप्ति हो।
विद्युत्कुमार–पु० दश भुवन पतियों में से एक। (जैन)
विद्युत्तजिह्व, (ज्जिह्व) विद्युत्तजिह्वा (ज्जिह्वा)–देखो 'विद्युज्जिह्वा'।
विद्युत्ता–स्त्री० [सं०] १ कुबेर की सभा की एक अप्सरा। २ देखो 'विद्युत'।
विद्युत्ताक्ष–पु० [सं०] स्वामी कार्तिकेय का एक अनुचर।
विद्युति–देखो 'विद्युत'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विद्युत्केस–पु० [सं० विद्युत्केश] १ हेति नामक राक्षस। २ सुकेशी नामक राक्षस।

विद्युत्पताक–स्त्री० [सं० विद्युत्पर्णा] एक अप्सरा।

विद्युत्पात–पु० [सं०] बिजली गिरने की क्रिया। वज्रपात।

विद्युत्प्रभ–पु० [सं०] १ एक दानव विशेष। २ एक ऋषि विशेष।

विद्युत्प्रिय–पु० [सं०] १ कांसा नामक धातु। २ इस धातु का बना पात्र।

विद्युल्लता–स्त्री० [सं० विद्युत्लता] बिजली की चमक या कौंध।

विद्युद्गौरी–स्त्री० [सं० विद्युद् गौरी] शक्ति की एक मूर्ति।

विद्युद्दंष्ट्र–पु० एक असुर।

विद्युद्वक्त्र–पु० स्कंद का एक सैनिक।

विद्युद्रूप; विद्युद्रूप–पु० [सं० विद्युद्रूप] १ लंका का एक राक्षस। २ कुबेर का सेवक एक यक्ष।

विद्युन्माल (माला)–स्त्री० १ एक छन्द विशेष। २ बिजली की चमक या कौंध। ३ एक राजा का नाम।

विद्युन्मालि (ली)–पु० [सं० विद्युन्मालिन्] १ तारकासुर का एक पुत्र। २ रावण का अनुचर एक राक्षस। ३ एक नृप विशेष। ४ रावण का मित्र, एक राक्षस।

विद्युत–स्त्री० १ अप्सरा। २ विद्युत, बिजली। –पु० ३ एक ऋषि।

विद्योतन–पु० [सं०] सूर्य, भानु।

विद्योता–१ देखो 'विद्युत'। २ देखो 'विद्युता'।

विद्रधि (धी)–पु० [सं०] एक प्रकार का फोड़ा जो पेट के भीतर होता है।

विद्रम–देखो 'विद्रुम'।

विद्रव–देखो 'विदरभ'।

विद्रवण–वि० देने वाला।

विद्रवणी (वी)–क्रि० १ दान देना, धन लुटाना। २ बांटना, देना। ३ द्रवीभूत होना। ४ दौड़ना, भागना। ५ विदीर्ण करना।

विद्राधी–वि० [सं० विद्राधिन्] १ भागने वाला। २ फाड़ने वाला।

विद्रुम–पु० [सं०] १ मूंगा, प्रवाल नामक रत्न। २ इसका वृक्ष। ३ मुक्ताफल का वृक्ष। ४ कोंपल। ५ एक प्रकार का गंध द्रव्य।

विद्रुमलता–स्त्री० [सं०] १ नलिका नामक गंध द्रव्य। २ मूंगा।

विद्रोह–पु० [सं०] १ राज्य या शासन का विरोध, विरोध में किया जाने वाला कार्य। २ बगावत, क्रांति, आंदोलन। ३ शत्रु को हानि पहुंचाने के उद्देश्य में किया जाने वाला कार्य। ४ कोई उपद्रव।

विद्रोही–वि० विद्रोह करने वाला, बागी, क्रान्तिकारी, उपद्रवी, विरोधी।

विद्वत्ता (त्ता)–स्त्री० [सं०] १ विद्वान या पंडित होने की स्थिति या भाव। २ जानकारी, ज्ञान। ३ पांडित्य।

विद्वति–देखो 'विदुत'।

विद्वस–वि० [सं०] १ पंडित, विद्वान। २ कवि। ३ चतुर, बुद्धिमान।

विद्वान, विद्वांस–पु० [सं० विद्वान, विद्वस] १ अपनी आत्मा का स्वरूप जानने वाला। २ सर्वज्ञ, ज्ञाता। ३ पंडित।

विद्विस–पु० शत्रु, रिपु।

विद्वेस–पु० [सं० विद्वेष] १ शत्रुता, दुश्मनी, वैर। २ विरोध।

विद्वेसक (विद्वेसी)–वि० शत्रु, वैरी, विरोधी।

विद्वेसिणी (सिणी)–स्त्री० [सं० विद्वेषिणी] एक यक्ष कन्या विशेष। –वि० द्वेष रखने वाली।

विद्वेसी–वि० [सं० विद्वेषिन्] विद्वेष करने वाला शत्रु।

विधंस–देखो 'विध्वंस'।

विधंसक–देखो 'विध्वंसक'।

विधंसण–वि० १ नाश होने वाला, नाशवान्। २ देखो 'विधुंसण'।

विधंसणी–वि० नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला।

विधंसणी (वी)–देखो 'विधुंसणी' (वी)।

विध–पु० [सं० विध] १ तरह, भांति, प्रकार। २ ढंग, तरीका प्रकार। ३ वृत्तान्त, हकीकत। ४ कारण। ५ शंख। ६ समूह, व्यूह। ७ देखो 'विधि'। ८ देखो 'विधु'।

विधचक–देखो 'विधिचक'।

विधकर–देखो 'विधिकर'।

विधचूड़ (ड)–पु० [सं० विधाचूण्ट] कपट, धोखा।

विधत–देखो 'विधाता'।

विधनयण–देखो 'विधिनयण'।

विधना–पु० [सं० विधि] ब्रह्मा, विधाता।

विधरम (म्म)–पु० [सं० विधर्म्म] पराया या दूसरा धर्म, अन्य धर्म। अधर्म। –वि० १ जो धर्मशास्त्र में निहित हो। २ जिसका कोई धर्म न हो अधर्मी। ३ दूसरे धर्म का विधर्मी।

विधरमि (मी, म्मी)–वि० [सं० विधर्मिन्] १ धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, विधर्मी, अधर्मी। २ पराये धर्म को मानने वाला।

विधरेख (खा)–स्त्री० [सं० विधि-रेखा] भाग्य का लेख, कर्म रेखा।

विधवत–देखो 'विधिवत'।

विधवा, विधवा–स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति मर चुका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो, पतिहीना, सौभाग्यहीना स्त्री। —पण, पन्न, पणु, पणी—पु०—वैधव्य, विधवापन, स्त्री की विधवा होने की दशा, अवस्था।

विधवाविया, विधवाविवाह—पु० विधवा स्त्री का पुनर्विवाह।

विधवाश्रम, विधवाश्रम—पु० [सं० विधवा-आश्रम] विधवा व निराश्रय स्त्रियों को रखने तथा उनकी उचित व्यवस्था करने का स्थान, आश्रम

विधविधान—क्रि० वि० विधि पूर्वक, विधिवत्।

विधवृक्ष—पु० [सं० विधि-वृक्ष] पलास नामक वृक्ष।

विधसरवा, विधसवा—पु० [सं० वृद्धश्रवा] इन्द्र।

विधान (न)—पु० [सं० विधान] १ किसी कार्य का आयोजन। २ कार्य करने की रीति, व्यवस्था व सम्पादन, नियम। ३ ढंग, तरीका। ४ तरकीब, उपाय। ५ धर्मशास्त्र की आज्ञा। ६ हाथी को मस्ती में लाने के लिये खिलाया जाने वाला पदार्थ। ७ धन, सम्पत्ति। ८ पूजा, अर्चना। ९ आज्ञा, आदेश। १० किसी देश के कानूनों का संग्रह। ११ रचना, बनावट। १२ नियम, परिपाटी, कानून। १३ वाद्य। १४ कारण। १५ एक प्रकार का शस्त्र। १६ सृष्टि, सर्जन।—वि० १ समान, तुल्य। २ रचना कर्ता, रचयिता।

विधानसप्तमि (मी, सप्तमी, सातम)—स्त्री० [सं० विधान सप्तमि] माघ शुक्ला सप्तमी से शुरू करके पूरे वर्ष किया जाने वाला व्रत विशेष।

विधानीक—पु० डिंगल गीत-रचना का एक ढंग।

विधासणी (बी)—देखो 'विधूंसणी' (बी)।

विधा—स्त्री० [सं०] १ ढंग, तरीका। २ तरह, भांति, प्रकार। ३ किस्म, जाति। ४ धन, सम्पत्ति। ५ हाथी या घोड़े का चारा। ६ किराया, भाड़ा। ७ मजदूरी। ८ रचना। ९ देखो 'विद्या'। १० देखो 'विदा'।

विधातनताका—पु० [सं० विद्योतन-ताका] चन्द्रमा, शशि।

विधाता (नाथ)—वि० [सं० विधातृ] १ रचना करने वाला, सृष्टि कर्ता। २ देने वाला, दाता। ३ प्रबंध या व्यवस्था करने वाला।—पु० १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ महेश। ४ विश्वकर्मा। ५ कामदेव। ६ भृगु एवं ख्याति का एक पुत्र। ७ प्रारब्ध, भाग्य। ८ एक आदित्य विशेष। —स्त्री० ९ मदिरा शराब। १० ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती, रूपा।

विधात्र, विधात्रा (त्रि, त्री)—पु० [सं० विधातृ] १ ब्रह्मा, विधि। २ देखो 'विधाता'।

विधायक—वि० [सं०] १ विधान निर्माता, कानून बनाने वाला। २ रचना, सृष्टि करने वाला। ३ व्यवस्था करने वाला, प्रबंधक। ४ उत्पादक।—पु० विधान सभा सदस्य।

विधारा—स्त्री० एक प्रकार की लता व उसके बीज।

विधि, विधि—पु० [सं० विधिः] १ कार्य करने की रीति, प्रक्रिया, प्रणाली। २ तरह, भांति, प्रकार। ३ नियम, कायदा। परिपाटी। ४ आज्ञा, आदेश। ५ धर्मशास्त्र की आज्ञा। ६ ढंग, तरीका। ७ धार्मिक विधान। ८ भेद, रहस्य। ९ सृष्टि, रचना। १० विधाता, ब्रह्मा। ११ भाग्य, प्रारब्ध। १२ विष्णु का एक नामान्तर। १३ विधान, कानून। १४ वैद्य, हकीम। १५ साहित्य में एक अर्थालंकार। १६ व्याकरण में आज्ञा का स्वरूप। —वि० १ पीला, पीत। २ श्वेत। ३ देखो 'विध'। ४ देखो 'विधु'। —अंक—पु० प्रारब्ध, भाग्य। —पुत्र—पु० ब्रह्मा पुत्र नारद। —पुर, पुरी—स्त्री० ब्रह्मलोक। —पूजा—स्त्री० ब्रह्मा की पूजा। —राणी, रानी—स्त्री० सरस्वती, शारदा। —लोक—पु० ब्रह्मलोक। —वदन—पु० ब्रह्मा का मुख। चार की संख्या। —वधू—स्त्री० सरस्वती, शारदा। —वाहन—पु० ब्रह्मा की सवारी, हंस।

विधिकर—पु० चाकर, नौकर, सेवक।

विधिज्ञ (ज्ञ)—पु० [सं० विधिज्ञ] शास्त्रोक्त एवं विधि के विधान का ज्ञाता, पंडित।

विधिनयण (न)—पु० [सं० विधिनयन] सूरज, सूर्य।

विधिपाट—पु० [स०] मृदंग के चार वर्णों में से एक।

विधिपाठक—पु० [सं०] शास्त्र रीति का पाठ करने वाला या बताने वाला।

विधिभेद—पु० [सं० विधिभेद] साहित्य में उपमा अलंकार का एक दोष।

विधी—१ देखो 'विधि'। २ देखो 'विधु'।

विधूंसणी (बी)—देखो 'विधूंसणी' (बी)।

विधु—पु० [सं०] १ चन्द्रमा, शशि। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ ब्राह्मण। ५ एक राक्षस का नाम।—स्त्री० [सं० वधू] ६ नव-विवाहिता दुल्हन। ७ कपूर।

विधुकांत—पु० [सं०] संगीत का एक ताल।

विधुत—देखो 'विद्युत'।

विधुतुद—पु० [स०] राहु का एक नामान्तर।

विधुप्रिया—स्त्री० [सं०] चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी।

विधुम—पु० [सं०] आठ वसुओं में से एक।

विधुर—वि० [सं०] १ दुःखी, व्याकुल। २ जिसकी पत्नी मर चुकी हो, पत्नी रहित। रंडुवा।—पु० १ कष्ट, दुःख। २ विरह, वियोग। ३ भय, डर। ४ मोक्ष।

विधुरा—स्त्री० [सं०] कान के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि।

विधुवदनी—स्त्री० [सं० विधुवदनी] चन्द्रमुखी, सुन्दर-मुख वाली स्त्री।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विधूंस–देखो 'विध्वंस'।
विधूंसन–पु० [सं० विध्वंसन] नाश, संहार।
विधूंसणो (बो)–क्रि० [सं० विध्वंसनम्] १ नाश करना, विध्वंस करना। २ मारना, संहार करना। ३ तोड़ना, भंग करना। ४ लूट-खसोट करना। ५ बर्बाद, तहस-नहस करना। ६ रति क्रीड़ा करना, मैथुन करना।
विधू–१ देखो 'विधु'। २ देखो 'वधु'।
विधूसणो (बो)–देखो 'विधूंसणो' (बो)।
विधेय–वि० [सं०] १ जिसका करना उचित हो, करणीय। विधान के योग्य। २ जिसे जानने का विधान हो। ३ आज्ञा के वशीभूत, आज्ञापालक। ४ जिसके द्वारा कुछ कहा जाय, कथ्य। ५ योग्य। –पु० १ कर्त्तव्य। २ नायिका की एक चेष्टा विशेष।
विधेयक–पु० [सं० विधेयकन्] किसी कानून या विधान का प्रारूप जो विधान सभा के विचारार्थ रखा जाय।
विधेयकरम–पु० [सं० विधेय-कर्म] १ उचित कार्य, कर्त्तव्य। २ नियमानुसार, वैधानिक कार्य। ३ शास्त्रोक्त कर्म।
विधेयाविमरस–पु० [सं० विधेय-अविमर्श] साहित्य में होने वाला एक वाक्य दोष।
विधोगत (ति. ती)–क्रि० वि० १ विधिवत्, यथाविधि। २ ढंगसे, नियमानुसार। ३ यथायोग्य।
विधोरणो (बो)–क्रि० मिटजाना, मिटना।
विधोविध, विधोविध–क्रि० वि० १ विविध प्रकार से भिन्न भिन्न प्रकार से। २ यथाविधि, विधिवत्। ३ यथार्थ में।
विध्य–देखो 'विधि'।
विध्यांन–देखो 'विधान'।
विध्या–देखो 'विद्या'।
विध्याता–देखो 'विधाता'।
विध्रत, विध्रति (ती)–पु० [सं० विधृति] १ एक सूर्य वंशी राजा। २ अमूतरजस् देवों से एक देव।–स्त्री० २ वैधृति नामक देवताओं की माता।
विध्रम (म्म)–देखो 'विधरम'।
विध्रमी (म्मी)–देखो 'विधरमी'।
विध्वंस–पु० [सं०] १ विनाश। २ तहस-नहस, बरबाद। ३ विनाश, संहार।
विध्वंसक–वि० [सं०] १ विनाश करने वाला। २ बरबाद करने वाला। ३ संहारक।
विध्वंसण–पु० [सं० विध्वंसन्] नाश, संहार।
विध्वंसणो–वि० (स्त्री० विध्वंसणी) १ नाश होने वाला, नाशवान्। २ मरने वाला। ३ तहस-नहस, बरबाद होने वाला। ४ नाश, संहार करने वाला। ५ बरबाद करने वाला।
विध्वंसणो (बो)–देखो 'विधूंसणो' (बो)।
विध्वस्त–वि० [सं०] १ नष्ट बरबाद। २ संहारित, मारा हुआ।
विनंत–देखो 'वनिता'।
विन–देखो 'बिना'।
विनउ–देखो 'विनय'।
विनड़णो(बो)–क्रि० १ विनम्र होना। २ देखो 'विन्नड़णो'(बो)।
विनड़णो (बो)–क्रि० १ दुःख देना, कष्ट देना। २ वेष बदलना। ३ देखो 'विनड़णो' (बो)। ४ देखो 'विन्नड़णो' (बो)।
विनत–पु० [सं०] १ राम की सेना का एक वानर जो साठ लाख वानरों का सेनापति था। २ एक दिग्गज। ३ देखो 'विनीत'।
विनतक–पु० [सं०] एक पर्वत का नाम।
विनता–स्त्री० [सं०] १ कश्यप ऋषि की एक पत्नी और पक्षियों की माता। २ एक राक्षसी। [सं० वनिता] ३ स्त्री, औरत। ४ स्त्री, पत्नी। ५ प्रेमिका स्त्री।
विनताक (ग)–पु० [सं० वृन्ताकि] बैंगन नामक शाक।
विनतासुत (सुनु)–पु० [सं०] गरुड़, अरुण।
विनति (ती)–स्त्री० [सं० विनतिः] १ अनुनय, विनय, प्रार्थना। २ नम्रता, विनय। ३ आवेदन।
विनम्र–वि० [सं०] विनयशील, नम्र, विनीत।
विनय–स्त्री० [सं० विनय] १ नम्रता, विनम्रता। २ अनुनय, प्रार्थना। ३ शील, सतीत्व। ४ शिष्ट व्यवहार। ५ बहत्तर कलाओं में से एक। ६ जितेन्द्रिय पुरुष।
विनयवंत–वि० [सं०] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत।
विनयवान–वि० [सं० विनयवान] विनयशील, विनीत।
विनयसील–वि० [सं० विनयशील] विनम्रता से युक्त।
विनवणो (बो)–क्रि० विनय करना, प्रार्थना करना।
विनस–पु० सरस्वती नदी के अदृश्य रहने का स्थान।
विनसण–पु० [सं०] १ विनाश, बरबादी। २ संहार।
विनसणो–वि० विनष्ट होने वाला, नाशवान।
विनसणो (बो)–क्रि० १ नष्ट होना, मिटना। २ संहार होना, मरना। ३ तहस-नहस होना, बरबाद होना।
विनसति (ती)–देखो 'वनस्पति'।
विनसाणो (बो), विनसावणो (बो)–क्रि० १ नाश करना, नष्ट करना। २ संहार करना, मारना। ३ तहस-नहस करना।
विनस्ट–वि० [सं० विनष्ट] १ जो नष्ट हो चुका हो। २ तहस-नहस व बरबाद। ३ मरा हुआ, मृत। ४ बिगड़ा हुआ, विकृत।
विनस्वर–वि० [सं० विनश्वर] १ नष्ट होने वाला, नाशवान्। २ जो बहुत दिनों तक न रह सके, अनित्य।
विनस्वरता–स्त्री० [सं० विनश्वरता] १ नाशवान् होने की अवस्था। २ अनित्यता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनां–देखो 'बिना'।

विनाण (णि, णी)–पु० १ विचार। २ तरकीब, उपाय। ३ चिह्न, लक्षण। ४ रूपक। ५ व्याख्या, विवेचन। ६ विध्वंस, नाश। ७ रहस्य, भेद। [सं० विज्ञान] ८ ज्ञान, जानकारी। ९ भेद प्रकार। १० तरह, प्रकार।–वि० १ समान, तुल्य। २ अद्भुत, अनोखा। ३ ज्ञानी, जानकार। ४ देखो 'बैनाणी'।

विनाणगार, विनाणगारु–वि० धूर्त, कपटी।

विनाणणो (बो)–क्रि० धोखा देना, छल करना।

विनान–देखो 'विनाण'।

विनामी–देखो 'बिन्यांनी'।

विनाम–वि० जिसका कोई नाम न हो, बिना नाम का।

विना–१ देखो 'बिना'। २ देखो 'विनय'।

विनाइक–देखो 'विनायक'।

विनाई–देखो 'बिना'।

विनाथ–वि० [सं०] जिसका कोई रक्षक न हो, अनाथ।–पु० वह बैल जिसके नाथ न डाली गई हो।

विनाबी–क्रि० वि० आदि काल से।

विनायक–पु० [सं० विनायक] १ गणों के ईश, गजानन, गणेश। २ गरुड़। ३ शिवगणों का एक समूह। ४ कपड़ा बुनने का औजार विशेष। ५ सुथार, बढ़ई। ६ विवाहादि अवसरों पर बनाई जाने वाली गणेश की मूर्ति। ७ मांगलिक कार्यों के आरंभ में गणेश स्थापना, यज्ञ एवं भोज। ८ गणेश के नाम के लोकगीत। ९ बौद्ध आचार्य विशेष।—चतुरथी, चौथ–स्त्री० प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, विशेष कर माघ व भाद्रव मास की चतुर्थी।

विनायकखूंटी–देखो 'गणेशखूंटी'।

विनायकण–स्त्री० बढई जाति की स्त्री।

विनायकहेतु–पु० [सं०] गरुड़ध्वज, श्रीकृष्ण।

विनायकियो, विनायकियो–पु० १ विवाह के समय दूल्हे के साथ रहने वाला छोटा बालक जिसे विनायक के रूप में संस्कारित किया गया हो। २ देखो 'विनायक'।

विनायका–स्त्री० [सं०] १ विनायक की पत्नी। २ गरुड़ की पत्नी का नामान्तर।

विनास–पु० [सं० विनाश] १ नाश, ध्वंस। २ बिगाड़ने का भाव, बिगाड़। ३ हानि, नुकसान। ४ कलह, झगड़ा। ५ कश्यप एवं कासा से उत्पन्न एक असुर।

विनासक, विनासकारी, विनासणो–वि० [सं० विनाशक] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला। २ मिटाने वाला, हटाने वाला। ३ तहस-नहस करने वाला, बरबाद करने वाला। ४ बिगाड़ने वाला। ५ संहारने, मारने वाला।

विनासणो (बो)–क्रि० [सं० विनाशनम्] १ नष्ट करना, ध्वंस करना। २ मारना, संहार करना। ३ बिगाड़ना, खराब करना। ४ अहित करना, बुरा करना। ५ बरबाद करना।

विनासी–वि० [सं० विनाशिन्] १ नष्ट होने वाला, नाशवान। २ मरने वाला, मिटने वाला। ३ देखो 'विनासक'।

विनाह–पु० [सं०] कुए के मुख का ढक्कन।

विनिग्रह–पु० [सं०] १ संयम, दमन, प्रतिबंध। २ बाधा, अवरोध। ३ ईर्ष्या, द्वेष।

विनिता–देखो 'विनता'।—सुत = 'विनतासुत'।

विनिद्र–पु० [सं०] १ अनिद्रा के रोग वाला प्राणी। २ जागृत व्यक्ति। ३ एक अस्त्र विशेष।–वि० १ निद्रारहित, जागा हुआ। २ खिला हुआ, फूला हुआ।

विनिपात–पु० [सं०] १ विनाश, ध्वंस। २ अपमान, अनादर। ३ मृत्यु, नाश। ४ बरबादी। ५ नरक। ६ कष्ट, पीड़ा। ७ संकट पूर्ण स्थिति। ८ गर्भपात।

विनिपातक–वि० [सं०] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला। २ अपमान या अनादर करने वाला। ३ कष्ट उत्पन्न करने वाला।

विनिमय–पु० [सं०] १ वस्तुओं का परस्पर आदान्-प्रदान। २ लेन-देन। ३ बंधक, गिरवी।

विनियां–देखो 'विनता'।

विनियुक्त–वि० [सं०] १ लगा हुआ, नियुक्त। २ आदेशित।

विनियोग–पु० [सं०] १ किसी वैदिक कर्म में मंत्र का प्रयोग। २ व्यापार में पूंजी का निवेश। ३ त्याग। ४ इष्ट देव के ध्यान की एक प्रक्रिया।

विनियोजन–पु० [सं०] १ विनियोग करने की क्रिया, भाव। २ अर्पण। ३ नियुक्ति।

विनिहत, विनिहोत–पु० [सं० विनिहतः] १ दैविक प्रकोप का संकट। २ अपशकुन, बुरा शकुन। ३ धूम्रकेतु, पुच्छलतारा।–वि० आहत, घायल। वशवर्ती।

विनीत–वि० [सं०] १ विनयशील, नम्र। २ शिष्ट, सभ्य। ३ जितेन्द्रिय, संयमी। ४ प्रिय, मनोहर। ५ ग्रहण किया हुआ।–पु० १ उत्तम मनु का एक पुत्र। २ पुलस्त्य व प्रीति का एक पुत्र।

विनीतता–स्त्री० १ विनय, नम्रता। २ शिष्टता।

विनीता–देखो 'विनता'।

विनु–देखो 'विनय'।

विनूर–वि० कायर, भीरू, डरपोक।

विनेत–पु० [सं० विनेतृ] १ आज्ञा, आदेश, हुक्म। २ शिक्षक। ३ दण्ड विधान बनाने वाला। [सं० विज्ञप्ति] ४ सूचना।

विनै–स्त्री० [सं० विनयः] १ कृपा, महरबानी। २ विनय। ३ देखो 'बिना'। ४ देखो 'बिनै'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनैनी–स्त्री० नम्रता, विनम्रता ।

विनोक्त, विनोक्ति–पु० [सं० विनोक्ति] एक अलंकार विशेष जिसमें किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता का वर्णन किया जाय ।

विनोद–पु० [सं० विनोद] १ ऐसा कार्य जो मन बहलाव करता हो । २ मनोरंजन, मन बहलाव । ३ हंसी-मजाक । ४ आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता । ५ उत्सुकता, उत्कण्ठा । ६ खेल क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद । ७ सोलह प्रकार के शृंगारों में से एक । ८ गायन, संगीत । ९ एक राग विशेष । १० रति-क्रिया का एक आलिंगन ।

विनोदक–वि० [सं०] १ विनोद करने वाला, खेल-क्रीड़ा करने वाला । २ मजाकिया, विदूषक ।

विनोदन–देखो 'विनोद' ।

विनोदित–वि० [सं०] १ हर्षित, खुश, आह्लाद युक्त । २ हंसी-मजाक किया हुआ । ३ आनन्द दायक कार्य किया हुआ । ४ विनोद शृंगार से युक्त ।

विनोदी–वि० [सं० विनोदिन्] १ खुद का व दूसरों का मन बहलाने वाला । २ हंसी-मजाक करने वाला । ३ विनोद संबंधी । ४ आनन्द व हर्ष उत्पन्न करने वाला । ५ खेल-क्रीड़ा करने वाला । ६ विनोद शृंगार करने वाला । ७ गाने वाला, गायक ।

विनोदीयो–देखो 'विनोदी' ।

विन्नक–पु० [सं० विन्नकः] अगस्त्य ऋषि का एक नामान्तर ।

विन्नवण–पु० कामी पुरुष ।

विन्नवणा–पु० [सं० विज्ञापना] कामी पुरुष के आगे रति क्रिया का प्रस्ताव करने वाली स्त्री ।

विन्नाण, विन्नाणि, विन्नाणी–देखो 'विनाण' ।

विन्नोद–देखो 'विनोद' ।

विन्यानी–वि० [सं० वैज्ञानिक] जानकार, ज्ञानी ।

विन्यायक (को)–देखो 'विनायक' ।

विन्यास–पु० [सं०] १ स्थापित करने की क्रिया या भाव । २ समूह, संग्रह । ३ यथास्थान रखने की क्रिया, सजावट । ४ जड़ने की क्रिया ।

विन्योक्ति–देखो 'विनोक्ति' ।

विन्ह, विन्हइ, विन्हे–१ देखो 'बिनै' । २ देखो 'बिना' ।

विपंचिका, विपंची–स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का वाद्य । २ आमोद-प्रमोद, खेल, क्रीड़ा ।

विप–१ देखो 'वपु' । २ देखो 'विप्र' ।

विपक्क–वि० [सं०] १ पूर्ण रूप से पका हुआ; परिपक्व । २ पूर्ण उबला हुआ, सीझा या पका हुआ । ३ उन्नति की चरम सीमा तक पहुँचा हुआ । ४ देखो 'विपक्ष' ।

विपक्ख–देखो 'विपक्ष' ।

विपक्खी–१ देखो 'विपक्षी' । २ देखो 'विपक्षी' ।

विपक्व–वि० [सं०] १ अच्छी तरह व पूर्ण रूप से पका हुआ । २ अपक्व या कच्चा ।–पु० एक देव विशेष ।

विपक्ष (क्ष)–वि० [सं०] १ विरुद्ध, खिलाफ, प्रतिकूल । २ उलटा, विपरीत ।–पु० १ विरोधी पक्ष, शत्रु पक्ष । २ दूसरा पक्ष, अन्य पक्ष । ३ विपरीत पक्ष ।

विपक्षी–पु० [सं०] १ दुश्मन, शत्रु । २ विरोधी पक्ष का व्यक्ति । –वि० दूसरे पक्ष का, विरोधी पक्ष का ।

विपखी–पु० १ अश्व, घोड़ा । २ देखो 'विपक्षी' ।

विपक्षणी–स्त्री० विरोधी की स्त्री ।–वि० विरोधी पक्ष की, प्रतिद्वंदिनी ।

विपच्छ–१ देखो 'विपक्ष' । २ देखो 'विपक्षी' ।

विपच्छी–देखो 'विपक्षी' ।

विपण–पु० [सं०] १ छोटा व्यापार । २ बिक्री ।

विपणक–वि० [सं०] व्यापारी, व्यवसायी ।

विपणन–स्त्री० [सं० विपणनम्] व्यापार, व्यवसाय, क्रय-विक्रय ।

विपणी–स्त्री० [सं० विपणी] १ बाजार । २ दुकान, हाट । ३ व्यापार का स्थान । ४ बाजार ।–पु० [सं० विपणिन्] ५ व्यापारी ।

विपत (ता, ति, तौ), विपत्त (त्ति, त्ती)–स्त्री० [सं० विपत्तिः] १ संकट, विपत्ति, आपाद् स्थिति । २ कष्ट, पीड़ा । ३ परेशानी, झंझट । ४ बुरे दिन, बुरा समय । ५ मृत्यु, मौत । ६ थकान, सुस्ती ।

विपत्थ, विपथ–पु० १ भयंकर मार्ग । २ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

विपद (दा, दि, दी)–देखो 'विपत' ।

विपदेस–पु० [सं० व्यपदेश] कपट, छल, धोखा ।

विपनविहारी (विहारी)–वि० वन-विहार करने वाला, वन में विचरण करने वाला ।

विपर–देखो 'विप्र' ।

विपरजय–देखो 'विपरय्य' ।

विपरत–देखो 'विपरीत' ।

विपरब–पु० [सं० विपर्व] बुरा दिन, असमय ।

विपरयय (य्य, य्यय)–पु० [सं० विपर्यय] १ व्यतिक्रम । २ उलट-फेर, हेर-फेर । ३ विरोध, प्रतिकूलता । ४ अशुद्धि, भूल । ५ अव्यवस्था, गड़बड़ी । ६ वैमनस्य, शत्रुता । ७ भ्रम, सन्देह । ८ विचारान्तर ।

विपराणी (णो), विपरावणी (णी)–देखो 'वपराणी' (णो) ।

विपरित, विपरिती, विपरीत, विपरित–वि० [सं० विपरीत] १ प्रतिकूल, विरुद्ध, खिलाफ । २ उल्टा, विलोम । ३ अनिष्ट साधन में तत्पर । ४ रुष्ट, क्रुद्ध । ५ अनुपयुक्त ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ कुटिल। ७ झूठा, मिथ्या। ८ अप्रिय। ९ अशुभ। १० भयंकर, भयावह। ११ नियम विरुद्ध। १२ सीधा, चित।

विपरीतरति–स्त्री० [सं०] रतिक्रिया का एक ढंग।

विपरीतलक्षण–पु० १ अशुभ संकेत, चिह्न। २ व्यंगात्मक अभिव्यक्ति।

विपरीता–स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री, बदचलन औरत।

विपरीति (ती)–स्त्री० १ विपरीत होने की अवस्था या भाव, वैमनस्यता। २ देखो 'विपरीत'।

विपरीत, विपरीत–देखो 'विपरीत'।

विपल (ल)–पु० [सं० विपल] १ समय का एक छोटा विभाग, पल का साठवां अंश। २ काल गणना की एक इकाई। ३ देखो 'विपुळ'।

विपलव, विपलव, विपलव–देखो 'विप्लव'।

विपला, विपला, विपला–देखो 'विपुला'।

विपली (ली), विपली–वि० (स्त्री० विपळी) १ अविश्वसनीय। २ संदेहास्पद।–पु० १ भूत, प्रेत। २ प्रेत बाधा।

विपसंचित, विपसंचित, विपसंची–पु० [सं० विपश्चित] कवि जन, पंडित।–वि० पंडित बुद्धिमान, सूक्ष्मदर्शी।

विपांशु, विपांडुर–वि० [सं०] पीला, पीत।

विपाक–पु० [सं० विपाकः] १ कर्मों का फल, परिणाम। २ स्वाद, जायका। ३ कठिनाई, तकलीफ। ४ परिपक्व व पका होने की अवस्था। ५ पूर्ण दशा में पहुँचने की दशा चरमोत्कर्ष।

विपाकसूत्र–पु० एक सूत्र ग्रंथ का नाम।

विपाट (ठ)–पु० [सं०] १ एक प्रकार का तीर; बाण। २ कर्ण का एक भाई।

विपाटल–वि० गहरा लाल।

विपाठा–स्त्री० [सं०] दुर्गम राजा की एक पत्नी।

विपाड–पु० [सं०] १ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक। २ एक पिशाचगण समूह।

विपादिका–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

विपाप–पु० शिवावतार के एक शिष्य का नाम।

विपाप्मन, विपाप्मन–पु० [सं० विपाप्मनः] १ अग्नि का एक पुत्र। २ मत्स्यानुसार आयु राजा का एक पुत्र।

विपास, विपासा–स्त्री० [सं० विपाश] पंजाब की सतलज नदी का एक नाम।

विपिन (विपुन)–पु० [सं० विपिन] १ वन, जंगल। २ उपवन, वाटिका। —चर–पु० जंगल में रहने या विचरण करने वाला प्राणी। —पति, पति, पती–पु० वन का राजा शेर, सिंह।

विपिनतिलका–पु० १ एक वर्ण वृत्त। २ एक मात्रिक छन्द।

विपिनविहारी (विहारी)–देखो 'विपनविहारी'।

विपुळ (ल)–वि० [सं० विपुल] १ प्रचुर, पर्याप्त। २ अधिक बहुत। ३ विशाल, बड़ा। ४ गहरा, अगाध। ५ रोमांचित। ६ विस्तृत। पु०–१ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग। २ वासुदेव व रोहिणी का एक अन्य पुत्र। ३ एक पर्वत जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला है। ४ हिमालय पर्वत।

विपुळता, विपुलता–स्त्री० १ प्रचुरता, बहुतायत। २ महानता; विशालता।

विपुळमति, विपुलमती–स्त्री० २८ प्रकार की लब्धियों में से नवमी लब्धि।

विपुळस्वांन–पु० सुकृष के पिता एक ऋषि।

विपुळा (ला)–स्त्री० [सं० विपुला] १ पृथ्वी, भूमि, धरती। २ एक देवी। ३ बहुला सती का नामान्तर। ४ विपुला देवी का पीठस्थान। ५ एक प्रकार का छन्द। ६ आर्या छन्द का एक भेद।

विपोहणी (वी)–क्रि० [सं० वि+पोषण] १ मिटाना, नाश करना, समाप्त करना। २ दूर करना; हटाना।

विप्र–१ देखो 'विप्र'। २ देखो 'विप्पला'।

विप्पोसहि (ही)–स्त्री० एक प्रकार की लब्धि।

विप्फरणी (वी), विप्फुरणी (वी), विप्फुरणी (वी)–देखो 'विफरणी' (वी)।

विप्र–पु० [सं०] १ ब्राह्मण। २ ब्राह्मण या पुरोहित जाति। ३ इस जाति का व्यक्ति। ४ विद्वान ब्राह्मण। ५ परब्रह्म। ६ कर्म निष्ठ पुरुष। ७ पीपल, सिरस आदि पेड़ों के नामान्तर। ८ ध्रुववंशीय एक राजा। ९ गण के पांचवें भेद का नाम। १० विद्वान या मेधावी व्यक्ति।

विप्रक–पु० [सं०] नीच या धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण।

विप्रकार–पु० [सं०] १ हार, पराजय। २ अनादर, तिरस्कार। ३ अपकार।

विप्रचरण–पु० [स०] भगवान विष्णु के हृदय पर अंकित भृगु ऋषि के चरण प्रहार का चिह्न।

विप्रचित्त (त्ति), विप्रचित्त (त्ति)–पु० [सं० विप्रचित्ति] १ राहु ग्रह। २ एक दानव राजा। ३ अष्टि नामक आचार्य का शिष्य। ४ हिरण्यकशिपु का सेवक एक राक्षस।

विप्रणी–देखो 'विप्री'।

विप्रता–स्त्री० ब्राह्मण होने की अवस्था, ब्राह्मणत्व।

विप्रतिसार, विप्रतीसार–पु० [सं०] १ रोष, क्रोध; गुस्सा। २ धृष्टता।

विप्रबंधु–पु० [सं०] १ धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण। २ मंत्र द्रष्टा मुनि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विप्रबुद्ध (बुध)–वि० [सं०] ज्ञानी, जानकार।

विप्रराम–पु० [सं०] परशुराम का एक नामान्तर।

विप्रलंभ–पु० [सं० विप्रलम्भ] १ धोखा, कपट। २ विछोह, वियोग। ३ प्रेमी-प्रेमिका का विच्छेद, वियोग। ४ एक अलंकार विशेष। ५ झगड़ा विवाद।

विप्रलब्ध–वि० [सं०] १ छला हुआ, धोखा दिया हुआ। २ हताश, निराश।

विप्रलब्धा–पु० [सं०] संकेत स्थान पर प्रेमी के न मिलने पर निराश होने वाली नायिका।

विप्रलाप, विप्रलाव–पु० [सं०] १ व्यर्थ बकवास। २ विवाद झगड़ा।

विप्रश्ट–पु० [सं० विप्रष्ट] बलराम का एक छोटा भाई।

विप्रश्न–पु० [सं० विप्रश्न] ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष से दिया जाय।

विप्रि, विप्री–स्त्री० आर्या छन्द में एक गाथा।

विप्लव, विप्लव–पु० [सं०] १ उपद्रव, बलवा, हंगामा, विद्रोह। २ युद्ध से उत्पन्न अव्यवस्था, अशांति। ३ आपत्ति, विपत्ति। ४ क्रांति, बगावत। ५ नाश, बरबादी। ६ युद्ध के समय की लूट-पाट। ७ अत्याचार, उत्पीड़न। ८ शत्रु-भय। ९ सीमोल्लंघन, अतिक्रमण। १० घोड़े की तेज चाल।

विप्लुत–वि० [सं०] १ बिखरा हुआ, छितराया हुआ। २ डूबा हुआ। ३ आकुल, भयभीत। ४ नष्ट, बरबाद। ५ तिरस्कृत। ६ उलटा। ७ झूठा। ८ जिसके उच्चारण में प्लुत से अधिक समय लगे।

विफंद, विफदौ–पु० जाल, पाश, फंदा।

विफरणो (बो), विफरणी (बी)–क्रि० [सं० विस्फुरणम्] १ क्रुद्ध होना, बिगड़ना। २ गरजना, दहाड़ना। ३ फैलना, बिखरना। ४ प्रगट होना, स्फुटित होना।

विफरेस, विफरैस–वि० क्रोधित, क्रुद्ध।

विफळ, विफल, विफळ–वि० [सं० विफल] (स्त्री० विफळा) १ जिसके फल न हो, फल रहित। २ व्यर्थ, निरर्थक। ३ अफल। ४ हताश, निराश। ५ परिणाम रहित। ६ अप्रभावी। —पु०–१ पान, ताम्बूल। २ बांझ ककड़ी।

विफळणो (बो), विफळणी (बी)–क्रि० १ हताश होना, निराश होना। २ घबराना, भयभीत होना।

विफळता, विफलता–स्त्री० [सं० विफलता] १ असफलता, नाकामयाबी। २ व्यर्थता, निरर्थकता। ३ हताश या निराश होने की अवस्था या भाव।

विबंक–पु० १ वीरता, बहादुरी। २ बांकापन, कुटिलता। ३ टेढ़ापन, वक्रता। –वि० वीर, बहादुर।

विबध–पु० [सं०] १ कब्जी होने की अवस्था, मलावरोध, कब्जी। २ अवरोध, रुकावट। ३ बंधन, हथकड़ी।

विबंधवस्ति–स्त्री० [सं० विबंधवस्ति] घोड़ों का पेशाब रुकने का एक रोग।

विबरण–देखो 'विवरण'।

विबळ, विबल–वि० [सं० विबल] १ अशक्त, शक्तिहीन, बलहीन। २ विशेष बलवान, शक्तिशाली।

विबहथरणो (बो)–क्रि० लहराना, फहराना।

विबिसण, विबिसण, विबीसण, विबीसण–देखो 'विभीसण'।

विबुद्ध–वि० [सं० विबुद्ध] १ जागृत, सचेत। २ ज्ञान प्राप्त जानकार। ३ चतुर, होशियार। ४ खिला हुआ, फूला हुआ।

विबुध–पु० [सं० विबुध] १ चन्द्रमा, चांद। २ देवता। ३ विद्वान पुरुष, पंडित, कवि। ४ शिव, महादेव। ५ एक पौराणिक राजा। —आचार्य, आचारिय–पु० बृहस्पति —तटणी (नी), तटिणी (नी)–स्त्री० आकाश गंगा, गंगा नदी। —तर, (रु, रू)–पु० कल्पतरु। —धेन (नु)–स्त्री० काम धेनु। —नद, नदी–स्त्री० आकाश नदी, गंगा। —पत, पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्ती–पु० देवराज इन्द्र। —वैद्य–पु० अश्विनी कुमार।

विबुधप्रिय (प्रिया)–स्त्री० [सं० विबुध प्रिया] चर्चरी नामक छन्द।

विबुधलता–स्त्री० [सं०] कल्पलता।

विबुधवेल (लि, ली)–देखो 'विबुधवेलि'।

विबुधवन–पु० [सं०] इन्द्र का नन्दन वन।

विबुधविलासण (णि, णी), विबुधविलासिणि (णी)–स्त्री० [सं० विबुध विलासिनी] १ देववाला, देवांगना। २ परी अप्सरा।

विबुधवेल (लि)–स्त्री० [सं० विबुधवेलि] कल्पलता।

विबुधान–पु० [सं० विबुधान] १ देवता। २ पंडित, विद्वान।

विबुधाधिप (पत, पति, पती)–पु० [सं० विबुध-अधिपति] देवराज इन्द्र।

विबुधापगा–स्त्री० [सं०] १ आकाश गंगा। २ गंगा नदी।

विबुधालय–पु० [सं० विबुध-आलय] १ देवता का मन्दिर। २ स्वर्ग।

विबुधावास–पु० [सं० विबुध-आवास] १ देवता का आवास। २ मंदिर। ३ स्वर्ग।

विबुधेंद्र–पु० [सं०] देवराज इन्द्र।

विबुधेस–पु० [सं० विबुधेश] १ भगवान विष्णु। २ देवराज इन्द्र।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विबोध–पु० [सं० विबोध] १ जागृति, जागरण। २ चेतना, होश। ३ साहित्य में व्यभिचारी भाव। ४ निर्वहसंधि के चौदह अंगों में से एक। ५ चैतन्य लाभ। ६ कार्य का अन्वेषण।

विबोधन–स्त्री० [सं० विबोधन] १ जागृति पैदा करने की क्रिया। २ होश में लाना क्रिया। ३ व्यभिचार।

विब्भाड़णी (बी), विब्भाड़नी (बी)–देखो 'विभाड़णी' (बी)।

विब्भाणी (बी)–देखो 'विभाणी' (बी)।

विभंग–पु० [सं०] १ भौंहों से होने वाली चेष्टा, भ्रू-भंग। २ वस्तु विन्यास, रखाव। ३ खण्डन, खण्डितावस्था।

विभंज, विभंजण (न)–पु० [सं० वि+भंज] १ नाश, विनाश। २ संहार, नाश।

विभंजणी (बी)–क्रि० [सं० विभंजनम्] १ नाश करना, विनाश करना। २ संहार करना। ३ मारना, वध करना ४ मिटाना।

विभ–देखो 'वैभव'।

विभकर–पु० एक प्रकार का रत्न विशेष।

विभक्त–वि० [सं०] बांटा हुआ, विभक्त, पृथक किया हुआ। –पु० स्वामि कार्त्तिकेय का नामान्तर।

विभक्ति–स्त्री० [सं०] १ बांटना, विभक्त करना क्रिया या भाव, पार्थक्य, अलगाव। २ शब्द के आगे लगने वाला का, के, की, ने, से आदि प्रत्यय।

विभग्ग, विभग्ग–वि० [सं० विभग्न] टूटा-फूटा, भग्न, खण्डित।

विभचार–देखो 'व्यभिचार'।

विभच्छ, विभछ, विभत्स–पु० [सं० विभाऽच्छ] १ वीर अर्जुन। २ देखो 'वीभत्स'। —रस='वीभत्सरस'।

विभनो, विभन्नो–वि० [सं० वि-भंज] मरा हुआ, मृत।

विभरणी (बी)–क्रि० १ चमकना, चौंकना। २ क्रुद्ध होना, क्रोधित होना, बिगड़ना। ३ भ्रम में पड़ना, भ्रमित होना।

विभळ, विभळी–स्त्री० १ बिल, गुफा। २ आंख, नयन, नेत्र। –वि० १ निर्मल, साफ, स्वच्छ। २ सुन्दर, मनोहर।

विभव–पु० [सं०] १ छत्तीसवें संवत्सर का नामान्तर। २ देखो 'वैभव'।

विभववांन–देखो 'वैभववांन'।

विभांत (ति,ती)–स्त्री० [सं० विभांति] प्रकार, भेद, किस्म। –वि० विविधरूपेण।

विभा–स्त्री० [सं०] १ कांति, दीप्ति, आभा, प्रभा। २ छवि, शोभा, सौंदर्य। ३ किरण, रश्मि। ४ अग्नि, आग। —कर–पु० सूर्य। चांद, चन्द्रमा। राजा। आक, मदार। अग्नि, आग। –वि०–प्रकाश करने व अंधेरा मिटाने वाला।

विभाग–पु० [सं० विभागः] १ बंटवारा, अंश, हिस्सा। २ अंश, प्रकरण। ३ कार्य क्षेत्र। ४ कार्यालय। ५ परिच्छेद, खण्ड।

विभागी–वि० [सं० विभागिन्] १ हिस्सेदार, भागीदार। २ विभाग करने वाला।

विभाड़–पु० १ नाश, ध्वंस। २ बिगाड़, हानि। ३ कलह, झगड़ा। ४ मारना क्रिया, संहार। ५ विनाश, बरबादी। –वि० १ वीर, बहादुर। २ विनाश करने वाला। ३ चीरने-फाड़ने वाला। ४ मारने वाला। ५ हानिकारक। ६ कलह प्रिय। ७ बरबाद करने वाला। ८ हराने-पराजित करने वाला। ९ वध करने वाला। १० बिखेरने वाला। ११ त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

विभाड़ण (णि, णी, णी)–वि० १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला। २ हानि करने वाला, बिगाड़ने वाला। ३ कलह करने वाला, झगड़ा करने वाला। ४ तहस-नहस करने वाला, बरबाद करने वाला। ५ संहार करने वाला, मारने वाला। ६ चीरने वाला, फाड़ने वाला। ७ पराजित करने वाला, लूटने वाला। ८ बिखेरने वाला। ९ त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

विभाड़णी (बी)–क्रि० १ नाश करना, ध्वंस करना, नष्ट करना। २ संहार करना, मारना। ३ तहस-नहस, बरबाद करना। ४ हानि करना, बिगाड़ना। ५ चीरना, बिदीर्ण करना। ६ टुकड़े-टुकड़े करना। ७ तितर-बितर करना, बिखेरना। ८ हत्या करना, वध करना। ९ युद्ध में जीत कर कब्जे में करना। १० मिटाना। ११ विजय करना, जीतना। १२ त्यागना, छोड़ना। १३ सजा देना, दण्डित करना। १४ पराजित करना, हराना।

विभाड़ो–देखो 'विभाड़'।

विभाजक–वि० विभाजन करने वाला, बांटने वाला। –पु० गणित में भाजक अंक।

विभाजण–देखो 'विभाजन'।

विभाजणी (बी)–क्रि० १ अलग-अलग करना, विभाजन करना। २ बांटना, बटवारा करना, हिस्से करना।

विभाजन–पु० [सं०] १ विभाग या हिस्से करने की क्रिया या भाव। २ बटवारा। ३ पात्र, बर्तन।

विभाजित–वि० [सं०] हिस्सों में बंटा हुआ, विभक्त।

विभाज्य–वि० [सं०] १ विभाजन करने योग्य। २ जो विभक्त किया जा सके।

विभाड़ण (णि, णी, णी)–देखो 'विभाड़ण'।

विभाड़णी (बी)–देखो 'विभाड़णी' (बी)।

विभाणी (बी)–क्रि० १ चमकना, झलकना। २ शोभा युक्त होना, शोभा पाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभामानु (नु)–पु० [सं० विभा-मानु] अग्नि, आग।

विभाव–स्त्री० [सं० विभावः] १ रति या रस विधान संबंधी साहित्य में एक अवस्था। २ देखो 'वैभव'।

विभावन–पु० [सं०] १ विवेक, विचार। २ वाद-विवाद। ३ साहित्य में एक अवस्था विशेष।

विभावना–स्त्री० [सं०] साहित्य में एक अर्थालंकार।

विभावरि (री)–स्त्री० [सं० विभावरी] १ रात, रात्रि। २ वेश्या। ३ चतुर स्त्री। ४ दूती, कुटनी। ५ वरुण की नगरी का नाम। ६ भ्रष्ट एवं पतिता स्त्री। ७ व्यभिचारिणी। ८ दूसरी पत्नी, रखैल।

विभावरिस, विभावरीस–पु० [सं० विभावरी-ईश] १ चन्द्रमा, चांद। २ उल्लू, घुग्घू।

विभावसु (सु)–पु० [सं० विभा+वसु] १ अधिक प्रकाशमय वस्तु। २ सूरज, सूर्य। ३ चांद, चन्द्रमा। ४ अग्नि, आग। ५ गले का आभूषण, हार। ६ आठ वसुओं में से एक।

विभास–पु० [सं०] १ चमक, तेज, प्रकाश, कांति। २ एक राग विशेष। ३ एक देव योनि विशेष।

विभासक–वि० [सं०] १ चमकने वाला, प्रकाश युक्त, प्रकाश वान्। २ चमकाने वाला, प्रकाश युक्त करने वाला।

विभासणो (बो)–क्रि० १ चमकना, झलकना। २ चमकाना, झलकाना।

विभासा–स्त्री० [सं०] चमक, आभा, कांति, दीप्ति।

विभिंदु, विभिंदुक–पु० [सं०] एक दानवीर राजा।

विभिखण–देखो 'विभीसण'।

विभिन्न–वि० [सं०] १ अनेक, कई प्रकार के, भिन्न-भिन्न। २ तोड़ा या छेदा हुआ। ३ पृथक, जुदा। ४ विद्ध, घायल। ५ उद्विग्न, विकल।

विभिसण, विभीखण–देखो 'विभीसण'।

विभीत, विभीतक–वि० [सं० विभीतकी, विभीता] (स्त्री० विभीता) डरा हुआ, भयभीत।–पु० बहेड़ा व इसका वृक्ष।

विभीसण–पु० [सं० विभीषण] १ लंका पति रावण का छोटा भाई जो राम का भक्त था। २ विभीषण वंशीय एक अन्य लंका नरेश। ३ एक यक्ष।–वि० भयंकर, डरावना।

विभीसणा–स्त्री० [सं० विभीषणा] एक स्कन्द मातृका।

विभीसिका–स्त्री० [सं० विभीषिका] १ भय प्रदर्शन, आतंक। २ डर, खौफ। ३ भयानक स्थिति, भयानकता।

विभु, विभू–वि० [सं० विभु] १ जो सर्वगत एवं सर्व व्यापक हो। २ बहुत बड़ा, महान्। ३ दृढ़, अटल। ४ बलवान, शक्तिशाली। ५ जितेन्द्रिय, संयमी।–पु० [सं० विभुः] १ आकाश, व्योम। २ ब्रह्मा। ३ भगवान श्रीविष्णु। ४ शिव, महादेव। ५ प्रभु, ईश्वर, स्वामी। ६ उड़ायी तरल पदार्थ विशेष। ७ नौकर, सेवक। ८ काल, समय। ९ सौवीर देश का एक राजा। १० रैवत मन्वन्तर का इन्द्र। ११ विष्णु का एक अवतार। १२ देव विशेष। १३ राजा, नृप।

विभूखण–देखो 'विभूसण'।

विभूखणी (बो)–देखो 'विभूसणी' (बो)।

विभूखा–देखो 'विभूसा'।

विभूखित–देखो 'विभूसित'।

विभूत–देखो 'विभूति'।

विभूतसिद्ध (सिध), विभूतासिद्ध (ध)–पु० [सं० विभूति-सिद्ध] १ शिव, महादेव। २ सिद्धि प्राप्त महात्मा। ३ एक लोक देवता विशेष।

विभूति (ती)–स्त्री० [सं० विभूति] १ बड़ा होने की अवस्था, बड़प्पन। २ स्वस्थता। ३ वृद्धि, बढ़ोतरी। ४ वैभव, ऐश्वर्य। ५ धन, दौलत, सम्पत्ति। ६ अधिकार, प्रभुत्व। ७ कान्ति, दीप्ति। ८ श्री विष्णु का नित्य व स्थाई ऐश्वर्य। ९ दिव्य शक्तियां। १० भस्मी, राख, भभूत। ११ यज्ञ या अग्नि कुण्ड की भस्म, धुनी की भस्म। १२ श्रीराम का एक दिव्यास्त्र। १३ सिद्ध पुरुष। १४ मूर्खों के लिये एक व्यंगात्मक सम्बोधन। १५ एक चर्म रोग। १६ विश्वामित्र का एक पुत्र।—द्वादस, द्वादसी–स्त्री० शुक्ल पक्ष की द्वादसी का व्रत।—मांन, वांन–वि० शक्तिशाली, बलवान, वैभवशाली, ऐश्वर्य युक्त। कान्ति युक्त, चमकीला।—सिद्ध, सिध='विभूतासिद्ध'।

विभूती–वि० भस्म या राख लगाया हुआ।

विभूवस (सु)–पु० एक ऋषि विशेष।

विभूसण–पु० [सं० विभूषणम्] १ अलंकार, आभूषण, जेवर। २ अलंकृत या आभूषित करने की क्रिया।—करता, कार–पु० स्वर्णकार।–वि० अलंकृत करने वाला।

विभूसणो (बो)–क्रि० [सं० विभूषणम्] १ अलंकृत होना आभूषण पहनना। २ शोभित होना।

विभूसा–पु० [सं० विभूषा] १ सुन्दरता, शोभा। २ सुन्दरी, मोहिनी।

विभूसित–वि० [सं० विभूषित] (स्त्री० विभूसिता) १ अलंकृत, शोभित। २ सुसज्जित। ३ कान्तिवान, आभायुक्त। ४ गुणों से युक्त।

विभेद–पु० [सं०] १ भिन्नता प्रकट करने वाला तत्त्व, अन्तर, फर्क। २ अनेक भेद-प्रभेद। ३ अंश, खण्ड, विभाग। ४ काटने-छेदने की क्रिया।

विभेदक–वि० [सं०] १ खण्डन, छेदन या भेद करने वाला। २ अन्तर, फर्क व भिन्नता प्रकट करने वाला तत्त्व।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभेदण–पु० [सं० विभेदनम्] १ विभेद बताना क्रिया, भिन्नता २ अनेक भेद-प्रभेद करना क्रिया। ३ अंश-खंड या विभाग करना क्रिया, बंटवारा। ४ काटना या छेदना क्रिया।–वि० (स्त्री० विभेदणी, विभेदिणी) १ अन्तर, फर्क या भिन्नता प्रकट करने वाला। २ भेद-प्रभेद करने वाला। ३ खण्ड या विभाजन करने वाला। ४ काटने-तोड़ने या छेदने वाला।

विभेदणी (णी)–क्रि० [सं० विभेदनम्] १ अन्तर, फर्क या भिन्नता प्रकट करना। २ अनेक भेद-प्रभेद करना। ३ खण्डन या विभाजन करना। ४ काटना, छेदना, तोड़ना। ५ घुसाना, धसाना। ६ ईर्ष्या उत्पन्न करना।

विभोग (गी)–पु० १ राज्य कर। २ कृषि उपज में जागीरदार का अंश। ३ आमोद-प्रमोद, विलास।

विभोर–वि० [सं०] १ आनन्द, मस्त, मगन, लीन। २ मद मस्त। ३ विकल, विह्वल, व्याकुल।

विभोवस (सु)–देखो 'विभावसु'।

विभो–देखो 'वैभव'।

विभ्रंस–पु० [सं० विभ्रंश] १ अवनति, पतन। २ विनाश, विध्वंस। ३ हानि, नुकसान। ४ ऊंचा कगार। ५ पहाड़ के शिखर का चौरस मैदान।

विभ्रंसण–पु० [सं० विभ्रंशम्] १ विनाश करना क्रिया, विध्वंस। २ हानि, नुकसान। ३ बरबाद, तहस-नहस।

विभ्रंसणी (णी)–क्रि० [सं० विभ्रंशम्] १ विनाश, विध्वंस करना। २ हानि, नुकसान करना। ३ बरबाद करना। ४ संहार करना, मारना।

विभ्रम–पु० [सं० विभ्रमः] १ घूमने की क्रिया, भ्रमण, चक्कर। २ भूल, गलती। ३ उतावला पन, उद्विग्नता। ४ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह। ५ एक शृंगारिक चेष्टा विशेष। ६ चकित। ७ संयोग शृंगार में नायिका की एक अवस्था विशेष।

विभ्रमणी (णी)–क्रि० [सं० विभ्रमणम्] १ घूमना, चक्कर लगाना। २ चिंतातुर या चिंतित होना। ३ भूल या गलती में होना। ४ भ्रमित होना, शंकायुक्त होना। ५ आश्चर्य चकित होना। ६ काम क्रिया के लिये उत्प्रेरित होना। ७ उतावला या उद्विग्न होना। ८ गलती करना, भूल करना।

विभ्रमा–स्त्री० १ आभा, कांति, शोभा। २ सुन्दरता। ३ वृद्धावस्था, बुढापा।

विभ्रम्म–देखो 'विभ्रम'।

विभ्रम्मणी (णी)–देखो 'विभ्रमणी' (णी)।

विभ्रस्ट–वि० [सं० विभ्रष्ट] १ पथ भ्रष्ट, पतित। २ नष्ट, ध्वस्त।

विभ्रांत–वि० [सं०] १ घूमा हुआ, चक्कर खाया हुआ। २ चिंतित। ३ आश्चर्य चकित। ४ भ्रमित, शंकायुक्त। ५ उद्विग्न।

विभ्रांतसील–वि० [सं० विभ्रान्त-शील] १ बन्दर, वानर। २ सूर्य मंडल। ३ चन्द्र मण्डल।–वि० १ व्याकुल, चिंतातुर। २ नशे में चूर।

विभ्रांति–स्त्री० [सं० विभ्रान्ति] १ भ्रमण, चक्कर। २ भूल, गलती। ३ सौन्दर्य, शोभा। ४ शंका, शक, संदेह। ५ भ्रान्ति, धोखा। ६ घबराहट, उद्विग्नता।

विभ्राज–पु० [सं०] १ ययाति वंश का एक राजा। २ एक अन्य प्राचीन राजा।

विमग्री–स्त्री० आर्या गीति का एक भेद।

विमगो–वि० १ अद्भुत, अनोखा। २ बिना मांगा हुआ।

विमचो–स्त्री० रक्त विकार संबंधी एक रोग।

विमणउ (णो)–पु० १ एक प्रकार का सुगंधित वृक्ष। २ देखो 'दू'णो'। ३ देखो 'विमन'।

विमता–स्त्री० १ आपत्ति, विपत्ति। २ नम्रता, धैर्य। ३ गरीबी, निर्धनता।

विमति–वि० [सं०] १ विपरीत बुद्धि वाला, मूर्ख, मूढ। २ बुद्धिहीन। ३ विरोधि मत का।–स्त्री० १ भिन्न मति, मतान्तर। २ मूर्खता। ३ नापसंदगी।

विमद–वि० [सं०] मद रहित।–पु० सत्य संघ राजा।

विमधु–पु० [सं०] अमृत, पीयूष।–वि० १ विशेष मीठा। २ कड़वा। ३ अज्ञानी, मूर्ख। ४ विशेष मोहित, उन्मत्त। ५ विकल, व्याकुल। ६ उदासीन, खिन्न।

विमन–वि० १ उदासीन, खिन्न चित्त। २ व्याकुल, उद्विग्न। ३ चिंतित, दुःखी। ४ क्रूर, क्रुद्ध, निर्दयी।–स्त्री० वमन, कै, उल्टी।

विमनुस्या–स्त्री० [सं० विमनुष्या] एक अप्सरा।

विमनी (ण स्त्री)–देखो 'विमन'।

विमर–१ देखो 'विवर'। २ देखो 'विमळ'।

विमरद–पु० [सं० विमर्दः] १ मसलने, मलने या उबटन करने की क्रिया। २ स्पर्श। ३ रगड़, रौंदना क्रिया। ४ युद्ध, संग्राम। ५ नाश, बरबादी। ६ संहार, विनाश। ७ कष्ट, दुःख देना क्रिया। ८ ग्रास, ग्रहण। ९ सूर्य-चन्द्रमा का समागम। १० एक किरात राजा। ११ नपुंसक व्यक्ति। १२ कमजोर या सामर्थ्यहीन व्यक्ति।

विमरदक–वि० [सं० विमर्दकः] १ मर्दन करने वाला, मसलने वाला, उबटन करने वाला। २ रगड़ने, रौंदने वाला, कुचलने वाला। ३ नाश, बरबाद करने वाला। ४ मारने वाला संहार करने वाला। ५ युद्ध करने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विमरवण–देखो 'विमरद'।

विमरवित–वि० विमरद किया हुआ, मसला हुआ, रौंदा हुआ।

विमरस–पु० [सं० विमर्श] १ नाटक की पांच संधियों में से एक। २ वासना। ३ विचार, समीक्षा। ४ बहस। ५ शंका, संदेह।

विमरीर–वि० जबरदस्त, महान्, शक्तिशाली।

विमळ, विमल–वि० [सं० विमल] १ मल रहित, निर्मल, उज्ज्वल। २ सफेद, स्वच्छ, साफ। ३ पार दर्शक। ४ दोष रहित, निर्दोष। ५ सुन्दर, मनोहर, शोभायुक्त। ६ पावन, पवित्र शुद्ध। (वाणी)–पु० १ चांदी। २ सेंधा नमक। ३ एक प्राचीन राजा। ४ एक यक्ष। ५ एक मात्रिक छन्द विशेष। ६ देखो 'विमलनाथ'।

विमलक–पु० एक बहुमूल्य पत्थर।

विमलकथ–वि० कीर्तिवान, यशस्वी। –स्त्री० कीर्ति, यश।

विमलगिरिंद (गिरि)–पु० शत्रुंजय पर्वत का एक नाम।

विमलजिन–पु० एक तीर्थंकर।

विमळता, विमलता–स्त्री० [सं० विमल+प्र० ता] १ स्वच्छता, निर्मलता। २ पावनता, पवित्रता। ३ सुन्दरता, मनोहरता। ४ मधुरता, मीठापन।

विमळदान–पु० [सं० विमल-दान] १ देवताओं की भेंट, चढ़ावा। २ केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाने वाला दान।

विमळध्वनि–पु० एक छन्द विशेष।

विमलनाथ–पु० एक तीर्थंकर।

विमळहंस–पु० हंस।

विमळा, विमला–स्त्री० [सं० विमला] १ सरस्वती का नामान्तर। २ एक देवी विशेष। ३ सुरभि की एक पुत्री, गाय। ४ वासुदेव की नायिका। –वि० निर्मल, स्वच्छ, साफ।–आतमा, आत्मा–वि० शुद्धात्मा, सहज स्वभाव। –पु०–चांद, चन्द्रमा।

विमळाचळ (ल), विमलाचली (लि, ली)–पु० [सं० विमलाचल] शत्रुंजय पर्वत का एक नाम।

विमळापत (पति, पती), विमलापत (पति, पती)–पु० [सं० विमलापति] १ ब्रह्मा। २ स्वायंभुवमनु। ३ वशीचि ऋषि। ४ आदित्य। ५ रंति राजा।

विमलेसर (सुर, स्वर)–पु० [सं० विमलेश्वर] एक तीर्थ विशेष।

विमांण (ण), विमांन–पु० [सं० विमान] १ वायुयान, विमान, उड़न खटोला। २ शव की अर्थी। ३ भगवान की सवारी निकालने का पालकीनुमा वाहन। ४ देव मंदिर का ऊपरी भाग। ५ वाहन, सवारी। ६ सात खंडों वाला मकान।

विमांणणी–स्त्री० दैवी प्रकोप से होने वाला एक वात रोग।

विमांणिक, विमांणी, विमांणीक, विमांणीय–देखो 'वैमानिक'।

विमांणी, विमांन–देखो 'विमांण'।

विमांस–पु० [सं०] अशुद्ध या अपवित्र मांस।

विमांह–देखो 'विवाह'।

विमात विमाता (त्र, त्री)–स्त्री० [सं० विमातृ] सौतेली मां। पिता की अन्य पत्नी।

विमार, विमार–वि० अस्वस्थ, रोगग्रस्त।

विमारग–पु० [सं० विमार्ग] १ बुरा रास्ता, कुमार्ग। २ बुरा आचरण।

विमाळ, विमाल–स्त्री० १ देरी, विलंब। २ विचार। –वि० चुप, शांत।

विमाळणो (णी)–क्रि० विचार करना।

विमाळी–देखो 'विमाळ'।

विमास, विमासण–पु० विचार।

विमासणो (णी)–क्रि० १ विचार करना। २ समझाना।

विमाह (हो)–देखो 'विवाह'।

विमाहणो (णी)–देखो 'विवाहणो' (णी)।

विमुक्त–वि० [सं०] १ छूटा हुआ, मुक्त। २ आजाद, स्वतंत्र। ३ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। ४ फेंका हुआ, छोड़ा हुआ। ५ दायित्व आदि से मुक्त।

विमुक्ति–स्त्री० [सं०] १ छुटने या मुक्त होने की अवस्था, छुटकारा। २ आजादी, स्वतंत्रता। ३ अलगाव, विछोह। ४ मुक्ति, मोक्ष।

विमुख (खी)–वि० [सं०] १ जो किसी कार्य, विषय या बात पर एकाग्रचित न हो। २ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध। ३ उल्टा, विपरीत। ४ पुनरावर्तन, प्रत्यावर्तन। ५ औंधा, उल्टा। ६ बिना, रहित, हीन। ७ उल्टे मुख। ८ मुख रहित।

विमुखता–स्त्री० [सं०] १ विरोध, प्रतिकूलता। २ अप्रसन्नता। ३ विरति।

विमुग्ध–वि० [सं०] १ मोहित, मुग्ध, आसक्त। २ भ्रमित, भ्रान्त। ३ उन्मत्त, मस्त। ४ विकल, परेशान। ५ पागल, बावला।

विमुग्धकारी–वि० [सं०] १ मोहित करने वाला। २ मस्त। ३ भ्रमित करने वाला।

विमुदर, विमुद्र–वि० [सं० विमुद्र] खिला हुआ, विकसित।

विमुह (हि, हो)–देखो 'विमुख'।

विमुहाळ–वि० औंधा, उल्टे मुख।

विमूंहो–देखो 'विमुख'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विमूढ–वि० [सं० विमूढ] १ मूर्ख, नासमझ। २ विशेष मोहित, मुग्ध। ३ भ्रमित। ४ चेतना रहित, चेतना शून्य। —गरभ–पु० मृत गर्भ।

विमूळ–वि० [सं० विमूल] १ मूल रहित, निर्मूल। २ नष्ट, बरबाद।

विमूळण–पु० [सं० विमूलन] १ उन्मूलन, उखाड़ फेंकने की क्रिया या भाव। २ नाश करना क्रिया।

विमेक (ख)–देखो 'विवेक'।

विमोक्ख, विमोक्ष, विमोख–पु० [सं० विमोक्ष] १ बंधन मुक्त करने या मुक्ति देना क्रिया। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ ग्रहण से मुक्ति। ४ सुमेरु पर्वत।

विमोखण–स्त्री० १ बंधन मुक्त या रिहा करना क्रिया। २ तीर आदि छोड़ना क्रिया।–वि० १ मुक्त या रिहा करने वाला। २ छोड़ने, चलाने वाला। ३ मुक्ति दिलाने वाला।

विमोखणो (णौ)–क्रि० [सं० विमोक्षणम्] १ बंधन मुक्त करना, रिहा करना। २ तीर, गोली आदि छोड़ना। ३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाना।

विमोचक–वि० मुक्ति दाता, बंधन मुक्त या रिहा करने वाला।

विमोचण (न)–पु० [सं० विमोचन] १ मुक्त करना क्रिया, मुक्ति। २ मोक्ष, निर्वाण। ३ कुरुक्षेत्र स्थित एक तीर्थ। ४ नाश करना क्रिया।

विमोचणो (णौ)–क्रि० १ बंधन से मुक्त करना, रिहा करना। २ आवागमन मिटाना, मुक्त करना।

विमोद–पु० [सं०] अत्यन्त हर्ष, मोद, प्रसन्नता।–वि० मोद या हर्ष रहित।

विमोह–पु० [सं०] १ अत्यन्त मोह। २ अज्ञान, भ्रम। ३ एक नरक का नाम।–वि० १ मोह रहित। २ बेसुध, अचेत।

विमोहक–वि० [स०] १ मोह उत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, आकर्षित करने वाला। २ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला। ३ अचेत या बेसुध करने वाला।

विमोहण (णो)–पु० [सं०] १ मोहित करने की क्रिया, आकर्षित करने की क्रिया। २ लुभाने या ललचाने की क्रिया। ३ अचेत या बेसुध करने की क्रिया। ४ कामदेव के पांच बाणों में से एक। ५ एक नरक का नाम। ६ मोह रहित करने की क्रिया।–वि० १ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला। २ लोभ उत्पन्न करने वाला। ३ अचेत या बेसुध करने वाला। ४ मोह रहित करने वाला।

विमोहणो (णौ)–क्रि० [सं० विमोहनम्] १ मोहित होना, मुग्ध होना। २ आकर्षित होना। ३ लालायित होना, ललचाना। ४ भ्रमित या भ्रान्त होना। ५ अचेत होना, बेसुध होना। ६ मोह रहित होना। ७ मोहित, अचेत या बेसुध करना। ८ मोह रहित करना।

विमोहा–पु० छः वर्णों का एक छन्द विशेष।

विमोहित–वि० [सं०] १ मोहित, आकर्षित। २ लालायित। ३ भ्रमित, भ्रान्त। ४ अचेत, बेसुध।

विमोही–वि० [सं० विमोहिन्] मोहित, भ्रमित या अचेत करने वाला।

विम्मर–देखो 'विवर'।

विम्मळ (ख)–देखो 'विमळ'।

विय–देखो 'विय'।

वियरमणि–पु० [सं० वियद्मणि] सूरज, सूर्य।

वियट्ठ–देखो 'विटळ'।

वियत–पु० [सं० वियत्] आकाश, व्योम, गगन।

वियतमणि (णी)–पु० [सं० वियत्-मणि] १ सूरज, सूर्य। २ चांद, चन्द्रमा।

वियतगंगा–स्त्री० [सं०] आकाश गंगा।

वियाणी–वि० जन्म देने वाली।

वियांन–१ देखो 'व्यान'। २ देखो 'वियांन'।

वियाज, वियाज–देखो 'व्याज'।

वियाणी (णी), वियाणी (णी)–देखो 'व्याणी' (णी)।

वियापणो (णौ), वियापणो (णौ)–देखो 'व्यापणो' (णौ)।

वियापि (पी)–देखो 'व्यापी'।

वियार–१ देखो 'विकार'। २ देखो 'विचार'।

वियाळु (ळू), वियाळु–देखो 'व्याळू'।

वियास–देखो 'व्यास'।

वियासियो–देखो 'वंयासियो'।

वियोग, वियोग–पु० [सं०] १ संयोग का अभाव। २ विच्छेद, अलगाव। ३ अवसर, मौका। ४ विरह, जुदाई। ५ साहित्य में एक अलंकार विशेष।–वि० रहित, बिना।–क्रि० वि० वियोग में, अलग।

वियोगण (णी)–स्त्री० [स० वियोगिनी] वह स्त्री जिसका पति से वियोग हो गया हो, विरहिणी।

वियोगांत–वि० [सं०] दुःखमय अंत वाला।–स्त्री० दुःखांत कथा।

वियोगिण (णि, णी), वियोगिन–देखो 'वियोगण'।

वियोगी, वियोगी–वि० [सं०] १ जो अपनी पत्नी या प्रिया से दूर हो, विरही। २ विरह से दुःखी।

वियोगी–पु० १ वियोग। २ देखो 'वियोगी'।

वियोजक–वि० [सं०] १ वियोग उत्पन्न करने वाला। २ अलग या विलग करने वाला।

वियोजण–पु० [सं० वियोजन] १ वियोग कराने की क्रिया या प्रयास। २ अलग या पृथक करने की क्रिया, भाव या तत्व। ३ गणित में घटाने की क्रिया, बाकी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विथो–देखो 'दूजो'।

विथौवन–पु० १ युवावस्था के बीच का समय। २ युवावस्था के बाद का समय।

विरंग (गु, गू, गो)–वि० [सं० विरंग] (स्त्री० विरंगी) १ अप्रिय, असुहावना। २ जो समय के प्रतिकूल हो। ३ कड़वा, बेस्वाद। ४ बदशक्ल, बदरूप, कुरूप। ५ बदरंग। ६ बहुरंगी। ७ भयंकर, डरावना। ८ उदासीन, खिन्न। ९ अशुभ (रंग)। १० फीका, नीरस। ११ अनुराग या इश्क रहित। १२ दुःख पूर्ण, पीड़ा युक्त, सन्ताप युक्त। १३ प्रभाव रहित, रोब रहित। १४ जोश रहित। १५ बद्दा, बुरा। १६ शुष्क, सूखा, निर्जल। १७ कड़वा, कर्ण कटु। १८ विकट।

विरंच–स्त्री० १ एक औषधि विशेष। २ देखो 'विरंचि'।

विरंचनाथ–देखो 'विरंचि'।

विरंचि (ची), विरंचिनाथ–पु० [सं० विरिञ्च, विरिञ्चि] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव।—सुत–पु० ब्रह्मा के पुत्र नारद।

विरंज (जी)–पु० १ चावल के साथ पकाया जाने वाला मांस। २ चावल का मीठा व्यंजन। ३ देखो 'विरंचि'।

विरंडो–देखो 'भिंडी'।

विरउ–वि० हल्का, तुच्छ।

विरक–पु० [सं० वृक] भेड़िया।

विरकत–देखो 'विरक्त'।

विरक्ख–देखो 'वृक्ष'।

विरक्त–पु० [सं०] १ रामस्नेही साधुओं का एक वर्ग। २ एक प्रकार का बाजा।–वि० १ अनुराग या आसक्ति रहित। २ सांसारिक बंधन या प्रपंच से अलग, तटस्थ उदासीन। ३ अत्यन्त लाल, गहरा लाल। ४ भोग व वासना से उदासीन। ५ बदरंग। ६ त्यागी। ७ खिन्न, उदास।

विरक्तता, विरक्ति–स्त्री० [सं० विरक्ति] १ अनुराग या आसक्ति का अभाव विमुखता। २ उत्तेजना। ३ खिन्नता, उदासी। ४ संसार से उदासीनता। ५ तटस्थता। ६ त्याग।

विरख–देखो 'वृक्ष'।

विरखभाण (ख, न, नु, भू)–देखो 'वृषभानु'।

विरखा–देखो 'वरसा'।

विरखाकरण–देखो 'वरखाकरण'।

विरगावणी (वो)–क्रि० दीन वचन कहना, गिड़गिड़ाना।

विरड़क, विरड़क–पु० १ बाधा, विघ्न। २ रोक, रुकावट। ३ प्रतिबंध।

विरड़णी (वो), विरड़णी(वो)–क्रि० १ घुसना, धंसना। २ कुपित या क्रुद्ध होना। ३ लड़ना, झगड़ना। ४ राजसत्ता के विरुद्ध विद्रोह करना।

विरड़णी(वो), विरड़णी(वो)–क्रि० १ पलटना, बदलना, विमुख होना। २ पीछे हटना। ३ विरुद्ध होना, प्रतिकूल होना। ४ क्रुद्ध या कुपित होना। ५ रचना, बनाना। ६ आयोजन करना, मनाना। ७ विरक्त, उदासीन या तटस्थ होना। ८ कम होना, घटना। ९ त्यागना, छोड़ना। १० धोखा देना, छलना।

विरचयिता–वि० [सं०] बनाने वाला, रचना करने वाला।

विरचित–वि० [सं०] रचित, निर्मित।

विरछ–देखो 'वृक्ष'।

विरछी–पु० बबूल की फली।

विरज–पु० [सं० विरजः] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर। २ शिव, महादेव। ३ वीर्य, बीज। [सं० विरजस्] ४ नारायण का एक मानस पुत्र। ५ एक प्रजापति।–वि० १ धूल, रज रहित, निर्मल, स्वच्छ। २ जिसका रजोधर्म बन्द हो गया हो (स्त्री)। ३ सुख व वासना से मुक्त, अनुराग रहित।

विरजा–पु० [सं० वीर्य+ज] १ पिता। २ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र। ३ शिव का एक नामान्तर। ४ वसिष्ठ ऋषि का एक पुत्र। ५ भगवान नारायण का एक पुत्र।–स्त्री० ६ विरजस नामक प्रजापति की कन्या। ७ श्रीकृष्ण की एक सखी। ८ राजा नहुष की पत्नी।

विरजाक्ष–पु० [सं०] मेरु पर्वत के पास उत्तर में स्थित एक पर्वत।

विरजाक्षेत्र (खेत, खेत्र)–पु० [सं०] उड़ीसा का एक पवित्र तीर्थ।

विरड़णी (वो)–देखो 'विरड़णी' (वो)।

विरणियो–वि० वीर, बहादुर, योद्धा।

विरतंत (ति)–देखो 'वृतांत'।

विरत–पु० १ झूठ, असत्य। २ यति, विश्राम। ३ देखो 'व्रती'। ४ देखो 'विरक्त'। ५ देखो 'व्रत'।

विरतांत–देखो 'वृतांत'।

विरता–१ देखो 'विरक्त'। २ देखो 'विरक्तता'।

विरति (ती)–स्त्री० [सं० विरतिः] १ अन्तिम अवस्था। २ अवसान, समाप्ति। ३ अन्तिम छोर, शिरा। ४ देखो 'विरक्ति'। ५ देखो 'व्रति'। ६ विपरीत रति।

विरतिचक्ष (चक्ष, चख)–पु० मंत्री।–वि० [सं० विरक्त-चक्षु] १ लाल आंखों वाला। २ क्रोध पूर्ण आंखों वाला।

विरतेसर (सरी, सुर, सुरी, स्वर, स्वरी)–देखो 'व्रतेस्वरी'।

विरतो–देखो 'विरत्तो'।

विरत्त–१ देखो 'विरक्त'। २ देखो 'व्रति'।

विरत्तउ–वि० [सं० विरक्त] पराङ्मुख।

विरत्तणी (वो)–क्रि० १ कुपित होना, क्रुद्ध होना। २ पीड़ित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या दुःखी होना। ३ उदासीन या खिन्न होना। ४ तटस्थ होना।

विरत्ति–१ देखो 'विरक्ति'। २ देखो 'विरति'। ३ देखो 'व्रति'। ४ देखो 'वीरता'।

विरत्तो–वि० [सं० विरक्त] (स्त्री० विरत्ती) १ पीड़ित, दुःखी, कष्टमय। २ कुपित, क्रुद्ध। ३ उदासीन, खिन्न चित्त।

विरथ–वि० [सं०] १ बिना रथ का, रथहीन। २ नृपंजय के पुत्र बहुरथ का नाम। ३ देखो 'व्यरथ'।

विरथा, विरथा–देखो 'वृथा'।

विरद, विरद–१ देखो 'बिरुद'। २ देखो 'विरुद'।

विरदधण (अल, भलू), विरदधर (धार, धारी, धारु)–वि० १ विरुदधारी, यशस्वी। २ वीर, बहादुर, योद्धा।

विरदपगार–वि० विरुद की रक्षा करने वाला।

विरदपत (पति, पती)–देखो 'विरुदपति'।

विरदाणी (बी)–देखो 'विरुदाणी' (बी)।

विरदाधिप (पत, पति, पती)–देखो 'विरुदपति'।

विरदायक–१ देखो 'वरदायक'। २ देखो 'विरुदायक'।

विरदाळ (ळी)–देखो 'विरुदाळी'।

विरदावणी (बी)–देखो 'विरुदाणी' (बी)।

विरदूं–देखो 'विरुद'।

विरदेत–देखो 'विरुदैत'।

विरदें–देखो 'विरुद'।

विरदैत–देखो 'विरुदैत'।

विरह–देखो 'विरुद'।

विरध, विरध–१ देखो 'विहव'। २ देखो 'विरुद'। ३ देखो 'विरुद्ध'। ४ देखो 'व्रद्ध'।

विरधा, विरधा–१ देखो 'व्रद'। २ देखो 'वृधा'।

विरधापण (पणो)–देखो 'व्रद्धपणा'।

विरधि (धी)–देखो 'व्रद्धि'।

विरम–देखो 'ब्रह्म'।

विरमचारी–देखो 'ब्रह्मचारी'।

विरमाणी, विरमाणी–देखो 'ब्रह्माणी'।

विरमा, विरमा–देखो 'ब्रह्मा'।

विरमाणी (बी), विरमाणी (बी), विरमावणी (बी), विरमावणी (बी)–देखो 'विलमाणी' (बी)।

विरमी–पु० दुसाला, वस्त्र, चद्दर।

विरम्म–१ देखो 'वरम'। २ देखो 'ब्रह्म'।

विरयां–१ देखो 'वेळा'। २ देखो 'बिरियां'।

विरळ, विरस, विरलउ–पु० सूर्य, सूरज।

विरळणी (बी)–क्रि० १ तहस-नहस करना, नष्ट करना। २ आकर्षित करना। ३ पथ भ्रष्ट करना, गुमराह करना। ४ वस्तु को उलट-पुलट कर देखना। ५ चीरना, फाड़ना। ६ ऊपर नीचे करना। ७ बिखेरना, अस्त-व्यस्त करना। ८ तहस-नहस या नष्ट होना। ९ आकर्षित या मोहित होना। १० पथ भ्रष्ट या गुमराह होना।

विरळाणी (बी), विरळावणी (बी)–क्रि० दिखाना।

विरळु, विरलु, विरळी (ळी)–वि० [सं० विरल] (स्त्री० विरळी) १ विशेषता रखने वाला, विशिष्ट। २ दुर्लभ्य, अलभ्य। ३ लाखों में एक, अद्वितीय। ४ थोड़ा, कम। ५ निर्जन, शून्य। ६ सघन का विपर्याय। ७ गाढ़ा का विपर्याय, पतला। ८ खाली रिक्त। ९ छितराया हुआ। १० नाजुक।

विरवड़, विरवड़ी–देखो 'वरवड़ी'।

विरस–वि० [स०] १ जिसमें रस न हो, नीरस। २ जिसमें स्वाद या जायके का अभाव हो, बेस्वाद, फीका। ३ प्रेम या प्रीति से रहित, रूखा, विरक्त, उदासीन। ४ रतिक्रीड़ा या हास-विलास से विरक्त। ५ उमग-जोश रहित, निरुत्साह। ६ तरलता या आर्द्रता रहित, शुष्क। ७ तत्त्व-सार रहित, निस्सार। ८ नाराज। ९ दुश्मन, शत्रु। १० चिन्तातुर, उदास। ११ अरुचिकर। १२ दया रहित, निर्दयी। १३ निष्ठुर। १४ कष्टदायी, दुःखदायी। –पु० १ क्रोध, गुस्सा। २ कलह, झगड़ा। ३ कड़वाहट।

विरसाळो (ली), विरसाळो–वि० (स्त्री० विरसाली) १ श्रेष्ठ, उत्तम। २ देखो 'विरस'।

विरह, विरह–पु० [सं०] १ संयोग का अभाव, वियोग। २ वियोग जनित दुःख। पीड़ा। ३ नायक-नायिका की जुदाई, अलगाव। ४ विच्छेद, पार्थक्य। ५ गैर हाजरी, अनुपस्थिति। ६ छोड़ने की क्रिया, त्याग। –वि० १ रहित, हीन। २ तप्त, गर्म। ३ देखो 'विरही'।

विरहण (णि, णी), विरहण–स्त्री० स्त्री या नायिका जो अपने प्रियतम से विलग हो, वियोगिनी स्त्री।

विरहणी (बी)–क्रि० [सं०] १ चीरा जाना, विदीर्ण किया जाना। २ संयोग का अभाव होना। ३ विच्छेद होना, अलग होना। ४ दो प्रेमियों का अलग-अलग होना। ५ प्रेमियों को जुदाई का कष्ट होना। ६ छोड़ना, त्यागना।

विरहन (नि,नी)–देखो 'विरहण'।

विरहमण, विरहासण–देखो 'ब्राह्मण'।

विरहाग, विरहागन (नि, नी, नि)–स्त्री० [सं० विरह-अग्नि] विरहानल, विरह की आग, व्यथा।

विरहानळ (ल, ळि, ळी)–स्त्री० [सं० विरह-अनल] विरह की आग, विरह-व्यथा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विरहाळी (ली)–स्त्री० शत पुष्पा, सौंफ ।

विरहि–१ देखो 'विरह' । २ देखो 'विरही' ।

विरहिण (णि, णी)–देखो विरहिणी' ।

विरही–वि० [सं०] (स्त्री० विरहिणी) १ जो अपनी पत्नी या प्रिया से अलग या दूर हो । २ प्रिया वियोग से दुःखी । ३ कठोर* ।–पु० १ वियोगी पुरुष या नायक । २ देखो 'बरही' ।

विरहीवीर–वि० महावीर, वीरों में श्रेष्ठ ।–पु० बलराम का एक नामान्तर ।

विरहुण (णि, णी)–देखो 'विरहणी' ।

विरहोत्कंठिता–स्त्री० [सं० विरह-उत्कंठिता] विरह में व्याकुल नायिका जिसे नायक के आने का विश्वास हो ।

विरहो–देखो 'विरह' ।

विरांण, विरांण–१ देखो 'विरांण' । २ देखो 'वीरांन' ।

विरांणी, विरांणी–१ देखो 'वणियांणी' । २ 'विडांणी' ।

विरांणी–देखो 'विडांणी' ।

विरांन–१ देखो 'वीरांन' । २ देखो 'वीरांण' ।

विराम–स्त्री० [सं० विराम] १ क्रिया, गति या चाल में ठहराव, अटकाव, रुकने का भाव । २ आराम, विश्राम । ३ कार्य से अवकाश, निवृत्ति । ४ वाक्य छन्द में यति । ५ यति का चिह्न । ६ चिह्न, लक्षण । ७ अंतिम अवस्था समाप्ति । ८ भ्रम, भ्रांति, सन्देह । ९ घबराहट, बेचैनी । १० उत्पात, उपद्रव । ११ कष्ट, पीड़ा, संकट । १२ निवास स्थान । १३ अज्ञान ।

विरामण,विरामण–देखो 'ब्राह्मण' ।

विरामणी–स्त्री० १ ब्रह्मचारिणी देवी । २ ब्राह्मणी ।

विरामणी (बो)–क्रि० १ शर्मिन्दा करना, लज्जित करना । २ कष्ट देना, दुःख देना, पीड़ित करना । ३ रोकना, ठहराना । ४ मरना । ५ हटना ।

विरामब्रह्म–पु० [सं० विरामब्रह्म] ब्रह्मताल का एक भेद ।

विरामी–वि० [सं० विराम] १ विश्राम या आराम करने वाला । २ व्याकुल, बेचैन । ३ शर्मिन्दा करने या होने वाला । ४ पीड़ादायक । ५ रोकने वाला । ६ मरने वाला । ७ हटने वाला ।

विराग, विराग–पु० १ मिश्रराग । २ वैराग्य ।

विरागणो (बो), विरागणो (बो)–क्रि० १ वैराग्य लेना, विरक्त होना । २ संन्यास लेना । ३ त्यागना, छोड़ना ।

विरागी, विरागी–देखो 'वैरागी' ।

विरागीय विरागी–देखो 'वैराग्य' ।

विराड, विराड़–पु० १ हिस्सा, भाग, बंट । २ देखो 'बराड़' ।

विराज–स्त्री० १ शोभा, सुन्दरता, सौन्दर्य । २ बैठना क्रिया । ३ राजा, नृप । ४ ब्रह्मा की प्रथम संतान । ५ क्षत्रिय जाति का व्यक्ति । ६ स्वयंभू मनु का नामान्तर । ७ एक वैदिक छन्द विशेष ।

विराजणो(बो),विराजणो(बो)–क्रि० [सं० विराजनम्] १ शोभित होना, शोभायमान होना । २ निवास करना, रहना । ३ बैठना । ४ होना । ५ उमड़ना, छाना, आच्छादित होना । ६ रहना । ७ जीवित रहना । ८ ठहरना, रुकना । ९ निवास करना । १० स्थित होना । ११ उपस्थित होना, विद्यमान होना ।

विराजमांन, विराजमांन–वि० [सं० विराजमान] १ शोभायमान, शोभित । २ उपस्थित, विद्यमान । ३ बैठा हुआ । ४ स्थित । ५ कोई स्थान विशेष का स्थान विशेष ग्रहण किये हुए । –पु० १ बैठना क्रिया । २ बैठाना क्रिया । ३ पत्र-लेखन में एक संबोधन ।

विराजित–वि० १ बैठे हुए, शोभित । २ विद्यमान ।

विराजी–देखो 'बेराजी' ।

विराट–पु० [सं० विराट] १ महाभारत के एक पर्व का नाम । २ जयपुर, अलवर व भरतपुर के बीच का एक प्रदेश । ३ इस प्रदेश का राजा । ४ स्वयंभूमनु का एक नाम । ५ भगवान विष्णु का विश्व रूप । ६ बलि छलने के लिये विष्णु द्वारा धारित त्रिविक्रम रूप । ७ विश्व शरीरमयी अन्तः पुरुष । ८ ब्रह्मा की प्रथम संतान । ९ एक देवयोनि । १० एक प्रकार का छंद । ११ देखो 'वैराट' ।

विराटक–पु० [सं०] एक प्रकार का हीरा या नग ।

विराटरूप–पु० [सं०] विष्णु का विश्व रूप ।

विराड–देखो 'विराट' ।

विराडणो (बो)–क्रि० डरना, भयभीत होना ।

विराडप–पु० अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

विरादर–देखो 'बिरादर' ।

विरादरी, विरादरी–देखो 'बिरादरी' ।

विराध–पु० [सं० विराध] १ विरोध, प्रतिकूलता । २ अनादर, अपमान । ३ कष्ट, पीड़ा । ४ रामायणकालीन एक राक्षस । –वि० [सं० विराद्ध] १ विरोधी, प्रतिपक्षी । २ अपमानित तिरस्कृत । ३ पीड़ित, दुःखी ।

विराधणो (बो)–क्रि० १ विरोध करना, विरुद्ध कार्यवाही करना । २ अनादर या अपमान करना । ३ रोकना, अवरुद्ध करना । ४ कष्ट देना, दुःख देना । ५ नष्ट करना ।

विराधी–देखो 'विराधक' ।

विराळ (ल)–स्त्री० उष्णता, वाष्प ।

विराळी, विरालो–देखो 'बिराळी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विराव–पु० [सं०] १ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल। २ ध्वनि, शब्द। ३ एक देव योनि विशेष।

विरावणो (बो)–क्रि० १ हल्ला-गुल्ला करना, शोर करना। २ ध्वनि या शब्द करना, बोलना।

विराह–पु० [सं० वि+फा० राह] १ कुमार्ग, बुरा रास्ता। २ बिना रास्ता, रास्ता विहीन। ३ उल्टा रास्ता ४ देखो 'वराह'।

विरिंच, विरिंचन, विरिंचि–पु० [सं० विरञ्च] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ महेश।

विरिकत, विरिक्त–देखो 'विरक्त'।

विरिख (ख, खि, खी)–१ देखो 'वृक्ष'। २ देखो 'बरस'।

विरित–पु० [सं० व्रतिन्, व्रत्ति] १ श्वान, कुत्ता। २ देखो 'विरक्त'।

विरिद, विरिदि–देखो 'विरुद'।

विरिध–देखो 'वृद्ध'।

विरिधि–देखो 'वृद्धि'।

विरियां–देखो 'बेळा'।

विरिस (सि, सी)–१ देखो 'वरीस'। २ देखो 'बरस'।

विरी–१ देखो 'बिना'। २ देखो 'बैरी'। ३ देखो 'बोड़ी'।

विरुआ–देखो 'विरूआ'।

विरुझणो (बो)–क्रि० उलझना, फंसना।

विरुत्त (त्तो)–देखो 'विरत्तो'।

विरुत्थ (त्थो), विरुथ–१ देखो 'वरूथ'। २ देखो 'विरत्तो'।

विरुथण, विरुथणी, विरुथनी–देखो 'वरूथणी'।

विरुद, विरुद–पु० [सं०] १ किसी के गुण, यश, प्रताप आदि का वर्णन। २ राजा की एक प्राचीन पदवी। ३ यश, कीर्ति। ४ यशस्वी बात या यश का कार्य। ५ कर्त्तव्य। ६ देखो 'विरुद'।—धार, धारी–वि० यशस्वी, कीर्तिवान। —पत, पति, पती–वि० विरुदधारी, यशस्वी।

विरुदाणो(बो), विरुदाणो(बो)–क्रि० १ जोश दिलाना, उत्साहित करना। २ कीर्ति गाना, यशोगान करना। ३ ललकारना।

विरुदायक–वि० १ कीर्तिगान या यशोगान करने वाला। २ जोश दिलाने वाला।

विरुदाळी–स्त्री० १ देवी, दुर्गा। २ देखो 'विरुदावळी'।

विरुदाळो–वि० (स्त्री० विरुदाळी) १ विरुदधारी, यशस्वी। २ वीर, बहादुर। ३ श्रेष्ठ, उत्तम।

विरुदावणो (बो), विरुदावणो (बो)–देखो 'विरुदाणो' (बो)।

विरुदावळी (ली), विरुदावळो–स्त्री० १ कीर्तिगान, यशवर्णन, प्रशंसा। २ यश वर्णन वाली कविता या पुस्तक। ३ देखो 'विरुदाळी'।

विरुदैत, विरुदैत–वि० १ विरुदधारी, यशस्वी। २ यश गाने वाला।

विरुद्द–१ देखो 'विरुद'। २ देखो 'विरुद्ध'।

विरुद्ध–वि० [सं०] १ जो विरोध करता हो, विरोधी। २ शत्रु, दुश्मन। ३ विपरीत, उल्टा। प्रतिकूल। ४ अवरुद्ध, अटका हुआ। ५ घेरा बन्दी किया हुआ। ६ बेमेल, असंगत। ७ अशुभ, बुरा। ८ अनुचित। ९ वर्जित, निषिद्ध।–पु० १ दसवें मन्वन्तर ब्रह्मसावर्णि का एक देवगण। २ युद्ध। —करमा–वि० विपरीत आचरण या बुरे चाल-चलन वाला।–पु० उक्त प्रकार का व्यक्ति।

विरुद्धता–स्त्री० प्रतिकूलता, विरोध।

विरुध (धि, धो)–देखो 'विरुद्ध'।

विरुपाक्ष (ख, खि, खी)–देखो 'विरूपाक्ष'।

विरुयउ विरुयो–देखो 'विरूआ'।

विरुहण (णि, णी)–देखो 'विरहणी'।

विरूअउ विरूउ, विरूओ–वि० [सं० विरूपक] (स्त्री० विरूई) १ बुरा, खराब, भद्दा। २ बदशक्ल, कुरूप। ३ बदजबान। ४ बुरा, अशुभ।

विरूठक–पु० [सं०] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा। २ एक लोक पाल।

विरूढ–देखो 'विरुद्ध'।

विरूणां–वि० वीरों का, वीरों से संबंधित।

विरूयणी, (नी, यिनी)–स्त्री० १ वैशाखमास के कृष्ण पक्ष की एकादशी। २ देखो 'वरूथणी'।

विरूयो–१ देखो 'वरूथी'। २ देखो 'वरूथ'।

विरूद–देखो 'विरुद'।

विरूध–देखो 'विरुद्ध'।

विरूप, विरूप–वि० [सं०] १ बदशक्ल, कुरूप, भद्दा। २ बहुरूपिया, अनेक रूपी। ३ अप्राकृतिक, अद्भुत। ४ आभा, कांति से हीन, मंद, फीका। ५ परिवर्तित रूप में, बदला हुआ। ६ भिन्न प्रकार का। ७ भयंकर, भयावह।–पु० १ श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया एक असुर। २ क्रोध का मानवी रूप। ३ शिव का एक नाम। ४ बदली या बिगड़ी सूरत।—चक्ष, चक्षु, चख–पु० शिव का एक नाम।

विरूपता–स्त्री० १ विरूप होने की दशा। २ भयंकरता।

विरूपपरिणाम–पु० एक रूपता से अनेक रूपता की ओर परिवर्तन (दर्शन)।

विरूपरूप–वि० [सं०] भद्दा, बेडौल, बदसूरत।

विरूपा–वि० [सं०] बदसूरत, बेडौल, भद्दी।–स्त्री० यम की एक पत्नी।

विरूपाक्ष (ख, खि)–वि० [सं० विरूप+अक्ष] बेढंगे या डरावने नेत्र वाला।–पु० १ शिव, शंकर। २ शिव का एक गण।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ एकादश रुद्रों में से एक। ४ एक भैरव का नाम। ५ एक विगज। ६ एक नाग। ७ एक देवी।

विरूपाक्षपूजन–पु० [सं० विरूपाक्ष-पूजन] पौष शुक्ला १४ को किया जाने वाला विरूपाक्ष देवी का पूजन।

विरूपिक, विरूपी–वि० (स्त्री० विरूपिका) बदसूरत, बदशक्ल। –पु० कुरूप व्यक्ति।

विरूहण (णि, णी)–देखो 'विरहणी'।

विरेच, विरेचक, विरेचण (न)–पु० दस्त लाने वाली औषधि, जुलाब।

विरेफ–पु० [सं०] १ जल की धारा या जल स्रोत। २ 'र' वर्ण।

विरोगी–वि० रुग्ण, बीमार।

विरोचन (न)–पु० [सं० विरोचन] १ सूरज, सूर्य। २ चन्द्रमा, चांद। ३ आग, अग्नि। ४ आक, मदार। ५ प्रह्लाद का पुत्र व बलि का पिता।—सुत–पु० राजा बलि। राजा कर्ण।

विरोचना–स्त्री० [सं०] १ भक्त प्रह्लाद की पुत्री। २ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।

विरोणी (वी)–क्रि० पिरोना, पोना, गूंथना।

विरोध, विरोध–पु० [सं० विरोध] १ लड़ाई, झगड़ा। २ वैर, दुश्मनी। ३ विपरीत, विपक्ष मत। ४ मतभेद, मतान्तर। ५ विरुद्ध होने की दशा या भाव। ६ अनबन, वैमनस्य। ७ बाधा, रुकावट। ८ परस्पर विपरीत गुणों वाला तत्त्व। ९ उल्टी दशा। १० नियत्रण, दमन। ११ प्रतिकूलता। १२ सामना, मुकाबला, चुनौती। १३ खण्डन, काट। १४ एक अर्थालंकार।

विरोधक–वि० १ विरोध करने वाला, विपक्षी। २ शत्रु, दुश्मन। –पु० अवरोधक तत्त्व।

विरोधणी (वी)–क्रि० [सं० विरोधनम्] १ विरोध करना। २ बेमेल कार्य करना। ३ वैर करना। ४ लड़ाई, झगड़ा करना। ५ कार्य को रोकने का प्रयास करना। ६ बाधा या रुकावट डालना। ७ मुकाबला या सामना करना। ८ खण्डन करना।

विरोधाचरण–पु० [सं० विरुद्ध-आचरण] १ प्रतिकूल आचरण। २ शत्रुता का व्यवहार। ३ सामान्य से विरुद्ध आचरण।

विरोधिता–स्त्री० १ नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि। २ शत्रुता, दुश्मनी।

विरोधी–वि० [सं० विरोधिन्] १ विरोध करने या विरोध में रहने वाला। २ विपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी। ३ शत्रु, दुश्मन, वैरी। ४ सामना या मुकाबला करने वाला। ५ बाधा डालने वाला, बाधक, अवरोधक। ६ खिलाफ, प्रतिकूल। –पु० साठ संवत्सरों में से २३ वां संवत्सर।

विरोळ–पु० १ भ्रम, भ्रान्ति। २ नाश, समाप्ति। ३ विघ्न, बाधा। ४ अव्यवस्था, गड़बड़ी। ६ युद्ध, झगड़ा। ७ मथने की क्रिया, मंथन।–वि० नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

विरोळण–वि० १ तहस-नहस करने वाला। २ अस्त-व्यस्त करने वाला। ३ मारने वाला, संहार करने वाला। ४ मथने वाला, विलोड़ित करने वाला।

विरोळणी (वी)–क्रि० [सं० विलोडन] १ तहस-नहस करना, बरबाद करना। २ ध्वंस या नाश करना। ३ अस्त-व्यस्त या अव्यवस्थित करना। ४ संहार या नाश करना। ५ मंथन करना, मथना, विलोड़ित करना। ६ उपभोग करना। ७ बिखेरना, छितराना। ८ समाप्त करना; मिटाना। ९ गुजरना, पार करना। १० पराजित करना, हराना। ११ रस लेना।

विरोहण–पु० १ एक नाग विशेष। २ वह संतान जिसकी माता का वर्ण पिता के वर्ण से ऊंचा हो।

विलंद–पु० १ बालिश्त। २ देखो 'बुलंद'।

विलंब–पु० [सं० विलम्ब] १ देरी, अतिकाल। २ निर्धारित समय या अवधि से अधिक समय। ३ आलस्य।

विलंबण (न)–स्त्री० [सं० विलम्बन] १ देर करने की क्रिया या भाव, विलम्ब की स्थिति। २ लटकने की क्रिया। ३ आश्रित या आधारित होने की अवस्था।

विलंबणी (वी)–क्रि० [सं० विलम्बनम्] १ देर करना, विलम्ब करना। २ अधिक समय लगाना। ३ आलिंगन करना। ४ स्पर्श करना, छूना। ५ पकड़ना, ग्रहण करना। ६ फंसना, धंसना। ७ देर होना, विलंब होना। ८ सहारा लेना। ९ मग्न होना, लीन होना। १० आसक्त होना, रत्त होना। ११ लगना, लिपटना। १२ उलझना, फंसना। १३ लटकना। १४ रुकना, अवरुद्ध होना। १५ चिपकना। १६ हर्षित या खुश होना। १४ भ्रमित होना, भूलना। १८ किसी की ओर उन्मुख या प्रवृत्त करना। १९ देखो 'विलूंबणी (वी)'।

विलंबिका–पु० अजीर्ण का एक रोग।

विलंबित–वि० [सं० विलम्बित] १ लटका हुआ, झूला हुआ। २ जिसमें देर हो गई हो। ३ देर करने वाला। ४ सुस्त या धीरे चलने वाला।

विलंभ–देखो 'विलंब'।

विळ, विस, विळ–१ देखो 'बिल'। २ देखो 'वस'।

विलउ–देखो 'विलय'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिलकणी (बो), बिलकली (बो)–देखो 'बिलखणी' (बो)।

बिलकलणी (बो)–देखो 'बिलकुलणी' (बो)।

बिलकुल–देखो 'बिलकुल'।

बिलकुलणी (बो)–क्रि० १ व्याकुल या विह्वल होना। २ प्रसन्न या खुश होना। ३ उतावला या आतुर होना। ४ प्रफुल्लित या विकसित होना, फूलना। ५ देदिप्यमान होना, चमकना। ६ चुनौती देना, ललकारना। ७ उत्साहित होना, जोश में आना। ८ चंचलता के साथ हिलना-डुलना। ९ निकलना।

बिलक्खणी (बो), बिलक्खली (बो)–देखो 'बिलखणी' (बो)।

बिलक्खो, बिलक्खी–देखो 'बिलखो'।

बिलक्ष–वि० [सं०] १ लक्षणहीन। २ लक्ष्यहीन, निरुद्देश्य। ३ विकल, व्याकुल। ४ अद्भुत, अनोखा। अनूठा, विशेष। ५ लज्जायुक्त। ६ आश्चर्य चकित।

बिलक्षण–वि० [सं०] १ अद्भुत, अनोखा, विचित्र। २ विशेष लक्षणों वाला। ३ अशुभ लक्षणों वाला। ४ लक्षणों या चिह्नों से रहित, लक्षणहीन।

बिलक्षणता–स्त्री० १ विचित्रता, अनोखापन। २ बिलक्षण होने की अवस्था या भाव। ३ अधीरता।

बिलक्षि–देखो 'बिलक्ष'।

बिलख, बिलखण–वि० १ खिन्न, विकल, उदास। २ व्याकुल। ३ अधीर, विह्वल।

बिलखउ–वि० १ सलज्ज। २ खिन्नचित, उदासीन।

बिलखणी–वि० (स्त्री० बिलखणी) १ व्याकुल, बेचैन। २ रोने वाला। ३ व्यथित, दुःखी। ४ मुरझाने वाला। ५ भयभीत, घबराया हुआ।

बिलखली (बो), बिलखाणी (बो), बिलखणी (बो), बिलखाणी बिलखावणी (बो), बिलखावली (बो)–क्रि० १ व्याकुल होना, बेचैन होना। २ व्यथित होना, दुःखी होना। ३ रोना, विलाप करना। ४ अधीर, विह्वल होना। ५ मुरझाना, कुम्हलाना। ६ भयभीत होना, घबराना।

बिलखूं, बिलखौड़ी–देखो 'बिलखो'।

बिलखी, बिलखयी, बिलखो–वि० (स्त्री० बिलखी) १ उदास, खिन्नचित, व्याकुल। २ दुःखी, व्यथित। ३ अधीर, विह्वल। ४ मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ। ५ भयभीत, घबराया हुआ। ६ वीरान, रिक्त, शून्य। ७ कान्तिहीन, तेज या चमक रहित। ८ निराश, उदास। ९ रुआंसा।

बिलग–वि० अलग, पृथक।

बिलगणी(बो),बिलगली(बो)–क्रि० १ लगना,लिपटना। २ अलग होना, पृथक होना। ३ छूना, स्पर्श करना। ४ किसी स्त्री से अनैतिक संबंध जुड़ना। ५ चिपकना, लगना, जुड़ना। ६ लगना, होना। ७ आवेष्टित होना, लिपटना। ८ कार्यारंभ होना। ९ पकड़ना, ग्रहण करना। १० आलिंगन बद्ध होना लिपटना। ११ कष्टदायक बात होना।

बिलगाणी (बो), बिलगावणी (बो)–क्रि० १ लगाना, लिपटाना। २ अलग करना, पृथक करना। ३ छुआना, स्पर्श कराना। ४ किसी स्त्री से अनैतिक संबंध कराना। ५ चिपकाना, लगाना, जोड़ना। ६ आवेष्टित कराना, लिपटाना। ७ लगवाना,कराना। ८ कार्यारंभ कराना।९ पकड़ाना, ग्रहण कराना। १० देखो 'बिलगणी' (बो)।

बिलगाव, बिलगाव–पु० १ लगाव, लिपटाव। २ अलगाव, पृथकता ३ किसी स्त्री से अनैतिक संबंध। ४ घेराव। ५ कार्यारम्भ। ६ पकड़।

बिलगावणी (बो), बिलगावणी (बो)–देखो 'बिलगाणी' (बो)।

बिलच्छण (न)–देखो 'बिलक्षण'।

बिलछणी (बो)–देखो 'बिलखणी' (बो)।

बिलणी (बो)–क्रि० आवेष्टित करना, घेरना, लिपटाना।

बिलधणी (बो)–देखो 'बिलुंधणी' (बो)।

बिलपणी(बो), बिलपणी(बो)–क्रि० १ उदास होना खिन्न होना। २ व्याकुल या दुःखी होना। ३ विलाप करना, रोना।

बिलपाणी(बो), बिलपावणी(बो), बिलपाली(बो), बिलपावली (बो)–क्रि० १ व्याकुल करना, दुःखी करना। २ रुलाना।

बिलब्ध–वि० [सं०] १ पाया हुआ, प्राप्त किया हुआ। २ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ।

बिलब्धणी (बो), बिलब्धणी (बो)–क्रि० [सं० बिलब्धनम्] १ प्राप्त करना, पाना। २ अलग करना, पृथक करना।

बिलम, बिलम–पु० १ मन बहलाव की क्रियाएँ। २ विलंब। ३ देखो 'वल्लभ'। ४ देखो 'बिलोम'।

बिलमणी–वि० १ प्रेमासक्त। २ भोगविलास में रत्त। ३ कार्य में लगकर भूलने वाला। ४ मग्न, लीन। ५ ठहरा हुआ, रुका हुआ।

बिलमणी(बो),बिलमली(बो)–क्रि० १ प्रेमासक्त होना। २ भोगों में रत्त होना। ३ कार्य में लीन होना। ४ किसी कार्य में बहलना, उलझना। ५ ठहरना, रुकना। ६ देखो 'बिलुंबणी' (बो)।

बिलमाणी (बो) बिलमावणी (बो) बिलमाली (बो)–क्रि० १ बातें करने हेतु प्रवृत्त करना, बातों में लगाना। २ मोहित करना, लुभाना, मोहना। ३ धैर्य देना, धीरज बंधाना। ४ फुसलाना, बहकाना। ५ विलंब या देरी करना। ६ रोकना, ठहराना।

बिलम्मणी (बो)–देखो 'बिलमणी' (बो)।

बिलम्माणी (बो), बिलम्मावणी (बो)–देखो 'बिलमाणी' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलय (न)–पु० [सं० विलयनम्] १ पानी में कोई पदार्थ घुलने की क्रिया या अवस्था। २ दो या अधिक वस्तुओं का परस्पर मिल कर एकाकार होने की क्रिया या भाव ३ किन्हीं दो या अधिक इकाइयों का एक होना। ४ मिलन। ५ आत्मा तथा परमात्मा का एकत्व। ६ सृष्टि का अन्त, लय, प्रलय। ७ मौत, मृत्यु। ८ नाश, समाप्ति।

विलळणो (बो), विलळाणो (बो), विलसाणो (बो)–क्रि० [सं० विलपनम्] १ उदास होना, खिन्न होना, बेचैन होना। २ व्याकुल होना, दुःखी होना। ३ विलाप करना रोना। ४ समाप्त होना, मिटना, नाश होना।

विलळाप–देखो 'विलाप'।

विलळापणो (बो)–देखो 'विलापणो' (बो)।

विलळावणो (बो), विलसावणो (बो)–देखो 'विलळाणो' (बो)।

विलळो, विलळो–देखो 'बिलळो'। (स्त्री० विलळी)

विलवणो (बो)–क्रि० १ उदास होना, खिन्न चित्त होना। बेचैन होना। २ व्याकुल, दुःखी होना, व्यथित होना। ३ विलाप करना, रोना। ४ निर्भर या आश्रित होना। ५ पकड़ना, ग्रहण करना।

विलविळणो (बो)–देखो 'बिलबिलणो' (बो)।

विलवावणो–स्त्री० छिपकली की जाति का एक जानवर।

विलविल–देखो 'बिलबिल'।

विलविळणो (बो)–देखो 'बिलबिलणो' (बो)।

विलविलाणो (बो), विलविलावणो (बो), विलविलाणो (बो), विलविलावणो (बो)–देखो 'बिलबिलाणो' (बो)।

विलसण, विलसणो–वि० १ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता। २ आमोद-प्रमोद करने वाला। ३ भोग विलास करने वाला। ४ दान देने वाला, दातार। –पु० दान।

विलसणो (बो)–क्रि० १ शोभा पाना, शोभित होना। २ कलंकित होना, कलंक लगना। ३ भोग विलास करना, आनन्द करना। ४ उपभोग करना, भोगना। ५ आमोद-प्रमोद करना। ६ दान देना। ७ संभोग या मैथुन करना। ८ उत्सव मनाना।

विलसाणो (बो)–क्रि० १ शोभित या शोभायमान करना। २ कलंकित करना, कलंक लगाना। ३ विलास करना। ४ उपभोग कराना। ५ आमोद-प्रमोद के लिए प्रेरित करना। ६ दान दिलाना। ७ संभोग या मैथुन के लिये प्रेरित करना।

विला–अव्य० बिना।

विलाइति (ती)–देखो 'विलायती'।

विलाउ–देखो 'बिडाळ'।

विलाग–वि० १ पृथक, भिन्न, अलग। २ संलग्न, लगा हुआ।

विलागणो (बो)–क्रि० १ चिपकना, लिपटना। २ पहुंचना। ३ स्पर्श करना, छूना। ४ देखो 'लागणो' (बो)।

विलाणो (बो)–क्रि० १ विलीन होना, विलय होना, मिल जाना। २ लुप्त या लोप होना। ३ नाश होना, मिटना। ४ व्यतीत होना, बीतना।

विलात–देखो 'विलायत'।

विलाति, विलाती–देखो 'विलायती'।

विलाप–पु० [सं०] १ उदास, खिन्न या व्याकुल होने की क्रिया या भाव। २ कष्ट, पीड़ा, दुःख। ३ रुदन, क्रन्दन। –वि० तप्त, गर्म।

विलापणो (बो)–क्रि० १ उदास होना, बेचैन होना, खिन्नचित्त होना। २ व्याकुल या दुःखी होना। ३ रुदन करना, रोना, विलाप करना।

विलापात, विलापाती–देखो 'विलाप'।

विलायत–पु० १ विदेश, पराया देश। २ इंग्लैण्ड। ३ युरोपीय देश। ४ ईरान, तुर्किस्तान। ५ जन्म भूमि के अतिरिक्त अन्य देश, दूसरा देश।

विलायति (ती)–वि० १ दूसरे देश का, विदेशी। २ इंग्लैण्ड या युरोप का। ३ ईरानी।

विलायन–पु० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

विलाल, विलालो–वि० (स्त्री० विलाली) १ रसिक, रसिया। २ अद्भुत, विचित्र। ३ छैल-छबीला। ४ युद्धोन्मत्त। ५ उदार, दातार। ६ विशेष।

विलाव–देखो 'बिडाळ'।

विलावणो (बो), विलावणो (बो)–देखो 'बिलाणो' (बो)।

विलावळ (ळि, ळी)–पु० एक राग विशेष।

विलाविया, विलावियो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

विलास–पु० [सं०] १ क्रीड़ा, खेल। २ आमोद-प्रमोद। ३ अनुराग या प्रेम। ४ शोभा, सुन्दरता, मनोहरता। ५ चमक, कान्ति। ६ मनोरंजन। ७ विषय-भोग, मैथुन। ८ संयोग शृंगार का एक भाव। ९ सुख, आनन्द। १० सुगंध, महक। ११ प्रिय वस्तु के दर्शन से होने वाली विशेष चेष्टा।

विलासक–वि० १ इधर-उधर घूमने वाला, भ्रमणशील। २ दातार, दानी। ३ भोग विलास करने वाला। ४ आनन्द, मौज करने वाला। ५ खेलने वाला। ६ अनुराग करने वाला।

विलासणो (बो)–क्रि० १ क्रीड़ा करना, खेलना। २ मनोरंजन, आमोद-प्रमोद करना। ३ स्त्रियोचित हाव-भाव, नाज-नखरे करना। ४ विषय-भोग या मैथुन करना। ५ आनन्द

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना, मस्ती करना। ६ अनुराग दिखाना, प्रेम करना। ७ शोभित होना।

विलासनी–देखो 'विलासिणी'।

विलासा–स्त्री० [सं० अभिलाषा] १ इच्छा, कामना। २ देखो 'विलास'।

विलासि–देखो 'विलासी'।

विलासिणी (नी)–स्त्री० [सं० विलासिनी] १ अधिक भोग विलास करने वाली स्त्री, विलासी प्रकृति की कामुक स्त्री। २ वेश्या, गणिका। ३ सुन्दर व युवा स्त्री। ४ देवी का विशेषण। ५ विक्षेप शक्ति से युक्त। ६ एक वर्ण वृत्त

विलासी–वि० [सं० विलासिन्] (स्त्री० विलासणी) १ दानी, दातार। २ आनन्द, सुख भोग करने वाला। ३ खेल, क्रीड़ा करने वाला। ४ भोग विलास में रत, कामी, विषयी, रसिक। –पु० १ आग, अग्नि। २ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। ३ भगवान श्रीविष्णु। ४ चांद, चन्द्रमा। ५ सांप, सर्प। ६ शिव-शंकर, महादेव। ७ कामदेव। ८ वरुण वृक्ष। ९ एक वर्णिक छन्द विशेष।

विलासु (सु, सो)–१ देखो 'विलास'। २ देखो 'विलासी'।

विलास्य–पु० एक तार-वाद्य विशेष।

विलि (ली)–देखो 'वळी'।

विलिखित–वि० [सं०] १ लिखा हुआ। २ खोदकर अंकित किया हुआ।

विलिप्त–वि० लिपा हुआ, पुता हुआ।

विलियां–देखो 'वेळा'।

विलिविलियो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

विलीजणो (णी)–क्रि० क्षरवाले पशुओं का रोगग्रस्त होना।

विलीन–वि० [सं०] १ घुल-मिल कर एकाकार। २ गायब, लुप्त। ३ नष्ट। ४ मृत। ५ गुप्त, छुपा हुआ। ६ एक ही इकाई या घटक के रूप में बना हुआ।

विलुब्ध–वि० [सं० विलुब्ध] १ मोहित, आकर्षित। २ लालायित। ३ उलझा या फंसा हुआ।

विलुब्धणो (णी)–देखो 'विलुंधणो' (णी)।

विलुप्त–वि० [सं०] १ जिसका नाश हो गया हो, नष्ट। २ जो लुप्त या अदृश्य हो। ३ जो टूट-फूट गया हो, बरबाद। ४ अपहृत। –योनि–स्त्री० स्त्रियों का एक रोग।

विलुंधणो (णी)–क्रि० १ झंझटों में उलझना, फंसना। २ मोह में फंसना, मोहित या आकर्षित होना। ३ लालायित होना, लालच में आना।

विलुंधो–वि० (स्त्री० विलुंधी) १ झंझटों व तकलीफों में फंसा हुआ। २ मोह में फंसा हुआ, मोहित। ३ लालची।

विलूंबणो(बो), विलूंबणो(बो), विलूंमणो(बो), विलूंमणो(बो)–क्रि० १ लटकना। २ मंडराना, छाना, झुकना। ३ समृद्धि या विशालता से शोभा पाना। ४ छूना, स्पर्श करना। ५ लिपटना, चिपकना। ६ लस्थोबस्थ होना। ७ आलिंगन बद्ध होना। ८ रोकना, अवरुद्ध करना।

विलू–देखो 'वळू'।

विलुधणो (बो)–देखो 'विलुंधणो' (बो)।

विलूरणो (बो)–क्रि० १ नोचना। २ छीनना, झपटना।

विळे–देखो 'वळे'।

विलेच्छ (च्छु)–देखो 'म्लेच्छ'।

विलेप (ण, न)–पु० [सं० विलेपः] १ लेप आदि करने की क्रिया। २ उबटन, लेपन। ३ केसर, चंदन आदि। –ग्रह–पु० लेपन, उबटन आदि करने का कक्ष।

विलेसय–देखो 'बलेसय'।

विळै (सै)–१ देखो 'वळै'। २ देखो 'विलय'।

विलोक–वि० १ जन रहित, निर्जन, शून्य। २ देखो 'विलोकण'।

विलोकण (णि, णी, न)–स्त्री० [सं० विलोकन] १ देखने की क्रिया या भाव। २ जांचने की क्रिया, परीक्षण। ३ तलाश करने की क्रिया, तलाशी। ४ नजर, दृष्टि।

विलोकणो (बो), विलोकणो (बो)–क्रि० १ देखना, अवलोकन करना। २ निरीक्षण या परीक्षण करना, जांच करना। ३ ढूंढ़ना, तलाश करना। ४ विचार करना, सोचना।

विलोकन–देखो 'विलोकण'।

विलोकवणो (बो)–देखो 'विलोकणो' (बो)।

विलोड़ण (न)–स्त्री० मंथन, मथना क्रिया।

विलोड़णो (बो), विलोड़णो(बो)–क्रि० मंथन करना, मथना।

विलोचण (न)–पु० [सं० विलोचनम्] १ आंख, नेत्र। २ दृष्टि, नजर। ३ एक नरक विशेष।–वि० [सं० वि-लोचन] बिना आंख या दृष्टि का, अंधा।

विलोड़ण–देखो 'विलोड़ण'।

विलोड़णो (बो)–देखो 'विलोड़णो' (बो)।

विलोणो, विलोणी–देखो 'विलोवणो'।

विलोणो (बो)–देखो 'विलोड़णो' (बो)।

विलोप–पु० [सं०] १ बाधा, रोक, रुकावट। २ कुछ हटाने या समाप्त करने की क्रिया। ३ बलात् कोई चीज लेकर भागना क्रिया। ४ हानि, नुकसान। ५ नाश, संहार। ६ उल्लंघन करना क्रिया। ७ अदृश्य या लुप्त होना क्रिया। –वि० गंवाने वाला, खोने वाला।

विलोपक–वि० १ बाधा डालने वाला, रुकावट डालने वाला। २ चोर। ३ हानिकारक। ४ नाश करने वाला। ५ विलोप करने वाला।

विलोपणो(बो), विलोपणो(बो)–क्रि० १ बाधा या रुकावट डालने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला कार्य करना। २ बलात् कोई चीज लेकर भागना, चोरी करना। ३ हानि, नुकसान या क्षति करना। ४ उल्लंघन करना। ५ हटाना, मिटाना, समाप्त करना। ६ अदृश्य या लुप्त होना या करना। ७ गंवाना, खोना। ८ विमुख होना, पलटना।

विलोपात–देखो 'विलाप'।

विलोपी–वि० विलोप करने वाला।

विलोभ (न)–वि० [सं०] १ लोभ रहित। २ मोहित, आकर्षित, लालायित। ३ ललचाने वाला।–पु० १ लालच। २ बहकावा, फुसलाहट। ३ आकर्षण। ४ गुण कथन।

विलोम–वि० [सं०] १ लोम या बाल रहित। २ विपरीत या उल्टा। ३ विपरीत क्रम या गति वाला। ४ दुश्मन, विरोधी।–पु० १ श्वान, कुत्ता। २ सर्प, सांप। ३ वरुण का एक नामान्तर। ४ रहट। ५ संगीत में अवरोह। ६ सितार आदि का मींड़।

विलोमसोमायन–पु० एक प्रकार का व्रत।

विलोल, विलोल–वि० [सं० विलोल] १ हिलने-डुलने या लहराने वाला। २ चंचल, सुन्दर। ३ ढीला, शिथिल। ४ अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ।–पु० ऐश-आराम।

विलोलणो (बो)–क्रि० १ ऐश-आराम करना। २ हिलाना-डुलाना। ३ हवा करना।

विलोवण्ड–देखो 'विलोवणो'।

विलोवणो, विलोवणो–स्त्री० १ दही मथने का मिट्टी का पात्र। २ दही मथने वाली स्त्री।

विलोवणू (बो)–पु० १ दही मथने का मिट्टी का बड़ा पात्र। २ दही मथने का कार्य।

विलोवणी (बो), विलोवणी (बो)–देखो 'विलोड़णी' (बो)।

विलोहणी–देखो 'विलोवणू'।

विलोहित–पु० [सं०] १ तीन सिर, पैर व हाथों वाला एक राक्षस। २ कश्यप के पुत्रों में से एक।

विल्ली–पु० १ वर्षा ऋतु में हरे घास या पानी में होने वाला एक कीड़ा। २ घास या पानी के साथ उक्त कीड़ा खा जाने से पशु के होने वाला रोग।

विल्या–देखो 'वेळा'।

विल्यो–देखो 'विल्यो'।

विल्लगणी (बो), विल्लगणी (बो)–देखो 'विलगणी' (बो)।

विल्लभ, विल्लभ–देखो 'वल्लभ'।

विल्लल–पु० एक देश का नाम।

विल्लायत–देखो 'विलायत'।

विल्ली–देखो 'बिल्ली'।

विल्व, विल्वपत्र–पु० [सं०] एक वृक्ष जिसके पत्तों से शिव की पूजा की जाती है।

विवंत–पु० दशा, हालत, स्थिति।

विवस्स–वि० [सं०] जिसके पुत्र या सन्तान न हो। निःसन्तान।

विवध–१ देखो 'विबुध'। २ देखो 'विविध'।

विवधा–देखो 'विविधता'।

विवधि–देखो 'विविध'।

विवनउ–देखो 'विवनो'।

विवनणो (बो)–क्रि० मरना, अवसान होना।

विवनो, विवनो–वि० (स्त्री० विवनी) १ मरा हुआ, मृत। २ उदास खिन्न चित्त। ३ विपत्तिग्रस्त, संटकासन्न।

विवन्नउ–देखो 'विवनो'।

विवन्नणो (बो)–देखो 'विवनणो' (बो)।

विवन्नो–देखो 'विवनो'।

विवर–पु० [सं०] १ सर्प, चूहों व चींटियों आदि के रहने का बिल, छेद। २ कन्दरा, गुफा। ३ छेद, गड्ढा। ४ गर्त। ५ दरार, खाई। ६ पाताल। ७ त्रुटि, गलती। ८ किसी ठोस पदार्थ में होने वाला खोखला स्थान। ९ घाव। १० मूर्ख, नासमझ, विवेकहीन व्यक्ति। ११ भू-गर्भ गृह, तहखाना। १२ समुद्र, सागर। १३ ब्योरा, हाल, वृत्तान्त। १४ कपटी व्यक्ति। १५ दूर सन्देश वाहक। १६ नौ की संख्या।

विवरजत (जित, जित्ति)–वि० [सं० विवर्जित] १ वर्जित, निषिद्ध। २ उपेक्षित, वंचित। ३ रहित, बिना। ४ रुका हुआ। ५ वर्णन किया हुआ, कहा हुआ।

विवरजितदे (देह)–पु० [सं० विवर्जित-देह] निराकार, ईश्वर, परमेश्वर।

विवरण–पु० [स० विवरण] १ प्रकट करना क्रिया, प्रकटन। २ विस्तृत विवरण, विवेचन, भाषा, टीका। ३ छेदने की क्रिया, छेदन। ४ मन्तव्य, स्पष्टीकरण। [सं० विवर्ण] ५ जातिच्युत, जाति बहिष्कृत। ६ साहित्य में नायक, नायिका संबंधी एक भाव।–वि० [सं० विवर्णः] १ नीच, कमीना, निम्न जाति या कुजाति का। २ बुरे या बेमेल रंग का। बदरंग। ३ कांति या चमक रहित शोभा रहित। ४ मूर्ख, नासमझ। ५ अनेक रंगों का, रंग-बिरंगा।

विवरत–पु० [सं० विवर्त] १ चक्कर, फेरा, घुमाव। २ प्रत्यावर्तन, लौटना क्रिया। ३ भ्रम, भ्रांति। ४ नृत्य, नाच। ५ परिवर्तन। ६ समुदाय, समूह।—कलप, कल्प–पु० जैन मतानुसार एक लोक।

विवराणी (बो)–क्रि० उच्चारित कराना।

विवरि (री)–पु० सन्देश वाहक, दूत।–वि० वर्णन करने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवरो–पु० १ भेद, रहस्य। २ कारण। ३ विवरण, ब्योरा, वृत्तान्त ४ ज्ञान, बुद्धि, विचार। ५ अन्तर, फर्क। ६ व्याख्या, टीका। ७ संक्षिप्त जानकारी, परिचय। ८ बयान।

विवस–वि० [सं० विवश] १ बेबस, मजबूर, लाचार। २ जो काबू में न हो, बेकाबू। ३ बेहोश। ४ मरा हुआ, मृत। ५ कारण। ६ असमर्थ।—ता–स्त्री० विवश होने की अवस्था या भाव। बेबसी, मजबूरी।

विवसवान, विवसाण (न)–पु० [सं० विवस्वत्] १ सूरज, सूर्य। २ अरुण। ३ अर्क, मदार। ४ पन्द्रहवां प्रजापति।

विवसाइ (ई)–१ देखो 'व्यवसाय'। २ देखो 'व्यवसायी'।

विवसाइयो, विवसाईयो–देखो 'व्यवसायी'।

विवसाय–देखो 'व्यवसाय'।

विवसायो (यी)–देखो 'व्यवसायी'।

विवसि (सी)–देखो 'विवस'।

विवस्था–देखो 'व्यवस्था'।

विवह–पु० १ देवराज, इन्द्र। २ तेज वायु, तूफान। ३ देखो 'विबुध'। ४ देखो 'विविध'।

विवहपरि (परी, प्परि)–क्रि० वि० विविध प्रकार से।

विवहल–देखो 'विह्वल'।

विवहार–देखो 'व्यवहार'।

विवहारिउ (ओ, यो), विवहारी–देखो 'व्यवहारियो'।

विवहालु (लो)–१ देखो 'विवाह'। २ देखो 'विवाहलो'।

विवहु–देखो 'विबुध'।

विवांण, विवांन–देखो 'विमाण'।

विवांणणो (वो)–क्रि० प्रसव करना।

विवांणि (णी)–स्त्री० १ अप्सरा, परी। २ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७५ वां ग्रह। ३ देखो 'विमाणि'।

विवाई, विवाई–देखो 'विवाई'।

विवाद–पु०[स०] १ लड़ाई, झगड़ा। २ मतभेद। ३ तर्क-वितर्क बहस। ४ शास्त्रार्थ। ५ विचार-विमर्श, सोच-विचार। ६ जिद्द, आग्रह, दुराग्रह। ७ न्यायालय में प्रस्तुत वाद, मुकदमा। ८ प्रतिस्पर्धा, होड़।

विवादक, विवादी–वि० [सं० विवादिन] १ झगड़ा, लड़ाई करने वाला। २ बहस करने वाला, विवाद करने वाला। ३ दुराग्रही। ४ शास्त्रार्थ करने वाला।–पु० राग में वर्जित स्वर।

विवादु, विवादी–१ देखो 'विवाद'। २ देखो 'विवादो'।

विवार–देखो 'व्यवहार'।

विवाह–पु० [सं०] १ पाणिग्रहण संस्कार, शादी। २ शादी का उत्सव या आयोजन। ३ इस अवसर पर किया जाने वाला धार्मिक कर्म। ४ ब्रह्मा का एक रक्त नामक पुत्र।

विवाहणो (वो)–क्रि० [सं० विवाहनम्] १ विधि-विधान से शादी करना, पति-पत्नी बनना। २ स्त्री-पुरुष का दाम्पत्य सूत्र में बंधना। ३ विवाह का कार्य करना, आयोजन करना।

विवाहलु, विवाहली–पु० [सं० विवाह-लाप] १ विवाह संबंधी कोई काव्य। २ विवाह।

विवाहित–वि० [सं० विवाहिता] शादीशुदा।

विवाहिलु (लो)–देखो 'विवाहलो'।

विविक्त–पु० [सं०] वह स्थान जहां स्त्री, पुरुष और नपुंसक न हों।

विविद, विविध–वि० [सं० विविध] तरह-तरह का, अनेक प्रकार का।

विविधजाण (न)–वि०. [सं० विविध-ज्ञान] १ कवि, पंडित। २ बहुत बातें जानने वाला, बहुश्रुत।

विविधता–स्त्री० विविध होने की अवस्था या भाव, अनेक रूपता।

विविधविस्राम–पु० [सं० विबुधन-विश्राम] स्वर्ग वैकुण्ठ।

विविधि–देखो 'विविध'।

विविधेस, विविधेसर (सुर, स्वर)–पु० १ ईश्वर। २ कवि, पंडित।

विविनणो (वो), विविन्नणो (वो)–देखो 'विवनणो' (वो)।

विविनो (न्न)–देखो 'विवनो'।

विविह–देखो 'विविध'।

विवुध–पु० [सं० विबुध] १ देवता। २ चन्द्रमा। ३ विद्वान पुरुष।—पुर–पु० स्वर्ग।—वन, वन–पु० नन्दनवन।—प्रिय, प्रिया–स्त्री० अप्सरा, देवांगना।—वैद्य, वैद्य–पु० देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।

विवेक–पु० [स०] १ ज्ञान, बुद्धि, समझ। २ अच्छे-बुरे का ज्ञान। ३ गुणावगुण पहचानने की शक्ति। ४ सत्यज्ञान।

विवेकजोग (ग)–पु० मनमें विकार पैदा करने वाले तत्व के संसर्ग का अभाव।

विवेकनारायण, विवेकवांन, विवेकी–वि० [सं० विवेकिन्] १ विवेकशील। विचारवान। २ बुद्धिमान, ज्ञानी। ३ न्याय प्रिय, न्यायशील।

विवेचक–वि० विवेचना करने वाला, समीक्षक।

विवेचन, विवेचना–स्त्री० [सं०] १ भला-बुरा, सत-असत आदि का ज्ञान। २ किसी विषय की मीमांसा, समीक्षा। ३ शोध, अनुसंधान। ४ निरीक्षण, परीक्षण। ५ निर्णय, फैसला। ६ तर्क-वितर्क, वाद-विवाद।

विवोगण (णि, णी), विवोगिण (णि, णी)–देखो 'वियोगण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवोढ़–पु० [सं० विवोढ़ृ] १ पति, खाविंद, भरतार। २ दूल्हा।
विव्यांण (णी)–देखो 'विमाण'।
विव्वोक–पु० [सं०] स्त्रियों का संयोग शृंगार संबंधी एक हाव।
विव्हार–देखो 'व्यवहार'।
विसट्ठुल–वि० [सं० विसंटुल] १ चंचल। २ विषम, विकट।
विसंड–पु० गणों के ईश, गणेश, गजानन।
विसंदरी–देखो 'वसूंदरी'।
विसधिकल्प–पु० जैनियों का एक ग्रंथ।
विसंन–१ देखो 'विष्णु'। २ देखो 'व्यसन'।
विसभ–पु० १ ईश्वर, परमेश्वर। २ श्रीकृष्ण। ३ ऋषभावतार।
–वि० भयंकर, डरावना।
विसंभर–देखो 'विस्वंभर'।
विसंभरा–देखो 'विस्वंभरा'।
विसंवाद–पु० [सं०] वाद-विवाद, बहस।
विस–पु० [सं० विष] १ जहर, गरल, विष। २ सुख, शांति में बाधा पहुंचाने वाला तत्त्व। ३ कुटिलता। ४ जहरीला या अत्यन्त कड़वा पदार्थ। बात। ५ वैश्य, बनिया। ६ कमल नाल। ७ जल, पानी। ८ घी, घृत। ९ सर्प, सांप। १० अमृत। ११ सात उपधातुओं में से एक। १२ एक देवगण। १३ एक असुर। —कंठ–पु० शिव, महादेव। एक पक्षी विशेष।—कन्या, कामणि (णी)–स्त्री० वह स्त्री या युवती जिससे संभोग करने से मृत्यु हो जाती है। नाग कन्या। —घाती–वि० विष का नाश करने वाला।
विसइ, विसई–१ देखो 'विसय'। २ देखो 'विसयी'।
विसक–देखो 'विसिख'।
विसकरमा–देखो 'विस्वकरमा'।
विसकुंभ–पु० [सं० विषकुम्भ] फलित ज्योतिष में एक योग।
विसक्ख–१ देखो 'विसिख'। २ देखो 'विसेस'।
विसकम्मा–पु० [सं० विश्व-कर्मिनी] १ सूर्य, रवि। २ देखो 'विस्वकरमा'।
विसख–देखो 'विसिख'।
विसखथांम–पु० [सं० विशिख-धाम] तरकस, तूणीर।
विसखपर, विसखपरी (खप्पर)–पु० [सं० विषकर्पर] १ कीचक के लिये प्रयुक्त विशेषण। २ देखो 'बिसखपरी'।
विसटाळ (ळु, ळु, ळू, ळी)–देखो 'विस्टाळी'।
विसटियो–देखो 'बिसटो'।
विसटो–पु० [सं० विष्टि] १ ज्योतिष में एक करण २ बेगार, मुफ्त का कार्य, श्रम। –वि० १ दुष्ट, आततायी। २ देश द्रोही, उपद्रवी। ३ डाकू, लुटेरा।
विसटो–देखो 'विस्ठो'।
विसठ–पु० [सं० विसठ] बलराम का एक पुत्र।
विसठी–देखो 'विस्ठी'।
विसण (ण, णु)–देखो 'विस्णु'।
विसणाइणी (णी)–देखो 'विणसाखी' (बी)।
विसतंत्र–पु० [सं० विषतंत्र] विष दूर करने की विधि।
विसत–देखो 'बहिस्त'।
विसतर, विसतर–१ देखो 'बिस्तर'। २ देखो 'विस्तार'।
विसतरणी (बी), विस्तरणी (बी)–देखो 'विस्तरणी' (बी)।
विसतरियो, विसतरी–देखो 'विस्तर'।
विसतार, विसतार–पु० १ समूह, झुण्ड। २ देखो 'विस्तार'।
विसतारण, विसतारण–देखो 'विस्तारण'।
विसतारणी (बी), विसतारणी (बी)–देखो 'विस्तारणी' (बी)।
विसतारी, विसतारी–देखो 'विस्तार'।
विसत्तरणी(बी),विसत्तरणी, विसथरणी(बी)–देखो 'विस्तरणी' (बी)।
विसथार, विसथार–देखो 'विस्तार'।
विसथारणी (बी)–देखो 'विस्तारणी' (बी)।
विसद–वि० [सं० विशद] १ स्वच्छ, निर्मल, साफ। २ पवित्र, शुद्ध। ३ उज्ज्वल, श्वेत। ४ सुन्दर। ५ चमकदार। ६ स्पष्ट। ७ स्थिर, निश्चल, शान्त। –पु० १ सफेद रंग। २ शंख। ३ एक प्राचीन राजा। —ता–स्त्री० स्पष्टता, स्वच्छता। सुन्दरता।
विसदसरीर–पु० [सं० विशद+शरीर] चन्द्रमा, चांद।
विसधर–पु० [स० विष+धर] १ सर्प, सांप। २ गोह। ३ शेषनाग। ४ महादेव, शिव।
विसधात्री–स्त्री० मनसादेवी।
विसधारी–पु० [सं० विषधारिन्] १ सर्प, सांप, गोह। २ शेषनाग। ३ महादेव, रुद्र।
विसन, विसन–पु० [सं० वैश्वानर] १ आग, अग्नि। २ देखो 'विस्णु'। ३ देखो 'व्यसन'।
विसनदेव, विसननाथ–पु० भगवान विष्णु।
विसनपथ–देखो 'विस्णुपथ'।
विसनपद–देखो 'विस्णुपद'।
विसनपरी (पुर, पुरी, री)–देखो 'विस्णुपुरी'।
विसनर (रु)–१ देखो 'वैस्वानर'। २ देखो 'विस्णु'।
विसनसांमी–पु० एक वैष्णव सम्प्रदाय या उसका अनुयायी।
विसनासन–पु० [सं० विष्णु-आसन] १ गरुड़। २ शेषनाग। [सं० विष-नाशन्] ३ विष नष्ट करने वाला तत्त्व।
विसनिर (रु, रू)–देखो 'वैस्वानर'।
विसनो (उ)–देखो 'व्यसनी'।
विसनु–देखो 'विस्णु'।
विसनुकवच, विसनुपंजन (पजर)–पु० [सं० विष्णु-पंजर] १

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१ विष्णुस्तोत्र जो रक्षार्थ पढ़ा जाता है। २ विष्णु स्तोत्र का ताबीज।

विसनो, विसनोई–पु० १ 'जाम्भोजी' द्वारा चलाया एक सम्प्रदाय। २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी।

विसनो–१ देखो 'विष्णु'। २ देखो 'व्यसन'।

विसनर–१ देखो 'विष्णु'। २ देखो 'वैस्वानर'।

विसन्नु–देखो 'विष्णु'।

विसपत (पति पतो)–१ देखो 'विस्वपति'। २ देखो 'बृहस्पति'।

विसपाळ–देखो 'विस्वपाळ'।

वसप्रसून–पु० [सं० विष-प्रसून] कमल।

विसप्रस्थ–पु० [सं० विषप्रस्थ] एक पर्वत का नाम।

विसफळ–पु० [स० विष-फल] कोई जहरीला फल।

विसब (ब्ब)–देखो 'विस्व'।

विसबाबीस–देखो 'विसवावीस'।

विसमत्र–पु० [सं० विष-मंत्र] १ विष उतारने का मंत्र। २ उक्त मंत्र जानने वाला व्यक्ति।

विसम–वि० [सं० विषम, विषमः] १ जो समान न हो, असमान। २ जिसका विभाजन बराबर न हो सके। ३ जो सरल न हो, कठिन, रहस्यमय। ४ दुर्गम्य। अगम्य। ५ अव्यवस्थित। ६ भयंकर, भीषण। ७ कष्टदायक, कष्टप्रद। ८ टेढ़ा, तिरछा, बाँका। ९ प्रतिकूल, विरुद्ध, विपरीत। १० अद्भुत, विचित्र, अनोखा। ११ बुद्धिमान, चतुर, चालाक। १२ तीव्र, तेज। १३ वीर, बहादुर। १४ जबरदस्त, जोरदार। १५ ऊबड़-खाबड़, असमतल। १६ दृढ़, मजबूत। १७ उल्टा विपरीत। १८ टेढ़ा, बुरा, कर्ण कटु।–पु० १ बराबर विभाजित न होने वाली संख्या। २ विपत्ति, संकट। ३ फौज, सेना। ४ अग्नि, आग। ५ वायु, पवन, हवा। ६ शिव, महादेव। ७ एक वर्ण वृत्त। ८ एक प्रकार का अर्थालंकार। ९ संगीत में एक ताल। १० चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक। ११ अपदान विष्णु का एक नामान्तर।—गत, गति, गती, गत्त, गत्ति, गत्ती–स्त्री० विपरीत, उल्टी गति, विकटस्थिति। —नयण, नयन, नेतर, नेत्र, नैण–पु० शिव, महादेव। —पण, पणो–पु० विषमता। —वार, वार–स्त्री० बुरा समय। संकटपूर्ण दशा।

विसमउं–१ देखो 'विस्मय'। २ देखो 'विसम'।

विसमज्वर (ज्वर)–पु० [सं० विषम-ज्वर] प्रायः वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का ज्वर।

विसमत–स्त्री० [सं० विष-मति] खराब बुद्धि, दुर्बुद्धि।–वि० १ ऊबड़-खाबड़, असमतल। २ कठिन, दुर्गम्य। ३ विस्मित। ४ संकुचित, सिकुड़ा हुआ। ५ दुर्बुद्धि।

विसमता–स्त्री० [सं० विषम+ता] विषम होने की दशा या भाव। असमानता।

विसमबांण–पु० [सं० विषम-बाण] कामदेव के पांच बाणों में से एक।

विसममत–देखो 'विसमत'।

विसमय–पु० [सं० वि-समय] १ बुरा समय, खराब समय। २ विस्मय, आश्चर्य।–वि० [स० विष-मय] विषयुक्त, जहरीला।

विसमरण (न)–देखो 'विस्मरण'।

विसमरणी (णी)–देखो 'विस्मरणी' (णी)।

विसमरो, विसमरो–पु० [सं० विषमर] छिपकली, विषैला जीव।

विसमल (मला, मल्ला, मल्लाह)–देखो 'विस्मिल्लाह'।

विसमविसिख–पु० [सं० विषम-विशिख] कामदेव का एक नाम।

विसमवृत्त–पु० [सं० विषम-वृत्त] एक प्रकार का वृत्त या छन्द।

विसमसि–पु० [सं०] आलम्बन, सहारा।

विसमागनि (नी, ग्नि)–स्त्री० [स० विषम-अग्नि] चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक।

विसमाबुद्ध (बुध, बुध्ध, युद्ध, युध)–पु० [सं० विषमायुद्ध] कामदेव का एक नाम।

विसमासन–पु० [सं० विषमाशन] असमय थोड़ा-थोड़ा भोजन करने की क्रिया।

विसमिउ–१ देखो 'विसम'। २ देखो 'विस्मय'।

विसमिल (मिला, मिल्ला, मिल्लाह)–देखो 'विस्मिल्लाह'।

विसमी (मु, मू)–देखो 'विसम'।

विसमे (मं मो)–१ देखो 'विस्मय'। २ देखो 'विस्मित'। ३ देखो 'विसम'।

विसम्म (म्मी) विसम्य–१ देखो 'विसम'। २ देखो 'विस्मय'।

विसय पु० [सं० विषय] १ विचारणीय या विवेचनीय विषय या तत्त्व। २ स्त्री प्रसंग, संभोग, मैथुन। ३ मैथुन या भोग से प्राप्त आनन्द। ४ बड़ा प्रदेश, राज्य। ५ पंचज्ञानेन्द्रिय से प्राप्त सुख। ६ जगह, स्थान। ७ वीर्य, बीज। ८ प्रियतम, पति। ९ सम्पत्ति। १० सर्प, साँप। ११ सन्तनत, बादशाहत। १२ सांसारिक पदार्थ। –क्रि० वि० १ लिए, वास्ते। २ मध्य, अन्दर, में।

विसयक–वि० [सं० विषयक] विषय से संबंधित, विषय का।

विसयी–पु० [सं० विषयिन्] १ कामदेव। २ भोग विलास में रत व्यक्ति, कामी पुरुष। ३ धन, द्रव्य या विलासी सामान वाला व्यक्ति।

विसर–पु० १ अपशब्द, कटु शब्द। २ अपमान सूचक शब्द। ३ निन्दा सूचक कविता। ४ एक प्रकार का विषैला जीव। ४ युद्ध, समर। ६ घोड़े का, एक प्रकार का चारजामा। ७ समूह, झुण्ड।–वि० भयंकर, भयावह।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विसरग–पु० [सं० विसर्ग:] १ दान, प्रदान, भेंट। २ छोड़ देना, त्याग देना। ३ विसर्जन। ४ मोक्ष, मुक्ति। ५ व्याकरण के अनुसार संस्कृत में एक वर्ण जिसका चिह्न खड़े दो बिंदु(:)।

विसरजण–पु० [सं० विसर्जन] १ दान, प्रदान भेंट। २ परित्याग, त्याग।

विसरण (न), विसरन–पु० [सं० विसर्जन] १ परित्याग, त्याग। २ दान या भेंट। ३ प्रस्थान, विदा। ४ मल त्यागने की क्रिया। ५ पूजन में अंतिम उपचार, षोडशोपचार। ६ सभा विसर्जन। ७ पूजनोपरांत मूर्ति का जल में विसर्जन। ८ विस्मरण, भूल। ९ समूह, व्यूह। –वि० [सं० विशरण] आश्रयहीन, अनाथ।

विसरणो(बो), विसरणो(बो)–क्रि० १ गलती होना। २ फैलना। ३ कुपित या क्रुद्ध होना। ४ विस्मरण होना, भूलना।

विसरप–पु० [सं० विसर्प] १ रेंगने या फिसलने की क्रिया या भाव। २ अनिष्टकारी प्रारम्भ। ३ शीतला या चेचक रोग।

विसरमो, विसरमो–वि० [सं० वि-शर्म] जिसे शर्म नहीं आती, निर्लज्ज।

विसरांत–पु० मथुरा का विश्राम घाट।

विसरांम–पु० [सं० विश्राम] १ सहारा, आश्रय, पनाह। २ आराम, चैन। ३ सुख शांति, आनन्द। ४ आश्रम व्यवस्था में संन्यास आश्रम। ५ अवसान, मौत, मृत्यु। ६ कार्य के बीच का अवकाश। ७ ठहरने का स्थान। विश्राम स्थल। ८ ठहराव। ९ अध्याय, प्रकाश। १० वाक्य के अन्त का विराम। ११ पद्य या छन्द आदि में यति।

विसरांमणो–वि० १ विश्राम करने वाला। २ आराम देने वाला। ३ सहारा देने वाला, सहायक।

विसरांमणो (बो)–क्रि० [सं० विश्रमण] १ आराम करना, विश्राम करना। २ मरना, अवसान होना। ३ युद्ध में वीरगति प्राप्त होना। ४ ठहरना, रुकना। ५ सहारा या आश्रय देना।

विसरांमी–वि० १ विश्राम करने वाला। २ विश्राम देने वाला। ३ देखो 'विसराम'।

विसरांमो–देखो 'विसरांम'।

विसराणो(बो), विसराणो(बो)–क्रि० १ विस्मरण करना, भूलना। २ गलती करना। ३ त्यागना, छोड़ना। ४ भुला देना स्मृति से निकाल देना।

विसरायण, विसरायाण, विसरारण–पु० दान।

विसराळ (ळी, ळो)–वि० [सं० विष+रा.प्र. राळो] १ विषैला, जहरीला। २ क्रोधी, क्रोध युक्त। ३ रसहीन, फीका, नीरस। ४ जोश पूर्ण, जोश युक्त। ५ भयंकर, भयावह। ६ निन्दाजनक काव्य रचना करने वाला। ७ कर्णकटु, कड़वा। –पु० निन्दा युक्त कविता।

विसरावणी (बो), विसरावणी (बो), विसरावणी (बो)–देखो 'विसराणी' (बो)।

विसलूमो–पु० एक प्रकार का कड़वा फल।

विसल्या–पु० [सं० विशल्या] १ रामानुज लक्ष्मण की पत्नी, उर्मिला। २ वरुण की सभा में रहने वाली एक नदी। ३ एक औषधि विशेष।

विसव–पु० [सं० विश्व] १ पृथ्वी, धरती, भूमि। २ स्वभाव, प्रकृति, आदत। ३ देखो 'विस्व'।

विसवकरमा–देखो 'विस्वकरमा'।

विसवतरेखा–स्त्री० [सं० विषुवत्रेखा] पृथ्वी के ठीक मध्य में पूर्व से पश्चिम चारों ओर होने वाली रेखा।

विसवनाथ–देखो 'विस्वनाथ'।

विसवयोनि–देखो 'विस्वयोनि'।

विसवाद–पु० [सं० विश्वाद] १ बहत्तर कलाओं में से एक। २ देखो 'विखवाद'।

विसवाबीस, विसवाबीस–देखो 'विसवावीस'।

विसवामंत्र (मित,मितर,मिति, मित्र, मित्रि)–देखो 'विस्वामित्र'।

विसवावीस–अव्य० १ निश्चय ही, जरूर। २ ठीक, सही, सत्य। ३ निस्सन्देह। ४ वस्तुत: यकीनन। ५ पूर्णरूप से।

विसवास, विसवास–देखो 'विस्वास'।—घात='विस्वासघात'।

विसवासणी (बो), विसवासणी (बो)–देखो 'विस्वासणी' (बो)।

विसवासिआ–स्त्री० आर्या या गाहा छन्द का एक भेद।

विसवासो, विसवासो–पु० [सं० विश्वाची] १ एक प्रकार का वात रोग। २ देखो 'विस्वासो'।

विसवाहोवीस–देखो 'विसवावीस'।

विसवि–देखो 'विस्व'।

विसवेस–देखो 'विस्वेस'।

विसवो–पु० १ कृषि भूमि का एक नाप, एकड़ का पचासवां भाग। २ अंगुलियों के संधिस्थल। ३ अंगुलियों के संधिस्थलों की रेखा। ४ वस्तु का भाग या अंश। ५ एक वर्णिक छन्द विशेष। ६ सांड या भैंसे के लिये लाया जाने वाला हरि फसल का भाग।

विसव्वावीस–देखो 'विसवावीस'।

विससन–पु० [सं० विशसन] एक नरक का नाम।

विसहर–पु० [सं० विषधर] सर्प, सांप। –वि० विष का प्रभाव मिटाने वाला।

विसहरतिय (तिथि)–स्त्री० नागपंचमी।

विसहरा–स्त्री० [सं० विषहरा] मनसादेवी का नामान्तर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

•विसहरि (हरी)–देखो 'विसहर'।

विसाई–देखो 'विसाति'।

विसांगणा (ना)–स्त्री० [सं० विष+अंगना] १ विष कन्या। २ नाग कन्या।

विसांण–पु० [सं० विषाण] १ हाथी दांत। २ पशु का सींग। ३ सूअर का दांत।

विसांणण (न)–पु० [सं० विष+आनन] सर्प, सांप।

विसांति, विसांती–स्त्री० विश्रान्ति।

विसांणी–पु० [सं० विषाण] हाथी दांत का चूड़ा।

विसांतक–वि० [सं० विष+अंतक] विष को नष्ट करने वाला। –पु० शिव, महादेव।

विसांन–पु० एक प्रकार का शृंगी वाद्य।

विसांनी–स्त्री० शर पुंखा।

विसाइत, विसाइत–देखो 'विसात'।

विसाइति (ती), विसाइति–देखो 'विसाती'।

विसाऊ–वि० खरीदने वाला, क्रेता, खरीददार।

विसाख–पु० [सं० विशाखः] १ स्वामिकार्तिकेय। २ शिव, महादेव। ३ स्वामिकार्तिकेय का छोटा भाई। ४ एक महर्षि।

विसाखा–पु० [सं० विशाखा] सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवां नक्षत्र।

विसाग–१ देखो 'विसाद'। २ देखो 'विसाख'।

विसाणी (बी)–क्रि० १ छितराना, फैलाना, बिखेरना। २ खरीदना, मोल लेना। ३ बेचना, विक्रय करना। ४ निवास कराना, ठहराना। ५ स्थापित करना।

विसात–१ देखो 'बिसात'। २ देखो 'विसाती'।

विसाति, विसाती–पु० १ व्यापार करने वाला, व्यापारी। २ देखो 'बिसाती'।

विसाद–पु० [सं० विषाद] १ दुःख, शोक। २ निराशा, हतोत्साह। ३ दुर्बलता, कमजोरी। ४ मूर्खता, अज्ञानता। ५ उपायों के अभाव में पुरुषार्थहीनता।

विसादी–वि० [सं० विषादिन्] जिसे विषाद हो, विषाद युक्त।

विसायत–१ देखो 'विसाती'। २ देखो 'बिसात'। ३ देखो 'बिसायत'।

विसायति (ती), विसायति–१ देखो 'विसाति'। २ देखो 'विसाती'।

विसायुद्ध (युध)–पु० [सं० विषायुद्ध] १ सर्प, सांप। २ विष में बुझाया हुआ शस्त्र। –वि० विष में बुझा, विषैला।

विसार–स्त्री० [सं०] १ मछली। २ देखो 'बिस्तार'।

विसारण (णो), विसारण–वि० (स्त्री० विसारणी) विस्मरण करने वाला, भुलाने वाला।

विसारणी (बी), विसारणी (बी)–क्रि० १ भूलना, स्मृति से निकालना। २ त्यागना, परित्याग करना। ३ गलती करना। ४ आरंभ करना, शुरू करना।

विसारद–वि० [सं० विशारद] १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, विशेषज्ञ। २ विद्वान, पंडित, कवि। ३ चतुर, कुशल, निपुण। ४ प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर। ५ श्रेष्ठ, उत्तम।

विसारी–पु० १ विस्मृति, भुलावा। २ परित्याग।

विसाळ, विसाल, बिसाळ–वि० [सं० विशाल] १ दीर्घ, बड़ा, विशाल। २ विस्तृत, लंबा-चौड़ा। ३ ऊंचा। ४ प्रसिद्ध, मशहूर। ५ महान। ६ सीमा से अधिक लम्बा। ७ बहुत अधिक। ८ लम्बा। ९ मात्रा में अधिक।–पु० १ एक पर्वत का नाम। २ राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र। ३ एक प्रकार का हिरन। ४ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७६ वां ग्रह।

विसालता–स्त्री० [सं० विशालता] १ विशाल होने की अवस्था या भाव। २ विस्तार, भव्यता। ३ बड़प्पन।

विसालद्रग (नेत्र, नेतर, नेत्र)–पु० [सं० विशाल-दृग] शिव, महादेव।

विसाळा–स्त्री० [सं० विशाला] १ पुराणानुसार एक तीर्थ। २ उज्जैन नगर का नाम। ३ प्रजापति दक्ष की एक पुत्री। ४ एक नदी।

विसालाक्ष–पु० [सं० विशाल-अक्ष] (स्त्री० विसालाक्षी) १ शिव का एक नामान्तर। २ वास्तु शास्त्र का एक ग्रंथकार। ३ भगवान विष्णु का एक नाम। ४ गरुड़ का एक पुत्र। ५ गरुड़। ६ चौसठ भैरवों में से एक।–वि० बड़ी व सुन्दर आंखों वाला।

विसालाक्षी–स्त्री० [सं० विशालाक्षी] १ सुन्दर व बड़ी आंखों वाली स्त्री। २ पार्वती का एक नाम ३ चौसठ योगिनियों में से एक।—त्रीजा, त्रीया–स्त्री० भादव कृष्णा तृतीया का व्रत व गौरी पूजन।

विसाळापुरी–स्त्री० उज्जैन नगरी।

विसाळु (ळू)–देखो 'विसाळ'।

विसावणी (बी)–क्रि० १ उपार्जन करना, कमाना। २ उत्पन्न करना, पैदा करना। ३ प्राप्त करना, पाना। ४ एकत्र एवं इकट्ठा करना। ५ संग्रह करना। ६ देखो 'विसाणी' (बी)।

विसावीस (सै)–देखो 'विसवावीस'।

विसास–देखो 'विस्वास'।—घात=विस्वासघात'।

विसासणी (बी)–देखो 'विस्वासणी' (बी)।

विसास्त्र–पु० [सं० विष-अस्त्र] १ विष युक्त अस्त्र, विष बुझा अस्त्र। २ सांप, सर्प।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विसाहणी (णो)–क्रि० १ स्वीकार करना। २ ग्रहण करना, पकड़ना। ३ देखो 'विसाणी' (णो)।

विसिसथल, विसिस्थल–पु० [सं० विशिस्थल] कटिस्थल।

विसिक्ख, विसिख–पु० [सं० विशिखः] १ बाण, तीर। २ पक्षिराज गरुड़ का एक पुत्र।

विसिखा–पु० [सं० विशिखा] १ फावड़ा। २ तकुआ। ३ बाण, तीर। ४ सुई, पिन। ५ राज मार्ग, आम रास्ता।

विसिखि, विसिक्ख–देखो 'विसिख'।

विसिन (नि, नी)–१ देखो 'विरुण'। २ देखो 'व्यसन'। ३ देखो 'व्यसनी'।

विसिमिसि–पु० [सं०] १ प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या, होड़। २ गर्व, अहंकार।

विसिया–१ देखो 'बिसिया'। २ देखो 'विसय'।

विसियारस–पु० [सं० विषय-रस] १ कामवासना, कामेच्छा। २ भोग विलास, मैथुन।

विसिरक्क–पु० [सं० विशिरस्क] सुमेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

विसिरा–स्त्री० [स० विशिरा] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

विसिस्ट–पु० [सं० विशिष्ट] वस्तु या प्राणी जिसमें विशेष गुण हो, साधारण से विशेष हो।–वि० १ प्रसिद्ध, मशहूर, कीर्तिवान। २ शिष्ट, सभ्य। ३ देखो 'वसिस्ठ'।

विसिस्टी, विसिस्ठी, विसोठ–पु० [सं० विशिष्टी] १ संदेश-वाहक। खबर नवीस, दूत।–स्त्री० २ शंकराचार्य की माता का नाम। ३ देखो 'वसीठ'। —गारी–स्त्री० दूत का कार्य। अपशब्द, गाली।

विसोसमूरति–पु० [सं० विशोषमूर्ति] कामदेव का नामान्तर।

विसुंडी–पु० [सं० विशुंडी] कश्यप ऋषि का पुत्र एक नाग।

विसुंबरी–देखो 'विसुंदरी'।

विसुंधरा–देखो 'वसुंधरा'।

विसु–१ देखो 'वसु'। २ देखो 'विस'।

विसुआवीस–देखो 'विसवावीस'।

विसुक्क–पु० [सं० विशुक्र] भण्डासुर नामक एक राक्षस।

विसुणी–देखो 'विलाति'।

विसुद्ध–वि० [सं० विशुद्ध] १ बिलकुल खरा, शुद्ध। २ बिना पाप का, पाप रहित। ३ कलंक रहित, पाप रहित। ४ सच्चा, ठीक। ५ पवित्र।–पु० योग या तंत्रानुसार शरीरस्थ आठ चक्रों में से पांचवां। —चारी–वि० शुद्ध चरित्र या विशुद्ध आचरण करने वाला।

विसुद्धता–स्त्री० शुद्धता, स्वच्छता।

विसुद्धात्मा–पु० परम निर्मल आत्म स्वरूप भगवान।–वि० शुद्ध भावना वाला।

विसुद्धि–स्त्री० [सं० विशुद्धि] शुद्ध या स्वच्छ होने की अवस्था या भाव, शुद्धता।

विसुध–१ देखो 'विसुद्ध'। २ देखो 'बेसुध'।

विसुनपुर (पुरो, पुरी)–देखो 'विस्णुपुरी'।

विसुरण (णी)–देखो 'विसूरणी'।

विसुरणी (णी), विसुरणी (णी)–देखो 'विसूरणी' (णी)।

विसुव–पु० [सं० विषुव] दिन और रात बराबर होने का समय जब सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुंचता है।

विसुवामित (मितर, मिति, मित्र)–देखो 'विस्वामित्र'।

विसूंणि (णी)–देखो 'विलाति'।

विसूंदरी–पु० (स्त्री० विसूंदरी) छिपकली, विषैला जन्तु विशेष।

विसू–देखो 'वसु'।

विसूइया–देखो 'विसूचिका'।

विसूकणी (णी), विसूगणी (णी)–क्रि० १ रसहीन होना, सूखना, शुष्क होना। २ नष्ट होना। ३ सुन्न होना। ४ दुर्बल या कमजोर होना। ५ दूधारू पशु का दूध सूखना।

विसूचिका–स्त्री० [सं०] हैजा नामक रोग।

विसूची–स्त्री० [सं० विसूची] १ विरूप नामक राक्षस की पत्नी। २ देखो 'विसूचिका'।

विसूणि (णी)–देखो 'विलाति'।

विसूर–पु० रुदन करने या सुबकने की क्रिया या भाव

विसूरण (णी)–पु० [सं० विसूरणं] १ दुःख, शोक, रंज, पश्चाताप। २ चिन्ता। ३ रुदन। ४ मरसिया, शोक काव्य।

विसूरणी (णी)–पु० [सं० विसूरणं] १ सुबकना, रोना। २ दुःख, शोक, पश्चाताप करना। ३ चिन्ता करना। ४ विह्वल होना।

विसेक (ख)–स्त्री० यश, कीर्ति, प्रसिद्धि।–वि० १ भयंकर, भयावह। २ दुःखी, खिन्न चित्त। ३ पीड़ित। ४ देखो 'विसिख'। ५ देखो 'विसेस'।

विसेखच्छेद्य–पु० ६४ कलाओं में से एक।

विसेखणी (णी)–क्रि० १ देखना, ज्ञांच करना। २ अवलोकन करना। ३ समझना, विचार करना। ४ कहना, पुकारना। ७ गौर से देखना, निरखना।

विसेखापुद्गळ–पु० [सं० विशेषापुद्गल] वे पुद्गल जिनका आत्म संबंध नहीं हुआ हो।

विसेति–पु० १ कारण। २ देखो 'विसेख'। ३ देखो 'विसेस'।

विसेखियो, विसेखी, विसेखो–१ देखो 'विसेख'। २ देखो 'विसेस'।

विसेट, विसेठ–देखो 'वसीठ'।

विसेरियो–पु० १ अनुशासन एवं स्वामिभक्ति में रहने वाला व्यक्ति। २ देखो 'बसोरो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विसेस–वि० [सं० विशेष] १ साधारण से अधिक, परे या अतिरिक्त, असाधारण। २ अधिक, ज्यादा। ३ मुख्य, खास, प्रधान। ४ विलक्षण, अनोखा।–पु० १ अन्तर, भेद। २ हर्ष, खुशी। ३ पदार्थ, वस्तु। ४ अधिकता, उत्तमता। ५ विचित्रता, अद्भुतता। ६ सार, तत्त्व। ७ प्रकार, किस्म। ८ दमन नामक शिवावतार का शिष्य। ९ सात प्रकार के पदार्थों में से एक (वैशेषिक दर्शन)। १० एक प्रकार का पद्य। ११ एक प्रकार का अर्थालंकार।

विसेसक–वि० [सं० विशेषक] विशेषता उत्पन्न करने वाला।–पु० १ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द। २ एक प्रकार का अर्थालंकार।

विसेसज्ञ–वि० [सं० विशेषज्ञ] किसी विषय या शास्त्र का विशेष ज्ञाता, पंडित।

विसेसण–पु० [सं० विशेषण] व्याकरण में एक प्रकार का विकारी शब्द।–वि० विशेषता या विशेष गुण बताने वाला।

विसेसता–स्त्री० [सं० विशेषता] विशेष गुण, खासियत, विचित्रता, अनोखापन।

विसेसन्नु–वि० विशेषज्ञ।

विसेसि–देखो 'विसेस'।

विसेसोक्ति–स्त्री० [सं० विशेषोक्ति] एक प्रकार का अलंकार।

विसेसो–देखो 'विसेस'।

विसेस्य–पु० [सं० विशेष्य] वह संज्ञा जिसके साथ विशेषण लगा हो।–वि० गण आदि द्वारा भेद बतलाने योग्य। मुख्य, प्रधान।

विसं–देखो 'विसय'।

विसोक–पु० [सं० विशोक] १ अशोक नामक वृक्ष। २ ईश्वर, परमात्मा। ३ भीमसेन का सारथि। ४ पाण्डव पक्षीय एक राजा। ५ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र। ६ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, नारद का शिष्य।–वि० १ जिसे शोक न हो, शोक रहित। २ शोक युक्त, शोक ग्रस्त। ३ सुखी।—द्वादसी–स्त्री० आश्विन कृष्णा द्वादशी की तिथि। इस तिथि का व्रत व लक्ष्मीपूजन।

विसोका–स्त्री० १ श्रीकृष्ण की एक पत्नी। २ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

विसोग–देखो 'विसोक'।

विसोतर (रि, री) विसोत्तर–पु० एक सौ बीस की संख्या।

विसोधन–पु० [सं० विशोधन] पापों का नाश करने वाला ईश्वर।

विसोधनी–स्त्री० [सं० विशोधनी] ब्रह्मपुरी का नाम।

विसोनी–स्त्री० छरपुंखा नामक पौधा।

विसोबा–देखो 'विसवो'।

विसोभित–वि० [सं० विशोभित] १ शोभा रहित, भद्दा। २ विशेष शोभा युक्त।

विसोवम–वि० [सं० विषोपम] विष के समान, जहर सदृश।

विसोवावीस, विसोहावीस–देखो 'विसवावीस'।

विसोही–वि० [सं० विशोही] आत्मा का विशेष शोधन करने वाला।–स्त्री० विशुद्धि।

विसो–वि० (स्त्री० विसी) वैसा, जैसा, समान।

विस्कंभ, विस्कंभक–पु० [सं० विष्कंभ, विष्कंभक] १ ज्योतिष के २७ योगों में से एक। २ योगियों का एक बंध। ३ नाटक का एक अंक जो प्रायः गर्भांक के निकट होता है। ४ वृत्त का व्यास। ५ प्रसार, लंबाई। ६ रोक, अड़चन। ७ स्तंभ, खंभा। ८ वृक्ष। ९ अर्गला। १० इमारत में लगने वाला शहतीर।

विस्कंभी–पु० [सं० विष्कम्भिन्] १ शिव का एक नामान्तर। २ देखो 'विस्कंभ'।

विस्क–पु० [सं० विष्क] बीस वर्ष का हाथी।

विस्कर–पु० [सं० विष्कर] १ पक्षी चिड़िया। २ पूर्व कालिक एक राक्षस।

विस्कल–पु० [सं० विष्कल] सूअर, शूकर।

विस्किर–पु० [सं० विष्किर] १ पक्षी, चिड़िया। २ सर्प, सांप।

विस्टइ–पु० [सं० विष्टि] संदेशवाहक, दूत।

विस्टकार–पु० १ दूत संदेशवाहक। २ अपशब्द, कहने वाला व्यक्ति।

विस्टकारी–स्त्री० १ दूत का कार्य। २ अपशब्द, गाली।

विस्टप–पु० [सं० विष्टप] संसार, जगत।

विस्टर–पु० [सं० विष्टर] १ आसन, बैठक। २ यज्ञ में ब्रह्मासन। ३ पेड़, वृक्ष। ४ देखो 'बिस्तर'।

विस्टरास (स्व)–पु० [सं० विष्टराश्व] एक सूर्यवंशी राजा।

विस्टाकारी–देखो 'विस्टकारी'।

विस्टाळ (ळु, ळु, ळू, ळू, ळो, लो)–वि० [सं० विष-टालनम्] बीच-बचाव या मध्यस्थता करने वाला।–पु० १ मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति। २ सुलह, समझौता।

विस्टि–पु० [सं० विष्टिः] १ ज्योतिष में एक करण। २ जीव का नरकवास। ३ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि।

विस्टिव्रत–पु० [सं० विष्टिव्रत] एक प्रकार का व्रत।

विस्टी (ठी), विस्टी–पु० [सं० विष्ठा] मल, टट्टी, पाखाना, मैला।

विस्टाघर, विस्टाघर–पु० [सं० विष्ठा-गृह] शौचालय, टट्टी।

विस्टामुक (मुख)–पु० [सं० विष्ठामुख] सूअर, शूकर।

विस्नु–देखो 'विस्णु'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विस्णतर–पु० सुदर्शनचक्र ।

विस्नु–पु० [सं० विष्णु] १ परब्रह्म एव ईश्वर का नामान्तर। सर्व प्रधान देव जो सृष्टि के पालनहार माने जाते हैं। २ अग्निदेव। ३ श्रीकृष्ण का नामान्तर। ४ तपस्वीजन। ५ बारह आदित्यों में से एक। ६ विष्णु स्मृति की रक्षा करने वाले एक ऋषि। ७ चौसठ भैरवों में से एक। ८ भृगुवंश में उत्पन्न एक गोत्रकार। ९ कार्तिक मास में अश्वतर नाग, रंभा अप्सरा, गंधर्व एवं यक्षों के साथ घूमने वाला सूर्य। १० अठारह पुराणों में से एक।

विस्नुकांची–पु० [सं० विष्णुकांची] श्रीशंकराचार्य द्वारा स्थापित दक्षिण का एक तीर्थ।

विस्नुकांता–स्त्री० औषध में काम आनेवाली एक जड़ी विशेष।

विस्नुक्रम–पु० [सं० विष्णुक्रम] भगवान विष्णु का पाद या पग।

विस्नुक्रांत– पु० [सं० विष्णुक्रांत] संगीत में एक ताल विशेष।

विस्नुक्रांता–स्त्री० [सं० विष्णुक्रांता] श्वेत कोयल नामक एक लता।

विस्नुगंग, विस्नुगंगा–स्त्री० [सं० विष्णुगंगा] एक प्राचीन नदी।

विस्नुगुपत (गुप्त)–पु० [सं० विष्णु-गुप्त] चाणक्य का एक नामान्तर।

विस्नुचक्कर (चक्र)–पु० [सं० विष्णुचक्र] भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र।

विस्नुजुर (ज्वर)–पु० [सं० विष्णुज्वर] एक प्रकार का ज्वर जो शत्रुओं का नाशक माना जाता है।

विस्नुतरपण–पु० [सं० विष्णुतर्पण] किसी बालक के मरने के तीसरे दिन दूध, जल, तिल आदि से किया जाने वाला तर्पण।

विस्नुतिथ (तिथि)–स्त्री० [सं० विष्णुतिथि] एकादशी और द्वादशी दोनों तिथियों का नामान्तर।

विस्नुतेल–पु० [सं० विष्णुतैल] वात रोगों में काम आने वाला वैद्यक में एक तेल।

विस्नुदैवत, विस्नुदैवत्य–पु० [सं० विष्णुदैवत्य] १ श्रवण नामक नक्षत्र जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं। २ चन्द्र मास के दोनों पक्षों की एकादशी एवं द्वादशी तिथियां।

विस्नुद्वीप–पु० [सं० विष्णुद्वीप] पुराणानुसार एक द्वीप।

विस्नुधरमा–स्त्री० [सं० विष्णुधर्मा] गरुड़ की प्रमुख संतान।

विस्नुधरमोत्तर–पु० [सं० विष्णुधर्मोत्तर] विष्णुपुराण का एक अंग।

विस्नुधारा–स्त्री० [सं० विष्णुधारा] १ एक पौराणिक नदी। २ एक प्राचीन तीर्थ।

विस्नुपथ–पु० [सं० विष्णुपथ] आकाश, व्योम।

विस्नुपद–पु० [सं० विष्णुपद] १ आकाश, व्योम। २ स्वर्ग, वैकुण्ठ। ३ क्षीरसागर। ४ कमल। ५ विष्णु के पैर। ६ एक प्रकार का मात्रिक छन्द। ७ विपाशा नदी के समीपस्थ एक तीर्थ।

विस्नुपदी–स्त्री० [सं० विष्णुपदी] १ भागीरथी, गंगा। २ द्वारिकापुरी। ३ वृष, वृश्चिक, कुंभ व सिंह आदि की संक्रांति।

विस्नुपुरी (पुरी)–पु० [सं० विष्णुपुर] स्वर्गलोक, वैकुण्ठ।

विस्नुप्रयाग–पु० [सं० विष्णु प्रयाग] विष्णु गंगा व अलकनंदा के समीप हाथी पर्वत के पास का तीर्थ स्थान।

विस्नुप्रिया–स्त्री० [सं० विष्णु प्रिया] १ भगवान विष्णु की पत्नी लक्ष्मी। २ तुलसी का पौधा।

विस्नुप्रीति–स्त्री० [सं० विष्णुप्रीति] १ भगवान विष्णु की पूजा या भक्ति। २ पुजारी को दी जाने वाली बिना लगान की भूमि।

विस्नुरथ–पु० [सं० विष्णुरथ] विष्णु का वाहन गरुड़।

विस्नुलोक–पु० [सं० विष्णुलोक] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

विस्नुवल्लभा–देखो 'विस्नुप्रिया'।

विस्नुवाहण (न)–पु० [सं० विष्णु वाहन] गरुड़।

विस्नुविवाह–पु० [सं० विष्णुविवाह] एक प्रकार का वैवाह्यहर जिसमें कन्या का विवाह पहले विष्णु से कर दिया जाता है।

विस्नुव्रत–पु० [सं० विष्णुव्रत] पौष शुक्ला द्वितीया से चार दिन तक किया जाने वाला व्रत।

विस्नुसकति (सक्ति, सगति)–स्त्री० [सं० विष्णुशक्ति] लक्ष्मी।

विस्नुसप्तमी–स्त्री० [सं० विष्णुसप्तमी] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को विष्णु की पूजा।

विस्नुसिला (सिला)–स्त्री० [सं० विष्णु शिला] सालिग्राम।

विस्नुसृंखल (ळा)–स्त्री० [सं० विष्णु शृंखला] श्रवण नक्षत्र में आने वाली द्वादशी।

विस्नुस्वामी–पु० [सं० विष्णुस्वामी] वैष्णव सम्प्रदाय वा रामावत साधुओं की एक शाखा।

विस्नू–देखो 'विस्नु'।

विस्तर, विस्तर–देखो 'बिस्तर'।

विस्तरण–वि० विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

विस्तरणा (णो)–क्रि० १ उच्चरित होना, ध्वनित होना; गूंजना। २ विस्तार पाना, व्याप्त होना। फैलना। ३ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना। ४ बिखरना, छितरना, फैलना। ५ हरा-भरा होना, लहलहाना। ६ गमन करना, जाना। ७ तितर-बितर होना, फैलना।

विस्तरता–स्त्री० [सं०] बहुत या अधिक होने की अवस्था या भाव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विस्तरियो–देखो 'बिस्तर'।

विस्तार, विस्तार–पु० [सं०] १ प्रसार, फैलाव। २ वृक्ष की शाखाएं। ३ अधिकता, बाहुल्य। ४ वृत्तान्त, विवरण।

विस्तारक–वि० विस्तार करने वाला।

विस्तारण–स्त्री० विस्तार या प्रसार की क्रिया या भाव।

विस्तारणो (बो)–क्रि० १ विस्तार करना, फैलाना। २ बिखेरना, छितराना। ३ ध्वनित करना, उच्चरित करना। ४ बढोतरी करना। ५ हिलाना-डुलाना। ६ प्रचार करना।

विस्तारि–देखो 'विस्तार'।

विस्तारी–वि० [सं० विस्तारिन्] जिसका विस्तार अधिक हो।

विस्तीरण–वि० [सं० विस्तीर्ण] १ विस्तृत फैला हुआ। २ बहुत लम्बा चौड़ा।

विस्तृत, विस्त्रित–वि० [सं० विस्तृत] १ फैला हुआ, विस्तरित, व्याप्त। २ लम्बा चौड़ा। ३ विपुल, परिव्याप्त।

विस्न, विस्न–१ देखो 'विस्णु'। २ देखो 'व्यसन'।

विस्नी, विस्नी–देखो 'व्यसनी'।

विस्फार–पु० [सं०] १ धनुष की टंकार। २ धनुष की डोरी। ३ कम्पन, सिसकन। ४ स्फूर्ति, तेजी। ५ विस्तार, विकास। ६ खिचाव, तनाव।

विस्फारित–वि० [सं०] १ टंकारा हुआ। खींचा हुआ। २ कंपित, थरथराता हुआ। ३ खींचा हुआ, ताना हुआ। ४ स्फूर्ति-युक्त। ५ विस्तृत, फैला हुआ।

विस्फुरणो (बो)–क्रि० १ कांपना, कंपित होना। २ डरना, भयभीत होना। ३ हिलना-डुलना। ४ थरथराना, फरकना।

विस्फुरावणो (बो)–क्रि० १ कम्पित करना, कंपाना। २ डराना, भयभीत करना। ३ हिलाना-डुलाना।

विस्फोट–पु० [सं०] १ भूमिगत आग, गैस आदि का जोर की आवाज के साथ फूट कर निकलने की क्रिया। २ इस क्रिया मे होने वाला जोर का शब्द। ३ कोई गोला या वस्तु जोर की आवाज के साथ फटना, फूटना। ४ जहरीला फोड़ा। ५ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ६ चेचक की बीमारी।

विस्फोटक–पु० [सं०] १ बारूद आदि शीघ्र आग पकड़ने वाला पदार्थ, विस्फोट करने का सामान। २ धमाके के साथ फटने वाली वस्तु। ३ जहरीला फोड़ा। ४ शीतला रोग, चेचक। ५ छत्तीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों में से एक।

विस्फोटणो (बो)–क्रि० १ धमाके के साथ फूटना, फूटकर निकलना। २ विस्फोट होना। ३ जहरीला फोड़ा होना।

विस्फोटता–स्त्री० आलस्य में अंग मोड़ने की क्रिया।

विस्मय–पु० [सं०] १ आश्चर्य, ताज्जुब। २ अद्भुत रस का स्थाई भाव। ३ अभिमान, गर्व। ४ शक, संदेह।—कारी –वि० आश्चर्यान्वित करने वाला, ताज्जुब में डालने वाला।

विस्मरण–पु० [सं०] स्मृति से निकलने या भूलने की अवस्था।

विस्मरणी, विस्मरणी–वि० भूलने वाला, भुलक्कड़।

विस्मरणो (बो)–क्रि० भूलना, स्मृति में न रहना।

विस्मारक–वि० भुलाने वाला, विस्मरण कराने वाला।

विस्मि, विस्मिय–देखो 'विस्मय'।

विस्मित–वि० आश्चर्ययुक्त, चकित।

विस्मिता–पु० एक प्रकार का वर्णिक छन्द।

विस्मिय–देखो 'विस्मय'।

विस्रंखल (ला)–वि० [सं० विस्रृंखल] १ जिसमें कोई शृंखला न हो, सिलसिला विहीन। २ उद्दण्ड, उत्पाती। ३ दुराचारी लंपट।

विस्रंभ–पु० [सं० विस्रम्भ] १ दृढ़ विश्वास। २ प्यार, प्रेम, मुहब्बत। ३ विश्राम। ४ संभोग के समय प्रेमी-प्रेमिका का होने वाला झगड़ा। ५ गुप्त बात। ६ हत्या।

विस्रंभी–वि० [सं० विस्रम्भी] १ विश्वास करने वाला। २ प्रेम या मुहब्बत संबंधी।

विस्र–पु० खून रक्त।

विस्रब्ध–वि० [सं० विस्रब्ध] १ जिसका विश्वास किया जाय। २ जो विश्वास करता हो। ३ निर्भय, निडर। ४ जो उद्धत न हो सुशील।

विस्रव, विस्रवा–पु० [सं० विस्रवस्] १ पुलस्त्य ऋषि का पुत्र एवं रावण का पिता। २ लंकापति रावण। ३ पुलस्त्य ऋषि के वंशज। ४ ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति। [सं० विस्रवः] ५ आश्रय, सहारा।

विस्रांत–वि० [सं० विस्रान्त] १ जिसने आराम किया हो। २ शान्त, सुशील। ३ अवशिष्ट।

विस्रांति (ती)–स्त्री० [सं० विस्रान्ति] १ विश्राम, आराम। २ अवसान, मौत, मृत्यु। ३ एक तीर्थ का नाम।

विस्रांम–देखो 'विसरांम'।

विस्रांमणो (बो)–देखो 'विसरांमणो' (बो)।

विस्रांमी–देखो 'विसरांमी'।

विस्रांमु (मू)–देखो 'विसरांम'।

विस्राळ (ल,ळी,ळो, लो)–वि० १ शान्त। २ देखो 'विसराळ'।

विस्रुत–वि० [सं० विश्रुत] १ जाना हुआ, सुना हुआ। २ प्रसिद्ध विख्यात। ३ प्रसन्न, खुश।–पु० १ वसुदेव का पुत्र एक राजकुमार। २ अमिताभ देवों में से एक।

विस्रुतात्मा–पु० [सं० विश्रुतात्मन्] भगवान विष्णु।

विस्रुति–स्त्री० [सं० विश्रुति] प्रसिद्धि, ख्याति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विस्रेय–वि० [सं० वि-श्रेयस्] १ विशेष श्रेष्ठता वाला, उत्तम, श्रेष्ठ। २ श्रेष्ठता रहित, बुरा।

विस्रस्य–वि० [सं० विस्रस्य] १ शिथिल, ढीला। २ सुस्त, थका हुआ।

विस्रेस–पु० [सं० विश्लेष] १ अलग या पृथक होने की क्रिया या भाव। २ वियोग, विछोह। ३ थकावट, सुस्ती। ४ शिथिलता, ढीलापन।

विस्लेसण–पु० [सं० विश्लेषण] १ किसी पदार्थ के संयोजक तत्त्वों को पृथक करने की क्रिया या भाव। २ विषय या पदार्थ के तत्त्वों की पृथक-पृथक जांच या अध्ययन। ३ अध्ययन या विवेचन की विधि। ४ वायु प्रकोप से बने फोड़े में होने वाला दर्द। ५ भंग करना क्रिया।

विस्लेसणात्मक–वि० [सं० विश्लेषणात्मक] १ जिसका विश्लेषण किया गया हो। २ विश्लेषण कर तैयार किया गया। ३ विश्लेषण करने योग्य।

विस्लोक–पु० [सं० विश्लोक] एक मात्रिक छंद विशेष।

विस्वंतर–पु० [सं० विश्वंतर] भगवान बुद्ध।

विस्वंभर–पु० [सं० विश्वंभर] १ समस्त संसार का भरण-पोषण करने वाला, ईश्वर, श्रीविष्णु। २ देवराज इन्द्र। ३ अग्नि देवता। ४ एक उपनिषद्।

विस्वंभरा (री)–स्त्री० [सं० विश्वंभरा] १ पृथ्वी, भूमि। २ एक रागिनी विशेष।

विस्वंभरेसर (सुर, स्वर)–पु० [सं० विश्वंभरेश्वर] १ हिमालय स्थित एक शिव लिंग का नाम। २ शिव, महादेव। ३ ईश्वर।

विस्व–पु० [सं० विश्व] १ संसार, जगत, दुनिया। २ समस्त ब्रह्माण्ड। ३ विष्णु का एक नामान्तर। ४ शिव, महादेव। ५ दश देवों का एक गण विशेष। ६ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला गंधर्व। ७ आत्मा, जीव। ८ नगर निवासी।–वि० १ समस्त, समग्र। २ प्रत्येक, हरेक।

विस्वईस–देखो 'विस्वेस'।

विस्वईसर (सुर, स्वर)–देखो 'विस्वेस्वर'।

विस्वकरण–देखो 'विस्वकरमा'।

विस्वकरमजा–स्त्री० [सं० विश्वकर्मजा] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

विस्वकरमा (र्मा)–पु० [सं० विश्वकर्मन्] १ विश्व की सृष्टि करने वाला ब्रह्मा, विधि। २ ईश्वर, विष्णु। ३ शिव, महादेव। ४ सूर्य, रवि। ५ शिल्प शास्त्र के अधिष्ठाता एक देव। ६ बढ़ई, लुहार आदि शिल्पी।

विस्वकसेन–पु० [सं० विश्वक्सेनः] १ भगवान विष्णु का एक नामान्तर। २ ईश्वर, परमात्मा। ३ इंद्र सभा के एक ऋषि। ४ नारद के शिष्य एक आचार्य। ५ चौदहवें मनु का नामान्तर।

विस्वकाय–पु० [सं० विश्वकाय] भगवान् श्रीविष्णु।

विस्वकाया–स्त्री० [सं० विश्वकाया] दुर्गा का एक नामान्तर।

विस्वकारक–पु० [सं० विश्वकारक] विष्णु। ब्रह्मा। शिव।

विस्वकारज (कार्य)–पु० [सं० विश्वकार्य] सूर्य की सप्तरंगी प्रमुख सात ज्योतियां।

विस्वकारणी, विस्वकारिणी–स्त्री० [सं० विश्वकारिणी] विश्व की कारण रूपा शक्ति, देवी।

विस्वकूट–पु० [सं० विश्वकूट] हिमालय की एक चोटी का नाम।

विस्वकेतु–पु० [सं० विश्वकेतु] १ अनिरुद्ध का एक नामान्तर। २ एक पर्वत का नाम।

विस्वकोस–पु० [सं० विश्वकोश] १ संसार के समस्त पदार्थ आदि का संग्रह, कोश या भण्डार। २ संसार के समस्त विषयों के विस्तृत विवेचन का ग्रंथ।

विस्वकृत–पु० [सं० विश्वकृत] १ संसार का सृष्टि कर्त्ता, ब्रह्मा। २ विश्व का पालनहार, विष्णु। ३ शिव, महादेव।

विस्वगंध–पु० [सं० विश्वगंध] १ लहसुन। २ लोबान।

विस्वगंधा–स्त्री० [सं० विश्वगंधा] पृथ्वी, भूमि।

विस्वगंधि (धी)–पु० [सं० विश्वगंधि] पृथु नामक राजा के पुत्र का नाम।

विस्वगरभ–पु० [सं० विश्वगर्भ] १ भगवान विष्णु। २ शिव।

विस्वगस्व–पु० [सं० विश्वगश्व] राजा पृथु के पुत्रों में से एक।

विस्वगोप्ता–पु० [सं० विश्वगोप्ता] १ विष्णु। २ देवराज इन्द्र। ३ विश्वंभर।

विस्वचक्ख (क्ष, क्षु, क्षु)–पु० [सं० विश्वचक्षुस्] १ ईश्वर परमात्मा। २ सूर्य, रवि।

विस्वचक्र–पु० [सं० विश्वचक्र] बारह प्रकार के महादानों में से एक।

विस्वजीत–पु० [सं० विश्वजित्] १ एक प्रकार का यज्ञ। २ वरुण का पाश। ३ अग्नि, आग। ४ बृहस्पति के एक पुत्र का नाम। ५ विष्णु।

विस्वजीव–पु० [सं० विश्वजीव] ईश्वर, परमात्मा।

विस्वजोन (जोनि, जोनी)–देखो 'विस्वयोनि'।

विस्वजोतिस–पु० [सं० विश्वज्योतिष] एक ऋषि विशेष।

विस्वतन (तनु)–पु० [सं० विश्वतनु] भगवान विष्णु।

विस्वतोया–स्त्री० [सं० विश्वतोया] गंगा नदी।

विस्ववत्त–पु० [सं० विश्वदत्त] सोमवंशीय एक राजा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विस्ववासा–स्त्री० [सं० विश्ववासा] अग्नि की सात जिह्वाओं का नाम।

विस्वदेव (देव)–पु० [सं० विश्वदेव] १ ईश्वर, परमात्मा। २ श्राद्ध संबंधी देवता विशेष।

विस्वदैवत–पु० [सं० विश्वदैवत्] उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

विस्वधर–पु० [सं० विश्वधर] भगवान श्रीविष्णु।

विस्वधाम–पु० [सं० विश्वधामन्] ईश्वर, परमात्मा।

विस्वधा–पु० [सं० विश्वधा] एक प्रकार के देवता।

विस्वधार–पु० [स० विश्व-धारी] (स्त्री० विश्वधारिणी) १ शिव, महादेव। २ एक तीर्थ का नाम।

विस्वधारणी (धारिणी)–स्त्री० [सं० विश्वधारिणी] १ भूमि, पृथ्वी। २ दुर्गा, देवी, शक्ति।

विस्वनंत–पु० [सं० विश्वनंत] जनकवंशीय एक राजा।

विस्वनाथ–पु० [सं० विश्वनाथ] १ काशी का एक ज्योतिर्लिंग। २ शिव, महादेव। ३ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। ४ ईश्वर, परमात्मा। ५ विश्व का स्वामी।

विस्वनाभ (भि, भी)–पु० [सं० विश्वनाभ] १ भगवान श्री विष्णु। २ विष्णु का सुदर्शन चक्र।

विस्वपत (पति, पती)–पु० [सं० विश्वपति] १ ईश्वर, परमात्मा। २ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। ३ मनु नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम। ४ विश्व के स्वामी, ईश्वर।

विस्वपा–पु० [सं० विश्वपा] १ ईश्वर, परमात्मा। २ सूर्य, सूरज। ३ चन्द्रमा, चांद। ४ अग्नि, आग।

विस्वपातरी (पात्री)–पु० [सं० विश्वपातृ] पितर विशेष।

विस्वपाळ–पु० [सं० विश्वपाल] १ संसार का भरण-पोषण कर्त्ता, ईश्वर, परमात्मा। २ एक राजा।

विस्वपावन (पावनी, पाविनी)–स्त्री० [सं० विश्वपावन] १ तुलसी। २ सूर्य, सूरज। ३ चांद, चन्द्रमा। ४ आग, अग्नि।

विस्वपूजिता–स्त्री० [सं० विश्वपूजिता] तुलसी।

विस्वप्रकास (क)–पु० [सं० विश्व प्रकाशक] सूर्य, रवि।

विस्वप्रबोध–पु० [सं० विश्वप्रबोध] भगवान विष्णु।

विस्वबंधु–पु० [सं० विश्वबंधु] शिव, महादेव।

विस्वबाहु–पु० [सं० विश्वबाहु] १ विष्णु। २ शिव, महादेव।

विस्वभरता (सा)–पु० [सं० विश्वभर्तृ] ईश्वर, परमात्मा।

विस्वभावन–पु० [सं० विश्वभावन] १ ईश्वर, परमात्मा। २ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र।

विस्वभुज, विस्वभुजा–स्त्री० [सं० विश्वभुज] १ एक देवी का नाम। २ ईश्वर, परमात्मा। ३ देवराज इन्द्र। ४ बृहस्पति का चौथा पुत्र व गोमती का पति एक अग्निदेव। –वि० सर्व भक्षी।

विस्वभूखण (भूसण)–पु० [सं० विश्व भूषण] एक सूर्यवंशी राजा।

विस्वमया–स्त्री० [सं० विश्वमया] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विस्वमहेस्वर–पु० [सं० विश्व महेश्वर] शिव महादेव।

विस्वमाता–स्त्री० [सं० विश्वमाता] दुर्गा, विश्व की माता।

विस्वमित (मितर, मित्र, मित)–देखो 'विस्वामित्र'।

विस्वमुखी–स्त्री० [सं० विश्वमुखी] पार्वती।

विस्वमूरति (मूरती, मूरत्ति)–स्त्री० [सं० विश्वमूर्ति] सर्व व्यापी भगवान विष्णु।

विस्वमोहन–पु० [सं० विश्व मोहनम्] विष्णु का नामान्तर।

विस्वयोनि (नी)–पु० [सं० विश्वयोनि] १ संसार के सृष्टि कर्त्ता, ब्रह्मा। २ विष्णु।

विस्वर–देखो 'विसर'।

विस्वरुचि (चो)–पु० [सं० विश्वरुचि] १ एक देव योनि। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विस्वरूप–पु० [सं० विश्वरूप] १ श्रीकृष्ण। २ श्रीविष्णु। ३ शिव, महादेव। ४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम। ५ शिव कल्प के पश्चात् प्रारंभ हुए एक कल्प का नाम। ६ श्रीकृष्ण का विराटरूप। ७ एक प्राचीन तीर्थ। ८ बृहस्पति के साथ होने वाले देव गुरु का नाम।

विस्वरूप-विस्तार–पु० श्रीकृष्ण।

विस्वरूपा–स्त्री० [सं० विश्वरूपा] १ एक देवी। २ धर्म ऋषि की पत्नी।

विस्वरूपी–पु० [सं० विश्वरूपिन्] भगवान श्रीविष्णु।

विस्वलोचण (न)–पु० [सं० विश्वलोचन] १ सूरज, सूर्य। २ चन्द्रमा।

विस्वविद्यालय–पु० [सं० विश्व विद्यालय] सभी विषयों की उच्च शिक्षा देने तथा उच्च शिक्षा की विश्व मान्य उपाधियां प्रदान करने वाला शिक्षा केन्द्र, विद्यापीठ।

विस्वसहा–स्त्री० [सं० विश्वसहा] १ भूमि, पृथ्वी। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

विस्वसाखी (साखी)–पु० [सं० विश्वसाक्षी] ईश्वर परमात्मा।

विस्वस्त–वि० [स० विश्वस्त] विश्वसनीय, विश्वास करने योग्य।

विस्वस्ता–स्त्री० [सं० विश्वस्ता] विधवा स्त्री।

विस्वस्रया–पु० [सं० विश्रवस्] कुबेर एवं रावण के पिता एक ऋषि।

विस्वहरता (त्ता)–पु० [सं० विश्वहर्तृ] शिव, महादेव।

विस्वहेतु–पु० [सं० विश्वहेतु] भगवान श्रीविष्णु।

विस्वा–स्त्री० [सं० विश्वा] १ धर्म की पत्नी। २ भारत की एक महानदी। ३ सोंठ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विस्वागाथा–स्त्री० [सं० विश्व-गाथा] गाहा छन्द का एक भेद।

विस्वाघात–देखो 'विश्वासघात'।

विस्वाची–स्त्री० [सं० विश्वाची] १ एक अप्सरा। २ एक प्रकार का वात रोग।

विस्वात्मा–पु० [सं० विश्वात्मा] १ भगवान विष्णु। २ सृष्टि के कर्त्ता, ब्रह्मा। ३ शिव, महादेव। ४ ईश्वर, परमात्मा।

विस्वाधार–पु० [सं० विश्वाधार] १ ईश्वर, परमात्मा। २ मेधातिथि के पुत्र का नाम।

विस्वाधारी–देखो 'विस्वाधार'।

विस्वाधिप (पत, पति, पती)–पु० [सं० विश्वाधिपति] विश्व का अधिपति, ईश्वर, परमेश्वर।

विस्वानर–देखो 'वैस्वानर'।

विस्वाबीस–देखो 'बिसवाबीस'।

विस्वामित (मितर, मित, मितर, मित्र, मित्रेस, मीत)–पु० [सं० विश्वामित्र] १ महाराज गाधि के पुत्र एक महर्षि जिन्होंने तप-बल से ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया था। २ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ रहने वाला एक ऋषि। ३ एक राक्षस समूह।

विस्वामित्रा–स्त्री० [सं० विश्वामित्रा] एक नदी विशेष।

विस्वावसु–पु० [सं० विश्वावसु] १ एक गंधर्व का नाम २ विष्णु का एक नामान्तर। ३ साठ संवत्सरों में से ३९ वां संवत्सर। ४ धर्म का पुत्र एक वसु।

विस्वाबीस, विस्वावीस–देखो 'बिसवाबीस'।

विस्वास, विस्वास–पु० [सं० विश्वास] १ किसी व्यक्ति, बात या वस्तु का भरोसा, यकीन, ऐतबार। तसल्ली। २ दृढ़ निश्चय, निश्चित धारणा। ३ तर्क या अनुमान के आधार पर तय की गई मान्यता, धारणा। ४ शक, संदेह व आशंका का पूर्ण अभाव। ५ आत्मबल। ६ साहस। ७ धैर्य, तसल्ली। ८ सन्तोष, सब्र। ९ गुप्त बात।—कारक–वि० विश्वास करने योग्य। विश्वास करने वाला।—घात–पु० धोखा, छल, कपट।—घातक, घाती–वि० धोखेबाज, छलिया, कपटी।—पात्र, पात्र–वि० विश्वसनीय, विश्वास करने योग्य।

विस्वासणो (बो)–क्रि० १ सन्तोष करना, सब्र करना। २ विश्वास या भरोसा करना। ३ दृढ़ निश्चय करना।

विस्वासा–पु० [सं० विश्वासा] एक सूर्यवंशी राजा, विश्रुतवान।

विस्वासी–वि० [सं० विश्वासी] १ जिसका विश्वास किया जा सके विश्वसनीय। २ विश्वास करने वाला।

विस्वेदेव–पु० [सं० विश्वेदेव] १ नौ देवों का एक समूह (वेद)। २ दस की संख्या*।

विस्वेस, विस्वेसर (सुर, स्वर)–पु० [सं० विश्वेस, विश्वेश्वर] १ शिव, महादेव। २ शिव की एक मूर्ति। ३ भगवान विष्णु। ४ ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म। ५ ब्रह्मा। ६ ग्यारह रुद्रों में से एक। ७ सत्ताईश नक्षत्रों में से एक।

विस्वैकसार–पु० [सं० विश्वेकसार] काश्मीर स्थित एक प्राचीन तीर्थ।

विस्वैकमा–देखो 'विस्वकरमा'।

विस्वौ–देखो 'विसवौ'।

विस्सरांम (मो)–देखो 'बिसरांम'।

विस्सम–देखो 'बिसम'।

विस्सहरपुर–पु० [सं० विषधरपुर] नागौर नगर का एक नाम।

विस्सा–पु० [सं० विश्वसा] पुद्गल, धूप, छाया आदि।

विहंग (ङो)–पु० [सं०] १ पक्षी, चिड़िया। २ मांसाहारी पक्षी। ३ सूर्य, रवि। ४ चन्द्रमा, चांद। ५ बादल, मेघ। ६ बाण, तीर। ७ घोड़ा, अश्व। ८ आकाश, गगन। ९ सत्ताईस नक्षत्रों में से एक नक्षत्र। १० ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग। ११ हंस। १२ विहंग मार्ग। १३ देखो 'विहाव'।—जेठी–पु० सूर्य, सूरज। गरुड़।—नाथ, पत, पति, पती–पु० पक्षिराज गरुड़। सूर्य। चन्द्रमा। इन्द्र।—पथ, मग, मारग–पु० आकाश, गगन। योग साधना का एक मार्ग।—राज, राजा–पु० गरुड़, इन्द्र।—राह=विहंगमारग'।

विहंगम–वि० [सं०] आकाश में गमन या विचरण करने वाला।—पु० १ सूर्य, सूरज। २ अश्व, घोड़ा। ३ आकाश, गगन। ४ मांसाहारी पक्षी। ५ कोई पक्षी। ६ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण। ७ खर राक्षस का एक अमात्य। ७ देखो 'विहंगमारग'।

विहंगमा–स्त्री० [सं०] सूर्य की किरण।

विहंगनाथ–देखो 'विहंगनाथ'।

विहंगेस–पु० [सं० विहंग-ईश] १ गरुड़। २ इन्द्र।

विहंगी–देखो 'विहंग'।

विहंड–पु० १ टुकड़ा, खण्ड। २ नाश, संहार। ३ मारने की क्रिया।

विहंडखंड–देखो 'खंडविहंड'।

विहंडण (णो)–पु० १ नाश, संहार। २ मारने की क्रिया।—वि० १ नाश करने वाला, संहार करने वाला। २ मारने वाला। ३ नाश करने या मिटाने वाला।

विहंडणो (बो)–क्रि० १ नाश करना। २ मिटाना। ३ मारना। ४ टुकड़े करना, खंड करना। ५ छेदना। ६ मरना। ७ घटना। ८ मिटना, खत्म होना।

विहंडाणो (बो)–क्रि० १ संहार कराना। २ नाश करवाना, मिटवाना। ३ टुकड़े करवाना, कटवाना। ४ छिदवाना।

विहंसक–देखो 'विध्वंसक'।

विहंसणो (बो)–देखो 'विहसणो' (बो)।

विह–देखो 'विधि'।

विहग–देखो 'विहंग'।

विहड़ (ड़ो)–पु० बीहड़, जंगल, वन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विहड़णो (बो)–देखो 'विहंडणो' (बो)।
विहवणो (बो)–देखो 'बँचणो' (बो)।
विहव (डो)–देखो 'विहड़'।
विहडु–१ देखो 'बेहद'। २ देखो 'विहड़'।
विहण–वि० [सं०] १ नाश करने वाला, संहार करने वाला। २ देखो 'बहन'।
विहत, विहति–क्रि० वि० [सं० विहीतम्] १ निवारण करने के लिये। २ देखो 'बेहद'
विहत्तर–देखो 'बेहतर'।
विहथी–वि० दो हाथ के बराबर नाप का।
विहव (ह्व)–पु० १ ध्वनि आवाज। २ परमात्मा, ईश्वर। ३ एक मात्रिक छन्द विशेष। ४ देखो 'बेहव'।
विहवभानु (नु)–पु० [सं० बृहद्भानु] १ अग्नि, आग। २ देखो 'बेहद'।
विहन–१ देखो 'बहन'। २ देखो 'विहूण'।
विहबल–देखो 'विह्वल'।
विहमंड–देखो 'ब्रह्मांड'।
विहर–पु० १ संहार, नाश। २ घोड़ा, अश्व। ३ विचरने की क्रिया। ४ साधुओं को दिया जाने वाला आहार या भिक्षा। ५ तरह, भांति, प्रकार।–वि० १ बहुत, अपार। २ बड़ा, विशाल। ३ बड़ा, महान।
विहरखो–पु० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।
विहरण–पु० [सं०] १ विहार करने की क्रिया। २ विछोह, वियोग। ३ विस्तार, फैलाव।
विहरणो (बो)–क्रि० १ विहार करना घूमना, टहलना। २ अलग-अलग या जुदा होना। ३ बिखरना, तितर-बितर होना। ४ भिक्षा देना। ५ गमन करना, जाना। ६ भिक्षा मांगना, भिक्षा लेना। ७ संहार करना, मारना। ८ काटना। ९ टुकड़े करना। १० विच्छेदन करना। ११ चीरना, विदीर्ण करना। १२ तोड़ना। १३ इंतजारी करना, प्रतीक्षा करना। १४ युद्ध क्रीड़ा करना।
विहरमाण (न)–पु० पांचों विदेह क्षेत्रों में विचरण करने वाले तीर्थंकर।
विहराणो (बो), विहरावणो (बो)–देखो 'बेराणो' (बो)।
विहर–वि० अंतर, दूरी, पृथकता।
विहलंघल (सा)–देखो 'विह्वल'।
विहलो–देखो 'बहिलो'।
विहव–देखो 'वैभव'।
विहवल–देखो 'विह्वल'।
विहव्य–पु० [सं०] वितथ्य का पिता एक ऋषि।
विहसणो (बो), विहसलो (बो)–क्रि० १ हंसना, प्रसन्न होना, खिलखिलाना। २ हर्षित होना, खुश होना। ३ खिलना, विकसित होना। ४ फूलना। ५ लहलहाना, लहराना। ६ प्रभात होना।
विहा–देखो 'विवाह'।
विहांग, विहांगड़ो–देखो 'विहंग'।
विहांण, विहांणड़–पु० [सं० विभानु] १ प्रातः काल, सवेरा। २ प्रातःकाल गाये जाने वाले लोक गीत। ३ देखो 'विहांन'।
विहांणो–वि० १ नष्ट। २ हीन, तुच्छ निम्न। ३ बीती हुई, गत, विगत। ४ बिना, रहित।–स्त्री० १ वृद्धावस्था। २ विध्वंस, नाश। ३ वार्ता, बात-चीत। ४ देखो 'विसांति'।
विहांणु (णू)–वि० १ रहित, विहीन, बिना। २ देखो 'विहांण' ३ देखो 'विहांणो'।
विहांणो–अव्य० १ कल। २ आने वाले समय में।–वि० १ बीता हुआ, विगत। २ बिना, रहित, हीन। ३ नष्ट। ४ देखो 'विहांण'। ५ देखो बिहांणा'।
विहांन–देखो 'विहांण'।
विहा–देखो 'विवाह'।
विहाइ–देखो 'विहायस'।
विहाइति–पु० [सं० विहापति] दान।
विहाई–१ देखो 'विहायस'। २ देखो 'बे'माता'।
विहाईमाता–देखो 'बे'माता'।
विहाग–देखो 'विहाग'।
विहाड़ (ड़ो)–वि० भयंकर, भयानक, डरावना।
विहाणो (बो)–क्रि० १ व्यतीत होना, गुजरना। २ बीतना। ३ छोड़ना, त्यागना, गंवाना। ४ रवाना होना। ५ प्रातः काल या सुबह होना। ६ देखो 'विवाहणो' (बो)।
विहापन–पु० [सं०] दातार, दानी।
विहायस–पु० [सं०] १ आकाश, गगन। २ पक्षी।
विहार–पु० [सं०] १ मैथुन, रति-क्रीड़ा। २ रति-क्रीड़ा या मैथुन करने का स्थान। ३ बौद्धों का मठ। ४ देवालय, मंदिर। ५ गति, चाल। वेग। ६ प्रस्थान, गमन। ७ जैन साधुओं का भिक्षार्थ गमन।–स्त्री० पंक्ति, कतार।
विहारजत्र–पु० विहार यात्रा।
विहारण–पु० [सं० विहारनम्] १ संहार, नाश। २ घूमने या टहलने की क्रिया। ३ प्रस्थान, गमन।–वि० १ संहार या नाश करने वाला। २ गमन करने वाला।
विहारणो (बो)–क्रि० १ चहल-कदमी करना, घूमना, फिरना टहलना। २ मंडराना, उड़ना। ३ संहार करना, मारना। ४ चीरना, विदीर्ण करना। ५ तहस-नहस करना नष्ट करना। ६ क्रीडा करना, खेल करना। ७ गमन करना,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्थान करना। ८ उपभोग करना, खाना। ९ रति-क्रीड़ा मैथुन या संभोग करना। ६ देखो 'बेराणो' (बो)।

बिहारियो–देखो 'व्यवहारियो'।

बिहारी–वि० १ विहार या विचरण करने वाला। २ गमन या प्रस्थान करने वाला। ३ नाश करने वाला। ४ रति क्रीड़ा या मैथुन करने वाला। ५ संहार करने, मारने वाला। –पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ शिव, महादेव। ३ ईश्वर, परमेश्वर। ४ एक प्रकार का नींबू। ५ देखो 'व्यवहारी'। ६ एक मुसलमान वंश।

बिहारीकंद–पु० [सं०] एक प्रकार का जमीकंद।

बिहाल (लो)–देखो 'बेहाल'।

बिहाव–देखो 'विवाह'।

बिहावणो (बो)–१ देखो 'बिवाहणो'(बो)। २ देखो 'बिहाणो' (बो)।

बिहिंसिक, बिहिंसिग–वि० अनेक प्रकार की हिंसाएं करने वाला, हिंसक (जैन)।

बिहि–१ देखो 'बिधि'। २ देखो 'बे'घाता'।

बिहिचणो (बो)–क्रि० १ विभक्त करना, तोड़ना। २ देखो 'बांटणो' (बो)।

बिहित, बिहिति–वि० [सं० विहित] १ बनाया हुआ। २ अनुष्ठान किया हुआ। ३ निर्मित, रचित। ४ स्थापित। ५ बांटा हुआ, विभक्त। ६ शास्त्र सम्मत, ठीक, उचित, उपयुक्त। –पु० १ विधि-विधान, कानून। २ आदेश, आज्ञा। ३ कृति, रचना।

बिहिमग्ग, बिहिमारग–पु० [सं० विधि मार्ग] विधिमार्ग।

बिहिर–पु० १ दूषित, आचार। २ व्यभिचार। ३ अपराध, दोष गल्ती। ४ फर्क, अन्तर, भेद।

बिहिल (ली, लु, लो, ल्ल, ल्लो, ल्य)–वि० १ काफी, बहुत, अधिक, पर्याप्त। २ दुःखी, पीड़ित। ३ देखो 'बहिलो'।

बिहिवा–देखो 'विवाह'।

बिहिवार–देखो 'व्यवहार'।

बिहिस्त–पु० [फा० बिहिश्त] स्वर्ग।

बिहीण (णो), बिहीन–वि० [सं० विहीन] १ बिना, रहित, बगैर। २ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। ३ नीच, कमीना।

बिहुंड–पु० [सं०] हुण्ड नामक राक्षस का पुत्र, एक राक्षस।

बिहुंडन–पु० [सं०] शिव का एक अनुचर विशेष।

बिहुंण (णो), बिहुण (णो)–वि० १ तुच्छ, न्यून। २ निर्बल, कमजोर। ३ देखो 'बिहूणो'।

बिहुव–क्रि० वि० चारों ओर, चारों तरफ।

बिहुं–देखो 'बेऊं'।

बिहुंण (णो)–देखो 'बिहूणो'।

बिहू, बिहूण, बिहूणड़ो (डो), बिहूणो–देखो 'बिहूणो'।

बिहूवल–देखो 'विह्वल'।

बिहेठ (ड)–पु० विनाश, संहार।

बिह्वल–पु० [सं० विह्वलम्] स्त्रियों के दस अलंकारिक गुणों में से एक।

बिह्वलि–स्त्री० [सं० विह्वलि] १ विहार, आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा। २ हटाने या छीनने की क्रिया।

बिह्वल–वि० [सं०] १ व्याकुल, बेचैन, भयभीत, डरा हुआ। २ खराब, विकृत। ३ चकित, विस्मित। ४ स्तब्ध, भौंचक्का। ५ पीड़ित, संतप्त। ६ कुटिल। ७ चिन्तित, उदास।

बिह्वलता–स्त्री० विह्वल होने की अवस्था या भाव।

बी–१ देखो 'बी'। २ देखो 'भी'। ३ देखो 'वी'।

बींकणो (बो)–क्रि० [सं० वीक्षणम्] १ ऊन, रूई आदि को हाथ से साफ करना। २ देखो 'बीखणो' (बो)।

बींख–देखो 'बीख'।

बींखणो (बो)–१ देखो 'बींकणो' (बो)। २ देखो 'बीखणो' (बो)।

बींची–स्त्री० १ विवर्चिका नामक कुष्ठ रोग। २ एक प्रकार का रक्त विकार रोग।

बींछयो, बींछाओ, बींछियो, बींछोयो, बींछ्यो, बींछ्यो–देखो 'बिछियो'।

बींजण–१ देखो 'बींजणो'। २ देखो 'बींजणो'।

बींजणि (णी)–१ देखो 'बींजणो'। २ देखो 'बीजणी'।

बींजणो–देखो 'बींजणो'।

बींजणो (बो)–देखो 'बींजणो' (बो)।

बींजाचळ (लो), बींजाचाळ (ळो)–देखो 'विंध्याचळ'।

बींजाणो (बो)–देखो 'बीजाणो' (बो)।

बींजासणियां–स्त्री० लोक देवियों का समूह।

बींजोणो–देखो 'बींजणो'।

बींझ–देखो विंध्य'।—गिर, गिरी='विंध्यागिरी'।

बींझणो (बो)–देखो 'बींजणो' (बो)।

बींझवन–पु० हाथियों की बहुतायत वाला वन, सुन्दर वन।

बींझाचळ, बींझाचल, बींझाचळ (ल, ळ, ल)–देखो 'विंध्याचळ'।

बींट बींट–पु० [सं० विष्टा] १ पक्षियों की बींट या विष्टा। २ आवेष्टन, घेरा। ३ टापू, द्वीप। ४ देखो 'बींटो'।

बींटण, बींटण–पु० [सं० वेष्टन] १ पुस्तक आदि लपेटने का वस्त्र। २ बिस्तर आदि बांधने की रस्सी।

बींटणो, बींटणो–देखो 'बींटो'।

बींटणो (बो), बींटणी (बो)–क्रि० १ किसी शहर या दुर्ग को घेर लेना, घेरा लगाना। २ समेटना, गोल करना। ३ चारों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओर से आक्रमण करना । ४ आच्छादित करना, ढकना । ५ लपेटना । ६ बाहुपाश में लेना, अंकमाल में लेना । ७ वस्त्र, कवच आदि पहनना, धारण करना । ८ मंडना, आच्छादित करना । ९ चारों ओर फैलना । १० आवेष्टित होना, घिरना । ११ जड़ना ।

बींटळी, बींटसी–स्त्री० १ पगड़ी, साफा । २ देखो 'बींटळी' । ३ देखो 'बींटी' । ४ देखो 'बींटणी' ।

बींटाणो (बो), बींटाणो (बो)–क्रि० १ दुर्ग, शहर आदि के घेरा लगवाना, घेराना । २ सिमटवाना, गोल कराना । ३ चारों ओर से आक्रमण कराना । ४ आच्छादित करवाना, ढकवाना । ५ लिपटवाना । ६ बाहुपाश में लेने को प्रेरित करना । ७ वस्त्रादि धारण कराना, पहनाना । ८ मंडवाना, आच्छादित कराना । ९ आवेष्टित कराना । १० चारों ओर कराना, फैलवाना ।

बींटी, बींटी–देखो 'बींटी' ।

बींटोरो, बींटोरो–देखो 'भींटोरो' ।

बींटो, बींटो–पु० १ दरी, बिस्तर आदि की गोल बंधी गठरी । २ देखो 'बींटी' ।

बींठो, बींठी–देखो 'बींटी' ।

बींडी–पु० १ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । २ देखो 'भिंडी' ।

बींण, बींण–१ देखो 'बीणा' । २ देखो 'बिना' ।

बींणणो (बो)–क्रि० १ छांटना, टालना । २ देखो 'बिणणो' (बो) । ३ देखो 'बुणणो' (बो) ।

बींणती, बींणती–देखो 'बिनती' ।

बींद (ड्), (घींवराजा) बींद–देखो 'बींद' ।

बींदड़ी–स्त्री० १ विवाहादि मांगलिक कार्यों का निमंत्रण-पत्र, कुमकुम पत्रिका । २ देखो 'बींदड़ी' । ३ देखो 'बींदणी' ।

बींदणी, बींदणी–देखो 'बींदणी' ।

बींदणी (बो), बींदणी (बो)–१ देखो 'बींधणी' (बो) । २ देखो 'बींधणी' (बो) ।

बींदळ–पु० नपुंसक, हिजड़ा ।

बींदोळी, बींदोळी (स्त्री)–पु० १ दूल्हे-दुल्हिन की जूती । २ देखो 'बंदोळी' ।

बींध–देखो 'बींद' ।

बींधणो (बो), बींधणो (बो)–क्रि० १ आरपार होना, पार निकलना । २ दबना, विवश होना । ३ दबोचना । ४ देखो 'बींधणो' (बो) । ५ देखो 'बिधणो' (बो) ।

बींधाणो (बो), बींधाणो (बो)–क्रि० १ आर-पार कराना । २ दबवाना, विवश कराना । ३ दबोचवाना । ४ देखो 'बींधाणो' (बो) । ५ देखो 'बिधाणो' (बो) ।

बींन–१ देखो 'बीणा' । २ देखो 'बींद' ।

बींफरणो (बो), बींफरणो (बो)–देखो 'बिफरणो' (बो) ।

बींभरणो (बो)–१ देखो 'भींभरणो' (बो) । २ देखो 'बिभरणो' (बो) ।

बींभळ (ळो)–देखो 'बिभळ' ।

बींही–सर्व० उस, उसी ।

बी–पु० १ शास्त्र । २ विष्णु । ३ योद्धा, सुभट । ४ गंगा । ५ देखो 'बी' । ६ देखो 'भी' ।

बीआळ (स)–देखो 'ब्याळ' ।

बीक–१ देखो 'बीख' । २ देखो 'बिक्रमादित्य' ।

बीकणो (बो), बीकणो (बो)–क्रि० १ बेचना, विक्रय करना । २ देखो 'बिकणो' (बो) ।

बीकधर–पु० बीकानेर का एक नाम ।

बीकनेर (पुर, पुरो)–देखो 'बिक्रमपुर' ।

बीकम (म्म)–१ देखो 'बिक्रम' । २ देखो 'बिक्रमादित्य' ।

बीकराळ (स), बीकराळ–देखो 'बिकराळ' ।

बीकांण, बीकांणगढ़ बीकांणो–देखो 'बीकानेर' ।

बीका–स्त्री० राठौड़ों की एक उपशाखा ।

बीकोदर–देखो 'भ्रकोदर' ।

बीक्रम–१ देखो 'बिक्रम' । २ देखो 'बिक्रमादित्य' ।

बीक्षण–पु० [सं०] देखने की क्रिया, अवलोकन, निरीक्षण ।

बीख(ड़ो)–पु० [सं० बीख] १ कदम, डग, पैंड । २ चाल, गति; वेग । ३ ऊंट या घोड़े की चाल विशेष । ४ देखो 'बिस' । ५ देखो 'बीक्षण' ।

बीखणी–देखो 'बिखणी' ।

बीखणो (बो), बीखणो (बो)–क्रि० १ रुदन करना, रोना । २ बिलखना, व्याकुल होना । ३ तरसना, लालायित होना । ४ तड़फना । ५ दुःखी या पीड़ित होना । ६ देखो 'बेखणो' (बो) ।

बीखरणो (बो)–देखो 'बिखरणो' (बो) ।

बीखराणो (बो), बीखरावणो (बो)–देखो 'बिखराणो' (बो) ।

बीखो, बीखो–देखो 'बिखो' ।

बीगड़णो (बो), बीगड़णो (बो)–देखो 'बिगड़णो' (बो) ।

बीगड़ाणो (बो), बीगड़ाणो (बो), बीगड़ावणो (बो), बीगड़ावणो (बो)–देखो 'बिगड़ाणो' (बो) ।

बीगसणो (बो)–देखो 'बिकसणो' (बो) ।

बीगाड़, बीगाड़–देखो 'बिगाड़' ।

बीगाड़णो (बो), बीगाड़णो (बो)–देखो 'बिगाड़णो' (बो) ।

बीगाड, बीगाड–देखो 'बिगाड़' ।

बीगाडणो (बो), बीगाडणो (बो)–देखो 'बिगाड़णो' (बो) ।

बीग्रह्–देखो 'बिग्रह्' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीग्रहणो (बो)–देखो 'विग्रहणो' (बो)।
वीघी, वीघो–देखो 'बीघो'।
वीडंग, वीडंगण, वीडंगि (गो)–देखो 'विडंग'।
वीडो–पु० मोट (चरस) की रस्सी का एक शिरा।
वीध, वीध–पु० १ राह, मार्ग। २ देखो 'बीच'। ३ देखो 'विधियो'।
वीधणो (बो), वीधरणो (बो)–क्रि० १ नाश करना, मिटाना। २ संहार करना, मारना। ३ अलग करना, पृथक करना। ४ त्यागना छोड़ना, बहिष्कार करना। ५ बीतना, गुजरना, घटित होना। ६ व्यतीत होना।
वीधली (ली), वीधली–देखो 'बिधली'। (स्त्री० वीधली)
वीधारणो (बो), वीधारणो (बो)–देखो 'विधारणो' (बो)।
वीधाळ (ळि, ळी, ळु, ळै), वीधाळ–क्रि० वि० बीच में, दरम्यान।
वीधि–स्त्री० [सं० वीचि:] १ विवेकहीनता, चंचलता। २ लहर, तरंग। ३ हर्ष, खुशी, आह्लाद। ४ किरन, रश्मि। ५ देखो 'बीच'। ६ देखो 'विचि'।
वीधिमाळी–पु० [सं० वीचिमालिन्] समुद्र, सागर।
वीधी–१ देखो 'बीच'। २ देखो 'विचि'। ३ देखो 'वीचि'।
वीधेतस–स्त्री० दुखित।
वीछड़णो (बो), वीछडणो (बो), वीछड़णो (बो)–१ देखो 'बिछुड़णो' (बो)। २ देखो 'विछूटणो' (बो)।
वीछण (णी), वीछण–देखो 'वीछण'।
वीछळ, वीछळण–पु० १ नहाने-धोने का पानी। २ प्रहार।
वीछळणो (बो)–क्रि० धोना, धुलाई करना।
वीछाणो, वीछांमणो–देखो 'बिछाणो'।
वीछाणो (बो), वीछावणो (बो)–देखो 'बिछाणो' (बो)।
वीछुड़णो (बो)–क्रि० १ विमुक्त होना, अलग होना। २ देखो 'बिछुड़णो' (बो)। ३ देखो 'विछूटणो' (बो)।
वीछू–देखो 'बिच्छु'।
वीछूड़ी, वीछूड़ी–१ देखो 'बिच्छूड़ी'। २ देखो 'बीछण'।
वीछूटणो (बो)–१ देखो 'विछूटणो' (बो)। २ देखो 'बिछुड़णो' (बो)।
वीछोड़णो (बो)–देखो 'बिछोड़णो' (बो)।
वीछोटणो (बो)–क्रि० १ बहना, निकलना। २ देखो 'बिछूटणो' (बो)।
वीछोय, वीछोव–देखो 'बिछोह'।
वीछोवणो (बो)–देखो 'बिछोहणो' (बो)।
वीछोवो, वीछोह (हो), वीछोवो, वीछोह–देखो 'बिछोह'।
वीज, वीज–१ देखो 'बीज'। २ देखो 'बीजळा'। ३ देखो 'बीजली'। ४ देखो 'दूज'।
वीजइ (ई)–१ देखो 'दूजो'। २ देखो 'बीजली'। ३ देखो 'विजय'।
वीजइथंभ–पु० [सं० विजयस्तम्भ] कीर्तिस्तम्भ, विजयस्तंभ।
वीजउ (ऊ)–१ देखो 'दूजो'। २ देखो 'बीज'।
वीजक–१ देखो 'बीजक'। २ देखो 'बीजळी'।
वीजकणो (बो), वीजखणो (बो), वीजकणो (बो)–देखो 'बिचकणो' (बो)।
वीजड़हत (ती, तो, थ, थी, थो)–देखो 'बीजळहथ'।
वीजड़ी, वीजड़ी–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।
वीजजळ वीजजुळ, वीजजुळ, वीजभळ, वीजभूळ–देखो 'बीजूभळ'।
वीजड–देखो 'बीजळा'।
वीजण (णो), वीजणु (णो)–देखो 'बींजणो'।
वीजणो (बो)–१ देखो 'बींजणो' (बो)। २ देखो 'बीजणो' (बो)।
वीजन–पु० [सं० वीजन:] १ चकवाक, चकोर पक्षी। २ पंखे से हवा डालने की क्रिया।
वीजपुरख (पुरस, पुरुख, पुरुस)–पु० वंश का आदि या मूल पुरुष।
वीजमंत्र–देखो 'बीजमंत्र'।
वीजळ (ल)–पु० १ पंखा। २ देखो 'बीजळ'। ३ देखो 'बीजळा'। ४ देखो 'बीजळी'।
वीजळड़ी, वीजलड़ी–१ देखो 'बीजल'। २ देखो 'बीजळा'। ३ देखो 'बीजळी'।
वीजळसार–देखो 'बिजळसार'।
वीजळहत (ती, त्थ, त्थी, थ, थी)–देखो 'बीजळाहथ'।
वीजळा (ला)–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।
वीजळि, वीजलि (ळी, ली)–स्त्री० १ वह भैंस जिसके स्तनों में सफेद रेखा या धारी हो। २ देखो 'बीजळा'। ३ देखो 'बीजळी'।
वीजाजळ, वीजाजुळ, वीजाभळ (ल)–१ देखो 'बीजूभळ'। २ देखो 'विंध्याचल'।
वीजाविक–पु० [सं०] ऊट।
वीजुळ, वीजुल, वीजुळी (ली)–१ देखो 'बीजळा'। २ देखो 'बीजळी'।
वीजूजळ (ल), वीजूभळ (ल)–देखो 'बीजूभळ'।
वीजोग, वीजोग–देखो 'बिजोय', 'विजोय', 'वियोग'।
वीजोरड़ो (डो)–देखो 'बीजोरो'।
वीजो, वीजो–देखो 'दूजो'।
वीझण, वीझणउ, वीझणो, वीझण, वीझणो–देखो 'बींजणो'।
वीझणो (बो), वीझणो (ब)–देखो 'बींजणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीभांणमात –स्त्री० एक देवी का नाम।

वीसाजळ (स), वीसासळ (स)–१ देखो 'बीजूझळ'। २ देखो 'विध्याचळ'।

वीसावण (न)–देखो 'वींझवन'।

वीसामणि, वीसासणी–१ देखो 'मावलियां'। २ देखो 'आवड़'।

वीसोड़णो, वीसोड़बो–क्रि० काटना।

वीटक–पु० [सं०] पान का बीड़ा।

वीटणी (बो), वीटणो (बो)–देखो 'वींटणी' (बो)।

वीटली (ली), वीटली–१ देखो 'बींटळी'। २ देखो 'वींटली'।

वीटबो–वि० घुमावदार, लपेटदार।

वीटिका–स्त्री० [सं० वीटि] १ पान की बेल। २ पान बीड़ा तैयार करने की क्रिया। ३ चोली की गांठ। ४ पान का बीड़ा।

वीटी, वीटो–१ देखो 'बींटी'। २ देखो 'वीटिका'।

वीटोजणी (बो), वीटोजणो (बो)–क्रि० टिड्डी का ऋतुमति होकर गर्भ धारण करना।

वीटोदार–पु० विशेष खुदाई वाला अर्धमंडलाकार पत्थर।

वीटोबी–देखो 'वीटबो'।

वीटुळी (ली), वीटुळी–१ देखो 'बींटली'। २ देखो 'बींटणी'। ३ देखो 'वींटली'।

वीटोरो, वीटोरो–देखो 'भीटोरो'।

वीटो, वीटी– पु० [सं० वीटा] १ एक प्रकार का खेल। २ देखो 'वींटी'। ३ देखो 'बींटी'।

वीठ, वीठ–देखो 'विस्ठो'।

वीठनि–क्रि० वि० अन्दर, में।

वीठळ (स)–देखो 'विट्ठळ'।—नाथ='विट्ठळनाथ'।

वीठलो–१ देखो 'वींटणी'। २ देखो 'वींटलो'। ३ देखो 'वींटली'।

वीठळी (ली), वीठुळ(स)–देखो 'विट्ठळ'।—नाथ=विट्ठळनाथ'।

वीठो–वि० १ आवेष्टित, घिरा हुआ। २ खराब।

वीडरणो (बो)–क्रि० क्रोध करना, गुस्सा करना, क्रोध में विकराल रूप धारण करना।

वीडयसदेस–पु० एक प्रदेश विशेष।

वीढ–१ देखो 'भीढ़'। २ देखो 'वेढ़'।

वीढ़णो (बो)–क्रि० १ लपेटना, लिपटाना। २ देखो 'विढ़णो' (बो)। ३ देखो 'वेढणो' (बो)।

वीण–स्त्री० [सं० वीणा] १ संपेरों का एक वाद्य विशेष, महुवरि। २ बांसुरी, मुरली। ३ देखो 'वीणा'।

वीणउसिउ–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

वीणकार–पु० गवैयों के अन्तर्गत एक वर्ग।

वीणणो (बो), वीणवणो (बो)–१ देखो 'वणणो' (बो)। २ देखो 'विणणो' (बो)।

वीणत (ति ती)–स्त्री० [सं० विनतिः] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना। २ नम्रता, विनम्रता।

वीणां–पु० १ कपास का पौधा व डोडा। २ देखो 'वीणा'।

वीणा–स्त्री० [सं०] १ एक प्रसिद्ध तार वाद्य। २ बीन। ३ बिजली, विद्युत। ४ निसाणी छन्द का एक भेद। ५ बहत्तर कलाओं में से एक।–कच्छणी–स्त्री० सरस्वती की वीणा का नाम।—कार–पु० वीणा बजाने वाला, गवैयों का एक भेद।—धर, धरि, धार, धारी–पु० नारद, सरस्वती, वीणाधारी।

वीणार–पु० १ अश्वारोही, घुड़सवार। २ एक वर्ण वृत्त विशेष।

वीणावंस–पु० एक प्रकार का वाद्य।

वीणावती–स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वीणावाद (क)–पु० वीणा बजाने वाला।

वीणावादणी (नी)–स्त्री० [सं० वीणावादिनी] सरस्वती।

वीणासर (सुर)–पु० वीणा का स्वर।

वीणास्य–पु० नारद।

वीणाहस्त–पु० शिव, महादेव।

वीणि–१ देखो 'बिना'। २ देखो 'वीणी'। ३ देखो 'वेणी'।

वीणिकार–देखो 'वीणकार'।

वीणी–स्त्री० १ कपाटों के पल्लों में लगने वाली आड़ी-सीधी लकड़ियां। २ छेद करने की कील। ३ हाथ की कलाई। ४ देखो 'वेणी'।

वीणी–पु० १ बड़ी वीणा। २ स्त्रियों के टीके का एक नाम। ३ स्त्रियों की चूड़ामणि के नीचे लगने वाला प्लास्टिक का टुकड़ा। ४ स्त्रियों के केशों की एक सजावट।

वीत–स्त्री० [सं० वीतं] १ हाथी को अंकुश से हांकने की एक क्रिया। २ युद्ध के लिये अयोग्य हाथी, घोड़ा या सैनिक। –वि० १ स्वतंत्र, मुक्त। २ गया हुआ। ३ पसंद, स्वीकृत। ४ देखो 'वित'।

वीतक (ग)–वि० बीता हुआ, गुजरा हुआ।

वीतगराग (गी)–देखो 'वीतराग'।

वीतणी (बो)–देखो 'बीतणी' (बो)।

वीतद्वेष (स)–वि० [सं० वीतद्वेष] द्वेष रहित, बिना द्वेष का।

वीतभय–पु० १ भगवान विष्णु का एक विशेषण। २ एक प्राचीन नगरी। ३ भयहीन।

वीतराग (गी, गो)–वि० [सं०] १ आसक्ति रहित, कामना, इच्छा रहित। २ जितेन्द्रिय। –पु० १ बुद्ध का एक नाम। २ जिन भगवान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीतसूत्र–पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
वीतसोक–वि० [सं० वीत-शोक] शोक रहित । –पु० १ अशोक वृक्ष । २ जैनियों का एक ग्रह ।
वीतहोत, वीतहोतर, वीतहोत्र–देखो 'वीतिहोत्र' ।
वीताणो (बो), वीतावणो (बो), वीताणो (बो)–देखो 'बिताणो' (बो) ।
वीति, वीती–पु० [सं० वीतिः] १ घोड़ा, अश्व । २ खाद्य पदार्थ, भोजन । ३ यज्ञ, हवन । ४ एक गोत्रकार । ५ चमक, दीप्ति, कांति । ६ अग्नि, आग । ७ गति, चाल । ८ पैदावार, उपज । ९ खाना-पीना क्रिया, उपभोग ।
वीतिहोत, वीतिहोतर (होत्र) वीतीहोत (होतर, होत्र) वीत्रहोत (त्र)–पु० [सं० वीतिः+होत्रः] १ अग्नि, आग । २ सूर्य, सूरज । ३ एक ऋषि । ४ एक प्राचीन राजा ।
वीत्रोट–पु० मन-मुटाव, वैर ।
वीथरणो (बो)–देखो 'विस्तरणो' (बो) ।
वीथि, विथिका, वीथी–स्त्री० १ मार्ग, रास्ता, गली । २ पंक्ति, कतार । ३ हाट, दुकान । ४ चित्रशाला । ५ भीतिचित्र । ६ सूर्य का भ्रमण-मार्ग । ७ एक प्रकार का काव्य ।
वीवंस–पु० श्येन, बाज आदि शिकारी पक्षी ।
वीद–पु० १ हाल, वृत्तान्त, विगत । २ देखो 'बींद' ।
वीदग, (ग्ध)–पु० [सं० विदग्ध] १ कवि, पंडित । २ चारणों का एक संबोधन ।
वीवळ, वीवस–देखो 'विदळ' ।
वीधणो (बो), वीधरणो (बो)–१ देखो 'बींधणो' (बो) । २ देखो 'बिंधणो' (बो) ।
वीधि–देखो 'विधि' ।
वीन–१ देखो 'बींद' । २ देखो 'वीण' । ३ देखो 'वीणा' ।
वीनउलो–देखो 'बंधोळी' ।
वीनड़ी, वीनणी, वीनणी–देखो 'बींदणी' ।
वीनणो (बो), वीनमणो (बो)–देखो 'विनवणो' (बो) ।
वीनसड़ी, वीनसि (सी)–देखो 'वीणती' ।
वीनमणो (बो)–देखो 'विनवणो' (बो) ।
वीनांण–स्त्री० १ रचना, कृति, सृजन । २ देखो 'विनांण' ।
वीनांणो–वि० १ रचना कर्त्ता, सृजन कर्त्ता, कृतिकार । २ देखो 'बैनांणो' ।
वीनो–पु० १ संकट, कष्ट, तकलीफ । २ विनय ।
वीपनी–स्त्री० शरपुंखा नामक पौधा ।
वीप्सा, वीप्सा–स्त्री० [सं० वीप्सा] १ प्रकार का शब्दालंकार । २ अधिकता, बाहुल्य । ३ व्यापकता । ४ पुनरावृत्ति ।
वीफणी–स्त्री० शरपुंखा नामक पौधा विशेष ।
वीफरणो (बो), वीफरणो (बो)–देखो 'विफरणो' (बो) ।
वीभरणो (बो)–देखो 'भींभरणो' (बो) ।
वीभचार–देखो 'व्यभिचार' ।
वीभत्स–पु० [सं०] साहित्य में एक रस । –वि० घृणित, जघन्य ।
वीभरणो (बो)–क्रि० गर्जना करना, दहाड़ना ।
वीभळियो, वीभलियो–वि० १ रसिक । २ थकित, श्रांत, क्लांत । ३ देखो 'विभळ' ।
वीभळो, वीभलो–स्त्री० १ एक देवी का नाम । २ देखो 'विभळो' ।
वीभव–पु० १ अर्जुन का एक नाम । २ देखो 'विभव' ।
वीभाड़णो (बो)–देखो 'विभाड़णो' (बो) ।
वीभाणो (बो), वीभ वणो (बो)–देखो 'विभाणो' (बो) ।
वीभो–देखो 'वैभव' ।
वीमांह–देखो 'विवाह' ।
वीमांहणो (बो)–देखो 'विवाहणो' (बो) ।
वीमा, विमा–देखो 'विवाह' ।
वीमासणो (बो)–देखो 'विमासणो' (बो) ।
वीमाह–देखो 'विवाह' ।
वीमाहणो (बो)–देखो विवाहणो' (बो) ।
वीमुह, वीमुहो, वीमूह (हो)–देखो 'विमुख' ।
वीम्हर–पु० झींगुर ।
वीयराग (गो, राय)–देखो 'वीतराग' ।
वीयाण, वीयांण–पु० आकाश, नभ ।
वीयाज, वीयाज–पु० ब्याज ।
वीयाजू, वीयाजू–देखो 'ब्याजू' ।
वीयास–देखो 'व्यास' ।
वीयोगण (णी), वीयोगिण (णी)–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम दूर हो या विदेश में हो, विरहणी ।
वीर–पु० [सं०] १ बहादुर, शूरवीर । २ सुभट, योद्धा । ३ पुत्र, बेटा । ४ पति खाविंद । ५ भाई, भ्राता । ६ मित्र, साथी । ७ सखी, सहेली । ८ दूल्हा, वर । ९ महिला, स्त्री । १० जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर, महावीर । ११ विष्णु । १२ अर्जुन । १३ कामदेव । १४ हनुमान, बजरंग । १५ गणेश । १६ भूत, प्रेत । १७ एक भैरव । १८ शिव के गण । १९ एक प्रकार का छंद । २० ठगों के द्वितीय भेद का नाम । २१ आरंभ । २२ रवानगी । २३ नये बैल का कृषि कार्य का प्रशिक्षण । २४ यज्ञ की अग्नि । २५ काली मिर्च । २६ आलु बुखारा । २७ बावन की संख्या ५२ । २८ वाराही कंद । २९ सिंदूर । ३० लोहा । ३१ कनेर । ३२ तुराई नामक सब्जी । ३३ कुश । ३४ भिलावा । –वि० १ कठिन एवं साहसिक कार्य करने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाला। २ शक्तिशाली, साहसी। ३ विशिष्ट कार्यों में अन्यों से बढ़कर। ४ कर्मठ, कर्मशील। ५ वाक्पटु चतुर।

वीरकंठ–पु० १ वीरध्वनि। २ डिंगल का एक गीत।

वीरक–पु० [सं०] १ चाक्षुक मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक। २ राजा शिबि का एक पुत्र। ३ देखो 'वीर'। ४ देखो 'वक्र'।

वीरकलहल–स्त्री० वीर ध्वनि।

वीरकाम–वि० [सं० वीर-कार्य] १ वीरोचित कार्य करने वाला। २ पुत्र की कामना करने वाला।

वीरकाव्य–पु० [सं० वीर-काव्य] वीर रस की कविता, काव्य।

वीरकुक्षि–स्त्री० [सं०] १ वीर पुत्र की माता। २ वीरों की भूमि, वीरों का क्षेत्र।

वीरक्क–१ देखो 'वीर'। २ देखो 'वीरक'।

वीरक्षेत्र–पु० [सं० वीर-क्षेत्र] १ युद्ध स्थल। २ वीरों की भूमि या क्षेत्र। ३ वीर पुत्र की माता।

वीरखेती–स्त्री० युद्ध, लड़ाई।

वीरगत (ति, ती)–स्त्री० [सं० वीरगति] रणक्षेत्र में वीरों को प्राप्त होने वाली मृत्यु गति, मुक्ति।

वीरगाथा (गाहा)–स्त्री० [सं० वीरगाथा] वीर रसात्मक काव्य।

वीरघंट (टु, टी)–पु० [सं० वीर-घंट] देवालयों या हाथियों के लटकाया जाने वाला बड़ा घंटा।

वीरचक्र–पु० [सं०] साहसिक कार्यों के बदले सैनिकों को दिया जाने वाला पदक।

वीरचाळी–पु० १ युद्ध, झगड़ा। २ भूत-प्रेतादि का उपद्रव। ३ वीरों का कार्य या चरित्र।

वीरचाव–पु० युद्ध झगड़ा।

वीरज (जु)– पु० [सं० वीर्य] १ शरीरस्थ सप्त धातुओं में से एक धातु, शुक्र, रज। २ किसी पदार्थ का सार भाग। ३ पराक्रम, तेज। ४ बल, सामर्थ्य, वीरता। ५ अन्नादि का बीज। ६ पुंसत्व। ७ प्रजनन शक्ति। ८ साहस, दृढ़ता। ९ आभा, कांति, चमक। १० फुर्तिलापन, स्फूर्ति। ११ पुत्र, बेटा। –वि० निर्मल, स्वच्छ।

वीरजा–स्त्री० वीरांगना, वीर स्त्री।

वीरडो–देखो 'वीर'।

वीरण–पु० १ कांस नामक तृण। २ एक प्रजापति।

वी'रणी (णी)–क्रि० १ विस्मरण होना, भूलना। २ देखो 'विहरणी' (णी)।

वीरत–स्त्री० [सं० वीरत्व] १ वीरता, बहादुरी, शौर्य, बल। २ देखो 'व्रति'।

वीरतराय–पु० विजयाधिपति, श्रेष्ठ वीर।

वीरतवंत–वि० १ बहादुर वीर, साहसी। २ शक्तिशाली, बलवान।

वीरता, वीरताई–स्त्री० वीर होने की अवस्था या भाव। २ साहसिक कार्य। ३ बल, पराक्रम। ४ जोश।

वीरति, वीरती (त्त, त्ति, त्ती)–१ देखो 'वीर'। २ देखो 'वीरता'।

वीरघाट–पु० सेना, फौज।

वीरवंण–देखो 'विरुद'।

वीरवेत (वैत)–देखो 'विरुदैत'।

वीरनंद (द्द)–पु० वीरों की सन्तान, वीर पुत्र।

वीरनाद–स्त्री० [सं०] वीरध्वनि, वीर गर्जना।

वीरपउंतार–वि० वीरों को उत्साहित करने या प्रेरणा देने वाला।

वीरपण(पणो)–पु० वीरत्व, वीरता। बहादुरी, साहस।

वीरपाण (न)–पु० वीरों के पीने का एक मादक पेय।

वीरपाटी–पु० वीर रस की शिक्षा।

वीरपुरी (री)–स्त्री० १ वीरों की नगरी। २ श्रावण शुक्ला तृतीया का एक पर्व।

वीरप्रसु (सू)–स्त्री० १ वीर संतान की माता। २ वीरों की भूमि।

वीरबहूटी (बहोड़ी)–स्त्री० वर्षा ऋतु में होने वाला एक लाल कीड़ा, इन्द्रवधू।

वीरबाहु–पु० [सं०] १ भगवान विष्णु का एक नाम। २ रावण का एक पुत्र।

वीरभद्दर (द्द, द्र)–पु० [सं० वीरभद्र] १ भगवान शंकर का प्रसिद्ध गण। २ श्रेष्ठ योद्धा, वीर। ३ अश्वमेध के लिये उपयुक्त घोड़ा। ४ सुगंधित घास, खस।

वीरभाव–पु० वीरत्व, बहादुरी, शौर्य। बल, पराक्रम।

वीरभूम (भूमि, भोम)–स्त्री० [सं० वीरभूमि] १ युद्धस्थल, रणांगन। २ वीरों को जन्म देने वाली भूमि। ३ श्मशान।

वीरमंत्र–पु० [सं०] श्मशान में भूत-प्रेतादि को जगाने का मंत्र।

वीरमणि–पु० वीरों में श्रेष्ठ।

वीरमति (ती)–स्त्री० भारत में बहने वाली एक प्राचीन नदी।

वीरमात (माता)–स्त्री० १ वीर पुत्रों की माता। २ पृथ्वी। ३ एक देवी विशेष।

वीरमारग–पु० वीरों का मार्ग, स्वर्ग, वैकुण्ठ।

वीरमुठ (मूठ)–पु० राजा द्वारा कवि को दिया जाने वाला एक नगद पुरस्कार।

वीरय (य्य)–देखो 'वीर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीररस (रस)–पु० १ साहित्य में एक रस। २ वीरों का आनन्द। –वि० पीत, पीला।

वीरलोक–पु० [सं०] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ। २ वीरों को प्राप्त होने वाला लोक।

वीरवंत (वत)–वि० वीरों से युक्त। –पु० मनु का एक पुत्र।

वीरवर–वि० श्रेष्ठ वीर, योद्धा, बलवान। –पु० वीरबल।

वीरवरद–पु० शिव, महादेव, शंकर।

वीरवरमन–पु० एक प्राचीन राजा।

वीरवाणी (वांनी)–स्त्री० वीर ध्वनि, वीर गर्जना।

वीरवानी–स्त्री० स्त्री, नारी, औरत।

वीरविद्या–स्त्री० १ तांत्रिक विद्या। २ युद्ध विद्या।

वीरवीराध (धि, धौ)–देखो 'विराधिवीर'।

वीरवंताळ–वि० उत्पात करने वाला, बदमाश, शैतान, उद्दण्ड।

वीरवृक्ष (वृक्ष)–पु० [सं० वीरवृक्ष] एक प्रकार का वृक्ष।

वीरव्रत (ती)–वि० दृढ़ संकल्प, निष्ठावान।

वीरव्वर–देखो 'वीरवर'।

वीरसंग–पु० ४९ क्षेत्रपालों में एक।

वीरस–देखो 'विरस'।

वीरसयन (सय्या)–पु० [सं० वीरशयन] वीरों के सोने का स्थान, रणक्षेत्र।

वीरसुता, वीरसुया–स्त्री० १ वीर पुत्रों को जन्म देने वाली स्त्री। २ वीर स्त्री, वीर बाला। ३ वीर भूमि।

वीरस्थान–पु० वैकुण्ठ। रणक्षेत्र।

वीरह, वीरह–देखो 'विरह'।

वीरहक (क्क, क्की)–देखो 'वीरहाक'।

वीरहथ (थी, थ्थ, थ्थी)–पु० वीर, बहादुर।

वीरहाक (हाकी)–पु० १ वीरों की ललकार। २ जोश पूर्ण ध्वनि।

वीरहोतर (होत्र)–पु० [सं० वीर होत्र] १ विन्ध्याचल पर्वत पर स्थित एक स्थान। २ एक प्राचीन सम्राट।

वीरांगना (ना)–स्त्री० वीर स्त्री, बहादुर स्त्री।

वीरांश–वि० १ वीरों का, वीरों संबंधी, वीरता सूचक। २ भयानक, भयावह। –पु० १ युद्ध, समर। २ देखो 'वीर'। ३ देखो 'वीरान'।

वीरांणी–स्त्री० वीरता, बहादुरी। –वि० १ वीर रस पूर्ण। २ भयानक, भयावह। ३ वीरों का, वीरता सूचक। ४ देखो 'वीरानी'।

वीरांन–वि० [फा० वीरान] १ उजाड़, जनशून्य। २ उजड़ा हुआ, श्रीहीन।

वीरांनी–स्त्री० उजड़ा होने की अवस्था या भाव।

वीरा–स्त्री० [सं०] १ पत्नी, स्त्री। २ वधू। ३ माता। ४ वीर पत्नी, वीर स्त्री। ५ बहन। ६ पुत्री, बेटी। ७ स्त्रियों के लिए एक प्रियवाची संबोधन। ८ मुरा, मुरा मासी। ९ केला। १० ऐलुवा।

वीराचारि (री)–पु० [सं० वीराचारिन्] १ एक प्रकार के वाम मार्गी या शाक्त। २ वीरों का आचार, कर्त्तव्य।

वीराजमांन, वीराजमांन–देखो 'विराजमांन'।

वीरातन–पु० १ बहादुरी, वीरता। २ बहादुर, वीर, योद्धा।

वीराधपत (पति, पती)–पु० वीरों में श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि।

वीराधवीर, वीराधि, वीराधिवीर–पु० वीर, बहादुर, वीर शिरोमणि, श्रेष्ठ वीर।

वीरापांचम–स्त्री० भादव शुक्ला पंचमी।

वीराबारस–स्त्री० कार्तिक कृष्णा द्वादशी।

वीराबीज–स्त्री० कार्तिक शुक्ला द्वितीया।

वीराबी–क्रि० वि० वीरों में।

वीरासण (न)–पु० १ निगाह करने की क्रिया, चौकसी। २ युद्ध में अधिक जोखिम वाला पक्ष। ३ वीर, सिपाही। ४ वीरों के बैठने का ढंग। ५ पहरे का स्थान। ६ एक प्रकार का योगासन।

वीरि–स्त्री० १ बहन, भगनी। २ वीर स्त्री।

वीरिणी–स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका पति एवं पुत्र जीवित एवं सुखी हो। २ शुक्र की पत्नी का नाम। ३ एक प्राचीन नदी।

वीरी–पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।

वीरीया–देखो 'वेला'।

वीरु–देखो 'वीर'।

वीरुज (ज्ज, ज्ज)–पु० अग्निहोत्र न करने वाला ब्राह्मण।

वीरुधा–स्त्री० [सं०] सुरसा की तीन कन्याओं में से एक।

वीरूप–वि० [सं०] भयंकर, भयावह, डरावना।

वीरेस, वीरेसर (सुर, स्वर)–पु० १ शिव, महादेव। २ वीर पुरुष। ३ हनुमान।

वीरोचंद, वीरोचन–देखो 'विरोचन'।

वीरोटण (णी)–स्त्री० जादू-टोना करने वाली स्त्री, जादूगरनी।

वीरोटियो–पु० १ श्मशान में भूत, प्रेतादि जगाने वाला पुरुष, जादूगर। २ देखो 'वीर'।

वीरोध–देखो 'विरोध'।

वीरोळणी (बी)–देखो 'विरोळणी' (बी)।

वीरो, वीरो–पु० १ भाई, भ्राता। २ एक लोक गीत विशेष।

वील–स्त्री० १ सामान रखने के लिये कमरे के अन्दर, ऊंचा लगा लंबा पत्थर, टांड। २ देखो 'वोली'। ३ देखो 'बील'।

वीलाणी (बी), वीलाणी (बी)–देखो 'विलाणी' (बी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीलहणवटी, बीलहणवाटी–स्त्री० मारवाड़ का एक प्रदेश।
बीलहौ–पु० एक प्रकार का पक्षी।
बीवणीटी–देखो 'बेमणोटी'।
बीवनो (न्नो)–देखो 'विधनो' (स्त्री० बीवनी)।
बीवरो–पु० १ आलंबन, सहारा। २ लीन या मग्न होने की स्थिति। ३ देखो 'विवरो'।
बीवसाळ–वि० विशाल।
बीवांण, बीवाण–देखो 'विमाण'।
बीवाह–देखो 'विवाह'।
बीवाहलो, बीवाहिलु, बीवाहिलो–देखो 'विवाहलो'।
बीवाहु–देखो 'विवाह'।
बीस–वि० दश का दुगुना, उन्नीस व एक। –स्त्री० बीस की संख्या, २०।
बीसण, बीसन (ण, नु)–पु० विष्णु।
बीसभुज, बीसभुजांण, बीसभुजा–पु० [सं० बीस-भुजा] १ लंकापति रावण। २ दुर्गा, महामाया। –वि० जिसके बीस भुजाएं हों।
बीसभुजाळी–स्त्री० देवी, दुर्गा, महामाया।
बीसम (उ)–देखो 'विसम' (उ.र.)।
बीसमणो (बो)–क्रि० १ आराम करना, ठहरना। २ शयन करना, सोना। ३ अवसान होना, मरना।
बीसमो (मै), बीसमो–१ देखो 'विसम'। २ देखो 'बीसवो'।
बीसम्मणो (बो)–देखो 'बीसमणो' (बो)।
बीसर, बीसर–स्त्री० १ भूल, विस्मरण। २ देखो 'विसर'।
बीसरणो, बीसरणी–वि० भूलने वाला, विस्मरण होने वाला।
बीसरणो (बो)–देखो 'विसरणो' (बो)।
बीसराणो (बो), बीसरावणो (बो), बीसराणो (बो)–देखो 'विसराणो' (बो)।
बीसवळो–पु० फलेजे पर पानी से भरी एक थैली।
बीसविसवा, बीसविसा, बीसबीसा, बीसबीसवा–देखो 'विसवा-बीस'।
बीसवों, बीसवो–वि० जिसका स्थान उन्नीस के बाद हो, इक्कीस से पहले वाला
बीससणो (बो)–क्रि० १ विश्वास या एतबार करना। २ विश्वास होना।
बीसहत (तो, त्थ, त्थो)–स्त्री० १ देवी, दुर्गा, महामाया। २ सरस्वती, भारती।
बीसहत्थो (हुत्थो, हम्थो)–पु० रावण। –वि० बीस भुजाओं वाला।
बीसहे'क–वि० बीस के करीब, लगभग बीस।
बीसाणी–स्त्री० शरपुंखा नामक पौधा विशेष।
बीसांभुजाळी–देखो 'बीसभुजाळी'।
बीसांम (उ, मो)–देखो 'विसरांम'।
बीसार, बीसार–स्त्री० १ विस्मरण, भूल। २ देखो 'विस्तार'।
बीसारण (णो)–देखो 'बिसारणो'।
बीसास–देखो 'विस्वास'।
बीसासघात–देखो 'विस्वासघात'।
बीसासणो (बो)–देखो 'विस्वासणो' (बो)।
बीसासो–देखो 'विस्वास'।
बीसियो–पु० एक प्रकार का घास।
बीसी–स्त्री० १ समय, अवधि। २ बीसमी, शताब्दी। ३ भोजनालय। ४ बीस वर्ष का समय। ५ बीस वस्तुओं गड्डी, कोड़ी। ६ बीस की इकाई से की जाने वाली गणना। ७ ज्योतिष में संवत्सरों का एक विभाग।
बीसूरणो (बो), बीसूरणो (बो)–१ देखो 'विसरणो' (बो)। २ देखो 'विसूरणो (बो)।
बीसूविसा (बीसा)–देखो 'विसवाबीस'।
बीसेक–वि० बीस के लगभग।
बीसविसा, बीसेबीसा–देखो 'विसवाबीस'।
बीसोतर–वि० एक सौ बीस। –पु० चारणों के एक सौ बीस गोत्र।
बीसो (बोस्यो)–पु० १ बीस का वर्ष। २ बीस का संवत्।
बीहंग (ङो)–देखो 'विहंग'।
बीह–देखो 'बी'।
बीहणो (बो)–देखो 'बीहणो' (बो)।
बीहरणो (बो)–देखो 'विहरणो' (बो)।
बीहळ (ल)–१ देखो 'विह्वल'। २ देखो 'वेहल'।
बीहळा (ला)–स्त्री० देवी, दुर्गा।
बीहळी, बीहली–स्त्री० वियोगिनी स्त्री, विरहिणी।
बीहली–वि० अत्यधिक, बेहद।
बीहसणो (बो)–क्रि० १ हसना, खुश होना। २ खिलखिलाना।
बीहांण (णी, णू, णो)–देखो 'विहांण'।
बीहांणी–स्त्री० शरपुंखा नामक पौधा विशेष, इसे सरफोंका भी कहते हैं।
बीहा–देखो 'विवाह'।
बीहाड़णो (बो), बीहाणो (बो)–१ देखो 'बीहाणो' (बो)। २ देखो 'बीहावणो' (बो)। ३ देखो 'विवाहणो' (बो)।
बीहार–देखो 'विहार'।
बीहाव–देखो 'विवाह'।
बीहावणो (बो)–क्रि० १ व्यतीत या समाप्त करना। २ देखो 'विवाहणो' (बो)।
बीहूर–पु० वातचक्र, बवंडर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बु–पु० १ प्रातःकाल, सवेरा। २ रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रदोष। ३ घन पटल।

बुअणो (बो)–१ देखो 'बहणो' (बो)। २ देखो 'बोअणो' (बो)।

बुआणो (बो)–१ देखो 'बहाणो'(बो)।२ देखो 'बोआणो'(बो)।

बुआरणो (बो)–देखो 'बुहारणो' (बो)।

बुआरी–१ देखो 'बुहारी'। २ देखो 'बहू'।

बुआवणो(बो)–१ देखो 'बहाणो'(बो)। २ देखो'बोआणो'(बो)।

बुक–१ देखो 'बक'। २ देखो 'बुग'।

बुकठणो (बो)–क्रि० निकालना।

बुकड़णो (बो)–देखो 'बुकठणो' (बो)।

बुकांनो–देखो 'बुकांनो'।

बुग–देखो 'बुग'।

बुगचियो, बुगचो–देखो 'बुगचो'।

बुगती–देखो 'बुगती'।

बुगलियो, बुगलो–१ देखो 'बुगलो'। २ देखो 'बक'।

बुड़चणो (बो)–देखो 'बुड़चणो' (बो)।

बुटठणो(बो), बुठणो(बो), बुट्ठणो (बो)–देखो 'बूठणो' (बो)।

बुडणो (बो), बुडवणो (बो)–१ देखो 'बूडणो' (बो)। २ देखो 'उडणो' (बो)।

बुड्ढो–देखो 'बूढो'।

बुणणो(बो)–१ देखो 'बुणणो' (बो)। २ देखो 'वणणो' (बो)।

बुणवाणो (बो), बुणाणो (बो)–१ देखो 'बुणाणो' (बो)। २ देखो 'वणाणो' (बो)।

बुधर–१ देखो 'सूधर'। २ देखो 'उधर'।

बुपर–देखो 'ऊपर'।

बुराई–देखो 'बुराई'।

बुराणो (बो), बुरावणो (बो) –देखो 'बुरावणो' (बो)।

बुरी–देखो 'बुरी'।

बुरो–देखो 'बुरो'।

बुलगणो (बो)–क्रि० प्रारंभ या शुरू करना।

बुलगार–देखो 'बुलगार'।

बुलसरो, बुलसिरी–देखो 'बोलसरो'।

बुलाणो (बो), बुलावणो (बो)–१ देखो 'बुलाणो' (बो)। २ देखो 'बोळाणो' (बो)।

बुलावो–देखो 'बुलावो'।

बुवारणो (बो)–देखो 'बुहारणो' (बो)।

बुवारी–१ देखो 'बुहारी'। २ देखो 'बहू'।

बुवाह–पु० वाह-वाह, धन्यवाद, साधुवाद।

बुवोतर–देखो 'बधोत्तर'।

बुवोतरो–देखो 'बधोत्तरो'।

बुसत–स्त्री० १ धन, दौलत। २ देखो 'वस्तु'।

बुसताज (ड)–देखो 'उसताद'।

बुसतु, बुसुत–देखो 'वस्तु'।

बुहणो (बो)–१ देखो 'बहणो'(बो)। २ देखो 'बोअणो' (बो)।

बुहरणो (बो)–क्रि० १ खरीदना, क्रय करना। २ व्यवहार करना।

बुहराणो (बो), बुहरावणो (बो) –देखो 'बुहराणो' (बो)।

बुहाणो (बो)–१ देखो 'बहाणो'(बो)। २ देखो 'बोआणो' (बो)।

बुहार–देखो 'व्यवहार'।

बुहारड़ो–१ देखो 'बुहारी'। २ देखो 'बहू'।

बुहारणो (बो), –देखो 'बुहारणो' (बो)।

बुहारी–१ देखो 'बुहारो'। २ देखो 'बहू'।

बुहावणो(बो)–१ देखो 'बहाणो'(बो)। २ देखो 'बोआणो'(बो)।

बूंग–१ देखो 'बूंग'। २ देखो 'बूंझ'।

बूंगो–देखो 'बूंगो'।

बूंघरी–देखो 'बूंघरी'।

बूंझ–देखो 'बूंझ'।

बूंट–देखो 'बूंट'।

बूंटो–देखो बूंटी'।

बूंटी–देखो 'बूंटी'।

बूंतणो (बो)–देखो 'बूंतणो' (बो)।

बूंब, बूंबड़, बूंबड़ो–देखो 'बूंद'।

बूंबी–देखो 'बूंदी'।

बूंब–देखो 'बूंब'।

बूंमड़ा–देखो 'बूंमड़ा'।

बू–पु० १ सूर्य, अर्क। २ यम। ३ कबूतर। ४ अधिक, बहुत। ५ सब, समस्त। ६ देखो 'बू'। ७ देखो 'बहू'।

बूअणो (बो)–१ देखो 'बहणो' (बो)। २ देखो 'बोअणो' (बो)।

बूआणो (बो), बूआवणो (बो)–१ देखो 'बहाणो' (बो)। २ देखो 'बोआणो' (बो)।

बूई–देखो 'बुई'।

बूक–देखो 'बूक'।

बूग–देखो 'बूग'।

बूजो, बूजोसा–स्त्री० [सं० वधू+रा० जोसा] १ वृद्ध स्त्री। २ माता। ३ दादी। ४ सास। ५ दादी सास।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बूझ–१ देखो 'बूझ'। २ देखो 'पूछ'।
बूझणो (बो)–देखो 'पूछणो' (बो)।
बूझवार–वि० बुद्धिमान।
बूझवणो (बो)–१ देखो 'बूझणो' (बो)। २ देखो 'पूछणो' (बो)।
बूझाणो (बो), बूझावणो (बो)–१ देखो 'बूझाणो' (बो)। २ देखो 'पूछाणो' (बो)।
बूटणो (बो)–देखो 'बूठणो' (बो)।
बूठ–स्त्री० वर्षा, वर्षा का प्रारंभ, बरसना क्रिया।
बूठणो (बो)–देखो 'बूटणो' (बो)।
बूठाळु (ळू)–वि० बरसने वाला, वर्षा करने वाला।
बूढ–देखो 'बूढ'।
बूढलो–देखो 'बूढो'।
बूढवाळ, बूढपावळ–स्त्री० वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
बूढसुहागण, बूढसुहाग्ण–स्त्री० सुहागन वृद्धा स्त्री।
बूढापण (पणो)–पु० बुढ़ापा, वृद्धपना।
बूढि, बूढी–देखो 'बूढी'।
बूढेवारै–देखो 'बूढ़वारै'।
बूढो–देखो 'बूढो'।
बूढोठाढो (ढ़ो), बूढोठेरो, बूढोभीड–(स्त्री० बूढीठाढी, बूढोठेरी बूढीढेरी) अतिवृद्ध पुरुष।
बूतणो (बो)–देखो 'बूंतणो' (बो)।
बूतेलो–पु० वात चक्र।
बूत्कार–देखो 'बूत्कार'।
बूथेळियो, बूथेळो–देखो 'बथूळो'।
बूमा–स्त्री० [सं० वधू+मातृ] पिता की चाची के लिए प्रयुक्त शब्द।
बूर–१ देखो 'बूर'। २ देखो 'बूरो'।
बूवणो (बो)–१ देखो 'बहणो' (बो)। २ देखो 'बोवणो' (बो)।
बूसट–पु० चपेटा।
बूसर–१ देखो 'धूसर'। २ देखो 'ऊसर'।
बूहणो (बो)–देखो 'बहणो' (बो)।
बूहाणो (बो), बूहावणो (बो)–देखो 'बहाणो' (बो)।
बूहारणो (बो)–देखो 'बुहारणो' (बो)।
बूहारो–देखो 'बुहारो'।
बूही–वि० १ पागलपन युक्त। २ अजीब, विचित्र।
बें–देखो 'बें'।
बेंगळा (ळा) बेंगळा–स्त्री० मूर्ख स्त्री, मूर्खा।
बेंचणो (बो), बेंचणी (बो)–देखो 'बैंचणो' (बो)।
बेंचाणो (बो), बेंचाणी (बो), बेंचावणो (बो)–देखो 'बंटाणो' (बो)।
बेंटणो (बो)–देखो 'बाटणो' (बो)।
बेंटाणो (बो), बेंटावणो (बो)–देखो 'बंटाणो' (बो)।
बेंडो–देखो 'बैंडो'।
बेंण, बेंण–१ देखो 'बहन'। २ देखो 'वचन'।
बेंत, बेंत–१ देखो 'बेंत'। २ देखो 'बैंत'।
बेंताणो (बो), बेंताणो (बो)–देखो 'बेंताणो' (बो)।
बेंतियो, बेंतियो–वि० एक बालिश्त का, एक बालिश्त लंबा। –पु० एक बालिश्त लंबा कल्पित व्यक्ति।
बेंहरो–पु० विवाद।
बे–पु० १ काम, कार्य। २ वैद्य, हकीम। ३ पल्लव, पत्ता। ४ कल्प वृक्ष। ५ पीपर। ६ वेग, गति। ७ स्वरूप, आकार। ८ पोशाक।–सर्व० १ वह का बहु वचन। २ उस, उन, वे, वह। ३ देखो 'बे'।
बेअब–वि० प्रतिष्ठा रहित, बेइज्जत।
बेअदब–देखो 'बेअदब'।
बेअदबी–देखो 'बेअदबी'।
बेआबरू–देखो 'बेआबरू'।
बेइंसाफ–देखो 'बेइंसाफ'।
बेइ, बेई–देखो 'बेई'।
बेईठणो (बो)–देखो 'बैठणो' (बो)।
बेईठाणो (बो), बेईठावणो (बो)–देखो 'बैठाणो' (बो)।
बेईमान, बेईमान–देखो 'बेईमान'।
बेउल–स्त्री० एक प्रकार की चमेली।
बेऊ–पु० १ एक प्रकार का शाक। २ देखो 'बेऊं'।
बेकट–पु० १ हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा। २ जौहरी। ३ युवा पुरुष।
बेकटी (ड़ी)–देखो 'विकट'।
बेकणो (बो)–देखो 'बेखणो' (बो)।
बेकर (ड़ो, ड़ो)–पु० १ एक प्रकार का घास। २ देखो 'बेकर'।
बेकळ, बेकळ (ळो, ळू)–१ देखो 'बेकळू'। २ देखो 'विकळ'।
बेकाम, बेकाम (मो)–देखो 'बेकाम'।
बेकाज, बेकाज–देखो 'बेकाज'।
बेकाबू, बेकाबू–देखो 'बेकाबू'।
बेकार, बेकार–देखो 'बेकार'।
बेकुंथहत्थिराज (राय), बेकुंथहथिराज (राय)–पु० हस्ती सेना नायक।
बेख–१ देखो 'विस'। २ देखो 'बेस'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेखणो (बो)–क्रि० [सं० वि+ईक्षणम्] १ देखना, अवलोकन करना। २ जांचना, निरीक्षण करना। ३ जानना, समझना।

वेखरच–देखो 'वेखरच'।

वेखासर, वेखातरी–देखो 'वेखातर, वेखातिर'।

वेखास–पु० १ प्रयत्न, प्रयास, कोशिश। २ विश्वास, एतबार। ३ विलाप, रुदन।

वेखुदी–वि० [फा० बेखुदी] जिसमें चेतना न हो, बेखबर, लापरवाह, बेहोश।

वेखून–वि० निरपराध।

वेग, वेग पु० [सं० वेग] १ प्रवाह, बहाव। २ दबाव। ३ वायु विकार। ४ गति, चाल। ५ आवेश, जोश। ६ दृढ प्रतिज्ञा। ७ प्रेमानुराग। ८ वीर्य, शुक्र। ९ स्खलन। १० शक्ति, बल, सामर्थ्य। ११ शीघ्रता। १२ खुशी, हर्ष।

वेगइरउ (रो)–क्रि० वि० अपेक्षाकृत जल्दी, शीघ्र।

वेगउ–देखो 'वेगो'।

वेगड़–१ देखो 'बिगड़'। २ देखो 'बेगड़ो'। ३ देखो 'दोगलो'।

वेगड़रीगढ़ी–स्त्री० एक प्रकार की बन्दूक।

वेगड़ियो–पु० १ चौहटे का नाम। २ देखो 'बेगडो'।

वेगड़ो–स्त्री० [सं० विकट शृंगी] सीधे व तीखे सींगों वाली गाय या भैंस।

वेगड़ो, वेगड, वेगडउ (डो)–१ देखो 'बेगड़ो'। २ देखो 'दोगळो'।

वेगतंत–क्रि० वि० तत्काल, शीघ्र, तुरंत।

वेगम–पु० १ अगम्य स्थान, दुर्गम स्थान। २ देखो 'बेगम'।

वेगरणो वेंगरणो–वि० मध्यस्थ।

वेगरणो वेगरणो–वि० मध्यस्थ –पु० मध्यस्थता का कार्य

वेगळ, वेगळि वेगलि, वेगळो, वेगळु, वेगळो (लो)–क्रि० वि० १ शीघ्र, जल्दी। २ दूर। –पु० भूखा सिंह, सिंह।

वेगवत, वेगवांन–वि० [सं० वेगवान्] १ वेग पूर्वक या तेज चलने वाला। २ जिसकी गति तीव्र हो। ३ जोश, आवेश वाला।–पु० १ श्रीविष्णु। २ एक नाग।

वेगवाहिनी–स्त्री० [सं०] १ गंगा नदी का एक नाम। २ एक रागिनी। ३ एक प्राचीन नदी।

वेगसर–पु० १ तेज गति से चलने वाला घोड़ा। २ देखो 'बेगसर'।

वेगागळ (ळो)–पु० १ घोड़े के गले में बांधने का चमड़े या सूत का तस्मा, रस्सा। २ घोड़ा, अश्व।–वि० तेजी वाला, अति चचल।–क्रि० वि० तेजी से।

वेगार वेगार–देखो 'बेगार'।

वेगाळ(ळो)–वि० १ तेज गति से चलने वाला, तीव्रगामी, शीघ्र गामी। २ जल्दबाज, उतावला। ३ तेजस्वी, ओजस्वी। –क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी। देखो 'बगागळ'।

वेगावेगि–क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी।

वेगिनी–स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम।

वेगेरो–देखो 'वेगो'।

वेगो, वेगों–वि० (स्त्री० वेगी) १ शीघ्र, जल्दी, अविलम्ब। –क्रि० वि० २ निर्धारित समय से पूर्व, पहले।

वेघ (घों)–१ देखो 'वेग'। २ देखो 'वेगो'।

वेढ़–१ देखो 'बीहड़'। २ देखो 'वेड'। ३ देखो 'वेढ़'। ४ देखो 'बेंड़'।

वेढ़णो (बो)–१ देखो 'वेडणो' (बो)। २ 'वेठणो' (बो)।

वेढ़लो–पु० स्त्रियों के कान में धारण करने का चांदी का आभूषण। पीपलपत्ता।

वेढ़ाफोड़–देखो 'बेड़ाफोड़'।

वेढ़ूंको (खो)–देखो 'बेढ़ूंको, बेढ़ूंखो'।

वेचणो (बो)–क्रि० १ खर्च करना, व्यय करना। २ बांटना। ३ देखो 'बेंचणो' (बो)। ४ देखो 'बेचणो' (बो)।

वेचरा (राज, राजि, राय)–देखो 'बहुचराय'।

वेचांण (न)–देखो 'बेचांण'।

वेचाक (ख)–देखो 'बेचाक'।

वेचाणो (बो), वेचावणो (बो)–देखो 'बेचाणो' (बो)।

वचाळ, वेचाल–वि० जिसका चरित्र ठीक न हो, बदचलन।

वेचैन–देखो 'बेचैन'।

वेचो–पु० सद्य प्रसूता गाय-भैंस का प्रारंभिक आठ-दश दिनों का दूध।

वेछाळ (ल)–पु० एक प्रकार का कंद।

वेछाड़–देखो 'बेछाड़'।

वेजड़, वेंजड़–देखो 'बेजड़'।

वेजबांन–देखो 'बेजबांन'।

वेजवाल–वि० जिसका पतन या नाश न हो।

वेजांन–देखो 'बेजांन'।

वेजा वेजा–पु० १ घोड़ों का एक रोग। २ देखो 'बेजा'।

वेजाताणा (ना)–पु० ताना-बाना, भूमिका।

वेजारो–वि० १ चतुर, होशियार। २ देखो 'बेजारो'।

वेज्यास–देखो 'बेज्यास'।

वेझ, वेंझ, वेझको–देखो 'बेंज'।

वेझड़, वेंझड़–देखो 'बेझड़'।

वेझु–देखो 'बेझो'।

वेट, वेंट–१ देखो 'वेठ'। २ देखो बेट

वेटोजणो (बो), वेंटीजणो (बो)–क्रि० बकरी का गर्भवती होना।

वेठ, वेंठ–स्त्री० [सं० वेष्टि: वेष्ट] लपेटना क्रिया, लपेटन।

वेठऊड़ो–वि० बेगार का कार्य करने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बेठणी (बी)–क्रि० १ लपेटना। २ घेरा डालना, घेरना ३ निभाना। ४ सहन करना, सहना। ५ बेगार का कार्य करना। ६ पालन-पोषण करना।

बेठन–स्त्री० [सं० वेष्टन] १ लपेटने की क्रिया, वेष्टन। २ लपेटने का वस्त्र।

बेठियो–[सं० वेष्टिक] बेगार में कार्य करने वाला, बिना पारिश्रमिक लिए कार्य करने वाला।

बेड–पु० १ वन, जंगल। २ सीमा, छोर, हद। ३ एक प्रकार का चन्दन। ४ कंटीली झाड़ियों का घेरा, आहता, बाड़ा। ५ देखो 'वेढ'।

बेडण–वि० १ संहार करने वाला, नाश करने वाला। २ तोड़ने वाला, काटने वाला।

बेडणो (बो)–क्रि० १ संहार करना, नष्ट करना। २ तोड़ना, काटना। ३ झगड़ना।

बेडर–वि० निःशंक, निर्भय।

बेडांणी–वि० १ दुष्ट, नीच। २ देखो 'बिडांणी'।

बेडाक–१ देखो 'बैंडाक'। २ देखो 'बैंडो'।

बेडाय–पु० १ सूअर, शूकर। २ वीर, योद्धा।

बेडावती–वि० १ जबरदस्त, जोरदार। २ वीर, बहादुर।

बेडाहुल–पु० मुसलमान, यवन।

बेडि, बेडिइ–पु० १ बाग, बगीचा। २ वन, जंगल। –वि० १ जंगल का, जंगली। २ देखो 'बेडी'।

बेडियो–पु० ऊंट की जट या बकरी के बालों की गेंदुरी। पूनी।

बेडी–वि० १ मस्त। २ कलहप्रिय, झगड़ालु। ३ वीर, बहादुर। ४ जबरदस्त, जोरदार। ५ देखो 'बेडि', 'बेडी'। ६ देखो 'बेडियो'।

बेडीमणी–देखो 'बेढ़ीमणी'।

बेडूर–पु० [सं० वैदूर्य] एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर।

बेडो–पु० खड्डा, गड्ढा। –वि० मस्त।

बेढग–देखो 'बेढंग'।

बेढ–स्त्री० [सं० वेध] १ युद्ध, संग्राम, लड़ाई। २ घर, गृह, धाम। ३ युद्धस्थल, रणभूमि। ४ योद्धा, वीर। ५ एक प्रकार का आभूषण। ६ देखो 'बेड'।

बेढक–पु० योद्धा, वीर। –वि० १ वीर, बहादुर। २ निर्भय, निःशंक। ३ जबरदस्त, जोरदार।

बेढगरी, बेढगारी–देखो 'बेढीगरी'।

बेढड़ी, बेढण–देखो 'बेढ'।

बेढणबाई–स्त्री० व्यर्थ बातें करने वाली स्त्री।

बेढणो (बो)–क्रि० १ युद्ध करना, संग्राम करना। २ संहार करना, नाश करना। ३ काटना, विच्छेदन करना। ४ युद्ध से मरना, वीरगति प्राप्त करना।

बेढमल (मल्ल)–वि० युद्ध का उस्ताद, युद्ध में निपुण योद्धा

बेढमी–स्त्री० एक प्रकार की रोटी विशेष।

बेढली–पु० स्त्रियों के कान का आभूषण विशेष।

बेढमांणी–देखो 'बेढीमणी'।

बेढारोटी–स्त्री० एक प्रकार की रोटी।

बेढिगर, बेढिगरी–वि० १ वीर, बहादुर। २ जबरदस्त, जोरदार।

बेढि–देखो 'बेढ'।

बेढ़िमी–देखो 'बेढमी'।

बेढोगार (री, रो)–पु० युद्ध करने वाला, योद्धा। –वि० १ वीर, बहादुर। २ शक्तिशाली, बलशाली।

बेढीमग्ग, बेढ़ीमणी, बेढैमणी–वि० १ वीर, बहादुर। २ जबरदस्त। ३ शक्तिशाली, बलशाली। ४ युद्ध प्रिय योद्धा।

बेण–पु० १ बांस का वृक्ष, बांस। २ एक सूर्यवंशी राजा। ३ सेना, सैन्यदल। ४ नाक का आभूषण विशेष। ५ देखो 'वचन'। ६ देखो 'वीण'।

बेणका–१ देखो 'वीण'। २ देखो 'वीणा'।

बेणरादमुनि–पु० नारद मुनि।

बेणा–स्त्री० १ भारत में बहने वाली एक नदी। २ देखो 'वीण'। ३ देखो 'वीणा'।

बेणाट–पु० दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रदेश।

बेणि, बेणिका, बेणी–स्त्री० १ स्त्रियों की चोटी। २ कलाई, मणिबंध। ३ नदी का प्रवाह। ४ गंगा नदी का एक नाम। ५ शाकद्वीप में एक नदी। ६ देखो 'वीण'। ७ देखो 'वीणा'।

बेणीदंड (दंड)–स्त्री० स्त्रियों के बालों की गुंथी हुई चोटी।

बेणीफूल–पु० स्त्रियों का एक आभूषण विशेष।

बेणीमाधव–पु० प्रयाग स्थित विष्णु की एक मूर्ति।

बेणु–पु० १ एक प्राचीन राजा। २ देखो 'वीण'। ३ देखो 'वीणा'। ४ देखो 'वेणी'।

बेणुपारितक–पु० शृंगार में एक आसन विशेष।

बेणुमती–स्त्री० पश्चिमोत्तर प्रदेश की एक नदी।

बेणुमांन–पु० १ एक पर्वत विशेष। २ एक प्राचीन वंश।

बेणो–पु० १ स्वर्णकारों का एक औजार विशेष। २ बढई का एक औजार। ३ देखो 'वहणो'। ४ देखो 'वीणो'।

बेणी (बो)–देखो 'वहणो' (बो)।

बेण्या, बेण्वा–स्त्री० [सं०] विन्ध्य पर्वत से निकली एक नदी।

बेतड–देखो 'वितंड'।

बेत–स्त्री० १ बूंदी एवं चित्तौड़ के पठार में बहने वाली एक नदी। २ देखो 'बेंत'। ३ देखो 'वेत'।

बेतन–पु० [सं०] कार्य या नौकरी के बदले साप्ताहिक, मासिक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

या वार्षिक मिलने वाला निश्चित धन, पारिश्रमिक, तनख्वाह। —भोगी–पु० वेतन के बदले काम करने वाला व्यक्ति, कर्मचारी।

वेतर–१ देखो 'वेहरु'। २ देखो 'व्यंतर'।

वेतरणी–स्त्री० १ दर्जियों द्वारा कपड़ा मापने की क्रिया। २ देखो 'वैतरणी'।

वेतस (रू)–स्त्री० शीघ्र प्रसव करने की स्थिति वाली मादा पशु।

वेतसिनी–स्त्री० एक प्राचीन नदी।

वेताळ (ल)–पु० [सं०] १ भूत-प्रेतादि की योनि विशेष। २ भूत-प्रेत के अधिकार में आया शव। ३ भाट, बंदीजन। ४ देव विशेष। ५ द्वारपाल, दरबान। ६ युद्ध प्रिय देव। ७ छप्पय छन्द का एक भेद। ८ देखो 'बेताळ'।

वेतालजननी–स्त्री० एक स्कन्द मातृका विशेष।

वेताळभट (भट्ट)–पु० एक प्रसिद्ध ब्राह्मण पंडित।

वेत्ता–वि० ज्ञाता, पंडित।

वेत्रकूट–पु० [सं०] हिमालय की एक चोटी का नाम।

वेत्रगंगा–स्त्री० हिमालय से निकलने वाली एक नदी।

वेत्रवती–स्त्री० [सं०] परियात्र नामक पर्वत से निकलने वाली चौदह नदियों में से वेतवा नामक नदी।

वेत्रासन–पु० बेंत का बना आसन।

वेधिक–पु० १ भारत का एक प्राचीन जनपद। २ इस जनपद का निवासी।

वेथी–देखो 'वेथी'।

वेद–पु० [सं०] १ धर्म व अध्यात्म का वास्तविक ज्ञान। २ भारतीय संस्कृति एवं धर्म के मूल स्रोत प्रसिद्ध चार ग्रंथ, ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा यजुर्वेद। ३ भगवान विष्णु का एक नाम। ४ ईश्वर, परमेश्वर। ५ जयकार ध्वनि। ६ ज्ञान। ७ चार की संख्या। ८ तीन की संख्या। ९ छन्द। १० एक प्रकार का वाद्य विशेष। ११ योग, जोड़। १२ वैद्य। १३ मांगणियार मुसलमानों की एक शाखा। १४ नाइयों की एक शाखा। १५ मृगु के वंश का एक मंत्रकार। १६ विवाह वेदी पर बोले जाने वाले मंत्र। १७ देखो 'वेध'।

वेदउदय–पु० [सं० उदयवेद] सूरज, सूर्य।

वेदक–१ देखो 'वैदिक'। २ देखो 'वैद्यक'।

वेदकरता (कार)–पु० [सं० वेदकर्तृ] १ वेदों के रचयिता ब्रह्मा। २ विष्णु का एक नाम। ३ शिव, शंकर। ४ सूर्य रवि। ५ वर-वधू को आशीर्वाद देने वाले व्यक्ति।

वेदकल्प–पु० [सं०] अथर्ववेद का एक भाग।

वेदका–स्त्री० विवाह वेदी, चंवरी।

वेदगंगा–स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।

वेदगरभ–पु० [सं० वेदगर्भ] १ ब्रह्मा। २ ब्राह्मण।

वेदगरभा–स्त्री० [सं० वेदगर्भा] १ सरस्वती नदी। २ रेवा नदी।

वेदगी–स्त्री० १ होशियारी, चतुराई। २ दक्षता, निपुणता। ३ देखो 'वेदगी'।

वेदपुत्र–पु० [सं०] १ भगवान श्रीकृष्ण। २ पाराशर ऋषि का एक पुत्र।

वेदज्ञ–वि० [सं० वेदज्ञ] १ वेदों का ज्ञाता, जानकार। २ ब्रह्मज्ञानी। –पु० ब्रह्मा।

वेदजणणी–स्त्री० वेदों की माता सावित्री।

वेदजा–स्त्री० १ अग्नि, आग। २ द्रौपदी।

वेदण–देखो 'वेदना'।

वेदणी (णी)–देखो 'वेधणी' (णी)

वेदतीरथ–पु० एक प्राचीन तीर्थ।

वेदधकी–पु० युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर।

वेदधरम–पु० वैदिक धर्म।

वेदधुनि (ध्वनि)–स्त्री० वेद मंत्रों का उच्चारण, मंत्रों की ध्वनि।

वेदन, वेदना–स्त्री० [सं० वेदना] १ पीड़ा, कष्ट, व्यथा। २ तकलीफ। ३ प्रसव के समय होने वाली पीड़ा। ४ रोग, बीमारी। ५ भय एवं हिंसा की पुत्री।

वेदनाथ–पु० शिव, महादेव।

वेदनिंदक–वि० १ वेदों की निंदा करने वाला, नास्तिक। २ बौद्ध धर्म का अनुयायी।

वेदनि–देखो 'वेदना'।

वेदपति–पु० अग्नि, आग।

वेदफळ–पु० वैदिक कर्म करने से प्राप्त होने वाला फल।

वेदबाह (बाहु)–पु० [सं० वेदबाहु] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ पुलस्त्य ऋषि का एक नाम।

वेदभू (भूम भूमि, भूमी)–स्त्री० [सं०] १ वेदाध्ययन का स्थान। २ भारत, आर्यावर्त। ३ देवताओं का एक गण।

वेदमत–पु० वेदों का मत, सिद्धान्त, नियम।

वेदमाता–स्त्री० [सं० वेदमातृ] १ सावित्री, गायत्री। २ दुर्गा, शक्ति। ३ सरस्वती शारदा। ४ गायत्री मंत्र।

वेदमूरत (मूरति, मूरती)–वि० [सं० वेदमूर्ति] वेदों का पूर्ण ज्ञाता, वेदज्ञ।

वेदरद (दी)–देखो 'बेदरदी'।

वेदरस–पु० [सं०] बृहस्पति का एक नाम।

वेदरह, वेदराह–पु० वेदमार्ग, वेद मत।

वेदल–देखो 'बेदिल'।

वेदवंत–वि० १ वेदों का ज्ञाता, वेदज्ञ। २ ब्रह्मज्ञानी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेदवचन-पु० [सं०] वेदों का मूल पाठ।

वेदवती-स्त्री० [सं०] १ सीता, जानकी। २ द्रौपदी। ३ एक अप्सरा। ४ एक प्राचीन नदी।

वेदवदन-पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ व्याकरण।

वेदवा-देखो 'वेदवा'।

वेदवाहन-पु० सूरज, सूर्य, रवि।

वेदविद, वेदविद्, वेदविदुख, वेदविदुस-वि० [सं० वेदवित्] १ वेदों का ज्ञाता, वेदज्ञ। २ वेद विशारद।-पु० १ ब्राह्मण। २ भगवान विष्णु।

वेदव्यास-पु० १ एक प्राचीन ऋषि, कृष्णद्वैपायन। २ वेद व्यास समूह।

वेदसिनी-स्त्री० एक पौराणिक नदी।

वेदांग-पु० [सं० वेदअङ्ग] १ वेदों के छः अंग। २ एक आदित्य। ३ सूरज, रवि। ४ छः की संख्या ६।

वेदांगी-स्त्री० १ दाख, द्राक्षा। २ देखो 'बेनांगी'। ३ देखो 'बिनांगी'।

वेदांत-पु० [सं०] १ उपनिषद एवं आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग। २ षट् दर्शनों में से प्रमुख दर्शन। ३ वैदिक सिद्धान्तों का विवेचनात्मक शास्त्र। ४ बहत्तर कलाओं में से एक।

वेदांती-वि० [सं० वेदांतिन्] वेदों का श्रेष्ठ ज्ञाता, ब्रह्मवादी।

वेदांनो-पु० १ एक प्रकार का अमरूद। २ एक प्रकार का अनार।

वेदात्मा-पु० [सं०] १ सूरज, रवि। २ भगवान विष्णु।

वेदाधिदेव-पु० [सं०] ब्राह्मण

वेदार-पु० [सं०] गिरगिट।

वेदारण-पु० [सं०] दक्षिण में स्थित एक तीर्थ।

वेदावती, वेदावत्या-स्त्री० [सं० वेदावती] एक प्राचीन नदी।

वेदि-देखो 'वेदी'।

वेदिउ, वेदिओ-देखो 'वेदियो'।

वेदिन-वि० [सं० वेदिन्] १ जानने वाला ज्ञाता। २ दूल्हा। ३ विद्वान, पंडित। ४ शिक्षक।-पु० ब्राह्मण।

वेदियो-वि० १ वेदों का पंडित। २ ज्योतिषी। ३ कर्मकाण्डी। ४ देखो 'वैद्य'।

वेदिल-देखो 'वेद्दिल'।

वेदी-स्त्री० [सं०] १ विवाह के लिये बनाई गई चंवरी, यज्ञ की चौकी, विवाहवेदी। २ नाम से अंकित अंगूठी। ३ सरस्वती। ४ एक प्राचीन तीर्थ। ५ चौकी, चबूतरा। ६ ब्रह्मा का एक नाम। ७ गुप्त बात, रहस्य। ८ ब्रह्मा की पत्नी।-वि० १ जानने वाला, ज्ञाता। २ विद्वान पंडित। ३ वेदों से संबंधित।

वेदु वेदू-वि० १ वेदों का जानकार, वेदज्ञ। २ विद्वान, पंडित।-पु० १ ब्रह्मा विधि। २ वेद।

वेदेह वेदेही-देखो 'विदेही'।

वेदोक्त, वेदोकति, वेदोकती, वेदोकित, वेदोक्त (क्ति, क्ती)

वेदोगत (ति, ती)-पु० [सं० वेदोक्त] १ वेदवाक्य, वेद वचन। २ वेदों के मंत्र। ३ शास्त्रोक्त वचन। ४ वैदिक विधि।

वेदोधर-पु० [सं०] ब्रह्मा, विरंचि, विधि।

वेदोधर्म-पु० वैदिक धर्म।

वेदो-देखो 'बेधी'।

वेध-वि० [सं०] १ जानने योग्य। २ सिखाने योग्य। ३ विवाह योग्य। ४ ग्रहों संबंधी।-पु० १ ग्रह-नक्षत्रों के सामने होने की स्थिति, सूर्यादि नक्षत्र एवं ग्रहों की एक रेखा पर होने की स्थिति। २ ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति एवं अध्ययन करने की यंत्रशाला, वेधशाला। ३ तीव्र प्यास। ४ छेदना क्रिया, छेदन। ५ घाव। ६ छेद, छिद्र।[सं०वेधस्] ७ ब्रह्मा, सृष्टि कर्त्ता। ८ विष्णु, शिव। ९ सूर्य।१० विद्वान।११ प्रजापति दक्ष। १२ आक, मदार। १३ आकर्षण। १४ कलह, झगड़ा। १५ शत्रुता, वैमनस्य। १६ देखो 'बेध'।

वेधक-वि० १ भेदन, छेदन करने वाला। २ जानकार पंडित।-पु० १ बनिया। २ कपूर। ३ एक नरक का नाम।

वेधकारी, वेधणी-वि० १ युद्ध करने वाला योद्धा। २ मारने व नाश करने वाला।

वेधणो (बो) वेधणो (बो)-क्रि० १ नाश करना, संहार करना। २ मारना। ३ चीरना, फाड़ना। ४ छेदना, भेदना। ५ युद्ध करना, संग्राम करना। ६ तोड़ना। ७ ग्रहों का विशेष स्थिति में आना। ८ ग्रह-नक्षत्रों की गति व स्थिति का अध्ययन करना।

वेधनी-स्त्री० [सं०] १ हाथी के कान वेधने का औजार। २ मोती आदि वेधने का उपकरण। ३ अंकुश।

वेधस-पु० [सं०] १ हथेली का, अंगुष्ठ की जड़ के पास का स्थान जिसे ब्रह्मातीर्थ कहते हैं। २ एक मंत्रकार। ३ देखो 'वेध'।

वेधांगी-पु० [सं०] योद्धा, वीर।

वेधांणी-देखो 'वेध'।

वेधा-देखो 'वेध'।

वेधातिथ (तिथि)-स्त्री० वह तिथि जब सूर्यादि नक्षत्र एवं लग्न नक्षत्र एक ही रेखा पर हों।

वेधाधि, वेधाधी-स्त्री० सरस्वती, भारती।

वेधि-१ देखो 'वेध'। २ देखो 'वेधी'।

वेधी-वि० [सं० वेधस्] १ पंडित, विद्वान्। २ शत्रु, दुश्मन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ सहयोगी जन। ४ युद्ध करने वाला।

वेधीलो–वि० (स्त्री० वेधीली) १ युद्ध करने वाला, बहादुर। २ द्वेष रखने वाला, द्वेषी।

वेधीसबद (सब्द)–पु० [सं० शब्द-वेधी] १ अर्जुन। २ दशरथ।

वेपेख, वेपेखण, वेपेयण–वि० [सं० वेवेय] मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ।

वेथो–पु० १ शंका, संदेह, संशय। २ देखो 'बेदो'। ३ देखो 'वेध'।

वेध्या–पु० [सं० विधाता] ब्रह्मा, विधाता।

वेन वेनड़, वेनड़ी–देखो 'बहन'।

वेनतनय–पु० [सं० वैनतेय] १ पक्षिराज गरुड़। २ सूर्यवंशी राजा पृथु।

वेनती–देखो 'विनती'।

वेनसीब–देखो 'बेनसीब'।

वेनांणी–१ देखो 'बैनांणी'। २ देखो 'विनांणी'।

वेनियो–पु० बबूल की टहनियों की छाल।

वेपरवा (ह्) वे॰परवा–देखो 'बेपरवाह'।

वेपरवाई (ही) वे॰परवाई–देखो 'बेपरवाई'।

वेपार, वे॰पार–१ देखो 'व्यापार'। २ देखो 'बेपार'।

वेपीड़, वेपीर–देखो 'बेपीड़'।

वेपुड़ि (ड़ी)–देखो 'बेपूड़ी'।

वेपूठ–वि० विमुख, विपरीत।

वेफरवांण (वांणी)–क्रि० वि० बिना आज्ञा, बिना आदेश।

वेफाड़ (ड)–देखो 'बेफाड'।

वेफिकर–देखो 'बेफिक्र'।

वेफिकरी–देखो 'बेफिक्री'।

वेम–पु० [सं०] १ वेग, जोश। २ बार, दफा। ३ देखो 'बेम'।

वे॰म–देखो 'वहम'।

वेमन–देखो 'बेमन'।

वेमाता, वे॰माता, वे॰माता–स्त्री० [सं० विधाता] १ विधाता, ब्रह्मा। २ बच्चों के भाग्य का लेख लिखने वाली एक काल्पनिक देवी।

वेमार, वेमार–देखो 'बीमार'।

वेमुख–१ देखो 'बेमुख'। २ देखो 'विमुख'।

वेमू–स्त्री० प्रसव देने की स्थिति वाली मादा पशु।

वेय–१ देखो 'वेद'। २ देखो 'वेय'।

वेयकाल–पु० [सं० वेदकाल] भोगने का समय।

वेयड्ड, वेयड्ढ, वेयड्ढु–पु० एक पर्वत का नाम।

वेयण (णा, णि, णी)–१ देखो 'वचन'। २ देखो 'वेदना'।

वेयहद (दी)–१ देखो 'बेहद'। २ देखो 'बेहद'।

वेयावच (च्च)–वि० [सं० वैयावृत्य] १ वयोवृद्ध, गुणवृद्ध। २ देखो 'वैयावच्च'।

वेर, वे॰र–स्त्री० [सं० वैरः] १ शरीर, बदन, देह। २ शत्रु, दुश्मन। ३ विलम्ब, देर। ४ देखो 'वेळा'।

वेरक–१ देखो 'वेरक'। २ देखो 'वैरक'।

वेरजा–वि० बिना इच्छा एवं बिना स्वीकृतिका, स्वीकृति रहित।

वेरजो–पु० चीड़ वृक्ष का गोंद। गंध विरोजा।

वेरणो, वे॰रणो–पु० १ बढ़ई का एक औजार विशेष। २ चीरने का कार्य। –वि० १ चीरने वाला, काटने वाला। २ देखो 'वारणो'।

वेरणो (णी)–देखो 'बैरणो' (णी)।

वेरतन–पु० [स० वैरीतनय] वैरी, दुश्मन, शत्रु।

वेरप्रळय (प्रळै)–पु० प्रलयकाल, कल्पांत।

वेरमण–पु० त्यागने की क्रिया, त्याग।

वेरह–देखो 'विरह'।

वेरहडी–स्त्री० एक प्रकार का घोड़ों का रोग।

वेरहर (रि, री)–देखो 'वैरहर'।

वेरांण (न)–१ देखो 'वीरांण'। २ देखो 'बीरांन'।

वेराग, वे॰राग–देखो 'वैराग्य'।

वेरागड़, वेरागर–देखो 'वैरागर'।

वेरागी, वे॰रागी–देखो 'वैरागी'।

वेराग्य–देखो 'वैराग्य'।

वेराजी, वेराजी–देखो 'बेराजो'।

वेराणी (णी), वेरावणी (णी)–देखो 'बैराणी' (णी)।

वेरासती–स्त्री० वैमनस्य, मनोमालिन्य।

वेराह–देखो 'वेराह'।

वेरि वेरी वे॰रि, वे॰री–१ देखो 'वैरी'। २ देखो 'वेळा'।

वेरी–पु० १ बड़ा कूप, कूआ। २ देखो 'बेरी'।

वेळ, वे॰ळ–वि० १ समान, तुल्य। २ अत्यधिक, ज्यादा। –पु० १ समुद्र, सागर। २ तरंग, लहर, हिलोर। ३ गले का आभूषण विशेष। ४ विशेष प्रकार की अंगूठी। ५ पागलपन। ६ आग, अग्नि। ७ तरंग, उमंग। ८ देखो 'वेल'। ९ देखो 'वेळा'। १० देखो 'वेल'।

वेल–पु० १ कूए के पानी का, खेत में जाने वाला बहाव। २ एक प्रकार का लघुकाव्य। ३ रेखा, लकीर। ४ चैत्र कृष्णा द्वादशी का व्रत विशेष। ५ देखो 'वेल'। ६ देखो 'बहल'। ७ देखो 'वेळ'।

वेलकि (की) स्त्री० मिट्टी का एक बर्तन विशेष।

वेलख (खि)–पु० [सं० वेलक] बाण का फर, पुंखस्थान

वेलड़, वेलड़ली, वेलड़ि (ड़ी), वेलड़ली, वेलड़ि, वेलड़ी–स्त्री० १ मिट्टी का एक पात्र विशेष। २ लता, बेल।

वेलण–स्त्री० १ नींद में, स्वप्न में या अचेतावस्था में बकने की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रिया या भाव । २ देखो 'वेलण' ।

वेलणियो–वि० नींद में बड़बड़ाने वाला । –पु० १ रहट के चक्र के लट्टू में लगने वाला डंडा । २ देखो 'वेलण' ।

वेलणो (बो)–क्रि० १ तड़फना, छटपटाना । २ नींद में बड़बड़ाना । ३ अनर्गल प्रलाप करना । ४ देखो 'वेलणो' (बो)।

वेलदार–देखो 'वेलदार' ।

वेळा, वेळा–स्त्री० [सं० वेला] १ समुद्र तट या किनारा । २ सीमा, हद । ३ रात व दिन का चौबीसवां भाग । ४ समय, वक्त, काल । ५ पल । ६ अवकाश, फुर्सत । ७ अवसर, मौका । ८ बार, दफा, मर्तबा । ९ देर, विलंब । १० देखो 'वेळ' ।

वेला–स्त्री० १ जन्म, जीवन । २ कष्ट, संकट । ३ देखो 'वेळा' । ४ देखो 'वेळ' ।

वेलाइत, वेलाइत–पु० समुद्र, सागर । –क्रि० वि० उचित समय पर ।

वेळाउळ, वेलाउल–१ देखो 'विलावळ' । २ देखो 'वेळावळ' । ३ देखो 'वेळाकूळ' ।

वेळाकूळ, वेलाकूल, वे.लाकूल–पु० बंदर, वानर ।

वेलाजुवर (ज्वर)–पु० मृत्युकालीन ज्वर ।

वेलातर (तरु)–पु० एक प्रकार का शाक ।

वेळाधिप, वेळाधिपत (पति, पती)–पु० दिनमान के आठवें भाग का अधिपति देव ।

वेळापात–देखो 'विलापत' ।

वेळापुळ (पूळ)–पु० अच्छा मुहूर्त, शुभ समय ।

वेलाळ, वेलाल–पु० १ पवन, हवा । २ समुद्र, सागर ।

वेळावळ, वेलावल–पु० १ समुद्र, सागर । २ देखो 'विळावळ' ।

वेळावळघी, वेलावलघी–स्त्री० लक्ष्मी, कमला ।

वेळावसेक, वेळाविसेक (ग) वे.लावसेक, वे.लाविसेक–पु० एक शिशु रोग विशेष ।

वेळाहरण, वेलाहरण–पु० समुद्र, सागर ।

वेलि–१ देखो 'वेल' । २ देखो 'वेली' । ३ देखो 'वेळा'

वेलियो–१ देखो 'वेलियो' । २ देखो 'वहलियो' ।

वेली–१ देखो 'वेली' । २ देखो 'वेल' ।

वेळु (सु)–१ देखो 'वाळू' । २ देखो 'वेळू' । ३ देखो 'व्याळू' ।

वेळुका, वेलुका–देखो 'वाळू' ।

वेळू, वेलू, वे.ळू–वि० १ व्याकुल, बेचैन, विह्वल । २ सहायक, मददगार । ३ देखो 'वाळ' । ४ देखो 'वाळू' । ५ देखो 'वेळा' ।

वेळो, वेलो–पु० १ क्रौंच पक्षी । २ एक अन्य पक्षी विशेष । ३ कष्ट, विपत्ति, संकट । ४ वंश । ५ प्राकार, बनावट, आकृति । ६ पूजा पात्र, पूजा पात्र पर बांधने का कपड़ा । ७ देखो 'वेळा' । ८ देखो 'बेळो' ।

वेल्या–१ देखो 'बेल' । २ देखो 'वेळा' ।

वेल्हणो (बो)–क्रि० १ चीरना, फाड़ना । २ दल के विभाग करना । ३ पृथक करना, दूर करना । ४ हटाना । ५ देखो 'बेलणो' (बो) । ६ देखो 'वेलणो' (बो) ।

वेल्हा–१ देखो 'वेळा' । २ देखो 'वेला' ।

वेव–देखो 'वेग' ।

वेवक्त वेवगत–देखो 'बेवक्त' ।

वेवड़ो–पु० १ एक प्रकार का बर्तन । २ देखो 'बेवड़ो' । ३ देखो 'बेढ़ो' ।

वेवणी वे.वणी–देखो 'बेवणी' ।

वेवणो (बो)–देखो 'वहणो' (बो) ।

वेवना–देखो 'वेदना' ।

वेवलियो, वेवली, वेवल्यो–देखो 'बेवली' ।

वेवांण वे.वांण–देखो 'विमांन' ।

वेवाई, वे.वाई–१ देखो 'बेवाई' । २ देखो 'व्याई' ।

वेवाणो (बो), वेवाहणो (बो)–देखो 'वहाणो' (बो)

वेसंभाळ–वि० अचेत, असावधान, बेसुध, लापरवाह ।

वेस वे.स–पु० [सं० वेशः] १ पहनने के वस्त्र, पोशाक, वेश । २ विशेष प्रकार का पहनावा । ३ रंगमंच के पीछे का स्थान । ४ भीतर जाने का रास्ता, प्रवेश द्वार । ५ वेश्याओं का मुहल्ला । ६ वेश्या का घर । ७ शरीर, देह । ८ स्थिति, हालत, अवस्था । ९ रूप, सौंदर्य । १० रूप, स्वरूप । –वि० १ श्रेष्ठ, बढ़िया । २ देखो 'बेसर' । ३ देखो 'वेस्या' । ४ देखो 'वेस्य' । ५ देखो 'वयस' ।

वेसकार–पु० [सं० वेषकार] वस्तु पर सुरक्षार्थ लपेटा हुआ वस्त्र ।

वेसण (न), वे.सण–देखो 'बेसण' ।

वेसणियो, वे.सणियो–पु० बेसन का बना खाद्य पदार्थ विशेष ।

वेसणो (बो)–देखो 'बैठणो' (बो) ।

वेसनर, वेसम्नर–देखो 'वैस्वानर' ।

वेसभार–देखो 'वेसभोर' ।

वेसभूसा–स्त्री० [सं० वेशभूषा] १ पहनने के वस्त्र, पहनावा विशेष, पोशाक । २ सजावट व सज्जा के लिये पहनने के वस्त्र ।

वेसम–देखो 'बेस्म' ।

वेसयुवति (ती)–स्त्री० [सं० वेश युवती] वेश्या, रण्डी ।

वेसर (ह, रू)–स्त्री० [सं० वेश्वर] १ खच्चर । २ देखो 'बेसर' ।

वेसरम–देखो 'बेसरम' ।

वेसलूक (ग)–वि० [फा० बे-सलूक] १ बिना ढंग का, तौर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरीका रहित। २ बिना, संबंध या रिश्ते का। ३ अव्यवहारी। ४ बेचैन, उद्विग्न।

बेसवनिता–स्त्री० वेश्या रण्डी।

बेसवार–पु० १ पिसे हुए नमक, मिर्च, धनिया आदि मसाले। २ एक प्रकार का पकाया हुआ मांस।

बेसवारियौखीच–पु० मोठ का मिश्रण एवं नमक, मसाले आदि डाल कर बनाया बाजरी का खीच।

बेसवारी–देखो 'बेसवार'।

बेसवास, बेसस्त्री–पु० वेश्या, रण्डी।

बेसांमी, बेसांमी–देखो 'विस्रांति'।

बेसाणी (वौ), बेसावणी (बो)–क्रि० १ उत्पन्न करना, व्याप्त करना। २ देखो 'बैठाणी' (वौ)।

बेसार–पु० विश्वास, भरोसा एतबार। –वि० १ बिना सार का, तत्त्वहीन, निस्सार। २ तलवार रहित। ३ चर्बी रहित।

बेसास–१ देखो 'विस्वास'। २ देखो 'बेसास'। —घात= 'विश्वासघात'।

बेसासड़, बेसासड़ी–देखो 'विस्वास'।

बेसासणी (बो)–देखो 'विस्वासणी' (बो)।

बेसासि (सौ)–देखो 'विस्वास'।

बेसि, बेसि–१ देखो 'वयस'। २ देखो 'वेस'। ३ देखो 'वेस्या'। ४ देखो 'वेस्य'।

बेसी, बेसी–वि० १ वेश धारण करने वाला, वेश धारित। २ देखो 'बेसी'।

बेसुध–देखो 'बेसुध'।

बेसुद्धि, बेसुधी–देखो 'बेसुध'।

बेसुमार–देखो बेसुयार'।

बेसूर–देखो 'बेसऊर'।

बेसूल (लौ)–वि० १ निष्कंटक। २ बिना दर्द। ३ अपार, असीम। ४ अमर्यादित।

बेसो–देखो 'वैसौ'।

बेस्टक–वि० [सं० वेष्टक] १ चारों ओर से ढकने या आवृत्त करने वाला। २ घेरा डालने वाला।

बेस्टण (न)–पु० [सं० वेष्टनं] १ कोई वस्तु आदि लपेटने का कपड़ा। २ लपेटने की क्रिया या भाव। ३ घेरने की क्रिया या भाव। ४ पगड़ी, साफा। ५ नृत्य का एक भाव। ६ घेरा आहता।

बेस्म–पु० [सं० वेश्म] घर, गृह, मकान।

बेस्य–पु० [सं० वैश्य] १ व्यापारी, बनिया। २ व्यापारी वर्ग। ३ वैश्य जाति। ४ कोई वैश्य।

बेस्यांगना, बेस्या–स्त्री० [सं० वेश्या] १ वह स्त्री या स्त्री समुदाय जो धन लेकर संभोग कराती हो, रण्डी, वेश्या, पातर। २ परी, अप्सरा। —गांमी, रत–पु० वेश्या के यहां जाने वाला, वेश्या से प्रेम करने वाला। —हटौ–पु० वेश्याओं का मुहल्ला।

बेह–पु० [सं० वृद्धि] १ विवाह वेदी के चारों ओर रखे जाने वाले पात्र, पात्र समूह। २ विवाह वेदी। ३ मंगल कलश। ४ विधाता। –सर्व० १ वह, वे। २ देखो 'वयस'। ३ देखो 'वेमाता'। ४ देखो 'वेध'।

बेहक–देखो 'बहक, बेहक'।

बेहकणी (बो)–देखो 'बहकणी' (बो)।

बेहड़, बेहड़ू, बेहड़ौ, बेहड़ड, बेहड़ु, बेहड़ू, बेहड़ौ–१ देखो 'बे'ड़ौ'। २ देखो 'बैसौ'।

बेहण–पु० [सं० विधाता] ब्रह्मा, विधि।

बेहणउ, बेहणौ–वि० [स० वेधनकम्] छेदन करने वाला, बेधने वाला।

बेहणी (बो)–क्रि० १ चालू होना, चालू रहना। २ डरना, भयभीत होना। ३ चलना। ४ देखो 'बहणी' (बो)। ५ देखो 'बेधणी' (बो)।

बेहत–पु० एक पौष्टिक पदार्थ विशेष।

बेहव, बेहवौ (ह्)–पु० १ सर्वशक्ति मान ईश्वर, परब्रह्म। २ स्वर्ग, वैकुण्ठ। ३ ब्रह्म पद, निर्वाण। ४ ब्रह्म से साक्षात्कार का आनन्द। ५ संत, भक्त। ६ अनहद नाद। ७ योग, समाधि,। ८ सत्य। ९ ज्ञान। –वि० १ ज्ञानी, पंडित २ इच्छुक, जिज्ञासु। ३ असीम, अपार, बेहद।

बेहन, बेहनड़ौ–देखो 'बहन'।

बेहमाता, बेहमाता–देखो 'वेमाता'।

बेहर–स्त्री० १ काटना या चीरना क्रिया, कतरन। २ भोजन, खानः क्रिया।

बेहरणी (बो)–देखो 'बैरणी' (बो)।

बेहराणी (बो)–देखो बैराणी' (बो)।

बेहल (ल)–स्त्री० १ ढोलियों की एक शाखा। २ देखो 'बेहल'। ३ देखो 'बहल'।

बेहलि (लो)–क्रि० वि० १ शीघ्र, जल्दी। २ देखो 'बेहल'।

बेहलियौ–देखो 'बैस'।

बेहाण–स्त्री० १ वृद्धावस्था, बुढापा। २ देखो 'विहाण'।

बेहा–देखो 'विधाता'।

बेहार–स्त्री० १ काटना क्रिया, कटाई। २ विहार।

बेहारी–१ देखो 'विहारी'। २ देखो 'व्यवहारी'।

बेहाल–देखो 'बेहाल'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेहो–पु० बदला, प्रतिकार, प्रतिशोध ।

वें–देखो 'वैं' ।

वेंकंड, वेंकुठ–देखो 'वैंकुंठ' ।

वेंकति, वेंक्तो–पु० १ रिक्त, खाली । २ विकार, विकृति ।

वेंग–स्त्री० १ चाल, गति । २ पानी का बहाव । ३ पानी का रास्ता । –वि० पागल ।

वेंगल्या–वि० फुहड़ स्त्री, अकार्यकुशल स्त्री, मूर्खा ।

वेंगाणळ–देखो 'वेंगाणळ' ।

वेंचणी (बो), वेंछणी(बो), वेंचणी(बो)–देखो 'बेंचणी' (बो) ।

वेंचाणी (बो), वेंचावणी (बो), वेंचाणी, वेंचावणी–देखो 'बेंचाणी' (बो) ।

वेंछो–पु० बंटवारा, हिस्सा ।

वेंडाक–देखो 'बेंडाक' ।

वेंण–वि० [सं० वितुण्ड] (स्त्री० वेंडी) १ दातार, उदारचित्त । २ मौजी, मस्त । अद्भुत, विचित्र, अनोखा । ४ देखो 'बेंडो' ।

वेंठा–१ देखो 'बहन' । २ देखो 'वचन' ।

वेंत, वेंत–पु० १ रीति, ढंग; उपाय । २ प्रकार । ३ हिसाब-किताब । ४ माप-नाप । ५ बनावट, रचना । ६ यत्न, काबू, नियंत्रण । ७ चिन्ता, दुःख । ८ तरह, भांति । ९ देखो 'बेंत' । १० देखो 'वैत' ।

वेंतणी (बो), वेंतणी (बो)–देखो 'बेंतणी' (बो) ।

वेंतावणी (बो), वेंतावणी (बो), वेंतावणी (बो)–देखो 'बेंतावणी' (बो) ।

वेंन, वेंन–१ देखो 'बहन' । २ देखो 'वचन' ।

वेंम, वेंम–देखो 'वहम' ।

वेंमी, वेंमी, वेंमोली–देखो 'वहमी' । (स्त्री० वेंमोली)

वेंह–देखो 'वें' ।

वेंहचणी (बो)–देखो 'बेंचणी' (बो) ।

वेंहचावणी (बो), वेंहचावणी (बो)–देखो 'बेंटावणी' (बो) ।

वें–पु० १ श्रीकृष्ण का एक नाम । २ स्वर्गलोक । ३ पति; खाविंद । ४ मालिक, स्वामी । ५ स्वीकृति सूचक अव्यय ध्वनि । –क्रि०वि० १ निश्चय ही । २ हां । ३ भी । ४ देखो 'वयस' । ५ देखो 'वें' ।

वेंईस–देखो 'बेंस्य' ।

वेंकंठ–देखो 'वैंकुंठ' । —नाथ='वैंकुंठनाथ' । —पत, पति='वैंकुंठपति' । —वासी='वैंकुंठवासी' ।

वेंकक्ष, वेंकक्षक, वेंकक्षिक–स्त्री० जनेऊ की तरह पहनी जाने वाली माला ।

वेंकटिक–पु० जौहरी ।

वेंकणी (बो)–देखो 'बहकणी' (बो) ।

वेंकरण–पु० [सं० वैकर्ण] १ वार्त्स्यमुनि । २ एक प्राचीन जनपद ।

वेंकल, वेंकळ–देखो 'विकळ' ।

वेंकल्प–देखो 'विकल्प' ।

वेंकल्पिक–वि० [सं०] १ ऐच्छिक । २ संदिग्ध ।

वेंकल्य–पु० [सं०] १ न्यूनता, कमी । २ विकलांग, लंगड़ापन । ३ व्याकुलता ।

वेंकाळ–पु० अपराह्न या सध्याकाल ।

वेंकुंठनाथ (नायक)–देखो 'वैंकुंठनाथ' ।

वेंकुंठ–पु० [सं०] १ भगवान श्रीविष्णु । २ स्वर्ग । ३ देवराज इन्द्र का एक नाम । ४ तुलसी का नाम । ५ एक देवगण विशेष । —नाथ, नायक, पत, पति, पती–पु० भगवान श्री विष्णु । —लोक–पु० स्वर्गलोक, गोलोक । —वासी–पु० श्रीविष्णु । स्वर्ग के निवासी ।

वेंकुंठवास–पु० [सं०] १ श्रीविष्णु का एक नाम । २ स्वर्ग । ३ स्वर्ग में निवास । ४ निर्वाण पद ।

वेंकुंठविलासी–पु० [सं०] विष्णु, ईश्वर ।

वेंकुंठि, वेंकुंठी–स्त्री० १ पालकीनुमा गाड़ी यान, रथ, अर्थी । २ वैंकुंठ ।

वेंकूंट, वेंकूंठ–देखो 'वैंकुंठ' । —नाथ='वैंकुंठनाथ' ।

वेंक्त–देखा 'विक्त' ।

वेंकांतमणि (मणी, मिण)–स्त्री० [सं० वैक्रान्त मणि] एक प्रकार का रत्न ।

वेंक्रिय–वि० जिसमें छोटे-बड़े अनेक रूप बनाने की क्षमता हो ।

वेंक्रियलब्धि–स्त्री० छोटे-बड़े अनेक रूप बनाने की सिद्धि ।

वेंक्रियसरीर–पु० [सं० वैक्रियशरीर] १ देव और नारकी जीवों का शरीर । २ हाड-मांस से रहित शरीर ।

वेंखरी–स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का नाद (स्वर) । २ वाक्शक्ति । ३ वाग्देवी सरस्वती । ४ बोलने की शक्ति ।

वेंखानस (सि, सी)–पु० [सं० वैखानसः] १ वानप्रस्थ आश्रम में पहुंचा व्यक्ति । २ भगवान वराह का एक नाम । ३ एक प्राचीन राजा । ४ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी ।

वेंग–देखो 'वेग' ।

वेंगरणी–वि० १ प्रबंधक, व्यवस्थापक । २ देखो 'वेंगरणी' ।

वेंगलेय–पु० भूतों का एक गण ।

वेंगाण–देखो 'वेग' ।

वेंगाणळ, वेंगाणळी–देखो 'वेंगाणळ' ।

वेंगी, वेंगी–देखो 'वेंगो' । (स्त्री० वेंगी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेढ–देखो 'वे'ढ'।

वे'ढो' वेढो–१ देखो 'वे'ढो'। २ देखो 'बैसो'।

वेचणो (बो), वे'चणो (बो)–१ देखो 'वेचणो' (बो)। २ देखो 'वेचणो' (बो)।

वेचाणो (बो) वेचावणो (बो)–१ देखो 'वेंचाणो' (बो)। २ देखो 'वेचाणो (बो)।

वेछंग–वि० चपल, चंचल, उच्छृंखल।

वेछाणो (बो), वेछावणो (बो)–देखो 'बिछणो' (बो)।

वेजंतीमाळ (माळा)–देखो 'वैजयंतीमाळा'।

वेजनाथ–देखो 'वैद्यनाथ'।

वेजभृत–पु० [सं० वैजभृत] मृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

वेजयंत–पु० [सं०] १ देवराज इन्द्र। २ इन्द्र का राजभवन। ३ इन्द्र का ध्वज। ४ झंडा, पताका। ५ घर, मकान। ६ क्षीरसागर के मध्य का एक पर्वत।

वेजयंतिक–पु० [सं०] ध्वज उठाकर चलने वाला।

वेजयंती–स्त्री० [सं०] १ ध्वजा, पताका, झण्डा। २ चिह्न लक्षण। ३ एक प्रकार का पौधा।

वेजयंतीमाळ (माळा)–स्त्री० [सं० वैजयंतीमाळा] १ मोती आदि का हार। २ गले से घुटनों तक लंबी पचरंगी माला ३ भगवान विष्णु की विजय माला।

वेजो–पु० घोड़ों का एक रोग विशेष।

वेंड–देखो 'वेढ'।

वेंडणो (बो)–देखो 'वेढणो' (बो)।

वेंडू'बो–पु० खराब कलिन्दा।

वेडूर्य, वेडूर्यमणि (मण)–देखो 'वैदूरयमणि'।

वेडोच्योढो–वि० विचलित, अधीर।

वेढ–देखो 'वेढ'।

वेढक–देखो 'वेठक'।

वेढगरो (गारो)–देखो 'वेठीगारो'।

वेढणो (बो)–देखो 'वेठणो' (बो)।

वेढीमण (मणो)–देखो 'वेठीमणो'।

वेण–पु० [सं० वचन] १ स्तुति, वन्दना। २ देखो 'वेण'। ३ देखो वीण'। ४ 'वीणा'। ५ देखो 'वचन'।

वेणदंड, वेणवंड–पु० [सं० वेणीदंड] १ एक प्रकार का सर्प। २ देखो 'वेणीदंड'।

वेणन–पु० [सं० वैणनः] श्वान, कुत्ता।

वेणव–वि० [सं०] बांस का, बांस संबंधी। –पु० १ बांस का बीज या फल। २ विश्वामित्र के वंशज एक गोत्रकार। ३ यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाने वाला बांस का दण्ड।

वेणवी–स्त्री० [सं०] १ बंशलोचन। २ वंशीवादक। ३ शिव महादेव।

वेणसगाई–देखो 'वयणसगाई'।

वेणा–देखो वीणा'।

वेणाधेणी–स्त्री० बोलचाल, वार्त्तालिप।

वेणि, वेणी–१ देखो 'वेणी'। २ देखो 'वहणी'।

वेणी–पु० लड़ई का एक प्रोजार विशेष।

वे'णो (बो), वेणो (बो)–१ देखो 'वहणो' (बो)। २ देखो 'होणो' (बो)।

वेत, वे'त–पु० १ वाहिन, सवारी। २ ऊंट। ३ समास व अनुप्रासों से युक्त गद्य-पद्य की रचना। ४ नियम। ५ प्रण, प्रतिज्ञा। ६ दांव, पेच। ७ गुरुमंत्र। ८ लता, बेल। ९ देखो 'वेंत'। १० देखो 'बेत'।

वेतणो (बो), वे'तणो (बो)–देखो 'वेंतणो' (बो)।

वेतर–१ देखो 'वेतरु'। २ देखो 'व्यंतर'।

वेतरणि, वेतरणी–स्त्री० १ उड़ीसा प्रान्त में बहने वाली एक नदी। २ गंगा का एक नाम। ३ नरक की एक नदी। ४ दान को जाने वाली वस्तु। —इग्यारस, एकादशी, ग्यारस–स्त्री० मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी।

वेतरणो (बो), वेतरणो (बो)–देखो 'वेंतणो' (बो)।

वेतसार–वि० मूर्ख, नासमझ।

वेताडारूपा–स्त्री० विकृतरूप धारण करने वाली देवी।

वेताढ्य, वेताढ्यगिरी–पु० एक पर्वत का नाम।

वेताणो (बो)–देखो 'वेंताणो' (बो)।

वेताळ (ल)–देखो 'वेताळ'।

वेताळरस, वेतालरस–पु० एक प्रकार की रसौषधि।

वैतालिक, वैतालिक–पु० [सं० वैतालिक] १ भाट, बंदीजन। २ मदारी। ३ ऐन्द्रजालिक, मायावी। ४ वेताल के उपासक।

वेताळी–पु० [सं० वैतालो] १ स्कन्द का एक अनुचर। २ देखो 'वैताल'।

वेताळीस–देखो 'बयाळीस'।

वैतियांण–वि० समर्थ, शक्तिशाली।

वेतुल–पु० घोड़ा, अश्व।

वेत्रासुरतंडळ (ल)–पु० [सं० वृत्र+रा० तंडल] इन्द्र का एक नाम।

वेधो–देखो 'वेधो'।

वेवंग (गो)–पु० १ वैद्यक, चिकित्सा। २ देखो 'वेदग्य'।

वेदगर–१ देखो 'वैद्य'। २ देखो 'वेदग्य'।

वेद, वे'द–पु० [सं०] १ विद ऋषि के एक पुत्र का नाम। २ देखो 'वैद्य'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैदक–वि० १ जानकर, ज्ञाता। २ देखो 'वैदिक'। ३ देखो 'वैद्य'।

वैदथिन–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि।

वैदरभ (भ)–पु० [सं० वैदर्भ] १ रुक्मिणी के पिता का नाम। २ दमयंती के पिता। ३ विदर्भ नामक प्रदेश। ४ विदर्भ के राजा भीम।

वैदराज–देखो 'वैद्यराज'।

वैदल–पु० १ पराठा। २ द्विदल धान्य। ३ भिखारी का पात्र।

वैदही–देखो 'वैदेही'।

वैदाणी (नी)–देखो 'बेनाणी'।

वैदिक–वि० [सं०] १ वेदों में वर्णित, वेदोक्त। २ वेदोक्त कार्य करने वाला। ३ वेदज्ञ। ४ वेदों से संबंधित।

वैदूर्य, वैदूर्यमणि (मणी)–स्त्री० [सं० वैदूर्यमणि] १ हरे रंग का एक रत्न विशेष। २ लहसुनिया नामक रत्न विशेष।

वैदेह–पु० [सं०] १ विदेहराज जनक। २ वैश्य या व्यापारी। ३ ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न वैश्यपुत्र।

वैदेही–स्त्री० [सं०] १ जानकी, सीता। २ विदेह कुलोत्पन्न कोई कन्या। ३ पिप्पली।

वैद्य–वि० [सं०] १ वेद का, वेद संबंधी। २ चिकित्सा संबंधी। ३ चिकित्सक। ४ विद्वान, शास्त्राचार्य। ५ सब विद्याओं का ज्ञाता। –पु० १ विद्वान, व्यक्ति। २ आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार चिकित्सा करने वाला व्यक्ति। ३ एक जाति या वर्ग विशेष। ४ भगवान विष्णु। ५ एक देव। ६ वरुण का एक पुत्र।

वैद्यक–पु० १ चिकित्सा शास्त्र। २ बहत्तर कलाओं में से एक। ३ देखो 'वैदग्ध'।

वैद्यकक्रिया–स्त्री० १ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। २ चिकित्सा।

वैद्यगी–स्त्री० वैद्य का कार्य, चिकित्सा।

वैद्यनाथ–पु०[सं०]१ बंगाल का एक प्रसिद्ध तीर्थ। २ धन्वन्तरी। ३ शिव का एक अवतार। ४ शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक।

वैद्यराज–पु० [सं०] अच्छा वैद्य, राज्य वैद्य।

वैद्यिक–देखो 'वैद्यक'।

वैद्रभा, वैद्रवा–देखो 'विदरभा'।

वैधव्य वैधव्य–पु० [सं० वैधव्य] विधवा होने की अवस्था, विधवापन।

वैधी–पु० [सं० वेधिन्] शत्रु, दुश्मन।

वैधीकरण–पु० कुन्ती पुत्र अर्जुन।

वैधृत, वैधृति, वैधृती; वैधृत (ति, ती)–पु० [सं० वैधृति] १ फलित ज्योतिष के २७ योगों में से एक। २ एक देव गण। ३ एक इन्द्र।

वैन, वैनड़, वैनड़ी वैनड़ी–१ देखो 'बहन'। २ देखो 'बधन'।

वैनतीय, वैनतेअ, वैनतेय–पु० [सं० वैनतेय] १ विनता पुत्र गरुड। २ गरुड़ की एक संतान।

वैनहोत (होतर, होत्र)–पु० एक राजा का नाम।

वैनाशिक–पु० फलित ज्योतिष में नक्षत्र विशेष।

वैनीत–१ देखो 'बेनीत'। २ देखो 'विनीत'।

वैन्य–पु० [सं०] १ भृगुकुलोत्पन्न एक मंत्रकार। २ राजा पृथु। ३ अत्रि ऋषि का एक नाम।

वैपार, वैपार–देखो 'व्यापार'।

वैपारी, वैपारी–देखो 'व्यापारी'।

वैफुल, वैफुली–देखो 'बहुफुली'।

वैभव–पु० [सं०] १ ऐश्वर्य, सम्पत्ति। २ धन, द्रव्य। ३ महिमा, महत्व। ४ सामर्थ्य, शक्ति। ५ कार्य, धंधा, व्यवसाय। ६ आधिक्य, बहुतायत। –वान–वि० ऐश्वर्यवान, सम्पत्तिशाली, शक्तिशाली, व्यवसायी। साळी, सासी–वि० ऐश्वर्यवान, धनवान, सम्पन्न।

वैभवता–पु० १ सम्पन्नता, समृद्धि। २ सम्पत्ति या धन की अधिकता।

वैभाखण (वैभीखण)–देखो 'विभीसण'।

वैभार–पु० वैहार नामक पर्वत।

वैभीसणि, वैभीसणि (णी)–पु० १ विभीषण का एक पुत्र। २ देखो 'विभीसण'।

वैम,वैम–पु० १ संबंध, लगाव, गरज। २ देखो 'वहम'।

वैमनस्य–पु० [सं०] १ शत्रुता, वैर, दुश्मनी। २ उदासी, शिथिलता।

वैमाणी, वैमाणीक, वैमाणीय, वैमानिक–वि० [सं० वैमानिक] १ विमान संबंधी, विमान का। २ आकाशचारी। –पु० १ विमान चालक। २ विमान का यात्री। ३ एक प्राचीन तीर्थ। ४ वैमानिक देव।

वैमार, वैमार–देखो 'बीमार'।

वैमितरा, वैमित्रा–पु० [सं० वैमित्रा] १ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका। २ सात शिशु माताओं में से एक।

वैमुख–देखो 'विमुख'।

वैयर–१ देखो 'बैर'। २ देखो 'वैर'।

वैयस्व–पु० [सं० वैयश्व] एक आचार्य।

वैयाधिक–पु० [सं०] १ दर्शन, सिद्धान्त। २ एक क्रूर देव।

वैयार–देखो 'व्यवहार'।

वैयावच्च, वैयावच्च (वत, त्य)–पु० [सं० वैयावृत्य] एक प्रकार का व्रत या तप विशेष।

वैरंग (गी) वैरंग–१ देखो 'विरंग'। २ देखो 'बैरंग'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वैरंडेय पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि ।

वैर, वैर-पु० [सं०] १ बदला, प्रतिकार । २ विरोध, शत्रुता, दुश्मनी । ३ फसल । ४ शत्रु, दुश्मन । ५ देखो 'बैर' । —भाव-पु० शत्रुता, विरोध, मनमुटाव ।—वैत्रासुर-पु० इन्द्र ।

वैरक, वैरक्क, वैरख-पु०[सं० वेरम्] १ शरीर, बदन । २ हाथी, हस्ती । ३ शत्रु, दुश्मन, वैरी । ४ देखो 'बैरक' ।

वैरड़ी-वि० १ दोगला, वर्ण संकर । २ वैर लेने वाला, बदला लेने वाला । ३ देखो 'बैर' । ४ देखो 'बैरड़ी' ।

वैरण (णि, णी)-वि० शत्रु दुश्मन, वैरी ।

वैरणी (णी)-देखो 'बैरणी' (वी) ।

वैरता-देखो 'बैर' ।

वैरवाद पु० विरोध शत्रुता ।

वैरस-वि० बिना रस का, नीरस, सारहीन ।

वैरसुध-स्त्री० बदला, प्रतिकार ।

वैरहर (हरण, हरि)-पु० शत्रु का वंशज, शत्रु ।

वैराण (न)-देखो 'वीरान' ।

वैराई, वैराई-देखो 'बैराई' ।

वैराक-पु० चौथी बार निकाला हुआ तेज व बढ़िया शराब ।

वैराग, वैराग-देखो 'वैराग्य' ।

वैरागड-देखो 'वैरागर' ।

वैरागण-स्त्री० १ विरक्त स्त्री । २ वैराग्य लिये हुए या लेने वाली स्त्री । ३ सन्यासियों का एक काष्ठ का उपकरण ।

वैरागणो (णी)-क्रि० १ संसार से विरक्त होना । २ संन्यास लेना, साधु हो जाना । ३ ईश्वर भजन में लीन होना । ४ किसी कार्य या वस्तु के प्रति विरक्त या उदास होना । ५ त्यागना ।

वैरागर (गिर, गिरि, गिरी)-वि० १ बहुत गहरा । २ रिक्त, खाली । -पु० १ खाली भूमि । २ गहरा कूआ । ३ हीरों की खान । ४ हीरों की खान वाला पर्वत । ५ एक देश का नाम । ६ एक प्रकार का वस्त्र । ७ हीरा । ८ एक अन्य प्रकार का रत्न ।

वैरागियो-१ देखो 'वैरागी' । २ देखो 'वैराग्य' ।

वैरागी, वैरागीयो-पु० [सं०] (स्त्री० वैरागण) १ संसार से विरक्त व्यक्ति । २ साधु, संन्यासी, महात्मा । ३ त्यागी पुरुष । ४ एक वैष्णव सम्प्रदाय । -वि० १ विरक्त, उदास २ त्यागी ।

वैराग्य-पु० [सं०] १ संसार, विषय वासना तथा भौतिक तत्त्वों के प्रति विरक्ति, उदासीनता, घृणा । २ संसार का त्याग एवं ईश्वर के प्रति तीव्र आसक्ति । ३ असंतोष, अप्रसन्नता । ४ अरुचि, घृणा । ५ किसी के प्रति रागात्मक भावना का अभाव ।

वैराड़ी-स्त्री० एक प्रकार की रागिनी ।

वैराजी-देखो 'बैराजी' ।

वैराट-वि० [सं०] १ विराट का, विराट संबंधी । २ लंबा-चौड़ा, विस्तृत । ३ महान, विशाल । ४ भयंकर, भयावह । पु० १ इन्द्रगोप कीट, वीरबहूटी । २ विराट राजा का पुत्र, उत्तर । ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र । ४ देखो 'विराट' । ५ देखो 'ब्रह्मरंध्र' । —रूप-पु० विष्णु या ब्रह्म का विश्व रूप ।

वैराणी (णी)-देखो 'बैराणी' (वी) ।

वैरात-देखो 'वरात' ।

वैराय, वैरायत-पु० शत्रु, दुश्मन, वैरी ।

वैरि, वैरी-देखो 'बैरी' ।

वैरिण, वैरिणि, वैरिणी-देखो 'वैरण' ।

वैरिय वैरी, वैरीडी-पु०[सं० वैरिन्](स्त्री०वैरण) शत्रु, दुश्मन ।

वैरीवाड़ी, वैरीवारी-पु० [सं० वैरी-पाटकः] १ शत्रुओं का मुहल्ला, देश, निवास स्थान । २ शत्रुता ।

वैरीसाल-वि० शत्रु के लिए शल्य रूप ।

वैरीहर-देखो 'वैरहर' ।

वैरोचन-पु० [सं०] १ राजा बलि का एक नाम । २ सूर्य का एक पुत्र । ३ अग्नि का एक पुत्र । ४ देखो 'विरोचन' ।

वैरोट-१ देखो 'विराट' । २ देखो 'वैराट' ।

वैरो-१ देखो 'बेरो' । २ देखो 'वैरी' । ३ देखो 'वैर' ।

वैल, वैल-१ देखो 'बहल' । २ देखो 'बैल' ।

वैलडली, वैलड़ी वैलड़ी-१ देखो 'बैल' । २ देखो 'बहल' ।

वैलणी (णी), वैलणी (णी)-१ देखो 'बेलणी' (वी) । २ देखो 'वेलणी' (वी) । ३ देखो 'बैलणी' (णी) ।

वैलवांन-पु० रथ हांकने वाला, रथचालक, सारथी ।

वैली-क्रि० वि० १ उस ओर, उस तरफ । २ देखो 'बहन' ।

वैले, वैलें-देखो 'वेले' ।

वैल्व-पु० [सं०] बिल्व नामक वृक्ष, पत्ता या फल ।

वैवतन-देखो 'बेवतन' ।

वैवस-देखो 'विवस' ।

वैवस्त, वैवस्वत-पु० [सं०] १ सूर्य का एक पुत्र । २ एक रुद्र का नाम । ३ शनि । ४ यम ।

वैवस्वती-स्त्री०यमुना नदी का नाम ।

वैवार, वैवार-१ देखो 'व्यवहार' । २ देखो 'व्यापार' ।

वैसंदर-देखो 'वैस्वानर' ।

वैसंधि (धी)-देखो 'वयसंधि' ।

वैसनर-देखो 'वैस्वानर' ।

वैसपा; वैसपायन-पु० [सं० वैशंपायन] वेदव्यास के शिष्य एक प्रसिद्ध ऋषि ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वंस, वंस– १ देखो 'वेस'। २ देखो 'वेसर'। ३ देखो 'वेस्या'। ४ देखो 'वैस्य'। ५ देखो 'वयस'।

वंसक–स्त्री० [सं० वेशक] १ वेश्या, रंडी। २ देखो 'बेसक'। ३ देखो 'बैठक'।

वंसणी–स्त्री० १ चार प्रकार की गाथाओं में से एक। २ वैश्य की स्त्री।

वंसणु–१ देखो 'वैस्णव'। २ देखो 'विस्णु'। ३ देखो 'बैसणी'।

वंसणी–देखो बैसणी।

वंसणी (बो)–देखो 'बैठणी' (बो)।

वंसन–देखो विस्णु'।

वंसनर–देखो 'वैस्वानर'।

वंसनव, वंसनी–देखो 'वैस्णव'।

वंसनर–देखो 'वैस्वानर'।

वंसयिक–वि० [सं० वैषयिक] १ किसी पदार्थ का, पदार्थ संबंधी। २ लपट, विषयी।

वंसलीण (न)–पु० [अं० वेस्लिन] मल्हम की तरह का एक स्निग्ध पदार्थ जो शीतकाल में त्वचा की सुरक्षार्थ काम में लिया जाता है।

वंसाणणी (बो)–क्रि० १ दफनाना, गाड़ना। २ देखो 'बैठाणी' (बो)।

वंसाख–पु० [सं० वैशाख] १ चैत्र के बाद आने वाला मास, महीना। २ बाण चलाने की एक मुद्रा। ३ घोड़ों का एक रोग। ४ मद्य दंड।—नंदण, नंदन–पु० गर्दभ, गधा।

वंसाखा–देखो 'विसाखा'।

वंसाखि (खी)–वि० [सं० वैशाखी] वैशाख मास का, वैशाख मास संबंधी।–स्त्री० १ वैशाख मास की पूर्णिमा, एक पर्व दिन। २ वैशाख शुक्ला तृतीया, अक्षय तृतीया। ३ सौर मास की संक्रांति का उत्सव। ४ वसुदेव की एक पत्नी। ५ लंगड़े आदमी द्वारा बगल में लेकर चलने की लकड़ी की घोड़ी।

वंसाखी–देखो 'वैसाख'।

वंसाड़णी (बो), वंसाणी (बो)–देखो 'बैठाणी' (बो)।

वंसानर–देखो वैस्वानर'।

वंसारण–देखो 'वैसारिण'।

वंसारणी (बो)–देखो 'बैठाणी' (बो)।

वंसारिण–स्त्री० [सं० वैसारिणः] मछली।

वंसाल–पु० [सं० वैशाल] १ राजा विशाल द्वारा बसाया हुआ एक नगर। २ एक प्राचीन ऋषि।

वंसालिनी–स्त्री० [सं० वैशालिनी] विशाल राजा की राजकुमारी।

वंसावणी (बो)–देखो 'बैठाणी' (बो)।

वंसास (सि)–देखो 'विस्वास'।

वंसासणी (बो)–देखो 'विस्वासणी' (बो)।

वंसिक–पु० [सं० वैशिक] वैश्यागामी एक नायक।

वंसी–स्त्री० १ वैश्य की स्त्री। २ एक प्रकार की गाथा।

वंसो–वि० १ जैसा कोई पहले था वैसा, उसके अनुरूप। २ उस प्रकार का।

वंस्णव (बु, धू)–वि० [सं० वैष्णव] विष्णु का, विष्णु संबंधी।–पु० १ विष्णु का उपासक या भक्त। २ विष्णु का उपासक एक सम्प्रदाय।—चाप–पु० सारंग नामक धनुष।

वंस्णवी–स्त्री० [सं० वैष्णवी] १ विष्णु की शक्ति। २ देवी, दुर्गा। ३ गंगा। ४ लक्ष्मी। ५ तुलसी। ६ वैष्णव सम्प्रदाय की स्त्री।

वंस्य–पु० १ व्यवसाय एवं उद्योग करने वाला एक वर्ग। २ बनिया, धनिक।

वंस्या–देखो 'वेस्या'।

वंस्रवण–पु० [सं० वैश्रवणः] १ शिव, महादेव। २ धनपति, कुबेर। ३ लंकापति रावण।

वंस्रवणाय, वंस्रवणालय–पु० १ कुबेर की अलकापुरी। २ वट वृक्ष।

वंस्त्रयुग–पु० विश्वासु और पराभाव नामक पांच संवत्सरों का युग।

वंस्वानर–पु० [सं० वैश्वानरः] १ अग्नि की उपाधि। २ इन्द्र सभा का एक महर्षि। ३ अग्नि का एक पुत्र। ४ जठराग्नि। पाचन शक्ति। ५ वेदांत में चेतना शक्ति। ६ परमात्मा, ईश्वर। ७ आग, अग्नि।

वंस्वामित्र–पु० विश्वामित्र।

वंहंग–देखो 'विहंग'।

वंहंचणी (बो)–देखो 'बैचणी' (बो)।

वंहंडणी (बो)–देखो 'विहडणी' (बो)।

वंह–१ देखो 'वयस'। २ देखो 'विधाता'। ३ देखो 'वे'माता'।

वंहणी (बो)–देखो 'वहणी' (बो)।

वंहतोवांण–१ देखो 'वंतियांण'। २ देखो 'वहतीवांण'।

वंहरणी (बो)–देखो 'बैरणी' (बो)।

वंहराणी (बो), वंहरावणी (बो)–देखो 'बैराणी' (बो)।

वंहळ, वंहल–वि० १ बिना हल का, उपाय रहित। २ देखो 'बहल'।

वंहलणी (बो)–क्रि० बुझना।

वंहलि, वंहली–देखो 'बहल'।

वंहळी, वंहली–वि० (स्त्री० वंहळी, वंहली) १ दुःखी, व्यथित, व्याकुल। २ मस्त, उन्मत्त। ३ शीघ्र, तुरंत।

वंहवार–देखो 'व्यवहार'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेहांयस–वि० आकाश का, आकाश संबंधी।
वेहार–देखो 'व्यवहार'।
वेहासक, वेहासिक–वि० [सं० वेहासिक] हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा, विदूषक।
वेहिलो–देखो 'वेहलो'।
वेहूं, वेहूँ, वेहू–देखो 'बेऊ'।
वेहूकणो, (बो) वेहूगणो (बो)–देखो 'विसूकणो' (बो)।
वोंकार–देखो 'वोंकार'।
वोंयं–देखो 'वांसं'।
वोंसलो, वोंसूलो–देखो 'वसूलो'।
वो–पु० १ विनय, प्रार्थना। २ सप्तस्वर। ३ समय, काल, वक्त। ४ पेड़, वृक्ष। ५ रथ का सारथी। ६ देखो 'वो'।
वोअणो (बो)–देखो 'बोवणो' (बो)।
वोई–देखो 'वही'।
वोक–१ देखो 'बोक'। २ देखो 'बूक'।
वोकणो (बो)–देखो 'बोकणो' (बो)।
वोकारणो (बो)–देखो 'वाकारणो' (बो)।
वोकियो, वोको, वोखो–देखो 'बोखो'। (स्त्री० वोखी)।
वोखद, वोखदि, वोखदो, वोखध–देखो 'ओखध'।
वोड़णो (बो)–देखो 'बोडणो' (बो)।
वोड़ामो (बो), वोड़ावणो (बो)–देखो 'बोड़ाणो' (बो)।
वोचणो (बो)–देखो 'बोचणो' (बो)।
वोछो–देखो 'ओछो'।
वोज–स्त्री० १ खाट की बुनावट। २ देखो 'बोझ'।
वोजनीलो–पु० एक विशेष रंग का घोड़ा।
वोजलखो–पु० शुभ्र रंग का एक घोड़ा।
वोझाड़ो–पु० १ झटका। २ प्रहार, चोट। –वि० प्रहार करने वाला।
वोट–१ देखो 'ओट'। २ देखो 'बोट'।
वोटणो (बो)–देखो 'वोटणो' (बो)।
वोढ–१ देखो 'वेढ'। २ देखो 'बोढ'।
वोढण–स्त्री० १ सर्प की केंचुली। २ ओढ़ने का वस्त्र, चद्दर।
वोढ़णो (बो)–देखो 'बोटणो' (बो)।
वोढ़ो–वि० छोटा, कनिष्ठ।
वोदी–देखो 'बोदो'।
वोपणो (बो)–देखो 'ओपणो' (बो)।
वोपार, वोपार–देखो 'व्यापार'।
वोपारी, वोपारो–देखो 'व्यापारी'।
वापारी–देखो 'व्यापारी'।
वोबार–पु० १ कन्या का संबंध करते समय वर पक्ष की ओर से कन्यापक्ष को दिया जाने वाला धन। २ देखो 'व्यवहार'।
वोभर–१ देखो 'बोभर'। २ देखो 'भोभर'।
वोभारयो, वोभरो–देखो 'बोभरो'।
वोम–देखो 'व्योम'।
वोमकेस (केसी)–देखो 'व्योमकेस'।
वोमगंगा–देखो 'व्योमगगा'।
वोमतलक, वोमतिलक–देखो 'व्योमतलक'।
वोमदेव–पु० शिव, महादेव।
वोमपट, वोमपाट–पु० [सं० व्योम-पट] आकाश मार्ग।
वोमवाण (वाणी)–स्त्री० [सं० व्योम-वाणी] आकाशवाणी, देव वाणी।
वोमि–देखो 'व्योम'।
वोर–देखो 'ओर'।
वोरणो (बो)–क्रि० १ डुबाना, तर-बतर करना। २ ओत-प्रोत करना। ३ देखो 'बुहारणो' (बो)।
वोराणो (बो), वोरावणो (बो)–क्रि० १ डुबवाना, तर-बतर कराना। २ ओत-प्रोत कराना। ३ देखो 'बुहराणो' (बो)।
वोरो, वो'रो, वोरो–देखो 'बो'रो'।
वोळणो (बो)–१ देखो 'बोळणो' (बो)। २ देखो 'वोंळणो' (बो)।
वोलणो (बो)–१ देखो 'बोलणो' (बो)। २ देखो 'वोळाणो' (बो)।
वोळाऊ वोलाऊ–देखो 'वोळावो'।
वोळाणो (बो), वोळावणो (बो)–देखो 'वोळाणो' (बो)।
वोलाणो (बो), वोलावणो (बो)–१ देखो 'बुलाणो' (बो)। २ देखो 'वोळाणो' (बो)।
वोळावो, वोळावू, वोळावो–देखो 'वोळावो'।
वोळी-वोळो, वोल्यू-वोस्यू–देखो 'ओळी-दोळो'।
वोल्लाह–देखो 'बोल्लाह'।
वोवड़णो (बो)–क्रि० बरसना।
वोवार–१ देखो 'व्यापार'। २ देखो 'व्यवहार'।
वोवो–पु० करघे का एक उपकरण विशेष।
वोसरणो (बो)–क्रि० १ छोड़ना, त्यागना। २ देखो 'बिसरणो' (बो)।
वोसराणो (बो), वोसरावणो (बो)–क्रि० १ त्याग कराना, छुड़वाना। २ देखो 'बिसराणो' (बो)।
वोसरु (रू)–पु० [सं० व्युत्-सर्ग] त्याग, परित्याग।
वोह–देखो 'बोह'।
वोहड़णो (बो)–देखो 'बहोड़णो' (बो)।
वोहड़ाणो (बो)–देखो 'बहोड़ाणो' (बो)।
वोहत–देखो 'बहुत'।
वोहतपत (पति, पती)–पु० पाण्डु पुत्र अर्जुन का नाम।
वोहनामो–देखो 'बहनामो'।
वोहरो–देखो 'बो'रो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वोहळणो (वो)–१ देखो 'वोळणो' (वो)। २ देखो 'वोहळणो' (वो)।

वोहळाणो (वो)–१ देखो 'वोहळाणो' (वो)। २ देखो 'वोळाणो' (वो)।

वोहळी–देखो 'वो'ळी'।

वोहार–देखो 'व्यवहार'।

वोहि, वोहित, वोहिति (ती) वोहित्थ, वोहिथ–१ देखो 'वोहित्थ'। २ देखो 'बहुत'।

वोही–देखो 'वही'।

योहोत, वोही–देखो 'बहुत'।

वो–पु० १ पत्ता, पान। २ तलवार, खड्ग। ३ पुत्र, बेटा। ४ जुलाहों का एक औजार।–सर्व० १ वह। २ उस।

वोगर, वोघर–पु० बाघ के शरीर की गंध।

वोड़णो (वो)–क्रि० १ निवृत्त होना। २ देखो 'वोड़णो' (वो)। ३ देखो 'वहोड़णो' (वो)।

वोड़ाणो (वो), वोड़ावणो (वो)–क्रि० १ निवृत्त करना/कराना। २ देखो 'वोड़ाणो' (वो)। ३ देखो 'वहोड़ाणो' (वो)।

वोछाड़, वोछार, वोछाळ–देखो 'वोछाड़'।

वोढ़उर, वोढ़पुर, वोढ़पुरो–पु० नल राजा द्वारा विजित एक नगर।

वोपार–देखो 'व्यापार'।

वोपारी–देखो 'व्यापारी'।

वोम–देखो 'व्योम'।

वोर–स्त्री० बिल्ली या बकरी की ऋतुमति की अवस्था।

वोरणो (वो)–देखो 'वुहारणो' (वो)।

वोराणो (वो), वोरावणो (वो)–क्रि० १ बिल्ली या बकरी का ऋतुमति होना। २ देखो 'वुहराणो' (वो)। ३ देखो 'वोराणो' (वो)।

वोळणो (वो), वोळवणो (वो)–क्रि० १ पहुंचना। २ भेजना। ३ उस पार जाना। ४ लांघना, पार करना। ५ विदा होना। ६ व्यतीत होना, बीतना। ७ खोना, गंवाना। ८ ठगा जाना। ९ उपभोग करना, सुख प्राप्त करना। १० संहार करना, मारना। ११ नाश करना, मिटाना। १२ दफनाना। १३ रक्षा करना, हिफाजत करना। १४ देखो 'वोळणो' (वो)।

वोळाणो (वो), वोळावणो (वो), वोलावणो (वो)–क्रि० १ बिताना, गुजारना। २ पहुचाना। ३ विदा होना, विदा करना। ४ भिजवाना, भेजना। ५ पीछा करना, अनुगमन कराना। ६ खोना, गुमाना। ७ पार कराना। ८ अत्येष्टि कराना। ९ उपभोग कराना। १० संहार कराना मरवाना। ११ खर्च करना, कराना। १२ ठगाना। १३ लौटाना। १४ देखो 'वोळाणो' (वो)।

वोलाणो (वो), वोलावणो (वो)–देखो 'बुलाणो' (वो)।

वोलावणी–स्त्री० १ विदा करना क्रिया। विदाई। २ गणगौर की विदाई का दिन। ३ मृतक की अंत्येष्टि।

वोळावो वोळावू, वोळावो–पु० १ विश्राम स्थल। ठहरने की जगह। २ ससम्मान विदाई। ३ सुरक्षार्थ यात्रा में साथ रहने वाला व्यक्ति, राह-रक्षक। ४ देखो 'बुलावो'।

वोळ्हाणो (वो), वोळ्हावणो (वो)–देखो 'वोळाणो' (वो)। २ देखो 'वोळाणो' (वो)।

वोल्हाणो (वो), वोल्हावणो (वो)–देखो 'बुलाणो' (वो)।

वोल्हावो–१ देखो 'वोळावो'। २ देखो 'बुलावो'।

वोवारियो–देखो 'व्यवहारी'।

वोह–१ देखो 'वोह'। २ देखो 'वोघ'।

वोहत–देखो 'बहुत'।

वोहनांमी–देखो 'बहुनांमी'

वोहरणो (वो)–क्रि० १ घूमना, फिरना। २ बुहारना। ३ व्यवहार करना।

वोहराणो (वो), वोहरावणो (वो)–क्रि० १ घुमाना, फिराना। २ बुहराना। ३ व्यवहार कराना।

वोहरो–देखो 'वो'रो'

वोहळाणो (वो), वोहळावणो (वो)–१ देखो 'वोळाणो' (वो)। २ देखो 'वोळाणो' (वो)।

वोहळी–देखो 'वो'ळी' (स्त्री० वोहळो)।

वोहवार–देखो 'व्यवहार'।

वोहवारियो, वोहवारी, वोहारी–देखो 'व्यवहारी'।

वोहि, वोहित, वोहिति (ती) वोहित्थ, वोहिथ–देखो 'वोहित'।

वोहोवार–देखो 'व्यवहार'।

व्यंग, व्यंग्य–पु० [सं० व्यंग्य] १ ताना, चुभती बात। २ चुटकी भरी बात। ३ व्यंजना शब्द-शक्ति से युक्त बात।

व्यंगुळ (स)–पु० [सं० व्यंगुल] एक अंगुल का साठवां भाग।

व्यंजक–वि० [सं०] प्रकट करने वाला, बोध कराने वाला।–पु० १ नाटकीय हाव-भाव से मनोगत भावों का प्रकटन। २ संकेत चिह्न, निशान।

व्यंजण (न)–पु० [सं० व्यंजन] १ व्यक्त या प्रकट होने की क्रिया या भाव। २ विशिष्ट प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन। ३ मिष्ठान्न, पकवान। ४ वर्ण, अक्षर जो स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं। ५ अंग, अवयव।

व्यंजनहारिका–स्त्री० [सं०] एक अमंगलकारी शक्ति जो नव वधुओं द्वारा बनाये गये भोजन को उठा कर ले जाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यंजना–स्त्री० [सं०] १ प्रकट करने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार की शब्द शक्ति।

व्यंतर, व्यंतरियो–पु० [सं० व्यंतर] १ भूत-प्रेतादिक योनि व इस योनि के भूत। २ एक देव योनि।

व्यंद–पु० [सं० बिंदु] १ बीर्य, बीज। २ देखो 'बींद'।

व्यंध–देखो 'विध्य'।

व्यंब–देखो 'बिंब'।

व्यउ–देखो 'बिवाई'।

व्यक्त–वि० १ प्रकट, जाहिर, प्रकट किया हुआ। २ स्पष्ट साफ।

व्यक्ति, व्यक्ती–पु०. [सं० व्यक्ति] १ आदमी, मनुष्य। २ देह, तन, शरीर। ३ प्रकट करने की क्रिया या भाव।

व्यग्र–वि० [सं०] १ व्याकुल, उद्विग्न। २ परेशान दुःखी। ३ भयभीत, डरा हुआ। ४ काम में लीन, आसक्त।

व्यजण, व्यजणक, व्यजन–पु० [सं० व्यजन] १ पंखा। २ पंखे से हवा करने की क्रिया।

व्यतिकर, व्यतिकार–पु० [सं०] १ सम्मिश्रण, मिलावट। २ संबंध, संसर्ग, लगाव। ३ आघात, चोट। ४ घटना, अवसर, मौका। ५ पारस्परिक संबंध। ६ आपसी लेन-देन।

व्यतिक्रम, व्यतिक्रमण–पु० [सं० व्यतिक्रम] १ क्रम भंग, क्रम का उल्टा। २ व्रत भंग। ३ व्रत भंग की इच्छा। ४ आपत्ति, संकट, तकलीफ। ५ पाप कर्म। ६ अपराध। ७ उल्लंघन, अवहेलना। ८ लापरवाही। ९ विपरीत होने की अवस्था।

व्यतिक्रमणो (बो)–क्रि० व्यतिक्रमण करना।

व्यतिपात–पु० [सं० व्यतिपात] १ सम्पूर्ण रीति से प्रस्थान या पूर्णतया विच्छेद। २ बड़ा भारी प्राकृतिक उत्पात। ३ अपमान, अपमान। ४ भारी अपशकुन। ५ ज्योतिष में एक योग।

व्यतिरेक–पु० अन्तर, फर्क, भेद। २ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष।

व्यतीत–वि० [सं०] १ मरा हुआ, मृत। २ त्यागा हुआ, परित्यक्त। ३ तिरस्कृत, उपेक्षित। ४ गुजरा हुआ, समाप्त

व्यतीतणो, (बो)–क्रि० १ मरना, मृत्यु को प्राप्त होना। २ त्यागना, छोड़ना। ३ तिरस्कृत होना, उपेक्षित होना। ४ गुजरना, समाप्त होना।

व्यतीपात–देखो व्यतिपात'।

व्यतीपाति (ती)–वि० १ उपद्रव करने वाला। २ प्रस्थान किया हुआ। ३ अपमान किया हुआ।

व्यथा–स्त्री० [सं०] १ रोग, बीमारी। २ डर, भय। ३ दुःख, कष्ट। ४ विकलता व्याकुलता। ५ दर्द पीड़ा।

व्यथित–वि० [सं०] १ विकल, व्याकुल, परेशान। २ डरा हुआ, भयभीत। ३ दुःखी, पीड़ित। ४ रोगी, बीमार।

व्यधाधर व्यधाधारी–देखो 'विद्याधर'।

व्यभचार, व्यभिचार व्यभीचार–पु० [सं० व्यभिचार] १ दुराचरण, बदचलनी। २ रतिक्रीड़ा, संभोग। ३ असतीत्व। ४ स्त्री-पुरुष का अवैध संबंध। ५ अनियमित कार्य। ६ अपराध दोष। ७ असत्य, झूठ।

व्यभिचारी–वि० [सं० व्यभिचारिन्] (स्त्री० व्यभिचारिणी) १ व्यभिचार करने वाला, पतित, दुराचारी। २ पथ भ्रष्ट। ३ दोषी, अपराधी। ४ पर-स्त्री गामी। ५ संभोगरत, भोगी। ६ झूठा, असत्य।

व्यभ्यास–पु० विशेष अभ्यास।

व्यय–पु० [सं०] १ खर्चा। २ कमी, ह्रास, घटत। ३ लागत। ४ नाश, बर्बादी। ५ लग्न से बारहवां स्थान (ज्योतिष)। ६ बृहस्पति की गति के अनुसार वर्ष या संवत्सर। ७ एक नाग।

व्ययकरण, व्ययकरणि (क), व्ययकारण, व्ययकारिणिक–पु०. [सं० व्ययकर्णिक] १ व्यय करने या खर्च करने वाला व्यक्ति, अधिकारी। २ भुगतान करने वाला अधिकारी।

व्यरथ–वि० [सं० व्यर्थ] १ फालतू, निरर्थक। २ अर्थ रहित। ३ लाभ हीन।

व्यरथता– स्त्री० [सं० व्यर्थता] १ फालतू होने की अवस्था या स्थिति। २ निरर्थकता। ३ लाभहीनता।

व्यळीक, व्यलीक–वि० [सं० व्यलीक] १ झूठा, मिथ्यावादी। २ अप्रिय। ३ दुःखदायी। ४ कामी, लंपट।–पु० १ दुःख का मूल। २ जुर्म, अपराध। ३ कपट, धोखा। ४ असत्यता।

व्यवधान–पु० [सं०] १ बाधा, विघ्न, रोड़ा, रोक। २ आड़, ओट। ३ भेद, रहस्य। ४ छिपाव।

व्यवसाइयो, व्यवसायो–देखो 'व्यवसायी'।

व्यवसाय–पु० [सं०] १ आजीविका, पेशा, वृत्ति। २ उद्योग, धंधा, कार्य। ३ व्यापार, ४ प्रयत्न, कोशिश। ५ आशय, मतलब। ६ कार्य का संपादन। ७ शिव व विष्णु का नामान्तर।

व्यवसायि, व्यवसायी–पु० [सं०] १ व्यवसाय करने वाला, व्यापारी। २ उद्योगशील परिश्रमी, कार्यकर्त्ता। ३ अनुष्ठान कर्त्ता व्यक्ति। ४ कोई पेशेवर व्यक्ति।

व्यवस्था–स्त्री० [सं०] १ किसी कार्य की निर्धारित विधि। २ प्रबंध, इंतजाम। ३ स्थिति, हालत, दशा। ४ निर्धारित योजना। ५ रखने का ढंग।

व्यवहरिक–देखो 'व्यवहारिक'।

व्यवहार–पु० [सं०] १ चाल-चलन, आचरण। २ पेशा, धंधा। ३ ब्याज, गिरवी आदि लेन-देन का धंधा। ४ व्यापार, व्यवसाय। ५ रीति, रस्म, रिवाज। ६ संबंध, रिश्ता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७ मुकद्दमा। ८ अधिकार, हक। ९ शास्त्रोक्त विधि। १० बरताव, सलूक। ११ भेद, अन्तर, फर्क। १२ एक सूत्र। (जैन)

व्यवहारणी (वी)–क्रि० १ आचरण करना। २ पेशा या धंधा करना। ३ गिरवी का लेन-देन करना। ४ व्यापार करना, व्यवसाय करना। ५ बरताव या सलूक करना।

व्यवहारिओ, व्यवहारिक, व्यवहारियो, व्यवहारी (उ) व्यवहारीओ, व्यवहारू व्यवहारियो, व्यवारी–वि० [सं० व्यवहारिन्] १ व्यवहार से संबंधित। २ बरताव या सलूक करने वाला। ३ व्यापार करने वाला। ४ संबंध रखने वाला। ५ उत्तम आचरण वाला।–पु० १ व्यापारी, बनिया। २ वैश्य। ३ संबंधी, रिश्तेदार

व्यसन–पु० [सं०] १ आदत, एब, लत। २ नियम। ३ निरर्थक बात। कार्य। ४ अशुभ बात। ५ असमर्थता, असामर्थ्य। ६ कष्ट, दुःख। ७ विपत्ति, संकट।

व्यसनी–वि० [सं० व्यसनिन्] १ किसी प्रकार के व्यसन वाला। २ ऐबी, लत खोरा। ३ बुरी आदतों वाला।

व्यस्टि, व्यस्टी–पु० [सं० व्यष्टि] समष्टि का उल्टा, पृथक एवं विशिष्ट अंश, इकाई रूप।

व्यस्त–वि० [सं० व्यस्त] १ कार्य में संलग्न, लीन। २ जिसे अवकाश या फुर्सत न हो। ३ आकुल, विकल, घबराया हुआ। ४ फैला हुआ, व्याप्त। ५ बिखरा हुआ।

व्यस्तार–पु० [सं०] १ हाथी की कनपटियों से मद चूने की क्रिया या स्थिति। २ देखो 'विस्तार'।

व्यां–सर्व० वह का बहुवचन, वे, उन।–क्रि० वि० १ ऐसे, इस तरह। २ वैसे, उस तरह।

व्याण–स्त्री० १ समधी की स्त्री, समधिन। २ दहेज में साथ आने वाली दासी।

व्यांणु, व्यांणू–पु० [सं० वि+अणु] अणु से बड़ा, विशेष अणु।

व्यान–पु० [सं० व्यान] शरीरस्थ एक वायु विशेष।

व्यानदा–स्त्री० [सं० व्यानदा] व्यान वायु देने वाली शारीरिक शक्ति विशेष।

व्याम–पु० [सं० व्याम] लंबाई का एक नाप विशेष।

व्याई, व्याई (ही)–पु० (स्त्री० व्याणि, व्यायण) सगा, समधी। रिश्तेदार।

व्याकरण–पु० [सं०] १ किसी भाषा के रचना विधान, शुद्धाशुद्ध का ज्ञान व संस्कार करने वाली विद्या। २ इसी विद्या से संबंधित शास्त्र विशेष। ३ किसी भाषा को व्याकरण संबंधी पुस्तक। ४ व्याख्या, विवेचन। ५ निर्माण, रचना। ६ बहत्तर कलाओं में से एक। ७ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। ८ आठ की संख्या ।

व्याकरणी–पु० [सं० वैयाकरणिक] व्याकरण का ज्ञाता, पंडित।

व्याकळ व्याकुळ (ल)–वि० [सं० व्याकुल] १ आतुर, व्यग्र, विकल, दुःखी। २ घबराया हुआ, भयभीत। ३ उदास, खिन्नचित्त। ४ विह्वल, भावुक, द्रवित। ५ क्षोभयुक्त। ६ उत्सुक, उत्कंठित।–पु० समुद्र, सागर।

व्याकुळणी (वी)–क्रि० १ घबराना, व्याकुल होना बेचैन होना। २ उदास होना, खिन्न होना। ३ भयभीत होना, घबराना। ४ आतुर होना। ५ कांपना, थर्राना।

व्याकुळता, व्याकुलता–स्त्री० [सं० व्याकुलता] १ व्याकुल होने की अवस्था या भाव, उदासी, खिन्नता। २ डर, भय, आतंक।

व्याकुळी–वि० भयभीत, बेचैन, व्याकुल।

व्याकोस–वि० [सं० व्याकोष] १ बढ़ाया हुआ, फुलाया हुआ। २ खिला हुआ, विकसित। ३ वृद्धि को प्राप्त, वृद्धिमान।

व्याकृति–देखो 'विकृति'।

व्याखान, व्याख्यान–पु० [सं० व्याख्यान] १ व्याख्यान करने की क्रिया या भाव। २ भाषण, प्रवचन।—सह–पु० टीकाकार व्याख्याता। प्रवक्ता।

व्याख्या–स्त्री० [सं०] १ किसी बात या विषय को समझाने के लिये किया गया विवेचन, स्पष्टीकरण, टीका। २ अर्थ, भावार्थ।

व्याघात–पु० [सं०] १ आघात, चोट प्रहार। २ विघ्न, बाधा। ३ घोर संकट, विपत्ति। ४ ज्योतिष में एक योग। ५ एक अर्थालंकार विशेष।

व्याघ्र–पु० [सं०] १ सिंह, शेर २ भादव मास में सूर्य के साथ घूमने वाला यक्ष।–वि० १ सर्वोत्तम, श्रेष्ठ। २ मुख्य, प्रधान।– चरम, चरम्म, चाम–स्त्री० शेर की खाल, बाघंबर।

व्याघ्रनायक व्याघ्रनायक–पु०[सं० व्याघ्रनायक] गीदड़ शृगाल।

व्याघ्रमुख–पु० [सं०] १ एक देश का नाम। २ एक पर्वत का नाम।

व्याघ्राक्ष–पु० [सं०] १ कार्तिकेय का एक अनुचर। २ एक राक्षस का नाम।

व्याज–पु० [सं०] १ कपट, छल, धोखा। २ बाधा, विघ्न, अड़चन। ३ विलम्ब, देरी। ४ बहाना, मिस। ५ ऋण का सूद। ६ ऋण की राशि।

व्याजडियो–पु० १ व्याज पर ऋण देने वाला व्यक्ति, ऋण दाता। २ देखो 'व्याज'।

व्याजवटो–पु० ऋण देने व व्याज लेने का व्यवसाय।

व्याजस्तुति–स्त्री० [सं०] १ निन्दा के बहाने स्तुति, स्तुति के बहाने निन्दा। २ एक अर्थालंकार विशेष।

व्याजु–पु० व्याज पर देने की रकम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्याजोक्ति–स्त्री० [सं०] १ कपट युक्त बात । २ बहाना । ३ एक प्रकार का अर्थालंकार ।

व्याड–पु० [सं०] १ सर्प, साँप । २ इन्द्र । ३ दुष्ट हाथी । ४ मांस भक्षी जीव । ५ गुण्डा, दुष्ट ।

व्याणी–स्त्री० प्रसव करने वाली मादा पशु ।

व्याणो–पु० जन्म देने की क्रिया । प्रसव ।

व्याणो (बो)–१ देखो 'व्याणो' (बो) । २ देखो 'विवाहणो' (बो) ।

व्याति–पु० लुब्धक नामक तारा ।

व्याध–पु० [सं०] १ शिकारी, बहेलिया । २ किरात जाति । ३ दुष्ट या नीच व्यक्ति । ४ देखो 'व्याधि' ।

व्याधि व्याधिय, व्याधी–स्त्री० [सं० व्याधि] १ रोग, बीमारी । २ कष्ट, दुःख, पीड़ा । ३ कुष्ठ रोग, कोढ़ । ४ झगड़ा, टंटा । ५ साहित्य में एक संचारी भाव । ६ मृत्यु की पुत्री ।

व्याप–१ देखो 'व्याप्त' । २ देखो 'व्यापक' ।

व्यापक–वि० [सं०] १ सर्वत्र व्याप्त या विद्यमान, चारों ओर फैला हुआ । २ छाया हुआ । ३ ढकने या घेरने वाला । ४ विस्तृत । ५ सामान्य, साधारण ।

व्यापण (न)–स्त्री० [सं० व्यापन] फैलाव, विस्तार ।

व्यापणो (बो)–क्रि० १ चारों ओर फैलना, व्यापक होना, व्याप्त होना । सर्वत्र विद्यमान होना । २ सर्वत्र अस्तित्व रखना, प्रभाव रखना । ३ समाना, प्रविष्ट होना । ४ छाना, फैलना । ५ घेरना, ढकना । ६ उत्पन्न या पैदा होना । ७ होना, आना, लगना । ८ विचार उत्पन्न होना । ९ असर होना, प्रभाव पड़ना । १० उत्पन्न होना । ११ पहुंचना ।

व्यापति, व्यापती–देखो 'व्याप्ति' ।

व्यापार–पु० [सं०] १ वस्तुओं का क्रय-विक्रय, व्यवसाय । २ उद्योग, धंधा । ३ कार्य, कर्म, काम । ४ व्यवहार, संबंध । ५ आचरण, व्यवहार । ६ किसी विषय या क्रिया के साथ इन्द्रियों का संयोग ।

व्यापारिक–वि० [सं०] व्यापार संबंधी ।

व्यापारी–पु० [सं० व्यापारिन्] १ वस्तुओं का क्रय-विक्रय या व्यापार करने वाला, सौदागर । २ बनिया, बनिक, वैश्य । ३ व्यवसाय या उद्योग करने वाला ।

व्यापी–वि० [सं० व्यापिन] १ व्याप्त या व्यापक होने वाला, फैला हुआ । २ आच्छादित ।–पु० भगवान विष्णु का नाम ।

व्याप्त–वि० [सं०] १ फैला हुआ । २ भरा हुआ, परिपूर्ण । ३ शामिल । ४ समाया हुआ । ५ आच्छादित ।

व्याप्ति, व्याप्ती–स्त्री० [सं०] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव । २ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक । ३ सर्वमान्य सिद्धान्त । ४ फैलाव, विस्तार । ५ पूर्णता ।

व्याप्रत्त–पु० [सं० व्यापृत] १ मन्त्रि, मंत्री । २ कामदार । ३ नौका, नाव ।–वि० किसी कार्य में लीन । व्यस्त ।

व्याप्रति–पु० [सं० व्यापृतिः] १ कार्य, धंधा । २ कार्य, कर्म । ३ उद्योग, परिश्रम । ४ पेशा, धंधा ।

व्यामोह–पु० [सं० व्यामोह] १ मोह, अज्ञान । २ व्याकुलता, परेशानी ।

व्यायण–देखो 'व्याण' ।

व्यायाम–पु० [सं० व्यायाम] १ स्वास्थ्य एवं शरीर की पुष्टि के लिये किया जाने वाला श्रम, कसरत । २ परिश्रम, मेहनत । ३ थकावट । ४ रतिक्रिया के बाद की थकावट । ५ कोशिश, प्रयास ।—साळ, साल, साळा, साला–स्त्री० नित्य व्यायाम करने का स्थान ।

व्यायामी–वि० व्यायाम करने वाला ।

व्यायोग–पु० [सं०] एक प्रकार का रूपक ।

व्यायोड़ी–स्त्री० प्रसूता मादा पशु ।

व्यारण–देखो 'धारण' ।

व्यारी, व्यारीउ–देखो 'व्यवहारी' ।

व्याळ, व्याल–पु० [सं० व्याल] १ दुष्ट व्यक्ति, निर्दयी व्यक्ति । २ मौत का दिन । मृत्यु काल । ३ सर्प, साँप । ४ हस्ती, हाथी । ५ शेषनाग । ६ दुष्ट हाथी । ७ पवन, हवा, वायु । ८ हिंसक जीव । ९ शेर, सिंह । १० बाघ, चीता । ११ राजा, नृप । १२ विष्णु का एक नाम । १३ दण्डक छंद का नाम ।

व्याळखळ–पु० [सं० व्यालखल] १ मोर, मयूर । २ पक्षिराज गरुड़ । ३ सिंह, शेर ।

व्याळग्राही–पु० [सं० व्यालग्राहिन्] सपेरा, गारुडिक ।

व्याळग्रीव, व्यालग्रीव–पु० [सं० व्यालग्रीव] एक देश का नाम ।

व्याळघोश–पु० [सं० व्यालघोष] १ शेषनाग । २ ऐरावत हाथी ।

व्याळपाळ–पु० [सं० व्यालपाल] चन्दन ।

व्यालरेस–पु० सर्पों का समूह ।

व्याळसूदन, व्यालारि–पु० १ पक्षिराज गरुड़ । २ मोर, मयूर । ३ सिंह, शेर ।

व्यालिक–पु० [सं०] संपेरा ।

व्याळी, व्यालो–पु० [सं० व्याली] १ शिव, शंकर, महादेव । २ मोर । ३ शेर ।

व्याळू, व्याळू–पु० [सं० विकालिक] १ सायंकाल या रात्रि का भोजन । २ देखो 'व्याळ' ।

व्याव, व्यावड़ो–देखो 'विवाह' ।

व्यावट–पु० [सं० व्यावर्त] दोष, सदोष ।

व्यावणी (बो)–१ देखो 'व्याणी' (बो) । २ देखो 'विवाहणी' (बो) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्यावर-स्त्री० १ गाय, भैंस आदि की जननेन्द्रिय, योनि। २ प्रसव देने की क्रिया।

ब्याहलो-पु० १ विवाह। २ श्रीकृष्ण-रुक्मिणी के विवाह संबंधी काव्य।

ब्याळू-पु० कुत्ते के भौंकने की ध्वनि।

व्यास-पु० [स०] १ वेदों के रचयिता ऋषि, वेदव्यास, कृष्ण द्वैपायन। २ कथावाचक ब्राह्मण। ३ फैलाव, विस्तार।

व्यासपूनम, (पूरणिमा)-स्त्री० [सं० व्यास पूर्णिमा] आसाढ़ की पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा।

व्यासि, व्यासी-देखो 'व्यास'।

व्याह-देखो 'विवाह'।

व्याहक-वि० विवाह करने वाला दूल्हा।

व्याहणी (बो)-१ देखो 'ब्याणी' (बो)। २ देखो 'विवाहणी' (बो)।

व्याहदापो-पु० १ विवाह संबंधी सरकारी कर। २ देखो 'दापो'।

व्याहलो-पु० १ डिंगल का एक छन्द या गीत। २ देखो 'ब्यावलो'। ३ देखो 'विवाहलो'।

व्याहार-पु० [सं०] १ भाषण, प्रवचन। २ ध्वनि, नाद, उच्चारण। ३ व्यवहार।

व्याहृति (ती)-स्त्री० [सं० व्याहृति] १ भाषण, वक्तृता। २ बयान, स्पष्टीकरण। ३ गायत्री आदि मंत्र, भूः, भुवः, स्वः।

व्यिजण (न)-स्त्री० [सं० वीजन] १ हवा, वायु। २ देखो 'व्यंजन'।

व्युत्पत्ति-स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति, उद्गम। २ उद्गम स्थान। ३ शब्द का मूल रूप। ४ विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

व्यूंबर-पु० [सं० व्योमधर] देवराज इन्द्र।

व्यूढ-वि० [सं०] १ पूर्ण, भरा हुआ। २ विवाहित। ३ सेना की आकृति संबंधी।

व्यूह-पु० [सं०] १ झुण्ड, समूह। २ सेना, फौज। ३ सैन्य विन्यास या संगठन। ४ शरीर, देह। ५ तर्क-वितर्क। ६ निर्माण, रचना। ७ चक्र। ८ भ्रमरजाल। ९ गोमा, छवि।

व्यूहन-पु० [सं० व्यूहनं] १ सेना की व्यूह रचना। २ निर्माण।

व्योपार-देखो 'व्यापार'।

व्योपारी-देखो 'व्यापारी'।

व्योम, व्योमाळ-पु० [सं० व्योमन्] १ आकाश, आसमान। २ जल, पानी। ३ अभ्रक, भोडल। ४ सूर्य का मंदिर। ५ बादल, मेघ। ६ शून्य। ७ विष्णु का एक नाम। ८ पवन, हवा वायु। ९ आसमानी, नीला। १० एक यदुवंशीय राजा। —केस, केसो-पु० शिव, महादेव।—गंगा-स्त्री० आकाश गंगा।—गमन-पु० आकाश में विचरण, उड़ान। —गमनी-स्त्री० आकाश में उड़ना क्रिया, उड़ान। उड़ने संबंधी विद्या।—चर, चारी-पु० उड़ने वाले पक्षी, देवता, यक्ष, किन्नर, गंधर्व। सूर्य, चन्द्रमा, वायुयान।—मंडल-पु० नभमंडल आकाश।—सरिता—स्त्री० आकाश गंगा।

व्योरो-पु० १ भेद, रहस्य। २ कारण। ३ विवरण, वृत्तान्त, हाल। ४ ज्ञान, समझ, बुद्धि। ५ व्याख्या, टीका। ६ संक्षिप्त परिचय। ७ बयान।

व्योहार-देखो 'व्यवहार'।

व्योंचो-स्त्री० एक प्रकार का रक्त विकार।

व्योपार-देखो 'व्यापार'।

व्रंद-पु० [सं० वृन्द] १ समूह, झुण्ड। २ ढेर, समूह। ३ गले का अर्बुद। ४ शुभ मुहूर्त। ५ एक प्रसिद्ध कवि।

व्रंदा-स्त्री० [सं० वृन्दा] १ तुलसी। २ गोकुल के समीपस्थ वन। ३ राधा का एक नाम। ४ कालनेमि की कन्या का नाम।

व्रंदारक-पु० [सं० वृन्दारक] देवता।-वि० १ मनोहर, सुन्दर २ उत्तम, श्रेष्ठ। ४ अत्यधिक, बहुत।—तरु, तरु-पु० देव वृक्ष, कल्पवृक्ष।

व्रंदारका, व्रंदारिका-स्त्री० अप्सरा, देवांगना।

व्रंदावन-पु० [सं० वृंदावन] १ मथुरा के पास का एक प्रसिद्ध तीर्थ। २ तुलसी के पौधे वाला चबूतरा।—पत, पति, पती राज, राय, राव-पु० श्रीकृष्ण। ईश्वर।—वासि, वासी-पु० वृन्दावन का निवासी।

व्रंभचार-देखो 'ब्रह्मचर्य'।

व्रंभचारी-देखो 'ब्रह्मचारी'।

व्रंभा-देखो 'ब्रह्मा'।

व्रंम-१ देखो 'ब्रह्म'। २ देखो 'भ्रम'।

व्रंम्यांन-देखो 'ब्रह्मज्ञान'।

व्रंमरूप-पु० [सं० ब्रह्मरूप] १ वेद। २ ब्रह्म का कोई रूप।

व्रंमवरधन-पु० [सं० ब्रह्मन्-वर्द्धन] ताम्बा, ताम्र।

व्रंहम, व्रंह्म-१ देखो 'ब्रह्म'। २ देखो 'ब्रह्मा'।

व्रक-पु० [सं० वृक] १ भेड़िया। २ श्वान, कुत्ता। ३ शृगाल, सियार। ४ कौवा, काक। ५ उल्लू। ६ उदरस्थ एक अग्नि विशेष। ७ डाकू, लुटेरा। ८ सूर्यवंशीय राजा रूरुक का एक पुत्र।-वि० क्रूर, गुस्सैल।

व्रककरमा-पु० [सं० वृककर्मा] एक असुर का नाम।

व्रकदंत-पु० [सं० वृकदन्त] कुम्भकरण का श्वसुर एक राक्षस।

व्रकदंस-पु० [सं० वृकदंश] कुत्ता, श्वान।

व्रकोदर, व्रकोवर-पु० [सं० वृकोदर] १ भेड़िया। २ भीमसेन का नामान्तर। ३ ब्रह्म।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वकोदरी–स्त्री० पूतना राक्षसी की बहन।

वक्क–पु० [सं० वृक्कः] १ हृदय, दिल। २ गुर्दा। ३ देखो 'वृक'।

वक्ष, वृक्ष–पु० [सं० वृक्ष] १ पेड़, रूंख, वृक्ष। २ धर्म। ३ दक्ष पुत्री अनला एवं कश्यप की संतान।—राज–पु० पारिजात वृक्ष, कल्पवृक्ष, वटवृक्ष। पीपलक वृक्ष। —वासी–पु० एक यक्ष।

वक्षचिकित्सा–पु० बहत्तर कलाओं में से एक।

वक्षासन (न)–पु० योग का एक आसन।

वक्षि–देखो 'वक्ष'।

वृक्ष–पु० [सं० वृष] १ भगवान विष्णु का एक नाम। २ कल्प वृक्ष। ३ इन्द्र। ४ धर्म। ५ इच्छा, अभिलाषा। ६ श्री कृष्ण। ७ पति, स्वामी। ८ कामदेव। ९ कामुक व्यक्ति। १० बलिष्ठ व्यक्ति। ११ शत्रु, दुश्मन। १२ न्याय। १३ शिव का नंदी। १४ मूसा, चूहा। १५ दया। १६ स्कंद का एक अनुचर। १७ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। १८ कर्ण का एक नाम। १९ देखो 'वृक'। २० देखो 'वृक्ष'। २१ देखो 'वरस'। २२ देखो 'वृषभ'। २३ देखो 'विस'।

वृषक–पु० [सं० वृषक] १ सांड, बैल। २ मोर, मयूर। ३ कलिंग का एक प्राचीन राजा।

वृषकर्मा–पु० [सं० वृषकर्मा] भगवान विष्णु का एक नाम।

वृषकेतु–पु० [सं० वृषकेतु] १ शिव, महादेव। २ कलिंग का एक राजकुमार। ३ कामदेव।

वृषचक्र (चकर, चक्क)–पु० [सं० वृषचक्र] मुहूर्त शास्त्र संबंधी एक योग।

वृषण–पु० [सं० वृषण] १ देवराज इन्द्र। २ दानवीर कर्ण। ३ घोड़ा, अश्व। ४ भगवान श्रीकृष्ण। ५ सांड, बैल। ६ वृक्ष, पेड़। ७ वृषभ राशि। ८ अण्ड कोश। ९ सहस्रार्जुन राजा का एक पुत्र।

वृषणकच्छ (कच्छ)–पु० एक प्रकार का चर्म रोग।

वृषणाश्व, वृषणास्व–पु० [सं० वृषण-अश्व] इन्द्र के घोड़े का नाम।

वृषदंस–पु० [सं० वृषदंश] मंदराचल के निकट का एक पर्वत।

वृषदर्भ–पु० [सं० वृषदर्भ] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ राजा शिबि। ३ भगवान विष्णु।

वृषदेवा–पु० [सं० वृषदेवा] १ भगवान विष्णु।–स्त्री० २ वसुदेव की एक स्त्री।

वृषद्वीप–पु० एक द्वीप।

वृषधर, (धारिण, धारी)–पु०[सं० विष धारिन्] १ सर्प, सांप। २ विषैला जंतु। ३ शिव, महादेव।

वृषध्वज (ध्वज)–पु० [सं० वृषध्वज] १ शिव, महादेव। २ गणेश, गजानन। ३ एक पर्वत का नाम। ४ कर्ण का एक पुत्र। ५ जनकवंशीय एक राजा।

वृषध्वजा (ध्वजा)–स्त्री० [सं० वृषध्वजा] देवी, दुर्गा।

वृषपत, वृषपति, वृषपती–पु० [सं० वृषपति] शिव, महादेव।

वृषपरवा–पु० १ शिव का एक नाम। २ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक। ३ एक महर्षि। ४ एक असुर विशेष।

वृषभ–पु० [सं० वृषभ] १ सांड, बैल। २ चार प्रकार के पुरुषों में से श्रेष्ठ पुरुष (काम शास्त्र)। ३ एक प्राचीन तीर्थ। ४ सूर्य वीथी का एक नाम। ५ एक औषधि विशेष। ६ चौबीस अवतारों में से एक। ७ ज्योतिष में एक राशि। ८ फलित ज्योतिष में एक लग्न।—केत, केतु–पु० शिव महादेव।—नाथ, पति, पती–पु० शिव, महादेव।—ध्वज, ज, धुजी ध्वजी–पु० शिव, महादेव, यम, धर्मराज। –वाहण, वाहन–पु० शिव, महादेव।

वृषभांक–पु० [सं वृषभांक] शिव, महादेव।

वृषभाण (भांशु, भान, भानु)–देखो 'वृसभांनु'।

वृषभानुजा–स्त्री० राधा, राधिका।

वृषभा–स्त्री० [सं० वृषभा] भारत की एक नदी।

वृषभासा–स्त्री० [सं० वृषभाषा] इन्द्र की पुरी अमरावती का एक नाम।

वृषभेक्षण–पु० [सं० वृषभेक्षण] श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषराज (राय राव)–पु० [सं० वृषराज] १ शिव, महादेव। २ सर्प, सांप। [सं० वृक्षराज] ३ कल्पवृक्ष, वट वृक्ष

वृषराशि, वृषरासी–स्त्री० वृषभ राशि (ज्योतिष)।

वृषरूढ़–पु० [सं० वृषरूढ़] रथ।

वृषल–पु० [सं० वृषल] १ शूद्र। २ घोड़ा, अश्व। ३ जाति च्युत व्यक्ति।

वृषलांछण (न)–पु० [सं० वृष लांछन] शिव, महादेव।

वृषली–स्त्री०[सं० वृषली] १ विवाह से पूर्व रजस्वला हुई कन्या। २ रजस्वला स्त्री। ३ बांझ स्त्री। ४ पर पुरुष से प्रेम करने वाली स्त्री। ५ मृत बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री

वृषलीपत (पति, पती)–स्त्री० 'वृषली' कन्या या स्त्री का पति।

वृषव–देखो 'वृषभ'।

वृषवात–पु० [सं० वृषवात] वन, जंगल।

वृषवाहण (न)–पु० [सं० वृष वाहन] १ शिव, महादेव। २ ग्यारह रुद्रों में से एक।

वृषसंक्रांत (ति, ती), वृषसंक्रात (ति, ती)–स्त्री० [सं० वृष संक्रांति] वृषभ राशि में पड़ने वाली संक्रांति।

वृषसार–पु० [सं० वृषसार] श्रेष्ठ बैल। सांड।

वृषसेन–पु० [सं० वृषसुत] अर्जुन, धनंजय।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृषस्कंध–पु० [सं० वृषस्कंध] शिव, महादेव ।
वृषांक–पु० [सं० वृषांक] शिव, महादेव ।
वृषांगगुण–पु० [सं० वृषांग गुण] भोजन ।
वृषा–पु० [सं० वृषा] १ इन्द्र का एक नाम । २ देखो 'वरसा' ।
वृषाकपाई (पायी)–स्त्री० [सं० वृषाकपायी] १ लक्ष्मी । २ गौरी । ३ इन्द्र पत्नी शची । ४ अग्नि-पत्नी स्वाहा । ५ सूर्य की पत्नी ।
वृषाकपि, वृषाकपी, वृषाकृति, वृषाकृती–पु० [सं० वृषाकपिः] १ सूरज, सूर्य । २ शिव, महादेव । ३ एक रुद्र का नाम । ४ इन्द्र । ५ विष्णु । ६ अग्नि, आग । ७ श्रीकृष्ण । ८ ईश्वर, परमात्मा ।
वृषासण (न)–स्त्री० [सं० वृषासन] शिव, महादेव ।
वृषासुर–पु० [सं० वृषासुर] भस्मासुर दैत्य ।
वृषि, वृषी–पु० [सं० वृषिन्] १ इन्द्र, देवराज । २ मंगलग्रह । ३ वृक्ष, पेड़ । ४ वृषभ राशि ।
वृस्ख–१ देखो 'वृक' । २ देखो 'वृक्ष' । ३ देखो 'वृषभ' ।
वृगुट (टि, टी, टु, टू)–देखो 'भृकुट' ।
वृच्छ, वृछ–देखो 'वृक्ष' ।
वृछिक–देखो 'वृश्चिक' ।
वृज (देस)–पु० [स०] १ मथुरा एवं वृन्दावन के चारों ओर का क्षेत्र । २ समूह, झुण्ड । ३ व्रज भाषा । ४ देखो 'वज्र' । —पत, पति, पती (त्ति, त्ती)–पु० श्रीकृष्ण ।—वासी–पु० इस प्रदेश का निवासी ।
वृजचंद–पु० [सं० व्रजचन्द्र] १ श्रीकृष्ण । २ ईश्वर ।
वृजणो (बो)–क्रि० १ जाना, गमन करना । २ रोकना, मना करना । ३ टालना ।
वृजदेव, वृजनंद–पु० श्रीकृष्ण ।
वृजनाइक, वृजनाथ, वृजनायक–पु० १ श्रीकृष्ण । २ भगवान विष्णु ।
वृजभाखा (भासा)–स्त्री० [सं० व्रजभाषा] व्रज प्रदेश की बोली ।
वृजभूखण (भूसण)–पु० [सं० व्रजभूषण] श्रीकृष्ण, ईश्वर ।
वृजभूप–पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।
वृजमंडल–पु० [सं० व्रजमंडल] व्रज के आस-पास का प्रदेश ।
वृजमोहन–पु० [सं०] श्रीकृष्ण ।
वृजयंद–पु० [सं० व्रजेंद्र] श्रीकृष्ण ।
वृजराज (राय, राव)–पु० [सं० व्रजराज] १ श्रीकृष्ण । २ वसुदेव ।
वृजरेणू–स्त्री० [सं०] व्रज भूमि की धूलि ।
वृजविलास–पु० [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम ।
वृजांगना–स्त्री० व्रज की स्त्री, गोपिका ।
वृजाक, वृजाय, वृजायनि (नी), वृजायि, वृजायी, वृजायिन–स्त्री० १ अस्त्र-शस्त्र । २ देखो 'वृजरंग' । ३ देखो 'वृजराज' ।
वृजिन–पु० [सं० वृजिन] १ कुकर्म, पाप । २ कष्ट, पीड़ा, दुःख ।
वृजेंद्र, वृजेस्वर–पु० [सं० व्रज-इन्द्र] श्रीकृष्ण ।
वृज्ज–देखो 'व्रज' ।—वासी=व्रजवासी' ।
वृज्या–स्त्री० [सं०] रीति, वेदोक्त विधान ।
वृण–पु० १ घाव, जख्म । २ फोड़ा, फुंसी । ३ चेचक का दाग । ४ देखो 'वरण' । ५ देखो 'वरणन' ।—सोथ, सोस–स्त्री० फोड़े के कारण होने वाली सूजन ।
वृतंत (त्ति, त्ती, तु, तू)–देखो 'वृतांत' ।
वृत–पु० [सं०] १ संकल्प, प्रतिज्ञा । २ नियम । ३ उपवास, लंघन । ४ धर्म, कर्त्तव्य । ५ आराधना, भक्ति । ६ अनुष्ठान की विधि । ७ यज्ञ, हवन, होम । ८ देश, राष्ट्र । ९ कूए से मोट खींचने का मोटा रस्सा । १० देखो 'वृत्त' । ११ देखो 'वृतांत' ।
वृतघण–पु० [सं० वृत्रघ्न] इन्द्र का एक नाम ।
वृतणो (बो)–देखो 'वरतणो' (बो) ।
वृतधार (धारी)–वि० [सं० व्रतधारिन्] व्रत रखने वाला, संकल्प करने वाला ।
वृतभग, वृतभंगी–पु० [सं० व्रतभंग] १ व्रत भंग होने या संकल्प टूटने की दशा या भाव । २ व्रत भंग करने वाला व्यक्ति । ३ काव्य रचना का एक दोष ।
वृतमांण (न)–देखो 'वरतमांण' ।
वृतवैरी–पु० [सं० वृत्र-वैरी] इन्द्र, सुरपति ।
वृतहा–देखो 'वृत्रहा' ।
वृतांत, वृतांति–पु० [सं० वृत्तान्त] १ किसी घटना का विवरण, ब्योरा । २ समाचार, खबर । ३ विषय, प्रसंग । ४ दशा, हालत ।
वृतासुर–देखो 'वृत्रासुर' ।
वृति–स्त्री० [सं० वृत्ति] १ चक्कर, घुमाव । २ परिधि, व्यास । ३ वृत्त, चक्र का घेरा । ४ चित्त की दशाएं, क्रियायें । ५ इच्छा, चाह, अभिलाषा । ६ क्रिया, कर्म व्यापार, कर्म विधान । ७ प्रकृति, स्वभाव, आदत । ८ वर्तमान होने वाला अस्तित्व । ९ दशा परिस्थिति । १० याचना, भिक्षा वृत्ति । ११ गति । १२ तौर, तरीका, ढंग । १३ आचरण, चरित्र । १४ धंधा, पेशा । १५ जीविका, रोजी । १६ सेवा कार्य । १७ मजदूरी, पारिश्रमिक । १८ नौयत । १९ मेहत्तर, नाई आदि का कुछ निश्चित लोगों के घरों पर किया जाने वाला कार्य । २० उक्त कार्य के उपलक्ष में सहायतार्थ दिया जाने वाला धन । २१ व्याख्या । २२ शब्द शक्ति । २३ छात्रवृत्ति आदि ।–वि० गोलाकार, गोल ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्रतिन–पु० [सं०] एक व्यास ।

व्रती, व्रतीक–पु० [सं० व्रतिन्] १ व्रत धारण करने वाला व्यक्ति । २ देखो 'व्रति' ।

व्रतु–देखो 'व्रत' ।

व्रतेसर, व्रतेसरी, व्रतेसुर (री), व्रतेस्वर, व्रतेस्वरी–पु० वृत्ति के लिये घरों पर कार्य करने वाला व्यक्ति या वर्ग, याचक ।

व्रत्त–पु० [सं० वृत्त] १ जीविका का साधन । २ चरित्र, आचरण । ३ गोला, गोल रेखा । ४ मंडल । ५ मंडलाकार क्षेत्र । ६ एक प्रकार का छन्द ।–वि० १ जीवित, जिन्दा । २ घटित हुवा, हुआ । ३ मृत, मरा हुआ । ४ बीता या गुजरा हुआ । ५ दृढ़, मजबूत । ६ देखो 'व्रत' । ७ देखो 'व्रतांत' ।

व्रतांत–देखो 'व्रतांत' ।

व्रत्तिकार–वि० [सं० वृत्तिकार] १ वृत्ति करने वाला । २ टीका करने वाला, टीकाकार ।

व्रत्ती–देखो 'व्रति' ।

व्रत्यानुप्रास–पु० एक प्रकार का अनुप्रास ।

व्रत्र–पु० [सं० वृत्रः] १ अंधेरा, अंधकार । २ पर्वत, पहाड़ । ३ बादल । ४ शत्रु, दुश्मन । ५ देखो 'व्रत्रासुर' ।

व्रत्रघ्नि (री) व्रत्रघन, व्रत्रघ्न, व्रत्रहा–पु० इन्द्र का एक नाम ।

व्रत्रारि (री)–पु० [सं० वृत्रारि] इन्द्र ।

व्रत्रासुर–पु० [सं० वृत्रासुर] एक राक्षस जिसे इन्द्र ने दधीचि की हड्डियों से बने वज्र से मारा था ।

व्रथ, व्रथा–वि० [सं० वृथा] १ व्यर्थ, फिजूल, फालतू, बेकार । २ निरर्थक । ३ असत्य, झूठ ।

व्रध(द्ध)–देखो 'विरुद' ।—धारी='विरुदधारी' ।—पूर='विरुदधारी' ।—राज='विरुदधारी' ।

व्रद्ध–पु० [सं० वृद्ध] १ बुढ़ापा, चौथापन । २ बूढ़ा प्राणी । –वि० (स्त्री० व्रद्धा) १ वृद्ध, बूढ़ा । २ पूर्ण रूपेण वृद्धि प्राप्त । ३ बुद्धिमान, पंडित । ४ बड़ी उम्र का, बुजुर्ग, दाना ।

व्रद्धकेसव–पु० [सं० वृद्धकेसव] सूर्य की एक मूर्ति ।

व्रद्धता–स्त्री० [स०] १ बुढ़ापा, वृद्धावस्था । २ बुजुर्गियत दानापन । ३ दुःख, कष्ट

व्रद्धवयस (वेस)–स्त्री० वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

व्रद्धस्रवा, व्रद्धस्रवा–पु० [सं० वृद्धश्रवस्] देवराज इन्द्र

व्रद्धाचल–पु० दक्षिण स्थित एक तीर्थस्थान ।

व्रद्धापण (न)–पु० वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

व्रद्धास्रम–पु० [सं० वृद्धाश्रम] वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

व्रद्धि–स्त्री० [सं० वृद्धि] १ बढ़ने की स्थिति, बतढ़ोरी । २ वृद्ध होने की अवस्था, बुढ़ापा । ३ व्याज, सूद । ४ लाभ । ५ प्रगति, विकास । ६ सूतक । ७ वृद्धियोग ।

व्रद्धिका–स्त्री० [सं० वृद्धिका] मानव मांस भक्षी स्त्रियों का एक वर्ग ।

व्रद्धितिथ (तिथि, तिथि)–स्त्री० [सं० वृद्धितिथि] वह तिथि जो दो दिन के सूर्योदय तक चालू रहे ।

व्रध–१ देखो 'व्रद्ध' । २ देखो 'वध' ।

व्रधपण (णी)–देखो 'व्रद्धता' ।

व्रधांराज, व्रधांराय (राय)–पु० [सं० वृद्धराज] ब्रह्मा ।

व्रधा–देखो 'व्रद्ध' ।

व्रधि, व्रधी–१ देखो 'वध' । २ देखो 'वृद्धि' ।

व्रधु–वि० [सं० वृद्ध] १ दीर्घ, वृहद, विशाल । २ देखो 'व्रद्ध' ।

व्रध्य–पु० १ एक सूर्य वंशी राजा । २ देखो 'व्रद्ध' ।

व्रध्यपण (पणो)–देखो 'व्रद्धता' ।

व्रन (न्न)–१ देखो 'व्रण' । २ देखो 'वरण' ।

व्रनअढ़ार–पु०१ अति उदार या दातार व्यक्ति । २ प्रजा समूह ।

व्रनणी (णी)–देखो 'वरणाणी (णी)

व्रप–देखो 'विप्र' ।

व्रमंड–देखो 'ब्रह्मांड' ।

व्रम–१ देखो 'ब्रह्म' । २ देखो 'ब्रह्मा' ।

व्रमसूत (सूत्र)–देखो 'ब्रह्मसूत' ।

व्रमहत्या–देखो 'ब्रह्महत्या' ।

व्रमांणी–देखो 'ब्रह्माणी' ।

व्रम्म–१ देखो 'ब्रह्म' । २ देखो 'ब्रह्मा' ।

व्रम्मधिया, व्रम्मधी, व्रम्मधीया–देखो 'ब्रह्मधीया' ।

व्रम्मा–देखो 'ब्रह्मा' ।

व्रम्ह–१ देखो 'ब्रह्म' । २ देखो 'ब्रह्मा' ।

व्ररख, व्ररस–१ देखो 'वरस' । २ देखो 'व्रक्ष' ।

व्रव–देखो 'व्रव' ।

व्रवग–पु० दान, पुण्य ।

व्रवणलोकेस (सु सू)–पु० ईश्वर, परमात्मा ।

व्रवणो (वो)–क्रि० १ दान देना । २ देना । ३ वितरण करना, बांटना । ४ त्यागना, छोड़ना । ५ अर्पण करना । ६ बोलना कहना ।

व्रस–१ देखो 'व्रख' । २ देखो 'व्रखम' । ३ देखो 'विस' । ४ देखो 'व्रक्ष' ।

व्रसचक (चकर, चक्ष)–पु० [सं० वृश्चिक] १ वृश्चिक राशि । २ देखो 'व्रखचक' ।

व्रसदरभ–देखो 'व्रखदरभ' ।

व्रसभांण (ण, न, नु)–पु० [सं० वृषभानु] श्रीकृष्ण की प्रेमिका राधा के पिता का नाम ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्चक–देखो 'अस्चिक'।

अस्चकसंकरांत (ति, ती) अस्चकसंकरायंत (संक्रांत, ति, ती) अस्चकसंक्रायत (संक्रांति)–देखो 'अस्चिकसंक्रांति'

अस्चिक–पु० [सं० वृश्चिक] (स्त्री० अस्चिकणी, नी) १ बिच्छू। २ बारह राशियों में से आठवीं राशि। ३ एक लग्न।

अस्चिकपत्रिका (प्रिया)–पु० पाई नामक शाक।

अस्चिकसंकरांत (ति, ती), अस्चिकसकरायंत (संक्रांत, ति, ती) अस्चिकसंक्रायत–स्त्री० [सं० वृश्चिकसंक्रांति] वृश्चिक राशि में सूर्य का प्रवेश, इस दिन का पर्व।

अस्टर–देखो 'विस्टर'।

अस्टरस्व, अस्टरस्वा (स्व, स्वा)–पु० [सं० विस्टरस्वा] १ ईश्वर, परमात्मा। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण।

अस्टि, अस्टी–स्त्री० [सं० वृष्टि] १ वर्षा, मेह। २ एक साथ कई वस्तुएं ऊपर से गिरना या गिराना क्रिया। ३ बहुतायत में देना या लगातार कुछ करना। झड़ी।

अस्णि, अस्णी–पु० [सं० वृष्णि] १ बादल, मेघ। २ श्रीकृष्ण। ३ इन्द्र। ४ एक यादववंश। –धरम, धर्म–पु०–श्रीकृष्ण।

अहमंड–देखो 'ब्रह्मांड'।

अहम–१ देखो 'ब्रह्म'। २ देखो 'ब्रह्मा'।

अहमण, अहमांण, अहमांणय–१ देखो 'ब्राह्मण'। २ देखो 'ब्रह्मा'।

अहमांणी–देखो 'ब्रह्मांणी'।

अह, अहत, अहती–वि० [सं० वृहत्] १ आकार में बड़ा, विशाल। २ विस्तार से लंबा-चौड़ा, विस्तृत। ३ अपार, बहुत। –पु० १ वेद। २ ब्रह्म। ३ एक वर्ण वृत्त।

अहाकलप (कल्प)–पु० एक सूत्र विशेष।

अहदग–पु० [सं० वृहत्-अंग] हाथी, गज।

अहदबळ–पु० एक सूर्यवंशी राजा।

अहदभवन (भांण, भांनु भांन, भांनु)–पु० [सं० वृहद भानु] १ आग, अग्नि। २ चित्रक। ३ सूरज, सूर्य। ४ सत्यभामा के पुत्रों में से एक।

अहदभोज–पु० एक सूर्यवंशी राजा।

अहबळ (ळ)–वि० [सं० वृहदल] अत्यधिक बड़ा, विशाल।

अहबस्व–पु० एक सूर्यवंशी राजा।

अहनट, अहन्नट (ड) अहन्नळा–पु० [सं० वृहन्नट, वृहन्नला] १ अर्जुन। २ अज्ञातवास में अर्जुन का वेश।

अहमंड; अहमंडक–देखो 'ब्रह्मांड'।

अहमंडी, अहमांडी–१ देखो 'ब्रह्मांडी'। २ देखो 'ब्रह्मांडी'।

अहम–पु० १ एक प्रकार का मात्रिक छंद। २ देखो 'ब्रह्म'।

अहमण्य–देखो 'ब्रह्मण्य'।

अहमग्यांन–देखो 'ब्रह्मज्ञान'।

अहमग्यांनी–देखो 'ब्रह्मज्ञानी'।

अहमघातिक, अहमघातिकी (स्त्री)–देखो 'ब्रह्मघातक'।

अहमचरज, अहमचरज्ज, अहमचरध–देखो 'ब्रह्मचर्य'।

अहमपुरांण–देखो 'ब्रह्मपुराण'।

अहमळा–वि० १ विमल, पवित्र। २ ब्राह्मण।

अहमवाचा–देखो 'ब्रह्मवाचा'।

अहमांड–देखो 'ब्रह्मांड'।

अहमांण–१ देखो 'ब्रह्मा' २ देखो 'ब्रह्मांणी'। ३ देखो 'ब्राह्मण'।

अहमांणी–१ देखो 'ब्रह्मांणी'। २ देखो 'ब्राह्मणी'।

अहमांन–१ देखो 'ब्रह्म'। २ देखो 'ब्रह्मा'।

अहमा (मि)–देखो 'ब्रह्मा'।

अहमिण–देखो 'ब्राह्मण'।

अहम्मंड–देखो ब्रह्मांड'।

अहम्मा–देखो 'ब्रह्मा'।

अहम्मह, अहम्मह–स्त्री० वीरों की हुंकार।

अहसपत (ति, ती), अहस्पत (ति, ती)–पु० [सं० वृहस्पति] १ प्रसिद्ध वैदिक देवता जो देवों के गुरु माने गये हैं। २ विद्वान या पंडित व्यक्ति। ३ सप्ताह का एक वार। ४ सौर जगत का पांचवां ग्रह। ५ जैनियों का एक ग्रह। ६ शास्त्रों के रचयिता ऋषि। ७ बुद्धि या यज्ञ का अधिष्ठाता देव। ८ चौथे द्वापर के एक वेदव्यास का नाम। —वार–पु० वृहस्पतिवार।

अहांमण–देखो 'ब्राह्मण'।

अहास (सि, सी)–पु० अश्व, घोड़ा।

अह्मांड–देखो 'ब्रह्मांड'।

अह्म–१ देखो 'ब्रह्म'। २ देखो 'ब्रह्मा'। ३ देखो 'ब्रह्मांड'। ४ देखो 'ब्राह्मण'।

अह्मगिनांन (ग्यांन)–देखो 'ब्रह्मज्ञान'।

अह्मग्यांनी–देखो 'ब्रह्मज्ञानी'।

अह्मचरज (चरज्ज, चरय्य, चर्य)–देखो 'ब्रह्मचर्य'।

अह्मदेव–१ देखो 'ब्रह्मा'। २ देखो 'ब्रह्मदेव'।

अह्मरूप–देखो 'ब्रह्मरूप'।

अह्मसू–देखो 'ब्रह्मसू'।

अह्मा–देखो 'ब्रह्मा'।

अह्मावं–१ देखो 'ब्रह्मावं'। २ देखो 'ब्रह्मा'।

अह्मावरत–देखो 'ब्रह्मावर्त'।

आंमण–देखो 'ब्राह्मण'।

आंळ–देखो 'वराळ'।

आंस, आंसि, आंसु–१ देखो 'बांस'। २ देखो 'भरोसो'।

आंहमण–देखो 'ब्राह्मण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्राचड़–स्त्री० एक भाषा जो अपभ्रंश का भेद मानी गई है।
ब्राजणी (बी)–देखो 'विराजणी' (बी)।
ब्रात–स्त्री० [सं० व्रातः] समूह, झुण्ड।
ब्रात्य–वि० [सं० व्रात्य] १ व्रत का, व्रत संबंधी। २ नीच, दुष्ट। –पु० १ नीच या कमीना व्यक्ति। २ क्षत्रिय स्त्री एवं शूद्र पुरुष की संतान। ३ यज्ञोपवीत संस्कार से पतित ब्राह्मण। ४ म्लेच्छ।
ब्राळ–स्त्री० १ अग्नि शिखा, आग की लपट। २ वाष्प, भाप।
ब्राह्मं–देखो 'ब्रह्म'।
ब्राह्मण, ब्राह्मन, ब्राह्मन्न ब्राह्मण–देखो 'ब्राह्मण'।
ब्राह्मणी–देखो 'ब्राह्मणी'।
ब्रिद–देखो 'व्रत'।
ब्रिकोदर–देखो 'वृकोदर'।
ब्रिख, ब्रिख–पु० १ जल, वारि। २ देखो 'वृक'। ३ देखो 'वृक्ष'। ४ देखो 'वृष'।
ब्रिखभ–देखो 'वृषभ'।
ब्रिखवात–देखो 'वृषवात'।
ब्रिखसेण (न)–देखो 'वृषसेण'।
ब्रिज, ब्रिज्ज–देखो 'व्रज'।
ब्रिति, ब्रिती, ब्रित्ति, ब्रित्ती–देखो 'वृति'।
ब्रिथा–देखो 'वृथा'।
ब्रिध, ब्रिधि, ब्रिधी, ब्रिद्ध–१ देखो 'विरुद'। २ देखो 'वृद्ध'।
ब्रिद्धी–स्त्री० अष्टवर्ग की ओषधियों में गिनी जाने वाली एक लता।
ब्रिध–देखो 'वृद्ध'।
ब्रिधव (धण, धणी)–पु० वृद्धावस्था, बुढ़ापा।
ब्रिधि (धी)–देखो 'वृद्धि'।
ब्रिप, ब्रिप्प ब्रिप्र–देखो 'विप्र'।
ब्रिप्पि, ब्रिप्पी, ब्रिप्रि, ब्रिप्री–देखो 'विप्री'।
ब्रिसपत (पति पती)–देखो 'बृहस्पति'।
ब्रिस्टि, ब्रिस्टी–देखो 'वृष्टी'।
ब्रिह्–देखो 'बिरह्'।
ब्रीख–देखो 'वीख'।
ब्रीखणी (बी)–१ देखो 'वीखणी' (बी)। २ देखो 'वेखणी' (बी)।
ब्रीड़ ब्रीड़ा–स्त्री० [सं०] शर्म, लज्जा।
ब्रीड़ित–वि० शर्मिन्दा, लज्जित, सकुचित।
ब्रीवणी(बी)–देखो 'ओवणी' (बी)।
ब्रीव, ब्रीध–देखो 'विरोध'।
ब्रोहाळ–देखो 'भ्रू'।
ब्हां–देखो 'वां'।
ब्हा–१ देखो 'वा'। २ देखो 'बाहु'।
ब्हार–१ देखो 'बहार'। २ देखो 'बाहर'।
ब्हालो–देखो 'वालो'।
ब्हेणी (बी)–देखो 'होणी' (बी)।

(स)

स–देवनागरी वर्णमाला का बत्तीसवां व्यंजन।
सं–पु० [सं० शं] १ आनन्द, हर्ष, सुख। २ कल्याण, मंगल। ३ वैराग्य। ४ शांति। ५ शिव, महादेव। ६ विष्णु। ७ आकाश। ८ इन्द्रिय। ९ कारण। १० पक्षी। ११ मधु। १२ रक्षक। १३ रोग। १४ शनिश्चर। १५ शरण। १६ शरीर। १७ सर्प, सांप। १८ पवन हवा। १९ प्रकाश। –वि० शुभ, सर्वोत्तम।–अव्य० [सं० सम] समता, निरंतरता सूचक अव्यय ध्वनि।
सई–१ देखो 'सखी'। २ देखो 'स्वामी'। ३ देखो 'साई'।
सक–देखो 'संका'।
संकड़ाई, संकड़ेलो–देखो 'सांकड़ीलो'।
संकड़ै (ड़ै)–देखो 'सांकड़ै'।
संकड़ो–देखो 'सांकड़ो'।
संकज–स्त्री० केसर।
संकट–पु० [सं०] १ दुःख, मुसीबत। २ पीड़ा, कष्ट, तकलीफ। ३ बाधा, अड़चन, रोड़ा। ४ आफत, विपत्ति। ५ रोग, बीमारी। ६ एक भैरव। ७ झंझट।—मोर–वि० दुःखी, पीड़ित, बीमार।—हर–वि० दुःखों का नाश करने वाला। –पु० ईश्वर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संकटचौथ–स्त्री० [सं० संकट-चतुर्थी] प्रति माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि।

संकटणी (बो)–क्रि० दुःख या विपत्ति आना, आफत में फंसना।

संकटा–स्त्री० [सं०] १ एक देवी विशेष। २ एक योगिनी विशेष।

संकणी (बो)–क्रि० [सं० शंकनम्] १ शंका या संदेह करना। २ डरना, भयभीत होना। घबराना। ३ लज्जित या शर्मिन्दा होना।

संकद–देखो 'स्कंद'।—जणणी='स्कंदजननी'।

संकपालिका–स्त्री० एक प्रकार का आभूषण विशेष।

संकल्प–देखो 'संकल्प'।

संकमान–पु० [सं० शंकमान] नागवंशीय एक राजा।

संकर–पु० [सं० शंकर] १ शिव, महादेव। २ शंकराचार्य। ३ सूर्य, रवि। ४ एक छंद विशेष। ५ एक राग विशेष। ६ भीम सेनी कपूर। [सं०संकर] ७ भिन्न-भिन्न वर्ण के माता-पिता से उत्पन्न संतान, वर्ण संकर। ८ विभिन्न वस्तुओं का मिश्रण। ९ एक ही आश्रय से अनेक अर्थ-प्राय देने वाली ध्वनि। १० साहित्य में दो अलंकारों का मिश्रण। –वि० १ कल्याण एवं मंगलकारी। २ आनन्ददायक। —आस–पु० धनुष। —धरण, धरणी–स्त्री० शिव की पत्नी, पार्वती।—प्रिय–पु० आक, भांग, धतूरा।—सेल–पु० कैलाश पर्वत।

संकरखण–पु० [सं० संकर्षण] १ बलराम। २ श्रीकृष्ण। ३ अपनी ओर खींचना क्रिया। ४ हल की जुताई। ५ संघर्षण। ६ ग्यारह रुद्रों में से एक। ७ एक वैष्णव सम्प्रदाय।

संकरजटा–स्त्री० [सं० शंकरजटा] १ रुद्रजटा। २ साबुदाना, साबूदाना।

संकरण–पु० [सं०] मिश्रण।–वि० शिव का, शिव संबंधी।

सकरणी–स्त्री० १ पार्वती, दुर्गा, शिवा। २ हरीतकी, हरड़े।

संकरता–स्त्री० १ मिश्रित होने की अवस्था या स्थिति। २ दोगलापन, वर्णसंकरता।

संकरवाणी–स्त्री० [सं० शंकरवाणी] १ सत्य बात, सत्य वचन। २ ब्रह्म वाक्य।

संकरस्वामी–देखो 'संकराचार्य'।

सकरांत संकरांति, सकरायत (ति)–स्त्री० [सं० संक्रांति] १ सूर्यादि ग्रहों का एक राशि से दूसरी में जाने का समय या क्रिया। २ मकर संक्रांति का पर्व। ३ संक्रमण।

संकरा–स्त्री० [स० शंकरा] १ पार्वती, भवानी। २ मजीठ। ३ शमी वृक्ष। ४ शंकर राग।–वि० मंगलदायिनी।

संकराचारज (चारय), संकराचारिज, संकराचारी–पु० [सं० शंकराचार्य] एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जो अद्वैत वाद के प्रवर्तक थे।

संकरालय–पु० [सं० शंकरालय] कैलाश पर्वत।

संकरवास–पु० [सं० शंकर-आवास] १ कैलाश पर्वत। २ श्मशान भूमि।

संकरियो–पु० १ एक प्रकार का हाथी। २ देखो 'संकर'।

संकरी–स्त्री० [सं० शंकरी] १ पार्वती, गिरिजा। २ दुर्गा, भवानी। ३ एक महाविद्या। ४ मजीठ। ५ शमी वृक्ष।

संकळ–देखो 'सांकळ'।

संकळजथा–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक विधि।

संकलणी (बो)–क्रि० १ एकत्र करना, संग्रह करना। २ एकत्री करण करना। ३ चुन कर एकत्र करना। ४ शस्त्र लज्जित होना।

संकळप–देखो 'संकल्प'।

संकळपणी (बो), संकळप्पणी (बो)–क्रि० [सं० संकल्पनं] १ किसी कार्य का दृढ़ निश्चय करना, पक्का विचार करना। २ दान करना। ३ इरादा करना। ४ समर्पण करना।

संकळि, संकळिक, संकलित–देखो 'सांकळ'।

संकळी–देखो 'सांकळी'।

संकल्प–पु० [सं० संकल्प] १ दृढ़ निश्चय या विचार। २ इच्छा, अभिलाषा। ३ इरादा, विचार। ४ दान। ५ दान देते समय का मंत्र। ६ मन, चित्त। ७ समर्पण। ८ इंद्रियों के साथ मन की क्रीड़ा।

संकल्पणी (बो)–देखो 'संकळपणी' (बो)।

संकाण, संका, संकां–स्त्री० [सं० शंका] १ संदेह, डर, भ्रम, आशंका, वहम। २ अविश्वास। ३ विचार, परवाह। ४ पशोपेश, हिचकिचाहट। ५ उलझन, भ्रम। ६ हाजत, अपेक्षा। ७ आशा, विश्वास। ८ लज्जा, शर्म।

संकाणी (बो), संकावणी (बो)–क्रि० १ शंकित करना, कराना। २ भयभीत करना, कराना। ३ परवाह करना, कराना। ४ लज्जित करना, कराना।

संकाळ, संकाळू–वि० १ शंकित रहने वाला, शंका करने वाला। २ भयभीत करने वाला। ३ लज्जित या शर्मिन्दा होने वाला।

संकित, संकीलो–वि० [सं० शंकित] (स्त्री० संकीली) १ भयभीत, खौफजदा। २ जिसके मन में शंका हो। ३ संदेह करने वाला।

संकु–पु० [सं० शंकु] १ कोई नुकीली वस्तु। २ कील, मेख। ३ भाला, बरछा। ४ दस लाख कोटि के बराबर की संख्या। ५ एक मछली। ६ कामदेव। ७ शिव, महादेव। ८ राक्षस, दैत्य। ९ हंस। १० बगुला। ११ लिंग।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२ वस्तु की तीखी नोक। १३ विष, जहर। १४ बारह अणुल के बराबर का माप। १५ घड़ी की सुई। १६ पाप, कलुष।

संकुकरण–पु० [सं० शंकु+कर्ण] १ शंकु के समान लंबे कान वाला गधा। २ शिव का एक पार्षद। ३ स्वामिकार्त्तिकेय।

संकुड़णो (बो)–देखो 'सिकुड़णो' (बो)।

संकुड़ित–वि० [सं० संकुचित] १ सिकुड़ा हुआ, संकुचित। २ लज्जित, शर्मिन्दा। ३ तंग, सकड़ा।

संकुचण–स्त्री० [सं० संकुचन] संकुचित होने की क्रिया या भाव। संकोच।

संकुचणि–स्त्री० संकोच, लज्जा।–वि० संकोच करने वाली, लज्जावान।

संकुचणो (बो), संकुचाणो (बो)–क्रि० १ शर्मिन्दा या लज्जित होना। २ सिमटना, छोटा होना, सिकुड़ना। ३ सलवटें पड़ना, झुरिया पड़ना। ४ बन्द होना।

संकुचित–वि० १ सिकुड़ा हुआ, सिमटा हुआ। २ लज्जित, शर्मिन्दा। ३ सलवटें या झुरियां पड़ा हुआ। ४ बन्द।–स्त्री० कली।

संकुड़णो (बो)–देखो 'सिकुड़णो' (बो))।

संकुळ–वि० [सं० संकुल] १ भरा हुआ, परिपूर्ण। २ घना। ३ पूर्ण, पूरा। ४ अस्त-व्यस्त।–पु० १ झुंड, समूह। २ भीड़। ३ जनता। ४ तुमुल युद्ध। ५ वाद-विवाद।

संकुळणो (बो)–क्रि० [सं० संकुलन] १ पूर्ण भरना। २ घना होना। ३ अस्त-व्यस्त होना। ४ तुमुल युद्ध होना। ५ वाद-विवाद होना।

संकुळि, संकुळित–वि० [सं० संकुलित] १ परिपूर्ण, भरा हुआ। २ एकत्र, इकट्ठा। ३ अस्त-व्यस्त।

संकुळी–स्त्री० [सं० संकुली] रोढ़ की हड्डी।–वि० संकुलित।

संकुळो, संकुनो–पु० [सं० शकुल] १ सुपारी काटने का सरौता। २ नश्तर या छुरी विशेष। ३ सुपारी का टुकड़ा।

संकेत–पु० [सं० संकेतः] १ घर, भवन। २ नाम। ३ इशारा ४ चिह्न, निशान। ५ निशानी या पहचान के तौर पर दी जाने वाली वस्तु। ६ भाव प्रगट करने की चेष्टा। ७ प्रासंगिक बात। ८ शृंगारिक चेष्टा। ९ प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का सांकेतिक स्थान।

संकोड़णो (बो)–क्रि० १ संकुचित या लज्जित होना। २ भय-भीत होना, डरना। ३ सिकुड़ना, बंद होना। ४ सलवटें पड़ना। ५ दबाना, मजबूर करना।

संकोच–पु० [सं०] १ लज्जा, शर्म। २ सकुचाहट। ३ झिझक, असमंजस। ४ सिकुड़न, सलवट। ५ लिहाज, प्रभाव। ६ एक प्रकार की मछली। ७ केसर। ८ एक प्रकार का अलंकार।

संकोचणो (बो)–क्रि० १ संकुचित होना, भयातुर होना। २ असमंजस या झिझक होना। ३ कम होना, घटना। ४ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना। ५ सिकुड़ना।

संकोचित–वि० [सं० संकुचित] १ सिकुड़ा हुआ, तंग। २ लज्जित, शर्मिन्दा। ३ अनुदार, रूखा। ४ जिसमें संकोच हो।

संकोची–देखो 'सेळी'।

संकोज–देखो 'संकोच'।

संकोड़णो (बो)–देखो 'संकोड़णो' (बो)।

संको, संकौ–पु० [सं० शंका] १ सन्देह, शक, भ्रम। २ डर, भय, आतंक। ३ लज्जा, शर्म। ४ दुराव, छिपाव। ५ खयाल, विचार। ६ चिंता, परवाह। ७ लिहाज। ८ संकोच, झिझक।

संक्रंदन–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ इन्द्र।

संक्रति (ती)–पु० [सं० संकृती] १ यम। २ रंतिदेव के पिता एक प्राचीन राजा।

संक्रम–पु० [सं० संक्रम] १ दुःख, कष्ट या कठिनाई बढ़ने की स्थिति। २ पुल, सेतु। ३ किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश। ४ चलने या गमन करने की क्रिया। ५ स्थिति का बदलाव। ६ दुर्गम या संकरा रास्ता। ७ प्राप्ति का साधन। ८ स्कन्द का एक अनुचर।

संक्रमण–पु० [सं०] १ चलने की क्रिया, गमन। २ अतिक्रमण। ३ सूर्य का किसी एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश। ४ सूर्य का उत्तरायण या दक्षिणायण में होने का दिन। ५ घुमाव, चक्कर। ६ परिवर्तन।–काळ–पु० बदलाव का समय। परिवर्तन काल।

संक्रमणो (बो)–क्रि० १ गमन करना, जाना, आगे की ओर बढ़ना। २ अतिक्रमण करना। ३ घूमना, फिरना। ४ रोग का फैलना। ५ प्रवेश करना, पहुंचना। ६ एक स्थिति से दूसरी स्थिति में होना। ७ बदलाव आना। ८ परिवर्तन होना।

संक्रांत (ति, ती)–देखो 'संकरांत'।

संक्रांमण–देखो 'संक्रमण'।

संक्रांमि, संक्रांमी–पु० [सं० संक्रामिन्] संक्रमण कराने वाला।

संक्रायत–देखो 'संकरात'।

संक्षिप्त–वि० [सं०] १ सूक्ष्म रूप में। २ लघु। ३ घटा कर या काट कर छोटा किया हुआ।

संक्षिप्ता–स्त्री० [सं०] बुध ग्रह की एक गति।

संक्षेप–पु० [सं०] १ थोड़े में कही हुई बात, सारबात।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ सकोचन । ३ समास । ४ सार-संग्रह ।

संख–पु० [सं० शंख] १ मृत घोंघे का मोटा कलेवर जो देव पूजन में जल रखने या फूंक कर बजाने के काम आता है । २ एक सौ खरब की संख्या । ३ शंख की आकृति का कोई सामुद्रिक चिह्न । ४ कनपटी की हड्डी । ५ एक प्रकार का शिर दर्द । ६ हाथी का गंडस्थल । ७ पुराण प्रसिद्ध एक राक्षस । ८ कुबेर की निधि के देवता । ९ कुबेर की नवनिधियों में से एक । १० नर सूअर के मुंह का एक भाग । ११ एक प्रकार का शस्त्र । १२ विष्णु का एक शस्त्र । १३ छप्पय छन्द का भेद । १४ 'ज' गण का द्वितीय भेद । १५ एक वर्ण वृत्त विशेष । १६ कपाल । १७ राजा विराट का पुत्र । १८ चरण-चिह्न । १९ ललाट । २० वायु के वेग से उत्पन्न ध्वनि । २१ जैनियों का एक ग्रह ।–वि० १ मूर्ख । २ पाखंडी । ३ रूखा-सूखा । ४ कठोर । ५ उदासीन । ६ श्वेत, सफेद । ७ देखो 'संख्या' ।—धर, धार, धारी–पु० शंख रखने वाला, विष्णु भगवान् । श्रीकृष्ण ।—नाद–पु० शंख बजने की ध्वनि ।—पर्वत–पु० मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत ।—पाणि, पाणी–पु० जिसके हाथ में शंख हो, विष्णु, श्रीकृष्ण, योद्धा, पुजारी ।

संखकूट–पु० [सं० शंखकूट] एक पर्वत ।

संखचूड़–पु० [सं० शंखचूड] १ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक राक्षस । २ एक यक्ष । ३ एक प्रकार का भयंकर विषैला सर्प । शंखचूर । ४ राम की सेना का एक वानर । ५ एक प्राचीन तीर्थ । ६ प्रजापति दक्ष का वंशज एक नाग ।

संखणी–स्त्री० [सं० शंखिनी] १ एक वनौषधि विशेष । २ चार प्रकार की स्त्रियों में से एक । ३ गुदा द्वार की एक नस । ४ एक देवी । ५ एक अप्सरा । ६ मुंह की एक नाड़ी । ७ सीप । ८ कलहप्रिय नारी । ९ बौद्ध लोगों द्वारा पूज्य एक शक्ति । १० घोड़े की ललाट पर होने वाली भंवरी विशेष । ११ गाथा छंद का एक भेद ।

संखतीरथ–पु० [सं० शंखतीर्थ] सरस्वती नदी के निकट स्थित एक तीर्थ ।

संखद्राव–पु० [सं० शंखद्राव] अति तीव्र एक प्रकार का अर्क ।

संखनारी–स्त्री० [सं० शंखनारी] १ सोमराजी नामक वनस्पती । २ एक छंद विशेष ,

संखनी–देखो 'संखणी' ।

संखपाखाण (पासाण)–पु० [सं० शंख पाषाण] संखिया, सोमल ।

संखप्रक्षालन–पु० योग की एक क्रिया विशेष ।

संखभृत–पु० [सं० शंखभृत] विष्णु ।

संखवात–पु० [सं० शंखवात] १ कनपटी संबंधी एक रोग । २ शिर की पीड़ा ।

संखसबदी (सद्दी)–पु० गधा, गर्दभ ।

संखा–देखो 'संख्या' ।

संखाई–स्त्री० १ धूर्तता । २ कपट । ३ आडंबर ।

संखात–पु० [सं० संख्य] युद्ध ।

संखाळ–पु० [सं० शंख-आलुच] १ शंखाकृति के दांत वाला बड़ा सूअर । २ विष्णु ।

संखावळी (संखाहुळी हूळी होळी)–स्त्री० १ ऊसर भूमि में छितर कर होने वाली एक वनस्पती, शंखपुष्पी । २ सफेद कोयल ।

संखासुर–पु० शंख नामक राक्षस ।

संखि–देखो 'संखात' ।

संखिणी (नी)–देखो 'संखणी' ।

संखिनीडंकिणी–स्त्री० [सं० शंखिनी डंकिनी] एक प्रकार का उन्माद रोग ।

संखियो–पु० [सं० शुंक] १ श्वेत पत्थर की तरह का एक उपधातु जो अत्यन्त विषैला होता है । सोमल । २ इस धातु की भस्म, मल्ल भस्म । ३ एक प्रकार का छोटा घोंघा । ४ देखो 'संख' ।

संखी–पु० [सं० शंखिन्] १ विष्णु । २ समुद्र । ३ शंख ।–स्त्री० ४ एक लता विशेष ।

संखु–देखो 'संख' ।

संखेप (ख)–देखो 'संक्षेप' ।

संखेवि–क्रि० वि० [सं० संक्षेप] संक्षेप में, संक्षेप से ।

संखेसर, संखेसरउ (स्वर)–पु० [सं० शंखेश्वर] १ पार्श्वनाथ का एक नाम । २ जैनियों के एक तीर्थ स्थान का नाम ।

संखोदाळ–पु० दूध, तिल, जौ आदि मिला जल ताबे के पात्र से शंख में लेकर की जाने वाली पितृ तर्पण विधि ।

संखोदक–पु० [सं० शंख-उदक] विष्णु पूजन में शंख में रखा जाने वाला जल ।

संखोद्धार (धार)–पु० १ नाथों द्वारा मृतक के मोक्ष के लिये किया जाने वाला योगमाया का पूजन । २ द्वारिका के पास का तीर्थ । ३ श्रीकृष्ण । ४ संन्यासी । ५ विष्णु का पुजारी ।

संखोलियो, संखौ–देखो 'संख' ।

संख्या–स्त्री० [सं०] १ गणना, गिनती, तादाद । २ उपाय, युक्ति । ३ कारण, निमित्त । ४ अंक, हिंदसा । ५ समझ बुद्धि । ६ विचार, खयाल । ७ ढंग, तौर-तरीका ।

संख्यात–वि० [सं०] १ जिसकी गणना या गिनती की जाय । २ गिना हुआ, गणित ।–पु० संख्या, अंक ।

संख्याता–स्त्री० [सं०] १ पहेली विशेष । २ देखो 'संख्यात' ।

संख्याति–वि० १ मूर्तिमान, साकार । २ असंख्य, अपार । –पु० मुलाकात, भेंट ।–क्रि० वि० सामने, सम्मुख ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख्यालिपि–स्त्री० शब्दों के स्थान पर अंकों की भाषा ।

संग–पु० [सं०] १ संगम, मिलन, मेल । २ स्पर्श, संसर्ग । ३ संगत, सोहबत, साथ । ४ संयोग । ५ सहवास । ६ आसक्ति, वासना । ७ साथ-साथ होने की अवस्था । [फा०] ८ पत्थर, पाषाण । ९ देखो 'संघ' । १० देखो 'साग' ।

संगअसब (असम, असबद)–पु० [अ० संगेअस्वद] १ मक्का स्थित वह काला पत्थर जिसके दर्शन किये जाते हैं । २ एक प्रकार का रत्न ।

संगखारी–पु० [सं० संगेखारा] एक प्रकार का पत्थर ।

संगजराहत–पु० [अ० संगेजराहत] औषधि में काम आने वाला एक सफेद कोमल पत्थर ।

संगट–देखो 'संकट' ।

संगटोयो–वि० दुःखी, पीड़ित, संकटग्रस्त ।

संगठ्ठण–देखो 'संघटण' ।

संगठ–१ देखो 'संकट' । २ देखो 'संघटण' ।

संगठण–देखो 'संघटण' ।

संगठणो (णी)–क्रि० [सं० संघटनम्] १ संगठन बनाना, संघ बनाना, एकमत होना । २ देखो 'संकटणो' (णी) ।

संगठासुर–देखो 'सकटासुर' ।

संगठित–वि० [सं० संघटित] १ एकत्र, मिला हुआ, संगृहीत । २ एकमत या एक गुट के रूप में बना हुआ, एक जुट ।

संगडी–देखो 'सग' ।

संगत–स्त्री० [सं०] १ साथ, सोहबत । २ एकता, मेल-जोल । ३ मित्रता, मैत्री । ४ सहयोग । ५ प्रासंगिक या उचित बात या व्यवस्था । ६ साहचर्य, संसर्ग । ७ सहवास, संभोग । ८ सामूहिक संकीर्तन, भजन ।–वि० १ जुड़ा हुआ, मिला हुआ । २ एकत्र, संगृहीत । ३ उचित, मुनासिब । ४ संकुचित, सिकुड़ा हुआ । ५ समान वर्ग या जाति का ।

संगति–स्त्री० १ तालमेल, सामंजस्य । २ सयोग, इत्तफाक । ३ मेल-जोल । ४ ज्ञान । ५ समाज । ६ संगत ।

संगतियो–पु० १ नाचने-गाने वाले का साथ देने वाला, सहयोगी । २ साथ रहने वाला व्यक्ति ।

संगम–पु० [सं०] १ दो वस्तुओं का परस्पर मिलन, मिश्रण । २ मिलनस्थल । ३ मेल, साथ । ४ ससर्ग, संस्पर्श । ५ सम्पर्क । ६ मैथुन, संभोग । ७ ग्रहों का सयोग ।

संगमरमर, संगमरवर–पु० [फा० संगमरमर] श्वेत या चिकना पत्थर विशेष ।

संगमूसी–पु० [फा० संगे-मूसा] काले रंग का एक बहुमूल्य पत्थर विशेष ।

संगयसब (सम, स्ब, स्म)–पु० [फा० संग-यशब] औषधि में काम आने वाले कुछ (पत्थर) रत्न विशेष ।

संगर (रि, रो)–पु० [सं० सम्-गृ] १ युद्ध, समर, संग्राम । २ सौदा, व्यवहार । ३ भोजन, खाना । ४ विष, जहर । ५ चारों ओर बनी खाई या दीवार । ६ संगठन । ७ विपत्ति, संकट । ८ प्रण, प्रतिज्ञा ।

संगराम–देखो 'संग्राम' ।

संगरोध–पु० [सं०] संक्रामक रोग की रोक–थाम की व्यवस्था ।

संगल–पु० [सं०] १ रेशम विशेष । २ लोह शृंखला । ३ बेड़ी ।

संगव–पु० [सं०] प्रातःकालीन समय ।

संगवी–पु० साथी, सहयोगी, सहगामी ।

संगसार–पु० [सं०] अपराधी को दीवार में चुनने का दण्ड ।

संगसुरमा–पु० [फा० संगेसुर्मा] सुरमा बनाने का उपधातु ।

संगह–देखो 'संग्रह' ।

संगहिया–वि० संगृहीत ।

संगा–वि० साथ रहने वाली, साथिन, सहचारिणी ।

संगाति, संगाती (थि, थी)–पु० १ संगी, साथी, सहयोगी । २ सहायक, मददगार । ३ मित्र, दोस्त । ४ प्रेमी ।

संगार–देखो 'सगार' ।

संगि, संगियो, सगी–पु० [सं० संग+रा.ई] (स्त्री० संगिनी) १ हरदम साथ रहने वाला, साथी, मित्र, दोस्त । २ साथ चलने वाला, सहगामी । सहचर । ३ सहायक, मददगार । ४ संरक्षक । ५ साथ । ६ संक्रामक रोग । ७ अनुरक्त, आसक्त । [सं० संज्ञी] ८ संज्ञा वाले जीव ।

संगीत–स्त्री० [सं० संगीत] १ गायन, वादन व नृत्य । २ समूह गान । ३ गायन-वादन की कला या शास्त्र । ४ वाद्यों के साथ कोई वर्णीकृत गायन ।—विद्या–स्त्री० गायन-वादन की कला या शास्त्र ।

संगीति (ती)–स्त्री० [सं० संगीत] १ संगीत विद्या । २ संगीतज्ञ, संगीत का पंडित । ३ देखो 'संगति' ।

संगीन–स्त्री० [फा०] बन्दूक (राइफल) के सिरे पर लगने वाला एक तीक्ष्ण शस्त्र ।–वि० १ विकट, मजबूत । २ असाधारण । ३ पत्थर का बना ।

संग्या–स्त्री० [सं० संज्ञा] १ होश-हवास, सुध, चेतना । २ अवस्था, दशा, हालत । ३ ध्यान, खयाल । ४ बुद्धि, अक्ल, ज्ञान । ५ किसी वस्तु या प्राणी का नाम जाति या कोई भावबोधक शब्द । ६ गायत्री मंत्र । ७ सूर्य की पत्नी का नाम ।

संग्याहीण–वि० [सं० संज्ञाहीन] १ चेतना रहित, बेहोश । २ मैला, कुचैला, गंदा । ३ घृणित । ४ मूर्ख ।

संग्रह–पु० [सं०] १ एकत्र करने की क्रिया या भाव । २ संगृहीत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्तुओं का ढेर। ३ भोजन, पान, औषध खाने की क्रिया। ४ मंत्र बल। ५ ग्रहण। ६ समूह, जमघट। ७ धारण करना क्रिया। ८ विवाह, शादी। ९ मैथुन, संभोग। १० स्वागत, सम्मान। ११ निग्रह, संयम। १२ रक्षा, हिफाजत। १३ तालिका, सूची। १४ योग, जोड़। १५ शिवजी का एक नाम। १६ स्कंद का एक अनुचर।

संग्रहण–पु० [सं०] १ लेना क्रिया, ग्रहण। २ प्राप्ति, लाभ। ३ गहनों की जड़ाई। ४ अपहरण। ५ व्यभिचार, संभोग, मैथुन। ६ संहार, नाश। ७ युद्ध।

संग्रहणि (णी)–स्त्री० [सं० संग्रहणी] पाचन क्रिया का विकार, एक रोग।

संग्रहणी (णी)–क्रि० [सं० संग्रहणम्] १ संग्रह या संचय करना। २ लेना, ग्रहण करना। ३ पहनना, धारण करना। ४ लाभ प्राप्त करना। ५ रक्षा करना, हिफाजत करना। ६ स्थापित करना। ७ कैद करना। ८ मिलना। ९ युद्ध। करना। १० रोकना, थामना।

संग्रहांणि, संग्रहाणी–देखो 'संग्रहणी'।

संग्रही–वि० संग्रह करने वाला, एकत्र करने वाला।

संग्राम–पु० [सं० संग्राम] युद्ध, समर, लड़ाई।

संग्रामसाही–पु० महाराणा संग्रामसिंह द्वारा प्रचलित मेवाड़ राज्य का एक सिक्का।

संग्रामांगण–पु० [सं० संग्राम-अंगण] युद्धभूमि, रणक्षेत्र। रणस्थल।

संग्राह–पु० [सं०] १ औजार या किसी हथियार का दस्ता। २ ढाल का हत्था विशेष। ३ मुक्का, मुष्ठिका।

संग्राहक–वि० [सं०] संग्रह करने वाला।

संग्राही–पु० [सं० संग्राहिन्] १ कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को खींचने वाला तत्व। २ कब्जकारी वस्तु।

संघ–पु० [सं०] १ लोगों का समुदाय या समूह। २ श्रावक समुदाय। ३ समूह, झुण्ड। ४ तीर्थाटन को जाने वाला यात्री दल। ५ साधुओं का मठ। ६ संगठित होने की अवस्था या भाव। ७ कुछ निश्चित उद्देश्य से बना समुदाय, संगठन। ८ एक लोक तांत्रिक शासन व्यवस्था। ९ राष्ट्रों का संगठन। १० देखो 'संग'।

संघट–पु० [सं०] १ समूह, समुदाय। २ देखो 'संकट'।

संघटण–पु० १ संगठित होने की अवस्था या भाव। २ इकाइयों का समूह। ३ बिखरी हुई शक्तियों को एक जुट करने की क्रिया। ४ किसी निश्चित लक्ष्य से बनाया गया समुदाय, संस्था। ५ रचना, संरचना, बनावट। ६ स्वरों का शब्दों से संयोग।

संघटा–पु० संसर्ग, संस्पर्श।

संघट्टचक्र–पु० [सं०] फलित ज्योतिष में युद्ध फल विचारने का नक्षत्रों संबंधी एक चक्र।

संघट्ठण–देखो 'संघटण'।

संघपत (ति, ती)–पु० [सं०] किसी संघ या समूह का अध्यक्ष, प्रधान, दलपति, नायक।

संघर–१ देखो 'संगर'। २ देखो 'संग्रह'।

संघरण–वि० १ संहार करने वाला, नाश करने वाला। २ देखो 'संग्रहण'।

संघरणी (णी)–क्रि० १ संहार करना, मारना। २ युद्ध करना। ३ देखो 'संग्रहणी' (णी)।

संघरस, संघरसण–पु० [स० संघर्ष, संघर्षण] १ रगड़ने, घिसने या घोटने की क्रिया। २ किन्हीं दो विरोधी दलों या पक्षों में एक दूसरे को दबाने के लिये चलने वाला झगड़ा। ३ कष्ट या अभाव से बचने का प्रयास। ४ प्रतियोगिता, स्पर्धा। ५ द्वेष, वैर। ६ टक्कर, भिड़ंत। ७ डाट, ढक्कन। ८ बाधा, रुकावट।

संघरसी–वि० [सं० संघर्षित] संघर्ष करने वाला, संघर्षरत।

संघल (वीप, द्वीप), संघलि (ली), संघलिद्वीप (द्वीप)–देखो 'सिंहलद्वीप'।

संघवाहणी–देखो 'सिंहवाहणी'।

संघवी–देखो 'सिंघवी'।

संघाट–देखो 'संघात'।

संघाड–पु० १ दो की जोड़ी, युग्म। २ समूह।

संघाडि (डी)–स्त्री० [स० सघाटिका] १ वस्त्र के टुकड़ों का बना चोगा, कथा। २ ओढ़ने का वस्त्र। ३ जैन साध्वियों के वस्त्र।

संघात (इ, ई)–पु० [स० संघात] १ साथ। २ ऐक्य, संयोग, मिलाप। ३ समुदाय, समूह। ४ हत्या, वध। ५ नाश, ध्वंस। ६ कफ, श्लेष्म। ७ एक नरक विशेष। ८ शरीर। –वि० साथ, सहित।

संघातक–वि० [सं०] १ मार करने या प्राण लेने वाला, मारने वाला। २ नाश या ध्वंस करने वाला।

संघार–देखो 'संहार'।

संघारक–देखो 'संहारक'।

संघारकर–पु० [सं० संहारकर] सुदर्शनचक्र।

संघारण–पु० [सं० सहारण] १ सुदर्शन चक्र। २ बलराम का एक नाम। –वि० संहार या नाश करने वाला।

संघारणी (णी)–देखो 'संहारणी' (णी)।

संघाळी–देखो 'सिंघाळी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संघासण–देखो 'सिंहासन'।

संच–देखो 'संचय'।

संचक, संचकर–पु० वह जो संचय करे, कृपण, कंजूस'।

संचकार–पु० [सं० सत्यंकार] १ सौदा तय होने पर दी जाने वाली पेशगी, साई। २ खुना स्थान।

संचण, संचणर–देखो 'संचकर'।

संचणलूण–पु० एक प्रकार का लवण।

संचणो (बो)–क्रि०१ संचय करना, एकत्र करना। २ देखभाल करना। ३ प्रविष्ट होना। ४ तैयार, कटिबद्ध होना। ५ सुरक्षित रखना।

संचतकरम–देखो 'संचितकरम'।

संचय–पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड। २ धन या वस्तुओं का संग्रह, सरक्षण। एकत्रीकरण। ३ संकलन। ४ पदार्थों का ढेर, राशि। ५ अधिकता, बाहुल्य। ६ दाह संस्कार के बाद अस्थियें बीनने की क्रिया।

संचर–पु० [सं०] १ गमन, चलन। २ एक राशि से दूसरी में ग्रह का गमन। ३ मार्ग, पथ, रास्ता। ४ शरीर, देह। ५ संचित कर्म। ६ संचार या प्रवेश का मार्ग। ७ देखो 'संचळ'।

संचरण–पु० [सं०] १ संचार करने की क्रिया या भाव, चलन, गमन। २ पसरने, फैलने की क्रिया। ३ कांपने की क्रिया या भाव। ४ मार्ग, रास्ता, पथ। ५ पैर, चरण, पग।

संचरणो (बो)–क्रि० [सं० सम्-चर] १ गमन करना, जाना २ घूमना, विचरण करना, परिभ्रमण करना। ३ आना, आगमन करना। ४ अनुसरण करना। ५ प्रविष्ट होना, पहुंचना। ६ अंकुरित होना, उभरना। ७ उत्पन्न होना, पैदा होना। ८ जाना, पलायन करना, भागना। ९ फैलना, प्रसारित होना। १० चलन में या व्यवहार में आना। ११ आक्रमण करना। १२ होना। १३ उच्चरित होना। १४ मिलना, प्राप्त होना।

संचरलूण–पु० एक प्रकार का नमक।

संचळ, संचल–पु० १ कंपन, आहट। २ स्पर्श, छूना क्रिया। ३ टटोलना क्रिया। ४ एक प्रकार का नमक।

संचवणो (बो)–क्रि० १ बन्द करना, जड़ना। २ लगाना, सटाना। ३ देखो 'संचणो' (बो)।

संचाण (णो), संचांन–देखो 'सिचाण'।

संचाणो (बो)–क्रि० १ संचय कराना, एकत्र कराना। २ देख भाल कराना। ३ प्रवेश कराना। ४ तैयार करना, कराना। ५ कटिबद्ध करना।

संचार–पु० [सं०] १ गमन, चलन। २ ग्रह का एक राशि से दूसरी में गमन। ३ आवागमन। ४ मार्ग, पथ, रास्ता। ५ कठिन कार्य या पथ। ६ मार्ग दर्शन। ७ सांप के फन की मणि

संचारक–वि० (स्त्री० संचारिका) १ संचार करने या संचरित होने वाला। २ नेता, मुखिया, प्रधान। ३ चलाने वाला। ४ प्रत्रेषक, शोधक।–पु० स्वामिकार्तिकेय का एक अनुचर।

संचारणो (बो)–क्रि०१ संचार करना। २ फैलाना। ३ चलाना।

संचारि, संचारिक–१ देखो 'संचार'। २ देखो 'सचारी'।

संचारिका–स्त्री० [सं०] १ दूती, कुटनी। २ नाक। ३ बू, गंध।

संचारी–पु० [सं० संचारिन्] १ साहित्य के अन्तर्गत भाव। २ पद या गीत का तीसरा भाग। ३ हवा, वायु।–वि० १ संचरण या संचार करने वाला। २ आया हुआ, आगन्तुक।

संचाळ (ल)–पु० कंपन, चलन, गमन।

संचावणो (बो)–देखो 'संचाणो' (बो)।

संचित (ब)–वि० [सं०] १ संचय या एकत्र किया हुआ। २ संचित कर्म।

संचियार–देखो 'सचियार'

संचो–देखो 'साची'।

संचोत–वि० चिंतित, दुःखी।

संचोताई–स्त्री० [सं० स+चिन्ता] चिन्ता, दुःख।

संचै–देखो 'संचय'।

संचो–पु० १ तरल या गीला पदार्थ डालकर विशेष आकृति में ढालने का उपकरण, फरमा, ढांचा। २ संग्रह, संचय, जमा। ३ तरह, प्रकार।

संछरदण–पु० [सं० संछर्दन] ग्रहण का मोक्ष विशेष।

संज–पु० [फा०] १ झांझ, मजीरा। २ शिव। ३ ब्रह्मा। ४ यंत्र या वाहन से संबंधित उपकरण। ५ साज-सामान। ६ एक देश का नाम। ७ देखो 'सध्या'।

संजड़ो–देखो 'सुजड़ो'।

संजण–देखो 'मज्जण'।

संजणो (बो)–क्रि० १ सकुचाना, शर्माना। २ ईर्ष्यायुक्त होना। ३ प्रभावित होना। ४ देखो 'सजणो' (बो)।

संजत–पु० १ सामान, सामग्री। २ सजावट। ३ प्रबंध, व्यवस्था। ४ देखो 'सजुत'। ५ देखो 'संयुक्त'।

संजनि–स्त्री० [सं० शिजनी] प्रत्यंचा।

संजब–देखो 'सजाफो'।

संजम–वि० १ अंधा। २ देखो 'संयम'।

संजमणो–वि० संयम धारण करने वाला।

संजमणो (बो)–क्रि० संयम रखना, संयम से रहना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संजमनी–स्त्री० [सं० संयमनी] यमराज की नगरी। —पत, पति, पती–पु० यमराज।

संजमसार–पु० दीक्षा।

संजमि (मी)–१ देखो 'संजम'। २ देखो 'संयम'। ३ देखो 'संयमी'।

संजय–पु० [सं०] १ धृतराष्ट्र का एक मंत्री। २ एक सूर्यवंशी राजा। ३ ब्रह्मा। ४ शिव।–वि० सुसज्जित, तैयार।

संजरांमो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

सजरी–पु० संज देश का निवासी।

संजवारी–स्त्री० झाड़ू, बुहारी।

संजाफ–स्त्री० [फा०] १ गोट, झालर, किनारा, हाशिया। २ देखो 'संजाफी'।

संजाफी–पु० आधा लाल व आधा हरे रंग का घोड़ा।

संजाब–पु० [फा०] १ चूहे के आकार का एक जीव। २ देखो संजाफ'। ३ देखो 'संजाफी'।

संजावणो (बो)–देखो 'संजोणो' (बो)।

संजिगत–वि० [सं० सयुक्त] सहित, संयुक्त।

संजिम–पु० १ दीक्षा। २ देखो 'संजम'।

संजीदगी–स्त्री० [फा०] १ आचरण, विचार, व्यवहार आदि में गंभीरता। २ शिष्टता, सौम्यता।

संजीदो–वि० [फा० संजीद:] स्वभाव से गंभीर, सौम्य, शिष्ट।

संजोरो–पु० १ रसोई या भोजन की सामग्री। २ रसोई का कार्य।

संजीव–पु० [सं०] १ मृतक को पुनः जिलाने की क्रिया। २ पुनर्जीवित करने वाला। ३ एक नरक का नाम।

संजीवण–देखो 'संजीवन'।

संजीवणी–देखो 'संजीवनी'।– विद्या='संजीवनीविद्या'।

संजीवन–पु० [सं०] १ पुनर्जीवित करने की क्रिया। २ एक प्रकार की जड़ी। ३ एक प्रकार की विद्या।–वि० जीवित, जिन्दा।—विद्या–स्त्री० मृतक को पुनः जीवित करने की विद्या या मंत्र।

संजीवनि, संजीवनी–स्त्री० [सं० संजीवनी] १ पुनर्जीवित करने वाली जड़ी। २ एक मंत्र या विद्या विशेष। ३ वैद्यक में एक औषधि।—विद्या–स्त्री० एक प्रकार की विद्या या मंत्र जिससे मृतक को पुनर्जीवित किया जा सकता हो।

संजुक्त–देखो 'संयुक्त'।

संजुग–पु० [सं० संयुग:] १ युद्ध, लड़ाई। २ देखो 'संयुक्त'।

संजुगम, संजुरम–वि० [सं० स+युग्म] सहित।

संजुत–पु० [सं० संयुक्त] युद्ध, लड़ाई।–वि० सुसज्जित, युक्त। देखो 'संयुक्त'।

संजुति, संजुत्त (त्ता, त्तू) संजूत–१ देखो 'संजुत'। २ देखो 'संयुक्त'।

संजोग–देखो 'संयोग'।

संजोगि, संजोगी–वि० १ मिला हुआ, संयुक्त, दीर्घ। २ देखो 'संयोगी'।

संजोगे (गै)–क्रि० वि० संयोग से, देवयोग से।

संजोगो–१ देखो 'संयोग'। २ देखो संयोगी'।

संजोड़णो (बो)–क्रि० १ मिलाना, संयुक्त करना। २ तैयार करना।

संजोणो (बो)–क्रि० [सं० संयोजनम्] १ जलाना, प्रज्वलित करना। २ सजाना, सुसज्जित करना। ३ तैयार करना, बनाना। ४ इकट्ठा करना, एकत्र करना। ५ पिरोना। ६ लगाना, करना। ७ देखना, निहारना। ८ सजीवित करना, हरा भरा करना, पल्लवित करना।

संजीत (ति, ती)–स्त्री० १ ज्योति, लौ। २ चमक।

संजोयणादोस–पु० भोजन संबंधी एक दोष।

संजोवणो (बो)–देखो 'संजोणो' (बो)।

संजोह–पु० १ कवच। २ जुलाहे के काम की लकड़ी का चौखटा।

संज्या–देखो 'सध्या'।

संज्वर–पु० [सं०] १ तीव्र बुखार। २ क्रोध, आवेग।

सझ–१ देखो 'साज'। २ देखो 'संध्या'। ३ देखो 'संज'।

सझया, सझा–देखो 'संध्या'।

संझाबळ–पु० [स० संध्याबल] राक्षस, निशाचर।

संझारावउं–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

संझि, सझ्या–देखो 'संध्या'।

संठ–देखो 'सठ'।

संठणो (बो)–क्रि० १ धनी, सम्पन्न या वैभवयुक्त होना। २ जुड़ना, संयुक्त होना। ३ संस्थापित होना।

संठवणो (बो)–देखो 'सठणो' (बो)।

संठवाड़ो–पु० १ खेत में होने वाला घास-फूस या छोटी झाड़ियां। २ घास-फूस या झाड़ियों वाला खेत। ३ छोटी-छोटी बूंदों से होने वाली वर्षा की झड़ी।

संठाणो (बो)–क्रि० १ संस्थापित करना/कराना। २ जुड़ाना या जोड़ना।

संठाव–पु० पड़त की कृषि भूमि।

संठावणो (बो)–देखो 'सठाणो' (बो)।

संठोर–वि० दृढ़, मजबूत।

संठोळी–स्त्री० १ गन्ने की छोटी पेरी। २ शक्कर की बनी चौकनुमा वस्तु।

संठो–देखो 'सोठो'।

संड–पु० [सं० शंड] १ नपुंसक, हिजड़ा। २ वह पुरुष जो निस्सतान हो। ३ देखो 'सांड'। ४ देखो 'सूंड'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संडता–स्त्री० [सं० षंडता] १ नपुंसकता, हिजड़ापन। २ मूर्खता।

संडयोनि–स्त्री० [सं० षंड-योनि] वह स्त्री जिसके स्तन न हों और मासिक धर्म न होता हो। पुरुष के लिये अयोग्य।

संडाई–स्त्री० १ मशक की तरह फूला हुआ भैंस का चमड़ा जो तैरने के काम आता है। २ देखो 'संडासी'।

संडास–पु० शौच-कूप, पखाना।

संडासी–स्त्री० १ लुहार व सुनारों आदि के काम आने वाला एक उपकरण। २ इसी तरह सर्प आदि पकड़ने का लकड़ी का उपकरण।

संडिल (ल्ल)–पु० आर्यों का एक जनपद।

संडेय–पु० १ नदी। २ वृषभ।

संडो–पु० १ असुरों के एक पुरोहित। २ ऊँट। ३ देखो 'लंडास'। ४ देखो 'सांडो'।

संणकणी (बी), संणक्कणी (बी)–क्रि० १ तीर, गोली आदि का तीव्र गति से चलना। २ तेज गति से सन्-सन् ध्वनि उत्पन्न होना। ३ देखो 'सिणकणी' (बी)।

संणको (क्को)–पु० तीर, गोली आदि की तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि।

संणगार–देखो 'सिणगार'।

संणगारणी (बी)–देखो 'सिणगारणी' (बी)।

संत–पु० [सं० सत्] १ साधु, सन्यासी या कोई मुनि-महात्मा। २ साधु की तरह ही कोई त्यागी पुरुष। ३ सज्जन। ४ भक्त। ५ एक मात्रिक छंद विशेष।–वि० निर्मल, पवित्र। —मन–वि० श्वेत, सफेद। अटल, दृढ़।

संतण (णु)–१ देखो 'सत'। २ देखो 'सांतनु'।

संतत–वि० [सं०] १ निरन्तर, लगातार। २ विस्तृत, फैला हुआ। ३ अत्यधिक। ४ सदा बना रहने वाला।

संतति–स्त्री० [सं०] १ संतान, औलाद। २ प्रजा, रिआया। ३ अवली, पंक्ति। ४ वंश, कुल।—पथ–पु० योनि।

संतबासोत–पु० रामावत साधुओं की एक शाखा।

संतन (नु)–१ देखो 'संत'। २ देखो 'सांतनु'।—सुत, सुतन= 'सांतनुसुत'।

संतप, संतप्त–वि० [सं० संतप्त] १ अधिक तपा हुआ, गर्म। २ जला हुआ, दग्ध। ३ दुःखी, पीड़ित।

संतमस–पु० [सं० संतमस] अंधकार, अंधेरा।

संतर–वि० शत्रु, दुश्मन।

संतरजण (न)–पु० [सं० संतर्जन] स्कन्द का एक अनुचर।

संतरदा संतरिदा–स्त्री० [सं० शतह्रदा] विद्युत, बिजली।

संतरी–पु० [अं० सेंटरी] पहरेदार, द्वारपाल, सिपाही।

संतरो–पु० [पुर्त० सगतरा] नारंगी नामक फल।

संतान–पु० [सं० संतान] १ वंश। २ औलाद। [सं० संतानः] ३ कल्प वृक्ष। ४ एक प्रकार का अस्त्र।

संतानक–पु० [सं० संतानक] १ कल्पवृक्ष। २ ब्रह्मलोक से परे एक लोक।

संतानिका–स्त्री० [सं० संतानिका] १ फेन, झाग। २ मलाई। ३ एक प्रकार का घास, मर्कटजाल। ४ छुरी या शस्त्र की धार। ५ एक स्कन्द मातृका विशेष।

संतापाळ–पु० [सं० संतपालक] परमेश्वर, ईश्वर।

संताड़णी (बी), संताणी (बी)–देखो 'संतापणी' (बी)।

संताप–पु० [सं०] १ अग्नि, धूप आदि तीव्र ताप या आंच। २ तीव्र मानसिक क्लेश। ३ चिन्ता, दुःख। ४ शरीर में होने वाली दाह, जलन। पीड़ा। ५ मन का अनुताप, पश्चाताप। ६ कष्ट, विपत्ति ७ ज्वर, बुखार। ८ शत्रु, दुश्मन। ९ रोग, बीमारी।–वि० तप्त।

संतापण (न)–पु० [सं० संतापन] १ संताप देने की क्रिया या भाव। २ कामदेव का एक बाण। ३ एक प्रकार का अस्त्र। –वि० संतप्त करने वाला।

संतापणी (बी)–क्रि० १ दुःख देना, सताना, कष्ट देना। २ दुःखी होना।

संतापित–वि० [सं०] पीड़ित, संतप्त।

संतापु, संताव–देखो 'संताप'।

संतावणी (बी)–देखो 'संतापणी' (बी)।

संति (ती)–पु० १ सोलहवें तीर्थंकर शांतिनाथ। २ देखो 'सांति'।

संतिकरउ–वि० शांति करने वाला।

संतीसर–पु० शांतिनाथ स्वामी।

संतु–वि० १ अच्छा। २ शान्त। ३ देखो 'संत'।

संतुख–स्त्री० १ सिंह के अगले कंधे के पास की एक झूल। २ देखो 'संतोस'।

संतुस्ट (स्ठ)–वि० [सं० संतुष्ट] १ जिसे संतोष हो, तुष्ट, तृप्त। २ मेहरबान, तुष्टमान। ३ राजी, रजामंद। ४ प्रसन्न, खुश। ५ आश्वस्त।

संतुस्टि (स्टी)–स्त्री० १ संतोष, तृप्ति। २ प्रसन्नता। ३ सब।

संतू–१ देखो 'संत'। २ देखो 'संतु'।

संतोक (ख)–देखो 'संतोस'।

संतोखड़ो–देखो 'संतोस'।

संतोखणी (बी)–क्रि० [सं० संतोषनम्] १ संतोष दिलाना, संतुष्ट करना, तृप्त या आश्वस्त करना। २ राजी करना, खुश करना। ३ संतुष्ट होना। ४ राजी होना, खुश होना।

संतोखी–देखो 'संतोसी'।

संतोखो–देखो 'संतोस'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संतोषणी (बो)–क्रि० संतुष्ट करना ।

संतोस–देखो 'संतोल' ।

संतोळियो–देखो 'संतोळियो' ।

संतोस–पु० [सं० संतोष] १ वह मानसिक अवस्था जब व्यक्ति किसी दशा या पदार्थ के प्रति आश्वस्त हो जाता है, संतोष, सब्र, तुष्टि । २ इच्छा पूर्ति की अवस्था । ३ हर्ष, प्रसन्नता । ४ धैर्य, शांति । ५ भरोसा, विश्वास । ६ प्रेम, प्यार । ७ स्नेह ।

संतोसणो–वि० १ संतुष्ट होने वाला । २ संतुष्ट करने वाला ।

संतोसणो (बो)–देखो संतोखणो' (बो)

संतोसन–पु० संतोष, संतुष्टि तृप्ति ।

संतोसी–वि० (स्त्री० संतोसण) १ संतोष करने वाला, संतोषी । २ संतोष संबंधी ।

संतोसीमाता–स्त्री० एक देवी विशेष ।

संत्थ–पु० [सं०] अग्निदेव का एक नाम ।

संथ–क्रि० वि० [सं० सति] हैं, हुए हैं ।

संथड (उ)–पु० [स० सीमंतक] स्त्रियों का आभूषण विशेष ।

संथनर–वि० [स० सस्त्यानं] संग्रह करने वाला, संग्रह कर्ता ।

संथणो (बो)–क्रि० [स० सस्त्यानम्] संचय करना, संग्रह करना ।

संथरड–स्त्री० १ बिछौना । २ सोने की क्रिया ।

संथव–पु० [सं० संस्तव] स्तुति, गुणगान ।

संथा–स्त्री० [सं० संहिता] १ गुरु के द्वारा पढ़ाया गया पाठ, सबक, पाठ का अंश । २ विद्या, ज्ञान । ३ वेदों का मंत्र भाग । ४ धर्मशास्त्र । ५ शिक्षा, उपदेश । ६ ईश्वर । ७ इतिहास, वृत्तान्त ।

संथार, संथारउ, संथारड़उ–देखो 'संथारो' ।

संथारणो (बो)–क्रि० बिछाना, फैलाना ।

संथारपयन्न–पु० संथारे की विधि संबंधी ग्रंथ ।

संथारो–पु० [सं० सस्तारक] १ जैनमत में शरीर त्याग हेतु किया जाने वाला अन्न-जल आदि का त्याग । [सं० संस्तरः] २ तृण, डाभ आदि का बिछौना । ३ बिस्तर । ४ शयन ।

संथुणणो (बो), संथूणणो (बो)–क्रि० [सं० संस्तुनोति] गुण गाना, स्तुति करना ।

संद–स्त्री० [सं० स्यन्द] १ वर्षा या बरसाती हवा से उत्पन्न नमी, आर्द्रता । २ धूलि, रेत ।

संदह, संदउ–वि० १ आर्द्र, नम । २ देखो 'हंदो' ।

संदक–स्त्री० १ गहरी निद्रा । २ नमी, आर्द्रता ।

संदग्ध–पु० [सं० संदिग्धत्व] १ काव्य का एक दोष विशेष । २ संदिग्ध ।

संदण–देखो 'स्यंदन' ।

संदणी (बो)–क्रि० १ मकान या दीवार आदि में नमी या आर्द्रता आना । २ गीलापन होना ।

संदन–देखो 'स्यंदन' ।

संदरभ–पु० [सं० सन्दर्भ] १ पूर्व वर्णित विषय । २ बनावट, रचना । ३ ग्रंथ रचना । ४ निबन्ध, लेख । ५ विवेचन । ६ अध्याय । ७ पूर्व बात का उल्लेख, प्रसंग ।

संदरी–१ देखो 'सुंदरी' । २ देखो 'सदरी'

संदळ (ल)–पु० [फा० संदल] चन्दन ।

संदळी, संदली–वि० चन्दन का, चन्दन के रंग का ।–पु० १ चन्दनी रंग का घोड़ा । २ चंदन की गंध का शराब । ३ वह हाथी जिसके बाहरी दांत न हो । ४ मकान या कक्ष में लगाया गया टांड ।

संदळो–पु० छत या आंगन में चूना-मसाला आदि जमा कर की जाने वाली घिसाई ।

संदाणो (बो)–देखो 'संधाणो' (बो) ।

संदानित–वि० [सं०] बंधा हुआ ।

संदावणो (बो)–देखो संधाणो' (बो) ,

संदावेस–पु० [स० सन्देश] समाचार, सन्देश ।

संदिग्ध–वि० [सं० सदिग्ध] जो संदेह योग्य है, जिस पर विश्वास करना संभव न हो ।

संदिपति (पती)–पु० [स० स्यंदन-पति] रथ हांकने वाला, रथी ।

संदी–देखो 'हंदी' ।

संदीणो, संदीणी (नी)–पु० [सं० संधान] दवाओं के साथ बनाया हुआ पौष्टिक खाद्य पदार्थ ।

संदूक (ड़ो, ड़ी), संदूकचो, संदूख–स्त्री० [अ०] वस्त्र, आभूषण आदि रखने का पेटी ।

संदूर–देखो 'सिंदूर' ।

संदे, संदै–देखो 'संदेह' ।

संदेड़ी–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

संदेस, संदेसउ (ड़उ बो)–पु० [सं० सन्देश] १ खबर, समाचार, सूचना । २ प्रेम । ३ एक प्रकार की मिठाई ।

संदेसी–वि० [सं० संदेशिन्] (स्त्री० संदेसण) संदेश वाहक ।

संदेसो–देखो 'संदेस' ।

संदेह–पु० [सं०] १ मन की अनिश्चित अवस्था, संशय, शंका, भ्रम । २ खतरा, भय । ३ अविश्वास । ४ साहित्य में एक अलंकार ।

संदेहास–पु० १ संदेहशील, भ्रम में पड़ा हुआ । २ शंकी, वहमी ।

संदेही–देखो 'संदेह' ।

संदोल–पु० एक प्रकार का कान का आभूषण ।

संदोह–पु० [सं०] १ समूह, झुण्ड । २ दोहन, दुहना क्रिया ।

संदभ, संदभ–देखो 'संदरभ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संद्राब–पु० [सं०] युद्ध से भागने की क्रिया या भाव ।

संध–पु० १ दूरी । २ अलगाव, पृथकता । ३ देखो 'सिंधु' । ४ देखो 'संधा' ।

संधक–पु० [सं० सँध्यक] पुष्प, फूल ।

संधणो (बो)–क्रि० १ जुड़ना, बंधना । २ संयुक्त होना, मिलना । ३ धारण करना, साधना । ४ ठानना, तय करना । ५ करना । ६ देखो 'सांधणो' (बो) ।

संधव (वो)–वि० संबंध रखने वाला, संबंधी ।–पु० १ भाई-बंधु रिश्तेदार । २ देखो 'सिंधु' । ३ देखो 'सैंधव' ।

संधांण (ण, न)–पु० [सं० संधानं] १ धनुष पर बाण चढाने की क्रिया । २ लक्ष्य साधन । ३ शरीर के जोड़, संधिस्थल । ४ चिकित्सा, उपचार । ५ अन्वेषण, खोज । ६ सीमा, हद । ७ संधि, मैत्री । ८ एकाग्रता । ९ समर्थन । १० शराब आदि मादक वस्तु । ११ कोई व्यंजन विशेष । १२ मुरब्बा बनाने की विधि । १३ गांठ, ग्रंथि । १५ जोड़, संधिस्थल ।

संधाणो–देखो 'मंदीणो' ।

संधा–स्त्री० [सं०] १ प्रतिज्ञा, प्रण । २ सीमा, हद, मर्यादा । ३ घनिष्ठ संबंध । ४ दृढ़ता, मजबूती । ५ स्वीकार; अंगीकार । ६ देखो 'संधि' ।

संधाणो (बो)–क्रि० [सं० संधानम्] १ धनुष पर बाण चढ़ाना । २ निशाना या लक्ष्य साधना । ३ जोड़ना, संयुक्त करना । ४ चिकित्सा या उपचार करना । ५ संयुक्त करना, मिलाना । ६ प्रतिज्ञा या प्रण करना । ७ जोड़ना, बनाना । ८ संधि करना । ९ धारण करना । १० नमी लाना, आर्द्र करना ।

संधाता–पु० [सं] भगवान विष्णु ।

संधारण–वि० [सं०] १ धारण करने वाला । २ पार लगाने वाला । ३ सुधार करने वाला ।–पु० १ आचरण । २ उपयोग । ३ किसी चीज को नियमित तैयार करते रहना क्रिया ।

संधि–स्त्री० [सं०] १ जोड़, मिलाप, संयोग; मेल । २ मिलने का स्थान, जोड़ । ३ जोड़ का स्थान । ४ गांठ-जोड़ । ५ शरीर के संधिस्थल । ६ वयसंधि, संक्रमण की अवधि । ७ देशों, राज्यों, व्यक्तियों, संस्थाओं के बीच होने वाला करार, सुलहनामा । समझौता । ८ दोस्ती । ९ दिन व रात का मिलन काल । १० युगान्तकाल । ११ देखो 'सुसंधि' । १२ देखो 'सेंध' ।

संधिक–पु० [सं०] एक प्रकार का वात रोग ।

संधिचोर (चोर)–पु० सेंध लगाकर चोरी करने वाला चोर ।

संधिणी–स्त्री० वह गाय या भैंस जिसका दूध न निकाला गया हो ।

संधिणो–देखो 'संदीणो' ।

संधियास–देखो 'संध्या' ।

संधिरेहु (रेहो)–पु० संधिपत्र लिखने वाला ।

संधिला–स्त्री० [सं०] १ शराब, मदिरा । २ दीवार में लगाई गई सेंध । ३ नदी । ४ सुरंग ।

संधिवात (वाय)–पु० [सं० संधिवात] शरीर का ग्रंथि रोग, गठियावात ।

संधिविग्रह (विग्रहिक, विग्रही)–पु० प्राचीन भारत में राज्य का एक अधिकारी जो युद्ध या संधि संबंधी कार्य करता था ।

संधी–देखो 'संधि' ।

संधु–देखो 'सिंध' ।

संबेसरा–पु० एक प्रकार का वृक्ष ।

संबोळी–स्त्री० [सं० संधितूलिका] कपड़ा बुनने का एक उपकरण विशेष ।

संधो–देखो 'सांधो' ।

संध्या–स्त्री० [सं०] १ दिन व रात का संधिकाल, सायंकाल, शाम । २ प्रातः का समय ।३ तड़का, भोर । ४ शाम की लालिमा, आभा । ५ प्रातः, मध्याह्न व अपराह्न में की जाने वाली उपासना, त्रिकाल-सन्ध्या । ६ एक नदी । ७ एक वर्षीय बालिका । ८ मेल, जोड़, संधि । ९ संध्या रूपिणी देवी । १० युग संधि । ११ ब्राह्मणी । १२ सीमा, हद । १३ ध्यान, विचार । १४ इकरार ।–वि० लाल, रक्त* ।—उपासना–स्त्री० त्रिकाल संध्या ।—पत, पति, पती–पु० शिव, महादेव ।—भ्रत–पु० शिव, महादेव । एक देव जाति ।—राग–स्त्री० सायंकल्याण राग । शाम की लालिमा ।

संध्रीच–पु० [सं० संध्र्यंच] १ सखा, मित्र । २ पति, खाविंद ।

संनबंध–देखो 'संबंध' ।

संनाह (हु)–देखो 'सन्नाह' ।

संनिचय–पु० [सं०] संग्रह ।

संनिधान–क्रि० वि० पास, निकट, नजदीक ।

संनिपात–पु० सन्निपात ज्वर ।

संनिवेस–पु० [सं० सन्निवेशः] निवास स्थान, रहने का स्थान ।

संनेसड़ो–देखो 'संदेह' ।

संनेसो–देखो 'संदेह' ।

संनेह–देखो 'सनेह' ।

संनेही–देखो 'सनेही' ।

संन्नांन–देखो 'स्नांन' ।

संन्नाही–पु० वीर, योद्धा ।

संन्यास–पु० [सं०] १ आर्य संस्कृति के अनुसार मानव जीवन का चौथा आश्रम । २ वैराग्य, विरक्ति, त्याग । ३ मूर्च्छा रोग का एक भेद । ४ शरीर त्याग, मृत्यु । ५ जटामासी । ६ धरोहर, थाती ।

संन्यासी–पु० [सं०] १ 'संन्यासधारी' साधु या व्यक्ति ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ दंडी या अवधूत कहलाने वाले साधु। –वि० त्यागी, वैरागी।

संप–पु० १ मेल, एकता, संगठन। २ स्नेह, प्रेम। [सं० सर्प] ३ शेषनाग। ४ सर्प, सांप। ५ देखो 'संपा'।

संपड़–पु० १ कोई प्राप्य वस्तु। २ देखो 'सपाड़ी'। –वि० संभव।

संपड़णी (बो)–क्रि० [सं० सम्प्रापणम्] १ प्राप्त होना, मिलना। २ सम्भव होना। ३ सम्भव करना। ४ स्नान करना।

संपड़ाणी (बो), संपड़ावणी (बो)–क्रि० स्नान कराना, नहलाना।

संपचूड़–पु० सर्प के फन के आकार का शस्त्र विशेष।

संपजणी (बो)–क्रि० [सं० संपदनम्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना। २ होना। ३ संचित होना, एकत्र होना। ४ प्राप्त होना, मिलना।

संपजाणी (बो), संपजावणी (बो)–क्रि० १ उत्पन्न करना/कराना। २ संचित करना/कराना। ३ प्राप्त करना/कराना। ४ कुछ करना/कराना।

संपट–वि० १ समाप्त, नष्ट। २ मूर्ख, अज्ञानी। ३ देखो 'संपुट'। –पु० १ अवसर, मौका। २ संयोग, मिलन।

संपटपाट–पु० १ सीधा एवं खुला मैदान। २ बरबादी, नाश; ध्वंस।

संपड़णी (बो)–देखो 'संपड़णी' (बो)।

संपणी (बो)–क्रि० १ एकता रखना या करना, मेल रखना। २ प्रेम या प्यार करना। ३ देखो 'सूंपणी' (बो)।

संपत–स्त्री० [सं० संपद्] १ धन, दौलत। २ संपन्नता, समृद्धि, खुशहाली। ३ एकता, मेल। ४ प्रेम, स्नेह। ५ वैभव, ऐश्वर्य। ६ लाभ, फायदा।

संपतणी (बो)–क्रि० [सं० संपदनम्] १ पहुंचना। २ उत्पन्न होना। ३ सम्पन्न होना, फलीभूत होना।

संपति (ती)–स्त्री० [सं० संपत्ति] १ धन, दौलत। २ वैभव, ऐश्वर्य। ३ जमीन-जायदाद। ४ खुशहाली, सम्पन्नता। ५ लक्ष्मी। ६ लाभ, सिद्धि। ७ प्रेम-स्नेह। ८ एकता।

संपत्त–वि० [सं० संप्राप्त] १ समस्त कर्मों का क्षय करके जो सिद्धि को प्राप्त हुआ हो। २ देखो 'संपति'।

संपत्तणी (बो)–देखो 'संपतणी' (बो)।

संपत्ति (त्ती)–देखो 'संपति'।

संपद, संपदा–स्त्री० [सं० संपद्] १ सुख। २ देखो 'संपत'।

संपनणी (बो)–क्रि० [सं० सम्पन्नः] १ जन्म लेना, उत्पन्न होना। २ प्राप्त होना। ३ पूर्ण होना, सिद्ध होना। ४ समृद्ध होना, समृद्धिवान होना। ५ कुछ होना। ६ युक्त होना।

संपन्न, संपन्नउ–वि० १ समृद्धिशाली, सयुद्ध। २ भरापूरा, परिपूर्ण। ३ पूर्ण, पूरा। ४ युक्त, सहित। ५ पाया हुआ, प्राप्त। ६ जो हो गया।

संपय–क्रि०वि० [सं० संप्रति] अभी, इसी समय।

संपराय (क)–पु० [सं० संपराय] १ लड़ाई, युद्ध। २ मुठभेड़। ३ संकट, विपत्ति। ४ भावी दशा।

संपहुतणी (बो)–देखो 'पहुंचणी' (बो)।

संपलाणी (बो)–देखो 'संपड़ाणी' (बो)।

संपसुज–पु० [सं० संपसृज] युद्ध।

संपा–स्त्री० [सं०] विद्युत, बिजली।

संपाक–पु० [सं० शम्पाक] भीष्म के लिये गुरु तुल्य, एक त्यागी ब्राह्मण।

संपाड़णी (बो)–क्रि० स्नान कराना।

संपाड़ी–पु० [सं० संप्लावनम्] स्नान, मज्जन।

संपाट–पु० संहार, नाश।

संपाठ्य–पु० चौसठ कलाओं में से एक।

संपाडणी (बो)–देखो 'संपाड़णी' (बो)।

संपात–पु० [सं० सम्पातः] १ एक साथ प्रहार, बौछार। २ वार प्रहार, आघात। ३ मुठ भेड़। ४ युद्ध, समर। ५ संगम, समागम। ६ मेल, संसर्ग। ७ एकता। ८ देखो 'संपाति'।

संपाति (ती)–पु० [सं० सम्पातिः] १ जटायु का बड़ा भाई एक गिद्ध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र था। २ विभीषण का मंत्री एक राक्षस। ३ राम की सेना का एक बंदर। ४ देखो 'संपात'।

संपादक–वि० [सं०] काम को सम्पन्न करने या सम्पन्न करने की व्यवस्था करने वाला। –पु० किसी पुस्तक, पत्र या पत्रिका की प्रकाशन योग्य सामग्री को संकलित कर व्यवस्थित करने वाला, एडिटर।

संपादन–पु० [सं०] १ ठीक करने या दुरुस्त करने की क्रिया। २ पूर्ण करने की क्रिया। ३ तैयार करने की क्रिया। ४ प्रकाशन योग्य पुस्तक या लेख आदि की देख-रेख, पाठ मिलान आदि कार्य। ५ प्राप्ति, उपलब्धि।

संपादित–वि० [सं०] १ जिसका संपादन हो चुका हो। २ पूर्ण। ३ तैयार।

संपीड़ण (न)–स्त्री० [सं० सम्पीड्डनम्] १ दबाने की क्रिया। २ निचोड़ना क्रिया। ३ दुःख देने की क्रिया या भाव।

संपुट–पु० १ पत्तों का बना दोना। २ विचारधारा, भावना, नियत। ३ मुलम्मा, कलई। ४ गोद, अंक। ५ औषध बनाने की एक विधि। ६ अंजलि। ७ कपाल, खोपड़ी। ८ खड्डा, गर्त। ९ संदूक, पेटी। १० उधार दिया गया धन।

संपुटी–स्त्री० [सं० संपुट] कोई छोटी कटोरी या तश्तरी।

संपुत्त (त्तु)–वि० [सं० सम्प्राप्त] प्राप्त, लब्ध।

संपूरण–वि० [सं० सम्पूर्ण] १ समस्त, सब। २ अन्त तक पूरा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ समाप्त, पूर्ण। ४ सम्पन्न। ५ सहित, युक्त। ६ व्यतीत। ७ विसर्जित।–पु० १ भगवान विष्णु। २ सात स्वरों का एक राग विशेष।

संपूरित (व)–वि० [सं० संपूरित] १ पूर्ण भरा हुआ। २ ग्रसित। ३ सम्पन्न।

संपेखणी (बो)–क्रि० [सं० सं - प्र - ईक्षणम्] १ देखना। २ विचारना, सोचना। ३ स्वागत या अगवानी करना, आदर करना। ४ दर्शन करना। ५ समझना, जानना ६ ढूंढना, खोजना। ७ दिखाई देना, दिखना।

संप्रत, संप्रति, संप्रती–देखो 'सांप्रत'।

संप्रदान–पु० [सं० सम्प्रदान] १ दान देने की क्रिया या भाव। २ उपहार, भेंट। ३ दीक्षा के समय शिष्य को गुरु मंत्र देना। ४ कोई वस्तु देना या पहुंचाना। ५ व्याकरण में एक कारक। ६ विवाह, शादी। ७ विवाह संबंधी एक रस्म।

संप्रदा, संप्रदाय–वि० [सं० सम्प्रदाय] देने वाला।–पु० १ कोई धार्मिक मत या सिद्धान्त विशेष। २ किसी धार्मिक मत विशेष के अनुयायियों का समाज। ३ परिपाटी, प्रथा। ४ समान धर्मावलंबियों का समूह। ५ गुरुमंत्र।

संप्रदायी–वि० [सं० सम्प्रदायिन्] १ देने वाला। २ किसी धर्म या मत विशेष का अनुयायी।

संप्रहार–पु० [सं० सम्प्रहार] संग्राम, युद्ध।

संप्राप्त, संप्राप्त–वि० [सं० संप्राप्त] प्राप्त किया हुआ।

संप्राप्ति (ती, प्ती)–स्त्री० [सं० सप्राप्ति] १ उपलब्धि, प्राप्ति। २ घटित होने की क्रिया या भाव। ३ उपस्थित होने की क्रिया। ४ पूर्णता, समाप्ति।

संप्रेक्षण–पु० [सं०] १ अनुसंधान, खोज। २ अवलोकन।

संप्रेसण–पु० [सं०] १ भेजने की क्रिया या भाव। २ सुरक्षित पहुंचाने की क्रिया। ३ सेवाच्युत करने की क्रिया।

संबं, संबंध–पु० [सं० सम्बन्ध] १ रिश्ता, नाता। २ घनिष्ठ मित्रता, दोस्ती। ३ विवाह, शादी। ४ लगाव, सम्पर्क। ५ सगाई। ६ व्याकरण में एक कारक। ७ बंधने या जुड़ने की क्रिया, भाव। ८ विवरण, वृत्तान्त। ९ हवाला, उल्लेख, संदर्भ।

संबंधी–वि० सम्बन्ध रखने वाला, लगाव रखने वाला।–पु० १ रिश्तेदार, नातेदार। २ भाई-बंधु।

संब–पु० [सं० शंब] इन्द्र का वज्र।

संबछर–देखो 'संवत्सर'।

संबत–देखो 'संवत'।

संबतसर–पु० मार्गशीर्ष मास।

संबर–पु० [सं० शंबर] १ युद्ध, संग्राम। [सं० शबरम्] २ जल, पानी। ३ मेघ, बादल। ४ एक प्रकार की बड़ी मछली, मच्छी। ५ शिव द्वारा वधित एक राक्षस। ६ मृग, हिरन। ७ अर्जुन नामक वृक्ष। ८ एक पर्वत का नाम। ९ कामदेव। १० पशु, चौपाया। ११ देखो 'सांबर'।

संबरकंद–पु० एक प्रकार का कंद। गेंठी।

संबरत, संबरतक–पु० [सं० संवर्तक] प्रलय।

संबरनास–पु० [सं० शंबरनाश] कामदेव।

संबरमाया–स्त्री० [सं० शंबरमाया] इन्द्रजाल, जादू।

संबरसूदन–पु० [सं० शंबरसूदन] १ कामदेव। २ प्रद्युम्न की उपाधि विशेष।

संबरारि–पु० [सं० शंबर-अरि] कामदेव।

संबरी–पु० [सं० स्वयम्बर] स्वयम्बर।

संबळ (ल)–पु० [सं० संबल] १ यात्रा में साथ रहने वाली खाद्य सामग्री। २ भोजन।। ३ आश्रय, सहारा। ४ गेहूं की फसल में होने वाला एक रोग। ५ सेमल का वृक्ष।–वि० बलवान्, शक्तिशाली।

संबळी–वि० १ बलवान्, शक्तिशाली। २ देखो 'संबळी'।

संबाध–पु० [सं०] १ बाधा, अड़चन। २ भीड़, समूह। ३ संघर्ष, झगड़ा। ४ योनि, भग। ५ कष्ट, पीड़ा। ६ नरक का मार्ग।

संबार–स्त्री० स्मरण, याद, सुधि।

संबारणी (बो)–क्रि० १ स्मरण करना, याद करना। २ भजन करना। ३ स्तुति करना।

संबाहणी (बो)–देखो 'संभाणी' (बो)।

संबी–स्त्री० [सं० शिबा] फली।

संबुक–पु० [सं० शंबुकः] १ घोंघा। २ शंख। ३ हाथी की सूंड की नोक। ४ हाथी का कुंभस्थल।

संबुकावरत–पु० [सं० शंबुकावर्त] एक प्रकार का भगंदर रोग।

संबुद्ध–वि० [सं०] १ जागृत, चैतन्य। २ प्रबुद्ध, ज्ञानी।–पु० गौतम बुद्ध। जिनदेव।

संबुद्धि–स्त्री० [सं०] १ समझदारी, बुद्धिमता। २ आह्वान, पुकार।

संबूक–देखो 'संबुक'।

संबेसर–पु० [सं० शंबेसरू] नींद, निद्रा; शयन।

संबोध–पु० [सं०] १ पूर्ण बोध। २ सांत्वना, ढाढ़स। ३ पूर्ण जानकारी।

संबोधन–पु० [सं०] १ कहना, बातचीत शुरू करना क्रिया। २ श्रोताओं को सुनाना, ज्ञान देना, प्रवचन करना आदि क्रिया। ३ सभा आदि में प्रस्तुत किया जाने वाला अपना वक्तव्य। ४ व्याकरण में एक कारक।

संब्राहणी (बो)–देखो 'संभाणी' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संभ–पु० [सं० शंभ] १ प्रसन्न एवं हंसमुख पुरुष। २ इन्द्र का वज्र। ३ शंभासुर दैत्य। ४ सृष्टि, संसार।–वि० १ महान् जबरदस्त. प्रचंड। २ देखो 'संभु'।

संभग्न–पु० [सं०] शिव, महादेव।–वि० १ खंडित, टूटा हुआ। २ पराजित।

संभजीवत–देखो 'जीवतसंभ'।

संभड़–वि० नगण्य, तुच्छ।

संभणी (बो)–क्रि० १ कटिबद्ध या तैयार होना। २ छाना, उमडना। ३ सुसज्जित होना। ४ देखो 'संभळणी' (बो)।

संभनाथ–देखो 'संभूनाथ'।

संभम–पु० [सं० संभव] १ संतति, सन्तान। २ देखो 'संभ्रम'। ३ देखो 'प्रभव'।

संभर–पु० १ महादेव, शिव। २ देखो 'सांभर'। ३ देखो 'सांभरियो'।

संभरण–पु० १ पालण-पोषण। २ संचय, परिग्रह। ३ तैयारी। ४ सामान।

संभरणी (बो)–१ देखो 'समरणी' (बो)। २ देखो 'सांभळणी' (बो)।

संभरथळ–पु० वह स्थान जहां जाम्भोजी ने विश्नोई संप्रदाय का प्रवर्तन किया था।—सांमी–पु० जाम्भोजी के लिये एक संबोधन।

संभरपुर–पु० सांभर नगर।

संभरा–स्त्री० शाकम्भरी देवी।

संभराणिव्रत–पु० एक व्रत विशेष।

संभराथळ–देखो 'संभरथळ'।—सांमी='संभरथळसांमी'।

संभरिप, संभरियो, संभरी, संभरीक, संभरीसरेस–पु० चौहान क्षत्रियों का एक विशेषण।

संभळणी (बो)–क्रि० १ सचेत होना, सावधान होना। २ ठीक स्थिति या हालत में आना। ३ सुधरना, सुधार होना। ४ देखो 'सांभळणी' (बो)।

संभळाणी (बो)–क्रि० १ सौंपना, देना। २ प्राप्त कराना। ३ सुनाना। ४ कहना। ५ चोट या हानि से बचाव कराना। ६ हालत सुधारना। ७ कार्यभार देना। सौंपना। ८ बताना, समझाना।

संभळावण (णि, णी)–१ देखो 'भोळावण' (णी)। २ देखो 'सुणावणी'।

संभळावणी (बो)–देखो 'संभळाणी' (बो)।

संभाळ (ळी)–देखो 'संवळी'।

संभव–पु० [सं०] १ उत्पत्ति, आविर्भाव। २ मुमकिन। ३ संयोग। ४ प्रमाण। ५ स्त्री प्रसंग, सहवास, मैथुन। ६ कारण, हेतु। ७ किसी काम या बात के होने की स्थिति। ८ गणेश का एक नाम।–वि० १ जो करने योग्य हो, शक्य। २ संभावित।

संभवणी (बो)–क्रि० संभव होना, मुमकिन होना।

संभवनाथ–पु० जैन धर्म में एक तीर्थंकर।

संभा–स्त्री० शिवा, पार्वती।

संभाऊ–वि० स्वाभाविक।

संभाखण–देखो 'संभासण'।

संभाग (गि)–पु० [सं० सम्भाग] दान।

संभाणी (बो)–क्रि० १ कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व आदि लेना, पालन करना, कार्य करना। २ लेना, उठाना। ३ संभालना। ४ धारण करना। ५ गिरते-पड़ते को रोकना। ६ सुसज्जित करना। ७ सन्नद्ध करना, तैयार करना।

संभार–पु० [सं०] १ भार, वजन। २ लालन-पालन, पोषण। ३ संचय, संग्रह। ४ सामग्री, सामान। ५ धन, सम्पत्ति। ६ अधिकता, बाहुल्य। ७ समूह, ढेर। ८ देखो 'संभाळ'।

संभारणी (बो)–क्रि० १ आंखें-पलकें मूंदना, झपकाना। २ देखो 'समरणी' (बो)। ३ देखो 'संभाळणी' (बो)।

संभाळ–स्त्री० १ रिश्तेदारों-मित्रों आदि के घर भेजी जाने वाली भेंट, खाद्य-सामग्री आदि। २ देखभाल, हिफाजत। ३ सुपुर्दगी। ४ जांच।

संभाळणी (बो)–क्रि० १ हिफाजत या देखभाल करना। २ सुरक्षित रखना, बनाये रखना। ३ लेना, ले रखना। ४ अपने जिम्मे करना। ५ जांच करना, निरीक्षण करना। ६ सुधि लेना, खबर लेना। ७ प्रबंध या व्यवस्था करना। ८ पालन-पोषण करना। ९ तलाश करना, ढूंढना। १० गिरते-पड़ते को बीच में रोकना। ११ आश्रय देना, सहारा देना। १२ चलाना, संचालन करना। १३ उत्तरदायित्व लेना। १४ वृद्धि प्राप्त करना। स्वतः खड़ा होना, संभलना। १५ रक्षित या सुरक्षित करना। १६ अपने अधिकार या वश में करना। १७ रोकना, थामना। १८ इज्जत, प्रतिष्ठा आदि बचाना। १९ ठीक करना, व्यवस्थित करना। २० देखो 'समरणी' (बो)।

संभळाय–स्त्री० नदी, सरिता।

संभाळी–पु० [सं० संभाल] १ तलाशी, खोज, जांच। २ चेतनता। ३ संभालना क्रिया। ४ जांच-पड़ताल।

संभाव–पु० चिह्न, निशान।

संभावण (णी)–वि० १ संभालने वाला, लेने वाला। जिम्मेदार २ सहायक, रक्षक। ३ तैयार या उद्यत करने वाला।

संभावणी (बो)–देखो 'संभाणी' (बो)।

संभावन–स्त्री० [सं० संभावनम्] १ कल्पना, अनुमान। २ आदर सम्मान। ३ मुमकिन।

संभावना–स्त्री० [सं०] १ विचार-मनन। २ कल्पना। ३ आशा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ सम्मान, प्रतिष्ठा। ५ मुमकिन, संभावना। ६ संदेह। ७ साहित्य में एक अलंकार।

संभास (ण)–पु० [सं० सम्भाषण] १ बातचीत, संभाषण। २ कथन, वार्त्तालाप।

संभासुर–पु० एक दैत्य का नाम।

संभाहणी (बो)–देखो 'संभाणी' (बो)।

संभु–पु० [सं० शंभुः] १ शिव, महादेव। २ एक रुद्र का नाम। ३ मैरव। ४ एक दैत्य। ५ ब्रह्मा, विधाता। ६ सिद्ध या पूज्य पुरुष। ७ ऋषि, मुनि। ८ अंबरीष राजा का पुत्र। ९ अग्नि का तप नामक पुत्र। १० श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ११ सगण, तगण, यगण, मगण और सात गुरु वर्णों के क्रम से बनने वाला एक वर्ण वृत्त।–वि० १ आनन्ददायी, हर्षप्रद। २ श्वेत❀। ३ पीला❀। —गिरि, गिरी–पु० कैलाश पर्वत। —भूसण –पु० सर्प, चन्द्रमा। —लोक–पु० कैलाश पर्वत। —सुत –पु० स्कन्द, गणेश।

संभुतेज, संभुबीज–पु० पारद, पारा।

संभू–देखो 'संभु'।

संभूत–वि० (स्त्री० संभूता) १ एक साथ उत्पन्न। २ उत्पन्न। –पु० एक प्राचीन राजा।

संभूतनाथ–पु० [सं० शंभूतनाथ] शिव, महादेव।

संभूभेख (भेस)–पु० [सं० शंभुभेष] संन्यासियों या साधुओं द्वारा किया जाने वाला एक वृहद् भोज।

संभूमन (नु)–देखो 'स्वयंभुव'।

संभेदतीरथ–पु० [सं० संभेदतीर्थ] एक तीर्थ विशेष।

संभेदन–पु० जुटाने, भिड़ाने या मिलाने की क्रिया।

संभेरी–पु० एक प्राचीन राजा।

संभेळी–देखो 'सांभेळी'।

संभोग–पु० [सं० सम्भोग] १ किसी वस्तु का भली प्रकार प्रयोग। २ रतिक्रीड़ा, मैथुन। ३ साहित्य में शृंगार रस का एक भेद। ४ व्यवहार। ५ हाथी के मस्तिष्क का एक भाग।

संभोगी–वि० [सं० संभोगिन्] १ संभोग करने वाला। २ उपयोग करने वाला।

संभोग्य–वि० १ जो उपयोग या उपभोग के लिए हो। २ जो उपयोग के योग्य हो, भोगने योग्य हो।

संभोज–पु० [सं०] १ भोजन, खाना। २ खाद्य सामग्री।

संभोजक–वि० [सं०] भोजन करने या खाने वाला।

संभोजन–पु० [सं०] १ भोज, दावत। २ भोजन सामग्री।

संभोज्य–वि० [सं०] खाने योग्य, खाने की।

संभ्रत–वि० [सं०] आश्चर्य चकित, अचंभित।

संभ्रम–पु० [सं० सम-भ्रम] १ पुत्र, लड़का। २ पौत्र, पोता। ३ युद्ध, संग्राम। ४ आतुरता, घबराहट। ५ गलती, भूल। ६ मान, आदर, सम्मान। ७ चारों ओर घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया। ८ भ्रम, भ्रांति। ९ शिव का एक गण। –वि० १ भ्रमित। २ प्रतिष्ठित, सम्मानित। ३ तुल्य, समान, बराबर।

संभ्रमणी (बो)–क्रि० १ आश्चर्य करना, अचम्भा करना। २ गलती करना, भूल करना। ३ भ्रम करना, शंका करना। ४ युद्ध करना, संग्राम करना। ५ आश्चर्य चकित या अचंभित होना। ६ गलती या भूल होना। ७ भ्रमित होना, शंकित होना। ८ युद्ध होना, संग्राम होना। ९ आतुर होना घबराना।

संभ्रमी–देखो 'संभ्रम'।

संभ्रांणी–स्त्री० घोड़ों की एक जाति।–पु० इस जाति का घोड़ा।

संभ्रांत–वि० [सं० सम्भ्रान्त] १ चारों ओर घुमाया हुआ। २ क्षुब्ध। ३ सम्मानित, प्रतिष्ठित।

संभ्रांति–स्त्री० १ 'संभ्रांत' होने की दशा, अवस्था या भाव। २ आतुरता, घबराहट।

संम–देखो 'सम'।

संमत, संमति, संमत्त–१ देखो 'संवत'। २ देखो 'समिति'। ३ देखो 'सम्मत'।

संमद–स्त्री० [सं० सम्मद] १ खुशी, प्रसन्नता। २ देखो 'समुद्र'।

संमधणी (बो)–देखो 'समझणी' (बो)।

संमधि–वि० १ सम्बन्धित। २ देखो 'समधी'।

संमपणी (बो)–देखो 'समपणी' (बो)।

संमपूरण–देखो 'संपूरण'।

संमर–देखो 'समर'।

संमरणी (बो)–देखो 'समरणी' (बो)।

संमळ–१ देखो 'समळ'। २ देखो 'संवळी'। ३ देखो 'सिवल'। ४ देखो 'सवांळी'।

संमळी–देखो 'संवळी'।

संमळी–१ देखो 'संवळी'। २ देखो 'सांवळी'।

संमहणी (बो)–देखो 'संमणी' (बो)।

संमाव–देखो 'समाधि'।

संमाणी (बो)–देखो 'समाणी' (बो)।

संमापित, संमापिता (पीत, पीता)–देखो 'समापत'।

संमार–१ देखो 'संवार'। २ देखो 'संभाळ'।

संमारजणी (नी)–स्त्री० [सं० संमार्जनी] बुहारी, झाड़ू।

संमारणी (बो)–१ देखो 'संवारणी' (बो)। २ देखो 'संभाळणी' (बो)।

संमावणी (बो)–१ देखो 'संभावणी' (बो)। २ देखो 'समाणी' (बो)।

संमिरणी (बो)–क्रि० १ परस्पर टकराना, भिड़ना। २ देखो 'समरणी' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संमिळणो (बो)–क्रि० १ सम्मिलित होना, मिलना। २ मिलाप होना। ३ सम्मिश्रण होना।

संमीपत्य–देखो 'सांमीपत्य'।

संमुखो–पु० [सं० सम्मुखिन्] शीशा, दर्पण।

संमुखीन–वि० [सं० सम्मुखीन] १ सामने का, सम्मुख का। २ आमने-सामने। –क्रि०वि० सामने, सम्मुख।

संमुद्राव–पु० [सं०] युद्ध में भागने की क्रिया।

संमुह, संमुहउ–देखो 'समूह'।

संमुहा–देखो 'समुहा'।

संमूह–देखो 'समूह'।

संमेहळो–देखो 'सांमेळो'।

संमोय–पु० संयम।

संमोवणो (बो)–१ देखो 'संवारणो' (बो)। २ देखो 'समोहणो' (बो)।

संमोहण–पु० [स० सम्मोहनः] १ कामदेव के पांच बाणों में से एक। २ वशीकरण, सम्मोहन।

संमोहणो (बो)–क्रि० १ आकर्षित होना, करना। २ मोहित होना, मुग्ध करना।

संम्य–देखो 'सम'।

संम्रत–वि० १ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ। २ देखो 'स्मृति'। ३ देखो 'समरथ'।

संम्रति (ती), संम्रित–देखो 'स्मृति'।

संम्रथ–देखो 'समरथ'।

संम्हा–स्त्री० [सं० संमहाः] आंगन उबाला।

संयत–वि० [सं०] १ कैद किया हुआ। २ बांधा हुआ, जकड़ा हुआ। ३ रोका हुआ। ४ मर्यादित। ५ व्यवस्थित, नियमबद्ध। ६ हद्द या सीमा में रखा हुआ। ७ वह जिसने पंचेंद्रिय पर काबू पा लिया हो।–पु० १ कैद। २ युद्ध, संग्राम। ३ योगी, संन्यासी। ४ शिव, महादेव।

संयद्दसो–स्त्री० [सं०] सूर्य की सात किरणों में से एक।

संयम–पु० [सं० मयमः] १ रोक, दमन। २ मन के विकारों का निरोध, इन्द्रिय निग्रह। ३ धैर्य, शांति। ४ धार्मिक व्रत। ५ स्वास्थ्य के लिये किया जाने वाला परहेज। ६ अनुचित कामों से बचाव। ७ मन की एकाग्रता, ध्यान, समाधि। ८ व्यवस्थित बंधन।

संयमन–पु० १ संयम करने की क्रिया या भाव। २ अनुचित कार्यों की रोक। ३ आत्म-निग्रह। ४ शृंगार में एक आसन।

संयमनी, संयमनी–स्त्री० [सं० संयमिनी] यमपुरी।

संयमी–वि० [सं० संयमिन्] १ संयम-नियम से रहने वाला। २ धैर्यवान। ३ जितेन्द्रिय।–पु० तपस्वी, ऋषि, साधु।

संयार, संयारणी–स्त्री० बढ़ई के कार्य का एक उपकरण।

संयु–पु० [स० शंयु] १ बृहस्पति का एक पुत्र। २ एक आचार्य।

संयुक्त–वि० [सं०] १ सहित। २ बराबर। ३ सम्मिलित, शामिल। ४ जुड़ा हुआ, सलग्न। ५ जिसका विघटन न हुआ हो। ६ मिलकर काम करने वाला।

संयुक्ता–स्त्री० [सं०] एक छन्द विशेष।

संयुग–पु० [सं०] १ मिलाप, संयोग। २ भिड़न्त, टक्कर। ३ युद्ध, लड़ाई।

संयुगत, संयुत–देखो 'संयुक्त'।

संयुप–पु० [सं०] सूर राजा का पुत्र एक यादव।

संयोग–पु० [सं०] १ मिलन, मेल। २ समागम। ३ वैशेषिक दर्शन का एक गुण। ४ बराबर, समान। ५ समान उद्देश्यों की पूर्ति संबंधी संधि। ६ प्रेमी-प्रेमिका का मिलन। ७ व्याकरण में व्यंजनों का मेल। ८ रति-क्रीड़ा, मैथुन। ९ दो ग्रहों का समागम। १० किसी कार्य या घटना का योग, इत्तफाक। ११ शिव, महादेव। १२ योग, जोड़। १३ वैवाहिक संबंध।

संयोगी–वि० [सं० संयोगिन्] (स्त्री० संयोगिनी, संयोगणी) १ जिसका मिलन या संयोग हुआ हो। २ विवाहित। ३ संयोग के फलस्वरूप होने वाला।

संयोजन–पु० [सं०] १ मेल-मिलाप। २ सम्मिश्रण। ३ मैथुन, रतिक्रीड़ा। ४ कार्य-व्यवस्था।

संयोजित–वि० जिसका संयोजन किया गया हो।

संरंभ–पु० [सं०] १ क्रोध, गुस्सा। २ आरंभ, शुरुआत। ३ उत्पात, हंगामा। ४ गर्व, घमण्ड। ५ उत्साह, उमंग।

संरक्षक–वि० [सं०] १ आश्रयदाता। २ पालन-पोषण करने वाला। ३ रक्षक। ४ अभिभावक।

संरक्षण–पु० [सं०] १ देख-रेख, निगरानी। २ हिफाजत। ३ सुरक्षा। ४ अधिकार, कब्जा।

संरक्षी–वि० [सं० संरक्षिन्] देख-रेख करने वाला।

संराधन–पु० [सं०] १ जय-जयकार। २ ध्यान मग्नता। ३ पूजा, अर्चना।

संरूढ–वि० [स०] १ अच्छी तरह चढ़ा या जमा हुआ। २ साथ-साथ उत्पन्न। ३ धृष्ट।

संरोध–पु० [सं०] १ रोक, रुकावट। २ बाधा, अड़चन। ३ नाका बंदी। ४ घेरा।

संलग्न–वि० [सं०] १ सटा हुआ, जुड़ा हुआ। २ निकटस्थ। ३ भिड़ा हुआ। ४ लीन, मग्न।

संलपन–पु० १ प्रलाप, बकवाद। २ गपशप, बातचीत।

संलय–पु० [सं०] १ नींद, निद्रा। २ घुलन, लीनता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संलाप-पु० [सं०] बातचीत, वार्त्तालाप।

संलापक-पु० [सं०] १ नाटक में एक प्रकार का संवाद। २ एक प्रकार का उप रूपक।-वि० वार्त्तालाप करने वाला।

संलिप्त-वि० [सं०] १ लीन, लगा हुआ। २ घुला-मिला हुआ।

संलीन (न)-वि० [सं०] १ आच्छादित, ढका हुआ। २ अच्छी तरह लगा हुआ, संलग्न। ३ संकुचित, सिकुड़ा हुआ।

संलेखना, संलेहणा (णा)-स्त्री० १ संथारा से पूर्व अनशन की क्रिया। २ एक प्रकार की तपस्चर्या।

संलोड़णा (बो)-क्रि० १ झकझोरना, हिलाना। २ मथना, इधर-उधर करना। ३ उथल-पुथल करना।

संवच्छर-देखो 'संवत्सर'।

संवच्छरदाण-पु० एक वर्ष तक किया जाने वाला दान।

संवच्छरी-देखो 'संवत्सरी'।

संवटणा (बो)-देखो 'सिमटणा' (बो)।

संवत-अव्य० [सं० संवत्] १ ईसा से ५६ वर्ष पूर्व प्रारंभ किया गया विक्रमादित्य वर्ष, विक्रमी वर्ष। २ वर्ष, साल। ३ किसी विशिष्ट गणनाक्रम वाला काल। समय।

संवतसर-देखो 'संवत्सर'।

संवत्सर-पु० १ वर्ष, साल। २ फलित ज्योतिष में वर्ष। ३ शिव, महादेव। ४ विष्णु। ५ विक्रमी संवत। ६ वर्ष का अधिष्ठाता।—दांण, दान-पु० एक वर्ष तक किया जाने वाला दान।

संवत्सरी-स्त्री० [सं०] १ आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से भादव शुक्ला चतुर्दशी तक किया जाने वाला व्रत (जैन) २ बरसी। ३ पर्यूषण के बाद का दिन (जैन)।

संवदण (न)-पु० [सं० संवदन] १ बातचीत, वार्त्तालाप। २ वशीकरण, सम्मोहन। ३ परीक्षा। ४ मंत्र।

संवर-पु० [सं०] १ दुराव, छिपाव। २ सहनशील होने की दशा। ३ जल, पानी। [सं० संवरः] ४ सिकुड़न। ५ पुल, सेतु। ६ एक प्रकार का हरिन। ७ एक दैत्य का नाम। ८ जैन मतानुसार इन्द्रिय और योगों की अशुभ प्रवृत्तियों से आते हुए कर्मों को रोकने की क्रिया या ढंग।

संवरण-पु० [सं०] १ रोक। २ चुनाव। ३ आच्छादन। ४ बहाना, मिस।

संवरत-पु० [सं० संवर्त्त] १ वर्ष। २ संसार का नैमित्तिक प्रलय। ३ अंगिरा ऋषि के आठ पुत्रों में से एक।

संवरतक-पु० [सं० संवर्त्तक] १ प्रलयाग्नि। २ प्रलयकालीन बादल। ३ बलराम का एक नाम। ४ बलराम के हल का नाम।

संवरतकास्त्र-पु० एक शास्त्र विशेष।

संवरणी (बो)-क्रि० १ संवारा जाना। २ देखो 'संवराणी'(बो)। ३ देखो 'समरणी' (बो)।

संवराणी (बो), संवराबणी (बो)-क्रि० १ जीर्णोद्धार कराना, मरम्मत कराना। २ साफ कराना, समतल कराना। ३ सजाना, अलंकृत कराना। ४ किसी को सुन्दर बनाना। ५ कार्यादि सुधराना।

संवळ-स्त्री० १ एक प्रकार की मछली। २ देखो 'सांवळी'। ३ देखो 'संबळ'।

संवळी-स्त्री० १ चील पक्षी। २ देखो 'संवळो' (स्त्री०)।

संवळो-पु० (स्त्री० संवळी) मांसाहारी एक काला पक्षी।-वि० १ अनुकूल। २ सीधा, सरल। ३ उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया। ४ सम्मुख, सामने। ५ देखो 'सांवळो'।

संवह-पु० [सं०] १ एक वायु मार्ग। २ देवताओं का विमान चालक। ३ अग्नि की एक जिह्वा।

संवाद-पु० [सं०] १ वार्त्तालाप, बात-चीत। २ खबर, समाचार। ३ प्रसंग। ४ सहमति, अनुमति। ५ बहस, वाद-विवाद।

संवादक-वि० [सं०] १ संवाद करने वाला, बातचीत करने वाला। २ बोलने वाला। ३ समाचार देने वाला।

संवादन-पु० [सं०] १ भाषण। २ बातचीत, संवाद।

संवादी-वि० [सं०] १ सहमत होने वाला। २ बातचीत करने वाला। ३ बराबर, सदृश।-पु० संगीत का एक स्वर।

संवादो-पु० १ लघु काव्य। २ देखो 'संवाद'।

संवार-स्त्री० १ खेत में पड़े मिट्टी के ढेले तोड़ने व भूमि को समतल व नरम करने का कृषि उपकरण। २ सुधारने व सजाने की क्रिया। ३ हजामत। ४ बचत। ५ सवेरा, प्रातःकाल।

संवारण-स्त्री० १ सजाने, सुधारने की क्रिया या भाव। २ निषेध, विरोध। ३ हटाना क्रिया।-वि० सुधारने वाला।

संवारणी (बो)-क्रि० १ अलंकृत करना, सजाना। २ कोई वस्तु सुधारना, सुंदर बनाना। ३ रचना, निर्मित करना। ४ व्यवस्थित करना। ५ सुसज्जित करना, सजाना। ६ संभालना, ठीक करना। ७ गुणों में वृद्धि करना। ८ साफ करना, बुहारना। ९ अन्तिम रूप देना। १० तेज करना, तीक्ष्ण करना। ११ ठीक करना, जीर्णोद्धार करना। १२ ठीक काम चलाना।

संवारै-अव्य० [सं० श्वः] १ आने वाला दिन। २ प्रातः काल, तड़का।

संवाळो-देखो 'सुंवाळो'।

संवास-पु० [सं०] १ साथ बसना या रहना, सहवास। २ पारस्परिक संबंध। ३ सभा, समाज। ४ घर, मकान। ५ सार्वजनिक खुला स्थान। ६ स्त्री प्रसंग, मैथुन।

संवाहक-वि० [सं०] १ ले जाने वाला। २ पहुंचाने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संवाहन–वि० [सं०] १ चलाने की क्रिया, परिचालन। २ ढोवाई भार वहन।

संविग्य–वि० [सं० संविज्ञ] पूर्ण जानकार।

संविग्यान–पु० [सं० संविज्ञान] १ पूर्ण ज्ञान। २ सहमति, समर्थन। ३ स्वीकृति, मंजूरी।

संवित–स्त्री० [सं० संविद्] अंगीकार, स्वीकृति।

संवो–देखो 'समी'।

संवेग–पु० [सं० संवेग] १ पूर्व वेग, तीव्रता, तेजी। २ उत्तेजना, आवेश। ३ क्षोभ। ४ मोक्ष की इच्छा। ५ त्याग, विरक्ति संयम। ६ वैराग्य भाव। ७ सम्यकत्व के पांच अंगों में से एक अंग।

संवेगी–वि० १ त्यागी, वैरागी। २ चरित्रवान। ३ निष्ठावान। ४ सम्यकत्व को धारण करने वाला। –पु० जैन साधुओं का एक भेद।

संवेटणो (वो)–देखो 'समेटणो' (वो)।

संवेद (न)–पु० [सं०] १ सुख-दुःख का बोध। २ ज्ञान।

संवेदित–वि० [सं०] अनुभव कराया हुआ, बोध कराया हुआ, बताया हुआ।

संवेस–पु० [सं० संवेश] १ पहुँचने की क्रिया। २ घुसना क्रिया, प्रवेश। ३ बैठना क्रिया। ४ निद्रा, नींद। ५ पहुंच। ६ स्वप्न।

संवेसण–स्त्री० [सं० संवेशन] शय्या।

संवेस्टण–स्त्री० [सं० संवेष्टन] १ घेरने, लपेटने की क्रिया। २ ढकना क्रिया।

संवो–देखो 'समी'।

संवृत–पु० [सं० संवृत:] १ वरुण का एक नाम। २ भगवान विष्णु का एक नाम।

संस–पु० [सं० संशय] १ आशंका, शक। २ शपथ।

संसकार–देखो 'संस्कार'।

संसकिरत, संसकृत–१ देखो 'संस्कृत'। देखो 'संसकित'।

संसकृती–पु० [सं० संस्कृत] १ संस्कृत भाषा का पंडित। २ देखो 'संस्कृति'।

संसकित–पु० १ संस्कार विधि। २ देखो 'संस्कृत'।

संसत–पु० १ समाज। २ संसद।

संसतउ–पु० शिथिल आचार।

संसतर–पु० [सं० संस्तर:] यज्ञ, हवन।

संसतवन–पु० [सं० संस्तवन] यज्ञ, हवन।

संसद–स्त्री० [सं०] १ राजसभा, सभा। २ प्रजातांत्रिक शासन पद्धति के अनुसार जनप्रतिनिधियों की संस्था जो देश का शासन संभालती है। ३ मंडली।

संसप्त–वि० [संशप्त] १ शापग्रस्त। २ वचनबद्ध।

संसप्तक–पु० [सं० संशप्तक:] १ रणक्षेत्र में विमुख न होने वाला योद्धा। २ शत्रु को मारने में दृढ संकल्प किया हुआ योद्धा। ३ किसी कार्य का बीड़ा उठाने वाला व्यक्ति।

संसफोट–देखो 'संस्फोट'।

संसमन–पु० [सं० संशमन] १ शांत करने की क्रिया। २ नाश, दमन, शमन। ३ दोषों का शोधन करने वाली औषधि।

संसय–पु० [सं० संशय] १ संदेह, शक। २ भ्रम। ३ अनिश्चयात्मक ज्ञान। ४ दुविधा। ५ खतरा, संकट।

संसयात्मा–स्त्री० [सं० संशयात्मा] संदेहवादी।

संसरग–पु० [सं० संसर्ग] १ सम्पर्क, लगाव। २ मेल-मिलाप। ३ मैथुन, संभोग। ४ सहवास। ५ निकटतम संबंध।

संसरगदोस–पु० [सं० संसर्गदोष] साथ रहने से उत्पन्न होने वाले दोष, अवगुण।

संसरगी–वि० साथ रहने वाला, साथी, सम्पर्क में रहने वाला।

संसरण (णो)–पु० [सं० संसरण] १ संसार। २ राजपथ, राजमार्ग। ३ नगर के समीपस्थ धर्मशाला। ४ पुनर्जन्म।

संसरप–पु० [सं० संसर्प:] १ क्षय मास वाले वर्ष में आने वाला अधिक मास। २ रेंगना क्रिया।

संसलभ–पु० छप्पय छंद का एक भेद।

संसाक्रित–स्त्री० संस्कृत भाषा।

संसाधक–वि० [सं०] १ सम्पन्न करने या पूर्ण करने वाला। २ जीतने वाला।

संसाधन–पु० [सं०] १ तैयारी, आयोजन। २ दमन, विजय। ३ उपकरण।

संसाधिनी–स्त्री० एक प्रकार की विद्या।

संसार–पु० [सं०] १ दुनिया, जगत, विश्व, मृत्युलोक। २ मानव सृष्टि। ३ मानव समाज। ४ दुनियादारी का काम। ५ भवचक्र, पुनर्जन्म। ६ मार्ग, रास्ता। ७ घर, गृहस्थी।—चक्कर, चक्र–पु० जगत के प्रपंच, झंझट। आवागमन। भवचक्र।

संसारगुर (गुरु)–पु० [सं० संसारगुरु] १ जगद्गुरु शंकराचार्य। २ कामदेव।

संसारि, संसारी (क)–वि० [सं० संसारिन्] १ संसार का, संसार संबंधी। २ संसार में रहने वाला। ३ दुनियादार, गृहस्थ।–पु० १ जीवधारी, प्राणी। २ दुनिया का कार्य।

संसारी–देखो 'संसार'।

संसालण–स्त्री० एक प्रकार का तरल खाद्य पदार्थ।

संसि–वि० [सं० शंसि] घोषणाकर्त्ता।

संसिद्ध, संसिद्धि, संसिध, संसिधि (धी)–स्त्री० [सं० संसिद्धि] १ स्वभाव। २ लक्षण। ३ प्रकृति। ४ सदमस्त स्त्री।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ योग सिद्धि। ६ मोक्ष, मुक्ति –वि० पूर्ण सम्पन्न। योग सिद्ध।

संसीत–वि० ठंड से जमा, ठंडा।

संसे, संसै–देखो 'संसय'।

संसोभित–वि० सुशोभित।

संसोसण–पु० [सं० संशोषण] शोषण, सोखना क्रिया।

संसौ–देखो 'सांसौ'।

संस्करण–पु० [सं०] १ दुरुस्त या ठीक करने की क्रिया। २ संस्कार करना क्रिया। ३ पुस्तक, पत्रिका आदि की एक बार की छपाई, प्रकाशन, आवृत्ति।

संस्कार–पु० [सं०] १ सुधार, दुरुस्ती। २ संशोधन, शुद्धि। ३ शिक्षा, उपदेश। ४ पूर्व जन्म की वासना। ५ धार्मिक दृष्टि से शुद्धिकरण। ६ द्विजातियों में होने वाले जन्म से मृत्यु तक के कार्य। ७ मृतक क्रिया। ८ धार्मिक अनुष्ठान। ९ शारीरिक व मानसिक शुद्धि। १० विचारधारा, सिद्धान्तों के अनुसार मन पर जमने वाला प्रभाव। ११ परिशोधन।—हीण–वि० जिसका संस्कार या शुद्धि न हुई हो।

संस्कृत–स्त्री० [सं० संस्कृत] १ भारत की प्राचीन साहित्यिक भाषा जो वैदिक भाषा के बाद प्रचलित हुई। देववाणी। २ व्याकरण के नियम से बना शब्द। ३ धार्मिक प्रथा। ४ सस्कारित व्यक्ति या वस्तु। ५ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।–वि० १ जिसका संस्कार कर दिया गया हो, परिष्कृत, शोधित। २ सुधारा हुआ, दुरुस्त। ३ पकाया हुआ।

संस्कृतजल्प–स्त्री० स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

संस्कृति, संस्कृती–पु० [सं० संस्कृति] १ संस्कार करने की क्रिया। २ किसी समाज या राष्ट्र की आचरणगत परंपरा, सभ्यता व रहन-सहन सम्बन्धी बातें। ३ दार्शनिक, साहित्यिक व नैतिक चिन्तन, आदर्श। ४ समाज विशेष के व्यक्तियों के दैनिक जीवन सम्बन्धी बातें।

संस्तव–पु० [सं०] १ प्रशंसा, तारीफ। २ स्तुति। ३ परिचय।

संस्तवणो (बो)–क्रि० [सं० संस्तवम्] गुणगान करना, कीर्तिगान करना, स्तुति करना।

संस्तुत–देखो 'संस्तव'।

संस्थल–पु० एक प्रकार का शस्त्र।

संस्थान–पु० [सं० संस्थान] १ ठहरने की क्रिया या भाव। २ ठहरने का स्थान। ३ शिक्षा आदि का कोई छोटा केन्द्र। शाला। ४ किसी विशेष कार्य से बना विभाग। ५ सभा।

संस्था–स्त्री० [सं०] १ ठहरने की क्रिया या भाव। २ सभा, मंडल। ३ कार्य या उद्देश्य विशेष से गठित समिति। ४ व्यवस्था, मर्यादा। ५ विधि, तरीका। ६ रहन-सहन का नियमित ढंग। ७ ठहराव, विश्राम। ८ अभिव्यक्ति। ९ मृत्यु। १० शव का सस्कार।

संस्थापक–वि० [स०] १ स्थापित करने वाला। २ शुरूआत या प्रारंभ करने वाला। ३ निर्माण करने या बनाने वाला।

संस्परद्धा–स्त्री० [सं० संस्पर्द्धा] १ ईर्ष्या, द्वेष। २ किसी के बराबर या समान होने की इच्छा।

संस्परस–पु० [सं० संस्पर्श] १ अच्छी तरह से स्पर्श होने का भाव। २ संगम, संयोग। ३ संसर्ग, मैथुन।

संस्फोट सस्फोट–पु० [सं० संस्फोटः] युद्ध, समर।

संस्मरण–पु० [सं०] १ अच्छी तरह या पूरी तरह याद, स्मरण। २ संस्कारजन्य ज्ञान।

संसृत, संसृति–स्त्री० [सं० संसृतिः] १ जन्म। २ आवागमन, भवचक्र। ३ आने-जाने का मार्ग। ४ संसार, जगत। ५ याददाश्त।

संस्रय–पु० [सं० संश्रय] १ शरण, आश्रय। २ अभिसंधि, मेल, सुलह। ३ शरणस्थल, घर।

संस्रस्ट–पु० [सं० संसृष्ट] एक पर्वत का नाम।

संस्रस्टि–स्त्री० [सं० संसृष्टि] १ मिलावट, मिश्रण। २ परस्पर सम्बन्ध लगाव। ३ घनिष्ठता। ४ काव्यालंकारों का समन्वय। (साहित्य)

संस्रुत–वि० [सं० संश्रुत] स्वीकृत, अंगीकृत।

संहंसकर–देखो 'सहस्रकर'।

संहसदोयचख–पु० [सं० द्विसहस्रचक्षु] शेषनाग।

संहसदोयस्रवण–पु० [सं० द्विसहस्रश्रवणः] शेषनाग।

संहट–पु० [सं० सघट] बैठक।

संहति–पु० [सं०] समूह।

संहरण–पु० [सं०] १ पूर्णता। २ एकत्रीकरण, संग्रह। ३ नाश, संहार।

संहरणो (बो)–देखो 'संघरणो' (बो)।

संहरत्ता–वि० [सं० संहर्त्तृ] नाश करने वाला, संहार कर्त्ता।

संहरस–पु० [सं० संहर्ष] १ रोमांच। २ पुलक। ३ प्रतिस्पर्द्धा। ४ आनन्द, हर्ष।

संहलाद–पु० [स०] भक्त प्रहलाद के बड़े भाई का नाम। एक असुर।

संहसपात–पु० [सं० सहस्र-पत्र] कमल।

संहसफण–पु० [सं० सहस्र-फण] शेषनाग।

संहार–पु० [सं०] १ नाश, ध्वंस। २ प्रलय। ३ संहार, विनाश। ४ एक नरक का नाम। ५ एक भैरव का नाम। ६ संचय, संग्रह।–वि० नाश करने वाला, विध्वंसक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संहारक, संहारकारी–वि० [सं०] विध्वंस या संहार करने वाला, विनाशक।

संहारण–पु० सिंह, शेर।

संहारकाळ–पु० [सं० संहारकाल] प्रलय, सृष्टि का विनाश।

संहारणी (बो)–क्रि० [सं० संहारण] १ मारना, संहार करना। २ नाश करना, ध्वंस करना।

संहारभैरव–पु० [सं०] चौसठ भैरवों के अन्तर्गत एक।

संहारू–देखो 'संहार'।

संहिता–स्त्री० [सं०] १ एक प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ। २ शासन सम्बन्धी नियम या विधान। ३ वेदों का एक विभाग, मंत्र भाग। ४ संयोग, मेल। ५ विश्व को संगठित रखने वाली शक्ति। ६ कार्य प्रणाली।

संहीयर–स्त्री० सहचरी, सखी।

स–पु० [सं० ष,शः] १ भोजन, खाना। २ शिव, महादेव। ३ हिमालय पर्वत। ४ रंग। ५ संदेह, शक। ६ कल्याण-मंगल। ७ तालाब, सरोवर। ८ तीर, बाण। ९ सूर्य, रवि। १० पैर, पद। [सं० ष] ११ नाश, संहार। १२ मोक्ष मुक्ति। १३ अवसान। १४ आकाश, नभ। १५ विष्णु का एक नाम। १६ इन्द्र। [सं० स] १७ सर्प, सांप। १८ पक्षी। १९ पवन, वायु। २० सगण का सूचक शब्द। –स्त्री० २१ पार्वती, दुर्गा। २२ सरस्वती। २३ लक्ष्मी। २४ शिक्षा। २५ वाणी। २६ ध्वनि, शब्द। २७ शिखा। २८ दीप्ति, चमक। २९ जीवात्मा। –सर्व० १ उस। २ वह। ३ सब। –वि० श्रेष्ठ, उत्तम, अद्दश्य। –अव्य० १ पादपूरक अव्यय शब्द। २ तक, पर्यन्त। ३ एक प्रकार का उपसर्ग।

सइ–पु० [सं० शत] दश की दश गुनी व निन्यानवें के बाद वाली संख्या, सौ, शत। –सर्व० १ सब, समस्त। २ स्वयं, खुद।

सइंग–देखो 'सैंग'।

सइंथु–पु० शिर का आभूषण विशेष।

सइंभरि–१ देखो 'संभरी'। २ देखो 'सांभर'।

सइंवर, सइंवरि (री)–देखो 'स्वयंवर'।

सइंवळ–पु० एक प्रकार का वृक्ष।

सइंहणी (बो)–देखो 'सहणी' (बो)।

सइ–वि० [सं० शत] १ सौ, दश का दश गुना। २ देखो 'सती'। –सर्व० १ स्वयं, खुद। २ सब।

सइकी–देखो 'सईकी'।

सइड़–पु० १ सांड, नन्दी। २ बैल। ३ चोट, प्रहार।

सइण–देखो 'सैण'।

सइथउ–पु० [सं० सीमन्तक] १ जैन मतानुसार एक नरक। २ सिन्दूर।

सइधु–पु० स्त्रियों का एक आभूषण विशेष।

सइमुख, सइमुखि–क्रि०वि० सामने, प्रत्यक्ष।

सइयण (णि, णी)–स्त्री० १ दर्जी जाति की स्त्री, दर्जन २ देखो 'सैण'।

सइयद (द्)–देखो 'सैयद'।

सइयर–देखो 'सखी'।

सइर (रि, री, रु, रू)–देखो 'सरीर'।

सइस–देखो 'सईस'।

सई–१ देखो 'सखी'। २ देखो 'सती'।

सईक–वि० सौ के लगभग। –स्त्री० सौ की संख्या।

सईकड़ी–देखो 'सैकड़ी'।

सईकी–पु० सौवां वर्ष।

सईद, सईयत, सईयद–पु० १ चाकर, टहलुआ। २ देखो 'सैयद'।

सईल–देखो 'सेल'।

सईस–पु० [अ० साईस] घोड़े की देखभाल करने वाला व्यक्ति।

सईह–देखो 'सही'।

सउ, सउ–सर्व० १ वह। २ देखो 'सहित'। ३ देखो 'सौ'। ४ देखो 'सरब'।

सउकि, सउकी–देखो 'सौक'।

सउच–देखो 'सौच'।

सउण–देखो 'सुगन'।

सउणी (बो)–देखो 'सोवणी' (बो)।

सउथक–पु० स्वस्तिक।

सउदागर–देखो 'सौदागर'।

सउरी–पु० [सं० शौरी] यमराज।

सउहाणी (बो)–देखो 'सुहाणी' (बो)।

सऊ–देखो 'साऊ'।

सऊकार–देखो 'साहूकार'।

सऊर–पु० [अ० शऊर] १ योग्यता। २ ढंग, शिष्टता। ३ बुद्धि, अक्ल।—दार–वि० योग्य शिष्ट, बुद्धिमान।

सऊध (धी)–वि० १ कुलीन, उच्च कुल का। २ खानदानी। ३ पद के अनुरूप।

सकंद (द्ध)–देखो 'स्कंद'।—जणणी, माता='स्कंदजणणी'।

सक–पु० [सं० शक] १ एक प्राचीन राजवंश। २ राजा शालिवाहन। ३ शालिवाहन द्वारा चलाया गया शक संवत। ४ संवत। ५ वर्ष। ६ वीर, योद्धा। ७ देवता। ८ तातार देश का प्राचीन नाम। ९ मुसलमान, यवन। १० तातार देश की एक प्राचीन जाति। ११ भय, डर। [अ० शक] १२ भ्रम, संदेह।–वि० १ समर्थ, सामर्थ्यवान। २ साफ, निर्मल।–सर्व० सब, समस्त।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकड़–वि० जबरदस्त, शक्तिशाली।

सकज (जी)–देखो 'सकज्ज'।

सकजापण (णी)–पु० शक्ति, पराक्रम, शौर्य।

सकज्ज–पु० हाथी, गज।–वि० १ समर्थ, शक्तिशाली। २ कार्य कर्त्ता। ३ कुशल कार्यकर्त्ता। ४ योग्य, लायक, काम का। ५ उत्तम, श्रेष्ठ। ६ वीर, बहादुर।–क्रि० वि० लिए, वास्ते, हेतु।

सकज्जाई–स्त्री० बहादुरी, वीरता।

सकट–पु० [सं० शकट] १ गाड़ी, छकड़ा। २ रथ। ३ शकटासुर दैत्य। ४ एक प्रकार का सैनिक व्यूह। ५ एक तौल विशेष। –वि० बुरा, कुत्सित, पापी।

सकटभेद–पु० [सं०] जन्म पत्री में एक लग्न।

सकटहा–पु० [सं० शकटहा] श्रीकृष्ण।

सकटार–पु० [सं० शकटार] चाणक्य का सहयोगी व महानंद का प्रधान।

सकटारि–पु० [सं० शकटारि] श्रीकृष्ण।

सकटासुर–पु० [सं० शकटासुर] एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

सकटिका, सकटी–स्त्री० [सं० शकटिका] १ छोटी गाड़ी। २ बग्घी। ३ गाड़ी।

सकट्ठ (ठ)–देखो 'सकट'।

सकठस्थ–वि० [सं० शकटस्थ] रथ या गाड़ी में बैठा हुआ।

सकणी (नी)–क्रि० १ कार्य करने योग्य, समर्थ या सक्षम होना। २ संभव होना, करने की स्थिति में आना।

सकत–१ देखो 'शक्ति'। २ देखो 'सख्त'।

सकतमंत्र–देखो 'सक्तिमंत्र'।

सकति–देखो 'सक्ति'।

सकतिभू–पु० [सं० शक्ति-भू] कार्तिकेय, षड़ानन।

सकतिवंत–वि० शक्तिशाली, बलवान।

सकतिहथी–वि० शक्ति या शस्त्र रखने वाला।

सकती–देखो 'सक्ति'।

सकतीधरण (धारण, धारी)–पु० [सं० शक्तिधारिन्] गरुड़।

सकतीपुर (पुरी)–देखो 'सक्तिपुर'।

सकत्त–१ देखो 'शक्ति'। २ देखो 'सख्त'।

सकत्ति (त्ती)–देखो 'सक्ति'।

सकन–देखो 'सुगन'।

सकनकूर–पु० [अ० सकन्कूर] गोह की तरह का एक जीव, रेत की मछली।

सकपकाणी (णी)–क्रि० १ आश्चर्य चकित होना। २ हिचकिचाना। ३ शर्माना। ४ असंतुलित, चंचल होना।

सकबंध (धी)–देखो 'साकाबंध'।

सकमळकर–पु० [सं० सकमल-कर] विष्णु।

सकयत्थो–वि० [सं० सकृतार्थ] कृतार्थ निहाल।

सकर–१ देखो 'सक्र'। २ देखो 'सक्कर'।

सकरकंद (दी)–पु० [सं० शर्करा-कंद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।

सकरड़ (ड़ी)–वि० जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली।

सकरण–पु० संहार, नाश।–वि० [सं० सकर्ण] १ जिसके कान हों। २ जो सुनने में समर्थ हो।

सकरणी (णी)–क्रि० १ स्वीकार होना, मंजूर होना। २ भुगतना, भुगतान होना।

सकरपारो–पु० [सं० शर्करा-पार] १ एक प्रकार का व्यंजन, विशेष। २ नींबू से कुछ बड़ा एक फल। ३ स्त्रियों के सिर पर धारण करने का आभूषण विशेष। ४ एक प्रकार का आम। ५ चतुष्कोणीय आकृति जिसकी लंबाई अधिक व चौड़ाई कम होती है।

सकरांणी–पु० १ शक्कर मिला भात या पदार्थ। २ देखो 'सुकरांणी'।

सकराणी (णी)–क्रि० १ भुगवाना, भुगतान लेना। २ स्वीकृत कराना।

सकरायंत–देखो 'संक्रांत'।

सकरायतमाता–स्त्री० एक देवी विशेष।

सकरियो–पु० स्वर्णकारों का एक औजार विशेष।

सकरोड़ी–देखो 'सखरी'। (स्त्री० सकरोड़ी)

सकरी–१ देखो 'सखरी'। २ देखो 'सिकरी'। (स्त्री० सिकरी)

सकळक, सकलंकी–पु० [सं० सकलंकित] चंद्रमा, चांद।–वि० जिसके कलंक या दोष लग गया हो।

सकलंकित–वि० कलंक सहित, कलंकित।

सकळ–पु० [सं० सकल] १ निर्गुण, ब्रह्म। २ प्रकृति। ३ घास या तृण। ४ सेना, फौज। [सं० शकल:] ५ खण्ड, भाग, टुकड़ा।–वि० १ सब, समस्त और सम्पूर्ण। २ जिसमें कला हो।–क्रि० वि० सब जगह, सर्वत्र।

सकल–स्त्री० [फा० शक्ल] चेहरे की बनावट, आकृति।

सकळआतमा (आत्मा)–पु० [सं० सकल-आत्मा] कामदेव।

सकळकळ–वि० सोलह कला युक्त।

सकळजगपाळक–पु० [सं० सकलजगपालक] ईश्वर, परमेश्वर।

सकळजणणी (जननी)–स्त्री० १ दुर्गा, देवी, जगदम्बा। २ प्रकृति।

सकळा, सकला–वि० कला सहित, कलायुक्त।

सकळाई–स्त्री० १ चमत्कार, करामात। २ बल, शक्ति। ३ सिद्धि।

सकळात, सकलात–पु० १ एक वस्त्र विशेष। २ देखो 'सकळायत'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकलाय–वि० कलापूर्ण, कलायुक्त।
सकळायत–पु० १ एक प्रकार का बढ़िया लोहा। २ देखो 'सकळाई'।
सकळावत–पु० चंद्र, चांद, चंद्रमा।
सकळी–स्त्री० [सं० शकलिन] १ मछली। २ पूर्णमासी।
सकळीगर, सकसीगर, सकळीघर, सकसीघर–देखो 'सिकळीघर'।
सकळीयत–पु० [सं० सकली-व्रत] चन्द्रमा, चांद।
सकव (वि, वी)–देखो 'सुकवि'।
सकस–पु० १ वीर पुरुष। २ पति। ३ देखो 'सख्स'।
सकसस्त्र–पु० [सं० अयशस्त्र] लोहा।
सकस्सा–वि० मजबूत, दृढ़।
सकस्सी–स्त्री० एक प्रकार का हथियार।
सकाम–वि० [सं० सकाम] १ सफल मनोरथ। २ कामनायुक्त। ३ मैथुन की इच्छा वाला व्यक्ति। ४ स्वार्थ। ५ इच्छित, अभीष्ट।
सकामी (मी)–पु० [सं० सकामिन्] १ विषयी व्यक्ति। २ देखो 'सकाम'।
सका–पु० [सं० शका] १ एक देश का नाम। २ एक जाति विशेष।
सकाकुळ–पु० १ जलचर जाति का एक कंद विशेष। –स्त्री० २ एक प्रकार की मछली।
सकाकोल–पु० [सं० सकाकोलः] एक नरक का नाम।
सकाज (जी)–देखो 'सकज्ज'।
सकाब्द–पु० [सं० शकाब्द] शक संवत।
सकार–पु० १ 'स' अक्षर, वर्ण। २ 'स' की ध्वनि। [सं० शकारः] ३ पत्नी का भाई, साला। ४ प्रयोजन, स्वार्थ। –स्त्री० ५ सार्थकता। ६ देखो 'सिकार'।
सकारि (री)–पु० [सं०] १ विक्रमादित्य की एक उपाधि। २ शिकारी।
सकारे (रै), सकाळ, सकाळि–क्रि० वि० [सं० सकाल] प्रातः काल, सवेरे।
सकियक–देखो 'सकैक'।
सकी–वि० [फा० शकी] संदेह करने वाला, संदेहशील।
सकुंच–वि० संकुचित।
सकुंत–पु० [सं० शकुंत] १ विश्वामित्र ऋषि के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक। २ एक प्रकार का पक्षी। ३ एक प्रकार का कीड़ा।
सकुंतक–पु० [सं०] एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
सकुंतला–स्त्री० [सं० शकुंतला] विश्वामित्र ऋषि व मेनका की पुत्री तथा राजा दुष्यन्त की पत्नी।
सकुच–देखो 'संकोच'।
सकुचण (न)–स्त्री० लज्जा, शर्म।
सकुचणो (बो)–देखो 'संकुचणो' (बो)।
सकुचाई–स्त्री० संकोच।
सकुचाणो (बो)–देखो 'संकुचणो' (बो)।
सकुटंब–क्रि० वि० परिवार के साथ, सपरिवार।
सकुन–पु० [सं० शकुन] १ पक्षी। २ एक दानव। ३ एक देव। ४ देखो 'सकुनि'। ५ देखो 'सुगन'।
सकुनद्वार–पु० [सं० शकुनद्वार] शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के एक साथ होने वाले शकुन।
सकुनसार–पु० स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।
सकुनसुद्धि–पु० [सं० शकुनशुद्धि] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।
सकुनावळ (ळी)–पु० शकुन शास्त्र की पुस्तक।
सकुनि–पु० [सं० शकुनि] १ हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य। २ कौरवों का मामा। ३ पक्षी। ४ गिद्ध पक्षी। ५ चील पक्षी। ६ मुर्गा। ७ एक नाग का नाम। ८ एक महर्षि। ९ देखो 'सुगनी'।
सकुनिका–स्त्री० [सं० शकुनिकाः] एक स्कन्द मातृका।
सकुळ–पु० [सं० सकुल] अच्छा व ऊंचा कुल।
सकुली–स्त्री० पुराणानुसार एक नदी।
सकुलीण (णी), सकुलीन–देखो 'सुकुलीण'।
सकुसळ–क्रि० वि० कुशलता पूर्वक, राजी-खुशी।
सकूनत–स्त्री० [अ० सकूनत] निवास स्थान।
सकूल–देखो 'स्कूल'।
सके–अव्य० जाने, जैसे।
सकेलणी–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
सकेळी–पु० एक प्रकार का लोहा।
सकंक–क्रि०वि० संभवतः, शायद।
सकोई–वि० समस्त, सब। सब कोई।
सकोड़ी–वि० १ उत्साह व उमंग युक्त। २ प्रसन्नता सहित।
सकोतरी–देखो 'सिकोतरी'।
सकोप–वि० क्रोध सहित, क्रोध के साथ, क्रोध में। –पु० क्रोध, कोप।
सकोमळ (ळ)–वि० १ कोमल, नाजुक, मुलायम। २ विनम्र।
सकोय–देखो 'सकोई'।
सकोरणो (बो)–देखो 'सिकोड़णो' (बो)।
सको–पु० पानी भरने वाला, भिस्ती। –वि० सर्व, समस्त। –सर्व० वह, वही, उसे, उसको।
सक्क–१ देखो 'सक'। २ देखो 'सक्क'।
सक्कणी–देखो 'साकणी'।
सक्कणो (बो)–देखो 'सकणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सक्कर–स्त्री० [सं० शर्करा] शक्कर, चीनी, खांड ।

सक्करखोर (खोरो)–पु० एक प्रकार का कीटाणु ।–वि० शक्कर खाने का शौकीन ।

सक्करपारो–देखो 'सकरपारो' ।

सक्कळ–देखो 'सकळ' ।

सक्कळा–देखो 'सकळा' ।

सक्कबे (बै)–पु० १ स्वर्ग, देवलोक । २ समर्थ व्यक्ति ।

सक्कस–वि० [फा० सरकश] १ ज़बरदस्त, जोरदार । २ घमण्डी, गर्विला । ३ देखो 'सकी' ।

सक्कार–१ देखो 'सत्कार' । २ देखो 'सकार' ।

सक्ख–देखो 'साखा' ।

सक्खर (रो)–देखो 'सखरो' । (स्त्री० सक्खरी)

सक्खि–स्त्री० मित्रता, दोस्ती ।

सक्त–पु० [सं० शक्त] पुरुवंशीय मनस्वी के पुत्र ।–वि० [सं० आसक्त] १ आसक्त । २ देखो 'सक्त' ।

सक्ति–स्त्री० [सं० शक्ति] १ दुर्गा, भवानी, देवी । २ सरस्वती, शारदा । ३ पार्वती, गिरिजा । ४ देवताओं की विभिन्न शक्तियों में से कोई एक । ५ बल, ताकत, ज़ोर । ६ दक्ष की पुत्री सती का नामान्तर । ७ लक्ष्मी । ८ बरछी या सांग नामक शस्त्र । ९ तलवार । १० स्त्री की योनि । ११ शक्तिशाली राज्य या शासन । १२ शाक्तपीठ की अधिष्ठात्री देवी । १३ किसी देवता का बल या पराक्रम । १४ तंत्र के अनुसार सुन्दर एवं सौभाग्यवती युवती विशेष । १५ किसी पदार्थ एवं उसका बोध कराने वाले शब्दों के बीच संबंध । (न्याय) १६ प्रभाव डालने वाली बात या बल । १७ हथेली में होने वाला सामुद्रिक चिह्न । १८ एक प्रकार का शस्त्र । १९ क्षमता, सामर्थ्य । २० भवन की संख्या ४ । २१ देखो 'सक्ती' ।—ग्रह–पु० शिव, महादेव । कार्तिकेय ।–वि० शक्ति को ग्रहण करने वाला । भालाधारी । —धर, धरण, धारी–पु० स्वामिकार्तिकेय । शिव, महादेव । गरुड़ ।—पूजक–पु० शाक्त ।—बोध–पु० शब्द शक्ति का बोध या ज्ञान ।— मंत्र–पु० युद्ध में विजय के लिये साधा जाने वाला शक्ति का मंत्र ।—मंत–वि० पराक्रमी, शक्तिशाली । समर्थ ।— वादी–पु० शक्ति का उपासक । —वीर–पु० वाममार्गी, शाक्त ।— हीन–वि० निर्बल, कमजोर, असमर्थ, नामर्द ।

सक्तिपुर–पु० १ दिल्ली का एक नाम । २ सिरोही नगर का एक नाम ।

सक्तिपुरियो (पुरो)–पु० १ दिल्ली का बादशाह । २ चौहान । ३ मुसलमान । ४ सिरोही या दिल्ली का निवासी ।

सक्ती–पु० १ एक मात्रिक छंद विशेष । २ देखो 'सक्ति' । —धर='सुक्तिधर' ।

सक्रंत (ति, ती)–देखो 'संक्रांत' ।

सक्रंतिमेख (मेखि, मेखी)–देखो 'मेखसंक्रांति' ।

सक्रंदन–पु० [सं० संक्रंदन] १ इन्द्र । २ श्रीकृष्ण ।

सक्र–पु० [सं० शक्र] १ इन्द्र । २ अर्जुन वृक्ष । ३ ज्येष्ठा नक्षत्र । ४ उलूक, उल्लू । ५ एक आदित्य का नाम । ६ दशमान के चौथे भेद का नाम (Sais) । ७ चौदह की संख्या ४ । ८ देखो 'सुक्र' ।

सक्रउत्सव–पु० [सं० शक्र-उत्सव] भादव शुक्ला द्वादशी का एक पर्वोत्सव ।

सक्रक्रीड़ाचळ–पु० [सं० शक्र-क्रीड़ाचल] सुमेरु पर्वत ।

सक्रकेत (केतु)–पु० [सं० शक्र-केतु] इन्द्र का ध्वज ।

सक्रकोस, सक्रकोसाधिक्ष–पु० [सं० शक्र-कोशाधिक्ष] कुबेर ।

सक्रगोप–पु० [सं० शक्र-गोप] वीर-बहूटी नामक कीड़ा ।

सक्रधरण–पु० [सं० शक्र-धरण] इन्द्र का वज्र ।

सक्रचाप–पु० [सं० शक्रचाप] इन्द्र धनुष ।

सक्रजांन (जानु, जांनू)–पु० [सं० शक्रजानु] श्रीराम की सेना का एक वानर ।

सक्रजित–पु० [सं० शक्रजित] इन्द्र को जीतने वाला, मेघनाद ।

सक्रतकर (करज)–पु० [सं० शक्रत्करि] बछड़ा, गो-वत्स ।

सक्रतू–पु० [सं० शक्र] इन्द्र, पुरंदर ।

सक्रदिस (दिसा)–स्त्री० [सं० शक्रदिश] पूर्व दिशा जिसका स्वामी इन्द्र माना जाता है ।

सक्रदेव–पु० [सं० शक्रदेव] देवराज इन्द्र ।

सक्रदेवत–पु० [सं० शक्रदैवत] ज्येष्ठा नक्षत्र ।

सक्रधनख (धनु, धनुख, धनुस)–पु० [सं० शक्रधनुस्] इन्द्र धनुष ।

सक्रनंद (नंदण, नंदन)–पु० [सं० शक्रनंद] १ अर्जुन । २ जयंत । ३ बालि ।

सक्रनदा (न्नंदा)–स्त्री० एक प्राचीन नदी ।

सक्रपत (पति, पती)–पु० [सं० शक्रपति] विष्णु ।

सक्रपुर (पुरी, पुरो)–पु० [सं० शक्रपुर] अमरावती, इन्द्रपुरी ।

सक्रप्रस्थ–पु० [सं० शक्रप्रस्थ] पांडवों का इन्द्रप्रस्थ ।

सक्रप्रिया–स्त्री० [सं० शक्र-प्रिया] इंद्राणी, शची ।

सक्रय–स्त्री० इन्द्राणी ।

सक्रवाह (वाहण, वाहन)–पु० [सं० शक्रवाहन] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत । २ हाथी, गज । ३ बादल ।

सक्रसरोवर–पु० [सं० शक्र-सरोवर] वज्र में स्थित इन्द्रकुंड नामक स्थान ।

सक्रसुत–पु० [सं० शक्रसुत] १ अर्जुन । २ जयंत । ३ बालि ।

सक्रारि, सक्रारी–पु० [सं० शक्रारि] मेघनाद ।

सक्रीत–वि० कीर्ति सहित, प्रसिद्धि के साथ ।

सक्रुद्ध, सक्रोध–वि० क्रोध पूर्ण, क्रोध युक्त ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकुनिज–देखो 'सकुनि'।

सख–पु० [सं० सखि] १ मित्र, सखा। [सं० शिष्य] २ शिष्य, चेला। ३ देखो 'साखा'।

सखणी (बो)–क्रि० १ साक्षी या गवाही देना। २ कहना।

सखत–देखो 'सख्त'।

सखति (ती)–१ देखो 'सख्ती'। २ देखो 'सक्ति'।

सखमदरा–पु० [सं० मदारसखा] मंदार का सखा, आक।

सखर (उ)–१ देखो 'सखरी'। २ देखो 'सिखर'।

सखराळ (ळी)–देखो 'सिखराळी'।

सखरी–वि० १ अच्छी, स्वच्छ, शुद्ध। २ अच्छे कार्य के लिये तैयार।

सखरु, सखरो–वि० (स्त्री० सखरी) १ सुन्दर, मनोहर। २ बलवान, वीर, बहादुर। ३ उपजाऊ। ४ अच्छा, बढ़िया। ५ उत्तम, श्रेष्ठ। ६ पक्ष वाला, अनुकूल। ७ स्वादिष्ट।

सखस–देखो 'सहस'।

सखा–पु० [सं० सखिन्] मित्र, साथी।

सखाइ–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

सखाईउ–पु० [सं० सख्य] सखा, मित्र।

सखाकरन–पु० [सं० कृष्ण सखा] अर्जुन।

सखायो–पु० [सं० सखा] विवाह के समय दूल्हे के साथ रहने वाला सखा।

सखावत–स्त्री० [अ०] उदारता, दानशीलता।

सखावरख–पु० [सं० शाखा-वृक्ष] बरगद, वट वृक्ष।

सखासमीर–स्त्री० अग्नि, आग।

सखाहर–पु० [सं० हरि सखा] इंद्र।

सखि, सखिए, सखी, सखीय–स्त्री० १ सहेली, सहचरी। २ नायिका की अन्तरंग सखी। ३ एक मात्रिक छन्द विशेष। [सं० शिखिन्] ४ अग्नि, आग।–वि० [फा०] दानी, दाता, उदार।

सखीभाव–पु० १ अपने इष्ट की सखी या पत्नी बन कर की जाने वाली भक्ति। २ वदान्यता।

सखेद–पु० कष्ट, दुःख, पीड़ा।–वि० दुःख व खेद सहित।

सखेत–१ देखो 'साखा'। २ देखो 'साक्षी'।

सखेर (रो)–१ देखो 'संखरी'। २ देखो 'सिखर'।

सख्त–वि० [फा०] १ कठोर, कड़ा, ठोस। २ मजबूत, दृढ़। ३ कठिन, दुस्तर। ४ दया, ममता आदि कोमल भावों से रहित। ५ पक्का।

सख्ती–स्त्री० [फा०] १ कड़ापन, कठोरता। २ दृढ़ता, मजबूती। ३ कठिनता। ४ क्रूरता, ज्यादती।

सख्य–पु० [सं० सख्य] १ मित्रता, दोस्ती। २ मित्र, दोस्त।

सख्यात–देखो 'साक्षात'।

सगस–पु० [अ० शख्श] १ व्यक्ति, आदमी। २ वीर, बहादुर।

सगध–वि० १ गंध युक्त। २ देखो 'सुगंध'।

सग–पु० [फा०] कुत्ता।

सगग–पु० [अनु०] १ ध्वनि विशेष। २ तरल पदार्थ का बहाव।

सगगणो (बो)–क्रि० पानी आदि तरल पदार्थ का सग-सग कर बहना।

सगगाट–स्त्री० १ पक्षियों के एक साथ उड़ने से उत्पन्न ध्वनि। २ तरल पदार्थ के उमड़ने या जोर स बहने की ध्वनि। ३ शरीर में कपन की अवस्था।

सगजवान–पु० [फा०] कुत्ते के समान पतली व लंबी जीभ वाला घोड़ा।

सगट–देखो 'सकट'।

सगडी–देखो 'सिगड़ी'।

सगण–पु० प्रथम दो लघु और अंत में एक गुरु अक्षर का एक गण।

सगणो (बो)–देखो 'सकणो' (बो)।

सगत–देखो 'सक्ति'।

सगतपण (पणो)–पु० शक्ति, सामर्थ्य।

सगतपुर–देखो 'सक्तिपुर'।

सगतपुरी–देखो 'सक्तिपुरी'।

सगतभूत (भूति)–पु० [सं० शक्तिभूत] स्वामिकार्तिकेय।

सगति–देखो 'सक्ति'।

सगतिविलद–पु० अर्जुन।

सगती–देखो 'सक्ति'।

सगतीपुरी–देखो 'सक्तिपुरी'।

सगत्त, सगत्ति, सगत्ती–देखो 'सक्ति'।

सगन–देखो 'सघन'।

सगपण–पु० १ रिश्ता, संबंध, नाता। २ लगाव, संबंध। ३ विवाह, शादी। ४ देखो 'सगाई'।

सगबग–वि० १ लथ-पथ, सराबोर। २ भरा हुआ, परिपूर्ण। –क्रि० वि० १ तेजी से, फुर्ति से। २ तुरन्त, शीघ्र।

सगर–वि० सब, समस्त।–पु० १ एक सूर्य वंशी राजा। २ एक चन्द्रवंशी राजा। ३ राठौड़ों की एक उपशाखा।

सगरब, सगरभ–वि० [सं० सगर्भ] १ सहोदर, सगा भाई। २ देखो 'सगरभा'।

सगरभा–स्त्री० [सं० सगर्भा] १ गर्भवती स्त्री। २ सहोदरा।

सगरव–वि० [सं० सगर्व] १ गर्व युक्त, गर्विला। २ देखो 'सगरभ'।

सगराम–देखो 'संग्राम'।

सगरि–पु० राजा सगर के पुत्र।

सगळा, सगळाई–वि० सब, समस्त।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सगळीगर–देखो 'सिकळीगर'।

सगळे, सगळै–क्रि० वि० सर्वत्र, सब जगह।–वि० [सं० सकल] सब, समस्त।

सगळो–वि० [सं० सकल] (स्त्री० सगळी) पूरा, समस्त, सब का सब।

सगस–पु० १ भूत-प्रेत। २ देखो 'सगाह'। ३ देखो 'राक्षस'।

सगह–पु० १ सिंह, शेर। २ देखो 'सगाह'।

सगांन–वि० १ गायन सहित। २ ज्ञान सहित।

सगा–वि० स्वयं के, खुद के।

सगाई–स्त्री० १ संबंध, रिश्ता। २ मंगनी, रिश्ता। ३ रिश्तेदारी की स्थिति। ४ विधवा का किसी पुरुष से संबंध, नाता।

सगाचार–पु० १ बेटे या बेटी के ससुराल वाला, संबंधी। २ रिश्ता, संबंध।

सगाढ़ो–वि० १ मजबूत, दृढ़। २ वीर, बहादुर।

सगातरो–वि० निकट, पास।

सगातेड़ो–पु० मृतक के पीछे किया जाने वाला भोज, मोसर।

सगापण (णो)–पु० सम्बन्धी होने का भाव, आत्मीयता।

सगारत (य)–पु० १ सगा होने का भाव। २ रिश्तेदारी, संबंध। ३ संबंधी, रिश्तेदार।

सगाळो–पु० निटकतम रिश्तेदार, संबंधी।

सगावट–पु० संबंध, रिश्ता, नाता।

सगावळ–पु० संबंध, रिश्ता।

सगाविध–पु० १ रिश्तेदार, संबंधी। २ आत्मीयता।

सगाह (हो)–वि० १ मजबूत, दृढ़। २ जबरदस्त, बलवान। ३ गर्व, सहित, सगर्व। ४ सादर, प्रतिष्ठा सहित। ५ क्रोध पूर्वक, सक्रोध।

सगुड–पु० कवचधारी (हाथी)।

सगुण–पु० [सं०] १ सत्व, रज और तम से युक्त साकार ब्रह्म। २ ईश्वर, परमात्मा। ३ ईश्वर के सगुण रूप का उपासक-सम्प्रदाय व व्यक्ति। ४ धार्मिक व साधु पुरुष। ५ अच्छा व श्रेष्ठ गुण। ६ डोर चढ़ा धनुष।–वि० (स्त्री० सगुणी) १ गुणवान, चतुर। २ परोपकारी। ३ कृतज्ञ। ४ अच्छी आदत व व्यवहार वाला। ५ सांसारिक। ६ देखो 'सुगन'।

सगुन–१ देखो 'सुगन'। २ देखो 'सगुण'।

सगुर–वि० [सं० सगुरु] महान्, जबरदस्त।

सगोड़ो, सगोडो (ढो)–पु० [सं० सम्-गोत्र] (स्त्री० सगोड़ी, सगोढ़ी) १ निकटतम रिश्तेदार। २ घनिष्ठ मित्र।

सगोत, सगोतरो, सगोती, सगोत्र (त्री)–वि० [सं० सगोत्रः] १ एक ही जाति का, सजातीय। २ अपने वंश का, कुल का। ३ सम्बन्धी। ४ कुल, वंश। ५ दूर का नातेदार।

सगो–पु० (स्त्री० सगी) १ बेटी या बेटे के ससुराल का व्यक्ति। २ सम्बन्धी, रिश्तेदार। ३ सहोदर, भाई। ४ निकटतम संबंधी या रिश्तेदार। ५ पिता, पितामह या नाना के वंश का सदस्य। ६ प्रिय व्यक्ति।

सग्ग–१ देखो 'सूक'। २ देखो 'स्वर्ग'।

सग्गपण–देखो 'सगपण'।

सग्गर–१ देखो 'सागर'। २ देखो 'सगर'।

सग्गह–देखो 'सगाह'।

सग्यांन–पु० [सं० सज्ञान] १ ज्ञानी व्यक्ति। २ बुद्धिमान पुरुष। ३ प्रौढ़ व वयस्क व्यक्ति।–वि० १ चतुर। २ सावधान, होशियार।

सग्र–देखो 'सगर'।

सग्रांम–देखो 'संग्राम'।

सघट–वि० दृढ़, मजबूत।

सघण–पु० १ पहाड़, पर्वत। २ वर्षा। ३ मेघ, बादल। ४ समूह, झुण्ड। ५ घन घटा, बादल।–वि० १ अधिक, बहुत। २ घना, गहरा। ३ स्थूल, मोटा।

सघणगाज–पु० पाण्डव पुत्र भीम का एक नाम।

सघणवाह–पु० इन्द्र।

सघणापो–पु० १ अधिकता, बाहुल्य। २ घना होने की अवस्था या भाव।

सघणी (णी)–देखो 'सकणी' (णी)।

सघन–देखो 'सघण'।

सघरो–वि० सपरिवार, कुटुम्ब सहित।

सघळउ, सघलउ, सघळू, सघलू, सघळो, सघलो–देखो 'सगळो'।

सघाळो–देखो 'सिघाळो'।

सड़ंग–पु० [सं० षड़ंग] वेद के छः अंग।

सड़–क्रि० वि० १ शीघ्र, जल्दी। वि० २ छः।

सड़क–स्त्री० १ यातायात के लिये बना मार्ग, राजपथ। २ बोवाई से होने वाला अनाज या अन्य पदार्थ।–वि० १ नशे में धुत, तृप्त। २ असली, वास्तविक।–क्रि० वि० सपाट से।

सड़काणी (णी), सड़कावणी (णी)–क्रि० चाबुक या छड़ी से मारना, पीटना।

सड़गुण–पु० [सं० षडगुण] १ छः गुणों का समूह। २ राजनीति की छः बातें।

सड़ज–पु० [सं० षड्ज] संगीत में किसी सप्तक का प्रथम स्वर।

सड़ण–स्त्री० सड़ने की क्रिया या भाव।–वि० सड़ने वाला।

सड़णी (णी)–क्रि० १ किसी वस्तु या शरीर के अंगादि में विकार उत्पन्न होना। २ विकृत होकर दुर्गन्ध देना। ३ विकृत होने से कीड़े पड़ जाना। ४ द्रव पदार्थों में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खमीर उठना। ५ दीन-हीन अवस्था में पड़े रहना। ६ कष्टमय या बुरी दशा होना। ७ व्यर्थ पड़ा खराब होना।

सड़बो–देखो 'सड़वो'।

सड़बड़णो (बो)–क्रि० १ तेज गति से चलना। २ भागना, दौड़ना।

सड़बड़ियो–पु० १ कायर। २ गरीब, दीन।

सड़बदन–पु० [सं० षड्वदनः] स्वामिकार्त्तिकेय।

सड़बरग–पु० [स० षड्वर्ग] १ छः वस्तुओं का समूह या वर्ग। २ ज्योतिष में क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश का समूह। ३ काम, क्रोध, मोह, मद और मत्सर का समूह। ४ समग्र ऐश्वर्य, समग्र धर्म, समग्र यश, समग्र श्री, समग्र ज्ञान, समग्र ज्ञान वैराग्य ये छः तत्त्व।

सड़बिदुतेल–पु० [सं० षड्बिंदुतैल] सिर दर्द से संबंधित वैद्यक में एक तेल।

सड़बिकार–पु० [सं० षड्विकार] १ प्राणियों की छः अवस्थाएँ-उत्पत्ति, वृद्धि, बालापन, प्रौढ़ता, वृद्धत्व तथा मृत्यु। २ काम, क्रोधादि छः मनोविकार।

सड़बो–पु० फसल की, पशु-पक्षियों से रक्षार्थ, खेत में खड़ा किया जाने वाला पुतला।

सड़सठ–१ देखो 'सतसठ'। २ देखो 'छासठ'।

सड़ांण, सड़ांध–स्त्री० १ सड़ने की क्रिया या अवस्था। २ दुर्गन्ध, बदबू।

सड़ाक (को)–पु० कोड़े या चाबुक में प्रहार की ध्वनि।–क्रि०वि० शीघ्र, तुरन्त।

सड़ाणो (बो)–क्रि० किसी वस्तु को सड़ने या विकृत होने के लिये छोड़ देना, विकृत करना, खमीर उठवाना।

सड़ानन–पु० [सं० षडानन] १ स्वामिकार्त्तिकेय, स्कन्द। २ संगीत में स्वर साधन की एक विधि।

सड़ायंध–स्त्री० वस्तु के सड़ने से उत्पन्न दुर्गन्ध, बदबू।

सड़ाव–स्त्री० सड़ने की क्रिया या अवस्था।

सड़ासड़–क्रि० वि० १ सड़-सड़ शब्द या ध्वनि करते हुए। २ शीघ्र, तेज गति से। ३ बिना रुके, निरन्तर लगातार।

सड़ित (बो)–पु० [अनु०] १ छड़ी, चाबुक आदि के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि। २ प्रहार, चोट।

सड़ियळ–वि० १ सड़ा हुआ। २ रद्दी, निकम्मा। ३ नीच पतित।

सड़ियो–पु० १ घास-फूस से बुनी मोटी रस्सी। २ ऊंट के अगले पैर बांधने का, चमड़े का बंधन।

सड़ी, सड़ो–स्त्री० १ भैंस के चमड़े की रस्सी। २ टहनी।

सड़ो, सड़ो–पु० १ वह बड़ा चौक या भू-भाग जिसके चारों ओर कांटों की बाड़ हो, बाड़ा। २ कूए के पास बनी कच्ची झोंपड़ी। ३ अधिक पकने से बेकार हुई मूली। ४ श्मशान भूमि में दाह किए गये शव की ताजी राख का ढेर।

सचंग–देखो 'सुचंग'।

सच–देखो 'सत्य'।

सचकार–देखो 'सचकार'।

सचकित–वि० [सं०] १ भड़का हुआ। २ डरपोक, कायर। ३ कांपता हुआ। ४ आश्चर्य युक्त।

सचणो (बो)–देखो 'सचणो' (बो)।

सचबोलो–वि० (स्त्री० सचबोली) सत्य बोलने वाला, सत्यवादी।

सचराचर (रि, रो)–वि० [सं० सचराचर] चर-अचर सब; स्थावर व जंगम समस्त।–पु० १ संसार के जड़ व चेतन सभी तत्त्व। २ चौसठ भैरवों में से एक।

सचळ–वि० १ चलायमान अस्थाई। २ गतिशील। ३ अटल, पक्का।

सचळियो, सचळो, सचल्यो–वि० (स्त्री० सचळी) १ नट-खट और चंचल। २ चुप, शांत।

सचवाणो (बो)–क्रि० १ जड़वाना, लगवाना। २ जांच कराना।

सचवादी–देखो 'सत्यवादी'।

सचांण (न)–१ देखो 'साचो'। २ देखो 'सिचांण'।

सचांणी–देखो 'साचांणी'।

सचाई–स्त्री० सत्यता, सच्चापन।

सचाड़ो–वि० १ श्रेष्ठ। २ जबरदस्त।

सचाडणो (बो)–क्रि० सहायता लेना।

सचाळ–देखो 'सचाळी'।

सचाळी–स्त्री० क्रीड़ा करने वाली देवी।

सचाळो–वि० (स्त्री० सचाळी) १ वीर, योद्धा। २ तेजस्वी। ३ गतिमान, चलने वाला। ४ खुशी व उमंग सहित।–पु० युद्ध, संग्राम।

सचावट–स्त्री० सच्चापन, सत्यता।

सचाह–वि० इच्छा सहित, इच्छुक।

सचित–वि० १ जिसे चिंता हो, चिन्तातुर। २ देखो 'सचीत'।

सचि–पु० [सं०] १ मित्र, दोस्त। २ मित्रता, दोस्ती। ३ देखो 'सत्य'। ४ देखो 'सची'।

सचिक्कण (न)–वि० [सं०] अत्यन्त चिकना, स्निग्ध।

सचित–वि० [सं० सचित्] जिसे ज्ञान या चेतना हो।

सचितानंद–देखो 'सच्चिदानंद'।

सचित्त–स्त्री० [स०] जिसे चेतना व ज्ञान हो, चैतन्य, सावधान।

सचित्राळी–स्त्री० दुर्गा, देवी।

सचियादे (दे), सचियाय–स्त्री० १ चारण कुलोत्पन्न एक देवी। २ ओसियां (जोधपुर) में स्थित एक प्रसिद्ध देवी।

सचियार–पु० [सं० सत्य] सच्चा, सत्य।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सचिव, सचिवाळ-पु० [सं० सचिव] १ मंत्री, वजीर। २ मित्र दोस्त। ३ मददगार सहायक। ४ प्रशासनिक अधिकारी

सचिवालय-पु० [सं०] सचिवों के बैठने का स्थान, कार्यालय।

सचींत (सचीत)-स्त्री० १ चिंता, क्लेश। २ देखो 'सचित'।

सची-स्त्री० [सं० शची] १ देवराज इन्द्र की पत्नी, शची इन्द्राणी। २ अप्सरा।—पत, पति, पती-पु० इन्द्र, अश्विनी कुमार।—सुत-पु० जयन्त। चैतन्यदेव।

सचीतीरथ-पु० [सं० सत्यतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सचीतो-वि० (स्त्री० सचीती) १ चिंतातुर, चिंताग्रस्त। २ तर्क सावधान।

सचोयार (रो)-देखो 'सचियार'।

सचीरार-पु० [सं० शची-राट्] इन्द्र।

सचोस-पु० [सं० शचीश] देवराज इन्द्र।

सचीसुखदायक-पु० इन्द्र।

सचीरपांप-पु० [सं० शचीस्वामी] इन्द्र।

सचूंप-वि० १ चतुराई पूर्वक। २ सुन्दर। ३ कुशल, चतुर। ४ हास्य रसयुक्त।-स्त्री० सुन्दरता।

सचूंपो, सचूप (पो)-वि० (स्त्री० सचूंपी) १ कुशल, निपुण। २ सुन्दर, मनोहर।

सचेत-वि० [सं० सचेतन] १ सावधान, सतर्क। २ मूर्च्छा रहित, जागरूक। [सं० सचेतस्] ३ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष। ४ संवेदनापूर्ण, दयालु।

सचेतन (नि, नी)-पु० [स० सचेतन्] १ चेतना या विवेकयुक्त प्राणी। २ चैतन्य पदार्थ या तत्त्व।-वि० १ चैतन्य। २ सावधान, सतर्क। ३ बुद्धिमान, चतुर।

सचेति, सचेती-स्त्री० १ सावधानी, समझदारी। २ चेतना। ३ बुद्धिमानी, चतुराई। ४ देखो सचेत'।

सचेळ, सचेळो-वि० १ शक्तिशाली, बलवान। २ गभीर। ३ उत्तम, श्रेष्ठ। ४ समर्थ, सामर्थ्यवान। ५ अद्भुत, अनोखा। ६ संख्या की दृष्टि से अधिक बड़ा। ७ खुश, प्रसन्न। ८ गुणों से बड़ा, महान्। ९ वस्त्र धारण किये हुए।

सचेस्ट-वि० [सं० सचेष्ट] चेष्टावान, क्रियाशील, सावधान।

सचैत-स्त्री० १ सखी, सहेली।-पु० २ आम का वृक्ष।-वि० प्रयत्नशील।

सचोक-पु० [सं० सत्यौक] सत्य, सच्चाई।

सचोज-वि० उत्साही, उत्साहयुक्त।

सचोप-पु० १ वस्त्र विशेष। २ देखो 'सचूंप'।

सचोपकाजी-पु० एक प्रकार का वस्त्र।

सचोळ-पु० १ झोंका। २ तरंग, लहर।-वि० लाल।

सचोळो-पु० सुसज्जित योद्धा।-वि० प्रसन्नचित्त।

सचो-देखो 'साचो'।

सच्च-देखो 'सत्य'।

सच्चरित, सच्चरितर (चरित्र)-वि० [सं० सच्चरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो, शुद्ध चरित्र वाला। २ सदाचारी।

सच्चव-देखो 'सचिव'।

सच्चवट-देखो 'सत्यवती'।

सच्चाई-स्त्री० सत्यता, हकीकत, वास्तविकता।

सच्चित-पु० [सं०] सत् और चित् से युक्त ब्रह्म।

सच्चिदानंद, सच्चिदानव-पु० [सं०] परमेश्वर, ब्रह्म।

सच्ची-१ देखो 'सची'। २ देखो 'साचो'।

सच्चु-१ देखो 'सत्य'। २ देखो 'साचो'।

सच्छंद-देखो 'स्वच्छंद'।

सजतो-वि० (स्त्री० सजंती) सुरक्षित।

सज-देखो 'सज्ज'।

सजकी-वि० (स्त्री० सजकी) १ सावधान, सतर्क। २ चंचल। ३ सुरक्षित।

सजग-वि० १ सचेत, चेतनायुक्त। जाग्रत। २ सतर्क, सावधान होशियार। ३ शीघ्र जागने वाला। ४ चालाक, होशियार।

सजगीर-वि० बलवान, शक्तिशाली।

सजगीस-देखो 'जगीस'।

सजड़-वि० १ सुदृढ़, मजबूत। २ घना, सघन। ३ जड़ सहित, समूल।

सजड़ी-देखो 'सुजड़ी'।

सजण-पु० १ सेना की चढ़ाई, प्रयाण। २ सजने की क्रिया या भाव। ३ देखो 'सज्जण'।

सजणो (णो)-क्रि० १ मिलना, प्राप्त होना। २ संभव होना, बन पड़ना। ३ तैयार होना। ४ असर होना। ५ होना। ६ चलना, निभना। ७ पर्याप्त होना, चलना; उपयुक्त होना। ८ कटिबद्ध या सुसज्जित होना। ९ तेज करना, तीक्ष्ण करना। १० प्रत्यंचा पर तीर चढ़ाना। ११ प्रयोग करना, काम में लेना। १२ चारजामा या अंगरखी कसना। १३ धारण करना, पहनना। १४ विविध रूप या शरीर बनाना, माया रचना। १५ रूप परिवर्तित करना। १६ सुरक्षार्थ पहनना। १७ करना। १८ युद्धार्थ सजाना, तैयार करना। १९ वश चलना। २० सफल होना। २१ शोभित होना। २२ पूरा होना, पूर्ण होना। २३ जाना, गमन करना। २४ देखो 'साजणो' (णो)।

सजतनी-वि० [सं० स+यत्न] (स्त्री० सजतनी) सुरक्षित।

सजधज-स्त्री० सजावट।

सजन-१ देखो 'सज्जण'। २ देखो 'स्वजन'। (स्त्री० सजनी)

सजनता-स्त्री० सज्जन होने की अवस्था या भाव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सजनी–स्त्री० [सं०] सखी, सहेली।

सजव्वणो (बो)–देखो 'जपणो' (बो)

सजरा (रो)–पु० [फा० शजर] १ वंश वृक्ष। २ वृक्ष, पेड़। ३ खेतों का नक्शा।

सजळ (ल, ळो)–वि० [सं० स+ज्वलनम्] १ प्रकाशयुक्त ज्योतियुक्त। २ जाज्वल्यमान, तेजपूर्ण। [सं० सजल] ३ जल युक्त। ४ अश्रुपूर्ण। ५ तरल, द्रव। ६ रुजलदार। ७ पानी की बहुतायत वाला। ८ देखो 'सुजळ'। ९ देखो 'सज्जळ'।

सजळाई–स्त्री० १ नमी, आर्द्रता, तरी। २ जल की प्रचुरता।

सजव–वि० [सं० सजव:] वेगवान, गतिमान, तीव्र गति वाला। –पु० १ गरुड़। २ पक्षी। ३ देखो 'सजीव'।

सजवना–स्त्री० सजने की क्रिया या भाव, तैयारी।

सजवाई–स्त्री० सुसज्जित करने की क्रिया।

सजवाणो (बो)–देखो 'सजाणो' (बो)।

सजांण (न)–वि० [सं० स+फा०जान] १ जिसमें प्राण हो, जान हो, प्राणवान। २ ज्ञानवान, अनुभवी। ३ देखो 'सुजांन'।

सजा–स्त्री० [फा० सजा] १ किसी अपराध के बदले मिलने वाला दण्ड, जुर्माना। २ कारावास, कैद। ३ यातना, कष्ट।

सजाइ, सजाई–स्त्री० १ सजावट। २ सजावट की सामग्री। ३ तैयारी। ४ चारजामा कसने की क्रिया। ५ चारजामा के उपकरण आदि।–वि० सुसज्जित, तैयार।

सजाणो (बो)–क्रि० १ किसी वस्तु को व्यवस्थित कर सुन्दर लगने लायक रखना। २ कक्ष या स्थान को साफ-सुथरा कर सुन्दर चित्र या वस्तुओं से सज्जित करना, सजाना। ३ जमाना, यथाक्रम रखना। ४ शस्त्रादि धारण कराना, सुसज्जित या तैयार करना। ५ संवारना, सुधारना। ६ धारण करना, पहनना। ७ चारजामा आदि बांधना।

सजाती, सजातीय–वि० [स० सजाति] १ एक ही जाति या गोत्र का, भाई-बंधु संबंधी। २ एक ही किस्म या प्रकार का।

सजाव, सजावट–स्त्री० १ सजाने की क्रिया या भाव। २ शृंगार। ३ तैयारी। ४ सजा हुआ होने की अवस्था या भाव।

सजावणो (बो)–देखो 'सजाणो' (बो)।

सजावन–स्त्री० सुरक्षित करने की क्रिया या भाव।

सजावार–वि० १ दण्ड का भागी। २ दण्डनीय।

सजीत–क्रि०वि० १ विजय के साथ, विजयी होकर। –वि० २ विजयदायक।

सजीव, सजीवी–वि० १ जीतने वाला, विजयी। २ जिताने वाला, विजयदायक।

सजीलो–वि० (स्त्री० सजीली) १ चंचल, फुर्तीला। २ विलास-प्रिय, कामुक। ३ सुन्दर, सुडौल। ४ धारण करने वाला। ५ छैल-छबीला, शौकीन, रसिक। ६ सुन्दर, आकर्षक, मनोहर।

सजीव–वि० [स०] १ जिसमें जीवन हो, प्राणयुक्त। २ चंचल, फुर्तीला। ३ ओजस्वी। ४ चेतना या संज्ञा युक्त। –पु० १ व्यक्ति प्राणी। २ चेतन वस्तु [स० सजव] ३ घोड़ा, अश्व। ४ देखो 'संजीव'।

सजीवण–वि० [स० संजीवन] १ जीवित, प्राणयुक्त। २ देखो 'संजीवन'।

सजीवणमंत्र–पु० [सं० सजीवन-मंत्र] १ मृत व्यक्ति या जीव को पुनर्जीवित करने का मंत्र, साधना। २ मोक्ष दिलाने वाला शब्द या मंत्र।

सजीवत–वि० जीवित।

सजीवन–वि० १ न मरने वाला, अमर। २ जीवित करने वाला। ३ जीवित, जिन्दा। –पु० मुक्ति, मोक्ष। देखो 'संजीवण'।

सजीवनबटी, सजीवनमूळ, सजीवनमूळी, सजीवनी–स्त्री० एक प्रकार की औषधि।

सजीवन्न–देखो 'सजीवन'।

सजुजो, सजूंजो–वि० [सं० स+युद्ध] १ लड़ने वाला, जूझने वाला। २ वीर, योद्धा।

सजूटणो (बो)–देखो 'जूटणो' (बो)।

सजूद–स्त्री० [फा०] विनय, प्रार्थना।

सजेत–वि० १ जीवित। २ विजय पूर्वक।

सजोड़, सजोड़ी–वि० १ सदृश, समान। २ प्रबल। ३ साथ, पास। ४ जोड़े के साथ। ५ हम उम्र, समवयस्क। –पु० दम्पत्ति।

सजोड़णो (बो)–देखो 'जोड़णो' (बो)।

सजोणो (बो)–देखो 'संजोणो' (बो)।

सजोत–देखो 'साजोत'।

सजोम–वि० जोश पूर्ण, जोश युक्त।

सजोर (रो)–वि० (स्त्री० सजोरी) १ बलवान, शक्तिशाली। २ जबरदस्त, जोरदार। ३ असर डालने वाला, प्रभाव-शाली।

सजोवणो (बो)–देखो 'संजोवणो' (बो)।

सजोस (सो)–वि० जोश युक्त, जोशीला।

सजोसणियो–वि० कवचधारी।

सज्ज–वि० [सं०] १ तैयार। २ सम्भाला हुआ। ३ संवारा हुआ। ४ शस्त्रसज्जित। ५ कटिबद्ध, सन्नद्ध।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सज्जण, सज्जणियो–पु० [सं० सज्जन] १ भला व सरीफ मनुष्य, सज्जन पुरुष, सभ्य । २ कुलीन व्यक्ति । ३ स्वजन, बंधु । ४ पति, प्रियतम । ५ मित्र, दोस्त, प्रेमी । ६ शुभ चिंतक । ७ देखो 'सजण' ।

सज्जणी (बी)–१ देखो 'सजणी'(बी) । २ देखो'साजणी'(बी) ।

सज्जन–देखो 'सज्जण' ।

सज्जनी–पु० किसी नायक या सरदार के चढ़ने का हाथी ।

सज्जळ–पु० १ हाथी, हस्ती । २ देखो 'सजळ' ।

सज्जा–१ देखो 'सय्या' । २ देखो 'सजा' ।

सज्जादो, सज्जादो–पु० [अ० सज्जादः] १ नमाज पढ़ते समय बिछाने का वस्त्र, मुसल्ला । २ किसी पीर या फकीर की गद्दी ।

सज्जित–पु० युद्ध के लिये सजा हाथी । –वि० १ सुशोभित । २ आवश्यक वस्तुओं या उपकरणों से युक्त । ३ अलंकृत । ४ तैयार । ५ कटिबद्ध ।

सज्जीखार–पु० एक प्रकार का क्षार, सज्जी ।

सज्जीभूत–वि० [सं०] १ कटिबद्ध, तैयार । २ शस्त्र सज्जित ।

सज्झणो(बी)–१ देखो 'सजणो'(बी) । २ देखो साजणो'(बी) ।

सज्य–वि० सह्य, सहनीय ।

सज्या–१ देखो 'सय्या' । २ देखो 'सजा' ।

सज्यास–पु० विश्वास, भरोसा ।

सज्यासेसू–पु० [सं० शेष-शय्या] १ ईश्वर, परमात्मा । २ विष्णु ।

सज्ञंड–पु० झुंड, समूह ।

सज्ञ–वि० सज्जिभूत, कटिबद्ध ।

सज्ञण–स्त्री० [सं० सज्ज] सेना को तैयार करने की क्रिया ।

सज्ञणी (बी)–१ देखो 'सजणी'(बी) । २ देखो 'साजणी'(बी) ।

सज्ञा–देखो 'सजा' ।

सज्ञाढ़ी–पु० वह स्थान जहां घने वृक्ष हों । –वि० घना गहरा, अधिक ।

सज्ञाणो (बी)–देखो 'सजाणो' (बी) ।

सज्ञाय–स्त्री० [सं० स्वाध्याय] १ स्वाध्याय, पठन-पाठन अध्ययन । २ वेद व शास्त्रों का अध्ययन । ३ शास्त्र या धार्मिक पुस्तक का नियमित पाठ ।

सज्ञावट–देखो 'सजावट' ।

सज्ञावार, सज्ञेवार–देखो 'सजावार' ।

सज्ञोळो–वि० बहुत, अधिक ।

सज्झड़ा–देखो 'सजड़' ।

सज्झा–१ देखो 'सजा' । २ देखो 'सय्या' ।

सट–पु० [सं०] १ साधु की जटा । २ सिंह की गर्दन के बाल, अयाल । ३ शूकर के बाल । [सं० शट] ४ खटाई । ५ तेजाब । [सं० षट्] ६ छः की संख्या । ७ एक राग विशेष । [अं० शट] ८ खाना डालने का खब्दार पात्र । –वि [सं० शट] १ खट्टा, अम्ल । [सं० शठ] २ मूर्ख । [सं० षट] ३ छः । –क्रि०वि० ४ शीघ्र, जल्दी, तुरंत । ५ देखो 'सटा' ।

सटक–स्त्री० [सं० षटक] १ छः की संख्या । २ छः वस्तुओं का समूह । ३ सटकने की क्रिया या भाव । ४ पतली छड़ी, कोड़ा ।–क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त ।

सटकणो (बी)–क्रि० १ खिसक जाना, चंपत होना, हटना । २ कायरता दिखाकर भाग जाना । ३ साथ छोड़ देना ।

सटकरम–देखो 'खटकरम' ।

सटकळ–पु० एक प्रकार का छोटा सर्प ।

सटकळा–स्त्री० [सं० षटकला] संगीत में ब्रह्मताल का एक भेद ।

सटकसपत्ति–स्त्री० छः प्रकार के कर्म–शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान ।

सटकाणो (बी), सटकारणो (बी)–क्रि० १ छड़ी या कोड़े से झट-झट आघात करना । २ ऐसे आघात से सट-सट ध्वनि होना ।

सटके (कै), सटके (कै, वर्के)–क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी, फटाफट ।

सटकोण (न)–पु० [सं० षटकोण] छः कोने वाला कक्ष स्थान, रेखाचित्र या वस्तु ।

सटको–पु० १ हुक्के की निगाली के स्थान पर लगाई जाने वाली नलिका । २ अवसर, मौका । ३ चाबियों का गुच्छा । ४ स्त्रियों का एक आभूषण विशेष । ५ कमीज आदि में लगाने का बटन विशेष ।

सटचक्र–पु० [सं० षट्चक्र] १ योग के छः चक्र । २ षड्यंत्र ।

सटचरण–पु० १ भौंरा, भ्रमर २ छः पैरों वाला जीव ।

सटणो (बी)–क्रि० १ एक दूसरे का अत्यन्त पास-पास होना, मिलना, जुड़ना, सटना । २ चिपकना, लगना । ३ मैथुन करना । ४ लिपटना । ५ मारपीट, होना ।

सटतिलाहगियारस (ग्यारस), सटतिलाएकावस (एकादसी)–स्त्री० माघ कृष्णा एकादशी ।

सटपट–स्त्री० १ गुप्त मंत्रणा, विचार । २ कानाफूसी । ३ सहवास, प्रसंग ।–क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।

सटपदप्रिय–पु० [सं० षट्पदप्रिय] १ कमल । २ नाग केसर का पौधा ।

सटमुख–पु० [सं० षटमुख] कार्त्तिकेय ।–वि० छः मुखों वाला ।

सटरिपु–पु० [सं० षड्रिपु] मन के छः विकार-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद व मत्सर ।

सटवटियो–वि० १ निर्लज्ज, बेशर्म । २ कायर डरपोक ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सटांमण, सटांवण–पु० रोटी को लोई पर लगाने का सूखा आटा, पलोथण ।

सटा–स्त्री० [सं० षटा] १ सिंह, सूअर तथा घोड़े की गर्दन के बाल, अयाल । २ साधु-संन्यासियों के शिर के बाल, जटा । ३ बालों की चोटी । ४ देखो 'छटा' ।

सटाक–क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।–पु० छड़ी या चाबुक से उत्पन्न ध्वनि, शब्द ।

सटाणो (बो)–क्रि० १ एक दूसरे को अत्यन्त पास-पास करना, मिलाना, जुड़ाना, सटाना । २ चिपकाना, लगाना । ३ मैथुन कराना । ४ लिपटाना । ५ मारपीट करना ।

सटौड़, सटौड़ो–पु० १ चोट, प्रहार । २ प्रहार की ध्वनि ।

सटै, सटं–देखो 'साटै' ।

सटेबाज, सटंबाज, सटोरियो–वि० सट्टा करने वाला, सटोरिया ।

सटो, सट्टो–पु० १ किसी कार्य के संबंध में दो पक्षों में किया जाने वाला अनुबंध । २ एक प्रकार का मौखिक व्यापार जिसमें वस्तु के भाव में उतार-चढ़ाव से ही हानि-लाभ होता है । ३ सौदा ।

सठ, सठ–वि० [सं० षठ] १ मूर्ख, देवकूफ । २ पागल । ३ आलसी । ४ धूर्त, चालाक । ५ कपटी । ६ लुच्चा, बदमाश । ७ दुष्ट ।–पु० १ साहित्य में एक प्रकार का नायक । २ वसुदेव व रोहिणी का एक पुत्र । ३ राम की सेना का एक वानर । ४ श्वान, कुत्ता । ५ पंच, मध्यस्थ । ६ कलई, रांगा । ७ निस्तब्धता, मौन, शांति ।

सठता–स्त्री० १ धूर्तता, चालाकी । २ बदमाशी, लुच्चाई । ३ मूर्खता । ४ पागलपन । ५ आलस्य ।–वि० दुःखद ※।

सठमठ–वि० कृपण, कंजूस ।

सठवा–स्त्री० एक प्रकार की सोंठ ।

सठिक–देखो 'स्वस्तिक' ।

सठियाणो (बो)–क्रि० १ साठ वर्ष की उम्र प्राप्त होना । २ इस उम्र के बाद मानसिक कमजोरी आना ।

सठो–देखो 'सैंठो' ।

सडंबर–देखो 'डंबर' ।

सडणो (बो)–देखो 'सड़णो' (बो) ।

सडदरसन–देखो 'खटदरसण'

सडवदन–देखो 'सड़वदन' ।

सडुक–पु० श्वान, कुत्ता ।

सढ़ांण–वि० सन्नद्ध, कटिबद्ध, तैयार ।

सढ़ो, सढ़ो (ढ़ो)–पु० १ ऊंट । २ देखो 'सड़ो' ।

सणंक–वि० १ स्पष्ट, साफ । २ निश्चित । ३ बिल्कुल ।–स्त्री० १ एक प्रकार की ध्वनि । २ देखो 'सणक' ।

सणंकणो (बो)–१ देखो 'संणकणो' (बो) । २ देखो 'सिणकणो' (बो) ।

सण–पु० १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों से रस्सियां बनती हैं । २ इस पौधे के रेशों का समूह । ३ सन की डोरी, सूतली । ४ सन का बना जाल ।

सणक–स्त्री० १ सहसा मन में उत्पन्न होने वाली कोई भावना, उमंग । २ देखो सणंक' ।

सणकणो (बो)–१ देखो 'सणकणो' (बो) । २ देखो 'सिणकणो' (बो) ।

सणकार (रो), सणकार (रो)–स्त्री० [देश०] १ इशारा, संकेत । २ घोड़े, बैल आदि को अभीष्ट दिशा में चलाने के लिये, राश में दिया जाने वाला झटका । ३ बैल, घोड़े आदि की सांस से उत्पन्न ध्वनि ।

सणकारणो (बो), सणकारणो (बो)–क्रि० १ इशारा या संकेत करना । २ नाक से ध्वनि करना । (बैल आदि) ३ बैल, घोड़े आदि को राश में झटका देकर अभीष्ट दिशा में चलाना ।

सणकावणो (बो)–क्रि० सांस लेना । उसांस लेना ।

सणकी–पु० एक प्रकार का वस्त्र विशेष । –वि० १ मन की तरंग या मौज के अनुसार कार्य करने वाला । २ तुनक-मिजाज ।

सणगार–देखो 'सृंगार' ।

सणगारज–पु० कामदेव ।

सणगारणो (बो)–देखो 'सिणगारणो' (बो) ।

सणगारहाट–स्त्री० १ शृंगार का बाजार । २ शृंगार प्रसाधन की दुकान । ३ वेश्याओं का मुहल्ला ।

सणणकणो (बो)–क्रि० सन-सन की ध्वनि होना ।

सणण–स्त्री० १ तेज हवा की ध्वनि । २ लंबे तारों या रस्सों से उत्पन्न ध्वनि ।

सणणाट, सणणाटो–१ देखो 'सणसणाहट' । २ देखो 'सन्नाटो' ।

सणणाणो (बो)–क्रि० १ ध्वनि विशेष होना । २ सनसनाना ।

सणणाहट–स्त्री० सन-सन ध्वनि, सन्नाटा ।

सणपद–पु० पंजे वाले जानवर ।

सणक–स्त्री० वात विकार से उत्पन्न दर्द ।

सणमणु, सणमणो–पु० १ रुग्ण, बीमार । २ शून्य, जड़वत ।

सणमांण–देखो 'सनमांन' ।

सणसणाणो (बो)–क्रि० ध्वनि उत्पन्न होना ।

सणसर–स्त्री० कानाफूसी ।

सणसूत्र–पु० [सं० शणसूत्र] श्राद्ध, तर्पण आदि करते समय अनामिका में पहनने को कुश की पवित्री ।

सणाइ (ई)–देखो 'सहनाई' ।

सणियो–१ देखो 'सींणो' । २ देखो 'सिणतरो' ।

सणीजा–वि० स्नेही, प्रेमी ।

सणु–पु० [सं०] भारत का एक प्राचीन जनपद ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सतंग–पु० शरीर के सात अंग ।

सत–पु० [सं० सत्] १ ब्रह्मा, विरंचि । २ सत्य । ३ सतीत्व, पातिव्रत्य । ४ सतीत्व का ओज, उमंग या बल । ५ सती होने की क्रिया । ६ वात्सल्य, स्नेह । ७ उदारता, दयालुता । ८ चरित्रबल । ९ धैर्य, साहस, हिम्मत । १० सार, तत्त्व । ११ नदी । १२ धर्म । १३ सतयुग । १४ मार्ग, रास्ता । १५ सात्त्विक भाव । १६ प्रकृति का सर्वोच्च गुण, सतोगुण । १७ शक्ति, बल । १८ परब्रह्म । १९ संवत् । २० शौर्य, पराक्रम । २१ वीरता । २२ धर्मात्मा पुरुष । –वि० १ ठीक, सही, उचित । २ दृढ़ अटल । ३ सज्जन, साधु, पुण्यात्मा । ४ विद्यमान, उपस्थित । ५ असल, मूल, वास्तविक । ६ प्रतिष्ठित, सम्मानित । ७ सुन्दर, मनोहर । ८ श्रेष्ठ, उत्तम । ९ अमिट, स्थाई । १० विद्वान, पंडित । ११ बुद्धिमान, चतुर । १२ धैर्यवान । १३ स्थिर, अचल, स्थाई । १४ पवित्र, शुद्ध । [सं० शत्] १५ सौ । [सं० सप्त] १६ सप्त, सात । १७ संख्या से बड़ा, अधिक । १८ देखो 'सत्य' । १९ देखो 'सत्' । —अंगी–वि० सौ या सात अंगों वाला ।–पु० रथ ।—करम –पु०पुण्य कार्य श्रेष्ठ कार्य । —करमी–वि० श्रेष्ठ कार्य करने वाला । —कोट, कोटि, कोटी–पु० सौ करोड़ की संख्या । इन्द्र का एक वज्र । –वि० सौ करोड़ । सौ धार वाला । —खंड–पु० सौ खण्ड । सात खण्ड । स्वर्ग, वैकुण्ठ । स्वर्ण निर्मित कोई वस्तु । —खंडियो, खंडी—वि० सात खण्ड या मंजिल वाला । —खणियो, खणी–वि० सात भाग या मंजिल वाला । —गु–वि० सौ गायें रखने वाला ।—गुणो –वि० सौ गुना । सात गुना ।—जिव्ह, जिव्हा, जिह, जिहा —पु० शिव, महादेव । —स्त्री० आग, अग्नि ।—तंत्री–पु० सौ तारों की वीणा । —दळ–पु० कमल । —धरम–पु० स्वामिभक्ति । —धारी–वि० वीर, बहादुर । शक्तिशाली । उदार, दातार । सत्य का पालन करने वाला । सच्चरित, सुशील । सत्ताधारी । —पु० इन्द्र —पण, पणो–पु० सतीत्व, सत्यव्रत । —पत, पत्र, पत्रक–पु० कमल । —पथ अच्छा मार्ग, अच्छा आचरण । उत्तम सम्प्रदाय । —पद –पु० कनखजूरा, चिउंटी । –वि० सौ या सात पावों वाला । —पुतर, पुत्र–पु० सपूत, सुपात्र संतान । —पुरस, पुरुस–पु० साधु या सज्जन पुरुष, सभ्य पुरुष । श्रेष्ठ चरित्रवाला व्यक्ति । —मंजळी, मंजळो–पु० सात मंजिल का भवन । —मा'यो, मासियो, माहियो–पु० सात मास गर्भ में रह कर जन्मा शिशु । —वाचो, वादि, वादी –वि० सत्य बोलने वाला, सत्य वक्ता । –पु० युधिष्ठिर ।

सतअंगी–पु० [सं० शत-अंग] १ रथ । २ युद्ध का रथ ।

सतअक्षी–स्त्री० [सं० शताक्षी] १ देवी, दुर्गा । २ रात, रात्रि ।

सतक–पु० [सं० शतक] १ सौ का समूह । शतक । २ शताब्दी । ३ सौ छंदों का समूह या रचना ।

सतकार–देखो 'सत्कार' ।

सतकारणो (बो)–क्रि० [सं० सत्कारणम्] १ आदर करना । २ स्वीकार करना, मंजूर करना । ३ अगवानी करना, सत्कार करना ।

सतकुंभ–पु० [सं० शतकुम्भम्] १ स्वर्ण, सोना । २ एक पर्वत विशेष जहां सोना पाया जाता है ।

सतकेतु–पु० [सं० शतक्रतु] देवराज इन्द्र ।

सतकेपर–पु० [स० शत-केसर] शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम ।

सतक्रत–पु० [सं० सत्कृतम्, शतक्रतुः] १ शिव, महादेव । २ धर्म, पुण्य । ३ उत्तम कार्य । ४ इन्द्र । ५ ध्वजा, पताका ।–वि० सम्मानित सत्कारित ।

सतक्रतचहन–स्त्री० ध्वजा, पताका ।

सतक्रति, सतक्रती–पु० १ ऋषि, मुनि । २ यम, धर्मराज । ३ देखो 'सतक्रत' ।

सतक्रतु–पु० [सं० शत-क्रतुः] १ इन्द्र । २ सौ अश्वमेध यज्ञ करने वाला ।

सतक्रित–देखो 'सतक्रत' ।

सतक्रिया–स्त्री० [सं०] १ पुण्य या धर्म का कार्य । २ सम्मान करने की क्रिया । ३ नमस्कार, प्रणाम । ४ अन्त्येष्टि क्रिया : ५ प्रायश्चित ।

सतगुर, सतगुरु–पु० [स० सत्-गुरु] १ सच्चे व श्रेष्ठ गुरु । २ ईश्वर, परमात्मा ।

सतजुग–पु० [सं० सत्ययुग] १ पुराण के अनुसार चार युगों में से प्रथम युग जो १७२८००० वर्ष का माना गया है । २ श्वेत, सफेद* ।

सतजुगी–वि० [सं० सत-युगी] १ सतयुग का, सतयुग संबंधी । २ सज्जन, भला ।

सतणधय–पु० [सं० स्तनधय] दूध पीता बच्चा ।

सतत–पु० [सं०] कुशल क्षेम ।–क्रि० वि० १ सदा, हमेशा, सदैव । २ निरन्तर । ३ अविच्छिन्न, अटूट ।—ज्वर–पु० निरन्तर रहने वाला ज्वर ।

सततगति–स्त्री० [सं०] हवा, पवन ।

सततरूप–पु० स्वभाव, आदत ।

सततारका–स्त्री० [सं० शत-तारका] १ सोम की सताईस पत्नियों में से एक । २ सताईस नक्षत्रों में से चौबीसवां नक्षत्र ।

सततो–वि० तेज, शीघ्रगामी ।

सतदेव–पु० [स० सत्यदेव] सूर्य, सूरज ।

सतद्रु–स्त्री० [सं० शतद्रु] १ सतलज नदी का नाम । २ गंगा नदी का एक नाम ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सतधांमा–पु० [सं० शतधामा] भगवान विष्णु का एक नाम।

सतधा–क्रि० वि० [सं० शतधा] १ सौ प्रकार से। २ सौ बार। –वि० ३ सौ गुणा। ४ सौ तरह का। ५ सौ भागों में।

सतधार–पु० [सं० शतधार] १ वज्र। २ इन्द्र का वज्र।–वि० सौ धारों वाला।

सतधारवन–पु० [सं० शतधारवन] एक तीर्थ का नाम।

सतध्रत (ति, ती)–पु० [स० शतध्रति] १ इन्द्र। २ ब्रह्मा। ३ ब्राह्मण। ४ सत्य को धारण करने वाला पुरुष। ५ स्वर्ग, वैकुण्ठ।—सुत–पु० नारद। जयंत।

सतन–पु० [सं० स्तन्य] १ दुग्ध, दूध। [सं० स्तन] २ कुच, स्तन।

सतनी–पु० [सं० स-स्तन्य] स्तन में उत्पन्न होने वाला पदार्थ, दूध।

सतप–पु० [सं०] १ गर्मी, उष्णता। २ तीक्ष्ण प्रकाश।–वि० १ तापवाला, उष्णता वाला। २ प्रकाशमान, तेजोमय।

सतपत (पत्र)–पु० [सं० शतपत्र] १ कमल। २ सेवती। ३ मोर पक्षी। ४ सारस पक्षी। ५ तोता।

सतपदम–पु० [सं० शत-पद्म] एक प्रकार का श्वेत कमल।

सतपरब–पु० [सं० शत पर्वन्] बांस।

सतपरबोका–स्त्री० [सं० शतपर्विका] दूब, दूर्वा।

सतपरब, सतपरबा–स्त्री० १ दूब, दूर्वा। २ आश्विन मास की पूर्णिमा। ३ शुक्राचार्य की एक पत्नी का नाम। ४ गन्ना, ईख। ५ बांस।

सतपुड़ो–पु० १ एक पर्वत का नाम। २ हथेली में होने वाला एक फोड़ा। ३ वृक्षों में रस-विकार से उत्पन्न होने वाला पदार्थ। ४ एक प्रकार का व्यंजन।

सतपुठो–पु० छकड़े के नीचे लगा लकड़ी का डंडा।

सतपुरी–स्त्री० सतियों को प्राप्त होने वाला लोक, सत्य लोक, वैकुण्ठ।

सतपोतक–पु० भगंदर रोग का एक भेद।

सतबळ (बळि, बळी)–पु० [सं० शतबलि] १ श्रीराम की सेना का एक मुख्य वानर। २ सात जगह से बलखाई हुई।

सतभइयो–वि० जिसके सात भाई हों।

सतभांम (भांमा)–स्त्री० [सं० सत्यभामा] श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।

सतभाव–पु० [सं० सद्भाव] १ सद् विचार अच्छे विचार। २ सच्ची धारणा। ३ विद्यमानता।

सतभिख, सतभिखा, सतभिस, सतभिसा, सतभीखा–स्त्री० [स० शतभिषा] सताईस नक्षत्रों में से चौबीसवां नक्षत्र।

सतभूमियो (भोमियो)–पु० सात मंजिल का।

सतमंडळ–पु० सूर्य, भानु।

सतम–पु० [फा० सितम] अनर्थ, गजब।

सतमख–पु० [सं० शतमख] १ वह व्यक्ति जिसने सौ यज्ञ किये हों। २ इन्द्र। ३ उल्लू। ४ कौशिक।

सतमत–पु० सतीत्व का भाव।

सतमन, सतमनु, सतमन्यु–पु० [सं० शतमन्यु] १ इन्द्र। २ उल्लू।

सतमयुख (मयूख)–पु० [स० शतमयूख] चांद, चन्द्रमा।

सतमाय–स्त्री० सौतेली मां।

सतमिण–स्त्री० १ वेश्या, रंडी। २ व्यभिचारिणी स्त्री।

सतमेव–क्रि० वि० निश्चय ही, जरूर ही।

सतरग–पु० [सं० सप्तरंग] आकाश, गगन।–वि० जिसमें सात रंग हों, सप्तरंगी।

सतरंगी–स्त्री० [सं० श्वेतरंगी] यश, कीर्ति।–वि० सात रंगों वाला, सप्तरंगी।

सतरज–स्त्री० [फा० शतरंज] चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाने वाला प्रसिद्ध भारतीय खेल। शतरंज। चतुरंग।

सतरंजी–स्त्री० १ विभिन्न रंगों की दरी। २ शतरंज खेलने की बिसात।

सतर–स्त्री० [अ० सत्र] १ पंक्ति, कतार। २ रेखा, लकीर। ३ देखो 'सतरन'। ४ देखो 'सत्रु'। ५ देखो 'सतरँ'। ६ देखो 'सितर'।

सतरक–वि० [सं० सतर्क] १ सावधान, सचेत, होशियार। २ तर्कशील, तर्कसहित।

सतरकता–स्त्री० [सं० सतर्कता] सावधानी, होशियारी।

सतरदा–देखो 'सतहदा'।

सतरन–पु० गुजरात प्रदेश का एक नाम।

सतरमाळियो–पु० आकस्मिक मृत्यु या बीरगति प्राप्त व्यक्ति का, आश्विन कृष्णा चतुर्थदशी को किया जाने वाला श्राद्ध।

सतरमो (मीं)–स्त्री० १ किसी सम्प्रदाय विशेष के साधु की मृत्यु पर सत्रहवें दिन का संस्कार। २ इस दिन किया जाने वाला भोज।

सतरमो (मीं)–वि० सोलह के बाद वाला। सत्रह के स्थान वाला।

सतरांम–पु० १ शव को श्मशान भूमि लेजाते समय की जाने वाली ध्वनि, राम-नाम सत। २ दादूपंथियों का परस्पर अभिवादन, रामा-सामा।

सतरात्र (त्रि, त्री)–पु० [सं० शतरात्रि] सौ रात्रियों में पूरा होने वाला यज्ञ विशेष।

सतरि–१ देखो 'सित्तर'। २ देखो 'सतरन'।

सतरुद्र–पु० [सं० शतरुद्र] १ इच्छित रूप बनाने वाले एक प्राचीन ऋषि। २ सौ मुख वाला एक रुद्र। ३ वेद का एक प्रकरण। ४ एक शक्ति।

सतरूपा–स्त्री० [सं० शतरूपा] ब्रह्मा की मानस कन्या व स्वायंभुव मनु की पत्नी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सतरें'क–वि० सत्रह के लगभग, सत्रह के करीब ।

सतरें–वि० [सं० सप्तदशन्] १ सोलह और एक का योग, सत्रह । –पु० दश व सात की संख्या, १७ ।

सतरौ–पु० सत्रह की संख्या का वर्ष ।

सतलड़ी–वि० (स्त्री० सतलड़ी) १ सात तह या परत का । २ सात लड़ों का ।–पु० एक प्रकार का हार ।

सतलज (ज्ज)–स्त्री० पंजाब की पांच नदियों में से एक ।

सतलस (स्स)–पु० एक प्रकार का हिंसक जानवर ।

सतलुंदी, सतलूंदी–स्त्री० सतलुज नदी का एक नाम ।

सतलोक–१ देखो 'सतीलोक' । २ देखो 'सत्यलोक' ।

सतलोचण (न)–पु० [सं० शतलोचन] १ स्कन्द का एक अनुचर । २ एक असुर ।

सतवंती–वि० पतिव्रता, सतीत्व वाली ।–स्त्री० जानकी, सीता ।

सतवन–देखो 'स्तवन' ।

सतवर–देखो 'सत्वर' ।

सतवाड़ो–पु० [सं० सप्त-वाटक] १ सप्ताह । २ प्रसव के सातवें दिन का प्रसूता का स्नान या संस्कार ।

सतवादी–वि० सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी । –पु० युधिष्ठिर ।

सतवादि, सतवादी–देखो 'सत्यवादी' ।

सतवार–देखो 'सत्वर' ।

सतवी–स्त्री० सूंठ ।

सतवेध–पु० [सं० शतवेधिन्] १ अमलबेंत । २ एक प्रकार की सब्जी ।

सतव्रत–देखो 'सत्यव्रत' ।

सतसग, सतसंगत (ति)–देखो 'सत्संग' ।

सतसंगी–देखो 'सत्संगी' ।

सतसंध–वि० [सं० सत्यसंध] सत्य प्रतिज्ञ, वचन पर दृढ़ ।–पु० १ श्रीरामचन्द्र । २ जनमेजय । ३ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

सतसई–स्त्री० [सं० सप्तशती] सात सौ छन्द या पद्यों की रचना या ग्रन्थ ।

सतसठ–वि० सात और साठ । सड़सठ ।

सतसठी–पु० सड़सठ की संख्या का वर्ष ।

सतसत (त्त)–पु० [सं० शतसप्त] इन्द्र ।

सतहर–पु० [सं० शत्रु-हर] शत्रु का वंशज ।

सतहीण(णी)–वि० दुर्बल, कमजोर ।

सतह्रदा–पु० [सं० शतह्रदा] १ इन्द्र का वज्र । —स्त्री० २ बिजली, विद्युत । ३ दक्ष की एक कन्या । ४ विराध नामक राक्षस की माता ।

सतांगत(ति,ती)–पु० [सं० सतांगति] सत्पुरुषों को प्राप्त मुक्ति, मोक्ष ।

सतांणमो (वौ)–पु० सतानवे की संख्या का वर्ष । —वि० सतानवे के स्थान वाला, छियानवे के बाद वाला ।

सतांणु–वि० नब्बे व सात, सौ से तीन कम ।

सतांन–देखो 'सिताब' ।

सतांस–पु० [सं० शतांश] सौ वां अंश ।

सता–पु० १ सत्य । २ कला । ३ भक्ति । ४ चमत्कार पूर्ण कार्य, सिद्धि । ५ प्रकृति । ६ माया, लीला । ७ अस्तित्व । ८ मूलभूत स्थिति । ९ संयोग, इत्तफाक । १० बल, शक्ति । ११ भगवान् विष्णु ।

सताईस–वि० [सं० सप्तविंशति] बीस और सात ।—पु० बीस व सात का अंक, २७ ।

सताईसौ–पु० १ सताईस का वर्ष । २ सताईस सौ की संख्या, २७०० ।

सताउर (रौ)–देखो 'सतावर' ।

सताक्षी–स्त्री० [सं० शत-अक्षी] १ रात, रात्रि । २ सौंफ । ३ दुर्गा, देवी । ४ पार्वती ।

सताड़णी (वौ)–देखो 'संतापणी' (वौ) ।

सताजोग–पु० इत्तिफाक, संयोग ।

सताणी (वौ)–देखो 'संतापणी' (वौ) ।

सतानंद–पु० [सं० शतानंदः] १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ श्रीकृष्ण का एक नाम । ४ राजा जनक के पुरोहित । ५ विष्णु के रथ का नाम । ६ सप्त ऋषियों में से एक ।

सतानन–पु० [सं० शतानन] शिव का एक नाम ।

सताननी–स्त्री० [सं०] एक देवी विशेष ।

सतानीक–पु० [सं०] १ द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न नकुल का पुत्र । २ जनमेजय का एक पुत्र । [सं० शतानीक] ३ बूढ़ा व्यक्ति ।

सताब (बौ)–देखो 'सिताब' ।

सताबद–पु० [सं० शताब्दी] सौ वर्ष । प्रति सौ वर्ष का समय । –वि० [सं० शताब्द] सौ वर्ष का ।

सताब्दी–स्त्री० [सं० शताब्दी] १ सौ वर्ष की अवधि । २ इस अवधि का सूचक अंक ।

सताभिधांन–वि० [सं० शतावधान] सौ बातों का ध्यान रख कर एक साथ तथा यथार्थ उत्तर देने वाला ।

सतायु, सतायुस–वि० [सं० शतायुस्] सौ वर्ष का ।

सतार–पु० [सं०] १ ग्यारहवां स्वर । २ देखो 'सितार' ।

सतारथ–वि० [सं० सत्यार्थ] १ सत्य, यथार्थ । २ देखो 'सत्यारथ'

सतारा, सतारा–पु० सप्त ऋषि तारे ।

सतारो–पु० १ दो बांसुरियों वाला, अलगोजे से भिन्न, एक वाद्य । २ देखो 'सितारो' ।

सतालंक–पु० [सं० शताऽऽलक] बलराम ।

सतावणी–वि० (स्त्री० सतावणी) सताने वाला, कष्ट देने वाला ।

सतावणी (वौ)–देखो 'संतापणी' (वौ) ।

सतावन–वि० [सं० सप्तपंचाशत] पचास व सात का योग ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सतावनो–पु० सतावन का वर्ष ।–वि० छप्पन के बाद वाला ।

सतावर (री)–स्त्री० [सं० शतावरी] १ एक प्रकार की औषधि । शतमूली, सफेद मूसली । २ इन्द्राणी ।

सतावरत–पु० [सं० शतावर्त] १ शंकर, महादेव । २ एक पवित्र वन का नाम ।

सतावो–देखो 'सिताब' ।

सतावीस–देखो 'सताईस' ।

सतावो–पु० गर्भवती गाय के स्तनों का उभार ।

सति–महा०क्रि० १ अस्ति, है । २ देखो 'सती' ।

सतिखख–वि० अति तीक्ष्ण ।

सतिधारी–देखो 'सतधारी' ।

सतियास, सतियासो–देखो 'सितियासो' ।

सती–पु० १ कुबेर । २ सौ का समूह ।–स्त्री० ३ प्रजापति दक्ष की पुत्री व भगवान शंकर की पत्नी । ४ पार्वती । ५ सीता । ६ द्रौपदी । [सं० क्षिति] ७ पृथ्वी, भूमि । ८ पतिव्रता व साध्वी स्त्री । ९ मृत पति के शव के साथ जल कर भस्म होने वाली स्त्री । १० स्त्री, महिला, औरत । ११ जैन साध्वी ।–वि० [सं० सत] १ सत्य, यथार्थ । २ सत्यवादी । ३ वीर, बहादुर । ४ दाता, दानी । ५ दृढ़, अटल ।

सतीक्षण, सतीखण–वि० [सं० सतीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज । २ नुकीला ।

सतीखो–वि० १ विशेष अधिक । २ देखो 'सतीखण' ।

सतीचौरो–पु० किसी सती का चबूतरा या स्मारक ।

सतीत्व–पु० [सं०] सती होने की अवस्था या भाव ।

सतीपुर–पु० सतीलोक, स्वर्ग ।

सतीय–देखो 'सती' ।

सतीरांणी–पु० एक लोक गीत विशेष ।

सतीलोक–पु० सती स्त्री को मिलने वाला लोक, स्वर्ग ।

सतीवरि–पु० [सं० सीतावर] सीतापति श्रीरामचन्द्र ।

सतीवांम–स्त्री० [सं० सतीवामा] सीता, जानकी ।

सतुआसंकरांत, सतुआसंकरांति, सतुआसंकरायत (ति) (संक्रांति) –स्त्री० [सं० सक्तुकसंक्रांति] वैशाख मास में आने वाली मेष की संक्रांति ।

सतुआसूंठ (सोंठ)–स्त्री० सोंठ की एक किस्म ।

सतुक–पु० अवसर, मौका ।

सतुलकीरत–स्त्री० [सं० श्रुतकीर्ति] दशरथ सुत शत्रुघ्न की स्त्री ।

सतुर–देखो 'सत्वर' ।

सतुळो–पु० एक प्रकार का जांघिया ।

सतूआरा–पु० बढ़ई, सुथार ।

सतूति, सतूती–देखो 'स्तुति' ।

सतूरण–स्त्री० [सं० सत्वरण] शीघ्रता ।–क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत ।

सतेई–क्रि० वि० प्रकृति से, कुदरतन ।

सतेज (जो)–पु० [सं०] १ वेग, गति । २ आग, अग्नि ।–क्रि० वि० वेगवान, तेजोमय, शक्तिशाली, बलवान ।

सतोखणो (बो)–देखो 'संतोखणो' (बो) ।

सतोगुण–पु० [सं० सत्वगुण] मनुष्य को अच्छे कामों की ओर प्रेरित करने वाला गुण, सात्विक वृत्ति ।

सतोतरो–पु० सतहत्तर की संख्या का वर्ष ।

सतोदर–पु० [सं० शतोदर] १ शिव का एक नाम । २ शिव का एक गण । ३ रामायण के अनुसार एक प्राचीन अस्त्र । ४ देखो 'सितोदर' ।

सतोदरी–स्त्री० [सं० शतोदरी] एक स्कन्द मातृका ।

सतोस (सी)–देखो 'स्तोम' ।

सतोरो–वि० (स्त्री० सतोरी) पराक्रमी, बलशाली, शक्तिशाली ।

सतोल–वि० (स्त्री० सतोली) १ असर करने वाला, प्रभाव शाली । २ दृढ़, पक्का । ३ भारी, वजनी । ४ बहुत, अधिक । ५ बराबर, समान ।

सतोळियो, सतोलियो, सताल्यो, सतोल्यो–पु० १ एक प्रकार का बच्चों का खेल । २ देखो 'सडमोल्यो' ।

सत्करता–वि० [सं० सत्कर्त्ता] १ सत्कर्म करने वाला । २ आदर सत्कार करने वाला ।

सत्करम–पु० [सं० सत्कर्म] १ अच्छा कार्य, पुण्य कार्य । २ अच्छा संस्कार ।

सत्कार–पु० [सं०] आदर, सम्मान ।

सत्कीरति–स्त्री० [सं० सत्कीर्ति] उत्तम कीर्ति, यश ।

सत्कृत–पु० १ आदर, सत्कार । २ सत्कर्म, अच्छे कार्य ।–वि० [सं० सत्कृत] १ अच्छी तरह किया हुआ । २ सत्कारित ।

सत्त–पु० [सं० सत्व] १ किसी पदार्थ का सार, तत्त्व । २ देखो 'सत' । ३ देखो 'साथ' । ४ देखो 'सात' । ५ देखो सत्य' । ६ देखो 'सत्रु' ।

सत्तम–वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ । २ देखो 'सप्तम'

सत्तवती–देखो 'सत्यवती' ।

सत्ता–स्त्री० १ शासन चलाने वाली शक्ति, राज्य, शासन । २ प्रभुत्व । ३ देखो 'सता' ।

सत्ताईस–देखो 'सताईस' ।

सत्तावन–देखो 'सतावन' ।

सत्ती–स्त्री० १ सात बूंटियों वाला ताश का पत्ता । २ देखो 'सती' ।

सत्तू, सत्तू–१ देखो 'सातु' । २ देखो 'सत्रु' ।

सत्तूकार, सत्तूकार–पु० [सं० सत्रु-आगार] वह स्थान जहां निःशुल्क भोजन व आवास की व्यवस्था हो ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्ती-पु० १ स्त्री के विरह में मरने वाला या स्त्री के शव के साथ जलने वाला व्यक्ति। २ देखो 'सातौ'।

सत्तौल-देखो 'सतोल'।

सत्थ-देखो 'साथ'।

सत्थर-पु० १ बारूद बिछी सुरंग। २ देखो 'साथरवाड़ी'।

सत्थरी-देखो 'साथरी'।

सत्थळ, सत्थल-पु० १ वस्त्र विशेष। २ देखो 'साथळ'।

सत्थवाह (ही)-देखो 'सारथवाह'।

सत्थि, सत्थी, सत्थु, सत्थं, सत्थ, सत्थी-१ देखो 'साथ'। २ देखो 'साथळ'। ३ देखो 'साथी'।

सत्पथ-पु० १ सदाचार। २ उत्तम सम्प्रदाय। ३ श्रेष्ठ सिद्धान्त। ४ उचित मार्ग।

सत्पुरस, सत्पुरुस-देखो 'सतपुरस'।

सत्यंभरा-पु० [सं०] प्लक्षद्वीप की एक नदी।

सत्यभूति-पु० [सं०] भगवान् विष्णु।

सत्य-वि० [सं०] १ ठीक, यथार्थ, वास्तविक। २ असल, शुद्ध, खरा। ३ सच्चा, ईमानदार। ४ पुण्यात्मा, धर्मात्मा। ५ सत् का या सत संबंधी। ६ झूठ से परे। ७ दृढ़, अटल। ८ अमिट। ९ अजर-अमर। [सं० शत्य] १० सौ से बना हुआ। ११ सौ से संबंधित। १२ सौ का सूचक।-पु० [सं० सत्य] १ वास्तविक बात, यथार्थ तत्व। २ न्याय या धर्म का पक्ष। ३ सात लोकों में से एक। ४ भगवान् विष्णु का एक नाम। ५ श्रीराम का एक नाम। ६ पारमार्थिक सत्ता जो सदा अविकारी रहती है। ७ बल, शक्ति। ८ सच्चाई। ९ भलाई। १० शपथ। ११ जल, पानी। १२ चार युगों में से प्रथम युग, स्वर्णयुग।

सत्यभामा-स्त्री० [सं० सत्यभामा] श्रीकृष्ण की एक पटरानी।

सत्यरूपा-स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।

सत्यलोक-पु० [सं०] सात लोकों में से सब से ऊपर का लोक जहां ब्रह्मा का निवास माना जाता है।

सत्यलोकेस सत्यलोकेस-पु० ब्रह्मा।

सत्यवत-वि० सत्य को धारण करने वाला।

सत्यवचन-पु० १ यथार्थ कथन, सही बात। २ प्रतिज्ञा, प्रण।

सत्यवती-स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता, सती। २ कुरुवंशीय राजा शांतनु की पत्नी। ३ अगस्त्य ऋषि की पत्नी। ४ एक प्राचीन नदी।

सत्यवादी-वि० [सं० सत्यवादिन] १ सत्य वक्ता, सही बात कहने वाला। २ धर्म परायण, धर्म पर दृढ़।

सत्यव्रत-पु० १ एक देव गण। २ सत्य बोलने का संकल्प। -वि० दृढ़ प्रतिज्ञ।

सत्यसंधा-स्त्री० [सं०] १ द्रौपदी। २ देवी का एक विशेषण।

सत्यसिंधु-पु० [सं०] ईश्वर, परमात्मा।

सत्या-स्त्री० [सं०] १ दुर्गा का एक नाम। २ सीता। ३ द्रौपदी। ४ सत्यभामा। ५ व्यास की माता का नाम। ६ भगवद्गीता का एक नाम। ७ शक्ति।

सत्यानंद-देखो 'सतानद'।

सत्यानास-पु० १ ध्वंस, मटियामेट, तहस-नहस। २ सर्वनाश।

सत्यानासी-स्त्री० १ पीले रंग के फूलों वाला एक पौधा। (वैद्यक) २ देखो 'सत्यानास'।

सत्यारथ पु० १ स्वामी दयानन्द विरचित सत्यार्थ प्रकाश। २ सही अर्थ।

सत्यासियो-पु० सत्यासी का वर्ष।

सत्यासी-वि० अस्सी व सात।-स्त्री० अस्सी व सात की संख्या, ८७।

सत्यासीयो-देखो 'सत्यासियो'।

सत्योसर (इ, ई)-१ देखो 'सितंतर'। २ देखो 'सितंतरी'।

सत्रंघण-पु० शत्रुघ्न।

सत्र-पु० [सं० सत्र, सत्र] १ यज्ञ, हवन। २ घर, मकान। ३ गरीबों को मुफ्त भोजन बांटने का स्थान। ४ पुण्य, धर्म। ५ सोम यज्ञ। ६ भेंट, नैवेद्य। ७ पर्दा, चादर। ८ सम्पत्ति, धन, दौलत। ९ आश्रय स्थान। १० धर्म शाला। ११ जंगल, वन। १२ विष्णु भगवान्। १३ देखो 'सत्रु'।

सत्रघण, सत्रघन, सत्रघ्न, सत्रघ्न, सत्रघ्नु-देखो 'सत्रुघण'।

सत्रव, सत्रव-देखो सात्रव'।

सत्रहरस-वि० सत्रह सौ।

सत्रांजीत-पु० [सं० शत्रुजीत] भीम। -वि० शत्रुओं को जीतने वाला।

सत्रांण-देखो 'सत्रु'।

सत्रांम-देखो 'सुत्रांमा'।

सत्रांसंधार-पु० १ लोहा। २ तलवार।

सत्राकार, सत्रागार-पु० गरीब व असहायों को मुफ्त भोजन बांटने का स्थान।

सत्राट-देखो 'सत्रु'।

सत्राटांकरणीसरव-स्त्री० यो० तलवार।

सत्रास-वि० [सं०] १ भयभीत, डरा हुआ। २ संकटग्रस्त, दुःखी।

सत्रि, सत्री-पु० [सं० सत्रि] १ राजदूत। २ हस्ती, हाथी। -वि० [सं० सत्रिन्] यज्ञ करने वाला।

सत्रुंजय-पु० [सं० शत्रुंजय] १ काठियावाड़ का एक पर्वत। २ हाथी, हस्ती। ३ परमेश्वर। ४ भगवान् विष्णु।-वि० शत्रु को जीतने वाला।

सत्रुंजया-स्त्री० [सं० शत्रुंजया] एक स्कन्द मातृका।

सत्रु-पु० [सं० शत्रु] १ वैरी, दुश्मन। २ राजनैतिक प्रतिद्वन्दी। ३ विजयी। ४ नाशकर्ता, संहारकर्ता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्रुकार–पु० [सं० सत्रु+कथागार] अन्न दानशाला।
सत्रुघण–पु० [सं० शत्रुघ्न] राजा दशरथ का सब से छोटा पुत्र।
सत्रुट–वि० कम, थोड़ा।
सत्रुता, सत्रुताइ (ई)–स्त्री० [सं० शत्रुता] वैर भाव, शत्रुता।
सत्रुदमण (न)–वि० [सं० शत्रुदमन] शत्रुओं का नाश करने वाला।
सत्रुमरदण (न)–वि० [सं० शत्रुमर्दन] शत्रुओं का नाश करने वाला।
सत्रुहण–देखो 'सत्रुघण'।
सत्रू–देखो 'सत्रु'।
सत्रूकार–१ देखो 'सत्रुकार'। २ देखो 'सत्राकार'।
सत्रूपा–देखो 'सतरूपा'।
सत्रेख–क्रि० वि० तीक्ष्णता से, तीक्ष्णता के साथ।
सत्रो–देखो 'सत्रु',
सत्व–पु० १ सत्ता। २ सार, मूल, तत्त्व। ३ वास्तविकता। ४ चित्त की प्रवृत्ति। ५ प्रकृति के तीन गुणों में से एक। ६ प्रकृति। ७ जीवन शक्ति। ८ मन, ज्ञान। ९ अधूरा गर्भ। १० भूत-प्रेत। ११ सात्विक भाव।
सत्वगुण–देखो 'सतोगुण'।
सत्वगुणी–वि० [सं० सत्वगुणिन्] १ जिसमें सतोगुण हो। २ साधु, विवेकी।
सत्वर–क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी।
सत्वसील–वि० [सं० सत्वशील] १ सदाचारी। २ सात्विक प्रकृति का। ३ धर्मात्मा, पुण्यात्मा।
सत्वाधिक–वि० बढ़कर, श्रेष्ठ।
सत्संग, सत्संगति–स्त्री० १ अच्छी संगती। अच्छी सोहबत। २ साधु-संतों का साथ। ३ धार्मिक चर्चा, कीर्त्तन, भजन।
सत्संगी–वि० सत्संग करने वाला, भजन करने वाला।
सथ–१ देखो 'साथ'। २ देखो 'सत'।
सथप्पणो (बो)–क्रि० १ नियुक्त करना। २ स्थापित करना।
सथर–स्त्री० [सं० स्थरा] १ पृथ्वी, भूमि। २ देखो 'सिथर'।
सथळ–स्त्री० १ रोमावली। २ देखो 'साथळ'। ३ देखो 'सिथिळ'।
सथान–देखो 'स्थान'।
सथानक, सांथनिक–देखो 'सुथानक'।
सथाप–स्त्री० तमाचा, थप्पड़, चांटा।
सथापणो (बो)–देखो 'स्थापणो' (बो)।
सथिति–स्त्री० [सं० स्थित] १ धरती, पृथ्वी, भूमि। २ देखो 'स्थिति'।
सथियारी–वि० साथ रहने वाला।
सथियो–देखो 'स्वस्तिक'।
सथिर–पु० १ हाथी। २ देखो 'स्थिर'।
सथी–१ देखो 'साथ'। २ देखो 'साथी'।
सथूळ–देखो 'स्थूळ'।
सथ्थ–देखो 'साथ'।
सथ्थल–क्रि० वि० १ साथ में। २ देखो 'साथळ'।
सथ्थी–१ देखो 'साथी'। २ देखो 'साथ'।
सदंका–वि० सरल, आसान।
सदंत–वि० दांत युक्त, दांतों वाला।
सदंभ–वि० [सं०] १ कपटयुक्त, कपटपूर्ण। २ अहंकार युक्त।
सद–पु० [सं० सदस्] १ सभा। २ चन्द्रमा, चांद। ३ दान, पुण्य। ४ परमेश्वर। ५ ज्ञानी। ६ ब्रह्म। ७ साधु, संत। ८ सत्य, सच।–स्त्री० ९ प्रकृति। १० रुकावट, बाधा।
–वि० १ ताजा। २ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया। ३ शुभ, मंगलमय। ४ सही, सत्य या पूर्ण। ५ ठंडा, शीतल। ६ सुन्दर मनोहर। ७ अमिट, स्थाई। ८ देखो 'साद'। ९ देखो 'सदा'।—गत, गति–स्त्री० मुक्ति, मोक्ष। अच्छी गति। —गुण–पु० अच्छा गुण, अच्छा आचरण। उत्तम लक्षण। —गुणी–पु० अच्छे गुण या आचरण वाला। उत्तम लक्षणों वाला।—गुरु–पु० अच्छा गुरु या शिक्षक। धर्मगुरु।
सदक–पु० पानी, जल।
सदकी–पु० [अ० सदक:] १ दान, खैरात। २ न्योछावर, बलिहारी। ३ खुशामद, चापलूसी। ४ मान, प्रतिष्ठा।
–वि० उत्तम, श्रेष्ठ।
सदगतनाथ–पु० १ विष्णु। २ ईश्वर, परमात्मा।
सदघटा–स्त्री० सभा।
सदणो (बो)–क्रि० १ अनुकूल या माफिक पड़ना, होना। २ सहन होना, बर्दाश्त होना। ३ शब्द या ध्वनि होना। ४ जिम्मेदार होना।
सदन–पु० [सं०] १ घर, मकान। २ आवास। ३ जल, पानी। ४ खान। ५ यज्ञ मण्डप। ६ यम का निवासस्थान।
सदनामी–स्त्री० यश, कीर्ति।
सदम–पु० [सं० सद्मन्] घर, मकान, मंदिर।
सदमो–पु० [अ० सदमा] १ मानसिक आघात। २ धक्का, चोट, आघात। ३ हानि, नुकसान।
सदय–वि० [सं०] दयामय, दयालु।
सदर–वि० [अ० सद्र] १ मुख्य, खास। २ बड़ा, महान्। ३ भीत, डरा हुआ।–पु० १ छाती, वक्षस्थल; सीना। २ सभापति, अध्यक्ष। ३ सभापति का स्थान। ४ किसी विभाग का केन्द्रीय कार्यालय। ५ केन्द्रीय स्थान। ६ मुगल कालीन शासन व्यवस्था में एक पद या पदाधिकारी। [अ० सदर] ७ आंखों की धुंध। ८ देखो 'सघर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सदरी–स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन का एक पहनावा, जाकिट

सदरुससदर (सुदर), सदरुससदर (सुदर)–पु० [अ० सद्रुस्सुदूर] १ शाही हरमसरा का संरक्षक, अंतः पुरिक। २ मुख्य न्यायाधिपति। ३ मुगल शासन में एक मंत्री विशेष।

सदरूप–देखो 'सैंदरूप'।

सदळ, सदल–पु० [सं० सदल] वृक्ष, पेड़।–वि० १ दलदार, मोटा, पुष्ट। २ अत्यधिक, बहुत। ३ सेना सहित।

सदवरत (व्रत)–पु० [सं० सदवृत्त] १ चरित्रवान, शीलवान। २ देखो 'सदावरत'।

सदस्य–पु० [सं०] सभासद, कार्यकर्त्ता (मेम्बर)।

सदांनो–देखो 'सांदियांनो'।

सदांमो–देखो 'सुदांमो'।

सदा (सदाई)–क्रि० वि० [सं०] १ सदैव, नित्य, हमेशा। २ हर वक्त, हर समय। ३ निरन्तर, लगातार।

सदागत, सदागति–पु० [सं० सदागति] १ पवन, हवा। २ ब्रह्म। ३ सूरज, सूर्य।

सदाचरण–देखो 'सदाचार'।

सदाचार–पु० [सं०] १ नीति और धर्म के अनुसार अच्छा आचरण, व्यवहार। २ सज्जनता का बर्ताव। ३ शिष्ट आचार, औपचारिकता।

सदाचारि,सदाचारी–वि० [सं० सदाचारिन्] जिसका आचरण धर्म परायण हो, सज्जन, शिष्ट, चरित्रवान।

सदाणो (बो)–क्रि० १ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी देना। २ अपने कर्ज की जिम्मेदारी उस व्यक्ति पर डालना जिसमें आपका कर्ज बकाया हो।

सदादांन–पु० [सं० सदादान] १ ऐसा हाथी जिसका मद हमेशा बहता हो। २ ऐरावत। ३ गणेश।

सदानंद–पु० [सं०] १ शिव, महादेव। २ श्रीविष्णु। ३ ईश्वर।

सदानीरा–स्त्री० १ करतोया या कर्मनाशा नदी का एक नाम। २ सदा बहती रहने वाली नदी।

सदापुसप, सदापुस्प–पु० [सं० सदापुष्प] १ आक, मदार। २ कपास। ३ रोहितक वृक्ष।

सदाफळ–पु० [सं० सदाफल] १ नारियल। २ एक प्रकार का नींबू। ३ बेल का वृक्ष। ४ गूलर। ५ वट।–वि० सदा फलने वाला।

सदाबरत–देखो 'सदावरत'।

सदामद, सदामद–क्रि० वि० १ परम्परागत, परम्परा से। २ पहले से, हमेशा से। ३ रोजाना, हमेशा।

सदारसंस–पु० [सं० सदामर्ष] भगवान् विष्णु।

सदावंत–देखो 'सदामंद'।

सदावणो (बो)–देखो 'सदाणो' (बो)।

सदावयस्य–पु० दोस्त, मित्र।

सदावरत (व्रत)–पु० [सं० सदाव्रत] १ गरीबों को नित्य भोजन देने का कार्य संकल्प। २ इस प्रकार हमेशा दिया जाने वाला भोजन या सामग्री। ३ दान।

सदावरती (व्रती)–वि० सदाव्रत बांटने वाला,दानी।

सदासिव–पु० [सं० सदाशिव] महादेव, शिव।

सदासुख–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

सदासुखी–स्त्री० जाति विशेष।

सदासुहागण (सुहागण)–स्त्री० वेश्या, रंडी।–वि० जिसका सुहाग अमर हो।

सदि–१ देखो 'सबद'। २ देखो 'सदी'।

सदिये (यै), सुदिये (यै)–क्रि० वि० [सं० सद्य] १ सूर्यास्त या सूर्योदय से पूर्व। २ शीघ्र, तुरंत, बिना देर किये।–पु० १ प्रातः काल, सवेरा। २ संध्या पूर्व का समय।

सदी–स्त्री० १ शताब्दी। २ सौ वर्षों का समूह। ३ सौ की संख्या, १००। ४ अच्छाई।–वि० सौ

सदीठ–स्त्री० [सं० सुदृष्टि] अच्छी नजर, सुदृष्टि।

सदीनो–वि० सैकड़ों वर्षों का

सदीव, सदीवत–देखो 'सदैव'।

सदुपदेस–पु० [सं० सदुपदेश] १ उत्तम उपदेश, कल्याणकारी उपदेश। २ अच्छी सलाह।

सदू–देखो 'सधू'।

सदूतर–पु० [सं० सद्योत्तर] हाजर जवाबी। अच्छा उत्तर।

सदूर–क्रि० वि० जो नजदीक न हो, दूर।

सदेव सदेवत–वि० १ देव तुल्य, देव समान। २ देखो 'सदैव'।

सदेह–वि० [सं०] सशरीर, देह सहित।

सदं–देखो 'सबद'।

सदैव–अव्य० १ नित्य, हमेशा, सर्वदा। २ निरन्तर, लगातार।

सदोस–वि० [सं० सदोष] दोष पूर्ण, दोष युक्त।

सदोमत (त्त)–वि० १ मस्त, प्रसन्नचित्त। २ उन्मत्त।

सदोरो–वि० मदोन्मत्त, मदमस्त, नशे में उन्मत्त।

सद्द–१ देखो 'सबद'। २ देखो 'सद'। ३ देखो 'स्वाद'। ४ देखो 'साद'।

सद्दणो (बो)–क्रि० १ बोलना, दहाड़ना, गर्जन करना। २ देखो 'सदणो' (बो)।

सद्दय–१ देखो 'सदय'। २ देखो 'सबद'।

सद्दळ–देखो 'सदळ'।

सद्दहणा–देखो 'सद्धा'।

सद्दा–पु० [अ० सद्दः] मुहर्रम से तीन दिन पहले का पर्व व उस पर्व का उत्सव।

सद्दूल–देखो 'सारदूळ'।

सद्दोमत–देखो 'सदोमत'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सद्धर–देखो 'सधर'।

सद्धरी–देखो 'सधरी'।

सद्म–पु० [सं० सद्मन्] १ घर, मकान। २ स्थान, जगह। ३ युद्ध।

सद्मिनी–स्त्री० [सं०] १ बड़ा मकान। २ प्रासाद, महल।

सद्य–क्रि० वि० [सं० सद्यस] १ आज ही, अब ही। २ तुरंत, शीघ्र।

सद्र–देखो 'सदर'।

सद्रड्ढ, सद्रड्ढी, सद्रढ़ (ढ़ी)–वि० [सं० सुदृढ़] १ सुदृढ़, मजबूत। २ अविचल, अटल, स्थिर।

सद्रव्य–पु० [सं० सद्द्रव्य] १ धनाढ्य व पूंजीपति। २ धन, दौलत।

सद्रस–वि० [सं० सदृश] समान, तुल्य, बराबर।

सद्रससद्दर, सद्रससुद्दर, सद्रस्सद्दर, सद्रस्सद्दर, (दूर)–देखो 'सदरुससदर'।

सद्रि, सद्री–पु० [सं० अद्रि] १ हाथी, हस्ती। २ बादल, मेघ। ३ अर्जुन का एक नाम। ४ बिजली।

सद्रोची–देखो 'सध्रीची'।

सद्वती–स्त्री० [सं०] पुलस्त्य ऋषि की एक पुत्री का नाम जो अग्निदेव को ब्याही गई थी।

सधण–वि० पत्नी सहित, सपत्नीक।

सधणी (बी)–क्रि० १ सिद्ध होना। २ सफल होना। ३ काम चलना। ४ अभ्यस्त होना, मंजना। ५ निशाना; ठीक होना। ६ पूर्ण होना। ७ पालन होना।

सधप–वि० तृप्त।

सधर–वि० १ श्रेष्ठ, बढ़िया, उत्तम। २ मजबूत। ३ प्रबल, सशक्त। ४ दयालु, कृपालु। ५ दृढ़, मजबूत। ६ सख्त, कठोर। ७ आश्रयदाता। ८ जबरदस्त, शक्तिशाली। ९ प्रभाव शाली, गहरा। १० तेज और जोश पूर्ण। ११ धैर्यवान, धैर्यशाली। १२ अटल, स्थिर। १३ दृढ़, अडिग। १४ तैयार, सावधान। १५ आधार व सहारे सहित। –पु० १ वाद्य। २ ऊपर का ओंठ। ३ धीरज, धैर्य। ४ एक छन्द विशेष।

सधरम (मी)–वि० [सं० सधर्मन्] १ समान धर्म का, समान गुणों वाला। २ समान जाति या सम्प्रदाय का। ३ समान।

सधरी–वि० (स्त्री० सधरी) १ अटल, अडिग। २ दृढ़, मजबूत। ३ वीर, बहादुर। ४ आधार या सहारे सहित।

सधव, सधवा–स्त्री० [सं० सधवा] सुहागिन औरत।

सधवाद–पु० [सं० साधुवाद] १ यश कीर्ति। २ शाबासी, धन्यवाद।

सधाणी (बी)–क्रि० १ निभाना, बनाये रखना। २ देखो 'सिधाणी' (बी)।

सधार–पु० [सं० स-आधार, सद्धार] १ आधार, आश्रय। २ सहायता, मदद। ३ भरोसा, विश्वास। ४ घी, घृत। ५ देखो 'साधार'।

सधारण–वि० उद्धार करने वाला, उद्धारक।

सधारणी (बी) १ देखो 'सिधाणी' (बी)। २ देखो 'धारणी' (बी)।

सधवार–स्त्री० गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें मास में दिया जाने वाला उपहार।

सधिये (यै), सधिये (यै)–देखो 'सदियै'।

सधीग–वि० १ प्रबल, जबरदस्त। २ वीर, साहसी।

सधीर–पु० १ सिंह, शेर। २ ईश्वर, परमेश्वर। ३ पृथ्वी, भूमि। ४ घोड़ा, अश्व। ५ लक्ष्मण।–वि० १ वीर, बहादुर। २ जिसकी थाह न मिले गंभीर, गहरा। ३ धैर्ययुक्त, धैर्यवान। ४ स्थिर, अटल। ५ व्यग्र, उतावला। ६ सुन्दर, मनोहर। ७ दक्ष, चतुर। ८ उत्तम, श्रेष्ठ। ९ निरोग, स्वस्थ। १० दाता, दानी।

सधीरांधीर–वि० महावीर।

सधु–स्त्री० पुत्री, बेटी।

सधुरधर–पु० बैल।

सधू–देखो 'सधु'।

सधूमवरणा–स्त्री० [सं० सधूमवर्णा] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सधेस–पु० १ सिद्ध, महात्मा। २ शिव, महादेव, शंकर।

सध्धर–देखो 'सधर'।

सध्रीच–पु० [सं०] मित्र, सखा।

सध्रीची–स्त्री० [सं०] सखी, सहेली।

सनकणी (बी)–१ देखो 'सणक्कणी' (बी) २ देखो 'सिणकणी' (बी)।

सनंब, सनंदण (न)–पु० [सं० सनंदन] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सन–पु० १ संवत, शताब्द। २ एक पौधा विशेष जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है, सण। ३ देखो 'सनि'। –अव्य० तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिह्न, से।

सनक–पु० [सं० सनक] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। २ शंकर के एक पुत्र का नाम। ३ देखो 'सणक'।

सनकणी (बी)–१ देखो 'सिणकणी' (बी)। २ देखो 'सणक्कणी' (बी)।

सनकादक, सनकादि (क)–पु० (ब. व.) ब्रह्मा के चार मानस पुत्र–सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार।

सनकारी–देखो 'सणकारी'।

सनडोरणी–पु० वह रस्सी जिससे चरस की 'सूंड' व 'पंजाळी' बंधी रहती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सनढ़–वि० १ वीर, योद्धा, बहादुर। २ सुसज्जित, कटिबद्ध तैयार। ३ दृढ़, मजबूत। ४ बलवान, शक्तिशाली। ५ शुभ, मंगलमय।

सनणो (णौ)–क्रि० १ लथपथ होना, युक्त होना। २ भीगना, तर होना।

सनत–पु० [सं० सनत्] ब्रह्मा।

सनत्सुजात, सनत्सुजान–पु० ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक।

सनद–स्त्री० [अ०] १ प्रमाण, सबूत। २ विश्वास। ३ प्रमाण-पत्र।

सनद्ध–वि० १ ध्वनि सहित। २ देखो 'सनद'।

सनद्वाज–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा।

सनध, सनद्ध–वि० [सं० सन्नद्ध] १ तैयार, सन्नद्ध। २ देखो 'सनद'।

सनबंध, सनमंद (मंध)–देखो 'संबंध'।

सनबंधी, सनमंधी–देखो 'संबंधी'।

सनम–स्त्री० १ इज्जत, मर्यादा। २ लाज। ३ प्रेम पात्र।

सनमन, सनमन–देखो 'संबंध'।

सनमांन, सनमांनउ–पु० [सं० सम्मान] १ आदर, सत्कार। २ इज्जत, प्रतिष्ठा।

सनमांनणो (णौ)–क्रि० १ सम्मान करना, आदर करना। प्रतिष्ठा बढ़ाना। २ कीर्ति या गुण वर्णन करना।

सनमुख, सनमुख–क्रि० वि० [सं० सम्मुख] सम्मुख, सामने।

सनमुख-माला–सहण–पु० १ वीर, योद्धा। २ सिंह, शेर।

सनमुधि–देखो 'संबंध'।

सनवार–देखो 'सनिवार'।

सनस–पु० १ लिहाज, खयाल। २ चीज, वस्तु। ३ शंका, लज्जा। ४ सनद, साक्षी। ५ इज्जत, मर्यादा। ६ कीर्ति, यश। –वि० समान, तुल्य।

सनसणो (णौ), सनस्सणो (णौ)–क्रि० जोश में होना, जोश आना।

सनसनो–स्त्री० १ सन्नाटा, स्तब्धता। २ घबराहट, खलबली। ३ उत्तेजना।

सनांण (न)– १ देखो 'सेनांण'। २ देखो 'स्नांन'।

सनाकत (खत, गत)–देखो 'सिनाख्त'।

सनाढ़–१ देखो 'सनढ़'। २ देखो 'सनाढ्य'।

सनाढ्य–पु० गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।

सनातन–पु० [सं०] १ प्राचीन काल। २ परम्परा। ३ धार्मिक रूढ़ि। ४ संबंध, रिश्ता। [सं० सनातनः] ५ ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ शिव। ८ ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक। –वि० १ आदि काल का, प्राचीन। २ निरन्तर, बराबर। ३ स्थाई, दृढ़। ४ अनंत। ५ नित्य, शाश्वत। ६ परम्परागत। —पुरस, पुरुस–पु० विष्णु।

सनातनधरम–पु० [सं० सनातन-धर्म] १ अनादिकाल या परम्परा से चला आरहा धर्म। २ वैदिक धर्म। ३ हिन्दू धर्म।

सनातनी–वि० [सं०] १ सनातन धर्म का, सनातन धर्म संबंधी। २ प्राचीन काल से प्रचलित।–पु० १ सनातन धर्म का अनुयायी।–स्त्री० २ दुर्गा, पार्वती। ३ सरस्वती। ४ लक्ष्मी।

सनाती–वि० १ संबंधी, रिश्तेदार। २ स्वजातीय।

सनाथ–वि० [सं०] १ जिसका कोई मालिक या स्वामी हो। २ जिसका कोई रक्षक हो। ३ आश्रय पाया हुआ। ४ कृत-कृत्य।

सनाद–वि० कुल, वंश।

सनाभ (भि, भी)–वि० [सं०] १ एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर। २ सजातीय। ३ स्नेही।–पु० १ भाई, सहोदर। २ नजदीकी रिश्तेदार।

सनाय–स्त्री० [अ० सना] १ सोनामुखी-पौधा व पत्तियां। २ देखो 'सहनाई'।

सनासन–क्रि० वि० १ निरन्तर लगातार। २ वेग से, तेजी से। ३ सन्–सन् शब्द करते हुए।

सनाह–१ देखो 'सन्नाह'। २ देखो 'सनाथ'।

सनाहवांन सनाहियो, सनाही, सनाहीयो, सनाहै–वि० कवचधारी।

सनाहू–प–पु० [सं०] युद्ध के योग्य हाथी।

सनि–पु० [सं० शनि] १ सौर जगत का सातवां ग्रह। २ सूर्य व छाया का पुत्र, शनिदेव। ३ शनिवार। ४ शिव, महादेव। —पित, पिता–पु० सूर्य।

सनिगध–वि० [सं० स्निग्ध] चिकना, स्निग्ध।–पु० मित्र, दोस्त।

सनिचर–देखो 'सनेसर'।

सनिचरया (चरिया, चर्या)–स्त्री० डंक ऋषि की संतान एक जाति, डाकोत।

सनिद्धि सनिध, सनिधि–देखो 'सन्निद्धि'।

सनिबाबो सनिम'राज, सनिमा'राज–पु० शनिदेव।

सनिवार–पु० [सं० शनिवार] सप्ताह का अन्तिम दिन

सनिसर–देखो 'सनेसर'।

सनिस्चर–पु० [सं० शनिश्चर] १ जैनियों के ८८ ग्रहों में से चौथा ग्रह। २ शनिदेव। ३ शनिवार।

सनी–वि० १ लथपथ, सराबोर, तर। २ परिपूर्ण, भरा हुआ। ३ देखो 'सनि'।

सनीढ़–क्रि० वि० पास समीप।

सनीचर–देखो 'सनेसर'।

सनीचरी–स्त्री० शनि ग्रह की किसी एक राशि पर रहने की अवधि।

सनीचरी–वि० बदकिस्मत, हतभाग्य।

सनीतात–पु० सूर्य।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सनीपात–देखो 'सन्निपात'।
सनीम–पु० [सं० स+नियम] नियमानुसार।
सनीयासी–देखो 'संन्यासी'।
सनीवार–देखो 'सनिवार'।
सनीसर–देखो 'सनेसर'।
सनीसरवार–देखो 'सनिवार'।
सनूरो–वि० (स्त्री० सनूरी) १ सुन्दर, खूबसूरत। २ अधिक, बहुत। ३ प्रकाशपूर्ण, ज्योति सहित। ४ तेजस्वी, ओजस्वी। ५ जोश व उमंग पूर्ण।
सनेगद–पु० [सं० स्निग्ध] मित्र, दोस्त।
सनेपत–पु० खड़ी फसल वाला खेत।
सनेपातवाय–पु० घोड़ों का एक रोग।
सनेपो–वि० हितैषी, शुभचिंतक।
सनेम–वि० नियमानुसार।
सनेस, सनेसड़ो–१ देखो 'संदेस'। २ देखो 'स्नेह'।
सनेसर–पु० [सं० शनैस्-चर] १ शनिग्रह। २ शनिवार।
सनेसरियो–पु० शनिदेव की पूजा करके उनके नाम पर दान लेने वाला व्यक्ति।
सनेसो–देखो 'सनेही'।
सनेसो–देखो 'संदेस'।
सनेह, सनेहड़ो–पु० [सं० स्नेह] १ प्रेम, प्यार। २ आस्था, श्रद्धा। ३ दर्शन। ४ कृपा, दया। ५ देखो 'स्नेह'। ६ देखो 'स्नेही'।
सनेही–पु० [सं० स्नेहिन्] १ प्रेमी, प्रिय। २ मित्र, दोस्त। ३ भक्त। ४ चित्रकार। ५ चिकित्सक।–वि० प्रेम व स्नेह करने वाला।
सनेहो–वि० १ सावधान, सतर्क। २ प्यारा, प्रिय। ३ संदेश। ४ स्नेह।
सनैं–क्रि० वि० [सं० शनैः] १ धीरे-धीरे। २ थोड़ा-थोड़ा। ३ सिल-सिलेवार, क्रमशः।
सनैह (ई)–देखो 'सनेही'।
सनैवार, सनैसरवार, सनैस्चरवार–देखो 'सनिवार'।
सन्न–देखो 'सुन्न'
सन्नक–देखो 'सनक'।
सन्नद्ध, सन्नह–देखो 'सनद्ध'।
सन्नत–वि० १ उदास, खिन्न। २ सिकुड़ा हुआ। ३ झुका हुआ।–पु० राम की सेना का एक वानर।
सन्नद्ध–वि० [सं०] १ तैयार कटिबद्ध। २ कवचधारी। ३ गुणादि से परिपूर्ण। ४ व्याप्त।
सन्नद्धबद्ध–वि० [सं०] १ शस्त्रास्त्र से सज्जित। २ वीर बहादुर। ३ कवचयुक्त।
सन्नाण–देखो 'स्नान'।
सन्ना–देखो 'सन्नाह'।
सन्नाटो–पु० १ निस्तब्धता, नीरवता। २ निर्जनता।
सन्नादी–पु० [सं०] स्वर की सहायता से बोला जाने वाला वर्ण।
सन्नाह–पु० १ जिरह, बख्तर, कवच। २ अस्त्र-शस्त्र। ३ वीर योद्धा। ४ स्वामी, मालिक। ५ युद्ध में जाने की तैयारी।–वि० १ सहायक, मददगार। २ रक्षक। ३ कवचधारी।
सन्नि–देखो 'सनि'।
सन्निद्धि, सन्निधि–क्रि० वि० समीप, निकट, पास।
सन्निनांण–स्त्री० [सं० संज्ञिज्ञान] पूर्व जन्म की स्मृति (जैन)।
सान्निपात–पु० [सं० सन्निपात] १ वात, पित्त व कफ के विकार से उत्पन्न रोग, जिसमें रोगी विक्षिप्त हो जाता है। २ वात पित्त, कफ का त्रिदोष। ३ प्रहार, चोट। ४ एक प्रकार का ज्वर।
सन्निपातजुर (जुवर, ज्वर)–पु० [सं० सन्निपात+ज्वरः] वात, पित्त, कफ के त्रिदोष से होने वाला ज्वर।
सन्नी–वि० [सं० संज्ञी] भविष्य के हित-अहित को समझने वाला, पंचेन्द्रिय।
सन्नेस–देखो 'संदेस'।
सन्नेह–देखो 'सनेह'।
सन्मांण (न)–देखो 'सनमांन'।
सन्मुख–देखो 'सनमुख'।
सन्यास–देखो 'संन्यास'।
सन्यासी–देखो 'संन्यासी'।
सन्रत–पु० [सं० ऋतु] सत्य।
सन्हद्द–वि० [सं० सन्नद्ध] बंधा हुआ (घोड़े आदि की पीठ पर)।
सपंखरो–देखो 'सुपंखरो'।
सपंपाट–वि० नष्ट-भ्रष्ट, तहस-नहस।
सप–स्त्री० १ शपथ, दुहाई। २ तेज गति से उत्पन्न ध्वनि।–क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी।
सपक–क्रि० वि० शीघ्र, तुरंत।
सपक्खर–वि० कवच सहित, 'पाखर' सहित।
सपखाळ, सपखाळो–वि० [सं० स्व-पक्ष] १ अपने पक्ष का, तरफदार। २ वीर, बहादुर। ३ श्रेष्ठ एवं कुलीन।
सपखर–देखो 'सपक्खर'।
सपगाई–स्त्री० सावधानी, सतर्कता।
सपगो (गी)–वि० (स्त्री० सपगी) १ अटल, अडिग। २ दृढ़, मजबूत। ३ विश्वास पात्र। ४ होश में, सावधान।
सपड़ाणो (बो), सपड़ावणो (बो)–क्रि० स्नान कराना, सज्जन कराना।
सपट–स्त्री० १ अवसर, मौका। २ झपट, टक्कर। ३ नाश, ध्वंस।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सपणि (णी), सपणि (णी)–स्त्री० [सं० सर्पिणी] १ नागिन, मादा सर्प । २ पीठ या गर्दन पर होने वाली रोमावली ।

सपणी–देखो 'सपनी' ।

सपतंग–पु० १ राज्य के सात अंग । २ इज्जत, प्रतिष्ठा । ३ कीर्ति, यश ।

सपत–१ देखो 'सप्त' । २ देखो 'सपथ' । ३ देखो 'सपदी' ।

सपततंतू–देखो 'सप्ततंतु' ।

सपततुरंग–देखो 'सप्ताश्व' ।

सपतदीप–देखो 'सप्तदीप' ।

सपतन–पु० [सं० सपत्नः] शत्रु ।

सपतम–देखो 'सप्तम' ।

सपतमी (म्मी)–देखो 'सप्तमी' ।

सपतमी (म्मी)–वि० (स्त्री० सपतमी) छः के बाद वाला, सातवां ।

सपतरिख (रिखि, रिखी, रिसी)–देखो 'सप्तरिसी' ।

सपतवीं–देखो 'सपतमी' ।

सपतसपती–पु० [सं० सप्त-सप्तीः] सूर्य, रवि ।

सपतसुर–देखो 'सप्तस्वर' ।

सपतहर (हरि)–पु० [सं० सप्त-हरि] सूर्य, रवि ।

सपतारचि (ची)–स्त्री० [सं० सप्तार्चि] अग्नि, आग ।

सपताळू–पु० एक प्रकार का रंग ।

सपतास, सपतास्व–देखो 'सप्ताश्व' ।

सपती, सपतो–स्त्री० १ अग्नि, आग । –पु० [सं० सप्ति] घोड़ा, अश्व ।

सपतो, सपनो–पु० [सं० सप्ताह] १ सात दिनों का समूह । २ रविवार से शनिवार तक का समय । ३ सात दिन तक होने वाली कथा या सत्संग ।

सपत्त–देखो 'सप्त' ।

सपत्नी–देखो 'सपती' ।

सपत्नो–वि० १ सफल, कामयाब । २ देखो 'सप्ताह' ।

सपत्नी–स्त्री० सौतिन, सौत । –वि० पत्नी के साथ या सहित ।

सपथ–पु० [सं० शपथ] १ कसम, सौगंध । २ वचन, कौल ।

सपथतंतु (तंतू)–देखो 'सप्ततंतु' ।

सपद, सपदि–क्रि०वि० शीघ्र, तुरंत ।

सपनंतर–पु० स्वप्न । –क्रि०वि० स्वप्न में ।

सपनो, सपनो–देखो 'स्वप्न' ।

सपमपाट–वि० १ समतल, सपाट । २ नाश, संहार ।

सपरस–देखो 'स्परस' ।

सपरसणो (बो)–क्रि० [सं० स्पर्श] छूना, स्पर्श करना ।

सपरसदिसा–स्त्री० [सं० स्पर्श-दिशा] सूर्य या चन्द्र ग्रहण के प्रारंभ की दिशा ।

सपरसन–पु० [सं० स्पर्शनः] वायु, हवा ।

सपरसमणि–स्त्री० [सं० स्पर्श-मणि] पारस पत्थर ।

सपरस्स–देखो 'स्परस' ।

सपरांणी–स्त्री० [सं० स्पर्शनम्] लेपन ।

सपरांशु (णी)–वि० [सं० सप्राण-क] वीर, योद्धा ।

सपरि–वि० १ शुभ मांगलिक । २ देखो 'सिपर' ।

सपलांणियो, सपलांणो–वि० चारजामा या पलाण कसा हुआ ।

सपलाणो (बो), सपलावणो (बो)–क्रि० [सं० सप्लावनम्] १ स्नान करना, नहाना । २ देखो 'संपड़ाणो' (बो) ।

सपळोटियो–पु० १ छोटा सर्प । २ सर्प का बच्चा ।

सपसप–स्त्री० १ गुपचुप, कानाफूसी । २ चलने से होने वाली ध्वनि विशेष ।

सपस्ट–वि० [सं० स्पष्ट] १ बिल्कुल स्पष्ट, साफ । २ साफ दिखने वाला । ३ प्रगट ।

सपांण (णो)–वि० १ प्राणवान । २ सबल, शक्तिशाली ।

सपाक–क्रि०वि० जल्दी से, शीघ्र ही । –स्त्री० तीव्र प्रहार की ध्वनि ।

सपाट–वि० पाट की तरह समतल, सीधा ।

सपाटो–पु० [सं० सर्पण] १ चलने, उड़ने आदि का वेग, गति । २ चाल या गति से उत्पन्न ध्वनि ।

सपात–वि० १ पत्र या पत्तों सहित । २ सुपात्र ।

सपाती–वि० १ अधिकारी व्यक्ति । २ रक्षा करने वाला, रक्षक ।

सपादलक्ष–देखो 'सवालक' ।

सपापो–वि० पापी, दोषी ।

सपाल्य (ल्यो)–वि० [सं० स+पालन] १ सुरक्षा सहित, सुरक्षित । २ बेरोकटोक स्वतंत्र ।

सपाह–पु० [सं० सुप्रभु] राजा, नृप ।

सपिंड–पु० शास्त्रानुसार एक ही कुल का ।

सपिंडी–स्त्री० मृतक के पीछे किया जाने वाला कर्म या संस्कार विशेष ।

सपीड़ (ड़ो)–पु० १ दौड़ने से उत्पन्न ध्वनि । २ पीटने की आवाज । –वि० दर्द सहित, दर्द पूर्ण ।

सपीटो (ठो)–वि० चिकनी, सुनायम ।

सपीठ–वि० १ मजबूत । २ समतल ।

सपुत, सपुतर, सपुत्र, सपूत–पु० [सं० सुपुत्र] १ माता-पिता का आज्ञाकारी एवं भक्त पुत्र । २ भला एवं सरीफ व्यक्ति –वि० १ वीर, योद्धा । २ योग्य, समझदार ।

सपूतपण (पणो)–पु० सुपुत्र एवं भले आदमी के कार्य । गुण ।

सपूताचार, सपूताचारो (सपूताचार)–पु० श्रेष्ठ, कार्य, कर्त्तव्य ।

सपूती–स्त्री० १ सपूत होने की अवस्था या भाव । २ आज्ञाकारी पुत्रों वाली माता या स्त्री ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सपूर–क्रि०वि० बल पूर्वक । –वि० पूर्ण, पूरा, समस्त ।

सपूरण–देखो 'संपूरण' ।

सपेखणी (णी)–देखो 'संप्रेक्षणी' (णी) ।

सपेत (त)–देखो 'सफेद' ।

सपेती (ती)–देखो 'सफेदी' ।

सपेतो (तो)–देखो 'सफेदो' ।

सपेलड़ो, सपेलो–वि० (स्त्री० सपेलड़ी, सपेली) सर्व प्रथम । सब से पहला ।

सपोतरो–पु० १ सुपुत्र । २ वंशज ।

सपोसय–वि० पुष्ट ।

सपोड़ो–पु० १ घोड़ा, अश्व । २ गधा । ३ खच्चर, टट्टू ।

सपोचो–वि० (स्त्री० सपोची) १ शक्तिशाली । २ साहसी । ३ हिम्मत वाला, सामर्थ्यवान ।

सप्त–वि० [सं०] सात ।–पु० सात की संख्या व अंक, ७ । —तन्त्री–स्त्री० सात तारों की वीणा ।—दीधिति–स्त्री० अग्नि, आग ।—द्वीप–पु० जंबू, प्लक्ष, शालमक्ति, कुश, क्रौंच, शाक तथा पुष्कर द्वीप ।—द्वीपा, द्वीपा–स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।—धातु–पु० शरीरस्थ-रक्त, पित्त, मांस, वसा, मज्जा, अस्थि और वीर्य-ये सात द्रव्य । सोना, चांदी, तांबा, लोहा, सीसा, वंग और जस्ता-सात खनिज पदार्थ ।—नाग–पु० अनंत, कर्क, महापद्म, पद्म, शंख, कुलिक आदि सात प्रमुख नाग ।—पाताळ–पु० अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।—पुरी–स्त्री० अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन और द्वारकापुरी । —भुवन='सप्तलोक' ।—मोमियो–वि० सात मंजिल या खंड वाला ।—रसि,रिसी–पु० गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि । उत्तरी ध्रुव के सात तारों का समूह ।—वाहण, वाहन–पु० सात घोड़े या सात मुख के घोड़े वाले सूर्य देव ।—सती–स्त्री० सात सौ पदों का समूह ।

सप्तक–पु० [सं०] १ संगीत के अन्तर्गत सात स्वरों का समूह । २ सात वस्तुओं का समूह ।

सप्तकी–स्त्री० [सं०] १ स्त्री की करधनी । २ सात लड़ की माला या करधनी ।

सप्तकोसी–स्त्री० [सं० सप्तकोशी] नेपाल की एक नदी ।

सप्तगंगा–स्त्री० [सं०] एक पुण्य स्थल ।

सप्तजिह्व (जिह्वा)–स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाएँ । २ अग्नि, आग ।

सप्ततंतु–पु० [सं०] यज्ञ, हवन ।

सप्तपदी–स्त्री० १ विवाह में चतुर्थ फेरे के बाद वर द्वारा वधू के दाहिने कन्धे पर हाथ रख कर वेदी के उत्तर की तरफ ईशान कोण में एक-एक पद आगे बढ़ाने की क्रिया । यह मित्रता बढ़ाने के लिये सात पावड़े भरता है, जो विश्व की सात परिधियां हैं । इसके आगे परम तत्त्व प्राप्त होता है । सप्तपदी के बाद वधू को वामांग में लाने के लिये उत्तर प्रत्युत्तर व स्वीकृति के बाद वामांग दिया जाता है । वैदिक मतानुसार सप्तपदी के निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। यह क्रिया गृहस्थ जीवन में कर्त्तव्य बोध की भावना से की जाती है।–प्रथम कर्त्तव्य(पग)–घर में अन्न भोजनादि की व्यवस्था रखना ।—दूसरा पग–भोजन को रुचिपूर्ण व बल वर्धक बनाना ।—तीसरा पग–रायस्पोषाय–गृहस्थ में अन्न व बल के साथ धन की व्यवस्था एवं ज्ञान होना चाहिये । —चौथा पग–अन्न-बलादि के सदुपयोग का ज्ञान हो ताकि जीवन सुखमय हो ।–पांचवांपग–संतान प्राप्ति व उसके भरण -पोषण की समुचित व्यवस्था ।–छठा पग–ऋतुओं के अनुसार रहन-सहन व खान-पान ।—सातवां पग–घर में परस्पर प्रेम एवं मित्रता की भावना हो । इससे पूर्व नव वर-वधू से सात प्रकार के होम (संकल्प) करवाये जाते हैं, जो अग्नि की साक्षी में "वसुधैवकुटुम्बकम्" की भावना के लिये होते हैं । (१) राष्ट्रभृत होम–राष्ट्र के भरण-पोषण की भावना । (व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र) अतः 'गृहस्थ' राष्ट्रीय जीवन में इकाई रूप है ।(२)जयाहोम–जीवन के प्रति आशावान होना । (३) अभ्यातन होम–सतत उन्नति की भावना । महत्वाकांक्षा ।(४) अरिष्टनाशन होम–जीवन में आने वाली अपघातिनी व विघ्नकारक शक्तियों को दूर करने की भावना । (५) व्याहृति होम–मन, कर्म व वचन से विश्व कल्याण का संकल्प रखना । (६) लाजा होम–स्त्री के लिये पति के वंश की वृद्धि, घर में समृद्धि के लिए कामना करना व कभी पृथक न होने की भावना रखना । (७) प्राजापत्य होम–प्रजापति के प्रति कृतज्ञता की भावना । २ वर-वधू द्वारा विवाह वेदी के की जाने वाली सात परिक्रमा, भांवरी ।

सप्तपदीपूजन, सप्तपदीपूजा–पु० १ विवाह के समय का एक पूजन । २ बांस ।

सप्तपरव, सप्तपाव–पु० [सं० सप्तपर्वन्] बांस ।

सप्तम–वि० सातवां ।

सप्तमात्रका (मात्रिका)–१ देखो 'मात्रका' । २ देखो 'माया' ।

सप्तमी–स्त्री० [सं०] मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि ।

सप्तमुख–पु० [सं०] यज्ञ, हवन ।

सप्तमी–वि० [सं० सप्तम्] (स्त्री० सातवीं) छः के बाद वाला, सातवां ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सप्तराव–पु० [सं०] गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक।

सप्तसागरदान–पु० सात पात्रों में घी, दूध, मधु, दही आदि रखकर ब्राह्मणों को देने का एक दान।

सप्तसूरज–पु० [सं० सप्तसूर्य] सात ग्रहों का एक समूह विशेष।

सप्तसुर, सप्तस्वर–पु० [सं० सप्तस्वर] संगीत में सरगम के सात स्वर।

सप्तात्मा–पु० [सं०] ब्रह्मा का एक नाम।

सप्ताळू–पु० एक रंग विशेष।

सप्तास, सप्तासव, सप्तास्व–पु० [सं० सप्ताश्व] १ सूर्य, रवि। २ रैवत मन्वन्तर के एक सप्तर्षि। ३ सूर्य के रथ के सात घोड़े या सात मुख वाला घोड़ा।

सप्ताह–पु० [सं० सप्त-अहन्] १ सात दिनों का समूह या अवधि। २ रविवार से शनिवार तक का समय। ३ सात दिनों का अनुष्ठान, कीर्त्तन या कथा।

सप्तेक्षा–पु० [सं०] भगवान् विष्णु का एक नाम।

सप्पणी–देखो 'सरपणी'।

सप्पनपाट सप्पमपाट–वि० १ साफ, समतल। २ नाश, संहार। ३ दरिद्र, निर्धन। ४ मूर्ख, अज्ञानी।

सप्रद–पु० [सं० क्षिप्र] वेग।–क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी।

सप्रवीत–वि० १ पवित्र, उत्तम। २ श्रेष्ठ।–पु० एक वर्णिक छंद विशेष।

सप्रस–पु० सूर्य, सूरज।

सप्रसन्न–वि० खुश, प्रसन्न।

सप्राण (णी)–वि० [सं० सप्राण] बलवान, शक्तिशाली।

सप्रीत–वि० १ सस्नेह, प्रेम सहित, सप्रेम। २ हर्ष, आनन्द, खुशी।

सप्रेक्षणी (बी)–क्रि० [सं० संप्रेक्षणम्] १ देखना। २ निरीक्षण करना।

सफ–पु० १ पंक्ति, कतार। [सं० सफः] २ क्षुर, टाप।

सफक–स्त्री० [अ० शफक] सूर्योदय या सूर्यास्त के समय की लालिमा।

सफकत–स्त्री० [अ० शफकत] १ अनुग्रह, मेहरबानी। २ प्रेम, मुहब्बत।

सफर–वि० भयंकर, घोर।–पु० [अ०] १ इस्लामी सन् का दूसरा महीना। २ यात्रा, प्रवास। ३ देखो 'सफरी'।

सफरजंग–पु० १ भयंकर युद्ध, घोर संग्राम। २ शतरंज से मिलता-जुलता एक खेल।

सफरा–देखो 'सिफ्रा'।

सफरारी–पु० बलि के लिये खिला-पिला कर तैयार किया गया बकरा।

सफरिम–वि० वीर, बहादुर।

सफरी–स्त्री० मछली।

सफरीपति–पु० मगरमच्छ।

सफल (ल)–पु० शस्त्र। –वि० [सं० सफल] १ सार्थक, कामयाब। २ उत्तीर्ण। ३ पूर्ण। ४ फलयुक्त, फलवाला। ५ फैलने वाला, बढ़ने वाला। ६ धारदार, नुकीला। ७ आनंदपूर्वक।

सफलणी (बी), सफलणी (बो)–क्रि० सफल होना, सफलीभूत होना।

सफलता–स्त्री० १ कामयाबी, उद्देश्य सिद्धि। २ पूर्णता।

सफलाइग्यारस (एकादसी)–स्त्री० [सं० सफलाएकादशी] पौष कृष्णा एकादशी।

सफळी (ली)–देखो 'सफळ'।

सफा–वि० १ बिल्कुल, कतई। २ साफ, स्पष्ट। ३ निर्मल, पवित्र। ४ स्वच्छ। ५ चिकना, बराबर। ६ खाली, रिक्त। ७ स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती। ८ मिटा हुआ, लुप्त।

सफाई–स्त्री० १ स्वच्छता, निर्मलता। २ बिल्कुल, कतई। ३ मैला या कूड़ा हटाने की क्रिया। ४ कुटिलता का अभाव। ५ स्पष्टता। ६ साफ होने की अवस्था या भाव।

सफाखानो, सफाखानो–पु० [अ० शफा+फा० खाना] चिकित्सालय, अस्पताल।

सफाचट–वि० १ एकदम स्वच्छ, बिल्कुल साफ। २ बिल्कुल खाली, रिक्त। ३ स्निग्ध, चिकना। ४ समतल, सपाट। ५ जिसका कोई अंश शेष न हो।

सफायो–पु० १ नाश, संहार। २ खत्म, समाप्त।

सफीट (ठ)–वि० साफ, चिकना।

सफील–स्त्री० १ परकोटा, प्राचीर। २ दीवार।

सफुब्बो–स्त्री० बादशाह की पुत्री, शाहजादी।

सफेत, सफेद–वि० [फा० सफेद] १ श्वेत, धवल। २ स्वच्छ, साफ। ३ निष्प्रभ, निस्तेज, कांतिहीन। ४ जिस पर कुछ न लिखा हो, कोरा।

सफेदअजनो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

सफेदपोस–वि० [फा० सफेद-पोश] स्वच्छ कपड़े पहनने वाला।

सफेदहाथी–पु० भद्र जाति का एक हाथी विशेष।

सफेदाई–स्त्री० श्वेतता, सफेदी।

सफेदी–स्त्री० १ वृद्धावस्था, बुढ़ापा। २ श्वेतता, धवलता। ३ भय, आतंक या चिन्ता के कारण चेहरे या शरीर पर आनेवाली निस्तेजता। ४ मकान आदि को चूने से पुताई।

सफेदी–पु० १ श्वेत-प्रदर नामक एक स्त्री-रोग विशेष। २ इसके कारण योनि से गिरने वाला द्रव। ३ जस्ते का चूर्ण जो औषधि आदि में काम आता है। ४ मकान की पुताई में काम आने वाली सफेद मिट्टी। ५ जूते आदि बनाने का सफेद चमड़ा। ६ सफेदा नामक वृक्ष विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्फ़–स्त्री० १ सफलता वृद्धि, सम्पन्नता । २ तन्दुरुस्ती ।

सफलिथी–पु० हिन्दवानी नामक फल का छोटा खण्ड ।

सबंगह–देखो 'सरबंगी' ।

सबध–देखो 'संबंध' ।

सब–वि० १ समस्त, कुल । २ अवधि, मात्रा, विस्तार आदि के विचार से कुल, सर्व, सम्पूर्ण ।–स्त्री० [फा० शब] रात, रात्रि ।

सबक–पु० [फा०] १ वह अंश जो एक बार में पढ़ाया जा सके, पाठ । २ नसीहत, शिक्षा ।

सबकना (वी)–क्रि० धूप या गर्म जगह पर अधिक बंधा रहने से पशु का बीमार होना ।

सबखो, सबखो–वि० (स्त्री० सबखी) १ सरल, आसान । २ छोटा । ३ उपयुक्त अनुकूल । ४ सुगम । ५ आचरण शील ।६ बुद्धिमान, समझदार ।

सबड़, सबड़, सबड़क, सबड़क सबड़की, सबड़की–पु० [अनु०] १ किसी गाढ़े या द्रव पदार्थ को हाथ से खाने या चाटने से उत्पन्न सड-सड़ ध्वनि । २ इस तरह खाने की क्रिया । ३ इस तरह से एक बार में खाये जाने वाले पदार्थ की मात्रा ।

सबछी–वि० [सं० स-वत्सा] बछड़े या बछिया सहित ।

सबज–वि० [फा० सब्ज] १ हरा । २ उत्तम, श्रेष्ठ ।–स्त्री० भांग, भंग ।–पु० एक रंग विशेष का घोड़ा ।

सबजी–देखो 'सब्जी' ।

सबजी, सबज–देखो 'सबज' ।

सबति, सबती–देखो 'सवती' ।

सबद–पु० [सं० शब्द] १ आवाज, ध्वनि । २ बोली । ३ वर्णों के संयोग से कंठ व तालू आदि मे उच्चरित होने वाली सार्थक ध्वनि, शब्द । ४ लिखे जाने वाला वर्ण या वर्ण समूह जिसका कोई निश्चित अर्थ हो । ५ वचन । ६ उपदेश । ७ सुयश, कीर्ति । ८ निर्गुण भक्ति संबंधी कोई पद । ९ छप्पय छन्द का एक भेद । १० दो लघु के गणों के दूसरे भेद का नाम ।—गुर, गुरु, गुरू–पु० उपदेश देकर शिष्य या अनुयायी बनाने वाला साधु, व्यक्ति ।—ग्रह–पु० कान ।—बेध,बेधी–पु० अर्जुन । राजा दशरथ । सम्राट पृथ्वी राज चौहान ।–वि० ध्वनि पर सही निशाना मारने वाला । —बोध–पु० अक्षर ज्ञान, सुनने से प्राप्त होने वाला ज्ञान । —भेद, भेदी='सबदबेध' ।—बेध, बेधी='सबदबेध' ।

सबदब्रह्म–पु० [सं० शब्द-ब्रह्म] १ वेद । २ सृष्टि की रचना करने वाला, ब्रह्मा । ३ ओंकार, प्रणव । ४ कुंडलिनी से ऊपर उठने वाले नाद का वह रूप जो निरुपाधि दशा में रहता है । (योग)

सबदसकत (सकति, सकती, सक्ति सगत, सगति, सगती–स्त्री० [सं० शब्द-शक्ति] शब्द की अर्थ बोधक शक्ति जो तीन प्रकार की मानी गई है–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना ।

सबदसाधन–पु० [सं० शब्द साधन] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, रूपान्तरण आदि का विवेचन हो ।

सबदाडंबर–पु० [सं० शब्दाडंबर] साधारण बात कहने के लिये जटिल एवं निरर्थक शब्दों का प्रयोग, शब्द जाल ।

सबदी–पु० १ कवि । २ यश, कीर्ति । ३ निर्गुण भक्ति संबंधी पद, भजन । ४ राजस्थानी के गेयात्मक छन्द ।

सबद्द–देखो 'सबद' ।

सबनीगर–पु० साबुन बनाने वाला ।

सबब–पु० [अ०] १ कारण, वजह, हेतु । २ द्वार । ३ साधन ।

सबबरात–पु० [अ०] मुसलमानों का एक पवित्र त्योहार ।

सबय–पु० [सं० स-वयस] १ मित्र, दोस्त, सखा । २ शिव । ३ हाथ । ४ जल । ५ पतिव्रता स्त्री ।

सबर–देखो 'सब्र' ।

सबरित–पु० [सं० सर्वरत:] श्रीकृष्ण ।

सबरी–स्त्री० [सं० शबरी] १ श्रवणा नामक शबर जाति की स्त्री जो श्रीराम की भक्त थी, भीलनी । २ शबर जाति की कोई स्त्री ।

सबळ–पु० [सं० शबल] १ सुमेरु, पर्वत । २ वायु, पवन । ३ घोड़ा, अश्व । ४ बलराम, बलभद्र । ५ भीम, वृकोदर । ६ एक नाग का नाम । ७ घी, घृत । ८ सप्त ऋषियों में से एक । –वि० १ बलवान, शक्तिशाली । २ पराक्रमी, वीर । ३ बड़ा, विशाल । ४ भयंकर, भीषण, जोरदार । ५ प्रचंड । ६ गहरा, घना । ७ सब, समस्त । ८ महान्, बड़ा । ९ गूढ़, जटिल, दुरूह । १० चितकबरा । ११ ज्यादा, अत्यधिक । १२ कठिन, मुश्किल । १३ दृढ़, मजबूत । १४ तेज प्रकाश युक्त । १५ अच्छा, बढ़िया ।

सबळदळगाहणो–पु० योद्धा, सिपाही ।

सबळवाय–पु० नेत्रों का एक रोग विशेष ।

सबळा, सबळि, सबळी–स्त्री० [सं० अबल, शबली, सबलि:] १ सायंकाल, संध्या । २ कामधेनु गाय । ३ चितकबरी गाय । ४ एक प्रकार का अन्न । ५ वसिष्ठ की गाय का नाम । ६ देखो 'सबळ' ।

सबळ, सबळो–देखो 'सबळ' ।

सबाब–पु० [अ० सवाब, असबाब, शबाद] १ सत्कर्म करने पर परलोक में मिलने वाला पुण्यफल । २ सामान, सामग्री । ३ युद्ध, सामग्री । ४ युवावस्था, यौवन । ५ सौन्दर्य । ६ हकीकत, वास्तविकता । –वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ पवित्र । ३ सुन्दर । ४ यथार्थ, सत्य । ५ वास्तविक । ६ दुरुस्त, ठीक ।

सबाब–१ देखो 'स्वभाव' । २ देखो 'सबाब' ।

सबासन–पु० डिंगल का एक छन्द विशेष ।

सबाहुत्र–पु० [सं०] भुजा का कवच ।

सबिका–देखो 'सिविका' ।

सबी–स्त्री० [अ० तसबीह] १ माला, हार । २ शक्ल, आकृति । ३ शोभा, सुन्दरता । ४ वक्षस्थल पर धारण करने का आभूषण विशेष । ५ तस्वीर, मूर्ति । ६ देखो 'सिबि' ।

सबील–स्त्री० १ प्याऊ, जल गृह । २ रास्ता, उपाय ।

सबुज्ज–स्त्री० बुर्ज सहित ।

सबुध–वि० बुद्धिमान, विद्वान ।

सबूत–पु० [अ० सुबूत] प्रमाण । –वि० पूर्ण, पूरा, अखण्ड ।

सबूब, सबूबी–वि० सुन्दर, श्रेष्ठ ।

सबूरी–देखो 'सब्र' ।

सबूरी–पु० [फा० सब्र] विधवा स्त्रियों की कामपिपासा तृप्त करने का चमड़े या काठ का लंबा उपकरण ।

सबै–देखो 'सब' ।

सबोड़णो (बो)–क्रि० [सं० सम्पुटनम्] १ किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को सड़ड़-सड़ड़ ध्वनि करते हुए खाना, चाटना । २ खाना । ३ जानवरों की तरह खाना या पीना ।

सबोझ, सबोझी–वि० गौरवयुक्त ।

सबोध (धो)–पु० [सं०] १ जानकारी । २ बुद्धि । ३ उत्तम ज्ञान । ४ अनुभव । –वि० ज्ञानवान, बुद्धिमान ।

सबोल–पु० बोलबाला, दबदबा ।

सबोळी–वि० (स्त्री० सबोळी) १ खुश, प्रसन्न । २ बहुत, अधिक; ज्यादा । ३ बराबर, सदृश । ४ महान्, श्रेष्ठ । ५ जबरदस्त, जोरदार । ६ अमिट, पक्का ।

सब्जी–स्त्री० [फा०] १ हरी वनस्पती या तरकारी । २ पका हुआ शाक, साग । ३ हरियाली । —**मंडी**–स्त्री० हरी सब्जी के क्रय-विक्रय का केन्द्र, सब्जी बाजार ।

सब्द–देखो 'सबद' ।

सब्दलक्खण (लक्षण, लखण, लख्खण)–पु० [सं० शब्द-लक्षण] बहत्तर कलाओं में से एक ।

सब्दवेधी, सब्बदवेधी, सब्बदावेध–देखो 'सबदवेधी' ।

सब्दारथ–पु० [सं० शब्दार्थ] शब्द का अर्थ, मतलब या माने ।

सब्बु–देखो 'सबद' ।

सब्ब–देखो 'सब' ।

सब्बदयं–देखो 'सबद' ।

सब्बळ (ळो)–देखो 'सबळ' ।

सब्बा–देखो 'सब' ।

सब्बाब–देखो 'सबाब' ।

सब्बाल–देखो 'सब्बाल' ।

सब्भी–देखो 'सब' ।

सब्बु, सब्बुन–देखो 'साबुन' ।

सब्बू–पु० रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल ।

सब्बै, सब्भ, सब्भै–देखो 'सब' ।

सब्र–स्त्री० [अ०] १ धैर्य, धीरज । २ संतोष ।

सभ–१ देखो 'सभ्य' । २ देखो 'सब' ।

सभद्र–पु० १ एक प्रकार का शुभ्र रंग का घोड़ा । २ देखो 'सुभद्रा' ।

सभर–वि० १ भारी । २ अत्यधिक । ३ श्रेष्ठ, बढ़िया ।

सभा–स्त्री० [सं०] १ किसी बात या विषय पर विचार करने निमित्त कई व्यक्तियों का एकत्र होकर बैठना, एकत्र होना । २ खास मुद्दों पर विचार करने तथा निर्णय करने हेतु गठित समिति, परिषद् । ३ परिषद् या समिति के बैठने का स्थान । ४ दरबार । ५ धर्मशाला । ६ मजलिस, गोष्ठी, अथाई चौपाल । ७ द्यूतगृह, जूआ खाना । ८ न्यायालय । ९ घर, मकान ।—**पति**–पु० किसी सभा या परिषद का अध्यक्ष ।—**मंडप**–पु० सभास्थल । मंदिर में दर्शनार्थियों के बैठने का स्थान ।

सभाउ (ई)–देखो 'स्वभाव'

सभाकार–पु० [सं०] १ सभा करने वाला । २ सभा का सदस्य ।

सभाग–देखो 'सौभाग्य' ।

सभागियो, सभागी, सभागी–पु० [सं० सभाग्य] (स्त्री० सभागण) १ भाग्यशाली व्यक्ति । २ सम्पन्न, धनवान व्यक्ति । –वि० १ भाग्यशाली, खुश किस्मत । २ उत्तम, श्रेष्ठ ।

सभाय–देखो 'स्वभाव' ।

सभाव, सभावि–पु० १ चिह्न, खोज । २ देखो 'स्वभाव' ।

सभिन्न–वि० भोगा हुआ ।

सभी–देखो 'सब' ।

सभोड़ो–वि० १ दुष्कर, कठिन । २ दृढ़ मजबूत ।–पु० समूह, झुण्ड, भीड़ ।

सभीत–वि० भयग्रस्त, भयभीत ।

सभूमो, सभोमी–वि० (स्त्री० सभूमी, सभौली) कार्य कुशल, चतुर ।

सभोभरम, सभोभ्रम–देखो 'संभ्रम' ।

सभौ–वि० भय युक्त, डर सहित ।

सभ्भ–देखो 'सब' ।

सभ्य–वि० [सं०] १ उत्तम आचार-विचार वाला, सज्जन । २ सभा से संबंधित, सभा का । ३ सभा के योग्य । ४ सामाजिक । ५ कुलीन । ६ विनम्र । ७ विश्वसनीय । –पु० १ सभासद । २ कुलीन व्यक्ति । ३ पंच । ४ जुआड़ खाना चलाने वाला व्यक्ति । ६ पंचायितियों में से एक ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सभ्यता–स्त्री० [सं०] १ सभ्य होने का भाव, शिष्टता। २ सज्जनतापूर्ण व्यवहार। ३ नम्रता, भद्रता। ४ किसी राष्ट्र या समाज में प्रचलित वे विचारधाराएँ या आचार संहिता जो शिक्षित एवं सामाजिक होने की सूचक होती हैं।

सभ्रम–देखो 'संभ्रम'।

समंक–पु० १ चन्द्रमा, सोम। २ आँकड़ों का समूह।

समंचार–देखो 'समाचार'।

समंछर–देखो 'संवत्सर'।

समंजण–पु० स्नान, मज्जन।

समंजणो (बो)–क्रि० [स० संमार्जनम्] १ स्नान करना, नहाना। २ देखो 'समझणो' (बो)।

समंजर–वि० मंजरी युक्त।

समंडळ–पु० [सं० समण्डल] सूर्य, भानु।

समंत–देखो 'सामंत'।

समंद–पु० १ एक प्रकार का फूल। २ हर्ष, आनन्द। ३ श्रेष्ठ घोड़ा, अश्व। ४ बादामी रंग का वह घोड़ा जिसके कुछ अंग काले होते हैं। ५ समुद्र, सागर।—कण–पु० मोती, मुक्ता।—फेण–पु० समुद्रफेन।—मेखळा–स्त्री० पृथ्वी, धरती।—व्यूह–पु० समुद्र व्यूह।—सुत, सुतन–पु० चन्द्रमा, चांद। अमृत। चौदह रत्नों में से एक।

समंदर–पु० समुद्र।

समंदरी–स्त्री० १ नैऋत्य कोण से बहने वाली हवा। २ एक विशेष रंग का घोड़ा।

समंदहुलास–पु० हर्ष, आनन्द।

समंदी, समंद्र–देखो 'समुद्र'।

समंध–देखो 'संबंध'।

समंसणो (बो)–क्रि० १ चिन्ता करना। २ पश्चाताप करना।

सम–वि० [सं०] १ समान, सदृश। २ बराबर, तुल्य। ३ एकसा, समरूप। ४ जिसका तल बराबर हो, ऊंचा-नीचा न हो। ५ उतार-चढ़ाव या तेजी-मंदी रहित।–पु० [सं० श्रम] १ शांति। २ मोक्ष। ३ श्रमन निवृत्ति। ४ ठीक-ठीक विभाजित होने वाली संख्या। ५ तीन प्रकार की वयण सगाई में से एक। ६ वर्गमूल संबंधी सीधी रेखा। ७ ताल का निश्चित स्थान या ताल की निश्चित आवृत्ति का प्रथम माप। ८ हाथी को छेड़ी या हाथी के दांत आदि पर लगने वाला छल्ला। ९ वर्ष, साल। १० भगवान् विष्णु का एक नाम।

समअर–देखो 'समर'।

समइ, समइयं, समइयो, समईयो–देखो 'समय'।

समउ–वि० सम, समान।

समउण–पु० [सं० समन] ब्रह्मा।

समकणो (बो)–देखो 'चमकणो' (बो)।

समकत–देखो 'सम्यकत्व'।

समकारणो (बो)–क्रि० बजाना।

समकाळ–पु० [सं० समकाल] एक ही समय या क्षण।

समकालीन–वि० [सं०] १ एक ही समय से संबंधित। २ एक ही समय होने वाला।

समकित–देखो 'सम्यकत्व'।

समकिती–वि० श्रद्धान की क्रिया करने वाला, सम्यकत्व का पालन करने वाला।

समकोस–पु० [सं० समकोष] एक प्राचीन देश।

समकौर–वि० एक समान, बराबर।

समखणो (बो)–देखो 'चमकणो' (बो)।

समखी–स्त्री० बात, तर्क-वितर्क।

समग–देखो 'समिग'।

समगत–देखो 'सम्यकत्व'।

समगना (समगिना)–स्त्री० [सं० समज्ञा] यश, कीर्ति।

समधि–पु० [सं० सम्यक] सत्य, सांच।

समग, समग्र, समग्रि–वि० [सं० समग्र] तमाम, सब, समूचा, सम्पूर्ण।

समड़णो (बो)–क्रि० चलना।

समड़ाणो (बो), समड़ावणो (बो)–क्रि० चलाना।

समचइ–देखो 'समचेई'।

समचार–देखो 'समाचार'

समचेइ, समचें–वि० सब, समस्त।–क्रि०वि० १ ठीक उसी समय तत्काल। २ एक ही साथ। ३ साथ लगकर। ४ होते ही।

समचो–पु० १ सूचना, संदेश, खबर। २ अवसर, मौका, समय।

समज–देखो 'समझ'।

समजण–पु० समझना या मानना क्रिया।

समजणो (बो)–देखो 'समझणो' (बो)।

समजत, समजतियो, समजती (त्ती)–वि० १ समान शक्ति या बल वाला। २ हर तरह से समता कर सकने वाला। ३ पंडित, विद्वान। ४ उदार, दातार।

समजया–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक विधि। शैली।

समजाणो (बो)–देखो 'समझाणो' (बो)।

समजायता–स्त्री० [सं० समज्या] सभा।

समजोत–स्त्री०[सं०सज्योति] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक।

समउजणो (बो)–देखो 'समझणो' (बो)।

समज्जि, समज्या–देखो 'समिजा'।

समझ, समझण–स्त्री० [सं० सबुद्धि] १ अक्ल, बुद्धि, विवेक। २ बुद्धिमानी चतुराई।–पु० ३ बुद्धिमान, चतुर व्यक्ति। ४ होश-हवास।—वार–वि० बुद्धिमान, अक्लमंद।—दारी–स्त्री० बुद्धिमानी, चतुराई।—वांन, वार–वि० बुद्धिमान, चतुर, कुशल। विवेकशील। धैर्यवान।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समझणियो, समझणो–वि० १ समझने वाला, मानने वाला, जानने वाला। २ बुद्धिमान। ३ दाना, सयाना। ४ शरीफ, सज्जन।

समझणो (बो)–क्रि० १ जानना। २ ध्यान में लाना, ध्यान करना। ३ सीखना।

समझाण–स्त्री० १ जानकारी। २ संकेत, इशारा। –वि० बुद्धिमान।

समझाइस–देखो 'समझायस'।

समझाणो (बो)–क्रि० १ शिक्षा, देना, उपदेश देना। २ सिखाना, बताना। ३ बोध कराना, ज्ञान कराना। ४ किसी के मन में कोई बात बैठाना।

समझायत, समझायस–स्त्री० १ बुद्धि। २ समझाने की क्रिया या भाव।

समझावणो (बो)–देखो 'समझाणो' (बो)।

समझास–देखो 'समझायस'।

समझि–देखो 'समझ'।

समझीयांण, समझू–वि० १ बुद्धिमान। २ समझदार।

समझोतरी–स्त्री० १ इशारा, संकेत। २ बुद्धि, समझ।

समझोतो–पु० १ राजीनामा, सुलह। २ संधि।

समजझ–देखो 'समझ'।

समटणो (बो)–१ देखो 'सिमटणो' (बो)। २ देखो 'समेटणो' (बो)।

समटांणो, समटावणो–देखो 'समठावणो'।

समठांणो, समठावणी, समठुणी, समठूणी–स्त्री० [सं० समुत्थानम्] दहेज, दहेज आदि विदाई का सामान।

समडी–स्त्री० शमी वृक्ष।

समण–पु० [सं० श्रमण] १ जोश, उमंग, उत्साह। २ श्रद्धा-भक्ति सहित दान। ३ स्वप्न। –वि० [सं० सहमन] १ समान, बराबर। २ देखो 'सुमन'।

समणडउ, समणउ, समणो–देखो 'सपनो'।

समत–स्त्री० [सं० सम्मति] राय, सलाह, सम्मति। –वि० [सं० सम्मत] समर्थित, प्रमाणित, अनुकूल। देखो 'संवत'।

समतळ–वि० [सं० समतल] जिसका तल या सतह बराबर हो।

समतसर–देखो 'संवत्सर'।

समता–स्त्री० [सं०] १ समानता, बराबरी, तुल्यता। २ एक रूपता। ३ निष्पक्षता। ४ मनःस्थिरता। ५ साधारणत्व।

समति–स्त्री० [सं० समिति] १ सभा। २ देखो 'सम्मति'।

समतूळ–वि० [सं० समतुल्य] समकक्ष, समान, बराबर। सदृश।

समत्थ–१ देखो 'समरथ'। २ देखो 'समस्त'।

समत्सर–देखो 'संवत्सर'।

समथ, समत्थ–१ देखो 'समरथ'। २ देखो 'समस्त'।

समद–देखो 'समुद्र'।

समदकप (कफ)–पु० समुद्र फेन।

समदम–पु० [सं० शमदम] ऋषि।

समदर–देखो 'समुद्र'।

समदरसुत (सुतन)–पु० [सं० समुद्रसुत] १ चन्द्रमा, चांद। २ मद्य, शराब।

समदरियो–पु० १ स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष। २ पुरुषों के शिर की पगड़ी विशेष। ३ देखो 'समुद्र'। ४ नैऋत्य कोण से आने वाली हवा।

समदसुत (सुतन)–देखो 'समदरसुत'।

समद्दांमदर–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

समदाव–पु० समृद्धि, वैभवता।

समदिस्टि, समदिसटो, समदिस्टी–वि० [सं० समदृष्टिन्] सब पर समान दृष्टि रखने वाला, सम भाव से देखने वाला। –स्त्री० सब के प्रति एकसा भाव।

समद्द, समद्र–देखो 'समुद्र'।

समध–देखो 'संबंध'।

समधणो (बो)–देखो 'समझणो' (बो)।

समधरणो (बो)–क्रि० १ मानना। २ धारण करना, स्मरण करना।

समधी–स्त्री० [सं० समिध] १ जलाने की लकड़ी, ईंधन। २ लड़के-लड़की के ससुराल वाले, सगे-संबंधी।

समधो–वि० १ साधारण, मामूली। २ सरल, आसान।

समन–पु० [सं० शमन] १ शांति। २ दमन, शमन। ३ काल, मृत्यु। ४ यमराज। ५ दाम, कीमत। ६ चमेली का फूल। ७ यज्ञ में पशु बलि। ८ सुमन। –वि० शान्त, जितेन्द्रिय।

समनो–वि० १ उत्साह वाला, जोशीला। २ अनुकूल, पक्षधर।

समपण (ण), समप्पण–पु० दान। –वि० १ दानी, उदार। २ देने वाला समर्पित करने वाला।

समपणो (बो), समप्पणो (बो)–क्रि० १ देना, प्रदान करना। २ अर्पित करना। ३ सौंपना। ४ दान देना।

समबरती, समबती, समब्रो–पु० [सं० समवर्ती] यमराज, धर्मराज।

समय–पु० [सं०] १ वक्त, काल, समय। २ अवसर मौका। ३ फुर्सत। ४ गर्व, मान, अभिमान। ५ हृदयाकाश में चक्रों का ध्यान।

समयति, समयती–वि० [सं०] सुन्दर, मनमोहक। –स्त्री० साध्वी स्त्री।

समयानंद–पु० [सं०] भैरव की एक मूर्ति।

समयो–१ देखो 'समय'। २ देखो 'समो'।

समरंगण, समरंगणि–देखो 'समरांगण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समर–पु० [सं० समरः] १ युद्ध, संग्राम। २ लोहार शाला। ३ बेहड़ा। ४ युद्धस्थल, रणभूमि। ५ शक्ति, बल, सामर्थ्य। ६ वैभव, धन, दौलत। [अ०] ७ कथा, कहानी, किस्सा। ८ फल, मेवा। ९ बदला, प्रतिकार। १० परिणाम, नतीजा। ११ देखो 'स्मर'। —भूमि–स्त्री० युद्धस्थल।

समरअंग (गी)–पु० बलराम।

समरइ–देखो 'स्मृति'।

समरक–देखो 'समर'।

समरकूप–स्त्री० [सं० स्मरकूप] योनि, भग।

समरट–वि० योद्धा, वीर।

समरण–देखो 'स्मरण'।

समरणा, समरणी–स्त्री० [सं० स्मरण] जपमाला, माला।

समरणी (बो)–क्रि० [सं० स्मरणम्] १ स्मरण करना, याद करना। २ भजन करना। ३ युद्ध करना, लड़ाई करना।

समरत–पु० १ एक प्रकार का रतिबंध। २ देखो 'समरथ'

समरति, समरती–देखो 'स्मृति'।

समरत्थ–देखो 'समरथ'।

समरथंभ–वि० [सं० समरस्तम्भ] योद्धा, वीर।

समरथ–पु० शिव, महादेव। –वि० [सं० समर्थ] १ शारीरिक, मानसिक व आर्थिक बल पर कुछ कर सकने योग्य, समर्थ। २ बलवान, शक्तिशाली। ३ योग्य, समक्ष। ४ योग्य, ठीक, उचित। ५ गूढ़ार्थ प्रकाशक। ६ जबरदस्त, जोरदार। ७ दृढ़, मजबूत। ८ वीर, बहादुर। ९ निष्णात, योग्यता-सम्पन्न। १० समृद्ध, धनाढ्य। ११ बड़ा, विशाल। १२ सामर्थ्यवान, सक्षम। –पु० शक्ति, बल।

समरथक–वि० [सं० समर्थक] समर्थन करने वाला।

समरथन–पु० [सं० समर्थन] अनुमोदन करने की क्रिया।

समरथा–देखो 'सामरथ्य'।

समरथीक, समरथ्य–देखो 'समरथ'।

समरद–पु० [सं० समद] युद्ध।

समरधुका–स्त्री० [सं० समधिका] बेटी, पुत्री।

समरपण–पु० [सं० समर्पण] १ श्रद्धा पूर्वक अर्पण करने की क्रिया या भाव। २ आदर पूर्वक को जाने वाली भेंट, नजराना। ३ किसी के आगे हार मानने या वशीभूत हो जाने की क्रिया, अवस्था या भाव। ५ भगवान के विग्रह के आगे खड़ा करके भक्त को आचारवान् वैष्णव बनाने की क्रिया।

समरपणी (बो)–क्रि० १ श्रद्धा पूर्वक अर्पित करना, सादर भेंट करना। २ सौंपना, देना। ३ हार मानना, वशवर्ती होना। ४ धारण करना।

समरपित–वि० [सं० समर्पित] १ दिया हुआ, दत्त। २ सौंपा हुआ, अर्पित, भेंट। ३ धारण किया हुआ। ४ समर्पण किया हुआ।

समरम–पु० [सं० सम-रमण] सम रूप से क्रीड़ा करने का भाव।

समरव (वी)–स्त्री० [सं० रव-सम] बिजली।

समरस(सि, सी)–पु० [सं० समरस] शान्त मनोभाव। –वि० समान रस या स्वभाव वाला।

समरांण (न)–पु० [सं० समर-अंगण] १ युद्ध, लड़ाई। २ युद्ध स्थल, रणक्षेत्र।

समराट–पु० १ राजा, नृप। २ वीर पुरुष। ३ देखो 'सम्राट'।

समराणी (बो)–देखो 'संवराणी' (बो)।

समराथ–देखो 'समरथ'।

समरार–देखो 'सबरारि'।

समरारि–पु० [सं० स्मरारि] शिव, महादेव।

समरिव–देखो 'समरव'।

समरु (रू)–देखो 'समर'।

समरूप–वि० १ समान, तुल्य। २ समान रूप या चेहरे वाला।

समळ–पु० [सं० श्यामलः] १ कृष्ण हरिण। [सं० शमलं] २ मल, विष्टा। –वि० [स० समल] १ खराब। २ गंदा, मैला, अपवित्र। ३ पापी, दुष्ट। ४ दोष पूर्ण। ५ देखो 'सांमिल'। ६ देखो 'संवळी'। ७ देखो 'सांवळी'।

समळा–देखो 'सम्मळा'।

समळी–देखो 'संवळी'।

समळौ–१ देखो 'संवळी'। २ देखो 'सांवळी'।

समर्थता–वि० समान, बराबर, तुल्य।

समवड़ (ड़ि, ड़ी)–वि० [सं० समवत्ति] समान, बराबर। –स्त्री० समानता, बराबरी। देखो 'समोवड़ियौ'।

समवड़णौ (बौ)–क्रि० सामना करना, मुकाबला करना।

समवड़ियौ–वि० बराबर का, बराबर वाला।

समवड (ड़ि, ड़ी), समवण–देखो 'समवड़'।

समवती–स्त्री० एक प्रकार की धोड़ी।

समवरती–पु० यमराज।

समवळ–देखो 'समवड़'।

समवसरण (न)–पु० जिनेश्वर के उपदेश देने का स्थान, उपदेश शाला। (जैन)

समवाद–देखो 'संवाद'।

समवादी–देखो 'संवादी'।

समवायंग, समवायांग–पु० जैन धर्म के ३२ सूत्रों में से चौथे सूत्र का नाम।

समवायु–पु० [सं० समवायः] १ समूह, समुदाय। २ घनिष्ठ संबंध।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समवेग–पु० श्रीकृष्ण के एक घोड़े का नाम।
समवेत–वि० १ अटूट व निरन्तर रहने वाला। २ बहु संख्यक। ३ एकत्र, मिला हुआ।
समसत, समसत्त, समसथ–देखो 'समस्त'।
समसमा, समसमी–वि० बराबर, समान।
समसर, समसरि–पु० महादेव, शिव।
समसाण–पु० [सं० श्मशान] १ जहाँ शव दाह किया जाय, मरघट। २ कब्रिस्तान। —काळिका–स्त्री० देवी का एक रूप विशेष। —पति–पु० शिव, महादेव। —पाळ–पु० श्मशान का चौकीदार, चांडाल। —भैरवी, वासणी–स्त्री० श्मशानवासी एक देवी। —वासी–पु० शिव, महादेव। चांडाल।
समसिड–पु० समस्या।
समसेर–स्त्री० [फा० शमशेर] तलवार, खड्ग।
समसेरी–पु० खड्गधारी।
समस्टी–स्त्री० [सं० समष्टि] सब का समूह, एक साथ।
समस्त–वि० [सं०] १ सब, कुल, समग्र। २ समास द्वारा मिलाया हुआ, संयुक्त।
समस्नु–स्त्री० [सं० श्मश्रु] मूँछ।
समस्या–स्त्री० [सं०] १ सलाह, मशविरा, विचार। २ उलझन, परेशानी। ३ कठिन प्रसंग। ४ संकेत, इशारा। ५ प्रश्न।
समस्सेर–देखो 'समसेर'।
समहदी–वि० सीमा का, सरहद का।
समहर (रि, री)–पु० १ तलवार। २ देखो 'समर'
समहो–देखो 'सांम्हो'।
समां–देखो 'समय'।
समांण–१ देखो 'समांन'। २ देखो 'सम्मांन'।
समांणो–वि० १ समवयस्का, समउम्र की। २ समान, बराबर, तुल्य। ३ पूरा, सम्पूर्ण।
समांन–पु० [सं० समानः] शरीर में नाभि स्थित दश वायुओं में से एक। –वि० १ बराबर, तुल्य। २ अनुसार, मुताबिक। ३ एक जैसा, अनुरूप। –क्रि०वि० ४ ही। ५ देखो 'सम्मांन'। ६ देखो 'सांमांन'।
समांनिका–स्त्री० एक प्रकार का वर्णवृत्त।
समांनोदरज–पु० [सं० समानः-उदर्य] सगा भाई, सहोदर।
समांम–स्त्री० [अ० शमाम] सुगंध, महक।
समांमी–स्त्री० [सं० सामान्य] वैभव, ऐश्वर्य।
समांमी–वि० (स्त्री० समांमी) १ वीर, बहादुर। २ बढ़िया, उत्तम। ३ अनुकूल, पक्षीय। ४ मिलनसार। ५ अनुरूप, समान। ६ बराबरी का, जोड़ का।
समा–स्त्री० [फा० शमा] १ मोमबत्ती। २ लहंगा जाति की एक शाखा। ३ भाटियों की एक शाखा (यादव)। –पु० [अ०] ४ आकाश, गगन। ५ दृश्य, नजारा। –क्रि०वि० १ ही। २ देखो 'समय'।
समाइ (ई)–वि० [सं० समाधि] समाधिस्थ, ध्यान मग्न। (जैन) –स्त्री० १ समाधिस्थ या ध्यानमग्न होने की क्रिया या भाव। २ आत्मा में समभाव रखने की क्रिया अवस्था या भाव। ३ क्षमा करने की क्रिया। ४ माला जपने या ध्यान लगाकर बैठने की क्रिया।
समाक–पु० [अ०] अत्यन्त कठोर पत्थर।
समाकृत–वि० [सं० समाकृति] १ समान आकृति का। २ एक समान अनुरूप।
समागम–पु० [सं०] १ आगमन, मिलन। २ भिड़ंत, मुठभेड़। ३ मैथुन, संभोग। ४ अवसर, संयोग। ५ मिलन। ६ सत्संग। ७ बहुत लोगों के एकत्र होने की स्थिति या क्रिया।
समाचरण, समाचार–पु० [सं० समाचारः] १ भली प्रकार आचरण। २ संदेश, खबर। ३ सामान्य बात। ४ हाल, ब्योरा।
समाज (ज, जी)–पु० [सं० समाज] १ बहुत से लोगों का समूह। २ समान धर्म एवं आचरण वाले लोगों का वर्ग, समुदाय। ३ समूह, दल। ४ साथी, संगी। ५ सभा। ६ सामान, सामग्री। ७ हथनी, हाथी। ८ परिग्रह।
समाजोग–पु० १ मेल, मिलाप। २ संसर्ग, सम्बन्ध। ३ शुभ योग। ४ कोई आकस्मिक घटना। ५ कई लोगों का मिलन, सम्मेलन। ६ संयोग, इत्तिफाक। ७ भीड़, जनसमूह। ८ देवयोग। ९ दोस्ती, मैत्री। १० कारण, हेतु। ११ सम्भावना। १२ अवसर, मौका। १३ भाग्य, तकदीर।
समाणो (णी)–क्रि० १ अवसान या मृत्यु होना। २ व्याप्त होना, फैलना। ३ विद्यमान होना। ४ फैलना। ५ एक रूप होना। ६ मिलना, विलीन होना। ७ विलीन होना। ८ समाहित होना। ९ धंसना, गड़ना। १० मिल जाना। ११ अदृश्य होना, ओझल होना, लुप्त होना। १२ लीन होना। १३ समाधिस्थ होना, अंतर्धान होना। १४ स्थित होना। १५ धारण करना। १६ मिटना, अंत होना। १७ स्थिर होना। १८ निवास होना। १९ प्रविष्ट होना। २० कुछ होना। २१ अनुरक्त होना। २२ देखो 'मावणो' (णी)। २३ देखो 'संमाणो' (णी)।
समातार–पु० सदस्य, मुआमद।
समाथ–वि० १ ऊपर किए हुए, उठाये हुए। २ देखो 'समरथ'।
समाद–देखो 'समाधि'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समादान-पु० [फा० शमादान] १ धातु या शीशे का उपकरण जिसमें मोमबत्तियां जलाई जाती हैं। [सं० शमऽऽदान] २ जैनियों का आह्निक कृत्य विशेष। ३ क्षमादान।

समादियो-देखो 'समाधियो'।

समाध-वि० स्वस्थ तन्दुरुस्त। -स्त्री० १ तन्दुरुस्ती, स्वस्थता। २ देखो समाधियो'। ३ देखो 'समाधि'।

समाधान-पु० [सं० समाधान] १ चित्त को एकाग्र कर ब्रह्म में लगाने की क्रिया या भाव। २ प्रश्न का उत्तर, आशंका निवारण सूचक बात। ३ समस्या हल करने की युक्ति। ४ संतोष, धैर्य। ५ संयोग।

समाधायो-देखो 'समाधियो'।

समाधि-स्त्री० [सं० समाधिः] १ योग के आठ अंगों में से एक मुख्य अंग। २ वह स्थान जहां शव या अस्थियां दफनाई गई हो। ३ साधु-संन्यासियों आदि का जीवित अवस्था में ध्यानावस्थित होकर दफन होने की क्रिया। ४ चित्त को एकाग्र करने की क्रिया। ५ कुशलक्षेम पूछने की क्रिया। ६ पूर्णता। ७ ध्यान। ८ श्रुतचारित्र रूप धर्म। ९ शांति, आराम। -वि० स्वस्थ, ठीक। देखो 'समाधिजिन'।

समाधियो-वि० १ संबंधी, रिश्तेदार। २ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

समाधी-देखो 'समाधि'।

समाप-पु० [सं० समर्पण] १ उत्सर्ग, दान। २ समर्पण।

समापक-वि० [सं०] (स्त्री० समापिका) १ समाप्त करने वाला। २ पूर्ण करने वाला। ३ समर्पण करने वाला।

समापण-देखो 'समपण'।

समापणी (बी)-देखो 'समपणी' (बी)।

समापत-वि० [सं० समाप्त] समाप्त, पूर्ण, सम्पूर्ण।

समापिका-स्त्री० व्याकरण में एक प्रकार की क्रिया।

समापित समाप्त-देखो 'समापत'।

समाप्ति-स्त्री० [सं०] कार्य की पूर्णता, सम्पन्न होने की क्रिया या स्थिति।

समायोग-देखो 'समाजोग'।

समार-पु० अधिकार, कब्जा। -वि० घावों से परिपूर्ण।

समारणी (बी)-देखो 'संवारणी' (बी)।

समावंत-वि० [सं० समा-वत्] समयानुसार, यथासमय, ठीक समय पर होने वाला।

समावड़-देखो 'समवड'।

समावण-पु० १ मृत्यु नाश। २ मृत्यु संदेश।

समावणी (बी)-१ देखो 'समाणी' (बी)। २ देखो 'सभाणी' (बी)।

समावत-पु० [सं० समावर्त] भगवान विष्णु का एक नामान्तर। -वि० आवृत्त, घिरा हुआ, आवेष्टित।

समास-पु० [सं० समासः] १ धैर्य। २ कम या थोड़ा होने का भाव। [सं० समाऽश] ३ वर्षाकाल। ४ संक्षिप्त। ५ व्याकरण के कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार दो या अधिक शब्दों का योग।

समासम-वि० समान, बराबर का।

समाश्रित-वि० [सं० समाश्रित] भली प्रकार आश्रित।

समाहणी (बी)-देखो 'सभाणी' (बी)।

समाहार-पु० [सं०] १ संग्रह। २ समूह, राशि। ३ मिलाप, मिलन।

समाहित-वि० [सं०] १ समाधिस्थ। २ स्थिर, अटल। ३ शांत। ४ सावधान, निरुपाधिध्येय।

समाही-देखो 'समाह'।

समाह्वा-स्त्री० वनगोभी नामक घास विशेष।

सामि-पु० समय।

समिअे (अं)-देखो 'समय'।

समिउ-वि० शांत।

सामिग-वि० [सं० सम्यक्] सत्य, असल।

समिज्जा-स्त्री० [सं० समज्या] सभा।

समिणवउ-पु० स्वप्न।

समित-पु० [सं० समित्] युद्ध, लड़ाई।

समिति-स्त्री० [सं०] १ सभा। २ मजलिस। ३ युद्ध, समर।

समिद्धउ, समिद्धह, समिद्धी-वि० [सं० समृद्ध] समृद्धिशाली, ऐश्वर्यशाली।

समिध, समिधा, समिधि-स्त्री० [सं० समिध्] १ यज्ञ कुण्ड में जलाने की लकड़ी। [सं० समीधः] २ आग, अग्नि।

समिय-देखो 'समय'।

समियांण, समियांणी, समियांन, समियांनी-पु० १ सिवाना (मारवाड़) के किले का नाम। २ देखो 'सामियाणी'।

समियो-१ देखो 'समय'। २ देखो 'समी'।

समीक-पु० [सं० समिक] १ भाला, बरछा, बल्लम। २ देखो 'समीक'।

समी-स्त्री० [सं० शमि, शमी] १ राजस्थान, गुजरात, पंजाब में पाया जाने वाला एक वृक्ष विशेष। २ फली। -क्रि०वि० होते ही, ही। देखो 'मम'। देखो 'समोवड़ियो'।

समीक-पु० [सं० समीक] युद्ध, संग्राम।

समीक्षक-वि० [सं०] समीक्षा करने वाला, समालोचक।

समीक्षा-स्त्री० [सं०] १ समालोचना, समीक्षा। २ दर्शन शास्त्र की मीमांसा पद्धति।

समीगरम, समीगव, समीगम, समीगमव, समीगमवा-स्त्री० [सं० शमीगर्भ] १ अग्नि, आग। २ अग्निहोत्री ब्राह्मण।

समीचीन-वि० [सं० समीचीनः] १ उचित, ठीक। २ न्याय संगत। -पु० [सं० समीचीनम्] सत्य व सच्ची बात।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समीत–पु० [सं० समित] १ युद्ध, दंगल। २ सभा, गोष्ठी।

समीप–क्रि०वि० [सं०] १ निकट, नजदीक, आस-पास। २ सम्मुख, सामने। ३ पास, बगल में।

समीपमुकत्ति–देखो 'सांमीपमुकत्ति'।

समिपि, समीपी–पु० [सं० समीप-ई] निकटवर्ती, नजदीकी। –वि० समीपवर्ती, निकट का, पास का।

समीम–पु० [अ० शमीम] सुगन्धित पदार्थ।

समीयं, समीयो–देखो 'समय'।

समीर, समीरण, समीरसं–पु०[सं० समीरः, समीरणः] १ वायु, हवा। २ भगवान विष्णु।

समोवड़, समोवड–देखो 'समवड़'।

समोसर–स्त्री० बराबरी, समानता। –वि० समान, तुल्य।

समीह–स्त्री० [स० समीहा] श्रेष्ठ अभिलाषा, सुकामना।

समुंद, समुंदर, समुंद्र–देखो 'समुद्र'।

समुंधो–वि० समूचा, समस्त, पूरा।

समु–देखो 'समो'।

समुक्ख, समुख, समुखो–क्रि० वि० सामने, सम्मुख। –पु० एक प्रकार का वर्णिक छन्द।

समुचित–वि० [सं०] १ वाजिब, उचित। २ उपयुक्त, वाजिब।

समुच्चय–पु० [सं०] १ समूह, राशि, ढेर। २ साहित्य में एक अलंकार विशेष।

समुझणो (बो)–देखो 'समझणो' (बो)।

समुझावणो (बो), समुझवणो (बो)–देखो 'समझाणो' (बो)।

समुदय, समुदाय–पु० [सं० समुदयः, समुदायः] १ समूह, झुण्ड। २ युद्ध, संग्राम।

समुद्द समुद्र–पु० [सं० समुद्र] १ पृथ्वी पर स्थल भाग को घेरने वाली विशाल जल राशि, सागर, समुद्र। २ शुभ्र रंग का एक प्रकार का घोड़ा। —कांता–स्त्री० नदी, सरिता। —जा–स्त्री० लक्ष्मी। —नेमि–स्त्री० पृथ्वी। —फीण, फेण, फेन–पु० समुद्र की लहरों के झाग जो औषधि में काम आते हैं। —मेखळा–स्त्री० पृथ्वी, भूमि। —सुत, सुतन–पु० चन्द्रमा, चांद। अमृत। मोती मौक्तिक।

समुद्रक–पु० शृंगार में एक आसन विशेष।

समुल्लसन–पु० [सं०] समस्त शारीरिक क्रियाओं से हर्ष प्रगट करने की क्रिया, अवस्था या भाव।

समुह, समुहा, समुहैं–क्रि०वि०[सं० सम्मुख] १ सामने, सम्मुख। २ देखो 'समूह'।

समूंची, समूंधो–वि० (स्त्री० समूंची, समूंधी) पूरा; समस्त, कुल।

समूंह–देखो 'समूह'।

समूतनी–स्त्री० [सं० सीमन्तिनी] स्त्री

समूरत, समूरती समूरथ (थो)–पु० श्रेष्ठ मुहूर्त, अच्छा समय।

समूळ, समूल–वि० [सं० समूल] १ सब, समस्त। २ पूरा, अखंड। ३ जड़ सहित, जड़ मूल सहित। ४ सकारण। ५ सबका, सभी का।

समूळो–देखो 'समूळ'।

समूह, समूहु–पु० [सं० समूह] १ सेना, फौज, दल। २ ढेर, राशि। ३ झुंड। ४ बाहुल्य, आधिक्य। ५ सनातन विश्व-देव का नाम।

समें, समे–देखो 'समय'।

समेगी–देखो 'संवेगी'।

समेजोग–देखो 'समाजोग'।

समेटणो (बो)–क्रि० १ मारना, संहार करना। २ कम करना, थोड़ा करना। ३ बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। ४ क्रमशः या तरतीब से लगाना। ५ काम पूरा करना या समाप्त करना।

समेडो–स्त्री० स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

समेत, समेति, समेती–पु० [सं० समेत] एक पर्वत का नाम। –वि० १ सयुक्त। २ साथ, सहित।

समेर–देखो 'सुमेर'।

समेळ–वि० १ मिश्रित। २ सहित, युक्त। ३ साथ। ४ एकत्रित। ५ देखो 'सिवळ'।

समेळो–वि० १ साथ, शामिल। २ एकत्रित, इकट्ठा। ३ मेल या मित्रता रखने वाला। ४ युक्त, सहित। ५ बराबर, तुल्य। ६ देखो 'सांमेळो'।

समें–१ देखो 'समय'। २ देखो 'सम'।

समेकत–वि० एकत्रित, संकलित।

समैयो–देखो 'समय'।

समोद–वि० गर्व सहित।

समोवनी–स्त्री० [सं० समुदायिनी] सेना, फौज।

समोवणो (बो)–देखो 'समवणो' (बो)।

समोवड़, समोवड़ियो, समोवर–१ देखो 'समवड़'। २ देखो 'समोवड़ियो'।

समोभरम, समोभ्रम, समोभ्रमो–देखो 'संभ्रम'।

समोवड–१ देखो 'समवड़'। २ देखो 'समोवड़ियो'।

समोवड़ियो–वि० १ समानता वाला, बराबर का। २ देखो 'समवड़'।

समोवण, समोवर–देखो 'समवड़'।

समोवणो (बो)–देखो 'समोहणो' (बो)।

समोवसरण–देखो 'समवसरण'।

समोसर, समोसरि–पु० १ श्रेष्ठ या मांगलिक अवसर। २ देखो 'समोसर'।

समोसरणि–स्त्री० [सं० समवसरण] सभा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समोसरणो, (बो)–क्रि० आना, पधारना।
समोसो–वि० बलवती।
समोसो–पु० १ मैदे की रोटी में मांस-मसाले डाल कर तल कर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ। २ इसी तरह आलू-प्याज आदि मसाले; मैदे की रोटी के सम्पुट में तल कर बनाया जाने वाला नमकीन।
समोह–पु० [सं०] युद्ध, संग्राम।–वि० १ मोहित। २ मूर्च्छित।
समोहणो (बो)–देखो 'संमोहणो' (बो)।
समोहा–पु० एक वर्णिक वृत्त विशेष।
सम्मो–पु० [सं० समा] १ वर्ष, साल। २ अध्याय, प्रकरण। ३ समय। ४ अवसर, मौका। –वि० (स्त्री० सम्मी) १ समान, तुल्य, बराबर। २ सीधा, सरल। ३ चक्कर या घुमाव रहित, सीधा। –क्रि०वि० ४ होते ही। ५ जैसा। ६ ऊपर, पर। ७ ही, पर। ८ तक, पर्यन्त। ९ सामने, सम्मुख। १० ज्योंहि। ११ देखो 'समय'।
सम्म–वि० [स० श्याम] काला, श्याम।
सम्मत–पु० [सं०] १ इकरारनामा, करार, कौल। २ राय, सम्मति। ३ विचार।
सम्मति–स्त्री० १ सलाह, राय। २ अनुमति। ३ अभिप्राय।
सम्मद–देखो 'समुद्र'।
सम्मन–पु० [अ० समन] न्यायालय में उपस्थित होने के लिये जारी किया गया आदेश, सूचना।
सम्मर–पु० १ वैभव, ऐश्वर्य। २ देखो 'समर'। ३ देखो 'स्मर'।
सम्मळा–स्त्री० १ एक देवी विशेष। २ चोल। ३ यमुना।–वि० श्याम वर्ण का।
सम्भवणो (बो)–देखो 'समाणो' (बो)।
सम्मसेर–देखो 'समसेर'।
सम्मांण, सम्मांन–पु० [स० सम्मान] आदर, प्रतिष्ठा।
सम्मा–वि० १ समान, तुल्य। २ देखो 'समा'।
सम्मास–वि० [अ० शम्मास] सूर्य के पुजारी, सूर्य-पूजक।
सम्मुख, सम्मुह–वि० [सं० सम्मुख] सम्मुख, समक्ष।
सम्मूढ–वि० [सं०] १ मोह युक्त। २ टूटा हुआ, भग्न। ३ ढेर लगा हुआ।
सम्मूह–देखो 'समूह'।
सम्मेटणो (बो)–देखो 'समेटणो' (बो)।
सम्मेलन–पु० [सं०] १. किसी कार्य या उद्देश्य विशेष से एकत्र मानव समाज, समूह। २ बहुत बड़ा आयोजन। ३ मिलाप, संगम। ४ जमाव, जमघट। ५ कोई बहुत बड़ी संख्या।
सम्मै–देखो 'समय'।
सम्मोहण (न)–पु० [सं० सम्मोहन] कामदेव के पांच बाणों में से एक।
सम्मोहणो (बो)–देखो 'समोहणो' (बो)।
सम्मो देखो 'समो'।
सम्यक–वि० [सं०] १ पूरा, समस्त। २ यथेष्ट। ३ यथार्थ, विशुद्ध।
सम्यकचरित्र–पु० [सं०] विशुद्ध धार्मिक आचरण। (जैन)
सम्यकत्व–पु० [सं०] नव तत्त्व एवं छः द्रव्यों में दृढ़ श्रद्धा होने का भाव (जैन)।
सम्यो–देखो 'समय'।
सम्रत–१ देखो 'स्मृति'। २ देखो 'समरथ'।
सम्रतवेता–देखो 'स्मृतिवेता'।
सम्रतीयद–पु० कवि।
सम्रत्थ, सम्रथ–देखो 'समरथ'।
सम्रद्ध–पु० [सं० समृद्ध] धृतराष्ट्र कुल में उत्पन्न एक नाग।–वि० सम्पन्न वैभवशाली।
सम्रद्धि, सम्रद्धी–स्त्री० [सं० समृद्धि] अत्यधिक सम्पन्नता।
सम्रधीक–वि० समृद्धिशाली वैभवशाली।
सम्रागी, सम्राग्यो–स्त्री० [सं० सम्राज्ञी] सम्राट की पत्नी, पटरानी।
सम्राट–पु० [सं० सम्राट] १ राजाओं का राजा, राजाधिराज, बादशाह। २ वह राजा जिसने राजसूय यज्ञ किया हो।
सम्स–पु० [सं० शम्स] १ रोशनदान। २ सूरज, सूर्य।
सम्हाळणो (बो)–देखो 'सभाळणो' (बो)।
सयकळ–देखो 'सांकळ'।
सयगार–देखो 'सिणगार'
सयतउ–वि० [सं० सचितक] उतावला, उत्तेजक, व्याकुल।
सयद–पु० १ स्वर्ण, सोना। २ शयन।
सयबर, सयंवर, सयंबरु–देखो 'स्वयंबर'।
सय–पु० [सं० शयः] १ हाथ। २ निद्रा, नींद। ३ शय्या, सेज, खाट। ४ सर्प विशेष। –वि० १ समस्त, सब। २ देखो 'सौ'। ३ देखो 'सैं'। ४ देखो 'स्वय'।
सयगहोदोस–पु० गृहस्थी के यहां से स्वयमेव आहार लेने पर लगने वाला दोष।
सयण–स्त्री० १ सखी, सहेली। २ देखो 'सयन'। ३ देखो 'सैण'।
सयणाचार–पु० [सं० स्वजनाचार] १ अपनों का सा व्यवहार। २ सज्जनता का व्यवहार।
सयणी–देखो 'सैणी'।
सयद–देखो 'सैयद'।
सयन–पु० [सं० शयनं] १ सोना क्रिया, विश्राम, आराम। २ निद्रा, नींद। ३ शय्या, सेज। ४ संभोग, मैथुन। —आरती–स्त्री० देव मंदिरों में होने वाली रात्रि की अंतिम आरती। —घर, मंदिर–पु० सोने का स्थान, शयनागार, शयनकक्ष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सयनपुन-पु० [सं० शयनं-पुण्यं] पलंग आदि के दान से मिलने वाला पुण्य।

सयनबोधिनी-स्त्री० [स० शयन बोधिनी] मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

सयना-स्त्री० अग्नि, आग।

सयनीय-स्त्री० शय्या, सेज।

सयनैकादसी-स्त्री० [सं० शयनैकादशी] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

सयमंत-पु० [सं० स्यमंतक] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि।

सयमुखि-क्रि०वि० सम्मुख, प्रत्यक्ष।

सयर, सयरइ, सयरि, सयस-१ देखो 'सिर'। २ देखो 'सरीर'।

सयल-वि० [सं० सकल] १ सब, समस्त। २ ससार। ३ देखो 'सैल'।

सयवर-देखो 'स्वयंबर'।

सयांण, सयांणउ-देखो 'सयाणी'।

सयांणप-देखो 'सैणप'।

सयाणी-वि० (स्त्री० सयांणी) १ तत्त्वज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी। २ समझदार, बुद्धिमान। ३ चतुर, होशियार। ४ सरल स्वभाव वाला, सीधा। ५ कपटी, धूर्त। ६ पूर्ण युवा, वयस्क। ७ जानकार, विज्ञ। ८ जादू-टोने जानने वाला। ९ चिकित्सक, वैद्य। १० वृद्ध, बूढ़ा।

सयांनक-पु० गिरगिट।

सयांनप-देखो 'सैणप'।

सयांनी-देखो 'सयाणी'।

सयी-देखो 'सखी'।

सय्या-स्त्री० [सं० शय्या] १ पलंग आदि पर बिछा बिस्तर, बिछौना। २ सोने लायक पलंग, चारपाई।

सय्यातर-पु० [स०] जैन साधुओं को, ठहरने का स्थान देने वाला व्यक्ति। —पिंड-पु० इस प्रकार से ठहरे साधु को दिया जाने वाला भोजन।

सय्यापाळ-पु० [सं० शय्यापाल] राजा के शयनागार का प्रबन्धक।

सरंगी-१ देखो 'सुरंगी'। २ देखो 'सारंग'।

सरंजांम-देखो 'सरजाम'।

सरभर-वि० सराबोर, तरबतर।

सर-पु० [सं० शरः] १ बाण, तीर। २ दुग्ध, दूध। ३ दूध की मलाई। ४ स्त्रियों का हार, कंठा। ५ गति, गमन। ६ जुलाब की औषधि। ७ छोर, सिरा। ८ हथेली में रेखाओं से बना तीर का निशान। ९ सागर, समुद्र। १० तालाब, जलाशय। ११ पानी, जल। १२ कूप, कुआ। १३ जल प्रपात, झरना। १४ बांध को बनी नीची भूमि जिसमें वर्षा के पानी से फसल होती है। १५ पक्ष। १६ सरपत जाति का एक पौधा, सरकंडा। १७ दो मात्रा के दो लघु का नाम। १८ छप्पय छन्द का एक भेद। १९ प्रशंसात्मक काव्य। [फा० सर] २० सिर, मस्तक। २१ एक प्रकार का अस्त्र। २२ हिमपात, पाला। २३ ताश के खेल में जीत वाली चाल। २४ रस्सी, डोरी। २५ जीत, विजय। २६ पांच की संख्या※। २७ सात की सख्या※। —वि० १ दबाया हुआ। २ हराया हुआ। ३ जीता हुआ विजित। ४ प्रमुख प्रधान। ५ उत्तम, श्रेष्ठ। ६ तीक्ष्ण, तीखा※। ७ समाप्त किया हुआ। —प्रत्य० १ शब्दों के अन्त में लगकर जो अनुसार व मुताबिक आदि अर्थ बनाता है। २ पूर्वकालिक क्रिया के साथ जुड़ने वाला शब्द। ३ देखो 'स्वर'।

सरअगना-स्त्री० द्रौपदी।

सरअजोत-पु० अर्जुन।

सरक-पु० १ सरकंडा। २ शराब की प्याली, चुस्की। ३ मस्तक का कवच, टोप।

सरकड, सरकडि (डी)-पु० [सं० शरः-काण्ड] १ नरकुल। २ बाण की लकड़ी। ३ सरकंडा।

सरकणी (बी)-देखो 'सिरकणी' (बी)।

सरकर, सरकरा-स्त्री० [सं० शर्करा] १ बालू रेत। २ शक्कर। ३ सूर्य, भानु।

सरकराचळ-पु० [सं० शर्कराचल] दान के लिये बनाया गया शक्कर का पहाड़, ढेर।

सरकरावेनु-स्त्री० शक्कर की गाय जो दान की जाती है।

सरकस-वि० [फा० सरकश] १ विद्रोही, बागी। २ स्वेच्छाचारी, निरंकुश। ३ उद्दण्ड, अशिष्ट। ४ अवज्ञाकारी। कृतघ्न। ५ मुंहफट। ६ देखो 'सिरकस'। —पु० [अ०] १ कलाबाजियां दिखाने वाले स्त्री-पुरुषों का समूह, मंडली जिसमें जानवरों के करतब भी दिखाये जाते हैं। २ इस प्रकार किये जाने वाले खेल-तमाशे।

सरकसी-स्त्री० [फा० सरकशी] १ उद्दण्डता, बदमाशी। २ विद्रोह, बगावत।

सरकाणी (बी)-देखो 'सिरकाणी' (बी)।

सरकायल-वि० अवारा घूमने वाला। निठल्ला।

सरकार-स्त्री० [फा०] १ राज्यसत्ता, शासन। २ राज्य सभा, दरबार। ३ रियासत। —पु० ४ ईश्वर, प्रभु। ५ स्वामी, मालिक। ६ आदर सूचक एक सबोधन विशेष।

सरकारी-वि० सरकार का, सरकार सबधी। राजकीय।

सरकावणी (बी)-देखो 'सिरकाणी' (बी)।

सरकेल-वि० १ खिसकने वाला। २ डरपोक, कायर। ३ सनकी, तुनक मिजाज। ४ हठी, जिद्दी। ५ उद्दण्ड।

सरकी-पु० लज्जाजनक बात।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरक्कणी (णो)–देखो 'सिरक्कणी' (णो)।
सरखंड–पु० [सं० श्रीखण्ड] एक प्रकार का कीमती वस्त्र।
सरखड, सरखउ–देखो 'सारीखो'।
सरखरु(क)–क्रि०वि० सामने, सम्मुख।
सरखूं, सरखो–देखो 'सारीखो'। (स्त्री० सरीखी)
सरग–पु० [सं० सर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति। २ किसी ग्रंथ का अध्याय, सर्ग। ३ शिव का एक नाम। ४ बाण, तीर। ५ देखो 'स्वरग'।
सरगट, सरगटो–पु० [देश०] घूंघट।
सरगणो–पु० [फा० सर्गन] १ अगुवा, नेता, सरदार। २ डींग हांकने या शेखी बघारने की क्रिया।
सरगतरग, सरगतरगख (णी)–स्त्री० [सं० स्वर्ग-तरंगिणी] गंगा नदी, सुरसरी।
सरगदुवार (वारी)–देखो 'स्वरगद्वारी'।
सरगनदी–स्त्री० [सं० स्वर्ग-नदी] गंगा।
सरगपत (ति, ती)–देखो 'स्वरगपति'।
सरगपुर (पुरी)–देखो 'स्वरगपुरी'।
सरगपूज–पु० [सं० स्वर्गपूज्य] बृहस्पति।
सरगम–पु० [सं०] संगीत में सात स्वरों का समूह जो प्रत्येक राग के लिए अलग-अलग होता है।
सरगरा–स्त्री० एक अनुसूचित जाति विशेष।
सरग-राजान–पु० [सं० स्वर्ग-राज] स्वर्ग का राजा, इन्द्र।
सरगरी–पु० (स्त्री० सरगरी) 'सरगरा' जाति का व्यक्ति।
सरगळ–वि० तरबतर, सराबोर।
सरगलोक (लीम)–देखो 'स्वरगलोक'।
सरगवट–पु० [सं० स्वर्ग-वाट:] स्वर्ग का मार्ग।
सरगाजळ–पु० स्वर्ग।
सरगापर (पुर, पुरि, पुरी)–देखो 'स्वरगपुरी'।
सरगि–देखो 'स्वरग'।
सरगिका–स्त्री० एक वर्णिक वृत्त विशेष।
सरगुजस्त (जस्व)–स्त्री० [फा० सर+गुजश्त] १ स्वयं पर बीती बात। २ जीवन चरित्र। ३ वर्णन, बखान।
सरगुण–देखो 'सगुण'।
सरगुणियो, सरगुणी–वि० १ सगुण ब्रह्म का उपासक। २ देखो 'सगुण'।
सरगूढ़ो–पु० एक वृक्ष विशेष।
सरगोसी–स्त्री० [फा० सरगोशी] १ कानाफूसी, गुफ्तगू। २ पीठ पीछे की जाने वाली आलोचना, निंदा।
सरगो–पु० शुभ रंग का घोड़ा।
सरग (गो)–देखो 'स्वरग'।
सरघर, सरघर–पु० [सं० सर-गृह] १ जल, पानी। [सं० शर-गृह] २ तूणीर, तरकस।
सरघा–स्त्री० [सं०] १ मधुमक्खी। २ भ्रमर।
सरघात–स्त्री० [सं०] तीरंदाजी।
सरड़–क्रि०वि० शीघ्र, झट। २ बेंत आदि के प्रहार की ध्वनि।
सरड़को–पु० १ वस्तु या अंगों का परस्पर घर्षण, रगड़। २ ऐसी घर्षण से पड़ने वाला निशान, चिह्न। ३ ऊंट की चाल विशेष। ४ छड़ी या बेंत के आघात की ध्वनि।
सरड़ाट, सरड़ाटो–पु० १ तेजी से दौड़ने या गतिमान होने से उत्पन्न ध्वनि। २ मुख या नाक से श्वास खींचने से उत्पन्न ध्वनि।
सरधणो (णो)–क्रि० १ किसी मूल्य पर विक्रय के लिये राजी होना, सौदा पटना। २ जचना। –क्रि०वि० पीटना, सजा देना।
सरचाणो (णो)–क्रि० १ किसी मूल्य पर विक्रय के लिये सहमत करना, सौदा पटाना। २ जंचाना, निपटाना। ३ पिटवाना, सजा दिलवाना।
सरच्चंद्र, सरच्चंद्रमा–पु० [सं० शरच्चन्द्र] शरद् ऋतु या शरत् पूर्णिमा का चन्द्रमा।
सरज–पु० १ एक प्रकार का ऊनी वस्त्र। [सं०सर्ज] २ मक्खन, नवनीत। ३ साल नामक वृक्ष। –स्त्री० ४ माला। –वि० सृजन करने वाला।
सरजक–पु० [सं० सर्जक] मट्ठा डाल कर फाड़ा हुआ दूध।
सरजण–पु० [सं० सृजन] १ सृष्टि, रचना, निर्माण। २ शल्य चिकित्सक।
सरजणहार–वि० [सं० सृजनम्] १ सृजन करने वाला। २ ईश्वर, विधाता।
सरजणी (णो)–क्रि० [सं० सृज] १ सृष्टि करना, सृजन करना। २ तय करना, निश्चित करना। ३ उत्पन्न या पैदा करना। ४ बनाना।
सरजथा–स्त्री० डिंगल गीत (छन्द) रचना की एक विधि।
सरजनमा, सरजन्म–पु० [सं० सरजन्म] १ कमल। [सं० शर-जन्मन्] २ स्वामि कार्तिकेय। स्कन्द।
सरजळ–पु० १ तीरों का जाल। २ माया जाल। ३ देखो 'मजळ'।
सरजळाइग्यारस–स्त्री० आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।
सरजस, सरजसका–स्त्री० [सं० सरजस्] रजस्वला स्त्री।
सरजांम–देखो 'सराजांम'।
सरजा–पु० [फा० सरजाह] १ श्रेष्ठ व्यक्ति। २ सरदार। ३ सिंह, शेर। ४ देखो 'सरजस'।
सरजित, सरजित, सरजीत–वि० १ हरा-भरा, सरस, सजळ। २ आनन्दित, हर्षित, खुश। ३ सजीव। ४ रचित। ५ विजयी। ६ सचेतन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरजीवण–देखो 'सजीवण'।
सरजीवत–देखो 'सजीव'।
सरजु सरजू, सरज्यु–देखो 'सरयू'।
सरजोड़, सरजोर–देखो 'सिरजोर'।
सरज्जणी (बी)–देखो 'सरजणी' (बी)।
सरट–पु० [सं० शरटः] १ गिरगिट। २ कुसुम। ३ पवन, वायु। ४ धागा। –स्त्री० ५ निशाना लगाने की क्रिया। ६ देखो 'सरठ'।
सरटि, सरटी–पु० [सं० सरटिः] १ पवन, हवा। २ बादल, मेघ। ३ छिपकली। ४ लाजवती स्त्री।
सरठ–पु० १ सरकार द्वारा निश्चित अनाज का भाव। २ माल क्रय-विक्रय का एक नियम विशेष। ३ निशाना, लक्ष्य। —बंधियो, बंधियो–पु० सरकार द्वारा निर्धारित कीमत पर बिकने वाला सामान। माल।
सरठो, सरढो–पु० (स्त्री० सरडी, सरढी) ऊंट।
सरण–स्त्री० [सं० शरण] १ आश्रय, पनाह। २ ओट, आड़। ३ सहारा। ४ वात-विकार के कारण होने वाला रोग विशेष। ५ घर, मकान। ६ रास्ता, पथ। ७ आश्रय स्थल, बचाव स्थान। ८ विश्राम, प्रवास। ९ कोठरी, कमरा। १० भगवान विष्णु का एक नाम। ११ आगे गमन करने की क्रिया या भाव। १२ लोहे का जंग। –वि० १ शरण में आया हुआ, शरणागत। २ गतिशील। ३ पश्चिमी राजस्थान का एक क्षेत्र विशेष।
सरणईसाधार, सरणसधार (साधार)–देखो 'सरणायांसाधार'।
सरणाट–देखो 'सरणाट'।
सरणाई–वि० १ शरणागत, शरण में आने वाला। २ देखो 'सहनाई'।
सरणाईराय–वि० राजा-महाराजाओं को शरण देने वाला।
सरणाईसधार, सरणाईसधीर, सरणाईसाधार, सरणाई-सोहड़(ड)–देखो 'सरणायांसाधार'।
सरणागत–पु० [सं० शरणागत] शरण में आया हुआ जीव या व्यक्ति।
सरणागति (ती)–स्त्री० [सं० शरणागति] १ शरणागत होने की क्रिया या भाव। २ देखो 'सरणागत'।
सरणाट–पु० १ फूंक वाद्यों(सुषिर) से उत्पन्न ध्वनि; आवाज। २ तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि, सनसनाहट। ३ छड़ी या बेंत के प्रहार की ध्वनि। ४ अस्त्र की गति। ५ पक्षी आदि के उड़ने की ध्वनि। –क्रि०वि० तीव्रता से तेजी से।
सरणाटे (टें)–क्रि०वि० तेजी से, वेग से।
सरणाटो–पु० [सं० सनष्ट] १ निस्तब्धता, सुनसान व शान्त वातावरण, सन्नाटा। २ पवनाघात। ३ मानसिक उत्तेजना या चित्त की व्यग्रता, जोश। ४ तेज वायु की ध्वनि।
सरणाणो (णी)–क्रि० तेज ध्वनि व आवाज करना।
सरणाय, सरणायत–१ देखो 'सरणागत'। २ देखो 'सहनाई'।
सरणायांसाधार, सरणायांसोहड़(ड), सरणासधार, सरणासाधार –वि० शरणागत वत्सल, शरणागत की रक्षा करने वाला।
सरणारथी–वि० [सं० शरणार्थिन] शरण या आश्रय चाहने वाला, शरण में आया हुआ।
सरणि, सरणी–वि० १ शरणार्थी। २ शरण देने वाला, आश्रयदाता। –स्त्री० [सं० सरणि, सरणी] १ दो पर्वत श्रेणियों के बीच का तंग संकरा मार्ग, घाटी। २ मार्ग, रास्ता। ३ सीधी रेखा। ४ गले का रोग विशेष। ५ ढंग, तौर, तरीका। ६ भूमि, जमीन। ७ देखो 'सरण'।
सरणी–पु० आश्रय, शरण।
सरणो (बो), सरणो (बो)–क्रि० [सं० सृ] १ सिद्ध होना, सफल होना। २ बनना, पूर्ण होना। ३ पार पड़ना। ४ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार होना। ५ कार्य का निर्वाह होना, पूरा होना। ६ लक्ष्य सिद्ध होना। ७ परिपूर्ण होना, पर्याप्त होना। ८ संभव होना। ९ होना। १० रूप, गुण आदि का किसी से मेल खाना। ११ चलना, निभना। १२ घूमना, फिरना, विचरित होना। १३ व्यतीत होना, बीतना। १४ पड़ना, विदित होना। १५ रहना, पड़ना।
सरणीदेवी–स्त्री० चौहानों की कुल देवी का नाम।
सरण्य–वि० [स०] १ शरणागत की रक्षा करने वाला। २ जिसका भाग्य खराब हो। –पु० [सं० शरण्यं] १ आश्रय स्थल, आश्रय स्थान। २ रक्षा करने वाला व्यक्ति। ३ रक्षा, सुरक्षा। ४ अनिष्ट, अपकार। ५ शिव, महादेव।
सरण्या–स्त्री० [सं० शरण्या] दुर्गा का एक नाम।
सरण्यु–पु० [सं० शरण्युः, सरण्यु] १ रक्षा करने वाला व्यक्ति। २ मेघ, बादल। ३ हवा, पवन। ४ वसन्त ऋतु। ५ यमराज, धर्मराज। ६ आग, अग्नि। ७ जल, पानी। –स्त्री० ८ सूर्य की पत्नी का नाम।
सरतग, सरतत–देखो 'सरतन'।
सरत–पु० [सं० शरद] १ संवत्, वर्ष। [सं० शर] २ तीर, बाण। ३ सरोवर, तालाब। –स्त्री० [अ० शर्त] ४ किसी कार्य या बात की सिद्धि के लिए जरूरी बातें, शर्त, कौल, वचन। ५ दाव, पेच, बाजी। ६ दाव पर लगाने का धन। ७ कर्त्तव्य। ८ देखो 'सरिता'।
सरतअधीस–पु० [सं० सरिता-अधीश] समुद्र।
सरतकाळ–देखो 'सरदकाळ'।
सरतन, सरतन–पु० १ इंतजाम, बंदोबस्त, प्रबन्ध। २ सामान, सामग्री। ३ साधन, उपाय। ४ वैभव, आर्थिक स्थिति। ५ आचरण, बर्ताव, व्यवहार।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरतनाह, सरतपत (पति, पती)–पु० [सं० सरिता-पति] समुद्र, सागर।

सरतपूनम, सरतपूरणिमा–देखो 'सरदपूरणिमा'।

सरतर–पु० [सं० सुरतरु] १ कल्पवृक्ष। २ सरोवर, तालाब

सरतवरा–देखो सरितिवरा'।

सरतांपत (पति, पती)–देखो 'सरतपति'।

सरता–पु० [स० सर्तृ] १ घोड़ा, अश्व। –स्त्री० [सं० शरता] २ बाण विद्या। ३ देखो 'सरिता'।

सरताज–वि० [फा० सर+अ० ताज] १ श्रेष्ठ, शिरोमणि। २ मुकुट छत्र।

सरति–देखो 'सरिता'।

सरतिया–क्रि०वि० [अ० शर्तिया] अवश्य ही, जरूर। शर्त के मुताबिक।

सरतिवरा–देखो 'सरितिवरा'।

सरतकाळ–देखो 'सरदकाळ'।

सरथ–पु० [सं०] एक ही रथ पर सवार योद्धा।

सरदंड–पु० [सं० शरदंड] १ चाबुक। २ सरकंडा।

सरद–स्त्री० [सं० शरद] १ शरद ऋतु, शरद का मौसम। २ तलवार। ३ तालाब, जलाशय। ४ वर्ष, संवत्। [सं० सरत्] ५ पवन, वायु। ६ मेघ, बादल। ७ छिपकली। ८ मधुमक्खी। ९ छोटा तंबू। –वि० १ अधीन, विजित, अधिकार में। २ शीतल, ठंडा। ३ नपुंसक, नामर्द। ४ धीमा, मंद। ५ सुस्त। ६ देखो 'सरहद'।

सरदकामो–पु० [स० शरद्-कामिन्] कुत्ता, श्वान।

सरदकाळ–पु० [सं० शरद्-कालः] १ शरद ऋतु। २ शरत-कालीन वातावरण।

सरदणो (बो)–क्रि० १ ठंडा होना। २ आर्द्र या नम होना। ३ देखो 'सरधणो' (बो)।

सरदपदम (पद्म)–पु० [सं० शरद्-पद्म] सफेद कमल।

सरदपूनम (पूरणिमा)–स्त्री० [सं० शरदपूर्णिमा] आश्विन मास की पूर्णिमा।

सरदमिजाज–वि० [फा० सर्दमिजाज] १ शील, संकोच रहित। २ ठंडे स्वभाव का।

सरदरित (रितु)–स्त्री० [सं० शरद ऋतु] आश्विन व कार्तिक मास की ऋतु, शीतकाल।

सरदळ, सरदल–पु० मकानों के दरवाजे पर आड़ा लगा पत्थर।

सरदवा, सरदवाई–स्त्री० १ एक प्रकार का वात रोग। २ हाथी का एक रोग विशेष।

सरदा–स्त्री० १ शरद ऋतु। २ वर्ष, साल। ३ देखो 'सरधा'।

सरदाइ (ई)–स्त्री० १ शीतलता, ठंडक। २ आर्द्रता, नमी।

सरदाबो–पु० [फा०सर्दाब] १ शीतल जल का स्थान। २ शीतल जल से स्नान। ३ तहखाना। ४ समाधिस्थल।

सरदार–वि० उदार, दातार, दयालु।–पु० [फा०] १ किसी मंडली का मुखिया, नायक। २ पति, स्वामी। ३ प्रियतम। ४ अमीर, उमराव। ५ राजपूत जाति का व्यक्ति। ६ वीर पुरुष। ७ सिक्खों का एक संबोधन।

सरदारी–स्त्री० [फा०] १ अध्यक्षता नेतृत्व। २ स्वामित्व। ३ सरदार होने का भाव या अवस्था।

सरदि, सरदी–स्त्री० [फा० सर्दी] १ शरद ऋतु। २ ठंडक। ३ जुखाम नामक रोग।

सरदू–देखो 'सरदो'।

सरदेसमुखी–पु० एक कर जो देश के उन प्रमुख इलाकों से वसूल किया जाता था जो मुसलमानों के आधिपत्य से मरहठों के अधिकार में आए हों।

सरदो–पु० [फा० सर्दः] १ एक जलचर पक्षी विशेष। २ एक प्रकार का खरबूजा जो अधिकतर काबुल में होता है। ३ राजपूत व चारण स्त्रियों द्वारा पति को किया जाने वाला सम्मान सूचक अभिवादन। ४ नमस्कार, प्रणाम।

सरद्द–पु० १ एक वृक्ष विशेष। २ देखो 'सरद'। ३ देखो 'सरहद'।

सरद्दणा–देखो 'सरधणा'।

सरध–पु० [सं० शर्ध] १ दल, समूह। २ बल, ताकत। ३ अपान वायु का त्याग।

सरधणा–पु० [सं० श्रद्धान्] मान्यता, दृष्टिकोण।

सरधणो (बो)–क्रि० १ मानना स्वीकार करना। २ विश्वास करना। ३ पूजना, आराधना करना। ४ मान्यता देना।

सरधनुधार, सरधनुधारी–पु० [सं० शर-धनुष-धारी] अर्जुन।

सरधर–वि० १ धनुर्धारी। २ अर्जुन। ३ तरकस। ४ देखो 'सिरधर'।

सरधा–स्त्री० १ कार्य सम्पादन की योग्यता, क्षमता शक्ति। २ बल, शक्ति। ३ हैसियत, बिसात, औकात। ४ हिम्मत, साहस। ५ देखो 'श्रद्धा'।

सरधाहीण (न)–वि० अशक्त, निर्बल, कमजोर।

सरधि–पु० [सं० शरधि] भाथा, तरकस।

सरध्धर–देखो 'सरधर'।

सरनंब–पु० [सं०] कमल।

सरनागत–देखो 'सरणागत'।

सरनांम, सरनांमी–वि० १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ श्रेष्ठ, मुख्य। –पु० पत्र के ऊपरी भाग का लेख, शीर्षक, पता।

सरपंख, (पंखो)–पु० [सं० शरपुंखा] एक प्रकार का क्षुप।

सरपंच–पु० [सं० शर-पंच] १ कामदेव। २ ग्राम पंचायत का अध्यक्ष या पंचों का मुखिया।

सरप–पु० [सं० सर्प] १ सांप, नाग। २ शेषनाग। ३ ज्योतिष

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का एक अशुभ योग। ४ ग्यारह रुद्रों में से एक। ५ नाग केसर। ६ पृथ्वी, भूमि। ७ पक्षी। ८ गमन। ९ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम। १० देखो 'सरपि'।—अरि-पु० गरुड़, मयूर, मोर, नेवला।—काळ, काल-पु० गरुड़, नेवला मोर।—दंष्ट्र-पु० सांप का विष दंत, विष दंत का घाव।—पति-पु० शेषनाग।—प्रिय-पु० चंदन।—भुज-पु० मयूर, मोर, सारस, बड़ा सर्प।—माळी-पु० शिव, महादेव।—राज-पु० शेषनाग।—विद्या-स्त्री० सर्प को वश में करने की विद्या।

सरपक (ख)-१ देखो 'सरप'। २ देखो 'सरपिस'।

सरपगंधा-स्त्री० [सं० सर्पगंधा] नागदवन नामक एक जड़ी।

सरपगत, (गति, गती)-स्त्री० [सं० सर्पगति] १ सर्प के समान चाल, कपट चाल, वक्रगति। २ कुटिल प्रकृति —वि० कुटिल, वक्रगति वाला।

सरपड़ी-देखो 'सरप'।

सरपजीह-स्त्री० [सं० सर्प जिह्वा] १ एक प्रकार की कटार। २ कोई कटार।

सरपट-स्त्री० १ घोड़े की एक तेज चाल। २ दौड़ते हुए चलना। —क्रि० वि० तेजी से, शीघ्रता से।

सरपणी-स्त्री० [सं० सर्पिणी] नागिन, सांपिन।

सरपबगड़ू तेज-पु०चिपटे नाक का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है।

सरपारि, सरपारी-पु० [सं० सर्पारि] १ गरुड़। २ मोर, मयूर। ३ नेवला।

सरपाव-देखो 'सिरपाव'।

सरपासण (न)-पु० [सं०सर्प-आशन्] १ गरुड़। २ मोर, मयूर। ३ नेवला। ४ भगवान विष्णु।

सरपाहार-पु० [सं० सर्प-आहार] १ नेवला। २ मोर, मयूर। ३ गरुड़। [सं० सर्प-हार] ४ शिव, महादेव।

सरपि, सरपिष, सरपिषि (खी)-पु० [सं० सर्पिष] घृत, घी।

सरपेच-देखो 'सिरपेच'।

सरपोस-पु० [फा० सरपोश] थाल आदि ढकने का वस्त्र।

सरपो, सरप्प-देखो 'सरप'।

सरफ-पु० [अ० सरफ] १ बड़ाई। २ सौभाग्य। ३ महत्व।

सरफणो (बो)-क्रि० हवा में फहरना, हवा के झोंके खाना, हिलना-डुलना।

सरफल-पु० [सं० शर:-फलम्] तीर की नोक।

सरफास-स्त्री० घास-फूस आदि का नुकीला भाग।

सरफो-पु० १ औषधि में काम आने वाला एक पौधा विशेष। [फा० सफ़] २ खर्च, व्यय। ३ फिजूल खर्च, अपव्यय। ४ मितव्ययता। ५ गुजर-बसर।

सरबंग-पु० [सं० सर्वांग] १ सब देह, सब अंग। २ एक छन्द विशेष। ३ दवा बांटने (पीसने) का संगमरमर का घोटा। ४ देखो 'सरभंग'। —क्रि०वि० पूर्ण रूप से, सर्वथा।

सरबंगी-वि० १ साम-दाम आदि नीतियां जानने वाला, नीतिज्ञ। २ देखो 'सरभंगी'।

सरबंद (ध)-पु० [सं० शरबंध] १ सिर पर बांधा जाने वाला वस्त्र, पगड़ी, साफा। २ स्त्रियों के सिर का आभूषण विशेष।

सरब-१ देखो 'सरभ' २ देखो 'सरब'।

सरबगळ-वि० १ सबको हजम करने वाला। २ सबको स्वाहा करने वाला। ३ देखो 'सरबग्रास'।

सरबग्यांनी, सरबज्ञांण-देखो 'सरबग्यांनी'।

सरबजीत-वि० [सं० सर्वजित्] सबको जीतने वाला, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ। —पु० १ काल या मृत्यु। २ इक्कीसवां संवत्सर। ३ एक प्रकार का यज्ञ।

सरबजीव-पु० [सं० सर्वजीव] ब्रह्मा का एक नाम।

सरबत-पु० [अ० शर्बत] १ फल, मेवे आदि का, शक्कर की चासनी के साथ बना रस। २ भुने चीनी आदि का पीने लायक रस। ३ मुसलमानों में सगाई की एक रश्म। ४ इस रश्म के अनुसार कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाने वाला धन।

सरबती-पु० [अ० शरबती] १ कुछ पीलापन लिए लाल रंग का एक नगीना। २ एक प्रकार का वस्त्र। ३ नींबू की एक जाति। ४ एक प्रकार का आम। —वि० १ शरबत का, शरबत संबंधी। २ रसदार, सरस। ३ हलका पीला व सुर्ख।

सरबथा-देखो 'सरवथा'।

सरबदा-देखो 'सरवदा'।

सरबमंगळा-स्त्री० [सं० सर्वमंगला] तांत्रिकों की एक देवी।

सरबमुख-देखो 'सरवमुख'।

सरबर-१ देखो 'सरोवर' २ देखो 'सराबोर'।

सरबरस-पु० [सं० सर्व-रस]-ज्ञान। —वि० खारा।

सरबरा, सरबराह-स्त्री० [फा० सरबराह] १ खातिर, आव भगत। २ आवभगत करने की सामग्री। ३ प्रबन्ध, व्यवस्था। —वि० १ प्रबंधक, व्यवस्थापक। २ स्वागतकर्त्ता। ३ मजदूरों का मुखिया।

सरबराकार-पु० [फा० सरबराह] व्यवस्थापक, प्रबंधकर्त्ता।

सरबरित-पु० [सं० सर्वरत] १ शिव, महादेव। २ श्रीकृष्ण। ३ ईश्वर।

सरबरी-देखो 'सरवरी'।

सरबलील-वि० सब पदार्थ खाने वाला, सर्वभक्षी।

सरबस-देखो 'सरबस्व'।

सरबसहा-देखो 'सरवसहा'।

सरबसुख-पु० [सं० सर्व-सुखम्] पानी, जल।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरबसुहागण–स्त्री० सधवा, सौभाग्यवती ।
सरबस्व–देखो 'सरवस्व' ।
सरबांणी–देखो 'सरवांणी' ।
सरबूद–पु० खेमा, तम्बू ।
सरबेण, सरबेत–वि० [सं० सर्व] सब, सम्पूर्ण, समस्त ।
सरबेस, सरबेसर, सरबेस्वर–देखो 'सरवेस्वर' ।
सरब्ब–देखो 'सरब' ।
सरभंग–पु० [सं० शरभंग] १ श्रीराम के अनन्य भक्त एक महर्षि । २ एक परिगणित जाति । [सं० सरभंग] ३ अघोर पथ का नाम ।
सरभंगी–पु० [सं०] १ अघोर पंथ का अनुयायी व्यक्ति । २ सरभंग जाति का व्यक्ति ।
सरभ–पु० [सं० शरभः] १ भगवान विष्णु का एक नाम । २ श्रीराम की सेना का एक बन्दर । ३ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । ४ हाथी का बच्चा । ५ ऊट । ६ एक प्रकार का मृग । ७ सिंह, शेर । ८ आठ पैरों वाला एक अति बलवान जीव । ९ टिड्डी । १० पतंग, शलभ । ११ एक प्रकार का वर्ण वृत्त । १२ दोहे का एक भेद विशेष । १३ 'स्कंधांग' नामक गाथा का एक भेद । १४ छप्पय छन्द का ३१वां भेद ।–वि० पीत, पीला ।
सरभखड़ो–पु० अघोरी, औघड़ ।
सरभर–स्त्री० बराबरी, समानता ।
सरभरा, सरभरि, सरभरी–१ देखो 'सरबरा' । २ देखो 'सरबरी' ।
सरभि–देखो 'सुरभि' ।
सरभू–पु०[सं० शरभूः] स्वामि कार्तिकेय ।
सरभेस, सरभेसर, सरभेस्वर–पु० [सं० शरभेस्वर] एक शिव लिंग विशेष ।
सरमंदगी–स्त्री० [फा० शर्मंदगी] १ लज्जा, शर्म । २ पश्चाताप, पछतावा ।
सरमंदो–वि० लज्जित, शर्मिन्दा ।
सरम–स्त्री० [फा० शर्म] १ लज्जा, शर्म । २ इज्जत, प्रतिष्ठा । ३ संकोच । [सं० शर्मन्] ४ हर्ष, आनन्द । ५ घर, मकान । ६ सुख । ७ विष्णु । ८ देखो 'सम' ।
सरमणो (बो)–क्रि० १ युद्ध करना, झगड़ा करना । २ प्रतियोगिता करना । ३ बहस करना । ४ प्रयत्न या कोशिश करना ।
सरमधारी–वि० शर्म को धारण करने वाला, शर्मिला ।
सरमल्ल–पु० [सं० शरमल्ल] १ सारिका पक्षी, मैना । २ तीर चलाने में दक्ष, धनुर्धर ।
सरमसार–वि० [फा०] १ लज्जाशील, शर्मिला । २ लज्जित, शर्मिन्दा ।
सरमांन–पु० मान सरोवर ।
सरमा–स्त्री० [सं० शर्मन्] १ ब्राह्मणों की एक उपाधि, उपनाम । [सं० सरमा] २ कश्यप ऋषि की पत्नी का नाम । ३ विभीषण की पत्नी का नाम । ४ देवताओं की एक कुतिया । ५ कोई कुतिया ।
सरमाणो (बो)–क्रि० १ लज्जित होना, शर्माना । २ संकोच करना । ३ खिसियाना । ४ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना ।
सरमाळ, सरमालू–वि० लज्जा व शर्म रखने वाला ।
सरमावणो (बो)–देखो 'सरमाणो' (बो) ।
सरमासरमी–स्त्री० परस्पर लज्जा करने का भाव ।
सरमाहणो (बो)–देखो 'सरमाणो' (बो) ।
सरमिंदो–स्त्री० १ निन्दा, बदनामी । २ लज्जा, शर्म ।
सरमिंदगी–वि० (स्त्री० सरमिंदी) जिसे शर्म आती हो, लज्जित ।
सरमीलो–वि० (स्त्री० सरमीली) स्वभाव से लज्जाशील ।
सरयु–पु० [सं० श्रम] १ युद्ध, लड़ाई । २ वाद-विवाद, बहस । ३ प्रतियोगिता । ४ प्रयत्न, कोशिश ।
सरम्म–देखो 'सरम' ।
सरया–स्त्री० [सं० शर्वा] १ रात्रि, रात । २ अंगुली ।
सरयु, सरयू–स्त्री० [सं० सरयुः, सरयू] १ अयोध्या के निकट बहने वाली, पुराण प्रसिद्ध नदी । २ पवन, वायु, हवा ।
सरर–स्त्री० १ ध्वनि विशेष । २ जुलाहों के काम आने वाली बांस की छड़ी ।
सरराज–पु० [सं०] समुद्र, सागर ।
सरराटो–पु० हवा आदि तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि ।
सरराणो (बो)–क्रि० १ हवा का तेज गति से सर-सर करते बहना । २ तीर गोला आदि तेज गति से चलना ।
सरळ, सरल–पु० [सं० सरल] १ बाल, केश । २ चीड़ का वृक्ष । ३ एक प्रकार का पक्षी । ४ अग्नि । ५ भाला । ६ बिजली, विद्युत ।–वि० १ सीधा, सरल, अवक्र । २ तेज, तीव्र । ३ सहज, आसान । ४ छल-कपट रहित, भला । ५ ईमानदार ।
सरलउ–वि० दीर्घ, प्रलंब ।
सरळक–पु० [सं० शरलकम्] १ जल, पानी । २ एक प्रकार का सर्प ।
सरलगतजथा–स्त्री० डिंगल गीत रचना का एक विधान जिसमें दृष्टान्त अलंकार युक्त मालोपमा होती है ।
सरळता, सरलता–स्त्री० १ सीधापन, सहजता । २ निष्कपटता, भलाई । ३ सुगमता, सुविधा । ४ ईमानदारी, सच्चाई ।
सरळधर, सरलधर–पु० [सं० सरलधर] बादल ।
सरळा, सरला–स्त्री० [सं० सरला] १ काली तुलसी । २ चीड़

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का वृक्ष । ३ घोड़ों की एक नस्ल । –वि० १ एकदम सीधा । २ सहज, सुगम । ३ निष्कपट, निश्छल । ४ त्राहि-त्राहि की पुकार ।

सरसी–स्त्री० एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

सरसोक–१ देखो 'श्लोक' । २ देखो 'सिलोकी' ।

सरव–पु० [सं० शर्वः, सर्वः] १ शिव, महादेव । २ भगवान विष्णु । ३ श्रीकृष्ण । ४ ग्यारह रुद्रों में से एक । –वि० सब, समस्त ।

सरवकरणी–स्त्री० पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक ।

सरवकरता–पु० [सं० सर्वकर्त्ता] ब्रह्मा ।

सरवकरमा–पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम ।

सरवकांमद–स्त्री० [सं० सर्वकामद] भगवान विष्णु ।

सरवकांमदुका–स्त्री० [सं० सर्वकामदुक्] कामधेनु ।

सरवकाळ–पु० [सं० सर्वकाल] यमराज ।

सरवगंध–पु० [सं० सर्वगंध] १ हजारचो । २ कपूर । ३ केसर । ४ दालचीनी । ५ अगर । ६ नाग केसर । ७ लौंग । ८ शिलारस ।

सरवग–वि० जिसकी गति सर्वत्र हो ।

सरवगति–वि० जो सबको शरण व आश्रय देता हो ।

सरवगळ–पु० खग्रास–वि० पूर्ण रूप से ग्रस्त ।

सरवग्य–वि० [सं० सर्वज्ञ] सर्वज्ञ । –पु० १ ईश्वर । २ शिव, महादेव । ३ चौसठ भैरवों में से एक । ४ देवता ।

सरवग्यानी–पु० [सं० सर्वज्ञानी] सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता ।

सरवग्याता–पु० [सं० सर्वज्ञाता] १ सब कुछ जानने वाला । सर्वज्ञाता । २ ईश्वर । ३ शिव, महादेव ।

सरवग्रास–पु० [सं० सर्वग्रास] सूर्य या चांद का पूर्ण ग्रहण ।

सरवघो–वि० मूसलाधार ।

सरवचारी–वि० [सं० सर्वचारिन्] सब में विचरण करने या रमने वाला । –पु० शिव, महादेव ।

सरवचूड़–पु० [सं० सर्वचूड] महादेव का चूड़, चंद्रमा ।

सरवजित–पु० [सं० सर्वजित] १ इक्कीसवें संवत्सर का नाम । २ कश्यप ऋषि के एक पुत्र का नाम ।

सरवण–पु० [सं० शरवण] १ वह स्थान जहां स्कन्द का जन्म हुआ । २ एक प्रकार की घास । ३ देखो 'स्रवण' ।

सरवणति–स्त्री० सास-श्वसुर की सेवा करने वाली स्त्री ।

सरवणो(णौ)–क्रि० [सं० अवति, सरापयति] १ टपकना, चूअना । २ तेज गति से बोड़ना, भागना । ३ शाप देना ।

सरवतापन–पु० [सं० सर्वतापन] १ सूर्य, सूरज । २ कामदेव ।

सरवतोभद्र–पु० [सं० सर्वतोभद्र] १ विष्णु के रथ का नाम । २ चारों ओर से खुला भवन, प्रासाद । ३ एक प्रकार का सैनिक व्यूह । ४ योग का एक आसन या मुद्रा । ५ एक प्रकार का चित्रकाव्य । ६ नीम का पेड़ । ७ बांस । ८ जल के अधिष्ठाता वरुण देव का निवास स्थान ।

सरवतोमुख–पु० [सं० सर्वतोमुख] १ शिव, महादेव । २ अग्नि, आग । ३ जल, पानी । ४ ब्रह्मा । ५ स्वर्ग । ६ आकाश । ७ एक प्रकार का सैनिक व्यूह ।

सरवत्र–क्रि० वि० [सं० सर्वत्र] १ हर जगह, प्रत्येक स्थान पर । २ हर समय ।

सरवत्रग–पु० [सं० सर्वत्रग] १ वायु, पवन । २ मनु के एक पुत्र का नाम । ३ भीम का एक पुत्र ।

सरवत्रगामी–पु० [सं० सर्वत्रगामिन्] वायु, पवन ।

सरवथा–क्रि० वि० [सं० सर्वथा] १ सब प्रकार से, हर तरह से । २ बिल्कुल, निरा । ३ सर्वत्र ।

सरवदेवमयरथ–पु० [सं० सर्वदेवमयरथ] त्रिपुर नाश के लिये, विश्वकर्मा द्वारा रचित, शिव का दिव्य रथ ।

सरवदेवेस–पु० चौसठ भैरवों में से एक ।

सरवधारी–पु० [सं० सर्वधारिन्] १ शिव, महादेव । २ साठ संवत्सरों में से बाईसवां संवत्सर ।

सरवनांम–पु० [सं० सर्वनाम] व्याकरण में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

सरवनास–पु० [सं० सर्वनाश] विध्वंस, सत्यानाश ।

सरवप–पु० [सं० सर्षप] १ राई । २ सरसों । ३ एक तौल विशेष । ४ एक प्रकार का विष ।

सरवपत्नी–स्त्री० [सं० सर्वपत्नी] १ लक्ष्मी । २ पार्वती ।

सरवपरवत–पु० [सं० शर्व-पर्वत] कैलाश पर्वत ।

सरवपरि–अव्य० १ सब तरह से । २ बिल्कुल । ३ पूर्णतया । ४ सर्वत्र, सब जगह ।

सरवभक्षा, सरवभखा–स्त्री० [सं० सर्वभक्षिका] १ बकरी । २ अग्नि, आग ।

सरवमंगळा–स्त्री० [सं० सर्वमंगला] १ चौसठ योगिनियों में से एक । २ पार्वती । –वि० सबका कल्याण करने वाली ।

सरवमुख–पु० [सं० सर्वतोमुखम्] पानी, जल ।

सरवर–पु० [सं० शर्वर] १ अंधकार, अंधेरा । २ कामदेव, मनोज । ३ देखो 'सरोवर' ।

सरवरा–देखो 'सरवरा' ।

सरवरि–१ देखो 'सरवरी' । २ देखो 'सरोवर' ।

सरवरियो–देखो 'सरोवर' ।

सरवरी–स्त्री० [सं० शर्वरी] १ रात्रि, निशा । २ स्त्री, औरत । ३ हल्दी । ४ बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से चौंतीसवां संवत्सर ।

सरवरोकर–पु० [सं० शर्वरीकर] विष्णु ।

सरवरीदीप, सरवरीदीपक–पु० [सं० शवरीदीपक] चन्द्रमा, चांद ।

सरवरीपत (पति, पती)–पु० [सं० शवरीपति] १ शिव, महादेव ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ चन्द्रमा, चांद ।

सरवरूप–वि० [सं० सर्वरूप] सर्व स्वरूप ।

सरवलोकेस–पु० [सं० सर्वलोकेश] १ ब्रह्मा । २ शिव । ३ विष्णु । ४ कृष्ण ।

सरवलोह–पु० [सं० सर्वलोह] तांबा, ताम्र ।

सरवविरति–स्त्री० [सं० सर्वविरति] हिंसा आदि का सम्पूर्ण त्याग ।

सरववल्लभा (वल्लभा)–स्त्री० [सं० सर्ववल्लभा] १ वेश्या । २ कुलटा स्त्री ।

सरवविद–पु० [सं० सर्वविद्] १ शिव, महादेव । २ बुद्ध देव । –वि० सब जानने वाला, सर्वज्ञ ।

सरवव्यापक, सरवव्यापी–पु० [सं० सर्वव्यापिन्] १ सर्वव्यापी परब्रह्म, ईश्वर । २ शिव, महादेव । ३ विष्णु ।–वि० जो सर्वत्र व्याप्त है ।

सरवसहार–पु० [सं० सर्व-संहार] काल, मृत्यु ।

सरवस–१ देखो 'सरवस्व' । २ देखो 'सरवसहा' ।

सरवसहा, सरवसहा–स्त्री० [सं० सर्वंसहा] भूमि, धरा ।

सरवसाक्षी, सरवसाखी–पु० [सं० सर्वसाक्षिन्] १ ईश्वर, परमात्मा । २ अग्नि, आग । ३ वायु, पवन, हवा ।

सरवसाधन–पु० [सं० सर्व साधन] १ सोना, स्वर्ण । २ शिव, महादेव । ३ धन, दौलत ।

सरवस्त्री–पु० [सं० सर्वश्री] कई व्यक्तियों का एक साथ नाम होने पर सर्व प्रथम लगने वाला विशेषण, सर्वश्री ।

सरवस्व–वि० [सं० सर्वस्व] १ सब कुछ । २ पूर्ण, पूरा । ३ सार । ४ अमूल्य, महत्वपूर्ण ।–पु० समस्त धन-सम्पत्ति आदि ।

सरवहर–वि० [सं० सर्वहर] सर्वस्व हरण करने वाला ।–पु० १ शिव, महादेव । २ अग्नि, आग । ३ काल, मृत्यु । ४ धर्मराज, यमराज ।

सरवहार–पु० एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

सरवांग–पु० [सं० सर्वांग] १ सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव । २ शिव, महादेव ।

सरवांगासन–पु० [सं० सर्वाङ्गासन] योग के चौरासी आसनों में से एक ।

सरवांगीण–वि० [सं० सर्वाङ्गीण] १ सभी अंगों या अंशों से युक्त । २ सम्पूर्ण, पूरा । ३ सभी अंगों या भागों से संबंधित ।

सरवांणी–पु० [सं० शरः+वाणि] १ तीर का सिरा । २ धनुर्धर, तीरंदाज । ३ तीर बनाने वाला । ४ पैदल सिपाही । –स्त्री० [सं० सर्वाणी] ५ पार्वती, उमा । ६ दुर्गा, देवी ।

सरवाक–पु० [सं० शरावक] १ प्याला । २ दीपक ।

सरवाक्ष–पु० [सं० सर्वाक्ष] १ रुद्राक्ष । २ शिव ।

सरवातीत–वि० [सं० सर्व-अतीत] सब से परे, दूर, बाहर ।

सरवात्मा–पु० [सं० सर्वात्मा] १ सब की आत्मा । २ परमात्मा, ईश्वर । ३ शिव ।

सरवानुभूति–पु० भूतकाल के छठे तीर्थंकर का नाम । (जैन)

सरवानुवाद–पु० [सं० सर्वानुवाद] सम्पूर्ण अनुवाद ।

सरवारण–स्त्री० [सं० शरवारण] तीरों की बौछार रोकने की ढाल ।

सरवारथसिद्धि–पु० [सं० सर्वार्थसिद्धि] १ सबसे ऊपर का लोक, सर्वोच्च देवस्थान । २ गौतम बुद्ध । ३ समस्त अर्थों की सिद्धि । ४ तत्त्वार्थ सूत्र की टीका का नाम ।

सरवारा, सरवारी–स्त्री० हरड़े, हरीतकी ।

सरवालि–पु० बाण, तीर ।

सरवाळै सरवालै–क्रि० वि० अंत में, आखिर में ।

सरवावसु–पु० [सं० सर्वावसु] सूर्य की एक किरण का नाम ।

सरवि–वि० [सं० सर्व] सब, समस्त ।

सरविद्या–स्त्री० [सं० शर-विद्या] धनुर्विद्या ।

सरवेत–वि० [सं० सर्वः] १ सब, समस्त । २ सर्वस्व ।

सरवेस, सरवेस्वर–पु० [सं० सर्वेश्वर] १ ब्रह्मा । २ ईश्वर । ३ शिव, महादेव । ४ विष्णु । ५ जो सब का स्वामी है ।

सरवीड़ो–वि० प्रतिध्वनि करने वाला । आवाज वापस देने वाला ।

सरवो, सरवो–पु० [सं० स्रुवा] १ हवनादि में घी की आहुति देने की लकड़ी की छोटी करछी । २ जल पात्र से पानी लेने का छोटा लोटा या पात्र ।–वि० (स्त्री० सरवी) शीघ्र सुनने वाला ।

सरव्य–पु० [सं० शरव्य] १ लक्ष्य, निशाना । २ तीरंदाज ।

सरव्वरी–देखो 'सरवरी' ।

सरस पु० [सं०] १ तालाब, जलाशय । २ सिरस का वृक्ष । [देश०] ३ रीति, रश्म । ४ छप्पय छंद का ३५ वां भेद । ५ एक वर्ण वृत्त । ६ "मोहणी" नामक छन्द ।–वि० १ रसपूर्ण, रसीला । २ समान, तुल्य । ३ जोश पूर्ण, जोशीला । ४ प्रीति सहित, प्रेम पूर्ण । ५ पल्लवित, हरा भरा । ६ अपेक्षाकृत अच्छा । ७ सुन्दर, मनोहर । ८ सजल, आर्द्र, नम । ९ स्वादिष्ट, जायकेदार । १० उत्तम, पवित्र । ११ मधुर, मीठा । १२ भाव पूर्ण । १३ श्रेष्ठ, उत्कृष्ट । १४ गुणकारी, लाभप्रद । १५ ताजा । १६ आनन्द पूर्वक, प्रेम सहित । १७ सुखप्रद । १८ अत्यधिक, बहुत । १९ देखो 'सरस्वती' ।

सरसइ, सरसई, सरसउ–देखो 'सरस्वती' ।

सरसज्या–स्त्री० [सं० शर-शय्या] तीरों की सेज ।

सरसणी (णो)–क्रि० १ होना । २ हरा भरा होना । ३ रसपूर्ण होना, रसयुक्त होना । ४ प्रवाहित होना । ५ बरसना । ६ आनन्दित होना, प्रफुल्लित होना । ७ गुणकारी या लाभदायक होना ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरसत (ति, ती, त्ति, त्ती)–देखो 'सरस्वती'।

सरसतीसयन–पु० आश्विन मास के प्रारंभ में मूल नक्षत्र व श्रवण नक्षत्र पर्यन्त का समय।

सरसर, सरसराट–पु० [अनु०] १ वायु की मंदगति से उत्पन्न ध्वनि। २ सर्प आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि।–क्रि० वि० धीरे-धीरे।

सरसराणो (बो)–क्रि० १ सर-सर ध्वनि होना। २ सनसनाना।

सरसरी–क्रि०वि० [फा० सरासरी] १ जल्दी। २ साधारणतया, मोटे तौर पर। –स्त्री० [सं० सुरसरी] गंगा।

सरसव (वि, वी)–देखो 'सरसू'।

सरसवती (बी)–देखो 'सरसती' (बी)।

सरसवान–पु० समुद्र, सागर।

सरसवेल–पु० [सं० सर्षपतैलम्] सरसों का तेल।

सरसाणी–देखो 'सरसावणी'।

सरसा–वि० १ स्वादिष्ट, रसपूर्ण। २ श्रेष्ठ, उत्तम।

सरसाणी (बी)–क्रि० १ हराभरा होना। २ शोभित होना। ३ मालूम होना, प्रतीत होना। ४ खुश होना, प्रफुल्लित होना। ५ बढ़ना, फैलना। ६ होना। ७ फैलाना, बढ़ाना। ८ दिखाना, प्रकट करना, बतलाना। ९ बजाना, ध्वनि करना।

सरसाद्दन–पु० अक्तिरस।

सरसाळ–वि० १ महत्वपूर्ण, महत्व की। २ फायदे की, फायदे मन्द, लाभप्रद। ३ रसपूर्ण, रसयुक्त। ४ आनन्द दायक।

सरसावखो–वि० (स्त्री० सरसावणी) १ रसिक, रसीला। २ प्रकटित। ३ शोभित। ४ आनन्ददायक। ५ मधुर, मीठा। ६ प्रकट करने वाला।

सरसावणी (बी)–देखो 'सरसाणी' (बी)।

सरसि–वि० १ मीठा, मधुर, रसपूर्ण। २ सुसज्जित।

सरसिज–वि० १ ललाई लिये हुए श्वेत रंग का। २ जो ताल में होता हो। ३ काला, श्यामक। ४ लाल, रक्तक। –पु० कमल।

सरसिजजोनि (योनि)–पु० [सं० सरसिजयोनि] कमल से उत्पन्न होने वाले, ब्रह्मा।

सरसिव–देखो 'सरसू'।

सरसी, सरसीऊ–स्त्री० [सं० सरसी] १ तालाब, जलाशय। २ बांध। –वि० बराबर, समान।

सरसीय–वि० १ समान, सदृश। २ देखो 'सरसिज'।

सरसीरह, सरसीरुह–पु० [सं० सरसीरुह] १ कमल। २ कर्नाटक पद्धति का एक राग।

सरसुति, सरसुती (त्ति,ती)–देखो 'सरस्वती'।

सरसू–स्त्री० [सं०सर्षप] राई से कुछ बड़े दानों वाला एक प्रसिद्ध तिलहन।

सरसूयण–देखो 'सूयंण'।

सरसेज्या, सरसेजा–देखो 'सरसज्या'

सरसेरो–वि० अधिक, ज्यादा।

सरसं–वि० समान, तुल्य, सदृश।

सरसंयो–पु० ऊट।

सरसो–वि० [सं० सदृश्] समान, तुल्य।

सरस्यूं–देखो 'सरसू'।

सरस्वत–वि० [सं० सरस्वत्] १ रसदार, रसीला। २ सुन्दर, मनोहर। ३ भाव पूर्ण। –पु० १ समुद्र, सागर। २ नदी, सरिता। ३ झील। ४ वायु पवन।

सरस्वती–स्त्री० [सं०] १ सत्वगुणों से सम्पन्न वाणी एव ज्ञान की अधिष्ठात्री एक देवी, शारदा। २ वाणी, गिरा। ३ भाषा। ४ भारत में बहने वाली एक अति प्राचीन नदी। ५ कोटेश्वर के पर्वत से निकल कर कच्छ की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी। ६ गिरनार के जगलों में बहने वाली एक अन्य नदी। ७ तुंगी नदी को पूर्वोत्तर नदी का नाम। ८ साबरमती नदी का एक नाम। ९ गंगा-यमुना के संगम के समय मिलने वाली नदी। १० गौ, गाय। ११ दशनामी संन्यासियों की एक शाखा। १२ इस शाखा का कोई व्यक्ति। १३ चौसठ योगिनियों में से एक। १४ हठ योग की सुषुम्ना नाड़ी। १५ सोमलता। १६ दुर्गा का एक नाम। १७ नदी, सरिता। १८ उत्तमा स्त्री। १९ बौद्धों की एक देवी। २० कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी।

सरस्वतीकंठाभरण–पु० [सं०] १ ताल के साठ भेदों में से एक। २ एक प्राचीन पाठशाला जो धारानरेश भोज द्वारा स्थापित की हुई थी।

सरस्स–देखो 'सरस'।

सरहंग–पु० [फा०] १ सेनापति। २ पैदल सिपाही। ३ चोबदार। ४ कोतवाल। ५ पहलवान, मल्ल।

सरह–स्त्री० [अ० शरह] १ किसी विषय की टीका, व्याख्या। २ दर, भाव। ३ ऋतु विशेष में होने वाला, फल तथा फल विशेष की ऋतु। ४ ऋतु फल का आस्वादन।–वि० १ स्थिर, अचल। २ देखो 'सरभ'। ३ देखो 'सरहद'। ४ देखो 'सुरभि'।

सरहद–स्त्री० [अ०] १ किसी देश, राज्य या प्रदेश की सीमा। हद। २ सीमान्त प्रदेश।

सरहदी–वि० [अ०] १ सीमा का, सीमा संबंधी। २ सीमा रक्षक।

सरहर, सरहरउ–देखो 'सिरहर'।

सरहरति, सरहरी–स्त्री० लगातार सीधी व समान रूप से बहने वाली नदी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरहा–स्त्री० [सं० सुरभि] १ गाय, गौ। २ पृथ्वी।
सरहो–पु० एक वर्ण वृत्त विशेष।
सरांई–स्त्री० एक प्रकार का, मिट्टी का पात्र।
सरांणी–देखो 'सिरहाणी'।
सरांपती–पु० [सं० सर-पति] १ समुद्र, सागर। २ तालाब, सरोवर।
सरांराज–पु० महासागर।
सरा–स्त्री० १ प्रशंसा, आनन्द। २ फल-फूल या फसल विशेष का मौसम, ऋतु। ३ ऋतुफलों का आस्वादन। ४ भू-भाग। ५ किला, दुर्ग। ६ महल, प्रासाद। ७ सराय।
सराइ (ई, ही)–स्त्री० १ 'बलोच' के अन्तर्गत एक मुसलमान कौम। २ देखो 'सराय'।
सराग (गि, गी)–वि० १ राग सहित। २ मधुर आवाज में। ३ रसपूर्ण, प्रेम सहित, सप्रेम। ४ स्नेह करने वाला, प्रेमी। ५ आसक्त।
सराड़ (ड़ौ)–पु० १ तीव्र भागने की क्रिया या भाव। २ तेज, दौड़। ३ घोड़े की तेज भागने की चाल। ४ तेज गति से उत्पन्न ध्वनि।
सराजांम–पु० [फा० सरंजाम] १ व्यवस्था, प्रबन्ध। २ तैयारी। ३ सामान, सामग्री। ४ वैभव।
सराणौ (णी)–क्रि० १ प्रशंसा करना, सराहना करना। २ सम्पादित करना। ३ भोजन करना। ४ तीर्थस्थानों में अस्थि विसर्जन करना।
सराध, सराध–देखो 'श्राद्ध'—पक्ष, पख = 'श्राद्धपक्ष'।—पूनम= 'श्राद्धपूनम'।
सरापंज–पु० १ तीरों का घेरा, शरकोटा। २ षड़यन्त्र।
सराप–पु० [सं० शापः] १ अहित सूचक शब्द, बद्दुआ, शाप। २ शपथ। ३ गाली। ४ निंदा, भर्त्सना। ५ दोष, कलंक ६ देखो 'सराफ'।
सरापणौ (णी)–क्रि० १ शाप देना, बद्दुआ देना। २ धिक्कारना, निंदा या भर्त्सना करना।
सरापु–देखो 'सराप'।
सराफ–पु० [अ०सर्राफ]स्वर्ण-चांदी के आभूषणों का व्यापारी।
सराफा (बाजार)–पु० १ सोने-चांदी का व्यापार, व्यवसाय। २ वह स्थान जहां सोने-चांदी का व्यवसाय होता है।
सराफी–वि० १ सोना-चांदी या आभूषणों का व्यवसाय। २ सर्राफ।
सराब–पु०[अ०शराब]मद्य, मदिरा। —खांनौ–पु० मदिरालय। —खोरौ, खवार–वि० शराब पीने का आदी, शराबी।
सराबी–वि० [अ० शराबी] शराब पीने वाला, मद्यप।
सराबोर–वि० १ तरबतर, लथपथ। २ व्याप्त।
सराय–स्त्री० [फा०] १ यात्रियों के ठहरने का स्थान, धर्म शाला, मुसाफिर खाना। २ ठहरने का स्थान।
सरायचौ–देखो 'सिरायचौ'।
सरायत–पु० [अ०] १ प्रवेश। २ प्रधान। ३ देखो 'सिरायत'।
सरारि, सरारी–स्त्री० १ टिटहरी नामक बड़ी चिड़िया। –पु० २ श्रीराम की सेना का एक यूथपति।
सरारीप–पु० धनुष, कमान।
सरारो–वि० १ श्रेष्ठ, उत्तम। २ समान, बराबर।
सरालउ–वि० पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण।
सराव–पु० [सं० शराव] १ कटोरा। २ दीपक। ३ मिट्टी का बना मद्य पात्र।
सरावगौ–पु० [सं० श्रावक] १ जैन धर्मावलंबी एक जाति विशेष। २ इस जाति का व्यक्ति।
सरावणौ (वौ)–देखो 'सराणौ' (वौ)।
सरावर सरावरण–पु० [सं० शरावर] १ ढाल। २ कवच।
सरावाप–स्त्री० [सं० शर-आवाप] धनुष, कमान।
सरास, सरासण, सरासन–पु० [सं० शरासन] १ धनुष, कमान। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सरासर–अव्य० [फा०] १ पूर्णतया, बिल्कुल। २ साक्षात, प्रत्यक्ष। ३ सर्वत्र।
सरासरी–स्त्री० १ शीघ्रता, तीव्रता। २ स्थूलरूप से, अनुमानतः। ३ देखो 'सरासर'।
सराह–स्त्री० १ प्रशंसा, सराहना, तारीफ। २ कीर्ती, यश। ३ धर्मशाला, सराय।
सराहणौ (वौ)–देखो 'सराणौ' (वौ)।
सरि–स्त्री०[सं०सरिः] १ नदी, सरिता। [सं० सर] २ माला। ३ आर्या गीति (खंधाण) नामक गाथा का एक भेद। ४ ललाट पर बनाई जाने वाली खड़ी रेखा, तिलक। –वि० १ समान, तुल्य। २ देखो 'सरीर'। ३ देखो 'सर'।
सरिका–स्त्री० [सं०] १ मुक्ता, मोती। २ मोतियों की माला। ३ लाल-तलैया। ४ रत्न।
सरिखउ, सरिखु, सरिखौ–देखो 'सारीखौ'।
सरिण–देखो 'सरण'।
सरित–देखो 'सरिता'। —पत, पति, पती='सरितापति'।
सरितवरा (वरा)–देखो 'सरितिवरा'।
सरिता–स्त्री० [सं० सरित्] १ नदी। २ धारा। —पत, पति, पती, पत्त, पत्ति, पत्नी—पु० समुद्र, सागर।
सरिति–देखो 'सरिता'।
सरितिवरा (सरिद्वरा)–स्त्री० [सं० सरतवरा] गंगा नदी।
सरियंद–पु० [सं० सुरेन्द्र] इन्द्र
सरियउ–देखो 'सरियौ'।
सरियत (त्त)–पु० [अ०] १ धार्मिक कानून। २ धर्मशास्त्र। ३ मार्ग, रास्ता। ४ एबज, बदौलत। ५ वफादारी, स्वामी धर्म। ६ चौड़ा रास्ता, राज-मार्ग।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरियावै–स्त्री० राम की अनन्य भक्त एक कुम्हारी, स्त्री ।
सरियो–पु० १ सरकंडों का पूआल । २ लोहे की लंबी छड़ । ३ देखो 'सर' ।
सरिवरि–स्त्री० १ समानता, बराबरी । २ पक्ष, विपक्ष ।
सरिस, सरिसउ, सरिसि–क्रि०वि० १ साथ में, साथ । २ देखो 'सारिखो' ।
सरिसव–देखो 'सरसू' ।
सरिसु, सरिसौ–देखो 'सारिखो' ।
सरिस्ता–पु० [फा०] किसी विभाग का कार्यालय, महकमा ।
सरी–स्त्री० १ क्यारियें सींचने के पानी की नाली । २ एक अव्यय जो अपनी बात पर जोर देने के लिये प्रयुक्त होता है । ३ देखो 'स्त्री' । ४ देखो 'सरि' । ५ देखो 'सिरी' ।
सरीकंठ–पु० [सं० श्रीकंठ] गले का एक आभूषण, कंठी ।
सरीक–वि० [अ० शरीक] १ सम्मिलित, शामिल । २ सहायक, मददगार, साथी । ३ हिस्सेदार, भागीदार । ४ देखो 'सारीखो' ।
सरीकत, सरीकता–स्त्री० [अ० शरीकत] १ शरीक होने की अवस्था या भाव । २ साझा, हिस्सा ।
सरीकी–वि० १ साथ रहने वाला, साथी । २ रिश्तेदार, संबंधी ।
सरीकौ, सरीख, सरीखो–१ देखो 'सारीखो' । २ देखो 'सरीक' ।
सरीखइ, सरीखउ, सरीखु, सरीखो–देखो 'सारीखो' ।
सरीगत–देखो 'सरीकत' ।
सरीगतनामौ–पु० साझे संबंधी शर्तों वाला पत्र ।
सरीख सरीखो–क्रि०वि० १ रीति से, ढग से, नियमानुसार । २ देखो 'सरीयत' ।
सरीपाख–पु० चंदन ।
सरीफ–पु० [अ० शरीफ] १ भला व शिष्ट व्यक्ति । २ कुलीन व्यक्ति । –वि० उत्तम, पवित्र ।
सरीयत–देखो 'सरियत' ।
सरीर–पु० [सं० शरीर] १ किसी प्राणी की देह, काया, तन । २ मृत शरीर, शव । ३ शारीरिक शक्ति । ४ मस्तिष्क । —ज–पु० कामदेव, रोग, बीमारी, पुत्र, बेटा, काम वासना । —वृति–स्त्री० आजीविका । —संसकार, संस्कार–पु० गर्भाधान से अन्त्येष्टि तक के शरीर के सोलह सस्कार । शरीर को स्वस्थ रखने की क्रिया ।
सरीरक–पु० [सं० शरीरक] १ तन, देह, शरीर । २ छोटा शरीर । [सं० शरीरकः] ३ जीवात्मा ।
सरीरांत–पु० [सं० शरीरान्त] १ शरीर का अंत, मृत्यु, मौत । २ अंत्येष्टि ।
सरीस–१ देखो 'सरेस' । २ देखो 'सरो' । ३ देखो 'श्रीकंठ' । ४ देखो 'सारीखो' । ५ देखो 'सरि' ।
सरीसप–पु० [सं० सरीसृप] सांप, सर्प ।
सरी-सरी–स्त्री० संगीत के सात स्वरों का आलाप, रागालाप ।
सरीसो–देखो 'सारीखो' ।
सरु–क्रि०वि० [अ० शुरूअ] प्रारम्भ, आरम्भ, आदि । –पु० [सं० शर] १ बज्र । २ तीर, बाण । ३ अस्त्र-शस्त्र । ४ क्रोध, गुस्सा । ५ एक गंधर्व का नाम । ६ तलवार की मूठ । –वि० १ वास्तविक, सही । २ देखो 'सरो' । ३ देखो 'सारु' ।
सरुठ–वि० क्रोध पूर्ण, सक्रोध ।
सरूप–पु० [सं० स्वरूप] १ नाथ सम्प्रदाय के योगियों का कुण्डल विशेष । २ हाल, वृत्तान्त । ३ तरह, भांति, प्रकार । ४ देखो 'स्वरूप' । –वि० १ सुन्दर, मनोहर । २ समान, तुल्य । ३ समरूप, हमशक्ल ।
सरूपवान (वांन)–देखो 'स्वरूपवांन' ।
सरूपसाही–पु० मेवाड का एक प्राचीन सिक्का ।
सरूपांत, सरूपात–देखो 'सरूपोत' ।
सरूपियो, सरूपो–देखो 'सरूप, स्वरूपी' ।
सरूपोत–क्रि०वि० १ प्रारंभ में । २ पहले-पहल । ३ सर्व प्रथम । ४ शुरूआत, पहल ।
सरूपौ–पु० १ नजारा, आश्चर्यजनक बात । २ देखो 'सरूप' ।
सरूभौ–देखो 'सलूभो' ।
सरेज–वि० श्रेष्ठ, उत्तम । –पु०[सं० शरेज] स्वामिकार्तिकेय ।
सरेव–स्त्री० रीति-रिवाज, प्रथा ।
सरेस–पु० [सं० शिरीष] १ एक वृक्ष विशेष । २ एक लसदार पदार्थ ।
सरें–१ देखो 'सिरें' । २ देखो 'सरह' ।
सरोकार–पु० [फा०] १ लगाव, मतलब, संबंध । २ मेल-मुलाकात ।
सरोकारी–वि० सरोकार रखने वाला ।
सरोख–देखो 'सरोस' ।
सरोढ़–वि० सीधा-सादा, भला ।
सरोज–पु० [सं०] १ कमल । २ श्वेत, सफेद । ३ लाल, रक्त ।
सरोजिनी–स्त्री० [सं०] १ कमल वाला तालाब । २ कमल का पौधा । ३ ब्रह्मा । ४ गौतम बुद्ध । –वि० कमल का, कमल संबंधी ।
सरोतर, सरोतरि, सरोतरो–वि० समान, बराबर ।
सरोतो–पु० सुपारी आदि काटने का उपकरण । –वि० समान; बराबर ।
सरोद–स्त्री० १ एक प्रकार का तार वाद्य । २ देखो 'सरोदो' ।
सरोदो, सरोधो–पु० [स० स्वरोदय] नासास्वर (नाक का श्वास) से शुभाशुभ फल बताने की विद्या, सगुन ।
सरोबर, सरोबार–वि० १ तरबतर । २ समान, सदृश । ३ देखो 'सरोवर' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरोभर–वि० समान, तुल्य ।
सरोरुह–पु० [सं० सरोरुह] कमल ।
सरोली–पु० एक प्रकार का आम ।
सरोवर–पु० [सं सर-वर] १ सागर, समुद्र । २ तालाब, जलाशय । ३ झील । –वि० समान, तुल्य, बराबर । –क्रि०वि० साथ-साथ, परस्पर ।
सरोस–पु० [सं०-सरोष] १ जोश, उमंग । २ आवेग । ३ तेज । –वि० १ जोशपूर्ण । २ नाराज, क्रोधित ।
सरोसरि, सरोसरी–वि० १ एक समान, बराबर । २ ठीक-ठीक, साधारण रूप में ।
सरौ, सरौं–पु० १ कंघे की तरह दांतों वाला एक कृषि उपकरण, दंताली । २ प्रथा, परिपाटी ।–वि० सही, सत्य ।
सरोवर–देखो 'सरोवर' ।
सलंज–पु० शामियाने का खंभा ।
सलभ–वि०[सं० सुलभ] सहज, सुलभ ।
सल, सल, सलु–पु० १ समतल या सपाट वस्तु में पड़ने वाले मोड़, सलवटें, सिकुड़न, शिकन । २ वृद्धावस्था, क्रोधादि के कारण चमड़ी में पड़ने वाली, रेखाएँ, झुर्री । ३ प्रपंच, बंधन । ४ नाश, संहार । ५ खलिहान में पड़ी गेहूं की कटी फसल का ढेर । ६ दुश्मनी, शत्रुता । ७ ऊंट । ८ भाला, बरछी । ९ कष्ट, पीड़ा । १० ब्रह्मा । –वि० १ सीधा, सरल । २ नोकदार, नुकीला । ३ मारने वाला, वध करने वाला ।
सलइ–पु० [सं० शल्लकी] एक प्रकार का वृक्ष ।
सलकजा–देखो 'सलकीजा' ।
सलकणो (बो)–क्रि० १ खिसकना, भागना, चुपके से भाग जाना । २ चमकना, दमकना । ३ हिलना, चल-विचल होना । ४ अक्र गति से चलना ।
सलकी, सलकीजा–स्त्री० मछली ।
सलवकणो (बो)–देखो 'सलकणो' (बो) ।
सलक्षण, सलक्षण–देखो 'सुलक्षण' ।
सलगणो (बो)–देखो 'सिलगणो' (बो) ।
सलगाणो (बो)–देखो 'सिलगाणो' (बो) ।
सलग्गणो (बो)–देखो 'सिलगणो' (बो) ।
सलज (ज्ज)–वि० लज्जाशील, सुशील ।
सलजणो (बो)–क्रि०१ लज्जित होना, शर्माना । २ संकोच करना ।
सलज्जणो (बो)–देखो 'सलजणो' (बो) ।
सलटणो (बो)–क्रि० १ किसी समस्या का मिटना, कठिन कार्य से निपटना । २ कार्य पूर्ण होना । ३ काम सधना, सफलता मिलना । ४ छुटकारा पाना, मुक्त होना ।
सलटाणो(बो), सलटावणो (बो)–क्रि० १ निपटाना । २ सुलझाना । ३ सुधारना । ४ करना, साधना । ५ मुक्ति या छुटकारा दिलाना ।
सलणो (बो)–देखो 'सुलणो' (बो) ।
सलत, सलता–देखो 'सरिता' ।
सलतनत–स्त्री०[अ०] १ शासन, हुकूमत । २ राज्य, बादशाहत ।
सलताळ–स्त्री० चमक-दमक ।
सलदी (ही)–देखो 'सरहदी' ।
सलप–वि० अल्प, थोड़ा ।
सलपळाट, सलपळाट (हट), सलफळाट सलफळाट (हट)–स्त्री० १ हवा के झोंके से पौधे आदि में होने वाली हल-चल, कम्पन । २ बल खाते हुए हिलने-डुलने की क्रिया । ३ फुसफुसाहट । ४ अधिक चुस्ती या फुर्ती दिखाने की स्थिति । ५ चचलता । ६ चित्त की खिन्नता ।
सलबं–क्रि०वि० पास, निकट ।
सलबो (डो)–वि० (स्त्री० सलबी) १ पास, करीब । २ लाभान्वित ।
सलभ–पु०[सं० शलभ:]१ टिड्डी । २ पतंगा । ३ देखो 'सुलभ' ।
सलभो–१ देखो 'सलबो' । २ देखो 'सलभ' ।
सलल–देखो 'सलिल' ।
सलळणो (बो), सललणो (बो)–देखो 'सालुळणो' (बो) ।
सलवट–स्त्री० १ शिकन, सिकुड़न, सिलवट । २ चाबुक, कोड़ा ।
सलवळ–स्त्री० १ रेंगकर चलने की क्रिया । २ सर्प आदि जीवों के शरीर से होने वाली हरकत, हलचल । ३ ऐसी हरकत से उत्पन्न ध्वनि । ४ अनरव, कोलाहल । ५ अफवाह, चर्चा, कानाफुसी । ६ हलचल, स्फुरन । ७ स्वागत, बंदगी, सेवा । ८ बिजली की चमक ।
सलवळणो (बो), सळवळणो (बो)–क्रि० १ रेंगना, रेंग कर चलना । २ पैदा या उत्पन्न होना । ३ कांपना, धूजना । ४ गतिमान होना, हिलना-डुलना । ५ सर्प आदि जीवों के शरीर में हलचल या हरकत होना ।
सलवळाट–देखो 'सलवळ' ।
सलवाट–देखो 'सिलावट' ।
सलवार, सलवार–स्त्री० १ पजामें की तरह का एक अधोवस्त्र । २ वह मादा ऊंट जिसके साथ उसका बच्चा भी हो ।
सलवी–स्त्री० वह भेड़ जिसकी ऊन काटी नहीं गई हो ।
सलवो–पु० १ संशय, शक, संदेह । २ कपट, धोखा । ३ देखो 'सलबो' ।
सलसळणो (बो), सलससणो (बो)–क्रि० १ हिलना-डुलना, हरकत करना । २ लचकना, डोलना । ३ तरंगित होना । ४ ढीला या खोखला होना ।
सलसूत्र–पु० सलाह सूत्र ।
सलह–देखो 'सिलह' ।
सलहटी–देखो 'सिलहटी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सलहदार, सलहिदार, सलहीदार–देखो 'सिलहदार'।

सलाम, सलामडी–पु० [अ० सलाम] १ नमस्कार, अभिवादन। २ वंदना, स्तुति।

सलामत–वि० [अ० सलामत] १ एक मांगलिक सम्बोधन। २ जो सकुशल हो। ३ सुरक्षित। ४ पूर्ण, पूरा। ५ जीवित, जिन्दा। ६ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। ७ मौजूद, उपस्थित।

सलामति (ती)–स्त्री० [अ० सलामती] १ सलामत होने की अवस्था या भाव। २ अमन, चैन, शांति। ३ स्वस्थता, तन्दुरुस्ती। ४ देखो 'सलामत'।

सलामी–स्त्री० [अ० सलामी] १ प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन की क्रिया। २ किसी उच्चाधिकारी का सैनिक दल द्वारा किया जाने वाला स्वागत। ३ किसी के स्वागत में किया गया कार्य, तोप, आतिशबाजी आदि। ४ नित्य सेवा चाकरी करने वाला। ५ एक निश्चित रकम जो अधीनस्थ जमींदार अपने सार्वभौम शासक को कर के रूप में देता था।

सला'–देखो 'सलाह'।

सलाई, सळाई–स्त्री० [सं० शलाका] १ किसी धातु की बनी पतली छड़। २ कपड़ा, जरसी आदि बुनने का उपकरण, सूआ। ३ सीखो, काड़ो। ४ सालने की मजदूरी। ५ पत्नी की बहन, साली। ६ स्वर्णकारों का एक औजार विशेष।

सलाक, सलाक (ख)–पु० [फा० सलाख] १ बाण, तीर। २ सर्प गति से बिजली की चमक। ३ मांस युक्त हड्डी का टुकड़ा जो साथ में पकता है। ४ सुरमा डालने की तीली। ५ तृण, तिनका। ६ रेखा, लकीर।

सलाकी–पु० [सं० शलाका] १ लोह या लकड़ी की सलाका। २ सुरमा लगाने की तीली। ३ तीर, बाण। ४ भाला, बरछी। ५ खाने की तीली, लाडी। ६ पांव की नली की हड्डी। ७ कोयल। ८ दांत साफ करने की कूंची। ९ जूआ खूत का एक पासा। १० पीड़ा, दर्द, चीस।

सलाड़णो(बो)–क्रि०१ मारना, पीटना। २ देखो 'सिलाड़णो'(बो)

सलाज–वि० लज्जावान, लज्जालु।

सलाजीत–देखो 'सिलाजीत'।

सलाट, सलाटु, सलाटू–पु० [सं० शिलाघटक] १ दफन या अन्त्येष्टि के स्थान पर बनाया जाने वाला चबूतरा। इमारत, स्मारक। २ सिलावट। ३ बीस तुला के वजन का नाम। ४ कच्चा फल।

सलात–स्त्री० बिजली की चमक।

सलाबति, सलाबती–१ देखो 'सलामत'। २ देखो 'सलामति'।

सलाभोलि–पु० [सं० शलाभोलि] ऊंट।

सलाव–देखो 'सिळाव'।

सलासूत–पु०१ राय, सलाह। २ विचार-विमर्श।

सलाह–स्त्री० [अ०] १ राय, सम्मति। २ विचार-विमर्श। ३ प्रशंसा, सराहना। ४ स्वाभिमान। ५ चापलूसी। ६ इच्छा, अभिलाषा। ७ सेवा, परिचर्या।–वि०१ लाभयुक्त। २ सुन्दर, अच्छा।

सलाहसूत–पु० विचार-विमर्श।

सलिहो–स्त्री० द्रौपदी का एक नाम।

सलिता–देखो 'सरिता'।

सलिताकंत–पु० समुद्र।

सळियळ–वि० १ सम्पूर्ण, पूर्ण रूपेण। २ देखो 'सलिल'।

सळियो, सळियी वि० (स्त्री० सळी) १ घास-फूस, कंकर-पत्थर से रहित। २ स्वच्छ, साफ। ३ सीधा, सरल।

सलिल, सलिलि–पु० [सं०] जल, पानी।–चर–पु० जलचर प्राणी।–ज–पु० कमल।–जन्मा–पु० कमल। कीचड़। सिंघाड़ा। जल-चर।–निधि, पत, पति, पती, राज–पु० समुद्र, सागर, वरुणदेव।

सलिलेंवर, सलिलेंद्र, सलिलेस, सलिलेसर (सुर, स्वर)–पु० १ जल का देव, वरुण। २ समुद्र।

सळी, सळो–स्त्री०१ साही नामक, कांटेदार जीव। २ घास या बांस की नुकीली फांस। ३ देखो 'सिळी'।

सलीकावंद, सलीकामंद–वि० शिष्ट, सभ्य।

सळीको–पु० रह-रह होने वाली पीड़ा, चीस, टीस।

सलीको–पु० [अ० सलीक:] १ शिष्टता, सभ्यता। २ हुनर, लियाकत। ३ योग्यता, तमीज। ४ प्रबंध, व्यवस्था। ५ संधि, सुलह, समझौता। ६ सुघड़ापा।

सळोटो, सळोटो–पु० रेंग कर चलने वाला जीव।

सलीण–वि० मुग्ध, मोहित।

सलीता–देखो 'सरिता'।

सलीतो–पु० सामान डाल कर ऊंट पर लादने का जूट का लम्बा थैला।

सलीम–वि० [अ०] १ शांत, गम्भीर। २ शांतिप्रिय; सहनशील।

सलीमकोट–पु० वह स्थान जहां प्रतिष्ठित सामन्तों को नजर-बन्द रखा जाता था। (जोधपुर)

सलीस–वि० [सं०] १ खिलाड़ी। २ लंपट; कामुक।

सलुक–देखो 'सलूक'।

सलुणो–देखो 'सलूणो'।

सलूंभणो (बो)–क्रि० लुभना, लटकना।

सलूंभो–वि० लाभयुक्त, सलाभ।

सळू–पु० १ गेहूं, जो आदि की बाली पर होने वाले तीक्ष्ण रेशे, बाल। २ कांटा। ३ देखो 'साळू'।

सलूक–पु० [अ०] १ व्यवहार, बर्ताव। २ मेल-जोल, मेल मिलाप। ३ शिष्टता, सभ्यता; अदब। ४ विचार। ५ निर्वाह। ६ प्रबन्ध, व्यवस्था। ७ ढंग, तौर-तरीका।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सळझणी (बो)–देखो 'सुळझणो' (बो)।
सळूझाणो (बो), सळूझावणो (बो)–देखो 'सुळझाणो' (बो)।
सलूणउ, सलूणड़ो–देखो 'सलूणो'।
सलूणपण (पणो)–पु० १ सौन्दर्य, लावण्य। २ नाजुकता, कोमलता।
सलूणो–वि० (स्त्री० सलूणी) १ नमक सहित। २ सुन्दर, मनोहर, सलोना। ३ अधिक, ज्यादा। ४ कान्ति युक्त, आभा युक्त। ५ स्वादिष्ट, जायकेदार। ६ प्यार भरा। ७ मोहक, आकर्षक। ८ आसक्त, लीन। ९ पवित्र। १० समस्त, पूरा।
सलूझणो (बो)–क्रि० समझना।
सलूझो–वि० समझदार, ज्ञानी।
सलूनो–देखो 'सलूणो'।
सलूभो–वि० लालायित, इच्छुक।
सलूर–पु० [सं० सालूर] मेंढक।
सलेक–पु० [सं०] एक आदित्य।
सलेट–देखो 'स्लेट'।
सलेदार–देखो 'सिलहदार'।
सलेस–पु० [सं० श्लेष] १ मिलन, आलिंगन। २ साहित्य का एक शब्दालंकार।
सलेसी–स्त्री० एक प्रकार का घास।
सलं–१ देखो 'सिलह'। २ देखो 'सुलह'।
सलोक–देखो 'स्लोक'।
सलोकता–स्त्री० [सं०] एक प्रकार की मुक्ति।
सलोकी–वि० श्लोक युक्त, श्लोक संबंधी।
सलोको–देखो 'सिलोको'
सलोभो–वि० १ कोमल, लचीला। २ लोचदार। ३ सुन्दर, मनोहर। –पु० घोड़े के चारजामे का एक उपकरण।
सलोणो, सलोनो–पु० १ श्रावण की पूर्णिमा का पर्व, रक्षा बंधन। २ देखो 'सलूणो'।
सलोतर–पु० [सं० शालिहोत्री] अश्व-चिकित्सक।
सलोभो–वि० १ लालची, लोभी। २ इच्छुक, लालायित। ३ सरल, सुलभ।
सल्क, सल्कल–पु० [सं० शल्कं, शल्कलम्] १ मछली का कांटा। २ छाल। ३ भाग, हिस्सा।
सल्तनत–देखो 'सलतनत'।
सल्य, सल्यु–पु० [सं० शल्यः] १ माद्री का भाई व नकुल का मामा। २ कंटीली झाड़ी। ३ शल्य चिकित्सा। ४ सीमा। ५ एक प्रकार की मछली। ६ कांटा। ७ कील, खूंटी। ८ हड्डी अस्थि। ९ संकट, विपत्ति। १० पाप, जुर्म। ११ विष, जहर। १२ छप्पय छंद का ५८ वां भेद। १३ छप्पय छन्द का एक अन्य भेद।
सल्यग्ररी–पु० [सं० शल्य अरि] १ युधिष्ठिर। २ भीम।
सल्यकी–स्त्री० वृक्ष-सताबि।
सल्यसुद्धि–स्त्री० पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।
सल्ल–पु० १ घाव, जख्म। २ चोट, प्रहार। ३ फोड़े-फुंसी पर जमने वाली पपड़ी, खुरंट। ४ दुर्विचार, दुष्ट विचार। ५ छप्पय छन्द का एक भेद। ६ एक प्रकार का तीर। ७ कांटा। ८ पीड़ा, कसक, टीस। ९ छाल। १० मेंढक। —वि० १ क्षत-विक्षत। २ देखो 'सल'।
सल्लकी–पु० [सं०] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
सल्लणो (बो)–क्रि० १ क्षत-विक्षत होना। २ देखो 'सल्लळणो' (बो)।
सल्लळणो (बो)–क्रि० १ सालना, खटकना, दर्द होना, कसकना। २ निकलना। ३ लूटना, उजाड़ना। ४ चलना, प्रस्थान करना। ५ फैलना, व्याप्त होना। ६ छाना, मंडराना।
सल्लय–पु० एक वृक्ष विशेष।
सल्ला'–देखो 'सलाह'।
सल्लीओ–पु० सैनिक, घुड़सवार।
सल्लील–देखो 'सलिल'।
सल्लुद्धार–पु० [सं० शल्योद्धार] दुःखों से मुक्ति, उद्धार।
सल्लं–देखो 'सिलह'।
सल्हिणो (बो)–देखो 'सल्लळणो' (बो)।
सवं–देखो 'स्वयं'।
सवकति–वि० वक्रतायुक्त, टेढ़ी।
सव–पु० [सं० सवः] १ घन, द्रव। [सं० शव] २ मृत देह, लाश। ३ कफन। [सं० शत्] ४ सौ की संख्या। [सं० सव, सवः] ५ फूलों का शहद। ६ यज्ञ, हवन। ७ चन्द्रमा, चांद। ८ जल, पानी। ९ सूर्य, सूरज। १० नैवेद्य, भेंट। ११ सन्तान, औलाद। –वि० [सं० शत] १ सौ, शत। २ निर्मल, स्वच्छ। ३ देखो 'सवद'।
सवइवार, सवईवार–क्रि०वि० सदैव, सर्वदा, हमेशा।
सवक्क–वि० टेढ़ा, वक्र।
सवचक–पु० [सं० सूचिकः] दरजी।
सवज–देखो 'सायक'।
सवण–१ देखो 'सुगन'। २ देखो 'स्रवण'।
सवणी–देखो 'सुगनो'।
सवणीगर–देखो 'सवनीगर'।
सवणो (बो)–क्रि० जन्म देना, उत्पन्न करना।
सवतो–स्त्री० [सं० सवित्री] माता, जननी।
सवत्स–वि० बछवे वाली, जिसके साथ बच्चा हो।
सवद–देखो 'सबद'।
सवमंदिर–पु० [सं० शव मंदिर] १ श्मशान। २ समाधि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ देखो 'सिवमंदिर'।

सवय–पु० [सं० सवयस्] साथी, मित्र।—वि० हमउम्र, समवयस्क।

सवयती–देखो 'सवती'।

सवयस, सवयस्क, सवयस्य–पु० [सं० सवयस्] १ सखा, मित्र। २ सहयोगी।—वि० हमउम्र, समवयस्क।

सवयान–पु० [सं० शवयान] शव ले जाने वाली अर्थी, टिकटी।

सवर–पु० [सं०] १ दानवीर राजा शिवि। २ धन, दौलत। [सं० सवरः] ३ शिव, महादेव। ४ जल, पानी। ५ देखो 'सबर'।

सवरण–वि० [सं० सवर्ण] १ समान वर्ण या जाति का। २ समान रंग का। ३ समान रूप का।

सवरणा–स्त्री० १ सूर्य की पत्नी का नाम। २ इन्द्रिय योगों की अशुभ प्रवृत्तियों से आते हुए कर्मों को रोकने की क्रिया।

सवराणी (वी)–देखो 'संवराणी' (वी)।

सवरी–पु० [सं० सौरि] १ शनिग्रह। २ नीलम। ३ देखो 'सबरी'।

सवळ–पु० [सं० श्यामल] अंधेरा, अन्धकार।–वि० १ सबल, जबरदस्त, जोरदार। २ भयंकर। ३ बहुत, अधिक।

सवळी–देखो 'सवळी'।

सवळी–वि० (स्त्री० सवळी) १ पूर्ण, समस्त, पूरा। २ देखो 'संवळी'।

सवसान–पु० [सं० शवसानः] १ यात्री, पथिक। २ मार्ग, रास्ता। ३ श्मशान।

सवसाची–देखो 'सव्यसाची'।

सवसाधन–पु० [सं० शवसाधन] श्मशान में किसी शव पर बैठ कर की जाने वाली तांत्रिक साधना।

सवहण–पु० [सं० श्रवण] कान।

सवहेक–वि० सौ के करीब, लगभग सौ।

सवां–पु० [सं० स्वर्ण] सोना, स्वर्ण।

सवांण सवांण– स्त्री० वह गाय या भैंस जिसे आसानी से दूहा जा सके।–वि० भला, सीधा।

सवाणी, सवांणी–देखो 'सवासणी'।

सवा, सवा–पु० १ डिंगल का एक छन्द (गीत) विशेष। २ एक व इकाई के चतुर्थांश का योग।–वि० एक व एक चौथाई।

सवाई, सवाई–पु० १ पुत्र, बेटा। २ जयपुर के महाराजाओं की उपाधि। ३ किसान से सवाया अनाज वापस लेने की शर्त पर बोवाई के लिये अनाज देने की रीति।–वि० १ एक से चतुर्थांश अधिक, सवाया। २ बढ़कर, विशेष, अधिक।

सवाए–देखो 'सवायो'।

सवाग, सवाग–देखो 'सुहाग'।

सवागण, सवागण–देखो 'सुहागण'।

सवागथाळ सवागथाळ–देखो 'सुहागथाळ'।

सवागी, सवागी–देखो 'सुहागी'।

सवाड़, सवाड़–देखो 'सुवावड़'।

सवाड़ी, सवाउ, सवाजी–वि० [सं० सानुकूल] १ अनुकूल। २ देखो 'सवायो'।

सवाजक–देखो 'सवालक'।

सवाणी–स्त्री० स्वर्णकारों का एक उपकरण।

सवाणी (वी)–देखो 'सुहाणी' (वी)।

सवाद, सवाद–देखो 'स्वाद'।

सवादक–पु० [सं० स्वादक] १ दूध। २ अमृत।–वि० १ स्वाद लेने वाला। २ स्वाद युक्त।

सवादी–देखो 'स्वादी'।

सवादो–देखो 'स्वाद'।

सवाब–देखो 'सबाब'।

सवामोतीवांण–पु० लखपत पिंगल के अनुसार एक छन्द।

सवाय–१ देखो 'सवायो'। २ देखो 'सिवाय'।

सवायक–पु० सखा, मित्र।–वि० अधिक, बढ़कर।

सवायो–वि० १ अधिक, विशेष। २ एक और चतुर्थांश के योग के बराबर। ३ विशेष, बढ़कर।–पु० १ सवाये का पहाड़ा। २ एक व चतुर्थांश के योग की संख्या व अंक।

सवार, सवार–पु० १ वह व्यक्ति जो सवारी करने में दक्ष हो। २ बेचक। ३ सैनिक, घुड़सवार। ४ वह जो किसी वस्तु पर बैठा हो। [सं० श्वः] ५ प्रातः, सुबह। ६ डिंगल का एक गीत (छन्द)। ७ हेगा, पटेला।

सवारणी (वी)–देखो 'संवारणी' (वी)।

सवारथ–देखो 'स्वारथ'।

सवारथी–देखो 'स्वारथी'।

सवारी, सवारी–स्त्री० १ सवार होने का साधन या पशु। २ तांगा, गाड़ी, यान, पशु आदि पर सवार होने वाला व्यक्ति। ३ किसी पर बैठने या सवार होने की अवस्था या भाव। ४ यात्री, मुसाफिर। ५ देव प्रतिमा, ग्रन्थ या किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को यान पर बैठा कर निकाला जाने वाला जुलूस। ६ कुश्ती का एक दांव। ७ देखो 'सवारें'।

सवारें, सवारें–क्रि०वि० [सं० श्वः] १ अगले दिन, कल। २ प्रातः, सवेरे।

सवाल–पु० [अ०] १ कुछ पूछने की बात, प्रश्न। २ पूछने की क्रिया। ३ दरख्वास्त, मांग। ४ प्रार्थना, निवेदन। ५ गणित का कोई हिसाब।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सवाळक, सवालख, सवाळख–पु० १ चौहानों के शासनाधीन रहने वाले प्रदेश का नाम। (प्राचीन) २ नागौर प्रदेश। ३ सवालाख की संख्या।

सवाळख-पट्टी–स्त्री० [सं०सपाद लक्ष पाटक] १ प्राचीनकाल का प्रसिद्ध चौहान राज्य। २ अर्वाचीन नागौर प्रदेश।

सवालाख, सवालाख–देखो 'सवालख'।

सवावड़–देखो 'सुवावड'।

सवास–वि० १ शिर से पांव तक, शिरोपाव। २ सुवास।

सवासक–पु० एक छन्द विशेष।

सवासण (न)–पु० [स० शवासन] योग के चौरासी आसनों में से एक।

सवासणी–स्त्री० [सं० स्व-वासिनी] १ किसी परिवार में बहन, पुत्री, बूआ, भतीजी, भाणजी आदि के रूप में मानी जाने वाली कन्या, स्त्री, युवती। २ दश-ग्यारह वर्ष की कुमारी कन्या। ३ पुत्री, बेटी। ४ दोहित्री, नवासी।

सवासणो–पु० बहन, बेटी, बूआ, भतीजी आदि का पति या पुत्र।

सवासो–वि० एक सौ व पच्चीस के बराबर।–पु० एक सौ पच्चीस का अंक या संख्या।

सवि–१ देखो 'सब'। २ देखो 'सव'।

सविकल्प–पु० १ एक प्रकार की समाधि। २ ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।–वि० १ ऐच्छिक, पसंद का। २ संदिग्ध। ३ वैकल्पिक।

सविकार–वि० [सं० स-विकार] विकार सहित, दोष पूर्ण।

सविचार–वि० विचार युक्त, विचार सहित।

सवित–देखो 'सविता'।

सविता, सवितार, सवित्ता–पु० [सं० सवितृ] १ सूर्य, सूरज। २ एक आदित्य। ३ पिता। ४ भगवान विष्णु। ५ बारह की संख्या।–वि० उत्पन्न करने वाला।–पुत, पुतर, पुत्र, सुत–पु० सूर्य पुत्र शनि, यम, कर्ण।

सवित्रि, सवित्री–स्त्री० [सं० सवित्री] १ मां, माता। २ गौ, गाय।–पु० [सं० सवितृ] ३ सूर्य, सूरज। ४ शिव, महादेव। ५ इन्द्रदेव। ६ अर्क, मदार।

सविध–वि० [सं०] १ पास, समीप। २ एक जैसा, समान।

सविमास–पु० [सं०] सूर्य, सूरज।

सवियोड़ी–वि० जिसने बच्चे को जन्म दिया हो।

सवियार, सवियारु (रू)–क्रि० वि० [सं० सर्व+वार] हर दिन, हर समय।

सविस्तर, सविस्तार–क्रि० वि० [सं० सविस्तार] विस्तार पूर्वक, विस्तार से।

सविहुं–अव्य० [सं० सर्वतस्] १ सब ओर से, सब तरफ से। २ सर्वत्र, चारों ओर। ३ सम्पूर्णतः।

सवीर–देखो 'वीर'।

सवेगो–वि० (स्त्री० सवेगी) १ जल्दी, शीघ्र। २ तेज गति या स्फूर्ती वाला।–क्रि० वि० शीघ्रता से, जल्दी से।

सवेध–देखो 'सुवेध'।

सवेर, सवेर–अव्य० प्रातःकाल, सवेरे।

सवेरियां–क्रि० वि० १ ठीक समय पर, यथासमय। २ प्रातःकाल या सवेरे ही।

सवेरो–स्त्री० [सं० स्वयंवृता] अपने पति को छोड़कर अन्य पुरुष के साथ जाने वाली स्त्री।

सवेरै–क्रि० वि० १ प्रातः काल। २ देखो 'सवारै'।

सवेरोराग–पु० [सं०सवीरोराग] सिंधु राग।

सवेरो–पु० १ प्रातःकाल, सवेरा। २ उषाकाल।

सवेळा–क्रि० वि० ठीक समय पर, उचित समय पर।

सवेळू (ळो)–वि० (स्त्री० सवेळी) १ यथा समय आने वाला। २ देखो 'सवेरो'।

सवेव–क्रि० वि० तेजी से, वेग से।

सवै–देखो 'सब'।

सवैइयो, सवैयो–पु० १ एक छन्द विशेष। २ डिंगल का एक गीत। ३ पिंगल का एक वर्णवृत्त। ४ गणित में सवा का पहाड़ा।

सवोळी–वि० श्रेष्ठ, उत्तम।

सव्य–वि० [सं०] १ बायां, वाम। २ प्रतिकूल, उल्टा। ३ दक्षिण का, दक्षिणी।–पु० १ भगवान विष्णु। २ यज्ञोपवीत। ३ ग्रहण के दश ग्रासों में से एक।

सव्यचारी, सव्यसाची–पु० [सं०] अर्जुन का एक नाम।

सव्याज–वि० [सं०] चालाक, धूर्त।

सव्यासव्य–वि० दायें-बायें।

सव्येस्ट–पु० [सं० सव्येष्ट] सारथी।

सव्व–देखो 'सरव'।

सव्वरिय, सव्वरी–देखो 'सरवरी'।

ससंक–पु० रोग, बीमारी।–वि० [सं० सशंक] १ भयकारी। भयावह, डरावना। २ देखो 'ससांक'।

ससंकणो (बो)–क्रि० शंकित होना, भयभीत होना, डरना।

सस, ससउ–पु० [सं० शशः] १ खरगोश। २ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदों में से एक। ३ कुशल क्षेम। ४ चन्द्रकलंक। ५ लोध्र वृक्ष। ६ गन्ध रस। ७ छः की संख्या, ६।–वि० १ अनुकूल, पक्षधर। २ छः। ३ देखो 'सस्य'। ४ देखो 'ससि'। ५ देखो 'सोसौ'। ६ देखो 'ससक'।

ससइ–स्त्री० [सं० श्वसिति] १ श्वास लेने की क्रिया या भाव। २ आह भरने की क्रिया।

ससक–पु० [सं० शशक] खरगोश।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ससकणी–वि० [सं० श्वासकृांत] (स्त्री० ससकणी) श्वास रोग से पीड़ित।

ससकणी (णो)–क्रि० १ तेज गति से सांस लेना, हांफना। २ तरसना, आह भरना, सिसकना। ३ कराहना, आहें भरना। ४ रोग के कारण तेज श्वास लेना। ५ हांफना (पशु)। ६ रतिक्रीड़ा आदि के समय सीत्कार करना।

ससकनी–स्त्री० एक प्रकार की बंदूक।

ससकारी–देखो 'सिसकारी'।

ससक्कणी (णो)–देखो 'ससकणी' (णो)।

ससगांणी–पु० [फा० शश] फिरोजशाह के समय प्रचलित एक चांदी का सिक्का।

ससगोत, ससगोति (ती, ती)–देखो 'ससिगोति'।

ससटम, ससटमो–वि० [सं० षष्ठम्] छठा।

ससणी–पु० [सं० श्वास क्रांत] (स्त्री० ससणी) श्वास रोग से पीड़ित।

ससणी (णो)–क्रि० [सं० श्वसिति] १ श्वास लेना। २ आह भरना।

ससत–क्रि०वि० वास्तव में, सत्य ही। –स्त्री० कुशल, खैरियत।

ससतर–देखो 'सस्त्र'।

ससती–देखो 'सस्ती'। (स्त्री० सरसी)

ससत्र–देखो 'सस्त्र'।

ससत्रघतोल–पु० वज्र।

ससत्रक–देखो 'सस्त्रक'।

ससदळ–पु० अर्द्ध चन्द्रमा।

ससधर–पु० [सं० शशधर] १ चन्द्रमा, चांद। २ कपूर।

ससनूर ससनूरी–देखो 'सनूरी'। (स्त्री० समनूरी)

ससनेह–वि० स्नेह पूर्वक, प्रेम पूर्वक।

ससनेही–देखो 'सनेही'।

ससप्रिया–देखो 'ससिप्रिया'।

ससबिंब, ससबिंबु–पु० [सं० शशबिन्दु] भगवान् विष्णु।

ससभ्रत–पु० [सं० शशभ्रत] १ चन्द्रमा, चांद। २ कपूर।

ससमत्थ ससमाथ–१ देखो 'ससिमाथ'। २ देखो 'समरथ'।

ससमारचक्र–देखो 'सिसुमारचक्र'।

ससमी–वि० (स्त्री० ससमी) १ कटिबद्ध, सन्नद्ध, तैयार। २ सहानुभूति युक्त। –पु० ऐनक।

ससमौलि–पु० [सं० शशिमौलि] शिव, महादेव।

ससरंग–पु० डिंगल का एक गीत (छन्द)।

ससर, ससरत, ससरित–१ देखो 'सिसिर'। २ देखो 'ससि'.

ससरम, ससरमा–देखो 'सुसरमा'।

ससरी–देखो 'सुसरी'।

ससलो–देखो 'सस'।

ससवापण (पणो), ससवापणो–पु० १ ओज, तेज, कान्ति, आभा। २ स्वस्थता। ३ वैभवता।

ससविंब ससविंबु–पु० [सं० शशः+बिन्दु] १ चन्द्रमा, चांद। २ विष्णु।

ससवी, ससवो–वि० (स्त्री० ससवी) १ स्वस्थ, निरोग। २ वैभवशाली, भाग्यवान।

ससराजा–पु० चन्द्रमा, शशि।

ससरिखर–देखो 'ससिसेखर'।

ससुर–पु० जीव, प्राण।

ससस्थली–स्त्री० [सं० शशः-स्थली] गंगा और यमुना के मध्य का प्रदेश।

ससहर–१ देखो 'ससिधर'। २ देखो 'समधर'।

ससांक–पु० [सं० शशांक] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

ससांकज–पु० [सं० शशांकज] चन्द्रमा का पुत्र, बुध।

ससांकसेखर–पु० [सं० शशांकशेखर] शिव, महादेव।

ससांकसुत–पु० [सं० शशांक सुत] चन्द्रमा का पुत्र, बुध।

ससांम्हो–क्रि०वि० सम्मुख, सामने।

ससा–स्त्री० [सं० श्वसा] १ बहन, भगिनी। २ देखो 'सस'।

ससात–पु० दुग्ध, दूध।

ससाद–पु० [सं० शशः+अदः] १ श्येन पक्षी, बाज। २ इक्ष्वाकु राजा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम।

ससि–पु० [सं० शशिन] १ चन्द्रमा, चांद। २ कपूर। ३ झरना, स्रोत। ४ मोती। ५ पंथो, राहगीर। ६ टगण की छः मात्राओं के दूसरे व दशवें भेद का नाम। ७ आर्यागीति (गाथा) का एक भेद। ८ छप्पय छन्द का एक भेद। ९ एक की संख्या। –वि० १ शीतल, ठंडा। २ देखो 'सिसु'। ३ देखो 'सस'। —कंत=ससिकांत'। —कर–पु० चन्द्रमा, चांद। —कळा–स्त्री० चन्द्रमा की कला। एक वर्ण वृत्त विशेष। —कांत–पु० चन्द्रकान्त मणि। —खड–पु० चन्द्र किरण। शिव। —गोत, गोति, गोती–पु० मोती, मुक्तक। —ज–पु० बुधग्रह। —तिथ, तिथि–स्त्री० पूर्णिमा। —धर–पु० शिव। —नंदण (न)–पु० बुध। —पक्ष, पख–पु० शुक्ल पक्ष। –पुत, पुतर, पुत्र–पु० बुध। भाळ, भूसण, भ्रत–पु० शिव, महादेव। —मंडळ–पु० चन्द्रमण्डल, चन्द्रमा का घेरा। —मण, मणि, मणी, मिण–पु० चन्द्रकान्त मणि। —मथ, मथ, माथ–पु० महादेव, शिव। —रस–पु० अमृत। —रेखा, लेखा–स्त्री० चन्द्रकला। —वदना–स्त्री० सुन्दर मुख वाली स्त्री, चन्द्र मुखी। —वदनी, वयनी–स्त्री० चन्द्रमुखी। —सुत–पु० बुध। —सेखर–पु० शिव, महादेव। —सोसक–पु० चन्द्रमा को क्षीण करने वाला कृष्ण पक्ष।

ससिवंव–पु० [सं० शशिदेव] मृगशिरा नक्षत्र।

ससिधर–देखो 'ससधर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ससिनाम–पु० यश कीर्ति ।
ससिपोसक–पु० शुक्ल पक्ष ।
ससिप्रभ–पु० [स० शशिप्रभ] १ जिसकी प्रभा चन्द्रमा के समान हो, मोती, मुक्ता । २ कुमुद ।
ससिप्रभा–स्त्री० [सं० शशिप्रभा] चांदनी, ज्योत्स्ना ।
ससिप्रिय–पु० [सं० शशिप्रिय] मोती ।
ससिप्रिया–स्त्री० [सं० शशिप्रिया] रात्रि, निशा ।
ससिबाम (बाम)–स्त्री० [सं० शशिवाम] निशा, रात्रि ।
ससियर, ससियळ–पु० चन्द्रमा ।
ससियो, ससिसउ–देखो 'सस' ।
ससिर–देखो 'सिसिर' ।
ससिवेस–पु० [सं० शिशुवयस्] बाल्यावस्था ।
ससिहर–देखो 'ससधर' ।
ससी–पु० १ एक वर्ण वृत्त विशेष । २ एक अन्य वृत्त । ३ देखो 'ससि' ।
ससीकर–स्त्री० [सं० शशिकर] चन्द्रकिरण ।
ससीवार, ससीवार–पु० [सं० शशिवार] सोमवार ।
ससीस–पु० [सं० शशीश] १ शिव, महादेव । २ स्वामी कार्तिकेय ।
ससेहर–१ देखो 'ससधर' । २ देखो 'ससिधर' ।
ससुर (रो)–पु० [सं० श्वसुर] १ पति या पत्नी का पिता । २ देखो 'सुसिर' ।–वि० [सं० सुस्वर] मधुर स्वर वाला ।
ससुवाद–वि० स्वादिष्ट, मीठा ।
ससूक, ससूग–वि० [स० सशूक:] तीक्ष्णता सहित, तीक्ष्ण ।
ससूत–वि० अत्यधिक, बहुत ।
ससूदित–वि० १ मारा हुआ । २ काटा हुआ ।
ससोकित–वि० शोकाकुल, शोक पूर्ण ।
ससोभ–वि० शोभनीय, सुन्दर ।
ससोभित–देखो 'सुसोभित' ।
ससोह–देखो 'ससोभ' ।
ससौ–पु० १ 'स' वर्ण । २ देखो 'सस' ।
सस्कुली–स्त्री० [सं० शष्कुली] १ कान का छेद । २ पुरी आदि पकवान । ३ कान का एक रोग ।
सस्ट, सस्ठ, सस्ठम–वि० [सं० षष्ठ] पांच के बाद वाला, छठा ।
सस्त–वि० [सं० शस्तम्] १ प्रशंसित, सराहा हुआ । २ मंगलकारी । ३ घायल । –पु० १ प्रसन्नता, खुशी । २ शरीर ।
सस्तर–देखो 'सस्त्र' ।
सस्तरपाटी, सस्तरपाती–स्त्री० १ अस्त्र-शस्त्र । २ काम करने के उपकरण; औजार ।
सस्तीवाढ़ी–पु० १ सस्तापन । २ बाजार भावों में मंदी की स्थिति ।
सस्ते–वि० १ समान, तुल्य । –क्रि०वि० २ लिए, तरफ से ।
सस्तो–वि० (स्त्री० सस्ती) १ जो महंगा न हो, सस्ता, कम मूल्य का । २ जिसका निपटारा आसानी से हो । ३ जो सहज में उपलब्ध हो । ४ घटिया किस्म का, साधारण ।
सस्त्र–पु० [स० शस्त्र] १ हाथ से चलाने का तलवार आदि हथियार, शस्त्र । २ लोहा । ३ फौलाद । ४ शल्य-चिकित्सा । —धर, धारी–वि० शस्त्र रखने वाला । –पु० सिपाही । —बंध–वि० शस्त्रों से सज्जित । योद्धा, वीर । —भृत–वि० शस्त्रधारी । —विद्या–स्त्री० शस्त्र चलाने की विद्या, युद्ध विद्या । —साळा, साला–स्त्री० शस्त्रागार ।
सस्त्रअज–पु० तीर, बाण ।
सस्त्रक–पु० [स० शस्त्रक] १ लोहा । २ इस्पात ।
सस्त्रघर–पु० [सं० शस्त्रगृह] १ शस्त्रागार, सिलहखाना । २ तलवार की म्यान ।
सस्त्रागार–पु० [सं० शस्त्रागार] १ शस्त्रशाला, सिलहखाना । २ शस्त्र प्रदर्शित करने का स्थान ।
सस्त्राजीव–पु० [सं० शस्त्राजीव] योद्धा, सैनिक ।
सस्त्रायस–पु० [स० शस्त्रायस] शस्त्र बनाने का लोहा ।
सस्त्री–पु० [सं० शस्त्री] छोटा शस्त्र ।–वि० शस्त्रधारी । शस्त्र चलाने में निपुण ।
सस्त्रीकरण–पु० शस्त्रों से सुसज्जित करने की अवस्था या भाव ।
सस्म–पु० रथ ।
सस्यंकी, सस्यंगी–पु० लोहा ।
सस्य–पु० [स० सस्यम्] १ सद्गुण । २ अनाज । ३ किसी वृक्ष का फल । ४ शस्त्र, हथियार । ५ नई घास, कोमल तृण ।
सस्यक–वि० [स०] १ सद्गुणी । २ सम्पन्न ।–पु० [स० सस्यक:] १ एक प्रकार का रत्न । २ हथियार । ३ तलवार ।
सस्स–देखो 'स्वास' ।
सस्सु, सस्सू–देखो 'सासु' ।
सस्सो–पु० १ 'स' वर्ण । २ देखो 'सस' ।
सहंटो, सहठो–देखो सैंठो' ।
सहटुक–पु० एक प्रकार का मांस का शोरबा ।
सहंस–देखो 'सहस्र' ।–कर = 'सहस्रकर' ।– करण='सहस्रकिरण' —किर= सहस्रकर' ।—पतर, पत्र, पात= सहस्रपत्र' । —फण, फुण='सहस्रफण'
सहसकार–देखो 'संस्कार' ।
सहंसबळ (बळो)–वि० बलवान, पराक्रमी ।
सहंसावस–देखो 'दससहंस' ।
सह–वि० १ सब, ससस्त । २ पूर्वक, सहित । ३ पूर्ण, पूरा । ४ युक्त, साथ –पु० [सं० सह:] १ मार्गशीर्ष का महीना । २ भाई । ३ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम । ४ श्रीकृष्ण का एक पुत्र । ५ घन । ६ शतरंज में बादशाह पर घात होने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की दशा। ७ ताकत, शक्ति। ८ उत्तेजित करने की क्रिया। ९ इन्द्रिय बल या शक्ति।–क्रि० वि० १ साथ। २ देखो 'गाह'।

सहकार–पु० १ आम। २ आम का वृक्ष। ३ सहयोग। ४ गायन का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।

सहकारि, सहकारी–वि० [सं० सहकारिन्] १ साथ कार्य करने वाला, सहयोगी। २ सहायक, मददगार। –पु० १ मित्र, दोस्त, साथी। २ देखो 'सहकार'।

सहकृतव–पु० [सं० सहकृत्वन्] सखा, मित्र।

सहकमण, सहगमि–पु० सहगमन।

सहगमण (न)–पु० [सं० सहगमन] १ साथ-साथ गमन, पलायन। २ पति के साथ सती होने की क्रिया या भाव। ३ संभोग, मैथुन।

सहगामणी, सहगामिणी–स्त्री० १ पति के साथ सती होने वाली स्त्री। २ सहगमन करने वाली स्त्री। ३ सहचरी, साथिन।

सहगामी–पु० १ जो साथ चले, साथी। २ अनुयायी।

सहगुरु (रू)–देखो 'सदगुरु'।

सहड–पु० १ हाथी। २ देखो 'सुभट'।

सहचर–पु० १ मित्र, दोस्त, सखा। २ सहायक, मददगार। ३ सेवक, नौकर। ४ सलाह देने वाला। –वि० (स्त्री० सहचरी) १ साथ-साथ चलने वाला। २ हर समय साथ रहने वाला, साथी। ३ देखो 'सहचरी'।

सहचरि, सहचरी, सहचारी–स्त्री० १ सखी, सहेली। २ पत्नी, भार्या।

सहज–पु० [सं०] १ भाई, भ्राता, सहोदर। २ प्रकृति, स्वभाव। ३ फलित ज्योतिष में जन्म लग्न से तृतीय स्थान। ४ तत्त्व। ५ ज्ञान। ६ ब्रह्मतत्त्व। ७ स्मरण याद। ८ परब्रह्म, ब्रह्म। ९ ईश्वर, परमात्मा। १० अनहदनाद। ११ ब्रह्मसुख। १२ अजपाजाप। १३ स्वर्गलोक, वैकुंठ। १४ मोक्ष, मुक्ति। १५ कैवल्य ज्ञान। १६ ध्यानावस्था, समाधि। १७ वास्तविकता। –सर्व० अपने-आप, स्वतः। –वि० १ अखण्ड। २ स्वतः सिद्ध। ३ सरल, सुगम, आसान। ४ परिपूर्ण। ५ अव्यक्त, अस्पष्ट। ६ वास्तविक। ७ अनोखा, अद्भुत। ८ व्यर्थ, बेकार। ९ सरल, सीधा। १० बिना यत्न या श्रम से। ११ प्राकृतिक, स्वाभाविक। १२ जो हर दृष्टि से ठीक व उपयुक्त हो। १३ यथार्थ, सत्य। १४ जन्म से प्रकृति के साथ उत्पन्न होने वाला। १५ मामूली, साधारण। १६ परम्परागत। –क्रि०वि० १ धीरे-धीरे। २ स्वभावतः। ३ अनायास, शीघ्र। ४ सरलता से, आसानी से। ५ निरन्तर, लगातार।

सहजणी–पु० एक प्रकार का वृक्ष।

सहजपंथ (पथ)–पु० [सं० सहजपथ] १ आसान या सुगम रास्ता। २ आसान तरीका। ३ वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

सहजिई–क्रि०वि० सहज में।

सहटी–१ देखो 'सटी'। २ देखो 'साटी'।

सहटणी (बो)–क्रि० एकत्र होना, जुड़ना, सम्मिलित होना।

सहड–पु० १ हाथी। २ देखो 'सुभट'।

सहण–पु० १ मिट्टी का बना भोजन का पात्र, सिहनक। २ एक प्रकार का शस्त्र, परशु। ३ अस्त्र-शस्त्र। ४ सहनशीलता। ५ देखो 'सहन'। ६ देखो 'सैण'।

सहणी–स्त्री० १ सहन करने की क्रिया। २ सहन करने की शक्ति। –वि० सहनीय।

सहणी–वि० (स्त्री० सहणी) १ सहन करने वाला, सहनशील। २ सहनीय।

सहणो (बो)–क्रि० १ बरदाश्त करना, सहन करना। २ परिणाम या फल भोगना। भुगतना। ३ वहन करना, झेलना। ४ उत्तरदायित्व लेना। ५ सज्जीभूत होना, सजना, तैयारी करना।

सहत–१ देखो 'सहित'। २ देखो 'सहद'।

सहता–स्त्री० [सं०] एकता, ऐक्य, मेल-जोल।

सहतार–पु० एक प्रकार का तार वाद्य।

सहति, सहती–१ देखो 'सहित'। २ देखो 'सहद'।

सहतीर–पु० [फा० सहतीर] १ लकड़ी का बड़ा व लम्बा लट्ठा। २ छत के नीचे लगने का बड़ा पत्थर, लोह की बड़ी पट्टी या मोटी लकड़ी।

सहतूत–पु० [फा० शहतूत] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल लटिका की तरह के व खट्टे मीठे होते हैं। २ इस पेड़ का फल। ३ एक देव वृक्ष।

सहती–देखो 'सहित'।

सहद–पु० [अ० शहद] मधु मक्खियों द्वारा संगृहीत, पुष्परस से रूपान्तरित होकर बनने वाला एक गाढ़ा व मीठा तरल पदार्थ, मधु।

सहदार–वि० [सं०] १ सपत्नीक। २ विवाहित।

सहदेई–स्त्री० [सं० सहदेवा] एक प्रकार की वनौषधि।

सहदे, सहदेव–पु० [सं०] १ पांडु पत्नी माद्री व अश्विनी कुमारों के संयोग से उत्पन्न सबसे छोटा पांडव। २ वचन सिद्ध महात्मा। –वि० भविष्यवक्ता।

सहन–पु० १ क्षमा। २ शांति। ३ आज्ञापालन। ४ सहनशीलता। ५ देखो 'सहनक'

सहनक–पु० मिट्टी की बनी एक तश्तरी।

सहनता–स्त्री० सहनशीलता।

सहनसील–वि० [सं० सहनशील] १ सहनेवाला, बरदास्त करने वाला। २ संतोषी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहनाई–स्त्री० [सं० सहनाई] एक वाद्य विशेष।
सहनी–पु० खेत में खड़ी फसल की रखवाली करने वाला।
सहम–स्त्री० १ कटार। २ परशु। ३ एक शस्त्र विशेष।
सहरबंद–पु० कैदी।
सहरि, सहरी–वि० १ शहर का, शहर संबंधी। २ सदृश, समान। ३ देखो 'सरग्रही'।
सहरुख–पु० [सं०] चन्द्रमा के एक घोड़े का नाम।
सहरो–वि० (स्त्री० सहरी) शीघ्र सुनने वाला।
सहल–पु० १ घूमने-फिरने की क्रिया या भाव, परिभ्रमण। २ क्रीड़ा, खेल। ३ आनन्द, मस्ती, मौज। ४ काम क्रीड़ा। ५ चूड़ियों आदि के लिये काम आने वाली लकड़ी की एक मोगरी। –वि० १ सरल, आसान, सुगम, सहज, सीधा। २ साधारण, मामूली। ३ साक्षात्, प्रत्यक्ष।
सहलड़ी–१ देखो 'सेलड़ी'। २ देखो 'सहल'।
सहलणो (बो)–क्रि० १ सहलाना। २ परिभ्रमण करना, घूमना। ३ देखो 'सेलणो'(बो)। ४ देखो 'सालणो' (बो)।
सहलसो–वि० साधारण मामूली।
सहलाणी–देखो 'सैनाणी'।
सहलाणो (बो)–क्रि० १ सहलाना। २ धीरे-धीरे हाथ फेरना। ३ परिभ्रमण कराना, घुमाना।
सहलोट–देखो 'सैलोट'।
सहळो (ळो)–वि० (स्त्री० सहली) १ आसान, सरल। २ देखो 'सैळो'।
सहल्य–देखो 'सहल'।
सहल्ले (ल्लै)–क्रि०वि० आसानी से, सरलता से।
सहवयस, सहवयस–पु० [सं० सहवयस्] सखा, मित्र।
सहवर–पु० १ वीर, योद्धा। २ सगा भाई।
सहवान–पु० सौभाग्य, सुहाग।
सहवास–पु० [स०] १ साथ-साथ रहने की क्रिया या भाव। २ संभोग मैथुन। ३ मित्र, दोस्त।
सहवासी–वि० साथ रहने वाला।
सहवृता–स्त्री० [सं०] पत्नी, भार्या।
सहस–पु० [सं० सहस्] १ मार्गशीर्ष मास। २ शरद ऋतु। ३ शक्ति, ताकत। ४ प्रचण्डता, उग्रता। ५ विजय, जीत। ६ चमक, कांति। ७ देखो 'सहस्र'।
सहसकर (किर, क्कर किर्कर)–देखो 'सहस्रकर'।
सहसकरण (किरण)–देखो 'सहस्रकिरण'।
सहसकार–देखो 'संस्कार'।
सहसचक्ख (चक्खु, चक्ख)–पु० [सं० सहस्र-चक्षु] देवराज इन्द्र।
सहसजीभ (जुब्भीह)–पु० [सं० सहस्र-जिह्व] शेषनाग।
सहसदळ–पु० [सं० सहस्रदल] कमल।
सहसनयण (नयण, नेत्त, नेत्र, नेण)–देखो 'सहस्रचक्ष'।
सहसपत्र–पु० कमल।
सहसफण (फणि, फणी), सहसफणधर, (धार, धारी), सहसफिणधर, धार, (धारी)–पु०[सं० सहस्रफण] शेषनाग।
सहसफूल–देखो 'सोसफूल'।
सहसबदन–पु० शेषनाग।
सहसबळ–पु० [स० सहस्रबलम्] १ सूर्य। २ सहस्र व्यक्तियों या हाथियों के बल वाला।
सहसबवणि–पु० [स० सहस्राभवन] वह स्थान जहां नेमिनाथ ने दीक्षा ली थी।
सहसभग–पु० इन्द्र।
सहसभाव–स्त्री० १ सहिष्णुता। २ क्षमा।
सहसमुख (मुखी)–पु० शेषनाग।
सहसमुखी–स्त्री० १ गंगा। २ एक प्रकार का कंद।
सहसान–पु० [सं० सहसानः] १ मोर, मयूर। २ नैवेद्य भेंट। ३ यज्ञ, हवन।
सहसा–अव्य० [सं०] १ अकस्मात, अचानक। २ जबरदस्ती, बलात्। ३ विचार पूर्वक।
सहसार्जुन (अर्जुनि, अरजण, अरजन, अरजुण, अरजुन)–देखो 'सहस्रार्जुन'।
सहसासतकार–अव्य० १ सम्मुख, सामने, समक्ष। २ देखो 'साक्षात्कार'।
सहसी–देखो 'सहसा'
सहसेई–पु० शेषनाग।
सहस्य–पु० [सं० सहस्यः] पौष मास का नाम।
सहस्र–पु० [सं०] १ हजार की संख्या। २ इस संख्या का अंक, १०००। –वि० हजार। —कर किर, किरण रु, गो–पु० सूर्य, सूरज। —चक्ष, चक्षु, चक्ष–पु० इन्द्र। —चरण–पु० विष्णु —नयण, नेण, नेत–पु० इन्द्र, विष्णु। —नांम नांम–पु० कोई स्तुति या कविता जिसमें किसी देवता के हजार नामों का वर्णन हो।–पत्र–पु० कमल, पंकज।–पाद–पु० विष्णु। शिव। सूर्य।—फण फिण, फुण –पु० शेषनाग।
सहस्रजित–पु० [सं०] १ विष्णु। २ कस्तूरी। ३ श्रीकृष्ण व जाम्बवती का एक पुत्र।
सहस्रणी–पु० [सं० सहस्रिन्] हजार रथियों का नायक, भीष्म।
सहस्रत–वि० हजारों, हजार के लगभग।
सहस्रदक्षण (दक्खिण, दक्खण, दक्षिण्य)–पु० वह यज्ञ जिसमें एक हजार गायों का दान करने का विधान हो।
सहस्रधार (धारा)–स्त्री० [सं०] १ भगवान् विष्णु का चक्र। २ अयोध्या के समीपस्थ एक तीर्थ। ३ हजार छिद्रों वाला एक जलपात्र विशेष।
सहस्रबाह (बाहु, बाहू)–पु० [सं०सहस्रबाहु] १ विष्णु। २ शिव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ बाणासुर। ४ राजा बलि का ज्येष्ठ पुत्र। ५ स्कन्द का एक अनुचर। ६ कृतवीर्य। ७ कृतवीर्य का पुत्र हैहय।

सहस्रभुजा–स्त्री० देवी का एक नाम।

सहस्ररश्मि–पु० [सं० सहस्ररश्मि] सूरज, सूर्य।

सहस्ररोमा–स्त्री० [सं० सहस्र-रोमन्] कम्बल।

सहस्रवीरया—स्त्री० [सं० सहस्र-वीर्या]-हींग।

सहस्रसिखर–पु० [सं० सहस्र-शिखर] विंध्याचल पर्वत।

सहस्रांक–पु० [सं०] सूर्य, सूरज।

सहस्राक्ष–वि० [सं० सहस्र-अक्ष] जिसके हजार आंखें हों। –पु० १ इन्द्र। २ विष्णु। ३ पुरुष। ४ देवी भागवत के अनुसार एक पीठ, स्थान।

सहस्रात्मा–पु० [सं०] ब्रह्मा।

सहस्रार्जुण(न)–पु० [सं० सहस्रार्जुन] १ सहस्रबाहु, हैहय। २ बलि राजा का पुत्र।

सहस्रिन–वि० [सं०] १ हजार पति। २ हजार के लगभग। –पु० १ हजार व्यक्तियों का समूह। २ सहस्र सैनिकों का समूह।

सहस्स–देखो 'सहस्र'। –कर= सहस्रकर'।

सहांणो–देखो 'साहणी'।

सहा–स्त्री०[सं०] १ पृथ्वी भूमि। २ मेंहदी। ३ अगहन मास। ४ हेमन्त ऋतु। ५ सपिणी। ६ खार पाठा। ७ सत्यनाशी। ८ एक अप्सरा का नाम।

सहाइ, सहाई–देखो 'सहाय'।

सहाज–देखो 'साज'।

सहाबत–स्त्री० [अ० शहादत] गवाह, साक्षी।

सहाब–पु० [फा० सहाब] १ एक प्रकार का गहरा लाल रंग। २ आदर सूचक एक संबोधन।

सहाबी–वि० [फा० शहाबी] लाल रंग का।

सहाय–पु० [सं० सहायः] १ सेना, फौज। २ रक्षा। ३ सहायता, मदद। ४ बल, शक्ति। –वि० १ सहायता करने वाला, मददगार। २ मित्र। ३ रक्षक।

सहायक (त)–पु० [सं०] १ मददगार, सहायक। २ साथी। मित्र। ३ रक्षा करने वाला, रक्षक। ४ अनुयायी। ५ नौकर, चाकर। ६ शिव।

सहायता–स्त्री०[सं०] किसी तरह की मदद, सहयोग, योगदान।

सहारण–वि० १ सहायता करने वाला। २ उद्धार करने वाला।

सहारो–पु० १ मदद, सहायता। २ आश्रय, अवलम्ब।

सहालग–पु०१ ज्योतिष के अनुसार कोई शुभ वर्ष। २ मांगलिक मुहूर्त वाला दिन या मास।

सहाव–पु० [सं० स्वभाव] आदत, स्वभाव, प्राकृतिक गुण। –वि० १ समान, तुल्य। २ देखो 'सहाय'।

सहावणो (बो)–क्रि० पकड़ाना।

सहावो–वि० १ धारण करने वाला। २ सहन करने वाला। ३ देखो 'सावो'।

सहास–वि० साहस पूर्वक। –क्रि०वि० खुशी से, हंसकर, हर्ष पूर्वक।

सहि–वि० सब, समस्त। –स्त्री० सखी, साथिन। देखो 'सही'

सहिउ–वि० [सं० सोढः] सहन किया हुआ।

सहिकार–देखो 'सहकार'।

सहिगुरु–पु० सद्गुरु।

सहिज–देखो 'सहज'

सहिजन–पु० [सं० शोभाजन] भारत में प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला वृक्ष।

सहिजादो–देखो 'साहजादी'।

सहिणो (बो)–देखो 'सहणो' (बो)।

सहित–अव्य० साथ, समेत, युक्त। साथ-साथ, साथ में। –पु० जैनियों के ८८ ग्रहों में से तेरहवां ग्रह।

सहिनांण–देखो 'सैनांण'।

सहियर–देखो 'सखी'।

सहिसाळो–देखो 'सोलाळो'।

सहिसकिरण–देखो 'सहस्रकिरण'।

सहिसभुज (भुजा), सहिस्रभुज (भुजा), सहिस्राभुज–देखो 'सहस्रबाहु'।

सही–वि० [अ० सहीह] १ जिसमें त्रुटि, दोष या कमी न हो; बिल्कुल ठीक। २ यथार्थ, वास्तविक। ३ सत्य, सच्च। ४ सब, समस्त। –पु० १ साक्षी के हस्ताक्षर, हस्ताक्षर। २ प्रामाणिकता या मान्यता का शब्द। –क्रि०वि० १ अवश्य ही, निश्चय ही। २ वास्तव में। ३ देखो 'सखी'।

सहीपड–स्त्री० सहेली या सखी मानने की स्थिति।

सहीक–अव्य० अवश्य ही, निश्चय ही।

सहीत (तो)–देखो 'सहित'।

सहतीड़ोतरो–पु० एक प्रकार का कर विशेष।

सहीद–वि० [अ० शहीद] देश, धर्म या लोक हित में बलिदान या उत्सर्ग होने वाला।

सहीदी–स्त्री० शहीद होने की क्रिया या भाव, शहीद होने पर मिलने वाली अमरता, कीर्ति, प्रसिद्धि।–वि० शहीद होने को तैयार।

सहीनांण–देखो 'सैनांण'।

सहीप–देखो 'सही'।

सहोली–देखो 'सहेली'।

सहुंगो–वि० १ सस्ता। २ कम मोल का। ३ बिना श्रम या मेहनत का।

सहु, सहुआं, सहुए–वि० सब, समस्त, सभी।

सहूर–देखो 'सऊर'।

सहू–देखो 'सहु'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहूर–देखो 'सऊर' । दार= सऊरदार' ।
सहूलियत–स्त्री० [फा०] १ आसानी, सुगमता २ सुविधा । ३ कायदा, अदब ।
सहूवर–देखो 'सहवर' ।
सहेज– देखो 'सहज' ।
सहेट–स्त्री० संकेत स्थल ।
सहेत, सहेतो, सहेतो–देखो 'सहित ।
सहेरउ, सहेरो–देखो 'सेवरो' ।
सहेल–पु० चौक ।
सहेलडी सहेली–स्त्री० १ सखी, संगिनी । २ अनुचरी, दासी ।
सहेलो–देखो 'सहल' ।
सहैंभर–देखो 'सांभर' ।
सहैर–देखो 'सहर' ।
सहोकति, सहोक्ति–स्त्री० [सं० सहोक्ति] एक प्रकार का काव्यालंकार विशेष ।
सहोढ़–पु० [सं०] अविवाहिता युवति के गर्भ से उत्पन्न पुत्र ।
सहोदर–वि० [सं०] (स्त्री० सहोदरा) जो एक ही माता के उदर से उत्पन्न हुआ हो । सगा भाई, भाई ।
सहोदरलखण (लखन, लखमण)–पु० [सं० सहोदर-लक्ष्मण] १ श्रीराम, भगवान । २ ईश्वर, परमेश्वर ।
सहोधो–वि० १ कुलीन, अच्छे कुल का । २ ओहदेधारी, पदाधिकारी ।
सहोर–वि० [सं०] श्रेष्ठ, उत्तम । –पु० [सं० सहोरा] ऋषि, मुनि ।
सह्य–पु० [स०] १ तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य । २ सहायता, मदद । ३ योग्यता । ४ सह्याद्रि नामक पर्वत । –वि० १ सहन करने योग्य, सहनीय । २ मजबूत, ताकतवर ।
सह्यालु–पु० एक पौधा विशेष, निरगुंडी ।
सह्याद्रि–पु० बम्बई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत ।
सहृदय–वि० [सं० सहृदय] १ कृपालु, दयालु, सहृदय । २ सच्चा । ३ विद्वान । ४ गुणग्राही । ५ सज्जन । ६ रसिक ।
सां–स्त्री० शपथ, सौगन्ध ।–सव० क्यों
सांइड–देखो 'सांढ़' ।
सांइणियो–वि० [सं० शाकुनिक] १ शकुनशास्त्र का जानकार व शकुन बताने वाला व्यक्ति । २ शकुन बताने वाला पशु या पक्षी ।
सांइणो, सांइणो (नो)–वि० [सं० सहायन] (स्त्री० सांइणी, सांइणी) १ समवयस्क, हम उम्र । २ साथी, मित्र, दोस्त । ३ सयाना, दाना ।
सांइ, सांई–स्त्री० [सं० स्वागतम्] १ मिलने-भेंटने की क्रिया । –पु० [सं० स्वामी] २ मुसलमान या सूफी फकीर । ३ एक आदर सूचक संबोधन ।
सांईआर, सांईआर–पु० १ बधिया या खसी किया हुआ पशु । २ बधिया करने की क्रिया ।
सांईणो, सांईणी (नो)–देखो 'सांइणो' । (स्त्री० सांइणी)
सांईयार, सांईयार (वार, सार)–देखो 'सांईआर' ।
सांउ सांऊ–पु० चने की जाति का एक घटिया अन्न ।
सांक, सांक–१ देखो 'संका' । २ देखो 'सकी' ।
सांकड़–पु० [सं० संकट] १ संकट, विपत्ति । २ असुविधा । –वि० संकीर्ण, तंग, कष्टप्रद ।
सांकड़णो (वो)–क्रि० १ संकुचित होना/करना । २ बंद करना । ३ आक्रमण करना, हमला करना ।
सांकड़मोड़ (ड़ी), सांकड़ाई–स्त्री० १ संकरापन, तंगी । २ आर्थिक अभाव ।
सांकड़ाणो (वो)–क्रि० १ संकुचित करवाना, संकीर्ण करवाना । २ बंद करवाना । ३ आक्रमण या हमला करवाना ।
सांकड़ीलो, सांकड़ीलो–पु० १ संकरापन, तंगी, स्थानाभाव । २ कमी, अभाव । ३ संकट, विपत्ति । ४ दबाव, प्रभाव । ५ लिहाज ।
सांकड़ें–क्रि० वि० १ संकट में, विपत्ति में । २ अचानक, अकस्मात । ३ पास में, नजदीक, समीप ।
सांकड़ैल–वि० जबरदस्त, जोरदार, शक्तिशाली, बलवान् ।
सांकड़ो–वि० [सं० संकट] (स्त्री० सांकड़ी) १ निकट, पास समीप । २ सकरा तंग आवश्यकता से कम । ३ संकुचित । ४ कठिन, दुस्तर । ५ भयभीत, डरा हुआ । ६ विकट, विषम । ७ संक्षिप्त, छोटा । ८ कमी व अभाव युक्त । –पु० १ कष्ट, विपत्ति, संकट । २ भय ।
सांकडउ, सांकड़ो–देखो 'सांकड़ो' ।
सांकणो (वो)–देखो 'संकणो' (वो) ।
सांकर–वि० [सं० शांकर] शंकर से संबंधित । –पु० १ स्कन्द । २ अग्नि । ३ शमी वृक्ष । ४ शिव सूत्र ।
सांकरघ–स्त्री० [स० सांकर्य] मिश्रण, मिलावट ।
सांकळ सांकळ, सांकस–स्त्री० [स० शृंखला] १ स्वर्ण, चांदी लोह आदि किसी धातु की जंजीर, शृंखला । २ शरीर की हड्डियों का ढांचा, अस्थिपंजर । ३ द्वार पर लगने की सिकड़ी, कुंदो । ४ एक प्रकार का आभूषण । ५ फोग की गंठीलो लकड़ी । ६ छप्पय छन्द का एक भेद ।
सांकळउ–देखो 'सांकळो' ।
सांकळणो (वो)–क्रि० [सं० शृंखलनम्] सांकल से बांधना ।
सांकळियो–पु० १ दोहे का एक भेद । अंत मेल । २ देखो 'संखियो' ।
सांकळो, सांकळी (लो)–स्त्री० [स० शृंखला] १ कान का एक आभूषण विशेष । २ स्त्रियों का अन्य शिरोभूषण । ३ हाथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का आभूषण विशेष। ४ शृंखलानुमा कोई भी आभूषण। ५ स्त्रियों द्वारा कार्तिक मास में किया जाने वाला व्रत विशेष। [सं० संकलिका] ६ संग्रह। ७ जोड़, योग। ८ देखो साकळी। [सं० शष्कुलि] ९ खाद्य पदार्थ विशेष। १० देखो 'सांकळ'। ११ देखो साकळी'।

सांकळ, सांकळी (ळु, ळी) सांकल्यो–पु० १ पैरों में पहनने का आभूषण विशेष। २ गले का आभूषण विशेष।

सांकोचर–पु० विषपान करने वाला, शिव।

सांकुड़णी (बो)–देखो 'संकुड़णी' (बो)।

सांकुल्यो, सांकुस्यो, सांकूल्यो, सांकूस्यो–१ देखो 'संख'। २ देखो 'संखियो'।

सांकेळी, सांकेली–स्त्री० १ सिरोही की बनी, एक प्रकार की तलवार। २ देखो 'संकेळी'।

सांको–देखो 'संको'।

सांखड़ि, सांखडो–वि० [सं० संस्कृति] परिमार्जित, साफ, शुद्ध।

सांखहड़ो–पु० चौहटा।

सांखिक–वि० [सं० शांखिक] १ शंख संबंधी। २ शंख का बना हुआ। ३ शंख बजाने वाला। ४ शंख बेचने वाला।

सांखूल्यो सांखूस्यो–१ देखो 'संख'। २ देखो 'संखियो'।

सांखो–पु० चारपाई की बुनावट का एक भाग।

सांख्य–पु० [सं०] १ महर्षि कपिल द्वारा रचित दर्शन का एक ग्रंथ। २ संख्याएँ आदि गिनने की क्रिया।–वि० १ संख्याओं से संबंधित। २ शंख का, शंख सम्बन्धी।

सांख्यजोग (योग)–पु० [सं० सांख्ययोग] शुद्ध चित्त एवं सच्चे त्याग से ग्रहण किया जाने वाला योग, दर्शन।

सांग–वि० [सं०] १ अंगों वाला, अवयव सहित। २ परिपूर्ण।–पु० [सं० शक्ति] १ भाले से मिलता-जुलता एक शस्त्र, शक्ति। २ एक प्रकार का भाला। ३ लोहे की मोटी छड़ जो भार उठाने में काम आती है। ४ एक प्रकार का अस्त्र। ५ देखो 'स्वांग'। ६ देखो 'सांगड़ी'।

सांगड़ी–स्त्री० १ बड़े पत्थर या पट्टियां उठाने वाले मजदूरों का मोटा डंडा, बल्ली। २ लोहे के बड़े खम्भों को खड़ा करने में काम आने वाला एक निसंडीनुमा उपकरण।

सांगड़ो–पु० १ बैलगाड़ी या शकट आदि को चक्कों सहित अधर उठाये रखने के लिये लगाया जाने वाला मोटा डंडा (देखो जैक)। २ देखो 'सांग'।

सांगणी–स्त्री० तिलहन के पौधों की फली या डोडी।

सांगणो–पु० १ शकुन के लिये दाहिनी ओर बोलने या दिखाई देने वाला पशु या पक्षी। २ दाहिना। ३ देखो 'सांधणो'।

सांगतिक–वि० १ संगति का, संगति संबंधी। २ सामाजिक। ३ अजनबी। ४ अतिथि, मेहमान।

सांगर–पु० १ शमी वृक्ष। २ देखो 'सांगरी'।

सांगरी–स्त्री० शमी वृक्ष की फली।

सांगळणो (बो)–क्रि० [सं० साकल्यम्] १ जख्म भरना, ठीक होना। २ कुए में पानी आना। ३ आय होना।

सांगावणो–देखो 'सांगणो'।

सांगवो–पु० रथ, तांगे आदि पर रखे मसनद की रोक के लिये लगाया जाने वाला उपकरण।

सांगि, सांगी–वि० १ स्वांग लाने वाला, स्वांगी। २ ढोंगी, पाखण्डी। ३ बैलगाड़ी आदि में लगने वाला छींका विशेष। ४ गाड़ीवान के बैठने का स्थान। ५ देखो 'सांग'।

सांगीत–देखो 'संगीत'।

सांगीयाई–स्त्री० १ आवड़ देवी का एक नाम। २ आवड़ देवी की, छः बहनें व एक भाई सहित, धातु पत्र पर बनी मूर्ति।

सांगुस्ट (स्ठ)–पु० [स० सांगुष्ठ] अंगूठे सहित हाथ का पंजा।

सांगुणो–१ देखो 'सांगणो'। २ देखो 'सांधणो'।

सांगेळ, सांगेळो–पु० [सं० साकल्यम्] बाहुल्य, अधिकता।

सांगोपांग–वि० [सं० साङ्गोपाङ्ग] १ समस्त अंगों सहित, पूर्ण, पूरा। २ सुन्दर, मनोहर। ३ उत्तम, श्रेष्ठ। ४ भीड़-भड़ाके सहित।

सांगो–देखो 'सागो'।

सांघणो–देखो 'सांगणो'।

सांघणो–वि० [सं० सघन] (स्त्री० सांघणी) १ घना, गहरा, सघन। २ समीप, पास। ३ अधिक, ज्यादा। ४ एक साथ, इकट्ठा। ५ जबरदस्त, जोरदार।–क्रि० वि० ६ सादर, ससम्मान। ७ देखो 'सांगणो'।

सांघुलो–१ देखो 'सांधणो'। २ देखो 'सांगणो'।

सांच–देखो 'सत्य'।

सांचभूंठकर, सांचकूठकर–पु० व्यापार, वाणिज्य।

सांचणो (बो)–क्रि० १ सांचा बनाना। २ सांचे में ढालना। ३ देखो 'संचणो' (बो)।

सांचियो–पु० १ सांचा बनाने वाला कारीगर। २ सांचे में वस्तुएँ ढालने वाला।

सांचिलो, सांचेलो–देखो 'साचो'। (स्त्री० सांचेली)

सांचोट–स्त्री० सच्चाई, सत्यता।

सांचो–१ देखो 'साचो'। २ देखो 'संचो'।

सांझ, सांजळो–देखो 'संध्या'।

सांजड–वि० संयत।

सांजणी–स्त्री० [सं० सांग्रही] दूध देने वाली गाय या भैंस जो बिना दूहो रह जाय।

सांजत, सांजति, सांजती–देखो 'साजत'।

सांजवण–स्त्री० [सं० संयवन] १ परिवार, कुटुम्ब। २ रसोईघर।

सांझ, सांझळो, सांझड़ी–देखो 'संध्या'।

सांझनट–पु० [सं० सन्ध्यानटी] शिव, महादेव।

सांझि, सांझी–स्त्री० १ विवाह के समय संध्या को गाये जाने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाले लोकगीत। २ पर्व दिन की संध्या को गाये जाने वाले लोकगीत। ३ देखो 'सध्या'। ४ देखो 'साझी'।

सांझ–देखो 'सध्या'।

सांझी–देखो 'साझी'।

सांट–देखो 'साट'

सांटै–देखो 'साटै'।

सांठगांठ–स्त्री० किसी कार्य की सिद्धि या योजना की पूर्ति के लिये की जाने वाली साझेदारी, समझौता। मेल-जोल।

सांठि, सांठी–स्त्री० १ तीर की डंडी। २ खान। ३ संधि।

सांठौ, सांठी–पु० [सं० साष्टिक] १ ईख, गन्ना। २ ज्वार के पौधे का हरा डंठल। ३ ईख का डंठल। ४ देखो 'सेंठौ'।

सांड, सांड–पु०[सं०षण्ड] १ गायों के ससर्ग के लिये छोड़ा हुआ, बछड़ा या बैल जिसे बिना खसी किये चिह्नित कर स्वतन्त्र छोड़ा जाता है ताकि अच्छी नस्ल के बछड़े हों। २ शिव का वाहन, नंदी। ३ नर घोड़ा।–वि० १ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा। २ वीर, बहादुर। ३ उन्मत्त, पागल। ४ बलवान, शक्तिशाली। ५ उद्दण्ड, उच्छृंखल। ६ देखो 'सांढ'।

सांड–देखो 'सांढ'।

सांडदहेजी–स्त्री० लड़की को दहेज में दिया जाने वाला एक सांड व बीस गायें।

सांडधेरी–पु० सांड के चरने के लिये खेत में छोड़ा जाने वाला फसल का भाग।

सांडणी–देखो 'सांढ'।

सांडसउ–पु० [सं० सन्दंश:] १ चिमटा, संडासी। २ जर्राही का एक औजार। ३ एक नरक का नाम।

सांडाई, सांडाई–स्त्री० अक्खड़पन, जबरदस्ती, जोरावरी।

सांडियौ–पु० १ संदेशवाहक, हरकारा। २ मादा ऊंट का सवार। ३ देखो 'सांड'।

सांडिल्य–पु० [सं० शाण्डिल्य] अग्नि का एक नाम।

सांडौ–पु० [सं० शाण्डिक] १ गोधा की आकृति का एक जंगली जानवर, जिसकी चर्बी एव तेल औषधि में काम आता है। २ कृषि कार्य में सामूहिक रूप से कार्य करने वाले मजदूरों (किसानों) को खिलाया जाने वाला भोजन। ३ संग, साथ। ४ देखो 'सांड'।

सांडयौ–देखो 'सांडियौ'।

सांढ, सांढ, सांढि–स्त्री० मादा ऊंट, ऊंटनी।

सांढियौ, सांढियौ, सांढोउ (यौ)–१ देखो 'सेंढौ'। २ देखो 'सांड'। ३ देखो 'सांडियौ'।

सांढौ, सांढी–देखो 'सांढौ'।

सांण–पु० [सं० श्राण] १ भोजन। २ कमल। ३ धनुष। [सं० शाण, शाण] ४ सन का बना मोटा वस्त्र। ५ कसौटी का पत्थर। ६ आरा। ७ शस्त्रों के धार लगाने का पत्थर या उपकरण। ८ चार माशे का एक तौल विशेष। ९ उत्तेजित करने वाले शब्द। १० गर्जन, ध्वनि। ११ देखो 'सान'।–वि० सन या पटसन का।

सांणग्रह (घर)–पु० [सं० शान-गृह] १ शस्त्र पैने करने का स्थान। २ स्नानघर।

सांणजी, सांणजीव–पु० [सं० शान-जीव] सिकलीघर।

सांणि–पु० [सं० शाणि] सन या पटसन।

सांणी, सांणौ–पु० [सं० साधनिक] १ घोड़ों के तबेलों का अध्यक्ष। २ घोड़ों को शिक्षित करने वाला। [सं० शाणी] ३ कसौटी। ४ पटसन का वस्त्र। ५ छोटी कनात या तम्बू। ६ फटा वस्त्र। ७ सान का पत्थर।–वि० [सं० श्लक्ष्णक] कोमल, नाजुक।

सांणोर–पु० डिंगल का एक छंद (गीत) विशेष।

सांणौ, सांणी–पु० १ अनाज को कोठी के नीचे बनी मोरी। २ इस मोरी को बन्द कर रखने का उपकरण।

सांत–वि० [सं० शांत] १ दबाया हुआ। २ मरा हुआ, मृत। ३ पूर्णत: समाप्त। ४ सतुष्ट, अघाया हुआ। ५ आवेग, चंचलता रहित, स्थिर। ६ सान्त्वना पाया हुआ। ७ शिथिल, ढीला। ८ अप्रभावित। ९ शुभ्र, मगलकारी। १० चुप, मौन। ११ जितेन्द्रिय। १२ निस्तब्ध, नीरव। १३ सौम्य, गंभीर। [सं० श्रान्त] १४ थकाहुआ, क्लान्त। १५ उष्णता रहित।–पु० १ सुख, हर्ष, आनन्द। २ प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष। ३ साहित्य में एक रस।

सांतकुंभ–देखो 'सातकुंभ'।

सांतकौ, सांतकौ–पु० चिंता, अशांति, फिक्र।

सांतनव–पु० [सं० शांतनव] भीष्म पितामह का एक नाम।

सांतनु–पु० [सं० शान्तनु] कौरव-पाण्डवों के प्रपितामह। राजा शान्तनु।—सुत–पु० भीष्म। शांतनु का पुत्र।

सांतपन–वि० [सं०] दो दिन में पूर्ण होने वाला।–पु० १ छः रात्रि तक किया जाने वाला एक उपवास। २ प्रथम दिन केवल पचगव्य पीकर दूसरे दिन रखा जाने वाला उपवास।

सांतपनकच्छ (कृच्छ)–पु० एक प्रकार का व्रत।

सांतर, सांतर–स्त्री० सामग्री, सामान।–वि० जिसके बीच में अवकाश हो।

सांतरौ, सांतरौ–वि० [सं० सत्तरम्] (स्त्री० सांतरी) १ उत्तम श्रेष्ठ, बढ़िया। २ अच्छा, ठीक। ३ स्वादिष्ट, जायकेदार। ४ स्वस्थ, तदुरुस्त। ५ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा। ६ वांछित, वाजिब, उपयुक्त। ७ उपयुक्त, बढ़िया। ८ तेज, तीक्ष्ण। ९ ठीक, व्यवस्थित। १० सुन्दर, खूबसूरत।

सांता–स्त्री० [सं० शान्ता] १ देवी का एक नाम। २ दूर्वा, दूब। ३ शमी। ४ एक श्रुति। ५ रेणुका।

सांताकारी–वि० [सं० शान्तिकारिन्] शांतिदायक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांति-स्त्री० [सं० शान्ति] १ वेग, क्षोभ, दुःख आदि से रहित स्थिति, अवस्था या भाव। २ स्थिरता। ३ आराम, चैन। ४ समाज की, लड़ाई-झगड़ा व उत्पात से मुक्त अवस्था। ५ नीरवता, निस्तब्धता। ६ मृत्यु मौत। ७ धीरज, धैर्य। ८ निष्कलंक होने की अवस्था। ९ वासनाओं से मुक्ति, विराग। १० सौभाग्य। ११ बचाव। १२ अनिष्ट निवारण। १३ रोगादि से मुक्ति। १४ युद्ध की समाप्ति। १५ मेल, मिलाप। १६ संतुष्टि। १७ दुर्गा देवी का नाम।

सांतिक-वि० [सं० शान्तिक] शान्ति से संबंधित।-पु० शांति का परिणाम।

सांतिकुंभ-देखो 'सातकुंभ'।

सांतिद, सांतिदाता (दायक, दायी)-वि० [सं० शांतिदातृ] शान्ति देने वाला।-पु० भगवान् विष्णु।

सांतिपंचमी (पांचम)-स्त्री० [सं० शांतिपंचमी] आश्विन शुक्ला पंचमी।

सांतिपात (पातर, पात्र)-पु० [सं० शान्तिपात्र] क्रूर ग्रह या पापों की शान्ति के लिये जल रखने का पात्र।

सांती-देखो 'सांति'।

सांतीर-देखो 'सहतीर'।

सांतोम, सांतोमि (मी)-देखो 'स्तोम'।

सांतो, सांतौ-पु० १ चोरी के उद्देश्य से दीवार में किया जाने वाला छेद, सेंध। २ नुकसान, हानि। ३ मोट की सिंचाई के उपकरणों का समूह।

सांथरवाड़ी-देखो 'साथरवाड़ी'।

सांथरी-देखो 'साथरी'।

सांथळ-देखो 'साथळ'।

सांधी-स्त्री० १ करघे के ऊपर लगी एक लकड़ी विशेष। २ बुनाई की एक प्रक्रिया।

सांधो-देखो 'सांतो'।

सांध्यो-पु० स्वस्तिक।

सांधो-१ देखो 'सांधो'। २ देखो 'सौंधो'।

सांद्र-वि० [सं०] १ गंभीर, गहरा। २ घना, सघन। ३ स्निग्ध, चिकना। ४ मृदु, मधुर। ५ सुन्दर, मनोहर। ६ विपुल, पर्याप्त। ७ गुच्छा, समूह।

सांद्रप्रसाद-पु० [सं०] मूत्र संबंधी एक रोग।

सांध-१ देखो 'सौंधो'। २ देखो 'संधि'।

सांधण-स्त्री० [सं० संधि] जोड़, योग।

सांधणो (बो)-क्रि० [सं० साधन] १ निशाना साधना, प्रत्यंचा पर तीर चढ़ाना। २ कपड़े आदि के जोड़ या टांका लगाना। ३ मेल-जोल करना। ४ संधि-समझौता करना। ५ पिंडाकार या गोलाकार करना। ६ जीतना। ७ सम्मिलित करना विलीन करना। ८ तैयार करना। ९ बनाना, गढ़ना। १० निर्मित करना, बनाना।

सांधाखांनो-देखो 'सौंधाखांनो'।

सांधाणो-स्त्री० कपड़े की बुनाई की एक विधि, प्रक्रिया।

सांधि-स्त्री० [सं० सन्धि] १ समय। २ संधि।

सांधिक-वि०[सं०] १ संधि कराने वाला। २ शराब बनाने वाला।

सांधिकै, सांधिकी, सांधै-पु० १ संधिस्थान, जोड़। २ सौध।

सांधो-पु० १ परस्पर लगाव, वास्ता, संसर्ग व सम्पर्क। २ जोड़, संधि। ३ वश, उपाय। ४ सहारा। ५ देखो 'सौंधो'।

सांन-स्त्री० [अ० शान] १ इज्जत, प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा। २ ठाट-बाट, तड़क-भड़क। ३ वात रोग, लकवा। ४ श्रेष्ठता। ५ प्रताप, प्रभाव। [सं० संज्ञा] ६ पागलपन, बावलापन। ७ निशान, झण्डा। ८ बुद्धि। ९ सन के रेशे से बना वस्त्र।-वि० १ तीक्ष्ण, तेज। २ देखो 'सांण'।

सांनणो (बो)-क्रि० १ भिगोना, गीला करना। २ पागल करना, बावला करना।

सांनपद (पाद)-पु० [सं० शानपाद] चन्दन घिसने का पत्थर।

सांनबाफ-पु० एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र।

सांनिज-देखो 'सानुज'।

सांनिद्ध, सांनिध, सांनिधि, सांनिध्य-पु० [सं० सानिध्य] १ सामीप्य। २ मंगल, अमन-चैन।

सांनियो-वि० १ पागल, बावला। २ चित्तभ्रम।

सांनी, सांनी-स्त्री० इशारा, संकेत।-वि० [अ० शानी] समान, तुल्य।

सांनु-पु० [सं० सानु] १ पर्वत की चोटी, शिखर। २ जंगल, वन। ३ पर्वत के ऊपर की चौरस भूमि।

सांनुज-पु० [सं० सहानुज] स्वभाव, आदत, प्रकृति।

सांनुमांन, सांनूमांन-पु० [सं० सानुमत्] पर्वत, पहाड़

सांनू-देखो 'सानु'।

सांनूवाळ-पु० [सं० सानु-आलुच] पर्वत, पहाड़।

सांप, सांप-पु० [सं० सर्प] सर्प, नाग।

सांपड़, सांपड़-पु० १ स्नान, मज्जन। २ झोंपड़ियों आदि में लगाया जाने वाला एक प्रकार का बंधन।

सांपड़णो (बो)-देखो 'संपड़णो' (बो)।

सांपड़ाणो (बो), सांपड़ावणो (बो)-देखो 'सपड़ाणो'(बो)।

सांपजणो (बो)-देखो 'संपजणो' (बो)।

सांपण (णी)-देखो 'सापणो'।

सांपणो (बो)-देखो 'सूंपणो' (बो)।

सांपनणो (बो), सांपन्नणो (बो)-क्रि० [सं० संपदनम्] १ प्राप्त होना, मिलना। २ उत्पन्न होना, पैदा होना। ३ पूरा होना, सम्पन्न होना।

सांपरत, सांपरत, सांपरतक, सांपरतंक, सांपरय-देखो 'साप्रत'।

सांपराय-पु० [सं० साम्परायम्] युद्ध।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांपरायक, सांपरायिक, सांपरायिकी–वि० [सं० साम्परायिक] १ युद्ध में काम आने वाला। २ परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक। ३ विपत्तिजनक।–पु० १ युद्ध, समर। २ युद्ध का रथ।

सांपरीछतरो–स्त्री० वर्षा ऋतु में होने वाला छातानुमा एक छोटासा पौधा।

सांपरीमासी–स्त्री० एक जंतु विशेष।

सांपाड़ो–देखो 'संपाड़ो'।

सांपोळी–पु० नशे में मस्त होकर झूमने या डगमगाने की क्रिया।

सांपो, सांपो–पु० जंगल में चरने के लिये जाने वाली गायों, भैंसों आदि का समूह।

सांप्रत, सांप्रत, (ति, तो)–अव्य० १ प्रत्यक्ष, सामने। २ हूबहू, साक्षात्। ३ सचमुच। ४ इसी समय, अभी। ५ फिर, पुनः। ६ उचित, मुनासिब। ७ वास्तव में, हकीकत में। ८ उस समय।

सांफळ–पु० युद्ध, लड़ाई, झगड़ा।

सांफळउ–देखो 'सांफळो'।

सांफळणो (बो)–क्रि० १ युद्ध करना, लड़ाई करना, संग्राम करना। २ टक्कर, लेना, भिड़ना।

सांफळो–पु० १ युद्ध, लड़ाई, संग्राम। २ मोर्चा। ३ टक्कर, मुठभेड़, झड़प।–वि० १ कटिबद्ध, तैयार। २ अस्त्र-शस्त्र सहित।

सांब–पु० [सं० साम्ब] १ शिव का एक नामान्तर। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ३ देखो 'सांम'।

सांबण–देखो 'सावण'।

सांबर–देखो 'सांभर'।

सांबरणी–स्त्री० अधिकार, कब्जा।

सांबरी–स्त्री० [सं० शाम्बरी] १ माया, इन्द्रजाल, बाजीगर। २ मायाविनी। ३ मूषाकानी लता। ४ देखो 'सांबरो'।

सांबरोट–पु० सांभर प्रदेश का भू-भाग या भूमि।

सांबरो–वि० सांभर पशु संबंधी, सांभर पशु के चर्म संबंधी।–पु० एक प्रकार का हिरन, सांभर।

सांबळ, सांबळउ–देखो 'सांवळो'।

सांबळणी (बो)–देखो 'सांभळणी' (बो)।

सांबविक–पु० [सं० साम्बविकः] शंख बेचने वाला व्यक्ति।

सांबहणी (बो)–देखो 'संभाणी' (बो)।

सांबीलो–पु० [सं० शंबज] १ धानादि कूटने का एक उपकरण, मूसल। २ एक प्रकार का हथियार।

सांभणी (बो)–देखो 'संभाणी' (बो)।

सांभर–पु० १ मृगों की एक जाति व इस जाति का मृग। २ इस मृग का सींग। ३ राजस्थान का एक प्रदेश। ४ इस प्रदेश के पास की, नमक की एक झील। ५ इस झील के पानी से बनाया गया नमक।

सांभरणी (बो)–१ देखो 'समरणी' (बो)। २ देखो 'सांभळणी' (बो)।

सांभरमति (ती)–देखो 'साबरमती'।

सांभरियो, सांभरी–पु० १ सांभर झील का नमक। २ चौहान शाखा का राजपूत। ३ 'सांभर' मृग।–वि० सांभर का, सांभर संबंधी।

सांभळण–पु० कान, श्रवण।

सांभळणो (बो)–क्रि० १ सुनना। २ ध्यान देना। ३ समझना, जानना।

सांभव–वि० [सं० शांभव] शिव का, शिव से संबंधित। शैव।–पु० १ देवदारू का वृक्ष। २ शिव उपासक, शिव भक्त। ३ शिव पुत्र। ४ कर्पूर। ५ विष, जहर।

सांभवी–स्त्री० [सं० शांभवी] १ पार्वती, दुर्गा। २ दूब, दूर्वा।

सांभेळी–देखो 'सांमेळो'।

सांम्हळणो (बो)–देखो 'सांभळणो' (बो)।

सांमंत–पु० [सं० सामंत] १ योद्धा। २ बड़ा सरदार, बड़ा अमीर। ३ छोटा राजा जो कर देता है। ४ वीर या बहादुर व्यक्ति। ५ देवराज इन्द्र। ६ समीपवर्ती, पड़ोसी। ७ पड़ोस। ८ देखो 'संवत'। ९ हाथी, गज।

सांमद–पु० १ बैलों की जोड़ी। २ देखो 'समुद्र'।

सांमदर, सांमद्र–देखो 'समुद्र'।

सांम–पु० [सं० सामन्] १ यज्ञ के समय पढ़े जाने वाले मंत्र। २ सामवेद। ३ राजनीति का एक अंग, साम नीति। ४ प्रशंसात्मक गान या छन्द। ५ कोमलता, मृदुता। ६ मैत्री, दोस्ती। [फा० शाम] ७ सायंकाल, संध्या। ८ डंडे, लाठी या हथियारों के दस्ते के बीच लगने वाला धातु का बंद। [फा० साय] ९ मरण, मृत्यु। १० दर्द, पीड़ा। ११ देखो 'सांमी'। १२ देखो 'स्यांम'। १३ देखो 'स्यांमक'।

सांमक–वि० [सं० सामक] १ सामवेद संबंधी। २ साम वेद का पंडित।

सांमख–वि० १ पूरा, पूर्ण। २ लम्बा, बड़ा।

सांमखोर, सांमखोरी–वि० स्वामी भक्त।

सांमग–पु० [सं० सामन-ग] १ सामवेद का गान करने वाला ब्राह्मण। २ भगवान विष्णु।

सांमगरो, सांमगिरो, सांमग्री–स्त्री० [सं० सामग्री] १ किसी कार्य में प्रयोग लो जाने वाली वस्तु, वस्तु समूह। २ सामान, साधन। ३ गृहस्थी का सामान। ४ असबाब।

सांमज–देखो 'स्यामज'।

सांमटणो (बो)–देखो 'समेटणो' (बो)।

सांमठो–देखो 'सांवठो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांमण–स्त्री० १ देवी का एक नाम। २ दशनामी संन्यासियों की कोई गृहस्थ स्त्री। ३ स्वामिनी, मालकिन। ४ देखो 'सांवण'।

सांमणि, सांमणी–स्त्री० [सं० स्वामिनी] १ स्वामिनी; मालकिन। २ श्रावण मास की तृतीया। ३ फकीरन, संन्यासिनी। –वि० १ श्रावण मास की, श्रावण मास संबंधी। २ भयंकर विनाशकारी।

सांमद्रोह–देखो 'स्वांमीद्रोह'।

सांमधरम, सांमधरमी (म्म)–देखो 'स्वांमीधरम'।

सांमधरमी (म्मी)–देखो 'स्वांमीधरमी'।

सांमधरमी–देखो 'स्वांमीधरम'।

सांमधी–देखो 'संबंधी'।

सांमध्रम, सांमध्रम्म–देखो 'स्वांमीधरम'।

सांमध्रमी, सांमध्रम्मी–देखो 'स्वांमीधरमी'।

सांमनें–क्रि० वि० १ सम्मुख, अगाड़ी। २ प्रत्यक्ष। ३ विरुद्ध।

सांमनो, सांमनो–पु० १ मुकाबला, भिड़ंत। २ विरुद्ध या विपक्ष में होने की अवस्था या भाव। ३ किसी पदार्थ के आगे का भाग। ४ भेंट, मुलाकात। ५ प्रतियोगिता।

सांमपण, सांमपणो–पु० स्वामित्व।

सांमर–देखो 'सांभर'।

सांमरत, सांमरत्थ, सांमरथ, सांमरथि–१ देखो 'सांमरथ्य'। २ देखो 'समरथ'।

सांमरथीक–देखो 'समरथ'।

सांमरथ्य–१ देखो 'सांमरथ्य'। २ देखो 'समरथ'।

सांमरथ्य–पु० [सं० सामर्थ्य] १ समर्थ होने की स्थिति या भाव। २ कार्य संपादन की शक्ति या योग्यता। ३ शब्दों की व्यंजना शक्ति। ४ शब्दों का पारस्परिक संबंध। ५ धन, दौलत। ६ शक्ति, बल।

सांमराट–देखो 'सम्राट'।

सांमराल–पु० युद्ध, संग्राम।

सांमराथ–देखो 'समरथ'।

सांमरियो–देखो 'सांमरियो'।

सांमरी–स्त्री० एक प्रकार की लता।

सांमर्क–देखो 'सांमर'।

सांमरोट–पु० ऊमरकोट के दक्षिण की ओर का भू-भाग।

सांमरी–देखो 'सांमर'।

सांमरथी–देखो 'सांमरियो'।

सांमळ, सांमल (लु, लू)–पु० १ सूर्य, सूरज। २ घोड़ों की एक जाति। ३ देखो 'सांवळो'। ४ देखो 'सांमिळ'।

सांमलात (ति, तो)–वि० शामिल, सम्मिलित।

सांमळियो–देखो 'सांवळो'।

सांमळी–देखो 'सवळी'।

सांमळू, सांमळो–देखो 'सांवळो'।

सांमलो–वि० (स्त्री० सांमली) १ आगे का, सामने का। २ प्रतिद्वन्द्वी प्रतियोगी। ३ आने वाला।

सांमहणी (णो)–देखो 'संमणी' (णो)।

सांमहलो–देखो 'सांमलो'।

सांमही–१ देखो 'सांम्ही'। २ देखो 'सांमलो'।

सांमान–पु० [फा० सामान] १ कार्य साधन की आवश्यक वस्तुएँ। २ प्रबन्ध, व्यवस्था। ३ साज-सामग्री। ४ युद्ध का सामान। ५ घर-गृहस्थी का सामान। ६ धन, द्रव्य, दौलत।

सांमान्या–स्त्री० १ धन के बदले प्रेम करने वाली नायिका। २ सर्व साधारण की उपलब्ध स्त्री।

सांमाचार, सांमाचारी–देखो 'समाचार'।

सांमाज–१ देखो 'समाज'। २ देखो 'स्वांमज'।

सांमालिक–पु० [सं० सामाजिक] १ सभा का सदस्य, सभासद। २ तमाशे करने वाला व्यक्ति। ३ तमाशा देखने वाला जन समूह। ४ काव्य एवं संगीत का ज्ञाता।–वि० १ समाज का, समाज संबंधी। २ सुहृदय।

सांमाजिका–पु० १ समाज में रहने वाले सदस्य। २ सभा के सदस्य, सभासद।

सांमाथ–देखो 'समरथ'।

सांमाधि, सांमाली–देखो 'समाधि'।

सांमायक, सांमायिक–स्त्री० समस्त सांसारिक क्रिया-कलापों को छोड़ कर प्रभु-स्मरण करने की घड़ी। (जैन)

सांमि–देखो 'सांमी'।

सांमिण, सांमिणी–१ देखो 'सांहणो'। २ देखो 'सांमणी'। ३ देखो 'समांणी'।

सांमिधरम, सांमिधरम्म–देखो 'स्वांमीधरम'।

सांमिधरमी, सांमिधरम्मी–देखो 'स्वांमीधरमी'।

सांमिध्रम, सांमिध्रम्म–देखो 'स्वांमीधरम'।

सांमिय–देखो 'सांमी'।

सांमियांणो (नो)–पु० [फा० शामियानः] तम्बू, शामियाना।

सांमियो–देखो 'सांमी'।

सांमिळ, सांमिल–वि० [फा० शामिल] साथ, शामिल; सम्मिलित।

सांमिलि–देखो 'सांमिल'।

सांमिसाल–पु० [सं० स्वामिन् सार] अधिपति।

सांमी, सांमी–पु० [सं० स्वामी] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान। २ भगवान विष्णु। ३ शिव, महादेव। ४ स्वामि कार्तिकेय। ५ पक्षिराज गरुड़। ६ राजा, नृप। ७ स्वामी, मालिक। ८ पति, स्वामी। ९ घर का प्रधान व्यक्ति। १० सेनापति, सेना नायक। ११ दशनामी संन्यासी। १२ नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी। १३ साधु, सन्यासी। १४ देखो 'सांम्ही'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१५ देखो 'सांय'।

सामीप्यरूप (प्यरूप्य, प्रम, प्रस्म)–देखो 'स्वामीप्यरूप'।

सामीनी–देखो 'साइणी'।

सामीप–१ देखो 'समीप'। २ देखो 'सामीप्य'।

सामीपत्य, सामीपमुक्ति (मुक्ति, मुक्ति) सामीप्य, सामीप्यमुक्ति–स्त्री० [सं० सामीप्य] १ निकटता, समीपता। २ मुक्ति के पांच भेदों में से एक जिसमें भगवान की नित्य समीपता प्राप्त हो जाती है।

सामीर–देखो 'समीर'।

सामीरजायी–पु० १ पवनसुत, हनुमान। २ भीम, वृकोदर।

सामीवच्छल, सामीवछल–पु० [सं० साधर्म्यवात्सल्य] जैन सम्प्रदाय में समान धर्मियों का भोजनादि से किया जाने वाला सत्कार।

सामुद, सामुदर, सामुद्र–वि० [सं० सामुद्र] १ समुद्र का, समुद्र संबंधी। २ समुद्र में उत्पन्न।–पु० १ समुद्री नमक। २ समुद्री फेन। ३ शारीरिक दाग, चिह्न। ४ हर्ष, आनन्द।

सामुद्रक, सामुद्रिक–पु० [सं० सामुद्रिक] १ मनुष्य के शरीर के चिह्न जिनसे शुभाशुभ फल ज्ञात होते हैं। २ शारीरिक चिह्नों से शुभाशुभ फल बताने वाला ज्योतिष का ग्रंथ।–वि० १ समुद्र का, समुद्र संबंधी। २ समुद्र से उत्पन्न।

सामुह, सामुहउ, सामुहु, सामुहो, सामू–देखो 'साम्हो'।

सामूसाम–देखो 'साम्होसाम'।

सामेळी–स्त्री० [सं० सामेयी] १ कन्या पक्ष वालों की ओर से, नगर या गांव के प्रांगण में दूल्हे व बरातियों का, तोरन पर जाने से पूर्व किया जाने वाला स्वागत। २ सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा मंगल कलश लेकर की जाने वाली अगुवानी।

सामेज–पु० [सं० सायुज्य] मुक्ति के पांच भेदों में से एक।

सामेहळी–देखो 'सामेळी'

सामैं–देखो 'साम्हैं'।

सामेरी–स्त्री० एक प्रकार की रागिनी।

सामोद–वि० हर्ष, प्रसन्नता युक्त, आनन्ददायक।

सामो, सामो–देखो 'साम्हो'।

सामोसाम–देखो 'साम्होसाम'।

साम्य–पु० [सं० साम्य] १ समानता। २ देखो 'स्यांस'। ३ देखो 'सांमी'।

साम्रत, साम्रथ–१ देखो 'समरथ'। २ देखो 'सांसरथ्य'।

साम्राज्य–पु० [सं० साम्राज्य] १ एक ही सम्राट के अधीन रहने वाला राष्ट्र, देश। २ शासन, सत्ता।

साम्हउ–देखो 'साम्हो'।

साम्हनैं–देखो 'सामनैं'।

साम्हळणी (बी)–देखो 'सांमळणी' (बी)।

साम्हलो–देखो 'सांमलो'।

साम्ही–क्रि० वि० १ सम्मुख, सामने। २ उल्टा, विपरीत या प्रतिकूल दशा में। ३ सामने। ४ ओर, तरफ। ५ अनुकूल; पक्ष में। ६ तुलना में अपेक्षाकृत। ७ समक्ष, अगाड़ी। ८ देखो 'सांमी'।

साम्हु–देखो 'साम्हो'।

साम्हेई–स्त्री० एक देवी विशेष।

साम्हेळी (ली)–देखो 'सांमेळी'।

साम्हैं–क्रि० वि० १ सामने, सम्मुख। २ ओर, तरफ।

साम्हो–वि० (स्त्री० साम्ही) १ सामने, सम्मुख। २ तरफ, ओर। ३ उल्टा, विपरीत। ४ अनुकूल, पक्ष में।

साम्होसाम–क्रि० वि० बिल्कुल सामने, आमने-सामने।

सायंकाळ–देखो 'सायंकाळ'।

सायंड (ड), सायंड (ड)–देखो 'सांड'।

साय–स्त्री० १ तीर, गोली चलने या पक्षियों के उड़ने से उत्पन्न ध्वनि। २ सुनसान जगह में वायु से उत्पन्न सन्-सन् ध्वनि।

सायत–स्त्री० १ समय, वक्त। २ देखो 'साति'।

सायति, सायती–देखो 'साति'।

सायरो–पु० किसी रास्ते पर लगाया जाने वाला झाड़ी का अवरोध।

सायी–१ देखो 'सांमी'। २ देखो 'साई'।

सायीनी, सायीनी–देखो 'साइणी'। (स्त्री० सायीनी, सायीनी)

सार, सारं–पु० गाय, बैल, भैंस आदि पशु।

सार–देखो 'सामंत'।

सावटणी (बी)–देखो 'समेटणी' (बी)।

सावटी, सावटी (ठी)–पु० ऊंचा स्थान, चबूतरा। –वि० १ जबरदस्त, शक्तिशाली। २ अधिक, पर्याप्त।

सावण, सावणियो–पु० [सं० श्रावण] १ विक्रमी या शक संवत के अनुसार प्रतिवर्ष का पांचवां मास, श्रावण। २ वर्षा ऋतु संबंधी या इस ऋतु में गाया जाने वाला लोक गीत। ३ देखो 'सुगन'। ४ देखो 'सुगणो'।

सावणडाढ (दाढ)–पु० माला।

सावणडोकरी–स्त्री० वीर बहूटी नामक कीड़ा।

सावणि, सावणिक–१ देखो 'सावण'। २ देखो 'सावणी'।

सावणी–वि० [सं० श्रावणी] १ श्रावण मास का, श्रावण मास संबंधी। २ देखो 'श्रावणी'। –पु० पहले श्रावण में वधू के लिये भेजे जाने वाले वस्त्र या खाद्य पदार्थ आदि।—तीज–स्त्री० श्रावण शुक्ला तृतीया, स्त्रियों के व्रत एवं उत्सव का दिन। —पूनम–स्त्री० श्रावण की पूर्णिमा, रक्षा बंधन पर्व।

सावणूं, सावणू–स्त्री० खरीफ की फसल। –वि० श्रावण मास का, श्रावण मास संबंधी।

सावणूबाव, सावणूसाण–पु० खरीफ की फसल पर कृषकों से लिया जाने वाला कर।

सावत–स्त्री० १ एक प्रकार की मुसलमान वेश्या; रंडी। २ देखो 'सांमत'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सांवतवे, सांवतवें—पु० एक लोक गीत विशेष ।
सांवन-पु० १ एक प्रकार की राग विशेष । २ देखो 'सांवण'
सांवरणी (बौ)-देखो 'संवारणी' (बौ) ।
सांवरियो, सांवरो, सांवळ, सांवळाो-देखो 'सावळी' ।
सांवळताई-स्त्री० श्याम वर्ण होने का भाव, श्यामलता ।
सांवळपक्ष, सांवळपख, सांवलपख-पु० [सं० श्यामल-पक्ष] प्रत्येक मास का कृष्णपक्ष ।
सांवळियो-देखो 'सांवळी' ।
सांवळी-देखो 'संवळी' ।
सांवळोसाढ़ो-स्त्री० एक प्रकार का लोक गीत ।
सांवळी (लौ)-पु० [सं० श्यामल] १ श्रीकृष्ण । २ अर्जुन । ३ श्रीराम । ४ परमेश्वर, ईश्वर । ५ भगवान विष्णु । ६ बादल, मेघ । ७ काला रंग । ८ एक मांसाहारी पक्षी । ९ भौंरा । १० शिकारी । ११ कृष्ण मृग । १२ अफीम, अमल । १३ भंवर, भ्रमर । -वि० (स्त्री० सांवळी) १ श्याम रंग का, कृष्ण, काला । २ नीला, काला ※।
सांवीणो-देखो 'साईणो' ।
सांवो, सांवौ-पु० [सं० श्यामक] १ चने की जाति एक अनाज जिसे उबाल कर खाया जाता है, एक प्रकार का कदन्न । २ घुटनों तक लंबा एक घास विशेष । ३ देखो 'संवो' ।
सांस-१ देखो 'सास' । २ देखो 'सूंस' ।
सांसउ-देखो 'सांसो' ।
सांसण-१ देखो 'सासन' । २ देखो 'सांसो' ।
सांसणी, सांसणीक-पु० १ वह व्यक्ति जिसको शासन की ओर से दान में भूमि मिली हुई हो । -स्त्री० २ भांट जाति की एक शाखा ।
सांसणो-पु० दमा रोग से पीड़ित पशु ।
सांसणो (बौ)-क्रि० १ अभिलाषा करना, इच्छा करना । २ शासन करना, हुकूमत करना । ३ तरसना, बिलखना । ४ सहना, सहा जाना । ५ ठहरना, रुकना ।
सांसता-वि० [सं० श्वसत्] स्वस्थ ।
सांसर-पु० पशुधन ।
सांसारिक, सांसारी-वि० [सं० सांसारिक] १ संसार का, संसार संबंधी । २ संसार के कार्य संबंधी, लौकिक । ३ जिसका संबंध जीवन की आवश्यकताओं या विषय भोगों से हो ।
सांसि, सांसी-पु० (स्त्री० सांसण) १ राजस्थान की एक घुमक्कड़ जाति व इस जाति का व्यक्ति । २ संशय ।
सांसु- १ देखो 'सासू' । २ देखो 'सास' । ३ देखो 'संसय' ।
सांसो-पु० [सं० संशय] १ संदेह, शक, भ्रम । २ सोच, फिक्र, चिन्ता । ३ दुःख । ४ डर, भय । ५ सम्भावना, आशंका । ६ चक्कर । ७ कमी, अभाव । ८ रौब, आतंक ९ धारणा । १० संकट, विपत्ति । ११ झंझट, उलझन ।
साहगणो, साहगणो-वि० १ अनुकूल । २ देखो 'सांगणो' ।
साहण-देखो 'साहण' ।
साहणी-देखो 'सांगणी' ।
साहणी-१ देखो 'सांगणो' । २ देखो 'साहणी' ।
साहणी (बौ)-देखो 'साहणो' (बौ) ।
साहमो-देखो 'सांम्हो' ।
साहस, साहस्स-देखो 'साहस' ।
साहांमो-देखो 'सांम्हो' ।
सा, सा-पु० १ ईश्वर, परमात्मा । २ मित्र, दोस्त । ३ वर्ष, साल । ४ स्वाद, जायका । ५ संगीत में एक स्वर ।—स्त्री० ६ स्त्री, नारी । ७ रज, धूल । ८ साली । ९ लक्ष्मी; रमा । १० गुफा । ११ टिड्डी । १२ रेखा, पंक्ति । १३ पावती । १४ मात्रा या तुलना सूचक प्रत्यय शब्द । -वि० १ समान, तुल्य । २ अच्छा, भला । ३ साथ, सहित । ४ देखो 'साह' ।-सर्व० वह (स्त्री) ।
सा-१ देखो 'सास' । २ देखो 'हा' ।
साअला-देखो 'सांता'
साइ-सर्व० १ वह (स्त्री) । २ देखो 'साई' । २ देखो 'सांमी'
साइउ-पु० [सं० स्वागत] मिलन ।
साइक (क)-देखो 'सायक' ।
साइण (णी)-१ देखो 'साकणी' । २ देखो 'सांइणी' (स्त्री०)
साइत-१ देखो 'सायत' । २ देखो 'सायद' ।
साइधण-देखो 'सावधण' ।
साइनी, सांइनी-देखो 'सांइणी' ।
साइर-१ देखो 'सागर' । २ देखो 'सायर' ।
साइवांण (न)-१ देखो 'सांमियांनो' । २ देखो 'साईवांन' ।
साई, साई-स्त्री० १ खरीद को जाने वाली जमीन, वस्तु आदि की कीमत का वह अंश जो सौदा तय हो जाने पर अग्रिम दिया जाता है, पेशगी । २ रुदन, चीत्कार । ३ साक्षी । ४ इशारा, संकेत । ५ देखो 'सांमी' ।
साईदार, साईदार-पु० साक्षी, गवाही । -वि० १ साक्षी देने वाला, गवाह । २ पेशगी देने वाला ।
साईनो, साईनो-वि० [सं० समवयस्क] (स्त्री० साईनी, साईनी) बराबरी का, हम उम्र ।
साईवांण (न)-पु० १ खज्जा, खाजन । २ देखो 'सांमियांनो' ।
साउ-पु० १ स्वाद, जायका । २ देखो 'साऊ' ।
साउचेती-देखो 'सावचेती' ।
साउळ, साउल-पु० १ बढ़ई का एक औजार विशेष । २ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । ३ एक प्रकार की साड़ी । ४ देखो 'सावळ' ।
साउबांणी-स्त्री० १ महारानी, रानी । २ ठकुरानी, सामंत की पत्नी । ३ बेटी, पुत्री । ४ देखो 'सवासणी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साऊ, साऊ–पु० १ सुभट, सामंत, योद्धा। २ देखो 'सासु'। –वि० १ सुन्दर, मनोहर। २ उत्तम, श्रेष्ठ।

साऊजम–वि० कार्यरत, उद्यमशील।

साऊवाणी–देखो 'सावधाणी'।

साकंप–वि० कम्पन सहित, कम्पनयुक्त।

साकंब, साकंबरी, साकंभ, साकंभरी–स्त्री० [सं० शाकम्भरी] १ देवी का एक रूप। २ अपने शरीर से उत्पन्न शाकों से समस्त संसार का भरण-पोषण करने वाली देवी। ३ चौसठ योगिनियों में से तीसरी योगिनी। ४ सांभर झील के आस-पास का प्रदेश। ५ सांभर का एक नाम। —पूनम–स्त्री० पौष शुक्ला पूर्णिमा।

साक–पु० [सं० शाक] १ शाकद्वीप का एक प्रसिद्ध वृक्ष। २ देखो 'साग'। ३ देखो 'सक'।

साकट–पु० [सं० शाक्त] १ शाक्त मत का अनुयायी। २ रथ, शकट। [सं० शाकटः] ३ बैल। –वि० १ दुष्ट, पाजी। २ विधर्मी। ३ मूर्ख, नासमझ।

साकणि, साकणी–स्त्री० [सं० शाकिनी] १ दुर्गा देवी की एक सहचरी का नाम। २ युद्धप्रिय चंडी। ३ चौसठ योगिनियों में से एक। ४ पिशाचिनी। ५ प्रेतिनी।

साकत, साकति, साकत्ति–१ देखो 'साखत'। २ देखो 'साकट'।

साकतिक–पु० [सं० शाक्तिक] शाक्त मत का अनुयायी, शाक्त।

साकदीप–पु० [सं० शाकद्वीप] १ पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक। २ ईरान व तुर्किस्तान के बीच का प्रदेश।

साकदीपी, साकदीपीय–पु० [सं० शाकद्वीपीय] १ शाकद्वीप का निवासी। २ ब्राह्मणों का एक वर्ग। –वि० शाकद्वीप से संबंधित।

साकर–१ देखो 'सक्कर'। २ देखो 'साकार'। ३ देखो 'साकुर'।

साकरखोर (खोरो)–देखो 'सक्करखोरो'।

साकरसिगा–स्त्री० शक्कर की बनी लिंगाकार मिठाई, वस्तु।

साकरियो–पु० १ घोड़ों का एक रोग। २ दानेदार शक्कर। ३ एक प्रकार का सूत या डोर।

साकरियोडोरो–पु० एक प्रकार का मजबूत धागा।

साकळी–स्त्री० [सं० शाकली, शष्कुलि] छोटी रोटी या खाजे की तरह बना मीठा या नमकीन खाद्य पदार्थ।

साकळे, साकळै–अव्य० आने वाले प्रातःकाल को, सवेरे।

साकवर–पु० [सं० शाकवर] बैल, वृषभ।

साकाबंद, साकाबंध, साकाबंधो–पु० युद्ध प्रिय योद्धा, वीर। –वि० १ यशस्वी, प्रतापी। २ ऐतिहासिक।

साकामिस–पु० कई प्रकार की शाक-सब्जियों का मिश्रण। (मेवाड़)

साकायत–वि० १ युद्ध करने वाला। २ प्रसिद्धि पाने वाला। ३ भयावह, डरावना।

साकारणो (बो)–क्रि० दाह-संस्कार करना।

साकारता–स्त्री० साकार होने की अवस्था या भाव।

साकिणि, साकिणी–देखो 'साकणी'।

साकिनी–स्त्री० [सं० शाकिनी] १ दुर्गा देवी की एक परिचारिका। २ शाक-सब्जी का खेत। ३ देखो 'साकणी'।

साकी–पु० [अ०] १ शराब पिलाने वाला। २ प्रेमी, माशूक। ३ शिकायत करने वाला। ४ चुगलखोर। ५ शत्रु, दुश्मन।

साकुन–वि० [सं० शाकुन] १ शकुन संबंधी। २ शुभ। ३ देखो 'सुगन'।

साकुर–पु० घोड़ा, अश्व।

साकुळी, साकुली–स्त्री० [सं० शष्कुली] पूरी, पकवान आदि।

साकूतरी, साकूतो–पु० संपत्ती-पुत्र।

साकेत–पु० अयोध्या नगरी का एक नाम।

साकेती–वि० अयोध्या संबंधी। –पु० अयोध्यावासी।

साको–पु० १ महायुद्ध। २ यश, कीर्ति, प्रसिद्धि। ३ अवसर, मौका। ४ धाक, रौब। ५ संवत, शाका। ६ यश का कार्य करने वाला।

साक्त–पु० [सं० शाक्त] शक्ति का उपासक। –वि० १ शक्ति या बल संबंधी। २ दुर्गा संबंधी।

साक्तिक, साक्तेय–वि० [सं० शाक्तिक] १ शाक्त मत का अनुयायी। २ मालाधारी।

साक्र–वि० [सं० शाक्र] इन्द्र का, इन्द्र संबंधी। –पु० ज्येष्ठा नक्षत्र।

साक्री–स्त्री० [सं० शाक्री] १ शची, इन्द्राणी। २ दुर्गा देवी।

साक्वर–पु० [सं० शाक्वर] १ इन्द्र, देवराज। २ इन्द्र का वज्र। ३ सांड, बैल।

साक्सर, साक्षर–वि० १ अक्षर ज्ञान वाला, शिक्षित। २ पंडित, ज्ञाता।

साक्षात–वि० साकार, मूर्तिमान। –अव्य० १ सामने प्रत्यक्ष। २ हूबहू।

साक्षातकार, साक्षात्कार–पु० [सं० साक्षात्कार] १ भेंट, मुलाकात। २ इन्द्रियों द्वारा पदार्थों का प्रत्यक्ष ज्ञान।

साक्षि, साक्षी–वि० [सं० साक्षिन्] १ जिसने किसी कार्य या घटना को आंखों से देखा हो, चश्मदीद गवाह। २ जो विवादास्पद विषय की सही जानकारी रखता हो। –पु० ईश्वर, परमेश्वर।

साख–स्त्री० [सं० साक्ष्य] १ साक्षी, गवाही, गवाह का वक्तव्य। २ गवाह या साक्षी के तौर पर किये गये हस्ताक्षर। ३ व्यापार या लेन-देन में होने वाली पैठ; विश्वास, प्रतिष्ठा। ४ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा। ५ यश, कीर्ति। ६ भाग, हिस्सा। ७ रश्मि, किरण। ८ नाता, रिश्ता, संबंध। ९ शिक्षा, उपदेश। १० फसल, उपज, पैदावार। ११ विवाह, शादी। १२ सगाई, मंगनी। १३ दूकान की पगड़ी, पैठी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

[सं० शाखा] १४ वंश, गोत्र, शाखा। १५ द्वार के कपाटों में लगाई जाने वाली सीधी लकड़ी। १६ एक साल की आयु वाला बैल। १७ बड़ी जलधारा की शाखा। १८ अग्नि शिखा। १९ घोड़े के चारजामे का एक भाग। २० प्रमाण, सबूत। २१ देखो 'साखा'।

साखहत–वि० उच्च कुल का, कुलीन।

साखड़ी–देखो 'साख'।

साखणी (बी)–क्रि० १ साक्षी देना, गवाही देना। २ प्रमाण या सबूत देना। ३ शिक्षा या उपदेश देना। ४ नाता-रिश्ता करना।

साखत, साखति, साखती–स्त्री० १ घोड़े का चारजामा व उसकी सजावट की सामग्री। २ सजावट। ३ पूर्ण सजा हुआ घोड़ा। ४ चाबुक। ५ शिष्य या अनुयायी वर्ग। –वि० १ सजावट युक्त। २ बढ़िया, बहुमूल्य।

साखदार–वि० [फा० साखदार] १ जिसकी अनेक शाखायें हों। २ साक्षी, गवाह। ३ श्रेष्ठ वंश का।

साखर–देखो 'साक्षर'।

साखसिणगार–पु० वंश में श्रेष्ठ, कुल में श्रेष्ठ।

साखसीर–पु० रिश्ता, संबंध।

साखा–स्त्री० [सं० शाखा] १ वृक्ष की टहनी, डाल-डाली। २ बांह, बाजू। ३ विभाग। ४ हाथ-पैर। ५ हाथ-पैरों की अंगुलियां। ६ वंश, कुल। ७ वट वृक्ष की झकड़ा, जड़, शाखा, शिफा। ८ किसी मूल वस्तु में निकले हुए हिस्से, अंश। ९ सम्प्रदाय, एक ही धर्मावलंबियों का वर्ग।

साखात–देखो 'साक्षात'।

साखामृग (म्रिग)–पु० [सं० शाखामृग] बंदर, वानर।

साखावत–पु० [सं० शाखावत] एक प्रकार का वात रोग।

साखि, साखिइं–१ देखो 'साक्षी'। २ देखो 'साख'।

साखिजात, साखियात–१ देखो 'साक्षात'। २ देखो साक्षी'

साखित–देखो साखत'।

साखिया–देखो 'साक्षा'।

साखियो–१ देखो 'स्वस्तिक'। २ देखो 'साक्षी'।

साखी–पु० [सं० शाखिन्] १ वृक्ष, पेड़। २ वेद। –स्त्री० ३ संतों द्वारा रचित भक्ति, ज्ञान, वैराग्य का कोई पद या छन्द। –वि० १ शाखाओं सहित। २ शाखा से संबंधी। ३ देखो 'साक्षी'।

साखीचर–पु० [सं० शाखिन्-चर] बन्दर, वानर।

साखीजणी (बी)–क्रि० गाय का गर्भवती होना।

साखीणो–पु० (स्त्री० साखीणी) सम्बन्धी, रिश्तेदार।

साखीय–वि० [स० साखीय] शाखा का शाखा संबंधी।

साखीरुख साखीरुखो–पु० [सं० शाखीवृक्ष] वट वृक्ष।

साखेत, साखेतो, साखैतो–वि० कुलीन, श्रेष्ठवंश का। –पु० घोड़ा, अश्व।

साखोचार, साखोचारन, साखोच्चार, साखोच्चारन–पु० [स० शाखोच्चार] १ विवाहादि मांगलिक कार्य करते समय वंश, गोत्रादि का उच्चारण। २ वंश के नाम का ताना या तारीफ।

साखोट–पु० एक प्रकार का वृक्ष।

साख्यात–देखो 'साक्षात'।

साग–पु० [स०शाक] १ कोई पौधा विशेष व उसके पत्ते, कंद मूल या फल आदि की सब्जी, शाक। २ नमक, मिर्च, मसाले के साथ पकाया हुआ दाल, कढ़ी आदि पदार्थ। ३ सागवान का पेड़। ४ एक देव वृक्ष।

सागउटो–पु० कुटिया या मण्डप बनाने वाला व्यक्ति।

सागड़द–देखो 'सागिरद'।

सागडदपंसो–देखो 'सागिरदपंसो'।

सागड़ी–पु० [सं० शाकटिक] १ हल, गाड़ी, रथ आदि हांकने वाला, गाड़ीवान। २ कृषक के पास कृषि कार्य करने वाला नौकर। ३ पति, स्वामी। (किसान)

सागड़ो–पु० एक ही फाल वाला हल।

सागण–वि० १ वास्तविक, असली। २ वही। ३ पंच भौतिक। ४ अपरिवर्तनीय। ५ ऊपर वर्णित, उक्त। –क्रि०वि० एक ही।

सागर–पु० [सं० सागरः] १ समुद्र, सरोवर। २ झील, जलाशय। ३ एक प्रकार का मृग। ४ दशनामी संन्यासियों की एक शाखा व इसका व्यक्ति। ५ अतीतकाल के तृतीय तीर्थंकर का नाम। ६ डिंगल का एक गीत, छन्द विशेष। ७ चार की संख्या*। ८ सात की संख्या*। ९ देखो 'सागरी'। १० देखो 'सागरोपम'।

सागरअंबेर–देखो 'सागरांवरा'।

सागरगामिण (गांमिणी, गांमिन, गांमिनी) –स्त्री० [सं० सागरगामिनी] १ गंगा नदी। २ नदी, सरिता।

सागरगा–स्त्री० १ गंगा नदी। २ नदी, सरिता।

सागरब–देखो 'सागिरद'।

सागरनीमी (नेमि, नेमी)–स्त्री० [स० सागरनेमि] धरती, पृथ्वी।

सागरमति (मती)–स्त्री० [सं० सागरमती] लूनी नदी का एक नाम।

सागरमुदरा (मुद्रा)–स्त्री० [सं० सागरमुद्रा] ध्यान या आराधना करते समय धारण करने की एक मुद्रा।

सागरमेखळा–स्त्री० [सं० सागरमेखला] भूमि, पृथ्वी।

सागरवासी–वि० [सं० सागरवासिन्] समुद्र तट पर या समुद्र में रहने वाला। –पु० १ भगवान् विष्णु। २ जलचर। ३ वरुणदेव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सागरांबरा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी, भूमि, धरती।
सागरालय–पु० [सं०] वरुणदेव का नामान्तर।
सागरी–पु० [सं० सागरः] बहुत गहरा कूआ।
सागरु, सागरू–देखो 'सागर'।
सागरोदक–पु० [सं०] समुद्र का जल।
सागरोपम–पु० दश क्रोड़ा-क्रोड़ी पल्योपम काल का प्रमाण।
सागवांन–पु० अच्छी किस्म की एक लकड़ी व इसका वृक्ष।
सागारघयणादोस (दोस)–पु० गृहस्थ से आहार लेने संबंधी एक दोष (जैन)।
सागारीसंथारो–पु० छूट सहित संथारा, रियायती संथारा।
सागि–देखो 'सार्ग'।
सागिरद–पु० [फा० शागिर्द] १ शिष्य, विद्यार्थी। २ वेश्याओं व रंडियों के साथ रहने वाला वाद्यवादक।
सागिरदपैसो–पु० [फा० शागिर्दपेशः] सेवक, टहलुवा।
सागी–देखो 'सार्ग'।
सागीड़ो–देखो 'सागेड़ो'।
सागेड़ो, सागेड़ो–वि० (स्त्री० सागेडी) १ उत्तम, श्रेष्ठ। २ अपार, अत्यधिक। ३ अच्छा, बढ़िया, ठाटदार। ४ मनोरंजक, रोचक। ५ लाभप्रद, हितकर। ६ स्वादिष्ट, जायकेदार। ७ मजबूत, दृढ़। ८ सुन्दर, आकर्षक। ९ खूब, अच्छी तरह।
सार्ग–वि० (स्त्री० सागण) १ वास्तविक, असली। २ उत्तम, श्रेष्ठ। ३ पूर्ववत्, वही। ४ साक्षात्, हूबहू। ५ साथ। –क्रि०वि० १ साथ में, संग-सग। २ वास्तव में। ३ मार्फत।
सागो–पु० साथ, संग।
सागोसाग–वि० वास्तविक हूबहू।
साघणो–देखो 'सांघणो'।
साड़–पु० सड़ा हुआ पदार्थ, गंदगी।
साड़ियो, साड़ियो–पु० एक प्रकार का वस्त्र।
साड़ी, साड़ी–स्त्री० [सं० शाटिका] १ स्त्रियों के पहनने-ओढ़ने की धोती, साड़ी। २ स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र विशेष। ३ ताकले (सलाकों) के मध्य भाग में लपेटे हुए सूत के धागे। ४ सासकों द्वारा विवाह के समय प्रजा से लिया जाने वाला एक लगान। ५ जैन साध्वियों के पहनने का वस्त्र, संघाटिका।
साड़ो, साड़ो–पु० १ जाट, कुम्हार आदि जातियों की स्त्रियों का घाघरा, लहंगा विशेष। २ पहनने का एक वस्त्र विशेष। ३ पुकार, आवाज।
साच, साचइ–पु० सारयान वा पौष्टिक वस्तु।–क्रि०वि० १ सचमुच। २ देखो 'सत्य'।
साचउ–देखो 'साचो'।
साचण–पु० सत्य।
साचमई–वि० सत्यमयी।
साचमाच–क्रि०वि० सचमुच, वास्तव में।
साचरी–स्त्री० भैरव राग की पत्नी एक रागिनी।
साचलो (ल्लो)–देखो 'साचो'। (स्त्री० साचली, साचल्ली)
साचवणो (बो)–क्रि० १ मारना, पीटना, प्रहार करना। २ धारण करना। ३ सुरक्षित रखना। ४ करना, अदा करना। ५ पालन करना, मानना।
साचांणी, साचांणी–क्रि०वि० सचमुच, वास्तव में।
साचो, साचो–वि० १ शुद्ध, विशुद्ध। २ पवित्र, निष्कपट। ३ पतिव्रता, सती। ४ बढ़िया, श्रेष्ठ।
साचू–देखो 'साचो'।
साचेलो, साचेलो, साचोड़ो–देखो 'साचो'।
साचोरा–पु० १ ब्राह्मणों की एक जाति। २ चौहान राजपूतों की एक शाखा।
साचोरी–वि० सांचोर प्रदेश का, सांचोर संबंधी। –स्त्री० सांचोर प्रदेश की गाय।
साचो, साचो–वि० [सं० सत्य] (स्त्री० साची) १ सच्चा; वास्तविक। २ सत्यवादी। ३ कर्त्तव्य परायण। ४ दृढ़, पक्का, अटल। ५ विश्वसनीय। ६ असली। ७ घनिष्ठ। ८ मौलिक। ९ निष्कपट पवित्र। १० खूब, अधिक। ११ तेज, तीव्र। १२ बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर। १३ शुद्ध, खरा। १४ कुशल निपुण। १५ सही, ठीक। १६ साक्षात्।
साचोट–स्त्री० दक्षता, निपुणता।
साच्चर, साछर–देखो 'साक्षर'।
साज, साज–पु० [फा० साज] १ उपकरण, सामान। २ किसी वस्तु को पूर्णता देने में काम आने वाली सामग्री, सामान। ३ साधन। ४ हाथी की अंबारी व ऊंट या घोड़े के चारजामें का सामान। ५ अस्त्र-शस्त्र। ६ युद्ध सामग्री। ७ घोड़े की काठी, जीन। ८ सजावट का सामान, उपकरण। ९ शृंगार, साधन। १० वेशभूषा, पहनावा। ११ आभूषण, गहने। १२ चमड़ा, चर्म। १३ वाद्य यन्त्र, बाजा। १४ व्यवस्था, प्रबन्ध। १५ आधार, अवलम्ब। १६ कार्य, काम। १७ तैयारी। –वि० बनाने वाला, ठीक करने वाला।
साजज–देखो 'सायुज्य'।
साजण साजणियो–१ देखो 'सज्जन'। २ देखो 'साजन'।
साजणी–स्त्री० १ बढ़ई का एक औजार विशेष। २ दीवार बनाते समय सीध देखने का उपकरण।
साजणो–वि० १ मारने, संहार करने वाला। २ देने वाला, प्रदान करने वाला।
साजणो (बो)–क्रि० १ मारना संहार करना। २ तैयार करना,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संवारना। ३ परिवर्तित करना। ४ धारण करना, शस्त्रादि सजना। ५ व्यवस्था करना, देना। ६ देना। ७ निकालना। ८ कुछ करना। ९ विचार बनाना, विचार करना। १० मारना, पीटना। ११ सजा देना, दण्डित करना। १२ प्राप्त करना। १३ बदला लेना प्रतिशोध लेना। १४ दम या सांस रोकने का अभ्यास करना। १५ बनाना, निकालना। १६ साधना, लगाना। १७ तैयार करना। १८ हाजर होना। १९ होना। २० सुसज्जित होना।

साजत, साजति, साजति–स्त्री० १ सजावट, सज्जा। २ तैयारी।

साजन, साजनियो–पु० १ पति, प्रियतम। २ देखो 'सज्जन'।

साजबाज–पु० १ अस्त्र-शस्त्र। २ संगीत संबंधी वाद्य। ३ सजावट की सामग्री। ४ हाथी की अंबारी तथा घोड़े, ऊंट आदि के चारजामे के उपकरण। ५ ठाट-बाट, वैभव।

साजवणी (बो)–देखो 'साजणी' (बो)।

साजस–देखो 'साजिस'।

साजसींग–पु० बन्दूक चलाने में काम आने वाली सामग्री।

साजांणी, सा'जांणी, साजांनी–पु० बादशाह द्वारा चलाया गया एक तोल विशेष।

साजा–पु० चांद, चन्द्र।

साजादो, सा'जादो–देखो 'साहजादो'।

साजाबोल–पु० अपने वचन का सच्चा, सत्यवादी।

साजारी–स्त्री० रहट के पानी की रोक के लिए लगाई जाने वाली आड़।

साजि–देखो 'साज'।

साजिस–स्त्री० [फा० साजिश] १ षड्यन्त्र, कुचक्र। २ विचार-विमर्श। ३ मेल-मिलाप।

साजी, साजो–स्त्री० [सं० सर्जिका] १ जवासे से मिलता-जुलता कुछ बड़ा, कांटेदार क्षुप। २ एक प्रकार का क्षार जो पापड़ बनाने या औषधि में काम आता है।

साजीखार–पु० [स० सज्जीक्षार] सज्जी के पौधे से निकला क्षार।

साजी,यो साजीयो–पु० साजी मिलाकर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ दलिया।

साजुज्य, साजोजमुकत (मुकति, मुक्त, मुक्ति), साजोजमुगत (मुगति)–देखो 'सायुज्य'।

साजोत, साजोति, साजोती–वि० [स० स+ज्योतिः] ज्योति सहित, देदीप्यमान। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ परब्रह्म। ३ पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक।

साजोम–देखो 'सजोम'।

साजो–वि० (स्त्री० साजी) १ स्वस्थ निरोग। २ पक्का, दृढ़। ३ अच्छा, श्रेष्ठ। ४ अनुकूल, लाभदायक। ५ ठीक, कुशल, अच्छा। ६ साधारण, सामान्य। ७ अखण्ड, पूर्ण। ८ प्रबल, शक्तिशाली। ९ स्वादिष्ट।

साझणी–देखो 'साजणी'।

साझणी (बो)–देखो 'साजणी' (बो)।

साझो साझेदार–वि० हिस्सेदार, भागीदार।

साझेदारी–स्त्री० हिस्सेदार होने की अवस्था या भाव, भागीदारी।

साझो–पु० १ हिस्सा, भाग। २ मिल-जुल कर कोई कार्य करने का समझौता। ३ हिस्सेदारी, भागीदारी।

साट, साट–स्त्री० १ सूअर की दलदार चर्बी। २ स्त्रियों के पैर का एक आभूषण विशेष। ३ चाबुक। ४ छिलका, भूसा। ५ स्वर्णकारों का एक औजार विशेष। ६ झुण्ड, समूह। ७ खेत में चीड़ी आदि पक्षी उड़ाने के काम की रस्सी (खेखावाटी)। ८ अपेक्षा, वास्ता। ९ एवज, बदला। १० आभूषण विशेष। ११ घोड़े के कान के बालों की एक आकृति विशेष। १२ संबंध। १३ ज्ञान, व्यवहार। १४ खेती, कृषि। १५ अभाव, कमी। १६ व्यापार। १७ विक्रय, बिक्री। १८ देखो 'साटो'।

साटई–क्रि०वि० बदले में, एवज में।

साटक–पु० १ एक प्रकार का छंद विशेष। २ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक। ३ भूसी, छिलका। ४ प्राकृत भाषा में रचित छोटा नाटक।

साटकी–स्त्री० छड़ी, बेंत।

साटकौ–पु० १ चाबुक। २ प्रहार, चोट। ३ एक छन्द विशेष।

साटण–स्त्री० १ एक प्रकार का बढ़िया रेशमी वस्त्र। २ साटिया जाति की औरत। ३ आक्रमण, हमला।

साटनार–पु० (यो०) मस्त हाथी के चारों तरफ भाले लेकर चलने वाले व्यक्ति। –वि० चाबुकधारी।

साटवणी (बो)–क्रि० १ विनिमय करना। २ खरीदना, क्रय करना।

साटिका–स्त्री० [सं०] साड़ी।

साटिया–स्त्री० एक जाति विशेष।

साटी, साटी–स्त्री० १ जमीन पर छितराने वाली गोल-गोल पत्तों की एक वनस्पति विशेष। २ एक प्रकार का वृक्ष।

साटुक–पु० एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

साटे, साटें–क्रि०वि० १ बदले में, एवज में। २ साथ।

साटो, साटौ–पु० १ पुनर्नवा से मिलता-जुलता एक प्रकार का क्षुप। २ सुगंधित फूलों वाला एक पौधा विशेष। ३ अदला-बदली, परस्पर लेन-देन। ४ विवाह की एक प्रथा।

साठ, साठ–वि० [सं० षष्ठि] पचास व दश, साठ। –पु० पचास व दश के योग की संख्या तथा इसका अंक, ६०।

साठमो (वो)–वि० साठ के स्थान वाला, उनसठ के बाद वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साठि साठी, साठी–पु० १ चावलों की एक किस्म। २ साठ की संख्या। ३ साठ वर्ष की आयु का व्यक्ति।

साठीको साठीको–पु० साठ पुरुष (एक नाप) गहरा कुआ।

साठेक, साठे'क, साठैक–वि० साठ के लगभग।

साठो–पु० १ साठ का अंक। २ साठ का वर्ष।–वि० १ साठवां। २ साठ गुना।

साड–स्त्री० १ शब्द, ध्वनि, आवाज। २ आसाढ़।

साडलउ, साडलो–१ देखो 'साड़ी'। २ देखो 'साड़ो'।

साडी–स्त्री० १ रबी की फसल। २ देखो 'साड़ी'।

साडे, साडै–देखो 'साढ़ी'।

साडो–देखो 'साड़ो'।

साढ़–१ देखो 'आसाढ़'। २ देखो 'साद'। ३ देखो 'साढ़ी'।

साढ़सती, साढ़ासाती–स्त्री० १ किसी प्राणी पर शनि ग्रह को होने वाली साढ़े सात वर्ष की दशा। २ शनि ग्रह की एक अनिष्टकारी दशा जिसका व्याप्तिकाल साढ़े सात वर्ष का होता है।

साढाचिमोतर, साढाचोतर, साढाचोमोत्तर, साढाचोहत्तर, साढाचोहोत्तर–देखो 'साढ़ैचोमोत्तर'।

साढ़ाळो–स्त्री० देवी।

साढी–स्त्री० १ दूध के ऊपर जमने वाली मलाई। २ संख्याओं के साथ लगने वाली आधी संख्या।

साढू–पु० [सं० सह-ऊढ़] पत्नी का बहनोई, साली का पति।

साढ़ैचो'तर, साढ़ैचोमोतर, साढ़ैचोहत्तर–पु० १ चोहत्तर व आधा का अंक या संख्या ७४½। २ किसी पत्र या आलेख पर लगाया जाने वाला अंक जो उसकी गोपनीयता का सूचक होता है।

साढ़ो–पु० सूतर पांजेसूत के धागों का समूह। (एक पांजासूत में पांच धागे) (बुनकर)।

सात–पु० [सं० सप्त] १ पांच और दो का योग। २ पांच और दो के योग की संख्या, ७। –वि० १ पांच और दो। २ सत्य, सच्च।

सातकाळी–स्त्री० निरन्तर दुर्भिक्ष वाले सात वर्ष, सात अकाल।

सातकुंभ–पु० [सं० सात-कुंभ] स्वर्ण, सोना।

सातकुळ–पु० पर्वतों के सात कुल।

सातणो (णी)–क्रि० १ स्वीकार करना, लेना। २ आदर करना, सत्कार करना।

सातरवाड़ो–देखो 'साथरवाड़ो'।

सातळमेर–पु० पोकरण नगर का एक प्राचीन गढ़।

सातळियो–पु० सात दांतों वाला बैल।

सातळो–पु० [सं० सप्तला] एक प्रकार की थूहर।

सातवल–पु० बलराम का एक नाम।

सातवाहण (न)–पु० [सं० शातवाहन] शालिवाहन के राजा का एक नाम।

सातवीं–वि० छः के बाद वाला, सात के स्थान वाला।

सातसती–स्त्री० सीता, कुंती, द्रोपदी, अनुसूया, अहिल्या, तारा और मंदोदरी–सात सतियां।

सातहजारी–देखो 'सप्तहजारी'।

साता–स्त्री० १ परिस्थिति, दशा, स्थिति। २ आराम, सुख आनन्द। ३ रक्षा, सुरक्षा। ४ दिनदशा, दिनमान। ५ भलाई, कल्याण। ६ कुशल क्षेम। ७ धन, दौलत, वैभव। ८ विवाह में सगुन के रूप में दी जाने वाली सात सुपारी या सिंघाड़ा।

सातादूतो–वि० (स्त्री० सातादूती) चुगलखोर।

सातिक सातिग–देखो 'सात्विक'।

सातिम–देखो 'मातम'।

सातो, सातो–स्त्री० सात बूंटी वाला ताश का पत्ता।

सातू सातू–पु० [सं० सक्तुक] १ गेहूं, चना, चावल आदि के आटे की बनाई जाने वाली मिठाई जो भादव कृष्णा तृतीया पर बनाई जाती है। २ जौ, चावल, चने आदि का भुना हुआ चूर्ण, आटा।

साते'क, साते'क–वि० सात के लगभग।

सातो, सातो–पु० १ सात का अंक। २ सात की संख्या का वर्ष। ३ ताश का एक पत्ता।

सात्यो–पु० ससुराल से पीहर या पीहर से ससुराल आते-जाते समय बहन-बेटी द्वारा घर की देहलीज पर अंकित की जाने वाली कुंम-कुंम की सात बिंदियां या चिह्न।

साथव, साथुन, साथुहर–पु० [सं० शात्रव] शत्रु, दुश्मन।

साथ्वक–१ देखो 'सात्विक'। २ देखो 'मात्यकि'।

सात्वत–पु० [सं०] १ भगवान् विष्णु का एक पार्षद। २ भगवान् श्रीकृष्ण। ३ बलराम। ४ यादवकुलोत्पन्न एक राजा। ५ यादव कुल की एक शाखा।

सात्विक, सात्त्विक–वि० [सं० सात्त्विक:] १ सतोगुणी, सत्वगुणी। २ सत्वगुण से संबंध रखने वाला। ३ प्राकृतिक, स्वाभाविक। –पु० १ सात्विक भावों को प्रदर्शित करने की क्रिया। २ भगवान् विष्णु। ३ ब्रह्मा।

सात्विकभाव–पु० १ शुद्ध व पवित्र भाव। २ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम।

साथ–पु० [सं० सार्थ] १ संग रहने का भाव, सहचार, संगत। २ संग रहने वाला साथी। ३ यात्रा या प्रवास में साथ रहने वाला, सहयात्री। ४ परिग्रह। ५ सेना, फौज। ६ समूह, झुण्ड। ७ संग, साथ। ८ संरक्षकता, मदद। ९ घनिष्ठता, मेल-मिलाप। १० वंश, जाति। –वि० १ सहित, युक्त, पूर्वक। २ शामिल, सम्मिलित, शरीक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साथइ–क्रि०वि० साथ में, संग में।
साथगत (गति, गती)–देखो 'सहगमन'।
साथड़लो–देखो 'साथळ'।
साथण (णि, णी)–स्त्री० १ सखी, सहेली। २ साथ-साथ रहने वाली।
साथणकिरोध (क्रोध), साथणसमीर–स्त्री० अग्नि, आग।
साथरउ–देखो 'साथरो'।
साथरवाड़ो–पु० [सं० संस्तर-वंत] १ किसी की मृत्यु के उपरांत परिवार वालों के पास संवेदना प्रगट करने का स्थान व उस पर बिछाने का वस्त्र, बिछौना। २ ऐसे स्थान पर बैठने की क्रिया। ३ ऐसे स्थान पर बारह दिनों तक किया जाने वाला धरती पर शयन।
साथरि, साथरी–स्त्री० १ घास का छोटा या छिछला ढेर। २ विश्नोई सम्प्रदाय की पीठ। ३ देखो 'साथरी'।
साथरो–पु० [सं० संस्तरः, स्रस्तर] १ बिस्तर, बिछौना। २ घास का बिछौना। ३ कुश की चटाई, तृण शय्या। ४ नाश, संहार, खातमा। ५ ढेर, राशि, समूह। ६ घास, मोठ, मूंग, ग्वार आदि के कटे पौधों का ढेर। ७ देखो 'संथारो'। ८ देखो 'सांथरवाड़ो'।
साथळ, साथळड़ी–स्त्री० [सं० सक्थि] जांघ, ऊरू।
साथलो–वि० (स्त्री० साथली) साथ में रहने वाला, साथी।
साथि–१ देखो 'साथी'। २ देखो 'साथ'।
साथियो–१ देखो 'स्वस्तिक'। २ देखो 'साथी'।
साथी साथीड़ो–पु० [सं० सार्थी] (स्त्री० साथण) १ मित्र, दोस्त। २ साथ रहने वाला, संगी। ३ हम उम्र, हमजोली। ४ सहायक, मददगार। ५ प्रेमी।
साथीपो, साथीपो–पु० मित्रता, दोस्ती।
सार्थ–क्रि०वि० १ साथ-साथ, संग में। २ किसी के प्रति। ३ सहयोग में।
साथो–देखो 'साथ'।
साद, साद–पु० [सं० शब्द] १ त्राहि-त्राहि की पुकार। २ शब्द। ३ आवाज, पुकार। ४ बोली, आवाज। ५ ध्वनि। ६ बात यश, कीर्ति। ७ आज्ञा, आदेश, हुक्म। ८ देखो 'स्वाद'। ९ देखो 'साध'।
सादगी–स्त्री० १ सीधापन, सरलता, सहजता। २ आडंबर या दिखावे का अभाव।
सादणो (बो)–क्रि० १ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी लेना। २ पुकार करना, आर्तनाद करना। ३ शब्द करना, ध्वनि करना। ४ आवाज देना, पुकारना। ५ आज्ञा देना, आदेश देना।
साबत–देखो 'सहादत'।
सादपख–देखो 'शुक्लपक्ष'।
सादर–वि० आदर सहित, सम्मान पूर्वक।
सादळ, सादल–वि० १ वीरहाक करने वाला। २ दल सहित। ३ देखो 'सारदूळ'।
सादवणो (बो)–देखो 'सादणो' (बो)।
सादापण (णो)–पु० सादगी, सरलता।
सादाळो–पु० [सं० स्यंदन] रथ।
सादिन–पु० [फा० शादिन] १ पशु, जानवर। २ मृग-शावक; हिरन का बच्चा।
सादियाण (णो, नो)–पु० [फा० शादियानः] मांगलिक अवसरों पर बजने वाला वाद्य, बाजा।
सादी–स्त्री० १ एक प्रकार की छोटी चिड़िया का नाम। २ ब्याह, विवाह। ३ घोड़ा। ४ शिकारी। ५ सवारी करने वाला व्यक्ति, सवार। ६ देखो 'सादो'।
सादीत–पु० विकसित।
सादुळ, सादुळउ, सादूर, सादूळ, सादूळउ, सादूलो–देखो 'सारदूळ'।
सादो–वि० [फा० सादः] (स्त्री० सादी) १ जिसमें एक ही प्रकार के तत्त्व हों। २ घुमाव-फिराव या उलझन से रहित; सीधा-सादा, सरल। ३ जिस पर कुछ अंकित न हो। ४ छल-कपट से रहित, सरल, सीधा, भला। ५ मूर्ख, बेवकूफ। ६ निर्मल, बेदाग। ७ बिना मिलावट या मिश्रण का। ८ समझने में आसान, सुबोध गम्य। ९ सफेद, श्वेत। १० जिसकी बनावट में कोई विशेष कौशल न हो। ११ लड़क-गड़क रहित। –पु० १ एक प्रकार का हाथी। २ वस्त्र या कागज जिस पर कुछ अंकित या चित्रित न हो।
सादोसरोपाव–पु० एक प्रकार का पुरस्कार।
साध–स्त्री० [सं० श्रद्धा] १ इच्छा, अभिलाषा। २ देखो 'साधु'।
साधक–पु० १ साधना करने वाला योगी, तपस्वी। २ भूत-प्रेत आदि को वश में करने वाला व्यक्ति। ३ पांच प्रकार के पित्तों मे से एक। ४ सहयोगी व्यक्ति।
साधका–स्त्री० दुर्गा देवी का एक नाम।
साधणो (बो)–क्रि० १ ठीक एवं निश्चित समय पर कार्य को पूर्ण करना, पूरा करना। २ करना। ३ दम भरना, दम साधना। ४ किसी कार्य को सिद्ध करने का प्रयास करना, अभ्यास करना, दक्षता प्राप्त करना। ५ किसी चीज को उपयुक्त स्थिति में लाना। ६ निशाना लगाना, संधान करना। ७ मारना, वध करना। ८ उपासना करना, साधना करना। ९ भरना, मारना। १० शिक्षित करना, सीखाना। ११ सीखना, अभ्यास करना। १२ पूर्ण करना, पूरा करना। १३ व्यवस्थित करना, सुधारना। १४ निकलना, भाग जाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साधदेव–देखो 'साढ्देव'।

साधन–पु० [सं०] १ किसी कार्य को पूरा करने की क्रिया या भाव। २ कार्य को पूरा करने का माध्यम, सहायक उपकरण। ३ किसी कार्य को सम्पादित करने में प्रयुक्त होने वाला सामान. सामग्री। ४ कोई चीज बनाने का सामान, कच्चा माल। ५ क्षति पूर्ति या त्रुटि सुधार का उपाय। ६ युद्ध सामग्री। ७ सेना, फौज। ८ उपाय, तरकीब। ९ साधना, उपासना। १० मदद, सहायता। ११ धन-दौलत। १२ संधान। –वि० धनाढ्य, मालदार।

साधना–स्त्री० [सं०] १ कार्य सम्पन्न करने की क्रिया। २ आराधना, उपासना।

साधनी–देखो 'साजणी'।

साधर्म्मिय–वि० समान धर्मी।

साधवी–स्त्री० [सं० साध्वी] १ भली तथा शुद्ध आचरण वाली स्त्री। २ पतिव्रता, सती स्त्री। ३ जैन साध्वी, आर्या।

साधस–पु० [सं० साध्वस] भय, डर।

साधार–वि० १ रक्षा करने वाला, रक्षक। २ पनाह व आश्रय देने वाला। ३ आधार, सहारा। ४ भरण-पोषण करने वाला, पालन-पोषण कर्ता। ५ सहायक, मददगार। ६ करने वाला, देने वाला।

साधारण–वि० [सं०] १ जिसमें कोई विशेषता न हो, सामान्य। २ जो सर्व-साधारण के समझने योग्य हो, सरल, सहज। ३ रक्षक, आश्रयदाता। –पु० अट्ठवीसी का चौथा वर्ष (ज्योतिषी)।

साधारणधरम–पु० [सं० साधारण धर्म] १ वह धर्म (गुण) जो एक ही प्रकार से सब पदार्थों में पाया जाय। २ सार्वजनिक धर्म।

साधारणी (णो)–क्रि० [सं० साऽऽधारम्] १ बचाना, रक्षा करना। २ आश्रय देना शरण देना। ३ सहायता करना, मदद करना। ४ भरण-पोषण या पालन-पोषण करना।

साधि–देखो 'साध्य'।

साधिक–देखो 'साधक'।

साधिका–स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी का एक नाम।

साधित–वि० [सं० साधित] १ सिद्ध किया हुआ। २ तैयार किया हुआ। ३ प्राप्त किया हुआ। ४ घुला हुआ।

साधु (धौ)–पु० [सं०] १ श्रेष्ठ कुल का व्यक्ति, कुलीन व्यक्ति। २ सज्जन व्यक्ति। ३ संत-महात्मा। ४ धार्मिक व परोपकारी पुरुष। ५ सांसारिक बंधनों से मुक्त, विरक्त या वैरागी प्राणी। ६ व्यापारी, वणिक। ७ जैन यति, साधु। ८ भक्त। ९ जिसकी साधना पूरी हो गई हो। १० एक जाति या वर्ग विशेष। –वि० १ सुन्दर, मनोहर। २ श्रेष्ठ कुल का, कुलीन। ३ सज्जन।

साधुमति (ती)–स्त्री० तांत्रिकों की एक देवी।

साधुध–देखो 'साधु'।

साधुवाद–पु० [सं०] १ अच्छे कार्य के प्रति धन्यवाद। २ प्रशंसा, तारीफ। ३ यश।

साधू, साधौ–देखो 'साधु'।

साध्य–पु० [सं०] १ बारह देव गणों का एक समूह विशेष। २ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक। ३ गुरु से लिए जाने वाले चार प्रकार के मंत्रों में से एक (तंत्र)। ४ देवता। ५ चाक्षुक मनु के पुत्रों में से एक। –वि० १ सिद्ध करने योग्य। २ जिसकी चिकित्सा की जा सके। ३ सहज, सरल।

साध्यता–स्त्री० [सं०] साध्य होने की अवस्था या भाव।

साध्र–देखो 'साध'।

साध्वी–देखो 'साधवी'।

सानंद–वि० आनन्द पूर्वक, आनन्द सहित।

साप–पु० [सं० सर्प] (स्त्री० सापण, भापणी) १ एक प्रसिद्ध रेंगने वाला विषैला जन्तु, नाग, सर्प। [सं०शाप] २ दुराशीष, बद्दुआ। –वि० १ काला, श्याम। २ क्रूर। ३ देखो 'सराप'।

सापग्रसत, साप्ग्रस्त–वि० [सं० शापग्रस्त] १ शाप से पीड़ित या जिसे शाप दिया गया हो, शापित। [सं० सर्पग्रस्त] २ सर्प का काटा हुआ, सर्प दंशित।

सापचेत–देखो 'सावचेत'।

सापण, सापणी, सापिण, सापिणी–स्त्री० १ आग, अग्नि। २ नागिन, सर्पिनी। ३ बरछी, भाला। ४ देखो 'नागण'।

सापणी (णो)–क्रि० शाप देना बद्दुआ देना।

सापतेयक–पु० [सं० स्वापतेयक] धन-दौलत।

सापती–देखो 'साबती'।

सापरीछतरी, सापरीढाळ–स्त्री० वर्षा ऋतु में होने वाला एक छातानुमा छोटा पौधा।

सापरोमासी–स्त्री० एक प्रकार का जन्तु विशेष।

सापुरख, सापुरस–पु० [सं० सत्पुरुष] १ सत्पुरुष, सज्जन। २ वीर एवं बहादुर पुरुष। ३ भला, सज्जन।

सापुरसाई–स्त्री० १ सज्जनता, भलमनसाहत। २ वीरता, बहादुरी।

सापूर–देखो 'सेंपूर'।

सापौ, सापो–पु० १ मृतक के पीछे बारह दिनों तक भूमि पर सोने की एक रश्म। २ देखो 'साफी'।

साफ–वि० [अ०] १ गन्दगी रहित, स्वच्छ, निर्मल। २ दोष, विकार आदि से रहित। ३ शुद्ध, खालिस। ४ जिसका तल सपाट हो। ५ जिसकी रचना में दोष, त्रुटि आदि न हो। ६ छल, कपट रहित। ७ स्वच्छ, निर्मल। ८ स्पष्ट।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ समाप्त, खत्म। १० चुकाया हुआ, चुकता किया हुआ। ११ जो अनुचित या नियम विरुद्ध न हो। १२ जिसके सुनने या समझने में कठिनाई न हो। १३ दूर हुआ हुवा। मिटा हुआ। १४ कोरा, अछूता। १५ बिल्कुल, पूरा।

साफचट–वि० बिल्कुल साफ, पूर्ण साफ।

साफळ–देखो 'सफल'।

साफल्य–स्त्री० सफलता।

साफी–स्त्री० १ 'चिलम' से धूम्रपान करते समय मुंह के आगे लगाया जाने वाला वस्त्र खण्ड। २ भंग छानने का कपड़ा। ३ मुंह का स्वाद, जायका। ४ सफाई का भाव, सफाई। –पु० ५ सफेद जीभ वाला बैल।

साफीरंदी–पु० लकड़ी को साफ कर चिकनी बनाने का औजार विशेष।

साफो–पु० आदमी के सिर पर लपेटकर बांधने का लम्बा वस्त्र। साफा।

सा'ब, साब–देखो 'साहिब'

सावक–वि० सब, समस्त।

सावके (कें)–वि० साधारण, मामूली।

सावकें–पु० चाबुक, कोड़ा।

सावण, सावण (न)–देखो 'साबुन'।

साबत, साबती–वि० [फा० साबित] (स्त्री० साबती) १ स्थिर, कायम। २ सही सलामत, अखण्डित। ३ निरन्तर चलने वाला। ४ पूर्ण एक, इकाई। ५ पूरा, समस्त, सब। ६ दुरुस्त, ठीक। ७ प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाणित। ८ जो टुकड़े-टुकड़े न हुआ हो, पूरा, पूर्ण, समूचा। ९ स्वस्थ, कुशल।

साबतपण–वि० [अ० साबित+सं० पदक] दृढ़ निश्चयी, दृढ़ प्रतिज्ञ।

साबर, साबरमंत्र–पु० [सं० शाबर मंत्र] शिव कृत एक प्रसिद्ध मंत्र।

साबरमती–स्त्री० हडर की एक नदी का नाम।

सावळ–स्त्री० १ एक प्रकार का भाला। २ देखो 'सांग'।

सावळी–देखो 'सबळी'।

साबाण–पु० १ छोटा तम्बू, खेमा। २ देखो 'सावांन'।

साबांणी–वि० साबुन का, साबुन संबंधी।

साबांन–पु० [अ० शाबान] १ आठवां इस्लामी माम। २ देखो 'सावांण'।

साबात–स्त्री० १ बारूद की सुरंग। २ बारूद का भण्डार। ३ शत्रु द्वारा किले की दीवार तक पहुँचने के लिए बनाया जाने वाला ऊंचा व ढका हुआ मार्ग विशेष।

साबासणो (णी)–क्रि० शाबासी देना। सराहना।

साबासी–स्त्री० [फा० शाबासी] वाह-वाही, शाबासी।

साबिण–देखो 'साबुण'।

साबित–देखो 'साबत'।

साबियांणी–देखो 'साबुन'।

साबी–स्त्री० १ मनोहरपुर की पहाड़ियों से निकलकर नाभा की तरफ बहने वाली एक नदी। २ अलवर की एक प्रसिद्ध नदी।

साबु, साबु, साबुण (न), साबू, साबू–पु० १ सोडे व तेल आदि के योग से बनी वस्तु जो कपड़ों का मैल साफ करने या नहाने आदि के काम आती है। —घर, घर–पु० साबुन बनाने का स्थान, कारखाना। साबुन रखने की डिबिया।

साबूणी–देखो 'साबूनी'।

साबूत–१ देखो 'साबत'। २ देखो 'सबूत'।

साबूदांणो (नो)–पु० साबू नामक वृक्ष के तने का गूदा। सागूदाना।

साबूनी–स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

साबती, साभरमती–देखो 'साबरमती'।

सामाय, सामाव–देखो 'स्वभाव'।

सायंकाळ–पु० [सं० सायंकाल] संध्या, शाम।

सायंत–देखो 'सांयत'।

सायसंध्यादेवता–स्त्री० [सं०] सरस्वती देवी का नाम।

साय–पु० [सं० सायः] १ दिन का अन्त, संध्याकाल। २ वक्त, समय। ३ देखो 'सहाय'। ४ देखो 'साह'।

सायक, सायक–पु० [सं० सायकः] १ बाण, तीर। २ डिंगल का एक गीत विशेष। ३ देखो 'सहायक'।

सायगवेसण–वि० सुख की गवेषणा करने वाला।

सायजदी–देखो 'साहजादी'।

सायजादी–स्त्री० [फा० शाहजादी] १ बादशाह की पुत्री। २ शाहजादे की बेगम।

सायजादो, सायज्यादो–पु० [फा० शाहजादो] बादशाह का पुत्र, राजकुमार।

सायडू–क्रि०वि० बायीं ओर।

सायण–पु० १ वेदों का भाष्य लिखने वाले एक प्रसिद्ध आचार्य। २ देखो 'सैण'।

सायणवाद–पु० सायण का सिद्धान्त या मत।

सायत–स्त्री० १ समय, वक्त। २ थोड़ा समय, क्षण, पल। ३ देखो 'सायद'।

सायता–देखो 'सहायता'।

सायती–देखो 'सामती'।

सायद–स्त्री० साखी, सबूत। –अव्य० कदाचित, संभवतः।

सायदांणी (णो)–देखो 'सादियांणी'।

सायदी–वि० साखी देने वाला, साक्षी।

सायधण–स्त्री० १ पत्नी, सहधर्मिणी। २ प्रेयसी, प्रेमिका।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सायब–देखो 'साहिब'।

सायबणी, सायबांणी–स्त्री० पत्नी।

सायबी–देखो 'साहिबी'।

सायबौ–देखो 'साहिब'।

सायर–पु० [अ० शायर] १ कविता रचने वाला, कवि। [अ० सायर] २ चुंगीकर, उत्पादन कर तथा राहदारी की देखभाल करने वाला विभाग। ३ कर मुक्त भूमि। –वि० १ सज्जन, भला, सीधा। २ समझदार, बुद्धिमान। ३ गम्भीर। ४ उत्तम, श्रेष्ठ। ५ अचंचल, ६ देखो 'सागर'।

सायरकण–पु० [सं० सागर-कण] मुक्ता, मोती।

सायरसोढ़ी–पु० दामाद को गाया जाने वाला एक लोक गीत।

सायरी–देखो 'सहारी'।

सायल, सायल–वि० [अ० सायल] १ प्रश्नकर्त्ता। २ भिखारी, याचक। ३ प्रार्थी आवेदक। ४ आशार्थी, उम्मीदवार। –पु० चुनाई की सीध देखने का एक उपकरण विशेष।

साया–वि० [अ० शाया] १ प्रकट, जाहिर। २ प्रकाशित। –स्त्री० छाया, प्रतिबिम्ब।

सायाबंदी–स्त्री० विवाह मण्डप बनाने की क्रिया।

सायीवांन–देखो 'सांमियांनो'।

सायीसेख, सायीसेस–पु० [सं० शय्याशेष] भगवान् विष्णु।

सायुज, सायुज्य–पु० [सं० सायुज्यम्] १ पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें साधक भगवान के विग्रह में समा जाता है। २ किसी से अभिन्न रूप से मिलने की क्रिया या भाव। ३ समानता, सादृश्यता।

सायुज्यता–स्त्री० सायुज्य का गुण या भाव।

सायो–पु० [फा० साय:] १ प्रभाव, असर। २ सहारा, मदद। ३ प्रतिबिम्ब, छाया। ४ आश्रय, शरण।

सारंग (सारंगड़ौ)–पु० [सं०] १ हंस। २ सर्प, सांप। ३ वीणा। ४ हरिण, मृग। ५ मुक्ता, मोती। ६ मयूर, मोर। ७ बन्दर, वानर। ८ कोश। ९ नाद ध्वनि। १० आकाश, गगन। ११ तोता, शुक। १२ कोयल, कोकिल। १३ कमल, वारिज। १४ वज्र। १५ वृक्ष, पेड़। १६ नारियल। १७ केसर। १८ मेह, वर्षा। १९ सिंह, शेर। २० चांद, शशि। २१ रवि सूर्य। २२ तलवार। २३ दीप, दीया। २४ पर्वत, पहाड़। २५ हाथी, गज। २६ पक्षी। २७ चन्दन। २८ निशान, चिह्न। २९ अग्नि, आग। ३० जल, पानी। ३१ बादल, मेघ, ३२ भ्रमर, भौंरा। ३३ धनुष। ३४ प्रकाश, ज्योति। ३५ स्वर्ण, सोना। ३६ गरुड़। ३७ शंख। ३८ चातक, पपीहा। ३९ घोड़ा, अश्व। ४० एक प्रकार का घोड़ा। ४१ विष्णु के धनुष का नाम। ४२ कामदेव। ४३ भगवान् विष्णु। ४४ शिव, महादेव। ४५ श्रीकृष्ण का एक नाम। ४६ विद्युत, बिजली। ४७ समुद्र, सागर। ४८ भूमि, जमीन। ४९ कबूतर। ५० तालाब, जलाशय। ५१ बाज, श्येन। ५२ कौवा, काग। ५३ मेंढक। ५४ आभूषण, गहना। ५५ दिन, दिवस। ५६ रात, रात्रि। ५७ कपूर। ५८ हाथ, हस्त। ५९ स्तन, कुच। ६० हल। ६१ काजल। ६२ छाता। ६३ शिर के बाल। ६४ नक्षत्र, ग्रह। ६५ लक्ष्मी। ६६ शोभा, सुन्दरता। ६७ चीतल, हिरन। ६८ बारहसिंगा। ६९ बगुल, बक। ७० तिनका, फूस। ७१ सारंगी नामक वाद्य। ७२ एक प्रकार की मधु मक्खी। ७३ चितकबरा रंग। ७४ कान्ति, दीप्ति। ७५ ईश्वर, भगवान्। ७६ परब्रह्म। ७७ घड़ा, कुम्भ। ७८ वायु, पवन। ७९ वस्त्र, कपड़ा। ८० सोनचिड़ी, खंजन। ८१ स्त्री, औरत। ८२ लक्ष्मी, रमा। ८३ शुद्ध स्वर एवं सम्पूर्ण जाति की एक राग। ८४ दर्पण, काच। ८५ पुष्प, फूल। ८६ आर्या या गीतिका का एक भेद। ८७ एक छन्द विशेष। ८८ एक अन्य वर्ण वृत्त। ८९ छप्पय छन्द का एक भेद। –वि० १ रंगीन, चमकदार। २ सुन्दर, सुहावना। ३ रसीला, सरस।

सारंगक–पु० [सं०] दर्पण, शीशा।

सारंगका–पु० एक वर्णिक वृत्त विशेष।

सारंगधर (धरण)–पु० [सं०] १ भगवान् विष्णु। २ ईश्वर, परमात्मा। ३ श्रीकृष्ण। –वि० सारंगधारी।

सारंगनट–पु० एक प्रकार की संकर राग।

सारंगपांण (पाणि, पांणी, पांनि)–वि० [सं० सारंगपाणि] जिसके हाथ में शंख या धनुष हो। –पु० १ भगवान् विष्णु। २ श्रीराम। ३ श्रीकृष्ण।

सारंगभरत (भ्रत)–पु० [सं० सारंगभृत] विष्णु भगवान् का एक नाम।

सारंगभ्रमरी–स्त्री० कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी विशेष।

सारंगा–स्त्री० १ अप्सरा। २ एक प्रकार की रागिनी।

सारंगिक–पु० [सं० सारंगिक] १ बहेलिया, चिड़ीमार। २ एक प्रकार का वृत्त।

सारंगिया–स्त्री० एक जाति विशेष।

सारंगियौ–पु० १ उक्त जाति का व्यक्ति। २ सारंगी बजाने वाला।

सारंगी–स्त्री० [स० सारंग] १ एक प्रकार का प्रसिद्ध तार वाद्य। –पु० २ ईश्वर, परमेश्वर। ३ विष्णु। ४ धनुष। ५ पांच भगण से बनने वाला एक छन्द विशेष।

सार–पु० [सं० सार:] १ तत्त्व, सत, मुख्य तत्त्व। २ महत्व, महत्ता। ३ आवश्यकता, जरूरत। ४ तथ्य, सच्चाई, यथार्थ। ५ कीमत, मूल्य। ६ हिफाजत, देखभाल। देखरेख। ७ पालन-पोषण, भरण-पोषण। ८ सुख-चैन, कुशलता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९ सेवा, सत्कार। १० सुधि, खबर। ११ रक्षा, सहायता। १२ अर्क, निर्यास। १३ जल पानी। १४ गूदा। १५ फल, नतीजा, परिणाम। १६ मक्खन। १७ मज्जा। १८ हड्डी। १९ अमृत। २० शक्ति, पौरुष। २१ चन्दन। २२ वीर्य, बीज। २३ धैर्य, धीरज। २४ धर्म। २५ सत्य। २६ जूआ खेलने का पासा। २७ धन, दौलत। २८ लोहभस्म। २९ घी। ३० युद्ध, संग्राम। ३१ पीपल का वृक्ष। ३२ संजीवनी बूटी। ३३ कटार। ३४ भूमि, जमीन। ३५ वरुणदेव। ३६ तलवार, खड्ग। ३७ अस्त्र-शस्त्र, हथियार। ३८ भाषा या वाणी के चार भेदों में से एक (आध्यात्म)। ३९ अनार का वृक्ष। ४० लोह। ४१ अन्तर, भेद। ४२ वीरता, बहादुरी। ४३ बढ़ई का एक औजार, बर्मी। ४४ बैल हांकने की लकड़ी की नोक में लगी कील। ४५ पिंगल का एक मातृक छंद। ४६ एक वर्ण वृत्त विशेष। ४७ शतरंज आदि का मोहरा। ४८ लाभ, फायदा। ४९ मतलब। ५० सार्थकता। ५१ निष्कर्ष परिणाम। –वि० १ मुख्य, प्रधान। २ सुन्दर, मनोहर। ३ सब, समस्त, समग्र। ४ उत्तम, बढ़िया।

सा'र–देखो 'सहारे'।

सारउ–देखो 'सारी'।

सारकी, सारखी–देखो 'सारीखा'।

सारगद–पु० १ चन्दन। २ डिंगल का एक गीत।

सारगत स्त्री० घोड़े की एक चाल विशेष।

सारघण–पु० कपूर।

सारडि, सारडी–देखो 'सारी'।

सारडो–पु० लट्टू।

सारङ्ग–पु० १ मक्खन। [स० सऽर] २ सुदर्शन चक्र।

सारङ्गग–पु० चांदी, रौप्य।

सारङ्गाळी, सारङ्गाली–स्त्री० कवच।

सारङ्गु–देखो 'सरजू'।

सारङ्गकोळ, सारङ्गकोळी–पु० युद्ध, संग्राम।

सारण–पु० [सं० सारण] १ रावण का एक अमात्य। २ तेलमे-कूए पर चरस खींचने वाले बैलों के चलने का मार्ग। ३ चरखे के नीचे लगी लकड़ी विशेष। ४ पारा आदि रसों का संस्कार। ५ रोग, बीमारी। ६ एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य। ७ तालाब से निकली छोटी नहर। ८ क्यारियों में पानी देने की नाली। –वि० १ पूर्ण करने वाला, पूरा करने वाला। २ सफलता प्राप्त सफल ३ सिद्ध।

सारणि, सारणी–स्त्री० [सं०] १ नाला या छोटी नहर। २ नदी। ३ तलहटी। ४ बड़ा बोझ। ५ तन्त्र-मन्त्र जानने वाली स्त्री। ६ संताप।

सारणेसर, सारणेसुर, सारणेस्वर–पु० १ आबू पर्वत पर स्थित शिव की एक मूर्ति, मन्दिर। २ सिरोही नगर में स्थित एक शिव मन्दिर। ३ शिव, महादेव।

सारणो–पु० १ मांस, सब्जी आदि। २ व्यंजन, पकवान। –वि० १ सफल करने वाला। २ कुछ करने वाला।

सारणो (वो)–क्रि० १ पूर्ण करना, पूरा करना। २ सिद्ध करना, सफल करना। ३ खींचना, कसना। ४ खींचना। ५ लगाना, डालना। ६ करना, पार पटकना। ७ करना। ८ बनाना, निकालना। ९ सुन्दर बनाना, सजाना, सुशोभित करना। १० भेजना, प्रेषित करना। ११ पिरोना। १२ शतरंज या चौसर में गोटी रखना। १३ सुधारना, पार लगाना। १४ देख-रेख करना। १५ तांत्रिक क्रिया से लेना, प्राप्त करना। १६ साफ करना, निर्मल करना। १७ चलाना, फिराना। १८ सहायता या मदद करना। १९ धारण करना २० अनुभव करना। २१ उत्पन्न करना, पैदा करना। २२ प्रशिक्षित या अभ्यस्त करना। २३ काटना। २४ ध्यान देना, सुनना। २५ मिलाना। २६ छेदना, छेदन करना। २७ मारना, संहार करना। २८ छोड़ना।

सारत, सारत्त–स्त्री० १ किसी कार्य के प्रति की जाने वाली गुप्त बात-चीत, समझौता। २ घोड़े की एक तेज चाल। –वि० रक्तवर्ण, लाल।

सारत्ति, सारत्ती–स्त्री० आसक्ति।

सारत्रण, सारत्रिण–पु० [सं० सार-तृण] बांस।

सारथक–वि० [सं० सार्थ-कन्] १ सफल, सिद्ध। २ लाभदायक, उपयोगी।

सारथकता–स्त्री० [सं० सार्थकता] १ सार्थक होने की अवस्था या भाव। २ उपयोगिता

सारथवाह (हि, हो)–पु० १ कुबेर। २ धनाढ्य व्यक्ति। ३ व्यापारी, साहूकार।

सारथि, सारथी पु० [सं० सारथि] रथ चालक, रथवान।

सारद–वि० [सं० शारदः] १ शरद ऋतु का, शरद ऋतु सबंधी। २ ठंडा, शीतल। –पु० १ चन्द्रमा, चांद। २ देखो 'सारदा'। ३ छप्पय छन्द का एक भेद।

सारदा–स्त्री० [सं० शारदा] १ सरस्वती। २ एक नदी का नाम। ३ देवी का एक नाम। ४ पार्वती। ५ प्राचीन समय की एक लिपि। ६ श्वेत रंग। –वि० १ अभीष्ट फल देने वाली। २ श्वेत, सफेद।

सारदातीरथ–पु० एक प्राचीन तीर्थ।

सारदाभरण–पु० [सं० शारदा भरण] कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

सारदासुंदरी–स्त्री० दुर्गा का एक नाम।

सारबूळ–पु० [सं० शार्दूल] १ सिंह, शेर। २ बन्दर या केसरी सिंह। ३ बाघ। ४ दोहे का एक भेद। ५ छप्पय छन्द का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक भेद । –वि० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सारवूळललित–पु० [सं० शार्दूलललित] एक प्रकार का वर्णवृत्त ।

सारवूळवाहण (न)–पु० [सं० शार्दूलवाहन] १ जैनमतानुसार पच्चीस पूर्व के जिनों में से एक । २ देवी, दुर्गा ।

सारवूळसटा–पु० एक वर्णिक वृत्त ।

सारवूळो–देखो 'सारवूळ' ।

सारशार–पु० १ खड्गधारी, व्यक्ति । २ तलवार ।

सारशू–स्त्री० लड़की पुत्री ।

सारनाल (ळी)–पु० बिना सिला वस्त्र ।

सारनी–स्त्री० नायिका ।

सारभांड–स्त्री० १ तलवार । २ देखो 'सारभांड' ।

सारभांण (न)–देखो 'सारवान' ।

सारभायरो–वि० तत्त्व रहित, निरर्थक ।

सारभांड–पु० १ व्यापारिक दृष्टि से कीमती वस्तु । २ तलवार ।

सारमाटो–पु० ज्वार आटा के बाद की स्थिति ।

सारमणी–स्त्री० बुहारी ।

सारमणो–पु० झाड़ू ।

सारमरण–पु० तलवार के आघात से होने वाली वीरगति ।

सारमेय–पु० [सं० सारमेय] श्वान, कुत्ता ।

सारमेयाशन–पु० [सं०] एक प्रकार का नरक ।

सारमोजा–पु० लोहे के दास्ताने ।

सारवंग–पु० घोड़ा, अश्व ।

सारवट–पु० १ लोहे की जाली का बना दास्ताना । २ लोहे की जाली का पजामा ।

सारवणो (वी)–देखो 'सारणी'-(वी) ।

सारवभू, सारवभूम–वि० समस्त भूमि सम्बन्धी ।

सारवभोम, सारवभौम–पु० [सं० सार्वभौम] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट । २ राजा, नृप । –वि० समस्त भूमि संबंधी, सम्पूर्ण भूमि की ।

सारवभौतिक–वि० [सं० सार्वभौतिक] जो सब भूतों से संबंधित हो ।

सारवभौमव्रत–पु० [सं० सार्वभौमव्रत] कार्तिक शुक्ला दशमी को किया जाने वाला एक व्रत ।

सारवरी–स्त्री० [सं० शार्वरी] १ रात, रात्रि । २ विष्णु सोलो का चौदहवां वर्ष ।

सारवाण, सारवांन–पु० ऊंट सवार, सुतर सवार । –वि० १ जिसमें कुछ सार या तत्त्व हो । २ ऊंट रखने वाला । ३ ऊंटों को चराने या सवारी कराने वाला ।

सारविद–पु० [सं०] शिव महादेव ।

सारविद्या–स्त्री० [सं०] अस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या ।

सारसंगीत–देखो 'वडोसांणोर' ।

सारस, सारसडो–पु० (स्त्री० सारसणी, सारसी) १ क्रौंच से कुछ बड़ा एक सुन्दर पक्षी जो सदा जोड़े से रहता है । २ चन्द्रमा, चांद । ३ छप्पय छन्द का एक भेद । ४ एक मात्रिक छन्द विशेष ।

सारसत (त्त)–१ देखो 'सरस्वती' । २ देखो 'सारस्वत' ।

सारसप्रिय–पु० कर्नाटकी पद्धति की एक राग ।

सारससीस–वि० रक्तवर्ण, लाल ।

सारसियाळ–पु० सिंह, शेर ।

सारसी–स्त्री० १ शेर, हाथी, ऊंट आदि की मस्ती । २ हाथी की, मस्ती में होने की अवस्था । ३ एक मात्रिक छन्द विशेष । ४ आर्या या माहा छन्द का एक भेद ।

सारसो–देखो 'सारीखो' ।

सारस्टि–स्त्री० [सं० सार्ष्टि] एक प्रकार की मुक्ति जिसमें भगवान के समान ऐश्वर्य भोग मिलता है ।

सारस्वत–वि० [सं०] १ सरस्वती का, सरस्वती संबंधी । २ सरस्वती नदी संबंधी । ३ सारस्वत देश संबंधी । –पु० १ सरस्वती नदी के तट पर बसा देश, प्रदेश । २ दधिचि ऋषि के पुत्र एक ऋषि । ३ पंचविंश गौड़ ब्राह्मण । ४ एक व्याकरण । ५ रविवार या प्रत्येक पंचमी को किया जाने वाला एक व्रत ।

सारस्वतो–स्त्री० [सं०] वीर विनोद के अनुसार लूनी नदी का एक नाम ।

सारहटा–पु० शस्त्र-प्रहार ।

सारहली–स्त्री० १ बढ़ई का एक औजार विशेष । २ मादा ऊंट । ३ देखो 'सार' ।

सारही–देखो 'सारथी' ।

सारहीयदोस (दोस)–पु० जैन मतानुसार सचित्त वस्तुओं के बीच रखी अचित वस्तु को लेने से होने वाला दोष ।

सारांस–पु० [सं० सारांश] १ सार, निचोड़ । २ संक्षेप । ३ अभिप्राय, तात्पर्य । ४ परिणाम, नतीजा । ५ उपसंहार ।

सारावती–स्त्री० एक प्रकार का छन्द विशेष ।

सारासार–पु० १ सत्यासत्य का विवेचन । २ सार-असार की व्याख्या ।

साराह–देखो 'सराह' ।

साराहणी (वी)–देखो 'सराणी' (वी) ।

सारि–१ देखो 'सारी' । २ देखो 'सार' ।

सारिका–स्त्री० [सं० शारिका] १ मैना पक्षी । २ अप्सरा, रंभा । ३ शतरंज की गोटी ।

सारिकाकवच–पु० [सं० शारिका कवच] दुर्गा का एक कवच । (स्तोत्र)

सारिख, सारिखउ, सारिखो–देखो 'सारीखो' ।

सारित–पु० शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सारिवा–स्त्री० एक प्रकार की घास या पौधा ।

सारिसो–देखो 'सारीखो' ।

सारी, सा'री–स्त्री० १ रहट के चक्र को खड़ा रखने के लिये लगाई जानी वाली बड़ी लकड़ी । २ मैना पक्षी । ३ चौसर आदि खेल की गोटी । ४ खेल की बाजी ।–वि० १ प्रत्येक, हरेक । २ सम्पूर्ण, सब, तमाम । ३ देखो 'स्यारी' ।

सारीक, सारीख, सारीखउ, सारीखो–वि० [सं० सदृश] (स्त्री० सारीखी) १ समान, सदृश । २ बराबरी या समता वाला । ३ जो आकार, तौल आदि में बराबर हो । ४ निरन्तर चलने वाला । ५ जैसा ।

सारीबारी–क्रि० वि० पारी के अनुसार ।

सारीमेर–क्रि० वि० चारों ओर, सर्वत्र ।

सारीस–वि० १ क्रोध पूर्ण, क्रुद्ध । २ देखो 'सारीखो' ।

सारीसो–देखो 'सारीखो' ।

सारू, सारू–स्त्री० मैना पक्षी । –क्रि० वि० १ लिए, वास्ते । २ मुताबिक, अनुसार । ३ काबू में, पकड़ में । ४ किसी के ऊपर, हाथ में ।

सारूपार, सारूयार, सारूयार, सारूयारू–वि० बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर ।

सारूप–१ देखो 'सरूप' । २ देखो 'सारूप्य' । ३ देखो 'स्वरूप' ।

सारूपता–स्त्री० सारूप्य होने की अवस्था या भाव ।

सारूप्य–पु० [सं० सारूप्य] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें भगवान का सा रूप मिलता है ।

सारै, सारै–क्रि० वि० अधिकार में, वश में, काबू में ।

सा'रै सा'रै–देखो 'सहारै' ।

सारोखणो (बो)–क्रि० [सं० स+रोष] क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

सारोड़ो–देखो 'सारो' ।

सारोह–पु० कवच, बख्तर ।

सारोपा–स्त्री० साहित्य में एक लक्षण ।

सारो, सा'रो–पु० १ हुक्म, आज्ञा । २ वश, काबू । ३ शक्ति, जोर । ४ अधिकार, आधिपत्य ।–वि० (स्त्री० सारी) १ समस्त, सब । २ कुल, तमाम, पूरा । ३ पूर्ण, सम्पूर्ण ।

सा'रो, सा'रो–१ देखो 'सहारो' । २ देखो 'सासरो' ।

सारो-बारो–पु० १ वश, चलन । २ प्राथमिकता ।

सालंक–पु० एक प्रकार की राग ।

साल–स्त्री० [सं० शाला] १ मकान के अन्दर का कक्ष जिसमें प्रायः खिड़की, रोशन दान आदि न हो । २ वह कक्ष जिसके दरवाजे एक से अधिक दिशाओं में खुलते हों । ३ चरस खींचते समय बैलों के चलने का मार्ग । ४ कपड़ा बुनते समय बैठने के लिये बना खड्डा । ५ मुख्य दरवाजे के पास बना खुला कमरा ।

साल (साल)–पु० [फा० शाल] १ बारह महीनों का समय, वर्ष । २ एक प्रकार का वृक्ष व उसकी लकड़ी । ३ वृक्ष, पेड़ । ४ अश्वकर्ण वृक्ष । ५ एक प्रकार का पुष्प । ६ वह स्थान जहां सिक्के ढाले जाते हैं, टकसाल । [सं० शल्य] ७ दुःख दर्द । ८ शल्य, कांटा । ९ प्रहार, घाव । १० घाटा, हानि, नुकसान । ११ पलंग, खाट आदि के पायों के छेद जिनमें पाटियों के सिरे फसाये जाते है । इस प्रकार फसाने के लिए तैयार किए गए पाटियों के शिरे । १२ सोना; स्वर्ण । [सं० शाल] १३ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७७ वां ग्रह । १४ एक प्राचीन नदी । १५ अस्त्र चिकित्सा । [फा० शाल] १६ एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर । १७ देखो 'लगाळ' । १८ देखो 'साली' । १९ देखो 'साळ' । २० देखो 'स्याल' ।

सा'ल–देखो 'सवाल' ।

साळड–देखो 'साळी' ।

सालक–पु० १ तालाब की मिट्टी में होने वाला एक मेवा विशेष । २ देखो 'स्यालक' ।

साळकटार (कटारी)–स्त्री० चारण-राजपूतों में विवाह संबंधी एक रश्म ।

साळकी–देखो 'साळ' ।

साळगणो (बो), सालगणो (बो)–क्रि० १ अंकुरित होना; पल्लवित होना । २ सुलगना, जलना ।

साळगराम, सालगरांम–पु० [सं० शालग्राम] १ विष्णु (शालग्राम) की एक प्रतिमा या रूप । २ गंडक नदी के किनारे का वन ।

सालगाणो (बो)–क्रि० १ अंकुरित करना । २ सुलगाना ।

सालगारांम (सालग्राम)–देखो 'साळगराम' ।

सालगिरह (गिरे)–पु० [फा० सालगिरह] वर्षगांठ, जन्म दिन ।

सालग्रांमि (मी)–स्त्री० १ गंडक नदी का एक नाम । २ इस नदी के उद्गम स्थान पर स्थित पुण्य स्थल ।

सालण–स्त्री० १ पंवारों की एक देवी विशेष । २ एक प्रकार का तरल पदार्थ । ३ मसालेदार साग सब्जी, नमकीन आदि खाद्य पदार्थ ।

सालणि (णी)–स्त्री० एक वर्णिक वृत्त विशेष । –वि० चावल का ।

सालणो (बो)–क्रि० १ खटकना, कसकना । २ दुःखदायी या दर्द युक्त होना । ३ पलंग, खाट आदि पायों में छेदकर पाटी फंसाना । ४ तपना । ५ आकर्षित करना ।

सालपरण (णि, णी)–स्त्री० [सं० शालपर्णी] १ सालविन वृक्ष । २ एक क्षुप विशेष ।

सालबाफ–पु० [फा० शालबाफ] १ कपड़ा बुनने वाला व्यक्ति । २ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।

साळबाह, सालबाह–पु० कपड़ा बुनने वालों से लिया जाने वाला कर विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सालमली-पु० [सं०शालमलीस्थ] १ गरुड़ । २ देखो 'साल्मली' ।

सालमुख-पु० [सं० शल्यमुख] युद्ध, संग्राम ।

सालर-पु० [सं० शल्लकी] १ एक वृक्ष विशेष । २ उक्त पेड़ की लकड़ी या जड़ ।

सालरचर-पु० हाथी, हस्ती ।

सालळणी (बी)-देखो 'सालुळणी' (बी) ।

साळवणी (बी)-क्रि० शस्त्र चलाना, प्रहार करना ।

सालवणी (बी)-देखो 'सालणी' (बी) ।

सालवाखर-पु० घोड़े का एक पाखर विशेष ।

साळवी, सासवी-पु० कपड़ा बुनने का व्यवसाय करने वाली एक जाति ।

साळस सालस-वि० १ सज्जन, भला । २ सुशील । ३ होशियार, बुद्धिमान, चतुर ।

साससि, साससी-स्त्री० साले की स्त्री, सलहज ।

सालहि-स्त्री० मैना पक्षी ।

सालहोतर (होत्र)-देखो 'सालिहोत्र' ।

सासा-स्त्री० [सं० शाला] १ गृह, मकान । २ बड़ा कक्ष, कमरा । ३ वृक्ष का तना । -वि० साल का, वर्ष संबंधी ।

साळाकटार (कटारी, कटारी)-देखो 'साळकटारी' ।

सासाना-वि० वार्षिक ।

सासाबाज-पु० सिंचाई संबंधी कर विशेष ।

सासाव्रक-देखो 'साळाव्रत' ।

सासाळी-स्त्री० कटार, कटारी ।

साळावक, साळावख-पु० [सं० शालावृक] १ कुत्ता; श्वान । २ भेड़िया । ३ शृगाल । ४ बंदर । ५ बिल्ली ।

साळासेली, साळाहेली-स्त्री० साले की पत्नी, पत्नी की भाभी ।

साळि, सालि-देखो 'साळी' ।

सासिक-देखो 'स्यालक' ।

सासिकर-पु० छन्द शास्त्र में दगण के तेरहवें भेद का नाम ।

सालिगराम, सालिग्राम-पु० [सं० शालग्राम] गंडक नदी में पाया जाने वाला गोल गोल व काला छोटा पत्थर जिस पर चक्रायुध अंकित होने से विष्णु के रूप में पूजन में रखा जाता है । तुलसी का विवाह इसी से करने की परम्परा है ।

सालिणी, सालिनी-स्त्री० [सं० शालिनी] १ ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त विशेष । २ वार्षिकी ।

सालिम, सालिम-वि० [अ०] १ पूर्ण, पूरा । २ स्वस्थ, निरोग । ३ सज्जन, सभ्य ।

सालियाणो (णी)-वि० वार्षिक, सालाना ।

सालियो, साळियो, सालियो-पु० १ बैलगाड़ी के अग्र भाग में लटकने वाली लकड़ियों का युग्म । २ शृगाल ।

सालिवाहण (न)-पु० [सं० शालिवाहन] शक संवत् चलाने वाला प्रसिद्ध राजा ।

सालिहोतर (होत्र)-पु० [सं० शालिहोत्र] १ अश्व चिकित्सा संबंधी ग्रन्थ या शास्त्र । २ इस ग्रन्थ के रचयिता ऋषि । ३ घोड़ा, अश्व ।

सालिहोतरी (होत्रि, होत्री)-पु० [सं० शालिहोत्री] १ घोड़ों के गुणावगुण व चिकित्सा के संबंध में पूर्ण जानकार व्यक्ति । २ देखो 'सालिहोत्र' ।

साळी, साळी (साली)-स्त्री०[सं० श्यालो] १ पत्नी की बहन । [सं० शालि] २ चावल ।

सालीणो-वि० (स्त्री० सालिणी) वार्षिक ।

सालुळणो (बो)-क्रि० १ विनय, प्रार्थना या स्तुति करना । २ युद्धार्थ प्रस्थान करना, प्रयाण करना । ३ आक्रमण या हमला करना । ४ प्रारम्भ या शुरू होना । ५ चलना । ६ उमड़ना । ७ प्रज्वलित होना, जलना । ८ झुकना । ९ वाद्य यंत्रों का बजना । १० उलटना । ११ होना । १२ गाया जाना ।

साळू-पु० १ मांगलिक लाल वस्त्र । २ सधवा स्त्रियों के ओढ़ने का सुन्दर व कीमती वस्त्र, साड़ी । ३ विवाह के समय धारण करने की लाल ओढ़नी । ४ किसान स्त्रियों की ओढ़नी । ५ रहट के चक्र के साथ खड़े लट्ठे का सिरा । ६ शीतकाल में ऊंट के मुंह से निकलने वाली गलसूंडी ।

सालूकिनी-पु० [सं० शालूकिनी] कुरुक्षेत्र का तीर्थस्थान ।

सालूडी-देखो 'साळू' ।

सालूर-पु० [सं० शालूर] १ मेंढक । २ डिंगल का एक मात्रिक छन्द । ३ डिंगल का एक वर्णिक छन्द ।

साळेवड़ी, सालेवड़ी साळेवड़ी-पु० चावल के आटे का बना पापड़नुमा पदार्थ ।

साळै सालै-क्रि०वि० पास, निकट या समीप से ।

साळैडी सालेंडी-स्त्री० साले की पत्नी, पत्नी की भाभी ।

सालोक, सालोक्य-पु० [सं० सालोक्य] पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक, जिसमें भगवान के नित्यधाम में निवास मिलता है ।

सालोतर-देखो 'सालिहोत्र' ।

सालोसाल-क्रि०वि० प्रति वर्ष, हर साल ।

साळो साळी (लो)-पु० [सं० श्यालक] पत्नी का भाई ।

साल्हळि, साल्हळी-पु० [सं० शाल्मलि] १ सेमल का वृक्ष । २ क्रौंच द्वीप से दुगुना एक द्वीप । ३ गरुड़ । ४ एक चन्द्रवंशी राजा । ५ एक प्रकार का नरक ।

साल्हलीकंद-पु० सेमल वृक्ष की जड़ ।

साल्यम-देखो 'सालिम' ।

साळयो, साळयो-देखो 'सगाळ' ।

साल्हड, साल्हड, साल्हु-देखो 'साळी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सावत–स्त्री० १ मुसलमान वेश्या। २ देखो 'सामंत'।

सावतरी, सावत्री–स्त्री० [सं० सावित्री] १ माता, जननी। २ गाय, गो। ३ देखो 'सावित्री'।

साव सावं–पु० [सं० शावः] १ बच्चा (पशु का)। २ बालक। ३ पुत्र, बेटा। –स्त्री० [सं० स्राव] ४ नदी, सरिता। –क्रि०वि० १ नितान्त, बिल्कुल। २ देखो 'स्वाद'।

सावक–पु० [सं० शावक] १ बच्चा, बालक। २ हंस। ३ देखो 'सावक'।

सावकअळ (ल)–पु० डिंगल का एक छन्द।

सावकरण–पु० [सं० श्यामकर्ण] १ घोड़ा, अश्व। २ देखो 'स्यामकरण'।

सावकी, सावकी–स्त्री० सौतेली।

सावकु, सावकुल, सावको, सावकी–पु०(स्त्री०सावकी) सौतेला।

सावग–१ देखो 'सावक'। २ देखो 'साधक'।

सावचेत, सावचेत–वि० १ सतर्क, सावधान। २ होश में, सचेत, सजग। ३ होशियार, चतुर।

सावचेतगी, सावचेती, सावचेती–स्त्री० १ चतुराई, होशियारी। २ सावधानी, सतर्कता।

सावज–पु० १ सिंह, शेर। २ बाघ, बघेरा। ३ शेर का बच्चा। ४ खरगोश, हिरन आदि वन्य पशु। ५ मांसाहारी पक्षी। ६ योद्धा, वीर। ७ देखो 'स्यामज'।

सावजन–वि० [सं० सावद्य] घृणित, निंद्य, तिरस्करणीय।

सावजळ (सावज्जळ)–पु० भाला।

सावज्ज–वि० [सं० सावद्य] पाप युक्त।

सावसड़ो–पु० डिंगल का एक गीत या छन्द।

सायटू–पु० १ सूर्योदय के समय भेड़िये का बायें से दायें जाने से होने वाला अपशकुन। २ श्रेष्ठ कपड़ों की पोशाक। ३ एक प्रकार का वस्त्र। ४ तोता, शुक। [सं० स्वापतेय] ५ धन, द्रव्य। –वि० १ नया, नवीन। २ श्रेष्ठ, उत्तम।

सावदळी–पु० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

सावदू–देखो 'सायटू'।

सावद्द–स्त्री० १ कृषि की अधिष्ठात्री एक देवी। २ फसल काटते समय सांड आदि के लिए छोड़ा जाने वाला फसल का भाग। ३ मातृभूमि।

सावण–पु० श्रावण मास।

सावणिक–वि० [सं० श्रावणिक] श्रावण मास का, श्रावण सबंधी। –पु० श्रावण मास।

सावणियो–देखो सावण'।

सावणु–पु० खरीफ की फसल।

सावतरी–देखो 'सावित्री'।

सावती–देखो 'सावती'।

सावत्री–देखो 'सावित्री'।

सावत्रीईस (ईसर, ईसुर, ईस्वर)–पु० [सं० सावित्री+ईश्वर] ब्रह्मा, विरंची।

सावद्य–पु० [सं०] योग में एक प्रकार की सिद्धि का नाम। –वि० पाप या दोषपूर्ण। —अनुकंपा, दया–स्त्री० पाप युक्त दया, दोष पूर्ण कृपा।

सावद्यक्रिया–स्त्री० पाप कर्म।

सावद्यदान–पु० पापमय दान।

सावधान–वि० १ खबरदार, चौकन्ना। २ सचेत, सतर्क, होशियार। ३ चतुर, बुद्धिमान। ४ जागरूक, सचेत।

सावधानी–स्त्री० सावधान होने की अवस्था या भाव, होशियारी। चतुराई।

सावर–पु० [सं०शावर] १ तांबा, ताम्र। –स्त्री०[सं०सा+वर] २ सुन्दर स्त्री। ३ देखो 'साबरमंत्र'।

सावरणि (णी)–स्त्री० [सं० सम्मार्जनी] १ झाड़ू। २ जैन यतियों के पास रहने वाला झाड़ूनुमा उपकरण। [सं० सावर्णि] ३ आठवें मनु का नाम। ४ एक प्राचीन ऋषि।

सावरत (त)–वि० लाल, रक्तवर्ण, रक्त रंजित। –पु० शंख, कम्बु। –क्रि०वि० दोनों ओर।

सावळ, सावळ (ल)–स्त्री० १ दुःख के समय ईश्वर से की जाने वाली प्रार्थना। २ कोर जाति में, खेत से सर्वप्रथम तोड़ कर बहन-बेटी को दी जाने वाली वस्तु। ३ शिल्पकारों का एक औजार। –वि० १ उचित, ठीक। २ पूर्ण, पूरा। ३ ध्यानपूर्वक। ४ स्पष्ट, साफ। ५ अच्छा, अनुकूल। ६ बढ़कर, बहत्तर। ७ लाभप्रद, हितकर। ८ स्वस्थ, तंदुरुस्त। ९ सीधा। –क्रि०वि० १ अच्छी तरह, भली प्रकार से। २ आराम से, चैन से। ३ सीधे तरीके से, शिष्ट व्यवहार से।

सावळाथार, सावळियार–वि० १ भला, सज्जन। २ सीधा, सरल।

सावळियारो–स्त्री० १ भले मनसाहत, शराफत। २ सज्जनता।

सावसावीअमावस–स्त्री० आश्विन मास की अमावस्या।

सावस्त–पु० [सं० शावस्त] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा।

सावित्र–पु० [सं० सावित्रः] १ शिव, महादेव। २ सूरज, सूर्य। ३ यज्ञोपवीत संस्कार। ४ एकादश रुद्रों में से एक। ५ कर्ण का एक नामान्तर। ६ सुमेरु पर्वत के एक शिखर का नाम। ७ गर्भ। ८ यज्ञोपवीत सूत्र।

सावित्री–स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मा की स्त्री जो सूर्य की पुत्री थी। २ सूर्य की किरण। ३ ऋग्वेद का गायत्री मंत्र। ४ उपनयन के समय का एक संस्कार। ५ सत्यवान की पत्नी एक पुराण प्रसिद्ध पतिव्रता। ६ पार्वती, उमा। ७ सरस्वती। ८ सरस्वती नदी। ९ पुष्कर तीर्थ की अधिष्ठात्री देवी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१० यमुना। ११ सधवा स्त्री। १२ प्लक्ष द्वीप की एक नदी। १३ चौसठ योगिनियों में से एक।

सावित्रीव्रत (व्रत)–पु० [सं० सावित्री-व्रत] ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्दशी या अमावस्या को स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रत।

सावित्रीसूत्र–पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जनेऊ।

सावु–पु० १ एक प्रकार का घास। २ देखो 'सावो'।

सावो–पु० १ विवाह का शुभ मुहूर्त। २ पाणिग्रहण संस्कार की तिथि व समय निश्चित कर, कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को भेजा जाने वाला निमन्त्रण। ३ पोशाक, वस्त्र।

साव्यकार–पु० शव से संबंधित कार्य करने वाला व्यक्ति।

सास–पु० [सं० श्वास] १ प्राणियों के मुंह व नाक के अन्दर से बाहर व बाहर से अन्दर होने वाली वायु, प्राण वायु, श्वास, दम। २ प्राण, जीव। ३ देखो 'सासू'।

सासक–पु० [सं० शासक] १ शासन करने वाला व्यक्ति। २ स्वामी, पति। ३ प्रशासक।

सासघर–पु० सासू का घर, ससुराल।

सासड़ (ड़ी)–देखो 'सासू'।

सासण–देखो 'सासन'।

सासत–वि० [सं० शाश्वत] हमेशा रहने वाला, अमर। सदा स्थाई। अनादि। –पु० १ ब्रह्मा, विष्णु, महेश। २ देखो 'सास्त्र'।

सासतर–पु० [सं० शास्त्र] १ रश्म, रीति। २ देखो 'सास्त्र'।

सासती–वि० आवश्यकतानुसार।

सासतीक (की)–वि० (स्त्री० सासतीकी) १ शास्त्र का, शास्त्र संबंधी। २ स्थाई।

सासतो–क्रि० वि० १ नित्य, हमेशा। २ निरन्तर, लगातार। –वि० १ स्थाई। २ अक्षय, अटल।

सासत्र–देखो 'सास्त्र'।

सासत्रीक–देखो 'सासतीक'।

सासन–पु० [सं० शासन] १ आज्ञा, आदेश। २ दान या पुरस्कार में प्राप्त भूमि या जागीर। ३ लिखित प्रतिज्ञा-पत्र, पट्टा। ४ कुछ अधिकार देने संबंधी फरमान, परवाना। ५ प्रबंधना।

सासनधर–पु० [सं० शासनधर] १ शासक। २ राजदूत।

सासनपतर (पत्र)–पु० [सं० शासन पत्र] राज्यादेश संबंधी ताम्रपत्र या शिलालेख।

सासनम–स्त्री० [सं० नभश्वास] वायु, हवा।

सासनसिस (सिसा)–स्त्री० [सं० शासन शिला] शासकीय घोषणा या राजाज्ञा संबंधी शिलालेख।

सासना–स्त्री० [सं० शासना] सजा, दण्ड।

सासनीय–वि० [सं० शासनीय] १ जो शासन करने योग्य हो। २ जिस पर शासन करना उचित हो।

सासय–देखो 'सासत'।

सासर, सासरउ, सासरवाड, सासरवाडो–देखो 'सासरो'।

सासरियो–पु० १ ससुराल का, ससुराल का निवासी। २ देखो 'सासरो'।

सासरो–पु० [सं० श्वसुरालय] १ श्वसुर का घर, ससुराल। २ ससुराल वाला गांव या नगर।

सासाहिबि (बी)–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

सासित्र (त्रि, त्री)–देखो 'सास्त्र'।

सासिव–पु० [सं० साशिव] एक प्राचीन देश।

सासीडाढ़ी (दाढ़ी)–स्त्री० युवावस्था की दाढ़ी-मूछ के मुलायम व घने बाल।

सासु, सासू–स्त्री० [सं० स्वश्रू] पति या पत्नी की माता, सास।

सासुरी–देखो 'सासरो'।

सासू, सासूड़ी–देखो 'सासु'।

सासूछाबड़ी, सासूबाड़ी–पु० १ दहेज के समय कन्या पक्ष की ओर से वर की माता को दी जाने वाली पोशाक। २ ऐसी पोशाक रखने की टोकरी।

सासूसळो (ली), सासूसळी–पु० एक प्रकार का आभूषण।

सास्टांग–वि० [सं० साष्टांग] हाथ, पांव, वक्षस्थल, शिर, नेत्र, मन व वाणी सहित।–पु० इन सभी अंगों व मन को केन्द्रित कर किया गया अभिवादन, प्रणाम।

सास्तर–देखो 'सास्त्र'।

सास्तिक–देखो 'सासतीक'।

सास्तो–देखो 'सासतो'।

सास्त्र–पु० [सं० शास्त्र] १ धर्म, आचार, दर्शन, नीति आदि के नियमों के विवेचन वाला ग्रंथ। २ कला, विद्या या विषय विशेष के विश्लेषण वाला ग्रंथ। ३ नियमानुसार आचरण के निर्देश। ४ किसी गंभीर विषय संबंधी सिद्धान्त। ५ पुस्तक।—कार–पु० शास्त्र का रचयिता पंडित, विद्वान, ऋषि, मुनि।—वकसा, वक्ता–पु० शास्त्रों की बातों का उपदेश देने वाला व्यक्ति।

सास्त्रग सास्त्रग्य–पु० [सं० शास्त्रज्ञ] १ शास्त्रों का जानकार। २ धर्म शास्त्रों का आचार्य।

सास्त्रसारा–स्त्री० [सं० शास्त्र-सारा] १ शास्त्रों की साररूपा देवी।

सास्त्री–पु० [सं० शास्त्री] १ शास्त्रों का ज्ञाता। २ धर्मशास्त्र का पंडित। ३ विश्व विद्यालयों की एक उपाधि।

सास्वत–वि० [सं० शाश्वत] १ नित्य; हमेशा। २ अमिट, स्थाई। ३ अनादि, सनातन। –पु० १ शिव, महादेव। २ स्वर्ग, वैकुंठ। ३ वेदव्यास।

सास्वती–स्त्री० [सं० शाश्वती] १ पृथ्वी, भूमि। २ सनातन देवी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सास्वादन–पु० [सं०] निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओं में से एक। (जैन)

सास्वादनगुणस्थान–पु० चौदह गुण स्थानों में से दूसरा गुणस्थान। (जैन)

साहस–देखो 'साहस'

साहसाह पु० [फा० शाहंशाह] सम्राट, बादशाह।

साहसाही–स्त्री० [फा० शाहंशाही] बादशाह का कार्य या पद –वि० बादशाह संबंधी, बादशाह जैसा।

साहसी, साहसीक–देखो 'साहसी'।

साह–पु० [फा० शाह] १ बादशाह, सम्राट। (स्त्री० साहणी)। २ सेठ, साहूकार। ३ राजा, नृप। ४ शाहजादा। ५ मुसलमान फकीर की एक उपाधि। ६ धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति। [फा० स्याह] ७ काले रंग का घोड़ा। ८ बादशाह या राजा द्वारा किसी वणिक को दी जाने वाली उपाधि। –वि० १ सज्जन, भला। २ उदार, दानी। ३ महान्, श्रेष्ठ।

साहणी (णो)–देखो 'साहणी' (णो)।

साहजानी–१ देखो 'सा'जानी'। २ देखो 'साहंसाही'।

साहजादो–पु० [फा० शाहजादा] (स्त्री० साहजादी) बादशाह का लड़का, राजकुमार।

साहण–वि० संहार करने वाला, नाश करने वाला। –पु० [सं० साधन] १ घोड़ा, अश्व। २ सेना, फौज। ३ साथी, संगी। ४ देखो 'साधन'।

साहणवइ–पु० सेनापति।

साहणी–स्त्री० १ साहु की स्त्री, सेठानी। २ देखो 'सा'णी'।

साहणो–वि० (स्त्री० साहणी) धारण करने वाला।

साहणो (णो)–क्रि० १ पकड़ना, ग्रहण करना, झेलना। २ धारण करना। ३ शस्त्र आदि का उठाना, लेना। ४ सहन करना, झेलना। ५ थामना, रोकना। ६ उद्धार करना, मोक्ष करना। ७ रखना, धरना। ८ सभालना। ९ मारना, वध करना। १० लेना। ११ सहन करना। १२ धारण करना, झेलना। १३ रक्षा करना। १४ सधान करना, चढ़ाना। १५ युद्ध करना।

साहनिवार–पु० एक महात्मा का नाम, निवारशाह।

साहपण, साहपणो–पु० १ 'शाह' की उपाधि। २ साहूकार होने का भाव।

साहब–देखो साहिब'।

साहबजादो–देखो 'साहजादो'।

साहबाज–पु० [फा० शाहबाज] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

साहबी–देखो 'साहिबी'।

साहबो–देखो 'साहिब'।

साहमणि, साहमणो–देखो 'समठावणी'।

साहमी–वि० [सं० साधर्मिन्] १ समानधर्मी, स्वधर्मी। २ देखो सांमो'। ३ देखो सांम्हो'।

साहमोवच्छल साहमोवच्छल, साहमोवछल–वि० [स० सधार्मिक + वात्सल्य] समान धर्म का प्रेम।

साहमू, साहमो–देखो सांम्हो'।

साहय–देखो सहाय'।

साहरिय, साहरियदोख (दोस)–पु० [सं० संहृत] एषणा समिति के ४७ दोषों में से ३७ वां दोष। (जैन)

साहुक–१ देखो 'सारू'। २ देखो सारो'।

साहरो–१ देखो 'सहारो'। २ देखो 'सारो'।

साहल–पु० १ सिंह, शेर। २ विनय, प्रार्थ पुकार।

साहवो–देखो 'सावो'।

साहस–पु० [सं०] १ हिम्मत, जरूरत। २ हठ, आग्रह। ३ जबरदस्ती, बरजोरी। ४ बेरहमी, नृशंसता। ५ जोश, उमंग। ६ देखो 'साहसी'।

साहसणो (णो)–क्रि० साहस करना, हिम्मत करना।

साहसबंध–देखो 'साहसी'।

साहसवंत–वि० हिम्मतवर, पराक्रमी।

साहसि, साहसिक–देखो 'साहसी'।

साहसी, साहसीक–वि० [सं० साहसिन्] १ साहस सम्बन्धी, साहस का। २ निडर, निर्भीक। ३ हिम्मतवर, पराक्रमी।

साहांणी (नि)–देखो सां'णी'।

साहांणो–वि० [फा०] राजसी, शाही।

साहांमू (मो)–देखो 'सांम्हो'।

साहांसाह–देखो 'साहंसाह'।

साहाय साहि–१ देखो 'सहाय'। २ देखो 'साह'। ३ देखो साही'।

साहिक–देखो 'सहायक'।

साहिजादो–देखो 'साहजादो'।

साहित–देखो 'साहित्य'।

साहितकार–देखो 'साहित्यकार'।

साहितिक–देखो 'साहित्यिक'।

साहित्य–पु० [सं०] १ शब्द और अर्थ का यथावत् सहभाव सार्थक शब्द मात्र। २ ज्ञान राशि का संचित कोश। ३ किसी भाषा या विषय के गद्य-पद्य के समस्त ग्रंथों व लेखों का समूह जिनमें सार्वजनीन हित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वाङ्मय।

साहित्यकार–पु० [सं०] साहित्य-सृजन करने वाला, ग्रंथ रचयिता, लेखक।

साहिब–पु० [फा०] १ भगवान, ईश्वर। २ स्वामी, मालिक। ३ पति, खाविंद। ४ प्रेमी, यार। ५ बादशाह, शासक। ६ किसी का सम्मानपूर्वक नाम लेने के साथ प्रयोग किया जाने वाला शब्द। ७ अंग्रेजों या अधिकारियों के लिये संबोधन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साहिबजादी देखो 'साहबजादी'।
साहिबियो देखो 'साहब'।
साहिबी–स्त्री० [फा०] १ हुकूमत, शासन। २ वैभव, ठाट-बाट, ऐश्वर्य। ३ दरबार। ४ राज्य। ५ दल, साथ। ६ साहब होने की अवस्था या भाव। ७ आनन्द हर्ष, मौज।
साहिबो, साहिब्ब–देखो 'साहिब'।
साहिय, साहियो–देखो 'साह'।
साही–स्त्री० [फा० शाही] १ बादशाह का शासन या राज्य। २ शासन या अधिकारों का अनुचित दबाव, प्रयोग। –वि० १ राजसी, बादशाही। २ शाह का, शाह संबंधी। ३ शाहों जैसा। ४ देखो 'सेही'।
साहीवान–पु० शामियाना, तम्बू।
साहु–१ देखो 'साह'। २ देखो 'साहू'। (स्त्री० साहुणी)
साहुकार–देखो 'साहूकार'।
साहुणि, साहुणी–१ देखो 'साधवी'। २ देखो 'साउवाणी'।
साहुळि, साहुलि–देखो 'साहल'।
साहू–पु० १ साधु, मुनि। २ देखो 'साह'।
साहूकार–पु० १ कोई बड़ा व्यापारी, महाजन, सेठ, वैश्य। २ वह व्यक्ति जो रुपये-पैसे का लेन-देन करता हो। –वि० ईमानदार।
साहूकारी (री)–स्त्री० १ साहूकार होने की अवस्था या भाव। २ ईमानदारी।
साहेत–देखो 'सहित'।
साहेब–देखो 'साहिब'।
साहेबी–देखो 'साहिबी'।
साहेसी–देखो 'सहेली'।
साहोगम–पु० ब्रह्मा, विधाता।
साह्यो–देखो 'साथी'।
सिकुल–देखो 'सांकळ'।
सिख्या–देखो 'सख्या'।
सिग, सिगड़ी–पु० [सं० शृंग] १ शिखर, चोटी। २ देखो 'संग'। ३ देखो 'सींग'।
सिगणी–देखो 'सींगण'।
सिंगरफ–पु० [फा० सिंगरफ] ईंगुर, हिंगुल।
सिंगरफी–वि० [फा० सिंगरफी] १ हिंगुल के समान रंग का, हिंगुल जैसा। २ लाल।
सिंगराज–पु० [देश०] एक प्रकार का चिकना सफेद पत्थर।
सिंगरौर–पु० [सं० शृंगवेर] प्रयाग के पश्चिमोत्तर में स्थित एक तीर्थ।
सिंगल–पु० १ रेल्वे स्टेशन पर ऊंचे खंभे पर लगा उपकरण जो रेल के आने-जाने का संकेत करता है। २ देखो 'सिहन'।
सिंगलदीप (द्वीप)–देखो 'सिंहलद्वीप'।
सिंगसट (सठ, सत, सत्य, सथ)–पु० [सं० सिंहस्थ] सिंह राशि में स्थित गुरु का बारह मास का समय, इस अवधि में विवाह संस्कार वर्जित हैं।
सिंगाड़ी, सिंगाड़ो–देखो 'सिंगोटी'।
सिंगार–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा। २ देखो 'सृंगार'।
सिंगारक–पु० [सं० शृंगारक] कामदेव, मदन।
सिंगारचौकी–देखो 'सिंगारचौकी'।
सिंगारणो (बो)–देखो 'सिंगारणो' (बौ)।
सिंगासण–देखो 'सिंहासण'।
सिंगियो–पु० [सं० शृंगिक] एक प्रकार का स्थावर विष।
सिंगी–स्त्री० [सं० शृंगी] १ तुरही नामक बाजा। २ योगियों के बजाने का सींग का बाजा। ३ घोड़ों का एक अशुभ लक्षण। ४ देखो 'सृंगी'। ५ देखो 'सिंघवी'।
सिंगीमछकाछबो–पु० एक प्रकार का कछुआ।
सिंगीमूरी, सिंगीमूहरी (मोहरी)–पु० एक प्रकार का पत्थर।
सिंगीय, सिंगीया, सिंगीव–स्त्री० [सं० शृंगिका] पिचकारी।
सिंगोटी–स्त्री० १ बैलों के सींगों पर पहनाया जानेवाला एक आभूषण। २ सींगों की आकृति या बनावट। ३ एक प्रकार का कर।
सिंगो पु० [सं० शृंग] १ फूंक कर बजाया जानेवाला बाजा विशेष, नरसिंहा। २ देखो 'कोंगी'। ३ देखो 'सींग'।
सिंग्या–देखो 'संग्या'।
सिंग्याहीण–देखो 'संग्याहीण'।
सिंघ–पु० [सं० सिंह] (स्त्री० सिंघण, सिंघणी) १ सिंह शेर। २ वीरता या श्रेष्ठता सूचक प्रत्यय शब्द। ३ वास्तुविद्या में प्रासाद का एक भेद। ४ एक राग का नाम। ५ ज्योतिष में बारह राशियों में से पांचवीं राशि। ६ छप्पय छन्द का एक भेद।
सिंघनाद–देखो 'सिंहनाद'।
सिंघपोळ–पु० वह मुख्य द्वार जिस पर सिंह की मूर्ति स्थापित हो।
सिंघरास सिंघरासी–देखो 'सिंहरासि'।
सिंघळ, सिंघळदीप–देखो 'सिंहलद्वीप'।
सिंघळो–पु० १ हाथी। २ सिंह। ३ पुत्र, लड़का, औलाद। –वि० १ वीर, बहादुर। २ बलवान। ३ जबरदस्त।
सिंघवाऊ पु० १ घोड़े का एक रोग जिससे घोड़े के पेट में कीड़े पड़ जाते हैं। २ सिंह के शरीर से उत्पन्न होने वाली गंध।
सिंघवाहणी (नी)–स्त्री० [सं सिंह-वाहिनी] १ गिरिजा, पार्वती। २ दुर्गा, भवानी। ३ रणचण्डी।
सिंघवी–स्त्री० ओसवालों की एक प्रमुख शाखा।
सिंघसेन–पु० [सं० सिंहसेन] एक सूर्यवंशी राजा।
सिंघार–१ देखो 'संहार'। २ देखो 'सस्त्र'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिधारणो (बो)–१ देखो 'सिणधारणो' (बो)। २ देखो सहारणो' (बो)।
सिधाळ–देखो 'सिधाळी'।
सिधाळी–स्त्री० सिंह की सवारी करने वाली दुर्गा।
सिधाळो–वि० १ योद्धा, वीर। २ पराक्रमी, बलवान। ३ सींगोंवाला। ४ श्रेष्ठ, अग्रणी। –पु० हाथी, गज।
सिधावलोकण (न)–देखो 'सिंहावलोकन'।
सिधासण–देखो 'सिंहासन'।
सिधी–१ देखो सिगी। २ देखो 'सिंधवो'। ३ देखो 'सिंही'। ४ देखो 'सिंगियो'।
सिधेस्वरी–स्त्री० [सं० सिद्धेश्वरी] १ दुर्गा, देवी। २ पार्वती।
सिधोड़ी–पु० १ पानी पर तैरने वाली एक लता विशेष का तिकोना फल। २ सिंघाड़े की तरह तिकोना बना कोई पदार्थ या चित्र, सिलाई आदि। ३ ऊंट के चारजामे के नीचे लगाई जाने वाली पट्टी।
सिधोदरी–वि० [सं० सिंहोदरी] १ जिसका पेट या उदर सिंह के समान हो। २ सिंह के समान पतली कमर वाली।
सिंचणो (बो)–देखो 'सींचणो' (बो)।
सिंचन–स्त्री० सिंचाई।
सिंचय–पु० [सं०] १ वस्त्र, कपड़ा। २ आवरण। ३ देखो 'संचय'।
सिंचांण, सिंचांणो–पु० १ बाज से कुछ छोटा एक शिकारी पक्षी। २ दोहा छन्द का चौथा भेद।
सिंचाई–स्त्री० १ फसल, पौधे आदि को पानी देने की क्रिया, सिंचन। २ सिंचन संबंधी कर। ३ सिंचन कार्य का पारिश्रमिक।
सिंचाणो (बो), सिंचावणो (बो)–देखो 'सींचणो' (बो)।
सिंजनी–स्त्री० [सं० सिञ्जनी] १ पैरों का आभूषण, पैंजनी, पायजेब। २ धनुष की डोर, प्रत्यंचा। ३ कटिमेखला के नूपुर, घुंघरू।
सिंजारो, सिंजारो–देखो 'सिंझारो'।
सिंज्या, सिंज्या–देखो 'संध्या'।
सिंज्यारो, सिंज्यारो–१ देखो 'सिंझारो'। २ देखो 'संजोरो'।
सिंझ, सिंझया, सिंझा, सिंझ्या, सिंझ्या–देखो 'संध्या'।
सिंझारो–पु० १ श्रावण कृष्णा तृतीया का पर्व दिन। २ इस अवसर पर कन्या या वधू के लिए भेजा जाने वाला सामान।
सिंण–देखो 'सण'।
सिंणगार–देखो 'सिंगार'।
सिंणगारचोकी–देखो 'सिंणगारचौकी'।
सिंणगारणी–स्त्री० शृंगार की सामग्री। –वि० शृंगार कराने वाली।
सिंणतरो, सिंतरो–देखो 'सिंणियो'।
सिंदड़ी–देखो 'सींदड़ी'।
सिंदण, सिंदन–१ देखो 'स्यदन'। २ देखो 'सैंधव'। ३ देखो 'सिंधी'। (स्त्री०)
सिंदळी–पु० धूम्र रंग का घोड़ा।
सिंदवी–स्त्री० एक रागिनी विशेष।
सिंदारो–देखो 'सिंझारो'।
सिंदिया–पु० १ सिंधिया। २ देखो 'संध्या'।
सिंदुरिया–वि० सिंदूर के रंग जैसा।
सिंदुरियो–पु० सिंदूरी रंग का पौधा या वस्तु। –वि० सिंदूर का, सिंदूर संबंधी।
सिंदूर–पु० [सं०] १ सौभाग्यवती स्त्रियों के मांग में भरने का लाल रंग का एक चूर्ण विशेष। २ देखो 'सिंदुर'।
सिंदूरतिलक, सिंदूरतिलका–स्त्री० १ सुहागिन स्त्री, सधवा। –पु० २ हाथी।
सिंदूरिया, सिंदूरी–स्त्री० १ सिंदूर रखने की डिबिया। २ सिंदूर के रंग की चिऊंठी। –वि० सिंदूर के रंग का।
सिंदूवार–पु० वृक्ष विशेष।
सिंध–पु० [सं० सिंधु] १ पाकिस्तान के दक्षिण-पश्चिम का एक प्रदेश। २ पाकिस्तान की एक प्रमुख नदी। ३ मालवा की एक नदी। ४ देखो 'सिंधु'।
सिंधक–पु० [सं० संध्यक] पुष्प, फूल।
सिंधचारी, सिंधचोरी–देखो 'सिंधुचरी'।
सिंधन–१ देखो 'सनद'। २ देखो 'सिंधी'। (स्त्री०)
सिंधपीण (पीयण)–पु० अगस्त्य ऋषि।
सिंधभैरव–स्त्री० एक राग विशेष।
सिंधव–१ देखो 'सैंधव'। २ देखो सिंधु'।
सिंधवराग, सिंधवा–देखो 'सिंधुराग'।
सिंधवी–स्त्री० एक रागिनी विशेष, संकरराग। –वि० सागर का, सागर सम्बन्धी।
सिंधवीराग–देखो 'सिंधुराग'।
सिंधसागरो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।
सिंधी–पु० (स्त्री० सिंधण) १ सिंध प्रदेश का निवासी। २ सिंध प्रदेश में आकर भारत में बसा व्यक्ति। ३ मुसलमानों का एक वर्ग। ४ सिंध का घोड़ा। ५ सिंध की भाषा या बोली। ६ शीतकाल में पश्चिमोत्तर से चलने वाली हवा जो फसल के लिये हानिकारक होती है। ७ एक प्रकार की बन्दूक। ८ तलवार की एक मूठ विशेष।
सिंधु–पु० [सं० सिंधुः] १ समुद्र, सागर। २ पंजाब के पश्चिम में बहने वाला सिंधु नद। ३ इस नद के आस-पास का प्रदेश। ४ हाथी की सूंड से निकला पानी। ५ हाथी का मद। ६ हाथी। ७ ऊंट। ८ वरुणदेव। ९ गंधर्वों के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राजा का नाम। १० एक प्राचीन देश। ११ वीररस पूर्ण एक राग। १२ श्वेत सुहागा। १३ कोई बड़ी नदी। १४ नदी सरिता। १५ सात की संख्या※।-वि० सुन्दर।

सिंधुओ-पु० १ सिंधुदेशोत्पन्न घोड़ा। २ देखो 'सिंधु'।

सिंधुकन्या-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सिंधुकुला (कुल्या)-स्त्री० [सं० सिंधुकुल्या] नदी।

सिंधुड़क, सिंधुड़ो-१ देखो 'सिंधु'। २ देखो 'सिंधी'।

सिंधुचरी-स्त्री० [सं०] मछली, मीन।

सिंधुज, सिंधुजन्मो-पु० [सं० सिन्धुज, सिंधुजन्मा] १ चन्द्रमा, शशि। २ सेंधा नमक।-वि० १ समुद्र या सिंधु से उत्पन्न। २ सिंधु देश से उत्पन्न।

सिंधुजा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

सिंधुजात-पु० [सं०] १ अश्व, घोड़ा। २ समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्नों में से एक। ३ शराब, मदिरा।

सिंधुदेस-देखो 'सिंधु'।

सिंधुदेसभव-पु० [सं० सिंधुदेशभव] सेंधा नमक।

सिंधुप-पु० [सं०] अगस्त्य ऋषि का एक नाम।

सिंधुपुत्र सिंधुसुत-देखो 'सिंधुजात'।

सिंधुर-पु० [सं०] १ हाथी, गज। २ नदी। ३ आठ की संख्या※।

सिंधुरवर-पु० श्रेष्ठ नर।

सिंधुरमणि-पु० [सं०] गज मुक्ता।

सिंधुरवदन-पु० [सं०] गणेश, गजानन।

सिंधुराग-पु० वीररस पूर्ण राग।

सिंधुरी-पु० युद्ध का वाद्य, वीररस का वाद्य।

सिंधुसुत-पु० [सं०] १ चौदह रत्नों में से कोई एक। २ चन्द्रमा। ३ जलंधर नामक राक्षस जिसे शिव ने मारा था।

सिंधुसुता-स्त्री० १ लक्ष्मी। २ सीप।

सिंधू-देखो 'सिंधु'।

सिंधूप्रसूत-देखो 'सिंधुजात'।

सिंधूभव-पु० [सं० सिंधुभव] १ सेंधा नमक। २ समुद्र से उत्पन्न होने वाले चौदह रत्नों में से एक।

सिंधूराग-पु० वीररस पूर्ण राग।

सिंधूरी-स्त्री० एक रागिनी विशेष।

सिंधूसुवन-पु० [सं० सिंधु-सूनुः] १ चन्द्रमा, चांद। २ समुद्र से निकलने वाले चौदह रत्नों में से कोई एक।

सिंध्या-देखो 'संध्या'।

सिनेह-देखो 'सनेह'।

सिन्यास-देखो 'संन्यास'।

सिंपा-देखो 'संपा'।

सिंबन-स्त्री० फली।

सिंबी-स्त्री० [सं० शिम्बा या शिम्बिका] फली।

सिंभ-देखो 'संभु'।

सिंभजियत, सिंभजीत (जीवत)-देखो 'जीवतसंभ'।

सिंभरि-पु० सांभर।

सिंभु, सिंभू, सिंभी-१ देखो 'संभु'। २ देखो 'संब'।

सिंम्रत-१ देखो 'समरथ'। २ देखो 'स्मृति'।

सिंम्रित-देखो 'स्मृति'।

सियासर-स्त्री० कृषकों की इष्ट देवी।

सियारो-पु० एक प्रकार की लोहे की छड़।

सियाळ-पु० १ क्यारी के पानी को रोक लिये बनी मेढ़। २ देखो 'सगाळ'।

सिंवटणो (बो)-देखो 'सिमटणो' (बो)।

सिंवरणो (बो)-देखो 'सुमरणो' (बो)।

सिंवरी-स्त्री० झड़बेरी के कांटों का, बैलगाड़ी में भरने सायक ढेर, गोला।

सिंवल-स्त्री० गाड़ी आदि के जूए के छोर में फंसाई जाने वाली खूंटी या छोटी लकड़ी।

सिंवसगिया-स्त्री० घोड़े की गर्दन के दाहिनी ओर, पीठ पर बनी भंवरी।

सिवाई-स्त्री० १ कपड़े की सिलाई। २ सिलाई का पारिश्रमिक।

सिंवाड़, सिंवाड़ो-देखो 'सीमाड़ो'।

सिंवाळ पु० [सं० शैवाल] १ पानी पर फैलने वाला एक प्रकार का बारीक घास। २ फफूंदी।

सिंसपो-पु० [सं० शिंशपा] १ शीशम का वृक्ष। २ अशोक वृक्ष।

सिंसार-देखो 'ससार'।

सिंसुमा-स्त्री० [सं० शिंशुमा] श्रीकृष्ण की रानी सुकेशी का एक नामान्तर।

सिंसुमार-पु० [सं० शिंशुमार] एक प्रकार का जल जंतु।

सिंहड-देखो 'सिहंड'।

सिंह-पु० [सं०] १ राजा। २ हवा, पवन। ३ सिंह, शेर, बाघ। -वि० १ योद्धा, वीर। २ श्वेत※। ३ श्याम※। ४ घुंघला※। ५ श्रेष्ठ, शिरोमणि। ६ देखो 'सिंघ'।

सिंहकेतु-पु० [सं०] चेदि देश का एक राजकुमार।

सिंहकेसर-पु० सिंह की गर्दन के बाल।

सिंहगुहा-स्त्री० सिंह की गुफा।

सिंहगोस-पु० एक जानवर विशेष।

सिंहचळ निसाणी-स्त्री० निसाणी छन्द का एक भेद विशेष।

सिंहचली, सिंहचालो-पु० डिंगल का एक गीत विशेष।

सिंहड-देखो 'सिहंड'।

सिंहणी-स्त्री० १ आर्या या गाथा छन्द का एक भेद। २ सिंह की मादा, शेरनी।

सिंहदवार (दुवार, द्वार)-पु० [सं० सिंहद्वार] मुख्य द्वार, तोरणद्वार।

सिंहनाद-स्त्री० [स०] १ सिंह की दहाड़, गर्जना। २ वीरों की हुंकार। -पु० ३ रावण का एक पुत्र।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिंहनिकीलिऊ–स्त्री० एक प्रकार की तपस्या या प्रायश्चित ।
सिंहफलंग–पु० डिंगल का एक गीत विशेष ।
सिंहराशि (रासी)–स्त्री० [सं० सिंहराशि] ज्योतिष की एक राशि ।
सिंहल (विष, द्वीप, द्वीप)–पु० [सं० सिंहलद्वीप] भारत के दक्षिण में स्थित एक प्राचीन जनपद, द्वीप, लंका ।
सिंहली–पु० १ शृगाल । २ सिंहलद्वीप का निवासी ।
सिंहलोक–पु० सिंह समुदाय ।
सिंहवाहणी–देखो 'सिंघवाहणी' ।
सिंहविक्रम, सिंहविक्रमांक–पु० [सं० सिंहविक्रम] घोड़ा, अश्व ।
सिंहविक्रांत–पु० १ सिंह की चाल । २ घोड़ा, अश्व ।
सिंहसत, सिंहस्थ–देखो 'सिंगसट' ।
सिंहारण–देखो 'सिंह' ।
सिंहार–देखो 'संहार' ।
सिंहारणी (बी)–देखो 'संहारणी' (बी) ।
सिंहालय–पु० [सं० सिंह-आलय] सिंह की मांद, गुफा ।
सिंहावलोकण (न)–पु० १ सिंह की तरह देखना क्रिया । २ सिंह की तरह दृष्टिपात । ३ एक मात्रिक छन्द विशेष ।
सिंहासण (न)–पु० [सं० सिंहासन] १ कुर्सी की तरह बना एक आसन जिसके दोनों ओर सिंह की आकृतियां बनी हों; राजसिंहासन । २ योग के चौरासी आसनों में से एक । ३ कामशास्त्र में एक रतिबंध ।
सिंहासनचक्र–पु० मानव आकृति का, ज्योतिष का एक चक्र ।
सिंहिका–स्त्री० लंका के समीप समुद्र में रहने वाली एक राक्षसी ।
सिंहो–स्त्री० १ आर्या नामक छन्द, गाथा । २ देखो 'सिंहणी' ।
सि–पु० [सं० शि] १ शिव, महादेव । २ शिखर, चोटी । ३ शुक, तोता । ४ सुख । ५ शुभ-लाभ । ६ सौभाग्य । ७ बोल । –स्त्री० ८ शिखा । ९ अग्नि । १० आशीष । ११ स्वस्थता । १२ शान्ति । –वि० १ हितैषी, शुभेच्छु । २ सब, समस्त ।
सिआर–स्त्री० १ लड़की में छेद करने का उपकरण, वर्मी । २ देखो 'स्याळ' ।
सिआल, सिआलक–देखो 'स्याल, स्यालक' ।
सिआळो–देखो 'सियाळो' ।
सिउं–देखो 'स्यूं' ।
सिकंजो–पु० [फा० शिकंजः] १ किसी को कसकर दबाने का एक यंत्र, उपकरण । २ ऐसा ही एक अन्य उपकरण जो पुस्तकों की जिल्दबंधी में काम आता है । ३ अपराधियों का पांव फंसाकर यंत्रणा देने का एक उपकरण । ४ वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार बन्द बनाते हैं । ५ ऊख, तेल आदि पेरने का कोल्हू ।
सिकंदर–पु० [फा०] विश्व प्रसिद्ध एक यूनानी सम्राट जो दार्शनिक अरस्तू का शिष्य था । –वि० १ तीव्र, तेज । २ महान् । ३ अच्छा, श्रेष्ठ ।
सिक–देखो 'सिख' ।
सिकटासुर–देखो 'सकटासुर' ।
सिकणो (बो)–क्रि० १ रोटी आदि का आग पर पकना, सेका जाना । २ भुना जाना, तला जाना । ३ तेज धूप में या अंगीठी आदि से ताप लेना, तापना, गर्म होना ।
सिकता–स्त्री० [सं०] १ बालू रेत, धूलि । २ रेतीली भूमि ।
सिकताव–पु० अंगीठी धूप आदि से शरीर या अंग को दिया जाने वाला ताप ।
सिकदार–पु० [फा० शिकदार] १ किसी क्षेत्र का पदाधिकारी । (मध्यकाल) । २ टकसाल का अधिकारी ।
सिकदारी–स्त्री० १ सिकदार का पद या कार्य । २ एक प्रकार का कर ।
सिकम–पु० [फा० शिकम] उदर, पेट ।
सिकमी–वि० १ पेट सम्बन्धी । २ जन्म सम्बन्धी, पैदाईशी । ३ भीतरी, आंतरिक ।
सिकमीकास्तकार–पु० [फा० शिकमीकास्तकार] अन्य काश्तकार का खेत जोतने वाला कृषक ।
सिकर–देखो 'सिखर' ।
सिकरवार–पु० क्षत्रियों की एक शाखा ।
सिकल–देखो 'सकल' ।
सिकलात–पु० बहुमूल्य ऊनी वस्त्र की बनी बनात ।
सिकळी–स्त्री० [अ० सैकल] धारदार हथियारों को मांजने और उन पर शान चढ़ाने की क्रिया । –गर, धर–पु० हथियारों पर शान चढ़ाने वाला कारीगर, हिन्दू लुहारों का एक भेद ।
सिकसा–देखो 'सिक्षा' ।
सिकस्त–स्त्री० [फा० शिकस्त] हार, पराजय ।
सिकायत–स्त्री० [अ० शिकायत] १ अपराधपूर्ण या अनियमित कार्यों के प्रति शासन को दी जाने वाली सूचना । २ उद्दण्डता या अन्याय के विरुद्ध उठाई जाने वाली आवाज । ३ चुगली । ४ निंदा, बुराई । ५ उपालंभ, उलाहना । ६ शरीर में उत्पन्न होने वाला रोग का उठान, प्रभाव ।
सिकार–पु० [फा० शिकार] १ किसी पशु-पक्षी को तीर-गोली आदि से मारना क्रिया, आखेट । २ आखेट में मारा जाने वाला जीव । ३ मांस का आहार । —खानो– पु० शिकार संबंधी कार्य की देखभाल करने वाला विभाग । —गाह–स्त्री० शिकार खेलने का स्थान ।
सिकारणो (बो)– क्रि० स्वीकार करना ।
सिकारपुरी–पु० १ घोड़ों की एक जाति विशेष । २ इस जाति या नस्ल का घोड़ा ।
सिकारबंध–पु० [फा० शिकारबंद] घोड़े की दुम के पास चारजामे के लगाया जाने वाला एक तस्मा विशेष ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिकारी–पु० [फा० शिकारी] १ शिकार करने वाला, आहेरी, आखेटक। २ बधिक, बहेलिया। ३ शिकार करने वाला कोई व्यक्ति। ४ एक प्रकार की तलवार।

सिकाल–पु० एक प्रकार का अशुभ रंग का घोड़ा।

सिकिरि–देखो 'सिखर'।

सिकुड़न–स्त्री० १ संकोच, आकुंचन। २ खिन्नचित्त या उदास होने की क्रिया या भाव। ३ संकुचन। ४ शिकन, सिलवट। ५ एकत्रीकरण।

सिकुड़णो (बो)–क्रि० १ संकुचित होना तंग होना, छोटा होना। २ कम होना, घटना ३ सकोचयुक्त होना शर्माना। ४ खिन्नचित्त या उदास होना। ५ शिकन, सलवट या झुर्रियां पड़ना। ६ एकत्र होना। ७ सिमटना।

सिकोड़णो (बो)– क्रि० १ संकुचित करना, तंग या छोटा करना। २ कम करना, घटाना। ३ संकोच करना, शर्माना। ४ खिन्न या उदास करना। ५ सलवट या शिकन पड़ना। ६ एकत्र करना। ७ समेटना।

सिकोतरी–स्त्री० १ पिशाचिनी, चुड़ैल। २ दूती। ३ दुर्गा का एक नामान्तर।

सिकोरी–पु० मिट्टी का कटोरा या प्याला।

सिको–पु० [अ० सक्का] १ मशक में पानी ढोने का कार्य करने वाला मजदूर, बिहिश्ती, भिश्ती। २ देखो 'सिक्को'। ३ देखो 'सकी'।

सिक्काबबात–स्त्री० पट्टों, परवानों आदि पर लगाई जाने वाली मुद्रा, मुहर।

सिक्को–पु० [अ० सिक्क:] १ निर्दिष्ट मूल्य की कोई धातु मुद्रा। २ प्रभाव, रौब। ३ मुहर, छाप। ४ देखो 'सिकी'।

सिक्ख–१ देखो 'सिख'। २ देखो 'सिस्य'। ३ देखो 'सीख'।

सिक्षक–पु० [सं० शिक्षक] १ अध्यापक, गुरु, शिक्षा देनेवाला। २ स्कन्द का एक अनुचर।

सिक्षा–स्त्री० [सं० शिक्षा] १ विद्या अध्ययन, पढ़ाई, पढ़ने का कार्य। २ कुछ सीखना क्रिया, अभ्यास। ३ उपदेश, सलाह। ४ दण्ड, सबक। ५ छः वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है।

सिक्षित–वि० [सं० शिक्षित] १ विद्वान्, पंडित। २ चतुर, दक्ष। ३ साक्षर, पढ़ा-लिखा।

सिखंड–पु० [सं० शिखंड] १ मोर की पूंछ। २ चोटी, शिखा। ३ मुकुट। ४ देखो 'सिखंडी'।

सिखंडणो (नो), सिखंडिनो, सिखंडो– पु० [सं० शिखंडिन्] १ मोर, मयूर। २ मुर्गा। ३ बाण, तीर। ४ पांचाल देश के राजा द्रुपद का पुत्र। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ कृष्ण का एक नामान्तर। ८ स्वामिकार्तिकेय। –स्त्री० ९ मयूर की पूंछ। १० पीली जूही। –वि० १ शिखा वाला, किलंगीदार। २ नपुंसक। ३ कायर, डरपोक।

सिख–पु० [सं० शिष्य] १ गुरु नानक व गोविन्दसिंह आदि दस गुरुओं द्वारा प्रचलित एक सम्प्रदाय। २ इस सम्प्रदाय का अनुयायी पंजाबी सरदार। एक वर्ण। [सं० शिखिन्] ३ शिर, मस्तक। ४ सिंह, शेर। ५ पतंग। ६ देखो 'सिखा'। ७ देखो 'सीख'। ८ देखो 'सिस्य'।

सिखखडी–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा।

सिखजनम–पु० [सं० शिखा-जन्म] १ दीपक। २ ज्योति-प्रकाश।

सिखदीपन–पु० केसर।

सिखनख–देखो 'नखसिख'।

सिखर–पु० [सं० शिखर] १ पहाड़ की चोटी या सबसे ऊपर का भाग। २ ऊंचा स्थान, ऊपरी हिस्सा। ३ मन्दिर का गुम्बद या कलश। ४ मण्डप, गुम्बद। ५ कगुरा, कलश। ६ वृक्ष की फुनगी। ७ शिखा, चोटी। ८ तलवार की धार, बाढ़। ९ शिरा, नोक। १० रोमांच। ११ बगल। १२ चुन्नी की तरह का एक रत्न। १३ ध्वजा या छत्र। १४ एक अस्त्र विशेष। १५ जैनियों का एक प्रसिद्ध तीर्थ। १६ तांत्रिक पूजा में बनाई जाने वाली, हाथ की अंगुलियों की, एक मुद्रा। १७ गौत्र। –वि० ऊंचा, ऊपर, चोटी तक ऊंचा।

सिखरण (णी)–स्त्री० [सं० शिखरिणी] १ दही में चीनी, केसर, मेवे आदि डाल कर तैयार किया गाढ़ा पेय पदार्थ। २ देखो 'सिखरिणी'।

सिखरबंध (बंध)–पु० [सं० शिखरबंध] शिखर वाला मन्दिर या देवालय। –वि० शिखर वाला।

सिखरवासणी (वासिणी)–स्त्री० [सं० शिखरवासिनी] पर्वत वासिनी दुर्गा या पार्वती।

सिखरा–स्त्री० [सं० शिखरा] १ विश्वामित्र से प्राप्त राम की एक गदा। २ मरोड़फली।

सिखराउल सिखराल (ळो)–वि० [सं० शिखरिन्] १ शिखरदार, शिखर वाला। २ चोटी, किलंगी या शिखा वाला। ३ नोकदार, नुकीला, अणीदार। ४ उच्च, ऊंचा। ५ वीर, बहादुर। ६ अग्रणी, अगुवा। ७ श्रेष्ठ। ८ बड़ा, दीर्घ। –पु० १ गढ़, दुर्ग। २ पहाड़, पर्वत। ३ वृक्ष, पेड़। ४ मयूर, मोर। ५ मुर्गा। ६ शिखरी नामक पक्षी।

सिखरिणी–स्त्री० [सं० शिखरिणी] १ उत्तम स्त्री। २ रोमावली। ३ सत्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।

सिखरी–पु० [सं० शिखरिन्] १ पर्वत, पहाड़। २ वृक्ष, पेड़। ३ दुर्ग, किला। ४ एक राग विशेष।

सिखरीस–पु० [सं० शिखर-ईश] पर्वत, पहाड़।

सिखवान–स्त्री० [सं० शिखावती] १ द्रौपदी। २ अग्नि, आग।

सिखवाल–पु० एक ब्राह्मण वर्ग।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिखसार–स्त्री० [सं० शिखासार] अग्नि, आग ।

सिखा–स्त्री० [सं० शिखा] १ दीपक की लौ, ज्योति । २ प्रकाश की किरण । ३ अग्नि, आग । ४ सिर की चोटी, शिखा । ५ किलंगी । ६ वेणी । ७ डाली, टहनी, शाखा । ८ अस्त्र की धार, बाढ़ । ९ वस्त्र की किनार । १० केसर । ११ तुलसी । १२ मूर्वा, मरोड़फली । १३ जटामासी । १४ बालछड़ । १५ वंश । १६ शिफा । –पु० १७ दीपक । १८ मोर, मयूर । १९ शिखर, शृंग । २० मित्र, दोस्त । २१ अंगारा । २२ किसी वस्तु का नुकीला सिरा, नोक । २३ एक वर्ण वृत्त । –वि० १ प्रधान, मुख्य । २ रक्त वर्ण, लाल ।

सिखाई–स्त्री० १ शिक्षा देने की क्रिया या भाव । २ शिक्षक का पारिश्रमिक ।

सिखाउजस–पु० [सं० शिखा-उज्ज्वल] दीपक ।

सिखाजोत–स्त्री०[सं० शिखा-ज्योति] १ दीपक । २ ज्योति, लौ ।

सिखाणो (बो)–क्रि० १ कोई विद्या, शिक्षा, कला या कार्य की शिक्षा देना, सिखाना, प्रशिक्षित करना । २ नियमित अभ्यास कराना । ३ कंठस्थ या याद कराना । रटाना । ४ किसी बात पर कायम करना, अपने पक्ष में करना । ५ विरोध के लिये तैयार करना ।

सिखाधर–पु० [सं० शिखाधर] १ मोर, मुर्गा आदि कलगी वाला पक्षी । २ हिन्दू । ३ ब्राह्मण ।

सिखाबळ–पु० [सं० शिखाबल] मोर, मयूर ।

सिखामांण–पु० बिरोचन ।

सिखामण, सिखावण–स्त्री० शिक्षा, उपदेश ।

सिखावणो (बो)–देखो 'सिखाणो' (बो) ।

सिखावत–स्त्री० [सं० शिखावत] १ आग, अग्नि । २ शिक्षा, उपदेश ।

सिखावळी–देखो 'सिखाबळ' ।

सिखावांन–स्त्री० [सं० शिखिन्] १ आग, अग्नि । २ द्रौपदी । –वि० शिखा या चोटी वाला ।

सिखि–पु० [सं० शिखिन्] १ मोर, मयूर । २ अग्नि, आग । ३ कामदेव । ४ तीन की संख्या ।

सिखिध्वज–पु० [सं० शिखिध्वजः] १ धूंआ, धूम्र । २ कार्त्तिकेय । ३ मयूरध्वज राजा का नामान्तर । ४ एक प्राचीन तीर्थ ।

सिखिर (रि, री)–पु० [सं० शिखरिन्] पर्वत, पहाड़ ।

सिखिवाह (वाहण, न)–पु० [सं० शिखिवाहन्] स्वामि कार्तिकेय ।

सिखी–पु० [सं० शिखिन्] १ मोर, मयूर । २ अग्नि । ३ जटाधारी साधु । ४ बाण । ५ वृक्ष । ६ पर्वत । ७ दीपक । ८ मुर्गा । ९ ब्राह्मण । १० घोड़ा, अश्व ।

सिखर–देखो 'सिखर' ।

सिख्या–देखो 'सिक्षा' ।

सिग–पु० [सं० शिखर] १ किसी पात्र में कोई वस्तु किनारों के ऊपर तक भरने की अवस्था या क्रिया । २ इस प्रकार का भराव । ३ ऊपर उठने की क्रिया या भाव । ४ शिखर । –वि० पूर्ण भरा हुआ ।

सिगड़ि, सिगड़ी–स्त्री० [सं० अंगकटी] मिट्टी या लोहे का चूल्हा, अंगीठी ।

सिगरत, सिगरी–वि० [सं० सकल या स-गृह] १ सब, समस्त । २ कुटुम्ब सहित, सपरिवार ।

सिगळइ (ई, उ), सिगलउ–क्रि० वि० १ सर्वत्र, सब जगह । २ देखो 'सगळौ' ।

सिगळै, सिगळैय–देखो 'सगळै' ।

सिगळौ–देखो 'सगळौ' । (स्त्री० सिगळी)

सिग्ग–देखो 'सिग' ।

सिग्घ, सिघर–देखो 'सीघ्र' ।

सिघळौ–देखो 'सगळौ' ।

सिघाळ (ळी)–देखो 'सिघाळौ' ।

सिघ्र–देखो 'सीघ्र' ।

सिघ्रघाव–पु० हरिण ।–वि० तेज धावक ।

सिड़–स्त्री० १ सनक, पागलपन । २ धुन, लगन । ३ सड़ने की क्रिया या भाव ।

सिड़णी (बो)–देखो 'सड़णी' (बो) ।

सिड़सट (ठ)–वि० [सं० सप्तषष्टि] साठ व सात ।–पु० साठ व सात की संख्या, ६७ ।

सिड़सटी (ठी)–पु० ६७ की संख्या का वर्ष ।

सिड़ी–वि० १ सनकी, तुनक मिजाज । २ पागल । ३ दीवाना ।

सिचांण (न)–देखो 'सिचांण' ।

सिचाणो (बो)–देखो 'सिचाणो' (बो) ।

सिचियामाता–स्त्री० पवारों की इष्ट देवी ।

सिच्छ, सिच्छा–देखो 'सिक्षा' ।

सिच्छित–देखो सिक्षित' ।

सिजदा–स्त्री० [अ० सिज्दः] १ नमाज पढ़ते समय या ईश्वर के लिये, सिर झुकाने की क्रिया या भाव । २ प्रार्थना, वंदना ।

सिजळज–देखो 'सतलज' ।

सिजवाळी–देखो 'सेजवाळी' ।

सिजाणो (बो), सिजावणो (बो) देखो 'सीझाणो' (बो) ।

सिजिया–देखो 'सय्या' ।

सिझणो (बो)–१ देखो 'सजणो'(बो) । २ देखो 'सीझणो'(बो) ।

सिझाय–पु० स्वाध्याय । (जैन)

सिज्या–देखो 'सय्या' ।

सिज्यातर, सिज्यातरी–देखो 'सय्यातर' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिटणी (बो)–क्रि० १ निर्बल होना, कमजोर होना। २ हताश या निराश होना। ३ लज्जित या शर्मिन्दा होना।

सिटपिटाणी (बो)–क्रि० किंकर्त्तव्य विमूढ़ होना। २ असमंजस में पड़ना। ३ घबराजाना। ४ दब जाना।

सिटळ (ळो)–वि० (स्त्री० सिटळी) १ पथ भ्रष्ट, पतित। २ अविश्वसनीय। ३ निर्लज्ज। ४ जो बात पर कायम न रहे।

सिटाणी (बो), सिटावणी (बो)–१ क्रि० पराजित करना। २ लज्जित या शर्मिन्दा करना। ३ दबाव डालना, दबाना। ४ देखो 'सिटणी' (बो)। ५ देखो 'सटाणी' (बो)।

सिटो–१ देखो 'सीटी'। २ देखो 'सिटी'।

सिटेबाज–वि० १ धोखेबाज, कपटी। २ व्यर्थ मोटी-मोटी बातें करने वाला।

सिटो, सिट्टो–पु० [सं० षष्टिक] १ बाजरी, ज्वार आदि का भुट्टा। २ छोखा, झाँसा।

सिडकांणी–स्त्री० लकड़ी का डंडा जो बैलगाड़ी या छकड़े में 'जैक' की तरह काम आता है।

सिणकणी (बो), सिणकणी (बो)–क्रि० नाक से गंदा पानी निकालना, नाक साफ करना।

सिण–स्त्री० एक प्रकार की घास।

सिणगार–पु० [सं० शृंगार] १ वस्त्र, कपड़ा। २ आभूषण, गहना। ३ एक छन्द विशेष। ४ देखो 'सिंगार'।

सिणगारचोकी–स्त्री० १ राज्याभिषेक से पूर्व राजा के शृंगार के लिये बैठने की चौकी। २ राजदरबार के समय राजा के बैठने का आसन। ३ शृंगार करने का स्थान।

सिणगारण–वि० शृंगार करने या कराने वाली।

सिणगारणी (बो)–क्रि० [सं० शृंगारणम्] १ सुशोभित करना, सजाना। २ अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित करना। ३ शृंगार करना, शृंगारना।

सिणगारपटी–स्त्री० [स० शृंगारपट्टिका] स्त्रियों के शिर का एक आभूषण विशेष।

सिणतर, सिणतरी–स्त्री० धरती पर छितरने वाली एक घास विशेष। शंखपुष्पी।

सिणतरी–पु० राजस्थान में पाया जाने वाला एक छोटा ऊँटदार क्षुप।

सिणफिण–स्त्री० धीरे-धीरे निरन्तर होने वाली वर्षा, झड़ी।

सिणमिणो, सिणमिणी–वि० (स्त्री० सिणमिणी) उदास, खिन्न चित्त। रुग्ण।

सिणियो–देखो 'सिणतरी'।

सित–देखो 'सित'।

सितंब–वि० १ पागल, मूर्ख। २ सनकी।

सितंतर–वि० [सं० सप्तसप्तति] सत्तर व सात, सतहत्तर।–पु० सत्तर व सात की संख्या, ७७।

सितंतरी–पु० सतहत्तर की संख्या का वर्ष।

सित–वि० [सं० सित] १ श्वेत, सफेद। २ निर्मल, स्वच्छ। ३ बंधा हुआ। ४ सम्पूर्ण, पूर्ण। [सं० शित] ५ तीक्ष्ण; तेज। –पु० [सं० सितः] १ शुक्ल पक्ष। २ शुक्र ग्रह। ३ शुक्राचार्य। ४ वासुकी। ५ किरण। ६ रजत, चांदी। ७ पंडित।

सितकंठ–पु० [सं० सितिकंठ] शिव, महादेव। –वि० सफेद कंठ या गर्दन वाला।

सितच्छद–पु० [स० सितच्छद] हंस।

सिततुरंग–पु० [सं० श्वेततुरंग] अर्जुन।

सितपक्ख सितपक्खि, सितपक्ष, सितपख–पु० [सं० सितपक्ष] शुक्ल पक्ष।

सितपद्म–पु० [सं० श्वेतपद्म] श्वेत कमल।

सितम–वि० [फा०] जोरदार, गजब, अद्भुत। –पु० अत्याचार, अनीति, जुल्म, हठ। —गर –वि० जालिम, अत्याचारी।

सितमणि–स्त्री० [सं०] स्फटिक मणि, बिल्लौर।

सितरग–स्त्री० रामबेलि नामक लता।

सितर, सितर–देखो 'सित्तर'।

सितांबर–देखो 'श्वेतांबर'।

सितांसु–पु० [सं० सितांशु] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

सिता–स्त्री० [सं०] १ मिश्री। २ चीनी, शक्कर। ३ शराब, मदिरा। ४ सफेद दूब। ५ प्रकाश, रोशनी। ६ सुन्दर स्त्री।

सिताब, सिताबी–वि० तीव्र, तेज। –क्रि०वि० [फा० शिताब] शीघ्र जल्दी।

सितार–पु० [फा० सेहतार] एक प्रसिद्ध तार वाद्य।—बाज, वादक –वि० सितार बजाने वाला, सितार बजाने में दक्ष।

सितारपेसांणी–पु० [फा० सितारः पेशानी] अशुभ चिह्न वाला एक घोड़ा।

सितारियो–पु० सितार बजाने वाला व्यक्ति।

सितारो–पु० [फा० सितारः] १ तारा, नक्षत्र। २ भाग्य, किस्मत।

सिताचडी–स्त्री० एक प्रकार का पौधा विशेष।

सितासित–पु० [सं० सित-असित] बलराम।

सितास्व–पु० [सं० सिताश्व] १ अर्जुन का एक नाम। २ चन्द्रमा।

सिति–देखो 'सित'।

सितिकंठ–देखो 'सितकंठ'।

सितियासिमो (यो), सितियासियो–वि० छियासी के बाद वाला। –पु० सत्तासी का वर्ष।

सितियासी, सितियासी–वि० [सं० सप्ताशीति] अस्सी और सात के योग के समान। –पु० ८७ का अंक

सितियासेक–वि० सत्तासी के लगभग।

सितिरि–देखो 'सत्तर'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सितोदर–पु० कुबेर का एक नाम।–वि० जिसका पेट सफेद हो

सितोपला–स्त्री० [सं० सितोपला] मिश्री।

सित्तर, सित्तर–वि० [सं० सप्तति] साठ और दस का योग। –पु० सत्तर की संख्या, ७०।

सित्तरमी–वि० सत्तर के स्थान वाला, सत्तरवां। –पु० सत्तर का वर्ष।

सित्तरेक–वि० सत्तर के लगभग।

सित्तरी–पु० सत्तर की संख्या का वर्ष।

सित्या–स्त्री० १ बल, शक्ति। २ बुद्धि, अक्ल।

सित्यानास–देखो 'सत्यानास'।

सित्यानासी–देखो 'सत्यानासी'।

सित्यासी–देखो 'सितियासी'।

सिथर–देखो 'स्थिर'।

सिथल, सिथिल, सिथिस–पु० [सं० शिथिल] एक प्राचीन राजा। –वि० १ जिसमें तनाव या खिचाव न हो। २ मंद, धीमा। ३ सुस्त, आलसी। ४ क्लांत, थकित। ५ कमजोर, निर्बल। ६ जो सख्त न हो, ढीला, अदृढ़।

सिथिलता–स्त्री० [सं० शिथिलता] १ आलस्य, सुस्ती। २ ढीलापन। ३ थकावट। ४ मंदता, धीमापन। ५ कमजोरी, निर्बलता।

सिदक–स्त्री० [अ० सिद्क] १ सच्चाई, सत्यता। २ निश्छलता। ३ शुद्धता, निर्मलता। ४ वास्तविकता, यथार्थता। –वि० सच्चा, वास्तविक।

सिदरी–स्त्री० [फा० सेहदरी] तीन ओर से खुला या तीन दरवाजों का कक्ष।

सिद्ध त–देखो 'सिद्धांत'।

सिद्ध–पु० [सं०] १ वायु पुराणानुसार ८८००० देव-गणों का एक समूह। २ तपस्या, त्याग या साधना से अलौकिक शक्ति प्राप्त कोई महापुरुष, योगी, ऋषि, साधु। ३ वेद, पुराण आदि का मर्मज्ञ पुरुष या साधु। ४ नाथ सम्प्रदाय का योगी। ५ नाथ सम्प्रदाय एवं हिन्दू योगियों से भिन्न, बौद्धयोगी। ६ देवदूत, फरिश्ता। ७ ऐन्द्रजालिक, जादूगर। ८ अभियोग, मुकद्दमा। ९ गुड़। १० समुद्री नमक। ११ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से एक। १२ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक। १३ युद्धप्रिय एक देवता। १४ शिव, महादेव। १५ ऐसा पुरुष या महात्मा जिसका वचन सत्य हो। १६ पूजनीय व्यक्ति, महापुरुष। १७ जाटों का एक सम्प्रदाय या इस सम्प्रदाय का जाट। १८ सामंजस्य। १९ सूचना, सन्देश। २० आर्या गीति या स्कंधाण का एक भेद। २१ छप्पय छन्द का एक भेद विशेष। –वि० १ साधना से सफल किया हुआ, साधा हुआ। २ सफल, पूर्ण। ३ प्राप्त, उपलब्ध। ४ पूर्णतया सम्पादित, पूर्ण। ५ स्थापित, बसा हुआ। ६ दृढ़, पक्का। ७ सत्य माना हुआ, प्रमाणित। ८ निर्णीत, निर्धारित। ९ पकाया हुआ। १० अदा किया हुआ, चुकाया हुआ। ११ वशीभूत या काबू किया हुआ। १२ निपुण, दक्ष। १३ तैयार। १४ दमनित। १५ मुक्त, स्वतन्त्र। १६ प्रायश्चित से पवित्र। १७ अलौकिक शक्ति सम्पन्न। १८ पवित्र, शुद्ध, निष्पाप। १९ ठीक, उचित। २० मुक्ति या निर्वाण प्राप्त। २१ दैविक। २२ अनादि, सनातन। २३ प्रसिद्ध, विख्यात। २४ चमकीला, प्रकाशमान। २५ स्थापित, बसा हुआ। २६ मीठा। २७ सर्व कर्मों का क्षय करके संसार से मुक्त। (जैन) –क्रि०वि० 'जावणो' क्रिया के पूर्व लगने वाला शब्द जो शुभ माना जाता है। 'ज्यूं–सिद्ध जावो हो'।

सिद्धआपगा–स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

सिद्धकणेरी–पु० प्रसिद्ध नौ नाथों में से एक, कृष्णपाद।

सिद्धकामेस्वरी–स्त्री० [सं० सिद्धकामेश्वरी] दुर्गा की पांच मूर्तियों में से प्रथम, कामाख्या।

सिद्धकारी–वि० [सं० सिद्धकारिन्] १ जो धर्मशास्त्र का अनुसरण करता हो। २ सिद्ध करने वाला।

सिद्धक्षेत्र–पु० दण्डक वन का एक नाम।

सिद्धजोग–देखो 'सिद्धयोग'।

सिद्धजोगी–पु० [सं० सिद्धयोगी] १ शिव, महादेव। २ कोई सिद्ध पुरुष, योगी।

सिद्धता–स्त्री० १ सिद्धि प्राप्त कर लेने की अवस्था क्रिया या भाव, सिद्धि, सिद्धित्व। २ तपस्या व साधना से प्राप्त की हुई अलौकिक शक्ति। ३ सफलता, पूर्णता। ४ दृढ़ता। ५ प्रसिद्धि। ६ मुक्ति।

सिद्धदेव, सिद्धनाथ–पु० [सं०] शिव, महादेव।

सिद्धपक्ष (पक्ष, पख)–पु० [सं० सिद्धपक्ष] प्रामाणिक बात।

सिद्धमात्रका–स्त्री० [सं० सिद्धमातृका] एक प्रकार की लिपि।

सिद्धयोग–पु० [सं०] वार व तिथियों के संयोग से बनने वाला शुभ योग, शुभ मुहूर्त।

सिद्धरसायण (न)–पु० एक रसौषधि विशेष।

सिद्धराज (राव)–पु० [सं० सिद्धराज] १ शिव, महादेव। २ गोरखनाथ।

सिद्धविचारनाथ–पु० राजा भर्तृहरि का एक नाम।

सिद्धसाधक–पु० १ सब इच्छाएँ पूर्ण करने वाला। २ सिद्ध तथा साधक।

सिद्धसी–स्त्री० [सं० सिद्ध-श्री] १ प्रारंभ, शुभारम्भ। २ पत्रादि लिखते समय सर्व प्रथम लिखा जाने वाला शब्द।

सिद्धांजन–पु० [सं०] एक प्रकार का अंजन जिसे आंख में लगाने पर अदृश्य वस्तुएँ दिखाई देती हैं। (कल्पित)

सिद्धांत–पु० [सं०] १ कला, विज्ञान, शास्त्र आदि के संबंध में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वमान्य मत, प्रामाणिक रूप में मानी जाने वाली बात। २ उसूल, मत। ३ विद्वानों द्वारा सत्य मानी जाने वाली बात। ४ तत्त्व की बात। ५ शास्त्र। ६ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।

सिद्धा–स्त्री० आर्या छन्द का एक भेद।

सिद्धाई–स्त्री० १ सिद्ध होने की अवस्था या भाव, सिद्धि। २ चतुराई। ३ पांडित्य, विद्वता। ४ सिद्ध करने की शक्ति। ५ सिद्धत्व। ६ विशेषता, खासियत।

सिद्धाचल (चल)–पु० [सं० सिद्धाचलः] काठियावाड़ में स्थित जैनियों का एक तीर्थस्थान।

सिद्धारथ–पु० [सं० सिद्धार्थ] १ गौतम बुद्ध का नाम। २ राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम। ३ स्कन्द का एक अनुचर। ४ रुद्रवीसी का चौदहवां वर्ष। (ज्योतिष)

सिद्धासण–पु० योग के चौरासी आसनों में से एक।

सिद्धि–स्त्री० [सं०] १ आठ प्रकार की अलौकिक शक्तियों (सिद्धियों) में से कोई एक। २ ऐन्द्रजालिक विद्या से चमत्कारिक कार्य करने की क्षमता। ३ साधना या तपस्या के परिणाम स्वरूप अर्जित दैवी शक्ति। ४ परिश्रम का फल, सफलता। ५ मुक्ति, मोक्ष। ६ निपुणता, दक्षता। ७ स्थापना, प्रतिष्ठा। ८ शुद्धता, पवित्रता। ९ वास्तविकता, सच्चाई। १० खाद्य पदार्थ के पकने की स्थिति, अवस्था, पकावट। ११ तत्परता, सावधानी। १२ बुद्धि। १३ अन्तर्धान होने की क्रिया। १४ समृद्धि, सुख। १५ विजय, सफलता। १६ दिग्विजय यात्रा। १७ दुर्गा का एक नाम। १८ गणेश की दो पत्नियों में से एक का नाम। १९ एक देवी जो कुन्ती के रूप में प्रकट हुई। २० जनक की पुत्र वधू का नाम।–पु० २१ वीर नामक अग्नि का एक नाम। २२ अच्छा फल सुफल। २३ निवास, आवास। २४ निर्विवाद परिणाम, निर्णय। २५ निर्णय, निश्चय, निपटारा। २६ भुगतान, चुकारा। २७ प्रभाव। २८ वार व नक्षत्र संबंधी एक योग। २९ आर्या छन्द का एक भेद। ३० देखो 'सुधि'।

सिद्धिदाता–पु० गणेश, गजानन। –वि० सिद्धि प्रदान करने वाला।

सिद्धिदातिथि–स्त्री० फलित ज्योतिष में वार व तिथि संबंधी एक योग।

सिद्धिदात्री–स्त्री० नव दुर्गा के अन्तर्गत एक देवी।

सिद्धिनायक–पु० [सं०] गणेश, गजानन।

सिद्धिप्रद–वि० सिद्धि देने वाला।

सिद्धिभू (भूमि)–स्त्री० तपोभूमि, सिद्धि प्राप्त कराने वाला स्थान।

सिद्धी–देखो 'सिद्धि'।

सिद्धेस्वर–पु० [सं० सिद्धेश्वर] १ कोई बड़ा योगी, सिद्ध। २ जलधरनाथ का एक नाम। ३ शिव, महादेव।—नारी–स्त्री० उमा, पार्वती।

सिद्धोदक–पु० [सं०] १ एक समुद्र विशेष। २ एक प्राचीन तीर्थ।

सिद्धौ–पु० [सं० सिद्धः] १ वर्णों का अभ्यास कराने की, व्याकरण युक्त एक पद्धति। २ देखो 'सौधी'।

सिधंत–पु० १ यमराज। २ देखो 'सिद्धांत'।

सिध–स्त्री० १ सफलता, विजय। २ संकेत। ३ लक्षण, चिह्न।–वि० १ उपयुक्त। २ सफल। ३ देखो शक्ति वाली, चमत्कार पूर्ण, चमत्कारिक।–अव्य० १ कहां, किधर। २ देखो 'सिद्ध'। ३ देखो 'सीध'। ४ देखो 'सिद्धि'।

सिधक–पु० सिद्ध पुरुष।

सिधकर–पु० एक देव जाति।

सिधकांम–पु० मिर्च।

सिधगुटकी–देखो 'सिद्धगुटकी'।

सिधजोग–देखो 'सिद्धजोग'।

सिधदेव–पु० प्रतिज्ञावीर पाबू राठोड़ का एक नाम।

सिधनायक–वि० [सं० सिद्धिनायक] सिद्धि देने वाला।–पु० गजानन, गणेश।

सिधपुर–देखो 'सिद्धपुर'।

सिधबुधवायक–पु० [सं० सिद्धि-बुद्ध-वायक] गणेश, गजानन।

सिधमल (मल्ल)–पु० महादेव, शिव।

सिधराज–देखो 'सिद्धराज'।

सिधवा–१ देखो 'सधवा'। २ देखो 'सिद्ध'।

सिधवाह–पु० वह शस्त्र जो अपने लक्ष्य से चूकता न हो, अचूक शस्त्र।

सिधांत–देखो 'सिद्धांत'।

सिधाई–स्त्री० १ सरलता, सीधापन। २ देखो 'सिद्धाई'।

सिधाणी (णो)–क्रि० [सं० सिद्धः] प्रस्थान करना, गमन करना, जाना, रवाना होना।

सिधार–पु० प्रस्थान या गमन करने का भाव।

सिधारणी (णो)–देखो 'सिधाणी' (णो)।

सिधारू–देखो 'सिद्ध'।

सिधावणी (णो)–देखो 'सिधाणी' (णो)।

सिधि, सिधी–देखो 'सिद्धि'

सिधेसर (सुर, स्वर)–देखो 'सिद्धेश्वर'।–नारी = 'सिद्धेस्वरनारी'।

सिधौ–१ देखो 'सिद्धौ'। २ देखो 'सीधौ'।

सिध्ध, सिध्धु–देखो 'सिद्ध'।

सिध्धसिला–स्त्री० [सं० सिद्ध-शिला] १ वह स्थान या लोक जहां मृतात्मायें मोक्ष प्राप्त कर अपने वास्तविक स्वरूप में रहती हैं। (जैन) २ पच्चीस विशेष। (जैन)।

सिध्धि–देखो 'सिद्धि'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिध्म–पु० [सं० सिध्मं] १ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। २ कोढ़ का दाग।

सिध्याइ–पु० स्वाध्याय।

सिन–पु० जाल नामक वृक्ष का फल, पीलू।

सिनक–देखो 'सनक'।

सिनकादिक–देखो 'सनकादिक'।

सिनांण (न)–पु० १ मस्तक, शिर। २ स्नान, सज्जन। —घर–पु० स्नानाघर, नहाने का स्थान।

सिनांणी (नी)–पु० १ बिश्नोई जाति के लिये एक सम्बोधन। २ इस जाति का व्यक्ति।

सिनाख्त–स्त्री० [फा० शिनाख्त] १ पहचान। २ पहचान चिह्न।

सिनावड़ी–स्त्री० छितराकर होने वाली एक वनस्पती।

सिनिया–देखो 'सेना'।

सिनियास–देखो 'संन्यास'।

सिनियासी–देखो 'संन्यासी'।

सिनेह–देखो 'स्नेह'।

सिन्नान–देखो 'सिनांण'।

सिन्यास–देखो 'संन्यास'।

सिन्यासी–देखो 'सन्यासी'।

सिपत–देखो 'सिफत'।

सिपर–स्त्री० [फा०] १ ढाल। २ कवच।

सिपहसालार–पु० सेनापति, सेनानायक।

सिपाई–देखो 'सिपाही'। —गिरी, गीरी = 'सिपाहीगिरी'।

सिपारो–पु० [फा० सिपारा] कुरान के तीस भागों में से एक।

सिपाह–स्त्री० [फा०] १ सेना, फौज। २ देखो सिपाही।

सिपाही–पु० [फा०] १ सैनिक, योद्धा। २ पुलिस का सबसे छोटा कर्मचारी। — गिरी, गीरी–स्त्री० सिपाही का कार्य या पद।

सिप्पाह–देखो 'सिपाह'।

सिप्पो–पु० १ निशान, चिह्न। २ रोब, प्रभाव। ३ संयोग।

सिप्रा–स्त्री० उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी।

सिफत–स्त्री० [अ० सिफत] १ हस्तलाघवता, निपुणता। २ कोई विशिष्ट गुण, विशेषता। ३ श्रेष्ठता। ४ प्रशंसा, तारीफ।

सिफर–पु० [अ० साइफर] १ बिन्दी, शून्य। २ देखो 'सिपर'।

सिफा–स्त्री० [सं० सिफा] १ जड़। २ वृक्ष विशेष की रेशेदार जड़।

सिफाहड़ी–देखो 'सिपाही'।

सिफारस–देखो 'सिफारिस'।

सिफारसी–वि० [फा० सिफारिशी] जिसकी सिफारिश की गई हो। किसी की सिफारिश से बना हुआ।

सिफारिस–स्त्री० [फा० सिफारिश] १ किसी के हित के लिये किसी अन्य को कही जाने वाली बात। २ नौकरी दिलाने, काम दिलाने या काम करवाने के लिये किया जाने वाला प्रयास। ३ समर्थन। ४ प्रशंसा, तारीफ। ५ खुशामद।

सिब–१ देखो 'सबी'। २ देखो 'सिबी'।

सिबका, सिबिका–देखो 'सिविका'।

सिबिर–देखो 'सिविर'।

सिबो–स्त्री० [सं० शिबा] १ मूंग आदि की फली। २ देखो 'सबी'।

सिमंट–देखो 'सीमेंट'।

सिमक–स्त्री० ऊंट का एक रोग।

सिमटणो (बो)–क्रि० १ बिखरे सामान या प्राणियों का एकत्र होना, सीमित होना। २ वस्त्र, पत्रादि का सिमटना, तह या परतों में जुड़ना। ३ क्रमशः होना, तरतीबवार किया जाना। ४ कार्य आदि का निपटना, पूर्ण होना। ५ सिकुड़ना, सलवट पड़ना। ६ संकोच या लज्जा में पड़ना। ७ कार्य क्षेत्र या शासन क्षेत्र का कम होना, सीमित होना। ८ देखो 'समेटणो' (बो)।

सिमटाणो (बो)–देखो 'समेटणो' (बो)।

सिमणो (बो)–देखो 'सींवणो' (बो)।

सिमरण–देखो 'स्मरण'।

सिमरणो (बो)–देखो 'समरणो' (बो)।

सिमरत्थ, सिमरथ, सिमरथ्थ–देखो 'समरथ'।

सिमरि–देखो 'समीर'।

सिमरि–देखो 'समीर'।

सिमरिव–स्त्री० बिजली, विद्युत।

सिमांनो–देखो 'सांमियांनो'।

सिमाड़–देखो 'सीमाड़'।

सिमाणो (बो), सिमावणो (बो)–देखो 'सींवाणो' (बो)।

सिमिटणो (बो)–देखो 'सिमटणो' (बो)।

सिमेटणो (बो)–देखो 'समेटणो' (बो)।

सिय–१ देखो 'सीता'। २ देखो 'सोत'।

सियरो–वि० शीतल, ठंडा।

सियल–देखो 'सील'।

सियली–वि० ठण्डी, शीतल।

सियांन–देखो 'सांन'।

सिया–पु० [अ० शीया] १ मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय २ ढोलियों की एक शाखा। ३ देखो 'सीता'।

सियाह–वि० शीलवती।

सियापत (पति, पती)–देखो 'सीतापति'।

सियार–स्त्री० १ बढ़ई का एक औजार विशेष। २ देखो 'सगाळ'।

सियारो–पु० १ मूत्रेन्द्रिय पर भौरी वाला बैल। २ देखो 'सोरावो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सियाल, सियाल, सियालक–देखो 'स्याल, स्यालक'। देखो 'सगाळ'।
सियालियो–देखो 'सगाल'।
सियाली–स्त्री० १ एक प्रकार का कन्द। २ मादा शृगाल।
सियालू–देखो 'सीयालू'।
सियाळो–देखो 'सोयाळो'।
सियाल्यो–देखो 'सगाळ'।
सियावर–पु० [सं० सीतावर] श्रीरामचन्द्र।
सियासांमी–देखो 'सीतास्वांमी'।
सियाहगोस–पु० वन बिलाव।
सियो–पु० १ सीसा नामक धातु। २ काच, दर्पण। ३ बोतल। ४ देखो 'सीत'। ५ देखो 'सीतजुर'।
सिय्या–स्त्री० शय्या, सेज।
सिरंग, सिरंगी–देखो 'सारंग'।
सिरंम–देखो 'सीरम'।
सिर–पु० [सं० शिरस्] १ शरीर के ऊपर का गोल भाग, मस्तिष्क, कपाल। २ शरीर की गर्दन के ऊपर या आगे का अंग। ३ विचार शक्ति, बुद्धि। ४ शिरा, नस। ५ सेना का अग्रभाग। ६ किसी वस्तु का सब से ऊंचा भाग, शृंग। ७ धान की बाल। ८ ललाट, भाल। –क्रि० वि० १ पर, ऊपर। २ अतिनिकट, नजदीक। ३ देखो 'सर'।
सिरक–स्त्री० [सं० शीत-रक्षक] सर्दी से बचने के लिये ओढ़ने का लिहाफ, रजाई।
सिरकण–स्त्री० १ खिसकने, हटने या जाने की क्रिया या भाव। २ देखो 'सिरकी'।
सिरकणो (बो)–क्रि० १ बीतना, व्यतीत होना, गुजरना। २ हटना, खिसकना। ३ चलना, जाना। ४ किसी की तरफ बढ़ना, पास आना। ५ इधर-उधर खिसकना। चुपचाप कहीं चले जाना। ६ मिटना, नाश होना। ७ रेंगना, सरकना। ८ काम बनना। ९ स्थगित होना, आगे के लिये तय होना।
सिरकस–पु० १ श्रेष्ठ, शिरमोर, बढ़िया। २ देखो 'सरकस'।
सिरकाणो (बो)–क्रि० १ रखना, धरना। २ खिसकाना। ३ धकेलना। ४ हटाना, दूर करना। ५ मिटाना, खत्म करना। ६ बढ़ाना। ७ व्यतीत करना, गुजारना। ८ कार्य पूरा करना। ९ स्थगित करना, अवधि बढ़ाना।
सिरकापासो–स्त्री० रस्सी से लगाई जाने वाली एक गांठ विशेष।
सिरकार–देखो 'सरकार'।
सिरकी–स्त्री० पतली तीलियां या सरकंडे की बनी टट्टी।
सिरख–देखो 'सिरक'।
सिरख-सोड़ियो–पु० शीतकाल में ओढ़ने का वस्त्र, लिहाफ, चादर।
सिरखुलोनिसांणो–स्त्री० निसानी नामक छन्द का एक भेद।
सिरखो–देखो 'सारीखो'।
सिरग–देखो 'सारंग'।
सिरगा–पु० घोड़ों की एक जाति।
सिरगिर, सिरगिरि (री)–देखो 'सोगिरि'।
सिरड़–स्त्री० १ मनक। २ क्रोध, आवेश। ३ धुन, लगन। ४ कुटेव।
सिरड़ि, सिरड़ी–स्त्री० तीव्र, आवाज। –वि० १ सनकी, तुनक मिजाज। २ पागल, बेवकूफ। ३ हठी, जिद्दी।
सिरचद–पु० हाथी के मस्तक का एक आभूषण।
सिरजंदो, सिरजंन, सिरजक (ण, न)–वि० १ सृजन करने वाला, बनाने वाला। २ ईश्वर, परमेश्वर।
सिरजणहार (री)–देखो 'सरजणहार'।
सिरजणी (बो)–देखो 'सरजणी' (बो)।
सिरजथा–स्त्री० डिंगल गीत रचना की एक विधि तथा इस विधि से बनाया गया गीत।
सिरजित, सिरजोत–पु० १ भाग्य का लेख, प्रारब्ध। २ देखो 'सरजोत'।
सिरजोलो–वि० सृजन करने वाला, बनाने वाला, निर्माता।
सिरजोर–वि० [फा० सरजोर] १ जबरदस्त, प्रचण्ड। २ प्रबल। ३ बलवान, शक्तिशाली। ४ बागी, विद्रोही। ५ उद्दण्ड, बदमाश।
सिरजोरी–स्त्री० [फा० सरजोरी] १ जबरदस्ती। २ उद्दंडता, सरकशी, बदमाशी।
सिरज्जण–देखो 'सरजण'।
सिरटी, सिरटी–देखो 'सिटी'।
सिरताज–देखो 'सरताज'।
सिरत्रांण–पु० [सं० शिरत्राणम्] शिर का कवच, झिलमटोप।
सिरथंभ–पु० [सं० शिर-स्तंभ] गर्दन।
सिरदार–देखो 'सरदार'।
सिरदारगी, सिरदारि (री)–स्त्री० १ सरदार होने की अवस्था या भाव। २ सम्पन्नता। ३ अमीरी।
सिरदुआळी–स्त्री० घोड़े का एक साज।
सिरदो–देखो 'सरदो'।
सिरधणी–पु० मालिक, स्वामी। –वि० शिरमोर, श्रेष्ठ।
सिरधर–पु० १ मकानों के स्तम्भ के ऊपर का पत्थर। २ मकान के द्वार पर लगने वाला एक पत्थर।
सिरधा–देखो 'सद्धा'।
सिरधारि, सिरधारी–पु० १ मस्तकों की मालाधारी शिव, महादेव। २ स्वामी, मालिक।
सिरनामो (मो)–पु० १ स्वामी, मालिक। २ देखो 'सरनामो'।
सिरपंच–देखो 'सरपंच'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिरपाउ, सिरपाव–पु० १ सिर से पैर तक पहनने के वस्त्रादि जो राजा, बादशाह द्वारा सम्मान में दिये जाते थे। २ पहनने के वस्त्र, वेशभूषा। ३ विवाहादि अवसरों पर भेंट किये जाने वाले वस्त्रादि।

सिरपेच–पु० [सं० शिर-रा० पेच] पगड़ी या साफे पर बाँधा जाने वाला आभूषण विशेष।

सिरपोस–पु० १ दीपक की लौ के धूंए की रोक के लिये लगाया जाने वाला टोप। २ बंदूक के ऊपर का गिलाफ। ३ शिर का आवरण। –वि० १ शिरोमणि, श्रेष्ठ। २ देखो 'सिरत्राण'।

सिरफ–वि० [सं० सिर्फ] १ केवल, मात्र। २ एकाकी, अकेला।

सिरबद (बद)–देखो 'सरबंद, सरबंध'।

सिरबंदी–पु० १ मोर्चाबंदी। २ किराये के सैनिकों का दल।

सिरमंड–पु० [सं० शिरमंड] १ बाल, केश। २ शिर का आभूषण।

सिरमणि, सिरमणी–पु० [सं० शिरोमणि] १ शेषनाग। २ शिर में मणि वाला सर्प। ३ साँप, सर्प। –वि० शिरोमणि।

सिरमाळ (माळा)–स्त्री० [सं० शिरमाला] मुंडमाला।

सिरमुंडाई–स्त्री० १ शिर मूंडने की क्रिया या भाव। २ मुण्डन संस्कार। ३ शिर मुंडवाने का पारिश्रमिक।

सिरमौड़ (मौर)–पु० १ सर्वश्रेष्ठ अंग, सर्वोत्तम भाग। २ शिरोभूषण, मुकुट। ३ पति, खाविंद। ४ स्वामी, मालिक। –वि० १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम। २ प्रधान, मुख्य।

सिरलोक, सिरलोकी–१ देखो 'सिलोकी'। २ देखो 'स्लोक'।

सिरलौ–वि० १ समान, बराबर। २ देखो 'सिलौ'।

सिरवरी–स्त्री० कहीं-कहीं दिखने वाले छोटे-छोटे बादल।

सिरवाळै–क्रि०वि० अन्त में, आखिर में।

सिरवाह–स्त्री० शिर पर किया जाने वाला प्रहार।

सिरस–देखो 'सरेस'।

सिरसतो–पु० सलाह, मशविरा।

सिरसद–वि० घायल।

सिरसब–देखो 'सरसू'।

सिरसालो–वि० बढ़िया, उत्तम।

सिरसिज–पु० १ बाल, केश। २ देखो 'सरसिज'।

सिरसूं–देखो 'सरसू'।

सिरसूत–पु० पगड़ी साफा।

सिरसौ–देखो 'सारीखो'।

सिरस्यूं–देखो 'सरसू'।

सिरहर–पु० [सं० सरोवर] १ तालाब। २ शिखर, शृंग। –वि० १ श्रेष्ठ, शिरोमणि, सरताज। २ समान, तुल्य।

सिरहाणे (णै)–अव्य० सोते समय, शिर की तरफ।

सिरहाणो–पु० १ पलंग, खाट आदि का शिर की तरफ रहनेवाला भाग। २ सोते समय शिर के नीचे लगाने का तकिया आदि।

सिरहार–पु० मुंडमाल।

सिरांणी, सिरांणियो, सिरांनो–देखो 'सिरहाणो'।

सिरांमण, सिरांवण–पु० [सं० शीतलासन, शिशिराऽसन] १ नाश्ता, कलेवा। २ संबल, पाथेय। ३ स्वल्पाहार।

सिरांमणी, सिरांवणी–स्त्री० १ यात्रा में साथ लिया जाने वाला भोजन या खाद्य सामग्री। २ देखो 'सिरांमण'।

सिरा–स्त्री० [सं० शिरा] १ रक्तवाहिनी नाड़ी, धमनी, रग। २ नलिका, नाली।

सिराइचो, सिराईचो–देखो 'सिरायचो'।

सिराई–देखो 'सराई' (ही)

सिराका–स्त्री० [सं० शंका] भ्रम, संदेह, शंका।

सिराज–वि० श्रेष्ठ।

सिराजी–पु० रंग विशेष का घोड़ा।

सिराणी (णो) देखो 'सराणी' (णो)।

सिरायचो–पु० छोटा तंबू, खेमा।

सिरायत–पु० १ राजवंश का बड़ा जागीरदार। २ प्रथम श्रेणी का राजदरबारी।–वि० १ हिस्सादार, भागीदार, सहभागी। २ देखो 'सरायत'।

सिरारी–क्रि० वि० तरफ का, ओर का।

सिरावण–देखो 'सिरांमण'।

सिराषो–देखो 'सीरावो'।

सिराजत–पु० [सं० सिराजुत] सीसा नामक धातु, रांगा।

सिराह–देखो 'सराह'।

सिराहणी (णो)–देखो 'सराणी' (णो)।

सिराही–पु० सिंध प्रदेश की एक प्राचीन जाति व इस जाति का व्यक्ति।

सिरि–१ देखो 'सिरी'। २ देखो 'सिर'। ३ देखो 'सी'। ४ देखो 'स्वर'। ५ देखो 'सरी'।

सिरिमंड–देखो 'सिरमंड'।

सिरिया–पु० [सं० शिरस्] शिर, मस्तक।

सिरियावैं–स्त्री० कुम्भकार जाति की एक भक्त स्त्री जो प्रह्लाद की गुरु थी।

सिरियारी–स्त्री० औषधि में काम आने वाली एक बूंटी।

सिरियो–देखो 'सरियो'।

सिरी–स्त्री० [सं० शिरम्] १ बकरे के शिर का गोश्त। [सं० शिरिः] २ तलवार, खड्ग। [सं० शिरः] ३ एक प्रकार का बड़ा सर्प। ४ सर्प, नाग। ५ शिकार किये गये पशु का शिर। ६ देखो 'सी'। ७ देखो 'सीरी'। ८ देखो 'सरि'।

सिरीकिसन–पु० श्रीकृष्ण।

सिरीख, सिरीखड, सिरीखो–देखो सारीखो'। (स्त्री० सिरीखी)

सिरीमरण–पु० [सं० श्रीमरण] श्रीविष्णु।

सिरीसाप–देखो 'सीसाप'।

सिरीसो–देखो 'सारीखो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिरीसप–पु० [सं० सरीसृपः] १ सर्प, नाग। २ रेंगने वाला जानवर।

सिरू, सिरू–वि० १ शीघ्र स्वाहा न होने वाला। २ पर्याप्त, पूर्ण। ३ बरकत। ४ देखो 'सरसू'। ५ देखो 'सरू'।

सिरे, सिरें–वि० १ श्रेष्ठ, बढ़िया। २ मुख्य, प्रधान, खास। ३ सिद्ध, सफल।–क्रि० वि० पर, ऊपर, सर्वोपर।

सिरेपोत–देखो 'सरूपोत'।

सिरैरोकुरब–पु० जोधपुर महाराजा द्वारा अपने सामंतों को दिया जाने वाला सम्मान, ताजीम।

सिरैरो-साट–पु० सूअर के कान के पास से पूंछ तक की गाढ़ी दलदार चर्बी जो पकाकर खाई जाती है।

सिरोगुहा–स्त्री० [सं० शिरोगुहा] १ शिर का एक वात रोग। २ सबसे ऊपर वाला कमरा, कक्ष।

सिरोत्तर–वि० समान, तुल्य।

सिरोधर, सिरोधरि–स्त्री० [सं० शिरोधर] गला, गर्दन।

सिरोबर–वि० बराबर, समान।

सिरोमण, सिरोमणि, सिरोमणी–वि० [सं० शिरोमणि] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्व प्रमुख। २ जिसके शिर पर मणि हो।

सिरोमणराय–पु० [सं० शिरोमणि-राज] १ परमेश्वर, ईश्वर। २ चक्रवर्ती, सम्राट।

सिरोमणि, सिरोमणी–वि० [सं० शिरोमणि] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्व प्रमुख। २ जिसके शिर पर मणि हो।

सिरोमरमा–पु० [सं० शिरोमर्मन्] सूकर, सूअर।

सिरोमाळी–पु० [सं० शिरोमालिन्] शिव, महादेव।

सिरोरुह, सिरोरूह–पु० [सं० शिरोरुह] १ शिर के बाल, केश। २ देखो 'सरोरुह'।

सिरोलो, सिरोली–वि० (स्त्री० सिरोली) साझेदारी वाला, सामूहिक।

सिरोही–पु० १ एक अच्छी किस्म का लोहा। २ इस लोहे की बनी तलवार। ३ राजस्थान का एक कस्बा।

सिरी–पु० १ लम्बाई का अन्त, लम्बाई का छोर, सिरा। २ ऊपर का या शीर्ष भाग। ३ नोक, अणी। ४ अग्रभाग। ५ पंक्ति, कतार। ६ शुरू का भाग। ७ एक प्रकार का पौधा। ८ देखो 'सिरटी'। ९ देखो 'सिरी'।

सिलंग–पु० रहट में लगने वाला एक पाटिया विशेष।

सिल–देखो 'सिला'।

सिळकणो (बो)–देखो 'सळकणो' (बो)।

सिळगणो (बो), सिळगावणो (बो)–क्रि० १ जलना, प्रज्वलित होना, भस्म होना। २ धुकना, धुंआ निकलना। ३ आग में पड़ना, आग लगना। ४ प्रकाशमान होना, चमकना। ५ उत्तेजित होना, भड़कना। ६ ईर्ष्या, क्रोध आदि में कुढ़ना। ७ असह्य वेदना होना। ८ झुलसना। ९ पेड़-पौधों का अंकुरित होना।

सिळगाणो (बो), सिळगावणो (बो)–क्रि० १ जलाना, प्रज्वलित करना, भस्म करना। २ धुकाना, धुंए के रूप में जलाना। ३ आग में पटकना, आग लगाना। ४ प्रकाशमान करना, चमकाना। ५ उत्तेजित करना, भड़काना। ६ ईर्ष्या, क्रोध आदि में कुढ़ाना। ७ असह्य कष्ट देना। ८ झुलसाना ९ पेड़ पौधों आदि को अंकुरित करना।

सिलड़ी–देखो 'सिला'।

सिलड़ो–पु० बड़ी शिला, चट्टान। बड़ा पत्थर।

सिलट–देखो 'सिलहट'।

सिळणो (बो), सिळणो (बो)–क्रि० छुपना।

सिलणो (बो)–क्रि० मिला जाना, सिलाई किया जाना।

सिलता–देखो 'सरिता'।

सिलदर, सिलधर–स्त्री० दरवाजे पर लगाई जाने वाली पत्थर की पट्टी।

सिलप–देखो 'सिल्प'।

सिलपट सिलपट्टी–स्त्री० १ रबर की, जलानी चप्पल विशेष। २ ऐड़ी की तरफ से खुली एक प्रकार की जूती। ३ रेल लाइन के नीचे बिछाने का लट्ठा। ४ एक प्रकार का पत्थर जिसकी, स्लेट पर लिखने की, कलम बनती है।

सिलपकर, सिलपकार–देखो 'सिल्पकार'।

सिलपसासतरी, सिलपसास्त्री–पु० [सं० शिल्पशास्त्री] कुशल शिल्पकार, शिल्पकला में निपुण।

सिलपी, सिलप्पी–देखो 'सिल्पी'।

सिलल–देखो 'सलिल'।

सिळवट–देखो 'सळवट'।

सिलवाड़–स्त्री० रहट में लगने वाला लकड़ी का टुकड़ा, गुटका।

सिलवाणो (बो)–क्रि० सिलाई कराना, सिलाना।

सिलसिलाबदी–स्त्री० कतार बंदी क्रम।

सिलसिलेवार–वि० यथाक्रम, क्रमशः।

सिलह सिलहक–पु० [अ० सिलह] १ कवच, बख्तर। २ अस्त्र-शस्त्र, हथियार। ३ युद्ध सामग्री।

सिलहखानो–पु० १ अस्त्र-शस्त्र रखने का कक्ष, शस्त्रागार। २ अस्त्र-शस्त्र।

सिलहट–पु० १ ईरान का बना एक मोटा व मजबूत वस्त्र विशेष। २ कवच, बख्तर। ३ देखो 'सिलहटी'।

सिलहटी–वि० सिलहट के कपड़े का बना हुआ।

सिलहडगळो–स्त्री० धड़ का कवच।

सिलहदार–वि० [अ०] १ अस्त्र-शस्त्रधारी। २ योद्धा, वीर। ३ शस्त्रागार का अधिकारी। ४ अस्त्र-शस्त्रों का व्यापारी।

सिलहपूर–वि० १ कवचधारी, बख्तरबंद। २ शस्त्रधारी।

सिलहपोस–वि० १ कवचधारी, बख्तरबंद। २ शस्त्रधारी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिलहबंध–वि० १ कवच, शस्त्र आदि धारण करने वाला योद्धा, वीर। २ कवच-शस्त्रादि से सुसज्जित व्यक्ति।

सिलहेत, सिलहैत–वि० १ अस्त्र-शस्त्र युक्त। २ कवचधारी।

सिलाम–देखो 'सलाम'।

सिलामत, सिलामति–१ देखो 'सलामत'। २ देखो 'सलामसि'।

सिलामी–देखो 'सलामी'।

सिला–स्त्री० [सं० शिला] १ पाषाण, प्रस्तर खंड। २ चट्टान। ३ प्रस्तर पट्टिका। ४ भंग आदि घोटने की शिला। ५ मैनसिल।

सिलाई–स्त्री० १ सीने का कार्य। २ सीने का ढंग। ३ सिलाई की मजदूरी।

सिलाउ, सिलाउ, सिलाक, सिलाक–स्त्री० १ बिजली, विद्युत। २ बिजली की चमक। ३ तोप की आवाज। ४ शलाका, सलाई।

सिलाड़–पु० १ दो पशुओं की गर्दन एक साथ बांधने की रस्सी। २ इस प्रकार एक ही रस्सी से बंधे पशु। ३ समान जाति के पशुओं का जोड़ा। ४ युग्म, जोड़ा।

सिलाड़णो (बो)–क्रि० १ दो पशुओं को गर्दन से परस्पर एक ही रस्सी से बांधना। २ देखो 'सिलाणो' (बो)।

सिलाड़ी–देखो 'सिला'।

सिलाड़ीबाब–पु० जूते बनाने वालों से लिया जाने वाला एक कर।

सिलाजतु, सिलाजीत–पु० [सं० शिलाजतु] पहाड़ों या चट्टानों से निकलने वाला लसदार एक पौष्टिक पदार्थ, शिलाजीत।

सिलाट–देखो 'सिलावट'।

सिलाणो (बो)–क्रि० १ ठण्डा करना। २ क्षति पूर्ति करना। ३ देखो 'सींवाणो' (बो)।

सिलावांन–पु० ब्राह्मण को शालिग्राम की मूर्ति का दान।

सिलामयी–स्त्री० एक देवी का नाम।

सिलार–पु० १ मुसलमान। २ देखो 'सिलारो'।

सिलारस–पु० १ रूमी पेड़ का गोंद। २ देखो 'सिलाजीत'।

सिलारो–पु० घोड़े की रकाब का एक भाग।

सिलास–पु० पाबू राठोड़ का एक नाम।–वि० भाला धारण करने वाला।

सिलाव, सिलाव–पु० १ आधार, साधन, स्रोत। २ देखो 'सिळाउ'।

सिलावट, सिलावटिणी, सिलावटी–स्त्री० १ भवन निर्माण व पत्थर घड़ने का कार्य करने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति। २ संगतराश, शिल्पी।

सिलावणो (बो)–१ देखो 'सिलाणो' (बो)। २ देखो 'सींवाणो' (बो)।

सिलासार–पु० [सं० शिलासार] लोह।

सिलास्वेद–स्त्री० [सं०] शिलाजीत।

सिलाह–देखो 'सिलह'।

सिळियो–वि० एकलौल, बेटूदा।

सिळियार–पु० [सं० शीलचार] युधिष्ठिर का एक नाम।

सिळी–स्त्री० १ बाण या भाले की नोक। २ शलाका, सलाई। ३ शाण का पत्थर। ४ छोटा तृण, फांस। ५ बंदूक के कान में फेरने की लोहे की कील।

सिळीमुख, सिलीमुख–पु० [सं० शिलीमुख] १ भ्रमर, भौंरा। २ एक प्रकार का तीर।

सिळू–पु० ऊंट के मुंह का एक रोग।

सिलूप–पु० नारियल।

सिलेटिया–स्त्री० रामावत साधुओं की एक शाखा।

सिलेटियो–पु० एक प्रकार का रंग।

सिलेहट–देखो 'सिलहट'।

सिलेहटी–देखो 'सिलहटी'।

सिलैं–देखो 'सिलह'।

सिलोक–१ देखो 'श्लोक'। २ देखो 'सिलोकी'।

सिलोकी–पु० एक प्रकार की पद्य बंध वचनिका।

सिलोच, सिलोचय, सिलोच्चै–पु० [सं० शिलोचयः] पहाड़, पर्वत।

सिलोटो–स्त्री० पथरीली और समचौरस भूमि का मार्ग।

सिळो–वि० (स्त्री० सिळी) शीतल, ठण्डा।

सिलो, सिलो–पु० १ बाजरी की पकी बालें काटने के बाद दुबारा आने वाली बालें। २ गेहूँ, चावल आदि की फसल काटने के बाद बिखरा रह जाने वाला अनाज। ३ फसल को कटाई के बाद दुबारा फूटने वाली फसल।

सिल्प–स्त्री० [सं० शिल्पम्] १ हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने की कला, दस्तकारी, कारीगरी। २ पत्थर आदि पर घड़ाई करने की कला।—कला–स्त्री० हस्तकला, पत्थर पर घड़ाई की कला।—कार–पु० कारीगर, शिल्पी, पत्थर का कारीगर।—कारी–स्त्री० शिल्पकार का कार्य, कारीगरी, पत्थर पर की गई घड़ाई।—गेह, गृह–पु० शिल्पी कार्य करने का स्थान या घर। कारखाना।—लिप, लिपि–पु० पत्थर या धातु पर अक्षर खोदने की विद्या या कला। पत्थर पर खुदी इबारत।—विद्या–स्त्री० हाथ से सुन्दर वस्तुएँ बनाने की विद्या।—साळा–स्त्री० शिल्पियों के काम करने का स्थान, कारखाना।—सास्त्र–पु० शिल्प विद्या संबंधी शास्त्र या ग्रन्थ, वास्तुशास्त्र।

सिल्पप्रजापत (ति. तो)–पु० [सं० शिल्पप्रजापति] विश्वकर्मा का एक नाम।

सिल्पमत–अव्य० कारीगरी से, व्यवस्थित ढंग से।

सिल्पवत–क्रि० वि० [सं० शिल्प-वत्] शिल्प-शास्त्र के अनुसार।

सिल्पी–पु० [सं० शिल्पिन्] शिल्पकार, कारीगर।

सिल्लगणो (बो)–देखो 'सिलगणो' (बो)।

सिल्लह–देखो 'सिलह'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिल्लाम–देखो 'सलाम'।
सिल्लावटो–१ देखो 'सिलावटो'। २ देखो 'सिलावट'।
सिल्लो–स्त्री० शस्त्र, चाकू आदि को धार तेज करने का पत्थर, साण का पत्थर।
सिल्हाड़–देखो 'सिलाड़'।
सिल्है–देखो 'सिल्ह'।
सिल्हैखांनो–देखो 'सिलहखांनो'।
सिल्हैबंध–देखो 'सिलहबंध'।
सिव–पु० [सं० शिवः] १ सनातन धर्म के मुख्य तीन देवों में से अन्तिम देव, महेश, शिव। २ सत्य, सांच। ३ वेद। ४ वसु, देव। ५ मोक्ष। ६ सियार, गीदड़। ७ खूंटा। ८ परमेश्वर, ब्रह्म। ९ पारा। १० लोहा। ११ समुद्री नमक। १२ लिंग, जननेन्द्रिय। १३ जल, पानी। १४ कुशल, मंगल। १५ विष्कंभादि सत्ताईस योगों में से बीसवां योग। १६ आर्या-गीति या खंधाण का भेद विशेष। १७ टगण के प्रथम भेद का नाम ऽऽऽ। १८ शुद्ध सुहागा। १९ गले में भौंरी वाला एक घोड़ा विशेष (अश्व)। २० एक छंद विशेष।–वि० १ श्वेत, उज्ज्वल*। २ श्वेत पीत*। ३ ग्यारह*। ४ मंगलमय, कल्याणकारी। ५ स्वस्थ, सुखी। ६ भाग्यवान।—कर, कारी–वि० मंगल कारी, आनन्ददायी।—कवच–पु० शिव का एक स्तोत्र विशेष।—कांता–स्त्री० शिव पत्नी उमा, दुर्गा।—कुमार–पु० स्वामि कार्त्तिकेय, गजानन।—गत, गति, गती–स्त्री० मोक्ष, मुक्ति।–वि० समृद्ध, सुखी, खुश।—गिर, गिरि, गिरी–पु० कैलाश पर्वत।—घांण–पु० श्मशान भूमि, कन्दरा, गुफा।—तीरथ–पु० काशी।—बूतिका, बूती–स्त्री० स्कन्द की एक मातृका। दुर्गा। एक योगिनी विशेष।—धाम–पु० कैलाश पर्वत। श्मशान भूमि। सिरोही नगर का एक नाम।—नंद, नंदण (न)–पु० स्कन्द, गजानन।—पद–पु० मोक्ष, मुक्ति।—पुर–पु० स्वर्ग, मुक्ति स्थान। कैलाश। काशी। —पुराण–पु० अठारह पुराणों में से एक —पुरि, पुरी–स्त्री० काशी, स्वर्ग परम पद, मोक्ष। सिरोही का एक नाम। —प्रिय–पु० रुद्राक्ष, धतूरा, स्फटिक, भंग। —प्रिया–स्त्री० भंग, पार्वती, दुर्गा। —भंडारी–पु० कुबेर। —भाळी–पु० चन्द्रमा।—मंदिर–पु० शिवालय, श्मशान घाट, मरघट। —माळ, माळा–स्त्री० शिव के गले की मुंडमाला। —रांणी, रांनी–स्त्री० उमा, पार्वती। —रात, रातरी, रात्रि, रात्री–स्त्री० फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या त्रयोदशी। —लोक–पु० कैलाश, स्वर्ग। —वल्लभा–स्त्री० पार्वती, दुर्गा। –वाहण (न), वसभ–पु० शिव का वाहन नंदी। बैल, वृषभ। –संभव–पु० शिव पुत्र गजानन, स्कन्द।— सखा, सिख–पु० कुबेर। —सुंदरी–स्त्री० दुर्गा। —सुत–पु० गणेश, स्कन्द।—सेखर–पु० चन्द्रमा। धतूरा। शिव का मस्तक।
सिवकर–पु० [सं० शिवकर] अतीतकाल के चोबीस जिनों में से एक। (जैन)
सिवकरणी–स्त्री० [सं० शिवकर्णी] स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।
सिवका–देखो 'सिविका'।
सिवकाई–स्त्री० सेवा का कार्य या भाव, सेवकाई।
सिवकीरतण (न)–पु० [सं० शिवकीर्तन्] भंगी का नाम।
सिवगत (गति, गती)–पु० [सं० शिवगति] भूतकाल के चौदहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)
सिवगांमी–वि० [सं० शिवगामिन्] मोक्ष को प्राप्त होने वाला।
सिवड़–पु० १ श्वेताम्बर जैन। २ देखो 'सेवड़'।
सिवण–स्त्री० १ एक प्रकार का पौष्टिक घास। २ शिव, महादेव।
सिवतिलक–पु० [सं० शिवतिलक] १ स्त्रियों के ललाट का एक स्वर्णाभूषण। २ चन्द्रमा, चांद।
सिवदेवी–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी।
सिवनाथ–पु० शिव, महादेव।
सिवनाभ (नाभि)–पु० [सं० शिवनाभि] एक प्रसिद्ध शिव लिंग।
सिवनारायणी–पु० [सं० शिवनारायणी] एक सम्प्रदाय विशेष।
सिवमडळी–स्त्री० नाथ सम्प्रदाय के संन्यासियों का एक समूह।
सिवरण–देखो 'सुमरण'।
सिवरणी (बी)–देखो 'सुमरणी' (बी)।
सिवलिंगी–स्त्री० वर्षा ऋतु में झाड़ियों के बीच होने वाली एक लता विशेष।
सिवलोकवासी–पु०[सं० शिवलोकवासी]१ कैलाश का निवासी। २ स्वर्गवासी। ३ परम पद मोक्ष को प्राप्त। ४ शिव, महादेव।
सिववाड़ियो–पु० एक प्रकार का ऊंट।
सिवसकरी–स्त्री० [सं०शिवशंकरी] देवी की एक मूर्ति का नाम।
सिवसगिया–स्त्री०घोड़े के गले के दाहिनी ओर होने वाली भौंरी।
सिवांणचो–पु० सिवाना नगर के आसपास का भू-भाग।
सिवा–स्त्री० [सं० शिवा] १ पार्वती, गिरिजा। २ दुर्गा। ३ हरीतकी, हर्रे। ४ मादा सियारी, शृगाली।–अव्य० अतिरिक्त, अलावा।
सिवाई–देखो 'सवाई'।
सिवाणी (बी)–देखो 'सीवाणी' (बी)।
सिवाबळि–पु० [सं० शिवबलि] तन्त्रोक्त देवी का एक नैवेद्य विशेष।
सिवाय–वि० विशेष। अधिक। –अव्य० अलावा।
सिवारांति–पु० [सं० शिवारांति] सियारिन का शत्रु, कुत्ता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिवाळ–देखो 'सिवाळ'।
सिवालय, सिवाळी–पु० [सं० शिवालय] शिव का मन्दिर।
सिवाळी–पु० [सं० शैवाल] कुछ हलके रंग वाला एक प्रकार का मरकत या पन्ना।
सिवि–पु० [सं० शिवि] राजा उशीनर का पुत्र का एक राजा। –वि० [सं० सर्व] सब, समस्त।
सिविका–स्त्री० [सं० शिविका] पालकी, डोली।
सिविता–देखो 'सविता'।
सिविर–पु० [सं० शिविर] १ डेरा, खेमा। २ सेना का पड़ाव, छावनी। ३ किला, कोट।
सिविहि, सिवी–देखो 'सिवि'।
सिसंक–देखो 'ससांक'।
सिस–१ देखो 'ससि'। २ देखो 'सिसु'। ३ देखो 'सस'। ४ देखो 'सीसा'। ५ देखो 'सिस्य'।
सिसकणी (बी)–देखो 'ससकणी' (बी)।
सिसकांनी–स्त्री० एक प्रकार की बन्दूक।
सिसकार–देखो 'सिसकारी'।
सिसकारणी (बी)–क्रि० १ सर्दी या पीड़ा के कारण मुंह से सी-सी शब्द करना, सीत्कार करना। २ रतिक्रिया में नायिका का सीत्कार करना। ३ मुंह से निश्वास छोड़ना। ४ ताड़ना या संकेत देने के लिये सी-सी करना।
सिसकारी, सिसकारो–स्त्री० १ रतिक्रिया के समय, नायिका का सीत्कार। २ सर्दी, पीड़ा आदि के कारण मुंह से निकलने वाला 'सी-सी' शब्द। ३ निश्वास, सीत्कार। ४ ताड़ना या बुलावे आदि का एक संकेत।
सिसकी–स्त्री० १ रुक-रुक कर रोने की क्रिया या भाव। २ रोने से बंधने वाली हिचकी। ३ सिसकारी।
सिसट–१ देखो 'सृष्टि'। २ देखो 'सिस्ट'।
सिसटाचार–देखो 'सिस्टाचार'।
सिसटी–देखो 'सृष्टि'।
सिसदा–पु० पक्षी विशेष।
सिसधर पु० [सं० शशधरः] १ चन्द्रमा। २ कर्पूर।
सिसपत (पति, पती)–पु० [सं० शशिपति] शिव, महादेव।
सिसपाळ–देखो 'सिसुपाळ'।
सिसप्रिया–देखो 'ससिप्रिया'।
सिसबीज–पु० शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा।
सिसमत्थ (मथ, माथ)–देखो 'ससिमाथ'।
सिसमाद, सिसमादचक्क, सिसमाध, सिसमाधचक्क–देखो 'सिसुमारचक्र'।
सिसमार–पु० [सं० शिशुमार] १ सुस नामक एक जल जन्तु। २ श्रीकृष्ण। ३ शिशुमारचक्र।
सिसमारचक्क–पु० [सं० शिशुमारचक्र] समस्त ग्रह, नक्षत्र, तारा मण्डल सहित, सौर जगत।
सिसवदनी–देखो 'ससिवदनी'।
सिसर–१ देखो 'सुसिर'। २ देखो 'सिसिर'।
सिसलो–पु० खरगोश।
सिसहर (हरि, हरी)–१ देखो 'ससधर'। २ देखो 'सिसिर'।
सिसहुर–पु० शंख, कबु।
सिसि–देखो 'ससि'।
सिसिगोत (गोति, गोती)–देखो 'ससिगोती'।
सिसियो–देखो 'सस'।
सिसिर–स्त्री० [सं० शिशिर] १ माघ व फाल्गुन मास की ऋतु; षड्ऋतुओं में से एक। २ शीतकाल, जाड़ा।
सिसिवदनी–देखो 'ससिवदनी'।
सिसिवो–वि० १ धनाढ्य, पैसे वाला, अमीर, सम्पन्न। २ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा।
सिसिसहोवर, सिसिसहोवर–पु० [सं० शशि-सहोदर] शंख।
सिसिहर–देखो 'ससधर'।
सिसी–देखो 'ससि'।
सिसोहर–१ देखो 'ससधर'। २ देखो 'सिसिर'।
सिसु–पु० [सं० शिशु] छोटा बच्चा।
सिसुचांद्रायण–पु० [सं० शिशुचांद्रायण] एक प्रकार का व्रत।
सिसुता, सिसुताई–स्त्री० बचपन।
सिसुनांसो–पु० ऊंट।
सिसुनाग–पु० एक राक्षस का नाम।
सिसुपाल–पु० [सं० शिशुपाल] चेदि का एक राजा, जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया।
सिसुमार–पु० १ जल मानस। २ मकर की आकृति वाला नक्षत्र समूह।
सिसुमारचक्र–पु० सौर जगत। सब ग्रहों सहित सूर्य।
सिसुमारमुखी–स्त्री० [सं० शिशुमारमुखी] स्वामि कार्तिकेय की एक मातृका।
सिसू–पु० १ पौत्र। २ देखो 'सिसु'।
सिस्ट–वि० [सं० शिष्ट] १ वह जो सभ्यता पूर्ण रहता हो या व्यवहार करता हो, सभ्य, सज्जन। २ शिक्षित, बुद्धिमान। ३ देखो 'सृष्टि'।
सिस्टसभा–स्त्री० [सं० शिष्ट-सभा] राजसभा, शिष्ट सभा।
सिस्टा–पु० [सं० सृष्टा] ब्रह्मा।
सिस्टाचार–पु० [सं० शिष्टाचार] १ सभ्य या शिष्ट पुरुषों का आचरण, व्यवहार। २ सभ्यता, सज्जनता। ३ नम्रता ४ आदर, सम्मान।
सिस्टी–देखो 'सृष्टि'।
सिस्त, सिस्ति–स्त्री० [फा० शिस्त] लक्ष्य, निशाना। —बाज–पु० निशानेबाज, लक्ष्य साधने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिस्न, सिस्नु–पु० [सं० शिश्न] पुरुष का लिंग, जननेंद्रिय ।
सिस्य–पु० [सं० शिष्य] १ शिष्य, शागिर्द, चेला । २ विद्यार्थी ३ क्रोध, रोष ।
सिस्समन्थ (मथ, मथ्य)–देखो 'ससिमाथ' ।
सिस्सिहर–१ देखो 'ससधर' । २ देखो 'ससिधर' ।
सिहंड–पु० [सं० शिखंड] मोर, मयूर ।
सिहड–पु० मल्हार नामक एक राग ।
सिहण–स्त्री० १ मादा शेर, शेरनी, सिहनी । —पु० २ स्तन, कुच ।
सिहर–पु० [सं० शिर] १ शिर, मस्तक । [सं० शिखर] २ हाथी, गज । ३ पर्वत, पहाड़ । ४ पर्वत चोटी, शृंग । ५ बादल, मेघ । ६ श्रेष्ठ वीर । ७ देखो 'सहर' ।
सिहरसिलाय–स्त्री० बिजली की चमक ।
सिहसान–पु० [सं० सिंहासन] एक सूर्यवंशी राजा ।
सिहाई–देखो 'सहाय' ।
सिहाखरो–पु० मस्तक, शिर ।
सिहाय–देखो 'सहाय' ।
सिहायक–देखो 'सहायक' ।
सिहायता–देखो 'सहायता' ।
सिहारो–देखो 'सहारो' ।
सिहि–वि० सब, समस्त ।
सिहिकार–स्त्री० [सं० सहकार] आय, आमदनी ।
सिहीर–१ देखो 'सिखर' । २ देखो 'सिहर' ।
सींक–देखो 'सीक' ।
सींकळी, सींखळी–पु० दही मथने की मथानी के साथ लगने वाला एक उपकरण ।
सींग, सींगड़ी, सींगड़ो, सींगटो–पु० [सं० शृंग] १ खुर वाले पशुओं के शिर पर होने वाले लकड़ीनुमा, नोकदार अवयव, पशु शृंग । २ फूंक से बजाने का एक वाद्य विशेष । ३ सींग से बनी एक नली । ४ बन्दूक का बारूद रखने का उपकरण विशेष ।
सींगण (णि, णी)–पु० [सं० शृंग] १ सींग का बना हुआ धनुष विशेष । २ धनुष । ३ अशुभ लक्षणों वाला घोड़ा ।
सींगलदीप–देखो 'सिंहलदीप' ।
सींगळी–देखो 'सिंघली' ।
सींगसाज–पु० सींग का बना, बारूद रखने का पात्र ।
सींगाड़ो, सींगाड़ो–देखो 'सिंगोटो' ।
सींगायस–वि० अपारा ।
सींगाळ, सींगाळो–वि० [सं० शृंगी] (स्त्री० सींगाळी) १ जिसके सींग हो, सींग वाला । २ वीर, बहादुर । –पु० १ सींगवाला पशु । २ बैल वृषभ ।
सींगी–१ देखो 'सिंगी' । २ देखो 'सिंगण' ।
सींगीबंध (बध)–वि० चूने-पत्थर की पक्की चुनाई से बांधा हुआ ।
सींगीमुहरी–देखो 'सिंगीमुहरी' ।
सींगीरिख, सींगीरिखी (रिखो)–देखो 'स्रंगीरिखी' ।
सींगी–पु० सींग के आकार की तीखी लकड़ी जो "जई" या "चौसंगी" के आगे जुड़ी रहती है ।
सींघण (णि, णी)–पु० १ घोड़े के शिर पर होने वाला एक टोका जिसमें भौंरियां होती हैं । २ देखो 'सींगण' ।
सींघल–१ देखो 'सिंहल' । २ देखो 'सिंगल' ।
सींघळी–देखो 'सिंघळी' ।
सींघसट (सठ, सत, सथ)–देखो 'सिंगसठ' ।
सींघाळी–१ देखो 'सिंघाळी' । २ देखो 'सींगाळी' ।
सींघोडो–देखो 'सिंघोड़ो' ।
सींचणियो–पु० १ कूए से पानी निकालने के पात्र से बांधा जाने वाला रस्सा । २ कूए से पानी निकालने का पात्र । ३ पानी निकालने वाला व्यक्ति ।
सींचणो (णो)–क्रि० [सं० सिचन्] १ पेड़-पौधों या फसल में पानी देना, सिचाई करना । २ पानी छिड़कना, नमी देना । ३ उड़ेलना, डालना । ४ यज्ञ में घी की आहुति देना । ५ कूए से पानी निकालना । ६ चींटियों आदि के लिए खाद्य पदार्थ डालना, बिखेरना, छितराना ।
सींचांण, सींचांणउ–देखो 'सिचांण' ।
सींचांणी–स्त्री० [सं० शची] इन्द्राणी, शची ।
सींचांणु, सींचांणो–देखो 'सिचांण' ।
सींचाणो (णो)–क्रि० १ कूए से पानी निकलवाकर फसल अथवा पेड़ पौधों को पिलवाना, सिचाई कराना । २ पानी छिड़कवाना, तरी दिलाना । ३ डलवाना, उंडेलवाना । ४ कूए से पानी निकलवाना । ५ कोई पदार्थ छिड़कवाना ।
सींचारो–पु० १ कूए से पानी निकालने या कूए के पानी से सिचाई करने वाला व्यक्ति । २ सिचाई का कार्य करने वाला व्यक्ति ।
सींचो, सींचो–पु० १ शौच निवृत्ति के बाद मलद्वार स्वच्छ करने की क्रिया या भाव, आबदस्त । २ जल का छींटा लगाकर शुद्धिकरण की क्रिया या भाव ।
सींठ, सींठ–पु० १ गुप्तेन्द्रिय के बाल, उपस्थ के बाल । २ गुप्तेन्द्रिय, जननेंद्रिय ।
सींठाणो (णो)–क्रि० बहकाना, फुसलाना ।
सींणगार–देखो 'स्रंगार' ।
सींणियो, सींणी–वि० हल्का कालापन लिए सफेद ।
सींतरो, सींतरो–स्त्री० एक प्रकार का घास विशेष ।
सींथाल–पु० जलाशय के किनारे रखा नहाने-धोने का बड़ा पत्थर ।
सींवड़ी, सींवरी–स्त्री० १ ससुराल जाते समय कन्या के सामान के साथ दी जाने वाली तेल, इत्र की शीशी । २ कूए से पानी निकालते की रस्सी । ३ पतली रस्सी का टुकड़ा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सींदवी–देखो 'सींधवी'।
सींधुर–देखो 'सिंधुर'।
सींदूर–देखो 'सिंदूर'।
सींदूरियो–पु० १ उषाकाल। २ देखो 'सिंदुरियो'।
सींधवी–पु० १ ऊंट के चमड़े का बना तेल या घी रखने का पात्र। २ ऊंट।
सींधळावटी–देखो 'सिंधलावटी'।
सींधवी, सींधवीनाद, सींधवो, सींधवीराग–देखो 'सिंधुराग'।
सींधूर–देखो 'सिंधुर'।
सींधू–१ देखो 'सिंधुराग'। २ देखो 'सिंधु'।
सींधूराग–देखो 'सिंधुराग'।
सींप–देखो 'सीप'।
सींव–१ देखो 'सीमा'। २ देखो 'सीम'।
सींवण, सींवणी–स्त्री० [सं० सीवनी] १ खण्डकोश के मध्य की रेखा जो सिली हुई लगती है। २ सिलाई की क्रिया या भाव। ३ सुई।
सींवणो–पु० [सं० सीवनम्] १ सिलाई करने की क्रिया या भाव। २ सिलाई का व्यवसाय या कार्य। ३ सिलाई के वस्त्र।
सींवणो (वो)–क्रि० [सं० सीवनम्] सिलाई करना, कपड़े सीना।
सींवाणो (वो)–क्रि० सिलाई कराना या सिलाई के लिये प्रवृत्त करना।
सींवाळ–देखो 'सिवाल'।
सींह–१ देखो 'सिंह'। २ देखो 'सिंघ'।
सी–पु० [सं० शीत] १ सर्दी, ठंड, शीत। २ सिंह, शेर। ३ डर, भय। ४ जल, पानी। ५ शंका। ६ सीत्कार। ७ शोभा। ८ समता सूचक प्रत्यय। –वि० समान, तुल्य। –सर्व० क्या, कैसी। –क्रि०वि० १ करीब, लगभग। २ को, समय में। ३ देखो 'सीता'। ४ देखो 'स्त्री'। ५ देखो 'हो'।
सीआल, सीआलक–देखो 'स्याल, स्यालक'।
सीए–पु० ठंड, सर्दी।
सीओदग–पु० [सं० शीतोदक] कच्चा पानी। (जैन)
सीओ, सीओताव–पु० [सं० शीत-ताप] शीत लगकर आने वाला विषमज्वर, मलेरिया।
सीकंठ–पु० [सं० शितिकंठ] शिव, महादेव।
सीकंत–देखो 'स्त्रीकंत'।
सीकंपी, सीकंपो–स्त्री० सर्दी के कारण होने वाली कपकंपी, कंपन।
सीक–स्त्री० [सं० इषीका] १ द्रव पदार्थ को पतली व तीक्ष्ण धार। २ लोहे की सलाई पर लपेट कर पकाया जाने वाला मांस। ३ पतली सलाई, तूलिका। ४ जलकण, बूंद। ५ इत्र लगाने के लिये तिनके या सलाई पर लपेटी जाने वाली रूई। –क्रि०वि० तक, पर्यन्त। देखो 'सी'।
सीकर–पु० [सं० शीकर] १ जलकण, पानी की बूंद। २ वायु द्वारा उत्क्षिप्त जल बिन्दु, वर्षा की फुहार। ३ पसीना, स्वेद।
सीकरड़–वि० जबरदस्त, शक्तिशाली, महान्।
सीकल–पु० [अ० संकल] १ हथियार पर लगे जंग को छुड़ाने की क्रिया। २ देखो 'सक्कल'।
सीकाळ–पु० शीतकाल।
सीकिरि–पु० एक विशेष प्रकार का छाता।
सीकिसण (न)–देखो 'स्त्रीकिसन'।
सीकोट–पु० १ शीत ऋतु में पश्चिमी क्षितिज पर कभी-कभी, नगर, भवन, आदि का होने वाला मिथ्या आभास, गंधर्व नगर। २ वायु के कारण वाष्प, मिट्टी या धूंए का उठने वाला समूह। ३ तेज गति से उत्पन्न ध्वनि।
सीकोतर, सीकोतरि, सीकोतरी–स्त्री० १ दुर्गा का एक नाम। २ युद्ध प्रिय एक देवी, रणचंडी। ३ प्रेतिनी। ४ कलह प्रिय स्त्री। ५ पिशाचिनी।
सीखड–देखो 'स्त्रीखंड'।
सीख, सीखड़ली–पु० १ शिक्षा, उपदेश। २ युक्ति, उपाय। ३ परामर्श, सलाह, राय। ४ कार्य विशेष पर नियुक्त व्यक्ति को, कार्य पूरा होने पर, विदाई के समय, दिया जाने वाला पुरस्कार, इनाम। ५ याचकों को दिया जाने वाला द्रव्य। ६ एक लोक गीत विशेष। ७ रिश्तेदार या प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भेंट-स्वरूप दी जाने वाली वस्तु। ८ बहन-बेटी या दामाद को विदाई के समय दिया जाने वाला द्रव्यादि। ९ अनुमति, इजाजत, आज्ञा। १० प्रस्थान, रवानगी। ११ विदाई।
सीखचो–पु० [अ० सीखच] लोहे की सलाखा, विशेष कर मांस भूनने की सलाखा।
सीखणो (वो)–क्रि० [सं० शिक्षणम्] १ किसी से कोई कला, विद्या आदि की शिक्षा लेना, कुछ सीखना। २ शिक्षा, नसीहत आदि लेना। ३ याद करना, कंठस्थ करना। ४ ग्रहण करना, स्वीकार करना। ५ किसी बात पर एक मत होना।
सीखत–स्त्री० १ सिखाने की क्रिया या भाव। २ शिक्षा, नसीहत। ३ सलाह, राय।
सीखा–देखो 'सिखा'।
सीख्या–स्त्री० १ एक वर्ण वृत्त विशेष। २ देखो 'सिक्षा'।
सीगण, सीगणी–देखो 'सींगण'।
सीगी–देखो 'सिंगी'।
सीघाऊ–पु० १ देवी-देवता संबंधी गायन या चरचा विशेष। २ मांगलिक वाद्य ध्वनि। ३ मांगलिक ढोल वाद्य।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीघ्र–वि० [सं० शीघ्र] १ अविलम्ब, तुरन्त, शीघ्र। २ फटाफट, चटपट। –क्रि०वि० तेजी से। –पु० १ पृथ्वी के दो भिन्न-भिन्न स्थानों से ग्रहों को देखने में आने वाला अन्तर। २ एक सूर्यवंशी राजा।

सीघ्रकारी–वि० [सं० शीघ्रकारिन्] १ शीघ्रता करने वाला। २ फुर्तीला। ३ शीघ्र प्रभाव करने वाला।

सीघ्रकोपी–वि० [सं० शीघ्रकोपिन्] १ शीघ्र क्रोधित होने वाला। २ चिड़चिड़े स्वभाव वाला।

सीघ्रता, सीघ्रताई–स्त्री० [सं० शीघ्रता] जल्दबाजी, उतावली, शीघ्रता।

सीघ्रपतन–पु० [स० शीघ्रपतन] शीघ्र स्खलित होने की अवस्था, स्तंभनशक्ति का अभाव।

सीड़–स्त्री० १ बकरी के बालों की बनी पतली डोरी। –पु० २ सांड, बैल।

सीचांण (न)–देखो 'सिचांणो'।

सीचाणो–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा। २ देखो 'सिचांणो'।

सीजणो (णौ), सीझणो (णौ)–क्रि० [सं० सिद्ध] १ आग की आंच पर पकना, परिपक्व होना। २ तपस्या करना, तपना। ३ सिद्ध होना, सफल होना। ४ जलना, भस्म होना। ५ कमजोर होना, बलहीन होना। ६ कष्ट, दुःख आदि सहन किया जाना। ७ झुलसना।

सीझाणो (णौ)–क्रि० १ पकाना, परिपक्व करना, कराना। २ तपस्या करने के लिये प्रेरित करना। ३ सिद्ध करना, सफल करना। ४ जलाना, भस्म करना। ५ कष्ट देना। झुलसाना।

सीझातर–देखो 'सम्यातर'।

सीट–स्त्री० [अ०] १ बैठने का स्थान, जगह। २ आसन, गद्दी।

सीटकी–स्त्री० पतली, टहनी।

सीटी–स्त्री० [सं० शीतृ] १ जीभ को सिकोड़ कर मुंह से हवा फेंकने पर उत्पन्न महीन तेज ध्वनि। २ इसी तरह की आवाज से बजने वाला खिलौना या बाजा। ३ किसी विशिष्ट क्रिया से उत्पन्न होने वाली ऐसी ही ध्वनि। ४ निर्धारित समय पर नियमित रूप से बजने वाला भोंपू। [अ०] ५ नगर, शहर।

सीढ़ी, सीढ़ी–स्त्री० [सं० निश्रेणी] १ जीना, सोपान, निसैनी, पैड़ियां। २ जीने की तरह बना लकड़ी आदि का उपकरण। ३ बांस व खपच्चियों की बनी अर्थी, शवयान। ४ क्रमशः विकास या उन्नति की अवस्थाएँ (लाक्षणिक)।

सीणो–पु० १ सीने का कार्य, सिलाई। २ देखो 'सींणो'। (स्त्री० सीणी)

सीतंसु, सीतंसू–देखो 'सितांसु'।

सीत, सीत–पु० १ पागलपन, सनक। २ सन्निपात रोग। ३ सर्दी, शीत। ४ शरद ऋतु। ५ लताओं का कुंज। –वि० १ ठंडा, शीतल। २ मुफ्त, निःशुल्क। ३ देखो 'सीता'। ४ देखो 'सीतजुर'।

सीतअंसु–देखो 'सीतांसु'।

सीतकटिबंध–पु० [सं० शीतकटिबंध] पृथ्वी के उत्तर व दक्षिण के भूखण्ड विशेष (भूगोल)।

सीतकर–पु० [सं० शीतकर] शीतल किरणों वाला, चन्द्रमा। –वि० १ ठंडा करने वाला। २ ठंडदायक, शीतल।

सीतकाळ–पु० [सं० शीतकाल] शीतकाल, हेमंत ऋतु।

सीतजुर (जुवर, ज्वर)–पु० [सं० शीतज्वर] जूड़ी लगकर आने वाला बुखार, ठंडा ज्वर, मलेरिया।

सीतता–स्त्री० शीतलता, ठंडक।

सीतनाथ–देखो 'सीतानाथ'।

सीतपत (पति, पती)–१ देखो 'सीतापति'। २ देखो 'सीतपित्त'।

सीतपित, सीतपित्त–पु० [सं० शीतपित्त] एक प्रकार का भयंकर रोग।

सीतप्रसाद–पु० किसी साधु आदि के भोजन का उच्छिष्ट भाग।

सीतभांण (भांन, भानु)–पु० [सं० शीतभानु] चन्द्रमा का एक नाम।

सीतरित, सीतरितु–स्त्री० [सं० शीतऋतु] हेमन्त ऋतु।

सीतरूंख, सीतरूख–पु० चन्दन।

सीतळ, सीतल–पु० [सं० शीतल] १ चन्दन। २ मोती। ३ चन्द्रमा। ४ कर्पूर। ५ पद्माकाष्ठ। ६ बर्फ। ७ पीत चंदन। ८ एक प्रकार का व्रत। –वि० १ ठंडा, शीतल। २ जिसमें जोश का अभाव हो। ३ प्रसन्न, खुश। ४ संतुष्ट। ५ देखो 'सीतलनाथ'।

सीतळचीणी–स्त्री० कबाब चीनी।

सीतळता, सीतळताई–स्त्री० [सं० शीतलता] १ ठंडक, तरी, नमी। २ शांति, संतोष। ३ जड़ता।

सीतळनाथ–पु० [सं० शीतलनाथ] जैनियों के वर्तमानकालीन दशवें तीर्थंकर।

सीतळपुहण–पु० [सं० शीतला-प्रवहण] रासभ, गधा।

सीतळप्रसाद–देखो 'सीतप्रसाद'।

सीतळप्रहण–देखो 'सीतळपुहण'।

सीतळरूंख–पु० चंदन वृक्ष।

सीतळा–स्त्री० [सं० शीतला] १ विस्फोटक रोग विशेष, चेचक। २ उक्त रोग की अधिष्ठात्री देवी। ३ नीली दूब।

सीतळावाह, सीतळावाहण–पु० [स० शीतला-वाहन] शीतला देवी का वाहन, गधा।

सीतलाष्टमी–स्त्री० [सं० शीतलाष्टमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि जिस दिन शीतला देवी की पूजा की जाती है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीतवीरज–पु० [सं० शीतवीर्य] १ पाषाण भेद। २ पित्त-पापड़ा। ३ मीठी दूब। ४ वह पदार्थ जो खाने में ठण्डा हो।

सीतसिव–पु० [सं० शीतशिव] सेंधा नमक।

सीतहर–पु० [सं० शीतधर] १ चन्द्रमा, चांद। [सं० शीतहर] २ सूर्य, सूरज। [सं० सीताहरण] ३ रावण।

सीतहरण–पु० गरुड़।

सीतांसु–देखो 'सितांसु'।

सीता–स्त्री० [सं०] १ विदेहराज जनक की पुत्री तथा श्रीराम दाशरथी की धर्मपत्नी। २ खेत या जमीन में हल से बनने वाली रेखा। ३ जोती हुई जमीन। ४ एक देवी विशेष। ५ लक्ष्मी का एक नामान्तर। ६ उमा का एक नाम। ७ आकाश गंगा की चार धाराओं में से एक। ८ मदिरा, शराब। —नम, नमी–स्त्री० वैशाख शुक्ला नवमी तिथि। —नाथ, पत, पति, पती, वर, रमण, वर–पु० श्रीराम-चन्द्र, श्रीविष्णु। —सुत–पु० लव व कुश। —स्वामी–पु० श्रीरामचन्द्र।

सीताफळ–पु० [सं० सीताफल] १ कुम्हड़े का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष का फल। ३ सुरवृक्ष।

सीतारांम–पु० सीता व राम की युग्म छवि।

सीतारांमी–पु० स्त्रियों के कंठ का एक स्वर्णाभूषण, हार।

सीताघट–पु० चित्रकूट और प्रयाग के बीच का एक स्थान जहां वनवास काल में श्रीराम ने सीता के साथ निवास किया था।

सीतासित–देखो 'सितासित'।

सीताहरण–पु० [सं०] रावण।

सीतोदक–पु० [सं० शीतोदक] १ एक नरक का नाम। २ ठंडा जल।

सीदणो (बो)–क्रि० विरह में झुरना, रोना।

सीधवत–वि० सिद्धियुक्त।

सीधी–पु० [अ० शीदी] हबश देश की हब्शी जाति या इस जाति का व्यक्ति।

सीधी–१ देखो 'सीधो'। २ देखो 'सिद्धी'।

सीध–स्त्री० १ किसी निश्चित लक्ष्य की दिशा। २ ठीक सामने की दिशा, जिसमें कोई घुमाव-फिराव न हो। ३ समानान्तर दिशा या स्थान। ४ पंक्तिबद्ध, शृंखलाबद्ध। ५ प्रस्थान रवानगी। ६ देखो 'सिद्ध'।

सीधाई–स्त्री० १ सीधा, सरल या सहज होने की अवस्था या भाव। २ समानान्तर या सपाट होने की दशा।

सीधापण (णो)–पु० १ सीधा होने का भाव, सरलता। २ भोलापन। ३ सादगी। ४ छल, कपट से रहित।

सीधी–स्त्री० ऊंट की एक चाल विशेष। –वि० सीधी-सादी, सरल।

सीधु, सीधू–पु० [सं० शीधु] गुड़ या ईख के रस से बनी मदिरा। शराब।

सीधोड़ी सीधोरी–पु० श्रीमाली ब्राह्मणों में विवाह से संबंधित एक रस्म।

सीधो–पु० १ साधु-ब्राह्मणों को भोजन के लिये दी जाने वाली, आटा-दाल आदि सामग्री। २ भोजन सामग्री, खाद्य पदार्थ। ३ देवताओं का नैवेद्य। ४ रसोई, भोजन आदि का कार्य। –वि० (स्त्री० सीधी) १ जिसमें वक्रता या घुमाव न हो, समानान्तर, समतल। २ जो किसी की ओर ठीक प्रवृत्त हो, लक्ष्य के अनुसार ठीक। ३ जो कपटी या कुटिल न हो, सरल, सहज। ४ शांत, सुशील, शिष्ट। ५ सामान्य, सुगम। ६ अनुकूल। ७ बनावट में सादगी वाला। ८ ऊपर मुंह किये, चित्त। ९ सुबोधगम्य। १० स्पष्ट, सही, सत्य। ११ चुप, शान्त। १२ उचित, ठीक। –क्रि०वि० १३ बिना रुके या इधर-उधर मुड़े। १४ बेरोक-टोक, बेहिचक। १५ शांति से, सभ्यता से। १६ प्रत्यक्ष में। १७ देखो 'सेंधी'। १८ देखो 'सिद्ध'। १९ देखो 'सिद्धी'। २० देखो 'सूधो'।

सीनांन–देखो 'स्नांन'।

सीनाजोरी–स्त्री० [फा० सीन: जोरी] १ उद्दण्डता, जबरदस्ती। २ चोरी या कसूर करके ऊपर से की जाने वाली बहस।

सीनाबंद–पु० १ अगले पैर से लंगड़ाने वाला घोड़ा। २ घोड़े का एक रोग। ३ अंगिया, चोली।

सीनाघड़ी–स्त्री० जमीन पर छितरने वाला एक पौधा।

सीनी–पु० [फा० सीन:] १ छाती, वक्षस्थल। २ कुच, स्तन।

सीप, सीपड़ी–स्त्री० [सं० शुक्ति] १ कठोर आवरण वाला एक छोटा जल जन्तु। मुक्तागृह। २ इसका आवरण। ३ हाथ की अंगुलियों पर होने वाला सामुद्रिक चिह्न। ४ तर्पण आदि का जल रखने का पात्र विशेष। –वि० श्वेत, सफेद।

सीपज–पु० [सं० शुक्ति-ज] मुक्ता, मोती।

सीपत, सीपति, सीपती–देखो 'स्त्रीपति'।

सीपनी–स्त्री० [सं० शिप्र] १ दरियाई नारीयल का संपुटनुमा भिक्षा पात्र। २ सीप का, चम्मचनुमा संपुट।

सीपर–देखो 'सिपर'।

सीपसुत, सीपसुतण (न)–पु० [स० शुक्ति-सुतन] मुक्ता, मोती।

सीपारी–पु० [फा० सिपार] कुरान का एक अध्याय।

सीप्रा–देखो 'सिप्रा'।

सीबध, सीबंधव, सीबंधु–देखो 'स्त्रीबंधु'।

सीबो–देखो 'सबो'।

सीभक्ष, सीभक्ष, सीभख–देखो 'स्त्रीभक्ष'।

सीमंग–पु० चन्द्रमा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीमत–पु० [सं०] १ शिर के बालों की माँग। २ सीमा रेखा या चिह्न। ३ देखो 'सीमन्तोन्नयन'।

सीमंतक–पु० [सं०] १ स्त्रियों के शिर में माँग निकालने की क्रिया। २ माँग में भरने का सिन्दूर। ३ एक नरक का नाम। ४ जैनियों के सात नरकों में से एक नरक का अधिपति। ५ नरक विशेष का रहने वाला।

सीमंतनी–स्त्री० [सं० सीमंतिनी] महिला, स्त्री, नारी।

सीमंतोन्नयन–पु० [सं०] हिन्दुओं के दश संस्कारों में से तृतीय संस्कार जो गर्भाधान के चौथे, छठे, आठवें मास में होता है।

सीमंधर–पु० प्रथम विहरमान जिनेश्वर का नाम। (जैन)

सीम–स्त्री० [सं०] १ जंगल, वन। २ समय, वेला। ३ देखो 'सीमा'। –क्रि० वि० तक, पर्यन्त।

सीमण–स्त्री० एक प्रकार की घास।

सीमंत, सीमंती–देखो 'सीमंति'।

सीमांत–पु० जहाँ सीमा का अन्त होता हो, सरहद।

सीमा–स्त्री० [सं०] १ किसी प्रदेश या स्थान के विस्तार का अन्तिम छोर, किनारा। २ सरहद का पत्थर, सीमा चिह्न। ३ मर्यादा। ४ तट, किनारा। ५ जोड़। ६ अन्तरिक्ष। ७ खेत, क्षेत्र। ८ गर्दन का पिछला भाग। ९ विभाजक रेखा। १० अण्डकोश।

सीमाड़–पु० सीमावर्ती राज्य, पड़ोसी राज्य। –क्रि० वि० १ सीमा पर। २ देखो 'सीमा'।

सीमाड़ी–वि० सीमा का, सीमा सम्बन्धी।

सीमाड़ों–देखो 'सीमा'।

सीमाउ (ऊ)–वि० सीमा पर या पड़ोस में रहने वाला।

सीमाणी (णी)–देखो 'सींवाणी (णी)'।

सीमार–पु० बढ़ई का एक औजार।

सीमावरोध–पु० १ सीमा निरधारण, हदबंदी। २ सीमा पर होने वाला अवरोध।

सीमिका–स्त्री० चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

सीमीतमुख–पु० [सं० सीमितमुख] नासमझ, मूर्ख।

सीमेण–स्त्री० १ सीमा, सरहद। २ मर्यादा। ३ वन, जंगल।

सीय–पु० [सं० शीत] १ शीत, सर्दी, जाड़ा। २ देखो 'सीता'।

सीयउ–देखो 'सीयो'।

सीयमाळ–पु० शृगाल, स्याल।

सीयल–पु० १ शीतलनाथ स्वामी का एक नाम। २ देखो 'सील' ३ देखो 'सीतल'। ४ देखो 'सीतला'।

सीयलो–वि० (स्त्री० सीयली) १ शीतल, ठंडा। २ देखो 'सीयालो'।

सीया–देखो 'सीता'।

सीयाक–देखो 'सहायक'।

सीयार–देखो 'सियार, सगाळ, सार'।

सीयाळ (ल)–देखो 'सगाळ'।

सीयाळइ, सीयालवी–क्रि० वि० शीतकाल में, सर्दी में। –वि० शीतल, ठंडी।

सीयाल, सीयालक–देखो 'स्यालक'।

सीयाळु, सीयाळू–पु० १ खरीफ की फसल। २ शीतकाल में उत्तर की ओर से चलने वाली ठंडी हवा। –वि० १ शीतकाल सम्बन्धी। हेमंत ऋतु का। २ शीतकाल में पकने वाली।

सीयालो–पु० [सं० शीतकाल] १ शीतकाल, शरदऋतु। २ ठंडक। ३ अत्यन्त ठंडा मौसम।

सीयो–देखो 'सीयो'।

सीयोवाउ–पु० पहले जाड़ा लगकर बाद में उष्णता देने वाला ज्वर।

सीर–पु० १ साझा, हिस्सा, भागीदारी। २ भाग, हिस्सा। ३ लाभ। ४ स्रोत, धारा, प्रवाह। ५ हल, लांगुल। ६ फव्वार, धारा। ७ नख, शिरा। ८ साथ, संग। ९ सगत, सोहबत। १० संबंध, मेल-मिलाप। ११ समागम, संगम। १२ स्तनों में दूध वाली नसें।

सीरख (ष्ख, ष्यो)–पु० [सं० शीत-रक्षक] १ सूर्य, रवि। [सं० शीर्ष] २ शिर, मस्तक। ३ देखो 'सिरक'।

सीरखो–देखो 'सारीखो'।

सीरण–वि० [सं० शीर्ण] १ फटा-पुराना, जीर्ण। २ मुरझाया हुआ। ३ देखो 'सीरी'।

सीरणकम, सीरणक्कम–पु० [सं० शीर्णकर्म] यमराज।

सीरणी–स्त्री० १ किसी को गुरु या इष्ट मानकर चढ़ाया जाने वाला प्रसाद, नैवेद्य। [सं० शीतलिनी] २ मिठाई। ३ मनौती, संकल्प। ४ नजराना।

सीरदार–वि० १ साझेदार, हिस्सेदार। २ देखो 'सरदार'।

सीरधर–पु० [सं०] हल धारण करने वाले बलराम।

सीरध्वज–पु० [सं०] १ बलराम का एक नाम। २ सीता के पिता जनक का नाम।

सीरपो, सीरपो–पु० १ भागीदारी, हिस्सेदारी। २ लाभ। ३ भाग्य का लेख।

सीरबधी (धी)–स्त्री० हिस्सादारी, साझेदारी।

सीरमा–स्त्री० वर्षा के पानी से ही रबी की फसल देने वाली कृषि भूमि।

सीरवाळ, सीरवाळी–पु० (स्त्री० सीरवाळण, सीरवाळणी) हिस्सादार, भागीदार।

सीरवीरंज–स्त्री० [सं० शीविरञ्ज] एक प्रकार की खीर।

सीरवी–पु० १ एक कृषक जाति विशेष। २ देखो 'सीरी'।

सीरस पु० [सं० शीर्ष] १ शिर, मस्तक। २ एक प्रकार का वृक्ष। ३ काला अजगर। ४ शिर का रोग।

सीरसक–पु० [सं० शीर्षक] १ किसी लेख या कविता आदि के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊपर लिखा रहने वाला उसका परिचायक नाम, हेडिंग। २ सिरा, चोटी। ३ खोपड़ी। ४ मस्तक, शिर। ५ युद्ध के समय शिर पर रखने का टोप। ६ पगड़ी, साफा। ७ फैसला, परिणाम। ८ राहु।

सीरसोदय–पु० [सं० शीर्षोदय] शिर से उदय होने वाली मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ और मीन राशियों का सामूहिक नाम। (ज्योतिष)

सीरांमण, सीरांमणी, सीरांवण (स्त्री)–देखो 'सिरांमण'।

सीराज–पु० [फा० शीराज:] १ पुस्तक की सिलाई के छोर पर सुन्दरता के लिए लगाया जाने वाला फीता। २ प्रबंध, इन्तजाम। ३ क्रम, सिलसिला। ४ ईरान का एक प्राचीन नगर।

सीराफिणी–स्त्री० शिर का एक आभूषण विशेष।

सीरावणी (बो)–देखो 'सरावणी' (बो)।

सीरावा–स्त्री० कूओं की खुदाई का काम करने वाली एक जाति विशेष।

सीरादाविद्या–स्त्री० भू-गर्भ में पानी का पता लगाने की विद्या, कला।

सीरावी–पु० [सं० शिरोवाह] १ भू-गर्भ से पानी का पता लगाने वाला व खारा-मीठा होने की पूर्व सूचना देने वाला व्यक्ति। २ 'सीरावा' जाति का व्यक्ति।

सीरी–वि० (स्त्री० सीरण, सीरणी) १ हिस्सेदार, साझेदार, भागीदार। २ उत्तराधिकारी ३ साथी, संगाती। ४ हक पाने का अधिकारी। ५ सहायक, मददगार।–पु० १ बलराम। २ देखो 'सिरी'। ३ देखो 'स्त्री'।

सीरखो–देखो 'सारखो'।

सीरोळी–वि० (स्त्री० सोरोळी) १ साझेदारी का, सामूहिक। २ जिसके कई हकदार हों।

सीरोही–देखो 'सिरोही'।

सीरो, सीरी–पु० [फा० शीर] १ मैदे, आटे, बेसन, सूजी, दाल आदि का हलुवा। २ हलवे की तरह बना कोई पदार्थ।

सील, सील–पु [सं० शील] १ सद्‌आचरण, सदाचार। २ नैष्टिक-ब्रह्मचर्य। ३ संयम। ४ पतिव्रत धर्म, पातिव्रत्य। ५ लज्जा, संकोच, शर्म। ६ चरित्र, आचरण, चाल-चलन, नैतिकस्तर। ७ गुण, लक्षण। ८ स्वभाव, आदत, टेव। ९ सम्मान, आदर। १० अनुशासन।–स्त्री० [सं० शीतल] ११ आर्द्रता, नमी। १२ गाय की, ऋतुमति की अवस्था। १३ प्रतिज्ञा, वादा, वचन। १४ देखो 'सीतळा'।–वि० १ प्रवृत्त, तत्पर। २ स्वभावयुक्त। ३ धैर्य। ४ विनम्र, शिष्ट। ५ पवित्र, निर्मल।

सीलआठम–देखो 'सीतळाअष्टमी'।

सीलणो–पु० १ एवज, बदला। २ प्रति-उपकार। ३ प्रतिकार, बदला। ४ क्षतिपूर्ति हरजाना।

सीलणो (बो)–क्रि० [सं० शील, सीलनम्] १ वस्तु के एवज में वस्तु देना, प्रति उपकार करना। २ चुकाना, देना। ३ लेना, वसूल करना। ४ आर्द्र करना, नमी युक्त करना, ठंडा करना। ५ बन्द करना, मुहरबन्द करना।

सीळता–स्त्री० [सं० शीलत्व] शील धारण करने की अवस्था या भाव।

सीळव्रत, सीलव्रत–देखो 'सीळव्रत'।

सीलवंत–देखो 'सीलवांन'।

सीलवंती, सीलवती–वि० [सं० शीलवती] १ पतिव्रता। २ ब्रह्मचारिणी। ३ अच्छे आचरण वाली। ४ शील धारण करने वाली।

सीलवणी–देखो 'सीलणी'।

सीलवणी (बो)–देखो 'सीलणी' (बो)

सीलवांन–वि० (स्त्री० सीलवंती) १ सदाचारी। २ ब्रह्मचारी। ३ अच्छे स्वभाव या आचरण वाला। ४ शील धारण करने वाला।

सीळव्रत, सीलव्रत–पु० [सं० शील-व्रत] १ जैन धर्म के पांच अणुव्रतों में से एक। २ ब्रह्मचर्य व्रत। ३ पतिव्रत धर्म।

सीलसमजया–स्त्री० डिंगल काव्य में गीत रचना का एक नियम।

सीळसातम–स्त्री० [सं० शीतलासप्तमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी, जिस दिन शीतला देवी की पूजा होती है।

सीलांगो–वि० आलसी सुस्त।

सीलांणी, सीलांमणी–देखो 'सीलणी'।

सीलांम–देखो 'सलांम'।

सीला–स्त्री० वालु प्रभा नामक नरक (जैन)।

सीलाणो (बो)–क्रि० १ हरजाना वसूल कराना। २ प्रतिकार करवाना। ३ ठंडा करना।

सीलायु–स्त्री० एक काल्पनिक पाषाण शिला जिस पर सौ लाख देवियां एकत्र होकर नृत्य करती हैं।

सीलावणी (बो)–देखो 'सीलाणी' (बो)

सोळी, सोली–स्त्री० १ लकड़ी, बांस, घास आदि का बारीक तृण, फरांस। २ उस्तरा तेज करने का पत्थर का टुकड़ा। ३ भूमि की नमी, आर्द्रता। ४ विवाह संबंधी एक रस्म।–वि० १ ठंडी, शीतल। २ देखो 'सीलवती'।

सीलैखांनो–देखो 'सिलहखांनो'।

सोलीनो–स्त्री० एक प्रकार की तलवार जिसकी मूठ पर सिंह की आकृति बनी होती है।

सोळी, सोली–वि० (स्त्री० सोळी) १ ठंडा, शीतल। २ कायर, कातर। ३ आर्द्र, नम।

सीलहैखांनो–देखो 'सिलहखांनो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीव–पु० [सं० सीमा]१ ईश्वर । २ परब्रह्म । ३ देखो 'सीमा' । ४ देखो 'सिव' ।

सीवण–१ देखो 'सेंवण' । २ देखो 'सीवण' । ३ देखो 'सीवन' ।

सीवणी–देखो 'सींवणी' ।

सीवणी (बो)–देखो 'सींवणी' (बो) ।

सीवन–स्त्री० १ सिलाई का कार्य, सिलाई । २ सिलाई का जोड़ । ३ सीमा, मर्यादा । ४ देखो 'सीवनी' ।

सीवनी–स्त्री० [सं०] लिंग के नीचे से गुदा द्वार तक बनी रेखा ।

सीवर–देखो 'सीवर' ।

सीवळ–पु० [सं० शीतला] चेचक का रोग, शीतला रोग ।

सीवाड़ी–देखो 'सीमाड़ी' ।

सीविका–देखो 'सिविका' ।

सीवृक्ष, सीवृक्ष, सीवृक्ष–देखो 'स्रोवृक्ष' ।

सीस–पु० [सं० शीर्षम्] १ मस्तक, सिर । २ ललाट, भाल । ३ खोपड़ी, कपाल । [सं०शिष्य] ४ शिष्य, चेला, शागिर्द । –क्रि०वि० पर, ऊपर ।

सीसकणी (बो)–देखो 'सिसकणी' (बो) ।

सीसइली, सीसड़ी–देखो 'सीस' ।

सीसढाळ–स्त्री० एक वाद्य यंत्र विशेष ।

सीसताण–पु० फारस और अफगानिस्तान के बीच का प्रदेश, सीस्तान ।

सीसत्राण–पु० [सं० शीर्षत्राण] १ शिर का कवच, टोप । २ टोपी, पगड़ी, साफा ।

सीसपत्र–पु० [सं०] १ सीसा नामक धातु । २ इस धातु का पत्तर, चद्दर ।

सीसफूल–पु० औरतों के शिर का एक स्वर्णाभूषण ।

सीसम–पु० [फा० शीशम] १ एक प्रकार का वृक्ष । २ इस वृक्ष की लकड़ी जो इमारती सामान में काम आती है ।

सीसमेहल, सीसमें'ल–पु० [फा० शीश-अ० महल] वह कमरा या मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों ।

सीसय–देखो 'सिस्य' ।

सीसवद–पु० सीसोदिया वंश का व्यक्ति ।

सीसवि–पु० [सं० शिंशपा] एक वृक्ष विशेष, सीसम ।

सीसाळी–स्त्री० तीप ।

सीसागर–पु० १ काच की चूड़ियां बनाने वाला कारीगर । २ शीशा बनाने वाला कारीगर ।

सीसागरी–स्त्री० १ मांस खाने के उद्देश्य से मारे गये बकरे के शिर का मांस । २ सीसागर का कार्य या हुनर ।

सीसाड़णो (बो), सीसाणो (बो), सीसावणो (बो)–क्रि० मुंह से सी-सी की ध्वनि करना, सीत्कार करना ।

सीसिक–पु० १ काच, दर्पण । [सं० सीसक] २ रांगा नामक धातु । ३ शिर, मस्तक ।

सीसी, सीसी–स्त्री० [फा० शीशी] तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम आने वाला शीशे का पात्र ।

सीसो–पु० [सं० सीसक] १ नीलापन लिए काले रंग का एक मूल धातु जो तौल में भारी होता है । २ बालू या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनने वाला एक पारदमंक मिश्र धातु । ३ दर्पण, आईना । ४ तेल आदि डालने का संकरे मुंह का लम्बा पात्र, बोतल ।

सीह–१ देखो 'सिंघ' । २ देखो 'सीत' ।

सीहदुआर, सीहदुवार, सीहद्वार–देखो 'सिंहद्वार' ।

सीहरू–पु० शेर, सिंह ।

सीहलोर–पु० डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

सीहलो–पु० १ एक प्रकार का शुभ्र रंग का घोड़ा । २ देखो 'सिंहू' ।

सीहवणो–पु० डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

सीहवाग–पु० एक क्षत्रिय वंश विशेष ।

सीहाणी (बो)–क्रि० प्रशंसा करना, सराहना ।

सीहू, सीहू–देखो 'सिंघ' ।

सीहो–पु० एक रंग विशेष का घोड़ा ।

सुं–सर्व० १ उसका । २ क्या । ३ करण व अपादान का चिह्न । –क्रि०वि० १ से । २ द्वारा, मार्फत । ३ अपेक्षा में । ४ आरंभ से । ५ पर । ६ से, को । ७ के द्वारा । ८ के साथ सहित । ९ क्यों, क्योंकर । –वि० १ पूर्वक, सहित । २ देखो 'सु' ।

सुंआळ–स्त्री० १ चिकना होने की अवस्था, चिकनाहट, स्निग्धता । २ देखो 'सुंवाळी' ।

सुंखड़ी–पु० बादाम, दाख आदि स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ ।

सुंखणी, सुंखनी, सुंखिणी (नी)–देखो 'संखणी' ।

सुंग–पु० [सं० शुंग] १ मगध पर शासन करने वाला एक क्षत्रिय वंश । २ आंवला । ३ वटवृक्ष, बरगद । ४ गेहूं, चावल आदि के पौधे पर आने वाली बाल । ५ पाकड़ वृक्ष ।

सुंगण–१ देखो 'सुगंध' । २ देखो 'सकुन' ।

सुंगवस–पु० [सं० शुंगवश] एक क्षत्रिय वंश ।

सुंघणी (नी)–१ देखो 'सूंघणी' । २ देखो 'सांगणी' ।

सुंघाणी (बो)–क्रि० सूंघने के लिये प्रेरित करना, सुंघाना ।

सुंज–स्त्री० तैयारी ।

सुंठ, सुंठि, सुंठी–देखो 'सूंठ' ।

सुंड–पु० [सं० शुण्ड] १ हाथी की कनपटी से बहने वाला मद । २ देखो 'सूंड' ।

सुंडदंड, सुंडदंड–देखो 'सूंडादंड' ।

सुंडभुसंड (भुसंडि, भुसंडी, भुसुंड, डि, डी)–पु० [सं० शुंड भुशंडि] हाथी, गज । –वि० मस्त, उन्मत्त ।

सुंडा–स्त्री० [सं० शुण्डा] १ हाथी की सूंड । २ वेश्या, रण्डी । ३ मदिरा, शराब । ४ कुटनी स्त्री ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुंडादंड (डु, डू)–देखो 'सूंडादंड'।
सुंडाडंबर–पु० १ हाथी, गज। २ गणेश, गजानन।
सुंडादंड–देखो 'सूंडादंड'।
सुंडार–पु० [सं० शुण्डार] १ हाथी की सूंड। २ साठ वर्ष की आयु का हाथी। ३ देखो 'सूंडाळ'।
सुंडाळ, सुंडाळको, सुंडाळो (लो), सुंडाहळ (ळो)–देखो 'सूंडाळ'।
सुंडि, सुंडी–स्त्री० [सं० शौण्डिन्] १ पिप्पली नामक लता या उसका फल। २ देखो 'सूंडी'।
सुंणणो (बो)–देखो 'सूणणो' (बो)।
सुंदर–वि० [सं०] १ जो दिखने में अच्छा लगता हो, मनमोहक, चित्ताकर्षक। २ खूबसूरत, स्वरूपवान। ३ अच्छा, भला, बढ़िया। ४ ठीक, सही। ५ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम। ६ सुघट, सुघड़ित। ७ पवित्र, स्वच्छ। ८ सौन्दर्य के मानदण्ड के अनुसार, श्रेष्ठ। ९ कला व रचना की दृष्टि से उच्च। –पु० १ ईश्वर, परमात्मा। २ बालक, बच्चा। ३ कामदेव, मदन। ४ लंका स्थित एक पर्वत। ५ एक प्रकार का वृक्ष। ६ लड़की या स्त्री के लिये प्रयुक्त संबोधन। ७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द। ८ डिंपल के वेलियो सांणोर छन्द का एक भेद। –स्त्री० ९ पृथ्वी। १० देखो 'सुंदरी'।
सुंदरता, सुंदरताई, सुंदराई–स्त्री० १ सुन्दर होने की अवस्था या भाव। २ सौन्दर्य, शोभा, झलक।
सुंदरबाई–स्त्री० बेला चारण की पुत्री एक देवी।
सुंदरि, सुंदरी–वि० [सं० सुन्दरी] १ सुन्दर, रूपवती। २ प्यारी, प्रियतमा, वल्लभा। –स्त्री० १ पत्नी, स्त्री। २ दुर्गा, पार्वती। ३ सुन्दर स्त्री। ४ रुक्मिणी। ५ विदुर सुन्दरी देवी। ६ एक योगिनी। ७ हलदी। ८ नाव बनाने की लकड़ी। ९ एक प्रकार का वाद्य। १० एक प्रकार का वर्ण वृत्त।
सुंदर सुंदरू–देखो 'सुंदर'।
सुंदळो–पु० १ मकान की छत पर किया जाने वाला चूने-मसाले का लेपन। २ चूना। ३ देखो 'संदळो'।
सुंदुस–पु० [सं०] अत्यन्त महीन व बहुमूल्य रेशमी वस्त्र।
सुंधाखांणो (नो)–देखो 'सौंधाखानो'।
सुंधो–देखो 'सौंधो'।
सुंन, सुंन्द–१ देखो 'सुन्न'। २ देखो 'सून्य'।
सुंपणो (बो)–देखो 'सूंपणो' (बो)।
सुंब–पु० [फा० सुंब] १ लोहे में छेद करने का उपकरण। २ लकड़ी में छेद करने का उपकरण। ३ जमीन खोदने का उपकरण। –स्त्री० [स० शुम्ब] ४ डोरी, रस्सी। ५ देखो 'सुम'। ६ देखो 'सूम'।
सुंबड़ो–१ देखो 'सुम'। २ देखो 'सूम'।
सुंबुक–स्त्री० [फा०] बड़ी नाव के साथ रहने वाली छोटी नाव, किश्ती।
सुंबुल–स्त्री० १ गेहूं, जौ आदि की बाल। २ एक प्रकार की सुगंधित औषधि। ३ बारह राशियों में से कन्या राशि। ४ बालों की लट, झलक।
सुंबो–पु० [देश०] १ तोप की नाल साफ करने का गज। २ तोप की नाल ठंडी करने का गीला वस्त्र। ३ लोहे में छेद करने का औजार विशेष।
सुंभ–पु० [सं० शुम्भ] एक असुर जो दुर्गा के हाथों मारा गया। —घातण, घातणी (नी), घातिण (णी, नी) –स्त्री० देवी, दुर्गा।
सुंभनिसुंभ-भांजणी–स्त्री० [सं० शुंभ-निसुंभ-भञ्जनी] १ दुर्गा, देवी। २ पार्वती।
सुंभपुरी–स्त्री० [सं० शुंभ-पुरी] शुंभ नामक राक्षस का नगर।
सुंभभांजणी, सुंभमरदणी (नी), सुंभमरदिणी (नी)–स्त्री० शुंभ राक्षस को मारने वाली देवी।
सुंमड़ो– १ देखो 'सुम'। २ देखो 'सूम'।
सुंमरणो (बो), सुंवरणो (बो)–१ देखो 'समरणो' (बो)। २ देखो 'संवरणो' (बो)।
सुंवराणो (बो), सुंवरावणो (बो)–क्रि० १ बाल कटवाना, हजामत या दाढ़ी बनवाना। २ देखो 'संवराणो' (बो)।
सुंवार–देखो 'संवार'।
सुंवारण–देखो 'संवारण'।
सुंवारणो (बो)–देखो 'संवारणो' (बो)।
सुंवारै, सुंवारो–देखो 'सवारै'।
सुंवाळ–१ देखो 'सुंवाळो'। २ देखो 'सुंआळ'।
सुंवाळो–स्त्री० [सं० सुकुमारिका] तेल में तली खाद्य वस्तु विशेष।
सुंवाळो–वि० (स्त्री० सुंवाळी) १ कोमल, मुलायम। २ चिकना स्निग्ध। –पु० जुलाहों का एक औजार विशेष।
सुंवो–वि० (स्त्री० सुंवी) १ सीधा, सही स्थिति में। २ देखो 'समो'।
सुंस–देखो 'सूंस'।
सुंसाड़ो–देखो 'सूंसाड़ो'।
सुंह–देखो 'सूंम'।
सुंहणो–देखो 'सूंणो'। (स्त्री० सुंहणी)।
सुंहाळ–१ देखो 'सुंआळ'। २ देखो 'सुंवाळो'।
सुंहाळी–स्त्री० एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।
सुंहाळो–देखो 'सुंवाळो'।
सुंहिणो, सुंहीणो–देखो 'सुहिणो'।
सु–पु० [स० शु] १ पल। २ पलाश। ३ चांद, चन्द्रमा। ४ शुक, तोता। ५ पत्थर, पाषाण। ६ कैलाश पर्वत।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

–पु० ७ घोड़ा, अश्व। ८ नख, नाखून। ९ गधा। १० समूह, झुण्ड। ११ मोर की तेज आवाज, कुहुक। [सं० सु] १२ रवि, सूर्य। १३ ध्वनि, आवाज। १४ कुल्हाड़ी, कुठार। १५ परशु। १६ तीर। १७ छेदन। १८ सुधार, बढ़ई। १९ सुन्दरता। २० उन्नति, प्रगति। २१ आनन्द, प्रसन्नता। २२ समृद्धि। २३ पूजा, अर्चना। २४ कष्ट, तकलीफ। २५ अनुमति, आज्ञा, सहमति। –वि० १ अच्छा, भला। २ अच्छा, बढ़िया। ३ श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ। ४ उत्तम, पवित्र। ५ सुन्दर, खूबसूरत। ६ सहज, सरल, आसान। ७ उचित, उपयुक्त। ८ अधिक, अत्यधिक, खूब। –सर्व० १ स्व, अपना। २ उन, उन्हें, उन्होंने। ३ वह, वे, सो। –क्रि० वि० १ संज्ञावाची शब्दों के साथ कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में एवं विशेषणों के साथ काम में लिया जाने वाला एक अव्यय शब्द। २ भली भाँति, अच्छी तरह। ३ सरलतापूर्वक, सहज ही। ४ इसलिये। ५ ही। ६ पादपूरक वर्ण। ७ देखो 'सु'। ८ देखो 'इसु'।

सुअटो–देखो 'सूअटो'।

सुअणो (बो)–देखो 'सूअणो' (बो)।

सुअन–पु० [सं० सूनु] पुत्र, बेटा।

सुअर (ड़ो)–देखो 'सूअर'।

सुअरदंतो–पु० एक प्रकार का हाथी जिसके दांत नीचे की ओर झुके रहते हैं।

सुआंमी–देखो 'सांमी'।

सुआगत–देखो 'स्वागत'।

सुआड़ी–देखो 'सुवाड़ी'।

सुआर–पु० १ नापित, नाई, हज्जाम। २ देखो 'संवार'।

सुआरथ–देखो 'स्वारथ'।

सुआरथी–देखो 'स्वारथी'।

सुआरव–वि० मधुर बोलने वाला।

सुआल–पु० [अ०] १ खांसी। २ देखो 'सवाल'।

सुआसन–पु० [सं०] १ बैठने का अच्छा आसन। २ बैठने का अच्छा ढंग।

सुआहित–पु० [सं०] तलवार के बत्तीस हाथों में से एक हाथ। तलवार का एक दाव।

सुइ–१ देखो 'सूई'। २ देखो 'सुचि'। ३ देखो 'स्मृति'। ४ देखो 'सो'।

सुइच्छा–स्त्री० [सं०] १ अच्छी भावना, सद्भावना। २ स्वेच्छा, अपनी इच्छा।

सुइणो (बो)–देखो 'सूवणो' (बो)।

सुइयो–देखो 'सूवो'।

सुई–पु० [सं० सूचिक] १ दर्जी। २ देखो 'सूई'। ३ देखो 'सुचि'। ४ देखो 'स्मृति'।

सुए–देखो 'सो'।

सुएँन–पु० सूर्य, रवि।

सुओ–देखो 'सूवो'।

सुओरोग–पु० सूतिका रोग।

सुकंट, सुकंठ–पु० [सं० सुकण्ठ] १ बाली के भाई सुग्रीव वानर का एक नाम। २ सुरीली या मीठी आवाज।

सुकंठी–वि० १ सुरीली व मीठी आवाज वाला। २ देखो 'सुकंठ'।

सुक–पु० [सं० शुकः] (स्त्री० सुकी) १ तोता, कीर, सुग्गा। २ रावण का एक अमात्य। ३ सोच, फिक्र। ४ कई सुगंधित पदार्थों का मिश्रण। ५ फलित ज्योतिष का एक योग। ६ देखो 'सक्र'। ७ देखो 'सुखदेव'। ८ देखो 'सुक्र' ९ देखो 'सुख'।

सुकड़णो (बो), सुकड़ाणो (बो), सुकड़ावणो (बो)–देखो 'सिकुड़णो' (बो)।

सुकचण–देखो 'संकुचण'।

सुकचाणो (बो)–देखो 'संकुचणो' (बो)।

सुकच्छ, सुकछ–वि० [सं० सु+कच] १ अच्छे केशों वाली। [सं० सु-कक्ष] २ सुन्दर कक्ष वाली। ३ सुन्दर वस्त्रों वाली।

सुकजाणो (बो)–देखो 'संकुचणो' (बो)।

सुकटि–वि० [सं०] जिसकी कमर सुन्दर हो, अच्छी कमर वाली। –स्त्री० १ अच्छी कमर, सुन्दर कमर। २ सुन्दर कमर वाली स्त्री।

सुकतज, सुकतिज–देखो 'सुक्तिज'।

सुकतुंड, सुकतुंड–पु० [सं० शुकतुंड] १ तोते की चोंच। २ तांत्रिक पूजा में हाथ की एक मुद्रा। –वि० सुन्दर नाक वाला।

सुकथ, सुकथन–पु० [सं० सुकथन] १ गुण-कथन, कीर्तिगान। २ कीर्ति, यश। ३ अच्छी बात, चर्चा। ४ कहने का सुन्दर ढंग।

सुकदायक–देखो 'सुखदायक'।

सुकदेव–पु० कृष्ण द्वैपायन व्यास के पुत्र, एक मुनि।

सुकन–वि० [सं० सु+कर्ण] जिसके कान सुन्दर हों। –पु० १ सुन्दर कर्ण, कान। २ देखो 'सुगन'।

सुकनाई–देखो 'सुगन'।

सुकनाधिप, सुकनाधिपत, सुकनाधिपति, सुकनाधिपती–पु० [सं० शकुन-अधिपति] पक्षिराज गरुड़।

सुकनी–स्त्री० [सं० सुकन्या] १ पुत्री, कन्या। २ देखो 'सकुनि'। ३ देखो 'सुगनी'।

सुकन्या–स्त्री० [स०] १ राजा ययाति की पुत्री जो च्यवन ऋषि की पत्नी थी। २ शुभ गुणों वाली कन्या।

सुकपिच्छक–पु० [सं० शुकपिच्छक] गन्धक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुकप्रिय सुकप्रिया–स्त्री० [सं० शुकप्रिय] अनार, बाड़म ।
सुकमळाकारी–पु० एक प्रकार का शुभ लक्षणों वाला घोड़ा ।
सुकमार–देखो 'सुकुमार' ।
सुकमारता–देखो 'सुकुमारता' ।
सुकमाळ (ळ), सुकपाळी (ळी)–देखो 'सुकोमळ' ।
सुकमुख–वि० [सं० शुक-मुख] १ जिसका मुख तोते के समान हो । २ टेढ़ा, वक्र, कुटिल । –पु० तोते का मुख ।
सुकर–पु० १ बरछी, भाला । २ हाथ कर । –वि० १ सहज, सरल । २ सहज, साध्य । ३ देखो 'सुक' । ४ देखो 'सूकर' ।
सुकरणी–पु० [सं० सु-कर्मन्] अच्छा कार्य, शुभ कार्य ।
सुकरत–देखो 'सुकृत' ।
सुकरतळ–पु० छप्पय छन्द का ३५ वां भेद ।
सुकरति, सुकरती–देखो 'सुकृत' ।
सुकरम–पु० [सं० सुकर्मन्] अच्छा कार्य, सत्कर्म ।
सुकरमा–वि० [सं० सुकर्मिन्] अच्छा कार्य करने वाला, पुण्य कर्ता । –पु० १ विष्कंभ आदि २७ योगों में से सातवां योग । (ज्योतिष) २ विश्वकर्मा । ३ विश्वामित्र ।
सुकरमी–वि० [सं० सुकर्मी] १ अच्छा कार्य करने वाला । २ जिसका कर्म या भाग्य अच्छा हो । ३ पुण्यात्मा, सदाचारी ।
सुकरवार–पु० [सं० शुक्रवार] शुक्रवार ।
सुकरांणी–पु० १ किसी कार्य में सहयोग करने वाले के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने का भाव या शब्द । २ कृतज्ञता के रूप में दिया जाने वाला धन । ३ राजा या जागीरदारों द्वारा लिया जाने वाला कर विशेष । ४ मकान की खिड़की या दरवाजे संबंधी कर विशेष ।
सुकरि–क्रि०वि० १ शीघ्र, जल्दी । २ देखो 'सुकर' ।
सुकरियप्रस्ट–पु० सूर्य, भानु ।
सुकलंबर, सुकलंबरा–देखो 'सुकळांबर' ।
सुकळ, सुकल–वि० [सं० सकल] १ कोमल, मधुर व अस्फुट शब्द करने वाला । २ अपने धन का सदुपयोग करने वाला । [सं० शुक्ल] ३ साफ, स्वच्छ, उज्ज्वल । ४ श्वेत, सफेद, धवल । ५ चमकीला, चमकयुक्त । ६ पवित्र, उत्तम । ७ सत्त्व गुणों से संबंधित, सात्विक । ८ दोष रहित, निर्दोष । ९ शुभ, लाभकर । १० प्रकाशवान, प्रकाशयुक्त । –पु० १ ब्राह्मणों का एक वर्ग या पदवी । २ देखो 'सुकळपक्ष' । ३ घोड़े के तालू व कण्ठ में होने वाली भंवरी जो शुभ मानी जाती है ।
सुकळवंग, सुकळपांग–देखो 'सुकळांग' ।
सुकळपक्ष (पख, पक्ष)–पु० [सं० शुक्ल-पक्ष] प्रत्येक मास का, अमावस्या के पश्चात् से पूर्णिमा तक का समय, मास का उत्तरार्द्ध ।
सुकळांग, सुकळांग–वि० [सं० शुक्ल-अंग] १ गौर वर्ण । २ देखो 'सवळांग' ।
सुकळांबर, सुकळांबरा–देखो 'सुकळांबर' ।
सुकळापंग, सुकळापांग–देखो 'सुकळांग' ।
सुकळी–स्त्री० [सं० शकुलिन्] मछली, मीन ।
सुकळीण, सुकलीण, सुकळीणी, सुकळीणी, सुकलीणी सुकलीन–देखो 'सुकुलीण' ।
सुकळोपांग–देखो 'सुकळांग' ।
सुकळी सुकळी–देखो 'सुकुलीण' ।
सुकव–देखो सुकवि' ।
सुकवाह, सुकवाहण, सुकवाहन–पु० [सं० शुकवाहन] तोते पर सवारी करने वाला, कामदेव ।
सुकवि, सुकवी–पु० [सं० सुकवि] १ उत्तम काव्यकर्त्ता, अच्छा कवि । २ चारण । ३ पण्डित ।
सुकसार–स्त्री० मछली, मीन ।
सुकसारिका–स्त्री०यौ० तोता-मैना ।
सुकसारिकाप्रलापण, सुकसारिकाप्रलापण (न)–पु० [सं० शुक-सारिका-प्रलापन] १ तोता-मैना को पढ़ाने की क्रिया । २ स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक ।
सुकाज–पु० [सं० सुकार्य] १ भलाई, उपकार । २ यश, कीर्ति । ३ अच्छा कार्य । –क्रि०वि० लिए, हेतु ।
सुकाणी (णी)–देखो 'सुखाणी' (णी) ।
सुकात–वि० नष्ट होने वाला, नश्वर ।
सुकातज, सुकातिज–पु० [सं० शुक्तिज] मोती ।
सुकाय–वि० १ बड़े आकार का, दीर्घकाय । २ सुन्दर व श्रेष्ठ शरीर वाला । ३ दृढ़, मजबूत, सशक्त ।
सुकाळ, सुकाल–पु० [सं० सुकाल] १ दुष्काल का उल्टा, सुभिक्ष, अकाल का अभाव । २ कृषि-उपज की दृष्टि से अच्छा समय । ३ प्रचुरता, बहुतायत ।
सुकाषणी (णी)–देखो 'सुखाणी' (णी) ।
सुकिति–देखो 'सुकीरति' ।
सुकिय–देखो 'स्वकीय' ।
सुकिया–देखो स्वकीया' ।
सुकियारथ, सुकियारथ, सुकियारथी–देखो 'सुक्यारथ' ।
सुकिरत, सुकिरति, सुकिरिति–देखो 'सुकीरति' ।
सुकिस–पु० शुक्ल पक्ष ।
सुकीया–देखो 'स्वकीया' ।
सुकीरत, सुकीरति, सुकीरती–स्त्री० [सं० सुकीर्ति] १ अच्छी ख्याति, सुयश, कीर्ति । २ सराहना, बड़ाई ।
सुकुड़णी (णी), सुकुड़ाणी (णी), सुकुड़ाषणी (णी)–देखो 'मकुड़णी' (णी) ।
सुकुन–देखो 'मकुन' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुकुनभेंट–पु० १ एक प्रकार की सरकारी भेंट। २ रस्मीतौर पर शकुन के रूप में दी जाने वाली वस्तु या धन।

सुकुनि, सुकुनी–१ देखो 'सकुनि'। २ देखो 'सुगनी'।

सुकुमार–वि० [सं०] १ कोमल, नाजुक। २ सुन्दर। ३ चिकना, स्निग्ध।–पु० १ नाजुक लड़का या बालिका। २ युवा पुरुष, जवान। ३ ईख। ४ स्वामि कार्तिकेय। ५ मेरु पर्वत के नीचे का वन। ६ काव्य का एक गुण। ७ चम्पा का वृक्ष या फूल।

सुकुमारता–स्त्री० १ सुकुमार होने का गुण, अवस्था या भाव। २ कोमलता, नाजुकता।

सुकुमारवन–पु० [सं०] सुमेरु के निकट का एक वन।

सुकुमारी–स्त्री० [सं०] १ पुत्री, बेटी। २ सुन्दर कन्या, सुन्दर लड़की। ३ कुमारी कन्या। ४ कोमल या नाजुक अंगों वाली स्त्री, युवती। ५ चमेली। ६ ईख। ७ शखिनी नामक ओषधि।–वि० जिसके अंग-प्रत्यंग कोमल हों, कोमलांगी।

सुकुमाल–देखो 'सुकुमार'।

सुकुल–पु० [सं० सुकुल] १ उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश। २ अच्छा घराना, प्रतिष्ठित परिवार। ३ उत्तम जाति, उच्च वर्ण।

सुकुलीण, सुकुळीणो(न)–वि०[सं० सुकुलीन] (स्त्री० सुकुलीण, सुकुळीणी) १ श्रेष्ठ कुल या उत्तम वंश में जन्मा, उच्च कुल का, कुलीन। २ अच्छी नस्ल का, नस्ली।

सुकुसुमा–स्त्री० [सं०] स्कंद की एक मातृका।

सुकुसुमाकर–पु० छप्पय छंद का १७ वां भेद।

सुकोमळ (ल)–वि० [सं० सुकोमल] १ अत्यन्त सुन्दर नाजुक, मनोहर। २ मुलायम, नरम। ३ धीमा, मन्द। ४ प्रिय, मधुर।

सुक्क–१ देखो 'सुक'। २ देखो 'सुक्क'।

सुक्कर–१ देखो 'सुक'। २ देखो 'सुकर'।

सुक्करवार–देखो 'सुक्रवार'।

सुकिया–देखो 'स्वकीया'।

सुक्ख–देखो 'सुख'।

सुक्खम–देखो 'सुक्षम'।

सुक्खेण–देखो 'सुखेण'।

सुक्खो–देखो 'सुख'।

सुक्क, सुक्तिज–पु० [सं० शुक्तिज] मोती। मुक्ता।

सुक्यारथ–क्रि०वि० [सं० सु-कार्यार्थ] १ किसी उत्तम कार्य के लिए, सद् उद्देश्य से।–वि० २ सार्थक, सफल। ३ सद्-उपयोग।

सुक्यारथी–वि० [सं० सु-कार्यार्थी] (स्त्री० सुक्यारथी) १ जो सद्उद्देश्य से कोई कार्य करता हो, शुभ कार्य करने वाला। २ सार्थक, सफल। ३ सद् उपयोग करने वाला।

सुक्र–पु० [सं० शुक्र] १ अग्नि देव का एक नाम। २ आग, अग्नि। ३ सौर मण्डल के नवग्रहों में से एक, शुक्रग्रह। ४ दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य। ५ सप्ताह का छठा दिन, शुक्रवार। ६ जैनियों के ८८ ग्रहों में से बयालीसवां ग्रह। ७ ज्येष्ठ मास का एक नाम। [सं० शुक्रम्] ८ पुरुष का वीर्य, धातु। ९ किसी वस्तु का सार, तत्त्व, सत्त। १० रस। ११ निष्कर्ष, परिणाम। [अ०] १२ धन्यवाद; शुक्रिया।–वि० [सं० शुक्र:] १ चमकीला चमकदार। २ उज्ज्वल, स्वच्छ। ३ एकाक्षी, काना। ४ श्वेत।

सुक्रकर–पु० [सं० शुक्रकर:] मज्जा।

सुकृत (ति, ती)–पु० [सं० सु-कृतम्] १ दान, पुण्य, धर्म आदि सत्कर्म, पुण्य का कार्य। [सं० सुकृत] २ परोपकार, भलाई। ३ इन्द्रासन।–वि० [सं० सुकृत्] १ भाग्यवान्। २ धर्मात्मा, पुण्यात्मा। ३ परोपकारी। ४ दाता, दानी। ५ अच्छी तरह किया या बनाया हुआ।—करम–पु० दान, पुण्य, परोपकार आदि सत्कर्म, शुभकार्य।

सुक्रतु–पु० [सं० सुक्रतु:] १ अग्नि, आग। २ शिव, महादेव। ३ इन्द्र। ४ मित्र, वरुण, सूर्य।

सुक्रत्य–पु० १ ऋषि, तपस्वी, मुनि। २ देखो 'सुकृत'।

सुक्रमण–पु० दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य।

सुक्रवार–पु० [सं० शुक्रवार] प्रत्येक सप्ताह का छठा दिन।

सुक्रसिख (सिस)–पु० [सं० शुक्रशिष्य] शुक्राचार्य के शिष्य, दैत्य, असुर।

सुक्रांम–पु० इन्द्र।

सुक्राचारज, सुक्राचारी, सुक्राचारय्य, सुक्राचारय–पु० [सं० शुक्राचार्य] भृगु ऋषि के पुत्र व दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य।

सुक्रित, सुक्रिय–देखो 'सुकृत'।

सुक्रियथ–देखो 'सुक्यारथ'।

सुक्रिया–पु० [अ० शुक्रिया] आभार प्रदर्शन, कृतज्ञता ज्ञापन।

सुक्रीडा–स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ अच्छा खेल।

सुक्रीत–वि० [सं० सुकीर्ति] जिसका सुयश हो, वीर, बहादुर।

सुक्रोध–देखो 'सक्रोध'।

सुक्ल–पु० [सं० शुक्ल] १ बहत्तरवीं का तीसरा वर्ष। (ज्योतिष) २ शुक्ल पक्ष। ३ देखो 'सुकल'।

सुक्लता–स्त्री० [सं० शुक्ल-ता] १ शुक्ल होने की अवस्था या भाव। २ सफेदी, श्वेतता। ३ चमक, आभा। ४ उज्ज्वलता, स्वच्छता।

सुक्लपक्ल (पक्ष, पख)–देखो 'सुकळपख'।

सुक्लमास–पु० ज्योतिष के २७ योगों में से एक योग।

सुक्लांग–पु० [सं० शुक्लांग] मोर, मयूर।

सुक्लांबर, सुक्लांबरा–स्त्री० [सं० शुक्लांबरा] सरस्वती, शारदा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखलापांग–देखो 'सुखलाप'।
सुखंकरी–स्त्री० जीवंती, डोडी।
सुखंडज–पु० [सं० शिखंडज] बृहस्पति।
सुख–पु० [सं०] १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति जब वह मुक्त रहकर संतुष्ट व उत्साहित रहता है। शान्ति, आराम। [सं० सुखम्] २ हर्ष, खुशी, आनन्द। ३ भय, चिन्ता या कष्टों से स्वतन्त्रता। ४ प्रेम, प्रीति, स्नेह। ५ दोस्ती, मित्रता। ६ सुविधा, आराम। ७ समृद्धि, सम्पन्नता। ८ कल्याण, मङ्गल। ९ तसल्ली, ढाढ़स। १० सन्तोष, सब्र। ११ उमंग, उत्साह। १२ निरोगता; स्वस्थता। १३ खामोशी, शांति। १४ सरलता, आसानी। १५ संधि, सुलह। १६ उपयुक्तता। १७ जल, पानी। १८ स्वर्ग। –वि० १ प्रिय, मधुर, मनोहर। २ धर्मात्मा, पुण्यात्मा। ३ सरल, सहज। ४ आरामदायक। ५ अच्छा, भला। –अव्य० १ सहर्ष, आनन्द से। २ आराम या आसानी से। ३ सहमति से। ४ चुपचाप, शान्ति से। —कंद–वि० सुख देने वाला, आनन्ददायक, सुख का मूल। —कर, करण, कार, कारी (री)–वि० आनन्ददायक, हर्षप्रद, सुखी करने वाला। –पु० स्वर्ग। —जनक–वि० सुखप्रद, सुखदायी। —जननी–स्त्री० सुख की मूल। —दान, दानी, दाइ, दाइक–वि० सुख देने वाला। —दात, दाता–वि० सुख देने वाला। —दाय, दायक, दायी, दायी–वि० सुखदाई, आराम या आनन्ददायक, संतुष्ट, हितैषी। —धाम–पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ। सुख का स्थान, सुविधाजनक स्थान। —धामी–पु० विष्णु। इन्द्र। स्वर्गवासी। –वि० सुखवास करने वाला, सुखी।
सुखआसन–देखो 'सुखासण'।
सुखगंध–वि० सुगंध, महक।
सुखग–वि० आराम से चलने वाला, जाने वाला।
सुखड़ी–स्त्री० १ एक प्रकार का मीठा खाद्य पदार्थ। २ मिठाई। ३ दस्तूरी, हक।
सुखड़ो–पु० १ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ। २ देखो 'सुख'।
सुखचतुरथो (थीय)–स्त्री० [सं० सुख चतुर्थी] वैशाख, भादव, पौष व माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि।
सुखचार–पु० बढ़िया घोड़ा।
सुखडो–देखो 'सुखड़ो'।
सुखण–पु० १ परशु, फरसा। २ बंडासा।
सुखणी–स्त्री० सुखी।
सुखत्रिय–पु० काजल।
सुखत्री–पु० [सं० सुक्षत्रिय] श्रेष्ठ क्षत्रिय।
सुखद–वि० [सं०] १ आरामदायक, सुविधाजनक। २ आनन्द दायक, हर्षप्रद। ३ सुन्दर, मनोहर। ४ प्रिय मधुर।
–पु० १ विष्णु का आसन। २ विष्णु। ३ मित्र, दोस्त। ४ भोजन, खाना।
सुखदा–स्त्री० [सं०] १ इन्द्र की एक अप्सरा। २ एक स्कन्द मातृका का नाम। ३ गंगा नदी। ४ लक्ष्मी। ५ हरीतकी, हरड़। –वि० सुखदायक।
सुखदाप्राण–पु० मित्र, दोस्त। –वि० प्राणों को सुख देने वाला।
सुखदे, सुखदेव–देखो 'सुकदेव'।
सुखनबाण–पु० [फा० सुखन-बाण] शब्द बाण, शब्द, ध्वनि।
सुखपत (पति, पती)–देखो 'सुसुप्ति'।
सुखपात–पु० सुख के पात्र।
सुखपाळ (ल)–स्त्री० १ एक प्रकार का वाहन, पालकी, डोली। २ एक प्रकार का स्वर्ण निर्मित पलंग।
सुखपोस–वि० जिसका पालन-पोषण सुखमय स्थिति में हुआ हो।
सुखबास–पु० १ सुख पूर्वक रहने की जगह। २ दुःख के दिन टालने के लिए किसी स्थान पर किया जाने वाला निवास। ३ आराम से निर्वाह के लिये जन्म स्थान से अन्यत्र निवास।
सुखबासो–वि० १ 'सुखबास' करने वाला। २ आनन्द एवं सुख से रहने वाला। ३ जन्म स्थान से अन्यत्र सुख से रहने वाला।
सुखम–देखो 'सूक्ष्म'।
सुखमगां–क्रि०वि० सीधे रास्ते से, सुगमता से।
सुखमण, सुखमणा (णि, णी)–स्त्री० [सं० सुषुम्ना] १ शरीरस्थ तीन प्रमुख नाड़ियों में से एक। (योग)। २ वैद्यक के अनुसार चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक। [सं० सुषुम्णः] ३ सूर्य की एक मुख्य किरण।
सुखम-दुखम–पु०यौ० [सं० सुख-दुःख] जैन मतानुसार काल के प्रमुख छः भागों में से एक उप-विभाग।
सुखमन, सुखमना (नि, नी)–देखो 'सुखमणा'।
सुखममारग–देखो 'सूक्ष्ममारग'।
सुखमय–क्रि०वि० [सं०] १ सुख पूर्वक, आनन्द पूर्वक। –वि० २ सुखी।
सुखमल–देखो 'सुखमल'।
सुखमसुख–पु०यौ० [सं० सुखम्] जैन मतानुसार काल का एक विभाग।
सुखमा–स्त्री० [सं० सुषमा] १ आभा, कान्ति, दीप्ति, शोभा, छवि। २ सुन्दरता। [सं० सुष्मा] ३ ज्योति, प्रकाश। ४ शक्ति, पराक्रम। ५ तेज। ६ सूर्य, रवि। ७ महिमा। ८ एक वर्ण वृत्त। ९ पक्षी। १० देखो 'सुसमा'। ११ देखो 'सुखमणा'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखमावसव–पु० [सं० सुषमाऽऽवशंद] परम शोभा का दर्पण चन्द्रमा।
सुखमिय–देखो सुखमणा'।
सुखरम–पु० [सं० सु-ख-रम] सूर्य, भानु।
सुखरात (राति, रात्रि)–स्त्री० [सं० सुखरात्रि] कार्तिक मास की अमावस्या की रात्रि।
सुखरास (रासि, रासी)–वि० [सं० सुख राशि] सर्वथा सुखमय, सुखों का समूह।
सुखलापांग–देखो 'सुकलांग'।
सुखलिणी–देखो 'सुकुलीणी'।
सुखलोधा–पु० घोड़ों का एक रोग।
सुखवंत, सुखवत–वि० [सं० सुखवत्] सुखी, प्रसन्न।
सुखवास–देखो 'सुखवास'।
सुखवासी–देखो 'सुखवासी'।
सुखसज्या–देखो 'सुखसेज्या'।
सुखसागर–पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर। २ भागवत के एक अनुवाद का नाम।
सुखसाजा–पु० सुख का सामान।
सुखसाता–स्त्री० [सं० सुख-शांति] १ सुख की उपलब्धि, प्राप्ति, आनन्द, कुशल-क्षेम। २ आरोग्यता, स्वस्थता।
सुखसार–पु० १ सुख का सार। २ अटारी, अट्टालिका।
सुखसिज्जा सुखसेज (सेज्जा, सेज्या) सुखसेज्या–स्त्री० [सं० सुख-शय्या] १ किसी मृतक के पीछे ब्राह्मण को दिया जाने वाला शय्या दान। २ आरामदायक शय्या।
सुखसोरठ–पु० एक राग विशेष।
सुखस्थायक–पु० कल्प वृक्ष।
सुखहारी–वि० सुख का हरण करनेवाला, दुःखदायी।
सुखांछक–पु० चन्द्रमा, चांद।
सुखांत–वि० जिसका अन्त सुखमय हो।
सुखाकर–वि० सुखदायक, सुखकर।
सुखाणी (बी)–क्रि० १ किसी गीले वस्त्र, कागज या वस्तु को धूप या हवा में फैलाकर रखना, सुखाना। २ आर्द्रता दूर करना। ३ सूखने के लिये डाल देना। ४ पानी सीखने के लिये प्रेरित करना। ५ दुर्बल या क्षीण करना।
सुखायत–पु० [सं०] प्रशिक्षित, सधा हुआ व शीघ्र वश में आने वाला घोड़ा।
सुखारथी–वि० [सं० सुखार्थी] सुख की इच्छा या कामना करने वाला।
सुखाळा–वि० १ प्रसन्न चित्त, खुश मिजाज। २ सुखी।
सुखाळी–स्त्री० १ सुख की अवस्था या भाव। २ आराम, चैन, खैरियत।
सुखाळी–वि० (स्त्री० सुखाळी) प्रसन्न, खुश, सुखी।
सुखावणी (बी)–देखो 'सुखाणी' (बी)।
सुखावेस सुखावेसु (सु)–क्रि० वि० सुख पूर्वक।
सुखासण (न,नि)–पु० १ पालकी, डोली, सुखपाल। २ आराम-दायक आसन। ३ पालथी, कमलासन।
सुखि–क्रि० वि० १ सुख पूर्वक, आराम से। २ देखो 'सुखी'।
सुखिऊ–वि० सुखी।
सुखिणी–देखो 'सुखी'।
सुखिम–देखो 'सूक्ष्म'।
सुखियारी–वि० (स्त्री सुखियारी) सुखी।
सुखियो–वि० १ सुखी। –क्रि० वि० सुखपूर्वक, आराम से।
सुखी–वि० [सं० सुखिन्] १ जिसे किसी प्रकार का दुःख, कष्ट या परेशानी न हो, दुःखों से पूर्णतया मुक्त। २ हर्षित; खुश। ३ संतुष्ट।
सुखीयो, सुखीयो–देखो 'सुखियो'।
सुखुपती सुखुप्ती–देखो सुसुप्ती'।
सुखेड़ी (बी)–स्त्री० हरी सब्जी जिसे सुखाकर शाक बनाया जाता है।
सुखेण (न)–पु० [सं० सुषेणः] १ बाली का श्वसुर व धर्म नामक वानर का पुत्र, एक वानर जो युद्ध-विशारद व वैद्यक का अच्छा ज्ञाता था। २ विष्णु का एक नामान्तर। ३ जमदग्नि एवं रेणु के पुत्रों में से एक। ४ कर्ण का एक पुत्र। ५ श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
सुखोपति–देखो 'सुसुप्ती'।
सुख्ख–देखो 'सुख'।
सुख्खदाई–देखो 'सुखदाई'।
सुख्खम–देखो 'सूक्ष्म'।
सुख्याति–स्त्री० [सं०] १ कीर्ति, यश, प्रशंसा। २ प्रतिष्ठा।
सुख्यारत, सुख्यारथ–देखो 'सुखयारथ'।
सुगंध, सुगंध, सुगंधड–स्त्री० [सं० सुगंध] १ अच्छी व प्रिय गंध। महक। खुशबू। २ गंधक। ३ चंदन। ४ जीरा। ५ नीलकमल। ६ गंधेज नामक घास, गंध तृण। ७ खुशबूदार बीज। ८ बेला। ९ मरुवा। १० माधवीलता ११ सफेद ज्वार। १२ केवड़ा। १३ राल। १४ व्यापारी। १५ रुसा घास। १६ शिलारस। १७ देखो 'सुगंधित'।
सुगंधउर–पु० १ हिरण, मृग। २ कस्तूरिया हिरण।
सुगंधक–पु० [सं० सुगंधकः] १ चन्दन। २ साल तुलसी। ३ पुष्प, फूल। ४ नारंगी। ५ गन्धक। –वि० जिसमें खुशबू हो। खुशबूदार।
सुगंधका–स्त्री० सोन जुही; कस्तूरी।
सुगंधता–स्त्री० फूल आदि खुशबूदार वस्तुओं का गुण-धर्म, महक।
सुगंधधर–पु० केसर। –वि० सुगंध को धारण करने वाला, महकदार।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुगंधमल्यका–स्त्री० [सं० सुगंधमल्लिका] मालती ।
सुगंधा–स्त्री० [सं०] १ तुलसी । २ सौंफ । ३ रुद्रजटा । ४ बिजौरा नींबू । ५ काला जीरा । ६ माधवी लता ।
सुगंधाई–स्त्री० सुगंध, महक, खुशबू ।
सुगंधाकर सुगंधाकार–वि० सुगंध से भरपूर, अत्यन्त सुगंधित ।
सुगंधि–वि० [सं०] १ धर्मात्मा, पुण्यात्मा । २ खुशबूदार । महकदार । ३ मधुर । –पु० १ परब्रह्म, परमात्मा । २ सुगंधयुक्त मधुर आम । ३ पिपरामूल । ४ वनतुलसी । ५ चन्दन । ६ देखो 'सुगंध' ।
सुगंधिक–पु० [सं० सुगंधिकः] १ चन्दन । २ धूप । ३ गन्धक । ४ चावल विशेष । [सं० सुगंधिकम्] ५ सफेद कमल । ६ देखो 'सुगंधका' ।
सुगंधिका–देखो 'सुगंधका' ।
सुगंधित–वि० [सं०] सुगंध फैलाने वाला, खुशबूदार । महकदार, सुवासित ।
सुगंधी–१ देखो 'सुगंधि' । २ देखो 'सुगंध' ।
सुगंधोक–देखो सुगंधक' ।
सुगड़ (ड़ी), सुगठ–देखो सुघड़' ।
सुगढ़–पु० अच्छा गढ़, मजबूत व दृढ़ किला । –वि० दृढ़, पक्का ।
सुगत–पु० १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा, शंखण या शंखनाभ । २ देखो 'सुगन' । ३ देखो 'सुगुणी' । ४ देखो 'सुगुण' ।
सुगणी–वि० १ शुभ लक्षणा, गुणवती, गुणवान । २ सुन्दरी, रूपसी । ३ देखो 'सुगुणी' । –स्त्री० १ शुभ लक्षणों वाली सुन्दर स्त्री । २ पुत्री ।
सुगणी–देखो 'सुगुणी' (स्त्री० सुगणी) ।
सुगत–पु० [सं० सुगतः] १ बुद्धदेव का एक नाम । २ पांडु-पुत्र अर्जुन । ३ हंस । –वि० १ अच्छी तरह गुजरा या बीता हुआ । २ भली-भांति दिया हुआ । ३ देखो 'सुगति' ।
सुगति, सुगती–स्त्री० [सं० सुगति] १ किसी प्राणी को मरणोपरान्त मिलने वाली उत्तम गति या मोक्ष । २ अच्छी दशा या हालत । ३ चलने का सुन्दर ढंग या चाल । ४ अपेक्षित गति या रफ्तार । ५ सदाचार । ६ शक्ति । ७ सीप । ८ एक प्रकार का मात्रिक छन्द ।
सुगन–पु०[सं०शकुन] १ यात्रा की शुरुआत या कार्यारंभ में दिखने या लक्षित होने वाले चिह्न जो शुभ या अशुभ के सूचक होते हैं । सगुन, शकुन । २ विभिन्न अवसरों पर शुभ मानी जाने वाली वस्तुयें । ३ विवाह का दस्तूर । ४ शुभ मुहूर्त । ५ शुभ मुहूर्त में सम्पादित कार्य । ६ शकुन के लिये किया जाने वाला मांगलिक कार्य । ७ मंगलगीत । ८ गिद्ध पक्षी । ९ चील ।
सुगनज्ञ–पु० [सं० शकुनज्ञ] शकुन का जानकार, शकुन शास्त्री
सुगनचिड़ी–स्त्री० कुछ-कुछ श्याम परों वाली सफेद चिड़िया ।
सुगनावळी–स्त्री० १ शकुन शास्त्र की पुस्तक । –पु० २ शकुन शास्त्री ।
सुगनियो–देखो 'सुगनो' ।
सुगनो–वि० [सं० शकुन+ई] शकुन शास्त्र का ज्ञाता, शकुन बताने वाला । –स्त्री० १ श्यामा पक्षी । २ मोरैया पक्षी । ३ शुश्रुत के अनुसार एक बालग्रह का नाम । ४ अर्जुन । ५ गाड़ी के अगाड़ी का तोकदार भाग जिस पर जुआ कसा जाता है (अलवर) । ६ देखो 'सुगणी' ।
सुगनो–देखो 'सुगुणो' ।
सुगम–वि० [सं०] १ जहां पर आना या पहुंचना आसान हो, सहजगम्य । २ सहज, सरल, आसान । ३ बोधगम्य । ४ जो सहज ही प्राप्त किया जा सके । –क्रि०वि० सरलता से, आसानी से ।
सुगमता–स्त्री० १ सुगम होने की स्थिति या भाव । २ सरलता आसानी । ३ स्पष्टता ।
सुगर–१ देखो सुघर' । २ देखो 'सुगुर' । ३ देखो 'सुघड़' । ४ देखो सुगरी' ।
सुगरख–वि० १ सद्गुणी, गुणवान । २ उत्तम, श्रेष्ठ ।
सुगरापणो–पु० १ 'सुगरा' होने की अवस्था या भाव । २ कृतज्ञता ३ कृतज्ञता मानने का गुण । ४ सिहाज, मुलाहिजा ।
सुगरीव–देखो 'सुग्रीव' ।
सुगरो–वि० [सं० स-गुरु] १ एहसान मानने वाला, कृतज्ञ । २ श्रद्धा रखने वाला, आस्था रखने वाला, विश्वास रखने वाला । ३ विनम्र, विनीत । ४ भला । ५ जिसके गुरु हो । –पु० १ किसी चीज को मजबूती से पकड़ने का लोहे का औजार । २ एक उपकरण विशेष जो मीनाकारी आदि में काम आता है ।
सुगळ–पु० पवन, वायु ।
सुगह–पु० १ अच्छी तरह कुचलने, पछाड़ने, झकझोरने की क्रिया या भाव, रोदन, मथन, गाहटन । २ भूसे से कूट कर निकाला हुआ अनाज । –वि० १ धुना हुआ । २ मथा हुआ ।
सुगांन–पु० [सं० सुगान] अच्छा गीत या गायन ।
सुगाणो (णो)–क्रि० १ नफरत करना, घृणा करना । २ किसी के केवल अवगुण जताना । ३ न्यून या हेय समझना ।
सुगात, सुगात्र, सुगाथ–पु० [सं० सुगात्र] १ सुन्दर, शरीर । २ चरित्र या गुणकथन । –वि० सुन्दर, सुकुमार ।
सुगार–पु० गीत, गायन ।
सुगारि, सुगारी–स्त्री० कच्चे आंगन आदि के लेपन के लिए बनाया मिट्टी व गोबर का गारा ।
सुगाळ, सुगाल–देखो सुकाळ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुगाळी–वि० अच्छे समय में जीवन बिताने वाला। –स्त्री० एक देवी का नाम।

सुगावणो (बो)–देखो सुगाणो' (बो)।

सुगिरीव–देखो 'सुग्रीव'।

सुगीणो–देखो 'सोगणो'।

सुगुण–पु० [सं०] १ अच्छा गुण, श्रेष्ठ गुण। २ अच्छा व्यवहार या आदत। ३ देखो 'सुगुणो'।

सुगुणी–१ देखो 'सुगुणो'। २ देखो 'सुगणो'।

सुगुणो–वि० (स्त्री० सुगुणी) १ श्रेष्ठ एवं उत्तम गुणों वाला, गुणवान गुणी। २ शुभ लक्षणा। ३ भाग्यशाली। ४ जो किसी विशेष कला में प्रवीण हो।

सुगुन–१ देखो 'सुगन'। २ देखो 'सुगुण'। ३ देखो 'सुगुणो'।

सुगुर, सुगुरु, सुगुरू–पु० [सं० सुगुरु] ऐसा गुरु जो अपने शिष्यों को उत्तम ज्ञान देकर उनके चरित्र का निर्माण करे।

सुगुरो–वि० १ अच्छे गुरु से मंत्र लेने वाला। २ देखो 'सुगरो'।

सुग्गीव–देखो 'सुग्रीव'।

सुग्घड़ी–देखो 'सुघड़ी'।

सुग्घड़ो–देखो 'सुघड़'।

सुग्यान–वि० [सं० सुज्ञान] १ उच्च कोटि का ज्ञान, श्रेष्ठ ज्ञान। २ अच्छी बुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि। ३ चतुराई, बुद्धिमानी। ४ सब प्रकार की अच्छी जानकारी। ५ एक प्रकार का साम। ६ देखो 'सुग्यानो'।

सुग्यानो–वि० [सं० सुज्ञानी] १ विद्वान, पण्डित, ज्ञानी, शास्त्रज्ञ। २ समझदार, ज्ञानवान, विवेकी। ३ चतुर, दक्ष, निपुण।

सुग्रह–पु० [सं०] १ फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ ग्रह। [सं० सुगृह] २ अच्छा घर। सुन्दर गृह। [सं० स्व-गृह] ३ अपना घर, स्व-गृह।

सुग्रहो–पु० [सं० सुगृह] घर।

सुग्री, सुग्रीव–पु० [सं० सुग्रीव] १ वानर राज बालि का छोटा भाई जो श्रीराम का मित्र था। २ हंस। ३ एक हथियार विशेष। ४ शिव। ५ इन्द्र। –वि० अच्छी गर्दन वाला।

सुग्रीवसेन–पु० श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।

सुग्रीवा–स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा का नाम। २ सुन्दर गर्दन।

सुग्रीवी–स्त्री० [सं०] दक्ष की एक पुत्री जो घोड़े, ऊंट, गधों की जननी मानी जाती है।

सुग्रीवेस–देखो 'सुग्रीव'।

सुघड़–वि० [सं० सुघट] १ चतुर, निपुण, होशियार २ समझदार, विचारवान, विवेकी। ३ अच्छा, बढ़िया। ४ बनावट से सुन्दर, कलात्मक, सुनिर्मित। ५ मधुर, प्रिय। ६ स्वरूपवान, सुन्दर। ७ जिसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो। ८ सुशिक्षित। –पु० राजस्थानी का एक छन्द विशेष।

सुघड़ई (ई)–देखो 'सुघड़ाई'।

सुघड़ता–देखो 'सुघड़ाई'।

सुघड़पण (णो)–पु० १ 'सुघड़' होने की अवस्था या भाव। २ चतुराई, निपुणता, बुद्धिमानी। ३ सुन्दरता, खूबसूरती। ४ दूरदर्शिता। ५ निर्माण कला की विशेषता। ६ माधुर्य।

सुघड़ाई (ई)–स्त्री० १ चतुराई, निपुणता, होशियारी। २ बुद्धिमत्ता, विवेक। ३ दूरदर्शिता। ४ सुन्दरता, खूबसूरती। ५ सुघड़ होने की अवस्था या भाव। ६ निर्माण कला की विशेषता। ७ माधुर्य। ८ वर्ण्य विषय।

सुघड़ापण (णो), सुघड़ापो–देखो 'सुघड़पणो'।

सुघड़ी–स्त्री० [सं० सुघटिका] १ अच्छा समय, अच्छी घड़ी, शुभवेला। २ वह समय जब कोई अच्छा कार्य हो। –वि० १ चतुर, दक्ष, प्रवीण। २ बुद्धिमान, विवेकी। ३ सुन्दर मनोरम। ४ श्रेष्ठ, उत्तम।

सुघड़ो–देखो 'सुघड़'।

सुघट–(ट्ट)–वि० [सं०] १ सुन्दर, सुडौल। २ सहज, आसान। ३ मजबूत, दृढ़। ४ अच्छी तरह बना। –पु० १ सुन्दर, शरीर। २ अच्छा पात्र।

सुघटित–वि० [सं०] १ सुन्दर, सुडौल। २ सुगठित। ३ दृढ़, मजबूत।

सुघड–देखो 'सुघड़'।

सुघर–पु० [सं० सुगृह] १ अच्छा घर, श्रेष्ठ घर। २ बया नामक पक्षी। ३ देखो 'सुघड़'।

सुघराई (ई)–देखो 'सुघड़ाई'।

सुघाट (टो)–देखो 'सुघट'।

सुघोर–पु० तीव्र आवाज, जोर का शब्द।

सुघोस–पु० [सं० सुघोष] १ नकुल के शंख का नाम। २ एक बुद्ध का नाम। –वि० १ जिसका स्वर सुन्दर हो। २ अच्छी आवाज, स्वर या शब्द।

सुघ्घणो (बो)–क्रि० १ आनन्द के नगाड़े बजाना। २ बेंत या छड़ी से बुरी तरह पीटना। ३ चाटकर खा जाना। ४ रगड़कर इकट्ठा करना।

सुघ्घ–देखो 'सुघ्घ'।

सुघ्घो–पु० स्वर्ण या चांदी का एक आभूषण विशेष।

सुघ्घ–स्त्री० वात विकार के कारण शरीर में रह-रहकर होने वाला दर्द।

सुघ्घफाट, सुघ्घफुड़–स्त्री० फुसफुसाहट, कानाफूसी।

सुचंग (गी)–वि० [सं० सुचङ्ग] १ सुडौल, सुगठित। २ अत्यन्त सुन्दर, मनोहर। ३ उत्तम, श्रेष्ठ। ४ शक्तिशाली, बलवान, बलिष्ठ। ५ शुद्ध, पवित्र, निर्मल। ६ ओज व कान्तियुक्त। ७ स्वस्थ, चंगा। –पु० १ घोड़ा, अश्व। २ एक छन्द विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुच–वि० [सं० शुचि] १ स्वच्छ, साफ। २ पवित्र, उत्तम। ३ धर्मात्मा, पुण्यात्मा। ४ निष्कपट सच्चा, ईमानदार। ५ चमकीला। ६ श्वेत, सफेद। ७ ठीक, सही, वाजिब। –पु० [सं० शुच] १ दुःख, शोक, संताप। २ पीड़ा, दर्द। ३ खेद, अफसोस। ४ देखो 'सुचि'।

सुचक्कर पु० [सं० सुचक्र] सुदर्शन चक्र।

सुचत–पु० कवि।

सुचती–वि० प्रसन्न, सन्तुष्ट।

सुचमुखी–देखो 'सूचिमुख'।

सुचरित (तो, त्र)–वि० [सं० सुचरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो, चरित्रवान। २ जिसका आचरण व व्यवहार उत्तम हो। –पु० १ अच्छा व शुद्ध चरित्र। २ अच्छा आचरण या व्यवहार।

सुचरुच, सुचरुप–स्त्री० पतिव्रता, सती।

सुचल (ळि, ळी)–वि० १ अस्थिर, चंचल। २ अस्थायी। –पु० हंस।

सुचवणो (बो)–क्रि० कहना, बोलना।

सुचवन–स्त्री० [सं० सुच्यवन] अग्नि, आग।

सुचहिय–वि० [सं० शुचि हृदय] शुद्ध हृदय वाला। –स्त्री० सती स्त्री।

सुचाणक–देखो 'सिचाण'।

सुचार–वि० १ शुद्ध, पवित्र। २ उत्तम, श्रेष्ठ। ३ सदाचारी, चरित्रवान। –स्त्री० १ अच्छी चाल-चलन, आचरण। २ देखो 'सुचारु'।

सुचारा–वि० १ शुद्ध, पवित्र। २ उत्तम, श्रेष्ठ।

सुचारु, सुचारू–पु० [सं० सुचारु] श्रीकृष्ण व रुक्मिणी का एक पुत्र। –वि० १ अत्यन्त, सुन्दर, खूबसूरत, अतिशय मनोहर। २ उत्तम, श्रेष्ठ। ३ ठीक, उचित।

सुचाल–स्त्री० १ अच्छी चाल, अच्छी गति। २ उत्तम आचरण, सदाचार। ३ अच्छा रहन-सहन।

सुचाळो–स्त्री० पृथ्वी, धरती। –वि० १ सदाचारी, चरित्रवान। २ अच्छे रहन-सहन वाला। ३ सुशील। ४ अच्छी चाल या गति वाला।

सुचि–स्त्री० [सं० शुचिः] १ पवित्रता, विशुद्धता, स्वच्छता, सफाई। २ ईमानदारी, सच्चाई। ३ भलाई, सज्जनता। ४ अग्नि, आग। ५ ग्रीष्म ऋतु, गरमी। ६ आसाढ़ मास की वायु। ७ कश्यप की एक पुत्री। [सं० शुचिस्] ८ किरण, रश्मि। ९ कांति, चमक, आभा। १० पुण्य, धर्म। ११ ब्रह्मचर्य। १२ पवित्र जल। १३ ब्राह्मण। १४ ईमानदार व सच्चा मित्र। १५ सूर्य, रवि। १६ चन्द्रमा, शशि। १७ शुक्रग्रह। १८ शृंगार-रस। १९ चित्रक वृक्ष। २० आसाढ़ मास का नाम। २१ ज्येष्ठ मास का नाम। –वि० [सं० शुचि] १ शुद्ध, पवित्र। २ उज्ज्वल, स्वच्छ। ३ श्वेत, सफेद।

सुचित–पु० [सं०] १ अच्छी बुद्धि, अच्छा ज्ञान। २ शुद्ध मन, पवित्र मन। ३ निश्चितता, बेफिक्री, मस्ती। ४ मन की स्थिरता, एकाग्रता। –वि० १ स्थिर मन, एकाग्रचित्त। २ प्रसन्न, खुश।

सुचितई, सुचिता, सुचिताई–स्त्री० १ सुचित होने की अवस्था या भाव। २ एकाग्रता, स्थिरता। ३ शुद्धता, पवित्रता।

सुचिती, सुचित्त–वि० १ प्रसन्न, खुश। २ जिसका चित्त स्थिर व शान्त हो। ३ देखो 'सुचित'।

सुची–देखो 'सुचि'।

सुचीत–वि० १ सुन्दर, सुहावना, मनोहर। २ शुद्ध, निर्मल। ३ देखो 'सुचित'।

सुचीमुख–देखो 'सूचिमुख'।

सुचील–देखो 'सुचित'।

सुचेतन–पु० १ विष्णु। २ देखो 'सचेतन'।

सुच्छंद–देखो 'स्वच्छंद'।

सुच्छ–देखो 'स्वच्छ'।

सुच्छम–देखो 'सूक्ष्म'।

सुच्छमता–देखो 'सूक्ष्मता'।

सुछंद–देखो 'स्वच्छंद'।

सुछम–देखो 'सूक्ष्म'।

सुछळ (ळि, ळी)–देखो 'छळ'।

सुजांन–पु० शिव, महादेव।

सुजिम–देखो 'सूक्ष्म'।

सुजग–पु० युद्ध।

सुज–सर्व० १ वह, वे। २ उसके। ३ उस। ४ वही। –पु० मस्तिष्क, शिर। –वि० शुभ। शुद्ध। –क्रि०वि० पुनः, फिर। और।

सुजगीस–क्रि०वि० शुद्ध भावना से।

सुजड़ (सुजड़ा, सुजड़ी)–स्त्री० १ तलवार। २ कटार। ३ भाला। —हत्थ, हथ, हथी–वि० जिसके हाथ में तलवार, भाला आदि शस्त्र हो।

सुजन–१ देखो 'स्वजन'। २ देखो 'सज्जण'।

सुजनता–देखो 'सज्जनता'।

सुजनी–स्त्री०जरी व कारचोब का काम किया हुआ बहुमूल्य वस्त्र

सुजळ–पु० [सं० सुजल] १ स्वच्छ व पवित्र जल। २ यश, कीर्ति, बड़ाई। ३ आभा, कान्ति, दीप्ति। ४ देखो 'सजळ'।

सुजस–पु० [सं० सुयश] १ यश, कीर्ति। २ प्रशंसा, तारीफ ३ ख्याति, बड़ाई।

सुजसउ–१ देखो 'सुजस'। २ देखो 'सुजसी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुजसवान–वि० कीर्तिमान, यशस्वी ।

सुजसा–स्त्री० [सं० सुयशा] १ एक अप्सरा का नाम । २ राजा परीक्षित की एक रानी का नाम ।

सुजसी–वि० यशस्वी ।

सुजाण (न), सुजाणी–वि० [सं० सज्ञान] १ चतुर, बुद्धिमान । २ दक्ष, निपुण । ३ विवेकशील समझदार । ४ विद्वान, पंडित । ५ प्रियतम, प्रेमी । ६ सज्जन । ७ ज्ञानी । –पु० १ पति, खाविंद । २ परमात्मा । ३ राजा, नृप ।

सुजाक–देखो 'सूजाक' ।

सुजाकी–वि० धोर का प्रकाश, रोशनी ।

सुजाग–वि० १ सावधान, चौकन्ना । २ चैतन्य । ३ सजग । ४ देखो 'सूजाक' ।

सुजागर–वि० १ जो देखने में अत्यन्त सुन्दर लगे, मनोहर । २ प्रकाशमान ।

सुजाणी (बी)–देखो 'सूजाणी' (बी) ।

सुजात–वि० [सं०] १ विधिवत विवाहित स्त्री-पुरुष से उत्पन्न संतान । २ अच्छी जाति या वर्ण में जन्मा ।–पु० जैनियों के पांच विहरमानों में से पांचवां विहरमान ।

सुजाति–स्त्री० उत्तम जाति या कुल ।–वि० १ उत्तम कुल या जाति का, कुलीन । २ उत्तम, श्रेष्ठ ।

सुजाव–देखो 'सुजाव' ।

सुजायत–वि० जो अच्छी सलाह दे, उत्तम सलाहकार । –स्त्री० [अ. शुजाअ+रा. प्र. आयत] वीरत्व, शौर्य ।

सुजाळ–पु० बैलों के 'जूघा' बांधने की रस्सी या तस्मा ।

सुजाव–पु० [सं० सुजात] १ पुत्र, बेटा । २ शत्रुघ्न का एक नाम । ३ देखो 'सुझाव' ।

सुजावणी (बी)–१ देखो 'सुजाणी' (बी) । २ देखो 'सुझाणी' (बी) ।

सुजि–देखो 'सुज' ।

सुजोध–पु० [सं० सुजव] घोड़ा, अश्व ।

सुजीवण–देखो 'सजीवण' ।

सुजोग–पु० [सं० सुयोग] १ अच्छा योग, सुयोग । २ संयोग; अवसर ।

सुजोधन–पु० [सं० सुयोजन] दुर्योधन का एक नाम ।

सुजोर–वि० १ पक्का, दृढ़, मजबूत । २ बलवान, शक्तिशाली ।

सुझणी (बी)–देखो 'सूझणी' (बी) ।

सुझती–देखो 'सूझती' ।

सुझाड़–पु० १ चंदन । २ वृक्ष ।

सुझाणी (बी)–क्रि० १ सुझाव देना, प्रस्ताव करना । २ दिखलाना, ध्यान दिलाना । ३ मार्ग-दर्शन करना, रास्ता बताना । ४ देखने के लिए प्रेरित करना । ५ युक्तियां प्रस्तुत करना ।

सुझाव–पु० १ प्रस्ताव । २ सलाह, राय, मशविरा । ३ तजवीज तरकीब ।

सुट्ट–वि० [सं० शुष्] १ स्तम्भित, हत-प्रभ भौचक्का । २ निश्चल, स्थिर । ३ विमूढ़, जड़ बुद्धि । ४ अचेत, बेहोश । ५ एकाग्रचित्त, तल्लीन ।

सुठांम–पु० [सं० सुस्थान] १ अच्छा स्थान, उत्तम जगह । २ उत्तम एवं सुन्दर पात्र ।

सुठि, सुठी–वि० [सं० सुष्ठु] (स्त्री० सुठि) १ सुन्दर, मनोहर । २ उत्तम, श्रेष्ठ ।

सुड–वि० अच्छा, बढ़िया ।

सुडमक–क्रि०वि० अच्छे ढंग से ।

सुडौळ–वि० १ जिसके अंग-प्रत्यंग सुन्दर हों, खूबसूरत । २ अच्छे डील-डौल वाला । ३ कलात्मक बनावट वाला ।

सुढंग–पु० १ अच्छा ढंग, अच्छा तरीका । २ अच्छा व्यवहार, अच्छा आचरण । –क्रि०वि० अच्छे ढंग से ।

सुढाळ, सुढाल–स्त्री० १ अच्छी ढाल उत्तम ढाल । २ सुन्दर लय या तर्ज । –वि० १ रक्षक, सहायक । २ सुन्दर ।

सुढाळी, सुढाली–वि० १ रक्षक, सहायक । २ सुन्दर, सुडौल ।

सुणअ–पु० [सं० शुनक] श्वान, कुत्ता ।

सुणघड़ियो–पु० स्वर्णकार, सुनार ।

सुणण–स्त्री० सुनने की क्रिया या भाव ।

सुणणो (बो)–पु० सुनने का कार्य, श्रोता का कार्य ।

सुणणो (बो)–क्रि० [सं० श्रवण] १ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, ध्वनि या बात का ज्ञान करना, सुनना । २ प्रवचन, चर्चा आदि नियमित सुनना, ध्यान देना । ३ किसी चर्चा, बात या घटना की जानकारी लेना, मिलना । ४ गौर करना, विशेष ध्यान देना । ५ कही हुई बात ठीक समझ लेना । ६ कोई घटना या बात पूरी जान लेना, आद्योपान्त सुनना । ७ विनती आदि स्वीकार कर लेना । ८ फटकार या कटु शब्द सहना, अर्दाश्त करना ।

सुणवाई–स्त्री० १ सुनने की क्रिया या भाव । २ कथन या प्रवचन के प्रति होने वाला ध्यान । ३ न्यायालय में किसी मुकद्दमें की सुनवाई । ४ विनती को गौर दिया जाने वाला ध्यान, स्वीकृति ।

सुणांमणी–स्त्री० मृत्यु संदेश ।

सुणांमणी (बो), सुणाणी (बो)–क्रि० १ किसी शब्द, ध्वनि या बात का श्रवणेन्द्रिय द्वारा ज्ञान कराना । २ कुछ सुनाकर, कहना, सुनाने के लिये बोलना । ३ प्रवचन आदि प्रसंग नियमपूर्वक कहना, सुनाना । ४ उपदेश के रूप में कहना । ५ कोई बात या घटना विस्तार से कहना । ६ ग्रंथ, कथादि पढ़कर समझाना, सुनाना । ७ किसी बात की पूर्व सूचना देना, आगाह करना । ८ गाकर सुनाना,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाना । ९ व्याख्या करना, वर्णन करना । १० प्रार्थना या विनती करना । ११ उलाहना देना, कटु शब्द कहना ।

सुनावण–वि० १ सुनाने वाला । २ देखो 'सुणावणी' ।

सुनावणी (ी)–देखो 'सुणावणी' (ी) ।

सुणिहर–पु० शयनगृह ।

सुणी–क्रि०वि० १ पर्यन्त, तक । २ देखो 'सुनी' ।

सुणीक–पु० सुनना का निश्चयार्थक रूप ।

सुणेर–पु० शयनागार, शयन-कक्ष ।

सुतंतर–देखो 'स्वतंत्र' ।

सुतंतरता–देखो 'स्वतंत्रता' ।

सुतंतरी–वि० [सं० स्वतंत्रिन्] १ स्वाधीन, मुक्त, आजाद । २ देखो 'सुतंत्रि' ।

सुतंत्र–देखो 'स्वतंत्र' ।

सुतंत्रि–पु० [सं०] तार वाद्य बजाने में प्रवीण व्यक्ति, वादक ।

सुत–पु० [सं० सुतः] १ पुत्र, बेटा । २ राजा, नृप । ३ जन्म कुंडली में लग्न से पांचवां घर । (ज्योतिष) ३ देखो 'सूत' ।

सुतअरक–पु० [सं० अर्क-सुतः) १ शनिश्चर । २ कर्ण । ३ यम, यमराज ।

सुतकासब–पु० [सं० कश्यप-सुत] कश्यप ऋषि का पुत्र, सूर्य ।

सुतकीरति, सुतकिरत्या–स्त्री० [सं० श्रुतकीर्ति] दशरथ सुत शत्रुघ्न की पत्नी, श्रुतकीर्ति ।

सुतगिलका–स्त्री० शालिग्राम की मूर्ति ।

सुतण, सुतण्ण–पु० [सं० स्व-तनय] पुत्र, बेटा ।

सुतदीप–पु० काजल ।

सुतदेवकी–पु० श्रीकृष्ण ।

सुतधर–स्त्री० रज, धूलि ।

सुतन–पु० [सं० सुतनु] १ स्वस्थ व सुन्दर तन, अच्छा शरीर । २ देखो 'सुतण' ।

सुतनउमा–पु० [सं० उमासुत] पार्वती के पुत्र, कार्तिकेय, गजानन, गणेश ।

सुतनी–वि० सुन्दर शरीर वाली, सुन्दरी ।

सुतनु–देखो 'सुतन' ।

सुतनेह–पु० [सं० सुत-नेह] काजल, अंजन ।

सुतन्न–देखो 'सुतण, सुतन' ।

सुतपंड–पु० राजा पाण्डु का कोई पुत्र ।

सुतपवन (न)–पु० [सं० पवन-सुत] १ पवन पुत्र हनुमान । २ पाण्डु पुत्र भीम ।

सुतपस्वी–पु० [सं० सुतपस्विन्] कोई बड़ा तपस्वी, तपधारी ।

सुतपा–पु० [सं० सुतपस्] १ विष्णु । २ सूर्य । ३ एक मुनि का नाम । ४ एक सूर्यवंशी राजा ।

सुतपाभगत–पु० [सं० सुतपाभक्त] इन्द्र ।

सुतपावाहण (न)–पु० [सं० सुतपावाहन] गरुड़, खगराज ।

सुतर–पु० [फा० शुतुर] ऊंट, उष्ट्र ।

सुतरखानी–पु० [फा० शुतुर-खानः] उष्ट्र शाला ।

सुतरनाळ (नाळी)–स्त्री० [फा० शुतुर+सं० नालीः] एक प्रकार की छोटी तोप जो ऊंट पर रखकर चलाई जाती थी ।

सुतरमुरग–पु० [फा० शुतुरमुर्ग] एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गर्दन ऊंट के समान लम्बी होती है ।

सुतराकस–पु० [सं० राक्षस सुत] ऊंट ।

सुतरु–पु० [सं०] १ अत्यन्त सघन एवं सुन्दर वृक्ष । २ श्रेष्ठ एवं उत्तम वृक्ष ।

सुतरूप–पु० [सं० ब्रह्मसुत] कामदेव ।

सुतळ–पु० [सं० सुतल] सप्त अधो-लोकों में से एक ।

सुतस्थान–पु० जन्म कुण्डली में लग्न से पांचवां स्थान ।

सुतांण (न)–देखो 'सुतण' ।

सुता–पु० [सं०] १ पुत्री, बेटी, लड़की । २ कुदरत, प्रकृति । ३ देखो 'सत्ता' । ४ देखो 'स्वतः' ।

सुतार–देखो 'सुथार' । (स्त्री० सुतारी) ।

सुति–देखो 'सुत' ।

सुतियाग–देखो 'सुत्यागी' ।

सुतीक्षण–देखो 'सुतीक्ष्ण' ।

सुतीक्षण-खड्ग–पु० एक प्रकार की तलवार जिसके नीचे का भाग पैना एवं चन्द्राकार होता है ।

सुतीक्ष्ण–पु० [सं०] अगस्त्य ऋषि के शिष्य एक ऋषि । —वि० जो बहुत तीक्ष्ण या पैना हो ।

सुतीरथ–पु० [सं० सु-तीर्थ] उत्तम या पावन तीर्थ ।

सुतुंग–पु० [सं०] ग्रहों का उच्चांश (ज्योतिष) ।

सुतुरगांब–पु० [फा०] जिराफा नामक जंतु ।

सुतेई–देखो 'स्वतः' ।

सुतेज–पु० [सं०] १ तीव्र प्रकाश, अच्छा प्रकाश । २ आभा, कान्ति । ३ जैनियों के अतीतकालीन चौबीसवें तीर्थंकर का नाम ।

सुतेसुभाव–क्रि०वि० [सं० स्वतः स्वभाव] १ कुदरतन, संयोग से, स्वयमेव । २ अचानक, अकस्मात् ।

सुतैं–देखो 'स्वतः' ।

सुतैंसिद्ध–वि० [सं० स्वतस्-सिद्ध] जो अपने आप सिद्ध हो, स्वयं सिद्ध ।

सुत्त–देखो 'सुत' ।

सुत्तग–पु० [सं० सूत्रक] कटिसूत्र, मेखला ।

सुत्तर–देखो 'सुतर' । –खानी= 'सुतरखानी' ।

सुत्तरुइ–स्त्री० सूत्र सुनने की रुचि (जैन) ।

सुत्तसंपया–स्त्री० १ सूत्र संपदा (जैन) । २ शास्त्रज्ञ (जैन) ।

सुत्याग–पु० [सं०] अच्छा त्याग, श्रेष्ठ त्याग ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुत्यागी–वि० श्रेष्ठ त्यागी, पूर्ण त्यागी, विरक्त।
सुत्र–देखो 'सूत्र'
सुत्रनाळ–देखो 'सुतरनाळ'।
सुत्रांमा–पु० [सं० सुत्रामन्] १ पुराणानुसार एक मनु का नाम। २ इन्द्र।
सुत्रांमणि–पु० एक प्रकार का यज्ञ।
सुत्री–स्त्री० [सं० सुता] १ पुत्री, बेटी। [सं० सु-स्त्री] २ सुन्दर, स्त्री।
सुथंभणो (वो)–क्रि० [सं० स्तम्भनम्] १ रोकना, ठहराना, थामना। २ पकड़कर रखना, पकड़ना। ३ देखभाल करना, सम्हालना।
सुथण–देखो 'सूथण'।
सुथर–वि० [सं० सुस्थिर] १ दृढ़, अडिग, अटल। २ मजबूत, पक्का। –स्त्री० १ पृथ्वी, भूमि। २ सुथार।
सुथरसाही–देखो 'सुथरेसाही'।
सुथराई–स्त्री० १ सफाई, स्वच्छता। २ चतुराई, निपुणता। ३ पवित्रता, शुद्धता।
सुथरापण(णो)–पु० १ सफाई, स्वच्छता। २ पवित्रता, शुद्धता, ३ दक्षता, निपुणता।
सुथरासाही, सुथरेसाही–पु० १ गुरु नानक के पुत्र सुथरासाह द्वारा प्रचलित एक सम्प्रदाय। २ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।
सुथरी–वि० [सं० सुस्तर] (स्त्री० सुथरी) १ उत्तम, श्रेष्ठ। २ बढ़िया, उम्दा। ३ पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ। ४ निष्कंटक। ५ उज्ज्वल, शुभ्र। ६ सुन्दर। ७ सुगंधित। ८ स्वादिष्ट। –पु० छोटा आसन, बिछौना।
सुथळ–पु० [सं० सुस्थल] १ अच्छा स्थान, शुभ स्थान। २ कोई, श्रेष्ठ भाव। –क्रि०वि० उचित ढंग से।
सुथांणो–पु० [सं० सस्थान:] १ श्रेष्ठ व उत्तम स्थान, जगह। २ उपयुक्त स्थान।
सुथांनक, सुथांनिक–पु० [सं० सुस्थान] १ सुमेरु पर्वत। २ गृह, घर।
सुथांनो–देखो 'सुथांन'।
सुथार–पु० [सं० सूत्रकार] (स्त्री० सुथारण, सुथारी) १ लकड़ी का इमारती सामान आदि बनाने वाली बढ़ई जाति। २ इस जाति का व्यक्ति, बढ़ई। ३ एक प्रकार की चिड़िया। —खांनो–पु० सुथार का कारखाना।
सुथाळ–देखो 'सुथळ'।
सुथिर–पु० १ एक मात्रिक छन्द विशेष। २ देखो 'सुथर'।
सुथिरवास–पु० किसी अच्छे व रमणीक स्थान पर निवास।
सुदंत, सुदंती–पु० [सं० सुदंती] हाथी, गज। –वि० जिसके दांत सुन्दर हों।
सुद–पु० [सं० सुदि] १ मास का शुक्ल पक्ष, जब चन्द्रमा की कलाएँ बढ़ती रहती हैं। २ देखो 'सुध'। ३ देखो 'सुद्ध'।
सुदक्खणा, सुदक्खिणा, सुदक्षणा, सुदक्षिणा–स्त्री० [सं० सुदक्षिणा] १ राजा दिलीप की एक पत्नी। २ श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ३ अच्छी दक्षिणा।
सुदत–देखो 'सुदत्त'।
सुदतपण (पणो)–पु० दानशीलता, दानवीरता।
सुदता–वि० दातार, दानी।
सुदतार–देखो 'सुदातार'।
सुदती–देखो 'सुदंती'।
सुदतो–वि० श्रेष्ठदानी, दानवीर।
सुदत्त–पु० श्रेष्ठ व उत्तम।
सुदन–पु० १ दानी, दातार। २ देखो 'सुदिन'।
सुदपक्ष (पख)–पु० [सं० सुदि-पक्ष] किसी मास का शुक्ल पक्ष।
सुदबक–क्रि०वि० अच्छी तरह ढककर या सुरक्षित करके।
सुदभाव–पु० [सं० शुद्ध भाव] १ मन की पवित्र विचारधारा, अच्छी मनोदशा। २ निष्कपट, निःस्वार्थ व सरल वृत्ति।
सुदयाळ, सुदयास (ळो, सो),–वि० दयावान, दयालु।
सुदर–देखो 'सूद'।
सुदरस, सुदरसण–पु० [सं० सुदर्शन] १ विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र। २ शिव का एक नाम। ३ गीध, गिद्ध। ४ जम्बूद्वीप। ५ सुमेरु पर्वत का नाम। ६ शुभ दर्शन, महापुरुषों का साक्षात्कार। ७ एक सूर्यवंशी राजा। ८ ज्वर की एक औषधि। –वि० १ सुन्दर, खूबसूरत। २ जो सहज में देखा जा सके। —चक्र–पु० भगवान विष्णु के हाथ में रहने वाला चक्र, एक अस्त्र। –वि० श्वेत, सफेद। —चूरण–पु० ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि।—द्वीप–पु० जम्बू द्वीप।
सुदरसेण–देखो 'सुदरसण'।
सुदराणो, सुदरांनो–देखो 'सूदणो'।
सुदरसण–देखो 'सुदरसण'।
सुदांन–पु० [सं० सुदान] अच्छा व श्रेष्ठ दान।
सुदांनी–देखो 'सादियांणी'।
सुदांम–पु० [सं० सुदामन्] १ श्रीकृष्ण का सखा एक गोप। २ सुदामापुरी या नगर
सुदांमा–स्त्री० [सं० सुदामा] १ स्कंद की एक मातृका। २ एक पौराणिक नदी।
सुदांमानगरी, सुदांमापुरी–स्त्री० श्रीकृष्ण के सखा सुदामा की नगरी।
सुदांमो–पु० [सं० सुदामन] १ श्रीकृष्ण का सहपाठी व सखा एक ब्राह्मण। २ इन्द्र का हाथी ऐरावत। ३ बादल। ४ समुद्र। ५ पहाड़।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुदात, सुदातार–वि० १ दातार, दानी। २ उदार।

सुदातारी–स्त्री० दातारी, उदारता।

सुदाय–स्त्री० [सं० सुदायः] १ यज्ञोपवीत-संस्कार के लिये प्रस्तुत ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा। २ किसी पर्व विशेष पर दिया जाने वाला दान। ३ दहेज। ४ शुभ भेंट।

सुदास–पु० [सं०] १ ऋतुपर्ण राजा का पौत्र अयोध्या का एक राजा। २ एक कुरुवंशीय राजा।

सुदि–१ देखो 'सुद'। २ देखो 'सुध'।

सुदिन, सुदिन्न–पु० [सं० सुदिन] १ कोई पर्व का दिन, शुभ दिन। २ खुशी या आनन्द का दिन। ३ शुभ अवसर।

सुदी–देखो 'सुद'।

सुदीठ–स्त्री० [सं० सु-दृष्टि] १ शुभ दृष्टि, दया दृष्टि। २ अच्छी तरह से देखने की क्रिया या भाव।

सुदीस–पु० [सं० सु-दिवस] शुभ दिवस।

सुदुमन–पु० [सं० सुदुम्न] वैवस्त मनु का पुत्र जो इस नाम से प्रसिद्ध था।

सुदुर, सुदूर– वि० [सं० सुदूर] बहुत दूर।

सुदेव–पु० [सं०] १ उत्तम देवता। २ श्वेत एवं सुरथ के पिता विदर्भ नरेश। ३ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो चंचुराय का पुत्र था। ४ देवक राजा का पुत्र एक राजा। ५ एक वैदिक यज्ञकर्त्ता।

सुदेस–पु० [सं० स्वदेश] १ अपना देश, स्वदेश। [सं० सुदेश] २ अच्छा देश।

सुदेसी–वि० [सं० स्वदेशी] १ अपने देश का, स्वदेशी। २ अपने देश का बना।

सुदेह–स्त्री० [सं०] सुन्दर शरीर।

सुदैव–पु० [सं०] १ शुभ संयोग, अच्छा अवसर। २ सौभाग्य, अच्छा भाग्य।

सुधौ, सुधौ–वि० (स्त्री० सुधी) सहित, साथ।–क्रि० वि० तक, पर्यन्त।

सुद्ध–वि० [सं० शुद्ध] १ जो भाषा, व्याकरण, उच्चारण व लिखावट की दृष्टि से सही हो। २ त्रुटि या दोष रहित। ३ पवित्र, शुद्ध, विशुद्ध। ४ युक्ति-युक्त, सही, ठीक। ५ निर्दोष, बेदाग, दोष रहित। ६ निर्मल, साफ, स्वच्छ। ७ बिना किसी मिलावट का, शुद्ध, खालिस। ८ अद्वितीय, अतुल्य। ९ चमकीला, उज्ज्वल। १० सफेद, श्वेत। ११ सीधा-सादा। १२ केवल, सिर्फ, मात्र।–पु० [सं० शुद्ध] १ शिव, महादेव। २ सेंधा नमक। ३ काली मिर्च। ४ शुद्ध वस्तु। ५ संगीत में राग का एक भेद। ६ चौदहवें मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक। ७ देखो 'सुध'।

सुद्धकुंडलिया–पु० 'कुंडलिया' छन्द का एक भेद।

सुद्धता–स्त्री० [सं० शुद्ध+ता प्र०] १ शुद्ध होने की अवस्था या भाव। २ पवित्रता, निर्मलता। ३ सफाई, स्वच्छता। ४ सही होने की अवस्था या भाव। ५ निर्दोषिता। ६ खालिसपना। ७ उज्ज्वलता, चमक। ८ सफेदी। ९ सादगी, सरलता।

सुद्धन–पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा।

सुद्धनिसांणी (नीसांणी)–स्त्री० एक प्रकार का "निसांणी" छन्द।

सुद्धनीर–पु० सात प्रकार के समुद्रों में से एक।

सुद्धमति, सुद्धमन, सुद्धमन्न–वि० जिसका मन व भावनाएँ शुद्ध हों। निष्कपट।

सुद्धसांणोर (सेंणोर)–देखो 'सुधसांणोर'।

सुद्धांत–पु० [सं० शुद्धांतः] अन्तः पुर, रनिवास।

सुद्धाद्वैत, सुद्धाद्वैत–पु० [सं० शुद्धाद्वैत] वल्लभाचार्य द्वारा चलाया हुआ एक वैदिक सम्प्रदाय।

सुद्धि, सुद्धी–स्त्री० [सं० शुद्धिः] १ शुद्ध या पवित्र करने या होने की क्रिया या भाव। २ शुद्धता, सफाई, स्वच्छता। ३ अपवित्र करने की क्रिया या संस्कार।–क्रि० वि० १ शुद्धता से। २ देखो 'सुध'। ३ देखो 'सुद्ध'।

सुद्र–देखो 'सूद्र'।

सुद्रणी, सुद्रणी–देखो 'सूदणी, सूदा'।

सुद्रव, सुद्रव्य–पु० [सं० सद्रव्य] शुभ सम्पत्ति, अच्छा द्रव्य।

सुद्रसण–देखो 'सुदरसण'।–चक्र = 'सुदरसणचक्र'।

सुद्रस्ट–वि० [सं० सुदृष्ट] कृपालु, दयालु।

सुध–स्त्री० [सं० शुद्ध] १ चेतना, संज्ञा, होश। २ बुद्धि, ज्ञान। ३ ध्यान, खयाल, विचार। ४ खबर, पता, जानकारी। ५ याददाश्त, स्मृति, स्मरण। ६ देख-भाल, सार-सम्हाल, खोज-खबर। ७ नीयत। ८ राह, मार्ग। ९ डिंगल का छन्द विशेष। १० देखो 'सुद्ध'।

सुधउ–देखो 'सूधो'।

सुधकर–स्त्री० [सं० शुद्ध-कर] काली मिर्च।

सुधजधा–स्त्री० १ डिंगल गीत रचना की एक परिपाटी। २ इस प्रकार से रचा हुआ गीत।

सुधनु–पु० [सं० सुधनुस्] राजा कुरु का एक पुत्र।

सुधन्न, सुधन्वा–वि० [सं० सुधन्वन्] अच्छा धनुर्धर, तीर-अंदाज।–पु० १ विष्णु। २ एक पौराणिक राजा।

सुधपिंड–पु० बहेड़ा।

सुधबायरी–वि० (स्त्री० सुधबाउरी) १ जिसके होश-हवास ठिकाने न हों, बदहवास, घबराया हुआ। २ अचेत, बेहोश। ३ विक्षिप्त, पागल। ४ मदहोश, मदमस्त, नशे में चूर।

सुधबुध–स्त्री० [सं० शुद्धि-बुद्धि] १ होश-हवास, सावधानी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विवेक। २ चेतना, संज्ञा, होश। ३ ध्यान, खयाल, विचार। ४ बुद्धि, ज्ञान। ५ पता, खबर, जानकारी ६ स्मृति, याददाश्त।

सुधभाव-पु० [सं० शुद्ध-भाव] शुद्ध विचार, अच्छी मनोदशा।

सुधमन, सुधमनी-वि० [सं० शुद्धमन] १ जिसका मन शुद्ध हो, निष्कपट वृत्ति वाला। २ होश-हवास वाला, सचेत।

सुधमांन-वि० [सं० शुद्धिमान्] बुद्धिमान।

सुधरणो (बो)-क्रि० [सं० सुध् या शोधनम्] १ किसी कार्य या बात का बिगड़ने से रहना, बनना, ठीक होना। २ बिगड़े कार्य की स्थिति या दशा आदि ठीक होना, ३ बीमारी में कमी आना, स्वस्थता या आराम की स्थिति आना। ४ आर्थिक स्थिति ठीक या अच्छी होना। ५ तरक्की या उन्नति होना। ६ बिगड़े आचरण का सुधरना। ७ सफल होना, सद्गति पाना। ८ वातावरण में तनाव कम होना।

सुधरम-पु० [सं०सुधर्म] १ उत्तम व श्रेष्ठ धर्म। २ पुण्य, दान। ३ परोपकार। ४ अच्छा आचरण। ५ महावीर स्वामी का एक शिष्य। ६ देखो 'सुधरमा'।

सुधरमा-स्त्री० [सं० सुधर्मन्] १ इन्द्र की सभा, देव सभा। २ इन्द्र के सभा भवन का नाम। ३ जैनियों के एक गणाधिपति। -वि० अपने धर्म पर अटल रहने वाला, स्वधर्मी।

सुधराई-स्त्री० १ सुधरने की क्रिया या भाव। २ किसी कार्य में किया जाने वाला सुधार। ३ सुधार कार्य की मजदूरी।

सुधरी-स्त्री० १ अच्छी हालत, सम्पन्नता। २ स्वस्थता।

सुधवटी, सुधवट्टी-स्त्री० तलवार।

सुधसागोर-पु० डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष।

सुधहोस-वि० १ चेतना, संज्ञा व होश-हवास से रहित, अचेत, बेहोश। २ जिसको अपने भले-बुरे का ज्ञान न हो।

सुधांग-पु० [सं०] चन्द्रमा, शशि।

सुधांम-पु० [सं० सुधामन्] १ कोई श्रेष्ठ या उत्तम धाम, तीर्थ। २ घर। ३ चन्द्रमा।

सुधांसु-पु० [सं० सुधा-अंशु] १ चन्द्रमा, शशि। २ कपूर।

सुधा-स्त्री० [सं०] १ अमृत। २ पुष्प रस, पुष्पों का मधु। ३ मदिरा, शराब। ४ जल, पानी। ५ गंगा का एक नाम। ६ पृथ्वी, धरती। ७ पुत्री, बेटी। ८ बिजली। ९ ईंट। १० सफेदी। ११ थूहर। १२ दूध। १३ जहर। -वि० १ श्वेत, सफेद। -क्रि०वि० २ तक, पर्यन्त। ३ सहित, युक्त।

सुधाई-स्त्री० सीधापन, सरलता।

सुधाकर-पु० [सं०] चन्द्रमा, शशि।

सुधाकुंडली-स्त्री० एक वाद्य विशेष।

सुधागेह-पु० [सं० सुधागृह] चन्द्रमा, शशि।

सुधाचरण-पु० गरुड़।

सुधातमा-वि० [सं० शुद्ध-आत्मा] जिसकी आत्मा शुद्ध हो, पवित्र व निष्कपट विचारों वाला। -पु० ईश्वर, परमात्मा।

सुधाधर, सुधाधरण, सुधाधांम, सुधाधार-पु० चन्द्रमा।

सुधाभुज, सुधाभुजीय, सुधाभुजु-पु० देवता, सुर।

सुधामय-देखो 'सुधारस'।

सुधार-पु० १ सुधरने की क्रिया या भाव। २ उन्नति, तरक्की, अच्छी स्थिति। ३ बुराई, विकार, दोष आदि दूर करने की क्रिया। ४ संशोधन, संस्कार। ५ अच्छाई। ६ उपयुक्तता, उपादेयता। ७ परिवर्तन। ८ फायदा, लाभ। ९ घृत, घी।

सुधारक-वि० १ सुधार करने वाला। २ समाज सेवी। ३ धर्म, समाज व राजनीति में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए आन्दोलन करने वाला, क्रांतिकारी। ४ संशोधन या संस्कार करने वाला। ५ परोपकारी।

सुधारण-वि० सुधारने वाला। -क्रि०वि० सुधारने के लिए। -स्त्री० सुधारने की क्रिया या भाव।

सुधारणो (बो)-क्रि० १ किसी कार्य या बात को बिगड़ते हुए से बचाना, बात बनाना, कार्य सुधारना। २ व्यवस्थित करना जमाना, बैठाना, सुधारना। ३ बिगड़े हुए को ठीक करना, कमी, दोष विकार आदि दूर करना। ४ लक्ष्य सिद्धि करना, उद्देश्य पूरा करना, पूर्ण करना। ५ तरक्की कराना। ६ आदतें ठीक करना, आचरण ठीक करना। ७ सफल बनाना, सद्गति प्राप्त कराना। ८ काम में लेने लायक बनाना, साफ करना। ९ सजाना, संवारना। १० तनावपूर्ण स्थिति को बदलना, सामान्य करना। ११ सफाई करना, साफ करना।

सुधारस-पु० १ अमृत। २ कमल।

सुधारसम-पु० [सं० सुधारश्मि] चन्द्रमा।

सुधारु, सुधारू-वि० सुधार करने वाला, सुधारक।

सुधारो-पु० १ मृतक के पीछे किये जाने वाले संस्कार, श्राद्ध, पितृतर्पण आदि। २ देखो 'सुधार'।

सुधासार-पु० [सं०] अमृत।

सुधासुत-पु० [सं०] १ चन्द्रमा। २ इन्द्र।

सुधासुती-पु० [सं० सुधासूती] चन्द्रमा।

सुधास्रव-पु० [सं० सुधास्रव] चन्द्रमा।

सुधि-१ देखो 'सुध'। २ देखो 'सुधी'। ३ देखो 'सुद्धि'। ४ देखो 'सुध'।

सुधिक-स्त्री० फटकार, धिक्कार।

सुधी-वि० [सं० सुधीः] १ पण्डित, विद्वान्। २ बुद्धिमान, चतुर। ३ धार्मिक। -पु० १ शिक्षक। २ कवि। -क्रि०वि० १ सहित, युक्त, साथ। २ तक, पर्यन्त। ३ देखो 'सुद'। ४ देखो 'सुद्धि'। ५ देखो 'सुध'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुशीव, सुशू सुशूषा–स्त्री० सुन्दर कन्या, सुपुत्री।
सुशोदक–पु० सप्त समुद्रों में से एक।
सुशो–पु० (स्त्री० सुशी) १ सीधा-सादा, सरल, भला, शरीफ, सज्जन। २ देखो 'सुधो'। ३ देखो 'सूंघो'।
सुसंग–देखो 'सुसग'।
सुसंव–पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण का एक पार्षद। २ एक देव पुत्र। ३ बलराम के मूसल का नाम। –वि० आनन्ददायक।
सुसंबन–पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुसंवा–स्त्री० [सं०] १ उमा, गौरी। २ श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ३ दुष्यन्त के पुत्र भरत की पत्नी। ४ ऋषभदेव की एक पत्नी का नाम। ५ स्त्री, नारी। ६ सुबुद्धि।
सुस–१ देखो 'सून्य'। २ देखो 'सुनक'।
सुसक–स्त्री० [सं० शुनक] १ कुत्ता, श्वान। २ दोहा छन्द का एक भेद। ३ भृगुवंशीय एक ऋषि का नाम।
सुसक्षत्र–पु० [सं०] १ उत्तम, नक्षत्र। २ मरुदेव राजा का उत्तराधिकारी एक राजा।
सुसक्षत्रा–स्त्री० [सं०] स्कन्द की एक मातृका।
सुसखी–स्त्री० चील।
सुसग–पु० [सं०] चन्दन।
सुसजर–स्त्री० कृपा दृष्टि, दया दृष्टि। –वि० दयालु, कृपालु।
सुसणी (बी)–देखो 'सुगणी' (बी)।
सुसत–देखो 'सुसत'।
सुसफा–स्त्री० चन्द्रमा की स्थिति से लक्षित होनेवाला एक शुभ योग। (ज्योतिष)
सुसमान–देखो 'सनमान'।
सुसमित–वि० विनम्र, नतमस्तक।
सुसयणा (ना)–स्त्री० [सं० सुनयना] १ राजा जनक की पत्नी व सीता की माता। २ नारी, स्त्री। ३ अच्छे नेत्रों वाली स्त्री।
सुसर–पु० [सं० सु-नर] १ अर्जुन। २ सुन्दर एवं वीरपुरुष।
सुससान–वि० [सं० शून्य-स्थान] १ निर्जन, वीरान, शून्य। २ जहां कोई न हो, एकान्त। ३ उजाड़, उजड़ा हुआ।
सुसहरासो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।
सुसहरी, सुसहरी, सुसही–वि० [सं० स्वर्णिम] १ स्वर्ण का, स्वर्ण सम्बन्धी, स्वर्णिम। २ जिसमें स्वर्ण का काम किया हुआ, स्वर्ण-जड़ित। ३ स्वर्ण के समान, स्वर्ण जैसा, सोने के रंग का।
सुसाम पु० [सं० सुनाम] १ यश, कीर्ति, ख्याति। २ शुभ नाम।
सुसामा–पु० ४९ क्षेत्रपालों में से ४८ वां क्षेत्रपाल।
सुसा–पु० फूल, सुमन।
सुसाच–पु० [सं० सुनृत्य] नाच।
सुसात–देखो 'सनाथ'।
सुसातन–देखो 'सनातन'।–धरम = 'सनातनधरम'।
सुसाथ–देखो 'सनाथ'। (स्त्री० सुसाथणी)
सुसाद–पु० [सं०] १ शब्द। २ देखो 'सनाद'।
सुसायक–वि० [सं०] श्रेष्ठ नायक, अच्छा नेता। –पु० १ स्कन्द का एक अनुचर। २ एक दैत्य का नाम।
सुसार–पु० [सं० स्वर्णकार] (स्त्री० सुसारी) १ सोने-चांदी के आभूषण बनाने वाली एक जाति या वर्ग। २ इस जाति का व्यक्ति।
सुसासीर (री)–पु० [सं० शुनाशीरः] १ इन्द्र। २ देवता। ३ उल्लू।
सुसि–१ देखो 'सून्य'। २ देखो 'सूनो'। ३ देखो 'सुनी'।
सुसिखत्र–देखो 'सुसक्षत्र'।
सुसिजर–देखो 'सुसजर'।
सुसिम–स्त्री० आभा, कान्ति, प्रभा।
सुसिमंडळ–देखो 'सून्यमडळ'।
सुसिहार, सुसिहाल–स्त्री० १ गम्भीरता से देखने, समझने या विचार करने की क्रिया या भाव। २ अच्छी तरह देखने की क्रिया या भाव।
सुसी–स्त्री० [सं० स्रवणी] नदी।
सुसील, सुसीति, सुसीती–स्त्री० [सं० सु-नीति] १ वह श्रेष्ठ एवं उत्तम नीति जिसके माध्यम से देश व राज्य का हित हो। २ अच्छा व्यवहार, आचरण। ३ बुद्धिमानी, समझदारी। ४ अच्छी नीयत, अच्छा उद्देश्य। ५ अच्छी युक्ति, अच्छा उपाय। ६ ध्रुव की माता का नाम।
सुसीसीर–देखो 'सुसासीर'।
सुसु–पु० सुत, पुत्र।
सुसू–देखो 'सूनो'।
सुसूर–पु० [स०सु+फा० नूर] सौंदर्य।–वि० सुन्दर।
सुसेरि, सुसेरी–पु० १ बंगाली भेर। २ देखो 'सुसहरी'।
सुसोचो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।
सुसून–पु० [स० शून्य] १ शरीर के किसी अंग में रक्त-संचार बंद हो जाने की अवस्था। २ स्तब्ध या किंकर्तव्यावस्था। –वि० १ जिसमें स्पंदन या हलचल न हो, चेतना शून्य। २ किंकर्तव्यविमूढ़, स्तब्ध। ३ निर्जीव। ४ देखो 'सून्य'।
सुसूनगार–देखो 'सून्यागार'।
सुसूनत–स्त्री० [अ०] मुसलमानों में बच्चे के खतना करने की क्रिया।
सुसूनाळ–देखो 'सून्याड़'।
सुसूनी–पु० [अ०] १ सुन्नत किये हुए मुसलमानों का वर्ग। २ इस वर्ग का व्यक्ति।
सुसून्य–देखो 'सून्य'।
सुसून्हली–देखो 'सुनहरी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुपंख–वि० १ सुन्दर तीरों वाला। २ सुन्दर परों वाला। –पु० अच्छे पंख।

सुपंखरी–पु० डिंगल का एक गीत (छन्द)।

सुपथ–पु० [सं० सु-पथ] १ अच्छा रहन-सहन, अच्छा चाल-चलन, अच्छा आचरण या व्यवहार। २ श्रेष्ठ मार्ग। ३ उत्तम या प्रतिष्ठित सम्प्रदाय।

सुपन–देखो 'स्वप्न'।

सुपक्व–वि० जो अच्छी तरह पका हुआ हो।

सुपक्ष, सुपक्ष–पु० [सं० सुपक्ष] १ अच्छा पक्ष, दृढ़ व प्रभावशाली पक्ष। २ श्रेष्ठकुल या वंश। ३ सुन्दर पंख। –वि० सुन्दर पंखों वाला।

सुपखाळ, सुपखाळी–पु० श्रेष्ठ या उत्तम वंश का, कुलीन

सुपड़कना–वि० बड़े-बड़े कानों वाला।

सुपच–वि० जो पाचक हो, आसानी से पचने वाला, सुपाच्य। पु० १ सुपथ्य, पथ्य। [सं० श्वपच] २ भंगी, डोम।

सुपट्ठ–वि० १ सुपाठ्य, सुवाच्य। २ स्पष्ट, साफ।

सुपण, सुपणी–देखो 'स्वप्न'।

सुपतळ, सुपत्तळ–वि० पतला, क्षीण।

सुपतास, सुपतासव–पु० [सं० सप्ताश्व] सात घोड़ों के रथ वाला, सूर्य।

सुपतिक–पु० रात को डाला जाने वाला डाका।

सुपतिट्ठ–वि० प्रतिष्ठित, सुप्रसिद्ध।

सुपत्र–वि० १ सुन्दर पत्तों से युक्त, सुन्दर पत्तों वाला। २ सुन्दर पंखों वाला। –पु० सुन्दर पत्ता।

सुपत्री–स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा, गङ्गापत्री।

सुपथ–१ देखो 'सपंथ'। २ देखो 'सुपथ्य'।

सुपथ्य–पु० [सं०] ऐसा आहार या खाद्य पदार्थ जो स्वादिष्ट सुपाच्य एवं स्वास्थ्यवर्धक हो। पथ्य।

सुपनंतर (रि, री)–क्रि० वि० [सं० स्वप्न-अनन्तर] १ स्वप्न के समय, स्वप्न के दौरान। २ स्वप्न के बाद, स्वप्न के अनन्तर।

सुपन (ड)–१ देखो 'स्वप्न'। २ देखो 'सुपनक'।

सुपनक–वि०[सं०स्वप्नक] १ निद्राशील, उनिंदा। २ देखो 'सपनौ'।

सुपनखा–स्त्री० [सं० शूर्पणखा] रावण की बहन एक राक्षसी। –वि० जिसके नाखून सूप जैसे हों।

सुपनू, सुपनू–देखो 'स्वप्न'।

सुपने, सुपनै–क्रि० वि० स्वप्न में।

सुपनौ–देखो 'स्वप्न'।

सुपबीत–देखो 'सुपवीत'।

सुपरकास–पु० सूर्य की रोशनी, धूप।

सुपरण, सुपरणक–पु० [सं० सुपर्णकः] १ गरुड़, खगराज। २ पक्षी। ३ विष्णु। ४ घोड़ा, अश्व। ५ एक देवयोनि विशेष। ६ सूर्य की किरण। ७ मुर्गा। ८ एक सूर्यवंशी राजा।–वि० सुन्दर पत्तों वाला।

सुपरणा, सुपरणी–स्त्री० [सं० सुपर्णा, सुपर्णी] १ गरुड़ की माता का नाम। २ पक्षिनी। ३ कमल समूह। ४ ऐसा तालाब जिसमें कमलों की अहतायत हो।

सुपरणेय–पु० [सं० सुपर्णेय] गरुड़।

सुपरबांण (बांण)–पु० [सं० सुपर्बाण] १ देवता, सुर। २ बांस। ३ तीर। ४ धूम्र, धूंआ।

सुपरस (न)–देखो 'स्परस'।

सुपरि (री)–वि० [सं० सु-परि] १ श्रेष्ठ, उत्तम। २ बड़ी। –क्रि० वि० अच्छी तरह से, चतुराई से।

सुपरी–वि० शुभ।

सुपवित्त–वि० [सं० सु-पवित्र] विशुद्ध, पवित्र।

सुपवी–वि० दृढ मजबूत।

सुपवीत–वि० विशुद्ध, पवित्र।

सुपसाद, सुपसाउ, सुपसाउलु सुपसाय–पु० [सं० सुप्रसाद] पूर्ण, कृपा, अनुग्रह।–वि० अत्यन्त शुभ अच्छा, ठीक।

सुपह, सुपहि, सुपहु–पु० [सं० सुप्रभु] १ श्रेष्ठ नृप, उत्तम राजा। २ बड़ा राजा। ३ दातार, दानवीर। ४ कोई राजा। ५ स्वामी, मालिक। ६ पति, स्वामी। ७ योद्धा, सुभट। ८ ईश्वर, प्रभु। ९ देखो 'सुपंथ'।

सुपाणि–पु० [सं० सुपाणि] वरद हस्त।

सुपाच्य–वि० [सं०] जो आसानी से पच जाय, पाचक, पथ्य। –पु० नरम व सुपाच्य भोजन।

सुपात सुपातर, सुपात्र–पु० [सं० सुपात्र] १ कवि। २ चारण कवि। ३ अच्छा पात्र, उत्तम एवं सुन्दर बर्तन। –वि० १ योग्य, सुयोग्य। २ सज्जन, भला सुपात्र।

सुपारस (सि, सी) सुपारिस–स्त्री० १ यश, कीर्ति, प्रशंसा। २ देखो 'सिफारिस'।

सुपारसव सुपारस्व, सुपारस्वनाथ–पु० [सं० सुपार्श्वनाथ] जैनियों के एक तीर्थंकर विशेष।

सुपारी–स्त्री० [सं० सुप्रिय] १ नारियल की जाति का एक वृक्ष विशेष। २ इस वृक्ष का गोलाकार छोटा फल जो पान में डाल कर खाया जाता है, पुंगीफल। ३ चिकनी सुपारी। ४ पुरुषेन्द्रिय का अग्र भाग।

सुपारीपाक–पु० चिकनी सुपारी व घी-शक्कर के योग से बनाया जाने वाला एक पौष्टिक पदार्थ।

सुपालग, सुपालक–वि० [सं० सुपालक] अच्छी तरह पालन-पोषण करने वाला।

सुपास–देखो 'सुपारस्वनाथ'।

सुपियार–पु० १ स्नेह, प्रेम, अनुराग। २ आदर्श प्रेम। ३ लाड-दुलार। ३ देखो 'सुपियारी'।

सुपियारी (सुपीयारी)–वि० (स्त्री० सुपियारी) १ अत्यन्त प्रिय, वल्लभ। २ प्रेमी, प्रियतम।–पु० पति।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुपीत–पु० [सं०] १ ज्योतिष में पांचवें मुहूर्त का नाम। २ पीला वस्त्र, पीताम्बर। –वि० बिल्कुल पीला, पीत।

सुपीहरी–वि० जिसके पीहर सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित हो।

सुपुण्य–पु० [सं० सुपुण्य] शुभ कार्य, पुनीत कर्म, दान।

सुपुत्र–पु० [सं०] (स्त्री० सुपुत्री) योग्य, सुशील, सुन्दर एवं गुणवान पुत्र।

सुपुर–पु० सुन्दर नगर।

सुपुरस (सुपुरुस)–पु० [सं० सु-पुरुष] भला, सज्जन एवं साधु पुरुष। अच्छे गुणों वाला व्यक्ति।

सुपुरि–देखो 'सपुर'।

सुपुहुप–पु० [सं० सुपुष्प] १ सुन्दर, पुष्प। २ लवंग, लौंग। ३ स्त्रियों का रज।

सुपूत देखो 'सपूत'।

सुपूतो–देखो 'सपूतो'।

सुपेखणो (बो)–क्रि० देखना।

सुपेत (व)–देखो 'सफेद'।

सुपेतो–देखो 'सफेदी'।

सुपेस–स्त्री० सुन्दर भेंट।

सुपेहा–स्त्री० राठौड़ों की एक उपशाखा।

सुप्यार (री)–१ देखो 'सुपियार'। २ देखो 'सुपियारी'।

सुप्रज्ञ–वि० [सं० सुप्रज्ञ] १ बुद्धिमान, चतुर। २ पंडित, विद्वान।

सुप्रतिस्ठ–वि० [सं० सुप्रतिष्ठित] जिसकी प्रतिष्ठा हो, सुविख्यात, मशहूर।

सुप्रतिस्ठा–स्त्री० [सं० सुप्रतिष्ठा] १ कीर्ति, यश, तारीफ। २ स्कन्द की एक मातृका का नाम। ३ किसी प्रतिमा, मन्दिर, मकान आदि का स्थापना समारोह, उत्सव। ४ एक वर्ण वृत्त विशेष।

सुप्रतीक–वि० [सं०] सुन्दर, मनोहर। –पु० १ ईशान कोण का दिग्गज। २ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा। ३ कामदेव का नाम। ४ शिव, महादेव।

सुप्रभ–वि० आभा, कान्ति या प्रभा से युक्त। –पु० शाल्मली द्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष।

सुप्रभा–स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २ स्कंद की एक मातृका। ३ सात सरस्वतियों में से एक। ४ आभा चमक, कान्ति।

सुप्रभात–पु० [सं०] १ शुभ या मंगलमय प्रभात। २ बड़ा सवेरा, तड़का।

सुप्रवीण–वि० [सं०] बहुत ही चतुर या दक्ष।

सुप्रवीत–वि० अत्यन्त पवित्र एवं शुद्ध।

सुप्रसण, सुप्रसन, सुप्रसन्न–वि० [सं० सुप्रसन्न] बहुत खुश, आह्लादित। –पु० गरुड़, खगराज।

सुप्रसिद्ध–वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध या विख्यात।

सुप्री–स्त्री० [सं० सुप्रिया] १ श्रेष्ठ व उत्तम स्त्री, सुन्दर स्त्री। २ प्रेयसी, प्रेमिका, प्रिया।

सुफर–देखो 'सफरी'।

सुफळ, सुफल–पु० [सं० सुफलम्] १ ऐसा अस्त्र-शस्त्र या कार्य जिसका फल अच्छा हो। २ अच्छा परिणाम या इच्छानुसार नतीजा। [सं० सुफल] ३ अनार का वृक्ष। ४ बेरी का पेड़। ५ मूंग। –वि० १ बहुत फलने वाला। २ बहुत उपजाऊ। ३ देखो 'सफळ'।

सुफला–स्त्री० [सं०] १ मुनक्कादाख, दाक्षा। २ तलवार जिसका फल सुन्दर हो।

सुफाळो–पु० तीर का अवयव विशेष।

सुफील–पु० [सं० सुपील] श्रेष्ठ एवं बड़ा हाथी।

सुफेर–वि० १ बुद्धिमान, समझदार। २ सुशील, सज्जन।

सुफ्फो स्त्री० छोटी कोठड़ी।

सुबंस–देखो 'सोबत'।

सुबग–देखो 'सुबुद्धि'।

सुबधो–पु० १ कवि। २ देखो 'सुबुद्धि'।

सुबनजर–देखो 'सुभनजर'।

सुबर–स्त्री० १ गर्भवती घोड़ी। २ गर्भवती ऊंटनी। ३ देखो 'सुवर'।

सुबरण (न)–देखो 'सुवरण'।

सुबरणरासि (रासी)–पु० सोने का ढेर, स्वर्ण राशि।

सुबह–पु० [अ० सुबूह] १ प्रातःकाल, सवेरा। २ ईश्वर का एक नाम। –वि० अत्यन्त पाक, पवित्र। –क्रि०वि० प्रातः, सवेरे।

सुबहान–पु० [अ० सुबूह आन] १ उषा वेला, प्रातःकालीन समय, सवेरा। २ ईश्वर-भजन का समय। ३ ईश्वर, परमात्मा। –वि० १ पवित्र, पाक, शुद्ध। २ महान्, श्रेष्ठ। –क्रि०वि० वाह-वाह, धन्य-धन्य।

सुबहू–स्त्री० [सं० सु-वधू] १ सुन्दर व शुभ लक्षणों वाली वधू। २ देखो 'सुबह'।

सुबांण, सुबांणो–देखो 'सुवाणो'।

सुबायत–पु० सूबेदार।

सुबाळ, सुबाल–स्त्री० १ सुन्दर बाला, युवती। –पु० २ सुन्दर बालक।

सुबास, सुबासना–देखो 'सुवास'।

सुबाह, सुबाहु–पु० [सं० सुबाहु] १ ताड़का का पुत्र व मारीच का भाई एक राक्षस। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ३ राम की सेना का एक वानर। ४ जैनियों के एक तीर्थंकर। ५ कश्यप की पुत्री एक अप्सरा। –वि० १ सुन्दर एवं दृढ़ बाहों वाला। २ आजानबाहु।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुबियांस–देखो 'सुभियांण'।
सुबीतो–देखो 'सुभीतो'।
सुबीर–पु० १ रबड़ी। २ छाछ की बनी रबड़ी, रावड़ी। ३ देखो 'सुबीर'।
सुबुकरंदी–पु० १ बर्तन बनाने का एक औजार। २ लकड़ी को छील कर साफ करने का एक औजार।
सुबुधी, सुबुद्दी, सुबुद्ध, सुबुद्धि–वि० [सं० सुबुद्धि] १ उत्तम व श्रेष्ठ बुद्धि वाला, बुद्धिमान, दूरदर्शी। २ चतुर, निपुण, दक्ष। ३ जिसकी प्रवृत्ति हमेशा अच्छे कामों में हो, सुमति। ४ कवि, पण्डित, विद्वान्। ५ प्रत्युत्पन्न मतिवाला, हाजर-जवाब। –स्त्री० १ अच्छी बुद्धि, विचाराधारा। २ बुद्धि, अक्ल, समझ, होश।
सुबुध–वि० [सं०] १ बुद्धिमान। २ सतर्क, सावधान। ३ देखो 'सुबुद्धि'।
सुबुधि, सुबुधी–देखो 'सुबुद्धि'।
सुबुधिनाथ–पु० [सं० सुबुद्धिनाथ] जैनियों के वर्तमान काल के नौवें तीर्थंकर।
सुबेस–वि० १ वयस्क, बालिग। २ देखो 'सुवेस'।
सुबेसारी–क्रि०वि० बड़े सवेरे, तड़के। ऐन सबह, प्रातः काल के समय।
सुबै–देखो 'सुबह'।
सुबैण–पु० [सं० सु-वचन] १ अच्छे एवं शुभ वचन। २ मित्रता, दोस्ती। –स्त्री० [सं० सु-वेणि] ३ स्त्रियों की सुन्दर वेणी, चोटी।
सुबोध–पु० [सं०] १ अच्छा ज्ञान, अच्छा बोध, अच्छी जानकारी। २ अच्छी सलाह, राय। ३ श्रेष्ठ ज्ञान। –वि० १ जिसे बोध या ज्ञान हो, जो अबोध न हो। २ जो सहज ही जाना जा सके।
सुबोल–पु० [सं०] १ सुन्दर वचन, उत्तम एवं मधुर वचन। २ यश, कीर्ति।
सुब्ब–देखो 'सुभ'।
सुब्भजोग–देखो 'सुभयोग'।
सुब्भट–देखो 'सुभट'।
सुब्र–देखो 'सुभ्र'।
सुब्रीड़ित–वि० [सं० सुव्रीड़ित] लज्जित, संकोचयुक्त।
सुभंकर–पु० १ छप्पय छन्द का चौदहवां भेद। २ देखो 'सुभकारी'।
सुभंग–पु० [सं० सुभङ्ग] १ देव वृक्ष। २ नारियल का वृक्ष। –वि० १ सुन्दर व खूबसूरत। २ योद्धा, वीर।
सुभ–वि० [सं० शुभ] १ कल्याणकारी, मंगलमय। २ उत्तम श्रेष्ठ। ३ मन पसंद, सुखप्रद। ४ भाग्यवान, भाग्यशाली। ५ नेक, धर्मात्मा। ६ सुन्दर, खूबसूरत। ७ चमकीला, चमकदार। ८ सुखी। ९ पवित्र, शुद्ध। –क्रि०वि० अच्छी तरह, भली प्रकार से। –पु० १ बिन्दु, शून्य, सिफर। २ सात प्रकार के चौघड़ियों में से पांचवां चौघड़िया। (ज्योतिष)। ३ विष्कंभादि सत्ताईस योगों में से तेईसवां योग (ज्योतिष)। ४ ग्रह व नक्षत्रों-संबंधी बनने वाले २८ योगों में से बीसवां योग। ५ एक राग विशेष। —वयणो–वि० मधुरभाषिनी।
सुभकंद–पु० गणेश, गजानन।
सुभकर–वि० [सं० शुभकर] कल्याणकारी, मंगलमय।
सुभकरी–स्त्री० पार्वती।
सुभकाम–पु० [सं० शुभ कर्मन्] अच्छा व श्रेष्ठ कार्य, पुण्य कार्य।
सुभकार–पु० [सं० शुभकार्य] मांगलिक कार्य।
सुभकारक, सुभकारि, सुभकारी–वि० [सं० शुभ-कारिन्] १ कल्याण करने वाला, मांगलिक। २ पवित्र, शुद्ध। ३ शुभकामना करने वाला, शुभेच्छु। ४ शुभ वाणी बोलने वाला। ५ उत्तम व श्रेष्ठ फलदायक।
सुभकृत, सुभकृित–पु० [सं० शुभकृत] विष्णुबीसी का सोलहवां वर्ष।
सुभग–वि० [सं०] १ सुन्दर, मनोहर। २ मधुर, प्रिय। ३ भाग्यवान्, समृद्धिशाली। ४ प्रेम-पात्र, प्यारा। ५ प्रसिद्ध। –पु० १ चन्दन। २ सुहागा। ३ अशोक का वृक्ष। ४ चम्पक वृक्ष। ५ लाल कट सरैया। –स्त्री० ६ सुन्दर योनि।
सुभगा–स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत प्यार करता हो, प्रियतमा स्त्री। २ पूज्या माता। ३ हल्दी। ४ तुलसी। ५ पांच वर्ष की कन्या। ६ स्कन्द की एक मातृका। –वि० १ सुन्दरी, मनोहारी। २ सौभाग्यवती, सुहागन।
सुभग्ग–वि० १ सौभाग्यशाली। २ देखो 'सुभग'।
सुभड़–देखो 'सुभट'।
सुभचरित–पु० [सं० शुभ-चरित्र] १ अच्छा चरित्र, शुद्ध चरित्र। २ अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति।
सुभचरिता–वि० [सं० शुभ-चरित्रा] १ शुद्ध चरित्रवाली, चरित्रवान। २ साध्वी पतिव्रता। –स्त्री० १ चरित्रवान व साध्वी स्त्री। २ पतिव्रता स्त्री।
सुभचिंत, सुभचिंतक–वि० [सं० शुभ-चिंतक] भलाई या मंगल की कामना करने वाला, हितैषी।
सुभट (सुभट्ट)–पु० [सं०] १ योद्धा, भट, वीर। २ सैनिक, सिपाही। ३ अर्जुन। –वि० १ पराक्रमी, बहादुर। २ रक्षा करने वाला, रक्षक। ३ चतुर, दक्ष। ४ सुगम, सरल, सहज। ५ स्पष्ट, साफ। –क्रि०वि० १ ठीक तरह से, अच्छी तरह। २ प्रगट, खोले। ३ पूर्णतया, पूर्ण रूप से।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुमत्ती–वि० शुभ, अच्छी।

सुमवता–स्त्री० पुष्पदंत नामक हाथी की हथिनी।

सुमवरसण (न)–वि० [सं० शुभ-दर्शन] १ जिसके दर्शन से शुभ या मंगलकारी कार्य होता हो। २ सुन्दर, खूब सूरत।

सुमद्र–पु० [सं०] १ कुशलक्षेम, खुशहाली। २ विष्णु का एक नाम। –वि० १ भाग्यवान, भाग्यशाली। २ अत्यन्त प्रसन्न, खुश।

सुमद्रा, सुभद्रिका–स्त्री० [सं०] १ श्रीकृष्ण की बहन व अर्जुन की पत्नी। २ दुर्गा का एक नाम।

सुमद्रेस–पु० [सं० सुभद्रेश] सुभद्रा का पति, अर्जुन।

सुमनजर–स्त्री० शुभ दृष्टि, कृपा दृष्टि।

सुमनामा–स्त्री० [सं० शुभनामा] १ शुक्ल पक्ष की पंचमी। २ दशमी या पूर्णिमा की तिथि।

सुमप्रद–पु० [सं० शुभप्रद] शुभ या मङ्गल करने वाला, शुभकारी।

सुमम–पु० [सं० शुभ] १ फूल, पुष्प। २ जल, पानी।

सुममोहरत, सुममौरत–पु० [सं० शुभ-मुहूर्त] विवाहादि मांगलिक कार्यों के लिये शुभ घड़ी, शुभ लग्न।

सुमयोग–पु० [सं० शुभयोग] अच्छा संयोग, शुभ घड़ी।

सुमर–पु० १ ब्रह्माण्ड। २ देखो 'सुवर'।

सुमराज (ज्ञ)–पु० १ अभिवादन, शुभराज। २ आशीर्वचन आदि शब्द।

सुमरासी–पु० [सं० शुभ राशि] चन्द्रमा, अग्नि।

सुमव्रत–पु० [सं० शुभव्रत] कार्तिक शुक्ला पंचमी का व्रत।

सुमसांत–पु० शान्त वातावरण, अनुकूल परिस्थिति।

सुमसूचक–वि० [सं० शुभसूचक] मांङ्गलिक।

सुभागी–पु० [सं० शुभ-भगी] १ कामदेव की पत्नी, रति। २ कुबेर की पत्नी का नाम। ३ सुन्दर स्त्री। —वि० शुभ अंगों वाली, सुन्दरी।

सुभान–पु० [सं० शुभान] १ बहत्तरवीं का सत्रहवां वर्ष। (ज्योतिष)। २ देखो 'सुबहान'।

सुभा–स्त्री० [सं० शुभा] १ आभा, कान्ति। २ सौन्दर्य, शोभा ३ कामना, अभिलाषा। ४ दूर्वा, दूब। ५ प्रियंगुलता। ६ देवताओं की सभा। ७ शमी वृक्ष। ८ गोरोचन।

सुभाइ, सुभाई, सुभाउ, सुभाऊ–देखो 'स्वभाव'।

सुभाग–पु० [सं० सौभाग्य] अच्छा भाग्य, सौभाग्य। —वि० १ भाग्यशाली। २ देखो 'सुहाग'।

सुभागण–देखो 'सुहागण'।

सुभागी–वि० सौभाग्यशाली, भाग्यवान।

सुभाग्य–पु० [सं०] अच्छा भाग्य, सौभाग्य। –वि० भाग्यशाली भाग्यवान।

सुभाव–देखो 'स्वभाव'।

सुभायक–वि० रुचिकर, सुहावना, मन को भाने वाला।

सुभारजा, सुभारिजा, सुभारिया–स्त्री० [सं० सुभार्या] श्रेष्ठ स्त्री, श्रेष्ठ पत्नी।

सुभाव–देखो 'स्वभाव'।

सुभावत–वि० प्यारा लगने वाला, मन चाहा, सुहावना।

सुभाविक–देखो 'स्वाभाविक'।

सुभाषण–पु० [सं० सु-भाषण] १ सुन्दर भाषण, कर्णप्रिय भाषण। [सं० शुभ-भाषण] २ सुन्दर भाषण।

सुभासित–वि० [सं० सुभाषित] सुन्दर ढंग से या अच्छी तरह कहा हुआ।

सुभिक्ष, सुभिख–पु० [सं० सुभिक्ष] दुर्भिक्ष का विपर्याय, सुकाल, अन्न आदि की अच्छी पैदावार।

सुभियांण, सुभियान–वि० [सं० शुभ+रा०प्र० याण] १ सर्वोत्तम, श्रेष्ठ। उत्तम। २ प्रमुख, खास, मुख्य। ३ योद्धा। ४ शुभ, मांगलिक।

सुभीतौ–पु० सुविधा, आसानी, आराम।

सुभीयांण, सुभीयांनी, सुभीयान–देखो 'सुभियांण'।

सुभीयागत–देखो 'सुभ्यागत'।

सुभूखण, सुभूसण–पु० [सं० सु-भूषण] सुन्दर, आभूषण। –वि० अच्छे आभूषणों से अलंकृत।

सुभेद–वि० रहस्य जानने वाला, भेदिया।

सुभेय–पु० चम्पा का वृक्ष।

सुभेवौ–वि० रहस्यपूर्ण।

सुभै–वि० सुन्दर।

सुभोय, सुभोधि, सुभोम–स्त्री० [सं० सु-भूमि] १ अच्छी भूमि, उपजाऊ भूमि। –पु० २ जैनियों का एक चक्रवर्ती राजा।

सुभ्भ–१ देखो 'सुभ्र'। २ देखो 'सुभ'।

सुभ्भागिणी–वि० सौभाग्यशाली, भाग्यशाली।

सुभ्यागत–वि० सौभाग्यशाली, भाग्यवान।

सुभ्र वि० [सं० शुभ्र] १ श्वेत, सफेद। २ उज्ज्वल, साफ, शुभ्र। ३ कान्तियुक्त, आभा युक्त। ४ स्वच्छ, निर्मल, पवित्र। –पु० १ चन्दन। २ सफेद रंग। ३ चांदी, रजत। ४ सेंधा नमक। ५ अभ्रक। ६ तूतिया।

सुभ्रकर, सुभ्रकरण, सुभ्रकिरण–पु० [सं० शुभ्र-कर, किरण] चन्द्रमा, राशि।

सुभ्रतटी–पु० क्षीर सागर।

सुभ्रवुति–पु० [सं० शुभ्र-वुति] इन्द्र का हाथी।

सुभ्रम–पु० पुत्र, बेटा।–क्रि० वि० जैसा।

सुभ्रा–स्त्री० [सं० शुभ्रा] १ गंगा, सुरसरि। २ वंशलोचन। ३ स्फटिक, फिटकरी।

सुभ्रि–पु० [सं० शुभ्रि] ब्रह्मा, विरंची।

सुभ्रू, सुभ्रू–देखो 'सुभ्र'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुमंगल–पु० [सं० सुमङ्गल] कुशल क्षेम, खुशहाली, खुशी।–वि० १ अत्यन्त शुभ। २ कल्याणकारी।

सुमंगला–स्त्री० [सं० सुमंगला] १ स्कन्द की एक मातृका। २ एक अप्सरा का नाम।

सुमंगली–स्त्री० [सं० सुमंगल] विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।

सुमंत–पु० [सं० सुमित्र] १ सूर्य, भानु, रवि। २ देखो 'समंत'। –वि० अत्यन्त बुद्धिमान।

सुमंत्र–पु० [सं०] १ राजा दशरथ का मंत्री, सुमंत। २ देखो 'सुमित्रा'।

सुमंत्रक–पु० [सं०] कल्कि का बड़ा भाई।

सुमत्रसुत–पु० [सं० सुमित्रासुत] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण व शत्रुघ्न।

सुम–पु० [फा०] १ घोड़े, गधे आदि पशुओं के पैरों के बिना फटे क्षुर, टाप। [सं० सुमं, सुमः] २ सुमन, पुष्प, फूल। ३ चन्द्रमा। ४ कपूर। ५ आकाश। ६ देवता। ७ पण्डित। ८ देखो 'सूम'। ९ देखो 'सून्य'।

सुमखारी–पु० वह घोड़ा जिसकी एक आंख की पुतली बेकार हो गई हो।

सुमज्झ (सुमध्य)–क्रि० वि० मध्य में, बीच।

सुमणि–पु० १ कौस्तुभमणि। २ छप्पय छन्द का एक भेद। ३ देखो 'सुमन'।

सुमत–स्त्री० १ इन्द्र की सभा। २ देखो 'सुमति'।

सुमतरास–पु० घोड़े के क्षुर या सुम काटने का औजार।

सुमतिजय–पु० [सं०] विष्णु।

सुमति–वि० [सं०] १ श्रेष्ठ बुद्धिवाला, बुद्धिमान। २ अच्छी भावना, सद्भावना। ३ कृपा, करुणा, दयालुता। ४ आशीर्वाद, वरदहस्त। ५ देवता का अनुग्रह। ६ प्रार्थना। ७ अभिलाषा, इच्छा। ८ मैत्री, दोस्ती। ९ सगर राजा की पत्नी जो ६० हजार पुत्रों की माता थी। (सुमति जैन्या) १० विष्णुयश की पत्नी जो कल्कि की माता थी। ११ देखो 'सुमतिजिन'।

सुमतिजिन, सुमतिनाथ–पु० १ जैनियों के वर्तमान काल के पांचवें तीर्थंकर का नाम। २ जैनियों के भूतकाल के तेरहवें तीर्थंकर का नाम।

सुमती, सुमत्ति सुमती–१ देखो 'सुमति'। २ देखो 'सुमतिजिन'।

सुमती, सुमत्ती–पु० नेक इरादा, इच्छा, इरादा।

सुमन–पु० [स० सुमनः] १ पुष्प, फूल। २ गेहूँ। ३ धतूरा। [सं० सुमनस्] ४ देवता। ५ पण्डित, विद्वान् व्यक्ति। ६ मित्र, दोस्त। [सं० शमनः] ७ यमराज। ८ एक दानव। —वि० [सं० सुमनस्] १ दयालु, कृपालु। २ अच्छे मन वाला, सहृदय, भावुक। [सं० सुमन] ३ सुन्दर, खूब सूरत। ४ देखो 'समन'।

सुमनचाप–पु० [सं०] १ फूलों का धनुष। २ उक्त धनुष को धारण करने वाला, कामदेव।

सुमनस–पु० [स० सुमनस्] १ गेहूँ। २ नीम का पेड़। ३ देवता। ४ पण्डितजन। ५ कवि। ६ वेदपाठी ब्रह्मचारी। ७ फूल पुष्प। ८ अच्छा या शुद्ध मन।

सुमनसधुज–पु० [सं० सुमनस्-ध्वज] कामदेव।

सुमना–स्त्री० [सं०] १ चमेली जाती पुष्प। २ सेवती, शतपत्री। ३ कैकयी का एक नाम। ४ पुष्प, फूल। ५ मालती, मधुमयी। –वि० प्रसन्न, खुश।

सुमनौकस–पु० [सं०] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

सुमन्न–देखो 'सुमन'।

सुमफटी–पु० घोड़े के क्षुर में होने वाला एक रोग

सुमरण–देखो 'स्मरण'।

सुमरणी–स्त्री० १ नाम जपने की माला जिसमें १०८ मणिये होते हैं। २ सत्ताईस दानों की एक अन्य माला

सुमरणी (णी)–क्रि० [सं० स्मरणम्] १ ईश्वर या अपने इष्ट का नाम जप करना, माला जपना, भजन करना। २ प्रस्थान के समय या कार्यारंभ में ईश्वर का स्मरण करना। ३ रटना। ४ याद करना स्मरण करना। ५ सोचना, विचारना।

सुमरन–देखो 'स्मरण'।

सुमरिणी (नी)–देखो 'सुमरणी'।

सुमसायक–पु० [सं० सुमन-सायक] रति-पति कामदेव।

सुमसुखड़ी–पु० घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके सुम सूखकर सिकुड़ जाते हैं।

सुमाण, सुमाणस–पु० [सं० सु-मानस] भला एवं सज्जन पुरुष।

सुमानी–वि० [सं० सुमानिन्] स्वाभिमानी।

सुमाग–देखो 'सुमारग'।

सुमात–स्त्री० श्रेष्ठ माता, पार्वती।

सुमार–पु० [फा० शुमार] १ गणना, गिनती, संख्या। २ लेखा-जोखा, हिसाब-किताब, नाप तौल। ३ सीमा, हद, पार, पारावार। ४ अदद, नग। ५ चोट, प्रहार। ६ नाश, संहार।

सुमारग–पु० [सं० सुमार्ग] श्रेष्ठ व उत्तम मार्ग, सन्मार्ग।

सुमारणी (नी)–क्रि० १ गणना या गिनती करना, गिनना। २ लेखा-जोखा करना, हिसाब करना। ३ वर्गीकरण करना, श्रेणी बनाना। ४ सीमा या हद निर्धारित करना। ५ चोट या प्रहार करना।

सुमाळी सुमाली–पु० [सं० अंशुमाली] १ सूर्य, रवि। [सं० सुमाली] २ एक राक्षस जो सुकेश राक्षस का पुत्र तथा रावण का नाना था। ३ एक वानर का नाम।

सुमित, सुमित्र–देखो 'सुमित्र'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुमिट्ठऊ–वि० [सं० सुमिष्ठम्] मधुर।
सुमिण–पु० स्वप्न।
सुमिरणा, सुमिरणी–पु० [सं० स्वप्न] स्वप्न, सपना।
सुमित्तरा–देखो 'सुमित्रा'।
सुमित्त–देखो 'सुमित्र'।
सुमित्र–पु० [सं०] १ श्रेष्ठ व अच्छा मित्र। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ३ अभिमन्यु के सारथी का नाम। ४ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा। ५ देखो 'सुमित्रा'।
सुमित्रा–स्त्री० [सं०] १ अयोध्या के राजा दशरथ की एक रानी तथा लक्ष्मण व शत्रुघ्न की माता। २ श्रीकृष्ण की एक रानी। ३ मार्कण्डेय ऋषि की माता। —नंदन सुत, सूतन –पु० लक्ष्मण, शत्रुघ्न।
सुमियांणी–पु० मारवाड़ राज्यान्तर्गत सिवाणा कस्बे के गढ़ का नाम।
सुमिरण–देखो 'स्मरण'।
सुमिरणी–देखो 'सुमरणी'।
सुमिरणी (णो)–देखो 'सुमरणी' (णो)।
सुमिरम–देखो 'स्मरण'।
सुमुख–पु० [सं०] १ गणेश, गजानन। २ शिव, महादेव। ३ गरुड़। ४ पंडितजन। ५ नाखून की खरोंच। –वि० [सं० सुमुख] (स्त्री० सुमुखा, सुमुखी) १ मनोहर, सुन्दर। २ आनन्दकर, सुखप्रद। ३ आतुर, उत्सुक। ४ सुन्दर मुख वाला।
सुमुखा, सुमुखी–वि० [सं०] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी।– स्त्री० १ सुन्दर स्त्री। २ एक अप्सरा। ३ संगीत में एक मूर्च्छना।
सुमुखो–वि० [सं० सुमुख] (स्त्री० सुमुखी) सुन्दर मुख वाला।– पु० आइना, काच, शीशा।
सुमेधा–पु० [सं० सुमेधस्] १ पितरों का एक गण या भेद। –स्त्री० २ मास कंगनी।
सुमेर, सुमेरगिर, सुमेरु सुमेक–पु० [सं०सुमेरुः] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो स्वर्ण का माना गया है। २ नाम जपने की माला के मध्य का बड़ा मनका। ३ शिवजी का एक नाम।
सुमोक्ष–पु० उत्सर्ग दान।
सुमोद–पु० [सं० सु+मोदः] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी।
सुमोरत–पु० [सं० सु+मुहूर्त] श्रेष्ठ व उत्तम मुहूर्त।
सुयं–देखो 'स्वयं'।
सुयंबर (बर)–देखो 'स्वयंवर'।
सुय–पु० [सं० सूत्र] १ जिनेन्द्र की वाणी या सूत्र। २ देखो 'श्रुत'।
सुयकरण–पु० [सं० श्रुतकरण] व्याकरण, दूसरी कलाओं आदि की ज्ञानरूप, अवस्था विशेष।
सुयखंध सुयखंध–पु० [सं० श्रुति-स्कंद] वेदों का एक विभाग।
सुयगडांग–पु० 'कृताङ्ग' नामक सूत्र।
सुयण–देखो 'सैण'।
सुयस–पु० [सं० सुयश] कीर्ति, यश, बड़ाई, तारीफ, सुख्याति।
सुयसा–स्त्री० [सं सुयशा] १ राजा परीक्षित की एक पत्नी। २ एक अप्सरा।
सुयांण–देखो 'सुजांण'।
सुयुद्ध–पु० [सं०] न्याय-सम्मत-युद्ध, धर्म युद्ध।
सुयोग–पु० [सं०] १ अच्छा योग, शुभ संयोग, शुभ अवसर या मौका। २ देखो 'सुयोग्य'
सुयोगता–स्त्री० [सं० सु-योग्यता] योग्यता, सुयोग्यता।
सुयोग्य पु० [सं०] बहुत योग्य, काबिल, लायक।
सुयोधन (नि, नी)–पु० [सं० सुयोधनः] दुर्योधन का एक नामान्तर।
सुयौ–१ देखो 'सुवौ'। २ देखो 'सूवौ'।
सुर–१ देखो 'स्वर'। २ देखो 'सुर'।
सुरंग–स्त्री० [स०] १ किसी मकान, किले, गढ़ या दीवार के अन्दर से होता हुआ भूमितल में बना तंग रास्ता जो आपात् स्थिति में किसी सुरक्षित स्थान में पहुंचने के काम आता है, गुप्त मार्ग। २ किले की दीवार आदि को उड़ाने के लिये बनाया गड्ढा या छेद जिसमें बारूद भरकर पलीता लगाया जाता है। ३ चोरी के उद्देश्य से दीवार में किया जाने वाला छेद। ४ विस्फोट के लिये बारूद भरने का गड्ढा। ५ पहाड़ की गुफा, गिरि-कन्दरा। ६ पहाड़ में बड़ा छेद कर, बनाया गया रेल मार्ग या सड़क।–पु० ७ अच्छा रंग या वर्ण। ८ सूर्य के रथ का सारथी, अरुण। ९ लाल रंग का घोड़ा। १० घोड़ा, अश्व. ११ आनन्द, सुख। १२ अट्ठाईस मात्रा का छन्द विशेष।–वि० (स्त्री० सुरंगी) १ उत्तम, श्रेष्ठ। २ अच्छा, बढ़िया। ३ सुन्दर, सुडौल। ४ अच्छे रंग का, सुन्दर रंग का। ५ लाल। ६ जोश पूर्ण, जोशीला। ७ सुन्दर, सुहावना। ८ स्वच्छ, साफ। ९ अनूठी उक्तिवाला। १० शुभ। ११ मधुर, मीठा।
सुरंगी वि० १ हंसी-खुशी, उत्साह-उमंग से भरपूर, आनन्दमय। २ हरी-भरी। ३ सुन्दर, आकर्षक। ४ आरामदायक, सुखदायक। ५ अच्छे रंग वाली, सुन्दर रंग की। ६ देखो 'सुरंगी'।
सुरंगीयो, सुरंगो–वि० [स० सुरंग] (स्त्री० सुरंगी) १ सुन्दर, मनोहर। २ आनन्दमय, सुखमय। ३ उत्साह, जोश व उमंग से पूर्ण। ४ रक्ताभ, लाल। ५ अच्छे रंगों का, सुन्दर रंगों का। ६ प्रफुल्लित, प्रसन्न। ७ शुभ। ८ श्रेष्ठ, उत्तम। ९ अच्छा, बढ़िया। १० स्वच्छ, साफ। ११ मधुर, प्रिय। १२ रसिक। १३ सुशोभित। १४ हरा भरा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरंग-देखो 'सुरेंद्र'।

सुरपत (पति, पती)-देखो 'सुरपति'।

सुरंम-देखो 'सौरभ'।

सुरंभी-देखो 'सुरभि'।

सुर-पु० [सं०] १ देवता, देवगण। २ ऋषि, मुनि, महात्मा। ३ सूर्य, रवि। ४ आकाश। ५ विद्वद्जन, पंडित। ६ हिन्दू, आर्य। ७ परमार राजपूतों की एक शाखा। ८ ठगण की प्रथम लघु मात्रा का नाम। ९ टगण के चतुर्थ भेद का नाम। १० तेतीस की संख्या ३३। ११ राग, धुन। १२ देखो 'स्वर'। —अंगना-स्त्री० अप्सरा। —आल, आलय-पु० देवताओं का निवासस्थान, स्वर्ग। —इंद, ईस-पु० इन्द्र, सुरेश। —ओक-पु० वैकुण्ठ। —कंत-पु० इन्द्र। —कन्या-स्त्री० देववाला, अप्सरा। —कानन-पु० देवताओं का वन, नन्दनवन। —कामिनी, कामिनी-स्त्री० अप्सरा। —कुंभ-पु० देवताओं का कलश, देवघट। —केतु-स्त्री० इन्द्र। देव प्रतिमा या देवालयों पर लगा ध्वज। —गज-पु० इन्द्र का हाथी, ऐरावत। —गण-पु० देवगण, देवता लोग। —गति- स्त्री० देवयोनि, देवयोगति। भावी। —गय= 'सुरगज'। —गायक-पु० गंधर्व। —गाह-स्त्री० देवताओं की कथा। —गिर, गिरि, गिरी-पु० सुमेरु पर्वत। —गुर, गुरु, गुरू -पु० देवताओं के गुरु बृहस्पति। बृहस्पति नामक ग्रह। बृहस्पतिवार, गुरुवार। —वि० पीला, पीतवर्ण। —घाती-पु० दैत्य, असुर, राक्षस। —वि० देवताओं का नाश करने वाला। —चाप- पु० इन्द्र धनुष। —जण, जन-पु० देवगण, देवता लोग। सज्जन, भला। चतुर बुद्धिमान। —जेठ, जेठि, जेठी, जेठो, ज्येस्ट, ज्येस्ठ -पु० ब्रह्मा विधाता, श्रीविष्णु, श्रीकृष्ण, इन्द्र। —ज्जण, ज्जन= 'सुरजण'। —तटी -स्त्री० गंगा नदी। —तर, तरु-पु० देव वृक्ष, कल्प वृक्ष। —तात -पु० देवताओं के पिता कश्यप। —तिय-स्त्री० अप्सरा। —त्रिय, त्रिया, त्री -स्त्री० अप्सरा, देवांगना, परी। —थान, थान-पु० देवालय, देव मन्दिर, स्वर्ग, वैकुण्ठ। —देस- पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ। —द्रुम, द्रुमी -पु० देववृक्ष, कल्पवृक्ष। —द्रोही-पु० असुर, दानव, दैत्य। रावण, दसानन यवन, मुसलमान। —द्वार -पु० स्वर्गद्वार। —द्विप--पु० इन्द्र का हाथी, ऐरावत। देवताओं का हाथी। —धनुख, धनुस-पु० इन्द्र धनुष। —धाम-पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ। —धेन, धेनु-स्त्री० इच्छित फल देने वाली कामधेनु। वसिष्ठ मुनि की नंदिनी गाय। —द्रोही='सुरद्रोही'। —नगर-पु० स्वर्ग। —नद, नदि, नदी-स्त्री० गंगा नदी, आकाश गंगा। —नाथ -पु० इन्द्र, सुरपति। -नायक-पु० ईश्वर, परमात्मा। विष्णु। —नारी -स्त्री० देववाला, अप्सरा। —नाह= 'सुरनाथ'। —प, पत, पति, पती -पु० देवताओं का राजा इन्द्र, सुरराज। विष्णु। —पथ -पु० आकाश, आसमान। —परवत -पु० सुमेरु पर्वत। —पाळ, पालक, पासक —पु० इन्द्र। विष्णु। —वि० देवताओं का रक्षक। पीतवर्ण। —पुर, पुरी -पु० अमरावती, स्वर्ग, वैकुण्ठ। —प्रिय- पु० इन्द्र का एक नामान्तर। बृहस्पति का एक नामान्तर। —वि० जो देवों को प्रिय हो। —बंधु-पु० दैत्य, दानव। —बाणी-स्त्री० देव भाषा, संस्कृत। —बाळ, बाळा, बाळी-स्त्री० देवांगना; अप्सरा। पृथ्वी। —भवण, भवन-पु० स्वर्ग वैकुण्ठ। देवस्थान, मंदिर, देवालय। —भाखा, भाख, भाखा-स्त्री० संस्कृत भाषा देववाणी। —भूप-पु० इन्द्र, सुरेश, विष्णु। —मंत्री-पु० बृहस्पति। —मंदिर-पु० देवालय, देवस्थान। —मग-पु० आकाश, आसमान। —माता, माता-स्त्री० सरस्वती, शारदा। —मारग='सुरमाग'। —मुख, मुख, मूख-पु० अग्नि, आग। —यान-पु० देव रथ। —रांण, रांणी-स्त्री० पार्वती, गिरिजा। दुर्गा, देवी। इन्द्राणी, शची। अप्सरा। —राइ, राई, राज, राजा, राय, राव-पु० देवराज इन्द्र ईश्वर, विष्णु। —रिप, रिपु-पु० देवताओं का शत्रु, दैत्य, दानव, राक्षस। —रूंख-पु० कल्पवृक्ष। —लोक, लोकि-पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ। —वधू-स्त्री० देवांगना, अप्सरा। —वल्लभा-स्त्री० अप्सरा, देवांगना। सफेद दूब। —वाणी-स्त्री० देववाणी, संस्कृत भाषा। —वांम, वांमा-स्त्री० देवांगना, अप्सरा।—वास-पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ। —विटप-पु० कल्पतरु। —वेस्म-पु० स्वर्ग, देवलोक। —वेस्या-स्त्री० अप्सरा। —वैरी-पु० दैत्य, दानव, राक्षस। —वृक्ष, वृख, विज, विछ, विछ-पु० कल्पतरु। -सख,सखा-पु० देवताओं का सखा इन्द्र। —सत्रु-पु० दैत्य, दानव, राक्षस। —सदन-पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ। —सांम, सांमी-पु० इन्द्र, विष्णु शिव, ईश्वर। —साइ, साई-पु० इन्द्र। —साल, सालु, सालू-वि० देवों को सताने वाला, देवों का शत्रु। —सुंदरी-स्त्री० देवांगना, अप्सरा। दुर्गा, पार्वती। -सुरभि, सुरभी-स्त्री० कामधेनु। —स्थान-पु० स्वर्ग, वैकुण्ठ। देवालय, मंदिर। —स्वांम, स्वांमी, स्वांमी-पु० विष्णु। इन्द्र। ईश्वर।

सुरइंद-देखो 'सुरेंद्र'।

सुरईस-देखो 'सुरेस'।

सुरक-पु० [सं० स्वर्ग] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ। २ घबराहट, डर, भय। ३ चिंता, फिक्र। ४ भय से धड़कन बढ़ने की स्थिति। ५ पानी आदि पदार्थ की सुड़की। ६ देखो 'सुरख'।

सुरकणो (नो)-क्रि० १ डरना, घबराना। २ धड़कना, फड़कना। ३ चिंता होना, सोच करना। ४ सुड़क-सुड़क कर धीरे-धीरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पीना। ५ ऊपर की ओर हवा के साथ धीरे-धीरे खिंचना।

सुरकरिप्रसठ–पु० [सं० सुरकरिप्रष्ठ] सूर्य, भानु।

सुरकरी–पु० [सं० सुरकरिन्] १ इन्द्र का हाथी। २ दिग्गज।

सुरकली–स्त्री० एक रागिनी विशेष।

सुरकाबुरकी–स्त्री० किसी बात को इधर-उधर करने की क्रिया, टौरय कर्म, चुगली।

सुरक्ष–पु० [सं०] १ इन्द्र। २ एक पौराणिक पर्वत। –वि० रक्षित, सुरक्षित।

सुरक्षा–स्त्री० [सं०] १ रक्षा, हिफाजत। २ देखभाल, संभाल।

सुरखंडनिका–स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वीणा।

सुरख–वि० [फा० सुर्ख] १ लाल, रक्ताभ, २ क्रोध पूर्ण, रोष पूर्ण। –पु० १ तांबा। २ एक प्रकार का शुभ रंग।

सुरखरू–वि० [फा०] १ सफल, कामयाब। २ सम्मानित।

सुरखाबी–वि० रक्ताभ, लाल।

सुरखाब–पु० [फा० सुर्खाब] १ चकवा नामक पक्षी। २ लाल परों वाला पक्षी विशेष ब्राह्मणी बतख। –वि० लाल।

सुरखियाबगली (बुगली)–पु० बुगले का एक भेद विशेष।

सुरखी–स्त्री० [फा० सुर्खी] १ अरुणिमा, लालिमा। २ नाराजगी, गुस्सा। ३ इमारत आदि बनाने में काम आने वाला ईंटों का महीन चूरा। –पु० [फा० सुर्ख] १ वह घोड़ा जिसकी दुम लाल हो। २ वह घोड़ा जिसका रंग सफेदी या भूरापन लिये काला हो।

सुरखो–पु० [फा० सुर्खा] १ लाल रंग का कबूतर। २ देखो 'सुरख'।

सुरग–देखो 'स्वरग'।

सुरगण–पु० [सं०] १ देवगण। २ देखो 'सगुण'।

सुरगनदी–देखो 'स्वरगनदी'।

सुरगपत (पति, पती)–देखो 'स्वरगपति'।

सुरगपहाड़–पु० [सं० स्वर्गपहाड़] सुमेरु पर्वत।

सुरगपाताळी–पु० ऐसा पशु जिसका एक सींग आकाश की ओर खड़ा हो तथा दूसरा बिलकुल नीचे झुका हो।

सुरगपुर (पुरी)–देखो 'स्वरगपुरी'।

सुरगबाळी–स्त्री० कान का एक आभूषण।

सुरगबेसा, सुरगबेस्या–स्त्री० [सं० स्वर्गवेश्या] अप्सरा।

सुरगरद–पु० [सं० सुरगिरि] सुमेरु पर्वत। —भाळा, माला–स्त्री० सुमेरु पर्वत श्रेणी।

सुरगलोक–देखो 'स्वरगलोक'।

सुरगवास–देखो 'स्वरगवास'।

सुरगसार–पु० [सं० स्वर्गसार] चतुर्दश ताल के चौदह भेदों में से एक।

सुरगह–पु० तीता, कोर।

सुरगाम–पु० [सं० स्वर ग्राम] स्वर ग्राम।

सुरगादि–पु० [सं० स्वर्ग-आदि] स्वर्ग-लोक-समूह।

सुरगापगा–स्त्री० [सं० स्वर्गापगा] स्वर्ग गंगा, मंदाकिनी, गंगा नदी।

सुरगापुर (पुरि)–पु० [सं० स्वर्ग-पुर] स्वर्ग धाम, वैकुण्ठ।

सुरगायत–पु० स्वर्ग वैकुण्ठ।

सुरगारोहण–पु० [सं० स्वर्गारोहण] स्वर्ग की ओर गमन।

सुरगि–देखो 'स्वरग'।

सुरगी–वि० [सं० स्वर्गीय] स्वर्ग का, स्वर्ग संबंधी। –पु० १ स्वर्ग का निवासी देवता। २ देखो 'स्वरग'।

सुरगोनदी–देखो 'स्वरगनदी'।

सुरगुण (न)–देखो 'सगुण'।

सुरग्यांन (ग्यांनी)–देखो 'सुग्यांनी'।

सुरग्रह सुरग्राह–पु० [सं० स्वर-गृह] १ वीणा। २ श्रवणेन्द्रिय; कान।

सुरघंट–पु० वीरघंट।

सुरघण–पु० मेघनाद, इन्द्रजित।

सुरड–देखो 'मरड'।

सुरड़णो (बो)–क्रि० १ काँटेदार छड़ी, बेंत या चाबुक से बुरी तरह पीटना। २ किसी पौधे या पेड़ की टहनी के पत्ते आदि खींच कर पूरे तोड़ देना। ३ अनर्गल बकना, बोलना। ४ चाटकर खाना। ५ संचय करना। ६ खरोंच लगाना, खरोंचना।

सुरड़ी–वि० नाक कटी हुई।

सुरड़ी बुरड़ी–वि० नाक-कान कटी हुई, बूंची।

सुरड़ो–वि० (स्त्री० सुरड़ी) १ नाक कान कटा, बूंचा। २ निर्लज्ज, बेशर्म।

सुरचक्र पु० सुदर्शन चक्र।

सुरचाह–स्त्री० अग्नि, आग।

सुरच्छा–देखो 'सुरक्षा'।

सुरज–पु० १ एक देव जाति। २ देखो 'सूरज'।

सुरजणो–पु० [सं० सुरञ्जन] सुपारी का पेड़।

सुरजमुखो–देखो सूरजमुखी'।

सुरजांण–पु० १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ इन्द्र।

सुरजा–स्त्री० [सं०] १ एक अप्सरा। २ पुराणोक्त एक नदी।

सुरझणो (बो)–देखो 'सुळझणो' (बो)।

सुरझावो (बो), सुरझावणो (बो)–देखो 'सुळझाणो' (बो)।

सुरटीप–स्त्री० [सं० स्वर-रा० टीप] गायन में स्वरालाप, टीप।

सुरण–स्त्री० १ वह रस्सी जो कूए से पानी खींचने वाले पात्र के साथ बंधी रहती है, 'लाव'। २ देखो 'सूरण'।

सुरणा, सुरणाइ (ई), सुरणाम, सुरणी–देखो 'सहनाई'।

सुरणो (बो)–क्रि० अपान वायु निकलना।

सुरत–स्त्री० [सं० सु-रत] १ स्त्री-संभोग, रति-क्रीड़ा, मैथुन।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ लहर, ऊर्मी, तरंग। ३ अत्यन्त हर्ष, आनन्द, आह्लाद। ४ न्याय दर्शन के अनुसार चित्त व शरीर के छः प्रकार के क्लेश, भूख प्यास आदि। ५ पुष्प गुच्छ जो शिर पर धारण किया जाय। [सं० सुरत] ६ अच्छा खिलाड़ी। ७ देखो 'सूरत'। ८ देखो 'स्मृति'। ९ देखो 'सुरति'।

सुरतग्रही–पु० [सं०] नाक।

सुरतजंग–पु० रतिक्रिया में होने वाला संघर्ष, रतिक्रीड़ा।

सुरतपाक–वि० जिसका चेहरा पवित्र व शुद्ध हो।

सुरतरंग–स्त्री० [सं० सुर-तरुणी] अप्सरा।

सुरतांग (गी)–देखो 'सुलतांग'।

सुरतांगी–देखो 'सुलतांगी'।

सुरतांत–क्रि०वि० [सं० सुरत-अन्त] सम्भोग के पश्चात्, मैथुन के बाद।

सुरता–स्त्री० १ चित्तवृत्ति, बुद्धि। २ आत्मा। ३ लगन, ध्यान। ४ याद, स्मृति। ५ देखो 'सोता'। ६ देखो 'सुरत'। ७ देखो 'सुरति'।

सुरताझीलणी–स्त्री० एक राजस्थानी लोक गीत।

सुरति–स्त्री० [सं० सु+रति] १ जमकर किया जाने वाला उपभोग, अच्छा भोग। २ तसल्ली, सन्तोष। ३ अप्सरा देवांगना। ४ याद, स्मरण। ५ ध्यान, लगन। ६ चित्त वृत्ति, बुद्धि। ७ आत्मा। ८ मोक्ष, मुक्ति। ९ ज्ञान। १० भावना। ११ शब्द, ध्वनि, स्वर। १२ परमपद, परमधाम। १३ प्राण या प्राण वायु। १४ देखो 'स्मृति'। १५ देखो 'सूरत'। १६ देखो 'सुरत'।

सुरतिगोपणा (ना)–स्त्री० [सं० सुरतिगोपना] एक प्रकार की नायिका।

सुरतिवंत–वि० [सं० सुरतिवत्] कामातुर।

सुरती–स्त्री० १ तम्बाकू के पत्तों का चूरा। २ देखो 'सुरत'। ३ देखो 'सूरत'। ४ देखो 'सुरति'। ५ देखो 'सुरता'।

सुरतुर–पु० सुरतरु, कल्पवृक्ष।

सुरत्त–१ देखो 'सूरत'। २ देखो 'सुरति'। ३ देखो 'सुरत'।

सुरत्थ, सुरत्थी–देखो 'सुरथ'।

सुरत्रिय, सुरत्रिया, सुरत्री–स्त्री० [सं०] अप्सरा, परी, देवांगना।

सुरथ–पु० [सं०] १ पुराणानुसार स्वारोचिष मनवन्तर का एक राजा। २ राजा द्रुपद का एक पुत्र। ३ जनमेजय का एक पुत्र। ४ एक द्वीप का एक नाम। ५ एक सूर्यवंशी राजा। ६ शस्त्रों से सज्जित सुन्दर रथ व इस रथ पर चढ़ने वाला योद्धा।

सुरथांनक–पु० १ सुमेरु पर्वत। २ देखो 'सुरथाणा'।

सुरदार–पु० [सं०] देवदारु का वृक्ष।

सुरदुंदुभि–स्त्री० [सं०] देवताओं का नगाड़ा।

सुरदेव–पु० [सं०] जैनियों के भविष्यत्काल के दूसरे तीर्थंकर का नाम।

सुरदेवि, सुरदेवी–स्त्री० [सं० सुरदेवी] यशोदा के गर्भ से अवतार लेने वाली योगमाया।

सुरद्रोही–पु० [सं० सुर-द्रोहिन्] देवों का दुश्मन, दैत्य, दानव, राक्षस।

सुरधरम–पु० [सं० सुर-धर्मा] बृहस्पति।

सुरधि–स्त्री० १ सफाई, स्वच्छता, शुद्धि। २ शोधन, परिशोधन।

सुरधुनी–स्त्री० [सं० सुर-ध्वनि] गंगा नदी।

सुरधर्मरिपु–पु० [सं० सुरधर्म-रिपु] दैत्य, दानव राक्षस।

सुरनगर–देखो 'सुरनगर'।

सुरनरजयकारी–पु० वह घोड़ा जिसका सब शरीर श्वेत तथा एक कान श्याम वर्ण का हो।

सुरनाथरथ–पु० [सं०] इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

सुरनैज–पु० [सं० सुर-नदी-ज] भीष्म, गांगेय।

सुरप, (पत, पति, पती)–पु० [सं०] १ देवराज इन्द्र। २ विष्णु। ३ दुर्गा देवी। ४ डमरू के चतुर्थ भेद का नाम। ५ पार्वती। ६ आदि गुरु त्रिकल मात्रा का नाम। ७ डमरू के द्वितीय भेद का नाम।

सुरपतगुरु, सुरपतिगुरु–पु० [सं० सुरपतिगुरु] बृहस्पति।

सुरपतिचाप–पु० [सं०] इन्द्र धनुष।

सुरपतिसनय–पु० [सं०] १ इन्द्र का पुत्र जयंत। २ अर्जुन।

सुरपतिवाट–पु० इन्द्रासन।

सुरपती(ती)–देखो 'सुरपति'।

सुरराज, सुरराजा–पु० श्रीरामचन्द, श्रीराम।

सुरराय–पु० [सं०] कल्पवृक्ष देववृक्ष।

सुरवीर–पु० १ देवताओं के पूज्य। २ देखो 'सुरपी'।

सुरपुर–पु० [सं०] १ अमरावती, स्वर्ग, वैकुण्ठ। २ किसी विषय या बात की गुप्त चर्चा। जिक्र। ३ गुप्त मंत्रणा। ४ फुसफुसाहट, अस्पष्ट आवाज। ५ भनक। ६ खबर। ७ उड़ती खबर, अफवाह। ८ चक-चक। ९ चर्चा, बात, जिक्र। १० विचार-विमर्श, सलाह।

सुरपुरनाथ, सुरपुरनाह–पु० [सं० सुरपुरनाथ] इन्द्र।

सुरपोढ़नी–स्त्री० आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

सुरफांकताल–स्त्री० मृदंग की एक ताल।

सुरबांग–स्त्री० [सं० स्वर + फा० बांग] अजान की आवाज।

सुरभंग–पु० [सं० स्वरभंग] १ आवाज खराब हो जाने का एक रोग। २ उच्चारण में होने वाली बाधा। ३ साहित्य में एक सात्विक अनुभाव।

सुरभख–देखो 'सुरभिख'।

सुरभि–स्त्री० [सं० सुरभि] १ वसंत ऋतु। २ महक, सुगंध, खुशबू। ३ गौ, गाय। ४ पृथ्वी, धरती। ५ शराब,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मदिरा। ६ अष्ट मातृकाओं में से एक। ७ वन तुलसी। ८ एक प्रकार की सुगंधित घास। ९ साल वृक्ष की राल। १० गंधक। ११ कस्तूरी। १२ हरीतकी, हर्रे। -पु० १३ चैत्र मास, मधु मास। १४ चंदन। १५ पुष्पहार। १६ नारियल। १७ चंपक वृक्ष। १८ समी वृक्ष। १९ कदंब वृक्ष। २० जातिफल, जायफल। २१ मोतिया, बेला। २२ सुवर्ण। -वि० १ महकदार, खुशबूदार सुगंधित। २ मनोहर, सुन्दर। ३ आनन्ददायक, प्रिय। ४ चमकदार, चमकीला। ५ प्रेमपात्र। ६ प्रसिद्ध प्रतिष्ठित। ७ बुद्धिमान, पंडित, विद्वान। ८ पुण्यात्मा, नेक। ९ जवान, युवा।

सुरभिक्ष सुरभिक्ष-पु० [सं० सुरभिक्ष] १ वह समय जब वर्षा व अन्नादि की फसलें अच्छी हों, दुरभिक्ष का उल्टा। २ अधिक वर्षा।

सुरभिगंध-स्त्री० [सं०] सुगंध खुशबू।

सुरभितनय-पु० [सं०] १ बैल। २ सांड। ३ बछड़ा।

सुरभितन्या-स्त्री० [सं०] १ गाय, गौ। २ गाय की बछिया।

सुरभिमास-पु० [सं०] चैत्रमास, मधुमास।

सुरभी-देखो 'सुरभि'

सुरभुयस, सुरभुवण (न)-देखो 'सुरभवन'।

सुरभूषण, सुरभूसण-पु० [सं० सुर-भूषण] देवताओं के पहनने का मोतियों का हार जो एक हजार दानों का व चार हाथ लम्बा होता है।

सुरमेई, सुरम्मी-देखो 'सुरभि'।

सुरमंडप-पु० [सं०] देवालय, मंदिर।

सुरमंडल-पु० [सं० सुरमंडल] १ देव समाज, देवगण। २ देवताओं की सभा, मण्डली या गोष्ठी। ३ मिजराब से बजाया जाने वाला एक तार वाद्य।

सुरम-स्त्री० १ घोड़े की ललाट पर होने वाली एक भंवरी। (शुभ)। २ देखो 'सुरम्य'।

सुरमण-स्त्री० [सं० सुरमणम्] रतिक्रीड़ा।

सुरमणि (णी)-स्त्री० [सं०] चिंतामणि।

सुरमानो-वि० [सं० सुरमानिन्] अपने को देवता समझने वाला।

सुरमादानो-स्त्री० सुरमे की शीशी या डिबिया।

सुरमो-पु० [फा० सुर्मः] एक प्रकार का खनिज जिसका महीन चूर्ण आंख में अंजन की तरह डाला जाता है।

सुरम्य-वि० [सं०] अत्यन्त मनोरम, सुन्दर, रमणीक।

सुरयंद, सुरयंद्र, सुरयिंद-देखो 'सुरेंद्र'।

सुरयी-पु० बछड़ा, बच्छ।

सुररंग-पु० फूल, पुष्प।

सुरराख्व-पु० [सं० सुरर्षभ] इन्द्र।

सुरराण, सुरराणी-स्त्री० [सं० सुर-राज्ञी] १ पार्वती, गिरिजा। २ दुर्गा, देवी। ३ इन्द्राणी, शची।

सुरराइ, सुरराई, सुरराज-पु० [सं० सुर-राजा] १ इन्द्र। २ परमात्मा। -स्त्री० ३ देवी, दुर्गा, पार्वती। ४ पूर्व दिशा। ५ श्यामा पक्षी। ६ भैरवी। -वि० १ श्वेत❀। २ श्याम❀। —गज-पु० इन्द्र का हाथी ऐरावत। -वि० श्वेत❀। श्याम❀। —गुरु, गुरू-पु० बृहस्पति। -वि० पीत, पीला।

सुरराम-पु० [सं० स्वरराशि] मुख, मुंह।

सुररिखभ-देखो 'सुरराख्व'।

सुररिखभवन-पु० [सं० सुरर्षभवनं] स्वर्ग।

सुररिखभवन-पु० [सं० सुर-ऋषभ-वन] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ। २ नन्दनवन।

सुररिखव-देखो 'सुरराख्व'।

सुररिसी-पु० [सं० सुर-ऋषि] देवर्षि।

सुरलक-देखो 'सीवल'।

सुरलसिना-वि० श्वेत, सफेद❀।

सुरळा-पु० थूक।

सुरळियांमणा-वि० [सं० सुर+रा० रळियांमणा] १ कर्ण प्रिय, मधुर, मीठा। २ मनोहर, सुन्दर।

सुरळियो-पु० १ एक आभूषण विशेष। २ कान का आभूषण विशेष।

सुरवइ-पु० [सं० सुरपति] १ इन्द्र। २ देवता।

सुरवर सुरवरि-पु० [सं० सुरवर] देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र।

सुरवल्ली-स्त्री० तुलसी।

सुरवा-पु० [सं० स्वर] आवाज, कोलाहल शोर।

सुरवीण, सुरवीणू-स्त्री० [सं० स्वर-वीणा] एक प्रकार का तार वाद्य।

सुरवीथी-स्त्री० [सं०] नक्षत्रों का मार्ग।

सुरवीर-पु० [सं०] १ इन्द्र। २ देखो 'सूरवीर'।

सुरव्रतक-स्त्री० [सं० सुरव्रतक] अग्नि, आग।

सुरव्रिति-स्त्री० [सं० सुर-वृत्ति] देवपूजन, गणेश-पूजा।

सुरसंत-देखो 'सरस्वती'।

सुरसंपति, सुरसंपती-स्त्री० [सं० सुर सम्पति] कल्पवृक्ष।

सुरस-वि० [सं०] १ रसीला, रसदार। २ मधुर, मीठा ३ सुंदर, मनोहर। ४ स्वादिष्ट, सरस।

सुरसत (ती)-देखो 'सरस्वती'।

सुरसतजनक-पु० ब्रह्मा।

सुरसर, सुरसरि, सुरसरित, सुरसरिता, सुरसरी-स्त्री० [सं० सुरसरित्] गंगा नदी।

सुरसांमणी, सुरसांमिणी-स्त्री० [सं० सुर-स्वामिनी] पार्वती दुर्गा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरसा–स्त्री० [सं०] १ नागों की माता जिसने समुद्र पार जाते हनुमान का रास्ता रोका था। २ एक अप्सरा। ३ तुलसी। ४ ब्राह्मी। ५ दुर्गा।

सुरसाइ, सुरसाई–पु० [सं० सुर-स्वामिन्] १ इन्द्र। २ एक प्रकार का दान। ३ देखो 'सूरसाही'।

सुरसाखी–पु० [सं० सुर-शाखिन्] कल्पवृक्ष।

सुरसाज–पु० बृहस्पति।

सुरसाल–पु० [सं० सु-रसाल] १ अच्छे व मीठे आमों का वृक्ष व फल। २ स्वादिष्ट ऋतु फल।

सुरसिंधु–पु० [सं०] गंगा नदी।

सुरसुर (री)–स्त्री० १ फुसफुसाहट, सुरसुराहट। २ देखो 'सुरसरी'।

सुरसुराट, सुरसुराहट–स्त्री० १ खुजलाहट। २ गुदगुदी। ३ फुसफुसाहट।

सुरसेनप–पु० [सं० सुरसेनपः] देवताओं का सेनापति, स्वामि कार्तिकेय।

सुरस्यांयण, सुरस्यांमणी–देखो 'सुरसांमणी'।

सुरस्सती–देखो 'सरस्वती'।

सुरस्सा–देखो 'सरसा'।

सुरह, सुरहड, सुरहर, सुरहरि, सुरहरी, सुरहळ–देखो 'सुरभि'।

सुरहि, सुरही–स्त्री० १ बैलगाड़ी। २ देखो सुरभि'।

सुरही–वि० [सं० सुरभि + रा.प्र.प्रो] १ गाय का, गाय संबंधी। २ सुरभि संबंधी।

सुरांबर–पु० [सं० सुर-वरणम्] आकाश, नभ।

सुरांण–पु० [सं० सुर] १ देवगण, सुरगण। २ देखो 'सुराणा'।

सुरांतर–देखो 'सुरतर'।

सुरांथांण (थांणी थांन, थांनि)–देखो 'सुरथान'

सुरांपत, सुरांपति, सुरांपती–देखो 'सुरपति'

सुरांमुख–देखो 'सूरमुख'।

सुरांरांण, सुरांराज (राय, राव)–१ देखो 'सुरराज'। २ देखो 'सुलतांण' (न)।

सुरांलोक–देखो 'सुरलोक'।

सुरा–स्त्री० [सं०] १ शराब, मदिरा। २ अंगूरी शराब। ३ अप्सरा, देवांगना। ४ पानी, जल। ५ सर्प।

सुराई–१ देखो 'सुराही'। २ देखो 'सूराई'।

सुराक, सुराख–देखो 'सूराख'।

सुराग–पु० [सं० सु-राग] १ अत्यन्त गाढ़ा प्रेम (तु० सुराग) २ किसी गुप्त बात, रहस्य आदि जानने का सूत्र, इशारा, संकेत। ३ गूढ़ विषय को समझने की विधि। ४ पांव का चिह्न, खोज, निशान। ५ पता, खबर, ठिकाना। ६ तलाश, अनुसंधान। ७ जिज्ञासा। ८ देखो 'सूराख'।

सुरागाय–स्त्री० १ गायों की एक नस्ल। २ इस नस्ल की गाय जिसकी पूंछ के बाल सफेद होते हैं।

सुरागार–पु० [सं० सुरा-आगार] जहां मद्य बिकता हो, शराब खाना।

सुरागी–वि० अनुरक्त, आसक्त।

सुराड़ो–वि० (स्त्री० सुराड़ी) वह व्यक्ति या प्राणी जो भोजन या खाना जैसा मिले वैसा खा लेता हो व उसमें कमी नहीं बताता हो।

सुराचार–पु० [सं० सुर-आचार] १ देवताओं के आचार-विचार। २ रीति, ढंग।

सुराचारज–पु० [सं० सुर+आचार्य] देवताओं के गुरु बृहस्पति।

सुराज–पु० [सं०] १ श्रेष्ठ राजा का ऐसा शासन जिसमें प्रजा अमन चैन से रहती हो। २ देखो 'सुराज्य'।

सुराजा–पु० [सं०] श्रेष्ठ राजा प्रजापालन में उत्तम शासक।

सुराजीव–पु० [सं०] विष्णु।

सुराज्य–पु० [सं०] अच्छा राज्य या शासन जिसमें प्रजा सुख से रहती हो।

सुराट–पु० [सं०] सुरराज, इन्द्र सुरपति।

सुराड़ी, सुराड़ी–पु० [देश०] (स्त्री० सुराड़ी, सुराड़ी) खाद्य पदार्थ का स्वाद लिये बिना उदरपूर्णार्थ खाने वाला व्यक्ति या पशु।

सुराति–देखो 'सूरता'।

सुराद–पु० [सं० सुरादय] सूर्य, रवि।

सुराद्रि–पु० [सं०] सुमेरु पर्वत।

सुराधिप–पु० [सं० सुर-अधिप] इन्द्र, सुरराज।

सुराधीस–पु० [सं० सुर-अधीश्वर] इन्द्र, सुरपति।

सुरानक–पु० [सं०] देवताओं का नगाड़ा।

सुरानीक–स्त्री० [सं०] देवताओं की सेना।

सुरापगा–स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

सुरापत (पति, पती)–देखो 'सुरपति'।

सुरापांन–पु० [सं० सुरापान] १ शराब पीने की क्रिया या भाव; मद्यपान। २ शराब, मदिरा। ३ शराब के साथ खाये जाने वाले चटपटे पदार्थ।

सुरापात्र–पु० १ मदिरा रखने का पात्र। २ मदिरा पीने का पात्र।

सुराब्धि–पु० [सं०] सुरा का समुद्र, मदिरा का सागर।

सुरामुख–देखो 'सूरमुख'।

सुरायण–पु० बहादुर दल, योद्धा-समूह।

सुरार, सरारि, सुरारी–पु० [सं० सुर + अरि] १ देवताओं का शत्रु; असुर; दैत्य, दानव, राक्षस। २ एक प्रकार की बरसाती घास।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुराळ–पु० देवता ।
सुरालय–पु० [सं०] १ देवताओं के रहने का स्थान, मंदिर, देवालय । २ स्वर्ग, वैकुण्ठ । ३ सुमेरु पर्वत । ४ शराब-खाना ।
सुराळी–देखो 'सुरावळी' ।
सुराव–पु० [सं०] १ एक प्रकार का घोड़ा । २ उत्तम ध्वनि ।
सुरावट–स्त्री० [सं० शूरत्व] बहादुरी, शूरता ।
सुरावळि (ळी)–स्त्री० [सं० स्वरावली] १ गायन में स्वरों का थाट, स्वर पंक्ति । [सं० सुर-अवलि] २ देवताओं की पंक्ति ।
सुरावास–पु० सुमेरु पर्वत ।
सुरावाहि–पु० [सं०] शराब का समुद्र ।
सुरासण–पु० इन्द्रासण ।
सुरासमुद्र–पु० [सं०] मदिरा सागर ।
सुराही–स्त्री० [अ०] १ मिट्टी या धातु का बना एक जल पात्र विशेष जिसका मुंह छोटा व पेट गोलाकार बड़ा होता है । २ अच्छा राहगीर ।—बार–वि० सुराई की तरह बना ।
सुरिंद–देखो 'सुरेंद्र' ।
सुरिंदी–पु० सारंगी जाति का एक तार वाद्य (गज) ।
सुरिंद्र, सुरिंद्रंद्र, सुरिंद्रेंद्र–देखो 'सुरेंद्र' ।
सुरिज, सुरिजि, सुरिजी–देखो 'सूरज' ।
सुरित–स्त्री० [सं० सु-ऋतु] १ अच्छी ऋतु । २ देखो 'सुरति' । ३ देखो 'सूरत' ।
सुरितांण (णि)–देखो 'सुलतांण' ।
सुरियं, सुरियंद–पु० १ वीर, योद्धा । २ देखो 'सुरेंद्र' ।
सुरियण–देखो 'सुरगण' ।
सुरिहि–देखो 'सुरभि' ।
सुरींद, सुरींद्र–देखो 'सुरेंद्र' ।
सुरी–स्त्री० [सं० सुरभि:] १ सीमा या सरहद का पत्थर । २ गोचर भूमि की सीमा का पत्थर । ३ देवी, दुर्गा । ४ देवांगना, अप्सरा ।
सुरीत, सुरीति, सुरीतो–स्त्री० [सं० सुरीति] अच्छी रीति, ढंग या तरीका ।
सुरीयांण–वि० शूरवीर, बहादुर ।
सुरीलो–वि० [सं०] कर्णप्रिय, मधुर, मीठी ।–स्त्री० मधुर आवाज, ध्वनि ।
सुरीलो–वि० (स्त्री० सुरीली) १ कर्णप्रिय, मधुर, मीठा । २ मधुर या मीठे स्वर वाला ।
सुरीस–पु० [सं० सुर+ईश] इन्द्र सुरेन्द्र ।
सुर–देखो 'सुर' ।–गुरु, गुरू=सुरगुरु' ।
सुरुचि–स्त्री० [सं०] १ सद्इच्छा, उत्तम रुचि । २ ध्रुव की सौतेली माता का नाम ।–वि० १ श्रेष्ठ विचार या रुचि वाला । २ स्वाधीन, स्वतंत्र ।
सुरुतांम–पु० समस्त देवगण ।
सुरुद–पु० [सं० सुहृद] मित्र, दोस्त ।
सुरू–देखो 'सुर' ।
सुरूप–वि० [सं०] १ सुन्दर, मनोहर, खूब सूरत । २ समान, सदृश्य । ३ पण्डित, विद्वान्, बुद्धिमान । ४ कवि । –पु० १ अच्छा रूप, सुन्दर रूप । २ प्रकृति, स्वभाव । ३ ढांचा, ढोस । ४ शिव । ५ कामदेव । ६ तरह, प्रकार, किस्म । ७ देखो 'स्वरूप' ।
सुरूपा–स्त्री० पुराणानुसार एक गाय ।–वि० रूपवती, सुन्दरी ।
सुरेंगलो–देखो 'सुरेंगलो' ।
सुरेंद्र–पु० [सं०] १ सुरराज, इन्द्र । २ विष्णु । ३ सूर्य, रवि । ४ देवगण, देवता । –चाप–पु० इन्द्रधनुष ।—लोक–पु० इन्द्रलोक ।
सुरे–पु० १ स्वरवाला वाद्य । २ देखो 'सुरै' ।
सुरेगाय–स्त्री० १ गायों की एक नस्ल । २ इस नस्ल की गाय जिसकी पूंछ के बालों का चंवर बनता है ।
सुरेली–स्त्री० एक प्रकार की घास ।
सुरेस–पु० [सं० सुरेश] १ सुरराज इन्द्र । २ विष्णु, ईश्वर । ३ कृष्ण । ४ शिव । ५ लोकपाल ।
सुरेसी–स्त्री० [सं० सुरेशी] दुर्गा, देवी ।
सुरेसुर, सुरेस्वर–पु० [सं० सुरेश्वर] १ देवताओं का स्वामी, इन्द्र । २ विष्णु, ईश्वर । ३ गजानन, गणेश ।
सुरेश्वरी–स्त्री० [सं० सुरेश्वरी] १ देवताओं की स्वामिनी, दुर्गा । २ लक्ष्मी ।
सुरै–देखो 'सुरै' ।
सुरैंगळो–पु० लोकगीतों में लय का शब्द ।–वि० सुन्दर, खूब सूरत ।
सुरै–स्त्री० [सं० सुरभि] १ गाय, गौ । २ ब्राह्मणों, पुजारियों आदि को दान में दी गई भूमि । ३ उक्त भूमि की सीमा पर रोपा गया पत्थर जिस पर गाय की आकृति अंकित हो । ४ गोचर भूमि । [सं० सुर] ५ देवता, सुर ।
सुरोतरि–देखो 'सुरतरु' ।
सुरोदय–पु० [सं० सूर्योदय] १ सूर्योदय । २ स्वरोदय ।
सुरोमा–वि० जिसकी रोमावली सुन्दर हो ।
सुरेय–देखो 'सुरेंद्र' ।
सुलंक–स्त्री० सुन्दर कटि, श्रेष्ठ कटि ।–वि० सुन्दर कटिवाली ।
सुलंकी–वि० सुन्दर कटिवाली, सुन्दरी ।
सुलंब–देखो 'सुलंब' ।
सुलंभ–देखो 'सुलंभ' ।
सुलक्ष सुलक्षण–पु० [सं० सुलक्षण] १ किसी के शरीर पर होने वाले शुभ चिह्न या लक्षण । २ अच्छा गुण, आदत,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यवहार। –वि० १ विद्वान, पंडित, कवि। २ सुन्दर, मनोहर।

सुलक्षणो–वि० [सं० सुलक्षण] (स्त्री० सुलक्षणी) १ भाग्य संबंधी अच्छे लक्षणों वाला, शुभ लक्षणा, भाग्यशाली। २ अच्छे स्वभाव व गुण वाला। ३ चतुर, निपुण व व्यवहार कुशल। ४ सुन्दर, मनोहर। ५ विद्वान, पंडित। ६ कवि। ७ सीधा, सरल।

सुलक्खण–देखो 'सुलक्षण'।

सुळक्खु, सुलक्खणो–देखो 'सुलक्षणो'। (स्त्री० सुलक्खणी)

सुलक्खण, सुलक्ष्यण–देखो 'सुलक्षण'।

सुलगणो–वि० (स्त्री० सुलगणी) १ शीघ्र जलने वाला, ज्वलनशील। २ भली प्रकार अंकुरित होने वाला।

सुळगणो (बो)–देखो 'सिळगणो' (बो)।

सुळगाणो (बो), सुळगावणो (बो)–देखो 'सिळगाणो' (बो)।

सुलग्न, सुलग्नो–पु० [सं० सुलग्न] ज्योतिष के अनुसार श्रेष्ठ लग्न।–वि० श्रेष्ठ लग्न वाला।

सुलच्छण–देखो 'सुलक्षण'

सुलच्छणो–देखो 'सुलक्षणो'।

सुलच्छ, सुलच्छण–देखो 'सुलक्षण'।

सुळझ, सुळझण–स्त्री० १ सुलझने की क्रिया या भाव। २ उलझन का विपर्याय।

सुळझणो (बो)–क्रि० १ किसी प्रकार की उलझन से मुक्त होना, छुटकारा पाना। २ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटना, समस्या का समाधान होना। ३ किसी गूढ़ विषय का आशय समझ में आना, समझना। ४ भ्रम का निवारण होना, भ्रम मिटना। ५ रस्सी डोरे, तार आदि की गुत्थियां मिटना, गुत्थी खुलना। ६ झगड़े का निपटारा होना, फैसला होना। ७ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त होना।

सुळझाड़, सुळझाड़ो–पु० १ जब किसी प्रकार की उलझन न हो, सुलझी हुई स्थिति। २ साफ-सफाई, स्पष्टता, ३ फैसला, निपटारा। ४ किसी समस्या का समाधान।

सुळझाणो (बो), सुळझावणो (बो)–क्रि० १ किसी प्रकार की उलझन दूर करना, उलझन मिटाना। २ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटाना, समस्या का समाधान करना। ३ किसी गूढ़ विषय के आशय को समझाना, स्पष्ट करना, व्याख्या करना। ४ भ्रम निवारण करना, दूर करना। ५ किसी तार, डोरे, रस्सी आदि में पड़ी गुत्थियों को निकालना, गुत्थियां खोलना, सुलझाना। ६ किसी प्रकार के बंधन से मुक्त करना। ७ झगड़ा निपटाना, फैसला करना।

सुलटो, सुल्टो–वि० (स्त्री० सुलटी) १ सीधा, सौंधा, औंधे का विपर्याय। २ उचित, सीधा, ठीक। ३ उल्टे का विपरीत। ४ प्रत्यक्ष। ५ जिसमें कोई घेराव न हो, जो टेढ़ा-मेढ़ा न हो।

सुळणो (बो), सुलणो (बो)–क्रि० १ लकड़ी या अनाज आदि में कीड़े पड़ना, कीड़ों द्वारा खाया जाना। २ अधिक दिन तक पड़ी वस्तु का खराब होना, बेकार होना। ३ कमजोर होना।

सुळतांण, सुलतांण–पु० [फा० सुल्तान] १ बादशाह, सम्राट। २ शासक।

सुळतांणी, सुलतांणी–स्त्री० [फा० सुल्तानी] बादशाहत, शासन।

सुलता–देखो सलिता'।

सुलप–वि० [सं० स्वल्प] सूक्ष्म, छोटा।

सुळफ, सुलफ–वि० १ श्वेत, सफेद। २ साफ, सुन्दर। ३ देखो 'सुलफो'।

सुळफसिला–स्त्री० स्फटिकशिला।

सुलफी–स्त्री० बर्दी या तम्बाखू पीने की चिलम।

सुलफेबाज–वि० [फा० सुल्फ-बाज] गांजा या चरस पीने का आदी।

सुलफो–पु० [फा० सुल्फ] तम्बाखू या गांजे की तरह चिलम में भर कर पीने का एक नशीला पदार्थ।

सुलभ, सुलभ–वि० [सं० सुलभ] १ जो सहज ही उपलब्ध हो, जो आसानी से मिल सके। २ सहज, आसान, सुगम। ३ उपयोगी, लाभकारी। ४ सीधा, सयाना।

सुलभता–स्त्री० [सं०] १ सरलता, आसानी, सुगमता। २ उपयोगिता।

सुलभो–देखो 'सुलभ'।

सुललित–वि० [सं०] अत्यन्त सुन्दर।

सुललोतर–पु० शुभ लक्षण।

सुलव–पु० [सं० शुल्व] तांबा, ताम्र। –वि० सूक्ष्म, बारीक।

सुळसुळ, सुळसुळाहट–स्त्री० १ कानाफूसी, फुसफुसाहट। २ अफवाह, जनश्रुति।

सुलह–स्त्री० [फा०] १ संधि, समझौता। २ मेल-मिलाप। –नामो–पु० संधिपत्र।

सुलाणो (बो), सुलावणो (बो)–क्रि० १ शयन कराना, सुलाना, सोने के लिये प्रेरित करना। २ मैथुन या संभोग के लिये साथ में लिटाना।

सुळाबक–देखो 'साळाबक'।

सुलितांण (न)–देखो 'सुळतांण'।

सुळियोड़ो–वि० १ जिसमें कीड़े पड़ गये हों, कीड़ों द्वारा खाकर खोखला किया। २ निरर्थक, बेकार।

सुलुक–देखो 'सलूक'।

सुलेक–पु० [सं०] एक आदित्य का नाम।

सुलेख–पु० [सं०] सुन्दर लिखावट, अच्छे अक्षर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुलेमांनी–देखो 'सुलहनामी'।
सुलेमानी–पु० १ सफेद आंखों वाला घोड़ा। २ एक प्रकार का पत्थर। ३ एक प्रकार का नमक विशेष।
सुलै–देखो 'सुलह'।
सुलोक–पु० [सं०] १ स्वर्ग या वैकुण्ठ। २ अच्छा व भला आदमी।
सुलोचन, सुलोचन–पु० [सं० सुलोचन] १ मृग, हरिन। २ रुक्मिणी के पिता का नाम। ३ अच्छे व सुन्दर नेत्र। —वि० अच्छे नेत्रों वाला।
सुलोचना (ना)–स्त्री० [सं० सुलोचना] १ एक अप्सरा का नाम। २ रावण के पुत्र मेघनाद की पत्नी। ३ अच्छे नेत्रों वाली स्त्री।
सुलोमा–वि० [सं०] जिसकी रोमावली सुन्दर हो।
सुलोह, सुलोहक, सुलोहित–पु० [सं० सुलोहक] पीतल।
सुलोहिता–स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
सुलोही–पु० एक ऋषि का नाम।
सुळी–पु० १ किसी लकड़ी या धनाज में लगने वाला कीड़ा, घुन। २ इस प्रकार का घुन लगने की अवस्था। ३ शूल, दर्द। ४ बीमारी, रोग।
सुल्तान–देखो 'सुल्तान'।
सुल्तानी (नी)–देखो 'सुलतानी'।
सुल्सह–देखो 'सुलह'।
सुल्ली–पु० १ मांस के योग से बना व्यंजन, विशेष। २ देखो 'सूळी'
सुवक–वि० सुन्दर व मनोहर।
सुवंछक–स्त्री० सखी, सहेली। –वि० शुभचिंतक, शुभेच्छु।
सुवंस–पु० [सं० सुवंश] १ अच्छा व श्रेष्ठ वंश, उच्च कुल। २ वसुदेव का एक पुत्र।
सुव–देखो 'सुत'।
सुवक्ता–वि० [सं०] व्याख्यान देने में चतुर, वाक्पटु, अच्छा वक्ता।
सुवक्षा–स्त्री० १ विभीषण की माता का नाम। २ सुन्दर वक्षस्थल वाली स्त्री।
सुवखत–स्त्री० अच्छा समय शुभ अवसर।
सुवग–पु० डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।
सुवड़–पु० [सं० सुवट] वट वृक्ष।
सुवच, सुवचन–पु० [सं० सुवचन, सुवचस्] अच्छा वचन, सत्य वचन।
सुवचनी–वि० १ अच्छा वक्ता, वाक्पटु। २ मृदुभाषी।
सुवटियो, सुवटो–देखो 'सूवो'।
सुवण–देखो 'स्वर्ण'।
सुवणी (वी)–देखो 'सूवणी' (वी)।
सुवदन–वि० [सं०] जिसका मुख सुन्दर हो, सुमुख।
सुवदना–स्त्री० [सं०] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी।
सुवद्द–पु० तीर, बाण।
सुवधि–स्त्री० अच्छा समय या अवधि।
सुवन–पु० १ सूर्य, रवि। २ चन्द्रमा, शशि। ३ अग्नि, आग। ४ पुत्र, बेटा, सुत।
सुवन्न–१ देखो 'सुवरण'। २ देखो 'सुवन'।
सुवप, सुवपि, सुवपी सुवपु–पु० [स० सुवपु] सुन्दर शरीर। –वि० सुन्दर शरीर वाला।
सुवयण–पु० [सं० सुवचन] १ उत्तम व श्रेष्ठ वचन। २ मधुर व मीठे वचन।
सुवर–वि० [सं०] सुन्दर व श्रेष्ठ। –पु० १ पति, खाविंद। २ श्रेष्ठवर, उत्तम वरदान। ३ सम्मुख या सामने करने की क्रिया। ४ देखो 'सूवर'।
सुवरजित–पु० ऐसा घोड़ा जिसके तीन पैर सफेद व शिर में तिलक हो।
सुवरण–पु० [सं० सु-वर्ण] १ अच्छा रंग-रूप। २ अच्छा कुल या जाति। ३ काव्य में शुभ माने-जाने वाले वर्ण, अक्षर। ४ सुन्दर अक्षर। ५ राजा दशरथ का एक मन्त्री। ६ कंचन, सोना। ७ एक वृक्ष विशेष। ८ धन, सम्पत्ति।
सुवरणक–पु० एक प्रकार का भाला या सांग।
सुवरणकार–पु० [सं० स्वर्णकार] सुनार, स्वर्णकार।
सुवरणकेतकी–स्त्री० लाल केतकी।
सुवरणगिर (गिरि, गिरी)–पु० [सं० स्वर्णगिरि] १ सुमेरु पर्वत। २ लंका का पर्वत। ३ जासौर के पर्वत का नाम।
सुवरणधेन, सुवरणधेनु–स्त्री० [सं० स्वर्णधेनु] दान के लिये बनवाई गई सोने की गाय।
सुवरणचूड (चूडक)–पु० सोने का एक आभूषण विशेष।
सुवरणपंख–पु० [सं० स्वर्णपक्ष] गरुड़।
सुवरणबजर (वज्र)–पु० एक प्रकार का भाला, सांग।
सुवरणा–स्त्री० [सं० सु+वर्णा] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
सुवरण–देखो 'सुवरण'।
सुवरणचूड (चूडक)–देखो 'सुवरणचूडक'।
सुवरन–देखो 'सुवरण'।
सुवराणो (वो), सुवरावणो (वो), सुवरावणो (वो)–क्रि० १ सुधरवाना, ठीक करवाना। २ बालों को कटाकर ठीक कराना या कंघी करके संवराना। ३ सजवाना, सज्जित कराना। ४ दाढ़ी बनवाना। ५ देखो 'संवराणो' (वो)।
सुवरियो–देखो 'सूवर'।
सुवस–पु० [सं०] अच्छा या श्रेष्ठ निवास, आवास। –वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ। २ सीधा, सरल। ३ सुव्यवस्थित।
सुवह–वि० योद्धा, वीर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुवहू–स्त्री० [सं० सुवधू] पुत्र वधू ।
सुवां–क्रि० वि० तक, पर्यन्त ।
सुवाणणी (बो)–देखो 'सुवाणी' (बो) ।
सुवाणी–स्त्री० [सं० सु+वाणी] १ सरस्वती, शारदा । २ श्रेष्ठ व उत्तम वाणी ।
सुवाणो–वि० (स्त्री० सुवाणी) १ सुवक्ता, अच्छा वक्ता । २ मधुर भाषी, मृदुभाषी । ३ देखो 'सुहाणो' ।
सुवान–पु० [सं० श्वान] कुत्ता ।
सुवाई–स्त्री० [सं० सु+वायु] १ शुद्ध एवं शीतल हवा, अच्छी हवा । २ सुलाने की क्रिया या भाव ।
सुवाक्य–पु० [सं०] सुन्दर वाक्य । –वि० सुन्दर वाक्य बोलने वाला, सुवक्ता ।
सुवाग–देखो 'सुहाग' ।
सुवागण–देखो 'सुहागण' ।
सुवागवाळ–देखो 'सुहागवाळ' ।
सुवागी–पु० १ सुन्दर पहनावा, सुन्दर वेश । २ देखो 'सुहागी' ।
सुवाड़णी (बो)–देखो 'सुवाणी' (बो) ।
सुवाड़ी–स्त्री० [सं० सूता] सद्य प्रसूता गाय, भैंस आदि ।
सुवाड़ीजाय–स्त्री० दूध-पीते बच्चे की बारात ।
सुवाट–स्त्री० अच्छी राह, अच्छा मार्ग ।
सुवाणी–देखो 'सुहाणो' ।
सुवाणी (बो)–क्रि० १ सोने के लिये प्रेरित करना, सुनाना । २ सुलाना, लिटाना । ३ बच्चे को थपकी देकर सुलाना । ४ अपने साथ लिटाना, पास में लिटाना, हमबिस्तर करना । ५ भार गिराना । ६ विश्राम या आराम कराना । ७ पटकना । ८ देखो 'सुहाणो' (बो) ।
सुवाद–देखो 'स्वाद' ।
सुवाद्य–पु० श्रेष्ठ व उत्तम वाद्य ।
सुवापी–स्त्री० जर्दे के साथ चूना मिला कर खाने योग्य बनाने की क्रिया ।
सुवायंत–स्त्री० शान्ति, तसल्ली ।
सुवाय, सुवायो–देखो 'सवायो' ।
सुवार–क्रि०वि० [सं० श्वः] १ आने वाला कल, आगामी दिवस । २ प्रातःकाल, सवेरा । ३ देखो 'संवार' । ४ देखो 'सवार' ।
सुवारणो(बो)–क्रि० १ तराशना । २ देखो 'सवारणो' (बो) ।
सुवारथ–देखो 'स्वारथ' ।
सुवारथी–देखो 'स्वारथी' ।
सुवारां, सुवारि, सुवारी, सुवारे, सुवारै–क्रि०वि० [सं० श्वः] कल । –पु० १ आने वाला अगला दिन, कल । २ प्रातः काल ।
सुवाळ–स्त्री० सुन्दरबाला, सुबाला ।
सुवाल–देखो 'सवाल' ।
सुवालख–देखो 'सवालख' ।
सुवाय–वि० उत्तम श्रेष्ठ ।
सुवावड़–पु० १ प्रसव के बाद खाये जाने वाले पौष्टिक पदार्थ । २ प्रसव के बाद स्नान-शुद्धि तक का समय ।
सुवावणो–देखो 'सहाणो' ।
सुवावणो (बो)–देखो 'सुहाणो' (बो) ।
सुवास–स्त्री०[सं० सु-वास] १ सुगंध, महक, खुशबू । २ पोशाक, वेशभूषा । ३ निवास, आवास । ४ डेरा, पड़ाव । ५ स्थान, जगह । ६ घर, मकान । ७ अच्छा पड़ोस । ८ शिवजी का एक नामान्तर । ९ श्वास सांस ।
सुवासणी, सुवासणो–देखो 'सवासणी' (णो)
सुवासमंद–पु० कदम ।
सुवासव–पु० चंदन ।
सुवासि–देखो 'सुवास' ।
सुवासिण–देखो 'सुवासणी' ।
सुवासिणि (णी)–वि० १ खुशबूदार, सुगंधित । २ देखो 'सवासणी' ।
सुवासी–वि० [सं० सुवासिन्] १ किसी अच्छे मकान या स्थान में रहने वाला । २ देखो 'सुवास' ।
सुवाह–पु० [सं०] अच्छा घोड़ा, अच्छी नस्ल का अश्व ।
सुवि–अव्य० सभी, सब, समस्त ।
सुविख्यात–वि० [सं०] जो अच्छे गुण, योग्यता व चरित्र के लिये प्रसिद्ध हो, प्रतिष्ठित ।
सुविग्य–वि० [सं० सुविज्ञ] १ पंडित, विद्वान । २ अच्छा अनुभवी । ३ बुद्धिमान, चतुर ।
सुविचार–पु० अच्छा व उत्तम विचार, नेक इरादा ।
सुविधा–स्त्री० [सं०] १ आराम, सुख । २ काम करने या रहने की ऐसी व्यवस्था जिसमें कोई कष्ट या दिक्कत मालूम न पड़े ।
सुविनीत–वि० [सं०] १ विनम्र, बहुत ही नम्र । २ सुशिक्षित ।
सुविसाल–वि० [सं० सुविशाल] जो अत्यन्त बड़ा तथा भव्य हो ।
सुविसाला–स्त्री० [सं० सुविशाला] स्कन्द की अनुचरी एक मातृका ।
सुविहाण–पु० शुभ सवेरा, उत्तम दिन ।
सुविहि–स्त्री० [सं० सुविधि] अच्छी विधि, सुविधि ।
सुविहित–वि० सुव्यवस्थित ।
सुवीर–पु० [सं०] १ स्कन्द का एक नाम । २ शिव का एक नामान्तर । ३ उत्तम व श्रेष्ठ योद्धा । ४ देखो 'सौवीर' ।
सुवीरक–देखो 'सौवीरक' ।
सुवेण–पु० सुन्दर व मृदु वचन ।
सुवेता–पु० [सं० सवितृ] सूर्य, सूरज ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुवेध–वि० १ पंडित, विदग्ध। २ रसिक। [सं० शान्त] विनीत।

सुवेल–पु० [सं० सुवेलः] १ लंका के पास का एक पर्वत जिस पर श्रीराम ने सैन्य शिविर लगाया था। –स्त्री० २ सुन्दर लता।

सुवेलड़ी–स्त्री० सुन्दर लता, वल्लरी।

सुवेळा–स्त्री० शुभ वेला, अच्छा समय।

सुवेस–पु० [सं० सुवेश] सुन्दर वेश। –वि० स्वरूपवान, सुन्दर।

सुवै–क्रि०वि० तक, पर्यन्त।

सुवैण–स्त्री० [सं० सुवेणि] १ किसी स्त्री की सुन्दर चोटी, सुन्दर वेणी। २ मित्रता, दोस्ती। ३ देखो 'सुवेण'।

सुवैन–पु० सूरज।

सुवोरोग–पु० सूतिका रोग।

सुवौ–पु० [सं० शुक] १ तोता, कीर, सुग्गा, शुक। २ प्रसव कालीन समय, सूतक। ३ देखो 'सुवो'। ४ देखो 'सूवौ'।

सुव्रख–पु० [सं० सु-वृक्ष] पीपल का वृक्ष।

सुव्रत–पु० [सं०] १ उत्तम व श्रेष्ठ व्रत। २ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ७८ वां ग्रह। ३ जैनियों के भविष्यत् काल के ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम।

सुव्रन–देखो 'सुवरण'।

सुव्रिंद–पु० [सं० सुर-वृन्द] १ इन्द्र। २ देवगण।

सुव्रीड़णो (बो)–क्रि० लज्जित होना, संकुचित होना।

सुव्विसाल–देखो 'सुविसाल'।

सुसंग–पु० १ अच्छा संग, उत्तम संगति। २ सत्संग।

सुसगत–वि० [सं०] युक्तियुक्त, उचित; ठीक। –स्त्री० अच्छी सोहबत या संगति।

सुसंगति–स्त्री० अच्छी संगत, सत्संग।

सुसंधि–पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा।

सुस–१ देखो 'ससा'। २ देखो 'सूंस'।

सुसकणो (बो)–देखो 'ससकणो' (बो)।

सुसकार (री)–स्त्री० १ मुंह से निकलने वाली सी-सी ध्वनि। २ ध्वनि, आवाज। ३ देखो 'सिसकारी'।

सुसणो (बो)–क्रि० १ सिकुड़ना, संकुचित होना। २ सूखकर कम होना, सोखा जाना।

सुसत–पु० १ सुख, शांति, कुशल-मंगल। २ सत्य, सच्च। ३ देखो 'सुस्त'।

सुसता, सुसताई, सुसती–स्त्री० [फा० सुस्ती] १ शांति, तसल्ली। २ उदासी, खिन्नता। ३ आलस्य, प्रमाद।

सुसते, सुसतै–क्रि० वि० धीरे, शनैः।

सुसतो–देखो 'सुस्त'।

सुसद्द–देखो 'सुसबद'।

सुसनंद–पु० [सं० श्वसन्-नंदन] हनुमान।

सुसब–स्त्री० [सं० सु-छवि] सुन्दरता, छवि।

सुसबद, सुसबद्द–पु० [सं० सु+शब्द] १ कीर्ति, यश, बड़ाई, २ अच्छा व शुभ शब्द। ३ मधुर वचन।

सुसमय–पु० अच्छा समय या अवसर।

सुसमा–स्त्री० [सं० सुषमा] १ सुन्दरता, शोभा, छवि। २ मंद मुस्कराहट, मृदु हास्य। [सं० सुष्म] ३ अग्नि।

सुसमाथ–वि० सामर्थ्यवान, समर्थ।

सुसमित–वि० [सं० सुस्मित] १ मुदित, मुस्कराता हुआ २ प्रफुल्लित।

सुसमो–देखो 'ससमो'।

सुसर–पु० [सं० सु-स्वर] १ मधुर स्वर। २ छप्पय छन्द का ३६वां भेद। ३ देखो 'ससुर'। ४ देखो 'सुसरि' ५ देखो 'सुसिर'।

सुसरनंद–पु० हनुमान।

सुसरम, सुसरमा–पु० [सं० सुशर्मा] महाभारत युद्ध में कौरव पक्षीय एक राजा।

सुसराळ–पु० [सं० श्वशुर-आलय] श्वशुर का घर, ससुराल।

सुसरि–स्त्री० [सं० सु+सरित्] १ सुन्दर हार, सुन्दर लड़ी या माला। [सं० सुरसरी] २ गंगा नदी। ३ तालाब, सर। –क्रि०वि० १ मधुर व मीठे स्वर में। २ देखो 'सुसिर'।

सुसरी–देखो 'ससुर'।

सुसलो, सुसल्यो–देखो 'सस'।

सुसवद–पु० कीर्ति, यश।

सुसवद, सुसवाद–वि० [सं० सु-स्वाद] स्वादिष्ट, जायकेदार।

सुसांत–वि० [सं० सु-शांत] अत्यन्त शान्त, स्थिर, गंभीर।

सुसा–देखो 'ससा'।

सुसाध्य–वि० [सं०] जिसे सरलता से पूर्ण किया जा सके। सुखसाध्य।

सुसार–पु० कमल।

सुसाणो (बो), सुसावणो (बो)–क्रि० संकुचित करना, सिकोड़ना, सिकुड़ाना।

सुसिख–स्त्री० [सं० सुशिख] १ अग्नि का एक नाम। [सं० सुशिखा] २ सुन्दर वेणी, चोटी। [सं० सुशिष्य] ३ अच्छा व गुणी शिष्य।

सुसियो–देखो 'सस'।

सुसिर–वि० [सं० सुशिर] जिसका शिर सुन्दर हो। –पु० [सं० सुषिर] १ बेंत। २ बांस। ३ अग्नि। ४ एक प्रकार का वाद्य।

सुसीतळ–वि० [सं० सु-शीतल] अत्यन्त ठंडा, शीतल।

सुसीम–स्त्री० सरदी, शीत।

सुसीर–पु० चन्द्रमा, चांद।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुसील, सुसील–वि० [सं० सु-शील] १ उत्तम स्वभाव वाला, सज्जन, भला। २ उत्तम चरित्रवाला, चरित्रवान, सच्चरित्र। ३ सरलचित्त, सीधा-सादा, भोला-भाला। ४ विनीत, नम्र।

सुसीलता–स्त्री० सुशील होने की अवस्था या भाव, सज्जनता।

सुसीला–स्त्री० [सं० सुशीला] १ श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक। २ यमराज की पत्नी का नाम। ३ सुदामा की पत्नी का नाम। ४ देवी, दुर्गा। ५ एक नदी का नाम।

सुसुक्षा–स्त्री० आग।

सुसुप्त–वि० [सं० सुषुप्त] १ प्रगाढ़ निद्रा में सोया हुआ, निद्रित। २ अचेतन, बेहोश ३ लकवा मारा हुआ, सुन्न।

सुसुप्ति, सुसुप्ती, सुसुप्ति, सुसुप्ती–स्त्री०[सं० सुषुप्ति] १ गहरी नींद, प्रगाढ़ निद्रा। २ अचेतनता, जड़ता, अज्ञानता। ३ पातंजल दर्शन के अनुसार चित्त की एक अनुभूति। ४ वेदान्त के अनुसार जीव की अज्ञानावस्था।

सुसुम्ण–स्त्री० [सं० सुषुम्णः] १ सूर्य की मुख्य किरणों में से एक। २ देखो सुसुम्णा'।

सुसुम्णा–स्त्री० [सं० सुषुम्णा] १ शरीर की नौ प्रमुख नाड़ियों में से एक। २ देखो 'सुसुम्णा'।

सुसुश्रुत–वि० [सं० सुश्रुत] १ अच्छी तरह सुना हुआ। २ वेद विद्या में निपुण। ३ प्रसिद्ध।

सुसेण–पु० [सं० सुषेण] १ भगवान विष्णु का एक नाम। २ सुग्रीव का वैद्य एक वानर।

सुसेत–वि० [सं० सु-श्वेत] श्वेत, उज्ज्वल, शुभ्र, चमकीला।

सुसेधकी–स्त्री० [सं०] सिंध देश की अच्छी घोड़ी।

सुसोभित–वि० [सं० सुशोभित] १ शोभायमान, शोभित। २ सुन्दर, मनोहर।

सुसोहणो (णी)–क्रि० शोभायमान होना, शोभित होना।

सुसोहत, सुसोहित–देखो 'सुसोभित'।

सुसौ–पु० शशक, खरगोश।

सुसोभ–स्त्री० [सं० सुशोभा] शोभा, आभा, कान्ति, छवि।

सुस्क–वि० [सं० शुष्क] १ जिसमें किसी प्रकार की नमी न हो, तरलता न हो, खुश्क, सूखा। २ जिसमें कोई रस न हो, नीरस। ३ विरक्त, उदास। ४ सूना हुआ। ५ कृश, दुबला। ६ झूठा, बनावटी। ७ रोता, खाली। ८ व्यर्थ, निरर्थक। ९ कटु, कर्कश। १० जीर्ण-शीर्ण पुराना।

सुस्कार, सुस्कारो–देखो 'सुसकार'।

सुस्त–वि० [फा० सुस्त] १ जिसमें तत्परता या स्फूर्ति न हो, आलसी, प्रमादी। २ दुर्बल, कमजोर, अशक्त, शिथिल। ३ खिन्न, मलिन, उदास। ४ मंद गति वाला, धीमा, दीर्घसूत्री। ५ जिसमें कार्य शक्ति कम हो। ६ जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मंद बुद्धि। ७ आभा या कांति से रहित, निस्तेज। ८ रोगी।

सुस्ताई–देखो 'सुस्ती'।

सुस्ताणो (णी) सुस्ताव्णो (णी)–क्रि० १ थकावट मिटाने के लिये विश्राम करना, श्रम दूर करना। २ किसी कार्य को करने के लिए कुछ रुकना ठहरना। ३ धैर्य रखना, धीरज धरना। ४ प्रतीक्षा या इंतजार करना। ५ आलस्य या सुस्ती फैलाना। ६ नींद लेना।

सुस्ती–स्त्री० [फा०] १ आलस्य, प्रमाद। २ शिथिलता, ढीलापन। ३ दुर्बलता, कमजोरी। ४ मलिनता, उदासी। ५ गति मांद्य, दीर्घसूत्रता। ६ बुद्धि मांद्य। ७ काम शक्ति का अभाव। ८ निस्तेजावस्था। ९ रुग्णावस्था।

सुस्थित–पु० घोड़े का एक ग्रह या रोग विशेष।

सुस्याम–वि० [सं० सुश्याम] सुन्दर एवं श्याम।

सुस्री–स्त्री० [सं० सुश्री] १ सुन्दर-शोभा। २ कुमारी, मिस।

सुस्रुसा–स्त्री० [सं० शुश्रूषा] १ सेवा-चाकरी, टहल बंदगी। २ देखभाल, संभाल, सुरक्षा।

सुस्रेय–पु० [सं० सुश्रेय] १ कुशल-क्षेम। २ यश, प्रशंसा।

सुस्वधा–स्त्री० [सं०] कल्याण, मंगल, सौभाग्य।

सुस्वप्न– पु० [सं०] अच्छा सपना, शुभ सपना।

सुस्वर–पु० मधुर व मीठा स्वर, मीठी आवाज। वि०–जिसका स्वर मधुर हो सुरीला।

सुहंगी–देखो 'सूंगो'। (स्त्री० सुहंगी)

सुह–१ देखो 'सुख'। २ देखो 'सुभ'।

सुहगुरु–पु० सद्गुरु।

सुहग्गा–देखो 'सुहागण'।

सुहड़ (डो), सुहट–देखो 'सुभट'।

सुहटी–देखो 'सूवो'।

सुहणउ, सुहणो–पु० स्वप्न।

सुहबोल्लु (ल्लो)–पु० मधुर भाषी।

सुहब्ब–पु० यम।

सुहब्बागिर–पु० [सं० सुभद्रागिरि] भाद्राजून (जोधपुर म) नामक गांव के पास की पहाड़ी।

सुहर–पु० सूअर, वराह।

सुहाणो–स्त्री० १ लोहे का नुकीला औजार विशेष। २ देखो 'सुहावणो'।

सुहांमणउ–देखो 'सुहावणो'।

सुहांमणउ, सुहांवणो–देखो 'सुहावणो'। (स्त्री० सुहांमणी)

सुहाग, सुहाग–पु० [सं० सौभाग्य] १ किसी स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। सौभाग्य। २ स्त्री के शरीर पर धारित सौभाग्य सूचक चिह्न। ३ पति की आयु। ४ पति का संसर्ग, सौभाग्य सुख, पति का प्रेम। ५ यश, प्रशंसा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले मंगल-गीत ।

सुहागण (णि, णी)–स्त्री० १ वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा, सुहागन, सौभाग्यवती । २ पति की प्रिया स्त्री, मानेती स्त्री ।

सुहागथाळ–पु० भोजन का थाल जिसमें कुछ सुहागिनी स्त्रियां नवागंतुक वधू के साथ भोजन करती हैं ।

सुहागवार-बिड़ली (बीड़ी) –पु० दूल्हे के स्वागत के समय वधू-पक्ष की स्त्रियों द्वारा दी जाने वाली पान की गिलोरी ।

सुहागि–देखो 'सुहाग' ।

सुहागिण, सुहागिन, सुहागिनी–देखो 'सुहागन' ।

सुहागी–पु० १ एक प्रकार का क्षार जिससे स्वर्ण के आभूषण साफ किये जाते हैं । २ सुन्दर वेश-भूषा, पोशाक ।

सुहाणो–वि० (स्त्री० सुहाणी) १ शोभा देने वाला, शोभायमान, शोभित । २ सुवासित । ३ अच्छा, बढ़िया । ४ सुन्दर, मनोहर । ५ स्वादिष्ट । ६ सुरुचिकर, मनभावन प्रिय ।

सुहाणो (बो)–क्रि० १ अच्छा लगना मन भाना, रुचिकर लगना, प्रीतिकर लगना । २ बरदाश्त होना, सहन होना । ३ शोभायमान होना, शोभित होना ।

सुहाय–देखो 'सहाय' ।

सुहार–देखो 'सुथार' ।

सुहारे, सुहारै–देखो 'सुथारै' ।

सुहासी–वि० सुन्दर, सुहावनी । –सेज-स्त्री० सुन्दर व मन भावनी शय्या ।

सुहावणि (णी)–वि० १ सुन्दर, मनोहर । २ जो रुचिकर लगे, मन भावन । ३ शोभित, शोभायमान ।

सुहावणो (बो)–देखो 'सुहाणो' (बो) ।

सुहावो–वि० सुहावना, सुन्दर ।

सुहासणी–देखो 'सवासणी'

सुहाहीणी–वि० मूर्ख, नासमझ ।

सुहिणह, सुहिणउ, सुहिणी–पु० स्वप्न, सपना । –वि० प्रिय, वल्लभ ।

सुहित–पु० [सं० स्वहित] अपना हित या भला । स्वार्थ । –वि० १ हितैषी, हितु । २ लाभदायक शुभ । ३ देखो 'सहित' ।

सुहितो–देखो 'सोहितो' ।

सुहित्त–देखो 'सुहित' ।

सुहिद्दा–स्त्री० सुमट्टा ।

सुहिलो–वि० सुलभ ।

सुही–सर्व० १ वही, वह । २ देखो 'सुखी' ।

सुहुड़–देखो 'सुभट' ।

सुहूचू–वि० सुलभ ।

सुहेतलउं, सुहेलउं–वि० शुभ, मांगलिक सहज ।

सुहेल–पु० [अ०] यमन देश में दिखने या उदय होने वाला । तारा विशेष ।

सुहेलु, सुहेलू (लो)–देखो 'सोहिलो' ।

सुहृत–पु० [सं० सुहृत्] १ मित्र, दोस्त, सखा । २ राज्य के सात अंगों में से एक ।

सुहृद–वि० [सं०] प्रिय, प्यारा, मित्र ।

सूं–क्रि० वि० १ ही । २ क्या । ३ सहित । ४ देखो 'सु' । ५ देखो 'स्यूं'

सूंई–क्रि० वि० से, ही ।–वि० १ उल्टी का विपर्याय, सीधी, सुलटी । २ चित, सीधी । ३ देखो 'सूई' ।

सूंक सूंक–स्त्री० रिश्वत, घूंस ।

सूंकखोर, सूंकखोर–वि० रिश्वत लेने वाला, रिश्वतखोर ।

सूंकड़ी–१ देखो 'सुकड़ी' २ देखो 'सूंक' ।

सूंकेड़ी–वि० रिश्वतखोर ।

सूंखड़ी–स्त्री० १ एक प्रकार का प्राचीन कर । २ खलिहान से ब्राह्मण, साधु आदि को दिया जाने वाला अनाज । ३ देखो 'सूकडी' ।

सूंखली–पु० गेहूं या जो की भूसी (खाखला) ।

सूंगणी–देखो 'सांगणी' ।

सूंगा, सूंगाकलाल–पु० एक वैश्य जाति जो शराब बनाने व बेचने का व्यवसाय करती थी ।

सूंगो–वि० सस्ती, कम मूल्य की ।–स्त्री० 'सूंगा' जाति की स्त्री ।

सूंगीवाड़ो–पु० सस्तीवाड़ा, सस्तापन, व्यापारिक मंदी ।

सूंगो सूंगो–वि० [सं० समर्घ] (स्त्री० सूंगी) १ कम दामों में प्राप्त होने वाला, सस्ता, । २ महत्वहीन, जिसकी तवज्जा कम हो । ३ कम खर्च या सहज में पूर्ण होने वाला । ४ सुलभ, आसान ।

सूंघ–स्त्री० रोचक वचन कहने की क्रिया ।

सूंघणी–स्त्री० १ नाक में सूंघने की तम्बाखु । २ देखो 'सांगणी' ।

सूंघणो (बो) –क्रि० [सं० शिघनम्] १ नाक (घ्राणेन्द्रिय) द्वारा किसी गंध का अनुभव करना । सूंघना । २ कोई गंध लेने का प्रयास करना । ३ कोई वस्तु सूंघने के लिये नाक के समीप लाना । ४ गंध लेकर खोज लेना, ढूंढना । ५ ध्यान या तवज्जाह देना, देखना ।

सूंघो–वि० १ रोचक वचन कहने वाला । २ देखो 'सूंगो' ।

सूंज, सूंझ–पु० विवाह के समय दहेज के रूप में तथा प्रथम प्रसव के बाद विदाई के समय, लड़की को दिया जाने वाला वस्त्राभूषण आदि ।

सूंट–पु० १ एक प्रकार का कोड़ा, कोट । २ देखो 'सूंठ' ।

सूंटी–स्त्री० [सं० सूत्थिता] नाभि ।

सूंटो–पु० वर्षा के साथ चलने वाली तेज हवा ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूंठ सूंठ-स्त्री० [सं० शुण्ठी] सूखी अदरक, सोंठ।

सूंठि, सूंठी-१ देखो 'सूंटी'। २ देखो 'सूंठ'।

सूंड-स्त्री० [सं० शुण्डा] १ हाथी की नाक जो सिर से जमीन तक लटकती रहती है। २ कूए से पानी निकालने की मोट जो हाथी की सूंड के आकार की होती है। ३ हरे रंग का एक कीड़ा, कीट विशेष।

सूंडकियो, सूंडक्यो-देखो 'सूंडो'।

सूंड डड (डंड)-देखो 'सूंडादंड'।

सूंडधर-पु० [सं० शुण्ड-धर] १ हाथी, गज। २ गणेश, गजानन।

सूंडर-पु० राठौड़ राजपूतों की एक शाखा व इसका व्यक्ति।

सूंडली, सूंडली-देखो 'सूंडो'।

सूंडहल-पु० [सं० शुण्डा-धर] हाथी, गज।

सुंड डंड, सूंडादंड (डो)-पुं० [सं० शुंडादण्ड] १ गणेश, गजानन। २ हाथी, गज। ३ हाथी की सूंड।-वि० जिसके सूंड हो, सूंडधारी।

सूंडाळ (ळी)-पु० [सं० सुण्डार] १ गजानन, गणेश। २ हाथी गज।-वि० जिसके सूंड हो, सूंडवाला।

सूंडाहल, सूंडाहळा-स्त्री० १ हाथी की सूंड। २ देखो 'सूंडाळ'।

सूंडियो-पु० १ वह कूआ जिसमें से हाथी की सूंड जैसी मोट से पानी निकाला जाता है। २ सूंडदार चरस (मोट)। ३ हाथी, गज। ४ देखो 'सूंडो'।

सूंडी-स्त्री० १ ऊंट की मुखाकृति। २ हाथी, गज। ३ नाभि।

सूंडीर-पु० [सं० शुण्डीर] १ हाथी की सूंड। २ हाथी।

सूंडी-पु० खपच्चियों का बना एक टोकरा विशेष।

सूंड्यासो-देखो 'सूंडाळ'।

सूंड्यो-देखो 'सूंडियो'।

सूंढि-१ देखो 'सूंड'। २ देखो 'सूंटी'।

सूंण-देखो 'सुगन'।

सूंणावणो (बो)-देखो 'सुणावणो' (बो)

सूंणी, सूंणी-स्त्री० १ छोटी चिमटी। २ शकुन शास्त्र का ज्ञाता, शकुनी।

सूंणो (बो)-देखो 'सूवणो' (बो)

सूंतणो (बो)-क्रि० [सं० सुसूवर्ण] १ तीक्ष्ण धार वाले अस्त्र से शरीर का कोई अंग काटना, विच्छेद करना। २ गीली रस्सी आदि को गाढ़ा भींचकर खींचना। ३ रसदार वस्तु को पींचकर रस निकालना। ४ ताकत या सत्व निकाल देना। ५ खींचकर एकत्र करना, इकट्ठा करना। ६ पतंग को डोर में सूंतो देना। ७ पौधे या पेड़ की टहनी को पकड़ कर ऐसे खींचना कि पत्ते टूट जायं। ८ उजाड़ना। ९ दूसरे का धन धीरे-धीरे अपने अधीन करना, हड़पना १० छड़ी आदि से पीटना।

सूंती-स्त्री० १ सूंतने की क्रिया या भाव। २ मुट्ठी में भींचकर दिया जाने वाला खिचाव, मरोड़। ३ पतंग की डोर पर किया गया मेदे आदि का लेपन। ४ तीक्ष्ण या पैनी वस्तु की रगड़।

सूंथणो (बो)-१ देखो 'सूंतणो' (बो)। २ देखो 'सूवणो' (बो)।

सूंथण (णि णी)-देखो 'सूथण'।

सूंद-देखो सूद्र'।

सूंदरि, सूंदरी-देखो 'सुंदरी'।

सूंदाराय-स्त्री० सूंधा पर्वत पर निवास करने वाली देवी।

सूंधो-पु० १ जालोर जिले में जसवंतपुरा के पास वाला पर्वत। २ देखो 'सूधो'।

सूंधा, सूंधा-क्रि० वि० १ सहित समेत। २ देखो 'सौंधो'।

सूंधावास-स्त्री० सुवास, सुगंध, खुशबू।

सूंधे-क्रि० वि० सुगंध से, खुशबू से।

सूंधो-वि० १ उलटा या औंधा का विपर्याय, सुलटा, सीधा। २ देखो 'सूधो'। ३ देखो 'सौंधो'। ४ देखो 'सूंदो'।

सून-देखो 'सून्य'

सूंनउ-देखो 'सूनो'।

सूंनत, सूंनित-देखो 'सुन्नत'।

सूंनी-देखो 'सून्नो'।

सूंनो-देखो 'सूनो'।

सून्य देखो 'सून्य'।

सूंप-स्त्री० सौंपने की क्रिया या भाव।

सूंपणो (बो)-क्रि० १ किसी कार्य का उत्तरदायित्व किसी को देना, सुपुर्द करना। २ कुछ देना, हस्तान्तरण करना। ३ भेंट करना, इनायत करना। ४ किसी को देख-रेख में रखना, चौकसी में रखना। ५ सिखाना, बताना, शिक्षा, ज्ञान आदि देना।

सूंफ-स्त्री० [सं० शतपुष्पा] १ भारत में प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला पांच या छः फुट का एक पौधा। २ इस पौधे के बीज जो जीरे की तरह-कुछ बड़े होते हैं।

सूंब, सूंबड़ो-देखो 'सूम'।

सूंम-पु० १ डाब के समान पत्तों वाला एक पौधा जिसकी रस्सी बनती है। २ देखो 'सूम'। ३ देखो 'सुम'।

सूंमरा-स्त्री० यादव वंश की एक शाखा जो बाद में मुसलमान हो गये।

सूंमरो-पु० उक्त जाति का व्यक्ति।

सूंमेर-देखो 'सुमेरु'।

सूंरो-वि० (स्त्री० सूंरी) सीधा, सामने की दिशा में, आर-पार।

सूंलियो-पु० खरहा, खरगोस।

सूंवो, सूंवो-वि० (स्त्री० सूंवी) १ सीधा, सुलटा, सौंधा। २ ऊपर मुंह किए हुए, चित-क्रि० वि० १ तक, पर्यन्त। २ ठीक ऊपर।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूंस-पु० १ शपथ, सौगन्ध, कसम। २ संकल्प, प्रण। ३ त्याग। ४ दादा, कौल। ५ एक जानवर जिसके चमड़े की ढाल बनती है। ६ हैल मछली।

सूंसतो-वि० (स्त्री० सूंसती) समर्थ, शक्तिशाली।

सूंसर-पु० मगर विशेष।

सूंसरउ, सूंसरो-देखो 'सूंरो'।

सूंसाड़ सूंसाड़ो-पु० १ तीव्र गति से चलने या फेंके जाने के कारण होने वाली सूं-सूं की आवाज। २ क्रोधावस्था या तेज़ चलने-दौड़ने के कारण श्वास की तेज आवाज। शब्द। ३ तेज हवा या आंधी की ध्वनि। ४ फुफकार।

सूंसाणो (बो), सूंसावणो (बो)-क्रि० १ अत्यन्त तीव्र गति से फेंकना या चलाना जिससे सूं-सूं ध्वनि हो। २ सूं-सूं की आवाज करना।

सूंसो-देखो 'सुसो'।

सूंहणो-देखो 'सूंघो'। (स्त्री० सूंहणी)

सूंहसो-पु० सोहणो नामक गीत (छन्द)।

सूंहरो-देखो 'सूंरो'। (स्त्री० सूंहणी)

सूंहाळी-पु० एक प्रकार का व्यंजन।

सू-देखो 'सु'।

सूअ, सूअड, सूअटो-पु० [सं० शुक] तोता, कीर, सुग्गा।

सूअणो (बो)-देखो 'सुवणो' (बो)।

सूअर, सूअरड़ो-देखो 'सूवर'।

सूअरदंतो-देखो 'सुअरदंतो'।

सूआगचूड़ी-स्त्री० स्त्रियों के हाथ के कंगन, सौभाग्यचिह्न।

सूआणो (बो)-देखो 'सुहाणो' (बो)।

सूआर-पु० रसोईया।

सूआरोग-पु० सूतिका रोग।

सूआवड़ि, सूआवड़ी-१ देखो 'सुवाड़ी'। २ देखो 'सुवावड़'।

सूइ, सूई-स्त्री० [सं० सूची] १ पक्के लोहे के पतले तार का नोकदार उपकरण जिसमें डोरा पिरोने का छेद होता है और कपड़े सिलने आदि के काम आता है। २ पक्के तार का नोकदार खण्ड जो ग्रामोफोन बजाने के काम आता है। ३ सूई की तरह बनी लोह की नलिका जो रोगी के शरीर में (नाड़ी या मांस में) दवा पहुंचाने के काम आती है। इंजक्शन।

सूओ-देखो 'सुओ'।

सूकड़ि, सूकड़ी, सूकड़ो (डि, डो)-पु० १ चंदन। २ एक पौधा विशेष। ३ एक खाद्य पदार्थ विशेष। -स्त्री० ४ मारवाड़ की एक नदी। -वि० शुष्क, सूखा।

सूकणो (बो)-देखो 'सूखणो' (बो)।

सूकनंद-पु० [सं० शूकनंद] ४९ क्षेत्रपालों में से ४६ वां क्षेत्रपाल।

सूकर-१ देखो 'सूक'। २ देखो 'सूवर'। (स्त्री० सूकरी)

सूकरक्षेत्र (क्षेत)-पु० [सं० सूकरक्षेत्र] मथुरा जिले में स्थित एक प्राचीन तीर्थ।

सूकरमुखी-स्त्री० सूवर के मुख के आकार की बनी एक तोप विशेष।

सूकरी-स्त्री० मादा सूवर 'भूंडण'।

सूकरो-पु० [सं० शूकर] सूअर, वराह।

सूकळ-पु० अशिक्षित घोड़ा।

सूकविक-पु० एक प्रकार का पक्षी।

सूकाणो (बो), सूकावणो (बो)-देखो 'सूखाणो' (बो)

सूकोड़ो-वि० (स्त्री० सूकोड़ी) शुष्क, सूखा हुआ।

सूकौ-देखो 'सूखौ'। (स्त्री० सूकी)

सूक्षम, सूक्ष्म-वि० [सं० सूक्ष्म] १ अत्यन्त लघु, बहुत छोटा। २ बहुत कम, अत्यन्त थोड़ा। ३ बहुत बारीक, महीन। ४ पतला, क्षीण। ५ तीक्ष्ण, नुकीला। ६ नाजुक, कोमल। ७ विलक्षण, अद्भुत। ८ उत्तम, श्रेष्ठ। ९ ठीक, सही। १० गूढ, गहरा। ११ चालाक, धूर्त। -पु० [सं० सूक्ष्म] १ सर्वव्यापी परमात्मा, ब्रह्म। २ आत्मा। ३ अणु परमाणु। ४ शिव का एक नामान्तर। ५ सूक्ष्मता। ६ केतक वृक्ष। ७ शिल्प कौशल। ८ धूर्तता, कपट, फरेब। ९ महीनडोरा, धागा। १० लिंग, शरीर। ११ योग द्वारा प्राप्त एक शक्ति। १२ एक काव्यालंकार विशेष। १३ देखो 'सूक्ष्मभूत'।

सूक्षमदृस्टि-स्त्री० [सं० सूक्ष्म दृष्टि] १ अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु देखने की ज्योति। २ विषय की गूढ़ता या सूक्ष्मता को समझने की बुद्धि। -वि० जिसकी ऐसी दृष्टि या बुद्धि हो।

सूक्षमभूत-पु० [सं०] पंच तन्मात्रा का नाम।

सूक्षमसरीर-पु० [सं० सूक्ष्मशरीर] पांच प्राण, पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समूह।

सूक्षमा-स्त्री० [सं०] विष्णु की नौ शक्तियों में से एक।

सूखड़िया-पु० एक वर्ग विशेष।

सूखड़ी-देखो 'सूकड़ी'।

सूखड़ो (डी, डो)-देखो 'सूखडी'।

सूखणो (बो)-क्रि० [सं० शुष्क] १ किसी पदार्थ का गीलापन, आर्द्रता या तरावट समाप्त होना, सूकना। २ वृक्ष, पौधों आदि का जल के अभाव में नष्ट हो जाना, जीवन शक्ति न रहना। ३ नदी, जलाशयों का जलहीन होना। ४ रस विहीन होना, नीरस होना। ५ दुर्बल होना, क्षीण होना।

सूखम-देखो 'सूक्ष्म'। -सरीर = 'सूक्ष्मसरीर'।

सूखमा-स्त्री० [सं० सुषमा] १ शोभा, छवि, आभा, कांति। २ एक प्रकार का वृक्ष। ३ देखो 'सूक्षमा'।

सूखाणो (बो), सूखावणो (बो)-देखो 'सुखाणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूखिम-देखो 'सूक्ष्म'।

सूखेड़ो-पु० १ शुष्क वातावरण या आंगन। २ आर्द्रताहीन मौसम।

सूखो-वि० [सं० शुष्क] (स्त्री० सूखी) १ आर्द्रता, नमी या तरावट से रहित, शुष्क। २ चिकनाई से रहित, फरका। ३ उदास, विरक्त। ४ कोमल भावों से रहित कठोर हृदय। ५ कोरा, केवल, निरा —पु० १ अनावृष्टि, अकाल, वर्षा का अभाव। २ पानी के अभाव वाला क्षेत्र। ३ तम्बाखू का सूखा पत्ता।

सूखोडो-वि० शुष्क, सूखा हुआ।

सूखोसपाक-वि० बिल्कुल सूखा, शुष्क।

सूग-स्त्री० घृणा, नफरत।

सूगणो-वि० शुभ लक्षण।

सूगली-स्त्री० [सं० शुक्ति:] सीप, शुक्ति।

सूगलीज-पु० [सं० शुक्तिज] मौक्तिक, मोती।

सूगलवाड़ो-पु० गदगी।

सूगलियो-पु० १ वर्षा ऋतु में मवेशियों के मुंह में होने वाला एक रोग विशेष। २ देखो 'सूगलो'।

सूगलो-वि० (स्त्री० सूगली) १ गंदा, घृणित, घिनौना। २ बुरा, खराब। ३ भद्दा, कुरूप।

सूगावणो (बो)-देखो 'सुगाणो' (बो)।

सूड़-पु० १ खेत में होने वाली कंटीली झाड़ी या घास के पौधे। २ ऐसे पौधों को काटकर सफाई करने की क्रिया। ३ नाश, ध्वंस। ४ सफाई।

सूड़उ-देखो 'सूवो'।

सूड़ि-देखो 'सूड़'।

सूड़ो-१ देखो 'सूवो'। २ देखो 'सूड़'। ३ देखो 'सूवर'।

सूचक-वि० [सं०] १ सूचना देने वाला, सूचित करने वाला, बताने वाला। २ बोधक, ज्ञापक। ३ दिखलाने वाला, बतलाने वाला, मुखबिर। ४ सिद्ध करने वाला। ५ छेद करने वाला।—पु० १ शिक्षक। २ किसी नाटक का प्रधान नट, सूत्रधार। ३ दर्जी। ४ कुत्ता, श्वान। ५ काग, कौआ। ६ सिद्ध। ७ दुष्ट, गुण्डा। ८ राक्षस, शैतान। ९ सूई। १० बिल्ली।

सूचना-स्त्री० [सं०] १ किसी घटना की जानकारी, बात का परिचय। २ किसी योजना, अभियान, षड्यंत्र का पूर्वाभास, जानकारी। ३ संदेश, समाचार। ४ विज्ञापन, विज्ञप्ति, इश्तिहार। ५ राजाज्ञा का प्रसारण। ६ दुर्घटना आदि का विवरण। ७ टोह

सूचनिका-स्त्री० १ सूची, विगत, विवरणिका। २ एक प्रकार का छन्द।

सूचि-स्त्री० किरण।

सूचिका-स्त्री० १ सूई। २ हाथी की सूंड।

सूचिमुख-पु० सूआ, चूहा। —वि० जिसका मुंह तेज व तीक्ष्ण हो।

सूचियो-देखो 'सूचक'

सूची-पु० [सं० सूचि] १ सैन्य-व्यूह रचना। २ इशारा, सैन। ३ भेदन। ४ हावभाव। ५ छेदन। ६ नृत्य विशेष। ७ गुप्त दूत, भेदिया। ८ चुगलखोर। ९ दुष्ट खल। १० कपड़ा सीने की सूई। ११ किरण, आभा। १२ दृष्टि। १३ अप्सरा। १४ विगत, तालिका, फहरिस्त। १५ सूई की नोक। १६ विषयानुक्रमणिका। १७ आठ प्रत्ययों में से एक (पिंगल शास्त्र)।—वि० [सं० शुचि] १ उजला, शुभ्र। २ सफेद, श्वेत,। ३ पवित्र, शुद्ध।

सूचीकरम-पु० [सं० सूचि-कर्म] सूई पिरोने व सीने की कला।

सूचीमुख-देखो 'सूचिमुख'।

सूचो-वि० [सं० शुचि] स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध, पवित्र।

सूछम-देखो 'सूक्ष्म'।

सूजणो (बो)-क्रि० १ किसी चोट या विकार के कारण किसी अंग पर शोथ आना, सोजन आना, फूलना। २ देखो 'सूझणो' (बो)।

सूजन-स्त्री० १ चोट, आघात या रोग के कारण किसी अंग पर आने वाली शोथ। फुलाव। २ सोजन आने की अवस्था या भाव।

सूजनस-स्त्री० [सं० सूर्यनवमी] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की नवमी।

सूजांण-देखो 'सुजांण'।

सूजाउ-देखो 'सुजाव'।

सूजाक, सूजाग-पु० [फा० सूजाक] मूत्रेन्द्रिय का प्रदाह युक्त रोग विशेष।

सूजाणो (बो)-क्रि० १ मार-मार कर या पीट कर शरीर या अंग को सुजा देना, फुला देना। २ रो-रो कर आंखे फूला लेना। ३ रूठ कर मुंह फुला लेना।

सूजाव-पु० १ शोथ, सूजन। २ देखो 'सुजाव'।

सूजावणो (बो)-१ देखो 'सूजाणो' (बो)। २ देखो सूझावणो' (बो)।

सूजी-सर्व० वह, वही।—पु० [सं०सूचिक] १ दर्जी।—स्त्री० २ सूजन, शोथ। ३ दानेदार मैदा जिसका हलवा बनाया जाता है।

सूझ—स्त्री० १ सोचने-समझने की क्रिया या भाव। २ दृष्टि, नजर। ३ बुद्धि, समझ, अक्ल। ४ वह बौद्धिक-शक्ति जिसके द्वारा कोई अद्भुत बात, नई उद्भावना जागृत होती है, समस्या सुलझाने की शक्ति। ५ समझदारी, दूरदर्शिता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूझणो (बो)–क्रि० १ दिखाई देना, दृष्टिगत होना, दिखना। २ समझ में आना ध्यान में आना, मन में आना। ३ बुद्धि से उपजना, ज्ञान चक्षुओं से समझना। ४ याद रहना, स्मरण रहना। ५ प्रवृत्ति होना, मन में आना। ६ योग बनना, संयोग होना। ७ चलना। ८ उत्पन्न होना, उठना। ९ अनुभव होना, समझ में आना।

सूझतउ, सूझतो–वि० (स्त्री० सूझती) १ आंखों वाला, दृष्टि वाला। २ विशुद्ध, निर्दोष –क्रि० वि० १ देखते व समझते हुए। २ दिखते, दिखाई देते हुए।

सूझबूझ–स्त्री० सोचने-समझने की बुद्धि, सूक्ष्म दृष्टि।

सूझाणो (बो), सूझावणो (बो)–देखो 'समझाणो' (बो)।

सूटो–देखो 'सूवो'।

सूठ–वि० [सं० सुष्ठु] उत्तम, श्रेष्ठ।

सूण–१ देखो 'सगुन'। २ देखो 'सकुन'।

सूणघर, सूणहर–पु० [सं० शयन-गृह] सोने का कमरा, शयनकक्ष।

सूणांपो, सूणापो–पु० सौन्दर्य।

सूणो–वि० (स्त्री० सूणी) १ सुहावना, सुन्दर, मनोहर। २ युक्त –क्रि० वि० १ तक, पर्यन्त। २ सहित, साथ।–पु० लोहे का मोटा चिमटा विशेष।

सूणो (बो)–देखो 'सूवणो' (बो)।

सूत, सूत–पु० [सं० सूत्र] १ धुनी हुई रूई को कात कर तैयार किया हुआ बारीक कच्चा धागा, तंतु या रेशा। २ कच्चे रेशों का बना बारीक डोरा। ३ ऐसे डोरों या कच्चे तागों का बना वस्त्र, सूती वस्त्र। ४ साफा, पगडी। ५ रूई। ६ रस्सी, डोरी। ७ चुनाई, दीवार की सीध नापने का डोरा। ८ सूत का ढेर। ९ द्विज का जनेऊ। १० आभूषण, गहना। ११ संपत्ति, धन पूंजी। १२ संचय, संग्रह। १३ संबंध। १४ विधान, नियम, कायदा। १५ विधि, तरीका। १६ ढंग, हालत। १७ कार्य, काम। १८ उपक्रम। १९ प्रभाव, प्रताप। २० मार्ग। २१ रूप, सौंदर्य। २२ बंदीजन, भाट। २३ रथ हांकने वाला सारथी। २४ वेदव्यास का शिष्य एक ऋषि। २५ बढई। २६ एक प्राचीन वर्णसंकर जाति। २७ इस जाति का व्यक्ति। २८ व्यवस्था, प्रबन्ध। २९ सीध, सीधाई। ३० घोड़ी या ऊंटनी की योनि।–वि० १ सीधा। २ श्रेष्ठ, उत्तम।

सूतक–पु० [सं०] १ संतान के जन्म पर गृह परिवार में होने वाला अशौच, प्रसूतिका अवधि, जन्म सूतक। २ सूर्य-चन्द्र का ग्रहण काल, ग्रहण अशौच। ३ मृत्यु के कारण होने अशौच। ४ पारा, पारद।

सूतका–स्त्री० [सं०] सद्य: प्रसूता स्त्री, प्रसूता स्त्री।

सूतकाळो–पु० किसी की मृत्यु के नौवें दिन परिवार एवं सम्बन्धियों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक स्नान।

सूतको–वि० [सं० सूतकिन्] जिसके घर या परिवार में 'सूतक' हो।

सूतगड–पु० [सं० सूतकृत] तीर्थंकरों द्वारा अर्थ रूप में उत्पन्न कर गणधरों द्वारा ग्रन्थ रूप दिया साहित्य। (जैन)

सूतड़ाचींदड़ी–स्त्री० पैर का आभूषण विशेष।

सूतड़ी–पु० हाथ का आभूषण विशेष।

सूतज–पु० [सं०] दानवीर राजा कर्ण।

सूतण–देखो 'सूथण'।

सूततनय–पु० [सं०] राजा कर्ण।

सूतनंदन–पु० [सं०] राजा कर्ण।

सूतनउमा–पु० [सं० उमा-सुत] १ स्वामिकार्त्तिकेय। २ गणेश, गजानन।

सूतपाळ–पु० [सं० सूतपाल] कर्ण।

सूतबंधी–स्त्री० सीध, सीधाई।–क्रि०वि० सीधे लक्ष्य की ओर।

सूतर–१ देखो 'सूत्र'। २ देखो 'सूत'।

सूतळ–वि० सूत का, सूत संबंधी।

सूतळी–स्त्री० १ जूट के बारीक रेशों की बनी पतली डोरी जो बोरे सिलने के काम आती है। २ सूत की पतली डोरी।

सूतहार, सूतार–देखो 'सूथार'।

सूतिका–देखो 'सूतका'।

सूतिकारोग–पु० प्रसव के कुछ समय बाद स्त्री के होने वाला रोग विशेष।

सूतियो–देखो 'सूत'।

सूतो–वि० १ सूत का, सूत संबंधी। २ सूत का बना हुआ।–पु० सूत का वस्त्र।

सूतोड़ो, सूतो–वि० [सं० सुप्त] (स्त्री० सूतोड़ी, सूती) १ सोया हुआ, सुप्त। २ बेहोश, गाफिल। ३ निद्रित।

सूत्र–पु० [सं० सूत्र] १ थोड़े से शब्दों में कही जाने वाली सार्थक बात, सारगर्भित एवं गूढार्थी पद, वाक्य। २ कटि सूत्र, करधनी की तरह बांधा जाने वाला डोरा। ३ यज्ञोपवीत, जनेऊ। ४ जैन शास्त्र, जैनागम। ५ संक्षेप में जीव अजीव आदि पदार्थों की सूचना करने वाला पद या वाक्य। (जैन) ६ किसी प्रकार की व्यवस्था करने का नियम। ७ किसी समस्या का हल निकालने की युक्ति या उपाय। ८ काष्ठ, लकड़ी। ९ देखो 'सूत'।

सूत्रकंठ–पु० [सं०] १ ब्राह्मण, द्विज। २ कबूतर। ३ खंजन।

सूत्रक–पु० [सं०] लोहे के तारों का बना कवच।

सूत्रकरम–पु० [सं० सूत्रकर्मन्] १ बढ़ई का कार्य या कर्म। २ बेल-बूंटे कसीदा निकालने की क्रिया। ३ चौसठ कलाओं में से एक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्रकार-पु० [सं०] १ सूत्र का रचयिता, सूत्र बनाने वाला। २ बढ़ई, सूथार। ३ जुलाहा। ४ मकड़ी।

सूत्रकोड़ा-स्त्री० [सं०] चौसठ कलाओं में से एक, सूत का खेल।

सूत्रग्रंथ-पु० [सं०] सूत्र के रूप में रचा हुआ ग्रंथ।

सूत्रणा (वा)-क्रि० [सं० सूत्रणम्] १ आरंभ करना, रचना। २ गूँथना, गुत्थियाँ डालना।

सूत्रधार-पु० [सं०] १ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट। २ बढ़ई, सूथार। ३ भवन निर्माण करने वाला शिल्पी। ४ सूत्रों को जानने वाला। ५ जुलाहा। ६ इन्द्र।

सूत्रसंधवा-स्त्री० [सं०] सूत्र ग्रंथों का संग्रह।-वि० शास्त्र के अर्थ-परमार्थ का ज्ञाता।

सूत्रस्थविर-वि० स्थानांगसूत्र, समवायांगसूत्र के सार या अर्थ को जानने वाला। (जैन)

सूत्रांम, सूत्रामा-पु० इन्द्र।

सूत्रा-स्त्री० सरकी।

सूथण, सूथणि, सूथली-स्त्री० १ जंजीरनुमा कवच विशेष जो शरीर के अधोभाग में धारण किया जाता है। २ पजामा आदि अधोवस्त्र।

सूथानक-पु० [सं० सुस्थानक] सुमेरु पर्वत।

सूद-पु०[फा०] १ ऋण पर होने वाला ब्याज। २ लाभ, नफा। ३ वृद्धि। ४ शूद्र। [सं० सूदः] ५ नाश, वध। ६ कूप। ७ सोता। ८ चश्मा। ९ रसोईया। १० पकवान। ११ चटनी, कढ़ी। १२ दली हुई मटर। १३ पाप, दोष।

सूदकशाला-स्त्री० [सं सूदः शाला] पाकशाला, रसोईघर।

सूदखोर-वि० [फा०] १ अधिक सूद कमाने वाला। २ अधिक ब्याज लेने वाला, ब्याज पर ब्याज लगाने वाला निर्मम ऋण दाता।

सूदणा (वा)-क्रि० [सं० सूद्] १ काटना, काटकर अलग करना। २ मर्दन करना, हनन करना। ३ घायल या चोटिल करना। ४ वध, संहार या नाश करना। ५ निकलना। ६ जमा करना। ७ स्वीकार करना, मानना। ८ पकाना, पकाकर तैयार करना।

सूदन-पु० [सं०] १ काटने, नष्ट करने या वध करने की क्रिया या भाव। २ विनाश, नाश। ३ वध, कत्ल। ४ निष्कासन, निकास। ५ पूर्व दिशा का स्वामी इन्द्र। -वि० १ विनाश करने वाला, नाशक। २ अधिक। ३ प्रेम-पात्र, प्यारा। ४ माशूक, आशिक।

सूदनकिरमर, सूदनकिरमिर-पु० [सं० सूदन-किर्मीर] भीम।

सूदर-देखो 'सूद'।

सूदी-१ देखो 'सुदी'। २ देखो 'सीधी'।

सूद्र-पु० [सं० शूद्र] (स्त्री० सूद्राणी, सूद्रा, सूद्री) १ हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार मानव-समाज के चार वर्णों में से चौथा वर्ण, शूद्र। २ इस वर्ण का कोई व्यक्ति। ३ सेवक, अनुचर, दास। ४ नैऋत्यकोण स्थित एक देश।

सूद्राणी, सूद्राणी, सूद्रा, सूद्री-स्त्री० [सं० शूद्रा, शूद्राणी] १ शूद्र जाति की स्त्री। २ गाथा छंद का एक भेद।

सूध-पु० १ शुक्ल पक्ष। २ देखो 'सुद्ध'। ३ देखो 'सूद'।

सूधउ-वि० १ सहज, सरल, आसान। २ शुद्ध। ३ देखो 'सूधौ'।

सूधणा (वा)-क्रि० [सं० शोधनम्] १ खोजना, ढूंढना, पता लगाना। २ शुद्ध करना, निर्मल करना।

सूधर-स्त्री० [सं० सु+धरा] अच्छी भूमि।

सूधरणा (वा)-देखो 'सुधरणा' (वा)।

सूधला-देखो 'सूधौ'।

सूधा, सूधा-वि० १ सहित, युक्त। २ सहज, सरल, आसान। -क्रि० वि० १ रहते हुए, होते हुए। २ लक्ष्य की ओर, सीधा।

सूधारणा (वा)-देखो 'सुधारणा' (वा)।

सूधी क्रि०वि० १ तक, पर्यन्त। २ सीधी लक्ष्य की ओर। ३ सहित युक्त।

सूधूं, सूधौ-वि० [सं० शुद्ध] (स्त्री० सूधी) १ सीधा-सादा, भोला-भाला, सरल, शान्त। २ शुद्ध, निर्मल। ३ उचित, यथोचित, उपयुक्त। ४ सहित, युक्त। -क्रि०वि० १ तक, पर्यन्त। २ से। ३ की ओर, को।

सून-पु० १ पुष्प, फूल। २ देखो 'सून्य'।

सूनउ-देखो 'सूनौ'।

सूनम-देखो 'सूनमं'।

सूनसांन-देखो 'सुनसांन'।

सूनसायर-पु० [सं० सुनु-सागर] समुद्र पुत्र, कामदेव।

सूनाडोस-पु० [सं० सूनादोष] चूल्हे, चक्की, ओखली आदि।

सूनी-वि० [सं० शून्य] १ निर्जन, शून्य। २ खाली, रिक्त। ३ देखो 'सुनी'। ४ देखो 'सुन्नी'।

सूनु सूनूं, सूनू-पु० [सं० सूनु] १ पुत्र, बेटा, लड़का। २ देखो 'सूनौ'।

सूनोड़ी-देखो 'सूनी'।

सूनोपण (पणौ)-पु० निर्जनता, शून्यता।

सूनौ-वि० [सं० शून्य] (स्त्री० सूनी) १ जन रहित, निर्जन, एकान्त, उजाड़। २ रिक्त, खाली, शून्य। ३ बन्धन मुक्त, खुला, स्वतन्त्र। ४ आरक्षित।

सून्य-पु० [सं० शून्य] १ खाली स्थान, रिक्त स्थान। २ जिसका कोई आकार या रूप न हो। ३ अभय स्थान। ४ परमधाम। ५ आकाश। ६ एकान्त स्थान। ७ गणित में अभाव सूचक चिह्न। ८ बिन्दी, बिन्दु। ९ भव-गुफा। १० सहस्रारधार चक्र। ११ त्रिकुटि। १२ विष्णु। १३ ईश्वर परमात्मा। १४ स्वर्ग। -वि० १ कुछ नहीं, निरर्थक। २ गुणातीत।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ जिसका अस्तित्व न हो। ४ जो वास्तविक न हो, असत्। ५ जो खाली हो, रीता, रिक्त। ६ निर्जन एकान्त। ७ अनासक्त, विरक्त, निर्विकल्प। ८ उदास रंजीदा ९ सीधा-सादा, सरल। १० अर्थ शून्य। ११ नंगा, नग्न। १२ अचेत, बेहोश, विमूढ़। —मंडल —पु० सौर मण्डल, आकाश। मस्तक।

सून्यवाद–पु० [सं० शून्यवाद] बौद्धों का एक सिद्धान्त।

सून्या–स्त्री० [सं० शून्या] १ बध्या स्त्री। २ नलिका नामक गंध द्रव्य।

सून्यागार–पु० [सं० शून्यागार] १ आकाश, नभ। २ सूना घर या मकान। ३ सूना कक्ष।

सून्याड़–स्त्री० १ सुनसान जगह, एकान्त स्थान, निर्जन स्थान। २ खाली या रिक्त होने की अवस्था, रिक्तता।

सूपंखी–वि० सूवा पंखी रंग का, हरे रंग का।

सूप–पु० [सं०] १ पकी हुई दाल, भाजी। २ रसदार, सब्जी। ३ सब्जी का रस, शोरवा। ४ कढ़ी। ५ चटनी। ६ तीर, बाण। [सं० शूर्प, सूर्पः] ७ अनाज को फटक कर साफ करने का उपकरण विशेष। [सं० सूप] ८ रसोईया। ९ करुणरस पूर्ण राग विशेष। १० एक नायिका विशेष। ११ एक प्रकार का वस्त्र। १२ देखो 'सुपनखा'।

सूपकर्नी–वि० [सं० सूर्प-कर्ण] १ सूप के समान बड़े-बड़े कानों वाला। –पु० हाथी।

सूपकार–पु० सं० सूपकार] भोजन बनाने वाला, रसोईया।

सूपड़ी–देखो 'सूप'।

सूपनखा सूपनिखा सूपनेखा–देखो 'सुपनखा'।

सूपरसन–स्त्री० [सं० स्पर्शन] वायु, हवा।

सूफंजर–पु० बड़ा ऊनी वस्त्र जिस पर स्वर्ण का काम किया हुआ हो।

सूफी–पु० [अ० सूफी] १ संसार से अनासक्त, ब्रह्मज्ञानी एवं सभी धर्मों के प्रति आस्था रखने वाला एक मुसलमान सम्प्रदाय। २ इस सम्प्रदाय का फकीर। ३ इस सम्प्रदाय का अनुयायी मुसलमान।

सूब–देखो 'सूम'।

सूबर–स्त्री० गर्भवती घोड़ी या मादा ऊंट।

सूबादार सूबायत सूबेदार–पु० [फा० सूबः दार] १ किसी प्रान्त या सूबे का अधिपति, अधिकारी। २ फौज या सेना में एक ओहदा या पद। ३ इस पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।

सूबेदारी–स्त्री० [फा०] १ सूबेदार का कार्य। २ सूबेदार का पद।

सूबै–देखो 'सुबह'।

सूबो–पु० [फा० सूबः] १ किसी राज्य का कोई प्रान्त, जिला या सूबा। [अ० शुबहा] २ शक, संदेह।

सूभग–वि० सुन्दर।

सूभमद्र–पु० कुशल मंगल, खैरियत।

सूभर–वि० १ सुन्दर। २ सुख, मय सुखरूप। –पु० १ पुष्कर। २ छोटा तालाब। ३ देखो 'सूबर'।

सूभरा–वि० सुन्दर।

सूभाव देखो 'स्वभाव'।

सूम–वि० [अ० शूम] (स्त्री० सूमणी) कृपण, कंजूस। –पु० १ पुष्प, फूल। २ देखो 'सुम'।

सूमड़ापण–पु० कंजूसी, कृपणता।

सूमड़ी–देखो 'सूम'।

सूमपण सूमपणो–पु० कृपणता, कंजूसी।

सूममन–वि० कठोर *।

सूमि–देखो 'सुम'।

सूयौ–पु० १ आकाश। २ दूध। ३ अंडा। ४ देखो 'सूम'

सूयंभू–देखो 'स्वयंभुव'।

सूयटो–देखो 'सूवो'।

सूयर–देखो 'सूवर'।

सूयाबड़ि–देखो 'सुवाड़ो'।

सूर–पु० [सं० शूर, सूर] १ शूरवीर, बहादुर, योद्धा। २ सूय, रवि, सूरज। ३ सिंह शेर। ४ चीता। ५ श्रीकृष्ण के पितामह का नाम। ६ विष्णु का एक नाम। ७ सूरदास, अंधा। ८ नाक का दाहिना छिद्र। ९ भूरे रंग का घोड़ा। १० पठानों की एक जाति। ११ उत्तर और वायव्य के मध्य सप्तर्षि के अस्त होने की दिशा (ऊंट)। १२ आक, मदार। १३ साल वृक्ष। १४ छप्पय छन्द का एक भेद। १५ देखो 'सूरि'। –वि० १ तप्त। २ देखो 'सूवर'। ३ देखो 'सुर'।

सू किरण–पु० छाते के आकार का राज चिह्न।

सूरखनोली–पु० एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा।

सूरगुर–वि० [सं० शूर गुरु] १ श्रेष्ठ वीर २ देखो 'सुरगुरु'।

सूरगुलूं–पु० एक प्रकार का पुष्प।

सूरडो–देखो 'सूवर'। (स्त्री० सूरड़ी)

सूरज–पु० [सं० सूर्यः] १ सूर्य, रवि, दिनकर। २ नाक का दाहिना स्वर स्थान। ३ नाक का पौधा। ४ गण के तृतीय भेद की छः मात्रा का नाम। ५ बारह की संख्या *। –वि० १ श्वेत, सफेद *। २ रक्त वर्ण। —काळ –पु० दिन का समय फलित ज्योतिष का एक चक्र। —कुळ–पु० एक प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश, सूर्य वंश। –ग्रह–पु० सूर्य, रवि। सूर्य का ग्रहण। —ग्रहण–पु० सूर्य ग्रहण। हठ योग की एक प्रक्रिया। —नारायण–पु० सूर्य देव। —पख —स्त्री० सूर्य किरण सूर्य प्रभा। —पुत्र–पु० यम। शनि। कर्ण। सुग्रीव। —पुत्री–स्त्री० यमुना। विद्युत, बिजली।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—पुराण–पु० एक ग्रन्थ जिसमें सूर्य की महिमा का वर्णन है। —प्रकाश–पु० सूर्य का प्रकाश, उजाला। धूप। —मंडल–पु० सौर मंडल। सूर्य की परिधि। —मणि–स्त्री० सूर्यकान्त मणि। —लोक–पु० सूर्य लोक। —वंश–पु० सूर्यवंश (क्षत्रिय)। —वंशी–पु० सूर्यवंशी क्षत्रिय। —सुत='सूरजपुत्र'। —सुता='सूरजपुत्री'।

सूरजकांतमणि–स्त्री० सूर्यकान्त मणि। –वि० श्वेत, सफेद।

सूरजकुंड–पु० १ आबू का एक तीर्थ स्थान। २ श्मशान भूमिका जलाशय या तालाब।

सूरजग्रह–पु० [सं० सूर्य-ग्रह] १ सूर्य, रवि। २ सूर्य का ग्रहण। ३ राहु व केतु। ४ जल घट की तली।

सूरजछट–स्त्री० कार्तिक शुक्ला षष्टी।

सूरजपुर–पु० [सं० सूर्यपुर] काश्मीर का एक प्राचीन नगर।

सूरजमंडलभिद–पु० वीर, योद्धा।

सूरजसंधवा–पु० सूर्यावर्त नामक शिर शूल जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहता है।

सूरजमल–पु० १ लोक गीतों में दूल्हे के प्रति संबोधन। २ पति। ३ राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि सूर्यमल्ल मिश्रण।

सूरजमाल–पु० [सं० सूर्यमाल] शिव का एक नामान्तर।

सूरजमुखी–पु० [सं० सूर्यमुखी] १ पीले रंग के पुष्पों वाला एक प्रसिद्ध पौधा। २ इस पौधे का पुष्प जिसका मुख हर समय सूर्य की तरफ ही रहता है। ३ राजा-बादशाह का राजछत्र, राज्य चिह्न। ४ एक प्रकार का रोग।

सूरजमुखी–पु० स्वर्णकारों का एक औजार विशेष।

सूरजरोटी–पु० १ चैत्रमास के रविवार को किया जाने वाला एक व्रत विशेष। २ इस व्रत के दिन सूर्य को चढ़ाया जाने वाला नैवेद्य।

सूरजा–स्त्री० [सं० सूर्य-जा] १ यमुना। २ विद्युत, बिजली।

सूरजालोक–पु० [सं० सूर्यालोक] १ सूर्य का तेज, प्रकाश। २ देखो 'सूरजलोक'।

सूराज, सूरज्ज, सूरज्जि–देखो 'सूरज'।

सूरज्या–स्त्री० [सं० सूर्या] १ सूर्य की पत्नी संज्ञा। २ देखो 'सूरजा'।

सूरझटकाकरण–स्त्री० तलवार, खड्ग।

सूरण–पु० [सं० शूरण] जमींकंद, सूरन, ओल।

सूरत, सूरतड़ी–स्त्री० [फा०] १ मुखाकृति, चेहरा, शक्ल। २ रूप सौन्दर्य। ३ दशा, हालत, स्थिति। ४ चित्र, तस्वीर, फोटो। ५ उपाय, युक्ति, तरकीब। ६ रूपरेखा, डौल। ७ इच्छा, विचार। ८ शोभा, छवि, आभा। ९ चित्त वृत्ति बुद्धि।–वि० [सं० सूरत] १ सुहृदय, दयालु, कृपालु। २ कोमल, नाजुक। ३ शान्त, स्थिर। ४ अनुकूल। ५ देखो 'सूरत'।

सूरतन–देखो 'सूरातन'।

सूरता, सूरताई–स्त्री० [सं० शूरता] १ शूरवीर होने की दशा, अवस्था या भाव। २ शौर्य, पराक्रम।

सूरति, सूरती–देखो 'सूरत'।

सूरद–पु० [सं० सुहृद] १ मित्र सखा। २ वीर, बहादुर।

सूरदांत–पु० सूअर या वराह का वह दांत जो ओठों से बाहर रहता है। –वि० कुटिल, टेढ़ा ※।

सूरदास–पु० १ अंधे व्यक्ति का एक आदरयुक्त संबोधन। २ ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कवि।

सूरपंथ–पु० [सं० सूर्य-पथ] आकाश, नभ।

सूरपकार–पु० कामदेव, मदन।

सूरपण, सूरपणो–पु० शूरत्व, शौर्य, पराक्रम, पौरुष।

सूरपत सूरपति (पती)–पु० राजा नृप।

सूरपथ–देखो 'सूरपंथ'।

सूरप्रभ–पु० जैनियों के नौवें विहरमान का नाम।

सूरबीरतन–वि० कठोर ※।

सूरभि, सूरभी–देखो 'सुरभि'।

सूरभूमि–स्त्री० [सं० शूरभूमि] १ उग्रसेन की एक कन्या का नाम। २ वीर भूमि।

सूरमंडल–पु० [सं० सूर्य-मण्डल] १ सूर्य का वृत्त, घेरा या परिधि। २ सूर्य व उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रह-उपग्रहों का समूह।

सूरमंडलभिद–वि० युद्ध में अद्भुत वीरता दिखाकर वीरगति प्राप्त करने वाला जो सूर्यमंडल को भेदकर उच्चलोक में जाता है।

सूरम–देखो 'सूरमो'।

सूरमटो (ठो)–वि० कायर, डरपोक।

सूरमण–देखो 'सूरपण'।

सूरमानी–वि० [सं० शूरमानिन्] अपने शौर्य पर गर्व करने वाला।

सूरमाई, सूरमापण (पणो)–स्त्री० वीरता, बहादुरी।

सूरमू, सूरमो–वि० वीर, बहादुर, पराक्रमी।

सूरय–देखो 'सूरज'।

सूरयो–पु० सप्तर्षि के अस्त स्थान से चलने वाला पवन जो श्रावण मास में वर्षा का सूचक माना जाता है।

सूरलोक–पु० [सं० सूर्यलोक] १ सूर्यलोक, सौरजगत। २ वीर गति प्राप्त योद्धाओं को मिलने वाला लोक, सुरलोक।

सूरवादो–पु० योद्धा, सुभट, वीर; बहादुर।

सूरवाळो–पु० एक प्रकार का घास।

सूरविद्या–स्त्री० युद्ध विद्या।

सूरवीर–वि० [सं० शूर-वीर] १ वीर, बहादुर, योद्धा। २ ताकतवर, बलवान। ३ साहसी, हिम्मतवार। ४ पुरुषार्थी।

सूरवीरता–स्त्री० वीरता, शूरत्व, बहादुरी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूरवो–देखो 'सूरमो'।
सूरसज्जा–स्त्री० [सं० शूर-शय्या] वीरों की शय्या, रणक्षेत्र।
सूरसरी–पु० बहादुरों, वीरों की परिपाटी।
सूरसामंत–पु० १ युद्ध मंत्री। २ सेनानायक, सरदार।
सूरसाही–पु० शेरशाह सूरी द्वारा चलाया गया सिक्का।
सूरसुत–पु० [सं० सूर्य-सुत] १ शनि। २ यम। ३ कर्ण। ४ सुग्रीव।
सूरसुता–स्त्री० [सं० सूर्य-सुता] १ यमुना। २ बिजली, विद्युत।
सूरसेत–पु० सिंह, शेर।
सूरसेनप–पु० [सं० शूरसेनप] १ शूरवीरों की सेना का पालन करने वाला। २ स्वामिकार्तिकेय।
सूरसेनी–पु० शौरसेनी भाषा।
सूरस्यारथी–पु० वह घोड़ा जिसके चारों पैरों के बाल पीले एवं नेत्र काले होते हैं।
सूरांगुर–पु० वीरों में श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि।
सूरांण–पु० (ब. व.) शूरवीर व बहादुर लोग।
सूरांणी–वि० शूरवीर, बहादुर।
सूरांतण–देखो 'सूरातन'।
सूरांयर–वि० वीर, बहादुर।
सूराई–स्त्री० १ वीरता, बहादुरी। –पु० [सं० सुरराज] २ इन्द्र।
सूराख–पु० [फा०] १ छिद्र, छेद। २ रास्ता, मार्ग।
सूराचंद–पु० मारवाड़ का एक प्रदेश।
सूरातन–पु० १ वीरता, शौर्य, पराक्रम। २ शौर्य, पराक्रम।
सूरापण (णी), सूरापो–देखो 'सूरपणो'।
सूराभिमुह–क्रि० वि० [सं० सूर्याभिमुख] सूर्य के सम्मुख, सूर्य के सामने।
सूरामंडळ–देखो 'सूरमंडळ'।
सूरावत–वि० वीर, बहादुर, पराक्रमी।
सूरि–पु० [सं०] १ पंडित, विद्वान। २ सूर्य, रवि। ३ जैन आचार्यों के नाम के पीछे उपाधि स्वरूप प्रयुक्त होने वाला शब्द।
सूरिज–देखो 'सूरज'।
सूरिजन–पु० (ब. व.) विद्वान लोग, विद्वज्जन।
सूरिजि–देखो 'सूरज'।
सूरिजिजा–देखो 'सूरजा'।
सूरिमो–देखो 'सूरमो'।
सूरियोवायरो–देखो 'सूरवो'।
सूरिवो–स्त्री० १ शूल। २ देखो 'सूरमो'।
सूरिस, सूरिसर, सूरिसरु (रू) सूरीसरो, सूरीस्वर–पु० [सं० सूरि-ईश, ईश्वर] १ आचार्य (जैन)। २ महा-पंडित।
सूरू–१ देखो 'सूर'। २ देखो 'सरु'।
सूरेह–देखो 'सुरभि'।
सूरी–पु० १ छन्द शास्त्र में ठगण का दूसरा भेद ऽऽ। २ देखो 'सूर'। ३ देखो 'सूवर'।
सूरध्वज–पु० [सं० सूर्यध्वज] कायस्थ जाति का एक भेद विशेष। –वि० जिसके रथ की ध्वजा में सूर्य का चित्र हो।
सूरधाभ–वि० [सं० सूर्याभ] जिसकी आभा सूर्य के समान हो।
सूरधावरत–पु० [सं० सूर्यावर्त] सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहने वाला शिर-दर्द का रोग।
सूरधावली–पु० एक प्रकार का आभूषण।
सूलंधरा स्त्री० शूल नामक शस्त्र को धारण करने वाली देवी, दुर्गा।
सूळ–पु० [सं० शूल] १ बरछे के आकार का प्राचीन काल का शस्त्र, बरछा, भाला। २ त्रिशूल। ३ प्राण-दण्ड देने की प्राचीन काल की सूली। ४ बबूल आदि वृक्षों का लम्बा काँटा। ५ तीक्ष्ण या नुकीला कोई पदार्थ। ६ काँटे आदि के चुभने का दर्द। ७ वात-विकार के कारण होने वाला तीव्र दर्द। ८ भय, डर। ९ टीस, कसक, दर्द। १० मृत्यु, मौत। ११ दुःख, पाप। –वि० नुकीला, तीक्ष्ण।
सूस–पु० १ रक्षा, बचाव। २ हाल-चाल, रंग-ढंग। ३ दशा, हालत, अवस्था। ४ प्रबन्ध, व्यवस्था। ५ संस्कार, सुधार। ६ उपाय, युक्ति, तरकीब। ७ प्रयास, प्रयत्न। ८ उद्देश्य, इरादा। ९ कारण, वजह। १० तरह, भांति, प्रकार। ११ आराम, चैन। १२ ज्योतिष का एक योग। १३ वस्तु, पदार्थ। –वि० १ कुशल, प्रवीण। २ ठीक, दुरुस्त। –क्रि०वि० ३ दशा, हालत या स्थिति में। ४ उपाय या तरकीब से, ढंग से। ५ देखो 'सूळ'।
सूळक–पु० [सं० शूलक] १ दुष्ट और उद्दण्ड घोड़ा। २ बिदकने वाला घोड़ा।
सूळग्रह–वि० [सं० शूलग्रह] शूल या त्रिशूलधारी। –पु० शिव या महादेव का एक नामान्तर।
सूळझणो (बो)–देखो 'सुळझणो' (बो)।
सूळटंकेस्वर–पु० [सं० शूलटंकेश्वर] प्रयाग वट के पास शिव की एक मूर्ति।
सूलधन्वो, सूलधर–पु० शिव, महादेव।
सूळधरा–स्त्री०, [सं० शूलधरा] दुर्गा, पार्वती।
सूळधारणी, सूळधारा, सूळधारिणी–स्त्री० [सं० शूलधारा] दुर्गा, पार्वती।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूळधारी–वि० [सं० शूलधारी] त्रिशूलधारी, शूल धारण करने वाला। –पु० १ शिव, महादेव। –स्त्री० २ देवी, दुर्गा।

सूळनासी–स्त्री० [सं० शूलनासिन्] हींग।

सूळपांण सूळपांणि सूलपांणि (णी)–वि० [सं० शूलपाणिन्] जिसके हाथ में त्रिशूल रहता हो। –पु० १ शिव, महादेव। २ पार्वती, दुर्गा।

सूलसामान–पु० साज-सामान, साधन-सामग्री।

सूळहती–पु० [सं० शूल-हस्त] दुर्गा, पार्वती।

सूळहथ सूळहथी–पु० [सं० शूल-हस्त] १ शिव, महादेव। –स्त्री० २ दुर्गा, पार्वती। –वि० शूलधारी, त्रिशूलधारी।

सूलहरो–पु० एक रंग विशेष का घोड़ा।

सूळागारियो सूळागारो–पु० 'सूला' (मांस) बनाने वाला।

सूलाव्रक सूळाव्रख–देखो 'साळाव्रख'।

सूळि–क्रि०वि० १ अच्छी तरह, भली प्रकार। २ देखो 'सूळी'।

सूळिक–पु० [सं० शूलिक] १ खरगोश। २ शिवजी का एक नामान्तर। –वि० १ त्रिशूलधारी। २ फांसी पर चढ़ाने वाला। ३ वात-विकार से पीड़ित।

सूळिणी–स्त्री० [सं० शूलिणी] दुर्गा, पार्वती।

सूळियां, सूलियां–क्रि०वि० १ ठीक तरह, अच्छी तरह से। २ ढंग से, तरीके से। –वि० ३ स्वस्थ। –पु० १ आराम, चैन सुख। २ सुविधा।

सूळियो–पु० भैंस, गाय आदि के बछड़े के मुंह पर बांधा जाने वाला कांटेदार उपकरण।

सूळी, सूली–स्त्री० [सं० शूल] १ प्राचीन समय में प्राण दण्ड देने का एक उपकरण। २ इस उपकरण से दी जाने वाली सजा। ३ कांटे के समान चुभने वाली कोई चीज। ४ कष्ट या दुःख भरा जीवन ५ दर्द, पीड़ा, वेदना। ६ देखो 'सूळी'। [सं० शूलिन्] ७ शिव का एक नामान्तर। –वि० १ कृश, दुर्बल। २ सैद्धान्तिक, उसूल वाला।

सूळू सूलू–देखो 'सूळी'।

सूळो, सूलो–पु० [सं० शूलः] १ लकड़ी के लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो लकड़ी का आटा बना देता है। २ क्षय रोग जैसा कोई रोग विशेष। ३ लोहे की छड़ से सेंका हुआ एक प्रकार का मांस।

सूलो, सूल्हो–क्रि०वि० (स्त्री०सूली) १ सीधे हाथों से। २ दाहिनी ओर। –वि० ३ श्रेष्ठ, उत्तम। ४ सीधा, शरीफ, सज्जन। ५ कुशल, प्रवीण।

सूवउ सूवड़ो, सूवटियो, सूवटो–देखो 'सूवो'।

सूवणो (बो)–क्रि० [सं० शयनम्] १ नींद लेने के लिये सोना, शयन करना, नींद लेना। २ विश्राम करना, आराम करना, लेटना। ३ रूठकर सोना।

सूवर–पु० [सं० शूकर] वराह, सूअर।

सूवांणणो (बो)–देखो 'सुवाणो' (बो)।

सूवाड़–पु० [सं० सुतिका-वृति] १ प्रसव, सौरी। २ देखो 'सुवावड़'।

सूवाड़ी–देखो 'सुवाड़ी'।

सूवाभळको–पु० स्त्रियों के शिर का आभूषण विशेष।

सूवारथ–देखो 'स्वारथ'।

सूवारे–देखो 'सुवारां'।

सूवो–पु० [सं० शुक] १ कीर, तोता, सुग्गा। २ शिशु के जन्म पर गृह-परिवार में रहने वाला अशौच, प्रसूति का काल। ३ बोरा आदि सीने की बड़ी सूई, सूआ। ४ एक लोक गीत विशेष।

सूस–पु० १ मगर की तरह का एक बड़ा जल जंतु। २ देखो 'सुस'। ३ देखो 'सिसु'।

सूसमदूसम–देखो 'सुखमदुखम'।

सूसमसूसम–देखो 'सुखमसुख'।

सूसमार–देखो 'सिसमार'।

सूसी–स्त्री० १ ऊंट के 'चारजामे' के नीचे लगाई जाने वाली गद्दी। २ एक प्रकार की धारीदार चारखानों की चादर।

सूसीम–स्त्री० शीत, सर्दी, ठंड।

सूसो–देखो 'सुपो'।

सूहटो–देखो 'सूवो'।

सूहणो–१ देखो 'सोहणो'। २ देखो 'स्वप्न'।

सूहर–१ देखो 'सूर'। २ देखो 'सूवर'।

सूहव–स्त्री० सौभाग्यवती या सुहागन स्त्री, सधवा।

सूहाकांम्हड़ा–पु० सब शुद्ध स्वरों का, सम्पूर्ण जाति का एक राग।

सूहाटोडी–स्त्री० एक राग विशेष।

सूहाली–स्त्री० एक खाद्य पदार्थ विशेष। (मि० सुंआळी)

सूही–पु० स्त्रियों के ओढ़ने का एक वस्त्र विशेष।

सेंग–देखो 'सींग'।

सेंगटी सेंगटीघाट–स्त्री० छाछ में पकाई हुई बाजरे की खिचड़ी, घाट।

सेंगत–वि० [सं०सम-गति] १ जिसका, वातावरण के साथ तारतम्य बैठ रहा हो, किसी परिस्थिति या वातावरण का आदी, अनुकूल। २ हमसफर, हमराही।

सेंगर–पु० [देश०] एक राजपूत वंश।

सेंचळ–पु० एक प्रकार का नमक।

सेंजणो–पु० एक प्रकार का वृक्ष जिसके फूल लाल, नीले व श्वेत रंग के होते हैं, फूलों का रायता व फलियों का शाक बनता है।

सेंजोड़ै–क्रि०वि० १ साथ-साथ, एक साथ। २ युग्म से।

सेंटो–१ देखो 'सांठो'। २ देखो 'सैंठो'।

सेंठाइ, सेंठाई–देखो 'सैंठाई'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेंठी–१ देखो 'सैंठी'। २ देखो 'सांठी'।
सेंण–देखो 'सैण'।
सेंणप–देखो 'सैणप'।
सेंताळीसो, सेंतालीसो, सेंताळी (सी)–देखो 'सैंताळीसो'।
सेंतीर, सेंहतीर–देखो 'सहतीर'।
सेंतीस–देखो 'सैंतीस'।
सेंतीसी–देखो 'सैंतीसो'।
सेंव–१ देखो 'सैंद'। २ देखो 'सेंध'।
सेंवरूप–देखो 'सैंदरूप'।
सेंवी–स्त्री० १ खजूर का प्रासव। २ देखो 'सैंदी' (स्त्री०)
सेंदेमुंडे (मूंडे)–क्रि०वि० १ जान-पहचान का होते हुए। २ परिचित होने से।
सेंदेस, सेंदेह–देखो 'सैंदेह'।
सेंधी, सेंदी–१ देखो 'सैंदी'। २ 'सेंधी'।
सेंध–स्त्री० [स० संधि] १ चोरी करने के उद्देश्य से मकान की दीवार में किया जाने वाला बड़ा छेद, सूराख। २ बड़ा छेद, सुरंग, नकब। ३ देखो 'सैंद'।
सेंधव, सेंधवी–देखो 'सैंधव'।
सेंधियो–वि० १ 'सेंध' लगाने वाला, सूराख करने वाला। –पु० १ चोर। २ देखो 'सैंदी'। ३ देखो 'सेंधी'।
सेंधी–पु० [सं० सैंधव] १ एक प्रकार का खनिज नमक। २ देखो 'सैंदी'।
सेंन–पु० १ संकेत, इशारा। २ शयन, विश्राम। ३ 'सैण'।
सेंनप–देखो 'सैणप'।
सेंनो–देखो 'सेंन'।
सेंभा–पु० घोड़ों का एक वात रोग।
सेंमुख–देखो 'सनमुख'।
सेंव–स्त्री० १ गेंदनुमा एक प्रसिद्ध फल। २ इस फल का वृक्ष।
सेंवज–स्त्री० १ वर्षा के पानी से होने वाली रबी आदि की फसल जिसमें सिचाई की आवश्यकता नहीं रहती। २ वह जमीन या खेत जिसमें बिना सिचाई किये वर्षा के पानी से फसल होती है।
सेंस–१ देखो 'सहस्र'। २ देखो 'सेस'।
सेंसपा–देखो 'सेक्रपा'।
सेंहतीर–देखो 'सहतीर'।
से–वि० [सं० सह] सब, समस्त। –सर्व० १ वे, वह। २ जो। –स्त्री० १ तृतीया और पंचमी की विभक्ति जो–द्वारा, अपेक्षा में, आरंभ में, पर, की आदि अर्थों में प्रयुक्त होती है। २ करण और अपादान कारक का चिह्न। –पु० ३ शेष। ४ शिखर। ५ गिरि, पर्वत। ६ सरस, मीठा। ७ पेड़, वृक्ष। ८ तोता, कीर। ९ पक्षी। १० बकरी। ११ नभ, आकाश। १२ पाताल लोक। १३ देखो 'सेह, सेहो'।
से'–१ देखो 'सेही'। २ देखो 'सेह' ३ देखो 'सेस'
सेइत्रो–स्त्री० दासी।
सेइया–देखो 'सय्या'।
सेई–सर्व० १ वे ही। २ वही। –स्त्री० १ अनाज मापने का एक पात्र विशेष। २ आधा मन अनाज। ३ देखो 'सेही'।
सेक–पु० १ आग, गर्म पानी आदि से गर्मी पहुँचाने या ताप देने की क्रिया। २ भुनाई, सिकाई।
सेकणो (णो)–क्रि० १ आग या गर्म पानी आदि से गर्मी पहुंचाना या ताप देना, गर्म करना। २ रोटी आदि अंगारों पर रख कर पकाना, सेकना। ३ दग्ध करना, जलाना। ४ पकाना, भुनना।
सेकाणो(णो), सेकावणो (णो)–क्रि० १ आग या गर्म पानी आदि से गर्मी पहुँचवाना, ताप दिराना, गर्म कराना। २ रोटी आदि अंगारों पर रखवाना, पकवाना, सिकाना। ३ पकवाना, भुनवाना। ४ दग्ध करवाना, जलवाना।
सेकिम–पु० [सं० सेकिम] १ मूली। २ शलजम।
सेक्रपा–पु० तीन घोड़ों का वेतन पाने वाला सवार।
सेख–पु० [अ० शैख] १ मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि। २ मुसलमानों का एक वर्ग। ३ उक्त वर्ग का मुसलमान। ४ धर्मोपदेशक, पीर, फकीर। ५ बड़ा-बूढ़ा, वृद्ध, बुजुर्ग। ६ कुल का नायक। ७ प्रतिष्ठित या श्रेष्ठ व्यक्ति। ८ नामर्द, शिखंडी। –स्त्री० ९ आग की लपट, अग्निशिखा। १० देखो 'सेस'।
सेखदकाळ (ल)–पु० १ चातुर्मास के उपरान्त का काल। २ शैशव-काल, बाल्यकाल।
सेखचिल्ली–पु० १ झूठ-मूठ के मंसूबे बांधने वाला व्यक्ति। २ एक काल्पनिक मूर्ख व्यक्ति विदूषक।
सेखनाग–देखो 'सेसनाग'।
सेखज्वाळ, सेखज्वाळा–स्त्री० [सं० शेष-ज्वाला] शेषनाग या सर्प की फुफकार, फूत्कार।
सेखर–पु० [सं० शेखर] १ शिखर, चोटी, शृंग। २ माथा मस्तक, सिर। ३ मुकुट, किरीट। ४ सिर पर धारण करने का आभूषण। ५ सिर पर धारण करने की पुष्प माला ६ श्रेष्ठतावाचक शब्द। ७ संगीत में ध्रुव या स्थाई पद का एक भेद। ८ लौंग। ९ आर्यागीत या खञ्जाण का एक भेद विशेष। १० ठगण की पांच मात्राओं के पांचवें भेद का नाम, ।।ऽ।/११ छप्पय छन्द का ६६ वां भेद।
सेखरापीड़योजन–स्त्री० स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक।
सेखल–पु० नागदेवता।
सेखससो–देखो 'सेखचिल्ली'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेखासाय (यी)–पु० [सं० शेष-शायी] १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु ।
सेखा–स्त्री० दो भगण या छः गुरु का एक वर्णवृत्त ।
सेखावतार (री)–पु० [सं० शेषावतार] १ दशरथ सुत लक्ष्मण । २ बलराम ।
सेखाक्षर–पु० [सं० शेषाक्षर] परब्रह्म, ईश्वर ।
सेखाटी, सेखावटी–स्त्री० राजस्थान के पूर्व का एक प्रदेश विशेष ।
सेखावत (त्त)–पु० १ कच्छवाहा क्षत्रियों की एक शाखा व इसका व्यक्ति । २ भाटी वंश की एक शाखा विशेष ।
सेखी–स्त्री० [तु० शेखी] १ अहंकार, गर्व, हेंकड़ी, अक्कड़ । २ अहंकारभरी बात, डींग । ३ अतिशयोक्ति । ४ झूठी-शान-शौकत । ५ तारीफ, बड़ाई ।
सेखीबाज–वि० १ अहंकारी, घमंडी, अभिमानी । २ शेखी बघारने वाला, डींगबाज ।
सेखू–पु० बादशाह ।
सेखौ–पु० एक प्रकार का मांसाहारी पक्षी ।
सेढ़ै–क्रि० वि० १ एक तरफ, एक ओर, परे । २ किनारे । ३ एकान्त में । ४ दूर ।
सेढ़ी–पु० [फा० सरहद] १ सीमा, हद । २ किनारा, छोर ।
सेंधरलूण–पु० [सं० सौवर्चल-लवण] एक प्रकार का नमक ।
सेज, सेजड़ली, सेजड़ी, सेजडो–स्त्री० [सं० शय्या-सज्जा] १ वह चारपाई या खाट जिस पर बिस्तर बिछा कर सोने योग्य बनाया गया हो, शय्या, पलंग । २ बिस्तर, बिछावन । ३ देखो 'सहज' ।
सेजखांनो–पु० वह कक्ष जहां शय्या लगी हो, शयनकक्ष ।
सेजड़ो–पु० १ विश्राम स्थल । २ देखो 'सेज' ।
सेजपथ, सेजपथ–देखो 'सहजपथ' ।
सेजपाळ–पु० [सं० शय्या पालक] शयनागार का पहरेदार ।
सेजबंध–पु० [सं० शय्या-बन्धन] शय्या का बन्धन ।
सेजबरदार–पु० शय्या बिछाने वाला कर्मचारी ।
सेजरी–देखो 'सेज' ।
सेजरीओवरी–स्त्री० महाराणा के शयनकक्ष की व्यवस्था या देख-रेख करने वाला महकमा ।
सेजलदेवी–स्त्री० एक देवी विशेष ।
सेजवाळौ, सेजवालो–पु० १ परदानशीन स्त्रियों के बैठने की परदादार गाड़ी, रथ, डग्घी आदि । २ पालकी डोली । ३ परदा करने का वस्त्र विशेष ।
सेजवदार–देखो 'सेजबरदार' ।
सेजी–पु० हृदय ।
सेजौ–पु० [सं० स्रोत] १ कूए का जल स्रोत । २ स्रोत या उद्गम । ३ भूमिगत जल प्रवाह ।
सेज्जांतरदोख–पु० [सं० शय्यान्तरदोष] जिसके मकान में ठहरे उसके भोजन लेने पर लगने वाला दोष (जैन) ।
सेज्या–देखो 'सेज' ।
सेज्यासण–पु० [सं० शय्यासन] शय्या का आसन ।
सेझ–१ देखो 'सेज' । २ देखो 'सहज' ।
सेझखांनो–देखो 'सेजखांनो' ।
सेझड़ली, सेझड़ी–देखो 'सेज' ।
सेझण–स्त्री० तलाश, खोज, शोध ।
सेझरी–देखो 'सेज' ।
सेझवट–स्त्री० शय्या, बिस्तर, बिछावन ।
सेझवाळौ (लौ)–देखो 'सेजवाळौ' ।
सेझौ–देखो 'सेजौ' ।
सेटौ–पु० अच्छी नस्ल का सांड ।
सेट्ठि, सेठ, सेठड़ो–पु० [सं० श्रेष्ठिन्] (स्त्री० सेठांणी) १ प्रतिष्ठित व श्रेष्ठ व्यक्ति । २ धनी व्यक्ति । ३ साहूकार, वणिक, व्यापारी । ४ व्यापारियों के लिये एक संबोधन । ५ ओसवाल, माहेश्वरी, अग्रवाल जाति के लिये सामान्य संबोधन । ६ दलाल । ७ व्यापारियों की पंचायत का मुखिया ।
सेठांणी–स्त्री० १ किसी व्यापारी या वणिये की स्त्री । २ धनी औरत ।
सेठाई, सेठायी–स्त्री० १ धनाढ्यता, मालदारी । २ सेठ होने की अवस्था या भाव ।
सेठि, सेठियो, सेठो–देखो 'सेठ' ।
सेड–वि० [सं० शौण्ड] १ मदोन्मत्त, मस्त, नशे में चूर । २ निपुण, दक्ष । ३ अभिमानी, घमंडी । ४ शराबी, मद्यप । ५ देखो 'सेठ' ।
सेडळ, सेडल (माइ, माता, माय)–स्त्री० चेचक रोग की अधिष्ठात्री देवी विशेष । शीतला माता ।
सेडाउ, सेडाऊ, सेडावू–देखो 'सेढावू' ।
सेडी–स्त्री० [सं० चेटि] सखी, सहेली ।
सेडौ–पु० १ प्रायः जुखाम के कारण नाक से निकलने वाला गाढ़ा मल, बलगम, श्लेष्मा युक्त मल, रेंट । २ देखो 'सेंढ़ौ' ।
सेढ़–स्त्री० १ गाय, भैंस आदि का दूध दुहने की क्रिया । २ दूध दुहते समय निकलने वाली धार । ३ स्तन ।
सेढ़कढ़ियोड़ो सेढ़कढ़ियो–वि० तुरन्त का दूहा, धारोष्ण । (दूध)
सेढ़ाउ, सेढ़ाऊ, सेढ़ावू–वि० तुरन्त दूहा, धारोष्ण । –पु० तुरन्त का दूहा हुवा दूध जो फैनिल व पौष्टिक होता है ।
सेढ़ितप पु० श्रेणितप (जैन) ।
सेढ़ी–स्त्री० सीढ़ी, जीना ।
सेढ़ूगारी–स्त्री० [सं० सेध-कारी] १ तंत्र-मंत्र या तांत्रिक विद्याओं से दूध-दही-घी आदि की चोरी करने वाली स्त्री । २ इस प्रकार की चोरी ।
सेढ़े, सेढ़ै–क्रि०वि० १ समीप, निकट, पास । २ पार्श्व में ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेढी–देखो 'सेड़ी', 'सेडी'।

सेण–स्त्री० १ ओजारों की धार पैनी करने वाला पत्थर या काच, सिल्ली। २ देखो 'सैण'। ३ देखो 'श्येन'।

सेणइयो–पु० १ वह कूआ जिसमें से सिंचाई के लिए रात-दिन पानी निकाला जाता हो। २ उक्त कूए से निरन्तर पानी निकालने वाला व्यक्ति।

सेणप–देखो 'सैणप'।

सेणावइ–देखो 'सेनापति'।

सेणि–१ देखो 'श्रेणि'। २ देखो 'सैणी'।

सेणियो–पु० एक गुरु, एक लघु के क्रम से ग्यारह वर्णों का एक छन्द।

सेणी–१ देखो 'सैणी'। २ देखो 'श्रेणी'।

सेणी–वि० [सं० सज्ञान] (स्त्री० सेणी) १ समझदार, योग्य, व्यवहार कुशल। २ सीधा-सादा, सरल, विनम्र। ३ अनुभवी। दूरदर्शी। ४ विवेकशील, विचारवान। ५ वयस्क, बालिग। ६ चालाक, धूर्त, कपटी। ७ सज्जन, शरीफ। ८ बुद्धिमान, चतुर।

सेणी (बी)–१ देखो 'सेवणी' (बी)। २ देखो 'सहणी' (बी)।

सेतंबर–देखो 'श्वेतांबर'।

सेतंबळ–पु० पानी, जल।

सेत–क्रि०वि० प्रत्यक्ष। –वि० सहित, साथ। –पु० १ आकाश, नभ। २ देखो 'सहद'। ३ देखो 'सेतुबंध'। ४ देखो 'सेतु'। ५ देखो 'श्वेत'। ६ सर्पों का एक कुल।

सेतअस, सेतअसव, सेतअस्व–पु० [सं० श्वेताश्व] अर्जुन।

सेतकरण–पु० [सं० श्वेत-किरण] चन्द्रमा।

सेतकुळी–पु० [सं० श्वेत-कुलीन] सर्पों के आठ कुलों में से 'सेत' कुल का सर्प। सफेद सर्प।

सेतखांनो–पु० [फा० सेहतखानः] शौचालय, पाखाना।

सेततरंग–स्त्री० [सं० श्वेत-तरंग] गंगा नदी।

सेतदंती–पु० [सं० श्वेत दंतिन्] सफेद हाथी।

सेतद्युत–पु० [सं० श्वेत-द्युति] चन्द्रमा।

सेतध्वज–पु० [सं० श्वेत-ध्वज] १ श्वेत ध्वजा। २ श्वेत ध्वजा वाले रथ वाला।

सेतपिंग–पु० [सं० श्वेत-पिंग] शेर, सिंह।

सेतबंद (बंध)–देखो 'सेतुबंध'।

सेतबंध-रांमेस (रांमेसर, रांमेस्वर)–देखो 'सेतुबंध-रामेसर'।

सेतबळ–पु० जल, पानी।

सेतबाह–पु० [सं० श्वेत-वाहन] १ अर्जुन। २ चन्द्रमा।

सेतरंग–पु० [सं० श्वेत-रंग] सफेद रंग।

सेतरंगी–स्त्री० कीर्ति, यश।

सेतरुंख–पु० [सं० श्वेत-रुक्ष] चन्दन का वृक्ष।

सेतळ–१ देखो 'सैंतळ'। २ देखो 'सैंतळ'।

सेतलं–पु० श्वेत रंग का घोड़ा।

सेतवाजी–पु० सिद्ध पुरुषों के पास रहने वाला एक अद्भुत पदार्थ।

सेतवाह–देखो 'सेतबाह'।

सेतांबर–देखो 'श्वेतांबर'।

सेतिखांनो–देखो 'सेतखांनो'।

सेतिलो–देखो 'सेतलो'।

सेती–क्रि०वि० १ से। २ सहित, पूर्वक। ३ को। ४ लिए, वास्ते, प्रति। ५ मार्फत, द्वारा। ६ में। ७ संग, साथ, निकट। ८ पर। ९ नीचे।

सेतोर, सेंतोर–देखो 'सहतीर'।

सेतु, सेतुक–पु० [सं०] १ किसी नदी, जलाशय, समुद्र आदि के ऊपर एक किनारे से दूसरे किनारे तक बना पुल, रास्ता जो आने-जाने के काम आता है। २ पानी की रोक के लिये बनाया गया बांध, रोक। ३ घाटी, दर्रा। ४ बंधन, प्रतिबंध। ५ टीला। ६ खेत की मेड़। ७ भू-सीमा, हद। ८ सीमा-मर्यादा। ९ किसी कार्य की कोई निर्धारित विधि, प्रणाली, नियम। १० ओंकार, प्रणव।

सेतुज–देखो 'सेत्रुंज'।

सेतुबंध (बंधन)–पु० [सं०] १ दक्षिण भारत में रामेश्वरम् के आगे लंका की ओर समुद्र में बना पथरीला मार्ग या पुल। २ रामेश्वर, महादेव। ३ द्वादश शिवलिंगों में से एक। ४ ईश्वर, परमेश्वर। ५ पुल की बनावट। ६ पुल बनाने की क्रिया या भाव।

सेतुबंध-रामेसर, सेतुबंध-रामेस्वर–पु० [सं० सेतुबंध-रामेश्वर] भारत की दक्षिणी सीमा पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जहां शिव का विशाल मंदिर है।

सेतो–वि० सहित, पूर्वक।

सेत्रुंज, सेत्रुंजय–देखो 'सेत्रुंज'।

सेत्र–पु० [सं० श्वेत] १ श्वेत, सफेद। २ देखो 'सेत'। ३ देखो 'सेत्र'।

सेत्रुंज, सेत्रुंजय, सेत्रुंजि, सेत्रुंजी–पु० [सं० शत्रुंजय] जैनियों का एक प्रमुख तीर्थ स्थान। शत्रुंजय।

सेथर–वि० [सं० स्थिर] १ स्थिर, अचंचल। २ दृढ़, मजबूत।

सेथी–देखो 'सेती'।

सेद–क्रि०वि० ठीक निकट। –पु० तरह, प्रकार।

सेदखांनो–देखो 'सेतखांनो'।

सेदज–देखो 'स्वेदज'।

सेदेव, सेंदेव, सुंदेव–देखो 'सहदेव'।

सेध–पु० १ काम, कार्य। २ सिद्धि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेधणो (णी)–क्रि० कार्य साधना, कार्य सिद्ध करना, उद्देश्य पूर्ति करना।

सेधाळ–वि० कार्य सिद्धि करने वाला, यशस्वी।

सेन–पु० [सं०] १ नाई जाति का एक भक्त। २ बंगाल का एक राजवंश। ३ नाई जाति। ४ बंगाल की वैद्य जाति का खिताब। ५ दिगंबर जैन साधुओं का एक भेद। ६ तन, शरीर। ७ जीवन। ८ शयन, बिछौना, शय्या। –वि० १ जिसका कोई प्रभु हो, सनाथ। २ आश्रित, अधीन। ३ देखो 'सेना'। ४ देखो 'सैन'। ५ देखो 'सैण'। ६ देखो 'स्येन'।

सेनप–पु० [सं० सेनापति] १ सेनापति। २ देखो 'सैणप'।

सेनपत (पति, पती)–देखो 'सेनापति'।

सेनांण, सेनांण–देखो 'सैनाण, सैनांण'।

सेनांणी, सेनांणी–१ देखो 'सैनाणी'। २ देखो 'सैनांण'।

सेनांणू–देखो 'सैनांण'।

सेनांनी–पु० [सं० सेनानी] १ स्वामिकार्त्तिकेय, स्कंद। २ सेनापति, सेनाध्यक्ष। —रथ–पु० मोर, मयूर। सेनापति का रथ।

सेना–स्त्री० [सं०] १ शस्त्रास्त्रों से युक्त, युद्ध के लिये प्रशिक्षित मनुष्यों का दल, फौज, कटक, वाहिनी। २ फौज की अधिष्ठात्री देवी, स्कन्द की पत्नी। ३ जैनियों की एक देवी विशेष।

सेनाउलि–स्त्री० [सं० सेना-अवलि] १ फौज की कतार, सेना की पंक्ति। २ सेना, फौज।

सेनाव, सेनावार–पु० फौज का अफसर, सेनानायक, सेनापति।

सेनाधपत, सेनाधपति, सेनाधिप, सेनाधिपत, सेनाधिपति–पु० [सं० सेना-अधिपति] सेना का अधिपति सेनापति।

सेनानायक–पु० [सं०] सेना का अधिकारी, सेनापति।

सेनापत (पति, पती, पाल)–पु० [सं० सेनापति] १ सेना का प्रधान अधिकारी, सेनाध्यक्ष। २ सेना के किसी एक विभाग का अधिकारी। ३ शिव। ४ हिन्दी साहित्य का एक कवि।

सेनाबेध–पु० सुभट, वीर, योद्धा।

सेनामुख–पु० सेना का अग्रभाग, हरावल।

सेनावास–पु० सैन्य शिविर, छावनी, सेना का पड़ाव।

सेनियो–पु० सिपाही, सैनिक।

सेनी–पु० सहदेव का एक नाम।

सेनेस–पु० [सं० सेना-ईश] १ सेना का मालिक। २ सेनापति।

सेन्य, सेन्या–देखो 'सेना'।

सेफ–स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

सेब–स्त्री० १ शीत लहर। २ देखो 'सेव'।

सेबक–देखो 'सेवक'।

सेबळो–पु० रास्ते का खर्च, संबल।

सेबू–देखो 'सेव'।

सेमंती–पु० [सं०] सफेद गुलाब।

सेमळ, सेमल–पु० एक बहुत बड़ा वृक्ष विशेष जिसके फूल लाल होते हैं। फूलों में केवल रूई होती है।

सेमांन–देखो 'सामांन'

सेमुंदी–देखो 'सेमूंदी'

सेमूंडे, सेमूंडै–क्रि०वि० १ प्रत्यक्ष, सामने, मुंह के आगे। २ रुबरू रज्जू। ३ आमने-सामने। ४ मौजूदगी में, उपस्थिति में।

सेमूंदी–वि० [सं० समुदित] (स्त्री० सेमूंदी) समस्त, सम्पूर्ण, समूचा, सब का सब।

सेमूळी–वि० [सं० समूल] (स्त्री० सेमूळी) १ मूल या जड़ सहित। २ सम्पूर्ण, सब, समस्त।

सेय, सेय–देखो 'सेय'।

सेयली–देखो 'सेही'।

सेय्या–देखो 'सेज'।

सेर–पु० [सं० सेरः] १ सोलह छटांक का एक तौल जो मन का चालीसवां भाग माना जाता है। २ इस मान का तौल, बाट या पात्र। ३ इस तौल के बराबर किसी वस्तु की मात्रा। [फा० शेर] (स्त्री० सेरणी, सेरनी) ४ सिंह, शेर, व्याघ्र। ५ उर्दू-फारसी में दो चरण का एक छन्द, कविता के दो चरण। –वि० वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा।

सेरगीर–पु० [सं० शेरगीर] एक प्रकार का हाथी।

सेरड़ी–पु० एक प्रकार का कर।

सेरण–स्त्री० एक प्रकार की घास।

सेरणी–१ देखो 'सोरणी'। २ देखो 'सेर' (स्त्री०)।

सेरणी–देखो 'सेरीणी'।

सेरदहां, सेरवां–स्त्री० [फा०] १ पुराने ढंग की एक बन्दूक। २ एक प्रकार की तोप। –वि० शेर के समान मुख वाला।

सेरपंजो–पु० १ सिंह का पंजा। २ सिंह के पंजे के आकार का एक अस्त्र, बघनखा।

सेरबच्चो–पु० १ शेर का बच्चा, सिंह शावक। २ वीर पुरुष। ३ एक प्रकार की छोटी बन्दूक, जो विशेष रूप से शेर की शिकार में काम आती थी।

सेरवानो–स्त्री० एक प्रकार का घुटनों तक लम्बा कोट, चोगा, अंगा।

सेराह, सेराहो–पु० [सं० सेराहः] दूध के समान सफेद रंग का घोड़ा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेरि–देखो 'सेरी'।

सेरियो–पु० खेतों की मेंढ के बीच का तंग रास्ता।

सेरी–स्त्री० १ वीथिका, गली, तंग रास्ता। २ मार्ग, रास्ता। ३ गुप्त रूप से भागने का छोटा मार्ग। ४ कंटीली बाड़ या दीवार को तोड़कर बनाया छोटा रास्ता। ५ छेद, सूराख, दरार। ६ मुख्य द्वार के बगल में बना छोटा फाटक। ७ स्थिति। ८ दो अंगों के बीच का अवकाश, अंतर।

सेरीनो–पु० एक प्रकार का कर।

सेरुराहु, सेरूराह–देखो 'सेराह'।

सेरे'क–वि० एक सेर के लगभग।

सेरो–पु० १ खेत का किनारा। २ सूराख। ३ बाड़ या दीवार के बीच बना छोटा मार्ग।

सेलंप–पु० रहट के खड़े चक्र के गड्ढे के किनारे पर लगी लकड़ी या पत्थर जो उसमें खाद आदि गिरने से रोकता है।

–क्रि०वि० १ लगातार, एक साथ, निरंतर। २ शृंखला-बद्ध। ३ देखो 'संलग्न'।

सेल–पु० [सं० शल:] १ भाला, बरछा, सांग। [अ० शेल] २ तोप का वह गोला जिसमें गोलियां आदि भरी रहती हैं। ३ वज्र। ४ छिद्र, सूराख, बिल। ५ दर्द, टीस, पीड़ा। ६ देखो 'सैर'।

सेलक, सेलक्क–पु० भाला, बरछा।

सेलखड़ी–स्त्री० १ खरिया मिट्टी। २ एक प्रकार का चिकना व मुलायम पत्थर जो बरतन बनाने के काम आता है।

सेलड़ी–स्त्री० १ ईख, गन्ना। २ बांस के शिरे पर लगा लोह का हासिया जिससे वृक्ष की टहनियां काटी जाती हैं।

सेलड़ो–पु० १ स्त्रियों की वेणी में गुंथा जाने वाला एक रौप्य आभूषण। २ देखो 'सेल'।

सेलणो (नो)–क्रि० १ चुभाना, घुसेड़ना। २ भाले, बरछे या तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना। ३ कष्ट देना, दुःख देना। ४ देखो 'सालणो' (नो)।

सेलपी–स्त्री० वनस्पति विशेष।

सेलमेल, सेलमेळ–पु० १ मिश्रण। २ गिल-मिल।

सेलवण–स्त्री० एक प्रकार का क्षुप विशेष।

सेलवणी–स्त्री० नदी, सरिता।

सेलसुत–देखो 'सैलसुत'।

सेलहत्थ, सेलहथ–वि० १ योद्धा, वीर। २ जिसके हाथ में भाला हो।

सलांणी–स्त्री० १ कोल्हू में पिले हुए अध-कचरे तिल, कच्चर। तिल का दलिया। २ देखो 'सैंनाणी'।

सेला–वि० शीतल, ठण्डा।

सेलाक–वि० भाला धारण करने वाला योद्धा, वीर।

सेलार, सेलारो–पु० १ पहाड़ी घोड़ा। २ भाला, बरछा। ३ डिंगल का एक मात्रिक छन्द विशेष। ४ तीन सगण और अन्त में लघु वर्ण का एक अन्य छन्द विशेष। ५ प्रत्येक चरण में चौदह मात्रा का एक छन्द।

सेलारसी–पु० एक भक्त का नाम।

सेलारियो–पु० बबूल वृक्ष की फली।

सेलाळ–वि० भाला धारी वीर, योद्धा।

सेलि–देखो 'सैली'।

सेलिया–स्त्री० १ घोड़ों की एक जाति। २ पीलू नामक लाल रंग का एक फल विशेष।

सेली–स्त्री० घोड़े की बागडोर में कान के पास लगाया जाने वाला एक उपकरण।

सेली–स्त्री० १ ऊन, सूत, रेशम या बालों की बनी एक मोटी डोरी जिसे नाथ योगी गले में डालते हैं। २ स्त्रियों के शिर का एक आभूषण। ३ पगड़ी पर बांधने का एक आभूषण। ४ छोटा भाला, बरछी। ५ देखो 'सैर'।

सेलीसंद, सेलीसमंद (ध)–पु० एक प्रकार का उत्तम जाति का घोड़ा।

सेलीहाली–वि० जिसकी पगड़ी पर सेली बंधी हो।

सेलुत–पु० एक वर्ग विशेष।

सेलुस–पु० [सं० शेलुष] एक प्रकार का सिसोड़ा।

सेळे–क्रि०वि० चिंता में।

सेलोट–देखो 'सैलोट'।

सेलोत–पु० गरासिया जाति का मुखिया या प्रधान।

सेळी–पु० १ कांटेदार रोमावली वाला एक छोटा जीव जो अपना मुख व पांव छुपाकर गेंदनुमा बन जाता है। २ गाय दूहते समय उसके पिछले पैरों में बांधने की रस्सी।

सेलो–पु० १ एक उत्तम कोटी का वस्त्र। २ लाल रंग का साफा। ३ अश्लेषा नक्षत्र का एक नाम। ४ सीधा-सादा व्यक्ति। ५ देखो 'सेल'।

सेल्लि–स्त्री० प्रस्तर पट्टिका, सिल्ली।

सेल्ह–देखो 'सेल'।

सेल्हथ–देखो 'सेलहथ'।

सेल्हा–स्त्री० चावलों की एक किस्म।

सेल्हारस–स्त्री० केसर या चंदन।

सेल्ही–देखो 'सेली'।

सेल्हो–१ देखो 'सेलो'। २ देखो 'सेळो'।

सेवंति, सेवंती, सेवत्री–देखो 'सेवती'।

सेव–स्त्री० [सं० सेविका] १ बेसन में मिर्च-मसाले मिलाकर, आटे की तरह गूंद कर, झारे के साध्यम से गर्म तेल में तलकर तैयार किया नमकीन विशेष। २ आटे या मैदे को गूंद कर डोरी की तरह बनाया पदार्थ जिसको पानी में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उबाल कर खाया जाता है (रक्षाबंधन, ईद)। ३ कुशल क्षेम. सुख-शांति; खुशहाली। ४ एक प्रकार का वृक्ष। ५ देखो 'सेंव'।

सेवक (सेवकर)–पु०[सं०] (स्त्री० सेवकण, सेवकांणी) १ सेवा उपासना, आराधना करने वाला भक्त, दास व्यक्ति। २ नौकर, चाकर, अनुचर। ३ पुजारी। ४ सिलाई करने वाला दर्जी। ५ बोरा। –वि० १ सेवा शुश्रूषा करने वाला। २ पूजा, उपासना करने वाला, अनुयायी। ३ नौकरी-चाकरी करने वाला। ४ पराधीन। ५ सेवन करने वाला, उपभोक्ता। ६ सहायक, मददगार।

सेवकण, सेवकणी–स्त्री० दासी, नौकरानी, सेविका।

सेवकाइ, सेवकाई–स्त्री० १ सेवक का कार्य, सेवा, चाकरी शुश्रूषा। २ साध भगत। ३ नौकरी। ४ भक्ति।

सेवक–देखो 'सेवक'।

सेवग–पु० [सं० सेवक] (स्त्री० सेवगण, सेवगणी, सेवगांणी) १ ब्राह्मणों का एक वर्ग, शाकद्वीपी ब्राह्मण। २ इस वर्ग का व्यक्ति। ३ देखो 'सेवक'।

सेवगर–देखो 'सेवक'।

सेवगसाधार–पु० १ भक्तों का परिपालक ईश्वर, विष्णु श्रीकृष्ण। २ अपने चाकर या अनुयायियों का रक्षक। स्वामी।

सेवगी, सेवग–देखो 'सेवक'।

सेवग्रह–स्त्री० सेवा चाकरी, टहल-बंदगी।

सेवड़–पु० १ राजगुरु पुरोहितों का एक गोत्र। २ इस गोत्र का पुरोहित। ३ देखो 'सेवड़ो'।

सेवड़ा–स्त्री० दशनामी संन्यासियों की एक शाखा।

सेवड़ो–पु० [सं० श्वेत-पट] १ जैन साधुओं का एक वर्ग व इस वर्ग का साधु। २ एक ग्राम्य देवता।

सेवज–देखो 'सेंवज'।

सेवट–क्रि०वि० [सं० सीमट्ट] अन्त में, आखिर, अन्ततोगत्वा।

सेवण–स्त्री० १ एक प्रकार की घास। २ उपासना, भक्ति या आराधना करने की क्रिया। ३ सेवा-चाकरी या टहल करने की क्रिया। ४ मादा पक्षियों की अण्डे पकाने की क्रिया या भाव। ५ सेवन।

सेवणो (बो)–क्रि० [सं० सेवनं] १ पूजा करना, अर्चना करना। २ वंदना करना, नमस्कार करना। ३ उपासना या भक्ति करना। ४ सेवा-शुश्रूषा करना, चाकरी करना। ५ उपभोग करना, भोगना। ६ सानिध्य करना, संसर्ग करना। ७ मादा पक्षी का अण्डे पकाने के लिये बैठना। पोषण करना। ८ रहना, बसना। ९ कोई औषधि या पथ्य लेना। १० लिप्त होना। ११ पालन करना।

सेवति सेवती–स्त्री० [सं० सेवती] १ एक प्रकार का सफेद गुलाब का फूल। २ इस फूल का पौधा।

सेवन–पु०[सं०] १ सेवा करने की क्रिया या भाव। २ उपासना, आराधना, भक्ति। ३ उपभोग, भोग, इस्तेमाल। ४ स्त्री संभोग, मैथुन क्रिया। ५ टहल, चाकरी। ६ सानिध्य, संसर्ग। ७ संरक्षण, रक्षा। ८ मादा पक्षियों द्वारा अण्डों का पोषण। ९ औषधि आदि का खान-पान। १० सिलाई।

सेवनी–स्त्री० १ सिलाई, सीवन। २ टांका। ३ सूई। ४ संधि-स्थान। ५ दासी, सेविका।

सेवभद्र–पु० कुशलता।

सेवमांण–वि० सेवन करने योग्य।

सेवर, सेवरड़ो, सेवरियो, सेवरो–पु० [सं० शिखर] १ विवाह की एक रश्म जो विवाह मण्डप में कन्या के भाई या मामा द्वारा वर के सामने 'सरवा' घुमाकर अदा की जाती है। २ विवाह में भांवर के समय गाया जाने वाला मांगलिक लोक गीत। ३ विवाह के समय सिर पर बांधा जाने वाला सेहरा, शिर मौर। ४ पगड़ी में बांधकर मौर के नीचे दूल्हे के मुंह के आगे लटकाई जाने वाली फूल मालायें। (मुसलमान) ५ माला, हार, विशेषकर रेशमी माला। ६ द्वार के ऊपर लगाया जाने वाला एक कलात्मक पत्थर। –वि० १ उत्तम, श्रेष्ठ। २ शिरोमणि।

सेवलण (णी)–स्त्री० [सं० शैवलिनी] नदी, सरिता, तटनी।

सेवळो–देखो 'सेहो'।

सेवळो–पु० १ सेमल वृक्ष। २ कलाई पर धारण करने की एक प्रकार की बलदार चूड़ी। ३ देखो 'सेळो'।

सेवांजळि (ळी)–स्त्री० [सं० सेवांजलि] १ दोनों हथेलियों को जोड़कर प्यालानुमा बनाई एक मुद्रा। २ ऐसी मुद्रा बना कर अपने उपास्य को कुछ अर्पण करने की क्रिया।

सेवा–स्त्री० [सं०] १ देवताओं की पूजा, अर्चना। २ सेवा-शुश्रूषा, तीमारदारी, टहल। ३ नौकरी। ४ आदर-सत्कार, आवभगत। ५ उपासना, आराधना, भक्ति। ६ प्रेम, आसक्ति। ७ आश्रय, शरण। ८ उपभोग, भोग। ९ श्रम, परिश्रम। १० समाज सुधार का कार्य, समाज सेवा। ११ चापलुसी, जी-हजूरी।

सेवागर–देखो 'सेवक'।

सेवाधरम–पु० [सं० सेवा-धर्म] सेवक का धर्म या कर्त्तव्य।

सेवाधारी–पु० [सं० सेवा-धारिन्]पुजारी, सेवक। –वि० जिसके मूर्ति पूजा या माला का नियम हो।

सेवापण (पणो)–पु० १ सेवा-वृत्ति, टहल-बंदगी। २ नौकरी-चाकरी।

सेवार, सेवाळ, सेवाल–स्त्री० [सं० शैवाल] १ पानी पर जमने वाली चीलू, काई। २ जलाशयों के पानी पर जाल की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उरद्द बिछने वाला घास विशेष । ३ द्रव पदार्थ पर जमने वाली मैल की परत । ४ आवरण परदा । –वि० घासमानी, नीला❀ ।

सेवावरती–वि० [सं० सेवा-वृत्तिः] जिसके सेवा करने का व्रत हो ।

सेविका–स्त्री० १ दासी, नौकरानी । २ परिचारिका ।

सेवी–वि० [सं० सेविन्] १ सेवन करने वाला, खाने व पीने वाला । २ उपासना, आराधना या भक्ति करने वाला, भक्त । ३ सेवा करने वाला, चाकरी करने वाला ।

सेवो, सेंधी–पु० १ पानी का सोता, स्रोत । २ नीचा मस्तक करके चलने वाला प्राणी । ३ अपेक्षाकृत कम गहराई पर मिलने वाला भूगर्भीय जल । ४ कम ऊंचाई-नीचाई वाला स्थान जो सीधा सपाट हो ।

सेव्य–वि० १ जिसकी आराधना या उपासना करना उपयुक्त हो । २ जिसकी सेवा बंदगी करना उचित हो ।

सेस–पु० [सं० शेष] १ पाताल में रहने वाला सहस्र फनों वाला सर्प, शेषनाग । २ लक्ष्मण । ३ बलराम, बलभद्र । ४ ईश्वर, परमेश्वर । ५ एक प्रजापति । ६ एक दिग्गज । ७ हाथी, गज । ८ पक्षीराज गरुड़ । ९ देवताओं की मनौती मनाने के लिये चढ़ाया जाने वाला प्रसाद । १० जनेऊ के स्थान पर धारण किया जाने वाला एक स्वर्णाभूषण विशेष । ११ बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर बचने वाली संख्या । १२ बाकी बचा, भाग या अंश । १३ मुक्ति, छुटकारा । १४ परिणाम, नतीजा । १५ समाप्ति, अंत । १६ मृत्यु, मौत । १७ नाश, विनाश । १८ स्मृति चिह्न । १९ छप्पय छन्द का एक भेद । २० टगण का पांचवां भेद । २१ टगण के छठे भेद का नाम । –वि० १ बाकी बचा, अवशिष्ट शेष । २ उच्छिष्ट, छूटा हुआ । ३ अन्य, और । ४ सफेद, श्वेत❀ ।

सेसजो–पु० १ शेषनाग । २ लक्ष्मण । ३ बलराम ।

सेसट–पु० १ बारह मेघमालाओं में से एक । २ एक सूर्यवंशी राजा ।

सेसधर–पु० [सं० शेष-धर] शिव, महादेव ।

सेसनाग–पु० [सं० शेषनाग] सहस्र फनों वाला पातालवासी एक पुराण प्रसिद्ध नाग जो पृथ्वी का आधार व विष्णु भगवान की शय्या माना गया है । शेषनाग ।

सेसनाथ–पु० शेषनाग के स्वामी, विष्णु ।

सेसभखण–पु० पवन, हवा ।

सेसरंग–पु० श्वेतरंग ।

सेसर–पु० [सं० शेखर] ब्रह्मा ।

सेसराज–पु० [सं० शेषराज] १ प्रत्येक चरण में दो भगण वाला एक वर्ण वृत्त । २ शेषनाग ।

सेसल–पु० [सं० शेषल] नाग देवता ।

सेससायंत, सेससायी–पु० [सं० शेष-शायिन्] शेषनाग पर शयन करने वाले विष्णु ।

सेसु सेसू–पु० जासूस, गुप्तचर ।

सेसूळियो–देखो 'सेळो' ।

सेह–१ देखो 'सेस', सह' । २ देखो 'सेही' ।

सेहज–देखो 'सहज' 'सेज' ।

सेहजे सेंहजे–क्रि०वि० १ अपने-आप, स्वतः । २ सुगमता से, आसानी से । ३ बातों-बातों में ।

सेहट–पु० कमरा, कक्ष, कोठरी ।

सेहत, सेहति (ती)–स्त्री० [अ०] १ स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती । २ शरीर । ३ शुद्धि ।

सेहथ, सेहथि, सेहथी–क्रि०वि० १ अपने हाथों से, स्वहस्त । २ देखो 'सेहत' ।

सेहर, सेहरउ–पु० [सं० शेखरः] १ पर्वत-शिखर, गिरि-शृंग । २ कोई शिखर । ३ मेघ, बादल, मेघमाला । ४ आकाश, नभ । ५ मंडप । ६ कंगूरा । ७ शिखर स्थित कलश । ८ देखो 'सहर' । ९ पुष्प । १० अलंकार ।

सेहरि, सेहरी, सेहरियो, सेहरो–१ देखो 'सेहर' । २ देखो 'सेवरो' । ३ देखो 'सेहरी' ।

सेहलो–देखो 'सेळो' ।

सेहवीरो–स्त्री० सज्जाजनक, शर्मनाक ।

सेहसूळियो–देखो 'सेळो' ।

सेहहजारी–पु०[फा०] मुगल शासन में दरबारियों व सरदारों को दी जाने वाली एक उपाधि जो तीन हजार की सेना का अधिष्ठाता होने पर मिलती थी ।

सेहाई–देखो 'सहाय' ।

सेही–स्त्री० [सं० सेधा] एक प्रकार का रेगिस्तानी जानवर जिसका शरीर नुकीली सूलों से ढका रहता है ।

सेहुरो, सेहुरो–१ देखो 'सेवरो' । २ देखो 'सेहर' ।

सैं–क्रि०वि० १ ठीक, एकदम । २ प्रत्यक्ष । –वि० १ खास । २ सो । ३ सब, समस्त । –पु० खास दिन, विशेष दिन । –सर्व० हम ।

सैंकड़ो, सैंकड़ो–देखो 'सैंकड़ो' ।

सैंग–वि० [सं० सकल] १ सब, समस्त, सभी, तमाम । २ पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण ।

सैंगत–देखो 'सँगत' ।

सैंगमैंग–वि० हतप्रभ ।

सैंगू–वि० १ संग-साथ वाला, साथी । २ देखो 'सैंग' ।

सैंचनण सैंचनण सैंचण्ण–पु० १ तीव्र प्रकाश, चकाचौंध करने वाला उजाला । २ ऐसा तीव्र उजाला करने वाली किरण । –वि० प्रकाशित, ज्योतिर्मय ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सैंजोड़–पु० दम्पति । –वि० १ जोड़ सहित । २ समान, सदृश ।

सैंजोड़ें, सैंजोड़ैं–क्रि०वि० पति या पत्नी के साथ, युग्म से ।

सैंजोत, सैंजोती–स्त्री० [सं० सञ्ज्योति] १ जीवात्मा का परमात्मा से मिलन, ज्योति में ज्योति का मिलना, मोक्ष । २ ज्योतिर्मय, ज्योतियुक्त, प्रकाशमान ।

सैंजोर–वि० [फा० बहजोर] बलवान, ताकतवर ।

सैंट–पु० सुगंधित द्रव्य, इत्र ।

सैंठाइ (ई)–स्त्री० १ बलवान व ताकतवर होने की अवस्था या भाव । २ जोरावरी, जबरदस्ती । ३ बल, शक्ति, ताकत ।

सैंठी, सैंठी–वि० [सं० साधीष्ठ] (स्त्री० सैंठी) १ किसी प्रकार के भय, त्रास, चिंता आदि हीन भावनाओं से मुक्त, साहस युक्त । २ घाटा, नुकसान आदि सहन करने की क्षमता वाला । ३ जोश, आक्रोश आदि पर काबू रखने वाला, दृढ़ विचार वाला, धैर्यवान । ४ सहनशील, सहिष्णु । ५ अपनी बात या लक्ष्य पर दृढ़, अडिग । ६ स्वस्थ, तरोताजा । ७ बलवान, शक्तिशाली । ८ मजबूत, पक्का । ९ सावधान, सचेत । १० सख्त, ठोस । ११ देखो 'सांठी' ।

सैंण–देखो 'सैण' ।

सैंणकी–देखो 'सैंणी' ।

सैंणप–देखो 'सैणप' ।

सैंणला–स्त्री० वेदा की पुत्री, सैंणीदेवी ।

सैंणाई–स्त्री० १ सहनाई । २ देखो 'सैणप' ।

सैंणी–देखो 'सैंणी' ।

सैंणी–देखो 'सैणी' । (स्त्री० सैंणी)

सैंतळ–स्त्री० १ हलवा बनाने के लिए घी में भुना जाने वाला आटा, मैदा आदि । २ देखो 'सैंतळ' ।

सैंताळिस, सैंताळी, सैंताळीसै–वि० [सं० सप्तचत्वारिंशत्] चालीस व सात का योग, छियालीस से एक अधिक । –पु० चालीस व सात की संख्या, ४७ ।

सैंताळीसमौं (वौं)–वि० छियालीस के बाद वाला, सैंतालीस के स्थान वाला । –पु० सैंतालीस का वर्ष ।

सैंताळीसैक–वि० सैंतालीस के लगभग ।

सैंताळीसै–क्रि०वि० सैंतालीस के वर्ष में ।

सैंताळीसौ, सैंताळी–पु० सैंतालीस का वर्ष ।

सैंतीर, सैंतीर–देखो 'सहतीर' ।

सैंतीस (सैंत्रीस)–वि० [सं० सप्तत्रिंशत्] तीस और सात का योग, छत्तीस से एक अधिक । –पु० तीस व सात के योग की संख्या, ३७ ।

सैंतीसमौं (वौं)–वि० सैंतीस के स्थान वाला, छत्तीस के बाद वाला । सैंतीसवां ।

सैंतो–क्रि०वि० धीरे-धीरे ।

सैंतीसौ, सैंत्रीसौ–पु० सैंतीस का वर्ष ।

सैंव–स्त्री० १ जान-पहचान, परिचय । २ जानकारी ।

सैंवरूप–वि० १ साक्षात्, प्रत्यक्ष, सम्मुख । २ वास्तविक, असली । –पु० नारियल, श्रीफल ।

सैंवाणी–देखो 'सेनाणी' ।

सैंवांणी, सैंवांन, सैंवांनी–देखो 'सांदियाणी' ।

सैंवेस–पु० [सं० स्व-देश] १ अपना देश, अपना वतन, स्वदेश । २ देखो 'सैंदेह' ।

सैंवेह, सैंवेही, सैंदेहे, सैंदेहै–वि० देह के साथ सशरीर, जीवित ।

सैंदै–देखो 'सैंदेह' ।

सैंबोई–पु० सहदोई नामक एक क्षुप विशेष ।

सैंधी–वि० [सं० सधित] (स्त्री० सैंदी) १ जान-पहचान का, परिचित । २ मेल-मुलाकात व सम्पर्क वाला ।

सैंध–१ देखो 'सैंद' । २ देखो 'सैंध' ।

सैंधणी–वि० स्वामी, मालिक । –क्रि०वि० १ प्रत्यक्ष, सामने । २ देखो 'संधीणो' ।

सैंधव–पु० [सं० सैंधवः] १ सिंधु देश का एक घोड़ा विशेष, अश्व । २ कोई घोड़ा, अश्व । ३ सेंधा नमक । ४ सिंधु देश । ५ इस देश का निवासी । ६ वीररस पूर्ण सिंधुराग । –वि० [सं० सैंधव] १ सिंधु देश का, सिंधु देश संबंधी । २ समुद्र सम्बन्धी, सामुद्रिक । ३ सिंधु नदी सम्बन्धी ।

सैंधवो–स्त्री० १ सिंधु राग । २ भैरव राग का एक भेद । –वि० सिंधु देश की ।

सैंधामुहां–देखो 'सेंदेमूंडे' ।

सैंधी–सैंधी–वि० परिचित ।

सैंधू–देखो 'सैंधव' ।

सैंधो–१ देखो 'सैंदो' । २ देखो 'सेंधो' । (स्त्री० सैंधी)

सैंध्रपणउ–पु० शीघ्रता, त्वरा ।

सैंन–१ देखो सैंण' । २ देखो 'सैंन' ।

सैंनिका–पु० एक वर्ण वृत्त विशेष ।

सैंफळ, सैंफळियो, सैंफळी–पु० युद्ध, समर । –वि० अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित, योद्धा, वीर ।

सैंबळ–देखो 'सेमळ' ।

सैंभर–१ देखो 'सांभर' । २ देखो 'सांभरियो' ।

सैंभरियो–देखो 'सांभरियो' ।

सैंभरी–स्त्री० १ सांभर नगर के समीप पहाड़ी पर स्थित देवी की मूर्ति, शाकंभरी देवी । २ देखो 'सांभरियो' ।

सैंमुख, सैंमुखि, सैंमुखो–देखो 'सनमुख' ।

सैंलोट–देखो 'सैलोट' ।

सैंवणी (वो)–देखो 'सेवणी' (वो) ।

सैंवत्स–देखो 'सैंवत्स' ।

सैंस–१ देखो 'सैंस' । २ देखो 'सहस्र' ।

सैंसकार–देखो 'संस्कार' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सँसमूळी–स्त्री० एक प्रकार की जड़ी।
सँसार–देखो 'संसार'।
सँसारी–देखो 'संसारी'।
सँसी–देखो 'सांसी'।
सँहते (तै)–क्रि०वि० धीरे-धीरे।
सँहबी–देखो 'सैंदी'। (स्त्री० सँहदी)
सँहस देखो 'सहस्र'।
सँहसकिरण–देखो 'सहस्रकिरण'।
सँहात, सँहाय–देखो 'सेहथ'।
सै–वि० १ समान, अनुरूप, बराबर। २ सब, समस्त। –क्रि०वि० ३ में। ४ से। –पु० [फा० शह] १ शह, किस्त। २ पक्षपात, तरफदारी। ३ बल, शक्ति। ४ सहारा। ५ बचत। ६ देखो 'सँ'। ७ देखो 'सो'। ८ देखो 'है'। ९ देखो 'सह'।
सैइ–स्त्री० सखी, सहेली।
सैकड़ू–वि० कई सौ, सैकड़ों।
सैकड़े–क्रि०वि० प्रतिशत, फीसदी।
सैकड़ो–वि० [सं० शतकाण्ड] सौ, पूरा सौ, शत। –पु० सौ की संख्या, १००।
सैकळ–पु० [अ०] हथियारों को साफ कर शान चढ़ाने का कार्य।
सैकळगर–पु० [अ०] तलवार, छुरी, चाकू आदि के धार लगाने वाला।
सैघ्रपणउ–पु० शीघ्रता, त्वरा।
सैचंग्रण–देखो 'सैचग्रण'।
सैचाल–स्त्री० शतरंज की एक चाल।
सैचेत–देखो 'सावचेत'।
सैंज सैंजे सैं जै–देखो 'सहज'।
सैजोरी–स्त्री० [फा० शहजोरी] १ जबरदस्ती, जोरावरी। २ शक्ति, बल, ताकत।
सैज्ञ–देखो 'सेज'।
सैंज्ञ–देखो सहज'।
सैझड़ी–पु० लगातार एक सौ होने वाली वर्षा।
सैझो–देखो 'सेजो'।
सैण–पु० १ पति, खाविंद। २ मित्र। ३ रिश्तेदार। –वि० [सं० सज्जन] १ शरीफ, भला। सज्जन। २ प्रियतम, पी। ३ सहायक, मददगार। ४ हितैषी, शुभेच्छु। ५ मेल-जोल वाला, मुलाकाती। ६ संरक्षक। ७ सीधा-सादा, भोला-भाला। ८ चतुर, होशियार।
सैणप–स्त्री० १ भले मनसाहत, सज्जनता। २ सीधापन, सरलता। ३ प्रेम, स्नेह। ४ होशियारी, चतुराई।
सैणल–देखो 'सैणी'।
सैणाई–१ देखो 'सैणाई'। २ देखो 'सैणप'।
सैणाचार–पु० १ सज्जनता पूर्ण आचरण, सौजन्यता पूर्ण व्यवहार। २ मित्रता, दोस्ती, प्रेम। ३ मेल-जोल। ४ भलाई।
सैणी–स्त्री० वेदा चारण की पुत्री जो देवी का अवतार मानी गई है। –वि० १ सीधी-सादी, भोली-भाली। २ भली, सज्जन, शरीफ।
सैणू, सैणौ–देखो 'सैणी'।
सैत, सैंत–१ देखो 'सेत'। २ देखो 'सहद'।
सैतळ–वि० १ नाश, नष्ट, ध्वस्त। २ समतल, बराबर। ३ देखो 'सैंतळ'।
सैतान–पु० [अ० शैतान] १ ईश्वर विरोधी एक अदृश्य शक्ति जो अमानवीय एवं क्रूर भावनाओं की प्रतीक मानी जाती है। २ भूत-प्रेत आदि अधम योनी। ३ दुष्ट, अत्याचारी, क्रूर व्यक्ति। –वि० १ क्रूर, दुष्ट, दुराचारी, आततायी। २ उद्दण्ड, बदमाश, शरारती। ३ प्रचण्ड, रौद्र। ४ शक्तिशाली प्रबल। ५ विशाल, भीमकाय। ६ धर्म विरोधी, विधर्मी।
सैतानी–स्त्री०[अ० शैतानी] १ शैतान का कार्य। २ अत्याचार, दुष्टता। ३ उद्दण्डता, शरारत। ४ शक्ति, बल, पराक्रम।
सैता–वि० १ सब, समस्त। २ सहित।
सैतार–देखो 'सितार'।
सैंत्रुंज, सैंत्रुंजो–देखो 'सेत्रुंज'।
सैंद–क्रि०वि० १ लिये, वास्ते, निमित्त। २ देखो 'सैंयद'।
सैंदजाबी–देखो 'सैयदजादौ'।
सैंदरूप–देखो 'सैंदरूप'।
सैंदांण–१ देखो 'सैंयद'। २ देखो 'सादियांणो'।
सैंदांणी, सैंदान, सैंदांनो सैंदांनौ–क्रि०वि० १ साक्षात्, प्रत्यक्ष। २ देखो 'सादियांणो'।
सैंदेव सैंदेव–देखो 'सहदेव'।
सैंदेह–देखो सैंदेह'।
सैंधव–पु० १ द्रव्य, धन, वित्त। २ देखो सैंधव'।
सैंधी–पु० सुरंग।
सैन–स्त्री० [सं० संज्ञपन] १ इशारा, संकेत। २ निशान, चिह्न, यादगार। ३ ज्ञान, शिक्षा। ४ मार्ग दर्शन। ५ लेटना, शयन। ६ कामदेव, मदन। ७ देखो 'सेन'। ८ देखो 'सैण'। ९ देखो सेना'।
सैनक–पु० सर्प।
सैनपति (पती)–देखो 'सेनापति'।
सैनभोग–पु० [सं० शयन-भोग] शयन आरती के समय चढ़ाया जाने वाला भोग।
सैनांण, सैंनांण पु० १ निशान, चिह्न। २ पहचान चिह्न।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ स्मृति चिह्न । ४ धब्बा, दाग खराब । ५ प्रतीक । ६ संकेत । ७ झण्डा, पताका ।

सैनाणी, सैनांणी–स्त्री० १ यादगार के रूप में मानी जाने वाली वस्तु, स्मृति चिह्न । २ पहचान, चिनारूत । ३ लक्षण गुण । ४ नमूना ।

सैनाई, सैनाय–स्त्री० [फा० शहनाई] शहनाई, नफीरी, बाजा ।

सैनिक–पु० [सं०] १ सेना या फौज का आदमी, सिपाही । २ सुभट, योद्धा । ३ प्रहरी, सतरी ।

सैनी–पु० १ नाई, हज्जाम । २ देखो 'सैन' ।

सैनीछर–देखो 'सनिस्चर' ।

सैन्या–देखो 'सेना' ।

सैपाठी–पु० सहपाठी, साथ पढ़ने वाला, साथी ।

सैफोड़ी–वि० निरन्तर दर्द या पीड़ा बना रहने वाला, कष्टमय ।

सैप्रत, सैप्रत्त–देखो 'सांपत' ।

सैफळ, सैफळी–देखो 'सैफळी' ।

सैफी–पु० [अ० सैफ़ा] जिल्दसाजी में काम आने वाला एक औजार विशेष ।

सैबास–देखो 'साबास' ।

सैबुलबुल–स्त्री० शहद बुलबुल नामक पक्षी ।

सैमळ, सैमल–१ देखो 'सेमळ' । २ देखो 'सामल' ।

सैमांन–देखो 'सामान' ।

सैमात–स्त्री० शतरंज के खेल में एक प्रकार की शिकस्त ।

सैमुदी, सैमूंदी, सैमूदी–देखो 'सेमूंदी' । (स्त्री० सैमुदी, सैमूंदी)

सैमें–देखो 'समय' ।

सैय–पु० पक्ष ।

सैयद–पु० १ मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग । २ मुसलमान । —जादी–पु० 'सैयद' वर्ग का मुसलमान ।

सैया–स्त्री० (ब.व.) १ सखियां सहेलियां । –पु० २ प्रियतम, पति ।

सैय्यद–देखो 'सैयद' ।

सैय्यां–देखो 'सैयां' ।

सैरंध्रिका, सैरंध्री–स्त्री० [सं० सैरन्ध्री] १ द्रौपदी का वह नाम जो उसने अज्ञातवास के समय रखा था । २ दूसरे के घर में रहने वाली स्वाधीन शिल्पकारिणी स्त्री । ३ अन्तःपुर में काम करने वाली दासी, विशेष । ४ दासी, सेविका, परिचारिका । ५ नीच जाति की चाकरानी । ६ वर्ण संकर जाति ।

सैर, सैर–स्त्री० [अ०] १ मनोरंजन के लिये की जाने वाली यात्रा, पर्यटन, भ्रमण । २ मौज, मस्ती, मनोविनोद । ३ शिकार मृगया । ४ देखो 'सहर' ।

सैरगाह–स्त्री० [अ०] पर्यटन-स्थल, सैर करने का स्थान ।

सैरड़ी–देखो 'सहर' ।

सैरपना, सैरपनाह, सैरपनी, सैरपनाह, सैरपनी–देखो 'सहरपनाह' ।

सैरसपाटा–पु० भ्रमण पर्यटन ।

सैरसारणी–स्त्री० [फा० शहर+सं० सारणी] शहर के समस्त व्यक्तियों को दिया जाने वाला सामूहिक भोज ।

सैरि–स्त्री० [सं०] १ कार्तिक मास । २ एक प्राचीन जनपद । ३ देखो 'सेरी' ।

सैरियो, सैरी–देखो 'सहरी' ।

सैलग–देखो 'सलग' ।

सैल (सैलड़ो)–पु० [स० शैल] १ पहाड़, पर्वत । २ कोई बड़ा पत्थर, चट्टान । ३ हिमाचल का राजा व पार्वती का पिता । –वि० १ पत्थर का, पत्थर संबंधी । २ कड़ा, कठोर । ३ देखो 'सैर' । ४ देखो 'सेल' । –कन्या, कुमारी –स्त्री० उमा, पार्वती । –गुर, गुरु–पु० बड़ा पर्वत, हिमालय या सुमेरु पर्वत । —जा–स्त्री० उमा, पार्वती । —धन्वा–पु० शिव, महादेव । –धर–पु० श्रीकृष्ण, बजरंग । —नदनी, नंदिनी –स्त्री० पार्वती । —पत, पति, पती–पु० हिमालय या सुमेरु पर्वत । —पुती, पुत्री, पुत्री–स्त्री० पार्वती, दुर्गा आठ विशिष्ट देवियों में से एक । —राज—पु० हिमालय, सुमेरु । –सुत–पु० स्वर्ण, सोना । –सुता–स्त्री० पार्वती, उमा ।

सैल–देखो 'सहल' ।

सैलगंगा–स्त्री० [सं० शैल-गंगा] गोवर्द्धन पर्वत से निकलने वाली एक नदी ।

सैलसपाटा, सैलसिकार–पु० आमोद-प्रमोद व मनोरंजन के के लिये किया जाने वाला भ्रमण, सैर ।

सैलांण–वि० १ सैर करने वाला, भ्रमणशील । २ देखो सेनांणी' । ३ देखो 'सलाणी' ।

सैलांन–पु० १ नग, नगीना । २ देखो 'सेनांण' ।

सैलाड़–पु० १ एक साथ, परस्पर गर्दन से बंध हुए दो बैल आदि चोपाये । २ इस प्रकार बांधने की रस्सी या क्रिया । ३ दो पशुओं का जोड़ा । ४ देवी को चढ़ाये जाने वाले दो बकरे, बकरों का युग्म ।

सैलाड़णो (बो)–क्रि० बैल, बकरे आदि के युग्म को एक ही रस्सी से परस्पर गर्दन से बांधना ।

सैलात्मजा–स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती ।

सैळी–देखो 'सेही' ।

सैली–स्त्री० [सं० शैली] १ वाक्य-रचना का ढंग, लिखने का ढंग । २ चाल, ढंग, तरीका । ३ परिपाटी, प्रणाली । ४ रीति, रिवाज, प्रथा । ५ आचरण, चाल-चलन ।

सैलोट–पु० १ ध्वंस, नाश, विनाश । २ समतल ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेळो, सेसो–पु० १ मट-मैले रंग का ऊंट या कुत्ता। २ देखो 'सेळो'।

सेव–वि० [सं० शैव] १ शिव का, शिव संबंधी। २ शैव सम्प्रदायी। ३ जिसकी सेवा करना उचित हो, सेव्य। –पु० १ शैव सम्प्रदाय या उसका अनुयायी। २ शिव का भक्त या उपासक। ३ अष्टादश पुराणों में से एक।

सेवण–देखो 'सेवण'।

सेवणी (बी)–देखो 'सेवणी' (बी)

सेवपुरांण–पु० [सं० शैवपुराण] शिव पुराण।

सेवळी–देखो 'सेहीं'।

सेवांन–देखो 'सादियाणो'।

सेवाळ–देखो 'सेवाळ'।

सेवालमालना–पु० एक प्रकार का भाला या सांग।

सेवी–स्त्री० [सं० शैवी] १ पार्वती, दुर्गा। २ मनसादेवी। ३ कल्याणी।

सेस–१ देखो 'सेस'। २ देखो 'सहस्र'।

सेंसांकरण–देखो 'सहस्रकिरण'।

सेसरनांम (नांव)–देखो 'सहस्रनाम'।

सेसव–स्त्री० [सं० शैशव] बाल्यकाल, बचपन, लड़कपन। –वि० शिशु संबंधी।

सेसवदन–पु० [सं० सहस्र-वदन] शेषनाग।

सेसाजळ–पु० लक्ष्मण।

सेसार–देखो 'ससार'।

सेसारजुन–देखो 'सहस्रार्जुन'।

सेह–देखो सें'।

सेहड़ो–पु० [सं० सुभट] १ योद्धा, सुभट। २ देखो 'सेड़ो'।

सेहत, सेहती–१ देखो 'सेहत'। २ देखो 'सहित'।

सेहनाई–देखो 'सहनाई'।

सेहर–१ देखो 'सहर'। २ देखो 'सैर'।

सेहस–देखो 'सैर'।

सेहे, सेहेत–१ देखो 'सें'। २ देखो 'सहित'।

सों–१ देखो 'सु'। २ देखो 'सोगन'।

सोंक–देखो 'सूंक'।

सोंगणी–देखो 'सागणी'।

सोंगसी–स्त्री० घोड़े के कान के नीचे व आंख के ऊपर होने वाली भंवरी।

सोंगाड़ो–पु० बढ़ई का औजार विशेष।

सोंझ–देखो 'सौंझ'।

सोंधो–देखो 'सोंधो'।

सोंपड़–देखो 'सोपड़'।

सोंपणी (बी)–देखो 'सूंपणी' (बी)।

सोंधो–पु० एक प्रकार का घास।

सोंस–देखो 'सूंस'।

सोंहगी–देखो 'सूंगी'।

सो–पु० १ श्लोक। २ दुःख। ३ मनुष्य। ४ शरीर। ५ पण्डित। ६ चन्द्रमा। ७ मंत्र। ८ शुक्रवार। —स्त्री० ९ पार्वती। —वि० १ शुद्ध, पवित्र। २ मलीन, म्लान। ३ स्थिर। ४ सब, समस्त। ५ समान तुल्य। –अव्य० १ मात्रा या मान सूचक अव्यय शब्द। –क्रि० वि० २ तक, पर्यन्त। ३ इस प्रकार, ऐसा। ४ अतः, इसलिये। —सर्व० १ वह, वे। २ वही। ३ उस, उसके। ४ उन। ५ जो।

सोअणो–देखो 'सोवणो'।

सोअहम–अव्य० [सं० सोऽहम्] वही मैं हूं। मैं ही ब्रह्म हूं।

सोइ–देखो 'सोई'।

सोइलो–देखो 'सोहिलो'।

सोई–स्त्री० एक जाति विशेष। —सर्व० वही, वह। –वि० १ शुभ चिंतक, हितैषी। २ सभी, सब। ३ देखो 'सोजी'।

सोउं–देखो 'सोअहम्'।

सोऊ–सर्व० वह।

सोक–पु० [सं० शोकः] १ परिवार में किसी की मृत्यु के कारण होने वाला शोक, दुःख। २ कष्ट, दुःख, रंज। ३ पीड़ा, दर्द। ४ विपत्ति, संकट। ५ संताप, पश्चाताप। ६ साहित्य में ३३ प्रकार के संचारी भावों में से एक। ७ देखो 'सोक'।

सोकड़, सोकड़लो, सोकण–१ देखो 'सोक'। २ देखो 'सोक'।

सोकणी (बी)–देखो 'सोखणी' (बी)।

सोकरड़ो–देखो 'सोकरड़ो'।

सोकळ–पु० १ शुष्क, साधारण। २ अपौष्टिक।

सोकह–पु० शोक, रंज।

सोकाकुळ–वि० [सं० शोकाकुल] शोक से व्याकुल, दुःखी, चिंतित।

सोकातिसार–पु० शोक व चिंता से होने वाला अतिसार रोग।

सोख–पु० १ बकरी के समान 'गलथने' वाला घोड़ा। २ देखो 'सोख'।

सोखण–देखो 'सोसण'।

सोखणी–वि० संहार करने वाली, शोषण करने वाली।

सोखणो (बी)–क्रि० [सं० शोषणम्] १ पीना। २ आचमन करना। ३ सुखाना। ४ शोषण करना, चूसना। ५ मारना, संहार करना। ६ नष्ट करना, मिटाना। ७ विष आदि उतारना।

सोखता–स्त्री० [सं० शुष्] एक प्रकार की पिशाचिनी जिसके संसर्ग से मनुष्य कृशकाय होकर धीरे-धीरे मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

सोखायत–देखो 'सोगात'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोखी–वि० १ मित्र, दोस्त, हितैषी। २ शोकीन।
सोखीन–देखो 'सौखीन'।
सोखीनाई–देखो 'सौखीनाई'।
सोगंध–स्त्री० शपथ।
सोग–देखो 'सोक'।
सोगटाबाजी–स्त्री० शतरंज या चौसर का खेल।
सोगटी, सोगट्ठी–देखो 'सोगटी'।
सोगटी, सोगठी–पु० शतरंज या चौसर की गोट, गोटी।
सोगन–१ देखो 'सोगंध'। २ देखो 'सुगनी'।
सोगरी, सोगरी–पु० बाजरे की मोटी रोटी।
सोगात–देखो 'सौगात'।
सोगियी–वि० १ भेद लेने वाला। २ देखो 'सोगी'।
सोगी–वि० [सं० शोक+रा प्र.ई.] १ शोकसंतप्त, दुःखी, चिंतित। २ देखो 'सुहागी'। ३ देखो 'सोखी'।
सोड़–स्त्री० १ रजाई, सिरख। २ देखो 'मसोड़'।
सोड़क–पु० ल व के साथ घूमने वाले चक्र में लगने वाला लोहे का डंडा।
सोड़स–देखो 'सोडस'।
सोच–पु० १ चिंता, फिक्र। २ पश्चाताप, पछतावा। ३ दुःख रंज। ४ आश्चर्य, विस्मय। ५ देखो 'सौच'।
सोचक–पु० [स० सूचिक] दरजी।
सोचकेस–देखो 'सोचीकोस'।
सोचणो (बो)–क्रि० १ चिंता या फिक्र में पड़ना, चिंतित होना। २ किसी बात या विषय पर विचार करना, मनन करना, कल्पना करना। ३ निश्चय करना, इरादा करना, विचार करना। ४ विशेषतः किसी कार्य के परिणाम या प्रणाली पर विचार-विमर्श करना। ५ किसी कार्य में उचित-अनुचित का विचार करना। ६ अनुमान या अंदाज करना। ७ असमंजस में पड़ना, पशोपेश में पड़ना।
सोचिकेस–देखो 'सोचीकेस'।
सोची–स्त्री० [स० शोचिस्] १ प्रकाश, ज्योति। २ आभा, कांति, चमक। ३ अग्नि, आग।
सोचीकेस–पु० [सं० शोचिष्केशः] अग्नि, आग।
साज–स्त्री० १ तैयारी। २ देखो 'सोच'।
सोजणो (बो)–देखो 'सोधणो' (बो)।
सोजतियो, सोजती–वि० सोजत का, सोजत संबंधी। –पु० सोजत की भूमि में उत्पन्न अजवायन विशेष।
सोजाक–देखो 'सूजाग'।
सोझि, सोझी, सोझी स्त्री० १ विवेक शक्ति, बुद्धि, ज्ञान। २ ध्यान, चेष्टा, जानकारी। ३ अक्ल, बुद्धि, विचार शक्ति। ४ देखो 'सोझी'।
सोझो, सोझो–पु० सूजन शोथ।
सोधण–स्त्री० शुद्ध करने या संशोधन करने की क्रिया।
सोधणो (बो)–देखो 'सोधणो' (बो)।
सोध, सोट–पु० १ गोडवाड़ में, बच्चे के जन्म के बाद प्रथम होली पर बांटा जाने वाला एक प्रकार का खाजा। २ देखो 'सोटो'।
सोटण, सोटी–स्त्री० लंबी लकड़ी या लाठी, तड़ी।
सोटो–पु० १ मोटी लकड़ी का मजबूत डंडा, लाठी, लट्ठ। २ भैंसा सांड। ३ देखो 'सोठो'।
सोठागारो–वि० (स्त्री० सोठागारी) १ मितव्ययी। २ कृपण, कंजूस।
सोठो, सोठो पु० १ तंगी अभाव। २ मितव्ययता। ३ कृपणता। ४ देखो सोटो'।
सोडस–वि० सोलह। –पु० सोलह की संख्या।
सोडसकळा–स्त्री० [सं० षोड्श-कला] चन्द्रमा की सोलह कलाएँ जिससे वह क्रमशः घटता-बढ़ता है।
सोडसगण–पु० [सं० षोडश्-गण] पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पांच भूत व एक मन का समूह।
सोडसमात्रका–स्त्री० [सं० षोडश्-मातृका] सोलह मातृकाओं का समूह।
सोडसवारखो–वि० [सं० षोडश्-वार्षिका] सोलह वर्ष की, षोडशी।
सोडसो–वि० [सं० षोडशी] १ सोलह वर्ष की आयु वाली। २ युवा, युवती –स्त्री० १ सोलह वर्ष की युवती। २ दश महाविद्याओं में से एक। ३ सोलह तत्त्वों का समूह।
सोडो–पु० एक प्रकार का क्षार।
सोढांण, सोढांथण–पु० ऊमरकोट प्रदेश का प्राचीन नाम।
सोण–पु० [सं० शोण] १ अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार। २ देखो 'शोणित'। ३ देखो 'सुगन'। ४ देखो 'सोणभद्दा'।
सोणक–वि० लाल।
सोणगिर (गिरि, गिरी)–देखो 'स्वरणगिरि'।
सोणत–देखो 'सोणित'।
सोणभद्दनद–पु० [सं० शोणभद्रनद] विंध्याचल से निकल कर पटना के पास गंगा में गिरने वाला एक नद।
सोणभद्दा–स्त्री० [सं० शोण भद्रा] पंजाब की सोन नदी।
सोणहर–पु० शयनघर शयनकक्ष।
सोणित–पु० [सं० शोणित] १ रुधिर, खून, रक्त। २ सिंदूर। ३ केसर। ४ तांबा। –वि० लाल, रक्त वर्ण।
सोणितचंदण (न) पु० [सं० शोणितचंदन] लाल चंदन।
सोणितपुर–पु० [सं० शोणितपुर] १ सोजत नगर का प्राचीन नाम। २ बाणासुर की राजधानी का नाम।
सोणो–१ देखो 'सोणित'। २ देखो 'सोणी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोणू–देखो 'सोहणो'।
सोणो (बो)–१ देखो 'सूवणो' (बो)। २ देखो 'सोहणो' (बो)।
सोत–स्त्री० १ जयपुर रियासत में बहने वाली एक नदी। २ देखो 'स्रोत'। ३ देखो 'सौत'।
सोतपत (पति, पत्नी)–देखो 'स्रोतपति'।
सोतो–देखो 'स्रोत'।
सोथ–स्त्री० [सं० शोथ] सूजन।
सोदकुंभ–पु० पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला एक संस्कार।
सोधणो (बो)–देखो 'सोधणो' (बो)।
सोदर, सोदरज–पु० [सं० स-उदर] एक ही माँ की कोख से जन्मा भाई, भ्राता।
सोदरा, सोदरी–स्त्री० [सं० सहोदरा] १ सगी, बहन, भगिनी। [सं० सुभद्रा] २ श्रीकृष्ण की बहन व अर्जुन की पत्नी। ३ दुर्गा देवी का एक नाम।
सोदागर–देखो 'सौदागर'।
सोदी–देखो 'सौदी'।
सोध–स्त्री० [सं० शोध] १ खोज तलाश और खबर। २ शुद्धि, संस्कार। ३ अन्वेषण, गवेषणा। ४ दुरुस्ती। ५ छिपी हुई व रहस्यपूर्ण बातों की खोज। –पु० ६ घर, मकान। ७ महल, प्रासाद। ८ विचार। ९ देखो 'सोध'।
सोधक–वि० [सं० शोधक] १ शुद्ध करने वाला। २ ढूंढने या तलाश करने वाला। ३ शोध करने वाला। ४ सुधार करने वाला।
सोधणी–स्त्री० [सं० शोधनी] बुहारी, झाड़ू।
सोधणो (बो)–क्रि० [सं० शोधन] १ खोजना, ढूंढना, तलाश करना। २ साफ करना, शुद्ध करना। ३ ठीक और दुरुस्त करना, सुधारना। ४ विचार करना, सोचना। ५ औषधियों का शुद्धिकरण करना। ६ छान-बीन या जांच करना। ६ गवेषणा, अन्वेषण करना।
सोधन–पु० [सं० शोधन] १ शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव। २ दोष, मूल आदि का सुधार। ३ रहस्यमय नई बातों की खोज, अन्वेषण। ४ प्रायश्चित। ५ सजा, दंड। ६ जुलाब की क्रिया, विरेचन। ७ नींबू। ८ औषधियों का शुद्धिकरण।
सोधाणो (बो)–क्रि० १ खोज या तलाश करना, ढूंढाना। २ शुद्ध कराना, साफ कराना। ३ ठीक या दुरुस्त कराना, सुधराना। ४ विचार करने के लिये प्रेरित करना। ५ वैद्यक में धातुओं का शोधन कराना। ६ छान-बीन कराना, जांच पड़ताल कराना। ७ अन्वेषण कराना, गवेषणा कराना
सोधी–देखो 'सोजी'।
सोधो–देखो 'सोदो'।
सोनंग, सोनंगर, सोनंगरी–देखो 'सोनगरो'।
सोन–स्त्री० [सं० शोण] १ एक नदी जो मध्य प्रदेश के अमरकंटक की अधित्यका से निकलती है तथा अंत में गंगा में मिलती है। २ एक सदाबहार पौधा।
सोनइयो–पु० १ स्वर्णमुद्रा। २ एक प्रकार की घास।
सोनउ–देखो 'सोनो'।
सोनगढ़–पु० १ जालोर का दुर्ग। २ देखो 'स्वरणगिरि'।
सोनगर–पु० जालोर नगर का प्राचीन नाम।
सोनगरो–पु० चौहान क्षत्रियों की सोनगरा शाखा।
सोनगिर (गिरि, गिरी)–देखो 'स्वरणगिरि'।
सोनचिड़ी–स्त्री० सफेद व काले रंग की एक चिड़िया जिसका शकुन देखा जाता है।
सोनजरद–पु० पीली जुही।
सोनजाय, सोनजुही–स्त्री० [सं० स्वर्णयूथिका] पीले रंग के फूलों वाली जूही।
सोनड़ो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।
सोनभद्र, सोनभद्रा–देखो 'सोन'।
सोनल–वि० १ सोने का, स्वर्णमय, सुनहरा। २ गौर वर्ण। ३ चमकदार, चमकीला।
सोनलभींग (भींगो)–स्त्री० १ भृंग जाति का एक कीट। २ एक राजस्थानी लोक गीत।
सोनलवो, सोनलहलवो (हलुवो)–देखो 'सोहनहलवो'।
सोनलिया–स्त्री० मांगणियार जाति का एक भेद विशेष।
सोनवांणो–पु० वह पानी जिसमें सोना डुबोया गया हो।
सोनहरो–पु० (स्त्री० सोनहरी) ऐसा घोड़ा जिसके काले सुमों पर सफेद रेखा या सफेद सुमों पर काली रेखा हो।
सोनागर, सोनागिर (गिरि)–देखो 'स्वरणगिरि'।
सोनागेरु–पु० [सं० स्वर्णगैरिक] एक प्रकार की लाल एवं मुलायम मिट्टी विशेष।
सोनानांमो–पु० रुक्मिणी का भाई, रुक्मि।
सोनामखी–स्त्री० रेतीले मैदान में पाया जाने वाला एक विषैला जंतु।
सोनामुखी–स्त्री० [सं० स्वर्ण मक्षिका] १ एक प्रकार का खनिज पत्थर जो सोने के अभाव में औषधियों में काम लिया जाता है। २ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियां विरेचन के काम आती है, सनाय। ३ एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
सोनार–देखो 'सुनार'।
सोनारूपो–पु० एक मारवाड़ी लोक गीत।
सोनावेल–स्त्री० एक लता विशेष।
सोनाहरणी–स्त्री० वेश्या।
सोनिक–पु० १ खटीक। २ कसाई।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोनिड़ी, सोनी, सोनीड़ी–देखो 'सुनार'।

सोनेरण–स्त्री० सोने की मूठ वाली तलवार या कटार।

सोनेरी–पु० एक प्रकार का घोड़ा। –वि० १ स्वर्ण संबंधी, सोने का। २ देखो 'सोनहरी'।

सोनेली (ली)–स्त्री० वर्षा ऋतु में होने वाला एक पौधा विशेष। –वि० सोने के समान रंग वाली।

सोनैयो–पु० [सं० स्वर्ण] सोने का सिक्का विशेष।

सोनो–पु० [सं० स्वर्ण] १ एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके आभूषण आदि बनते हैं, कंचन। २ बहुमूल्य पदार्थ, वस्तु। –वि० पीत*।

सोन्हैरी–देखो 'सोनेरी'।

सोपट–क्रि०वि० प्रत्यक्ष, खुल्लमखुल्ला, चौड़े में।

सोपान–पु० [सं० सोपान] १ जीना, सीढ़ी। २ किसी पुस्तक का अध्याय, पाठ। ३ मोक्ष का उपाय। (जैन)

सोपारी–देखो 'सुपारी'।

सोपारी सोपारी–पु० १ अलगोजे से मिलता-जुलता एक वाद्य विशेष। २ पुरुष चिह्न, जिनेंद्रिय का अग्र भाग, मणि।

सोपो, सोपो–पु० [सं० स्वापः] १ रात्रि का सन्नाटा, शान्ति। रात के सन्नाटे वाला समय। २ स्तब्धता, सुनसान, सूनापन। ३ शांति।

सोफियांनी (नी)–वि० [अ० सूफी-इयानी] १ सूफियों का, सूफी सम्बन्धी। २ हल्का-फुल्का, साधारण।

सोफियो–पु० सूफी सम्प्रदाय का व्यक्ति।

सोफी–पु० नशा करने वाला व्यक्ति, नशाबाज।

सोफोदर–पु० [सं० शोफः-उदर] उदर पर सूजन आने का एक रोग विशेष।

सोब–पु० १ पोशाक, पहनावा। २ देखो 'सोभा'।

सोबण–पु० लकड़ी घिसने का औजार।

सोबत–पु० १ व्यापारियों का काफिला, समूह। २ घोड़ों का झुण्ड, समूह। ३ देखो 'सोहबत'।

सोबा–देखो 'सोभा'।

सोबाग–देखो 'सौभाग्य'।

सोबादार, सोबायत–देखो 'सूबेदार'।

सोबो–१ देखो 'सूबो'। २ देखो 'सूबेदार'।

सोभण (न)–देखो 'सुवरण'।

सोभ–देखो 'सोभा'।

सोभक–वि० सुन्दर, सजीला।

सोभग्रीवा–स्त्री० १ गले में धारण करने का आभूषण विशेष। २ कण्ठ की शोभा।

सोभण–पु० १ वस्त्र, कपड़ा। २ एक वर्ण वृत्त विशेष।

सोभणी–१ देखो 'सोभा'। २ देखो 'सोभनी'।

सोभणौ (णौ)–क्रि० १ शोभित होना, शोभायमान होना। २ जंचना, फबना शोभा देना। ३ सज्जित होना, सजना।

सोभन–पु० [सं० शोभन] १ शिव, महादेव। २ सुर्य। ३ मालकोश राग का एक भेद। ४ अग्निदेव। ५ आग, अग्नि। ६ ग्रह। ७ ज्योतिष के २७ योगों में से पांचवां योग। ८ चौबीस अक्षरों का एक छन्द विशेष। ९ विष्णुबीसी का सत्रहवां वर्ष। –वि० १ मंगल, कल्याण। २ सुन्दर, मनोहर। ३ देखो 'सोभण'।

सोभना–स्त्री० [सं० शोभना] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

सोभनी–स्त्री० १ एक प्रकार की रागिनी। २ देवी दुर्गा का नाम। –वि० सोभा देने वाली।

सोभय–स्त्री० सुख देने वाली देवी विशेष।

सोभरद्रांम–पु० सोभर ऋषि का धाम या यमुना नदी का हृद।

सोभवती–वि० सुन्दर, आकर्षक।

सोभा–स्त्री० [सं० शोभा] १ दीप्ति, आभा, कांति, चमक। २ सुन्दरता, छवि, रूप। ३ रंग वर्ण। ४ सौन्दर्य को बढ़ाने वाला तत्व। ५ प्रशसा, बड़ाई, कीर्ति। ६ अच्छा गुण। ७ हल्दी। ८ गोरोचन। ९ बीस अक्षरों का वर्ण वृत्त। १० आर्या या गाहा छन्द का एक भेद।

सोभाउ (ऊ)–स्त्री० वह स्त्री या कन्या जिसे, विवाहित कन्या के प्रथम बार ससुराल जाते समय साथ भेजा जाता है। –वि० शोभा बढ़ाने वाला।

सोभाग–देखो 'सौभाग्य'।

सोभागियो, सोभागी–वि० (स्त्री० सोभागण, सोभागणी) सौभाग्यशाली, भाग्यवान।

सोभायमांन–वि० शोभायुक्त, शोभित, शोभा देने वाला।

सोभाळू–वि० सुन्दर, बढ़िया, प्रशंसनीय।

सोभाळो–वि० (स्त्री० सोभाळी) १ यशस्वी, कीर्तिवान। २ सुन्दर, मनोहर।

सोभाव–देखो 'स्वभाव'।

सोभावटी–वि० [सं० शोभा-वती] एक प्रकार की पत्थर की पट्टी या लकड़ी का मोटा तख्ता जो खिड़की या दरवाजे के ऊपरी भाग पर पाटन के रूप में लगाया जाता है, करगहना।

सोभावांन–वि० १ सौभाग्यवान, सौभाग्यशाली। २ शोभावाला। ३ आभा व कांति वाला। ४ कीर्तिवान।

सोभित–वि० [सं० शोभित] १ सुन्दर, मनोहर। २ शोभायमान। ३ शोभा युक्त, सजा हुआ, सुशोभित।

सोम–पु० [सं०] १ चन्द्रमा, शशि। २ अमृत। ३ यम। ४ सोमवार। ५ स्वर्ग। ६ किरण। ७ एक प्रकार की लता जिसका रस यज्ञ में काम आता था। ८ सोमवल्ली

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का रस। ९ कर्पूर। १० जल, पानी। ११ पवन, वायु। १२ कुबेर। १३ शिव का एक नाम। १४ मन। १५ एक प्रकार की औषधि। १६ आठ वसुओं में से एक। १७ पितर गणों का एक समूह। १८ मांड। १९ स्त्रियों का एक प्रदर रोग। २० मालकोश राग का भेद। २१ एक प्रकार का वृक्ष। २२ मेवाड़ की एक नदी। २३ देवता। २४ यज्ञ की सामग्री। २५ एक प्रकार का यज्ञ। २६ आकाश। २७ कांजी। २८ जैनियों के ८८ ग्रहों में से बारहवां ग्रह। २९ एक अन्य ग्रह। –वि० १ श्वेत। २ लाल। ३ शांत, निर्मल। –कर–वि० मधुर। –पुत्र–पु० चन्द्रमा का पुत्र बुध। —पुर–पु० चन्द्रलोक। —प्रिया–स्त्री० रात्रि, चांदनी। —बधु–पु० बुध ग्रह। सूर्य। कुमुद। —भू–पु० बुध का एक नाम। चन्द्रवंशी। —राज–पु० चन्द्रमा। —राज्य–चन्द्रलोक। —वंस–पु० चन्द्रवंश। युधिष्ठिर। —वंसी–पु० चन्द्रवंशीय क्षत्रिय या व्यक्ति। —सुत='सोमपुत्र'।

सोमइयो, सोमईउ, सोमईयो–पु० सोमनाथ नामक प्रसिद्ध शिव लिंग।

सोमक–पु० [सं०] १ स्त्रियों का एक रोग। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ३ एक प्राचीन ऋषि।

सोमकांत–स्त्री० [सं०] १ चन्द्रकांत मणि। २ सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन राजा।

सोमग्रह–पु० घोड़ों का एक रोग विशेष।

सोमज–पु० [सं०] दूध।

सोमधात–पु० सूर्य भानु।

सोमनाथ–पु० १ काठियावाड़ में स्थित एक प्रसिद्ध शिव लिंग। २ वह स्थान जहां यह शिव लिंग स्थित है।

सोमप–पु० [सं०] १ पितरों का एक समूह विशेष। २ स्कन्द का एक सैनिक। –वि० जिसने यज्ञ में सोमरस का पान किया हो।

सोमपुरा–स्त्री० एक जाति विशेष जो स्थापत्य कला या शिल्प का कार्य करती थी।

सोमबल्लि–स्त्री० सोमलता।

सोमरोग–पु० स्त्रियों का एक रोग।

सोमल–पु० १ शंखिया नामक विष का एक भेद। २ एक वृक्ष। –वि० कड़वा, खारा।

सोमलखार–पु० मल्ल नामक विष।

सोमलता–स्त्री० १ गिलोय। २ ब्राह्मी। ३ एक लता विशेष।

सोमवंसपत–पु० [सं० सोमवंश पति] १ युधिष्ठिर का एक नाम। २ कोई चन्द्रवंशीय राजा।

सोमवंसराजा–पु० युधिष्ठिर।

सोमवतीअमावस (अमावस्या)–स्त्री० सोमवार को आने वाली अमावस्या तिथि जो पुण्य तिथि मानी जाती है।

सोमवरचा–पु० [स० सोमवर्चा] १ एक सनातन विश्वदेव का नाम। २ एक गन्धर्व का नाम।

सोमवार–पु० [स०] प्रत्येक सप्ताह में रविवार के बाद आने वाला दिन।

सोमवारो–वि० १ सोमवार का, सोमवार संबंधी। २ सोमवार को पड़ने वाला या आने वाला।

सोमा–स्त्री० [सं०] १ एक प्राचीन नदी। २ एक अप्सरा का नाम।

सोमायन–पु० एक माह तक चलने वाला एक व्रत विशेष।

सोमावती–स्त्री० [स०] चन्द्रमा की माता का नाम।

सोमिज–देखो 'सोमज'।

सोमीईयो–देखो 'सोमइयो'।

सोमेसर (सुर, स्वर)–पु० [सं० सोमेश्वर] १ महादेव, शिव। २ काशी में स्थित एक प्रसिद्ध शिव लिंग।

सोम्य–वि० [सं०] १ सोम-सम्बन्धी सोम, का। २ सुन्दर मनोहर। ३ सोम पान करने का अधिकारी। ४ यज्ञ में सोम की आहुति देने वाला। ५ अच्छा, सुन्दर। ६ शांत, गंभीर।

सोयप्रभा–देखो 'स्वयंप्रभा'।

सोय–स्त्री० १ जानकारी, ध्यान, समझ। २ ठीक सामने की दिशा, सीध। ३ टोह, अंदाज, पता। ४ रुख, इरादा ध्यान। –सर्व० १ वह, वे। २ उसे। ३ जो। ४ वही। ५ 'सो'।

सोयण–पु० [स० सज्जन] चारण कवि।

सोयम–वि० तीसरा, तृतीय।

सोयली–स्त्री० साड़ी।

सोयलो–पु० (स्त्री० सोयली) १ एक प्रकार का घास। २ देखो 'मोहिलो'।

सोयसी–स्त्री० [सं० श्रेयसी] हरीतकी, हर्रे।

सोरंभ–देखो 'सौरभ'।

सोरंभणो (बो)–क्रि० सुगंध युक्त होना, महकना।

सोरंभमूळ–देखो 'सौरभमूळ'।

सोरंभी–देखो 'सौरभ'।

सोर–पु० [फा० शोर] १ कोलाहल, हल्ला-गुल्ला। २ बारूद। ३ तीखी व ऊंची आवाज, चीख। ४ मधुर या मोहक ध्वनि। ५ आतिशबाजी, पटाखा।

सोरकी–पु० १ डर, भय, आतंक। २ चिंता, फिक्र।

सोरखानो–पु० [फा० शोरखाना] बारूद बनाने या रखने का स्थान बारूद कक्ष।

सोरगर पु० [फा० शोरगर] बारूद व आतिशबाजी बनाने व बेचने वाला।

सोरजंत्र–पु० [फा० शोर+सं० यंत्र] १ बन्दूक। २ तोप।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोरट, सोरठ–स्त्री० १ राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में स्थित सौराष्ट्र प्रदेश। २ ओड़व जाति का एक राग।

सोरठगेड़–स्त्री० शकुनशास्त्र के अनुसार दूल्हा-दुल्हिन के परिभ्रमण की गति का नाम।

सोरठड़ी–वि० १ सौराष्ट्र देश की। २ अच्छी लगने वाली। ३ देखो 'सोरठ'।

सोरठमलार–पु० सब शुद्ध स्वरों का, सम्पूर्ण जाति का एक राग।

सोरठियो–पु० डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

सोरठी–स्त्री० एक रागिनी विशेष।

सोरठो–पु० एक छन्द विशेष।

सोरदांणी–स्त्री० [फा० शोरदानी] बारूद रखने का एक पात्र विशेष।

सोरप–देखो 'सोरापो'।

सोरभ–देखो 'सोरभ'।

सोरभखी सोरभखो–स्त्री० [फा० शोर + सं० भक्षी] तोप, बन्दूक।

सोरम–देखो 'सोरभ'।

सोरसदे–स्त्री० एक देवी का नाम।

सोरमो, सोरवो–पु० १ पके हुए मांस का रस। २ सब्जी का झोल, रस, वसा।

सोराई, सोराई–स्त्री० १ आराम, शांति, तसल्ली। २ सुख।

सोरापो, सोरापो–पु० आराम, सुख, शांति, चैन।

सोरीघर–पु० प्रसूतीगृह।

सो'रो, सोरो–वि० (स्त्री० सोरी) १ आरामदायक, सुखप्रद। २ सहज सरल और आसान। ३ सम्पन्न, समृद्ध। ४ प्रसन्न, खुश। ५ सुखी। –क्रि०वि० आसानी से, आराम से। –पु० १ बारूद। २ एक प्रकार का क्षार। ३ देखो 'सुसरो'।

सोळ सोल–स्त्री० १ वह गाय जिसके स्तन बड़े हों किन्तु दूध कम देती हो। २ पीतल या लोहे का बना छोटा लट्टू जिसको रस्सी के एक छोर पर बांध कर दीवार की सीध देखने के काम लिया जाता है। ३ देखो 'सोळह'।

सोळपगी–पु० १ कनखजूरा। २ सोलह पांव का, रेंगने वाला एक जीव।

सोलमइ (ई, उ), सोळमो (वो)–वि० (स्त्री० सोळवी) पन्द्रह के बाद वाला, सोलह के स्थान वाला।

सोळवी–वि० १ एक मन में सोलह सेर घी वाली। २ सोलह के स्थान वाली।

सोळवीसोनो–पु० १ सोलह बार तपा कर शुद्ध किया हुआ सोना, उत्तम श्रेणी का स्वर्ण। २ अच्छे गुणों वाला ईमानदार व्यक्ति (लाक्षणिक)।

सोळह–वि० [सं० षोडस्] दस व छः का योग। –पु० दस व छः की संख्या व अंक, १६।

सोळहकळास्वांमी–पु० [सं० षोडशकलास्वामी] चन्द्रमा

सोळहसिणगार (सिणगार, सिंगार)–पु० [सं० षोडश-शृंगार] स्त्रियों की वे सोलह प्रसाधन-क्रियायें जो उन्हें अधिक चित्ताकर्षक व सुन्दर बनाती है।

सोसहो–देखो 'सोळो'।

सोळा–देखो 'सोळह'।

सोलाळी, सोलालो–स्त्री० धरती, पृथ्वी।

सोळासणगार, सोळासिणगार (सिंगार)–देखो 'सोळह सिंगार'।

सोलियाळ–वि० [सं० सुखलन् + रा.प्र. ईयाळ] १ कार्य से निवृत्त, उत्तरदायित्व से मुक्त। २ जो किसी प्रकार का शारीरिक श्रम न कर सकता हो, नाजुक। ३ आलसी, निकम्मा। ४ सुखी।

सोळियो–पु० किसी लकड़ी में अन्य लकड़ी फंसाने के लिये किया गया छेद।

सोळी, सोली–स्त्री० रहट के चक्र में लगने वाली लकड़ी विशेष।

सोळे, सोळै, सोळै–देखो 'सोळह'।

सोळैक–वि० सोलह के लगभग।

सोळैकांकरी सोळैसारी–स्त्री० सोलह-सोलह छोटे कंकरों से खेला जाने वाला एक देहाती खेल।

सोळो सोळो–पु० १ एक प्रकार का लोक गीत। २ इस लोक गीत के प्रभाव से होने वाला उत्साह, आवेग, जोश। ३ कांति, दीप्ति, तेज। ४ खुशी के गीत। ५ अंगारा। ६ सोलह का वर्ष, सोलहवां वर्ष।

सोवंन, सोवन्न–देखो 'स्वरण'।

सोवड़ सोवड़ि–स्त्री० १ रजाई के नीचे ओढ़ने का वस्त्र या कम्बल। २ ओढ़ने का बिस्तर, रजाई।

सोवड़ो–पु० मुंह, मुख।

सोवणघर सोवणघर–पु० शयनगृह, शयन कक्ष।

सोवणो–देखो सोहणो'।

सोवणो(वो)–१ देखो 'सुवणो' (वो)। २ देखो 'सोहणो' (वो)।

सोवन–देखो 'स्वरण'।

सोवनकार–देखो 'स्वरणकार'।

सोवनगर, सोवनगिर (गिरि, गिरो)–देखो 'स्वरणगिरी'।

सोवनचिड़ी–देखो 'सोनचिड़ी'।

सोवनजाई, सोवनजुही–देखो 'सोनजुही'।

सोवनथांभ–पु० स्वर्ण स्तंभ।

सोवनथाळ–पु० [सं० स्वर्णथाल] सोने की थाली।

सोवनदे–स्त्री० [सं० सुवर्ण-देह] वधू के लिये प्रयुक्त होने वाला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्मान सूचक शब्द। –वि० स्वर्ण के समान देह वाली।

सोवनमाखी–स्त्री० [सं० स्वर्ण-मक्षिका] १ सुनहरे शरीर वाली एक प्रकार की बड़ी मक्खी। २ देखो 'सोनामक्खी'।

सोवनसींगी–स्त्री० [सं० स्वर्णशृंगी] सोने से मंडित सींगों वाली, सोने के सींगों वाली।

सोवनी–वि० (स्त्री० सोवनी) १ स्वर्ण का, सोने का। २ सुन्दर, सुनहला, सुनहरा।

सोवरण–देखो 'स्वरण'।

सोवरणगिर (गिरि, गिरी)–देखो 'स्वरणगिरि'।

सोवन, सोवन (न्न)–देखो 'स्वरण'।

सोवनी–वि० स्वर्ण का, स्वर्ण युक्त।

सोस–पु० [सं० शोषः] १ अफसोस, खेद। २ जिसमें मन न लगता हो, अरुचिकर। ३ चिंता, फिक्र, सोच। ४ सूजन। ५ दबने का भाव या क्रिया। ६ देखो 'सूंस'।

सोसक–वि० [सं० शोषक] १ शोषण करने वाला, चूसने वाला। २ सुखाने वाला। ३ नाश करने वाला। ४ क्षीण करने वाला। ५ दूसरे का धन हरने वाला। –पु० गरीबों का शोषण करने वाला समाज का धनी वर्ग।

सोसण–पु० [सं० शोषण] १ सुखाने या शुष्क करने की क्रिया या भाव। २ शोषण। ३ सोखने की क्रिया। ४ कामदेव के पांच बाणों में से एक बाण।

सोसणकती–स्त्री० एक प्रकार की, सिरोही की बनी तलवार।

सोसणो (बो)–क्रि० १ सुखाना, शुष्क करना। २ चूसना। ३ किसी के धन या श्रम का शोषण करना। ४ किसी की आर्द्रता या नमी दूर करना, सोखना।

सोसन–पु० १ वस्त्र। २ देखो 'सोसण'।

सोसनग्रह–पु० पारसी मतानुसार रात के १२ बजे से प्रातः तक का समय।

सोसनपता–स्त्री० एक प्रकार की तलवार, कृपाण।

सोसनिया, सोसनी–वि० [फा० सौसनी] आसमानी, नीला। –पु० १ आसमानी रंग। २ आसमानी रंग का घोड़ा।

सोहं, सोहंग, सोहंगम–देखो 'सोऽहम्'।

सोह–वि० १ सब, समस्त। २ सहित, युक्त। –पु० १ जोश, उत्साह। २ कीर्ति, यश। ३ तेज। ४ इज्जत, प्रतिष्ठा। ५ शोभा। ६ सिंह, शेर।

सोहग–१ देखो 'सुभग'। २ देखो 'सोहाग'।

सोहगी–१ देखो 'सुहागी'। २ देखो 'सोगी'।

सोहड, सोहड–देखो 'सुभट'।

सोहग–पु० १ डिंगल का एक गीत या छंद विशेष। २ देखो 'स्वप्न'।

सोहणीनिसांणी–स्त्री० डिंगल का एक मात्रिक छन्द विशेष।

सोहणो–वि० (स्त्री० सोहणी) १ सुहावना, सुन्दर, मनोहर। २ प्रिय, मधुर। ३ शोभा देने वाला। ४ देखो 'स्वप्न'।

सोहणो (बो)–क्रि० १ शोभा देना, शोभित होना। २ जचना, फबना, सुन्दर लगना। ३ कीर्ति, यश आदि फैलना, प्रसिद्ध होना। ४ सूप से अनाज साफ करना।

सोहतो–देखो 'सोहितो'।

सोहनचिड़ी–देखो 'सोनचिड़ी'।

सोहनहलवो–पु० जमे हुए कतरों के रूप में घी से तर एक मिठाई विशेष।

सोहबत–स्त्री० [अ० सोहबत] १ संग, साथ। २ दोस्ती, मेल। ३ देखो 'सोबत'।

सोहबरदिया–पु० सूफी मुसलमानों का एक सम्प्रदाय विशेष।

सोहरो–देखो 'सोरो'। (स्त्री० सोहरी)

सोहलाली–देखो 'सोलाळी'।

सोहनो–स्त्री० ललाट पर धारण करने का, स्त्रियों का एक आभूषण विशेष।

सोहळो–देखो 'सोळो'।

सोहांन–देखो 'सांण'।

सोहांमणो–देखो 'सुहाणो'। (स्त्री० सोहांमणी)

सोहा–१ देखो 'सोभा'। २ देखो 'स्वाहा'।

सोहाग–पु० १ वृक्ष विशेष। २ देखो 'सुहाग'।

सोहागण, सोहागणी, सोहागवति (ती) सोहागिण–देखो 'सौभाग्यवती'।

सोहागी–देखो 'सुहागी'।

सोहापति–पु० [सं० स्वाहापति] अग्नि, आग।

सोहारद–पु० [सं० सौहार्द] १ सहृदय होने की अवस्था या भाव। २ सहानुभूति। ३ कृपा, अनुग्रह। ४ मित्रता, दोस्ती। ५ मित्र, दोस्त।

सोहावणी (बो)–देखो 'सोहणी' (बी)।

सोहितो–पु० बाजरी के खीच व गोश्त को एक साथ पकाकर बनाया जाने वाला नमकीन, मांसोदन।

सोहिलउ–वि० सहज, सुभ।

सोहिलो–वि० (स्त्री० सोहली) १ आसान, सुगम, सरल। २ सुखी। ३ सम्पन्न। –पु० आराम, सुख।

सोही–वि० शुभचिंतक, हितैषी। –सर्व० वही, सो।

सोहोड़–देखो 'सुभट'।

सोह्रद, सोह्रिद–वि० [सं० सहृदय] १ मित्र, हितैषी। २ दयावान, कृपालु।

सौं–स्त्री० सपथ, सौगंध।

सौंज–पु० १ साज-सामान, साधन, सामग्री। २ माला चलाने की विद्या या खेल। ३ खेती, फसल। ४ राह, मार्ग।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ खजाना, भण्डार। ६ विशिष्ट कार्य या क्रिया। ७ कोई पूजनीय चित्र या वस्त्र। –वि० सब, समस्त।

सौंडिक–पु० [सं०] शराब बनाकर बेचने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।

सौण–१ देखो 'सुगन'। २ देखो 'सयन'।

सौणहर–पु० [सं० शयनगृह] शयनागार।

सौणी–देखो 'सुगनी'।

सौधाखानो–पु० इत्र, तेल आदि सुगंधित द्रव्य रखने का कक्ष।

सौधी–पु० १ राजस्थान एवं मध्य प्रदेश में पाया जाने वाला एक पौधा या घास जिससे सुगंधित तेल या इत्र आदि निकलता है, रोहिष। २ इस घास से निकला सुगंधित तेल या इत्र। ३ इत्र आदि सुगंधित द्रव्य।

सौन–देखो 'सुगन'।

सौपणो (वो)–देखो 'सूंपणो' (वो)।

सौफ–स्त्री० १ पांच छः फुट ऊंचा एक पौधा। २ इस पौधे के बीज जो पान मसाला या औषधि में काम आते हैं।

सौबो–देखो 'संवळो'।

सौस–देखो 'सूंस'।

सौ–पु० १ शंख। २ बालक। ३ शनि। ४ सूर्य। ५ बुध। ६ भाई। ७ मित्र। ८ जप। ९ अच्छा वाक्य। –स्त्री० १० धरती पृथ्वी। ११ क्षुधा, भूख। १२ उपासना, आराधना। १३ सौ की संख्या, १००। –वि० १ बलवान, पराक्रमी। २ शुद्ध, पवित्र। ३ सब, समस्त, सम्पूर्ण। [सं० शत] ४ नब्बे और दस, पचास का दुगुना। ५ देखो 'सो'।

सौक, सौकड़, सौकड़ली, सौकण–स्त्री० १ सौत। २ पक्षियों की तेज उड़ान या विमान आदि की तेज गति से उत्पन्न ध्वनि विशेष। ३ तीव्र गति, रफ्तार। ४ तेज भागने की क्रिया। ५ देखो 'सौख'।

सौकरड़, सौकरड़ो–पु० १ तेज वर्षा की ध्वनि। २ तेज व शीघ्र प्रहार की ध्वनि।

सौकसटो–स्त्री० स्त्रियों के सिर के बाल जो लट के रूप में आगे निकले रहते हैं।

सौकातिसार–देखो 'सोकातिसार'।

सौकिया–क्रि०वि० शौक या मनोरंजन के लिये। –पु० शौक पूरा करने या दिल बहलाने के लिये किया गया कार्य।

सौकीन–देखो 'सौखीन'।

सौकूतरो, सौकूतो–देखो 'साकूतरो'।

सौख–पु० [अ० शौक] १ किसी पदार्थ की प्राप्ति या निरन्तर भोग या मन की इच्छा पूर्ति के लिये लगातार किया जाने वाला कार्य। २ इच्छा, आकांक्षा, लालसा। ३ व्यसन, चसका। ४ प्रवृत्ति, झुकाव। ५ देखो 'सौक'।

सौखी–१ देखो 'सोखी'। २ देखो 'सौखीन'।

सौखीन–वि० [अ० शौकीन] १ किसी वस्तु, कार्य, कला, खेल आदि का विशेष चाव या रुचि रखने वाला। २ हर समय बना-ठना रहने व सैर-सपाटे करने वाला। ३ अय्याश, रंडीबाज। ४ नशाबाज।

सौखीनाई–स्त्री० १ शौकीन होने की अवस्था या भाव। २ सजने-संवरने व सैर-सपाटे की प्रवृत्ति। ३ रंडीबाजी, अय्याशी।

सौखीनी–१ देखो 'सौखीनाई'। २ देखो 'सौखीन'। ३ देखो 'सोखी'।

सौगंद, सौगंध, सौगन–देखो 'सोगंध'।

सौगात–स्त्री० [तु०] किसी के यहां उपहार या भेंट-स्वरूप भेजी जाने वाली वस्तु विशेष।

सौगाळो–पु० [सं० शौक-आलुच्] मृतक के पीछे की जाने वाली एक रश्म (मेवाड़)।

सौड़–देखो 'सौड़'।

सौच–पु० [सं० शौच] १ प्रातः उठते ही की जाने वाली मल त्याग आदि नित्य क्रिया। २ शारीरिक शुद्धिकरण, शुचिता।

सौण, सौणी–१ देखो 'सुगन'। २ देखो 'सोणित'।

सौतेलो–पु० (स्त्री० सौतेली) विमाता का पुत्र। –वि० सौतनी या सौत का।

सौदरा–१ देखो 'सुभद्रा'। २ देखो 'भोदरा'।

सौदामणी, सौदामनी, सौदामिणी–स्त्री० [सं० सौदामिनी] १ विद्युत, बिजली। २ एक अप्सरा। ३ कश्यप ऋषि की एक पुत्री।

सौदागर–पु० [फा०] १ व्यापारी, व्यवसायी २ घोड़ों का व्यापारी।

सौदागरी–स्त्री० सौदागर का कार्य, व्यापार, व्यवसाय।

सौदो, सौदो–पु० [अ० सौदा] १ क्रय-विक्रय का कार्य, व्यापार, लेन-देन। २ क्रय-विक्रय की वस्तु, व्यावसायिक सामान। ३ शरीर की एक धातु। ४ कार्य। ५ मस्तिष्क-विकार, पागलपन। ६ प्रेम, इश्क। ७ वस्तु-विनिमय। ८ पशुओं का क्रय-विक्रय, आदान-प्रदान, सट्टा। –वि० चालाक। धूर्त।

सौध–पु० भवन, महल, अट्टालिका।

सौनंद, सौनंद–पु० १ बलराम का एक नाम। २ बलराम का मूसल।

सौनइयो–देखो 'सोनइयो'।

सौनक–पु० [सं० शौनक] एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य ऋषि।

सौनचिड़ी–स्त्री० १ कलाबाजी दिखाने में अत्यन्त निपुण नटी। २ देखो 'सोनचिड़ी'

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोनहरी, सोनेरी-पु० १ सिंह की एक जाति व इस जाति का सिंह। २ देखो 'सोनेरी'।

सौपरण्य-पु० [सं० सौपर्ण] विष्णु के वाहन गरुड़ के अस्त्र का नाम।

सौपाक-पु० एक प्राचीन वर्ण संकरजाति।

सौबल-१ देखो 'सोहबल'। २ देखो 'सोबल'।

सौबल्य-पु० एक प्राचीन जनपद का नाम।

सौबायत, सौबाहो-देखो 'सूबेदार'।

सौभ-स्त्री० १ शाल्वों का नगर। २ आकाश में स्थित एक काल्पनिक नगरी।

सौभद्र-पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ।

सौभाग-देखो 'सौभाग्य'।

सौभागिन, सौभागनी, सौभागिनी-देखो 'सौभाग्यवती'।

सौभागिनेय-पु० [सं०] वह स्त्री जिसका पुत्र उसके पति को अधिक प्रिय हो।

सौभागियो-देखो 'सौभागियो'।

सौभाग्य-पु० १ अच्छा भाग्य या अच्छी किस्मत। २ यश, कीर्ति। ३ शुभत्व। ४ धन, सम्पत्ति, वैभव। ५ सुन्दरता, मनोहरता। ६ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था, सुहाग। ७ शुभ-सन्देश, मंगल-कामना। ८ ज्योतिष के २७ योगों में से चौथा योग ९ एक छन्द विशेष।

सौभाग्यतीज (तीया)-स्त्री० [सं० सौभाग्यतृतीया] भादव मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया।

सौभाग्यवती-स्त्री० १ सधवा या सुहागिन स्त्री। २ सुन्दर स्त्री। --वि० १ अच्छी किस्मत वाली। २ शुभ लक्षणों वाली।

सौभाग्यवान-वि० १ खुश किस्मत, अच्छे भाग्यवाला। २ वैभवशाली, सम्पन्न।

सौभाग्यव्रत-पु० [फा०] फाल्गुन शुक्ला तृतीया को किया जाने वाला व्रत।

सौभाग्यसुंठी-स्त्री० सूतिका रोग में उपयोगी एक आयुर्वेदिक औषधि, पाक।

सौमंत्रेय-पु० १ लक्ष्मण। २ शत्रुघ्न।

सौमन-पु० [सं०] प्राचीन समय का एक अस्त्र।

सौमनस-स्त्री० [सं०] १ पश्चिमी दिशा का एक दिग्गज। २ उदयगिरि पर्वत के एक शिखर का नाम।

सौमनसा-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी।

सौमनस्य-पु० [सं०] १ आनन्द, खुशी। २ पारस्परिक सद्भाव। ३ श्राद्ध में पुरोहित के हाथ में फूल देने का कार्य।

सौम्य-वि० १ शांत, गंभीर। २ नरम, कोमल। ३ ठंडा, शीतल, स्निग्ध। ४ स्वच्छ, निर्मल। ५ सुंदर, मनोहर। ६ प्रसन्न, खुश। ७ उज्ज्वल, चमकीला। ८ चन्द्रमा संबंधी। ९ शुभ, मंगलमय। --पु० १ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। २ चन्द्रमा का पुत्र बुध। ३ साठ संवत्सरों में से एक। ४ फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक। ५ वार व नक्षत्र संबंधी एक योग।

सौम्यगिरि-पु० एक प्राचीन पर्वत।

सौम्या-स्त्री० दुर्गा।

सौयंबर-देखो 'स्वयंबर'।

सौरंभ, सौरंभ-देखो 'सौरभ'। — चर= सौरभचर'।

सौर-पु० [सं०] १ सूर्य का पुत्र, शनि। २ यमराज। ३ दाहिनी आंख। ४ तुंबरु। --वि० १ सूर्य का, सूर्य संबंधी। २ सूर्य से उत्पन्न। ३ देखो 'सोर'।

सौरकी-देखो 'सोरकी'।

सौरत-देखो 'सोहरत'।

सौरभ-स्त्री० [सं०] १ सुगन्ध, खुशबू, महक। २ केसर। ३ सुरभि, गाय। ४ तुंबरु। ५ धनिया। ६ बोल नामक गंध-द्रव्य। ७ आम —चर-पु० भौंरा, भ्रमर

सौरभमूळ-पु० [सं० सौरभ-मूल] चंदन।

सौरभेई-स्त्री० [सं० सौरभेयी] गाय।

सौरभेय-स्त्री० [स० सौरभेय] बैल।

सौरभेयी-स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

सौरम-देखो 'सौरभ'।

सौरमास-पु० एक सूर्य संक्रान्ति से दूसरी सूर्य संक्रान्ति तक का समय।

सौरसेन-पु० [सं० शौरसेन] १ वर्तमान ब्रज मण्डल का प्राचीन नाम। २ उक्त जनपद का निवासी।

सौरसेनी-स्त्री० [सं० शौरसेनी] एक प्राचीन भाषा, सौरसेनी अपभ्रंश।

सौरसेय-पु० [सं०] स्वामिकार्तिकेय का एक नाम।

सौराष्ट्र-पु० [सं० सौराष्ट्र] गुजरात-काठियावाड़ प्रदेश का एक प्राचीन नाम।

सौरि-पु० [सं० शौरि] १ विष्णु। २ वसुदेव। ३ कृष्ण। ४ बलदेव। ५ शनि ग्रह।

सौरी सौरो-१ देखो 'सोरी'। २ देखो 'सुसरी'।

सौर्य-पु० [स० शौर्य] १ वीरता, साहस। २ पराक्रम, पौरुष। ३ शक्ति, बल।

सौळ-देखो 'सोलह'।

सौवस्तिक-पु० [सं०] जैनियों के ८८ ग्रहों में से ५९ वां ग्रह।

सौवीर-पु० सिंधु नदी के आस-पास स्थित एक प्राचीन प्रदेश का नाम।

सौस-देखो 'सूस'।

सौसनी-देखो 'सोसनी'।

सौह-देखो 'सोह'।

सौहगी-देखो 'सुहागी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोहड़–देखो 'सुभट'।
सोहती–देखो 'सोहिती'।
सोहरत–पु० १ प्रसिद्धि, ख्याति। २ कीर्ति, यश।
सोहागण–देखो 'सुहागण'।
स्कंद–पु० [सं०] १ स्वामिकार्त्तिकेय। २ शिव, महादेव। ३ राजा, नृप। ४ विद्वान, पंडित। ५ शरीर। ६ बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक। —जननी, जननी, मात, मातरी, माता, मात्री–स्त्री० पार्वती, उमा। नव दुर्गाओं में से एक।
स्कंदजित (जीत)–पु० [सं०] भगवान विष्णु।
स्कंदधर–पु० [सं०] भगवान विष्णु।
स्कंध–पु० [सं० स्कन्धः] १ कन्धा। २ शरीर, बदन। ३ तना। ४ राजा, नृप। ५ नारियल। ६ शाखा, डाल। ७ आर्या छन्द का एक भेद। ८ एक नाग विशेष। ९ राम की सेना का एक वानर।
स्कंधतरु (तरु)–पु० [सं० स्कन्ध : + तरु] नारियल का पेड़।
स्कंधफळ, स्कंधफल–पु० [सं० स्कन्ध+फलः] १ नारियल का पेड़ या नारियल। २ बिल्व वृक्ष।
स्कंधमणि, स्कंधमणी (णी)–पु० [सं० स्कन्धमणि] एक प्रकार का मंत्र या तावीज।
स्कंधाक्ष, स्कंधाक्ष, स्कंधाक्ष–पु० [सं० स्कंधाक्ष] देवताओं के एक गण का नाम।
स्कंधावार–पु० [सं० स्कंधावार] १ सेना, फौज। २ सेना का पड़ाव। ३ शिविर।
स्कल–पु० [सं० स्खल] पतन।
स्तंब–पु० [सं०] १ झुट्टा, बाल। २ झाड़ी। ३ गुच्छा ४ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्त-ऋषियों में से एक।
स्तंबतरण, स्तंबतरण, स्तंबतिरण–पु० [सं० स्तंब-तृण] घास, झाड़ी।
स्तंबबन–पु० [सं०] १ खुम्भी। २ हंसिया।
स्तंभ–पु० [सं० स्तम्भः] १ खम्भा २ मूर्खता। ३ रोग आदि के कारण होने वाली मूर्च्छा। ४ गतिहीनता। ५ सुन्नता, संज्ञाहीनता। ६ तना। ७ प्रतिबंध, रुकावट। ८ साहित्य में एक सात्विक भाव। ९ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।
स्तंभक–वि० [सं०] रोकने वाला, वीर्य का स्तंभन करने वाला।
स्तंभकी–स्त्री० [सं० स्तंभकिन] एक देवी।
स्तंभन–पु० [सं० स्तंभनम्] १ रुकावट, अवरोध। २ काम के पांच बाणों में से एक। ३ वीर्यपात रोकने वाली दवा। ४ संभोग के समय वीर्य को रोक रखने की क्रिया, अवस्था या क्षमता। ५ देखो 'थंभण'।
स्तन–पु० [सं० स्तन] १ किसी स्त्री का उरोज, कुच, चूंची। २ मादा पशु या जानवरों के थन।
स्तनंधय–पु० [सं० स्तनंधयः] बालक, शिशु।
स्तनांतर–पु० [सं०] १ हृदय, दिल। २ स्त्रियों के स्तन पर होने वाला एक प्रकार का सामुद्रिक चिह्न।
स्तव, स्तवण, स्तवन–पु० [सं० स्तवः, स्तवनम्] १ स्तोत्र, स्तव। २ प्रशंसा, स्तुति, गुणगान।
स्तुति, स्तुती–स्त्री० [सं० स्तुतिः] १ प्रशंसा, तारीफ। २ बिरुदावली। ३ चापलूसी। ४ देवी-देवताओं के गुणों का सादर पाठ, जाप, प्रार्थना। ५ देवी का एक नाम। –पु० ६ शिव का एक नाम।
स्तोक–वि० [सं० स्तोक] १ तनिक, थोड़ा। २ ह्रस्व, लघु। ३ कुछ। ४ निम्न।
स्तोत्तर, स्तोत्र–स्त्री० [सं० स्तोत्र] १ प्रशंसा, तारीफ। २ बिरुदावली। ३ प्रशंसा या विनय संबंधी श्लोक, छंद या कविता।
स्तोम–पु० [सं० स्तोमः] १ यज्ञ, हवन, होम। २ संग्रह। ३ बिरुदावली, प्रशंसा। ४ धन, दौलत।
स्त्रसतर, स्त्रसत्र, स्त्रस्तर, स्त्रस्त्र–पु० [सं० तृण-सस्तर] तृण शय्या।
स्त्रींद्रिय, स्त्रींद्री–स्त्री० [सं० स्त्रींद्रिय] योनि, भग।
स्त्री–स्त्री० [सं०] १ नारी, औरत। २ पत्नी, भार्या, जोरू। ३ व्याकरण में स्त्रीलिंग का संक्षिप्तरूप ४ मादा जन्तु या प्राणी। –करण–पु० संभोग, मैथुन। –काम–स्त्री० स्त्री या भार्या की कामना, काम वासना। —गमण, गमन–पु० स्त्री से संभोग, मैथुन। —चिन, चिह्न–पु० स्त्री के लक्षण; स्त्रियोचित चिह्न, निशान। योनि। —धर्म–पु० स्त्रियों का कर्त्तव्य, पत्नीव्रत। स्त्री का मासिक धर्म, राजस्वला अवधि। मैथुन संभोग। —धरमणी, धरमिणी–स्त्री० रजस्वला स्त्री। —परसंग, प्रसंग, भोग–पु० स्त्री के साथ संभोग, मैथुन। —लक्खण, लक्षण, लखण–पु० पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक। स्त्रियोचित गुण। –लिंग–पु० व्याकरण में एक लिंग। योनि, भग। —वास–पु० स्त्री संभोग के समय उपयुक्त वस्त्र। स्त्री संभोग का उचित स्थान। स्त्री के साथ सहवास। —विलय, विलं–पु० संभोग। –संग, संभोग, समागम–पु० संभोग, मैथुन। –सुख –पु० गृहस्थाश्रम का सुख, स्त्री के मिलन का सुख, संभोग। —सेवण, सेवन–पु० संभोग, मैथुन।
स्त्रीग्रह–पु० ज्योतिष में बुध, चन्द्र और शुक्र ग्रह जो स्त्री जाति के माने जाते हैं।
स्त्रीधन–पु० स्त्रियों के छः प्रकार के धन, जिन पर स्त्रियों का पूर्ण अधिकार हो।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्त्रीराशि, स्त्रीरासी–स्त्री० [सं० स्त्रीराशि] ज्योतिष में, वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियां।

स्त्रीवार–पु० [सं०] ज्योतिष में चन्द्र, बुध और शुक्रवार को स्त्री जाति के माने जाते हैं।

स्त्रीव्रत–पु० [सं०] १ अपनी पत्नी के अलावा अन्य स्त्री का इच्छा न रखने का भाव, व्रत या संकल्प। २ ऐसा संकल्प रखने वाला पुरुष।

स्तंभ–पु० [सं० स्तम्भ] खंभा, स्तंभ।

स्तंभनी–पु० पार्श्वनाथ का एक नाम।

स्तग–वि० [सं०] १ धूर्त, कपटी। २ ढीठ, लापरवाह। ३ गुण्डा, बदमाश।

स्तपत, स्तपति, स्तपती–पु० [सं० स्थपति] १ राजा, शासक। २ कारीगर। ३ रथ हांकने वाला, सारथी। ४ कुबेर। ५ बृहस्पति। ६ अन्तःपुर का रक्षक।

स्थल–पु० [सं० स्थल] १ भूमि, जमीन। २ भू-भाग। ३ जल रहित भूमि या वह भू-भाग जहां पानी की कमी हो। ४ मरुभूमि। ५ पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।

स्थलकाली–स्त्री० [सं० स्थलकाली] दुर्गा की एक सहचरी का नाम।

स्थाणु–पु० [सं० स्थाणु] १ शिव, महादेव। २ ग्यारह रुद्रों में से एक। ३ एक प्रजापति का नाम। ४ घोड़ों का एक रोग विशेष। ५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ एक प्राचीन ऋषि।

स्थान–पु० [सं० स्थान] १ जगह, स्थान। २ भू-भाग, जमीन। ३ घर, मकान; रहने का स्थान। ४ किसी के लिये प्रतिदिन या प्रायः बैठने का स्थान। ५ कार्य स्थल। ६ मंदिर, देवालय। ७ पद, ओहदा। ८ महत्व, मान्यता या गणना की स्थिति। ९ उदासीन हो बैठने की क्रिया या भाव।

स्थानक–देखो 'थानक'।

स्थानजफ–पु० मुसलमानों का एक तीर्थ स्थल।

स्थापन–देखो 'थापन'।

स्थापननिक्षेप–पु० अर्हत् की मूर्ति का पूजन। (जैन)

स्थापना–देखो 'थापना'।

स्थायी–वि० [सं०] १ हमेशा बना रहने वाला नित्य। २ दृढ़, मजबूत, पक्का। ३ नौकरी या पद पर पक्का। –पु० गीत का पहला चरण, पंक्ति, टेक।

स्थायीभाव–पु० [सं०] मनुष्य के मन में सदा रहने वाले मूल भाव। (साहित्य)

स्थाल–देखो 'थाल'।

स्थावर–पु० [सं०] १ अचेतन पदार्थ। २ पहाड़, पर्वत। ३ स्थूल शरीर। ४ अचल सम्पत्ति। –वि० १ स्थिर, अचल। २ जंगम का विलोम।

स्थावरता–स्त्री० स्थावर होने की अवस्था या भाव।

स्थित–पु० [सं०] १ निवास, अवस्थान। २ अचल। ३ उपस्थित, मौजूद। ४ दृढ़, पक्का। ५ बसा हुआ। ६ वर्तमान। ७ तैयार।

स्थिति–स्त्री० [सं०] १ स्थित होने की अवस्था या भाव। २ टिकाव, ठहराव। ३ हालत दशा। ४ पद, मर्यादा आदि के अनुसार मिलने वाला स्थान। ५ ढंग, तरीका। ६ सीमा, हद।

स्थिर–वि० [सं०] १ स्थायी। २ सदा एकसी दशा में रहने वाला, निश्चल। ३ शान्त, अचंचल। ४ निश्चित, पक्का। ५ दृढ़, मजबूत। ६ निर्दय, निष्ठुर। –पु० [सं०] १ ज्योतिष के २८ योगों में से एक। २ फलित ज्योतिष में तिथि व नक्षत्रों संबंधी तृतीय योग। ३ वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ राशियां। ४ एक क्षेत्रपाल। ५ शनिग्रह। ६ देवता। ७ पर्वत, पहाड़। ८ वृक्ष, पेड़। ९ शिव, महादेव। १० स्वामिकार्तिकेय। ११ वृष, सांड। १२ देखो 'थिर'।

स्थिरता–स्त्री० [सं०] १ स्थिर होने की अवस्था, भाव या स्थिति। २ दृढ़ता।

स्थिरासण (न)–पु० [सं० स्थिरासन] योग के चौरासी आसनों में से एक।

स्थूळ स्थूस–देखो 'थूंळ'।

स्थूळपाव–पु० [सं० स्थूलपाद] हाथी, गज।

स्थूळहस्त (हस्त)–स्त्री० [सं० स्थूलहस्त] हाथी की सूंड।

स्थूळा–स्त्री० [सं० स्थूला] १ सौंफ। २ इलायची। ३ मुनक्का। ४ कपास। ५ ककड़ी।

स्थूळाक्ष, स्थूळाक्ष, स्थूळाक्ष–पु० [सं० स्थूलाक्ष] १ एक महर्षि का नाम। २ एक राक्षस।

स्नान–पु० [सं० स्नान] १ पानी से शरीर को धोने की क्रिया, पानी में शरीर डुबा कर नहाना क्रिया, मज्जन। २ धूप, वायु आदि के सामने बैठना क्रिया ३ पानी या तरल पदार्थ में भिगोना क्रिया। —आगार–पु० गुसलखाना। —गृह, घर–पु० गुसलखाना, नहाने का कक्ष। —जातरा, जात्रा, यात्रा–स्त्री० ज्येष्ठ की पूर्णिमा को विष्णु की मूर्ति को स्नान कराने का एक उत्सव विशेष। —साळ, साळा–स्त्री० स्नानघर।

स्नायु–पु० नहरुआ।

स्नायुवर्म–पु० [सं० स्नायुवर्मन्] आंख का एक रोग विशेष।

स्निग्ध–वि० [सं०] १ चिकनाहट युक्त, चिकना। २ कोमल, मुलायम। ३ प्रिय, प्यारा। ४ तर, नम। –पु० १ तेल। २ सोम। ३ मित्र, दोस्त।

स्निग्धता–स्त्री० [सं०] स्निग्ध की अवस्था या भाव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्नेह–पु० [सं०] १ चिकना पदार्थ। २ दूध, दही आदि पर आने वाली मलाई। ३ किसी के प्रति होने वाला प्रेम भाव, प्रेम, ममत्व, नेह। ४ एक राग विशेष। ५ सरसों। ६ नमी, तरी। ७ चरबी। ८ तेल। ९ धीर्य, शुक्र। १० कोमलता, मुलायमी। ११ चिकनाई। –वि० १ चिकना, स्निग्ध। २ नमी से युक्त नम। ३ देखो 'सनेह'।

स्नेहपात्तर (पात्र)–वि० [सं० स्नेहपात्र] जिसके प्रति स्नेह हो, प्रिय।

स्नेही–देखो 'सनेही'।

स्पंदण, स्पंदन–पु० [सं० स्पंदन] १ धड़कन। २ कंपन। ३ फुदकन।

स्पंदणी, स्पंदिणी–स्त्री० [सं० स्पंदिनी] १ रजस्वला स्त्री। २ कामधेनु।

स्परधा–स्त्री० [सं० स्पर्द्धा] १ बराबरी, समता। २ ईर्ष्या, डाह। ३ प्रतियोगिता, होड़।

स्परस–स्त्री० [सं० स्पर्श] १ सटने, छूने या हलके से लग जाने की क्रिया, अवस्था या भाव। २ एक प्रकार का रतिबंध। ३ हवा, पवन, वायु। ४ ज्योतिष में ग्रहों का समागम। ५ रोग, बीमारी।

स्पष्ट–वि० [सं० स्पष्ट] १ साफ, प्रगट। २ बिना छुपाव या दुराव का, खुला। ३ वास्तविक, सही, खुलासा।

स्पस्टता–स्त्री० [सं० स्पष्टता] स्पष्ट होने की स्थिति, सफाई, वास्तविकता।

स्फटिक–पु० [सं० स्फाटिका] १ सूर्यकान्तमणि। २ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर। ३ कपूर। ४ फिटकरी। —मणि, मणी–स्त्री० सूर्य-कान्त मणि।

स्फटिकी, स्फटी–स्त्री० [सं स्फटिका] फिटकरी।

स्फरण, स्फुरण–पु० [सं० स्फुरणम्] अंग फड़कने की क्रिया या अवस्था। तनिक हरकत। कोई भाव विशेष।

स्फूरति, स्फूरती–स्त्री० [सं० स्फूर्ति] १ चंचलता, फुर्ती। २ तेजी। ३ ताजगी। ४ दिलचस्पी।

स्मर–पु० [सं० स्मरः] १ कामदेव, मनोज। २ यादगार, स्मृति। ३ प्रेम, प्यार।

स्मरकूप, स्मरग्रह–पु० योनि, भग।

स्मरण–पु० [सं०] १ याद आने की क्रिया या भाव, यादी। २ नौ प्रकार की भक्तियों में से एक।

स्मरदसा–स्त्री० [सं० स्मरदशा] प्रेमी-प्रेमिका के मिलन पर होने वाली दशा या भाव।

स्मरदहण (न)–पु० [सं० स्मरदहन] शिव, महादेव।

स्मरबधु (बधू)–स्त्री० [सं०स्मर-बधू] कामदेव की पत्नी, रति।

स्मरसख (सखा)–पु० [सं० स्मर-सखा] चांद, चन्द्रमा।

स्मररिप, स्मररिपु–पु० [सं० स्मररिपु] १ शिव, महादेव २ संयमी, संयमधारी।

स्मरारि–पु० [सं० स्मर-अरि] शिव, महादेव।

स्मसांण–देखो 'समसांण'।

स्म्रति, स्म्रती–स्त्री० [सं० स्मृति] १ धर्म संहिता। २ याददाश्त, स्मरण शक्ति। ३ एक प्रकार का छन्द। ४ अठारह की संख्या सूचक शब्द। —कार–पु० धर्म संहिता बनाने वाला, धर्माचार्य। —वेता–पु० स्मृतियों का जानकार।

स्यंगार–देखो 'सिंगार'।

स्यंगासण (न), स्यंघासण (न)–देखो 'सिंघासन'।

स्यंघस स्वयंसवीप देखो सिंहल'।

स्यंद–पु० [सं० स्यन्द] रथ, गाड़ी।

स्यंदण, स्यंदन–पु० [सं० स्यंदन] १ रथ, विशेषकर युद्ध के लिये सुसज्जित रथ। २ गाड़ी। ३ बहाव, कटाव। ४ वायु हवा, पवन। ५ जल, पानी। ६ चन्द्रमा, चांद। ७ घोड़ा, अश्व। ८ जैनियों के एक तीर्थंकर का

स्यंदूर–देखो 'सिंदूर'।

स्यंध–१ देखो 'स्यंद'। २ देखो 'सिंधु'।

स्यंभ–देखो 'स्वयंभू'।

स्यंमतकमण, स्यंमतकमणि, स्यंमतकमणी, स्यंमतकमिणि, स्यममिणि (णी), स्यतमंकमण (मणि, मणी, मिण, मिणी) –स्त्री० [सं० स्यमंतकमणि] श्रीकृष्ण की पटरानी सत्यभामा के पास रहने वाली एक बहुमूल्य मणि।

स्यांणप–देखो 'सैंणप'।

स्यांणी–देखो सैंणी'। (स्त्री० स्यांणी)

स्यांन–देखो 'सांन'।

स्यांनमठ–वि० मूर्ख, बेवकूफ।

स्यांने, स्यांनै–क्रि०वि० किसलिए, क्यों।

स्यांम–पु० [सं० श्याम] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ श्रीराम का एक नाम। ३ ईश्वर, परमात्मा। ४ एक प्राचीन देश। ५ प्रयाग का अक्षयवट। ६ श्रीराग का पुत्र एक राग। [सं० श्यामक] ७ सांवा नामक एक प्रकार का कदन्न। [सं० श्यामा] ८ रात, रात्रि। ९ कृष्ण पक्ष। १० स्वामि-कार्तिकेय। ११ बादल, मेघ। १२ समय, वक्त। १३ छप्पय छन्द का एक भेद। –वि० १ कृष्ण, काला। २ देखो 'सामी'। ३ देखो 'सांम'। ४ देखो 'स्यामा'।

स्यांमकंठ–पु० [सं० श्यामकंठ] १ शिव, महादेव। २ मोर, मयूर।

स्यांमक–पु० [सं०श्यामक] १ एक देश का नाम। २ रामकपूर।

स्यांमकरण–पु० [सं० श्याम कर्ण] ऐसा घोड़ा जिसका शरीर सफेद लेकिन नाक, कान व नेत्र श्याम हों।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्यामकल्याण–स्त्री० [सं० श्यामकल्याण] एक प्रकार की राग।
स्यामकारतिक (केय)–देखो 'स्वामिकारतिकेय'।
स्यामग्रीव–पु० [सं० श्यामग्रीव] काली गर्दन वाला एक सारस विशेष।
स्यामचिड़ी–स्त्री० काली चिड़िया।
स्यामज–पु० [सं० शामज] १ हाथी, गज, हस्ती। २ श्याम देश का निवासी।
स्यामजीरी–देखो 'स्याहजीरी'।
स्यामतमाळ (वाळ)–पु० [सं० श्याम तमाल] एक वृक्ष विशेष।
स्यामतर (तह)–वि० [सं० श्यामतर] १ श्याम वर्ण का, सांवला। २ श्याम जैसा।
स्यामता–स्त्री० [सं० श्यामता] कालापन, सांवलापन।
स्यामताळ (ळु, ळू)–पु० [सं० श्यामतालु] एक प्रकार का घोड़ा विशेष जिसका तालू श्याम वर्ण का होता है।
स्यामतीतर–पु० [सं० श्याम-तित्तर] एक प्रकार का तीतर पक्षी।
स्यामधरम (धरम्म धम्म)–देखो 'स्वामीधरम'।
स्यामधरमाई स्यामधरमी (धर्मी, धर्म्मी)–देखो 'स्वामिधरमी'।
स्यामनद (नदी)–स्त्री० [सं० श्याम-नदी] यमुना नदी।
स्याममंजरी–स्त्री० जगन्नाथ के आस-पास की भूमि की पवित्र मिट्टी।
स्यामळ–पु० काला रंग। –वि० श्याम, काला।
स्यामला–स्त्री० [सं० श्यामला] १ एक देवी। २ पार्वती। ३ कस्तूरी।
स्यामसखक–पु० [सं० सामवायक] मित्र, दोस्त।
स्यामसुंदर–पु० [सं० श्याम सुन्दर] श्रीकृष्ण का एक नाम।
स्यामांग–पु० [सं० श्यामांग] बुध ग्रह। –वि० जिसका रंग श्याम हो।
स्यामा–स्त्री० [सं० श्यामा] १ राधिका का एक नाम। २ लक्ष्मी, रमा। ३ पृथ्वी, भूमि। ४ रात, रात्रि। ५ कोयल पक्षी। ६ छाया। ७ प्रतिबिंब, परछाई। ८ रुक्मिणी का एक नाम। ९ कालिका। १० कस्तूरी। ११ यमुना नदी। १२ सोलह वर्ष की युवती। १३ सुन्दर स्त्री। १४ श्याम वर्ण की गाय, गौ। १५ हल्दी। १६ तुलसी। १७ गुग्गुल। १८ शीशम। १९ नील। २० हरड़, हरीतकी। २१ गोरोचन। २२ हरी दूब। २३ पीपल, पिप्पलिका। २४ मेरु की नौ पुत्रियों में से एक। २५ एक पक्षी विशेष। –वि० काले रंग की, श्यामा, सांवली। —धार–पु० पीपल, पिप्पल।
स्यामी–देखो 'सांमी'। —धरम, धरम्म, धम, धम्म= 'सामीधरम'।
स्या–देखो 'सा'।
स्याई–देखो 'स्याही'।
स्याजस स्याजिस–देखो 'साजिस'।
स्यात, स्याति, स्याती–वि० पूर्ण, पूरा। –पु० १ समय, वक्त। २ देखो 'सायद'।
स्यातेक, स्याते'क–वि० करीब, लगभग। –पु० १ क्षणेक का समय, तनिक समय। २ देखो 'साते'क'।
स्यादवाद, स्याद्वाद–पु० एक प्रकार का जैन दर्शन।
स्यापो–देखो 'सोपो'।
स्याबास–देखो 'सबास'।
स्याबासणी (बी)–देखो 'साबासणी' (बी)।
स्याबासी–देखो 'साबासी'।
स्याय–देखो 'सहाय'।
स्यार–देखो 'सार'।
स्यारी–स्त्री० १ डायन। २ तंत्र विद्या से घी, दूध आदि को चोरी करने वाली स्त्री।
स्याळ–देखो 'सगाळ'।
स्याल, स्यालक–पु० [सं० श्यालः, श्यालक] पत्नी का भाई, साला।
स्याळकियो, स्याळको, स्याळवयो–देखो 'सगाळ'। (स्त्री० स्याळकी)
स्याळभुआ, स्याळभुवा, स्याळभूआ (भूवा)–स्त्री० लोमड़ी।
स्याळसींगी, स्याळियासींगी–स्त्री० एक अलौकिक बूटी जिसके प्रभाव से किसी को वश में किया जा सकता है।
स्याळियो–देखो 'सगाळ'।
स्याळू–१ देखो 'सीयाळू'। २ देखो 'साळू'।
स्यावड़–१ देखो 'सावढ़'। २ देखो 'सुयावड़'। —माता= 'सावढ़'।
स्यावज–१ देखो 'सावज'। २ देखो 'स्यामज'।
स्यावळ, स्यावल–पु० [सं० स्यावल] १ सूत की डोर में बंधा लोह आदि का लट्टू जैसा उपकरण जो दीवार की चुनाई के समय काम आता है। २ देखो सावळ'।
स्याह–वि० [फा०] कृष्ण, काला। –पु० १ काला रंग। २ देखो 'साह'।
स्याहगोस–वि० [फा०] काले कानों वाला। –पु० वन बिलाव।
स्याहजबांन–पु० काली जीभ वाला हाथी, घोड़ा या बैल।
स्याहजादो (ज्यादो)–देखो 'साहजादी'।
स्याहाय–देखो 'सहाय'।
स्याही–स्त्री० [फ़ा०] १ पेन में भर कर या कलम डुबा कर लिखने का द्रव पदार्थ, जो काला, नीला आदि कई रंगों में होता है। मसि। इंक। २ इसी तरह छपाई में काम आने वाला विभिन्न रंग का तरल, गाढ़ा पदार्थ। ३ देखो 'साही'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—चूंस, चूस, सोख, सोखतो–पु० स्याही सोखने का मोटा कागज । उपकरण ।

स्युं, स्यूं–सर्व० [गु०] १ क्या । २ क्यों । –क्रि०वि० १ कैसे, किस तरह । २ से, साथ ।

स्यूढ़–वि० [सं० समूढ] दीर्घ, बड़ा ।

स्येन–पु० [सं० श्येन] १ बाज नामक पक्षी । २ एक महर्षि । ३ दोहे का एक भेद ।

स्यों, स्यो–सर्व० क्या, कैसा ।

स्रंखळ–देखो 'स्रंखळा' ।

स्रंखळक–पु० [स० शृंखलक] ऊंट ।

स्रंखळा, स्रंखला–स्त्री० [सं० शृंखला] १ जंजीर, सांकल । २ हाथी के पैरों में बांधने की जंजीर । ३ हथकड़ी, बेड़ी । ४ क्रम, सिलसिला । ५ सिकड़ । ६ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार । —बद्ध, बध–वि० जंजीर से बंधा या जकड़ा हुआ । क्रमबद्ध ।

स्रंग–पु० [सं० शृंग] १ शिखर, चोटी । २ गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं के सींग । ३ मकान, दुर्ग आदि का ऊंचा भाग, कंगूरा । ४ वृक्ष, विटप । ५ ऊंचाई । ६ सींगी नामक वाद्य जो फूंककर बजाया जाता है । ७ निशान, चिह्न । ८ कमल । ९ अदरक । १० सोंठ । ११ स्तन, कुच । १२ पानी का फुहारा, पिचकारी । १३ काम-वासना । १४ प्रमुखता, प्रधानता । १५ एक औषधि विशेष । १६ एक प्राचीन ऋषि का नाम । १७ शिव का एक पार्षद । [सं० शुक] १८ माला । १९ देखो 'स्रंगी' ।

स्रंगक–पु० [सं० शृंगक] १ सींग । २ कोई नोकदार चीज । ३ शिखर, चोटी ।

स्रंगणि, स्रंगणी–स्त्री० [सं० शृंगणी] १ गाय, गौ । २ देखो 'सींगण' ।

स्रंगधर–पु० [सं० शृंगधर] १ पर्वत, पहाड़ । २ वृषभ, बैल । ३ सींगधारी पशु ।

स्रंगबेर–देखो 'स्रंगवेर' ।

स्रंगरिख (रिखि, रिखो, रिस, रिसि, रिसी)–पु० [सं० शृंगी-ऋषि] शमीक ऋषि के पुत्र एक ऋषि

स्रंगवण–पु० शृंगार, बनाव ।

स्रंगवाण (न)–पु० [सं० शृंगवान्] एक ऋषि ।

स्रंगवेर–स्त्री० [सं० शृंगवेर] १ अदरक । २ सोंठ । ३ गंगा तट पर बसा एक प्राचीन नगर ।

स्रंगाटक–पु० [सं० शृंगाटक] १ सिंघाड़ा । २ दरवाजा, द्वार । ३ चौराहा । ४ मांस के योग से बनने वाला एक खाद्य पदार्थ । ५ मस्तिष्क में एक स्थान ।

स्रंगार, स्रंगारइ–पु० [सं० शृंगार] १ साहित्य के नौ रसों में से एक प्रमुख रस । २ वस्त्राभूषण व अन्य सामान से शरीर, मूर्ति आदि की सजावट । ३ सजावट करने का सामान, प्रसाधन । ४ शोभा, सौंदर्य । ५ स्त्रियों का सौभाग्य सूचक सामान, आभूषण आदि । ६ मैथुन, संभोग । –वि १ श्याम, कृष्ण ।। २ देखो 'सिणगार' ।

स्रंगारजनमा, स्रंगारजन्मा–पु० [सं० शृंगारजन्मा] कामदेव, मनोज ।

स्रंगारजोनि (जोनी)–देखो 'स्रंगारयोनि' ।

स्रंगारणी (णी)–देखो 'सिणगारणी' (णी) ।

स्रंगारभूखण (भूसण)–पु० [सं० शृंगार भूषण] सिंदूर ।

स्रंगारमंडळ (मंडल)–पु० [सं० शृंगार मण्डल] १ वह स्थान जहां प्रेमी-प्रेमिका क्रीड़ा करते हैं । २ ब्रज का वह स्थान जहां श्रीकृष्ण ने राधिका का शृंगार किया था ।

स्रंगारयोनि, स्रंगारयोनी–पु० [सं० शृंगारयोनि] कामदेव, मनोज ।

स्रंगारवेख, स्रंगारवेस–पु० [सं० शृंगारवेश] प्रेमिका से मिलने जाते समय प्रेमी द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक, वेश ।

स्रंगारहाट–स्त्री० [सं० शृंगारहाट] १ वेश्याओं का बाजार या चकला । २ वह स्थान जहां सौन्दर्य प्रसाधन का ऐसा सामान मिलता हो ।

स्रंगारिख, स्रंगारिखी–स्त्री० [सं० शृंगारिणी] १ शृंगार करने वाली स्त्री । २ एक प्रकार की रागिनी विशेष । ३ वस्त्राभूषणों से सज्जित स्त्री, शृंगार की हुई स्त्री ।

स्रंगारियो–पु० १ वह व्यक्ति जो शृंगार कला में दक्ष हो । २ देव मूर्तियों का शृंगार करने वाला व्यक्ति । ३ बहुरूपिया ।

स्रंगारी–वि० [सं० शृंगारिन्] शृंगार संबंधी शृंगार का ।

स्रंगी, स्रंगु–पु० [सं० शृंगी] (स्त्री० स्रंगणी) १ बैल, वृषभ । २ सींगवाला पशु । ३ पर्वत, पहाड़ । ४ कान के पास भौंरियों वाला घोड़ा । ५ हाथी, हस्ती । ६ पेड़, वृक्ष । ७ महादेव, शिव । ८ सिंगिया नामक जहर, विष । ९ एक प्राचीन देश का नाम । १० पांवसा । ११ बरगद, वट । १२ सोना, स्वर्ण । १३ ऋमीक ऋषि के पुत्र एक ऋषि । १४ देखो 'सिंगी' । १५ सींग का बना वाद्य, शृंगी नाद । —गिर, गिरि, गिरी–पु० वह पर्वत जिस पर शृंगी ऋषि ने तपस्या की थी । —रिख, रिखो, रिसी–पु० शृंगी ऋषि ।

स्रक–स्त्री० [सं० सृक] १ माला, पुष्पहार । २ पवन, हवा । ३ कमल । ४ बाण, तीर । ५ भाला । ६ ज्योतिष में एक प्रकार का योग ।

स्रकवण–पु० [सं० सृक्क, सृक्कणी] १ कपोल, गाल । २ मुख के दोनों ओर के कोने ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वग–१ देखो 'स्वरग'। २ देखो 'सरग'।

स्वगबार (बुवार, द्वार)–पु० [सं० स्वर्ग-द्वार] सूरज, सूर्य।

स्वगम–पु० जल, पानी।

स्वगलोक (लोग)–देखो 'स्वरगलोक'।

स्वगवाट–पु० स्वर्ग का रास्ता।

स्वगविहारी–देखो 'स्वरगविहारी'।

स्वगसुखवा–पु० [स० स्वर्ग सुखवाः] कल्पवृक्ष।

स्वगाळ, स्वगाल–पु० [सं० शृगाल] (स्त्री० स्वगाळी) १ गीदड़, सियार। २ कायर, डरपोक व्यक्ति। ३ निर्दयी व्यक्ति। ४ धूर्त चालाक व्यक्ति।

स्वगा–देखो 'स्वरग'।

स्वज–पु० १ एक विश्वदेव का नाम। २ देखो 'सरक'।

स्वजणो (बो)–क्रि० १ प्राप्त करना। २ देखो 'सरजणो' (बो)।

स्वणिका–स्त्री० [सं० सृणिका] लार।

स्वणी–पु० [सं०अणि] १ अंकुश। [सं०सृणी] २ चन्द्रमा, चांद।

स्वणीक–पु० [सं० सृणीक] १ वायु, हवा। २ आग, अग्नि।

स्वत, स्वति स्वती–पु० [सं० सृति] मार्ग, रास्ता।

स्वदणो (बो)–देखो 'सरघणो' (बो)।

स्वद्धांजळि, स्वद्धांजली–स्त्री० [सं० श्रद्धांजलि] १ किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति के प्रति श्रद्धा पूर्वक कही जाने वाली बात। २ किसी मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति के लिए श्रद्धा-पूर्वक की जाने वाली प्रार्थना। ३ श्रद्धापूर्वक दी जाने वाली अंजलि।

स्वद्धा–स्त्री० [सं० श्रद्धा] १ ईश्वर, धर्म, किसी पूज्य पुरुष के प्रति होने वाली आदर की भावना, आस्था। २ किसी कार्य या बात की प्रबल इच्छा, वासना। ३ गर्भवती स्त्री के मन की इच्छा, दोहद। ४ घनिष्ठ परिचय। ५ सम्मान, प्रतिष्ठा। ६ चित्त की प्रसन्नता। ७ विश्वास। ८ वेद शास्त्र और आप्त वाक्यों में विश्वास। ९ सूर्य की एक कन्या का नाम। १० अंगिरा ऋषि की पत्नी का नाम।

स्वद्धाळु, स्वद्धालु, स्वद्धाळू (लू)–वि० [सं० श्रद्धालु] १ श्रद्धा रखने वाला, श्रद्धावान। २ अभिलाषी, इच्छावान। –स्त्री० कई प्रकार की अभिलाषाओं वाली गर्भवती स्त्री।

स्वधा–देखो 'स्वद्धा'।

स्वप (स्वप्प)–देखो 'सरप'।

स्वपाटो–स्त्री० चौंच,

स्वपी–वि० तृप्त, संतुष्ट।

स्वब–देखो 'सरव'।

स्वबकामधुन, स्वबकामधुनि–पु० वेद।

स्वबकारण–पु० [सं० सर्व-कारण] ईश्वर, प्रभु।

स्वबजाण स्वज्जाणग–वि० [सं० सर्वज्ञ] सब कुछ जानने वाला। सर्वज्ञ।

स्वबथा–क्रि०वि० सर्वथा।

स्वबदायक–पु० [स० सर्वदायक] कल्पवृक्ष।

स्वबसेव–पु० सूर्य, सूरज।

स्वब्ब–देखो 'सरव'।

स्वब्बबियाप (बियापी, बियाप, बियापो)–वि०[सं० सर्वव्यापिन्] जो सर्वत्र तथा सब वस्तुओं में व्याप्त है, जिसकी उपलब्धि सर्वत्र व सब समय मानी जाती है। –पु० १ ईश्वर, परब्रह्म। २ शिव, महादेव।

स्वब्बेस–सर्व० १ सर्व, सब, समस्त। २ देखो 'सरवेस'।

स्वम–पु० [सं० श्रम] १ परिश्रम, मेहनत। २ दौड़-धूप, प्रयास, प्रयत्न। ३ थकावट, थकान। ४ व्यायाम, कसरत। ५ अभ्यास। ६ खेद, रंज। ७ तपस्या। ८ कष्ट, तकलीफ। ९ साहित्य में एक संचारी भाव।

स्वमकण–पु० [सं०श्रमकण] परिश्रम करने पर शरीर से निकलने वाली पसीने की बूंदें।

स्वमजळ (ल)–पु० [सं० श्रमजल] पसीना, स्वेद।

स्वमण–पु० [सं० श्रमण] १ पाप, दोषादि से रहित साधु। मुनि। २ भगवान महावीर का उपनाम। ३ बौद्ध भिक्षुक। –वि० १ परिश्रमी, मेहनती। २ तपस्या में तत्पर तपस्वी। ३ दुष्ट, पतित। ४ पाखंडी, ढोंगी। ५ देखो 'स्रवण'।

स्वमबिंदु–पु० [सं० श्रमबिन्दु] पसीना, स्वेद।

स्वमसीकर–पु० [सं० श्रम शीकर] श्रमबिंदु, पसीना।

स्वम्प–देखो 'स्वम'।

स्वयांणी–स्त्री० स्त्री, औरत।

स्वरक–पु० [सं० सरक] घोड़ा, अश्व।

स्वलोक (को)–१ देखो 'स्लोक'। २ देखो 'सिनोको'।

स्ववंति (ती)–स्त्री० नदी, सरिता।

स्वण–पु० [सं० श्रव] १ कान, कर्ण। २ झरना, सोता। ३ मूत, मूत्र, पेशाब। ४ देखो 'सरव'।

स्वण–पु० [सं० स्रवनं] १ चुआव, टकराव। २ पसीना, स्वेद। ३ मूत्र, पेशाब। [सं० श्रवण] ४ कान, कर्ण। ५ गर्भपात। ६ स्तन। ७ सत्ताईस नक्षत्रों में से बाईसवां नक्षत्र। ८ नवधा भक्ति में से एक। ९ माता-पिता, का भक्त एक पुराण प्रसिद्ध तपस्वी।

स्वणद्वादसी–स्त्री० [सं० श्रवणद्वादशी] भादव शुक्ला द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में हो।

स्वणपथ–पु० शब्द, ध्वनि का ज्ञान कराने वाली इन्द्री, कान।

स्वणपाळ (पालि, पाळो)–स्त्री० [सं० श्रवण-पालिः] १ कान की नोक। २ कान का एक आभूषण विशेष।

स्वणपीठ–पु० [सं० श्रवणपृष्ठः] कान में धारण करने का आभूषण विशेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्रवणी (बो)–क्रि० [सं० स्रवणम्] १ बहना। २ बरसना। ३ झरना, रिसना, चूना। ४ टपकना, गिरना। ५ सुनना।

स्रवत–पु० [सं० स्रष्ट] ईश्वर, परमात्मा।

स्रवता–पु० [सं० सविता] सूर्य, सूरज।

स्रवती–स्त्री० नदी।

स्रवदायक–पु० [सं० सर्वदायक] कल्पवृक्ष।

स्रवमंगळा (मंगसा)–देखो 'सरवमंगळा'।

स्रवसार–पु० शब्द, ध्वनि।

स्रसाड़ा–पु० कथा, बात, वृत्तान्त।

स्रविस्टा, स्रविस्ठा–पु० [सं० श्रविष्ठा] १ धनिष्ठा नक्षत्र। २ श्रवण नक्षत्र।

स्रवेति, स्रवेती–स्त्री० नदी, सरिता।

स्रव्व–देखो 'सरव'।

स्रसतर–देखो 'स्रस्तर'।

स्रस्ट, स्रस्टा–पु० [सं० स्रष्टृ] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव, महादेव। ४ ईश्वर। –वि० १ सृष्टि का निर्माता, कर्ता। २ देखो 'स्रस्टि'।

स्रस्टि–स्त्री० [सं० सृष्टिः] १ संसार, विश्व। २ संसार के चराचर प्राणी व पदार्थ। ३ पृथ्वी, जमीन। ४ निर्माण, रचना। ५ कंस के एक भाई का नाम। ६ एक देवी का नाम।

स्रस्टिकरता–पु० [सं० सृष्टिकर्तृ] १ ब्रह्मा। २ सृष्टि की रचना करने वाला ईश्वर।

स्रस्टिवेल (वेलि, वेली)–स्त्री० एक प्रकार की लता विशेष।

स्रस्टी–देखो 'स्रस्टि'।

स्रस्टीवार–क्रि० वि० सृष्टि के क्रमानुसार

स्रस्तर–पु० [सं० संस्तरः] १ शय्या, बिस्तर। २ घास-फूस आदि का आसन।

स्रांत–वि० [सं० श्रांत] १ परिश्रम से थका हुआ। २ दुःखी, खिन्न। ३ जितेन्द्रिय। ४ जो सुख भोगकर तृप्त हो चुका हो।–पु० साधु, तपस्वी।

स्राद्ध–पु० [सं० श्राद्धम्] १ श्रद्धा पूर्वक किया जाने वाला कार्य। २ वह कृत्य जो सनातनी हिन्दुओं में पितरों के लिये तीर्थस्थलों पर किया जाता है। ३ आश्विन मास का कृष्ण पक्ष व इस पक्ष का कोई दिन। ४ इन दिनों में, मृत व्यक्ति या पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला कार्य या ब्राह्मण भोजन आदि। –पक्ख, पक्ष, पख–पु० आश्विन मास का कृष्ण पक्ष। —पूनम, पूरणिमा–पु० भादो मास की पूर्णिमा।

स्राद्धकरता–पु० [सं० श्राद्धकर्ता] श्राद्ध करने वाला व्यक्ति।

स्राद्धदेव (देवता)–पु० [सं० श्राद्धदेव] १ मार्कण्डेय पुराणानुसार श्रद्धा के पति मनु का नाम। २ यमराज, धर्मराज। ३ ब्राह्मण।

स्राध–देखो 'स्राद्ध'।

स्राप–देखो 'सराप'।

स्रापणी (बो)–देखो 'सरापणी' (बो)।

स्रायक–वि० [सं० श्रद्] बरसाने वाला, देने वाला।

स्राव–पु० [सं०] १ बहाव, रिसाव, टपकाव। २ गर्भपात, गर्भस्राव। ३ पेड़-पौधों व जीव-जन्तुओं के भीतरी अंगों से निकलने वाला तरल पदार्थ, रस। ४ युवनाश्व प्रथम का पुत्र, शावस्त।

स्रावक, स्रावग–पु० [सं श्रावक] (स्त्री० स्रविका) १ शिष्य, अनुयायी। २ बारह सूत्रों का पालन करनेवाला, जैन धर्मानुयायी, जैनी। ३ बौद्ध संन्यासी। ४ जैन साधु। ५ बौद्ध भक्त। –वि० १ बहाने, रिसाने, चुआने वाला। २ सुनने वाला।

स्रावगी–पु० [सं० श्रावगी] जैन श्रावक, जैनी।

स्रावण–वि० १ देने वाला, चुआने वाला, बरसाने वाला। २ सावण संबंधी, सावण मास का ३ देखो 'सांवण'। ४ देखो 'स्रांवण'।

स्रावणि, स्रावणी–स्त्री० [सं० श्रावणी] १ श्रावण मास की पूर्णिमा, रक्षा बंधन पर्व। २ देखो 'सांवणी'।

स्रावणी (बो)–क्रि० १ बरसना। २ गिराना, टपकाना। ३ बहाना।

स्रिग–देखो 'स्रंग'।

स्रिगक–देखो स्रंगक'।

स्रिगार–देखो 'स्रंगार'।

स्रिगी–देखो स्रंग'।

स्रि–देखो स्री'।

स्रिक–देखो 'स्रक'।

स्रिखड–देखो 'स्रीखंड'।

स्रिज–देखो 'स्रक'।

स्रिय–देखो 'स्री'।

स्रियखंड–देखो 'स्रीखंड'।

स्रिया–देखो 'स्री'। २ देखो 'सीता'।

स्रियावर, स्रियावर–देखो 'सीतावर'।

स्रिलोक स्रिलोकू–देखो 'स्लोक'। २ देखो 'सिलोकी'।

स्रिस्ट, स्रिस्टि, स्रिस्टी–देखो 'स्रस्टि'।

स्रींगी–देखो 'स्रंगी'।

स्री–स्त्री० [सं० श्री] १ लक्ष्मी, रमा। २ पृथ्वी, भूमि, धरती। ३ सम्पत्ति के रूप में भू-भाग। ४ धन, दौलत, सम्पत्ति। ५ कीर्ति, यश। ६ कांति, चमक। ७ मर्यादा, सीमा। ८ इज्जत, प्रतिष्ठा। ९ कुशल, क्षेम। १० प्रकाश।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

११ शोभा; सौन्दर्य । १२ सरस्वती । १३ सिद्धि । १४ गिरिजा, पार्वती । १५ सीता । १६ धूप । १७ हाथी के मस्तक का आभूषण विशेष । १८ त्रिवर्ग-धर्म, अर्थ और काम । १९ साल वृक्ष । २० पैर के तलुए की एक रेखा (सामुद्रिक) । २१ एक राग । २२ स्त्रियों के मस्तक का आभूषण विशेष । २३ बुद्धि, प्रतिभा । २४ स्त्री, पत्नी । २५ अलौकिक शक्ति । २६ सजावट । २७ बेल का वृक्ष । २८ कमल । २९ सफेद चंदन । ३० एक औषधि विशेष । ३१ अधिकार । ३२ उच्च पद । ३३ किसी के नाम के आगे (पूर्व) लगने वाला आदर सूचक शब्द । ३४ धर्म ऋषि की पत्नी का नाम । —पु० ३५ ब्रह्मा । ३६ विष्णु । ३७ कुबेर । ३८ सम्पूर्ण जाति का एक राग । ३९ एक वैष्णव सम्प्रदाय विशेष । ४० मंगल सूचक शब्द । —वि० १ बुद्धिमान । २ श्रेष्ठ, सुन्दर । ३ शुभ, उत्तम । —सर्व० अपने स्वयं के ।

श्रीकंठ–पु० [सं० श्रीकण्ठ] शिव, महादेव । —सखा–पु० कुबेर ।

श्रीकंठी–स्त्री० [सं० श्रीकण्ठी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी ।

श्रीकंत–पु० [सं० श्रीकांत] लक्ष्मीपति विष्णु ।

श्रीकमळ–पु० [सं० श्रीकमल] मुख ।

श्रीकर–पु० [सं० श्रीकर] १ विष्णु । २ लाल कमल । –वि० शोभा बढ़ाने वाला ।

श्रीकरण, श्रीकरणा श्रीकरणिक, श्रीकरणीक, श्रीकरिणिक–वि० [सं०श्रीकरण] १ खजाने की देख-रेख करने वाला, कोषाध्यक्ष । २ वैभव की वृद्धि करने वाला । ३ धन एकत्र करने वाला ।

श्रीकरी–स्त्री० [स० श्रीकरी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी ।

श्रीकांत–पु० [सं० श्रीकांत] १ विष्णु । २ श्रीरामचंद्र भगवान । ३ श्रीकृष्ण । ४ महादेव, शिव ।

श्रीकार–वि० [सं० श्रीकार] १ श्रेष्ठ उत्तम, कल्याणकारी । २ श्री अक्षर का आकार, बनावट । ३ एक छन्द विशेष ।

श्रीकास्ट, श्रीकास्ठ–पु० [स० श्रीकाष्ठ] नल राजा द्वारा विजित एक प्रदेश

श्रीकिसण (न)–देखो 'सीकृष्ण' ।

श्रीकीरत, श्रीकीरति (ती)–पु० ताल के आठ भेदों में से एक ।

श्रीकृसण, श्रीकृस्ण, श्रीकिसण, श्रीकिस्न–पु० [सं० श्रीकृष्ण] भगवान कृष्ण, वासुदेव, नंद नन्दन ।

श्रीखंड श्रीखंडस–पु० [सं० श्रीखण्डः] १ चन्दन । २ दही, चीनी, केसर, मेवे आदि के मिश्रण से तैयार किया एक पेय पदार्थ ।

श्रीखंडसैल–पु० [सं० श्रीखंडशैल] मलयगिरि पर्वत ।

श्रीखांडव, श्रीखांविद, श्रीखाखंड, श्रीखांविद–पु० [सं०श्री+फा० खांविद] १ विष्णु । २ श्रीरामचन्द्र ।

श्रीगणेस–पु० [सं० श्री-गण-ईश] १ किसी ग्रंथ, पत्र आदि के प्रारंभ में लिखा जाने वाला मांगलिक शब्द । २ प्रारंभ गुरूआत ।

श्रीगरण, श्रीगरणा, श्रीगरणिक, श्रीगरणीक, श्रीगरिणिक–देखो 'श्रीकरणिक' ।

श्रीगिर, श्रीगिरि श्रीगिरी–पु० [सं० श्रीगिरि] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम ।

श्रीचकर, श्रीचक्कर, श्रीचक्र–पु० [सं० श्रीचक्र] भगवान विष्णु का दिव्य आयुध सुदर्शन चक्र ।

श्रीजी–पु० प्रतिष्ठित व्यक्तियों के प्रति एक सम्मान सूचक सम्बोधन ।

श्रीजुकत, श्रीजुक्त, श्रीजुस–वि० [सं० श्रीयुक्त] श्री से युक्त, श्री सहित ।

श्रीतळ, श्रीतस–पु० [सं० श्रीतल] एक नरक का नाम ।

श्रीतीरथ–पु० [सं० श्रीतीर्थ] एक तीर्थ का नाम ।

श्रीद–पु० [सं० श्रीदः] १ कुबेर । २ विष्णु ।

श्रीदत–पु० [सं० श्रीदत्त] १ कुबेर । २ पृथ्वी, जमीन ।

श्रीदांम, श्रीदांमण, श्रीदांमन–देखो 'सुदांमो' ।

श्रीदेवियांण, श्रीदेवीयांण–स्त्री० १ बीज मंत्राक्षरों में से एक । २ बीजाक्षर । ३ ईश्वरदास बारहठ कृत देवी की स्तुति का छोटा ग्रंथ ।

श्रीधर–पु० १ भगवान विष्णु, ईश्वर, परमेश्वर । २ श्रीराम । ३ श्रीकृष्ण । ४ जैनियों के एक तीर्थंकर का नाम । ५ त्रेता युग का एक राजा विशेष ।

श्रीधांम–पु० [सं० श्रीधाम] १ लक्ष्मी का निवास स्थान । २ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

श्रीनंदण, श्रीनंदन–पु० [सं० श्रीनंदन] १ कामदेव, मनोज । २ श्रीराम । ३ विष्णु । ४ श्रीकृष्ण ।

श्रीनाथ–पु० [सं० श्रीनाथ] १ लक्ष्मीपति विष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ श्रीराम । ४ शिव, महादेव ।

श्रीनितंबा–स्त्री० [सं० श्रीनितम्बा] राधिका ।

श्रीनिध, श्रीनिधि, श्रीनिधी–पु० [सं० श्रीनिधि] भगवान विष्णु का नाम ।

श्रीनिवास–पु० [सं० श्रीनिवास] विष्णु का एक नामांतर ।

श्रीपंचमी–स्त्री० [सं० श्रीपंचमी] माघशुक्ला पंचमी तिथि । बसंत पंचमी ।

श्रीपत, श्रीपति, श्रीपती–पु० [सं० श्रीपति] १ विष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३ ईश्वर, परमेश्वर । ४ श्रीरामचन्द्र । ५ कुबेर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीपाळी–स्त्री० सोंठ

श्रीपूज, श्रीपूजनीय, श्रीपूज्य–पु० १ जैन धर्मानुसार सम्प्रदाय के अधिपति, संघनायक, आचार्य । २ यतियों के आचार्य ।

श्रीफळ, श्रीफल–पु० [सं० श्रीफल] १ नारियल । २ आंवला । ३ बेल का वृक्ष ।

श्रीबंध, श्रीबंधव, श्रीबंधु–पु० [सं० श्रीबंधु] १ चंद्रमा, चांद । २ अमृत ।

श्रीभरतार–पु० [सं० श्रीभर्तृ] १ विष्णु । २ श्रीरामचन्द्र । ३ श्रीकृष्ण ।

श्रीभांण, श्रीभांणु, श्रीभांनु–पु० [सं० श्रीभानु] श्रीकृष्ण व सत्यभामा के एक पुत्र का नाम ।

श्रीभ्रात, श्रीभ्राता–पु० [सं० श्रीभ्रातृ] १ चन्द्रमा; चांद । २ घोड़ा, अश्व । ३ अमृत, सुधा ।

श्रीमंडळ, श्रीमंडळू–पु० [सं० श्रीमंडल] १ एक वाद्य विशेष । २ एक राग विशेष ।

श्रीमंत–पु० [सं० श्रीमंत] १ एक प्रकार का शिरोभूषण । २ किसी के प्रति सम्मान सूचक संबोधन ।

श्रीमति, श्रीमती–स्त्री० [सं० श्रीमती] १ परिणिता स्त्रियों के नाम से पूर्व लगने वाला सम्मान सूचक शब्द । २ सुन्दर स्त्री । ३ एक गंधर्व कन्या । ४ सृंजय राजा की कन्या दमयन्ती का नामान्तर ।

श्रीमांण, श्रीमांन–पु० [सं० श्रीमान] १ आदरणीय व्यक्तियों के नाम के पहले लगाया जाने वाला आदर सूचक शब्द । २ श्रीकृष्ण व सत्यभामा का एक पुत्र । –वि० १ धनाढ्य, वैभवशाली । २ श्री से युक्त ।

श्रीमात, श्रीमाता–स्त्री० [सं० श्रीमाता] एक देवी विशेष ।

श्रीमाळ–पु० [सं० श्रीमाल] १ भीनमाल कस्बे का एक प्राचीन नाम । २ जैनमतावलम्बी एक वैश्य जाति ।

श्रीमाळी–पु० (स्त्री० श्रीमाळण) १ एक प्रसिद्ध ब्राह्मण वर्ग । २ इस वर्ग का ब्राह्मण ।

श्रीमुख–पु० १ विष्णु का मुख वेद । २ सन्त-महात्मा, राजा-महाराजा तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के 'स्वयं' के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द । ३ ब्रह्मवीसो का सातवां वर्ष । –सर्व० अपने, स्वयं के ।

श्रीय, श्रीया–देखो 'श्री' ।

श्रीयुत–देखो 'श्रीजुत' ।

श्रीरंग–पु० [सं० श्रीरंग] १ भगवान विष्णु का एक नामान्तर । २ श्रीकृष्ण । ३ ईश्वर, परमेश्वर । ४ श्रीरामचन्द्र ।

श्रीरमण, श्रीरवण–पु० [सं० श्रीरमण] १ एक संकर राग विशेष । २ भगवान विष्णु । ३ श्रीकृष्ण । ४ श्रीराम ।

श्रीरांमालय–पु० हनुमान, पवनसुत ।

श्रीराज, श्रीराज्य–पु० [सं० श्रीराज्य] वह प्रदेश जिसे राजा नल ने विजय किया था ।

श्रीवंति, श्रीवंती–स्त्री० नदी, सरिता ।

श्रीवक्षस्थळ, श्रीवक्षःस्थळ, श्रीवत्सस्थळ–पु० [सं० श्रीवक्षस्थल] १ श्रीकृष्ण । २ श्रीविष्णु । ३ ईश्वर, परमात्मा ।

श्रीवछ, श्रीवछ श्रीवास–पु० [सं० श्रीवत्स] १ भगवान विष्णु का एक नाम । २ विष्णु की छाती पर लगा भृगु ऋषि का चरण चिह्न ।

श्रीवर, श्रीवलभ, श्रीवल्लभ–पु० [सं० श्रीवर, श्रीवल्लभ] १ भगवान-विष्णु । २ श्रीरामचन्द्र । ३ परमेश्वर, ईश्वर । ४ श्रीकृष्ण ।

श्रीवास–पु० [सं० श्रीवासः] १ श्रीविष्णु भगवान । २ शिव, महादेव । ३ कमल ।

श्रीवृक्ख, श्रीवृक्ष, श्रीवृख–पु० [सं० श्रीवृक्ष] १ पीपल का वृक्ष । २ बेल का वृक्ष । ३ घोड़े के माथे या छाती पर होने वाली भवरी ।

श्रीवृछक–पु० [सं० श्रीवत्सकिन्] छाती पर भौंरी वाला घोड़ा ।

श्रीव्रत–पु० [सं० श्रीव्रत] चैत्र शुक्ला पंचमी को किया जाने वाला व्रत ।

श्रीसग–पु० [सं० श्रीसङ्ग] लौंग, लवंग ।

श्रीसंघ–पु० [सं० श्रीसंघ] १ जैन धर्मानुसार-श्रावक, श्राविका, साधु व साध्वियों का समूह । २ ऐसा स्थान जहां उक्त चारों का मिलन या संगम हो ।

श्रीसंप्रदाय–पु० वैरागी साधुओं का एक सम्प्रदाय विशेष ।

श्रीसंभूता–स्त्री० ज्योतिष में कर्ममास (श्रावण) की छठी रात्रि ।

श्रीसमाध (धि, धी)–पु० [सं० श्रीसमाधि] १ भविष्यत् काल के सत्रहवें तीर्थंकर का नाम । २ एक राग विशेष ।

श्रीसहोदर–पु० [सं० श्रीसहोदरः] १ चन्द्रमा, चांद । २ मोती । ३ समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्नों में से एक ।

श्रीसाप, श्रीसाफ–पु० एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा ।

श्रीसुत, श्रीसुतण–पु० [सं० श्रीसूतः] कामदेव, मनोज ।

श्रीसुपास–पुं० [सं० श्रीपार्श्वनाथ] पार्श्वनाथ का एक नाम ।

श्रीस्यांम–पु० [सं० श्रीश्याम] १ विष्णु भगवान । २ श्रीराम । ३ श्रीकृष्ण । ४ शिव, महादेव । ५ ईश्वर, परमेश्वर ।

श्रीहजूर–पु० एक प्रकार का प्राचीन कर ।

श्रीहर, श्रीहरि–पु० [सं० श्रीहरि] १ विष्णु । २ शिव, महादेव ।

श्रुक–देखो 'सुक' ।

श्रुग, श्रुगि, श्रुगी–देखो 'स्वरग' ।

श्रुण, श्रुणि, श्रुणी–१ देखो 'सोणित' । २ देखो 'सोण' । ३ देखो 'सोणि' ।

श्रुत–पु० [सं० श्रुत] १ राजा भगीरथ के एक पुत्र का नाम । २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र । ३ वेद, श्रुति ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतकीरत, श्रुतकीरति, श्रुतकीरती–पु० [सं० श्रुतकीर्ति] १ अर्जुन व द्रौपदी का एक पुत्र। २ दशरथ-सुत शत्रुघ्न की पत्नी का नाम। ३ वसुदेव की बहन का नाम।

श्रुतज्ञान–पु० [सं० श्रुतज्ञान] शास्त्रों को पढ़ने-सुनने से प्राप्त होने वाला ज्ञान।

श्रुतदेव–पु० [सं० श्रुतदेव] १ श्रीकृष्ण के महारथी पुत्रों में से एक। २ एक कृष्ण भक्त वैरागी ब्राह्मण। ३ विष्णु का एक पार्षद।

श्रुतदेवा, श्रुतदेवी–स्त्री० [सं० श्रुतदेवी] १ वसुदेव की बहन। २ सरस्वती देवी।

श्रुतधर–पु० [सं० श्रुतधर] कान अवण।

श्रुतध्वज, श्रुतध्वज–पु० [सं० श्रुतध्वज] विराट के राजा का एक भाई।

श्रुतसेण श्रुतसेन–पु० [सं० श्रुतसेन] १ भीमसेन व द्रौपदी का एक पुत्र। २ एक नाग। ३ परीक्षित का पुत्र, एक राजा।

श्रुतस्रवा–पु० [सं० श्रुतश्रवा] १ सूर्य पुत्र शनि का एक नाम। २ सावर्णि मनु का नामान्तर। ३ एक महर्षि। ४ वसुदेव की बहन व शिशुपाल की माता।

श्रुति–स्त्री० [सं० श्रुति] १ सुनने की क्रिया या भाव, अवण। २ शब्द, ध्वनि। ३ कान, कर्ण। ४ वेद। ५ एक योगिनी। ६ युक्ति, कथन। ७ जन श्रुति। ८ अनुप्रास का एक भेद। ९ कर्दम ऋषि की पत्नी। १० संगीत में स्वर का अन्तराल। ११ अवण नक्षत्र। १२ चार की संख्या सूचक शब्द।

श्रुतिधर–वि० [सं० श्रुतिधर] जिसकी स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र हो।

श्रुतिमुख–पु० [सं० श्रुतिमुख] ब्रह्मा, चतुरानन।

श्रुतिरंजण, श्रुतिरंजणी (नी)–स्त्री० [सं० श्रुतिरंजनी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी।

श्रुतिवांण श्रुतिवांणी, श्रुतिवांन–स्त्री० [सं० श्रुति-वाणी] १ वेद वाक्य, वेदों की वाणी। २ वेदों में आस्था रखने वाला।

श्रुतिविद्या–स्त्री० [सं० श्रुतिविद्या] कुश द्वीप की एक नदी।

श्रुची–पु० [सं० स्रुवा] यज्ञाग्नि में घी इत्यादि की आहुति देने का लकड़ी का, चम्मच।

श्रूत–पु० कान, कर्ण।

श्रूल–पु० गढ़, किला।

श्रेणता–स्त्री० पंक्ति।

श्रेणि, श्रेणी–स्त्री० [सं० श्रेणि] १ रेखा, पंक्ति। २ समूह, दल। ३ कारीगरों का संघ, व्यापारियों का संगठन। ४ शृंखला, सिलसिला। ५ सेना, फौज। ६ जीना, सीढ़ी। ७ वर्ग, विभाग, दर्जा। —बद्ध–क्रि०वि० कतार में, पंक्ति से।

श्रेय–वि० [सं० श्रेयस्] १ उत्कृष्ट, बेहतर। २ उत्तम, श्रेष्ठ। ३ मंगलमय, कल्याणकारी। ४ शुभ। ५ यशदाता, कीर्तिकर। –स्त्री० १ उत्तमता। अच्छापन। २ शुभ आचरण। ३ भलाई, कल्याण।

श्रेयसी–स्त्री० [सं० श्रेयसी] हरड़े, हरीतकी।

श्रेयस्कर–पु० [सं० श्रेयस्कर] जैनियों के ८८ ग्रहों में से ६६ वां ग्रह। –वि० अपेक्षाकृत उत्तम।

श्रेयांस, श्रेयांसनाथ–पु० [सं० श्रेयांसनाथ] जैनियों के एक तीर्थंकर का नाम।

श्रेवड़ा–पु० १ जैन साधु। २ साधु, संन्यासी।

श्रेस्ट–देखो श्रेस्ठ'।

श्रेस्टता–देखो श्रेस्ठता'।

श्रेस्टी–देखो श्रेस्ठी'।

श्रेस्ठ–पु० [सं० श्रेष्ठ] १ विष्णु। २ कुबेर। ३ ब्राह्मण। ४ राजा, नृप। ५ सुधामन देवों में से एक। ६ गाय का दूध –वि० १ सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट। २ मुख्य, प्रधान। ३ वृद्ध, बूढ़ा।

श्रेस्ठता–स्त्री० [सं० श्रेष्ठता] १ प्रधानता। २ खासियत, विशेषता।

श्रेस्ठाश्रम–पु० [सं० श्रेष्ठाश्रम] श्रेष्ठ आश्रम, गृहस्थाश्रम।

श्रेस्ठी–पु० [सं० श्रेष्ठिन्] प्रतिष्ठित व्यवसायी, सेठ।

श्रोण–पु० [सं० श्रोण] एक प्रकार का रोग। –वि० १ लंगड़ा, लूला। २ लाल, रक्त वर्ण। ३ देखो 'सोणित'। ४ देखो श्रोणि'।

श्रोणि–पु० [सं० श्रोणि, श्रोणी] १ चूतड़, नितम्ब। २ कटि, कमर। ३ मार्ग, रास्ता।

श्रोणित–देखो 'सोणित'।

श्रोणी–स्त्री० [सं० श्रोणी] १ भूमि, पृथ्वी। २ देखो 'सोणित'। ३ देखो 'श्रोणि'।

श्रोणीसूतर, श्रोणीसूत्र–पु० [सं० श्रोणि + सूत्र] एक प्रकार का आभूषण विशेष, कटिमेखला।

श्रोत–पु० [सं० श्रोत] १ कर्ण, कान। २ हाथी की सूंड। [सं० स्रोत] १ चश्मा, सोता, धार। २ जलप्रवाह, तेज प्रवाह वाली नदी। ३ वह आधार या साधन जिसमें से कोई वस्तु बराबर निकलती या आती रहे। ४ वंश-परम्परा। ५ कूए आदि में जमीन के अन्दर से आने वाली जल धारा। ६ लहर, तरंग। ७ जल, पानी। ८ इन्द्रिय।

श्रोतईस–पु० [सं० स्रोत-ईश] नदियों का स्वामी, समुद्र।

श्रोतपत (पति, पती)–पु० [सं० श्रोत पति] समुद्र, सागर।

श्रोतस्वी, श्रोतस्विनी–स्त्री० [सं० स्रोतस्विनी] नदी, सरिता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोता–वि० [सं० श्रोता] सुनने वाला। –पु० १ सुनने वाला व्यक्ति। [सं० श्रोतस्] २ नदी, सरिता। ३ जल, पानी। ४ चश्मा, सोता, जल प्रवाह।

स्रोत्र–पु० [सं० श्रोत्र] १ कान, कर्ण। २ वेदों का ज्ञान। ३ वेद। ४ तुषित देवों में से एक।

स्रोत्रि–पु० सोता।

स्रोन–देखो 'स्रोणित'।

स्लेट–स्त्री० १ चिकने पत्थर, लोहे व गत्ते की बनी चौकोर तख्ती या पटरी जिस पर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं। २ मलमल में तहें डालकर बनाई जाने वाली ढाल, ईरानी ढाल।

स्लेष–पु० [स० श्लेष] १ ऐसा शब्द जिसके दो भिन्न प्रकार के अर्थ हों। २ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार, जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ हों। ३ आलिंगन। ४ जुड़न, मिलन।

स्लेसम–पु० [सं० श्लेष्म] १ लिसोड़े का वृक्ष। २ देखो 'स्लेस्म'।

स्लोक–पु० [सं० श्लोक] १ प्रशंसा, तारीफ। २ यश, कीर्ति। ३ पुकार, आह्वान। ४ प्रशंसात्मक छंद, कथन। ५ संस्कृत का पद्य, जो अनुष्टप छंद में हो। ६ ध्वनि, आवाज। ७ लोकोक्ति, कहावत।

स्व–सर्व० [सं०] स्वयं का, अपना, निजी। –वि० १ अपनी जाति का, सजातीय। २ स्वाभाविक, प्रकृतिगत। –पु० १ नातेदार, रिश्तेदार। २ जीवात्मा। ३ धन-दौलत, सम्पत्ति।

स्वकरमी–वि० [सं० स्वकर्मिन्] १ स्वार्थी, मतलबी। २ अपने कर्त्तव्य या धर्म का पालन करने वाला।

स्वकीय–पु० [सं०] १ स्वजन, कुटुम्बी। २ अपना, निजी।

स्वकीया–स्त्री० [स०] ऐसी स्त्री या नायिका जो केवल अपने पति से ही अनुराग करती हो।

स्वगत–वि० [सं०] १ मन में आया हुआ। –अव्य० २ स्वतः अपने आप।

स्वच्छंद, स्वछंद–पु० [सं० स्वच्छंद] १ कार्तिकेय या स्कन्द का एक नाम। –स्त्री० २ अपनी इच्छा या मर्जी। –वि० १ मनमौजी, स्वेच्छाचारी। २ परम स्वतंत्र, निरंकुश, नियमण या मर्यादा से मुक्त। ३ भय रहित। –क्रि०वि० १ अपनी इच्छानुसार, अपनी मर्जी से। २ बिना किसी भय या संकोच के।

स्वछंदचारण, स्वछंदचारणी, स्वछंदचारिण, स्वछंदचारिणी–स्त्री० १ वेश्या, रंडी। २ बदचलन स्त्री। ३ अपनी मर्जी मुताबिक चलने वाली।

स्वछंदचारी–वि० स्वेच्छाचारी, मनमौजी।

स्वछंदता–स्त्री० स्वछंद होने का गुण, अवस्था या भाव।

स्वच्छ–वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार का मैल या गंदगी न हो, साफ, निर्मल। २ जिसमें कोई उलझन न हो, स्पष्ट। ३ सुन्दर, मोहक। ४ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। ५ पवित्र, शुद्ध। ६ निष्कपट। ७ स्पष्ट।

स्वच्छता–स्त्री० [सं०] १ स्वच्छ होने की अवस्था या भाव। २ निर्मलता, सफाई। ३ स्पष्टता।

स्वजन–पु० [सं०] १ आत्मीयजन। परिवार के अपने लोग। २ रिश्तेदार, संबंधी।

स्वजनता–स्त्री० [सं०] १ आत्मीयता। २ रिश्तेदारी।

स्वजात–पु० [स०] पुत्र, बेटा। –वि० अपने से उत्पन्न।

स्वजाति–स्त्री० अपनी जाति, कौम या वर्ग।

स्वतंत्र–वि० [सं०] १ जो किसी के नियंत्रण, दबाव या शासन में न हो स्वाधीन। २ जो किसी प्रकार के बन्धन में न हो, आजाद। ३ जिसमें किसी अन्य का सहारा न लिया गया हो। ४ अलग, जुदा, भिन्न। ५ नियम आदि के बंधन से रहित। ६ निरंकुश, स्वेच्छाचारी। ७ वयस्क, बालिग। –पु० अपना तन्त्र, शासन या राज्य।

स्वतंत्रता–स्त्री० १ स्वतंत्र रहने या होने का भाव। २ आजादी। ३ स्वाधीनता।

स्वतः–अव्य० [स० स्वतस्] अपने-आप, स्वयमेव।

स्वतिस्त्री–देखो 'स्वस्तिस्त्री'।

स्वत्व–पु० [सं० स्वत्वः] १ अधिकार, हक। २ अपनापन।

स्वदेस–पु० [सं० स्वदेश] अपना देश, वतन।

स्वधरम–पु० [सं० स्वधर्म] अपना धर्म, कर्त्तव्य।

स्वधा–स्त्री० [स०] १ पितरों के निमित्त दिया जाने वाला भोजन, पितृ-अन्न। २ दक्ष की एक कन्या जो पितरों की पत्नी मानी जाती है। ३ अंगिरा ऋषि की पत्नी का नाम। ४ देवता या पितरों को हवि देते समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द।

स्वध धिप, स्वधाधिपत (पति, पती)–पु० [सं० स्वधा-अधिपति] अग्नि, आग।

स्वधाप्रिय–पु० [स०] आग, अग्नि।

स्वधोद–पु० 'सूरज प्रकास' के अनुसार एक प्राचीन राजा।

स्वनंवा–स्त्री० दुर्गा।

स्वन–पु० १ सत्य के एक पुत्र का नाम। २ शब्द, ध्वनि। [सं० श्वन्] ३ कुत्ता, श्वान।

स्वनचकर, स्वनचक्र–पु० [सं० स्वनचक्र] एक प्रकार का रति बंध या संभोग का आसन।

स्वपच–पु० [स० श्वपचः] १ श्वान का मांस पकाकर खाने वाला व्यक्ति, चांडाल। २ पतित जाति का व्यक्ति।

स्वपथ–पु० स्वर्ग का मार्ग या रास्ता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वपन, स्वपनी–देखो 'स्वप्न'।

स्वपाळ (ल)–पु० [सं० स्वपाल] स्वर्ग का रक्षक।

स्वप्न–पु०[सं०]१ सोना क्रिया या अवस्था, नींद। २ निद्रावस्था में किसी घटना, विचार, चित्र आदि मस्तिष्क में आने की स्थिति, झंझाल। ख्वाब। ३ निद्रा या तंद्रावस्था में सहसा आने वाला विचार जो कभी सत्य व प्रायः असत्य होता है। ४ कल्पना, मन की उड़ान। ५ एक लोक गीत। –वि० १ क्षण भंगुर, नाशवान। २ मिथ्या।

स्वप्नदोस–पु० [सं० स्वप्नदोष] निद्रावस्था में काम वासना जागृत होने से होने वाला वीर्यपात, स्खलन।

स्वभाउ, स्वभाव–पु० [सं० स्वभाव] १ अपना या निजी भाव, विचार। २ ऐसी क्रिया जो बार-बार स्वतः होती रहती, हैं, आदत, बान। ३ मूल भूत गुण, प्रकृति। ४ खासियत, विशेषता। ५ मनुष्य के मन का वह पक्ष जो बहुत कुछ जन्म जात होता है तथा सदैव देखने में आता है।

स्वयं–वि० [सं० स्वयम्] अपने-आप कार्य करने वाला। –सर्व० आप, खुद। –अव्य० अपने आप।

स्वयंजोत (जोति, जोत, ज्योति, ज्योती)–पु० [सं०स्वयंज्योति] परमेश्वर, ईश्वर, परब्रह्म।

स्वयंवूत–पु० एक प्रकार का नायक। (साहित्य)

स्वयंवूती–स्त्री० एक प्रकार की नायिका। (साहित्य)

स्वयंप्रभ–पु० [सं०] १ जैनियों के एक तीर्थंकर। २ जैनियों ८८ ग्रहों में से ६४वां ग्रह।

स्वयंप्रभा–स्त्री० [सं०] १ इन्द्र की अप्सरा व मंदोदरी की माता। २ अर्जुन के स्वागत में इन्द्र सभा में नृत्य करने वाली अप्सरा।

स्वयंभुव, स्वयंभू–पु० [सं० स्वयंभुः] १ ब्रह्मा, विरंची। २ शिव, महादेव। ३ विष्णु। ४ कामदेव, मनोज। ५ प्रथम मनु का नाम। ६ काल जो मूर्तिमान हो। ७ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। –वि० अपने आप स्वतः उत्पन्न होने वाला।

स्वयंवर–पु० [सं०] १ स्वयं वरण करने की क्रिया, स्वयंवरण। २ ऐसा उत्सव या समारोह जिसमें उपस्थित होने वाले व्यक्तियों में से कन्या वर का चयन कर वरण करती है। ३ इस तरह वरण करने का विधान। ४ विवाह, शादी।

स्वर–पु० [सं० स्वरः] १ किसी प्रकार के आघात, गति, संघर्षण या अन्य क्रिया से उत्पन्न ध्वनि, शब्द। २ किसी प्राणी की बोली, बोलने का शब्द, आवाज। ३ प्राकृतिक क्रिया से स्वतः उत्पन्न होने वाला घोष, गूंज। ४ संगीत में सप्तस्वरों में से कोई ध्वनि, सरगम की कोई ध्वनि। ५ व्याकरण में 'अ' से 'अः' तक ध्वनियां जिनके योग से व्यंजनों का उच्चारण होता है। ६ किसी वाद्य की आवाज। बोल। ७ वेद पाठ में शब्दों का उतार चढ़ाव जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीन प्रकार का होता है। ८ नथूने से निकलने वाला पवन। ९ निद्रावस्था या सोते समय नाक से निकलने वाला श्वास, खर्राटा। १० सात की संख्या। [सं० स्वर] ११ स्वर्ग। १२ आकाश, अन्तरिक्ष। १३ सूर्य और ध्रुव के बीच का स्थान। १४ एक व्याहृति।

स्वरकळानिध (निधि, निधी)–स्त्री० [सं० स्वर+कला निधि] कर्नाटक पद्धति की एक राग।

स्वरगंगा–स्त्री० [सं० स्वर-गंगा] आकाश गंगा।

स्वरग–पु० [सं० स्वर्ग] १ अन्तरिक्ष में स्थित सात लोकों में से तीसरा लोक, जहां देवता, पुण्यात्मा, सत्कर्मी निवास करते हैं, देवलोक, वैकुंठ। २ अन्य धर्मों के अनुसार आकाश स्थित एक अन्य स्थान। ३ ऐसा कोई स्थान जहां सर्वसुख की प्राप्ति होती हो। ४ आकाश, आसमान। ५ ईश्वर। ६ सुख। ७ देखो 'सरग'। —गमण गमन–पु० स्वर्ग को जाने की क्रिया या भाव, मृत्यु। —गांमी–वि० स्वर्ग को जाने वाला, मृत्यु को प्राप्त, मृत। —तरंगिणा, तरंगिणी–स्त्री० आकाश गंगा। —तर, तरु–पु० कल्प वृक्ष। पारिजात। —धेन, धेनु–स्त्री० कामधेनु। —नव, नवी–स्त्री० आकाश गंगा। —पत, पति, पती–पु० स्वर्ग का मालिक, इन्द्र। —पुर, पुरी–स्त्री० अमरावती, वैकुण्ठपुरी। —मंदाकनी, मंदाकिनी–स्त्री० आकाश गंगा। —लोक–पु० देवलोक, वैकुण्ठ। आकाश। —लोकेस, लोकेसर, लोकेसु, लोकेसुर–पु० इन्द्र। तन शरीर। —वधू, वधू–स्त्री० अप्सरा। —वास–पु० स्वर्ग या वैकुण्ठ में निवास। देवलोक, स्वर्ग। देहावसान, मृत्यु। —वासी–वि० स्वर्ग में रहने वाला। मृत्यु को प्राप्त, स्वर्गीय। —विहारी–पु० देव, देवता। —गाजी–स्त्री० अप्सरा।

स्वरगद–वि० [सं० स्वर्गद] स्वर्ग देने वाला।

स्वरण–पु० [सं० स्वर्ण] १ सुवर्ण, सोना, कनक। २ धतूरा। ३ कामरूप देश की एक नदी।

स्वरणकाय–पु० [सं० स्वर्णकाय] गरुड़ का एक नाम।

स्वरणकार–पु० [सं० स्वर्णकार] स्वर्ण के आभूषण बनाने व व्यवसाय करने वाली एक जाति व इस जाति का व्यक्ति। सुनार।

स्वरणगिर (गिरि, गिरी)–पु० [सं० स्वर्णगिरि] १ सुमेरु पर्वत। २ लंका का दुर्ग। ३ जालोर का दुर्ग। ४ मगध की प्राचीन राजधानी।

स्वरणचूड–पु० [सं० स्वर्णचूड] १ नीलकंठ नामक पक्षी। २ महादेव, शिव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वरणजात (जाति, जाती)–स्त्री० [सं० स्वर्णजाति] पीली, चमेली।

स्वरणपक्ष (पक्ष, पख)–पु० [सं० स्वर्णपक्ष] गरुड़।

स्वरणभूषण (भूषण)–पु० [सं० स्वर्ण भूषण] १ सोनागेरु। २ सोने के आभूषण।

स्वरभांण (भांणु, भांनु भांनू)–पु० [सं० स्वरभानु] १ श्रीकृष्ण व सत्यभामा का एक पुत्र। २ राहु नामक ग्रह।

स्वरमंडळ–पु० [सं० स्वरमंडल] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

स्वरलोक–देखो 'स्वरगलोक'।

स्वरवेस्या–स्त्री० [सं० स्ववेंश्या] अप्सरा।

स्वरसंक्रम–पु० [सं०] संगीत में स्वरों का उतार-चढ़ाव।

स्वरसंधि–स्त्री० [सं०] व्याकरण में दो या अधिक स्वरों का एक साथ मिलन, योग।

स्वरस–पु० औषधि का रस।

स्वरा–स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मा की पत्नी, गायत्री की सपत्नी। २ राजा उत्तानपाद की एक कन्या।

स्वराज्य–पु० [सं०] १ अपना राज्य या शासन। २ अपना देश या वतन। ३ विदेशी शासन से किसी देश या राज्य की मुक्ति।

स्वराट–पु० [सं०] १ इन्द्र, देवराज। २ ब्रह्मा। ३ परमेश्वर, ईश्वर।

स्वरूप–पु० [सं०] १ आकार, बनावट, आकृति। २ रूप, शक्ल। सूरत। ३ सौन्दर्य, सुन्दरता। ४ मूर्ति या चित्र। ५ किसी चीज का ढंग या पद्धति। ६ स्वभाव, आदत, प्रकृति। ७ आत्मा। ८ विद्वान, पंडित। ९ ईश्वर, भगवान्। १० पांच प्रकार की मुक्तियों में से सारूप्य नामक मुक्ति। –वि० १ मनोहर, सुन्दर, रूपवान। २ तुल्य, समान। ३ देखो 'सरूप'। —मांन, वांन–वि० सुन्दर, खूबसूरत।

स्वरूपी–वि० स्वरूप वाला, स्वरूपवान।

स्वरेणु (णू)–स्त्री० सूर्य की पत्नी संज्ञा का नामान्तर।

स्वरोदय–पु० [सं०] दायें-बायें नथूने से निकलने वाली श्वास विशेष से शुभाशुभ फल जानने का ज्ञान या विधि।

स्ववस–वि० [सं० स्ववश] अपने वश या काबू में, अपने नियंत्रण में।

स्वसन–पु० [सं० श्वसन] १ हवा, पवन। २ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग का नाम।

स्वसरिता–स्त्री० [सं० स्वः सरित्] गंगा।

स्वसा–स्त्री० [सं० स्वसृ] बहन।

स्वसाव–पु० एक सूर्यवंशी राजा सगर।

स्वसुंदरी–स्त्री० [सं० स्व: सुन्दरी] अप्सरा।

स्वस्ति–स्त्री० [सं०] १ ब्रह्मा की तीन पत्नियों में से एक। २ पत्र या किसी लेख के आरम्भ में लिखा जाने वाला मंगलकामना सूचक शब्द। –अव्य० १ मंगल हो, भला हो। २ ठीक है, मान्य है। ३ कुशल है, क्षेम है, कल्याण है। ४ देखो 'स्वस्तिक'।

स्वस्तिक–पु० [सं०] १ एक प्रकार का मांगलिक चिह्न, साथिया। २ साथिया जैसा सामुद्रिक चिन्ह। ३ भीगे हुए चावलों को पीसकर, विवाहादि के अवसर पर बनाया जाने वाला मांगलिक द्रव्य। ४ सथिया जैसा चिह्न। ५ एक विशेष प्रकार का राजप्रासाद। ६ चौराहा। ७ एक प्रकार का पकवान। ८ एक प्रकार का प्राचीन यंत्र जो शरीर में गड़े शस्त्रादि निकालने के काम आता था। ९ सांप के फन पर की नीली रेखा। १० एक विशेष प्रकार का मकान जिसके पश्चिम व पूर्व में दालान हो। ११ लहसुन। १२ मूली। १३ रतालू। १४ रसिया, लंपट। १५ जैनियों के ८८ ग्रहों में से ५८ वां ग्रह। १६ एक प्रकार का योगासन।

स्वस्तिका–स्त्री० चमेली।

स्वस्तिकासण (न)–पु० योग के चौरासी आसनों में से एक।

स्वस्तिमत (ति, ती)–स्त्री० [सं० स्वस्तिमति] स्वामि कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

स्वास्तिवाचन–पु० पत्र आदि के प्रारम्भ में लिखा जाने वाला मांगलिक शब्द।

स्वांग–पु० [सं०] १ किसी का नकली वेश। २ बहाना, झूठा नाटक। ३ मनोरंजन या किसी को डराने के लिये बनाया गया हास्यास्पद या भय नक वेश। ४ खयाल या नाटक के पात्र के रूप में धारण की जाने वाली वेशभूषा विशेष। ५ ढोंग, आडंबर। ६ देखो 'सांग'।

स्वांगी–वि० १ ढोंगी। २ नकल करने वाला, नकलची। ३ बहुरूपिया।

स्वांत, स्वांति–पु० १ अपना अंत, मृत्यु। २ मन, अन्तःकरण। ३ देखो 'स्वाति'।

स्वांन–पु० [सं० श्वान] १ कुत्ता। २ दोहा नामक छन्द का एक भेद। ३ छप्पय छन्द का एक भेद। [सं० स्वान] ४ शब्द, ध्वनि, आवाज। –वि० क्रूर।

स्वाननिद्रा–स्त्री० मामूली आहट से खुल जाने वाली हल्की निद्रा, अल्प निद्रा।

स्वांम, स्वांमि–देखो 'सांमी'।

स्वांमिधरम (धरम्म धम, धम्म)–देखो 'स्वांमीधरम'।

स्वांमिधरमी (धरम्मी, धमी, धम्मी)–देखो 'स्वांमीधरमी'।

स्वांमी–देखो 'सांमी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वामीकारतिक, स्वामीकारतिकेय–पु० [सं० स्वामिकार्त्तिकेय] शिव व पार्वती का बड़ा पुत्र जो देव सेना का सेनापति था और तारकासुर का वध करने के लिये अवतरित हुआ था, षड़ानन, स्कन्द।

स्वामीद्रोह–पु० [सं० स्वामिन्-द्रोह] अपने मालिक का विरोध, स्वामी के प्रति विद्रोह, बलवा।

स्वामीद्रोही–वि० अपने मालिक का विरोध या विद्रोह करने वाला।

स्वामीधरम (धरम्म, धम, धम्म)–पु० [सं० स्वामिन्-धर्म] स्वामी के प्रति वफादारी, स्वामीभक्ति।

स्वामीधरमी (धरम्मी, धमी, धम्मी)–पु० अपने मालिक का वफादार, स्वामीभक्त।

स्वागत–पु० [सं० स्वागत] १ अगुवानी, अभिनंदन। २ उक्त अवसर पर पूछा जाने वाला कुशल मंगल। ३ आगंतुक की खातिरदारी, आवभगत। ४ किसी प्रस्ताव, बात, विचार आदि के प्रति प्रगट की जाने वाली खुशी, आस्था। ५ एक प्राचीन राजा।

स्वात–पु० [सं०] १ कश्यप एवं ब्रह्मधना के पुत्रों में से एक। २ देखो 'स्वाति'।

स्वातग–पु० १ चातक, पपीहा। २ देखो 'स्वाति'।

स्वातज–पु० मोती, मुक्ता।

स्वाति–पु० [सं०] १ मोती, मुक्ति। २ सत्ताईस नक्षत्रों में से पन्द्रहवां नक्षत्र। ३ सूर्य की एक पत्नी का नाम।

स्वातिसुत (सुतण, सुतन)–पु० मोती मुक्ता।

स्वाद–पु० [सं०] १ किसी वस्तु को खाने-पीने से रसनेन्द्रिय को आने वाला आनन्द,अनुभव जायका। २ किसी वस्तु का खट्टा, मीठा, खारा आदि गुण, रस। ३ भोजन। ४ किसी बात का आनन्द, मजा। ५ संभोग। ६ आराम, सुख, आनंद। ७ रस, आनंद। ८ इच्छा, कामना। ९ आदत, ऐब। १० मीठापन। ११ तत्त्व, सार। –वि० जायकेदार, स्वादिष्ट।

स्वादिस्ट, स्वादिस्ठ–वि० [सं० स्वादिष्ठ] जिसका स्वाद अच्छा हो, जायकेदार।

स्वादी–स्त्री० दाख, द्राक्ष। –वि० १ स्वाद वाला, स्वाद पूर्ण। २ स्वाद लेने वाला। ३ रसिक, रसिया। ४ हठी, जिद्दी।

स्वादीलो–वि० (स्त्री० स्वादीली) १ स्वादयुक्त, स्वादिष्ट, जायकेदार। २ स्वाद लेने वाला, स्वाद-रसिक।

स्वादु–पु० [सं० स्वादु] १ मधुर रस। २ गुड़। ३ मीठास। ४ महुआ। ५ बेर। ६ दुग्ध, दूध। –वि० १ स्वादिष्ट, जायकेदार। २ मधुर, मीठा। ३ मनोहर, प्रिय। ४ स्वादिष्ट पदार्थ खाने का आदी, चटट्टू।

स्वाधिस्ठांण–पु० [सं० स्व + अधिष्ठान] कुंडली के ऊपर पड़ने वाला एक चक्र।

स्वाधीन–वि० [सं०] १ जो पराधीन न हो, आत्मनिर्भर, स्वतंत्र मुक्त। २ किसी नियंत्रण से परे, निरंकुश।

स्वाधीनपतिका–स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।

स्वाध्याय–पु० [सं०] वेदों का निरंतर अभ्यास करने की क्रिया या ढंग। २ किसी गंभीर विषय का भली प्रकार अध्ययन।

स्वापतेय, स्वापतेयक–पु० [सं० स्वापतेय] धन, दौलत।

स्वापद–पु० [सं० श्वापदः] १ हिंसक पशु। २ चीता। –वि० हिंसक, भयंकर।

स्वाभाविक–वि० [सं०] जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो, प्राकृतिक। संभावित, जिसका होना आम बात हो।

स्वायंत–पु० १ संतोष, शांति। २ देखो 'स्वाति'।

स्वायंभु, स्वायंभुव, स्वायंभू–पु० [सं० स्वायंभुव] मनुस्मृति नामक धर्म शास्त्र का कर्ता तथा प्रथम मन्वन्तर का अधिपति मनु।

स्वार–देखो 'सुवारै'।

स्वारथ–पु० [सं० स्वार्थ] १ स्वयं का भला या हित सोचने की क्रिया या भाव, मतलब। २ केवल अपना ही हित या लाभ। ३ उद्देश्य, प्रयोजन।

स्वारथता–स्त्री० खुदगर्जी, स्वार्थपरता।

स्वारथत्याग–पु० दूसरों के हित के लिये अपना हित या लाभ त्यागना।

स्वारथी–वि० [सं० स्वार्थिन्] १ अपना मतलब सिद्ध करने वाला, खुद गर्ज, मतलबी। २ अपने हित या लाभ को सर्वोपरि समझने वाला। ३ देखो 'सारथी'।

स्वाल–देखो 'सवाल'।

स्वास–पु० [सं० श्वास] १ तीव्र सांस चलने का रोग, दमा। २ सांस।

स्वासणि, स्वासणी–देखो 'सवासणी'।

स्वासा–स्त्री० [सं० श्वासा] दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

स्वास्थ्य–पु० तंदुरुस्ती, निरोगता।

स्वाहा–स्त्री० अग्नि की पत्नी। –वि० १ जिसे जला कर नष्ट कर दिया गया हो, भस्म। २ पूर्णतया नष्ट। –अव्य० एक शब्द जिसका उच्चारण यज्ञ में आहुति देते समय किया जाता है। —पत, पति, पती–पु० अग्नि।

स्वाहाप्रसण, स्वाहाग्रहण–पु० [सं० स्वाहा-प्रसन्] देवता।

स्वीकार–वि० [सं०] १ माना हुआ, मंजूर या कबूल किया हुआ, अंगीकृत। २ जिस पर सहमति हो।

स्वीकारणो (णी)–क्रि० १ अंगीकार करना, कबूल या मंजूर करना। २ सहमति या अनुमति देना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वीकृति–स्त्री० [सं० स्वीकृति] मंजूरी, रजामंदी।

स्वेच्छा–स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा।

स्वेत–वि० [सं० श्वेत] १ धवल, सफेद। २ निर्मल, साफ। ३ उज्ज्वल, उजला। ४ स्पष्ट, साफ। ५ मंद, कांतिहीन, उदास। ६ कमजोर। ७ निर्दोष, निष्कलंक। –पु० १ सफेद रंग। २ चांदी, रजत। ३ शंख। ४ कौड़ी। ५ शिव का एक अवतार। ६ पुराणानुसार एक द्वीप। ७ शुक्र ग्रह का एक नाम। ८ स्कन्द का एक अनुचर। ९ सर्पों के आठ कुलों में से एक। १० सफेद घोड़ा। ११ पुच्छल तारा। १२ नील व शृंगवान पर्वत के पास का एक पर्वत। १३ श्रीराम की सेना का एक वानर। १४ एक यक्ष।

स्वेतअंजनी (नी)–पु० [सं० श्वेत-अंजनी] वह घोड़ा जिसकी पसलियां श्वेत हों।

स्वेतकुंजर, स्वेतगज–पु० [सं० श्वेत-कुंजर, गज] ऐरावत हाथी का एक नाम।

स्वेतगंडक (की)–स्त्री० [सं० श्वेत गंडकी] गंडक नदी की एक सहायक नदी।

स्वेतनायक–पु० [सं० श्वेत-नायक] एक प्रकार का आभूषण।

स्वेतपिंगळ–पु० [सं० श्वेत-पिंगल] शिव, महादेव।

स्वेतमृग, स्वेतमृग–पु० [सं० श्वेत-मृग] एक प्रकार का मृग।

स्वेतरंगी–स्त्री० यश, कीर्ति।

स्वेतवाहण(न)–पु० [सं० श्वेतवाहन] १ अर्जुन का एक नाम। २ चंद्रमा का एक नाम।

स्वेतांबर–पु० [सं० श्वेताम्बर] १ जैन धर्म की एक शाखा। २ इस शाखा के साधु जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।

स्वेतांबरी–पु० [सं० श्वेताम्बरी] जैन धर्म की श्वेतांबर शाखा का साधु या अनुयायी।

स्वेता–स्त्री० [सं० श्वेता] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २ स्कंद की अनुचरी, एक मातृका। ३ कश्यप एवं क्रोधा की एक पुत्री।

स्वेतोदर–पु० [सं० श्वेतोदर] १ कुबेर का एक नाम। २ एक पर्वत विशेष।

स्वेद–पु० [सं०] पसीना। —ज, जन्म–पु० पसीने से उत्पन्न जीव, जंतु।

स्वेदण, स्वेदन–पु० पसीना, स्वेद।

स्वै–वि० अपना, निज का।

स्वैरी–वि० [सं० स्वैरिन्] (स्त्री० स्वैरिणी) १ व्यभिचारी, दुराचारी, बदचलन। २ स्वेच्छाचारी।

(ह)

ह–देवनागरी वर्णमाला का तेतीसवां (अंतिम वर्ण) व्यंजन।

हंऊडो–पु० पत्थर तोड़ने का लोहे का एक भारी उपकरण।

हंकणो (बो)–देखो 'हकणो' (बो)।

हंकरणी (बो)–देखो 'हांकरणो' (बो)।

हंकराणो (बो)–क्रि० १ स्वीकार कराना, स्वीकृत कराना। २ मनवाना; कबूल कराना। ३ किसी कार्य या बात के लिये राजी या सहमत कर लेना। ४ मन की बात उगलवाना।

हंकाणो (बो)–देखो 'हकाणो' (बो)।

हंकार–१ देखो 'अहंकार'। २ देखो 'हुंकार'।

हंकारणो (बो)–क्रि० १ स्वीकार करना, स्वीकृत करना। २ किसी कार्य के करने के लिये राजी होना, सहमत होना। ३ मानने के लिये मजबूर होना। ४ मन में छिपी बात उगलना।

हंकारो–१ देखो 'हुंकारो'। २ देखो 'हुंकार'।

हंगणो (बो)–क्रि० मल त्याग या टट्टी करना।

हंगांम–देखो 'हुंगामो'।

हंगांमो–वि० [फा० हंगाम + रा,प्र.ई.] १ क्रान्तिकारी, उपद्रवी। २ हुल्लड़ या शोर करने वाला। ३ उत्साही, साहसी। ४ योद्धा, वीर।

हंगांमो–पु० [फा० हंगाम] १ युद्ध, जंग, लड़ाई। २ क्रान्ति, विप्लव, विद्रोह, उपद्रव। ३ कोलाहल, शोरगुल, हुल्लड़। ४ दंगा फसाद, मारपीट, छीना-झपटी। ५ सेना, सैन्य दल। ६ जन-समूह, भीड़, मेला। ७ धूम-धाम। ८ हर्ष, खुशी, आनन्द।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुंगाणी (बो), हुंगावणी (बो)–क्रि० मल त्याग के लिये प्रेरित करना, टट्टी कराना।

हुंगोड़ी, हुंगोडो, हुंगोरी–वि० (स्त्री० हुंगोरी) बार-बार मल त्याग करने वाला या शौच जाने वाला रोगी।

हुंचणी (बो)–देखो 'हिचणी' (बो)।

हुंज–देखो 'हुंस'।

हुंजर–वि० सुन्दर, खूब सूरत।

हुंजरणी (बो)–देखो 'हिजरणी' (बो)।

हुंजलीआक–पु० १ एक राजस्थानी लोक गीत। २ देखो 'हुंजामाक'।

हुंजा–स्त्री० [सं० हुञ्जे] १ दासी, चेरी। २ पति, प्रियतम। ३ प्रेमी। ४ लोक गीतों में एक लय। ५ ऊंट का सीना। –क्रि०वि० ढंग से, उचित तरीके से।

हुंजामाक–पु० १ पति, प्रियतम। २ रसिक, प्रेमी।

हुंजीरी–पु० नाक, किंवंश, बिनाक।

हुंजौ–पु० १ पति, प्रियतम, प्रेमी। २ देखो 'हुंस'।

हुंस, हुंसि, हुंसी–१ देखो 'हुस'। २ देखो 'हुंजा'।

हुंडक–१ देखो 'हाडक'। २ देखो 'हुंडियो'।

हुंडबाई–देखो 'हांडो'।

हुंडिज्जणी (बो)–क्रि० भ्रमण करना, घूमना।

हुंडियो–पु० १ लकड़ी, धातु या हाथी दांत की बनी अफीम रखने की डिबिया। २ देखो 'हांडो'।

हुंडी–देखो 'हांडी'।

हुंडुछाहट–देखो 'हिडळाट'।

हुंडो–पु० १ मिट्टी या धातु का बना जल पात्र। २ देखो 'हांडो'। ३ देखो 'हांडो'।

हुण–पु० हनुमान।

हुणे, हुणै–देखो हणां'।

हुंत–अव्य० १ दुःख या खेद में बोला जाने वाला शोह, हाय। २ उत्तेजना सूचक अव्यय शब्द। २ इसी तरह की ध्वनि जो आश्चर्य, दया, रहम, सौभाग्य का संकेत देती है। ४ देखो 'हूंत'।

हुंतकार–स्त्री० पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मण आदि को दी जाने वाली रोटी।

हुंता–देखो 'हूंत'।

हुंती–१ देखो 'हूंती'। २ देखो 'हांती'।

हुंतीया–देखो 'हुता'।

हुंतोगत, हुंतोपति–स्त्री० कृपा, दया, अनुग्रह।

हुंतो–वि० [सं० हुंतु] (स्त्री० हुंती) १ मारने, वध करने वाला। २ देखो 'हूंतो'।

हुंद–देखो 'हुव'।

हुंदड, हुंदा–अव्य० षष्ठी विभक्ति का सम्बन्ध सूचक चिह्न।

हुंदी–अव्य० षष्ठी विभक्ति के सम्बन्ध सूचक शब्द का स्त्री रूप।

हुंदो–अव्य० षष्ठी विभक्ति का चिह्न, का।

हुंफणी–देखो 'हांफणी'।

हुंबा, हुंबै–अव्य० हां, स्वीकृति सूचक ध्वनि या संकेत।

हुंम–देखो 'हुम'।

हुंयुक–पु० ४९ क्षेत्रपालों में से अन्तिम क्षेत्रपाल।

हुंस–पु० [सं०] (स्त्री० हुंसणी, हुंसी) १ बड़े-बड़े सरोवर या झीलों के किनारे रहने वाला, बतख के आकार का एक सफेद जल पक्षी। २ सूर्य, भानु, रवि। ३ शिव, महादेव। ४ ब्रह्मा। ५ विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक। ६ परमात्मा, परब्रह्म, ईश्वर। ७ विष्णु का एक नामान्तर। ८ मन। ९ जीवात्मा, प्राण। १० शरीरस्थ प्राण वायु। ११ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र। १२ रजत, चांदी। १३ पर्वत, पहाड़। १४ घोड़ा, अश्व। १५ कामदेव, अनंग। १६ सन्यासियों का एक भेद, एक सम्प्रदाय विशेष। १७ अनिरुद्ध का एक नाम। १८ ज्ञानी व भक्त पुरुष। १९ दोहा छंद का एक भेद। २० एक वर्णिक छन्द विशेष। २१ हंस के आकार का बनाया जाने वाला प्रासाद जिस पर शृंग बना हो। २२ एक मंत्र विशेष। २३ ध्वनि रव। २४ सफेद रंग ❀। –वि० सफेद, श्वेत ❀।

हंसक–पु० [सं०] १ पैर की अंगुली का बिछुवा। २ नूपुर। ३ देखो 'हिसक'।

हंसग–पु० [सं०] ब्रह्मा, विधाता।

हंसगत, हंसगति (ती)–स्त्री० १ ब्रह्मत्व की प्राप्ति, सायुज्य की प्राप्ति। २ हंस के समान सुन्दर व धीमी चाल, यति। ३ एक प्रकार का मात्रिक छंद। ४ हंस की चाल।

हंसगमण (गमणा, गमणि, गमणी), हंसगवणी (गोमणि, गांसणी, गांमिणी, गोणी)–स्त्री० [सं० हंसगामिनी] हंस के समान धीमी चाल वाली सुन्दर स्त्री।

हंसड़, हंसड़ी–१ देखो 'हंसी'। २ देखो 'हंस'।

हंसचर–वि० मांसाहारी, मांस भक्षी। –पु० मोती।

हंसजा–स्त्री० [सं०] १ सूर्य की पुत्री, यमुना। २ हंस की पुत्री।

हंसण (ण)–स्त्री० हंसने की क्रिया या भाव, हंसी।

हंसणो–पु० हंसना क्रिया, हंसी।

हंसणी (बो)–क्रि० [सं० हसे] १ खुशी, आनन्द आदि के आवेग से चेहरा खिलना व मुंह से 'ह-ह' की ध्वनि फूटना, हंसना, खिलखिलाना। २ मुस्कराना, मुस्कान दिखाना। ३ प्रसन्न, खुश होना। ४ खिलना; शोभा देना। ५ परिहास या मजाक करना। ६ व्यंग करना; खुशी में ताना देना।

हंसपदी, हंसपादी–स्त्री० [सं० हंसपदिका] एक प्रकार की औषधि।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हंसवाहण–देखो 'हंसवाहण' ।
हंसवाहणी–देखो 'हंसवाहणी' ।
हंसमख–पु० [सं० हंसमक्षणम्] मौक्तिक, मोती ।
हंसमंगळा–स्त्री० एक प्रकार की संकर रागिनी ।
हंसमाळा–पु० एक छन्द विशेष ।
हंसमुख–वि० १ प्रसन्न वदन, विनोदशील, हास्यप्रिय । २ जिसका चेहरा प्रायः प्रसन्न रहता हो ।
हंसमोती–पु० शुभ रंग का घोड़ा ।
हंसरथ–पु० [सं०] ब्रह्मा ।
हंसराज–पु० १ स्वर्णकारों का एक औजार । २ देखो 'हंसपदी' ।
हंसराजा–पु० प्राण, जीव ।
हंसल–देखो 'हंस' ।
हंसलउ–देखो 'हंस' ।
हंसलिपि, हंसलिवी–स्त्री० [सं० हंसलिपि] एक प्राचीन लिपि विशेष ।
हंसलो–देखो 'हांसलो' ।
हंसलो–देखो 'हंस' ।
हंसवंस–पु० [सं० हंस-वंश] सूर्य वंश ।
हंसवडि–पु० वस्त्र विशेष ।
हंसवाहण (न)–पु० १ ब्रह्मा । २ देखो 'हंसवाहणी' ।
हंसवाहणी वाहिणी, वाहिनी)–स्त्री० [सं० हंस-वाहिनी] सरस्वती, शारदा ।
हंसमुता–स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री, यमुना ।
हंसाई–देखो 'हंसी' ।
हंसागति, हंसागमण (णि)–वि० हंस के समान मंद व सुन्दर चाल वाली । –स्त्री० हंस की चाल ।
हंसागमणि (णी)–देखो 'हंसगामिणी' ।
हंसाणो (णी)–क्रि० १ हंसने के लिये प्रेरित करना, हंसाना, हंसी की बात करना । २ खुश करना । ३ शोभित करना, सुसज्जित करना । ४ मजाक, चुहल या व्यंग करना । ५ किसी को दिल्लगी कराना, मजाक बनवाना ।
हंसारो–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
हंसारूढ–पु० [सं० हंस-आरूढ] १ ब्रह्मा । –स्त्री० २ सरस्वती । –वि० हंस पर सवार, आरूढ ।
हंसाळ–पु० १ छंद विशेष । २ घोड़ा, अश्व । ३ देखो 'हंसाळू' । ४ देखो 'हंस' ।
हंसाळु, हंसाळू–वि० १ हंसी करने वाला, विनोदप्रिय । २ खुश-मिजाज । –पु० १ किसी खेल या नाटक का हास्य अभिनेता । २ विनोद प्रिय व्यक्ति ।
हंसाणी (णी)–देखो 'हंसाणी' (णी) ।
हंसावळी–स्त्री० १ निसाणी छन्द का एक भेद । २ हंसों की उजली पंक्ति ।
हंसावळी–पु० डिंगल का वह गीत जिसमें 'वेलिया' नामक छंद में 'रा' 'रा' शब्द रीति सहित आकर, उल्लेखालंकार का प्रयोग होता है ।
हंसासण–पु० योग के चौरासी आसनों में से एक ।
हंसासणी–स्त्री० सरस्वती, शारदा ।
हंसि–देखो 'हंसी' ।
हंसियो–पु० १ लोहे की पतली पत्ती का चन्द्राकार बना एक कृषि उपकरण । २ हाथी के अंकुश का चन्द्राकार भाग ।
हंसी–स्त्री० १ (राजस्थान में) दूध देने वाली गायों की अच्छी नस्ल व इस नस्ल की गाय । २ हंसने की क्रिया या भाव, खिलखिलाहट । ३ मुस्कान, मृदुहास्य । ४ मजाक, परिहास, दिल्लगी । ५ मजाक के तौर पर की जाने वाली बात । ६ जग-हंसाई, निंदा । ७ मजाक या उलाहने के रूप में दिया जाने वाला ताना, व्यंग । ८ मादा हंस । ९ आर्या या गाहा छंद का एक भेद । १० एक वर्णिक छन्द विशेष ।
हंसौ–१ देखो 'हंस' । २ देखो 'हंसो'
हंहकार–देखो 'हाहाकार' ।
ह–पु० १ हर्ष । २ चोर । ३ शिव । ४ काष्ठ । ५ निरवेधा । ६ मृगाक्ष । ७ शून्य । ८ आकाश । ९ जल, पानी । १० ध्यान । ११ चन्द्रमा, शशि । १२ स्वर्ग । १३ ज्ञान । १४ कल्याण, मंगल । १५ खून, रक्त । १६ डर, भय । १७ कारण, सबब । १८ भगवान विष्णु । १९ वैद्य, चिकित्सक । २० घोड़ा, अश्व । २१ लड़ाई, युद्ध । २२ अभिमान, गर्व । २३ एक प्रकार का योगासन । २४ हास्य, हंसी । २५ राजस्थानी कविता में एक पाद पूर्ति सूचक वर्ण । २६ एक प्रकार का अव्यय ।
हआ–देखो 'हां' ।
हइवर–देखो 'हयवर' ।
हइ–अव्य० १ हे, अरे, ओ । २ देखो 'है' । ३ देखो 'हृदय' ।
हइकप–देखो 'हैकंप' ।
हइमर–देखो 'हयवर' ।
हइरान–देखो 'हैरान' ।
हइवइ–पु० [सं० हय-पति] १ राजा, नृप । २ देखो 'हैवं' । ३ देखो 'हयवर' ।
हइवर–देखो 'हयवर' ।
हई–१ देखो 'हय' । २ देखो 'है' ।
हईअगवीन–देखो 'हयअंगवीन' ।
हईड, हईडइ, हईडो–देखो 'हिरदो' ।
हईवळ–देखो 'हयदळ' ।
हईवर–पु० १ मोढा वीर । २ देखो 'हयवर' ।
हउं–देखो 'हुं' ।
हउंस–देखो 'हंस' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हउ–अव्य० अरे।

हउणो (बो), हऊणो (बो)–देखो 'होणो' (बो)।

हकड–देखो 'हेकड'।

हक–पु० [अ० हक] १ स्वत्व, अधिकार, दावा। २ न्याय, प्रथा, आदि से प्राप्त अधिकार। ३ कुछ करने का अधिकार। ४ सत्य, यथार्थ। ५ ईश्वर, परमात्मा। ६ ठीक या सीधा कार्य। ७ पक्ष, हिस्सा, भाग। ८ पारिश्रमिक, मेहनताना। –वि० १ मृत। २ जायज, ठीक, वाजिब। ३ युक्ति संगत, युक्ति-युक्त। ४ देखो 'हाक'।

हकड़ी–स्त्री० हकलाहट, तुतलाहट।

हकड़ो–देखो 'हाकड़ो'।

हकडक–स्त्री० १ हसने की ध्वनि, खिलखिलाहट। २ देखो 'हकबक'।

हकणो (बो)–क्रि० १ गतिमान होना, चलना, रवाना होना। २ जुतना, चलना। ३ युद्ध करना, भिड़ना। ४ गर्मी आदि से पानी या द्रव पदार्थ का भाप बनकर उड़ना। ५ कम होना, घटना। ६ देखो 'हाकणो' (बो)।

हकदार–वि० [अ०] १ स्वत्व या अधिकार रखने वाला, अधिकारी। २ दावेदार। ३ पात्र।

हकनाक, हकनाहक–अव्य० [अ०] १ अकारण। २ बेकार में, व्यर्थ में ३ अनुचित ढंग से।

हकबक–वि० हक्का-बक्का, भौंचक्का, स्तंभित।

हकबकणो (बो), हकबकाणो (बो)–क्रि० १ हक्का-बक्का, भौंचक्का या स्तंभित होना, करना। २ आश्चर्य चकित होना, करना।

हकबाक–देखो हकबक'।

हकमीरसी–पु० [अ०] पैतृक अधिकार, उत्तराधिकार।

हकळाणो (बो), हकळावणो (बो)–क्रि० १ बोलते वक्त अटकना, अटक-अटक कर बोलना। २ तुतलाना।

हका–देखो 'हाक'।

हकाणो (बो)–क्रि० १ गतिमान कराना, चलाना, रवाना कराना। २ जुताना, चलाना। ३ युद्ध के लिये प्रेरित करना, भिड़ाना। ४ द्रव पदार्थ को आग पर गर्म करके भाप बना कर उड़ाना।

हकार–पु० १ 'ह' अक्षर या वर्ण। २ कल्द, ध्वनि, पुकार। ३ ललकार, हुंकार। ४ देखो 'अहंकार'।

हकारणो (बो)–क्रि० १ बोलना, कहना। २ जोश दिलाना, उत्साहित करना। ३ बुलाना। ४ चलाना। ५ ललकारना। ६ सचेत करना। ७ चलना।

हकारवाड़ा–पु० १ ध्वनि, आवाज। २ हुंकार।

हकारो–पु० १ आवाज, ध्वनि। २ देखो 'हुकारो'।

हकावणो (बो)–क्रि० १ बल पूर्वक अथवा डरा-धमका कर कहीं से भगाना खदेड़ना। २ चलाना हांकना। ३ उत्तेजित करना, ललकारना। ४ चिल्लाना, बकारना। ५ उत्साहजन्य वाक्य बोलना, आवाज करना। ६ पुकारना, आवाज लगाना। ७ ललकारना।

हकाली–देखो 'हाकी'।

हकावणो (बो)–देखो 'हकाणो' (बो)

हकीकत–स्त्री० [अ०] १ वृत्तान्त, हाल, विवरण। २ सच्चाई, वास्तविकता, यथार्थ। ३ सूचना, खबर, समाचार। ४ घटना। ५ मन्तव्य। ६ इतिहास।

हकीकी–वि० [अ०] १ सच्चा, असली। २ आत्मीय। ३ वास्तविक, यथार्थ।

हकीगत–देखो 'हकीकत'।

हकीम–पु० [अ०] १ यूनानी पद्धति से चिकित्सा करने वाला चिकित्सक। २ मीमांस का पंडित, मीमांसक।

हकीमी–स्त्री० [अ०] १ यूनानी चिकित्साशास्त्र। २ यूनानी चिकित्सा का कार्य। –वि० यूनानी चिकित्सा से संबंधित।

हकीयत–पु० हक होने का भाव, स्वत्व, अधिकार।

हकूक–पु० [अ०] हक का बहुवचन, अधिकार आदि।

हकूमत–स्त्री० [अ०] १ राज्य, सरकार। २ शासन, प्रशासन। ३ सत्ता, अधिकार। ४ हाकिम का कार्यालय या जिला मुख्यालय।

हको–देखो 'हाको'।

हक्क–१ देखो 'हक'। २ देखो 'हाक'।

हक्कणो (बो)–क्रि० १ कमजोर होना, निर्बल होना। २ देखो 'हकणो' (बो)।

हक्कल–वि० १ तोल या माप से कुछ अधिक। २ देखो 'हकल'।

हक्कासुक्को–देखो 'हक्कीबक्की'।

हक्कारणो (बो)–देखो 'हकारणो' (बो)।

हक्कीबक्की–वि० (स्त्री० हक्कीबक्की) १ आश्चर्य चकित विस्मित। २ स्तंभित, भौचक्का। ३ किंकर्तव्यविमूढ़।

हक्कीहक्क–वि० १ ठीक, उचित। २ देखो 'हाक'।

हक्को–पु० १ एक प्रकार का फूंक वाद्य। २ यश, कीर्ति, प्रशंसा। ३ ललकार, हाक। ४ देखो 'हाको'।

हगमगो–वि० (स्त्री० हगमगी) प्रसन्नचित, प्रफुल्लित

हगाम, हगामो, हगामी–देखो 'हंगामो'।

हगीगत–देखो 'हकीकत'।

हड़–क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी।

हड़काणो–देखो 'हिड़कियो'।

हड़ड़, हड़ड़ाट–स्त्री० १ दीवार आदि के गिरने की ध्वनि। २ कई पक्षियों के एक साथ उड़ने की ध्वनि। ३ देखो 'हड़हड़'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हड़ताल–स्त्री० [सं० हट्ट-ताला] १ किसी बात के विरोध में या किसी माँग के संबंध में; कर्मचारी समूह द्वारा कार्य रोकने, व्यापारियों द्वारा दुकानें बन्द करने तथा विद्यार्थियों द्वारा पढ़ाई बन्द कर देने की स्थिति या भाव। सामूहिक कार्य स्थगन। २ अभाव, अकाल। ३ देखो 'हरताल'।

हड़तालतीज–स्त्री० हरियाली तृतीया।

हड़बे–क्रि०वि० १ शीघ्रता से, जल्दी से। २ देखो 'हिरदो'।

हड़दी–पु० १ अधिक परिश्रम का घरेलू कार्य। २ देखो 'हिरदी'।

हड़प–वि० १ अनुचित रीति से प्राप्त कर अपने अधिकार में किया हुआ। २ गले में उतारा हुआ। निगला हुआ। ३ गायब, अलोप, पार।

हड़पणो (बो), हड़प्पणो (बो), हड़फणो (बो), हड़पकणो (बो)–क्रि० १ अनुचित रूप से किसी की वस्तु प्राप्त कर अधिकार कर लेना, दबा लेना। २ गायब करना, उड़ाकर लेना, पार कर देना। ३ पेट में उतार लेना, निगल जाना। ४ झपटना छीनना।

हड़बड़–देखो 'हड़बड़ी'।

हड़बड़णो (बो)–देखो हड़बड़ाणो' (बो)।

हड़बड़ाट–स्त्री० १ हड़बड़ की ध्वनि, कोलाहल, शोरगुल। २ शीघ्रता, जल्दबाजी। ३ देखो 'हड़बड़ी'।

हड़बड़ाणो (बो), हड़बड़ावणो (बो)–क्रि० १ बहुत जल्दी करना, अत्यन्त शीघ्रता करना। २ अधिक जल्दी के कारण घबड़ाहट उत्पन्न होना, आतुर या अधीर होना, संतुलन खो देना। ३ भय या खुशी के मारे इधर-उधर भागना। ४ जल्दी या शीघ्रता करने के लिये प्रेरित करना।

हड़बड़ियो–वि० (स्त्री० हड़बड़ी) जल्दबाज, उतावला, आतुर।

हड़बड़ी–स्त्री० १ सेना की हलचल का शोर। २ जनरव, कोलाहल। ३ व्याकुलता, आतुराई। ४ जल्दबाजी, उतावली।

हड़बच–स्त्री० मुंह से सहसा काटने की क्रिया या भाव।

हड़बी–देखो 'हिरदी'।

हड़बू–पु० [देश०] १ राव जोधाजी का समकालीन एक पंवार वंशीय क्षत्रिय जो सिद्ध पुरुष माना गया है। २ मट्टी से गर्म कोयले निकालने का एक उपकरण।

हड़बोचो–पु० मुंह से सहसा काटने की क्रिया या भाव।

हड़बोलो–वि० काम से जी चुराने वाला, कामचोर।

हड़ब्बड़–देखो 'हड़बड़ी'।

हड़मच–देखो 'हड़बच'।

हड़मंत, हड़मंत–देखो 'हनुमांत'।

हड़मस–स्त्री० कुल्टा, छिनाल स्त्री।

हड़मान, हड़मानी–देखो 'हनुमांत'।

हड़वड़–देखो 'हड़बड़ी'।

हड़वड़णो (बो)–देखो 'हड़बड़णो' (बो)।

हड़वड़ाणो (बो)–देखो 'हड़बड़ाणो' (बो)।

हड़वा–स्त्री० भाटी राजपूतों की एक शाखा।

हड़ब्बड़–देखो 'हड़बड़ी'।

हड़हड़–स्त्री० १ जोर से हंसने या अट्टहास करने की ध्वनि, खिलखिलाहट। २ ध्वनि विशेष।

हड़हड़णो (बो)–क्रि० १ जोर से हंसना, खिलखिलाना। २ अट्टहास करना।

हड़हड़ाट–स्त्री० १ जोर से हंसने की ध्वनि। २ हड़हड़ की आवाज।

हड़ाहड़–अव्य० १ दबादब तुरन्त, शीघ्र। २ देखो 'हड़हड़'।

हड़ोंबो–पु० ऊंचाई से किसी भारी वस्तु के गिरने की ध्वनि, धमाका।

हड़ीप–वि० १ साहसी वीर। २ शक्तिशाली, बलवान। २ दृढ़, मजबूत।

हड़ूमांन–देखो 'हनुमांन'।

हड़ूंडो–पु० [देश०] परस्पर मस्तक भिड़ा कर खेला जाने वाला एक खेल।

हड़ूमांन–देखो 'हनुमांन'।

हड़ो–पु० १ वायु का बवंडर, वातचक्र, बगूला, बतूंल। २ देखो 'हड़ो'।

हण–देखो 'हिचण'।

हणकणो (बो)–देखो 'हिचकणो' (बो)।

हणकाणो (बो), हणकावणो (बो)–देखो 'हिचकाणो' (बो)।

हणको–देखो 'हिचको'।

हणक्कणो (बो)–देखो 'हिचकणो' (बो)

हणण–देखो 'हिचण'।

हणणो (बो)–देखो 'हिचणो' (बो)।

हणां–क्रि०वि० शीघ्रता से, जल्दी से।

हणोड़ो हणमोड़ो–पु० १ जोर का धक्का, जोर का झटका। २ जोर की टक्कर।

हणोळणो (बो)–देखो 'हिचोळणो' (बो)।

हणोळो–पु० १ वाहनों के चलने से लगने वाला हिलोला, झटका, धक्का। २ धक्का, टक्कर। ३ लहर, हिलोर, तरंग।

हज–देखो 'हज्ज'।

हजम–वि० [अ०] १ जिसे खाकर पचा लिया गया हो, पचा हुआ। २ जो लेकर वापस न किया गया हो, हड़प लिया गया हो। ३ पूर्ण रूप से अधिकृत। स्त्री० १ खाया हुआ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पच जाने की स्थिति, हड़प लेने की अवस्था या भाव। २ सिंह के अगले कंधे के पास की हड्डी जिसे चाट कर वह खाना 'हजम' करता है।

हजरत, हजरति (त्ति) हजरथ, हजरिति (थो)–पु० [अ० हज्रत] १ आदर या सम्मान सूचक शब्द, श्रीमान। २ बादशाह। ३ महात्मा, महापुरुष। ४ चालाक दुष्ट या लुच्चा व्यक्ति।

हजाम–पु० [अ० हज्जाम] हजामत बनाने वाला, नाई।

हजाज–स्त्री० [अ० हजाज] बफा।

हजामत (ति)–स्त्री० [अ०] १ सिर या दाढ़ी के बाल कटाने की क्रिया, क्षौर कर्म। २ बढ़े हुए बाल। ३ किसी को बेवकूफ बनाकर खर्चा कराना या ठगना (व्यंग)।

हजार–वि० [फा०] सौ का दस गुणा, सहस्र। –पु० सौ के दस गुणा की संख्या, १०००। –मेखी, मैखी–वि० जिसमें हजार कीलें लगी हों। –पु० एक प्रकार का कवच।

हजारवाँ–वि० हजार के स्थान वाला, ९९९ के बाद वाला। –पु० किसी इकाई का हजारवां अंश या भाग।

हजारी–पु० १ एक हजार मुद्रा के मूल्य का घोड़ा। २ हजार के मूल्य का कोई पदार्थ। ३ एक हजार सिपाहियों का सरदार, सेनानायक। –वि० १ हजार के मूल्य का। २ हजार का, हजार से संबंधित। ३ हजार की गणना में, तादाद में। ४ हजार वर्षों की। ५ वर्णसंकर, दोगला। ६ हजारे का।

हजारीगुल–पु० एक प्रकार का पुष्प।

हजारीघास–स्त्री० एक प्रकार की घास जो औषधि में काम आती है।

हजारीसद्दी–पु० [फा० हजारी-सद्दी] हजारवां महोत्सव।

हजारेहफत–देखो 'हफतहजारी'।

हजारें–वि० [फा० हजार + रा.प्र.ऊं] १ कई हजार, सहस्रों। २ अत्यधिक, बहुत। ३ हजारों की तादाद में।

हजारेक–वि० एक हजार के लगभग।

हजारो–पु० पीले और लाल रंग का, छोटी पंखुड़ियों का गुच्छादार फूल व इसका पौधा।

हजुरि (रो)–देखो 'हुजुरी'।

हजूमी–वि० प्राकृतिक, नैसर्गिक।

हजूर–देखो हुजूर'।

हजूरि (रो)–देखो हुजूरी'।

हजूरिया, हजूरियो–देखो 'हुजूर'।

हजूरीवान–देखो 'हुजूरीवान'।

हज्ज–पु० [अ०] १ मुसलमानों द्वारा की जाने वाली मक्का-मदीना की यात्रा, तीर्थयात्रा। २ संकल्प। ३ आनन्द, सुख।

हट–१ देखो 'हाट'। २ देखो 'हठ'।

हटक, हटकण–पु० १ भय, डर। २ आज्ञा, अनुशासन। ३ रोब, प्रभाव, धाक। ४ मर्यादा, सीमा। ५ बंधन। ६ वर्जन, मनाही। ७ हाँकना क्रिया। ८ नियंत्रण।

हटकणो (बो)–क्रि० १ मना करना, वर्जन करना, रोकना। २ डांटना, धमकाना, फटकारना। ३ पीछे हटाना, परास्त करना। ४ प्रतिबंध लगाना, रोक लगाना। ५ हटाना, दूर करना। ६ नियंत्रण करना।

हटकारणो (बो)–देखो 'हटकणो' (बो)।

हटकार–स्त्री० लानत, फटकार।

हटकारो–वि० १ वर्जन, निषेध। २ डांट, फटकार। ३ हटने की क्रिया या भाव। ४ मूंछों पर ताव देने का भाव।

हटको-हटको–अव्य० अटक-अटक कर। रुक-रुक कर।

हटक्क–देखो 'हटक'।

हटड़ी–स्त्री० १ काष्ठ या धातु निर्मित पात्र जिसमें मिर्च मसाले रखने के खाने बने होते हैं। २ दीवार में 'आळे' (ताक) की तरह रखी जाने वाली जगह, जिसके कपाट भी लगते हैं। ३ देखो 'हाट'।

हटड़ो–पु० १ एक ही व्यवसाय की दुकानों वाला स्थान या क्षेत्र। २ वस्तु विशेष का उत्पादन या व्यावसायिक केन्द्र। ३ देखो 'हाट'।

हटणो (बो)–क्रि० १ किसी स्थान को छोड़कर इधर-उधर होना, सिरकना, खिसकना। २ टलना, हटना। ३ किसी बात या कार्यक्रम का निश्चित समय से आगे सरकना, स्थगित होना। ४ दूर होना, मिटना। ५ कायम या दृढ़ न रहना, विचलित होना। ६ दूर रहना, अलग रहना, अन्यत्र रहना। ७ सामने से दूर करना।

हटवांणियो–पु० व्यापारी, दुकानदार।

हटवाड़ी (ड़ी)–पु० १ सप्ताह में किसी नियत दिन को लगने वाला बाजार या हाट। २ हाट, समूह, बाजार लगने का केन्द्र स्थल। ३ बाजार।

हटवाणो (बो)–क्रि० १ किसी स्थान को छुड़ाकर इधर-उधर करवाना, टलवाना, खिसकवाना। २ किसी बात या कार्यक्रम को नियत समय से आगे सरकवाना, स्थगित कराना। ३ सामने से दूर करवाना, विमुख कराना। ४ मिटवाना, दूर कराना। ५ कायम या दृढ़ न रहने देना, विचलित करवाना। ६ दूर, अन्यत्र या अलग रहने के लिये प्रेरित कराना।

हटवी–पु० दुकानदार, व्यापारी।

हटाणो (बो)–क्रि० १ किसी स्थान से इधर-उधर करना, सिरकाना, खिसकाना, स्थान से टालना, हटाना। २ सामने से दूर करना, विमुख करना। ३ नियत समय से आगे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरकाना, स्थगित करना। ४ दूर करना, मिटाना, न रखना। ५ किसी बात वचन या प्रतिज्ञा आदि से डिगाना, विचलित करना। ६ दूर करना, अन्यत्र रखना।

हटारड़ी–देखो 'हाट'।

हटाळ, हटाळी–देखो 'हटी'।

हटावणो (बो)–देखो 'हटाणो' (बो)।

हाटि–स्त्री० १ शरीर की बनावट। २ शक्ति, बल, ताकत। ३ देखो 'हठ'। ४ देखो 'हाट'। ५ देखो 'हठी'।

हटियाळ–देखो 'हठी'।

हटीलो–देखो 'हठी'।

हटैल–वि० हठी, जिद्दी।

हटोटो–स्त्री० कला, बुद्धि, चतुराई।

हट्ट, हट्टण, हट्टन–देखो 'हाट'।

हट्टसोभा–स्त्री० दुकानों की सजावट, शोभा।

हट्टश्रेणि–स्त्री० दुकानों की कतार, पंक्ति।

हट्टात–अव्य० दुकानों से, दुकान से।

हट्टि–१ देखो 'हट'। २ देखो 'हठी'।

हट्टीका–देखो 'हट'।

हट्टोकट्टो–वि० [सं० हृष्ट-काष्ठ] (स्त्री० हट्टोकट्टी) हृष्ट-पुष्ट मोटा ताजा।

हट्ठ–देखो 'हठ'।

हट्ठतुट्ठ–वि० हृष्ट-पुष्ट।

हठ–पु० [सं०] १ जिद्द, दुराग्रह। २ श्रद्धा, भक्ति या स्नेह से किया गया आग्रह, सत्याग्रह। ३ योग के दो भेद राजयोग व हठयोग में से एक। ४ दृढ़ संकल्प, प्रतिज्ञा। ५ दुश्मन के पीछे से किया जाने वाला आक्रमण। ६ मर्यादा, टेक। ७ जबरदस्ती। ८ अनिवार्यता।

हठजोग–पु० [सं० हठ:-योग] योग का वह भेद, जिससें आसन सिद्धि, प्राणायाम, नेति, धोति आदि कठिन मुद्राओं और आसनों द्वारा चित्तवृत्ति को हठात् बाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्मुख किया जाता है।

हठणो (बो)–क्रि० १ हठ, दुराग्रह या जिद्द करना। २ देखो 'हटणो' (बो)।

हठधरम–पु० १ उचित-अनुचित का विचार किये बिना किया जाने वाला हठ, दुराग्रह। २ धर्म या सम्प्रदाय संबंधी कट्टरपन।

हठधारो–वि० [सं० हठ-धारिन्] १ हठ को धारण करने वाला, हठी, जिद्दी, दुराग्रही। २ दृढ़ प्रतिज्ञ। ३ हठयोग को साधना करने वाला।

हठनाळ–स्त्री० दुकानों की पंक्ति।

हठमत्त, हठमल्ल–पु० १ योद्धा, वीर। २ दृढ़ प्रतिज्ञ।

हठाणो (बो)–देखो 'हटाणो' (बो)।

हठाळ, हठाळी–देखो 'हठी'।

हठावणो (बो)–देखो 'हटाणो' (बो)।

हठी, हठीलो, हठैल–वि० [सं० हठिन्] १ हठ करने वाला; जिद्दी, दुराग्रही। २ योद्धा, वीर। ३ दुश्मन को जीतने वाला, अरिमर्दन। ४ दृढ़ प्रतिज्ञ।

हड–देखो 'हाड'।

हडजोड़, हडजोड़ा–स्त्री० एक औषधि विशेष।

हडताल–देखो 'हड़ताल'।

हडफूटण, हडफूटणी–स्त्री० १ एक प्रकार का रोग। २ चमगादड़।

हडफोड़–स्त्री० १ एक प्रकार की चिड़िया। २ देखो 'हडफूटण'।

हडब–देखो 'हाड'।

हडबडी–स्त्री० १ एक वनस्पति विशेष। २ देखो 'हड़बड़ी'।

हडमंत, हडमत–देखो 'हनुमांन'।

हडबड–देखो 'हड़बड़ी'।

हडसंहारी, हडसेलि–स्त्री० [सं० हड्डसंकरी] एक प्रकार की लता व उसका डंठल।

हडहड–देखो 'हड़हड़'।

हडहडणो (बो)–देखो 'हड़हड़णो' (बो)।

हडाराहा–स्त्री० घोड़ों की एक जाति विशेष।

हडूमांन–देखो 'हनुमांन'।

हडोई–स्त्री० १ वक्षस्थल की हड्डी। २ मांस रहित अस्थि समूह।

हडोती–देखो 'हाडोती'।

हडो–देखो 'हाडो'।

हड्डु–देखो 'हड्डी'।

हड्डा–पु० १ घोड़ों का एक रोग विशेष। २ देखो 'हाडा'।

हड्डो हड्ड–स्त्री० [सं० अस्थि] शरीर के भीतर सफेद रंग का कठोर अंग या तत्त्व जो रीढ़ वाले प्रायः सभी प्राणियों के होता है अस्थि।

हण–१ देखो 'हनुमांन'। २ देखो 'हणैं'।

हणकंस–देखो 'हिरणकस्यप'।

हणकणो (बो), हणक्कणो (बो)–क्रि० हाक करना, हुंकार करना।

हणणंक–स्त्री० घोड़ों की हिनहिनाहट की ध्वनि।

हणणकणो (बो)–क्रि० घोड़ों का हिनहिनाना, बोलना।

हणण–पु० [सं० हन्] १ मार डालने या वध करने की क्रिया, वध, हत्या। २ नष्ट करने या मिटाने की क्रिया या भाव। ३ आघात, प्रहार। ४ गणित में गुणन या गुणा करने की क्रिया।

हणणाट, हणणाहट–देखो 'हिणहिणाट'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हणणो (बो)–क्रि० [सं० हन्] १ वध करना, संहार करना, मारना। २ आघात या प्रहार करना। ३ मारना, पीटना। ४ कष्ट देना, सताना। ५ हराना, परास्त करना।

हणमंत हणमति, हणमंतो, हणमत (ति, तो), हणमांन–देखो 'हनुमांन'।

हणमांन-चाळीसो–पु० १ हनुमानजी की महिमा व स्तुति वाला चालीस छंदों का एक काव्य। २ इस काव्य की पुस्तक।

हणवत, हणवत–देखो 'हनुमांन'।

हणहण–देखो 'हिणहिणाट'।

हणहणणो (बो)–देखो 'हिणहिणणो' (बो)।

हणसणा–स्त्री० घोड़ों की हिनहिनाट, बोली।

हणां हणा–क्रि०वि० [सं० अधुना] इसी समय, अभी।

हणु, हणुमांन, हणू, हणूअंगी, हणूमंत (मत, मांन)–देखो 'हनुमांन'।

हणुमा–पु० १ भारी दाढ़ या जबड़े वाला। २ देखो 'हनुमांन'।

हणूरत्तम–पु० एक प्रकार की वात व्याधि।

हणू, हणूमांम, हन्–देखो 'हनुमांन'।

हणूमो–देखो 'हनुमांन'।

हणूफाळ–देखो 'हनुफाळ'।

हणूमत, हणूमांन, हणूयो–देखो 'हनुमांन'।

हणेहण–स्त्री० मार-काट की ध्वनि।

हणैं, हर्ण–देखो 'हणां'।

हत–वि० [सं०] १ मरा हुआ, मृत। २ आहत, घायल, जख्मी। ३ पीड़ित, ग्रस्त। ४ रहित, विहीन, वंचित। ५ बिगड़ा हुआ। ६ ध्वस्त, नष्ट। ७ परेशान, दुःखी, त्रस्त। ८ निर्बल, कमजोर। ९ हताश, निराश। –पु० १ रिपु, बैरी। २ देखो 'हाथ'।

हतआसा–वि० निराशा।

हतक–स्त्री० १ बेइज्जती; तोहीन। २ हत्या, संहार। –वि० १ मारा हुआ, हत। २ घायल।

हतकड़ी–देखो 'हथकड़ी'।

हतकार–देखो 'हंतकार'।

हतणो (बो)–क्रि० [सं० हन्] १ मारना, वध करना, संहार करना। २ आघात करना, पीटना। ३ पीड़ित करना। ४ घायल, जख्मी या आहत करना। ५ हराना, परास्त करना। ६ हटाना, ले जाना। ७ वंचित करना। ८ परेशान करना, दुःखी करना। ९ नाश करना, ध्वस्त करना, मिटाना। १० हताश करना, निराश करना।

हतवाह–देखो 'हथवाह'।

हतभाग (भागी, भाग्य)–वि० [सं० हत-भाग्य] भाग्यहीन, अभागा, बदकिस्मत।

हतरस–वि० हस्त मैथुन करने का अभ्यस्त।

हतळेवो–देखो 'हथळेवो'।

हतवा–देखो 'हथवा'।

हतवाओ, हतवास–देखो 'हथवाहो'।

हतां, हता–वि० थे।

हतायळो, हतायली–देखो 'हथायळो'।

हतास–वि० [सं० हत-आशा] १ जिसकी आशा टूट चुकी हो, निराश। २ साधनहीन। ३ मजबूर, विवश।

हतियारो–देखो 'हत्यारो'। (स्त्री० हतियारण, हतियारी)

हतीक–क्रि०वि० निश्चय ही।

हतीको–वि० [सं० हस्तकृतः] (स्त्री० हतीकी) १ ठीक स्थान पर। २ प्रत्यक्ष, हाथोंहाथ। ३ विश्वास पात्र। ४ हाथ का रखा हुआ। ५ प्रसिद्ध, मशहूर।

हतूंडिया–पु० राठौड़ वंश की एक उप शाखा।

हतेरण–पु० [सं० हस्तकरण] १ लेख या साक्षी-पत्र, दस्तावेज, सनद। २ रुपयों के लिये गिरवी रखी जाने वाली वस्तु, आभूषण।

हतेरो–देखो 'हथेळी'।

हतोड़ो–देखो 'हथोड़ो'।

हतोटो–देखो 'हथोटी'।

हतोळियो–पु० १ सामान भरकर हाथ से ढकेल कर चलाने की गाड़ी, ठेला। २ एक प्रकार का हल।

हतो–देखो 'हूंतो'।

हत्त–१ देखो 'हाथ'। २ देखो 'हत'।

हत्तीबीस–देखो 'बीसहतो'।

हत्थ, हत्थ–देखो 'हाथ'।

हत्थड़ो–देखो 'हाथ'।

हत्थळ–देखो 'हाथळ'।

हत्थांण–देखो 'हाथ'।

हत्थि–देखो 'हाथी'।

हत्थिप–पु० [स० हस्तिप] १ हाथी का अंकुश। २ महावत।

हत्थो–क्रि०वि० [सं० हस्त] हाथ से, हाथ पर। –वि० हाथ के माप वाली। २ हाथों वाली, हाथों की। ३ देखो 'हाथी'। ४ देखो 'हाथ'।

हत्थु, हत्थो–पु० १ किसी औजार या मशीन का भाग जिसे पकड़ कर उसका संचालन किया जाता है, दस्ता, मूठ। २ हाथ की तरह काम देने वाला उपकरण विशेष। ३ दण्ड बैठक लगाते समय हाथ के नीचे रखने का पत्थर या ईंट। ४ आहता, चार दीवारी। ५ देखो 'हाथ'।

हत्थोहत्थ–देखो 'हाथोहाथ'।

हत्या–स्त्री० [सं०] किसी प्राणी का वध, कत्ल, हिंसा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हत्यारो–वि० (स्त्री० हत्यारण, हत्यारणी, हत्यारी) किसी प्राणी का वध या हत्या करने वाला, वधिक। २ क्रूर, निर्दयी, हिंसक। ३ सताने वाला।

हथ–देखो 'हाथ'।

हथकंडो–पु० १ किसी कार्य में दिखाई जाने वाली कुशलता, हस्त कौशल। २ साधन, स्रोत। ३ कार्य साधन में की जाने वाली चालाकी, धूर्तता, तरकीब।

हथकड़ी–स्त्री० [सं० हस्तयुक्] पुलिस या प्रशासन द्वारा किसी अपराधी के हाथ में पहनाई जाने वाली कड़ी या जंजीर।

हथकती–स्त्री० [सं० हस्तकृति] १ हाथ की बनाई वस्तु, दस्तकारी। २ हाथ की लिखी पुस्तक या प्रति।

हथखंडो–देखो 'हथकंडो'।

हथखरच–देखो 'हाथखरच'।

हथछारो–वि० १ कुपित झल्लाया हुआ, क्रुद्ध। २ जिसके हाथ की चोट भारी पड़ती हो।

हथड़ी (डी)–देखो 'हाथ'।

हथजोड़ो–वि० सदा हाथ जोड़ कर खड़ा रहने वाला, खुशामदी, चाटुकार।

हथणांपुर, हथणाउर–पु० १ दिल्ली नगर का एक नाम। २ देखो 'हस्तिनापुर'।

हथणी–स्त्री० [सं० हस्तिनी] १ सरोवर या जलाशय के घाट की सीढ़ियों के अगल-बगल बना चबूतरा। २ तालाब के बीच बना चौकोर स्तम्भ। ३ मादा हाथी। ४ हरिजन स्त्री।

हथणो (बो)–क्रि० [सं० हस्त-रा.प्र.णो] १ हाथ में पकड़ना, हाथ में लेना। २ हस्तगत करना, अधिकार में करना। ३ किसी वस्तु पर बलात् अधिकार करना, हथिया लेना। ४ देखो 'हतणो' (बो)।

हथनाळ (ल), हथनालि (लो, ली)–स्त्री० १ हाथ की बन्दूक। २ देखो 'गजनाळ'।

हथपाह–देखो 'हथबाह'।

हथफूल–पु० [सं० हस्त-पुष्प] स्त्रियों के हाथ का एक पुष्पाकार आभूषण विशेष।

हथफेरो–स्त्री० हाथ की सफाई, एक तांत्रिक क्रिया।

हथबाह–पु० शस्त्र प्रहार की कला।

हथबोलणो–पु० १ नवागन्तुक वधू के प्रथम परिचय संबंधी एक रस्म जिसमें घर की सब स्त्रियां नय वधू के साथ भोजन करती हैं। २ इस अवसर के लिये बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

हथमार (रो)–वि० १ अपने हाथ से दूसरों का सिर काटने वाला, संहारक। २ प्राणघातक चोट या आघात करने वाला। –पु० जल्लाद।

हथमेळी–देखो हथळेवो'।

हथयार–देखो 'हथियार'।

हथळ–१ देखो 'हाथ'। २ देखो 'हाथळ'।

हथळेवो, हथलेव, हथळेयड़ो, हथलेवो–पु० [सं० हस्त-लग्न] १ विवाह में वधू का हाथ वर के हाथ में पकड़ाने की क्रिया, रस्म, पाणिग्रहण संस्कार। २ इस अवसर पर गाया जाने वाला लोकगीत। ३ इस अवसर पर वधू पक्ष की ओर से वधू को दी जाने वाली भेंट। ४ हाथ पकड़ने की क्रिया या भाव।

हथवड़ो–देखो 'हथोड़ो'।

हथवा–देखो 'हथवाह'।

हथवार, हथवाड़ (रू, रो)–वि० [सं० हस्तवारः] किसी के हाथ की अभ्यस्त या आदी। –स्त्री० किसी व्यक्ति विशेष के हाथ से दुहाने की अभ्यस्त गाय, भैंस या मादा पशु।

हथवाळो–वि० १ घात करने वाला, प्रहार करने वाला, घातक। २ मारने वाला, वधिक।

हथवासो–वि० [सं० हस्तवाह] ढाल पकड़ने का हत्था।

हथवाह–देखो 'हथबाह'।

हथवाही–स्त्री० प्रहार करने की क्रिया या भाव।

हथवाही–वि० १ मारने वाला, हन्तु। २ देखो 'हथवासो'।

हथसंकळ (संकळो, सांकळि, सांकळी)–स्त्री० [सं० हस्त-शृंखला] हाथ का आभूषण विशेष।

हथसाळा–स्त्री० [सं० हस्ती-शाला] हाथियों को रखने का स्थान।

हथाई–स्त्री० [सं० अस्थायी] १ गांव की चौपाल, बैठक। २ वार्तालाप, बातचीत, गपशप।

हथायलो–स्त्री० [सं० अस्थायी] १ हल के ऊपरी छोर की लकड़ी। २ कुम्हार का चाक घुमाने का काष्ठ का डंडा।

हथालि, हथालिय–देखो 'हथेळी'।

हथालियो–वि० १ हथेली जैसा। २ हथेली के आकार का। ३ हथेली में समाने योग्य।

हथाळा–देखो 'हथेळी'।

हथाळो–पु० [सं० हस्त-आलुच्] १ वीर पुरुष, योद्धा। २ दानी, दातार।

हथि–देखो 'हाथ'।

हथियार–देखो हथियार'।

हथिणाउर, हथिणापुरि (पूर)–देखो 'हस्तिनापुर'।

हथीयार–देखो 'हथियार'।

हथूंडिया–स्त्री० राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

हथूंडियो–पु० राठौड़ वंश की 'हथूंडिया' शाखा का व्यक्ति।

हथेरण–देखो 'हतेरण'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हथेळी–स्त्री० [सं० हस्ततल] कलाई और अंगुलियों के मध्य का आगे वाला भाग, हस्ततल, करतल ।

हथेळो–पु० १ हल का वह भाग जो कृषक (चालक) के हाथ में पकड़ा रहता है । २ देखो 'हथेळी' ।

हथोड़ी, हथोड़ो–पु० [सं० हस्त-घोटः] स्वर्णकार, लोहार, सुथार आदि के काम आने वाला लोह का मुष्ठिकाकार उपकरण जिसके बीच में लकड़ी का दस्ता फंसा रहता है ।

हथोटी–स्त्री० [सं० हस्तकृति] १ किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव । २ हस्तकौशल, दक्षता ।

हथोहत्थ–देखो 'हाथोहाथ' ।

हथोसी–देखो 'हथवासी' ।

हथ्थ, हथ्थड़ (ड़ो)–देखो 'हाथ' ।

हथ्थळ–१ देखो 'हाथळ' । २ देखो 'हाथ' ।

हथ्थहेक–स्त्री० कटारी ।

हथ्थां–क्रि०वि० हाथों से, हाथ से ।

हथ्थार–देखो 'हथियार' ।

हथ्थी–वि० हाथों वाली ।

हद–स्त्री० [अ०] १ आखिरी किनारा, सीमा, छोर । २ मर्यादा, सीमा । ३ तारीफ, साधुवाद । ४ तह, परत । ५ औकात । –वि० १ अत्यन्त, बहुत, खूब । २ साधारण, विशेष । ३ भयंकर, भीषण । ४ पूर्ण, पूरा

हदको–स्त्री० कंपन, थरथराहट ।

हदगा–स्त्री० एक औषधि विशेष ।

हदछज–पु० मन्दिर, देवालय ।

हदनीरोअर–पु० समुद्र, सागर ।

हदफ–पु० [अ०] १ लक्ष्य, निशाना । २ चांदमारी करने का निशान ।

हदभराई–पु० माली या बागवानों से लिया जाने वाला एक कर ।

हदवंत–पु० देश, मुल्क ।

हदवाट–क्रि०वि० सीमा की ओर, सीमा पर ।

हदवाळो–वि० मर्यादा या सीमा वाला ।

हदवि (वी, वे)–क्रि०वि० धीरे-धीरे, शनैः-शनैः ।

हदसाही–स्त्री० बादशाहत, राज्य, शासन ।

हदि–पु० १ संसार । २ अज्ञान । ३ असत्य, झूठ । ४ मृत्युलोक । –वि० १ सांसारिक, लौकिक । २ अज्ञानी । ३ देखो 'हद' ।

हदियो–पु० १ सीमा पर गड़ा पत्थर । २ एक प्रकार का दान । (मुसलमान) –वि० लौकिक ।

हदीस–स्त्री० [अ०] १ नई बात या खबर । २ मुहम्मद साहब के उपदेशों का संग्रह ।

हदेश–देखो 'हद' ।

हदोहद्द–वि० हठपूर्वक ।

हद्दंविहद्द–वि० असीम, अपार ।

हद्द, हद्दि–देखो 'हद' ।

हधूण–पु० आधामन, बीस सेर ।

हधूर–स्त्री० हुंकार ।

हनंकणो (बो)–देखो 'हिणहिणणो' (बो) ।

हनणो (बो)–देखो 'हणणो' (बो) ।

हनफो–वि०[अ०] इमाम अबू हनीफा के अनुयायी (मुसलमान) ।

हनुग्रह–पु० [सं०] जबड़े बैठने का एक रोग विशेष ।

हनुफाळ–पु० एक मात्रिक छन्द विशेष ।

हनुमंत–देखो 'हनुमान' ।

हनुमंती–स्त्री० एक वनस्पती विशेष ।

हनुमत, हनुमांन–पु० [सं० हनुमत्] श्रीराम का अनन्य भक्त एक पुराण प्रसिद्ध वानर । –वि० १ वीर, बहादुर । २ भारी दाढ़ व जबड़ों वाला ।

हनुमांनबैठक–स्त्री० एक प्रकार की कसरत ।

हनू, हनूमंत, हनूमत–देखो 'हनुमान' ।

हनोज, हन्नोज, हन्नौज–क्रि०वि० १ अब तक, अभी तक । २ नित्य, हमेशा । ३ नहीं तो । ४ अन्यथा, वरना ।

हप हप्प–पु० मुंह से की जाने वाली एक ध्वनि विशेष ।

हफत–पु० [फा० हफ्त] १ सात की संख्या । २ सात दिन की अवधि सप्ताह । –वि० सात ।

हफतहजारी–पु० [फा० हफ्त-हजारी] मुगलशासन में एक पदवी । –वि० सात हजार का, सात हजार वाला ।

हफतो, हफ्तो–पु० [फा० हफ्तः] १ सात दिन की अवधि, सात दिन का समूह । २ रविवार से शनिवार तक का समय, सप्ताह ।

हब–क्रि०वि० [अनु०] १ शीघ्र, तुरन्त । २ आसानी से । ३ अब । ४ मुंह से की जाने वाली ध्वनि विशेष ।

हबकणो (बो)–क्रि० १ छलकना, उछलना । २ फिरना, घूमना । ३ निरुद्देश्य या अवारा फिरना । ४ काटने के लिए झटके से मुंह खोलना । ५ द्रव पदार्थ का तेज गति से ध्वनि करते हुए बहना, उछलना ।

हबको–पु० १ मृत्यु के समय का अन्तिम श्वास । २ ऐसा श्वास आने की क्रिया या अवस्था ।

हबक्कणो (बो)–देखो 'हबकणो' (बो) ।

हबड़-हबड़–क्रि०वि० १ शीघ्रता पूर्वक, शीघ्रता से, तेज गति से । २ "सबड़का" मारते हुए ।

हबद–देखो 'होदो' ।

हबबाहण–देखो 'हव्यवाहन' ।

हबरकै–देखो 'अबरकै' ।

हबवाहण–देखो 'हव्यवाहन' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हबस–पु० [अ० हबस] १ मिश्र के दक्षिण में स्थित एक अफ्रीकी देश। २ देखो 'हबिस'। ३ देखो 'हबसी'।

हबसनफस–पु० प्राणायाम।

हबसाणी (नी)–स्त्री० १ घोड़ों की एक जाति विशेष। २ इस जाति का घोड़ा। ३ एक प्रकार की तलवार।

हबसी–पु० [अ० हबशी] १ उत्तरी अफ्रीका के 'हबश' देश का निवासी। २ इस देश के मुसलमान। ३ एक प्रकार का काला अंगूर। –वि० हबश देश का, हबश देश संबंधी।

हबास–देखो हवास'।

हबिस, हबिसी, हबीस, हबीसी–पु० किसी भारी वस्तु के गिरने, टकराने या पानी में डूबने का भारी शब्द। धमाका।

हबीड़–पु० जोर की टक्कर या झटका।

हबीड़णी (बी)–क्रि० १ गिराना, पटकना। २ मारना, पीटना।

हबोड़ो–पु० १ जोर की टक्कर या झटका। २ भारी वस्तु के गिरने-पड़ने का धमाका। ३ चोट, प्रहार।

हबीब–पु० [अ०] १ मित्र, दोस्त। २ प्रेम पात्र, माशूक।

हबूब–पु० [अ०] १ आंधी, तूफान। २ पानी का बुलबुला। ३ असार या व्यर्थ बात।

हबै–देखो 'हवै'।

हबोथब, हबोथबी–वि० १ गुत्थम-गुत्था। २ पूर्ण भरा हुआ, लबालब। –पु० पिंगल का एक छन्द।

हबोळी–पु० १ पानी की लहर, तरंग, हिलोरा। २ उमंग, उत्साह। ३ झूमते हुए चलने की क्रिया। ४ समूह, झुण्ड। ५ चमक। ६ मन की इच्छा, मौज। ७ जलसा। ८ टक्कर, भिड़ंत।

हब्बंब–देखो हबिद'।

हब्बोड़, हब्बोड़ो–देखो हबीड़ो'।

हब्बोडब्बो–पु० बच्चों का श्वसन रोग, निमूनिया।

हब्बो–देखो 'हब'।

हब्सेबेजा–स्त्री० [अ०] अवैध ढंग से रोकने की क्रिया।

हमंची–पु० १ संदेश, समाचार, सूचना। २ श्रम साध्य कार्य करते समय मुंह से की जाने वाली ध्वनि।

हमंस–पु० शोरगुल, कोलाहल।

हम–सर्व० [सं० अस्मत्] 'मैं' का बहुवचन, हम। –वि० [फा० हमः] सर्व, सब, समस्त। –पु० अहम्, घमण्ड।

हमअसर–वि० [फा० हमः + अ० असर] एक ही समय में होने वाला। एक समान प्रभावशाली।

हमकर–पु० १ गर्व, अभिमान। २ देखो 'हिमकर'।

हमकलो, हमकलं, हमकै–क्रि०वि० १ इस बार, अब की बार। २ अगलीबार।

हमकौम–वि० [फा० हमः + अ०कौम] अपनी जाति का, स्वजातीय।

हमगीर–वि० [फा० हमः गीर] १ समस्त, समग्र, पूर्ण, कुल। २ विस्तार पूर्वक, विस्तृत। ३ अगणण्य, अगुआ। ४ वीर, बहादुर, योद्धा। ५ मारने या नष्ट करने वाला। ६ नियम भंग करने वाला। ७ उत्पाती, उद्दण्ड। ८ अनुगामी। ९ उत्तेजित। १० मस्त। ११ मित्र, दोस्त, साथी। १२ प्रसन्न, खुश। –क्रि०वि० साथ।

हमगीरता–स्त्री० १ मित्रता, दोस्ती। २ नेतृत्व।

हमची–पु० १ नौबतखाने में शहनाई के साथ नगारे आदि का वादन। २ ऐसे वादन के साथ किया जाने वाला नृत्य। ३ रावल लोगों द्वारा रात में खेल करने के बाद प्रातः देवी के सम्मुख किया जाने वाला नृत्य।

हमची–पु० १ आक्रमण। २ तैयारी। ३ वीर-ध्वनि। ३ संदेश, समाचार।

हमजोळी, हमजोळी–पु० साथी, सखा, मित्र।

हमणो–सर्व० हमारा। –क्रि०वि० अब।

हमतम, हमतमी, हमतम्म–पु० वाग्युद्ध, तू-तू, मैं-मैं।

हमदरद–वि० [फा० हमदर्द] सुख-दुःख का साथी, सहायक।

हमदरदी–स्त्री० [फा०] सहानुभूति।

हमपेसा–वि० [फा० हमपेशः] सह-व्यवसायी, एक ही तरह का कार्य करने वाला।

हममजहब–वि० [फा०] एक धर्म के अनुयायी, सहधर्मी।

हमरंग–वि० समान रंग वाला, रागरंग में सहयोगी।

हमरकै–देखो 'हमकै'।

हमराह–पु० [फा०] १ साथी, मित्र। २ संग, साथ। –वि० १ एक मत। २ सह-पथिक।

हमरोट–देखो 'अमरकोट'।

हमरोटी–स्त्री० ऊपरकोट की स्त्री।

हमल–पु० १ समुद्र, सागर। २ समूह, झुण्ड, दल। ३ गर्भ।

हमलकै–देखो 'हमरकै'।

हमलो हमल्ल हमल्लो–पु० [अ० हम्लः] १ आक्रमण, हमला। २ आघात, चोट, प्रहार। ३ चढाई, युद्ध के लिये प्रयाण। ४ झटका। ५ टक्कर, भिड़ंत। ६ दाव-पेंच।

हमस–पु० १ सेना, फौज। २ गर्व, अभिमान। ३ पृथ्वी, भूमि। ४ कोई बड़ा कार्य। ५ इच्छा, अभिलाषा।

हमसर–पु० बराबर के दरजे का व्यक्ति।

हमसरी–स्त्री० बराबरी, समानता।

हमसाया–पु० [फा०] पड़ोसी।

हमस्स–देखो 'हमस'।

हमां–सर्व० हम।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हमाम–पु० [अ० हम्माम] १ स्नानघर, स्नानागार, नहाने का कक्ष। २ अंधेरा तलगृह जहाँ अपराधियों को रखा जाता था। ३ कोई कक्ष विशेष। [अ० हमाम:] ४ कपोत, कबूतर। ५ गले पर बनी कण्ठी वाला पक्षी।

हमामदस्ता–पु० [फा० हावनदस्त] लोहे की ओखली व मूसली।

हमाऊ–पु० सुरखाब नामक पक्षी विशेष।

हमाट–स्त्री० ध्वनि विशेष।

हमायची–पु० एक माप या परिमाण विशेष।

हमायुं, हमायूं–देखो 'हुमाऊ'।

हमार–क्रि० वि० अभी, इसी समय। तत्काल।

हमारउ–देखो 'हमारो'।

हमारू, हमारू–देखो हमार'।

हमारी–सर्व० (स्त्री० हमारी) हमारा, मेरा।

हमाल–पु० [अ०] १ बोझा ढोने वाला मजदूर, भारवाहक, कुली। २ संभालने वाला रक्षक।–वि० समान, सदृश।

हमासत–सर्व० हमारे जैसा।

हमीणो–सर्व० हमारा।

हमेल, हमेलबेल–पु० [अ० हमाइल] १ बगल में लटकाने की वस्तु। २ गले में लटकाने का छोटा कुरान। ३ घोड़े के गले का आभूषण। ४ स्त्रियों के गले का आभूषण विशेष।

हमेलिया–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पती।

हमेळी–देखो 'हामेळी'।

हमेस, हमेसां–क्रि० वि० [फा० हमेशः] १ सदा, सर्वदा। २ प्रतिदिन, नित्य। ३ हर समय, हरवक्त। ४ प्राय: अधिकतर।

हमैं, हमं, हमी–क्रि० वि० १ अब। २ इस बार, इस समय।

हम्म–देखो 'हम'।

हम्मर–पु० [सं० हयवर] घोड़ा।

हम्माल–देखो 'हमाल'।

हम्मीर–पु० १ रणथम्भोगढ़ का प्रसिद्ध चौहान राजा। २ योद्धा, वीर। ३ सम्पूर्ण जाति का एक राग।

हम्मीरनट–पु० एक प्रकार की संकर राग।

हय, हयंद, हयं–पु० [स० हय] १ अश्व, घोड़ा। २ तुषित एवं साध्य देवों में से एक।–क्रि० वि० हां। –साळा–स्त्री० अश्वशाला।

हयअंगवीन–पु० [सं० हैयङ्गवीनम्] १ मक्खन, नवनीत। २ घी, घृत।

हयग्रीव–पु० १ विष्णु का एक अवतार। २ एक असुर जो कश्यप एवं दिति के पुत्रों में से एक था। ३ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से था।

हयग्रीवा–स्त्री० दुर्गा देवी का एक नामान्तर।

हयण–देखो 'हय'।

हयघट्ट–पु० १ अश्व, समूह, अश्वदल। २ अश्व सेना।

हयघळ–पु० [सं० हयदल:] अश्वदल, अश्वसेना।

हयनाळ–स्त्री० [सं० हय-नाल:] १ घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली या पीठपर लादी जाने वाली तोप। २ घोड़ों की टाप, खुरताल।

हयवर–पु० [सं०] १ श्रेष्ठ घोड़ा, उत्तम जाति का घोड़ा। २ कोई घोड़ा, अश्व।

हयतरि–पु० पीले रंग का घोड़ा।

हयाणी, हयांणीआ–स्त्री० [सं० हय-अनीक:] अश्व सेना, घुड़ सेना।

हयांणो–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा।

हयांराज–पु० [सं० हयराज] १ बड़ा घोड़ा, हयेन्द्र। २ घोड़ा।

हया–स्त्री० [अ०] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। २ शर्म, लज्जा। ३ दया, करुणा। ४ भावुकता।

हयाऊत–पु० एक पक्षी विशेष।

हयात–स्त्री० [अ०] जीवन, जिन्दगी।

हयादार–वि० [अ० हया+फा० दार] १ लज्जालु, शर्मीला। २ दयावान, करुणाशील। ३ भावुक। ४ मान, प्रतिष्ठा व इज्जत वाला।

हयानन–पु० [सं० हय-आनन] विष्णु का एक अवतार; हयग्रीव।

हय्येक–स्त्री० [सं०] एक ही बात।

हर–पु० [सं० हर:] १ शिव, महादेव। २ अग्नि, आग। ३ सूर्य, भानु। ४ एक दानव। ५ विभीषण का अमात्य एक असुर। ६ राम की सेना का एक वानर। ७ गणित में कोई भाजक संख्या। ८ छप्पय छन्द का एक भेद। ९ तीन दीर्घवाले टगण के प्रथम भेद का नाम। १० पौत्र, वंशज। ११ पानी, जल। १२ गधा, गर्दभ।–स्त्री० [सं० स्मर] १२ उत्कृष्ट आकांक्षा, प्रबल इच्छा। १४ इच्छा, चाह। १५ आशा, उम्मीद। १६ ध्यान। १७ स्मरण, याद, स्मृति। १८ जिद, दुराग्रह, हठ। १९ ऊंट पर लदे हुए बोझे का एक तरफ अधिक झुकाव। २० हरियाली। –अव्य० १ एक विशेषण प्रत्यय। २ प्रत्येक, हरेक, एक-एक। ३ श्वेत, सफेद। ४ पूर्वकालिक क्रिया सूचक अव्यय। ५ देखो 'हरि'। ६ देखो 'हरो'।

हरई–पु० एक प्रकार का शुभ्र रंग का घोड़ा।

हरकंकण–देखो 'हरकाकण'।

हरक–वि० [सं०] १ हरण करने वाला। २ ले जाने वाला; पहुंचाने वाला।–पु० १ गणित में भाजक। २ प्रलयंकर रूप में शिव का एक नाम। ३ देखो 'हरख'।

हरकण–देखो 'हरख'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरकणी (बी)–देखो 'हरसणी' (बी)।

हरकत (त, ती)–स्त्री० [अ०] १ गति, चाल। २ चेष्टा। ३ स्पंदन, धड़कन। ४ उद्दण्डता पूर्ण कार्य, बदमाशी, शैतानी। ५ खुशी, उत्साह।

हरकसबोळी–पु० [देश०] विवाह संबंधी एक रस्म।

हरकांकण–पु० महादेव का कंकण।

हरकारचंद्रा–स्त्री० एक प्रकार की औषधि।

हरकारो–देखो 'हलकारो'।

हरक्क, हरक्ख, हरख–देखो 'हरस'।

हरखणी (बी) हरखणी (बी)–देखो हरसणी' (बी)।

हरखत–१ देखो 'हरसित'। २ देखो 'हरकत'।

हरखमांण–वि० [सं० हर्षमान] हर्षित, प्रसन्न, खुश।

हरखवंत–वि० प्रसन्न, हर्षित,

हरखाणी (बी), हरखावणी (बी)–देखो 'हरसाणी' (बी)।

हरखित–देखो 'हरसित'।

हरखिली, हरखीली–वि० (स्त्री० हरखोली) हर्षित, प्रसन्न।

हरख्ख–देखो 'हरस'।

हरगज, हरगिज–अव्य० [फा० हरगिज] कदापि, कभी भी।

हरगिर (गिरि, गिरी)–पु० [सं० हरगिरि] कैलाश पर्वत।

हरगीता–स्त्री० एक मात्रिक छन्द विशेष।

हरगौरीरस–पु० एक आयुर्वेदिक रसौषधि विशेष।

हरगिर–देखो 'हरगिर'।

हरड़–देखो 'हरड़ै'।

हरड़को–पु० १ भैंस आदि के दौड़ने की क्रिया। २ दौड़ते समय भैंस के मुंह से निकलने वाली ध्वनि विशेष।

हरड़ाट (टो)–पु० १ तीव्र आंधी या वर्षा से उत्पन्न ध्वनि। २ किसी भारी वस्तु के जोर से गिरने की ध्वनि।

हरड़ो, हरड़ै–स्त्री० [सं० हरीतकी] १ एक पेड़ विशेष। २ इस पेड़ का सूखा फल जो औषध में काम आता है। ३ शक्ति, सामर्थ्य, औकात। ४ गुदा के भीतर का एक अवयव विशेष।

हरड़ो–पु० रंग विशेष का घोड़ा।

हरचंब–अव्य० [फा०] १ कितना ही, कितना भी। २ यद्यपि, अगरचे। ३ जितना कुछ, जिस कदर। ४ देखो 'हरिश्चंद्र'।

हरचंदवरा–पु० १ राजा हरिश्चन्द्र का शासन काल। २ आनन्द या सुख का समय।

हरचंदि–देखो 'हरिश्चंद्र'।

हरज–पु० [अ०] १ हानि, नुकसान। २ उपद्रव, गड़बड़। ३ अड़चन, बाधा, रुकावट। ४ आपत्ति, विरोध, ऐतराज।

हरजट–वि० पीला, पीत ❀।

हरजस–पु० [सं० हरि+यश] १ ईश्वर की महिमा या स्तुति का पद, गीत। गायन, भजन, हरियश। २ ईश्वर का यश या कीर्ति।

हरजांणो (नो)–पु० १ क्षतिपूर्ति के लिये निर्धारित धन या वस्तु। २ नुकसान, हानि।

हरजाई–स्त्री० १ उजाड़ करने वाली, अवारा। २ व्यभिचारिणी स्त्री, वेश्या।

हरजी–पु० १ संगतराश के काम का उपकरण, टांकी। २ देखो 'हरज'।

हरज्ज–देखो हरज'।

हरड, हरडइ, हरडि, हरडू–देखो 'हरड़ै'।

हरणंक, हरणंख, (ख, खुर)–१ देखो 'हिरण्याक्ष'। २ देखो 'हिरण्यकस्यप'।

हरण पु० [सं० हरण] १ दूसरे की वस्तु की चोरी। २ किसी का अपहरण ३ हटाने, मिटाने या दूर करने की क्रिया या भाव। ४ वंचित करने की क्रिया या भाव। ५ अपनी ओर खींचने की क्रिया या भाव। ६ पकड़ने की क्रिया। ७ संहार, नाश। ८ विभाजन। ९ वहन। १० विद्यार्थी के लिये दिया जाने वाला दान। ११ यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा। १२ बाहु। १३ वीर्य। १४ स्वर्ण, सोना।–वि० १ चुराने वाला, चोरी करने वाला। २ मिटाने वाला, दूर करने वाला। ३ देखो 'हिरण'।

हरणकस्यप, हरणकुस (कुस)–देखो 'हिरणकस्यप'

हरणक्ख, हरणख–देखो 'हिरण्याक्ष'।

हरणगरभ–देखो 'हिरण्यगरभ'।

हरणांकु–देखो 'हिरण्याक्ष'।

हरणाकस, हरणाकुस–देखो 'हिरणकस्यप'।

हरणाक्ष, हरणाक्ख, हरणाख–देखो 'हिरण्याक्ष'।

हरणाखी–देखो 'हरिणाक्षी'।

हरणाट–स्त्री० १ नगाड़े की ध्वनि। २ कोई ध्वनि विशेष। ३ देखो 'हिणहिणाट'।

हरणामख–पु० १ एक रंग विशेष का घोड़ा। २ एक अन्य प्रकार का घोड़ा।

हरणायख–१ देखो 'हिरण्याक्ष'। २ देखो 'हिरणकस्यप'।

हरणी–वि० १ हरण करने वाली। २ देखो 'हरिणी'।

हरणीयन–वि० १ मन को हरने वाली, सुन्दर आकर्षित। २ देखो 'मनहरण'।

हरणो–वि० [सं० हर] (स्त्री० हरणी) १ हरण करने वाला, चुराने वाला। २ छीनने या लूटने वाला। ३ मिटाने वाला, दूर करने वाला, हटाने वाला। ४ नष्ट करने वाला। ५ खींचने वाला। ६ आकृष्ट करने वाला।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरणी (णो)–क्रि० [सं० हरणम्] १ दूसरे की वस्तु को उसकी इच्छा के विपरीत या उसकी जानकारी के बिना ले लेना, कब्जे में कर लेना, चोरी करना। २ हटाना, दूर करना, मिटाना। ३ किसी को बलपूर्वक, चोरी या धोखे से उड़ा लेना, अपहरण करना। ४ अपनी ओर खींचना, आकर्षित करना। ५ पकड़ना। ६ पूर्ण करना, पूर्ति करना। ७ संहार या नाश करना। ८ विभाजन करना। ९ वहन करना।

हरत–देखो 'हरित'।

हरतणु–(णू, नु, नू)–पु० [सं० हरतनुः] ओस-कण।

हरता–वि० [सं० हर्ता, हर्तृ] १ हरण करने वाला, चोर। २ जबरदस्ती छीनने वाला, डाकू, लुटेरा। ३ संहार व नाश करने वाला। मारने वाला। ४ दुख, शोक, पीड़ा आदि मिटाने वाला, दूर करने वाला। ५ आकर्षित करने वाला। ६ उड़ाकर ले जाने वाला। ७ विभाजक। –पु० सूर्य।

हरतार–वि० [सं० हर्त्तरि] हरण करने वाला, हर्ता।

हरताळ, हरताल–स्त्री० [सं० हरिताल] १ संखिया व गंधक के योग से बना एक खनिज पदार्थ। २ एक उप धातु, गोदंत। –वि० १ पीला, पीतवर्ण। २ देखो 'हड़ताल'।

हरतेज–पु० [सं० हरतेजस्] पारद, पारा।

हरत्ता–देखो 'हरता'।

हरथानक–पु० [सं० हर-स्थान] १ शिव मन्दिर, शिवालय। २ हिमालय पर्वत। [सं० हरि-स्थान] ३ विष्णु का मन्दिर।

हरद–देखो 'हल्दी'।

हरदम–क्रि०वि० [फा०] १ प्रतिक्षण, हरक्षण, हर समय। २ निरन्तर, लगातार। ३ सदा, सर्वदा।

हरदास, हरदासियो–देखो 'हरिदास'।

हरदासी–देखो 'हरिदासी'।

हरदो–देखो 'हल्दी'।

हरदोखो, हरदोसी–पु० [सं० हर-दोषी] कामदेव, मदन।

हरदो–देखो 'हिरदो'।

हरद्वान–पु० एक स्थान विशेष जहां की तलवारें प्रसिद्ध हैं।

हरधम–देखो 'हरदम'।

हरन–१ देखो 'हिरण्य'। २ देखो 'हरण'।

हरपुर–पु० [सं०] १ शिवधाम, कैलास। २ देखो 'हरिपुर'।

हरप्रि, हरप्रिय–पु० [सं० हर-प्रियः] १ धनपति, कुबेर। २ देखो 'हरिप्रिय'।

हरप्रिया–स्त्री० [सं०] १ उमा, पार्वती। २ दुर्गा, भवानी। ३ देखो 'हरिप्रिया'।

हरफ–पु० [अ० हर्फ] १ अक्षर, वर्ण। २ शब्द, आवाज। ३ दोष, ऐब, बुराई। ४ लक्ष्य, निशान।

हरफनीर–वि० [अ० हर्फ गीर] १ बहुत बारीकी से अक्षर, अक्षर का गुण दोष निकालने वाला। २ ऐब या गलती निकालने वाला, छिद्रान्वेषी। ३ आलोचक, निंदक।

हरफगीरी–स्त्री० [अ० हर्फगीरी] १ हरफगीर का कार्य या धर्म। २ छिद्रान्वेषण। ३ आलोचना, निंदा।

हरफोवड़ो–स्त्री० कमरख की जाति का एक सुन्दर वृक्ष।

हरफो–पु० कटा हुआ चारा या भूसा रखने का घर या कक्ष जिसके चारों ओर लकड़ी का घेरा बना होता है।

हरबड़ाहट–पु० १ ध्वनि विशेष। २ घबराहट।

हरबळ–देखो 'हरावळ'।

हरबांम, हरबांमा–१ देखो 'हरवांम'। २ देखो 'हरिवांमा'।

हरबो–पु० एक वृक्ष विशेष।

हरभू–देखो 'हड़बू'।

हरभांत (भांति)–क्रि०वि० हर तरह से, हर प्रकार से, तरह-तरह से, येन-केन-प्रकारेण।

हरभू (भो)–देखो 'हड़बू'।

हरम–पु० [अ०] १ राज प्रासाद का रनिवास, अन्तःपुर, जनानखाना। २ अन्तःपुर में रहने वाला स्त्री समाज। [सं० हर्म्य] ३ बड़ा महल, अट्टालिका। ४ जीव हिंसा के लिये सर्वथा वर्जित मक्के के आस-पास का क्षेत्र। ५ गुंबद। ६ बुढ़ापा। –स्त्री० ७ पत्नी, स्त्री। ८ बादशाह की बेगम। ९ उप पत्नी रखैल। १० दासी, चेरी —खानो–पु० अन्तःपुर, जनान खाना।

हरमजदगी–देखो 'हरांमजादगी'।

हरमजादो–देखो 'हरांमजादो'। (स्त्री० हरमजादी)

हरमज्जि–पु० एक प्रकार का अनार।

हरमल–स्त्री० एक प्रकार की झाड़ी।

हरमीखजूर–पु० एक प्रकार का खजूर, छुहारा।

हरमीजोसीरू–पु० एक प्रकार का फल।

हरमेखलिक–वि० जिसके पास कोई सिद्धि हो, सिद्ध।

हरम्म (म्य)–पु० [सं० हर्म्य] १ राजभवन, महल। २ बड़ा भवन, हवेली। ३ देखो 'हरम'।

हरयंबुवर–देखो 'हरियंदुवर'।

हररथ–पु० १ शिव का नन्दी। २ बैल। ३ देखो 'हरिरथ'।

हररांणी–स्त्री० [सं० हर+राज्ञी] १ उमा, पार्वती। २ देखो 'हरिरांणी'।

हरराया–पु० विष्णु।

हररोज–क्रि० वि० प्रतिदिन, रोजाना, नित्य।

हरलोयण–पु० [सं० हर+लोचनम्] १ शिव का नेत्र। २ तिकोनी वस्तु। –वि० त्रिकोण ❀।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरवकत (वक्त, वखत)–क्रि० वि० [अ० हरवक्त] हर क्षण, हर समय, हरदम।

हरवळ (ल्ल)–देखो 'हरावळ'।

हरवांम (वांमा)–स्त्री० [सं० हर-वामा] १ उमा, पार्वती। २ गंगा। ३ देखो 'हरिवांमा'।

हरवाइ, हरवाई–स्त्री० नीचता, कुकर्म, दुष्टता।

हरवाहण (न)–पु० [सं० हर-वाहन] १ शिव की सवारी, नन्दी। २ बैल। ३ देखो 'हरिवाहण'।

हर-संकरी–पु० एक प्रकार का मादक पदार्थ, विशेष।

हरस–पु० [सं० हर्ष] १ आनन्द, खुशी, प्रसन्नता। २ उत्फुल्लता, प्रफुल्लता, रोमांच। ३ संयोग शृंगार के अन्तर्गत एक संचारी भाव (साहित्य)। ४ धर्म के तीन पुत्रों में से एक। ५ देखो 'हरसवरद्धन'।

हरसक, हरसकर–वि० [सं० हर्षक, हर्ष-कर] आनन्ददायक, प्रसन्न करने वाला।

हरसकीलक–पु० [सं० हर्ष-कीलक] कामशास्त्र के अनुसार एक आसन।

हरसखा–पु० [सं०] धनपति, कुबेर।

हरसण–पु० [सं० हरण] १ कामदेव के पांच बाणों में से एक। २ काम वासना की तीव्रता मे पुरुष को इन्द्रिय का तनाव। ३ एक नेत्र रोग विशेष। ४ श्राद्ध कर्म का अधिष्ठाता एक देव। ५ फलित ज्योतिष के २७ योगों में से एक। ६ प्रसन्न या खुश होने की अवस्था या भाव। ७ प्रसन्नता, खुशी। ८ एक प्रकार का श्राद्ध।–वि० १ आनन्ददायक, प्रसन्नताकारक। २ हर्ष-उत्पादक।

हरसणाकस–स्त्री० हर्ष ध्वनि।

हरसणी (णी)–क्रि०० [सं० हर्षण] १ खुश होना, प्रसन्न होना। २ हंसना, खिलखिलाना।

हरसत–देखो 'हरसित'।

हरसवरद्धन, हरसवरधन–पु० [सं० हर्षवर्धनः] भारत का एक प्रसिद्ध सम्राट जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुआ था।

हरसाणी (णी)–क्रि० [सं० हर्षण] १ खुश होना, प्रसन्न होना या करना। २ हंसना, हंसाना।

हरसित–वि० [सं० हर्षित] प्रसन्न, खुश, आनन्दित।

हरसिरा–स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

हरसुत–पु० [सं०] १ शिव के पुत्र स्वामिकार्तिकेय। २ गणेश, गजानन।

हरसेखरा–स्त्री० [सं० हरशेखरा] गंगानदी।

हरसेन–पु० [सं० हरिसेना] श्रीराम की वानर सेना।

हरस्वांत–पु० पपीहा।

हरहंस–पु० सूर्य।

हरहार–पु० शिव के गले का हार, सर्प।

हरांन–देखो 'हैरांन'।

हरांम–वि० [अ० हराम] १ इस्लाम धर्म के अनुसार हलाल का विपर्याय। पाप युक्त। २ धर्म विरुद्ध, वर्जित, निषिद्ध। ३ अभक्ष्य। ४ अनुचित, नाजायज। ५ दोषयुक्त, बुरा। ६ अप्रिय, कटु। ७ कठिन, दूभर। ८ बेकार; व्यर्थ। –पु० १ अघं, पाप। २ बुराई। ३ स्त्री-पुरुष का नाजायज संबंध, व्यभिचार। ४ निषिद्ध की हुई वस्तु। —कारी–स्त्री० परस्त्री गमन, व्यभिचार। –खोर–वि० कृतघ्न, नमक हराम। अनुचित कमाई करने वाला। कामचोर, निकम्मा। दंगाबाज धोखेबाज।—खोरी–स्त्री० हरामखोर का कार्य। कृतघ्नता, नमक हरामी। कामचोरी, निकम्मापन। पाप की कमाई, चोरी। धृष्टता, बदमाशी। —खोरी='हरामखोर'।–जादगी='हरांमखोरी'।—जादी –वि० हराम की औलाद, दोगला। जारज। धूर्त, दुष्ट, पाजी। निकम्मा, हरामखोर।

हरांमी–वि० [अ० हरामी] १ हराम की पैदाइस, व्यभिचार से उत्पन्न, दोगला। २ दुष्ट, धूर्त, पाजी। ३ कृतघ्न, नमक हराम। ४ मुफ्तखोर। —खोर='हरांमखोर'।

हरा–स्त्री० १ उमा, पार्वती, गिरिजा। २ हरीतकी, हरें, हरड़।

हराउळ–देखो 'हरावळ'।

हराड़–स्त्री० हार, पराजय।

हराणी (णी)–क्रि० [सं० हृ] १ युद्ध, द्वन्द्व या प्रतियोगिता में परास्त करना, पछाड़ना। २ शिथिल करना, थकाना; नाकामयाब करना। ३ तर्क या युक्ति द्वारा निरुत्तर कर देना। ४ अपहरण कराना।

हराव–पु० [सं० ह्रादः] ध्वनि, आवाज।

हरायण (णो)–पु० १ हरे होने की अवस्था या भाव; हरितता। २ हरे रंग या वर्ण की झलक।

हरायत–पु० १ संदेशवाहक, खबरनवीस। २ देखो 'हेरायत'।

हरारत–स्त्री० [अ०] १ मंद ज्वर, हल्का ज्वर। २ गर्मी, उष्णता।

हरालउ–वि० हरित।

हरावणी–वि० (स्त्री० हरावणी, हरावनी) १ हार या पराजय दिलाने वाला। २ हराने वाला, पराजय करने वाला ३ हरण कराने वाला।

हरावणी (णी)–देखो 'हराणी' (णी)।

हरावळ (ल)–पु० [फा०] १ सेना का अग्रभाग। २ आगे का हिस्सा या भाग।

हरास–१ देखो 'ह्रास'। २ देखो 'हरारत'।

हरि–पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ श्रीराम, श्रीरामचन्द्र। ५ ब्रह्मा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ इन्द्र । ७ सूर्य, रवि । ८ शिव, महादेव । ९ चन्द्रमा, चांद । १० वायु, हवा । ११ अग्नि, आग । १२ कामदेव, मदन । १३ मानव, मनुष्य । १४ यमराज । १५ शुक्रग्रह । १६ सिंह, शेर । १७ हाथी, गज । १८ वानर, बंदर । १९ अश्व, घोड़ा । २० इन्द्र का घोड़ा । २१ हिरन, मृग । २२ भ्रमर, भौंरा । २३ मयूर, मोर । २४ तोता, कीर । २५ गोदड़ । २६ हंस । २७ जल, पानी । २८ सर्प सांप । २९ मेंढक । ३० एक प्राचीन पर्वत । ३१ एक देश या भू-भाग विशेष । ३२ भर्तृहरि का नामान्तर । ३३ गरुड़ के पुत्रों में से एक । ३४ भूरा या पीला रंग । ३५ जैनियों के ८८ ग्रहों में से उन्चासवां ग्रह । ३६ छप्पय छन्द का तो वां भेद । ३७ छप्पय छन्द का एक अन्य भेद । –स्त्री० ३८ किरण, रश्मि । ३९ सिंह राशि । ४० इच्छा, कामना । ४१ कोयल । ४२ घोड़ों की एक जाति । –वि० १ भूरा, कपिल, बादामी । २ पीला । ३ हरा, धानी । ४ काला-श्वेत ।

हरिक–पु० [सं०] १ पीले या भूरे रंग का घोड़ा । २ जुआरी । ३ चोर । –वि० पीला, हरा ।

हरिकथा–स्त्री० [सं० हरि-कथा] १ ईश्वर के अवतारों एवं चरित्रों का वर्णन, कथानक । २ ऐसे कथानकों की पुस्तक ।

हरिकाय–पु० [सं० हरितकम्] शाकाहार, फलाहार ।

हरिकीरतन (कीरत्तन)–पु० [सं० हरिकीर्त्तन] भगवान के नाम का कीर्त्तन, भजन, गायन ।

हरिकेत–पु० एक तीर्थ का नाम ।

हरिकेस–पु० [सं० हरिकेश] १ शिव, महादेव । २ सूर्य की एक कला ।

हरिकेसि (सी)–पु० [सं० हृषिकेश] १ श्रीकृष्ण । २ चांडाल कुलोत्पन्न एक ऋषि ।

हरिक्षेत्र–पु० [सं०] पटना के पास का एक तीर्थ स्थान ।

हरिख (खि)–पु० १ एक वर्ण वृत्त । २ देखो 'हरस' ।

हरिखेत (खेतर)–देखो 'हरिक्षेत्र' ।

हरिगीतिका–स्त्री० एक मात्रिक छन्द विशेष ।

हरिचंद–देखो 'हरिश्चंद' ।

हरिचंदण (न)–पु० [सं०] १ एक प्रकार का चन्दन । २ स्वर्ग का एक वृक्ष ।

हरिचरित (त्र)–पु० ईश्वर का चरित्र व गुणगान ।

हरिचाप–पु० [सं०] इन्द्र धनुष ।

हरिजख–पु० [सं० हर्यक्ष] सिंह, शेर ।

हरिजटा–स्त्री० [सं०] रावण की अनुचरी एक राक्षसी जो अशोक वाटिका में सीता के पास नियुक्त थी ।

हरिजण (न)–पु० [सं०हरि-जन] १ ईश्वर का भक्त । २ भंगी ।

हरिजस–पु० [सं० हर्यश्व] १ एक सूर्यवंशी प्राचीन राजा । [सं० हरियश] २ ईश्वर का गुणगान, भक्ति संबंधी पद, भजन । ३ देखो 'हरिकीर्त्तन' ।

हरिण–पु० [सं० हरिणः] (स्त्री० हरिणी) १ एक प्रसिद्ध चौपाया जंगली जानवर, मृग, हिरन । २ हंस । ३ सूर्य । ४ विष्णु । ५ शिव । ६ सफेद रंग । ७ ब्रह्मा । –वि० १ श्वेत । २ पीला । ३ देखो 'हिरण्य' ।

हरिणईख, हरिणख–१ देखो 'हिरणकस्यप' । २ देखो 'हिरण्याक्ष' ।

हरिणनयणा (नयणी)–स्त्री० मृग के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री, मृगनयनी ।

हरिणनाभ–पु० १ मृग की नाभि जिसमें कस्तूरी होती है । २ हरण्यनाभ नामक एक सूर्यवंशी राजा ।

हरिणली–देखो 'हरिणी' ।

हरिणांकुस–१ देखो 'हिरणकस्यप' । २ देखो 'हिरण्याक्ष' ।

हरिणांखी–देखो 'हरिणाक्षी' ।

हरिणाकस, हरिणाकुस–१ देखो 'हिरणकस्यप' । २ देखो 'हिरण्याक्ष' ।

हरिणाक्षी (खी)–स्त्री० [सं० हरिणाक्षी] मृग के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री, मृगनयनी ।

हरिणि, हरिणी–स्त्री० [सं० हरिणी] १ मादा हिरन, मृगी । २ कामशास्त्र के अनुसार चित्रणी जाति की स्त्री का नाम । ३ आर्या छन्द का एक भेद । ४ सुन्दर स्वर्ण प्रतिमा । ५ सोनजुही नामक लता ।

हरिणेगमेखी–पु० जैन मतानुसार शकेन्द्र की पैदल सेना के सेनापति देव का एक नाम ।

हरित–पु० [सं०] १ विष्णु का एक नामान्तर । २ सूर्य । ३ सूर्य का एक घोड़ा, कुम्मेद । ४ सिंह, शेर । ५ हरा, पीला या धानी रंग । ६ घास, तृण । ७ दिशा । ८ द्वादश मन्वन्तर का एक देव । ९ मान्धाता के पौत्र व युवनाश्व के पुत्र का नाम । –वि० १ हरे रंग का, हरा । २ पीला । ३ धानी ।

हरितकाय–पु० शाक-सब्जी ।

हरितमणि–स्त्री० [सं०] पन्ना, मरकत ।

हरिताळ, हरिताल–पु० [सं० हरितालः] १ पीले रंग का कबूतर । २ देखो 'हरताळ' ।

हरितालिका (तालिका)–पु० [सं० हरितालिका] १ भादव शुक्ला चतुर्थी । २ दूर्वा, दूब ।

हरितालिका-व्रत–पु० [सं०] भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को किया जाने वाला व्रत ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरिताळी, हरितालो–स्त्री० १ तलवार की धार, तलवार का अग्रभाग। २ देखो 'हरितालिका'।

हरितिय–स्त्री०[सं० हरि-तिय]१ सरस्वती, भारती। २ लक्ष्मी।

हरिवरम–पु० [सं० हरिदर्भ] हरे घोड़े वाला सूर्य।

हरिवास–पु० [सं०] (स्त्री० हरिदासो) १ ईश्वर का भक्त। २ विष्णु भक्त। ३ रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रसिद्ध महात्मा।

हरिवासी–पु० [स० हरिद्रासिन्] १ ईश्वर की भक्त या साध्वी स्त्री। २ लक्ष्मी, रमा। ३ पार्वती। ४ रिद्धि-सिद्धि। ५ दौलत, माया।

हरिविन, हरिविवस–पु० [सं०] विष्णु की उपासना का दिन, एकादशी।

हरिविसा–स्त्री० [सं० हरि-दिशा] पूर्व दिशा।

हरिवेव–पु० [सं०] १ विष्णु। २ श्रवण नक्षत्र।

हरिद्वार–पु० [सं०] उत्तर भारत में स्थित वह तीर्थ स्थान जहाँ पर 'गंगा' नदी पहाड़ों को छोड़कर मैदान में प्रवेश करती है।

हरिधनुख (धनुस)–पु० [सं० हरिद्धनुष] इन्द्र धनुष।

हरिधाम–पु० [सं० हरि-धाम] विष्णुलोक, स्वर्ग।

हरिधम–पु० [सं० हरि-धर्म] १ ईश्वर का भजन। २ विष्णु धर्म।

हरिनख–पु० १ बाघ का नाखून लगा ताबीज। २ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। –वि० कुटिल, टेढ़ा।

हरिननैणी–स्त्री० मृगनयनी।

हरिनाम–पु० ईश्वर का नाम, स्मरण।

हरिनामी–पु० अशुभ रंग का एक प्रकार का घोड़ा।

हरिनाथ–पु० [सं०] हनुमान का एक नामान्तर।

हरिन्मणि–स्त्री० [सं०] हरे रंग की मणि, पन्ना।

हरिपद–पु० [सं०] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ वसंत का वह दिन जब रात व दिन का समय बराबर होता है।

हरिपदि (दी)–स्त्री० [सं०] गंगा नदी का एक नाम, विष्णु पदी।

हरिपुर–पु० [सं०] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

हरिपेड़ी–स्त्री० १ हरिद्वार में गंगा का प्रसिद्ध घाट, तीर्थ स्थान। २ इस घाट पर बनी सीढ़ियाँ।

हरिप्रिय–पु० [सं०] एक प्रकार का चन्दन।

हरिप्रिया–स्त्री० [सं०] १ लक्ष्मी, कमला। २ पृथ्वी, धरती। ३ तुलसी। ४ द्वादशी तिथि। ५ शराब, मदिरा। ६ शहद, मधु। ७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द।

हरिप्रीता–स्त्री० ज्योतिष के अनुसार एक मुहूर्त।

हरिबल्लभा–देखो 'हरिवल्लभा'।

हरिबाहण (न)–देखो 'हरिवाहन'।

हरिबोधनी, हरिबोधिनी–स्त्री० [सं० हरिबोधिनी] कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

हरिभक्त (भगत)–पु० [सं०] ईश्वर में श्रद्धा-भक्ति रखने वाला साधु।

हरिभक्ति (भगति)–स्त्री० [सं०] ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था या प्रेम।

हरिमंथक–पु० [सं० हरि-मन्थकः] १ छोटा मटर। २ चना।

हरियंबुवर–पु० [सं० हरितेन्दुदर] भ्रमर, भौंरा।

हरिय–पु० [सं० हरित] १ वनस्पती। २ पीत वर्ण का घोड़ा।

हरियर–पु० एक प्राचीन राजकुल।

हरियळ (ल)–वि० १ हरे रंग का, हरा। २ जो सूखा न हो; हरा, गीला, नम। (पौधा आदि) ३ हरा-भरा, प्रफुल्लित, पल्लवित-पुष्पित। ४ फलने-फूलने लायक, विकासशील। –पु० एक प्रकार का पक्षी जिसका मांस अच्छा होता है।

हरियाणउ, हरियाणी (नी)–वि० (स्त्री० हरियाणी) १ हरा-भरा, सर-सब्ज। २ प्रसन्न, हर्षित। ३ पुष्पित, पल्लवित। –पु० राजस्थान का सीमावर्ती, भारत का एक प्रान्त।

हरियामूल–पु० वर्षा ऋतु में गाय, भैंस आदि पशुओं के होने वाला एक रोग।

हरियाळ (ल)–पु० [सं० हरिताल] १ वक्त, समय। २ देखो 'हरताळ'।

हरियाळो (लो)–स्त्री० १ हरे-भरे वृक्ष, पौधों या वनस्पतियों का समूह। २ हरी घास, दूब। ३ पेड़-पौधों आदि के पल्लवित होने की अवस्था या स्थिति। ४ आर्द्रता, गीलापन, नमी, सूखेपन का विपर्याय। ५ हरापन। ६ पावस, वर्षा। ७ आनन्द, खुशहाली। (लाक्षणिक)।

हरियाळी अमावस–स्त्री० श्रावण मास की अमावस्या।

हरियाळीटालो–स्त्री० एक लोक गीत विशेष।

हरियालीतीज–स्त्री० श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया।

हरियाळो वनड़ो–पु० १ नया दूल्हा। २ एक लोकगीत।

हरियाळो (लो)–पु० १ हरे-भरे पौधों का समूह, विस्तार। २ किसान स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला एक लोकगीत विशेष। ३ हरी घास। ४ हरा-भरा वातावरण। ५ एक जाति विशेष का घोड़ा। –वि० १ जो सूखा न हो, आर्द्र, ताजा, हरा। २ हरे रंग का, हरा। ३ हरा-भरा।

हरियो-भरियो–वि० १ हरा-भरा। २ पुष्पित-पल्लवित। ३ सुखी, प्रसन्न, प्रफुल्लित, सम्पन्न। ४ पर्याप्त, पूर्ण।

हरियो–पु० [सं० हरित] १ हरा घास, चारा, वनस्पती। २ हरे रंग का विस्तार। ३ एक प्रकार का घोड़ा। –वि० १ हरे रंग का, हरा। २ आर्द्र, नम, तर, सूखे का विपर्याय। ३ पुष्पित, पल्लवित। ४ हरियाली से भरा हुआ। ५ प्रसन्न, प्रफुल्लित। ६ देखो 'हरि'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरिरक्षा–पु० राम रक्षा नामक स्तोत्र ।
हरिरथ–पु० [सं०] विष्णु का वाहन गरुड़
हरिरस–देखो 'रामरस' ।
हरिराणी–स्त्री० १ लक्ष्मी । २ पार्वती । ३ सरस्वती ।
हरिराय–पु० ईश्वर, परमात्मा ।
हरिरूपा–स्त्री० [सं०] विष्णु रूपा, गंगा ।
हरिलंकी–वि० [सं० हरि-लंक] सिंह की कमर के समान पतली कमर वाली, सुन्दरी ।
हरिलीला–स्त्री० [सं०] १ ईश्वर की माया या लीला । २ चौदह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त ।
हरिलोक–पु० [सं०] विष्णु लोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
हरिवंस–पु० [सं० हरिवंश] १ सूर्य वंश । २ कृष्ण वंश । ३ श्रीकृष्ण के वंश के वर्णन वाला महाभारत का परिशिष्ट ।
हरिवंसपुराण (न)–पु० एक पुराण विशेष ।
हरिवल्लभा–देखो 'हरिप्रिया' ।
हरिवसु–वि० [सं० हरि-वश] ईश्वर के अधीन ।
हरिवाम (वामा)–स्त्री० [सं० हरि-वामा] १ लक्ष्मी, कमला । २ सरस्वती । ३ पार्वती । ४ सीता ।
हरिवासर–देखो 'हरिदिन' ।
हरिवाहण (न)–पु० [सं० हरि-वाहन] विष्णु का वाहन, गरुड़ । –वि० पीला, पीत ।
हरिविक्रम–पु० शृंगार का एक आसन ।
हरिव्रत–पु० [सं०] ईश्वर की भक्ति, आराधना ।
हरिव्रती–वि० [सं० हरिव्रतिन्] १ ईश्वर भक्त, हरिभक्त । २ धर्मात्मा, व्रतधारी, भक्त । –पु० [सं० हरिवर्त्ती] पवनचारी पक्षी विशेष ।
हरिसंकर–पु० [स० हरि-शंकर] १ विष्णु का एक नामान्तर । २ विष्णु व शिव की जोड़ी ।
हरिस–पु० [स० हृस] १ अर्श रोग । २ देखो 'हरस' ।
हरिसखा–पु० [स० हरिसखः] १ अर्जुन का एक नामान्तर । २ गंधर्व ।
हरिसेण (न)–पु० १ एक चक्रवर्ती राजा । (जैन) २ ब्रह्म सावर्णि मनु का एक पुत्र ।
हरिस्चंद्र–पु० [सं० हरिश्चन्द्र] त्रिशंकु के पुत्र एक सूर्यवंशी राजा जो विख्यात सत्यवादी एवं दानी थे ।
हरिहस, हरिहसल–देखो 'हरहंस' ।
हरिहर–पु० [सं०] विष्णु व शिव ।
हरी–पु० १ एक वृक्ष विशेष । २ भलाई, हित । ३ देखो 'हरो' । ४ देखो 'हरि' ।
हरीअडो–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
हरीआळी (ली)–देखो 'हरियाळी' ।
हरीख–क्रि०वि० १ हर्षित होकर । २ देखो 'हरस' ।
हरीखणो (णो)–देखो 'हरसणो' (णो) ।
हरीखो–देखो 'हरसित' ।
हरीचंदण (न)–देखो 'हरिचंदण' ।
हरीचरित (चिरत)–देखो 'हरिचरित' ।
हरीजख–देखो 'हरिजख' ।
हरीतकी–स्त्री० [सं०] १ हरड़, हर्र । २ हर्र का पेड़ ।
हरीतणोपिलंग–पु० १ शेषनाग की शैया । २ शेषनाग ।
हरीतन–पु० हरियालो ।
हरीपड़ो–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
हरिपदि (दी)–देखो 'हरिपदि' ।
हरीपुर–देखो 'हरिपुर' ।
हरीफ–वि० [फा०] प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, दुश्मन । –पु० एक प्रकार का वस्त्र ।
हरीभरीवाड़ो–स्त्री० १ पेड़-पौधों, लताओं व पुष्पों से भरा बगीचा । २ हरा-भरा खेत । ३ सुखी व सम्पन्न परिवार ।
हरीयड़–पु० १ एक क्षत्रिय वंश विशेष । २ घोड़ों की एक जाति ।
हरीयड़ो (डो)–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।
हरीयळ, हरीयाळ–देखो 'हरियळ' ।
हरीयोनीलो–पु० एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।
हरीस–पु० [सं० हरीश] १ वानरों का राजा । २ हनुमान ।
हरीसरी–स्त्री० गंगा नदी ।
हरीसो–पु० मांस के योग से बनने वाला एक खाद्य पदार्थ विशेष ।
हरीहय–पु० देवराज इन्द्र ।
हरीहोणी–स्त्री० गाय, भैंस आदि की गर्भवती होने की स्थिति ।
हरेई–पु० एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा ।
हरेक–वि० [फा० हर+सं० एक] प्रत्येक, हरेक ।
हरेबो–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा । २ देखो 'हरेवो' ।
हरेवा–स्त्री० १ हरे रंग की बुल-बुल । २ छोटा मकान ।
हरेयो–स्त्री० १ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ, एक प्रकार की दाल । २ देखो 'हरेबो' ।
हरोळ (ळ), हरोळाई, हरोलिय, हरोळो–देखो 'हरावळ' ।
हरो–पु० १ पौत्र, वंशज । २ ताजो घास या पत्ती का सा रंग । ३ उक्त प्रकार के रंग का घोड़ा । –वि० [सं० हरित] (स्त्री० हरी) १ हरे रंग का, हरा । २ जो सूखा या मुरझाया हुआ न हो । ३ गीला, आर्द्र । ४ खुश, प्रसन्न
हरोळ, हरोळो–देखो 'हरावळ' ।
हर्यो–देखो 'हरियो' ।
हलंत–वि० जिसके अंत में स्वर रहित व्यंजन हो । –पु० स्वर रहित व्यंजन या वर्ण । आधा वर्ण ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हळ–पु० [सं०हल] १ अनाज आदि की बोवाई करने का प्रमुख कृषि यंत्र, उपकरण। २ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ में रहने वाला आयुध विशेष। ३ एक हल द्वारा एक दिन में बोवाई करने लायक भूमि का हिस्सा। ४ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार पैर का एक रेखा चिह्न। ५ अस्त्र-शस्त्रों पर बनी स्वर्णिम रेखा विशेष।

हल–पु० [अ०] १ किसी समस्या का समाधान, निराकरण। २ गणित में किसी सवाल का उत्तर या गुणनफल आदि। [सं० हल्] ३ स्वर रहित शुद्ध व्यंजन। [देश०] ४ गति, चाल। ५ हिलने-डुलने की अवस्था या भाव, झटका, कम्पन। ६ देखो 'हलो'।

हलक–पु० [सं० हल्क] १ गले की नली; कंठ। २ गला। ३ मण्डली। ४ मण्डल, घेरा, वृत्त। ५ क्षेत्र, इलाका। ६ चहल-पहल।

हलकणो (बो)–क्रि० १ भरे हुए पात्र में द्रव पदार्थ का हिलना डुलना। २ हिलना-डुलना। हिलोरे खाना। ३ ललकारना, उकसाना।

हलका–स्त्री० एक प्रकार की कमान।

हळकाई–स्त्री० १ हल्कापन। २ विनम्रता। ३ लघुता, तुच्छता।

हलकाणो (बो)–क्रि० १ हिलाना-डुलाना, हिलोरे देना। २ ललकारना।

हळकापण, हलकापण (णो)–पु० १ वजन या भार की दृष्टि से हल्का होने की अवस्था, गुण, हल्कापन। २ तुच्छता, ओछापन। ३ लघुता, छोटापन।

हलकार–स्त्री० ललकार।

हलकारणो (बो)–क्रि० १ ललकारना, चुनौती देना, उकसाना, जोश, दिलाना। २ हाँकना, प्रेरित करना। ३ बुलाना, पुकारना।

हलकारु, हलकारू (रो)–पु० १ दूत, सदेशवाहक, पत्रवाहक। २ ध्वनि, आवाज।

हळको–वि० (स्त्री० हळकी) १ जो वजनी न हो गुरुता या भार रहित। २ कम, थोड़ा, अल्प। ३ तुच्छ, ओछा, न्यून स्तर का। ४ अशिष्ट, असभ्य, बुरा। ५ अपमानित। ६ मंद, धीमा। ७ पतला, महीन, बारीक। ८ सस्ता या कमजोर। ९ महत्वहीन। १० सुख साध्य, आसान। ११ भार या उत्तरदायित्व से मुक्त। १२ जिसमें कुछ भरा न हो। १३ ताजा प्रफुल्ल।

हलको–पु० [अ० हल्का] १ प्रशासनिक दृष्टि से कोई विशिष्ट क्षेत्र या भू-खण्ड। २ परिधि, वृत्त, घेरा। ३ दल, समूह, झुण्ड। ४ सौ हाथियों का समूह या दल। ५ देखो 'हळको'।

हलक–देखो 'हलक'।

हलकणो (बो)–देखो 'हलकणो' (बो)।

हलको–देखो 'हळको'।

हलख–देखो 'हलक'।

हलखड़ (ड़ो)–पु०कृषि करके जीवनयापन करने वाला, व्यक्ति।

हळगणत–पु० मुफ्त में काम आने वाला हल।

हळगत–पु० खेत जोतने पर हलों के अनुसार लिया जाने वाला कर।

हलगल–स्त्री० १ अफवाह, गप्प। २ समाचार। ३ चर्चा।

हलचल–स्त्री० १ घबराहट, बेचैनी, हड़बड़ाहट। २ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला। ३ भगदड़, अव्यवस्था। ४ कंपन, आतंक, भय। ५ युद्ध, लड़ाई। ६ धूमधाम, रौनक, चहलपहल। ७ गतिशीलता। ८ असर, प्रतिक्रिया। ९ स्वागत, सत्कार। १० कोई क्रिया, हरकत।

हलचलणो (बो)–क्रि०१ घबराहट, होना, बेचैनी होना, हड़बड़ाहट होना, खलबली मचना। २ शोरगुल या हल्ला-गुल्ला होना। ३ भगदड़ मचना, अव्यवस्था होना। ४ आतंकित होना, भयभीत होना। ५ युद्ध होना, लड़ाई होना। ६ धूमधाम होना, रौनक होना, चहल-पहल होना। ७ गतिशील होना। ८ असर होना, प्रभाव होना, प्रतिक्रिया होना। ९ स्वागत-सत्कार होना। १० कोई क्रिया या हरकत होना।

हलचली, हलचलो, हलचल्ल–देखो 'हलचल'।

हलचल्लणो (बो)–देखो 'हलचलणो' (बो)।

हळचो–पु० मेला।

हळछठ–स्त्री० भादव मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि।

हळणो–देखो 'हलाणो'।

हलणो (बो)–१ देखो 'हालणो'(बो)। २ देखो 'हिलणो'(बो)।

हळत-पळत, हळति-पळति–पु० लालन-पोषण, भरण-पोषण।

हळति (ती)–स्त्री० मर्यादा, सीमा।

हळद, हलद–देखो 'हळदी'।

हळदियो–पु० १ एक रोग विशेष जो कामला रोग का ही एक भेद है। २ गेहूं की फसल पकते समय दानों में होने वाला विकार। ३ एक वृक्ष विशेष। –वि० हल्दी जैसे रंग का, पीला, पीत।

हळदी–स्त्री० [सं० हरिद्रा] १ हल्दी नामक पौधे की जड़ जो मिरच मसालों में काम आती है। २ एक लोकगीत विशेष।

हळदीघाटी–स्त्री० मेवाड़ स्थित, अरावली पर्वत श्रेणियों के बीच का एक दर्रा, जहाँ पर महाराणा प्रताप व अकबर की सेना के बीच इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुआ था।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हळब–वि० १ पीला, पीत । २ देखो 'हळदी' ।

हळदरजोड़, हळदरजोड़–पु० बलराम के भाई श्रीकृष्ण ।

हळधर, हलधर–पु०[सं० हलधर] १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम । २ हल चलाने वाला व्यक्ति, कृषक ।

हळधरबंधव–पु० श्रीकृष्ण ।

हळधरनांगळ–पु० हल से संबंधित उपकरण, हल की सामग्री ।

हळनाड़ियो, हळनाड़ो–पु० हल के साथ जूआ बांधने का चमड़े का रस्सा ।

हळपळणो (बो)–देखो 'हळफळणो' (बो) ।

हळपाणि–पु० [सं० हलपाणि] हल जैसा आयुध रखने वाले, बलराम का एक नाम ।

हळफ–स्त्री० [अ०] शपथ, सौगंध ।

हलफनांमो–पु० [अ० हलफ-नामा] शपथ-पत्र ।

हळफळ–स्त्री० १ व्याकुलता, घबराहट, बेचैनी । २ शीघ्रता, ताकीद, उतावली । ३ परेशानी, हैरानी । ४ बातचीत, विचार-विमर्श, हलचल ।

हळफळणो (बो), हुलफलणो (बो), हळफळाणो (बो)–क्रि० १ व्याकुल, बेचैन या अधीर होना । २ घबराना, डरना । ३ आश्चर्य चकित होना, विस्मित होना, चौंकना । ४ दौड़ना, भागना । ५ परेशान होना, हैरान होना । ६ शीघ्रता करना, ताकीद करना ।

हळफळो–वि० (स्त्री० हळफळी) १ जिसका संतुलन खो गया हो, असतुलित । २ व्यग्र, आतुर । ३ शीघ्रता करने वाला ।

हळब–पु० [फा०] फारस की तरफ का एक प्राचीन देश ।

हळबळ–देखो 'हलबल' ।

हळबळणो (बो)–देखो 'हळबळणो' (बो) ।

हळबळाणो (बो)–देखो 'हळबळाणो' (बो) ।

हळबलाहट–स्त्री० १ भय, घबराहट आदि के कारण होने वाली स्थिति । २ शीघ्रता । ३ भगदड़ ।

हळबळो (बो)–पु० १ भय, आतंक । २ शोर-गुल, हल्ला । ३ भगदड़, अव्यवस्था । ४ शीघ्रता, ताकीद ।

हळबांणो–स्त्री० लोहे की लम्बी छड़ जिसका एक सिरा नुकीला होता है ।

हळबांणं–देखो 'हलमांणं' ।

हळबा–देखो 'हळवा' ।

हळबी–वि० हलब देश की, हलब देश संबंधी । –स्त्री० १ एक प्रकार की तलवार । २ एक प्रकार का आईना, शीशा । ३ देखो 'हळवी' ।

हळबेडर–स्त्री० हल के पीछे बंधी रहने वाली, बांस आदि से बनी बीज बोने की नलिका ।

हळबोळ, हलबोल–पु० कोलाहल, शोरगुल ।

हळबळ–देखो 'हळबळ' ।

हळभळी–स्त्री० १ खलबली, भगदड़ । २ घबराहट, बेचैनी । ३ हलचल ।

हलभृत–पु० [सं० हलभृत] बलराम का एक नामान्तर ।

हलमांणं–क्रि०वि० साथ-साथ ।

हलमा–स्त्री० १ हल जोतने वालों से लीजाने वाली बेगार । २ इस बेगार से बचने संबंधी कर ।

हळमुख, हळमुखी–पु० पिंगल में एक छन्द विशेष ।

हुलरावणो (बो)–क्रि० १ छोटे बच्चे को गोद में उठाकर झुलाना, थपकी देकर चुप करना । २ इसी तरह कुछ गुन-गुनाना । ३ पलने में झुलाना, लोरी गाना ।

हुलव–पु० १ अनुगमन । २ चलन, प्रचलन ।

हळवइ, हुलवइ (ई)–देखो 'हळवो' ।

हुलवणो (बो)–देखो 'हालणो' (बो) ।

हळवद (द्)–पु० एक प्रदेश का नाम ।

हळबळ–स्त्री० १ चिंघाड़, चिंघाड़ने की आवाज । २ आवाज, कोलाहल । ३ शीघ्रता, ताकीद । ४ हलचल । ५ कोई शब्द, ध्वनि । ६ भगदड़ । ७ घबराहट, भय । ८ परेशानी, हैरानी । ९ चकाचौंध, कौंध । १० आदर-सत्कार, स्वागत ।

हळबळणो (बो)–क्रि० १ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल होना । २ शीघ्रता या ताकीद करना । ३ उत्सुक होना, व्यग्र होना । ४ तेज चलना, द्रुतगति से जाना । ५ चहल-पहल होना, हलचल होना, आवाज होना, बोलना, शब्द होना । ६ भगदड़ मचना । ७ घबराना, डरना । ८ परेशान होना, हैरान होना । ९ आदर-सत्कार होना, स्वागत होना । १० चकाचौंध होना, कौंधना ।

हळबळाणो (बो)–क्रि० १ हल्लागुल्ला, शोरगुल कराना; कोलाहल कराना । २ शीघ्रता कराना ताकीद करना, त्वरा कराना । ३ उत्सुकता, व्यग्रता, आतुरता जागृत कराना । ४ तेज या द्रुत गति से चलाना । ५ चहल-पहल कराना, हलचल कराना, आवाज करना, बोलाना शब्द कराना । ६ भगदड़ मचवाना । ७ डराना । ८ परेशान करना, हैरान करना । ९ आदर-सत्कार कराना, स्वागत कराना ।

हळबळी–देखो 'हळबळ' ।

हळवां-हळवां–क्रि० वि० धीरे-धीरे ।

हळवांणो, हलवांणो (नो)–देखो 'हळबांणो' ।

हळवा–स्त्री १ उतनी कृषि भूमि जो १०० हलों से (मतान्तर से ४० हल) एक दिन में जोती जा सके । २ फसल के बीच खाली रही जमीन में दुबारा की जाने वाली बोवाई । ३ ऐसी वर्षा जिससे बोवाई के लिये हल चल सके ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हलवाइ, हलवाई, हलवायी–पु० मिठाई बनाने व इसका व्यवसाय करने वाला व्यक्ति, कंदोई । –वि० बातूनी, वाचाल, वाक्पटु ।

हळवाह–पु० १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम । २ देखो 'हळवा' ।

हळवाहण–पु० बैल ।

हळवो, हलवी–वि० १ तुच्छ, ओछी । २ छोटी, लघु, पतली । ३ निर्बल, अशक्त । ४ भारमुक्त, हल्की । ५ सुख साध्य । –क्रि० वि० धीरे-धीरे, शनैः-शनैः ।

हळवे-हळवे, हलवे-हलवे–क्रि० वि० धीरे-धीरे, शनैः शनैः ।

हळवें, हलवें–क्रि०वि० धीरे ।

हळवो–वि० १ छोटा, लघु । २ अल्प, थोड़ा । ३ तुच्छ, ओछा । ४ हल्का, भार मुक्त । ५ आघात या प्रभाव की दृष्टि से हल्का ।

हलवो–पु० १ मैदा, सूजी, आटा आदि को घी में भुनकर, गर्म पानी व शक्कर मिलाकर बनाया जाने वाला एक पकवान विशेष । २ मोहन भोग । ३ देखो 'हळवो' ।

हलसारो–पु० हल को बेगार के बदले दिया जाने वाला कर ।

हलसोटी, हळसीतियो–देखो 'हळोतियो' ।

हळहळ, हलहल–स्त्री० १ शीघ्रता, ताकीद । २ भगदड़, खलबली, हड़बड़ाहट । ३ धूम-धाम, चहल-पहल । ४ कोलाहल-शोरगुल । ५ घबराहट, बेचैनी । –क्रि० वि० धीरे-धीरे, शनैः-शनैः ।

हलहलणो (बो)–क्रि० १ कांपना । २ डरना, घबराना । ३ अधीर होना, विचलित होना । ४ भगदड़ मचना, खलबली मचना । ५ कोलाहल होना, शोरगुल होना । ६ हिलना-डुलना । ७ शीघ्रता करना, ताकीद करना ।

हलहलाणो (बो)–क्रि० १ कंपायमान करना । २ डराना । ३ अधीर करना, विचलित करना । ४ भगदड़ मचवाना । ५ खलबली मचवाना । ६ कोलाहल कराना, शोरगुल कराना । ७ हिलवाना, डुलवाना । ८ शीघ्रता कराना, ताकीद कराना । ९ सलाह करवाना, विचार करवाना ।

हलहली–वि० सजी हुई ।

हलहल्ल–देखो 'हळहळ' ।

हलहल्लणो (बो)–देखो 'हलहलणो' (बो) ।

हलांण–स्त्री० गति, चाल ।

हलांणो–पु० १ कन्या की विदाई, गौना । २ दहेज का सामान, द्रव्य । ३ प्रथम प्रसव के बाद कन्या को दिया जाने वाला सामान व विदाई । ४ प्रस्थान, गमन ।

हलांम–पु० सेना, फौज ।

हला–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती । २ सखी । ३ शराब । ४ पानी, जल ।

हळाई–स्त्री० १ हल को बारह रेखा (सीता) की इकाई । २ इस इकाई वाला खेत का भाग । ३ हल जोतने का समय । (शेखावाटी)

हलाक–वि० [फा०] १ मरा हुआ, मृत, वध किया हुआ । २ नष्ट ।

हलाकत–स्त्री० [फा०] हत्या, वध, नाश ।

हलाकुएस–पु० [फा०] सेना का भयंकर आक्रमण ।

हलाकू–वि० [फा०] मारने वाला, वधिक, हत्यारा ।

हलाणो (बो)–क्रि० १ चलाना, चलायमान करना । चलने के लिये प्रेरित करना । २ गतिमान करना । ३ आगे बढ़ाना, अग्रसर करना, भेजना । ४ रखाना करना सीख देना । ५ घुमाना, फिराना । ६ देखो 'हिलाणो' (बो) ।

हलाणो-चलाणो–देखो 'हुलावो-चलावो' ।

हळाबोळ–वि० १ बिल्कुल, नितान्त, सरासर । २ प्रचंड । ३ ऊपर तक भरा हुआ । लबालब । ४ समुद्र की तरह लहरें देता हुआ । ५ अत्यधिक, बहुत । ६ तेज । ७ बुरा, खराब ।

हळाम–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

हलायुध हलायुध–पु० १ हल के आकार का एक आयुध विशेष, बलराम का आयुध । २ बलराम का एक नामान्तर ।

हलारकी–पु० [देश०] हलार देश में उत्पन्न एक प्रकार का घोड़ा ।

हलारियो–पु० [देश०] कुंभट व बबूल की फली ।

हलाल–वि० [अ०] १ उचित, वाजिब । २ जिसका खाना-पीना धर्म में वर्जित न हो । ३ मुसलमानी शरअ के अनुसार गर्दन पर धीरे-धीरे छुरी चला कर मारा हुआ (बकरा) ।

हलालखोर–पु० [अ०] १ मेहतर, भंगी । २ मुसलमान । –वि० मेहनत या श्रम की कमाई खाने वाला ।

हलालखोरो–पु० [अ०] १ 'हलालखोर' का कार्य । २ मेहनत, परिश्रम । ३ परिश्रम की कमाई ।

हलालियो–वि० कृतज्ञ ।

हलालो–वि० [फा०] १ जिसका कत्ल किया जाय, जिसका हलाल किया जाय । २ हलाल करने वाला । ३ उत्तम, अच्छा । –पु० हलाल करने की क्रिया या भाव ।

हळाव–देखो 'हळाई' ।

हलावणो–देखो 'हलांणो' ।

हलावणो (बो)–१ देखो 'हलाणो' (बो) । २ देखो 'हिलाणो' (बो) ।

हलावो-चलावो–पु० मृतक का शव श्मशान ले जाने की प्रक्रिया ।

हळासोक–वि० विष युक्त ।

हळाह–पु० कबरे रंग का घोड़ा ।

हळाहळ, हळाहळि–पु० [सं० हलाहल] १ प्रचंड विष, महाविष । २ हलाहल योग । (फलित ज्योतिष) –वि० १ प्रचंड, तेज ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ कुपित, नाराज। ३ बिल्कुल, कतई। ४ सरासर, साफ, स्पष्ट।

हलाहिअ–अव्य० अभी, तुरन्त।

हलि–पु० [सं० हलिन्] १ बलराम का एक नामान्तर। २ हल चलाने वाला कृषक। ३ देखो 'हळ'।

हलिइ–देखो 'हळी'।

हलिघर, हलिघरि–देखो 'हळघर'।

हलिप्पिय–पु० [सं० हलिन्-प्रियः] १ कदंब का वृक्ष। २ मद। ३ बलराम का एक नामान्तर।

हलिप्पिया–स्त्री० [सं० हलिन्-प्रिया] १ शराब, मदिरा। २ बलराम की प्रिय वस्तु।

हलिमा–स्त्री० स्कन्द की अनुचरी, एक मातृका।

हलिओ–पु० [सं० हलिन्] १ हल चलाने वाला, कृषक। २ छोटा हल, खिलौना। ३ हल।

हलिवइ (ई)–देखो 'हळवं'।

हली–१ देखो 'हलि'। २ देखो 'हळ'।

हलीपण (णि, णी)–पु० [सं० हल-पाणि] बलराम का एक नामान्तर।

हलीम, हलीम–पु० [सं० हलीम] १ केतकी। [अ० हलीम] २ मुहर्रम में बनने वाला एक प्रकार का खाना। ३ हसन व हुसैन के निमित्त बनने वाला मांस। ४ मांस के योग से बनने वाला एक व्यंजन विशेष। ५ खिचड़ी। ६ गंभीर स्त्री। –वि० १ सहनशील, गंभीर। २ सीधा-सादा, शान्त।

हलीमक–पु० [स०] पाण्डु रोग का एक भेद।

हलील–पु० समुद्र, सागर।

हलोलो–पु० [देश०] साधारण गृह कार्य।

हलीसक–पु० एक प्रकार का नृत्य विशेष।

हलुअउ–१ देखो 'हळवो'। २ देखो 'हलवो'।

हलुआपण (णु, णी)–पु० १ हल्कापन। २ लघुता। ३ ओछापन, तुच्छता।

हलुइ (ई)–क्रि०वि० [सं० लघुकेन] धीरे-धीरे।

हलुआ–देखो 'हळवो'।

हलुओ–देखो 'हलवो'।

हलुकरम–पु० हल्का कार्य।

हलुकरमी (हलूकरमी)–वि० १ हल्के कर्मों वाला, जिसके कर्म न्यून हों। २ शीघ्र मुक्तिगामी।

हलुहार–पु० एक प्रकार का घोड़ा जिसके अंडकोश काले होते हैं और माथे पर दाग होते हैं।

हलू हलूइ–वि० हल्का, धीमा, मन्द।

हलूकमउ–देखो 'हलुकरम'।

हलूकरी–देखो 'हलुकरमी'।

हलूपण–पु० [सं० लघुत्वन] हल्कापन।

हलूर–स्त्री० तरंग, लहर।

हलूस–पु० उत्साह, उमंग।

हलूसणो (वो)–क्रि० १ उत्साहित होना, प्रसन्न होना। २ एकाएक झपटना, उचकना।

हळोबळ–वि० विचलित, व्याकुल।

हळोटी–पु० जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन कर।

हळोतियो–पु० १ मौसम की प्रथम वर्षा के बाद की जाने वाली प्रथम बोवाई। २ बुवाई का मुहूर्त।

हळोद, हळोदपुर–पु० एक प्राचीन शहर का नाम।

हलोर–देखो 'हिलोर'।

हलोरणो (वो)–देखो 'हिलोड़णो' (वो)।

हलोळी–देखो 'हिलोळी'।

हळोवळ, हळोवळां, हळोवळी–क्रि०वि० १ चारों ओर, चौतरफ। २ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

हलो–पु० १ आक्रमण, हमला। २ हल्ला-गुल्ला, शोर-गुल।

हळोतरी, हळोतियो–देखो 'हळोतियो'।

हळको–देखो 'हळको'।

हल्द–देखो 'हळदो'।

हल्दहात (थ)–पु० विवाह के समय वर-वधू के हल्दी लगाने की प्रथा।

हल्दियो–वि० हल्दी के रंग का, पीला। –पु० १ एक शुभ रंग का घोड़ा। २ एक प्रकार का कामला रोग।

हल्ल–स्त्री० १ आवाज, शब्द। २ सेना, फौज। ३ देखो 'हल'। ४ देखो 'हळ'।

हल्लणो (वो)–देखो 'हालणो' (वो)।

हल्लर-फल्लर–पु० १ टालमटोल, उपेक्षा। २ अतिथि सत्कार। ३ खुशामद।

हल्लाणउ–देखो 'हलाणो'।

हल्लाणो (वो)–देखो 'हलाणो' (वो)।

हल्लीसक–पु० १ वर्तुलाकार नृत्य। २ वर्तुलाकार सामूहिक नृत्य।

हल्लो–पु० १ हमला, धावा; आक्रमण। २ शोरगुल; हल्ला, कोलाहल। ३ आवाज, पुकार, शब्द। ४ युद्ध की ललकार, चुनौती। ५ काम-काज, धंधा, कार्य।

हव–पु० [सं०] १ यज्ञ में दी जाने वाली आहुति, बलि, चढ़ावा। २ अग्नि, आग। ३ यज्ञ। –क्रि०वि० १ अभी, इसी समय। २ अब।

हवइ (ई)–क्रि०वि० अब, अभी, इसी समय।

हवण (णि, णी)–पु० १ वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय, हवि। २ घृत, घी।

हवट–पु० घोड़ा, अश्व।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हवड–पु० समय, वेला । –क्रि०वि० अब, अभी ।

हवडां, हवडा–क्रि०वि० [सं० अधुना] १ अब, अभी । २ इधर । ३ कभी भी ।

हवडी–क्रि०वि०[सं० अधुना] १ अब, अभी । २ देखो 'हिवड़ी' ।

हवणार–देखो 'होणहार' ।

हवणी–क्रि०वि० इस समय, अब ।

हवणी (बी)–देखो 'होणी' (बी) ।

हवद (द्द)–१ देखो 'होज' । २ देखो 'होदो' ।

हवदो (द्दो)–देखो 'होदो' ।

हवदाळी–वि० अंबारी युक्त, चारजामा सहित ।

हवन–पुं० १ यज्ञ; होम । २ चढ़ावा, बलि, नैवेद्य । ३ आह्वान, आमन्त्रण, प्रार्थना । ४ ललकार ।

हवनिया–स्त्री० चार मास की अवधि ।

हवनीय–वि० हवन करने योग्य । –पु० घी, घृत ।

हवरु (रू)–क्रि०वि० अभी, इस समय ।

हवलदार–पु० १ सेना या पुलिस का एक छोटा अधिकारी । २ कर वसूली व फसल की निगरानी के लिये नियुक्त अधिकारी ।

हवळै, हवलै–देखो 'हळवै' ।

हवलै-हवलै–देखो 'हळवै-हळवै' ।

हवल्ल–देखो 'हवाल' ।

हवां–देखो 'हों' ।

हवांभाव–देखो 'हावभाव' ।

हवा–स्त्री० [अ०] १ पंचभौतिक पदार्थों में से एक, वायु, पवन । २ झपट, झौंका । ३ वातावरण । ४ धुन, सनक । ५ भूत, प्रेत । ६ मातृका का प्रभाव ।

हवाइ (ई)–पु० १ एक प्रकार का आग्नेयास्त्र । २ एक प्रकार की आतिशबाजी । ३ चार मास या दो ऋतुओं का समय । –वि० १ हवा का, हवा संबंधी । २ हवा में चलने वाला । ३ हवा में छोड़ा जाने वाला । ४ व्यर्थ, निर्मूल, निरर्थक । ५ असत्य ।

हवाई-जंत्र–पु० तोप ।

हवाईमैंस–पु० १ काल्पनिक महल । २ हवामहल ।

हवाचक्की–स्त्री० अनाज आदि पीसने की चक्की जो हवा के प्रभाव से चलती है ।

हवादार–वि० [अ०] जिसमें हवा के आवागमन की पर्याप्त गुंजाइश हो, वातायनों से युक्त ।

हवामहल, हवामैल–पु० ऐसा महल या भवन जिसमें हवा के लिये खिड़की, झरोखे या वातायन अधिक हों ।

हवाल–पु० [अ० हाल] १ दशा, अवस्था, हालत । २ दुर्दशा, बुरा हाल, शोचनीय दशा । ३ हाल-चाल, हालात । ४ समाचार, खबर । ५ विवरण, विगत । ६ परिणाम ।

हवालगी–स्त्री० खर्च के लिये दी गई कुछ अग्रिम राशि ।

हवालगीर–पु० [फा०] राज दरबार का एक पदाधिकारी ।

हवालदार–देखो 'हवलदार' ।

हवालात–स्त्री० १ कारागृह, कैद खाना, जेल । २ नजरबंदी ।

हवालीमुवाली–पु० परिग्रह ।

हवाले, हवालै–वि० [अ० हवाल:] १ सुपुर्द । २ वश में, काबू में ।

हवालो–पु० [अ० हवाल:] १ उल्लेख, वर्णन । २ उदाहरण, मिसाल, दृष्टान्त । ३ प्रमाण । ४ संदर्भ, प्रसंग । ५ हवलदार का कार्यालय । ६ अधिकार, कब्जा । ७ हस्तान्तरण, सुपुर्दगी । ८ खालसे का गाँव । ९ कर, लगान । १० भूमि का लगान वसूल करने वाला विभाग ।

हवास–पु० १ पुष्प, फूल । २ घोड़ा, अश्व ।

हवि, हवि–क्रि०वि० [सं० अथवा, प्रा० अहुवा] अब, अभी । –स्त्री० १ अग्नि, आग । २ हवन सामग्री । ३ घृत, घी ।

हविख (ख)–पु० [सं० हविष] १ घी, घृत । २ हवन करने योग्य पदार्थ ।

हविवाह हविवाहण (न)–देखो 'हव्यवाहन' ।

हविस्मती–स्त्री० [स० हविष्मती] कामधेनु ।

हविस्मांन–पु० [सं० हविष्मन्] यज्ञ कर्ता ।

हविस्यंद–पु० [स० हविष्यंद] विश्वामित्र के पुत्र का नाम ।

हविस्य–वि० [सं० हविष्य] १ हवन करने योग्य । २ जिसकी आहुति दी जाने वाली हो, बलि, हवि ।

हविस्यांन्न–पु० [सं० हविष्यान्न] व्रत में खाने योग्य पदार्थ, फलाहार, आकाहार ।

हवी–देखो 'हवि' ।

हवु–क्रि०वि० अब ।

हवे–देखो 'हवै' ।

हवेजो–स्त्री० चने की दाल डाल कर बनाई गई कढ़ी ।

हवेली–स्त्री० [अ०] दो मंजिला भवन, महल, प्रासाद ।

हवै–क्रि०वि० अब, अभी । –पु० १ स्वीकृति सूचक शब्द, हां । २ होना क्रिया ।

हव्य–पु० [सं०] १ घृत, घी । २ चढ़ावा, नैवेद्य । ३ हवन सामग्री । –वि० हवन करने योग्य ।

हव्यवाह (वाहण, वाहन)–स्त्री० [सं० हव्यवाहन] अग्नि, आग ।

हसंब, हसंभ–देखो 'हसम' ।

हस–पु० [सं० हास्य] हंसी, विनोद, परिहास ।

हसणि (णी)–स्त्री० हंसने की क्रिया या भाव, हंसी, मुस्कान ।

हसणो–पु० हंसने की क्रिया या भाव, हँसी ।

हसणो (बो)–देखो 'हंसणो' (बो) ।

हसत–१ देखो 'हस्त' । २ देखो 'हस्ति' ।

हसतणी–देखो 'हस्तिनी' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हसतनखतर (नखत्र, नखित्र)–पु० [सं० हस्त-नक्षत्र] खुले हाथ की आकृति वाला एक नक्षत्र विशेष ।

हसतबंध–देखो 'गजबंध' ।

हसति हसती–देखो 'हस्ति' ।

हसतीबंद, हसतीबंध–देखो 'गजबंध' ।

हसतेजामा–पु० एक प्रकार का सरकारी कर ।

हसत्ति, हसत्ती–देखो 'हस्ति' ।

हसन–स्त्री० [सं०] १ हंसने की क्रिया या भाव. हंसी । २ मजाक, दिल्लगी, विनोद। हास-परिहास । –पु० ३ अली के दो पुत्रों में से एक ।

हसब–अव्य० [प०] अनुसार, मुताबिक ।

हसम–पु० [अ०] १ सेना, फौज । २ अश्व, घोड़ा । ३ लश्कर, समूह । ४ नौकर, सेवक । ५ भाग्य । ६ वैभव । —पत, पति, पती–पु० सेनापति ।

हसमस–पु० १ धक्का, प्रहार । २ उत्साह जोश ।

हसमसणो (बो)–क्रि० १ धक्का देना, ढकेलना । २ उत्साह दिखाना, जोश दिखाना ।

हसम्म (म्मि, म्मी)–देखो 'हसम' ।

हसर–पु० सिंगाले के सवारों का एक भेद ।

हसाइ, हसाई–स्त्री० १ हंसी, मजाक । २ अपकीर्ति ।

हसाणो (बो)–देखो 'हंसाणो' (बो) ।

हसाब–वि० १ उचित, वाजिब, ठीक । २ श्रेष्ठ, उत्तम । ३ देखो 'हिसाब' ।

हसारथ–स्त्री० हंसी ।

हसावणो (बो)–देखो 'हंसाणो' (बो) ।

हसि–देखो 'हंसी' ।

हसित–पु० पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक । –वि० हंसा हुआ, खुश, प्रसन्न, हर्षित । —मुखा–वि० हर्षित या हंसते मुंह वाला ।

हसियसद्द–पु० हास्य शब्द ।

हसी–देखो 'हंसी' ।

हसीम–देखो 'हसम' ।

हसेर–पु० एक वृक्ष विशेष ।

हसो–पु० हंसने की क्रिया या भाव, हंसी, विनोद, हास्य ।

हस्त–पु० [सं०] १ कुहनी से अंगुलियों तक का भाग, कर, हाथ । २ हाथ की लंबाई का माप, परिमाण । ३ हाथ के आकार का एक नक्षत्र जो पांच तारों का होता है । ४ हस्तलिपि । ५ प्रमाण, सबूत । ६ सहायता, मदद । ७ नृत्य का एक भाव । ८ देखो 'हस्ति' ।

हस्तउड–पु० [सं० हस्त-उडु] पांच तारों वाला, हाथ के आकार का एक नक्षत्र ।

हस्तक–पु० [सं०] १ हाथ, हस्त । २ संगीत की एक ताल ।

हस्तकौसळ–पु० [सं० हस्तकौशल] हस्त-लाघव, हाथ की सफाई, हस्तकला ।

हस्तक्रिया–स्त्री० [सं०] १ हाथ के कार्य की निपुणता । २ हाथ से इन्द्रिय संचालन ।

हस्तक्षेप–पु० [सं०] किसी कार्य में या बात में किया जाने वाला दखल ।

हस्तगत–वि० जो हाथ में आगया हो । –वि० अधिकार में, काबू में ।

हस्तग्रह–पु० [सं०] पाणिग्रहण, विवाह संस्कार ।

हस्तणी–देखो 'हस्तिनी' ।

हस्तत्राण–पु० [सं० हस्तत्राण] अस्त्र-शस्त्रों से रक्षा के लिये हाथ में पहना जाने वाला दस्ताना या कवच ।

हस्तनक्षत्र (नखत्र)–पु० [सं० हस्तनक्षत्र] पांच तारों वाला, हाथ के आकार का नक्षत्र ।

हस्तनी–देखो 'हस्तिनी' ।

हस्तपुर–देखो 'हस्तिनापुर' ।

हस्तपुरपत (पति)–पु० [सं० हस्तिनापुर-पति] युधिष्ठिर का एक नामान्तर ।

हस्तबंध–देखो 'गजबंध' ।

हस्तभुजासण (न)–पु० योग के चौरासी आसनों में से एक आसन ।

हस्तरेखा–स्त्री० [सं०] हाथों की रेखा ।

हस्तलक्षण–पु० [सं०] हथेली में बनी रेखाओं के अनुसार शुभाशुभ भाग्य का निर्णय ।

हस्तलाघव–पु० [सं०] १ चौसठ कलाओं में से एक । २ हस्त कौशल ।

हस्तलिखित–वि० [सं०] किसी लेखक, पंडित या रचयिता के हाथ का लिखा हुआ ।

हस्तवृक्षासन, हस्तव्रक्षासण (न), हस्तव्रिक्षासण (न)–पु० [सं० हस्तवृक्षासन] योग के चौरासी आसनों में से एक ।

हस्तसंकलिका–स्त्री० [सं०] हाथ का एक आभूषण विशेष ।

हस्तसूत्र–पु० [सं०] रक्षा बन्धन ।

हस्तांगुस्क–पु० एक प्रकार का वस्त्र ।

हस्ताक्षर–पु० [सं०] किसी लिखावट के नीचे या कहीं अन्यत्र, अपनी सहमति के रूप में अपने हाथ से लिखा जाने वाला अपना नाम, दस्तखत ।

हस्ति–पु० [सं०] १ हाथी, गज । २ ऐरावत । ३ हाथों की सूंड । ४ बरछी ।

हस्तिणि (णी)–देखो 'हस्तिनि' ।

हस्तिनागपुर (पुर), हस्तिनापुर–पु० [सं० हस्तिनापुर] कुरु प्रदेश की राजधानी जो गंगा तट पर मेरठ जिले में थी । यह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरठ से २२ मील उत्तर पूर्व में थी जो गंगा के प्रवाह में डूबकर नष्ट हो गई।

हस्तिनी–स्त्री० [सं०] १ मादा, हाथी। २ चार प्रकार की स्त्रियों में से स्थूल अंगों वाली स्त्री। ३ एक सुगंध द्रव्य, रूखरी। ४ आर्या (गाथा) छन्द का एक भेद।

हस्तिमुख–पु० गणेश का एक नामान्तर।

हस्तिशाळ, हस्तिसाल, हस्तिसाळा, हस्तिसाला–स्त्री० [सं० हस्ति-शाला] हाथियों को बांध कर रखने का स्थान।

हस्ती–पु० [फा०] १ कोई अस्तित्ववान या प्रभावशाली व्यक्ति। २ अस्तित्व, सामर्थ्य, शक्ति। [सं०] ३ एक चन्द्रवंशी राजा जिसने हस्तिनापुर बसाया था। ४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ५ देखो 'हस्ति'।

हस्तीबंद (बंध)–देखो 'गजबंध'।

हस्ते, हस्तें–क्रि०वि० [सं० हस्त] १ हाथ से, मार्फत, द्वारा। २ हाथ में, हाथ पर। ३ तालके, हवाले।

हस्म, हस्म्म–देखो 'हसम'।

हहंकार, हहकार (री)–देखो 'हाहाकार'।

हहयाधीस–पु० [सं० हहयाधीश] सहस्रार्जुन।

हहरणी (बी)–क्रि० १ कांपना, थर्राना, धूजना। २ डरना, भयभीत होना।

हहराणी (बी)–क्रि० १ कंपाना, धूजाना। २ डरवाना, भयभीत करवाना।

हहलाणउ, हहलाणी–देखो 'हलाणी'।

हहा–स्त्री० १ हंसने की ध्वनि। २ हंसी, मजाक, ठट्ठा। ३ दुःख या पश्चात्ताप सूचक ध्वनि 'हहा'। ४ विनती। ५ गिड़गिड़ाहट। ६ एक गंधर्व।

हही–पु० १ हंसी, मजाक, परिहास, विनोद। २ देवनागरी वर्णमाला का अन्तिम वर्ण 'ह'।

हां–अव्य० [सं० आम्] १ स्वीकृति या सम्मति सूचक अव्यय। २ किसी प्रश्न, आवाज या सम्बोधन के उत्तर में बोला जाने वाला शब्द। ३ होने की अवस्था या दशा।

हांक–देखो 'हाक'।

हांकणी (बी)–क्रि० १ रथ में जुते घोड़ों या गाड़ी में जुते बैलों को चलाना, चलाने की क्रिया करना, हांकना। २ प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना। ३ बढ़-बढ़ कर बातें करना, शेखी बघारना, गर्व मारना। ४ चलाना। ५ आवाज देना, पुकारना। ६ चिल्लाना।

हांकरणी (बी)–क्रि० १ हां करना, स्वीकार करना। २ मानना, कबूल करना।

हांकल–स्त्री० १ जोर की पुकार, आवाज। २ ललकार। ३ देखो 'हाक'।

हांकळणी (बी)–देखो 'हाकलणी' (बी)।

हांकांधाकां–देखो 'हाकांधाकां'।

हांकार–पु० १ हां, स्वीकृति। २ देखो 'हुंकार'।

हांकारणी (बी)–क्रि० १ स्वीकार करना, अंगीकार करना। २ मनवाना, कबूल कराना।

हांकारो–देखो 'हुंकारो'।

हांचळ–पु० [सं० अञ्चल] १ किसी स्त्री के उरोज, स्तन। २ मादा पशु या जानवरों के स्तन।

हांजी–पु० १ 'हां' करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति सूचक शब्द। २ हां में हां मिलाने की क्रिया या भाव। ३ बड़े व्यक्ति के पुकारने पर प्रत्युत्तर में कहा जाने वाला आदर युक्त शब्द। ४ लोकगीतों में प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक सम्बोधन।

हांजीड़ो–वि० हां में हां मिलाने वाला, चापलूस।

हांडणो–वि० [सं० हिण्ड] १ अवारा घूमने वाला, अवारा। २ भटकने वाला।

हांडणी (बी)–देखो 'हांढणी' (बी)।

हांडलउ, हांडलो–देखो 'हांडो'।

हांडाडोयो–पु० रसोईघर या पाकशाला संबंधी कार्य।

हांडी–स्त्री० [सं० हण्डिका] १ मिट्टी का बना, बटलोई के आकार का, मझौला बर्तन। २ पात्र।

हांडो–पु० १ बड़े पेट का मिट्टी का बर्तन, बड़ी हंडिया। २ कोई बड़ा पात्र। ३ बड़े पेट वाला व्यक्ति। ४ मोटा-ताजा आदमी।

हांढणो (बी)–क्रि० [सं० हिण्ड] १ भटकते हुए फिरना, भटकना। दर-दर की ठोकरें खाना। २ अवारा घूमना, अवारा फिरना।

हांण–स्त्री० १ ऊंट के, जवानी के दांत। २ दांतों के अनुसार ऊंट की आयु का निर्णय। ३ आयु। ४ शत्रु। ५ देखो 'हांणि'।

हांणक–पु० [सं० हानिक] दुश्मन, शत्रु, वैरी। –वि० १ हानि या नुकसान पहुंचाने वाला। २ चोट करने वाला।

हांणकांण–स्त्री० १ किसी कार्य या चलते समय की जाने वाली त्वरा, आतुराई। २ श्वास की तीव्र गति। –वि० १ अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त। २ भयभीत, डरा हुआ। ३ विकल, व्याकुल, बदहवास।

हांणि, हांणी–स्त्री० [सं० हानि] १ नुकसान, हानि, क्षति। २ नाश, संहार, बरबादी। ३ ह्रास, क्षय। ४ अभाव, कमी। ५ बुराई, अपकार, अनिष्ट। ६ घाटा। ७ छूट, त्याग। ८ असफलता। ९ अनुपस्थिति। १० कष्ट, दुःख, तकलीफ।

हांणीकर (कारक)–वि० [सं० हानिकारक] १ नुकसानदायक, हानिकारक, हानिप्रद। २ कष्ट-प्रद, दुःखदायी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हांणू–वि० १ हनन करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला। २ हानि पहुँचाने वाला, नुकसानदायक।

हांणे. हांर्ण–१ देखो 'हणां'। २ देखो हांने।

हांती–स्त्री० [सं० हिन्त + अण्=हान्ती] विवाहादि विशिष्ट अवसरों पर बने भोजन विशेष का अंश, जो सबंधियों व मिलने वालों के घर बांटा जाता है।

हांतो–पु० १ नवरात्र स्थापना पर देवी के निमित्त दीवार पर चिपकाये जाने वाले रंग-बिरंगे कागजों के चिह्न। २ नुकसान।

हांन–१ देखो 'हांण'। २ देखो 'हाणि'।

हांनि, हांनी–देखो 'हाणि'।

हांने, हांर्न–क्रि०वि० १ यथास्थान। २ अधिकार में, कब्जे में, वश में।

हांनो–पु० ऊंट के चारजामे का अगला भाग, जीन का अगला भाग।

हांपणो (बो)–देखो 'हांफणो' (बो)।

हांफ–स्त्री० उमंग, इच्छा, रुझाहिश।

हांफणी–स्त्री० १ तीव्र गति से श्वास आने की दशा या भाव। २ श्वास रोग, दमा की बीमारी।

हांफणो (बो)–क्रि० [सं० उष्मायते] तीव्र गति से श्वास लेना, उसांसें भरना, हांफना।

हांफरड़ें–क्रि०वि० हांफते हुए।

हांफळणो (बो)–क्रि० उतावला होना, आतुर होना।

हांफो–देखो 'हांफणो'।

हांभाड़–स्त्री० गाय के रंभाने से उत्पन्न ध्वनि।

हांम–स्त्री० १ मन की इच्छा, कामना, अभिलाषा, चाह, मनोरथ। २ उत्कण्ठा, लालसा। ३ उत्साह, उमंग, जोश। ४ क्षमता, योग्यता। ५ धैर्य, धीरज। [प० हाम:] ६ कपाल, खोपड़ी, मस्तक। ७ अपने गोत्र या जाति का नाम।

हांमकांम–पु० मन का आवेग।

हांमकांमलोचनी–स्त्री० १ कामुक नेत्रों वाली स्त्री, मदिरेक्षणा। २ अत्यन्त सुन्दर।

हांमकांमा–स्त्री० १ अत्यन्त सुन्दर नेत्रों वाली स्त्री। २ इच्छा पूर्ण करने वाली स्त्री। ३ रति की इच्छा करने वाली स्त्री।

हांमगोर–देखो 'हमगोर'।

हांमळ–स्त्री० स्वीकृति, स्वीकारोक्ति, सहमति।

हांमलो–वि० (स्त्री० हांमली) १ प्रसन्नचित्त, खुश। २ सौहार्द पूर्ण। ३ विनम्र।

हांमस–स्त्री० इच्छा, कामना।

हांमी–स्त्री० १ हां करने या स्वीकारने की क्रिया या भाव, स्वीकृति। २ सहमति। –वि० शुभचिंतक, हितैषी, मददगार।

हांमू–देखो 'हांम'।

हांयलो–देखो 'हांसली'।

हांस–पु० १ स्त्रियों के गले में पहनने का आभूषण विशेष। २ देखो हंस'।

हांसउ–देखो 'हांसो'।

हांसढ़ो–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा। २ देखो 'हांसो'।

हांसस–पु० १ एक प्रकार का घोड़ा। २ देखो 'हासिल'।

हांसली–स्त्री० १ मनुष्य की छाती के ऊपर की धनुषाकार हड्डी। २ गले में पहनने का एक चन्द्राकार आभूषण।

हांसलोडी, हांसलोवी–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

हांससो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

हांसिल–देखो 'हासिल'।

हांसी–स्त्री० १ श्वास रोग से पीड़ित एक प्रकार की गाय। २ देखो 'हंसी'।

हांसो–पु० [सं० हास्य] १ हंसने की क्रिया या भाव। २ हंसी, विनोद, मजाक, परिहास। ३ किसी की उपेक्षा करने या अपमान करने के लिये किया जाने वाला व्यंग, उपहास, दिल्लगी, खिल्ली। ४ हंसने की ध्वनि। ५ सफेद जीभ वाला बैल। ६ देखो 'हंसो'। ७ देखो 'हंस'।

हां-हां–अव्य० मुंह से कहा जाने वाला शब्द जिसके उच्चारण भेद से स्वीकृति या निषेधात्मक अर्थ प्रकट होता है।

हा–अव्य० [सं०] १ दुःख, उदासी, पीड़ा के अर्थ में मुंह से की जाने वाली ध्वनि। २ आश्चर्य या आह्लाद सूचक शब्द। ३ क्रोध या भर्त्सना सूचक ध्वनि। ४ है का भूतकालिक रूप था, थे। ५ एवम्, अथ।

हाइभाइ, हाउभाउ–देखो 'हावभाव'।

हाऊ–पु० बच्चों को डराने-धमकाने के उद्देश्य से बताया जाने वाला एक काल्पनिक जंतु, हौवा।

हाऊबोर–पु० बेरों की एक जाति व इस जाति का बेर।

हाक–स्त्री० [सं० हक्क] १ जोर से पुकारने का शब्द, आवाज, पुकार। २ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल। ३ हुंकार, वीर ध्वनि। ४ ललकार। ५ प्रेरित या उत्साहित करने संबंधी शब्द। ६ खिल्लाहट। ७ ऊंची आवाज या जोर का शब्द। ८ समूह का सम्मिलित स्वर। ९ डांट-फटकार, प्रताड़ना। १० डर, भय, आतंक।

हाकड़णो (बो)–क्रि० [सं० हिक्किकतिम्] अटकते-अटकते बोलना, हकलाना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाकड़ियो–वि० १ तेज चाल से चलने वाला। २ देखो 'हाकडो'।

हाकड़ो–पु० [देश०] १ सतलज नदी से संबंधित एक नद। (स्त्री० हाकडी) २ हकलाते हुए बोलने वाला व्यक्ति।

हाकडाक–स्त्री० [सं० हक्क-डाकृति] १ रणभेरी, रणवाद्य। वीरों की हुंकार।

हाकणो–वि० १ ललकारने वाली, हांकने वाली। २ देखो 'हाक'।

हाकणो (बो)–देखो 'हांकणो' (बो)।

हाकबंदाळ–वि० बहादुर, वीर, पराक्रमी।

हाकबाक, हाकबाक–देखो 'हाकियो-बाकियो'।

हाकम–देखो 'हाकिम'।

हाकमारोघरुलाग–स्त्री० प्रजा से वसूल किया जाने वाला एक कर विशेष।

हाकमी–देखो 'हाकिमी'।

हाकर-डाकर–स्त्री० वीरों की हुंकार।

हाकरणो (बो)–क्रि० १ गरजना, दहाड़ना। २ ललकारना, चुनौती देना। ३ चिल्लाना। ४ देखो 'हांकणो' (बो)। ५ देखो 'हांकरणो' (बो)।

हाकळ–पु० १ चौदह मात्रा का एक छन्द विशेष। २ एक वर्णिक छन्द विशेष।

हाकल–देखो 'हाक'।

हाकलणो (बो)–क्रि० १ चलाना, हांकना। २ ललकारना चुनौती देना। ३ प्रोत्साहित करना, उत्साह देना। ४ डांटना, फटकारना, दुत्कारना। ५ जोश दिलाना, उत्तेजित करना। ६ जोर से पुकारना, आवाज देना। ७ हुंकार भरना, गरजना। ८ डराना, भयभीत करना।

हाकळि–१ देखो 'हाकळ'। २ देखो 'हाकळी'।

हाकळिका–स्त्री० पन्द्रह अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।

हाकळियो–वि० हकलाकर बोलने वाला, हकलाने वाला।

हाकळो–स्त्री० १ दश अक्षरों वाला एक वर्ण वृत्त। २ देखो 'हाकल'।

हाकल्ल–पु० १ फौज, सेना। २ घोड़ा, अश्व। ३ सिपाही, सैनिक। –वि० १ हांका जाने वाला। २ देखो 'हाकल'।

हाकहोक हाकहूक–देखो 'हाकाहाक'।

हाकांणो–पु० दुर्भिक्ष के समय मवेशी को पानी व घास वाले प्रदेश में ले जाना क्रिया।

हाकांताकां हाकांघाकां–क्रि०वि० १ देखते देखते, खुले आम। २ बलात्, हठात्।

हाकाबड़बड़–पु० शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

हाकार, हाकारो–देखो 'हाहाकार'।

हाकालणो (बो)–देखो 'हाकलणो' (बो)।

हाकाहाक–स्त्री० १ बहुत से व्यक्तियों के सम्मिलित स्वर से होने वाली तेज आवाज शोरगुल, हल्ला-गुल्ला। २ हुंकार, वीर हाक, वीर ध्वनि।

हाकि–देखो 'हाक'।

हाकिनी–स्त्री० तंत्र की एक प्रकार की घोर देवी।

हाकिम–पु० [अ०] १ राजा, नरेश, बादशाह। २ स्वामी, मालिक। ३ शासक। ४ अध्यक्ष, सरदार, नेता। ५ किसी प्रान्त या जिले का सबसे बड़ा अधिकारी, हुकूमत करने वाला, शासन करने वाला हुक्म चलाने वाला।

हाकिमी–स्त्री० [अ०] १ हाकिम का कार्य या पद। २ शासन, हुकूमत। ३ स्वामित्व।

हाकियो-बाकियो–वि० (स्त्री० हाकीबाकी) हक्का-बक्का, भौंचक्का, हतप्रभ। स्तब्ध।

हाकोटणो (बो)–क्रि० हांकना।

हाकोटो–वि० १ प्रसन्न, खुश। २ स्वस्थ, स्वच्छ।

हाकोबेदो–पु० शोरगुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल।

हाको–पु० १ जोर का शब्द या आवाज। २ पुकार, आवाज। ३ शोर, हल्ला-गुल्ला। ४ ललकार, चुनौती। ५ किसी को बुलाने या लोगों को एकत्र करने के लिए किया जाने वाला हल्ला। ६ चर्चा, खबर, अफवाह। ७ धिक्कार, फटकार; डांट। ८ चिल्लाहट, हायतोबा। ९ गर्जना, हुंकार। १० बहुत से लोगों या प्राणियों का समवेत स्वर, शोर।

हाक्यो-बाक्यो–देखो हाकियो-बाकियो'।

हागड़धाट–पु० १ आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, विनोद। २ वैभव, ठाट-बाट।

हागड़दि हागड़दि–स्त्री० हाहाकार, आहि-त्राहि।

हागड़धाट–देखो 'हागडधाट'।

हाड़ो–स्त्री० रबी की फसल।

हाजत–स्त्री० [अ०] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा, ख्वाहिश। २ मलत्याग की इच्छा, टट्टी की शंका। ३ शंका, संदेह।

हाजमो–पु० [अ० हाजिम] पाचन शक्ति, पाचन क्रिया।

हाजर–देखो हाजिर'।

हाजरजवाब–देखो 'हाजिर-जवाब'।

हाजरनाजिर–पु० वह नौकर या सेवक जो हर समय सेवा में उपस्थित रहे। –वि० तैयार, उपस्थित। –क्रि०वि० खुले आम, दिन दहाड़े।

हाजरि–देखो 'हाजिर'।

हाजरियो–पु० १ सेवक, अनुचर, नौकर। २ संदेश वाहक। ३ हाथ में रखने का डंडा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाजरी–स्त्री० [अ० हाजिरी] १ उपस्थिति, मौजूदगी या वर्तमान होने की अवस्था। २ विशेष कार्य या अवसर पर उपस्थिति। ३ नौकरी, स्कूल या कार्य पर उपस्थित होने के हस्ताक्षर, उपस्थिति। ४ कार्य, कर्त्तव्य। ५ सेवा, चाकरी, टहल। ६ अपने कार्य या स्वार्थ सिद्धि के लिये बार-बार जाने की क्रिया या भाव। ७ देखो 'हाजिर'।

हाजित–देखो 'हाजत'।

हाजिर–वि० [अ०] १ उपस्थित, मौजूद, विद्यमान। २ प्रस्तुत। ३ सन्नद्ध, सावधान। ४ उपलब्ध।

हाजिर-जवाब–वि० [अ०] १ किसी बात का तत्काल उत्तर देने वाला। २ प्रत्युत्पन्न मति या कुशाग्र बुद्धि वाला।

हाजिरजवाबी–स्त्री० [अ०] १ 'हाजिर-जवाब' होने की अवस्था या भाव। २ तुरन्त जवाब देने की क्षमता।

हाजिरात–स्त्री० [अ०] भूत-प्रेत आदि को बुलाने की क्रिया।

हाजिरि–पु० १ छड़ीदार, प्रतिहार। २ देखो 'हाजरी'।

हाजिरियो–देखो 'हाजरियो'।

हाजिरी–१ देखो 'हाजरी'। २ देखो 'हाजिरी'।

हाजी–पु० [अ०] वह व्यक्ति जिससे हज की यात्रा करली हो, हज किया हुआ।

हाजी-बिट्ठल–पु० मुसलमान हिजड़ों का एक पीर।

हाट–स्त्री० [सं० हट्ट] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहाँ वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है, दुकान। २ बाजार। ३ सुनार लोहार आदि के कार्य करने का स्थान या कक्ष।

हाटक–पु० [सं०] १ स्वर्ण, सोना। २ देखो 'हाट'।

हाटककोट, हाटकपुर–पु० [सं०] स्वर्ण निर्मित नगर लंका।

हाटकलोचन (न)–पु० [सं० हाटक-लोचन] हिरण्याक्ष नामक दैत्य।

हाटकेस–पु० [सं० हाटकेश] शिव की एक मूर्ति जिसकी उपासना गोदावरी के तट पर होती है।

हाटड़ि, हाटडि, हाटडी–१ देखो 'हाट'। २ देखो 'हटड़ी'।

हाटी–पु० [सं० हाट्टिक] १ हाट लगाने वाला वणिक, व्यापारी। २ देखो 'हाट'।

हाटेडो–पु० [सं० हाट्टिका] हाट पर सामान बेचने वाला, दुकानदार।

हाटोहाट–क्रि०वि० एक दुकान से दूसरी दुकान, दुकान-दुकान पर।

हाठ–देखो 'हाट'।

हाठु, हाठू–देखो 'आंठू'।

हाड, हाडक–पु० [सं० हड्ड] १ किसी प्राणी के शरीर का अस्थि समूह, हड्डी, अस्थि। २ मृत प्राणी के शरीर की हड्डी का टुकड़ा, अंश, हड्डी। ३ शरीर, पिंड। ४ वंश का गौरव, वंश की मर्यादा, कुलीनता। –वि० सफेद, श्वेत।

हाडकाड़ो (हाडकोड़)–पु० वह स्थान जहां मृत पशुओं की हड्डियां पड़ी रहती हैं।

हाडको, हाडको, हाडख–देखो 'हाड'।

हाडजळ–पु० अग्नि, आग।

हाडजुर–पु० एक प्रकार का ज्वर।

हाडकूटणो, हाडकूटि, हाडकूटी–स्त्री० [सं० हड्डस्फूटि] हड्डियों में होने वाली पीड़ा, दर्द।

हाडफोड़–वि० १ बलवान। २ मांसाहारी।

हाडबरड़–वि० जबरदस्त।

हाडबैर, हाडबैर–पु० [सं० हड्ड-वैर] पारिवारिक सदस्य या संबंधी को मारने के बदले में बंधने वाली शत्रुता, दुश्मनी, वैर।

हाडवढ़ियो–पु० कृषि कार्य में खेत में काम कराने के बदले काम करने वाला व्यक्ति।

हाडवढ़ी–स्त्री० काम के बदले काम करने की क्रिया (कृषि)।

हाडसंकसि–स्त्री० [सं० हड्ड + शृंखला] अस्थि-पंजर, अस्थि-समूह।

हाडहोड, हाडहौड–स्त्री० १ प्रतिस्पर्द्धा। २ बहस, तर्क, दलील। ३ शोरगुल, हल्ला।

हाडा–पु० १ चौहान क्षत्रियों की एक शाखा। २ राठौड़ों की एक उपशाखा।

हाडारोखेत–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का क्षुप।

हाडारोतिल–पु० एक प्रकार का तिलहन जो बिना बोये उत्पन्न होता है।

हाडि–१ देखो 'हाड'। २ देखो 'हाडो'।

हाडी–स्त्री० १ 'हाडा' राजपूतों की पुत्री; 'हाडा' जाति की स्त्री। २ मादा कीड़ा। ३ ऊंटों का एक रोग जिससे उसके पिछले पैर की हड्डी बाहर निकल आती है। ४ देखो 'हाड'।

हाडेराव–देखो 'हाडोराव'।

हाडोघास–पु० वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का घास।

हाडोतण–स्त्री० १ हाडोती प्रदेश की वस्तु। २ हाडोती प्रदेश में उत्पन्न तमाखू। ३ देखो 'हाडो'।

हाडोती–स्त्री० १ "हाडा" चौहानों के राज्य वाला क्षेत्र, वर्तमान में कोटा-बूंदी वाला राजस्थान का क्षेत्र। २ इस क्षेत्र की बोली।

हाडोराव–पु० १ हाडा शाखा का क्षत्रिय राजा। २ एक लोक गीत विशेष।

हाडोहाड–देखो 'हाडोहाड'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हाडी–पु० (स्त्री० हाडी) १ हाडा जाति का क्षत्रिय। २ कोवा।

हाडोहाड–क्रि० वि० १ अंग-प्रत्यंग में, सम्पूर्ण अंग में। २ यथोचित, ठीक।

हात–देखो 'हाथ'।

हातकमाई–स्त्री० १ स्वयं का उपार्जित धन, खुद की कमाई। २ अपने हाथ या परिश्रम से बनी वस्तु।

हातळ–देखो 'हाथळ'।

हातळियो–देखो 'हाथ'।

हातळो–स्त्री० आरा की मूठ या बेंट। छोटा हत्था।

हातवीसाळी–देखो 'बीसहत्थी'।

हाता–वि० संहार या हनन करने वाला।

हातापाई–स्त्री० १ द्वन्द्व युद्ध, झगड़ा। २ हाथ-पांव मार कर की जाने वाली छोटी-मोटी लड़ाई। ३ मस्ती।

हातिम–वि० [अ०] १ दानी, उदार। २ निपुण, चतुर। –पु० १ न्यायाधीश, जज। २ काजी। ३ एक बड़ा कौआ।

हाती–देखो 'हाथी'।

हाते, हातै–क्रि०वि० १ हाथ से। २ स्वयमेव, स्वतः। ३ हाथ में।

हातोताळी–क्रि०वि० शीघ्र, जल्दी।

हातोपाई–स्त्री० १ हस्त प्रक्षालन, हाथों को धोना क्रिया। २ देखो 'हातापाई'।

हातोहाथ (हाथ)–देखो 'हाथोहाथ'।

हाती–पु० १ घेरा हुआ स्थान, अहाता। २ सीमा, हद। ३ रोक, निषेध। ४ नवरात्र स्थापना पर देवी के निमित्त, दीवार पर चिपकाये जाने वाले रंग-बिरंगे कागजों के चिह्न। ५ देखो 'हाथी'।

हात्थियो, हात्थीयो–देखो 'हाथी'।

हाथ–पु० [सं० हस्त] १ मनुष्य जाति के प्राणियों के शरीर का प्रमुख अंग जिससे समस्त क्रियायें सम्पादित की जाती हैं, कर, हस्त। २ मनुष्य के हाथ की कुहनी से पंजे तक की लम्बाई का एक नाप। ३ हाथ के पंजे का चिह्न। ४ ताश के खेल में बनने वाला सर। ५ चौसर के खेल में एक पासा। ६ पारी। –क्रि०वि० १ वश या काबू में, अधिकार में। २ देखो 'हासिल'।

हाथकड़ी–देखो 'हथकड़ी'।

हाथकांम–पु० यज्ञोपवीत, विवाहादि मांगलिक कार्य का प्रारंभ एवं गणेश पूजन।

हाथखरच–पु० [सं० हस्त + फा० खर्च] १ भोजन-वस्त्रादि के अतिरिक्त व्यसन, शौक संबंधी निजी खर्च। २ ऐसे खर्च की निर्धारित राशि। ३ राजाओं द्वारा सामन्तों को उनकी जागीर के बदले में दिया जाने वाला धन जिससे वे अपना निर्वाह करते थे।

हाथगरो–वि० आश्रित।

हाथड़, हाथड़ी–१ देखो 'हाथ'। २ देखो 'हाथळ'।

हाथफूल–देखो 'हथफूल'।

हाथबाथ–स्त्री० इच्छानुसार तेज चलने वाली ऊंटनी।

हाथरू–पु० हाथी, गजराज।

हाथरोकूरब–पु० देशी राजाओं को दिया जाने वाला सम्मान या ताजीम।

हाथळ–स्त्री० [सं० हस्त-तल] १ सिंह का अगला पंजा। २ हाथ का पंजा, हथेली, करतल। ३ बांह, भुजा। ४ शस्त्र प्रहार। ५ हाथ का कवच। ६ देखो 'हाथ'

हाथळचेरो–स्त्री० हर समय उपस्थित रहने वाली दासी।

हाथळणो(बो)–क्रि० हाथ के पंजे से प्रहार करना।

हाथलियो–पु० हल के ऊपर बना हत्था, दस्ता।

हाथलूहांण–पु० हाथ पोंछने का वस्त्र।

हाथलो–पु० बैलगाड़ी का एक उपकरण विशेष।

हाथसाढ–पु० हाथ पोंछने का वस्त्र।

हाथां–क्रि०वि० [सं० हस्त] १ हाथों में, हाथ में। २ अपने हाथ से, स्वयं द्वारा।

हाथांहेल–वि० बड़ा दानी, बड़ा त्यागी, उदारचित्त।

हाथाछूट, हाथाछूटो–क्रि०वि० तीव्र गति से, तेजी से।

हाथाजोड़ी, हाथाजोडी–स्त्री० १ खुशामद, आजीजी, नम्रता। २ औषधि में काम आने वाला पौधा विशेष।

हाथांताळी–स्त्री० [सं० हस्त-ताल] १ दोनों हाथों से बजाई जाने वाली ताली। २ दोनों हाथों से ताली बजाने में लगने वाला समय।

हाथापाई–स्त्री० १ हाथ-पांव मारकर की जाने वाली लड़ाई। २ हाथ-पांवों से की जाने वाली मस्ती। ३ हाथ-पांव धोने की क्रिया।

हाथाळ–वि० १ शक्तिशाली, बलवान। २ आजानबाहु। ३ शस्त्र चलाने में प्रवीण, चतुर। ४ हाथल वाला। ५ योद्धा, वीर। –पु० सिंह, शेर।

हाथालगि–वि० हस्तगत किया हुआ, प्राप्त।

हाथाळी–देखो 'हथेळी'।

हाथाळी–देखो 'हाथाळ'।

हाथि–१ देखो 'हाथ'। २ देखो 'हाथी'।

हाथिणी–देखो 'हथणी'।

हाथियो–१ देखो 'हाथी'। २ देखो 'हाथो'।

हाथी, हाथीड़ो–पु० [सं० हस्तिन्] १ विशाल एवं स्थूल शरीर,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लंबी सूंड वाला प्रसिद्ध स्तनपाई चौपाया जानवर, गज, हस्ती। २ हरिजन, मेहत्तर, भंगी। ३ शतरंज का एक मोहरा। ४ एक प्रकार का कीड़ा। —खानो-पु० हाथियों को बांध कर रखने का स्थान, हस्तिशाला। —दांत-पु० हाथी के मुंह से बाहर निकले बड़े-बड़े दांत। —बंध-पु० ऐसा व्यक्ति या घराना जहाँ हाथी रखने की क्षमता हो। —वान-पु० महावत।

हाथीनाळ-स्त्री० एक प्रकार की तोप।

हाथीपगो-पु० १ एक प्रकार का रोग। २ हाथी जैसे पांवों वाला।

हाथीचच-स्त्री० एक प्रकार की वनस्पती, तरकारी।

हाथीमती-स्त्री० साबरमती में गिरने वाली एक नदी।

हाथीमूळ-पु० एक प्रकार का आम व इसका वृक्ष।

हाथीमोगरी-पु० मोगरे की जाति का पौधा विशेष।

हाथीयउ, हाथीयो-देखो 'हाथी'।

हाथी-सिरोपाव-पु० राजा-बादशाहों द्वारा दिया जाने वाला पुरस्कार, सिरोपाव।

हाथुडी (डी)-स्त्री० एक प्रकार की वनस्पती।

हाथुलि हाथुली-स्त्री० [सं० हस्त+लि] हाथ का एक आभूषण विशेष।

हा वालइ-देखो 'हथलेवो'।

हाथे, हाथें-क्रि०वि० १ हाथ में। २ वश में, काबू में। ३ हाथ से। ४ स्वतः, अपने-आप।

हाथोगळ-स्त्री० गले पर हाथ रख कर ली जाने वाली सौगंध, शपथ।

हाथोड़ी-देखो 'हथोड़ी'।

हाथोड़ो देखो 'हथोड़ो'।

हाथोहाथ-क्रि०वि० १ एक हाथ से दूसरे हाथ, प्रतिहस्त। २ लगेहाथ तुरन्त, शीघ्र। -वि०३ प्रत्यक्ष। ४ खुद, स्वयं। -पु० मिल-जुल कर काम को शीघ्र निपटाने की क्रिया।

हाथो-पु० [सं० हस्तक] १ किसी औजार या उपकरण का दस्ता, मूठ, बेंट। २ जुलाहों का एक उपकरण। ३ हाथ का चिह्न, निशान। ४ देखो 'हाथों'।

हाथोहाथ-देखो 'हाथोहाथ'।

हाफज, हाफिज-पु० [अ० हाफिज] वह मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो। -वि० [अ० मुहाफिज] रक्षक।

हाफुस-पु० एक प्रकार का आम।

हाफे, हार्फे-क्रि०वि० अपने आप, स्वयं। -सर्व० स्वयं, खुद।

हाब-गाब-वि० १ जिसका संतुलन बिगड़ गया हो, अस्थिर चित्त, उद्विग्न, व्यग्र। २ स्तब्ध, स्तंभित, भयभीत।

हाबर-वि० सुन्दर, मनोहर।

हाबो-स्त्री० जबड़ा।

हाबू-पु० वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

हाबूब-पु० रंग विशेष का घोड़ा।

हाबो-पु० १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला। २ रोने की आवाज, चिल्लाहट। ३ करुण पुकार।

हाय-स्त्री० [सं० हा] १ जोर से रोने, चिल्लाने की क्रिया या भाव, त्राहि-त्राहि। २ दुराशोष, शाप, बद्दुआ। ३ आह।

हायछो-स्त्री० १ घृणित वस्तु, मल, विष्टा। २ घृणित वस्तु के प्रति बोला जाने वाला शब्द।

हायणो-स्त्री० पचास से साठ वर्ष तक की आयु। (जैन)

हायतराय, हायत्राय-स्त्री० १ करुण क्रन्दन, विलाप। २ व्यग्रता, आतुराई। ३ अत्यधिक परिश्रम, दौड़-भाग।

हायधाय-स्त्री० दुःखभरी आवाज।

हायन-पु० १ वर्ष, साल, संवत्सर। २ शोला, अंगारा। ३ एक प्रकार का चावल। -वि० १ गुजरा हुआ, बीता हुआ, विगत। २ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त।

हायबोय-स्त्री० १ कूकने की आवाज, शोरगुल, हल्ला। २ विलाप, क्रन्दन। ३ प्रलाप, बकवास।

हायहाय-देखो 'हायत्राय'।

हार-स्त्री० [सं० हारः, हारि] १ युद्ध, लड़ाई, खेल आदि में होने वाली पराजय, शिकस्त, जीत का विपर्याय। २ किसी कार्य या प्रयास में मिलने वाली असफलता। ३ माला, स्वर्ण, चांदी आदि का माला जैसा आभूषण। ४ लड़ाई, संग्राम। ५ एक दीर्घ या गुरु मात्रा का नाम। ६ प्रथम गुरु के सगण का नाम। ७ छन्द शास्त्र में ठगण का चौथा भेद। ८ अंक गणित का भाजक, विभाजन। ९ वन, जंगल। १० खेत। ११ राज्य द्वारा किया जाने वाला हरण, जब्ती। १२ पंक्ति। १३ देखो 'हारो'।

हारक-पु० [सं०] १ चोर। २ हरण करने वाला, लुटेरा। धूर्त, कपटी। ४ मुक्ताहार। ५ विभाजक। -वि० हारने वाला।

हारणो-वि० (स्त्री० हारणी) १ हरण करने, नष्ट करने वाला। पापहारी। २ हारने वाला, पराजित होने वाला। ३ निराश होने या थकने वाला।

हारणो (बो)-क्रि० [सं० हृ, हारयति] १ युद्ध, लड़ाई, मुकदमा, खेल आदि में पराजित होना, शिकस्त खाना। २ अपना दांव गंवा देना, खो देना। ३ कार्य में असफल होना। ४ हतोत्साहित होना, हारमान लेना। ५ अमूल्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्तु का सदुपयोग न होना, व्यर्थ खोदेना। ६ जबान खाली जाना।

हारब–पु० [सं० हार्द] १ प्रेम, स्नेह प्यार। २ कृपालुता, दयालुता। ३ कोमलता, नाजुकता। ४ अभिप्राय, इरादा, मन की बात। ५ दृढ़ संकल्प। ६ प्रेमी, मित्र।

हारबा–पु० [सं० हृदय] हृदय, दिल, मन।

हारबिक–वि० [सं० हार्दिक] १ हृदय का, हृदय से संबंधित, हृदय से निकला हुआ। २ सच्चा, वास्तविक।

हारबंद, हारबंध–पु० [सं० हार-बंध] एक प्रकार का हारनुमा चित्र काव्य।

हारमेल–देखो 'हमेल'।

हारमोनियम–पु० [अ०] सन्दूक से आकार का एक प्रसिद्ध स्वर वाद्य।

हारमोर–वि० १ गायब, अलोप, लुप्त। २ अदृश्य; ओझल। ३ नष्ट।

हारल–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया।

हारवणो (बो)–देखो 'हरावणो' (बो)।

हारवल्ली–स्त्री० माला।

हारसणगार (सिंगार, सिंगार)–पु० [सं० हार + शृंगार] १ एक प्रकार का वृक्ष, पारिजातक वृक्ष। २ वस्त्राभूषणों से किया जाने वाला शृंगार।

हारहूर–पु० [सं०] एक प्रकार का मद्य।

हारहूरा–स्त्री० १ मुनक्का दाख, द्राक्षा। २ अंगूर।

हाराड़–स्त्री० १ लड़ाई, झगड़ा। २ युद्ध, जंग।

हारावणो (बो)–देखो 'हरावणो' (बो)।

हारि–देखो 'हार'।

हारिक–देखो 'हारक'।

हारिख–पु० एक प्रकार का रोग।

हारित–पु० [सं०] १ एक प्रकार का कबूतर। २ हरा रंग। –वि० १ हारा हुआ, पराजित। २ भेंट किया हुआ।

हारीत–पु० [सं० हारीतः] १ एक कबूतर विशेष। २ धूर्त या कपटी व्यक्ति। ३ जाबाल ऋषि के पुत्र का नाम। ४ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र। ५ देखो 'हारित'।

हारु, हारू–वि० १ कायर, डरपोक। २ कमजोर, अशक्त। ३ हार मानने वाला। ४ देखो 'हार'। ५ देखो 'हारो'।

हारो–प्रत्य० क्रिया शब्दों के पीछे लगकर विशेषण बनाने वाला एक प्रत्यय। –पु० १ चूल्हा। २ देखो 'हार'।

हालदियो, हालंदो–वि० (स्त्री० हालदी) चलने वाला।

हाल–पु० [अ०] १ दशा अवस्था, हालत। २ रंग-ढंग, स्थिति। ३ समाचार, खबर, संवाद। ४ ब्यौरा, विवरण, वृत्तान्त, बयान। ५ आख्यान, कथा। ६ व्यवस्था। ७ चलने का ढंग, गति, चाल। ८ सुख, चैन। ९ वर्तमान काल। १० वर्तमान से कुछ पहले का समय। [सं० हालः] ११ हल। १२ हल का हरिसा। १३ बलराम का एक नाम। १४ शालिवाहन का एक नाम। १५ एक प्रकार का पक्षी। –अव्य० [फा०] १ अभी, इसी समय। २ तुरन्त, तत्काल। ३ अभी तक, अब तक। ४ शीघ्र, जल्दी। ५ फिलहाल।

हालक–पु० [सं०] बादामी या भूरे रंग का घोड़ा। –वि० पीला, हरा।

हालड़ो–पु० [देश०] हेंगा नामक एक कृषि उपकरण।

हाल-चाल–पु० १ दशा, हालत, अवस्था, स्थिति। २ रंग-ढंग, ३ समाचार, खबर। ४ विवरण, वृत्तान्त। ५ रहन-सहन का ढंग।

हालण–स्त्री० १ चलने की क्रिया या भाव। २ गतिमान होने की क्रिया या भाव।

हालण-डोलण–स्त्री० १ हिलने-डुलने की क्रिया या भाव। २ साधारण या फुटकर काम।

हालणसींगो–पु० (स्त्री० हालणसींगी) वह बैल (पशु) जिसके सींग हिलते हों।

हालणो (बो)–क्रि० [सं० हल्लनं] १ गतिमान होना, चलना। २ रास्ते चलना, आगे बढ़ना, जाना। ३ कहीं जाना; चलना। ४ प्रस्थान करना, रवाना होना। ५ घूमना-फिरना, टहलना, विचरण करना। ६ हिलना-डुलना, झोले खाना। ७ कांपना, धूजना। ८ उड़ना। ९ होना, चलना। १० आना, चलना। ११ व्यभिचार की दृष्टि से किसी से लगना। १२ प्रचलन, व्यवहार या जारी रहना। १३ ठीक उपयोग होते रहना। १४ चलना।

हालत–स्त्री० [अ०] १ दशा, अवस्था। २ घर की अवस्था; आर्थिक स्थिति। ३ वातावरण, स्थिति। ४ वृत्तान्त, हाल। ५ समाचार, खबर।

हालतसींगो–पु० (स्त्री० हालतसींगी) वह बैल जिसके सींग झुके हुए तथा हिलते हुए हों।

हालतांई–क्रि०वि० अभी तक, अब तक।

हालबोळ–देखो 'हळाबोळ'।

हालमकर–पु० अनार, दाड़िम।

हालर–देखो 'हालरियो'।

हालर-फालर–पु० चापलूसी, खुशामद।

हालर-हूलर–पु० १ व्यर्थ का प्रलाप। २ व्यर्थ कार्य, झंझट। ३ व्यर्थ का हंसी-ठट्ठा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हालरि, हालरियु, हालरियो–पु० १ बच्चा, पुत्र, बेटा। २ बच्चों को सुनाई जाने वाली लोरी। ३ बच्चे का पलना, झूला। ४ बच्चे को पलने में झुलाने की क्रिया। ५ बच्चे के जन्मोत्सव पर गाया जाने वाला लोकगीत विशेष। ६ एक अन्य लोकगीत। ७ गले में धारण करने का आभूषण विशेष।

हालरो–पु० १ वीररस पूर्ण गायन। २ घोड़े के गले का आभूषण विशेष। ३ हाथ के इशारे से बुलाने की क्रिया या भाव। ४ देखो 'हालरियो'।

हालवद–पु० तंग, तस्मा।

हालवो–पु० रतिक्रीड़ा आदि के लिये आने-जाने की क्रिया या भाव।

हालहवाल–पु० १ दशा, अवस्था, हाल-चाल। २ समाचार, खबर, वृत्तान्त।

हालहुकम (हुकम्म, हुक्म)–पु० हुकूमत, शासन।

हाला–स्त्री० [सं०] १ शराब, मदिरा। २ भाटी वंश की एक शाखा। ३ पैर, चरण।

हालाडूलो (डोई, डोलो, डोलो)–पु० १ छोटा-मोटा घरेलू कार्य। २ व्यर्थ का गोरखधंधा।

हालावोळो–स्त्री० १ प्रार्थना, बंदगी, स्तुति। २ देखो 'हालाडोई'।

हालार–पु० 'हाला' भाटियों के शासन वाला गुजरात का एक प्राचीन प्रदेश।

हालाहर–पु० १ यादव या भाटी वंश की 'हाला' शाखा का व्यक्ति। २ देखो 'हालार'।

हाळाहळ, हालाहल–देखो 'हळाहळ'।

हाळि हाळो, हाळोड़ो–देखो 'हाळो'।

हालिद्दो–वि० [सं० हारिद्र] पीत, पीला। –पु० १ पीला रंग। २ कदंब का वृक्ष, क्षुप।

हाळियो–देखो हाळी'।

हाळी (हालो)–पु० [सं० हलिन्] १ हल चलाने वाला किसान, कृषक। २ हल चलाने व कृषि कार्य के लिये रखा जाने वाला व्यक्ति, नौकर। ३ कृषि कार्य करने वाला मजदूर, श्रमिक। ४ पति, खाविंद। (किसान) –वि० १ हांकने वाला, चलाने वाला, चालक। २ लोभी। ३ पापी।

हालो–स्त्री० १ चलने का ढंग, गति, चाल। २ आचरण, व्यवहार। ३ रहन-सहन का ढंग, चाल-चलन। ४ बूंदी राज्य का प्राचीन सिक्का। –वि० अमरूप, गंवार।

हाळोअमावस–स्त्री० वैशाख मास की अमावस्या।

हालोड़ो–देखो 'हाळो'।

हालोचालो–स्त्री० चाल-चलन, आचार-व्यवहार, रहन-सहन का ढंग।

हाळो-चिट्ठो, हाळीचोट्ठो–स्त्री० जागीरदार द्वारा किसान को, कूआ या खेत जोतने की स्वीकृति के रूप में लिखा जाने वाला खत।

हाळोपण (पणो, पो)–पु० १ 'हाळो' का कार्य, 'हाळो' के रूप में नौकरी। २ इस कार्य का पारिश्रमिक।

हाळी-वाळवी–पु० नौकर-चाकर।

हाळीबीज–स्त्री० वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया जो किसानों के लिये शुभ दिन माना जाता है।

हाळेड़, हालेड़–वि० १ गंदे स्थान पर जाने या गंदी चीज खाने का आदी (पशु)। २ अवारा, बंधन रहित।—पु० ऐसा पशु जो वस्तु विशेष को खाने के लिये स्थान विशेष पर जाने का आदी हो।

हाळेतो–देखो 'हाळो'।

हालोचालो–पु० हो-हल्ला, शोरगुल, हलचल।

हालोर–देखो 'हालार'।

हालोहळ, हालोहाल–पु० १ शोरगुल। २ देखो 'हळाहळ'।

हाळो, (लो)–प्रत्य० वाला।

हालो–पु० १ चलने का संकेत, हाथ का इशारा। २ चाल-चलन व आचरण-व्यवहार। ३ भाटी वंश की 'हाला' शाखा का व्यक्ति।

हालोचळ, हालोहळ (हाल)–स्त्री० हलचल।

हाल्यो-मोल्यो–वि० तुच्छ, ओछा।

हाव–पु० [सं०] १ संयोग शृंगार में नायिका की चेष्टाएँ जो नायक को आकर्षित करती हैं, नाज, नखरा। २ साहित्य में होने वाले ग्यारह हाव। ३ बुलावा, पुकार। ४ प्रेमालाप।

हावउ–क्रि० वि० १ ऐसे, इसी तरह। २ जैसे, जिस तरह।

हावनगह–पु० [फा०] फारसियों के अनुसार प्रातःकाल से दोपहर तक का पहला नमाज का समय।

हावभाव–पु० [सं०] १ प्रेमी को आकर्षित करने की, प्रेमिका की चेष्टाएँ, नाज, नखरा। २ नृत्य की मुद्राएँ, चटक-मटक। ३ प्रभाव। ४ संकेत, भाव।

हावर–पु० एक प्रकार का वृक्ष।

हावे, हावें–वि० १ भयभीत, स्तंभित। २ हर्षित, प्रसन्न। ३ आश्चर्य चकित। ४ किंकर्त्तव्यविमूढ़, हतप्रभ।

हावो–पु० १ भय, आतंक। २ आश्चर्य, अचम्भा।

हास–पु० [सं० हासः] १ हंसने की क्रिया या भाव। २ हंसी, मुस्कान। ३ मजाक, विनोद, दिल्लगी, व्यंग। ४ हर्ष, खुशी, उल्लास। ५ निंदा, अपकीर्ति। ६ किसी का उपहास। ७ साहित्य में एक रस।—वि० श्वेत ❀।

हासउ–देखो 'हांसो'।

हासक–पु० [सं०] १ हंसी-मजाक, विनोद। २ विनोदी व्यक्ति, मजाकिया। ३ देखो 'हास'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हासकारी–वि० [सं० ह्रास-कारक] १ ह्रास करने वाला, क्षीण या कम करने वाला। [सं० हास्य-कारक] २ हंसी-मजाक करने वाला, विनोदी। ३ हंसने योग्य, हास्यास्पद।

हासकोड़ा,–स्त्री० [सं० हास्य-क्रीड़ा] मजाक, दिल्लगी, हंसी।

हासणी (बी)–देखो 'हंसणी' (बी)।

हासपरिहास–पु० परस्पर की जाने वाली विनोद की बातें, मजाक।

हासम–पु० [अ० हाशिम] १ रोटी बनाने वाला, बावर्ची। २ मुहम्मद साहब के वंशज, मुसलमान। ३ देखो 'हसम'।

हासरस–पु० [सं०हास्य-रस] साहित्य में नौ रसों में से एक रस।

हासल–देखो 'हासिल'।

हासलोक–वि० १ हासिल का, हासिल संबंधी। २ हासिल के रूप में प्राप्त होने वाला। ३ हासिल देने वाला।

हासविलास–पु० आमोद-प्रमोद, हंसी मजाक, मनोविनोद।

हासा–देखो 'हंसी'।

हासारस–देखो 'हासरस'।

हासियो–पु० १ फैली हुई वस्तु का किनारा, गोट, मगजी। २ लेखन के समय कागज के दायें-बायें छोड़ा जाने वाला स्थान। ३ इस प्रकार छोड़े हुए भाग में लिखी जाने वाली टिप्पणी।

हासिल–पु० [अ०] १ राजा, सामंत, जमींदार, भू-स्वामियों द्वारा किसानों से वसूल किया जाने वाला कृषि उपज का कुछ निश्चित भाग। २ कृषि-भूमि से होने वाली आय। ३ उपज, पैदावार। ४ लाभ, जमा, फायदा। ५ लगान, कर। ६ नतीजा, परिणाम : ७ गणित में किसी संख्या का गुणफल या योग करते समय बचने वाला भाग जो चकाई से दहाई व दहाई से सैकड़े आदि के अंकों में जुड़ता जाता है।—वि० १ प्राप्त, उपलब्ध। २ वसूल किया हुआ।

हासी–देखो 'हंसी'।

हासू, हासो–देखो 'हांसो'।

हास्य–वि० [सं० हास्यः] १ हंसने योग्य, उपहास करने योग्य। २ देखो 'हास'।

हास्यकथा–स्त्री० [सं०] हंसी की बात, मनोरंजक कहानी।

हास्यकर–वि०[सं०] १ हंसी आने लायक, हास्यास्पद। २ हंसाने वाला।

हाहत–अव्य० अत्यन्त शोक सूचक शब्द।

हाहा–स्त्री० [अनु०] १ हंसी की आवाज। २ रोने की आवाज, रुदन। ३ त्राहि-त्राहि। ४ अत्यन्त दुःखी होने पर मुंह से निकलने वाला शब्द हा, आह।

हाहाकार (कारो)–पु० [सं०] १ करुण पुकार, क्रन्दन, त्राहि-त्राहि, कुहराम, रुदन। २ किसी बात का तहलका, हो-हल्ला, बड़ी गड़बड़ी।

हाहाठोठी–स्त्री० [अनु०] हंसी की आवाज।

हाहाहूहू–पु० १ व्यर्थ का हल्ला, शोर। २ व्यर्थ की हंसी। ३ जोर की हंसी।

हाहुळि, हाहुळी–पु० [देश०] १ उदार, दातार। २ योद्धा, शूरवीर।

हाहूं, हाहू–पु० [अनु०] शोर, हल्ला, हलचल, चिल्लाहट।

हाहूबोर–देखो 'हाऊबोर'।

हि–देखो 'ही'।

हिंओड़ी–स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कृषि उपकरण जो अंग्रेजी के (V) आकार में, दो लकड़ियों से बनता है।

हिंओड़ी–पु० [देश०] काष्ठ के मोटे डंडों का कैंचीनुमा बना उपकरण जो बढ़इयों के मोटे लट्ठे चीरने के काम आता है।

हिंगरड़ी–स्त्री० किसी बात या कार्य के लिये लगातार ताकीद करने की क्रिया या भाव।

हिंगळाज–स्त्री० सिंध व बलूचिस्तान की पहाड़ियों में स्थित दुर्गा की एक मूर्ति।

हिंगळू–पु० [सं० हिंगलु] इंगुर।

हिंगळूढोलियो–पु० लाल रंग के पायों वाली चारपाई या पलंग।

हिंगाढेल–वि० प्रचुर, पर्याप्त।

हिंगुळा–स्त्री० वह प्रदेश जहां 'हिंगलाज' देवी की मूर्ति स्थित है।

हिंगुलेश्वर–पु० ज्वर सम्बन्धी एक आयुर्वेदिक औषधि।

हिंगू–देखो 'हींग'।

हिंगूण–पु० इंगूदी का वृक्ष।

हिंगूणियो–स्त्री० इंगूदी वृक्ष का फल।

हिंगोट–पु० [सं० हिंगुपत्र] मंझोले कद का, कंटीली झाड़ीदार वृक्ष।

हिंगोटियो, हिंगोटो–पु० 'हिंगोट' वृक्ष का फल।

हिंगोळ–देखो 'हिंगळाज'।

हिंचणो (बो)–देखो 'हिंचणो' (बो)।

हिंचोळणो (बो)–देखो 'हिंचोळणो' (बो)।

हिंजड़ी–देखो 'हींजड़ी'।

हिंजरणो (बो)–क्रि० १ वियोग, विरह या किसी की याद में निरन्तर रोना, करुण विलाप करना, शिर धुनना, झुरना। २ वात्सल्य, प्रेम में विलाप करना। ३ किसी की ओर टकटकी लगाकर देखना। ४ किसी की शरण या आश्रय लेना। ५ घोड़ों का हिनहिनाना।

हिंजोर–स्त्री० हाथी के पैर में बांधने की रस्सी या जंजीर।

हिंजोळियो–पु० हलवे के ऊपर तैरकर आने वाला घी, घृत।

हिंडणो (बो)–देखो 'हींडणो' (बो)।

हिंडळणो (बो)–देखो 'हिंडुळणो' (बो)।

हिंडळाट–देखो 'हिंडोळाट'।

हिंडाणो (बो)–देखो 'हींडाणो' (बो)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिंडायलो–पु० कूए के अन्दर लटकने वाली लकड़ी को बांधे रखने वाली रस्सी ।

हिंडी–स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम ।

हिंडुक–पु० [सं०] शिव का एक नाम ।

हिंडुळणो (बो)–क्रि० १ हिलना-डुलना, झोले खाना, लटकना । २ झूला-झूलना । ३ मस्त चाल से झूमते हुए चलना । ४ मस्ती में घूमना ।

हिंडोरो–देखो 'हिंडोळो' ।

हिंडोळ–पु०[सं०हिन्दोल] १ एक राग विशेष । २ देखो 'हिंडोळो' ।

हिंडोळणो (बो)–क्रि० [सं० हिण्डनम्] १ किसी झूले या पालने में झुलाना । २ हिलाना, झकझोरना । ३ लटकना, लटकते हुए झोले खाना । ४ पानी में लहर या भांवर उठना

हिंडोळाट–पु० एक पलंग विशेष ।

हिंडोळि, हिंडोळी–स्त्री०१ एक राग विशेष । २ देखो 'हिंडोळो' ।

हिंडोळो–पु० [सं० हिंदोलकः] १ झूला, बड़ा झूला । २ पलना । ३ एक लोक गीत विशेष । ४ वह बणिक जो व्यवसाय न करके मांग कर खाता है । —वि० मूर्ख, अज्ञानी ।

हिंडो–देखो 'हींडो' ।

हिंताळ–पु० [सं० हिताल] एक प्रकार का जंगली खजूर (वृक्ष व फल) ।

हिंद–पु० [फा०] भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त ।

हिंदगी–स्त्री० हिन्दी भाषा ।

हिंदब, हिंदब–देखो 'हिंदू' ।

हिंदवांण (णी)–देखो 'हिंदवांण' ।

हिंदवसथांण (न)–देखो 'हिंदुस्तांन' ।

हिंदवांण (न)–पु० १ भारतवर्ष, हिन्दुस्तान । २ हिन्दू-समाज, हिन्दू, आर्य । ३ हिन्दू धर्म, हिन्दुत्व ।

हिंदवांणी (नी)–स्त्री० हिन्दू जाति की स्त्री, हिन्दू-स्त्री ।

हिंदवांणी–वि० १ हिन्दुओं का, हिन्दू सम्बन्धी । २ देखो 'हिंदवांण' ।

हिंदवाद–पु० हिन्दुस्तान, भारतवर्ष ।

हिंदवासूरज–पु० उदयपुर के महाराणाओं की उपाधि ।

हिंदवी–स्त्री० १ हिन्दू स्त्री । २ देखो 'हिंदो' ।

हिंदवीराय–पु० हिन्दू राजा ।

हिंदसथांण (न)–देखो 'हिंदुस्तांन' ।

हिंदाळसाही–पु० एक प्राचीन सिक्का ।

हिंदी–स्त्री० १ देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा । २ किसी का उपहास, हंसी, दिल्लगी ।

हिंदु–देखो 'हिंदू' ।

हिंदुआंण–देखो 'हिंदवांण' ।

हिंदुआंणी–स्त्री० १ हिन्दू स्त्री । —पु० [फा० हिंदुआन] २ तरबूज नामक देशी फल ।

हिंदुआंन–पु० १ हिन्दू-गण, आर्य । २ देखो 'हिंदवांण' ।

हिंदुकर, हिंदुकार–देखो 'हिंदूकार' ।

हिंदुप–वि० हिन्दुओं का, हिन्दू राजाओं द्वारा शासित ।

हिंदुपति, हिंदुपती–देखो 'हिंदूपति' ।

हिंदुपछात–पु० हिन्दुओं का राजा ।

हिंदुवांण–देखो 'हिंदवांण' ।

हिंदुवांणी–देखो 'हिंदवांणी' ।

हिंदुसथांन, हिंदुस्तांन (स्थांन)–पु० [फा० हिंदुस्तान] भारतवर्ष, आर्यावर्त ।

हिंदुस्तांनी–पु० १ भारत का नागरिक, भारत का निवासी । –स्त्री० २ भारत की भाषा । –वि० भारत का, भारत संबंधी ।

हिंदू–पु० [फा०] १ भारत में रहने वाला वह मानव धर्म जो वैदिक धर्म एवं संस्कृति का अनुयायी है, आर्य, भारतीय । २ वैदिक या आर्य संस्कृति का अनुयायी ।

हिंदूकार–पु० १ हिन्दू होने की अवस्था या भाव, हिन्दुत्व । २ हिन्दू लोग ।

हिंदूकुस–पु० [फा० हिन्दूकुश] अफगानिस्तान के उत्तर में स्थित, हिमालय से मिली एक पर्वत श्रेणी ।

हिंदूधरम, हिंदूधर्म–पु० [फा० हिंदू + सं० धर्म] १ वेद एवं पुराण सम्मत, हिन्दुओं का धर्म, आर्य संस्कृति । २ हिन्दुओं के आचार-विचार, सिद्धान्त । ३ हिन्दुओं के रीति-रिवाज ।

हिंदूपत (पति, पती)–पु० [फा० हिंदू + सं० पति] हिन्दुओं का राजा, ऐसा राजा जो हिन्दू समाज, संस्कृति एवं धर्म का रक्षक हो ।

हिंदूवांण–देखो 'हिंदवांण' ।

हिंदोरणो (बो)–क्रि० इधर-उधर घुमाना, हिलाना, मथना ।

हिंयाळी–पु० एक मारवाड़ी लोक गीत ।

हिंयो–देखो 'हियो' ।

हिंव–१ देखो 'हिम' । २ देखो 'हिव' ।

हिंवणां, हिंवणा–क्रि०वि० अभी, तत्काल ।

हिंवळास–पु० धीरज, धैर्य, ढाढ़स ।

हिंवाऊ–क्रि०वि० अभी, इसी समय, तत्काल ।

हिंस–देखो 'हींस' ।

हिंसक–वि० [सं०] १ हिंसा करने या मारने वाला । वधिक । २ प्रायः जीव मारकर खाजाने की आदत वाला । ३ हानि या अनिष्टकारक । ४ दूसरों को कष्ट या पीड़ा पहुँचाने वाला । –पु० १ शत्रु, वैरी, दुश्मन । २ जंगली जानवर ।

हिंसा–स्त्री० [सं०] १ किसी जीव को मारने की क्रिया या भाव, जीव हत्या, शिकार, वध । २ अहिंसा का विपर्याय ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ किसी के लिये कष्ट या पीड़ादायक कार्य। ४ कष्ट, पीड़ा। ५ विनाश। ६ अनिष्ट, बुराई। ७ उत्पात, लूट-पाट।

हिंसाकरम–पु० [सं० हिंसा-कर्म] १ ऐसे कार्य जो हिंसा की श्रेणी या संज्ञा में आते हैं। २ वध, हत्या। ३ कष्ट, पीड़ा।

हिंसात्मक–वि० [सं०] १ जिसमें हिंसा निहित हो, हिंसायुक्त। २ हिंसा संबंधी।

हिंसाधरमी–वि० [सं० हिंसा-धर्मी] हिंसात्मक कार्य करने वाला या ऐसे कामों में विश्वास करने वाला।

हिंसावंत–वि० हिंसा की भावना रखने वाला, हिंसक, हत्यारा।

हिंस्या–देखो 'हिंसा'।

हिंस्र–वि० [सं०] १ हिंसात्मक प्रवृत्ति वाला, हिंसालु। २ खूंखार, खतरनाक, भयानक। ३ अनिष्टकर, घातक। ४ निष्ठुर। ५ उपद्रवी, उत्पाती। –पु० १ हिंसक पशु या प्राणी। २ शिव। ३ भीम (पांडव) का एक नामान्तर।

हि–स्त्री० [सं०] १ एक प्राचीन विभक्ति। २ टिटहरी। –पु० [सं० हय] ३ अश्व, घोड़ा। ४ खेद, अफसोस। ५ सर्प, सांप। ६ मोर, मयूर। ७ हाथ, पाणि। –वि० १ हरा। २ देखो 'हो'।

हिअ (औ)–देखो 'हिरदै'।

हिअकांप–देखो 'हितकांप'।

हिआउ, हिआव–पु० [सं० हृद] साहस, हिम्मत।

हिएसी, हितेसी–देखो 'हितैसी'।

हिक–वि० [सं० एक] एक।

हिकमत–स्त्री० [अ० हिकमत] १ बुद्धि, अक्ल, बुद्धिमानी। २ उपाय, तरकीब, युक्ति। ३ विद्या, ज्ञान। ४ कला, कारीगरी, कौशल। ५ चतुराई, चालाकी। ६ नीति, चाल। ७ यूनानी चिकित्सा। ८ चिकित्सा शास्त्र, आयुर्वेद। ९ विज्ञान।

हिकमति, हिकमती–वि० [अ० हिकमत] १ अपने काम में कुशल, चतुर, बुद्धिमान। २ सभ्य, व्यवहार कुशल। ३ ज्ञानवान, पंडित। ४ चालाक। ५ नीतिज्ञ। –पु० १ वैद्य हकीम। २ देखो 'हिकमत'।

हिकमय–पु० १ एकता, एकमत होने की अवस्था या भाव। २ एक मन। –वि० एकाग्रचित्त, दत्तचित्त।

हिकरंगी–वि० १ जिसका रंग कभी बदलता नहीं, एक ही रंग में रहने वाला। २ आचरण एवं विचार से दृढ़। ३ मिलते-जुलते रंग का। ४ समान दशा वाला।

हिकरदन–पु० [सं० एक-रदनः] गणेश, गजानन।

हिके–क्रि०वि० पास में। अधिकार में।

हिकोहिक–क्रि०वि० १ सब के सब, सभी। २ एक-एक करके। ३ परस्पर, आपस में।

हिकली–वि० अकेली।

हिंगमत–देखो 'हिकमत'।

हिंगुळाऊ–वि० 'हिंगलाज' देवी का दर्शनार्थी।

हिंगेमिंग–पु० हर्षोल्लास।

हिड़कणो–वि० पागल। –पु० पागलपन के रोग वाला कुत्ता, पशु या मनुष्य।

हिड़कणो (बो)–क्रि० १ काटखाने के लिये दौड़ना, दौड़ कर आना, टूट पड़ना। २ पागल होना। ३ किसी पर अकारण चेंटना, नाराज होना, लड़ाई करना।

हिड़कवा, हिड़काव, हिड़कियाबाव–स्त्री० १ पागल कुत्ते, पशु या गीदड़ आदि के काटने से होने वाला रोग। २ पागलपन का रोग। ३ शैतानी।

हिड़कियो, हिड़क्यो–पु० १ पागलपन के रोग वाला कुत्ता। २ पागल।

हिड़दो–देखो 'हिरदो'।

हिड़मच–स्त्री० [अ० हिरमिजी] १ एक प्रकार की लाल मिट्टी। २ इस मिट्टी को पानी में घोलने से बनने वाला रंग।

हिड़मची–वि० उक्त मिट्टी के अनुरूप लाल रंग का। –पु० इसी रंग का घोड़ा।

हिचक–स्त्री० १ मन की झिझक, संकोच। २ असमंजस। ३ भय, डर। ४ लचक। ५ धक्का। ६ अनिच्छा, उदासीनता।

हिचकणो (बो), हिचकिचाणो (बो)–क्रि० १ कोई काम करते समय मन में झिझक होना, संकोच करना, आगा-पीछा सोचना। २ अनिच्छा या उदासीनता दिखाना। ३ पीछे-पीछे हटना। मुंह मोड़ना। कतराना। ४ डरना, भय खाना। ५ लचकना। ६ हिलना-डुलना।

हिचकिचाट, हिचकिचाहट–देखो 'हिचक'।

हिचकी–स्त्री० [सं० हिक्का] १ उदरस्थित एक प्रकार की वायु जो गले में झटका मार कर निकलती है, इससे 'हुक्क' की आवाज होती है। २ एक प्रकार का वात रोग जिससे उक्त क्रिया बार-बार होती है। ३ सिसकने का शब्द, सिसकी। ४ चिबुक, ठोड़ी। ५ रहट को उल्टा घूमने से रोकने के लिये लगाई जाने वाली लकड़ी। ६ ऊंट का एक रोग।

हिचको–पु० १ धक्का। २ लचका। ३ कष्ट, पीड़ा। ४ परिश्रम, जोर।

हिचडणो–पु० बड़ी-बड़ी टांगों वाला एक प्रकार का कीड़ा।

हिचण–पु० १ युद्ध, लड़ाई। २ देखो 'हीचण'।

हिचणो (बो)–क्रि० १ युद्ध करना, लड़ाई करना। २ टक्कर लेना, सामना करना, भिड़ना। ३ युद्ध में वीरगति प्राप्त करना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिचर-मिचर–पु० १ किसी काम में आगा-पीछा सोचने की अवस्था या भाव। झिझक, हिचकिचाहट। २ टालमटूल। असमंजस।

हिचावण–देखो 'हिचण'।

हिचोळणो (बो)–क्रि० १ झूला-झुलाना, झूले में धक्का देना। २ हिलाना-झकझोरना।

हिचोळो–पु० १ धक्का, झोंका। २ झटका।

हिज–देखो 'हीज'।

हिजारो–पु० कमर तक की ऊंचाई में, दीवार में लगाया जाने वाला पत्थर विशेष।

हिजूर–देखो 'हुजूर'।

हिज्जे–पु० [अ० हिज्ज] सार्थक शब्द का वर्ण समूह, वर्तनी, स्पेलिंग।

हिठाकर–वि० युद्ध करने वाला योद्धा, वीर।

हिडंब–देखो 'हिडिब'।

हिडंबा–देखो 'हिडिबा'।

हिडंबो–पु० १ एक प्रकार का काच। २ देखो 'हिडिबा'।

हिडंबु–देखो 'हिडिब'।

हिडायलो–पु० कूए के उपकरण को बांधे रखने वाली एक रस्सी विशेष।

हिडिब–पु० [सं०] १ भीम (पांडव) द्वारा वधित एक राक्षस। २ भैंसा, महिष।

हिडिबा–स्त्री० [सं०] १ भीम (पांडव) की पत्नी एक राक्षसी। २ भैंस, महिषी।

हिडोकै–क्रि०वि० इस बार, अब की।

हिण–देखो 'इण'।

हिणणाट, हिणणाहट–देखो 'हिणहिणाट'।

हिणणो (बो)–देखो 'हणणो' (बो)।

हिणहिणणो (बो)–क्रि० १ घोड़े का बोलना, हिनहिनाना। २ जोर-जोर से हंसना।

हिणहिणाट, हिणहिणाहट–स्त्री० घोड़े के बोलने की आवाज, बोली।

हिणहिणाणो (बो)–क्रि० १ घोड़े का बोलना, हिनहिनाना। २ हंसना।

हिणा–क्रि०वि० [सं० अधुना] इस समय, इस वक्त।

हिणोड़ो–स्त्री० वह गाय या भैंस जो दूध देने की स्थिति में न हो।

हित–पु० [सं० हित] १ लाभ, फायदा, मुनाफा। २ भला, कल्याण, मंगल। ३ उपकार, भलाई। ४ आनन्द, सुख। ५ शुभ कार्य, उपयुक्त कार्य। ६ शुभ कामना। ७ तंदुरुस्ती, स्वस्थता। ८ देखो 'हेत'। ९ देखो 'हेतु'। १० देखो 'हितु'।

हितकर–वि० [सं०] १ हित करने वाला, हितकारी। २ लाभप्रद, फायदेमंद। ३ अनुकूल, उपयोगी। ४ स्वास्थ्य के लिये माफिक।

हितकाम–पु० १ भलाई की इच्छा या भाव। २ भलाई का कार्य। –वि० १ भलाई करने वाला। २ शुभेच्छु, हितेच्छु।

हितकामी–वि० १ भलाई करने वाला, हितैषी। २ देखो 'हितकाम'।

हितकार, हितकारक, हितकारी–वि० [सं० हित-कारक] १ हित करने वाला, उपकारी हितैषी। २ लाभदायक, फायदेमंद। ३ गुणकारी, स्वास्थ्यवर्धक। ४ मंगलमय, कल्याणकारी। ५ प्रेमी, स्नेही। ६ दया करने वाला कृपालु। ७ आनन्ददायक, सुखप्रद।

हितकारी–देखो 'हितकारी'।

हितचकोर–पु० [सं० चकोर+हित] चन्द्रमा, चांद।

हितचिंतक–वि० [सं०] शुभेच्छु, हितैषी।

हितचिंतन–पु० [सं०] १ हित करने की इच्छा, भलाई करने का विचार। २ हित, भलाई।

हितण–पु० चारण कवि।

हितवादी–वि० हित की बात कहने वाला।

हितवारज–पु० [सं० वारज+हित] सूर्य, रवि।

हितावन–वि० जिससे अपना हित हो।

हितारथ–क्रि०वि० [सं० हितार्थ] हित के लिये, भलाई हेतु। –पु० प्रेम, स्नेह।

हिति–१ देखो 'हित'। २ देखो 'हितू'।

हितिकारी–देखो 'हितकारी'।

हितिया–देखो 'हत्या'।

हितियारी–देखो 'हत्यारी'।

हितु, हितू–वि० १ हित करने वाला, भला करने वाला, हितेच्छु, शुभेच्छु। २ काम में आने वाला, उपयोगी। ३ अपने पक्ष वाला, पक्षधर। ४ दयालु, कृपालु, खैरख्वाह। ५ प्रेमी, प्रिय। –पु० १ मित्र, दोस्त, प्रेमी। २ भाई सहोदर। ३ रिश्तेदार, संबंधी।

हितेच्छु, (हितेसी)–वि० [सं०] १ हित चाहने वाला, भला चाहने वाला, शुभचिंतक। २ कृपालु, दयालु। ३ सहयोगी।

हित्या–देखो 'हत्या'।

हित्यारी–देखो 'हत्यारी'। (स्त्री० हित्यारण, हित्यारी)

हिदायत–स्त्री० [अ०] १ आदेश, हुक्म, निर्देश। २ पथ-प्रदर्शन। ३ गुरुमंत्र। ३ चेतावनी।

हिदै, हिदो–देखो 'हिरदो'।

हिना–स्त्री० [अ०] मेंहदी, रक्तगर्भा।

हिफाजत–स्त्री० [अ०] १ सुरक्षा, बचाव। २ उचित व्यवस्था,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माकूल इंतजाम । ३ देख-रेख, देखभाल । ४ निरीक्षण, जांच । ५ होशियारी, सावधानी ।

हिबोळो, हिबोळो–देखो 'हबोळो' ।

हिमंचळ–देखो 'हिमाचळ' ।

हिमंत–देखो 'हेमंत' ।

हिम–पु० [सं० हिमम्] १ बर्फ, पाला, तुषार [सं० हिमः] २ ठंडक, जाड़ा, शीत, सर्दी । ३ शीतकाल, सर्दी का मौसम । ४ हिमालय पर्वत । ५ चन्द्रमा, चांद । ६ चंदन । ७ मोती । ८ कमल । ९ कर्पूर । १० मक्खन । ११ औषध बनाने की एक प्रक्रिया । १२ ठंडा, क्वाथ । –वि० १ श्वेत, सफेद । २ शीतल, ठण्डा । ३ देखो 'हेम' ।

हिमउपल–पु० [सं०] वर्षा की बूंदों के साथ गिरने वाले हिम खण्ड ओले ।

हिमकण–पु० [सं०] १ बर्फ का छोटा टुकड़ा । २ ओस की बूंद । ३ ओला ।

हिमकर (रि, री)–पु० [सं० हिमकरः] १ चन्द्रमा, शशि । २ कर्पूर ।

हिमकिर (किरण)–पु० [सं०] चन्द्रमा, चांद ।

हिमखंड–पु० [सं०] १ बर्फ का टुकड़ा । २ हिमालय पर्वत ।

हिमगर (गिर, गिरि)–देखो 'हिमगिरि' ।

हिमगिरिसुता–स्त्री० [सं० हिमगिरि-सुता] पार्वती, उमा ।

हिमगिरि, हिमगिरी–पु० [सं० हिमगिरि] हिमालय पर्वत । –वि० श्वेत, सफेद ।

हिमगु–पु० [सं०] चन्द्रमा, शशि ।

हिमचळ–देखो 'हिमाचळ' ।

हिमजा–स्त्री० [सं०] १ पार्वती, उमा । २ गंगा नदी । ३ हरड़, हरीतकी । ४ आंबा हल्दी ।

हिमतण–वि० निर्भीक साहसी (स्त्री०) ।

हिमतमरियो–वि० १ साहसी, निर्भीक । २ बहादुर, पराक्रमी ।

हिमताळू–वि० साहसी, हिम्मतवान ।

हिमद्रजा–स्त्री० [सं० हिम-अद्रि-जा] पार्वती, उमा ।

हिमप्रकास–पु० [सं० हिमप्रकाश] १ शीतल प्रकाश । २ चांदनी ।

हिमभान (भानु)–पु० [सं० हिमभानु] चन्द्रमा, चांद ।

हिममयूख–पु० [सं०] चन्द्रमा, चांद ।

हिमरके (कै)–क्रि० वि० इस बार, अब की ।

हिमरश्मि–पु० [सं० हिमरश्मि] चन्द्रमा, शशि ।

हिमरा–स्त्री० तरफदारी, पक्षपात ।

हिमरित (रितु)–स्त्री० [सं० हिम-ऋतु] १ हेमन्त ऋतु । २ शीतकाल ।

हिमरुचि–पु० [सं०] चन्द्रमा, चांद ।

हिमरुत–देखो 'हिमरितु' ।

हिमवत (वत)–पु० [सं० हिमवत्] १ हिम के समान, बर्फ जैसा । २ शीतल, ठंडा । –पु० हिमालय ।

हिमवंतपरवति–पु० [सं० हिमवत्-पर्वत] हिमालय पर्वत ।

हिमवांन–पु० [सं० हिमवत्] १ हिमालय पर्वत । २ चन्द्रमा । –वि० १ जिसमें हिम हो, बर्फीला । २ शीतल, ठंडा ।

हिमवार–स्त्री० हेमन्त ऋतु का समय, शीतकाल ।

हिमसैलजा–स्त्री० [सं० हिमशैलजा] पार्वती, उमा ।

हिमसुत–पु० [सं०] चन्द्रमा ।

हिमांचळ–देखो 'हिमाचल' ।

हिमांणी (नी)–देखो 'हेमांणी' ।

हिमांसु, हिमांसू, हिमांसु–पु० [सं० हिमांशुः] १ चन्द्रमा । २ कर्पूर । ३ रजत, रूपा, चांदी ।

हिमाइत–देखो 'हिमायत' ।

हिमाकत–स्त्री० [अ०] मूर्खता, बेवकूफी ।

हिमाचळ, हिमाजळ–पु० [सं० हिम-अचल] १ हिमालय पर्वत । २ शिव के श्वसुर व पार्वती के पिता ।

हिमाद्रि–पु० [सं०] हिमालय पर्वत ।

हिमायत–स्त्री० [अ०] १ पक्षपात, तरफदारी, समर्थन । २ सहायता, मदद । ३ संरक्षण, रक्षा । ४ दोस्ती, मित्रता । ५ प्रोत्साहन ।

हिमायती–वि० १ हिमायत करने वाला । २ सहायक, मददगार । ३ पक्षपाती, अपने पक्ष का । समर्थक । ४ रक्षक, सरक्षक । ५ मित्र, दोस्त ।

हिमार–देखो 'हमार' ।

हिमारति–स्त्री० [सं० हिम-अरति] १ अग्नि, आग । २ सूर्य, सूरज ।

हिमारू, हिमारू–देखो 'हमार' ।

हिमाळय, हिमालय, हिमाळिय, हिमाळे (ळें, ळो)–पु० [सं० हियालय] भारत की उत्तरी सीमा पर स्थित विशाल पर्वत श्रेणी जिस पर प्रायः बर्फ जमा रहता है ।

हिमें, हिमे–देखो 'हमैं' ।

हिमेण–पु० प्रथम गुरु के गणगण का नाम ।

हिमेस–पु० [सं० हिमेश] १ हिमालय पर्वत । २ देखो 'हमेस' ।

हिमैं, हिमै–देखो 'हमैं' ।

हिम्मत–स्त्री० [अ०] १ साहस, हौसला, उत्साह, जोश । २ बल, शौर्य, पराक्रम । ३ धैर्य, दृढ़ विश्वास ।

हिम्मति (ती)–देखो 'होमती' ।

हिय, हियड़लु हियड़लो, हियड़ो, हियड, हियडउ, हियडलइ, हियडलउ, हियडलो, हियडो–देखो हिरदो' ।

हियत्थ–पु० हितार्थ, मोक्ष । (जैन)

हियरो–देखो 'हिरदो' ।

हियां–अव्य० यहां, इस जगह ।

हियाखाई–स्त्री० [सं० हृदय-खाति] १ किसी काम के प्रति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झिझक, संकोच, हतोत्साह। २ डर, भय। ३ शंका, संदेह।

हियाफूट, हियाफूटोड़ो, हियाफूटो–वि० (स्त्री० हियाफूटी, हियाफूटोड़ी) १ मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ, शिर-फिरा। २ खिन्नचित्त, उदास।

हियाळी, हियासो–स्त्री० [सं० हृदय+आलो] १ वात्सल्य, प्रेम, स्नेह। २ तसल्ली, धैर्य, ढाढस। ३ हंसी, मजाक। ४ बदतमीजी, अभद्र व्यवहार।

हियाव–पु० लगाव।

हियाहीण (न)–वि० [सं० हृदयहीन] १ मूर्ख, अज्ञानी। २ कायर, डरपोक। ३ क्रूर, दयाहीन, हृदयहीन।

हियुं, हियु, हियू, हियो–देखो 'हिरदो'।

हिरणंखी–देखो 'हरिणाक्षी'।

हिरण–पु० [सं० हिरण्य] १ स्वर्ण, सोना। २ द्रव्य, धन, सम्पत्ति। ३ देखो 'हरिण'। ४ देखो 'हरण'।

हिरणउपवन–पु० ब्रह्मा।

हिरणाक, हिरणाकस–१ देखो 'हिरण्याक्ष'। २ देखो 'हिरण्यकस्यप'।

हिरणाकसप (कसिपु, कस्यप)–पु० [सं० हिरण्यकशिपु] १ एक दानव राजा जिसने शिव के वरदान से एक अर्बुद वर्षों के लिये सारे देवताओं का ऐश्वर्य प्राप्त किया। २ कश्यप एवं दिति का पुत्र एक सुविख्यात दैत्य जो प्रह्लाद का पिता था।

हिरणखुरी–स्त्री० १ वर्षा ऋतु में उगने वाली एक लता जिसके पत्ते हिरन के क्षुर की तरह होते हैं। २ रात्रि में हिरन के बैठने का स्थान।

हिरणाखि–देखो 'हरिणाक्षी'।

हिरणागरभ–देखो 'हिरण्यगरभ'।

हिरणचरो–पु० एक प्रकार का घास।

हिरणजंघ (झंघ)–पु० १ डिंगल का एक छंद (गीत) विशेष। २ मृग की छलांग।

हिरणदा–स्त्री० [सं० हिरण्यदा] पृथ्वी, धरती।

हिरणरेत–पु० [सं० हिरण्यरेतस्] १ अग्नि, आग। २ शिव, महादेव। ३ सूर्य, रवि। ४ बारह आदित्यों में से एक।

हिरणाली–देखो 'हिरणा'।

हिरणाक, हिरणाकस (कुस)–१ देखो 'हिरण्याक्ष'। २ देखो 'हिरणाकस्यप'।

हिरणाख–देखो 'हिरण्याक्ष'।

हिरणाखि, हिरणाखो–१ देखो 'हरिणाक्षी'। २ देखो 'हिरण्याक्ष'।

हिरणायख–देखो 'हिरण्याक्ष'।

हिरणावटियो–पु० झोंपड़े के मध्य खड़े स्तम्भ के ऊपरी शिरे के चारों ओर लगाई जाने वाली लकड़ी।

हिरणियो–पु० १ गरीब व्यक्ति। २ देखो 'हरिण'।

हिरणी–स्त्री० १ मादा हरिन, मृगी। २ सोन जुही। ३ स्वर्ण की चमक। ४ मृगशिरा नक्षत्र। ५ देखो 'हिरणीखूंटो'।

हिरणीखूंटो–पु० गाड़ी में लगाया जाने वाला लकड़ी का डंडा विशेष।

हिरण्ण–देखो 'हिरण्य'।

हिरण्मय–पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ जंबू द्वीप के नौ खण्डों में से एक। ३ एक प्राचीन ऋषि। –वि० १ स्वर्ण का। २ सुनहरा।

हिरण्य–पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ एक प्राचीन ऋषि। ३ जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में से एक। ४ सोना, स्वर्ण। ५ ज्योति, प्रकाश। ६ वीर्य, शुक्र। ७ अमृत। ८ धतूरा।

हिरण्यकसिप, हिरण्यकसिपु, हिरण्यकस्यप–देखो 'हिरणाकसिपु'।

हिरण्यकांमधेन, हिरण्यकांमधेनु–स्त्री० [सं० हिरण्यकामधेनु] दान के निमित्त बनाई स्वर्ण की कामधेनु।

हिरण्यकार–पु० [सं० हिरण्य+कृ] स्वर्णकार, सुनार।

हिरण्यकेस–पु० [सं० हिरण्यकेश] भगवान् विष्णु का एक नाम।

हिरण्यगरभ–पु० [सं० हिरण्यगर्भ] १ वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा एवं सृष्टि की उत्पत्ति हुई। २ ब्रह्मा, विरंचो। ३ विष्णु। ४ आत्मा, जीव। ५ ईश्वर। ६ शुक्र ग्रह। ७ शुक्राचार्य।

हिरण्यनाभ (नाभि)–पु० [सं०] १ भगवान विष्णु। २ मैनाक पर्वत का एक नाम।

हिरण्यपुर (पुरो, पुरी)–पु० [सं०] समुद्र पार वायुमण्डल में स्थित असुरों का एक नगर।

हिरण्यबाह (बाहु)–पु० [सं० हिरण्यबाहु] १ शिव का एक नाम। २ सोन नदी का एक नाम। ३ वासुकी के वंश का एक नाग।

हिरण्यबिंद (बिंदु)–पु० [सं० हिरण्य-बिन्दु] एक तीर्थ विशेष।

हिरण्यव–पु० [सं०] १ देव मंदिर या देव प्रतिमा के आगे चढ़ाया जाने वाला द्रव्य। २ स्वर्ण का गहना।

हिरण्यवती–स्त्री० [सं०] कुरुक्षेत्र की एक नदी।

हिरण्यवसतर (वस्तर, वस्त्र)–पु० [सं० हिरण्यवस्त्र] सुनहरे तारों का बना एक प्रकार का कपड़ा।

हिरण्यवीरय–पु० [सं० हिरण्यवीर्य] १ अग्नि, आग। २ सूर्य, सूरज।

हिरण्यसिंग–पु० [सं० हिरण्यशृंग] कैलाश के समीप एक पर्वत जिसमें रत्न की खानें हैं।

हिरण्याक्ष, हिरण्याख–पु० [सं० हिरण्याक्ष] १ हिरण्यकश्यप का भाई एक दानव जो वराह अवतार (विष्णु) द्वारा मारा गया। २ एक यादव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिरण्यास्व, हिरण्यास्व–पु० [सं० हिरण्याश्व] दान के लिये बनाई गई घोड़े की स्वर्ण प्रतिमा ।

हिरद, हिरदय–देखो 'हिरदो' ।

हिरदावळ–पु० [सं० हृदावर्त] घोड़े की छाती पर होने वाली भौंरी ।

हिरदेगम–पु० [सं० हृदयंगम] १ किसी विषय या बात को चित्त में अच्छी तरह बैठा लेने की अवस्था या भाव । २ कोई शिक्षा या विद्या कंठस्थ हो जाने की स्थिति । –वि० हृदय या चित्त में समाहित ।

हिरदै, हिरदो–पु० [सं० हृदय] १ प्राणियों के वक्षस्थल में स्थित प्रमुख अवयव जिससे शरीर में रक्त संचालन एवं श्वास क्रिया होती है । दिल । २ चेतना शक्ति, अन्तःकरण, चित्त, मन । ३ ज्ञानेन्द्रिय । ४ वक्षस्थल, छाती, सीना । ५ मुख, जबान । ६ किसी वस्तु का सार, मर्म, मूल तत्त्व । ७ अत्यन्त प्रिय वस्तु या प्राणी । ८ जीवन, प्राण । ९ प्रेम, प्यार । १० स्मरण शक्ति ।

हिरन–१ देखो 'हरिण' । २ देखो 'हिरण्य' ।

हिरनकस्यप–देखो 'हिरणकस्यप' ।

हिरनहीरनाछी–पु० वह घोड़ा जिसका आधा शरीर हरे रंग का तथा आधा श्वेत हो ।

हिरनाख–देखो 'हिरण्याक्ष' ।

हिरमच, हिरमची–देखो 'हिड़मच' ।

हिरळवत–पु० [सं० हिरण्यवत्] सूर्य, रवि ।

हिरस–स्त्री० [सं० हिंस] १ तृष्णा, वासना, लोभ, लालच । २ ईर्ष्या, द्वेष, विद्वेष । ३ डर, भय, खतरा । ४ हविस, ख्वाहिस । ५ कार्य करने की स्पर्धा ।

हिरातो–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा ।

हिराबोल–पु० एक प्रकार का पौधा ।

हिराळी–देखो 'हरियाळी' ।

हिरावळ–देखो 'हरावळ' ।

हिरासत–स्त्री० [अ०] १ कैद, हवालात, कारावास । २ निगरानी, पहरा, चौकीदारी । ३ नजरबंदी, नजर कैद ।

हिरिण–१ देखो 'हरण्य' । २ देखो 'हिरण' । ३ देखो 'हरिण' ।

हिरिवी–देखो 'हिरदो' ।

हिरिम–वि० [सं० ह्रीमान्] १ लज्जावान, लज्जाशील । २ शिष्ट, सभ्य ।

हिळणो (बो)–क्रि० [सं० हिल्] १ चस्का लगना, लगाव होना, लगना । २ आदी होना, निर्भर होना । ३ एक ही तरफ झुकाव होना । ४ अनुरक्त या आसक्त होना । ५ घुसना, पैठना ।

हिलाणो (बो)–क्रि० [सं० हिल्] १ चलायमान होना, चलना । स्थिर न रहना, हिलना, डुलना । ३ चलना, जाना, सरकना, अपने स्थान से टलना, इधर-उधर होना, खिसकना । ४ कांपना, धूजना । ५ झूमना, लहराना । ६ जमकर न रहना, विचलित होना, डिगना, चंचल होना । ७ कोई हरकत होना । ८ चंचल होना । ९ फिरना, घूमना ।

हिलम–स्त्री० एक गुफा विशेष ।

हिलम–स्त्री० [सं० हिल्म] १ मल मनसाहत, भलाई । २ गंभीरता, धीरता, शान्ति । ३ सहिष्णुता, सहनशीलता । ४ विवेक ।

हिळमिळ–स्त्री० १ मिलने-जुलने की अवस्था या भाव । २ परस्पर सहयोग के उद्देश्य से साथ होने की दशा । ३ प्रेम या मित्रता से रहने की दशा । ४ स्नेह, प्रेम । ५ घुल-मिल जाने की अवस्था या भाव ।

हिळमिळणो (बो)–क्रि० १ प्रेम से हिलमिल जाना, भेद भाव रहित प्रेम होना, एकाकार होना । २ मित्रता या दोस्ती होना । ३ परस्पर सहयोग के लिये एकत्र होना । ४ मिल-जुल कर चलना ।

हिलमोचिका, हिलमोची–पु० [सं० हिलमोचिका] १ एक प्रकार का पौधा । २ एक प्रकार का शाक ।

हिलराणो (बो)–देखो 'हुलराणो' (बो) ।

हिळवळणो (बो)–देखो 'हळवळणो' (बो) ।

हिलवांण–स्त्री० एक प्रकार की बन्दूक ।

हिळवाळियो–वि० १ उत्तेजित, उतावला । २ घबड़ाया हुआ, भयभीत । ३ त्वरा युक्त ।

हिलवी–पु० १ हलब जाति का मुसलमान । २ हलब देश का निवासी । ३ एक प्रकार का दर्पण विशेष । –वि० १ हलब देश का, हलब देश संबंधी । २ हलब का ।

हिळा–देखो 'हळा' ।

हिळाणो (बो)–क्रि० १ चस्का लगाना, लगाव पैदा करना, लगाना । २ आदी करना, वशीभूत करना । ३ अनुरक्त या आसक्त करना । ४ घुसाना, पैठाना ।

हिलाणो (बो)–क्रि० १ चलायमान करना, चलाना । २ स्थिर न रहने देना, हिलाना-डुलाना । ३ चलाना, भेजना, सरकाना, इधर-उधर करना, खिसकाना । ४ कंपाना, धूजाना । ५ झूमने या लहराने के लिये प्रेरित करना । ६ जमकर न रहने देना, विचलित करना, डिगाना, उद्विग्न करना । ७ कोई हरकत करना, हिलाना । ८ चंचल करना । ९ फिराना, घुमाना ।

हिलारियो (हिलारी)–पु० बबून की फली ।

हिलारी–पु० १ किसी वस्तु की एक बार में ढोई जाने वाली मात्रा । २ ढोवाई का क्रम । ३ ढोवाई के प्रत्येक क्रम का पारिश्रमिक ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिळावणी (बो)–देखो 'हिळाणी' (बो)।
हिलावणी (बो)–देखो 'हिलाणी' (बो)।
हिळियो-मिळियो–वि० घनिष्ठ परिचित।
हिळोमिळी, हिळीमीळी–वि० घनिष्ठ प्रेम में बंधी हुई, स्नेह युक्त, प्रेम युक्त। –स्त्री० घनिष्ठ प्रेम मय होने की अवस्था वा भाव।
हिल्लूर–देखो 'हिलोर'।
हिल्लूसणी (बो)–देखो 'हुलसणी' (बो)।
हिलोड़णी (बो)–क्रि० [सं० उल्लोलनम्] १ जल या किसी द्रव पदार्थ को हाथ, लकड़ी आदि से हिलाना, तरंगित करना। २ द्रव पदार्थ को मथना, विलोड़ित करना। ३ लहराना, डुलाना। ४ विचलित करना, तितर-बितर करना। ५ तरंगित करना। ६ चलायमान करना, चलाना।
हिलोड़ो–देखो 'हिलोळो'।
हिलोर–स्त्री० १ उमंग, आनन्द की लहर। २ तरंग, लहर। ३ झोंका, झोला। ४ प्रवाह। ५ कल्लोल, क्रीड़ा।
हिलोरणी (बो)–देखो 'हिलोड़णी' (बो)।
हिलोरव–पु० १ डोलने, झूलने या झोंका खाने की क्रिया। २ चक्कर, भांवर। ३ तरंग, लहर। ४ समुद्र।
हिलोळ, हिलोल–देखो 'हिलोर'।
हिलोळणी (बो)–देखो 'हिलोड़णी' (बो)।
हिलोळो–पु० [सं० हिल्लोल] १ आनन्द की लहर, उमंग। २ लहर, तरंग। ३ उमंग, जोश, उत्साह। ४ झोंका, झोला। ५ गति, चाल, प्रवाह। ६ आक्रमण के लिये बताई जाने वाली तैयारी। ७ घबराहट या भय का दौरा, संचार। ८ धक्का, आघात। ९ प्रहार, चोट।
हिलोहणी (बो)–देखो 'हिलोड़णी' (बो)।
हिलोहळ, हिलोहिळ–पु० [सं० हल्लोघर] १ समुद्र, सागर। २ मथन, विलोडन। ३ लहर, तरंग। –वि० पूर्ण, परिपूर्ण।
हिल्लोळ–देखो 'हिलोर'।
हिवं, हिव, हिवइ–क्रि०वि० [सं० अधुना] १ अब, अभी। २ इसके बाद, तदनन्तर।
हिवके, हिवकं–क्रि०वि० इस बार, अबकी।
हिवड़उ, हिवड़लो–देखो 'हिवडो'।
हिवड़ां, हिवड़ा, हिवड़ं–क्रि०वि० अभी, इसी समय।
हिवड़ी–पु० [सं० हृदय] १ मन, चित्त, दिल, अन्तःकरण। २ वक्षस्थल, छाती, सीना। ३ वक्षस्थल के नीचे स्थित अवयव जो शरीर में रक्त संचार करता है।
हिवडां, हिवडा–देखो 'हिवड़ां'।
हिवडो–देखो 'हिवडो'।
हिवार, हिवारं, हिवारु, हिवारूं, हिवारू–क्रि०वि० अभी, इसी समय, अब।
हिवा, हिवि, हिवें, हिवे, हिवं, हिवै–देखो 'हिव'।
हिस–स्त्री० [सं०हिस्] १ पशु-पक्षी आदि जानवरों को ताड़ने की क्रिया या भाव। २ इस क्रिया के समय मुंह से निकलने वाली ध्वनि। [अ० हिस] ३ संवेदन, एहसास, अनुभव। ४ संवेदन शक्ति।
हिसाट, हिसाटि–देखो 'हींस'।
हिसाब–पु० [अ०] १ संख्याओं का गुणाभाग करने या हल निकालने की क्रिया या विद्या, गणित विद्या। २ इस विद्या से कीमत आदि का निर्धारण। ३ व्यापार या लेन-देन में आय-व्यय का ब्योरा, विवरण। ४ लेन-देन का विवरण, खाता। ५ बकाया देनदारी। ६ गणना, शुमार, गिनती। ७ वस्तु का मान या मात्रा का निर्धारण। ८ दर, मूल्य, भाव। ९ नियम, परिपाटी। १० रीति, युक्ति, तरीका। ११ व्यवस्था, प्रबन्ध। १२ हृदय की प्रकृति की परस्पर अनुकूलता। १३ मितव्ययता। १४ सम्मति, विचार। १५ आय-व्यय की जांच। १६ मूल्यांकन। —बही–स्त्री० ऐसी पुस्तक, बही, पंजिका या चोपड़ी जिसमें लेन-देन का विवरण हो।
हिसार–पु० एक प्रदेश का नाम।
हिस्ट–वि० [सं० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, स्वस्थ। –अव्य० हट, धत्।
हिस्ठ-पुस्ट–वि० [सं० हृष्ट-पुष्ट] स्वस्थ, मोटा-ताजा।
हिस्सादार, हिस्सेदार–वि० किसी काम, व्यापार, सम्पत्ति आदि में हक, अधिकार या दायित्व रखने वाला, भागीदार।
हिस्सादारी, हिस्सेदारी–स्त्री० किसी कार्य, व्यापार, सम्पत्ति आदि में हक, अधिकार या दायित्व होने की अवस्था, भागीदारी, साझेदारी।
हिस्सो–पु० [अ० हिस्सः] १ सम्पूर्ण कार्य, वस्तु या सम्पत्ति आदि का कुछ अंश, भाग या हिस्सा। २ खण्ड, टुकड़ा, अंश। ३ विभाजन या बंटवारे के कारण बनने वाली इकाई। ४ छोर, अंश, भाग। ५ कार्य में योगदान। ६ व्यापार में साझेदारी। ७ किसी कार्य में विशेषता रखने का गुण। ८ मिश्रित वस्तुओं में प्रत्येक वस्तु का एक निश्चित अंश। ९ कोई उप विभाग, शाखा। १० कृषि उपज में जागीरदार या भू-स्वामी का भाग।
हींकणी–स्त्री० एक वनस्पती विशेष।
हींकार, हींकारी–स्त्री० [स० हींकार] उपासना संबंधी किसी बीज मंत्र की ध्वनि।
हींग–पु० [स० हिंगु] १ अफगानिस्तान व फारस में स्वतः होने वाला एक पौधा। २ इस पौधे से निकलने वाला गोंद या दूध जो सूखने के बाद शाक, औषधि आदि में काम आता है। ३ पतंग में सीधी लगने वाली तीली, खपची। ४ देखो 'सींग'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हींगणो (बो)–क्रि० १ लालायित होना, ललचाना। २ दीनता दिखलाना।

हींगळू, हींगलू–पु० [सं० हिंगुल] एक प्रकार का खनिज जो उपधातु माना जाता है, इसे स्त्रियाँ मांग भरने के काम लेती है, ईंगुर, सिंदूर।

हींगळूढोलियो–पु० सिंदूर से रंगे पायों वाला पलंग या चारपाई।

हींगवधार–पु० १ पुष्करणा ब्राह्मणों की विवाह संबंधी एक प्रथा। २ हींग का छौंका।

हींगवरण–देखो 'हींगोट'।

हींगांठेत–वि० बहुत, काफी, पर्याप्त।

हींगापाई–स्त्री० खलबली, हलचल, परेशानी।

हींगु–देखो 'हींग'।

हींगोट, हींगोटो, हींगोरो–पु० [सं० इंगुदी] एक प्रकार का वृक्ष।

हींच–स्त्री० १ लड़ाई, युद्ध। २ चोट, प्रहार।

हींचको–पु० १ झूला, हिंडोला। २ देखो 'हिचको'।

हींचरण–स्त्री० १ मकड़ी जाति का एक जंतु जो केंकड़े की तरह होता है। २ देखो 'हिचरण'।

हींचणी–पु० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

हींचरणू, हींचणो–पु० झूला, हिंडोला, पालना।

हींचणो (बो)–क्रि० १ झूला-झूलना। २ हिलना-डुलना, लटकना, लटकते हुए झूलना। ३ भ्रमण करना, विचरण करना। ४ बछड़े आदि जानवर का आतुर होना, तड़फना। ५ भुरट नामक घास को बालें काटकर एकत्र करना। ६ उपलब्ध होना, मिलना। ७ देखो 'हिचरणो' (बो)।

हींचाहींच–स्त्री० खींचातान, लूट-खसोट।

हींचोल, हींचोळो (लो)–पु० झूले या पालने के दिया जाने वाला धक्का।

हींचो–१ देखो 'हींचको'। २ देखो 'हिचको'।

हींजड़ो–न० १ मानव जाति का विकृत प्राणी जो न पुरुष होता है न स्त्री, नपुंसक। २ पुंसत्व खोया हुआ व्यक्ति, नामर्द। ३ अत्यन्त कायर या डरपोक व्यक्ति। –वि० १ नपुंसक, नामर्द। २ कायर, डरपोक। ३ अशक्त, कमजोर। ४ उत्साहहीन। —पण, पणो–पु० नपुंसकता, नामर्दगी, क्लीवता, कायरता, कमजोरी।

हींजरणो (बो)–देखो 'हिंजरणो' (बो)।

हींजरो–पु० १ वियोग जनित दुःख, विछोह की पीड़ा। २ 'हींजड़ो'।

हींट, हींठ–पु० १ अंगूठा। २ गुप्तांगों के बाल, उपस्थ के केश।

हींड–स्त्री० १ झूले मे झूलने की क्रिया या भाव। २ वीर गति प्राप्त योद्धा द्वारा मशाल लेकर रात में की जाने वाली गश्त। (जनश्रुति) ३ देखो 'होड'। ४ देखो 'होडो'।

हींडण–स्त्री० [सं० हिण्डनम्] १ झूला-झूलने की क्रिया या भाव। २ लम्बे पैरों का एक जन्तु विशेष। –वि० झूलने वाला।

हींडणियो–वि० १ झूलने वाला। २ लटकने वाला।

हींडणो (बो)–क्रि० [सं० हिण्डनम्] १ झूला झूलना, हींडना २ बच्चे का पलने में झूलना। ३ मस्ती में झूलना। ४ लहरें लेना, हिलोरे खाना। ५ लटकना। ६ विचरण या भ्रमण करना। ७ भटकना, भटकते हुए फिरना। ८ जाना, गमन करना। ९ चलना, दौड़ना।

हींडळ–पु० झूला, पलना।

हींडळणो (बो)–देखो 'हींडणो' (बो)।

हींडाणो (बो)–क्रि० १ झूला झुलाना, हींडाना। २ बच्चे को पलना झुलाना। ३ मस्ती में झुमाना। ४ लहरें खिलाना, हिलोरे खिलाना। ५ लटकाना। ६ विचरण कराना, भ्रमण कराना। ७ भटकाना, भटकते हुए फिराना। ८ जाने या गमन करने के लिये प्रेरित करना। ९ चलाना, दौड़ाना।

हींडो–स्त्री० बच्चों का पलना।

हींडोळ हींडोल, हींडोळणो–देखो 'हिंडोळो'।

हींडोळणो (बो) हींडोलणो (बो)–देखो 'हिंडोळणो' (बो)।

हींडोळाखाट–स्त्री० चारपाईनुमा झूला, पालना।

हींडोलाट (टि, टी)–पु० १ झूला, धक्का। २ देखो 'हिंडोळो'।

हींडोळि, हींडोळी, हींडोळी, हींडोळी–देखो 'हिंडोळो'।

हींडो–पु० [सं० हिंडनम, हिंदोल] १ किसी पेड़ की मोटी डाल या ऊंचे स्थान से बड़ी रस्सी बांधकर बनाया जाने वाला झूला। २ पालना। ३ पालने में झुलाने की क्रिया। ४ झूलानुमा बनी चारपाई।

हींण–देखो 'हीण'।

हींद–देखो 'हिंद'।

हींदव–देखो 'हिंदू'।

हींदवांण–देखो 'हिंदवांण'।

हींदवाछात हींदवोछात–पु० हिंदू राजा, हिंदुओं का राजा।

हींदणो (बो)–देखो 'हिंडणो' (बो)।

हींदु–देखो 'हिंदू'।

हींदुसथान, हींदुस्तांन–देखो 'हिंदुस्तांन'।

हींदू–देखो 'हिंदू'।

हींदूकार–देखो 'हिंदूकार'।

हींदूपत (पति, पती)–देखो 'हिंदूपति'।

हींदूसथांन, हींदूथांन–देखो 'हिंदुस्तांन'।

हींदोल, हींदोलड–देखो 'हिंडोळो'।

हींदोळाट–देखो 'हिंडोळाट'।

हींदोलि, हींदोलु–देखो 'हिंडोळो'।

हींदो–देखो 'हींडो'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हींप, हींफ–स्त्री० शीतल वायु।

हींबाण–पु० एक जाति विशेष का घोड़ा।

हींमजी–पु० एक वृक्ष विशेष।

हींमत–देखो 'हिम्मत'।

हींमती–देखो 'हीमती'।

हींयोड़ो, हींयोड़ो–देखो 'हिंयोड़ो'।

हींयो–देखो 'हिरदो'।

हींस–स्त्री०[सं० हेषः]१ घोड़े के बोलने का शब्द। हिनहिनाट। २ देखो 'हूंस'।

हींसणो–पु० [सं० हेषण] घोड़े के बोलने का शब्द, हिनहिनाने की क्रिया।

हींसणो (बो)–क्रि० [सं० हेषण] १ घोड़े का बोलना, हिनहिनाना। २ उमंगित होना, उत्साहित होना, प्रसन्न होना। ३ तरसना, लालायित होना।

हींसळ, हींसल–पु० [सं० हेषिन्] घोड़ा, अश्व।

हींसवणो (बो)–देखो 'हींसणो' (बो)।

हींसाण, हींसार, हींसारव–स्त्री० घोड़े की बोली, हिनहिनाट।

हींसी–पु० घोड़ा, अश्व।

हींसू–पु० जमीन खोदने का औजार विशेष।

हींसोड़ो–स्त्री० १ जुलाहों का एक उपकरण। २ देखो 'हिंयोड़ो'।

हीं-हीं–स्त्री० १ हंसने की क्रिया, हंसी। २ हंसने की ध्वनि।

ही–अव्य० [सं०] १ भी। २ एक मात्र, केवल। ३ शोक, विस्मय, निराशा सूचक ध्वनि। –भू०का०कृ० थी। –पु० [सं० हृदय] दिल, हृदय, मन।

होअ, होअड–देखो 'हिरदो'।

होआहोण, होआहोन–देखो 'हियाहोण'।

होइ, होओ–देखो 'हिरदो'।

हीक–स्त्री० [सं० हिक्क] १ क्रोध की ज्वाला, क्रोध का आवेग। २ तीव्र मानसिक व्यथा, कसक। ३ तीक्ष्ण दर्द, चोस, टीस। ४ कोई तीव्र गंध। ५ दाह, जलन।

हीकणो (बो)–क्रि० [सं० हिक्क] १ छाती ठोककर ललकारना, चुनौती देना। २ मारना, वध करना। ३ चोट करना, आघात या प्रहार करना।

हीगमत–देखो 'हिकमत'।

हीड़–पु० दीपावली की संध्या को बच्चों द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव।

हीड़कियो–देखो 'हिड़कियो'।

हीड़ाऊ–देखो 'हेड़ाऊ'।

हीड़ाकड़, हीड़ागर–पु० १ चाकरी करने वाला, सेवा करने वाला, सेवक। २ बेगार का काम करने वाला वर्ग, बेगारी लोग।

हीड़ो–पु० १ सेवा, सुश्रुषा, बंदगी। २ चाकरी, नौकरी। ३ रोगी की सेवा या चिकित्सा। ४ आदर, सत्कार, स्वागत। ५ इज्जत, सम्मान। ६ मनोविनोद, क्रीड़ा। ७ बेगार में किया जाने वाला काम। ८ काम-काज, कार्य।

हीच–देखो 'हींच'।

हीचड़णो (बो), हीचणो (बो), हीचवणो (बो)–देखो 'हिचणो' (बो)।

हीचाहीच–देखो 'हींचाहींच'।

हीज–अव्य० १ केवल, मात्र। २ तैयार, तत्पर, सन्नद्ध। ३ करीब, प्रायः, लगभग। ४ किसी बात पर जोर देने के अभिप्राय से बोला जाने वाला अव्यय शब्द। ५ निश्चय या दृढ़ता सूचक अव्यय ध्वनि। ६ अन्ततोगत्वा, आखिरकार। ७ अनन्यता सूचक अव्यय। ८ अल्पता या परिमितता सूचक अव्यय। ९ देखो 'ही'।

हीजर–पु० [अ० हिजार:] पाषाण, प्रस्तर, पत्थर।

हीजरणो (बो)–देखो 'हिजरणो' (बो)।

हीजरो–पु० वियोग जनित दुःख।

हीठो–वि० १ बंधन मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद। २ रहित, बिना। ३ ढीठ, धृष्ट।

हीड–पु० समूह, भीड़।

हीडणो (बो)–देखो 'हींडणो' (बो)।

हीडवण–स्त्री० एक प्रकार की मिश्री।

हीडोलणो (बो)–देखो 'हिंडोळणो' (बो)।

हीडोलाखाट (खाटलो)–स्त्री० झूले की तरह बनी खाट, खाट का झूला।

हीडोलाट–देखो 'हींडोलाट'।

हीण–वि० [सं० हीन] १ निम्नस्तरीय, न्यून, घटकर, घटिया, हल्का, ओछा। २ कायरतापूर्ण। ३ रहित, विहीन, अभावग्रस्त। ४ अशक्त, कमजोर, क्षीण। ५ पतला-दुबला, क्षीणकाय। ६ तुच्छ, नगण्य, निरर्थक, महत्वहीन। ७ लघु, छोटा। ८ रिक्त, खाली। ९ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ। त्यक्त। १० दोषयुक्त, त्रुटियुक्त, अशुद्ध। ११ अल्पतर, कम। १२ वर्जित। १३ नष्ट। १४ कायर, डरपोक। १५ साहित्य में खलनायक, अधम नायक। १६ धर्मशास्त्र के अनुसार अविश्वसनीय साक्षी। १७ काव्य संबंधी एक दोष। १८ मूर्ख। १९ नीच, पामर। —करम–पु० नीच कार्य, बुरा भाग्य। —करमी–वि० कुकर्मी, भाग्यहीन, दुष्ट। —चरित–वि० दुश्चरित्र, चरित्रहीन।

हीणता–स्त्री० [सं० हीनता] १ हीन होने की दशा या भाव।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ अभाव, कमी। ३ तुच्छता, ओछापन। ४ बुराई, नीचता। ५ कमजोरी, दुर्बलता। ६ बुरा कर्म, कार्य। ७ लघुता, अल्पता। ८ कायरता। ९ मूर्खता।

हीणदंत (दंतो, दंतो)–पु० अशुभ चिह्नों वाला एक प्रकार का घोड़ा।

हीणदोस–पु० डिंगल साहित्य में नायक संबंधी एक दोष।

हीणपक्ख (पक्ष, पख)–पु० [सं० हीनपक्ष] १ कमजोर या दुर्बल पक्ष। २ वह बात जो तर्क सम्मत न हो, अप्रामाणिक हो। ३ किसी विषय का कमजोर पक्ष।

हीणपण (पणो)–पु० १ हीन होने की दशा या भाव। २ लघुता, अल्पता। ३ दुर्बलता, कमजोरी। ४ कायरता। ५ नीचता, धृष्टता।

हीणपद–वि० पदच्युत, पद से हटा हुआ, पद से गिरा हुआ।

हीणपुण्ण (पुण्या, पुण्यो, पुन्या)–वि० भाग्यहीन, हतभाग्य। २ जिसके पुण्य क्षीण हो।

हीणमांण (न)–वि० [सं० मान-हीन] १ जिसका मान घट गया हो, अप्रतिष्ठित, हतवीर्य्य। २ हताश, निराश।

हीणमेध–वि० [सं० मेधा-हीन] १ मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी। २ जिसकी बुद्धि कमजोर हो, अल्पबुद्धि,

हीणो–वि० १ ओछो, हल्को, न्यून। २ छोटो, लघु। ३ हीन, निम्न।

हीणु, हीणो–देखो 'हीण'।

हीणोदाव–पु० १ कायरता, भीरुता। २ कमजोर पक्ष। ३ दीन वचन।

हीतळ, हीतल–पु० [सं० हृदयतल] अन्तःकरण, अन्त-स्थल।

हीन–देखो हीण'।

हीनक्रम–पु० काव्य में होने वाला एक दोष।

हीनता–देखो 'हीणता'।

हीनपक्ख (पक्ष, पख)–देखो 'हीणपख'।

हीनयोन, हीनयोनि (नी)–स्त्री० [सं०] १ नीच जाति, नीच कुल। २ नीच या अधम योनि। –वि० नीच योनि का, नीच कुल का।

हीनवाद–पु० [सं०] १ मिथ्या तर्क, झूठा वाद। २ झूठी गवाह।

हीनवीरज (वीर्य)–वि० [सं० हीन-वीर्य] १ कमजोर, अशक्त, दुर्बल। २ कायर, डरपोक। ३ निस्तेज, मंद।

हीनांग–वि० [सं० अंग-हीन] १ जिसका कोई अंग खण्डित हो, अंग-भंग। २ अधूरा, अपूर्ण। ३ कमी वाला।

हीनोपमा–स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद।

हीवणो (बो)–क्रि० १ युद्ध करना, लड़ाई करना। २ मारना, पीटना, कूटना। ३ संहार करना, वध करना। ४ पछाड़ना, पटकना।

हीवर–देखो 'हियवर'।

हीमंसु–पु० [सं० हिमांशु] १ चन्द्रमा, शशि। २ रूपा, चांदी।

हीमत–देखो 'हिम्मत'।

हीमतण–वि० साहसी, हिम्मत वाला।

हीमतभरियो–वि० जिसमें हिम्मत या साहस हो, बल पौरुष वाला।

हीमतवर–वि० हिम्मती, साहसी।

हीमति हीमतो–वि० (स्त्री० हीमतण) साहसी, निडर, बहादुर।

हीमत–देखो 'हिम्मत'।

हीमाचळ–देखो 'हिमाचळ'।

हीमायत–देखो 'हिमायत'।

हीमाळ, हीमाल–स्त्री० १ ठण्डी लहर, शीत लहर। २ देखो 'हिमालय'।

हीमाळइ हीमाळउ, हीमाळे हीमाळो–देखो 'हिमालय'।

हीय, हीयइ हीयइ, हीयउ, हीयऊ, हीयइइ, हीयइसो, हीयडो, हीयडुं, हीयडई हीयडउ, हीयडलू, हीयडलो, हीयडो, हीयरो–देखो हिय'।

हीयणइ–क्रि०वि० [सं० अधुना] अभी, अब।

हीयतळ–पु० [सं० हृदय-तलः] अन्तःस्थल, हृदयतल।

हीयागम–देखो हियंगम'।

हीयाफूट (फूटीडो, फूटो)–देखो 'हियाफूटी'।

हीयालि, हीयालो–देखो 'हियाळो'।

हीयाळे–देखो 'हिमालय'।

हीयो–देखो 'हियो'।

हीर–पु० [सं०] १ हीरा नामक रत्न। २ मोतियों की माला, हार। ३ सूर्य, रवि। ४ विद्युत, बिजली। ५ इन्द्र का वज्र। ६ शक्ति, बल। ७ सर्प, सांप। ८ सिंह, शेर। ९ कोई अमूल्य वस्तु। १० वस्तु का सार भाग, गूदा, सत। ११ धातु, वीर्य। १२ रेशम। १३ शिव का एक नामान्तर। १४ छप्पय छन्द का एक भेद। १५ एक मात्रिक छंद विशेष। १६ गण की पांच मात्राओं में से चौथे भेद का नाम। १७ एक प्रकार की लता।

हीरइ, हीरउ–देखो 'हीरो'।

हीरक, हीरकण (कणी)–पु० [सं०] १ हीरा नामक रत्न। २ कांच काटने का वह औजार जिसमें हीरे का कण लगा हो। ३ वज्र। ४ हीरे का टुकड़ा, कण।

हीरकि, हीरकी–देखो 'हीरक'।

हीरडु, हीरडो–१ देखो 'हिरदो'। २ देखो 'हीरो'।

हीरणी (बी)–देखो 'हरणी' (बी)।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हीरद्द, हीरद्दी–देखो 'हिरदी'।
हीरपट, हीरपट्ट–पु० रेशमी वस्त्र।
हीरबुध (ध)–पु० फारसी धर्म का पुजारी।
हीरबडि–पु० एक प्रकार का वस्त्र।
हीरबणी–स्त्री० कपास का पौधा।
हीराकणी–देखो 'होरकणी'।
हीराउलो–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पती।
हीराकसो, हीराकसीस–पु० १ गंधक के रासायनिक योग से बनने वाला एक पदार्थ। २ वस्त्र रंगने का रंग विशेष।
हीरागर, हीरागरउ–पु० १ एक वस्त्र विशेष। २ एक जाति विशेष। ३ इस जाति का व्यक्ति।
हीरानांनीचोंपण–स्त्री० स्वर्णकारों का एक औजार विशेष।
हीरानांमी–स्त्री० १ स्त्रियों के पैर का, चांदी का आभूषण विशेष। २ स्वर्णकारों का एक औजार। ३ आभूषणों पर की गई खुदाई।
हीराबेधी–पु० छप्पय छन्द का एक भेद विशेष।
हीरामण (न)–पु० एक जाति विशेष का तोता जिसका वर्ण सुनहरा माना जाता है।
हीराळ–पु० तेज चाल वाला एक प्रकार का घोड़ा।
हीरालूलि–पु० एक प्रदेश का नाम।
हीरावणी–स्त्री० १ ससुराल में नव वधू को दिया जाने वाला कलेवा, नाश्ता। २ देखो 'सिरावण'।
हीरावळ (ळी)–पु० १ ओढने का एक बहुमूल्य वस्त्र विशेष। २ एक प्रकार का ऊनी कम्बल। –स्त्री० ३ हीरों की पंक्ति, कतार, माला।
हीरू–स्त्री० बापंद की पुत्री एक देवी।
हीरो–पु० [सं० हीर] १ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर या रत्न, हीरा। २ महत्वपूर्ण वस्तु। ३ बहुत अच्छा व्यक्ति। –वि० कठोर।
हील, हील–स्त्री० १ बंधन। २ रोक, निषेध, प्रतिबन्ध। ३ डर, भय, आतंक। ४ शंका, संदेह। ५ शीतल वायु, ठण्डी हवा। ६ वात रोग, वायु। ७ वृत्तान्त, हाल।
हीलणो (बो)–क्रि० १ बंधन में लेना, बांधना। २ बन्द करना रोक या प्रतिबन्ध लगाना। ३ मुहरबन्द या सीलबन्द करना। ४ ठण्डी हवा खाना, ठण्डी हवा लगाना। ५ ठण्डा या शीतल होना। ६ भय खाना, डरना।
हीलहुज्जत–स्त्री० आना-कानी, बहस, प्रतिवाद।
हीलाणो (बो), हीलावणो (बो)–क्रि० १ बंधन में लिवाना, बंधवाना। २ बन्द कराना, रोक लगवाना, प्रतिबन्ध लगवाना। ३ ठण्डी हवा लगवाना। ४ डराना, भय पैदा करना। ५ ठण्डा या शीतल करना। ६ देखो 'हिलाणो'(बो)
हीलेड़ो–देखो 'हिलोळो'।
हीलोळ–१ देखो 'हिलोर'। २ देखो 'हिलोळो'।
हीलोळणो (बो)–देखो 'हिलोड़णो' (बो)।
हीलोळो–देखो 'हिलोळो'।
हीलोहळ–देखो 'हिलोहळ'।
हीली–पु० १ किसी कार्य की सिद्धि के लिये सोचा हुआ मार्ग। उपाय, रास्ता। २ काम, कार्य। ३ व्यवसाय, रोजी। ४ द्वार, दरवाजा। ५ ब्याज। ६ बच्चे के लिए गाई जाने वाली लोरी गीत। –क्रि०वि० मिलजुल कर, शामिल।
हीलोळ–देखो 'हिलोर'।
हीलोळणो (बो)–देखो 'हिलोड़णो' (बो)।
हीव–देखो 'हिरदो'।
हीवर–देखो 'हयवर'।
हीस–देखो 'हींस'।
हीसणो (बो)–देखो 'हींसणो' (बो)।
हीसाळ–पु० १ घोड़ा, अश्व। २ देखो 'हींसार'।
हीसूं–स्त्री० हंसने की क्रिया, हंसी।
हुं–अव्य० [सं० हुं, हुम्] १ स्वीकृति सूचक अव्यय, हां। २ किसी बात, आवाज आदि के प्रत्युत्तर में कहा जाने वाला शब्द हां, जी, प्रश्नोद्योतक अव्यय। ३ स्मृति, याद। ४ संदेह शक। ५ क्रोध, गुस्सा। ६ घृणा, अरुचि। ७ भर्त्सना, निंदा। ८ देखो 'हूं'।
हुंकळ–देखो 'हूकळ'।
हुंकार–स्त्री० [सं० हुंकार] १ सिंह, वीर पुरुष आदि की जोश पूर्ण आवाज, गर्जना। २ जोर का शब्द, ध्वनि, घोष, टंकार। ३ लड़ने-भिड़ने, ललकारने या चुनौती सूचक शब्द। ४ डांट-फटकार का शब्द। ५ चीत्कार, चिंघाड़। ६ करुण क्रन्दन, हाहाकार।
हुंकारड़उ–देखो 'हुंकारो'।
हुंकारणो (बो)–क्रि० [सं० हुंकार] १ हुंकार करना, गर्जना, गुर्राना, जोश पूर्ण आवाज करना। २ जोश पूर्ण शब्द, घोष या टंकार करना। ३ चिल्लाना, चीत्कार करना, चिंघाड़ना। ४ ललकारना, चुनौती देना। ५ डांटना, फटकारना। ६ बुलाना, पुकारना। ७ रोना, करुण क्रन्दन करना, हा-हाकार करना। ८ 'हुं' शब्द से बात का प्रत्युत्तर करते रहना।
हुंकारियो–पु० बात के साथ 'हुंकारा' देने वाला।
हुंकारो–पु० १ कही जाने वाली बात के प्रत्युत्तर में बोला जाने वाला 'हां' 'हुं', 'जी' शब्द। २ स्वीकृति, सहमति। ३ कही जाने वाली बात के साथ हां-हां करते रहने की क्रिया।
हुंकाळ–देखो 'हूंकळ'।
हुंछ, हुंछउ–देखो 'हूंछ'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुंडन–पु० [सं०] शिव के एक गण का नाम।

हुंडी–स्त्री० १ सेठ-साहूकार या व्यापारियों द्वारा लिखा जाने वाला भुगतान पत्र। २ वह ऋण-पत्र जिसमें ऋण की रकम, अवधि व ब्याज लिखा होता है। ३ हुक।

हुंडीबही–स्त्री० ऐसी बही या किताब जिसमें हुंडी की नकल रखी जाती है।

हुंडीवाळ–पु० वह व्यक्ति या व्यापारी जिसकी हुंडी की साख अच्छी हो।

हुंणहार–देखो 'होणहार'।

हुंतउ–देखो 'हूंतौ'।

हुंतासण (न)–देखो 'हुतासन'।

हुंति, हुंती–देखो 'हूंती'।

हुंतु, हुंतौ, हुंतउ–देखो 'हूंतौ'।

हुंफर–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पती।

हुंबड़–पु० पंवार राजपूतों की एक शाखा।

हुंस–देखो 'हूंस'।

हुंसरड़ी–पु० अड़ियल ऊंट।

हुंसि–स्त्री० एक प्रकार की वनस्पती।

हुंसियार–देखो 'होसियार'।

हुंसियारी–देखो 'होसियारी'।

हुंसेर–स्त्री० उत्कण्ठा, अभिलाषा।

हुंस्यार, हुंस्वार–देखो 'होसियार'।

हुंस्यारी–देखो 'होसियारी'।

हु–पु० [सं०] १ नृप, राजा। २ आलोचना, निंदा। ३ निश्चय, निर्णय। ४ सभारण। ५ अतिरेक। ६ निवेदन। ७ भेंट। ८ यज्ञ। ९ खाना।

हुअणहार–देखो 'होणहार'।

हुअणी–१ देखो 'होणी'। २ देखो 'हुवा'।

हुआ–वि० पर्याप्त, बहुत।

हुउं–अव्य० नहीं, न, इन्कार।

हुक–पु० १ अंकुश की तरह आगे से मुड़ी हुई बड़ी कील या उपकरण। २ देखो 'हूक'।

हुकम–पु० [अ० हुक्म] १ राज्य या शासन द्वारा जारी किया गया आदेश, राजाज्ञा, फरमान। २ सामान्यतया किसी कार्य के लिये की जाने वाली आज्ञा। ३ मार्ग-दर्शन, निर्देश। ४ अधिकार, शासन। ५ स्वीकृति, अनुमति, इजाजत। ६ प्रभुत्व, प्रभाव। ७ नियम, विधान, विधि। ८ शिक्षा। ९ व्यवस्था, प्रबन्ध। १० बड़ों व गुरुजनों का वचन। ११ बड़ों की बात का आदर युक्त प्रत्युत्तर। १२ जरूरत से ज्यादा जताया जाने वाला प्रभाव, रौब। १३ ताश का काला रंग।

हुकमखरच–पु० महाराणा के निजी खर्च का हिसाब रखने वाला महकमा।

हुकमणी–वि० आज्ञा या हुकम देने वाला।

हुकमदार–वि० १ अधिकार रखने वाला। २ हुकम देने वाला।

हुकमनांमो (नांवो)–पु० [अ० हुकमनामः] १ राज्य, शासन का आज्ञा पत्र, आदेश पत्र। २ आदेश, आज्ञा। ३ उत्तराधिकार कर जो जागीर की कुल वार्षिक आय अथवा रेख की तीन चौथाई राशि के रूप में होती थी।

हुकममय–पु० नौकर, चाकर।

हुकमी–वि० [अ० हुक्मी] हुकम मानने वाला, अनुयायी, ताबेदार।

हुकमेण, हुकमो, हुकम्म, हुकम्मा–देखो 'हुकम'।

हुकहुकी–स्त्री० बोलने की उत्कण्ठा।

हुकाधारी–देखो 'होकाधारी'।

हुको–स्त्री० शृगाल की बोली या आवाज।

हुकुम–देखो 'हुक्म'।

हुकूमत–देखो 'हकूमत'।

हुकौ–देखो 'होकौ'।

हुक्कांम–पु० [अ० हुक्काम] हाकिम आदि उच्च पदाधिकारी वर्ग।

हुक्को–देखो 'होकौ'।

हुक्म–देखो 'हुकम'।

हुक्मनांमो (नांवो)–देखो 'हुकमनांमो'।

हुक्मबरदार–पु० [अ० हुकम+फा० बरदार] १ हुकम मानने वाला अनुचर, कर्मचारी, अनुयायी। २ शासन या हुकम चलाने वाला। ३ शासक। ४ हाकिम।

हुक्मबरदारी–स्त्री० [अ०] १ 'हुक्मबरदार' होने की अवस्था या भाव। २ आज्ञा का अनुपालना, सेवा, चाकरी। ३ शासन या हुक्म चलाने की क्रिया। ४ शासन, हुकूमत।

हुक्मी–देखो 'हुकमी'।

हुड़–स्त्री० १ आशा, अभिलाषा, इच्छा। २ जोश, आवेश। ३ उमंग, उत्साह। ४ देखो 'हुड'।

हुड़क–पु० [सं० हुडुक्क] एक प्रकार का छोटा ढोल।

हुड़कणो (वो)–क्रि० उमंग, साहस के साथ उछलना कूदना। २ जोश में भाग कर आना। ३ हमला करना।

हुड़कळ–स्त्री० १ एक प्रकार की चिड़िया। २ भीलों की एक याचक जाति।

हुड़कळी–स्त्री० एक चिड़िया विशेष।

हुड़को–पु० १ 'हुड़कल' जाति का व्यक्ति। २ पशु का आक्रामक भाव।

हुड़पेक–देखो 'हुड़क'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुड़क्कणो (बो)–देखो 'हुड़कणो' (बो) ।

हुड़खो–पु० १ सोच-विचार, चिन्ता, फिक्र । २ सूर्य की किरणें सीधी पड़ने से होने वाली गर्मी या उमस ।

हुड़दंग–वि० १ मजबूत, दृढ़ । २ मस्त, मोटा-ताजा । ३ देखो 'हुड़दंगो' ।

हुड़दंगी–स्त्री० १ मजबूत, मोटी-ताजी या हृष्ट-पुष्ट स्त्री । २ छिनाल स्त्री ।

हुड़दंगो–पु० (स्त्री हुड़दंगी) १ उत्पात, उपद्रव । २ मस्त, आदमी । –वि० १ उपद्रवी, उत्पाती । २ मस्त, मतवाला, मौजी । ३ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

हुड़दाबिगम (बेगण, बेगम, बेगम)–स्त्री० [उ०] १ मर्दानी पोशाक एवं शस्त्रों से सुसज्जित स्त्री जो बादशाहों के जनानखानों की रक्षार्थ नियुक्त रहती थी । २ शैतान या उद्दण्ड स्त्री ।

हुड़बो–पु० घाणी (कोल्हू) की लाठ को रोक रखने के लिये लगाई जाने वाली लकड़ी ।

हुड़ियार–पु० [सं० हुड] नर मेष, भेड़ा ।

हुड़ियो–देखो 'हुड' ।

हुड़ी–स्त्री० १ तेज गति, तीव्रता । २ शीघ्रता । ३ दौड़ । ४ आक्रमण, हमला । ५ देखो 'हुडी' ।

हुचकणो (बो)–क्रि० [सं० उच्चकनम्] १ युद्ध करना, लड़ाई करना । २ भिड़ना टक्कर लेना । ३ वीरगति, प्राप्त करना ।

हुचकाणो (बो)–क्रि० १ युद्ध कराना, लड़ाई कराना । २ भिड़ाना टक्कर लिराना । ३ वीरगति प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना । ४ पीटना, मारना । ५ धक्का देना । ६ धमकाना, डराना ।

हुचको–पु० १ झटका धक्का । २ रोने का भाव, सुबकना क्रिया । ३ रुक-रुक कर श्वास आने की अवस्था । ४ पतंग की डोर लपेटने की गिडगिड़ी । ५ आघात, चोट ।

हुचक्क–स्त्री० १ चोट, आघात, प्रहार । २ धक्का, झटका । ३ युद्ध, लड़ाई ।

हुचक्कणो (बो)–देखो 'हुचकणो' (बो) ।

हुचणो (बो)–क्रि० १ खदेड़ना, ताड़ना या प्रताड़ना देकर भगा देना । २ मुरट नामक पौधे का बीज निकालना ।

हुचरियो, हुचरच, हुचियो, हुच्यो–पु० कुत्ते का छोटा बच्चा ।

हुजवार–पु० १ हाथी का महावत, फीलवान । २ नौकर, अनुचर, कर्मचारी । ३ प्रमुख कर्मचारी, अधिकारी । ४ सामंत । ५ प्रतिनिधि । ६ सेना का व्यवस्थापक ।

हुजवारी–पु० १ "हुजदार" होने की अवस्था या भाव । २ प्रमुख पद, ओहदा, अधिकार । ३ देखो 'हुजदार' ।

हुजूर–पु० [अ०] १ बादशाह सम्राट । २ हाकिम, न्यायाधीश । ३ दरबार, कचहरी, सभा । ४ ईश्वर, मालिक । ५ सेवा, टहल, बंदगी, नौकरी । ६ उपस्थिति, हाजिरी । ७ मौजूदगी । ८ राज्य, शासन । ९ बड़े लोगों के प्रति सम्बोधन । –क्रि०वि० १ सेवा, चाकरी या नौकरी में । २ सामने, सम्मुख । ३ दरबार में ।

हुजूरण–स्त्री० अन्तःपुर की खास दासी ।

हुजूरी–स्त्री० [अ०] १ नौकरी, चाकरी, सेवा, टहल । २ किसी बड़े आदमी का सामीप्य । ३ किसी की हाजरी में रहने की अवस्था या भाव । ४ खुशामद । –वि० १ हुजूर में रहने वाला । २ खास सेवा में रहने वाला ।

हुजूरीयांन–पु० अर्दली, सेवक, चाकर ।

हुज्जत–स्त्री० [अ०] १ तर्क, प्रतिवाद, दलील । २ विवाद, बहस, वाद-विवाद, तकरार । ३ प्रमाण, सबूत । ४ कलह, झगड़ा, बखेड़ा । ५ तूं-तूं, मैं-मैं । ६ जिद्द, हठधर्मी ।

हुज्जती–वि० [अ०] १ हुज्जत करने वाला । २ बहस करने वाला, प्रतिवाद करने वाला । ३ हर बात में तकरार या हुज्जत करने वाला । ४ तर्क या दलील देने वाला । ५ प्रमाण पेश करने वाला ।

हुटकारणो (बो)–क्रि० फटकारना, दुत्कारना ।

हुटणो (बो)–क्रि० १ रुकना, ठहरना । २ दम घुटना, घबराहट होना ।

हुटुहुडाट–देखो 'हुड़बड़ाट' ।

हुडंबो–पु० गणेश, गजानन ।

हुडबेस–पु० [सं० हिडिंबा-ईश] भीम पांडव ।

हुड–पु० [सं०] (स्त्री० हुडी) १ नर मेष, भेड़ा । २ ग्राम शूकर । ३ एक अस्त्र विशेष । ४ लोहे का डंडा या गदा । ५ लोहे का खम्भा या मेख जो चोरों से बचने के काम आती हैं । ६ एक प्रकार का हाता । ७ मूढ़, मूर्ख । ८ दैत्य, राक्षस ।

हुडक, हुडकी–स्त्री० शब्द, आवाज, शोरगुल ।

हुडक्कणो (बो)–देखो 'हुड़कणो' (बो) ।

हुडरकी–पु० चिंता, फिक्र ।

हुडियार–पु० नर मेष, भेड़ा ।

हुडी–स्त्री० भेड़, मेषी ।

हुडीजणो (बो)–क्रि० भेड़ का गर्भवती होना ।

हुडीजियोड़ी–वि० गर्भवती (भेड़) ।

हुडुक, हुडुक्क–पु० [सं० हुडुक्कः] १ एक विशेष प्रकार का ढोल । २ किवाड़ों में लगी चटखनी । ३ नशे में चूर व्यक्ति । ४ दात्यूह पक्षी ।

हुण–क्रि०वि० अब ।

हुणहार–देखो 'होणहार' ।

हुणो (बो)–देखो 'होणो' (बो) ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुतंकर–देखो 'हुतासन'।

हुत–पु० [सं०] १ शिव का एक नामान्तर। २ नैवेद्य; प्रसाद। ३ हवन, सामग्री। –वि० १ हवन किया हुआ। होमा हुआ। २ पीड़ित, त्रस्त। ३ नष्ट किया हुआ, हत। ४ ध्वस्त।

हुतब–देखो 'होतब'।

हुतभक्ख (भक्ष, भख, भुक, भुख, भुज)–पु० [सं० हुतभक्ष, हुत भुज्] अग्नि, आग।

हुतळ–स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि।

हुतवह–स्त्री० [सं०] अग्नि, आग।

हुतसेस–स्त्री० [सं० हुतशेष] हवन की अवशिष्ट बची सामग्री।

हुतां, हुता–क्रि०वि० १ 'होना' का भूतकालिक रूप, था, थे। २ होते हुए, होकर के। ३ से।

हुताग्नि–स्त्री० [सं०] १ यज्ञ या हवन की अग्नि। २ जिसने हवन किया हो, अग्निहोत्री।

हुतास, हुतासण (णि, णी)–स्त्री० [सं० हुत-अशनः] १ अग्नि, आग। २ तीन प्रकार की अग्नियों में से एक। ३ शिव की एक उपाधि। ४ फलित ज्योतिष में वार व तिथि संबंधी योगों में से पांचवां योग।

हुतासणी-पूनम–स्त्री० फाल्गुन मास की पूर्णिमा।

हुतासन, हुतासनि (नी)–देखो 'हुतासण'।

हुती–क्रि०वि० १ थी। २ से। ३ होते हुए।

हुतोज, हुतो–क्रि०वि० 'है' का भूतकालिक रूप था।

हुदहुद–स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया।

हुदावरस–पु० एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

हुदी, हुद्दी–देखो 'होदी'।

हुनर (हुन्नर)–पु० [फा०] १ कारीगरी, दस्तकारी, निर्माण-कला, फन। २ विद्या, इल्म। ३ हस्तकौशल। ४ विशेषता, खूबी, गुण। ५ चालाकी, चतुराई। ६ युक्ति, सूझ-बूझ। —बंध, मंद–वि० 'हुनर' जानने वाला, कारीगर, शिल्पी। चतुर, चालाक।

हुब–पु० [अ०] १ प्रेम, अनुराग, स्नेह। २ शोरगुल, हल्ला। ३ मुसलमान।

हुबकणी (बी), हुबबकणी (बी)–देखो 'ऊबकणी' (बी)।

हुबचळ–पु० समर, युद्ध।

हुबणी (बी)–क्रि० [सं० उभ्] १ क्रोधित होना, गुस्सा करना। २ जोर से बोलना, जोश में बोलना। ३ युद्ध करना, लड़ाई करना। ४ आवेश में आना, जोश खाना। ५ जलना प्रज्वलित होना। ६ प्रकाशित होना, जगमगाना। ७ मारना, वध करना। ८ भिड़ना, टक्कर लेना। ९ कुढ़ना, जलना। १० उत्साहित होना।

हुबास, हुबासि (सी)–देखो 'होबास'।

हुबीहुब, हुबीहूब–देखो 'हूबहू'।

हुब्बकणी (बी)–देखो 'ऊबकणी' (बी)।

हुब्बणी (बी)–देखो 'हुबणी' (बी)।

हुमकणी (बी)–क्रि० १ उछलना, कूदना। २ पैरों से धक्के लगाना, ठेला मारना। २ जोर से दबाना, दबाव डालना।

हुमगणी (बी)–देखो 'हुमकणी' (बी)।

हुमणी–सर्व० अपनी, हमारी।

हुमणी–देखो 'हूमणी'। (स्त्री० हुमणी)

हुमा–स्त्री० [फा०] एक प्रकार का कल्पित पक्षी।

हुमाऊ, हुमायु (यू)–पु० [फा० हुमायू] बादशाह अकबर का पिता।

हुमेल–देखो 'हमेल'।

हुरम–देखो 'हरम'।

हुरकलियो–पु० वेश्याओं का दलाल।

हुरकणी (नी)–स्त्री० [सं० हुडुकिनी] हिन्दू वेश्याओं का एक वर्ग व इस वर्ग की वेश्या।

हुरकिया–स्त्री० गाने-बजाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति।

हुरकियो–पु० उक्त जाति का व्यक्ति।

हुरखणी (बी)–देखो 'हरसणी' (बी)।

हुरड़ा–पु० चौहान क्षत्रियों की एक शाखा।

हुरड़ाई–स्त्री० उत्कण्ठा, लालसा।

हुरड़ी–स्त्री० टक्कर, धक्का।

हुरदंगी–देखो 'हुडदंगी'।

हुरभुज–पु० एक प्राचीन देश का नाम।

हुरम–देखो 'हरम'। —खानो= हरमखानो'।

हुरमटी–स्त्री० गाय की छोटी बछिया।

हुरमत (ति, ती)–स्त्री० [अ० हुर्मत] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा। २ ईमान, धर्म। ३ सतीत्व, अस्मत। ४ परहेज, मनाही। ५ स्त्री, पत्नी।

हुररा, हुररं–स्त्री० [अ० हुर्रा] १ एक प्रकार की हर्ष ध्वनि। २ बेहज्जती, हंसी।

हुरळ–स्त्री० किसी पैनी वस्तु या शस्त्र का प्रहार।

हुरळणी (बी)–क्रि० किसी पैनी वस्तु या शस्त्र का प्रहार करना।

हुरहटक–पु० हाथी का अंकुश।

हुरुमयी–स्त्री० एक प्रकार का नृत्य।

हुलंब–वि० लम्बा चौड़ा, विस्तृत।

हुळ हुल–पु० १ एक प्रकार की दुधारी कटार, छुरी। २ सीसोदिया राजपूतों की एक शाखा। ३ किसी पैने शस्त्र का प्रहार। आघात।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुळको, हुलको–स्त्री० मन्द ज्वर, हल्का बुखार। –वि० मन्द, हल्की।

हुलड़–देखो 'हुल्लड़'।

हुलणी–स्त्री० सीसोदिया क्षत्रियों की एक शाखा।

हुळणो (बो)–क्रि० [सं० हुल्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना। २ उमंगित होना, उत्साहित होना।

हुलणो (बो)–क्रि० छोटे बच्चे को हुलराना।

हुलबग–स्त्री० चर्चा, खबर।

हुळम, हुलम–पु० एक प्रकार का शोशा।

हुलरणो (बो)–क्रि० [सं० उल्ललनम्] हुलराया जाना, लोरी गाया जाना।

हुलरावणो (बो), हुलरावणो (बो)–क्रि० [सं० उल्ललनम्] १ बच्चे को हुलराना, लोरी गाना। २ बच्चों को प्यार करना, स्नेह या ममत्व दिखाना। ३ गायन करना, गाना। ४ लोरी गाते हुए झूला झुलाना। ५ रेंगना।

हुलस–देखो 'हुलास'।

हुळसण, हुलसण (न)–स्त्री० [सं० उल्लास] प्रसन्नता, उमंग, उत्साह।

हुळसणो (बो), हुलसणो (बो)–क्रि० [सं० उल्लसनम्] १ प्रसन्न होना, आनन्दित होना, खुश होना। २ उमंगित होना। ३ उमड़ कर आना। ४ उत्सुक, लालायित या उत्कण्ठित होना। ५ चमकना, जगमगाना। ६ मंडराना, फैलना, छाना। ७ झुकना। ८ उतावला होना, आकुल होना। ९ प्रवृत्त होना, झुकना। १० टूट पड़ना, झपटना।

हुळसाणो (बो), हुलसाणो (बो)–क्रि० १ प्रसन्न करना, आनन्दित करना, खुश करना। २ उमड़ाना, उमड़ा कर लाना। ३ उत्कण्ठित करना, लालसा जागृत करना। ४ चमकाना, दीप्तिमान करना। ५ झुकाना। ६ उत्साहित करना, उमंगित करना। ७ देखो 'हुळसणो' (बो)।

हुळहुळ–पु० १ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियां औषधियों में काम आती हैं। २ देखो 'सुळसुळ'।

हुवाउ–पु० शोरगुल, कोलाहल।

हुलास–पु० [सं० उल्लास] १ हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द। २ उत्साह, उमंग। ३ उत्कण्ठा, लालसा। ४ रोमांच। ५ चमक, आभा, दीप्ति। ६ एक अलंकार विशेष। ७ किसी ग्रन्थ का एक भाग, अंश, अध्याय। ८ एक छंद विशेष।

हुलासी–वि० [सं० उल्लसित] १ प्रसन्नचित्त, आनन्दित। २ कान्तिवान, दीप्तिवान, तेजस्वी। ३ चमकदार, आभा युक्त। ४ उत्साहित, उमंगित। ५ लालायित।

हुळियार–पु० होली का रंग खेलने वाला।

हुल्लड़–पु० [सं० हुल] १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल। २ उपद्रव दंगा। ३ विद्रोह। ४ हलचल।

हुल्लराणो (बो)–देखो 'हुलराणो' (बो)।

हुल्लास–देखो 'हुलास'।

हुवणो (बो)–देखो 'होणो' (बो)।

हुवणहार–देखो 'होणहार'।

हुवर–देखो 'हूर'।

हुवा–वि० १ बस, काफी। २ अलभ्य, दुर्लभ्य। ३ समाप्त, खत्म। ४ पर्याप्त। ५ अधिक, बहुत।

हुवारियो–पु० १ आवाज देने की क्रिया या भाव। २ लम्बी आवाज।

हुवाल–देखो 'हवाल'।

हुवाले, हुवालै–देखो 'हवालै'।

हुवास–देखो 'होवास'।

हुविए, हुविऐ–क्रि०वि० अब, अभी।

हुवो–पु० कूए मे मोट खाली करते समय बोला जाने वाला शब्द विशेष। –क्रि०वि० पर्याप्त।

हुसंड–वि० १ मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट। २ शक्तिशाली, बलवान। ३ स्वस्थ। –पु० घोड़ा, अश्व।

हुस–अव्य० निषेध या भर्त्सना सूचक ध्वनि।

हुसन–पु० [अ० हुस्न] १ सुन्दरता, खूबसूरती। २ आभा, कान्ति, लावण्य। ३ शोभा, छटा, रौनक। ४ यौवन का उभार। ५ मतीत्व। ६ भलाई, अच्छाई। ७ उत्तमता, श्रेष्ठता। –वि० उत्तम, श्रेष्ठ, भला।

हुसनाक, हुसनायक–वि० १ जिसमें हुस्न हो, सौन्दर्य हो, सुन्दर; खूबसूरत। २ कान्तिवान, दीप्तिवान, ओजस्वी। ३ प्रभावशाली, प्रतिभाशाली। ४ अच्छा, भला। ५ उत्तम, श्रेष्ठ। ६ साहसी, निडर। ७ चुनौती मानने वाला, सामना करने वाला। ८ चतुर, होशियार। –पु० शाहजादा।

हुसनेनाको–पु० एक प्रकार का पौधा व उसका फूल।

हुसमंद–देखो 'होसमंद'।

हुसियार–देखो 'होसियार'।

हुसिक–पु० १ हौसला, होश। २ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

हुसियार–देखो 'होसियार'।

हुसियारक–पु० द्वारपाल, प्रतिहार, दरबान, छड़ीदार।

हुसियारगी, हुसियारी–देखो 'होसियारी'।

हुसोयार (रो)–देखो 'होसियार'।

हुसैन–पु० [अ०] मोहम्मद साहब का दौहित्र व हजरत अली का दूसरा पुत्र। यह शिया मुसलमानों के लिए पूज्य है।

हुसैनी–वि० 'हुसैन' का, हुसैन संबंधी। –स्त्री० १ मुसलमानों की एक भाषा। २ यवन भाषा। ३ एक प्रकार की तलवार।

हुसैनीकांन्हड़ा–पु० सब शुद्ध स्वरों वाला एक राग।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुस्तंड–देखो 'हुसंड'।
हुस्त–देखो 'हुस'।
हुस्यार–देखो 'होसियार'।
हुस्यारी–देखो 'होसियारी'।
हूहव–पु० एक नरक का नाम।
हूहू, हूहू–पु० १ देवता। २ एक गंधर्व। ३ देखो 'हूहू'।
हूं–सर्व० [सं० अहम्] मैं, मैंने, मुझे। –अव्य० १ से। २ द्वारा, मार्फत। ३ से, अपेक्षाकृत, तुलना में। ४ को। ५ के। ६ हां। ७ वर्तमानकालिक क्रिया "है" का उत्तम पुरुष एक वचन रूप।
हूंकणी–स्त्री० १ किसी जानवर की बोली, आवाज। २ उमंग, प्रबल इच्छा।
हूंकणी (बो)–क्रि० १ हुंकार भरना, हुंकारना। २ गर्जना, गर्जन करना। ३ सिसकना, रोना। ४ बोलना, आवाज करना।
हूंकर–देखो 'हुंकार'।
हूंकळ–पु० [सं० उत्कललनह] १ कोलाहल, शोरगुल। २ हुंकार, गर्जन। ३ घोड़े की हिनहिनाट। ४ शब्द, ध्वनि। ५ युद्ध लड़ाई। ६ सिंधु राग। ७ गायन, गाना।
हूंकळचाळो–पु० उपद्रव, बखेड़ा, दंगा।
हूंकळणी(बो)–क्रि० १ कोलाहल या शोरगुल होना। २ गरजना, हुंकारना। ३ हिनहिनाना। ४ शब्द, आवाज या ध्वनि होना। ५ सिंधु राग गाया जाना।
हूंकार–स्त्री० १ स्वीकृति, सहमति, हां। २ देखो 'हुंकार'।
हूंकारो–देखो 'हुंकारो'।
हूंचकणी (बो)–देखो 'हुचकणी' (बो)।
हूंचणी (बो)–देखो 'हुचणी' (बो)।
हूंचो, हूंछ–पु० 'मुरट' नामक घास की बाल या बोज।
हूंट, हूंठ–वि० [सं० अर्द्ध-चतुष्टय] तीन व आधा, साढ़े तीन। –पु० साढ़े तीन की संख्या।
हूंटो, हूंठो–पु० साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूंड–वि० लम्बा।
हूंडा–पु० चौपड़ के खेल में पासे निरस्त हो जाने की एक अवस्था।
हूंडो–स्त्री० १ नाभि। २ देखो 'हुंडी'।
हूंडीवाळ–देखो 'हुंडीवाळ'।
हूंडो–पु० एक प्रकार की डलिया।
हूंणहार–देखो 'होणहार'।
हूंणी–देखो होणी'।
हूंत–अव्य० १ तृतीया विभक्ति चिह्न, 'से'। २ तुलना में, से। ३ सहित, समेत, युक्त, से। ४ का, के, की। ५ द्वारा, मार्फत। ६ होना क्रिया।
हूंतउ–देखो 'हूंतो'।
हूंतळ–क्रि०वि० शामिल, साथ।
हूंतां, हूंता–देखो 'हूंत'।
हूंति हूंती–अव्य० १ से। २ की। ३ थी।
हूंतूं–सर्व० मैं व तूं।
हूंतें–क्रि०वि० १ से, द्वारा। २ होते हुए। ३ वाजिब, ठीक, उचित।
हूंतो–अव्य० १ से। २ द्वारा, मार्फत, से। ३ के, को। ४ था।
हूंफणी (बो)–देखो 'हांफणी' (बो)।
हूंमड–पु० पंवार राजपूतों की एक शाखा।
हूंमणी (बो)–देखो 'होमणी' (बो)।
हूंस–स्त्री० [सं० उष्म] १ प्रबल इच्छा, अभिलाषा, उत्कण्ठा। २ उमंग, उत्साह, जोश। ३ हर्ष, खुशी, आनन्द। ४ मोद, गर्व, अभिमान। ५ हिम्मत, हौसला। ६ प्रवृत्ति। ७ मौज, मस्ती। ८ आभा, कान्ति, दीप्ति, चमक।
हूंसनायक, हूंसियो–देखो 'हुसनायक'।
हू–स्त्री० शृगाल या सियार की बोली।
हूक–स्त्री० १ छाती या सीने में होने वाली तीव्र पीड़ा, दर्द। २ मन की कसक, वेदना, दुःख। ३ तड़प, आह, कराह। ४ करुण, क्रन्दन। ५ शोक, समाचार। ६ धड़कन। ७ पश्चाताप, खेद। ८ अभिलाषा, मनोकामना।
हूकणी (बो)–क्रि० १ छाती या सीने में तीव्र पीड़ा होना, दर्द होना। २ कसक उठना, वेदना या दुःख होना। ३ कराहना, आह भरना, तड़पना। ४ करुण क्रन्दन करना। ५ शोक समाचार फैलना। ६ धड़कना, धड़कन होना। ७ पश्चाताप या खेद करना।
हूकळ, हूकल–देखो 'हूंकळ'।
हूकळणी (बो), हूकलणी (बो)–देखो 'हूकळणी' (बो)।
हूकळी–स्त्री० फौज के चलने से उत्पन्न ध्वनि, शोर, कोलाहल।
हूकाधारी–देखो 'होकाधारी'।
हूकारो–देखो 'हुंकारो'।
हूकी–देखो 'होकी'।
हूचक–पु० [सं० उच्चकन] १ युद्ध, समर, लड़ाई। २ भिड़ंत, टक्कर। ३ वीर गति। ४ प्रहार, टक्कर।
हूचकणी (बो)–देखो 'हुचकणी' (बो)।
हूचकी–देखो 'हुचकी'।
हूचटो–पु० १ झटका। २ धक्का।
हूचणी (बो), हूछणी (बो)–देखो 'हुचणी' (बो)।
हूड–देखो 'हुड'।
हूण–पु० १ एक प्राचीन मंगोल जाति। २ इस जाति का व्यक्ति। ३ एक राजवंश। ४ पंवार राजपूतों की एक शाखा। ५ देखो 'होणी'।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हूणहार–देखो 'होणहार'।
हूणी (बो)–देखो 'होणी' (बो)।
हूतव्य–देखो 'हूंती'।
हूतव्य–पु० [सं०] हवन, सामग्री।
हूतळ, हूतस–देखो 'हुतळ'।
हूतां, हूता–देखो 'हूंत'।
हूनर, हून्नर–देखो 'हुनर'।
हूपड़ी–पु० बैलगाड़ी के धाटे के आगे लगा त्रिभुजाकार तख्ता।
हूबकणी (बो)–देखो 'ऊबकणी' (बो)।
हूवणी (बो)–देखो 'हुवणी' (बो)।
हूबहू–वि० [फा०] १ बिल्कुल एकसा, समान, सदृश। २ बराबर, तुल्य। ३ ज्यों का त्यों, जैसा का जैसा।
हूबी–स्त्री० ऊंट के तालु में होने वाला ग्रन्थि-रोग।
हूबोहूब, हूबोहूब–देखो 'हूबहू'।
हूर–स्त्री० १ मुसलमानों के बहिश्त की परी। २ स्वर्ग की अप्सरा, परी। ३ वेश्या, रंडी, नगर वधू। ४ सुन्दर, स्त्री।
हूरळ–पु० १ पैने शस्त्र का जोरदार प्रहार। २ शूल, हूक।
हूरव–पु० [सं० हूरवः] शृगाल, गीदड़।
हूरवर, हूरांवर–पु० युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाला योद्धा।
हूळ, हूल–स्त्री० [सं० शूल] १ प्रहार, आघात, वार। २ भय, त्रास। ३ कोई भयंकर पीड़ा, दर्द। ४ दुःख, कसक, वेदना। –पु० ५ चौदहवीं वार उलटाकर बनाया हुआ, शराब। ६ देखो 'हूल'।
हूलाहूल–स्त्री० निरन्तर उठती रहने वाली कसक, पीड़ा, वेदना।
हूलियो–पु० [अ० हुलियः] १ आकृति, शक्ल, चेहरा। २ रूपरंग, बनावट। ३ किसी मनुष्य की शक्ल-सूरत का ब्योरा।
हूवणी (बो)–देखो 'होणी' (बो)।
हूस–वि० १ अडिग, अटल। २ अशिष्ट, असभ्य। ३ बेहूदा, उजड्ड मूर्ख।
हूसनांइक (नायक)–देखो 'हुसनाक'।
हू-हल्लो–पु० शोरगुल, कोलाहल।
हूहू–पु० [सं०] १ गन्धर्व विशेष। २ देवता। ३ अग्नि के जलने का शब्द, धू-धू, धांय-धांय।
हेंकड़ी–देखो 'हेकड़ी'। —बाज= हेकड़ीबाज'।
हेंवर–देखो 'हयवर'।
हेंस, हेंसो–देखो 'हिस्सो'।
हें-हें–स्त्री० हंसी की आवाज, हंसी।
हे–अव्य० [सं०] १ सम्बोधनात्मक अव्यय, अरे, ओ। २ दर्प, ईर्ष्या, द्वेष या शत्रुता द्योतक अव्यय। ३ देखो 'है'।
हेआर–पु० हय, घोड़ा, अश्व।
हेकंकार–वि० समान, तुल्य, बराबर।
हेकंखण, हेकंखियो–वि० विमूढ, अवाक्।
हेकंड–वि० जबरदस्त, जोरदार।
हेकंपणो (बो)–क्रि० १ कंपायमान होना, कांपना, थर्राना। २ भयभीत होना, डरना। ३ आश्चर्य चकित होना।
हेक–वि० [सं० एक] १ एक, एक मात्र। २ करीबन, अंदाजिया; अनुमानित। ३ कई, कुछ।
हेकड़–वि० [सं० हृत्कटु] १ एक। २ अड़ियल, उद्दण्ड। ३ देखो 'एकड़'।
हेकड़ी–स्त्री० १ उद्दण्डता, अड़ियलपना। २ बलप्रयोग; जोरावरी, जबरदस्ती, बलात्कार। ३ शेखी, शान; अकड़। ४ गर्व, अभिमान, मान। ५ हठ। —बाज–वि० शेखी मारने वाला, गर्वीला, घमण्डी, बलवान।
हेकड़ो–वि० अकेला।
हेकठ, हेकठा, हेकडा–क्रि०वि० १ एकत्र होकर, साथ-साथ। २ मिल-जुल कर, सम्मिलित होकर। ३ एक ही जगह या स्थान पर।
हेकण–देखो 'एकण'।
हेकणजमें–वि० इकट्ठा, एकत्रित।
हेकणि, हेकणी–देखो 'एकण'।
हेकमत–पु० १ मन मिलने की अवस्था या भाव। २ एकमत; मतैक्य, सहमति। ३ एकाग्रता। ४ प्रेम, प्यार, स्नेह, अनुराग।
हेकमहेक–देखो 'एकमेक'।
हेकर–देखो 'एकर'।
हेकरसां (सूं, से, सैं)–देखो 'एकरसूं'।
हेकल–देखो 'एकल'।
हेकलि, हेकली–वि० अकेली।
हेकले, हेकलं–वि० अकेले।
हेकलो हेकल्लो–देखो 'एकलो'।
हेकहेकोज–वि० एक ही, अकेला, कइयों में एक।
हेकहेको–वि० अकेला, केवल एक।
हेकांणी–वि० १ एक। २ अकेला। ३ एक बार।
हेकांणवइ (ई)–वि० नब्बे तथा एक, इक्यानवे, इकरानवे।
हेका–वि० १ एक ही। २ अकेला। –क्रि०वि० १ एक ओर; एक तरफ। २ इधर-उधर। ३ देखो 'एका'।
हेकारु हेकारू–क्रि०वि० एक बार, एक समय।
हेकाहेक हेकाहेकी–देखो 'एकाएक'।
हेके, हेकें–देखो 'एकें'।
हेकोहिक, हेकोहेक–क्रि०वि० एक-एक करके, बारी-बारी से।
हेकी–पु० १ एक को संख्या या अंक। २ देखो 'एकी'। –क्रि०वि० एक बार।
हेकारव–पु० [सं० हृत या हेष] शब्द या आवाज।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेखि पु० [सं० हर्ष] खुशी, प्रसन्नता, हर्ष ।

हेग्रिव, हेग्रीव–देखो 'हयग्रीव' ।

हेड़–स्त्री० १ चौपाये जानवरों का समूह, झुण्ड : वर्ग । २ भीड़, समूह । ३ टोली, मण्डली ।

हेड़णो (बो), हेड़वणो (बो)–क्रि० १ हांकना, हांककर ले जाना । २ एकत्र या इकट्ठा करना, घेरे में लाना । ३ भगाना, डराना । ४ ललकारना, चुनौती देना । ५ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना । ६ छोड़ना, बंधन मुक्त करना । ७ चलाना, फेंकाना । ८ रखना, डालना, पटकना । ९ खदेड़ना । १० देखो 'हेरणो' (बो) ।

हेड़बरीस–वि० घोड़ों के समूह का दान करने वाला दानी ।

हेड़रोसिंगार–वि० भीड़ या समूह में श्रेष्ठ, वर्ग में अग्रणी ।

हेड़वणो (बो)–१ देखो 'हेरणो' (बो) । २ देखो 'हेड़णो'(बो) ।

हेड़वियो, हेड़वीयो–वि० १ 'हेड़ने' वाला । २ वीर ।

हेड़ाउ, हेड़ाऊ–पु० [सं० हेडाबुक्कः] १ घोड़ों का व्यापारी, सौदागर । २ पशुओं का व्यापारी । ३ पशुओं को घेरने वाला, ग्वाला । –वि० जाने वाला ।

हेड़ि–वि० १ 'हेड़ने' वाला । २ तलाश करने वाला, लौटाने वाला । ३ देखो 'हेड़' ।

हेड़ो–१ देखो 'हेड़ि' । २ देखो 'हेड़' ।

हेड़ो–पु० १ वह बड़ा भोज जिसमें हर आगन्तुक व्यक्ति को भोजन कराया जाता है । २ एक पौधा विशेष ।

हेच–वि० [फा०] १ तुच्छ, नाचीज, छोटा । २ व्यर्थ, बेकार ।

हेचणी (बो)–देखो 'हिचणो' (बो) ।

हेज–पु० [सं० हृदयज, हृद्य] १ दाम्पत्य, प्रेम, प्यार । ३ मन, दिल, चित्त । ३ इश्क, लगाव । ४ स्नेह, ममता, प्रेम । ५ वात्सल्य । ६ दोस्ती की भावना, हेत, मेल । ७ मेलमिलाप, सबंध । ८ श्रद्धा । ९ आदर, सम्मान । १० स्वाद, रस ।

हेजइ–क्रि०वि० 'हेज' से प्रेम से, प्यार से ।

हेजणो (बो)-क्रि० १ प्रेम करना, प्यार करना, मुहब्बत करना । २ लाड करना; दुलराना । ३ वात्सल्य भाव से द्रवित होना । ४ उल्लसित होना, उमंगित होना । ५ दोस्ती या मित्रता करना । ६ मेल-मिलाप करना । ७ श्रद्धा करना, आदर करना । ८ रस लेना, स्वाद लेना । ९ इश्क या लगाव होना ।

हेजाळू, हेजाळू, हेजालू–वि० १ जिसके मन में प्रेम हो, स्नेह हो, प्रेमी, स्नेही । २ जिसमें वात्सल्य हो ।

हेजि–क्रि०वि० १ 'हेज' से, प्रेम से, प्यार से । २ देखो 'हेज' ।

हेजीमोगर–पु० पकाई हुई चने की 'फरकी' दाल ।

हेजे हेजै, हेजै-क्रि०वि० प्रेम से, प्यार से, श्रद्धा से ।

हेट–वि० १ निम्नस्तर का, नीचा । २ तुच्छ, हीन, नाचीज । ३ देखो 'हेटै' ।

हेटड़ो–देखो 'हाट' ।

हेटणो (बो)–क्रि० नीचा दिखाना, निस्तेज करना ।

हेटलो–वि० (स्त्री० हेटली) नीचे का, नीचे वाला ।

हेटवाळियो–वि० (स्त्री० हेटवाळण) १ मातहत, अधीनस्थ । २ नीचे का, नीचे वाला । ३ जो दबता हो, दबाव में आकर रहने वाला ।

हेटा–क्रि०वि० नीचे, नीचे की ओर । –वि० नीचा, न्यून, निम्न ।

हेटि हेटी–क्रि०वि० १ नीचे जमीन पर । २ नीचे की ओर, नीचे स्थित । ३ किसी के नीचे । ४ देखो 'हेठी' ।

हेटियां–क्रि०वि० नीचे से ।

हेटे हेटै–क्रि०वि १ नीचे की ओर, नीचे, ऊंचाई से नीचे की ओर । २ जमीन पर, आधार पर । ३ किसी के नीचे, अधीन, अधिकार में । ४ नीचे । ५ ऊंचाई से नीचे । ६ अधो भाग में ।

हेटो–वि० (स्त्री० हेटी) १ नीचा, न्यून, निम्नस्तर का । २ नीच, तुच्छ, हीन । ३ जिसकी ऊंचाई कम हो । ४ तुलना में नीचा । ५ शान्त ।

हेट्ठिम, हेट्ठिम-वि० [सं० अधोवर्ती] नीच, पामर, जघन्य संयमधारी, केवल वेषधारी । अधोवर्ती । (जैन)

हेठ–वि० १ नीचा । २ कम, घटकर । ३ देखो 'हेटै' ।

हेठलि–क्रि०वि० नीचे, नीचे की ओर ।

हेठलो–वि० (स्त्री० हेठली) नीचे का, नीचे वाला ।

हेठि–१ देखो 'हेटी' । २ देखो 'हेठी' ।

हेठियां–देखो 'हेटियां' ।

हेठिलो–देखो 'हेटलो' ।

हेठी–स्त्री० १ अपकीर्ति, अप्रतिष्ठा । २ अपमान, बेइज्जती । ३ हीनता, न्यूनता, तुच्छता । ४ देखो 'हेटी' । ५ देखो 'हेटै' ।

हेठे, हेठै–देखो 'हेटै' ।

हेठो–देखो 'हेटो' ।

हेड–देखो 'हेड' ।

हेडणो (बो), हेडवणो (बो)–देखो 'हेड़णो' (बो) ।

हेडाउ हेडाऊ–देखो 'हेड़ाऊ' ।

हेडो–स्त्री० सेहा नामक जंतु विशेष ।

हेडोकी हेडोके, हेडोकै, हेडोकै–क्रि०वि० इस बार, अब की बार ।

हेणां, हेणा–देखो 'हणा' ।

हेत–पु० १ प्रेम, प्रीति, स्नेह, प्यार । २ वात्सल्य, ममता, दुलार । ३ मोह, लगाव । ४ श्रद्धा, भक्ति । ५ मेल-मिलाप, सम्पर्क । ६ इश्क, यौनसंबंध । ७ आनन्द, हर्ष । ८ देखो 'हेतु' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेतइं–देखो 'हेतु'।
हेतभाव–पु० प्रेम भाव।
हेतव–पु० १ चारण कवि। २ कवि। ३ देखो 'हितु'।
हेता–देखो 'हेत'।
हेतारथ–देखो 'हितारथ'।
हेताळ, हेताळु, हेतालू–वि० १ हित चाहने वाला, हितैषी। २ प्रेमी, स्नेही।
हेति–स्त्री० [सं०] १ अस्त्र, हथियार। २ वज्र। ३ भाला। ४ आघात, चोट, प्रहार। ५ प्रकाश, चमक। ६ अंगारा, लोला। ७ मधु या चैत्र मास में सूर्य के रथ पर रहने वाला प्रथम राक्षस राजा।
हेतिकरण–देखो 'हितकारी'।
हेतो–१ देखो 'हेत'। २ देखो 'हेतु'।
हेतु पु० [सं०] १ कारण, वजह, उद्देश्य। २ उद्भव स्थल, निकास, उत्पत्ति। ३ साधन, जरिया। ४ अभिप्राय, उद्देश्य कारक या उत्पादक विषय। ५ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके होने से कोई बात हो, प्रमाणित करने वाली बात। ६ ज्ञापक विषय। ७ तर्क, विज्ञान व न्याय दर्शन में वर्णित प्रमाणों में से कोई प्रमाण। ८ एक अलंकार विशेष। –क्रि०वि० १ लिये, वास्ते, निमित्त। २ देखो 'हितु'।
हेतुभेद–पु० [सं०] ज्योतिष में ग्रह-युद्ध का एक भेद।
हेतुमंत–वि० [सं० हेतुमत्] जिसका कुछ कारण हो, हेतु हो।
हेतुवाद–वि० [सं०] १ तर्क विद्या, तर्क शास्त्र। २ कुतर्क। ३ नास्तिकता।
हेतुवादी–वि० [सं०] १ उक्त सिद्धान्त को मानने वाला, तार्किक। २ नास्तिक।
हेतुविद्या–स्त्री० [सं०] तर्क शास्त्र।
हेतुहेतुमद्भाव–पु० [सं०] कारण और कार्य का संबंध।
हेतू–१ देखो 'हितु'। २ देखो 'हेतु'।
हेतै–देखो 'हेतु'।
हेती–वि० १ हतप्रभ, निराश, हतोत्साह। २ देखो 'हेत'।
हेनाळ–स्त्री० घोड़े के सुम की नाल, खुरताल।
हेप हेफ–देखो 'हैफ'।
हेमक–पु० [सं०] १ विष्णु। २ ब्रह्मा। ३ गरुड। ४ शेर, सिंह। ५ सुमेरु पर्वत। ६ हिमालय पर्वत। ७ बर्फ, हिम। ८ स्वर्ण, सोना, कंचन। ९ चंपक वृक्ष। –वि० १ सुनहला। २ शीतल।
हेमंत, हेमंतरित (रितु)–स्त्री० [सं० हेमन्त, हेमन्त ऋतु] १ छः ऋतुओं में से एक ऋतु जो मिगसर व पौष मास में रहती है। २ शीतकाल। ३ एक छन्द विशेष।
हेमंत, हेमतो, हेमंतु–देखो 'हेमंत'।
हेमसु हेमसू–देखो 'हिमासु'।

हेम–पु० [सं० हेमिन्] १ स्वर्ण, सोना, कंचन। २ वह वस्त्र जिस पर सुनहरा कार्य किया हुआ हो। ३ हेमंतऋतु। ४ सुमेरु पर्वत। ५ पानी, जल। ६ धतूरा। ७ केसर का फूल। ८ गौतम बुद्ध का एक नाम। ९ बादामी रंग का घोड़ा। –वि० १ शीतल, ठण्डा। २ श्वेत सफेद। ३ पीत, पीला। ४ देखो 'हिम'।
हेमअद्र, हेमअनड़–पु० [सं० हेम-अद्रि] १ हिमालय, पर्वत। २ सुमेरु पर्वत।
हेमअरि–पु० [सं०] स्वर्ण का शत्रु, सीसा।
हेमकार–पु० [सं०] १ स्वर्णकार, सुनार। २ सोना, स्वर्ण।
हेमकूट–पु० [सं०] हिमालय के उत्तर में स्थित एक पर्वत।
हेमकेस–पु० [सं० हेमकेश] शिव का एक नामान्तर।
हेमगढ–पु० [सं०] १ सोने का गढ़। २ लंका।
हेमगर, हेमगिर (गिरि, गिरी)–पु० [सं० हेमगिरिः] १ सुमेरु पर्वत। २ हिमालय पर्वत।
हेमचंद, हेमचंदर, हेमचंद्र–पु० [सं० हेमचंद्र] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा। २ कलिकाल सर्वज्ञ के नाम से प्रसिद्ध एक जैनाचार्य।
हेमजा–स्त्री० [सं० हिमजा] १ हरीतकी, हरड़। २ पार्वती, उमा।
हेमजाळ (जालक)–पु० एक आभूषण विशेष।
हेमता–वि० सोने का।
हेमतुला–स्त्री० [सं०] १ सोने का तुलादान, तराजू। २ वह तराजू जिसमें सोना तोला जाता है।
हेमदंता–स्त्री० [सं०] एक अप्सरा विशेष।
हेमदिस, हेमदिसा (दिसि)–स्त्री० [सं० हिम-दिशा] हिमालय या उत्तर दिशा।
हेमपंथ, हेमपथ–पु० [सं० हेम-पथ] १ हिमालय पर्वत। २ उत्तर दिशा का मार्ग।
हेमपरवत–पु० [सं० हेमपर्वत] १ सुमेरु पर्वत। २ स्वर्ण की वह राशि जो दान में दी जाय। ३ हिमालय पर्वत।
हेमपुसप (पुस्प)–पु० [सं० हेमपुष्प] १ चम्पा का पुष्प। २ गुलाब का पुष्प विशेष।
हेमफूल, हेमफूलिका–स्त्री० सोनजुही का पौधा।
हेममाळ (माळा)–पु० [सं० हेममालिन्] १ सूर्य, रवि। २ एक राक्षस विशेष।
हेमर–देखो 'हयवर'।
हेमलंब–पु० विष्णु बीसों का ग्यारहवां वर्ष। (ज्योतिष)
हेमळ–पु० [सं० हमलः] १ स्वर्णकार, सुनार। २ कसौटी। ३ गिरगिट।
हेमवत–पु० हिमालय पर्वत।
हेमवती, हेमवतो–स्त्री० [सं० हेमवती] १ पार्वती, गौरी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ गंगा नदी । ३ हरीतकी, हर्रे, हरड़ ।

हेमवरण–वि० १ स्वर्णमय, स्वर्णिम । २ पीला❀ । ३ श्वेत, सफद❀ । –पु० १ पीला रंग । २ श्वेत वर्ण ।

हेमवल-पु० [सं० हेमवल] मुक्ता, मोती ।

हेमसुता–स्त्री० [सं०] पार्वती, गिरिजा, दुर्गा ।

हेमहेड़ाऊ–पु० [सं० हेम-हेडाबुक:] १ एक चारण जो घोड़ों का प्रसिद्ध व्यापारी व महा दानी था । २ इसके नाम पर गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

हेमांग–देखो 'हेमंग' ।

हेमांगद–पु० [सं० हेम-अंगद] सोने का बाजूबंध ।

हेमांगिर, हेमांगिरि (री)–देखो 'हेमगर' ।

हेमांणि, हेमांणी–स्त्री० [सं० हेम-खानी] १ स्वर्ण का खजाना । २ धन, दौलत, लक्ष्मी । ३ मुद्रा रखने की थैली विशेष (प्राचीन) ।

हेमा–स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती । २ मंदोदरी की माता, एक अप्सरा ।

हेमागिर (गिरि, गिरी)–देखो 'हेमगिरि' ।

हेमाचळ, हेमाचल, हेमाछळ, हेमाजळ–देखो 'हिमाचळ' ।

हेमाद्रि, हेमाद्री–देखो 'हिमाद्रि' ।

हेमायत–देखो 'हिमायत' ।

हेमाळ, हेमाळइ (ई) हेमाळय–वि० [सं० हेमन्] स्वर्णिम, सुनहरा । –पु० १ दीपक राग का पुत्र एक राग । २ देखो 'हिमाळय' ।

हेमाळे, हेमाळें, हेमाळी–देखो 'हिमाळय' ।

हेय–वि० [सं०] १ त्यागने या छोड़ने योग्य, त्याज्य । २ निकृष्ट, घृणित, बुरा ।

हेयाळी–देखो 'हियाळी' ।

हेरंब, हेरंबो, हेरम्ब (म)–पु० [सं० हेरम्ब] १ गजानन । २ हाथी, गज । ३ भैंसा । ४ शेखीबाज, वीर ।

हेरंबमाता–स्त्री० [सं० हेरम्ब-माता:] गणेश की माता पार्वती, दुर्गा ।

हेरंभकारी (हेरंभा)–पु० घोड़ों की एक जाति या इस जाति का घोड़ा ।

हेर–स्त्री० १ खोज या पीछा करने की क्रिया या भाव । २ छान-बीन, खोज, तलाश । ३ गश्त, फेरी । –वि० हैरान, व्याकुल ।

हेरइ (ई)–पु० एक प्रकार का घोड़ा ।

हेरउ–देखो 'हेरो' ।

हेरण–स्त्री० १ हेरने, तलाश करने की क्रिया या भाव । २ तलाश, खोज, छानबीन ।

हेरणो (बो)–क्रि० १ ढूंढना, तलाश करना, खोजना । २ पता लगाना, जासूसी करना, जांच पड़ताल करना । ३ पीछा करना । ४ फेरी लगाना, चक्कर लगाना, गश्त लगाना । ५ देखना, अवलोकन करना । ६ गौर करना, टकटकी लगाना, ताकना । ७ विचार करना, पुनरावलोकन करना ।

हेरन–१ देखो 'हिरण्य' । २ देखो 'हेरण' ।

हेरफेर–पु० १ इधर-उधर करने की क्रिया या भाव । २ परिवर्तन, फेर-बदल । ३ अदल-बदल । विनिमय । ४ हस्तान्तरण, स्थानान्तरण । ५ घुमाव, चक्कर । ६ शब्दाडंबर, वाग्जाल । ७ कुटिल युक्ति, दावपेच, चाल । ८ अन्तर, फर्क । ९ घट-बढ़ ।

हेरम–देखो 'हेरंब' ।

हेरा–क्रि०वि० जासूसी या गुप्तचरी हेतु ।

हेराउ, हेराऊ–वि० १ तलाश करने वाला, ढूंढने वाला, खोज करने वाला । २ जासूस, भेदिया । ३ पीछा करने वाला । ४ देखने वाला । ५ संदेशवाहक, दूत, चर ।

हेरायत–पु० १ गुप्तचर, जासूस । २ संदेशवाहक, दूत । –वि० १ खोजने वाला, ढूंढने वाला । तलाश करने वाला । २ जासूसी करने वाला । ३ पीछा करने वाला । ४ देखने वाला ।

हेरिक–पु० [सं०] १ गुप्तचर, जासूस । २ संदेश वाहक, दूत, चर ।

हेरू, हेरुअ–देखो 'हेराउ' ।

हेरुक–पु० [सं०] १ गणेश, गजानन । २ महाकाल शिव का एक गण ।

हेरु, हेरूअ–देखो 'हेराउ' ।

हेरो–पु० १ खोजने या तलाश करने की क्रिया या भाव । २ छान-बीन, जांच-पड़ताल । ३ खबर, पता । ४ पीछा । ५ गुप्तचरी, जासूसी । ६ खबर, सन्देशा । ७ जासूस, गुप्तचर, भेदिया । ८ सन्देशा, सूचना । ९ दूत, संदेश वाहक । १० खोजी ।

हेळ, हेल–पु०[सं० हेलन] १ क्रीड़ा, खेल, तमाशा । २ खलबली, हलचल । ३ अपराध, गलती, भूल । ४ अनिष्ट, बुरा । ५ उमंग, उत्साह, जोश । ६ लहर, तरंग, हिलोर । ७ समुद्र, सागर । ८ अत्यधिक ठण्डी हवा । ९ आक्रमण, हमला, लड़ाई । १० मेल-जोल, घनिष्ठता । ११ बार, दफा, मरतबा । –वि० १ समान, तुल्य, बराबर । २ सहज, आसान । ३ किंचित, थोड़ा । ४ नगण्य, गौण । ५ तरंग या लहरदार । ६ देखो 'हील' ।

हेलइ, हेलउ–देखो 'हेलो' ।

हेळणी (बो)–१ देखो 'हिळणी' (बो) । २ देखो 'हिळाणी' (बो)

हेलन–पु० १ दोष, अपराध, कसूर, भूल । २ पाप ।

हेळमेळ–पु० १ मित्रता, दोस्ती । २ घनिष्ठता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेळवणी (बो)–१ देखो 'हिळाणी'(बो) । २ देखो 'हिळणी'(बो)

हेळहमीर, हेळांहमीर–वि० बहुत बड़ा दानी, दातार ।

हेळा, हेला–स्त्री० [सं० हला, हेला] १ पृथ्वी, धरती, भूमि । २ तरंग, लहर, उमंग । ३ क्रीड़ा, खेल । ४ नायक से मिलते समय नायिका की विनोद पूर्ण क्रीड़ा की मुद्रा । ५ दुःख । ६ हल्ला, चिल्लाहट । ७ चढ़ाई । ८ धावा, हमला, आक्रमण । ९ डांट-फटकार । १० कठिनाई । ११ हीन भावना । १२ तिरस्कार अपमान । १३ सरलता, भोलापन । –क्रि०वि० सरलता से, आसानी से । –वि० १ दानी, दातार । २ काम का पाबन्द । ३ मैला उठाने वाला ।

हेलि, हेली–स्त्री० [सं० सहकेलि] १ सखी, सहेली । २ देखो 'हवेली' ।

हेलु, हेलू–देखो 'हेलो' ।

हेलूग्राफ–पु० चमक से संकेत देने का एक प्रकार का तार ।

हेलूर–पु० घोड़ों का समूह ।

हेलूसणी (बो)–देखो 'हुलसणी' (बो) ।

हेलो–पु० १ सहायतार्थ बुलाने की आवाज । २ आर्त पुकार, दर्द भरी पुकार । ३ बुलावा, संबोधन, पुकार । ४ जोर की लम्बी आवाज, पुकार । ५ चिल्लाहट, हो-हल्ला । ६ घोषणा, ढिंढोरा । ७ भांग । ८ डिंगल का एक गीत (छन्द) ।

हेव–क्रि०वि० [सं० एव] १ अब, वस्तुतः । २ स्वीकृति सूचक शब्द, हां ।

हेवन–वि० अति, बहुत ।

हेवा–वि० अभ्यस्त, आदी, निर्भर ।

हेवै–पु० [सं० हयपति] १ बादशाह, सम्राट । २ मुसलमान । ३ मुर्गी का अण्डा सेने की क्रिया । ४ अभ्यस्त, आदी । –क्रि०वि० अब ।

हेवैपत (पति)–पु० बादशाह, सम्राट ।

हेवैपुर–पु० दिल्ली नगर का नाम ।

हेसमी–पु० एक प्रकार का व्यंजन विशेष ।

हेसा–स्त्री० हिनहिनाने की ध्वनि, आवाज, हींस ।

हेसारी–वि० हिसार प्रदेश का ।

हेहेकार–देखो 'हाहाकार' ।

है–अव्य० १ आश्चर्य, भयातुर, हतप्रभ होने की दशा में मुंह से होने वाली अव्यय ध्वनि । २ किसी बात पर असहमति या इन्कार सूचक अव्यय । ३ 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक बहुवचन रूप ।

हैंकप–देखो 'हैकंप' ।

हैंजम, हैंजजम–देखो हैजम' ।

हैंदू–देखो 'हिंदू' ।

हैंबर, हैंबर–देखो 'हयवर' ।

हैंसत–देखो 'हैसियत' ।

हैंसु हैंसू–देखो 'हींसू' ।

हैंसो–देखो 'हिस्सो' ।

है–पु० १ जल, पानी । २ देखो 'हय' । ३ देखो 'हे' ।

हैकंध–पु० १ योद्धा, वीर । २ शक्तिशाली, बलवान । ३ दीर्घ-काय, मोटा-ताजा । ४ बड़ा अफीमची । ५ घोड़ा, अश्व ।

हैकंप, हैकंपण–पु० भय, डर, त्रास, आतंक । –वि० भयातुर; कंपित, आतंकित ।

हैकंपणी (बो)–क्रि० १ डरना; भयभीत होना, घबराना, आतंकित होना । २ कंपायमान होना, थर्राना ।

हैकळ, हैकल–पु० घोड़े के गले में पहनाया जाने वाला गहना विशेष । –वि० तौल में अधिक, कुछ ज्यादा ।

हैकार–पु० हा-हा कार ।

हैकारव–पु० शब्द, आवाज ।

हैगळ, हैगांम–पु० घोड़ों का समूह, अश्व दल, घुड़ सेना ।

हैगोव–देखो 'हयग्रीव' ।

हैड़ो–सर्व० ऐसा ।

हैज–पु० [अ०] १ स्त्री का मासिक धर्म । २ देखो 'हेज' ।

हैजम–पु० १ सैन्य दल, सेना फौज । २ अश्व, घोड़ा । ३ दल, समूह । ४ तलवार ।

हैजमप, हैजमपत (पति, पती)–पु० सेनापति, सेनानायक ।

हैजो–पु० [अ० हैजः] गर्मी की मौसम में होने वाला एक घातक रोग, जिसमें रोगी को कै व दस्त अधिक होते हैं । विसूचिका ।

हैज्जम–देखो 'हैजम' ।

हैटलो–वि० (स्त्री० हैटली) नीचे वाला । –पु० १ निम्न, दबा हुआ, शोषित । २ देखो 'हेटो' ।

हैठे, हैठें–देखो 'हेटें' ।

हैडइ, हैडई, हैडउ–देखो 'हिरदो' ।

हैडर–पु० घास का सुरक्षित मैदान ।

हैडु हैडो–देखो 'हिरदो' ।

हैणो (बो)–देखो 'होणो' (बो) ।

हैतारत, हैतारथ–देखो 'हितारथ' ।

हैताळ–स्त्री० १ घोड़े के सुमों की ठोकर । २ देखो 'हेताळ' ।

हैथंड, हैथट, हैथट्ट, हैथाट–पु० १ अश्वदल, अश्वारोही दल, घुड़ सेना । २ सेना, फौज ।

हैदर–पु० दीवारों पर लगाया जाने वाला एक प्रकार का भारी पत्थर ।

हैदरा-वादी-सिंधी–पु० मीरखां पींडारी के पास रहने वाला एक मुसलमानी सैनिक दल विशेष ।

हैदळ–देखो हयदळ' ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैप, हैफ-पु० [अ०] १ आश्चर्य, विस्मय, ताअज्जुब। २ अफ़सोस, खेद।

हैबर, हैबर-देखो 'हयबर'।

हैबी-पु० हलवा, शीरगुल।

हैमत-पु० १ घोड़ा द्वारा नाक से की जाने वाली आवाज हिनहिन। २ देखो 'हेमंत'।

हैमर-देखो 'हयबर'।

हैमवत-वि० [सं० हैमवत्] १ बर्फ के समान, हिम जैसा। २ हिमालय जैसा, हिमालय के समान। ३ हिमालय का, हिमालय संबंधी। ४ हिमालय में होने वाला।

हैमार-देखो 'हमार'।

हैमाल, हैमाली-देखो 'हिमालय'।

हैमुख-पु० [सं० हयमुख] १ बड़वानल का एक नाम। २ हयग्रीव।

हैय-देखो 'हे'।

हैये, हैयै-१ देखो 'हेहय'। २ देखो 'हिरनी'।

हैरब-देखो 'हैरत'।

हैर-अव्य० १ शोक या निराशा सूचक अव्यय ध्वनि। २ देखो 'हैर'।

हैरान, हैरांन-वि० [अ० हैरान] १ परेशान, अशान्त, दुःखी, तंग। २ लज्जित, हताश, थकित। ३ आश्चर्य चकित, विस्मित, हक्का-बक्का, विस्मित।

हैरानी-स्त्री० [अ० हैरानी] १ परेशानी, अशान्ति, कष्ट, दुःख, तकलीफ। २ निराशा, थकान। ३ आश्चर्य, विस्मय।

हैराव-देखो 'हयबर'।

हैवंत-पु० घुड़सवार, अश्वारोही।

हैय-पु० १ एक प्रदेश का नाम। २ देखो 'हैवे'।

हैयर, हैयरा-देखो 'हयबर'।

हैवान-पु० [अ० हैवान] १ पशु, जानवर, चौपाया। २ उजड्ड, असभ्य या गंवार व्यक्ति।

हैवानी-स्त्री० [अ० हैवानी] १ 'हैवान' होने की अवस्था या भाव। २ पशुता। ३ उजड्डपन, असभ्यता। -वि० पशुओं का, पशु सम्बन्धी।

हैवेयत, हैवेयति-देखो 'हैवैपति'।

हैवेराई, हैवेराज, हैवेराव-देखो 'हैवैपति'।

हैवे-क्या० 'हैवे'।

हैवैपत, हैवैपति, हैवैपती-देखो 'हैवैपति'।

हैसली, हैसलदी-देखो 'होसली'।

हैसाब, हैसाब-वि० १ उचित, ठीक। २ देखो 'हिसाब'।

हौसला-स्त्री० [अ०] १ शौक, उमंग, होसला। २ दशा, अवस्था, स्थिति, ढंग। ३ आयु के अनुसार, वित्तीय अवस्था। ४ गम्भीरता, धीरता। ५ धैर्य, प्रतिष्ठा, इज्जत। ६ पुण्य, कीर्ति। ७ शोभा, सजा।

हैसी-देखो 'हिस्सी'।

हैहय-पु० [सं०] १ यदुवंश की एक शाखा। २ सहस्रबाहु का एक नाम। -अधिराज, राज-पु० सहस्रार्जुन का एक नाम।

हैं-हैं-अव्य० खेद या शोक सूचक ध्वनि।

हैंहैंकार-देखो 'हाहाकार'।

हैं हैं बोल-पु० वीर ध्वनि।

हों-अव्य० १ 'होना' क्रिया का संभाव्य रूप। २ देखो 'हौं'।

होंपरड़ोह, होंफरड़ोह-देखो 'होफरड़ोह'।

होस-१ देखो 'हंस'। २ देखो 'होस'।

होंसली-देखो 'होसली'।

होंसियो-वि० कायर डरपोक।

होंसो-पु० एक प्रकार का बैल।

हो-पु० [सं०] पुकार या सम्बोधन का शब्द। -अव्य० १ हे, अरे, अजी। २ देखो 'हौ'।

होक-स्त्री० १ सिर की दहाड़। २ हुक्का।

होकड़ो-देखो 'होको'।

होकबो-पु० १ उत्सव, जलसा, समारोह। २ बाहुल्य, अधिकता, प्राचुर्य।

होकर-देखो 'होकार'।

होकरणो (बो)-देखो 'होकरणो' (बो)।

होकाटाळ-वि० जिसका हुक्का-पानी बन्द हो, बहिष्कृत।

होकाधारी-वि० हुक्का पीने वाला। जिसके हाथ में हुक्का हो।

होकापांणी (णो)-पु० १ साथ-साथ उठने-बैठने व मिलजुल कर खाने-पीने का व्यवहार या भाव। २ हुक्का-पानी।

होकार-देखो 'होकार'।

होकारो-पु० १ किसी को डराने, चौंकाने, प्रताड़ना देने या सावधान करने की दृष्टि से मुंह से किया जाने वाला 'हा' शब्द। २ शब्द आवाज या नाद। ३ पशुओं को रोकने संबंधी ध्वनि। ४ घोड़े की हिनहिनाहट, हींस। ५ हुंकार। ६ मौज, मस्ती, आमोद। ७ उत्सव, जलसा। ८ देखो 'हुंकारो'।

होको-पु० [अ० हक्क] १ धूम्रपान का एक बड़ा उपकरण। २ पंचायतों आदि में मृत्युभोज में दिया जाने वाला विशेष भोज।

होच-देखो 'होछ'।

होछाहोछ (छा)-पु० ज्योतिष के अन्तर्गत राशि, नक्षत्र, ग्रह आदि बातों का साधारीकरण करने वाला चक्र।

होछाहोछि (छा)-देखो 'होछाहोछी'।

होड़ी-पु० १ दरवाजे की मजबूती से बन्द कर रखने के लिये लगाया जाने वाला लकड़ी या पत्थर का सहारा। २ मानसिक कष्ट या विकार के कारण शरीर में होने वाली थरथराहट। ३ सहारा, रोक।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होट, होदड़ो, होठ, होठड़ो, होठड़ी–पु० [सं० ओष्ठ] प्राणियों के मुंह के किनारे के अवयव, ओष्ठ; वस्त्रच्छद।

होड–स्त्री० [सं० होडु] १ बराबरी, समानता। २ प्रतिस्पर्द्धा। ३ शर्त, बाजी। ४ ईर्ष्या, द्वेष। ५ मुकाबला, सामना।

होडहाक–स्त्री० घोर ध्वनि।

होडाहोड–देखो 'होडाहोड'।

होडाहोड–क्रि०वि० १ देखादेखी, दूसरों के अनुकरण से। २ प्रतिस्पर्द्धा या जिद् के कारण। ३ ईर्ष्या, या द्वेषवश। ४ बराबरी में समता में, तुलना में। ५ शर्त या बाजी लगाकर। ६ मुकाबले में, सामने।

होडाहोडा (डो)–देखो 'होडाहोड'।

होडि–देखो 'होड'।

होण–क्रि०वि० १ होने के लिये। २ देखो 'होणो'।

होणपवारव–देखो 'होणहार'।

होणहार, होणहारी, होणार, होणी, होणेहार–स्त्री० ऐसी घटना या बात जो होकर रहे, होनहार, भवितव्यता, भावी।–वि० अपने लक्षण, गुण या कर्त्तव्यों में जो योग्य लगता हो, भाग्यशाली, उदीयमान।

होणो (णी)–क्रि० [सं० भू, प्रा० होइ] १ स्वयमेव घटना, होना। २ अस्तित्व में आना, बनना। ३ उपस्थित या मौजूद रहना। ४ निर्मित होना, रचा जाना। ५ काम बनना या सिद्ध होना। ६ पूर्ण होना, पूर्णता की स्थिति में आना। ७ निवृत्ति की अवस्था में आना। ८ बीतना, गुजरना। ९ परिणाम, नतीजा निकलना। १० असर या प्रभाव पड़ना। ११ हानि या क्षति पहुंचना। १२ भुगतना, सहन करना। १३ उचित क्रम या नियम से चलते रहना। १४ परिवर्तित अवस्था में पहुंचना। १५ जन्मना, उत्पन्न होकर सामने आना। १६ विशेष स्थिति या अवस्था में आना। १७ चमकना, प्रकाशित होना। १८ मिलना, प्राप्त होना। १९ व्यापना, आना, छाना। २० किसी रोग या प्रेत बाधा आदि का फैलना। २१ निकलना, प्रगट होना। २२ मिलना, भेंटना। २३ अवतरित होना। २४ विकार सूचक क्रिया किया जाना। २५ काम निकलना, गरज सरना। २६ नाते-रिश्ते या मोह-ममता में बंधना निकट-वर्ती या घनिष्ठ बनना।

होत–पु० [सं० होत्र] यज्ञ, हवन।

होतव, होतव्य, होतव्ये, होतव्य, होतव्यता–स्त्री० [सं० भवितव्यता] होनहार, भावी, होनो।

होता–वि० [सं० होतृ] १ यज्ञ करने वाला, आहुति देने वाला। २ देखो 'होत'।

होतासण–देखो 'हुतासण'।

होती–वि० 'है' का भूतकालिक स्त्री रूप, थी।–स्त्री० संभावना।

होतो–वि० 'है' का भूतकालिक रूप था।

होध–१ देखो 'होज'। २ देखो 'होदो'।

होबळ–वि० कम्पित।

होबाय, होबी–देखो 'होदो'।

होमहार–देखो 'होणहार'।

होफ, होफर–स्त्री० १ सिंह की दहाड़, गरजना। २ जोश पूर्ण आवाज, वीर ध्वनि। ३ आवाज, ध्वनि।

होफरहोह–वि० (स्त्री० होफरहोह) सिंह के समान दहाड़ने वाला, गरजने वाला।

होफरणो (णी)–क्रि०१ गरजना, दहाड़ना। २ जोश में बोलना। ३ क्रोध करना, रोष करना।

होफरेळ–पु० सिंह, शेर।

होबड़–स्त्री० १ ठोड़ी, हिचकी। २ मुंह, मुख। ३ ओष्ठ, अधर, होठ। ४ देखो 'थोबड़ो'।

होबरड़ो–पु० उबकाई, मतली।

होम–पु० [सं०] १ हवन, यज्ञ। २ यज्ञ में आहुति देने की क्रिया।

होमकाट (काठ)–पु० [सं० होम + काष्ठ] १ यज्ञ की लकड़ियां, समीधा। २ देखो 'होमकास्ठी'।

होमकास्ठी–स्त्री० [सं० होमकाष्ठी] यज्ञ की अग्नि दहकाने की फूंकनी।

होमकुंड–पु० [सं०] वह गड्ढा या कुंड जिसमें यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित की जाती है।

होमछाळणा–स्त्री० बिश्नोइयों में झगड़ा या विवाद तय करने संबंधी एक प्रक्रिया।

होमणो–वि० (स्त्री० होमणी) १ होमने वाला, आहुति देने वाला। २ नष्ट करने वाला, बरबाद करने वाला। ३ बलिदान करने वाला।

होमणो (णी)–क्रि० [सं० होमम्] १ हवन करना, यज्ञ करना। २ यज्ञ की अग्नि में सामग्री डालना, आहुति देना।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३ बलिदान करना। ४ जलाना। ५ नष्ट करना, बरबाद करना। ६ अर्पित करना।

होमपाठ–पु० यज्ञ के समय बोले जाने वाले मंत्रादि।

होमि–पु० [सं०] १ अग्नि। २ घी, घृत।

होमीजणो (बो)–क्रि० १ अत्यन्त गर्मी या उष्णता महसूस करना, गर्मी से बेचैन होना। २ दुःखी या परेशान होना। ३ नष्ट या बरबाद होना। ४ अर्पित होना। ५ आहुति दिया जाना, होमा जाना। ६ बलिदान किया जाना।

होर–स्त्री० इच्छा, अभिलाषा।

होरा–स्त्री० [सं०] १ राशि का उदय। २ राशि का आधा भाग।

होरी–देखो 'होली'।

होरीलो–वि० (स्त्री० होरीली) हठ करने वाला, हठी, जिद्दी।

होरो–पु० १ हठ, जिद्द। २ बालक का हठ, बाल हठ।

होल–स्त्री० १ आवड़ देवी की बहन एक देवी। २ चित्त, मन, दिल।

होळका–१ देखो 'होलास्टक'। २ देखो 'होळो'।

होलड़–स्त्री० छोटी पंदुकी।

होळां–क्रि०वि० धीरे, आहिस्ता।

होळा–पु० (ब०व०) गेहूँ, चने आदि के कच्चे दाने जिन्हें सेक कर खाया जाता है।

होला–स्त्री० गप्प।

होसात–देखो 'हवालात'।

होळावो–पु० एक शिकारी पक्षी विशेष।

होळास्टक, होलास्टक–पु० [सं० होलाष्टक] १ फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से होलिका पर्व तक की अवधि। २ इस अवधि में रहने वाला नक्षत्र।

होळाहड़ो–पु० एक प्रकार का घोड़ा।

होळि–स्त्री० १ जलाशय का वह भाग जहाँ नावें बंधी रहती हैं। २ देखो 'होळी'।

होळिका, होलिका, होळिय–देखो 'होळी'।

होळियार–पु० १ होली के त्यौहार पर चरचरी नृत्य करने वाला व्यक्ति। २ होली का रंग खेलने वाला, होली खेलने वाला।

होलोवो–पु० ज्वार का लंबा डंठल जिसके सिरे की दीपावली के दिन जलाते हैं।

होळी–स्त्री० [सं० होली] १ फाल्गुन की पूर्णिमा (कभी-कभी चतुर्दशी) को मनाया जाने वाला हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्यौहार। २ इस दिन मुहल्ले या चौक में रोपी जाने वाली झाड़ी जिसे रात में जलाया जाता है। ३ इस त्यौहार पर खेला जाने वाला रंग। ४ इन दिनों गाये जाने वाले गीत। ५ लाक्षणिक अर्थ में अग्नि, आग। ६ आग की लपट, लौ। ७ चिनगारी। ८ फारुता नामक पक्षी। –[सं० होलिका] ९ एक पुराण प्रसिद्ध राक्षसी जो हिरण्यकश्यप की बहन थी। –वि० १ अशक्त, कमजोर। २ कम प्रभावी, हल्की।

होळोउ–पु० एक प्रकार का वस्त्र।

होळोभंझाटो–स्त्री० एक राग विशेष।

होलेड़ो–देखो 'होळो'।

होळें–क्रि०वि० १ धीरे, धीमे, आहिस्ता। २ मंदगति से।

होळेंसीक, होळेंसें–क्रि०वि० १ धीरे से, आहिस्ता से। २ चुपके से।

होवणहार–देखो होणहार'।

होवणो (बो)–देखो 'होणो' 'बो')।

होवनगार–देखो 'होणहार'।

होवास–पु० घोड़ा, अश्व।

होस–पु० [फा० होश] १ बुद्धि, अक्ल, ज्ञान-वृत्ति। २ संज्ञा, चेतना, होश। ३ विवेक। ४ शिष्टता, सभ्यता। ५ सावधानी, सतर्कता। ६ सामान्य मानसिक स्थिति। ७ मौज, मस्ती। ८ स्मरणशक्ति, याददाश्त। ९ परिपक्वावस्था, उत्तरदायित्व संभालने की अवस्था। १० इच्छा, कामना। ११ उत्साह, उमंग।

होसनाइक होसनाक, होसनायक–देखो 'हुसनाक'।

होसमंद, होसलामद–वि० १ होश वाला, सावधान। २ समझदार, बुद्धिमान।

होसलो–पु० [अ० हौसलः] १ किसी कार्य के लिये होने वाली सामर्थ्य शक्ति। २ साहस, हिम्मत। ३ उत्साह, जोश। ४ सहन शक्ति। ५ जरूरत, आवश्यकता। ६ धृष्टता, ढीठाई। ७ उत्तरदायित्व संभालने या कष्ट सहन करने की अवस्था।

होसियार–वि० [फा० होशियार] १ चतुर, निपुण, दक्ष, कुशल। २ समझदार, बुद्धिमान, व्यवहार कुशल। ३ सचेत, सावधान, सतर्क, खबरदार। ४ धूर्त, चालाक, ठग, छलिया।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

होसियारी-स्त्री० [फा० होशियारी] १ चतुरता, निपुणता, कौशल। २ समझदारी, बुद्धिमानी, व्यवहारकुशलता। ३ सतर्कता, सावधानी। ४ चालाकी, धूर्तता, छल, ठगी।

होहा-स्त्री० १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला। २ हाहाकार।

होहोकार-स्त्री० हाहाकार।

होहो-पु० पशुओं के लिये एक संकेतात्मक शब्द।

हौं-सर्व० मैं, हम।

हौंकार-देखो 'होकार'।

हौंण-देखो 'होणी'।

हौंणी (बो)-देखो 'होणी' (बो)।

हौंस-देखो 'होस'।

हौं-वि० १ था। २ देखो 'हो'।

हौआ-देखो 'हौवा'।

हौक-स्त्री० १ ध्वनि, आवाज, शब्द। २ भय, आतंक।

हौकबो-देखो 'होकबो'।

हौकर-देखो 'हौकार'।

हौंकरणो (बो)-क्रि० जोश या क्रोध पूर्ण आवाज करना, दहाड़ना, गरजना।

हौकार-स्त्री० १ दहाड़, गरजना। २ जोश पूर्ण आवाज। ३ जोर की आवाज, हल्ला, शोर। ४ चुनौती, ललकार। ५ पुकार, आवाज।

हौज-पु० [अ०] पानी संग्रह करने का बड़ा कुण्ड या कोठा। हौद।

हौड-देखो 'होड'।

हौडाहौड-देखो 'होडाहोड'।

हौद-१ देखो 'हौज'। २ देखो 'हौदो'।

हौदळ-पु० गले का एक आभूषण विशेष।

हौदो-पु० [अ० हौदज] १ हाथी पर सवारी के लिये उसकी पीठ पर बांधने का आसन, अम्बारी। २ तांगे के आगे पीछे बना, (बैठने वालों के) पांव रखने का स्थान। ३ मकान की बालकानी। ४ देखो 'हौज'।

हौप, हौफ, हौफर-देखो 'हौफ'।

हौफरणो (बो)-देखो 'हौफरणो' (बो)।

हौम-देखो 'होम'।

हौर-पु० १ भय, त्रास, आतंक। २ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

हौल-पु० [अ०] १ भय, त्रास, आतंक, धाक। २ गड्ढा, खड्डा। ३ बेचैनी, घबराहट।

हौलबिस-पु० १ दिल धड़कने का रोग विशेष। २ उन्माद रोग। ३ देखो 'हौलदिलो'।

हौलदिलो-वि० १ डरपोक, कायर, बुजदिल। २ डरा हुआ, भयातुर।

हौळी-देखो 'होळी'।

हौळै-देखो 'होळै'।

हौळोळणो (बो)-देखो 'हिलोड़णो' (बो)।

हौवणो (बो)-देखो 'होणो' (बो)।

हौवा-स्त्री० १ वह पहली स्त्री जो आदम के साथ पृथ्वी पर पैदा हुई थी (मुसलमान)। -पु० २ बच्चों को डराने का एक काल्पनिक जंतु।

ह्यौस-देखो 'होस'।

ह्यौसनाइक, ह्यौसनाक, ह्यौसनायक-देखो 'हुसनाक'।

ह्यौसली-देखो 'होसली'।

ह्यां-अव्य० यहां पर, यहां।

ह्यांको-सर्व० १ मेरी। २ इनकी। -वि० यहां की।

ह्यौ-पु० हृदय। -सर्व० यह।

ह्रद-पु० [सं०] १ गहरी बड़ी झील। २ सरोवर, तालाब। ३ गहरी गुफा। ४ किरण। ५ दाह, जलन। [सं० हृदय] ६ हृदय, दिल, मन।

ह्रदय, ह्रदि, ह्रदे, ह्रदै, ह्रदौ-देखो 'हिरदो'।

ह्रस्व-वि० [सं०] १ छोटा, लघु। २ तुच्छ, थोड़ा। ३ बौना, वामन। -पु० लघु स्वर या लघु मात्रा वाला व्यंजन।

ह्राद-पु० [सं० ह्रादः] १ शब्द, ध्वनि। २ शोरगुल, हल्ला।

ह्रादनी, ह्रादिनी-स्त्री० [सं० ह्रादिनी] १ बिजली, विद्युत। २ इन्द्र का वज्र, वज्र। ३ शल्लकी नामक वृक्ष। ४ नदी; सरिता।

ह्रास-पु० [सं०] १ क्षय, कमी। २ विनाश, ध्वंस। ३ क्षीणता। ४ छोटी संख्या। ५ घाटा। ६ शब्द, ध्वनि। ७ शोर; हल्ला।

ह्रिव-पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिअय, हिई, हिओ–देखो 'हिरदो'।

ह्रींकार–पु० [सं०] बीजाक्षर।

ह्री–स्त्री० [सं०] १ लज्जा, लाज, शर्म। २ नम्रता, शिष्टता। ३ मदिरा, शराब। ४ दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म की पत्नी।

ह्रीक्षेर–वि० नेत्रवाला।

ह्रीहेत, ह्रीहेत–वि० [सं० ह्रीहत] निर्लज्ज, बेशर्म।

ह्लादिणी, ह्लादिनी–वि० [सं० ह्लादिन्] १ प्रसन्नताकारक, हर्षप्रद। २ देखो 'ह्लादनी'।

ह्वां–अव्य० यहां।

ह्वाल–देखो 'हवाल'।

ह्वेसणियापांन–पु० समुद्र देश का एक पात्र विशेष।

ह्वे–अव्य० १ स्वीकृति सूचक अव्यय, हां। २ है।

ह्वंणो (बो)–देखो 'होणो' (बो)

ह्वंयोड़ो–देखो 'होयोड़ो' (स्त्री० ह्वंयोड़ी)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only